महाभारत

भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्रीपर्व्व
समाप्त

महर्षि कृष्णद्वैपायन वेदव्यास-कृत मूल संस्कृतसे
योग्यपण्डितोंके द्वारा
अनुवादित
और
११७। १ बहूबाजार ष्ट्रीट, कलकत्तेसे
श्री प्रतापचन्द्र सोमके द्वारा
प्रकाशित।

द्वितीय संस्करण।

VOL. II.

कलकत्ता ;
श्री माणिकचन्द्र चक्रवर्त्तीके द्वारा
११७। १ बहूबाजार ष्ट्रीट,—कलेज मेसिन प्रेससे मुद्रित।

१६०७।

सम्पूर्ण महाभारतका मूल्य १५) रुपये।

महाभारत।

भीष्मपर्व्व।

नारायण नरोत्तम, नर और सरस्वती देवीको नमस्कार करके पुराणादि कीर्त्तन करते हैं।

श्रीवैशम्पायनजीसे राजा जनमेजयने पूछा, हे ब्रह्मन्! सुमहात्मा कुरु, पाण्डव, और चन्द्रवंशीय वीरगण तथा अनेक देशोंसे आये हुए पार्थिवगणने किस तरह युद्ध किया। श्रीवैशम्पायनजी बोले, हे महीपते! कुरु, पाण्डव और सोम वंशीय वीरोंने तपःक्षेत्र कुरुक्षेत्रमें जिस प्रकार युद्ध किया था सो सुनिये। वेदाध्ययनमें निपुण, लड़ाके, जय चाहनेवाले और महाबली पाण्डवोंकी सब सेना सोमवंशियोंके साथ कुरुक्षेत्रमें आकर कौरवोंकी ओर चली। वे दुराधर्ष सोमवंशीय और पाण्डव-सैनिकोंके साथ युद्धमें विजय पानेकी इच्छा करते हुए; दुर्य्योधनकी सेनाके सम्मुख होकर गये और पश्चिम ओर जाकर पूरब मुंह खड़े हुए। कुन्तीनन्दन युधिष्ठिरने सेनाके बाहर यथोपयुक्त हजार हजार डेरे खड़े कराये। हे पार्थिवसत्तम। उस समय समस्त भूमण्डल पुरुषशून्य अश्वशून्य और गजशून्य सा मालूम होता था। सब स्थानमें केवल लड़के, बूढ़े और स्त्रियां ही बच गई थीं। जम्बूद्वीप मण्डलमें जिन जिन स्थानों तक सूर्य्यकी ज्योति पहुंचती है, उन सब स्थानोंसे सब लोग कुरुक्षेत्रमें आकर सैन्यरूपसे उपस्थित हुए। सब जातिके सब मनुष्योंने एकत्रित होकर कई योजन भूमिमें अनेक देश, नदी, पर्व्वत और नदियोंको छा लिया। बल वाहन समन्वित उन असंख्य योद्धाओंके खाने पीनेका बहुत उत्तम प्रबन्ध राजा युधिष्ठिरने कर दिया, और लड़ाईके समय धोखा न हो इस लिये उन्होंने अपने पक्षके सैन्योंका एक नाम निर्दिष्ट कर दिया कि जो इस प्रकारका नाम कहेगा वह पाण्डवोंके पक्षका समझा जायगा। अपने प्रत्येक दलका भी उन्होंने एक एक विशेष चिन्ह, विशेष नाम और विशेष भाषा निर्द्देश कर दी।

उस तरफ पीले आतपत्रको शिर पर रखे, हजारों हाथियोंके बीचमें, अपने भाई लोगोंसे घिरे हुए, महामानी राजा दुर्य्योधनने पाण्डवोंकी ध्वजाका अग्रभाग देखते हुए अपने पक्षके राजाओंके साथ होकर पाण्डवोंके विरुद्ध अपनी सेनाकी व्यूहरचना करने लगे। युद्ध चाहनेवाले पाञ्चाल योधाओंने दुर्य्योधनको देखके अत्यन्त प्रसन्न होके बड़े जोरसे शङ्ख, मीठी बोलीवाली भेरी आदि बजाने लगे। पाण्डव और वीर्य्यवान् वासुदेव उन सैन्य दलोंको उस प्रकार प्रसन्न देखकर बहुत खुश हुए। रथमें बैठे हुए पुरुषोंमें इन्द्रके समान कृष्ण और अर्ज्जुन योद्धाओंके साथ युद्धमें प्रवृत्त होकर अपना अपना दिव्य शङ्ख बजाने लगे। उनके पाञ्चजन्य और देवदत्त शङ्खोंके भयङ्कर शब्दोंको सुनकर कायर योधाओंके पखाना पिशाब होगई। जैसे जोरसे बोलने वाले महासिंहकी गर्ज्जना सुनके अन्य पशुवर्ग भयसे व्याकुल होजाते हैं, वैसे ही उस दिव्य वारिज-

शङ्खको सुनके वह सेना मानो मतवाली सी हो गया। उस समय पर्व्वोंसे इतनी धूल उड़ने लगी कि उससे दिन जानकर सूर्य डूब गये ऐसी मालूम होने लगी, कोई भीज नहीं देख पड़ती थी। तब समस्त सेनाओं पर ऊंचे मेघसे मांस और लोहू बरसने लगा। ऐसी आंधी उठी कि लाखों लाख गावें गिरने लगीं।

ये सब बड़े आश्चर्यके समान मालूम होने लगे। हे राजेन्द्र! ऐसी क्षुभित सागरके समान ये दोनों सेनाएं युद्ध करनेके लिये बहुत तेजके और हर्षित होकर कुरुक्षेत्रमें खड़ी रहीं। लड़नेवाली दोनों सेनाओंका ऐसा आपसमें समारोह हुआ जैसे युगके अन्तमें दो बड़े समुद्रोंका होता है। कौरव और पाण्डवोंके सेना सम्मुख उपस्थित होनेसे पृथ्वी खाली सी होगई; केवल लड़के, वृद्ध और स्त्रियां ही अपने अपने देशमें रह गयीं।

हे भरतश्रेष्ठ! कौरव, पाण्डव और सोमवंशियोंने ऐसी प्रतिज्ञा और धर्म स्थापन किया। केवल बराबरवालेके साथ न्याय पूर्वक परस्पर युद्ध करेंगे, कोई पीछेसे किसी प्रकार छल नहीं करने पावेगा; न्यायानुसार युद्ध करनेके बाद निवृत्त होनेपर हमलोगोंके दलोंमें परस्पर प्रीति होगी; जो वाग्युद्धमें प्रवृत्त होंगे, उनके साथ केवल वाक्योंहीसे युद्ध किया जायगा; जो सेनाके बीचसे निष्क्रान्त हो उनपर आघात नहीं कर सकेगा, रथी रथीके साथ, गजारोही गजारोहीके साथ घुड़सवार घुड़सवारके साथ; और पैदल पैदलके साथ युद्ध करेंगे। योग्यता, अभिलाषा, उत्साह और पराक्रमके अनुसार बातचीत करके प्रहार किया जायगा; पृथिवीपर गिरे वा विह्वल होगये हुए, शरण आये हुए, युद्धसे पराङ्मुख हुए, शस्त्र रहित अथवा वर्म्महीन (बेबखतरके) लोगोंपर किसी प्रकार प्रहार नहीं किया जायगा; और सारथी, वाहन, शस्त्रवाहक, भेरी शङ्खादि बजानेवाले, लोगोंपर आघात नहीं किया जायगा। कौरव पाण्डव और सोमवंशीय इस प्रकार प्रतिज्ञा करके आपनी अपनी सेना निरीक्षण करके बहुत विस्मयान्वित हुए। इस तरहसे मनुष्योंमें प्रधान वे महात्मालोग योद्धाओंके साथ सेनाके सन्निवेश करके बहुत प्रसन्न होकर युद्धके लिये उद्यत हुए।

प्रथम अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायनजी बोले, कि इसके बाद, भूत भविष्यत् वर्त्तमानके जाननेवाले, वेदके जाननेवाले, प्रत्यक्ष देखने वाले, वेदके जाननेवालोंमें श्रेष्ठ, भरतवंशीय लोगोंके पितामह और सत्यवतीके पुत्र, भगवान् व्यास ऋषि होनेवाली निदारुण लड़ाईके पूर्व पश्चिम भागमें खड़े होकर उस सम्पूर्ण सेनाको देखके, अपने लड़कोंकी दुर्नीतिके विचारसे व्याकुल होकर विचित्रवीर्य्यनन्दन धृतराष्ट्रको एकान्तमें बुलाकर कहने लगे, हे राजन्! तुम्हारे पुत्रोंका और अन्यराजाओंका काल समीप आगया है। वे लोग लड़ाईमें परस्पर एकत्रित होकर एक दूसरेको मारेंगे; काल आजानेसे वे लोग संहार दशाको प्राप्त हो जायगे, कालको चाल देख कर तुम, लोगोंके लिये शोक मत करो। हे पुत्र! अगर लड़ाईमें इन लोगोंको देखनेकी तुम्हारी इच्छा हो तो मैं तुम्हें नयन प्रदान करूं; उससे तुम लड़ाई देख सकोगे।

धृतराष्ट्र बोले, हे ब्रह्मर्षिसत्तम! ज्ञातिवध देखनेकी मेरी अभिलाषा नहीं होती है परआपके तेजः प्रभावसे इस लड़ाईका सब हाल सुननेकी इच्छा रखता हूं। श्रीवैशम्पायनजी बोले, कि धृतराष्ट्रके लड़ाई देखनेकी अनिच्छा और उसका हाल सुननेकी इच्छा प्रगट करने पर, वर प्रदान करनेके ईश्वर व्यासजीने सञ्जयको वर दिया और धृतराष्ट्रसे कहा, कि इस,

लड़ाईका सब वृत्तान्त यह सञ्जय तुमसे कहेंगे लड़ाईकी कोई बात इनसे छिपी नहीं रहेगी, इनके दिव्य नेत्र हो जायंगे उसीसे सब बातें जान सकेंगे, और युद्धके सब वृत्तान्त तुमसे कहेंगे। प्रकाश हो वा गुप्त हो, दिनकी हो वा रातकी हो, जब कोई बात होगी तो यह केवल मनमें चिन्ता करके सब बात जानेंगे। शस्त्रोंके आघातसे यह नहीं मर सकेंगे। और परिश्रम करनेसे यह नहीं थक सकेंगे। हे सौम्य! यही गवल्गणके पुत्र सञ्जय इस लड़ाईसे अलग रह सकेंगे। हे भरतश्रेष्ठ! शोकसे व्याकुल मत होना, कुरुपाण्डवोंकी यह कीर्त्ति मैं विख्यात कर दूंगा। हे नरेन्द्र! इस उपस्थित व्यापारका देवताओंका किया हुआ जानना देवताओंके किये हुए कामोंके लिये कभी शोक नहीं करना चाहिये। विशेष बात यह है, कि इसका रोकनेका सामर्थ्य भी नहीं है, क्योंकि जिस पक्षमें धर्म्म रहेगा उसी पक्षकी जय होगी। श्रीवैशम्पायनजी बोले, कि कौरवों और पाण्डवोंके पितामह महाभाग भगवान् व्यासजी धृतराष्ट्रको इतनी बात कहके फिर कहने लगे, कि हे महाराज! इस लड़ाईसे बहुत हानि होगी, उन हानियोंको जनानेवाली बहुतसी सूचनायें अभी देख पड़ती हैं, श्येन, गिद्ध, कौए, कङ्क और बगुले आदि सब पक्षी पेड़ोंपर आ आके बैठते हैं और एकाग्रचित्त और प्रसन्नमन समीप वाले रणस्थलको देखते हैं। हाथी घोड़े आदिका मांस खाने वाले गीदड़ कुत्ते आदि जानवर इधर उधर घूम रहे हैं। विकट रूप वाले कङ्क पक्षी दया रहित होकर शब्द करके भय उत्पन्न करते हैं और जाके मध्यस्थलमें एकत्र होते हैं। हे भारत! सुबह और शाम होनेके पहिले और पीछे नित्य मालूम होता है, कि मानो सूर्य्यदेव कबन्धोंसे घिरे हैं। एक ओर सफेद मेघ दूसरी ओर लाल मेघ और बीचमें काले मेघ सन्ध्या समय सूर्य्यको चारों ओरसे घेरसे लेते हैं। मैंने देखा है कि अमावसके दिनमें चन्द्रमा और सूर्य्यके साथके नक्षत्र पापग्रहोंके साथ जा मिले हैं और उसी अर्द्धरात्रमें ग्रहस्पर्श हुआ है, केवल भय दिखलानेके लिये हुए हैं। कार्त्तिक पूर्णिमासे चन्द्रमा ज्योति रहित और लाल रङ्गके हो कर अलक्ष्य हो गये हैं। इस लिये बहुतसे वीर्य्यशाली विशालबाहु, वीर राजा और राजपुत्र मारे जाकर पृथिवी-तलमें शयन करेंगे। रातको लड़नेवाले शूकर और विड़ालके घोर शब्द अन्तरीक्ष पथमें सुन पड़ते हैं। देवमूर्त्तियां कभी कांपती हैं; कभी हंसती हैं, कभी घर्म्मयुक्त होती हैं। हे नरपाल! दुन्दुभियोंको कोई बजाता नहीं है पर तौभी सब बजने लगती हैं, क्षत्रियोंके प्रधान प्रधान रथोंमें कोई घोड़ा नहीं जोतता है, तौभी सब चलने लगते हैं, कोकिल, शतपत्र चास, भास, शुक, सारस, मयूर, आदि सब चिड़ियाएं बहुत कठोर घोर शब्द करती हैं, कहीं घुड़सवार लोग बखतर पहन कर और हथियार लेकर खड़े करते हैं, अरुणोदयके समय फतिङ्गोंके सैकड़ों दल देख पड़ते हैं, और सन्ध्या और सुबहको दिग्दाह प्रकाशित होता है। हे भारत! मेघोंसे धूल और मांस बरसता है। हे राजन्! साधुजनोंसे पुरस्कार की हुई, तीनों लोकमें विख्यात यह अरुन्धती अपने स्वामी वशिष्ठको पीठपर लिये है। शनिग्रह रोहिणीको पीड़ा देते हैं। चन्द्रमाका मृगचिन्ह अपने सुनासिब स्थानपर नहीं दीखता है। आकाशमें विना मेघके कठोर गर्ज्जन सुन पड़ती है और वाहन सब रोते हैं। महाराज! इन सब सूचकोंको देखकर विश्वास होता है कि कोई महा भयावह घटना होगी।

२ अध्याय समाप्त।

स्वरको सुनके वह समूचा सैन्यदल थरा गया। उस समय पृथ्वीसे इतनी धूल उड़ने लगी कि उससे छिप जानेपर सूर्य्य डूब गये हुएसे मालूम होने लगे, कोई चीज नहीं दीख पड़ती थी। तब समस्त सेनाओं पर वहां मेघसे मास और लोहू बरसने लगा। ऐसी आंधी उठी कि लाखों लाख योधे गिरने लगे।

ये सब बड़े आश्चर्यके समान मालूम होने लगे। हे राजेन्द्र! तौभी क्षुभित सागरके समान वे दोनो सैन्यदल युद्ध करनेके लिये बहुत इच्छुक और दृढ़चित्त होकर कुरुक्षेत्रमें अड़े रहे। लड़नेवाली दोनो सेनाओंका ऐसा आश्चर्य्य समारोह हुआ जैसे युगके अन्तमें दो बड़े समुद्रोंका होता है। कौरव और पाण्डवोंके सैन्य समूह एकत्र करनेसे पृथ्वी खाली सी होगई। केवल लड़के, बूढ़े और स्त्रियां ही अपने अपने देशमें बच गयीं।

हे भारतप्रवर! कौरव, पाण्डव और सोमवंशियोंने ऐसी प्रतिज्ञा और धर्म्म स्थापन किया। केवल बराबरहीके लोग न्याय पूर्व्वक परस्पर युद्ध करेंगे, कोई आदमी किसी प्रकार छल नहीं करने पावेगा, न्यायानुसार युद्ध करनेके बाद निवृत्त होनेपर हमलोगोंके दलोंमें परस्पर प्रीति होगी; जो वाग्युद्धमें प्रवृत्त होंगे, उनके साथ केवल वाक्यहीसे युद्ध किया जायगा, जो सेनाके बीचसे निष्क्रान्त हो उनपर आघात नहीं कर सकेगा, रथी रथीके साथ, गजारोही गजारोहीके साथ घुड़सवार घुड़सवारके साथ, और पैदल पैदलके साथ युद्ध करेंगे। योग्यता, अभिलाषा, उत्साह और पराक्रमके अनुसार बातचीत करके प्रहार किया जायगा, पृथिवीपर गिरे वा विह्वल होगये हुए, शरण आये हुए, युद्धसे पराङ्मुख हुए, शस्त्र रहित अथवा वर्म्महीन (बेखतरके) लोगोंपर किसी प्रकार प्रहार नहीं किया जायगा, और सारथी, वाहन, शस्त्रवाहक, भेरी शङ्खादि बजानेवाले, लोगोंपर आघात नहीं किया जायगा। कौरव पाण्डव और सोमवंशीय इस प्रकार प्रतिज्ञा करके अपनी अपनी सेना निरीक्षण करके बहुत विस्मयान्वित हुए। इस तरहसे मनुष्योंमें प्रधान वे महात्मालोग योद्धाओंके साथ सेनामें सन्निवेश करके बहुत प्रसन्न होकर युद्धके लिये उत्सुक हुए।

प्रथम अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायनजी बोले, कि इसके बाद भूत भविष्यत् वर्त्तमानके जाननेवाले, वेदके जाननेवाले, प्रत्यक्ष देखने वाले, वेदके जाननेवालोंमें सबसे श्रेष्ठ, भरतवंशीय लोगोंके पितामह और सत्यवतीके पुत्र, भगवान् व्यास ऋषि होनेवाली निदारुण लड़ाईके पूर्व्व पश्चिम भागमें खड़े होकर उस सम्पूर्ण सेनाको देखके अपने लड़केकी दुर्नीतिके विचारसे व्याकुल होकर विचित्रवीर्य्यनन्दन धृतराष्ट्रको एकान्तमें बुलाकर कहने लगे, हे राजन्! तुम्हारे पुत्रोंका और अन्यराजाओंका काल समीप आगया है। वे लोग लड़ाईमें परस्पर एकत्रित होकर एक दूसरेको मारेंगे, काल आजानेसे वे लोग संहार दशाको प्राप्त हो जायगे, कालको चाल देखकर तुम, लोगोंके लिये शोक मत करो। हे पुत्र! अगर लड़ाईमें इन लोगोंको देखनेकी तुम्हारी इच्छा हो तो मैं तुम्हें नयन प्रदान करूं, उससे तुम लड़ाई देख सकोगे।

धृतराष्ट्र बोले, हे ब्रह्मर्षिसत्तम! ज्ञातिबध देखनेकी मेरी अभिलाषा नहीं होती है पर आपके तेजः प्रभावसे इस लड़ाईका सब हाल सुननेकी इच्छा रखता हूं। श्रीवैशम्पायनजी बोले, कि धृतराष्ट्रके लड़ाई देखनेकी अनिच्छा और उसका हाल सुननेकी इच्छा प्रगट करने पर, वर प्रदान करनेके ईश्वर व्यासजीने सञ्जयको वर दिया और धृतराष्ट्रसे कहा, कि इस,

लड़ाईका सब वृत्तान्त यह सञ्जय तुमसे कहेंगे लड़ाईकी कोई बात इनसे छिपी नहीं रहेगी, इनके दिव्य नेत्र हो जायगे उसीसे सब बातें जान सकेंगे, और युद्धके सब वृत्तान्त तुमसे कहेंगे। प्रकाश हो वा गुप्त हो, दिनकी हो वा रातकी हो, जब कोई बात होगी तो यह केवल मनमें चिन्ता करके सब बात जानेंगे। शस्त्रोंके आघातसे यह नहीं मर सकेंगे। और परिश्रम करनेसे यह नहीं थक सकेंगे। हे सौम्य! यही गवल्गणके पुत्र सञ्जय इस लड़ाईसे अलग रह सकेंगे। हे भरतश्रेष्ठ! शोकसे व्याकुल मत होना, कुरुपाण्डवोंकी यह कीर्त्ति मैं विख्यात करदूंगा। हे नरेन्द्र! इस उपस्थित व्यापारका देवताओंका किया हुआ जानना देवताओंके किये हुए कामोंके लिये कभी शोक नहीं करना चाहिये। विशेष बात यह है, कि इसका रोकनेका सामर्थ्य भी नहीं है, क्योंकि जिस पक्षमें धर्म्म रहेगा उसी पक्षकी जय होगी। श्रीवैशम्पायनजी बोले, कि कौरवो और पाण्डवोंके पितामह महाभाग भगवान् व्यासजी धृतराष्ट्रको इतनी बात कहके फिर कहने लगे, कि हे महाराज! इस लड़ाईसे बहुत हानि होगी, उन हानियोंको जनानेवाली बहुतसी सूचनाये अभी देख पड़ती है, श्येन, गिद्ध, कौए, कङ्क और बगुले आदि सब पक्षी पेड़ोंपर आ आके बैठते हैं और एकाग्रचित्त और प्रसन्नमन समीप वाले रण स्थलको देखते हैं। हाथी घोड़े आदिका मास खाने वाले गीदड़ कुत्ते आदि जानवर इधर उधर घूम रहे हैं। विकट रूप वाले कङ्क पक्षी दया रहित होकर शब्द करके भय उत्पन्न करते हैं और जाके मरुस्थलमें एकत्र होते हैं। हे भारत! सुबह और शाम होनेके पहिले और पीछे नित्य मालूम होता है, कि मानो सूर्य्यदेव कबन्धोंसे घिरे है। एक ओर सफेद मेघ दुसरी ओर लाल मेघ और बीचमें काले मेघ सन्ध्या समय सूर्य्यको चारों ओरसे घेरसे लेते हैं। मैंने देखा है कि अमावसके दिनमें चन्द्रमा और सूर्य्यके साथके नक्षत्र पापग्रहोंके साथ जा मिले है और उसी अहोरातमें त्र्यहस्पर्श हुआ है, केवल भय दिखलानेके लिये हुए है। कार्त्तिक पूर्णिमासे चन्द्रमा ज्योति रहित और लाल रङ्गके हो कर अलक्ष्य हो गये है। इस लिये बहुतसे वीर्य्यशाली विशालबाहु, वीर राजा और राजपुत्र मारे जाकर पृथिवी-तलमें शयन करेंगे। रातको लड़नेवाले शूकर और बिड़ालके घोर शब्द अन्तरीक्ष पथमें सुन पड़ते है। देवमूर्त्तियां कभी कांपती है, कभी हंसती है, कभी घर्म्मयुक्त होती हैं। हे नरपाल! दुन्दुभियोंको कोई बजाता नहीं है पर तौभी सब बजने लगती है, क्षत्रियोंके प्रधान प्रधान रथोंमें कोई घोड़ा नहीं जोतता है, तौभी सब चलने लगते है, कोकिल, शतपत्र चास, भास, शुक, सारस, मयूर, आदि सब चिड़ियाएं बहुत कठोर घोर शब्द करती है, कहीं घुड़सवार लोग बखतर पहन कर और हथियार लेकर खड़ी करते हैं, अरुणोदयके समय फतिङ्गोंके सैकड़ों दल देख पड़ते है, और सन्ध्या और सुबहको दिग्दाह प्रकाशित होता है। हे भारत! मेघोंसे धूल और मास बरसता है। हे राजन्! साधुजनोंसे पुरस्कार की हुई, तीनो लोकमें विख्यात यह अरुन्धती अपने स्वामी वशिष्ठको पीठपर लिये है। शनिग्रह रोहिणीको पीड़ा देते है। चन्द्रमाका मृगचिन्ह अपने मुनासिब स्थानपर नहीं दीखता है। आकाशमें विना मेघके कठोर गर्ज्जन सुन पड़ती है और वाहन सब रोते है। महाराज। इन सब सूचकोंको देखकर विश्वास होता है कि कोई महा भयावह घटना होगी।

२ अध्याय समाप्त।

श्रीव्यासजी बोले, हे राजेन्द्र! तुम्हारे नगरमें गायके पेटसे गदहा पैदा होता है। लड़के मांके साथ भोग करते हैं। वनके पेड़ विना समयही फल फूलसे भर गये हैं, मास खानेवाले पशुपक्षी एकत्र होकर भोजन करते हैं किसीको चार आंखें, किसीको पांच पैर, किसीको दो लिङ्ग किसीको बड़े बड़े दात, इत्यादि रूपके विकट शरीर वाले पशु उत्पन्न होते हैं, और वे जनमते ही मुह बाय कर अमङ्गल ध्वनि करते है। किसीको तीन पैर, किसीको चार दात, कोई शिखायुक्त, वा कोई सींगयुक्त इत्यादि विकट रूपके घाड़े उत्पन्न होते हैं, और किसी किसी ब्रम्हवादियोंकी स्त्रियोंको गरुड़ पक्षी और मयूर पैदा हुआ है। हे महीपति! घोड़ी गायके बच्चे, कुत्तीका अशगुन बोलने वाले गीदड़ मुरगे, करभ और शुक पैदा होते हैं। कई स्त्रियोंको चार पाच लड़किया पैदा हुई है। और ये कन्याए जनमते ही नाचती हैं, गाती है, और हसती है। इन सबसे बहुत भयकी आशङ्का होती है। मानो कालसे प्रेरित होकर लड़के लोग शस्त्र सहित प्रतिमा लिखते हैं, हाथमें लाठी लेकर परस्पर मारपीट करनेके लिये दौड़ते है और लड़ाई करके कृत्रिम नगरको भग्न करते है। कमल, उत्पल, कुमुद कल्हार आदि जलपुष्प पेड़ोंमें उत्पन्न होते हैं। चारों ओर प्रचण्ड वायुके बहनेसे बहुत धूल उड़ती है, लेकिन शान्त नही होती है। धीरे धीरे भूकम्प होता है। राहु सूर्य्यको सदा ग्रसते हैं, और केतु ग्रह चित्रा नक्षत्रको बिताकर विराजमान है, इससे कुरु वंशके ध्वंस होनेके विशेष लक्षण दीख पड़ते हैं, और महाघोर महाग्रह धूमकेतु पुष्य नक्षत्रको बिताकर विराजमान है, इससे दोनो सेनाओंको विषमतर अनिष्ट उत्पन्न होगा। मंङ्गल ग्रह मघा नक्षत्रसे और बृहस्पति श्रवण नक्षत्रसे वक्र भावसे योग करते है। शकुनि पूर्व्वफाल्गुनीको आक्रमण करके पीड़ा देते हैं। शुक्र पूर्व्वभाद्रपदपर सवार होके प्रकाशमान होते है और परिघ नामक उपग्रहके साथ मिलकर परिक्रमा करके उत्तर भाद्रपदको आक्रमण करनेकी चेष्टा करते है। केतु नामक द्वितीय उपग्रह धूम्र छोड़ते हुए अग्निके समान प्रज्वलित होकर इन्द्र देवताके समान तेजस्वी ज्येष्ठा नक्षत्रके ऊपर आक्रमण कर रहे हैं। ध्रुव नक्षत्र भयानक रूपसे प्रकाशमान होकर दक्षिण दिशाको चले जाते है। चन्द्रमा और सूर्य्य दोनो रोहिणीको पीड़ा देते हैं। परुष ग्रह राहु चित्रा और रोहिणीके बीचमें आगये है। अग्निके समान तेज रखनेवाले मङ्गल टेढ़ी चालसे जाकर बृहस्पतिके पास वाले श्रवण नक्षत्रको सम्पूर्ण रूपसे वेधके बैठे हैं। महाराज। समयानुसार विशेष विशेष अन्न पैदा करनेवाली भूमि अभी सब तरहसे अन्नसे परिपूर्ण हो गई है। जगत्की रक्षा करनेवाली सब लोकोंसे प्रधान गायोंको बछोंके पीनेके बाद दुहनेसे लोहू निकलता है। शरासनसे सहसा तेजःपुञ्ज निकलता हैं, अचानक खड्ग अत्यन्त प्रभायुक्त होजाते है, मालूम होता है कि शस्त्र सब उपस्थित समय जान कर कामोको स्पष्ट रूपसे देखते हैं। हे भारत! जब ध्वजा कवच, शस्त्र और जलकी आभा आगके समान होती है तब अवश्य ही मालूम होता है कि विषम ध्वंस होगा। कुरु और पाण्डवोंके परस्पर हिंसाव्यापारसे पृथिवी रक्तके भंवरसे भरी हुई नदीके समान होजायगी और ध्वजा सब उसमें बेड़ेके समान दीखेगी।

चारो ओर जानवर और पक्षी जलते हुए मुंहसे बहुत कठोर ध्वनि करते हैं। एक आंख और एक पैरका शकुनि रातको घूम कर मानो शस्त्रोंको लोहूसे भिगाने होके लिये अत्यन्त क्रुद्ध होकर भयङ्कर शब्द करता है। हे राजेन्द्र!

इस समय सब शस्त्र मानो प्रज्वलित हो उठते है। उदार भावके सप्तर्षि-मण्डलका प्रभापुञ्ज एकदम छिप जाता है। तेजोमय बृहस्पति और शनैश्चर विशाखाके पास जाके एक बरस तक स्थिर होगये है। एक पक्षमें दो तीन तथा-स्पर्श होनेसे परिवासे गिनने पर १३ वें दिन जो पूर्णिमा वा अमावास्या होती है उसपूर्णिमा वा अमावस्यामें चन्द्रमा और सूर्य्य राहुसे ग्रस्त होकर मानो प्रजाके क्षयकी इच्छा करते है। बहुत धूल बरसनेसे सब दिशा भरकर अशुभ सूचना देती है। भीषणस्वरूप, उत्पात सूचित करनेवाले मेघ रातको लोहू बरसाते है। दुष्ट राहु कृत्तिकाको पीड़ा देते हुए अवस्थित है। सब उत्पातोंको उत्पन्न करनेके लिये वायु बार बार झोंकसे बहती है, इस लिये भारी रुलानेवाला युद्ध उपस्थित होगा। अश्वपति, गजपति और नरपति यही तीन राजाओंके छत्र और चक्र कहे गये है, अश्विनी आदि नव नक्षत्रोंसे किसी नक्षत्रमें पापग्रहके आनेसे अश्वपतिको विघ्न होता है, मघाआदि नव नक्षत्रोंमें किसी नक्षत्रके पापग्रहसे वेधित होनेसे गजपतिका अरिष्ट आ पहुंचता है, और मूलादि नव नक्षत्रोंमेंसे किसीके पापग्रहसे वेधित होनेसे नरपतिका अनिष्ट होता है। हे नरपते! इन तीनों चक्र सम्बन्धीय प्रति नवं संख्यक नक्षत्रोंमेंसे किसी न किसीके ऊपर पापग्रह आगया है। यह बहुत भय उत्पन्न करनेका कारण हुआ है। कभी किसी एक पक्षमे तिथिकी क्षय होनसे परिवासे गिननेपर १४ वे दिन वा नहीं तो १५ वें दिन, और कभी एक पक्षमें एक तिथकी वृद्धि होनेसे १६ वें दिन पूर्णिमा वा अमावस्यामें चन्द्रमा वा सूर्य्य राहुसे ग्रस्त होते है; किन्तु एक ही महीनेमें कृष्ण और शुक्ल दोनों पक्षोंमें एक एक तिथिकी क्षय होनेपर जो तेरहवें तेरहवें दिन पूर्णिमा और अमावस्यमें चन्द्रमा और सूर्य्य राहुसे ग्रस्त होते है सो मैंने कभी नहीं देखा था, इस लिये जब चन्द्रमा और सूर्य्य दोनों ग्रह तेरहवें दिन राहुग्रस्त हुए है तो मुझे इसमें कुछ शंका नहीं होती है कि वे प्रजाका संहार करेंगे। राक्षस लोग उस समय भर मुंह लोहू पीनेपर भी तृप्त नहीं होते। महाराज! महानदीकी धारा एकदम उलटी चलती है। सब नदियोंका पानी लोहूके रंगका होगया है। कूंए फेनसे भरकर बैलके समान हुंकरते हैं। शुष्काशनिके समान देदीप्यमान उल्का गिरती है, और आज, रात बीतनेपर सुबह होनेके समय, चरों ओर जलतीं हुई उल्काओंके साथ सूर्य्यदेव निकले है। महर्षिलोगोंने एकत्र होकर प्रार्थना की है, कि इस प्रकार उत्पात होनेसे हजारों हजार राजाओंके लोहूको पृथिवी पीयेगी। अलावे इसके हिमालय, कैलास और मन्दर गिरिके पास बड़े जोरसे हजारो शब्द होते है और शिखर सब गिरते है। इतना भूकम्प होता है कि चारों समुद्र बहुत बढ़कर मानो पृथिवीको क्षुभित करते हुए अपने अपने किनारोंको टप गये है। कङ्कर उड़ानेवाली वायु इतने जोरसे बहती है कि वृक्ष सब जड़से हिल जाते है। गावों और नगरोंमें वृक्ष और चैत्य आदि अधिक झोंक न सहनेके कारण टूट टूट कर गिरते है। जिस अग्निसे ब्राह्मण लोग होम करते हैं वह अग्नि नीली, लाल वा पीली होकर दुर्गन्ध करती है और कठोर शब्द करती हुई तथा बाईं ओर धाह फेंकती हुई जलती है। स्पर्श, गन्ध, रस आदि विपरीत भाव होते है। ध्वजा सब धीरे धीरे डोलती हुई धूंआ फेंकती है। भेरी, पटह आदि सब बाजासे आग निकलती है। चारो ओर कौए बहुत ऊंचे पेड़ोंकी फुनगियांपर बाई ओर मण्डली बांधकर बैठते है और "पक्का, पक्का" कठोर शब्द करते है। और और पक्षी सब बार बार बोलते हुए, राजाओंके

ध्वंसकी सूचना करते हुए ध्वजाओंके अग्रभाग-पर आके बैठते हैं। दूसरे दंतैले सब कांपते हुए पैखाना पिशाब करते हैं और हाथी घोड़े दीन भावसे युक्त होगये हैं। हे भारत। तुमने इन सब घटनाओंकी बात सुनली। अब जिस कामसे लोगोंकी मृत्यु नहीं हो और वह काम कैसे करना उचित है, उन्ही बातोंका अनुष्ठान करो।

श्रीवैशम्पायन जी बोले, कि पिता व्यासदेव-की इस बातोंको सुनके धृतराष्ट्रने उत्तर दिया, कि इस समय जो मनुष्योंकी मृत्यु होगी उसे अवश्य ही देवताओंकी की हुई कहनी चाहिये। जो कुछ हो, यदि राजा लोग क्षत्रियोंके धर्मके अनुसार युद्ध करके मरें, तो वीरोंके लाभ करने योग्य स्वर्ग लोक प्राप्त करके अखण्ड सुख भोग सकेंगे। मनुष्योंमें प्रधान लोग महा समरमे प्राण परित्याग करके इस लोकमें कीर्ति और परलोकमें दीर्घकाल महत् सुख लाभ करेंगे।

श्रीवैशम्पायन जी बोले, हे राजसत्तम! अपने पुत्र धृतराष्ट्रसे यह बात सुनकर कवीश्वर व्यास देवने चित्तको परम ध्यानमें लगाया। एक मुहूर्त्त चिन्ता करनेके बाद उन्होंने फिर कहा हे राजेन्द्र! काल ही जगत्के नाशके और पुनर्वार उत्पत्तिके कारण होते हैं। इसमें कोइ संशय नहीं कि इस संसारमें कोई वस्तु चिरस्थायी नहीं है। तौभी कुरु, पाण्डव और अन्यान्य मित्र और बान्धवोंको धर्म्ममार्ग दिखलाना तुमको उचित है; क्योंकि तुम ही उनको प्रवृत्त करानेमें समर्थ हो। ज्ञातिके वध होनेको पण्डितोंने, अत्यन्त ही गर्हित कर्म्म कहा है। इसलिये हे राजन्! तुम हमारे अप्रिय कामोंके अनुष्ठा-नोंका अनुमोदन मत करना।

हे नरपति! साक्षात् कालहीने आकर तुम्हारे पुत्रके रूपसे जन्म ग्रहण किया है। वेदमें हिंसाकी प्रशंसा नहीं है और कोई मतके अनुसार हिंसा करना शुभ नहीं है। जो अपने शरीरके समान कुल धर्म्मका नाश करता है उसका वही कुलधर्म्म नाश करदेता है। सब बात बूझनेकी शक्ति तुममे है, तौभी कालके वशमें आपद ग्रस्तोंके समान तुम अपने कुल और दूसरे दूसरे क्षत्रियोंके वंशके नाशके निमित्त बेराह चलते हो। राज्यके लोभहीसे तुम्हारा यह अनर्थ उत्पन्न हुआ है, तुम्हारा धर्म्म एक बारगी लोप हो रहा है, इस लिये अब भी अपने पुत्रोंको धर्म्ममार्ग दिखाओ। हे दुर्द्धर्ष। जिस राज्यके लिये तुम्हे इतना पाप उठाना होगा उस राज्यसे तुम्हें प्रयोजन क्या है? तुम यश, कीर्त्ति और धर्म्मकी रक्षा करो, उससे स्वर्ग लाभ करोगे। पाण्डवोंको राज्य लेने दो, कौरवोंको शान्ति प्राप्त करने दो।

धृतराष्ट्रसे व्यासजीकी बात समाप्त भी नहीं हुई थी तभी अम्बिकाके पुत्र, बड़े वक्ता फिर यह कहने लगे, हे पितः! आप अभिज्ञान सम्पन्न हैं; आपको भावाभाव जिस तरहसे विदित होता है, मुझको उस तरहसे नहीं मालूम होता है। लेकिन मनुष्य स्वार्थसे स्वभावहीसे विमुग्ध होता है। मुझे भी आप एक साधारण मनुष्य समझिये। हे बड़े प्रभा-के महर्षि! आप धीर हैं, उपदेशकरनेवाले हैं और हम लोगोंके गति हैं, आप मुझपर प्रसन्न हों। मैं अधर्म्म करना नहीं चाहता हूं। लेकिन मेरे वे पुत्र आज्ञाकारी नहीं हैं। आप भरतवंशकी कीर्त्ति हैं। धर्म्म प्रवृत्ति और यशके आप आगार हैं, और कुरुपाण्डवोंके मान्य पितामह हैं।

यह सुनकर व्यासदेव बोले, हे विचित्रवीर्य्य-नन्दन महाराज। अगर तुम्हारे मनमे कोई शंका हो तो जी खोलके उसे कहो, मैं उसे पूरा करूं। धृतराष्ट्र बोले, हे भगवन्! लड़ाईमें जीतने वालेकी और जो जो शुभ गतिं होती हैं

सो सब यथार्थ रूपसे सुननेकी मुझे इच्छा होती है। तब वेदव्यासजी कहने लगे, आगकी आहुतिमें धूआं नहीं होता है, ज्योति निर्म्मल होती है, रोशनी ऊपरकी ओर और धाह दहिनी ओर जाता है, और अग्निमें जो आहुति दी जाती है उससे चारों ओर पवित्र गन्ध फैलता है। जीतने-वालोंके लक्षण पण्डितोंने यही सब कहे हैं। शङ्ख और मृदङ्गकी ध्वनि गम्भीर होती है और बहुत दूर तक जाती है, और सूर्य्य और चन्द्रमा अत्यन्त विशुद्ध किरण प्रकाश करते हैं। पण्डितोंने इन्हीं सबको भावी जीतनेवालेके लक्षण कहे हैं। क्या बैठे, क्या चलते, सब कौओंके शुभशब्द सुन पड़ते हैं, जो कौए पीछे रहते हैं वे लड़नेवालोंको उत्साह देते हैं, और जो आगे रहते हैं वे निषेध करते हैं। जिस जगह शकुनि, राजहंस, और शतपत्र आदि चिड़िया मधुर शुभ सूचक शब्द करती हैं, और दाहिनी ओर होकर चलती हैं, उस जगहका ब्राह्मण लोग अवश्य ही जय देनेवाली कहते हैं। जिसकी सेना अलङ्कार, वर्म्म और ध्वजावलिसे अत्यन्त चमकीली और आंखोंको तिरमिराने-वाली होती है, और वाहन सब प्रसन्न होकर मधुर स्वर करते हैं वह इन्द्रको भी जीत सकता है। जिसके योद्धा उत्साह पानेसे हर्षध्वनि करते हैं, और जिसकी वीरता और माला मलिन नहीं होती हैं, वह समर-सागरसे पार उतर जाता है। दूसरेकी सेनामें जाकर "यह मारा, वह मारा" इत्यादि मनके लायक बात बोलना दूसरेकी सेनामें पैठनेकी इच्छासे "यह तुमको मार दिया" इत्यादि कौशलके अनुसार बात बोलना और "अब क्या लड़ते हो, अब लड़ोगे तो मारे जाओगे" इत्यादि जो उत्साह घटानेवाली बात बोलना ये सब जीतपानेके लक्षण हैं। शब्द, स्पर्श, रूप रस, गन्ध ये सब यदि अविकृत हों तो शुभ जानना चाहिये जो योद्धा जयशील होता है, वह सदा प्रसन्नचित्त, प्रगाढ़ होता है, वायु, मेघ और पक्षी सब उसके अनुकूलगामी होते हैं; और मेघ और इन्द्रधनुष पानी बरसाते हैं। हे राजन्! जय-शीलोंके येही लक्षण देख पड़ते हैं; और जो हारनेवाले हैं उनके ये सब विपरीत होते हैं।

सेना थोड़ी हो वा अधिक हो योद्धाओंका प्रसन्न रहना ही जीतनेका एक प्रधान लक्षण कहा गया है। उत्साह रहित एक आदमी भी भाग कर बहुत बढ़िया बड़ी सेनाको भी छिन्न भिन्न कर दे सकता है। सेनाको भग्न होते देख कर अति शौर्य्य-शाली वीर पुरुष भी भाग जाता है। वह बड़ी सेना एक बार छिन्न भिन्न होजाने पर, अत्यन्त प्रबल नदीकी बाढ़ वा प्याससे हरिणोंके झुण्डके समान, उसका फिर निवृत्त करना असम्भव हो जाता है। रण-कोविद पुरुष भी एक बड़ी सेनाके बिखरनेपर उसे खड़ी नहीं कर सकते; बल्कि उन सबको भागते देख कर स्वयं भी निरुत्साह हो जाते हैं। उनको डरे और भग्न देखकर और वीर भी अधिक डर सकते हैं। इस लिये समस्त सेना छिन्न भिन्न होकर बहुत जल्द जिधर तिधर चली जाती है। तब शौर्य्यवान् सेनाध्यक्ष लोग चतुरंगिणी सेनाके साथ रहनेपर भी उन सबको निवृत्त करनेमें असमर्थ होजाते हैं।

हे नरपते। मेधावी लोग स्थिरचित्त होकर सामादि उपायों द्वारा जय लाभ करनेकी चेष्टा करते हैं। पण्डितोंने कहा है, कि सामादि उपायोंके द्वारा जो जय होती है, वही श्रेष्ठ है, भेद द्वारा जो जय लाभ होती है वह मध्यम है और युद्ध द्वारा जो जय प्राप्त होती है, सो सबसे नीच है। इस लिये लड़ाई बहुत दोषोंकी खान है, क्योंकि मनुष्यका मारा जाना ही इसका प्रधान फल कहा गया है। एक दूसरेको जानने वाले, उत्साही, स्त्री

पुत्रादिसे मन हटाये हुए, पूरे बेकार, इस तरहके पांच सौ वीर पुरुष बड़ी भारी सेनाको भी हरा सकते हैं। और किसी प्रकार पीछे पाव नहीं देनेवाले पांच छः वा सात आदमी भी जय लाभकर सकते हैं। विनताके पुत्र सुवर्ण गरुड़, असंख्य स्वर्णचूड़ पक्षियोंको एकत्र देखनेपर भी उनको हरानेके लिये किसीको प्रार्थना करने नहीं जाते। इसलिये, बड़ी सेना रहनेसे जय होगी सो कोई बात नहीं है, विजयकी कोई स्थिरता नहीं है, वह देवताओंके हाथमें रहती है; विजय करनेके योग्य लोग भी लड़ाईमें हार सकते हैं।

३ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायनजी बोले, हे भरतर्षभ! महात्मा व्यासदेवजी बुद्धिमान् धृतराष्ट्रको इतना कह कर चले गये। उनकी उन सब बातोंको सुन कर महाराज धृतराष्ट्र सोचने लगे, और एक मुहूर्त्ततक चिन्ता करनेके बाद वारवार निश्वास परित्याग करके प्रशंसितात्मा सञ्जयसे पूछने लगे, हे सञ्जय! जब मैं देखता हूं कि लड़ाई चाहनेवाले ये सब शूर क्षत्रिय राजा लोग ऐश्वर्य्यकी इच्छासे पृथ्वीके लिये बहुतसे बड़े बड़े शस्त्रोंकी सहायतासे एक दूसरेपर आघात करनेको उद्यत हो रहे हैं, जानका मोह छोड़ कर एक दूसरेके दुश्मन बनते हैं, संहारके द्वारा यमके घरको भर देनेकी चेष्टा करते हैं और इन सब कामोंसे बाज नहीं आते हैं, तब मुझे मालूम होता है, कि पृथिवीमें अवश्य ही बहुत प्रकारके गुण हैं। इस लिये आप कृपा कर पृथिवीके गुणोंका विस्तार रूपसे वर्णन मुझे सुनावें। इस कुरु-क्षेत्रमें कई करोड़, बहुतसे अर्बुद वीर लोग हैं, वे लोग जिन जिन स्थानोंसे आये हैं, उन सब देश और नगरोंकी प्रकृति, रूप, आकृति सुननेकी इच्छा होती है। उन अमित तेजस्वी महर्षि व्यासदेवजीके प्रसादसे आपको दिव्य-बुद्धिसे प्रदीप्त ज्ञाननेत्र प्राप्त हुए हैं, इस लिये आपसे कोई बात छिपी नहीं है। सञ्जय बोले, हे बड़े बुद्धिमान् भरतेन्द्र! आपको प्रणाम करके पृथिवीके गुणोंको यथामति वर्णन करता हूं, शास्त्रनेत्रसे इन सबको देखें।

सञ्जय बोले, इस संसारमें दो प्रकारके जीव हैं स्थावर और जङ्गम। इनमेंसे जङ्गम तीन प्रकारके हैं, स्वेदज, अण्डज और जरायुज। जरायुज जीवोंमें मनुष्य और यज्ञमें काम आनेवाले विविध प्रकारके पशु सबसे श्रेष्ठ हैं। वे पशु १४ प्रकारके होते हैं, सिंह, बाघ, शूकर, भैंसा, हाथी भालू और बन्दर येही सात जंगली पशु हैं, मनुष्य गाय, खस्सी, भेड़ा, घोड़ा, खच्चर और गदहा येही सात घराऊ पशु हैं; साधुओंने ऐसा ही कहा है। हे राजन्! येही १४ प्रकारके जंगली घराऊ जानवरोंकी कथा वेदमें है। इन्हींसे सब यज्ञ प्रतिष्ठित होते हैं। घराऊ पशुओंमे मनुष्य और जंगली पशुओंमें सिंह सबसे श्रेष्ठ है। प्राणी मात्र ही एक दूसरेके उपजीव्य होते हैं। स्थावर जीवोंको उद्भिज कहा है। इनकी पाच जाति होती है; यथा, वृक्ष (अश्वत्थादि), गुल्म (कुश काशादि स्तम्ब), लता (वृक्षादियोंपर लतरनेवाली गुडुच्यादि) बल्ली, (एक ही वर्ष जीनेवाली कुष्मा आदि) और त्वक्-सार तृण (बास आदि)। स्थावर और जङ्गमसे पैदा हुए येही १९ प्रकारके जीव हैं, और इन सबसे पैदा हुए पाच महाभूत हैं, इन्हो चौबीसों कार्य्य कारणको चौबीस अक्षरवाली, तीनो लोकोंमें विख्यात, ब्रह्मरूप गायत्री कहा है। हे भरतश्रेष्ठ! संसारमे जो मनुष्य सब गुणोंसे विभूषित, पवित्र, इस गायत्रीको प्रकृत-रूपसे जानता है, उसका कभी विनाश नहीं होता है, भूमिहीमें ये सब मिल जाते हैं,

और भूमि ही सब भूतोंकी प्रतिष्ठा और परायण होती है। जो मनुष्य भूमिका अधिकारी होता है उसके स्थावर, जङ्गम समस्त विश्व-ही मुट्ठीमें रहते हैं, इसी लिये राजा लोग भूमिके अभिलाषी होकर, एक दूसरेको मारनेके लिये आए हुए हैं।

४ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे प्रमाणज्ञ सञ्जय। सम्पूर्ण पृथिवी और उसपर जितनी नदियां, पहाड़, वन, जनपद, इत्यादि जो कुछ भूमिके ऊपर स्थित हैं, उन सबका नाम और परिमाण विस्तार पूर्व्वक मुझे सुनाइये।

सञ्जय बोले, हे महाराज! संसारकी सब चीजोंसे पांच महाभूत संग्रह किये गए हैं, इस लिये पण्डितोंने संसारकी सब चीजोंको तुल्य ही बनाया है। आकाश, वायु, अग्नि, पानी और पृथिवी, इन्हीं पांचो महाभूतोंके क्रमानुसार शब्द स्पर्श, रूप, रस और गन्ध पाच गुण हैं और पीछेवाले महाभूतोंमे पहिले वाले महाभूतोंके गुण भी है। इन पाचो महाभूतोंमें पृथिवी सबसे प्रधान है क्योंकि तत्वको जानने वाले ऋषियोंने कहा है, कि पृथिवीमें शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध पाच गुण हैं। पानीमें गन्ध नहीं है पर और चारों गुण में, अग्निमें शब्द, स्पर्श और रूप तीन गुण हैं; वायुमें शब्द और स्पर्श दो गुण है; और आकाशमें केवल शब्द मात्र गुण है। हे राजन्! इस अखिल संसारके सब पदार्थोंके आधार इन पांच महाभूतोंमे ये पांच गुण रहते है। जब यह पांचो महाभूत बराबर बराबर रहते हैं, तब पाचों एकत्र नहीं रह सकते है, अर्थात् तब संसारके सब भौतिक पदार्थ नाश होजाते में। जब ये पाचों महाभूत विषम परिमाणसे रहते है, तब संसारके सब भौतिक पदार्थ देह धारण करके रहते हैं, अर्थात् तब ही संसार स्थित रहता है। इससे अन्यथा कभी नहीं होता हैं। इन सब महाभूतोंका क्रमानुसार ध्वंस होता है, और क्रमानुसार ही सृष्टि होती हैं। अर्थात् भूमिसे जलका, जलसे अग्निका अग्निसे वायुका और वायुसे आकाशका नाश होता है; और आकाशसे वायुकी, वायुसे अग्निकी, अग्निसे जलकी और जलसे भूमिकी उत्पत्ति होती है।

महाराज। किसी भूतका परिमाण कहना कठिन है, सब ही अपरिमित और सब ही ऐश्वरिक है। सब पदार्थोंमे पाचो महाभूत पाये जाते हैं। तर्क करके मनुष्य कह सकता है, कि सब पदार्थोंमें यह पाचों महाभूत विद्यमान रहते हैं, किन्तु जो विषय ध्यानमें नहीं आ सकता है, उसके बारेमें तर्क करना उचित नहीं है। जो प्रकृतिसे अतिरिक्त है वही ध्यानमें नहीं आता है।

हे कुरुवर्द्धन। सुदर्शन नामक एक जामुनका पेड़ है, उसीके नामसे जो सुदर्शन द्वीप विख्यात है, उसकी कथा कहता हूं, आप सुनिये। वह गोलाकार है, चन्द्रमाकी तरह वह सस्थित और नदी, और दुसरी दुसरी तरहके जलाशय, मेघोंके बराबर ऊंचे पहाड़, बहुत तरहके आकारके शहर, रमणीय जनपद, फूल और फलोंसे लदे पेड़, धन धान्य और चारों ओर चार समुद्र सुदर्शन द्वीपमें हैं। जैसे आईनेमें मनुष्य अपना मुह देखता है, वैसे ही वह सुदर्शन द्वीप चन्द्रमण्डलमें देख पड़ता है। वह सुदर्शन द्वीप सब औषधियोंसे भरा हुआ है। उसमें दो दो अंशों पर पीपलके पेड़ हैं, और दो दो अंशों पर शशस्थान (चरागाह) है। इसके अलावे स्थानोंको पानीसे भरा समझिये। इसको और बातोंको संक्षेप रूपसे कहते है, आप सुनिये, शेष बातोंको पीछे कहूंगा।

५ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले हे बुद्धिमान् सञ्जय। आप सब तत्त्वोंको भली भांति जानते हैं, परन्तु सुदर्शन द्वीपकी कथा जो आपने संक्षेप रूपसे कही है, सो विस्तार रूपसे कहिए, और वहांके शश-स्थानोंमें (चरागाहों) जितनी भूमि दीखती है, उसका प्रमाण भी कहिये, पीपलकी बात पीछे कहियेगा। राजा धृतराष्ट्रसे एसे पूछेजाने पर सञ्जयने कहना प्रारम्भ किया, महाराज। पूर्व्व पश्चिममें आयतपूर्व्व, पश्चिम समुद्र तक फैला हुआ हेमकूट पहाड़, नगोत्तम निषध, वैदूर्य्यमय नील, शशिसन्निभ श्वेत, और सर्व्वधातु पिनद्ध शृङ्गवान् येही छः वर्ष पहाड़ वहां हैं। इन पहाड़ोंमें सिद्ध चारण लोग रहते हैं। इन सबके आपसके बीचका स्थान हजार हजार योजन है। वे स्थान पुण्य देश और वर्ष कहे गये हैं। उन स्थानोंमें नाना जातिके लोग वास करते हैं। यह भारतवर्ष है, इसके उत्तर हैमवतवर्ष और हैमकूटके उत्तरमें हरि वर्ष कहा गया है। हे महाराज! नील गिरिकी दक्षिण ओर निष-धकी उत्तर और पूर्व्वसे पश्चिमको आयत माल्य-वान् नामका शैल है। उस माल्यवान्के बाद गन्धमादन पर्व्वत है। उन माल्यवान् और गन्ध-मादन पर्व्वतोंके बीचमें गोलाकार सोनेका पहाड़ मेरु है। तरुण सूर्य्य और धूंआ रहित अग्निके समान इस मेरुकी प्रभा है। हे महीपते। उसकी ऊंचाई चार हजार योजन है, और चारही हजार योजन वह नीचे पृथ्वीमें धसा है। उसके ऊपर, मध्य और नीचे प्रदेशोंमें सब लोग रहते हैं। उसकी चारो ओर भद्राश्व केतु-माल, जम्बूद्वीपमें श्रेष्ठ भारतवर्ष, और पुण्यवान् लोगोंके रहनेकी भूमि उत्तर कुरु, येही चारो द्वीप समान स्थान है। गरुड़के पुत्र सुमुख पक्षीने मेरु पहाड़पर सब पक्षियोंको सुवर्णमय देख कर चिन्ता की थी, कि इस मेरु पहाड़ पर उत्तम, मध्यम और अधम पक्षियोंमें कोई भेद नहीं है, इस लिये मैं यहां नहीं रहूंगा। महा-राज! बड़ी ज्योतिवाले-सूर्य्य चन्द्रमा, नक्षत्र और वायु इस पर्व्वतको प्रदक्षिणा करके नित्य जाते हैं दिव्य फूल और फल उस पहाड़ पर फूलते फलते हैं, और उनको चारों ओरसे सोनेके शुभ भवन घेरे रहते हैं। हे राजन्! इस पहाड़पर देवता, गन्धर्व्व, असुर, और राक्षस लोग अप्सराओंके साथ सदा विहार करते रहते हैं। वहीं ब्रम्हा, रुद्र और सुरेश्वर इन्द्र एकत्र होकर अनेक दक्षिणाक विविध प्रकारके यज्ञका अनुष्ठान करते हैं। तुम्बुरु नारद, विश्वावसु, और हाहा हूहू आदि गन्धर्व्व वहीं जाकर अनेक स्तुतिवाक्योंसे देव-ताओंका स्तव करते हैं, और महात्मा सप्तर्षि-लोग और प्रजापति कश्यप पर्व्वोंमें वहीं जाते हैं। हे महीपते! इसी पहाड़के शिखर प्रदेशपर कवियोंमें प्रधान, दैत्योंके गुरु दैत्योंको लेकर सदा क्रीड़ा करते रहते हैं। जितने रत्नके पहाड़ और सोना आदि जितने रत्न हैं सब उसी सुमेरुके सम्बन्धीय हैं। भगवान् कुवेर वहीं उस रत्नका चौथा हिस्सा भोगते हैं, और सोलहवा हिस्सा मनुष्योंको देते हैं।

मेरुकी उत्तर ओर सब लोकोंमें उत्पन्न फूलोंसे घिरा हुआ पत्थरोंके उत्तम चट्टानोंके द्वारा रमणीय और दिव्य कर्णिकार वन है। श्रीभूतभावन भगवान् पशुपति दिव्य भूतगणोंको लेकर श्रीपार्व्वतीजीके साथ वहीं विहार करते हैं। पैर तक लटकती हुई कर्णिकारकी माला पहिरे वह वहीं रहते हैं और उगते हुए तीन सूर्य्योंके समान उनके तीनो नेत्रोंसे तेज प्रकाश होता है। केवल बड़े तपस्वी और सत्यवादी व्रतपरायण सिद्ध लोग ही उनका दर्शन पाते हैं; दुराचारी लोग उन्हें नहीं देख सकते हैं। हे नरनाथ! पुण्यात्मा लोगोंसे परिसेविता, शुभदायिनी, विश्वरूपा, पुण्या, भागीरथी गङ्गा उसी मेरु पहाड़के शिखरसे दूधके समान साफ धारा रूपसे निकल कर,

प्रबल वेगके घोर आघात करती हुई शुभ चन्द्र तालावमें आकर गिरती हैं। गंगाहीजीके द्वारा समुद्रके समान वह हृद उत्पन्न हुआ है। जब गंगाजी निकलकर अत्यन्त वेगसे चली थी, तब पर्व्वत सब उनके आघात नहीं सह सके थे। पिनाकधारी श्रीमहेश्वरजीने तब उन्हें सौ हजार (एक लाख) बरस तब अपने मस्तकपर धारण कर रखा था।

हे महीपाल! जम्बूखण्डमें मेरुके पश्चिम ओर केतुमाल द्वीपमें बड़ा देश है। वहा एकही वर्णके सब आदमी होते हैं, स्त्रिया अप्सराओंके समान होती है, और उनकी आयु दस हजार बरसकी होती है। वहांके लोग तप्त सोनेके समान रङ्गके होते हैं। नित्य प्रफुल्ल चित्त, अनामय, और शोक रहित रहते हैं।

गुह्यकोंके राजा कुवेर अप्सराओंको लेकर राक्षसोंके साथ गन्धमादन पहाड़पर आमोद करते हैं। गन्धमादनके आस पास जितने छोटे छोटे पहाड़ विद्यमान है, वहाके लोगोंपरमायुकी सख्या ११ हजार बरस है। हे राजन्! यहांके लोग हृष्टचित्त, तेजस्वी और महाबली होते है, स्त्रियां उत्पलपत्रके रङ्गकी और प्रियदर्शना होती हैं। नील पर्व्वतके उत्तर श्वेतवर्ष है, श्वेतवर्षके उत्तर हैरण्यक वर्ष है, और उससे भी उत्तर विविध प्रकारके लोगोंसे निवसित ऐरावत वर्ष है। ऊपर कहे हुए सबसे उत्तरवाला ऐरावत वर्षका और ऊपर कहे हुए सबसे दक्षिण भारतवर्षका आकार धनुषके समान है। हे महाराज! ऊपर कहे हुए श्वेत और हैरण्यक, दूसरा इलावृत वर्ष और ऊपर ही कहे हुए हरिवर्ष और हैमवत वर्ष, येही पाचों वर्ष बीचमें हैं; परन्तु सबके बीचमें इलावृत वर्ष हैं। भारतवर्ष आदि सातों वर्षोंमें जैसे जैसे उत्तर जाइए वैसे वैसे क्रमानुसार धर्म्म, काम, अर्थ, आरोग्य और परमायुका परिमाण अधिक पाइएगा। हे भारत। इन सब वर्षोंके लोग आपसमें बहुत मित्रभाव रखते है। हे महाराज! इसी तरहसे समूची पृथिवी पर्व्वतोंकी श्रेणियोंसे भरी है। हे राजन्! कैलाश नाम करके जो बड़ा हेमकूट पहाड़ है, उसपर गुह्यकोंके साथ कुवेर आमोद प्रमोद किया करते है।

कैलाश पहाड़के उत्तर मैनाक पहाड़के समीप सोनामय शिखर वाला बहुत बड़ा दिव्य मणिमय पहाड़ है। उसके पास, सोनेका बालूवाला रमणीय, बड़ा शुभ, और दिव्य विन्दु सरोवर उपस्थित है। इसी स्थानमें गंगाजीका दर्शन पाकर राजा भगीरथने बहुत बरसों तक वास किया था। इस जगह मणिमय धूप और हिरण्मय (सोनामय) चैत्य विद्यमान हैं। और सहस्राक्ष राजा इन्द्र यहीं यज्ञ करके सिद्धि लाभ करते है। यहीं सबलोगोंके बनानेवाले, तिग्मतेजा, सनातन भूतपतिकी भूतसब उपासना करते है। यहीं नर, नारायण, ब्रह्मा, मनु और स्थाणु विराजते है। त्रिपथगामिनी दिव्य गंगाजी ब्रम्हलोकसे निकल कर पहिले इसी स्थानमें आती है और बस्वाकसारा, नलिनी, पविता, सरस्वती, जम्बूनदी, सीता, गगा और सिन्धु येही सातों नामकी सात धाराओंमें विभक्त होती हैं। विधाताने यही अचिन्तनीय, दिव्य सस्काभा, सप्तविधा गंगाका विधान किया है। युगप्रलयके बाद, इसी स्थानमें महर्षि, ऋषि, और देवता लोग यज्ञका अनुष्ठान करते है। हिमालयमें राक्षसलोग, हेमकूटमें गुह्यकलोग और निषध गिरिमें सर्प लोग वास करते है। गोकर्ण पर्व्वत तपस्वियोंका स्थान है, और श्वेत पहाड़ देवताओ और असुरोंके निवासकी भूमि है। गन्धर्व्वलोग निषध पहाडपर और ब्रह्मर्षि लोग नील शैलपर नित्य रहते है। हे महाराज! शृङ्गवान् पहाड़पर भी देवता लोग विहार करते है। महाराज! विभागके हिसा-

बसे इन सातो वर्षका वर्णन किया ; सातो वर्ष स्थावर जङ्गम और सर्व्वभूतोंकी आवास भूमि है। यहां इतने देवता और मनुष्य रहते हैं, कि उनकी गिनती नहीं हो सकती। कल्याण चाहनेवाले वहा श्रद्धा करके रहते हैं। हे महाराज। आपने जो शशस्थानोंके विषयमें प्रश्न किया था सो उसकी बात मैंने इतनी कही, और उसकी दक्षिण ओर भारतवर्ष और उत्तर ओर ऐरावत वर्ष है, इन दोनों वर्षोंकी बात भी मैंने कह सुनाई। दूसरे नागद्वीप और काश्यपद्वीप, ये दोनो शशस्थानमें कर्ण स्वरूप है। हे राजन्। तांबेके पत्तेके समान शिलासे सुशोभित जो मलय पर्व्वत है, सो इस जम्बू-द्वीपके शशस्थानका द्वितीय अवयव मालूम होता है।

५ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! मेरुकी उत्तर ओर और पूरब ओरका और माल्यवान् पर्व्वतका वृत्तान्त विस्तार पूर्वक मुझे सुनाइये।

सञ्जय बोले, कि नीलगिरिके दक्षिण और मेरुके उत्तर सिद्धोंसे निवसित पवित्र उत्तरकुरु है। इस स्थानके पेड़ोंके बहुत मीठे फल होते हैं, और पेड़ोंमें फूल फल नित्य निकलते हैं, सब फूल सुगन्धित और सब फल मजेदार होते हैं। हे नरनाथ! इस स्थानके वृक्षोंमेंसे किसी किसी वृक्षमें इच्छानुसार फल होजाता है। क्षीरी नामके बहुतसे पेड़ हैं, उनमेंसे अमृतके ऐसा दूध और छःप्रकारके रस सदा बहते रहते हैं, और इसी पेड़से कपड़े पैदा होते हैं। इन्हीं पेड़ोंके फलोंसे गहने उत्पन्न होते हैं। इस स्थानकी भूमि मणिमय है, और उसपर सोनेके छोटे छोटे बालू छिटे रहते हैं। यह स्थान सब ऋतुओंमें सुखस्पर्श रहता है, और ऋतुके समान बदलता नहीं है। देवतालोकसे निकलने पर मनुष्योंका यहीं जन्म होता है। विशुद्ध आभिजात्य सम्पन्न और सातिशय प्रिय दर्शन होते हैं। वहीं एक समयमें युग्म (जोंआ) कन्या पुत्रका उत्पन्न होता है। स्त्रिया अप्सराओंके समान होती हैं। वे सब पूर्व्वोक्त क्षीर वृक्षका दूध पीकर रहते हैं। जोंए लड़के लड़कियां समान रूपसे बढ़ती हैं। वे सब तुल्य रूप, तुल्य गुण और चकवाके समान परस्पर प्रेममें बद्ध होते हैं। हे विभो! उन लोगोंको कभी रोग नहीं होता, सदा आनन्दसे रहते हैं। महाराज। वहां लोग ११ हजार बरस जीते हैं, और सहोदर रहनेके कारण एक दूसरेको परित्याग नहीं करता। तीक्ष्णतुण्ड विशिष्ट बड़े बलवान् भारुण्ड नामके पक्षी वहा होते हैं, वे मुरदोंको पकड़कर पहाड़की गुफाओंमें लेजाते हैं। हे महाराज! उत्तरकुरुका यह वृत्तान्त सक्षेप रूपसे कहा है।

अब मेरुके पूरब ओरकी बात यथावत् कहते हैं। हे प्रजापाल! मेरुके पूरब ओर भद्राश्व स्थान है। इस स्थानमें भद्रमाल वन और कालाम्र नामका एक बड़ा पेड़ है। महाराज। वह कालाम्र पेड़ चार कोस ऊंचा नित्य फूल फलसे भरा, शुभ धारनेवाला और सिद्ध चारण लोगोंसे परिसेवित है। यहाके लोग बड़े बलवान्, तेजस्वी और गोरे होते हैं। स्त्रिया कुमुदके रंगकी, सुन्दरी और प्रिय देखनेवाली होती हैं; उनकी कान्ति चन्द्रमाके समान, मुंह पूर्णमासीके चन्द्रमाके समान, शीतल और गाने बजानेकी विद्यामें निपुण होती हैं। हे कुरुनन्दन। उन लोगोंकी परमायु दश हजार बरसकी होती है, और वे लोग कालाम्रका रस पीकर चिरकाल तक जवानीका सुख भोगते हैं।

नीलके दक्षिण और निषधके उत्तर सुदर्शन नामका एक बड़ा जामुनका पेड़ है। वह वृक्ष सर्व्वकालमें वर्त्तमान रहता है। वह सिद्धचारण

लोगोंसे सेवित है। यह पवित्र पेड़ सर्व्वकालमें फलता है उसी जामुनके पेड़के लिये यह द्वीप जम्बूद्वीपके नामसे आजतक प्रसिद्ध है। हे भरतनन्दन मनुजेश्वर। यह पेड़ ११ सौ योजन ऊंचा होकर आकाशको छूता है। उसके रस-भेदी फल ढाई सौ अरत्निके होते हैं। जब वह पृथिवीमें गिरता है, तब बड़ा शब्द होता है, और उसमेंसे काला रस बहता है। उस जामुनके रससे नदी निकलकर मेरुको प्रदक्षिणा करती हुई उत्तर कुरुमें चली जाती है। उस फलके रसको पीनेसे थकावट नहीं रहती है, प्यास बुझ जाती है और बुढ़ापेका दुःख भोगना नहीं पड़ता है, इस जगह उज्ज्वल कान्तिका, इन्द्रगोपके समान जाम्बूनद नामका देवभूषण एक कनक उत्पन्न होता है। वहीं लोगोंके शरीरकी शोभा तरुण सूर्य्यके समान होती है।

हे भरतनन्दन। माल्यवान् पहाड़के शिखरपर सम्बर्त्तक नामकी कालाग्नि आग सदा दीख पड़ती है। इस पहाड़का परिमाण ११ हजार योजन है और उसके पूर्व शृङ्ग पर छोटे छोटे पहाड़ पूरबकी ओर व्याप्त हैं। यहां सोनाकी कान्तिके समान कान्तिके लोग जन्म लेते है। वे सब ब्रह्मलोकसे निकाले हुए ब्रह्मवादी, और उर्द्धरेता होते है, और कठोर तपस्या करते है। वेही ६६ हजार पुरुष सूर्य्यको घेर कर अरुणके आगे आगे चलते हैं, वे लोग ६६ हजार वरस तक सूर्य्यकी गरमीको सहकर तब चन्द्रमण्डलमें प्रवेश करते है।

७ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय। सब वर्ष, पहाड़ और पहाड़पर रहने वालोका नाम मुझे कह सुनाइये। सञ्जय बोले, कि श्वेत गिरिके दक्षिण और निषध गिरिके उत्तर रमणक वर्ष है। वहां जो मनुष्य जन्म लेते है, वे सब विशुद्ध आभिजात्य सम्पन्न प्रियदर्शन और निःशत्रु होकर रहते है। वे लोग नित्य हृष्ट चित्त रहते हैं, और साढ़े ग्यारह हजार वर्ष तक जीते है। नील पर्व्वतके दक्षिण और निषध शैलके उत्तर हिरण्मय नामका वर्ष है, उसमें हिरण्मयी नदी बहती है। हे महाराज। यहां सुप्रसिद्ध पतगोत्तम पक्षिराज गरुड़ वास करते है। वहांके लोग यक्षके अनुगामी, प्रियदर्शन, महाबलवान्, धनशाली, और प्रफुल्ल चित्त होते है। वे साढ़े बारह हजार बरस तक जीते हैं। हे मनुजाधिप! शृङ्गवान् पहाड़के तीन विचित्र शृङ्ग हैं। एक मणिमय, एक अद्भुत सुवर्णमय और तीसरा सब रत्नोंसे भरा हुआ और अच्छे अच्छे मकानोंसे सुशोभित। वहां स्वयं प्रभाशाण्डिली देवी नित्य निवास करती है।

शृङ्गवान् गिरिसे उत्तर समुद्र तक ऐरावत नाम वर्ष है। उसके पास उतने महिमासे युक्त शृङ्गवान् पहाड़के रहनेसे यह इतना श्रेष्ठ कहा गया है। वहा सूर्य्यका ताप नहीं होता है, मनुष्योंको बुढ़ापा नहीं होता है; सब नक्षत्रोंसे घिरे चन्द्रमा वहीं मानो ज्योतिःस्वरूप होकर रहते है। वहा पद्मपलाक्ष लोचन, पद्मवर्ण, पद्मके समान शोभायमान और पद्मदलके समान सुगन्धित मनुष्य उत्पन्न होते है। वे सब देवताओंके समान दृष्टगन्धान्वित, विना आहारके जीने वाले, जितेन्द्रिय, निष्पाप और देवलोकसे च्युत होते है। हे भरतसत्तम। वे सब तेरह हजार वर्षतक जीते है।

हे गनाधिप! वैसे ही क्षीरोदसमुद्रके उत्तर कनकमय शकटमें प्रभु वैकुण्ठमें हरि वास करते है। उस शकटमें आठ पहिये है। भूतोंसे घिरा, मनके समान शीघ्र गामी अग्निवर्ण, महा तेज सम्पन्न, और उत्तम सोनेसे सुशोभित है। वही विभु हरि सब भूतोंके प्रभु

उन्हींसे जगत्का सर्व्वनाश होता है और उन्हींसे फिर जगत् प्रकाशित होता है। वही कर्त्ता और प्रवर्त्तक हैं। वही पृथिवी, आकाश जल वायु और तेज स्वरूप हैं। वही सर्व्वभूतके यज्ञ स्वरूप है और अग्नि उन्हींका मुंह है। श्रीवैशम्पायन जी बोले, कि जब महामना सञ्जयने नरपति राजा धृतराष्ट्रसे इतना कहा तब राजा धृतराष्ट्र अपने लड़कोंके विषयमें सोचने लगे। वह महातेजस्वी राजा धृतराष्ट्र कुछ कालतक चिन्ता करनेके बाद सञ्जयसे कहने लगे, हे सूतनन्दन! काल ही सम्पूर्ण संसारका संहार करता है,फिर सृष्टि भी करता है। इस संसारमें कोई चीज चिरस्थायी नहीं है, मुझे इस बातमें संशय नहीं है। सर्व्वज्ञ नरनारायण ही सब भूतोंके संहार कर्त्ता है। देवता उन्हें वैकुण्ठ और मनुष्य उनको प्रभु विष्णु कहके कीर्त्तन करते हैं।

८ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्रने कहा,-जिस भारतवर्षके लिये यह समूची सेना मुग्ध,मेरा बेटा दुर्य्योधन अत्यन्त लोभी और पाण्डव लोलुप हो रहे है, और हमारा मन भी मग्न होरहा है,उसका यथार्थ विवरण आप विस्तार पूर्व्वक मुझे सुनाइये क्योंकि मैं समझता हूं कि आप इस विषयमें विज्ञ हैं।

सञ्जय बोले, महाराज! मेरी बात सुनिये, पाण्डवोंको भारतवर्षका लोभ नहीं है। दुर्य्योधन सुवलनन्दन शकुनि और अन्यान्य क्षत्रिय राजा लोग ही इस भारतवर्षके लिये लुब्ध हुऐ है। ये लोग उसी लिये एक दुसरेको क्षमा नहीं करते है। इस भारतवर्षका विवरण मै आपके समीप कहता हू, सुनिये। यह भारतवर्ष इन्द्र देवताका प्रिय है, और वैवस्वत मनु, पृथु वैण्य महात्मा इक्ष्वाकु, ययाति,, अम्बरीष, मान्धाता, नहुष,मुचुकुन्द, शिवि,ऋषभ, ऐल, नृग, कुशिक महात्मा गाधि, सोमक, राजर्षि दिलीप आदि राजा और अन्यान्य बलिष्ठ महात्मा क्षत्रियोंका भी प्रिय है। हे अरिन्दम! आपने जो मुझसे इस भारतवर्षकी कथा पूछी; सो मैं यथावत् क्रमसे कहता हूं, आप सुनिये।

हे राजन्! इस भारतर्षमें महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, ऋक्षमान्, विन्ध्य और पारियात्र ये ही पहाड़ोंके सात कुल है। इन सब पहाड़ोके पास अनजान हजारों हजार विपुल, सारवान्, विचित्र सानुमान् पहाड़ विद्यमान हैं। उनको छोड़ कर भी नीच लोकोंसे बसे हुए बहुतसे छोटे छोटे पहाड़ है। इन नदियोंका पानी आर्य, म्लेच्छ और मिश्रित जातिके आदमी काममें लाते हैं,—विपुला, गङ्गा, सिन्धु,सरस्वती, गोदावरी, नर्म्मदा बाहुदा, शतद्रु, यमुना,दृषद्वती, विपाशा, विपापा, स्थूलबालुका, वेत्रवती, कृष्णा, वेण्या, इरावती, वितस्ता, पयोष्णी, देविका, वेदस्मृति, वेदशिरा, त्रिदिवा, इक्षुला, कृमि, करीषिणी, चित्रवहा, चित्रसेना, गोमती, धूतपापा, चन्दना, कौशिकी, कृत्या, निचिता, लोहतारणी, रहस्या, शतकुम्भा, सरयू,अमरावती, वेत्रवती, हस्तिसोमा, दिश, शरावती, वेण्या, भीमरथी, कावेरी, चुलूका, वापी,शतवली, नीवारा,महिता, सुप्रयोगा, चित्रा, कुण्डला, राजनी, पुरमालिनी, पूर्व्वाभिरामा, वीरा, भीमा, ओघवती, पलाशिनी, पापहरा, महेन्द्रा, पाटलावती, असिक्नी, कुशचीरा, मरुद्दी, प्रवरा, मेना, हेमा, धृतवती, पूनावती, अनुष्णा, सैव्या, कापी, सदानीरा, अधृष्या, कुशधारा, सदाकान्ता, शिवा, वीरवती, वस्त्र, सुवर्ण, गौरी किम्पुणा, हिरण्वती, वरा, वीरकरा, पञ्चरमी रथचित्रा, ज्योतिरथा, विश्वामित्रा, कपिञ्जला, उपेन्द्रा, बहुला, कुवीरा, अम्बुबाहिनी, वैनन्दी, पिञ्जला, तुङ्गवेणा, विदिशा, ताम्रा, कपिला, सुवामा, देवाश्वा, हरिश्रवा, महा पगा, सीघ्रा,

।पञ्चला, भारद्वाजी,शोणा, चन्द्रमा, दुर्गा, मन्त्रशिला, ब्रह्ममेध्या, वृहद्वती, यवक्षा, रोही, जाम्बू-नदी, सुरसा, दासी, सामान्या, वरणा, असी, नीला, धृतिकरी, मानवी, वृषभा, वसा, भासा आदि अन्यान्य महानदियां हैं—सदानिरमया, कृष्णा, मन्दगा, मन्दवाहनी,ब्रह्माणी, महागौरी, दुर्गा, चित्रोपला, चित्ररथा, मञ्जुला, वाहिनी, वैतरणी, कोषा, मुक्तिमती, अनङ्गा, वृषसाह्वया, लोहित्या, करतोया, वृषकाह्वया, कुमारी, ऋषिकुल्या, मारिषा, मन्दाकिनी, सुपुण्या और सर्व्व गङ्गा, ये सब नदियां जगत्की माताके समान और महाफल देनेवाली हैं। इस प्रकार अन्य अन्य लाखों नदियां मनुष्योंसे अप्रकाशित हैं। लेकिन जहां तक मुझे याद आया उन सबका नाम मैंने कह सुनाया।

महाराज! अब जनपदोंका नाम कहते हैं, सो सुनिये। कुरु, पाञ्चाल,शाल्व,मद्र, जाङ्गल, शूरसेन, पुलिन्द, बोध, माल, मत्स्य, कुशट, कापिश्य, कुन्ति, काशि, कोशल, चेदि, मत्य, करुष, भोग, सिन्धु, दशार्ण, मेकल, उत्कल, नैकपृष्ठ, युगन्धर, मन्द्र, कलिन्द, काशी, अपरकाशी, जठर, कुकुर, अवन्ति, कुन्ति, अपर कुन्ति, गोमन्त, मल्लक, पाण्ड्य, विदर्भ, अनूपाहिक, अपश्वक, पांशुराष्ट्र, गोपराष्ट्र, करीति, अधिराज्य, मल्लपाष्ट्र, केरल, वारवास्य, आपवाह, वक्र, वक्रवादि, शक, विदेह, मगध, स्वक्ष, मालय, विजय, अंग, वंग, कलिग, यकृल्लोमा, मल्ल, सुदेष्ण, प्रह्लाद, माहिष, शशिक; वाल्हीक, वारधान, आभीर, कालतोयक, अपरान्त, परान्त, पह्लव, चर्म्मचण्डक, अटवीशिखर, मेरुभूत, उपावृत, अनुपावृत, सुराष्ट्र, केकय, कुटु, माहेय, कक्ष, सामुद्र, निष्कूट बहुअन्ध देश; आन्तर्गिर्य, वहिर्गिर्य, अंगमलद, मालवाञ्जट, मयत्तर, प्रावषेय, भार्गव, पुण्ड्र, भार्ग, किरात, यामुन, निषाद, निषध, आनर्त्त, नैऋत, दुर्गल, पूतिमत्स्य, कुशल कुराल, तीव्रग्रह, ईजिक, अन्यकारगण, तिलभार, मसीर, मधुमत्त, सुकन्दक, काश्मीर, सिन्धु, सौवीर, गान्धार, दर्शक, अभीसार, कुलूत, शैवाल, दर्व्वीचर, नव, दर्व्व, वातज, आमरथ, उरग, बाहुवाद्य, सुदामा, सुमल्लिक, वध्र, करीषक, कुलिन्द, कुशाबिन्द, कच्छ, गोपालकच्छ, जागल, कुरुवर्णक, किरात, वर्व्वर, सिद्ध, ताम्रलिप्तक, ओड्र, म्लेच्छ, सैरिन्ध्र और पार्व्वतीय।

हे भरतनन्दन! अब दक्षिणदेशीय जनपदोंका नाम सुनिये। द्रविड़, केरल, प्राच्य, मूषिक, वनवासिक,कर्णाटक, माहिषक, विकल्प, मूषक, झिल्लिक, कुन्तल, सौहृद, नलकानन, कोकुट्टक, चोल, कोङ्कण, मालव, नर, समङ्ग, कनक, कुकुट, अगार, मारिष, ध्वजिनी, उत्सव, सङ्केत, त्रिगर्त्त, शाल्वसेनि, व्यूढ़क, कोड़क, प्रोष्ट, समवेगवश, विन्ध्य, पुलिक, पुलिन्द, वल्कल, वल्लव, अपर वर्णक, कुलिन्द, कालद, दण्डक, करट, मुनवाल, सनीय,अघट, सृञ्जय, अलिदाय, शिवाट, स्तनप, ऋषिक, विदर्भ, काक, तंगन और परतंगन।

महाराज! अब और उत्तर देशोंकी कथा सुनिये। यवन, काम्बोज, सकृद्ग्रह, कुलथ्य, हून, पारसिक, रमण, चीन, और दशमालिक, इन देशोंमें दारुण म्लेच्छ जाति रहती है। और क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जातियोंके रहनेके ये देश सब हैं आभीर, दरद, काश्मीर, पशु, खाशीक, अन्तचार, पल्हव, गिरिगह्वर, आत्रेय, भरद्वाज, स्तनपोषिक, द्रोषक, कलिङ्ग, किरात जातिके लोगोंके रहनेका प्रदेश, तोमर, हन्यमान, और करभञ्जक। हे भारत! पूर्व्व अन्यान्य देशोंका विवरण मैंने उद्देशमात्र कहा। ये सब भूमि कामदुघा धेनुके समान हैं। गुण और बलके अनुसार सम्यक् प्रकारसे अनुष्ठान करनेपर इससे धन, अर्थ, और काम दोहन कर सकते हैं। धर्म्मार्थ कोविद शूर ५।

ऐसी ही भूमिके लिये उत्पन्न हुए हैं। वेही तरखी क्षत्रिय लोग धन सम्पत्तिके लोभी होकर, युद्धमें प्राणत्याग करनेको उद्यत हुए हैं। भूमि ही देवता और मनुष्योंकी कामना रूपी परमगति हुई। जैसे मांसके लोभसे कुत्ते सब एक दूसरेसे व्याकुल होते हैं, पृथिवीके भोगविलासके लिये क्षत्रिय लोग भी उसी दशामें हुए हैं। अपनी कामनाको समाप्त करके कोई तृप्ति नहीं लाभ करता है। इसलिये कुरु पाण्डव साम, भेद, दान, वा दण्डद्वारा भूमि लेनेके लिये यत्न करते हैं। भूमि पर खूब ध्यान रखनेसे भूमि ही माता, पिता, पुत्र आदिका आकाश और स्वर्गके समान अवलम्बन होती है।

९ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सूत सञ्जय! हैमवतवर्ष, हरिवर्ष, और यह भारतवर्षमें आयुःपरिमाण, बल, शुभ और अशुभ, तथा भविष्य, भूत और वर्त्तमानके विषयमें आप सविस्तार कीर्त्तन करें।

सञ्जय बोले, हे भारतेन्द्र! इस भारतवर्षमें सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि येही चार युग होते हैं। पहिले सत्य, तब त्रेता, उसके बाद द्वापर और सबके अन्तमें कलियुग होता है। मनुष्यकी आयुसंख्या सत्ययुगमें चार हजार वर्ष, त्रेता युगमें तीन हजार वर्ष, और द्वापरमें दोहजार वर्ष, लेकिन कलियुगमें परमायुकी संख्या निरूपित नहीं है। इस युगमें मनुष्य गर्भमें भी मर सकता है, और जन्मलेनेके समय भी यमके घर जा सकता है। सत्ययुगमें मनुष्य लोग महाबली, महा सत्वी, वीर्य्यवान्, प्रिय दर्शन और बुद्धिमान् होते हैं। वे सब बड़े उत्साही, महात्मा, धार्म्मिक, सत्यवादी, और तपोधन मुनि हो सकते हैं। क्षत्रिय लोग प्रिय दर्शन, प्रशस्त शरीरवाले, महावीर्य्य, धनुर्धर, लड़ाके और शूरसत्तम होते हैं। त्रेतायुगमें समुदाय क्षत्रिय लोग ही अपने अपने चक्रमें स्वाधीन राजा होकर रहते हैं। द्वापर युगमें सब ही वर्ण उत्साही, बड़े वीर्य्यवान्, और परस्पर वध करनेकी इच्छावाले होते हैं। और कलियुगमें लोग अल्पतेजस्वी, क्रोधपरायण लुब्ध, और झूठे होते हैं। उनको ईर्षा, अभिमान, क्रोध, माया, असूया, राग और लोभ, आदि बहुत होते हैं। हे नराधिप! इस समय इस द्वापर युगका अब बहुत थोड़ा बाकी रह गया है। इस भारतवर्षसे हैमवतवर्षमें गुण अधिक होता है, और उससे भी हरिवर्षमें गुण अधिक होता है।

१० अध्याय समाप्त।

भूमि पर्व्व

धृतराष्ट्र बोले, हे गवल्गणपुत्र-सूत सम्यग्दर्शी सञ्जय! आपने जम्बूखण्डका विवरण यथावत् वर्णन किया, अब उसका विस्तार और परिमाण यथार्थ मुझे कहिये; और समुद्रका परिमाण शाकद्वीप, कुशद्वीप, शाल्मलि द्वीप, क्रौञ्चद्वीप, राहु, चन्द्र और सूर्य्यके विषयमें ठीक ठीक सब बातें कहिये।

सञ्जय बोले हे महाराज! जिनके द्वारा यह जगत् विस्तारित हुआ है; वैसे बहुतसे द्वीप हैं। उनमेंसे सातो द्वीप और चन्द्र सूर्य्य और राहुके विषयमें मैं कहता हूं आप सुनिये।

हे नराधिप! जम्बूपहाड़का अट्ठारह हजार छःसौ योजन विस्तार है। इससे द्विगुण चार समुद्रका विस्तार है। इस चार समुद्रमें बहुतसे जनपद हैं; इसमें मणियोंके बहुतसे विचित्र विचित्र पेड़ हैं; वह अनेक धातुओंसे सङ्कीर्ण है, और गोलाकार है। हे कुरुनन्दन पृथ्वीनाथ! इस समय शाकद्वीपका विषय यथान्याय अनुरूप कहते हैं; आप भी सुनिये।

विस्तारमें शाकद्वीप जम्बूद्वीपसे द्विगुण है। उस शाकद्वीपको चारो ओर क्षीरोद सागर है। वह सागर शाकद्वीपसे भी द्विगुण है। इस शाकद्वीपमें पुण्यदेश विद्यमान है, इस लिये वहांके लोग स्वल्पायु नहीं होते है। सब लोग क्षमाशील और तेजस्वी होते है। वहां अकाल पड़नेकी सम्भावना नहीं है। हे भरतश्रेष्ठ महाराज! शाकद्वीपका यह संक्षेप विवरण मैंने आपके निकट वर्णन किया, अब आगे क्या कहूं सो पूछिये।

धृतराष्ट्र बोले, हे महाप्राज्ञ सञ्जय! आपने शाकद्वीपका विवरण संक्षेप रूपसे कहा सो इसे विस्तारपूर्व्वक यथार्थ रूपसे कहिये। सञ्जय बोले, महाराज! इस शाकद्वीपसे मणिविभूषित समुद्र है, सात पहाड़ और बहुतसी नदियां विद्यमान हैं; उनके नाम भी बतलाता हूं, आप इन पहाड़ोंको सब बातोंका गुणवत् जानियेगा। पहला मेरुगिरि है। वह, देव, ऋषि और गन्धर्व्व लोगोंका घर है। तब मलयपहाड़ पूरबकी ओर है। उससे मेघ उत्पन्न होकर चारों ओर फैलता है। उसके बाद जलधार गिरि नामका पहाड़ है; इन्द्र इसी पहाड़से प्रतिदिन अच्छा पानी ग्रहण करते है; और वर्षाकालमें बरसाते है। उसके ऊपर रेवती नक्षत्र प्रतिदिन प्रतिष्ठित होते है। पितामह ब्रह्माकी यह सृष्टि बहुत दिनसे विदित है। हे राजेन्द्र! इसके उत्तरमें श्याम नामक महागिरि है; वह नये मेघके समान ज्योतिमान्, ऊंचा सुन्दर, शोभायमान और उज्वल है। उस पहाड़का रंग श्याम है, इसी लिये वहाके लोग भी सावले होते है। धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! आपने जो कहा उससे हमे इसी समय एक भारी संशय हुआ है, वहाके लोग क्यो सावले होते है।

सञ्जय बोले, हे कुरुनन्दन! सब द्वीपोंमें लोग गोरे, काले तथा इन दोनो रंगोंके मिले हुए रंगके होते हैं; पर इस गिरिके लोग केवल सांवले होते है; और इसी लिये इस गिरिको श्याम गिरि कहते है। इसके बाद महोधर दुर्ग्ग शैल है, और तब केशरी पर्व्वत है। वायु केशर युक्त होकर इसी केशरी गिरिसे बहता है। ऊपर कहे हुए इन सब पहाड़ोंका विस्तार परिमाण जैसे उत्तर जाइये वैसे वैसे द्विगुण होता जाता है। इन्हो सातों पर्व्वतोंके मनीषियोंने सात वर्ष निर्म्माण किये हैं। मेरुपर्व्वत का महाकाश, जलद मलय पर्व्वतका कुमुदोत्तर महागिरि जलधार शैलका महापुरुष वर्ष कहा गया है। हे कुरुनन्दन। उस शाकद्वीपमें शाक नामका एक बड़ा वृक्ष है। उसकी ऊंचाई और फैलाव जम्बूद्वीपके जम्बू वृक्षके समान है, प्रजा लोग उसी वृक्षकी उपासना करते है। उस शाकद्वीपकी समस्त पृथ्वी पवित्र है। वहा शङ्कर देव सब लोगोंसे पूज्यमान हैं और सिद्ध, चारण तथा देवगण वहा जाकर रहते हैं। वहांकी चारो प्रकारकी प्रजा अत्यन्त धार्म्मिक और सब वर्ण अपने अपने कर्म्ममें निरत रहते हैं। वहां चोरी नहीं होती हैं। प्रजालोग न बूढ़े होते हैं, न मरते हैं, पर दीर्घायु होकर बढ़ती हुई नदीके समान बढ़ते जाते है। वहां ऐसी नदिया हैं, जिनका पानी पवित्र हैं। गंगा वहा बहुत दूर तक बहती हैं, और महानदी सुकुमारी, कुमारी, सीता, शिवेणिका मणिजला, चंक्षा और वर्द्धनिका आदि लाखो नदिया पवित्र पानीवाली वहा हैं। देवताओंके राजा इन्द्र इन नदियोंसे पानी लेकर बरसाते हैं। इन सब नदियोंका नाम बताना वा उनका परिमाण कहना असम्भव है। वे सब नदिया प्रधान और पुण्य देने वाली है। हे महाराज! इस पुण्य देश शाकद्वीपमें मग मशक, मानस, और मन्दग येही चार लोक है। मगदेशमें बहुतसे ब्राह्मण अपने कर्म्ममें निरत रहते हैं। मशक देशमे सब कामना देनेवाले धार्म्मिक क्षत्रिय लोग

निवास करते हैं हे महाराज! मानस जनपदोंमें सब अभिलाषाओंसे पूर्ण धर्मात्मा, अपने धर्मसे जीते हुए शूर वैश्यलोग रहते हैं। और मन्दग भूमिमें धर्मशील, पौरुष-सम्पन्न शूद्रजाति सदा रहती है। हे राजेन्द्र! उस देशमें राजा नहीं है; दण्ड नहीं है और दण्डपानेके योग्य लोग भी नहीं है। वहांकी प्रजा स्वय अपने अपने धर्मके अनुसार एक दूसरेकी रक्षा करती है। उस शाकद्वीपके विषयमें इतनी ही बातें कही जासकती हैं और इतनी ही सुननी उचित भी है।

११ अध्याय समाप्त।

इतनी कथा कह सञ्जय बोले, हे महाराज! उत्तर प्रदेशीय द्वीपोंकी कथा जहां तक मैंने सुनी है सो कहता हूं आप चित्त लगाकर सुनें। इन सब द्वीपोंके पास घीका समुद्र दहीका समुद्र, और मदिराका समुद्र है। इन सब द्वीपोंमें धर्म बहुत है। हे नराधिप! उन सब द्वीपोंसे उनके पासका समुद्र द्विगुण परिमाणका है, और पर्व्वत सब भी इन समुद्रोंसे घिरे हैं। बीचवाले द्वीपोंमें सब धातुओंसे भरा हुआ मनःशिलागौर गिरि है, पश्चिम वाले द्वीपमें नारायणसख कृष्ण पर्व्वत है। स्वयं केशव, प्रजाओंके सुखके विधानके लिये प्रजापतिकी उपासना करते हुए दिव्य रत्नोंकी रक्षा करते हुए रहते है। कुशद्वीपमें जनपदोंके बीचवाले कुशस्तम्बकी शाल्मली द्वीपमें शल्मली वृक्षकी,और क्रौञ्चद्वीपमें सब रत्नोंकी खानवाली क्रौञ्चगिरिकी सब प्रजा पूजा करती है। हे राजेन्द्र! कुशद्वीपमें गोमन्त नामका एक पहाड़ है। यह बहुत बड़ा है और इसमें सब धातु पाये जाते है, इसीपर श्रीमान् प्रभु नारायण कमललोचन हरि मोक्ष पाये हुए लोगोंको सङ्ग लेकर सदा निवास करते हैं। दूसरा, पेड़ोंसे शोभित, दुर्द्धर्ष, द्युतिमान् सुनामा नामका बर्फका पहाड़ है, तीसरा कुमुदगिरि, चौथा पुष्पवान् शैल, पांचवा कुशेशय, और छठा हरिगिरि नामका पहाड़ है। येही छओं पहाड़ प्रधान है। उन सबके बीचका स्थान एक दूसरेसे द्विगुण है। सबसे पहिले उद्भित वर्ष, दूसरा वेणुमण्डल वर्ष, तीसरा सुरथ वर्ष, चौथा लम्बन वर्ष, पांचवा धृतिमत् वर्ष, छठा प्रभाकर वर्ष, और सातवां कपिल वर्ष, येही सातों वर्ष लम्भक पहाड़ हैं। हे पृथिवीश्वर! देव गन्धर्व्व अन्यान्य प्रजा लोग इन सब वर्षोंमें विहार करते हैं। हे नृप! वहां म्लेच्छ जाति और दस्युवृत्तिके लोग नहीं हैं। प्रायः सब लोग गोरे और सुकुमार होते हैं।

इतनी कथा सुना कर सञ्जय फिर बोले हे मनुजेश्वर! द्वीपोंके विषयमें मैंने जो कुछ सुनी है, सो सब बातें अब कहता हूं आप अव्यग्रचित्त होकर सुनिये।

सञ्जय कहने लगे कि क्रौञ्चद्वीपमें क्रौञ्च नामका एक बड़ा पहाड़ है। उसके बाद वामनक, वामनकके बाद अन्धकारक, अन्धकारकके बाद मैनाक, मैनाकके बाद पहाड़ोंमें उत्तम मैनाक, बाद उत्कृष्ट गोविन्द गिरि और गोविन्दके बाद निविन्द नामका पहाड़ है। इन सबके बीचका अन्तर पहले सबसे दूसरे सबमें द्विगुण है। इस समय इन्हीं देशोंकी कथा कहता हूं, आप सुने।

क्रौञ्चगिरिके पास कुशलदेश है, वामन गिरिके पास मनोनुग देश है, मनोनुगके बाद उष्णदेश है, उष्णदेशके बाद प्रावरक देश है, प्रावरक देशके बाद अन्धकार देश है, अन्धकार देशके बाद मुनिदेश, और मुनिदेशके बाद वही दुन्दुभिस्वर जनपद है, जहां सिद्ध चारण लोगोंके रहनेकी बात कही गई है। वहांके लोग प्रायः गोरे होते है। महाराज! इन सब देशोंमें देव और गन्धर्व्व लोग विहार करते रहते हैं। पुष्कर द्वीपमें मणिरत्नोंकी

खान वाला पुष्कर पहाड़ है। वहां स्वयं प्रजापति देव नित्य रहते हैं। हे नरधिप! सब देवता और ऋषि प्रतिदिन अपने अपने मनके अनुसार वाक्य कहके उनकी पूजा करते हुए उनकी उपासना करते हैं। जम्बूद्वीपमें जो रत्न निकलते हैं; उन सबको वहांकी प्रजा अपने काममें लाती है। इन सब द्वीपोंकी प्रजाके ब्रह्मचर्य्य, शम, दम, आरोग्य, और परमायु परिमाण, पहिले द्वीपोंसे क्रमशः उसके बादके द्वीपोंमें द्विगुण होता है। हे राजन्! इन सब द्वीपोंमें जितने देश हैं, उन सबको एक ही देश कहना चाहिये; क्योंकि इन सब देशोंमें एक ही धर्म्म देख पड़ता है। नियन्ता प्रजापति स्वय दण्ड लेकर इन सब देशोंकी सदा रक्षा करते हैं। वही राजा, वही शिव, वही चेतन और अचेतन सब प्रजाकी रक्षा करते हैं। उन्हीके कारण सदा रहने वाला अन्न वहा उपस्थित होता है, और उसीको खाकर प्रजा जीती है।

हे महाराज! उसके बाद समा नामका चौकोन लोकालय है। उस स्थानमें तैंतीस मण्डलिया हैं। वहां लोकोंमें विख्यात वामन ऐरावत, प्रभिन्नकरटामुख, सुप्रतीक चार दिग्गज हैं, उनके परिमाणकी संख्या करनेका हमारा साहस नहीं होता है, क्योंकि उन गजोंके ऊपरका हिस्सा बीचका हिस्सा और और नीचेका हिस्सा सदा अपरिमित रहता है। वहा वायु विशृङ्खला रूपसे नाना दिशासे बहती है। आकर्षण करने वाले वे दिग्गज सब कमलके समान प्रभायुक्त अपने सूण्डोंके अग्रभागसे उस वायुको लेते हैं और उसी समय उसको सौगुणा बढ़ाके नित्य बाहर निकालते हैं। उन्हीं दिग्गजोंसे निकाली हुई वायु वहा आती है, और उसीसे प्रजा जीवित रहती है।

इतनी कथा सुन धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! आपने द्वीपोंकी कथा विस्तार पूर्व्वक कही, और उनका स्थान भी बताया; पर अब उपाकार आगेकी कथा कहिये।

इस बातके सुनते ही सञ्जय बोले, हे महाराज! सब द्वीपोंकी कथा मैंने कही; अब चन्द्र, सूर्य्य और और प्रभावान् राहुग्रहके वृत्तान्त यथार्थ रूपसे कहता हूं, आप मन लगा कर सुनिये। हे, महाराज! सुना है, कि राहु ग्रह गोलाकार है; उसके व्यासका (बीचकी लकीरका) परिमाण बारह हजार योजन हैं, और परिधि (किनारे किनारे बाहरकी लकीर) बेयालिस हजार योजनसे अधिक नहीं है; पुराण जाननेवाले पण्डितोंने ऐसा ही कहा है। महात्मा चन्द्रमाका व्यास ग्यारह हजार योजन है, और परिधि तैंतीस हजार उनसठ सौ योजन है। परम उदार और शीघ्र जानेवाले सूर्य्यका व्यास दश हजार योजन है, और परिधि पैंतीस हजार आठ सौ योजन सुनते हैं। हे भारत! इस संसारमें सूर्य्यका यही परिमाण निर्द्दिष्ट किया गया है। वही राहुग्रह चन्द्रमा और सूर्य्यको, समय आनेपर छिपा लेता है। यह सब बातें संक्षेप रूपसे मैंने कही। हे महाराज! आपने जो यह सब बातें पूछी थीं उन्हें मैंने शास्त्रानुसार यथानुरूप कही, अब आप कुछ शान्त भाव अवलम्बन करें। हे कुरुनन्दन! इस संसारके पदार्थोंके विषयमें उद्देशानुसार मैंने आपसे सब बातें कहीं, इस लिये अब आप अपने पुत्र दुर्य्योधनके ऊपर आश्वस्त हो। भरतेन्द्र! यह सनानुगत भूमिपर्व्व यदि कोई क्षत्रिय सुने तो वह श्रीमान्, अर्थसिद्ध और साधुओंसे सम्मानित हो और उसका आयु, बल, कीर्त्ति और तेज बढ़े। यदि कोई राजा व्रत करके इसको आदिसे सुने तो उसके पिता पितामहादि प्रसन्न हो। हम लोग जहा रहते है सो भारतवर्ष है, यहा रह करके जो पुण्य लोगोंको होता है, सो सब आप सुन चुके हैं।

१२ अध्याय समाप्त।

इतनी कथा कह श्रीवैशम्पायन जी बोले, हे भारत! तब राजा धृतराष्ट्र चिन्तामें निमग्न रहे; उसी समय भूतभविष्य और वर्त्तमानके जाननेवाले, प्रत्यक्ष देखनेवाले गवल्गणके पुत्र विद्वान् सञ्जय रणक्षेत्रसे होकर बहुत जल्द उनके समीप गये और भारत लोगोंके पितामह भीष्मके लड़ाईमें होनेका सम्वाद कहने लगे। सञ्जय बोले, हे महाराज भारतप्रवर! मैं आपको नमस्कार करता हूं; मैं सञ्जय हूं, भारतपितामह भीष्म मारे गये। सब योद्धोंके प्रधान और सब धनुर्द्धरोंके तेजः स्वरूप कुरुपितामह आज शर शय्यापर शयन कर रहे हैं। जिनके बल, वीर्य्यका आश्रय करके आपके पुत्रने जूएका खेल खेला था, वही भीष्म युद्धमें शिखण्डी करके निहत होकर शयन कर रहे हैं। जिन महारथने काशीपुरीमें आये हुए सब राजाओंको एक ही रथके द्वारा जय किया था, और जिन्होंने जामदग्न्य रामसे दृढ़चित्त होकर लड़ाई की थी, पर जिनको जामदग्न्य राम नहीं मार सके थे, वही भीष्म शिखण्डीके हाथसे मारे गये हैं। जो शौर्य्यमें महेन्द्रके समान, दृढतामें हिमालयके समान, गम्भीरतामें समुद्रके सदृश, और सहिष्णुतामें पृथ्वीके समान थे, और जिनका शर दांतके समान, धनुष सुंड़के समान और खड्ग जीभके समान था, सो ही दुरासद, नररूप सिंह, आपके पिता भीष्म पाञ्चाल राजपुत्रके द्वारा गिराये गये है। रणस्थलमें जिनको देखके, लड़नेको उद्यत पाण्डवोंकी बड़ी सेना, भयसे व्याकुल होकर सिंहका देखके घबड़ाई गायके समान कम्पित होती थी, वह दश दिन तक आपकी सेनाकी रक्षा करके, पाण्डवोंको सेनाको मारकर, आज वैसे ही अस्त होगये हैं जैसे अति दुष्कर कामको करके सूर्य्य डूब जाते हैं। जो इन्द्रके समान निर्मोह होकर हजार बाण बरसाकर दश दिनोंमें दश हजार योद्धोंको युद्धमें मारडाला है, वह वायुके झकोरेसे वृक्षके समान निहत होकर आज पृथ्वीपर पड़े हैं। हे महाराज। वह भरतकुल-तिलक भीष्म इस घटनाके योग्य नहीं थे; परन्तु आपहीकी दुर्मन्त्रणासे उनकी यह दुर्दशा हुई है।

१३ अध्याय समाप्त।

यह समाचार सुनकर धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय। इन्द्रके समान मेरे पिता और कुरु-पितामह भीष्मको शिखण्डीने किस प्रकार मारा? वह किस प्रकार रथसे गिरे? जिन्होंने अपने पिताके लिये ब्रह्मचर्य्य अवलम्बन किया था, उन देवकल्प बलशाली भीष्मके नहीं रहनेसे हमार योद्धा लोगोंकी क्या दशा हुई? उन महाप्राज्ञ, महाधनुर्द्धर, महाबल, महासत्व, नरश्रेष्ठके मारे जानेपर उस समय हमारे पक्षके लोगोंका कैसा चित्त हुआ? हे सञ्जय! उन अविचलितचित्त कुरुवीर पुरुषप्रवरके मारेजानेका समाचार सुनकर मेरा मन अत्यन्त व्यथित होगया है। हे सञ्जय! उनके लड़ाईमें जानेके समय काई आदमी उनके पीछे, कोई आगे, काई साथ साथ, कोई निहत और कोई अनुवर्त्ती हुआ था सेनाओंपर आक्रमण करनेवाले, क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ, अच्युत उन महारथ कुरुश्रेष्ठकी पृष्ठरक्षा किन किन शूरोंने की थी? वह सूर्य्यके समान तेजस्वी और शक्रघातीके, जैसे सूर्य्यके द्वारा अन्धकारका नाश होता है, वैसे लड़ाईमें परपक्षी सेनाका विनाश करके परपक्षको भय देनेवाले थे; उन्होंने पाण्डवोंकी सेनापर बड़ा दुष्कर काम किया था; क्या उस सेना-ग्रास करने वाले पुरुषका किसीने निवारण नहीं किया था? हे सञ्जय! वाणकी वर्षा करनेवाले उन कृती दुराधर्ष शान्तनुनन्दनके समीप पाण्डव लोग किस प्रकार आकर लड़ाईमें निवारण कर सके?

जिनका शर दांतके समान, जिनका शरासन बाये हुए मुंहके समान, खड्ग जीभके समान, और जो कभी पराजित नहीं हुए वह इस प्रकारके भीषणरूप वाले, युद्धमें मारेजानेके अयोग्य लज्जाशील, महानुभाव, भीषण रूप थे उन अजित पुरुषव्याघ्रको किस प्रकारसे कुन्ती-पुत्रलोग लड़ाईमें मारसके ? जो प्रधान रथमें बैठकर शरसमूहसे शत्रोंके मस्तक छेदते थे, और पाण्डवोंकी बड़ी सेना जिन उग्रधन्वा, उग्रशरवाणको काममें लानेवाले दुर्द्धर्ष पुरुषको लड़ाईमें देखकर सब क्षण कालाग्निके समान जानकर होशियार रहती थी, वह दश दिनतक दुश्मनकी सेनाको परिकर्षण करके विनष्ट हो गये। सूर्य्यके समान अत्यन्त दुःसाध्य काम करके अस्त हो गये हैं । इन्द्रके समान अक्षय शरजालकी बर्षा करके दश दिनमें अर्बुद असंख्य योद्धाओंको जिन्होंने मारा है, सो आज लड़ाईमें निहत होकर वायुसे झकोरे पेड़के समान पृथ्वीमें पड़े हैं । उन भारत-कुलचूड़ामणिके ऊपर ऐसी दुर्घटना होनेका कारण एक मात्र मेरी दुर्मन्त्रणा ही है। हे सञ्जय। शान्तनुके पुत्र बड़े पराक्रम-वाले, उन भीष्मको देखकर वहां पाण्डवसेना किस प्रकार प्रहार करने लगी ? पाण्डव ही लोग भीष्मके साथ लडाई करने लगे ? आचा-र्य्य द्रोणके जीते रहनेपर भी भीष्म क्यों नहीं विजयी हुए ? और द्रोणके बैठे और कृपके समीप रहनेपर भी प्रहारकोंमें प्रधान भीष्म क्यों मारे गये ? जिन्हें देवता भी नहीं हरा सके उन अतिरथ भीष्मको किस तरहसे पाञ्चाल्य शिखण्डीने युद्धमें मारा ? जो लड़ाईमें, बडे बलवान् जामदग्न्य रामके ऊपर भी स्पर्द्धा कर सके थे और जिनको परशुराम भी जीत नहीं सके थे महारथोंके कुलमें जन्म लिये हुए इन्द्रके समान पराक्रमवाले उस वीरपुरुषके लड़ाईमें हारनेका सब समाचार आप मुझे कहिये। क्यों कि जबतक मैं वह नहीं सुनूंगा तबतक मेरा चित्त स्थिर नहीं होगा।

हे सञ्जय। मेरे पक्षके किसी महाधनुर्द्धर ने तो उन अटल वीरको परित्याग नहीं किया ? दुर्य्योधनकी आज्ञासे किसी वीरहोने उनको तो जा नहीं घेरा था ? हे सञ्जय ! जब सब पाण्डव लोगोंने शिखण्डीको आगे करके भीष्म पर आक्रमण किया था, तब कुरु-वीरोंने तो उन अटल वीरको छोड़ नहीं दिया था ? जिनके धनुषका टङ्कार बज्रनादके समान जिनका बाण बौछार जलबिन्दुके समान, और जिनकी सौर्वीघोषा गर्ज्जनके समान ऐसे बड़े मेघके समान जिस वीरने, जैसे इन्द्र वज्रसे दानवोंके दलका नाश करते हैं, वैसे, पाञ्चाल और सृञ्जय आदि सहित पाण्डवोंके महार-थोंको बाणोंकी वर्षा करके मार हटाया था ? और जो बड़े वेगसे जानेवाले बाणोंके भयानक समुद्रमें बाण जल-जन्तुके समान और धनुषकी डोरीकी फटकार लहरके समान हुई थी, और जिससे पार उतरनेके लिये न कोई द्वीप और नाव थी, जिसमे गदा और प्रस्त ही मानो मकरोंके घर थे, जिसमें घोड़े मानो आवर्त्तके समान हाथियोंसे समाकुल, पैदल सेना मछलीके समान दुरासद और अक्षोभ्य, और जिसका शब्द शङ्ख और दुन्दुभीके समान होता था, और जिस सागरमें बहुतसे हाथी, घोडे, पैदल और रथ डूब जाते थे और क्रोध-स्वरूप बाड़वानलमें जल जाते थे;— उन्हीं वीर शत्रुहन्ता, शत्रुतापन भीमरूप महाअस्त्र सागरका, जैसे समुद्रके तरंगको समुद्र किनार की भूमि रोकती है वैसे किसी योद्धाने अवरोध किया था? हे सञ्जय। जब दुश्मनोंको मारनेवाले भीष्म दुर्य्योधनके निमित्त लड़ाई करने गये थे तब कौन कौन उनके सामने आये थे ? उन अमित तेजस्वी भीष्मके दाहिने चक्रकी किसने

रक्षा की थी? किस पुरुषने दृढ़ प्रतिज्ञा करके उनकी सहायता करनेके अभिप्रायसे उनका पृष्ठरक्षक होकर प्रधान वीरोंको रोका था? किसी वीरने उन लड़नेवाले वीरके बायें चक्रकी रक्षा की थी? कोई आदमी उनके पास रहकर आगेका भाग रक्षा करनेके लिये विद्यमान था? किस वीरने उनकी बाईं ओर रहकर सृञ्जय लोगोंको प्रहार किया था? किसने उनकी आगेकी सेनाके नहीं जीतनेके योग्य अग्रभागकी रक्षा की थी? किसने दुर्गम गति स्वीकार करके उनकी पार्श्व रक्षा की थी? और उनकी रक्षा करनेके निमित्त, बराबरकी लड़ाईमें प्रधान वीरोंसे किसने लड़ाइ की थी? और किसकी उन्होंने (भीष्मने) रक्षा की थी? और तब क्यों वे सब वीर लोग लड़ाईमें बल करके दुर्जय पाण्डवोंकी सेनाको नहीं जीत सके?

हे सञ्जय। सर्व्व लोकेश्वर परमेष्ठी ब्रह्माके समान उन भीष्मपर पाण्डव लोग किस तरहसे प्रहार कर सके? जो डूबते हुए लोगोंको द्वीपके समान आश्रय थे, जिनके आश्रयसे निर्भय होकर मेरे पुत्र लोग पाण्डवोंसे लड़ते थे, वेही नरसिंह भीष्म रूप द्वीपके डूब जानेका वृत्तान्त आप सुनाते हैं। बड़े बलवान् मेरे पुत्र जिनके आसरे पाण्डवोंकी गिनती भी नहीं करते थे वे किस प्रकारसे पाण्डवों करके मारे गये। राक्षसोंको मारनेकेस मय देवताओंने युद्धदुर्म्मद महाव्रत जिन मेरे पिता भीष्मकी सहायता पानेकी इच्छाकी थी, और पुत्रके लक्षणोंसे सम्पन्न महाबल भीष्मके जन्म लेनेसे लोक विख्यात राजा शान्तनुका शोक, दुःख, दैन्य सब दूर होगया था, उन्ही विख्यात परमाश्रय, प्राज्ञ, अपने धर्म्ममें दृढ़, शुचि और वेदवेदाङ्गके तत्वोंको जाननेवाले भीष्मको मेरे सामने आप किस प्रकार मरा हुआ कहते हैं?

हे सञ्जय। सब शस्त्रोंके जाननेवाले, शान्त, और गुणी महानुभाव शान्तनुनन्दन भीष्मके मारे जानेका समाचार सुनकर हमको बोध होता है कि मेरी ओरकी सम्पूर्ण सेना मारी गई। हे सञ्जय। हमारी समझमें होतो है, कि धर्म्मसे अधर्म्म ही अधिक बलवान् होकर फैलता है, क्योंकि पाण्डव लोग वृद्ध गुरुको मारकर राज्यभोगकी अभिलाषा रखते हैं। पूर्व्वकालमें सब शस्त्रोंके जानने वालोंमें बड़े जामदग्न्य राम अम्बाके लिये जिन भीष्मके साथ लड़ाई करके हार गये थे, धनुषधारियोंमें प्रधान, इन्द्रके समान कृती, उन्हीं भीष्मके मरनेका जो सम्वाद मुझे कहा, सो उससे बढ़कर अब क्या हो सकता है? जिन्होंने क्षत्रियोंको बार-बार पराजित किया था, शत्रुहन्ता जामदग्न्य राम जिन भीष्मको नहीं मार सके थे, सो आज शिखण्डीके हाथसे मारे गये. इस लिये युद्धदुर्म्मद, महावीर्य्यवान्, भृगुनन्दन परशुरामसे भी द्रुपदपुत्र शिखण्डीको बड़ा कहनेमें कुछ संशय नहीं है। उसी शिखण्डीने युद्धविद्यामें निपुण, सब शास्त्रोंको जाननेवाले, परमास्त्रवेत्ता, शूर वीर भरतवंश प्रवर भीष्मको मारा है।

हे सञ्जय। उस लड़ाईमें पाण्डवोंसे मारे हुए उन वीरके कौन कौन साथी हुए और पाण्डवोंसे उनकी कैसी लड़ाई हुई सो सब आप मुझे कहिये। इस समय मेरे पुत्र दुर्य्योधनकी सेना पतिपुत्र विहीन स्त्रीके समान होरही है। मेरे पक्षकी सम्पूर्ण सेना चरवाहेके बिना गायके झुण्डके समान इस समय बिखर गई है। बड़ी लड़ाइमें जिसके परम पौरुषकी प्रशंसा सब लोगोंसे बढ़कर होती, वेही महापुरुष जब मारे गये, तब आप लोगोंका मन कैसा हुआ था? हे सञ्जय। मेरे पिता, महावीर्य्य उन धार्म्मिकवरके आज मारे जानेसे हम लोगोंमें जीवनकी और क्या आशा बाकी रह गई है? हे सञ्जय। मुझे बोध होता है, कि जैसे उस पार जानेवाले मनुष्य, अथाह पानीमें डूबी हुई नावको देखकर कातर होते

हैं, वैसे ही भीष्मको मरा देख कर मेरे पुत्र सब दुःखसे नितान्त शोकार्त्त हो गये हैं। हे सञ्जय! हमारा हृदय सत्य ही पत्थरमय है, क्योंकि उन पुरुषसिंहके मरनेकी खबर सुनकर मेरा हृदय विदीर्ण नहीं हुआ। जिन पुरुषसिंहके कारण अप्रमेय अस्त्र, मेधा और नीति विद्यमान थी, और जो दुश्मनोंसे जीते जानेके योग्य नहीं थे, सो युद्धमें कैसे मारे गये? कोई आदमी अस्त्र, शौर्य्य, तपस्या, मेधा, धैर्य्य, त्याग, आदि किसी प्रकारसे मृत्युसे नहीं बच सकता है, महावीर कालहीको मनुष्य किसी प्रकारसे फल नहीं सकता है, हे सञ्जय! उसी कालहीके कारण आप भीष्मके मरनेका वृत्तान्त मुझसे कह सके। पुत्रशोककी आशङ्कासे कातर होकर बड़े दुःखकी चिन्ता करनेके समय मैं भीष्महीके द्वारा त्राण पानेकी आशा करता था। हे सञ्जय! जब दुर्य्योधनने पृथ्वीपर गिरे हुए सूर्य्यके समान भीष्मको देखा तब क्या किया? हे सञ्जय! क्या अपने पक्ष, क्या परपक्ष सब राजाओंकी सेनाके विषयमें बुद्धिके द्वारा चिन्ता करके देखता हूं तो कुछ समझ सकता हूं। देवताओंने इस वैर भावको कैसा निदारुण करके दिखलाया है, जिस कारण पाण्डव लोग भीष्मको मारकर राज्यके अभिलाषी हुए हैं। हम लोग जो उन महाव्रत भीष्मको मरवाकर राज्य करनेकी इच्छा रखते हैं, और पाण्डव लोग जो उनको मारकर राज्य भोग करनेकी अभिलाषा रखते हैं, इसका हम लोगोंको अपराध नहीं हो सकता है, क्योंकि हम दोनों पक्षवाले क्षत्रियका धर्म्म पालते हैं। अत्यन्त कठिन आपत्ति आपड़नेसे इस प्रकारका निष्ठुर काम आर्य्यलोगोंको भी करना उचित हैं, क्योंकि शत्रुपर आक्रमण करना परमशक्तिको प्रकाशित करना, और उक्त प्रकारका निष्ठुर काम करना ही क्षत्रियोंका धर्म्म कहा गया है। हे सञ्जय! अपराजित, लज्जाशील, शान्तनुनन्दन पिता महाशय, सेनाका नाश करते थे, उनको पाण्डवोंने किस प्रकार रोका? किस तरहसे सेना नियुक्त की गई थी, और किस प्रकारसे महात्माओंके साथ उनका युद्ध हुआ? और किस प्रकारसे मेरे पिता भीष्म महाशय, दुश्मनोंसे मारे गये? उनके मारेजानेपर दुर्य्योधन, कर्ण, सुवलपुत्र चालाक शकुनि और दुःशासनने क्या किया? जिस सभामें शर, शक्ति, गदा, खड्ग, तोमर प्रभृति सब अस्त्र शस्त्र पासेके समान हुए थे; नर वानर तथा घोड़ोंका शरीर समूह विसात (आस्तरण) के समान; और प्राण प्रदान रूप भयङ्कर बाजी लगी थी, उस जुएकी सभामें कौन कौन लड़ाके जुआरी अल्पबुद्धि राजाने प्रवेश करके जुआ खेला था? और उससे भीष्मको छोड़ कर और कौन जयी कौन पराजित और कौन कृतलक्ष हुए थे? सो सब बातें आप मुझे समझाकर कहिये। हे सञ्जय! युद्धमें शोभनेवाले, देवताओंके समान व्रत करनेवाले, कठिन काम करनेवाले पिता भीष्मके मरनेका समाचार सुनके मुझे कुछ शक्ति नहीं रही। पुत्रके मरनेके लिये मेरे हृदयमें महा शोकानल जल उठा था, आपने मानो उस अग्निमें घी देकर उसे और भी प्रदीप्त कर दिया। सब लोकोंमें विख्यात भीष्मको महाभार ग्रहण करके मरते देखकर मालूम होता है कि मेरे पुत्र सब शोकग्रस्त होगये हैं। हे सञ्जय! दुर्य्योधनको जो दुःख हुआ है सो सब सुननेकी मेरी इच्छा होती है, इस लिये वहां जो जो घटना और जो जो बातें हुई थीं सो सब मुझे कहिये। उस लड़ाईके मैदानमें, मन्द लोगोंकी बुद्धिके दोषसे जो जो अनीति और सुनीति हुई थीं सो सब मुझे सुनाइये। उस रणक्षेत्रमें, जयकी इच्छा करनेवाले यमके समान भीष्मने तेजकी सहायतासे जो जो काम

किये थे; और उस लड़ाईमें कुरुपाण्डवोंकी जितनी सेना, जिस प्रकारसे, जिस क्रमसे, जिस समय जिस प्रकारकी हुई थी सो सब बातें आप मुझसे अशेषरूपसे कहिये।

१४ अध्याय समाप्त।

इतने प्रश्नोंको सुनकर सञ्जय बोले, हे महाराज! अपने जो प्रश्न किये हैं सो आपके योग्य ही हैं, किन्तु आप दुर्य्योधनके ऊपर यह दोष मत लगाइये, क्योंकि जो मनुष्य अपने बुरे कामोंसे फल पाते हैं, वे अपने अपराधको दूसरोंपर आशङ्का करनेके योग्य नहीं होते हैं। जो दूसरोंके ऊपर निन्दित कामोंका आचरण करता है, वही निन्दित काम करनेवाला मनुष्य सब लोगोंसे मारे जानेके योग्य होता है। सरल स्वभाववाले पाण्डवोंने अपने परिवारके सहित आपकी आशासे बहुत दिनतक अपकार सहा और वनवासी होकर बहुत दुःख सहा था; इस लिये उन लोगोंको दोषी ठहराना उचित नहीं है।

इतनी बात कह सञ्जय फिर बोले, हे महाराज! घोड़े, हाथी और अमित तेजस्वी राजा लोगोंके विषयमें मैंने जो कुछ अपनी प्रत्यक्ष आखोंसे देखा है और जो कुछ मैंने योगबलसे देखा है सो सब मैं आपके निकट निवेदन करता हूं, आप चित्त लगाकर सुनिये और शोकमें निमग्न मत होइये। ये सब बातें पहिलेहीसे देवताओंने निश्चय कर रखी हैं। जिनके प्रसादसे मैंने अनुत्तम दिव्य ज्ञान लाभ किया है, जिन महात्माके वरदानसे मैंने इस युद्धके विषयमें न देखने योग्य चीजोंको देखना, बहुत दूरकी बातोंको सुनना, दूसरेके मनकी वृद्धि, बीते और आनेवाले विषयको जान लेना, शास्त्रोंके लङ्घनकारी लोगोंकी उत्पत्तिका कारण-ज्ञान, अकालमें शुभगति, और अस्त्र शस्त्रोंसे असङ्ग, आदि गुण प्राप्त किया है; आपके उन्ही बुद्धिमान् पिता पराशर-नन्दन व्यासदेवको नमस्कार करके मैं यह लोमहर्षण-जनक कुरु पाण्डवीय परम अद्भुत विचित्र युद्धका वृत्तान्त सविस्तर वर्णन करता हूं; आप सुनिये।

उस सम्पूर्ण सेनाके यथाविधान व्यूह रचनामें खड़े और सयत्न होजानेपर दुर्य्योधनने दुःशासनको आदेश किया कि हे दुःशासन! भीष्मकी रक्षा करनेके लिये तुम सब रथोंको जल्द जुतवा लो और बहुत जल्द सब सेनाओंका नियोग करो। मैं इतने बरसोंसे कुरुपाण्डवोंकी जिस लड़ाइमें सेनाओंके एकत्र होनेकी चिन्ता करता था, सो ही आज मेरे सामने उपस्थित हुई है। इस लड़ाइमें भीष्मकी रक्षाको छोड़कर और काम प्रधान काम नहीं मालूम होता है, क्योंकि इनकी रक्षा होनेसे यह पाण्डव, सोमक, और सृञ्जय लोगोंका संहार कर सकेंगे। विशुद्धात्मा भीष्म महाशयने कहा है कि "मैं शिखण्डीको नहीं मारूंगा, क्योंकि पहिलेहीसे सुनते आते हैं कि शिखण्डी स्त्री जाति है; इस लिये लड़ाईमें मैं शिखण्डीको नहीं मारूंगा।" इस लिये मेरा विचार है कि भीष्मकी खूब रक्षा की जाय और हमलोगोंकी ओरके सब लोग शिखण्डीको मारनेकी चेष्टा करें। सब शस्त्रोंकी विद्या जाननेवाले बड़े बड़े वीर लोग उत्तर, पश्चिम, दक्षिण और पूरब ओर खड़े होकर पितामहकी रक्षा करें। बड़ा बलवान् सिंह भी यदि अरक्षित होजाय तो उसे सियार भी मार सकता है। इसलिये हे दुःशासन! देखो, सियारके द्वारा सिंहके वधके समान शिखण्डी करके भीष्मका वध न होने पावे। युद्धस्थलमें अर्ज्जुन शिखण्डीकी रक्षा करते हैं, और अर्ज्जुनके वाम चक्रकी रक्षा युधामन्यु और दक्षिण चक्रकी रक्षा उत्तमौजा करते हैं। इस लिये

उक्त प्रकारसे रक्षित होकर अर्ज्जुन जिस शिखण्डीकी रक्षा करते हैं ; और विशेषत: जिसपर पितामह महाशय आघात नहीं करेंगे, सो शिखण्डी किसी प्रकारसे पितामह महाशयका बध करने न पावे सो करना ।

१५ अध्याय समाप्त ।

इतनी कथा सुना कर सञ्जय फिर कहने लगे, हे महाराज । तब सुबह होनेपर, राजा लोग कहने लगे "इकट्ठे होजाओ, इकट्ठे हो-जाओ ।" तब शंख दुन्दुभीके सिंहके समान शब्दसे, घोड़ोंकी हिनहिनाहटसे रथोंकी घड़-घड़ाहटसे, हाथियोंके गरजनेसे, और चिकरने-वाले योद्धा लोगोंके विविध प्रकारकी चिल्ला-हटसे महा घोर शब्द हो पड़ा । हे राजेन्द्र ! सूर्य्योदय होनेके समय कुरु और पाण्डव दोनो पक्षकी सेना उठकर सब प्रकार तयार हो गई । इसके बाद सूर्य्योदयके होनेपर आपके ओर और पाण्डवकी ओरके दुराधर्ष लोग अस्त्र शस्त्र और कवच लेने लगे ; और दोनो ओर की सेना अस्त्र शस्त्र लिये दृष्टि-पथमें प्रगट होने लगी । सोनेसे विभूषित रथ और हाथी सब बिजली सहित मेघके समान दीखने लगे ; और अनेकानेक रथोंके सहित समूची सेना रथके समान मालूम होने लगी । उसके बीचमें आपके पिता पूर्णिमाके चांदके समान अत्यन्त शोभित होने लगे । देखा कि योधालोग धनुष, इषु, खड्ग, गदा, शक्ति, तोमर आदि अच्छे अच्छे अस्त्रोंके लेकर अपने अपने दलमें रहते हैं । लाखों लाख हाथी, पैदल, रथी और घोड़े सब मालूम होते थे मानो शत्रुको बझानेके लिये जाल फैलाये हुए हैं । आपके और पाण्डवके पक्षको चञ्चल चमकीली; हजार हजार, अनेक रङ्गकी ध्वजा शोभा पा रही है । जलती आगके समान, मणिजटित सुवर्णमय, चमकीली, राजा-ओंकी हजारों हजार ध्वजा इन्द्रपुरीकी उत्तम इन्द्रध्वजाओंके समान चमक रही थीं । लड़-नेके लिये उत्सुक वीर लोग सनाह पहर पहरकर उन ध्वजाओंको देखने लगे । बड़ी बड़ी आंखवाले मनुष्योंमें इन्द्रके समान प्रधान प्रधान लोग वर्म्म, तूणीर, ज्याटानत्राण, और आयस धारण करके सूर्य्यके मुंह खड़े होकर शोभा पाते हैं । सुवलके बेटे शकुनि, शल्य, जयद्रथ, अवन्तिके राजा विन्द और अनुविन्द, कैकेय, काम्बोजके राजा सुदक्षिण, कलिंग देशके राजा श्रुतायुध, राजा जयत्सेन, कोशलके राजा वृह-द्वल, और सात्वत कृतवर्म्मा, वे ही दशों भूरि-दक्षिण यागशील, परिघवाहु, पुरुषप्रवर, शूरभूपति लोग एक एक अक्षौहिणी सेनाके सरदार बनाये गये । इन दशों आदमियोंको और इनके अलावे बहुतसे नीति जाननेवाले महारथ राजा और राज पुत्रोंको दुर्य्योधनके वशमें होकर अपनी अपनी सेनामें जाते देखा । उन सबोंने ध्वजा लेकर और सुन्दर माला पहिर कर कृष्णाजिन बांधकर, हृष्टचित्तसे दुर्य्योधनके लिये ब्रह्म लोक जानेमें दीक्षित होकर, समृद्धिसे भरी हुई दश अक्षौहिणी सेनाको अपने अधिकारमें कर लिया । इसके अलावे कौरवोंकी धार्त्तराष्ट्री एक अक्षौहिणी सेनाने न दशों अक्षौहिणियोंके आगे होकर ग्यारह अक्षौहिणी पूरी की और इस सम्पूर्ण ग्यारह अक्षौहिणी सेनाके प्रधान सेनापति शान्तनुपुत्र भीष्म हुए । हे महाराज ! वह अक्षय पुरुष भीष्मके श्वेतवर्ण उष्णीष, घोड़े और वर्म्मके द्वारा उनको उगते हुए चन्द्रमाके समान देखने लगे । जिसकी हेममय तालध्वजा शोभा पाती थी, उसी रजतमय रथमें बैठे भीष्मको कौरव और पाण्डव लोग शुभ्र मेघमें बैठे हुए सूर्य्यके समान देखने लगे । आगे रहने-वाले धृष्टद्युम्न आदि बड़े धनुर्द्धर सृञ्जय और पाण्डव लोग भीष्मको सूर्य्यके मुंह देखकर

कांपने लगी। जिस तरहसे क्रोधित सिंहको देखकर चुद्र मृग सब उद्विग्न होते हैं वैसे ही धृष्टद्युम्न आदि सब लोग बारबार घवड़ा गये। हे राजन्! जैसे आपकी ओर यह ग्यारह दल श्री सम्पन्न सेना प्रधान प्रधान पुरुषोंके द्वारा रचित हुई थी, वैसे ही पाण्डवोंकी ओर भी सात दल सेना प्रधान प्रधान पुरुषोंसे रचित रचित हुई थी। इन दोनो दलोंकी दो दल सेना उन्मत्त मकरोंके समूहसे भरे, और बड़े बड़े ग्राहके समूहसे पूरे युगके अन्तवाले दो समुद्रोंके समान दीखने लगी। हे महाराज! कौरवोंकी सेनाके समान सेनाका समावेश पहिले न कभी देखा था और न कभी सुना था।

१६ अध्याय समाप्त।

इतनी कथा कह सञ्जय फिर कहने लगे हे महाराज! जिस दिन राजा लोग युद्ध करनेकी इच्छासे एकत्र होकर आये उस दिन जैसा भगवान् वेदव्यासने कहा था वैसा ही हुआ। मरे लोगोंको दिव्य देह प्राप्त करानेके निमित्त चन्द्रमण्डल पितृ लोकसे समीप आगया सूर्य्योदयके समय मालूम हुआ जैसे जलती हुई बत्तीके साथ शरीर धारण कर भगवान् भानु उदय हुए है। मास लोहूके खानेवाले सियार और कौवे मुरदोंकी लालसासे चारो ओर उजियारेमें शोर गुल करने लगे। शत्रुके मारनेवाले कुरुओंके पितामह बूढ़े भीष्म और भरद्वाजनन्दन द्रोण ये दोनों एकत्र होकर पार्थ लोगोंके लिये कहते थे कि पाण्डवोंकी जय हो, और आपके पचके लिये जैसी प्रतिज्ञा की थी वैसे युद्ध करते थे। आपके पिता सब धर्मोंका विशेषरूपसे जाननेवाले, वेदव्रत सब राजाओंको बुलाकर कहने लगे कि हे चत्रियो! आप लोगोंके लिये यह बड़ा स्वर्गद्वार खुला है, इस द्वार होकर इन्द्रलोक और ब्रह्मलोक जाइये। पहिलेके ऋषियोंने आप लोगोंके लिये यही राह बत लाई है। इस लिये आप अव्यग्र चित्त होकर लड़ाईमें प्रवृत्त हो। नाभा, ययाति मान्धाता, नहुष, और नृग आदि राजाओंने यही कर्म्म करके परम धाम पाया था। घरमें रहकर पीड़ाके साथ मरना ही चत्रियोंके लिये बड़ा भारी अधर्म्म है; और लड़ाईमें लड़ते मरजाना ही उनके लिये सनातन धर्म्म है।

इतनी कथा कह सञ्जय बोले, हे भरतप्रवर! महीपाल लोगोंको जब भीष्म महाशय इस प्रकार कह चुके, तब सब राजालोग उत्तम उत्तम रथोंमें बैठकर शोभायमान होनेके उपरान्त अपनी अपनी सेनामें चले गये। हे भारत! विकर्त्तनके पुत्र कर्ण अपने अमात्यों तथा बन्धुओंको लेकर भीष्मके लिये अस्त्र परित्याग करनेके बाद लड़ाईसे निवृत्त हुए थे। सुतरा उनको छोड़कर आपके पचके राजा लोग और आपके बेटे सब सिंहनादके द्वारा दशों दिशाओंको गनगनाकर अपनी अपनी सेनामें गये। उन लोगोंकी यह सब सेना, श्वेतछत्र, पताका, ध्वजा, वारण, घोड़ा, रथ और पदातिक लोगोंसे अत्यन्त शोभित हुई। भेरी, पणव, दुन्दुभी, और रथनेमिके शब्दसे पृथ्वी व्याकुल हो गई। महारथ लोग सोनेके अङ्गद, केयूर कार्म्मुक द्वारा आगके पहाड़के समान चमकने लगे। कुरु पितामह भीष्म, पञ्चतारकके सहित महा तालध्वजके द्वारा शोभित होकर कुरुसेनामें मानो विमल सूर्य्यके समान बैठे थे। जो राजा लोग आपकी ओर थे, सब भीष्मकी आज्ञानुसार अपने अपने स्थानपर आ खड़े हुए। गावासन देशके राजा शैव्य पताकाके सहित राजाके योग्य हाथीके द्वारा उन सब राजाओंके साथ गये। जिनकी ध्वजा सिंहकी पुच्छके समान चिचित्र रंगोंकी थी, सो ही कमलके रङ्गवाले अश्वत्थामा सम्पूर्ण सेनाके आगे हुए और बड़ी सावधानी

से चलने लगे। श्रुतायुध, चित्रसेन, पुरुमित्र विविंशति, शल्य, भूरिश्रवा, और महारथ विकर्ण येही सात आदमी उत्तम बर्म्म पहनकर, महा धनुर्द्धर रथोंपर सवार होके भीष्मके आगे और अश्वत्थामा आदिके पीछे चले। इन लोगोंकी चमकती हुई, सोनेकी लम्बी लम्बी पताका उत्कृष्ट रथोंको सुशोभित करके विराजमान होने लगी। आचार्य्योंमें प्रधान द्रोणकी ध्वजामें कमण्डलु और धनुषकी आकृतिसे विभूषित सोनेकी वेदी शोभा पाने लगी। लाखों सेनाओंके परिचालन करनेवाले दुर्य्योधनकी ध्वजामें मणिका नाग विराजमान हुआ। पौरव, कालिङ्गके राजा, काम्बोजके राजा सुदक्षिण, क्षेमधन्वा और शल्य येही लोग रथी दुर्य्योधनके आगे चले। कृपाचार्य्य महार्ह रथपर सवार होके बैलके चिन्हवाली ध्वजासे सुशोभित होकर, मागध सेनाको परिचालन करके उसके आगे चले, बरसातकी घनघोर घटाके समान प्राच्य देशकी वह बड़ी सेना अङ्गराज्य कर्णपुत्र तथा मनस्वी कृपसे रक्षित हुई। बड़े यशवाले जयद्रथ सूअरके चिन्हवाली प्रधान ध्वजासे सुशोभित होकर सेनाके सामने खड़े हुए। दुर्य्योधनके आज्ञाकारी जयद्रथको लाख रथ, आठ हजार हाथी, और अगणित घोड़े थे। तब रथ हाथी घोड़ेवाली वह बड़ी सेना सिन्धुपति राजा जयद्रथसे रक्षित होने लगी। तब समूचे कालिङ्ग देशके राजा केतुमान् साठ हजार रथ और अगणित हाथी लेकर चले। इस सेनासे बड़े पहाड़ोंके समान हाथियोंके झुण्ड चक्र तोमर, तुणीर और पताकाओंसे शोभित होकर अत्यन्त सुन्दर दीखने लगे। कालिङ्गराज अग्निके समान सुख्यध्वजा, श्वेतछत्र, कण्ठा और चंवरसे शोभा पाने लगे। केतुमान्, सो परम अङ्कुशयुक्त हाथीपर सवार होकर मेघसे बैठे सूर्य्यके समान समरमें समागम करने लगे। तेजसे उजियारे राजा भगदत्त प्रधान हाथीपर सवार होकर वज्र रखनेवाले इन्द्रके समान जाने लगे। भगदत्तके समान अवन्ति देशके विन्द और अनुविन्दने, केतुमान्के पीछे पीछे हाथीपर सवार होकर समर यात्रा की। हे महाराज! द्रोणाचार्य्य, राजा शान्तनुके पुत्र (भीष्म आचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामा) बाह्लीक और कृपाचार्य्य, इन लोगोंने जिस रूपसे रथके साथ सेनाकी व्यूह रचना की, उस व्यूहके अङ्ग हाथी सब, मस्तक राजा सब, और पक्ष घोड़े सब हुए। सर्व्वतो मुख ऐसा दारुण व्यूहकी मानो हंसी करते हुए उत्पत्ति होने लगी।

१७ अध्याय समाप्त।

इतनी कथा सुनाकर सञ्जय फिर कहने लगे, हे महाराज! तब एक मुहूर्त्तके बाद लड़नेकी इच्छावाले योधोंके हृदय विदारक शब्द सुन पड़ने लगे। शङ्ख और दुन्दुभीकी बोली हाथियोंका चीत्कार, रथोंकी घरघराहट आदि द्वारा पृथ्वी फटती सी मालूम होने लगी। तब घोड़ोंकी हिनहिनाहट और योधोंके चिकार जैसे पृथ्वी और आकाश दोनों गूजने लगे। आपके लड़कोंकी और पाण्डवोंकी सेना आपसके समागमसे कापने लगी। बस, रणस्थलमें सोनेसे मढ़े रथ और हाथीके झुण्ड बिजली सहित मेघके समान शोभित होने लगे। हे नराधिप! आपकी और सोनेके कामवाली ध्वजा सब जलती हुई आगके समान चमकने लगी जैसे महेन्द्रके घरमें उत्तम महेन्द्रकेतु होता है वैसे आपके पक्षकी और पाण्डवोंके पक्षकी पताका सब देख पड़ने लगी। चमकते हुए सूर्य्यके समान तेजवाले सोनेके कवचोंको पहिरे योधा लोग तेजमान सूर्य्यके समान दीखने लगे। हे महाराज! बड़ी बड़ी आंखवाले, महाधनुर्द्धर, विचित्र आयुध और कार्म्मुकको रखनेवाले बलवान् कुरुपक्षी वीर लोग पताका और

विचित्र अस्त्र शस्त्रोंके द्वारा सेनाके आगे बड़ी शोभा पाने लगे। हे नराधिप! आपके बेटे दुःशासन, दुर्विसह, दुर्मुख, विविंशति, चित्रसेन, महारथ विकर्ण, और सत्य, जय, भूरिश्रवा; और शल यह लोग भी भीष्मकी रक्षा करने लगे बोस हजार रथी इनके साथ हुए। और अभीषाह, शूरसेन, शिवि, वसाति, शाल्व, मत्स्य अम्बष्ठ, त्रिगर्त्त, केकय, सौवीर, कितव और प्राच्य पश्चिम और उत्तर बारह जनपदोंके यह सब शूर तनुत्याग करनेकी प्रतिज्ञा करके बहुत रथोंको साथ लेकर कुरुपितामह भीष्मकी रक्षा करने लगे। मगधके राजा दस हजार हाथीकी सेना लेकर उस रथवाली सेनाके अनुगामी हुए। समूची सेनामें सातलाख आदमी रथमण्डलके चक्ररक्षक और दन्तिदलके पाद रक्षक हुए। नखर और प्रास अस्त्रयोधी कई लाख पैदल, असि चर्म्म और धनुष हाथमें लेकर आगे गये। हे महाराज! आपके पुत्रकी ११ अक्षौहिणी सेना वैसी ही शोभती थी जैसे गगाजीके बीचमें यमुनाजीका सङ्गम हुआ हो।

१८ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! पाण्डुनन्दन युधिष्ठिरने ग्यारह अक्षौहिणी सेनाको व्यूह रचनामें बंधी हुई देखकर अपनी छोटी सेनासे उनके विरुद्ध किस प्रकारसे व्यूह रचना की? जो लोग मनुष्योंकी देवताओंकी गन्धर्व्वोंकी और राक्षसोंकी व्यूहरचना जानते हैं, उनके विरुद्ध पाण्डुपुत्रोंने किस प्रकार प्रति व्यूह रचा।

इतनी बात सुनकर सञ्जय बोले, कि धर्म्मात्मा धर्म्मराज युधिष्ठिर धृतराष्ट्रके पुत्रोंकी सेनाका व्यूह देखकर धनञ्जयसे कहने लगे, हे अर्जुन! महर्षि बृहस्पतिके वाक्योंके द्वारा बहुत लोग जानते हैं, कि छोटी सेनाको खूब मिलाकर लड़ाना चाहिये और बड़ी सेनाको इच्छानुसार विस्तार करके लड़ाना चाहिये। इस लिये बड़ी सेनासे लड़नेके समय छोटी सेनाको चाहिये कि सूचीमुख सैन्यव्यूह करे। सो विपक्षियोंकी अपेक्षा हम लोगोंकी सेना छोटी है, इस कारण महर्षि बृहस्पतिकी बातोंको स्मरण करके सेनाका व्यूह रचो।

धर्म्मराजकी इन बातोंको सुनकर अर्ज्जुनने उत्तर दिया; हे राजसत्तम! वज्रपाणि इन्द्र जिस अचल व्यूहका विधान करते हैं, मैं वही दुर्ज्जय व्यूह आपके निमित्त रचता हूं। इस व्यूहका नाम वज्रव्यूह है। जो चलती हुई तेज हवाके समान है, लड़ाईमें शत्रु जिन्हें जीत नहीं सकते और लड़ाकाओंमें जिनकी गिनती सबसे पहिले होती है, सो ही भीमसेन हम लोगोंके आगे रहकर लड़ाई करेंगे, वह युद्धके उपाय सोचनेमें विचक्षण हैं। वही पुरुषसत्तम भीमसेन हम लोगोंके सेनापति होकर दुश्मनोंकी सेनाको तेजसे मर्द्दन करते हमारे आगे आगे चलेंगे। जैसे सिंहको देखकर क्षुद्र शृगाल सब डरसे कांपते भागते हैं, वैसे ही उनको देखकर दुर्य्योधन आदि बिलकुल पार्थिव लोग थर्रा जायंगे। और जैसे देवता लोग देवराज इन्द्रके शरणागत होते हैं, वैसे ही हम लोग प्रहारक प्रधान भीमको प्राकार (कोटकी भीत) स्वरूप करके प्रस्थान करेंगे और सब प्रकारके भयसे निश्चिन्त हो जायंगे। इस संसारमें कोई मनुष्य ऐसा नहीं है जो अत्यन्त उग्र काम करनेवाले पुरुषप्रवर, क्रोधित भीमसेनका सामने देख सके।

इतनी बात कहकर महात्मा धनञ्जय फाल्गुनने अपने कथनानुसार काम किया और अपनी समूची सेनाकी जल्दी व्यूह रचना करके आगे बढ़ने लगे। कौरवोंकी सेनाको भी आगे बढ़ते देखकर पाण्डवोंकी सेना वैसे ही दीखने लगी, जैसी जीव जन्तुओंके सहित सन्नद्ध और

धीरे धीरे चलनेवाली श्री गङ्गाजीकी छटा होती है। पाण्डवोंकी सेनाके आगे आगे महात्मा भीमसेन, वीर्य्यवान् धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव, राजा धृष्टकेतु और महाराज विराट चले। लेकिन महाराज विराट अपनी एक अक्षौहिणी सेनाको लिये अपने भाई और पुत्रोंके सहित पाण्डव-सेनाके पीछे जाकर उनके पृष्ठरक्षक हुए। भीमसेनकी चक्ररक्षाके लिये महा तेजस्वी नकुल और सहदेव तत्पर हुए। सुभद्राके वेगशील पुत्र और द्रौपदीके बेटे सब भीमसेनके पृष्ठरक्षक हुए। पाञ्चाल राजनन्दन महारथ धृष्टद्युम्न, लड़ाकाओंमें शूर और रथि-प्रधान प्रभद्रक लोगोंके साथ उन सबके रक्षक हुए। तदनन्तर शिखण्डीकी रक्षा यत्नपूर्व्वक करने लगे। तब भीष्मको मार डालनेके निमित्त शिखण्डी भी आगे बढ़े। अर्ज्जुनकी पृष्ठ-रक्षाके निमित्त महाबल युयुधान यत्न करने लगे और उनकी चक्र-रक्षा करनेमें पाञ्चाल युधामन्यु और उत्तमौजा तथा कैकेय लोग, धृष्टकेतु और वीर्य्यवान् चेकितान तत्पर हुए।

इतनी कथा सुनाकर सञ्जय बोले, महाराज। इसी समय महाबल भीमसेनकी ओर दिखलाकर राजा युधिष्ठिरसे वीभत्सु कहने लगे, कि हे जनाधिप। वह भीमसेन यदि बज्रसारमय दृढ़ गदा लेकर अत्यन्त वेगसे विचरण करे तो समुद्रको भी सोख सकते हैं, और इन्हींको देखकर राजा धृतराष्ट्रके यह सब लड़के अपने कुटुम्बोंके साथ अवस्थान कर रहे हैं। सञ्जय बोले, हे भारत। जब अर्ज्जुनने इस तरहकी बात रणभूमिमें कही तब लोगोंने भी उसी तरहकी बात कहकर उनकी प्रतिष्ठा की; परन्तु कुन्तीपुत्र राजा युधिष्ठिर सेनाके बीचमें, चलते हुए पहाड़ोंके समान विशाल-विशाल मत्त हाथियोंसे घिरे ठहरे रहे। महामनस्वी पराक्रमशाली पाञ्चाल राज यज्ञसेन एक अक्षौहिणी सेना लेकर पाण्डवोंकी सहायता कर के निमित्त विराटराजके पीछे जा खड़े हुए। इन सब राजाओंके रथपर सूर्य्य और चन्द्रमाके समान ज्योतिमती, उत्तम सोनेके गहनोंसे शोभित, अनेक प्रकारके चिन्होंसे उपलक्षित, बड़ी बड़ी ध्वजाएं विराज रही थीं। महारथ धृष्टद्युम्न इन सब राजाओंके पीछे जाकर अपने लड़के और भाइयोंको सङ्ग लेकर राजा युधिष्ठिरकी रक्षा करनेमें तत्पर हुए। अर्ज्जुनकी ध्वजामें एक ही महा कपि पाण्डव और कौरवोंकी सब ध्वजाओंको अभिनव करते हुए बैठे थे। कई लाख पैदल सिपाही भीमसेनकी रक्षाके निमित्त असि शक्ति और ऋष्टि धारण करके आगे आगे चले। महाराज युधिष्ठिरके पीछे पीछे दश हजार महाई हाथी चले। ये हाथी, शौर्य्य-सम्पन्न थे, इनके गण्डस्थलसे मद चूता था और उससे पद्मके समान सुगन्धि निकलती थी। इन हाथियोंपर झूल ऐसी उत्तम थी कि हाथी सब चमकीले दीखते थे। जैसे पानी बरसानेवाले मेघोंकी शोभा होती है, वैसे ही ये हेममय हाथी सब रणस्थलमें शोभित थे। पृथ्वीके वर्ष खण्डोंको बिलक्षण करनेवाले विशाल पहाड़ोंसे इन हाथियोंकी तुलना की जा सकती थी। सञ्जय बोले, महाराज। महानुभाव दुराधर्ष भीमसेन परिघके समान भीषण गदाको प्रकर्षण करते हुए बड़ी सेनाको प्रकर्षण करने लगे। सो सूर्य्य और जलती आगके समान दुष्प्रेक्षणीय उन भीमसेनके पास जानेका साहस उन सब योद्धा लोगोंका नहीं हुआ।

इतनी कथा सुनाकर सञ्जय फिर कहने लगे हे पुरुषप्रवर! इस प्रकारसे वज्रनामका घोर व्यूह रचा गया! यह व्यूह सर्व्वतोमुख, शत्रुभय रहित, शरासनके समान अनेक चमकीली ध्वजाओंसे निविष्ट हुआ। महात्मा

अर्जुन गाण्डीव धनुष लेकर इसकी रक्षा करने लगे। सो आपके वाहिनी व्यूहके प्रतिपक्षमें यह बज्र नामका व्यूह रचके पाण्डव लोग स्थिर रहे। जब पाण्डव लोग इस व्यूहकी रक्षा करनेवाले हुए तब इसे मर्त्य-लोकमें अजेय ही समझना चाहिये। हे महाराज! प्रातःसन्ध्याके समय समूची सेना जब व्यूह-रचनाके क्रमसे खड़ी होगई, तब बिना मेघके बिजली चमकने लगी; पानीके बिन्दुओंके साथ वायु बहने लगी, नीचेके स्थलोंसे कङ्कड़ोंको लेकर चारों ओर बड़े वेग-से हवा चलने लगी, और सम्पूर्ण संसारको अन्धकारमें डुबाकर धूल आकाशमें फैल गई। हे भरतवर! बड़ी बड़ी उल्का आगेकी ओर गिरने लगी और उगे हुए सूर्य्यको आहत करती हुई टूकडे होने लगी। हे महाराज! जब समूची सेना तयार हो गई तब सूर्य्य ज्योतिरहित होकर उगे। पृथिवी शब्दसे प्रकम्पमान और घोर शब्दके प्रतिशब्दसे विदीर्ण होने लगी। हे महाराज! तब चारों ओर अनेक निर्घात होने लगे। इतनी धूल उड़ने लगी कि किसी ओर कुछ नहीं देख पड़ता था किङ्किणीके समान शब्द करने-वाली सोनेकी लड़ियोंसे भूषित और सूर्य्यके समान पताकाओंसे सुशोभित बड़ी ध्वजा हवा-से सहसा कम्पमान होने लगी और इससे ताड़के पेड़के वनके समान सब स्थानोंमें झन झन शब्द होने लगा।

हे भरतप्रधान! जैसे जानवरोंमें बाघ होते है वैसे ही मनुष्योंमें पाण्डव है। सो वह लो आपके पुत्रोंके सैन्यव्यूहके विपक्षमें अपना सैन्य व्यूह रच करके और हाथमें गदा लिये हुए भीमसेनको आगे खड़े देखकर ऐसे युद्धोत्साही मालुम होते थे मानो हम लोगोंके योधाओंके मज्जाग्रास कर डालेंगे।

१८ अध्याय समाप्त।

इतनी कथा सुनकर महाराज धृतराष्ट्रने सञ्जयसे पूछा; हे सञ्जय! सूर्य्योदय होनेके बाद भीष्मका अधिकार माननेवाली हम लोगोंकी सेना और भीमसेनका अधिकार माननेवाली पाण्डवोंकी सेना इन दोनो सेनाओंमें कौन सेना लड़ाईके निमित्त पहले सामने आई? चन्द्रमा सूर्य्य और वायु किस सेनाके लिये अरिष्ट करनेवाले हुए? किस सेनाकी ओर श्वापदोंने अशुभ शब्द किया? और किन किन जवानोंके मुखपर प्रसन्नता झलकती थी? सो सब बातें आप मुझे यथार्थ कह सुनाइये।

इन बातोंको सुनते ही सञ्जयने कहा हे नरेन्द्र! दोनो सेना बराबर ही उपक्रान्त हुई; व्यूहित होनेसे दोनो हृष्टरूप दीखती थी; दोनो सुन्दर वनकी शोभा धारण करके अद्भुत रूपकी हुई; हाथी, रथ, घोड़ेसे दोनो भरी थी; दोनो ओरकी सेना बहुत बड़ी और भीषणाकृति दीखती थी, दोनो एक दूसरेके लिये असह्य मालूम होती थी। दोनो व्यूह स्वर्ग जय प्राप्त करनेके लिये निर्म्मित हुए थे और दोनो सत्पु-रुषोंके द्वारा उपयुक्त किये गये थे। धृतराष्ट्रके पक्षकी कुरुसेना पूरब किनारे खड़ी तथा पश्चिम दिशाको मुह किये, और पाण्डवोंकी सेना पश्चिम किनारे खड़ी और पूरब दिशाको मुह किये युद्ध करनेको उत्सुक थी। उन दोनो सेनाओंकी ओर देखनेसे मालूम होता था जैसे कुरुसेना दैत्योंके राजाकी हो और पाण्डवोंकी सेना देवराज इन्द्रकी हो। हवा पाण्डवोंके पीछेसे पूरबकी ओर बहने लगी। श्वापद कुरु-सेनाकी ओर शब्द करने लगे। पाण्डवोंकी सेनाके गजेन्द्रोंके गण्डस्थलसे चूनेवाले मदकी सुगन्ध आपके पुत्रोंके नाग सह नहीं सके।

दुर्य्योधन सोनेके जालदार कक्षका पहिरे मदचूते हुए कमल रङ्गके हाथीपर सवार होकर कुरुसेनाके बीचमें विराजमान रहे। मागध और बन्दी लोग उनकी स्तुति करने लगे।

उनके शिरके ऊपर सोनेकी मालाओंसे विभूषित चन्द्रमाके समान चमकनेवाला सुफेद छाता लगाया हुआ, शोभा पा रहा था। पहाड़ी गान्धार प्रदेशमें उत्पन्न सिपाहियोंकी सेनाको सङ्ग लिये गान्धारराज शकुनि उनके पीछे हुए। सुफेद तलवार, और सुफेद उष्णीषके साथ बूढ़े भीष्म, सुफेद छाता रहनेके कारण सुफेद पहाड़की तरह शोभायमान होकर समूची सेनाके आगे हुए। उनकी सेनामें धृतराष्ट्रके सब बेटे, बाह्लीक प्रदेशके एक अधिपति राजा शल सिन्धु प्रदेशके सब अम्बष्ठ और क्षत्रिय लोग, सौवीर और पञ्चनद प्रदेशीय शूरलोग निविष्ट रहे। लाल घोड़ेवाले सुवर्णरथपर सवार होकर अदीनसत्त्व महात्मा गुरु द्रोण शरासन हाथमें लेकर प्रायः सब राजाओंके पीछे पीछे इन्द्रकी तरह सेनाकी रक्षा करने लगे। वार्द्धक्षत्रि, भूरिश्रवा, पुरुमित्र, जय, शल्य, मत्स्यदेशवाले और केकयराज सब भाईयोंके साथ, अपना अपना हाथी और सेना लेकर लड़ाई करनेके लिये उस सैन्यके बीचमें उपस्थित हुए। जिनके रथका अग्रभाग उत्कृष्ट रहता है सो ही महात्मा गौतमवंशीय शरद्वतके बेटे विचित्र योधा महाधनुर्द्धर कृप, शक किरात यवन और पह्लव लोगोंके साथ उत्तरकी ओर गये विख्यात महारथी आयुधधारी वृष्णि और भोज लोग तथा सौराष्ट्र देशीय योधा लोगोंके द्वारा रक्षित जो बड़ी सेना थी और जिसकी रक्षा कृतवर्म्मा करते थे सो ही बड़ी सेना आपकी सेनाके दक्षिण भागमें गई। हे राजन्! अयुत संख्या रथी जो संशप्तक लोग थे, वे सब, "अर्ज्जुनको हम ही लोग मार डालेंगे वा वही हम लोगोंको मारडालेंगे" यही सिद्धान्त करके और तयार होके, जहां अर्ज्जुन खड़े थे वहीं, यमके समान चले गये, और शौर्य्यसम्पन्न शस्त्रधारी त्रिगर्त्तके लोग भी वहीं चले गये। हे भारत। आपको सेनामें एक लाख प्रधान गजारोही योद्धा है। उनमें बहुतसे गजारोहियोंके पास एक एक सौ रथी, प्रत्येक रथीके पास एक एक सौ घुड़सवार, प्रत्येक घुड़सवारके पास दस दस धनुषधारी, और एक एक धनुषधारीके साथ दस दस आदमी चर्मी अवस्थित हुए। शान्तनुके पुत्र महात्मा भीष्मने प्रधान सेनापति होकर आपका सैन्यव्यूह इस तरहसे बनाया। वह किसी दिन मानुष व्यूह, किसी दिन दैव व्यूह, किसी दिन गान्धर्व्व व्यूह, और किसी किसी दिन असुर व्यूह रचना करते थे। महारथिओंके समूहमें कई प्रकारकी होकर समुद्रकी तरह निर्घोषवान् कुरुसेना व्यूहयुद्धमें पश्चिम मुंह अवस्थित रही। हे नरेन्द्र। आपकी सेना असीम संख्यक होनेके कारण भीषण रूपकी हुई। यद्यपि पाण्डवोंकी सेना इतनी बड़ी नहीं थी, तौभी उनकी सेना और भी बहुत बडी और दुर्द्धर्षणीय मालूम होने लगी, क्योंकि केशव और अर्ज्जुन उनके नेता थे।

२० अध्याय समाप्त।

इतनी कथा कहकर सञ्जय फिर बोले हे महाराज! कुन्तीपुत्र राजा युधिष्ठिर धार्त्तराष्ट्रीय सेनाको अत्यन्त बड़ी और उद्यत देखकर विस्मित होगये। उन्होंने भीष्मका रचा हुआ व्यूह अभेद्य देखकर उसे वास्तवमें अभेद्य समझकर विवर्ण होगये और अर्ज्जुनको कहने लगे, हे महाबाहु धनञ्जय। जिन लोगोंकी ओर पितामह योद्धा हुए है, उस धार्त्तराष्ट्रीय सेनाके साथ संग्राममें हम लोग किस प्रकारसे लड़ सकेंगे? भूरितेजा अमित्रकर्षण भीष्मने शास्त्रके अनुसार अक्षोभ्य और अभेद्य व्यूह रचना करडाली है। शत्रुकर्षण! इससे मुझे और मेरी सेनाको संशय हो गया है कि इस व्यूहसे हम लोग किस प्रकारसे जय प्राप्त कर सकते हैं?

इतनी कथा कह सञ्जय फिर कहने लगे

हे राजन्! दुश्मनोंको मारनेवाले अर्जुन कनौती आखोंसे विषस्स युधिष्ठिरको देखकर कहने लगे। हे नरेन्द्र! थोड़ेसे शूरलोक बुद्धि द्वारा जिस प्रकारसे गुणयुक्त बहुसंख्य समधिक असुर लोगोंको जीत सके हैं सो आप सुनिये। आप असूयारहित हैं; आपको मैं इसका कारण बतलाता हूं, आप सुनिये। श्रीनारद ऋषि इसको जानते हैं और भीष्म और द्रोणको भी यह बात मालूम है। ऐसा ही अवसर पाकर पूर्व्वकालमें श्रीब्रह्माजीने देवासुर संग्राममें इन्द्रादि देवताओंको यह उपदेश दिया था। "जय प्राप्त करनेवाले लोग बल वीर्य्यके द्वारा उतने विजयी नहीं होते हैं जितने सत्य, अनृशंसता, धर्म्म और उद्यमके द्वारा होते हैं। इस लिये तुम लोग धर्म्माधर्म्म, लोभ रहित, उद्यमको आश्रित और अहङ्कार रहित होकर युद्ध करो; क्योंकि जहां धर्म्म है वहीं जय भी रहता है।" हे राजन्! आप भी ऐसा ही समझिये। लड़ाईमें हम ही लोग जीतेंगे। श्रीनारदजीने कहा है कि जिस और श्रीकृष्णजी रहेंगे उसी और जय होगा। जय श्रीकृष्णजीके साथ गुणभूत होकर रहा है, इस लिये वह उन्हीके पीछे पीछे जाता है। उनका एक गुण जैसे विजय है, वैसे ही नम्रता भी एकगुण विराजमान है। जो गोविन्द अनन्त तेजस्वी सनातनतम पुरुष शत्रुसमूहमें भी विना क्लेशके रहते हैं, सो ही श्रीकृष्णजी जिस और हैं उसी और जय होगा। शस्त्रोंसे नहीं मारेजानवाले इन्ही वैकुण्ठवासी हरिने पूर्व्वकालमें आविर्भूत होकर देवताओं और असुरोंसे अति गम्भीर स्वरमें पूछा था "कौन जयी होगा? उसके बाद जिन लोगोंने उस समय कहा "हे कृष्ण! हम लोग जयी हुए। वहां श्रीकृष्णजीके प्रसादसे इन्द्रादि देवता सबोंने इस तरहपर कहके जयलाभ कर, त्रैलोक्य प्राप्त किया था। इस लिये हे भारत! विश्वभुक् त्रिदिवेश्वर वही हरि जब हम लोगोंके जय होनेके लिये इच्छा करते हैं, तो इस जयके होनेके विषयमें कुछ कष्ट मुझे नहीं दीखता है।

२१ अध्याय समाप्त।

इतनी कथा सुनाकर सञ्जय फिर बोले, हे भरतर्षभ! इसके बाद भीष्मको सेनाके प्रतिपक्षमें व्यूह रचना कर लेने पर अपनी सेनाको राजा युधिष्ठिर समझाने लगे। "हे विशुद्धाशय लोगो! देखो! देखो, पाण्डवोंने अपने शत्रुओंके प्रतिपक्षमें यथोद्दिष्ट अनीक व्यूहकी रचना कर ली है, तुम लोग परम स्वर्गके अभिलाषी होकर युद्ध करो।" सव्यसाची, और शिखण्डी उनकी सेनाके मध्य भागकी रक्षा करने लगे। धृष्टद्युम्नके अग्रभागकी रक्षा भीमसेन स्वयं करने लगे। सात्वतवंशके प्रधान धनुष्मान् श्रीमान् युयुधान इन्द्रके समान दक्षिण दिशामें अवस्थित अनीक लोगोंकी रक्षा करने लगे। नागसमूहके बीच राजा युधिष्ठिर रथपर सवार हुए। इस रथकी बनावटमें कारीगरी इतनी थी कि यह इन्द्रके रथके समान दीखता था, उसमें सोने आदि रत्नोंका विचित्र काम किया हुआ था, उसके घोड़ोंके अलङ्कार भी काञ्चनमय थे। हाथीदांतकी राठी सहित पीले रंगका छाता उनके सिरपर ताना हुआ बहुत शोभायमान मालूम होता था। महर्षि लोग प्रदक्षिणा करके उनको स्तुति करने लगे। उनके चारों और पुरोहित और वेदके जाननेवाले ब्रह्मर्षि और सिद्ध लोग जप, मन्त्र और ओषधि तथा स्वस्त्ययन वाक्य कहकर उनके शत्रुका वध मनाने लगे। तब कुरुसत्तम महात्मा युधिष्ठिर वस्त्र, गो, फल, पुष्प, और निष्क ब्राह्मणोंको प्रदान करते हुए देवराज इन्द्रके समान गमन करने लगे। अर्जुनके जिस रथके सारथी केशव हुए उसमें श्वेत घोडे जुते थे। सचक्रयुक्त सौ घण्टियोंसे शोभित,

सबसे उत्तम जाम्बूनद सुवर्णसे विचित्र सहस्र सूर्य्यके समान तेज रखनेवाला वह रथ अर्चिमाली अग्निके समान प्रकाश होने लगा। जिनके समान धनुर्द्धर पृथिवीपर आजतक कोई नहीं हुआ और शायद कोई होगा भी नहीं और जिनके रथध्वजपर कपिवर श्रीहनुमानजी विराजमान थे सो ही अर्जुन गाण्डीव और वाण हाथमें लेकर उस रथपर आरूढ़ हुए। सुन्दर हाथवाले जो भीमसेन अस्त्र रहित होकर भी केवल दोनो हाथोंसे मनुष्य, अश्व और हाथियोंको लड़ाईमें राखके समान धूल बना दे सकते हैं; उन्होंने आपके लड़के और सेनाको मारनेकी प्रतिज्ञा करके अतीव रौद्र-रूप धारण किया। नकुल और सहदेव भी व्यवस्थानुसार वीरो और रथियोंके रक्षक हुए। हे महाराज! मनुष्योंमें महेन्द्रकल्प और गज-राजके समान दर्पवान् और वसा हो मत्त भीम-सेनको सिंहवरके समान खेलनशील, दुरासद और सेनाके आगे आगे आते देखकर आपके पक्षीके योधा लोग भयसे उद्विग्न होकर पांकमें फँसे हुए हाथियोंके समान बहुत व्यथित होने लगे। हे भरतश्रेष्ठ! जनार्द्दन कृष्ण सेनाके बीचमें खड़े हुए दुरासद राजपुत्र गुड़ाकेशसे कहने लगे। श्रीकृष्णजी बोले, हे पुरुषप्रवीर! जिन्होंने तीन सौ अश्वमेध आहरण किये थे वही कुरुकुलकेतु अत्यन्त पराक्रमी यह भीष्म सेनाके मध्यमें उसकी रक्षा कर रहे हैं, वह हम लोगोंकी सेनासे अपनी सेनाको सिंहकी समान रक्षा कर रहे हैं। जैसे मेघमाला तेज-वान् सूर्य्यको छिपा देती है वैसे ही यह समूची सेना इन महानुभाव भीष्मको छिपा रही है। इस लिये तुमको चाहिये कि इस समूची सेनाको नाश करके इन भरतवर भीष्मके साथ युद्ध करो। इतनी कथा सुनाकर सञ्जय फिर कहने लगे, कि हे महाराज! श्रीकृष्ण धार्त्त-राष्ट्रीय सेनाको लड़नेके लिये प्रस्तुत देखकर अर्जुनकी भलाईके निमित्त फिर उनसे कहने लगे। श्रीकृष्ण बोले, हे महाबाहो! शत्रुको जीतनेके निमित्त तुम पवित्र होकर संग्रामकी ओर मुंह करके श्री दुर्गाजीका स्तोत्रपाठ करो।

बुद्धिमान् वासुदेवजीने जब अर्जुनसे रण-स्थलमें इतनी बात कही, तब अर्जुन रथसे पृथिवीपर उतरकर हाथ जोड़के श्रीदुर्गाजीका स्तव करने लगे। अर्जुन पाठ करने लगे, हे आर्य्ये! हे सिद्धसेनानि! हे कुमारि! हे कालि! हे कपालि! हे कपिले! आपको मैं नमस्कार करता हूं। हे भद्रकालि! आपको नमस्कार करता हूं। हे महाकालि! आपको नमस्कार करता हूं। हे चण्डि! हे चण्डे! हे तारिणी! हे वर्णिनि! आपको नम-स्कार करता हूं। हे कात्यायनि! हे महाभागे! हे करालि! हे विजये! हे जये! हे शिखि-पिच्छ ध्वजाधारिणि! हे नानाभरण भूषिते! हे अट्टशूलप्रहरणे! हे खड्गखेटक धारिणि! हे गोपेन्द्रकन्ये! हे ज्येष्ठे! हे नन्दगोप-कुलोद्भवे! हे सततमहिषसृधिरप्रिये! हे कौशिकि! हे पीतवाससि! हे अट्टहासिनि! हे वृन्दमुखि! हे रणप्रिये! आपको नमस्कार करता हूं। हे उमे! हे शाकम्भरि! हे श्वेते! हे कृष्णे! हे कैटभनाशिनि! हे हिरण्याक्षि! हे विरूपाक्षि! हे सुधूम्राक्षि! आपको नमस्कार करता हूं। हे वेदश्रुते! हे महापुण्ये! हे ब्रह्मण्ये! हे जातवेदसि! जम्बुद्वीप और देवालय आपके नित्य सन्निहित स्थान हैं। आप विद्या समुदायमें ब्रह्मविद्या हैं और देहियोंकी महानिद्रा हैं। हे स्कन्द-मातः! हे दुर्गे! हे दुर्गमपथवासिनि! आप स्वाहा, स्वधा, कला, काष्ठा, सरस्वती सावित्री, वेदमाता, वेदान्तमें कही गई हैं, हे महादेवि! मैं विशुद्ध चित्तसे आपका स्तव करता हूं। आपके प्रसादसे चारों लड़ाईमें नित्य मेरी जीत हो। भयके स्थलमें, घोर वनमें,

दुर्गोंमें, भक्त लोगोंके घरमें और पातालमें आप नित्य वास करती हैं, और, लड़ाईमें दानवोंका नाश करती हैं। आप जृम्भणी, मोहिनी, माया, लज्जा, श्री, दीप्ति, चन्द्र सूर्य्यको बढ़ानेवाली, और भूतिशाली लोगोंके लिये भूति होती है और सिद्धचारण लोगोंके तलस्थानसे ज्ञानगम्या होती है।

सञ्जय बोले, जब अर्जुनने भगवती श्रीदुर्गाजीका ऐसे स्तव किया, तब, मनुष्योंपर कृपा करनेवाली श्रीदुर्गाजी अर्जुनकी भक्ति देखकर अन्तरीक्षमें प्रगट हुई और श्रीगोविन्दके आगे खड़ी होकर अर्जुनसे कहने लगीं। भगवती बोलीं, तुम थोड़े ही समयमें शत्रुओंको जय कर लोगे, हे दुर्द्धर्ष! तुम नारायणकी सहायता करनेवाले नर हो; लड़ाईमें शत्रु तुमको जीत नहीं सकेंगे; स्वयं इन्द्र अपना बज्र लेकर आवेंगे तौभी तुमसे जीतकर नहीं जायंगे। सञ्जय बोले, इतना कहकर वरदेनेवाली भगवती उसी समय अन्तर्हित हो गईं। कुन्तीनन्दन अर्जुन वर लाभ करके मन ही मन कहने लगे, मैं अवश्य जीतूंगा और इसके बाद सब लोगोंकी रायसे फिर रथपर सवार हुए। श्रीकृष्णजी और अर्जुन एक ही रथपर बैठकर दिव्य शङ्खध्वनि करने लगे। जो मनुष्य भोर ही उठकर इस स्तोत्रका पाठ किया करेंगे, उन्हें कभी यक्ष, राक्षस, और पिशाचका भय नहीं होगा, उनका कोई शत्रु नहीं रहेगा; और दांत काटनेवाले सर्प आदि जो हिंसक जीव हैं उनका और राजकुलका भय भी नहीं रहेगा; वे लोग अवश्य ही विवादमें जय लाभ करेंगे, बन्धनसे मुक्त होंगे, दुर्गम स्थानसे निकल जायंगे; सग्राममें नित्य विजय लाभ करेंगे, उन्हें चोरका भय नहीं रहेगा; लक्ष्मी उनके यहां सदा रहेंगी; और वे अरोग और बलवान् होकर सौ वर्ष जीवेंगे। हे भारत! हम धीमान् श्रीव्यासदेवजीकी कृपासे यह जानते हैं, किन्तु आपके दुराशय पुत्र सब क्रोधके वश होकर और कालके फांसमें बंधकर इन नरनारायण ऋषिको मोह प्रयुक्त जान नहीं सकते हैं; और यह भी नहीं जानते हैं कि यही राज्य काल होकर प्राप्त हुआ है। द्वैपायन, नारद, कण्व, राम, नभ, उन सब लोगोंने आपके पुत्रोंको निवारण किया था, पर उनकी बातोंको इन लोगोंने कुछ नहीं माना। जहां धर्म्म, द्युति और कान्ति रहती है, जहां लज्जा, श्री और मति रहती है, वहीं श्रीकृष्णजी रहते हैं, और जहां श्रीकृष्णजी रहते हैं वहीं जय होती है।

२२ अध्याय समाप्त।

इतनी कथा सुनकर राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! उस लड़ाईमें किस पक्षके योधाने प्रविष्ट होकर आगे लड़ाई की थी? कौन उत्साहित चित्त थे और कौन दीनचित्त हुए थे? कलेजा डोलानेवाली उस लड़ाईमें हमारे पक्षवालेने वा पाण्डव पक्षवालेने पहिले प्रहार किया था? किस ओरकी सेनाका गन्ध और मालाका प्रादुर्भाव हुआ था? और किस पक्षके बहुत चिकरनेवाले योद्धा लोगोंकी अनुकूल बोली हुई थी? ये सब बातें आप हमें समझाकर कहें। इतनी बात सुनकर श्री सञ्जयजी बोले, कि दोनों पक्षोंके सेनाके योद्धा लोग हर्षान्वित होगये थे, दोनों पक्षोंमें माला और सुगन्धका समान ही प्रादुर्भाव हुआ था। हे महाराज! समुन्नत बद्धवर्म्मा व्यूहित समस्त सेनाके परस्पर संसर्गसे बड़ा भारी घोर शब्द हुआ। शङ्ख, भेरीके बजनेसे और लड़ाके शूर लोगोंके आपसमें गरजनेसे बड़ी भारी ध्वनि हुई। हे महाराज! परस्पर वीक्षणकारी हृष्ट चित्त और निनादकारी दोनों पक्षीय सेनाके योद्धा लोग और हाथी सब व्यूहके बड़े व्यतिकर हुए।

२३ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! हमारे पक्षवाले योद्धा लोग और पाण्डव लोग लड़ाई करनेकी इच्छासे धर्म्मक्षेत्रमें एकत्र होकर क्या करने लगे? सञ्जय कहने लगे, हे महाराज! दुर्य्योधन तब पाण्डव सेनाको व्यूहित देखकर आचार्य्यके पास गये और कहने लगे, कि हे आचार्य्य! यह देखिये, आपके शिष्य धीमान् द्रुपदपुत्र पाण्डवोंकी बड़ी सेना व्यूहित कर रहे हैं। इस पक्षके शूर सब महाधनुर्द्धर हैं और लड़ाईमें भीम और अर्ज्जुनके समान हैं। युयुधान, विराट, महारथ द्रुपद, धृष्टकेतु, चेकितान, वीर्य्यमान् काशिराज, पुरुजित्, कुन्तिभोज, नरश्रेष्ठ शैव्य, विक्रान्त युधामन्यु, वीर्य्यवान् उत्तमौजा, सुभद्रानन्दन और द्रौपदीके पुत्र लोग, सबके सब महारथ हैं। परन्तु हे द्विजोत्तम! हम लोगोंके पक्षमें जितने प्रधान योद्धा हैं उनका भी नाम सुनिये। जो लोग हमारी सेनाके नायक हुए हैं उनका नाम आपको कहता हूं। आप, भीष्म, कर्ण, युद्धविजयी कृप, अश्वत्थामा, विकर्ण, सोमदत्तके पुत्र भूरिश्रवा, जयद्रथ और अन्यान्य बहुतसे वीर लोगोंने हमारे निमित्त जीनेकी आशा छोड़कर लड़ाई करनेका सङ्कल्प किया है। ये सब लोग नाना शस्त्रोंका प्रहार कर सकते हैं और बड़े बुद्धिमान् हैं। हमारी यह सेना इतनी बड़ी भारी और भीष्मके द्वारा रक्षित होनेपर भी असमर्थ मालूम होती है, और पाण्डवोंकी यह इतनी छोटी और भीमके द्वारा रक्षित होनेपर समर्थ बोध होती है, इस लिये आप लोग रणभूमिके पूर्व्वापरादि यथायोग्य दिग्विभागकी जगहपर खड़े रहें और भीष्मकी रक्षा करें।

प्रतापवान् कुरुपितामह बूढ़े भीष्म दुर्य्योधनको खुश करते हुए बड़े जोरसे शङ्खध्वनि की। इसके बाद ही रणस्थलमें सब जगह शङ्ख, भेरी, पणव, पटह और गोमुखके बोलनेके बड़े घोर शब्दसे भारी कोलाहल होने लगा। तब श्वेत घोड़ोंके महारथपर श्रीकृष्णजी और श्री अर्ज्जुन महाराज दोनो दिव्य शङ्खध्वनि करने लगे। भगवान् हृषीकेशने पाञ्चजन्य और धनञ्जयने देवदत्त शङ्ख बजाये। भीम कर्म्म करनेवाले वृकोदर पौण्ड्रनामका शङ्ख बजाने लगे। युधिष्ठिरने अनन्तविजय नामका शङ्ख नकुलने सुघोष शङ्ख, और सहदेवने मणिपुष्पक शङ्ख बजाये। सञ्जय बोले, हे महीपते! महाधनुर्द्धर काशिराज, महारथ शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, विराट, अपराजित सात्यकि, द्रुपद, और द्रौपदीके पुत्र और महाबाहु सुभद्रानन्दन अभिमन्यु, ये सब लोगोंने पृथक् पृथक् अपना अपना शङ्ख बजाया उस शङ्खध्वनिसे भूमण्डल गूंज गया और आपके पक्षवालोंका कलेजा फट गया। हे महिपाल! तदनन्तर जब अस्त्रशस्त्र चलानेका समय आया, तब हनुमानजीकी ध्वजावाले अर्ज्जुन धृतराष्ट्रपक्षीय योद्धा लोगोंको लड़ाई करनेके लिये तैयार देखकर शरासनको सम्भालके हृषीकेश भगवान्को यों कहने लगे। अर्ज्जुन बोले, हे अच्युत! जो लोग लड़ाई करनेके लिये उपस्थित हुए हैं, उन लोगोंको जिसमें मैं देख सकूं वैसे ही ढंगसे रथको दोनो पक्षोंकी सेनाओंके बीचमें ठहराइये, लड़ाईके प्रारम्भ होनेपर मुझे किन किन लोगोंसे लड़ना पड़ेगा, और कौन कौन लोग दुर्बुद्धि दुर्य्योधनकी भलाई करनेकी इच्छासे यहां आये हैं, उन सब लड़नेवालोंको मैं देखना चाहता हूं।

इतनी कथा सुनाकर सञ्जय फिर कहने लगे, हे भारत! हृषीकेश श्रीकृष्णने गुड़ाकेश अर्ज्जुनकी इतनी बात सुनते ही दोनो सेनाओंके बीचमें भीष्म, द्रोण, और समस्त राजाओंके सामने बड़े रथको खड़ा करके बोले, हे पार्थ! लड़नेके लिये आये हुए इन सब कुरुपक्षियोंको आप देखिये। पार्थने वहां देखा, कि व

दादा लोग, मामा लोग, भाई लोग, बेटे भतीजे लोग, पोते लोग, ससुर लोग, मित्र और साथी लोग दोनो सेनाओंमें विद्यमान हैं। कुन्तीपुत्र अर्जुन उनसब बन्धुबान्धवोंको लड़ाई करनेके लिये तयार देखकर परम कृपा-परायण और विषस होकर कहने लगे कि हे कृष्ण! इन सब स्वजनोंको एक दम तयार देखकर मेरा गात्र अवसन्न होता है, मुह सूख ता है, देह काप रही है, लोमहर्षण होता है, हाथसे गाण्डीव धनुष गिरा जाता है, चमड़ा गरम हो गया है और मन बहुत घबड़ा गया है, अब मैं यहां नहीं ठहर सकता हूं। मैं इन सब लक्षणोंको अशुभ-सूचक समझता हूं। मैं नहीं समझता हूं कि अपने लोगोको मारकर मै किसी प्रकारसे श्रेय प्राप्त कर सकूगा। अब मैं विजय प्राप्त करनेको इच्छा नहीं करता हू और मुझे राज्य वा सुखकी भी चाह नहीं है। हे गोविन्द! हम लोगाको राज्य वा भाग वा जीवनका क्या प्रयाजनहै? जिनके लिये हम लाग राज्य, भाग वा सुखकी अभिलाषा करते है, यह देखिये। वे ही लोग धन और प्राण परित्याग करनेको मुस्तैद होकर लड़ाईमें उपस्थित हुए हैं। गुरु, चचा बेटा, दादा, मामा ससुर, पिता, और अत्यन्त समीप सम्बन्धीय सब यहां वर्त्तमान है। हे मधुसूदन! ये हम लागोंको मार डालें तो भी इस पृथिवोके निमित्त क्या बल्कि त्रैलोक्य राज्यका लाभ करनेके लोभसे भी इन सबको मारनेमें मेरो इच्छा नहीं होती है। हे जनार्दन! राजा धृतराष्ट्रके बेटोंको मारकर क्या हम लोगोको आपसमें प्रीति बढ़ जायगी? अगर ये सब आततायो हों, तौ भी इन्हें मारनेसे हम सबको पाप ही आकर घेरेगा। (आग लगनेवाले, विष देनेवाले, शस्त्र उठाकर मारनेको उद्यत होनेवाले, भूमि हरलेनेवाले तथा स्त्री हरलेनेवालेको आततायी कहते हैं)। हे माधव! दुर्य्योधनको सबान्धव मारडालना हम लोगोंको उचित नहीं है। हम लोग स्वजनको मारकर किस तरहसे सुखी हो सकेंगे? यद्यपि यह सब राज्य-लाभसे अविवेक चित्त होकर मित्रद्रोह करनेका पाप और कुलक्षय करनेका दोष देख नहीं सकते है, तो भी कुलक्षय करनेके दोषको जानकर हम लोग उस महा पापसे बचनेको चेष्टा क्यों नहीं करें? कुलक्षय होनेसे सनातन कुलधर्म्म विनाश होजता है धर्म्म नष्ट हो जानेसे अधर्म्ममें कृतघ्नकुल आक्रान्त होजाता है, और अधर्म्मके सञ्चार होनेसे कुल स्त्रिया दूषिता हो जाती है। हे कृष्ण! स्त्रियोंके दूषित होनेसे वर्णसङ्करोंको उत्पत्ति होती है। उस वर्णसङ्कर दोषसे कुलघातियोंका कुल नरकको जाता है; और वंश लोप होनेसे उन सबके पितृ लोग भी पिण्डोदकसे विवर्ज्जित होकर नरकमें पतित होते हैं। कुलक्षयकारियोंके इस वर्णसङ्कर दोषसे परम्पराके जातिधर्म्म, कुलधर्म्म, और आश्रमधर्म्म उठ जाते हैं। हे जनार्दन! मैने सुना है, कि जिन लोगोंका कुलधर्म्मका नाश होजाता है वे लोग अवश्य ही नरकमें जाते ज़ाते हैं। हे कृष्ण! हम लोग यह महत् पाप करनेकी चेष्टा कर रहे है। राज्य सुख लाभ करनेके लोभसे स्वजन लोगोंको मारडालनेके लिये तयार हुए हैं। इस लिये यदि मैं शस्त्रहीन और प्रतिकार चेष्टा-रहित हो जाऊं, और राजा धृतराष्ट्रके लड़के लोग हाथमें शस्त्र लेकर रणस्थलमें मेरा विनाश करें, तौ भी मेरा एक तरहसे कल्याण ही हो।

इतनी कथा सुनाकर सञ्जय बोले, हे महाराज! अर्जुन ये सब बातें कहके, रणक्षेत्रमें शर शरासन परित्याग करके, शोकसे चित्त सन्तप्त होजानेके कारण रथमें चुप चाप बैठ गये।

२४ अध्याय समाप्त।

उस तरहसे जब अर्ज्जुन कृपाविष्ट और आंखोंमें आंसू भरकर विषण्ण होके बैठ गये तब मधुसूदनने उनसे कहा, हे अर्ज्जुन । इस सङ्कट समयमें क्यों आपको मोह उत्पन्न हुआ है? इस मोहके फन्देमें आर्य्य लोगोंको न फंसना चाहिये, इससे स्वर्ग नहीं मिलता और कीर्त्ति-का नाश हो जाता है। हे परन्तप कौन्तेय। आपको कातर होना नहीं चाहिये। कातर होना आपके लिये योग्य नहीं है। हृदयकी दुर्व्वलता तुच्छ पदार्थ है, सो आप उसे परित्याग करके उठिये।

अर्ज्जुन बोले, हे शत्रुओंको मारनेवाले मधुसूदन। मैं पूजनीय भीष्म और द्रोणके साथ किस प्रकार लड़ाईमें अस्त्र लेकर लड़ूंगा? महानुभाव गुरुओंको नहीं मारनेसे भिक्षान्न भोजन करना पड़े तो सो भी मुझे श्रेय मालूम होगा, क्योंकि इन गुरु लोगोंको मारनेसे इसी लोकमें रुधिर लिप्त अर्थ काम उपभोग करना होगा। अगर मैं विपक्ष लोगोंको जीत लूंवा वे ही सब हम लोगोंको जीतलें, तो दोमेंसे किसी बातके होनेमें मैं कल्याण नहीं देखता हूं क्योंकि जिन लोगोंको मारकर स्वयं जीवित रहनेकी इच्छा नहीं करता हूं वे ही धृतराष्ट्र पक्षीय सब सामने खड़े हैं। इन लोगोंको मारकर मैं कैसे जीवन धारण करूंगा। यही भावना रूप दैन्यभावसे और कुलक्षय करनेके दोषकी भावनासे मेरा स्वभाव अभिभूत और चित्त ऐसा घवड़ा गया है कि मैं नहीं कह सकता हूं कि धर्म्म विषयमें मुझे क्या करना उचित है। मैं आपके वश हूं, और आपके शरणागत हूं; इस लिये आपसे पूछता हूं, जिससे श्रेय हो सो आप निश्चित रूपसे आदेश कीजिये। मुझे पृथिवीमें निष्कण्टक राज्य और सुर लोकका आधिपत्य भी लाभ हो तो भी मुझे कोई काम नहीं सूझता है, जिसके द्वारा मेरे इन्द्रिय-शोषक इस महा सन्तापका अपनोदन हो सके। सञ्जय बोले, कि हे महाराज। इसके बाद गुड़ाकेश अर्ज्जुन शत्रुतापन हृषीकेश श्रीगोविन्दको यह कहकर चुप हो बैठे कि मैं लड़ाई नहीं करूंगा।

इतनी कथा सुनाकर सञ्जय फिर कहने लगे, हे भारत। दोनो सेनाओंके बीचमें अर्ज्जुनको विषादसे भरे देखकर श्रीभगवान् हृषीकेश हंसकर उनसे कहने लगे। भगवान् बोले, हे अर्ज्जुन। आप सब बात तो पण्डितोंके समान बोलते हैं, परन्तु उन बन्धुओंके लिये शोक करते हैं जिनके लिये शोक करना उचित नहीं है। जो लोग सोच विचार कर काम करते हैं, वे सब जीते हुए मरे भाई बन्धुओंके लिये यह शोक नहीं करते हैं कि हम बन्धु विहीन होकर कैसे जीवेंगे, क्योंकि ऐसा कोई नहीं कह सकता है, कि मैं पहिले कभी नहीं था, वा आप पहिले कभी यहीं थे वा ये राजा लोग पहिले कभी नहीं थे अथवा हम लोग इसके बाद और कभी नहीं रहेंगे। शरीरका अभिमान करनेवाले जीवोंका जैसे लड़कपन, जवानी और बुढ़ापा अवस्था लाती है, और जैसे लड़कपन हानि होकर जवानी जवानीकी हानि होकर बुढ़ापा आदि अवस्था बदलनेसे भी भी उसकी सचमुच कोई अवस्था नहीं बदलती है और ज्योंकी त्यों बनी रहती है, वैसे ही इस देहके विनाश होनेसे और लिङ्गदेह अवलम्वन करनेसे केवल देहान्तर होता है, किन्तु सचमुच कोई अवस्थान्तर वा हानि नहीं होती है। इसी लिये धीर लोग देहकी उत्पत्ति वा विनाशसे मुग्ध नहीं होते हैं। हे कुन्तीपुत्र! इन्द्रियके साथ जो विषयका संयोग होता है, इसीसे कभी डर, कभी साहस, कभी सुख, कभी दुःख प्राप्त होता है। यह विषयेन्द्रिय संयोग कभी उत्पन्न होता है और कभी नाश होजाता, इस लिये यह अनित्य है। इस कारण आप उ

वा विषाद न माने, सो ही उत्तम होगा। अगर आप इस बातका खूब विचार करलें तो वस्तुओंके मारे जानेका दुःख आपको कुछ असर न करे।

हे पुरुषवर। जो आदमी सुख और दुःखको समान समझते हैं उनको ऊपर कहे हुए डर साहस आदि व्यथित नहीं कर सकते हैं, और वही पुरुष मुक्ति लाभकर सकते हैं। और अनात्म स्वभाव प्रयुक्त अविद्यमान पदार्थ जो शीतष्णादि है सो आत्मामें नहीं रहता है; और वैसे ही, सत्स्वभाव जो आत्मा है उसको भी कभी क्षय नहीं सकती। वस्तुओंके तत्वको देखनेवाले पण्डित सत्य और असत्य दोनो पदार्थोंका ऐसे ही निर्णय ज्ञाता हुए हैं। अतएव, दुःसह शीतोष्णादि दुःख सह लेनेसे कभी आपके विनाशकी सम्भावना नहीं है। उत्पत्ति और नाश होनेवाले इस शरीरमें, जो साक्षीकी तरहपर व्याप्त हैं उन्हीं आत्माको अविनाशी जानियेगा, क्योंकि उनका अवयव (खण्ड) नहीं है और देहादिके समान उनका नाश भी नहीं होता है और इसी लिये कोई उसको विनाश कर भी नहीं सकता है। हे भारत। यह देह नश्वर है, देहस्थित आत्मा ही सर्वथा एकरूप अविनाशी अपरिच्छिन्न हैं, विवेकी लोगोंने ऐसा ही कहा है। इस लिये आप मोह जनित शोकको छोडकर युद्ध कीजिये अपने धर्मको मत त्यागिये। जो पुरुष उन आत्माको मारनेवाला समझते हैं और जो पुरुष उन आत्माको मरा समझते हैं, वे दोनोंमेंसे कोई भी उनको नहीं पहचानते है, क्योंकि न वह किसीको मारते हैं और न उनको कोई मार सकता है। वह कभी जन्म नहीं लेते है, कभी मरते नहीं है और कभी जन्म लेकर जीते भी नहीं रहते हैं; क्योंकि वह स्वभावतः जन्म रहित है और सदा वर्त्तमान रहते है। वह नित्य है, सर्व्वदा एकरूप रहते हैं। वह शाश्वत है—उनका क्षय कभी नहीं होता है; वह पुराण हैं—पूर्व्वहीसे नवीन हैं। यह परिणामके द्वारा रूपान्तर प्राप्त करके कभी नवीन नहीं होते हैं; और शरीरके मरने योग्य होनेपर भी वह नहीं मरते हैं। हे पार्थ। जो पुरुष उन आत्माको घात और जन्मसे रहित जानते हैं और अविनाशी करके मानते हैं, वह किसीको मारेंगे, किस प्रकारसे मारेंगे, वा किसके द्वारा मार डालेंगे? जिस प्रकारसे आदमी एक पुराने कपड़ेको परित्याग करके दूसरे नये कपड़ेको पहनता है, वैसे ही जीव पुराने शरीरको परित्याग करके नये शरीर प्राप्त करते हैं। उन आत्माको शस्त्र काट नहीं सकते हैं, आग जला नहीं सकती है, पानी डुबा नहीं सकता है और वायु सुखा नहीं सकती है, क्योंकि वह अवयव रहित है। इस कारण वह अच्छेद्य, अदाह्य, अक्लेद्य, और अशोष्य हैं। वह आत्मा अविनाशी, सर्व्वगत, रूपान्तर अप्राप्त, पूर्व्वरूपको अपरित्यागी, अनादि, चक्षु आदि ज्ञानेन्द्रियोंसे अतीत, मन और हस्तादि कर्मेन्द्रियोंके अविषय कहे गये है। सो आत्माको ऐसा समझकर आपको शोक करना उचित नहीं है।

हे महाबाहो! अगर सदा उन आत्माको देहके जन्म लेनेसे जन्मा हुआ और देहके नाश होनेसे मरा हुआ लोग कहते है, तो भी आपको इस प्रकार शोक करना उचित नहीं है, क्योंकि, जितनी वस्तु जन्म लेती है, और मरनेपर फिर अवश्य ही जन्म लेती है। तब जो बात रुक नहीं सकती है उसके लिये आप शोक क्यों करते है? भूत सब जन्म लेनेके पहिले अदृश्य रहते है, और मरनेपर भी अदृश्य हो जाते है; बीचमें अर्थात् जन्म लेनेके बाद और मरनेके पहिले दिख पड़ते है, इस लिये ऐसे भूतोंके हेतु इतना शोक और विलाप क्या? शास्त्र और आचार्य्योंके उपदेशके द्वारा इस आत्माको लाभ करके कोई आश्चर्य्यकी

तरह दर्शन करता है, कोई आश्चर्य्यकी तरह कीर्त्तन करता है, कोई आश्चर्य्यकी तरह सुनता है, और कोई दर्शन, कीर्त्तन और श्रवण करनेपर भी विपरीत भावनामें फंसा रहनेके कारण उन्हें कुछ जान नहीं सकता है। सुतरां, विद्वान् होनेपर भी आत्मज्ञान नहीं रहनेके कारण बहुत लोग शोक करते हैं। हे भारत! किसीके शरीरमें किसी अवस्थामें यह मारा नहीं जा सकता है, इस लिये किसी प्राणीके निमित्त शोक करना आपको उचित नहीं; अगर आप अपने क्षत्रियधर्म्मकी ओर ध्यान दीजिये तौभी आपको कम्पित होना उचित नहीं है; क्षत्रियोंके लिये धर्म्म युद्धसे बढकर और कोई कल्याण नहीं है। हे पार्थ! विना प्रार्थना किये हुए स्वर्गका द्वार खुल गया है, जिन क्षत्रियोंको ऐसी लड़ाईमें प्रस्तुत रहना भाग्य होता है, वे बहुत सुखी होते हैं। इस समयपर अगर आप लड़ाईसे मुंह मोड़ें तो आपको धर्म्म और कीर्त्ति खोकर पाप भोगना पड़ेगा और लोकोंमें आपकी बड़ी अकीर्त्ति फैल जायगी। जो धर्म्मनिष्ठ और शौर्य्यादि गुणसे सम्पन्न हैं उनके लिये अकीर्त्ति होना मरनेसे भी बढ़ कर है। महारथ लोग समझेंगे कि आप डरकर लड़ाईसे विमुख हो गये हैं। सो जिनके सामने पहिले आपको गुणवान् जानकर आपकी प्रतिष्ठा होती थी उनके सामने अब लाघव होगा। और सुनिये, आपके शत्रु सब आपके सामर्थ्यकी निन्दा करेंगे और बहुत सी बातें ऐसी कहेंगे जिसे कहना उचित नहीं। कहिये तो इससे बढ़कर और कौन बातसे दुःख होगा? हे कौन्तेय! यदि आप लड़ाईमें मारे जायंगे, तो आपको स्वर्ग मिलेगा, इस लिये लड़ाई करनेको आप उठिये। सुख, दुःख, लाभ, हानि, जय, और पराजयको समान ही समझ करके आप युद्ध करनेको तत्पर होइये, ऐसे करनेसे आपको पाप कुछ भी नहीं लग सकेगा। हे पार्थ! आत्मतत्वके विषयमें जिस तरहका ज्ञान करना उचित है, सो सब मैंने आपको समझा दिया; यदि इससे भी वह आत्मतत्व आपको प्रत्यक्ष नहीं हुआ हो तो अन्तःकरण शुद्धि द्वारा आत्मतत्व प्रत्यक्ष करनेके निमित्त कर्म्म योगके विषयमें सुनिये यदि यह ज्ञान आपको पूरी रीतिसे हो जाय तो आप परमेश्वरार्पित कर्म्मयोग करेंगे, अर्थात् जो काम करेंगे सब परमेश्वरहीको अर्पित करेंगे अपने स्वार्थके लिये एक भी नहीं समझेंगे। इस कर्म्मयोगके होजानेसे आपका चित्त शुद्ध होजायगा और चित्त शुद्ध हो जानेसे आप कर्म्म बन्धनको परित्याग कर सकेंगे। जो काम करें सब परमेश्वरहीको अर्पित करते जाना स्वार्थ काम नहीं कहलाता है, उसे निष्काम कर्म्मयोग कहना चाहिये।

यह निष्काम कर्म्म योग आरम्भमें भी निष्फल नहीं होता है; इससे कोई प्रत्यवाय भी नहीं उत्पन्न होता है; और ईश्वरकी आराधनके कारण यह धर्म्म थोड़ा करनेसे भी बड़े भयसे रक्षा करता है। ईश्वरकी आराधना करना एक कर्म्मयोग है, इस कर्म्मयोगमें निश्चयात्मक बुद्धि केवल परमेश्वरकी भक्ति रहनेके कारण होती है। हे कुरुनन्दन! जो लोग ईश्वरकी आराधना नहीं करते हैं, पर अपना स्वार्थ सिद्ध किया चाहते हैं, उनको अनेक कामना रहनेके कारण उनकी बुद्धि अनन्त और विविध फलोंके प्रकारके अनुसार बहुत ओर फैल जाती है। हे पार्थ! जो लोग अविवेकी हैं, अपनी कामना सिद्ध करनेके लिये व्याकुल चित्त रहते हैं, और स्वर्गहीको प्राप्त करना पुरुषार्थ समझते हैं, वे लोग वेदके फल देनेवाले उन वाक्योंसे प्रीति करते हैं जहां लिखा है, कि चातुर्मास्य व्रत करनेसे अक्षय फल होता है और सोमपान करनेसे अमृत पीनेका फल होता है। वे लोग कहा करते हैं, कि इनके अतिरिक्त पीनेके योग्य

और कोई पदार्थ ईश्वरतत्त्व नहीं हैं। अर्जुन। वेदके, अर्थवाद रूप स्वर्गादि फलप्रद श्रुति वाक्योंको भोग्य और ऐश्वर्य्य दिलानेवाले, विशेष कामोंके बोधक, जन्म और कर्म दिलानेवाले, तथा फली फली अत्यन्त विषलताके समान मानना चाहिये; पर स्वार्थ साधक लोग उन्ही वाक्योंको परमार्थ साधन कहते हैं। उन लोगोंका चित्त ऊपर कहे हुए अत्यन्त मनोहर वेदवाक्योंसे हर लिया जाता है। इस तरहके भोग और ऐश्वर्य्य चाहनेवाले लोगोंकी निश्चयात्मक बुद्धि ईश्वरतत्वकी ओर कभी नहीं जाती है। हे अर्जुन। वेदके बहुत प्रश्नोंसे सकाम मनुष्योंको अर्थ और फल मिल सकता है, किन्तु आप निष्काम होइये, दुःख सुख शीतोष्णादि द्वन्द्व सह लीजिये, सदा सत्वगुणके आश्रित होइये; जो आपको नहीं है उसे प्राप्त करनेमें और जो है उसकी रक्षा करनेमें निवृत्त होइये और प्रमादको परित्याग करिये। जिस तरहसे बापी, कूप, तड़ागादि अनेक छोटे छोटे जलाशयोंमें भ्रमण करनेसे इनके विभागमें अनुसार स्नान दानादि जो काम हो सकते हैं सो सब एक ही बड़ी झीलमें हो सकते हैं, वैसे ही सम्पूर्ण वेदमें यहां वहां कहे हुए कर्मफल रूप जो प्रयोजन सिद्ध होते हैं, वे सब निश्चयात्मक बुद्धिवाले ब्रह्मनिष्ठ पुरुषोंको हो जाते हैं। आप तत्व ज्ञानके चाहनेवाले हैं, इस लिये आपकी कर्महीसे कामना रहनी चाहिये, किन्तु संसारके बन्धनके हेतु जो कर्म-फल है उनमें कामना न होने पावे। अर्थात् फलपानेके अभिप्रायसे आप कर्म करनेमें तत्पर मत होइये, और कर्म न करनेमें भी आपकी प्रवृत्ति न हो।

इतनी बात समझा कर भगवान् श्रीकृष्णजी फिर कहने लगे, कि हे धनञ्जय। आप मोहको परित्याग करके योगस्थ होकर कर्म कीजिये; सिद्धि हो वा न हो, दोनोको समान दृष्टिसे देखकर आप कर्म कीजिये; क्योंकि समभाव ही (सब चीजको समान समझना) योग कहा जाता है। हे धनञ्जय! सम भावसे सम्पन्न बुद्धिके द्वारा जो काम किये जाते हैं वे कामना रखनेवाली बुद्धिके द्वारा किये कर्म्मोंसे कहीं उत्तम हैं; आप बुद्धिसे परित्राण करनेवाले ईश्वरके आश्रयकी प्रार्थना कीजिये, क्योंकि फल पानेकी कामना रखनेवाले लोग दीनभावसे सम्पन्न होते है, समभाव सम्पन्न बुद्धिवाले लोग स्वर्गादि साधन समान सुकृति और नरकादि साधन समान दुष्कृति दोनो कामोंक परित्याग करते हैं। इस लिये आप योगमें नियुक्त होइये। ईश्वरमें चित्त अर्पण करके निबन्धनसे जो असिद्धि होती है उस विषयमें समत्व भाव रखनेका जो कौशल है, योग शब्दसे उसीका बोध होता है। जिन लोगोंकी बुद्धि इस समत्व भावसे युक्त है अर्थात जो केवल ईश्वरकी आराधनाहीके कर्मोंका अनुष्ठान किया करते हैं, वे भली वा बुरी देह प्राप्त करनेके कर्मफलसे मुक्त होकर ज्ञान-युक्त होकर और जन्म बन्धनसे छूटकर सब उपद्रवोंसे रहित परम पदको लाभ करते हैं। इस तरहसे ईश्वरकी आराधनामें प्रवृत्त रहनेपर जब उनकी कृपासे मोहमय गहन किलेसे आपकी बुद्धि विशेष रूपसे निकल जायगी, तब सुननेके योग्य वा सुने हुए अर्थोंमें वैराग्य लाभ कीजियेगा। अनेक प्रकारके लौकिक और वैदिक विषयोंको सुननेसे आपकी बुद्धि विक्षिप्त होगई है; सो बुद्धि जब विषयोंसे निकलकर अनाकृष्ट और स्थिर हो जानेके बाद परमेश्वरमें अवस्थिति करेगी, तब योगफलका तत्वज्ञान समझेगी।

इतनी बातोंको सुनकर अर्जुनने भगवान्से पूछा, हे केशव। समाधिस्थ और स्थिर बुद्धिवाले पुरुषोंके क्या लक्षण है? और वे किस प्रकार और कब बैठते है वा चलते है? अर्जु-

नके ये प्रश्न सुनकर श्रीकृष्णचन्द्रने कहा, हे पार्थ! जब साधक मनकी सब कामनाओंको परित्याग करता है और परमानन्दस्वरूप आत्मा-हीसे आत्मा द्वारा सन्तुष्ट रहता है तब उसे स्थिर चित्तवाला कहना चाहिये। दुःख उप-स्थित होनेसे जिसका मन उद्विग्न नहीं होता है, सुखकी अभिलाषा नहीं रहती है, और राग, भय और क्रोध जिसको नहीं होता है उसे स्थिर बुद्धि मुनि कहना चाहिये। जिसको पुत्र वा मित्रसे प्रेम नहीं रहता है जो जो शुभ विषयोंसे प्राप्त होनेसे प्रसन्न नहीं होता है, और अशुभ विषय प्राप्त होनेसे द्वेषी भी नहीं होता है अर्थात् इन सब विषयोंमें औदास्य भाव रखता है उसी को बुद्धि प्रतिष्ठिता होती है, अर्थात् उसे स्थिरचित्तवाला कह सकते हैं। जैसे कछुआ हाथ पाव सब समेटके संकुचित होता है, वैसे ही योगी लोग जब काम आदि सब इन्द्रियोंको उनके विषय शब्द आदिसे अलग करके संकुचित होते है तब उनकी बुद्धि प्रति-ष्ठिता होती है। जड़, आतुर, उपवास करने-वाले लोगोंको समर्थ नहीं कर सकते हैं; सुतरा उनके समीप भी विषय सब निवृत्त रहते हैं किन्तु उनकी बुद्धि स्थिर नहीं कही जा सकती है, क्योंकि उनकी विषय वासना निवृत्त नहीं होती है, पर स्थिरप्रज्ञ लोगोंकी वह भी निवृत्त होजाती है। हे कुन्तीपुत्र! विवेकी पुरुष कितना ही सयत्न रहे, चञ्चल इन्द्रिय उसको हठात् हरण कर लेते हैं। इसीलिये उन सब इन्द्रियोंको दमन करके परमेश्वरमें एकाग्र चित्त लगाकर बैठिये, क्योंकि जिसकी इन्द्रिया अपने वशमे रहती हैं उसकी बुद्धि स्थिर रहती है। विषयको चिन्ता करते करते आदमी उसी विषयसे आसक्त हो जाता है; आसक्त होजानेके बाद उसे अभिलाषा होती है, अर्थात् जब उस अभिलाषाके पूरी होनेमें कोई बाधा उत्पन्न हो जाती है, तब क्रोध आकर उनको घेर लेता है। क्रोध होनेसे मोह होता है, मोह होनेसे कार्य्याकार्य्यका विचार नहीं रहता है, मोहहोसे स्मरण-शक्ति चूक जाती है, स्मरणशक्तिके चूकनेसे बुद्धि भी नाश हो जा सकती है, और बुद्धिके नाश होजानेसे अपना भी नाश हो जाता है। जिनका मन अपने वशमें रहता है, वे ही पुरुष मनको रागद्वेषसे विलग रखनेके कारण इन्द्रि-यसे विषय भोग करनेपर भी शान्तचित्त रहने-का फल पा सकते हैं। शान्ति प्राप्त होनेसे इन प्रसन्नचित्तके लोगोंके सब दुःख नाश और बुद्धि प्रतिष्ठिता होती है। जिसकी इन्द्रियां वशमें नहीं हैं उसकी बुद्धि आत्मविषयमें प्रवृत्त नहीं होती है। इस लिये उसे आत्म विषयक चिन्ता होनेकी सम्भावना नहीं होती है। जिसे शान्ति नहीं है उसे सुख कैसे होगा? मन अगर विषयमें रहनेवाली इन्द्रियोंका अनु-गामी हो तब, जैसे वायु मतवाले नाविकको नावको पानीपर घुमाती है, वैसे ही, इस योगी पुरुषके मनको विषयसे फेंक देता है। लिये हे महाबाहो! जिसकी इन्द्रिया अपने विष-योंसे सब तरह अलग रहती हैं उसकी बुद्धि प्रतिष्ठिता हो सकती है। सब साधारण लोगोंके लिये आत्मनिष्ठा निशा स्वरूप होती है। इसी आत्मनिष्ठा निशामें इन्द्रियोंका वश करनेवाले योगी लोग जागरण करते हैं; और साधारण लोग जिस विषय निशामें निष्ठासे जागरण करते है, वह आत्मदर्शी मुनियोंके लिये निशा-स्वरूप होजाती है, उससे वे जागे नहीं रहते है। बहुत पानीसे भरा हुआ और अचल समुद्रमें पैठनेसे पानी उसीमें मिल जाता है वैसे ही जिस योगीमें कामना सब प्रवेश करके लीन होजाती है वे ही शान्ति लाभ करते हैं, विषय कामवाले आदमी वह प्राप्त नहीं कर सकते हैं। जो लोग प्राप्त हुए पदार्थोंकी उपेक्षा करते है और कभी अहङ्कार नहीं करते हैं

और इसी लिये भोग करने योग्य चीजोंमें ममता न रखकर प्रारब्ध कर्मके द्वारा भोग करनेके योग्य वस्तुओंका भोग करते हैं, वे ही शान्ति लाभ करते हैं। श्रीकृष्णजी बोले, हे पार्थ! ब्रह्मनिष्ठा इसी प्रकार होती है। जिसको यह प्राप्त होता है वह फिर मोहके वशमें न होता है। अगर मरनेके समय इससे विश्वास दूर होजाय तौ भी आदमी ब्रम्हहीमें लय होजाता है। तब भर जीवन इसमें विश्वास रखनेसे क्या होगा सो कहनेकी क्या जरूरत है?

२५ अध्याय समाप्त।

अर्ज्जुन बोले, हे जनार्द्दन! यदि तुम ज्ञानहीको कर्म्मसे श्रेष्ठ समझते हो, तो प्राणियोंके बधरूपी हिंसात्मक कर्म्ममें मुझे क्यों नियुक्त करते हो? कभी कर्म्मकी प्रशंसा, कभी ज्ञानको श्रेष्ठ कहके वर्णन करते हो। इन मिलीजुली बातोंसे मेरी बुद्धिको क्यों मोहमें डालते हो? इन दोनोंमें निश्चय करके जो उत्तम हो, उसे कहो, जिसको अनुष्ठान करनेसे मेरा कल्याण हो।

श्रीभगवान् बोले, हे पापरहित अर्ज्जुन! इस लोकमें दो प्रकारकी निष्ठा है, यह मैंने प्रथम ही कह दिया है, अर्थात् शुद्ध हृदय-वाले पुरुषोंको ध्यान धारणादिक करके ब्रह्मनिष्ठा उचित है, और जिनका अन्तःकरण शुद्ध नहीं है, परन्तु ज्ञानकी इच्छा करते हैं, उनको कर्म्म योग ही चित्तशुद्धि-साधनके निमित्त करना चाहिये। मैंने कर्म्मयोग और ज्ञान-योगको पृथक् रूपसे मोक्षसाधक नहीं कहा, जो मैं ऐसा कहता, तो यह प्रश्न उचित था, कि "एक विषयको निश्चय करके कहिये।" विना कर्म्मके अनुष्ठान किये पुरुष कदापि ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता, और कर्म्मजनित चित्तशुद्धिके विना केवल सन्न्याससे मोक्षलाभका अधिकारी भी नहीं हो सकता है। ज्ञानी हो, वा अज्ञानी हो, विना कर्म्म किये क्षण मात्र भी कोई किसी अवस्थामें नहीं रह सकता, क्योंकि प्रकृतिसे जो स्वाभाविक राग, द्वेष आदिक गुण उत्पन्न होते हैं, उनके वशमें होकर कर्म्ममें अवश्य ही प्रवृत्त होना पड़ता है, इससे अन्तःकरणकी शुद्धिके वास्ते फलकी इच्छा त्यागकर कर्म्म अवश्य करना चाहिये, कर्म्मका त्याग सन्न्यास नहीं है।

जो मनुष्य हाथ पाव आदिक पांचो इन्द्रियोंको रोककर अन्तःकरण अर्थात् मनमें इन्द्रियोंका ध्यान करता है, वह मूढ़बुद्धि मिथ्याचारी झूठा वा पाखण्डी कहलाता है। हे अर्ज्जुन! जो पुरुष ज्ञानके इन्द्रियोंको मनसे रोकके और फलाभिलाषसे रहित होकर कर्म्मेन्द्रियोंसे कर्म्मरूप क्रियाका अनुष्ठान करता है, वही सबसे उत्तम अर्थात् ज्ञानी है। हे कुन्तीनन्दन! इससे तुम नियमित कर्म्मका निर्वाह करो, क्योंकि कर्म्म न करनेसे कर्म्मका करना ही उत्तम है। इस हेतु कर्म्मसे निवृत्त होनेपर तुम्हारे शरीरका निर्वाह ही नहीं होगा। ईश्वराराधनके सिवाय अन्य जो कर्म्म हैं, उनमें सब प्राणी बंधे हैं। हे कुन्तीनन्दन! इससे तुम फलकी इच्छा छोड़कर ईश्वराराधनके वास्ते कर्म्म करो। प्रजापति (ब्रह्मा) ने ब्राह्मणादिक प्रजाओंको यज्ञके अधिकार समेत उत्पन्न किया और उनसे कहा कि यज्ञसे तुम्हारी वृद्धि होगी, यह तुम्हारे अभीष्ट-कामनाओंके सिद्ध करनेको कामधेनुरूप होगा; तुम लोग यज्ञसे देवताओंको प्रसन्न करोगे, और देवता लोग भी जलवृष्टि आदिसे अन्न उत्पन्न करके तुम्हारी वृद्धि करेंगे! इस प्रकार देवता और तुम लोग परस्पर भावना करते हुए सर्व्वर्द्धित होकर परम कल्याणको प्राप्त होओगे। यज्ञसे देवता लोग तृप्त और प्रसन्न होकर जल वृष्टि आदिसे तुम्हारी सकल अभि-

लषित और भोगप्रद वस्तु तुम्हें प्रदान करेंगे, इससे जो पुरुष उन देवताओंके दिये हुये अन्न आदिको उन्हें बिना समर्पण किये ही स्वयं भोग करता है, उसको चोरके समान जानना चाहिये। वलिवैश्वदेवादि यज्ञसे बचे हुए अन्नको जो महात्मा भोजन करते हैं, वे सब पंचसूना पापसे बच जाते हैं अर्थात् गृहस्थोंके घरमें पांचस्थानोंसे जिन जीवोंका बध होता है, (वे पांच स्थानये हैं, ओखली, चक्की, चूल्हा, घरमें झाड़ू देनेके समय और जल रखनेकी जगह घड़ेके नीचेमें जो जीव मरते हैं), वे सब पाप वलिवैश्वदेव आदि यज्ञ करनेसे नष्ट हो जाते हैं, और जो मनुष्य अपने ही वास्ते भोजन बनाते हैं वे दुराचार केवल पाप ही भोगते रहते हैं। अन्न, यज्ञसे वृष्टि, कर्म्मसे यज्ञादिकी उत्पत्ति, कर्म्मकी उत्पत्ति वेदसे होती है, और वेदकी उत्पत्ति अक्षर अविनाशी ब्रह्मसे है। इस वास्ते जो ब्रह्म सबमें व्यापक हैं वह नित्य यज्ञमें रहते है। इससे जब कर्म्म ही जगत् रचाका मूल (जड़) है,तब जगत् कर्त्ताके वाक्य रूप वेद जिस ब्रह्मको गाते हैं वह यज्ञसे ही प्रतिष्ठित है, अर्थात् सवर्थ गत होनेपर भी यज्ञमें प्राप्त होते हैं। ईश्वरके वचन—वेदसे पुरुषोंको कर्म्ममें प्रवृत्ति होती है, कर्म्मके निष्पन्न होनेसे जल बरसता है, उससे अन्न उत्पन्न होता है और अन्नहीसे सम्पूर्ण प्राणी जीवन धारण करते हैं:—इसी प्रकारसे जो घूमनेवाला कर्म्म-रूपी यह जगत् चक्र है, उसके निमित्त जो पुरुष इस लोकमें उसका अनुवर्त्ती अथात् कर्म्मानुष्ठानका अनुयायी नहीं होता, उसकी अवस्था पाप-स्वरूप है। हे अर्ज्जुन! ऐसा मनुष्य केवल इन्द्रिय-परायण वा इन्द्रियाराम (इन्द्रियोंको सुख देने वाला) है। वह वृथा जीवन धारण करता है। हे अर्ज्जुन। जो पुरुष केवल आत्माहीमें प्रीति. आसक्ति और तृप्ति मानता है तथा आत्मा-हीमें जिसकी सन्तुष्टता रहती है, उसको कुछ काम इस लोक और परलोकमें करनेको नहीं रहता—अर्थात् वह सब कर्म्म कर चुका। इस लिये उसे कर्म्म करनेसे पुण्य और न करनेसे पाप नहीं लगता, तथा मोक्षके निमित्त भी ब्रह्मादि स्थावर पर्य्यन्त किसी प्राणीका आश्रय नहीं लेना पड़ता। जब कि इस प्रकारके ज्ञानके पक्षमें कर्म्मकी कुछ भी आवश्यकता नहीं रहती और दूसरेके लिये कर्म्म करनेकी आवश्यकता रहती है, तब तुम सदा मनसे फलासक्तिकी कामना छोड़के, करने योग्य जो कर्म्म है, उनको अवश्य करते रहो, क्योंकि जो पुरुष फलकी कामना त्यागके कर्म्म करता है, उसका चित्तशुद्ध होकर मोक्ष होता है। जनक आदि महात्माओंने निश्चय करके कर्म्मके द्वारा ही सम्पूर्ण रूपसे ज्ञान प्राप्त किया था। यदि तुम अपनेको पूर्ण ज्ञानी जानते हो, तो भी लोककी श्रद्धा बढ़ानेके निमित्त अर्थात् "मेरे कर्म्म करनेसे सब लोग कर्म्ममें प्रवृत्त होंगे, नहीं तो मेरे ही दृष्टान्तसे अज्ञानी लोग भी अपने अपने नित्य, नैमित्तिक और धर्म्मके कार्य्योंको त्यागके पतित हो जायगे ऐसा समझ करके भी तुम्हें कर्म्म करना उचित है। श्रेष्ठ लोग जिस जिस कर्म्मको करते हैं, उसी कर्म्मको साधारण मनुष्य भी करने लगतेहैं, श्रेष्ठ पुरुष कर्म्मका प्रवर्त्तक अथवा कर्म्मसे निवर्त्तक जिस शास्त्रको प्रमाण मानके चलते हैं,—उसीके अनुसार सब लोग चलते हैं। हे अर्ज्जुन! मुझको तीनों लोकमें कुछ कर्म्म करनेकी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मुझसे कोई पदार्थ अप्राप्त नहीं है, कि कर्म्म करनेसे प्राप्त हो, तौ भी मैं कर्म्म करनेमें लगा ही रहता हूं। हे अर्ज्जुन! जो मैं आलस्य त्यागके कर्म्म न करूं तो यह सम्पूर्ण लोग कर्म्मको छोड़के मेरी राहपर चलने लगेंगे; यदि मैं कर्म्म न

करूं, तो ये सब लोग कर्म्महीन होकर धर्म्म लोप होनेसे कुमार्गी हो जायँगे। जिसके होनेसे हम लोग, प्रजाके वर्णसङ्कर होनेके कारण और उनके नाशक समझे जायँगे। हे भारत। इससे जैसे अज्ञानी मनुष्य कर्म्ममें आसक्त होकर जिस प्रकारसे कर्म्ममें प्रवृत्त रहते हैं; वैसे ही ज्ञानी पुरुषको भी लोक-रक्षाके निमित्त अर्थात् अज्ञ लोगोंको उपदेश देनेके लिये कर्म्मके फलकी आशा त्यागके कर्म्मका करना ही उचित है। जो अज्ञानी मनुष्य कर्म्ममें आसक्त है, उन लोगोंको आत्मा-का उपदेश करके उनको कर्म्मविषयक बुद्धिमें दूसरा भाव उत्पन्न कराना विद्वान्को कदापि उचित नहीं है, बल्कि ज्ञान को योग्य है, कि वह सब लोगोंकी श्रद्धा और निष्ठाको बढ़ाता हुआ स्वयं सब कर्म्म करके उन लोगोंको भी कर्म्ममें प्रवृत्त किये रहे। सब कर्म्म प्रकृतिके गुण और इन्द्रियोंके विषय कामनासे उत्पन्न होते है, जो पुरुष इस प्रकृतिके कार्य्य इन्द्रिय कर्तृक सब कर्म्मोंका कर्त्ता अपनेहीको मानता है, उसकी बुद्धि अहङ्कारसे मन्द होगई है। हे महाबाहो। तत्ववित् लोग प्रकृतिके गुण और इन्द्रियोंके विषयोंसे आत्माको पृथक् जानकर यह समझते हैं, कि इन्द्रिया विषयमें प्रवृत्त होती है, हम नहीं प्रवृत्त होते है। ऐसा विचार करके उसमें आसक्त नहीं होते। जो लोग प्रकृतिके सत्वादि गुणोंसे मोहित होकर इन्द्रियोंके विषयमें फंसे रहते है, उन अल्पज्ञ मन्द-बुद्धि लोगोंको ज्ञानी लोग आत्मउपदेश करके विचलित नहीं करते,—इससे जब तत्त्वज्ञ पुरुषोंको भी निश्चय करके कर्म्म करना उचित है, और तुम अभीतक तत्वज्ञ भी नहीं हुए, तब ऐसी अवस्थामें तुम अध्यात्म-ज्ञान द्वारा सब कर्म्मोंको (मैं ईश्वरके आधीन होकर कर्म्म करता हूं, इस प्रकारकी बुद्धिसे सब कर्म्म) मुझे अर्पण करके निष्काम होकर "यह कर्म्म मेरा फलसाधक है" इस प्रकारके ममता ज्ञान और शोकसे रहित होकर युद्ध करो। जो लोग मेरी इस सम्मतिपर असूया-रहित और श्रद्धावान् होकर मेरे इस मतका नित्य अनुष्ठान करते है, वे लोग धीरे धीरे कर्म्म करते हुए सम्पूर्ण ज्ञानियोंकी भांति कर्म्मसे मुक्त होजाते हैं। जो लोग मेरे इस मतकी निन्दा करते है, और इसका अनुष्ठान नहीं करते, उनको दुष्टबुद्धि, सर्व्वज्ञानसे मूढ़ तथा नष्टचित्त जानना चाहिये। अपनी प्रकृतिके अनुकूल ज्ञानी मनुष्य भी कर्म्म करनेकी इच्छा करते है। जब कि प्राणी मात्र ही प्रकृतिके अनुवर्त्ती है, तब ऐसे स्थलमें मेरे वा अन्य लोगोंके निषेध वचन उन लोगोंका क्या कर सकते है? बल्कि हर एक इन्द्रियोंके अपने अपने विषय अश्रद्धा होनेसे उसमें अनुराग और प्रति-कूल होनेसे उससे द्वेष उत्पन्न होता है, परन्तु ऐसा होने पर भी राग द्वेष आदिके वशमें होना उचित नहीं है, क्योंकि वह मोक्षकी इच्छा करने वाले पुरुषका विरोधी है। और सम्पूर्ण रूपसे अनुष्ठित पराये धर्म्मसे अपना धर्म्म अङ्गहीन भी हो, तौ भी उत्तम है; क्योंकि अपने धर्म्ममें मरना भी श्रेष्ठ है, अर्थात् अपने धर्म्ममें मर जाना भी इस लोकमें यश और स्वर्गसाधनका मूल है, परन्तु दूसरेका धर्म्म उत्तमतासे भी ग्रहण किया जावे, तौ भी इस लोकमें अपयश और मरनेसे परलोकमें नरक साधनका मूल होता है।

अर्ज्जुन बोले, हे हृषीकेश नन्दन। पुरुष विना इच्छाके भी किसकी प्रेरणासे पाप कर्म्ममें नियुक्त होता है? जैसे कोई बल-पूर्व्वक उसको पाप कर्म्म करनेमें नियुक्त करता है, इसमें पुरुष किसकी इच्छासे प्रेरित होकर पापाचरण करता है?

श्रीकृष्ण भगवान् बोले, हे अर्ज्जुन! तुमने जो पुरुषके पापाचरणके विषयमें मुझसे प्रश्न

किया, वह काम और क्रोध हैं। इस कामको मोक्षके पथका शत्रु समझना चाहिये इसे दान द्वारा तृप्त और सामसे शान्त भी कोई नहीं कर सकता। वह काम रजोगुणसे उत्पन्न होता है, इसीसे सात्विक बुद्धि द्वारा रजोगुणका नाश करनेसे उसकी उत्पत्ति नहीं हो सकती। जैसे धूएंसे आग, मलसे दर्पण और जरायुसे (भिल्ली) गर्भ छिपा रहता है, वैसे ही कामसे विवेक भी छिप जाता है। हे कुन्तीनन्दन! वह काम जो असन्तोषका फैलानेवाला, अग्निके समान हृदयको जलानेवाला और ज्ञानी लोगोंका भी नित्य वैरी है, वह विवेक और ज्ञानको छिपा देता है। विषयके दर्शन, संकल्प और अध्यवसायसे कामकी उत्पत्ति होती है. इस निमित्त दशों इन्द्रिय, मन और बुद्धिको इस कामके रहनेका स्थान कहते हैं, इन्द्रियोंके विषयसे यह काम बुद्धिको मोहित करके विवेक ज्ञानको छिपा देता है। हे भरतर्षभ! इस वास्ते जबतक तुम्हें ये इन्द्रिया मोहमें न फंसावें तबतक-तुम इन्द्रियोंका दमन करके, ज्ञान विज्ञानके नाश करनेवाले महापापी कामको जीत लो। इन्द्रिया शरीरको धारण करती हैं, इससे शरीरसे इन्द्रिया सूक्ष्म और उसको प्रकाशक है। इस वास्ते इन्द्रियोंको पण्डितोंने शरीरसे श्रेष्ठ कहा है। मन इन्द्रियोंके अपने अपने विषयमें प्रवृत्त और निवृत्त करता है, इस वास्ते इन्द्रियोंसे मन श्रेष्ठ है, मनसे बुद्धि और बुद्धिसे परे साक्षी रूपसे जो अवस्थान करता है, वही बुद्धिसे श्रेष्ठ है, और उसीको आत्मा कहते हैं। हे महाबाहो! इस प्रकार उस आत्माको बुद्धिसे अतीत जान कर बुद्धिसे अपने मनको निश्चयसे दृढ़ करके, इस कामरूपी शत्रुको जो अत्यन्त दुःखसे जीता है, नाश करो।

३ अध्याय समाप्त।

श्रीभगवान् बोले, हे शत्रुनाशन! इस अव्यय (नाशरहित) योगको मैंने पहले पहल विवस्वान् आदित्य (सूर्य्य) से कहा था, सूर्य्यने अपने पुत्र मनुसे कहा और वैवस्वत मनुने राजा इक्ष्वाकुसे कहा था। इसी प्रकार परम्परासे प्राप्त होता हुआ यह योग राजर्षि लोगोंको मालूम होता चला आया। बहुत दिन बीत जानेसे अब यह योग लोप हो गया है, उसी पुराने उत्तम योगको मैंने तुम्हें अपना भक्त और सखा जान कर कहा है।

अर्ज्जुन बोले, विवस्वान् सूर्य्यका जन्म प्रथम, और तुम्हारा जन्म इस कालमें हुआ है, तब मैं किस प्रकारसे जानूं कि, तुमने पहले विवस्वान् आदित्यसे इस योगका वर्णन किया था?

श्रीभगवान् बोले, हे शत्रुओंके नाश करनेवाले अर्ज्जुन! मेरे और तुम्हारे बहुतेरे जन्म बीत गये किन्तु मेरी ज्ञान-शक्तिका लोप नहीं हुआ इसी निमित्त मैं उन बीते हुए सब जन्मोंको जानता हूं. परन्तु तुम्हारी ज्ञान-शक्ति अज्ञानसे छिप गई है, इस कारण तुम उन बीते हुए जन्मोंको नहीं जानते हो। मैं जन्म मरण रहित अविनाशी और सब प्राणियोंका ईश्वर होकर भी इच्छानुसार निर्म्मल सत्वगुणी प्रकृतिको अवलम्बन करके जन्म धारण करता हूं। हे भारत! जब जब धर्म्मकी हानि और अधर्म्मकी बढ़ती होती है, तब तब मैं साधुओंके क्लेश दूर करनेके निमित्त और अधर्म्मी दुष्कर्मी, दुष्टलोगोंको दमन करनेके वास्ते तथा धर्म्मको पुनः स्थापन करनेके लिये युग युगमें इच्छानुसार अवतार लेता हूं। हे अर्ज्जुन! जो लोग हमारे इन अलौकिक जन्म कर्म्मको जो मेरी प्रजाके कल्याणके निमित्त हुआ करते है, उसे यथार्थ रूपसे जानते हैं, उन्हें शरीर छोड़नेपर फिर जन्म नहीं लेना पड़ता; वरन वह मुझे पाता है। बहुतसे पुरुष राग, द्वेष और

क्रोधको जीतकर मुझमें निष्ठा और मेरा ही आसरा लेकर आत्मज्ञान और अपने धर्म्मका अनुष्ठान करते हुए अज्ञानरूपी अन्धकारसे छूटकर मुझको प्राप्त भये हैं। हे अर्ज्जुन! जो जिस प्रकारसे मेरा भजन वा सेवा करता है, मैं उसीके अनुसार उसको वैसा ही फल देनेका यत्न करता हूं, क्योंकि वह चाहे कैसा ही क्यों न हो; किन्तु मेरे ही व्रतमें तत्पर रहता है। इस मर्त्य-लोकमें प्रायः मनुष्य लोग कर्म्मके फलकी इच्छासे ही इन्द्रियादिकोंसे देवताओंके निमित्त यज्ञ करते हैं, किन्तु साक्षात् मेरी उपासना नहीं करते, क्योंकि कर्म्मसे उत्पन्न हुआ फल उनको शीघ्र ही मिलता है, परन्तु दुर्लभ ज्ञान फल कैवल्य शीघ्र नहीं प्राप्त होता। ब्राह्मण लोगोंमें सत्वगुणकी प्रधानता है, इससे उनके कर्म्म शम, दम आदि है, क्षत्रियोंमें रजोगुण प्रधान है, इस वास्ते उनके कर्म्म वीरता वा युद्ध आदि हैं, वैश्योंमें रज-तम दोनों गुणकी प्रधानता रहती है, इससे उनका कर्म्म कृषि और वाणिज्य आदि है, और शूद्रोंमें केवल तमोगुणकी अधिकता है, इसीसे उनका कर्म्म ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्योंकी सेवा आदि है,—इसी प्रकार गुण कर्म्मके विभागसे मैंने चारों वर्णोंको उत्पन्न किया है। मैं इन सब कार्य्योंका करनेवाला हूं तो भी तुम मुझे न करनेवाला (अकर्त्ता) ही जानो। क्योंकि इन कर्म्मोंमें न मेरी फल भोगकी कुछ इच्छा है और न ये कर्म्म ही मुझमे लिपटते हैं; इससे आसक्ति और प्रसक्ति दोष मुझमें नहीं है। जो मनुष्य मुझको इसी भांति जानता है, वह कर्म्मके बन्धनमें नहीं बंधता। अहङ्कार त्यागकर जो कर्म्म किया जाता है, वह बन्धनका कारण नहीं होता, ऐसा ही समझके जनक आदि पुराने महात्मा ज्ञानी होकर भी अन्तःकरणकी शुद्धिके वास्ते कर्म्म करते थे, इससे तुम भी पूर्व्वपुरुषोंके किये हुए आचरणोंको धारण करके चित्तशुद्धिके निमित्त वेदोक्त कर्म्मोंका अनुष्ठान करो। कैसा कर्म्म करना उचित है और किस प्रकारका कर्म्म न करना चाहिये, इस विषयमें ज्ञानी लोग भी मोहित होजाते हैं। इससे जैसा कर्म्म करनेसे संसारके बन्धनसे मुक्त होओगे, वह कर्म्म मैं कहता हूं, तुम सुनो। शास्त्रसे निषिद्ध किया हुआ वर्जित कर्म्म और सन्यास धारण पूर्व्वक कर्म्म त्याग—इन तीन प्रकारके कर्म्मोंका मर्म्म जानना उचित है; क्योंकि इन इन तीनों प्रकारके कर्म्मोंकी गति जानना बहुत कठिन है। जो देह और इन्द्रियोंके सब कर्मोंके वर्त्तमान रहते भी आत्माको शरीरसे भिन्न अलग समझते हैं, स्वभाविक अकर्म्मको भी जानते हैं, और ज्ञानसे रहित जो किया हुआ कर्म्म है, उसे दुःखदाई जानकर उसके त्यागनेको अपना धर्म्म समझते है वेही मनुष्योंमें बुद्धिमान् हैं, उन्हें इच्छानुसार मिले हुए आहार, अधिकार, कर्त्तृत्व आदिका कुछ अभिमान नहीं रहता और न यह भाव ही उदय होता है, वेही आत्मज्ञानी और समाधि भावमें स्थित योगी हैं। जिसके कर्म्म समस्त फल और कामनाओंसे रहित होते हैं, उनको उसी निष्काम कर्म्मके करनेसे, चित्त शुद्ध होनेपर ज्ञान उत्पन्न होता है, ज्ञान उत्पन्न होनेपर कर्म्मसे प्रवृत्ति न रहनेसे कर्म्म करनेका कुछ प्रयोजन नहीं होता, क्योंकि ज्ञानाग्निसे सम्पूर्ण कर्म्म भस्म होजाते हैं और अकर्म्म भाव उत्पन्न होता है। ऐसे ही मनुष्योंको पण्डित कहा जाता है। जो लोग कर्म्मके फल और आसक्तिको छोड़कर नित्य ही अपने आत्मानन्दमें तृप्त रहते हैं और अप्राप्त विषयकी इच्छा तथा प्राप्त विषयकी रक्षा करते हैं, किसीका आसरा नहीं करते, वे शास्त्रमें कहे हुए और स्वाभाविक कर्मोंमें प्रवृत्त रहनेपर भी कुछ कर्म्म नहीं करते अर्थात् उनका संपूर्ण

किया हुआ कर्म्म अकर्म्म भावको प्राप्त होजाता है। जिन्हें कुछ भी कामना नहीं है, जिनके चित्त और देह वशीभूत हुए हैं, केवल शरीरके निर्व्वाह मात्रके निमित्त कर्म्म करते है, वे करने योग्य कर्म्म न करनेके लिये दोषी नहीं होते। जो विना मांगे हुए ही यथा लाभमें सन्तुष्ट रहें, जो सर्दी, गर्मी सुख, दुःख, वैर प्रीति आदिका सहनशील हो; जिसमें वैर भाव न हो; जिसे विना इच्छाके लाभ तथा नुकसानमें हर्ष विषाद न उत्पन्न होवे; वह शास्त्रमें कहे हुए और स्वाभाविक कर्म्म करके बन्धनमें नहीं फंसता। जो राग, द्वेषसे मुक्त हैं, जिसको कुछ भी कामना नहीं है, जो ज्ञानसे मनको स्थिर करके परमेश्वरमें चित्त लगाता है;—ऐसा मनुष्य परमेश्वरकी आराधनाके निमित्त यदि कर्माचरण करता है, तो उसके सकाम कर्म्म भी लय हो जाते हैं, अर्थात् अकर्म्म भाव प्राप्त हो जाता है। ज्ञानी मनुष्य कर्म्म और कर्म्मके अङ्गोंमें भी ब्रह्महीको देखते हैं, जिससे घृतादि अग्निमें होम किये जाते हैं वह स्रुवा आदि पात्र ब्रह्म है, घृत आदि जो होममें पड़ते हैं, वे भी ब्रह्म हैं, जब अग्निमें होम किया जाता है, वह अग्नि भी ब्रह्म है, उसमें जो होम करता है वह भी ब्रह्म है, ब्रह्म ही होम करता है, इस प्रकार कर्म्मात्मक ब्रह्ममें जिसके चित्तकी एकाग्रता है, उसको मिलनेवाला फल ब्रह्म ही है, दूसरा कुछ भी नहीं। कर्म्म योगवाले इन्द्र, वरुण आदि देवताओंका यज्ञ और श्रद्धासहित उपासना करते हैं, ज्ञानयोग वाले, पहिले कहे हुए ब्रह्मरूप अग्निमें यज्ञ करके ब्रह्म यज्ञहीका होम करते हैं अर्थात् ब्रह्मार्पण करके ईश्वर-होमें लय कर देते हैं। ब्रह्मचारी लोग नाक कान इत्यादि इन्द्रियोंका संयमरूपी अग्निमें हवन करते हैं। गृहस्थ लोग शब्द, स्पर्श आदि विषयोंके द्वारा हवन करते हैं। ध्यान निष्ठयोगी पांच ज्ञान इन्द्रिय, पांच कर्म्म इन्द्रिय, प्राण, अपान, श्वास, प्रश्वास आदिका ज्ञानसे जलता हुआ जो आत्मसंयम,—आत्मा में ध्यानकी एकाग्रता योगरूपी अग्नि है, उसमें होम करने योग्य ब्रह्मको पूर्ण रूपसे जानकर उसीमें मनको संयम करके समस्त कर्म्मोंका होम करते हैं। कोई कोई उद्यम करने वाले तीव्र व्रतधारी लोग द्रव्यका दान रूप यज्ञ करते हैं; कोई कोई यत्न करने-वाले कठोर व्रती मनुष्य चान्द्रायण आदि तपस्या रूपी यज्ञका अनुष्ठान करते हैं। कोई कोई यत्न करनेवाले तीक्ष्णव्रती मनुष्य लोग चित्तकी वृत्तिको निरोध (रोक) करके समाधि रूपी यज्ञ करते हैं, कोई वेदाध्ययन रूपी यज्ञ करते हैं; कोई वेदार्थ ज्ञान रूपी यज्ञ करते हैं; कोई प्राण वायुको अपानवायुसे जीत कर पूरक नामक प्राणायाम करते हैं; कोई अपान-वायुको प्राण-वायुमें होम करके रेचक प्राणा-याम करते हैं; कोई प्राण और अपान-वायुकी गति रोककर कुम्भक प्राणायाम करते हैं; और कोई कोई मित आहार करनेवाले होकर प्राण प्रभृति वायुमें प्राणवायुका ही हवन किया करते है, अर्थात् वे लोग प्राण और अपान वायु आदिमेंसे जिसकी गति रोक देते हैं, उसीमें अन्यवायु लीन प्राय हो जाती हैं—परन्तु ये सब ही यज्ञ करनेवाले तथा जाननेवाले है, इन लोगोंके ऊपर कहे हुए सभी यज्ञोंसे पापोंका नाश होता रहता है; वे यज्ञके कर्मोंको समाप्त करके पश्चात् अमृतके समान अवर्जित अन्न (जिसकी मनाही नहीं है) भोजन करते हैं—ऐसे ही ज्ञानी लोग ज्ञानसे सनातन ब्रह्मको पाते हैं। हे कुरुसत्तम! जो इन ऊपर कहे हुए यज्ञोंमेंसे किसी यज्ञका भी अनुष्ठान नहीं करते, उनके लिये यह थोड़े सुखसे युक्त मनुष्यलोक ही नहीं रहता, तब बहुत सुखोंसे भरा हुआ स्वर्गलोक क्यों मिलेगा। इसी प्रका-

रसे नाना प्रकारके यज्ञ जो वेदमें कहे हुए हैं, उन सबको ही कायिक, वाचिक और मानसिक कर्मोंसे सिद्ध होनेवाला जानना चाहिये, आत्मासे उनका कुछ भी सम्बन्ध नहीं है, ऐसा ही जान कर तुम इस संसारसे मुक्त होओगे। हे परन्तप पृथा-पुत्र। द्रव्य-मय देवता आदिके यज्ञोंसे ज्ञान-यज्ञ ही उत्तम है, क्योंकि फलके सहित सब कर्म्म ज्ञानसें समाप्त हो जाते हैं। तुम पूरे सब बातोंके जाननेवाले (सम्यक् दर्शी) महात्मा, ज्ञानी, और गुरुके पास जाकर भक्ति तथा श्रद्धाके सहित नमस्कार और उनकी सेवा करके, प्रश्नके द्वारा ज्ञान प्राप्त करो. वे लोग तुम्हारी भक्ति और सेवासे प्रसन्न होकर तुम्हें ज्ञानका उपदेश करेंगे। हे पाण्डुनन्दन! उस ज्ञानको पाकर फिर तुम ऐसे मोहमें न पड़ोगे, समस्त प्राणियोंको अपनी आत्माहीमें देखोगे, अनन्तर परमात्मा रूपी जो मैं हूं,—मुझसे अपनेमें कुछ भेद न समझोगे। यदि तुम सम्पूर्ण पापियोंसे भी अधिक पापी होओगे, तौभी ज्ञान-रूपी नौका पर चढ़के पापरूपी समुद्रके पार हो जाओगे, हे अर्जुन। जिस प्रकार जलती हुई अग्नि लकड़ियोंको भस्म कर देती है उसी भांति आत्मज्ञानरूपी अग्नि भी आरम्भ किये कर्म्मको छोड़के अन्य सब कर्मोंको नाश कर देती है। इस संसारमें आत्म-ज्ञानके समान दूसरी कोई वस्तु नहीं है। वह आत्म-ज्ञान कर्म्मयोग और समाधिके द्वारा समयानुसार क्रमसे मनुष्यको अनायास स्वयं ही प्राप्त होजाता है। संयमसे युक्त, जितेन्द्रिय, श्रद्धावान् और आत्मामें निष्ठा रखनेवाले लोग ही आत्म-ज्ञानको पासकते हैं और इस आत्म ज्ञानसे कुछ दिनोंमें धीरे धीरे परम शान्तिपद पाते हैं, दूसरी वस्तुको आत्मा जाननेवाले, श्रद्धासे हीन और संशयसे युक्त लोग शीघ्र ही नष्ट होजाते हैं, विशेष करके शंका करनेवाले मनुष्य न इस लोक और न परलोकहीमें सुख पाते पाते हैं। हे धनञ्जय! जिसके सब कर्म्म परमेश्वरको आराधनाके वास्ते परमेश्वरहीमें योग द्वारा समर्पण कर दिये जाते हैं, उसको वे सब कर्म्म-फल बन्धनमें नहीं फंसा सकते, और जिसको आत्माके जाननेसे देह आदिका अभिमान नष्ट होजाता है, उस प्रमादसे रहित मनुष्यको वे कर्म्म-फल स्वभावहीसे नहीं बाध सकते। इससे हे भारत! तुम अज्ञानसे उत्पन्न हुए हृदयमें शोक आदिके करनेवाले इस संशयको विवेक-ज्ञान रूपी खड्गसे काट कर कर्म्म-योगका आसरा लेकर अहंभाव ममता त्यागकर युद्ध करनेके निमित्त उठके खड़े होजाओ।

२७ अध्याय समाप्त।

अर्जुन बोले, हे कृष्ण! तुम शास्त्रमें कहे हुए कर्म्मोंका त्यागना भी कहते हो, और कर्म्मके अनुष्ठान करनेकी भी आज्ञा देते हो,—इन दोनोंमें जो एक उत्तम हो, उसीको निश्चय करके मुझसे कहो।

श्रीकृष्ण भगवान् बोले, कर्म्मका त्याग और उसके अनुष्ठान दोनों ही मोक्ष-साधनके हेतु हैं, किन्तु इन दोनोंमेंसे कर्म-त्यागसे कर्मका करना उत्तम है। हे महाबाहो! जो सुख, दुःख तथा उसके साधनके निमित्त द्वेष और आकांक्षा नहीं करते, उन्हें परमेश्वरकी प्रीतिके वास्ते कर्ममें प्रवृत्त होनेसे भी नित्य सन्यासी ही जानना चाहिये। क्योंकि वे निर्द्वन्द्व-स्वरूप निष्काम (इच्छा रहित) कर्मसे चित्त शुद्धिके द्वारा अनायास ही संसारसे मुक्त हो सकते हैं। अज्ञानी लोग कर्म सन्यास और कर्मका अनुष्ठान दोनों विषयोंको अलग अलग कहते हैं; किन्तु पण्डित लोग ऐसा नहीं कहते; क्योंकि इन दोनोंमेंसे एकका अच्छी प्रकार अनुष्ठान करनेहीसे, इन दोनोंका जो एक ही मोक्षफल

है, वह मिलता है। ज्ञानमें निष्ठा रखनेवाले पुरुष जिस साक्षात् मोक्ष पदको पाते हैं; निष्काम (फलकी इच्छा त्यागकर) कर्म्म करनेवाले लोग भी ज्ञानसे उसी मोक्ष-पदको पाते हैं। इससे कर्म्म-सन्न्यास और कर्म्म (यज्ञादि) के अनुष्ठान इन दोनोंको जो मनुष्य एक ही जानता है, तथा एक ही मोक्ष-फलकी प्राप्तिका हेतु समझता है, उसीको यथार्थदर्शी कहना चाहिये। हे महाभुज! कर्म्म-योगको छोड़कर जो सन्न्यास है, वह दुःखके निमित्त होता है, क्योंकि विना इच्छारहित फलकी कामना त्याग किये (निष्काम) कर्म्मसे चित्तशुद्धि नहीं होती, चित्तशुद्धिके विना ज्ञान होनेवाला नहीं है; परन्तु कर्म्मयोगसे युक्त मनुष्य लोग चित्तशुद्धिसे सन्न्यासी होकर थोड़े ही समयमें ब्रह्मको जान सकते हैं। वे निर्म्मलचित्त होकर शरीर और इन्द्रियोंको अपने वशमें करके आत्माको सब प्राणियोंकी आत्मा-स्वरूप जानते हैं, स्वभाविक वा लौकिक कर्मोंको करके भी उसमे नहीं फसते। धीरे धीरे तत्वज्ञानी होकर देखना, सुनना, छूना, सूंघना, भोजन करना; आना, जाना, सोना, श्वास लेना, श्वासका छोड़ना, वचन बोलना, मल-मूत्रका त्यागना, किसी वस्तुका ग्रहण करना, पलक खोलना और बन्द करना आदि सब कर्मोंको करते हुए भी यह जानते हैं, कि इन्द्रिया सब अपने अपने विषयमे प्रवृत्त रहती हैं। "मै कुछ नहीं करता" जो लोग ज्ञानी नही होते, परन्तु कर्म योगमें लगे रहते हैं, ऐसे मनुष्य जो फलासक्तिको त्यागकर सेवककी भांति स्वामीका कार्य्य करके कर्मफल परमेश्वरको समर्पण करते हुए कर्म करते है. वे कमलके पत्तेपरके जलकी भांति कर्ममें नहीं फसते। कर्म्म योगी लोग फलकी आसक्ति छोड़कर चित्तशुद्धिके वास्ते शरीरसे स्नान. मनसे ध्यान, बुद्धिसे तत्वका निश्चय और कर्म्मके अभिनिवेशसे रहित इन्द्रियोंके द्वारा सुनना और कीर्त्तन करना इत्यादि कर्म्म करते हैं। एक परमेश्वरहीमें निष्ठावान् होकर कर्म्मके फलोंको त्यागपूर्व्वक कार्य्य करनेसे मोक्षपद मिलता है। परमेश्वरसे अलग होकर कामनासे प्रवृत्त होनेपर कर्म्मके फलमें आसक्त होकर कर्म्म करनेसे संसारके बन्धनमें बंधना पड़ता है। पवित्रचित्त और शुद्ध शरीरवाले न स्वयं किसी कर्म्मको करते है, न दूसरेको किसी कर्म्ममें प्रवृत्त करते है; वे विवेक-बुद्धिसे सब कर्मोंको परित्याग करके नवद्वारसे युक्त शरीरमें स्थिति मात्र करते है। परमेश्वरने जीवोंको कर्तृत्व, कर्म वा फलके संयोगसे नही उत्पन्न किया है, जीवकी अविद्या प्रकृति ही कर्म्ममें प्रवृत्त होती है, सर्व्वदायक, आप्त पुरुषसे जानने योग्य परमेश्वर किसीके पाप, पुण्यके ग्रहण करनेकी इच्छा नही करता "ईश्वर सबके पक्षमें एकसा है" इस प्रकारका ज्ञान, "ईश्वरका निग्रह रूपी दण्ड ही उसकी कृपा है। इस प्रकारसे अज्ञानसे ज्ञान छिप जाता है, जिससे सब जीव मोहमें पड़कर ईश्वरसे भ्रमयुक्त विषमताका ज्ञान करते है। जिसको ईश्वरके ज्ञानसे यह विषमतारूपी अज्ञान नष्ट हो जाता है, उसका वही ज्ञान जिस प्रकार सूर्य्य सब वस्तुओंको प्रकाशित करता है, उसी भांति सर्व्वव्यापक ईश्वरके स्वरूपका नाश कर देता है। जिसको ईश्वर विषयहीको बुद्धि, प्रयत्न और निष्ठा है, और वह ईश्वरको ही परम आश्रयका स्थान जानता है, उसका ईश्वरके प्रसादसे आत्मज्ञान मिलता है, जिससे ससारके समस्त दोष धो जाते है. उसीसे वह मोक्ष पाता है। वही ज्ञानी पुरुष विद्या, विनयसे भरे हुए ब्राह्मण, चाण्डाल, हाथी, गऊ और कुत्तोंमें समदर्शी होता है। जिसका मन समान भावसे स्थिर हो जाता है वह इसी जन्ममें ससारको जीत लेता है; क्योंकि ब्रह्म समान भावसे युक्त और

निर्दोष है; इससे समदर्शी ज्ञानी लोग ब्रह्म भावसे युक्त होकर ब्रह्महीमें लीन हो जाते हैं। जो ब्रह्मज्ञानी होकर ब्रह्महीमें लीन होते हैं, वे कोई प्यारी वस्तुको पाके सन्तुष्ट नहीं होते और अप्रिय चीजोंको पाकर भी नहीं घबड़ाते, क्योंकि मोहके निवृत्त होनेसे उनकी बुद्धि स्थिर होजाती है, इससे वे वाह्यविषयोंसे अनासक्त चित्त होकर अन्तःकरणके उपशमसे आत्मिक-सात्विक सुख पाते हैं, और समाधिसे उनकी आत्मा ब्रह्मके साथ ऐक्यभाव धारण करती है, इससे उन्हें अक्षय सुख (मोक्ष) मिलता है। हे कुन्तीनन्दन! विषयोंके भोगसे जितने सुख होते हैं, वे सब ही दुःखदाई हैं; उनका आदि अन्त भी है; इससे ज्ञानी लोग उन सब सुखोंमें अनुरक्त नहीं होते। जो सब दिन काम, क्रोधके वेगको सहनेमें समर्थ होते हैं, वेही सुखी है। जो अपने अन्तरहीमें सुख और भीतर हीमें दृष्टि रखता है, वही योगी ब्रह्ममें स्थित होकर ब्रह्महीमें लीन होजाता है। जिसका चित्त सावधान हुआ है और संशय छूट गये हैं तथा पाप आदिक दोषोंका भी नाश हुआ है, वही सब भूतोंका हित करनेवाला पूर्व्वदर्शी पुरुष मोक्षपद पाता है। काम क्रोधसे छूटे हुए, सन्न्याससे युक्त, सावधानचित्त, आत्म-तत्व जाननेवाले पुरुषोंको जीवित अवस्था और मरनेके अनन्तर दोनों ही समयमें मोक्ष वर्त्तमान है। जो लोग सन्न्यास-युक्त मोक्ष परायण होके इच्छा भय और क्रोधका त्याग करते हैं, तथा इन्द्रिय, मन और बुद्धिको संयम पूर्व्वक रूप रस आदि वाह्य विषयोंको वाहर करके (अर्थात् जिनसे वे भीतर प्रवेश न कर सकें) उनका चिन्तन छोड़कर, नेत्रको अर्द्ध निमीलन करके भ्रूमध्य (नासिकाके अग्रभाग) में दृष्टिको लगाते हैं; और प्राण, अपान, ये दोनों वायु जिस प्रकार नासिकाके भीतर ही तक आवे और जाय, अर्थात् धीरे धीरे धीरे श्वास समान रूपसे युक्त हो जावे, इसी भांतिसे सर्व्वदा स्थित करते हैं, उन्हें मोक्ष मिलता है। यज्ञ और तपस्याके पालन कर्त्ता और सब लोगोंका ईश्वर तथा सम्पूर्ण प्राणियोंका निरपेक्ष उपकारी जो मैं हूं, मुझे जाननेसे मोक्ष होता है।

२८ अध्याय समाप्त।

श्रीभगवान् बोले, हे पाण्डव! जो कर्म्मके फलसे निरपेक्ष होकर अवश्यकरणीय शास्त्रमें कहे हुए कर्म्मोंका अनुष्ठान करते है, वेही सन्न्यासी और योगी है; इससे वे अग्नि साध्य (अग्निहोत्रादि इष्ट-कर्म्म) और अनग्नि साध्य अनिष्ट कर्म्मकी क्रियाका त्यागी) भी नहीं कहे जाते। वेद और स्मृतिके जाननेवालोंने कर्म्मफल त्याग-रूपी सन्न्यासको जो उत्तम कहा है; उसी सन्न्यासको कर्म्मानुष्ठानरूप योग जानना चाहिये। क्योंकि चाहे कर्म्म निष्ठ हो, वा ज्ञाननिष्ठ हो, जिसने कर्म्मके फलका परित्याग नहीं किया है; ऐसा कोई मनुष्य भी योगी नहीं हो सकता। ज्ञान-योगमें आरोहण (चढ़ने) की इच्छा करनेवाले लोगोंके कर्म्म उनमें आरोहणके कारण कहे जाते है और ज्ञान-योगमें चढ़नेहीसे उस ज्ञान निष्ठ पुरुषको सब कर्म्मोंसे निवृत्ति ही ज्ञानकी पक्का करनेका कारण कही जाती है। जब पुरुष आसक्तिकी जड़से उत्पन्न हुए सब कर्मोंके संकल्प और विषयोंके भोगका त्यागी होकर इन्द्रियोंके भोग और उनके साधनकर्म्ममें आसक्ति नहीं करता, तब वह योगारूढ़ कहा जाता है। आत्मा ही मेरा मित्र और आत्मा ही मेरा शत्रु है, इससे आत्मा ही मेरा उद्धार करेगा और वही मुझे अधोगतिमें पहुंचनेसे बचावेगा। जिसकी आत्मासे आत्मा वशीकृत (अर्थात् सब इन्द्रिया वशीभूत हुई) है;—वैसी आत्माका आत्मा ही मित्र है, और जिसकी

आत्माकी इन्द्रिया वशमें नहीं है उस आत्मा-की आत्मा ही शत्रुकी भांति दुःखदायी होता है। जिसने आत्माको जय अर्थात् इन्द्रियोंको जीता है, उसी शान्तचित्त राग द्वेष आदि क्लेशोंसे रहित पुरुषके हृदयमें सुख, दुःख,सर्दी, गर्म्मी और मान अपमान सह कर भी पर-मात्मा स्थिर रहता है। शास्त्रमें कहे हुए पदा-र्थोंका ज्ञान, और शास्त्रसे जाने हुए पदार्थोंका अपनी बुद्धिसे अनुभव, इन दोनो तरहके ज्ञान विज्ञानसे जिनका अन्त:करण परितृप्त हो जाता है, वे निर्विकार और जितेन्द्रिय होते हैं, और वे मट्टी, पत्थर तथा सोनेको समान ज्ञानसे देखते हैं; ऐसे योगी पुरुषको योगारूढ़ कहते हैं। सुहृत्, मित्र, उदासीन, मध्यस्थ,द्वेषी, शत्रु, बन्धु सदाचारी और दुराचारी इन सब पुरुषोंमें जिनकी सम-बुद्धि हैं, वे सबसे उत्तम हैं। पवित्र स्थानमें जो बहुत ऊंचा वा बहुत नीचा न हो, वहांपर कुशासनके ऊपर मृगछाला और उस-पर कपड़ा बिछा कर अचल (स्थिर) आसन लगाकर उसपर बैठके मनको एकाग्रताके सहित चित्त और इन्द्रियोंकी क्रियाको रोक कर अन्तःकरणकी शुद्धिके निमित्त योगका अनुष्ठान करे। देह, मस्तक और गर्द्दनको सीधा और अचल रखके अपनी नाकके अग्र-भाग पर दृष्टिकर, मनको सम्पूर्ण वृत्तियोंसे हटाकर, दृढ़ यत्नके सहित इधर उधर न देखे, शान्त-चित्त, भयसे रहित, ब्रह्मचारीके व्रतमें स्थित होके मनको संकल्प विकल्पसे रोका करे, और अहंकार त्याग कर मेरे ध्यानमें बैठे। इसी प्रकारसे एकाग्रचित्त होकर आत्मामें मिलनेवाला योगी निर्वाण प्राप्तिका साधनभूत मेरे स्वरूपमें स्थित होके परम शान्तिपद पाता है, और मुझमें मिल जाता है,। हे अर्ज्जुन! जो अधिक भोजन करते हैं, अथवा जो कुछ भी भोजन नहीं करते, और जो अत्यन्त सोनेवाले तथा जो बहुत जागनेवाले पुरुष हैं,—इनमेंसे किसीको भी योगानुष्ठानकी सम्भावना नहीं होती। जिसका खाना, काम करना, सोने और जागनेकी गति ठीक ठीक नियम पूर्व्वक होती है, उसीको संसारके दुःखोंको नाश करनेवाला योग सिद्ध होता है। जिस समय साधना करने-वालेका चित्त बाहरी चिन्ता और विषयोंसे निराश होकर आत्माहीमें स्थिर होता है, उस समय वही सब कामोंका त्याग करनेवाला साधक पुरुष योगी कहलाता है। चित्त और योगकी गतिको जाननेवाले बुद्धिमान् लोगोंने योगियोंके चित्तके दृष्टान्तको इस प्रकारसे वर्णन किया है,—"जैसे बिना हवाके मकानमें दियेकी ज्योति नहीं हिलती,वैसे ही चित्तको रोकनेवाले तथा आत्म विषयक योगके अभ्यास करनेवाले योगी लोगोंके चित्त भी दोलायमान नहीं होते; अर्थात् योगी लोग मनको एकाग्र करके आत्मामें लगाते हैं। जिस समय योगीका चित्त योगाभ्याससे हटता है, उस समयमें वह ज्ञानी पुरुष समाधिसे पवित्र अन्तः करणसे सर्व्व ज्योति स्वरूप प्रकाशमय आत्मा-को देखता है, और अपनी आत्माहीमें सन्तुष्ट रहता है, तब ऐसी अवस्थामें विषय और इन्द्रियोंके सम्बन्धसे अलग जो निर्म्मल बुद्धिसे जानने योग्य आत्मसुख है, उसको जानकर, उसीमें स्थित होना पड़ता है; और उस तत्व ज्ञान तथा आत्म ज्ञानसे चलायमान नहीं होता, उस समय सब सुखोंसे अधिक सुख आत्माका रूप जाननेसे उत्पन्न होता है, उससे बढ़कर किसी अन्य सुखको उत्तम और अधिक नहीं समझता, जिसमें स्थित होके सर्दी गर्मी आदि बड़े दुःखसे भी चलायमान नहीं होना पड़ता; और विषयादिक सुख दुःखोंका जिस अवस्थामें वियोग होता है, उसी अवस्था को योग विषयक समझना चाहिये। संकल्प आदि कामना और सम्पूर्ण कार्य्यका वस्तुओंका त्याग कर चारो ओर घूमनेवाली इन्द्रियोंको

विषयोंके दोष दिखानेवाले मनसे रोके और यदि जल्दी सिद्ध न हो, तो दुःखदायी जानकर भी अपने प्रयत्नको ढीला न करे, शास्त्र और गुरुके उपदेशमें निश्चय करके ऊपर कहे हुए योगका अनुष्ठान करना उचित है। निश्चय करनेवाली बुद्धिसे अपनी आत्मामें मनको पूरी तरहसे लगाकर धीरे धीरे अभ्यास करता हुआ मनको स्थिर करे, किसी दूसरे विषयका विचार न करे, अर्थात् स्वयं ही अपने प्रकाशमान परमानन्दमें मग्न रहे और आत्माका ध्यान न छोड़े। धारणा करनेसे भी यह चञ्चल और अधीर मन अपनी स्वभाविक चञ्चलतासे जिन जिन विषयोंमें जाता है, वहां वहांसे हटाकर उसको आत्मोहीमें लगाना चाहिये। ऐसा करनेसे रजोगुणका नाश होकर योगीका मन शान्त और संसारके सब दोष छूट जाते है, तब उसको मोक्षपद मिलता है। ऐसे योगीके पास महासुख खुद ही विराजमान रहता है। इसी भांति सदा सर्व्वदा मनको वशमें करनेसे, पापोंसे छूटे हुए योगी लोग विना परिश्रमसे ही ब्रह्मको जानकर सबसे उत्तम सुख भोगते हैं। वेही योगसे युक्त चित्तको स्थिर किये हुए योगी-पुरुष सब जगत्में समदर्शी होकर सब प्राणियोंको अपनी आत्मामें और अपनी आत्माको सम्पूर्ण प्राणियोंमें देखते हैं। इन सम्पूर्ण प्राणियोंका आत्मा स्वरूप जो मैं हूं, मुझको जो सबमें देखते है, सर्व्वत्र मुझे ही जानते हैं, मैं उनसे अलग नहीं होता; और न वे ही मुझसे पृथक् हैं। जो एकतावलम्बी योगी मुझे सब प्राणियोंमें व्यापक स्थित जानकर मेरा भजन करता है, वह सब कर्मोंको त्यागनेपर भी मुझीमें मिला रहता है। हे अर्ज्जुन! जो सुख दुःखको सब प्राणियोंमें समान देखता है, वही पुरुष मरे मतसे उत्तम और योगी है।

अर्ज्जुन बोले, हे मधुसूदन! लय और विक्षेपसे अलग मनसे आत्मस्वरूपमें स्थिति-योग जो तुमने मुझसे कहा, उस योगके, मनकी चञ्चलताके कारण, मुझे बहुत समयतक ठहरनेकी सम्भावना नहीं मालूम होती है। हे कृष्ण! मन स्वभावहीसे चञ्चल है, देह और इन्द्रियोंको व्याकुल करनेवाला और विचारसे न जीतने योग्य तथा विषयवासनासे जकड़ा हुआ, कठिनतासे वश होनेवाला है; इससे जिस प्रकार आकाशमें भरी हुई वायुको घड़े, अथवा मुट्ठीमें बन्द नहीं कर सकते, जसे प्रकार मनको भी रोकना मै बहुत ही कठिन समझता हूं।

श्रीभगवान् बोले, हे महाभुज कुन्तीनन्दन! तुम जो चञ्चल मनको रोकना कठिन समझते हो, उसमें कुछ भी सन्देह नहीं है, परन्तु अभ्यास और वैराग्यसे मनको रोक सकते है। जिसका चित्त अभ्यास और वैराग्यसे वशमें नहीं हुआ है, उसको यह योग दुःखसे भी नहीं प्राप्त होता,—इसे मैं निश्चय करके जानता हूं। जिनका मन अभ्यास और वैराग्यसे वशमें होगया है, वे ही उद्यमशील पुरुष ऊपर कहे हुए उपायोंसे इस योगको प्राप्त कर सकते हैं।

फिर अर्ज्जुन बोले, हे कृष्ण! जो लोग पहले श्रद्धासे योगमें प्रवृत्त होकर फिर अभ्यासकी शिथिलतासे योगसिद्धिको नहीं प्राप्त कर सकते उनकी क्या दशा होती है? हे कृष्ण! ईश्वरके निमित्त कर्म्मफल अर्पण वा कर्म्मका अनुष्ठान न करनेसे स्वर्ग आदिके फलोंको नहीं पाते, और योगको सिद्धि न होनेसे ब्रह्मप्राप्तिके मार्गके विमुख होकार मोक्ष भी नहीं पा सकते; इस प्रकार दोनों ओरसे भ्रष्ट हुए विना किसी आसरेके पुरुष क्या बादलके टुकड़ेकी तरह नष्ट होजाते हैं, वा नहीं? हे कृष्ण! मेरे इस सन्देहको पूरी तरहसे तुम ही जड़से काटने वा छुड़ाने के योग्य हो, तुम्हारे विना अन्य कोई भी मेरे इस संशयको छिदन करनेवाला नहीं मिलेगा।

श्रीभगवान् बोले, हे पार्थ! वह पुरुष इस लोकमें पतित नहीं होता और स्वर्गसे भी नरकमें नहीं जाता, क्योंकि अच्छे कर्मोंका करनेवाला कोई पुरुष नीच गतिको नहीं प्राप्त होता। वे योग भ्रष्ट पुरुष अश्वमेध इत्यादि पुण्य-कर्म्मके करनेवाले मनुष्योंके पाने योग्य स्वर्ग लोकमें जाते है, और वहां बहुत दिनोंतक रहकर सदाचारसे युक्त धनवान् पुरुषोंके घरमें जन्म लेते हैं। यदि बहुत कालके अभ्यास किये हुए योगसे भ्रष्ट होते हैं, तो योग-निष्ठ ज्ञानियोंहीके कुलमें जन्म ग्रहण करते है, ऐसे कुलमें जन्म होना लोकमें बहुत ही दुर्लभ है। हे कुरु-नन्दन। वेही योग-भ्रष्ट पुरुष सदाचारी धनियोंके अथवा योगनिष्ठ ज्ञानियोंके घर जन्म लेकर पहिले शरीरसे किये हुए ब्रह्म-विषयक बुद्धि योगको प्राप्त करते है, फिर मोक्षलाभके निमित्त बहुत ही यत्न करते है। उन योग-भ्रष्ट पुरुषोंको किसी विघ्नके कारण इच्छा न रहने पर भी पहले शरीरका किया हुआ अभ्यास ही उन्हे विषयोंसे हटाकर ब्रह्म-निष्ठ बनता है। यद्यपि वे योगमें प्रवृत्त होकर किसी पापके कारण योगसे भ्रष्ट होते हैं, तो भी वे मुक्त होजाते है, इससे जो योगी क्रमसे बहुत ही पूर्व्वक योगाभ्याससे सब पापोंका नाश कर कर देते है, वे अन्य अनेक जन्मोंकी पूरी सिद्ध और योगसे परम गतिको प्राप्त करते अर्थात मुक्त होजाते है, इसमें सन्देह नहीं। हे अर्ज्जुन। मेरे मतमें चान्द्रायण आदि व्रतों तप करनेवाले, शस्त्रोंके जाननेवाले, और यज्ञ आदि कर्म्मोंके करनेवालोंसे भी योगी पुरुष ही उत्तम है। हे अर्ज्जुन! इससे तुम भी योगी हो जाओ। जो श्रद्धावान् होकर मुझमें मन लगाते हैं, और अन्तःकरणसे मेरा भजन करते है, मेरे मतमें वे ही पूरे योगी और सब योगियोंमे उत्तम है।

२६ अध्याय समाप्त।

श्रीभगवान् बोले, हे अर्ज्जुन! तुम मुझमें आसक्त होके, तथा मेरा ही आसरा करके चित्त सावधान करो; और मैं जो विभूति, बल, शक्ति और सब ऐश्वर्य्यादि गुणोंसे युक्त हूं, मुझे जिस प्रकार निश्चयपूर्व्वक जानोगे, उसे कहता हूं, तुम सुनो। मैं तुम्हें अपने विषयका शास्त्रमें कहा हुए ज्ञान और अपना अनुभव पूरी तरहसे कहता हूं; जिसको इस संसारमें जाननेसे और कुछ जानना बाकी नहीं रह जाता। हजारों मनुष्योंके बीचमें कोई आत्मसिद्धिके निमित्त यत्न करता है; और सहस्रों उपाय करनेवालोंमें कोई मुझे "जो मैं परमात्मा हूं यथार्थ रूपसे जानता है। मेरी प्रकृति माया, जड़रूपी शक्ति, मिट्टी, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार,—ये आठ प्रकारकी प्रकृति अलग अलग कही गई वे योगीके वास्ते उत्तम नहीं है, क्योंकि ये ही संसारमें बन्धनकी मूल है। हे महाभुज। इसके अनन्तर जीवस्वरूप मेरी दूसरी प्रकृति को उत्तम समझना चाहिये। उसी चेतनरूप प्रकृतिके किये हुए कर्मोंसे यह संसार चल रहा है। इन दोनों प्रकृतियोंको सब जगत की उत्पत्तिका कारण जानना चाहिये। जड़ प्रकृति शरीरके रूपमें दीख पड़ती है, और चेतन प्रकृति मेरे अंशसे उत्पन्न होकर भोक्ता रूपसे देहमें प्रवेश करके अपने कर्मोंसे स्थावर और जङ्गम शरीरको धारण करती है। हे धनञ्जय। ये दोनों प्रकृतियां मुझसे ही उत्पन्न हुई हैं, इससे मैं ही सब जगत्का परम कारण और संहार करनेवाला हूं इसीसे मुझसे बढ़कर अर्थात् संसारको उत्पन्न करनेवाला और संहार करनेवाला दूसरा कोई भी नहीं है। जैसे धागेमें मणि गुथे रहते हैं, उसी प्रकारसे मुझमें यह सारा संसार गुथा (पिरोया) हुआ है। कौन्तीनन्दन। मैं ही जलमें रस हूं और चन्द्रमा तथा सूर्य्यमें प्रकाश भी मेरा ही है, सब

वेदोंका प्रणव मैं ही हूं, मैं आकाशमें शब्द, पुरुषोंमें पुरुषार्थ मिट्टीमें सुगन्ध और अग्निमें प्रकाश हूं, मैं ही सब प्राणियोंका जीवन और तपस्या करनेवालोंकी तपस्या हूं। हे पार्थ! तुम मुझे सम्पूर्ण प्राणियोंका सनातन बीज जानो। हे भरतर्षभ! मैंही बुद्धिमान् लोगोंकी बुद्धि और तपस्वियोंका तेज हूं; तथा तेजवाले पदार्थोंमें तेज और प्रकाश मैं ही हूं; बलवान् पुरुषोंमें काम और राग शून्य बल मेरा ही रूप है; अर्थात् सात्विक भावसे स्वधर्मके अनुष्ठानमें सामर्थ और सब प्राणियोंके धर्मके अनुकूल काम मैं ही हूं। जो सब शम, दम, आदिक सात्विक और हर्ष, अभिमान आदि राजस तथा मोह शोक तामस भाव प्राणियोंमें अपने कर्मके वशसे उत्पन्न होते हैं, उन सबहीको मुझसे उत्पन्न हुआ जानो, अर्थात् वह सब मेरी ही प्रकृतिके कार्य्य हैं। परन्तु जीवकी भांति मैं प्रकृति और उसके गुणोंके वशमें नहीं होता, बरन वे ही मेरे आधीन रहकर मुझमें वर्त्त-मान रहते हैं। ऊपर कही हुई सात्विक, राजस और तामस प्रकृति और उनके गुणोंसे जो सम्पूर्ण प्राणी मोहित हुए रहते हैं, इसी हेतुसे, मुझे नहीं जान सकते। मैं इन तीनों गुणोंसे अलग (परे) और अविनाशी हूं, और इन त्रिविध गुणोंका नियन्ता भी हूं, इससे मुझमें किसी विकारकी सम्भावना नहीं है। यह मेरी अलौकिक गुणोंसे भरी माया रूपी शक्ति बहुत ही दुःखसे दूर होनेवाली है। जो लोग मेरी शरणमें आते हैं, वे ही इस मायासे पार हो सकते हैं। जो अधम-पुरुष विवेक और ज्ञानसे विमुख हैं, जो पापमें लगे रहते हैं, जिन लोगोंकी गुरुओंके द्वारा ज्ञान उत्पन्न होकर भी मायाके प्रभावसे नष्ट हो जाता है, जो दम्भ, क्रोध, अभिमान और निठुरता आदि आसुरी-भावोंका आसरा करते हैं; ये सब लोग मेरा भजन नहीं कर सकते। हे भरतर्षभ अर्जुन! दुःखी, आत्म-ज्ञानकी इच्छा करनेवाले, लोक-परलोककी कामनावाले, तथा अर्थकी इच्छा रखनेवाले और ज्ञानी पुरुष,—ये चारों पुरुष यदि पूर्व्व जन्मके पुण्यात्मा हों, तो मेरा भजन करते हैं ऊपर कहा हुआ ज्ञानी पुरुष मुझमें ही निष्ठावान् और मेरा ही भक्त होता है; मैं उसका अत्यन्त प्रिय और वह भी मेरा बहुत ही प्यारा होता है; इससे वह ऊपर कहे चार प्रकारके मनुष्योंमें सबसे उत्तम है। ये चारो पुरुष बड़े हैं, उनमें आत्मज्ञानी पुरुष मेरे मतसे मेरा ही स्वरूप है, क्योंकि वह मुझमें ही निष्ठावान् होकर सबसे उत्तम गति जो मैं हूं, मेरा ही आसरा, और मुझमें स्थिति (वास) करता है। बहुतसे जन्मोंके पुण्यसे अन्तमें ज्ञानी होके इस सारे संसारको एक मात्र वासुदेव-रूप जानता है, इस प्रकारकी सब जग-हमें आत्मदृष्टिसे वह महात्मा मेरा भजन करता है; ऐसे ज्ञानवाले महात्मा बहुत ही दुर्लभ हैं। जो लोग पुत्र, कीर्त्ति और शत्रुओंके जीत-नेकी इच्छासे विवेक तथा ज्ञान-हीन होकर अपनी प्रकृतिके वशमें ही मुझे त्यागकर दूसरे देवताओंकी उपासनाके प्रकरणमें कहे हुए उप-वास आदि नियमोंसे उन देवताओंके भजन करते हैं, उनमेंसे जो लोग जैसे भक्त होते हैं जो पुरुष जिन देवताओंके रूपवाली मेरी मूर्त्तिकी पूजा करते हैं, मैं उस पुरुषकी उसी देवतामें श्रद्धा बढ़ा कर उसे दृढ़ कर देता हूं। वह उसी दृढ़ श्रद्धाके वशमें होकर उसी देव-ताकी आराधना और उपसना करता है, तिसके पीछे उसी उपासना करी हुई देवमूर्त्तिसे मेरी दी हुई अपने हितकी सब कामनाओंको पाता है। उन अल्पबुद्धिवालोंको फल मैं देता हूं किन्तु वह नाशवान् होता है, देवताओंका यज्ञ करनेवाले देवलोकको जाते हैं, और मेरे भक्त लोग अनादि, अनन्त परमानन्द स्वरूप जो मैं हूं,—मुझको पाते हैं। थोड़ी बुद्धिवाले

मनुष्य मुझ अव्यक्त,—मूर्त्ति-रहित, प्रपंचोंसे अलग रहनेवालेको मनुष्य, मछली, कछुवा, आदि भावसे उत्पन्न हुआ समझते हैं, क्योंकि वे लोग मेरे उत्तम स्वरूप नित्य-भावको नहीं जानते। मैं सब प्राणियोंके निकट प्रकाशित नहीं होता, क्योंकि मैं योगमायासे अर्थात् तीनों गुणोंसे छिपा रहता हूं। इससे यह सम्पूर्ण लोक मेरे रूपको जाननेमें असमर्थ होता है, और जन्म-मरणसे रहित मैं जो अविनाशी स्वरूप हूं—मुझको नहीं जान सकता। हे अर्ज्जुन। जो प्राणी गुजर (मर) गये, जो वर्त्तमान हैं, और जो आगे होंगे, उन सबको मैं जानता हूं, किन्तु मुझे कोई नहीं जान सकता। हे भारत। शरीरके उत्पन्न होनेपर उसके अनुकूल विषयोंमें इच्छा और प्रतिकूल विषयोंमें द्वेष उत्पन्न होता है, इन दोनोंसे जो सर्दी गर्मी, सुख, दुःख, वैर, प्रीति आदि द्वन्द्व मोह जो विवेक और ज्ञानके नष्ट होनेपर उत्पन्न होता है, उसीसे सब जीव मोहको प्राप्त होते हैं, कि मैं सुखी वा दुःखी हूं, इत्यादि। इसी प्रकारसे सब जगत् मोहित और प्रगट भया है, इसीसे मेरा भजन नहीं करता। जिन सब पुण्यात्माओंके प्रतिबन्धक सम्पूर्ण पाप नष्ट होजाते हैं, वे ही लोग द्वन्द्व और मोहसे छटके दृढव्रती होकर मेरा भजन करते हैं। जो लोग बुढ़ापा और मृत्युसे छूटनेके निमित्त मुझहीमें चित्त लगाकर मेरा ही आसरा करके यत्नवान् होते हैं, वे ही परमेश्वरको जान सकते हैं; सम्पूर्ण अध्यात्म विद्या और पूरे कर्म्मोंको जानते हैं। जो लोग मुझे अधिभूत (सम्पूर्ण जगत्‌रूप), अधिदैव (सब देवताओंका ईश्वर) और अधियज्ञ (सम्पूर्ण यज्ञोंका स्वामी) रूप जानते हैं, मेरे निमित्त वे ही महात्मा लोग आसक्त चित्त होकर मरनेके समय भी मुझहीमें मन लगाते और मुझे जान सकते हैं; अर्थात् मरनेके समयमें भी घबड़ाकर मुझको नहीं भूल जाते।

३० अध्याय समाप्त।

अर्ज्जुन बोले, हे पुरुषोंमें उत्तम कृष्ण! अध्यात्म-विद्या, कर्म्म, अधिभूत और अधिदैव जो तुमने कहे, वे सब क्या हैं? अधिभूत और अधिदैव क्या कहलाता है? और अधियज्ञ अर्थात् कर्म्ममें लगानेवाला तथा फल देनेवाला कौन है? और किस तरहसे वे इस शरीरमें रहते हैं? हे मधुसूदन। मनको वशमें करनेवाले पुरुष लोग तुमको अन्तकाल अर्थात् मृत्युके समय कैसे जान सकते हैं?

श्री भगवान् बोले, जो परम-अक्षर (अविनाशी) हैं, वे ही ब्रह्म हैं, उसी परब्रह्मका जो जीव-भाव है, जो देहको प्रकाशित करता है, उसको अध्यात्म कहते हैं। जरायुज आदि प्राणियोंकी उत्पत्तिके निमित्त देवताओंके वास्ते यज्ञ करना, इसीका नाम कर्म्म है। हे शरीरधारियोंमें श्रेष्ठ! नाश होनेवाले जो देह आदि पदार्थ हैं, जो प्राणियोंके अधिकारसे होते हैं, उन्हे अधिभूत कहते हैं। जो सब जीवोंका इन्द्रिय आदिका चलानेवाला, सब देवताओंके नायक, हिरण्यगर्भ तथा पुरुष नामसे देहरूपी नगरमें रहता है, वही अधिदैव कहा जाता है। इस शरीरमें मैं यज्ञ आदि सम्पूर्ण कर्म्मोंका प्रवर्त्तक होकर कर्म्मोंका फल-दाता रूपसे विद्यमान रहता हूं। इस निमित्त मुझे ही अधियज्ञ समझो। इस प्रकारसे सबके अन्तरकी बातोंको जाननेवाला मैं जो परमेश्वर हूं, मुझे अन्तकालमें स्मरण करते हुए जो लोग शरीर छोड़के उत्तरायण मार्गसे स्वर्गको जाते हैं; वे मेरे रूपको पाते हैं; इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। हे कुन्तीनन्दन। जो लोग अन्त-समय शरीर त्याग करते हुए जिन जिन देवता अथवा अन्य दूसरे

भावोंका स्मरण तथा ध्यान करते हैं, वे सर्व्वदा वैसे ही भावोंको प्राप्त होते हैं। क्योंकि पूर्व्व-वासना ही अन्तकालमें स्मरणकी हेतु होती है, और उस समयमें दुःख तथा क्लेशोंसे आर्त्त होजानेसे स्मरण करनेकी सम्भावना नहीं रहती; इस निमित्त तुम सर्व्वदा मेरा ध्यान करते रहो; परन्तु विना चित्तकी शुद्धिके सब समय स्मरण भी नहीं हो सकता इस कारण चित्तशुद्धिके वास्ते अपने धर्म्म अर्थात् युद्धादि कर्म्मोंका भी अनुष्ठान करो। इसी प्रकारसे मुझमें चित्त और बुद्धि लगानेसे अवश्य ही तुम मुझे पाओगे; इसमें कुछ भी संशय नहीं है। हे अर्ज्जुन! जो लोग अभ्यासरूपी उपायसे और सब विषयोंमें गमन करनेवाले मनसे उस परम-पुरुष परमेश्वरका ध्यान करते हैं; वे उसीको प्राप्त होकर परम सुख पाते हैं। वह परमेश्वर सर्व्वज्ञ, नित्य, सृष्टिकर्त्ता और आकाश तथा काल आदि सूक्ष्म पदार्थोंसे भी सूक्ष्म है, सबका पालन करनेवाला है, मलिनमन तथा बुद्धिसे न जानने योग्य है, वह सूर्य्यके समान प्रकाशित और अज्ञान-रूपी मोहान्धकारसे दूर है, जो लोग अन्त समयमें भक्तिपूर्व्वक और प्रमादशून्य होकर योगबलसे अर्थात् समाधि द्वारा चित्त शुद्ध करके स्थिरताके सहित नासिकाके अग्रभागमें दोनों भ्रू (भौंहों)के बीचमें प्राणवायुको स्थापन करते हुए, इस प्रकारके परम पुरुष-परमेश्वरका स्मरण करते हैं, वह प्रकाशमय परम-पुरुष परमेश्वरहीको पाते हैं। वेदके जाननेवाले जिसको अविनाशी कहते हैं, जिसमें राग, द्वेष तथा वासनाके रोकनेवाले यती लोग प्रवेश करते हैं, और जिसकी चाहके निमित्त बहुतेरे मनुष्य ब्रह्मचर्य्य करते हैं, उस पदकी प्राप्तिका उपाय तुमसे मैं संक्षेपमें कहता हूं। नेत्र आदि इन्द्रियोंके दशों दरवाजोंको रोकके, मनको हृदयमें ठहराके और प्राणवायुको दोनों भ्रूमध्य (भौंहोंके बीच) में स्थापन करके योगकी धारणामें प्रवृत्त होवे; परमेश्वरका वाचक एक अक्षर प्रणवका उच्चारण करके तथा वारम्वार मेरा स्मरण करता हुआ, जो पुरुष देह छोड़ता है, वह परम गति (मोक्ष) पाता है। हे अर्ज्जुन! जो लोग सब ओरसे चित्तको हटाकर प्रति दिन मेरा ही स्मरण करते हैं, उस नित्य मिलनेवाले योगीको मैं सहजहीमें मिलता हूं। वे महात्मा लोग मुझे पाकर फिर नाशवान् जन्म जो सब दुःखोंका घर है, उससे छूट जाते हैं; क्योंकि वह मोक्ष लाभ करते हैं। हे अर्ज्जुन! ब्रह्म-लोक वासियोंसे लेकर जितने लोक हैं, सबहीका विनाश होता है, उन लोकोंमें पहुंचकर फिर जन्म लेना पड़ता है। हे भारत! मुझे पाकर फिर जन्म नहीं लेना होता है।

मनुष्योंके एक वर्ष दिनकी देवताओंकी एक अहोरात्रि होती है, इसी तरहसे देवताओंके अहोरात्रिके हिसाबसे पक्ष, मासकी गिनती करते हुए देवताओंका एक वर्ष होता है; उस बारह हजार वर्षका चतुर्युग (चारो युग होते हैं। इस प्रकारकी हजार चतुर्युगीका ब्रह्माका एक दिन होता है; और ऐसे ही दूसरी एक हजार चतुर्युगीमें ब्रह्माकी एक रात्रि होती है। इसी प्रकार ब्रह्माके अहोरात्रि (रात दिन) की गिनतीसे एक सौ वर्षतक ब्रह्माकी आयु होती है। देवताओंके रातदिनके हिसाबसे इसी तरह हजार चतुर्युगी बीतने पर ब्रह्माका एक दिन होता है, और दूसरी हजार चतु-र्युगी बीतनेपर ब्रह्माकी एक रात्रि होती है। इस प्रकारसे ब्रह्माके दिन भर सम्पूर्ण चराचर प्राणी जगत्-निर्म्माता परब्रह्मसे उत्पन्न होते हैं, और ब्रह्मरात्रिमें उन्हीमें लीन होजाते हैं। हे अर्ज्जुन! सम्पूर्ण प्राणी मात्र उस ब्रह्म-दिनके आनेपर उत्पन्न होकर फिर उस ब्रह्म-रात्रिके आनेपर कारणरूपी उसी अव्यक्त परब्रह्ममें लीन होजाते हैं, और वही प्राणी पुनः ब्रह्म

दिनके आनेपर अपने अपने पूर्व्वकर्म्मानुसार फिर जन्म लेते हैं। सब भूतों (प्राणियों) का कारणभूत जो रूपरहित अविनाशी परमेश्वर है, उसी अविनाशी कारणभूतका अर्थात् उससे भिन्न जो रूपरहित अर्थात् नेत्र आदिसे न जानने योग्य जो अनादि भाव है, वह सम्पूर्ण प्राणियोंके विनाश- होनेपर भी नहीं विनष्ट होता। वही रूप-रहित अविनाशी ब्रह्म ही जन्म मरणसे रहित कहा गया है, पण्डित लोग उसीको परम गतिका स्थान कहते हैं। जहां जाकर फिर संसारमें नहीं आना पड़ता वह परम-धाम मेरा स्वरूप है। हे अर्ज्जुन। जिसमें सब प्राणी बसते हैं, और जो सारे संसारमें व्याप्त हैं, वही परम-पुरुष मैं केवल भक्तिहीसे मिलता हूं। हे भारत! उपासक लोग जिस समय देह छोड़ कर संसारमें फिर नहीं जन्म लेते अथवा जिस कालमें देहको त्यागनेसे पुन: संसारमें जन्म लेना पड़ता है, उसे मैं तुमसे कहता हूं तुम श्रवण करो। जो लोग ब्रह्मको उपासना करते हैं, वे लोग देवताओंके दिन, शुक्लपक्ष अर्थात् उत्तरायणके छ: महीनेमें शुक्ल पक्षके दिनको मरते हैं, वे उन्हीं उत्तरायण आदिके देवताओंके मार्गसे ब्रह्म (मोक्ष) पाते हैं। और जो लोग कर्म्मके करनेवाले हैं, वे धूम, रात्रि, कृष्णपक्ष तथा दक्षिणायनके छ: महीनेवाले देवताओंके मार्गसे जहां चन्द्रमाका प्रकाश है वहां पहुंचकर अपने कर्मोंके फलो भोग करके फिर संसारमें जन्म लेते हैं। जगत्में सब दिनसे प्राणी और कर्म्म करनेवाले पुरुषोंके भेदसे शुक्लपक्ष और कृष्णपक्षकी यह दोनों गति चली आती है। इन दोनों गतिओंमेंसे शुक्लपक्षकी गतिसे ससारमें फिर नहीं जन्म लेना पड़ता और कृष्णपक्षकी गतिसें फिर इस संसारमें जन्मग्रहण करना पड़ता है। हे अर्ज्जुन! इन दोनों तरहके मार्गोंको जानकर फिर कोई योगी पुरुष कभी मोहित नहीं होते अर्थात् स्वर्गादिक फलकी कामना छोड़ कर परमेश्वर-होमें निष्ठावान् होते है। इस निमित्त तुम सर्व्वदा योगाभ्यासमें लगे रहो, हे अर्ज्जुन। इस अध्यायमें कहे हुए प्रश्न-निर्णयार्थ तत्व जाननेसे वेद पढ़ना, शरीरको सुखाना, तपस्या, दान आदि जो उत्तम कर्मोंके फल शास्त्रोंमें कहे गये है, सबसे बढ़ कर जो सबका मूल जड़ विष्णु-पद (मोक्ष) है, योगी-पुरुष उसी मुक्तिपदको पाते है।

२१ अध्याय समाप्त।

श्रीभगवान् बोले, हे अर्ज्जुन! मैं फिर तुमको अपने माहात्म्यका उपदेश करता हूं, इस वास्ते मेरे ऊपर तुम्हारी दोष दृष्टि नहीं है; इससे फिर भी मैं उपासना समेत गुप्त भेद-युक्त ईश्वर विषयक ज्ञान तुमसे कहूंगा, जिसे जानकर तुम संसारके दुःख अर्थात् जन्म मरणसे छूट जाओगे। वह ज्ञान सब विद्याओंका राजा, अत्यन्त पवित्र, ज्ञानी लोगोंको जिसका फल प्रत्यक्ष है, तथा धर्म्म रूप अविनाशी सुख-साध्य और अक्षय-फलका देनेवाला है। हे शत्रुओंके जलानेवाले अर्ज्जुन। जो लोग इस धर्म्ममें श्रद्धा-हीन है, वे मुझको न पाकर मर्त्य लोकमें जो मृत्युका घर है, बार बार जन्मते मरते अर्थात् भटकते रहते है। रूपरहित मूर्त्तिसे मैं इस जगत्में व्याप्त हूं, सम्पूर्ण संसार भी मुझमें रहता है, परन्तु आकाशकी भांति मैं इस जगत्में लिप्त नहीं होता हूं। मेरी इस योग-मायाका ऐश्वर्य्य देखो,—यह सब चराचर जगत् मुझमें रहता है, परन्तु मैं उसमें लिप्त नही हूं, इससे यह मुझमे विद्यमान नहीं है। और भी आश्चर्य्य यह है कि, मैं सब प्राणियोंका धारण तथा पालन करता हूं, तौ भी मेरा स्वरूप इन सबमें नही रहता, अर्थात् जिस तरहसे जीव देहका

धारण और पालन करता हुआ अहंकारसे उसमें युक्त रहता है, उसी प्रकारसे मैं सब प्राणियोंका धारण, पालन करता हुआ भी उन भूतों (प्राणियों) से नहीं युक्त होता, तथा मेरा मन उनमें बंधा नहीं है, क्योंकि मुझमें अहंकार नहीं है। जिस प्रकारसे आकाशमें रहनेवाली वायु महान् बड़ी और सब जगहोंमें पूर्ण है, उसमें आकाशका लेश नहीं रहता, उसी तरहसे सम्पूर्ण चराचर जगत् मुझसे पृथक् समझना चाहिये। हे कुन्तीनन्दन! सम्पूर्ण प्राणी कल्पके अन्तमें तथा प्रलय-कालमें मेरी त्रिगुणात्मक मायामें लीन होजाते हैं; और पुनः कल्पके आरम्भमें, मैं उन सब चराचर भूतोंको (प्राणियोंको) विशेषरूपसे उत्पन्न करता हूं। मैं प्रकृतिको अवलम्बन करके इन चार प्रकारके अस्वतन्त्र भूतोंका उनके पूर्व कर्म्मके अनुसार बार बार उत्पन्न करता हूं। हे धनञ्जय! जगत्के उत्पन्न करनेवाले कर्म्म मुझे नहीं बांध सकते; क्योंकि मैं कर्मोंसे आसक्त तथा ममता-रहित होकर उदासीनकी तरह रहता हूं। अधिकार भावसे युक्त साक्षी वा प्राणस्वरूप जो मैं हूं, मेरे अधिष्ठानके वास्ते मेरी त्रिगुणात्मक माया अर्थात् अविद्या प्रकृतिसे ही यह सम्पूर्ण चराचर जगत् उत्पन्न होता है। हे कौन्तेय! मेरी इच्छासे यह सब संसार बार बार उत्पन्न होता है। जो लोग मेरे भूत मय परम तत्वरूपको नहीं जानते, वे ही मूढ़ लोग मुझे भक्तोंकी इच्छाके अनुसार मनुष्य देह धरनेसे नहीं पहचानते और मेरी महिमा न जानकर मेरी अवज्ञा करते है। वे लोग मुझको छोड़ कर देवताओंको शीघ्र फल देनेवाला समझते हैं किन्तु उनकी वह आशा व्यर्थ होती है, क्योंकि मुझसे विमुख होनेसे उनके कोई कर्म्म फल देनेवाले नहीं होते, और शास्त्रका ज्ञान भी नाना कुतर्कोंसे युक्त होकर उनके चित्तको विक्षिप्त कर देता है, क्योंकि वे लोग हिंसा आदि अत्यन्त तामसी तथा काम, क्रोध, अभिमान आदि बहुत ही राजसी और बुद्धिके नाश करनेवाली प्रकृतिके आसरेमें पड़ कर मेरी अवज्ञा करते हैं। हे अर्ज्जुन। जिनका चित्त काम आदिसे युक्त नहीं होता, वे लोग शम, दम, दया, श्रद्धा आदि लक्षणोंसे युक्त होकर देवताओंके स्वभाव (प्रकृति) का आसरा करके, तथा मुझको जगत्का कारण और नित्य समझके मेरा भजन करते हैं, वे सर्व्वदा दृढ़ नियममें स्थिर और यत्नवान् होके भक्तिपूर्व्वक मुझको स्तोत्र और मन्त्रोंसे प्रणाम करते हुए, मेरी उपसना करते है। बहुत लोग मुझको "सबमें एकमात्र विष्णु ही व्याप्त है"—इस प्रकारसे सर्वात्मदर्शन ज्ञान-यज्ञसे पूजते हुए उपसना करते हैं। उनमेंसे कोई कोई अभेद-भावसे, कोई कोई दास भावसे, कोई कोई मुझे विश्वमुख अर्थात् सर्वात्मका समझके ब्रह्मा, विष्णु, महेश, आदि विविध भावनाओंसे मेरी उपासना करते हैं। मैं वेदमें कहे हुए अग्निष्टोम आदि यज्ञ हूं, मैं स्मृतिमें कहे हुए पञ्चयज्ञ हूं; मैं पितृ लोकके निमित्त श्राद्धरूप हूं; मैं ही औषध, मै ही यजमान, और मन्त्र आदि भी मैं ही हूं; मैं ही होम आदिके साधनका पदार्थ; मैं ही घृत और मैं ही होमकी अग्नि हूं; मैं ही इस जगत्का पिता, माता, और पितामह हूं; मै कर्म्मका फल देनेवाला, मै ही जाननेके योग्य पवित्रोंसे पवित्र और ओंकार हूं। मैं ऋक्, साम और यजुर्वेद हूं, मैं ही प्राणियोंकी गति, उनका पालनकर्त्ता, नियन्ता और शुभ तथा अशुभ कर्मोंका द्रष्टा (देखनेवाला) हूं। मैं ही सुखका स्थान, रक्षा करनेवाला, हितकारी, उत्पन्न करनेवाला और संहार करनेवाला हूं। मैं ही सबका आधार, लयका स्थान, कारण और अविनाशी हूं। मै ही सूर्य्यरूप होकर सब जगत्को तपा रहा हूं, मैं ही वर्षाकालमें

जलकी वर्षा करता हूं, और फिर उस जलको सोखता हूं। हे अर्जुन! मैं ही देवता लोगोंका अमृत हूं; मैं ही देखने योग्य स्थूल वस्तु हूं, और मैं ही न देखने योग्य सूक्ष्म वस्तु हूं। इसी प्रकारकी अनेक भावनाओंसे बहुतसे लोग मेरी उपासना करते हैं। तीनों वेदोंमें कहे हुए कर्मोंमें जो मनुष्य रत हैं, वे मेरे ही रूप जो इन्द्रादिक देवता हैं, इस भेदको न जानकर यथार्थमें इन्द्र आदि देवता रूपसे अग्निष्टोमादि यज्ञसे पूजा करके यज्ञके अन्तमें सोमपानसे सब पापोंको नाश करते हुए स्वर्गलोककी प्रार्थना करते हैं। वे लोग अपने पुण्यके प्रतापसे इन्द्रलोकमें जाकर, वहांपर देवताओंके भोगने योग्य उत्तम भोगोंको भोगते हैं। वे लोग विशाल-स्वर्ग-सुख भोग कर फिर पुण्य-कर्म्मके फल नाश होने पर मर्त्यलोकमें जन्म लेते हैं, और फिर भोग, काल तथा वेदविहित कर्मोंका अनुष्ठान करके स्वर्ग लोकमें जाते हैं,—इसी प्रकार उनका आवागमन लगा रहता है। और जो लोग ममता-रहित होकर मेरा ध्यान करते हुए मेरी उपासना करते हैं, मुझमें ही निष्ठा करने वाले उन पुरुषोंके मैं अप्राप्त विषयोंकी प्राप्ति और प्राप्त विषयोंकी रक्षा करता रहता हूं। हे कुन्तीनन्दन! श्रद्धावान् होकर जो लोग मुझसे पृथक् इन्द्रादिक देवताओंकी भक्तिके सहित उपासना करते हैं, वे भी मेरी ही उपासना करते हैं, किन्तु वे लोग मोक्ष पानेकी विधिके अनुसार उपासना नहीं करते, मैं जो सम्पूर्ण यज्ञोंका अर्थात् उन यज्ञोंके अनुकूल देवता रूपसे भोग करनेवाला हूं, और सम्पूर्ण यज्ञोंका फलदाता भी हूं,—इस प्रकारके यथार्थ-रूपसे वे लोग मुझको नहीं जानते; इसी कारणसे संसारमें आते जाते (आवागमन करते) रहते हैं। देवताओंकी पूजा करनेवाले पितृ लोक और मातृआदिक भूतोंके यज्ञ करनेवाले भूत-लोक और मेरे उपासक लोग मुझे पाते हैं। जो मनुष्य भक्तिके सहित पत्र, पुष्प तथा फल मूल मुझे चढ़ाता (देता) है, उसी शुद्धचित्त मनुष्यके भक्तिपूर्व्वक दिये हुए उन पत्र पुष्पादिकोंको मैं प्रीतिके साथ ग्रहण करता हूं। हे कुन्तीपुत्र! तुम भोजन, होम, दान और तपस्या आदि कर्म्म, तथा शास्त्रमें कहे हुए और स्वाभाविक जो कुछ कर्म्म करते हो, उन सबहीको जिस प्रकारसे होसके मुझे समर्पित करो। ऐसा करनेसे तुम पाप और पुण्य रूपी कर्म्मके बन्धनसे छूट जाओगे, तब मुझमें कर्म्म समर्पणरूपी सन्यास योगमें मन लगानेसे मुक्त होकर मेरे रूपमें मिल जाओगे। सब प्राणियोंमें मेरा सम-भाव है, इससे मेरा कोई शत्रु वा मित्र नहीं है। तब जो लोग भक्ति पूर्व्वक मेरा भजन करते हैं, मुझमें बास करते हैं, और मैं भी उन पुरुषोंमें वर्त्तमान रहता हूं यह केवल मेरे विषयकी भक्तिका ही महात्म्य है। अत्यन्त भ्रष्टाचारी मनुष्य भी यदि अत्यन्त-भक्त होकर मेरी उपासना करता है, तो उसे साधु समझना चाहिये, क्योंकि उसका व्यापार उत्तम है। बहुत कुकर्मी होनेपर भी मेरा भजन करनेसे वह शीघ्र ही धर्मात्मा होजाता है, और उसका चित्त शुद्ध तथा स्थिर होकर इसी परमेश्वरसे निष्ठावान् कर देता है। इससे वह नाश रहित परम शान्तिपद पाता है। हे कुन्तीनन्दन! मेरा भक्त जो नष्ट नहीं होता वरन कृतार्थ होजाता है-इसे तुम प्रतिज्ञा करके कह सकते हो। हे पार्थ! जो लोग अन्त्यज-(शूद्र)कुलमे जन्म लेते हैं, जो लोग कृषि और वाणिज्यमें ही रात दिन लगे रहते हैं, तथा जो वेद-विद्यासे रहित स्त्री और शूद्र आदिक हैं; वे भी जब मेरी सेवा करनेपर गति प्राप्त करते हैं,—तब भक्तिसे युक्त पुण्य वंशीय ब्राह्मण तथा राजऋषि लोग जो परम गति (मोक्ष) पावेंगे, इसमें क्या सन्देह है? इससे तुम सुख रहित इस

अनित्य (नाशवान्) मर्त्य-लोकमें आकर दुर्लभ पुरुषार्थ साधन करके मेरा भजन करो। मुझमें एकाग्र होकर मन लगाओ, मेरे उपासक बनो मेरी ही पूजा करो और मुझे ही प्रणाम करो ; इसी प्रकारसे मेरा आसरा करके मुझमें ही मन लगानेसे मैं जो परमानन्द रूप हूं,— मुझे पाओगे अर्थात् मुझमें मिल जाओगे ।

३२ अध्याय समाप्त।

श्रीभगवान् बोले, हे महाबाहो। तुम मेरे बचनोंमें बहुत प्रीति करते हो, इससे तुम्हारे हितकी इच्छासे मैं पुनर्वार परमेश्वरमें निष्ठा उत्पन्न करनेवाली बातोंको कहता हूं, तुम श्रवण करो,—मेरे अवतारोंको देवता और महर्षि लोग भी नहीं जानते, क्योंकि मैं उनकी उत्पत्ति तथा बुद्धि आदि प्रवृत्तिका आदि कारण हूं ; विना मेरी कृपाके मुझे कोई नहीं जान सकता। जो लोग मुझे जन्म मरणसे रहित अनादि और सब लोकोंका ईश्वर जानते है, वे ही सब मनुष्योंके बीच मोहसे छूट कर सब पापोंसे मुक्त होते है। बुद्धि—सार और असारके विचारमें निपुणता, ज्ञान—आत्मज्ञान, अहंकार—मोह, क्षमा धैर्य्य—सहनशीलता, सत्यय—यार्थ बचन कहना, इन्द्रियोंका संयम—शम अन्तःकरणका संयम सुख, दुःख, जन्म, मरण, डर, निर्भयता, अहिंसा—किसीको क्लेश न देना, समता—राग-द्वेषसे रहित, तुष्टि—ईश्वर प्रदत्त कार्य्योंमें सन्तोष, तपस्या—इन्द्रियोंके संयमसे शरीरको अपने अधीन करना, दान—न्यायसे पैदा किये हुए धनका सत्पात्रोंको प्रदान करना यश—सत्कीर्त्ति, अयश—अकीर्त्ति, यह सम्पूर्ण नाना भांतिके भाव प्राणियोंको मुझसे ही उत्पन्न होते है। भृगु आदि सात महर्षि और उनसे भी पुराने सनक आदि चार महा ऋषि, तथा स्वायम्भुव मनु आदिक चौदह मनु मेरे ही प्रभाव तथा संकल्प मात्रसे उत्पन्न हुए हैं, जिनके पुत्र, पौत्र, सन्तान और शिष्य आदिक यह सम्पूर्ण प्रजा इस जगत्में विद्यमान है। जो मनुष्य भृगु प्रभृति मेरी इस विभूति (सन्तति) योग सर्व्वज्ञतादि ऐश्वर्य्यको यथार्थ रूपसे जानते हैं ; वह निःसन्देह पूर्णदर्शी तथा अचल ज्ञान पाते हैं, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। मैं ही सब सृष्टिकी उत्पत्तिका कारण हूं मुझसे ही बुद्धि, ज्ञान, मोहादिकी प्रवृत्ति होती रहती हैं ; ऐसा जानकर ज्ञानी पुरुष मुझमें प्रीतिसे युक्त होकर मेरी उपासना करते हैं। मुझमें चित्त और प्राणको लगाये हुए, न्यायसे युक्त, श्रुति (वेद) आदिके प्रमाणोंको मानते अर्थात् समझते और दूसरेको भी समझाते है ; मेरी कथाको कहते हुए सन्तुष्ट रहते हैं और सबको प्रसन्न करते हैं। इस प्रकारसे प्रीतिपूर्व्वक मुझमें चित्त लगानेवालोंको मैं ऐसी निर्म्मल बुद्धि देता हूं, कि जिससे वे मुझको पाते हैं। इसके अनन्तर मैं उनके ऊपर दया करके उनकी बुद्धि-वृत्तिमें वास करके अज्ञान रूपी अन्धकारको ज्ञान रूपी दीपकसे नाश कर देता हूं।

अर्ज्जुन बोले, हे केशव। तुम ही परम पवित्र, परम धाम और पर-ब्रह्म हो, तुम्हारे माहात्म्यको भृगु आदिक समस्त ऋषि लोग और देवऋषि नारद, असित मुनि, देवल तथा व्यास ही तुम्हें जन्म-रहित और व्यापक कहते है और तुम भी स्वयं मुझसे वही कथा कहते हो। हे भगवन्! तुम मुझसे जो कुछ कहते हो वह सब मैं सत्य ही समझता हूं। हे पुरुषोत्तम! तुम्हारा अवतार देवताओंकी रक्षा और दैत्योंके विनाशके निमित्त होता है, इसे न देवता लोग ही जानते हैं ; और न दैत्योंहीको यह तुम्हारा अवतार मालूम होता है। हे जगत्के उत्पन्न करनेवाले! हे सबके ईश्वर! हे देवोंके देव! हे विश्वपा-

लक! तुम आप ही अपनेको स्वयं जानते हो, तुम्हारी यह सब आत्म विभूति अद्भुत है; जिससे तुम सम्पूर्ण लोकमें व्याप्त होकर निवास करते हो, उसी पूर्ण रीतिसे तुम ही कह सकते हो। हे योगेश्वर। मैं सर्व्वदा दूसरी चिन्ताओंमें मग्न रहता हूं, मैं तुम्हें किस प्रकारसे जान सकूंगा? हे भगवन्! हे जनार्दन! हे दैत्यारि! तुम अपनी सर्व्वज्ञता, योग, सर्व्व शक्ति और विभूतियोंको विस्तारपूर्व्वक फिर कहो; क्योंकि तुम्हारे अमृतके समान वचनोंको सुनकर मेरी तृप्ति नहीं होती है।

श्रीभगवान् बोले, हे कुरुकुलश्रेष्ठ! मेरी दिव्य विभूतियोंके विस्तारका अन्त नहीं है, उनमेंसे जो जो मुख्य विभूतिया हैं, उन्हें मैं तुमसे कहता हूं। हे गुड़ाकेश! मैं सब प्राणियोंके अन्तःकरणमें निवास करनेवाला परमात्मा हूं। मैं सबके जन्म, मृत्यु और संहारका कारण हूं। मैं द्वादश आदित्योंमें विष्णु नाम आदित्य हूं; प्रकाशमें किरणधारी सूर्य्य हूं। मैं सम्पूर्ण वायुमें मरीचि नाम वायु, और मैं ही तारागणोंके बीचमें चन्द्रमा हूं। वेदोंमें सामवेद, देवताओंमें इन्द्र और एकादश इन्द्रियोंके बीचमें मन मेरा ही स्वरूप है। सब जीवोंमें चेतना (विचार और ज्ञान) शक्ति मैं ही हूं। एकादश रुद्रोंमें मैं शङ्कर नामक रुद्र हूं; यक्ष, राक्षसोंमें मैं कुवेर हूं, मैं आठो वसुओंमें अग्नि और पर्व्वतोंमें सुमेरु हूं। हे अर्ज्जुन! तुम मुझे पुरोहितोंमें मुख्य वृहस्पति जानो। मैं सेनापतियोंमें स्वामि-कार्त्तिक हूं, और सम्पूर्ण जलका स्थानीय समुद्र हूं। महर्षियोंमें मैं भृगु हूं, वाक्योंके बीचमें मैं एक अक्षर (प्रणव) हूं; मैं पहाड़ोंमें हिमालय और वृक्षोंमें पीपल हूं। मैं देवर्षियोंमें नारद, गन्धर्व्वोंमें चित्ररथ और सिद्धोंमें कपिल मुनि हूं। अमृतके निमित्त समुद्र मथनेपर जो उच्चैःश्रवा घोड़ा और ऐरावत हाथी निकले वे भी मेरी विभूति हैं। मनुष्योंके बीच मैं ही राजा हूं, और शस्त्रोंमें बज्र हूं। मैं गौओंमें कामधेनु हूं; मैं ही प्रजाओंके उत्पन्न करनेका कारण अर्थात् कामदेव हूं। सब सर्पोंके कुलमें मैं ही शेषनाग हूं, जलके जीवोंका स्वामी बरुण भी मैं ही हूं। पितरोंमें अर्य्यमा नाम पितर और नियमसे दण्ड देनेवालोंमें यमराज मैं ही हूं। दैत्योंमें मैं प्रह्लाद हूं, वश करनेवाले अथवा गिनती करनेवालोंमें काल मैं ही हूं। पशुओंमें सिंह और पक्षियोंमें गरुड़ हूं। बड़े वेगसे चलनेवालोंमें मैं पवन हूं; शस्त्र धारियों अर्थात् शूरवीरोंमें मैं रामचन्द्र हूं। मैं ही मछलियोंमें मगर और नदियोंमें गङ्गा हूं। हे अर्ज्जुन। सब संसारका आदि मध्य और अन्त मेरी ही विभूति जानो, मैं सब विद्याओंमें अध्यात्म-विद्या और वादी प्रतिवादीके तत्वको निरूपण करनेके निमित्त सिद्धान्त हूं। अक्षरोंमें अकार, समासोंमें द्वन्द्व और प्रवाह रूपसे नाश न होनेवाला काल मैं ही हूं। मैं कर्म्मोंका फल देनेवाला ईश्वर हूं। सब ओर मेरा मुख है अर्थात् मैं सब विश्वको देखता हूं। सबके संहार करनेमें मैं मृत्यु हूं; मैं ही उत्पत्ति, कीर्त्ति, यश, लक्ष्मी, सरस्वती, मेधा, धृति और क्षमा हूं। साम-वेदकी ऋचाओंमें वृहत्साम और छन्दोंमें गायत्री छन्द मैं ही हूं। महीनोंमें मार्गशीर्ष और ऋतुओंमें वसन्त ऋतु हूं। छलियोंमें जूआ हूं, तेजवालोंमें तेज हूं, और मैं ही जयशील लोगोंमें जय रूप हूं। उद्योगियों तथा सब कामोंमें मैं परिश्रम हूं, और सत्वगुणी पुरुषोंमें मैं ही सत्वगुण हूं। मैं यदुवंशियोंमें वासुदेव और पाण्डवोंमें अर्ज्जुन हूं। मैं वेदार्थको मनन करनेवाले मुनियोंमें शुक्राचार्य्य और दण्ड देनेवालोंमें मै ही मैं शासन हूं, जयशील लोगोंमें साम दाम उपाय आदि नीति हूं। मैं गोपनीय विषयोंके छिपानेमें मौन (चुप) रहना और तत्वज्ञानियोंका आत्मज्ञान हूं। हे अर्ज्जुन! सब जगत और प्राणियोंका मूल तथा

बीज मैं ही हूं; विना मेरे कोई चराचर वस्तु उत्पन्न हो, ऐसी कोई वस्तु ही नहीं है। हे परन्तप! मेरी दिव्य विभूतियोंका शेष नहीं है, इस निमित्त सब नहीं कही जासकती हैं, इससे मैंने तुमसे संक्षेपमें कहा है। ऐश्वर्य-युक्त राजश्री, सब प्रकारकी शोभा बल आदिकी बढ़ती इत्यादि जो कुछ प्रभावशाली वस्तु हैं, वह सब मेरे तेजके अंशसे उत्पन्न हैं। हे अर्जुन! मेरी इन सब विभूतियोंको अलग जाननेकी तुम्हें क्या आवश्यकता है? क्योंकि इस सम्पूर्ण संसारमें मैं अपने एक अंशसे व्याप्त होरहा हूं इससे मुझसे अलग कोई भी वस्तु नहीं है।

३२ अध्याय समाप्त।

अर्जुन बोले, हे कमलनेत्र कृष्ण! मेरे शोक और मोहके नाश होनेके निमित्त, तुमने जो परम गुप्त परमात्मनिष्ठ आत्मा और अनात्माका विवेक विषयक ज्ञान कहा, उससे मैं इन लोगोंका मारनेवाला होऊंगा और मुझसे ये मारे जायंगे,—इत्यादि भ्रम और अज्ञान मेरा नष्ट होगया। तुमसे ही सब जीवोंकी उत्पत्ति और उनका संहार होता है, उसे और तुम्हारे नाश-रहित विस्तार माहात्म्यको मैंने सुना। हे परमेश्वर! तुमने जिस प्रकारसे कहा, वह सब सत्य ही है, उसमें मुझे कुछ भी अविश्वास नहीं है। हे पुरुषोंमें उत्तम कृष्ण! जैसा तुम अपनेको कहते हो वैसे ही तुम्हारे रूपको देखनेकी इच्छा है। हे प्रभो! हे योगियोंके ईश्वर! तुम यदि मुझे उस अपने रूपके देखने योग्य समझते हो, तो अपना अव्यय और अविनाशी रूप मुझे दिखाओ।

श्रीभगवान् बोले, हे अर्जुन! तुम मेरे सफेद और काले नाना आकृतियोंके सैकड़ों, हजारों तथा अगनित आश्चर्यमय रूपोंको देखो। हे भारत! तुम मेरे शरीरमें आदित्य, वसु, रुद्र, अश्विनीकुमार और मरुद्गणको देखो। अनेक प्रकारके रूपोंको जिनको तुमने वा किसीने पहले नहीं देखा था, उनको देखो। हे गुड़ाकेश! हमारे शरीरमें इसी जगह ठहरके जङ्गम, स्थावर सहित सब जगत्को और जो कुछ देखनेकी इच्छा करते हो, वह सब अभी देख लो। परन्तु तुम अपनी इन चमड़ेकी आखोंसे मेरा दिव्य रूप न देख सकोगे; इस निमित्त मैं तुम्हें अलौकिक ज्ञानका नेत्र देता हूं; उससे मेरे बड़े तेजस्वी प्रकाशमान, योग और ऐश्वर्यको देखो।

सञ्जय बोले, हे महाराज धृतराष्ट्र! महा योगेश्वर कृष्णने ऐसा कहके अनेक मुख, बहुतसे नेत्रयुक्त, बहुत तरहके अद्भुत दर्शन, अनेक दिव्य भूषणोंसे शोभित, अनेक दिव्य शस्त्रोंको धारण किये हुए, बहुतसी दिव्य माला और अम्बर पहरे हुए तथा दिव्य सुगन्धियोंको शरीरमें लगाये, सब तरहके अचरजसे भरे, प्रकाशमान अनन्तरूप और संसार भरमें मुह (सब जगत और दिशाओंमें जिसका मुह है) धारण किये, सर्व्व भूतात्मा, प्रकाशित, परम ऐश्वर्य्ययुक्त रूपको दिखाया। यदि आकाशमें एक ही समय हजार सूर्य्यका प्रकाश हो, तो किसी तरहसे वह प्रकाश उन विराट् रूपी महात्माके समान हो सकता है। पाण्डुपुत्र अर्जुनने देवोंके देव कृष्णके शरीरमें देवता, पितर, मनुष्य आदि भेदसे सब जगत्के अनेक जीवोंको देखा।

अनन्तर उस अचरजमयी मूर्त्तिको देखकर अर्जुन भयसे व्याकुल होगये, और उनके शरीरके रोंए खड़े होगये। अनन्तर अर्जुनने शिर झुका और हाथ जोड़के उस मूर्त्तिको प्रणाम किया और फिर कहने लगे,

हे देवेश। तुम्हारे शरीरमें सूर्य्य आदि सब देवता, जरायुज और अण्डज आदि सम्पूर्ण प्राणी, तथा दिव्य नागोंको देखता हूं; इन सबके बनानेवाले पद्मासनपर बैठे हुए ब्रह्माको भी देखता हूं। हे विश्वरूप जगत्के स्वामी! मैं तुम्हे बहुतसे भुजाओंसे युक्त अनेक नेत्र तथा बहुतसे मुखवाला देखता हूं। मुझे तुम्हारा आदि मध्य और अन्त नहीं दीखता है। चारों ओर तुम्हारा अनन्त रूप देखता हूं, मै किरीट, गदा, और चक्र लिये हुए सर्व्वत्र प्रकाशमान तेजसे भरे तथा अग्नि और सूर्य्यकी ज्योतिके समान प्रकाशमान, कठिनाईसे निश्चय करने और देखने योग्य तुम्हारा रूप चारों ओर देखता हूं। मैं तुम्हें अविनाशी, परब्रह्म, मुमुक्षु लोगोंसे जानने योग्य ससारके निवास स्थान, नित्य धर्म्मका पालन करनेवाला और सनातन पुरुष समझता हूं। मैं तुम्हें उत्पत्ति स्थिति और नाश रहित, अनन्त-प्रभाव, बहुत सी भुजाओंसे युक्त तथा चन्द्रमा सूर्य्यको तुम्हारे नेत्र-स्थानमें देखता हूं। जलती हुई अग्निके सदृश तुम्हारा मुंह है और तुम्हारे तेजसे यह जगत् प्रकाशित होरहा है। आकाश, पृथ्वी और अन्तरिक्ष अर्थात् इन दोनोंका मध्य और सब दिशाओंमें तुम्हारा रूप पूर्ण होरहा है। हे परमात्मन्! तुम्हारे इस अद्भुत, भयानक और अचरजसे भरे हुए उग्र रूपको देख कर तीनों लोक भयसे व्याकुल होगये हैं। यह सब देवता लोग जो पृथ्वीके भार उतारनेको मर्त्यलोकमें उत्पन्न होकर वीर तथा योद्धा रूपसे दीख पड़ते हैं, उनको तुम्हारे शरीरमे प्रवेश करता हुआ देखता हूं; उनमेंसे कोई कोई भयसे दुःखी होकर हाथ जोड़कर तुम्हारी स्तुति करते हैं। महर्षि और सिद्ध लोग जगत्के कल्याणके निमित्त तुम्हारी बहुत सराहना करके स्तुति करते हैं। ग्यारह रुद्र, बारह आदित्य, आठ वसु, सम्पूर्ण देवता, साध्य, अश्विनीकुमार, मरुत् गण, पितर, गन्धर्व्व, यक्ष, विरोचन आदि असुर और सिद्ध लोग मारे डरके भयभीत होकर तुम्हें देख रहे हैं। हे महाबाहो। तुम्हारे बहुत मुख, आख, भुजा, पेट और असंख्य जङ्घाएं हैं, तथा अगीनित चरण हैं, और भयानक तीखे दातवाले सब सामर्थसे पूरे तुम्हारे इस सबसे बड़े रूपको देखकर चौदहों लोक भयसे व्याकुल और चकित होगये हैं। हे विष्णो। तुम्हें आकाश भरमें व्याप्त, तेजपुञ्जसे भरे हुए, और तुम्हारे नाना रङ्ग विरङ्गके बहुतसे मुख और अग्निकी ज्वालाके समान जलते हुए विशालनेत्रोंको देखकर मेरा अन्तरात्मा व्याकुलतासे दुःखी है; मनकी स्थिरता समझ नहीं पड़ती, मैं धीरज धारण नहीं कर सकता हूं। हे देवताओंके ईश्वर! प्रलयकालकी अग्निके समान प्रकाशमान और कराल दांतोंसे युक्त तुम्हारे बहुतसे मुंह देख कर मुझे सुख नहीं मिलता है, हे जगत्के स्वामी! मेरे ऊपर प्रसन्न होइये। मैं देखता हूं, कि जयद्रथ आदि राजाओंके सहित दुर्य्योधन आदि सब धृतराष्ट्रके पुत्र लोग और भीष्म, द्रोण, कर्ण तथा मेरी ओरके मुख्य मुख्य वीर शिखण्डी, धृष्टद्युम्न आदिक सब बहुत जल्दीसे तुम्हारे अनेक दांतोंसे युक्त विकराल मुखमें प्रवेश कर रहे हैं। इन लोगोंमेसे कोई कोई तुम्हारे कठोर और भयानक तीखे दांतोंकी रेखामें अटक रहे हैं; और उनके शिर चूर चूर दिखाई देते हैं। जिस प्रकार नदी बहुत वेगसे बढ़ती हुई समुद्रमे जा गिरती है, वैसे ही यह समस्त वीर लोग तुम्हारे ज्वालाकार मुखोंमें प्रवेश कर रहे हैं। जिस प्रकारसे जलती हुई अग्निमें पतङ्ग अपने नाशके निमित्त बड़े वेगसे चले जाते हैं तैसे ही ये सब वीर लोग तुम्हारे विकराल दांतोंसे युक्त मुखोंमे घुसे जाते हैं। हे विष्णु! तुम अपने अग्निके समान मुखोंसे

सब लोकोंको ग्रास तथा भक्षण कर रहे हो। तुम्हारे तेजसे सम्पूर्ण संसार भर गया है; यह तुम्हारा रूप सबको दुःख देरहा है और बड़े कठोर तेजसे सबको भस्म कर रहा है। ऐसे प्रचण्ड तथा विकराल मूर्त्तिवाले तुम कौन हो? मैं तुम्हें जाननेकी इच्छा करता हूं। हे देवताओंमें उत्तम! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं; मेरे ऊपर प्रसन्न होइये। किस कारणसे तुम्हारी ऐसी कार्य्योंमें प्रवृत्ति है, इसे मैं नहीं जान सकता हूं। क्या तुम आदि पुरुष हो? मैं तुम्हें अच्छी प्रकारसे जाननेकी इच्छा करता हूं।

श्रीभगवान् बोले, मैं सब लोकोंका नाश करनेवाला काल हूं। सब लोकोंके संहार करनेके निमित्त इस समय प्रवृत्त हुआ हूं। ये सब जितने योद्धा इस सेनामें अलग अलग सेनाके बीच निवास करते हैं, तुम्हारे सिवाय और कोई भी जीते न बचेंगे। इससे हे अर्जुन! तुम उठके खड़े होजाओ, शत्रुओंको जीतकर यश प्राप्त करो और बढ़ती हुई राजलक्ष्मीका भोग करो। मैने पहले ही इन सब लोगोंको मरा हुआ समझ रक्खा है, इस समय तुम केवल निमित्त मात्र बनोगे। द्रोणाचार्य्य, भीष्म, कर्ण, जयद्रथ, तथा और वीर लोग जब मेरी इच्छानुसार मर रहे हैं, तब तुम इनके मारनेमें क्यों दुःखी होते हो? इन्हें अवश्य मारो, युद्ध करनेको खड़े होजाओ, अवश्य तुम्हारी जीत होगी।

सञ्जय बोले, हे महाराज! अर्जुनने कृष्णकी ऐसी बातोंको सुन कर, कांपते हुए भयसे दुःखित हो शिर झुका और दोनों हाथ जोड़के उन्हें प्रणाम किया। और गद्गद वचनसे फिर हाथ जोड़के कहने लगे, हे हृषीकेश! तुम्हारे माहात्म्यका वर्णन और स्तुति करनेसे सब जगत् प्रसन्न होता और प्रीति करता है, यह योग्य ही है, राक्षस लोग भयसे दुःखित होकर सब दिशाओंमें भाग जाते हैं, और योग, तपस्या और मन्त्रोंसे सिद्ध लोग तुमको नमस्कार करते हैं, यह बहुत उचित है। हे महात्मन्! हे देवेश! हे जगन्निधान! हे अनन्त! ऊपर कहे हुए सिद्धोंके समूह तुम्हें क्यों न प्रणाम करेंगे? क्योंकि तुम ब्रह्मा प्रभृतिके भी आदिकर्त्ता हो, इससे सबसे बड़े हो। तुम सत्, असत् अर्थात् सबके मूल कारण ब्रह्म हो। हे अनन्तरूप, देवताओंके स्वामी! तुम आदिपुरुष, अविनाशी और गुप्त तथा प्रत्यक्षसे परे हो। तुम देवताओंके आदि, जगत्के लयके स्थान, सनातन, पुराण और जो कुछ जानने योग्य वस्तु है, वह सम्पूर्ण तुम ही हो, वह परमधाम जिसे विष्णुपद कहते हैं, वह भी तुम ही हो; तुम पितामह ब्रह्मा और उनके भी उत्पन्न करनेवाले हो, इससे तुम प्रपितामह हो, इस निमित्त तुम्हें सहस्र बार प्रणाम है। तुम्हींसे सब जगत् व्याप्त होरहा है; वायु, जल, अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, वरुण आदि देवता और पितामह तथा प्रपितामह तुम ही हो, इससे तुमको सहस्रों बार प्रणाम है। हे सर्वात्मन्! तुम्हारे सम्मुख नमस्कार, तुम्हारे पीठ पीछे नमस्कार और तुम्हें सब ओरसे प्रणाम है। तुम्हारी अनन्त सामर्थ और अकथनीय पराक्रम है। तुम जगत्में बाहर भीतरसे व्यापक हो इससे सब वस्तु तुम्हारे ही रूप हैं। हे अच्युत! मैं तुम्हारी इस महिमाको न जानकर, तुम्हें अपना मित्र मानके, प्रमाद, प्रीति उन्मत्तता, और हँसीमें जो कुछ अनादर तथा ढिठाई की है, तथा चलते, फिरते, खाते, पीते, सोते, बैठते, परिहास एवं अकेले अथवा लोगोंके आगे जो कुछ सुझसे विना जाने अपराध हुआ हो,—उसके निमित्त मैं तुमसे क्षमा मांगता हूं। हे प्रमाणसे बाहर प्रभाववाले! तुम इस सम्पूर्ण चराचर जगतके पिता, पूज्य, गुरु और गुरुओंसे भी बड़े हो। जब तीनों लोकमें

भी तुम्हारे समान दूसरा कोई नहीं है, तब तुमसे बड़ा दूसरा कोई कहांसे होगा? तुम जगत्के नियन्ता और स्तुति करनेके योग्य हो। इससे हे देवोंके देव! मैं तुम्हें दण्डवत् (सब शरीरको पृथ्वी पर गिराके साष्टांग प्रणाम) करता हूं; तुम्हारे प्रसन्न होनेके निमित्त प्रार्थना करता हूं। जिस तरहसे पुत्रके अपराधको पिता और मित्रके अपराधको मित्र, तथा प्रियजनोंके अपराधोंको प्यारे मनुष्य क्षमा करते हैं, उसी प्रकार तुम मेरे अपराधोंको क्षमा करनेके योग्य हो। हे देवेश! हे जगत्के निवास स्थान! तुम्हारे इस रूपको, जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था, देखके मैं प्रसन्न और हर्षित हूं, परन्तु उससे मेरा मन दुःखी और अधीर भी होरहा है, इससे हे देवोंके देव! मेरे ऊपर अब प्रसन्न होइये, मुझे अपना वही पहला स्वरूप दिखलाइये, मैं तुम्हें पहलेकी भांति किरीट-युक्त, गदा और चक्रधारी देखनेकी इच्छा करता हूं। हे सहस्र भुजावाले! हे विश्वमूर्त्ति! अब इस विराट् रूपको समेट कर वही चतुर्भुजी मूर्त्तिसे प्रकट होजाइये।

श्रीभगवान् बोले, हे अर्ज्जुन! तुम क्यों डरते हो? मैने तुम्हारे ऊपर प्रसन्न होकर यह अपने ऐश्वर्य्यसामर्थके हेतु आदिभूत, विश्वात्मक, अनन्त और प्रकाशमय अपना रूप तुम्हें दिखाया है, जिसको तुम्हें छोड़ और किसीने कभी इस लोकमें न देखा था। हे कुरुकुल प्रवीर! वेद, यज्ञ, अध्ययन, अग्निहोत्र आदि क्रियाके करनेवाले तथा चान्द्रायण आदि कठोर तपस्यासे भी मर्त्यलोकमें तुम्हें छोड़ कोई भी मेरे इस रूपका दर्शन करनेमें कभी समर्थ न हुआ। मेरे इस प्रकारके घोर तथा भयकर रूपको देखकर तुम्हें भय और मोह उत्पन्न होता है; इस निमित्त जिससे तुम्हारे भय तथा दुःख छूट जाय,—मैं तुम्हें वही अपना पूर्व्व रूप दिखाता हूं; तुम भय रहित होकर प्रीति पूर्व्वक वही रूप देखो।

सञ्जय बोले, हे राजा धृतराष्ट्र! अनन्तर महात्मा श्रीकृष्ण भगवान् अर्ज्जुनको भयभीत देख कर उन्हें शान्त करते हुए अपनी प्रसन्न मूर्त्ति धारण करके जैसे पहले थे, वैसे ही होगये, और अर्ज्जुनको आशा भरोसा दिया। अनन्तर अर्ज्जुन बोले, हे जनार्द्दन! अब मैं तुम्हारे इस सुकुमार मनुष्य रूपको देखकर सुखी हुआ, और मेरा चित्त भी अब प्रसन्न होगया।

श्रीभगवान् बोले, हे अर्ज्जुन! मेरे उस जगत् रूपको जो तुमने देखा, उसका देखना बहुत ही कठिन हैं, देवता लोग भी मेरे उस विराट् रूपके देखनेकी इच्छा करते हैं। हे परन्तप! तुमने जिस प्रकारसे मेरे रूपका दर्शन किया, इस भांतिसे वेद पढ़के, तथा यज्ञ, दान और तपस्यासे भी कोई मनुष्य कभी नहीं देख सकता। मुझमें ही एक मात्र चित्तको लगाकर कोई महात्मा पुरुष अनन्य-भक्ति पूर्व्वक मेरे उस विश्वरूपको जान सकता है तथा देखता है; और अध्यात्मभावसे उसमें प्रवेश कर सकता है। हे पाण्डव! मेरे ही लिये कर्म्म करनेवाला, मेरा ही आसरा करनेवाला, मेरे ही निमित्त पुरुषार्थ करके ज्ञान प्राप्त करनेवाला, पुत्रादिकोंमें ममता रहित, और सबसे शत्रुताचरणसे रहित पुरुष मुझे पाता है।

३४ अध्याय समाप्त।

अर्ज्जुन बोले, इसी प्रकारसे तुम्हें सब कर्म्म समर्पण करते हुए, तुममें ही निष्ठावान् होकर जो भक्त लोग जगत् रूप सर्व्वज्ञ और सर्व्व शक्तिमान् तुम्हारी उपासना करते हैं; और जो लोग नाशरहित, अक्षर, मूर्त्तिरहित ब्रह्मको उपासना करते हैं, इन दोनोंसे अधिक योगके जाननेवाले कौन हैं?

श्रीभगवान् बोले, हे अर्जुन! जो लोग जगत् रूपी, सर्व्वज्ञ और सर्व्व शक्तिमान् मुझमें चित्त लगा कर मेरे निमित्त कर्म्मका अनुष्ठान करते हुए श्रद्धा पूर्व्वक मेरी उपासना करते हैं, वे ही मेरे मतमें पूरे योगी हैं। और जो लोग सब प्राणियोंके हितमें रत और सर्व्वत्र समान बुद्धि रखते हैं, और इन्द्रियोंके समूहको भली भांतिसे रोककर नाश रहित, इन्द्रियोंसे न जानने योग्य, निराकार, सर्व्वव्यापक और नित्य-रूपकी उपासना करते हैं, वे लोग भी मुझे ही पाते हैं। किन्तु इसमें विशेष बात यही है, कि रूपरहित अविनाशी ब्रह्ममें चित्त लगानेवालों-को अधिक क्लेश होता है; क्योंकि शरीर-धारियोंको निराकार ब्रह्मतक पहुंचना बहुत कष्टसाध्य अर्थात् अत्यन्त दुर्लभ है। और जो लोग एकचित्त होकर सब कर्म्मोंको मुझे समर्पण करते हुए अनन्य योग अथवा मेरे वास्ते एक ही भक्तियोगसे मेरी उपासना करते हैं, वे मुक्त होजाते हैं। हे अर्जुन! जिसका मन मुझमें लगा है, उसे मैं मृत्यु-युक्त संसार-सागरसे शीघ्र ही पार कर देता हूं; इससे तुम मुझमें ही अपना मन ठहराओ और बुद्धि लगाओ; ऐसा करनेसे तुम इस शरीरको छोड़नेपर मुझमें मिल जाओगे, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। हे धनञ्जय! यदि तुम चञ्चल-चित्तको मुझमें न ठहरा सको; तो मेरा ध्यान करते हुए अभ्यास योगसे मुझमें मिलने तथा मुझे पानेकी इच्छा करो। यदि अभ्यास करनेमें भी तुम असमर्थ हो, तो मेरी प्रीतिके निमित्त जो मेरे भजन स्मरण आदिक कर्म्म हैं, उन्हीमें लगे रहो। इस प्रकारसे सब कर्म्मोंको मेरे ही निमित्त करनेसे तुम्हें मुक्ति मिलेगी। जो यह भी तुमसे न होसके, तो मेरी शरणके आसरे होकर अग्निहोत्र आदि सब कर्म्मोंका फल त्याग कर इन्द्रियोंको वशमें करो। निश्चय है, कि ज्ञान-रहित अभ्याससे युक्ति सहित उपदेशयुक्त ज्ञान उत्तम है, उस ज्ञानसे ज्ञानपूर्व्वक ध्यान श्रेष्ठ है, और उससे भी यथोक्त रीतिसे कर्म्मका त्याग उत्तम है, इसी तरहसे कर्म्मके फलमें ममताकी निवृत्ति होनेसे ससारमें सदा शान्तरूप रहना अच्छा है। उत्तम पुरुषोंसे विरोधरहित, बराबरवा-लोंसे मित्रता और अपनेसे छोटोंपर दया, करना अच्छा है। जो सब जगत्से वैर रहित हो, जिसे सबपर दया हो, जो देह और इन्द्रि-योंसे ममतारहित हो, तथा अहङ्कारसे रहित, सुख दुःखको समान जाननेवाला, क्षमावान्, हानि और लाभमें प्रसन्नचित्त, प्रमादसे रहित, स्थिर-चित्त और मुझमें ही निष्ठा रखनेवाला, तथा मेरेहीमें दृढ़ निश्चय करनेवाला, और जिसका मन, बुद्धि मुझमें लगे है; ऐसा जो मेरा भक्त है, वही मुझको प्यारा होता है। जो प्यारी वस्तुओंके मिलनेसे प्रसन्न नहीं होता, अप्रिय चीजोंसे दुःखी नहीं होता, विषयोंके नाश होनेपर शोक नहीं करता, अप्राप्त विषयोंकी इच्छा नहीं रखता; —ऐसा जो मेरा भक्त है, वह मुझे प्यारा होता है। जो शत्रु, मित्र, मान, अपमान, सर्दी गर्मी, सुख और दुःखको समान जानता है, तथा किसीमें ममता नहीं करता और स्तुति, निन्दाको बराबर जानता है; जिसके वचन स्थिर हैं; जो कुछ मिले उसीमें प्रसन्न और सन्तुष्ट रहनेवाला, जिसका कोई घर नहीं ऐसा स्थिरचित्तवाला जो मनुष्य है वही मेरा भक्त और मुझे प्यारा है। जो लोग श्रद्धावान् और मुझमें अनुरक्त होके इस ऊपर कहे हुए अमृतरूपी धर्म्मका अनुष्ठान तथा मेरी उपा-सना करते हैं, वे ही भक्त मुझे बहुत ही प्यारे होते हैं।

३५ अध्याय समाप्त।

अर्ज्जुन बोले, हे केशव! मैं प्रकृति और पुरुष, क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ, ज्ञान और ज्ञेयके जाननेकी इच्छा रखता हूं।

श्रीभगवान् बोले, हे कुन्तीनन्दन! यह भोग करनेका घर शरीर क्षेत्र ठहराया गया है, इस शरीरको जो जानता है, तत्वके जाननेवाले ज्ञानी लोग उसे क्षेत्रज्ञ कहते हैं। हे भारत! मुझे ही तुम सब क्षेत्रोंमें क्षेत्रज्ञ रूपसे जानो, क्षेत्र और क्षेत्रज्ञका जो ज्ञान है, मेरी बुद्धिमें वही ज्ञान श्रेष्ठ कहे जानेके योग्य है; क्योंकि वही मोक्षका कारण है। वह क्षेत्र जिस प्रकारसे जड़, चेतन स्वभावयुक्त इच्छा आदिसे पूरा, इन्द्रिय आदि विकारोंसे युक्त प्रकृति और पुरुषके संयोगके आधीन उत्पन्न और जिस तरहसे जङ्गम तथा स्थावर भेदोंसे अलग हुआ है; तथा उसका क्षेत्रज्ञ भी जिस प्रकार ऐश्वर्य्य और प्रभाववाला तथा न जानने योग्य है, उसे मैं संक्षेपसे कहता हूं, तुम श्रवण करो। उस क्षेत्र और क्षेत्रज्ञके स्वरूपका वशिष्ठ आदि ऋषियोंने बहुत विस्तारसे वेदोंके अनुकूल कहा है, ऋक् आदि वेदोंमें कई प्रकारके छन्दों और मन्त्रोंमें तथा भ्रमरहित ब्रह्मसूत्रोंमें अनेक भांतिसे कहा गया है। भूमि आदि पांच महाभूत, अहङ्कार ज्ञानात्मक महत्तत्व, मूल-प्रकृति, दशोंइन्द्रिया मन और शब्द आदि पांचो विषय—ये चौबीस तत्व क्षेत्र हैं; इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख, देह इन्द्रियोंका मेल, मनकी वृत्ति, चैतन्यता और धीरज धारण करना—ये क्षेत्रके गुण मैंने तुमसे संक्षेपसे कहे हैं। अपने गुणोंकी प्रशंसा न करना, मान और दम्भसे रहित होना, किसीको दुःख न देना, क्षमा, नम्रता गुरुकी सेवा, पवित्रता, अच्छे मार्गमें प्रवृत्ति तथा निष्ठावान् होना, शरीरका संयम इस लोक और परलोकमें इन्द्रियोंका विषय भोगसे वैराग्य अर्थात् इन्द्रियोंको जीतना, अहङ्कारसे पूरी निवृत्ति, जन्म लेना, मरना, बुढ़ापा और रोगके निमित्त दुःखरूपी दोषोंको देखना, स्त्री, पुत्र घर तथा अन्य वस्तुओंमें आसक्ति (ममता) को त्याग देना, प्रिय तथा अप्रिय वस्तुओंके मिलनेको चित्तसे समान जानना, इत्यादि,—मुझमें सर्व्वात्म दृष्टिपूर्व्वक अनन्य योगसे दृढ़-भक्ति करना, एकान्त स्थानमें बैठना, और साधारण मनुष्योंकी सङ्गतिसे अलग रहना अध्यात्म ज्ञानमें निष्ठा रखना और तत्व-ज्ञानके निमित्त नित्य दृष्टि रखना इत्यादि—इन्हीको ज्ञानका साधन कहते हैं और इसके विरुद्ध अपने गुणोंकी प्रशंसा आदिको ज्ञानका विरोधी कहा गया है।

ऊपर कहे हुए ज्ञानके साधनोंसे जो जानने योग्य अर्थात् ज्ञेय है, उसे कहता हूं, उसको जाननेसे मोक्ष होता है। वह आदि-अन्तसे रहित परब्रह्म मेरा निर्व्विशेष रूप है। उसके प्रमाणके निमित्त सत् वस्तु और निषेधके वास्ते असत्-वस्तु—इन दोनोंसे अलग कही जाती है। उसके हाथ, पांव, आंख, कान और मुख सब जगहोंमें मौजूद हैं, और वह सब जगत् तथा सब पदार्थोंमें व्यापक है। वह सब इन्द्रियों और उनके विषयोंका प्रकाशक है, और इन्द्रियादिकोंसे रहित है। वह सङ्गसे अलग है, किन्तु सबका आधार है, वह सत्व आदि गुणोंसे रहित और उन गुणोंका पालनहार है। सम्पूर्ण सृष्टि और चराचरके बाहर भीतर पूर्ण है, बहुत सूक्ष्म रहनेके कारण जाना नहीं जाता, वह दूर रहता है और निकटसे भी निकट है। सब जगत्में मिला है और पृथक्की भांति रहता है। वह सब प्राणियोंका सृष्टि-कर्त्ता, पालनहार और संहार करनेवाला है। उसे सूर्य्य आदि प्रकाशमान पदार्थोंमें ज्योति स्वरूप अर्थात् उनका भी प्रकाशक जानना चाहिये। वह अज्ञानसे जानने योग्य और ज्ञानसे जानने योग्य बुद्धिवृत्ति तथा प्राणियोंके

हृदयमें विराजमान है। यह तुमसे क्षेत्र ज्ञान और ज्ञेयको मैंने संक्षेपसे कहा है। मेरे भक्त लोग इसे पूरा जानकर मेरे भावको पहुंचते हैं। प्रकृति और पुरुष दोनों अनादि हैं; और देह, इन्द्रिय, सुख, दुःख और मोह आदिको प्रकृतिसे उत्पन्न हुआ समझना चाहिये। शरीर और इन्द्रियोंकी क्रियाका निर्व्वाह करनेवाली प्रकृति है और सुख दुःखका भोक्ता क्षेत्रज्ञ अर्थात् पुरुष कहा जाता है। पुरुष प्रकृति अर्थात् कार्य्यरूपी शरीरमें रहकर कर्म्मोंके फल सुख दुःखको भोग करता है, और उन्हीं कर्म्मोंके अनुसार उत्तम और अधम शरीर पाता हैं। वह प्रकृतिके कार्य्यरूपी शरीरमें रहकर भी उससे अलग है; उसीको उपद्रष्टा, अनुमन्ता, भर्त्ता, भोक्ता और महेश्वर तथा परमात्मा कहते है। जो पुरुष और प्रकृतिको गुणोंके सहित जानता है; सब अवस्थाओंमें रहनेसे भी उसे फिर जन्म नहीं लेना पड़ता। जो पुरुष अपने शरीरमें ही आत्माका ध्यान करते हुए उसका दर्शन करते है वे उत्तम हैं। और कोई कोई प्रकृति, पुरुषकी आलोचना करते हुए योगसे उसका दर्शन करते है; वे लोग मध्यम है। कोई कोई ईश्वरके निमित्त कर्म्मोंको अर्पण करते हुए कर्म्मयोगसे उसे देखते है, वे अधम अधिकारी हैं। कोई कोई पहले कही हुई साधनाओंको न जानकर आचार्य्योंके उपदेशके अनुसार मेरा ध्यान करते हैं, वे अति अधम अधिकारी हैं, किन्तु वे भी श्रद्धा पूर्व्वक उपदेश सुनकर धीरे धीरे संसारसे पार होजाते हैं। हे भारत! जितने जीव अथवा स्थावर जङ्गम आदि वस्तु उत्पन्न होती हैं, उन्हें क्षेत्र और क्षेत्रज्ञके संयोगसे ही जानना चाहिये। जो जगत्की सब वस्तुओंमे परमेश्वरको विराजमान और उनके विनष्ट होने पर भी उसे अविनाशी जानता है वही पूर्णदर्शी कहाता है। वह ईश्वरको सब जगहमें सब समय तथा सब वस्तुओंमें समान निश्चयसे विराजमान देखता है, वह अपनी आत्मासे सच्चिदानन्द आत्माका तिरस्कार करके उसकी हिंसा नहीं करता, वही देह छोड़ने पर मोक्ष पाता है। जो देह और इन्द्रिय-रूपी प्रकृतिको ही सब कर्म्मोंका कारण जानता है, और आत्माको देहाभिमानसे पृथक् कर्म्मका कर्त्ता नहीं देखता, वही आत्माको जानता और सबका देखनेवाला कहाता है। जब स्थावर, जङ्गम आदि सृष्टिको पृथक्-रूपसे आत्माहीमें देखता और उसी आत्मासे सम्पूर्ण संसारको उत्पन्न हुआ जानता है,तभी वह ब्रह्म स्वरूप होजाता है। हे कुन्तीनन्दन! जिसकी उत्पत्ति होती है, उसका आदि भी है, किन्तु उस परमात्माकी उत्पत्ति नहीं है, इससे वह अनादि है,,और उसका कोई गुण भी नहीं है, कि जिसका कभी विनाश होगा। इससे वह अव्यय और अविकारी है वह शरीरमें निवास करके भी कोई कर्म्म नहीं करता और न कर्म्मके फलोंमें लिप्त होता है। जैसे आकाश सर्व्वत्र व्याप्त है और सूक्ष्म होनेसे भी किसी पदार्थमें लिप्त नहीं होता, उसी प्रकारसे आत्मा उत्तम, मध्यम और अधम शरीरोंमें निवास करके भी शरीरके गुण तथा दोषोंमें लिप्त नहीं होता। जो लोग विवेक तथा ज्ञानके नेत्रसे पहले की हुई रीतिसे क्षेत्र और क्षेत्रज्ञके भेद तथा जो पंच भूतोंकी प्रकृति पहले कही गई हैं, उनमेंसे मोक्षके उपाय ध्यान आदिको करना जानते हैं, वे परमार्थतत्व ब्रह्मको पाते अर्थात् मुक्त होजाते हैं।

३६ अध्याय समाप्त।

श्रीभगवान् बोले, हे अर्ज्जुन। परम ज्ञान जो सबसे उत्तम है, उसे मैं तुमसे फिर कहता हूं; जिसको जानकर सब मुनि लोग शरीर

बन्धनसे छूट कर मुक्त हुए है । इस उपदेश तथा ज्ञानका आसरा करके मनुष्य मुझे पाते हैं, और सृष्टिकी उत्पत्तिके समयमें भी नहीं जन्मते और न प्रलय कालके दुःखको ही भोगते हैं तथा उनको पुनर्व्वार जन्म नहीं लेना पड़ता। हे भारत! देश और कालसे अपरिछिन्न और बीज बोनेका स्थान जो मेरी प्रकृति है, उसमें जगत्के विस्तारके वास्ते जो सब लोग प्रलय कालमें मुझमें लीन रहते हैं, उन्हींको उनके कर्म्मानुसार उत्पन्न करता हूं। हे कुन्तीनन्दन! सब योनियोंमें जो स्थावर, जङ्गम आदि मूर्त्ति उत्पन्न होती हैं उन सबके उत्पत्तिका स्थान वही महत् तत्व अर्थात् प्रकृति है, मैं उन सबका पिता अर्थात् प्रकृतिमें बीज डालनेवाला हूं । हे महाबाहो! कर्म्मफलके कारणसे देहमें आसक्त जीव जो यथार्थमें अविकारी और नाशरहित है, उसे प्रकृतिके सत्व, रज, तम आदि गुण सुख, दुःख और मोहमें बांध देते हैं। हे पापरहित! ऊपर कहे हुए तीनों गुणोंमेंसे सत्वगुण प्रधान है, निर्म्मल वह प्रकाश करनेवाला, शान्तभावसे युक्त सुख तथा ज्ञानकी इच्छासे बांध देता है। हे कुन्तीनन्दन! रजोगुणको इच्छा और प्रीतिका स्वरूप तृष्णासे उत्पन्न हुआ समझो, रजोगुणसे अप्राप्तकी इच्छा और प्राप्त विषयोंमें आसक्ति होती है, इस लिये वह देहधारी जीवको स्वर्ग आदि फलोंके कर्म्मबन्धनमें बांध देता है। तमोगुणको अज्ञान शक्तिसे युक्त प्रकृतिसे उत्पन्न हुआ जानो, इस निमित्त वह सबको मोहनेवाला, उन्माद, निद्रा और आलस्यसे बांध देता है। हे भारत! सत्वगुण सुख और हर्षमें लगा देता है, रजोगुण पारमार्थिक और सांसारिक कर्म्मोंमें प्रवृत्त करता है तथा तमोगुण ज्ञानको नाश करके प्रमादयुक्त करता है। रजोगुण और तमोगुणको अलग करके सत्वगुण प्रकाशित होता है, सत्वगुण, और तमोगुणको दबाके रजोगुण प्रगट होता है; और रजोगुण तथा सत्वगुणको दूर करके तमोगुण उत्पन्न होता है। जिस समय सब द्वारों (इन्द्रियों) में ज्ञानका प्रकाश होता है, उस समय सत्वगुणकी बढ़ती समझनी चाहिये। हे भरतकुलपावन! जिस समय लोभ-प्रवृत्ति कर्मोंका आरम्भ,—इसे करके उसे करेंगे, इत्यादि संकल्प-उठते है, उस समय रजोगुणकी बढ़ती समझना उचित है। हे कुरुनन्दन! जब तमोगुण बढता है, तब बुद्धिकी मलिनता, ज्ञानका नाश किसी कार्य्यको करनेकी रुचि न होनी इत्यादि लक्षण उत्पन्न होते है। जब सत्वगुणके बढ़नेपर जीव मर जाता है, तो हिरण्यगर्भ आदिके उपासकोंके भोगने योग्य लोगोंमें जाता है। रजोगुणके बढ़ने पर जब जीव मरता है, तो कर्म्मसे युक्त मनुष्य लोकमें जन्म पाता है; और तमोगुणकी बढ़तीमें मरनेसे पशु आदि मूढ़-योनियोंमें जन्म लेता है। सत्वगुणके कर्मोंका फल निर्म्मल सुख, रजोगुणका दुःख और तामसिक कर्मोंका फल अज्ञान हैं। सत्वगुणसे ज्ञान, रजोगुणसे लोभ और तमोगुणसे प्रमाद, मोह और अज्ञान पैदा होते है। सत्वगुणी पुरुष क्रमसे मनुष्य, गन्धर्व्व आदि लोकोंसे होकर सत्य-लोकतक जाते हैं। रजोगुणी पुरुष तृष्णा आदिसे युक्त होकर मनुष्य-लोकमें रहते हैं; और तमोगुणी पुरुष प्रमाद, मोह आदिसे युक्त होकर तामिस्रादि नरकोंको जाते हैं। जब मनुष्य विवेकपूर्व्वक बुद्धि आदि गुणोंसे अन्य किसीको भी कर्त्ता नहीं समझता, और आत्माको गुणोंसे अलग जानता है, तब वह मेरा पद अर्थात् मुझे पाता है। देह आदि रूपसे जो ये तीनों गुण उत्पन्न होते हैं; उनसे रहित होनेपर शरीरधारी पुरुष जन्म मृत्यु, बुढ़ापा और दुःखोंसे छूटकर परमानन्दको पाते अर्थात् मुक्त होते हैं।

अर्जुन बोले, हे प्रभु सर्व्वसामर्थी कृपा

किन लक्षणोंसे तथा किन उपायों और आचारोंसे इन तीनों गुणोंसे अलग हो सकते हैं?

श्रीभगवान् बोले, हे अर्जुन। सत्त्वगुणका कार्य्य प्रकाशरूपी ज्ञान है; रजोगुणका कार्य्य कर्म्ममें प्रवृत्ति और तमोगुणका कार्य्य मोह आदि है; इनसे अतिरिक्त और दूसरे तामसिक राजस और सात्त्विक कार्य्योंके उपस्थित होनेपर उसमें न द्वेष करे और न दुःखी हो; इनके निवृत्त होनेपर उनकी फिर इच्छा भी न करे, उदासीनकी भांति दुःख सुखको समान जानके अपनी आत्मामें चित्तको ठहरा रक्खे; सब गुण अपने अपने कार्य्योंमें प्रवृत्त हो रहे हैं, इनके सङ्ग मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। जो इस प्रकारके विवेक ज्ञानसे निवास करते हैं किसी भांति चलायमान नहीं होते, अपनी आत्माके रूपमें मन ठहराते हैं, जिन्हें सुख, दुःख समान है, जो लोहे पत्थरको बराबर जानते हैं; जो प्यारी और अप्यारी चीजोंमें सम बुद्धि रखते हैं, जिनको अपनी स्तुति और निन्दामें समान दृष्टि है; मान, अपमानको भी समान ही जानते हैं, जिनको मित्र और शत्रुमें भी भिन्नभाव नहीं है, और जो सम्पूर्ण दृष्टादृष्ट कर्मोंके फलोंके त्याग करनेवाले हैं ऐसे आचारसे युक्त धीर पुरुषको सत्त्व, रज और तमोगुणसे पृथक् कहा है। जो लोग केवल मुझमें ही निष्ठावान् होकर भक्ति-योगसे मेरी सेवा करते हैं वे इन सब गुणोंके पार होकर ब्रह्मपद अर्थात् मोक्ष पानेके योग्य हैं। मैं नाशरहित विकारशून्य, नित्य ज्ञान-योगसे मिलने योग्य, आनन्दस्वरूप और व्यभिचार-रहित ब्रह्मके निवासका स्थान हूं।

३७ अध्याय समाप्त।

श्रीभगवान् बोले, श्वः शब्दका अर्थ सवेरा है, इससे जिसका प्रभात समय तक ठहरनेका निश्चय नहीं है, उसे अश्वत्थ कहते हैं; संसारको सवेरे तक भी स्थाई (ठहरनेवाला) नहीं कहते, इसीसे वेदमें इसे अश्वत्थ वृक्ष कहते हैं। इसकी जड़ ऊपर अर्थात् परमपुरुष परमात्मा है; शाखा इसकी ब्रह्मादिक जीव हैं, और जीवोंके कर्म्म और फलको प्रतिपादन करनेवाली वेदकी ऋचा इसके पत्ते हैं; जो इसको जानता है, वही वेदका जाननेवाला है। पुण्यात्मा जीव लोग देव आदि योनियोंमें उत्पन्न होते हैं, वे सब इस वृक्षकी ऊपरकी शाखा (डाली) हैं; और निकृष्ट कर्मोंके करनेवाले जीव पशु आदि योनियोंमें जन्म लेते हैं, वे सब नीचेकी शाखा हैं। ये सम्पूर्ण शाखा जल सींचना रूपी सत्त्वगुण आदि वृत्तियोंसे बढ़ती हैं, और इन्द्रियोंकी वृत्तियोंसे युक्त रूप, रस आदि विषयोंसे पल्लवित तथा पुष्ट होती हैं। ईश्वर इसकी ऊपरकी डाली हैं. इसकी सम्पूर्ण जड़ सत् असत् कर्मोंके साथ बंधी हैं। इसी वृक्षकी जड़से मर्त्यलोकमें जीवोंकी कर्म्ममें प्रवृत्ति हुआ करती है। इस जगत्में रहनेवाले जीव संसार वृक्षके ऊपरकी जड़को नहीं पहुंच सकते, इसके आदि अन्तको भी नहीं जान सकते; और यह किस तरहसे ठहरा है, वह भी नहीं जानते। इसका रूप इस लोकमें नहीं पाया जाता, इस लिये इच्छा रहित शास्त्रसे अर्थात् ममता-त्याग और विचार रूपी शस्त्रसे इस वृक्षको काट कर उस वृक्षको मुख्य जड अर्थात् विष्णुपदको ढूंढना चाहिये, जिसको पानेसे फिर संसारमें जन्म नहीं लेना पड़ता। मनुष्य लोग अहङ्कार, मान, मोहसे रहित; पुत्र आदि सङ्गके दोषोंको जीत कर, आत्मज्ञानमें निष्ठावान्; कामनाओंसे छूटकर और सुख, दुःख, गर्मी, सर्दीसे रहित होकर अविद्याके नाश होने पर उस अव्यय अविनाशी पदको पाते हैं। जिस पदको पानेसे फिर जन्म लेना नहीं पड़ता, वही परमधाम मेरा परमपद है; उस मेरे धाममें सूर्य्य

चन्द्रमा और अग्निका प्रकाश भी नहीं पहुंच सकता ।

इस संसारमें जीव मेरा ही अंश है, उस जीवकी आंख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा और दूसरी सम्पूर्ण कर्म्म इन्द्रिय और मनके सहित सुषुप्ति प्रलय कालमें मुझमें लीन होजाती हैं। वही जीव फिर भी जीवलोक (संसार) के भोगोंको भोगनेके निमित्त उन कर्मेन्द्रिय और मनको खींच लाता है। जब कर्म्मोंके वशमें होकर जीवात्मा शरीरको धारण करता है, और जब देहको छोड़ता है, उस समय उसी शरीरमेंसे, जैसे वायु फूलोंसे सुगन्धको उड़ा लेजाता है; उसी तरह जीवात्मा ऊपर कही हुई इन्द्रियोंको मनके सहित सङ्ग लेजाकर दूसरे शरीरमें जाता है। वह अन्तःकरण और कान, आंख आदि बाहरी इन्द्रियोंके आसरे शब्द आदि विषयोंको भोगता है। मूढ़ लोग जीवको एक देहसे दूसरे शरीरमें जानेवाला, अथवा उसी देहमें वास करनेवाला, विषयोंका भोगनेवाला, इन्द्रियोंसे युक्त नहीं देख सकते; परन्तु ज्ञाननेत्रवाले मनुष्य ही, उसे देख सकते हैं। इस जीवात्माको यत्न पूर्व्वक योगी लोग ध्यान आदिसे अपने शरीरमें स्थित देखते हैं; परन्तु अज्ञानी, मलिन बुद्धिवाले शास्त्रके अभ्यास और यत्न करनेसे भी उसे नहीं देख सकते। जिससे सूर्य्य प्रकाशित होता है, चन्द्रमा जिस तेजसे प्रकाशित है, और अग्निमें जो तेज विद्यमान (मौजूद) है, उसे मेरा ही तेज समझना चाहिये। मैं पृथ्वीमें प्रवेश करके सब जगत् अर्थात् प्राणियोंको अपनी शक्तिसे धारण करता हूं। मैं चन्द्रमा होकर सब औषधियोंका पोषण करता हूं, मैं जठराग्नि होकर जीवधारियोंके शरीरमें निवास करता हूं, उनके प्राण तथा अपानके साथ मिल कर चारो प्रकारके भोगोंको पचाता हूं। मैं सब जीवोंके हृदयमें अन्तर्यामी रूपसे निवास करता हूं, इससे मुझसे ही उनकी स्मृति, इन्द्रियोंके संयोगसे ज्ञान और इन दोनोंका अभाव भी होता है। मैं ही सब वेदोंसे जाननेके योग्य हूं; वेदान्तसे सब सम्प्रदायोंका चलानेवाला और वेदका जाननेवाला हूं। इस जगत्में क्षर (नाशवान्) और अक्षर (नाशरहित) दो पुरुष प्रसिद्ध हैं, उनमेंसे ब्रह्मासे लेकर स्थावर तकको क्षर (नाशवान्) कहते हैं, और शरीरके विनष्ट हुने पर भी जिसका नाश नहीं होता उसको ज्ञानी लोग अक्षर (अविनाशी) कहते हैं। इस क्षर, और अक्षरसे भी दूसरा एक उत्तम पुरुष और है, जिसे वेदमें परमात्मा कहते हैं, वह अविनाशी और सर्व्व सामर्थ्य युक्त है, नियन्ता रूपसे सब जगत्का पालन करता है। इस निमित्त मैं नित्य, मुक्त स्वभाव होनेसे जगत्से अलग, क्षर और अक्षर दोनोंसे बाहर और सबसे उत्तम हूं, इससे मैं लोक और वेदमें पुरुषोत्तम कहाता हूं। जो बुद्धिमान् पुरुष निश्चय पूर्व्वक ऊपर कही हुई रीतिसे मुझ (पुरुषोत्तम) को जानते हैं, वह सब प्रकारसे मुझको जानते हैं, इसी कारणसे वह सर्व्वश्रेष्ठ होते हैं। हे पापरहित अर्ज्जुन! इस गुप्तसे गुप्त शास्त्रको मैंने तुमसे कहा है, इसको जाननेसे मनुष्य पूरा ज्ञानी और कृतकृत्य होजाता (जो करनेके काम हैं सब कर चुकता) है।

३८ अध्याय समाप्त ।

श्रीभगवान् बोले, हे अर्ज्जुन! निर्भयता, मनकी प्रसन्नता, आत्मज्ञानके उपायमें निष्ठा, दान, दम, यज्ञ करना, शरीरका संयम, तप, अहिंसा, सत्य, क्रोध न करना, उदासीनता, पराक्षमें पराये दोषोंको न कहना, असमर्थों पर दया, लोभका त्याग, कोमलता, बिना प्रयोजनकी प्रवृत्तिमें लज्जा, निष्फल कर्मोंको न करना, क्षमा, धैर्य्य धरना, बाहर और भीतर-

रकी पवित्रता, किसीसे वैर न करना, अपनेको बड़ा और पूज्य समझके अभिमान न करना इत्यादि ये सब देवताओंकी प्रकृति सत्वगुणवाले पुरुषोंमें हुआ करती है। और धर्मध्वजीपन, दम्भ, मान, अभिमान, धन और विद्या आदिके वास्ते लालच, क्रोध, निठुरता और अविवेक यह सब आसुरी प्रकृतिके स्वभाव हैं। हे अर्जुन देवताओंकी प्रकृति मुक्तिके वास्ते और असुरोंका मत बन्धनका कारण होता है। हे भारत! तुम देवताओंकी प्रकृतिमें उत्पन्न हुए हो, इस निमित्त तुम शोक मत करो। हे अर्जुन। इस संसारमें दैवी और आसुरी दो प्रकारकी सृष्टि हुआ करती है, उनमेंसे मैंने देवताओंके विषयको विस्तारसे कहा है, अब असुरोंका विषय सुनो। आसुरी स्वभावके मनुष्य धर्ममें लगे रहना और अधर्मको छोड़ देना नहीं जानते। उनमें पवित्रता, आचार और सत्य नहीं रहते। वे कहते हैं, संसारमें वेद और पुराण आदिका कुछ प्रमाण नहीं है, जगत् धर्म अधर्मसे रहित है, और संसारका बनानेवाला ईश्वर कोई नहीं है। यह जगत् स्त्री और पुरुषके संयोगसे उत्पन्न हुआ है, इसकी उत्पत्तिका और दूसरा कारण कौन है? स्त्री पुरुषके अभिलाष विशेष ही इस जगत्के प्रवाहरूपसे चले आनेका हेतु है। वह लोग इसी तरहसे नास्तिकता ग्रहण करके, मलिन-चित और तुच्छबुद्धिवाले, आखसे देखने योग्य वस्तुओंके देखनेवाले, दुष्टकर्म करनेवाले, और हिंसा करनेवाले पुरुष जगत्का नाश करनेके निमित्त उत्पन्न होते हैं। वह सांसारिक कामना जो कभी पूरी नहीं होती उसीका सहारा करके पाखण्ड, प्रतिष्ठाके घमण्डसे भरे हुए, अपवित्र, मद्य और मांस भक्षण करनेवाले, मोहसे युक्त होके "मैं इस मन्त्रसे अमुक देवताकी आराधना करके बहुत धन पैदा करूंगा" इत्यादि रूपसे हठ और दुराग्रह करते हुए क्षुद्र देवताओंकी आराधना और उपासनामें लगे रहते हैं। काम आदिके भोगमें तत्पर तथा काम क्रोधके वशमें होके सैकड़ों आशाओंके फंदेमें बंधे हुए "काम-भोग ही परम पुरुषार्थ है" ऐसा सोचते हुए काम क्रोधसे युक्त अपने और इन्द्रियोंके विषयके लिये अन्याय और अधर्मसे अर्थ इकट्ठा करनेकी कोशिश करते हैं। आज मुझे यह धन मिला है, कल मेरा अमुक मनोरथ सिद्ध होगा, इस समय इतना मेरा धन है, इसके बाद इतना हो जायगा; इस शत्रुको मैंने मारा, दूसरोंको फिर मारूंगा, मैं सामर्थवान् और सब तरहके भोगोंको भोगनेवाला हूं, मैं पुत्र पौत्रादिसे युक्त हूं, मैं बलवान्, सुखी और कुलीन हूं, मेरे समान और दूसरा कौन है? मैं यज्ञ आदि कर्मोंको करके सबको मात करूंगा, और स्तुति करनेवालोंको दान देकर हर्षित होऊंगा। इत्यादि प्रकारके अज्ञानसे मोहित होकर अनेक मनोरथोंके विषयोंमें चित्त लगाते हैं। ऐसे मोहमय जालसे जकड़े और काम आदि भोगोंमें फंसे हुए अशुद्ध हृदयवाले पुरुष नरकमें गिरते हैं। वे अपनेको बहुत बड़ा समझने वाले, नम्रता-रहित, धन, प्रतिष्ठा और अभिमानमें भरे हुए, अहङ्कार, बल, काम तथा क्रोधके आसरे होकर मेरे साथ दूसरे शरीरोंसे (सब शरीरमें मैं वास करता हूं, मुझसे) द्वेष करते हैं। और पाखण्डपूर्वक मेरा स्मरण करते हैं। उन क्रूर, बुरे कर्मोंके करनेवाले, संसार शत्रु, नीच लोगोंको क्रूर बाघ और सांप आदि योनियों डाल देता हूं। हे कुन्तीनन्दन। वे लोग आसुरी योनिमें जाकर प्रतिजन्ममें मुझे पाना तो दूर रहा, पानेका उपाय भी नहीं जान सकते, उन योनियोंसे भी फिर वह नीच योनि अर्थात कीट पतङ्गकी योनिमें प्राप्त होते हैं। काम, क्रोध और लोभ यह तीनों आत्माके नाश करनेवाले नरकके

दरवाजे है, इस निमित्त इन तीनोंको त्यागना उचित है। हे कुन्तीनन्दन। जो मनुष्य नरकके द्वार इन काम, क्रोध और लोभसे छूटनेपर अपने उत्तम साधनों तपस्या और योगाभ्यास आदि कर्म्मोंको करता है, उसको मोक्ष मिलता है। जो वेदमें कहे हुए धर्म्मोंको त्याग कर इच्छानुसार कर्म्मको करता है, वह तत्वज्ञान नहीं पाता; उसे शान्ति तथा स्थिरता नहीं मिलती, वह मोक्ष भी नहीं प्राप्त कर सकता। करने और न करने योग्य कर्म्म जो वेद तथा पुराण आदि शास्त्रोंमें कहे गये है, तुम उन्हीं शास्त्रोंमें कहे हुए विधि अनुकूल कर्म्मोंको जानकर वैसा ही आचरण करो।

३६ अध्याय समाप्त।

अर्ज्जुन बोले, हे कृष्ण। दुःख, ज्ञान अथवा आलस्यके कारण शास्त्रकी विधिको छोड़कर पूर्ण श्रद्धासे जो लोग यज्ञ करते है, उनकी देवपूजा आदि प्रवृत्ति सत्वगुणी, रजोगुणी, वा तमोगुणी हैं?

श्रीभगवान् बोले, हे अर्ज्जुन। शास्त्रके तत्वज्ञानसे प्रवृत्त देहधारियोंकी श्रद्धा सत्वगुणी ही होती है, और लोकाचार के हेतु कर्म्ममें प्रवृत्त हुए लोगोंकी श्रद्धा सात्विकी, राजसी और तामसी तीनो प्रकारकी होती है, उसे सुनो। ज्ञानी, अज्ञानी सबका अपने पूर्व्वसंस्कारके अनुसार ही श्रद्धा उत्पन्न होती है। ये सब संसारी लोग तीनो श्रद्धासे युक्त है, जो पुरुष पहले जन्ममें जिस श्रद्धासे युक्त रहता है, वह वसी ही श्रद्धासे पुनः उत्पन्न होता है। सात्विकी श्रद्धा वाले सत्वगुण प्रधान देवताओंका यज्ञ करते है, राजसी श्रद्धावाले रजोगुणप्रधान यक्ष तथा राक्षस आदिकी उपासना करते हैं; और तामसी प्रकृतिवाले भूत प्रेतोंकी पूजा करते है। जो अविवेकी काम क्रोध और पाखण्डसे युक्त होकर वृथा उपवास आदि करके शरीरको कृशित करते है; वे शास्त्रकी विधिसे बाहर और मेरी आज्ञाको भङ्ग करनेवाले, अहंकारसे भरे हुए भयंकर तपस्याका आचरण करते है; उन्हे अति निठुर कामनासे भरे हुए हठी समझना चाहिये जो लोग पाचो भूत और इन्द्रियोंको सुखाते हैं, और जिस शरीरके भीतर रहता हूं उसे दुःख देते है, उन्हें निश्चय करके असुर समझना चाहिये।

हे अर्ज्जुन। जगत्में तीन प्रकारके पुरुषोंको भोजन भी तीन तरहका प्यारा होता है, उसका भेद भी सुनो। जिस भोजनसे मनुष्यकी आयु, उत्साह, सामर्थ्य, आरोग्यता, चित्तकी प्रसन्नता, सुख और प्रीति आदिकी बढ़ती हो, जो भोजन उत्तम, चिकना, बहुत काल तक गुण करनेवाला मनभावना हो ऐसा भोजन सत्वगुणी पुरुषोंका प्यारा होता है। जो बहुत कड़ुवा, तीखा, खारा और अत्यन्त कसैला भोजन दुःख, शोक और रोग बढ़ानेवाला होता है, वह राजसी प्रकृतिके मनुष्योंका प्यारा होता है। जिस अन्नको पाक हुए एक पहर काल बीत गया हो; जिसका स्वाद जाता रहे, जो बासी और दुर्गन्धसे युक्त हो, जूठा, और खानेके योग्य न हो; इस प्रकारका भोजन तमोगुणी पुरुषोंको प्यारा होता है। हे अर्ज्जुन! फलकी आकाङ्क्षाको त्याग कर मनको एकाग्रतासे शास्त्रकी आज्ञाओंको मान कर जो यज्ञका अनुष्ठान किया जाता है, उसे सात्विक यज्ञ कहते हैं। हे भारत! जो फलका आसरा करके दम्भ और यशके वास्ते यज्ञ करते हैं, उसे राजसी यज्ञ कहते है। जो यज्ञ शास्त्रकी विधिसे पूरा नहीं होता जिसमें ब्राह्मणोंके निमित्त अन्न सामग्री नहीं लगती, जो यज्ञ मन्त्र, दक्षिणा और श्रद्धासे रहित होता है; उस पाखण्ड लोग तामसी यज्ञ कहते है। ऊपर ताप

प्रकारके यज्ञ कहे, अब तीन तरहके तप कहते हैं। देवता, ब्राह्मण, गुरु, तत्त्वज्ञानियोंकी सेवा, पवित्रता, सीधापन, ब्रह्मचर्य्य और अहिंसा इन सबोंका अनुष्ठान शरीरका तप कहाता है। जो वचन किसीको अप्रिय न लगे उसका कहना तथा सच्चापन, प्यार, और वेदाभ्याससे युक्त वचनका कहना वाचनिकतप है। मनकी प्रसन्नता, कठोरपनका त्याग, मननशीलता, विषयोंसे मनको रोकना, व्यवहारमें छल-रहित होना इत्यादि सब मानसिक तप कहलाते है। कायिक, वाचिक और मानसिक इन तीनों तपस्याओंको यदि मनुष्य एकाग्र-चित्त होकर फलकी इच्छा त्यागके श्रद्धापूर्व्वक करे, तो उसी तपको सात्त्विकी तपस्या कहते हैं। जिसे सब लोग साधु वा तपस्वी कहते हैं उसे देखते ही उठके खड़ा हो और प्रणाम करे; अथवा धन देके उसकी सम्मान रक्षा करे, इस प्रकारसे दम्भ पूर्व्वक जो तपस्या की जाती है, उसे राजसी तपस्या कहते है, यह तपस्या क्षणिक है, स्थिर नहीं रहती। अज्ञान और हठसे कष्ट करते हुए अपने शरीर और इन्द्रियोंका दुःख देते हुए दूसरोंको पीड़ा देनेके निमित्त जो तपस्या करते हैं, वह तामसी तपस्या कहलाती है। देने योग्यको जो दान अर्थात् जो दान उपकार न किये हुए पुरुष, शास्त्रके जाननेवाले, सुचरित्र, उत्तमदेश और उत्तमकालमें तथा सत्पात्रको दिया जाता है, उसे सात्त्विक दान कहते हैं। और प्रत्युपकार (बदले) के वास्ते और फलकी इच्छासे, दुःख पूर्व्वक और क्लेशसे जो दान दिया जाता है, उसे राजसी दान कहते है। अपवित्र स्थानमें, अशुभ कालमें, मूर्ख और तस्कर (चोर) आदिको एवं विना सत्कार और अनादर पूर्व्वक जो दान दिया जाता है उसे तामसी दान कहते है। ओं तत् सत् (अकार, ओकार, मकार) यह तीन नाम ब्रह्मके कहे गये है; उन्हीसे जगत्‌में पहिले पहल ब्रह्माने वेद, ब्राह्मण, देवता और यज्ञकी रचना की है; इसी कारणसे ब्रह्मवादी लोग सब समय "प्रणव" का उच्चारण करते हुए दान, तपस्या और शास्त्रमें कहे हुए कर्मोंका अनुष्ठान करते हैं। तत् इस शब्दका उच्चारण करते हुए इच्छारहित फलकी कामनाओंको त्यागनेवाले तथा मुक्तिकी इच्छावाले भाति भातिके यज्ञ, दान, तप आदि कर्मोंको करते है। हे अर्ज्जुन! सच्ची भावना और उत्तम श्रद्धासे सत् शब्दका प्रयोग किया जाता है। यज्ञ, दान, तपस्या, निष्ठा और विवाह आदि माङ्गलिक कर्मोंमें भी सत् शब्द कहा जाता है, जिस कर्म्मका फल परमात्माकी प्राप्ति है, उसकी सिद्धिके निमित्त भी सत् शब्दका प्रयोग होता है, और ईश्वरके निमित्त बगीचे, तालाव, धनोपार्जनके उपाय आदिमें भी सत् शब्दका व्यवहार होता है। इससे ऊपर लिखे हुए सब कर्मोंमें सत् शब्दहीका उच्चारण करना चाहिये। हे अर्ज्जुन! होम, दान, तपस्या और उनसे पृथक् जो कर्म्म अश्रद्धापूर्व्वक किये जाते है, वे सब असत् कहाते हैं, क्योंकि वे कर्म्म निष्प्रयोजन होनेसे न इस लोकहीमें फल-देते हैं, और न परलोकहीमें फल-दायक होते हैं।

४० अध्याय समाप्त।

अर्ज्जुन बोले, हे लम्बी भुजावाले केशि-निसूदन हृषीकेश! मैं सन्न्यास और त्यागके विषयको अलग अलग जाननेकी इच्छा करता हूं।

श्रीभगवान् बोले, हे अर्ज्जुन! सकाम कर्मोंके छोड़नेको पण्डितोंने सन्न्यास कहा है; और सम्पूर्ण कर्मोंके फलोंके त्यागनेको त्याग कहते हैं। कोई कोई शास्त्र जाननेवाले कर्म्मको दोषके समान त्याग देनेको त्याग कहते हैं;

और कोई कोई पण्डित यज्ञ, दान और तपस्या आदि कर्मोंको (न त्यागने योग्य) अत्यज्य कहते हैं। हे भरतकुलश्रेष्ठ! हे पुरुषेन्द्र! इसका सिद्धान्त तुम श्रवण करो। तत्वज्ञानी लोग तीन प्रकारके त्याग कहते हैं। यज्ञ, दान और तपस्याका त्याग करना उचित नहीं, उसे अवश्य करना चाहिये; क्योंकि ये सब कर्म्म विवेकी पुरुषोंको चित्त-शुद्धिके हेतु होते हैं। हे अर्जुन! अहङ्कार और फलकी इच्छा छोड़कर इन कर्म्मोंको करना चाहिये; यह मेरे मतका पक्का निश्चय है। नित्य नैमित्तिक कर्मोंको कभी न छोड़ना चाहिये, क्योंकि वे सत्वगुणकी शुद्धिसे मोक्षके हेतु होते हैं; इससे जब उनका त्याग मूर्खता और प्रमादसे होता है, तब उस त्यागको तामसी त्याग कहते हैं। शरीरके दुःख तथा भयसे जिस कर्म्मको दुःखका कारण जानके त्याग किया जाता है, उसे राजसी त्याग कहते हैं, जो इस प्रकारसे कर्म्मका त्याग करते हैं, वह ज्ञान-निष्ठारूपी फल (मोक्ष) नहीं पाते। हे अर्जुन! यह कर्म्म करना ही चाहिये यह विचारकर जो सङ्ग और कर्म्म फलको त्यागके नियत कर्मोंका अनुष्ठान करते हैं, इस प्रकारके त्यागको सात्विकी त्याग कहते हैं। जो त्यागी और सत्वगुणमें युक्त बुद्धिमान् संशयरहित पुरुष हैं, वे दुःखदायी कर्मोंसे दुःखी और सुखदायी कर्मोंसे सुखी नहीं होते और न इनमें आसक्ति रखते हैं। वे इस जगत्के सुख दुःखको क्षणकालके निमित्त समझते हैं, इससे उनके शारीरिक सुख, दुःखका नाश कर्मोंसे होजाता है, ऐसे पुरुष दुःखदाई द्वेष नहीं करते, और सुख देनेवाले कर्मोंमें अनुरक्त भी नहीं होते हैं। देहाभिमानी पुरुष सम्पूर्ण कर्म्मका नहीं त्याग सकते, इससे जो कर्मोंका अनुष्ठान करते हुए कर्म्मके फलको त्याग करते हैं उनका ही यथार्थ त्यागी कहा जाता है। अच्छे और बुरे तथा इन दोनोंसे मिले हुए कर्म्मके फल तीन प्रकारसे प्रसिद्ध हैं, वह सब अत्यागी (कर्म्मके फलोंको न त्यागनेवाले) सकाम कर्म्म करनेवालोंको परलोकमें फल देते अर्थात् वहां ले जाते हैं, परन्तु सन्यासी अर्थात् कर्म्मके फलके त्यागीको परलोकमें जाना नहीं होता।

हे लम्बी भुजावाले अर्जुन! सब कर्मोंकी सिद्धिके निमित्त यह पांच कारण जो सांख्य शास्त्रमें कहे गये हैं, उन्हें मुझसे सुनो। शरीर-कर्त्ता अर्थात् उपाधि लक्षणसे युक्त आत्मा, इन्द्रिय और इन्द्रियोंके विषय, अलग अलग और नाना प्रकारके कर्म्म तथा प्राण और अपान आदिसे कर्म्म और बहुत प्रकारकी चेष्टा होती है,—इस जगह दैव अर्थात् प्रारब्ध और इन्द्रियोंके देवता यही पांचो सब इन्द्रियोंके कारण हैं। शरीर, वाणी और मनसे मनुष्य जिस कार्य्यका आरम्भ करता है, चाहे वह कर्म्म उत्तम हो वा निकृष्ट हो यही पांच इसके हेतु हैं। इससे जो मनुष्य शास्त्र और आचार्य्यके उपदेशके अभावमें संस्कार-हीन बुद्धिसे सङ्ग रहित आत्माको अपनी मूर्खतासे कर्म्मका कर्त्ता देखता है, वह बुद्धिहीन पुरुष यथार्थदर्शी नहीं है। जिसको कर्म्म करनेका अभिमान नहीं है, जिसकी बुद्धि भले, बुरेके ज्ञानसे कर्मोंमें नहीं लिपटती वह शरीर आदिसे अलग आत्मदर्शी मनुष्य इन सम्पूर्ण प्राणियोंको लोक-दृष्टिके क्रमसे मार डालनेपर भी नहीं मारता और न वह कर्म्मके फलोंसे बंधता है। यह 'इष्ट साधन है" इस प्रकार ज्ञान, (जानने योग्य वस्तु) और ज्ञेय जाननेवाला (कर्म्मका प्रेरण) और ज्ञानके आश्रयदाता आत्मा यही तीनों कर्म्म प्रवृत्तिके कारण हैं, और कान आदि इन्द्रिय, कर्म्म और कार्य्यका करनेवाला कर्त्ता; ये तीन कार्य्यके आश्रय हैं। सांख्यशास्त्र ज्ञान, कर्म और कर्त्ता सात्विक आदि गुणोंके भेदसे तीन प्रकारके कहे गये हैं उनको भी पूरा

तरहसे सुनो। जिस ज्ञानसे सब जगत्में एक अखण्डब्रह्मका प्रकाश दीखता है, और सब प्रकारके जीवोंमें पृथक् पृथक् रूपसे उसको एकाकार जनाता है, उसे ही सात्विक ज्ञान जानना चाहिये। जिस ज्ञानसे आत्माको सब प्राणियोंमें सुखी, दुःखी आदि अनेक भावोंसे युक्त जानता है, उसे राजस ज्ञान कहते हैं। जो कोई एक शरीर वा मूर्त्ति आदिमें पूर्णकी तरह आत्माको व्यर्थ निश्चय करता है, वह अज्ञानी, अल्पबुद्धि और तामस ज्ञानसे युक्त कहाता है। आसक्ति, फलकी कामना और राग, द्वेषको त्याग कर अवश्य करणीय नियत कर्मोंको जो करता है, उसी कर्म्मको सात्विक कर्म्म कहते हैं। जो कर्म्म सकाम और अहङ्कारपूर्व्वक बहुत क्लेश और दुःखसे किया जाता है, उसे राजस कर्म्म कहते हैं। जो कर्म्म करनेके पीछे बन्धनका हेतु, अशुभ, धनक्षय, दूसरेको पीड़ा और अपने आत्माके सामर्थ्यको विना विचारे किया जाता है, उसे तामसिक कर्म्म कहते हैं। आसक्तिको त्यागनेवाला विना अभिमानके वचन बोलनेवाला, धीरज और उद्योगसे भरा हुआ, कर्म्मके पूरा होने और अधूरा रहनेमें सुखी, दुःखी न हो,—इस प्रकारके कर्त्ताको पण्डितोंने सत्वगुणी कहा है। इन्द्रियोंके विषय और पुत्र आदिमें प्रीति करनेवाला, कर्म्मके फलोंके मिलनेकी इच्छा रखनेवाला, पराये धनको लेनेकी अभिलाषा करनेवाला, हिंसकस्वभाव, भीतर और बाहरसे अशुद्ध (अपवित्र) और हानि, लाभमें शोक, हर्ष करनेवाला पुरुष रजोगुणी कहाता है। धर्म्मकी श्रद्धासे रहित, विवेकहीन, क्रूर, शठ, मूर्ख, अहङ्कारी, धोखा देनेवाला, आलसी, पछतावा करनेवाला, दीर्घसूत्री, और दूसरेको अवमानना करनेवाला पुरुष तामसी कहाता है। हे धनञ्जय! बुद्धि और धारणाशक्तिके सात्विक आदि गुणोंके भेदसे तीन प्रकारके प्रभेद अलग अलग कहता हूं, तुम सुनो। हे पार्थ! जिस बुद्धिसे धर्म्म विषयमें प्रवृत्ति और अधर्म्मसे निवृत्ति होती है, जिस समय जहां पर जो कुछ करना वा न करना हो, उसका ठीक ठीक निश्चय करले; किन कार्योंमें भय और किन कर्म्मोंमें निर्भयता होगी, उसको जाने; तथा किस प्रकारसे बन्धनमें पड़ना होगा और कैसे मुक्ति होगी,—इत्यादि विषयोंका जिससे ज्ञान होता है, उसे सात्विकी बुद्धि कहते हैं। हे अर्ज्जुन! जिससे धर्म्म, अधर्म्म, कार्य्य तथा न करने योग्य कर्म्मोंका पूरा ज्ञान हो, उसे राजसी-बुद्धि कहते हैं। जो बुद्धि अज्ञानसे युक्त होकर अधर्म्मको धर्म्म और सब जानने योग्य वस्तुओंको उलटी (विपरीत) समझती है, उसे तामसी बुद्धि कहते हैं। हे अर्ज्जुन! जिस धारणा शक्तिसे विषयान्तरोंका धारण नहीं होता और चित्तकी एकाग्रताके निमित्त मन, प्राण और इन्द्रियोंकी क्रियाका नियमित रूपसे निर्वाह होता है, वह धारणा सत्वगुणी है। हे पृथापुत्र! जिस धारणा शक्तिसे मनुष्य धर्म्म, अर्थ और कामको धारण करके कभी परित्याग नहीं करते, और अहङ्कार पूर्व्वक फल चाहते हैं, वह रजोगुणी-धृति है। जिससे अविचारकी बुद्धिसे युक्त होकर मनुष्य स्वप्न, भय, क्रोध, शोक, तथा पछतावा नहीं छोड़ते उस धृतिको तामसी कहते हैं।

हे भरतर्षभ! तुम तीन प्रकारके सुखोंको मुझसे सुनो। जिसमें अभ्यास करनेसे मन लगता है, और दुःख समाप्त होजाता है, जो पहिले विषकी भांति और पीछे अमृतके समान हो, जो आत्म-विषयक बुद्धिसे रज और तमगुणको नाश करता हुआ, स्वच्छन्दता पूर्व्वक अवस्थान (शान्ति) से उत्पन्न होता है, वह सुख सत्वगुणी कहाता है। जो सुख इन्द्रिय और विषयोंके संयोगसे पहले अमृतके तुल्य पीछे विषके समान दुःखदायी होता है, उसे

राजस-सुख कहते हैं। जो सुख आदि और अन्तमें भी मन और बुद्धिको मोहमें डालता है; जो निद्रा, आलस्य, और प्रमाद आदिसे उत्पन्न होता है, उसको तामस सुख कहते हैं। मनुष्य लोक अथवा स्वर्ग लोकमें भी कोई प्राणी ऐसा नहीं है, कि जो प्रकृतिसे उत्पन्न भये इन ऊपर कहे हुए तीनों गुणोंसे छूटा हो। हे शत्रुओंको जलानेवाले! ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रोंके पूर्व्व-जन्मके संस्कारोंमें सात्विक आदि गुणोंसे उत्पन्न हुए सम्पूर्ण कर्म्म गुणोंके अनुकूल विभाग किये गये हैं। ब्राह्मणोंका स्वभाव केवल सत्वगुणी है, क्षत्रियोंका कुछ सत्वगुण मिला हुआ रजोगुणी स्वभाव है; वैश्योंका स्वभाव कुछ तमोगुणसे मिला हुआ रजोगुणी है, और शूद्रोंका स्वभाव थोड़े रजोगुणसे मिला हुआ तमोगुणी है। शम, दम, पवित्रता, तप, क्षमा, शान्ति, सीधापन, शास्त्रका ज्ञान, अनुभव और ईश्वरमें विश्वास आदि कर्म्म ब्राह्मणोंमें स्वभावसे होते हैं। शूरता, लड़ाईमें पीछे न हटना, दान करना, और दण्ड देनेका सामर्थ्य इत्यादि कर्म्म क्षत्रियोंमें स्वाभाविक उत्पन्न होते हैं। खेती करना, पशुओंको पालना, और बेचना, खरीदना आदि कर्म्म वैश्योंमें स्वभावसे ही उत्पन्न होते हैं, और ब्राह्मण आदि तीनों वर्णोंकी सेवा करना शूद्रोंका स्वाभाविक कर्म्म है। मनुष्य लोग अपने अपने कर्म्मोंमें लगे रहें तो ज्ञान, योग्यता और पूरी सिद्धिको प्राप्त कर सकते हैं. निज कर्मोंमें मन लगानेसे जिस प्रकारसे तत्त्व ज्ञान मिलता है, वह सुनो। जिससे सब प्राणियोंकी उत्पत्ति है और जो सब संसारमें व्याप्त है, उसी अन्तर्यामी ईश्वरको अपनी जातिके कहे हुए कर्मोंसे पूजकर मनुष्य सिद्धिको (तत्त्वज्ञान) पाते हैं। अपना धर्म्म अधूरा और अङ्गहीन हो. और दूसरेका धर्म्म पूरा तरहसे भी अनुष्ठान किया हो. तौभी अपना धर्म्म दूसरेके धर्म्मसे उत्तम और कल्याण करनेवाला है, क्योंकि ऊपर कहे हुए स्वाभाविक कर्म्मके करनेसे मनुष्य पापग्रस्त नहीं होता। हे कुन्तीनन्दन! अपनी जातिके कर्म्मको कभी न छोड़ना चाहिये, क्योंकि धूएंसे ढकी हुई अग्निकी भांति सब कर्मोंमें कुछ न कुछ दोष है, जैसे अग्निके धूमको त्यागके अन्धकार दूर करने तथा शीत आदिकी निवृत्तिके निमित्त अग्निका सेवन किया जाता है, उसी प्रकारसे तुम्हारे जातीय कर्म्ममें हिंसा आदि दोषोंके रहनेपर भी उसके दोषोंको छोड़कर गुणांशका ग्रहण करना पड़ेगा। जिनकी बुद्धि सम्पूर्ण विषयोंसे सङ्ग-रहित है और जो अहङ्कार तथा फलकी बासनाओंको त्याग किये हुए हैं; वे सन्न्याससे सब कर्मोंकी निवृत्तिस्वरूप परम सिद्धि पाते हैं। हे अर्ज्जुन! वे ही सिद्धिको पाये हुए मनुष्य ज्ञानकी परा निष्ठासे परब्रह्म परमेश्वरको पाते हैं; वे जिस प्रकारसे ब्रह्मको प्राप्त करते हैं, वह तुम मुझसे सुनो। वे सात्विकी बुद्धिसे विधिपूर्व्वक पवित्र स्थानमें रहकर परिमित भोजन, वाक्-संयम, शरीरको वशमें करना, चित्तकी स्थिरता, और ध्यानपूर्व्वक ब्रह्मकी प्राप्तिमें तत्पर हो वैराग्यसे युक्त होकर ममताका त्यागकर सात्विकी धारणासे बुद्धिको वशमें करके शब्द आदि विषयोंको परित्याग करते हुए राग, द्वेष, अहङ्कार, अभिमान, काम, क्रोध आदिको छोड़कर परम शान्तिपद पाकर ब्रह्ममें निवास करनेके योग्य होजाते हैं। ब्रह्ममें वास करने योग्य पुरुष प्रसन्नचित्त होकर नष्ट भई वस्तुओंका सोच नहीं करते, अनमिली चीजोंकी इच्छा नहीं करते, उनको राग, द्वेष आदि कुछ भी नहीं रहता, वह सब प्राणियोंमें मुझे समान रूपसे जानते हैं. और मेरा ध्यान करते हुए मेरी प्रिय भक्तिको पाते हैं। उसी भक्तिसे मुझे उपाधिहीन बहुत भेदसे अलग,

तरहसे सुनो। जिस ज्ञानसे सब जगत्में एक अखण्डब्रह्मका प्रकाश दीखता है, और सब प्रकारके जीवोंमें पृथक् पृथक् रूपसे उसको एकाकार जनाता है; उसे ही सात्विक ज्ञान जानना चाहिये। जिस ज्ञानसे आत्माको सब प्राणियोंमें सुखी, दुःखी आदि अनेक भावोंसे युक्त जानता है, उसे राजस ज्ञान कहते हैं। जो कोई एक शरीर वा मूर्त्ति आदिमें पूर्णकी तरह आत्माको व्यर्थ निश्चय करता है, वह अज्ञानी, अल्पबुद्धि और तामस ज्ञानसे युक्त कहाता है। आसक्ति, फलकी कामना और राग, द्वेषको त्याग कर अवश्य करणीय नियत कर्मोंको जो करता है, उसी कर्मको सात्विक कर्म कहते हैं। जो कर्म सकाम और अहङ्कारपूर्व्वक बहुत क्लेश और दुःखसे किया जाता है, उसे राजस कर्म कहते हैं। जो कर्म करनेके पीछे बन्धनका हेतु, अशुभ, धनक्षय, दूसरेकी पीड़ा और अपने आत्माके सामर्थ्यको विना विचारे किया जाता है, उसे तामसिक कर्म कहते हैं। आसक्तिको त्यागनेवाला विना अभिमानके वचन बोलनेवाला, धीरज और उद्योगसे भरा हुआ, कर्मके पूरा होने और अधूरा रहनेमें सुखी, दुःखी न हो,—इस प्रकारके कर्त्ताको पण्डितोंने सत्वगुणी कहा है। इन्द्रियोंके विषय और पुत्र आदिमे प्रीति करनेवाला, कर्मके फलोंके मिलनेकी इच्छा रखनेवाला, पराये धनको लेनेकी अभिलाषा करनेवाला, हिंसकस्वभाव, भीतर और बाहरसे अशुद्ध (अपवित्र) और हानि, लाभमें शोक, हर्ष करनेवाला पुरुष रजोगुणी कहाता है। धर्मकी श्रद्धासे रहित, विविकहीन, क्रूर, शठ, मूर्ख, अहङ्कारी, धोखा देनेवाला, आलसी, पछतावा करनेवाला, दीर्घसूत्री, और दूसरेकी अवमानना करनेवाला पुरुष तामसी कहाता है। हे धनञ्जय! बुद्धि और धारणाशक्तिके सात्विक आदि गुणोंके भेदसे तीन प्रकारके प्रभेद अलग अलग कहता हूं, तुम सुनो। हे पार्थ! जिस बुद्धिसे धर्म्म विषयमें प्रवृत्ति और अधर्मसे निवृत्ति होती है, जिस समय जहां पर जो कुछ करना वा न करना हो, उसका ठीक ठीक निश्चय करले; किन कार्योंमें भय और किन कर्म्मोंमें निर्भयता होगी, उसको जाने; तथा किस प्रकारसे बन्धनमें पड़ना होगा और कैसे मुक्ति होगी,—इत्यादि विषयोंका जिससे ज्ञान होता है, उसे सात्विकी बुद्धि कहते हैं। हे अर्ज्जुन! जिससे धर्म, अधर्म, कार्य्य तथा न करने योग्य कर्म्मोंका पूरा ज्ञान हो, उसे राजसी-बुद्धि कहते हैं। जो बुद्धि अज्ञानसे युक्त होकर अधर्मको धर्म और सब जानने योग्य वस्तुओंको उलटी (विपरीत) समझती है, उसे तामसी बुद्धि कहते हैं। हे अर्ज्जुन! जिस धारणा शक्तिसे विषयान्तरोंका धारण नहीं होता और चित्तकी एकाग्रताके निमित्त मन, प्राण और इन्द्रियोंकी क्रियाका नियमित रूपसे निर्वाह होता है, वह धारणा सत्त्वगुणी है। हे पृथापुत्र! जिस धारणा शक्तिसे मनुष्य धर्म्म, अर्थ और कामको धारण करके कभी परित्याग नहीं करते, और अहङ्कार पूर्व्वक फल चाहते हैं, वह रजोगुणी धृति है। जिससे अविचारकी बुद्धिसे युक्त होकर मनुष्य स्वप्न, भय, क्रोध, शोक, तथा पछतावा नहीं छोड़ते उस धृतिको तामसी कहते हैं।

हे भरतर्षभ! तुम तीन प्रकारके सुखोंको मुझसे सुनो। जिसमें अभ्यास करनेसे मन लगता है, और दुःख समाप्त होजाता है, जो पहिले विषकी भांति और पीछे अमृतके समान हो, जो आत्म-विषयक बुद्धिसे रज और तमगुणको नाश करता हुआ, स्वच्छन्दता पूर्व्वक अवस्थान (शान्ति) से उत्पन्न होता है, वह सुख सत्वगुणी कहाता है। जो सुख इन्द्रिय और विषयोंके संयोगसे पहले अमृतके तुल्य पीछे विषके समान दुःखदायी होता है, उसे

राजस-सुख कहते हैं। जो सुख आदि और अन्तमें भी मन और बुद्धिको मोहमें डालता है; जो निद्रा, आलस्य, और प्रमाद आदिसे उत्पन्न होता है; उसको तामस सुख कहते हैं। मनुष्य लोक अथवा स्वर्ग लोकमें भी कोई प्राणी ऐसा नहीं है, कि जो प्रकृतिसे उत्पन्न भये इन ऊपर कहे हुए तीनों गुणोंसे छूटा हो। हे शत्रुओंको जलानेवाले। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रोंके पूर्व्व-जन्मके संस्कारोंमें सात्विक आदि गुणोंसे उत्पन्न हुए सम्पूर्ण कर्म्म गुणोंके अनुकूल विभाग किये गये हैं। ब्राह्मणोंका स्वभाव केवल सत्वगुणी है, क्षत्रियोंका कुछ सत्वगुण मिला हुआ रजोगुणी स्वभाव है; वैश्योंका स्वभाव कुछ तमोगुणसे मिला हुआ रजोगुणी है, और शूद्रोंका स्वभाव थोड़े रजोगुणसे मिला हुआ तमोगुणी है। शम, दम, पवित्रता, तप, क्षमा, शान्ति, सीधापन, शास्त्रका ज्ञान, अनुभव और ईश्वरमें विश्वास आदि कर्म्म ब्राह्मणोंमें स्वभावसे होते हैं। शूरता, लड़ाईमें पीछे न हटना, दान करना, और दण्ड देनेका सामर्थ्य इत्यादि कर्म्म क्षत्रियोंमें स्वाभाविक उत्पन्न होते हैं। खेती करना, पशुओंको पालना, और बेचना, खरीदना आदि कर्म्म वैश्योंमें स्वभावसे ही उत्पन्न होते हैं; और ब्राह्मण आदि तीनों वर्णोंकी सेवा करना शूद्रोंका स्वाभाविक कर्म्म है। मनुष्य लोग अपने अपने कर्म्मोंमें लगे रहें तो ज्ञान, योग्यता और पूरी सिद्धिको प्राप्त कर सकते हैं, निज कर्मोंमें मन लगानेसे जिस प्रकारसे तत्व ज्ञान मिलता है, वह सुनो। जिससे सब प्राणियोंकी उत्पत्ति है और जो सब संसारमें व्याप्त है, उसी अन्तर्य्यामी ईश्वरकी अपनी जातिके कहे हुए कर्मोंसे पूजकर मनुष्य सिद्धिको (तत्वज्ञान) पाते हैं। अपना धर्म्म अधूरा और गुणहीन हो, और दूसरेका धर्म्म पूरी तरहसे भी अनुष्ठान किया हो, तौभी अपना धर्म्म दूसरेके धर्म्मसे उत्तम और कल्याण करनेवाला है, क्योंकि ऊपर कहे हुए स्वाभाविक कर्म्मके करनेसे, मनुष्य पापग्रस्त नहीं होता। हे कुन्तीनन्दन! अपनी जातिके कर्म्मको कभी न छोड़ना चाहिये, क्योंकि धूएंसे ढकी हुई अग्निकी भांति सब कर्मोंमें कुछ न कुछ दोष है, जैसे अग्निके धूमको त्यागके अन्धकार दूर करने तथा शीत आदिकी निवृत्तिके निमित्त अग्निका सेवन किया जाता है, उसी प्रकारसे तुम्हारे जातीय कर्म्ममें हिंसा आदि दोषोंके रहनेपर भी उसके दोषोंको छोड़कर गुणांशका ग्रहण करना पड़ेगा। जिनकी बुद्धि सम्पूर्ण विषयोंमें सङ्ग-रहित है और जो अहङ्कार तथा फलकी बासनाओंको त्याग किये हुए हैं, वे सन्न्याससे सब कर्मोंकी निवृत्तिस्वरूप परम सिद्धि पाते हैं। हे अर्ज्जुन! वे ही सिद्धिको पाये हुए मनुष्य ज्ञानकी परा निष्ठासे परब्रह्म परमेश्वरको पाते हैं; वे जिस प्रकारसे ब्रह्मको प्राप्त करते हैं, वह तुम मुझसे सुनो। वे सात्विकी बुद्धिसे विधिपूर्व्वक पवित्र स्थानमें रहकर परिमित भोजन, वाक्-संयम, शरीरको वशमें करना, चित्तकी स्थिरता, और ध्यानपूर्व्वक ब्रह्मकी प्राप्तिमें तत्पर हो वैराग्यसे युक्त होकर ममताका त्यागकर सात्विकी धारणासे बुद्धिको वशमें करके शब्द आदि विषयोंको परित्याग करते हुए राग, द्वेष, अहङ्कार, अभिमान, काम, क्रोध आदिको छोड़कर परम शान्तिपद पाकर ब्रह्ममें निवास करनेके योग्य होजाते हैं। ब्रह्ममें वास करने योग्य पुरुष प्रसन्नचित्त होकर नष्ट भई वस्तुओंका सोच नहीं करते, अनमिली चीजोंकी इच्छा नहीं करते, उनको राग, द्वेष आदि कुछ भी नहीं रहता, वह सब प्राणियोंमें मुझे समान रूपसे जानते हैं, और मेरा ध्यान करते हुए मेरी प्रिय भक्तिको पाते हैं। उसी भक्तिमें मुझे उपाधिकृत बहुत भेदसे अलग,

सच्चिदानन्दस्वरूप अर्थात् मेरे यथार्थ रूपको जान सकते हैं, मुझको यथार्थरूपसे जाननेपर वे मुझे पाते हैं, अर्थात् परमानन्द रूप होजाते हैं। मेरा ही आसरा करके वे नित्य नैमित्तिक सब कर्मोंको ऊपर कही हुई रीतिसे करते हुए मेरी प्रसन्नतासे शाश्वत, अव्यय (नाश-रहित) पदको पाते हैं। तुम सच्चे मनसे सब कर्मोंको मुझे अर्पण करके मुझमें चित्त लगाओ और बुद्धियोगका आसरा करके कर्मोंके अनुष्ठानके समय भी पहिले कही हुई सम्पूर्ण वस्तुओंमें मुझे जानकर निरन्तर मेरा ही चिन्तन करो। मुझमें चित्त लगानेसे सांसारिक सब कठिनाइयोंसे पार होजाओगे। यदि अहङ्कार करके मेरी इन बातोंको न सुनोगे, तो पुरुषार्थ और परिश्रमका नाश करोगे अर्थात् नष्ट होजाओगे। जो तुम अहङ्कारसे यह समझते हो, कि मैं न लड़ूगा तो यह परिश्रम तुम्हारा निरा झूठा है, और इस विषयोंमें तुम्हारा यह विचार भी निष्फल होगा, क्योंकि तुम्हारी प्रकृति तुम्हें युद्धमें लगा देगी। हे कुन्तीनन्दन! जो तुम मोह और अज्ञानसे युद्ध करनेकी इच्छा नहीं करते हो, उसके लिये स्वभावसे उत्पन्न हुई प्रकृति जो कि अपने प्रारब्ध-कर्मोंसे बधी है, वह तुम्हें पूर्व्व संस्कारोंसे युक्त शूरता आदि कर्मोंमें लगा देगी, उसके वशमें होकर तुम्हें इस युद्धकार्य्यको अवश्य ही करना पड़ेगा। हे अर्ज्जुन! अन्तर्यामी परमेश्वर सबके हृदयमें निवास करता है, वह अपनी मायासे सब भूतोंको (जीवोंको) कठपुतलीकी भांति घुमाता है। हे भारत! तुम सब प्रकारसे उसीके चरणमें जाओ, जिसकी कृपासे शाश्वत नाशरहित, परम शान्तिके स्थानको पाओगे। इस गुप्तसे भी गुप्त ज्ञानको मैंने तुमसे कहा है, इसको भली भांतिसे विचार करके जैसी तुम्हारी इच्छा हो वैसा कर्म्म करो।

हे अर्ज्जुन सब गुप्त विषयोंसे भी परम गुप्त मेरे अत्यन्त सूक्ष्म वचनोंको तुम फिर सुनो, क्योंकि तुम मेरे मित्र और प्यारे हो, इस निमित्त तुमसे यह बचन कहता हूं—तुम मुझमें मन लगाओ, मेरे भक्त बनो, मेरी पूजा और यज्ञ करो और मुझको प्रणाम करो, ऐसा करनेसे तुम मुझे पाओगे, इसमें कुछ सन्देह न करना। तुम मेरे प्यारे हो, इस निमित्त मैं तुमसे यह सच्ची प्रतिज्ञा करके कहता हूं, कि तुम सब कर्मोंको त्याग कर केवल मेरी ही शरणमें आओ, मैं तुमको सब पापोंसे छुड़ा दूंगा, कुछ सोच मत करो। इस गीताके अर्थके तत्वका तुम कभी तपस्या-हीन, भक्ति-हीन, आज्ञा न माननेवाले और मेरी निन्दा करनेवाले पुरुषोंको उपदेश न करना। जो मुझमें परम भक्ति करके मेरे भक्तोंसे इस उत्तम भेदको कहेंगे, वे निःसन्देह मुझको पावेंगे, इसमें कुछ भी संशय नहीं है। जो मेरे भक्तोंके निकट गीता शास्त्रकी व्याख्या करते हैं उन पढ़ने और सुननेवाले मनुष्योंसे बढ़कर कोई भी इस पृथ्वीपर मुझे प्यारा नहीं दीखता है और न भविष्यमें होगा तथा न मुझको कोई उससे अधिक प्रसन्न करनेवाला ही है मेरा यही मत है, कि जो मनुष्य मेरे और तुम्हारे इस धर्म्म सम्वादको पढ़ेगा, वह ज्ञानसे मेरी ही पूजा करनेवाला कहा जायगा और मैं उसके उसी यज्ञका भोग करनेवाला बनूंगा। जो मनुष्य श्रद्धावान् और निन्दासे रहित होकर इस कथाको सुनते हैं, वह सब पापोंसे मुक्त होकर पुण्यात्माओंके पाने योग्य लोकोंमें जाते हैं। हे पार्थ। क्या तुमने इसको एकाग्रचित्तसे सुना है? बतलाओ तो, अब तुम्हारा अज्ञान, और मोह छूटा वा नहीं?

अर्ज्जुन बोले, हे अच्युत! मेरा अज्ञान और मोह छूट गया, तुम्हारे प्रसादसे स्मरणानुस्मान

(आत्माका ज्ञान) मुझको मिला; मैं अब धर्मके विषयोंमें सब सन्देहसे रहित होकर स्थित हूं, और तुम्हारी आज्ञाको पालन करनेमें तत्पर हूं।

सञ्जय बोले; हे राजन् धृतराष्ट्र। मैंने महात्मा अर्ज्जुन और कृष्णका यह परम अद्भुत और रोंए खड़े करनेवाला सम्वाद अपने कानोंसे सुना था। हे राजन्! परम योगीश्वर साक्षात् कृष्णने इस परम गुप्त-योगको अर्ज्जुनसे कहा है, मैंने व्यासकी कृपासे अपनी आखोंसे देखा और कानोंसे सुना। मैं कृष्ण और अर्ज्जुनके पुण्य देनेवाले सम्वादको स्मरण करके बारबार प्रसन्न और हर्षित होता हूं। हे राजन् धृतराष्ट्र! हरिके उस परम अद्भुत रूपको बार बार स्मरण करके मुझे बहुत ही भय और आश्चर्य होता हैं तथा मेरे शरीरके रोंए खड़े हुए जाते है। हे राजन्! जहां पर परम योगीश्वर कृष्ण और महाधनुर्द्धारी अर्ज्जुन निवास करते हैं उसी स्थान पर निश्चय करके राजलक्ष्मी, विजय, ऐश्वर्य्य और उत्तम नीति भी निवास करती है, यही मेरे विचारमें दृढ़ निश्चय है।

४१ अध्याय समाप्त।

गीता माहात्म्य समाप्त हुआ।

अब भीष्म-वध पर्व्व लिखेंगे।

सञ्जय बोले, अनन्तर अर्ज्जुनको फिर वाण और गाण्डीवधारी देखकर सब महारथ योद्धा लोग सिंहनाद करने लगे। पाण्डव, सृञ्जय तथा जो वीरलोग उनके अनुगामी थे, वे सब सावधान होकर अपने अपने शङ्ख बजाने लगे। अनन्तर शंख भेरी, दुन्दुभी (नगाड़े) आदि सब बाजे अत्यन्त वेगसे बजने लगे, उससे महा तुमुल शब्द उत्पन्न होने लगा। हे प्रजानाथ! अनन्तर देवता, गन्धर्व्व पितर, सिद्ध और चारणगण युद्ध देखनेकी इच्छासे विमानों पर चढ़के आकाशमें आये, और महाभाग ऋषियोंसे मिल इन्द्रको आगे करके उस महा हत्याकी लीला देखनेके निमित्त आकाशमें विमानोंपर आके इकट्ठे हुए।

इसके अनन्तर धीरज धारण करनेवाले धर्म्मराज वीर युधिष्ठिरने उन समुद्रकी तरह दोनों ओरकी सेनाओंको युद्धके निमित्त तैयार और बार बार आगे बढ़ती हुई देख कवच उतारके अपने शस्त्रोंको फेंक दिया, फिर अपने रथसे शीघ्रताके साथ उतर कर पितामह भीष्मकी ओर देखते हुए चुपचाप दोनों हाथ जोडके शत्रुओंकी ओर पूर्व्वदिशाको पैदल ही जाने लगे। कुन्ती-पुत्र धनञ्जय, महाराज युधिष्ठिरको जाते हुए देख कर रथसे शीघ्र ही उतरे और धर्म्मराज जिस मार्गसे जारहे थे, उसी मार्गसे भाइयोंके सहित उनके पश्चात्-गामी हुए।

हे राजन्! श्रीकृष्णचन्द्रजी भी उनके पीछे चले। अन्य राजा लोग भी कौतुक देखनेको उनके पीछे चले। अनन्तर अर्ज्जुन धर्म्मराजको पुकारके बोले, हे राजन्। आप यह क्या कार्य्य करते है? आप हम लोगोंको छोड़ कर शत्रुओंकी सेनाकी तरफ पूर्व्वदिशामें पैदल ही क्यों चले जाते हैं? भीमसेन बोले, हे पार्थिव राजेन्द्र! आप कवच और शस्त्रोंको फेंक कर और भाइयोंको भी त्याग कर युद्धके निमित्त खड़ीहुई शत्रुओंकी सेनाकी ओर कहा जायंगे? नकुल बोले, हे भरतनन्दन! आप हम लोगोंके ज्येष्ठ भ्राता हैं आपको इस समय ऐसे भावसे गमन करते देख कर हम लोगोंका हृदय भयसे दुःखी हो रहा है, आप कहिये कि कहा जायंगे? सहदेव बोले, हे राजन्! युद्ध करनेके वास्ते इस भयानक रण-समूहके (सेनाके) इकट्ठा होने पर आप शत्रुओंकी ओर कहां चले जाते हैं?

सञ्जय बोले, हे कुरुनन्दन! मौनावलम्बी राजा युधिष्ठिर भाइयोंके इस प्रकार बार बार पूछने पर कुछ भी उत्तर न देकर आगे ही बढ़ने लगे। महाबुद्धिमान्, महा-मना श्रीकृष्णचन्द्रजी हंसते हुए अर्जुन आदि सबसे कहने लगे, कि इनका अभिप्राय मुझे मालूम है। ये भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य और शल्य आदिक समस्त गुरु-जनोंके निकट जाकर उनसे युद्ध करनेकी अनुमति लेंगे और उनकी आज्ञानुसार शत्रुओंसे युद्ध करेंगे। मैंने पुराने इतिहासोंको सुना है, कि जो मनुष्य शास्त्रकी आज्ञाके अनुसार गुरु, वृद्ध और बन्धुओंके सङ्ग युद्ध करता है, वह निश्चय विजयी होता है, यही मेरा विचार और निश्चय है। कृष्णके ऐसा कहने पर कौरवी सेनामें महा हाहाकार शब्द होने लगा, कितने ही सन्नाटे मारके खड़े रहे। धृतराष्ट्रके पक्षवाले कितने ही निठुर सेनाके पुरुष युधिष्ठिरको इस प्रकार जाते हुए देख कर आपसमें कहने लगे, कि देखो यह कुलपाशन युधिष्ठिर यथार्थमें भयभीत होकर भीष्मके पास जारहा है। यह राजा भाइयोंके सहित शरणके निमित्त याचना करने आता है। पाण्डुपुत्र अर्ज्जुन, भीम, नकुल और सहदेवकी सहायता पाने पर भी युधिष्ठिर किस कारणसे भयभीत होकर यहां आरहा है? इस अल्प पुरुषार्थी युधिष्ठिरका अन्तःकरण जब युद्धके भयसे व्याकुल हुआ है, तब पृथ्वीमें विख्यात यह युधिष्ठिर निश्चय ही क्षत्रियकुलमें नहीं जन्मा है। इसके अनन्तर सम्पूर्ण सैनिक पुरुष अलग अलग कौरवोंकी प्रशंसा करने लगे और पुलकित होकर स्वच्छन्दचित्तसे अपने उत्तरीय वस्त्रोंको कम्पित करने लगे। हे नरनाथ! इसके अनन्तर सब वीर लोग कृष्ण और भाइयोंके सहित राजा युधिष्ठिरकी निन्दा करने लगे। हे नरेन्द्र! फिर कौरवी सेनाके वीर लोग राजा युधिष्ठिरको धिक्कार देकर शीघ्र ही सन्नाटा खींचके चुप होगये, क्योंकि राजा युधिष्ठिर भीष्मसे क्या कहेंगे, और भीष्म उसको क्या उत्तर देंगे, युद्धमें प्रशंसित भीमसेन क्या कहेंगे और कृष्ण तथा अर्ज्जुन ही क्या वचन कहेंगे; तथा युधिष्ठिरके बोलने योग्य क्या विषय है, । युधिष्ठिरके निमित्त दोनों ओरकी सेनाओंमें इस प्रकारका बहुत सा संशय उत्पन्न हुआ था।

महाराज युधिष्ठिर भाइयोंसे घिरे हुए दुर्य्योधन और शक्तिसे युक्त शत्रु-सेनाको देखते और उससे पार होते हुए भीष्मके समीप जा पहुंचे; और युद्ध करनेके निमित्त उद्यत शान्तनुपुत्र भीष्मके दोनों चरणोंको अपने हाथोंसे पकड़ कर उनसे बोले, हे दुर्द्धर्ष! मैं आपसे यह निवेदन करता हूं, कि आपके सङ्ग जो मैं युद्ध करूंगा, इसके लिये आप मुझे अनुमति और आशीर्वाद दीजिये।

भीष्म बोले, हे पृथ्वीपति भारत! यदि तुम हमारे पास इस तरहसे न आते, तो मैं तुम्हारे पराजयके निमित्त तुम्हें अभिशाप देता। हे पुत्र! मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हुआ, तुम युद्ध करो, युद्धमें जय प्राप्त करो और दूसरी तुम्हारी इच्छा होगी, उसे भी तुम पाओगे। तुम मुझसे क्या वर मागना चाहते हो, उसे कहो, ऐसा होनेसे तुम्हारे पराजयकी सम्भावना नहीं है। हे महाराज! पुरुष अर्थका दास है, और अर्थ किसीका दास नहीं है, यही सत्य है; हमलोग अर्थसे कौरवोंके निकट बद्ध हैं; इससे तुमसे मैंने ये सब निरर्थक वचनोंको कहा है कि "मैं कौरवोंके निकट अर्थके वशमें होकर भृतिभुक् हुआ हूं, तुम युद्धके अतिरिक्त और क्या चाहते हो, उसे मुझसे प्रकाश करके कहो।

युधिष्ठिर बोले, हे महाबुद्धिमान्! आप ही उसको विचारिये, मेरी प्रार्थना आपके पास यही है, कि आप नित्य नित्य (रोज ही)

हमारे हितके निमित्त कौरवोंकी ओरसे युद्ध कीजिए।

भीष्म बोले, हे नृप! हे कुरुनन्दन! कौरवोंके पक्षसे हम इच्छानुसार ही युद्ध करेंगे, अतएव हम तुम्हारी क्या सहायता करें? युद्धके अतिरिक्त और तुम्हारी जो कुछ कहनेकी इच्छा हो, वह प्रकट करो।

युधिष्ठिर बोले, आप युद्धमें अपराजित हैं, मैं आपके निकट किस प्रकारसे युद्धमें विजयी हो सकूंगा, इस विषयमें आप यदि मेरा हितकर और कल्याणका मार्ग कुछ देखते हों, तो उसकी विचार करके कहिये।

भीष्म बोले, हे कुन्तीनन्दन! मुझे संग्राममें युद्ध करते हुए जो कोई पुरुष पराजित करे, ऐसा वीर मैं किसीको भी नहीं देखता; साक्षात् इन्द्र भी युद्धमें मुझको नहीं जीत सकेंगे।

युधिष्ठिर बोले, हे पितामह! मैं आपको प्रणाम करता हूं, मैं इसी कारणसे आपसे पूछता हूं कि आप युद्धमें शत्रुओंके द्वारा किस प्रकारसे पराजित होंगे, उसका उपाय कहिये।

भीष्म बोले, हे तात। युद्धमें मुझे कोई जीत ले, ऐसा मैं किसीको नहीं देखता और अभी मेरा मृत्युकाल भी नहीं आया है, इससे तुम फिर एक वेर मेरे पास आना।

सञ्जय बोले, हे कुरुनन्दन! अनन्तर महाबाहु युधिष्ठिर भीष्मकी वही बात सिरपर चढ़ाके और उनको फिर प्रणाम करके भाइयोंके सहित सब सेनाके सम्मुख होकर तथा सेनाके बीचसे गमन करते हुए द्रोणाचार्य्यके रथकी ओर चले। महाराज युधिष्ठिरने द्रोणाचार्य्यके पास जाकर उनको प्रदक्षिणा और उन्हें प्रणाम किया, पश्चात् अपने कल्याणके निमित्त यह वचन बोले,—हे भगवन् द्विजसत्तम! मैं किस प्रकारसे निर्दोष अन्तःकरणसे युद्ध कर सकूंगा और किस भांतिसे सब शत्रुओंको जीत सकूंगा? इस विषयमें मैं आपको आमन्त्रण करता हूं, आप मुझे अनुमति दीजिये।

द्रोणाचार्य्य बोले, हे महाराज! यदि आप युद्धके निमित्त कृतनिश्चय होकर मेरे पास न आते, तो मैं तुम्हारे पराभवके हेतु सब तरहसे अभिशाप देता, इससे हे निष्पाप युधिष्ठिर। मैं तुमसे पूजित होकर तुम्हारे ऊपर सन्तुष्ट हुआ हूं, मैं आपसे कहता हूं कि आप युद्ध कीजिये, आप विजय पावेंगे। हे महाराज! आपका जो कुछ कहनेकी इच्छा हो कहिये, मैं उसे पूरी करूंगा। इस उपस्थित समयमें "आप युद्धके अतिरिक्त और क्या इच्छा करते हैं" मैं कौरवोंकी ओरसे युद्ध अवश्य करूंगा, परन्तु आपकी जयके निमित्त मैं अन्तःकरणसे प्रार्थना करूंगा।

युधिष्ठिर बोले, हे ब्रह्मन्! आपके निकट मैं यही प्रार्थना करता हूं, कि आप कौरवोंकी ओरसे युद्ध कीजिये, परन्तु मेरे विषयमें जय आशीर्वाद और हमारे हित साधनके कार्य्योंमें मन्त्रणा (सलाह) दिया कीजिये।

द्रोणाचार्य्य बोले, हे राजन्! जब कृष्ण आपके मन्त्री हैं, तब आपका विजय अवश्य होगा; हम भी आपको आशीर्वाद देते हैं, कि आप शत्रुओंको जीतेंगे। हे कौन्तेय! जहांपर धर्म्म है, वहां ही कृष्ण हैं; और जहांपर कृष्ण हैं, वहां ही विजय है। इससे आप जाइये, युद्धमें प्रवृत्त होइये। इस समय यदि मुझसे कुछ पूछना हो तो पूछो, मैं उसका तुमसे उत्तर दूंगा।

युधिष्ठिर बोले, हे द्विज प्रधान! मुझे जो कहनेकी इच्छा है, वह कहता हूं, आप सुनिये, आप युद्धमें अजेय हैं, मैं आपको संग्राममें कैसे जीत सकूंगा?

द्रोणाचार्य्य बोले, हे राजन्! मैं जबतक रणभूमिमें युद्ध करता रहूंगा, तबतक आपके विजयकी सम्भावना नहीं है; इससे आप भाइ-

योंके सहित शीघ्र ही मेरे मारनेका यत्न कीजियेगा।

युधिष्ठिर बोले, हे महाप्राज्ञ आचार्य्य। उनसे युक्त होकर मैं आपको नमस्कार करता हूं, और अत्यन्त दुःखके सहित आपसे पूछता हू, कि आप अपने मरनेका उपाय मुझसे कहिये।

द्रोणाचार्य्य बोले, हे तात! मैं रणभूमिमें स्थित होकर उत्साह-पूर्वक बाणोंकी वर्षा करता हुआ यदि युद्ध करता रहूं तो मुझको बध करनेवाला कोई नहीं दीखता। इसके अतिरिक्त जब मैं रणभूमिमें शस्त्रको परित्याग करके योगमें आसक्त और मरनेके निमित्त निष्ठावान् होकर परमेश्वरके ध्यानमें तत्पर होऊंगा, उस समय वैसी अवस्थामें जो मुझको मारेगा, वही मेरा बध कर सकेगा। ये सब मैंने तुमसे सत्य ही कहे हैं। जिसके वचनमें श्रद्धा की जाती है, ऐसे मनुष्यके मुखसे अत्यन्त अप्रिय वचन सुनकर मैं रणभूमिमें अस्त्रशस्त्रोंका परित्याग कर सकता हूं; यह भी मैंने तुमसे सब सत्य कह दिया।

सञ्जय बोले, हे महाराज! राजा युधिष्ठिर बुद्धिमान् द्रोणाचार्य्यके,ये सब वचन सुनकर उनको प्रणाम करके शारद्वत कृपाचार्य्यके निकट पहुंचे। वाक्य-विशारद महाराज युधिष्ठिर कृपाचार्य्यकी प्रदक्षिणा और उनको प्रणाम करके यह वचन बोले, हे विशुद्धात्मन् आचार्य्य! मैं आपके पास युद्धकी अनुमति चाहता हू, जिससे निर्दोष अन्तःकरणसे युद्धकर सकू, और सब शत्रुओंको जीत लूं यही आप मुझे बुद्धि दीजिये, और युद्ध करनेकी आज्ञा दीजिये।

कृपाचार्य्य बोले, हे महाराज। यदि आप युद्ध करनेमें कृतनिश्चय होकर मेरे पास न आते तो मै आपके पराजयके निमित्त सब प्रकारसे उद्योग करता। हे महाराज। पुरुष अर्थका दास है, अर्थ किसीका भी दास नही, यह ठीक ही है। मैं अर्थसे कौरवोंके वशीभूत हूं, हे महाराज। मेरा यह निश्चय है, कि मैं कौरवोंकी ओरसे युद्ध करूंगा, अतएव आपको यह निरर्थक वचन कहना पड़ता है, कि "युद्धके अतिरिक्त और क्या आप मुझसे चाहते हैं।"

युधिष्ठिर बोले, हे आचार्य्य। मैं इसी कारणसे अति दुःखित अन्तःकरणसे आपके निकटमें आकर यह पूछता हूं, आप मेरी बातोंको सुनिये।

सञ्जय बोले, ऐसा कहके राजा युधिष्ठिर व्यथित और मूर्च्छित होगये, और कुछ भी बात न कर सके। कृपाचार्य्य उनके कहनेका अभिप्राय जानकर बोले, कि हे महाराज! मुझे कोई नहीं मार सकता, किन्तु आप युद्ध कीजिये, आपकी विजय होगी। हे मनुष्योंके राजा! आप जो मेरे पास आये, इससे मैं आपके ऊपर प्रसन्न हुआ हूं, मैं प्रतिदिन खड़ा होके आपके जयकी प्रार्थना करूंगा, यह मै सत्य ही कहता हूं हे महाराज। इसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर गौतमनन्दन कृपाचार्य्यके वचनोंको सुन कर उन्हें प्रणाम कर वहांसे बिदा होकर जहां मद्रराज शल्य थे, वहां पहुंचे। वह प्रतापवान शल्यके निकट खड़े होकर उसकी प्रदक्षिणा की और प्रणाम करके अपने कल्याणके निमित्त यह वचन बोले,—हे प्रतापवान् महाराज। मैं आपके निकट युद्ध करनेकी अनुमति मांगने आया हूं। मैं जिससे दोषरहित होकर युद्ध कर सकूं, और युद्धमें सब प्रबल शत्रुओंको पराजित करूं, आप वही उपाय मुझे बतलाइये।

शल्य बोले, हे महाराज! यदि तुम युद्धमें कृत-निश्चय होकर मेरे पास न आते तो मैं युद्धमें तुम्हारे पराजयके निमित्त अवश्य अभिशाप देता। तुमने मेरा सम्मान किया, इससे मैं तुम पर प्रसन्न हूं, तुम जिस बातकी आकांक्षा करते हो, वह सिद्ध होगी, मै तुमको अनुमति देता हू, तुम युद्ध करनेमें प्रवृत्त होओ,

जय पाओगे। हे वीर। तुमको किस विषयका प्रयोजन है? मैं तुम्हें क्या प्रदान करूं? इस वर्त्तमान अवस्थामें तुम "युद्धके अतिरिक्त और मुझसे क्या चाहते हो" मुझसे स्पष्टरूपसे कहो। हे वत्स। हे भागिनेय। पुरुष अर्थका दास है, अर्थ किसीका भी दास नहीं, यह वचन बहुत ठीक है। मैं अर्थके वशमें होकर कौरवोंके निकट बंधा हूं, इससे तुमको ऐसा निरर्थक वचन कहता हूं कि तुम्हारी यथाभिलषित कामना पूर्ण करूंगा; इससे तुम युद्धके अतिरिक्त और क्या अभिलाषा करते हो?

युधिष्ठिर बोले, महाराज! आप इच्छानुसार शत्रुपक्षमें रह कर युद्ध कीजिये परन्तु मैं आपसे यही वर मांगता हूं, कि मेरा जिसमें अत्यन्त कल्याण हो, उसीको आप मन्त्रणा (सलाह) कीजियेगा।

शल्य बोले, हे नृपसत्तम! मैं कौरवोंके अर्थसे उनका दास होरहा हूं इससे मैं इच्छानुसार ही तुम्हारे विरुद्ध युद्ध करूंगा। ऐसे स्थल पर मैं तुम्हारी क्या सहायता करूं; वह मुझसे कहो।

युधिष्ठिर बोले, हे मातुल। आपने युद्धके उद्योगके समय स्वीकार किया था, कि संग्रामभूमिमें कर्णके तेजका नाश करूंगा। वही वर मैं आपसे मांगता हूं।

शल्य बोले, हे कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर! तुम्हारी यह अभिलाषा पूरी होगी, जाओ इच्छानुसार युद्ध करो, तुम्हारे विजयका उपाय करना मैंने अङ्गीकार किया।

सञ्जय बोले, इसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर मद्रराजकी अनुमति ले और उन्हें प्रणाम कर भाइयोंके सहित उस महा सेनाके बीचसे बाहर निकले। गदाग्रज बलदेवजीके प्रिय भ्राता श्रीकृष्णचन्द्रजी युद्धकी भूमिमें सेनासे अलग राधापुत्र कर्णके निकट गये और पाण्डवोंके प्रयोजन सिद्ध करनेके निमित्त कर्णसे यह वचन बोले, हे कर्ण। मैंने सुना है, कि तुम भीष्मके द्वेषसे अभी युद्ध न करोगे; इससे जब तक भीष्म नहीं मारे जाते हैं, तब तक तुम हम लोगोंको वरण करो। यदि तुम दोनो ही पक्षको समान जानते हो, तो भीष्मके मरनेपर फिर दुर्य्योधनकी सहायता करनेके निमित्त पाण्डवोंके विरुद्ध युद्धमें प्रवृत्त होना।

कर्ण बोले, हे केशव। मैं दुर्य्योधनका अप्रिय कार्य्य नहीं कर सकता हूं, तुम मुझको दुर्य्योधनका हितैषी और उसके निमित्त मुझे प्राणत्याग करनेवाला समझो।

हे भारत। कृष्ण कर्णकी ऐसी वाणी सुनकर वहांसे लौटे और युधिष्ठिर प्रभृति पाण्डवोंमें आकर मिल गये। अनन्तर राजा युधिष्ठिर सेनाके बीचमें यह वचन उच्चस्वरसे बोले, कि जो इस युद्धमें हमारी सहायताके निमित्त हम लोगोंको वरण करेंगे, मैं उनको ग्रहण करूंगा। इसके अनन्तर युयुत्सु उन लोगोंको इस प्रकार देखके प्रीति-युक्त चित्तसे बोले, कि हे धर्म्मराज! यदि आप मुझे वरण करें, तो मैं सङ्ग्रामभूमिमें धृतराष्ट्रके पुत्रोंके विरुद्ध आपकी ओरसे युद्ध करूं?

युधिष्ठिर बोले, हे युयुत्सु! चले आओ, हम सब तुम्हारे मूर्ख भाइयोंके सङ्ग युद्ध करेंगे। श्रीकृष्ण और हम सब लोग तुमसे कहते हैं, कि हे महाबाहो! तुमको युद्ध करनेके निमित्त हम लोग वरण करते हैं; तुम हम लोगोंके निमित्त युद्ध करो; धृतराष्ट्रके पिण्डकी आशा और वंशकी रक्षा तुमसे ही देखी जा रही है। हे महा-उज्ज्वल रूप-सम्पन्न राजपुत्र! तुमको हमलोग ग्रहण करनेके अभिलाषी हैं; तुम भी हमलोगोंको ग्रहण करो; अत्यन्त क्रोधी और नीचबुद्धि दुर्य्योधन अब जीता नहीं रहेगा।

सञ्जय बोले हे महाराज। इसके अनन्तर युयुत्सु, आपके पुत्र तथा कौरवोंको परित्याग

करके नगाड़ा बजवाते हुए पाण्डवोंकी सेनामें चले गये। इसके बाद महाभुज राजा युधिष्ठिरने अत्यन्त प्रसन्न और आनन्दित होकर प्रकाशमान सोनेके कवचको फिर पहर लिया, और वे सब पुरुषसिंह अपने अपने रथपर फिर चढ़े और अपने पहिलेके रचे हुए व्यूहको बनाके फिर दुरुस्त किया, और सैकड़ों नगाड़े और बहुतसे बाजोंके सहित नाना प्रकारके सिंहनाद करने लगे। धृष्टद्युम्न आदिक सब राजा लोग उस समय पाण्डवोंको रथके ऊपर चढ़े हुए देखकर प्रसन्न और हर्षित हुए। उन सब मानी पुरुषोंके सम्मान रक्षा करनेवाले पाण्डवोंके गौरवको देख कर राजा लोग उनकी अत्यन्त प्रशंसा करने लगे, और महात्मा पाण्डवोंके यथा समय पर सुहृद भाव, कृपा स्वभाव और विशेषतः ज्ञातियोंके ऊपर उन दयाकी कथाओंको आपसमें कहने लगे। उन कीर्त्तिमान् पुरुष-सिंहोंके प्रति चारों ओरसे "साधु साधु" और स्वस्ति युक्त पुण्य वाक्य सब ओर सुनाई पड़ने लगे, उससे वहां पर इकट्ठे हुए सबके मन आकर्षित होने लगे। म्लेच्छ वा क्षत्रिय पुरुष जिन जिनने वहां पर पाण्डवोंके चरित्रोंको देखा अथवा सुना, वे लोग गद्गद होकर आंसूकी धारा बहाने लगे। अनन्तर वे मनस्वी वीर लोग प्रसन्न होकर सैकड़ों सहस्रों महाभेरी आदि पुष्कल बाजे और गऊके दूधके समान प्रकाशित उज्वल शंखोंको बजाने लगे।

४२ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, मेरी और पाण्डवोंकी सेनाका व्यूह इस प्रकारसे रचा गया, इसके अनन्तर किस ओरके वीर लोगोंने पहिले प्रहार आरम्भ किया।

सञ्जय बोले, आपका पुत्र दुःशासन अपने भाई दुर्योधनका पूर्वोक्त वचन सुन कर भीष्मको आगे करके रणभूमिकी ओर बढ़ा। उसी तरहसे पाण्डव भी प्रसन्न चित्त होकर भीमसेनको सम्मुख करके भीष्मके सङ्ग युद्ध करनेकी अभिलाषासे आगे बढ़े। इसके अनन्तर शंख, भेरी, मृदङ्ग आदि विविध बाजे बजने लगे। उस समय घोड़ोंका महाघोर शब्द होने लगा, हाथी चिङ्घाड़ मारने लगे। वीरोंका सिंहनाद और किलकिला शब्द दोनों सेनाओंके बीच होने लगा। पाण्डव लोग सिंहनाद करते हुए हमारी ओर दौड़े, और हमलोग भी उनकी ओर तर्ज्जन गर्ज्जन करते हुए वेगसे दौड़े, इससे दोनों सेनाके विविध शब्दोंसे महा- तुमुल शब्द उपस्थित हुआ। पाण्डव और धृतराष्ट्र दोनों पक्षकी महासेना उस महाभयङ्कर समागममें शंख और भेरी आदि शब्दोंसे युद्ध होने पर वायुसे कांपते हुए वन वृक्षोंकी भांति कांपने लगी। उस अशुभ समयमें वहां पर आये हुए राजाओंके हाथी, घोड़े, और रथोंसे युक्त सैनिक-वीरोंका तुमुल शब्द वायुसे उठे हुए समुद्रके तरङ्गके शब्दोंकी भांति प्रकट होने लगा। इस प्रकारके रोएं खड़े करनेवाले शब्दके उठने पर महाबाहु भीमसेन गो-वृषभकी भांति हांक देने लगे। भीमसेनका वह हांक देना शङ्ख, दुन्दुभी (नगाड़े) आदिक बाजे, हाथियोंके चिङ्घाड़, घोड़ोंके हिनहिनाहट और सेनाके सब पुरुषोंके सिंहनादको अतिक्रम (उल्लङ्घन) करके बढ़ गया। बादलके समान गर्जता हुआ भीमसेनका वह महा शब्द इन्द्रके बज्रके समान हुआ, उसका सुनके आपकी सेनाके लोग भयभीत होगये। जिस तरहसे सिंहका गरजना सुनकर वनके सब पशु मल—मूत्र त्याग करने लगते हैं, उसी तरहसे सम्पूर्ण सवारीके वाहन घोड़े और हाथी आदि उस महावीर भीमका हांकना (शब्द) सुनकर मल-मूत्र त्यागने लगे। वह वीर भीमसेन बादलोंकी भांति गर्जता हुआ भय उत्पन्न करनेवाली अपनी

मूर्त्तिको दिखाकर आपके पुत्रोंको भयभीत करता हुआ उनकी ओर वेगसे आ पहुंचा। महाधनुर्द्धारी भीमसेनको आया हुआ देखकर आपके पुत्र दुर्योधन, दुर्म्मुख, दुःसह, सह अतिरथ दुःशासन, दुर्म्मर्षण, विविंशति, चित्रसेन, महारथ विकर्ण, पुरुमित्र और जय आदि सबने जैसे बादलसे बिजली निकलती है, उसी प्रकारसे धनुषपर टङ्कार देते हुए सर्पके समान तीक्ष्ण बाणोंसे भीमसेनको ऐसे छिपा दिया, जैसे बादलोंके समूह सूर्य्यको छिपा देते हैं। इसके अनन्तर द्रौपदीके पांचो पुत्र और सुभद्रानन्दन अभिमन्यु तथा नकुल, सहदेव और धृष्टद्युम्नने अपने चोखे बाणोंसे धृतराष्ट्रके पुत्रोंको इस प्रकारसे विदारण किया, जैसे इन्द्रने पर्व्वतोंके ऊपर वज्र चलाया था। अनेक धनुर्द्धारियोंके धनुष और करतालियोंके शब्दसे युद्धमें बाणोंको चलाते हुए उस प्रथम दिनकी लड़ाईमें तुम्हारे और पाण्डवोंके पक्षका कोई वीर भी पीछे न हटा। हे भरतसिंह महाराज। द्रोण-शिष्योंको मैंने बार बार बाण चलाते हुए उनके हस्तकी लाघवता (हाथकी फुर्त्ती) और लक्षका वेध करते हुए देखा। उस समयमें धनुषोंका शब्द शान्त नहीं हुआ और आकाशमार्गसे बाणोंके झुण्ड प्रकाशमान चमकते हुए पदार्थोंकी भांति चलने लगे। हे भारत! अन्य राजा लोग उस समय देखनेवालोंकी तरह खड़े होकर उस भयङ्कर लड़ाईका कौतुक और ज्ञातिवर्गोंका युद्ध देखने लगे। हाथी, घोड़े और रथोंसे युक्त वह कौरव और पाण्डवोंकी सेना रङ्गे हुए कपड़ेकी भांति रणभूमिमें बाणोंके लगनेसे अत्यन्त शोभायमान हुई। अनन्तर वे महारथ लोग क्रोधसे पूरित और एक दूसरेके वधके निमित्त इच्छा करते हुए आपसमें व्यायाम करने लगे। इसके अनन्तर सब राजा लोग तुम्हारे पुत्र दुर्योधनकी आज्ञानुसार अपने अपने पक्ष और सेनाको लेकर उस युद्धक्षेत्रमें जापहुंचे। उन सब राजाओंके रणभूमिमें आनेसे वहांपर हाथी, घोड़े, वीरोंके सिंहनाद और शङ्ख, भेरी, मृदङ्ग आदि बाजोंसे ऐसी आवाज हुई, जैसे वायुके झकोरेसे समुद्रके जलके तरङ्गोंके गिरनेका शब्द होता है। इस भयङ्कर समुद्रमें बाणोंके समूह सर्प, धनुष कछुए, और तलवार सहित आगे खड़े हुए वीरोंका तर्ज्जन गर्ज्जन तथा कूदना वायु था। उधरसे हजारों राजालोग महाराज युधिष्ठिरकी आज्ञासे सिंहकी भांति गर्ज्जते हुए आपकी सेनापर आपहुंचे। दोनों सेनाके पक्षके दलोंका विकराल रूप दीख पड़ने लगा। उन सब सेनाओंके सम्मिलित होनेपर वीरोंके चरणकी धूलिके उड़नेसे आकाशमें सूर्य्य छिप गया। क्या स्वपक्षीय, क्या शत्रुपक्षीय किसीकी भी युद्ध करने, भागने अथवा फिर युद्धमें प्रवृत्त होनेमें कुछ विशेष बात नहीं दीख पड़ी। उस महा भयङ्कर बहुत बड़े रणभूमिके स्थानपर आपके पिता भीष्म इस प्रकारकी बहुतसी सेनाको लांघकर सेनाके आगे प्रकाशित होने लगे।

४३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! उस भयङ्कर दिनके प्रथम प्रहरसे ही राजाओंके शरीरोंको काटनेवाला महायुद्ध आरम्भ हुआ। एक दूसरेके जीतनेकी इच्छा करते हुए पाण्डव और सृञ्जयोंके सिंहनादसे पृथ्वी और आकाश पूरित होगया। शङ्खोंकी ध्वनि और वीरोंका किलकिला शब्द होरहा था, उसपर भी सिंहनाद और तर्ज्जन गर्ज्जनका शब्द होने लगा। हे भरतसिंह! धनुषोंके चटाने और तलवारोंके शब्द, पैदलोंके पांवके शब्द, घोड़ोंकी हींस हिनहिनाहट, कोड़े और अङ्कुशोंका चमाना, अस्त्रोंकी आवाज, एक दूसरेकी ओर दौड़ते

हुए हाथियोंके घण्टेके शब्द और रथोंके चलनेसे बादलकी भांति महा भयङ्कर गम्भीर और रोंएंको खड़े करनेवाला विकराल शब्द होने लगा। कौरव लोग जीनेकी आशा छोड़ कृत-निश्चय और कड़े चित्तसे पताकाओंको फहराते हुए पाण्डवोंकी सेनापर आपहुंचे। शान्तनुपुत्र भीष्म यमराजके दण्डके समान विकराल और भयङ्कर धनुष लेकर अर्जुनकी ओर वेगसे चढ़ धाये। तेजस्वी विख्यात अर्जुन भी गाण्डीव धनुष लेकर रणभूमिकी ओर भीष्मके निकट वेगसे चढ़ दौड़े, वे दोनो कुरु-शार्दूल एक दूसरेके वधकी इच्छा करने लगे। महाबलवान् गङ्गापुत्र भीष्म युद्धमें अर्जुनको पीछे न हटा सके, और उसी भांति अर्जुन भी भीष्मको युद्धसे पीछे हटानेमें समर्थ न हुए। महाधनुर्धारी सात्यकि कृतवर्म्माके सम्मुख हुए, उन दोनोंका रोंएं खड़े कर देनेवाला भयङ्कर युद्ध आरम्भ हुआ। सात्यकि कृतवर्म्माको और कृतवर्म्मा सात्यकिको अस्त्र शस्त्रोंका प्रहार करते हुए आपसमें तर्ज्जन गर्ज्जन करके एक दूसरेको आक्रमण करने लगे। उन दोनों सात्वत-वंशीय पुरुषसिंहोंका सारा शरीर बाणोंसे ऐसा भूषित हुआ, जैसे वसन्तकालमें किंशुक (पलास) वृक्ष-फूला हुआ शोभायमान लगता है। महाधनुर्द्धर अभिमन्युने अयोध्यापति वृहद्दलको आक्रमण किया। वृहद्दलने युद्धमें अभिमन्युकी ध्वजाको काटके गिरा दिया और उनके सारथीको भी मारके नीचे गिरा दिया। सारथीके मरने पर सुभद्रानन्दन अभिमन्युने महाक्रोध करके नौ बाणोंसे वृहद्दलको घायल किया। इसके अनन्तर उत्तम पानीसे बुझाये हुए एक चोखे बाणसे वृहद्दलकी पताका काटके गिराई और दूसरे बाणसे उनके पृष्ठरक्षकको काट डाला; इन दोनों शत्रुओंके नाश करनेवालोंका इस प्रकारसे परस्पर युद्ध होने लगा।

हे महाराज! भीमसेनने युद्धमें प्रकाशमान, महारथ, मानी, शत्रुताको जड़को उत्पन्न करनेवाले आपके पुत्र दुर्य्योधनपर आक्रमण किया। वे दोनों नरसिंह, महारथोंमें मुख्य, कुरुप्रधान वीर युद्धकी भूमिमें एक दूसरेपर बाणोंकी वर्षा करने लगे। हे भारत! उन युद्धविद्याके जाननेवाले दोनों पुरुषोंको विचित्र युद्ध करते हुए देखकर सब प्राणियोंको महाभय उत्पन्न हुआ। दुःशासनने नकुलपर आक्रमण करके उत्तम पानीसे बुझाये चोखे दश मर्म्मभेदी बाणोंसे विद्ध किया; फिर दुःशासनने उस युद्धमें नकुलके रथ, घोड़े और पताकाको काटके गिरा दिया; माद्रीपुत्र नकुलने हंसकर उत्तम पानीसे बुझे हुए चोखे बाणोंसे दुःशासनके धनुषको बाणोंके समेत काटके पृथ्वीमें गिरा दिया और उसके रथ, घोड़े और ध्वजाको भी काट डाला; अनन्तर नकुलने फिर दुःशासनकी ओर पच्चीस क्षुद्रक बाण चलाया। दुर्म्मुख उस महा युद्धमें यत्नवान् सहदेवकी ओर चढ़ गया और अपने बाणोंकी वर्षासे उनको विद्ध करने लगा। अनन्तर वीर सहदेवने उस महायुद्धमें तीक्ष्ण बाणोंसे दुर्म्मुखके सारथीको मारके गिरा दिया। वे दोनों युद्धमें मतवारे होकर एक दूसरेपर आक्रमण करने लगे और एक दूसरेके प्रतिकारको कोशिश करते हुए अपने बाणोंके समूहसे सबको भयभीत करने लगे। धर्म्मराज युधिष्ठिरने मद्रराज शल्यपर आक्रमण किया। मद्रराज शल्यने उनको दृष्टिके सम्मुख ही युधिष्ठिरके धनुषको काटके दो टुकड़े कर दिया। कुन्ती-पुत्र युधिष्ठिरने उस कटे हुए धनुषको फेंक कर शीघ्रतासे दूसरा दृढ़ धनुष ग्रहण किया। और अत्यन्त क्रोध करके पंखयुक्त अपने बाणोंसे मद्रराजको छिपा लिया। मद्रराज युधिष्ठिरके बाणोंसे छिप गये और 'खड़ा रह'। ऐसा वचन कहने लगे। अनन्तर धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यके

सामने चढ़ आये। महारथ द्रोणाचार्य्यने अत्यन्त क्रोध करके एक बाणसे पाञ्चालराज-पुत्र धृष्टद्युम्नके भार साधन दृढ़ धनुषको काट डाला और कालदण्डके समान और एक भयङ्कर बाण धृष्टद्युम्नकी ओर चलाया, वह बाण उसके शरीरमें पैठ गया। द्रुपद-पुत्र धृष्टद्युम्नने दूसरा धनुष लेकर चौदह बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको विद्ध किया। वे दोनों महावीर क्रोधसे पूरित होकर महायुद्ध करने लगे। शीघ्रगामी विराटपुत्र शंखने वेगवान् सोमदत्तके पुत्रको आक्रमण किया और "खड़ा रह, खड़ा रह" करके पुकारने लगा, फिर उस वीरने अपने बाणसे सोमदत्त-नन्दनकी दहनी भुजा विद्ध की। सोमदत्तके पुत्रने भी शङ्खका कोष-स्थान विद्ध किया। हे नरनाथ! उन दोनों अभिमानी वीरोंका युद्ध यथार्थमें देव दानवोंके समान दीखने लगा। महात्मा महारथ धृष्टकेतु क्रुद्ध होकर क्रोधी वाह्लिककी ओर दौड़े। अनन्तर वाह्लिकने धृष्टकेतुको अनेक बाणोंसे मोहित कर दिया, फिर सिंहनाद करने लगे। चेदिराज धृष्टकेतुने क्रोधके वशमें होकर मतवारे हाथीके समान वाह्लिकपर आक्रमण करते हुए नौ बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। वे दोनों क्रुद्ध होकर बार बार तर्ज्जन गर्ज्जन करते हुए मङ्गल और बुध ग्रहोंकी भांति आपसमें क्रोध पूर्व्वक युद्ध करने लगे। क्रूर-कर्म्म करनेवाले घटोत्कच राक्षसने महाक्रूर अलम्बुष राक्षस पर इस प्रकारसे आक्रमण किया, जैसे इन्द्रने बलासुरके ऊपर आक्रमण किया था। घटोत्कचने क्रोधित होकर नौ चोखे बाणोंसे अलम्बुषको क्षत विक्षत (घायल) कर दिया। अलम्बुषने भी भीमसेनके पुत्र घटोत्कचको अनेक सोनेसे युक्त बाणोंसे मारके क्षत विक्षत (घायल) किया। वे दोनों घोर संग्रामभूमिमें बाणोंसे जर्जरित होकर इस प्रकारसे शोभित हुए, जैसे देवता और असुरोंके युद्धमें इन्द्र और बलासुरकी शोभा हुई थी। हे महाराज! बलवान् शिखण्डी द्रोणाचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामासे युद्ध करनेके निमित्त आगे बढ़े। इसके अनन्तर अश्वत्थामाने शिखण्डीको तीक्ष्ण बाणोंसे अत्यन्त विद्ध करके पीछे हटाया। फिर शिखण्डीने भी तीक्ष्ण और चोखे अच्छी प्रकारसे पानी चढ़े हुए बाणोंसे द्रोणाचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामाको प्रहार किया; अनन्तर वे दोनों अनेक प्रकारके शस्त्रोंसे एक दूसरेको मारने लगे। सेनापति विराट शीघ्रता सहित वीरतासे भरे हुए राजा भगदत्त पर चढ़ आये; अनन्तर उन दोनोंका घोर युद्ध आरम्भ होगया। हे भारत! जिस प्रकारसे बादल पहाड़ों पर जलकी वर्षा करते हैं, उसी प्रकारसे राजा विराटने क्रुद्ध होकर अपने बाणोंकी वर्षासे भगदत्तको छिपा दिया। भगदत्तने भी जैसे बादलोंसे सूर्य्य पुनः प्रकाशित होता है, उसी भांति बाणोंसे अलग होकर राजा विराटको शीघ्र ही पीड़ित किया, कृपाचार्य्य केकयाधिपति बृहत्-क्षत्रकी ओर चढ़ धाये। और अपने बाणोंकी वर्षासे उनको छिपा दिया। केकय-राजने भी अत्यन्त क्रोधसे अपने बाणोंसे कृपाचार्य्यको परिपूरित कर दिया। हे राजन्! अनन्तर उन दोनोंमें एक दूसरेके धनुष और अश्व तथा रथ छेदन करके दोनों बिना रथके होगये; अब वे दोनों तलवार खींचकर खड़े हो खड्गोंसे युद्ध करने लगे; उन दोनोंका महा घोर रूप उस संग्रामभूमिमें दीखने लगा। राजा द्रुपदने क्रोधसे भरकर सिन्धुराज जयद्रथपर आक्रमण किया। इसके बाद सिन्धुराज जयद्रथने तीन बाण राजा द्रुपदके ऊपर चलाये, द्रुपदने भी उनके ऊपर प्रहार करना आरम्भ किया; शुक्र और मङ्गल ग्रहोंकी भांति उन दोनोंका दारुण युद्ध होने लगा, उसको देखकर दर्शक लोग प्रशंसा करने लगे। आपके पुत्र विकर्ण वेगवान् घोड़ोंसे युक्त रथपर चढ़के सुतसोमकी ओर

चढ़ गये,—अनन्तर उन दोनोंमें संग्राम होने लगा। विकर्ण सुतसोमको बाणोंसे मारकर उन्हें नहीं हटा सके; और सुतसोम भी विकर्णको युद्धसे नहीं विचलित कर सके,—इन दोनोंका युद्ध अद्भुत प्रकारसे हुआ। पराक्रमी चेकितान उत्साहपूर्वक पाण्डवोंकी ओरसे सुशर्म्माकी ओर चढ़ आये। सुशर्म्मा बहुतसे बाणोंसे चेकितानको निवारण करने लगे, अनन्तर चेकितानने सुशर्म्माके ऊपर इस प्रकारसे बाणोंकी वर्षा की जैसे बादल पहाड़ोंपर पानी बरसाता है। पराक्रमी शकुनि पराक्रमशील प्रतिविन्ध्यकी ओर इस प्रकारसे दौड़े, जैसे मतवारे हाथीकी ओर सिंह दौड़ता है, युधिष्ठिरनन्दन प्रतिविन्ध्यने बहुत ही क्रोधसे भरकर अच्छे पानीसे बुझे हुए अनेक चोखे बाणोंसे सुबल-पुत्र शकुनिको इस प्रकारसे क्षत-विक्षत किया जैसे इन्द्रने दनुपुत्रोंको क्षतविक्षत किया था। पराक्रमी शकुनि भी युधिष्ठिरपुत्र प्रतिविन्ध्यको युद्ध-भूमिमें अपने तीक्ष्ण बाणोंसे क्षतविक्षत करने लगे। श्रुतकर्म्मा काम्बोज-देशीय महाबल पराक्रमी सुदक्षिणकी ओर चढ धाये। सुदक्षिण सहदेवपुत्र महारथ श्रुतकर्म्माको बाणोंसे बिद्ध करने लगे परन्तु जैसे इन्द्र मैनाक पर्व्वतको कम्पित नहीं कर सके थे, उसी भांतिसे सुदक्षिण भी श्रुतकर्म्माको नहीं हटा सके। फिर श्रुतकर्म्माने क्रोध करके अपने अनेक बाणोंसे काम्बोज-देशीय महारथ सुदक्षिणको क्षत-विक्षत करके सब प्रकारसे उन्हें मोहित कर दिया। अनन्तर शत्रुओंके जलानेवाले अर्ज्जुन-पुत्र इरावान् क्रोधसे पूरित होकर सावधान चित्तसे अमर्षण श्रुतायुकी ओर चढ़ गये। अर्ज्जुनपुत्र महारथ बलवान् इरावान्ने श्रुतायुके सब घोड़ोंको मारकर सिंहनाद किया; सेनाके लोग उनका यह कार्य्य देखकर प्रशंसा करने लगे। श्रुतायुने भी क्रोध करके इरावान्के घोड़ोंको गदासे मारडाला, अनन्तर-उन दोनोंका घोर युद्ध होने लगा। अवन्ति देशीय विन्द और अनुविन्द अपनी सेना और पुत्रके सहित महारथ कुन्तिभोजके सङ्ग युद्ध करने लगे, उन दोनोंका आश्चर्य-रूपी महाघोर पराक्रम दीखने लगा, वह दोनों बड़ी सेनाके सहित स्थिर होकर युद्ध करने लगे। अनुविन्दने कुन्तिभोजके ऊपर गदाका प्रहार किया, परन्तु कुन्तिभोजने अपने हाथोंकी शीघ्रतासे बाण चलाकर उसे निवारण किया। कुन्तिभोजने सित-शायकसे विन्दको पीड़ित किया और विन्दने भी अपने बाणोंसे कुन्तिभोजको पीड़ित करना आरम्भ किया। उन दोनों वीरोंका युद्ध अद्भुत रीतिसे होने लगा। केकयराज पांचो भाई अपनी सेनाके सहित पांचो गान्धारराजोंके सङ्ग युद्ध करने लगे। तुम्हारा पुत्र वीरबाहु, रथियोंमें श्रेष्ठ बिराटपुत्र उत्तरके सङ्ग युद्ध करने लगे और उत्तम पानीमें बुझे हुए चोखे बाण उत्तरके ऊपर चलाये। उत्तरने भी वीरबाहुके ऊपर चोखे बाणोंको चलाना आरम्भ किया चेदिराज शीघ्रतासे उलूकके सम्मुख हुए और अपने बाणोंकी वर्षासे उसके ऊपर प्रहार करने लगे। उलूक भी उनके ऊपर रोंए खड़े करनेवाले उत्तम पानीसे बुझे हुए चोखे बाण चलाने लगे। वे दोनों ही अपराजित और क्रोधसे पूरित होकर एक दूसरेको पीड़ित करने लगे; उन दोनोंका अत्यन्त भयङ्कर युद्ध होने लगा। हे राजन्! तुम्हारे और पाण्डवोंके पक्षके रथीं, गजपति, घुड़सवार और पैदलोंका इसी प्रकारसे सहस्रों समान वीर एक दूसरेके सम्मुख होकर द्वन्द्वयुद्ध मुहूर्त्त भरके वास्ते अत्यन्त सुन्दर और मनोहर हुआ था; फिर वही युद्ध उन्मत्तोंके समान होने लगा; उस समयमें कुछ भी बोध नहीं होता था। हाथीवाले हाथीवालोंसे, रथी रथीसे

घुड़सवार घुड़सवारोंके सङ्ग और पैदल चलनेवाले वीर लोग पैदलोंके सङ्ग युक्त होकर युद्ध करने लगे। इसके अनन्तर एक दूसरेके सम्मुख होकर लड़नेसे उस समय उन सब वीरोंका महा घोर तथा भयङ्कर संग्राम होने लगा। सिद्ध, चारण, देवता और देवऋषि आकाशमें विमानों पर आकर पृथ्वीमें देवअसुरोंके समान वह महाघोर संग्राम देखने लगे। इसके अनन्तर पुरुष, घोड़े, रथ और हाथियोंका विपरीत रीतिसे युद्ध होने लगा। रथी, गजपति और घुड़सवार लोग जगह जगह बार बार युद्ध करते हुए दिखाई देने लगे।

४४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! सहस्रों पैदल चलनेवाले वीरोंकी मर्य्यादाको लांघकर जहां तहां युद्ध हुआ था;—वह मै तुम्हारे निकटमें वर्णन करता हूं। कौरव और पाण्डवोंके पक्षके सब वीर योद्धा लोग प्राणकी आशा छोड़कर युद्ध करने लगे। उस समयमें पुत्र पिताको, पिता पुत्रको, मामा भानजेको, भानजा मामाको और सखा सखाको भी नहीं पहचान सकता था। कोई कोई पुरुषसिंह रथोंके सहित रथवालोंकी सेनाके सम्मुख आपहुंचे, रथोंके दण्डोंसे रथोंके दण्डे टूटने लगे। कोई कोई वीर योद्धा अनेक वीरोंके बीचमें होगये और कोई कोई रथ अनेक रथोंके बीचमें पड़कर चलनेमें असमर्थ हुए। मद चूते हुए बड़े बड़े मतवारे हाथी हाथियोंके सङ्ग मिल कर आपसमें क्रुद्ध होकर इधर उधरके स्थानोंको विचलित करने लगे। हाथियोंके समूह तोमर और पताकाओंसे युक्त होकर बड़े बड़े मतवारे हाथियोंके सम्मुख जाकर उनके सूंड़ तथा दांतोंके आघातसे पीड़ित होकर जोरसे चिग्घाड़ मारने लगे। अनेक प्रकारके शिक्षासे युक्त मतवारे हाथी पीलवानोंके अंकुशसे भी नहीं रुके और बड़े बड़े मदसे मतवारे हाथियोंके सम्मुख जाने लगे। कोई कोई बलवान् हाथी मदचूते हुए मतवारे हाथियोंके सङ्ग मिलकर क्रौञ्च पक्षीकी भांति शब्द करते हुए इधर उधर दौड़ने लगे; और पूर्णरीतिसे शिक्षा पाये हुए वे सब उत्तम हाथी ऋष्टि, तोमर और बाणोंके प्रहारसे व्याकुल होने लगे। वे सब हाथी शस्त्रोंकी चोटसे पीड़ित होके मरके पृथ्वीमें गिरने लगे और कोई कोई हाथी भयङ्कर शब्द करते हुए सब दिशाओंमें वेगसे दौड़ने लगे। महाराज! उस समयमें मैंने देखा, कि हाथिओंके पाद-रक्षक वीर पुरुष लोग क्रुद्ध होकर धनुष बाण, परशु, गदा, तोमर, ऋष्टि, भिन्दिपाल, मुषल, लोहेके परिघ और उत्तम पानीमें बुझाई हुई तेज तलवार लेकर इधर उधर प्रहार करते हुए दौड़ने लगे। एक दूसरेकी ओर चढ़ धाये और उस समय वीरोंकी तलवार युद्ध करनेसे रक्तवर्ण होकर प्रकाशित होने लगी। वीरोंके हाथोंसे चलती, कांपती और दूसरे पुरुषोंके मर्म्म स्थानों पर गिरती हुई उन तलवारोंका महाघोर शब्द होने लगा। रणभूमिमें जगह जगह गदाकी चोटसे पीड़ित, तलवारोंके प्रहारसे शरीरके अङ्ग कटे हुए, पृथ्वीमें पड़े हाथियोंके पैरके नीचे पड़के पिसते और उनके दांतोंकी चोटसे और भी पीड़ित होते हुए मनुष्योंके महाघोर रोनेका शब्द ऐसा सुनाई देने लगा, जैसे नरकमें पड़े हुए जीवोंका आर्त्तनाद तथा रोदन सुनाई पड़ता है। घुड़सवार लोग हंसके समान चवर भूषित घोड़ों पर चढ़के एक दूसरेकी ओर चढ़ दौड़े; उन लोगोंके हाथसे छूटे हुए विषधारी सर्पके समान महा प्रास युद्धमें इधर उधर चलने लगे। कितने ही घुड़सवार अत्यन्त वेगसे दौड़नेवाले घोड़ों पर चढ़के रथियोंके सम्मुख जाकर घोड़ेसे कूद कर उनके सिरको काटने

लगे। कोई कोई रथो बहुतसे घुड़सवारोंको सम्मुखमें आया हुआ देखकर अपने चोखे बाण और अस्त्र शस्त्रोंसे मार कर गिराने लगे। सुवर्णके भूषणोंसे भूषित बहुतसे हाथी घोड़ोंको सूंडसे पकड़ कर अपने पांवसे मर्द्दन करने लगे और वीर पुरुषोंके प्रास आदि अस्त्रोंसे व्याकुल होके चिंघाड़ मारने लगे। कोई कोई बड़े शरीरवाले मतवारे हाथी सवारोंके सहित रणभूमिमें घोड़ोंको बलपूर्व्वक विकल करके दूर फेंकने लगे। कितने ही हाथी अपने दांतोंकी नोकसे सवारोंके सहित घोड़ोंको फेंक कर ध्वजासे युक्त रथोंको मर्द्दन करते हुए रणभूमिमें घूमने लगे। कोई कोई बड़े शरीरवाले मद चूते हुए मतवारे हाथी अपने सूंड़ और पांवसे सवारोंके सहित घोड़ोंको मारनेमें प्रवृत्त हुए, हाथियोंके मस्तक, पेट, पंसली, और दूसरे अङ्गोंमें सर्पके समान चोखे, तीक्ष्ण बाण वीरोंके धनुषसे छूटे हुए आकर घुसने लगे।

महाराज! इधर उधर रणभूमिमें वीर पुरुषोंकी भुजाओंसे छूटीं हुई प्रकाशमान उत्तम, चोखी और भयानक शक्ति लोहेके कवचको काटकर मनुष्य और घोड़ोंके शरीरमें प्रवेश करने लगी। अनेक वीर पुरुष क्रोधसे भर कर अपने दांतोंसे ओठ काटते हुए निडर होके हाथमें तलवार, ढाल और परशु धारण करके एक दूसरेके सम्मुख आपहुंचे। कितने ही हाथी अपने सूंड़ोंसे घोड़ोंके सहित रथोंको पकड़के फेंकने लगे और रोदन करनेवाले पुरुषोंके शब्दके अनुसार चारों ओर घूमने लगे। हे महाराज! कोई पुरुष तलवार और कोई परशु आदि शस्त्रोंसे मारे गये। कितने पुरुष हाथियोंके पावोंके तले पिसके मर गये, कितने होने घोड़ोसे गिरकर प्राण त्याग किया और कितने ही रथके पहियोंके नीचे गिरके कट कर अपने बन्धु बान्धवोंको पुकारते हुए रोदन करने लगे। उनमेंसे बहुतसे लोगोंने पिता, पुत्र, मामा, भानजे, भाई, तथा दूसरे पुरुषोंके नाम लेकर उन लोगोंको पुकारना आरम्भ किया। अनेक मनुष्योंकी भुजा जङ्घा, कमर, शस्त्रोंकी चोटसे टूट गये और वह लोग जीनेकी इच्छासे रोदन करते हुए दीख पड़ते थे। कोई कोई अल्प पराक्रमसे युक्त मनुष्य शस्त्रके प्रहारसे पृथ्वीमें गिर कर प्यासे होके जल मांगने लगे। अनेक पुरुष शरीरमें रुधिर लिपटे हुए बहुत ही दुःखित होकर अपनी तथा अपने पुत्रोंकी अत्यन्त ही निन्दा करने लगे। आपसमें शत्रुता करनेवाले पराक्रमसे युक्त कितने ही वीर क्षत्रियोंने शस्त्रका त्याग तथा रोदन नहीं किया, बरन प्रसन्न होकर आपसमें तर्ज्जन गर्ज्जन करने लगे और दांतोंसे ओठ काटते हुए भृकुटी चढ़ाकर तिरछी नजरसे एक दूसरेकी ओर देखने लगे। इसके अतिरिक्त कड़े चित्तवाले अत्यन्त बलवान् कोई कोई वीर योद्धा लोग बाणोंके लगनेसे अत्यन्त पीड़ित और क्लेशित होकर भी चुपचाप ही रहे। कोई कोई वीर योद्धा मतवारे हाथियोंके सूंड़ और पांवोंके आघातसे रथहीन होकर पृथ्वीमें गिरकर दूसरे पुरुषके रथको मांगने लगे। कितने ही वीर पुरुष फूले हुए पलाशके फूलके समान शोभित होने लगे। कितने ही सेनाके बीच बड़े जोरसे चिल्ला रहे थे। उन महावीर पुरुषोंके नाश करनेवाले भयङ्कर युद्धमें पिता पुत्रको और पुत्र पिताको, मामा भानजेको और भानजा मामाको, मित्र मित्रको और भाई भाईको बध करने लगा। इसी प्रकारसे कौरव तथा पाण्डवोंका नाश होने लगा। हे भरतर्षभ! उस मर्य्यादा-रहित महा घोर युद्धमें पाण्डवोंकी सेनाके वीर योद्धा भीष्मके निकट कांपने लगे। जैसे चन्द्रमा सुमेरु पर्वतपर शोभायमान होता है, वैसे ही महाबाहु भीष्म उस समयमें महारथपर प्रकाशित

सुवर्णमयी पाच तारोंसे युक्त ताल-ध्वजाके सहित शोभित होने लगी।

४५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! उस अत्यन्त भयङ्कर दिनमें सवेरेसे बहुत दिन चढ़े तक वीर पुरुषोंके नाश करनेवाले उस महा भयानक युद्धमें दुर्मुख, कृतवर्म्मा, कृपाचार्य्य, शल्य, और विविंशति, ये लोग दुर्य्योधनकी आज्ञाके अनुसार भीष्मके निकट जाकर उनकी रक्षा करने लगे। महारथी भीष्म इन पांचों अतिरथ वीरोंसे रक्षित होकर पाण्डवोंकी सेनाका संहार करने लगे। भीष्मकी ताल-ध्वजा चेदि, काशि, करूष और पाञ्चालदेशीय सेनाओंके बीचमें बहुधा घूमती हुई दीख पड़ने लगी; वह महा वीरपुरुष अपने तेज बाणोंसे रथ, रथकी ध्वजा, धुरी, चक्र और वीरोंके सिरोंको काटकर पृथ्वीमें गिराने लगे; उस समय वह रथपर चढ़े हुए नृत्य करते हुएके समान बोध होने लगे। कितने ही हाथी भीष्मके बाणोंसे पीड़ित होकर आर्त्तनाद करने लगे; उसे देखकर अभिमन्यु अत्यन्त ही क्रुद्ध होकर अपने पिङ्गलवर्णके उत्तम घोड़े और सुवर्ण-चित्रित कर्णिकाकी ध्वजासे शोभित रथपर चढ़कर भीष्मकी ओर धाये और भीष्म तथा उनके रक्षक उन पाच अतिरथियोंके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। उस वीरने भीष्मकी ध्वजामें अपने चोखे बाण मार कर भीष्म तथा उनके पाचों रक्षक वीरोंसे युद्ध करना आरम्भ किया। कृतवर्म्माको एक तथा शल्यको पाच बाण मारे और पितामह भीष्मके ऊपर उत्तम पानीसे बुझाये हुए चोखे नौ बाण चलाये। अनन्तर धनुषको अच्छी प्रकारसे खींचकर एक बाणसे दुर्मुखको सुवर्णभूषित ध्वजा काटकर गिरा दी। इसके अनन्तर कवच आदिको काटनेवाले एक नतपर्व्व भल्लसे दुर्मुखके सारथीका सिर काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। फिर उत्तम पानीमें बुझाये हुए चोखे एक भल्लसे कृपाचार्य्यका धनुष काटके गिराया, और वह महारथ अत्यन्त क्रुद्ध होकर मानो नृत्य करता हुआ सबको अपने बाणोंसे मारने लगा, उसके हाथकी फुर्त्ती देखकर देवता लोग भी प्रसन्न हुए। भीष्म आदि सम्पूर्ण रथियोंने अर्ज्जुन-पुत्रके लक्ष्यवेध करनेकी निपुणता देख कर उसे अर्ज्जुनके समान पराक्रमी समझा। उसका धनुष उस समयमें गाण्डीव धनुषके समान शीघ्रता और टङ्कार शब्दसे प्रकाशित होने लगा, और वह धनुष धारण करके चारों ओर घूमने लगा। अत्यन्त पराक्रमी, शत्रुओंके नाश करनेवाले, देवव्रती भीष्म शीघ्र ही अभिमन्युके सम्मुख होकर अत्यन्त वेगसे युक्त नौ बाण अभिमन्युके शरीरमें मारा और तीन बाणोंसे परम तेजस्वी अभिमन्युकी ध्वजा काटकर गिरा दी, फिर तीन बाणोंसे उसके सारथीको मारा। इसी प्रकारसे कृतवर्म्मा, शल्य और कृपाचार्य्य भी अभिमन्युके ऊपर बाणोंका प्रहार करके भी अकम्पित सैनाक पर्व्वतकी भांति उसे कम्पित न कर सके। पराक्रमसे युक्त अर्ज्जुन-पुत्र अभिमन्यु धृतराष्ट्र-पक्षीय महारथ वीरोंसे घिरकर भी उन लोगोंके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगा। अनन्तर वह अपने बाणोंकी वर्षासे इन सबके महा अस्त्रोंका निवारण करके बलपूर्व्वक गर्ज्जते हुए भीष्मके ऊपर अपने बाणोंको चलाने लगा। हे राजन्! जिस समय वह अपने बाणोंसे यत्नके सहित भीष्मको पीड़ित कर रहा था, उस समय उसकी दोनों भुजाओंका दृढ़ ही बल प्रकाशित हुआ था। ऐसे पराक्रमी वीरके ऊपर भीष्म भी अच्छी प्रकार अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे; और वह भी भीष्मके धनुषसे छूटे हुए उन सब

बाणोंको काटने लगा। इसके अनन्तर उस पराक्रमी अभिमन्युने भीष्मकी ध्वजाको नौ बाणोंसे काटकर गिरा दिया; उसे देखकर सब लोग अभिमन्युको धन्य धन्य कहने लगे; सुवर्णसे बनी हुई बहुत ऊंची वह तालध्वजा सुभद्रानन्दन अभिमन्युके बाणोंसे कटकर पृथ्वीमें गिर पड़ी। भीष्मकी ध्वजाको अभिमन्युके बाणोंसे कटती हुई देखकर भरतश्रेष्ठ भीम प्रसन्न होकर सुभद्रानन्दन अभिमन्युको हर्षित करनेके निमित्त सिंहनाद करने लगे। अनन्तर अत्यन्त तेजस्वी महाबली भीष्मने उस महा भयङ्कर रणभूमिमें बहुतसे दिव्य महा अस्त्रोंको प्रकट किया। अनन्तर पंखसे युक्त सात हजार बाण भीष्मने अभिमन्युके ऊपर चलाये। इसके अनन्तर पाण्डवोंकी ओरसे महा धनुर्द्धारी महारथ पुत्रोंके सहित विराट, धृष्टद्युम्न, भीम, केकयराज पांचो भाई और सात्यकि आदि दश महारथी शीघ्रतासे रथपर चढ़के वहांपर अभिमन्युकी रक्षा करनेके निमित्त आपहुंचे। उन लोगोंके शीघ्र आनेके समयमें ही शान्तनुपुत्र भीष्मने धृष्टद्युम्नको तीन और सात्यकिको नौ बाणोंसे प्रहार किया और धनुष खींचकर एकमात्र क्षुरास्त्रसे भीमसेनकी ध्वजा काटकर पृथ्वीमें गिरा दी। हे राजेन्द्र! भीमसेनकी सुवर्ण-भूषित सिंह-चिन्हकी ध्वजा भीष्मके अस्त्रसे रथपरसे कटकर जब पृथ्वीमें गिरी, तब भीमसेनने उस रणभूमिमें भीष्मको तीन, कृपाचार्य्यको एक और कृतवर्म्माको आठ बाण मारे।

विराट पुत्र उत्तर मद्रराज शल्यके सङ्ग युद्ध करनेके निमित्त कुण्डलीकृत सूंड़वाले एक हाथीपर चढ़के शल्यके निकट जाने लगे। जब वह हस्तिराज वेगपूर्व्वक शल्यके रथकी ओर जाने लगा, तब शल्यने उसके अनोखे वेगको निवारण करनेका यत्न करना आरम्भ किया। परन्तु उस हस्तिराजने क्रुद्ध होकर शल्यके रथको पकड़कर अपने पावसे उनके चारों उत्तम घोड़ोंको मारडाला। राजा शल्यने घोड़ोंके मारे जानेपर रथमें बैठकर सर्पके समान लोहमयी एक शक्ति उत्तरका नाश करनेके निमित्त चलाई; वह शक्ति उत्तरके कवचको काटकर शरीरमें पैठ गई और इनके हाथसे अंकुश और तोमर भी छूटकर गिर गया; अनन्तर वह शक्तिके लगनेसे अत्यन्त ही मोहित होकर हाथीसे पृथ्वीपर गिर पड़े। तब शल्यने तलवार ग्रहण करके पराक्रमके सहित रथपरसे कूदकर उस गजराजके बड़े सूंड़को काट डाला। वह हाथी पहिलेसे ही बाणोंके लगनेसे अत्यन्त पीड़ित हो रहा था; फिर सूंड़के कटनेसे भयानक शब्द करता हुआ मर गया। राजा शल्य ऐसे कठिन कर्म्मको करके शीघ्रताके सहित कृतवर्म्माके प्रकाशमान रथपर जाचढ़े। इसके अनन्तर अपने भाई उत्तरको मराहुआ और शल्यको कृतवर्म्माके सहित रथपर बैठा हुआ देख बिराटका दूसरा पुत्र शङ्ख क्रोधमें भरकर अग्निमें घृतके समान जलने लगा; वह बलशाली इन्द्र धनुषके समान बड़ा धनुष ग्रहण करके मद्रराजको युद्धमें मारनेकी इच्छासे उनकी ओर वेगसे दौड़ा। चारों ओरसे अनेक रथोंके समूहमें घिरकर भी वह अपने बाणोंकी बरसाता हुआ शल्यके समीपमें जाने लगा। उस मतवारे हाथीके समान पराक्रमी शङ्खको आता हुआ देखकर मानो मृत्युके कराल दांतोंके भीतरसे मद्रराज शल्यकी रक्षा करनेके निमित्त तुम्हारी ओरके सात रथियोंने शङ्खको घेर लिया। इसके अनन्तर महाबाहु भीष्म बादलके समान गर्ज्जतेहुए ताल प्रमाण धनुषका धारण करके शङ्खकी ओर दौड़े; महा धनुधारी अत्यन्त बली भीष्मको आता हुआ देखकर पाण्डवोंकी सेना भयभीत होकर इस प्रकारसे तितर बितर होगई, जैसे वायुके वेगसे नौका इधरकी उधर

होजाती है। उस समय शङ्खकी रक्षा करना कर्त्तव्य कर्म्म समझकर अर्ज्जुन शीघ्रताके सहित शङ्खके आगे होगये; तब युद्ध आरम्भ हुआ। उस समय युद्ध करनेवाले वीर योद्धाओंका बहुत बड़ा हाहाकार शब्द होने लगा; एक तेज दूसरे तेजसे मिलने लगा,—इसे देख कर सब आश्चर्य करने लगे। उधर शल्यने हाथमें गदा लेकर कृतवर्म्माके रथसे उतर कर कर शङ्खके रथमें जुते हुए चारों घोड़ोंको मार डाला। घोड़ोंके मारे जाने पर शङ्ख तलवार ग्रहण कर रथसे शीघ्र ही उतरे और अर्ज्जुनके रथ पर चढ़के शान्ति अवलम्बन की। इसके अनन्तर भीष्मके रथसे अनेक वाण उनके धनुषसे छूट कर आकाश और पृथ्वी पर दीख पड़ने लगे। हे भारत! भीष्म उन्हीं वाणोंसे पाञ्चाल, मत्स्य, केकय और प्रभद्रक वीरोंका संहार करने लगे। प्रहार करनेवालोंमें श्रेष्ठ भीष्मने अर्ज्जुनको छोड़ कर बहुतसे वाणोंको चलाते हुए पाञ्चालराजकी सेना तथा प्यारे भाईसे युक्त राजा द्रुपदकी ओर गमन किया। राजा द्रुपद और उनकी सेनाको मानो शिशिर ऋतुके अनन्तर अग्निसे भस्म होते हुए वनकी भांति अपने वाणोंसे जलाने लगे। भीष्म पितामह धूएंसे रहित अग्निके समान उस समयमें बोध होने लगे। जिस प्रकारसे दोपहर दिनके समय अत्यन्त तपते हुए सूर्य्यके तेजको कोई नहीं सह सकता उसी भांतिसे पाण्डवोंके पक्षके वीर लोग भीष्मकी ओर देखनेमें भी समर्थ नहीं हुए। भयसे विकल होके शीतसे दुःखित गौवोंके समूहकी भांति उस समयमें उन लोगोंने किसीको अपना परित्राण करनेवाला नहीं देखा। पाण्डवोंकी सेनाके वीर लोग मारे जाने लगे, और विकल होके उत्साहसे रहित हो, आर्त्तनाद करते हुये तितर बितर होगये; उस समय पाण्डवोंकी सेनाके बीच अत्यन्त ही हाहाकार शब्द होने लगा। शान्तनुनन्दन भीष्म लगातार विषधारी सर्पके समान जलते हुए अपने वाणोंको पाण्डवोंकी सेनापर चलाने लगे। उस समय उनका धनुष मण्डलाकार दीखने लगा। वह ब्रह्मचर्य्य व्रत करनेवाले भीष्म वाणोंसे सब दिशाओंमें एक मात्र मार्ग करते हुए पाण्डवोंकी ओरके रथियोंका नाम ले लेकर उनका वध करने लगे; उससे सब सेना भीष्मके वाणोंसे मथित होकर भाग गई, अनन्तर सूर्य्यके अस्त होजाने पर फिर कुछ भी नहीं दिखाई पड़ता था, उस समय पाण्डवोंने भीष्मको इस महासंग्राममें इस प्रकार प्रचण्ड तेजसे प्रकाशित देखकर सन्ध्याके समय युद्धसे अपनी सेना लौटा ली।

४६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे भारत! पहिले दिनके युद्धमें सेनाको युद्धसे लौटाने पर धर्म्मराज युधिष्ठिर भीष्मके प्रभाव और पराक्रम तथा दुर्य्योधनके हर्षको देख कर अत्यन्त ही शोकित हुए और अपना पराजय होता हुआ समझ कर भाइयों तथा मित्र राजाओंके सहित शीघ्र ही यदुकुल भूषण कृष्णके निकट जाकर यह वचन बोले, हे कृष्ण! देखो भीष्म कैसे अत्यन्त पराक्रमी और महाधनुर्द्धारी हैं? वह ग्रीष्मकालकी अग्निके समान सूखे तृण रूपी मेरी सेनाको भस्म कर रहे हैं; तथा घृतसे युक्त अग्निकी भांति सूखी लकड़ीरूपी मेरी सेनाको जला रहे हैं। इस महाबली अत्यन्त पराक्रमी पुरुषको मैं रणभूमिमें किस प्रकारसे देखनेमें समर्थ हो सकता हूं? महाबलवान् इस पुरुषसिंहको धनुष हाथमें लिये हुए देख कर तथा उनके वाणोंसे पीड़ित होकर मेरी सेना भागने लगी। क्रुद्ध हुए यमराज, वज्रधारण करने-

वाले इन्द्र, पाशधारी वरुण और गदाधारण करनेवाले कुवेरको भी युद्धमें जीतना सम्भव हो सकता है; परन्तु महाबली अत्यन्त पराक्रमी भीष्मको किसी प्रकारसे भी कोई पराजित नहीं कर सकता है। ऐसी अवस्थामें मैं भीष्म रूपी अथाह जलमें पड़ कर डूब रहा हूं, तुम्हारी बुद्धिकी दुर्ब्बलताके कारण मैं रणभूमिमें भीष्मके सम्मुख हुआ हूं; इससे तो वनमें ही हमलोगोंको जीवित रहना उत्तम है; इससे अबमें वनको जानेकी इच्छा करता हूं। इन राजाओंको भीष्मरूपी यमराजके हाथमें समर्पण करना उचित नहीं है। महाअस्त्रोंके जाननेवाले भीष्म मेरी सेनाका अवश्य ही नाश कर देंगे। जैसे पतङ्ग अपने शरीरके नाशके निमित्त ही दौड़ कर अग्निमें प्रवेश करते है; वैसे ही मेरे सैनिक पुरुष भी भीष्मके समीपमें गमन कर रहे हैं। हे कृष्ण! मैं राज्यके निमित्त पराक्रमी होकर अपना नाश करा रहा हूं; मेरे वीर भाई भी भ्रातस्नेहसे युक्त होके मेरे ही निमित्त राज्य और सुखसे रहित होकर बाणोंसे पीड़ित और दुःखसे विकल हो रहे हैं। इस समयमें जीवन ही दुर्लभ है; जीते रहना ही मैं बहुत श्रेष्ठ समझता हूं। मैं अपने इस बाकी जीवनके समयमें कठिन तपस्या करूंगा; इन मित्र राजाओंको रणभूमिमें नष्ट न कराऊंगा। महाबली भीष्म हमारे मुख्य मुख्य प्रहार करनेवाले सहस्रों रथियोंका लगातार बध कर रहे हैं। हे कृष्ण! इस समयमें कौनसा कार्य्य करनेसे मेरा कल्याण होगा; —उसे तुम शीघ्र ही कहो। अर्जुनको तो इस युद्धमें मध्यस्थकी भांति मैं देख रहा हूं; यह एक ही महाबाहु भीम क्षत्रियधर्म्मको स्मरण करते हुए केवल अपने बाहुबलसे शक्तिके अनुसार शत्रुओंके सङ्गमें युद्ध कर रहे हैं। यह महात्मा भीम अपने उत्साहके अनुसार वीरोंका नाश करनेवाली गदासे रथी, घुड़सवार, गजपति और पैदल चलनेवाले वीरोंके विषयमें अत्यन्त कठिन कार्य्य कर रहे हैं; परन्तु वह अकेले किसी प्रकारसे भी दूसरेकी सेनाका नाश करनेमें मैं समर्थ न हो सकेंगे और विनीत भावसे युद्ध करनेपर सौ वर्षमें भी इन्द्रके समान कुरु-सेना कभी नष्ट न हो सकेगी। तुम्हारे मित्र अर्ज्जुन ही एक हम लोगोंके बीचमें अस्त्र-युद्धमें निपुण हैं। परन्तु वह महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य्यके अस्त्रोंसे हम लोगोंको जलते हुए देखकर भी उपेक्षा करते है। उन दोनों महात्माओंका दिव्य अस्त्र छूटकर बार बार सब क्षत्रियोंके भस्म करेंगे। हे कृष्ण! भीष्म ही क्रुद्ध होके सब राजाओंके सङ्ग मिलकर अपने पराक्रमके अनुसार क्षत्रियों तथा हम लोगोंका नाश कर देंगे। हे महाभाग! हे योगीश्वर! जिस प्रकारसे बरसते हुए बादलोंका समूह जलती हुई अग्निको बुझा देता है, वैसे ही युद्धमें भीष्मको निवारण कर सके ऐसे किसी महारथी पुरुषको तुम मेरी सेनामेंसे दिखा दो। हे गोविन्द! ऐसा होनेहीसे पाण्डव लोग तुम्हारी कृपासे शत्रुहीन होकर अपने राज्यको पाकर सुखी हो सकेंगे। महात्मा युधिष्ठिर ऐसा कहकर शोक और दुःखसे चेतरहित होकर और मनको मलिन कर अत्यन्त चिन्ता करने लगे। कृष्णने युधिष्ठिरको दुःख तथा शोकसे आर्त्त देखकर उन्हें सम्बोधन करके सम्पूर्ण पाण्डव पक्षीय वीरोंको आनन्दित करते हुए यह वचन बोले, हे भारत! तुम शोक मत करो, शोक करना तुमको उचित नहीं है; तुम्हारे ये सब भाई, लोकके बीचमें शूरवीर और धनुर्द्धारी कहके विख्यात हैं। मैं, महारथी सात्यकि, विराट, धृष्टद्युम्न, द्रुपद आदि सब लोग तुम्हारे प्रिय कार्य्यको करनेमें रत हैं। हे राजसत्तम! अपनी अपनी सेनाके सहित ये सब राजा लोग तुम्हारी आज्ञाकी प्रतीक्षा कर

रहे हैं; विशेष करके ये सब लोग तुम्हारे भक्त हैं। हे महाबाहो! यह पृषतनन्दन महारथ धृष्टद्युम्न सदासे तुम्हारे प्रियकार्य्य करनेमें रत होकर सेनापतिके कार्य्यमें प्रवृत्त हुए हैं। भीष्मके मृत्युस्वरूप शिखण्डी भी तुम्हारे हितैषी और प्रिय कार्य्य करनेमें रत हैं। इसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर कृष्णकी यह वात सुनकर उस सभाके बीच धृष्टद्युम्नसे यह वचन बोले।- हे धृष्टद्युम्न! मैं जो कुछ तुमसे कहता हूं उसे तुम भली भांतिसे सुनो, मेरी वात खाली न जाने पावे। श्रीकृष्ण-की सम्मतिके अनुसार तुमने हमारे सेनापतिके पदको ग्रहण किया है। जिस प्रकारसे पहिले समयमें स्वामिकार्त्तिक सदा ही देवताओंके सेना-पति बने थे, हे पुरुषर्षभ। उसी प्रकारसे तुम भी पाण्डवोंके सेनापति हुए हो। हे पुरुषसिंह! इससे अव तुम अपने पराक्रमको प्रकाशित करके कौरवोंका नाश करो। भीमसेन, कृष्ण, नकुल, सहदेव आदि राजा, द्रुपदके जामाता (दमाद) तथा दूसरे प्रधान प्रधान राजा लोग जो युद्धके निमित्त हर्ष पूर्व्वक इकट्ठे हुए हैं, ये सव तथा हम लोग तुम्हारे पीछे पीछे चलेंगे। इसके अनन्तर धृष्टद्युम्न वहा पर सबको हर्षित करते हुए यह वचन कहने लगे। हे पार्थ! भगवान् शङ्करने पहिलेहीसे मुझको द्रोणा-चार्य्यका वध करनेहीके वास्ते उत्पन्न किया है। आज मैं सबके सङ्ग मिल कर व्यूह वांध कर युद्धमें अभिमानी भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य्य, शल्य और जयद्रथ आदि वीरोंके सङ्ग युद्ध करूंगा। शत्रुनाशन धृष्टद्युम्नके उद्यम और हुंकारके सहित इस वचनको सुन कर पाण्डवोंके पक्षके सम्पूर्ण वीर योद्धा लोग हर्षके सहित सिंहनाद करने लगे। इसके अनन्तर धर्म्मराज युधिष्ठिर सेनापति धृष्टद्युम्नसे फिर यह वचन बोले,—हे धृष्टद्युम्न! क्रौञ्चारुण नामक सब शत्रुओंका नाश करनेवाला एक व्यूह है, जिसको देवअसुरोंके युद्धके समयमें वृह-स्पतिने इन्द्रसे कहा था; शत्रुओंकी सेनाका नाश करनेके निमित्त विधिपूर्व्वक तुम उसी क्रौञ्चारुण व्यूहको रचना करो, कौरव तथा दूसरे राजा लोगोंने जिसको पहिले कभी नहीं देखा था, उस व्यूहको इस समयमें देखें। जैसे इन्द्र विष्णुसे वचन कहते हैं, वैसे ही धर्म्मराज युधिष्ठिरने धृष्टद्युम्नसे इस तरह कहा। अनन्तर सवेरा होते ही धृष्टद्युम्नने अर्ज्जुनको सब सेनाके आगे किया। अर्ज्जुनके रथकी ध्वजा जिसको विश्वकर्म्माने बनाया था, वह पताका सूर्य्यके मार्गसे गमन करनेवाली होकर अद्भुत रूपसे शोभित होने लगी, इन्द्रधनुषके समान वर्णवाली वह ध्वजा सब भांतिसे अलंकृत होकर गन्धर्व्व-नगरकी भांति रथ चलनेके क्रमसे आकाशमण्डलमें मानो नृत्य करती हुई प्रकाशित होने लगी। वह रत्नोंसे युक्त ध्वजा गाण्डीव धनुष धारण करनेवाले अर्ज्जुनसे और अर्ज्जुन—रत्नोंसे भूषित उस ध्वजासे परस्पर ऐसे शोभायमान हुए जैसे सूर्य्यके समीपमें ब्रह्मा शोभित होते हैं। वड़ी सेनाके सहित राजा द्रुपद उस क्रौञ्चारुण व्यूहके मस्तक हुए। कुन्तिभोज और चेदिपति दोनों राजा उस व्यूहके नेत्र स्थानमें स्थापित किये गये। दाशेरक वीरोंके सहित प्रयाग, दशार्ण, अनूप और किरात देशीय राजा लोग उसकी ग्रीवा बने; पटच्चर, हुण्ड, कौरवक और निषाद आदि विदेशीय वीरोंके सहित राजा युधिष्ठिर उस व्यूहके पीठ हुए। भीमसेन, धृष्टद्युम्न, द्रौपदीके पांचो पुत्र महारथ अभिमन्यु और सात्यकि ये लोग उसके दोनों पंखोंके मध्यस्थानमें नियत हुए। पिशाच, दरद, पौण्ड्र, कुण्डीवृष, मारुत, धेनुक, तङ्गन, परतङ्गन, वाह्लीक, तित्तिर, चोल और पाण्ड्य प्रभृति देशोंके वीरोंके सहित नकुल और सहदेव, इस व्यूहके पक्ष-स्थानमें स्थित हुए। पक्ष-स्थानमें अयुत रथके भागमें नियुत,

पीठ स्थानमें एक अर्बुद बीस हजार, गर्द्दनमें एक नियुत सत्तर हजार रथ रक्खे गये। दोनों पंखोंके अन्तमें चलते हुए पर्व्वतके समान हाथियोंका समूह चलने लगा। केकय वीरोंके सहित विराट और तीन अयुत रथोंके सङ्ग काशिराज तथा शैव्य उसके चरण स्थानकी रक्षा करने लगे। भरतसत्तम पाण्डवोंने इसी प्रकारसे इस महा व्यूहको सजा कर सब कोई मिल कर सूर्य्य उदय होनेकी अपेक्षा करते हुए स्थित हुए। उस समय उन लोगोंके रथ और हाथियों पर बड़े बड़े श्वेत-छत्र स्वच्छताके सहित अरुण (लाल) वर्ण दीख पड़ने लगे।

४७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! अत्यन्त तेजस्वी पाण्डुपुत्र युधिष्ठिरका बनाया हुआ अच्छे प्रकारसे रचित उस क्रौञ्च नामके महाघोर अभेद्य व्यूहको देखकर तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनने आचार्य्य द्रोण, कृपाचार्य्य, शल्य, सोमदत्त, विकर्ण, अश्वत्थामा और दुःशासन आदि सब भाइयों तथा युद्धके निमित्त आये हुए सब वीर राजाओंको आवाहन करके उन्हें हर्षित करनेके निमित्त समयके अनुसार यह वचन कहा, तुम सब लोग महारथ, शास्त्रके जाननेवाले और नाना प्रकारके शस्त्रोंके चलानेमें समर्थ हो; तुम सब कोई अकेले ही पाण्डुपुत्रोंको बध कर सकते हो; तब सब कोई मिलकर तथा सेनाके सहित इकट्ठे होकर जो पाण्डवोंको मारोगे, इसमें कहना ही क्या है? और हमारी सेना अधिक तथा भीष्मसे रक्षित है। पाण्डवोंकी थोड़ी सेना है, और वह भीमसे रक्षित है। शत्रुञ्जय, वीर दुःशासन, विकर्ण, नन्द, उपनन्द, चित्रसेन और मणिभद्रकके सहित संस्थान, शूरसेन, विकर्ण, कुकुर, रेचक, त्रिगर्त्त, मद्रक और यवनदेशीय वीर लोग सेनाके सहित भीष्मके अनुगामी होकर उनकी रक्षा करो महाराज। उस समय भीष्म, द्रोण और तुम्हारे पुत्रोंने पाण्डवोंके व्यूहके विरुद्ध एक महा व्यूह सज्जित किया। बड़ी सेनासे चारों ओरसे घिरकर भीष्म उस महा सेनाके दलको आकर्षण करते हुए इन्द्रके समान सबके आगे चलने लगे। प्रतापवान् महा धनुषधारी द्रोणाचार्य्य कुन्तल, दशार्ण, मागध, विदर्भ, मेकल और कर्णप्रावर वीरोंके सहित भीष्मके अनुगामी हुए; और सब सेनाके सहित गान्धार, सिन्धु, सौवीर, शिवि और वशातिदेशीय वीर योद्धा युद्धमें श्रेष्ठ भीष्मके पीछे पीछे चले। शकुनि अपनी सेनाके सहित भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्यकी रक्षा करनेमें प्रवृत्त हुए। सब भाइयोंके सहित राजा दुर्य्योधन हर्षित होकर अश्वातक, विकर्ण वामल, कोशक, दरद, शक, क्षुद्रक, और मालव वीरोंके सहित पाण्डवोंकी सेनाके ऊपर युद्ध करनेके निमित्त चढ़ गये। भूरिश्रवा, शल, शल्य, भगदत्त, अवन्तिदेशीय विन्द और अनुविन्द वामपार्श्वकी रक्षा करने लगे। सौमदत्ति, सुशर्म्मा, काम्बोजराज सुदक्षिण, शतायु और अच्युतायु दाहिने पार्श्वकी रक्षामें प्रवृत्त हुए। अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य, शाश्वत, कृतवर्म्मा, नाना देशके राजा लोग, केतुमान्, वसुदान और विभु काशिराजके पुत्र बड़ी सेनाके सहित सेनाके पीठ-स्थानपर स्थित हुए। इसके अनन्तर तुम्हारे पक्षके सब वीर प्रसन्न होकर युद्धके निमित्त उत्साहपूर्व्वक शङ्ख बजाने और सिंहनाद करने लगे। उन लोगोंके हर्षसूचक सिंहनाद और शङ्खध्वनिको सुनकर कौरवोंके बूढ़े पितामह भीष्मने भी सिंहनाद करके अपना शङ्ख बजाया। उसके अनन्तर दूसरे सब लोग शङ्ख, भेरी, नगाड़े, आदि जुझाऊ बाजोंको बजाने लगे, उससे महा घोर शब्द उत्पन्न हुआ। अनन्तर सफेद घोड़ोंसे युक्त बड़े रथपर बैठे हुए हृषीकेश कृष्ण और अर्जुन

सुवर्ण-रत्न-भूषित अपने अपने श्रेष्ठ शङ्ख बजाने लगे, कृष्णने पाञ्चजन्य और अर्ज्जुनने देवदत्त शङ्ख बजाया। भीम कर्म्म करनेवाले वृकोदरने पौण्ड्र नामका महा शङ्ख और राजा युधिष्ठिरने अनन्त विजय नाम शङ्ख बजाया। नकुलने सुघोष और सहदेवने मणिपुष्पक नामके शङ्ख बजाये। काशिराज, शैब्य, महारथ शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, विराट, महारथ सात्यकि, पाञ्चाल-राज द्रुपद, महाधनुषधारी द्रौपदीके पांचो पुत्र,—वे सब लोग अपने अपने शङ्खोंको बजा कर सिंहनाद करने लगे। उन सम्पूर्ण वीरोंका महाघोर शब्द आकाश-मण्डल और पृथ्वीमें गूंज कर प्रतिध्वनि उत्पन्न करने लगा; इससे वह महा भयङ्कर शब्द अत्यन्त वृहत् हो गया। महाराज! कौरव और पाण्डवोंके पक्षके सब वीर योद्धा लोग आनन्दित और प्रसन्न होकर एक दूसरेको भय उत्पन्न कराते हुए फिर युद्ध करनेके निमित्त सज कर खड़े हुए।

४८ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! दोनों ओरकी सेनाका व्यूह इस प्रकारसे सज्जित होने पर मुख्य मुख्य प्रहार करनेवालोंमें श्रेष्ठ, और पुरुषोंने किस प्रकारसे युद्ध करना आरम्भ किया?

सञ्जय बोले, महाराज! इसी प्रकारसे सेनाका व्यूह बननेसे सब योद्धा सज कर खड़े हुए, उनकी मनोहर ध्वजा प्रकाशित होने लगी। तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन अपनी समुद्रके समान महा सेनाको देख कर उसमें स्थित होकर सम्पूर्ण योद्धाओंसे यह वचन बोले, तुम लोग युद्ध करनेके निमित्त तैयार और व्यूह बांध कर खड़े हुए हो, अब इस समय युद्ध करना आरम्भ करो। तब वह सब लोग जीनेकी आशा छोड़ कर निडर चित्तसे पाण्डवोंकी सेनाके सम्मुख दौड़े; उन सब वीरोंकी ध्वजा उछलती हुई अत्यन्त ही शोभित होने लगीं। अनन्तर तुम्हारे पक्षवाले और पाण्डवोंकी सेनासे रथी, गजपति आदि वीरोंका रोएंको खड़ा करनेवाला घोर संग्राम होने लगा। सोनेके पखसे युक्त तेज और चोखे बाण रथियोंके धनुषसे छूटकर हाथी और घोड़ोंके ऊपर गिरने लगे। इस प्रकारसे संग्राम आरम्भ होने पर कवच तथा वर्म्म धारण करनेवाले अत्यन्त पराक्रमी महाबाहु भीष्म महारथ अभिमन्यु, भीमसेन, अर्ज्जुन, कैकेय, विराट, धृष्टद्युम्न, चेदि और मत्स्यराज; इन सब राजाओंके समीप गमन करके अपने बाणोंको बरसाने लगे। उस समय भीष्मके समागम होने पर वह ऊपर कहा हुआ व्यूह कम्पित होने लगा, पाण्डवोंकी सम्पूर्ण सेनामें ही महा सङ्कट उपस्थित हुआ। रथी, घुड़सवार, गजपति और पैदल आदि सब वीर मारे जाने लगे। रथकी सेनाको आगे बढ़नेका साहस न हुआ। तब पुरुषसिंह अर्ज्जुन महारथ भीष्मको देख कर क्रोधसे भर कर कृष्णसे यह वचन बोले,—हे कृष्ण! जहां पर पितामह हैं, वहां पर ही मेरे रथको ले चलो; मुझे यह निश्चय बोध होता है, कि दुर्य्योधनके हितैषी यह भीष्म क्रुद्ध होकर हमलोगोंकी सेनाका नाश कर देंगे। द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, शल्य, विकर्ण, दुर्य्योधन आदि धृतराष्ट्रके पुत्र लोग दृढ़ धनुषधारी भीष्मसे रक्षित होकर पाञ्चाल वीरोंका संहार करेंगे; इससे मैं सेनाकी रक्षाके निमित्त भीष्मका वध करूंगा। कृष्ण बोले, हे अर्ज्जुन तुम सावधान रहो, यही मैं तुमको पितामहके रथके समीप ले चलता हूं।

महाराज! कृष्ण अर्ज्जुनसे ऐसा कह कर उन लोक प्रसिद्ध रथको भीष्मके रथके निकट

लेगये। अर्ज्जुन उस समय बहुतसी पताका-ओंसे युक्त श्वेत वर्णके घोड़ोंके सहित, महा भयङ्कर शब्द करनेवाले वानर राजसे युक्त, उछलती हुई पताकासे विराजमान, सूर्य्यके तेजसे युक्त, उस बड़े रथ परसे मेघके समान गम्भीरस्वरसे शूरसेन और दूसरी कौरवोंकी सेनाका नाश करते हुए भीष्मकी ओर जाने लगे। सिन्धु, प्राच्य, सौवीर, और कैकेय वीरोंसे अच्छे प्रकारसे रक्षित शान्तनुनन्दन भीष्म रणभूमिमें शत्रुपक्षके शूरवीरोंको भयभीत करते और मारते हुए वेगके सहित दूसरे गजराजके समान शीघ्रतासे आते हुए, सुहृद लोगोंके आनन्द बढ़ानेवाले अर्ज्जुनके सम्मुख सहसा आकर उपस्थित हुए। महाराज! कौरवोंके पितामह भीष्म, द्रोणाचार्य्य अथवा कर्णके अतिरिक्त और कौन रथी गाण्डीव धनुष धारण करनेवाले अर्ज्जुनके सङ्गमें युद्ध कर सकता है।

अनन्तर भीष्मने सतहत्तर, द्रोणाचार्य्यने पच्चीस, दुर्य्योधनने चौंसठ, कृपाचार्य्यने पचास, शल्यने नौ, सिन्धुराजने नौ, शकुनिने पांच और विकर्णने दश बाण अर्ज्जुनको मारा। महाधनुर्द्धारी महाबाहु अर्ज्जुन चारों ओरसे उत्तम पानीमें बुझे हुए चोखे बाणोंसे बिद्ध होकर भी भिद्यमान पर्व्वतके समान विकल नहीं हुए। उस महा तेजस्वी अर्ज्जुनने भीष्मको पच्चीस, कृपाचार्य्यको नौ द्रोणाचार्य्यको, साठ, विकर्णको तीन, शल्यको पाच बाणोंसे विद्ध किया। तब सात्यकि, विराट, धृष्टद्युम्न, द्रौपदीके पाचो पुत्र और अभिमन्यु ये सब लोग अर्ज्जुनके निकट आपहुंचे। अनन्तर धृष्टद्युम्न सोमकवंशियोंके सहित गङ्गापुत्र भीष्मके कार्य्यमें रत महा धनुर्द्धारी द्रोणाचार्य्यके निकट उपस्थित हुए; परन्तु भीष्मने शीघ्रताके सहित उत्तम पानीमें बुझाये हुए अत्यन्त चोखे अस्सी बाण अर्ज्जुनके ऊपर चलाये, यह देखकर तुम्हारे पक्षके सब वीर हर्षके सहित सिंहनाद करने लगे। अनन्तर रथियोंमें श्रेष्ठ प्रतापवान् अर्ज्जुनने हर्षसे युक्त प्रफुल्लित उन योद्धाओंके सिंहनादको सुनकर उन लोगोंके बीच प्रसन्नचित्तसे उनकी सेनामें प्रवेश किया। अनन्तर उन रथिश्रेष्ठ वीरोंको लक्ष्य करके धनुषसे क्रीड़ा करने लगे।

महाराज! उस समय राजा दुर्य्योधन युद्धमें अपनी सेनाको अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित देखकर भीष्मसे बोले, हे पितामह! रथियोंमें मुख्य तुम्हारे और द्रोणाचार्य्यके जीवित रहते ही यह बली अर्ज्जुन कृष्णके सहित हमारी सेनाका नाश करता हुआ हम लोगोंकी जड़को नष्ट कर रहा है। कर्ण हमारे हितैषी थे, वह तुम्हारे ही कारणसे अस्त्र शस्त्र त्यागकर युद्धसे अलग हुए हैं। इससे जिस प्रकारसे अर्ज्जुन मारा जावे तुम उस ही उपायका विधान करो। महाराज! तुम्हारे पिता देवव्रती भीष्म दुर्य्योधनकी बात सुनकर बोले, "क्षत्रिय-धर्म्मको धिक्कार है" ऐसा कहकर अर्ज्जुनके रथके समीपमें गमन किया। दोनों श्वेतवाहन पुरुषसिंहोंको युद्धमें मिलता हुआ देखकर राजा लोग अत्यन्त ही सिंहनाद करके शङ्ख बजाने लगे। द्रोणाचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामा और तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन भीष्मको घेरकर युद्धके निमित्त स्थित हुए वैसे ही पाण्डवोंके पक्षके वीर लोग अर्ज्जुनको घेरकर युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए; इसके अनन्तर युद्ध होने लगा। गङ्गानन्दन भीष्मने नौ बाण अर्ज्जुनको मारे; अर्ज्जुनने भी दश मर्म्मभेदी बाण भीष्मके ऊपर चलाये। इसके अनन्तर युद्धमें लड़ाईके योग्य अर्ज्जुनने सहस्र बाण चलाकर भीष्मको चारों ओरसे छिपा दिया। भीष्मने भी उस समय अपने बाणोंके जालसे अर्ज्जुनके चलाये हुए बाणोंको निवारण किया। वह दोनों ही युद्धमें प्रशंसनीय थे, दोनों परम हर्षके सहित एक दूसरेके शस्त्रोंको निवारण करते हुए विशेषरूपसे युद्ध करने लगे। जो सब

बाण भीष्मके धनुषसे छूटते थे, वे अर्ज्जुनके बाणोंसे कटकर गिरते दीख पड़ते थे। उसी प्रकारसे जो सब बाण अर्ज्जुनके गाण्डीव धनुषसे छूटते थे, वे भीष्मके बाणोंसे टुकड़े होकर पृथ्वीमें गिरने लगे। अर्ज्जुनने पचीस बाणोंसे भीष्मको प्रहार किया और भीष्मने अर्ज्जुनको नौ बाण मारे। वह दोनों शत्रुनाशन वीर लीलाके क्रमके अनुसार एक दूसरेके घोड़े, रथ, ध्वजा और रथकी धुरी तथा रथके चक्रको अपने बाणोंसे वेधते हुए क्रीड़ा करने लगे। इसके अनन्तर योद्धाओंमें मुख्य भीष्मने क्रुद्ध होकर अर्ज्जुनके सारथी कृष्णकी छातीमें तीन बाण मारे। कृष्ण भीष्मके धनुषसे छूटे हुए तीनो बाणोंसे विद्ध होकर उस रणभूमिमें फूले हुए पलाश वृक्षके समान शोभित हुए। अर्ज्जुनने कृष्णको भीष्मके बाणोंसे विद्ध हुआ देख कर अत्यन्त क्रुद्ध हो भीष्मके सारथीको तीन बाणोंसे विद्ध किया। उस समयमें वे दोनों वीर यत्नवान् होकर भी एक दूसरेको लक्षित करनेमें समर्थ नहीं हुए, क्योंकि दोनो ही सारथियोंके रथ चलानेकी निपुणतासे रथकी मण्डलाकार विचित्र गतिको देखने लगे। दोनो ही प्रहार करनेका अवकाश पाकर बाणोंका अनुसन्धान करते हुए फिर इधर उधर घूमने लगे और सिंहनादके सहित शंख बजाने लगे; फिर धनुषो पर टङ्कार देने लगे। उन लोगोंके शंखके शब्द और रथोंके निर्घोषसे पृथ्वी विदारित और कम्पित होने लगी तथा पृथ्वीसे प्रतिध्वनि उत्पन्न होने लगी, वे दोनो ही समान शूरवीर और बलवान् थे, दोनोंमेंसे किसीने भी छिद्र अवकाश नहीं देखा। कौरवोंके योद्धा लोग जो भीष्मकी रक्षा करनेके निमित्त उनके समीप गये, वे केवल भीष्मके रथके चिह्न मात्रको देखकर ही गये थे. उसी प्रकारसे पाण्डवोंकी ओरके वीर लोग अर्ज्जुनके रथके चिह्नको देख कर उनके समीप गये। महाराज! युद्धमें उन दोनों पुरुष सिंहोंके ऐसे पराक्रमको देख कर सम्पूर्ण प्राणी विस्मित हुए। जिस प्रकारसे धर्मात्मा पुरुषका कभी कुछ पापकर्म्म नहीं दीख पड़ता, वैसे ही कोई भी रणभूमिमें उन लोगोंके छिद्रको देखनेमें समर्थ नहीं हुआ। वह दोनों वीर कभी बाणोंके जालसे छिप जाते थे और कभी प्रकट होजाते थे। दोनोंके पराक्रमको देख कर वहां पर युद्ध देखनेवाले देवता, महर्षि, गन्धर्व्व और चारण लोग आपसमें कहने लगे;—इन दोनों पराक्रमी महारथ वीरोंको सम्पूर्ण लोक देवता, असुर और गन्धर्वोंके सङ्ग मिल कर भी युद्धमें किसी प्रकारसे पराजित करनेमें समर्थ नहीं हो सकेंगे। लोकके बीच यह युद्ध आश्चर्य्य रूप तथा अद्भुत प्रकारसे होरहा है, ऐसा युद्ध कभी भी होनेकी सम्भावना नहीं है। भीष्म घोड़ोंसे युक्त रथ पर बैठके हाथमें धनुष लेकर यदि बाणोंको छोड़ते रहेंगे, तो बुद्धिमान् अर्ज्जुन उनको युद्धमें किसी प्रकारसे भी नहीं जीत सकेंगे। उसी प्रकारसे भीष्म भी देवताओंसे भी न जीतने योग्य धनुर्द्धारी अर्ज्जुनको युद्धमें नहीं जीत सकेंगे। ये दोनो यदि प्रलय काल पर्य्यन्त युद्ध करते रहें, तो भी यह युद्ध समान रूपमें ही होता रहेगा। उन दोनोंके विषयमें इसी प्रकारसे स्तुति वचन इधर उधरसे सुनाई देने लगा।

महाराज! उन दोनोंके पराक्रम प्रकाश करने पर तुम्हारे और पाण्डवोंकी ओरके योद्धा लोग एक दूसरेके अस्त्र शस्त्रोंकी चोटसे मरने लगे। दोनों ओरके शूरवीर योद्धा लोग उत्तम धारवाले खड्ग, परशु, अनेक प्रकारके बाण तथा दूसरे शस्त्रोंसे आपसमें एक दूसरेको चोटसे कट कर पृथ्वीमें गिरने लगे। उस महाभयङ्कर घोर संग्राममें द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नका भी महाघोर युद्ध होने लगा।

५२ अध्याय समाप्त ।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! महात्मा द्रोणाचार्य्य और पाञ्चाल धृष्टद्युम्न किस प्रकारसे यत्नवान् होकर आपसमें युद्ध करनेके निमित्त प्रवृत्त हुए थे; वह तुम मेरे निकट वर्णन करो। हे सञ्जय! जब भीष्म पाण्डवोंसे छुटकारा न पासके, तब पुरुषार्थकी अपेक्षा प्रारब्धको ही मुख्य मानना पड़ता है। नहीं तो भीष्म क्रुद्ध होकर सम्पूर्ण लोकके प्राणी मात्रका संहार कर सकते हैं; वह युद्धमें पाण्डवरूपी समुद्रसे क्यों नहीं पार होसके?

सञ्जय बोले, हे महाराज! इन्द्रके सहित देवता लोग भी अर्ज्जुनको युद्धमें नहीं जीत सकते; इससे तुम इस महा भयङ्कर युद्धके वृत्तान्तको चित्त लगाकर सुनो। द्रोणाचार्य्यने अनेक भांतिके बाणोंसे धृष्टद्युम्नको विद्ध किया और भल्लसे उनके सारथीको मारकर रथसे पृथ्वीमें गिरा दिया; फिर क्रुद्ध होकर उन्होंने चार बाणोंसे धृष्टद्युम्नके घोड़ोंको पीड़ित किया। अनन्तर वीर धृष्टद्युम्नने हंसकर "खड़ा रह! खड़ा रह!" कहकर नौ बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको विद्ध किया, तब अत्यन्त तेजस्वी महा प्रतापी भरद्वाजनन्दन द्रोणाचार्य्यने धृष्टद्युम्नको अपने बाणोंसे छिपा दिया; और इन्द्रके बज्रके समान स्पर्श करनेवाला तथा दूसरे यमराजके दण्डके समान एक महा घोर बाण ग्रहण किया, द्रोणाचार्य्यके उस बाणको धनुषपर रखते ही सेनाके बीचमें अत्यन्त हाहाकार शब्द होने लगा। महाराज! उस समयमें मैंने धृष्टद्युम्नका अद्भुत पराक्रम देखा, कि वह वीर अकेला ही पर्व्वतके समान अचल होकर खड़ा था और अपने मृत्यु-स्वरूप आये हुए उस बाणको काटकर गिरा दिया; अनन्तर वह द्रोणाचार्य्यके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगा उसके इस भांतिके अति कठिन पराक्रमको देखकर पाञ्चाल और पाण्डव लोग सिंहनाद करने लगे। अनन्तर पराक्रमशील महावीर धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यके बध करनेकी इच्छासे सुवर्ण-भूषित अत्यन्त वेगशील एक शक्ति चलायी। द्रोणाचार्य्यने हंसते हंसते उस प्रकाशमान शक्तिको अपने बाणोंसे तीन खण्ड करके पृथ्वीमें गिरा दिया। प्रतापी धृष्टद्युम्नने शक्तिके खण्डित होनेपर द्रोणाचार्य्यके ऊपर बाणोंकी वर्षा करनी आरम्भ की। महायशस्वी द्रोणाचार्य्यने धृष्टद्युम्नके बाणोंको निवारण करके उनके धनुषका मध्यभाग अपने बाणोंसे काट दिया। यशस्वी धृष्टद्युम्नने धनुषको कटा हुआ देखकर पर्व्वतके समान एक बहुत बड़ी और भारी गदा द्रोणाचार्य्यके ऊपर चलाई, वह गदा उनके हाथसे छूटकर द्रोणाचार्य्यको नाश करनेके निमित्त चली, परन्तु उस ही समय द्रोणाचार्य्यका अद्भुत पराक्रम देखा गया। उन्होंने रथ चलनेकी शीघ्रता और निपुणताके कारण उस सुवर्ण-भूषित गदाको विफल कर दिया। गदाको विफल करके शिलापर घिसे और उत्तम पानीमें बुझाये हुए सोनेके पंखयुक्त कितने ही भल्ल धृष्टद्युम्नके ऊपर चलाये। वह सब भल्ल उनका कवच काटकर रुधिरको पीने लगे। अनन्तर महात्मा धृष्टद्युम्नने उस युद्धमें और एक दूसरा धनुष लेकर पांच बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको विद्ध किया। तब दोनों ही पुरुषसिंह रुधिरसे भींगकर वसन्त ऋतुके फूले हुए पलाश वृक्षके समान शोभित होने लगे। महाराज! अनन्तर द्रोणाचार्य्यने अत्यन्त क्रुद्ध होकर सेनाके बीच द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्नके धनुषको फिर पराक्रमके सहित अपने बाणसे काटकर गिरा दिया। धृष्टद्युम्नका धनुष काटकर प्रतापी द्रोणाचार्य्य पर्व्वतके ऊपर मेघकी जल वर्षाके समान उनके ऊपर पंखसे युक्त बाणोंको बर्षाने लगे, और एक भल्लसे उनके रथके सारथीको मारके पृथ्वीमें गिरा दिया। उसके अनन्तर चार शाणित बाणोंसे उनके रथके चारों घोड़ोंको

संहार करके सिंहनाद करने लगे। अनन्तर और एक वाणसे उनके अंगुलिवाणको काट दिया। धृष्टद्युम्न धनुषके कटने और सारथी तथा घोड़ोंके मारे जानेपर अत्यन्त पराक्रमके सहित गदा लेकर उतरने लगे; परन्तु रथसे उतरते ही उतरते द्रोणाचार्य्यने कई एक वाणोंसे उनकी गदाको टुकड़े टुकड़े करके गिरा दिया, वह कर्म्म अद्भुत रूपसे प्रकाशित हुआ। इसके अनन्तर बलवान् महाबाहु धृष्टद्युम्न सौ चन्द्र युक्त एक मनोहर सुन्दर ढाल और दिव्य खड्गको लेकर मतवारे हाथीको ओर मांसकी इच्छा करनेवाले सिंहके समान द्रोणाचार्य्यके वध करनेके निमित्त वेगसे दौड़े। उस समयमें मैंने भरद्वाजपुत्र द्रोणके दोनों भुजाओंका बल, शस्त्रोंकी शीघ्रता और पराक्रम अद्भुत रूपमे अवलोकन किया कि उन्होंने अकेले ही अपने वाणोंकी वर्षासे धृष्टद्युम्नको मार्गमें ही रोक रक्खा, धृष्टद्युम्न ऐसे बलवान् होकर भी द्रोणाचार्य्यके समीपमे न जासके। मैंने देखा, कि उस समय वह महारथ मार्ग ही में खड़े होकर अपने हाथकी शीघ्रताके सहित ढालसे उन वाणोंको निवारण करने लगे। अनन्तर महाबलवान् महाबाहु भीमसेन महात्मा द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्नकी सहायताके निमित्त वहां पर आपहुंचे। उन्होंने भली भांतिसे सात शाणित वाणोंसे द्रोणाचार्य्यको विद्ध किया, फिर शीघ्रताके सहित धृष्टद्युम्नको दूसरे रथ पर चढ़ाया इसके अनन्तर राजा दुर्योधनने एक बड़ी सेनाके सहित कलिङ्गराजको द्रोणाचार्य्यको सहायताके निमित्त भेजा। कलिङ्गराजकी बड़ी सेना तुम्हारे पुत्रकी आज्ञाके अनुसार भीमसेनकी ओर दौड़ी। तब रथियोंमें मुख्य द्रोणाचार्य्य धृष्टद्युम्नको छोड़ कर बूढ़े विराट और द्रुपद के सङ्ग युद्ध करने लगे। धृष्टद्युम्न भी धर्म्मराजके समीप गये। अनन्तर महात्मा भीमके सङ्ग कलिङ्ग सेनाका महाघोर रोएंको खड़ा करनेवाला, भयङ्कर और जगत् नाश करनेवाला अत्यन्त कठिन संग्राम होने लगा।

५० अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! सेनापति कलिङ्गराजने दुर्योधनकी आज्ञाके अनुसार सेनाको सङ्ग लेकर दण्डधारी यमराजके समान गदा धारण करके सेनाके बीच भ्रमण करते हुए अद्भुत कर्म्म करनेवाले महा बलवान् भीमसेनके सङ्ग किस प्रकारसे युद्ध किया?

सञ्जय बोले. हे महाराज। कलिङ्गराजने तुम्हारे पुत्रके समीप ऐसी आज्ञा पाकर अपनी बड़ी सेनाको सङ्ग लेकर भीमके निकट गमन किया। भीमसेनने चेदि देशीय वीरोंके सहित रथ, घोड़े हाथीसे युक्त महा अस्त्र शस्त्र ग्रहण करनेवाले कलिङ्ग देशीय बहुत बड़े सेनाके दल और निषादतनय केतुमान्को आया हुआ देखकर उनकी ओर वेगसे चले। राजा केतुमान्के सङ्ग श्रुतायु भी क्रुद्ध होकर निज सेनाका व्यूह बनाके भीमके निकटमें गये। कलिङ्गराजने कई हजार रथियों और निषाद योद्धाओं तथा दश हजार हाथियोंके सहित भीमसेनको चारों ओरसे घेर लिया। चेदि, मत्स्य, करूप और दूसरे राजाओंके सहित भीमसेन सहसा निषाद वीरोंकी ओर दौड़े। इसके अनन्तर वीर योद्धा लोग एक दूसरेको मारनेकी इच्छामें घोर संग्राम करने लगे। उस बड़ी सेनाके संग्राममें समुद्रकी लहरके समान बड़ा घोर शब्द होने लगा. महाराज! जैसे दैत्योंकी सेनाके सङ्ग इन्द्रका युद्ध होता है, वैसे ही कलिङ्ग सेनाके सङ्ग भीमसेनका महाघोर संग्राम होने लगा। महाराज! सेनाके वीरोंने एक दूसरेको काटते हुए मांस और रुधिरसे पृथ्वीको पूरित कर दिया। क्रोधके

वशमें होकर योद्धाओंको अपने और शत्रुपक्षके वीरोंका भी ज्ञान न रहा; वह अपने पक्षवाले वीरोंहीके ऊपर प्रहार करने लगे। बहुतसे निषाद और कलिङ्ग वीरोंके संग्राममें थोड़ेसे चेदि देशीय योद्धाओंका अत्यन्त ही नाश होने लगा। बलवान् चेदिदेशीय योद्धा लोग शक्तिके अनुसार पराक्रम प्रकाशित करनेके अनन्तर भीमसेनको अकेला छोड़ कर युद्धसे हट गये। परन्तु चेदिदेशीय वीरोंके भाग जाने पर महाबली भीमसेन सम्पूर्ण कलिङ्ग-देशीय योद्धाओंसे घिरकर तथा उनसे आक्रान्त होकर भी युद्धसे निवृत्त नहीं हुए, वह अपने बाहुबलके आसरे होसे रणभूमिमें डटे रहे। महाराज! महाबाहु भीमसेन अपने रथके ऊपरसे तनिक भी विचलित नहीं हुए और अपने चोखे बाणोंसे कलिङ्ग-सेनाको विकल करने लगे। फिर महाधनुर्द्धर महारथी कलिङ्गराज और उनके पुत्र शक्रदेव; ये दोनों भीमके ऊपर अपने बाणोंको चलाने लगे। इसके अनन्तर भीमसेन अपने बाहुबलके आसरेसे मनोहर धनुषको कंपाते हुए शक्रदेवके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। शक्रदेवने भी युद्धमें बहुतसे बाण चलाकर भीमसेनके चारों घोड़ोंको मार डाला। तब शत्रुनाशन भीमको रथहीन देखकर शक्रदेव अपने चोखे बाण चलाते हुए भीमकी ओर दौड़े। जैसे ग्रीष्म ऋतुके अन्तमें बादल आकाशसे जलकी वर्षा करते हैं, वैसे ही महाबली शक्रदेव भीमसेनके ऊपर बाण बरसाने लगे। महाबली भीमसेनने घोड़ोंसे रहित रथपर स्थित होके महा भयङ्करी गदा शक्रदेवके ऊपर चलाई। महाराज! उस गदासे कलिङ्गराजके पुत्र ध्वजा और सारथीके सहित मरकर पृथ्वीमें गिर पड़े। हे राजन्! कलिङ्गराजने अपने पुत्रको मरा हुआ देखकर सहस्रों रथियोंको लेकर भीमसेनको चारों ओरसे घेर लिया। अनन्तर महाबली अत्यन्त पराक्रमी महाबाहु भीमने कठिन कर्म करनेकी इच्छासे गदा त्यागकर सुवर्णमयी अर्द्धचन्द्र और बहुतसे नक्षत्रोंके चिन्होंसे भूषित उत्तम ढाल और तलवार ग्रहण किया। इसके अनन्तर कलिङ्गराजने क्रोधके वशमें होकर भीमसेनको बध करनेकी इच्छासे धनुषपर टङ्कार देते हुए विषधारी सर्पके समान एक भयङ्कर बाण धनुषपर चढ़ाकर भीमकी ओर चलाया। उस धनुषसे छूटे हुए बाणको वेगसे आता हुआ देखकर भीमसेनने अपने उस बड़े खड्गसे काटके दो टुकड़े करके पृथ्वीमें गिरा दिया और तुम्हारी सेनाको भयभीत करते हुए सिंहनाद करने लगे। इसके अनन्तर कलिङ्ग-राजने शिलापर शाणित चौदह तोमर भीमके ऊपर चलाया।। महाबाहु भीम आकाशसे उन बाणोंको आता हुआ देखकर शरीरमें न लगते ही लगते अपनी तलवारसे उन्हें बीचहीमें काटा। युद्धमें उन चौदह बाणोंको काटकर कलिङ्गराजके पुत्र भानुमान्को लक्ष्य करके उसकी ओर दौड़े; भानुमान् भी अपने बाणोंकी वर्षासे भीमसेनको ढांपते हुए आकाशको अपने शब्दसे पूरित हुए बलपूर्वक सिंहनाद करने लगे। परन्तु उस महायुद्धमें भीमसेन भानुमान्के सिंहनाद को न सहकर बड़े ऊंचे स्वरसे महा घोर शब्द करने लगे। उस शब्दसे कलिङ्ग देशीय सेना भयभीत होगई और युद्धमें भीमको मनुष्य नहीं समझती थी। महाराज! अनन्तर तलवार लिये हुए भीमसेन महा घोर शब्द करके वेगके सहित कूदकर भानुमानके हस्तिराजका दोनों दांत पकड़कर उसकी पीठपर जा चढ़े और उस ही समय अपने उस महा खड्गसे भानुमान्के शरीरको बीचों बीचसे काटकर गिरा दिया। अनन्तर उस बड़े खड्गको अपने समीपवाले हाथीकी गर्दनपर चलाया; हाथियोंका यूथपति गर्दनके कटनेसे विकल

होकर चिघाड़ मारता हुआ पर्व्वत तथा समुद्रसे वेगके समान पृथ्वीमें गिरा। हाथीके पृथ्वीमें गिरनेके पहिले ही पराक्रमी भरतनन्दन भीम तलवार हाथमें लिये हुए हाथीपरसे कूदकर पृथ्वीपर आगये और निर्भय होकर सब हाथियों-को मारते हुए रणभूमिमें बहुतसा मार्ग करके चारों ओर घूमने लगे। उस समय वह घूमते हुए अग्निचक्रके समान सब ओर दिखाई देने लगे। कभी घोड़े, कभी हाथी और कभी रथ सेना तथा पैदल सेनाको मारते, और रुधिरसे पृथ्वीको गीली करते हुए सब स्थानोंमें भ्रमण करने लगे। युद्धके समयमें भयङ्कर और महा-वेगवान् होकर वह घोड़े, पैदल, रथी और हाथियोंके शरीर और शिरको अपनी बड़ी तलवारसे काटते हुए मानो बाज पक्षीके समान रणभूमिमें घूमने लगे। वह सहायहीन और पैदल होकर भी क्रोधसे भर कर प्राणि-योंका नाश करनेवाले यमराजके समान होकर शत्रुओंको भयभीत करते हुए सब शूर वीरों-को मोहित करने लगे। जब वह महायुद्धमें अत्यन्त वेगके सहित हाथमें तलवार लेकर भ्रमण कर कर रहे थे उस समयमें मूढ़ लोग ही गर्ज्ज गर्ज्ज कर उनके सम्मुख युद्धके निमित्त दौड़ते थे। शत्रुनाशन महावीर भीम रथ, रथकी धुरी और रथके चक्रको तोड़ने तथा रथ पर चढ़े योद्धाओंको तलवारसे काटने लगे। उनको संग्राममें बहुत स्थानोंमें भ्रमण करते हुए मैंने देखा। वह घूमना, फिरना, लौटना, दौड़ना, उछलना, कूदना, वीरोंको मारना आदि गति-विशेषसे रणभूमिको देखने लगे। महात्मा भीमसेनको तलवारसे कट कर कितने ही हाथी चीत्कार करने लगे। कोई कोई हाथी मर्म स्थानोंके फटनेसे मरकर पृथ्वीमें गिरने लगे। कितने ही हाथियोंका दांत और सूंड़ कट गया, कितने हाथियोंका पेट फट गया; अत्यन्त रक्षित होकर अपने पक्षके योद्धाओं-को मारने लगे; और महाघोर शब्दसे चिङ्घाड़ मारते हुए पृथ्वीमें गिर पड़े। हे महा-राज! हाथियोंके मस्तक, तोमर, विचित्र परिस्तोम, सुवर्ण भूषित हाथियोंके हौदे, हाथि योंके गलेके भूषण, शक्ति, पताका, तूणीर, यन्त्र, विचित्ररूपके धनुष, शुभ्र अग्निदण्ड, चाबुक, अंकुश, कई प्रकारके घंटे, सुवर्णभूषित तर-वारोंको मैंने पृथ्वीमें गिरते हुए देखा। मरे हुए हाथी, हाथियोंके कटे शरीर और सूण्डोंका समूह मानों मार्गमें पड़े हुए पर्व्वतके समान उस रणभूमिमें व्याप्त होगया। महाराज! पुरुषसिंह भीमसेन इसी प्रकारसे सब हाथि-योंका संहार करके फिर घोड़े और मुख्य मुख्य घुड़सवारोंको मारने लगे। यह युद्ध दोनों ओरसे अत्यन्त भयङ्कर हुआ। उस महायुद्धमें विचित्र वल्गा, सुवर्णसे युक्त कच्छा, परिस्तोम, प्रास, महामूल्यवान् ऋष्टि, कवच, ढाल और विचित्र शस्त्र कटते और पृथ्वीमें गिरते हुए दीख पड़ने लगे। उस वीरने विचित्र ग्रीव, यन्त्र और सुन्दर बाणोंसे पृथ्वी-तलको पूर्ण कर दिया। उससे पृथ्वी तल मानो कुमुद पुष्पके समान धवलवर्ण होगया। महाबली भीमसेन कूद कर अपने तलवारसे कितने ही रथियोंको ध्वजाके सहित काट कर पृथ्वीमें गिराने लगे; यशस्वी भीमसेन रणभूमिमें बार बार इधर उधर दौड़ कर विचित्र मार्ग बना कर भ्रमण करते हुए सब सैनिक पुरुषोंको विस्मित करने लगे। कितने ही योद्धाओंको पकड़के दूर फेंक दिया, कितनोंको तलवारसे काटा, कितने ही वीरोंको गर्ज्जते हुए अपने भयङ्कर शब्दसे भयभीत कर दिया और कितनोंको छाती और पांवके धक्केसे पृथ्वीमें गिरादिया। कितने ही पुरुष भीमको देख कर ही भयसे भागने लगे। और इतनेही बलवान् कलिङ्ग देशकी सेना उनको चारों ओरसे घेर कर भयानक कर्म्मवाले भीमसेनकी ओर दौड़ी। महाराज!

भीमसेन श्रुतायुको कलिङ्ग सेनाके अगाड़ी देख कर उसकी ओर दौड़े। महात्मा कलिङ्गराजने भीमसेनको अपनी ओर वेगसे आता हुआ देख कर नौ वाण उनकी छातीमें मारे; भीमसेन श्रुतायुके बाणोंसे विद्व होकर अंकुशसे पीड़ित हाथीके समान तथा क्रोधसे जलती हुई अग्निके समान प्रज्वलित होगये। इसी अवसरमें सारथी विशोक सुवर्ण भूषित रथको लाकर रथियोंमें प्रधान भीमसेनके समीप उपस्थित हुआ। शत्रुनाशन कुन्तीपुत्र भीम शीघ्र ही रथ पर चढ़के "खड़ा रह! खड़ा रह!" कहते हुए कलिङ्गराज श्रुतायुके सम्मुख दौड़े। इसके अनन्तर बलवान् श्रुतायुने क्रुद्ध होकर अपने हाथोंकी शीघ्रता दिखाते हुए नौ शाणित बाणोंको भीमके ऊपर चलाया। महाराज! महाबली भीमसेन कलिङ्गराजके धनुषसे छूटे हुए नौ चोखे वाणोंसे अत्यन्त विद्व होकर दण्डसे मारे गये सर्पके समान कुपित हो गये। बलवानोंमें मुख्य भीमसेनने एक बड़ा तथा दृढ़ धनुष ग्रहण करके लोहमय सात बाण कलिङ्गराजको मारे और उनके सत्यदेव और सत्य नाम दोनों बलवान् चक्ररक्षकोंको एक एक क्षुरास्त्रसे यमपुरीमें भेज दिया। इसके अनन्तर महा पराक्रमी भीमसेनने तीन शाणित वाणोंसे केतुमान्को यमलोकमें पहुंचाया। उस कर्मको देखकर कलिङ्ग देशीय क्षत्रिय वीर क्रोधमें भरकर कई हजार सेना लेकर क्रोधी भीमसेनके सङ्ग संग्राम करने लगे। सैंकड़ों कलिंगदेशीय योद्धा लोग शक्ति, गदा तलवार, तोमर, ऋष्टि और परशु धारण करके भीमसेनके ऊपर प्रहार करके उन्हें शस्त्रोंसे तोपने लगे। महावली भीमसेन उन सब वीरोंकी शरवृष्टिको निवारण करके वेगके सहित कूदकर गदा ग्रहण करके सात सौ वीरोंको यमपुरीमें भेज दिया; और फिर थोड़े ही समयमें दो हजार वीरोंको मारकर पृथ्वीमें गिरा दिया; भीमका पराक्रम अद्भुतरूपसे दीख पड़ा; भीमपराक्रमी भीमसेन इसी प्रकारसे बार बार कलिंग-सेनाके बहुतसे वीरोंका नाश करने लगे। सब हाथी भीमके शस्त्रोंसे पीड़ित तथा सब वीरोंसे रहित होनेपर वायुसे छिन्न भिन्न हुए बादलकी भांति सेनाके बीच चिंघाड़ मारते हुए, निज सेनाको अपने पावोंसे पीसते हुए चारों ओर घूमने लगे। तब बलवान् खड्ग धारण करनेवाले भीमसेनने हर्षके सहित अपना शङ्ख बजाया उससे सब कलिंग देशीय वीर योद्धाओंका चित्त शङ्कित और मोहित होगया। सब ओर गजराजके समान भीमसेनके भयसे सब सेना कांपने लगी और सवारीके वाहनोंने मल-मूत्र त्याग किया। वह रणभूमिमें बहुतसे स्थानोंमें इधर उधर घूमते और दौड़ते हुए शत्रुओंको मोहित करने लगे। जिस प्रकारसे बड़ा तालाव घड़ियालके दौड़नेसे मथित होजाता है, वैसे ही कलिंगदेशकी सेना भीमसेनसे भय भीत और पीड़ित होकर तितर बितर होगई। सम्पूर्ण कलिंगदेशीय योद्धा लोग अद्भुत कर्म्म करनेवाले भीमसेनसे भयभीत होके इधर उधर दौड़के फिर उनसे युद्ध करनेके निमित्त लौटे; तब पाण्डवोंके सेनापति धृष्टद्युम्नने अपनी सेनाको उन लोगोंके संग युद्ध करनेके निमित्त आज्ञा दी; शिखण्डी आदि वीर लोग सेनापतिकी बात सुनकर प्रहार करनेमें निपुण रथ-सेनाके सहित भीमसेनके समीपमें आपहुंचे। धर्म्मराज युधिष्ठिर भी बादलके समान हाथियोंकी महासेना लेकर उनके पश्चात् ही वहांपर उपस्थित हुए। धृष्टद्युम्न अपनी ओर की सब सेनाको आज्ञा देके तथा वीर पुरुषोंसे युक्त होके स्वयं भीमसेनके पार्श्व-भागकी रक्षा करने लगे। पाञ्चालराजके पुत्र धृष्टद्युम्नको भीम और सात्यकि प्राणसे भी अधिक प्रिय थे; उनसे बढ़कर दूसरा और कोई भी जगत्में

उनका प्यारा नहीं था। शत्रुओंका नाश करनेवाले वीर धृष्टद्युम्न कलिंगदेशीय सेनामें भीमको इस प्रकारसे भ्रमण करता हुआ देखकर हर्षके सहित गर्ज्जते हुए शङ्ख बजाकर सिंहनाद करने लगे। भीमसेन धृष्टद्युम्नके बहुत बड़े घोड़ोंसे युक्त सुवर्णभूषित रथकी लालवर्णवाली स्वर्णध्वजा देखकर आनन्दित हुए। महात्मा धृष्टद्युम्न भी भीमसेनको कलिंगदेशीय वीरोंसे घिरे हुए देखकर उनकी रक्षाके निमित्त आगे बढ़े। शत्रुनाशन शिनिपौत्र पुरुषसिंह सात्यकि दूरहीसे भीम और धृष्टद्युम्नको कलिंगसेनाके संग युद्ध करता देखकर वहांपर गमन करके दोनोंकी पार्श्वरक्षाके निमित्त युद्धमें प्रवृत्त हुए, वह चित्तको कठोरकर धनुष ग्रहण करके शत्रुओंका नाश करने लगे। तब भीमने भी कलिंगवीरोंके मास रुधिरसे मानो पङ्कसे युक्त नदी बहा दी; पाण्डवोंमें महाबली भीम उचित अवसर पाकर समुद्र रूपी न तरने योग्य कलिंग सेनाके पार होने लगे। महाराज! भीमसेनको इस भांतिसे कलिंग वीरोंको मारता हुआ देख कर तुम्हारी ओरके सब योद्धा लोग ऊंचे स्वरसे ऐसा वचन कहने लगे "भीमसेन साक्षात् कालरूप होकर कलिंग वीरोंका संहार कर रहे हैं।" इसके अनन्तर संग्रामके बीच शान्तनुपुत्र भीष्म उस शब्दको सुन कर चारो ओरसे व्यूहयुक्त सेनासे घिरके शीघ्र ही भीमके रथके समीप उपस्थित हुए। तब सात्यकि, भीमसेन और धृष्टद्युम्न सुवर्णभूषित भीष्मके रथकी ओर दौड़े; इन लोगोंने सहसा गंगानन्दनको चारो ओरसे शीघ्र ही घेर कर तीन तीन बाणोंसे एकबार मारा; तुम्हारे पिता देवव्रत भीष्मने भी यत्नपूर्व्वक इन महाधनुर्द्धर वीरोंके ऊपर तीन तीन बाण चलाये; अनन्तर भीष्मने [illegible] बाणोंसे महारथ वीरोंको निवारण करके सुवर्णभूषित भीमसेनके घोड़ोंको अपने बाणोंसे मार डाला। प्रतापी भीमसेनने घोड़ोंसे रहित रथ पर ही बैठ कर गङ्गानन्दन भीष्मके रथकी ओर एक शक्ति चलाई; भीष्मने उस शक्तिको अपने बाणोंसे मार्गहीमें तीन खण्ड करके पृथ्वीमें गिरा दिया, तब पुरुषसिंह भीमसेन लोहमयी बड़ी गदा ग्रहण करके शीघ्र ही रथसे कूदे। रथियोंसे मुख्य धृष्टद्युम्नने उसी समय भीमको अपने रथमें चढ़ा कर सब सेनाके सम्मुख ही उस रथको लौटाया। सात्यकिने भी उस समयमें भीमके प्यारे कार्य्यको करनेकी अभिलाषासे अपना बाण चला कर कौरवोंमें वृद्ध भीष्मके सारथीको मारके गिरा दिया, सारथीके मारे जाने पर भीष्मके रथके घोड़े वायुके समान उस रथको लेकर दूसरी ओर चले गये। महाराज! भीष्मके रणभूमिसे पृथक् होने पर भीमसेन तृणको भस्म करनेवाली अग्निके समान प्रज्वलित होगये;—सेनाके बीच स्थित होके सब कलिंग-देशीय योद्धाओंका वध करने लगे। तुम्हारी ओरका कोई पराक्रमी वीर योद्धा भीमसेनके सङ्ग युद्ध करनेमें उत्साही न हुआ; वह पाञ्चाल और मत्स्य देशीय वीरोंमें पूजित होकर धृष्टद्युम्नको आलिङ्गन करके सात्यकिके समीप उपस्थित हुए। यदुवंशियोंमें श्रेष्ठ पराक्रमी सात्यकि धृष्टद्युम्नको हर्षित करते हुए उनके सम्मुखहीमें भीमसे यह वचन बोले,—कलिङ्गराज, उसके पुत्र केतुमान् और शक्रदेव तथा दूसरे बहुतसे कलिङ्ग वीरोंको तुमने प्रारम्भहीमें युद्धमें मारा है। हाथी, घोड़े और रथोंसे युक्त अनेक महावीर पुरुष और योद्धाओंसे सहित कलिङ्ग सेनाका व्यूह तुमने अकेले ही अपने बाहुबलसे मर्द्दन किया। शत्रुनाशन महाबाहु सात्यकिने ऐसा कहकर [illegible] रथ [illegible] उन्हें आलिङ्गन किया; [illegible]

पर आकर उनको उत्साहित करनेके निमित्त तुम्हारी ओरके वीर योद्धाओंको मारने लगे।

५२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! उस दिन दोपहरके बीतते तक रथ, घोड़े, हाथी और पदातियोंका बहुत ही नाश हुआ। धृष्टद्युम्नने अश्वत्थामा, शल्य और कृपाचार्य्यके सङ्ग युद्ध करना आरम्भ किया! पाञ्चालराजके पुत्र महाबलवान् धृष्टद्युम्नने अश्वत्थामाके जगत्-विख्यात घोड़ोंको अपने दश उत्तम पानीसे बुझे हुए बाणोंसे मार डाला; घोड़ोंके मरने पर अश्वत्थामा शल्यके रथ पर चढ़के अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। सुभद्रा पुत्र अभिमन्यु धृष्टद्युम्नको अश्वत्थामाके सहित युद्धमें प्रवृत्त हुआ देख कर अपने बाणोंको चलाते हुए वहां पर उपस्थित हुए और शल्यके ऊपर पचीस, कृपाचार्य्य पर नौ और अश्वत्थामाके ऊपर आठ बाण चलाए। तब अश्वत्थामाने शीघ्रताके सहित अभिमन्युको निज बाणोंसे विद्ध किया और शल्यने बारह तथा कृपाचार्य्यने तीन बाणोंसे अभिमन्युको विद्ध किया। महाराज! तुम्हारा पौत्र लक्ष्मण अभिमन्युको युद्धमें प्रवृत्त हुआ देख कर क्रोधके सहित उसकी ओर दौड़ा अनन्तर उन दोनोंका युद्ध होने लगा। लक्ष्मणने अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपने शाणित बाणोंसे जो अभिमन्युको विद्ध किया, वह अद्भुत प्रकारसे दीख पड़ा। अभिमन्युने क्रुद्ध होकर शीघ्रतापूर्व्वक पांच सौ बाणोंसे लक्ष्मणको विद्ध किया। तिसके अनन्तर लक्ष्मणने अपने दश बाणोंसे अभिमन्युके धनुषकी मुष्टि काट दी; उसे देखकर सब कोई जोरसे सिंहनाद करने लगे। शत्रुनाशन वीर अभिमन्युने उस कटे हुए धनुषको त्यागकर और एक वेगवान् विचित्र धनुष ग्रहण किया। अनन्तर वह दोनों पुरुषसिंह एक दूसरेके शस्त्रोंके प्रतिकार करते हुए अपने चोखे बाणोंसे आपसमें प्रहार करने लगे। अनन्तर राजा दुर्य्योधनने अभिमन्युके अस्त्रोंसे अपने पुत्रको पीड़ित देखकर उसके समीपमें गमन किया; दुर्य्योधनके वहां पर गमन करते ही सब राजाओंने अभिमन्युको अपने रथोंके समूहके सहित चारों ओरसे घेर लिया। कृष्णके समान पराक्रमी महावीर अभिमन्यु उन सब शूरवीरोंसे घिर कर भी भयभीत न हुआ। अर्ज्जुन अपने पुत्र अभिमन्युको इस प्रकारसे रथियोंके बीच घिरा हुआ देखकर अत्यन्त क्रुद्ध होकर उसके परित्राणके निमित्त शीघ्रतापूर्व्वक उस ही ओर चले। तब भीष्म द्रोणाचार्य्य आदि राजा, रथी और हाथियोंकी सेना तथा पदातियोंके सहित अर्ज्जुनकी ओर दौड़े। हाथी, घोड़े, रथ और पदातियोंके पांवकी धूलि उड़नेसे सूर्य्य छिप गया। सहस्रों गजपति, और सैकड़ों राजा किसी प्रकारसे भी अर्ज्जुनके बाणोंको निवारण करके उनके समीप नहीं जासके, सब पुरुष ही विकल होकर चिल्लाने लगे; सब दिशा अन्धकारसे पूरित होगई, कौरवोंकी घोर अनीति प्रकाशित होने लगी, अर्ज्जुनके बाणोंसे आकाश, दिशा, पृथ्वीतल तथा सूर्य्य भी नहीं दीख पड़ता था, अनेक हाथियों परसे ध्वजा कट गई; अनेक रथियोंके रथके घोड़े मारे गये और अनेक रथ यूथपतियोंके रथ अत्यन्त वेगसे दौड़ते हुए दीख पड़ते थे; कितने ही रथियोंको रथहीन होनेपर उनको हाथमें शस्त्र लिये हुए मैंने इधर उधर दौड़ते देखा। अर्ज्जुनके बाणोंसे मैंने राजाओंको रथ हाथी और घोड़ोंके ऊपरसे गिरते और कितनोंको गिरकर फिर उठते हुए देखा। अर्ज्जुन मानो रुद्र-मूर्त्ति धारण करके रणभूमिमें इधर उधर योद्धाओंकी भुजाको गदा, खड्ग, प्रास, तूणीर,

धनुष, वाण, अङ्कुश और पताकाके सहित काटकर गिराने लगी। परिघ, मुद्गर, प्रास, भिन्दिपाल, तीक्ष्ण, फरशे, तोमर, ढाल, तलवार, कवच, ध्वजा और दूसरे सब शस्त्र, छत्र, सुवर्णके दण्ड, अङ्कुश, चाबुक, आदि सब वस्तु छिन्न भिन्न होकर रणभूमिमें इधर उधर पृथ्वीमें गिरती हुई बोध होने लगी। महाराज! तुम्हारी सेनाके बीच ऐसा कोई भी पुरुष नहीं था, जो उस समय युद्धमें प्रवृत्त हुए अर्जुनके सम्मुख किसी प्रकारसे ठहर सकता। जो पुरुष युद्धमें अर्जुनके सम्मुख जाते थे, वे उनके कठोर वाणोंसे मरकर यमलोकमें पहुंचते थे। तुम्हारी सेनाके सब वीरोंके भाग जाने पर कृष्ण और अर्जुन अपने अपने महाशङ्खको बजाने लगे। तब तुम्हारे पिता देवव्रत भीष्म सेनाको भागती हुई देखकर संग्रामके बीच द्रोणाचार्य्यसे हंसते हुए यह वचन बोले, कृष्णके संग मिलकर यह पाण्डुपुत्र बलवान् अर्जुन सैनिक पुरुषोंके संग जैसा कर्म्म करनेमें समर्थ है, वैसा ही कर रहा है। इसकी मानो कालके समान मूर्त्ति देखता हूं, उससे आज किसी प्रकारसे इस युद्धमें जीतनेका निश्चय नहीं होता है। देखो, यह बड़ी सेना विकल होकर इधर उधर भाग रही है; इस समय उसे लौटाकर फिर युद्धमें नियुक्त करना भी असाध्य है और भगवान् सूर्य्य भी अब इस समय सब लोगोंकी दृष्टिसे रहित होकर अस्ताचल पर गमन कर रहे हैं। हे पुरुषर्षभ! योद्धा लोग भयभीत हुए तथा थक गये हैं, अब यह लोग किसी प्रकारसे युद्ध नहीं कर सकेंगे; इससे सेनाको युद्धसे निवृत्त करना ही मैं उत्तम समझता हूं। महाराज! महारथ भीष्मने द्रोणाचार्य्यसे ऐसा कह कर अपनी सेनाको युद्धसे निवृत्त किया, तिसके अनन्तर सूर्य्यके अस्त होने पर सन्ध्याके समय दोनों ओरकी सेनाएं युद्धसे निवृत्त हुईं।

५५ अध्याय समाप्त

सञ्जय बोले, हे महाराज! जब रात्रिके बीतने पर सवेरा हुआ, तब शान्तनुनन्दन भीष्मने सेनाके पुरुषोंको युद्धके निमित्त सज्जित होनेकी आज्ञा दी कौरवोंमें बूढ़े भीष्म तुम्हारे पुत्रोंकी विजकी अभिलाषा करके उस दिन गारुड़ नामके महाव्यूहकी रचना की। उस गारुड़ व्यूहके तुण्डस्थलमें स्वयं देवव्रत भीष्म हुए, दोनों नेत्रोंके स्थानमें द्रोणाचार्य्य और सात्वत कृतवर्म्मा नियत हुए। सम्पूर्ण त्रिगर्त्त, मत्स्य, केकय और वाटधान देशीय वीरोंके सहित अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य उसके सिरस्थलमें स्थित हुए। भूरिश्रवा, शल, शल्य, भगदत्त और जयद्रथ,—ये लोग मद्रक, सिन्धु, सौवीर और पञ्चनद देशीय वीरोंके सहित उसकी गर्द्दनके स्थानमें स्थापित किये गये। राजा दुर्य्योधन अनुयायी और भाइयोंके सहित उसके पीठ स्थानमें स्थित हुए। अवन्ति देशीय विन्द और अनुविन्द और काम्बोज राज उसके पूंछके स्थानमें रक्खे गये। मागध, कलिंग और दासेरक वीर योद्धा उस व्यूहका दाहिना पक्ष और कारुष, विकुञ्ज, मुण्ड और कुण्डीवृष देशीय सब योद्धा वृहद्बलके सहित उसके बाये पक्षके स्थानमें स्थित हुए। महाराज! महात्मा अर्जुनने शत्रुओंके व्यूहको इस प्रकारसे सज्जित हुआ देख कर धृष्टद्युम्नके सहित मिल कर अपनी सेनाका व्यूह रचित किया। पाण्डव लोगोंने तुम्हारी ओरके गारुड़ व्यूहके विरुद्धमें अर्द्धचन्द्र नामके अत्यन्त कठिन व्यूहकी रचना की। उसके दाहिने नोक पर अनेक शस्त्रोंसे युक्त नाना देशीय राजाओंके सहित भीमसेन विराजमान हुए; उनके पीछे महारथ विराट और द्रुपद स्थित हुए, उसके अनन्तर नीलायुधसे युक्त नीलराज, नीलके अनन्तर चेदि, काशि, करूष और पौरव वीरोंके सहित महारथ धृष्टकेतु स्थित हुए। धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, पाञ्चाल और प्रभद्रक [illegible]

बहुत बड़े सेनादलके सहित उसके मध्य-स्थलमें स्थित होके युद्धके निमित्त प्रतीक्षा करने लगे, राजा युधिष्ठिर भी हाथियोंकी सेनाके सहित उस ही स्थान पर विराजमान हुए उनके बाद सात्यकि, द्रौपदीके पांचो पुत्र और अभिमन्यु खड़े हुए। उन लोगोंके अनन्तर द्रुपदवान्, उसके बाद घटोत्कच और उसके अनन्तर केकय देशीय योद्धा लोग युद्धके निमित्त शीघ्रताके सहित सजके खड़े होगये। उन लोगोंके अनन्तर बायें टूनगे पर जगत्की रक्षा करनेवाले जनार्द्दन कृष्णके सहित मनुष्येन्द्र अर्ज्जुन स्थित हुए। इसी प्रकारसे पाण्डव तथा उनके अनुयायी राजाओंने तुम्हारे पुत्रोंके बध करनेके निमित्त इस महाव्यूहकी रचना की।

महाराज! तिसके अनन्तर दोनों ओरके रथी और गजारोही पुरुषोंका आपसमें युद्ध होने लगा। जगह जगहमें रथी और गजपतियोंने युद्धमें प्रवृत्त होकर एक दूसरेको मारना आरम्भ किया। उस महाघोर संग्राममें तुम्हारे और पाण्डवोंके पक्षके वीर लोगोंका युद्धमें प्रवृत्त होना, दूसरेकी ओर दौड़ना, एकका दूसरेको मारना, तथा सिंहनादका महाघोर शब्द नगाड़ा आदि जुझाऊ बाजोंके सङ्ग मिल कर आकाशमण्डलको पूरित करने लगा।

५३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! दोनो ओरकी व्यूहबद्ध सेनाके बीच अतिरथी अर्ज्जुन अपने बाणसे रथ यूथप पुरुषोंको पीड़ित करते हुए रथ सेनाका बध करने लगे। धृतराष्ट्र-दल प्रलयकालकी अग्निके समान अर्ज्जुनके बाणोंसे भस्म-प्राय होकर भी अत्यन्त यत्नके सहित शत्रुओंके सङ्ग युद्ध करने लगा। हे राजन्! वह लोग पवित्र यश पानेके अभिलाषी होकर युद्धमें मरना ही उत्तम समझ कर चित्तको एकाग्र करके सब भांतिसे पाण्डवोंकी सेनाको मारकर हटाने लगे; उससे पाण्डवोंकी सेना भागने लगी; उस समय पाण्डव और कौरव पक्षीय सम्पूर्ण सेना ही इधर उधर भागने और फिर युद्धके निमित्त लौटने लगी; तब कुछ भी नहीं बोध होता था। वीरोंके पांवके धक्केसे ऐसी धूलि उड़ी, कि उससे सूर्य्य छिप गया, किसी प्रकारसे कसी पुरुषको दिशा ज्ञान न रहा; रणभूमिमें इधर उधर संज्ञा, नाम तथा गोत्रके उच्चारण और अनुमानहीसे उस समयमें युद्ध होता था। कौरवोंका व्यूह सत्यपराक्रमी द्रोणाचार्य्यसे रक्षित रहनेके कारण पाण्डव लोग उसे नहीं तोड़ सके; उसी भांति पाण्डवोंका व्यूह अर्ज्जुन और भीमसे रक्षित रहनेसे कौरव लोग भी उसे नहीं तोड़ सके। दोनों सेनासे रथ और हाथीपर चढ़े हुए पुरुष व्यूहके अग्रभागसे दौड़ दौड़ कर युद्ध करने लगे। झुण्डकेझुण्ड पैदलचलनेवाले वीर योद्धा आपसमें क्रुद्ध होकर उत्साहपूर्व्वक भिन्दिपाल और फरशेसे बहुतसे पैदल वीरोंका बध करने लगे। रथी लोग हाथीपर चढ़े हुए वीरोंको सम्मुख पाकर हाथीके सहित उनको तथा गजपति लोग रथियोंको अपने सम्मुख पाके शस्त्रोंसे उन्हें मारने लगे। घुड़-सवार रथियोंको और रथी घुड़सवारोंको प्रास आदि अस्त्रोंसे मारने लगे। दोनो सेनाके पैदल चलनेवाले वीर रथियोंको और रथी लोग पैदल वीरोंको अपने उत्तम पानीमें बुझे हुए बाणों मारने लगे। गजपति योद्धा घुड़सवारोंको और घुड़सवार गजपतियोंको मारकर पृथ्वी गिराने लगे, वह युद्ध अद्भुतरूपसे दीख पड़ा जगह जगह गजपतियोंको पैदल योद्धा और पैदल वीरोंका गजपति लोग शस्त्रोंसे मारकर पृथ्वीमें गिराने लगे। सैकड़ों यथा सहस्रों पैदल योद्धा पदातियोंके शस्त्रोंसे मरते हुए दीख पड़े। महाराज! ध्वज

धनुष, तोमर, प्रास, गदा, परिघ, कम्पन, शक्ति, विचित्र कवच, कणप, अङ्कुश, तलवार, सोनेके पङ्खसे युक्त बाण, परिस्तोम, महामूल्य कम्बल, माला आदि सब गिरी हुई वस्तुओंसे रणभूमि चित्रित होकर प्रकाशित होने लगी। मरे हुए हाथी, घोड़े और मनुष्योंके मांस तथा रुधिर से रणभूमि पूरित होगई। उस समयमें मनुष्योंके रुधिरसे पृथ्वीके पूरित होनेपर धूलिका उड़ना बन्द हो गया; इससे सब दिशाएं निर्म्मल होगई। हे भरतर्षभ! जगत्के नाश होनेके चिन्हस्वरूप रणभूमिमें चारों ओरसे अगणित कबन्ध दौड़ने लगे।

महाराज! उस महाघोर अत्यन्त भयङ्कर युद्धमें रथियोंको मैंने चारो ओर दौड़ते हुए देखा। तिसके अनन्तर भीष्म, द्रोणाचार्य्य, सिन्धुपति जयद्रथ, पुरुमित्र, विकर्ण, सुबलपुत्र शकुनि :—ये सब सिंहके समान पराक्रमी वीर पुरुष युद्धमें आसक्त होकर पाण्डवोंकी सेनाको भगाने लगे। उधर सब राजाओंके सहित भीमसेन, राक्षस घटोत्कच, सात्यकि, चेकितान और द्रौपदीके पांचो पुत्र रणभूमिमें तुम्हारे पुत्रों तथा कौरव पक्षीय वीरोंको इस प्रकारसे तितर बितर करने लगे, जैसे देवता लोग दानवोंको मारके छिन्न भिन्न करके भगा देते हैं। वह सब क्षत्रिय श्रेष्ठ पुरुष युद्धमें एक दूसरेको मारते हुए रुधिरसे पूरित होकर भयानक रूपसे दीख पड़ने लगे। दोनो ओरके मुख्य मुख्य वीर योद्धालोग विपक्ष वीरोंको जीतकर मानो आकाशमण्डलमें स्थित हुए ग्रहों की भांति दिखाई पड़ने लगे। तिसके अनन्तर तुम्हारे पुत्र दुर्योधनने सहस्र रथियोंके सङ्ग मिलकर पाण्डवगण तथा घटोत्कच राक्षस-पर आक्रमण किया। सम्पूर्ण पाण्डवोंने बड़ी सेनाके सहित मिलकर शत्रुनाशन भीष्म और द्रोणाचार्य्यपर आक्रमण किया। अर्जुन भी क्रु-द्ध होकर इधर उधर स्थित सब राजाओंके [illegible] करने लगे। अभिमन्यु और सात्यकिने सुबलराजकी सेनाके सङ्ग युद्ध करनेकी निमित्त यात्रा की। तिसके अनन्तर एक दूसरेको मारनेकी इच्छासे तुम्हारे और पाण्डवोंकी ओरके वीरोंका फिर रोएंको खड़ा करनेवाला महा भयङ्कर संग्राम होने लगा।

५४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! अनन्तर उन सब राजाओंने रणभूमिमें अर्ज्जुनको देखकर क्रोधसे भरकर सहस्रों रथियोंके सहित उन्हें चारों ओरसे घेर लिया। अर्ज्जुनको रथोंसे घेरकर कई सहस्र बाणोंसे उन्हें छिपा लिया। प्रकाशमान तीक्ष्ण शक्ति, गदा, परिघ, प्रास, परशु, मुद्गर और मूषल आदि शस्त्रोंको अर्ज्ज-नके रथपर बर्षाने लगे। अर्ज्जुनने भी सब ओरके शलभ समूहकी भांति उन बाणोंकी वर्षाको देख कनकभूषण नामक बाणोंको चलाकर निवारण किया। उस स्थानमें अर्ज्जुनके अलौकिक हस्तलघुताको देखकर देवता, दानव, गन्धर्व्व, पिशाच, सर्प और राक्षस लोग "धन्य, धन्य" कहके उनकी प्रशंसा करने लगे। सात्यकि और अभिमन्यु, सुबलराज और उनकी पराक्रमसे युक्त सेनाको निवारण करनेमें प्रवृत्त हुए। अनन्तर सौबल शूरवीरोंने सात्यकिके रथको काटकर टुकड़े टुकड़े कर दिया। शत्रुनाशन सात्यकि रणभूमिमें कटे हुए रथको त्यागकर शीघ्रताके सहित अभिमन्युके रथपर जा चढ़े, वह दोनों एक ही रथपर चढ़के शीघ्र-ताके सहित अपने तीखे बाणोंसे सौबल सेनाके वीरोंको मारने लगे। अनन्तर धर्म्मपुत्र राजा युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव सब सेनाके सम्मुख ही द्रोणाचार्य्यकी सेनाको घेर दौड़े, जिस भांतिसे पहिले देवता और असुरोंका [illegible] हुआ था, [illegible]

सब वीरोंका महा भयङ्कर रोएंको खड़ा करनेवाला घोर संग्राम होने लगा।

राजा दुर्य्योधन भीमसेन और घटोत्कचको संग्राममें बहुत बड़े कार्य्यको करते हुए देखकर उन दोनोंके सम्मुख गमन करके उन्हें रोकनेमें प्रवृत्त हुए। महाराज! इस स्थानपर हिड़िम्बापुत्रका मैंने अद्भुत पराक्रम देखा, कि वह अपने पिता भीमसेनसे भी बढ़कर पराक्रम प्रकाशित करने लगा। भीमसेनने भी क्रुद्ध होकर हंसते हुए शत्रुनाशन दुर्य्योधनके हृदयमें एक वाण मारा, तिसके अनन्तर राजा दुर्य्योधन उस कठिन वाणसे मोहित और मूर्च्छित होरक रथपर बैठ रहे; उनको मूर्च्छित देखकर सारथीने रणभूमिसे रथको लौटा लिया, उसको देखकर दुर्य्योधनकी सब सेना भागने लगी। तब भीमसेन कौरवी सेनाको इधर उधर भागती हुई देखकर चोखे वाणोंसे उन सब वीरोंके ऊपर प्रहार करते हुए उनका पीछा करने लगे। रथियोंमें श्रेष्ठ धृष्टद्युम्न और धर्म्मपुत्र राजा युधिष्ठिर भीष्म द्रोणके सम्मुख ही उनकी सेनाको अपने तीक्ष्ण वाणोंसे नाश करने लगे। महाराज! महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य्य दुर्य्योधनकी भागती हुई सेनाको निवारण करनेमें समर्थ नहीं हुए। वह सब सेना महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य्यसे निवारित होनेपर भी उन दोनोंके सम्मुख हो भागने लगी। तिससे अनन्तर सहस्रों रथोंके समूह शीघ्रताके सहित इधर उधरसे दौड़ते हुए वहां पर आपहुंचे। एक ही रथमें बैठे हुए शिनिपौत्र सात्यकि और सुभद्रानन्दन अभिमन्यु सौबली सेनाका संहार करने लगे; उस समय वह दोनों ऐसे शोभित हुए, जैसे अमावस्याके दिन सूर्य्य और चन्द्रमा आकाशमण्डलमें एक ही स्थान पर शोभित हों। अर्ज्जुन क्रुद्ध होकर तुम्हारी सेना पर अपने वाणोंको इस प्रकारसे वर्षाने लगे, जैसे बादल आकाशसे जल वर्षाता है। तब कौरवी सेना अर्ज्जुनके वाणोंसे पीड़ित होकर भयसे कांपती हुई रणभूमिसे भागने लगी। उस सेनाको भागती हुई देख कर दुर्य्योधनके हितैषी महाबली भीष्म और द्रोणाचार्य्य उसके निवारण करनेमें प्रवृत्त हुए। अनन्तर राजा दुर्य्योधनने उस सेनाको धीरज देके फिर युद्धके निमित्त लौटायी। महारथी क्षत्रिय योद्धाओंने जहां जहांसे दुर्य्योधनको देखा, उस ही ओरसे युद्धके निमित्त फिर लौट आये; उन सब वीरोंको लौटता हुआ देखकर सब साधारण वीर लोग इच्छानुसार तथा कितने ही लज्जित होके फिर युद्धके निमित्त लौटे, उस सम्पूर्ण सेनाके फिर युद्धके निमित्त लौटने पर ऐसा वेग हुआ, जैसे पूर्णमासीके दिन चन्द्रमाको देख कर समुद्रकी तरंग अत्यन्त वेगसे उठती है। राजा दुर्य्योधन सेनाको लौटी हुई देखकर शीघ्रताके सहित भीष्मके समीप जाकर यह वचन बोले,—हे पितामह! मैं जो कुछ तुमसे कहता हूं, उसको सुनो। शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ पुत्र और सुहृद पुरुषोंके सहित तुम्हारे तथा कृपाचार्य्यके विद्यमान रहते हो, जो यह सब सेना युद्धसे भागती है, मेरे विचारमें यह आप लोगोंके योग्य कार्य्य नहीं हो रहा है; युद्धमें मैं तुम्हारे तथा द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा वा कृपाचार्य्यके समान पाण्डवोंको कभी नहीं समझता हूं। जब सेनाके वीरोंको मरता देख कर भी आप लोप क्षमा कर रहे हैं; तब निश्चय मुझे यही बोध हो रहा है, कि आप लोग पाण्डवोंके ऊपर कृपा कर रहे हैं। इससे युद्ध आरम्भ होनेके पहिले ही आपको यह कहना उचित था, कि "मैं पाण्डव लोग, सात्यकि वा धृष्टद्युम्नके सङ्ग युद्ध नहीं करूंगा," ऐसा होनेपर मैं तुम्हारे और द्रोणाचार्य्यके इस वचनको सुन कर, उसी समय कर्णके संग विचार करके किसी प्रकारसे अपने कर्त्तव्य कार्य्यका निश्चय

करता जो हो, अब इस उपस्थित युद्धमें यदि मैं तुम्हारे और आचार्य्य महाशयके परित्याग न किये जानेके योग्य होऊं, तो आप दोनों पुरुषसिंह अपने अपने पराक्रमके अनुसार युद्ध कीजिये। दुर्योधनकी बात सुन कर भीष्म हंसकर क्रोधसे नेत्र लाल करके उनसे बोले, हे राजन्! मैंने बहुत बार तुमको हितकारी तथा पथ्य वचन कहा है, कि पाण्डव लोग युद्ध में इन्द्रके सहित देवताओंसे भी न जीतने योग्य हैं। जो हो, अब इस संग्राम भूमिमें मेरी जहां तक शक्ति है, उसी मैं सामर्थ्यके अनुसार प्रकाशित करता हूं, तुम बन्धुबान्धवोंके सहित मेरे पराक्रमको देखो। आज सब पाण्डवोंके सम्मुख ही सेनाके सहित वीर पाण्डवोंको निवारण करूंगा। राजा दुर्योधन भीष्मके ऐसे वचन सुन हर्षके सहित अपना शंख बजाने लगे और भेरी, मृदङ्ग, नगाड़े आदि बाजोंका शब्द होने लगा: उन युद्धके बाजोंका शब्द सुनके पाण्डव लोग भी शंख आदि युद्धके बाजे बजाने लगे।

५५ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय। उस महाभयङ्कर युद्धमें दुर्योधनकी बातसे विशेष क्रुद्ध होकर, भीष्मने प्रतिज्ञा करके पाण्डवोंसे किस प्रकार युद्ध किया? और पाण्डव तथा धृष्टद्युम्न आदि वीरोंने भी भीष्मके संग कैसा संग्राम किया यह सब वृत्तान्त तुम मुझसे वर्णन करो।

सञ्जय बोले, हे महाराज। उस दिन सबेरेसे दोपहर तक कुछ अधिक समय बीतने पर जब महात्मा पाण्डव लोग दुर्योधनकी सेनाको परास्त कर प्रसन्न हुए, तब तुम्हारे पिता देवव्रत भीष्म तुम्हारे सङ्ग चले और इस बड़ी सेनाके [illegible] पाण्डवोंकी [illegible] हे महाराज। [illegible] पाण्डवोंके

सङ्ग उनका महा भयङ्कर तमुल संग्राम होने लगा। यह सब घटना आपके अनीति दोषसे ही हुई। जो हो, तब उस समय पर्व्वतको भी भेद करनेवाली प्रचण्ड ध्वनि, धनुषटङ्कार और शस्त्रोंके घोर खटपट शब्द होने लगे, और "खड़ा रह, यहीं हूं, बस करो, चुप रहो, खड़ाहूं शस्त्र चलाओ" ;—इसी प्रकारके सब और शब्द सुनाई देने लगे। सुवर्णके तनुत्राण किरीट और ध्वजा आदि शस्त्रोंके लगनेसे कटके गिरने लगे। सैकड़ों तथा सहस्रों सिर और भूषणोंसे युक्त वीरोंकी भुजाएं कटकर पृथ्वीमें गिरकर चेष्टासे रहित होने लगीं। कितने ही पुरुष हाथमें शस्त्र वा धनुष लिये ही सिर कट जानेपर खड़े ही रहे। रणभूमिमें मरे हुए मनुष्य, घोड़े और हाथियोंके शरीरके रुधिरसे गिद्ध, और सियारोंके हर्षको बढ़ानेवाली महा घोर तरङ्गसे युक्त रुधिरकी नदी बह चली: हाथियोंके शरीर इस नदीमें पर्व्वतकी शिला, मांस कीचड़ और रुधिर जलरूपी था, वह परलोकरूपी समुद्रकी ओर बहने लगी। महाराज। मैंने तुम्हारे पुत्रोंके संग पाण्डवोंका जैसा संग्राम देखा, वैसा युद्ध पहिले न कभी देखनेमें आया और न मैंने सुना ही था। उस रणभूमिमें मरे हुए योद्धाओंके शरीर इधर उधर पड़े रहनेके कारणसे रथोंके गमन करनेका मार्ग नहीं रहा; मरे हुए हाथियोंके शरीरसे रणभूमि इस प्रकारसे भर गई, मानो नीलगिरिके शिखर सब स्थानोंको घेरकर पड़े हुए हैं। बहुतसे विचित्र कवच और मुकुटसे रणभूमि इस प्रकारसे शोभित हुई जैसे शरद् ऋतुमें आकाश तारोंसे शोभायमान लगता है। कितने ही पुरुष शस्त्रोंकी चोटसे पीड़ित होकर क्रोधपूर्वक दांत पीसते हुए शत्रुओंकी ओर दौड़ने लगे। कितने ही रणभूमिमें शस्त्रोंकी चोटसे गिरकर पिता, भाई, [illegible] और [illegible]

"मुझे छोड़के मत जाओ" ऐसा कहकर रोदन करते हुए दीख पड़े। बहुतेरे योद्धालोग; चले आओ, मेरे निकट आओ, क्या तुम डर गये हो? कहां जाओगे? मैं युद्धहीमें हूं, तुम कुछ भय मत करो; ऐसा कहकर पुकारते तथा चिल्लाते थे। इस प्रकारकी संग्रामभूमिमें शान्तनु पुत्र भीष्म अपने मण्डलाकार धनुषको गृहण करके विषधर सर्पके समान सब प्रकाशमान बाणोंको चला रहे थे। महाराज! महाव्रत करनेवाले भीष्म अपने बाणोंसे सब दिशाओंका एक मार्ग बनाकर पाण्डवोंकी ओरके रथियोंका नाम ले लेकर उनका बध करते थे। हे राजन्! वह अपने हाथकी फुर्त्ती दिखाते हुए रथसमेत चक्रकी भांति सब ओर घूमते हुए दीख पड़ते थे; उनके हाथकी फुर्त्ती और युद्धमें निपुणताके कारण पाण्डव तथा सृञ्जयोंने उन एक ही भीष्मकी सैकड़ों तथा सहस्रों मूर्त्ति देखी; वहांपर उनकी आत्माको उस समय सब पुरुष ऐन्द्रजालिक समझने लगे। उनको पूर्व दिशामें देखते थे और फिर क्षण भरमें पश्चिम ओर देखते थे, फिर घूमकर उत्तर ओर भी भीष्मको देखते और फिर उस ही समय दक्षिण दिशामें लौटकर उन्हें उस ओर भी देखते थे। पाण्डवोंकी सेनामें कोई भी उनको देखनेमें समर्थ न हुआ, केवल उनके धनुषसे छूटे हुए बाणोंको ही सब देखने लगे। वीर-रस-मय उनको सब सेनाका नाश और अत्यन्त कठिन कर्म्म करते हुए देखकर बहुतेरे पुरुष दुःखित होकर आर्त्तनाद करने लगे। सहस्रों क्षत्रिय वीर योद्धा अमानुषरूपसे रणभूमिमें घूमनेवाले क्रोधसे युक्त भीष्मरूपी अग्निमें पतङ्गोंकी भांति भस्म होने लगे। अत्यन्त शीघ्रताके सहित शस्त्रोंको चलानेपर भी उनका एक भी बाण मनुष्य, हाथी वा घोड़ोंके शरीरमें लगकर निष्फल नहीं होता था। धनुषसे छूटे हुए एक ही बाणसे वर्म्मसे युक्त हाथी मरकर इस भांतिसे पृथ्वीमें गिर पड़ते थे, जैसे वज्रसे पर्व्वत टुकड़े टुकड़े होकर गिर जाता है। उत्तम पानीसे बुझे हुए एक ही बाणसे वह वर्म्मसे युक्त एकत्रित हुए दो तीन गजारोही पुरुषोंका संहार करते थे। युद्धमें जो कोई मनुष्य उस पुरुषसिंहके सम्मुख जाता था, वह क्षण ही भरमें मर कर पृथ्वीमें गिर पड़ता था। युधिष्ठिरकी महासेना अत्यन्त पराक्रमी भीष्मके बाणोंसे विकल होके सहस्रों भागमें बंटकर महात्मा कृष्ण और अर्ज्जुनके सम्मुख ही भीष्मके बाणोंसे पीड़ित हो भयसे कांपने लगी। पाण्डवोंके पक्षके वीर लोग महात्मा भीष्मके बाणोंसे पीड़ित होकर रणभूमिसे भागने लगे। सेनापति वीर लोग यत्नवान् होकर भी अपनी सेनाको निवारण न कर सके। महाराज! मुख्य सेना भी इन्द्रके समान पराक्रमी भीष्मके बाणोंसे पीड़ित हो कर भागने लगी। सब वीर रणभूमिसे भागने लगे और भागते समय किसीने किसी पुरुषकी अपेक्षा नहीं की। पाण्डवोंकी सेनामें हाहाकार मच गया। वीर लोग चेतरहित होने लगे और उनके हाथी, घोड़े, रथ, ध्वजा सवारोंसे रहित होके पृथ्वीमें कट कर गिरने लगे। इस युद्धमें मानो दैवकी ओरसे प्रेरित होकर पिता पुत्रका और पुत्र पिताका संहार करने लगा और सखा अपने प्यारे सखाको युद्धके निमित्त आवाहन करने लगा। पाण्डव पक्षीय अनेक योद्धाओंको कवच रहित और नङ्गे सिरसे मैंने भागते हुए देखा। पाण्डवोंकी सेना मानो सिंहके भयसे गैओंके समूहकी भांति भयभीत और विकल होकर आर्त्तनाद करती हुई भागने लगी। यदुकुलभूषण कृष्ण सेनाको भागती हुई देख, रथको रोक कर अर्ज्जुनसे कहने लगे, हे पुरुषसिंह अर्ज्जुन! तुमने जिस समयकी इच्छा की थी, वह समय अब उपस्थित हुआ है; इसी अवसरमें भीष्मके ऊपर प्रहार करो, नहीं तो

मोक्षको प्राप्त होओगे। हे वीर! तुमने पहिले राजाओंके समागमके समय कहा था, कि भीष्म, द्रोणाचार्य्य आदि धृतराष्ट्र सेनामेंसे जो पुरुष मेरे सङ्ग युद्ध करेगा, मैं उसका सेवकोंके सहित युद्धमें नाश करूंगा; इस समय अब अपना वह वचन सत्य करो। वह देखो, तुम्हारी सेना इधर उधर भाग रही है! वह देखो, युधिष्ठिरकी ओरके सब राजा लोग रणभूमिसे भाग रहे हैं। वह लोग भीष्मको शस्त्रधारी यमराजके समान जान कर इस प्रकारसे युद्धभूमिसे भाग रहे हैं जैसे सिंहको देख कर साधारण मृग आदि पशु विकल होके भागते हैं।

अर्ज्जुनने कृष्णकी बात सुनकर उनसे कहा, कि जहां पर भीष्म हैं उसी स्थानमें इस युद्ध-रूपी समुद्रको लाघ कर तुम मेरे रथको ले चलो; मैं युद्ध-दुर्म्मद कौरवोंके पितामह बूढ़े भीष्मको युद्धमें मार कर पृथ्वी पर गिराऊंगा।

महाराज! अनन्तर जहां पर सूर्य्यके समान प्रकाशमान महात्मा भीष्मका रथ था, कृष्णने वहां पर ही सुवर्णभूषित अपने रथके घोड़ोंको चलाया। अनन्तर युधिष्ठिरकी वह महासेना महाबाहु अर्ज्जुनको भीष्मके सङ्ग युद्ध करनेके निमित्त आगे बढ़ता हुआ देखकर फिर संग्रामके निमित्त लौटी। तब पराक्रमी भीष्मने बार बार सिंहनाद करके अपने बाणोंकी वर्षासे अर्ज्जुनके रथको व्याप्त कर दिया; वह रथ क्षण भरमें भीष्मके बहुतसे बाणोंकी वर्षासे ध्वजा और सारथीके सहित ऐसा छिप गया, कि दिखाई भी नहीं पड़ता था। पराक्रमी कृष्ण स्थिर-चित्तसे धीरज धरके भीष्मके बाणोंसे [illegible] हुए घोड़ोंको चलाने लगे। अनन्तर अर्ज्जुनने [illegible] मेघके गर्जनके समान शब्दसे युक्त [illegible] धनुष ग्रहण करके [illegible] बाणोंसे भीष्मके धनुषको काट कर गिरा दिया। धनुष कटने पर भीष्मने [illegible] दूसरे धनुष पर रोदा चढ़ा लिया। तब अर्ज्जुनने क्रुद्ध होकर महाधनुषको हाथोंसे ग्रहण करके भीष्मके धनुषको फिर काट डाला। शान्तनुनन्दन भीष्मने अर्ज्जुनके हाथकी फुर्त्तीकी प्रशंसा की;— हे महाबाहो पाण्डुनन्दन अर्ज्जुन! तुम "धन्य हो। धन्य हो! ऐसा बड़ा कर्म्म करना तुम्हारे ही योग्य है। हे पुत्र! तुम्हारे ऊपर मैं प्रसन्न हुआ; अब तुम मेरे सङ्ग दृढ़ युद्ध करो" उन्होंने इस प्रकारसे अर्ज्जुनकी प्रशंसा करके फिर एक महा धनुष ग्रहण कर अर्ज्जुनके रथके ऊपर बाण चलाये। तब कृष्ण शीघ्रताके सहित मण्डलाकार रथको चलाकर, भीष्मके चलाये हुए सब बाणोंको, बिफलकर घोड़ोंके चलानेकी अत्यन्त निपुणता प्रकाशित करने लगे। परन्तु भीष्मने फिर शीघ्र ही उत्तम पानीमें बुझे हुए बाणोंसे कृष्ण और अर्ज्जुनके सम्पूर्ण शरीरको विद्ध किया; वह दोनों पुरुषसिंह भीष्मके बाणोंसे क्षत विक्षत होकर सींगकी चोटके समान चिन्हित शरीर तथा हाक देनेवाले वृषभकी भांति शोभायमान होने लगे। भीष्मने क्रुद्ध होकर बार बार सैकड़ों तथा सहस्रों बाणोंसे कृष्ण और अर्ज्जुनको चारों ओरसे छिपा दिया, और क्रोधसे भरकर सिंहनादके सहित हंसी करके तथा विस्मय उत्पन्न करके कृष्णको कंपाने लगे। इसके अनन्तर शत्रुनाशन वीर महाबाहु भगवान् कृष्ण युद्धमें भीष्मका पराक्रम और अर्ज्जुनका सरल संग्राम देखकर चिन्ता करने लगे, कि भीष्म जो दोनों सेनाके बीच प्रचण्ड तेजसे युक्त सूर्य्यके समान होकर लगातार अपने बाणोंकी वर्षा कर पाण्डवोंकी सेनाके निमित्त प्रलय कालका समय उपस्थित कर रहे हैं, इस महासेनाके बीचमें मुख्य मुख्य [illegible] पुरुषोंका वध कर रहे हैं, इस प्रकारसे तो युधिष्ठिरकी सेना [illegible] नहीं [illegible] आज एक ही दिनमें [illegible]

दानवोंका नाश कर सकते हैं; तब जो सेनाके सहित युद्धमें अनुयायी राजाओंके समेत पाण्डवोंका नाश कर देंगे; उसमें कौनसा सन्देह है? महात्मा युधिष्ठिरकी सेना भाग रही है। ये सब कौरव लोग सोमकवंशियोंको रणभूमिसे भागता देखकर आनन्दपूर्व्वक भीष्मकी हर्षित करते हुए युद्ध करनेके निमित्त शीघ्रताके सहित आगे बढ़ रहे हैं। इससे आज मैं महात्मा पाण्डवोंके निमित्त रणभूमिमें स्थित होके भीष्मका नाश करूं। मैं इस कार्य्यको करके पाण्डवोंका दुःख दूर करूंगा; क्यों कि अर्ज्जुन युद्धमें तीक्ष्ण बाणोंसे पीड़ित होकर भी पितामहके गौरवसे वाध्य होके अपने कर्त्तव्य कार्य्यको नहीं समझ सकता है। कृष्ण इस प्रकारसे मन ही मन विचार कर रहे थे और उधर भीष्म क्रुद्ध होकर अर्ज्जुनके रथके ऊपर अपने अनेक बाणोंको चला रहे थे। भीष्मके धनुषसे छूटे हुए अनेक बाणोंसे सम्पूर्ण दिशा पूरित होगई। आकाश, दिशा, पृथ्वीका तल भाग और किरणधारी भगवान् सूर्य्य भी भीष्मके बाणोंसे ऐसे छिप गये, कि नेत्रसे दिखाई भी नहीं देते थे। द्रोणाचार्य्य, विकर्ण, जयद्रथ,भूरिश्रवा, कृतवर्म्मा, कृपाचार्य्य, श्रुतायु, राजा अम्बष्ठपति, विन्द, सुदक्षिण, पूर्व्वदेशीय वीर योद्धा, सौवीर देशीय योद्धा, सम्पूर्ण वशाति और मालव देशके वीर लोग भीष्मकी आज्ञाके अनुसार शीघ्रताके सहित अर्ज्जुनके निकट युद्ध करनेके निमित्त उपस्थित हुए। शिनि-पौत्र सात्यकिने अर्ज्जुनको सैकड़ों तथा सहस्रों हाथी, घोड़े पदाति और रथोंके बीच चारों ओरसे घिरा हुआ देखा। वह शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ कृष्ण अर्ज्जुनको रथ, घोड़े, हाथी और पैदलोंके बीचमें घिरा हुआ देखकर उनके निकट गये। जिस प्रकारसे विष्णु वृत्रासुरका नाश करनेवाले इन्द्रकी सहायता करते हैं, वैसे ही सात्यकि कौरवोंकी सेनाके बीचसे गमन करके अर्ज्जुनकी सहायता करनेमें प्रवृत्त हुए। सात्यकि युधिष्ठिरकी सेनाकी हाथी, घोड़े, रथ, और ध्वजाओंके सहित तितर बितर तथा भीष्मके भयसे डर कर भागती हुई देख कर कहने लगे; हे क्षत्रिय वीरो! तुम लोग किधर जारहे हो? प्राचीन ऋषियोंने कहा है, कि रणभूमिसे भागना उत्तम क्षत्रिय पुरुषोंका धर्म्म नहीं है। हे वीर पुरुषो! तुम अपनी अपनी प्रतिज्ञाको क्यों परित्याग करते हो? तुम लोग अपने वीर धर्म्मका पालन करो। सम्पूर्ण दशार्णगणके स्वामी महात्मा यशस्वी कृष्ण अर्ज्जुनको इस भांति सरल युद्ध करते, और चारों ओर पाण्डवोंकी ओरके मुख्य मुख्य क्षत्रियोंको भागते, भीष्मके प्रज्वलित अग्निके समान सबको तपाते और कौरवोंकी सेनाके योद्धाओंको चारों ओरसे बढ़ाते हुए चले आते देखकर क्रुद्ध होके सात्यकिकी प्रशंसा करते हुए कहने लगे। हे सात्यकि! जो लोग जाते हैं, वे जावें और जो लोग युद्धमें उपस्थित हैं, वे भी चले जावें, उन लोगोंके रहनेकी कुछ भी आवश्यकता नहीं है। देखो, आज मैं भीष्म और द्रोणाचार्य्यको उनके अनुयायियोंके सहित मारकर गिराता हूं। आज कौरवोंकी सेनामें कोई भी पुरुष मेरे क्रोधके सम्मुख रणभूमिमें नहीं वच सकेगा; अब मैं भयङ्कर चक्र ग्रहण करके भीष्मका प्राण-संहार करूंगा। महारथ भीष्म और द्रोणाचार्य्यको उनके रक्षक तथा अनुयायियोंके सहित मार कर राजा युधिष्ठिर, अर्ज्जुन, भीमसेन, नकुल और सहदेवकी प्रीतिका कार्य्य सम्पन्न करूंगा। सब धृतराष्ट्र पुत्रोंको तथा और जितने मुख्य राजा लोग उनके पक्षमें है, उन सब लोगोंका भी मैं आज संहार करके अजातशत्रु राजा युधिष्ठिरको हर्षके सहित सब राजाओंका स्वामी बनाऊँगा।

वसुदेव पुत्र महात्मा कृष्ण ऐसा कह,

घोड़ोंकी लगाम छोड़कर सहस्र वज्रके समान छुरधारसे युक्त सूर्य्यकी भांति प्रकाशमान चक्रको हाथमें घुमाते और रथसे कूद कर अपने पांवोंसे पृथ्वीको कंपाते हुए भीष्मकी ओर जाने लगे। जैसे अत्यन्त अहंकारी मतवारे गजराजको मारनेकी अभिलाषासे सिंह दौड़ता है, वैसे ही शत्रुनाशन कृष्ण भीष्मके वध करनेकी इच्छासे उनकी सेनाके बीचसे दौड़कर जाने लगे। जैसे आकाशमण्डलमें बिजलीके तेजसे युक्त बादल शोभायमान लगता है, वैसे ही वह पीले वर्णके वस्त्रोंके उड़नेसे शोभित होने लगे। जिस प्रकारसे तरुण सूर्य्यके समान वर्णवाला प्रथम पद्मपुष्प विष्णुकी नाभीसे उत्पन्न होकर प्रकाशित हुआ था, उसी भांतिसे कृष्णका सुदर्शन-चक्ररूपी पद्म उनके मनोहर और विशाल भुज-मृणाल पर शोभित होने लगा। वह चक्र-पद्म कृष्णके क्रोध रूपी सूर्य्यके उदयसे प्रफुल्लित हुआ तथा उसके छुरान्तसदृश अग्रभाग पद्मदलके रूपसे प्रकाशित और कृष्णका विशाल शरीर मानो उस भुज मृणाल सहित सरोवर रूपसे विराजित होने लगा। कृष्णको क्रुद्ध, चक्रधारी और ऊंचे स्वरसे सिंहनाद करता हुआ देख कर सम्पूर्ण प्राणी, "यही अब कौरवोंके कुलका नाश हुआ" ऐसा समझ कर अत्यन्त ही विस्मित होके हाहाकार करने लगे। जैसे धूमकेतु स्थावर जङ्गम जीवोंको भस्म करनेके निमित्त प्रकट होता है, वैसे ही सब लोकोंके स्वामी परमेश्वर महात्मा कृष्ण सब प्राणी तथा लोकोंको जलानेवाली प्रलयकालकी अग्निके समान प्रज्वलित होके भीष्मके सम्मुख गमन करके प्रकाशित होने लगे।

धनुर्धारियोंमें श्रेष्ठ शान्तनुनन्दन भीष्म [illegible] हाथमें चक्र [illegible] लिये [illegible] देखकर निर्भय-चित्तसे [illegible] हे [illegible] तुम्हें नमस्कार है

हे शार्ङ्गधर! हे गदाधर। हे खड्ग धारण करनेवाले! हे लोकोंके स्वामी! हे प्राणियोंको शरण देनेवाले! तुम युद्धमें रथसे वलपूर्व्वक मुझे मार कर पृथ्वीमें गिराओ। हे कृष्ण! आज यदि तुम मेरा वध करोगे, तो मेरी इस लोक और परलोकमें कीर्त्ति होगी। हे अन्धक और वृष्णिवंशियोंके स्वामी। मैं तुम्हारे हाथसे मरनेसे ही मङ्गलसे युक्त होऊंगा; मेरा प्रभाव तीनों लोकमें विख्यात होगा। भीष्म ऐसा ही कह रहे थे और कृष्ण भी वेगके सहित उनकी ओर चले जाते थे,—यह देखकर विशालबाहु अर्ज्जुन शीघ्रताके सहित रथसे उतर कर यदु-वंशियोंमें श्रेष्ठ कृष्णके पीछे अत्यन्त शीघ्रतासे दौड़कर उनकी दोनों विशाल तथा उत्तम भुजाओंको पकड़ लिया। परन्तु आदिदेव योगी कृष्ण अत्यन्त ही क्रुद्ध थे, इस ही कारणसे वह अर्ज्जुनसे पकड़े जाने तथा निवारण किये जाने पर भी, जैसे प्रवल वायु एक वृक्षको आकर्षण करके उड़ा ले जाता है, वैसे ही वेगके सहित अर्ज्जुनको आकर्षित करके भीष्मकी ओर शीघ्रताके सहित नौ पग गये; दशवें पदमें महात्मा अर्ज्जुनने उनके दोनो चरणोंको वलपूर्व्वक ग्रहण किया और धीरे धीरे वलसे किसी भांति उन्हें रोक रक्खा। कृष्णके खड़े होने पर अर्ज्जुन प्रसन्न होकर उनसे विनय-पूर्व्वक कहने लगे। हे केशव! तुम पाण्डवोंकी गति हो, इससे क्रोध त्याग करो। हे पद्मपलाश-लोचन कृष्ण। मैं पुत्र और भाइयोंकी शपथ करके कहता हूं, कि प्रतिज्ञाके अनुयायी कर्म्मको कभी परित्याग न करूंगा। तुम्हारी आज्ञाके अनुसार मैं कौरवोंके नाशके निमित्त अवश्य यत्न करूंगा।

इसके अनन्तर जनार्दन कृष्ण अर्ज्जुनकी प्रतिज्ञा और वचनको सुन कर हाथमें चक्र लिये हुए [illegible] और [illegible] सहित [illegible] हुए और फिर [illegible]

ग्रहण करके पाञ्चजन्य शङ्खको बजा कर उसके शब्दसे सब दिशा और आकाशमण्डलको पूरित कर दिया। कौरवोंके पक्षके सब वीर लोग चञ्चल निष्क अंगद और कुण्डल भूषित, धूलिसे पूरित शरीर, कमल-नयन और शुद्ध दांतोंसे शोभायमान कृष्णको फिर युद्धके निमित्त शङ्ख-धारी देख कर ऊंचे स्वरसे सिंहनाद करने लगे; उन लोगोंकी सेनामें भी शङ्ख, भेरी, मृदंग, नरसिंहे और नगाड़े बजने लगे, उन सम्पूर्ण बाजोंका शब्द कौरवोंके वीरोंके सिंह-नादके संग मिल कर महाघोर तुमुल शब्द होगया। इसके अनन्तर अर्ज्जुनके गाण्डीव-धनुषका शब्द बादलके गर्ज्जनके समान सब दिशा तथा आकाशमण्डलमें व्याप्त होगया और उनके धनुषसे छूटे हुए तेज बाण सब दिशाओंमें गमन करते हुए दिखाई देने लगे। कौरवराज दुर्य्योधन हाथसे धनुष बाण ग्रहण कर भीष्म, भूरिश्रवा और सेनाके सहित अर्ज्जुनके सम्मुख आये। अनन्तर अर्ज्जुनके ऊपर भूरिश्रवा सुवर्ण पङ्खयुक्त सात बाण, दुर्य्योधनने प्रचण्ड तोमर, शल्यने गदा और भीष्मने शक्ति चलाई। महा-धनुर्द्धारी महात्मा वीर अर्ज्जुन भूरिश्रवाके चलाए हुए सात भल्ल सात बाणोंसे और दुर्य्यो-धनकी भुजासे छूटे हुए तोमरको एक चोखे क्षुरास्त्रसे काट डाला, भीष्मकी चलाई हुई वेगवान् बिजलीके समान प्रकाशित शक्तिको एक बाण और शल्यकी गदाको एक बाणसे काट कर पृथ्वीमें गिरा दी। इसके अनन्तर महाबलवान् अर्ज्जुनने विचित्र गाण्डीव धनुषको ग्रहण कर अत्यन्त भयङ्कर माहेन्द्र शस्त्रको विधिपूर्व्वक आकाशमें प्रकट किया। उस प्रबल अस्त्रको उत्पन्न करके झुण्डके झुण्ड अग्निवर्णवाले सुन्दर बाणोंके जालसे कौरवोंकी सम्पूर्ण सेनाको निवारण करने लगे। उनके धनुषसे छूटे हुए सब बाण शत्रु-ओंके रथ, ध्वजा, धनुष, वीरोंकी भुजाओंको काटते हुए राजाओं, गजों तथा घोड़ोंके शरीरमें प्रवेश करने लगे। अर्ज्जुनके उत्तम पानीमें बुझे हुए चोखे बाणोंसे सब दिशा-ओंको पूरित देख और गाण्डीव धनुषके शब्दको सुनकर शत्रुओंका अन्तःकरण पीड़ित होने लगा। उस महा घोर शस्त्रोंके युद्धमें गाण्डीव धनुषके शब्दसे शंख, नगाड़े और रथोंका शब्द दब गया। उस गाण्डीव धनुषका शब्द सुनकर विराट आदि पुरुषसिंह और पाञ्चाल-राज द्रुपद निर्भयचित्तसे वहांपर युद्धके निमित्त आपहुंचे। तुम्हारे पक्षके वीरोंने जहांपर गाण्डीव धनुषके शब्दको सुना, वहां पर ही शिथिल होगये, उसके विरुद्ध होकर कोई भी युद्धके निमित्त आगे न बढ़े। उस राजाओंके नाश करनेवाले महा-घोर युद्धमें रथ, घोड़े, सारथीके सहित वीर पुरुष और उत्तम सुवर्णके हौदे और पताकाओंसे युक्त हाथी अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित होके तथा मरकर पृथ्वीमें गिरने लगे। सेनामें सब राजाओंकी ध्वजा अर्ज्जुनके महा वेगवान् तीक्ष्ण बाणोंसे कटकर गिरने लगी। हे राजन्! उस भयङ्कर युद्धमें अर्ज्जुनके प्रबल ऐन्द्रास्त्रके प्रभावसे पैदल, रथ, घोड़े और हाथीवाले सब वीर-कवचके सहित बाणोंसे कट कटके शीघ्र शीघ्र हाथमें शस्त्र लिये हुए ही मरकर पृथ्वीमें गिरने लगे। इसके अनन्तर उस रणभूमिमें महा घोर रुधिरकी नदी उत्पन्न होकर भयङ्कर रूपसे वेगके सहित बहने लगी। अर्ज्जुनके बाणोंसे कटे हुए पुरुषोंके शरीरका रुधिर ही उस नदीका जल, मनुष्योंका मेद फेन, मरे हुए हाथी घोड़ोंका शरीर और गिरे हुए अस्त्र उसके तीर, मज्जा और मांस उस नदीका पङ्क, मनुष्योंके केशयुक्त शिर उसके भंवर, नाना भांतिके विचित्र कवच उसकी तरङ्ग, मनुष्य हाथी, घोड़ोंकी हड्डियें उसके बालू तथा

पत्थरके किनके हुए और वह भयङ्कर नदी अनेक राक्षस तथा भूत प्रेतोंसे सेवित तथा रक्षित होकर बहने लगी। सियार, भेड़िये, गिद्ध, बगुला आदि मांस भक्षण करनेवाले जीव उसके किनारे भ्रमण करने लगे। सब पुरुष अर्ज्जुनके बाणोंके प्रभावसे उत्पन्न हुई उस रुधिर, मास और चर्व्वीसे युक्त बहनेवाली महा भयङ्करी नदीको वैतरणीकी भांति देखने लगे। महाराज! चेदी, पाञ्चाल, करूष, मत्स्य और पाण्डव आदि सम्पूर्ण वीर लोग कौरवोंकी सेनाके वीरोंको मरता हुआ देखकर सहसा सिंहनाद करने लगे। वे सब वीर पुरुष अर्ज्जुनके शत्रुओंकी ओरके सब वीरोंको जयकी आशासे युक्त देखकर शत्रु सेनाको भयभीत करनेके निमित्त पाण्डवोंके जय सूचक शब्द करने लगे। गाण्डीवधनुषको धारण करनेवाले अर्ज्जुन और कृष्ण भी हर्षके सहित सिंह जैसे मृगोंके समूहको भयभीत करता है, वैसे ही कौरवोंके सेनापतियोंकी सेनाको भयसे विकल करते हुए सिंहनाद करने लगे। इसके अनन्तर अत्यन्त ही क्षत विक्षत शरीरसे भीष्म द्रोणाचार्य्य, दुर्य्योधन और वाह्लिक आदि कौरव पक्षीय वीरोंने सूर्य्यको अस्त होता तथा घोर अर्ज्जुनके कालदण्डके समान ऐन्द्रास्त्रको न सहने योग्य देखकर अपनी सेनाको युद्धसे निवृत्त किया। अर्ज्जुन भी युद्धमें शत्रुओंको मर्दन करके यश युक्त होके सूर्य्यको अस्त होता देखकर सब राजाओं तथा सहोदर भाइयोंके सहित सन्ध्याके समय अपने शिविरमें गये। इसके अनन्तर उस रात्रिके समय कौरवोंकी सेनामें महाघोर तुमुल शब्द होने लगा, कि आज अर्ज्जुनने दस हजार रथियोंको मारकर सात सौ हाथियोंका संहार किया है और प्राच्य, सौवीर, क्षुद्र और मालवदेशके [illegible] किया, अर्ज्जुनने जो आज [illegible] है, ऐसा [illegible] दूसरे किसीको भी करनेका सामर्थ्य नहीं है। हे महाराज! अम्बष्ठपति श्रुतायु, दुर्म्मर्षण, चित्रसेन, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, जयद्रथ, वाह्लिक, भूरिश्रवा, शल्य और दूसरे सैकड़ों वीर योद्धा भीष्मके सहित युद्धमें इकट्ठे होने पर भी पाण्डवोंके एक महारथी अर्ज्जुन होने उन सबको अपने बाहुबलसे पराजित किया है। ऐसे ही वचन कहते हुए तुम्हारी सेनाके सब योद्धा लोग अपने अपने शिविरोंमें गये। कुरुसेनाके सम्पूर्ण वीर लोग अर्ज्जुनके भयसे विकल होके हजारों लुक तथा दीपक जला कर अपने शिविरोंमें प्रवेश किया।

५६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे भारत! महात्मा भीष्म क्रोधसे युक्त थे, उन्होंने रात्रिके बीतने पर सवेरे ही सब सेनाके सहित शत्रुओंके विरुद्ध युद्धके निमित्त यात्रा की। द्रोणाचार्य्य, दुर्य्योधन, वाह्लिक, दुर्म्मर्षण, चित्रसेन, महाबलवान् जयद्रथ और दूसरे सब राजाओंने युद्ध करनेके निमित्त भीष्मके सङ्ग गमन किया। जैसे देवतोंके राजा इन्द्र देवताओंके बीच शोभायमान होते हैं; वैसे ही महात्मा भीष्म भी पराक्रमी तेजस्वी बड़े बड़े तथा प्रधान राजाओंके बीच विराजमान हुए। उस महासेनाके बीच हाथियोंके कन्धे पर लगी हुई,—लाल, पीली, काली और पाण्डुरवर्णकी पताका फहराने लगी। वह सब सेना महारथ भीष्म और हाथी घोड़ोंसे युक्त होकर वर्षाकालकी बिजलीके सहित बादलोंकी भांति शोभित होने लगी। इसके अनन्तर शान्तनुनन्दन भीष्मसे रक्षित वह कौरवोंकी सेना शीघ्र ही अर्ज्जुनसे [illegible] करनेके निमित्त भयङ्कर नदीके वेगके समान गमन करने लगी। उस सेनाके वीरोंने [illegible] महाघोर महात्मा अर्ज्जुनके [illegible] रथ, और

पदातियोंसे युक्त पचके सहित उस व्यालव्यूह-को दूरहीसे अवलोकन किया। अर्जुनने अपनी सेनाके सहित सफेद घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़के सेनाके आगे होकर शत्रुओंकी ओर गमन किया। तुम्हारे पुत्रोंके सहित सब कौरव लोग अर्जुनके विचित्र ध्वजासे युक्त उत्तम रथ और उनके सारथी कृष्णको देखकर उत्साह-रहित होगये। पाण्डवोंका जो व्यूह बनाया गया, उसके दोनों कर्ण स्थलमें चार चार हजार हाथी थे। ऐसे व्यालव्यूहकी लोकमें विख्यात अर्जुन शस्त्र धारण करके रक्षा करते थे; तुम्हारी ओरके सब वीर उस व्यूहकी देखने लगे। धर्म्मराज युधिष्ठिरने पहिले दिन जैसा व्यूह तैयार किया था उस भांतिका व्यूह पहिले पृथ्वीमें देखा वा सुना नहीं गया था, यह व्यूह भी उसी भांति पहिले कभी मनुष्योंके देखने तथा सुननेमें नहीं आया था। इससे अनन्तर रणभूमिमें सम्पूर्ण सेनाके बीच शङ्ख, भेरी आदि बाजोंके सङ्ग वीरोंके सिंहनादका शब्द होने लगा। अनन्तर क्षण ही भरके बाद वीरोंके धनुष चढ़ानेके शब्द तथा शङ्खकी ध्वनिसे भेरी आदि बाजोंका शब्द छिप गया, उस समय शङ्खके शब्दसे युक्त आकाश वीरोंके पांवकी धूलिसे पूरित होगया; तब वीर लोग चिन्ह और अनुमानसे आगे बढ़ने लगे। अनन्तर सारथी, घोड़े, रथ और ध्वजाके सहित रथी रथियोंसे, हाथी हाथीसे और पैदल चलने-वाले वीर पैदल योद्धाओंसे लड़ कर पृथ्वीमें गिरने लगे। युद्ध करनेवाले उत्तम उत्तम सवार लोग अच्छे घुड़सवारोंके प्रास और तरवालकी चोटसे अद्भुतरूपसे भयङ्कर मूर्त्ति होकर पृथ्वीमें गिरने लगे। सुवर्णयुक्त अनेक तारोंसे भूषित सूर्य्यके समान प्रकाशित ढाल, परशु, प्रास और तलवारोंकी चोटसे कट कर पृथ्वीमें गिरने लगे। बहुतसे रथी सारथीके सहित हाथियोंके दांत और सूड़ोंसे पीड़ित हुए तथा बड़े बड़े हाथी भी रथियोंमें श्रेष्ठ पुरुषोंके बाणोंसे मर कर पृथ्वीमें गिर गये। कितने ही घुड़सवार और पैदल वीर हाथियोंके समूहके बीचमें पड़ कर उनके पांव और सूंड़से पीड़ित होके अनेक स्थानोंमें आर्त्तनाद करने लगे। मनुष्य लोग उसे सुन कर शङ्कित होगये, इसी प्रकारसे जब सवार और पैदल चलनेवाले वीरोंका अत्यन्त ही नाश हो रहा था और हाथी, घोड़े तथा रथी भयसे आतुर होरहे थे; उस ही समयमें महारथ वीरोंके हितमें श्रेष्ठ महात्मा भीष्मने कपिराजकेतुवाले अर्जुनको देखा। विशाल तालवृक्षके समान ऊंची ताल ध्वजासे युक्त शान्तनुपुत्र भीष्मने देखा, कि अर्जुनका रथ उत्तम घोड़ोंके वेगसे अद्भुत पराक्रमसे युक्त हुआ है और उसके महा अस्त्रोंका वेग वज्रके समान प्रकाशित होरहा है, यह देखकर भीष्म अर्जुनके सम्मुख हुए। उस इन्द्रपुत्र अर्जुनके सम्मुख कृपाचार्य्य, शल्य, विविंशति, दुर्य्योधन और सोमदत्तके पुत्रने द्रोणाचार्य्यको आगे करके गमन किया। इसके अनन्तर सुवर्णमय विचित्र वर्म्मको धारण करनेवाले, पराक्रमी सब शस्त्रोंके जाननेवाले, अर्जुनके पुत्र अभि-मन्युका रथ सेनासे निकलकर वेगके सहित उन सब लोगोंसे युद्ध करनेके निमित्त उप-स्थित हुआ कठिन कर्म्म करनेवाला अभिमन्यु कृपाचार्य्य आदि उन महाबली वीरोंके महा अस्त्रोंको विशेषरूपसे निवारण करके, महा-मन्त्रसे उत्पन्न हुई शिखासे युक्त वेदीकी अग्निके समान प्रकाशित होने लगा। अनन्तर महा पराक्रमी भीष्मने शत्रुओंकी सेनाके वीरोंको मार उनके रुधिरसे नदी बहा कर शीघ्रता पूर्व्वक अभिमन्युकी अतिक्रमकर महा-रथ अर्जुनके समीप जाकर उनके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। अनन्तर कठिन कर्म्म करनेवाले महात्मा अर्जुनने हंसते हुए अद्भुत रूपवाले गाण्डीव धनुषके महा घोर

टङ्कारके सहित अपने बाणोंको चलाकर भीष्मके चलाये हुए महा अस्त्रोंका संहार किया और फिर उनके ऊपर उत्तम बाणोंकी वर्षा करने लगे। तुम्हारी सेनाके सब लोगोंने अर्जुनको महाअस्त्रोंको आकाशमें भीष्मके महा शस्त्रोंसे इस भांतिसे कटते हुए देखा, कि जैसे सूर्य्यका उदय होनेसे अन्धकारका नाश होजाता है। कौरव, सृञ्जय और दूसरे सब लोग धनुर्धरोंमें श्रेष्ठ भीष्म और अर्जुनका इसी प्रकारसे प्रबल शस्त्रों तथा भयङ्कर सिंहनादके सहित द्वैरथ युद्ध देखने लगे।

५७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले; हे महाराज। अश्वत्थामा, भूरिश्रवा, शल्य, चित्रसेन और सांयमनिके पुत्र अभिमन्युके सङ्ग युद्ध करने लगे। सब पुरुष उस एक तेजस्वी बालकको उन पांच पुरुषसिंहोंके बीच मानो एक सिंहपुत्रके समान देखने लगे। लक्ष्य-वेध, धीरता, पराक्रम और अस्त्र चलानेकी फुर्त्ती आदि किसी युद्ध कर्ममें कोई अर्जुन-पुत्र अभि-मन्युके समान न हुआ। अर्जुन शत्रुनाशन निज-पुत्र अभिमन्युको अत्यन्त पराक्रम प्रकाशित करते हुए देखकर सिंहनाद करने लगे। तुम्हारी ओरके वीरोंने अभिमन्युको सेनाका नाश करता हुआ देखकर उसे चारों ओरसे घेर लिया। [illegible] सेनाका भी नाश करने-वाला अभिमन्यु निर्भय चित्तसे उन लोगोंसे युद्ध करने लगा। शत्रुओंके सङ्ग युद्ध करनेके [illegible] समान प्रकाशित [illegible] और हाथकी फुर्तीके कारण किसी [illegible] पड़ता था। उसने अश्व-त्थामाको एक और शल्यको पांच बाणोंसे [illegible]

शक्ति चलाई, अभिमन्युने एक शाणित बाणसे उसे काटकर गिरा दिया। शल्यने सैकड़ों महाघोर बाण अभिमन्युके ऊपर चलाये, अभिमन्युने अपने बाणोंसे शल्यके बाणोंको निवारणकरके उनके चारों घोड़ोंको मार डाला। भूरिश्रवा, शल्य, अश्वत्थामा, सांय-मनि-पुत्र और शल्य,—ये सब लोग भयभीत होकर अभिमन्युके बाहुबलको सहनेमें असमर्थ होगये।

हे राजेन्द्र। तब धनुर्विद्याके जाननेवाले शत्रुओंसे युद्धमें अजेय सब अस्त्रोंके जाननेवाले त्रिगर्त्त, मद्र और केकयदेशीय पचीस हजार योद्धाओंने दुर्य्योधनकी आज्ञासे शत्रुओंको मारनेकी इच्छासे पुत्रके सहित अर्जुनको चारों ओरसे घेर लिया। हे राजन्! शत्रुनाशन पाण्डवोंके सेनापति धृष्टद्युम्नने महारथ अर्जुन और अभिमन्युको शत्रुसेनासे घिरे हुए देखकर कई हजार हाथी, रथोंके समूह, सौ सौ हजार पैदल वीर और घुड़सवारोंकी सेना लेकर धनुष खींचते हुए उन मद्र-देशीय तथा केकय देशीय वीरोंसे युद्ध करनेके निमित्त यात्रा की। रथ, हाथी और घोड़ोंसे युक्त वह सेना कीर्त्ति-मान् दृढ़धनुषधारी धृष्टद्युम्नसे रक्षित और युद्धके निमित्त गमन करती हुई अत्यन्त शोभायमान होने लगी। कृपाचार्य्यको अर्जुनके समीप गमन करता हुआ देखकर धृष्टद्युम्नने तीन बाण उनकी पसलीमें मारे। तिसके अनन्तर धृष्टद्युम्नने मद्रक वीरोंको दश बाणोंसे छिन्न करके शीघ्रताके सहित कृत-वर्म्माके पृष्ठरक्षकको एक भल्लसे मार डाला। अनन्तर महात्मा पौरवके दायाद दमनको [illegible] बाणोंसे मारा। अनन्तर सांयमनि-पुत्रने युद्धदुर्मद धृष्टद्युम्नको दश बाणोंसे छिन्न करके उनके सारथीको भी दश बाणोंसे छिन्न किया। [illegible]

तीक्ष्ण भल्लसे उनका धनुष काट डाला और शीघ्रताके सहित उनके ऊपर पच्चीस बाण चलाये, अनन्तर धृष्टद्युम्नने उसके घोड़े, पृष्ठरक्षक और सारथीको मार डाला। हे भारत। संयमनिपुत्र घोड़ोंसे रहित रथ पर ही स्थित होके यशस्वी द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्नकी ओर देखके शीघ्र ही महा भयानक लोहमयी तलवार ग्रहण करके पैदल ही उनकी ओर दौड़े। पाण्डवगण और धृष्टद्युम्न उनको मतवारे हाथीके समान पराक्रमशील, सूर्य्यकी भांति प्रकाशित, काल-प्रेरित यमराज और आकाशसे उड़ते हुए महासर्पके समान और खड्ग घुमाते तथा महावेगके सहित आते हुए देखने लगे। उत्तम पानीमें बुझाई हुई शाणित तलवार और हाथमें ढाल लिये दौड़ते हुए शत्रुओंके बाणोंका वेग अतिक्रम करके रथके समीप पहुंचते ही सेनापति धृष्टद्युम्नने क्रुद्ध होकर गदासे उसके शिरको टुकड़े टुकड़े कर दिया। हे राजन्! उनके मरते ही वह प्रकाशित ढाल और तलवार उनके हाथसे छूट कर पृथ्वीमें गिरी और उनका शरीर भी पृथ्वी पर गिर पड़ा। महापराक्रमी पाञ्चालराज-पुत्र महात्मा धृष्टद्युम्न ने गदासे उसका बध करके परम यश पाया। उस महाधनुर्द्धर महारथ राजपुत्रके मारे जाने पर तुम्हारी सेनामें महा हाहाकार शब्द हुआ। अनन्तर संयमनि अपने पुत्रको मरा हुआ देखकर क्रोधपूर्व्वक धृष्टद्युम्नकी ओर वेगसे दौड़े और कौरव तथा पाण्डवोंके सम्मुख ही वे दोनो वीर आपसमें युद्ध करने लगे। पहिले संयमनिने क्रुद्ध होकर महागजराजको अंकुशसे पीडित करनेके समान धृष्टद्युम्नको तीन बाण मारे और महारथ शल्यने भी क्रुद्ध होकर वीर धृष्टद्युम्नकी छातीमें बाणोंका प्रहार किया, फिर उन लोगोंका महाघोर तुमुल युद्ध होने लगा।

५८ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय। पुरुषार्थसे दैवहीको मैं श्रेष्ठ समझता हूं; क्योंकि पाण्डवोंकी सेना हो धीरे धीरे मेरे पुत्रोंकी सेनाका बध कर रही है। हे तात। तुम नित्य ही मेरे पक्षका नाश और पाण्डवोंके पक्षको बहुत प्रबल तथा प्रसन्न वर्णन करते हो। तुम इस समय मेरी ओरकी सेनाहीको पराक्रमसे रहित, गिरती, भगती और मरती हुई कहके वर्णन करते हो। वह जयकी इच्छासे युद्ध करती है, तो भी पाण्डव लोग उसे पराजित ही करते हैं; और मेरी सेना पराक्रम हीन होती है। हे सूत! इससे दुर्य्योधनके कारण मुझे नित्य ही न सहने योग्य अनेक प्रकारसे दुःखके विषय सुनने पड़ते हैं। हे सञ्जय। किस उपायसे पाण्डव लोग पराक्रमहीन और मेरे पक्षवाले वीर जययुक्त हो सकते हैं; सो मैं कुछ भी नहीं देखता हूं।

सञ्जय बोले, हे राजन्। बड़ी भारी आपदा तुम्हारी ओरसे ही उत्पन्न हो रही है। जो हो अब इस समय तुम हाथी, घोड़े, रथ और मनुष्योंके नाशका वृत्तान्त सुनो। धृष्टद्युम्नने मद्रराज शल्यके बाणोंसे पीड़ित होकर क्रोधपूर्व्वक नौ बाणोंसे उन्हें बिद्ध किया; उस समय धृष्टद्युम्नका अद्भुत पराक्रम दिखाई देने लगा, वह शीघ्रताके सहित शल्यको निवारण करने लगे। वे दोनों इस भांतिसे युद्ध करने लगे, कि किसीने उन्हें क्षणभर युद्धसे ठहरते न देखा। हे महाराज। शल्यने उत्तम पानीसे बुझे हुए एक बाणसे धृष्टद्युम्नका धनुष काट दिया, फिर वर्षाकालके मेघके समान अपने बाणोंकी वर्षा कर उन्हें छिपा दिया, धृष्टद्युम्न शल्यके बाणोंसे पीड़ित हुए, तब पराक्रमी अभिमन्युने शल्यके रथके समीप शीघ्रतासे गमन किया। अनन्तर अभिमन्युने शल्यके निकट जाकर तीन बाणोंसे उन्हें बिद्ध किया, उसे देखकर तुम्हारी ओरके योद्धालोग चारो ओरसे शल्यके रथको

कर कर अभिमन्युसे युद्ध करने लगे। दुर्य्योधन, महारथ विकर्ण, दुःशासन, विविंशति, दुर्म्मर्षण, दुःसह, चित्रसेन, दुर्म्मुख, सत्यव्रत और पुरुमित्र, ये दश पुरुष मद्रराज शल्यके रथकी रक्षा करनेमें प्रवृत्त हुए। हे महाराज! भीमसेन, धृष्टद्युम्न, द्रौपदीके पांचों पुत्र, अभिमन्यु, नकुल और सहदेव,—ये दश पुरुष अनेक प्रकारके अस्त्रोंको चलाकर तुम्हारी ओरके उन दशों वीरोंको निवारण करने लगे। हे राजन्! तुम्हारी कुनीतिसे ही ये सब वीर युद्धमें इकट्ठे होकर एक दूसरेके मारनेकी इच्छासे संग्राम करने लगे। तुम्हारे और पाण्डवोंकी ओरके रथी लोग उन आपसमें एक दूसरेके वध करनेकी इच्छासे युद्ध करते हुए दश महारथियोंके युद्धको देखने लगे। वह सिंहनाद करके अनेक प्रकारके शस्त्रोंको चलाते हुए आपसमे युद्ध करने लगे। वे सब क्रोधित होकर ईर्ष्यापूर्व्वक एक दूसरेका वध करनेकी इच्छासे महा अस्त्र चलाने लगे। दुर्य्योधनने क्रोधपूर्व्वक चार बाण, दुर्म्मर्षणने बीस, चित्रसेन सात, दुर्म्मुख दश, दुःसह सात, विविंशति पांच और दुःशासनने तीन बाणोंसे धृष्टद्युम्नको प्रहार किया। हे राजेन्द्र! शत्रुनाशन पृषत-कुमार धृष्टद्युम्नने हाथकी फुर्तीके सहित उनमेंसे हर एक वीरको पचीस पचीस बाणोंसे प्रहार किया। अभिमन्युने सत्यव्रत और पुरुमित्रको दश दश बाणोंसे बिद्ध किया। माताके आनन्दको बढ़ानेवाले नकुल और सहदेवने अपने मामा शल्यको [illegible] बाणोंसे ढांप दिया, वह संग्राम अद्भुत सा दीख पड़ा। अनन्तर रथियोंमें श्रेष्ठ शल्यने अपने दोनों भान्जोंके ऊपर [illegible] बाणोंसे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

लिये हुए महाबाहु भीमको शिखरसे युक्त कैलास पर्व्वतके समान देखकर तुम्हारे दूसरे सब पुत्र वहांसे भाग गये; परन्तु दुर्य्योधन क्रुद्ध होके मगधदेशीय दश हजार हाथियोंकी सेनाके सहित मगधराजको आगे करके भीमसेनके सम्मुख हुए। हाथमें गदा लिये हुए भीमसेन हाथियोंकी सेना आती हुई देखकर सिंहनाद करते हुए रथसे उतरे। वह कालके समान होकर अत्यन्त कठोर लोहमयी भारी गदा लेकर दौड़े। जैसे वृत्रासुरके नाश करनेवाले इन्द्र दानवोंकी सेनामें भ्रमण करते हैं, वैसे ही महाबाहु भीमसेन गदासे हाथियोंको मारते हुए रणभूमिमें चारों ओर घूमने लगे। चित्त तथा हृदयको कंपानेवाले भीमसेनका तर्ज्जन गर्ज्जन सुनकर सब हाथी एक स्थानपर एकत्रित होकर अत्यन्त चेष्टा करने लगे। इसके अनन्तर द्रौपदीके पुत्र, महारथ अभिमन्यु, नकुल, सहदेव और धृष्टद्युम्न भीमसेनकी पृष्ठरक्षामें प्रवृत्त होकर जैसे बादल पर्व्वतके ऊपर जल बर्षाता है, वैसे ही हाथियोंकी सेनाके ऊपर अपने बाणोंको बर्षाने लगे। अनन्तर शिलापर घिसे हुए चोखे क्षुर, क्षुरप्र, भल्ल और अञ्जलिकास्त्रसे हाथियोंपर चढ़े हुए योद्धाओंका सिर काटने लगे। गजपतियोंके सिर, भुजा और अङ्कुश सहित हाथ बाणोंसे कटकर ऐसे गिरने लगे, कि मानो पत्थरकी वर्षा होरही है। कटे हुए योद्धाओंका सिर कटकर हाथियोंके ऊपर इस प्रकारसे दीखने लगा, जैसे पर्व्वतके ऊपर टूटे हुए वृक्षोंकी शाखा दीख पड़ती है। महात्मा धृष्टद्युम्नको भी [illegible] मगध देशके राजाने [illegible] समान एक महागजराज अभिमन्युके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

मन्युने सुवर्ण पंखसे युक्त एक बाणसे उनका शिर काट डाला। इधर भीमसेन हाथियोंकी सेनामें प्रवेश करके सब हाथियोंको मारते हुए ऐसे घूमने लगे, जैसे इन्द्रने पर्व्वतोंपर भ्रमण किया था। वह नाना भांतिसे हाथियोंको मारने लगे। रणभूमिमें सब मरे हुए हाथियोंको मैं वज्रकी चोटसे गिरे हुए पर्व्वतके समान देखने लगा। किसी किसी हाथीका दांत, कितनोंकी कमर और कितने ही हाथियोंका सिर टूट गया। पर्व्वतके समान कितने ही हाथी भयसे विह्वल होगये; कितने ही रणभूमिसे भागने लगे; कोई कोई हाथी भय भीत होकर मलमूत्र त्यागने लगे, कितने हाथी भीमसेनके भ्रमण करनेके मार्गहीमें पिस कर मर गये और कितने ही आर्त्त होकर चिंघाड़ मारने लगे, कितने ही हाथी पेट फटनेसे रुधिर वमन करते हुए पर्व्वतकी भांति पृथ्वीमें गिर पड़े। भीमसेन रुधिर, मास और मज्जासे पूरित होकर दण्डधारी यमराजके समान रणभूमिमें चारों ओर भ्रमण करने लगे, यह हाथियोंके रुधिरसे पूरित गदा लेकर पिनाकधारी रुद्रके समान भयङ्कर दिखाई देने लगे। सब हाथी भीमसेनकी गदासे विकल होकर तुम्हारी सेनाका मर्दन करते हुए भागने लगे। जैसे देवता लोग बज्रधारी इन्द्रकी रक्षा करते हैं, वैसे ही अभिमन्यु आदि वीर लोग उस रणभूमिमें भीमसेनकी सब भांतिसे रक्षा करने लगे। महाबलवान् भीमसेन गदा धारण करके रणभूमिमें यमराजके समान दिखाई देने लगे। सब ओर गदा ग्रहण करके युद्धमें वह ऐसे भ्रमण करते थे, जैसे शिव जी श्मशानमें नृत्य करते हैं, वज्रके समान उस भारी गदाकी चोटका शब्द होता था और वह यमदण्डके समान दीख पड़ती थी। पशुओंके नाश करनेके समय जैसे क्रुद्ध हुए रुद्रदेवका पिनाक दीख पड़ता है, वैसे ही केश, मज्जा और रुधिरसे युक्त भीमसेनकी वह भयङ्कर गदा दिखाई देने लगी। जैसे पशुपालक लोग लाठीसे पशुओंकी ताड़ना करते हैं, वैसे ही भीमसेन गदासे हाथियोंको मारने लगे। तुम्हारी ओरके सब हाथी भीमसेनकी गदा तथा शत्रुओंके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर निज सेनाको मर्द्दन करते हुए वेगसे भागने लगे। जैसे प्रबल वायु बादलोंको तितर बितर करके उड़ा देता है, वैसे ही भीमसेन सब हाथियोंको भगा कर श्मशानवासी रुद्रकी भांति युद्ध भूमिमें स्थित हुए।

५६ अध्याय समाप्त ।

सञ्जय बोले, हे भारत! उस सम्पूर्ण हाथियोंकी सेनाका बध होनेपर राजा दुर्य्योधनने भीमसेनका बध करनेके निमित्त सम्पूर्ण सेनाको आज्ञा दी। रणभूमिमें महाघोर शब्द करनेवाली वह सम्पूर्ण सेना दुर्य्योधनकी आज्ञासे भीमसेनकी ओर दौड़ी। भीमसेन देवताओंसे भी न जीतने योग्य, पर्व्वके दिवस महा भयङ्कर समुद्रकी तरङ्गके समान अनेक रथ, पैदल, हाथी, घोड़ोंके सहित शंख, ढोल और दुन्दुभीसे युक्त दूसरे समुद्रके समान, धूलिसे पूरित उस महासेनाको ऐसे निवारण करने लगे, जैसे समुद्रके वेगको तट रोकता है। महाराज! उस समयमें मैंने पाण्डुपुत्र महात्मा भीमसेनका अलौकिक पराक्रम देखा, वह घोड़े हाथीसे युक्त सम्पूर्ण राजाओंको गदासे निवारण करने लगे, बलवानोंमें श्रेष्ठ भीमसेन गदासे उस सम्पूर्ण सेनाको निवारण करके मेरु पर्व्वतकी भांति वहां पर स्थित रहे। उस महा भयङ्कर तुमुल युद्धमें भाई, पुत्र, धृष्टद्युम्न, द्रौपदीके पुत्र लोग, अभिमन्यु और अपराजित शिखण्डी महाबलवान् भीमसेनको भयसे त्याग कर रणभूमिसे पृथक् नहीं हुए। अर्जुनाशन

भीमसेन उन सब वीरोंसे रक्षित होकर लोहमयी अत्यन्त भारी गदा लेकर दण्डधारी यमराजके समान तुम्हारी सेनाके योद्धाओंका वध करने लगे। रथ और घोड़ोंको उठाके फेंकते हुए प्रलयकालकी अग्निके समान युद्धभूमिमें घूमने लगे। प्रलयकालकी मृत्युके समान होकर रथकी ध्वजाओंको तोड़ते हुए वीर योद्धाओंका संहार करने लगे, और तुम्हारी सेनाके बीच रथी, गजपति और घुड़सवार तथा पैदल वीर भीमकी गदासे इस प्रकार मरने लगे जैसे वायुके प्रबल वेगसे वृक्ष टूटके गिर पड़ते हैं। उनकी गदा उस समय रुधिर, मांस, मज्जासे युक्त होकर अत्यन्त भयानक रूपमें दिखाई देने लगी। इधर उधर मरके पड़े हुए मनुष्य, हाथी और घोड़ोंसे रणभूमि यमराजके मृत्युस्थानके समान होगई। भीमसेनकी गदा शत्रुओंका नाश करनेवाली, यमदण्डके समान भयङ्कर और इन्द्रके वज्रके समान प्रकाशमान हुई। उस गदाको सब लोग पशुओंका नाश करनेवाले महादेवके पिनाकके समान देखने लगे। जिस प्रकार प्रलयकालके समयमें यमराजका विकराल रूप होजाता है, उस महात्मा कुन्तीनन्दन भीमकी भी गदा लेकर भ्रमण करनेके समयमें वैसी ही मूर्त्ति दिखाई देने लगी। उनको हाथमें गदा लिये हुए महा सेनाको छिन्नभिन्न करता हुआ देखकर सब योद्धे अत्यन्त ही भयसे व्याकुल होने लगे। हे भारत! उस समयमें भीमसेन गदा लेकर सेनामें जिस ओर देखते उधर ही [illegible] होने लगते थे।

[illegible] कौरवोंके पितामह भीष्म [illegible] भीमसेनको [illegible] और महा भयङ्कर [illegible] हुए यमराजके समान [illegible] करते हुए [illegible],

सूर्य्यके समान प्रकाशमान बड़े रथ पर चढ़के बादलके समान गर्ज्जते और मेघकी भांति अपने बाणोंको बर्षाते हुए उन सेनाओंकी ओर दौड़े। महाबाहु भीमसेनको क्रुद्ध यमराजके समान आते हुए देखकर क्रोधपूर्व्वक उसके सम्मुख हुए। तब सत्यपराक्रमी सात्यकि दुर्य्योधनकी सेनाको कम्पित करते, और अपने दृढ़ धनुषसे शत्रुओंका वध करते हुए पितामह भीष्मके समीप जाने लगे। उत्तम पानीसे बुझाये हुए बाणोंको चलाते और सुवर्ण भूषित घोड़ोंसे युक्त उत्तम रथ पर चढ़े हुए सात्यकिके गमन करनेके समयमें कोई भी तुम्हारी सेनाका वीर निवारण न कर सका। तब अलम्बुष राक्षसने दश बाणोंसे सात्यकिको विद्ध किया, परन्तु सात्यकि अलम्बुषको चार बाणोंसे विद्ध करके गमन करने लगे। तुम्हारी ओरके योद्धा लोग वीर सात्यकीको कुरुप्रधान वीरोंको हटाते तथा आगे बढ़े आते देखकर जैसे मेघ पर्व्वतके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं, वैसे ही उसके ऊपर बाणोंकी वर्षा करके भी मध्याह्न, कालके तपते हुए सूर्य्यके समान तेजस्वी उस महारथ सात्यकिको निवारण करनेमें समर्थ न हुए। हे राजन्! उस सब सेनाके बीच सोमदत्तका पुत्र भूरिश्रवाके अतिरिक्त और कोई भी सात्यकिके सम्मुख न होसका, वह अपनी ओरके रथियोंको सात्यकिके बाणोंसे तितर बितर होते देखकर प्रचण्ड धनुष धारण करके सात्यकिसे युद्ध करनेके निमित्त आकर खड़े हुए।

[illegible] अध्याय समाप्त।

[illegible] हे राजन्! [illegible] क्रुद्ध होकर [illegible] प्रहार [illegible] प्रहार [illegible]

सात्यकि भी सब लोगोंके सम्मुख अपने अनेक चोखे बाणोंसे भूरिश्रवाको निवारण करने लगे। तिसके अनन्तर राजा दुर्य्योधन भाइयोंके सहित भूरिश्रवाको चारो ओरसे घेर कर उसकी रक्षा करनेमें प्रवृत्त हुए और महाबलवान् पाण्डवोंके पक्षके योद्धा लोग भी सात्यकिको चारों ओरसे घेर कर उसकी रक्षाके निमित्त खड़े हुए। भीमसेनने क्रुद्ध हो गदाधारण करके तुम्हारे सब पुत्रोंको घेर लिया। कई हजार रथियोंसे युक्त तुम्हारे पुत्र नन्दकने क्रुद्ध होकर शिलापर घिसे हुए सुवर्ण पंखसे युक्त तीक्ष्ण बाणोंसे भीमसेनको प्रहार किया, तब दुर्य्योधनने भी क्रोधपूर्व्वक नौ बाणोंसे भीमसेनकी छातीमें प्रहार किया। अनन्तर अत्यन्त बलवान् भीमसेन अपने उत्तम रथ परबैठ कर निजसारथी विशोकसे यह वचन बोले, हे सारथी! ये सब महारथी बलवान् धृतराष्ट्रपुत्र अत्यन्त क्रुद्ध होकर युद्धमें मेरे बधके निमित्त उद्यत हुए हैं, आज मैं उन सबको तुम्हारे सम्मुख ही यमपुरीमें भेज दूंगा; इससे तुम इस संग्राममें मेरा घोड़ोंको शीघ्रताके सहित सावधान होके चलाओ। महाराज! भीमने सारथीसे ऐसा कह कर सुवर्णभूषित अनेक तीक्ष्ण बाणोंसे दुर्य्योधनको बिद्ध किया। इसके अनन्तर नन्दकके दोनो स्तनोंके बीचमें तीन बाणोंसे प्रहार किया, तब दुर्य्योधनने महाबलवान् भीमको साठ बाणोंसे बिद्ध करके फिर चोखे तीन बाणोंसे उनके सारथी विशोकको विद्ध किया और हंसते हंसते तीन बाणोंसे भीमके धनुषकी मुष्टि काट डाली। तब भीम निज सारथी विशोकको धनुर्द्धारी दुर्य्योधनके चोखे बाणोंसे पीड़ित देखकर क्रुद्ध होके दुर्य्योधनके बध करनेके निमित्त दिव्य धनुष और रोएंको खड़े करनेवाले क्षुरप्र अस्त्र ग्रहण करके राजा दुर्य्योधनके धनुषकी मुष्टि काट डाली। दुर्य्योधनने क्रोधसे मूर्च्छित होकर कटा धनुष त्याग कर शीघ्रता पूर्व्वक एक वेगवान् धनुष ग्रहण करके यमदण्डके समान, एक बाण धनुष पर चढ़ा कर भीमसेनके दोनों स्तनोंका मध्यस्थल विद्ध किया। भीमसेन उस बाणसे अत्यन्त ही विद्ध पीड़ित और मूर्च्छित होकर रथपर बैठ गये। भीमसेनको मूर्च्छित देख कर अभिमन्यु आदि पाण्डवोंके महावीर महारथ वीरोंसे नहीं रहा गया। वे सब दुर्य्योधनके ऊपर अपने प्रचण्ड बाणोंको बर्षाने लगे। महाबलवान् भीमसेन भी क्षण भरमें सावधान होगये; उन्होंने पहिले तीन बाणोंसे दुर्य्योधनको विद्ध करके फिर पाच बाणोंसे विद्ध किया। तब शल्यको स्वर्ण पंखसे युक्त पचीस बाणोंसे विद्ध किया। शल्य बाणोंसे पीड़ित होके युद्धसे पृथक् हुए। महाराज! इसके अनन्तर सेनापति, सुषेण, जलसन्ध, सुलोचन, उग्र, भीमरथ, भीम, वीरबाहु, अलोलुप, दुर्म्मुख, दुष्प्रधर्ष, विवित्सु, विकट और सम तुम्हारे चौदह पुत्र इकट्ठे होकर क्रोधसे लाल नेत्र कर भीमसेनके समीप जाकर उनके ऊपर अनेक बाणोंकी वर्षा करके उन्हें दृढ़ रूपसे बिद्ध करने लगे। महाबाहु महाबली भीमसेन तुम्हारे पुत्रोंको इस प्रकारसे बाण चलाते देखकर उनकी ओर ऐसे दौड़े जैसे पशुओंकी ओर भेड़िया दौड़ता है, उनके सम्मुख पहुंचके क्षुरप्र अस्त्रसे सेनापतिका सिर काट डाला; फिर हंसके तीन बाणोंसे जलसन्धका संहार करके यमपुरीमें भेज दिया और सुषेणका भी बध करके मृत्युके हवाले किया; उग्रका शिरस्त्राणके सहित दोनो कुण्डलोंसे शोभायमान चन्द्रमाके समान मस्तकका भल्लास्त्रसे काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया, अश्वकेतुको सारथीके सहित सत्तर बाणोंसे मार डाला, वेगशील भीमरथ और भीम दोनों भाइयोंका मानो हसते हसते मारकर यमपुरीमें भेज दिया। इनसे भिन्न और जो सब तुम्हारे पुत्र वहांपर बाकी थे, वे सब उस समय

भीमसेनका पराक्रम देख उसके बाणोंसे अत्यन्त ही बिद्ध होकर इधर उधर भाग गये। अनन्तर शान्तनुनन्दन भीष्मने सब महारथियोंसे कहा; हे महारथी लोगो! प्रचण्ड धनुषधारी यह भीमसेन रणभूमिमें क्रुद्ध होकर महारथियोंके बीच चाहे कोई कैसे ही शूरवीर क्यों न होवें, सबका वध कर रहा है; इससे उनको तुम लोग शीघ्र ही निवारण करो। तब कौरवोंकी सम्पूर्ण सेना भीष्मकी आज्ञाके अनुसार महाबली भीमसेनकी ओर क्रुद्ध होकर दौड़ी। भगदत्त मदचूते हुए मतवारे गजराज पर चढ़े हुए भीमसेनके सम्मुख आ पहुंचे। उन्होंने भीमके निकट पहुंचकर उन्हें अपने बाणोंसे ऐसा छिपा दिया, जैसे मेघ सूर्य्यको छिपा देता है। अभिमन्यु आदि महारथ योद्धाओंने भीमका बाणोंसे छिपना न सहकर चारों ओरसे बाणोंकी वर्षा करके भगदत्त और उनके हाथीको अस्त्रोंसे छिपा दिया, वह प्राग्ज्योतिष गजराज उन सब महारथोंके अनेक पैने शल्योंसे विद्ध होकर ऐसा शोभित हुआ, जैसे सूर्य्यके किरणसे बादलके समूहमें अनेक रङ्गसे युक्त इन्द्रधनुष दीख पड़ता है। वह मदचूता हुआ मतवारा हाथी भगदत्तके चलानेपर द्विगुण वेगसे चलकर निज पांवसे पृथ्वीको कंपाता हुआ काल प्रेरित यमराजके समान उन सब योद्धाओंकी ओर दौड़ा। सम्पूर्ण महारथ योद्धा उस महा गजराजका अत्यन्त भयानक रूप देखकर भयभीत होगये। राजा भगदत्तने क्रुद्ध होकर नतपर्व्व बाणोंसे भीमसेनके छातीमें प्रहार किया। [illegible] महारथ भीमसेन राजा भगदत्तके बाणोंसे अत्यन्त बिद्ध और मूर्च्छित होकर [illegible] पकड़कर स्थित हुए। [illegible] उन सब महारथ योद्धाओंको भयभीत और भीमसेनको मूर्च्छित देखकर [illegible] किया। [illegible]

अनन्तर महा भयानक राक्षस घटोत्कच भीमसेनको मूर्च्छित देखकर क्रुद्ध होके उस ही स्थानपर अन्तर्हित हुआ और थोड़े ही समयके अनन्तर कायरोंके भयको बढ़ानेवाली माया उत्पन्न करके मायाके बने हुए ऐरावतके ऊपर चढ़के भयङ्कर मूर्त्ति धारण करके सबके सम्मुख ही प्रकट हुआ। तेज, बल, वीर्य्य, महावेग और पराक्रमसे युक्त राक्षसोंके सहित अनेक मदचूते तेजस्वी और बड़े बड़े चार दांतसे युक्त अञ्जन, वामन और महापद्म ये तीनो दिग्गज उसके अनुगामी हुए। घटोत्कचने हाथीके सहित भगदत्तका नाश करनेके निमित्त अपने हाथीको चलाया और दूसरे तीन हाथी भी महाबलवान् राक्षसोंके चलानेसे क्रुद्ध होकर भगदत्तके हाथीको चारों ओरसे दांतोंसे पीड़ित करने लगे; वह हाथी पहिलेहीसे अभिमन्यु आदि महारथ वीरोंके बाणोंसे पीड़ित था, फिर दिग्हस्तियोंके दांतोंके आघातसे बहुत ही पीड़ित होकर इन्द्रके वज्रके समान महा शब्द करने लगा।

हे भारत! भीष्म उस भगदत्तके हाथीका महा घोर शब्द सुनकर राजा दुर्य्योधन और द्रोणाचार्य्यसे बोले, महा धनुर्द्धर राजा भगदत्त घटोत्कच राक्षसके सङ्ग युद्ध कर रहे हैं; वह असाध्य कार्य्यमें प्रवृत्त हुए हैं। राक्षस घटोत्कच बड़ा भारी शरीरवाला है, और भगदत्त भी महा क्रोधी है; ये दोनों ही युद्धमें एक दूसरेके मृत्युस्वरूप हैं। यह देखो, पाण्डवोंकी हर्षयुक्त महाध्वनि और भयसे विकल भगदत्तके हाथीका अत्यन्त ही आर्त्तनाद सुनाई दे रहा है, इससे हम लोगोंका मङ्गल हो, चलो हम सब लोग भगदत्तकी रक्षा करें; इस समयमें रक्षा न करनेसे वह शीघ्र ही युद्धमें प्राणत्याग करेंगे। हे महारथो! [illegible] शीघ्र करो, विलम्ब मत करो [illegible]

वाला संग्राम होरहा है। हे अक्षय पराक्रमी वीर लोग! राजा भगदत्त उत्तम कुलकी सन्तान, शूरवीर और सेनापति हैं; उनका परित्राण करना हम लोगोंका अत्यन्त ही कर्त्तव्य कार्य्य है। भीष्मका यह वचन सुनकर द्रोणाचार्य्य आदि सम्पूर्ण राजा लोग भगदत्तकी रक्षाके निमित्त शीघ्रताके सहित उनकी ओर गमन करने लगे। युधिष्ठिरकी ओरके पाण्डव और पाञ्चाल योद्धा उन सब महारथियोंको घटोत्कचकी ओर जाता हुआ देखकर उनके पीछे दौड़े। प्रतापी राक्षसेन्द्र घटोत्कचने उस सब सेनाको देखकर बड़े जोरसे भयानक शब्द करके आकाशमण्डलको पूरित कर दिया। शान्तनुनन्दन भीष्म उसका महानाद सुन और उन दिग्हाथियोंको युद्ध करते हुए देखकर द्रोणाचार्य्यसे फिर बोले; इस दुष्टात्मा घटोत्कचके सङ्ग युद्ध करनेमें मेरी इच्छा नहीं होती है, यह दुष्टात्मा उत्तम सहायता और बलवीर्य्यसे युक्त हैं; स्वभावहीसे लक्ष्यके वेध और प्रहार करनेमें समर्थ है। इस समय उसे इन्द्र भी युद्धमें जीतनेमें समर्थ न होंगे, विशेष करके हम लोगोंके वाहन अब इस समय थक गये हैं, हम लोग भी आज पाञ्चाल और पाण्डवोंसे क्षत-विक्षत होरहे हैं; इस समय पाण्डवोंकी जीत हुई है, उन लोगोंके संग युद्ध करनेसे अब मेरी इच्छा नहीं होती है, इससे अब सेनाको युद्धसे निवृत्त करो। कल्ह शत्रुओंके सङ्ग युद्ध किया जावेगा।

घटोत्कचके भयसे पीड़ित कौरव लोग पितामह भीष्मकी बात सुनकर, रात्रि उपस्थित हुई देखके यही एक उपाय अवलम्बन करके हर्ष प्रकाश करते हुए सेनाके युद्धसे निवृत्त-होनेके निमित्त घोषणा करने लगे। कौरवोंके निवृत्त होनेपर जय पाये हुए पाण्डव लोग शंख, बांसुरी आदि बाजोंके सहित सिंहनाद करने लगे। हे भारत! उस दिन कौरवोंके संग घटोत्कचका इसी प्रकारसे युद्ध हुआ था। पाण्डव लोगोंने कौरवोंको पराजित और लज्जित कर अपने अपने शिविरोंमें प्रवेश किया। अस्त्रोंसे क्षतविक्षत शरीर महारथ पाण्डव लोग भीमसेन और घटोत्कचकी प्रशंसा करते हुए उन्हें आगे करके प्रसन्नतापूर्व्वक अपने अपने शिविरोंमें जाने लगे। उन लोगोंने अत्यन्त आनन्दित होकर दुर्य्योधनके मर्म्मभेदक शङ्ख, नफीरी आदि विविध बाजोंके सङ्ग सिंहनाद करके पृथ्वीको कंपाते हुए सन्ध्याके समय अपने शिविरोंमें प्रवेश किया। राजा दुर्य्योधनने भाइयोंके वधसे दीनतायुक्त चित्तसे शोकित होकर मुहूर्त्त भर चिन्ता की, तिसके अनन्तर शिविरके सब कार्य्योंका यथाविधिसे विधान करके फिर भाइयोंके शोकसे दुःखित होकर चिन्ता करने लगे।

९१ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! पाण्डुपुत्रोंकी देवताओंसे भी दुस्साध्य कर्म्म करते हुए सुनकर, मुझे अत्यन्त ही भय और विस्मय उत्पन्न होता है। हे सञ्जय! पुत्रोंका सब भांतिसे पराजय सुनकर,—इसके अनन्तर क्या होगा? यह बड़ी भारी चिन्ता मेरे चित्तको व्याकुल कर रही है। हे सञ्जय। जो सब कार्य्य दैवके आधीन देख रहा हूं, उससे निश्चय ही विदुरकी बात मुझे सन्तापित करेगी, क्योंकि पाण्डवोंकी सेनाके योद्धा लोग योद्धाओंमें श्रेष्ठ सब शस्त्रोंके जाननेवाले महावीर भीष्म आदिके संग युद्ध करके उनलोगोंको ऊपर शस्त्रोंका प्रहार कर रहे हैं। हे सूत! महात्मा महाबलवान् पाण्डव लोग किस कारणसे अवध्य हुए? जब कि वह लोग आकाशमें रहनेवाले तारोंकी भांति नष्ट नहीं होते हैं, तब उन लोगोंको किसीने वर दिया होगा, अथवा वह लोग कुछ मन्त्र जानते होंगे।

पाण्डव लोग जो वार वार मेरी सेनाका नाश कर रहे हैं, इसको मैं नहीं सह सकता हूं। परम दारुण दण्ड दैवकी ओरसे मेरे ही ऊपर पतित हुआ है। हे सञ्जय! पाण्डव लोग जिस कारणसे अवध्य और मेरे पुत्र जिस हेतुसे वध्य हुए हैं, उसे तुम यथार्थ रूपसे मेरे समीप वर्णन करो। मैं मनुष्यके दोनों भुजाओंसे अपार महा समुद्र पार होनेके समान किसी प्रकारसे भी इस दुःख सागरसे पार होनेका उपाय नहीं देखता हूं। मैं निश्चय ही अपने पुत्रोंमें महा दारुण व्यसनको उपस्थित हुआ समझता हूं, भीम मेरे सब पुत्रोंका संहार करेगा, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। हे सञ्जय! मैं ऐसा वीर किसीको भी नहीं देखता हूं कि युद्धमें मेरे पुत्रोंकी रक्षा कर सके, इससे मेरे पुत्रोंका निस्सन्देह विनाश होगा। हे सञ्जय! मैं तुमसे यह पूछता हूं, कि पाण्डवोंके जय और मेरे पुत्रोंके पराजयके विषयमें युक्ति युक्त कारण क्या है? वह तुम मेरे निकट यथार्थरूपसे वर्णन करो, और दुर्योधन, भोज, शकुनि, जयद्रथ, द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा, विकर्ण आदि सब महा बलवान् महा धनुर्द्धर योधाओंने युद्धसे विमुख होकर क्या किया, और मेरे पुत्रोंने युद्धसे पराजित होकर उस समयमें क्या निश्चय किया?

सञ्जय बोले, हे राजन्! चित्त लगा कर सुनिये और निश्चय कीजिये। पाण्डव लोगोंने न तो कुछ मन्त्र प्रयोग किया, न वह मायाका आश्रय लेते हैं, और न वह इन्द्रजाल वा [illegible] युद्धमें उत्पन्न करते हैं। वह लोग [illegible] हैं, [illegible] उचित [illegible] हे भारत! पाण्डव लोग सदा ही [illegible] [illegible] [illegible]

धर्म्म है, वहां ही जय रहता है" इस ही कारणसे वह सब युद्धमें अवध्य और जयी होरहे हैं; और तुम्हारे पुत्र लोग दुष्ट, निठुर, नीच-कर्म्म करनेवाले और सदा पाप कार्य्य करनेहीमें रत रहते हैं, इस ही कारणसे वे लोग युद्धमें पराजित होते हैं। उन लोगोंने पाण्डवोंके विषयमें नीच पुरुषोंकी भांति अनेक पाप-कर्म्मोंका आचरण किया था; परन्तु पाण्डव लोग तुम्हारे पुत्रोंके उन नीचकर्म्मोंको क्षमा और उसे यत्नपूर्व्वक गोपन करते थे। हे राजन्! तुम्हारे पुत्रोंने जो उन लोगोंको अप-मानित किया था; इस समय उन्ही सब पाप-कर्म्मोंका महाकाल रूपी दारुण फल उदय हुआ है; उसे तुम सुहृद और पुत्रोंके सहित भोग करो। महात्मा विदुर, भीष्म और द्रोणाचार्य्यके निवारण करने पर भी जब तुमने युद्धका परिणाम नहीं समझा, मैंने भी तुम्हें यथार्थ हितके वचनोंसे निवारण किया, परन्तु जैसे रोगी पुरुष पथ्य और औषधि नहीं ग्रहण करता है, वैसे ही तुमने भी मेरे कहे हुए उन हितके वचनोंको नहीं ग्रहण किया, पुत्रोंके मतमें सहमत होके ही पाण्डवोंको पराजित समझ लिया था।

हे महाराज! तुमने पाण्डवोंके जयके विषयमें मुख्य कारण जो मुझसे पूछा, उसे मैं फिर तुमसे कहता हूं; तुम भली भांति श्रवण करो। यही विषय दुर्योधनने पितामह भीष्मसे पूछा था, उन्होंने दुर्योधनसे जो कुछ कहा, वह मैं तुम्हारे समीप वर्णन करता हूं। हे प्रजा-नाथ! रात्रिके समय राजा दुर्योधन अपने पराक्रमी भाइयोंको युद्धमें पराजित देखकर [illegible] महा बुद्धिमान् पितामह [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

विकर्ण आदि आप सब लोग महारथ और उत्तम कुलमें उत्पन्न हुए हैं, युद्धमें उत्साह करके प्राण त्यागनेमें आप सब लोग लोकमें विख्यात है ; मेरी समझमें तीनों लोकके बीच आप लोगोंके समान कोई योद्धा नहीं है, सम्पूर्ण पाण्डवोंकी सेनाके योद्धा भी आपके पराक्रमको नहीं सह सकते हैं ; इससे मेरे मनमें यह सन्देह उत्पन्न हुआ है, कि पाण्डव लोग किसके आसरेसे पद पदमें जयसे युक्त होते हैं ? जिसके आसरेसे वह लोग जयी होते हैं, वह तुम मुझसे वर्णन करो ।

भीष्म बोले ; हे कौरवराज । मैं जो तुमसे कहता हूं, उसे तुम सुनो, मैंने तुमसे बहुत बार कहा था, परन्तु तुमने मेरी बात नहीं ग्रहण की । अब भी कहता हूं, कि पाण्डवोंके सङ्ग सन्धि करो, मेरे विचारमें सन्धिका करना ही तुम्हारे और सम्पूर्ण पृथ्वीके निमित्त मंगल-जनक है । तुम पाण्डवोंके संग सन्धि करके भाइयोंके सहित सुखी होके सब मित्र और बन्धु बान्धवोंके साथ आनन्दित होके पृथ्वीका भोग करो । हे पुत्र ! तुमने पहिले पाण्डवोंको अपमानित किया था, मैंने उस समय मुक्तकण्ठसे निवारण किया था, तो भी तुमने मेरी बात नहीं सुनी थी ; उसहीका फल इस समय तुमको मिल रहा है । हे राजन् ! कठिन कर्म्मोंके करनेवाले पाण्डवोंके अवध्य होनेका कारण वर्णन करता हूं उसे तुम सुनो । कृष्णसे रक्षित पाण्डवोंको कोई युद्धमें पराजित करे, ऐसा पुरुष इस लोकके बीचमें कोई भी नहीं है, पहिले न हुआ और न भविष्यमें होगा । हे पुत्र ! धर्म्म जाननेवाले महात्मा मुनियोंने इस पुरानी कथाको जिस भांति मेरे समीप वर्णन किया था, उसे मैं ज्योंकी त्यों तुमसे कहता हूं ।

पहिले समयमें सब ऋषि और देवता लोग गन्धमादन पर्व्वतपर जाकर ब्रह्माके समीप विराजमान हुए । उन सबके बीचमें बैठे हुए प्रजापति ब्रह्माने आकाशमें प्रकाशमान श्वेत वर्ण एक उत्तम विमान देखा ; उन्होंने विचार करके उस विमानमें विराजमान परमेश्वरको जानकर स्थिर हो दोनों हाथ जोड़के नमस्कार किया । ऋषि और सब देवता लोग इस महा अद्भुत व्यापार और ब्रह्माको उठता हुआ देख कर हाथ जोड़के खड़े होगये । संसारके रचने वाले परम धर्म्मके मर्म्मको जाननेवाले प्रजापति ब्रह्मा उन परम देव परमेश्वरकी पूजा करके उनकी स्तुति करने लगे । हे देवेश ! तुम वसु, विश्वकी मूर्त्ति, जगत्के स्वामी, जगत्के पालन कर्त्ता, सृष्टिकर्त्ता, विश्वेश्वर, वासुदेव, और योगात्मा हो, इससे मैं तुम्हारी शरणमें हूं । हे अखिल भुवनके स्वामी । तुम्हारी जय हो, तुम स्वाभाविक नित्य उत्कर्ष सम्पन्न करो । हे लोक हितैषी ! तुम्हारी जय हो । हे विभु योगीश्वर । तुम्हारी जय हो । हे योगपारावार । तुम्हारी जय हो । हे पद्मनाभ । तुम्हारी जय हो । हे विशालाक्ष । हे लोकेश्वरोंके ईश्वर । तुम्हारी जय हो । हे भूत भविष्य और वर्त्तमानके प्रभु । तुम्हारी जय हो । हे सौम्य । हे आत्माओंके आत्मज । तुम्हारी जय हो । हे वादरायण ! हे अनन्त महिमावाले । हे शार्ङ्ग धनुषके धारण करनेवाले । तुम्हारी जय हो । हे सब गुणोंकी मूर्त्ति । हे जगत्की मूर्त्ति । हे निरामय । तुम्हारी जय हो । हे विश्वेश्वर ! हे महाबाहो । हे लोकके हित करनेवाले ! तुम्हारी जय हो । हे महानाग ! हे वाराह ! हे आदि कारण । हे पिङ्गलकेश ! हे विभो ! हे पीतवासः । हे दिशाओंके स्वामी ! हे विश्ववास । हे अमित । हे अव्यय ! तुम्हारी जय हो । हे व्यक्त ! हे अव्यक्त ! हे अमित आधार । हे जितेन्द्रिय । हे सत्क्रिय । हे असङ्ख्येय । हे आत्मभावज्ञ । हे गम्भीर ! हे कामद ! तुम्हारी जय हो । हे

अनन्त! हे विदित! हे ब्रह्मन्! हे नित्य! हे भूतभावन। हे कृतकार्य्य! हे धर्म्मज्ञ! हे जय पराजयरहित! हे गुह्यात्मन्! हे सर्व्वयोगात्मन्! हे स्फुट सम्भूत। हे भूतात्म तत्व! हे लोकेश! हे भूतविभावन! तुम्हारी जय हो। हे आत्मयोनि! हे महाभाग! हे कल्प-संक्षेप-तत्पर! हे मनोभावोद्भावन! हे ब्राह्मणप्रिय! तुम्हारी जय हो। हे नैसर्गिक-सृष्टि-निरत! हे कामेश! हे परमेश्वर! हे अमृतोत्पादक! हे सद्भाव! हे मुक्तात्मन्! हे विजय-प्रद! हे प्रजापतिके स्वामी! हे देव! हे महाबल! हे आत्मभूत! हे महाभूत! हे कर्म्मात्मन्! हे सर्व्वप्रद! तुम्हारी जय हो। पृथ्वी तुम्हारा चरण, सब दिशा तुम्हारी भुजा, अन्तरिक्ष तुम्हारा सिर, मैं तुम्हारी मूर्त्ति, सब देवता तुम्हारे शरीर, सूर्य्य-चन्द्रमा तुम्हारे नेत्र, सङ्कल्प और धर्म्म-कर्म्मका मूल सत्य तुम्हारा बल है, अग्नि तुम्हारा तेज, वायु तुम्हारा स्वास, जल तुम्हारे शरीरका पसीना, दोनों अश्विनीकुमार तुम्हारे दोनों कान हैं, सरस्वती देवी तुम्हारी जिह्वा, वेद तुम्हारी संसारनिष्ठा और यह सम्पूर्ण जगत् तुम्हारे ही आसरसे विराजमान है। हे योगेश! हम सब तुम्हारी संख्या, परिमाण, तेज, पराक्रम, बल और उत्पत्ति कुछ भी नहीं जान सकते। हे विष्णु! हे देव! तुम महादेव और तुम ही परमेश्वर हो। हम सब तुम्हारी ही [illegible] होकर तुम्हारे ही आसरसे नियम [illegible] सदा तुम्हारी पूजा करते रहते हैं। हे [illegible]! हे [illegible]! हे कृष्ण! हे दुखोंके [illegible] ऋषि, देवता गन्धर्व राक्षस, [illegible] मनुष्य, मृग पक्षी और [illegible] तुम्हारे प्रतापसे [illegible] तुम सब प्राणि- [illegible]

रहती है। हे विशालाक्ष! इस ही निमित्त तुम यदुवंशमें उत्पन्न होके धर्म्म स्थापन, दैत्योंका वध, और जगत्को धारण करनेके निमित्त हम लोगोंका यह निवेदन स्वीकार करके सब कार्य्य पूर्ण करो। हे वासुदेव! हे विभो! तुम्हारे प्रसादसे मैंने यह परमगुप्त विषय तुम्हारे समीप वर्णन किया है, कि तुमने स्वयं आत्मासे निज आत्माको बलदेव रूपसे उत्पन्न करके फिर आत्माको कृष्ण रूपसे उत्पन्न किया है; फिर आत्मासे ही प्रद्युम्नको प्रकट किया हैं, जिसे सब अव्यय विष्णु जानते हैं, उस अनिरुद्धको तुमने प्रद्युम्नसे उत्पन्न किया है और अनिरुद्ध मुझ लोकधारी ब्रह्मा रूपसे उत्पन्न किया है, इससे हे वसुदेवके आत्मज तुमसे मैं उत्पन्न हुआ हूं,—इससे अब तुम अपनेको अंशके क्रमसे विभाग करके मनुष्यत्वको प्राप्त होओ। तुम मर्त्यलोकमें सब लोकोंके सुखके निमित्त असुरोंका वधकर, धर्म्म स्थापित करते हुए यश युक्त होकर तत्वके अनुसार योग लाभ करो। हे अमित पराक्रमी! सब लोकोंके बीच ब्रह्मर्षि और देवता लोग अपने अपने नामके अनुसार विभक्त होकर तुम्हें परमात्मा रूपसे गाया करते हैं। हे सुबाहो! ब्राह्मण लोग और सम्पूर्ण प्राणी तुममें ही स्थित होकर, तुम्हारा ही आसरा करते हुए, तुमको वरप्रद, आदि मध्य और अन्त रहित, अपार-योगसे युक्त और [illegible] जगत्का कारण कहके तुम्हारा यश गान करते रहते हैं।

[illegible] अध्याय समाप्त।

[illegible]

भगवान् उस ही स्थान पर अन्तर्द्धान हो गये। तब सब देवता, ऋषि और गन्धर्व्व आदि परम विस्मित होकर ब्रह्मासे पूछने लगे। हे लोकोंके विधाता! तुमने जिनकी प्रणाम करके विनय-पूर्व्वक स्तुति की, वह कौन हैं; हम सब लोग इस विषयको सुननेकी इच्छा करते हैं। पितामह ब्रह्मा देवता, गन्धर्व्व और देवर्षियोंके वचनोंको सुनकर मीठे वचनसे बोले। हे देवगण! जो "तत्"पदसे ग्रहण किया जाता है,जो उत्कृष्ट है, जो इस समयमें वर्त्तमान है और भविष्यमें भी रहेगा, जो सब प्राणियोंका आत्मा और जो परम पद ब्रह्म है, वह प्रसन्न होकर मुझसे बात चीत करता था, मैंने भी उस जगत्के स्वामी लोकनाथके समीप सब प्राणियों पर कृपा करके इस प्रकारसे प्रार्थना की, कि हे प्रभो! तुम वसुदेवके पुत्र रूपसे मनुष्य लोकमें जन्म ग्रहण करो, असुरोंका वध करनेके निमित्त पृथ्वीमें अवतार लो। जो सब दैत्य, दानव और राक्षस लोग युद्धमें मारे गये हैं, वह घोर रूपसे महाबलवान् योद्धा मर्त्य लोकमें उत्पन्न हुए हैं, हे भगवन्! उन सबका बध करनेके निमित्त तुम बलवान् नरऋषिके सहित मनुष्य जन्म ग्रहण करके पृथ्वीमें भ्रमण करो। ऋषिसत्तम नर और नारायणको सम्पूर्ण देवता लोग यत्नवान् होकर भी युद्धमें नहीं जीत सकते। उन महातेजस्वी नर और नारायणके पृथ्वीमें उत्पन्न होने पर मूढ़ लोग उन्हें न जान सकेंगे। मैं जिसका आत्मज होकर सब जगतका प्रभु बना हूं, वह सब लोकोंके नाथ वासुदेव तुम सब लोकोंसे पूजित होनेके योग्य है। हे देवगण! उस महापराक्रमी शङ्ख, चक्र, गदाधारीको कभी मनुष्य कहके अवज्ञा करनी उचित नहीं है। वह परम गुह्य, परम पद, परब्रह्म, परम यश, अव्यक्त और शाश्वत हैं, उनको ही पुरुष कहके सब जानते और उनहीका मान करते हैं। विश्व-कर्म्मा उनको ही परम तेज, परम सुख और परम सत्य कहके वर्णन करते हैं। उस अमित पराक्रमी प्रभु वासुदेवको इन्द्र आदि सब देवता, असुर तथा कोई भी पुरुष मनुष्य कहकर उनकी अवज्ञा न करें। जो नीचबुद्धि पुरुष उन हृषीकेशको मनुष्य समझता है, उसको पण्डित लोग अधम पुरुष कहते हैं। जो उन महात्मा योगीश्वरको मनुष्य शरीर धारण करनेके कारण उनकी अवमानना करते हैं, लोकमें वे पापी कहे जाते हैं। उन सब प्राणियोंकी आत्मा श्रीवत्साङ्क, पद्मनाभको जो नहीं जान सकता है, वह लोकमें पापी कहा जाता है। जो कोई उन किरीट कौस्तुभधारी मित्रोंको अभय देनेवाले महात्माकी अवज्ञा करता है, वह घोर पापमें फंसता है। हे देवगण! सब लोक इन तीनों लोकके स्वामी वासुदेवको इसी प्रकारसे जान कर उन्हें नमस्कार करें।

भगवान् ब्रह्मा देवताओंसे ऐसा कहकर उन लोकोंके समीपसे उठकर अपने स्थानपर गये। अनन्तर देवता, गन्धर्व्व, अप्सरा और मुनि लोग ब्रह्माके मुखसे इस कथाको सुनकर प्रसन्न होकर स्वर्गको गये। हे पुत्र दुर्य्योधन! वासुदेवकी यह पुरानी कथा मैंने पूजनीय महात्मा ऋषियोंके मुखसे सुनी है। हे शास्त्र अर्थके तत्वको जाननेवाले! जामदग्न्य राम, बुद्धिमान् मार्कण्डेय, व्यास और नारदके निकटमें भी मैंने इस कथाको सुनी है। हे पुत्र दुर्य्योधन! जगत्के पिता ब्रह्मा जिनके आत्मज हैं; उन परमेश्वर, अव्यय, महात्मा कृष्णके इस विषयको सुनकर कौन मनुष्य उनकी पूजा नहीं करेगा? पहिले तुमको महात्मा ऋषियोंने निवारण किया था, कि तुम धनुर्धारी कृष्ण और पाण्डवोंके सङ्ग युद्ध करनेके निमित्त मत गमन करो, परन्तु तुम मोहमें पड़कर प्रकृत अर्थ नहीं समझ सकते हो, इससे मैं तुमको

निठुर राक्षस समझता हूं। और तुम्हारा चित्त तमोगुणसे युक्त है, क्योंकि तुम कृष्ण, पाण्डव और अर्ज्जुनसे द्वेष करते हो। दूसरा कौन पुरुष नर-नारायण ऋषिसे द्वेष कर सकता है? तुम कृष्णको शाश्वत, अव्यय, शास्ता, धाता, विश्वाधार, ध्रुव कहके निश्चय करो। वह तीनों लोकको धारण करते हैं, वही सब प्राणियोंके गुरु, प्रभु, योद्धा, जय, जेता, सबकी प्रकृति तथा सबहीके ईश्वर हैं। हे राजन्! वह सत्वगुणसे युक्त हैं, उनमें रजोगुण और तमोगुण नहीं है। जिस ओर कृष्ण हैं, वहां ही धर्म्म है; जहां धर्म्म है, वहां ही जय है। उनका आत्ममय योग-माहात्म्य पाण्डवोंको धारण किये हुए है, इससे पाण्डवोंही की जय होगी। जो पाण्डवोंको उत्तम बुद्धि प्रदान करते रहते हैं, वह युद्धमें भी उन लोगोंको बल प्रदान करते तथा भयसे भी उनकी रक्षा किया करते हैं। हे भारत। तुमने मुझसे जो कुछ पूछा, उसका कारण मैंने तुमसे वर्णन किया। जो पाण्डवोंके सहाय और वसुदेवके पुत्र करके विख्यात हैं, वह सब भूतमय, शाश्वत ईश और कल्याणसे युक्त हैं। उत्तम लक्षणसे युक्त ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र अपने अपने कर्म्ममें स्थित होके उनकी पूजा किया करते हैं। सङ्कर्षण बलदेव युगके आदि होनेपर कलियुगके पहिले शाश्वत भक्ति अवलम्बन करके जिनके चरितोंको गाया करते हैं, वह जगत्के स्वामी वासुदेव युग युगमें देव-लोक और मर्त्य-लोकके वासि-[illegible] और समुद्रमें [illegible] करते हैं।

[illegible] अध्याय समाप्त।

[illegible]

हैं, उनकी उत्पत्ति और स्थिति जाननेकी मुझे अभिलाषा हुई है।

भीष्म बोले; हे भारत! कृष्ण महा पराक्रमी और सब देवताओंके भी देवता हैं। उन पुण्डरीकाक्षसे श्रेष्ठ और कोई भी नहीं है। महामुनि मार्कण्डेय उनकी अद्भुत महिमा वर्णन करते हैं। सम्पूर्ण भूतोंकी आत्मा वह महात्मा अव्यय पुरुष जल, वायु, तेज और समस्त स्थावर जङ्गमको उत्पन्न करते हैं। सब लोकोंके प्रभु महात्मा पुरुषोत्तमदेव जलपर शयन करके पृथ्वीको उत्पन्न करते हैं। वह सब तेजोंसे युक्त देवोंके स्वामी योगबलसे जलके ऊपर शयन करते रहते हैं। वह महात्मा कृष्ण मुखसे अग्नि और प्राणसे वायु, वाणी और वेदोंको उत्पन्न करते हैं। इसी भांतिसे वह आरम्भमें देवता, ऋषि और प्रजाओंकी उत्पत्ति, मृत्यु, मृत्युके उपाय, और मृत्युके प्रयोजक यमराजको उत्पन्न करते हैं। वही धर्म्म, धर्म्मात्मा, वर देनेवाले और सर्व्व कामके दाता हैं; वही कर्त्ता और कार्य्य हैं, वही स्वयं आदिदेव और सबके प्रभु हैं। वह जनार्दन भूत, भविष्य और वर्त्तमान, ये तीनों काल, दोनों सन्ध्या, दिशा, आकाश और नियमोंको उत्पन्न करते हैं। वह अव्यय वरप्रद प्रभु ऋषि, तपस्या, विधाता और प्रजापतिकी उत्पत्ति करते हैं, और सब प्राणियोंमें अपराजेय बलदेवको उत्पन्न करते हैं। जिसको सम्पूर्ण लोक अनन्त समझता है जो समस्त प्राणियोंके सहित इस पृथ्वीको धारण करता है, उस शेष नागको भी वही उत्पन्न करते हैं। महा तेजस्वी ब्राह्मण और इस [illegible] ध्यानसे जान सकते हैं। [illegible] पुरुषोत्तम [illegible] उत्पन्न [illegible] पराक्रमी [illegible] मधु नामक [illegible]

ऋषि लोग उनको मधुसूदन कहते हैं। वही बाराह, नृसिंह, त्रिविक्रम, गति और सबके प्रभु हैं; वही हरि सबके माता और पिता हैं। उस पुण्डरीकाक्षसे श्रेष्ठ न कोई हुआ और न भविष्यमें होगा। वह मुखसे ब्राह्मण, बाहुसे क्षत्रिय, ऊरुसे वैश्य और अपने चरणोंसे शूद्रोंको उत्पन्न करते हैं। अमावस्या और पूर्णमासीके दिन तपस्यामें रत होकर परिचर्य्या करनेसे सबके उत्पन्न करनेवाले उस योगात्मा केशवको मनुष्य प्राप्त कर सकते हैं। वह कृष्ण परम तेजस्वी और स्थावर जङ्गमात्मक सबके प्रभु हैं। मुनि लोग जिसे हृषीकेश कहते हैं; उसको ही आचार्य्य पिता और गुरु जानना चाहिये। वह कृष्ण जिसपर प्रसन्न होते हैं; उसे अक्षय लोक प्राप्त होता है। जो मनुष्य भयसे विकल होके उनकी शरणमें जाते हैं; उनको मोह नहीं प्राप्त होता, वही जनार्दन महा भयमें पड़े हुए मनुष्योंको परित्राण करते हैं। हे राजन्! राजा युधिष्ठिर उस महाभाग जगत्के प्रभु योगेश्वर कृष्णको इसी प्रकारसे जान कर, सब भांति तथा सर्व्व प्रयत्नसे उनके शरणागत हुए हैं।

६४ अध्याय समाप्त।

भीष्म बोले, हे महाराज! ब्रह्मर्षि और देवताओंने पहिले समय पृथ्वीमें श्रीकृष्णको जिस प्रकारसे वर्णन किया था, उस वेद स्वरूप स्तुतिको तुम मुझसे सुनो। नारद ऋषिने कृष्णको लोकभावन, भावज्ञ, साध्य और सब देवताओंका प्रभु और देवताओंका ईश्वर कहके वर्णन किया है। मार्कण्डेय मुनिने यज्ञके यज्ञ, तपस्याकी भी तपस्या और भूत, भविष्य, वर्त्तमान कहा है। भगवान् भृगुने उन्हें देवोंके देव और उनके रूपहीको विष्णुका पुरातन परमरूप कहा है। महर्षि द्वैपायनने उन्हें इन्द्रके स्थापन करनेवाले, वसुओंमें वासुदेव और देवोंके देव कहके वर्णन किया है। अङ्गिरा मुनिने पहिले प्रजापतिकी सृष्टिके समयमें उन्हें सब जगत्के उत्पन्न करनेवाले दक्ष प्रजापति कहके वर्णन किया था। असित और देवल मुनिने कहा है, कि अव्यक्त तुम्हारे शरीर और व्यक्त तुम्हारे मनमें स्थित हैं, तुम देवोंकी उत्पत्तिके स्थान हो; तपस्यासे जिन पुरुषों[illegible] आत्मा शुद्ध है, वही तुमको जानते हैं, तुम्हारा सिर अन्तरिक्ष, तुम्हारी दोनों भु[illegible]ओंसे पृथ्वी धारण की हुई है और तुम्हा[illegible] जठर तीनों लोक हुआ है, तुम सनातन पु[illegible] हो। सनत्कुमार आदि योगज्ञ ऋषि [illegible] उस पुरुषोत्तम भगवान्की सदा पूजा क[illegible] रहते हैं और इस भांतिसे उनकी स्[illegible] करते हैं;—हे मधुसूदन! आत्माके दर्श[illegible] तृप्त जो सब ऋषि हैं, और युद्धमें अपराजित सब उदार स्वभावके राजर्षि हैं, उन सब लो[illegible] तथा सम्पूर्ण धर्म्मात्मा पुरुषोंकी तुम ही ग[illegible] और तुम ही नित्य हो। हे पुत्र! तुमसे [illegible] कृष्णकी कथा सक्षेप रूप और विस्तारके क्र[illegible] कही, इससे तुम प्रसन्न होकर प्रीति पूर्व्व[illegible] कृष्णकी शरणमें जाओ।

सञ्जय बोले, महाराज! दुर्य्योधनने इ[illegible] पुण्य उपाख्यानको सुनकर कृष्ण और महारथ पाण्डवोंको श्रेष्ठ समझा। हे राजन्! शान्तनुनन्दन भीष्म दुर्य्योधनसे फिर बोले, हे पुत्र! तुमने महात्मा कृष्णका माहात्म्य सुना, और जिस नर पुरुषका विषय तुमने मुझसे पूछा था, जिस कारणसे नर और नारायण दोनों ऋषि मर्त्यलोकमें उत्पन्न हुए हैं और जिस कारणसे वे दोनों महात्मा युद्धमें अपराजित और पाण्डव लोग किसीसे भी बध्य नहीं हैं, वह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुमने सुना। हे राजेन्द्र! कृष्ण उन यशस्वी पाण्डवोंसे बहुत ही प्रीतिसे युक्त हैं; इस ही निमित्त मैं कहता

हूं, कि तुम पाण्डवोंके संगमें सन्धि करो, तुम बलवान् भाइयोंके सहित प्रजाका शासन करते हुए पृथ्वीका भोग करो। नर-नारायणकी अवज्ञा करनेसे भाइयोंके सहित तुम्हारा नाश होजावेगा। हे प्रजानाथ! तुम्हारे पिता भीष्म ऐसा वचन कहके चुप होगये; फिर दुर्य्योधनके समीपसे जाकर शयन किया। राजा दुर्य्योधनने भी महात्माओंको प्रणाम कर शिविरमें जाके दिव्य शय्यापर शयन करके रात्रि व्यतीत की।

६५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! जब रात्रि बीत गई और सूर्य्य उदय हुआ, तब दोनों ओरकी सेनाओंने युद्धके निमित्त यात्रा की। वह सब रणभूमिमें एकत्रित होकर एक दूसरेको अवलोकनकर क्रोधपूर्व्वक एक दूसरेकी ओर दौड़े। तुम्हारी अनीतिसे ही कौरव और पाण्डव लोग व्यूह बांधकर प्रसन्नतापूर्व्वक युद्धमें प्रवृत्त हुए। भीष्म मकरव्यूह बनाकर चारों ओरसे निज सेनाकी रक्षा करने लगे। पाण्डव लोग भी अपनी सेनाका व्यूह बनाकर युद्धमें प्रवृत्त हुए। भीष्म पितामह रथियोंके समूहमें घिरकर अनेक रथ और सेनाके सहित युद्धके निमित्त आगे चले। इनमें सब रथी घुड़सवार, गजपति और पैदल चलनेवाले योद्धा लोग उनके अनुगामी हुए। तब पाण्डव लोग उनको देखके शत्रुओंसे [illegible] अपनी सेनाका श्येन-व्यूह बनाकर युद्धके निमित्त उद्यत हुए। उस [illegible] महा बलवान् भीमसेन [illegible] और धृष्ट-द्युम्न और शिखण्डी [illegible] पराक्रमी [illegible]

अक्षौहिणी सेना लेकर उसके बायें पक्ष पर स्थित हुए और केकयराज एक अक्षौहिणी सेनाके सहित उसके दहिने पक्षपर स्थित हुए। द्रौपदीके पुत्र और पराक्रमी अभिमन्यु, उसके पृष्ठरक्षक हुए। राजा युधिष्ठिर स्वयं दोनों भाइयों (नकुल सहदेव) के सहित उसके पीछे स्थित हुए। अनन्तर भीमसेनने मकरव्यूहके मुखमें प्रवेश कर भीष्मके समीप गमन कर उनके ऊपर बाणोंकी वर्षा करके उन्हें छिपा दिया। पराक्रमी भीष्म भी पाण्डवोंकी व्यूहबद्ध सेनाको मोहित करते हुए महा अस्त्रोंको चलाने लगे। तब सेनाको भीष्मके बाणोंसे मोहित देखकर अर्ज्जुनने शीघ्रतासे भीष्मके सम्मुख जाके एक सहस्र बाणोंसे उनको प्रहार किया; और भीष्मके चलाये हुए अस्त्रोंको विदारण करके निज सेनाको हर्षित करते हुए युद्ध करने लगे। इसके अनन्तर बलवानोंमें श्रेष्ठ राजा दुर्य्योधन जो पहिले कई एक भाइयों और सैनिक पुरुषोंका नाश देख चुके थे, उस ही कारणसे वह शीघ्रतापूर्व्वक द्रोणाचार्य्यके निकट जाके बोले, हे धर्म्मात्मा आचार्य्य! तुम सदा हमारे हितकी अभिलाषा करते रहते हो, मैं तुम्हारे और पितामह भीष्मके आसरेसे देवताओंको भी युद्धमें जीतनेकी अभिलाषा कर सकता हूं, इसमें कुछ सन्देह नहीं है। तब जो वीर्य्यहीन और पराक्रम रहित पाण्डवोंको युद्धमें पराजित करूंगा, उसकी बात ही क्या है? इससे तुम्हारे पक्षमें शुभ होवे, जिस प्रकारसे पाण्डवोंका वध होवे तुम वही उपाय करो। द्रोणाचार्य्य रणभूमिमें दुर्य्योधनका वचन सुन कर सात्यकिके आगे ही पाण्डवोंकी सेनापर शस्त्रप्रहार करने लगे, तब सात्यकि द्रोणाचार्य्यके निवारण करनेमें प्रवृत्त हुए। तब द्रोण [illegible]

कोखेको अपने दश बाणोंसे बिद्ध किया। अनन्तर भीमसेन क्रुद्ध होकर शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यसे सात्यकिकी रक्षा करनेके निमित्त उनके ऊपर बाणोंकी वर्षा करने लगे। इसके अनन्तर द्रोणाचार्य्य, भीष्म और शल्यने क्रुद्ध होकर भीमसेनको अपने बाणोंसे छिपा दिया। तब अभिमन्यु और द्रौपदीके पुत्रलोग क्रुद्ध होकर शस्त्रधारी द्रोणाचार्य्य आदिको शिला पर घिसे हुए चोखे बाणोंसे विद्ध करने लगे। महाधनुर्द्धारी शिखण्डी भी द्रोणाचार्य्य और भीष्मको क्रुद्ध होकर युद्धके निमित्त आया हुआ देखकर उनके सम्मुख हुए, और बादलके समान धनुष ग्रहण करके सूर्य्यके समान तेजस्वी भीष्म और द्रोणाचार्य्यको अपने बाणोंसे छिपा दिया। भीष्म पितामहने युद्धमें शिखण्डीको स्त्री बनाकर उसके ऊपर शस्त्र नहीं चलाया। तब दुर्य्योधनकी आज्ञासे द्रोणाचार्य्य वहां पर भीष्मकी रक्षा करनेके निमित्त शिखण्डीके सम्मुख उपस्थित हुए। शिखण्डीने प्रलयकालकी अग्निके समान शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यको सम्मुख आया हुआ देख, भयभीत होके भीष्मको त्याग कर वहांसे प्रस्थान किया। फिर दुर्य्योधन बहुतसी सेना लेकर भीष्मकी रक्षा करनेमें प्रवृत्त हुए और पाण्डव लोग अर्ज्जुनको आगे करके विजयके निमित्त भीष्मके निकट उपस्थित हुए। अत्यन्त अद्भुत यश और विजयकी इच्छा करनेवाले दोनों ओरकी सेनाके वीरोंका देवता और दानवोंके युद्धके समान महाघोर संग्राम आरम्भ हुआ।

९९ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! शान्तनुनन्दन भीष्म तुम्हारे पुत्रोंका भीमसेनसे परित्राण करनेके निमित्त महाघोर युद्ध करने लगे। दिनके पूर्वाह्न समयमें कौरव और पाण्डवोंकी सेनाका महादारुण युद्ध होने लगा, उससे मुख्य मुख्य वीरोंका प्राण नाश हुआ। उस अत्यन्त भयङ्कर युद्धमें वीरोंका घोर शब्द आकाश तक गूंजने लगा, बड़े बड़े हाथी चिङ्घाड़ मारने लगे, घोड़ोंके हिन हिनाने और शङ्ख, भेरी, मृदङ्ग आदिके शब्दसे महाघोर शब्द उत्पन्न हुआ। युद्धके चाहनेवाले महाबली वीर लोग आपसमें तर्ज्जन गर्ज्जन करने लगे; चोखे बाणोंसे वीरोंके सिर कटके इस भांति पृथ्वीमें गिरने लगे, मानो आकाशसे शिलाकी वर्षा होने लगी। बाणोंके लगनेसे मुकुट और कुण्डलोंसे युक्त सिर, हाथके भूषण तथा और बहुतसे आभूषणोंसे युक्त वीरोंके शरीरसे पृथ्वी छिप गई। कवचयुक्त शरीर भूषणोंसे भूषित भुजा, चन्द्रमाके समान प्रकाशमान देह, लाल नेत्रसे युक्त मस्तकोंसे मुहूर्त्त भरमें सम्पूर्ण रणभूमि भर गई। बहुतसे वीररूप मेघ, शस्त्ररूपी बिजली, अस्त्र शस्त्रोंका शब्द मानों बादलोंके शब्दके समान बोध होने लगा। हे भारत! कुरुपाण्डवोंके उस महाघोर युद्धमें मानो शोणितका तालाव उत्पन्न हुआ। युद्धमें मतवारे क्षत्रिय शूर वीर योद्धा रोवोंके खड़े करनेवाले महाघोर बहुतसे बाणोंकी वर्षा करने लगे। दोनों सेनाओंके हाथी शूरवीरोंके शस्त्रोंकी चोटसे विकल होके चिङ्घाड़ मारने लगे। हाथियोंके शब्द वीरोंके धनुष टङ्कार और पदलाणके शब्दसे कुछ भी नहीं बोध होता था। सब ओर रणभूमिमें रुधिरका तालाव भर गया, कबन्ध उठ उठ शस्त्र लेके दौड़ने लगे, इस प्रकारकी रणभूमिमें राजा लोग शत्रुओंके बधके निमित्त चारों ओर घूमने लगे। बड़े बड़े तेजस्वी शूरवीर बाण, शक्ति, गदा और तलवार ग्रहण करके युद्धमें एक दूसरेको मारने लगे, सवारोंसे रहित हाथी घोड़े बाणोंसे विद्ध होकर

चारों ओर भागने लगे । दोनों सेनाके योद्धाओंमेंसे बहुतेरे पुरुष शस्त्रोंकी चोटसे पीड़ित होकर पृथ्वीमें गिरने लगे । भीष्म और भीमसेनके युद्धमें भुजा, शिर, धनुष, गदा, परिघ, खड्ग, पांव और भूषणोंके ढेरके ढेर सब ओर रणभूमिमें दिखाई देने लगे । जगह जगह दौड़ते हुए हाथी, घोड़े और रथोंका आपसमें टक्कर होने लगे । क्षत्रिय लोग कालके वशमें होकर गदा, प्रास, शक्ति, तलवार और चोखे बाणोंसे एक दूसरेका वध करने लगे । बहुतेरे बाहुयुद्धमें निपुण वीर लोहमयी भुजाओंसे ठौर ठौर युद्ध करने लगे । दोनों ओरके बहुतसे घोर लात, मुक्के और थप्पड़ोंसे एक दूसरेको मारने लगे । बहुतसे शूरवीर योद्धा जगह जगह शस्त्रोंकी चोटसे पृथ्वीमें गिरते पड़ते और चेष्टारहित होकर भी फिर महा घोर युद्ध करने लगते थे । बहुतसे रथी रथ रहित होकर उत्तम तलवार मियानसे खींच एक दूसरेके वध करनेकी इच्छासे दौड़ने लगे । तिसके अनन्तर राजा दुर्य्योधनने बहुतसे कलिंग-देशीय वीरोंसे युक्त होकर भीष्मको आगेकर पाण्डवोंकी ओर गमन किया । पाण्डव लोग भी क्रुद्ध होकर भीमसेनको आगे करके वेग शील वाहनोंपर चढ़के भीष्मके सम्मुख आपहुंचे ।

४८ अध्याय समाप्त ।

सञ्जय बोले, हे राजन् ! अर्जुन अपने भाइयों तथा दूसरे राजाओंको भीष्मके संग [illegible] देखकर धनुष ग्रहण करके [illegible] । [illegible] शब्द [illegible] और [illegible] आकाशमें [illegible] और [illegible]

मानके चिह्नसे युक्त सिंहकी पूंछकी भांति अनेक रूपसे युक्त वृक्षकी समान वृक्ष आदिसे कहीं भी न रुकनेवाली उस अलौकिक ध्वजाको मैंने अवलोकन किया । उस संग्राममें योद्धा लोग उनके सुवर्ण चर्चित गाण्डीव धनुषको आकाशमें बादलोंके बीच रहनेवाली बिजलीकी भांति देखने लगे । तुम्हारी सेनाका वध करनेके समय वह बहुत ही गर्ज्जने लगे और उनके दोनों पद त्राणका शब्द सुनाई देने लगा । जिस भांति प्रचण्ड वायुकी सहायतासे गर्ज्जता हुआ बिजलीसे युक्त मेघ सब ओर पानीकी वर्षा करता है, उसी भांतिसे वह बाणोंकी वर्षासे सब दिशाओंको पूरित करने लगे । वह भयङ्कर अस्त्रोंको वर्षाते हुए भीष्मकी ओर दौड़े, उनके चलाये हुए अस्त्रोंसे मोहित होकर हम लोगोंको पूरब, पश्चिम आदि दिशाओंका भी ज्ञान न रहा । हे भारत ! तुम्हारी सेनाके योद्धाओंमें कितनोंके वाहन थक गये और कितनोंके वाहन शस्त्रोंसे मरके पृथ्वीपर गिर गये, वह लोग भयभीत होके आपसमें एक दूसरेको मारते और मरते हुए दिशाके ज्ञानसे रहित होकर तुम्हारे सब पुत्रोंके सहित भीष्मके शरणागत हुए । उस युद्धमें भीष्म ही उन लोगोंके परित्राण करनेवाले हुए । उस समय भयभीत होके रथी रथसे, घुड़सवार घोड़ोंकी पीठसे और पैदल चलनेवाले वीर शस्त्रोंकी चोटसे मरकर पृथ्वीमें गिरने लगे । हे भारत ! वज्रके समान गाण्डीव धनुषका शब्द सुनकर सम्पूर्ण सेना भयसे पीड़ित होकर किसी उत्तम भांतिसे रक्षित स्थानपर नाहीं ठहरी । हे प्रजानाथ ! तब मद्र, गान्धार, त्रिगर्त्त और सम्पूर्ण कलिङ्ग देशीय [illegible] सहित [illegible] [illegible] करनेवाले बहुतसे [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible]

कोखेको अपने दश बाणोंसे बिद्ध किया। अनन्तर भीमसेन क्रुद्ध होकर शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यसे सात्यकिकी रक्षा करनेके निमित्त उनके ऊपर बाणोंकी वर्षा करने लगे। इसके अनन्तर द्रोणाचार्य्य, भीष्म और शल्यने क्रुद्ध होकर भीमसेनको अपने बाणोंसे छिपा दिया। तब अभिमन्यु और द्रौपदीके पुत्रलोग क्रुद्ध होकर शस्त्रधारी द्रोणाचार्य्य आदिको शिला पर घिसे हुए चोखे बाणोंसे विद्ध करने लगे। महाधनुर्द्धारी शिखण्डी भी द्रोणाचार्य्य और भीष्मको क्रुद्ध होकर युद्धके निमित्त आया हुआ देखकर उनके सम्मुख हुए, और बादलके समान धनुष ग्रहण करके सूर्य्यके समान तेजस्वी भीष्म और द्रोणाचार्य्यको अपने बाणोंसे छिपा दिया। भीष्म पितामहने युद्धमें शिखण्डीको स्त्री बनाकर उसके ऊपर शस्त्र नहीं चलाया। तब दुर्य्योधनकी आज्ञासे द्रोणाचार्य्य वहां पर भीष्मकी रक्षा करनेके निमित्त शिखण्डीके सम्मुख उपस्थित हुए। शिखण्डीने प्रलयकालकी अग्निके समान शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यको सम्मुख आया हुआ देख, भयभीत होके भीष्मको त्याग कर वहांसे प्रस्थान किया। फिर दुर्य्योधन बहुतसी सेना लेकर भीष्मकी रक्षा करनेमें प्रवृत्त हुए और पाण्डव लोग अर्जुनको आगे करके विजयके निमित्त भीष्मके निकट उपस्थित हुए। अत्यन्त अद्भुत यश और विजयकी इच्छा करनेवाले दोनों ओरकी सेनाके वीरोंका देवता और दानवोंके युद्धके समान महाघोर संग्राम आरम्भ हुआ।

९९ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! शान्तनुनन्दन भीष्म तुम्हारे पुत्रोंका भीमसेनसे परित्राण करनेके निमित्त महाघोर युद्ध करने लगे। दिनके पूर्वाह्ण समयमें कौरव और पाण्डवोंकी सेनाका महादारुण युद्ध होने लगा, उससे मुख्य मुख्य वीरोंका प्राण नाश हुआ। उस अत्यन्त भयङ्कर युद्धमें वीरोंका घोर शब्द आकाश तक गूंजने लगा, बड़े बड़े हाथी चिङ्घाड़ मारने लगे, घोड़ोंके हिन हिनाने और शङ्ख, भेरी, मृदङ्ग आदिके शब्दसे महाघोर शब्द उत्पन्न हुआ। युद्धके चाहनेवाले महाबली वीर लोग आपसमें तर्ज्जन गर्ज्जन करने लगे; चोखे बाणोंसे वीरोंके सिर कटके इस भांति पृथ्वीमें गिरने लगे, मानो आकाशसे शिलाकी वर्षा होने लगी। बाणोंके लगनेसे मुकुट और कुण्डलोंसे युक्त सिर, हाथके भूषण तथा और बहुतसे आभूषणोंसे युक्त वीरोंके शरीरसे पृथ्वी छिप गई। कवचयुक्त शरीर भूषणोंसे भूषित भुजा, चन्द्रमाके समान प्रकाशमान देह, लाल नेत्रसे युक्त मस्तकोंसे मुहूर्त्त भरमें सम्पूर्ण रणभूमि भर गई। बहुतसे वीररूप मेघ, शस्त्ररूपी विजली, अस्त्र शस्त्रोंका शब्द मानों बादलोंके शब्दके समान बोध होने लगा। हे भारत! कुरुपाण्डवोंके उस महाघोर युद्धमें मानो शोणितका तालाव उत्पन्न हुआ। युद्धमें मतवारे क्षत्रिय शूर वीर योद्धा रोवोंके खड़े करनेवाले महाघोर बहुतसे बाणोंकी वर्षा करने लगे। दोनों सेनाओंके हाथी शूरवीरोंके शस्त्रोंकी चोटसे विकल होके चिङ्घाड़ मारने लगे। हाथियोंके शब्द वीरोंके धनुष टङ्कार और पदत्राणके शब्दसे कुछ भी नहीं बोध होता था। सब ओर रणभूमिमें रुधिरका तालाव भर गया, कवन्ध उठ उठ शस्त्र लेके दौड़ने लगे, इस प्रकारकी रणभूमिमें राजा लोग शत्रुओंके बधके निमित्त चारों ओर घूमने लगे। बडे बड़े तेजस्वी शूर-वीर बाण, शक्ति, गदा और तलवार ग्रहण करके युद्धमें एक दूसरेको मारने लगे, सवा-रोंसे रहित हाथी घोड़े बाणोंसे विद्ध होकर

चारों ओर भागने लगे । दोनों सेनाके योद्धाओंमेंसे बहुतेरे पुरुष शस्त्रोंकी चोटसे पीड़ित होकर पृथ्वीमें गिरने लगे । भीष्म और भीमसेनके युद्धमें भुजा, शिर, धनुष, गदा, परिघ, खड्ग, पांव और भूषणोंके ढेरके ढेर सब ओर रणभूमिमें दिखाई देने लगे । जगह जगह दौड़ते हुए हाथी, घोड़े और रथोंका आपसमें टक्कर होने लगी । क्षत्रिय लोग कालके वशमें होकर गदा, प्रास, शक्ति, तलवार और चोखे बाणोंसे एक दूसरेका बध करने लगे । बहुतेरे बाहुयुद्धमें निपुण वीर लोहमयी भुजाओंसे ठौर ठौर युद्ध करने लगे । दोनों ओरके बहुतसे वीर लात, मुक्के और थप्पड़ोंसे एक दूसरेको मारने लगे । बहुतसे शूरवीर योद्धा जगह जगह शस्त्रोंकी चोटसे पृथ्वीमें गिरते उठते और चेष्टारहित होकर भी फिर महा घोर युद्ध करने लगते थे । बहुतसे रथी रथ रहित होकर उत्तम तलवार मियानसे खींच एक दूसरेके बध करनेकी इच्छासे दौड़ने लगे । तिसके अनन्तर राजा दुर्य्योधनने बहुतसे कलिंग-देशीय वीरोंसे युक्त होकर भीष्मको आगेकर पाण्डवोंकी ओर गमन किया । पाण्डव लोग भी क्रुद्ध होकर भीमसेनको आगे करके वेग शील वाहनोंपर चढ़के भीष्मके सम्मुख आपहुंचे ।

९७ अध्याय समाप्त ।

सञ्जय बोले, हे राजन् ! अर्ज्जुन अपने भाइयों तथा दूसरे राजाओंको भीष्मके संग युद्ध करते हुए देखकर धनुष ग्रहण करके भीष्मकी ओर आपहुंचे । पाञ्चजन्य शङ्खका शब्द अर्ज्जुनके गाण्डीव धनुषका टङ्कार सुनके और उनके रथकी ध्वजाको देखकर हम लोग भयभीत होगये । अर्ज्जुनकी आकाशतक जलते हुए पर्व्वतके समान, दिव्य, चित्रित और हनुमानके चित्रसे युक्त सिंहकी पूंछकी भांति अनेक रूपसे धुंएके समान वृक्ष आदिसे कहीं भी न रुकनेवाली उस अलौकिक ध्वजाको मैंने अवलोकन किया । उस संग्राममें योद्धा लोग उनके सुवर्ण चर्चित गाण्डीव धनुषको आकाशमें बादलोंके बीच रहनेवाली बिजलीकी भांति देखने लगे । तुम्हारी सेनाका बध करनेके समय वह बहुत ही गर्ज्जने लगे और उनके दोनों पद तालका शब्द सुनाई देने लगा । जिस भांति प्रचण्ड वायुकी सहायतासे गर्ज्जता हुआ बिजलीसे युक्त मेघ सब ओर पानीकी वर्षा करता है, उसी भांतिसे वह बाणोंकी वर्षासे सब दिशाओंको पूरित करने लगे । वह भयङ्कर अस्त्रोंको वर्षाते हुए भीष्मकी ओर दौड़े, उनके चलाये हुए अस्त्रोंसे मोहित होकर हम लोगोंको पूरब, पश्चिम आदि दिशाओंका भी ज्ञान न रहा । हे भारत ! तुम्हारी सेनाके योद्धाओंमें कितनोंके वाहन थक गये और कितनोंके वाहन शस्त्रोंसे मरके पृथ्वीपर गिर गये, वह लोग भयभीत होके आपसमें एक दूसरेको मारते और मरते हुए दिशाके ज्ञानसे रहित होकर तुम्हारे सब पुत्रोंके सहित भीष्मके शरणागत हुए । उस युद्धमें भीष्म ही उन लोगोंके परित्राण करनेवाले हुए । उस समय भयभीत होके रथी रथसे, घुड़सवार घोड़ोंकी पीठसे और पैदल चलनेवाले वीर शस्त्रोंकी चोटसे मरकर पृथ्वीमें गिरने लगे । हे भारत ! वज्रके समान गाण्डीव धनुषका शब्द सुनकर सम्पूर्ण सेना भयसे पीड़ित होकर किसी उत्तम भांतिसे रक्षित स्थानपर जाके ठहरी । हे प्रजानाथ ! तब मद्र, गान्धार, त्रिगर्त्त और सम्पूर्ण कलिङ्गदेशीय मुख्य मुख्य योद्धाओंके सहित काम्बोजदेशीय शीघ्र गमन करनेवाले बहुतसे घोड़े और कई हजार गोप तथा गोपयन सेनाके सङ्ग कलिङ्गराज, नाना भांतिके मनुष्योंके समूहसे युक्त होकर सम्पूर्ण राजाओंके सहित दुःशासन

प्रमुख, राजा जयद्रथ और चौदह हजार मुख्य मुख्य घुड़सवार दुर्य्योधनकी आज्ञासे सुवलपुत्र शकुनिको घेर कर उनकी रक्षा करनेके निमित्त स्थित हुए। हे भारत! अनन्तर पाण्डवलोग रथ तथा दूसरे वाहनों पर चढ़के एकत्रित हो तथा पृथक् पृथक् होके तुम्हारी सेनाके वीरोंका बध करने लगे। उस रण-भूमिमें रथी, हाथी, घोड़े और पैदलोंके वेगसे चलनेसे ऐसी धूलि उड़ी कि मानो आकाशमें बादलोंका समूह दिखाई देरहा हो। भीम तोमर, प्रास, बाण, हाथी, घोड़े और रथियोंकी सेना सङ्ग लेके अर्ज्जुनके सङ्ग युद्ध करने लगे। अवन्तिराज काशिराजसे, सिन्धुराजसे भीमसेन, पुत्र और सेवकोंके सहित अजातशत्रु राजा युधिष्ठिरने मद्रराज शल्यसे, विकर्ण सहदेवसे, और चित्रसेन शिखण्डीसे युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। हे प्रजानाथ! मत्स्य-देशीय योद्धा दुर्य्योधन और शकुनिके संग युद्ध करने लगे। द्रुपद, चेकितान और महारथ सात्यकिपुत्र सहित महात्मा द्रोणाचार्य्यसे युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए; कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा;—ये दोनों धृष्टकेतुसे युद्ध करनेके निमित्त आगे बढ़े; दूसी भांतिसे जगह जगह दलके दल रणभूमिमें भ्रमण करनेवाले, हाथी, घोड़े और रथियोंने आपसमें युद्ध करना आरम्भ किया। हे राजन्! उस समय विना बादलके बिजली, और भयानक शब्दके सहित उल्कापात होने लगा, वायु बड़े वेगसे बहने लगा और रुधिरकी वर्षा होने लगी। सूर्य्य सेनाके पांवकी धूलिसे आकाश-मण्डलमें छिप गये, सब दिशाओंमें धूलि व्याप्त होगई। शूरवीरोंके अस्त्रोंके सङ्ग वायुसे उड़ती हुई वह सम्पूर्ण धूलि सैनिक पुरुषोंको मोहित करने लगी। वीरोंकी भुजाओंसे छूटे हुए सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्रोंका भयङ्कर शब्द होने लगा। तारोंके समान प्रकाशमान शस्त्र वीरोंकी भुजा-ओंसे छूट कर आकाशमण्डलको प्रकाशित करने लगे। सुवर्णकी जालोंसे भूषित विचित्र ढाल सब ओर रणभूमिमें कट कर गिरने लगीं। महारथियोंके रथके चक्के, धुरी आदि टूटके गिरने लगे। योद्धाओंके शरीर और शिर प्रकाशमान तलवारोंसे कटके पृथ्वीमें गिरने लगे, रथकी ध्वजाएं कटने लगीं और घोड़ोंके मरनेसे महारथी योद्धा लोग जगह जगह पृथ्वी पर पैदल चलते हुए दिखाई देने लगे। बहुतसे रथियोंके मारे जाने पर उनके रथके घोड़े शस्त्रोंसे क्षत विक्षत शरीर होके खाली ही रथको लेके दौड़ते हुए पृथ्वी गिरने लगे। जगह जगह बहुतसे उत्तम घोड़े बाणोंसे पीड़ित होके भी रथोंको खींच लगे, उस रणभूमिमें एक बलवान् हाथी मैंने सारथी, घोड़े और रथके सहित बहुत रथियोंको मरते हुए देखा। युद्धके निमि तैयार हुई सेनाओंके बीचसे बहुतसे हा दूसरे मद चूते हुए हाथियोंके समीप जा उन्हें सूंघके चिङ्घाड़ मारने लगे। ध्व तथा पीलवानोंके सहित बहुतसे हाथि और बाणोंकी चोटसे मरे हुए पुरुषों रणभूमिकी पृथ्वी भर गई। अङ्कु देके चलाये जाने पर बहुतेरे हाथी युद्ध शस्त्रोंसे कट कर पृथ्वीमें गिरने लगे हे राजन्! अनेक हाथी हस्तिराजके समान रथोंको सूंड़से फेंक कर पांवके चूर्ण करके रथियोंको उठाकर दूर फेंकने लगे और बड़े बड़े अनेक हाथी दूसरे रथोंको तोड़ने और नाना भांतिसे भयानक शब्द करते हुए सब दिशाओंमें गमन करने लगे। उन सम्पूर्ण हाथियोंकी रथ आकर्षण करते हुए गमन करनेके समयमें ऐसी शोभा हुई, जैसे मतवारे हाथी तालावमें कमलोंके समूहको तोड़ते हुए प्रकाशित होते हैं। दूसी प्रकारसे वह रणभूमि घोड़े, हाथी, पैदल और रथोंकी ध्वजा, तथा रथियोंके मरके गिर-

नेसे पूरित होगई और रथोंके चलनेका मार्ग बन्द होगया।

६८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् शिखण्डीने मत्स्य-राज विराटके सहित अत्यन्त पराक्रमी महा-धनुर्द्धर भीष्मके समीप गमन किया। अर्जुन द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, विकर्ण, अनुयायी और बन्धुओंसे युक्त महाधनुर्द्धारी सिन्धुराज जयद्रथ, पूर्व्व, पश्चिम और दक्षिणदेशीय राजाओं तथा और बहुतसे महाधनुर्द्धारी बलवान् शूरवीर क्षत्रियोंके संग युद्ध करनेके निमित्त आगे बढ़े। भीमसेन तुम्हारे पुत्र क्रुद्धस्वभाव महा धनुर्द्धर दुर्य्योधन और दुःसहके संग युद्धमें प्रवृत्त हुए। सहदेव महाधनुर्द्धारी शकुनि और उनके पुत्र उलूकके संग युद्ध करने लगे। महाराज युधिष्ठिरने दुर्य्योधनकी हाथियोंकी सेनाके संग युद्ध करनेके निमित्त गमन किया। युद्धमें शत्रुओंको रुलानेवाले माद्रीपुत्र नकुलने त्रिगर्त्त देशीय योद्धाओंके सग युद्ध आरम्भ किया। युद्धमें पराक्रम करनेवाले बलवान् सात्यकि, चेकितान और अभिमन्यु शाल्व और केकय देशीय योद्धाओंके सङ्ग युद्धमें प्रवृत्त हुए। धृष्टकेतु और राक्षस घटोत्कच दुर्य्योधन-की रथसेनाके सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते आगे बढ़े। सेनापति महारथ धृष्टद्युम्न महापरा-क्रमी द्रोणाचार्य्यसे युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। इसी प्रकारसे दोनों ओरके शूरवीर योद्धा लोग आपसमें एक दूसरेके सम्मुख होकर युद्ध करने लगे। जिस समय दोपहरके अनन्तर सूर्य्यके तेजसे सम्पूर्ण आकाशमण्डल तप रहा था, उस ही समय कौरव और पाण्डव लोग आपसमें एक दूसरेका वध करने लगे। ध्वजा पताकासे युक्त सुवर्ण-चर्चित रथ रणभूमिमें भ्रमण करते हुए प्रकाशित होने लगे, और सिंहके समान शूरवीरोंके नादसे तुमुल शब्द होता था। कौरव और सृञ्जयोंका महाघोर दारुण युद्ध में दिखने लगा। चारों ओरसे अस्त्र शस्त्र तथा बाणोंके चलनेसे आकाश, सूर्य्य, दिशा, विदिशा कुछ भी नहीं दीख पड़ता था। शूरवीरोंके चलाये हुए उत्तम तोमर, बाण, शक्तिके प्रकाश और विचित्र कवच तथा भूषणोंके प्रकाशसे आकाश प्रकाशित होने लगा। उस समय राजा लोग सूर्य्य-चन्द्रमाके समान प्रकाशमान शरीरसे रणभूमिमें प्रकाशित होने लगे। पुरुष-सिंह रथियोंका स्वरूप आकाश-मण्डलके तारा पुञ्जकी भांति प्रकाशित हुआ।

हे भारत। रथियोंमें श्रेष्ठ भीष्म क्रुद्ध होकर सम्पूर्ण सेनाके सम्मुख हो भीमसेनको निवारण करने लगे। भीष्मके चलाये हुए रुक्म पङ्ख, शिला पर घिसे और तेलसे माजे हुए बाण भीमसेनको पीड़ित करने लगे। महा बलवान् भीमसेनने क्रुद्ध होकर भीष्म पितामहके ऊपर शक्ति चलाई, उस रुक्म दण्डवाली प्रचण्ड शक्ति-को सम्मुख आती हुई देखकर भीष्मने तीन बाणोंसे उसे काट कर गिरा दिया, और दूसरे एक बाणसे भीमसेनका धनुष दो टुकड़े करके पृथ्वीमें गिरा दिया। इसके अनन्तर सात्यकिने भीष्मके समीप शीघ्रतासे जाके कान पर्य्यन्त धनुष खींचके तीक्ष्ण, चोखे और तेजस्वी बाणोंसे उनको विद्ध करना आरम्भ किया। अनन्तर भीष्मने महाकठोर एक बाण चलाके सात्यकिके सारथीको मारके पृथ्वीमें गिरा दिया। सारथीके मारे जाने पर वायुके समान वेगसे चलनेवाले घोड़े सात्यकिके रथको लेकर इधर उधर दौड़ने लगे। उसे देखकर पाण्डवोंकी सम्पूर्ण सेनामें हाहाकार और तुमुल शब्द होने लगा, और "दौड़ो दौड़ो पकड़ो, घोड़ोंको रोको, जल्दी दौड़ो" ऐसा ही शब्द होने लगा। इस ही अवसरमें शान्तनुनन्दन भीष्म पाण्डवोंकी सेनाका इस

प्रकार वध करने लगे, जैसे इन्द्र असुरोंकी सेनाका नाश करते हैं। पाञ्चाल और सोमक-वंशीय क्षत्रिय भीष्मके बाणोंसे पीड़ित होकर भी युद्धमें दृढ़ताके सहित उनकी ओर बढ़ने लगे। तुम्हारी ओरसे भीष्म और द्रोणाचार्य्य आदि वीर भी पाण्डवोंकी सेनापर वेगपूर्व्वक दौड़े, अनन्तर फिर आपसमें युद्ध होने लगा।

९८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे भारत! इसके अनन्तर महारथ विराटने भीष्मको तीन बाणोंसे विद्ध करके फिर उनके घोड़ोंको भी तीन बाणोंसे विद्ध किया। महाबलवान् महा धनुर्द्धारी शान्तनुपुत्र भीष्मने हाथकी शीघ्रताके सहित रुक्मपङ्खवाले दश बाणोंसे विराटको विद्ध किया, भयानक धनुषको धारण करनेवाले द्रोणाचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामाने दृढ़ हस्तलघुताके साथ गाण्डीवधारी अर्ज्जुनके दोनों स्तनोंके बीचमें छःवाण मारे। शत्रु नाशन वीर अर्ज्जुनने अपने तीक्ष्ण बाणोंसे अश्वत्थामाके धनुषको काटकर फिर चोखे बाणोंसे उन्हें खूब ही विद्ध किया। अश्वत्थामाने धनुषका काटना न सहकर क्रोधसे मूर्च्छित हो, दूसरा धनुष ग्रहण करके उत्तम पानीमें बुझे हुए नौ बाणोंसे अर्ज्जुनको विद्ध करके फिर सात प्रबल बाणोंसे कृष्णको बिद्ध किया। इसके अनन्तर शत्रुओंको नाश करनेवाले अत्यन्त बलवान् गाण्डीवधारी अर्ज्जुनने कृष्णके सहित क्रोधसे लाल नेत्र करके गर्म्म और लम्बी सास लेते हुए बार बार चिन्ता कर बाये हाथसे धनुष खींच करके जीवनको नाश करनेवाले कालके समान भयङ्कर बाणोंको चलाकर अश्वत्थामाका शीघ्र ही विद्ध किया; वे सब बाण अश्वत्थामाके कवचको काटकर रुधिर पीने लगे, परन्तु अश्वत्थामा अर्ज्जुनके बाणोंसे इस प्रकारसे विद्ध होकर भी पीड़ित न हुए, वरन महाव्रत करनेवाले भीष्मकी रक्षा करनेकी अभिलाषसे युद्धमें स्थित होके अर्ज्जुनके ऊपर उसी भांतिसे बाणोंको चलाने लगे। वह जो इस भांतिसे रणभूमिमें कृष्णार्ज्जुनके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त थे, उस महा दारुण कर्म्मको देखकर सम्पूर्ण कौरव उनकी प्रशंसा करने लगे। उन्होंने पिता द्रोणाचार्य्यसे अत्यन्त दुर्लभ अस्त्रोंका चलाना तथा उपसंहार करना आदि सब अस्त्र शिक्षा प्राप्त की थी, इसीसे वह सदा सर्व्वदा निर्भय चित्तसे सेनाके बीच युद्ध करते थे। महा पराक्रमी श्वेतवाहन अर्ज्जुनने विचारा, कि यह मेरे गुरुके पुत्र हैं; द्रोणाचार्य्यके प्यारे पुत्र और विशेष करके हमारे पूज्य हैं;—ऐसा विचारकर उनके ऊपर कृपा प्रकाशित करते हुए, युद्धसे उनके सम्मुखसे हटकर दूसरी ओर शीघ्रतासे गमन करके युद्ध करने लगे।

इधर दुर्य्योधनने महा धनुर्द्धारी भीमसेनको शिलापर घिसे हुए रुक्मपुङ्ख तथा गिद्धपंखसे युक्त बाणोंसे विद्ध किया। भीमसेनने क्रुद्ध होकर एक विचित्र धनुष ग्रहण करके दश चोखे बाण राजा दुर्य्योधनकी चौड़ी छातीमें मारे। दुर्य्योधनकी विशाल छातीके ऊपर सुवर्णभूषित रत्नयुक्त कवचपर वे बाण ऐसे शोभित हुए, जैसे आकाशमें ग्रहोंके बीच सूर्य्य शोभायमान होता है। सर्प जिस भांतिसे मनुष्यके तल ताणका शब्द नहीं सहता, वैसे ही तेजस्वी दुर्य्योधनने भीमसेनके बाणोंकी चोट नहीं सही, उन्होंने क्रुद्ध होके सैनिक पुरुषोंको भयभीत करते हुए सुवर्णपुङ्खसे युक्त शिलापर घिसे हुए बाणोंसे भीमसेनको विद्ध किया। भीम और दुर्य्योधन युद्धमें एक दूसरेके अस्त्रोंसे अत्यन्त ही क्षत-विक्षत शरीर होकर रणभूमिमें शोभित हुए। शत्रुनाशन महावीर अभिमन्युने पुरुषसिंह चित्रसेन और पुरुमित्रको सात बाणोंसे

विद्ध करके सत्यव्रतके ऊपर सत्तर बाण चलाये, जिस प्रकार इन्द्र दानवोंको युद्धके समय रणभूमिमें घूमते हैं; वैसे ही अभिमन्यु युद्धमें चारों ओर मानो नृत्य करता हुआ शत्रुओंको पीड़ित करने लगा। फिर चित्रसेनने दश, पुरुमित्रने सात और सत्यव्रतने नौ बाणोंसे अभिमन्युको विद्ध किया। अभिमन्युके शरीरसे रुधिर गिर रहा था, उसी अवस्थामें उसने चित्रसेनके बाण निवारण करके उनके विचित्र धनुष और कवचको अपने बाणोंसे काटकर फिर उनकी छातीमें बाण मारा। अनन्तर तुम्हारी ओरके महारथ वीर राजपुत्र क्रुद्ध होके एकत्रित हुए और उत्तम पानीमें बुझाये हुए बाणोंसे अभिमन्युको विद्ध करने लगे, परम अस्त्रोंके जाननेवाले अभिमन्यु उन सब महारथ वीरोंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे निवारण करने लगे, तुम्हारे पुत्रोंने अभिमन्युका ऐसा कठिन कर्म्म देखकर उसे चारों ओरसे घेर लिया। जैसे शिशिर ऋतुमें प्रचण्ड अग्नि सूखे तृण और काठोंको भस्म कर देती है, वैसे ही अभिमन्यु तुम्हारी सेनाके योद्धाओंको अपने अस्त्रोंसे जलाने लगे, अभिमन्यु कौरवोंकी सेनाको संहार करता हुआ रणभूमिमें अत्यन्त ही शोभित होने लगा। हे राजन्! सुभद्रापुत्र अभिमन्युका ऐसा कठिन कर्म्म देखकर तुम्हारा पौत्र लक्ष्मण शीघ्र ही उसके समीपमें गया। अभिमन्युने क्रुद्ध होकर छःबाणोंसे वीर लक्ष्मणको और तीन बाणोंसे सारथीको विद्ध किया। लक्ष्मण भी अभिमन्युको उत्तम पानीमें बुझे हुए बाणोंसे विद्ध करने लगे, वह युद्ध अद्भुत रूपसे दिखाई देने लगा। शत्रुनाशन वीर अभिमन्युने लक्ष्मणके रथके चारों घोड़े और सारथीको अपने बाणोंसे मारकर उसकी ओर बढ़े। शत्रुओंके नाश करनेवाले वीर लक्ष्मणने घोड़ोंसे रहित रथपर स्थित होके अभिमन्युके ऊपर शक्ति चलाई, अभिमन्युने उस घोररूपा महा शक्तिको सम्मुख आती हुई देखकर अपने तीक्ष्ण बाणोंसे काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। अनन्तर कृपाचार्य्यने लक्ष्मणको अपने रथपर चढ़ाके सम्पूर्ण सेनाके सम्मुखहीमें उन्हें वहांसे दूसरी ओर करदिया। उस महा भयङ्कर युद्धमें वीर लोग एक दूसरेके बध करनेकी इच्छासे क्रुद्ध होकर इधर उधर दौड़ने लगे। प्राणकी आशा छोड़कर भी तुम्हारे और पाण्डवोंकी ओरके सम्पूर्ण महारथ शूर वीर योद्धा आपसमें एक दूसरेका बध करने लगे। सृञ्जयगण खुले हुए शिर, कवच और रथसे रहित तथा धनुषके कट जानेपर भी कौरवोंकी सेनाके वीरोंसे बाहुयुद्ध करने लगे। महा बलवान् महाबाहु भीष्म क्रुद्ध होकर अपने दिव्य अस्त्रोंसे पाण्डवोंकी सेनाका नाश करने लगे, तब पृथ्वी मरे हुए सवार, घोड़े, रथ हाथी, और मनुष्योंके शरीरसे पूरित होगई।

७० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! युद्धमें पराक्रमी सात्यकि उस रणभूमिमें एक उत्तम धनुष ग्रहण करके हस्तलाघव दिखाते हुए उत्तम पानीमें बुझाये हुए विषधारी सर्पके समान बाणोंकी बर्षा करने लगे। रणभूमिमें शत्रुओंका बध करनेके समय वह बहुत ही शीघ्रतासे मुट्ठके मुट्ठ बाणोंको चलाकर शत्रुओंका नाश करने लगे, जब वह बाणोंको ग्रहण करते, चलाते और शत्रुओंके बाणोंको निवारण करते थे, उस समयमें उनकी मूर्त्ति अत्यन्त बर्षा करनेवाले बादलके समान दीख पड़ती थी। हे भारत! उस समय राजा दुर्य्योधनने सात्यकिको ऐसा कठिन कर्म्म करते देख कर दश हजार रथ उनके समीप भेज दिये। महाधनुर्द्धारी सत्य पराक्रमी सात्यकिने अपने दिव्य अस्त्रोंसे उन सब शूरवीर रथियोंका बध किया। धनुषधारी

महावीर सात्यकि ऐसा कठिन कर्म्म करके भूरिश्रवाके सङ्ग युद्ध करने लगे। कौरवोंके कुलकी कीर्त्ति बढ़ानेवाले दुर्य्योधन निज सेनाको युयुधानसे पीड़ित देखकर उनकी ओर बढ़े और इन्द्रधनुषके समान बड़ा धनुष चढ़ा कर हस्त-लाघव दिखाते हुए वज्र तथा विषधर सर्पके समान एक एक सहस्र बाण उनके ऊपर छोड़ने लगे। सात्यकिके अनुयायी लोगोंने कालके समान उन बाणोंको न सह कर उनको वहां पर छोड़ कर इधर उधर युद्धसे पृथक् होगये। भूरिश्रवाको देखकर युयुधानके महाबली महारथ विचित्र वर्म्म शस्त्र, और ध्वजाओंसे युक्त विख्यात दश पुत्र क्रुद्ध होकर भूरिश्रवाके समीप गमन करके उनसे यह वचन बोले,—हे कौरव-दायाद भूरिश्रवा। आओ, तुम हम सब लोगोंसे अथवा एक एकके सङ्ग युद्ध करो, या, तो तुम ही हमलोगोंको जीत कर यश प्राप्त करोगे अथवा हम ही लोग तुमको युद्धमें पराजित करके पिताकी प्रीतिका कार्य्य पूर्ण करेंगे। महाबलवान् पुरुषसिंह भूरिश्रवा उन लोगोंकी बात सुन और उन्हें युद्ध करनेके निमित्त उपस्थित देख कर कहा,—हे वीरपुरुषो! तुम लोगोंने उत्तम वचन कहा है, यदि तुम लोगोंकी ऐसी ही इच्छा है, तो तुम सब इकट्ठे होकर मेरे सङ्ग युद्ध करो, मै आज तुम सब लोगोंका युद्धमें बध करूंगा। महावीर भूरिश्रवाने जब उन शत्रुनाशन वीरोंसे ऐसा बचन कहा; तब उन सबने अपने बाणोंको भूरिश्रवाके ऊपर बर्षाना आरम्भ किया। महाराज। सन्ध्याके समय भूरिश्रवाके सङ्ग उन दश वीरोंका महाघोर युद्ध होने लगा, उन लोगोंने रथियोंमें मुख्य भूरिश्रवाके ऊपर इस प्रकारसे बाणोंकी वर्षा की, जैसे वर्षा ऋतुमें बादल पर्व्वतके ऊपर पानीकी वर्षा करता है। महारथ भूरिश्रवाने, उन लोगोंके चलाये हुए यमदण्डके समान बाणोंको समीप न आते ही मार्गहीमें काट कर गिरा दिया। मैंने उस समय भूरिश्रवाका यह अद्भुत पराक्रम देखा, कि वह अकेले ही कई महारथियोंके सङ्ग निर्भय चित्तसे युद्ध कर रहे थे। उन दश महारथियोंने मिल कर उस महाबाहु भूरिश्रवाको घेरकर उनके संहार करनेकी इच्छा की परन्तु सोमदत्तपुत्र भूरिश्रवाने क्रुद्ध होकर निमिष भरमें उन दशों महारथियोंका धनुष दश बाणोंसे काट कर गिरा दिया। उनके धनुषोंको काट कर फिर अपने तेज बाणोंसे उनका सिर काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। वह सब बज्रकी चोटसे टूटे हुए वृक्षके समान मरके पृथ्वीमें गिर पड़े। वृष्णिवंशीय सात्यकि अपने महाबलवान्, पुत्रोंका मरते हुए देख कर गर्जते हुए भूरिश्रवाकी ओर दौड़े। वह दोनों महारथ महाबलवान् आपसमें एक दूसरेको अपने बाणोंसे पीड़ित करते हुए रथके नष्ट होजाने पर बिना रथके ही तलवार और ढाल ग्रहण करके रथसे कूद, युद्धके निमित्त रणभूमिमें खड़े होकर अत्यन्त ही शोभित हुए। तब भीमसेनने तलवार ग्रहण किए हुए सात्यकिके समीपमें शीघ्र ही आके उन्हें अपने रथ पर बैठाया और तुम्हारे पुत्रोंने भी सब धनुर्द्धारियोंके सम्मुखहीमें शीघ्र ही भूरिश्रवाको रथ पर उठाके बैठा लिया। उस युद्धमे पाण्डव लोग क्रुद्ध होकर महा तेजस्वी भीष्मके सङ्ग युद्ध करने लगे। सूर्य्यके अस्त होने तक अर्ज्जुनने पच्चीस हजार महारथियोंका बध किया, वह सब दुर्य्योधनकी आज्ञासे अर्ज्जुनका नाश करनेकी उनकी ओर युद्ध करनेको बढ़े थे, परन्तु फतिङ्गे अग्निमें न पहुंच कर उनके समीप जाते ही नष्ट होजाते हैं, वैसे ही वह सब वीर अर्ज्जुनको प्राप्त न होकर ही उनके निकट जाते ही नष्ट होगये। तिसके अनन्तर धनुषविद्याको जाननेवाले मत्स्य और केकय देशीय वीरोंने पुत्रके सहित महारथ अर्ज्जुनको चारों

ओरसे घेर लिया। उस समयमें सूर्य्य धूलिसे उत्पन्न हुए बादलमें छिप गये उससे सम्पूर्ण सेना मोहित होगई, उस समय तुम्हारे पिता देवव्रती भीष्मके घोड़े भी थक गये थे और सन्ध्याका समय भी उपस्थित हुआ था, इसीसे उन्होंने सेनाको युद्धसे निवृत्त होनेके निमित्त आज्ञा दी। पाण्डव और कौरवोंकी सेना इस युद्धसे ही अत्यन्त ही विकल थी, वह विश्राम करनेके निमित्त अपने अपने शिबिरोंमें गई। अनन्तर पाण्डव, सृञ्जय और कौरव लोग अपने शिबिरोंमें जाकर वहां पर विश्राम करके अपने यथा विधि कार्य्योंके करनेमें प्रवृत्त हुए।

७१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! इसके अनन्तर कौरव और पाण्डवलोग रात्रिके सम्पूर्ण कार्य्योंको समाप्त करके सवेरा होते ही फिर युद्धके निमित्त शिबिरोंसे निकलके तैयार हुए। दोनों ओरके युद्धके निमित्त तैयार होते हुए रथ और हाथियोंका महाघोर शब्द होने लगा। पैदल और सवारोंको युद्धके निमित्त तैयार होने पर उनके सिंहनाद और शङ्ख, नगाड़े आदिके शब्दसे तुमुल शब्द होके सब दिशाओंमें व्याप्त होगया। तब राजा युधिष्ठिर धृष्टद्युम्नसे बोले, हे महाबाहो! शत्रुओंको तपानेवाले मकरव्यूहकी रचना करो। रथियोंमें मुख्य धृष्टद्युम्नने राजा युधिष्ठिरकी ऐसी आज्ञा सुन सम्पूर्ण रथियोंको मकर व्यूह बनानेके निमित्त आज्ञा दी। अर्ज्जुन और द्रुपद उसके मस्तक, नकुल, सहदेव उसके तुण्ड, अभिमन्यु, द्रौपदीके पाचो पुत्र, राक्षस घटोत्कच, सात्यकि और राजा युधिष्ठिर उसकी गर्द्दन, सेनापति विराट बड़ी सेना लेकर धृष्टद्युम्नके सङ्ग मिलकर उसके पीठस्थान पर स्थित हुए; केकय देशीय राजा पांचो भाई उसके बांये पक्ष और पुरुषसिंह धृष्टकेतु और चेकितान उसके दहिने पक्ष पर स्थित हुए। महारथ कुन्तिभोज और शतानीकने बड़ी सेनाके सहित उसके दोनों पांवोंके स्थानों पर और सोमकवंशीय क्षत्रियोंसे युक्त होकर महाबलवान् शिखण्डी और इरावान् उसके पूंछ पर स्थित हुए। हे भारत! पाण्डवलोग इसी प्रकारसे व्यूह बनाकर सूर्य्य उदय होनेके पहिले ही युद्धके निमित्त तैयार होकर ध्वजा, छत्र, उत्तम पानीमें बुझाये हुए बाण, हाथी, घोड़े, रथ और पैदल सेनाके सहित कौरवोंकी ओर युद्ध करनेके निमित्त गमन करने लगे। तुम्हारे पिता देवव्रती भीष्मने पाण्डवोंका मकर व्यूह देखके अपनी सेनाके वीरोंको बड़े क्रौञ्चव्यूह बनानेके निमित्त आज्ञा दी। महाधनुर्द्धारी भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्य उसके तुण्ड, अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य उसके नेत्र सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंमें श्रेष्ठ पुरुषसिंह कृतवर्म्मा काम्बोज देशीय राजा और वाह्लिकके सहित उसके शिर स्थल पर स्थित हुए; अनेक राजाओंसे युक्त तुम्हारे पुत्र महाराज दुर्य्योधन और शूरसेन उसकी गर्द्दन, मद्र, सौवीर और केकय देशीय वीर योद्धाओंके सहित राजा भगदत्त बड़ी सेनाको लेकर उसके पीठ स्थान पर स्थित हुए, सुशर्म्माने अपनी सेनाके सहित बर्म्म धारण करके उसका बाया पक्ष ग्रहण किया; तुषार, शक, यवन और चूलिक देशीय योद्धा लोग उसके दहिने पक्ष पर स्थित हुए। श्रुतायु, शतायु, और सौमदत्ति;—ये लोग आपसमें एक दूसरेसे रक्षित होकर उसके चरण स्थानपर स्थित हुए। सूर्य्यके उदय होनेके समय दोनों सेनाके सब योद्धा लोग इसी भांतिसे व्यूह बद्ध करनेको रणभूमिमें आये। इसके अनन्तर महाघोर युद्ध होने लगा। रथी रथियोंसे; हाथीवाले हाथियोंसे, घुड़सवार घुड़सवारोंसे, बहुत स्थानमें रथी घुड़सवारोंसे; घुड़सवार भी हा और रथी लोग भी गजपति, घु

रथियोंके सङ्ग युद्ध करने लगे ; फिर रथी लोग पैदल चलनेवाले वीरोंसे और घुड़सवार भी पदाति सेनाके सङ्ग क्रोधपूर्व्वक युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। जिस प्रकारसे तारोंके उदय होनेसे रात्रि शोभायमान लगती है, वैसे ही पाण्डवोंकी सेना भीमसेन, अर्ज्जुन, नकुल और सहदेवसे रक्षित होकर शोभित होने लगी, और कौरवी सेना भी तारोंसे युक्त आकाशकी भांति भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, शल्य और दुर्य्योधन आदि महारथियोंसे रक्षित होकर शोभायमान हुई। पराक्रमी भीमसेनने द्रोणाचार्य्यको देखकर वेगवान् घोड़ोंसे युक्त रथपर चढ़के उनके सम्मुख गमन किया। द्रोणाचार्य्यने क्रुद्ध होकर भीमसेनके मर्म्मस्थानोंको भेद करनेकी इच्छासे नौ बाणोंसे उन्हें विद्ध किया, भीमसेनने द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर उनके सारथीको अपने अस्त्रोंसे मारकर यमपुरीमें भेज दिया, जिस प्रकार अग्नि रूईको भस्म कर देती है, वैसे ही प्रतापी द्रोणाचार्य्य पाण्डवोंकी सेनाको जलाने लगे स्ऋञ्जयगण, केकय-देशीय योद्धाओंके सहित भीष्म और द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे विकल होके रणभूमिसे भागने लगे। तुम्हारी सेना भी भीमसेन और अर्ज्जुनके अस्त्रोंसे क्षत-विक्षत शरीर होकर मतवारी वाराङ्गनाके समान जहां की तहां ही मोहित होकर खड़ी रही। उस वीरोंका नाश करनेवाले भयङ्कर युद्धमें तुम्हारी और पाण्डवोंकी सेनाओंमें महा घोर कोलाहल होने लगा ; दोनों सेनाओंके व्यूह टूटने लगे। दोनों ओरके योद्धा एकत्रित होके विपक्ष सेनासे युद्ध करने लगे ; उसे मैंने अद्भुत रूपसे अवलोकन किया। कौरव और पाण्डव पक्षीय वीर योद्धालोग आपसमें अस्त्रोंको चलाते हुए एक दूसरेका वध करने लगे।

७२ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! हमारे अनेक प्रकारकी सेनाके सब पुरुष उत्तम हैं और सब गुणोंसे पूर्ण हैं ; उन लोगोंका व्यूह भी शास्त्रकी रीतिसे अमोघ होता है। वह सब हम लोगोंके ऊपर सन्तुष्ट, अत्यन्त ही अनुरक्त, विनयसे युक्त और व्यसनसे रहित हैं, पहिले उन लोगोंके बल पराक्रमकी परीक्षा करके तब सेनामें नियुक्त किया हैं। वे लोग न तो बहुत बूढ़े और अत्यन्त बाल:अवस्थाके हैं, न वे लोग बहुत मोटे हैं, वे लोग शीघ्र गमन करनेवाले मध्यम शरीर, मजबूत, रोगरहित, व्यूह रचना जाननेवाले और बहुतसे शस्त्रोंके जाननेवाले शूरवीर योद्धा हैं। वह सब लोग तलवार युद्ध, बाहुयुद्ध और गदायुद्धके जाननेवाले और प्रास, ऋष्टि, तोमर, लोहमयी परिध, भिन्दिपाल, शक्ति, मूषल, लगुड़, धनुष, कणप और ढेले आदिको जानते तथा विचित्र मुष्टि युद्धके करनेमें समर्थ हैं। धनुर्व्वेद जाननेवाले, कसरत करनेमें निपुण, सब शस्त्रोंके ग्रहण करनेकी विद्या जाननेवाले, हाथी आदि वाहनों पर चढ़ने, उतरने, पृथक् जाने, बीचमें आने, आगे गमन करने, पीछे जाने और अच्छी रीतिसे शत्रुओंके ऊपर प्रहार करनेमें निपुण है, और हाथी, घोड़े, रथोंकी भी उत्तम रीतिसे परीक्षा की गई है। सेनाके योद्धाओंको भली भांतिसे परीक्षा करके उचित रीतिसे उन्हें वेतन दिया जाता है ; उन लोगोंको किसी सामाजिक सम्बन्ध वा मित्रताके कारण अथवा और कोई नाता तथा सम्बन्धसे सेनामें नहीं नियुक्त किया गया है, वे सब लोग मानो, यशस्वी और श्रेष्ठ पुरुषोंके स्वभावसे युक्त हैं। हमारे यहांसे उनके सब घरके लोग धनसे युक्त हैं, उनके वन्धुबान्धव भी सन्तुष्ट हैं, तथा सत्कार पाते हैं ; और उन सब लोगोंका बहुत प्रकारसे उपकार किया गया है। हे सूत! लोकमें विख्यात लोकपालके समान कर्म्म करनेवाले बलवान्

मुख्य पुरुष उन लोगोंका पालन करते रहते है। जो सब क्षत्रिय बलवान् और इच्छाके अनुसार हमारे अनुरक्त हैं, और पृथ्वीके बीच सब लोग जिनका सम्मान किया करते हैं; वे सब बहुतसे अनुयायियोंके सहित सब योद्धाओंकी रक्षा करते रहते हैं। पक्ष रहित तौ भी पक्षियोंके समान शीघ्र चलनेवाले रथ, हाथी, और घोड़ोंके समूहरूपी तरङ्गयुक्त नदी सब भांतिसे पूर्ण है, तथा नाना प्रकारके योद्धारूपी जलसे युक्त, अनेक तरङ्गरूपी वाहनोंसे भयानक, गदा, शक्ति, वाण और प्रास आदि अस्त्र रूपी पत्थरोंसे युक्त, ध्वजा, वस्त्र और भूषणरूपी बांधके सहित रत्नोंकी पांतियोंसे अत्यन्त शोभित वायुके वेगसे लहराती हुई, दौड़नेवाले घोड़ोंसे पूर्ण; वह सब सेना सब वीर और वाहनोंसे युक्त होकर महासागरके समान हुई है। अपार समुद्रके समान गर्ज्जनेवाली वह महासेना द्रोणाचार्य्य, भीष्म, कृतवर्म्मा, कृपाचार्य्य, दुःशासन, जयद्रथ, भगदत्त, विकर्ण, अश्वत्थामा शकुनि और वाह्लिक आदि पराक्रमी लोकमें विख्यात महात्मा वीरोंसे रक्षित होकर भी जब मारी जा रही है, तब उसका कारण केवल पूर्व्वजन्मके कर्म्म अर्थात् भाग्य ही कहना पड़ता है। हे सञ्जय! महात्मा प्राचीन पुरुष तथा ऋषियोंने भी ऐसा युद्ध कभी नहीं देखा था। इस प्रकारसे बलवान्, शास्त्रकी विधिको जाननेवाले अर्थ और सम्पत्तिसे युक्त होने पर भी जब शत्रुओंसे मेरी सेनाके लोग बध्य हो रहे हैं, तब इसका कारण भाग्यके अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है? इस प्रकारकी महाघोर सेना भी जब पाण्डवरूपी समुद्रके पार नहीं जा सकती है, तब मेरे निकट सब विपरीत कार्य्य प्रकाशित होरहे हैं। हे सञ्जय! मुझे बोध होता है, देवता लोग पाण्डवोंके हितसाधनके निमित्त रणभूमिमें आकर जिस प्रकारसे मेरी सेना नष्ट होवे, वैसा ही उत्पात करके युद्ध करते होंगे? पहिले विदुरने हितकारी और जो सब पथ्य वचन कहे थे, मेरे बुद्धि-हीन पुत्र दुर्य्योधनने उन बातोंको नहीं ग्रहण किया। इस समयमें जो सब घटना उपस्थित होरही है, उसे मुझे निश्चय बोध होता है, कि महात्मा विशेषज्ञ विदुरने इन सब घटनाओंको पहिले ही जान लिया था; इस ही कारणसे उनका ऐसा विचार हुआ था। हे सञ्जय! यह होनहार व्यापार पहिले ही से ब्रह्माने उत्पन्न कर रक्खा है, वह अवश्य ही होवेगा; कोई इसे अन्यथा नहीं कर सकेगा।

७२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! तुम अपने ही दोषसे ऐसे व्यसनमें फंसे हुए हो। हे भारत! धर्म्मके उलट पुलटसे जो दोष होता है, उसको दुर्य्योधन नहीं देख सकता, परन्तु तुम वह जानते थे। महाराज! तुम्हारे ही दोषसे पहिले जुएका खेल हुआ और तुम्हारे ही दोषसे इस समय पाण्डवोंके सङ्ग युद्ध होरहा है; इससे तुम ही इस समय अपने किये हुए कर्म्मोंके फलको भोग करो, अपने किये हुए कर्म्मोंका फलभोग तुम ही को करना होगा इससे तुम इस लोक अथवा पर लोकमें निज कर्म्मोंके फलको भोग करोगे। जो हो, अब मैं यथावत् युद्धका वृत्तान्त वर्णन करता हूं; तुम इस उपस्थित व्यसनके निमित्त शोकित होके भी चित्त देके युद्धका वृत्तान्त सुनो। बलवान् भीमसेनने अपने तेज वाणोंसे महा सेना भेद करके दुर्य्योधनके सब भाइयोंपर आक्रमण किया। महा बलवान् भीमसेनने दुःशासन, दुर्व्विषह, दुर्म्मद, दुःसह, जय, जयसेन, विकर्ण चित्रसेन, सुदर्शन, चारुचित्र, सुवर्म्मा, दुष्कर्ण, और कर्ण,—इन सब महारथ धृतराष्ट्रपुत्रों और उनकी ओरके बहुतसे महारथियोंको

क्रुद्ध और समीपमें स्थित देखकर; भीमसे रक्षित महासेनाके बीच प्रवेश किया। भीमसेनको सेनाके बीच प्रवेश करते हुए देखकर तुम्हारे सब पुत्र आपसमें कहने लगे, हे क्षत्रिय वीरो! आओ, हम लोग इस भीमसेनके प्राणका आज संहार करें। उन सब भाइयोंने ऐसा निश्चय करके भीमसेनको चारों ओरसे घेर लिया, जैसे सूर्य्य सब प्राणियोंका नाश करनेके समय क्रूर ग्रहोंसे घिर जाते हैं, वैसे ही भीमसेन भी तुम्हारे पुत्रोंके बीचमें घिर गये। जैसे देवता और असुरोंके युद्धमें दानवोंके बीच स्थित इन्द्रको कुछ भय नहीं होता, वैसे ही शत्रुओंके व्यूहमें प्रवेश करते हुए भीमसेनके मनमें भी कुछ भय नहीं हुआ। सैकड़ों तथा सहस्रों रथियोंने सब प्रकारके शस्त्रोंको धारण करके युद्धके निमित्त उपस्थित होकर भीमसेनको चारों ओरसे बाणोंकी वर्षासे छिपा दिया। पराक्रमसे युक्त महा बलवान् भीमसेन हाथी, घोड़े, रथ और धृतराष्ट्रपुत्रोंकी कुछ भी परवाह न करके उन सब शूरवीरोंका वध करने लगे। धृतराष्ट्र-पुत्रोंकी आशासे पराजित करनेके निमित्त उद्यत हुए उन रथियोंके अभिप्रायको जानकर भीमसेनने उन सब लोगोंके वध करनेकी इच्छा की। अनन्तर गदा लेके रथसे उतरकर धृतराष्ट्र-पुत्रोंके सेना-सागरमें प्रवेश करके सब शूरवीरोंपर प्रहार करना आरम्भ किया। जब भीमने शत्रुओंकी सेनामें प्रवेश किया, तब पृषतनन्दन धृष्टद्युम्न अकस्मात् द्रोणाचार्य्यको त्यागकर जहांपर रणभूमिमें सुबलपुत्र शकुनि थे, वहां जाने लगे। वह तुम्हारी महा सेनाको निवारण करते हुए भीमसेनके छोड़े रथके समीप पहुंचे। उन्होंने उस युद्धभूमिमें भीमसेनके सारथी विशोकको देखकर दुःखित, चेतरहित और मलिनचित्तसे शोकित होकर लम्बी सांस लेते हुए भीमके सारथीसे यह पूंछा;—हे विशोक! मेरे प्राणके प्यारे भीमसेन कहां हैं? विशोकने हाथ जोड़के धृष्टद्युम्नसे कहा, कि महा बलवान् भीमसेन मुझको इसी स्थानपर रखके धृतराष्ट्र पुत्रोंकी महासेनामें अकेले ही प्रवेश किया है, उन्होंने मुझसे यह प्यारा वचन कहा है, कि हे सारथी! जो लोग मेरा वध करनेके निमित्त उद्यत हुए हैं, मैं जबतक उन सबका वध करके नहीं लौटूंगा, तबतक अर्थात् मुहूर्त्त भर तुम इस ही स्थानपर ठहरकर मेरी बाट जोहना।" अनन्तर उस महाबलवान् भीमसेनको हाथमें गदा लेकर शत्रुओंकी ओर दौड़ते देखके सब सेनाके वीर हर्षित हुए। उसी महा भयङ्कर घोर युद्धमें तुम्हारे सखा बलवान् भीमसेनने शत्रुओंके व्यूहको भेद करके उस महासेनाके बीच प्रवेश किया है। महा बलवान् धृष्टद्युम्नने युद्धभूमिमें विशोककी यह बात सुनकर फिर उससे कहने लगे, आज रणभूमिमें पाण्डवोंके स्नेहको उपेक्षा करनेसे भीमसेनके विना मेरे जानेसे क्या प्रयोजन है? रणभूमिमें मेरे स्थित रहते ही भीमसेनने अकेले ही सेनाके बीचमें मार्ग बनाकर गमन किया है, इस समय यदि मैं उनको छोड़कर यहांसे चला जाऊं, तो सब क्षत्रिय वीर योद्धा मुझे क्या कहेंगे? जो मनुष्य सहायता चाहनेवाले पुरुषोंको युद्धमें छोड़के घर लौट जाता है, इन्द्र आदिक देवता उसका कल्याण नहीं होने देते। भीमसेन मेरे सखा, सम्बन्धी और भक्त हैं, मेरी भी उस शत्रुनाशन भीमसेनमें भक्ति है; इससे जहा पर वह गये हैं, मैं भी उसी स्थानपर जाऊंगा, मेरे वहां जाने पर तुम हम लोगोंको इस भांतिसे शत्रुओंका संहार करते हुए देखोगे जैसे इन्द्र दानवोंका नाश करते हैं।

वीर धृष्टद्युम्न विशोकसे ऐसा कह कर भीमसेनको गदासे मरे हुए हाथियोंके चिन्ह देखते हुए, उस ही मार्गसे जाने लगे। उन्होंने देखा

कि भीमसेन शत्रुओंकी सेनाका अपनी गदासे वध कर रहे हैं, और बहुतसे राजाओंको इस भांतिसे मारके पृथ्वीमें गिराते हैं, जैसे प्रचण्ड वायु वृक्षको उखाड़के गिरा देता है। रथी, घुड़सवार, हाथी और पैदल चलनेवाली सेना भीमसेनके प्रहारसे पीड़ित होकर आर्त्तनाद करने लगी। बहुतसे अस्त्र शस्त्र जाननेवाले शूर वीरोंके मरनेसे तुम्हारी सेनामें अत्यन्त ही हाहाकार मच रहा था। अनन्तर सब शस्त्र-विद्याके जाननेवाले शूर वीर योद्धा चारों ओरसे भीमसेनको घेर कर उनके ऊपर अपने अस्त्रोंकी वर्षा करने लगे। पृषतनन्दन बलवान् धृष्टद्युम्न शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ, वीरोंके अग्रणी, लोक विख्यात, महाघोर सेनामें घिरे हुए, प्रलयकालके दण्डधारी यमराजके समान गदा लिये हुए, शस्त्रोंकी चोटसे क्षत विक्षत शरीर, क्रोधरूपी विष उगलते और पावसे ही पृथ्वीपर गमन करनेवाले भीमसेनको देखकर उन्हें धीरज देते हुए उनके निकट उपस्थित हुए। उस महात्मा धृष्टद्युम्नने शत्रुओंके मण्डलमें भीमसेनको धीरज देकर उन्हें आलिङ्गन करके शीघ्र ही अपने रथ पर चढ़ाया और उनके शल्योंको निकालके बाहर किया। तुम्हारे पुत्र, दुर्य्योधन भी वीरोंके उस संहारके स्थान पर सहसा उपस्थित होके भाइयोंके निकट जाकर यह वचन बोले, यह दुष्टात्मा द्रुपदपुत्र भीमसेनके सहित यहां पर उपस्थित हुआ है, इस समय वह शत्रु जब तक हमलोगोंको युद्धके निमित्त आवाहन न करे तब तक चलो हम सब मिलकर उसका संहार करें। तुम्हारे सब पुत्रोंने अपने बड़े भाईकी आज्ञा सुनकर शीघ्र ही क्रोधपूर्व्वक शस्त्रग्रहण करके जिस प्रकार प्रलय कालके समयमें भयानक केतु प्रकाशित होता है. उसी भांतिसे धृष्टद्युम्नके वधके निमित्त आके उपस्थित हुए। उन सब वीर सुवर्णचर्चित धनुष ग्रहण करके धनुष टङ्कार और अपने रथके शब्दसे पृथ्वीको कंपाते हुए द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्नके ऊपर इस प्रकार अपने अस्त्रोंको वर्षाने लगे, जैसे बर्षाकालमें मेघ पर्व्वतके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं। महा-बलवान् महारथ पुरुषसिंह धृष्टद्युम्न तुम्हारे पुत्रोंको रणभूमिमें सम्मुख आया हुआ तथा युद्धके निमित्त उपस्थित देख और उनके तीक्ष्ण बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर दुःखित नहीं हुए। उन्होंने अत्यन्त ही क्रुद्ध होकर जैसे देवताओंके स्वामी इन्द्र दानवोंका नाश करते हैं, वैसे ही तुम्हारे पुत्रोंके नाश करनेकी इच्छासे प्रमोहनास्त्रका प्रयोग किया। वे सब वीरपुरुष धृष्टद्युम्नके प्रमोहन अस्त्रसे मोहित होकर चेत रहित तथा शक्ति हीन होगये। तब सम्पूर्ण सेना तुम्हारे पुत्रोंको मोहित अर्थात् चेतरहितके समान देखकर घोड़े, हाथी और रथोंके सहित चारों ओर भागने लगी इसी समय शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने युद्धमें द्रुपदको महा कठोर तीन बाणोंसे विद्ध किया। वह द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर पहिलेके वैरको स्मरण करते हुए रणभूमिसे भाग गये। प्रतापी द्रोणाचार्य्यने द्रुपदको पराजित करके अपना शङ्ख बजाया, उससे सब सोमक वंशीय क्षत्रिय भयभीत होगये, अनन्तर राजहितैषी सब शस्त्रोंके जाननेवाले, तेजस्वी महा धनुर्द्धारी प्रतापी द्रोणाचार्य्यने तुम्हारे पुत्रोंको प्रमोहन अस्त्रसे मोहित सुनकर शीघ्रताके सहित वहां-पर जाके देखा, कि धृष्टद्युम्न और भीमसेन रणभूमिमें भ्रमण कर रहे हैं, और धृतराष्ट्र-पुत्र सब धृष्टद्युम्नके अस्त्रसे मोहित होगये हैं। अनन्तर उन्होंने प्रज्ञास्त्र चलाकर मोह-नास्त्रका निवारण किया। तब तुम्हारे सब पुत्र फिर सावधान होकर भीमसेन और धृष्ट-द्युम्नसे युद्ध करने लगे। इसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर अपनी सेनाके पुरुषोंको आवाह

करके यह वचन बोले, भीमसेन और धृष्टद्युम्नके निमित्त मेरा चित्त व्याकुल हो रहा है, इससे अभिमन्यु आदि बारह महारथी अस्त्र-शस्त्र तथा वर्म्म धारण करके रणभूमिमें यथाशक्ति पराक्रम प्रकाश करते हुए उनके समीपमें गमन करें और उन लोगोंके वृत्तान्तको मालूम करें। पुरुषोंमें अभिमानी अभिमन्यु केकयराज पाचों भाई, द्रौपदीके पांचों पुत्र और धृष्टकेतु,—इन बारह वीर राजा युधिष्ठिरको आज्ञाके अनुसार बड़ी सेनाके सहित मध्यान्हके समय जहांपर भीमसेन और धृष्टद्युम्न युद्ध कर रहे थे, वहांपर ही जाने लगे। वे लोग सूचीमुख व्यूह बनाकर कौरवोंको रथसेनाको भेद करने लगे। जैसे मदसे मूर्च्छित प्रमदा स्त्री अपनेको निवारण करनेमें समर्थ नहीं होती, वैसे ही भीमसेनके डरसे भयभीत और धृष्टद्युम्नके बाणोंसे मोहित हुई वह कौरवोंकी सेना पाण्डवोंकी ओरके अभिमन्यु आदि महा धनुर्द्धारियोंको नहीं निवारण कर सकी। सुवर्ण ध्वजाओंसे युक्त पाण्डवोंकी सेनाके महाधनुर्द्धारी वीर लोग धृष्टद्युम्न और भीमसेनके समीप जानेकी इच्छासे शत्रुओंका वध करते हुए वेगसे आगे बढ़े। धृष्टद्युम्न और भीमसेन शत्रुसेनाका नाश करते हुए अभिमन्यु आदि महाधनुर्द्धर वीरोंको आते हुए देखकर आनन्दित हुए। धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यको सम्मुख आते हुए देखकर फिर तुम्हारे पुत्रोंके बध करनेकी इच्छा नहीं की, और भीमसेनको केकयराजके रथपर चढ़ाकर क्रुद्ध होकर धनुर्व्वेदके जाननेवाले द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। शत्रुओंके नाश करनेवाले प्रतापी द्रोणाचार्य्यने धृष्टद्युम्नको सम्मुख आते देखकर उनका धनुष एक ही भल्लास्त्रसे काट डाला, और दुर्य्योधनके अन्न तथा सेवाको स्मरण करके दूसरे सैकड़ो बाण धृष्टद्युम्नके ऊपर चलाने लगे। अनन्तर शत्रुनाशन वीर धृष्टद्युम्नने दूसरा धनुष ग्रहण करके सत्तर बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको विद्ध किया। शत्रुओंको पीड़ित करनेवाले द्रोणाचार्य्यने फिर उनके धनुषको काटके चार बाणोंसे चारों घोड़ोंको मार डाला; और एक बाणसे उनके सारथीका शिर काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। महाबाहु महारथ धृष्टद्युम्न घोड़े और सारथीसे रहित रथके ऊपरसे कूदके अभिमन्युके बड़े रथपर जा चढ़े। इसके अनन्तर पाण्डवोंकी सेना रथ हाथी और घोड़ोंके सहित भीम और धृष्टद्युम्नके सम्मुखहीमें द्रोणाचार्य्यके अस्त्रोंसे पीड़ित होके कांपने लगी। वे सब पाण्डवोंके महारथी लोग द्रोणाचार्य्यके सम्मुखसे भागते हुई अपनी सेनाको निवारण करनेमें समर्थ न हुए। वह सब सेना महा तेजस्वी द्रोणाचार्य्यके तीक्ष्ण बाणोंसे इस भांतिसे तितर बितर होगई, जैसे प्रबल वायुके जोरसे समुद्रका जल झकोरे खाने लगता है। तुम्हारी ओरके सब वीर योद्धा लोग द्रोणाचार्य्यको इस प्रकारसे शत्रुओंकी सेनाको नाश करते हुए देखकर आनन्दित हुए; और धन्य धन्य कहके ऊंचे स्वरसे उनकी प्रशंसा करने लगे।

७४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे भारत। अनन्तर राजा दुर्य्योधन मोहसे पड़के महापराक्रमी भीमसेनका फिर अपने बाणोंकी वर्षासे निवारण करने लगे, और तुम्हारे सब पुत्र भी फिर मिलकर इकट्ठे होके भीमसेनके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। भीमसेन भी युद्धमें फिर अपने रथपर चढ़के तुम्हारे पुत्रोंके समीप उपस्थित हुए; और शत्रुओंके प्राणका नाश करनेवाला एक बड़ा वेगवान् धनुष ग्रहण करके तुम्हारे पुत्रोंको बाणोंसे विद्ध करने लगे। अनन्तर राजा दुर्य्योधनने भी भीमसेनके मर्म्म स्थानमें

तीक्ष्ण बाणोंसे प्रहार किया। महा बलवान् भीमसेन उससे अत्यन्त बिद्ध होके क्रोधसे लाल नेत्र करके, शीघ्रतासे धनुष खींचके तीन बाणोंसे दुर्य्योधनकी दोनों भुजा और छातीमें प्रहार किया। दुर्य्योधन भीमसेनके बाणोंसे विद्ध होकर भी गिरिराजके समान तनिक भी अपने स्थानसे न हटे। उन दोनों क्रुद्ध वीरोंको इस प्रकारसे युद्ध करते हुए देखकर दुर्य्योधनके शूरवीर सब भाई पहिले विचारको स्मरण करके प्राणकी आशा छोड़कर भीमसेनको पराजित करनेका निश्चय कर उनके वध साधनके निमित्त यत्नवान् हुए। भीमसेनने उन लोगोंको युद्धके निमित्त समीप आते हुए देखके इस प्रकारसे उनकी ओर दौड़े, जैसे एक मतवाला हाथी अनेक हाथियोंकी ओर दौड़ता है। महा यशस्वी भीमसेन तुम्हारे पुत्र चित्रसेनको चोखे बाणोसे विद्ध करके अनेक प्रकारके स्वर्णपुङ्खसे युक्त बाणोंसे तुम्हारे और दूसरे पुत्रोंके ऊपर प्रहार करने लगे। तब धर्म्मराज युधिष्ठिरके भेजे हुए भीमसेनकी रक्षाके निमित्त अभिमन्यु आदि बारह महारथी तुम्हारी सेनाको कंपाते हुए तुम्हारे महारथ पुत्रोंके निकट उपस्थित हुए। उस समय तुम्हारे महा बलवान् पराक्रमी पुत्रलोग रथमें स्थित सूर्य्यके समान तेजस्वी, महाधनुर्द्धारी, प्रकाशमान श्रीसे युक्त, महा युद्धमे प्रकाशमान सुवर्ण मुकुटसे शोभित अभिमन्यु आदि शूरवीरोंको आते हुए देखकर भीमसेनको छोड़कर वहांसे जाने लगे। तुम्हारे पुत्र लोग जो जीते ही वहासे जाने लगे वह कुन्तीपुत्र भीमसेनसे नहीं सहा गया, वह फिर उन लोगोंका पीछा करते हुए उन्हें पीड़ित करने लगे। तब धनुषधारी दुर्य्योधन आदि तुम्हारे सब पुत्र अपनी सेनाके बीच भीमसेन और धृष्टद्युम्नके सहित इकट्ठे हुए अभिमन्युको देखकर शीघ्र गमन करनेवाले घोड़ोसे युक्त रथपर चढ़के जहा अभिमन्यु आदि महारथी थे, वहापर गमन किया। तिसके अनन्तर अपरान्ह समयमें तुम्हारी ओरके वीरों और शत्रुओंसे महाघोर युद्ध होने लगा।

हे भारत! अभिमन्युने उस युद्धमें विकर्णके सब घोड़ोंको मारकर उनके ऊपर पच्चीस क्षुद्रक अस्त्र चलाये। महारथ विकर्ण घोड़ोंसे रहित रथको त्यागकर चित्रसेनके प्रकाशमान रथपर जा चढ़े। विकर्ण और चित्रसेन दोनों भाइयोंके एक ही रथपर चढ़नेके अनन्तर अभिमन्युने अपने बाणोंकी बर्षासे उन दोनोंको छिपा दिया। इसके अनन्तर दुर्ज्जय और विकर्णने अभिमन्युको पांच बाणोंसे विद्ध किया, उससे अभिमन्यु तनिक भी विचलित नहीं हुए, बरन मेरु गिरिके समान युद्धमें खड़े रहे। दुःशासनने केकयराज पांचों भाइयोंके सङ्ग युद्ध करना आरम्भ किया; वह युद्ध अद्भुत रूपसे दिखाई देने लगा। द्रौपदीके पाचो पुत्रोंने क्रुद्ध होकर दुर्य्योधनको निवारण करते हुए तीन बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। महाक्रोधी दुर्य्योधन भी तीक्ष्ण बाणोंसे उन सबको पीड़ित करने लगे, और उन लोगोंके बाणोंसे विद्ध होकर रुधिर बहते हुए शरीरसे ऐसे शोभित हुए, जैसे बहते हुए गेरूकी धारसे पहाड़ शोभायमान लगता है। उस महा संग्राममें महा बलवान् भीष्म पाण्डवोंकी सेनाके वीरोंका इस प्रकारसे वध करके युद्धसे भगाने लगे, जैसे पशुपालक लोग पशुओंको ताड़ना देते है। उस समय अर्ज्जुन जहा पर शत्रुओंका वध कर रहे थे, दक्षिण ओरसे उनके गाण्डीव धनुषका शब्द सुनाई पड़ने लगा। युद्ध भूमिमे कौरव और पाण्डवोंकी सेनामें रुधिरका समुद्र दिखाई देने लगा। उसमे बाण भंवर, सब मरे हाथी टापू और घोड़े तरङ्ग रूपी दीख पड़ने लगे। पुरुषसिंह रथरूपी नौकासे उससे पार

होते हुए दिखाई देने लगे। सहस्रों श्रेष्ठ पुरुषोंको शिर रहित, कवचहीन और शरीरसे विकल हुए पृथ्वी पर पड़े हुए मैंने अवलोकन किया। रुधिरसे युक्त मरे हुए मतवारे हाथी पहाड़के समान दीख पड़ते थे। वहां पर मैंने यह आश्चर्य्य देखा, कि तुम्हारी सेना तथा पाण्डवोंकी सेनामें ऐसा कोई भी पुरुष न था, जो युद्धकी अभिलाष न करता हो। इसी प्रकारसे तुम्हारी सेनाके वीर लोग जयकी अभिलाष करते हुए पाण्डवोंकी सेनासे युद्ध करने लगे।

७५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! इसके अनन्तर सूर्य्यके अस्त होनेके समयमें उत्साही राजा दुर्य्योधन भीमसेनके वध करनेकी इच्छासे उनकी ओर दौड़े। भीमसेन उस दृढ़-शत्रु पुरुषसिंह दुर्य्योधनको आते हुए देख कर क्रुद्ध होकर उनसे यह बचन बोले, हे गान्धारी पुत्र! मेरे कई वर्षकी कीहुई अभिलाषका समय आज उपस्थित हुआ; यदि तुम रण-भूमिको छोड़के भाग न जाओगे, तो आज मैं तुम्हारा वध करूंगा। आज मैं तुमको मारकर माता कुन्तीके क्लेश, वनवाससे उत्पन्न हुए हम लोगोंके सब कष्ट और द्रौपदीके दुःखोंको आज ही दूर कर दूंगा। तुमने पहिले मत्सरतासे युक्त होकर जो पाण्डवोंको अवमानित किया था उसी पापका फल अब तुमको यह व्यसन उपस्थित हुआ है। कर्ण और शकुनिके सलाहसे तुमने पाण्डवोंके विषयमें कुछ भी विचार न करके जो अपनी इच्छाके अनुसार सब कार्य्यों को किया था, और कृष्ण सन्धिके निमित्त तुम्हारे समीप प्रार्थना करने गये थे, तब तुमने वहांपर उनका भी अपमान किया था, इसके अतिरिक्त तुमने आनन्दित होके उलूकको भेज कर हम लोगोंके विषयमें जो कटूक्ति कही थी आज मैं तुमको बन्धु-बान्धव और अनुयायियोंके सहित नाश करके तुम्हारे उन पहिलेके किये हुए पापोंकी शान्ति करूंगा। भीमसेनने ऐसा वचन कहके महाघोर धनुष चढ़ा कर बार बार टङ्कार करते हुए वज्रके समान भयानक अग्निकी शिखाके समान जलते हुए छब्बीस चोखे बाणोंको दुर्य्योधनके ऊपर शीघ्र चलाया। फिर दो बाणोंसे उनके धनुष और दो बाणोंसे सारथीको बिद्ध करके फिर चार बाणोंसे उनके वेगवान् घोड़ोंको मारके गिरा दिया। फिर अपने बाणोंको चलाकर दुर्य्योधनके रथसे उनके उत्तम छत्रको काटके गिराया और तीन बाणोंसे उनकी उत्तम ध्वजाको रथपरसे काटके उनके सम्मुखहीमें ऊंचे स्वरसे सिंहनाद करने लगे; जैसे बादलसे निकल कर बिजली गिरती है, वैसे ही दुर्य्योधनके रथसे नाना रत्नोंसे भूषित सुवर्ण युक्त उत्तम ध्वजा कटके गिर पड़ी। सम्पूर्ण राजा लोग कुरुराज दुर्य्योधनकी सूर्य्यके समान प्रकाशमान मणियोंसे युक्त शोभायमान हाथीके चिन्हसे युक्त उस उज्वल ध्वजाको कटी हुई देखने लगे। अनन्तर महारथ भीमसेन हंसते हंसते अंकुशसे गजराजको पीड़ित करनेके समान दश बाणोंसे कुरुराज दुर्य्योधनके ऊपर प्रहार किया। अनन्तर रथियोंमें प्रधान सिन्धुराज जयद्रथ मुख्य मुख्य वीरोंके सहित दुर्य्योधनकी पृष्ठ-रक्षा करनेमें प्रवृत्त हुए। महारथ कृपाचार्य्यने अत्यन्त तेजस्वी महाक्रोधी कुरुराज दुर्य्योधनको अपने रथ पर चढ़ा लिया। उस समय राजा दुर्य्योधन भीमसेनके बाणोंसे अत्यन्त ही विद्ध और पीड़ित होकर रथपर बैठे। तब सिन्धुराज, जयद्रथने भीमसेनके वध करनेकी इच्छासे चारो ओरसे सहस्रों रथियोंको सङ्ग लेकर उन्हें घेर लिया, और बाणोंकी वर्षासे छिपा लिया। तब धृष्टकेतु, पराक्रमी अभिमन्यु, केकय राज पांचो भाई और द्रौपदीके पांचो पुत्र

तुम्हारे पुत्रोंसे युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। चित्र-सेन, सुचित्र, चित्राङ्ग, चित्रदर्शन, सुचारु, चारु-चित्र, नन्द और उपनन्द ये आठ यशस्वी तुम्हारे सुकुमार पुत्रोंने महा धनुषधारी अभिमन्युको चारों ओरसे घेर लिया। अनन्तर महातेजस्वी अभिमन्युने अपने विचित्र धनुषसे छूटे हुए वज्रके समान पांच पांच बाणोंसे उन सबको विद्ध किया। वे सब लोग क्रुद्ध होकर अभिमन्युके ऊपर इस प्रकारसे बाणोंकी वर्षाने लगे जैसे बादल पहाड़पर पानी बर्षाते है। सब अस्त्रोंको जाननेवाला अभिमन्यु उन सब वीरोंके बाणोंसे पीड़ित होकर जैसे देव असुरोंके युद्धमें देव-ताओंके स्वामी इन्द्रने महा घोर असुरोंको कम्पित किया था, वैसे ही उन सबको अपने बाणोंसे कंपाने लगा। रथियोंमें मुख्य अभि-मन्यु मानो नृत्य करता हुआ विकर्णकी ओर विषधारी सर्पके समान भयङ्कर चौदह बाण चलाकर उनके रथकी ध्वजा काट दी, और घोड़ोंको भी मारकर पृथ्वीमें गिरा दिया। फिर दूसरी बार निर्भय होकर, उत्तम पानीसे बुझाये हुए बाणोंसे विकर्णके ऊपर प्रहार किया। वे सब कङ्क और मोरपङ्खसे युक्त बाण विकर्णके शरीरको भेदकर प्रकाशमान सर्पके समान पृथ्वीमें प्रवेशकर गये। उस समय सुवर्ण-भूषित वे सब बाण विकर्णके रुधिरसे युक्त होकर पृथ्वीमे रुधिर गिराने लगे। विकर्णके दूसरे भाई उन्हें बाणोंसे क्षत विक्षत देख-कर अभिमन्यु आदि वीरोंकी ओर वेगसे दौड़े। वे लोग शीघ्रताके सहित सूर्य्यके समान तेजस्वी अभिमन्युके निकट जाके उन महारथियों, तथा अभिमन्युसे युद्ध करके एक दूसरेको अपने बाणोंसे पीड़ित करने लगे। दुर्म्मुखने सात बाणोंसे श्रुतकर्म्माको विद्ध करके एक बाणसे उनकी ध्वजा काट दी और उनके सुवर्ण जालसे भूषित वायुके समान गमन करनेवाले चारों घोड़ोंको छः बाणोंसे मारकर फिर सात बाणोंसे उनके सारथीका वध करके रथसे गिराया। महा बलवान् श्रुत-कर्म्माने क्रुद्ध होकर घोड़ोंसे रहित रथपरसे ही एक प्रकाशमान जलती हुई शक्ति दुर्म्मुखके ऊपर चलाई। वह तेजस्वी दुर्म्मुखके वर्म्मको भेद करके पृथ्वीमें प्रवेश कर गई। श्रुतकर्म्माको विरथ देखकर महारथ सुतसोमने उस सेनाके सम्मुख ही उन्हें अपने रथपर चढ़ा लिया। श्रुत-कीर्त्ति तुम्हारे पुत्र जयत्सेनके नाश करनेकी इच्छासे उनके समीप उपस्थित हुआ। हे भारत! जयत्सेनने महात्मा श्रुतकीर्त्तिको धनुष चढ़ाते हुए देखकर हंसते हंसते अपने तीक्ष्ण क्षुरप्र बाणोंसे उनके धनुषको काट दिया। तेजस्वी शतानीक अपने भाईका धनुष कटा हुआ देखकर सिंहके समान गर्ज्जता हुआ जयत्सेनके समीप आया और अत्यन्त शीघ्र-तासे धनुष खींचकर दश बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। फिर एक तीक्ष्ण बाणसे उनके हृदयमें प्रहार किया। उस युद्धमें दुष्कर्ण क्रोधसे मूर्च्छित होके अपने भाई जयत्सेनके समीप ही स्थित होके नकुल पुत्र शतानीकके धनुषको बाण समेत काट डाला। महाबली शतानीक और एक दूसरा दृढ़ धनुष ग्रहण किया और दुष्कर्णको उनके भाईके सम्मुख ही "खड़ा रह, खड़ा रह।" कहके सर्पके समान तीक्ष्ण बाण उनके ऊपर चलाने लगे। अनन्तर एक बाणसे उनके धनुष और एक बाणसे सार-थीको काट कर उनको सात बाणोंसे विद्ध किया फिर उनके वायुके समान शीघ्र गमन करनेवाले चित्रित घोड़ोंके उत्तम पानीमें बुझे हुए बारह बाणोंसे मारके पृथ्वीमें गिरा दिया। फिर एक अत्यन्त भयङ्कर बाणसे उनको विद्ध किया; उससे वह वज्रकी चोटसे टूटे हुए वृक्षके समान पृथ्वीमें गिरे। हे महाराज! दुष्कर्णको गिरते देख कर दुर्म्मुख, दुर्ज्जय, दुर्म्मर्षण, शत्रुञ्जय और शत्रुसह;—तुम्हारे

पांचो महारथ पुत्रोंने शतानीकको घेर लिया और उसको अपने बाणोंसे छिपा दिया। केकयराज पांचो भाई शतानीकको बाणोंसे छिपा हुआ देख कर क्रुद्ध होकर शत्रुओंकी ओर दौड़े। महाराज! तुम्हारे महारथ पुत्रलोग उन्हें आते हुए देखके जैसे हाथी मतवारे हाथियोंकी ओर गमन करते हैं, वैसे ही उनके सम्मुख गये। महा धनुषधारी विचित्र कवच और ध्वजाओंसे युक्त वे दुर्म्मुख आदि यशस्वी पांचो भाई नाना वर्णकी चित्रित पताकाओंसे शोभित होके मन तथा वायुके समान वेगसे गमन करनेवाले घोड़ोंसे युक्त, नगरके समान रथ पर चढ़के केकयराज पाचों भाइयोंके समीप जानेके निमित्त जैसे सिंह वनके भीतर प्रवेश करता है वैसे ही शत्रुओंकी सेनामें जाकर प्रवेश किया। तब उन लोगोंका महाभयङ्कर तुमुल युद्ध आरम्भ हुआ। रथी और गजपतियोंने क्रुद्ध होकर एक दूसरेके ऊपर शस्त्रोंका प्रहार करना आरम्भ किया। सूर्य्यके अस्त होते समय मुहूर्त्त भरके बीचमें सहस्रों रथी और घुड़सवार लोग भयङ्कर युद्ध करके रणभूमिमें एक दूसरेके अस्त्रोंसे मर कर पृथ्वीमें गिर पड़े। इसके अनन्तर शान्तनुनन्दन भीष्म अपने तीक्ष्ण बाणोंको चला कर पाञ्चाल वीरोंकी सेनाका नाश करने लगे। महाधनुर्द्धारी भीष्म इसी प्रकारसे पाण्डवोंकी सेनाको तितर बितर करके सन्ध्याके समय अपनी सेनाको निवृत्त होनेकी आज्ञा देकर निज शिविरमें गये। धर्म्मराज युधिष्ठिरने भी धृष्टद्युम्न और भीमसेनको देख कर उनका मस्तक सूंघ हर्ष पूर्व्वक अपने शिविरको जानेके निमित्त प्रस्थान किया।

७६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! रक्त पूरित शरीरसे आपसमें एक दूसरेको पराजित करके तथा एक दूसरेको मार कर दोनों सेनाके शूरवीर अपने अपने शिविरोंमें गये। वे सब लोग शिविरमें विश्राम करके न्यायके अनुसार एक दूसरेका सत्कार कर फिर युद्धकी इच्छासे कवच पहरके तैयार हुए। इसके अनन्तर रुधिर झरते हुए शरीरसे तुम्हारे पुत्र राजा दुर्य्योधनने चिन्ता करके पितामह भीष्मसे पूछा, कि हे सत्य-पराक्रमी पितामह! पाण्डवोंकी ओरके महारथ शूरवीरोंने शीघ्रताके सहित हमारी सेनाको मोहित करके हमारी बहुतसी ध्वजा पताकाओंसे युक्त व्यूहबद्ध महाघोर सेनाको भेद कर, अनेक वीरोंको युद्धमें पीड़ित करके बहुत ही कीर्त्ति प्राप्त की है। भीमसेनने वज्रके समान वैसे कठिन मकर व्यूहमें प्रवेश करके यमदण्डके समान भयानक बाणोंसे मुझे पराजित किया है, उसको क्रुद्ध देखकर मैं भयसे मूर्च्छित होरहा हूं; अबतक भी मुझे शान्ति नहीं है। जो हो; इस समय मैं तुम्हारे प्रसादसे पाण्डवोंका नाश करके जयकी अभिलाष करता हूं। शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ महात्मा गङ्गापुत्र भीष्म दुर्य्योधनकी बात सुन और उनको दुःखित देखकर स्थिर चित्तसे हंसते हुए बोले, हे राजपुत्र! मैं सब प्रकारसे यत्नपूर्व्वक पाण्डवोंकी सेनाका नाश करके तुम्हारे विजय और सुखके निमित्त इच्छा करता हूं तुम्हारे वास्ते मैं अपने पराक्रमको छिपा नहीं रखता; परन्तु जो लोग पाण्डवोंके सहाय हुए हैं, वे सब भी बहुतसे महारथी और भयानक वीर योद्धा हैं। वे सब यशस्वी, शस्त्रोंको जाननेवाले और शूरवीर हैं। वे सब मानो युद्धमें क्रोध रूपी विष उगलते हैं, और संग्राममें शान्त नहीं होते। विशेष करके वे लोग बल और पराक्रमसे बहुत बढ़े हुए हैं, और तुमने इन लोगोंके सङ्ग शत्रुता की है; इससे वे सब लोग सहसा पराजित होनेके योग्य नहीं हैं। जो हो मैं अपने प्राणकी आशाको छोड़कर सब प्रकारसे

उन लोगोंके सङ्ग युद्ध करूंगा। हे महानुभाव! आज मैं तुम्हारे निमित्त युद्ध करके अपने प्राणोंके त्यागनेका भी उत्साह करता हूं; मैं तुम्हारे निमित्त तुम्हारे शत्रुओंको तो क्या बात है, देवता और दानवोंके सहित सम्पूर्ण लोकोंको भस्म कर सकता हूं। आज मैं पाण्डवोंके संग युद्ध करके तुम्हारा प्रियकार्य्य करूंगा। दुर्य्योधन पितामह भीष्मकी यह बात सुनकर शान्तचित्तसे बहुत ही प्रसन्न हुए। तब हर्षित होकर सब राजाओं और सेनाके वीरोंसे बोले, कि तुम लोग युद्धके निमित्त गमन करो। सेनाके सब पुरुष उनकी आज्ञा सुनते ही युद्ध करनेके निमित्त शीघ्र ही तैयार होकर शिविरसे निकले। रथ, हाथी, घोड़े और पैदल वीरोंसे युक्त नाना भांतिके शस्त्रोंके सहित वह महा सेनाका दल हर्षपूर्व्वक युद्धभूमिमें आकर विराजमान हुआ। उन सब वीरोंकी सेनामें झुण्डका झुण्ड योद्धाओंसे युक्त हाथियोंका दल स्थित होके प्रकाशित होने लगा, और युद्ध विद्याके जाननेवाले राजा लोग सब अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके सेनाके बीच विराजमान हुए। यथाविधिसे रथ, घोड़े, हाथी और पैदल वीरोंके गमन करनेके समय अत्यन्त तेजस्वी राजा लोग सूर्य्यके समान वीरोंके बीच प्रकाशित होने लगे। जैसे आकाशमें बादलोंके बीच बिजली प्रकाशित होती है, वैसे ही रथ और हाथियों पर स्थित नाना भांतिकी पताकाओंसे युक्त सब शूरवीर अत्यन्त ही शोभित होने लगे। जैसे सत्ययुगमें देवता और असुरोंके मथनेपर समुद्रमें महा घोर शब्द हुआ था, वैसे ही राजाओंके धनुष्टङ्कारका अत्यन्त भयानक घोर शब्द होने लगा। तुम्हारे पर्वोंका नाश करनेवाली, समुद्रके समान अनेक वर्ण घोर रूपसे युक्त महा सेना उस समय प्रलयकालके बादलोंके समान दिखाई देने लगी।

७७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे भारत! गङ्गापुत्र भीष्म तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनको चिन्तायुक्त देखकर फिर उनको हर्षित करनेके निमित्त यह वचन बोले, द्रोणाचार्य्य, शल्य, सात्वत कृतवर्म्मा, अश्वत्थामा, विकर्ण, भगदत्त, शकुनि, अवन्तिदेशीय राजा विन्द और अनुविन्द सम्पूर्ण बाह्लिक वीरोंके सहित बाह्लिकराज, बलवान् त्रिगर्त्तराज, पराक्रमी मगधराज, कोशलाधिपति, सब शोभाओंसे युक्त कई हजार महा बलवान् हाथियोंपर चढ़नेवाले सब योद्धा, नाना देशीय अनेक शस्त्रोंके जाननेवाले शूरवीर पैदल चलनेवाले सब योद्धा लोग और हम सब लोग तुम्हारे निमित्त युद्ध करनेको उद्यत हैं, और दूसरे बहुतसे योद्धा लोग भी तुम्हारे वास्ते प्राणकी आशा छोड़के युद्धके निमित्त खड़े हैं; मेरे मतसे ये सब युद्धमें देवताओंको भी जीतनेमें समर्थ हैं, परन्तु तुमसे अत्यन्त हितकारी मैं यह वचन कहता हूं, कि इन्द्रके समान पराक्रमी कृष्णकी सहायतासे युक्त पाण्डवोंको सब देवताओंको सहित इन्द्र भी युद्धमें नहीं जीत सकते; जो हो, मैं सब प्रकारसे तुम्हारे वचनको पालन करूंगा; या तो हम लोग पाण्डवोंको पराजित करेंगे; अथवा वे लोग हम लोगोंको ही जीतेंगे। शान्तनुपुत्र भीष्मने तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनसे ऐसा वचन कहकर बलको बढ़ानेवाली, तथा शस्त्रोंकी पीड़ा दूर करनेवाली उत्तम औषधि उन्हें प्रदान की; दुर्य्योधन उस औषधिको सेवन करके उसी समय अस्त्रोंकी चोटसे उत्पन्न हुई सब पीड़ासे रहित होगये।

हे भारत! सवेरा होते ही व्यूह रचन जाननेवाले महा पराक्रमी भीष्मने स्वयं ही

मुख्य मुख्य वीरोंसे युक्त, नाना शस्त्रोंसे पूर्ण, प्रास, तोमर आदि अस्त्रोंको ग्रहण करनेवाले बड़े बड़े वीर योद्धा, गजपति, घुड़सवार, पदाति और सहस्रों रथियोंसे चारों ओरसे घेर कर अपनी महासेनाका व्यूह तैयार किया। प्रत्येक हाथीके समीप सात सात रथी, हर एक रथीके निकट सात सात घुड़सवार और प्रति घुड़सवारोंके पास सात सात ढाल तलवार ग्रहण करनेवाले योद्धा और हर एक तलवारवाले वीरके निकट सात सात धनुषधारी पुरुष स्थित हुए। महाराज! इसी प्रकारसे सब महारथोंके सहित महात्मा भीष्म तुम्हारी सेनाकी रक्षा करने लगे। दश हजार घुड़सवार, दश हजार गजपति, दश हजार रथी और तुम्हारे चित्रसेन आदि शूर वीर पुत्र कवच धारण करके पितामह भीष्मकी रक्षा करनेमें प्रवृत्त हुए। वे सब शूरवीर भीष्मकी रक्षा करने लगे, और वे सब महाबली योद्धा लोग व्यूहबद्ध होकर भीष्मसे रक्षित दिखाई देने लगे। तेजस्वी राजा दुर्य्योधन वर्म्मधारण करके देवताओंके बीच इन्द्रके समान शोभित होने लगे। तिसके-अनन्तर रथोंके चलनेका शब्द, जुझाऊ बाजे और तुम्हारे पुत्रोंका सिंहनाद सुनाई देने लगा। शत्रुओंसे न भेदने योग्य भीष्मका बनाया हुआ बहुत ही बड़ा वह मण्डल व्यूह पश्चिम और रणभूमिमें गमन करने लगा। हे राजन्! शत्रुओंसे अभेद्य वह मण्डल व्यूह गमन कालके समय अत्यन्त ही शोभित होने लगा। राजा युधिष्ठिरने शत्रुओंके महादारुण तथा अभेद्य मण्डल व्यूहको देखकर वज्रव्यूहकी रचना की। उससे रथी, घुड़सवार और सेनाके सब शूरवीर योद्धा यथारीति स्थानो पर स्थित होके सिंहनाद करने लगे। सेनाके रणभूमिमें उपस्थित होने पर दोनों ओरके शस्त्रधारी योद्धा आपसमें युद्धकी अभिलाष करते हुए एक दूसरेके व्यूहको भेद करनेकी

इच्छासे आगे बढने लगे। भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्य विराटसे, अश्वत्थामा शिखण्डीसे, राजा दुर्य्योधन धृष्टद्युम्नसे, नकुल सहदेव मद्रराज शल्यसे, अवन्ति देशके राजा विन्द और अनुविन्द युधामन्युसे और सब दूसरे राजा अर्जुनसे, भीमसेन सावधान होकर कृतवर्म्मासे, और अभिमन्यु चित्रसेन, विकर्ण और दुर्म्मर्षण तुम्हारे इन तीनों पुत्रोंके सङ्ग युद्ध करनेके निमित्त उनकी ओर वेगसे आया। हिड़िम्बा पुत्र राक्षसोंमें श्रेष्ठ घटोत्कच प्रागज्योतिषपुरके राजा भगदत्तके सम्मुख इस प्रकारसे चला, जैसे एक मतवारा हाथी दूसरे मतवारे हाथीकी ओर जाता है। राक्षस अलम्बुष क्रुद्ध होकर युद्ध दुर्म्मद सेनाके सहित पराक्रमी सात्यकिकी ओर दौड़ा। भूरिश्रवा यत्नवान् होके धृष्टकेतुसे, धर्म्मपुत्र राजा युधिष्ठिर श्रुतायुसे और चेकितान कृपाचार्य्यसे युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। बाकी सब वीर योद्धाओंने भीष्मको आक्रमण किया। तिसके अनन्तर सहस्र सहस्र राजाओंने शक्ति, त्रिशूल, तोमर, बाण, धनुष और गदा धारण करके अर्जुनको चारों ओरसे घेर लिया; तब अर्जुन अत्यन्त क्रुद्ध होके कृष्णसे बोले, हे कृष्ण! यह देखो, व्यूहरचना जाननेवाले गङ्गापुत्र भीष्मने धृतराष्ट्रसेनाके इस हद व्यूहको रचा है। पराक्रमसे युक्त राजा लोग कवच धारण करके मेरे संग युद्ध करनेके निमित्त उपस्थि। हुए हैं। हे जनार्द्दन! इस रणभूमिमें मेरे संग युद्धकी अभिलाष करके जो लोग यहां पर आये हैं, आज तुम्हारे देखते ही देखते मैं उन सबका सहार करूंगा। कुन्तीपुत्र अर्जुनने कृष्णसे ऐसा वचन कहकर धनुषपर रोदा चढाया, और उन सब राजाओंके ऊपर अपने बाणोंको वर्षाने लगे। जैसे वर्षाके समयमें बादल तालावोंको जलसे पूर्ण कर देता है, वैसे ही उन सब राजाओंने भी अपने बाणोंकी वर्षासे अर्जुनको पूरित कर दिया। महाराज!

कृष्ण अर्ज्जुनको वाणोंसे छिपे हुए देखकर तुम्हारी सेनाके बीच अत्यन्त ही हाहाकार शब्द होने लगा। देवता, देवऋषि, गन्धर्व्व और नाग आदि कृष्ण-अर्ज्जुनको इस प्रकारसे देखकर अत्यन्त ही विस्मित हुए। तब अर्ज्जुनने क्रुद्ध होकर ऐन्द्र अस्त्र चलाया, इस अवसरपर मैंने अर्ज्जुनका यह अद्भुत पराक्रम देखा, कि उन्होंने सब राजाओंके वैसी बाणोंकी वर्षाका भी निवारण किया और घोड़े, हाथी; सहस्र सहस्र राजाओं तथा प्रत्येक योद्धाओंको दो दो तथा तीन तीन बाणोंसे विद्ध किया, वे सब अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित होके शान्तनुनन्दन भीष्मके समीप चले गये। तब अथाह जलमें डूबती हुए नौकाके समान मनुष्योंको बचानेके निमित्त भीष्म ही उन सबको अर्ज्जुनके बाणोंसे बचानेवाले हुए। महाराज! जैसे वायुके प्रबल वेगसे समुद्रका जल बहुत दूर तक उठता है, वैसे ही तुम्हारी सब सेना अर्ज्जुनके सम्मुखसे भाग कर महापराक्रमी भीष्मकी सेनामें वेगसे पहुंच कर वहां पर स्थित हुई।

७८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र! इस भांतिके युद्धके समयमें धर्म्मात्मा युद्धसे निवृत्त हुए, और सब वीर योद्धा महात्मा अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित होकर जब भीष्मके समीप आये, तब भीष्म अपनी समुद्रके समान अपार सेनाको इस प्रकारसे व्याकुल देखकर, अर्ज्जुनके सम्मुख युद्धके निमित्त उपस्थित हुए। तब राजा दुर्य्योधन अर्ज्जुनका पराक्रम देखकर शीघ्रताके सहित सब राजाओंके समीप जाकर, उन सब वीरोंके सम्मुख सम्पूर्ण सेनाके पुरुषोंको हर्षित करते हुए महाबलवान् सुशर्म्मासे बोले, यह कौरवोंमें श्रेष्ठ शान्तनुपुत्र भीष्म अपने प्राणकी माया छोड़ कर सब प्रयत्नके सहित अर्ज्जुनके संग युद्ध करनेके अभिलाषी हुए हैं। तुम सब लोग सम्पूर्ण सेनाके सहित शत्रुओंसे युद्ध करनेवाले पितामह भीष्मकी सब प्रकारसे यत्न पूर्व्वक रक्षा करो। सब राजाओंकी सेना दुर्य्योधनकी आज्ञाको सुनते ही भीष्मकी रक्षा करनेमें तत्पर हुई। युद्धके निमित्त गमन करते हुए शान्तनुपुत्र भीष्म सहसा अर्ज्जुनको अत्यन्त सफेद घोड़ोंसे युक्त भयानक रथकी ध्वजासे शोभित, महाघोर बादलके समान गम्भीर गर्ज्जनसे युक्त रथ और शङ्खके शब्दसे पूर्ण अत्यन्त प्रकाशमान रथ पर आते हुए देखकर उनके निकट गये। किरीटधारी अर्ज्जुनको इस प्रकारसे आया हुआ देखकर सम्पूर्ण सेना भयसे व्याकुल हो, तुमुल शब्द करने लगी। मध्यान्ह समयके दूसरे सूर्य्यके समान घोड़ोंकी बागडोर ग्रहण करनेवाले कृष्णकी ओर कोई भी देखनेमें समर्थ न हुआ। और पाण्डवोंकी ओरके वीर भी श्वेत धनुष तथा सफेद घोड़ोंके रथ पर चढ़े हुए महाबलवान् भीष्मको आकाशमें उदय हुए श्वेतग्रहके समान देख कर कोई भी उनकी ओर न ताक सका, वह सम्पूर्ण त्रिगर्त्त देशीय वीर योद्धाओं तुम्हारे पुत्रों और दूसरे बहुतसे महारथियोंसे युक्त थे। इधर भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्यने अपने बाणोंसे मत्स्यराज विराटको विद्ध किया और एक एक बाणसे उनके धनुष और रथकी ध्वजा काट दी। सेनापति विराटने कटा धनुष त्यागके वेग पूर्व्वक एक दृढ़ धनुष लेकर सर्पके समान प्रज्वलित तीन बाणोंसे द्रोणाचार्य्यके ऊपर प्रहार किया। फिर चार बाणोंसे उनके चारों घोड़े, एक बाणसे उनके रथकी ध्वजा, पांच बाणोंसे सारथी और एक बाणसे उनका धनुष विद्ध किया तब ब्राह्मणश्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने क्रुद्ध होकर अपने आठ तीक्ष्ण बाणोंसे विराटके रथके घोड़ोंका और एक बाणसे उनके सारथीका बध किया। रथियोंमें मुख्य विराट घोड़े और

सारथीके मारे जानेपर निज रथसे कूदके अपने पुत्रके रथपर जा चढ़े। तिसकेअनन्तर वे पिता-पुत्र एक ही रथपर स्थित होके बहुतसे बाणोंकी बर्षाकर द्रोणाचार्य्यका निवारण करने लगे। तब द्रोणाचार्य्यने क्रुद्ध होकर विषधर सर्पके समान एक बाण विराट-पुत्र शङ्खके ऊपर शीघ्र ही चलाया; वह बाण शङ्खके हृदयका भेद करके रुधिर पीता हुआ रक्तसे भीगके पृथ्वीमें गिरा। शंख पिताके निकटहीमें गिर पड़े। राजा विराट अपने पुत्र शङ्खको मारा हुआ देखकर भयभीत होके मुख पसारे कालके समान द्रोणाचार्य्यके सम्मुख रणभूमिसे भाग गये। तिसके अनन्तर द्रोणाचार्य्य शीघ्रताके सहित पाण्डवोंके सैकड़ों तथा सहस्रों वीरोंको युद्धमें निवारण करने लगे। महाराज! शिखण्डीने युद्धमें अश्वत्थामाके निकट जाकर शीघ्रताके सहित तीन बाणोंसे उनके भौंहके बीचका स्थान अर्थात् ललाट विद्ध किया; उन तीनों बाणोंसे ललाटमें विद्ध होनेपर, सुवर्णमय तीन शिखरोंसे युक्त मेरु पर्वतकी भांति अश्वत्थामाकी शोभा हुई। तब उन्होंने क्रुद्ध होकर निमेष भरमें शिखण्डीके रथके घोड़े और सारथीको मारकर उनके रथकी ध्वजा और उनका धनुष काट डाला। शत्रुनाशन रथियोंमें मुख्य शिखण्डी क्रुद्ध होकर उत्तम शाणित तलवार और ढाल ग्रहण करके रथसे कूदके बाज-पक्षीकी भांति रणभूमिमें भ्रमण करने लगे। हे राजन्! तलवार ग्रहण करके युद्धभूमिमें घूमनेवाले शिखण्डीके छिद्रको कोई भी नहीं देख सका, वह अद्भुत रूपसे दीख पड़ने लगा। अश्वत्थामा अत्यन्त क्रुद्ध होकर उनके ऊपर सहस्रों बाणोंकी बर्षा करने लगे; रथियोंमें मुख्य शिखण्डी भी उन दारुण बाणोंको अपने तीक्ष्ण-धारवाले तलवारसे काटने लगे। तब अश्वत्थामाने बहुतसे बाणोंसे उनकी तलवार और ढाल काटकर फिर उन्हें अपने बाणोंसे विद्ध किया। शिखण्डीने अश्वत्थामाके बाणोंसे खण्डित उस आधे तलवारके टुकड़ेको-जो उसके हाथमें था, घुमाकर अश्वत्थामाके ऊपर जलते हुए सर्पके समान चलाया। अश्वत्थामाने बज्रके समान प्रकाशमान खण्डित तलवारको सहसा सम्मुख आते हुए देखकर अपने हाथोंकी शीघ्रतासे बाण चलाकर उसे भी काटके गिरा दिया। और शिखण्डीको भी लोहमय अनेक बाणोंसे विद्ध किया। तब शिखण्डी अश्वत्थामाके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर शीघ्रताके सहित वृष्णिवंशीय सात्यकिके रथपर जो चढ़े।

हे भारत! पराक्रमी सात्यकिने क्रुद्ध होकर अत्यन्त क्रूर राक्षस अलम्बुषको अपने बाणोंसे विद्ध किया। राक्षसेन्द्र अलम्बुषने अर्धचन्द्र बाणसे सात्यकिके धनुषको काटकर अपने बाणोंसे उन्हें विद्ध किया, फिर राक्षसी माया उत्पन्न करके बाणोंकी बर्षासे सात्यकिको छिपा दिया। उस युद्धमें मैंने सात्यकिका यह अद्भुत पराक्रम देखा, कि वह अनेक तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध होकर भी युद्धसे विचलित नहीं हुए, वरन अर्जुनके निकट जो उन्होंने ऐन्द्र अस्त्र प्राप्त किया था, उसे चलाया, उस ऐन्द्र अस्त्रसे राक्षसी मायाको जला करके जैसे बादल बर्षाकालमें जलकी वर्षासे पृथ्वीको पूर्ण करते हैं, वैसे ही बाणोंकी वर्षा करके सात्यकिने अलम्बुषको छिपा दिया। वह राक्षस यशस्वी सात्यकिके बाणोंसे इस प्रकारसे पीड़ित होके डरकर रणभूमि छोड़के भाग गया। सत्य पराक्रम प्रगटनेवाले सात्यकिने इन्द्रसे भी अजेय उस राक्षसको तुम्हारी सेनाके योद्धाओंके सम्मुख हीमें पराजित करके सिंहनाद किया और फिर तुम्हारी सेनाके योद्धाओंका उत्तम पानीसे बुझाये हुए बाणोंसे नाश करने लगे, वे सब योद्धा भयभीत होकर भागने लगे। उधर द्रुपद-पुत्र बलवान् धृष्टद्युम्नने तुम्हारे

पुत्र राजा दुर्य्योधनको तीक्ष्ण बाणोंसे छिपा दिया, हे राजन्! राजा दुर्योधन धृष्टद्युम्नके बाणोंसे आच्छादित होकर भी पीड़ित न हुए, और नौ बाणोंसे धृष्टद्युम्नको शीघ्र ही विद्ध किया; वह युद्ध अद्भुत रूपसे दीख पड़ने लगा। सेनापति धृष्टद्युम्नने दुर्य्योधनके धनुषको काट कर शीघ्र ही चारों घोड़ोंको मार डाला फिर सात बाणोंसे उनको शीघ्र विद्ध किया; तब महाबाहु बलवान, राजा दुर्य्योधन रथसे कूद कर तलवार ढाल ग्रहण करके पैदल ही धृष्टद्युम्नकी ओर दौड़े। राजहितैषी शकुनिने सब वीरोंके सम्मुखहीमें उनको अपने रथ चढ़ा लिया। शत्रुनाशन वीर धृष्टद्युम्न राजा दुर्य्योधनको इस प्रकारसे पराजित करके वज्रधारी इन्द्रके समान तुम्हारी सेनाका वध करने लगे। कृतवर्म्माने भीमसेनको अपने बाणोंसे इस प्रकारसे छिपा दिया, जैसे बादल सूर्य्यको छिपा देता है। शत्रुनाशन भीमसेन हंसते हुए कृतवर्म्माके ऊपर अपने बाणोंका चलाने लगे। शस्त्रोंकी विद्या जाननेवाले वाले कृतवर्म्मा भीमसेनके बाणोंसे विद्ध होकर भी कम्पित नहीं हुए, और उनके ऊपर तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करने लगे। महाबलवान् भीमसेनने कृतवर्म्माके चारों घोड़े सारथी और रथकी ध्वजाको अपने बाणोंसे विद्ध किया। वह बाणोंसे क्षत-विक्षत शरीर होकर फूले पलाश वृक्षकी भांति दिखाई देने लगे। अनन्तर शीघ्र ही रथसे उतर कर अपने साले वृषकके रथ पर तुम्हारे पुत्रोंके सम्मुखहीमें जा चढ़े। तब भीमसेन क्रुद्ध होके तुम्हारी सेनाकी ओर दौड़े; और दण्डधारी यमराजके समान उन सब सैनिक-पुरुषोंका वध करने लगे।

७८ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! अपनी सेनाके संग पाण्डवोंका बहुत विचित्र द्वैरथ युद्ध मैंने तुम्हारे मुखसे सुना, तुम मेरी ओरके किसी वीरको प्रसन्न और हर्षित कहकर प्रशंसा नहीं करते हो। सदा पाण्डवोंके योद्धाओंको ही आनन्दित और युद्धमें उत्साही कहके प्रशंसा करते हो। मेरी सेनाके योद्धाओंको तेजहीन, मनमलिन और पराजित कहके वर्णन करते हो, इसका कारण प्रारब्ध ही है, इसमें कुछ सन्देह नहीं है।

सञ्जय बोले, हे राजन्! तुम्हारी ओरके सब योद्धा ही श्रेष्ठ और बलवान् हैं, वह सब उत्साह और शक्तिके अनुसार पराक्रम प्रकाशित करते हैं; परन्तु जिस प्रकारसे गङ्गाका मीठा जल समुद्रमें जाकर खारा हो जाता है, वैसे ही तुम्हारे सब महात्मा वीरोंका पराक्रम पाण्डवोंके समीपमें निष्फल होजाता है, तुम्हारी ओरके सब योद्धा अत्यन्त चेष्टा करके शक्तिके अनुसार कठिन कर्म्मोंका अनुष्ठान करते रहते हैं; इससे तुम उन लोगोंके ऊपर दोषारोपण मत करो। हे राजन्! तुम्हारे तथा दुर्य्योधन आदिके दोषहीसे यमराजके राज्यको बढ़ानेवाला सब लोकोंके अत्यन्त ही नाशका समय उपस्थित हुआ है। यह तुम्हारे किये हुए दोषोंसे जो फल प्राप्त हुए हैं; उनके निमित्त शोक करना तुमको उचित नहीं है। क्षत्रिय योद्धा लोग सम्पूर्ण अर्थ और जीवन रक्षाकी आशा छोड़ कर स्वर्गप्राप्तिके निमित्त युद्धमें मरकर पुण्य लोकमें जानेकी अभिलाष करके नित्य युद्ध करते हैं। महाराज! उस दिन पूर्व्वाह्न समयमें देवता और असुरोंके समान जो वीरोंका युद्ध होने लगा, वह तुम एकाग्र चित्त होके मुझसे सुनो। युद्धमें भयानक कर्म्म करनेवाले महारथी, तेजस्वी अवन्ति राज दोनों भाई इरावान्‌को देखकर उनके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए; उनका महाघोर रोएँको खड़े करनेवाला युद्ध आरम्भ हुआ। इरावान, अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपने

बाणोंसे देवरूपी उन दोनों भाइयोंको शीघ्रताके सहित विद्ध करने लगे। वे विचित्र योद्धा दोनों भाई भी इरावान्को अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे। वे लोग शत्रुका नाश करनेके निमित्त आपसमें जिस प्रकारसे युद्ध करने लगे, उसमें कोई दूसरेसे अधिक न दीख पड़ा। इरावान्ने चार बाणोंसे अनुविन्दके चारों घोड़ोंका वध करके फिर चोखे दो बाणोंसे उनके रथकी ध्वजा और धनुषको काट दिया। तब अनुविन्दने अपने रथको छोड़के विन्दके रथपर चढ़के एक दृढ़ धनुष ग्रहण किया। फिर बलवानोंमें श्रेष्ठ अवन्तिदेशीय विन्द और अनुविन्द दोनों भाई शीघ्र इरावान्के ऊपर बाणोंकी वर्षा करने लगे। उनके धनुषोंसे छूटे हुए बाण आकाशमें सूर्य्यका पथ रोक करके उन्हें छिपाने लगे। इरावान्ने भी उन दोनोंके ऊपर बाणवर्षा करके उनके सारथीको मारके गिरा दिया। सारथीके मरनेपर घोड़े रथ लेकर इधर उधर घूमने लगे। सर्पोंके राजा ऐरावत नागके दौहित्र राजा इरावान् अवन्तिराज दोनों भाइयोंको इस प्रकारसे पराजित करके पराक्रमको प्रकाशित करते हुए शीघ्रताके सहित तुम्हारी सेनाका नाश करने लगे। तुम्हारी सेनाके योद्धा इरावान्के बाणोंसे पीड़ित होकर जैसे मनुष्य विष पान करके मूर्च्छित होजाते हैं, वैसे ही चारों ओर वेगपूर्व्वक घूमने लगे। इधर महा बलवान्, पराक्रमी राक्षसेन्द्र, घटोत्कच सूर्य्यके समान प्रकाशित और ध्वजासे शोभित रथपर चढ़के भगदत्तकी ओर दौड़ा। जैसे पहिले समयमें वज्रधारी इन्द्र तारकामयके युद्धमें ऐरावतपर चढ़के शोभित हुए थे, वैसे ही प्राग्ज्योषपुरके राजा भगदत्त अपने हस्तिराजपर चढ़के घटोत्कचके सङ्ग युद्ध करने लगे। देखनेवाले देवता, गन्धर्व्व और ऋषियोंने घटोत्कचके सङ्ग भगदत्तके युद्धमें किसीको एक दूसरेसे अधिक पराक्रम करते नहीं देखा। जैसे देवताओंके राजा इन्द्र दानवोंकी सेनाको भयभीत करते हैं, वैसे ही राजा भगदत्त पाण्डवोंकी सेनाको अपने अस्त्रोंसे मारकर तितर बितर करने लगे। पाण्डवोंकी सेनाके योद्धा लोग इधर उधर दौड़ने लगे, और अपनी सेनाके बीचमें किसीको भी अपनी रक्षा करनेवाला न देखा; हम लोगोंने केवल घटोत्कचको भगदत्तके सम्मुख युद्ध करते देखा, और सब पाण्डवोंकी ओरके योद्धा उनके सम्मुखसे भाग गये। पाण्डवोंकी सेनाके फिर निवृत्त होनेपर सेनाके बीच महा कोलाहल होने लगा। अनन्तर घटोत्कचने अपने बाणोंकी वर्षासे भगदत्तको इस प्रकारसे छिपा दिया, जैसे बादल पहाड़पर जलकी वर्षा करते हैं। राजा भगदत्तने घटोत्कचके धनुषसे छूटे हुए सब बाणोंको काटकर अपने बाणोंसे उसके सम्पूर्ण मर्म्मस्थानोंको विद्ध किया, जिस प्रकार वज्रसे पहाड़ भेदित होता है, वैसे ही घटोत्कच भगदत्तके अनेक बाणोंसे पीड़ित होकर भी दुःखित नहीं हुए। तब भगदत्तने क्रुद्ध होके घटोत्कचके ऊपर चौदह तोमर चलाये, घटोत्कचने उनको अपने बाणोंसे काटके गिरा दिया। उस महाबाहु घटोत्कचने उत्तम पानीमें बुझाये उन सब तोमरोंको काटकर कङ्कपत्रसे युक्त सात बाणोंसे भगदत्तको विद्ध किया। तब भगदत्तने हंसते हुए चार बाणोंसे घटोत्कचके चारों घोड़ोंको मार डाला। घटोत्कचने घोड़ोंसे रहित रथपरसे ही एक शक्ति भगदत्तके ऊपर चलाई, भगदत्तने उस वेगवान् सुवर्णदण्डसे युक्त शक्तिको सम्मुख आती देखकर अपने बाणोंसे तीन खण्ड करके पृथ्वीमें गिरा दिया। हिड़िम्बापुत्र घटोत्कच अपनी चलाई हुई शक्तिको निष्फल होती देखकर; भयभीत होके राजा भगदत्तके सम्मुखसे इस भांति भाग गया, जैसे इन्द्रके युद्धमें दैत्यम

श्रेष्ठ नमुचि भाग गया था। भगदत्तका गज-राज यम और वरुणसे भी अजेय महापराक्रमी विख्यात शत्रु घटोत्कचको पराजित करके जैसे वनका हाथी कमलके वनको तोड़ता हुआ घूमता है, वैसे ही पाण्डवोंकी सेनाको मर्द्दन करता हुए चारों ओर रणभूमिमें भ्रमण करने लगा। मद्रराज शल्यने अपने दोनों भानजों नकुल और सहदेवके सङ्ग युद्धमें प्रवृत्त होकर उन्हें अपने बाणोंसे छिपा दिया। सहदेवने अपने मामा मद्रराजको युद्धमें उपस्थित देख उन्हें अपने बाणोंसे इस भांतिसे छिपा दिया जैसे बादल सूर्य्यको छिपा देता है। मद्रराज शल्य भानजोंके बाणोंसे छिप कर बहुत ही आनन्दित हुए और नकुल सहदेव भी मामाके बाणोंसे छिप कर उनके ऊपर प्रसन्न हुए। तब राजा शल्यने चार बाणोंसे नकुलके चारों घोड़ोंको मार डाला। महारथ नकुल घोड़ोंके सहित रथसे कूद कर यशस्वी भाई सहदेवके रथ पर जाचढ़े। दोनो भाई एक ही रथ पर चढ़के अपने धनुषको चढ़ा कर बाणोंकी वर्षासे क्षण भरमें मद्रराज शल्यके रथको छिपा दिया। पुरुषसिंह शल्यने दोनों भानजोंके तीखे बाणोंसे छिप कर हंसते हुए उनके बाणोंकी वर्षाको निवारण किया। तब सहदेवने क्रुद्ध होकर एक महाभयङ्कर बाण ग्रहण करके शल्यके ऊपर चलाया। वह सहदेवके धनुषसे छूटा हुआ बाण गरुड़के समान वेगवान् होकर मद्रराजके शरीरको भेद करके पृथ्वीमें गिरा। महारथ शल्य उससे अत्यन्त विद्ध और पीड़ित होके रथ पर मूर्च्छित होगये। तब उनका सारथी उन्हें भानजोंके बाणोंसे पीड़ित और मूर्च्छित देखकर उनको लेके रणभूमिसे पृथक् हुआ। तब धृतराष्ट्रकी सेनाके सब योद्धा शल्यको मरा हुआ जान कर दुःखित हुए. महारथ माद्रीनन्दन नकुल और सहदेव मामाको युद्धमें पराजित करके हर्षसे प्रफुल्लित होकर शङ्ख बजाके सिंहनाद करने लगे। हे राजन्! जिस प्रकार इन्द्र और उपेन्द्र दोनों देवता दैत्योंको तितर बितर कर देते हैं, वैसे ही नकुल-सहदेव दोनों भाई हर्षित होकर तुम्हारी सेनाको तितर बितर करने लगे।

८० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, इसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर मध्यान्ह समयमें श्रुतायुको देखकर उनकी ओर अपने रथको बढाया। अनन्तर उत्तम पानीसे बुझे हुए नौ तीक्ष्ण बाणोंको चला कर शत्रुनाशन श्रुतायुको विद्ध करते हुए उनकी ओर दौड़े। महारथ श्रुतायुने धर्म्मराजके चलाये हुए बाणोंको निवारण करके उनके ऊपर सात बाणोंको चलाया। वह सब बाण महात्मा युधिष्ठिरके कवचको भेदके मानों प्राण निकालते हुए रुधिर पान करने लगे। रथियोंमें श्रेष्ठ महात्मा राजा युधिष्ठिर श्रुतायुके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर बराहकर्णनाम एक बाणसे राजा श्रुतायुका हृदयस्थान विद्ध किया और एक बाणसे उनके रथकी ध्वजा काटके पृथ्वीमें गिरा दी। श्रुतायुने अपनी ध्वजा कटती हुई देखके सात बाणोंसे फिर राजा युधिष्ठिरको विद्ध किया। तिसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर जैसे प्रलय कालमें अग्नि प्रज्वलित होकर सम्पूर्ण जीव जन्तुओंको भस्म कर देती हैं; वैसे ही क्रोधसे प्रज्वलित होगये। हे महाराज! देवता, गन्धर्व्व और राक्षस आदि धर्म्मराज युधिष्ठिरको इस भांतिसे क्रुद्ध हुए देख कर व्याकुल होने लगे। धर्म्मराज युधिष्ठिरने क्रोधित होकर ओठोंको काटते हुए प्रलय कालके सूर्य्यके समान मूर्त्ति धारण की, तब सम्पूर्ण प्राणियोंने समझा, कि आज धर्म्मराज युधिष्ठिर तीनों लोकोंको भस्म कर देंगे। तुम्हारी सेनाके सब योद्धा अपने जीवनकी आशासे निराश होगये। परन्तु धर्म्मराज

युधिष्ठिरने धीरज धरके अपने क्रोधको शान्त किया। तब राजा युधिष्ठिरने श्रुतायुके बड़े धनुषकी मूष्टि काट कर उन्हें धनुषरहित करके, सब सेनाके सम्मुखहीमें उनके दोनों स्तनोंके बीचका स्थान अपने बाणोंसे बिद्ध किया; और शीघ्रताके सहित उनके चारों घोड़े और सारथीको मार डाला। तब श्रुतायु राजा युधिष्ठिरके पराक्रमको देखकर घोड़ोंसे रहित हो, रथ छोड़कर वेग पूर्व्वक रणभूमिसे भाग गये। उस महा धनुर्द्धारी श्रुतायुके भागजाने पर दुर्य्योधनकी सब सेना युद्ध भागने लगी। महाराज! राजा युधिष्ठिर इस प्रकारसे कठिन कर्म्म करके यमराजके समान तुम्हारी सेनाका नाश करने लगे। वृष्णिवंशीय चेकितानने रथियोंमें मुख्य कृपाचार्य्यको सब सेनाके सम्मुखहीमें अपने बाणोंसे छिपा दिया। कृपाचार्य्यने शीघ्रताके सहित उन सब बाणोंको निवारण करके फिर अपने बाणोंसे चेकितानको बिद्ध किया; फिर एक बाणसे उनके धनुषको काट दिया और एक बाणसे उनके सारथीको मार डाला। इसके अनन्तर उनके घोड़ोंको अपने अस्त्रोंसे मार कर पृष्ठरक्षकोंके दो सारथियोंका संहार किया। तब चेकितानने शीघ्र ही रथसे कूद कर गदा ग्रहण की फिर उस वीरोंके नाश करनेवाली गदासे अश्वत्थामाके चारों घडोंको मार कर उनके सारथीको भी मारके गिरा दिया। अश्वत्थामाने पृथ्वीमें खड़े होकर चेकितानके ऊपर सोलह बाण चलाये। वह सब बाण चेकितानके कवचको भेद करके पृथ्वीमें प्रवेश कर गये। जैसे इन्द्रने वृत्रासुरके ऊपर वज्र चलाया था, वैसे ही चेकितानने अश्वत्थामाके वधकी इच्छा करके उस भयङ्कर गदाको उनके ऊपर चलाया। गौतमनन्दन कृपाचार्य्यने उस महा-कठोर प्रचण्ड पत्थरकी गदाको कई हजार बाणोंसे निवारण किया। हे भारत। तब चेकितान मियानसे तलवार खींच कर कृपाचार्य्यकी ओर वेगसे दौड़े। कृपाचार्य्य भी धनुष त्याग कर तलवार ग्रहण करके चेकितानकी ओर वेगसे दौड़े; वे दोनों पराक्रमी महारथयोद्धा तीक्ष्ण धारवाले तलवारोंसे एक दूसरेके ऊपर प्रहार करने लगे। सब लोगोंके देखते हुए पृथ्वीके बीचमें वे दोनों वीर स्थित होके प्रहार करते, तथा पैंतरा बदलते हुए एक दूसरेके प्रहारसे पीड़ित होकर मूर्च्छित होगये। तब करकर्ष नामक एक पुरुष जो युद्ध-दुर्म्मद चेकितानका मित्र था, उनको इस अवस्थामें देख कर मित्रताके वशमें होकर दौड़ा और वहां पर पहुंच कर सब सेनाके सामने ही उन्हें अपने रथपर चढ़ा लिया। वैसे ही तुम्हारे सालि पराक्रमी शकुनिने भी रथियोंमें मुख्य कृपाचार्य्यको शीघ्र ही अपने रथ पर चढ़ा लिया। हे राजन्! बलवान् धृष्टकेतुने युद्धमें क्रुद्ध होकर सोमदत्तपुत्र भूरिश्रवाकी छातीमें नौ बाण मारे। जैसे सूर्य्य मध्यान्ह कालमें अपनी प्रकाशमान किरणोंसे शोभित होते हैं, वैसे ही वे सब बाण तेजस्वी भूरिश्रवाकी छातीमें लग कर शोभायमान हुए। सोमदत्त-पुत्र भूरिश्रवाने भी अपने तीक्ष्ण बाणोंको चला कर अपने [illegible] और उनके सारथिसे महाबाहुके उन्हें रथहीन कर दिया। तब उनको रथ और सारथीसे रहित देख कर अपने बाणोंकी वर्षासे छिपा दिया। महात्मा धृष्टकेतु उस रथको त्याग कर शतानीकके रथ पर जाचढ़े। हे राजन्! चित्रसेन, विकर्ण और दुर्म्मर्षण तुम्हारे ये तीनों पुत्र वर्म्म धारण कर सुभद्रापुत्र अभिमन्युके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। जैसे वात, कफ और पित्त इन तीनोंके सङ्ग शरीरका युद्ध होता है, वैसे ही अभिमन्युके सङ्ग उन तीनों वीरोंका महाघोर युद्ध होने लगा। उस महाघोर युद्धमें तुम्हारे तीनों पुत्रोंको रथहीन करनेके अनन्तर अभिमन्युको भीमसेनकी प्रतिज्ञाकी सुध हुई।

इसहीसे उन्होंने तुम्हारे तीनों पुत्रोंका वध नहीं किया। तिसके अनन्तर श्वेतवाहन अर्ज्जुन गजपति, घुड़सवार और रथी आदि वीरोंसे युक्त राजाओंसे घिरे हुए देवतासे भी अजेय भीष्मकी एकमात्र बालक अभिमन्युके हाथसे तुम्हारे पुत्रोंकी रक्षा करनेके निमित्त शीघ्र जाते हुए देखकर कृष्णसे बोले, हे हृषीकेश! जहां पर ये बहुतसे रथी दीख पड़ते हैं, तुम उसी स्थानमें मेरे रथको लेचलो; वे सब बड़े शूरवीर, अस्त्रविद्या जाननेवाले और युद्धके अभिलाषी हैं, जिससे वे लोग मेरी सेनाका नाश न करें, तुम उस ही रीतिसे मेरे रथको वहां पर लेचलो। अत्यन्त पराक्रमी अर्ज्जुनने जब कृष्णसे इस प्रकार कहा, तब उन्होंने उस सफेद घोड़ोंसे युक्त रथको उसी ओर चलाया। अर्ज्जुन जो क्रुद्ध होकर तुम्हारी सेनाकी ओर गमन करने लगे, उससे तुम्हारी सेनामें महा कोलाहल होने लगा। कुन्तीनन्दन अर्ज्जुनने भीष्मकी रक्षा करनेवाले उन सब राजाओंके निकट जाकर सुशर्म्मासे कहा, तुम युद्धमें एक मुख्य वीर और हम लोगोंके पुराने शत्रु हो तुमको मैं विशेषरूपसे जानता हूं; तुम [illegible] अनीतिका दारुण फल आज अनुभव करोगे [illegible] निवारण [illegible] तुम्हारे मरे हुए पिताके समीप भेज [illegible] रथियोंमें श्रेष्ठ सुशर्म्माने शत्रुनाशन अर्ज्जुनकी कठोर बातोंको सुन भला बुरा कुछ भी उत्तर नहीं दिया। उन्होंने तुम्हारे पुत्रों और बहुतसे राजाओंके सहित अर्ज्जुनके समीप गमन किया और बादल जैसे सूर्य्यको छिपा देते हैं, वैसे ही उन्होंने आगे पीछे तथा सब ओरसे बाणोंकी वर्षा करके अर्ज्जुनको छिपा दिया। अनन्तर दोनों पक्षवालोंसे महाघोर रुधिर बहाने वाला भयङ्कर युद्ध आरम्भ हुआ।

८१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! जब सब राजाओंने अपने बाणोंसे बलवान् अर्ज्जुनको पीड़ित किया तब उन्होंने पैरसे पोंछ दबनेसे सर्पके समान लम्बी सांस लेते हुए एक एक बाणोंसे उन सब महारथियोंके धनुषको काट दिया। क्षण भरमें उन सब राजाओंके धनुषको काट कर उनके नाश करनेकी इच्छासे एक सङ्ग ही सबको बाणोंसे विद्ध किया। अर्ज्जुनने जब उन महारथिओंके ऊपर इस भांतिसे बाणोंका प्रहार किया, तब किसी किसीका शरीर क्षत विक्षत रुधिरसे पूरित और कितनोंका शरीर कवच रहित होगया। किसीका शिर कट गया और कोई अर्ज्जुनके बाणोंसे मर कर विचित्र रूपसे नष्ट होगये। वे सब एक ही समयमें कालके कराल ग्रासमें जा पड़े। उन राजपुत्रोंको युद्धमें मरते हुए देख कर उनके पृष्ठरक्षक बत्तीस योद्धा और त्रिगर्त्तराज सुशर्म्मा रथ पर चढ़के अर्ज्जुनके सम्मुख आके उपस्थित हुए। जैसे मेघ पर्व्वत पर जलकी वर्षा करते हैं, वैसे ही वे लोग अर्ज्जुनको चारों ओरसे घेर कर धनुष पर टङ्कार देके उनके ऊपर बाणोंकी वर्षा करने लगे। यशस्वी अर्ज्जुनने उनके बाणोंसे पीड़ित और क्रुद्ध होके उन पृष्ठरक्षक वीरोंको शिला पर घिसे और तेलसे साफ किये हुए साठ बाणोंसे मारडाला। फिर उन साठ रथियोंको पराजित करके प्रसन्न चित्तसे राजाओंकी सेनाका नाश करते हुए भीष्मके वधके निमित्त शीघ्रतासे आगे बढ़ने लगे। त्रिगर्त्तराज सुशर्म्माने बन्धुबान्धवोंको अर्ज्जुनके बाणोंसे मरा हुआ देखकर पहिले पराजित हुए उन सब रथी राजाओंको आगे कर शीघ्रताके सहित अर्ज्जुनके वधके निमित्त फिर उनके सम्मुख गमन किया। शिखण्डी आदि वीर त्रिगर्त्तराज आदि वीरोंसे अर्ज्जुनको आक्रान्त देखकर उनकी रक्षा करनेकी अभिलाषामें अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके वहां पर उपस्थित हुए। भीष्मके

समीप जानेकी इच्छा करनेवाले महाधनुर्द्धारी अत्यन्त पराक्रमी अर्ज्जुन त्रिगर्त्तराजके सहित उन वीरोंको फिर सम्मुख आते हुए देख, गांडीव धनुषसे छूटे हुए अपने बाणोंसे उन सबको तितर बितर कर वेगसे गमन करने लगे। फिर राजा दुर्य्योधन और सिन्धुराज जयद्रथको सम्मुख आया हुआ देख, उनके सङ्ग भी मुहूर्त्त भर युद्ध किया, फिर उन्हें त्याग कर धनुष बाण हाथमें ग्रहण करके भीष्मकी ओर जाने लगे।

अनन्त कीर्त्तिमान् महाबलसे युक्त महात्मा राजा युधिष्ठिर क्रुद्ध होके शीघ्रता पूर्व्वक युद्धमें अपना भाग मद्रराज शल्यको त्यागकर भीमसेन नकुल और सहदेवके सहित शान्तनुपुत्र भीष्मके निकट युद्ध करनेके निमित्त जाने लगे। महाबलवान् गङ्गापुत्र भीष्म आये हुए सम्पूर्ण महारथियोंमें अग्रगण्य सब पाण्डुपुत्रोंसे आक्रान्त होकर भी विचलित न हुए। महापराक्रमी राजा जयद्रथ एक प्रचण्ड धनुष ग्रहण करके उन महारथियोंके समीप जाकर सहसा उन सब लोगोंका धनुष काट दिया, महात्मा दुर्य्योधन क्रोधरूपी विषसे पूर्ण होकर युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल और सहदेवको अग्निके समान बाणोंसे विद्ध करने लगे। हे राजन्! जैसे दैत्योंने मिल कर देवताओंको अपने अस्त्रोंसे विद्ध किया था, वैसे ही कृपाचार्य्य, शल्य, शल और चित्रसेन अत्यन्त क्रुद्ध होकर पाण्डवोंको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे।

महाराज! अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर भीष्मके बाणसे शिखण्डीके धनुषको कटते और उसे युद्धसे भागते हुए देखकर क्रुद्ध होकर यह वचन बोले, हे महावीर द्रुपदपुत्र! तुमने अपने पिताके सम्मुख हमींमें मुझसे यह कह कर प्रतिज्ञा की थी, कि मैं सत्य कहता हूं, सूर्य्यके समान प्रकाशमान बाणोंसे महाव्रत करनेवाले भीष्मका वध करूंगा। इस समय उनको बिना युद्धमें मारे तुम्हारी वह प्रतिज्ञा सफल नहीं होती है, इससे जिसमें तुम्हारी प्रतिज्ञा झूठी न होजावे, तुम वैसा ही कार्य्य करो, अपनी प्रतिज्ञा पूरी करके धर्म्म, यश और कुलकी रक्षा करो। देखो भयानक वेगशील भीष्म सबके नाश करनेवाले यमराजके समान क्षण भरमें मेरी सम्पूर्ण सेनाको अपने बाणोंसे नाश किये डालते हैं; तुम युद्धमें भीष्मके बाणोंसे कटा हुआ धनुष लेकर बन्धु बान्धव तथा अपने सहोदर भाइयोंको छोड़कर कहां भागे जाते हो? ऐसा कार्य्य करना तुमको उचित नहीं है। हे द्रुपदपुत्र! तुम भीष्मको अत्यन्त ही बलवान् और सब सेनाको उनके बाणोंसे तितर बितर होती तथा भागती देख कर अवश्य ही भयभीत होगये हो, क्योंकि तुम्हारे मुखका वर्ण मलिन होगया है। परन्तु अर्ज्जुन भीष्मसे युद्ध करनेके निमित्त उनके सम्मुख उपस्थित हुए हैं, उनको क्या तुम नहीं जानते हो? विशेष करके तुम पृथ्वीमें विख्यात वीर प्रसिद्ध होकर आज किस कारणसे भीष्मसे डरते हो? राजन्! महात्मा शिखण्डी धर्म्मराज युधिष्ठिरके इस प्रकार रूखे और अर्थ युक्त वचन सुन, उसे उपदेश जानकर भीष्मके वधके निमित्त शीघ्रतासे फिर उनकी ओर गमन करने लगे। राजा शल्य शिखण्डीको भीष्मकी ओर वेगसे गमन करता हुआ देखकर अपने महाघोर अस्त्रोंसे उन्हें निवारण करने लगे। महाधनुर्द्धारी इन्द्रके समान पराक्रमी शिखण्डी प्रलयकालकी अग्निके समान प्रकाशित उन अस्त्रोंको देखकर विचलित नहीं हुए, वरन अपने प्रचण्ड बाणोंसे उसे निवारण करनेकी इच्छासे वहां पर ही स्थिर हुए; अनन्तर उन्होंने उसके प्रतिकारके निमित्त वारुणास्त्र चला कर उस महाघोर आग्नेयास्त्रका निवारण किया। पृथ्वीके सब वीर योद्धा और आकाशसे देवता लोग उस

आग्नेयास्त्रको वारुणास्त्रसे निवृत्त होते हुए देखने लगे।

हे भारत! अत्यन्त पराक्रमी महात्मा भीष्म राजा युधिष्ठिरके अत्यन्त विचित्र रथ, ध्वजा और धनुषको बाणोंसे काट कर सिंहनाद करने लगे। तब युधिष्ठिरको भयभीत देखकर भीमसेन गदा ग्रहण करके जयद्रथकी ओर पैदल ही दौड़े। सिन्धुराज जयद्रथने गदा लिये हुए भीमसेनको दण्डधारी यमराजके समान अत्यन्त वेगसे सम्मुख आता हुआ देखकर उनको चारों ओरसे यमदण्डके समान भयानक उत्तम पानीसे बुझे हुए बाणोंसे विद्ध किया। अत्यन्त वेगसे दौड़ते हुए भीमसेनने उन बाणोंकी कुछ भी पर्वाह न करके क्रुद्ध होकर उनके रथके चारों घोड़ोंको मार डाला। तब अत्यन्त तेजस्वी इन्द्रके समान तुम्हारे पुत्र चित्रसेन भीमको देखकर अस्त्र ग्रहण कर उनके वध करनेके निमित्त शीघ्रताके सहित रथ पर चढ़के भीमसेनके सम्मुख उपस्थित हुए। भीमसेनने गर्ज्जते हुए चित्रसेनके समीप जाकर उनके ऊपर गदा चलाई। उस मनुष्योंके नाश करनेवाली महाघोर गदाको देखकर सब कौरव उससे बचनेके निमित्त शीघ्र ही वहांसे डरके हट गये। परन्तु चित्रसेन उस आती हुई महाघोर गदाको देखकर भयभीत न हुए और उत्तम तलवार और ढाल ग्रहण करके जैसे पर्व्वतके शृङ्गसे सिंह कूद कर गमन करता है, वैसे ही रथसे कूद कर पृथ्वीपर गमन करने लगे। इधर वह भीमकी चलाई हुई गदा चित्रसेनके घोड़े और सारथीके सहित उत्तम रथको नष्ट करती हुई आकाशसे गिरे हुए महोल्काकी भांति पृथ्वीमें गिरी। तुम्हारी सेनाके योद्धा और शत्रुओंके सब वीर मिलकर उस अद्भुत कर्मको देखकर सिंहनाद करके तुम्हारे पुत्र चित्रसेनकी प्रशंसा करने लगे।

सञ्जय बोले; तुम्हारे पुत्र विकर्णने पराक्रमी चित्रसेनको रथरहित देखकर उन्हें अपने रथपर चढ़ा लिया। इस प्रकारके महाघोर तुमुल युद्धके समयमें शान्तनुपुत्र भीष्म शीघ्रताके सहित राजा युधिष्ठिरकी ओर चले, तब रथी, गजपति और घुड़सवारोंके सहित सब सृञ्जयोंकी सेना कांपने लगी, सबोंने समझा, कि युधिष्ठिर यमराजके हाथमें पड़े, परन्तु अपने नकुल सहदेव दोनों भाईयोंके सहित युधिष्ठिरने भी पुरुषसिंह भीष्मके सम्मुख गमन किया। जैसे बादल सूर्य्यको छिपा देते हैं, तैसे ही उन लोगोंने भीष्मको अपने बाणोंकी वर्षासे छिपा दिया। गङ्गापुत्र भीष्म युधिष्ठिरके सौ सौ और सहस्र सहस्र बाणोंको सैकड़ों तथा सहस्रों बाणोंसे काट काट गिराने लगे। वे सब बाणोंके समूह आकाशमें शलभ समूहकी भांति दिखाई देने लगे। पराक्रमी भीष्मने आधे निमिष भरमें राजा युधिष्ठिरको युद्धमें अपने बाणोंसे अदृश्य कर दिया। अनन्तर राजा युधिष्ठिरने कुरुकुल-भूषण भीष्मके ऊपर विषधर सर्पके समान एक बाण चलाया। हे महाराज! महारथ भीष्मने युधिष्ठिरके धनुषसे छूटे हुए उस बाणको समीप न आते ही मार्गहीमें क्षुरप्रबाणसे काटके गिरा दिया। फिर सुवर्णभूषित उनके रथके सब घोड़ोंको मार डाला। राजा युधिष्ठिर उसी समय घोड़ोंसे रहित रथको त्यागके नकुलके रथ पर चढ़ गये। तब शत्रुओंके देशको जीतनेवाले भीष्म अत्यन्त क्रुद्ध होकर नकुल और सहदेवके समीप जाकर उनको अपने बाणोंकी वर्षासे छिपाने लगे।

महाराज! राजा युधिष्ठिर नकुल और सहदेवको भीष्मके बाणोंसे पीड़ित देखकर भीष्मके वध करनेके निमित्त चिन्ता करने लगे. फिर अनुयायी राजाओं और सुहृद लोगोंसे बोले, "तुम लोग युद्धमें भीष्मका वध करो।" तब उन सब वीरोंने राजा युधिष्ठिरका

वह वचन सुनकर बहुतसे रथियोंके सहित भीष्मको चारों ओरसे घेर लिया। तुम्हारे पिता देवव्रती भीष्म चारों ओरसे रथियोंके समूहमें घिरकर मानो क्रीड़ा करते हुए महा-रथियोंका वध करने लगे। पाण्डव लोग महा-वनके बीच हरिणोंके झुण्डमें सिंहके समान भीष्मको रणभूमिमें भ्रमण करते हुए देखने लगे। महाराज! क्षत्रिय लोग उनको तर्ज्जन गर्ज्जन करते तथा बाणोंसे सब शूरवीर योद्धाओंको भयभीत करते हुए देख कर इस प्रकारसे डर गये, जैसे सिंहको देख-कर मृगोंका झुण्ड भयसे विकल होजाता है और वायुकी सहायतासे अग्निके समान उस पुरुषसिंहके तेज और पराक्रमको देखने लगे। जैसे निपुण पुरुष तालके वृक्षसे पके हुए फलोंको गिराता है, वैसे ही पराक्रमी बलवान् भीष्म रथियोंके शिरको काट काटके पृथ्वीमें गिराने लगे। वह सब कटे हुए सिर पत्थरके टुकड़ोंके समान घोर शब्द करते हुए पृथ्वीपर गिरने लगे। उस महा भयङ्कर तुमुल संग्राममें सेनाके बीच महा कोलाहल होने लगा, व्यूह छिन्न भिन्न होगया; क्षत्रिय योद्धा आपसमें एक दूसरेको आवाहन करके युद्ध करने लगे। शिखण्डीने भीष्मके सम्मुख पहुंचकर "खड़ा रह! खड़ा रह।" कहके वेगपूर्व्वक उनपर आक्रमण किया, तब भीष्मने शिखण्डीको स्त्री जानकर उसके ऊपर शस्त्र नहीं चलाया, और क्रुद्ध होकर सृञ्जयोंकी ओर गमन किया। सृञ्जय योद्धा लोग महा-रथ भीष्मको देखकर शङ्ख बजा कर प्रसन्न चित्तसे सिंहनाद करने लगे। उस समय सूर्य्य पश्चिम दिशामें गमन कर रहे थे। उस ही अव-सरमें रथी और गजपतियोंके सङ्ग युद्ध आरम्भ हुआ। पाञ्चालराज द्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्न और सात्यकि शक्ति तोमर तथा अनेक प्रकारके बाणों-को वर्षाकर तुम्हारी सेनाके पुरुषोंका वध करने लगे। हे पुरुषर्षभ! तुम्हारी ओरके महारथ योद्धा सात्यकि और धृष्टद्युम्नके बाणोंसे पीड़ित होकर भी युद्धसे न हटे; वरन उत्साहित होकर युद्ध करने लगे। तुम्हारी महा बलवान् सेना भी धृष्टद्युम्नके बाणोंसे पीड़ित होकर आर्त्तनाद करने लगी। उस घोर आर्त्तनादको सुनके तुम्हारी ओरके राजाओंके बीचमें अवन्तिनगरके राजा विन्द और अनुविन्द दोनों भाईयोंने धृष्टद्युम्नके निकट उपस्थित होकर शीघ्रताके साथ उनके रथके घोड़ोंको मारकर फिर अपने बाणोंकी वर्षासे उनको छिपा दिया। महाबली धृष्टद्युम्न घोड़ोंसे रहित रथसे कूदकर महात्मा सात्यकिके रथपर शीघ्र ही चढ़ गये। तब राजा युधिष्ठिर बड़ी सेनाके सहित क्रुद्ध होकर शत्रुनाशन अवन्तिराज विन्द-अनुविन्दकी ओर वेगसे चले। तुम्हारे पुत्र लोग भी सब अस्त्रशस्त्र ग्रहण करके विन्द अनुविन्दकी रक्षा करने लगे। अर्ज्जुन क्रुद्ध होकर इस प्रकारसे क्षत्रियोंके सङ्ग युद्ध करने लगे, जैसे इन्द्रने असुरोंके साथ संग्राम किया था। तुम्हारे पुत्रोंके हितैषी द्रोणाचार्य्य क्रुद्ध होकर जैसे अग्नि रूईको भस्म करता है, वैसे ही सम्पूर्ण पाण्डवोंकी सेना भस्म करने लगे। हे राजन्! दुर्य्योधनके सहित तुम्हारे सब पुत्र लोग भीमसेनको चारों ओरसे घेरकर उनके सङ्ग युद्ध करने लगे। सूर्य्यके लाल वर्ण होनेपर राजा दुर्य्योधनने अपनी सेनाके सब वीरोंसे कहा, कि शीघ्रता करो। सूर्य्यके अस्त होते हुए सन्ध्याके समय वह सम्पूर्ण राजा और वीर योद्धा लोग महा कठिन कर्म्म करने लगे। क्षण भरमें वीरोंके रुधिरसे तरङ्गयुक्त और गिद्ध तथा सियारोंसे पूर्ण महा घोर नदी उत्पन्न हुई। चारों ओर सियार महा भयङ्कर शब्द करने लगे। सैकड़ों तथा सहस्रों राक्षस और पिशाच और मांसको इच्छावाले जन्तु उसके चारों ओर दिखाई देने लगे। है

राजेन्द्र! अनन्तर अर्जुनने सेनाके वीर सुशर्म्मा आदि राजाओंको अनुयायियोंके सहित पराजित करके निज शिविरमें जानेके वास्ते प्रस्थान किया। कुरुकुलभूषण युधिष्ठिर सन्ध्याके समय अपने दोनों भाइयों नकुल सहदेवके सहित अपने शिविरमें गये। भीमसेनने दुर्य्योधन आदि रथियोंको युद्धमें पराजित करके शिविरमें जानेके निमित्त प्रस्थान किया। द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, शल्य और सात्वत कृतवर्म्मा,—ये सब लोग अपनी अपनी सेनाके सहित अपने शिविरोंमें गये। सात्यकि और धृष्टद्युम्न सेनाके योद्धाओंसे युक्त होकर अपने शिविरोंमें गये। महाराज! इसी प्रकारसे तुम्हारे और पाण्डवोंके सब योद्धा युद्धसे निवृत्त होकर रणभूमिसे लौटकर अपने शिविरोंमें आये। फिर पाण्डव और तुम्हारी ओरके सब योद्धा लोग अपने शिविरों पर आकर एक दूसरेका यथा योग्य सत्कार और पूजा कर अपनी अपनी सेनाके पुरुषोंका दर्शन करके आत्मरक्षाका उपाय करते हुए शरीरोंसे शल्य निकाल कर विविध भाँतिके जलसे स्नान किया। उन सब यशस्वी महारथ योद्धाओंने ब्राह्मणोंके स्वस्त्ययन और वन्दियोंकी स्तुति सुनते हुए गीत और बाजोंके शब्दसे मुहूर्त्त भर क्रीड़ा की। वह मुहूर्त्त भरका समय उन सब पुरुषोंको स्वर्ग-सुखके समान बोध हुआ। तब फिर उन लोगोंमें युद्ध सम्बन्धीय कुछ बातचीत नहीं हुई। हे राजन्! दोनों ओरके बहुतसे घोड़े, हाथी, और मनुष्योंसे युक्त सम्पूर्ण सेना थक गई थी; वह निद्रित होकर अत्यन्त मनोहर दिखाई देने लगी।

८६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे कुरुराज! कौरव और पाण्डवोंकी ओरके सब वीरोंने सुखसे सोकर उस रात्रिको व्यतीत किया। सवेरेके समय फिर युद्धके निमित्त शिविरोंसे बाहर निकले। दोनों सेनाके शिविरोंसे निकलनेके समय समुद्रके समान अत्यन्त भयङ्कर शब्द होने लगा। तिसके अनन्तर राजा दुर्य्योधन,चित्रसेन,विविंशति,रथियोंमें श्रेष्ठ भीष्म और ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य,—इन सब महारथ कौरवोंने एकत्रित, तथा यत्नवान् होकर और वर्म्म धारण करके पाण्डवोंके सङ्ग युद्ध करनेके निमित्त व्यूह रचना की। हे राजन्! तुम्हारे पिता शान्तनुपुत्र भीष्मने बाणरूपी तरङ्गसे युक्त समुद्रके समान निज सेनाका महाघोर व्यूह बनाकर सेनाके आगे मालव, दाक्षिणात्य और अवन्ति देशीय योद्धाओंसे युक्त होकर युद्धके निमित्त प्रस्थान किया। उनके पश्चात् प्रतापी द्रोणाचार्य्यने पुलिन्द, पारद, क्षुद्रक और मालव देशीय योद्धाओंके सहित यात्रा की। उनके पीछे प्रबल प्रतापी भगदत्तने मगध, कलिङ्ग और पिशाच वीरोंसे युक्त होकर युद्धके निमित्त गमन किया, उनके पीछे कोशलराज वृहद्बल मेकल, त्रिपुर और चिलुक योद्धाओंके सहित युद्धके वास्ते प्रस्थान करने लगे। वृहद्बलके पीछे प्रस्थलराज त्रिगर्त्त, काम्बोज और सहस्रों वीर योद्धाओंसे युक्त होकर चले। उनके पीछे अत्यन्त पराक्रमी अश्वत्थामा सिंहनादसे पृथ्वीको पूर्ण करते हुए युद्धके निमित्त चले, उनके पीछे राजा दुर्य्योधनने सहोदर भाइयोंसे युक्त होकर सम्पूर्ण सेनाके सहित युद्धके निमित्त यात्रा की और उनके पीछे शारद्वतपुत्र कृपाचार्य्यने युद्धके निमित्त प्रस्थान किया। हे भारत! समुद्रके समान उस महाव्यूहके गमन करनेके समय श्वेतछत्र, पताका, दृढ़ कवच और धनुष आदि अस्त्र शस्त्र प्रकाशित होने लगे।

महाराज! युधिष्ठिरने तुम्हारी ओरका ऐसा व्यूह देखकर सेनापति धृष्टद्युम्नसे कहा,

हे महाधनुर्द्धर। यह देखो, शत्रुओंने समुद्रके समान महाव्यूह बनाया है, तुम भी उसके विरुद्ध शीघ्र ही व्यूह तैयार करो। महाराज! तिसके अनन्तर पराक्रमी धृष्टद्युम्नने शत्रु-व्यूहको नाश करनेवाले महादारुण शृङ्गाटक व्यूह बनाया। महारथ भीमसेन और सात्यकि कई हजार रथी, घुड़सवार और पैदल योद्धा-ओंके सहित उसके दोनों शृङ्गस्थानों पर स्थित हुए। पुरुषोंमें श्रेष्ठ श्वेतवाहन अर्जुन कृष्णाके सहित उसके नाभिस्थान पर विराजमान हुए। राजा युधिष्ठिर और माद्रीपुत्र नकुल सहदेव उसके मध्यस्थल पर स्थित हुए। व्यूह रचना जाननेवाले दूसरे महाधनुर्द्धारी योद्धाओंने उस शृङ्गाटक व्यूहके यथायोग्य स्थानोंपर स्थित होके उसे पूर्ण किया। तिनके पीछे महारथ अभिमन्यु, बिराट, द्रौपदीके पुत्र और राक्षस घटोत्कच स्थित हुए। हे भारत! पराक्रमसे युक्त पाण्डव लोग इसी प्रकारसे व्यूह बनाकर जयकी अभिलाषा करते हुए युद्धके निमित्त रणभूमिमें गये। शङ्खके सङ्ग मिलकर भेरी, मृदङ्ग, बांसुरी और नरसिंहोंके सिंहनादसे महा घोर शब्द होकर सब दिशा पूर्ण हुई। शूरवीर योद्धा लोग आपसमें शत्रुओंके समीप जाकर एक दूसरेको देखने लगे। हे प्रजानाथ! उन शूरवीरोंने पहिले आपसमें एक दूसरेका नाम लेकर आवाहन किया और फिर युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। तब उन वीरोंका महा भयानक युद्ध होने लगा। दोनों सेनाके योद्धा लोग एक दूसरेके अस्त्रोंसे पीड़ित होने लगे। उत्तम पानीसे बुझे हुए बाण सर्पके समान रणभूमिमें चारों ओर गिरने लगे। तेजसे शिकिल की हुई निर्म्मल प्रकाशमान शक्ति मानो बिजलीके समान बादलोंसे निकलकर रणभूमिमें चारों ओर गिरने लगीं। सुवर्णयुक्त दण्डसे भूषित पर्व्वतके शृङ्गके समान गदा और दूसरे अस्त्र रणभूमिमें चलते हुए दिखाई देने लगे, और सैकड़ों तारे और चन्द्रमाके रूपसे भूषित उत्तम ढाल युद्धक्षेत्रमें सब ओर शोभित होने तथा शस्त्रोंसे कटकर पृथ्वीमें गिरने लगी। हे राजन्! दोनों ओरकी सेना युद्धमें उत्साही होकर देवता और दैत्योंकी सेनाके समान शोभित होने लगी। चारों ओर रणभूमिमें शूरवीर योद्धा एक दूसरेकी ओर वेगसे दौड़ने लगे। उस तुमुल युद्धमें क्षत्रियश्रेष्ठ रथियोंने शत्रुओंके रथसे अपना रथ भिड़ाकर युद्ध करना आरम्भ किया। सब ओर युद्ध करते हुए मतवारे हाथियोंके दांतोंकी रगड़से धूएंसे युक्त अग्नि उत्पन्न होने लगी। कितने ही गज पति योद्धा प्रास आदि अस्त्रोंकी चोटसे मर-कर इस भांति पृथ्वीपर गिरने लगे, जैसे पर्व्वत परसे बड़े बड़े पत्थरके टुकड़े गिरते हैं। शूर वीर पैदल योद्धा लोग गदा, प्रास, तलवार आदि अस्त्रोंसे युद्ध करके एक दूसरेको मारते हुए विचित्र मूर्त्तिवाले दीख पड़ते थे। कौरव और पाण्डवोंकी सेनाके वीर शत्रुओंके समीप जाकर अपने नाना प्रकारके शस्त्रोंसे एक दूसरेका वध करके उन्हें यमपुरीमें भेजने लगे। तिसके अनन्तर शान्तनुपुत्र भीष्म रथके शब्दसे पृथ्वीको अनुनादित और अपने धनुषके टङ्कार शब्दसे सबको मोहित करते हुए पाण्ड-वोंकी ओर गमन किया। धृष्टद्युम्न आदि पाण्डवोंके महारथ योद्धा यत्नपूर्व्वक अपने रथके घोर शब्दके सहित भीष्मकी ओर दौड़े। तिसके अनन्तर तुम्हारी और उन लोगोंकी ओरके मनुष्य, घोड़े, रथ और हाथिओंका आपसमें महा भयङ्कर युद्ध होने लगा।

८४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! जब भीष्म युद्धमें क्रुद्ध होकर शत्रुसेनाकी भक्षा करने लगे, उस

समय पाण्डव लोग सूर्य्यके समान तेजस्वी भीष्मकी ओर देखनेको भी समर्थ नहीं हुए। अनन्तर पाण्डवोंकी सम्पूर्ण सेना धर्मराज युधिष्ठिरकी आज्ञाके अनुसार उत्तम अस्त्र-शस्त्रोंको ग्रहण करके सेनाका नाश करनेवाले भीष्मकी ओर दौड़ी। युद्धमें प्रशंसित भीष्म महाधनुर्द्धर सोमकवंशी, सृञ्जय और पाञ्चाल वीरोंका अपने वाणोंसे एक ही समयमें वध करने लगे। सोमकवंशीय वीरोंके सहित पाञ्चाल योद्धा लोग भीष्मके वाणोंसे पीड़ित होकर भी उनकी ओर शीघ्रताके सहित बढ़ने लगे। महा पराक्रमी भीष्म अनेक रथियोंके सिरको अपने वाणोंसे काटने लगे और कितनोंको रथ रहित कर दिया। महाराज। उस समयमें भीष्मके अस्त्रोंसे घुड़सवारोंके सिर घोड़ों परसे कटके गिरने लगे और हाथियोंकी हवारहित पर्व्वतके समान मैं मनुष्योंसे रहित देखने लगा। हे राजन्! रथियोंमें श्रेष्ठ महाबलवान् भीमसेनाके अतिरिक्त पाण्डवोंकी सेनामें ऐसा कोई भी पुरुष उस समयमें न था, जो भीष्मको युद्धसे निवारण कर सकता हो; भीमसेन भीष्मके समीप जाकर उन्हें निवारण करने लगे। भीष्म और भीमसेनका युद्ध देखकर सब सेनाके बीच महा घोर कोलाहल होने लगा और पाण्डव लोग हर्षित होकर सिंहनाद करने लगे। उस महा घोर युद्धमें राजा दुर्य्योधन सहोदर-भाइयोंसे युक्त होकर भीष्मको रक्षा करते थे, रथियोंमें मुख्य भीमसेनने भीष्मके सारथीको मार डाला; उससे भीष्मके घोड़े चारों ओर कूदते हुए इधर उधर दौड़ने लगे। तब भीमसेनने क्षुरप्र अस्त्रको धनुषपर चढ़ाकर उससे सुनाभका शिर काट डाला, तुम्हारे पुत्र सुनाभके मरने पर आदित्यकेतु बह्वाशी, कुण्डधर, महोदर, अपराजित, पण्डितक और दुर्व्विजय, विशालाक्ष और विचित्र कवच तथा शस्त्रोंको धारण करनेवाले शत्रुमर्द्दन—वे सातों भाई क्रुद्ध होकर युद्धकी अभिलाषसे विचित्र कवच धारण करनेवाले भीमसेनके सम्मुख गये, हे राजन्! जैसे इन्द्रने नमुचि नाम दैत्यके ऊपर प्रहार किया था, वैसे ही महोदरने बज्रके समान नौ वाणोंसे भीमसेनको विद्ध किया, और आदित्यकेतुने सत्तर, बह्वाशीने पाच,कुण्डधारने नौ विशालाक्षने सात और शत्रुओंको जीतने वाले महारथ अपराजितने अनेक वाणोंसे भीमसेनको विद्ध किया, अनन्तर पण्डितकने भी तीन वाणोंसे भीमसेनपर प्रहार किया। शत्रुनाशन भीमसेनने युद्धभूमिमें प्रहारको अधिक न सहके बायें हाथसे धनुष लेकर नतपर्व्व वाणसे अपराजितके सुन्दर नासिकासे शोभित शिरको काट दिया, अपराजित भीमसेनके शस्त्रसे मारे गये और और उनका शिर कटकर पृथ्वीमें गिरा। तिसके अनन्तर भीमसेनने एक वाणसे सब सेनाके सम्मुख ही महारथ कुण्डधारको भी यमपुरीमें भेज दिया। फिर महाबलवान् भीमसेनने एक वाण साधके पण्डितकके ऊपर चलाया, जैसे काल प्रेरित सर्प मनुष्योंका नाश करके पृथ्वीमें प्रवेश करता है, वैसे ही भीमसेनके उस वाणने पण्डितकका संहार करके पृथ्वीमें प्रवेश किया; फिर पराक्रमी भीमने पहिले क्लेशको स्मरण करते हुए तीन वाणोसे विशालाक्षका सिर काट-पृथ्वीमें गिरा दिया। अनन्तर उन्होंने महाधनुर्द्धर महोदरके दोनों स्तनोके बीचको एक एक वाणसे विद्ध किया, उससे ही महोदर मर कर पृथ्वीमें गिर पड़े, फिर भीमसेनने एक वाणसे आदित्यकेतुका छत्र काटकर अत्यन्त तीक्ष्ण वाणसे उनका सिर काट डाला। तब तब क्रुद्ध होकर एक उत्तम वाणसे बह्वाशीको भी यमपुरीमें पहुंचा दिया। हे राजन्! तब तुम्हारे दूसरे सब पुत्र भीमसेनकी सभामे की हुई प्रतिज्ञाको सत्य जान कर उनके सम्मुखसे भाग गये। तिसके अनन्तर

राजा दुर्य्योधनने भाइयोंके वधसे क्रुद्ध होकर सब सेनाके योद्धाओंसे कहा, कि तुम लोग इस भीमसेनका युद्धमें वध करो।

महाराज। तुम्हारे महाधनुर्द्धर पुत्रोंने इस भांति भाइयोंको मरते देख कर उस समयमें सत्यवादी बुद्धिमान् विदुर जो सब वचन पहिले कहे थे, उनको स्मरण किया। हे प्रजानाथ! पहिले विदुरके उन हितकर और यथार्थ वचनोंको जिसे तुम पुत्रोंके स्नेह और लोभ, मोहके वशमें होकर नहीं समझ सके थे, इस समय वह प्रत्यक्ष हो रहा है। महाबाहु बलवान् भीमसेन जिस प्रकारसे कौरवोंका वध कर रहे हैं, उससे यह निश्चय बोध होता है, कि बलवान् भीमसेनने तुम्हारे पुत्रोंके वधके निमित्त ही जन्म लिया है। अनन्तर राजा दुर्य्योधन अत्यन्त शोकित और दुःखित होकर भीष्मके निकट जाकर आसू भरे हुए नेत्रसे युक्त होकर इस प्रकारसे विलाप करने लगे, हे पितामह! मेरे बलवान् भाई भीमसेनके हाथसे युद्धमें मारे गये हैं और दूसरे सब सेनाके वीर योद्धा भी मेरी जयके निमित्त यत्नवान् होकर भी भीमसेनके शस्त्रोंसे नष्ट हो रहे हैं। तुम सदा मानो मध्यस्थकी भांति हमारे विषयमें उपेक्षा कर रहे हो, इससे मेरे इस अभाग्यको देखो, कि मैं युद्धमें प्रवृत्त होकर कुमार्गमें गमन कर रहा हूं। महाराज। तुम्हारे पिता देवव्रती भीष्म दुर्य्योधनके इस प्रकार निठुर वचन सुनकर आखोंमें आंसू भरकर उनसे बोले, हे पुत्र! द्रोणाचार्य्य, विदुर, यशस्विनी गान्धारी और मैंने पहिले ही तुमको कहा था; परन्तु तुमने हम लोगोंकी बात न मानी। हे शत्रुनाशन! मैंने तुम्हारे निमित्त पहिले ही सिद्धान्त कर रक्खा है, कि मैं तथा द्रोणाचार्य्यआदि हम सब किसी प्रकारसे भी इस युद्धसे मुक्त न हो सकेंगे। मैं यह सत्य कहता हूं कि भीम धृतराष्ट्रकी ओरके वीरोंमें जिसको ओर देखेगा उसका ही वध कर सकेगा। इससे तुम स्वर्ग लोक पानेकी अभिलाष करके दृढ़ होकर धीरज धारण कर पाण्डवोंके सङ्ग युद्ध करो। देवता लोग इन्द्रके सङ्ग मिलकर भी पाण्डवोंको युद्धमें पराजित करनेमें समर्थ नहीं हैं; इससे तुम रणभूमिमें स्थिर बुद्धि होकर युद्ध करो।

८५ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य आदिने अकेले भीमसेनसे मेरे कई पुत्रोंको मरता हुआ देखकर क्या किया? हे सूत! जब मेरे पुत्र प्रतिदिन ही युद्धमें मारे जा रहे हैं, तब मैं सब भांतिसे यही विचार करता हूं, कि वे सब निश्चय ही दैवकी इच्छासे मर रहे हैं। जब मेरे सब पुत्र पराजित हो रहे हैं, किसी प्रकारसे भी युद्धमें जयी नहीं होते हैं; विशेष करके महात्मा भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, सोमदत्तपुत्र भूरिश्रवा, वीरोंमें श्रेष्ठ भगदत्त और अश्वत्थामा आदि महात्मा शूरवीर योद्धा तथा दूसरे बहुतसे बलवान् योद्धाओंके बीचमें रहकर भी जब मारे जारहे हैं, तब अभाग्यके अतिरिक्त और क्या कहा जायगा? हे सूत! मैं, भीष्म और विदुरने पहिले मन्दबुद्धि दुर्य्योधनको कई बार निवारण किया था, परन्तु उसने हम लोगोंकी बात ग्रहण नहीं की, और गान्धारीने भी पहिले उस नीचबुद्धिवाले दुर्य्योधनके हितकी इच्छासे युद्ध करनेसे निवारण किया परन्तु वह दुष्ट दुर्य्योधन मोहमें पड़के उसकी बातको भी नहीं समझ सका; उसका ही फल अब इस समयमें उपस्थित हुआ है,— भीमसेन क्रुद्ध होकर विशेषरूपसे मेरे पुत्रोंको ही प्रति दिन यमपुरीमें भेज रहा है।

सञ्जय बोले, हे राजन्! तुमने जो सब

समय विदुरके कहे हुए हितकर तथा यथार्थ वचनोंको नहीं सुना, उसका ही फल इस समयमें उपस्थित होरहा है। विदुरने उस समय कहा था "अपने पुत्रोंको जुएके खेलसे रोको, पाण्डवोंके अनिष्ट करनेका विचार मत करो।' हे महाराज! मृत्युके वशमें हुआ मनुष्य जैसे पथ्य औषधि नहीं ग्रहण करता, वैसे ही तुमने भी जो हितैषी सुहृद पुरुषोंकी बातें नहीं सुनीं; उन्हीं सज्जनोंके वचनोंका विषय इस समय तुम्हारे निकट उपस्थित हुआ है। विदुर भीष्म, द्रोणाचार्य्य और दूसरे हितैषी पुरुषोंकी बातें न सुननेहीसे कौरवोंका नाश होरहा है। महाराज! पहिले जब तुमने सुहृदलोगोंकी बातोंको नहीं ग्रहण किया, तबहीसे ये सब व्यसन उपस्थित हुआ है। जो हो उस समय जिस प्रकारसे युद्ध हुआ, इस वृत्तान्तको मेरे मुखसे विस्तार पूर्व्वक सुनो। मध्याह्न समयमें जिस प्रकार महाभयङ्कर वीर पुरुषोंका नाश करनेवाला युद्ध आरम्भ हुआ, उसे मैं वर्णन करता हूं, तुम चित्त एकाग्र करके सुनो।

तिसके अनन्तर पाण्डवोंकी सेना धर्म्मराज युधिष्ठिरकी आज्ञानुसार भीष्मकी ओर उनके वध करनेकी इच्छासे दौड़ी। महारथ धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और सात्यकि सेनाके सहित भीष्मकी ओर वेगसे दौड़े। विराट और द्रुपद भी सब सेनाके सहित भीष्मकी ओर युद्ध करनेके निमित्त बढ़े। केकयराज, धृष्टकेतु और कुन्तिभोज सेनाके सहित कवच धारण करके भीष्मके सङ्ग युद्ध करनेके निमित्त शीघ्रतासे चले। अर्जुन, द्रौपदीके पुत्र और चेकितानने युधिष्ठिरकी आज्ञासे दुर्य्योधनकी सेनाके सब राजाओंकी ओर गमन किया, पराक्रमी अभिमन्यु, राक्षस घटोत्कच और भीमसेन कौरवोंके सङ्ग युद्धके निमित्त रणभूमिमें उपस्थित हुए। पाण्डवोंके सब योद्धा तीन हिस्सोंमें बंट कर कौरवोंकी सेनाका वध करने लगे; और कौरवोंकी सेनाके वीर भी तीन हिस्सोंमें बंट कर पाण्डवोंकी सेनाका नाश करने लगे। रथियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य क्रुद्ध होकर सोमकवंशियों और सृञ्जयोंकी यमपुरीमें भेजनेकी इच्छासे उनकी ओर दौड़े। महात्मा सृञ्जयगण धनुर्द्धारी द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे पीड़ित होकर महाघोर-आर्त्तनाद करने लगे, द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे पीड़ित हुए अनेक मनुष्योंको रोगी पुरुषोंकी भांति अशक्त हुए मैंने निरीक्षण किया। भूखसे व्याकुल कितने ही पुरुषोंकी रणभूमिमें चिल्लाहट, कितनोंका रोना और कितनोंहीका सिंहनाद सुन पड़ने लगा। महाबल भीमसेन क्रुद्ध होके मानो दूसरे यमराजके समान रूप धारण करके कौरवोंकी सेनाका नाश करने लगे। सम्पूर्ण सेनाके वीरोंके आपसमें लड़कर मरने पर उन लोगोंके रुधिरसे रणभूमिमें महाघोर-रूपिणी नदी उत्पन्न हुई। हे राजन्! कुरुसंग्राम यमपुरीकी वृद्धिका कारण हुआ। तिसके अनन्तर भीमसेन क्रुद्ध होकर विशेषरूपसे वेगके सहित हाथियोंकी सेनाकी ओर दौड़े और उनका वध करके यमपुरीमें भेजने लगे। सब हाथी भीमके बाणोंसे पीड़ित होकर चिंघाड़ मारने और कितने ही मर कर पृथ्वीमें गिरने लगे, कितने ही चारों ओर दौड़ने लगे। बड़े बड़े हाथी सूंड़ तथा और शरीरके कटने पर क्रौञ्चपक्षीके समान शब्द करते हुए पृथ्वीमें गिरने लगे।

नकुल और सहदेव घुड़सवारोंकी सेनाकी ओर दौड़े; सुवर्णमय भूषणोंसे भूषित सौ सौ सहस्र सहस्र घोड़े नकुल और सहदेवके अस्त्रोंसे मर कर पृथ्वीपर गिर पड़े। हे राजन्! कितने ही घोड़ोंकी जीभ कट गई, कितने ही लम्बी सांस लेते हुए हांफने लगे; कितने ही घोड़े पक्षियोंकी भांति शब्द करने लगे। कितने ही मर गये और बहुतसे घोड़े मर कर नाना आकारके दिखाई देने लगे, उस समय वहां

पर पृथ्वी मरे हुए घोड़ोंके शरीरसे पूर्ण होगई। हे भारत! रणभूमिमें नाना स्थानों पर अर्जुनके हाथसे मारे गये सब राजा भयङ्कर रूपसे दिखाई देने लगे। जैसे वसन्त ऋतुमें वन फूलोंसे शोभायमान लगता है वैसे ही टूटे रथ, कटी ध्वजा, कटे शस्त्र, चंवर, अत्यन्त प्रकाशमान छत्र, हार, निष्क-केयूर, कुण्डलसे शोभायमान मस्तक, वस्त्र, पताका, रथके नीचेकी लकड़ी, बागडोर सहित चाबुक;—इन सब वस्तुओंसे पृथ्वी वहां पर छिप गई। हे भारत! शान्तनुनन्दन भीष्म रथियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और कृत-वर्म्माके क्रुद्ध होने पर पाण्डवोंकी सेनाके वीरोंका इसी प्रकारसे नाश होने लगा और पाण्डवोंके पक्षके सब वीरोंके क्रुद्ध होनेपर तुम्हारी सेनाके योद्धाओंका भी इस ही प्रकार नाश होने लगा।

८६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र! उस वीरोंके नाश करनेवाले भयङ्कर संग्रामके उपस्थित होनेपर राजा शकुनि पाण्डवोंकी ओर दौड़े। महाबल-वान् शत्रुनाशन कृतवर्म्मा भी पाण्डवोंकी सेनाका नाश करनेके वास्ते वेगसे आगे बढ़े; इसके अतिरिक्त तुम्हारी ओरके और भी बहुतसे योद्धा अर्थात् काम्बोज, नदीज, आरट, स्थलत, सिन्धुदेशीय, वनायुदेशीय और तित्तिरदेशीय अनेक योद्धाओंने पवनके समान वेगगामी पर्व्व-तवासी सफेद रङ्गके अनेक घोड़ोंपर चढ़के पाण्डवोंकी सेनाको चारों ओरसे घेर लिया। सुवर्णभूषित कवच, अच्छे प्रकारकी शिक्षासे युक्त, वायुके समान गमन करनेवाले मुख्य मुख्य घोड़ोंके सहित शत्रुनाशन पराक्रमी अर्जुन-पुत्र इरावान् हर्षित होकर उस सम्पूर्ण सेनासे युद्ध करनेके निमित्त आकर उपस्थित हुए। महाराज! बुद्धिमान् इरावान् नाग-राज ऐरावतके वंशमें महात्मा अर्जुनके वीर्य्यसे उत्पन्न हुए थे। पक्षियोंके राजा गरुड़ने जब महात्मा ऐरावतके पुत्रके पुत्रको हरण किया, तब उन्होंने पुत्रवधूको पुत्रहीन और दुःखित देखकर अर्जुनको दान किया। अर्जुनने भी अभिलाषा विशेषको वशवर्त्तिनी उस नागराज पुत्रीको अपनी भार्य्या बनाई; इसी प्रकारसे इरावान् दूसरेके क्षेत्रमें अर्जुनसे उत्पन्न हुए। वह नाग लोकमें माताके पालन पोषणसे बड़े हुए थे। उनके दुष्टात्मा पितृव्यने अर्जुनके ऊपर द्वेष करके उन्हें त्याग दिया। इरावान् सत्य पराक्रमी, रूपवान्, बलवान् और गुण वान् होगये। जब अर्जुन इन्द्रलोकमें गये थे, तब सत्य पराक्रमी महाबाहु इरावान्‌ने अपने पिता अर्जुनके निकट गमन करके स्थिर चित्तसे उन्हें प्रणाम कर हाथ जोड़के विनयपूर्व्वक अपना परिचय देकर निवेदन किया, कि "हे महाराज! तुम्हारा कल्याण होवे; मैं इरा-वान् नामक तुम्हारा पुत्र हूं; और जिस भांतिसे उनकी माता अर्जुनके निमित्त प्रदान की गई थी, इरावान्‌ने उसे भी वर्णन किया। तब अर्जुनको पुराना वृत्तान्त सब पूर्ण रीतिसे विदित हो गया। वह इन्द्रके स्थानपर आत्म-सदृश गुणयुक्त इरावान् पुत्रको आलिङ्गन करके प्रसन्न हुए। हे राजन्! अर्जुन उस समय देव लोकमें महाबाहु इरावान्‌से प्रीतिपूर्व्वक यह वचन बोले, 'तुम युद्धके समयमें हमारी सहा-यता करना।" इरावान्‌ने अर्जुनकी उस आज्ञाको स्वीकार किया। हे महाराज! अब युद्धका समय उपस्थित होनेपर वह उत्तम रूप और वेगवान् घोड़ोंके समूहसे घिरकर रणभूमिमें उपस्थित हुए। सुवर्ण-भूषित नाना वर्णोंसे युक्त उनके सब घोड़े सहसा मानो समुद्रके बीच हंसोंके समान रणभूमिमें उपस्थित हुए। ये सब घोड़े तुम्हारे महा

वेगवान् घोड़ोंके बीच गमन करके आपसमें नाकसे नाक, शिरसे शिर टकराते हुए रणभूमिमें गिरने लगे। जैसे गरुड़ पक्षियोंके अकस्मात् गिरनेसे भयानक शब्द होता है, वैसे ही घोड़ोंके गिरनेसे घोर शब्द होने लगा। हे राजन्! उन घोड़ोंके सवारलोग तुम्हारी सेनाके वीरोंपर आक्रमण करके घोर रूपसे उनका वध करने लगे। उस महा घोर संग्राममें चारों ओर दोनों सेनाके घोड़ोंका महा भयङ्कर शब्द सुनाई देने लगा। शूरवीर एक दूसरेके बाणोंसे पीड़ित होकर पृथ्वीमें गिरने लगे; और उनके घोड़े भी मरके पृथ्वीमें गिर गये।

तिसके अनन्तर उस घोड़ोंकी सेनाका नाश होनेमें और कुछ बाकी रहने पर पराक्रमी, युद्ध जाननेवाले, भयङ्कर रूपवाले हाथियोंसे युक्त होकर गव, गवाक्ष, वृषभ, चर्म्मवान्, आर्ज्जव और शुक नामक महाबलवान् शकुनिके छः भाई राजा शकुनि और अपनी महाबलवान् सेनाके सहित वायुके समान वेगवान् उत्तम घोड़ों पर चढ़के उस महा सेनासे निकल कर इरावान्की ओर दौड़े। हे राजन्! युद्धमें पराक्रमी गान्धार देशी उन छवों भाइयोंने स्वर्गप्राप्तिके निमित्त हर्षित और विजयके अभिलाषी होकर बड़ी सेनाके सहित उस महाघोर घोड़ोंकी सेनाको भेद करके उसमें प्रवेश किया। पराक्रमी इरावान् उनको सेनाके बीच प्रवेश करते देखकर विचित्र कवच और शस्त्रधारी योद्धाओंसे बोले, हे योद्धा लोगो! ये सब धृतराष्ट्रके योद्धा लोग जिस प्रकारसे वाहनोंके सहित मारे जावें तुम लोग वही उपाय करो। इरावान्की सेनाके सब योद्धाओंने उनकी आज्ञा सुनते ही अपने शत्रुओंकी सब सेनाको मार डाला। सुबलपुत्रोंने अपनी सब सेनाको इरावान्की सेनाके वीरोंसे मरती हुई देखके क्रुद्ध होकर इरावान्के समीप जाकर उनको चारों ओरसे घेर लिया; और आपसमें उन सब लोग बाणोंसे प्रहार करके प्रास आदि अस्त्रसे उनको पीड़ित करने लगे। इरावान् उनके प्रास आदि अस्त्रोंसे विद्ध होकर ऐसे क्रुद्ध हुए, जैसे अंकुशसे हाथी क्रुद्ध होता है। अनन्तर इरावान् उनके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर रुधिरसे पूरित होगये। अकेले इरावान् उन सबके अस्त्रोंके प्रहारसे सब स्थानोंमें विद्ध होकर अत्यन्त धीरज अवलम्बन करनेके कारणसे दुःखित नहीं हुए। बरन शत्रुनाशन इरावान्ने उत्तम पानीसे बुझे हुए बाणोंसे उन सबको विद्ध करके मोहित कर दिया; और अपने शरीरमें विद्ध हुए प्रास आदि अस्त्रोंको निकाल कर उससे ही सुबलपुत्रोंके ऊपर प्रहार करने लगे। अनन्तर सुबलपुत्रोंका नाश करनेके निमित्त मियानसे तलवार खींचके और ढाल लेकर शीघ्रताके सहित पैदल ही उनकी ओर दौड़े। तब सुबलपुत्रोंने सावधान होकर इरावान्के समीप गमन किया। बलवान् इरावान् भी तलवार ग्रहण करके हाथोंकी फुर्त्ती दिखाते हुए उन सबकी ओर वेगसे गमन करने लगे। सुबलपुत्रलोग शीघ्र गमन करनेवाले घोड़ोंपर धीरे धीरे गमन करके भी पैदल चलनेवाले इरावान्का कोई छिद्र न देख सके। उन सबोंने इरावान्को पृथ्वी पर गमन करते देखकर उन्हें घेरकर जीते ही ग्रहण करनेका विचार किया। जब वे लोग उनके समीप पहुंचे, तब शत्रुनाशन इरावान् दोनो हाथसे तलवार पकड़के उनके शरीर, शस्त्र और भूषणोंके सहित भुजाओंको काटने लगे। उन लोगोंके बीच वृषभके अतिरिक्त और सब इरावान्के तलवारसे कट कर प्राण त्यागके यम लोकको सिधारे। वृषभ क्षत-विक्षत शरीर होकर भी उस महाभयङ्कर इरावान्के संग्राममें किसी भांति जीवित बचे।

महाराज ! ऋष्यशृङ्गका पुत्र राक्षस अलम्बुष महाधनुर्द्धर और मायावी था ; भीमसेनने जबसे बकासुरका संहार किया था, तबसे वह उनसे शत्रुता रखता था। राजा दुर्य्योधन सुबलपुत्रोंको इरावान्के हाथसे मरते देखकर क्रुद्ध होकर महाघोर शत्रुनाशन राक्षस अलम्बुषसे बोले, हे वीर ! देखो, अर्जुनका पुत्र मायावी बलवान् इरावान्ने मेरी सेनाका नाश करके महादारुण कर्म्म किया है। हे तात ! तुम इच्छानुसार गमन करनेवाले, माया अस्त्रोंके जाननेवाले हो और भीमसेनके सङ्ग तुम्हारी शत्रुता है, इससे तुम इस इरावान्का शीघ्र वध करो। महाभयङ्कर रूपवाला राक्षस अलम्बुष दुर्य्योधनकी आज्ञा सुन कर सिंहनाद करता हुआ अर्जुनपुत्र इरावान्के निकट गया। अलम्बुष अपने वाहन पर चढ़के युद्ध-विद्याके जाननेवाले प्रासयोधी वीरोंके सङ्ग अपनी सेनाके सहित होकर मरनेसे बचे हुए दो हजार घुड़सवारोंसे युक्त इरावान्के वध करनेकी इच्छासे उनकी ओर वेगसे दौड़ा। पराक्रमी शत्रुनाशन इरावान् क्रुद्ध होकर राक्षस अलम्बुषको निवारण करनेमें प्रवृत्त हुए। अत्यन्त पराक्रमी अलम्बुषने इरावान्को सम्मुख आते देखके शीघ्रताके सहित मायाका विस्तार किया। जब सब सेना मारी गई, तब दोनो बलवान् योद्धा इरावान् और अलम्बुष वृत्रासुर और इन्द्रके समान युद्ध करने लगे। पराक्रमी इरावान् बलवान् राक्षस अलम्बुषको सम्मुख आते देखकर शीघ्रताके सहित उनकी ओर दौड़े। अनन्तर राक्षस अलम्बुषके समीप आनेपर इरावान्ने तलवारसे उसके प्रकाशमान धनुष बाणोंको पांच खण्ड कर डाला। राक्षस अलम्बुष धनुषको कटता हुआ देखकर वेगपूर्व्वक आकाशमें गया, और अत्यन्त क्रुद्ध होके इरावान्को मायासे मोहित कर दिया। सब मर्म्मको जाननेवाले पराक्रमी इरावान् भी माया विद्या जानते थे, और वह भी इच्छाके अनुसार रूप धारण कर सकते थे। जब राक्षस अलम्बुष आकाशमें गया, तब वह भी आकाशमें जाके मायासे उसे मोहित करके उसके शरीरको अपने अस्त्रोंसे काटने लगे। अलम्बुष बार बार कट कर भी फिर ज्योंका त्यों होने लगा। हे राजन् ! राक्षसोंकी माया सब अनेक व्यापार सहज और अवस्था तथा सब प्रकारका मूर्त्ति धारण कार्य्य भी उनकी इच्छानुसार हो सकता है ; इसी कारणसे उसका शरीर बार बार कटके भी फिर पहिलेके समान होने लगा। इरावान् उस महा बलवान् राक्षसको तीक्ष्ण परश्वध अस्त्रोंसे बार बार काटने लगे, वह वीर राक्षस बलवान् इरावान्के अस्त्रोंसे वृक्षके समान कट कर भयानक शब्द करने लगा ; उसका महा घोर शब्द सुनाई देने लगा। बलवान् राक्षस परश्वध अस्त्रसे क्षतविक्षत शरीर होकर बहुत ही रुधिर बहाता हुआ क्रोधपूर्व्वक वेग प्रकाश करने लगा ; और रणभूमिमें सबके सम्मुखमें ही अर्जुनपुत्र यशस्वी इरावान्को प्रबल देखकर भयानक रूप धारण करके उसे ग्रहण करनेकी इच्छा की। इरावान्ने भी उस राक्षसकी ऐसी माया देखकर माया प्रगट करना आरम्भ किया। जब वह युद्धसे पीछे न हटके अत्यन्त क्रुद्ध हुए, तब उनके मातृवंशीय सब नाग उनके समीप आकर अनेक फणोंसे युक्त होकर शेष नागके समान शोभित होने लगे, और राक्षस अलम्बुषको नाना भांतिके नागोंने जाकर छिपा लिया। राक्षसोंमें श्रेष्ठ अलम्बुष अनेक नागोंके वेगसे छिपके क्षण भर चिन्ता करके गरुड़रूप धारण करके उन सब सर्पोंको भक्षण कर डाला, जब अलम्बुषने इरावान्के मातृवंशके नागोंको भक्षण कर डाला, तब

वह अत्यन्त ही मोहित होगये। अलम्बुषने इरावान्‌को मोहित देखकर उसी समय तलवारसे उनके कुण्डल और मुकुट भूषित चन्द्रमाके समान प्रकाशमान शिरको काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया।

हे प्रजानाथ! अर्ज्जुन पुत्र वीर इरावान्‌को राक्षस अलम्बुषके हाथसे मरते हुए देखकर तुम्हारी सब सेनाके योद्धा राजाओंके सहित शोकसे रहित हुए। उस महाभयङ्कर संग्राम-भूमिमे दोनों सेनाके बीच महा घोर युद्ध होने लगा। उस घोर युद्धमें हाथी घोड़े और पैदल सेनाके सब योद्धा एकत्रित होकर हाथियोंसे; घोड़े, हाथी पैदलोंसे और पत्ति, घोड़े तथा रथोंका समूह हाथियोंसे विनष्ट होने लगा। अर्ज्जुनने अपने पुत्र इरावान्‌के वधका सम्वाद नहीं सुना था, वह भीष्मसे रक्षित क्षत्रियोंका नाश कर रहे थे। हे राजन्! सहस्रों सृञ्जय और तुम्हारी ओरके योद्धा प्राणकी आशा छोड़कर एक दूसरेका वध करने लगे। अनेक योद्धा खुले केश, कवच और रथसे हीन और धनुषके कटने पर केवल आपसमें बाहुयुद्ध करने लगे। शत्रुनाशन भीष्म पाण्डवोंकी सेनाको कपाते हुए मर्म्मभेदी बाणोंसे महारथियोंका वध करने लगे। उन्होंने युधिष्ठिरकी सेनाके अनेक मनुष्य, हाथी घुड़सवार और रथियोंका नाश किया। हे भारत! युद्धमे इन्द्रके समान मैं भीष्मका अद्भुत पराक्रम देखने लगा; भीमसेन धृष्टद्युम्न और धनुर्धारी सात्यकिका भी अद्भुत पराक्रम प्रकाशित होने लगा; परन्तु द्रोणाचार्य्यके पराक्रमको देखकर पाण्डवलोग भयभीत होगये; वह सब द्रोणाचार्य्यके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर कहने लगे, कि "द्रोणाचार्य्य अकेले ही हम लोगोंका सेनाके सहित वध कर सकते हैं, उस पर भी वह पृथ्वीमें विख्यात शूरवीरोंसे युक्त हैं; इससे वह क्या नहीं कर सकेंगे?" ऐसे भयानक संग्राममें दोनों ओरके वीर आपसमें एक दूसरेके प्रहारको न सह सके, वे सब क्रुद्ध होकर मानो राक्षस और पिशाचोंकी भांति युद्ध करने लगे। देव असुरोंके युद्धके समान उस वीरोंके महाघोर युद्धमें किसीको भी मैंने प्राणकी रक्षाके निमित्त यत्न करते हुए नहीं देखा।

८७ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! महारथ पाण्डवोंने इरावान्‌को युद्धमें मरा हुआ देखकर क्या किया, वह तुम मुझसे वर्णन करो।

सञ्जय बोले, हे राजन्! भीमसेन-पुत्र राक्षस घटोत्कच इरावान्‌को मरते देखकर भयंकर शब्द करने लगा। उस समय उसके महाघोर शब्दसे पर्व्वत, वन, समुद्रके सहित पृथ्वी, आकाश, सम्पूर्ण दिशाऐं कम्पित होने लगीं, उस महाघोर शब्दको सुनकर तुम्हारी सेनाके वीर कांपने लगे उनके शरीरसे पसीना निकलने लगा, हे राजन्! तुम्हारी ओरके सब वीर सिंहसे डरे हुए हाथियोंकी भांति भयभीत होकर व्याकुल होगये। राक्षस घटोत्कचने वज्रके समान महाघोर शब्द करके भयङ्कर मूर्त्ति-धारण कर प्रकाशमान एक प्रचण्ड शूल ग्रहण करके नाना भांतिके अस्त्र शस्त्र धारण करनेवाले राक्षसोंके सहित युद्धके निमित्त रणभूमिमें आकर उपस्थित हुआ। राजा दुर्य्योधन भयङ्कर मूर्त्तिवाले अत्यन्त क्रुद्ध घटोत्कचके आनेसे अपनी सेनाको उसके भयसे विकल देख वार वार सिंहनाद करके दृढ़ धनुष ग्रहण करके घटोत्कचको ओर दौड़े। वङ्ग देशके राजा दश हजार हाथियोंकी सेनाके सहित दुर्य्योधनके अनुगामी हुए। राक्षस घटोत्कच हाथियोंकी सेनासे युक्त तुम्हारे पुत्रको आते हुए देखकर उनके ऊपर अत्यन्त

हुआ। तिसके अनन्तर राक्षसोंसे दुर्य्योधनकी सेनाका महाघोर भयङ्कर युद्ध होने लगा। अस्त्रधारी राक्षसोंने बादलकी घटाके समान हाथियोंकी सेनाको आई हुई देखकर क्रोध पूर्व्वक मानो बिजलीके सहित बादलोंके समान विविध भांतिसे गर्ज्जते हुए धनुष-बाण, ऋष्टि और शक्ति ग्रहण करके हाथियोंकी सेना पर प्रहार करना आरम्भ किया; फिर त्रिशूल, मुद्गर, परशु, भिन्दिपाल, पहाड़के शृङ्ग और वृक्षोंसे बड़े बड़े हाथियोंका वध करने लगे। हे भारत! जब वे सब राक्षस हाथियोंका वध करने लगे, तब उन हाथियोंसे कितनोंके शरीर दो खंडोंमें बंट गये, कितनोंका पेट फट गया कितने रुधिर वमन करने लगे और कितने ही हाथियोंके शरीर क्षतविक्षत होगये। जब इस प्रकारसे हाथियांकी सेनाका नाश होने लगा और सेनाके पुरुष भयभीत हुए, तब राजा दुर्य्योधन राक्षसोंकी ओर दौड़े। राजा दुर्य्योधन क्रोधके वशमें होकर अपने प्राणके त्यागनेका निश्चय करके उन राक्षसोंके ऊपर उत्तम पानीसे बुझे हुए चोखे बाणोंकी वर्षा करने लगे, महाधनुर्द्धर तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनने उनमेंसे मुख्य मुख्य राक्षसोंका वध किया। महाबलवान् दुर्य्योधनने वेगवान्, महारौद्र, विद्युज्जिह्व और प्रमादी, इन चार राक्षसोंको चार चार बाणोंसे मार डाला। फिर पराक्रमी दुर्य्योधन राक्षसोंकी सेना पर बार बार तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करने लगे, महा बलवान् घटोत्कच दुर्य्योधनके ऐसे कठिन कर्म्मको देखकर क्रोधसे जलने लगा। वह महा कठिन प्रचण्ड धनुष ग्रहण करके शत्रुनाशन दुर्य्योधनके ओर वेगसे दौड़ा। महाराज! राजा दुर्य्योधन उसे दण्डधारी यमराजके समान सम्मुख आते देखकर भी विकल नहीं हुए। अत्यन्त क्रूरसेन भीमका पुत्र राक्षस घटोत्कच क्रोधसे लाल नेत्र करके राजा दुर्य्योधनसे बोला, रे क्षत्रिय! आज मैं अपने माता पिताके ऋणसे उत्तीर्ण होऊंगा। तूने जो जो नीच कर्म्म करके मेरे पिता आदिको कपटके जुएमें पराजित करके बहुत दिनोंतक वनवासी किया था, रजस्वला एक वस्त्रधारिणी यशस्विनी द्रौपदीको सभामें बुलाकर अत्यन्त क्लेश दिया था; और मेरे पिता आदिके वनवासी होनेपर सिन्धुराज जयद्रथने तेरे प्रिय कार्य्य करनेकी इच्छासे, जब द्रौपदी आश्रममें निवास करती थी तब उसे हरण करके जो अत्यन्त क्लेश दिया था, यदि तू आज युद्धमें मेरे सम्मुखसे नहीं भाग जावेगा तो आज ही मैं तुझको इन सब अपमान और जुएकी खेल तथा दूसरे सब पापोंका प्रतिफल अवश्य ही प्रदान करूंगा। घटोत्कच ऐसा कहकर क्रोधसे होठोंको काटता और दांत कटकटाता हुआ महा प्रचण्ड धनुषको चढ़ाकर जैसे वर्षाकालमें बादल जलकी वर्षासे पृथ्वीको दुर्य्योधनको छिपा दिया।

८८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे भारत! तिसके अनन्तर राजा दुर्य्योधनने दानवगणसे भी न सह्य होने योग्य उस बाणवर्षाको इस प्रकारसे धारण किया, जैसे गजराज जलकी वर्षाको धारण करता है। फिर दुर्य्योधन क्रुद्ध होकर सर्पके समान लम्बी सांस छोड़ते हुए अत्यन्त ही शङ्कित हुए, अनन्तर पच्चीस तीक्ष्ण बाण घटोत्कचके ऊपर चलाये। सब बाण गन्धमादन पर्व्वतपर सर्पोंके गिरनेके समान सहसा घटोत्कचके शरीरमें लगे, राक्षसेन्द्र घटोत्कच उन बाणोंसे विद्ध होकर मदचूते हुए हाथीके समान शरीरसे रुधिरकी धारा बहाने लगा। फिर राजा दुर्य्योधनका नाश करनेकी इच्छासे पत्थरको भी तोड़नेवाली एक महाशक्ति ग्रहण की। राक्षस घटोत्कचने दुर्य्योधनके वधको

अभिलाषसे वज्र तथा लुक्कके समान जलती हुई उस प्रकाशमान महा शक्तिको चलानेका विचार किया। बलवान् वङ्गराजने उस शक्तिको आती देखकर पर्व्वतके समान एक मतवारे हाथीको उसकी ओर बढ़ाया; और शीघ्रताके सहित उस हाथीपर चढ़के दुर्य्योधनके रथके सम्मुख उपस्थित होकर उस हाथीसे दुर्य्योधनके रथको छिपाया। महाराज! क्रोधसे लाल नेत्र किये हुए घटोत्कचने दुर्य्योधनका रथ बुद्धिमान् वङ्गराजके हाथीसे छिपा देखकर उस महाशक्तिको वङ्गराजके हाथीपर ही चलाया। वह गजराज घटोत्कचकी चलाई हुई महाशक्तिके लगते ही रुधिर वमन करते हुए पृथ्वीमें गिरकर मर गये। हाथीके पृथ्वीमें गिरनेके समय बलवान् वङ्गराज उसपर से कूदके पृथ्वीपर खड़े हुए। राजा दुर्य्योधन उस मुख्य गजराजको मरते और अपनी सेनाको भागती देखके दुःखित हुए; वह अपनी सेनाको भागती जानकर भी निज अवमानना और क्षत्रिय धर्म्मको स्मरण करके अचल पर्व्वतके समान रणभूमिमें खड़े रहे। फिर अत्यन्त क्रुद्ध होकर होकर प्रलय कालकी अग्निके समान जलते हुए एक भयङ्कर बाणको धनुष पर चढ़ाके राक्षस घटोत्कचके ऊपर चलाया। मायावी घटोत्कचने इन्द्रके वज्रके समान उस प्रकाशमान बाणको आते देखके शीघ्रताके सहित घूमनेकी फुर्त्तीसे उसे निष्फल किया और क्रोधसे लाल नेत्र करके सब सेनाको डराता हुआ प्रलयकालके बादलके समान फिर महाघोर शब्द करने लगा।

शान्तनुपुत्र भीष्म राक्षस घटोत्कचके दारुण शब्दको सुन द्रोणाचार्य्यके निकट जाकर बोले, कि राक्षस घटोत्कचका जैसा घोर शब्द सुन पड़ता है. उससे मुझे निश्चय बोध होता है, कि वह राजा दुर्य्योधनके सङ्ग युद्ध कर रहा है, इससे तुम्हारा मङ्गल होवे, तुम लोग वहां पर जाकर राजा दुर्य्योधनकी रक्षा करो। जब महात्मा दुर्य्योधनसे बलवान् राक्षस युद्ध कर रहा है; तब ऐसे समयमें राजाकी रक्षा करना ही हम सब लोगोंका कर्त्तव्य कार्य्य है। सब महारथ योद्धा पितामह भीष्मकी आज्ञा सुनके शीघ्रतासे सहित दुर्य्योधनकी रक्षा करनेके निमित्त प्रस्थान करने लगे। द्रोणाचार्य्य, सोमदत्त, बाह्लिक, जयद्रथ, कृपाचार्य्य, भूरिश्रवा, शल्य, अवन्तिराज, बृहद्बल, अश्वत्थामा, विकर्ण, चित्रसेन और विविंशति,—ये सब महारथी योद्धा और उनके अनुयायी, सेनाके वीर योद्धा तथा कई हजार रथी शीघ्रताके सहित राजा दुर्य्योधनके निकट जाने लगे। त्रिशूल, मुद्गर और अनेक प्रकारके शस्त्रोंको धारण करनेवाले राक्षसोंके सहित बलवान् घटोत्कच उन महारथियोंसे रक्षित महा सेनाको आततायी रूपसे आते देख मैनाक पर्व्वतके समान रणभूमिमें अचल होके स्थित हुआ। इसके अनन्तर दुर्य्योधनकी उस सेनाके सङ्ग घटोत्कचका महाभयङ्कर रोएंको खड़े करनेवाला युद्ध होने लगा। रणभूमिमें सब ओर धनुषोंका टङ्कार और शस्त्रोंका शब्द इस प्रकारसे होने लगा। जैसे वनमें आग लगानेसे बांसोंके फटनेका शब्द होता है। कवचधारी योद्धाओंके शरीर पर गिरते हुए शस्त्रोंका शब्द पर्व्वत भेदनेके समान सुनाई देने लगा। वीर योद्धाओंके धनुषसे छूटे हुए बाण आकाशमें गमन करनेवाले सर्पोंके समान दिखाई देने लगे। महाबाहु घटोत्कच परम क्रुद्ध होकर घोर शब्द करके धनुष चढ़ाकर अर्द्धचन्द्र बाणसे द्रोणाचार्य्यका धनुष और एक बाणसे सोमदत्तके रथकी ध्वजाको काट कर सिंहनाद करने लगा। तीन बाणोंसे बाह्लिक के दोनो स्तनोंके बीचका स्थान और एक बाणसे कृपाचार्य्य और तीन बाणोंसे चित्रसेनको विद्ध किया। फिर एक बाण चला कर विकर्णको

विद्ध किया; विकर्ण उस बाणके लगनेसे रुधिरयुक्त होकर रथका दण्ड पकड़के बैठ गये, हे भारत! अनन्तर बड़े शरीरवाले भयङ्कर राक्षस घटोत्कचने भूरिश्रवाके ऊपर पन्द्रह बाण चलाये; वे सब बाण भूरिश्रवाके मर्म्मस्थानोंको भेद कर पृथ्वी पर गिरे। फिर उसने विविंशति और अश्वत्थामाके सारथियोंको मारा, वे दोनों सारथी घोड़ोंकी बागडोर छोड़कर रथ पर गिर पड़े। अनन्तर अर्द्ध-चन्द्रबाणसे सुवर्ण भूषित बराह चिन्हसे युक्त सिन्धुराज जयद्रथकी ध्वजा काट कर दूसरे बाणसे उनका धनुष काट दिया; क्रोधसे लाल नेत्र करके चार बाणोंसे महात्मा अवन्ति-राजके चारों घोड़ोंको मारा, फिर धनुष खींचकर एक तीक्ष्ण बाणसे राजपुत्र वृहद्दलके शरीरको विद्ध किया; वृहद्दल उस बाणसे अत्यन्त विद्ध होके रथ पर बैठ गये। अनन्तर राक्षस घटोत्कचने अत्यन्त क्रुद्ध होकर विषधर सर्पके समान कई एक तीक्ष्ण बाण धनुर्द्धारी शल्यके ऊपर चलाये, उन बाणोंसे महात्मा शल्यको विद्ध किया।

८६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र! राक्षस घटोत्कच तुम्हारे सब महारथियोंको पीड़ित करके दुर्य्योधनके नाश करनेकी इच्छासे उनकी ओर दौड़ा। तुम्हारे सब महारथ योद्धा घटोत्कचको दुर्य्योधनके वधकी इच्छासे दौड़ते देख शीघ्रताके सहित उसके सम्मुख उपस्थित हुए; वे सब सिंहके समान गर्ज्जते हुए ताल प्रमाण धनुष चढ़ाके उस राक्षसकी ओर दौड़े। जैसे शरद ऋतुमें बादल पानी वर्षा कर पृथ्वीको पूर्ण कर देते हैं, वैसे ही उन्होंने अपने अपने बाणोंकी वर्षासे घटोत्कचको छिपा दिया। उन बाणोंसे वह अंकुशसे पीड़ित हाथीके समान अत्यन्त विद्ध और, पीड़ित होकर विनतानन्दन गरुड़की भांति आकाश मार्गमें चला गया। महाबलवान् राक्षस घटोत्कचने आकाशमें जाके बादलके समान घोर गर्ज्जन करके सब दिशाओंको अपने भयङ्कर शब्दसे पूरित कर दिया। धर्म्मराज युधिष्ठिर उसके उस घोर शब्दको सुनकर भीमसेनसे बोले, हे महाबाहो! राक्षस घटोत्कचका जैसा घोर शब्द सुन पड़ता है, उससे निश्चय यही बोध होता है, कि धृतराष्ट्रकी महासेनाके सङ्ग उसका युद्ध होरहा हैं। बोध होता है, वह युद्ध राक्षस घटोत्कचके पक्षमें अत्यन्त ही कठिन हो रहा है। उधर पितामह भीष्म क्रुद्ध होकर पाञ्चाल वीरोंके नाश करनेको उपस्थित हुए है; उन सबकी रक्षा करनेके निमित्त वहां पर अर्ज्जुन शत्रुओंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए हैं। हे भीम! इस समय यह दो कार्य्य उपस्थित हैं, उन्हें जान कर तुम अत्यन्त शंकित घटोत्कचकी रक्षाके निमित्त ही शीघ्र गमन करो। धर्म्म-पुत्र युधिष्ठिरकी आज्ञा सुनके भीमसेन सिंहनाद करके सब राजाओंको भयभीत करते हुए समुद्रके वेगके समान घटोत्कचकी रक्षा करनेके वास्ते प्रस्थान करने लगे। सत्यधृति, पराक्रमी सौचित्ति, श्रेणिमान्, बसुदान, काशिराज पुत्र, द्रौपदीके पुत्र, अभिमन्यु, क्षत्रदेव, पराक्रमी क्षत्रधर्म्मा और अपनी सेनाके सहित अनूप देशके नील राजा, ये सब महारथ योद्धा भीमसेनके अनुगामी हुए। वे सब लोग छः हजार हाथियोंकी सेना और बहुतसे रथोंसे युक्त होके सिंहनाद करते हुए रथके शब्द और घोड़ोंकी टापसे पृथ्वीको कँपातेहुए राक्षस घटोत्कचके समीप पहुंचे और चारों ओरसे घेर कर उसकी रक्षा करनेमें प्रवृत्त हुए। महाराज! तुम्हारी ओरकी सेना उन सब वीरोंके विविध भांतिके शब्द सुन और भीमसेनके भयसे विकल हो, मनमलिन करके घटोत्कचको त्याग कर इन सब योद्धाओंके

युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुई। किसी ओरके योद्धा युद्धमें निवृत्त होनेवाले नहीं थे; इससे उन दोनों सेनाओंका महाघोर युद्ध आरम्भ हुआ। महारथ योद्धा एक दूसरेकी ओर दौड़ते हुए शस्त्रोंका प्रहार करने लगे। इस युद्धमें डरपोक पुरुषोंने भी भयानक रूप धारण किया। घुड़सवार गजपतियोंको और पैदल वीर योद्धा रथियोंको आवाहन करके युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। रथ, घोड़े, हाथी और पैदलोंके युद्धमें उन सबके पाव और रथोंके चलनेसे इस प्रकारसे धूल उठी, कि उससे रणभूमिमें अन्धकार होगया। तब उस समय किसीको भी अपने वा शत्रुपक्षका ज्ञान न रहा। वीरोंके नाश करनेवाले उस भयङ्कर युद्धमें पिता पुत्रको और पुत्र पिताको भी नहीं जान सकता था; गर्जनेवाले पुरुषों और शस्त्रोंका महाघोर शब्द प्रेतोंके शब्दके समान सुनाई देने लगा। हाथी घोड़े और मनुष्योंके रुधिर रूपी जलकी तरङ्ग और केशरूपी संवारसे युक्त घोर नदी रणभूमिमें उत्पन्न हुई, जैसे पत्थरके टुकड़ोंके गिरनेसे शब्द होता है, वैसे ही मनुष्योंकी देहसे शिर कटके गिरनेका शब्द सुन पड़ता था। शिर-रहित मनुष्य और कटे हुए हाथी तथा घोड़ोंके शरीरसे रणभूमि छिप गई। महारथ योद्धा लोग एक दूसरेके ऊपर अपने शस्त्रोंको वर्षाते हुए वेगसे दौड़ने लगे। घोड़े घुड़सवारोंके चलानेसे घोड़ोंके समीप जाकर आपसमें वीरोंके शस्त्रोंके प्रहारसे मरकर पृथ्वीमें गिरने लगे। पैदल वीर योद्धा लाल नेत्र करके पैदलोंके समीप जाकर आपसमें युद्ध करके एक दूसरेका वध करने लगे। हाथी फीलवानोंके अंकुशसे चलाये जानेपर हाथियोंके सम्मुख जाके अपने दांत और सूंड़ोंसे हाथियोंके सङ्ग युद्ध करने लगे; पताकाओंसे शोभित वे सब हाथी रुधिरसे युक्त होकर ऐसे शोभायमान हुए जैसे बादलोंके बीच बिजली शोभित होती है। कितने ही हाथी सूंड़ कटनेसे मरके पृथ्वीमें गिरे, कितने ही हाथी तोमर अस्त्रोंके प्रहारसे पीड़ित होकर बादलके समान शब्द करते हुए रणभूमिमें दौड़ने लगे। कितने ही हाथियोंके सूंड़ दो खण्ड होगये, कितनोंकी गर्द्दन कट गई और कितने ही हाथियोंके शरीर बीचों बीच दो खण्ड होगये; वह सब हाथी रणभूमिमें पर्व्वतके समान मरके गिरने लगे। बड़े बड़े हाथियोंके पेट दूसरे हाथियोंके दांतोंसे फटनेपर उनके शरीरसे इस प्रकार रुधिर बहने लगा, जैसे पहाड़पर गेरूकी धारा बहती है। कितने ही हाथी बाण और तोमरोंसे बिद्ध होकर सवारोंके मारे जानेपर शृङ्गहीन पर्व्वतके समान दिखाई देने लगे। कितने ही हाथी बाणोंसे पीड़ित होके क्रुद्ध हो रणभूमिमें सैकड़ों रथ, घोड़े और पैदल योद्धाओंको सूंड़से पकड़ कर पांवसे मर्द्दन करने लगे। अनेक घोड़े जिन जिन घुड़सवारोंके प्रास और तोमरोंसे बिद्ध हुए थे, उनकी ओर ही व्याकुल होकर दौड़ने लगे। वीरकुलमें उत्पन्न हुए सब वीर रथी योद्धा निर्भय चित्तसे रथियोंके सङ्ग युद्ध करने लगे। योद्धा लोग उस युद्धभूमिमें स्वयम्वर-स्थलके समान यश वा स्वर्ग गमनकी अभिलाषी होकर आपसमें युद्ध करने लगे। इस प्रकारके महा घोर युद्धमें कौरवोंकी महासेना युद्धसे विमुख होने लगी।

९०अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! राजा दुर्य्योधन अपनी सेनाको नष्ट होती देखकर क्रुद्ध होके शत्रुनाशन भीमसेनकी ओर दौड़े; इन्होंने इन्द्रधनुषके समान प्रचण्ड धनुष ग्रहण करके अपने बाणोंकी वर्षासे भीमसेनको छिपा दिया और एक तीक्ष्ण बाण चलाकर उनका धनुष

काटदिया। तेजस्वी भीमसेन दुर्य्योधनके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर दांत पीसते हुए सुवर्णभूषित रथकी ध्वजाको पकड़ कर स्थित हुए। घटोत्कच भीमसेनको पीड़ित देखकर अग्निके समान जलने लगा; और पाण्डवोंकी ओरके अभिमन्यु आदि शङ्कित होके ऊंचे स्वरसे सिंहनाद करके राजा दुर्य्योधनकी ओर दौड़े। भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्य अभिमन्यु आदि महारथोंको क्रुद्ध और शङ्कित देखकर अपनी सेनाके महारथोंसे बोले, ये सब पाण्डवोंकी सेनाके महारथ योद्धा क्रुद्ध होकर जयकी अभिलाषासे भीमसेनके अगाड़ी होके अपने सिंहनादसे क्षत्रिय वीरोंको भयभीत करते और अनेक प्रकारके अस्त्रशस्त्रोंको चलाते हुए राजा दुर्य्योधनकी ओर दौड़े चले आरहे हैं। राजा दुर्य्योधन भी इस समय व्यसनरूपी समुद्रमें पड़कर शोकित हुए हैं; इससे हे महारथ वीरो! तुम लोगोंका कल्याण होवे, तुम लोग शीघ्रतासे गमन करके राजाओंसे दुर्य्योधनकी रक्षा करो। सोमदत्त आदि तुम्हारी ओरके सब राजाओंने द्रोणाचार्य्यकी बात सुनकर पाण्डवोंकी सेनाके समीप गमन किया। कृपाचार्य्य, भूरिश्रवा, शल्य, अश्वत्थामा, विविंशति, चित्रसेन, विकर्ण जयद्रथ, बृहद्बल और महाधनुर्द्धर अवन्तिराज शीघ्रतासे गमन करके चारो ओरसे दुर्य्योधनको घेरकर खड़े हुए। वे सब महारथ योद्धा वीर आगे बढ़के पाण्डवोंकी सेनापर प्रहार करने लगे। अनन्तर दोनों सेनाका महा घोर युद्ध होने लगा। महाबाहु द्रोणाचार्य्यने सब महारथ वीरोंको दुर्य्योधनकी रक्षाके निमित्त भेजकर अपना महा धनुष चढाकर छव्वीस बाणोंसे भीमसेनको विद्ध किया; और फिर शीघ्रताके सहित भीमसेनके ऊपर इस प्रकारसे अपने बाणोंको वर्षाने लगे, जैसे बादल आकाशसे जलकी धारा वर्षाता

है। महाबलवान् धनुषधारी भीमसेनने द[...] बाणोंसे द्रोणाचार्य्यका वामपार्श्व विद्ध किया [...] अवस्थामें बूढ़े द्रोणाचार्य्य उन बाणोंसे अत्य[...] विद्ध और पीड़ित होकर रथपर बै[...] गये। तब राजा दुर्य्योधन और अश्वत्था[...] द्रोणाचार्य्यको पीड़ित देखकर क्रुद्ध हो[...] भीमसेनकी ओर दौड़े। महाबाहु भीम[...] उन दोनों महारथ वीरोंको प्रलयकाल[...] यमराजके समान आते देखकर शीघ्रत[...] सहित गदा लेकर रथसे कूद पड़े, और [...] यमदण्डके समान भारी गदाको लेकर अ[...] पर्व्वतके समान पृथ्वीपर स्थित हुए। कुरु[...] दुर्य्योधन और अश्वत्थामाने शृङ्गयुक्त कैल[...] पर्व्वतके समान भीमसेनको गदाधारी देख[...] शीघ्रताके सहित उनके समीप गमन कि[...] भीमसेन भी उन दोनों पराक्रमी मह[...] वीरोंको आते देख उनकी ओर वेगसे दौ[...] द्रोणाचार्य्य आदि सम्पूर्ण कौरव महा[...] भीमसेनको इस प्रकार दौड़ते देख शीघ्रत[...] सहित उनके वध करनेकी इच्छासे उ[...] और वेगसे चले। और सबने मिलकर भी[...] सेनकी छातीमें चारो ओरसे बाणोंकी [...] करना आरम्भ किया। अभिमन्यु आदि पा[...] वोंकी ओरके महारथ योद्धा भीमसे[...] पीड़ित और शोकित देखकर उनकी [...] करनेके निमित्त अपने प्राणकी आशा छो[...] वेगपूर्व्वक दौड़े। भीमसेनके प्यारे मित्र [...] प्रदेशके राजा नील क्रुद्ध होकर अश्वत्था[...] सम्मुख हुए। महाधनुर्द्धर नील सदा [...] अश्वत्थामाके सङ्ग युद्धमें ईर्षा करते थे। उ[...] ने धनुष चढ़ाकर एक बाणसे अश्वत्थामा[...] विद्ध किया। महाराज! पहिले समयमें ब[...] वान् विप्रचित्ति नामका एक दानव था, [...] उसने अपने क्रोधसे तीनों लोकोंको भयभ[...] किया था, जैसे देवताओंके राजा इन्द्रने उ[...] अपने बाणोंसे विद्ध किया था, वैसे ही नी[...]

राजाने अश्वत्थामाको एक बाणसे विद्ध किया। बुद्धिमान् अश्वत्थामा उस बाणसे पीड़ित तथा रुधिरयुक्त शरीरसे अत्यन्त क्रुद्ध होकर इन्द्रके बज्र समान शब्द करनेवाले विचित्र धनुषको चढ़ाकर राजा नीलके नाश करनेका विचार किया। तिसके अनन्तर उन्होंने शिलापर घसे हुए चार तीक्ष्ण बाणोंसे नील राजाके चारों घोड़े, एकसे उनके सारथी, एक बाणसे रथकी ध्वजा काटके फिर नील राजाके ऊपर एक बाणसे प्रहार करके उनका वक्षस्थल विद्ध किया; उससे वह अत्यन्त विद्ध होकर रथपर बैठ गये। मेघवर्ण नील राजको मोहित देखकर राक्षस घटोत्कच क्रुद्ध होकर अपने सब राक्षसोंके सहित वेगपूर्व्वक शत्रुनाशन अश्वत्थामाकी ओर दौड़ा। तेजस्वी अश्वत्थामा महा भयङ्कर राक्षस घटोत्कचको सम्मुख आते देख शीघ्रताके सहित उसकी ओर बढ़े। जो सब राक्षस क्रुद्ध होकर घटोत्कचके अनुगामी हुए थे अश्वत्थामाने उन सब राक्षसोंका संहार किया। विकराल शरीरवाला राक्षस घटोत्कच उन राक्षसोंको अश्वत्थामाके बाणोंसे मरते देखकर अत्यन्त क्रुद्ध हुआ। राक्षसेन्द्र मायावी घटोत्कचने अश्वत्थामाको मोहित करनेके निमित्त महाघोर माया उत्पन्न की। तिसके अनन्तर तुम्हारी सेनाके सब वीर घटोत्कचकी मायासे मोहित होकर आपसमें एक दूसरेको देखने लगे और सबने देखा, कि द्रोणाचार्य्य, दुर्य्योधन, शल्य, अश्वत्थामा, तथा और भी दूसरे अनेक कौरव राजा अस्त्रोंसे पीड़ित, रुधिरसे युक्त और कितने ही मरकर पृथ्वीमें पड़े हैं। सहस्रों घोड़ और घुड़सवार कटके पृथ्वीमें गिरे हुए हैं। यह कौतुक देखकर तुम्हारी सब सेना शिविरमें जानेके निमित्त वेगसे दौड़ने लगी। महाराज उन सब वीरोंको भागते देखकर भीष्म और मैंने ऊंचे स्वरसे पुकारकर कहा, तुम लोग क्यों भागते हो? युद्ध करो। तुम लोग जो कुछ रणभूमिमें देखकर भयभीत हुए हो, वह सब असत्य हैं; वह सम्पूर्ण राक्षसी मायाका कार्य्य है। वे सब योद्धा मोहित होकर हम दोनोंकी बातको न सुनकर शंकित चित्तसे भागने ही लगे, और खड़े नहीं हुए। घटोत्कच और पाण्डव लोग उन सब वीरोंको भागते देख युद्धमें विजयी होकर सिंहनाद करने लगे; और शंख नगाड़े आदि बाजोंको बजा कर पृथ्वीको अनुनादित करने लगे। महाराज! तुम्हारी सब सेना दुष्टात्मा घटोत्कचकी मायासे सूर्य्य अस्त होनेके समय इधर उधर भाग गई।

९१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! उस महाघोर भयङ्कर संग्राममें राजा दुर्य्योधनने पितामह भीष्मके समीप जाकर प्रणाम करके विनयपूर्व्वक अपने पराजय और घटोत्कचके विजयका वृत्तान्त विस्तार पूर्व्वक वर्णन किया। बलवान् राजा दुर्य्योधन बार बार लम्बी सांस लेते हुए सब समाचार सुनाकर फिर बोले, हे पितामह! जैसे पाण्डवोंने कृष्णका आसरा करके विग्रह आरम्भ किया है, वैसे ही मैंने भी तुम्हारे आसरेसे युद्ध आरम्भ किया है। हे परन्तप! मैं इस ग्यारह अक्षौहिणी सेनाके सहित तुम्हारी आज्ञा पालनमें तत्पर हूं; तो भी पाण्डवोंने जो घटोत्कचके आसरे मुझे पराजित किया, उससे जैसे अग्नि सूखे तृणको भस्म कर देती है, वैसे ही क्रोधसे मेरा शरीर जला जाता है; हे परन्तप पितामह! इससे जिस प्रकार तुम्हारे प्रसादसे इस दुष्ट राक्षसका वध कर सकूं, वही उपाय तुम वर्णन करो। कुरुकुल-भूषण शान्तनुनन्दन भीष्म दुर्य्योधनकी ऐसी बात सुनकर उनसे बोले, हे राजन्! इस युद्धमें तुम्हारा जो कर्त्तव्य

है, वह मैं तुमसे कहता हूं, तुम सुनो। हे पुत्र! युद्धमें तथा सब अवस्थाओंमें तुमको अपनी रक्षा करनी उचित है। धर्मराज युधिष्ठिर, अर्ज्जुन, भीमसेन, नकुल वा सहदेव;—इनमेंसे किसी एकके सङ्ग युद्ध करना तुमको उचित है, क्योंकि राजा लोग राजधर्म्मके अनुगामी होकर राजाहीके सङ्ग युद्ध किया करते हैं। हे पुत्र! यदि भयङ्कर राक्षस घटोत्कचके वधके वास्ते तुम इच्छा करते हो, तो द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा, सात्वत कृतवर्म्मा, शल्य, भूरिश्रवा, महारथ विकर्ण तथा दुःशासन आदि तुम्हारे मुख्य मुख्य भाई और मैं,—हम सब लोग तुम्हारे निमित्त उस महाबलवान् राक्षसके सङ्ग युद्ध करेंगे। अथवा इन्द्रके समान पराक्रमी राजा भगदत्त दुष्टबुद्धि राक्षस घटोत्कचके सङ्ग युद्ध करनेके निमित्त गमन करेंगे।

बुद्धिमान् भीष्म दुर्य्योधनसे ऐसा वचन कह कर उनके सम्मुख ही राजा भगदत्तसे बोले; हे महाराज! तुम युद्धकी इच्छा करनेवाले राक्षस घटोत्कचके समीप शीघ्र गमन करो! जैसे पहिले समयमें इन्द्रने तारकासुरको निवारण किया था, वैसे ही तुम सब धनुर्द्धारियोंके सम्मुख यत्नपूर्व्वक उस दुष्ट राक्षसको युद्धसे निवारण करो। हे शत्रुनाशन! सब दिव्य अस्त्र और पराक्रम तुममें विद्यमान है और पहिले अनेक देवताओंके सङ्ग तुमने युद्ध भी किया था, इससे तुम ही इस भयङ्कर राक्षसके सङ्ग युद्ध करनेके योग्य पराक्रमशील योद्धा हो, तुम अपने बलको प्रकाशित करके उस दुष्ट राक्षसका संहार करो।

राजा भगदत्तने सेनापति भीष्मका यह वचन सुनके शत्रुओंकी ओर सिंहनाद करते हुए गमन किया। पाण्डवोंकी सेनाके महारथ भीमसेन, अभिमन्यु, घटोत्कच, द्रौपदीके पांचों पुत्र, सत्यधृति, क्षत्रदेव, चेदिराज, वसुमान्, और दशार्ण देशके राजाओंने भगदत्तको गर्ज्जते हुए बादलके समान सिंहनाद करते हुए सम्मुख आते देखकर क्रुद्ध हो उनकी ओर गमन किया। राजा भगदत्त भी सुप्रतीक नामक गजराज पर चढ़के उन सब लोगोंकी ओर दौड़े। तिसके अनन्तर राजा भगदत्तके सङ्ग पाण्डवोंका महाभयङ्कर संग्राम होने लगा। महाराज! महा वेगवान् अत्यन्त चोखे बाण वीरोंके धनुषसे छूट कर रथ और हाथियोंके ऊपर गिरने लगे। मदचूते हुए मतवारे हाथी निर्भय चित्तसे महावतोंके अंकुशसे प्रेरित होकर हाथियोंके समीप जाकर आपसमें युद्ध करने लगे। महामतवारे हाथी क्रुद्ध होकर अपने मूषलके समान दांतोंसे दूसरे हाथियोंको आक्रमण करके उन्हें क्षत विक्षत करने लगे। चंवर भूषित घोड़े प्रासधारी घुड़सवारोंसे प्रेरित होकर शीघ्रताके सहित रणभूमिमें भ्रमण करने लगे। सैकड़ों सहस्रों पैदल वीर योद्धा पैदलवीरोंके अस्त्रोंसे मरकर पृथ्वी में गिरने लगे। रथी योद्धा रथपर चढ़के कर्णि, नालीक, आदि बाणोंसे वीरोंका वध करके सिंहनाद करने लगे।

ऐसे रोवोंके खड़े करनेवाले संग्राममें महा धनुर्द्धारी राजा भगदत्त मदचूते हुए सुप्रतीक नामक गजराजपर चढ़के भीमसेनके समीप उपस्थित हुए। जिस प्रकारसे पर्व्वतके नाना स्थानोंसे जल बहता है, वैसे ही राजा भगदत्तके गजराजके सम्पूर्ण शरीर अर्थात् दोनों नेत्र, दोनों कान, दोनो गण्ड और मस्तकसे मद चू रहा था। हे पाप-रहित राजेन्द्र। राजा भगदत्त उस गजराज पर चढ़के ऐरावतपर चढ़े हुए इन्द्रके समान जल-वर्षाकी भांति अपने बाणोंको वर्षाते हुए गमन करने लगे। जैसे बादल वर्षा-ऋतुमें पहाड़पर जल वर्षाता है, वैसे ही भीमसेनको अपने बाणोंकी वर्षासे पीड़ित करने लगे। महा धनुर्द्धर भीमसेनने क्रुद्ध होकर सौसे भी अधिक भगदत्तके पाद रक्षकोंको अपने बाणोंसे मार

डाला । राजा भगदत्तने पादरक्षकोंको मरते देख उस गजराजको भीमसेनके रथकी ओर चलाया । वह गजराज राजा भगदत्तसे प्रेरित होकर धनुषसे छूटे हुए वाणके समान शत्रुनाशन भीमसेनकी ओर दौड़ा । केकयराज, अभिमन्यु, द्रौपदीके पुत्र, दशार्णराज, पराक्रमी क्षत्रदेव, चेदिराज और चित्रकेतु पाण्डवोंके इन सब महा बलवान् महारथियोंने उस गजराजको आते देखके भीमसेनको आगे करके क्रुद्ध हो दिव्य अस्त्रोंको प्रकाशित करते हुए उस एक हाथीको चारो ओरसे घेर लिया । वह महा गजराज उन सब महारथियोंके अनेक वाणोंसे विद्ध होकर रुधिर युक्त होकर ऐसा शोभित हुआ, जैसे गेरूकी धारा बहनेसे पर्व्वत शोभायमान लगता है । दशार्णराज भी पर्व्वतके समान एक हाथीपर चढ़के भगदत्तके हाथीके समीप उपस्थित हुए । जैसे तट समुद्रके वेगको निवारण करता है, वैसे ही भगदत्तके गजराजने दशार्णराजके हाथीके वेगको धारण करके उसे निवारण किया ; उसे देख पाण्डवोंकी सेनाके सब वीर धन्य धन्य कहके प्रशंसा करने लगे । हे भारत ! अनन्तर राजा भगदत्तने क्रुद्ध होकर उस हाथीके ऊपर चौदह तोमर चलाये । वे सब तोमर उस हाथीके कवचको भेदकर उसके शरीरमें घुस गये, वह हाथी उन तोमरोंसे पीड़ित हो शीघ्र ही पराक्रमहीन होकर जैसे वायु प्रबल वेगसे वृक्षोंको उखाड़के फेंक देता है, वैसे.ही महा घोर शब्द करता हुआ अपनी सेनाके वीरोंका मर्द्दन करता हुआ भाग गया । जब वह हाथी भाग गया, तब पाण्डव लोग भीमसेनको आगे करके सिंहनाद करते हुए युद्धमें विविध भांतिके वाण और शस्त्रोंको चलाते हुए भगदत्तकी ओर दौड़े । हे राजन् ! महा धनुर्धारी भगदत्तने उन सब क्रुद्ध महारथ वीरोंके सिंहनादको सुनकर [illegible] क्रुद्ध हो निर्भय-चित्तसे अपने हाथीको उनकी ओर वेगपूर्व्वक बढ़ाया । हाथियोंमें श्रेष्ठ गजराज सुप्रतीक भगदत्तके अंकुश और अङ्गूठेसे प्रेरित होकर क्षण भरमें प्रलयकालकी अग्निके समान प्रज्वलित होगया । यहांतक कि वह गजराज अत्यन्त क्रुद्ध होकर इधर उधर दौड़नेवाले सवारोंके सहित रथ, हाथी, घोड़ों और सहस्र सहस्र पैदल चलनेवाले वीरोंका मर्द्दन करने लगा । महाराज ! पाण्डवोंकी बहुतसी सेना उस गजराजसे पीड़ित होकर मानों अग्निसे तपाये गये चमड़ेकी भांति सिमट गई । राक्षस घटोत्कचने अपनी सेनाको बुद्धिमान् भगदत्तके सम्मुखसे भागती हुई देखकर क्रुद्ध होके उनके समीप गमन किया । उस महाबलवान् घटोत्कचने लाल नेत्र और भयङ्कर मूर्त्ति धारण कर क्रोधसे जलके पर्व्वतको भी भेदनेमे समर्थ एक प्रकाशमान भयङ्कर त्रिशूल ग्रहण करके राजा भगदत्तकी ओर चलाया । राजा भगदत्तने उस भयानक त्रिशूलको सम्मुख आते देख, एक अर्द्धचन्द्र वाणसे उसे काटके गिरा दिया । जैसे इन्द्र-धनुष आकाशमें उदित होकर शोभित होता है, वैसे ही वह प्रकाशमान शूल भगदत्तके वाणसे दोखण्ड होकर शोभित होने लगा । हे राजन् ! राजा भगदत्तने राक्षसके चलाए त्रिशूलको दो खण्ड करके. फिर घटोत्कचको "खड़ा रह ! खड़ा रह !" कहके अग्निकी शिखाके समान जलती हुई सुवर्ण दण्डसे युक्त एक महाशक्ति ग्रहण करके उसके ऊपर चलाई । घटोत्कच आकाशसे वज्रके समान उस शक्तिको सम्मुख आती देख शीघ्र ही कूद कर उसे ग्रहण करके सिंहनाद करने लगा । हे भारत ! उसने उस शक्तिको शीघ्रताके सहित ग्रहण कर पांवके घुटनो पर रखके राजा भगदत्तके सम्मुख ही तोड़ डाला. उसका वह कर्म्म अद्भुतरूपका देख पड़ा । आकाशमें विमानों पर बैठे देवता, गन्धर्व्व और मुनिलोग उस बलवान् [illegible]

ऐसे कर्म्मको देखकर विस्मित हुए। भीमसेन आदि पाण्डव उसके ऐसे कर्म्मको देखके "धन्य है, धन्य है" कहके उसकी प्रशंसा करने लगे। महाधनुर्द्धारी प्रतापी भगदत्त महात्मा पाण्डवोंके हर्ष सूचक सिंहनादको सुनकर क्रोधसे पूर्ण होगये; वह इन्द्रके वज्रके समान प्रचण्ड और प्रकाशमान धनुष चढ़ाकर पाण्डवोंकी ओरके सब महारथियोंके ऊपर प्रकाशमान तीक्ष्ण बाणोंको सिंहनाद करते हुए चलाने लगे। उन्होंने एक बाणसे भीमसेन, नौ बाणोंसे घटोत्कच, तीन बाणोंसे अभिमन्यु और पाच बाणोंसे केकयराज पाचों भाइयोंको विद्ध किया। फिर एक तीक्ष्ण बाण धनुष पर खींच कर हलदेवकी दहिनी भुजामें प्रहार किया, उस बाणके लगते ही बाणके सहित उनका धनुष हाथसे छूट कर गिर पड़ा। तिसके अनन्तर प्रतापी भगदत्तने पाच बाणोंसे द्रौपदीके पाचो पुत्रोंको विद्ध करके फिर क्रुद्ध होके भीमसेनके रथके घोड़ोंको मार डाला; और तीन बाणोंसे उनकी सिंहध्वजाको काट कर फिर तीन बाणोंमे उनके सारथी विशोकको बिद्ध किया। भीमसेनका सारथी विशोक राजा भगदत्तके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर रथ पर बैठ गया। तिसके अनन्तर रथियोंमें श्रेष्ठ भीमसेन गदा ग्रहण कर रथसे उतरके पृथ्वी पर खड़े हुए। हे भारत! उनको शृङ्गयुक्त पर्व्वतके समान गदाधारी देखकर तुम्हारी सेनाके योद्धाओंको अत्यन्त ही भय उत्पन्न हुआ।

हे महाराज! इसी अवसरमें सारथी कृष्णके सहित अर्ज्जुन चारो ओरसे शत्रु-सेनाका वध करते हुए, जिस स्थान पर बलवान् पराक्रमी पितापुत्र भीमसेन और घटोत्कच भगदत्तके सङ्ग युद्ध कर रहे थे, उसी स्थान पर आकर उपस्थित हुए। हे भारत! अर्ज्जुन महारथ भाइयोंको भगदत्तके बाणोंसे पीड़ित देखकर शीघ्रताके सहित बाणोंको चलाकर युद्ध करने लगे। तिसके अनन्तर राजा दुर्य्योधनने शीघ्रताके सहित हाथी और मनुष्योंसे युक्त सम्पूर्ण सेनाको अर्ज्जुनके समीप भेज दिया, पाण्डुपुत्र अर्ज्जुन सहसा कौरवोंकी सेनाको सम्मुख आती देख, वेगपूर्व्वक उसकी ओर दौड़े। हे भारत! राजा भगदत्त अपने गजराजसे पाण्डवोंकी सब सेनाको मर्द्दन करते हुए राजा युधिष्ठिरके समीप उपस्थित हुए। तब पाञ्चाल, पाण्डव और केकय देशीय योद्धाओंके संग राजा भगदत्तका अत्यन्त भयानक युद्ध होने लगा। उसी समय भीमसेनने कृष्ण और अर्ज्जुनको रणभूमिमें इरावान्की मृत्युका वृत्तान्त विस्तारपूर्व्वक सुनाया।

९२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! अर्ज्जुन अपने पुत्र इरावान्की मृत्युका वृत्तान्त सुनकर अत्यन्त दुःखित होके सर्पके समान लम्बी सास छोड़ते हुए श्रीकृष्णचन्द्रसे बोले, हे मधुसूदन! पहिले महा बुद्धिमान् विदुरने निश्चय ही इस युद्धमें कुरु पाण्डवोंका घोर नाश जानकर राजा धृतराष्ट्रको निवारण किया था। कौरवोसे अवध्य हमारी ओरके बहुतसे वीरोंका कौरव लोग वध कर रहे है, और हम लोगोंसे अवध्य कौरवोंको भी हम युद्धमें नाश कर रहे हैं। हे पुरुषोत्तम! हम लोग केवल अर्थके निमित्त ही इस प्रकारके जाति-नाश करनेमें प्रवृत्त हुए है, अर्थहीके निमित्त ऐसे निन्दित कर्म्म करनेमें प्रवृत्त हुए है; इससे अर्थको धिक्कार है। हे कृष्ण! धनहीन पुरुषको बरन मरना ही उत्तम है, परन्तु जातिके लोगोंका वध करके धन उपार्ज्जन करना उत्तम नहीं है। हे महाबाहो! हम युद्धमें जातिके लोगोंका वध करके ही क्या पावेंगे? सुबलपुत्र शकुनि और कर्णकी

कुमन्त्रणाके अनुसार दुर्य्योधनके अपराधसे ही चत्रियोंका नाश होरहा है। हे मधुसूदन! इस समय मैंने समझ लिया, कि राजा युधिष्ठिरने दुर्य्योधनके निकट आधा राज्य तथा पांच ही गांव मांगकर उत्तम कार्य्य किया था; परन्तु नीचबुद्धि दुर्य्योधनने वह प्रदान नहीं किया। अब इस समय शूरवीर चत्रियोंको मरके पृथ्वीपर पड़े हुए देखकर मैं अपनेको निन्दित समझता हूं, चत्रियोंकी जीविकाको धिक्कार है। हे मधुसूदन! ये सब चत्रिय मुझे युद्धमें असमर्थ समझेंगे, इस ही कारणसे मैं जातिके लोगोंके सङ्ग युद्ध कर रहा हूं। हे कृष्ण! इस समय घोड़ोंको तुम शीघ्र धृतराष्ट्र सेनाकी ओर चलाओ, मैं अपनी दोनों भुजाओंकी सहायतासे इस युद्ध-सागरसे पार होऊंगा, अब निरर्थक समयको विताना उचित नहीं है।

शत्रुनाशन कृष्ण अर्जुनकी बात सुनकर वायुके समान वेगवाले घोड़ोंको तुम्हारी सेनाकी ओर चलाया। हे भारत। जैसे पूर्णमासीके दिन समुद्रमें महा घोर शब्द होता है, वैसे ही तुम्हारी सेनाके बीच अत्यन्त कोलाहल होने लगा। महाराज! तब सन्ध्या के समय पाण्डवोंके सङ्ग भीष्मका बादलके शब्दके समान महा घोर शब्दसे युक्त भयङ्कर युद्ध होने लगा। जैसे वसुओंने इन्द्रको चारों ओरसे घेरकर युद्धके निमित्त गमन किया था, वैसे ही तुम्हारे सब पुत्र द्रोणाचार्य्यको घेरकर भीमसेनकी ओर दौड़े। तिसके अनन्तर रथियोंमें श्रेष्ठ भीष्म, कृपाचार्य्य, भगदत्त और सुशर्म्मा अर्ज्जुनसे युद्ध करनेके निमित्त उनके समीप उपस्थित हुए। कृतवर्म्मा और वाह्लिक सात्यकिसे और अम्बष्ठ अभिमन्युसे युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। हे महाराज! वाकी सब महारथ योद्धा पाण्डवोंके महारथियोंपर आक्रमण करने लगे। तब उन सब वीरोंका महा घोर भयङ्कर संग्राम होने लगा। हे राजन्! भीमसेन युद्धमें तुम्हारे पुत्रोंको देखकर जैसे अग्नि घृत पड़नेसे अधिक प्रज्वलित होती है, वैसे ही क्रुद्ध होकर प्रकाशित होने लगे। तुम्हारे पुत्रोंने भी जैसे वर्षाके समयमें बादल पर्व्वतपर जलकी वर्षा करते हैं, वैसे ही भीमसेनके ऊपर बाणोंकी वर्षा करके उन्हें छिपा दिया। पराक्रमी भीमसेन तुम्हारे पुत्रोंके बाणोंसे बार बार छिपके दांत पीसते हुए एक तीक्ष्ण क्षुरप्रसे व्यूढ़ोरस्कके ऊपर प्रहार किया, उसके लगते ही व्यूढ़ोरस्क मरके पृथ्वीमें गिरे। अनन्तर जैसे सिंह छोटे मृगका वध करता है, वैसे ही एक शाणित भल्लसे कुण्डलको भी मार डाला। अनन्तर वहांपर स्थित तुम्हारे सब पुत्रोंको देखकर शीघ्रताके सहित कितने ही बाणोंसे उनके ऊपर प्रहार करने लगे। दृढ़ धनुर्द्धारी भीमसेनके बाणोंसे अनाधृष्टि कुण्डभेदी, वैराटि, दीर्घलोचन, दीर्घबाहु, सुबाहु और कनकध्वज;—तुम्हारे ये अति महारथ वीर पुत्र रथसे मरकर पृथ्वीमें गिर पड़े। ये सब रथसे गिरते समय वसन्तकालके आमके वृक्षोंकी भांति प्रकाशित हुए। तुम्हारे शेष पुत्र उस महा संग्राममें बलवान् भीमसेनको कालस्वरूप जानकर वहांसे भाग गये। द्रोणाचार्य्यने भीमसेनको तुम्हारे पुत्रोंका वध करते देखकर पर्व्वतके ऊपर बादलकी जलवर्षाके समान उन्हें चारों ओरसे अपनी बाण-वर्षासे छिपा दिया। कुन्तीपुत्र भीमसेनका उस समय यह मैंने अद्भुत पराक्रम देखा, कि उनको द्रोणाचार्य्य अपने बाणोंसे निवारण कर रहे थे; तौ भी उन्होंने तुम्हारे पुत्रोंका वध किया। जैसे सांढ़ आकाशसे गिरते हुए जलकी वर्षा सहते हैं, वैसे ही भीमसेन द्रोणाचार्य्यके चलाये हुए बाणोंको सहने लगे। महाराज! भीमने उस युद्धमें यह आश्चर्य्य कार्य्य किया, कि द्रोणाचार्य्यको भी निवारण किया और तुम्हारे पुत्रोंका भी युद्ध-भूमिमें वध

किया। जैसे सिंह हरिणोंके भुण्डमें भ्रमण करके क्रीड़ा करता है, वैसे ही भीमसेन तुम्हारे पुत्रोंके बीच भ्रमण करके उनको तितर बितर करने लगे। भीष्म, भगदत्त और महारथ कृपाचार्य्य पाण्डुपुत्र बलवान् अर्जुनको निवारण करने लगे; परन्तु अतिरथ अर्जुनने उस सब महारथियोंके अस्त्रोंको अपने अस्त्रोंसे निवारण किया। फिर तुम्हारी सेनाके मुख्य मुख्य शूरवीरोंका वध करके उन्हें यमपुरीमें भेजने लगे। अभिमन्युने लोकमें विख्यात रथियोंमें श्रेष्ठ राजा अम्बष्ठको रथ रहित कर दिया। राजा अम्बष्ठ यशस्वी महात्मा सुभद्रा-पुत्र अभिमन्युके बाणोंसे पीड़ित और रथ रहित होकर लज्जापूर्व्वक रथसे कूद उनके ऊपर तलवार फेंकके कृतवर्म्माके रथ पर चढ़ गये, युद्धविद्याके जाननेवाले शत्रुनाशन अभिमन्युने उस तलवारको आती देख,रथकी गतिसे भ्रमण करके उसे निष्फल किया, उनके इस कर्म्मको देखकर सेनाके पुरुष धन्यवाद करके उनकी प्रशंसा करने लगे।

हे राजन्! उधर पाण्डवोंकी सेनाके सहित धृष्टद्युम्न आदि योद्धा और तुम्हारी सेनाके वीरोंका घोर युद्ध होने लगा। दोनो सेनाके शूरवीर योद्धा एक दूसरेके केशोंको आकर्षण करते,नख, दांत, मुक्के, तमाचे, बाहु और घुटनोंसे युद्ध करने लगे। और दांत पानेसे शत्रुओंका वध करके यमपुरीमें भेजने लगे। पिता पुत्रके ऊपर और पुत्र पिताके ऊपर प्रहार करने लगा, सेनाके शूरवीर योद्धा रणभूमिमें वीर पुरुषोंको सब भांतिसे व्याकुल करके युद्धके कार्य्यको पूर्ण करने लगे। मरे हुए पुरुषोंके सुवर्ण भूषित मनोहर धनुष और उत्तम भूषण रणभूमिमें गिर कर शोभित होने लगे। और सोने चांदीके दण्डयुक्त बाण सर्पके समान रणभूमिमे गिर कर प्रकाशित होने लगे। हाथी दांतसे बनो हुई तलवारोंकी मूंठ, सुवर्ण भूषित तलवार, ढाल, प्रास, पट्टिश, ऋष्टि, शक्ति, उत्तम कवच, बड़े बड़े मूषल, परिघ, भिन्दिपाल, विचित्र सुवर्ण भूषित नाना भांतिके धनुष, चंवर, और दूसरे नाना प्रकारके शस्त्र रण भूमिमें गिरे हुए दिखाई देने लगे। महारथ वीर योद्धा इन सब शस्त्रोंको लिये हुए ही मरके पृथ्वीमें गिरते थे, वे सब मरके भी जीते हुएके समान प्रकाशित होते थे। हे भारत! अनेक योद्धाओंके शरीर गदाके प्रहारसे नष्ट हुए, अनेक वीरोंके शिर मूषलके चोटसे फूट गये थे, सब मरे हुए योद्धा हाथी, घोड़े और टूटे रथके सहित मर कर रणभूमिमें पड़े थे, रणभूमिका सब स्थान हाथी, घोड़े और मनुष्योंके शरीरोंसे इस भांति पूर्ण होगया,मानों पृथ्वी पर्व्वतोंसे छिप गई हो। गिरे हुए शूल, शक्ति, ऋष्टि, बाण, तोमर, तलवार, पट्टिश, प्रास, लोहेके घड़े, परशु, परिघ, भिन्दिपाल, और शतघ्नी,—ये सब शस्त्र और मरे हुए पुरुषोंके शरीरसे पृथ्वी छिप गई। हे शत्रुनाशन महाराज! रुधिर बहते हुए शरीरसे गिर कर कितने ही योद्धा चेष्टा रहित होगये, और कितने ही धीरे धीरे शब्द करने लगे, इस प्रकारसे पुरुषोंके मरे हुए शरीरोंसे पृथ्वी छिप गई। हे भारत! बलवान् वीरोंके गिरे हुए तलत्राण, और चन्दन चर्चित भुजा, हाथियोंके सूंडके समान जङ्घा, कुण्डल मुकुट शोभित शिरोंसे पृथ्वी पूर्ण होगई। पृथ्वी पर शिखारहित अग्निकी जिस प्रकारसे शोभा होती है, सुवर्णमय कवच रुधिरसे युक्त होकर पृथ्वी पर वैसे ही शोभित होने लगे। इधर उधर गिरे हुए भूषण, सुवर्ण दण्डयुक्त बाण, सब प्रकारसे किङ्किणियुक्त जाल विभूषित रथ, बाणोंसे मरे हुए जीभ निकाले रुधिरसे युक्त शरीरवाले घोड़े, रथके नीचेका काठ, पताका, तूणीर, ध्वजा, वीरोंके श्वेतवर्ण बड़े बड़े शंख और

कटे हुए सूण्डसे युक्त मरे हुए पर्व्वतके समान हाथियोंसे युक्त युद्धकी पृथ्वी नाना भांतिके भूषणोंसे युक्त प्रमदा स्त्रीकी भांति शोभित हुई। प्राससे युक्त अत्यन्त पीड़ित सूण्डसे वार वार शब्द करते हुए और कितने ही चेष्टारहित हाथियोंसे पृथ्वी छिप गई। हाथियोंके नाना वर्ण-वाले कम्बल, वैदूर्य्यमणि, हाथी-दांतोंसे युक्त शोभायमान अंकुश, परिस्तोम, घण्टा, सादे अंकुश, चित्र विचित्र गलेकी माला, सुवर्णके हौदे, बहुतसे कटे टूटे यन्त्र, सुवर्णमय तोमर, धूलिसे युक्त पीतवर्ण भूषित घोड़ोंके चारजामे सवारोंके कवच, कटे हुए हाथ, तीक्ष्ण प्रास, ऋष्टि, सुवर्ण-दण्ड-भूषित बहुतसे वाण, राजा-ओंके महा मूल्यवान् विचित्र चूड़ामणि, छत्र, चंवर, व्यजन, वीरोंके मनोहर कुण्डल युक्त पद्म और चन्द्रमाके समान उत्तम रूपसे भूष-णोंसे भूषित प्रकाशमान शरीर और सुवर्णके कुण्डल आदि भूषणोंके इधर उधर पड़े रह-नेसे पृथ्वी ग्रह तथा तारोंसे युक्त आकाशमण्ड-लके समान शोभित होने लगी। दोनों ओरकी बहुत सेना युद्धमें इसी प्रकारसे मरकर पृथ्वीमें पड़ीहुई दिखाई देने लगी। हे भारत! योद्धा-ओंके थकने और मरके पृथ्वीमें गिरनेके अन-न्तर जब रात्रि उपस्थित हुई, तब फिर कुछ भी नहीं बोध होता था, महा भयङ्कर घोर रात्रि होते देख, कौरव और पाण्डवोंने अपनी अपनी सेनाको युद्धसे निवृत्त किया। सेनाके निवृत्त होनेपर सब योद्धा अपने अपने शिविरोंमें जाकर स्थित हुए।

६३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! तिसके अनन्तर राजा दुर्योधन, सुबलपुत्र शकुनि, तुम्हारा पुत्र दुःशासन और दुर्ज्जय, सूतपुत्र कर्ण,—ये सब एकत्र होकर पाण्डवोंको किस प्रकारसे परा-जित किया जायगा, इसका विचार करने लगे। फिर राजा दुर्य्योधन महा बलवान् कर्ण और शकुनिको सम्बोधन करके उन सब मन्त्रियोंसे बोले। द्रोणाचार्य्य, भीष्म, शल्य, कृपाचार्य्य, और भूरिश्रवा;—ये सब न जाने किस कारणसे पाण्डवोंको युद्धमें निवारित नहीं करते, उसे मैं समझ नहीं सकता हूं। वे सब लोग इन सब पराक्रमी वीरोंसे अवध्य होकर हमारी सेनाका नाश कर रहे हैं, हे कर्ण। युद्धमें हमारी सेनाका नाश भी हो रहा है, और अस्त्र शस्त्रोंके प्रहार भी नष्ट होरहे हैं। हे कर्ण। देवताओंसे भी अवध्य शूरवीर पाण्डवोंसे मैं ठगा गया हूं। उन लोगोंको युद्धमें किस भांतिसे प्रहार करूंगा, उस विषयमें मुझे सन्देह उत्पन्न हुआ है।

कर्ण बोले, हे महाराज। तुम शोक मत करो। शान्तनुनन्दन भीष्म इस युद्धसे शीघ्र ही हट जावें, तो मैं तुम्हारा प्रिय कार्य्य करूंगा। मैं तुम्हारे समीप यह सत्य प्रतिज्ञा करता हूं, कि भीष्मके शस्त्र त्यागकर युद्धसे निवृत्त होने-पर उनके सम्मुखमें ही मैं सम्पूर्ण चन्द्रवंशियोंके सहित पाण्डवोंको पराजित करूंगा। भीष्म सदा पाण्डवोंके ऊपर स्नेह किया करते हैं, इससे वह इस महा युद्धमें पाण्डवोंको रणभू-मिमें पराजित नहीं कर सकेंगे; और वह युद्धमें अभिमानी हैं, सदा सर्व्वदा युद्ध करने-होकी अभिलाषा करते हैं; इससे युद्ध करने-वाले पाण्डवोंको किस निमित्त पराजित करके युद्ध शेष करेंगे? हे भारत। तुम शीघ्र ही भीष्मके शिविरमें जाकर बूढ़े गुरु भीष्मको इस विषयमें सम्मत करके उनका अस्त्र शस्त्र त्याग करनेके निमित्त अनुरोध करो। उनके अस्त्र त्याग करनेपर तुम देखोगे, कि मैंने अकेले ही पाण्डव लोगोंको उनके सुहृद बन्धुबान्धवोंके सहित पराजित किया है।

महाराज! तब कर्णने तुम्हारे पुत्र दुर्य्योध-नसे ऐसा वचन कहा. तब वह अपने भाई दुःशा-

सनसे बोले, हे दुःशासन। जिससे रे अनुयायी वीर योद्धा सब प्रकारसे सज्जित होवें, तुम उसका ही विधान करो। राजा दुर्य्योधन दुःशासनसे ऐसा कह कर फिर कर्णसे बोले, हे शत्रुनाशन! मैं भीष्मको उक्त विषयमें सम्मत करके शीघ्र ही तुम्हारे निकट आता हूं, भीष्मके युद्धसे पृथक् होनेहीसे तुम युद्ध करोगे। हे राजन्! तिसके अनन्तर तुम्हारे पुत्र राजा दुर्य्योधन सब भाइयोंसे युक्त हो देवताओंके बीच इन्द्रके समान शोभित होकर गमन करने लगे। तब भाई दुःशासनने शार्दूलके समान पराक्रमशील राजशार्दूल दुर्य्योधनको शीघ्रताके सहित घोड़ेपर चढ़ाया। राजा दुर्य्योधन शरीरके सब उत्तम वस्त्र, भूषण और मुकुटसे भूषित होकर मार्गमें गमन करते हुए अत्यन्त शोभित होने लगे। पुष्पवासित सुवर्ण-भूषित उत्तम वस्त्र तथा सुगन्धि चन्दन आदिसे युक्त निर्म्मल अम्बर धारण किये हुए सिंहगतिके समान गमन करते हुए राजा दुर्य्योधन उस समय अम्बरधारी होकर किरण-धारी सूर्य्यके समान प्रकाशित हुए। पुरुषसिंह राजा दुर्य्योधनको भीष्मके शिविरकी ओर जाते देखकर सब लोकोंमें विख्यात महा बलवान् धनुर्द्धारी योद्धा और उनके धनुर्द्धर सब भाई लोग इस प्रकारसे उनके अनुगामी हुए, जैसे देवता लोग इन्द्रका अनुगमन करते हैं। कितने ही घोड़े पर, कितने ही हाथी और कितने ही पराक्रमी वीर रथपर चढ़के राजा दुर्य्योधनको चारों ओरसे घेरकर चले। जैसे स्वर्गमें देवता लोग इन्द्रकी रक्षा करनेके निमित्त उनके अनुगामी होते हैं, वैसे ही उनके सुहृद भावको प्रकाशित करते हुए राजा-दुर्य्योधनकी रक्षा करनेके निमित्त उनके अनुगामी हुए कुरुराज दुर्य्योधन कौरवोंसे पूजित होकर यशस्वी गङ्गानन्दन भीष्मके समीप जाने लगे। वह अनुगमन करनेवाले सहोदर भाइयोंके सहित गमन कर रहे थे, चारों ओरसे नाना देशवासी मनुष्य हाथ जोड़के खड़े होकर उनसे विनय करते थे; वह यथायोग्य अस्त्र शिक्षायुक्त अनुकूल रूपसे हाथीके सूण्डके समान अपना दहिना हाथ उठाते, उन लोगोंकी विनययुक्त अञ्जली ग्रहण करते और मधुर वचनोंको सुनते हुए गमन करने लगे। सूत, मागध आदि पुरुष महायशस्वी राजा दुर्य्योधनकी स्तुति करने लगे। महात्मा राजपुरुष सुगन्धित तेलसे युक्त सुवर्णमय दीपक जला कर चारों ओरसे उन्हें घेर कर गमन करने लगे। राजा दुर्य्योधन उन सब सुवर्णके दीपकोंमें घिर कर प्रकाशित ग्रहोंके बीच चन्द्रमाके समान शोभित होने लगे। सुवर्णभूषित वस्त्रोंको धारण करनेवाले योद्धा लोग हाथमें शस्त्र ग्रहण करके सब ओर मार्गसे मनुष्योंको धीरे-धीरे हटाने लगे। इसी प्रकारसे गमन करते हुए राजा दुर्य्योधनने भीष्मके शिविरके समीप पहुंचके घोड़ोंसे उतर कर उन्हें प्रणाम किया। अनन्तर उत्तम वस्त्रोंसे युक्त सुवर्णमय सुन्दर आसनपर बैठ हाथ जोड़ दुःखित चित्तसे आंखोंमें आंसू भरके भीष्मसे बोले, हे शत्रुनाशन! हम लोग युद्धमें तुम्हारा आसरा करके इन्द्रके सहित देवता और असुरोंको भी पराजित करनेका उत्साह करते हैं; तब जो सुहृद तथा बन्धुबान्धवोंके सहित पाण्डवोंको युद्धमें पराजित करूंगा; उसकी बात ही क्या है? इससे हे पितामह गङ्गानन्दन भीष्म! तुम मेरे ऊपर कृपा करो। हे महाराज! जैसे इन्द्रने दानवोंका वध किया था, वैसे ही तुम युद्धमें पाण्डवोंका नाश करो। भरतकुलभूषण! तुमने कहा था, कि मैं सम्पूर्ण सोमकवंशी पाञ्चाल, केकय और करूष देशीय योद्धाओंका संहार करूंगा। तुम्हारा वचन सत्य होवे, तुम एकत्रित हुए सोमकवंशीय वीर योद्धा और पाण्डवोंका वध करके सत्यवादी बनो। हे

भारत! यदि पाण्डवोंके ऊपर तुम्हारी दया हो, और मेरे ऊपर तुम द्वेष युक्त होकर पाण्डवोंकी रक्षा करते होओ, तो युद्धभूमिमें पराक्रमी कर्णको युद्ध करनेके निमित्त आज्ञा दीजिये, वह पाण्डवोंको उनके सुहृद बन्धु बान्धवोंके सहित युद्धमें पराजित करेंगे। तुम्हारे पुत्र राजा दुर्य्योधनने भीष्मसे ऐसा वचन कहकर मौन अवलम्बन किया।

९४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे भारत! लोकोंके स्वभाव जाननेवालेमें अग्रणी महात्मा भीष्म तुम्हारे पुत्रके वचनरूपी शलाकासे अत्यन्त विद्ध और महादुःखित हो कुछ भी अप्रिय वचन न बोले। वह दुर्य्योधनके वचनरूपी शलाकासे पीड़ित, दुःखित और क्रोधसे युक्त होकर सर्पकी भांति लम्बी सांस छोड़ते हुए बहुत देर तक चिन्ता करने लगे; फिर क्रोधरूपी अग्निसे दोनों नेत्र लाल करके मानो देवता, असुर और गन्धर्व्वोंको भस्म करते हुए तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनको इस प्रकार साम वचनसे बोले, हे दुर्य्योधन! मैं अपनी शक्तिके अनुसार तुम्हारे प्रियकार्य्यकी चेष्टा करता हूं और अनुष्ठान भी करता हूं, तुम्हारे प्रियकामनाके निमित्त इस महायुद्ध रूपी अग्निमें अपने प्राणकी आहुति देनेके वास्ते भी उद्यत हुआ हूं; तब तुम क्यों मुझको वचन रूपी शलाकासे विद्ध कर रहे हो? अर्जुन आदि पाण्डुपुत्र जो युद्धमें अजेय हैं, उस विषयमें अधिक क्या कहूंगा! पराक्रमी अर्जुनने जो खाण्डववनमें इन्द्रको पराजित करके अग्नि को तृप्त किया था, वही उसके निमित्त पूरा प्रमाण है। हे राजन्! जब गन्धर्वोंने तुमको हरण किया था, तब उस समय अर्जुनने अपने पराक्रमसे उनके हाथसे तुम्हें छुड़ाया था, वही इसमें यथेष्ट प्रमाण है। हे महाबाहो! तुम्हारे शूरवीर भाई और बलवान् कर्ण जो उस समय भागे थे, वही उनके विषयमें पूर्ण प्रमाण है। विराट नगरमें जब हम सब लोगोंने मिल कर गौओंका हरण किया था, तब अर्जुनने अकेले ही हम लोगोंपर आक्रमण किया था; वही उसके विषयमें पूर्ण प्रमाण है, उस समय अर्जुनने मुझे और द्रोणाचार्य्यको जो युद्धमें पराजित करके वस्त्र हरण किया, यही उसके विषयमें यथेष्ट प्रमाण है। उसी युद्धमें महाधनुर्द्धर अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और पुरुष-मानी कर्णको भी जो अर्जुनने पराजित कर वस्त्र हरण करके उत्तराको समर्पण किया था, वही उसमें पूरा प्रमाण है। देवताओंके राजा इन्द्र भी जिनको युद्धमें नहीं जीत सके, उन निवातकवच नामके दानवोंको जो अर्जुनने युद्धमें पराजित किया, यही उसके विषयमें पूर्ण प्रमाण है। हे राजन्! जिस अर्जुनके रक्षक शंख, चक्र और गदा धारी संसारकी रक्षा करनेवाले महात्मा कृष्ण हैं, नारद आदि महर्षि लोग जिसको महाशक्तिमान्, सृष्टिको संहार करनेवाले, सबका ईश्वर, देवोंके भी देव, परमात्मा और सनातन कहके वर्णन करते हैं, वही कृष्ण अर्जुनकी रक्षा कर रहे हैं, उस महापराक्रमी कृष्णसे रक्षित अर्जुनको कौन युद्धमें पराजित कर सकता है? हे दुर्य्योधन! तुम मोहमें पड़ कर कार्य्याकार्य्यको नहीं समझ सकते हो। सब दुःखोंसे मुक्त हुए पुरुष जैसे सब वृक्षोंको सुवर्णमय देखते हैं; तुम भी उस ही प्रकारसे विपरीत दर्शन कर रहे हो। तुमने ही पहिले पाण्डव और सृञ्जयोंके सङ्ग अत्यन्त शत्रुता उत्पन्न की है, इस समय तुम ही उन सब वीरोंके सङ्ग युद्ध करके पराक्रम प्रकाशित करो: हमलोग तुम्हारे पराक्रमको देखें। मैं शिखण्डीके अतिरिक्त युद्धके निमित्त एकत्रित हुए सम्पूर्ण सोमक, सृञ्जय और पाञ्चाल दलो

ओंका वध करूंगा। या तो मैं उन लोगोंके हाथसे मरके यमराजके स्थान पर गमन करूंगा; अथवा उनको मार कर तुम्हारी प्रीतिके कार्य्यको पूर्ण करूंगा। पहिले शिखण्डी राजा द्रुपदके घरमें स्त्री होकर जन्मी थी, फिर वरके प्रभावसे पुरुष हुई है; यथार्थमें वह शिखण्डिनी स्त्री है। हे भारत! प्राण त्याग होने तक भी मैं उसका वध नहीं करूंगा, क्योंकि विधाताने उसे पहिले स्त्रीरूपसे ही उत्पन्न किया था। हे गान्धारीनन्दन दुर्य्योधन। तुम सुखसे जाकर शयन करो, मैं कल्ह महायुद्ध करूंगा। जबतक पृथ्वी रहेगी, तबतक मेरी यह कीर्त्ति पृथ्वीमें प्रकाशित रहेगी। हे राजन्। जब भीष्मने तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनसे ऐसा वचन कहा, तब उन्होंने गुरु भीष्मको मस्तकसे प्रणाम किया। शत्रुओंके नाश करनेवाले राजा दुर्य्योधनने अपने शिविरमें आकर सङ्गमें चलनेवाले अनुयायियोंको निज निज स्थानमें जानेके निमित्त आज्ञा देकर शिविरमें प्रवेश करके वह रात्रि बिताई। रात्रिके बीतने पर सवेरे उठके सम्पूर्ण राजाओंको आज्ञा दी, कि तुम लोग सेनाको सज्जित करो; आज भीष्म क्रुद्ध होकर सोमकवंशी वीरोंका युद्धमें वध करेंगे। हे राजन्! शान्तनुनन्दन भीष्मने रात्रिके समय दुर्य्योधनके उस विलाप वचनको सुनकर उसे अपने पक्षमें आज्ञा स्वरूप मान कर अपना अवमान बोध करके पराधीनताकी निन्दा की। फिर अर्ज्जुनके संग जो युद्धके निमित्त बहुत दिनसे चिन्ता कर रहे थे, उस ही युद्धके निमित्त विचार करने लगे। दुर्य्योधनने, उनके विचारको प्रारब्धके अनुसार जानके, दुःशासनसे कहा, हे दुःशासन! तुम भीष्मकी रक्षाके निमित्त सब रथियों और सम्पूर्ण सेनाका बाईस श्रेणियोंमें विभाग करो। सेनाके सहित पाण्डवोंका वध करके जो सम्पूर्ण पृथ्वीका निष्कण्टक राज्य ग्रहण करनेकी चिन्ता करते हुए चला आता हूं; उसका समय उप स्थित हुआ है। इससे भीष्मकी रक्षा करना ही हम लोगोंका इस समय यथार्थ कार्य्य है, क्योंकि वह हम लोगोंके सहायक हैं, वह रक्षित होनेसे ही युद्धमें पाण्डवोंकी सेनाका नाश करेंगे। पाप-रहित भीष्मने मुझसे यह वचन कहा है, कि "मैं शिखण्डीके ऊपर शस्त्र प्रहार नहीं करूंगा, वह पहिले स्त्री होकर जन्मा था, इस ही कारणसे युद्धमें मैं उसका वध न करूंगा। हे महाबाहो! मैंने पिताके प्रियकार्य्य करनेकी इच्छासे सम्पूर्ण राज्य और स्त्रीका त्याग किया है। वह किसीसे अविदित नहीं है। मैं तुम्हारे समीप यह सत्य वचन कहता हूं, कि स्त्री जाति अथवा जो पहिले स्त्रीरूपसे जन्म लेकर पीछे किसी कारणसे पुरुष होगया है, उसका मैं कभी युद्धमें वध नहीं करूंगा। युद्ध आरम्भ होनेसे पहिले मैंने तुमसे इस विषयको वर्णन किया था, और तुमने सुना है, कि वह पहिले स्त्रीरूपसे जन्म लेकर शिखण्डिनी नामसे विख्यात हुई थी। जो पहिले कन्या होकर पीछे पुरुष हुआ है, वह यदि मेरे सङ्ग युद्ध करेगा, तो मैं किसी प्रकारसे उसके ऊपर बाण न चलाऊंगा। शिखण्डीको छोड़के और जितने योद्धा पाण्डवोंके पक्षमें हैं, उन्हें मैं अपने सम्मुख पानेसे अवश्य पराजित करूंगा। हे भारत! शस्त्रोंके जाननेवाले गङ्गानन्दन भीष्मने मुझसे ऐसा ही वचन कहा है, इससे सब भांतिसे यत्नपूर्व्वक उनकी रक्षा करना हो मैं उत्तम समझता हूं। महा वनमें सिंह भी यदि अरक्षित होवे, तो भेड़िये भी उसका संहार कर सकते हैं, इससे सिंहरूपी भीष्मका भेड़ियारूपी शिखण्डीसे युद्धमें वध कराना उचित नहीं है। द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, शल्य, विविंशति और शकुनि, ये सब महारथ योद्धा यत्नपूर्व्वक भीष्मकी रक्षा करें, उनकी रक्षा करनेसे निश्चः

हम लोगोंकी विजय होगी। शकुनि आदि महारथ योद्धा दुर्य्योधनकी आज्ञा सुनके रथोंपर चढ़ यशस्वी भीष्मको घेरकर उनकी रक्षा करनेमें प्रवृत्त हुए। तुम्हारे पुत्रोंने भी पृथ्वी और आकाशको कम्पित कर भीष्मको घेरकर गमन करना आरम्भ किया। व्यूहबद्ध महारथ योद्धा, रथी, गजपति, घुड़सवारोंके सहित भीष्मको घेरकर उनकी रक्षा करनेके निमित्त रणभूमिमें स्थित हुए। जैसे देवता और असुरोंके युद्धमें देवता लोग इन्द्रकी रक्षा करते हैं, वैसे ही वह सब महारथ योद्धा भीष्मकी रक्षा करने लगे। राजा दुर्य्योधन फिर दुःशासनसे बोले, हे दुःशासन! युधामन्यु और उत्तमौजा अर्जुनके रथके बायें और दहिने चक्रकी रक्षा करते हैं, अर्जुन दोनों वीरोंसे रक्षित होकर शिखण्डीकी रक्षा करेंगे। हम लोग यदि यशस्वी भीष्मकी रक्षा न करेंगे, तो शिखण्डी अर्जुनसे रक्षित होकर पितामह भीष्मका वध करेगा। इससे जिस प्रकार वह भीष्मका वध न कर सके, तुम उसीका विधान करो। तुम्हारे पुत्र दुःशासनने दुर्य्योधनका वचन सुन सेनाके सहित भीष्मको आगे करके रणभूमिमें गमन किया। रथियोंमें श्रेष्ठ अर्जुन भीष्मको रथोंके समूहसे युक्त देखकर धृष्टद्युम्नसे बोले, हे सेनापति पाञ्चालराज! पुरुषसिंह शिखण्डीको भीष्मके आगे स्थित करो, आज मैं उसका रक्षक बनूंगा।

९५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे भारत! अनन्तर शान्तनुपुत्र भीष्म सेनाके सहित रणभूमिमें स्थित हुए और यत्न-पूर्ब्बक सर्व्वभद्र नामके बहुत बड़े व्यूहकी रचना की। कृपाचार्य्य, कृतवर्म्मा, महारथ शैव्य, शकुनि, सिन्धुराज जयद्रथ और काम्बोजराज सुदक्षिण—ये सब महारथ योद्धा भीष्म और तुम्हारे पुत्रोंके सहित सम्पूर्ण सेनाके आगे उस व्यूहके मुखपर स्थित हुए। द्रोणाचार्य्य, भूरिश्रवा, शल्य, और भगदत्त, ये लोग कवच धारण कर उस व्यूहके दहिने पक्षपर स्थित हुए। अश्वत्थामा, सोमदत्त और महाराज अवन्तिराज दोनों भाई बहुतसी सेना लेकर उस व्यूहके वामपक्षपर स्थित हुए। राजा दुर्य्योधन त्रिगर्त्तदेशीय सम्पूर्ण योद्धाओंसे युक्त होकर उसके मध्यस्थलपर स्थित हुए। रथियोंमें श्रेष्ठ अलम्बुष और महारथ श्रुतायु कवचधारण करके सब सेनाके सहित उस व्यूहके पीठपर विराजमान हुए। हे भारत! तुम्हारी ओरके सर्व योद्धा व्यूहबद्ध हो जलती हुई अग्निके समान प्रकाशित होने लगे। तिसके अनन्तर पाण्डुपुत्र, राजा युधिष्ठिर, भीमसेन, माद्रीपुत्र नकुल, सहदेव सम्पूर्ण सेनाका महा दुर्ज्जय व्यूह बनाकर सब सेनाके आगे स्थित हुए, उनके पीछे धृष्टद्युम्न, विराट, शत्रुनाशन महारथ सात्यकि बड़ी सेनाके सहित स्थित हुए, उनके बाद शिखण्डी अर्जुन, राक्षस घटोत्कच, महाबाहु चेकितान और पराक्रमी कुन्तिभोज ये सब वीर योद्धा बहुतसी सेनाके सहित युद्धके निमित्त स्थित हुए। उसके अनन्तर महाधनुर्द्धर अभिमन्यु, द्रुपद और केकयराज पांचों भाई वर्म्म धारण करके युद्धके निमित्त चले। पराक्रमसे युक्त पाण्डव लोग वर्म्मधारी होकर तुम्हारी सेनाके प्रतिकूलमें अत्यन्त दुर्ज्जय महा व्यूह बनाकर युद्धके निमित्त रणभूमिमें आकर उपस्थित हुए। पाण्डव लोग युद्धमें विजयकी इच्छा करते हुए भीमसेनको आगे करके भीष्मकी ओर बढ़े। पाण्डव लोग सिंहनाद करके शङ्ख, भेरी, ढोल, मृदङ्ग आदि बाजोंको बजाते हुए युद्धमें प्रवृत्त हुए। हम लोग भी क्रुद्ध होकर सेनाके सहित शङ्ख, भे[illegible] मृदङ्ग और नगाड़ोंको बजाते

करते हुए उन लोगोंके सम्मुख उपस्थित हुए, उनसे महा घोर तुमुल शब्द होने लगा। इसके अनन्तर सब योद्धा एक दूसरेके सम्मुख होकर शस्त्रोंका प्रहार करने लगे; उस महाघोर शब्दसे पृथ्वी कांपने लगी। सूर्य्य अत्यन्त प्रकाश युक्त होकर उदय हुए थे, परन्तु उस समय उनका तेज छिप गया। वायु प्रबल वेगसे बहने लगा; सियार महाघोर भयानक शब्द करने लगे, सब दिशाएं जलने लगीं,धूलि उड़ने लगी और रुधिरसे युक्त मांस-हड्डीकी वर्षा होने लगी। सवारीके सब वाहन रोदन करने लगे, उनके नेत्रोंसे आसूकी धार बहने लगी; वे सब भयभीत होकर मल मूत्र परित्याग करने लगे। मनुष्योंके भक्षण करनेवाले राक्षसोंके महा घोर शब्दसे इन सबका शब्द छिप गया। सियार, गिद्ध और कौवे आदि मांस खानेवाले पक्षी भयानक बोली बोलने लगे, और जलते हुए लुक्क सूर्य्यकी ओरसे गिरने लगे। जैसे प्रबल वायुसे वन कम्पित होता है, वैसे ही कौरव और पाण्डवोंकी महासेना शङ्ख, मृदङ्ग, ढोल, नगाड़े तथा वीरोंके सिंहनाद आदि शब्दोंसे कम्पित होने लगी। अमङ्गल सूचक ऐसे समयमें प्रवृत्त हुए सम्पूर्ण राजाओं तथा हाथी, घोड़ोंसे युक्त महा सेनाका भयानक शब्द वायुके प्रबल वेगसे उठे हुए समुद्रके जलके समान सुनाई देने लगा।

९६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! उदार स्वभाववाले तेजस्वी अभिमन्यु पीतवर्ण घोड़ोंके रथपर चढ़के दुर्य्योधनकी सेनापर इस प्रकारसे अपने बाणोंको वर्षाने लगे, जैसे बादल आकाशसे पानीकी वर्षा करता है। तुम्हारी ओरके वीर योद्धा समुद्रके समान महासेनाके सहित अस्त्र धारी शत्रुनाशन अभिमन्युको युद्धमें निवारण करनेमें समर्थ न हुए। वह शत्रुओंके नाश करनेवाले यमदण्डके समान जब अपने बाणोंको छोड़ने लगे, तथा जब वह बाणोंसे रथके सहित रथी, हाथियोंके सहित गजपति और घोड़ोंके सहित घुड़सवारोंको शीघ्रताके सहित विद्ध करके उनको यमपुरीमें भेजने लगे। तब राजा लोग युद्धमें अभिमन्युके इस बड़े कर्म्मको देखकर उसकी प्रशंसा करने लगे। जैसे वायु रूईके ढेरको चारों ओर उड़ा देता है, वैसे ही वह दुर्य्योधनकी सेनाको तितर बितर करने लगे। हे राजन्! तुम्हारी सेना छिन्नभिन्न होकर पङ्कमें पड़े हुए हाथीके समान किसीको भी अपना सहाय न देखा। उस समय अभिमन्यु तुम्हारी सब सेनाको पराजित करके धूएंसे रहित अग्निके समान प्रकाशित होने लगे। जैसे पतङ्ग काल प्रेरित होकर जलती हुई अग्निको नहीं सह सकते, वैसे ही तुम्हारी सब सेना अभिमन्युके बाणोंको न सह सकी। महाधनुर्द्धारी महारथ अभिमन्यु पाण्डवोंके सम्पूर्ण शत्रुओंको पराजित करके बज्रधारी इन्द्रके समान दिखाई देने लगे। उनका सुवर्ण भूषित धनुष चारों ओर इस भांतिसे भ्रमण करता हुआ देख पडा, जैसे बादलोंके बीच प्रकाशवान बिजली दिखाई देती है। उसके धनुषसे छूटे हुए सब बाण पुष्परूपी सेनाके वनमें भ्रमररूपी होकर चारों ओर भ्रमण करने लगे। किसी मनुष्यने सुवर्णभूषित रथमें घूमते हुए अभिमन्युका कुछ भी छिद्र नहीं निरीक्षण किया। महाधनुर्द्धर अभिमन्यु द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, बृहद्बल, अश्वत्थामा और सिन्धुराज जयद्रथको मोहित करते हुए रणभूमिमें भ्रमण करने लगे। तुम्हारी सेनाको भस्म करनेके समय उसका धनुष सूर्य्यमण्डलके समान प्रकाशित होने लगा। शूरवीर क्षत्रिय योद्धा उसको ऐसा पराक्रमशील तथा इतनी शीघ्रताके युद्ध करते देखकर "इस लोकमें दो अर्जुन उपस्थित हैं," ऐसा समझने लगे। महाराज! तुम्हारी महा-

ेना अभिमन्युके बाणोंसे पीड़ित होकर इधर धर घूमने लगी। जैसे इन्द्रने मय दानवको युद्धमें राजित करके देवताओंको आनन्दित किया ा, वैसे ही अभिमन्युने दुर्य्योधनकी महासे-ाको तितर बितर करके सुहृद लोगोंको आन-्दित करने लगे। तुम्हारी सेना अभिमन्युके स्त्रोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर बादलके समान हाघोर स्वरसे आर्त्तनाद करने लगी। हे भारत! ब राजा दुर्य्योधन पूर्णमासीके दिन पवनके प्रबल ासे भयङ्कर शब्द करनेवाले महासमुद्रके समान पनी सेनाका आर्त्तनाद सुनकर ऋष्यशृङ्गके त्र राचस अलम्बुषसे बोले, हे राचसेन्द्र! दूसरे र्ज्जुनके समान क्रुद्ध होकर यह अभिमन्यु री सेनाको इस प्रकारसे पीड़ित कर रहा है, से वृत्रासुरने देवताओंकी सेनाको पीड़ित िया था, तुम युद्ध विषयक सब विद्याओंको ानते हो, तुम्हारे अतिरिक्त मैं अपनी सेनाकी ्ा करनेवाले किसी पुरुषको भी नहीं देख- ्हूं, इससे तुम शीघ्र गमन करके अभिमं-्का वध करो। हम सब भीष्म और द्रोणा-र्य्यको आगे करके अर्ज्जुनका नाश करेंगे। ापी राचसेन्द्र अलम्बुष दुर्य्योधनकी बात नकर वर्षा कालके बादलके समान सिंहनाद ्के शीघ्रताके सहित अभिमन्युकी ओर चला। नके उस महाभयङ्कर शब्दको सुनकर पांड-की सेना वायुके झकोरसे समुद्रके जलके समान ा ओर छिन्न भिन्न होने लगी। महाराज! ्तसे मनुष्य उसके उस महाघोर शब्दको ाकर भयसे पीड़ित होके प्राण त्याग कर ीपर गिर पड़े। अर्ज्जुन-पुत्र अभिमन्यु हर्षित कर धनुष बाण ग्रहण करके मानो रथ पर ्य करते हुए उस राचसके सम्मुख उपस्थित ा। तिसके अनन्तर क्रोधी राचस अलम्बुष भिमन्युको आते देख उनसे …दूर पर स्थित ्र फिर उनकी सेनाकी ओर दौड़ा। वह पाण्डवोंकी सेना राचस अलम्बुषके बाणोंसे पीड़ित होकर भी जैसे देवताओंकी सेनाने बला-सुरपर आक्रमण किया था, उसी भांति उस राच सकी ओर दौड़ी। उस महाघोर भयानक राचसने जब पाण्डवोंकी सेनाके ऊपर अत्यन्त उपद्रव करना आरम्भ किया, तब उस सेनामें अत्यन्त कोलाहल होने लगा; उस राचसने अपना पराक्रम प्रका-शित करके सहस्र सहस्र बाणोंसे उस सम्पूर्ण सेनाके शूरवीरोंको तितर बितर कर दिया; तब पाण्डवोंकी सेना भयभीत होकर भागने लगी।

हे राजन्! जैसे हाथी कमलके वनको मर्द्दन करता है, वैसे ही अलम्बुषने पाण्डवोंकी सेना मर्द्दन करके फिर द्रौपदीके पुत्रोंपर आक्र-मण किया। जैसे पांच ग्रह एक सूर्य्यको घेर लेते हैं, वैसे ही महारथ द्रौपदीके पांचो पुत्रोंने अकेले अलम्बुषको चारों ओरसे घेरकर उसपर आक्रमण किया। जैसे प्रलयकालके समय पांच ग्रह एक चन्द्रमाको पीड़ित करते हैं, वैसे ही वे पांचो भाई उस राचसको पीड़ित करने लगे। महारथ प्रतिविंध्यने सब प्रकारसे परशुके समान अस्त्रोंसे राचस अलम्बुषको विद्ध किया; वह राचस बाणोंसे विद्ध होकर सूर्य्यकिरणोंसे युक्त महामेघके समान प्रकाशित हुआ, और सुवर्णदण्डसे युक्त उन बाणोंसे वह शृङ्गयुक्त पर्व्व-तके समान शोभित होने लगा। फिर उन पांचो भाइयोंने सुवर्ण भूषित तीक्ष्ण बाणोंसे उस राचसको पुनर्वार विद्ध किया। वह राचस उन बाणोंके लगनेसे क्रुद्ध हुए सर्पराजके समान अत्यन्त क्रुद्ध हुआ। अनन्तर पांचों द्रौप-दीके पुत्रोंके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर चण भर मोहित रहा, फिर सावधान होके क्रोधसे दूना होगया, और अपने बाणोंसे उन लोगोंकी ध्वजा और धनुषको काट दिया। फिर हंसकर मानो रथपर नृत्य करते हुए उन प्रत्येक वीरोंको पांच पांच बाणोंसे विद्ध किया। अनन्तर अत्यन्त क्रुद्ध होकर उन …

घोड़ों और सारथियोंका वध करके नाना भांतिके सैकड़ों तथा सहस्रों बाणोंसे उन पांचों महारथोंको विद्ध किया। राक्षस अलम्बुष उन महाधनुर्द्धरोंको रथ-रहित करके उनका वध करनेको वेगसे दौड़ा। तब अर्ज्जुनपुत्र अभिमन्यु उन महा रथियोंको राक्षस अलम्बुषके बाणोंसे पीड़ित देखकर उसकी ओर शीघ्रतासे दौड़े। तुम्हारी ओरके और पाण्डवोंके पक्षके सब पुरुष उन दोनों महा बलवान् पुरुषसिंहोंके युद्धको इन्द्र और वृत्रासुरके युद्धके समान देखने लगे। महा बलवान् अभिमन्यु और अलम्बुष आपसमें युद्ध करते हुए क्रोधसे लाल नेत्र किये हुए एक दूसरेको प्रलयकालकी अग्निके समान देखने लगे। जैसे पहिले समयमें देवता और असुरोंके युद्धमें इन्द्र और शम्बरासुरका भयङ्कर युद्ध हुआ था, उसी भाँति उन दोनों महा बलवान् वीरोंका भयङ्कर संग्राम होने लगा।

९३ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! अलम्बुषने महारथ वीरोंके नाश करनेवाले अभिमन्युके सङ्ग किस प्रकारसे युद्ध किया; और शत्रु-नाशन वीर अभिमन्युने ही अलम्बुषसे किस भांतिसे युद्ध किया?—इस विषयको तुम विस्तार पूर्व्वक मेरे समीप वर्णन करो; और मेरी सेनाके सङ्ग अर्ज्जुन, बलवान् भीमसेन, नकुल, सहदेव, राक्षस घटोत्कच और सात्यकिने किस प्रकारसे युद्ध किया था? हे सञ्जय! तुम सब समाचारोंको जानते हो, इससे मेरे समीप सब यथार्थ युद्ध वृत्तान्तको वर्णन करो।

सञ्जय बोले, हे राक्षसेन्द्र अलम्बुषके सङ्ग अभिमन्युका जैसा युद्ध हुआ था, भीमसेन, अर्ज्जुन, नकुल, सहदेव और तुम्हारी सेनाके पराक्रमी वीर भीष्म और द्रोणाचार्य्य आदिने जिस भांतिसे निर्भय होकर अपने अपने पराक्रमको प्रकाशित करके अद्भुत कर्म्म किया था; वह सब वृत्तान्त मैं तुम्हारे समीप वर्णन करता हूं, तुम सुनो। राक्षस अलम्बुषने बार बार तर्ज्जन गर्ज्जन करके अभिमन्युको "खड़ा रह! खड़ा रह।" कहके आक्रमण किया, तिसके अनन्तर देवता और दानवके समान अभिमन्यु और राक्षस अलम्बुष अपने अपने रथोंको बढ़ाकर महा घोर युद्ध करने लगे। राक्षसेन्द्र अलम्बुष मायावी और अभिमन्यु दिव्य अस्त्रोंका जाननेवाला था। पहिले अभिमन्युने तीन बाणोंसे अलम्बुषको विद्ध किया; उसके अनन्तर फिर पांच बाणोंसे उसको विद्ध किया। अलम्बुष भी अत्यन्त क्रुद्ध होकर शीघ्रताके सहित जैसे अंकुशसे हाथीको विद्ध करते हैं, वैसे ही अभिमन्युके हृदयमें नौ बाणोंसे प्रहार किया। तिसके अनन्तर एक सहस्र बाणोंको चलाकर अभिमन्युको पीड़ित किया। तब अभिमन्युने उत्तम पानी चढ़े हुए नौ बाणोंसे राक्षस अलम्बुषका विशाल वक्षस्थल विद्ध किया। वह सब बाण शीघ्रतासे उसके शरीरको भेद कर मर्म्मस्थानमें प्रविष्ट हुए, उससे वह फूले हुए पलासके वृक्षके समान रुधिरसे शोभित होकर पर्व्वतके समान प्रकाशित होने लगा। हे राजन्! तब अलम्बुषने क्रुद्ध होके इन्द्रके समान अभिमन्युको अपने बाणोंसे छिपा दिया। राक्षसके धनुषसे छूटे हुए वे सब बाण अभिमन्युके शरीरको भेदते हुए पृथ्वी पर गिरे। और अभिमन्युके धनुषसे छूटे हुए सुवर्ण दण्डयुक्त बाण अलम्बुषके शरीरको भेद कर पृथ्वीमें घुस गये; अनन्तर जैसे इन्द्रने मयदानवको रणभूमिसे विमुख किया था वैसे ही अभिमन्युने अपने तेज बाणोंसे राक्षसको युद्धसे विमुख किया। शत्रुनाशन राक्षस अलम्बुषने युद्धमें शत्रुके बाणोंसे पीड़ित होकर तामसी माया उत्पन्न की। तब सब रणभूमिमें अन्धकार होगया; उस समय अभिमन्यु, तुम्हारी सेना, तथा पाण्डवोंकी ओरके कोई पुरुष भी

नहीं दिखाई पड़ते थे। कुरुनन्दन अभिमन्युने उस महाघोर अन्धकारको देखकर भास्कर अस्त्र चला कर उस दुष्ट राक्षसकी मायाका नाश किया, तब सब स्थानोंमें फिर प्रकाश होगया। रथियोंमें मुख्य अभिमन्युने क्रुद्ध होकर तीक्ष्ण बाणोंसे राक्षसेन्द्र अलम्बुषको छिपा दिया; अलम्बुषने उसी प्रकारसे दूसरी अनेक भांतिकी माया उत्पन्न की, परन्तु सब दिव्य अस्त्रोंके जाननेवाले अभिमन्युने अपने दिव्य अस्त्रोंसे उसकी सब मायाओंका निवारण किया। जब उस राक्षसकी सब माया निष्फल हुई; तब वह अभिमन्युके बाणोंसे पीड़ित होकर उसी स्थान पर अपने रथको छोड़कर रणभूमिसे भाग गया। अभिमन्यु उस मायावी राक्षसको पराजित करके जैसे मतवारा हाथी कमलसे युक्त सरोवरमें पैठके कमलोंको तोड़ डालता है, वैसे ही तुम्हारी सेनाको अपने बाणोंसे मथने लगे।

महाराज! तिसके अनन्तर शान्तनुनन्दन भीष्मने तुम्हारी सेनाको अभिमन्युके बाणोंसे तितर बितर होते देखकर अनेक रथियोंके सहित उसे घेर लिया। तुम्हारी सेनाके बहुतसे महारथ एकत्रित होकर अपने बाणोंसे अभिमन्युको विद्ध करने लगे। रथियोंमें अग्रणी, सब शस्त्रोंके जाननेवाले, पराक्रममें अपने पिता अर्ज्जुनके समान और मामा कृष्णके तुल्य बलवान् अभिमन्यु उन सब योद्धाओंसे युद्ध करने लगे। तब अर्ज्जुन अपने पुत्र अभिमन्युकी रक्षा करनेके वास्ते क्रुद्ध होकर सेनाके घोर पुरुषोंका वध करते हुए भीष्मके समीप उपस्थित हुए। तुम्हारे पिता भीष्म भी सूर्य्यके निकट राहुग्रहकी भांति अर्ज्जुनके सम्मुख उपस्थित हुए। तब तुम्हारे पुत्र रथ, घोड़े, सारथी, और पैदल सेनाके सहित महात्मा भीष्मकी रक्षा करने लगे। पाण्डव लोग भी उस महायुद्धमें अर्ज्जुनको घेर कर उनकी रक्षा करने लगे। अनन्तर कृपाचार्य्यने अर्ज्जुनको पच्चीस बाणोंसे विद्ध किया। शार्द्दूल जैसे मतवारे हाथीपर आक्रमण करता है, वैसे ही पाण्डवोंके हितैषी सात्यकिने कृपाचार्य्यपर आक्रमण करके अपने तीक्ष्ण बाणोंसे उन्हें विद्ध करना आरम्भ किया। कृपाचार्य्यने भी क्रुद्ध होकर सात्यकिके हृदयमें कङ्कपत्र युक्त नौ बाणोंसे प्रहार किया। तब शिनि-पौत्र सात्यकिने धनुष खींचकर कृपाचार्य्यका नाश करनेके निमित्त एक महाभयङ्कर बाण चलाया। द्रोणाचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामाने इन्द्रके वज्रसमान उस बाणको आता देखकर क्रुद्ध होके अपने बाणसे दो टुकड़े करके गिरा दिया। तब रथियोंमें मुख्य सात्यकि कृपाचार्य्यको छोड़कर जैसे राहु ग्रह चन्द्रमाकी ओर वेगसे जाता है, वैसे ही वेगपूर्व्वक अश्वत्थामाकी ओर दौड़े। अश्वत्थामाने सात्यकिके धनुषको दो खण्ड करके अपने बाणोंसे उसे पीड़ित किया। सात्यकिने एक दृढ़ धनुष ग्रहण करके साठ बाणोंसे अश्वत्थामाकी भुजा और वक्षस्थलमें प्रहार किया। अश्वत्थामा उससे पीड़ित और मूर्च्छित होकर रथको ध्वजाका दण्ड पकड़ क्षण भर रथके ऊपर बैठे रहे। अनन्तर प्रतापी अश्वत्थामाने सावधान होकर क्रुद्ध चित्तसे सात्यकिको एक बाणसे विद्ध किया। वह बाण सात्यकिके शरीरको भेद कर वसन्त कालके बलवान् सर्पके बिलमें घुसनेके समान पृथ्वीमें घुस गया। अश्वत्थामाने एक बाणसे सात्यकिके रथकी ध्वजाको काटकर सिंहनाद किया और वर्षा ऋतुमें जैसे बादल सूर्य्यको छिपा देता है वैसे ही अपने बाणोंकी वर्षासे सात्यकिको छिपा दिया। महाराज! सात्यकिने अश्वत्थामाके बाणोंको निवारण करके अपने अनेक बाणोंसे अश्वत्थामाको शीघ्र ही छिपाया, और सूर्य्य जैसे बादलोंसे मुक्त होकर सब प्राणियोंको तपाता है, वैसे ही सात्यकि भ

बाणोंसे मुक्त होकर उन्हें अपने बाणोंसे तपाने लगे। महा बलवान् सात्यकिने फिर सहस्रों बाणोंसे अश्वत्थामाको छिपा दिया। प्रतापी द्रोणाचार्य अपने पुत्र अश्वत्थामाको राहुग्रस्त चन्द्रमाके समान सात्यकिके बाणोंसे पीड़ित देख क्रुद्ध होकर उसकी ओर दौड़े, और सात्यकिके बाणोंसे पीड़ित अश्वत्थामाको रक्षा करनेके वास्ते तीक्ष्ण बाणोंसे उसको विद्ध किया। तब सात्यकिने युद्धमें अश्वत्थामाको त्याग कर लोहमय बीस बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको विद्ध किया। तिसके अनन्तर अत्यन्त तेजस्वी अर्ज्जुन सात्यकिकी रक्षा करनेके निमित्त द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। हे भारत। तब अर्ज्जुन और द्रोणाचार्य्य संग्राम-भूमिमें आकाशमें स्थित बृहस्पति और शुक्र ग्रहकी भांति युद्धमें प्रवृत्त हुए।

९८ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय। महा-धनुर्द्धारी द्रोणाचार्य्य और अर्ज्जुन दोनों महा बलवान् योद्धाओंने युद्धमें प्रवृत्त होकर किस प्रकारसे युद्ध किया? पाण्डुपुत्र अर्ज्जुन द्रोणा-चार्य्यके अत्यन्त प्यारे और द्रोणाचार्य्य भी अर्ज्जुनके सदासे प्रिय हैं, ये दोनो ही अतिरथ और सिंहके समान बलवान् है, उन दोनोंने किस प्रकारसे यत्नवान् होकर आपसमें युद्ध किया।

सञ्जय बोले, हे भारत! द्रोणाचार्य्य अर्ज्जु-नको युद्धके स्थानपर अपना प्यारा शिष्य नहीं समझते, और अर्ज्जुन भी क्षत्रिय धर्म्मकी प्रतीक्षामें गुरु द्रोणाचार्य्यको संग्रामभूमिमें प्रिय ज्ञान नहीं करते। सम्पूर्ण क्षत्रिय योद्धा ही किसीको युद्धमें त्याग नहीं करते। भाई, पिता, पुत्र और पितामह आदिके सङ्ग भी मर्य्यादा-रहित होकर युद्ध किया करते हैं। हे भारत। द्रोणाचार्य्य अर्ज्जुनके तीन बाणोंसे विद्ध होकर उसे अर्ज्जुनके धनुषका बाण जानके कुछ चिन्ता नहीं की; जब अर्ज्जुनने फिर द्रोणाचार्य्यको अपने बाणोंकी वर्षासे छिपाया, तब द्रोणाचार्य्य वनको जलानेवाली अग्निके समान क्रोधसे प्रज्वलित होगये। अनन्तर शीघ्रताके सहित द्रोणा-चार्य्यने अर्ज्जुनको अपने बाणोंसे छिपा दिया। तब राजा दुर्य्योधनने द्रोणाचार्य्यकी पृष्ठ रक्षा करनेके निमित्त सुशर्म्माको आज्ञा दी। पुत्रोंके सहित त्रिगर्त्तराज सुशर्म्माने धनुष धारण करके लोहमय बाणोंसे अर्ज्जुनको छिपा दिया। उन दोनोंके धनुषसे छूटे हुए बाण आकाशमें इस प्रकारसे शोभित होने लगे, जैसे शरद ऋतुमें हंसोंके समूह आकाशमें गमन करते हुए शोभायमान लगते हैं, और जैसे पक्षी चारों ओरसे आकर सुस्वादु फलोंसे युक्त वृक्षके ऊपर वेगसे गिरते हैं, वैसे ही सब बाण चारों ओरसे अर्ज्जुनके ऊपर गिरने लगे, परन्तु रथियोंमें श्रेष्ठ अर्ज्जुनने सिंहनाद करके पुत्रके सहित त्रिगर्त्तराज सुशर्म्माको अपने बाणोंसे विद्ध किया। वह भी प्रलय कालके यमराजके समान अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित होकर भी प्राणत्याग करनेका निश्चय कर सम्मुखहीमें खड़े हो उनके ऊपर बाणकी वर्षा करने लगे। जैसे पर्व्वत जलकी वर्षाको ग्रहण करता है; वैसे ही अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे उनके सब बाणोंको निवारण किया, उनके इस आश्चर्य्यरूपी हस्त लघुता को उस समय मैंने देखा, कि उन्होंने अकेले ही अनेक योद्धाओं की कठिन बाणवृष्टिका इस भांति निवारण किया, जैसे वायु अपने प्रबलवेगसे बादलोंका निवारण कर देता है। ऐसा कठिन कार्य्य देखके देवता और दानव प्रसन्न हुए।

हे महाराज। तिसके अनन्तर अर्ज्जुनने त्रिगर्त्त सेना पर क्रुद्ध होकर वायव्यास्त्र चलाया। उससे वायु प्रबल वेगसे चलकर वृक्षोंको तोड़ता और सेनाके पुरुषोंको मोहित करता प्रगट हुआ। हे राजन्। द्रोणाचार्य्यने उस

प्रचण्ड वायव्य अस्त्रको देखकर महाभयङ्कर शैलास्त्र चलाया, शैलास्त्रके चलानेसे वायु शान्त और सब दिशाएं निर्म्मल होगईं। फिर अर्जुनने अपने अस्त्रोंसे त्रिगर्त्तराजके, सब रथियोंको उत्साह-रहित, पराक्रम-हीन और युद्धसे विमुख कर दिया।

अनन्तर राजा दुर्य्योधनने अश्वत्थामा, शल्य, काम्बोजराज सुदक्षिण, कृपाचार्य्य, विन्द, अनुविन्द और महाराज वाह्लिकके सहित बड़ी सेनासे युक्त होकर भीमसेनको घेर लिया। भूरिश्रवा, शल्य और शकुनिने माद्रीपुत्र नकुल सहदेवपर अपने तीक्ष्ण बाणोंसे आक्रमण किया। भीष्मने सेनाके सहित धृतराष्ट्र पुत्रोंसे युक्त होकर राजा युधिष्ठिरके निकट जाके उन्हें चारों ओरसे घेर लिया। महाराज! अत्यन्त-पराक्रमी भीमसेन हाथियोंकी सेनाको आती देखकर रथसे कूदके गदा ग्रहण करके उसकी ओर इस प्रकारसे दौड़े, जैसे वनमें हाथियोंके झुण्ड पर सिंह वेगसे दौड़ता है। हाथियों पर चढ़नेवाले वीर योद्धाओंने भीमसेनको गदा लिये हुए देखकर शीघ्रताके सहित उन्हें चारों ओरसे घेर लिया। जैसे बादलोंके महामण्डलमें सूर्य्य विराजमान होता है, वैसे ही पाण्डुपुत्र भीमसेन हाथियोंकी सेनाके बीच शोभित हुए; वह पवनके समान होकर उस हाथियोंकी सेनारूपी मेघमण्डलको तितर बितर करने लगे। हाथियोंकी सेना बलवान् भीमसेनकी गदाके प्रहारसे पीड़ित होकर बादलके समान गर्ज्जती हुई आर्त्तनाद करने लगी। भीमसेन भी हाथियोंकी सेनामें पटके हुए तथा शरीरमें उनके दांतोंसे घायल होकर फूले हुए पलाश वृक्षके समान शोभित हुए। घोर दण्डधारी यमराजके समान घूमकर कितने ही हाथियोंके दांत उखाड़के उन्हें दन्तहीन कर दिया; उन हाथियोंके दांतोंसे ही उनका पेट फाड़ फाड़ अनेक हाथियोंको पृथ्वीमें गिरा दिया; अनन्तर वह हाथियोंके मांस, मज्जा (चर्ब्बी) और रुधिरसे पूरित होकर गदा ग्रहण किये साक्षात् रुद्रकी भांति दिखाई देने लगे। हे राजन्! हाथियोंकी सेना इसी प्रकारसे मारी जाने लगी और मरनेसे बचे हुए बड़े हाथी भीमकी गदासे पीड़ित तथा घायल होके अपनी सेनाके वीरोंका ही नाश करते हुए इधर उधर दौड़ने लगे। दुर्य्योधनकी सब सेना उन बड़े बड़े हाथियोंको दौड़ते तथा चारों ओर भागते और अपनी सेनाके वीरोंको मर्द्दन करते देख कर रणभूमिसे फिर विमुख हुई।

९६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! इस दिन मध्याह्नके समय सोमकवंशियोंके सङ्ग महात्मा भीष्मका महाभयङ्कर मनुष्योंका क्षय करनेवाला घोर संग्राम हुआ, रथियोंमें श्रेष्ठ गङ्गानन्दन भीष्म पाण्डवोंकी सेनाके सौ सौ तथा सहस्र सहस्र वीरोंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे जलाने लगे। जैसे बैल कटे हुए अन्नको खलिहानमें मर्द्दन करते हैं, वैसे ही पितामह भीष्म पाण्डवोंकी सेनाको अपने शस्त्रोंसे मर्द्दन करने लगे। धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, विराट और राजा द्रुपद भीष्मके निकट जाकर उनको अपने बाणोंसे पीड़ित करने लगे। शत्रुनाशन भीष्म भी तीन तीन बाणोंसे धृष्टद्युम्न और विराटको बिद्ध करके राजा द्रुपदके ऊपर एक बाण चलाया। हे प्रजानाथ! धृष्टद्युम्नआदि वे सब महाधनुर्द्धारी वीर भीष्मके अस्त्रोंसे बिद्ध होकर पांवसे पूंछ दबे हुए सर्पके समान क्रुद्ध होगये। शिखण्डी पितामह भीष्मको अपने बाणोंसे छिन्न करने लगे, परन्तु महाव्रत वीर भीष्मने [illegible] स्त्री जानके उसके ऊपर शस्त्र नहीं

द्युम्नने क्रोधसे अग्निके समान जलके तीन बाणोंसे भीष्मकी दोनों भुजा और उनकी छातीमें प्रहार किया। महाराज! उन बाणोंसे भीष्म अत्यन्त विद्ध होकर फूले हुए वसन्त ऋतुके अशोक वृक्षके समान शोभायमान हुए और शिखण्डीको छोड़के उन सब महारथियोंको तीन तीन बाणोंसे विद्ध करके एक बाणसे राजा द्रुपदका धनुष काट दिया। राजा द्रुपदने दूसरा धनुष लेकर पांच बाणोंसे भीष्मको विद्ध करके तीन बाणोंसे उनके सारथीको विद्ध किया। युधिष्ठिरके हितैषी भीमसेन, द्रौपदीके पांचो पुत्र, केकयराज पाचो भाई और पराक्रमी सात्यकि धृष्टद्युम्नको आगे करके पाञ्चालराज द्रुपदकी रक्षा करनेकी अभिलाष करके भीष्मकी ओर दौड़े। हे राजन्! तुम्हारी ओरके सब योद्धा सेनाके सहित भीष्मकी रक्षा करते हुए पाण्डवोंकी सेनाकी ओर दौड़े। तब दोनों सेनाओंके मनुष्य घोड़े, हाथी और रथियोंका महाभयङ्कर दारुण संग्राम होने लगा; रथी योद्धा रथियोंपर आक्रमण करके यमपुरीमें भेजने लगे। मनुष्य, हाथी, घुड़सवार एक दूसरेके सम्मुख होकर अपने तीक्ष्ण अस्त्रोंसे एकको मारके एक पृथ्वीमें गिराने लगे। हे राजन्! जगह जगह अनेक रथ सारथी और रथियोंके मारे जाने पर रणभूमिमें चारों ओर इधर उधर दौड़ने लगे। मैंने देखा, कि वे सब रथ वायुके समान वेगवान् होकर अनेक मनुष्य और घोड़ोंको मर्दन करते हुए रणभूमिमें चारों ओर गन्धर्व नगरके समान शोभायमान होने लगे। हे राजन्! जिन्होंने नीतिमें वृहस्पति और धनमें कुवेर और वीरतामें इन्द्रकी उपमाको धारण किया था, ऐसे ऐसे कवच, कुण्डल, वर्म्म और सुवर्ण-भूषित वस्त्र, तथा सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्रोंसे युक्त देवपुत्रोंके समान शूरवीर और पराक्रमी रथी राजा लोग रथसे रहित होकर साधारण मनुष्योंके समान इधर उधर दौड़ने लगे। सम्पूर्ण हाथी सवारोंसे हीन होकर चिंघाड़ मारते, दौड़ते और अपनी सेनाके वीरोंका ही मर्द्दन करते हुए शूरवीरोंके अस्त्र शस्त्रोंसे मरकर पृथ्वीमें गिरने लगे। कितने ही हाथी वर्षाकालके बादलके समान शब्द करते हुए दौड़े, उनके विचित्र वर्म्म, चमर, पताका, सुवर्ण-दण्ड भूषित छत्र और तीक्ष्ण धारवाले तोमर आदि अस्त्र रणभूमिमें इधर उधर गिर पड़े; उन हाथियोंके सवार भी अनेक स्थलोंमें हाथियोंसे रहित होकर युद्धभूमिमें चारों ओर दौड़ने लगे। नानादेशीय सैकड़ों तथा सहस्रों घोड़े सुवर्ण भूषित वर्म्मसे युक्त होकर वायुके समान युद्धक्षेत्रमें दौड़ते हुए दीख पड़े। घोड़ोंके मरनेपर उनके सवार भी तलवार ग्रहण करके शत्रुओंकी ओर दौड़े, और कितने ही दूसरेसे पीड़ित होकर इधर उधर दौड़ने लगे। कोई कोई हाथी दौड़ते हुए मनुष्य और घोड़ोंको अपने पावसे मर्द्दन करते हुए दूसरे हाथियोंके सङ्ग मिलकर गमन करने लगे; कितने ही हाथी बहुतसे रथोंको मर्दन करने लगे। रथोंका समूह भी पृथ्वीमें पड़े हुए घोड़े, तथा युद्ध करते हुए अनेक मनुष्योंको अपनी गतिसे पीसने लगे। इसी भांति अनेक प्रकारसे हाथी और रथोंसे मनुष्योंका नाश होने लगा। इस प्रकारसे महाभयङ्कर दारुण युद्धमें रुधिर और अस्त्रोंकी तरङ्गसे युक्त अत्यन्त भयङ्करी नदी उत्पन्न हुई। हड्डियां उसमें किनारेकी बालू, वीर योद्धा और वाहनोंके केश उस नदीके सेवार, टूटे हुए रथ उसमें नावसे बहे जाते थे, बाण आदि अस्त्र पतवारसे दीख पड़ते थे, मरे हुए घोड़े उसमें मछली, वीरोंके शिर पत्थरोंके टुकड़े और मरे हुए हाथी उसमें मगर घड़ियालके समान देख पड़ते थे, कवच और वस्त्र आदि उस नदीमें बहते हुए फेनके समान बोध होते थे, धनुष उसके

किनारेकी भूमि, तलवार ढाल उस नदीके कछुए और पताका ध्वजा उस नदीके किनारे रहनेवाले वृक्षके समान दिखाई देने लगे। यह नदी मनुष्य-रूपी तटका नाश करने लगी; युद्ध करते हुए वीरोंका समूह इस नदीकी हंसयोगी हुई। जलकी नदियां समुद्रको बढ़ाती है, परन्तु यह नदी यमराजके राज्य-की बढ़ाने वाली उत्पन्न हुई। पराक्रमसे युक्त अनेक शूरवीर क्षत्रिय योद्धा भय त्यागके रथ; हाथी और घोड़े रूपी नावासे इस नदीके पार जाने लगे। जैसे वैतरणी नदी मरे हुए मनुष्यको यमपुरीमें लेजाती है, वैसे ही यह रुधिरकी नदी भी मूर्च्छित, और डरपोक मनुष्योंको बहा कर लेजाने लगी। क्षत्रिय योद्धा इस प्रकारसे वीरोंका नाश होता हुआ देख-कर जोरसे चिल्लाकर कहने लगे, कि दुर्य्यो-धनके दोषहीसे सब वीरोंका नाश होरहा है; राजा धृतराष्ट्रहीने न जाने किस कारणसे लोभ मोहमें फंस कर गुणवान् पाण्डुपुत्रोंसे विरोध किया? उन सब वीरोंके मुखसे इसी भांति अनेक प्रकारसे पाण्डवोंकी प्रशंसा और तुम्हारे पुत्रोंकी निन्दाके सूचक नाना प्रकारके वचन सुनाई देने लगे। सब लोकोंमें अपराधी तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन उन सब योद्धाओंके ऐसे वचन सुनकर भी महा पराक्रमी भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य और शल्यसे बोले, कि तुम सब लोग अहङ्कारसे रहित होकर युद्ध करो, क्यों विलम्ब करते हो? हे राजन्! अनन्तर फिर इस पाण्डवोंका महा-घोर भयङ्कर संग्राम होने लगा। हे विचित्र-वीर्य्य पुत्र! अनेक महात्माओंने पहिले तुम्हें निवारण किया था, तोभी तुमने उस समयमें उन लोगोंका वचन नहीं ग्रहण की, उस कारण यह महाभारत युद्ध इस समय उप-स्थित हुआ है। तुम्हें पाण्डव, कौरव, तथा [illegible] सेना और उनके अनुयायी पुरुष आदि कोई भी अपनी प्राणरक्षाकी चेष्टा नहीं करते है। तुमने जो पहिले किसीके युद्धसे निवारण करनेवाले वचनोंको नहीं सुना था, उस ही कारणसे होवे, चाहे तुम्हारी अनीतिके दोषसे ही होवे,—यह महाभयङ्कर जातिके लोगों तथा अपने इष्ट मित्र आदि सब पुरुषोंके नाशका समय उपस्थित हुआ है।

१०० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! पुरुषसिंह अर्ज्जुन सुशर्म्माके अनुयायी क्षत्रियोंको अपने तीक्ष्ण-बाणोंसे वध करके यमपुरीमें भेजने लगे। सुशर्म्मा भी अपने बाणोंसे अर्ज्जुनको विद्ध करने लगे। सुशर्म्माने सत्तर बाणोंसे कृष्णको विद्ध करके नौ बाणोंसे अर्ज्जुनको विद्ध किया। महा-रथ इन्द्रपुत्र अर्ज्जुन सुशर्म्माको अपने बाणोंसे निवारित करके उसकी सेनाके योद्धाओंका नाश करने लगे। सुशर्म्माके अनुयायी मरनेसे बचे हुए महारथ योद्धा प्रलयकालके यम-राजके समान उनके अस्त्रोंसे पीड़ित हो डरकर अर्ज्जुनके सम्मुखसे भाग गये। कोई कोई घोड़ोंको त्याग कर चारों ओर युद्ध भूमिमें भागने लगे, कितने ही शूरवीर घोड़े, हाथी और रथोंके सहित शीघ्रतासे वेग पूर्व्वक भागने लगे, कितने ही पैदल योद्धा उस महासंग्राममें शस्त्रोंको त्याग किसीकी ओर न देख इधर उधर भाग गये। उन लोगोंको त्रिगर्त्तराज सुशर्म्मा तथा दूसरे बहुतसे मुख्य राजाओंने बार बार निवारण किया, तो भी वे सब योद्धा भागनेसे निवृत्त नहीं हुए।

हे महाराज! तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन इस सम्पूर्ण सेनाके आगे होकर पितामह भीष्मको आगे कर त्रिगर्त्तराज सुशर्म्माकी रक्षा करनेके वास्ते सब प्रकारके [illegible] ऊपर दौड़े। अकेले राजा दुर्योध

योंके सहित नाना प्रकारके बाणोंको चलाते हुए अर्ज्जुनके सम्मुख स्थित हुए, और सेनाके सब पुरुष भाग गये। पाण्डवोंने भी सब सामानसे युक्त होकर अर्ज्जुनकी रक्षा करनेके निमित्त भीष्मके समीप गमन किया। उन सब पुरुषोंने गाण्डीवधनुष धारण करनेवाले अर्ज्जुनका भयानक बल और पराक्रम जानके भी उत्साहपूर्व्वक हाहाकार शब्द करते हुए अर्ज्जुनको चारों ओरसे घेर कर भीष्मके निकट गमन किया। तब तालध्वजावाले भीष्मने अपने तीक्ष्ण बाणोंसे पाण्डवोंकी सेनाको छिपा दिया। महाराज! तिसके अनन्तर जब सूर्य्य आकाशके बीचों बीच हुए, उस समय सब कौरव एकत्रित होकर पाण्डवोंसे युद्ध करने लगे। सात्यकि पांच बाणोंसे कृतवर्म्माको विद्ध करके सहस्र सहस्र बाणोंको चलाते हुए रणभूमिमें स्थित हुए। राजा द्रुपदने द्रोणाचार्य्यको उत्तम पानीसे बुझे हुए अनेक बाणोंसे विद्ध किया; तिसके अनन्तर उनके सारथीको भी पांच बाणोंसे विद्ध किया। भीमसेन प्रपितामह महाराज बाह्लिकको बाणोंसे विद्ध करके शार्द्दूलके समान महानाद करने लगे। अर्ज्जुनपुत्र अभिमन्यु चित्रसेनके अनेक बाणोंसे विद्ध होकर तीन बाणोंसे उनके हृदयमें प्रहार करके चित्रसेनको अत्यन्त ही विद्ध किया, जैसे आकाशमें बुध और शनैश्चर ग्रह प्रकाशित होते हैं, वैसे ही वे दोनों पराक्रमी महाभयङ्कर रूपसे प्रकाशित होने लगे। शत्रुनाशन वीर अभिमन्युने नौ बाणोंसे चित्रसेनके चारों घोड़े और उनके सारथीका वध करके सिंहनाद किया। हे राजन्! चित्रसेन घोड़े और सारथीसे रहित रथपरसे कूदके दुर्म्मुखके रथपर चढ़ गये। पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने तीक्ष्ण बाणोंसे राजा द्रुपदको विद्ध करके शीघ्रताके सहित उनके सारथीको भी विद्ध किया; राजा द्रुपद सम्पूर्ण सेनाके सम्मुख ही द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे पीड़ित हो पहिलेकी शत्रुताको स्मरण करके वेगवान् घोड़ोंके सहित रथ पर चढ़े हुए रणभूमिसे भाग गये। भीमसेनने सब सेनाके सम्मुख ही मूहूर्त्त भरमें महाराज बाह्लिकको घोड़े, सारथी और रथसे रहित कर दिया। हे महाराज! पुरुषश्रेष्ठ बाह्लिक अत्यन्त सन्देह और भयसे युक्त होकर शीघ्रताके सहित अपने रथसे कूदके लक्ष्मणके रथ पर चढ गये। सात्यकिने अनेक बाणोंसे कृतवर्म्माको निवारण करके भीष्मके निकट गमन किया, और उत्तम पानी चढ़े हुए रोएंको खड़े करनेवाले साठ बाणोंसे महाबलवान् पितामह भीष्मको विद्ध करके धनुष घुमाते हुए मानो रथके ऊपर नृत्य करने लगे। तिसके अनन्तर पितामह भीष्मने सुवर्णचित्रित महावेगशील सर्पिणीके समान भयङ्करी लोहमयी एक उत्तम शक्ति सात्यकिकी ओर चलाई। वृष्णिवंशीय यशस्वी सात्यकिने मृत्युके समान अत्यन्त प्रचण्ड शक्तिको सम्मुख आती देखके शीघ्रतासे रथपर भ्रमण करके उसे विफल किया, वह प्रकाशमान भयानक शक्ति सात्यकिको न पाकर बड़े लुक्केके समान पृथ्वीपर गिरी। तब सात्यकिने सुवर्णभूषित प्रकाशमान अपनी शक्ति ग्रहण करके पितामह भीष्मकी ओर चलाई, गङ्गानन्दन भीष्मने उस शक्तिको सम्मुख आती देख दो क्षुरप्र बाणोंसे काटके दो खण्ड कर दिया उससे वह शक्ति दो टुकड़े होके पृथ्वीमें गिर पड़ी। शत्रुनाशन भीष्मने उस शक्तिको काटके क्रुद्ध होकर नौ बाणोंसे सात्यकिके वक्षस्थलमें प्रहार किया। हे राजन्! तब पाण्डवोंने भीष्मके अस्त्रोंसे सात्यकिके बचानेके वास्ते रथ, हाथी, घोड़े और पैदल सेनाके सहित चारों ओरसे उनको घेर लिया तिसके अनन्तर विजयकी इच्छा करनेवाले कौरव और पाण्डवोंका रोएंको खड़े

करनेवाला महाघोर भयङ्कर युद्ध आरम्भ हुआ।

१०१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! राजा दुर्य्योधनने क्रुद्ध भीष्म पितामहको ग्रीष्मकालके सूर्य्यके समान पाण्डवोंकी सेनारूपी बादलोंमें छिपा हुआ देखके दुःशासनसे कहा, हे भारत। शत्रुनाशन महा धनुर्द्धारी पराक्रमी भीष्म पितामह पाण्डवोंकी सेनामें घिर गये हैं। हे वीर। इस समय तुमको महात्मा भीष्मकी रक्षा करनी उचित है; जब हम लोग पितामह भीष्मकी रक्षा करेंगे, तब वह यत्नपूर्व्वक पाण्डवोंके सहित पाञ्चाल योद्धाओंका वध कर सकेंगे; इससे उनकी रक्षा करनी ही मैं सबसे बड़ा कार्य्य समझता हूं। यह महाव्रत करनेवाले महा धनुर्द्धारी भीष्म युद्धमें सदा कठिन कर्म्मोंको करते रहते हैं, और वह हम लोगोंके रक्षक हैं; इसने तुम सब सेनासे युक्त होकर उनकी रक्षा करो। तुम्हारे पुत्र दुःशासन रणभूमिमें दुर्य्योधनकी आज्ञा सुनकर बहुत बड़ी सेनाके सहित भीष्मको घेरकर खड़े हुए। तिसके अनन्तर रथियोंमें मुख्य सुबलपुत्र शकुनि उत्तम शिक्षा और युद्धके कामोंमें निपुण मुख्य वीर पुरुषोंके सहित सेनामें स्थित होकर अत्यन्त वेगवान, अभिमानी, ध्वजा पताकाओंसे शोभित [illegible] ऋष्टि और तोमर धारण करनेवाले [illegible] दश हजार घुड़सवारोंके सहित एकत्रित होकर पाण्डुपुत्र धर्मराज, नकुल और सहदेवको चारो ओरसे घेरकर उन्हें निवारण करने लगे। फिर राजा दुर्य्योधनने पाण्डवोंके निवारण करनेके वास्ते पराक्रमसे युक्त दश हजार घुड़सवारोंको उनके निकट भेज दिया। [illegible] पक्षीकी भांति [illegible] उस समय पृथ्वी उन घोड़ोंकी टापसे कांपने लगी; जैसे पहाड़पर जलते हुए बांसोंका प्रचण्ड शब्द होता है उसी भांति घोड़ोंकी टापका भी महा घोर शब्द सुनाई देने लगा; उन सब घोड़ोंके वेगसे चलनेके समय उनके पांवोंके धक्केसे इतनी धूलि उड़ी, कि उससे सूर्य्य छिप गया। जैसे बड़े तालावमें हंसोंकी पांति वेगसे आकर गिरती है, वैसे ही उन वेगशील घोड़ोंको शीघ्रताके सहित सम्मुख आते देख पाण्डवोंकी सेना चकित होगई, घोड़ोंके हिनहिनानेपर उस समय वहांपर कुछ भी नहीं सुन पड़ता था। महाराज जैसे वर्षाकालके पूर्ण महा सागरकी लहर पूर्णमासीके दिन बहुत वेगसे उठती है, और जैसे तट उस लहरको रोकता है, वैसे ही युधिष्ठिर, नकुल और सहदेवने बलपूर्व्वक उन सम्पूर्ण घुड़सवारोंके वेगको निवारण किया। तिसके अनन्तर वे तीन रथी ही उन घुड़सवारोंके सिरको अपने चोखे बाणोंसे काटने लगे। हे राजन्। जैसे बड़ा सर्प सब सांपोंके द्वारा पर्व्वतकी कन्दरामें गिरता है, वैसे ही वे सब योद्धा लोग, युधिष्ठिर, नकुल और सहदेवके बाणोंसे रणभूमिमें यथा उचित मरकर गिरने लगे; युधिष्ठिर आदि सब ओर भ्रमण करके शिलापर घिसे हुए बाणों और प्रास आदि अस्त्रोंसे उन सब घुड़सवारोंके सिरोंको काटने लगे, वे सब घुड़सवारोंके सिर पाण्डवोंके शस्त्रोंसे इस भांति कटके गिरने लगे, जैसे वृक्षसे पके हुए फल गिरते हैं; सब ओर घोड़ोंके सहित सवार मरके पृथ्वीमें गिरने लगे। यत्नमें बचे हुए सब घुड़सवार अपने प्राणकी रक्षाके निमित्त भयभीत होकर इस प्रकार रणभूमिसे भागे, जैसे वनमें हरिणोंका मृग सिंहको देखकर भाग जाता है। तब पाण्डव लोग उस समय शत्रुओंको जीत कर शंख भेरी आदि बाजोंको बजाने लगे।

अनन्तर राजा दुर्य्योधन युद्ध

सेनाको भागती हुई देख कर दुःखित हो मद्र-राज शल्यसे बोले, हे राजन्। यह देखो राजा युधिष्ठिर अपने नकुल सहदेव दोनों भाइयों के सहित हमलोगोंके सम्मुखहीमें हमारी सेनाको तितर बितर कर रहे हैं; हे महा-बाहो! तुम्हारा शत्रुओंसे न सहने योग्य परा-क्रम सबको विदित है, इससे जैसे तट समुद्रके वेगको रोकता है, वैसे ही तुम भी युधिष्ठरको निवारण करो। प्रतापवान् शल्य तुम्हारे पुत्रके वचन सुनकर रथोंके समूहके सहित राजा युधिष्ठिर जिस स्थान पर थे, वहां पर गमन किया; तब शल्यको महासेनाको उस समय वेग पूर्व्वक आई हुई देखकर धर्म्मराज युधिष्ठिर निवारण करने लगे; युधिष्ठिरने शीघ्रताके सहित दश बाणोंसे मद्रराज शल्यके दोनों स्तनोंके बीचमें प्रहार किया और नकुल सहदेवने भी शीघ्रताके सहित सात बाणोंसे शल्यको विद्ध किया। शल्यने भी पहिले उन तीनों महारथियोंको तीन बाणोंसे निवारण करके फिर राजा युधिष्ठिरको शिला पर घिसे हुए साठ बाणोंसे और नकुल सहदेवको दो दो बाणोंसे विद्ध किया। उसके बाद भीमसेन राजा युधिष्ठिरको मृत्युके मुखमें पड़े हुए पुरुषके समान शल्यके वशमें हुआ जानकर उनके निकट उपस्थित हुए। उस समय सूर्य्य पश्चिम दिशामें जाकर सबको तपाने लगे; उसी समयमें महाघोर दारुण संग्राम होने लगा।

१०२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! तिसके अनन्तर पराक्रमी भीष्म पितामहने क्रुद्ध होकर चारों ओरसे तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करके सेनाके सहित पाण्डवोंको पीड़ित करना आरम्भ किया, भीमको बारह, सात्यकिको नौ, नकुलको तीन और सहदेवको सात बाणोंसे विद्ध करके फिर बारह बाणोंसे राजा युधिष्ठिरकी दोनों भुजा और छातीमें प्रहार किया। फिर धृष्टद्युम्नको तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध करके सिंहनाद करने लगे। तब नकुलने बारह, सात्यकिने तीन, सहदेवने सात, अर्ज्जुनने नौ, धृष्टद्युम्नने सत्तर, भीमसेनने सात और युधिष्ठिरने बारह बाणोंसे पितामह भीष्मको विद्ध किया। द्रोणाचार्य्यने यमदण्डके समान पांच बाणोंसे सात्यकिको विद्ध करके भीमसेनको भी उसी भांति पांच बाणोंसे विद्ध किया। जैसे हाथीको अंकुशसे पीड़ित करते हैं, वैसे ही भीमसेन और सात्यकिने ब्राह्मण श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यको तीन तीन बाणोंसे विद्ध किया। सौवीर, कितव, प्राच्य, प्रतीच्य, उदीच्य, मालव, अभीषाह, शूरसेन, शिवि और वशाति देशीय सम्पूर्ण योद्धाओंने भीष्मके तीक्ष्ण बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर भी उन्हें त्याग नहीं किया। उसी भांति नाना देशोंसे आये हुए तुम्हारी सेनाके राजा लोग भी विविध भांतिके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर भी पाण्डवोंके सम्मुख हुए। पाण्डवोंने भीष्म पितामहको चारों ओरसे घेर लिया, अपराजित भीष्म चारों ओरसे शत्रुओंमें प्रचण्ड अग्निके समान प्रकाशित होकर पाण्डवोंकी सेनाको अपने तीक्ष्ण अस्त्रोंसे भस्म करने लगे। भीष्मरूपी अग्निराशिमें रथ शिखा, धनुष, तलवार, शक्ति, गदा और बाण जलने वाले काठ हुए; इस प्रकारसे भीष्मरूपी अग्नि क्षत्रियरूपी योद्धाओंको भस्म करने लगी। भीष्मने गिद्धपङ्खवाले सुवर्ण दण्ड युक्त चोखे बाणोंसे पाण्डवोंकी सेनाको छिपा दिया; फिर उन्होंने सम्पूर्ण रथोंकी ध्वजाओंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे काटकर टूटे ताल वनके समान कर दिया। सब शस्त्रधारि-योंमें श्रेष्ठ महाबाहु भीष्मने रथ घोड़े और हाथियोंको मनुष्योंसे रहित कर दिया। हे भारत! वज्रके समान भीष्मके धनुषकी टङ्कार और तलत्राणके शब्दको सुनकर

सम्पूर्ण मनुष्य कांपने लगे। हे राजन्! भीष्म पितामहके बाण अमोघ होकर चारों ओर गिरते हुए दिखाई देने लगे। भीष्मके बाण केवल शत्रुओंके वर्म्महीमें लगके नहीं रह गये; किन्तु मैंने देखा, कि भीष्मके धनुषसे छूटे हुए बाणोंने वेगवान् घोड़ोंके सहित रथोंको रथियोंसे रहित कर दिया, वीरोंसे हीन रथ रणभूमिमें चारों ओर घूमने लगे। केकय, काशि, चेदि और करूष-देशीय उत्तम वंशमें उत्पन्न हुए चौदह हजार शूरवीर रणसे पीछे न हटनेवाले योद्धालोग रथ, हाथी और घोड़ोंके सहित महात्मा भीष्मके बाणोंसे मरकर परलोक सिधारे। महाराज! उस समय, मैंने देखा, कि सैकड़ों तथा सहस्रों रथोंके चक्र तथा उपरके हिस्से टूट टूट पृथ्वीमें गिरने लगे। टूटे रथ, मरे हुए हाथी, रथी, बाण, विचित्र कवच, पट्टिश, गदा, भिन्दिपाल, शिलापर घिसे हुए चोखे बाण, रथके नीचेका काठ, तूणीर, टूटे हुए रथके चक्के, वीरोंकी कटी भुजाएं, धनुष, तलवार कुण्डलोंके सहित मस्तक, पदत्राण, अङ्गुलित्राण, ध्वजा और बहुतसे टूटे हुए धनुषोंसे पृथ्वी छिप गई। हे राजन्! सौ सौ तथा हजार हजार हाथी और घोड़े सवारोंसे रहित होकर प्राणोंसे मरकर गिरने लगे पाण्डवोंकी ओरके महारथ योद्धा भीष्मके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर रणभूमिसे इधर उधर भागने लगे; पराक्रमी पाण्डव बलवान् होकर भी उनको निवारण न कर सके। सम्पूर्ण सेना इन्द्रके समान पराक्रमी प्रतापी भीष्म पितामहके बाणोंसे पीड़ित और भयभीत होकर इतनी [illegible] भागने लगी, कि दो दो [illegible] एक संग नहीं दौड़ सके। पाण्डवोंकी सेनाके हाथी, घोड़े और रथोंकी ध्वजा भीष्मके बाणोंसे कटके पृथ्वीमें गिर गए, और सेनाके सब शूरवीर योद्धा हाहाकार [illegible] तथा कोलाहल करने लगे।

उस समयमें दैवकी इच्छासे प्रेरित होकर पिता पुत्रका, पुत्र पिताका और प्यारा मित्र अपने प्रिय मित्रोंका वध करने लगे। उस समय मैंने देखा, कि पाण्डवोंकी सेनाके कितने ही पुरुष कवचको त्यागके खुले हुए केश तथा नङ्गे सिर होकर भागने लगे। जब उस समय भीष्मका रथ चारों ओर रणभूमिमें घूमने लगा, तब वह सब योद्धा मानों सिंहको देखकर गौओंकी भांति इधर उधर घूमते और भागते हुए आर्त्तनाद करने लगे।

महाराज! यदुकुलभूषण कृष्ण पाण्डवोंकी सेनाको भागती हुई देख रथको खड़ा करके अर्जुनसे बोले, हे पुरुषसिंह अर्जुन! तुमने पहिले जो अभिलाष की थी, उसका समय अब उपस्थित हुआ है, इसी समय भीष्मका वध करो, नहीं तो पीछे तुमको मोह प्राप्त होगा। हे वीर! विराट नगरमें जब हस्तिनापुरसे सञ्जय तुम्हारे समीप आये थे, तब तुमने राजाओंके इकट्ठे होनेके समय उनसे यह कहा था, कि "दुर्य्योधनके भीष्म, द्रोणाचार्य्य आदि सेनाके पुरुष तथा दूसरे जो मनुष्य उसके निमित्त मेरे सङ्ग युद्ध करेंगे, सब पुरुषोंको मैं अनुयायियोंके सहित युद्धमें मारूंगा।" हे शत्रुनाशन कुन्तीपुत्र अर्जुन! तुम क्षत्रिय धर्म्म को स्मरण करके सब शोक और चिन्ताओंको त्याग कर अब अपने वचनको सत्य करो।

अर्जुन कृष्णकी बात सुन कर सिर नीचे करके तिरछी दृष्टिसे मानो इच्छा रहित होकर यह वचन बोले, अवध्य पुरुषोंको मारकर नरकमें [illegible] राज्यका पाना और [illegible] [illegible] इस समय आप [illegible] उचित है [illegible], मैं तुम्हारे वचनका पालन करूंगा. [illegible] [illegible]

में अत्यन्त पराक्रमी कुरु पितामह भीष्मका वध करूंगा।

हे राजन्! तिसके अनन्तर कृष्णने सूर्य्यके समान तेजस्वी भीष्मके समीपमें सुवर्णभूषित रथको घोड़ोंकी गतिसे चलाया। तब युधिष्ठिरकी महासेना महाबाहु अर्जुनको भीष्मसे युद्ध करनेके निमित्त उपस्थित देखकर फिर लौटी। तब कौरवोंमें श्रेष्ठ भीष्म पितामहने बार बार सिंहनाद करके अपने बाणोंकी वर्षासे अर्जुनके रथको छिपा दिया। भीष्मके बाणोंकी वर्षासे क्षण भरमें घोड़े और सारथीके सहित अर्जुनका रथ अदृश्य हो गया। तब कृष्णने सावधानीके सहित भीष्मके बाणोंसे क्षत विक्षत शरीरवाले घोड़ोंको धीरताके सहित चलाया। अनन्तर अर्जुनने बादलके समान शब्द करनेवाले गाण्डीव धनुषको ग्रहण करके अपने तीक्ष्ण बाणोंसे भीष्म पितामहके धनुषको काट दिया। धनुष कटते ही पितामह भीष्म बादलके समान शब्द करनेवाले एक दूसरे धनुष पर रोंदा चढ़ा कर दोनों हाथोंसे फेरते हुए बाणोंको चलाने लगे, परन्तु अर्जुनने क्रुद्ध होकर उसे भी काट डाला; अर्जुनके ऐसे कर्म्मको देखकर भीष्म पितामहने "धन्य धन्य" कहके अर्जुनके हस्तलाघवकी प्रशंसा की। अर्जुनकी प्रशंसा कर फिर एक मनोहर धनुष ग्रहण करके उनके रथ पर अपने बाणों की वर्षा करने लगे। कृष्णने मण्डलाकार रथको चला कर भीष्मके चलाये हुए उन सब बाणोंको निष्फल करके अर्जुनके घोड़ोंका परम पराक्रम दिखाया। फिर कृष्ण और अर्जुन दोनों ही भीष्मके बाणोंसे क्षत विक्षत शरीर होकर प्रकाशित हुए। हे राजन्! अर्जुन मृदु युद्ध करते थे, और भीष्म सदा अपने बाणोंकी वर्षा करते थे। भीष्म दोनों सेनाके बीच तपते हुए सूर्य्यके समान प्रकाशित होकर पाण्डवोंकी सेनाके मुख्य मुख्य योद्धाओंका वध कर रहे थे; यहां तक कि युधिष्ठिरकी सेनाके निमित्त मानो प्रलय कालका समय उपस्थित कर रहे थे। यह देखकर यदुकुल मणि, शत्रुनाशन, सब कार्योंके करनेमें समर्थ, महाबाहु श्रीकृष्ण अधिक न सह सके, वे सुवर्णभूषित घोड़ोंको त्याग कर उस उत्तम रथसे नीचे उतरे। अत्यन्त तेजस्वी, जगतके स्वामी, महाबली और पराक्रमी कृष्ण क्रोधसे नेत्र लाल करके भीष्मके वध करनेकी इच्छासे बार बार सिंहनाद करके अपने पांवोंसे पृथ्वीको कंपाते हुए अपने भुजारूपी शस्त्रोंका अवलम्ब करके हाथमें कोड़ा लिये हुए भीष्मकी ओर दौड़े। महाराज! रणभूमिमें कृष्णको भीष्मकी ओर वेगसे दौड़ते हुए देखकर तुम्हारी सेनाके पुरुष भयभीत होगये। उस समय कृष्णसे भयभीत होकर जगह जगह सब मनुष्य कहने लगे, "भीष्म मारे गये, भीष्म मारे गये" ऐसे वचन रणभूमिमें सुनाई देने लगा। जैसे बादल बिजलीसे शोभायमान लगता है, वैसे ही मेघ वर्ण कृष्ण पीताम्बर पहरे हुए शोभित हुए। जैसे यूथपति सिंह गर्ज्जते हुए उत्तम गजराज की ओर दौड़ता है, वैसे ही यदुकुलभूषण कृष्ण सिंहनाद करते हुए कुरुश्रेष्ठ भीष्म पितामहकी ओर वेगसे दौड़े।

शान्तनुपुत्र भीष्मने कृष्णको क्रुद्ध चित्तसे अपनी ओर आते हुए देखकर अपने बड़े धनुषको फेरते हुए निर्भय चित्त होकर कृष्णसे कहा, हे पुण्डरीकाक्ष! आओ, आओ, हे देवोंके देव! तुमको मेरा नमस्कार है। हे पुरुषोत्तम! इस महायुद्धमें तुम मेरा वध करो। हे परमात्मन्! हे कृष्ण! हे गोविन्द! यदि तुम मुझे युद्धमें मारोगे, तो लोकके बीचमें मेरा मङ्गल होगा; मैं आज तीनों लोकमें सम्मानित होऊंगा। हे पापरहित! मैं तुम्हारा दास हूं, तुम इच्छाके अनुसार मेरे ऊपर प्रहार करो।

तिसके अनन्तर महाबाहु अर्जुनने भीष्

नाके सहित कृष्णके पीछे दौड़के अपनी दोनों भुजाओंसे उन्हें ग्रहण किया। कमलनयन पुरुषोत्तम कृष्ण अर्ज्जुनसे ग्रहण किये जाने पर भी अर्ज्जुनको सङ्ग लिये हुए ही वेग पूर्व्वक गमन करने लगे, परन्तु नौ चरण गमन करनेके अनन्तर दशवें चरण पर शत्रुनाशन वीर अर्ज्जुनने बलपूर्व्वक उनके दोनों पावोंको पकड़के किसी प्रकारसे रोक रक्खा। अनन्तर अर्ज्जुन कातर होकर क्रोधसे लाल नेत्र किये, और सर्पके समान लम्बी सास छोड़ते हुए अपने मित्र महात्मा कृष्णसे विनय पूर्व्वक बोले, हे महाबाहो कृष्ण! तुम निवृत्त होजाओ। तुमने पहिले कहा था, कि "मैं युद्ध नहीं करूंगा। इससे तुम अपने उस वचनको मिथ्या मत करो, यदि तुम युद्ध करोगे, तो तुमको सब पुरुष मिथ्यावादी कहेंगे। हे कृष्ण! मेरे ऊपर यह सम्पूर्ण भार है, मैं ही भीष्म पितामहका वध करूंगा। हे शत्रुनाशन कृष्ण! मैं सत्य, शास्त्र और सुकृतके सहित तुम्हारे निकट प्रतिज्ञा तथा शपथ करता हूं, कि शत्रुओंका जिस प्रकारसे नाश हो सकेगा, मैं वही उपाय करूंगा। तुम्हें आज ही महारथ दुर्ज्जय भीष्मको प्रलय कालके अपूर्ण तारापति चन्द्रमाके समान मेरे अस्त्रोंसे पतित हुए देखनेकी सम्भावना है। क्रुद्ध कृष्ण महात्मा अर्ज्जुनका ऐसा वचन सुन कुछ भी न कहकर फिर रथपर चढ़े। उन दोनोंके रथपर चढ़नेके अनन्तर शान्तनुपुत्र भीष्म उन दोनों पुरुषोंके ऊपर इस प्रकार परम बाणोंकी वर्षा करने लगे, जैसे बादल पर्व्वतके ऊपर जलकी वर्षा करता है। जैसे शिशिर ऋतुके अन्तमें सूर्य अपनी किरणोंसे सम्पूर्ण पदार्थोंके तेजको ग्रहण करता है, वैसे ही भीष्म पितामह अपने तीक्ष्ण बाणोंसे वीरोंके प्राण हरण करने लगे। पाण्डव लोग जिस भांतिसे कुरुसेनाको तितर बितर करते थे, भीष्म पितामह भी उसी भांतिसे पाण्डवोंकी सेनाको रणभूमिसे भगाने लगे। पाण्डवोंकी सेना भीष्मके बाणोंसे विकल और पीड़ित होकर इस प्रकारसे उत्साहरहित होके युद्धभूमिसे भागी, कि अत्यन्त पराक्रमी भीष्म पितामहकी ओर पीछे फिर कर देखनेमें भी समर्थ न हुई। भीष्मके बाणोंसे सैकड़ों तथा सहस्रों बार पीड़ित और भयसे आर्त्त होकर सब शूरवीर उनको दो पहरके सूर्य्यके समान तेजसे जलते हुए देखने लगे। हे भारत! पाण्डवोंकी सम्पूर्ण सेनाके वीरोंने भीष्मके बाणोंसे तितर बितर होकर कीचड़में पड़े हुए गौओंके समूहकी भांति किसीको भी अपनी रक्षा करनेवाला न देखा। अस्त्रोंसे युक्त अत्यन्त प्रचण्ड महारथ भीष्मरूपी अग्नि बाणरूपी शिखाके सहित सूर्य्यके समान प्रज्वलित होकर राजाओंको भस्म करने लगा, कोई उनकी ओर देखनेमें भी समर्थ नहीं हुआ। इसी प्रकारसे जब वह पाण्डवोंकी सेनाका नाश कर रहे थे, तब सहस्र-किरणधारी भगवान् सूर्य्य अस्त होने लगे, अनन्तर संग्राममें थके हुए सेनाके पुरुषोंका चित्त युद्धसे निवृत्त होनेके निमित्त व्याकुल होने लगा।

१०३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे भारत! अनन्तर युद्ध करते करते सूर्य्यके अस्त होनेपर महा घोर सन्ध्याका समय उपस्थित हुआ, तब उस समय युद्धमें कुछ भी नहीं सूझ पड़ता था। राजा युधिष्ठिरने सन्ध्याके समय अपनी सेनाको भीष्म पितामहके बाणोंसे पीड़ित, भयसे विमुख और युद्धसे विकल होकर अस्त्रशस्त्रोंको त्यागकर भागी हुई देख तथा महारथ भीष्मको क्रुद्ध होकर सेनाको पीड़ित करते और सोमकवंशके [illegible] पराजित तथा उत्साहरहित देखकर, [illegible]

को युद्धसे निवृत्त होनेके निमित्त आज्ञा दी। राजा युधिष्ठिरने जब युद्धसे अपनी सेनाको निवृत्त किया, तब तुम्हारी सेना भी संग्रामसे निवृत्त हुई। हे भारत। महारथ योद्धाओंने क्षतविक्षत शरीरसे युक्त सम्पूर्ण सेनाको युद्धसे निवृत्त करके अपने शिविरोंमें प्रवेश किया। पाण्डव लोग युद्धमें भीष्मके वाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर उनके युद्धके कार्य्योंकी चिन्ता करने लगे, उस समयमें वह लोग शान्ति लाभ न कर सके। हे भारत! भीष्म पितामहने भी सृञ्जयोंके सहित पाण्डवोंको पराजित करके तुम्हारे पुत्रोंसे वन्दित और पूजित होकर चारों ओरसे प्रसन्नचित्त और हर्षयुक्त कुरुसेनाके सहित शिविरमें प्रवेश किया। तिसके अनन्तर सब प्राणियोंको मोहित करनेवाली रात्रि उपस्थित हुई। उस महा घोर रात्रिके समय बुद्धिमान् पाण्डव लोग सृञ्जयों और वृष्णिवंशियोंके सहित विचार करनेके वास्ते तत्पर हुए। मन्त्रकार्य्यको जाननेवाले वह सब महा बलवान् पुरुष एकाग्रचित्त होकर समयके अनुसार अपने कल्याणके निमित्त विचार करने लगे। अनन्तर राजा युधिष्ठिर बहुत देरतक विचार करके कृष्णकी ओर देखकर यह वचन बोले, हे कृष्ण! तुमने देखा, अत्यन्त पराक्रमी भीष्म मेरी सेनाका इस प्रकारसे नाश करते हैं जैसे हाथी कमलके वनका नाश कर देता है। उन महा तेजस्वी महात्मा भीष्म पितामहकी ओर हमलोग देखनेमें भी समर्थ नहीं हो सकते। रणभूमिमें प्रतापवान् भीष्म पितामह तीक्ष्ण शस्त्रोंको धारण करके महा विषधर तक्षक सर्पके समान क्रुद्ध होकर धनुष फेरते हुए अपने तीक्ष्ण वाणोंको मेरी सेनापर वर्षाते रहते हैं। क्रुद्ध हुए दण्डधारी यमराज, हाथमें वज्र लिये हुए इन्द्र, पाशको ग्रहण करनेवाले वरुण और गदाधारी कुवेरका भी युद्धमें जय किया जा सकता है; परन्तु इस महा युद्धमें क्रुद्ध भीष्मको पराजित नहीं किया जा सकता। हे कृष्ण। इससे मैं अपनी बुद्धिकी निर्बलताके कारण युद्धमें भीष्मके निमित्त शोकरूपी समुद्रमें डूब रहा हूं; भीष्म सदा ही हम लोगोंको पीड़ित करते हुए हमारी सेनाका वध करते हैं, अब मेरी युद्ध करनेके निमित्त इच्छा नहीं होती है, इससे अब मैं वनको जाऊंगा, वनवास करना ही मेरे निमित्त कल्याणकारी है। जैसे पतङ्ग जलती हुई अग्निमें प्रवेश करके केवल अपने शरीरहीका नाश कर देता है, तैसे ही मैंने भी भीष्म पितामहको युद्धमें पाया है। हे यदुकुल भूषण! मैं राज्यके निमित्त पराक्रमके कार्य्यमें प्रवृत्त होकर अपना नाश कर रहा हूं। मेरे शूरवीर बलवान् भ्राता भीष्मके वाणोंसे अत्यन्त ही पीड़ित हो रहे हैं; वे सब भ्रातृस्नेहके वशमें [illegible] मेरे ही निमित्त राज्यसे भ्रष्ट होकर [illegible] हुए थे। हे मधुसूदन! द्रौपदी भी मेरे ही कारण इतना क्लेश पा रही है; इससे जीवनको श्रेष्ठ और दुर्लभ समझता हूं; अब इस बाकी जीवनकी अवस्थामें कल्याणके वास्ते धर्म्माचरण करूंगा। हे माधव। यदि मैं और मेरे भाई तुम्हारे अनुग्रहके पात्र होवें, तो तुम जिससे हम लोगोंके धर्म्ममें विरोध न होवे, ऐसा हित कर्म्म वर्णन करो; मैं उसका ही अनुष्ठान करूंगा।

श्रीकृष्णने इसी प्रकार राजा युधिष्ठिरके बहुतसे वचनोंको विस्तार पूर्व्वक सुनके करुणापूरित वचनोंसे उन्हें धीरज देकर यह वचन कहा, हे सत्य-प्रतिज्ञ धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर! तुम कुछ भी शोक मत करो, तुम्हारे सब भाई पराक्रमसे युक्त, शत्रुओंका नाश करनेवाले और युद्धमें दुर्जय हैं। अर्जुन और भीमसेन वायु और अग्निके समान तेजस्वी हैं। माद्रीपुत्र नकुल सहदेव ऐसे पराक्रमी हैं, कि वे लोग प्रायः देवताओंके ऊपर भी प्रभुता कर सकते हैं। हे पाण्डु

नन्दन। मेरे सङ्ग जो तुम्हारा सम्बन्ध वा सुहृदता है, उस ही निमित्त तुम मुझे नियुक्त करो, तो मैं अवश्य भीष्मके सङ्ग युद्ध करूंगा। महाराज! यदि तुम मुझको नियुक्त करोगे, तो तुम्हारे निमित्त मैं क्या नहीं करसकता? यदि अर्ज्जुन भीष्मके वध करनेकी इच्छा न करेंगे, तो मैं धृतराष्ट्रकी सब सेनाके सम्मुख ही पुरुषोंमें श्रेष्ठ भीष्मको युद्धमें आवाहन करके अपने अस्त्रोंके जोरसे रथसे पृथ्वीपर गिरा दूंगा। जो पुरुष पाण्डवोंका शत्रु है, वह मेरा भी शत्रु है; जो मेरा शत्रु है, वह तुम्हारा भी वैरी है। हे राजन्! तुम्हारे भाई अर्ज्जुनके सङ्ग मेरा सम्बन्ध है, विशेष करके वह मेरे सखा और शिष्य है, मै अर्ज्जुनके निमित्त अपने शरीरसे मांस भी काटके दे सकता हूं, पुरुषसिंह अर्ज्जुन भी मेरे निमित्त प्राण त्याग कर सकते है। हम दोनोमें यह प्रतिज्ञा है, कि हम दोनों आपसमें एक दूसरेको परित्राण करेंगे, हे राजन्। इससे जिस प्रकारसे मैं युद्ध कर सकूंगा, तुम उस ही उपायसे मुझे युद्धमें नियुक्त करो। परन्तु विराट नगरमे सब राजाओंके बीच अर्ज्जुनने यह प्रतिज्ञा की थी, कि "मैं भीष्मका वध करूंगा" बुद्धिमान् अर्ज्जुन इस वचनकी रक्षा करनेके निमित्त यदि मुझसे अनुरोध करेंगे, तो मैं अवश्य ही उसका पालन करूंगा, इसमें कुछ सन्देह नहीं है, अथवा अर्ज्जुन ही युद्धमे शत्रुनाशन भीष्मका वध करें, अर्ज्जुनके वास्ते यह भार कुछ कठिन नही है; क्योंकि वह युद्धके निमित्त तैयार होने पर दूसरे पुरुषोंसे न होने योग्य कर्मोंको भी कर सकते है। अर्ज्जुन युद्धमें दैत्य दानवोंके सहित सम्पूर्ण देवताओंको भी नष्ट कर सकते है; तब क्या भीष्मका युद्धमें वध करेंगे, इसकी बात ही कौनसी है? मेरा [illegible] भीष्म आज तुम्हारा अनिष्ट करनेमें प्रवृत्त होरहे है, इससे उनकी बुद्धि [illegible] पराक्रम हीन और अल्पबुद्धि होगये हैं, इसही निमित्त वह कर्त्तव्य-कर्मोंको नहीं समझ सकते हैं, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

राजा युधिष्ठिर बोले, हे महाबाहो! हे माधव! तुम जो कुछ वचन कहते हो, वह सब ठीक है। तुम पुरुषसिंह हो, जब तुम ही मेरी ओर हो, तब अभिलाषाके अनुसार सम्पूर्ण विषय ही मुझे सदा प्राप्त होवेंगे। हे विजयदाता गोविन्द। जब मैंने तुमको अपना सहाय पाया है, तब इन्द्रके सहित सब देवताओंके भी जीत सकता हूं; तिस पर महारथ भीष्म तो तुच्छ ही है? परन्तु हे कृष्ण। तुमने कहा था, कि "मैं युद्ध नहीं करूंगा" इससे अब मैं तुमको निज स्वार्थके निमित्त युद्धसे नियुक्त करके मिथ्यावादी नहीं बनाया चाहता हूं, इससे तुम युद्ध न करके यथा उचित हम लोगोंकी सहायता करो। भीष्मने मेरे निकट युद्ध विषयक कार्य्यको एक प्रकारसे अङ्गीकार किया है, कि तुम्हारे हितके निमित्त मैं तुम्हें उत्तम मन्त्रणा प्रदान करूंगा; परन्तु तुम्हारी ओरसे किसी प्रकारसे भी युद्ध न करूंगा यह तुम मेरे वचनको सत्य जानो। हे मधुसूदन भीष्मके वधका उपाय पूछनेके वास्ते चलो हम सब लोग फिर उनके समीप गमन करें। हे सबके स्वामी वृष्णिनन्दन कृष्ण! चलो हम सब कोई मिलकर कुरुश्रेष्ठ भीष्म पितामहके निकट चलकर अपने विजयके निमित्त उनसे विचार करें; वह मेरे निमित्त हितकर और यथार्थ वचन कहेंगे, वह मुझसे जैसा कहेंगे, मैं वैसा ही उपाय करूंगा। हे कृष्ण! जब हम लोग बालक अवस्थामें पितृहीन हुए थे, तब उन्होंने ही हमको लालन पालन करके बड़ा किया था। वह देवव्रत पितामह [illegible] उत्तम बुद्धि देकर हमलोगोंके विजयके निमित्त उपाय बतावेंगे, [illegible] पिता समान, और [illegible] पितामह

मैंने वध करनेकी इच्छा की, तब हम लोगोंकी क्षत्रियजीविकाकी धिक्कार है।

सञ्जय बोले, महाराज! अनन्तर वृष्णिनन्दन कृष्ण कुरुनन्दन युधिष्ठिरसे बोले, हे महाबुद्धिमान् राजा युधिष्ठिर! तुमने जो वचन कहा, उसमें मेरी भी सम्मति है। गङ्गानन्दन पराक्रमी और देवव्रती भीष्म शत्रुओंको युद्धमें नेत्रसे देखकर ही भस्म कर सकते हैं, इससे उनके वधका उपाय पूंछनेके वास्ते तुम उनके समीप गमन करो। जब तुम उनसे पूछोगे, तो वह यथार्थ ही उत्तर देंगे, इससे चलो हमलोग उनसे ही परामर्श करनेके निमित्त उनके निकट गमन करें; हम सब भी उन शान्तनुनन्दन बूढ़े भीष्मके निकट चलकर उनसे परामर्श करेंगे; वहां पर जानेसे वह हमलोगोंको जिस प्रकारसे परामर्श देंगे; उसहीके अनुसार हमलोग शत्रुओंसे युद्ध करेंगे। हे राजन्! बलवान् पाण्डव और पराक्रमी कृष्णने ऐसा ही विचार करके शस्त्र और कवचको उतारके सबने मिलके भीष्मके शिविरमें जानेके निमित्त प्रस्थान किया। वहां पहुंचके शिविरमें प्रवेश कर शिर झुका कर भीष्म पितामहको प्रणाम किया। हे महाराज! पाण्डवलोग कुरुश्रेष्ठ पितामह भीष्मको शिर झुका कर प्रणाम करके उनकी यथा उचित रीतिसे पूजा करते हुए उनके शरणागत हुए।

महाबाहु भीष्म पितामह उन सबका स्वागत प्रश्न पूछके फिर बोले; तुम लोगोंकी प्रीतिके निमित्त कौनसा कार्य्य मुझको करना पड़ेगा, उसे तुम मुझसे कहो, यदि वह कार्य्य अत्यन्त कठिन भी होगा, तो भी मैं सब भांतिके प्रयत्न करके उसे पूर्ण करूंगा। जब गङ्गानन्दन भीष्मने बार बार प्रीतिपूर्व्वक ऐसा वचन कहा, तब राजा युधिष्ठिर दुःखित चित्तसे स्नेह युक्त यह वचन बोले, कि हे धर्म्मके जाननेवाले पितामह! मैं किस प्रकारसे युद्धमें विजय प्राप्त कर सकूंगा? कैसे राज्य पाऊंगा? और किस प्रकारसे प्रजाओंका नाश न होवेगा, तुम मुझसे यही सब उपाय वर्णन करो। हे महाबलवान् पितामह! हमलोग युद्धमें तुम्हारे तेजको किसी प्रकार भी नहीं सह सकते हैं; इससे तुम स्वयं ही अपने वधका उपाय वर्णन करो। हे पितामह! युद्धमें सदा ही तुम्हारा धनुष मण्डलाकार दिखाई देता है, युद्धमें तनिक भी तुम्हारा कोई छिद्र नहीं देख पड़ता। हे महाबाहो! तुम सूर्य्यके समान रथ पर स्थित होके किस समयमें बाण ग्रहण करके, साधते और धनुष पर रखके छोड़ते हो, वह हमलोग नहीं देख सकते। हे भरतर्षभ! हे शत्रुओंके नाश करनेवाले, तुम जब रथी, गजपति और घुड़सवारोंका वध करते रहते हो, उस समयमें कौन पुरुष तुम्हें जीतनेका उत्साह कर सकता है? हे पितामह! तुमने युद्धमें अपने बाणोंकी वर्षा करके अनेक पुरुषोंकी हत्या की है, हमारी महासेनाका तुमने बहुत ही क्षय किया है। जो हो, इस समय किस प्रकारसे हमलोग युद्धमें तुम्हें पराजित कर सकेंगे, जिस भांतिसे मुझे राज्य मिले और जैसे मेरी सेनाके पुरुषोंका कल्याण होवे, वही उपाय तुम मेरे निकट वर्णन करो।

हे राजन्! युधिष्ठिरको बात सुनकर शान्तनुनन्दन भीष्म उनसे बोले, हे धर्म्मके जाननेवाले कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर! युद्धमें जब तक मैं जीवित हूं तब तक तुम्हारे विजयकी सम्भावना नहीं है; तुमसे मैंने यह सत्य वचन कहा है। मेरे पराजित होने पर तुमलोग युद्धमें विजयी हो सकोगे। इससे यदि तुम लोग युद्धमें अपने विजयकी इच्छा करते हो, तो शीघ्र मेरे ऊपर शस्त्रोंका प्रहार करके मेरा वध करो। मैं तुम लोगोंको आज्ञा देता हूं, कि तुम सब कोई इच्छाके अनुसार मेरे ऊपर शस्त्रोंका प्रहार करो। मैं जो इस प्रकारसे

तुम लोगोंसे विदित हुआ हूं; इसी मैं अपना सुकृत तथा पुण्य समझता हूं। मेरे मारे जानेहीसे सम्पूर्ण कुरुसेना तथा कौरवोंका वध होगा; इसमें मैंने जो कुछ वचन कहा, तुम लोग वैसा ही उपाय करो।

राजा युधिष्ठिर बोले, युद्धमें तुम दण्डधारी यमराजके समान दीख पड़ते हो; हम लोग तुम्हें जैसे पराजित कर सकेंगे, वह उपाय तुम मुझसे वर्णन करो। इन्द्र, यम और वरुणको भी युद्धमें पराजित किया जा सकता है, परन्तु तुम्हें युद्धमें कोई पुरुष पराजित नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त इन्द्रके सहित सब देवता और दैत्य भी तुम्हें जीतनेमें समर्थ नहीं हैं।

भीष्म बोले, हे पाण्डव! तुम जो कहते हो, वह सब सत्य है। यदि मैं यत्नपूर्व्वक धनुष ग्रहण करके युद्धमें स्थित होऊं तो सब देवता और असुरोंके सहित इन्द्र भी मुझे जीतनेमें समर्थ नहीं हो सकेंगे। मेरे शस्त्र-रहित होनेपर ये ही पुरुषसिंह मेरा वध कर सकते हैं। शस्त्र-त्यागी, शस्त्रोंसे घायल होके पृथ्वीपर गिरे हुए, कवचहीन, ध्वजारहित, भागते, 'मैं तुम्हारा हूं' ऐसा कहके शरणमें आये हुए पुरुष, स्त्रीजाति, स्त्री नामधारी पुरुष, विकल हुए पुरुष, एक पुत्रक, सन्तानरहित और पापी पुरुषोंके सङ्ग युद्ध करनेकी मेरी इच्छा नहीं होती। हे राजन्! मेरे पहिलेके किये हुए सङ्कल्पको सुनो, मैं किसीको अमङ्गलिक ध्वजा देखनेसे उसके सङ्ग युद्ध नहीं करता। द्रुपदराजका पुत्र, युद्धमें अभिमानी, शूरवीर, क्रोधी, महारथ शिखण्डी जो तुम्हारी सेनामें स्थित है; वह पहिले कन्या होकर जन्मा, पीछे पुरुष होगया है, इस वृत्तान्तको तुम लोग विस्तारपूर्व्वक जानते हो। अर्जुन कवच धारण कर उसी शिखण्डीको आगे खड़ा करके पैने बाणोंसे मेरा वध करेंगे। उस शिखण्डीकी ध्वजा अमाङ्गलिक है विशेष करके वह कन्या होके उत्पन्न हुआ था, इससे मैं शस्त्रधारी होकर किसी प्रकारसे भी उसके ऊपर प्रहार करनेकी अभिलाष नहीं करता हूं। हे भरतर्षभ! पाण्डुपुत्र अर्ज्जुन उस शिखण्डीके पीछे खड़े होकर चारों ओरसे शीघ्रताके सहित अपने बाणोंसे मेरे ऊपर प्रहार करेंगे। युद्धभूमिमें खड़े होने पर कृष्ण और अर्ज्जुनके अतिरिक्त ऐसा कोई भी पुरुष इस पृथ्वीपर नहीं दीख पड़ता, जो युद्धमें मेरा वध कर सके। इससे यह अर्ज्जुन अपने सब अस्त्रोंके सहित गाण्डीव-धनुषको ग्रहण करके राजा द्रुपदके पुत्र शिखण्डीको मेरे सम्मुख खड़ा करके शीघ्रताके सहित मेरा वध करे, ऐसा होनेहीसे निश्चय तुम्हारा विजय होगा। हे कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर! मैंने जैसा कहा है, तुम उसीके अनुसार सब कर्म्म करना, ऐसा करनेहीसे इन सब उपस्थित धार्त्तराष्ट्रोंको युद्धमें पराजित कर सकोगे।

सञ्जय बोले, तिसके अनन्तर पाण्डव लोग भीष्म पितामहको प्रणाम करके उनकी आज्ञा लेकर अपने अपने शिविरोंमें गये। गङ्गापुत्र भीष्मके इस प्रकार वचनोंको सुनकर अर्ज्जुन अत्यन्त दुःखित होकर लज्जापूर्व्वक कृष्णसे बोले; हे माधव! कुरुकुलमें वृद्ध बुद्धिमान् गुरु भीष्म पितामहके सङ्ग मैं रणभूमिमें कैसे युद्ध कर सकता हूं। हे कृष्ण! बालक अवस्थामें खेलते हुए मैंने सम्पूर्ण शरीरमें धूलि लपेटकर महा यशस्वी महात्मा भीष्म पितामहकी गोदमें चढ़के उनके सब वस्त्रों और शरीरको धूलिसे मलिन किया था। वह मेरे पिता महात्मा पाण्डुके भी पिता हैं; परन्तु मैंने बालक अवस्थामें उनकी गोदमें बैठकर उन्हें "पिता" कहके पुकारा था; तब वह मुझसे बोले थे; कि हे भरतकुलप्रदीप! मैं तुम्हारा पिता नहीं हूं, मैं तुम्हारे पिताका पिता हूं।" ऐसे स्थानमें मैं किस प्रकारसे उनका

मेरी सेनाके सब पुरुष इच्छापूर्व्वक उनके ऊपर शस्त्रोंका प्रहार करें, परन्तु मैं महात्मा भीष्म पितामहके सङ्ग युद्ध न करूंगा; चाहे इससे मेरा विजय हो अथवा पराजय हो। हे कृष्ण! इस विषयमें मेरा ऐसा ही विचार है, इसमें तुम्हारा क्या मत है? श्रीकृष्णचन्द्र बोले, हे अर्जुन! तुमने क्षत्रिय धर्म्मको अवलम्बन करके पहिले यह प्रतिज्ञा की थी, कि मैं भीष्मको युद्धमें मारूंगा, इस समय उनको विना मारे तुम कैसे शान्त रह सकते हो? हे अर्ज्जुन! तुम युद्धदुर्म्मद गङ्गापुत्र भीष्मको, शीघ्र ही, रथसे पृथ्वी पर गिरा दो। भीष्मको विना मारे युद्धमें तुम्हारी जीत न हो सकेगी। भीष्मकी मृत्यु इसी प्रकारसे होगी, इसका निश्चय देवताओंने पहिलेहीसे कर रक्खा है; पहिले समयमें जैसा निश्चय हो चुका है, अवश्य ही सब कार्य्य उसी रीतिसे होगा; उसमें कुछ भी अन्यथा नहीं हो सकता। युद्धमें मुंह पसारे हुए यमराजके समान अत्यन्त पराक्रमी भीष्मको मारनेमें तुम्हारे अतिरिक्त और कोई भी समर्थ न होगा, वरन वज्रधारी इन्द्रभी उस महा बलवान् भीष्मको युद्धमें नहीं जीत सकेंगे। तुम भीष्मका वध करो इसमें कुछ भी अपने मनमें दुबिधा मत उत्पन्न करो। इस विषयमें महाबुद्धिमान् बृहस्पतिने पहिले समयमें जो कुछ कहा था, वह वचन तुम मुझसे सुनो, अनेक उत्तम गुणोंसे भूषित श्रेष्ठ तथा वृद्ध पुरुष भी यदि आततायी होवे अथवा दूसरा भी कोई पुरुष यदि किसीके प्राणका नाश करता हो, तो उसका वध करना उचित है। हे अर्ज्जुन! क्षत्रियोंका सदासे यही सनातन धर्म्म निश्चित हुआ है, कि पापरहित क्षत्रिय पुरुष शत्रुओंके सङ्ग युद्ध करें, प्रजाकी रक्षा करें और यज्ञ करें।

अर्ज्जुन बोले, हे कृष्ण! शिखण्डी ही भीष्मका वध करेगा, क्योंकि शिखण्डीको देखते ही भीष्म पितामह कभी उसके ऊपर अस्त्रोंको नहीं चलाते। इससे मैं यही विचार करता हूं, कि भीष्मके सामने शिखण्डीको खड़ा करके उसके पीछेसे उनके ऊपर अपने शस्त्रोंका प्रहार करूंगा; इसी उपायसे उनका वध कर सकूंगा। मैं युद्धमें महा धनुर्द्धारी महारथ योद्धाओंको अपने अस्त्रोंसे निवारण करूंगा, और शिखण्डी योद्धाओंमें श्रेष्ठ भीष्महीके ऊपर अपने शस्त्रोंको चलावेंगे। मैंने कुरुश्रेष्ठ भीष्मके निकट सुना है, कि उन्होंने कहा था; शिखण्डी पहिले कन्या होकर पीछे पुरुष हुआ है, इस प्रकारसे मैं शिखण्डीका वध नहीं करूंगा। कृष्णके सहित पाण्डव लोग महात्मा भीष्मकी आज्ञाके अनुसार ऐसा ही निश्चय करके प्रसन्न चित्तसे अपने अपने शिविरोंमें गये।

१०४ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! युद्धमें शिखण्डी किस प्रकारसे भीष्मके सम्मुख हुए और महात्मा भीष्म भी किस भांतिसे पाण्डवोंके सम्मुख होकर युद्धमें प्रवृत्त हुए; वह सब वृत्तान्त तुम मेरे समीप वर्णन करो।

सञ्जय बोले, महाराज! तिसके अनन्तर पाण्डवोंने शङ्ख, भेरी, मृदङ्ग, ढोल और नगाड़ोंको बजवाके सर्व्वशत्रुनिर्व्वहण नामका व्यूह बनाकर शिखण्डीको आगे करके युद्धके निमित्त यात्रा की। हे राजन्! शिखण्डी उस सब सेनासे सजे हुए व्यूहके आगे हुए, भीमसेन और अर्ज्जुन शिखण्डीके चक्ररक्षक हुए; द्रौपदीके सब पुत्र और पराक्रमी अभिमन्यु उसके पृष्ठरक्षक नियत हुए, महारथ सात्यकि और चेकितान उन सबके रक्षक बनाये गये। पाञ्चाल योद्धाओंसे रक्षित होकर धृष्टद्युम्न उन सबके पीछे स्थित हुए। हे भारत! तिसके पीछे सम्पूर्ण सेनाके स्वामी राजा युधिष्ठिर

सिंहनाद करते हुए नकुल सहदेवके सहित गमन करने लगे, उनके पीछे राजा विराट अपनी सेनाके सहित युद्धके निमित्त चलने लगे। उनके पीछे राजा द्रुपद चले। कैकयराज पांचो भाई और धृष्टकेतु उस व्यूहकी रक्षा करते हुए सबके पीछे चलने लगे। हे महाराज! पाण्डव लोग इसी प्रकारसे महा व्यूह बनाकर अपने प्राणोंकी आशा छोड़ कर रणभूमिमें तुम्हारी सेनाकी ओर दौड़े।

हे प्रजानाथ! कौरवोंने भी महारथ भीष्मको सब सेनाके आगे करके पाण्डवोंके सम्मुख गमन किया। तुम्हारे महावलवान् पराक्रमी पुत्र भीष्मकी रक्षा करनेमें प्रवृत्त हुए। तिसके पीछे महावली द्रोणाचार्य्य और उनके पुत्र महापराक्रमी अश्वत्थामा चले और उनके पीछे हाथियोंकी सेनासे युक्त होकर राजा भगदत्तने प्रस्थान किया। कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा राजा भगदत्तके अनुगामी हुए; उनके पीछे वलवान् काम्बोजराज सुदक्षिणने युद्धके निमित्त यात्रा की। मगधदेशके राजा जयत्सेन, सुबलपुत्र, वृहद्वल और सुशर्म्मा आदि दूसरे सब महाधनुर्द्धारी राजाओंने सम्पूर्ण सेनाकी रक्षा करते हुए सबके पीछे गमन किया। शान्तनुपुत्र भीष्म आसुर, पैशाच और राक्षस व्यूहोंके ओरसे नित्य ही एक नया व्यूह बनाया करते थे। हे भारत! अनन्तर दोनों ओरके योद्धाओंमें युद्ध आरम्भ हुआ। दोनों ओरके योद्धालोग आपसमें एक दूसरेका वध करके यमपुरीकी वृद्धि करने लगे; अर्जुन आदि पाण्डव लोग शिखण्डीको आगे करके तीक्ष्ण बाणोंको चलाते हुए भीष्मके सम्मुख हुए। [illegible] तब तुम्हारी सेनाको पीड़ित करना आरम्भ किया, तब हे [illegible] सब योद्धा लोग रुधिरसे [illegible] होकर परलोकमें गमन करने लगे। [illegible] और महारथ सात्यकि तुम्हारी [illegible] हुए पीड़ित करने लगे। तुम्हारी सेनाके सब योद्धा पाण्डवोंकी ओरके शूरवीर योद्धाओंके अस्त्रोंसे विकल होकर उनकी महासेनाको निवारण करनेमें समर्थ नहीं हुए, वे सब महारथ वीरोंकी अस्त्रोंसे चारों ओरसे पीड़ित होकर इधर उधर भागने लगे; तुम्हारी सेनाके सब योद्धाओंने पाण्डवों और सृञ्जयोंके तीक्ष्ण बाणोंसे अत्यन्त विद्ध और पीड़ित होकर किसीको भी अपना बचानेवाला नहीं पाया।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! महापराक्रमी भीष्मने मेरी सेनाको पाण्डवोंके अस्त्रोंसे पीड़ित देखकर जो कुछ कर्म्म किया था, वह तुम मेरे समीपमें वर्णन करो। हे पापरहित! बलवान् भीष्मने पाण्डवोंके सम्मुख होकर किस प्रकारसे चन्द्रवंशियोंका वध किया था? वह सब वृत्तान्त विस्तार पूर्व्वक तुम मुझसे कहो।

सञ्जय बोले, हे महाराज! जब तुम्हारे पुत्रोंकी सेना पाण्डव और सृञ्जयोंसे पीड़ित हुई, तब उस समयमें तुम्हारे पिता भीष्मने जो कुछ कर्म्म किया था, वह मैं तुमसे कहता हूं;—पराक्रमी पाण्डव लोग हर्षपूर्व्वक तुम्हारे पुत्रोंकी सेनाका वध करते हुए आगे बढ़े। हे राजन्! तब महावलवान् भीष्म हाथी, घोड़े और मनुष्योंसे युक्त अपनी सेनाको शत्रुओंके अस्त्रोंसे नष्ट होती देख कर उसे न सह सके। महाधनुर्द्धारी पराक्रमी भीष्म अपने प्राणको त्यागनेके वास्ते तैयार होकर तीक्ष्ण बाण वत्सदन्त और अञ्जलिक अस्त्रोंको सम्पूर्ण पाण्डव, पाञ्चाल और सृञ्जयोंके ऊपर चलाने लगे। उन्होंने रणभूमिमें क्रुद्ध होकर पाण्डवोंके पांच महारथियोंको [illegible] निवारण करके पराक्रमके सहित क्रोधपूर्व्वक नाना भांतिके [illegible] अस्त्रोंकी वर्षा करके उनके [illegible] [illegible]

वोंकी सेनाके शूरवीरोंमेंसे रथियोंको रथ परसे, हाथीसवारोंको हाथी परसे और घुड़सवारोंको घोड़ोंकी पीठसे अपने अस्त्रोंके प्रभावसे मारके पृथ्वी पर गिरा दिया; पैदल सेनाको भी अपने बाणोंसे विद्ध कर पृथ्वी पर सुला दिया। जिस प्रकारसे असुर लोग वज्रधारी इन्द्रके सम्मुख हुए थे, उसी प्रकारसे पाण्डव लोग शीघ्रताके सहित महारथ भीष्मके सम्मुख उपस्थित हुए। उस समय घोर मूर्त्ति धारण किये हुए इन्द्रके बज्रके समान स्पर्श करने वाले तीक्ष्ण बाण सब दिशाओंमें चलते हुए दीख पड़े। युद्धके समय इन्द्रधनुषके समान महात्मा भीष्मका धनुष सदा ही मण्डलाकार दीख पड़ता था। हे राजन्। तुम्हारे पुत्रलोग युद्धमें उनके ऐसे पराक्रम तथा कठिन कर्मको देखकर विस्मित हुए और उनकी अत्यन्त ही प्रशंसा करने लगे। जैसे देवताओंने विप्रचित्ति असुरको रणभूमिमें अवलोकन किया था, वैसे ही पाण्डव लोग अकुला कर महापराक्रमी युद्ध कार्य्यके जाननेवाले भीष्म पितामहको देखने लगे; उनको मुख पसारे हुए कालके समान रणभूमिमें खड़ा देखकर कोई भी उन्हें निवारण न कर सका। जैसे प्रचण्ड अग्नि जङ्गलोंको भस्म कर देती है, वैसे ही भीष्म पितामह दशवें दिन अपने तीक्ष्ण तथा चोखे बाणोंसे शिखण्डीकी रथ-सेनाको जलाने लगे। तब शिखण्डीने क्रोधी सर्प तथा काल प्रेरित यमराजके समान महा बली भीष्मके दोनों स्तनोंके बीचमें तीन बाणोंसे प्रहार किया। भीष्म शिखण्डीके उन बाणोंसे विद्ध और क्रुद्ध होकर हंसके अपना अभिप्राय प्रकाशित करते हुए शिखण्डीसे बोले, तुम इच्छाके अनुसार अपने बाणोंको मेरे ऊपर चलाओ चाहे न चलाओ; परन्तु मैं किसी प्रकारसे भी तुम्हारे सङ्ग युद्ध न करूंगा; क्योंकि विधाताने जो तुमको पहिले स्त्रीरूपसे उत्पन्न किया था, तुम वही शिखण्डिनी हो।

शिखण्डी उस समय भीष्मकी यह बात सुनकर क्रोधसे मूर्च्छित होकर होठोंको चाटते हुए उनसे यह वचन बोले;—हे महाबाहो! तुम जो क्षत्रियोंका नाश करनेवाले हो, मैं जानता हूं, परशुरामजीके सङ्गमें तुम्हारा संग्राम हुआ था, वह भी मैंने सुना है और तुम्हारे अलौकिक प्रभाव और कीर्त्तिको भी मैंने बहुत प्रकारसे सुना है; तुम्हारे ऐसे प्रभाव और पराक्रमको जानकर भी आज मैं तुम्हारे सङ्गमें युद्ध करूंगा। हे पुरुषश्रेष्ठ! मैं तुम्हारे समीपमें सत्य प्रतिज्ञा करता हूं, कि मैं अपने और पाण्डवोंके प्रिय कार्य्य करनेके निमित्त आज तुमसे युद्ध करके निश्चय ही तुम्हारा वध करूंगा, मेरे इस वचनको सुनकर तुम पराक्रमके अनुसार कार्य्य करो। हे युद्ध जीतनेवाले भीष्म! तुम इच्छा पूर्वक मेरे ऊपर बाण चलाओ, चाहे न चलाओ; परन्तु मेरे सम्मुखसे आज जीवित न बच सकोगे। इससे अब तुम इस लोकको अच्छी भांतिसे देख लो, क्योंकि फिर न देखने पाओगे।

सञ्जय बोले, हे राजन्! शिखण्डीने भीष्मके इसी प्रकारसे वचनरूपी बाणोंसे विद्ध करके सरल दण्डयुक्त पांच बाणसे उन्हें विद्ध किया। महारथ अर्जुनने शिखण्डीकी बातको सुनकर समझा कि "यही भीष्मके वधका समय है," ऐसा जान कर शिखण्डीसे बोले, हे महाबाहो! मैं शत्रुओंकी सब सेना को तितर बितर करता हुआ तुम्हारा अनुगामी बनूंगा; तुम सावधान होकर महापराक्रमी भीष्मपर आक्रमण करो महाबल भीष्म आज तुमको पीड़ित न कर सकेंगे, इससे यत्न पूर्वक शीघ्र ही तुम भीष्मकी ओर बढ़ो। यदि आज तुम भीष्मको विना वध किये ही रणभूमिसे लौट चलोगे, तो सब लोग तुम्हारी और मेरी हंसी करेंगे। हे वीर! जिससे हम दोनोंकी सब लोगोंके बीच हंसी न होवे, तुम वैसा ही यत्न करो;—भीष्म पिता-

इका शीघ्र ही इस रणभूमिमें वध करके नको रथसे पृथ्वीपर गिरा दो। हे महाबलवान् शिखण्डी! मैं इस युद्धमें सम्पूर्ण रथियोंको निवारण करके तुम्हारी रक्षा करूंगा; तुम भीष्मका वध करनेके निमित्त यत्न करो। द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा, दुर्योधन, चित्रसेन, विकर्ण, सिन्धुराज जयद्रथ, अवन्तिनगरीके राजा विन्द और अनुविन्द, काम्बोजराज सुदक्षिण, पराक्रमसे युक्त राजा भगदत्त, महाबली पराक्रमी मगधराज, सोमदत्तका पुत्र भूरिश्रवा, राक्षस और शूरवीर महारथियोंको मैं इस प्रकारसे निवारण करूंगा, जैसे समुद्रके वेगको तट रोकता है; इसके अतिरिक्त महाबलवान् युद्ध करनेवाले सम्पूर्ण कौरवोंका भी एक ही समयमें निवारण करूंगा; इससे तुम शीघ्र ही भीष्म पितामहका वध करो।

१०५ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! पाञ्चालराजके पुत्र शिखण्डीने युद्धमें क्रुद्ध होकर ब्रह्मचर्य्य व्रत करनेवाले, धर्मात्मा गङ्गानन्दन भीष्मपर किस प्रकारसे आक्रमण किया था? पाण्डवोंकी ओरके कौन कौनसे योद्धालोग शीघ्रताके सहित क्रुद्ध होकर शस्त्रधारी शिखण्डीकी रक्षा करनेमें प्रवृत्त हुए थे? महाबलवान् शान्तनु-पुत्र भीष्मने उस दशवें दिन किस भांतिसे पाण्डव और सृञ्जयोंके सङ्ग युद्ध किया था? शिखण्डीने भीष्मके सम्मुख होकर उनपर आक्रमण किया यह सुनके नहीं सहा जाता है। शिखण्डीने जब भीष्मके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा की उस समय भीष्मका रथ तो नहीं टूट गया था अथवा उनका धनुष तो नहीं कट गया था।

सञ्जय बोले, हे भारत! युद्ध करते हुए भीष्मका न रथ ही टूटा और धनुष ही काटा था, वह अपने तीक्ष्ण बाणोंसे शत्रुओंका नाश कर रहे थे, तुम्हारी ओरके कई सौ और कई हजार महारथी, गजपति और घुड़सवार योद्धा सज्जित होके भीष्म पितामहको आगे करके युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए थे। हे राजन्! युद्ध जीतनेवाले भीष्मने प्रतिदिन अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंका नाश किया था। वह महाधनुर्द्धारी भीष्म दशवें दिन युद्धभूमिमें जब शत्रु सेनाका अपने अस्त्रोंसे नाश कर रहे थे, उस समय पाण्डव और पाञ्चाल योद्धा लोग उनका पराक्रम देखकर उन्हें निवारण करनेकी समर्थ नहीं हुए। पाण्डवोंकी सेनाके शूरवीर योद्धा सैकड़ों तथा सहस्रों बाणोंको चला कर भी महापराक्रमी भीष्मका युद्धमें निवारण नहीं कर सके; क्योंकि दण्डधारी यमराजके समान सेनापति भीष्मको रणभूमिमें पराजित करनेकी उनका सामर्थ्य न हुआ। महाराज! तिसके अनन्तर सव्यसाची अर्ज्जुनने सम्पूर्ण रथियोंको भयभीत करके भीष्मके समीपमें गमन किया; वह बलपूर्व्वक सिंहनाद और बार बार धनुष टङ्कार करके अपने तीक्ष्ण बाणोंको चलाते हुए रणभूमिमें घूमने लगे। हे भारत! अर्ज्जुनके सिंहनाद और गाण्डीव धनुषके शब्दको सुनकर तुम्हारी सम्पूर्ण सेना भय-भीत होकर इस भांति भागने लगी, जैसे सिंहका शब्द सुन कर हरिणोंका समूह शीघ्रतासे भाग जाता है। राजा दुर्योधन अर्ज्जुनको युद्धमें जययुक्त और अपनी सेनाको अत्यन्त पीड़ित और भागती हुई देखकर दुःखित होके भीष्म पितामहसे बोले,—हे पितामह! यह देखो, कृष्ण सारथीके सहित श्वेतवाहन अर्ज्जुन मेरी सेनाका इस प्रकारसे नाश कर रहा है; जैसे अग्नि वनको भस्म कर देती है, इसलिये मेरी सम्पूर्ण सेना युद्धमें अर्ज्जुनके बाणोंसे पी[illegible]

होके चारों ओर भाग रही है। हे शत्रुनाशन! जैसे गोपाल वनमें गौओंको मार पीटके अपने वशमें कर लेता है, वैसे ही अर्ज्जुन भी मेरी सेनाको अपने अस्त्र शस्त्रोंसे पीड़ित करके युद्ध-भूमिसे भगा रहा है, मेरी सेना जगह जगह अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित होकर इधर उधर भाग रही है और दुःखसे जीतने योग्य भीम भी उस मेरी सेनाको तितर बितर कर रहा है। इसके अतिरिक्त सात्यकि, चेकितान, नकुल, सहदेव और पराक्रमी अभिमन्यु आदि रथी योद्धा भी हमारी सेनाको छिन्नभिन्न कर रहे हैं। शूरता और वीरतासे युक्त धृष्टद्युम्न और राक्षस घटोत्कच भी शीघ्रताके सहित मेरी सेनाको रणभूमिसे भगा रहे हैं। हे भारत! तुम देवताओंके समान पराक्रमी हो, तुम्हारे अतिरिक्त इन सब महारथियोंसे पीड़ित हुई मेरी सेनाकी रक्षा और इन सबके सङ्ग युद्ध करनेका उपाय मैं दूसरा कुछ भी नहीं देख सकता हूं; इससे तुम शीघ्रताके सहित इन सब महारथियोंका युद्धमें निवारण करो, मेरी सेनाका अर्ज्जुन आदि महारथियोंके बाणोंसे नाश होनेसे बचाओ। महाराज! शान्तनुपुत्र भीष्म दुर्य्योधनका यह वचन सुनकर क्षणभर सोच विचार अपना कर्त्तव्य-कर्म्म निश्चय करके दुर्य्योधनको धीरज देते हुए यह वचन बोले,—हे प्रजानाथ महा बलवान् राजा दुर्य्योधन! मैंने तुम्हारे समीप पहिले यह प्रतिज्ञा की थी, कि सग्राममें दश हजार योद्धाओंको मारकर तब युद्धसे निवृत्त होऊंगा, जो कुछ मैंने प्रतिज्ञा की थी, उसे पूर्ण भी किया है, परन्तु आज भी संग्राममें बड़ा कर्म्म करूंगा। या तो आज मै पाण्डवोंको मारूंगा, अथवा उन लोगोंके अस्त्रोंसे मरकर रणभूमिमें शयन करूंगा। आज मैं तुम्हारे सम्मुख ही स्वामीके दिये हुए अन्न आदि ऋणोंसे मुक्त होऊंगा। महा पराक्रमी दुःखसे जीते जाने योग्य महात्मा भीष्मने ऐसा कहकर हाथियोंके ऊपर बाणोंकी वर्षा करते हुए पाण्डवोंकी से[illegible] आक्रमण किया। हे भारत! पाण्डव [illegible] रणभूमिमें स्थित क्रोधी सर्पके समान [illegible] भीष्मको युद्धसे निवारण करने लगे। हे राज[illegible] भीष्मने अपनी शक्तिके अनुसार दशवें दि[illegible] सौ हजार योद्धाओंका वध किया। जैसे सू[illegible] अपने किरणोंसे जल आकर्षण करता [illegible] वैसे ही महात्मा भीष्मने भी पाञ्चालदेशी[illegible] योद्धाओंके तेजका आकर्षण कर लिया। [illegible] राजन्! वह सवारोंके सहित दश हजार हाथ[illegible] दश हजार घोड़े और पूरे दो लाख पै[illegible] चलनेवाले योद्धाओंका वध करके [illegible] धूएंसे रहित अग्निके समान विराजमान हु[illegible] पाण्डवोंकी सेनामें कोई भी पुरुष ऐसा [illegible] था, जो उत्तरायणकालके तपते हुए सूर्य[illegible] समान महात्मा भीष्मकी ओर देख सकत[illegible] अनन्तर पाण्डव और सृञ्जय प्रभृति महार[illegible] योद्धा भीष्मके बाणोंसे पीड़ित होकर उ[illegible] वधके निमित्त शीघ्रतासे आगे बढ़े। [illegible] करते हुए शान्तनुपुत्र भीष्म उस सम[illegible] बहुतसे योद्धाओंसे घिरकर ऐसे शोभाय[illegible] हुए, जैसे काले रङ्गके बादलोंसे छिप[illegible] पर्व्वतोंमें श्रेष्ठ सुमेरु गिरि शोभित होता [illegible] तुम्हारे सब पुत्र भी बड़ी भारी सेनाके स[illegible] गङ्गानन्दन भीष्मकी चारों ओरसे घेर[illegible] उनकी रक्षा करनेके निमित्त वहांपर उपस्थि[illegible] हुए।

१०६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! अर्ज्जुनने [illegible] भीष्मका पराक्रम देखकर शिखण्डीसे क[illegible] तुम भीष्म पितामहके सङ्ग युद्ध करनेमें त[illegible] हो जाओ, आज तुम किसी प्रकारसे [illegible] उनका कुछ भय मत करो। मैं अपने ती[illegible] बाणोंसे विद्ध करके उनको उत्तम र[illegible]

पृथ्वीपर गिरा दूंगा। हे भारत! जब अर्ज्जुनने शिखण्डीसे ऐसा कहा, तब शिखण्डीने उनका वचन सुनकर भीष्मके निकट गमन किया। बूढ़े राजा विराट, द्रुपद और कुन्तिभोज भी अस्त्र शस्त्रोंको धारण करके अपने पुत्रके सहित भीष्मकी ओर दौड़े। नकुल, सहदेव और धर्म्मराज युधिष्ठिर तथा सम्पूर्ण सेनाके वीरोंने भीष्मपर आक्रमण किया। तुम्हारी सेनाके जिन जिन योद्धाओंने इन उपस्थित महारथियोंका सामना किया, वह सब वृत्तान्त मैं विस्तारपूर्व्वक तुम्हारे निकट वर्णन करता हूं, तुम सुनो। महाराज! जैसे व्याघ्र वृषपर आक्रमण करता है, वैसे ही भीष्मके समीपमें चित्रसेनने सम्पूर्ण चेकितान की सेनापर आक्रमण किया; कृतवर्म्मा भीष्मके समीप आये हुए धृष्टद्युम्नको शीघ्रताके सहित यत्नपूर्व्वक निवारण करनेमें प्रवृत्त हुए। भूरिश्रवा भीष्मका वध करनेके वास्ते उनके सम्मुख आये हुए भीमसेनको युद्धसे निवारण करने लगे। विकर्ण भीष्मकी रक्षाके निमित्त बहुतसे बाणोंको चलाकर नकुलको युद्धसे हटाने लगे। कृपाचार्य्य क्रुद्ध होकर भीष्मके रथके समीपमें पहुंचे हुए सहदेवको निवारण करने लगे। बलवान् दुर्म्मुख भीष्मके वधकी इच्छा करनेवाले महाक्रूर भीमसेनके पुत्र राक्षस घटोत्कचकी ओर दौड़े। ऋष्यशृङ्गका पुत्र अलम्बुष राक्षस सात्यकीका निवारण करने लगा। काम्बोज-राज सुदक्षिण भीष्मके रथके समीप पहुंचे हुए अभिमन्युको यत्नपूर्व्वक निवारण करने लगे। अश्वत्थामा क्रुद्ध होकर बूढ़े राजा विराट और द्रुपदको दोनोंको निवारण करने लगे। द्रोणाचार्य्य यत्नपूर्व्वक भीष्मके वधकी इच्छा करनेवाले धर्मराज युधिष्ठिरको युद्धसे निवारण करनेमें प्रवृत्त हुए। अर्ज्जुन शिखण्डीको आगे करके अपने बाणोंसे इस ओर तुम्हारी सेनाके योद्धाओंको भस्म करते हुए जब भीष्मके सम्मुख उपस्थित हुए, तब महा धनुर्द्धारी दुःशासन सावधान होकर उनको निवारण करनेमें प्रवृत्त हुए। तुम्हारी-सेनाके और दूसरे सब शूरवीर योद्धा भीष्मके सम्मुख आये हुए पाण्डवोंकी सेनाके दूसरे सब महारथी योद्धाओंको निवारण करने लगे। धृष्टद्युम्न क्रुद्ध होकर अपनी सेनाके सहित केवल भीष्महीकी ओर बढ़े और जोरसे पुकारकर बार बार सब शूरवीरोंसे यह कहने लगे, कि कुरुनन्दन अर्ज्जुन भीष्मके सम्मुख युद्ध करनेके निमित्त गमन कर रहे हैं, अब तुम लोग कुछ भी भय मत करो; शीघ्रताके सहित भीष्मकी ओर दौड़ो; अब भीष्म तुम लोगोंपर आक्रमण नहीं कर सकेंगे। संग्रामभूमिमें इन्द्र भी अर्ज्जुनके सङ्ग युद्ध करनेका उत्साह नहीं कर सकते, तब बलहीन और थोड़े पराक्रमवाले भीष्म उनका क्या करेंगे? पाण्डवोंकी सेनाके महारथी योद्धा लोग सेनापति धृष्टद्युम्नकी बात सुनकर हर्षपूर्व्वक भीष्मके रथकी ओर दौड़े- तुम्हारी ओरके महाबलवान् योद्धा लोग प्रचण्ड अग्निके समान तेजस्वी उन महारथियोंको आते हुए देखके हर्षित होकर उनको निवारण करनेमें प्रवृत्त हुए। महारथ दुःशासन भीष्मके जीवनकी अभिलाष करके भय छोड़के अर्ज्जुनकी ओर दौड़े। पराक्रमी पाण्डवोंने भीष्मके रथके समीपमें तुम्हारे पक्षपर आक्रमण किया। हे राजन्! इस स्थानपर मैंने एक अद्भुत कर्म यह देखा, कि अर्ज्जुन दुःशासन के रथके समीपमें पहुंचकर फिर वहांसे आगे न बढ़ सके; जिस प्रकारसे तट समुद्रके वेगको रोकता है, वैसे ही दुःशासनने अर्ज्जुनका निवारण किया। वे दोनों ही रथियोंमें श्रेष्ठ, दोनों ही पराक्रमी और दोनों ही शोभासे चन्द्रमा और सूर्य्यके समान प्रकाशित हुए। वे दोनों अब हुए एक दूसरेके वधकी इच्छासे

युद्ध करने लगे, जैसे पहिले समयमें मयासुर और इन्द्रका युद्ध हुआ था। महाराज! दुःशासनने अर्ज्जुनपर तीन बाण और कृष्णके ऊपर बीस बाणोंसे प्रहार किया। तिसके अनन्तर अर्ज्जुनने कृष्णको पीड़ित देखकर सौ बाणोंसे दुःशासनको विद्ध किया; वे सब बाण दुःशासनके कवचको भेद कर उनके रुधिरको पीने लगे। तब दुःशासनने क्रुद्ध होकर पांच बाणोंसे अर्ज्जुनका ललाट विद्ध किया। महाराज! जैसे सुमेरु पर्व्वत बहुत ऊंचे शृङ्गसे शोभित होता है, वैसे ही अर्ज्जुन भी माथेमें विद्ध हुए उन बाणोंसे संग्राम भूमिमें शोभायमान हुए। महाधनुर्द्धारी अर्ज्जुन दुःशासनके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर फूले हुए पलाश वृक्षके समान रणभूमिमें दिखाई देने लगे। अनन्तर जैसे पूर्णमासीके दिन राहु अत्यन्त क्रुद्ध होकर चन्द्रमाको पीड़ित करता है, वैसे ही अर्ज्जुन क्रुद्ध होकर दुःशासनको पीड़ित करने लगे। हे प्रजानाथ! दुःशासनने अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित होकर शिलापर घिसे हुए कङ्क-पत्र शोभित बाणोंसे अर्ज्जुनको फिर विद्ध किया। तब अर्ज्जुनने तीन बाणोंसे दुःशासनका धनुष और रथ काट कर उनको नौ बाणोंसे विद्ध किया। फिर दुःशासनने दूसरा धनुष ग्रहण करके भीष्मके सम्मुख स्थित हुए अर्ज्जुनको दोनों भुजा और वक्षस्थलमें पचीस बाणोंसे प्रहार किया। हे राजन्! अनन्तर शत्रुनाशन अर्ज्जुनने क्रुद्ध होकर यमदण्डके समान भयङ्कर अनेक बाण दुःशासनके ऊपर चलाये। दुःशासनने यत्नपूर्व्वक सावधान होकर अर्ज्जुनके उन बाणोंको मार्गहीमें काटके गिरा दिया; फिर अपने तीक्ष्ण बाणोंसे अर्ज्जुनको विद्ध किया, वह कठिन कार्य्य अचरजकी भांति दिखाई पड़ा। तिसके अनन्तर अर्ज्जुनने अत्यन्त क्रुद्ध होकर धनुष पर उत्तम शिलासे घिसे हुए चोखे सुवर्ण युक्त अनेक बाणोंको चढ़ा कर दुःशासनकी ओर चलाया। हे राजन्! जैसे हंसोंका समूह तालाबको पाकर उसमें उतरता है, वैसे ही अर्ज्जुनके चलाये हुए वे सब बाण दुःशासनके शरीरमें घुस गये। तब तुम्हारे पुत्र दुःशासन संग्राममें अर्ज्जुनको त्याग कर शीघ्रताके सहित भीष्मके रथ पर चढ़ गये, उस समय विपदरूपी अगाध समुद्रमें डूबते हुए दुःशासनके पक्षमें भीष्म ही द्वीपस्वरूप हुए। अनन्तर पराक्रमी दुःशासन सावधान होकर फिर अर्ज्जुनको निवारण करने लगे। जैसे इन्द्रने वृत्रासुरको निवारण किया था, वैसे ही भारी शरीरवाला तुम्हारा पुत्र दुःशासन उत्तम शिला पर घिसे हुए तीक्ष्ण बाणोंसे अर्ज्जुनको विद्ध करने लगा, परन्तु उससे अर्ज्जुन पीड़ित नहीं हुए।

१०७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! महाधनुर्द्धारी ऋष्यशृङ्ग पुत्र राक्षस अलम्बुष भीष्मकी रक्षाके निमित्त उनके सम्मुख उपस्थित होकर बलवान् सात्यकिको युद्धसे निवारण करनेमें प्रवृत्त हुआ। यदुकुलनन्दन सात्यकिने अत्यन्त क्रुद्ध होकर हंसते हंसते नौ बाणोंसे राक्षस अलम्बुषको पीड़ित किया। उसी प्रकारसे राक्षसेन्द्र अलम्बुषने भी नौ बाणोंसे शिनिपौत्र सात्यकिके ऊपर प्रहार किया। तब पराक्रमी सात्यकिने अत्यन्त क्रुद्ध होकर अलम्बुषके ऊपर अपने बाणोंको चलाना आरम्भ किया। तिसके अनन्तर अलम्बुषने सत्य पराक्रमी, महाबाहु सात्यकिको तीक्ष्ण-बाणोंसे विद्ध करके सिंहनाद किया। तेजस्वी सात्यकि उस समय अलम्बुष राक्षसके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर धीरज अवलम्बन करके सिंहनाद करने लगे। तिसके अनन्तर जैसे बड़े हाथीको अंकुशसे पीड़ित करते हैं, उसी भांतिसे भगदत्तने क्रुद्ध होकर

शिलापर घिसे हुए तीक्ष्ण-बाणोंसे सात्यकिके ऊपर प्रहार किया। रथियोंमें श्रेष्ठ सात्यकि राक्षस अलम्बुषको त्याग कर राजा भगदत्तके ऊपर अपने बाणोंको चलाने लगे। राजा भगदत्तने शीघ्रताके सहित अपने चोखे बाणोंसे सात्यकिका धनुष काट दिया। शत्रुनाशन सात्यकिने एक दूसरा वेगवान् धनुष ग्रहण करके तीक्ष्ण-बाणोंसे राजा भगदत्तको विद्ध किया। महाधनुर्द्धारी राजा भगदत्तने सात्यकिके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर होंठोको काटते हुए सुवर्णभूषित लोहमयी यमदण्डके समान महा भयङ्कर एक दृढ़ शक्ति सात्यकिकी ओर चलाई। सात्यकिने भगदत्तके हाथसे छूटी हुई उस शक्तिको शीघ्रताके सहित सम्मुख आती हुई देखकर उसको अपने बाणसे काटके दो टुकड़े कर दिया, वह शक्ति महा लुक्काके समान तेजहीन होकर पृथ्वीमें गिर पड़ी। हे राजन्! तुम्हारे पुत्रोंने भगदत्त की शक्तिको निष्फल होती हुई देखकर बड़ी भारी रथसेनाको सङ्ग लेकर सात्यकिको चारों ओरसे घेर लिया। वृष्णिवंशियोंके महारथ सात्यकिको रथियोंकी सेनासे घिरा हुआ देखकर राजा दुर्य्योधन अपने सब भाइयोंसे हर्षपूर्वक यह वचन बोले, हे कुरुनन्दन वीर पुरुषो! जिसमें तुमलोगोंके निकटसे सात्यकि इस रथ-सेनामेंसे जीतेजी न निकल सके, तुम लोग वैसा ही उपाय करो; मेरे विचारमें सात्यकिके मारे जाने पर पाण्डवोंकी महासेनाका नाश होगा। तुम्हारे सब पुत्र दुर्य्योधनकी आज्ञाको मान कर भीष्मके समीप ही सात्यकिके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। हे राजन्! पराक्रमी काम्बोजराज अभिमन्युको भीष्मके और आते देखके उनको युद्धमें निवारण करने लगे। काम्बोजराज सुदक्षिणने भीष्मके [illegible] अभिमुख करके कई एक तीक्ष्ण [illegible] अभिमन्युको विद्ध करके फिर चौंसठ

बाणोंसे उन्हें विद्ध किया, और फिर पांच बाणोंसे उनको पुनर्वार विद्ध करके नौ बाणोंसे उनके सारथीको विद्ध किया। उन दोनोंके समागमसे वहां पर महाघोर संग्राम हुआ, क्योंकि शत्रुनाशन शिखण्डी भीष्मकी ओर बढ़े थे। बूढ़े राजा विराट और द्रुपदने बड़ी सेनाको निवारण करके भीष्मपर आक्रमण किया। रथियोंमें श्रेष्ठ अश्वत्थामा क्रुद्ध होकर विराट और द्रुपदकी ओर वेगसे दौड़े; फिर उन दोनों महारथियोंके सङ्ग अश्वत्थामाका संग्राम होने लगा। शत्रुनाशन विराटने महाधनुर्द्धारी द्रोणाचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामाको दश बाणोंसे विद्ध किया और द्रुपदने भी शिलापर घिसे हुए तीन बाणोंसे अश्वत्थामाके ऊपर प्रहार किया। वे महाबलवान् दोनो महारथ अश्वत्थामाके ऊपर बाणोंको चलाने लगे। अश्वत्थामाने भी भीष्मके समीप उपस्थित हुए द्रुपद और विराटको अनेक बाणोंसे विद्ध किया, उन दोनों बूढ़े राजाओंका उस समय मैंने यह अद्भुत पराक्रम देखा, कि वे लोग अश्वत्थामाके धनुषसे छूटे हुए बाणोंका निवारण करने लगे। अनन्तर कृपाचार्य्यने सहदेवको भीष्मकी ओर आते देख कर जैसे वनमें एक मतवारा हाथी दूसरे मतवारे हाथीकी ओर जाकर उसपर आक्रमण करता है, वैसे ही सहदेवपर आक्रमण किया। पराक्रमी कृपाचार्य्यने माद्रीपुत्र सहदेवको सत्तर बाणोंसे विद्ध किया। सहदेवने अपने बाणोंको चला कर कृपाचार्य्यके धनुषको काट कर दो खण्ड कर दिया, कृपाचार्य्यका जब धनुष कट गया, तब सहदेवने नौ बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। अनन्तर कृपाचार्य्यने दूसरा धनुष लेकर भीष्मकी रक्षाकी अभिलाष करके माद्रीपुत्र सहदेवको दश बाणोंसे प्रहार किया, पाण्डुपुत्र सहदेवने भी भीष्मके [illegible] करके कृपाचार्य्यको [illegible] तीक्ष्ण बाणोंसे प्रहार किया,

महावली पुरुष सिंहोंका अत्यन्त ही भयङ्कर महा घोर सग्राम होने लगा। भीष्मकी रक्षा करनेवाले महा बलवान् शत्रुनाशन विकर्णने रणभूमिमें क्रुद्ध होकर साठ बाणोंसे नकुलको विद्ध किया। नकुलने भी तुम्हारे पुत्र विकर्णके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर सत्तर बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। शत्रुनाशन ये दोनों वीर भीष्मके निमित्त गौ और वृषभके समान होकर एक दूसरेके ऊपर अपने बाणोंको चलाने लगे। पराक्रमी दुर्मुखने राक्षस घटोत्कचकी सेनाका नाश करते हुए भीष्मकी ओर बढ़े आते देखकर उसकी ओर अपने रथको चलाया। हिड़िम्बापुत्र घटोत्कचने अपने तीक्ष्ण बाणोंसे दुर्मुखकी छातीमें प्रहार किया। शत्रुनाशन दुर्मुखने सिंहनाद करके हर्षके सहित साठ चोखे बाणोंसे भीमसेनके पुत्र घटोत्कचको विद्ध किया। महारथ कृतवर्म्मा धृष्टद्युम्नको भीष्मकी ओर आते देखकर उनको निवारण करने लगे। धृष्टद्युम्न लोहमय पांच बाणोंसे कृतवर्म्माको विद्ध करके फिर "खड़ा रह! खड़ा रह।" कहके पचास बाणोंसे पुनर्व्वार विद्ध किया। महारथ कृतवर्म्मा भी धृष्टद्युम्नको अपने बाणोंसे पीड़ित करने लगे। अनन्तर धृष्टद्युम्नने कङ्कपत्र युक्त भली भाँति शिलापर घिसे हुए चोखे नौ बाणोंसे कृतवर्म्माको विद्ध किया। जैसे वृत्रासुरके सङ्ग इन्द्रका युद्ध हुआ था, वैसे ही भीष्मके निमित्त उन दोनोंमें महा संग्राम होने लगा। सोमदत्तके पुत्र भूरिश्रवाने शीघ्रताके सहित आये हुए भीमसेनपर "खड़ा रह। खड़ा रह!" कहके आक्रमण किया। अनन्तर सुवर्णभूषित तीक्ष्ण बाणोंसे भीमसेनके दोनों स्तनोंके वीचमें प्रहार किया। हे राजन्! पहिले समय क्रौञ्च नामका असुर जिस भाँतिसे स्वामिकार्त्तिककी शक्तिसे विद्ध होकर शोभित हुआ था, प्रतापवान् भीमसेनकी छातीमें भी वह सब बाण उसी भांतिसे शोभित होने लगे। वे दोनों क्रुद्ध होकर शिलापर घिसे हुए सूर्य्य और चन्द्रमाके समान बाणोंको एक दूसरेकी ओर बार बार चलाने लगे। भीष्मका वध करनेकी इच्छासे भीम भूरिश्रवाके ऊपर और भूरिश्रवा भीष्मकी रक्षाके निमित्त भीमसेनके ऊपर अपने बाणोंको चलाते हुए अपने पराक्रमको प्रकाशित करने लगे। हे कुरुराज! युधिष्ठिर बड़ी सेनाके सहित भीष्मकी ओर आते थे, परन्तु द्रोणाचार्य्य उन्हें मार्गहीमें निवारण करने लगे। प्रभद्रक सेनाके वीर योद्धालोग द्रोणाचार्य्यके बादलके समान गर्ज्जते हुए रथके शब्दको सुनकर कांपने लगे। पाण्डुपुत्र युधिष्ठिरकी वह महा सेना द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे पीड़ित होकर अनेक यत्न करके एक चरण मात्र भी आगे न बढ़ सकी।

हे राजन्! तुम्हारे पुत्र चित्रसेन चेकितानको भीष्मकी ओर आते देखकर उनको निवारण करनेमें प्रवृत्त हुए। पराक्रमी चित्रसेन भीष्मकी रक्षाके वास्ते चेकितानके सङ्ग अपनी शक्तिके अनुसार युद्ध करने लगे। चेकितान भी चित्रसेनको बलपूर्व्वक निवारण करने लगे। उस रणभूमिमें उन दोनोंका महाभयङ्कर संग्राम होने लगा। हे राजन्! अर्ज्जुन बहुत भांतिसे निवारण किये जानेपर भी तुम्हारे पुत्र दुःशासनको युद्धसे विमुख करके तुम्हारी सेनाका नाश करने लगे, परन्तु दुःशासन ऐसा निश्चय करके "कि अर्ज्जुन हम लोगोंके भीष्म पितामहका जिसमें किसी प्रकारसे वध न कर सकें" अपनी परम शक्तिके अनुसार उन्हें निवारण करने लगे। हे राजन्! पाण्डवोंके मुख्य मुख्य रथीलोग तुम्हारी सेनाके योद्धाओंका वध करते हुए उस महासेनाके वीरोंको तितर वितर करने लगे।

१०८ अध्याय समाप्त।

———

सञ्जय बोले, महाराज! महाबलवान् धनुर्द्धारी मतवारे हाथीके समान पराक्रमी द्रोणाचार्य्य मतवारे हाथियोंके निवारण करने योग्य एक बड़े धनुषको ग्रहण करके पाण्डवोंकी सेनाके महारथ वीरोंको रण-भूमिमें तितर बितर कर रहे थे और उनके पुत्र अश्वत्थामा भी पाण्डवोंकी सेनाको अपने बाणोंसे जला रहे थे; शकुनि उस समय द्रोणाचार्य्यसे छिपे नहीं थे। उन्होंने उस समय [illegible] और बुरे लक्षणोंको देखकर अपने पुत्र अश्वत्थामासे कहा, हे पुत्र! महा बलवान् अर्जुन जिस दिन भीष्मके वधके निमित्त परम यत्न करेंगे, आज वही दिन उपस्थित हुआ है; क्योंकि मेरे बाण अपने आप ही तूणीरसे निकलकर गिर रहे हैं; धनुष कांप रहा है, सब अस्त्र चलनेकी इच्छा नहीं करते हैं; मेरा चित्त भी व्याकुल होरहा है। हरिण और सब पक्षी चारों ओर भयङ्कर शब्द कर रहे हैं। गिद्ध इस सेनाकी ओर आकाशसे पृथ्वीपर उतर रहे हैं; सूर्य्य मानो प्रकाश रहित होगया है; दिशा सब लालवर्ण दीख पड़ती हैं; पृथ्वी मानो सब प्रकारसे घोर शब्दसे पीड़ित होकर कांप रही है; कौवे, गिद्ध और बगुले बार बार भयङ्कर शब्द कर रहे हैं, चारा और सियार महा घोर शब्द करके अमङ्गल-सूचक वाणी बोलकर महा भय उत्पन्न कर रहे हैं; सूर्य्य-मण्डलकी ओरसे बड़े बड़े लुक्क गिर रहे हैं, [illegible] रुधिर परिघ सूर्य्यको घेर रहा है; चन्द्रमा और सूर्य्यका स्वरूप भयङ्कर होकर क्षत्रियोंके नाशके निमित्त महा भय दिखा रहा है, कौरवोंमें श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्रके देवा-लयोंके सब देवता कांपते, नाचते और रोदन करते हुए दिखाई देते हैं; ग्रह [illegible] दाहिने ओर [illegible] कर रहे हैं, [illegible] होरहे हैं, धृतराष्ट्रकी सेनाके राजाओंका तेज मलिन दीख पड़ता है; वे सब अस्त्रशस्त्र और कवच धारण करके भी तेजहीन दीख पड़ते हैं, और दोनों सेनाके बीच पाञ्चजन्य शङ्ख और गाण्डीव धनुषका शब्द सुनाई देता है; इससे अर्जुन रण-भूमिमें उत्तम अस्त्रोंके आसरेसे दूसरे सब योद्धाओंको त्यागकर निश्चय ही भीष्म पितामह पर आक्रमण करेगा। हे पुत्र! भीमसेन और अर्जुनके समागमको विचार कर मेरा मन व्याकुल होरहा है और मेरे शरीरके रोएं खड़े होगये हैं। अर्जुन आज रणभूमिमें धूर्त्त-बुद्धि पापी शिखण्डीको आगे करके भीष्मके सङ्ग युद्ध करनेके निमित्त गमन कर रहा है। भीष्मने पहिले कहा है, "मैं शिखण्डीका वध नहीं करूंगा, क्योंकि विधाताने उसे पहिले स्त्रीरूपसे उत्पन्न किया था, वह दैवी घटनासे पुरुष होगया है, और महा बलवान् याज्ञसेनि शिखण्डीकी ध्वजा भी अमाङ्गलिक है", इसी कारणसे गङ्गापुत्र भीष्म शिखण्डीके ऊपर अपने अस्त्रोंको नहीं चलावेंगे। अर्जुन जो रणभूमिमें उपस्थित होकर क्रुद्ध भीष्मकी ओर वेगपूर्व्वक दौड़ रहा है, उससे मेरे शरीरका रुधिर सूखा जाता है। युधिष्ठिरका क्रोध, अर्जुनका युद्ध और मेरे अस्त्रोंका चलाना यह सब निश्चय ही प्रजाके अमङ्गलका कारण है। पाण्डुनन्दन अर्जुन मनस्वी, बलवान्, शूरवीर, अस्त्रोंके चलानेमें निपुण, अत्यन्त पराक्रमी, दूरतक अस्त्रोंको चलानेवाला, उत्तम और दृढ़ बाणोंको धारण करनेवाला, सब शकुन और लक्षणोंको जाननेवाला, युद्धमें इन्द्र आदि देवताओंसे भी न जीते जानेयोग्य, बुद्धिमान्, जितेन्द्रिय, योद्धाओंमें श्रेष्ठ, सदा युद्धको जीतनेवाला और [illegible] अस्त्रोंको धारण करता है। तुम इसके मार्गको त्याग करके [illegible] [illegible] करो। हे पुत्र! आज [illegible]

हत्या होती हुई देखोगी। अर्ज्जुन क्रुद्ध होकर अपने तीक्ष्ण बाणोंसे शूरवीरोंके सुवर्णभूषित उत्तम कवचोंको काटेगा और ध्वजा, तोमर धनुष, प्रास, सुवर्ण-भूषित तीक्ष्ण शक्ति और हाथियोंके ऊपरकी पताकाओंको अपने अस्त्रोंके बलसे काटकर गिरा देगा।

हे पुत्र! उपजीवी पुरुषोंको प्राण रक्षा करनेका यह समय नहीं है; स्वर्ग प्राप्तिकी इच्छा करके यश और जयके निमित्त युद्ध करनेके निमित्त गमन करो। यह देखो कपिध्वजामें युक्त अर्ज्जुन मरे हुए हाथी, घोड़े, टूटे रथ आदिसे युक्त महा भयङ्करी संग्रामरूपी नदीका रथरूपी नौकासे तैरकर उसके पार जारहा है। जिस युधिष्ठिरमें ब्रह्मनिष्ठा, दम, दान, तपस्या और उत्तम चरित विद्यमान हैं, जिसके सखा और भ्राता अर्ज्जुन, भीमसेन, नकुल और सहदेव हैं, जिसके सहाय यदुकुलभूषण श्रीकृष्ण हैं, और जिसका शरीर तपस्यासे शुद्ध होकर प्रकाशित है, नीचबुद्धि धृतराष्ट्र पुत्रोंके ऊपर उसका कोप ही कुरुसेनाको भस्म किये डालता है। यह देखो, अर्ज्जुन कृष्णकी सहायतासे दुर्य्योधनकी सम्पूर्ण सेनाको तितर बितर कर रहा है। जैसे वायु महासागरकी तरङ्गको उठा कर दूर फेंकता है, वैसे ही अर्ज्जुन सम्पूर्ण कौरवी सेनाको युद्धसे विमुख कर रहा है। यह सुनो! सेनाके बीच हाहाकार शब्द मच रहा है, इससे हे पुत्र! तुम शिखण्डीके समीप गमन करो, मैं युधिष्ठिरके सम्मुख युद्ध करनेके निमित्त जाता हूं, अत्यन्त तेजस्वी राजा युधिष्ठिरके समुद्रके समान व्यूहके बीच गमन करना बहुत ही कठिन कार्य्य है; क्योंकि वह सब ओरसे रक्षित तथा अतिरथ योद्धाओंसे युक्त है। सात्यकि, अभिमन्यु, धृष्टद्युम्न, भीमसेन, नकुल और सहदेव राजा युधिष्ठिरकी रक्षा करते हैं। इन्द्रके समान श्यामवर्ण और बड़े शालवृक्षके समान ऊंचा यह अभिमन्यु, दूसरे अर्ज्जुनके समान आगे गमन कर रहा है; इससे तुम बड़े धनुष और उत्तम उत्तम अस्त्र ग्रहण करके शिखण्डीके समीपमें जा भीमसेनके सङ्ग युद्ध करो। कौन पुरुष प्यारे पुत्रके अनेक वर्षों तक जीते रहनेकी इच्छा नहीं करता;—सब कोई करते हैं परन्तु मैं क्षत्रिय धर्म्मको अवलोकन करके तुमको इस युद्धमें नियुक्त करता हूं। हे पुत्र! यह भीष्म भी देखो, यमराज और वरुणके समान अपने पराक्रमको प्रकाशित करके पाण्डवोंकी महासेनाको अपने अस्त्रोंसे भस्म कर रहे हैं।

१०९ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! भगदत्त, कृपाचार्य्य, शल्य, कृतवर्म्मा, अवन्तिराज विन्द और अनुविन्द, सिन्धुराज जयद्रथ, चित्रसेन, विकर्ण और दुर्म्मर्षण तुम्हारी ओरके ये दश योद्धा लोग यशकी अभिलाष करके नाना देशोंसे इकट्ठी हुई महासेनाके सहित भीष्मके समीपमें भीमसेनसे युद्ध करने लगे। शल्यने नौ, कृतवर्म्माने तीन और कृपाचार्य्यने नौ बाणोंसे भीमसेनके ऊपर प्रहार किया। चित्रसेन, विकर्ण और भगदत्तने भीमसेनके ऊपर दश दश बाण चलाये; सिन्धुराज जयद्रथने तीन बाणोंसे भीमसेनको विद्ध किया। अवन्तिराज विन्द और अनुविन्दने पांच पांच बाणों और दुर्म्मर्षणने बीस तीक्ष्ण बाणों और दुर्म्मर्षणने बीस तीक्ष्ण बाणोंसे भीमसेनको विद्ध किया। महाराज! महाबलवान् भीमसेनने तुम्हारी ओरके लोक-विख्यात उन महावीर तेजस्वी महारथियोंको अलग चोखे बाणोंसे पृथक् पृथक् रूपसे विद्ध किया। उन्होंने शल्यको पचास और कृतवर्म्माको आठ बाणोंसे विद्ध करके बाणके द्वारा कृपाचार्य्यके धनुषको बीचोंबीचसे

दिया; फिर धनुष रहित कृपाचार्य्यके ऊपर सात बाणोंसे प्रहार किया। अनन्तर विन्द और अनुविन्दको तीन तीन बाणोंसे विद्ध करके दुर्म्मर्षणको बीस, चित्रसेनको पांच और विकर्णको दश बाणोंसे विद्ध किया। अनन्तर जयद्रथको पांच बाणोंसे विद्ध करके फिर उनके ऊपर दूसरी बार तीन बाणोंसे प्रहार करके हर्षके सहित सिंहनाद किया। रथियोंमें श्रेष्ठ कृपाचार्य्यने दूसरा धनुष ग्रहण करके शिला पर घिसे हुए दश चोखे बाणोंसे भीमसेनको विद्ध किया। भीमसेनने अङ्कुशोंके बलसे मतवारे महाथीके समान कृपाचार्य्यके दश बाणोंसे विद्ध होकर क्रोध पूर्व्वक बहुतसे बाणोंको चलाकर कृपाचार्य्यको विद्ध किया। अनन्तर यमराजके समान मूर्त्तिवाले भीमसेनने जयद्रथके रथके चारो घोड़े और सारथीको तीन बाणोंसे मारकर पृथ्वीमें गिरा दिया। महारथ जयद्रथ घोड़ोंसे रहित रथपरसे शीघ्र ही कूदे और भीमसेनके ऊपर अनेक तीक्ष्ण बाण चलाये, परन्तु भीमसेनने दो बाणोंसे महात्मा जयद्रथका धनुष काट डाला। तब जयद्रथ धनुषके कटने, घोड़े और सारथीके मरनेपर शीघ्रताके सहित चित्रसेनके रथपर चढ़ गये। हे राजन्! पाण्डुनन्दन भीमसेन रणभूमिमें इन सब महारथियोंको अपने बाणोंसे विद्ध करके अत्यन्त ही अद्भुत कर्म्म करने लगे। राजा शल्यने सब पुरुषोंके सामने जयद्रथको रथ-रहित देखकर भीमसेनके पराक्रमको सहन नहीं किया। उन्होंने "खड़ा रह!" कह कर [illegible] घिसे हुए तीक्ष्ण बाणोंको [illegible] चढ़ाकर भीमसेनके ऊपर चलाया, [illegible], कृतवर्म्मा, पराक्रमी भगदत्त, अवन्ति-राज विन्द और अनुविन्द, चित्रसेन, विकर्ण, दुर्म्म-र्षण और पराक्रमी [illegible] जयद्रथ [illegible] शल्यको [illegible] भीमसेनको अपने बाणोंसे [illegible] भीमसेनने भी इन सब महार[illegible]

ओंको पांच पांच बाणोंसे विद्ध किया और शल्यको सत्तर बाणोंसे विद्ध करके फिर दूसरी बार दश बाणोंसे उनके ऊपर प्रहार किया। शल्यने भीमको नौ बाणोंसे विद्ध करके फिर उन्हें पांच बाणोंसे विद्ध किया और एक बाणसे उनके सारथीका मर्म्मस्थान विद्ध किया। प्रतापी भीमसेनने अपने सारथी विशोकको शल्यके बाणसे अत्यन्त पीड़ित देखकर तीन बाणोंसे मद्रराज शल्यकी दोनो भुजा और छातीमें प्रहार किया और दूसरे उन सब महा धनुर्द्धारी महारथियोंके ऊपर तीन तीन बाणोंसे प्रहार करके सिंहनाद करने लगे। तिसके अनन्तर उन सब महारथियोंने यत्नवान् होकर शिलापर घिसे हुए तीन तीन तीक्ष्ण बाणोंको चलाकर भीमसेनके मर्म्मस्थानोंको अत्यन्त विद्ध किया। जैसे पर्व्वत वर्षते बादलोंकी जलधारासे पीड़ित नहीं होता, वैसे ही महाधनुर्द्धारी भीमसेन सब महारथियोंके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर भी दुःखित न हुए। अनन्तर महा यशस्वी भीमसेनने चारो ओरसे तीन तीन बाणोंको चलाकर मद्रराज शल्यको और नौ बाणोंसे कृपाचार्य्यको विद्ध करके राजा भगदत्तको एक सौ बाणोंसे विद्ध किया। इसके अनन्तर अपने हाथोंकी शीघ्रतासे बाण चलाकर कृतवर्म्माके धनुषको बाणके सहित काट दिया। शत्रुनाशन कृतवर्म्माने शीघ्र ही दूसरा धनुष ग्रहण करके भीमसेनकी दोनों भृकुटी (भौंहों) के मध्य-स्थलमें एक बाणसे प्रहार किया। उसके अनन्तर भीमसेनने शल्यको नौ, भगदत्तको तीन, कृतवर्म्माको आठ बाणोंसे विद्ध करके कृपाचार्य्य आदि महारथियोंको दो दो बाणोंसे विद्ध किया। [illegible] महारथी भीमसेनको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध करने लगे। भीमसेन उस समय उन सब महारथियोंके बाणोंसे [illegible] होकर भी [illegible]

घूमने लगे। तब उन सब महारथियोंने सावधान होकर भीमसेनके ऊपर सौ सौ तथा हजार हजार बाणोंको चलाना आरम्भ किया। हे राजन्! वीरोंमें अग्रणी भगदत्तने सुवर्णदण्ड युक्त एक वेगवान् शक्ति ग्रहण करके भीमसेनको ओर चलाई; महा बलवान् जयद्रथने तोमर और पट्टिश, कृपाचार्य्यने शतघ्नी,पराक्रमी शल्यने बाण और दूसरे सब धनुर्द्धारियोंने पांच पांच बाणोंको शीघ्रताके सहित भीमसेनके ऊपर चलाया। पवननन्दन भीमसेनने उन सब महारथियोंके अस्त्रोंको विफल कर दिया। क्षुरप्र अस्त्रसे तोमरास्त्रको दो टुकड़े करके काट दिया, तीन बाणोंसे पट्टिशास्त्रको तीन खण्ड कर दिया और कङ्कपत्र युक्त नौ बाणोंसे शतघ्नी अस्त्रको निवारण किया। महारथ भीमसेनने मद्रराज शल्यके चलाये हुए बाणोंको काटकर भगदत्तकी चलाई हुई शक्तिको भी शीघ्रताके सहित काटके गिरा दिया और दूसरे सब महारथियोंके बाणोंको भी अपने तीक्ष्ण बाणोंसे तीन तीन टुकड़े करके काट काटके पृथ्वीमें गिराया। अनन्तर उन महाधनुर्द्धारी योद्धाओंके ऊपर तीन तीन बाणोंसे प्रहार किया। तिसके अनन्तर अर्ज्जुन उस महायुद्धमें महारथ भीमसेनको बाणोंसे शत्रुसेनाके महारथ योद्धाओंके सङ्ग युद्ध करते हुए देखकर वहां पर उपस्थित हुए। महाराज! तुम्हारी ओरके महारथ वीरोंने उन दोनों पुरुषसिंहोंको वहीं पर उपस्थित देखकर जयकी आशाको त्याग दिया। अर्ज्जुन शिखण्डीको आगे करके भीष्मके वधकी अभिलाषसे गमन कर रहे थे, वह मार्गमें तुम्हारी ओरके दश महारथ वीरोंसे भीमसेनको युद्ध करते देखकर उनके निकट गये, और जो सब महारथ भीमसेनसे युद्ध कर रहे थे, अर्ज्जुन भीमसेनके प्रियकार्य्यको करनेकी इच्छासे उन सबको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे। तब राजा दुर्य्योधन भीमसेनका वध करनेके निमित्त सुशर्म्मासे यह वचन "हे सुशर्म्मा! तुम शीघ्र ही सेनाके अर्ज्जुन और भीमसेनके निकट जाकर वध करो। त्रिगर्त्तराज सुशर्म्माने दुर्य्योधनकी आज्ञा सुनकर सहस्रों रथियोंके सहित पूर्व्वक गमन करके धनुर्द्धारी भीमसेन अर्ज्जुनको चारों ओरसे घेर लिया, तिसके अनन्तर उस सब कुरुसेना और त्रिगर्त्तराजकी सेनाके सङ्ग अर्ज्जुनका युद्ध होने लगा।

११० अध्याय समाप्त

सञ्जय बोले, हे राजन्, अर्ज्जुनने यत्नके सहित शल्यको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे छिपा दिया,सुशर्म्मा और कृपाचार्य्यको तीन बाणोंसे विद्ध किया। अनन्तर राजा भगदत्त, सिन्धुराज जयद्रथ, चित्रसेन, विकर्ण, दुर्म्मर्षण और अवन्तिराज विन्द और अनुविन्दको मोर और कङ्कपक्षसे युक्त तीन तीन बाणोंसे विद्ध करके तुम्हारी सेनाके दूसरे योद्धाओंको पीड़ित करने लगे। सिन्धुराज जयद्रथने चित्रसेनके रथ पर चढ़के अपने बाणोंसे विद्ध करके शीघ्रताके सहित भीमसेनको भी अपने बाणोंसे विद्ध किया। रथियोंमें श्रेष्ठ कृपाचार्य्य और शल्यने नाना प्रकारके मर्म्मभेदी बाणोंसे अर्ज्जुनको विद्ध किया। चित्रसेन आदि तुम्हारे हर एक पुत्रोंने शीघ्रताके सहित पांच पांच तीक्ष्ण बाणोंसे अर्ज्जुनके ऊपर प्रहार किया। भरतकुल-भूषण दोनों कुन्तीपुत्र त्रिगर्त्त देशीय सेनाके योद्धाओंको पीड़ित करने लगे। बलवान् सुशर्म्माने भी अर्ज्जुनके ऊपर नौ बाणोंसे प्रहार करके बलपूर्व्वक सिंहनाद करके महासेनाको भयभीत किया। पराक्रमसे युक्त दूसरे अनेक शूरवीर योद्धा शिला पर घिसे हुए तीक्ष्ण बाणोंसे भीमसेन और अर्ज्जुनको विद्ध करने

मार्ग। रथियोंमें श्रेष्ठ उदार स्वभाववाले भीम और अर्ज्जुन दोनों ही मानो गौओंके समूहमें मांसकी अभिलाष करनेवाले पराक्रमशील दो सिंहोंकी भांति सम्पूर्ण रथियोंके बीच क्रीड़ा करते हुए विचित्र दिखाई देने लगे। वे दोनों और रणभूमिमें सैकड़ों शूरवीर योद्धाओंके धनुष बाणोंको काटके कितने ही वीरोंका शिर काटकर पृथ्वीमें गिराने लगे। अनेक रथ उस युद्धभूमिमें टूट गए, और सैकड़ों हाथी, घोड़े सवारोंके सहित मरकर पृथ्वीमें गिर पड़े। कितने ही रथी और घुड़सवार शस्त्रोंसे पीड़ित होके पृथ्वी पर गिरते और फिर उठकर युद्ध करते हुए दिखाई देते थे। मरे हुए हाथी, घोड़े, पैदल चलनेवाले योद्धाओं और जगह जगह टूटे हुए रथोंसे पृथ्वी पूरित होगई। जाजे जाजे जगहोंमें कटे और टूटे हुए छत्र ध्वजा, अङ्कुश, कोड़े, केयूर, अंगद, हार, माला, किरीट, चवर, पखे और इधर उधर पड़ी हुई राजाओंकी चन्दनचर्चित भुजा तथा जङ्घासे पृथ्वी पूर्ण होगई। युद्धभूमिमें उस समय मैंने अर्ज्जुनका यह अद्भुत पराक्रम देखा, कि उन्होंने अपने बाणोंसे उन सब महारथ वीरोंका निवारण करके तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंका नाश करने लगे। तुम्हारे सब पुत्रोंने भीमसेन और अर्ज्जुनके पराक्रमको देखकर गङ्गानन्दन भीष्मके रथके समीपमें गमन किया। कृपाचार्य, कृतवर्म्मा, शल्य सिन्धुराज जयद्रथ और अवन्तिराज विन्द और अनुविन्द उस समयमें [illegible]। महाधनुर्धारी भीमसेन और महारथ अर्ज्जुन उस महा भयङ्कर कुरु सेनाको [illegible] करने लगे। तुम्हारे [illegible] दश दश [illegible]

होकर मानो क्रीड़ा करते हुए अर्ज्जुनकी छातीमें अनेक तीक्ष्ण बाणोंसे प्रहार किया। अर्ज्जुनने पांच बाणोंसे उनका धनुष और अंगुलित्राण काटकर फिर तीक्ष्ण बाणोंसे उनको मर्म्मस्थानोंको अत्यन्त ही विद्ध किया। पराक्रमी शल्यने एक दूसरा दृढ़ धनुष ग्रहण करके तीन बाणोंसे अर्ज्जुनके ऊपर प्रहार करके फिर पांच बाणोंसे कृष्णको विद्ध किया; अनन्तर नौ बाणोंसे भीमसेनकी दोनों भुजा और वक्षस्थल विद्ध किया। हे राजन्! अनन्तर महारथ मगधराज और द्रोणाचार्य्य दुर्य्योधनकी आज्ञासे जिस स्थानपर दोनों महारथी भीमसेन और अर्ज्जुन कौरवोंकी महासेनाका नाश कर रहे थे, उसी स्थानपर उपस्थित हुए। हे भारत! मगधदेशके राजा जयत्सेनने प्रचण्ड अस्त्रोंको धारण करनेवाले भीमसेनको उत्तम पानी चढ़े हुए आठ बाणोंसे विद्ध किया। भीमसेनने उनको दश बाणोंसे विद्ध करके फिर पांच बाणोंसे विद्ध किया, अनन्तर एक तीक्ष्ण बाणसे उनके सारथीको मारकर पृथ्वीपर गिरा दिया। तब मगधराज जयत्सेनके रथके घोड़े भ्रमित होकर चारों ओर दौड़ने लगे, उससे वह सम्पूर्ण सेनाके सम्मुख ही युद्धसे पृथक् हुए। द्रोणाचार्य्यने छिद्र देखकर भीमसेनको पैंसठ बाणोंसे विद्ध किया। युद्धमें प्रशंसित भीमसेनने रणभूमिमें पिताके समान गुरु द्रोणाचार्य्यको नौ बाणोंसे विद्ध करके फिर शकुनिके सहित साठ बाणोंसे विद्ध किया। अर्ज्जुनने सुशर्म्माको अनेक बाणोंसे विद्ध करके जैसे वायु महामेघमण्डलको उड़ाकर एक दिशामें कर देता है, वैसे ही त्रिगर्त्तोंकी सेनाको रणभूमिमें तितर बितर करने लगे। तिसके अनन्तर भीष्म, राजा कौशल्य और बृहद्बल क्रुद्ध होकर भीमसेन और अर्ज्जुनके सम्मुख उपस्थित हुए। [illegible]

घूमने लगी। तब उन सब महारथियोंने सावधान होकर भीमसेनके ऊपर सौ सौ तथा हजार हजार बाणोंको चलाना आरम्भ किया। हे राजन्! वीरोंमें अग्रणी भगदत्तने सुवर्णदण्ड युक्त एक वेगवान् शक्ति ग्रहण करके भीमसेनकी ओर चलाई; महा बलवान् जयद्रथने तोमर और पट्टिश, कृपाचार्य्यने शतघ्नी, पराक्रमी शल्यने बाण और दूसरे सब धनुर्द्धारियोंने पांच पांच बाणोंको शीघ्रताके सहित भीमसेनके ऊपर चलाया। पवननन्दन भीमसेनने उन सब महारथियोंके अस्त्रोंको विफल कर दिया। क्षुरप्र अस्त्रसे तोमरास्त्रको दो टुकड़े करके काट दिया, तीन बाणोंसे पट्टिशास्त्रको तीन खण्ड कर दिया और कङ्कपत्र युक्त नौ बाणोंसे शतघ्नी अस्त्रको निवारण किया। महारथ भीमसेनने मद्रराज शल्यके चलाये हुए बाणोंको काटकर भगदत्तकी चलाई हुई शक्तिको भी शीघ्रताके सहित काटके गिरा दिया और दूसरे सब महारथियोंके बाणोंको भी अपने तीक्ष्ण बाणोंसे तीन तीन टुकड़े करके काट काटके पृथ्वीमें गिराया। अनन्तर उन महाधनुर्द्धारी योद्धाओंके ऊपर तीन तीन बाणोंसे प्रहार किया। तिसके अनन्तर अर्ज्जुन उस महायुद्धमें महारथ भीमसेनको बाणोंसे शत्रुसेनाके महारथ योद्धाओंके सङ्ग युद्ध करते हुए देखकर वहां पर उपस्थित हुए। महाराज! तुम्हारी ओरके महारथ वीरोंने उन दोनों पुरुषसिंहोंको वहीं पर उपस्थित देखकर जयकी आशाको त्याग दिया। अर्ज्जुन शिखण्डीको आगे करके भीष्मके वधकी अभिलाषसे गमन कर रहे थे, वह मार्गमें तुम्हारी ओरके दश महारथ वीरोंसे भीमसेनको युद्ध करते देखकर उनके निकट गये, और जो सब महारथ भीमसेनसे युद्ध कर रहे थे, अर्ज्जुन भीमसेनके प्रियकार्य्यको करनेकी इच्छासे उन सबको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे। तब राजा दुर्य्योधन भीमसेनका वध करनेके निमित्त सुशर्म्मासे यह वचन कहा; हे सुशर्म्मा! तुम शीघ्र ही सेनाके सहित अर्ज्जुन और भीमसेनके निकट जाकर वध करो। त्रिगर्त्तराज सुशर्म्माने दुर्य्योधनकी आज्ञा सुनकर सहस्रों रथियोंके सहित पूर्व्वक गमन करके धनुर्द्धारी भीमसेन अर्ज्जुनको चारों ओरसे घेर लिया, अनन्तर उस सब कुरुसेना और त्रिगर्त्त सेनाके सङ्ग अर्ज्जुनका युद्ध होने लगा।

११० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्, अर्ज्जुनने ... यत्नके सहित शल्यको अपने तीक्ष्ण ... छिपा दिया, सुशर्म्मा और कृपाचार्य्यको तीन ... बाणोंसे विद्ध किया। अनन्तर राजा भ... सिन्धुराज जयद्रथ, चित्रसेन, विकर्ण, ... दुर्म्मर्षण और अवन्तिराज विन्द और ... न्दको मोर और कङ्कपखसे युक्त तीन ... बाणोंसे विद्ध करके तुम्हारी सेनाके दूसरे योद्धाओंको पीड़ित करने लगे। सिन्धु... जयद्रथने चित्रसेनके रथ पर चढ़के अ... अपने बाणोंसे विद्ध करके शीघ्रता सहित भीमसेनको भी अपने बाण... विद्ध किया। रथियोंमें श्रेष्ठ कृपाचार्य्य और शल्यने नाना प्रकारके मर्म्मभेदी बाण... अर्ज्जुनको विद्ध किया। चित्रसेन आदि तुम्हारे हर एक पुत्रोंने शीघ्रताके सहित पांच ... तीक्ष्ण बाणोंसे अर्ज्जुनके ऊपर प्रहार कि... भरतकुल-भूषण दोनों कुन्तीपुत्र त्रिगर्त्त सेनाके योद्धाओंको पीड़ित करने लगे। तब सुशर्म्माने भी अर्ज्जुनके ऊपर नौ बाणोंसे प्रहार करके बलपूर्व्वक सिंहनाद करके महासेनाको भयभीत किया। पराक्रमसे युक्त दूसरे शूरवीर योद्धा शिला पर घिसे हुए बाणोंसे भीमसेन और अर्ज्जुनको विद्ध

रथियोंमें श्रेष्ठ उदार स्वभाववाले भीम
अर्जुन दोनों ही मानो गौओंके समूहमें
ो अभिलाष करनेवाले पराक्रमशील दो
की भांति सम्पूर्ण रथियोंके बीच क्रीड़ा
हुए विचित्र दिखाई देने लगे। वे दोनों
रणभूमिमें सैकड़ों शूरवीर योद्धाओंके
बाणोंको काटके कितने ही वीरोंका
काटकर पृथ्वीमें गिराने लगे। अनेक
उस युद्धभूमिमें टूट गए; और सैकड़ों
ो, घोड़े सवारोंके सहित मरकर पृथ्वीमें
पड़े। कितने ही रथी और घुड़सवार
ोंसे पीड़ित होके पृथ्वी पर गिरते और
उठकर युद्ध करते हुए दिखाई देते थे।
हुए हाथी, घोड़े, पैदल चलनेवाले योद्धाओं
जगह जगह टूटे हुए रथोंसे पृथ्वी पूरित
ई। बाजे बाजे जगहोंमें कटे और टूटे हुए छत्र
ा, अंकुश, कोड़े, केयूर, अंगद, हार, माला,
ट, चंवर, पंखे और इधर उधर पड़ी हुई
ाओंकी चन्दनचर्चित भुजा तथा जङ्घासे पृथ्वी
ो होगई। युद्धभूमिमें उस समय मैंने अर्जु-
ा यह अद्भुत पराक्रम देखा, कि उन्होंने
ने बाणोंसे उन सब महरथ वीरोंका निवा-
ा करके तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंका
श करने लगे। तुम्हारे सब पुत्रोंने भीम-
न और अर्जुनके पराक्रमको देखकर गङ्गा-
न्दन भीष्मके रथके समीपमें गमन किया।
ाचार्य्य, कृतवर्म्मा, शल्य सिन्धुराज जयद्रथ और
वन्तिराज विन्द और अनुविन्द उस समयमें
हसे नहीं हटे। महाधनुद्धारी भीमसेन और
हारथ अर्जुन उस महा भयङ्कर कुरु सेनाको
ारों ओर तितर बितर करने लगे। तुम्हारी
ोरके सब क्षत्रिय योद्धा एक ही बार दश दश
हजार और अर्बुद अर्बुद बाणोंको अर्जुनके रथ
र चलाने लगे। अर्जुन उन सब बाणोंको अपने
ाणोंसे निवारण करके सम्पूर्ण योद्धाओंको
म पुरीमें भेजने लगे। महारथ शल्यने क्रुद्ध
होकर मानो क्रीड़ा करते हुए अर्जुनकी
छातीमें अनेक तीक्ष्ण बाणोंसे प्रहार किया।
अर्जुनने पांच बाणोंसे उनका धनुष और अङ्गु-
लित्राण काटकर फिर तीक्ष्ण बाणोंसे उनके
मर्म्मस्थानोंको अत्यन्त ही विद्ध किया। परा-
क्रमी शल्यने एक दूसरा दृढ़ धनुष ग्रहण करके
तीन बाणोंसे अर्जुनके ऊपर प्रहार करके फिर
पांच बाणोंसे कृष्णको विद्ध किया, अनन्तर नौ
बाणोंसे भीमसेनकी दोनों भुजा और वक्षस्थल
विद्ध किया। हे राजन्! अनन्तर महारथ मग-
धराज और द्रोणाचार्य्य दुर्य्योधनकी आज्ञासे
जिस स्थानपर दोनो महारथी भीमसेन और
अर्जुन कौरवोंकी महासेनाका नाश कर रहे
थे, उसी स्थानपर उपस्थित हुए। हे भारत!
मगधदेशके राजा जयत्सेनने प्रचण्ड अस्त्रोंको
धारण करनेवाले भीमसेनको उत्तम पानी चढ़े
हुए आठ बाणोंसे विद्ध किया। भीमसेनने
उनको दश बाणोंसे विद्ध करके फिर पांच
बाणोंसे विद्ध किया, अनन्तर एक तीक्ष्ण बाणसे
उनके सारथीको मारकर पृथ्वीपर गिरा दिया।
तब मगधराज जयत्सेनके रथके घोड़े भ्रमित
होकर चारों ओर दौड़ने लगे, उससे वह
सम्पूर्ण सेनाके सम्मुख ही युद्धसे पृथक् हुए।
द्रोणाचार्य्यने छिद्र देखकर भीमसेनको पैंसठ
बाणोंसे विद्ध किया। युद्धमें प्रशंसित भीमसेनने
रणभूमिमें पिताके समान गुरु द्रोणाचार्य्यको
नौ बाणोंसे विद्ध करके फिर शीघ्रताके सहित
साठ बाणोंसे विद्ध किया। अर्जुनने सुशर्म्माको
अनेक बाणोंसे विद्ध करके जैसे वायु महामेघ-
मण्डलीको उड़ाकर एक दिशामें कर देता
है, वैसे ही त्रिगर्त्तकी सेनाको रणभूमिसे
तितर बितर करने लगे। तिसके अनन्तर
भीष्म, राजा कौशल्य और वृहद्बल क्रुद्ध होकर
भीमसेन और अर्जुनके सम्मुख उपस्थित
हुए। पराक्रमी पाण्डव और धृष्टद्युम्न मुख
पसारे हुए यमराजके समान भीष्मकी ओर

दौड़े। शिखण्डी कुरु-पितामह भीष्मको देख-भय त्यागके प्रसन्नतापूर्व्वक उनकी ओर दौड़ने लगे, युधिष्ठिर आदि सम्पूर्ण पाण्डव शिखण्डीको आगे करके सम्पूर्ण सृञ्जयोंके सहित भीष्मके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। तुम्हारी ओरके सब शूरवीर योद्धा लोग देवव्रती भीष्मको आगे करके पाण्डवोंके सङ्ग युद्ध करने लगे। उस समय भीष्मके निमित्त कुरु-पाण्डवोंमें भयङ्कर युद्ध होने लगा। हे राजन्! तुम्हारी ओरके योद्धाओंके सङ्ग आपसमें एक दूसरेको जीतनेकी अभिलाषासे पाण्डवोंका संग्रामरूपी जुएका खेल आरम्भ हुआ। हे राजन्! उसमें आप लोगोंके जयके विषयमें भीष्म ही पण (बाजी) स्वरूप हुए। हे भारत! धृष्टद्युम्न सम्पूर्ण सेनाके पुरुषोंसे बोले; हे रथिसत्तम क्षत्रिय पुरुषो! तुमलोग भय त्यागके भीष्मकी ओर बढ़ो। पाण्डवी सेना सेनापति धृष्ट-द्युम्नकी बात सुन प्राणकी आशा छोड़के भीष्मकी ओर दौड़ी। जैसे समुद्रके प्रबल वेगको तट ग्रहण करता है, वैसे ही रथियोंमें श्रेष्ठ भीष्मने उस सम्पूर्ण सेनाको अपने अस्त्रोंके बलसे रोक दिया।

१११ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! शान्तनु-नन्दन महा बलवान् भीष्मने दशवें दिन पाण्डव और सृञ्जयोंके सहित किस प्रकारसे युद्ध किया था? और युद्धमें प्रशंसित भीष्मने उस दशवें दिन जो महाघोर संग्राम किया था, उसे तुम विस्तारपूर्व्वक मेरे निकटमें वर्णन करो।

सञ्जय बोले, हे भारत! कौरवोंने पाण्ड-वोंके सङ्ग जिस प्रकारसे युद्ध किया था, उसे मैं पूर्णरीतिसे कहता हूं, तुम चित्त लगा कर सुनो। प्रति दिन अर्ज्जुनने तुम्हारी सेनाके रथियोंका वध करके उन्हें यमलोकमें भेजा था और कौरवोंमें श्रेष्ठ युद्ध जीतनेवाले भीष्मने भी अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार नित्य पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंका वध किया था। हे शत्रुनाशन! तुम्हारी ओरके युद्ध करने वालोंमें श्रेष्ठ भीष्म और पाण्डवोंकी ओरसे पाञ्चाल वीरोंके सहित अर्ज्जुनको देखके जयके विषयमें संशय उत्पन्न हुआ था, परन्तु दशवें दिन जब भीष्म और अर्ज्जुनका समागम होने लगा, तब दोनों सेनाके शूरवीर योद्धाओंका नाश होने लगा। परन्तप भीष्मने उस दिन दश दश हजार योद्धाओंको कई बार अपने अस्त्रोंके बलसे मार कर पृथ्वीमें गिरा दिया। जिन सबके नाम और गोत्र अज्ञात प्राय होगये और जो युद्धमें पराक्रमी और पीछे न हटने वाले शूरवीर योद्धा थे, वे सब भीष्मके बाणोंसे मर कर यमलोकमें पहुंचे।

शत्रुनाशन धर्म्मात्मा महाबाहु तुम्हारे पिता भीष्मने दशवें दिन पाण्डवोंकी सेनाको अत्यन्त पीड़ित करके अपने प्राणकी आशको त्याग त्याग दिया, वह युद्धमें शीघ्र ही मरनेकी इच्छा करके "अब अनेक श्रेष्ठ पुरुषोंका वध नहीं करूंगा" ऐसा विचार कर समीपमें खड़े हुए युधिष्ठिरसे बोले, हे पुत्र! सब अस्त्रोंके जाननेवाले धर्म्मात्मा युधिष्ठिर! मैं तुम्हारे निकट स्वर्ग-प्राप्तिके निमित्त धर्म्मयुक्त वचन कहता हूं, उसको तुम सुनो। मैने युद्धमें अनेक पुरुषोंका वध करके बहुत समय बिताया है, इस समय अब मैं अपने शरीरके रखनेकी इच्छा नहीं करता हूं; इससे यदि मेरा प्रियकार्य्य करनेकी इच्छा करते हो, तो पाञ्चाल योद्धा और सृञ्जयोंके सहित अर्ज्जुनको आगे करके शीघ्र ही मेरे वधके निमित्त यत्न करो।

हे राजन्! धृष्टद्युम्न और युधिष्ठिर भीष्मका यह वचन सुनकर सम्पूर्ण सेनाके पुरुषोंसे बोले, तुम लोग भीष्मकी ओर दौड़ो; उनके सङ्ग युद्ध करके उन्हें पराजित करो। शत्रुओंको जीतने-

वाले अर्ज्जुन तुम लोगोंकी रचा करेंगे और सेनापति महाधनुर्धारी धृष्टद्युम्न और भीमसेन भी तुम सबकी रचा करेंगे। हे सृञ्जय पुरुषो। तुम लोग भीष्मसे तनिक भी मत डरो, हमलोग शिखण्डीको आगे करके भीष्मको जीतेंगे, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। दशवें दिन पाण्डव लोग इसी प्रकारसे प्रतिज्ञा करके ब्रह्म लोकमें गमन करनेका निश्चय करके क्रुद्ध-चित्तसे शिखण्डी और अर्ज्जुनको आगे करके भीष्मके वधके निमित्त यत्नपूर्व्वक उनकी ओर बढने लगे। तिसके अनन्तर महाबली परा-क्रमी नाना देशोंके राजा और अश्वत्थामाके सहित द्रोणाचार्य्य अपनी सेनाके सहित और बलवान् दुःशासन अपने सब भाइयोंको सङ्ग-लेकर युद्धभूमिमें स्थित भीष्म पितामहकी रचा करने लगे। तिसके अनन्तर तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग,भीष्मको आगे करके शिखण्डी आदि पाञ्चाल देशीय वीरों और पाण्डवोंके सङ्ग युद्ध करने लगे। कपिध्वजावाले अर्ज्जुनने शिख-ण्डीको अपने आगे करके चेदि और पाञ्चाल-देशीय योद्धाओंके सहित भीष्मके सम्मुख गमन किया। शिनिपौत्र सात्यकि अश्वत्थामासे; धृष्ट-केतु पौरवके सङ्ग और अभिमन्यु अनुयायी और सेवकोंके सहित दुर्य्योधनके सङ्ग युद्ध करने लगे। राजा विराट अपनी सेनाके लेकर जय-द्रथसे और बार्द्धचेमिके जामाताने विचित्र बाण और धनुष धारण करनेवाले तुम्हारे पुत्र चित्र-सेनके सङ्ग युद्ध करना आरम्भ किया। युधिष्ठिर अपनी सेनाके सहित मद्रराज शल्यसे और भीमसेन अच्छी प्रकारसे रचित हाथियोंकी सेनाके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। धृष्टद्युम्न अपने भाइयोंके सहित यत्नवान् होकर निवारण न होने योग्य सब अस्त्र शास्त्रोंको जाननेवाले महा पराक्रमी द्रोणाचार्य्यके सङ्ग युद्ध करने लगे। शत्रुनाशन सिंह ध्वजासे युक्त राजपुत्र बृहद्बल सुभद्रानन्दनकी ओर दौड़े। तुम्हारे सब पुत्र बहुतसे राजाओंके सहित एकत्र होकर शिखण्डी और अर्ज्जुनके वधकी इच्छा करके उन दोनोंवीरोंके सम्मुख उप-स्थित हुए।

हे भारत। जब दोनों ओरकी महासेना अत्यन्त भयानक रूपसे पराक्रमको प्रकाशित करती हुई रणभूमिमें एक दूसरेकी ओर दौड़ी उस समय पृथ्वी कांपने लगी। भीष्मको देखकर दोनों सेनाके योद्धा आपसमें युद्ध करने लगे; एक दूसरेकी ओर यत्नपूर्व्वक दौड़ने लगे; उस समय सम्पूर्ण सेनाके बीच महाघोर शब्द सब दिशाओंमें उत्पन्न होने लगा। शङ्ख, नगाड़े और ढोल आदि जुझाऊ बाजोंका शब्द और हाथियोंके चिङ्घा-ड़का शब्द तथा वीरोंका सिंहनाद सुनाई देने लगा। सम्पूर्ण राजाओंके उत्तम कवच और किरीट चन्द्रमा और सूर्य्यके समान प्रकाशित होने लगे, दोनों सेनाके दौड़ने पर जो धूलि उड़ी, वह बादलके समान दिखाई देने लगी: उसमें वीरोंके शस्त्र बिजलीके समान दीख पड़ते थे। दोनों सेनाके धनुष, बाण, शङ्ख भेरी और रथोंके चलनेका शब्द और वीर पुरुषोंके तर्ज्जन गर्ज्जनके शब्द चारों ओरसे सुन पड़ते थे। आकाश मण्डल दोनों सेनाके प्रास, शक्ति, ऋष्टि और बाणोंके समूहसे पूरित होकर दिखाई नहीं देता था, रथी रथियोंको और घुड़सवार घुड़सवारोंको मारकर पृथ्वीमें गिराने लगे; पैदल चलनेवाले योद्धा पदाति-सेनाके वीरोंका वध करने लगे और हाथीवाले शूरवीर योद्धा गजसेनाके योद्धाओंको मारकर पृथ्वीमें गिराने लगे। हे राजन्। जैसे मांसके निमित्त दो बाज पक्षियोंका आपसमें युद्ध होता है, वैसे ही भीष्मके निमित्त पाण्डवोंके सहित कौरवोंका महाघोर युद्ध होने लगा, वे सब एक दूसरेके वधकी इच्छा करके क्रुद्ध होकर भयङ्कर युद्ध करने लगे।

११२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! पराक्रमी अभिमन्यु भीष्मके वधके निमित्त बड़ी भारी सेनासे युक्त तुम्हारे पुत्र दुर्योधनके सङ्ग युद्धमें प्रवृत्त हुए। दुर्योधनने नौ तीक्ष्ण बाणोंसे अर्जुन पुत्र अभिमन्युके ऊपर प्रहार किया और फिर क्रुद्ध होकर तीन बाणोंसे अभिमन्युकी छातीमें आघात किया। अभिमन्युने क्रुद्ध होकर मृत्युके समान एक भयङ्कर शक्ति दुर्योधनके रथ पर चलाई। हे राजन्! तुम्हारे पुत्र दुर्योधनने उस महाघोर शक्तिको सम्मुख आती देखकर क्षुरप्र अस्त्रसे काटके उसे दो खण्ड कर दिया। अर्जुन-पुत्र अभिमन्युने उस शक्तिको कटती हुई देखके अत्यन्त क्रुद्ध होकर तीन बाणोंसे राजा दुर्योधनको दोनो भुजा और वक्षस्थलमें प्रहार किया। अनन्तर पराक्रमी अभिमन्युने फिर दूसरी बार दुर्योधनके दोनो स्तनोंके बीचमें दश बाण मारे, हे राजन्! सुभद्रापुत्र अभिमन्यु और कुरुराज दुर्योधन,—इन दोनों वीरोंका जो भीष्मके वध तथा अर्जुनकी पराजयके निमित्त महा घोर युद्ध होने लगा, वह अत्यन्त ही विचित्र और सब लोगोंमें प्रशंसाके योग्य था, सम्पूर्ण राजा उन दोनो पुरुषसिंहोंकी प्रशंसा करने लगे। शत्रुनाशन ब्राह्मणश्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामाने क्रुद्ध होकर सात्यकिकी छातीमें एक बाणसे प्रहार किया। हे भारत! सात्यकिने अश्वत्थामाके सम्पूर्ण मर्म्मस्थानोंमें नौ बाणोंसे प्रहार किया। अश्वत्थामाने भी सात्यकिके ऊपर नौ बाणोंको चला कर फिर शीघ्रताके सहित सात्यकिकी दोनों भुजा और छातीमें तीस बाणोंसे प्रहार किया। महायशस्वी महाधनुर्द्धारी सात्यकिने अश्वत्थामाके बाणोंसे अत्यन्त विद्व होकर द्रोणाचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामाके ऊपर फिर तीन बाणोंसे प्रहार किया। महारथ पौरवने धृष्टकेतुके धनुषको काट कर बलके सिंहनाद किया और फिर अपने तीक्ष्ण बाणोंसे उनको विद्ध किया। महाराज! धृष्टकेतुने दूसरा धनुष लेकर तिहत्तर बाणोंसे पौरवके ऊपर प्रहार किया, वह महारथ महाधनुर्द्धारी दोनों वीर इसी प्रकारसे एक दूसरेको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे; वे दोनों वीर एक दूसरेके रथके घोड़ोंको मार कर और एक दूसरेके धनुषको काटके तलवार ग्रहण करके युद्ध करने लगे। वे दोनों वीर विचित्र रूपकी चन्द्र सूर्य्य और तारोंसे चित्रित सुवर्णभूषित ढाल और तलवार ग्रहण करके इस प्रकारसे एक दूसरेकी ओर दौड़े, जैसे ऋतुमती सिंहिनीके सगम समयमें दो सिंह एक दूसरेकी ओर दौड़ते हैं; वे दोनों एक दूसरेको आक्रमण करनेकी इच्छासे मण्डलाकार पैंतराको चाल दिखाते हुए रणभूमिमें भ्रमण करने लगे; अनन्तर पौरवने "खड़ा रह।" कहके धृष्टकेतुके ललाटमें अपनी बड़ी तलवारसे प्रहार किया; चेदिराज धृष्टकेतुने भी पुरुषोंमें मुख्य पौरवके ऊपर अपनी तलवार चलाई, हे राजन् शत्रु नाशन दोनों शूरवीर इसी प्रकारसे आपसमें एक दूसरेके ऊपर खड्गका प्रहार करके अन्तमें दोनों अत्यन्त पीड़ित हो पृथ्वीमें गिरे, तब तुम्हारे पुत्र जयत्सेनने पौरवको अपने रथ पर उठाके उन्हें रणभूमिसे पृथक् किया। पराक्रमी प्रतापवान् माद्री पुत्र सहदेवने धृष्टकेतुको युद्ध भूमिसे पृथक् किया।

भीमसेनने अनेक बाणोंसे सुशर्म्माको विद्व करके फिर उन्हें साठ बाणोंसे विद्ध किया, उसके अनन्तर फिर दूसरी बार नौ बाणोंसे विद्ध किया। सुशर्म्माने भी क्रुद्ध होकर भीमसेनको दश बाणोंसे विद्ध किया। फिर भीमसेनने क्रुद्ध होकर तीस बाणोंसे सुशर्म्माके ऊपर प्रहार किया। इसी प्रकारसे भीष्मके निमित्त वे दोनों पुरुषसिंह यश और कीर्त्तिकी अभिलाष करके युद्ध करने लगे।

हे राजन्! पराक्रमी अभिमन्यु भीष्मके निकट अर्ज्जुनकी सहायताके निमित्त वृहद्दलके सङ्ग युद्ध करने लगे। कोशलराज वृहद्दलने पहिले अभिमन्युको पांच वाणोंसे विद्ध करके फिर दूसरी बार बीस वाणोसे विद्ध किया। अनन्तर अभिमन्यु कोशलराज वृहद्दलको आठ वाणोंसे विद्ध करके उन्हें विचलित न कर सके; तब फिर अपने वाणोंसे उनको विद्ध करने लगे और अपने तीक्ष्ण वाणोंसे उनके धनुषको काटके फिर कङ्क पङ्खसे युक्त तीस वाणोंसे राजा वृहद्दलके ऊपर प्रहार किया। राजा वृहद्दलने दूसरा धनुष ग्रहण करके क्रुद्धचित्तसे अनेक वाणोंको चलाकर अर्ज्जुनपुत्र अभिमन्युको विद्ध किया। हे परन्तप! जैसे देवता और असुरोंके युद्धमें इन्द्र और वलिका युद्ध हुआ था, उसी प्रकारसे भीष्मके निमित्त पराक्रमी अभिमन्यु और राजा वृहद्दल क्रुद्ध होकर आपसमें युद्ध करने लगे। जैसे देवताओंके राजा इन्द्र हाथमें वज्र लेकर बड़े बड़े पर्व्वतोंको विदारण करते हुए शोभित हुए थे, वैसे ही भीमसेन गजसेनाके सहित युद्ध करते हुए प्रकाशित होने लगे। पर्व्वतके समान बहुतसे हाथी भीमसेनकी गदाकी चोटसे मरकर चिङ्घाड़ मारते हुए पृथ्वीपर गिरने लगे। श्यामवर्णके वे सब हाथी मरके पृथ्वीमें गिरनेपर कज्जल गिरिके समान प्रकाशित होने लगे।

महा धनुर्द्धारी राजा युधिष्ठिर बड़ी भारी सेनासे रक्षित होके मद्रराज शल्यको पीड़ित करने लगे। पराक्रमी शल्य भीष्मकी रक्षाके निमित्त क्रुद्ध होकर धर्म्मपुत्र युधिष्ठिरको अपने वाणोंसे पीड़ित करने लगे। राजा जयद्रथने विराटको सुवर्णदण्डयुक्त नौ वाणोंसे विद्ध किया। राजा विराटने सेनापति जयद्रथकी छातीमें शिलापर घिसे हुए तीस चोखे वाणोंसे प्रहार किया। राजा विराट और सिन्धुराज जयद्रथ इन दोनों महारथोंके विचित्र धनुष, उत्तम तलवार, विचित्र कवच, विचित्र ध्वजा और अस्त्र-शस्त्र भी विचित्र ही थे; इससे दोनों ही विचित्ररूपसे युद्ध करते हुए रणभूमिमें विराजमान हुए।

हे राजन्! द्रोणाचार्य्य सेनापति धृष्टद्युम्नके सम्मुख होकर अपने तीक्ष्ण वाणोंसे महा घोर संग्राम करने लगे। द्रोणाचार्य्यने पचास वाणोंसे धृष्टद्युम्नका धनुष काट दिया, फिर बहुतसे वाण चलाकर उनको विद्ध किया। शत्रुनाशन वीर धृष्टद्युम्नने दूसरा धनुष लेकर युद्ध करते हुए द्रोणाचार्य्यके ऊपर वाणोंको चलाना आरम्भ किया। महारथ द्रोणाचार्य्यने अपने वाणोंसे धृष्टद्युम्नके चलाए हुए सब वाणोंको काट दिया, फिर द्रोणाचार्य्यने राजा द्रुपदकी ओर पांच वाण चलाये। हे राजन्! तिसके अनन्तर शत्रुनाशन वीर धृष्टद्युम्नने यमदण्डके समान एक गदा ग्रहण करके द्रोणाचार्य्यकी ओर चलाई; द्रोणाचार्य्यने सुवर्णभूषित उस गदाको सम्मुख आती देख पचास वाणोंसे उसे निवारण किया; वह गदा द्रोणाचार्य्यके वाणोंसे कई टुकड़े होकर पृथ्वीपर गिरी। शत्रुनाशन धृष्टद्युम्नने गदाको विफल देखकर लोहमयी एक उत्तम शक्ति द्रोणाचार्य्यकी ओर चलाई। हे राजन्! द्रोणाचार्य्य नौ वाणोंसे उस शक्तिको काटके फिर धृष्टद्युम्नको अपने वाणोंसे पीड़ित करने लगे। हे राजेन्द्र! भीष्मके निमित्त महा धनुर्द्धारी द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नका इसी प्रकारसे महा घोर संग्राम होने लगा। अर्ज्जुन गङ्गानन्दन भीष्मको देखके अपने तीक्ष्ण वाणोंसे पीड़ित करते हुए जैसे वनमें एक मतवारा हाथी, दूसरे मतवारे हाथीकी ओर जाता है, वैसे ही उनकी ओर दौड़े। प्रतापवान् महा बलवान् राजा भगदत्त अपने महा मदान्ध हाथीपर चढ़के अर्ज्जुनकी ओर वेगसे चले, उस हाथीके शरीरसे मद झरता था। अर्ज्जुन इन्द्रके ऐरावत

हाथीके समान उस गज-राजको सम्मुख आते देखके अत्यन्त यत्नके सहित उसके सम्मुख उपस्थित हुए। अनन्तर प्रतापी महाबलवान् राजा भगदत्त अपने बाणोंकी वर्षासे अर्ज्जुनको निवारण करने लगे। राजा भगदत्तका हाथी जिस समय वेगपूर्व्वक अर्ज्जुनकी ओर जारहा था, उस समय उन्होंने सुवर्णदण्डयुक्त लोहमय तीक्ष्ण बाणोंसे उसे विद्ध किया। महाराज। अर्ज्जुन शिखण्डीको "जाओ, जाओ, भीष्मके निकट जाओ, उनका वध करो",—ऐसा ही वचन कहने लगे। राजा भगदत्त अर्ज्जुनको त्याग कर शीघ्रताके सहित राजा द्रुपदके समीप उपस्थित हुए। तब अर्ज्जुन शिखण्डीको आगे करके शीघ्रताके सहित भीष्मके सम्मुख स्थित हुए। उसके अनन्तर युद्ध होने लगा; तब तुम्हारी सेनाके शूरवीर रणभूमिमें अर्ज्जुनकी ओर सिंहनाद करते हुए दौड़े; उन सब वीरोंका दौड़ना अद्भुतरूपसे दिखाई देने लगा। जैसे वायु आकाशमें बादलोंको तितर बितर कर देता है, वैसे ही अर्ज्जुन उत्तम अवसर पाकर तुम्हारे पुत्रोंकी सेनाको रणभूमिमें छिन्न-भिन्न करने लगे। शिखण्डीने भीष्म पितामहको देखकर निर्भय चित्तसे यत्नपूर्व्वक अनेक बाणोंकी वर्षासे छिपा दिया। भीष्म उस समय रथ रूपी अग्निगृहमें स्थित थे, धनुष उस अग्निकी शिखा; तलवार, शक्ति और गदा उसके इन्धन, और बाणरूपी महाभयङ्कर ज्वालासे युक्त होकर क्षत्रिय योद्धाओंको भस्म करते थे। जैसे अग्नि वायुका सयोग फूसको भस्म करता हुआ चारों ओर प्रकाशित होता है, वैसे ही भीष्म पितामह अपने दिव्य अस्त्रोंको चलाते हुए प्रकाशित होने लगे। महारथ भीष्म सुवर्णदण्डयुक्त अपने तीक्ष्ण-बाणोंसे पाण्डवोंके अनुयायी चन्द्रवंशियोंका वध कर रहे थे, और पाण्डवोंकी सेनाके शूरवीरोंका भी निवारण करते थे, महारथ भीष्म रथोंकी ध्वजाओंको काट कर रथोंको मुण्डित तालवनके समान कर रहे थे; सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ भीष्म उस रणभूमिमें रथ हाथी और घोड़ोंको मनुष्य-रहित कर रहे थे। सम्पूर्ण सेनाके योद्धा उनके धनुष टङ्कार शब्दको सुन कर भयसे कांप रहे थे। हे प्रजानाथ! तुम्हारे पिता भीष्मके बाण चारों ओर अमोघरूपसे भ्रमण करते हुए दिखाई देते थे, वे सब बाण योद्धाओंके केवल शरीर मात्रमें लगके नहीं गिरे किन्तु शरीरके आवरण भेद कर निकलने लगे।

हे राजन्! उस समय मैंने देखा, कि वेगवान् घोड़ोंके सहित भीष्मके बाणोंसे बहुतेरे मनुष्य मर कर पृथ्वीमें गिर पड़े, कितने पुरुषोंके मरने पर उनके रथके घोड़े वायु वेगके समान रथको खींचते हुए इधर उधर दौड़ने लगे। चेदि, काशि और करूष देशीय चौदह हजार उत्तम वंशमें उत्पन्न हुए शूरवीर महारथ योद्धा, जिनके रथ पर सुवर्णभूषित ध्वजा शोभित थी, और जो संग्रामसे कभी पीछे नहीं हटते थे, वे सब अपने प्राणकी आशाको छोड़ कर यमराजके समान भीष्मके सम्मुख पहुंच कर रथ, हाथी और घोड़ोंके सहित परलोक सिधारे। चन्द्रवंशियोंके बीच ऐसा कोई भी पुरुष उस समय वहा पर नहीं था, जो भीष्मके समीप जाकर अपने जीनेकी आशा कर सके; उस समय सम्पूर्ण पुरुष भीष्मके पराक्रमको देखकर, वहां पर उपस्थित हुए सम्पूर्ण योद्धाओंको ही यमलोकमें पहुंचा हुआ समझने लगे। उस समय रणभूमिमें कृष्ण सारथीके सहित वीर पदसे पुकारे जाने योग्य अर्ज्जुन और राजा द्रुपदके पुत्र महारथ शिखण्डीको छोड़के अन्य कोई भी महारथ योद्धा भीष्मके सम्मुख न जासके।

११३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे भारत । शिखण्डीने पुरुष-सिंह भीष्मके सम्मुख उपस्थित होके शिला पर घिसेहुए दश बाणोंसे उनके दोनों स्तनोंके बीचमें प्रहार किया। गङ्गानन्दन भीष्म क्रोधमें भर कर शिखण्डीको इस प्रकारसे देखने लगे मानो दृष्टिसे ही उसे भस्म किये डालते थे; उन्होंने सब पुरुषोंके सम्मुख जो शिखण्डीको स्त्री समझके उसका वध नहीं किया, उस बातको शिखण्डीने नहीं समझा। हे राजन्! अनन्तर अर्ज्जुन शिखण्डीसे बोले; "जलदी आगे बढ़ो, भीष्म पितामहका वध करो। हे वीर। तुम्हारी क्या बात है। तुम भीष्म पितामहको मारके रथसे गिरा दो। हे पुरुषसिंह। मैं तुम्हारे समीपमें सत्य वचन करता हूं, कि राजा युधि-ष्ठिरकी सेनाके बीच तुम्हारे अतिरिक्त और ऐसा कोई भी शूरवीर योद्धा नहीं है, जो संग्राममें भीष्मके विरुद्ध उनके सम्मुख उपस्थित होके युद्ध कर सके" शिखण्डीने अर्ज्जुनके मुंहसे इस प्रकार अपनी बड़ाई सुनके नाना प्रकारके अस्त्र-शस्त्रोंको चलाके भीष्म पितामहको छिपा दिया। तुम्हारे पिता देवव्रती भीष्मने शिख-ण्डीके चलाए हुए बाणोंको कुछ भी पर्व्वाह न करके क्रुद्ध होकर अर्ज्जुनहीको युद्धसे निवा-रण करने लगे, और पाण्डवोंकी सेनाके दूसरे अनेक योद्धाओंको अपने बाणोंसे मारकर यम-लोकमें भेजने लगे। पाण्डवोंने भी महासेनाको लेकर जैसे बादलोंका समूह सूर्य्यको छिपा देता है वैसे ही भीष्म पितामहको चारों ओरसे घेर लिया। महा पराक्रमी भीष्म पाण्डवोंकी सेनामें चारों ओरसे घिरकर उन सब शूरवीरोंको इस प्रकार अपने अस्त्रोंसे जलाने लगे, जैसे अग्नि वनमें प्रकट होके सम्पूर्ण वनके वृक्षोंको जला देती है। उस रणभूमिमें मैंने तुम्हारे पुत्र दुःशासनका यह आश्चर्य्यमय पराक्रम देखा, कि वह भीष्म पितामहकी रक्षा करने लगे और अर्ज्जुनके सङ्ग युद्ध भी करते थे। सम्पूर्ण पुरुष तुम्हारे पुत्र दुःशासनके उस अद्भुत कर्म्मको देखकर प्रसन्न हुए। वह जब अत्यन्त तेजस्वी होकर अर्ज्जुनके सहित पाण्डवोंसे युद्ध करने लगे, उस समयमें पाण्डव लोग उनको निवारण न कर सके। दुःशासनने रथियोंको रथरहित और घुड़सवारोंको घोड़ोंसे हीन कर दिया; अनन्तर गजसेनाके योद्धाओंको भी हाथियोंसे रहित किया। सम्पूर्ण योद्धा और उनके वाहन दुःशासनके बाणोंसे पीड़ित होके तथा मरके पृथ्वीमें गिरने लगे। कितने ही हाथी बाणोंसे पीड़ित होके रणभूमिसे इधर उधर भागने लगे। जैसे अग्नि सूखे काठको पाकर अधिक प्रचण्ड होती हैं, वैसे ही दुःशासन क्रुद्ध होकर पाण्ड-वोंकी सेनाको अपने बाणोंसे जलाने लगे। हे भारत! उस महा संग्राममें दुःशा-सनको पाण्डवोंकी सेनाके बीचसे कृष्ण सारथीके सहित श्वेतवाहन अर्ज्जुनको छोड़के और कोई भी जय करने वा उनके सम्मुख बढ़नेमें समर्थ न हुआ। हे राजन्! विजय नाम युद्धमें प्रसिद्ध अर्ज्जुन सब पुरुषोंके सामने ही दुःशासनको पराजित करके वेगपूर्व्वक भीष्मकी ओर बढ़े। तुम्हारे पुत्र दुःशासन पराजित होकर भी महा बलवान् भीष्मके बाहुबलका आसरा करके अपनी सेनाके पुरुषोंको धीरज देते हुए फिर अर्ज्जु-नके सङ्ग क्रुद्ध होकर युद्ध करने लगे। शिखण्डी विषधर सर्प और बज्रके समान स्पर्श करने-वाले बाणोंसे भीष्म पितामहको विद्ध करने लगे; परन्तु शिखण्डीके धनुषसे छूटे हुए उन सम्पूर्ण बाणोंसे भीष्म पितामहको तनिक भी पीड़ा न हुई; वह हंसते हंसते शिखण्डीके बाणोंको ग्रहण करने लगे। जैसे गर्म्मीसे दुःखित मनुष्य जलधाराको ग्रहण करनेकी इच्छा करता है, उसी प्रकारसे गङ्गानन्दन भीष्म शिखण्डीके बाणोंको ग्रहण करने लगे।

महाराज। उस समय सम्पूर्ण क्षत्रिय योद्धा महात्मा भीष्मको अग्निके समान प्रचण्ड होकर सब पाण्डवोंकी सेनाके शूरवीर योद्धाओंको अपने अस्त्रोंके बलसे जलाते देखने लगे। तिसके अनन्तर राजा दुर्य्योधनने अपनी सेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंसे कहा, कि तुम लोग सब भांतिसे अर्ज्जुनपर आक्रमण करो ; धर्म्मात्मा भीष्म तुम सब लोगोंकी रक्षा करेंगे, इससे तुम सब लोग मृत्युका भय त्यागकर पाण्डवोंकी सेनाके सङ्ग युद्ध करनेके निमित्त आगे बढ़ो। भीष्म पितामह सम्पूर्ण धार्त्तराष्ट्रोंके शर्म्म वर्म्मकी रक्षा करते हुए सुवर्ण दण्ड भूषित महा तालध्वजासे शोभित होकर रणभूमिमें स्थित है। सम्पूर्ण देवता भी मिलके महात्मा भीष्मको युद्धमें पराजित नहीं कर सकते हैं, तब बलवान् पाण्डव लोग मनुष्य होकर उनका क्या कर सकेंगे? हे शूरवीर क्षत्रिय पुरुषो! तुम लोग रणभूमिमें अर्ज्जुनको देख कर क्यों युद्धसे भाग रहे हो? तुम सब कोई क्षत्रिय योद्धा हो, इससे सावधान होकर यत्न पूर्व्वक युद्ध करो। मैं आज यत्नवान् होके तुम सब लोग के सङ्ग मिल कर अर्ज्जुनके सङ्ग युद्ध करूंगा।

हे राजन्! तुम्हारे धनुर्द्धारी पुत्र राजा दुर्य्योधनके वचनको सुनकर विदेह, कलिङ्ग, दासेरक, निषाद, सौवीर, वाह्लिक, शूरसेन, शिवि, वशाति, दरद, प्रतीच्य, मालव, अभीषाह, शाल्व, शक, त्रिगर्त्त, अम्बष्ठ और केकय देशीय बलवान् और महापराक्रमी सम्पूर्ण योद्धा जैसे पतङ्ग अग्निकी ओर दौड़ता है, वैसे ही अर्ज्जुनके सम्मुख शीघ्रताके सहित आके उपस्थित हुए। हे भारत! महारथ अर्ज्जुनने उन सब महारथियोंको सम्पूर्ण सेनाके सहित सम्मुख आया हुआ देख कर चिन्ता करके दिव्य अस्त्रोंको चलाया, उन अस्त्रोंसे अनेक वाण उत्पन्न हुए और उन्हीं सब वाणोंसे दुर्य्योधनकी सेनाके सब योद्धा इस प्रकारसे भस्म हो गये, जैसे पतङ्ग अग्निमें जाकर जलके मर जाते हैं। महाधनुर्द्धारी अर्ज्जुन जब सहस्रों बाणोंको अपने दिव्य अस्त्रोंसे उत्पन्न करके चलाने लगे, तब उनका गाण्डीव धनुष आकाशमें प्रकाशित होने लगा। महाराज! उन सब क्षत्रियोंके पीड़ित होने पर उनकी ध्वजा भी इधर उधर बाणोंसे कटके गिर पड़ी, वे सब लोग इकट्ठे होकर भी कपिध्वज अर्ज्जुनके सम्मुख न हो सके। रथी योद्धा लोग रथकी उत्तम ध्वजाके सहित, घुड़सवार घोड़ोंके सङ्ग और गजगति योद्धा हाथियोंके सहित अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित होके पृथ्वी पर गिरने लगे। अनन्तर अर्ज्जुनकी भुजाओंसे छूटे हुए बाणोंसे अनेक राजाओंकी सेना चारों ओर भागती हुई दिखाई देने लगी। हे राजन्! अर्ज्जुनने उस सम्पूर्ण सेनाको तितर बितर करके दुःशासनकी ओर अनेक बाण चलाये। वे सब बाण दुःशासनके वपुको भेदके पृथ्वीमें इस प्रकारसे घुस गये, जैसे सर्प विलमें प्रवेश करता है। तिसके अनन्तर अर्ज्जुनने दुःशासनके घोड़ोंका वध करके उनके सारथीको भी बाणोंसे मारके गिरा दिया। फिर अर्ज्जुनने विविंशतिको बीस बाणोंसे रथरहित करके, पांच बाणोंसे पीड़ित किया। अनन्तर कुन्तीपुत्र श्वेतवाहन अर्ज्जुनने कृपाचार्य्य, शल्य और विकर्णको अनेक बाणोंसे विद्ध करके उन सबकी रथ हीन कर दिया। कृपाचार्य्य, शल्य, दुःशासन विकर्ण और विविंशति, ये पाच महारथ रथ रहित होकर अर्ज्जुनके सम्मुख रणभूमिमें पराजित होके भाग गये। हे राजन्! पूर्वाह्न समयमें अर्ज्जुन उन सब महारथियोंको पराजित करके धूएंसे रहित अग्निके समान प्रकाशित होने लगे; और जैसे किरणधारी सूर्य्य चारों ओर अपने किरणोंको प्रकाशि-

करते हैं, वैसे ही अर्ज्जुनने अपने बाणोंकी वर्षा करके दूसरी ओरके क्षत्रिय योद्धाओंका भी वध किया। उन्होंने महारथ वीरोंको अपने बाणोंसे पराजित करके संग्राम भूमिमें कुरु-पाण्डवोंकी सेनाके बीच रुधिरकी नदी बहा दी। हाथी घोड़े और रथियोंका समूह बाजे बाजे स्थानोंमें अस्त्रोंसे मरके पृथ्वीमें गिर पड़ा, कितने ही रथी योद्धा हाथियोंसे और कितने ही घुड़सवार शूरवीर पैदल चलानेवाले योद्धाओंके अस्त्रोंसे मरके पृथ्वीमें गिरे। बहुतेरे हाथी, घोड़े और रथियोंके शरीर और सिर बीचों बीच कटकर चारों ओर रणभूमिमें पड़े हुए दिखाई देते थे। हे राजन्! रुधिररूपी कीचड़से युक्त अनेक मरे हुए हाथी, घोड़े और रथके चक्कोंसे कटे हुए, तथा अस्त्र शस्त्रोंसे गिरते हुए मनुष्योंसे रणभूमि छिप गई। पैदल चलनेवाले शूरवीर योद्धा और घुड़सवार चारों ओर दौड़ने लगे। बहुतेरे रथी और गजपति चारो ओर वीरोंके अस्त्र शस्त्रोंसे मर कर पृथ्वीमें गिर पड़े; और बहुतसे रथोंके चक्के, धूरी और ध्वजा टूट गई; वे सब टूटे हुए रथ इधर उधर पृथ्वीमें पड़े हुए दीख पड़ते थे। जैसे शरद ऋतुमें लाल रङ्गके बादल आकाशमें दीख पड़ते है, उसी भांतिसे युद्धभूमि रथियोंके रुधिरसे रक्त वर्ण होकर प्रकाशित होने लगी। कौए, गिद्ध, कुत्ते, सियार, भेड़िये और दूसरे बहुतसे भयानक पशु-पक्षी मांस भक्षण करके महाभयङ्कर बोली बोलने लगे। राक्षस और दूसरे अनेक प्राणी भी उस समयमें महाघोर शब्द करने लगे। वायु सब दिशाओंमें अनेक प्रकारसे बहने लगा। सुवर्णमय मूल्यवान् पताका वायुके प्रचण्डवेगसे उड़ती हुए दिखाई देने लगी; सैकड़ो, सहस्रों श्वेत छत्र और ध्वजाओंसे युक्त रथ इधर उधर वायुके झोंकेसे तितर बितर होने लगे। हे राजन्! पताकाके सहित कितने ही हाथी अस्त्रोंसे पीड़ित होके इधर उधर दौड़ने लगे। हे प्रजानाथ! कितने ही क्षत्रियोंको गदा, शक्ति और धनुष ग्रहण किये हुए ही मैंने पृथ्वी पर गिरे हुए देखा। हे राजेन्द्र! तिसके अनन्तर महाबलवान् भीष्म दिव्य अस्त्रोंको उत्पन्न करके सब धनुर्द्धारियोंके सम्मुख अर्ज्जुनकी ओर दौड़े। शिखण्डी भीष्मको अर्ज्जुनकी ओर आते देखकर उनकी ओर दौड़े; तब भीष्म शिखण्डीके चलाये हुए अग्निके समान बाणोंको ग्रहण करने लगे, उस ही अवसरमें कुन्तीपुत्र श्वेतवाहन अर्ज्जुन भीष्म पितामहको मोहित करके तुम्हारी सेनाके योद्धाओका वध करने लगे।

११४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! दोनों सेना समानरूपसे व्यूह-बद्ध हुई थी; सेनाके सब योद्धा युद्धसे पीछे न हटके ब्रह्म-लोकमें गमन करनेकी इच्छा करके युद्ध करने लगे। जब महा घोर संग्राम उपस्थित हुआ, तब सेनाके शूरवीरोंने अपने समान पुरुषोंके सङ्ग युद्ध करनेका विचार न किया; सब योद्धा उन्मत्तके समान होकर जहा तहा युद्ध करने लगे। दोनों सेनाका अत्यन्त भयङ्कर मर्य्यादारहित विपरीत युद्ध होने लगा; उस महा घोर युद्धमें मनुष्य और हाथी घोड़े चारों ओर तितर बितर होके लड़ने लगे, तब पैदल चलनेवाले योद्धा, गजपति, रथी तथा घुड़सवारोंमें कोई विशेषता न रही; जिसने जिसको जहा अपने घातपर पाया, वहांपर ही उसका वध किया। इधर शल्य, कृपाचार्य्य, चित्रसेन, दुःशासन और विकर्ण— ये पाचों महारथी योद्धा अपने प्रकाशमान रथोंपर चढ़के पाण्डवोंकी सेनाको अस्त्रोंसे कंपाने लगे, पाण्डवोंकी सेना इन पाचों महारथियोंके बाणोंसे पीड़ित होकर रणभूमिमें

व्याकुल होके इस प्रकार चारों ओर घूमने लगी, जैसे वायुके प्रबल वेगसे समुद्रमें नौका चारों ओर घूमने लगती है। जैसे शिशिर कालमें गौ आदि पशु शीतसे अत्यन्त दुःखित होते हैं वैसे ही पराक्रमी भीष्मके बाणोंसे पाण्डवोंकी सेना अत्यन्त ही पीड़ित और दुःखित हुई। उधर महात्मा अर्ज्जुन भी तुम्हारी महासेनाके काले बादलोंकी घटाके समान अनेक हाथियोंको मारकर रथ यूथपतियोंको पीड़ित करने लगे। कितने ही महा बलवान् हाथी सहस्रों बाणोंसे पीड़ित होकर आर्त्त-नाद करते हुए पृथ्वीपर गिर पड़े। कितने ही शूरवीर महात्मा योद्धा मर गये, उनके सुन्दर भूषणोंसे भूषित शरीर और कुण्डलोंसे युक्त शिरोंसे पृथ्वी छिप गई। उस महा घोर युद्धमें जब भीष्म और अर्ज्जुन अपने पराक्रमको प्रकाशित कर रहे थे, तब तुम्हारे सब पुत्र सम्पूर्ण सेनाको आगे करके भीष्मके निकट उपस्थित हुए और स्वर्ग गमनकी अभिलाषा करके प्राणकी आशा त्यागकर पाण्डवोंकी ओर दौड़े।

हे राजन्! पराक्रमी पाण्डव लोग भी तुम्हारे पुत्रोंके पहिले समयके दिये हुए दुःखोंका स्मरण करके भय त्यागकर ब्रह्म- लोकमें गमन करनेका निश्चय करके क्रोध-पूर्व्वक हर्षके सहित युद्ध करने लगे। सेना-पति महारथ धृष्टद्युम्नने रणभूमिमें अपनी सेनाके योद्धाओंसे कहा, कि तुम लोग सृञ्ज-योंके सहित मिलकर गङ्गानन्दन भीष्मपर आक्रमण करो। चन्द्रवंशी क्षत्रिय और सृञ्जय शूरवीर योद्धा सेनापति धृष्टद्युम्नके वचनको सुनकर चारो ओरसे अस्त्रशस्त्रोंकी वर्षा करते हुए भीष्मकी ओर दौड़े। तुम्हारे पिता भीष्म उन सब वीरोंके अस्त्र शस्त्रोंसे पीड़ित होके क्रोधपूर्व्वक उस सम्पूर्ण सेनाके सङ्ग युद्ध करने लगे। यशस्वी भीष्म पितामहको पहिले बुद्धि-मान् परशुरामने जो शत्रुओंकी सेनाका नाश करनेवाले अस्त्रोंकी शिक्षा दी थी, भीष्मने उन्हीं अस्त्रशस्त्रोंकी शिक्षाके बलसे इस महा संग्राममें नित्य ही दश हजार योद्धाओंका वध किया था; परन्तु दशवें दिन महा पराक्रमी शत्रुनाशन भीष्मने अकेले ही मत्स्य और पाञ्चाल देशीय अगणित हाथी घोड़ोंको मारकर सात महारथियोंका वध किया, और फिर दूसरी बार पांच हजार रथी, चौदह हजार पैदल चलनेवाले मनुष्य, छः हजार हाथी और दश हजार घोड़ोंका वध किया। तिसके अन-न्तर सब राजाओंकी सेनाको तितर बितर करके राजा विराटके प्यारे सहोदर भाई शता-नीकका वध करके पृथ्वीमें गिरा दिया। महा प्रतापी भीष्मने रणभूमिमें शतानीकको मारकर एक हजार राजाओंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे पीड़ित किया, पाण्डवोंकी ओरके जो सब क्षत्रिय योद्धा अर्ज्जुनके अनुगामी हुए थे, सब भीष्मके सम्मुख पहुंचके उनके अस्त्रोंसे मरकर यमलोकको सिधारे। भीष्मने इसी प्रकारसे दशों दिशामें अपने बाणोंको चलाकर पाण्ड-वोंकी सेनाके योद्धाओंका वध किया और कित-नोंको बाणोंसे पीड़ित करके कुरु सेनाके आगे स्थित हुए। जब भीष्म पितामह युद्धमें कठिन कर्म्म करके हाथमें धनुष लेकर दोनों सेनाके बीचमें स्थित हुए, तब उस समयमें सम्पूर्ण योद्धा उनकी ओर इस प्रकारसे न देख सके, जैसे ग्रीष्मकालके तपते हुए मध्याह्न समयके सूर्य्यको कोई नहीं देख सकता है। हे भारत! जैसे देवताओंके राजा इन्द्रने दानवोंकी सेनाको भस्म किया था, उसी प्रकारसे भीष्म पाण्डवोंकी सेनाको अपने अस्त्रोंके बलसे जलाने लगे। देवकीनन्दन कृष्ण महात्मा भीष्मको इस प्रकारसे पराक्रम प्रकाशित करके बीचमें स्थित देखके प्रीति पूर्व्वक अर्ज्जुनसे बोले, हे अर्ज्जुन! यह बलवान

भीष्म दोनों सेनाके बीच इस समय स्थित है; तुम बल पूर्व्वक उनका वध करके युद्धमें विजय लाभ करो। जहांपर वह सम्पूर्ण सेनाको अपने बाणोंसे पीड़ित कर रहे हैं, वहां पर ही तुम अपने पराक्रमको प्रकाशित करके उनका निवारण करो। हे अर्ज्जुन। तुम्हारे अतिरिक्त और दूसरा कोई भी पराक्रमी भीष्मके बाणोंको सहनेका उत्साह नहीं कर सकता।

हे राजन्। कपिध्वज अर्ज्जुनने कृष्णके वचनको सुनकर उसी समय अपने बाणोंकी वर्षासे भीष्मको ध्वजा, रथ और घोड़ोंके सहित छिपा दिया। कुरुश्रेष्ठ भीष्म अर्ज्जुनके चलाये हुए बाणोंसे ही कितने स्थानोंमें पाण्डवोंको सेनाको तितर बितर करने लगे। तिसके अनन्तर राजा द्रुपद पराक्रमी धृष्टकेतु, पाण्डुपुत्र भीमसेन, पृषतनन्दन धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव, चेकितान, केकयराज्यके पांचों भ्राता, सात्यकि, अभिमन्यु, घटोत्कच, द्रौपदीके पांचो पुत्र, शिखण्डी, पराक्रमी कुन्तिभोज, सुशर्म्मा, विराट और पाण्डवोंकी ओरके महाबली पराक्रमी योद्धा और दूसरे अनेक शूरवीर योद्धा लोग जो भीष्मके बाणोंसे पीड़ित होकर शोकरूपी समुद्रमें डूब रहे थे, उन लोगोंके वास्ते अर्ज्जुन नौकास्वरूप होकर भीष्मके सम्मुख आपहुंचे। तब शिखण्डो अर्ज्जुनसे रक्षित होकर परम अस्त्रशस्त्रोंको ग्रहण करके भीष्म पितामहकी ओर दौड़े। अभिमन्यु और द्रौपदीके पांचो पुत्र महा अस्त्रोंको ग्रहण करके भीष्मकी ओर दौड़े। युद्धमें पीछे न हटनेवाले दृढ़ धनुषधारी सम्पूर्ण महारथ भीष्मकी ओर अपने बाणोंको चलाने लगे। शत्रुनाशन भीष्म उन सब धनुषधारी राजाओंके बाणोंको निवारण करके पाण्डवोंकी सेनाको अपने बाणोंसे पीड़ित करने लगे, और मानो क्रीड़ा करते हुए उन सब महारथियोंके बाणोंको काट काटके पृथ्वीमें गिराने लगे। उन्होंने बार बार हंसकर शिखण्डीको स्त्री समझके उसको ओर बाण नहीं चलाया, जब महात्मा भीष्मने राजा द्रुपदकी सेनाके सात रथियोंका वध किया, तब क्षणभरके बीच मत्स्य, पाञ्चाल और चेदिदेशीय योद्धा सिंहनाद करते हुए भीष्मकी ओर दौड़े। हे राजन्! उन सब योद्धाओंने हाथी, घोड़े, रथ और पैदल सेनाके सहित महारथ भीष्मको इस प्रकारसे घेर लिया जैसे बादलोंका समूह सूर्य्यको छिपा देता है। तिसके अनन्तर देव असुरोंके समान उस महाघोर संग्राममें अर्ज्जुन शिखण्डीको आगे करके भीष्म को अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे।

११५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्। पाण्डव लोग इसी प्रकार शिखण्डीको आगे करके भीष्मको घेरकर चारों ओरसे विद्ध करने लगे। वे सब सृञ्जयोंके सहित एकत्रित होकर महा भयङ्कर शतघ्नी, पट्टिश, परशु, मुद्गर, मूषल, प्रास, सुवर्णदण्डयुक्त बाण, शक्ति, तोमर, लोहमय बाण और भुसुण्डी आदि अस्त्रोंसे भीष्मके ऊपर प्रहार करने लगे। उन सब महारथियोंके शस्त्रोंके प्रहारसे महात्मा भीष्मका तनुत्राण कट गया और उनके मर्म्मस्थान बाणोंसे विद्ध होने लगे। भीष्म पितामह उन सब महारथियोंके बाणोंसे विद्ध होकर भी दुःखित न हुए, बल्कि उस समय रणभूमिमें प्रलयकालकी अग्निके समान प्रकाशित होकर चारों ओर घूमने लगे। धनुष बाण तथा दूसरे सम्पूर्ण महा अस्त्रोंसे उनका अधिक प्रकाश बढ़ा, उनके धनुषसे जो सब बाण छूटते थे, वे अग्निके सहायक वायुरूपी दीख पड़ते थे, रथका शब्द अग्निके समान सबको तपा रहा था, उनका धनुष अग्निकी महाशिखारूप और वीर शरीर ही उस अग्निमें काष्ठरूपो बोध होता था। शत्रुओंके निमित्त इस प्रकारके अग्निरूपी भीष्म

उन सब राजाओंके रथोंके समूहके मध्यसे निकल कर बाहर होजाते थे, और कभी उन सब रथियोंके बीचमें घूमते हुए दीख पड़ते थे। अनन्तर उन्होंने पाञ्चालराज और चेदि-राजको तुच्छ समझ कर पाण्डवोंकी सेनामें प्रवेश किया। तब महाबलवान् भीष्म सात्यकि, भीमसेन, अर्ज्जुन, द्रुपद, विराट और धृष्टद्युम्नको महावेगवान् शिलापर घिसे तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध करने लगे। अनन्तर उन छःहों महा-रथियोंने भीष्मके तीक्ष्ण बाणोंको निवारण करके बल पूर्व्वक अपने दश दश बाणोंसे उन्हें पीड़ित किया। महारथ शिखण्डीने जिन सब उत्तम पानी चढ़े हुए बाणोंको भीष्मके ऊपर चलाया, वे सब बाण महात्मा भीष्मके शरीरमें घुस गये। शिखण्डीको आगे करके अर्ज्जुन क्रुद्ध होकर भीष्मकी ओर दौड़े, औरअपने बाणोंसे उनका धनुष काट दिया।

द्रोणाचार्य्य, कृतवर्म्मा, सिन्धुराज जयद्रथ, भूरिश्रवा, शल, शल्य, और राजा भगदत्त,—ये सात महारथी भीष्मके धनुषका कटना न सहके परम क्रुद्ध हो अपने दिव्य अस्त्रोंको प्रकाशित करते हुए शीघ्रताके सहित अर्ज्जुनके सम्मुख आपहुंचे और उनको अपने अस्त्र-शस्त्रों से छिपा दिया। जैसे प्रलयकालके समयमें समुद्रकी लहरका महाभयङ्कर शब्द होता है, वैसे ही उन सब महारथियोंके अर्ज्जुनके निकट उपस्थित होने पर महाघोर शब्द सुनाई देने लगा। अर्ज्जुनके रथके समीप "मारो, पकड़ो, अस्त्रोंसे विद्ध करो, काटो," इसी प्रकारसे चारों ओर महाघोर शब्द होने लगा। हे भारत! उस शब्दको सुनकर पाण्डवोंकी ओरके महारथ सात्यकि, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, विराट, द्रुपद, राक्षस घटोत्कच और अभिमन्यु विचित्र धनुषोंको ग्रहण करके क्रोधपूर्व्वक अर्ज्जुनकी रक्षा करनेके वास्ते भीष्मकी ओर दौड़े जैसे देवताओंके सङ्ग दानवोंका संग्राम हुआ था, वैसे ही कुरुपाण्डवोंका महाघोर रोंगटे खड़ा करनेवाला संग्राम होने लगा। इधर अर्ज्जुनसे रक्षित शिखण्डीने धनुष कटे हुए महात्मा भीष्मको और उनके सारथीको दश दश बाणोंसे विद्ध करके एक बाणसे उनके रथकी ध्वजा काटके गिरा दी। भीष्मने और एक महावेगवान् धनुष ग्रहण किया, अर्ज्जुनने उसे भी उत्तम पानी चढ़े हुए तीन बाणोंसे काटके गिरा दिया। भीष्म जब दूसरा धनुष ग्रहण करते थे, उस ही समय अर्ज्जुन क्रुद्ध होके अपने बाणोंसे उसे काट देते थे। इसी भांति जब बार बहु बार धनुषसे रहित हुए, तब फिर धनुष न ग्रहण करके दांतसे होंठ काटते हुए एक महाघोर पर्व्वतोंको भी तोड़नेकी सामर्थ्यवाली शक्ति ग्रहण करके क्रोधपूर्व्वक अर्ज्जुनकी ओर चलाई। हे भारत। पाण्डुपुत्र अर्ज्जुनने जलते हुए बज्रके समान उस घोर शक्तिको सम्मुख आती देखकर उत्तम पानी चढ़े हुए पांच बाणोंको ग्रहण किया; अनन्तर उन पांचो बाणोंको चला कर भीष्मकी भुजासे छूटी हुई उस भयङ्कर शक्तिको पाच खण्ड करके पृथ्वीमें गिरा दिया। जैसे बिजली बादलोंसे निकल कर पृथ्वी पर गिरती है, वैसे ही वह प्रकाश-मान शक्ति पाच खण्ड होके गिर पड़ी। पराये देशके जीतनेवाले भीष्म उस भयङ्कर शक्तिको अर्ज्जुनके अस्त्रसे कटके गिरती हुई देखकर विचार करने लगे, कि यदि महाबलवान् जनार्द्दन कृष्ण पाण्डवोंके रक्षाकर्त्ता न होते, तो मैं एक धनुष लेकर ही उन सबका वध कर सकता और भी पाण्डवोंकी अवध्यता और शिख ण्डीके स्त्री-भावके कारणसे मैं पाण्डवोंके सङ्ग युद्ध न करूंगा। पहिले समयमें मेरे पिता शान्तनुने सत्यवतीके सङ्ग विवाह करनेके समय मेरे ऊपर प्रसन्न होकर मुझे यह वरदान दिया था, कि "तुम जब मरनेकी इच्छा करोगे,

तभी तुम्हारी मृत्यु होगी।" यदि मैं मरनेकी इच्छा न करूं; तो रणभूमिमें मेरी मृत्यु भी नहीं हो सकती है; इससे अब इस अवसरमें मरनेकी इच्छा करना ही मेरा कर्तव्य कार्य्य है यही मेरी मृत्युके योग्य समय उपस्थित हुआ है। अत्यन्त तेजस्वी भीष्म पितामहके इस अभिप्रायको आकाशमें विमानोंपर बैठे हुए ऋषि लोग और वसुओंने जानकर उनसे कहा, हे तात। तुमने जो विचार किया है, वह हम लोगोंको भी प्रिय है; हे महा धनुर्द्धारी भीष्म! तुम ऐसा ही कार्य्य करो,—युद्धसे निवृत्त होजाओ। उनके वचनोंके समाप्त होनेपर जलकणोंसे युक्त शीतल, मन्द, सुगन्धित वायु बहने लगी। देवतासभाने आनन्दित होके स्वर्गमें दुन्दभी बजाकर भीष्मके ऊपर फूलोंकी वर्षा की; हे राजन्। उन लोगोंके उस वचनको महाबाहु भीष्मके अतिरिक्त और किसीने भी नहीं सुना; परन्तु मैंने व्यास मुनिके वर-प्रभावसे उन सब वचनोंको सुन लिया। हे राजन्! सब लोकोंके प्यारे भीष्म रथसे पृथ्वीपर गिरेंगे, इस बातको जानके देवताओंके मनमें अत्यन्त ही दुःख उत्पन्न हुआ।

महायशस्वी शान्तनुनन्दन भीष्मने देवताओंके वचनको सुन अर्ज्जुनके तीक्ष्ण बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर फिर उनपर आक्रमण नहीं किया। शिखण्डीने क्रुद्ध होकर नौ बाणोंसे भीष्मकी छातीमें प्रहार किया। जैसे भूकम्प होनेपर पर्व्वत अचल रूपसे ही स्थिर रहता है, वैसे ही शिखण्डीके बाणोंके लगनेसे भीष्म तनिक भी विचलित न हुए। अनन्तर अर्ज्जुनने हंसकर गाण्डीव धनुषको खींचकर भीष्मकी ओर पचीस क्षुद्रक बाण चलाये। अनन्तर अर्ज्जुनने फिर क्रुद्ध होकर भीष्मके सम्पूर्ण शरीर और उनके मर्म्म स्थानको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध किया। सत्य पराक्रमी महाबलवान् भीष्म इसी प्रकारसे अन्य महारथियोंके बाणोंसे भी सहस्रों बार अत्यन्त विद्ध होकर उन सबको शीघ्रताके सहित विद्ध करने लगे, और उनके चलाये हुए बाणोंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे निवारण करने लगे। महारथ शिखण्डीने शिलापर घिसे हुए सुवर्ण दण्डयुक्त जितने बाण भीष्मके ऊपर चलाये, उससे उन्हें तनिक भी पीड़ा न हुई। अनन्तर अर्ज्जुन अत्यन्त क्रुद्ध होकर शिखण्डीको आगे करके भीष्मके सम्मुख उपस्थित हुए और उनके धनुषको अपने बाणोंसे काट दिया। अनन्तर अर्ज्जुनने नौ बाणोंसे भीष्मको विद्ध कर एक बाणसे उनके रथकी ध्वजा काट दी, और दश बाणोंसे उनके सारथीको पीड़ित किया। गङ्गानन्दन भीष्मने एक दूसरा दृढ़ धनुष ग्रहण किया, अर्ज्जुनने उसे भी अपने बाणोंसे तीन खण्ड काट दिया। इसी प्रकारसे पल भरमें भीष्म जितने धनुष ग्रहण करते थे, अर्ज्जुन उसी समय उसे अपने बाणोंसे काट देते थे; इसी प्रकार अर्ज्जुनने भीष्मके बहुतसे धनुषोंको काट डाला। तिसके अनन्तर शान्तनुपुत्र भीष्म युद्ध करनेके निमित्त अर्ज्जुनकी ओर नहीं बढ़े; परन्तु अर्ज्जुनने भीष्मके ऊपर पचीस क्षुद्रक अस्त्र चलाये। तब महाधनुर्द्धारी भीष्म अर्ज्जुनके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर दुःशासनसे बोले, हे वीर पाण्डवोंमें महारथ अर्ज्जुन रणभूमिमें क्रुद्ध होकर कई हजार बाणोंसे मुझे पीड़ित कर रहा है। वज्रधारी इन्द्र भी युद्धमें अर्ज्जुनको नहीं पराजित कर सकते, और देव, दानव, तथा राक्षस लोग भी एकत्रित होकर मुझे युद्धमें पराजित करनेको समर्थ नहीं हो सकते; तब मनुष्य महारथ होकर भी मेरा क्या कर सकते हैं? इसी प्रकारसे भीष्म दुःशासनसे बात चीत कर रहे थे, उसी समय अर्ज्जुन शिखण्डीको आगे करके अपने तीक्ष्ण बाणोंसे उनको विद्ध करने लगे। अनन्तर भीष्म पितामह अ॰

तीक्ष्ण-बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होके, हंसकर दुःशासनसे बोले,—ये सब बाण जलधाराके समान आकाशसे आकर मेरे शरीरमें वज्रके समान लगते हैं;—इससे इन बाणोंको अर्जुन ही चला रहा है, ये शिखण्डीके चलाये हुए बाण नहीं है। ये सब बाण मेरे दृढ़ कवचको तोड़के मर्म्मस्थानोंको पीड़ित कर रहे हैं, ये शिखण्डीके बाण नहीं हैं। ये बाण ब्रह्मदण्डके समान स्पर्श करनेवाले और वज्रकी तुल्य न सहने योग्य होकर मुझे अत्यन्त पीड़ित कर रहे हैं, ये शिखण्डीके चलाये बाण नहीं हैं। गदा और परिघके समान स्पर्श करके ये सब बाण मानो यमदूतोंके समान मेरे प्राणका नाश किया चाहते हैं, ये सब बाण शिखण्डीके चलाये हुए नहीं हैं। ये सब बाण विषवारी सर्पके समान मेरे मर्म्मस्थानोंके बीच प्रवेश कर रहे है, इससे ये शिखण्डीके बाण नहीं हैं। जैसे माघ महीनेमें गौओंके मर्म्मस्थान पीड़ित होते हैं, वैसे ही ये सब बाण मेरे शरीरको पीड़ित कर रहे हैं,—इससे इन सब बाणोंको अर्जुन ही चला रहा है, ये बाण शिखण्डीके नहीं हैं। गाण्डीवधारी कपिध्वजासे युक्त वीर अर्जुनके अतिरिक्त दूसरे सम्पूर्ण क्षत्रिय एकत्रित होकर भी युद्धमें मुझे पीड़ित नहीं कर सकते। हे भारत। शान्तनुपुत्र भीष्मने ऐसे ही वचनोंको कहते हुए मानो अर्जुनको भस्म करनेकी इच्छा करके उनकी ओर एक महाभयङ्कर शक्ति चलाई। अनन्तर अर्जुनने भीष्मकी चलाई हुई शक्तिको सब कुरुवंशियोंके सम्मुख ही तीन बाणोंसे तीन टुकड़े करके पृथ्वीमें गिरा दिया; तिसके अनन्तर गङ्गानन्दन भीष्मने मृत्युके मुखमें गमन करनेकी अथवा विजयकी इच्छा करके सुवर्ण भूषित ढाल और तलवारको ग्रहण किया, उन्हें ग्रहण करके रथसे उतरते उतरते ही अर्जुनने अपने बाणोंसे ढाल और तलवारको सौ टुकड़े करके गिरा दिया; अर्जुनका वह कठिन कर्म्म आश्चर्य्यमय दिखाई देने लगा। तिसके अनन्तर राजा युधिष्ठिरने अपनी सेनाके योद्धाओंको आज्ञा दी, कि तुम लोग शीघ्रताके सहित गङ्गानन्दन भीष्मके निकट युद्ध करनेके वास्ते गमन करो, तुम लोगोंको तनिक भी भयकी सम्भा नहीं है। वे सब योद्धा राजा युधिष्ठिरकी आज्ञाके अनुसार गदा, तोमर, प्रास, पट्टिश, धनुष, बाण और उत्तम अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके सिंहनाद करते हुए भीष्मकी ओर दौड़े। हे राजन्। तुम्हारे सब पुत्र भीष्मकी जयकी अभिलाष करके उनकी रक्षाके निमित्त सिंहनाद करते हुए पाण्डवोंकी सेनाकी ओर दौड़े। उस दशवें दिन भीष्म और अर्जुनका समागम होने पर तुम्हारी महासेनासे पाण्डवोंकी सेनाका महा घोर संग्राम होने लगा। दोनों ओरकी सेनाके योद्धा एक दूसरेके बाणोंसे पीड़ित होने लगे। जैसे समुद्रमें गङ्गाका सङ्गम होने पर क्षण भरके बीच वहां पर जल ही जल दीख पड़ता है, वैसे ही दोनों सेना युद्धभूमिमें शोभित हुईं। उस समय भीष्मके सम्पूर्ण मर्म्मस्थान अर्जुनके बाणोंसे विद्ध हुए थे, तो भी वह दश हजार पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंको मार कर कुरु सेनाके आगे स्थित हुए। अनन्तर धनुर्द्धारी अर्जुन अपनी सेनाके आगे होकर कुरु सेनाको तितर बितर करने लगे। उस समय हम लोग, अर्जुनके तीक्ष्ण-बाणोंसे पीड़ित होकर भागने लगे; सौवीर, कितव, प्राच्य, प्रतीच्य, मालव, अभीषाह, शूरसेन, शिबि, वशाति, शाल्व, त्रिगर्त्त, अम्बष्ठ और केकय, इन सब देशोंके शूरवीर योद्धाओंने अर्जुनके सहित भीष्मको रणभूमिमें त्यागके वहांसे पलायन किया। अनन्तर बहुतसे शूरवीर योद्धा सम्पूर्ण कौरवोंको अपने बाणोंसे पीड़ित करके चारों ओरसे एक भीष्मको ही घेरकर उनके ऊपर

अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। सैकड़ों तथा सहस्रों बाणोंको एक ही बार सम्पूर्ण योद्धा भीष्मके ऊपर चलाने लगे, और "मारो, पकड़ो, विद्व करो, काटो," इसी प्रकारसे महा घोर शब्द भीष्मके रथके समीपमें सुनाई देने लगा। इसी भांति तुम्हारे पिता भीष्म अपराह्न समयमें तुम्हारे सब पुत्रोंके सम्मुखमें ही अर्ज्जुनके तीक्ष्ण बाणोंसे क्षत विक्षत शरीर होके पूरबको सिर और पश्चिमको चरण करके रथसे गिरे। भीष्मको रथसे गिरता देख सम्पूर्ण राजाओं तथा आकाशसे देवताओंने महा हाहाकार शब्द किया। महात्मा भीष्म पितामहको रथसे गिरते देखकर, उनके सङ्ग ही सङ्ग हम सब लोगोंका चित्त भी विचलित हुआ। सब धनुर्द्धारियोंके ध्वजास्वरूप वह महाबाहु भीष्म इन्द्र-ध्वजाकी भांति रथसे गिरकर पृथ्वीको कंपाने लगे। महात्मा भीष्म बाणोंसे व्याप्त होरहे थे, इससे रथसे गिरके भी पृथ्वीको स्पर्श नहीं किया। महाधनुर्द्धारी भीष्म पितामहने रथसे गिरके शरशय्यापर शयन किया, उस समय जब उनके हृदयमें दिव्य भावका सञ्चार हुआ; तब आकाशसे बादल जलकी बर्षा करने लगे और पृथ्वी कांपने लगी। वह रथसे गिरते समय सूर्य्यको दक्षिणायन मार्गसे गमन करता हुआ देखकर चिन्ता करके फिर सावधान हुए। इसके अनन्तर चारों ओरसे उन्होंने यह देववाणी सुनी कि "पुरुषसिंह गङ्गानन्दन भीष्म सूर्य्यके दक्षिणायन रहनेपर क्यों प्राणत्याग करेंगे?" देववाणी सुनकर भीष्म पितामह बोले, मैं जीवित हूं। कुरुपितामह भीष्म रथसे पृथ्वीपर गिरकर भी सूर्य्यके उत्तरायण आनेकी प्रतीक्षा करते हुए प्राण धारण करके शरशय्यापर शयन करने लगे।

हिमालयपुत्री गङ्गाने भीष्मका अभिप्राय समझकर महर्षियोंको हंस रूपसे उनके निकटमें भेज दिया। जिस स्थानपर पुरुषसिंह भीष्म शरशय्यापर शयन कर रहे थे, मानसनिवासी हंसरूपी सब ऋषि लोगोंने मिलकर शीघ्रताके सहित वहांपर आकाशसे उतरकर उनके निकटमें गमन किया। अनन्तर उन सब ऋषियोंने भीष्मको शरशय्यापर शयन किये हुए देखा, वे सब मनीषी महर्षि लोग महात्मा भीष्मको प्रदक्षिणा कर सूर्य्यको दक्षिणायन मार्गसे गमन करते देख चिन्ता करके आपसमें कहने लगे, भीष्म धर्म्मात्मा और महात्मा होकर दक्षिणायनमें क्यों प्राणत्याग करते हैं? हंसोंने ऐसा वचन कहके दक्षिण दिशासे प्रस्थान करनेका विचार किया। हे भारत! महा बुद्धिमान् शान्तनुनन्दन भीष्मने उन सब ऋषियोंको जानकर चिन्तापूर्व्वक उन सम्पूर्ण महर्षियोंसे कहा, जबतक सूर्य्य दक्षिणायनमें हैं, तबतक मैं किसी प्रकारसे भी परलोकमें गमन नहीं करूंगा, मैंने ऐसा ही अपने मनमें विचार किया है। हे हंसो! मैं तुम लोगोंसे सत्य वचन कहता हूं, जब सूर्य्य उत्तरायण मार्गसे गमन करेंगे, तब मैं अपने पुराने स्थानपर गमन करूंगा, इस समय उत्तरायण कालकी प्रतीक्षा करते हुए प्राण धारण करूंगा। उचित समयपर प्राणत्याग करना मेरे वशमें है, इसी कारणसे मैं उत्तरायण समयमें मरनेकी अभिलाष करूंगा। मेरे महात्मा पिताने जो मुझे इच्छा-मरणका वर दिया था, वह सार्थक होवे; उसी वरके प्रभावसे अपने मरनेके विषयमें मुझे अधिकार है। जब इच्छा करूंगा, तब ही मेरी मृत्यु होगी; मैं उत्तरायण समयतक प्राणधारण करूंगा। शरशय्या पर पड़े हुए भीष्मने ऐसा वचन कहके फिर शयन किया। कुरुकुलके शृङ्गस्वरूपी महातेजस्वी भीष्म पितामहको इस प्रकारसे गिरा हुआ देखकर पाण्डव और सृञ्जय सिंहनाद करने लगे। हे भारत! कुरु-पितामह महा

भीषमकी रथसे पृथ्वीपर गिरे हुए देखकर तुम्हारे सब पुत्र अपने कर्त्तव्य कर्म्मसे विमूढ़ हुए और सम्पूर्ण कौरवोंको उस समयमें मोह उत्पन्न हुआ। कृपाचार्य्य, दुर्योधन आदि सम्पूर्ण कौरव लम्बी सांसोंको छोड़ने लगे। और विषाद युक्त सम्पूर्ण शरीर और इन्द्रियोंसे शिथिल होकर बहुत समयतक स्थिर होके चिन्ता करने लगे; उस समय युद्ध करनेमें किसी की भी इच्छा नहीं हुई। उनके हाथ पैरोंने मानो मगर घड़ियालरूपी होकर उन्हें पकड़ रक्खा; युद्धमें पाण्डवोंकी ओर गमन करनेमें भी समर्थ नहीं हुए। महाराज। शान्तनुपुत्र महातेजस्वी भीष्म जब सब पुरुषोंसे अवध्य होकर भी युद्धमें मारे गये तब हम लोगोंके मनमें यही वितर्क उपस्थित हुआ, कि अब कुरुराज दुर्य्योधन जीवित नहीं है। हम लोग अर्ज्जुनके सम्मुखसे पराजित और उनके बाणोंसे क्षत विक्षत शरीर होके निज कर्त्तव्य कर्म्मसे विमूढ़ होकर व्याकुल होगये। हे राजन्! महाबाहु पराक्रमी पाण्डवोंका युद्धमें विजय और न्याय युद्धमें जययुक्त होनेसे परलोक भी सुधरेगा। ऐसा विचार कर सब कोई हर्षके सहित अपने अपने शङ्खोंको बजाने लगे। सैकड़ों शङ्ख, भेरी, बांसुरी, ढोल और नगाड़ोंका शब्द सुनाई देने लगा। भीमसेन बलपूर्व्वक महा भयङ्कर सिंहनाद करने लगे। हे राजन्। गङ्गानन्दन भीष्मके मरने पर दोनो सेनाके शूर-वीर योद्धा इधर उधर अस्त्र शस्त्रोंको रख कर चिन्ता करने लगे। कितने ही जोरसे चिल्लाते और कितने ही योद्धा उस समय भागने लगे। कितने ही मोहित होगये और कितने ही शूरवीरोंने क्षत्रिय धर्म्मकी निन्दा करके भीष्मकी प्रशंसा की। सम्पूर्ण ऋषि, देवता, पितर और भरतकुलके पूर्व्व पुरुषोंने भी महाव्रत करने-वाले भीष्म पितामहकी प्रशंसा की। शन्तनुपुत्र बुद्धिमान् भीष्म सूर्य्यके उत्तरायणकी अभिलाष करके उपनिषदोंमें कहे हुए योगको अवलम्बन करके समय बिताते हुए शरशय्या पर शयन करने लगे।

११९ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले; हे सञ्जय। जो पिताके निमित्त ब्रह्मचारी हुए थे, उन देवताओंके समान पराक्रमी भीष्मसे हीन मेरी सेनाके योद्धाओंने उस समय क्या किया? जब भीष्मने द्रुपदपुत्र शिखण्डीके ऊपर घृणा करके उसके वधके निमित्त अपने अस्त्रोंको नहीं चलाया, उसी समयमें मैंने सम्पूर्ण कौरव तथा उनके अनुयायी समस्त योद्धाओंको पाण्डवोंके अस्त्रोंसे मरे हुए समझ लिया है। अपनी दुर्बुद्धिके कारण मैंने आज पिता भीष्मके मरनेका वृत्तान्त सुनके जो दुःख पाया है; इससे बढ़कर और दूसरा कौनसा दुःख हो सकता है? हे सञ्जय! निश्चय ही मेरा हृदय पाषाणसे निर्म्मित है, नहीं तो भीष्मका मरना सुन कर हृदय सौ टुकड़े होके क्यों न फट गया? हे तात सञ्जय! जयकी अभिलाष करनेवाले कुरुसिंह भीष्मने युद्धमें घायल होकर जो कुछ किया था, वह वृत्तान्त तुम मेरे निकट वर्णन करो; युद्धमें जो भीष्म मारे गये, यह मुझसे बार बार नहीं सहा जाता है। पहिले जमदग्निपुत्र परशुरामजी अपने दिव्य-अस्त्रोंको चला कर भी जिनका वध न कर सके;—वह महातेजस्वी भीष्म युद्धमें द्रुपदपुत्र शिखण्डीके अस्त्रोंसे मारे गये!

सञ्जय बोले, हे राजन्! कुरुपितामह भीष्मने सन्ध्याके समय घायल होके धार्त्तराष्ट्रोंको विषादित और पाण्डवोंको आनन्दित करके पृथ्वीको विना स्पर्श किये ही शरशय्या पर शयन किया; वह जिस समय बाणोंसे अत्यन्त विद्व होकर रथसे पृथ्वी पर गिरे, उस समयमें सम्पूर्ण प्राणी महाघोर हाहाकार शब्द करने

लगे। कौरवोंके सौभाग्य रूपी युद्धके जीतनेवाले भीष्म पितामहको पृथ्वी पर गिरते देख दोनों सेनाके योद्धाओंके चित्तमें भय उत्पन्न हुआ। भीष्मको कवच रहित और ध्वजासे हीन देखकर पाण्डव और कौरव—दोनों सेनाके हृदयमें विपरीत भाव उत्पन्न हुआ। आकाशमें अन्धेरा छागया, सूर्य्य प्रकाश हीन होगए, और पृथ्वीमें महाघोर शब्द उत्पन्न हुआ। सम्पूर्ण मनुष्य पुरुषोंमें मुख्य भीष्मको शरशय्या पर शयन करते देखकर आपसमें कहने लगे;—यह ब्रह्मज्ञ पुरुषोंमें श्रेष्ठ और ब्रह्मज्ञोंकी गति हैं। ऋषि, सिद्ध और चारण लोग भरतकुलसत्तम भीष्मको शरशय्यापर देखकर यह वचन कहने लगे, "इन्होंने पिता शान्तनुको कामार्त्त समझके ब्रह्मचर्य्य व्रत अवलम्बन किया था।" जब कुरु-पितामह भीष्म रथसे घायल होके पृथ्वी पर गिरे, तब तुम्हारे पुत्र लोग "क्या करेंगे" ऐसी चिन्ता करके कुछ भी निश्चय न कर सके; उन लोगोंका मुख मलिन होगया; और उन सब लोगोंने तेज रहित तथा लज्जित होके सिर नीचा कर लिया। पाण्डवलोग युद्धमें विजय पाके सुवर्णभूषित शंख और युद्धके सब बाजोंको बजाने लगे। हे महाराज। उस समय महाबलवान् कुन्तीपुत्र भीमसेनको बलपूर्व्वक कुरुसेनाके योद्धाओंका वध करते हुए मैंने निरीक्षण किया। कौरव लोग चेतरहित होगये, कर्ण और दुर्य्योधन बार बार लम्बी सांस छोड़ते चिन्ता करने लगे। कुरुपितामह भीष्मको इस प्रकारसे पृथ्वी पर गिरा हुआ देख सम्पूर्ण सेनाके बीच हाहाकार मच गया। तुम्हारे पुत्र दुःशासन भीष्मको पृथ्वी पर गिरा हुआ देख कर वेगपूर्व्वक द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। दुर्य्योधनकी आज्ञासे भीष्मकी रक्षाके निमित्त चारों ओरसे अपनी सेनाको व्यूहबद्ध कर सेनाके पुरुषोंको विषादित न करके दुःशासनने द्रोणाचार्य्यके समीप गमन किया। हे राजन्! कुरुसेनाके सब शूरवीर योद्धा दुःशासनको आते देख उनकी बातोंको सुननेके निमित्त चारों ओरसे उन्हे घेरके खड़े होगये। तिसके अनन्तर दुःशासनने द्रोणाचार्य्यके समीप जाकर भीष्मके पृथ्वी पर गिरनेका सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन किया; द्रोणाचार्य्य उस अप्रिय समाचारको सुनकर मोहित होगये। प्रतापवान् भरद्वाज-पुत्रने थोड़ी देरके अनन्तर सावधान होकर उसी समय अपनी सेनाको युद्धसे निवृत्त होनेके निमित्त आज्ञा दी। तब पाण्डवोंने भी कौरवोंको युद्धसे निवृत्त होता हुआ देखकर शीघ्र गमन करने वाले अपने अपने घुड़सवार दूतोंको सेनामें चारों ओर भेजके अपनी सेनाके योद्धाओंको भी युद्धसे निवृत्त किया। सेनाके सब पुरुष निवृत्त होनेका समाचार सुनकर युद्धसे निवृत्त हुए। जब सम्पूर्ण सेना युद्धसे निवृत्त होगई तब सब राजाओंने अपने शरीरसे कवच उतार कर भीष्मके निकट गमन किया। उस समयमें सैकड़ों तथा सहस्रों क्षत्रिय योद्धा युद्धसे निवृत्त होकर जैसे सब देवता लोग प्रजापति ब्रह्माके समीप जाकर खड़े होते हैं; वैसे ही भीष्मके निकट जाकर खड़े हुए।

पाण्डव और कौरव, कुरुश्रेष्ठ भीष्म-पितामहको शरशय्यापर शयन किये हुए देखकर प्रणाम करके उनके सम्मुख खड़े होगये। तब धर्म्मात्मा शान्तनुनन्दन भीष्म उन सब लोगोंसे यह वचन बोले,—हे महाभाग पुरुषो! तुम्हारा स्वागत हो। हे देवताओंके समान शूरवीर पुरुषो! तुम सब लोगोंके दर्शनसे मैं सन्तुष्ट हुआ हूं। भीष्म पितामह सिर नीचे लटकाते हुए शरशय्यापर शयन करके सम्पूर्ण पुरुषोंका इसी प्रकारसे स्वागत करके तुम्हारे पुत्रोंको अपने निकट चारों ओर खड़े देखकर उनसे यह वचन बोले;—मेरा सिर नीचे लटक रहा है, तुम लोग मेरे सिरके नीचे

तकिया लगा दो। यह वचन सुनके तुम्हारे पुत्र लोग महीन और कोमल वस्त्रोंसे बने हुए तकिये लेकर वहां उपस्थित हुए; परन्तु पुरुष सिंह भीष्म उन वस्तुओंको ग्रहण करनेकी इच्छा न करके हंस कर उन लोगोंसे बोले, हे राजा लोगो! ये सब वस्तु वीरशय्याके योग्य नहीं हैं। तिसके अनन्तर सब लोकोंके बीच महारथ पुरुष सिंह लम्बी भुजावाले पाण्डुपुत्र अर्जुनकी ओर देखकर महात्मा भीष्म पितामह यह वचन बोले, हे तात! हे महाबाहु अर्जुन! मेरा शिर तकियेके विना लटक रहा है, इससे तुम्हारे विचारमें जैसा वस्त्र मेरे सिरके नीचे देनेके योग्य होवे, वह तुम मेरे शिरके नीचे लगा दो।

सञ्जय बोले, अर्जुन भीष्म पितामहको प्रणाम कर अपने धनुष पर रोदा चढ़ा आंखोंमें आंसू भरके उनसे बोले, हे शस्त्रधारियोंमें अग्रणी पितामह! मैं तुम्हारा दास यहां पर उपस्थित हूं,—कहो, मुझे क्या करना होगा?

अर्जुनकी बात सुनके शान्तनुनन्दन भीष्म फिर बोले, हे तात! कुरुश्रेष्ठ अर्जुन! मेरा सिर नीचे लटका जाता है, इससे तुम मेरे सिरके नीचे कोई योग्य वस्तु प्रदान करो। हे वीर अर्जुन! तुम इस कार्य्यके करनेमें समर्थ हो; तुम सब धनुर्द्धारियोंमें श्रेष्ठ हो; इससे मेरे वीर-शय्याके योग्य मेरे सिरके नीचे तकिया लगा दो। क्षत्रिय धर्मके जाननेवाले, बुद्धि और पराक्रमसे युक्त अर्जुन भीष्मकी आज्ञा मान उनके अभिप्रायके अनुसार कार्य्य करनेके निमित्त तैयार हुए। उन्होंने महात्मा कुरु-पितामह भीष्मकी अनुमति पाकर गाण्डीवधनुष पर सन्नतपर्व्व युक्त तीन तीक्ष्ण वाणोंको चढ़ाके अभिमन्त्रित कर वेग-पूर्व्वक चलाया, और उन तीनों वाणोंसे भीष्म पितामहके सिरको धारण किया। जब सव्यसाची अर्जुनने भीष्मकी इच्छाके अनुसार कार्य्य किया, तब धर्म्म-अर्थके तत्वको जाननेवाले भीष्म पितामह आनन्दित हुए। उन्होंने अपने शरशय्याके योग्य तकिया पाकर अर्जुनको आनन्दित किया, और सम्पूर्ण भरतवंशीय सन्तानोंकी ओर देखके अर्जुनसे यह वचन बोले,—हे कुन्तीपुत्र! हे योद्धाओंमें श्रेष्ठ! हे इष्टमित्रोंके आनन्द और प्रीतिके बढ़ानेवाले पाण्डुपुत्र अर्जुन! तुमने मेरे वीरशय्याके योग्य तकिया प्रदान किया है, यदि तुम इसके विपरीत कार्य्य करते, तो मैं रुष्ट होकर तुम्हें शाप देता। हे महाबाहो! धर्म्ममें निष्ठा करनेवाले क्षत्रियोंको युद्धमें इसी भांतिकी शर-शय्या पर शयन करना योग्य है। भीष्म पितामह अर्जुनसे ऐसा कहके अपने समीप खड़े हुए सम्पूर्ण राजा और राजपुत्रोंसे बोले, आप सब लोगोंने देखा अर्जुनने मेरे शिरके नीचे कैसा उपधान प्रदान किया है? जब तक सूर्य्य उत्तरायण मार्गसे गमन नहीं करेंगे, तब तक मैं इसी शर शय्या पर शयन किये रहूंगा। जो सब क्षत्रिय पुरुष उस समय मेरे समीप आवेंगे, वे लोग मुझे उस समय प्राण त्याग करते हुए देखेंगे। हे राजा लोगो! इस स्थान पर मेरे निमित्त परिखा खुदवा दो, मैं यहां पर ही अनेक वाणोंसे व्याप्त रह कर सूर्य्यकी उपासना करूंगा। हे राजसत्तम! तुम लोग इस समय आपसकी शत्रुताको त्यागके युद्धसे शान्त होजाओ।

सञ्जय बोले, हे राजन्! अनन्तर शरीरके घावोंकी चङ्गा करनेके निमित्त, उत्तम शिक्षा और चिकित्सामें निपुण कई एक वैद्य सम्पूर्ण औषधियोंको लेकर भीष्म पितामहके निकट उपस्थित हुए। गङ्गानन्दन भीष्म उन वैद्योंको देखकर तुम्हारे पुत्र राजा दुर्य्योधनसे बोले, हे दुर्य्योधन! तुम चिकित्सकोंको सम्मानित करके उन्हें धन देकर विदा करो; इस समय मेरी ऐसी अवस्थामें वैद्यका कुछ भी प्रयोजन नहीं

है, क्योंकि मैंने क्षत्रिय धर्म्मके अनुसार परम श्रेष्ठ गतिको प्राप्त किया। हे राजा लोगो! इस समय अब मैं शरशय्या पर हूं, अब मेरे वास्ते वैद्योंकी क्या अवश्यकता है? अब जो मैं इन सम्पूर्ण तीक्ष्ण-बाणोंकी अग्निसे भस्म होऊंगा यही मेरे वास्ते परम धर्म्म है। राजा दुर्य्योधनने भीष्मके ऐसे वचन सुन वैद्योंको यथायोग्य धन देके उन सबको मान पूर्व्वक विदा किया। अनन्तर नाना देशोंके इकट्ठे हुए सम्पूर्ण राजा लोग अत्यन्त तेजस्वी भीष्म पितामहको धर्म्म विषयमें परम निष्ठा देखकर विस्मित हुए। महाराज पाण्डव और कौरवोंने तुम्हारे पिता भीष्मको इस प्रकारसे तकिया प्रदान किया; अनन्तर सबने मिल शरशय्या पर सोये हुए महात्मा भीष्मके निकट जाकर तीन बार उनकी प्रदक्षिणा किया। रुधिरसे युक्त शरीरवाले सम्पूर्ण वीर योद्धाओंने भीष्मकी रक्षाका विधान करके बहुत ही कातर चित्तसे चिन्ता करते हुए विश्रामके निमित्त अपने अपने शिबिरोंमें प्रवेश किया।

महा बलशाली कृष्ण भीष्मके पृथ्वीपर गिरनेके अनन्तर, पाण्डवोंको प्रसन्न चित्तसे शिबिरोंमें पहुंचा देख उचित समय जान कर उन सबके निकट जाकर धर्म्म पुत्र युधिष्ठिरसे यह वचन बोले—हे भारत! तुम प्रारब्धसे ही युद्धमें जयी हुए हो, सत्य पराक्रमी भीष्म मनुष्योंसे अवध्य थे, तुमने प्रारब्धसे ही उन्हें निपातित किया है, अथवा तुम अपनी कोपदृष्टिसे जिसकी ओर देखो, वह कभी जीवित नहीं रह सकता। इससे भीष्म सब शस्त्रोंके जानने वाले होकर भी प्रारब्धके अनुसार तुम्हारे सङ्ग युद्ध करके तुम्हारी कोपदृष्टिसे ही भस्म होते होंगे।

जब कृष्णने धर्म्मराज युधिष्ठिरसे ऐसा वचन कहा, तब राजा युधिष्ठिर उनसे बोले, हे कृष्ण! तुम जिस पर प्रसन्न रहते हो, उस ही का जय होता है; और तुम जिसके ऊपर क्रोध करते हो, उसहीका युद्धमें पराजय होता है। हे कृष्ण! जो लोग तुम्हारे भक्त और शरणागत हैं, उन्हें कुछ भी भय नहीं होता, हम लोग तुम्हारे शरणमें है। तुम युद्धमें सदा जिसकी रक्षा करते हो, जिसके तुम सदा ही; हितैषी हो, उसके विजयका होना कुछ आश्चर्य्यका विषय नहीं है। मेरे विचारमें जब हम लोगोंने तुमको सब प्रकारसे अपना सहाय पाया है, तब युद्धमें विजय प्राप्त करेंगे, इसमें आश्चर्य्य ही क्या है?

जब धर्म्मराज युधिष्ठिर कृष्णसे ऐसा वचन बोले तब जनार्द्दन कृष्णने हंसके कहा, हे राजसत्तम। तुमने जैसा वचन कहा है, वह तुम्हारे ही उपयुक्त हुआ है।

११७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज। रात्रिके बीतने पर जब सवेरा हुआ, तब सम्पूर्ण राजा पाण्डव और तुम्हारे पुत्रोंने भीष्म पितामहकी उपासना करनेके निमित्त उनके समीप गमन किया। सम्पूर्ण क्षत्रिय पुरुष वीर शय्यापर शयन किये हुए भीष्मको प्रणाम करके उनके निकट खड़े होगये। सहस्रों कन्याएं वहां जाकर शान्तनुनन्दन भीष्मके निमित्त चन्दन चूर्ण और माल लेकर खड़ी हुईं। बालक, बूढ़े, स्त्री और सर्व्वसाधारण लोग भीष्मको देखनेकी इच्छासे उनके निकट इस भांतिसे उपस्थित हुए जैसे सम्पूर्ण प्राणी अन्धकारका नाश करनेवाले सूर्य्यके अनुगामी होते हैं। बहुतेरे बाजा बजानेवाले; नट नाच करनेवाले और शिल्पी लोगोंने शरशय्यापर शयन किये हुए भीष्मके निकट गमन किया। कुरु-पाण्डवोंकी सेनाके सब वीर योद्धाओंने कवच तथा अस्त्र-त्याग कर महातेजस्वी शत्रुनाशन भीष्म

मह्के निकट गमन किया। वह सब पहिलेकी भांति वहां पहुंचकर प्रीतिपूर्व्वक यथा योग्य रीतिसे भीष्मके निकट बैठ गये। जैसे आकाशमें सूर्य्यमण्डलकी शोभा दीख पड़ती है, वैसे ही सैकड़ों राजाओंसे युक्त वह सभा भीष्म और भरत वंशीय राजाओंसे प्रकाशित होकर शोभित होने लगी। जैसे ब्रह्माकी उपासना करनेके समय देवताओंकी सभा शोभित होती है, वैसे ही गङ्गानन्दन भीष्मकी उपासना करनेवाले उन राजाओंकी सभा भी प्रकाशित होने लगी। हे भारत! भीष्म बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर सर्पके समान लम्बी सांस छोड़ते हुए धीरज धारण कर अस्त्र-शस्त्रोंकी सम्पूर्ण पीड़ा सह रहे थे; उनका शरीर बाणोंकी चोटसे भस्म होरहा था; उन्होंने बाणोंकी पीड़ासे मूर्च्छित-प्राय होकर सम्पूर्ण राजाओंको अपने निकटमें उपस्थित देखकर पानी पीनेकी इच्छा की; अनन्तर उन सब राजाओंने चारों ओरसे भोजन करने योग्य बहुतसे व्यञ्जन और अत्यन्त ही उत्तम तथा मीठे और ठण्डे कई एक पानीके घड़ोंको लाकर उपस्थित किया, उसे देखकर शान्तनुपुत्र भीष्म बोले, हे पुत्रो! इस समय मैं किसी प्रकारसे मनुष्योंके योग्य भोगोंको नहीं ग्रहण करूंगा। मैं इस समय शरशय्या पर पड़ कर मनुष्योंके योग्य भोगोंसे रहित होगया हूं, केवल सूर्य्य-चन्द्रमाके उत्तरायण मार्गसे गमन करनेकी प्रतीक्षासे जीवन धारण कर रहा हूं। हे भारत! शान्तनुपुत्र भीष्मने ऐसा वचन कहके क्षत्रियोंकी निन्दा करके अर्जुनको देखनेकी इच्छा की। अनन्तर महाबाहु अर्जुनने उनके समीप जा हाथ जोड़के उन्हें प्रणाम किया और उनके सम्मुख खड़े होगये। अर्जुनने भीष्मसे निवेदन किया, कि कहिये पितामह! क्या आज्ञा है, मुझे कौनसा कार्य्य करना होगा? धर्म्मात्मा भीष्म पुत्र अर्जुनको प्रणाम करते और सम्मुख खड़े देखकर प्रसन्न हो यह वचन बोले, हे अर्जुन! तुम्हारे बाणोंसे मैं अत्यन्त ही बिद्ध होगया हूं, मेरा सब शरीर भस्म हुआ जाता है, मर्म्म स्थानोंमें पीड़ा होरही है, मुख सूखा जाता है, मेरा सम्पूर्ण शरीर अस्त्र शस्त्रोंकी चोटसे अत्यन्त पीड़ित होरहा, हे महाधनुर्धारी अर्जुन! तुम ही इस अवस्थामें मुझे यथा उचित विधिपूर्व्वक पानी पिलानेमें समर्थ होओगे, इससे तुम मुझे पीनेके वास्ते जल प्रदान करो। पराक्रमी अर्जुनने भीष्मकी आज्ञा सुनके रथ पर चढ़के बलपूर्व्वक धनुष पर रोदा चढ़ाकर धनुष्टङ्कार किया। सम्पूर्ण राजा और दूसरे सब पुरुष वज्रके समान अर्जुनके गाण्डीव धनुषके शब्दको सुनकर भयभीत होगये। पाण्डुपुत्र रथियोंमें श्रेष्ठ अर्जुनने शर शय्या पर सोये हुए भीष्म पितामहको रथ पर चढ़के प्रदक्षिणा किया। अनन्तर एक प्रका समान बाणको अभिमन्त्रित और पार्जन्य अस्त्रसे युक्त कर धनुष पर चढ़ाके भीष्मके दाहिनी ओर पृथ्वीको विद्ध किया। तिसके अनन्तर दिव्य सुगन्ध और रससे युक्त अमृतके समान शीतल जलकी धारा पृथ्वीसे उत्पन्न हुई। अर्जुनने उसी जलधारासे दिव्य कर्म्म करनेवाले, दिव्य पराक्रमी, कुरुश्रेष्ठ भीष्मको तृप्त किया। तब सम्पूर्ण क्षत्रिय योद्धा इन्द्रके समान अर्जुनका यह पराक्रम देखकर अत्यन्त ही विस्मित हुए। कौरवलोग अर्जुनका अलौकिक कर्म्म देखकर शीतसे जकड़े हुए गौओंके समान कांपने लगे। सम्पूर्ण राजा अर्जुनका यह कर्म्म देखकर कम्पित हुए और चारों ओरसे शंख और नगाड़े बजने लगे। शान्तनुपुत्र भीष्म तृप्त होकर सम्पूर्ण क्षत्रियोंके सम्मुख अर्जुनकी प्रशंसा करके यह वचन कहने लगे; हे कुरुवंशके आनन्दको बढ़ानेवाले अत्यन्त तेजस्वी महाबाहु अर्जुन! यह कर्म तुम्हारे निमित्त कुछ विचित्र नहीं है, तुम अ

पुरातन ऋषि हो, उसे देवर्षि नारदने मेरे वर्णन किया था। सम्पूर्ण देवताओंके सहित इन्द्र भी जिस वृहत् कार्य्यके करनेका उत्साह नहीं कर सकते, तुम कृष्णकी सहायतासे उस कर्म्मको पूर्ण करोगे। ज्ञानी पुरुष तुमको सम्पूर्ण क्षत्रियोंका नाश करनेवाला समझते हैं। तुम पृथ्वीके बीच सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंमें प्रधान हो और समस्त पुरुषोंमें भी श्रेष्ठ हो। इस पृथ्वीमें जैसे सब जीवोंके बीच मनुष्य श्रेष्ठ है, पक्षियोंमें गरुड़ श्रेष्ठ हैं और सरितोंमें समुद्र श्रेष्ठ है, वैसे ही धनुर्द्धारियोंके बीच तुम श्रेष्ठ हो। जैसे तेजस्वियोंमें सूर्य्य, पर्व्वतोंमें हिमालय और जातियोंमें ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं; उसी प्रकारसे तुम धनुर्द्धारियोंमें श्रेष्ठ हो। मैं, विदुर, द्रोणाचार्य्य, जमदग्निके पुत्र परशुराम, जनार्द्दन कृष्ण और सञ्जय आदि हम सब लोगोंने पृथक् रूपसे दुर्य्योधनको युद्धसे निवारण किया था; परन्तु बुद्धिहीन दुर्य्योधनने अज्ञान पुरुषके समान होकर हम लोगोंके वचनोंमें श्रद्धा नहीं की। वह सदा ही शासनसे बाहर रहता है, इससे शीघ्र ही भीमसेनके बलसे मरकर पृथ्वीमें सोवेगा। अनन्तर भीष्मकी बात सुनकर दुर्य्योधन दीनचित्त होकर दुःखित हुए। दुर्य्योधनको दुःखित देखकर भीष्म पितामह बोले, हे राजन्। दीनभावको त्यागकर मेरे वचनोंको सुनो। बुद्धिमान् अर्ज्जुनने जो दिव्य गन्धयुक्त अमृतके समान पृथ्वीसे जलधारा उत्पन्न की, उसे तुमने अपने नेत्रोंसे देखा, ऐसा कर्म्म कर सके, इस प्रकारका कोई भी पुरुष इस पृथ्वीपर नहीं है। आग्नेय, वारुण, सौम्य, वायव्य, वैष्णव, ऐन्द्र, पाशुपत, ब्राह्म, और प्राजापत्य, ये सम्पूर्ण अस्त्र और विधाता, त्वष्टा और सविताके सम्पूर्ण अस्त्र इस मर्त्यलोकके बीच एक अर्ज्जुन और देवकीपुत्र कृष्ण ही जानते है, दूसरा कोई भी नहीं जानता है। हे दुर्य्योधन। जिस महात्माका तुमने ऐसा अलौकिक कर्म्म देखा है, उसको तुम युद्धमें कैसे पराजित कर सकोगे? इससे युद्धके सब कार्य्योंको जाननेवाले पराक्रमी अर्ज्जुनके सङ्ग तुम्हारी शीघ्र ही सन्धि होनी उचित है। हे कुरुसत्तम। जबतक महाबाहु कृष्ण क्रुद्ध नहीं होते हैं, उतने ही समयमें तुम शूरवीर पाण्डवोंके सङ्गमें सन्धि स्थापन करो। जबतक अर्ज्जुन अपने तीक्ष्ण बाणोंसे तुम्हारी सम्पूर्ण सेनाको नहीं जलाते हैं, तभी तक तुम पाण्डवोंके सङ्गमें सन्धि स्थापन करो। जबतक तुम्हारे बचे हुए सहोदर भ्राता और बहुतसे राजा इस युद्धमें जीवित हैं; तभीतक पांडवोंके संग तुम सन्धि कर लो। जबतक राजा युधिष्ठिर क्रोधपूरित नेत्रसे तुम्हारी सेनाको नहीं जलाते हैं, तभीतक तुमको पाण्डवोंके संग सन्धि करनी उचित है। जबतक नकुल, सहदेव और भीमसेन तुम्हारी सम्पूर्ण सेनाका नाश नहीं करते हैं, तभीतक वीर पाण्डवोंके संग तुम्हारी मित्रता होनी चाहिये, यही मेरी इच्छा है। हे पुत्र। तुम पाण्डवोंके सहित शान्तिभाव अवलम्बन करो, मेरे विनाश तक ही युद्धको शेष करो। हे पापरहित। मैंने जो कुछ वचन तुमसे कहा है, उसमें तुमको सम्मत होना योग्य है, यही मैं तुम्हारे और इस वंशके लिए मङ्गलमय और कल्याणकारी समझता हूं। हे पुत्र। क्रोध त्यागकर पाण्डवोंके संग मेल कर लो; अर्ज्जुनने यहां ही तक युद्धमें जो कुछ कर्म्म किया है, वहा तक ही अब युद्धको समाप्ति करो। भीष्मके निपातित होनेपर अब तुम लोगोंमें मित्रता स्थापित होवे बचे हुए सब क्षत्रिय जीवित रहें, इससे तुम प्रसन्न चित्तसे पाण्डवोंको आधा राज्य प्रदान करो, धर्म्मराज युधिष्ठिर हस्तिनापुरमें गमन करें। हे कुरुराज! ऐसा होनेसे मनुष्यों के बीच पापी और मित्रद्रोही

अकीर्त्ति नहीं होवेगी। मेरे मरनेतक ही सब प्रजाओंके बीच शान्ति स्थापित होवे, राजा लोग प्रीतिपूर्व्वक अपने अपने स्थानोंपर गमन करें, पिता पुत्रको, भानजे मामाको और भ्राता अपने भाईको जीवित पावेंगे। यदि समयके अनुसार मेरे इस वचनको तुम अपनी नीच बुद्धि के वशमें होकर नहीं मानोगे, तो तुमको अन्त समयमें पश्चात्ताप करना पड़ेगा। मैंने यह सब तुम लोगोंसे सत्य ही कहा है, इससे तुमलोग यहां ही तक युद्ध करके अब शान्त होकर आपसमें सन्धि कर लो।

सञ्जय बोले, गंगानन्दन भीष्मने सम्पूर्ण क्षत्रियोंके बीच दुर्य्योधनको इसी प्रकारके वचन सुनाये; उनके सम्पूर्ण मर्म्मस्थान तीक्ष्ण-बाणोंसे अत्यन्त क्षत-विक्षत होकर पीड़ित हो रहे थे, उसको पीड़ा सहते हुए उन्होंने आत्माको स्थिर किया। उनके कहे हुए हितकारी धर्म्म अर्थसे युक्त उत्तम वचनोंको सुनकर राजा दुर्य्योधनको उसमें इस प्रकारसे रुचि नहीं हुई, जैसे कालके वशमें हुआ पुरुष औषधि ग्रहण करनेकी इच्छा नहीं करता।

११८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! तिसके अनन्तर शान्तनुनन्दन भीष्मके मौनावलम्बन करने पर सम्पूर्ण क्षत्रिय योद्धाओंने फिर अपने अपने शिविरों पर गमन किया। तब पुरुषश्रेष्ठ राधानन्दन कर्णने भीष्मका वध सुनकर अत्यन्त विस्मित हो शीघ्रताके सहित उनके निकट गमन किया। महातेजस्वी कर्ण वहां पर पहुंचे और भीष्म पितामहको शरशय्या पर पडे तथा बाणोंसे ही उत्पन्न हुए स्वामिकार्त्तिकके समान शरशय्या पर शयन किये और नेत्रोंको मूंदे हुए देखा, अनन्तर आखोंमें आंसू भर दुःखित चित्तसे भीष्मके समीप जा उनके दोनों चरणोंपर अपना शिर रखके ये वचन बोले,—हे पितामह! मैं वही राधापुत्र कर्ण हूं, जिसको तुम सदा सर्व्वदा सब स्थलों पर द्वेषभावसे देखते थे।

कौरवोंमें बूढ़े भीष्म पितामहके दोनों नेत्र जरा-अवस्थाके पलकोंके चमड़ोंसे ढके थे, उन्होंने कर्णका वचन सुनकर धीरे धीरे अपने नेत्रोंको खोला, फिर सम्पूर्ण रक्षकोंको वहांसे पृथक् करा कर निर्ज्जन स्थान देख, उन्होंने अपने एक हाथसे कर्णको इस प्रकारसे आलिंगन किया, जैसे पिता पुत्रको आलिंगन करता है। अनन्तर भीष्म पितामह प्रीतिपूर्व्वक कर्णसे यह वचन बोले, हे कर्ण! आओ, आओ, तुम शत्रुभावसे युक्त होकर मुझसे ईर्षा करते हो, परन्तु यदि तुम इस समय मेरे निकट न आते, तो तुम्हारा किसी प्रकारसे कल्याण न होता। हे महाबाहो! तुम कुन्तीके पुत्र हो, यह मुझसे देवऋषि नारदने कहा था; मैंने इस विषयको उनके और कृष्ण द्वैपायन (व्यास) के निकट सुना था; इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। हे पुत्र! तुमसे मैं सत्य कहता हूं, तुम्हारे ऊपर मेरा कुछ भी द्वेष नहीं है; तुम्हारे तेजका नाश करनेके निमित्त मैंने तुमको कठोर वचन कहा था। हे उत्तम व्रत करनेवाले कर्ण! तुम विना कारणसे ही पाण्डवोंकी निन्दा किया करते हो, इसीसे मैंने तुमको कुरुसभामें अत्यन्त रूखा वचन सुनाया था। मैं तुम्हारी ब्रह्मनिष्ठा, वीरता और दानमें परम निष्ठा तथा युद्धमें शत्रुओंके न सहने योग्य पराक्रमको जानता हूं। हे देवताओंके समान कर्ण! पुरुषोंमें तुम्हारे समान कोई भी नहीं हैं, मैं केवल कुलभेदके भयसे ही सदा तुमको कठोर वचन कहता था। अस्त्र-शस्त्र, बाण और अस्त्रोंके सन्धान करने, हस्तलघुता तथा अस्त्रोंके बलसे तुम महात्मा कृष्ण और अर्ज्जुनके समान हो।

हो हे कर्ण। तुमने अकेले ही धनुष धारण करके कुरुराजके विवाहके निमित्त काशीनगरीमें गमन करके सम्पूर्ण राजाओंको पराजित किया था। युद्ध में प्रशंसित महाबलवान् राजा जरासन्ध तुम्हारे समान न होसका। तुम द्विजोंमें निष्ठावान् और सत्यवादी हो। युद्धके कार्य्य, तेज और बलमें तुम देवपुत्रके समान और युद्धभूमिमें अलौकिक कर्म्मोंके करनेवाले हो। तुम्हारे ऊपर मेरा जो क्रोध था वह आज दूर होगया; जो होना था वह हुआ है पुरुषार्थसे कोई प्रारब्धको नहीं अतिक्रम कर सकता। हे शत्रुनाशन महाबाहो। पाण्डव तुम्हारे सहोदर भाई हैं। इससे यदि तुम मेरे प्रियकार्य्यको करनेकी इच्छा करते हो, तो उन लोगोंसे मिलो। हे सूर्य्य-पुत्र कर्ण! मेरे ही वध पर्य्यन्त पाण्डवोंके सङ्ग शत्रुताकाशेष होवे, जिससे पृथ्वीके सम्पूर्ण राजा जीवित रहके अपने स्थानोंपर गमन करें।

कर्ण बोले, हे महा तेजस्वी महाबाहो पितामह। तुम जो कहते हो, वह सब मैं जानता हूं। मैं सूतपुत्र नहीं हूं, कुन्तीका पुत्र हूं, यही ठीक है;— इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। परन्तु कुन्तीने जब मुझे त्याग दिया, तब अधिरथ सूतने मेरा प्रतिपालन करके मुझे बड़ा किया है। इसके अतिरिक्त मै दुर्य्योधनका ऐश्वर्य्य उपभोग कर रहा हूं, उसके ऐश्वर्य्यको भोग करते हुए मैंने उसके निकट जो कुछ कार्य्य स्वीकार किया है, उसको मिथ्या करनेका उत्साह नहीं कर सकता हूं। हे बहुतसी दक्षिणा देनेवाले देवव्रती भीष्म! बसुदेवपुत्र कृष्ण जिस प्रकारसे पाण्डवोंकी रक्षाके निमित्त दृढ़ निश्चय करके स्थित हैं, मैं भी उसी भांतिसे दुर्य्योधनके निमित्त धन, पुत्र, स्त्री और यश आदि सम्पूर्ण वस्तुओंके त्यागनेकी अभिलाष करता हूं। क्योंकि क्षत्रियोंको व्याधिसे मरना उत्तम और उपकारक नहीं है। विशेष करके मैंने दुर्य्योधनका आसरा करके पाण्डवोंको कुपित किया है; जो अवश्यभावी होनहार है, उसके निवारण करनेकी किसीकी भी सामर्थ नहीं है। कौन पुरुष पुरुषार्थसे दैवी घटनाओंके निवारण करनेका उत्साह कर सकता है? हे पितामह। तुमने पृथ्वीके सम्पूर्ण वीरोंका नाश करके सम्पूर्ण राज्य ग्रहण किया था, जिसे तुमने कुरुसभामें वर्णन किया था। पाण्डव लोग और कृष्ण जो किसी प्रकारसे भी दूसरे किसी पुरुषसे पराजित नहीं होनेवाले हैं, उसे जानकर भी मैं उनके सङ्ग युद्ध करनेका उत्साह करता हूं, कि उन लोगोंको युद्धमें पराजित करूंगा, यह मेरा निश्चित विचार है। मुझमें इस महा घोर शत्रुताचरणको त्यागनेको सामर्थ्य नहीं है। हे तात! मैं प्रीतियुक्त चित्तसे अर्ज्जुनके सङ्ग युद्ध करूंगा। मैं युद्धके निमित्त निश्चय कर चुका हूं, अब तुम युद्ध करनेके निमित्त मुझे आज्ञा दो। मैं तुम्हारी अनुमति ग्रहण करके युद्ध करूं, यही मेरी इच्छा है। मैंने क्रोध और चपलताके कारण जो तुम्हारे विरुद्ध कुछ आचरण किया हो तो उसे तुम क्षमा करो।

भीष्म बोले, हे कर्ण। यदि तुम इस कठोर शत्रुभावको त्यागनेमें असमर्थ हो तो मै तुमको युद्धके निमित्त अनुमति देता हूं; स्वर्ग-प्राप्तिको कामना करके युद्ध करो। क्रोध और अभिमानको त्यागकर साधु पुरुषोंके समान उत्तम चरित्रसे युक्त होकर अपनी शक्ति और उत्साहके अनुसार राजाओंके योग्य युद्ध कार्य्य करो। मैं तुमको आज्ञा देता हूं, तुम जो इच्छा करोगे उसे सिद्ध करोगे, तुम क्षत्रिय धर्म्म द्वारा पराजित सम्पूर्ण लोकोंको अवश्य प्राप्त करोगे। क्षत्रियोंका धर्म्म युद्धको अपेक्षा दूसरा और कुछ भी उत्तम नहीं है। इसमें अपने बल, वीर्य्य और पराक्रमके अनुसार अहङ्काररहित होकर युद्ध करो। हे कर्ण। मैंने इस वैर भावको छुड़ानेके निमित्त बहुत दिनोंतक

अत्यन्त ही यत्न किया; परन्तु कृतकार्य्य नहीं हो सका।

सञ्जय बोले, जब गङ्गानन्दन भीष्मने ऐसा वचन कहा तब राधापुत्र कर्णने भीष्म पितामहको प्रणामकर रोदन करते हुए रथपर चढ़के तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनके समीप जानेके निमित्त प्रस्थान किया।

११९ अध्याय समाप्त।

भीष्मपर्व्व सम्पूर्ण।

महाभारत ।

द्रोणपर्व्व ।

अब द्रोणाभिषेकपर्व्व लिखेंगे ।

दोहा ।

नर, नारायण, व्यास अरु
वन्दि सरस्वति पाय ।
भारतकी भाषा-करौं
सुजननको सुखदाय ॥

राजा जनमेजय बोले, हे ब्राह्मणश्रेष्ठ । महाबली, अत्यन्त तेजस्वी और बड़े प्रतापी, देवताओंके व्रतमें स्थित, जेठे पुरखा भीष्म पाञ्चाल शिखण्डीके हाथसे मारे गये ; यह सुनकर बलवान् राजा धृतराष्ट्रने आंसू भरे नेत्रसे किस प्रकारकी चेष्टा की थी ? हे भगवन् । उनके पुत्रोंने भीष्म, द्रोण आदि महारथ वीरोंके द्वारा महाधनुर्द्धारी पाण्डवोंके राज्य लेनेकी इच्छा की थी। तपोधन सब धनुष-धारियोंके पताकारूपी पितामह भीष्मके गिरने पर राजा दुर्य्योधनने भी कैसा उद्योग किया ? वह तुम मुझसे कहो ।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजा जनमेजय ! जेठे पिता भीष्मका मरना सुनके कौरवराज राजा धृतराष्ट्र बहुत ही चिन्ता और शोकसे व्याकुल होगये ; उनकी शान्ति और धीरज जाता रहा। वह हर घड़ी दुःख और चिन्ताहोंमें मग्न थे; ऐसे अवसर पर गवल्गणपुत्र सञ्जय फिर उनके पास आये । अम्बिका पुत्र राजा धृतराष्ट्रने रात्रिके समय सञ्जयको शिविर (डेरे) से हस्तिनापुरमें आया हुआ देख कर उनसे पूछा । पुत्रके विजयकी अभिलाषा करने वाले राजा धृतराष्ट्र भीष्मका पतन (गिरना) सुनकर अत्यन्त व्याकुल हो आतुरकी भांति विलाप करके कहने लगे कि—हे तात । कालप्रेरित कौरव लोगोंने अत्यन्त पराक्रम-युक्त महात्मा भीष्मके मारे जाने पर शोक और चिन्तासे दुःखित हो क्या किया ? उन महा प्रतापी वीर महात्मा भीष्मके मरने पर कौरवोंने शोकसमुद्रमें डूब कर किन कार्य्योंका उद्योग किया ? हे सञ्जय । महात्मा पाण्डवोंकी गगनको भेद करनेवाली बड़ी सेना उस समय तीनों लोकको भय दिखानेमें समर्थ हुई होगी । हे सञ्जय । कौरवश्रेष्ठ देवव्रती भीष्मके मरने पर कौरवोंने जो कुछ किया, उस वृत्तान्तका तुम मुझसे वर्णन करो ।

सञ्जय बोले, हे राजा धृतराष्ट्र । भीष्मके मारे जाने पर तुम्हारे पुत्रोंने जो कुछ किया वह मैं तुमसे कहता हूं, तुम एकाग्रचित्त होकर मेरी बातोंको सुनो ; सत्य-पराक्रमी भीष्मके मरनेसे तुम्हारे सब पुत्र अपने पराजय और पाण्डवोंके विजयका अनुमान करके शोक और चिन्तामें डूब गये । हे प्रजानाथ ! दोनों दल भयभीत और आनन्दित हुए तथा क्षत्रिय धर्म्मकी निन्दा भी करने लगे ; और महातेजस्वी महात्मा भीष्मको प्रणाम करके तिरछे

बाणोंके उपधानके सहित शय्या कल्पना (बना) कर दी; उस पर उनकी रक्षाकी तयारी करके उन्हें प्रदक्षिण किया। उनसे सबने आपसमें मिलकर बात चीत की, और उनकी आज्ञाके अनुसार क्रोधसे लाल नेत्र कर परस्पर एक दूसरेको देखते हुए काल-प्रेरित युद्ध करनेके निमित्त फिर सजके खड़े हुए। तुम्हारी और पाण्डवोंकी सेना शंख भेरी आदि बजाती हुई निकलने लगी। हे राजेन्द्र! तुम्हारे पुत्रगण भरत-श्रेष्ठ गङ्गा-पुत्र भीष्मके शरशय्यापर सोनेके दूसरे दिन क्रोधके वशमें कालप्रेरित और हतबुद्धि होके महात्मा भीष्मके वचनोंको न मानकर शस्त्रोंको धारण करके शीघ्र ही शिविरोंसे बाहर हुए। तुम्हारे पुत्रोंकी दुर्बुद्धिसे महात्मा भीष्मका विनाश होने पर सब राजाओंके सहित कौरव लोग भीष्मके विना ऐसे दीखने लगे, जैसे महा विपदके वनमें विना रक्षा करनेवालेके भेड़ और बकरियोंका झुण्ड मृत्युके निमित्त दीखता है। कौरवी सेना ऐसी मालुम होने लगी, जैसे मृत्युके निमित्त यज्ञके पशु बुलाये जाते हैं; इसी प्रकारसे कौरवी सेना व्याकुल होने लगी। हे भरत-श्रेष्ठ! भीष्मके शरशय्या पर शयन करनेके अनन्तर कौरवी सेना ऐसी दीख पड़ने लगी जैसे ताराओंके विना अन्तरीक्ष, वायु विना आकाश, शस्य विना पृथ्वी, संस्कार विना वाणी, बलि राजके विना असुरोंकी सेना, पति-हीन स्त्री, जलके सूख जाने पर नदी, भेड़ियेसे पकड़ी हुई हरिनी और शरभसे मारे गये सिंहके विना पर्वतकी कन्दरा, सूनी दीखने लगती है। लाखों बलवान् वीरोंका पाण्डवोंसे अत्यन्त पीड़ित देख, उस समय वह कौरवी सेना इस प्रकारसे अत्यन्त व्याकुल होगई, जैसे तूफानके जोरसे समुद्रमें चलती हुई नौका उलट जाती है। विना भीष्मके उस सेनामें सम्पूर्ण राजा लोग भयभीत और पातालमें निमग्न होनेकी भांति कातर होगये। अनन्तर जिस प्रकारसे गृहस्थ मनुष्य विद्या और तपस्यासे प्रज्वलित अतिथिकी प्रार्थना करते हैं, उसी प्रकारसे कौरवोंने सर्व्वशस्त्रधारी कर्णका स्मरण किया, क्योंकि कर्ण का पराक्रम भीष्मके समान है। हे भारत! जिस प्रकारसे विपदमें पड़े हुए मनुष्यका मन अपने बन्धुओंकी ओर दौड़ता है, उसी प्रकारसे उन सब पुरुषोंका मन कर्णकी ओर झुक गया। वे सब लोग "हे कर्ण! हे कर्ण!" कहकर पुकारने लगे और कहने लगे, कि "मरनेके भयसे रहित राधा-पुत्र कर्ण ही हमलोगोंके हितकारी हैं; उन महायशस्वी कर्णने बन्धु मित्रोंके सहित दश दिनों तक युद्ध नहीं किया है, उन्हे शीघ्र बुलाओ।" जो पुरुषोंमें मुख्य महाबाहु कर्ण महारथोंकी अपेक्षा द्विगुण हैं, जो रथी और अतिरथियोंकी गिनतीमें सबसे प्रथम गिने जानेके योग्य और शूरवीरतासे भरे हैं, जो यम, कुवेर, वरुण और इन्द्रके संग भी संग्राम करनेका उत्साह रखते हैं, जिनको भीष्मने सब क्षत्रियोंके सामने बलविक्रमशाली महारथोंकी गिनती करनेके समय अर्द्ध रथी गिना था,—जो उसी क्रोधसे गङ्गापुत्र भीष्मसे बोले थे, कि "हे कौरव्य! जब तक तुम जीवित रहोगे, तब तक मैं कदापि युद्ध नहीं करूंगा। तुम यदि पाण्डवोंको इस महायुद्धमें वध कर सकोगे, तो मैं दुर्य्योधनकी अनुमतिसे वनको चला जाऊंगा, और यदि पाण्डवोंके हाथसे मर कर तुम स्वर्ग-गमन करोगे, मैं एक रथसे ही होकर जिन्हें तुम महारथ जानते हो, उन सबको मार डालूंगा।" जिस महाबाहु महायशस्वी कर्णने यही वचन कह कर दश दिन तक आपके पुत्र दुर्य्योधनकी अनुमतिसे युद्ध नहीं किया था, हे भारत! युद्धमें विक्रम करनेवाले महा पराक्रमी शूर, सत्यव्रतधारी, महाबली भीष्मके दश दिनों तक युद्ध करके पाण्डवोंकी बहुतसी सेनाका नाश करके शर-शय्या

बाणोंके उपधानके सहित शय्या कल्पना (बना) कर दी, उस पर उनकी रक्षाकी तयारी करके उन्हें प्रदक्षिणा किया। उनसे सबने आपसमें मिलकर बात चीत की, और उनकी आज्ञाके अनुसार क्रोधसे लाल नेत्र कर परस्पर एक दूसरेको देखते हुए काल-प्रेरित युद्ध करनेके निमित्त फिर सजके खड़े हुए। तुम्हारी और पाण्डवोंकी सेना शंख भेरी आदि बजाती हुई निकलने लगी। हे राजेन्द्र! तुम्हारे पुत्रगण भरत-श्रेष्ठ गङ्गा-पुत्र भीष्मके शरशय्यापर सोनेके दूसरे दिन क्रोधके वशमें कालप्रेरित और हतबुद्धि होके महात्मा भीष्मके वचनोंको न मानकर शस्त्रोंको धारण करके शीघ्र ही शिविरोंसे बाहर हुए। तुम्हारे पुत्रोंकी दुर्बुद्धिसे महात्मा भीष्मका विनाश होने पर सब राजाओंके सहित कौरव लोग भीष्मके बिना ऐसे दीखने लगे, जैसे महा विपदके वनमें बिना रक्षा करनेवालेके भेड़ और बकरियोंका झुण्ड मृत्युके निमित्त दीखता है। कौरवी सेना ऐसी मालुम होने लगी, जैसे मृत्युके निमित्त यज्ञके पशु बुलाये जाते हैं; इसी प्रकारसे कौरवी सेना व्याकुल होने लगी। हे भरत-श्रेष्ठ! भीष्मके शरशय्या पर शयन करनेके अनन्तर कौरवी सेना ऐसी दीख पड़ने लगी जैसे ताराओंके बिना अन्तरीक्ष, वायु बिना आकाश, शस्य बिना पृथ्वी, संस्कार बिना बाणी, वलि राजके बिना असुरोंकी सेना, पति-हीन स्त्री, जलके सूख जाने पर नदी, भेड़ियेसे पकड़ी हुई हरिनी और शरभसे मारे गये सिंहके बिना पर्व्वतकी कन्दरा, सूनी दीखने लगती है। लाखों बलवान् वीरोंका पाण्डवोंसे अत्यन्त पीड़ित देख, उस समय वह कौरवी सेना इस प्रकारसे अत्यन्त व्याकुल होगई, जैसे तूफानके जोरसे समुद्रमें चलती हुई नौका उलट जाती है। बिना भीष्मके उस सेनामें सम्पूर्ण राजा लोग भयभीत और पातालमें निमग्न होनेकी भांति कातर होगये। अनन्तर जिस प्रकारसे गृहस्थ मनुष्य विद्या और तपस्यासे प्रज्वलित अतिथिको प्रार्थना करते हैं, उसी प्रकारसे कौरवोंने सर्व्वशस्त्रधारी कर्णका स्मरण किया, क्योंकि कर्णका पराक्रम भीष्मके समान है। हे भारत! जिस प्रकारसे विपदमें पड़े हुए मनुष्यका मन अपने बन्धुओंकी ओर दौड़ता है, उसी प्रकारसे उन सब पुरुषोंका मन कर्णकी ओर झुक गया। वे सब लोग "हे कर्ण! हे कर्ण!" कहके पुकारने लगे और कहने लगे, कि "मरनेके भयसे रहित राधा-पुत्र कर्ण ही हमलोगोंके हितकारी हैं, उन महायशस्वी कर्णने बन्धु मित्रोंके सहित दश दिनों तक युद्ध नहीं किया है, उन्हें शीघ्र बुलाओ।" जो पुरुषोंमें मुख्य महाबाहु कर्ण महारथोंकी अपेक्षा द्विगुण हैं, जो रथी और अतिरथियोंकी गिनतीमें सबसे प्रथम गिने जानेके योग्य और शूरवीरतासे भरे हैं, जो यम, कुवेर, वरुण और इन्द्रके संग भी संग्राम करनेका उत्साह रखते हैं, जिनको भीष्मने सब क्षत्रियोंके सामने बलविक्रमशाली महारथोंकी गिनती करनेके समय अर्द्धरथमें गिना था,—जो उसी क्रोधसे गङ्गापुत्र भीष्मसे बोले थे, कि "हे कौरव्य! जब तक तुम जीवित रहोगे, तब तक मैं कदापि युद्ध नहीं करूंगा। तुम यदि पाण्डवोंको इस महायुद्धमें वध कर सकोगे, तो मैं दुर्य्योधनकी अनुमतिसे वनको चला जाऊंगा, और यदि पाण्डवोंके हाथसे मर कर तुम स्वर्ग-गमन करोगे, मैं एक रथी ही होकर जिन्हें तुम महारथ जानते हो, उन सबको मार डालूंगा।" जिस महाबाहु महायशस्वी कर्णने यही वचन कह कर दश दिन तक आपके पुत्र दुर्य्योधनकी अनुमतिसे युद्ध नहीं किया था, हे भारत! युद्धमें विक्रम करनेवाले महा पराक्रमी शूर, सत्यव्रतधारी, महाबली भीष्मके दश दिनों तक युद्ध करके पाण्डवोंकी बहुतसी सेनाका नाश करके शर-शय्या

ऊंचे खरसे रोने लगी और शोकसे आंसुओंको गिराने। अनन्तर जब महा युद्धका फिर समय आया, तब सबने अपनी अपनी सेना सावधान करके खड़ी की। अनन्तर महारथ-श्रेष्ठ कर्ण रथिश्रेष्ठ पुरुषोंके निमित्त फिर हर्ष उत्पन्न करनेवाली बातोंको कहने लगे।

कर्ण बोले, मैं इस अनित्य और सदा आवागमनशील संसारको न ठहरनेवाला ही देख रहा हूं। तुम सब लोगोंके युद्धमें उपस्थित रहनेपर पर्वतके समान कुरुश्रेष्ठ भीष्म किस प्रकारसे मारे गये? पृथ्वीमें पड़े हुए सूर्य्यके समान महारथ शान्तनु-पुत्र भीष्मके मरनेपर जिस प्रकारसे पर्वतको उखाड़नेवाले वायुके तेजको वृक्ष आदि नहीं सह सकते, उसी भांतिसे राजा लोग अर्ज्जुनके पराक्रमको सहनेमें असमर्थ हैं। जैसे उन महात्मा भीष्मने युद्धमें कौरवी सेनाकी रक्षा की थी, उसी भांतिसे मुझको आज मारी हुई, आर्त्त, उत्साह-रहित और अनाथ कुरुसेनाकी रक्षा करनी होगी। मैंने अपने मनसे इस भारको अपने ऊपर ले लिया, संसारको अनित्यता और युद्धमें महावीर भीष्मका वध देखकर मैं क्यों डरूंगा? मैं रणभूमिमें घूमता हुआ अपने बाणोंसे, उन कुरु-वृषभ पाण्डवोंको यमपुरीमें भेजकर जगत्में परम यश और कीर्त्तिको पाऊंगा, अथवा उन लोगोंके हाथसे युद्धमें मरकर भूमिपर शयन करूंगा। युधिष्ठिर धैर्य्यशील, बुद्धिमान्, धार्म्मिक और सत्यवादी हैं, भीम दश सहस्र हाथियोंके समान बलवान है; अर्ज्जुन इन्द्रका पुत्र है; इससे उन लोगोंका बल देवताओंसे भी शीघ्र न जीतनेके योग्य है। जिस युद्धमें यमराजके समान पराक्रमी नकुल सहदेव, सात्यकि और देवकीनन्दन कृष्ण हैं, उस युद्धमें कापुरुष मनुष्य जाकर इस प्रकारसे नहीं बच सकता, जैसे प्राणधारी लोग मृत्युके मुखसे नहीं निकल सकते। प्रतापी और तेजस्वी पुरुष बढ़ी हुई तपस्याको तपस्यासे और बलको बलसे बद्ध कर सकता है, इससे मेरा मन निश्चय ही बलसे शत्रुओंको निवारण करने और अपनी सेनाकी रक्षा करनेमें उत्सुक होरहा है। हे सारथी! आज युद्धमें जाकर ही शत्रुओंके बलका नाश करके उनको जीत लूंगा, इस प्रकारका मित्रद्रोह मुझे सहना उचित नहीं है। जो मनुष्य सेनाकी गिरती अवस्थामें आकर उसका सहाय होता है, वही मित्र है। हे सत्पुरुषो! मैं यही श्रेष्ठ कर्म्म करूंगा; मैं प्राण त्याग कर भी भीष्मका अनुगमन करूंगा। या तो मैं युद्धमें सब शत्रुओंका नाश कर दूंगा, और नहीं तो उनके हाथसे मर कर वीर-लोकमें पहुंचूंगा। हे सूत! जब धार्त्तराष्ट्रोंका बल पौरुष सब हट गया है, तब ऐसे अवसरमें मैं अपना यही कर्त्तव्य कार्य्य समझता हूं, इससे आज मैं राजा दुर्य्योधनके शत्रुओंको पराजित करूंगा। इस महा युद्धमें प्राण त्याग करके ही कौरवोंकी रक्षा और पाण्डवों तथा दूसरे शत्रुओंको मारके दुर्य्योधनको राज्य दान करूंगा। सोनेसे युक्त सफेद मणि और रत्नोंसे पूर्ण विचित्र कवच, सूर्य्य-प्र... उष्णीष, अग्नि, विष, और सर्पके समान धनुष और बाणोंको सज्जित करो। सोलह प्रकारसे तूणीरों, दिव्यधनुषों और तलवार, शक्ति, गदा और सोनेसे चित्रित विचित्र नाभिसे युक्त शङ्ख ले आओ; और सोनेसे बनी हुई इन्द्रके तुल्य दिव्य और विचित्र पताकाको रथ पर लगाओ। सूक्ष्म वस्त्रोंसे साफ करके युद्धके योग्य गुथी हुई विचित्र माला आदि ले आओ। शुभ्र मेघ सहाश, पुष्ट, और मन्त्रसे शुद्ध हुए जलको तपाये हुए सुवर्णके कलसोंमें भरके तथा शीघ्रगामी घोड़ोंको तुम दौड़के लाओ। सोनेकी मालाके सहित चन्द्र और सूर्य्यके समान प्रकाशित सब युद्धके उपयोगी वस्तुओंके साथ वेगगामी घोड़ोंसे

ऊंचे स्वरसे रोने लगी और शोकसे आंसुओंको गिराने। अनन्तर जब महा युद्धका फिर समय आया, तब सबने अपनी अपनी सेना सावधान करके खड़ी की। अनन्तर महारथ-श्रेष्ठ कर्ण रथिश्रेष्ठ पुरुषोंके निमित्त फिर हर्ष उत्पन्न करनेवाली बातोंको कहने लगे।

कर्ण बोले, मैं इस अनित्य और सदा आवागमनशील संसारको न ठहरनेवाला ही देख रहा हूं। तुम सब लोगोंके युद्धमें उपस्थित रहनेपर पर्वतके समान कुरुश्रेष्ठ भीष्म किस प्रकारसे मारे गये? पृथ्वीमें पड़े हुए सूर्य्यके समान महारथ शान्तनुपुत्र भीष्मके मरनेपर जिस प्रकारसे पर्वतको उखाड़नेवाले वायुके तेजको वृक्ष आदि नहीं सह सकते, उसी भांतिसे राजा लोग अर्जुनके पराक्रमको सहनेमें असमर्थ है। जैसे उन महात्मा भीष्मने युद्धमें कौरवी सेनाकी रक्षा की थी, उसी भांतिसे मुझको आज मारी हुई, आर्त्त, उत्साह-रहित और अनाथ कुरुसेनाकी रक्षा करनी होगी। मैंने अपने मनसे इस भारको अपने ऊपर ले लिया, संसारकी अनित्यता और युद्धमें महावीर भीष्मका वध देखकर मैं क्यों डरूंगा? मैं रणभूमिमें घूमता हुआ अपने बाणोंसे, उन कुरु-वृषभ पाण्डवोंको यमपुरीमें भेजकर जगत्में परम यश और कीर्त्तिको पाऊंगा, अथवा उन लोगोंके हाथसे युद्धमें मरकर भूमिपर शयन करूंगा। युधिष्ठिर धैर्य्यशील, बुद्धिमान्, धार्म्मिक और सत्यवादी हैं; भीम दश सहस्र हाथियोंके समान बलवान है; अर्जुन इन्द्रका पुत्र है, इससे उन लोगोंका बल देवताओंसे भी शीघ्र न जीतनेके योग्य है। जिस युद्धमें यमराजके समान पराक्रमी नकुल सहदेव, सात्यकि और देवकीनन्दन कृष्ण हैं, उस युद्धमें कापुरुष मनुष्य जाकर इस प्रकारसे नहीं बच सकता, जैसे प्राणधारी लोग मृत्युके मुखसे नहीं निकल सकते। प्रतापी और तेजस्वी पुरुष बढ़ी हुई तपस्याको तपस्यासे और बलको बलसे बद्ध कर सकता है; इससे मेरा मन निश्चय ही बलसे शत्रुओंको निवारण करने और अपनी सेनाकी रक्षा करनेमें उत्सुक होरहा है। हे सारथी! आज युद्धमें जाकर ही शत्रुओंके बलका नाश करके उनको जीत लूंगा, इस प्रकारका मित्रद्रोह मुझे सहना उचित नहीं है। जो मनुष्य सेनाकी गिरती अवस्थामें आकर उसका सहाय होता है, वही मित्र है। मैं सत्पुरुषों... मैं यही श्रेष्ठ कर्म्म करूंगा; मैं प्राण त्याग कर भी भीष्मका अनुगमन करूंगा। या तो मैं युद्धमें सब शत्रुओंका नाश कर दूंगा, और नहीं तो उनके हाथसे मरकर वीर-लोकमें पहुंचूंगा। हे सूत! जब धार्त्तराष्ट्रोंका बल पौरुष सब छूट गया है, तब ऐसे अवसरमें मैं अपना यही कर्त्तव्य कार्य्य समझता हूं; इससे आज मैं राजा दुर्य्योधनके शत्रुओंको पराजित करूंगा। इस महा युद्धमें प्राण त्याग करके ही कौरवोंकी रक्षा और पाण्डवों तथा दूसरे शत्रुओंको मारके दुर्य्योधनको राज्य दान करूंगा। सोनेसे युक्त सफेद मणि और रत्नोंसे पूर्ण विचित्र कवच, सूर्य्य-प्रकाश उष्णीष, अग्नि, विष, और सर्पके समान धनुष और बाणोंको सज्जित करो। सोलह प्रकारसे तूणीरों, दिव्यधनुषों और तलवार, शक्ति, गदा और सोनेसे चित्रित विचित्र नाभिसे युक्त शङ्ख ले आओ; और सोनेसे बनी हुई इन्द्रके तुल्य दिव्य और विचित्र पताकाको रथ पर लगाओ। सूक्ष्म वस्त्रोंसे साफ करके युद्धके योग्य गुथी हुई विचित्र माला आदि ले आओ। शुभ्र मेघ सङ्काश, पुष्ट, और मन्त्रसे शुद्ध हुए जलको तपाये हुए सुवर्ण कलसोंमें भरके तथा शीघ्रगामी घोड़ोंको जल्दी ले आओ। सोनेकी मालाके सहित चन्द्र और सूर्य्यके समान प्रकाशित सब युद्धके उपयोगी वस्तुओंके साथ वेगगामी घोड़ोंसे

...। हे कुरुसत्तम। ... सञ्जय, मन्त्रणा, ... प्रकारके विषयमें ... नहीं देखता, जो ... परित्राण करे। ... इस समय पर ... उद्यत हुए हैं। हे ... प्रकारसे क्रुद्ध व्याघ्र ... हैं, उसी भांतिसे पाण्डव ... नाश करना आरम्भ ... असुर लोग इन्द्रसे भय- ... आज कौरव लोग ... तेजको देखकर डर गये ... वज्रके समान ... और दूसरे राजाओंकी भयसे ... हे वीर! जिस प्रकारसे प्रचण्ड ... जला देती है, उसी ... बाण धार्त्तराष्ट्रगणको ... अग्नि और वायु एकत्र ... चलते हैं, उसी और ... आदि भस्म होजाते ... समान और कृष्ण वायुके ... भी सन्देह नहीं ... आज कौरवी ... हे भारत! ... शब्द ... होगी। ... हृदयमें चल... रणमें आ... शब्दोंको नहीं ... लोग जिस अर्जुनके दि... आपके अतिरिक्त ... करनेमें समर्थ है? ... जिसका अलौकिक ... महादेवसे साधारण ... दुर्लभ वर पाया है,

रक्षा स्वयं श्रीकृष्ण करते हैं; उससे कौन वीर पुरुष युद्ध कर सकता है? आपने देव दानवोंसे पूजित क्षत्रियोंको शेष करनेवाले परशुरामजीको रणभूमिमें पराजित किया था, आप ऐसे बलवान् होकर भी जिसको पहिले नहीं जीत सके, उस अर्जुनके सङ्ग रणभूमिमें कौन युद्ध कर सकेगा? इस समय यदि आप मुझे अनुमति दें, तो मैं आज उस युद्ध दुर्म्मद अर्जुनको अपने अस्त्रोंके बलसे मारनेके समर्थ होऊं।

३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, कुरु-वृद्ध पितामह भीष्म इस प्रकारसे बार बार कहे हुए कर्णके वचनोंको सुन कर, प्रीति पूर्व्वक देश और कालके अनुसार यह वचन बोले,—हे कर्ण। जैसे समुद्र जलोंका, सूर्य्य ज्योतिका और उर्व्वरा भूमि बीजकी तथा वर्षा सब स्थावर जङ्गमकी आश्रय है, उसी प्रकारसे तुम मित्रोंके आसरा रूपी हो। जिस प्रकारसे देवता लोग इन्द्रके अनुजीवी होते हैं, उसी भांतिसे तुम्हारे बन्धुवर्ग तुम्हारे अनुजीवी बनें। तुम शत्रुओंके मानको मर्दन क... आनन्दको बढ़ाओ। जैसे विष्णु ... है, वैसे ही तुम कौरवोंकी ...। तुमने ... वनके प्रियकार्य्य ... ने ... से राजपुरमें ... जाकर ... गान्धार ... । है

होकर भी पृथ्वीमें सोये हुए हैं। हे कुरुसत्तम। मैं इस समय कौरवोंको कोप सञ्जय, मन्त्रणा, व्यूहरचना और शस्त्रोंके प्रहारके विषयमें ऐसे किसी शुद्धबुद्धि पुरुषको नहीं देखता, जो उनकी सहायता और उनका परित्राण करे। आप अनेक वीरोंको मारकर इस समय पर लोकमें जानेके निमित्त उद्यत हुए हैं। हे भारतश्रेष्ठ भूपाल। जिस प्रकारसे क्रुद्ध व्याघ्र मृगोंका नाश कर देते हैं, उसी भांतिसे पाण्डव लोग आजसे कौरवोंका नाश करना आरम्भ करेंगे। जिस प्रकारसे असुर लोग इन्द्रसे भय-भीत होते हैं, उसी तरहसे आज कौरव लोग गाण्डीवधारी अर्ज्जुनके तेजको देखकर डर गये हैं। आज गाण्डीवसे छूटे हुए वज्रके समान बाण सब कौरव और दूसरे राजाओंको भयसे दुःखित करेंगे। हे वीर। जिस प्रकारसे प्रचण्ड अग्नि जङ्गलके वृक्षोंको जला देती है, उसी भांतिसे आज अर्ज्जुनके बाण धार्त्तराष्ट्रगणको जला देंगे। जङ्गलमें अग्नि और वायु एकत्र होकर जिस ओरको चलते हैं, उसी ओर बहुतसे तृण, गुल्म, वृक्ष आदि भस्म होजाते हैं। अर्ज्जुन अग्निके समान और कृष्ण वायुके तुल्य हैं, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है, ये दोनो एकत्र होकर आज कौरवी सेनारूपी वनको जला देंगे। हे भारत। पाञ्चजन्य शङ्ख और गाण्डीव धनुषके शब्दको सुनकर समस्त कुरु-सेना भयभीत होगी। आपके विना क्षत्रिय लोग शत्रुओंके हृदयमें चलनेवाले रथपर चढ़े हुए कपिध्वजासे युक्त रणमें आये हुए अर्ज्जुनको देखकर उनके शस्त्रोंको नहीं सह सकेंगे। बुद्धिमान् लोग जिस अर्ज्जुनके दिव्य कर्म्मोंकी प्रशंसा करते हैं, आपके अतिरिक्त कौन राजा उस अर्ज्जुनसे युद्ध करनेमें समर्थ है? महात्मा शिवजीके सङ्ग जिसका अलौकिक संग्राम हुआ था, जिसने महादेवसे साधारण पुरुषोंको न मिलने योग्य दुर्लभ वर पाया है, जिसकी रक्षा स्वयं श्रीकृष्ण करते हैं, उससे कौन और पुरुष युद्ध कर सकता है? आपने देव दानवोंसे पूजित क्षत्रियोंको शेष करनेवाले परशुरामजीको रणभूमिमें पराजित किया था, आप ऐसे बलवान् होकर भी जिसको पहिले नहीं जीत सके, उस अर्ज्जुनके सङ्ग रणभूमिमें कौन युद्ध कर सकेगा? इस समय यदि आप मुझे अनुमति दें, तो मैं आज उस युद्ध दुर्म्मद अर्ज्जुनको अपने अस्त्रोंके बलसे मारनेको समर्थ होऊं।

३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, कुरु-वृद्ध पितामह भीष्म इस प्रकारसे बार बार कहे हुए कर्णके वचनोंको सुन कर, प्रीति पूर्व्वक देश और कालके अनुसार यह वचन बोले,—हे कर्ण। जैसे समुद्र जलोंका, सूर्य्य ज्योतिका और उर्व्वरा भूमि बीजकी तथा वर्षा सब स्थावर जङ्गमकी आश्रय हैं, उसी प्रकारसे तुम मित्रोंके आसरा रूपी हो। जिस प्रकारसे देवता लोग इन्द्रके अनुजीवी होते हैं, उसी भांतिसे तुम्हारे बन्धुवर्ग तुम्हारे अनुजीवी बनें। तुम शत्रुओंके मानको मर्दन कर मित्रोंके आनन्दको बढाओ। जैसे विष्णु देवताओंकी गति हैं, वैसे ही तुम कौरवोंकी गति हो। हे कर्ण। तुमने दुर्य्योधनके प्रियकार्य्य करनेवाले होकर अपने बाहुबलसे राजपुरमें जाकर काम्बोज गणको, गिरिव्रजमें जाकर नग्नजित् प्रभृति राजाओंको और विदेह, गान्धार तथा अम्बष्ठ गणको जीत लिया था। हे कर्ण। तुमने पहिले हिमालयके रहनेवाले दुर्गवासी रणकर्कश किरातोंको जीत कर दुर्य्योधनके वशवर्त्ती किया था। तुमने युद्धमें उत्कल पौण्ड्र, कलिङ्ग, अन्ध्र, निषाद, त्रिगर्त्त और वाह्लिक राजगणको पराजित किया था। हे वीर कर्ण। तुम दुर्य्योधनके हितैषी होकर अपने बाहुबल और पराक्रमसे बहुतेरे राजाओंको

होकर भी पृथ्वीमें सोये हुए हैं। हे कुरुसत्तम। मैं इस समय कौरवोंकी कोष सञ्चय, मन्त्रणा, व्यूह-रचना और शस्त्रोंके प्रहारके विषयमें ऐसे किसी शुद्धबुद्धि पुरुषको नहीं देखता, जो उनकी सहायता और उनका परित्राण करे। आप अनेक वीरोंको मारकर इस समय पर लोकमें जानेके निमित्त उद्यत हुए हैं। हे भारतश्रेष्ठ भूपाल! जिस प्रकारसे क्रुद्ध व्याघ्र मृगोंका नाश कर देते हैं, उसी भांतिसे पाण्डव लोग आजसे कौरवोंका नाश करना आरम्भ करेंगे। जिस प्रकारसे असुर लोग इन्द्रसे भय-भीत होते हैं, उसी तरहसे आज कौरव लोग गाण्डीवधारी अर्ज्जुनके तेजको देखकर डर गये हैं। आज गाण्डीवसे छूटे हुए वज्रके समान बाण सब कौरव और दूसरे राजाओंको भयसे दुःखित करेंगे। हे वीर! जिस प्रकारसे प्रचण्ड अग्नि जङ्गलके वृक्षोंको जला देती है, उसी भांतिसे आज अर्ज्जुनके बाण धार्त्तराष्ट्रगणको जला देंगे। जङ्गलमें अग्नि और वायु एकत्र होकर जिस ओरको चलते हैं, उसी ओर बहुत से तृण, गुल्म, वृक्ष आदि भस्म होजाते हैं। अर्ज्जुन अग्निके समान और कृष्ण वायुके तुल्य हैं, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है, ये दोनो एकत्र होकर आज कौरवी सेनारूपी वनको जला देंगे। हे भारत! पाञ्चजन्य शङ्ख और गाण्डीव धनुषके शब्दको सुनकर समस्त कुरु-सेना भयभीत होगी। आपके विना क्षत्रिय लोग शत्रुओंके हृदयमें चलनेवाले रथपर चढ़े हुए कपिध्वजासे युक्त रणमें आये हुए अर्ज्जुनको देखकर उनके शस्त्रोंको नहीं सह सकेंगे। बुद्धिमान् लोग जिस अर्ज्जुनके दिव्य कर्म्मोंकी प्रशंसा करते हैं, आपके अतिरिक्त कौन राजा उस अर्ज्जुनसे युद्ध करनेमें समर्थ है? महात्मा शिवजीके सङ्ग जिसका अलौकिक सग्राम हुआ था, जिसने महादेवसे साधारण पुरुषोंको लने योग्य दुर्लभ वर पाया है, जिसकी रक्षा स्वय श्रीकृष्ण करते हैं; उससे कौन और पुरुष युद्ध कर सकता है? आपने देव दानवोंसे पूजित क्षत्रियोंको शेष करनेवाले परशुरामजीको रणभूमिमें पराजित किया था, आप ऐसे बलवान् होकर भी जिसको पहिले नहीं जीत सके, उस अर्ज्जुनके सङ्ग रणभूमिमें कौन युद्ध कर सकेगा? इस समय यदि आप मुझे अनुमति दें, तो मैं आज उस युद्ध दुर्म्मद अर्ज्जुनको अपने अस्त्रोंके बलसे मारनेके समर्थ होऊं।

३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, कुरु-वृद्ध पितामह भीष्म इस प्रकारसे बार बार कहे हुए कर्णके वचनोंको सुन कर, प्रीति पूर्व्वक देश और कालके अनुसार यह वचन बोले,—हे कर्ण! जैसे समुद्र जलोंका, सूर्य्य ज्योतिका और उर्व्वरा भूमि बीजकी तथा वर्षा सब स्थावर जङ्गमकी आश्रय हैं, उसी प्रकारसे तुम मित्रोंके आसरा रूपी हो। जिस प्रकारसे देवता लोग इन्द्रके अनुजीवी होते हैं, उसी भांतिसे तुम्हारे बन्धुवर्ग तुम्हारा अनुजीवी बनें। तुम शत्रुओंके मानको मर्दन कर मित्रोंके आनन्दको बढ़ाओ। जैसे विष्णु देवताओंकी गति हैं, वैसे ही तुम कौरवोंकी गति हो। हे कर्ण! तुमने दुर्य्योधनके प्रियकार्य्य करनेवाले होकर अपने बाहुबलसे राजपुरमें जाकर काम्बोज गणको, गिरिव्रजमें जाकर नग्नजित् प्रभृति राजाओंको और विदेह, गान्धार तथा अम्बष्ठ गणको जीत लिया था। हे कर्ण! तुमने पहिले हिमालयके रहनेवाले दुर्गवासी रणकर्कश किरातोंको जीत कर दुर्य्योधनके वशवर्त्ती किया था। तुमने युद्धमें उत्कल पौण्ड्र, कलिङ्ग, अन्ध, निषाद, त्रिगर्त्त और वाह्लिक राजगणको पराजित किया था। हे वीर कर्ण! तुम दुर्य्योधनके हितैषी होकर अपने बाहुबल और पराक्रमसे बहुतेरे राजाओंको

होकर भी पृथ्वीमें सोये हुए हैं। हे कुरुसत्तम! मैं इस समय कौरवोंकी कोष सञ्चय, मन्त्रणा, व्यूहरचना और शस्त्रोंके प्रहारके विषयमें ऐसे किसी शुद्धबुद्धि पुरुषको नहीं देखता, जो उनकी सहायता और उनका परित्राण करे। आप अनेक वीरोंको मारकर इस समय पर लोकमें जानेके निमित्त उद्यत हुए हैं। हे भारतश्रेष्ठ भूपाल! जिस प्रकारसे क्रुद्ध व्याघ्र मृगोंका नाश कर देते हैं, उसी भांतिसे पाण्डव लोग आजसे कौरवोंका नाश करना आरम्भ करेंगे। जिस प्रकारसे असुर लोग इन्द्रसे भय-भीत होते हैं, उसी तरहसे आज कौरव लोग गाण्डीवधारी अर्ज्जुनके तेजको देखकर डर गये हैं। आज गाण्डीवसे छूटे हुए वज्रके समान बाण सब कौरव और दूसरे राजाओंको भयसे दुःखित करेंगे। हे वीर! जिस प्रकारसे प्रचण्ड अग्नि जङ्गलके वृक्षोंको जला देती है, उसी भांतिसे आज अर्ज्जुनके बाण धार्त्तराष्ट्रगणको जला देंगे। जङ्गलमें अग्नि और वायु एकत्र होकर जिस ओरको चलते हैं, उसी ओर बहुत से तृण, गुल्म, वृक्ष आदि भस्म होजाते हैं। अर्ज्जुन अग्निके समान और कृष्ण वायुके तुल्य हैं, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है, ये दोनो एकत्र होकर आज कौरवी सेनारूपी वनको जला देंगे। हे भारत! पाञ्चजन्य शङ्ख और गाण्डीव धनुषके शब्दको सुनकर समस्त कुरु-सेना भयभीत होगी। आपके बिना क्षत्रिय लोग शत्रुओंके हृदयमें चलनेवाले रथपर चढ़े हुए कपिध्वजासे युक्त रणमें आये हुए अर्ज्जुनको देखकर उनके शस्त्रोंको नहीं सह सकेंगे। बुद्धिमान् लोग जिस अर्ज्जुनके दिव्य कर्म्मोंकी प्रशंसा करते हैं, आपके अतिरिक्त कौन राजा उस अर्ज्जुनसे युद्ध करनेमें समर्थ है? महात्मा शिवजीके सङ्ग जिसका अलौकिक सग्राम हुआ था, जिसने महादेवसे साधारण पुरुषोंको न[illegible] ने योग्य दुर्लभ वर पाया है, जिसकी रक्षा स्वय श्रीकृष्ण करते हैं, उससे कौन वीर पुरुष युद्ध कर सकता है? आपने देव दानवोंसे पूजित क्षत्रियोंको शेष करनेवाले परशुरामजीको रणभूमिमें पराजित किया था, आप ऐसे बलवान् होकर भी जिसको पहिले नहीं जीत सके, उस अर्ज्जुनके सङ्ग रणभूमिमें कौन युद्ध कर सकेगा? इस समय यदि आप मुझे अनुमति दें, तो मैं आज उस युद्ध दुर्म्मद अर्ज्जुनको अपने अस्त्रोंके बलसे मारनेके समर्थ होऊं।

३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, कुरु-वृद्ध पितामह भीष्म इस प्रकारसे बार बार कहे हुए कर्णके व[illegible] सुन कर, प्रीति पूर्व्वक देश और कालके अनुसार यह वचन बोले,—हे कर्ण! जैसे समुद्र जलोंका, सूर्य्य ज्योतिका और उर्व्वरा भूमि बीजकी तथा वर्षा सब स्थावर जङ्गमकी आश्रय हैं, उसी प्रकारसे तुम मित्रोंके आसरा रूपी हो। जिस प्रकारसे देवता लोग इन्द्रके अनुजीवी होते हैं, उसी भांतिसे तुम्हारे बन्धुवर्ग तुम्हारे अनुजीवी बनें। तुम शत्रुओंके मानको मर्दन कर मित्रोंके आनन्दको बढाओ। जैसे विष्णु देवताओंकी गति हैं, वैसे ही तुम कौरवोंकी गति हो। हे कर्ण! तुमने दुर्योधनके प्रियकार्य्य करनेवाले होकर अपने बाहुबलसे राजपुरमें जाकर काम्बोज गणको, गिरिव्रजमें जाकर नग्नजित् प्रभृति राजाओंको और विदेह,गान्धार तथा अम्बष्ठ गणको जीत लिया था। हे कर्ण! तुमने पहिले हिमालयके रहनेवाले दुर्गवासी रणकर्कश किरातोंको जीत कर दुर्योधनके वशवर्त्ती किया था। तुमने युद्धमें उत्कल पौण्ड्र, कलिङ्ग, अन्ध्र, निषाद, त्रिगर्त और वाल्हिक राजगणको पराजित किया था। हे वीर कर्ण! तुम दुर्योधनके हितैषी होकर अपने बाहुबल और पराक्रमसे बहुतेरे राजाओंको

सकते हैं, क्योंकि ये सब ही कुल, प्रतिष्ठा, दृढ़ता, बल, पराक्रम, बुद्धिसे भरे और कृतज्ञ है, तथा पीछे न हटनेवाले, और अग्रगामी है। परन्तु एक ही बार सबको सेनापति नहीं बनाया जा सकता, इस निमित्त इनमेंसे विशेष गुणोंसे युक्त किसी पुरुषको सेनापति करना उचित है। परन्तु ये राजा लोग एक दूसरेकी ईर्षा करनेवाले है, इनमेंसे एक पुरुषका सम्मान करनेसे दूसरा अप्रसन्न होगा और आपका हितैषी होकर युद्ध न करेगा। इससे इन सब योद्धाओं तथा शस्त्रधारी लोगोंमें श्रेष्ठ बूढ़े आचार्य्य द्रोणको सेनापति बनाना उचित है। बृहस्पति और शुक्राचार्य्यकी कही हुई नीतिशास्त्रके अनुसार ब्रह्मज्ञ श्रेष्ठ बलवान् द्रोणाचार्य्यके रहते दूसरा कोई भी सेनापति नहीं हो सकता। हे भारत! द्रोणाचार्य्यके सेनापति होनेसे आपको सेनामें ऐसे कोई योद्धा नहीं है, जो उनका अनुगमन न करें। हे राजन्! वे सेनापतियोंमें प्रधान, शस्त्रधारियोंमें मुख्य, बुद्धिमानोंमें भी श्रेष्ठ, और तुम्हारे गुरु है! हे दुर्य्योधन! जिस प्रकारसे दैत्योंको जीतनेके निमित्त देवताओंने स्वामि कार्त्तिकको सेनापति बनाया था, वैसे ही तुम भी आचार्य्य द्रोणको शीघ्र सेनापति बनाओ।

सञ्जय बोले, राजा दुर्य्योधन इस प्रकारसे कर्णके, वचनोंको सुनकर सेनाके बीचमें जाकर द्रोणाचार्य्यसे कहने लगे, हे आचार्य्य! आप विद्या, बुद्धि, बल, वीर्य्य, वर्ण, अवस्था, अधिकार, अर्थज्ञान, निपुणता, नीति, जय, तपस्या, कृतज्ञता, कुल और दूसरे सब गुणोंसे सबमें श्रेष्ठ है, आपके समान और कोई भी दूसरा राजाओंका रक्षक नहीं है। हे द्विजसत्तम! जैसे इन्द्र देवताओंकी रक्षा करते है, उसी भांतिसे आप भी हम लोगोंकी रक्षा कीजिए। मैं आपको सेनापति बनाकर शत्रुओंको जीतनेकी इच्छा करता हूं। जैसे कपाली रुद्रोंके, अग्नि वसुओंके, कुवेर यक्षोंके, इन्द्र देवताओंके, वशिष्ठ ब्राह्मणोंके, सूर्य्य ज्योतिवाले पदार्थोंके, धर्म्मराज पितरोंके, घड़ियाल जलजन्तुओंके, चन्द्रमा ताराओंके और दैत्योंके लिये शुक्राचार्य्य श्रेष्ठ हैं, वैसे ही आप हम लोगोंके सब सेनापतियोंमें श्रेष्ठ होकर कौरवी सेनाके सेनापति होइये। हे पापरहित! यह ग्यारह अक्षौहिणी सेना आपके वशमें होगी, आप इस सब सेनाका व्यूह बना कर शत्रुओंका इस प्रकारसे नाश कीजिए, जैसे इन्द्रने दानवोंका नाश किया था। जैसे स्वामिकार्त्तिक देवताओंके आगे चलते है, उसी भांतिसे आप भी हमलोगोंके अगाड़ी चलिये। जैसे गऊ बैलको अनुगामिनी होती हैं, उसी तरहसे हमलोग युद्धमें आपके अनुगामी होंगे। उग्रधन्वा महाधनुर्धारी अर्ज्जुन आपको आगे देखकर दिव्य धनुषको चढ़ा कर हमारी सेना पर प्रहार नहीं कर सकेगा। हे पुरुषसिंह! आपके सेनापति होनेसे मैं अनुचरोंके सहित, भाइयों समेत युधिष्ठिरको निश्चय जीत लूंगा।

सञ्जय बोले, दुर्य्योधनने, जब द्रोणाचार्य्यको इस प्रकारसे कहा, तब समस्त राजा लोग बहुत जोरसे सिंहनाद करके आपके पुत्रको आनन्दित और द्रोणाचार्य्यको जय जयकार करने लगे। सेनाके सब वीरोंने भी दुर्य्योधनको आगे करके महायशस्वी द्विजोत्तम द्रोणाचार्य्यका सम्मान बढ़ाते हुए जय जयकार शब्दका उच्चारण किया।

द्रोणाचार्य्य बोले, मै छहों अंगके सहित वेद, मनुष्योंकी अर्थ-विद्या, शैव्य और दूसरे भी सब अस्त्रशस्त्रोंको जानता हूं। तुमने जयकी इच्छासे जो कुछ मेरा गुण कहा है, मैं उन सब गुणोंको सार्थक करनेकी अभिलाषासे पाण्डवोंके सङ्ग युद्ध करूंगा। हे राजन्! मैं युद्धमें धृष्टद्युम्नको किसी प्रकारसे न मार सकूंगा, वह पुरुषश्रेष्ठ मेरे ही वधके निमित्त

सकते हैं; क्योंकि ये सब ही कुल, प्रतिष्ठा, दृढ़ता, बल, पराक्रम, बुद्धिसे भरे और कृतज्ञ हैं, तथा पीछे न हटनेवाले, और अग्रगामी है। परन्तु एक ही वार सबको सेना-पति नहीं बनाया जा सकता, इस निमित्त इन-मेंसे विशेष गुणोंसे युक्त किसी पुरुषको सेनापति करना उचित है। परन्तु ये राजा लोग एक दूस-रेकी ईर्षा करनेवाले है, इनमेंसे एक पुरुषका सम्मान करनेसे दूसरा अप्रसन्न होगा और आपका हितैषी होकर युद्ध न करेगा। इससे इन सब योद्धाओं तथा शस्त्रधारी लोगोंमें श्रेष्ठ बूढ़े आचार्य्य द्रोणको सेनापति बनाना उचित है। बृहस्पति और शुक्राचार्य्यकी कही हुई नीतिशास्त्रके अनुसार ब्रह्मज्ञ श्रेष्ठ बलवान् द्रोणाचार्य्यके रहते दूसरा कोई भी सेनापति नहीं हो सकता। हे भारत! द्रोणाचार्य्यके सेनापति होनेसे आपकी सेनामें ऐसे कोई योद्धा नहीं है, जो उनका अनुगमन न करें। हे राजन्! वे सेनापतियोंमें प्रधान, शस्त्रधारियोंमें मुख्य, बुद्धिमानोंमें भी श्रेष्ठ, और तुम्हारे गुरु हैं! हे दुर्य्योधन। जिस प्रकारसे दैत्योंको जीतनेके निमित्त देवताओंने स्वामि कार्त्तिकको सेनापति बनाया था, वैसे ही तुम भी आचार्य्य द्रोणको शीघ्र सेनापति बनाओ।

सञ्जय बोले, राजा दुर्य्योधन इस प्रकारसे कर्णके, वचनोंको सुनकर सेनाके बीचमें जाकर द्रोणाचार्य्यसे कहने लगे, हे आचार्य्य! आप विद्या, बुद्धि, बल, वीर्य्य, वर्ण, अवस्था, अधि-कार, अर्थज्ञान, निपुणता, नीति, जय, तपस्या, कृतज्ञता, कुल और दूसरे सब गुणोंसे सबमें श्रेष्ठ है, आपके समान और कोई भी दूसरा राजाओंका रक्षक नहीं है। हे द्विजसत्तम। जैसे इन्द्र देवताओंकी रक्षा करते है, उसी भांतिसे आप भी हम लोगोंकी रक्षा कीजिए। मैं आपको सेनापति बनाकर शत्रुओंको जीतनेकी इच्छा करता हूं। जैसे कपाली रुद्रोंके, अग्नि वसु-ओंके, कुवेर यक्षोंके; इन्द्र देवताओंके, वसिष्ठ ब्राह्मणोंके, सूर्य्य ज्योतिवाले पदार्थोंके, धर्मराज पितरोंके, घड़ियाल जलजन्तुओंके, चन्द्रमा ताराओंके और दैत्योंके लिये शुक्राचार्य्य श्रेष्ठ है, वैसे ही आप हम लोगोंके सब सेनापतियोंमें श्रेष्ठ होकर कौरवी सेनाके सेनापति होइये। हे पापरहित! यह ग्यारह अक्षौहिणी सेना आपके वशमें होगी, आप इस सब सेनाका व्यूह बना कर शत्रुओंका इस प्रकारसे नाश कीजिए, जैसे इन्द्रने दानवोंका नाश किया था। जैसे स्वामिकार्त्तिक देवताओंके आगे चलते है, उसी भांतिसे आप भी हमलोगोंके अगाड़ी चलिये। जैसे गऊ बैलकी अनुगामिनी होती है, उसी तरहसे हमलोग युद्धमें आपके अनुगामी होंगे। उग्रधन्वा महाधनुर्द्धारी अर्ज्जुन आपको आगे देखकर दिव्य धनुषको चढ़ा कर हमारी सेना पर प्रहार नहीं कर सकेगा। हे पुरुष सिंह! आपके सेनापति होनेसे मैं अनुचरोंके सहित, भाइयों समेत युधिष्ठिरको निश्चय जीत लूंगा।

सञ्जय बोले, दुर्य्योधनने जब द्रोणाचार्य्यसे इस प्रकारसे कहा, तब समस्त राजा लोग बहुत जोरसे सिंहनाद करके आपके पुत्रको आनन्दित और द्रोणाचार्य्यको जय जयकार करने लगे। सेनाके सब वीरोंने भी दुर्य्योधनको आगे करके महायशस्वी द्विजोत्तम द्रोणाचार्य्यका सम्मान बढ़ाते हुए जय जयकार शब्दका उच्चारण किया।

द्रोणाचार्य्य बोले, मैं छहो अंगके सहित वेद, मनुष्योंकी अर्थ-विद्या, शैव्य और दूसरे भी सब अस्त्रशस्त्रोंको जानता हूं। तुमने जयकी इच्छासे जो कुछ मेरा गुण कहा है, मैं उन सब गुणोंको सार्थक करनेकी अभिलाषासे पाण्डवोंके सङ्ग युद्ध करूंगा। हे राजन्! मैं युद्धमें धृष्टद्युम्नको किसी प्रकारसे न मार सकूंगा, वह पुरुष श्रेष्ठ मेरे ही वधके निमि-

सहित अर्ज्जुन शत्रुओंके सम्मुख कालचक्रकी भांति आकर खड़े हुए। अनन्तर वह कर्ण और अर्ज्जुन युद्धके सब कर्म्मोंको जाननेवाले यत्नवान् होकर एक दूसरेके वधकी इच्छा करके परस्पर देखने लगे। आपकी सेनाके आगे अर्ज्जुन इसी प्रकार खड़े हुए। इसके अनन्तर अकस्मात् द्रोणाचार्य्यके आनेसे पृथ्वी घोर आर्त्तनादसे परिपूर्ण होकर कांपने लगी। सेनाके वीरोंके पैरकी धूली उड़नेसे आकाशमें अन्धकार होगया, और उससे सूर्य्य छिपगया। बादलसे रहित आकाशसे मांस, हड्डी और रक्तकी वर्षा होने लगी। हे राजन्! हजारों गिद्ध, कौए और गोमायु आदि आपकी सेनाकी ओर दौड़ने लगे; सियारोंके झुण्ड मास और लहूकी इच्छासे आपकी सेनाकी दाहनी ओरसे चलने लगे। उस संग्रामभूमिमें जलते हुए उल्कापात भूमिकम्प होकर तुम्हारी सेनाके सम्मुख पड़ने लगा। हे राजन्! सेनापतिके यात्रा करने पर सूर्य्यका बहुत तेज बढ़ा, वह बिजलीसे युक्त गर्ज्जते हुए बादलोंमें छिप गया। वीरोंके जीवनके नाश करनेवाले यह असगुन और उत्पात दिखाई देने लगे। अनन्तर परस्पर एक दूसरेके वधकी इच्छा करनेवाले कौरव और पाण्डवोंकी सेनाका भयङ्कर युद्ध आरम्भ हुआ। तब जयकी इच्छा करनेवाले पाण्डव और कौरवोंकी सेनासे चोखे बाणोंकी वर्षा होने लगी। अनन्तर पाण्डव श्रेष्ठ महाधनुर्द्धर प्रतापी अर्ज्जुन एक एक बार सौ सौ तीक्ष्ण बाणोंको छोड़ते हुए अत्यन्त शीघ्रतासे आपकी सेनाकी ओर दौड़े। हे राजन्! पाण्डव लोग द्रोणाचार्य्यको आया हुआ देख, सृञ्जयोंके सङ्ग मिलकर उनके ऊपर अलग अलग बाणोंकी वर्षा करने लगे। जैसे वायुसे बादल टुकड़े टुकड़े होजाते हैं, उसी प्रकारसे वह बड़ी पाञ्चाल सेना द्रोणाचर्य्यके बाणोंसे जर्ज्जरित होकर कई हिस्सोंमें बंट गई। द्रोणाचार्य्यने क्षण भरके बीचमें अनेक अस्त्र शस्त्रोंको [illegible] करके पाण्डव और सृञ्जयोंको पीड़ित तथा दुःखित कर दिया। जिस प्रकारसे दान[illegible] लोग है, इन्द्रसे पीड़ित होकर दुःखि[illegible] होते वैसे ही धृष्टद्युम्नके देशके रहनेवा[illegible] पांचाल योद्धा द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे व्याकु[illegible] होकर कांपने लगे। अनन्तर महारथ दि[illegible]श स्त्रोंके जानने वाले याज्ञसेनि धृष्टद्युम्नने श[illegible] बाणोंकी वर्षासे द्रोणाचार्य्यकी सेनाको छि[illegible] भिन्न कर दिया। बलवान् धृष्टद्युम्न श[illegible] बाणोंसे द्रोणाचार्य्यके बाणोंको काट कर [illegible] कुरु-सेनाका नाश करने लगे। अनन्तर महाध[illegible]र्द्धारी द्रोणाचार्य्य युद्धमें पूरी तरहसे प्रवृत्त होक[illegible] सेनाको यत्नपूर्व्वक विशेष रूपसे ठहराकर [illegible]द्युम्नकी ओर चढ़ आये। जैसे इन्द्र प[illegible] क्रोध करके दानवोंपर बाणोंकी वर्षा क[illegible] है, उसी भांतिसे द्रोणाचार्य्य धृष्टद्युम्नकी उप[illegible] एक बार ही बहुतसे दिव्य बाणोंकी वर्षा कर[illegible] लगे। जैसे सिंहको देखकर छोटे छोटे हरि[illegible] तितर बितर होकर भाग जाते हैं, वैसे ही पाण्[illegible] सृञ्जयगण द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे कम्पित होक[illegible] इधर उधर भागने लगे। हे राजन्! बलवान् द्रोण[illegible]चार्य्य पाण्डवोंकी सेनामें प्रज्वलित अग्नि[illegible] समान चारों ओर घूमने लगे, वह घूमना अद्भु[illegible] प्रकारका दीखने लगा। वह आकाशगामी नगर कल्प, शास्त्रकी विधिसे कहे हुए वायु[illegible] समान पताका सहित नाचते और गतिविशि[illegible] चलनेवाले घोड़ोंसे युक्त, प्रज्वलित स्फटिकक[illegible] भांति सुन्दर पताका समेत उत्तम रथपर च[illegible]कर, शत्रुओंकी सेनाको डर दिखाते हु[illegible] उसका संहार करने लगे।

६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, पाण्डव लोग इस प्रकारसे द्रोणाचार्य्यको अपनी सेनाके हाथी, [illegible]

सहित अर्ज्जुन शत्रुओंके सम्मुख कालचक्रकी भांति आकर खड़े हुए। अनन्तर वह कर्ण और अर्ज्जुन युद्धके सब कर्म्मोंको जाननेवाले यत्नवान् होकर एक दूसरेके वधकी इच्छा करके परस्पर देखने लगे। आपकी सेनाके आगे अर्ज्जुन इसी प्रकार खड़े हुए। इसके अनन्तर अकस्मात् द्रोणाचार्य्यके आनेसे पृथ्वी घोर आर्त्तनादसे परिपूर्ण होकर कांपने लगी। सेनाके वीरोंके पैरकी धूली उड़नेसे आकाशमें अन्धकार होगया और उससे सूर्य्य छिपगया। बादलसे रहित आकाशसे मांस, हड्डी और रक्तकी वर्षा होने लगी। हे राजन्! हजारों गिद्ध, कौए और गोमायु आदि आपकी सेनाकी ओर दौड़ने लगे, सियारोंके झुण्ड मास और लहूकी इच्छासे आपकी सेनाकी दाहनी ओरसे चलने लगे। उस संग्रामभूमिमें जलते हुए उल्कापात भूमिकम्प होकर तुम्हारी सेनाके सम्मुख पड़ने लगा। हे राजन्! सेनापतिके यात्रा करने पर सूर्य्यका बहुत तेज बढ़ा, वह बिजलीसे युक्त गर्ज्जते हुए बादलोंमें छिप गया। वीरोंके जीवनके नाश करनेवाले यह असगुन और उत्पात दिखाई देने लगे। अनन्तर परस्पर एक दूसरेके वधकी इच्छा करनेवाले कौरव और पाण्डवोंकी सेनाका भयङ्कर युद्ध आरम्भ हुआ। तब जयकी इच्छा करनेवाले पाण्डव और कौरवोंकी सेनासे चोखे बाणोंकी वर्षा होने लगी। अनन्तर पाण्डव श्रेष्ठ महाधनुर्द्धर प्रतापी अर्ज्जुन एक एक बार सौ सौ तीक्ष्ण बाणोंको छोड़ते हुए अत्यन्त शीघ्रतासे आपकी सेनाकी ओर दौड़े। हे राजन्! पाण्डव लोग द्रोणाचार्य्यको आया हुआ देख, सृञ्जयोंके सङ्ग मिलकर उनके ऊपर अलग अलग बाणोंकी वर्षा करने लगे। जैसे वायुसे बादल टुकड़े टुकड़े होजाते हैं, उसी प्रकारसे वह बड़ी पाञ्चाल सेना द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे जर्ज्जरित होकर कई हिस्सोंमें बंट गई। द्रोणाचार्य्यने क्षण भरके बीचमें अनेक अस्त्र शस्त्रोंको [illegible] करके पाण्डव और सृञ्जयोंको पीड़ित तथा दुःखित कर दिया। जिस प्रकारसे दानव लोग हैं, इन्द्रसे पीड़ित होकर दुःखित होते वैसे ही धृष्टद्युम्नके देशके रहनेवाले पांचाल योद्धा द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे व्याकुल होकर कांपने लगे। अनन्तर महारथ दिव्य शस्त्रोंके जानने वाले याज्ञसेनि धृष्टद्युम्नने अपने बाणोंकी वर्षासे द्रोणाचार्य्यकी सेनाको छिन्न भिन्न कर दिया। बलवान् धृष्टद्युम्न अपने बाणोंसे द्रोणाचार्य्यके बाणोंको काट कर कुरु-सेनाका नाश करने लगे। अनन्तर महाधनुर्द्धारी द्रोणाचार्य्य युद्धमें पूरी तरहसे प्रवृत्त होकर सेनाको यत्नपूर्व्वक विशेष रूपसे ठहराकर धृष्टद्युम्नकी ओर चढ़ आये। जैसे इन्द्र पर क्रोध करके दानवोंपर बाणोंकी वर्षा करते हैं, उसी भांतिसे द्रोणाचार्य्य धृष्टद्युम्नकी तरफ एक बार ही बहुतसे दिव्य बाणोंकी वर्षा करने लगे। जैसे सिंहको देखकर छोटे छोटे हरिण तितर बितर होकर भाग जाते हैं, वैसे ही पाण्डव सृञ्जयगण द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे कम्पित होकर इधर उधर भागने लगे। हे राजन्! बलवान् द्रोणाचार्य्य पाण्डवोंकी सेनामें प्रज्वलित अग्निके समान चारों ओर घूमने लगे, वह घूमना बहुत प्रकारका दीखने लगा। वह आकाशगामी नगर कल्प, शास्त्रकी विधिसे कहे हुए वायुके समान पताका सहित नाचते और गतिविशेषसे चलनेवाले घोड़ोंसे युक्त, प्रज्वलित स्फटिकके भांति सुन्दर पताका समेत उत्तम रथपर चढ़कर, शत्रुओंकी सेनाको डर दिखाते हुए उसका संहार करने लगे।

६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, पाण्डव लोग इस प्रकारसे द्रोणाचार्य्यको अपनी सेनाके हाथी, [illegible]

चार्य्य पराक्रम और वीरता-युक्त बड़े चित्तसे धनुष और बाणोंको हाथमें लेकर केकयराजके पांचों भाई और पाञ्चालराजको बाणोंसे जर्जरित करके युधिष्ठिरकी सेनाकी ओर चढ धाये ।

भीमसेन, अर्ज्जुन, शिनिपौत्र सात्यकि, राजा द्रुपदके पुत्र, शैव्य-नन्दन, काशिराज और शिविराजने हर्षित होकर सिंहनाद करके बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको छा लिया । द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छूटे हुए सुवर्ण दण्डसे युक्त तीक्ष्ण बाण उन लोगोंके हाथी, घोड़े और पैदल चलनेवाले सेनाके वीरोंका शरीर भेदकर रुधिर लिपटे हुए पृथ्वीमें प्रवेश करने लगे । वह रणभूमि बाणोंके चलनेसे तथा दूसरे अस्त्र शस्त्रोंसे मरे हुए शूरवीर योद्धा, हाथी और घोड़ोंके शरीरसे इस प्रकार छिप गई जैसे काले बादलोंसे आकाश छिप जाता है । द्रोणाचार्य्य राजा दुर्य्योधनके हितैषी होकर सात्यकि, भीमसेन, अर्ज्जुन, अभिमन्यु, सेनापति धृष्टद्युम्न, काशिराज और दूसरे अनेक शूरवीरोंको अपने बाणोंसे पीड़ित करने लगे । हे राजन् ! वह महा पराक्रमी द्रोणाचार्य्य यह सम्पूर्ण कार्य्य तथा युद्धमें और भी बहुतसा पराक्रम कर्म्म करके, जैसे प्रलय कालके सूर्य्य सम्पूर्ण प्राणियोंको तपाके भस्म करता है, वैसे ही उन्होंने पाण्डवोंकी बहुतसी सेनाको अपने बाणोंसे भस्म करके इस लोकसे परलोकको गमन किया । वह सुवर्ण युक्त रथपर चढ़े हुए महापराक्रमी द्रोणाचार्य्य पाण्डवोंकी सेनाके सैकड़ों सहस्रों योद्धाओंका वध करके अन्तमें धृष्टद्युम्नके हाथसे मारे गये । उन बुद्धिमान् द्रोणाचार्य्यने युद्धमें पीछे न हटनेवाली दो अक्षौहिणीसे भी अधिक शत्रुसेनाका वध करके परम गति प्राप्त की । हे राजन् ! सुवर्णभूषित रथमें स्थित अनन्त कठिन कार्य्योंको करके उन्होंने पाण्डवोंके सहित पाञ्चाल योद्धाओंके अशुभ तथा क्रूर कर्म्मोंके अनुष्ठानसे मारे गये हे राजन् । युद्धमें द्रोणाचार्य्यके मरनेपर सब प्राणी और सेनाके हाहाकार और चिल्लाहटसे आकाश गूंज उठा । सम्पूर्ण प्राणियोंने "ओहो! धिक्कार है" ऐसा ही कहके पृथ्वी, आकाश, और दिशाओंको अनुनादित करके महा घोर शब्द किया । देवता, पितर और उनके पूर्व पुरुषों तथा वसु गन्धर्वोंने भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्यको उस रणभूमिमें मरे हुए । देखा । पाण्डव लोग युद्धमें विजय करके सिंहनाद करने लगे । उन शूरवीरोंके सिंहनादसे पृथ्वी कांपने लगी ।

७ अध्याय समाप्त ।

राजा धृतराष्ट्र बोले, सब शस्त्रधारियोंके बीच अस्त्रशस्त्रोंके युद्धमें निपुण द्रोणाचार्य्यने ऐसा कौनसा कर्म्म किया था, कि जिससे पाण्डव और सृञ्जय उनका वध करनेमें समर्थ हुए? क्या युद्धके समय उनका रथ टूट गया था, अथवा बाण चलानेके समय उनका धनुष टूट गया था? क्या वह युद्धमें असावधानीके कारणसे मारे गये? हे तात! वह द्रोणाचार्य्य धर्म्मात्मा, शत्रुओंको जीतनेवाले, कृतास्त्र, ब्राह्मणश्रेष्ठ, दूर तक लक्ष्यको वेधनेवाले, महापराक्रमी, सम्पूर्ण अस्त्रयुद्धके जाननेवाले और दिव्य अस्त्रोंको धारण करनेवाले थे, वह अक्षय वीर द्रोणाचार्य्य शीघ्रताके साथ अपने तीक्ष्ण बाणोंको चलाते हुए दारुण कर्म कर रहे थे, तब उस समयमें पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्नने किस प्रकारसे उनका वध किया? जब महात्मा धृष्टद्युम्नके हाथसे द्रोणाचार्य्य मारे गये, तब मुझे यह निश्चय होरहा है, कि पुरुषार्थसे दैव ही बली है । जिस पुरुषमें शस्त्र योजना, सन्धान, मोक्ष और संहार,—यह चारों प्रकारकी अस्त्रविद्या विद्यमान थी, और जो धनुष बाणधारी

चार्य्य पराक्रम और वीरता-युक्त कड़े चित्तसे धनुष और बाणोंको हाथमें लेकर केकयराजके पांचो भाई और पाञ्चालराजको बाणोंसे जर्जरित करके युधिष्ठिरकी सेनाकी ओर चढ़ धाये।

भीमसेन, अर्ज्जुन, शिनिपौत्र सात्यकि, राजा द्रुपदके पुत्र, शैव्य-नन्दन, काशिराज और शिवि-राजने हर्षित होकर सिंहनाद करके बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको छा लिया। द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छूटे हुए सुवर्ण दण्डसे युक्त तीक्ष्ण बाण उन लोगोंके हाथी, घोड़े और पैदल चलनेवाले सेनाके वीरोंका शरीर भेदकर रुधिर लिपटे हुए पृथ्वीमें प्रवेश करने लगे। वह रणभूमि बाणोंके चलनेसे तथा दूसरे अस्त्र शस्त्रोंसे मरे हुए शूरवीर योद्धा, हाथी और घोड़ोंके शरीरसे इस प्रकार छिप गई जैसे काले बादलोंसे आकाश छिप जाता है। द्रोणाचार्य्य राजा दुर्य्योधनके हितैषी होकर सात्यकि, भीमसेन, अर्ज्जुन, अभिमन्यु, सेनापति धृष्टद्युम्न, काशिराज और दूसरे अनेक शूरवीरोंको अपने बाणोंसे पीड़ित करने लगे। हे राजन्! वह महा पराक्रमी द्रोणाचार्य्य यह सम्पूर्ण कार्य्य तथा युद्धमें और भी बहुतसा पराक्रम कर्म्म करके जैसे प्रलय कालके सूर्य्य सम्पूर्ण प्राणियोंको तपाके भस्म करता है, वैसे ही उन्होंने पाण्डवोंकी बहुतसी सेनाको अपने बाणोंसे भस्म करके इस लोकसे परलोकको गमन किया। वह सुवर्ण युक्त रथपर चढ़े हुए महापराक्रमी द्रोणाचार्य्य पाण्डवोंकी सेनाके सैकड़ों सहस्रों योद्धाओंका वध करके अन्तमें धृष्टद्युम्नके हाथसे मारे गये। उन बुद्धिमान् द्रोणाचार्य्यने युद्धमें पीछे न हटनेवाली दो अक्षौहिणीसे भी अधिक शत्रु सेनाका वध करके परम गति प्राप्त की। हे राजन्! सुवर्णभूषित रथमें स्थित अनन्त कठिन कार्य्योंको करके अन्तमें पाण्डवोंके सहित पाञ्चाल योद्धाओंके अशुभ तथा क्रूर कर्म्मोंके अनुष्ठानसे मारे गये हे राजन्। युद्धमें द्रोणाचार्य्यके मरनेपर समस्त प्राणी और सेनाके हाहाकार और चिल्लाहटसे आकाश गूंज उठा। सम्पूर्ण प्राणियोंने "ओह! धिक्कार है" ऐसा ही कहके पृथ्वी, आकाश, और दिशाओंको अनुनादित करके महा घोर शब्द किया। देवता, पितर और उनके पूर्व पुरुष तथा वसु गन्धर्वोंने भरद्वाज पुत्र द्रोणाचार्य्यको उस रणभूमिमें मरे हुए। देखा। पाण्डव लोग युद्धमें विजय करके सिंहनाद करने लगे। उन शूरवीरोंके सिंहनादसे पृथ्वी कांपने लगी।

७ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले; सब शस्त्र-धारियोंके बीच अस्त्रशस्त्रोंके युद्धमें निपुण द्रोणाचार्य्यने ऐसा कौनसा कर्म्म किया था, कि जिससे पाण्डव और सृञ्जय उनका वध करनेमें समर्थ हुए? क्या युद्धके समय उनका रथ टूट गया था अथवा बाण चलानेके समय उनका धनुष टूट गया था? क्या वह युद्धमें असावधानता कारणसे मारे गये? हे तात। वह महा द्रोणाचार्य्य धर्म्मात्मा, शत्रुओंको जीतनेवाले कृतास्त्र, ब्राह्मणश्रेष्ठ, दूर तक लक्ष्यको वेधनेवाले महापराक्रमी, सम्पूर्ण अस्त्रयुद्धके जाननेवाले और दिव्य अस्त्रोंको धारण करनेवाले थे, उस वह अक्षय वीर द्रोणाचार्य्य शीघ्रताके सहित अपने तीक्ष्ण बाणोंको चलाते हुए दारुण कर्म कर रहे थे, तब उस समयमें पाञ्चालराजके पुत्र धृष्टद्युम्नने किस प्रकारसे उनका वध किया? जब महात्मा धृष्टद्युम्नके हाथसे द्रोणाचार्य्य मारे गये, तब मुझे यह निश्चय होरहा है, कि पुरुषार्थसे [illegible] ही बलवान् है। जिस पुरुषमें शस्त्र योजना, सन्धान, मोक्ष और संहार,—यह चारों प्रकारकी अस्त्र विद्यमान थी, और जो धनुष बाणधारी

चार्य्य पराक्रम और वीरता-युक्त कड़े चित्तसे धनुष और बाणोंको हाथमें लेकर केकयराजके पांचो भाई और पाञ्चालराजको बाणोंसे जर्ज-रित करके युधिष्ठिरकी सेनाकी ओर चढ़ धाये।

भीमसेन, अर्ज्जुन, शिनिपौत्र सात्यकि, राजा द्रुपदके पुत्र, शैव्य-नन्दन, काशिराज और शिवि-राजने हर्षित होकर सिंहनाद करके बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको छा लिया। द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छूटे हुए सुवर्ण दण्डसे युक्त तीक्ष्ण बाण उन लोगोंके हाथी, घोड़े और पैदल चलनेवाले सेनाके वीरोंका शरीर भेदकर रुधिर लिपटे हुए पृथ्वीमें प्रवेश करने लगे। वह रणभूमि बाणोंके चलनेसे तथा दूसरे अस्त्र शस्त्रोंसे मरे हुए शूरवीर योद्धा, हाथी और घोड़ोंके शरीरसे इस प्रकार छिप गई जैसे काले बादलोंसे आकाश छिप जाता है। द्रोणाचार्य्य राजा दुर्य्योधनके हितैषी होकर सात्यकि, भीमसेन, अर्ज्जुन, अभिमन्यु, सेनापति धृष्टद्युम्न, काशिराज और दूसरे अनेक शूरवीरोंको अपने बाणोंसे पीड़ित करने लगे। हे राजन्! वह महा पराक्रमी द्रोणाचार्य्य यह सम्पूर्ण कार्य्य तथा युद्धमें और भी बहुतसा पराक्रम कर्म्म करके, जैसे प्रलय कालके सूर्य्य सम्पूर्ण प्राणियोंको तपाके भस्म करता है; वैसे ही उन्होने पाण्डवोंकी बहुतसी सेनाको अपने बाणोंसे भस्म करके इस लोकसे परलोकको गमन किया। वह सुवर्ण युक्त रथपर चढ़े हुए महापराक्रमी द्रोणाचार्य्य पाण्डवोंकी सेनाके सैकड़ों सहस्रों योद्धाओंका वध करके अन्तमें धृष्टद्युम्नके हाथसे मारे गये। उस बुद्धिमान् द्रोणाचार्य्यने युद्धमें पीछे न हटनेवाली दो अक्षौ-हिणीसे भी अधिक शत्रु सेनाका वध करके परम गति प्राप्त की। हे राजन्! सुवर्णभूषित रथमें स्थित अनन्त कठिन कार्य्योंको करके अन्तमें पाण्डवोंके सहित पाञ्चाल योद्धाओंके अशुभ तथा क्रूर कर्म्मोंके अनुष्ठानसे मारे ग[ये]। हे राजन्! युद्धमें द्रोणाचार्य्यके मरनेपर सब प्राणी और सेनाके हाहाकार और चिल्लाहट[से] आकाश गूंज उठा। सम्पूर्ण प्राणियोंने "अहो धिक्कार है" ऐसा ही कहके पृथ्वी, आकाश, और दिशाओंको अनुनादित करके महा घोर श[ब्द] किया। देवता, पितर और उनके पूर्व पुरु[ष] तथा बन्धु बान्धवोंने भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्य[को] उस रणभूमिमें मरे हुए। देखा। पाण्डव लो[ग] युद्धमें विजय करके सिंहनाद करने लगे। उ[न] शूरवीरोंके सिंहनादसे पृथ्वी कांपने लगी।

७ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, सब शस्त्र-धारियों[के] बीच अस्त्रशस्त्रोंके युद्धमें निपुण द्रोणा[चार्य्यने] ऐसा कौनसा कर्म्म किया था, कि जिससे पाण्[डव] और सृञ्जय उनका वध करनेमें समर्थ हु[ए]? क्या युद्धके समय उनका रथ टूट गया था? अथवा बाण चलानेके समय उनका धनुष [टूट] गया था? क्या वह युद्धमें असावधानता[के] कारणसे मारे गये? हे तात! वह महा[त्मा] द्रोणाचार्य्य धर्म्मात्मा, शत्रुओंको जीतनेवाले कृतास्त्र, ब्राह्मणश्रेष्ठ, दूर तक लक्ष्यको वेधनेवाले महापराक्रमी, सम्पूर्ण अस्त्रयुद्धके जाननेवाले और दिव्य अस्त्रोंको धारण करनेवाले थे; ज[ब] वह अक्षय वीर द्रोणाचार्य्य शीघ्रताके स[हित] अपने तीक्ष्ण बाणोंको चलाते हुए दारुण क[र्म्म] कर रहे थे, तब उस समयमें पाञ्चालरा[जके] पुत्र धृष्टद्युम्नने किस प्रकारसे उनका [वध] किया? जब महात्मा धृष्टद्युम्नके हाथसे द्रोणा-चार्य्य मारे गये, तब मुझे यह निश्चय हो रहा है, कि पुरुषार्थसे [दैव] ही [बलवान्] है। जिस पुरुषमें शस्त्र योजना, सन्धान, मो[क्ष] और संहार,—यह चारों प्रकारकी अस्त्र[विद्या] विद्यमान थी, और जो धनुष बाणधारी

...सरे भी बहुतसे अस्त्रधारी योद्धाओंके आचार्य्य ..., उनको तुम मेरे निकट युद्धमें मरा हुआ ...हके वर्णन करते हो। आज उस व्याघ्र-...र्मसे युक्त सुवर्णभूषित रथमें स्थित सुवर्णमय ...वच और वस्त्रोंसे शोभित द्रोणाचार्य्यको ...रा हुआ सुनकर मैं अपने शोकका वेग नहीं ...ोक सकता हूं। सञ्जय! दूसरेके दुःखसे ...ई नहीं मरता यह निश्चित है, क्योंकि ...ैं अपनी अबुद्धिके कारण द्रोणाचार्य्यको ...रा हुआ सुनकर भी जीवित हूं। जब मेरी ...ओरके नीतिज्ञ द्रोणाचार्य्य शत्रुओंके हाथसें ...ारे गये, तब मैं दैवहीको श्रेष्ठ समझता ...हूं, उत्तम नीति और पराक्रमसे कुछ भी नहीं हो सकता। मेरा हृदय निश्चय ही पत्थरसे ...निर्म्मित हुआ है, नहीं तो द्रोणाचार्य्यका मरना ...सुनकर मेरा हृदय सौ टुकड़े होकर क्यों नहीं ...फट जाता है? विद्यार्थी, ब्राह्मण और राज-...पुत्रलोग ब्राह्म और दैव अस्त्रोंके निमित्त ...जिसकी सदा उपासना किया करते थे, वह ...किस प्रकारसें मृत्युके मुखमें पतित हुए? समु-...द्रका सूखना, सुमेरु पर्वतका चलना, और ...सूर्य्यके गिरनेके समान द्रोणाचार्य्यका वध मुझसे ...नहीं सहा जाता है। जो शत्रुनाशन द्रोणा-...चार्य्य दुष्टोंके नाश करनेवाले और धर्म्मात्मा-...ओंके रक्षक थे, जो दीन दुःखियोंके निमित्त ...प्राणदान भी करनेकी अभिलाष करते थे, ...जिनके पराक्रमके आसरेसे मेरे नीचबुद्धि पुत्रोंने ...युद्धमें विजयकी आशा की थी, जो बुद्धिमें बृह-...स्पति और नीतिमें शुक्राचार्य्यके समान थे,— ...ह पराक्रमी द्रोणाचार्य्य युद्धमें किस प्रकारसे ...मारे गये? उनके रथमें जुते हुए सुवर्णभूषित ...वायुके समान गमन करनेवाले सिन्धुदेशीय लाल ...रङ्गके उत्तम और बड़े घोड़े क्या अस्त्र-शस्त्रोंकी ...चोटसे विकल होगये थे? हे तात! द्रोणाचार्य्यके ...सुवर्णयुक्त रथमें जुते हुए सब घोड़े हाथियोंकी ...चिङ्घाड़ शंख नगाड़ोंके शब्द और धनुषटङ्कारके शब्द, बाणोंकी वर्षा और दूसरे अस्त्र-शस्त्रों...भी सह सकते थे, वे सब घोड़े अस्त्रोंके ल... तथा रथके अधिक खींचनेसे भी पीड़ित न... होते थे और शीघ्र गमन करनेवाले तथा शत्रु... न पराजित होने योग्य शूरवीरों रक्षित थे... इससे उनके द्वारा शत्रुओंके पराजित ह... होनेकी सम्भावना थी; ऐसे घोड़े पाण्डवों... सम्पूर्ण सेनासे किस कारणसे पार न होसके... जो युद्धमें शत्रु सेनाके शूरवीरोंको रुलाते ... ऐसे द्रोणाचार्य्यने सुवर्णयुक्त शोभायमान उत्त... रथ पर चढ़के कौन सा कार्य्य किया था... जिनकी शस्त्रविद्याको ग्रहण करके शूरवी... अनेक योद्धा धनुर्द्धारी हुए हैं, उस सत्य परा...क्रमी द्रोणाचार्य्यने युद्धमें कौनसा कार्य्य किय...या? स्वर्गमें जैसे इन्द्र सम्पूर्ण देवताओंमें श्रेष्ठ है... वैसे ही सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंमें श्रेष्ठ महा भयङ्क... कर्म्मोंको करनेवाले द्रोणाचार्य्यकी पृष्ठरक्षा उस... समय किन महारथोंने की थी? उस महा-भयङ्कर युद्धमें सुवर्णभूषित रथमें बैठे तथा दिव्य अस्त्रोंकी वर्षा करनेवाले द्रोणाचार्य्यको देखकर पाण्डव लोग अत्यन्त ही पीड़ित हुए थे, फिर दूसरी बार पाञ्चाल योद्धा और भाइ-योंके सहित धर्म्मराज युधिष्ठिरने किस प्रकारसे द्रोणाचार्य्य पर आक्रमण किया? मुझे बोध होता है कि पहिले अर्जुनने मेरी ओरके मुख्य मुख्य महारथ योद्धाओंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे पीड़ित करके मार्गमें ही रोक रक्खा, तब पीछेसे पापी धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यपर आक्र-मण किया होगा। अर्जुनसे रक्षित धृष्टद्युम्नके अतिरिक्त ऐसा कोई भी योद्धा मैं नहीं देखता हूं, कि जो तेजस्वी द्रोणाचार्य्यका वध कर सके। मैं बोध करता हूं कि जिस प्रकारसे चींटियोंसे अत्यन्त उद्विग्न हुए सर्पको कोई पुरुष मारनेमें समर्थ हो सकता है, वैसे ही पाञ्चाल योद्धाओंमें अधम धृष्टद्युम्नने केकय, चेदि मत्स्य, करूष और अन्य देशीय बहुतसे राजाओंसे युक्त

होकर कठिन कर्मोंके करने वाले द्रोणाचार्य्यका वध किया होगा। जिन्होंने अङ्गोंके सहित चारों वेदोंको पढ़ा था, जो नदियोंके आश्रय स्थान समुद्रकी भांति ब्राह्मणोंके आश्रय स्थान थे, जो शत्रुनाशन द्रोणाचार्य्य क्षत्रिय और ब्राह्मण दोनों ही धर्म्मोंके जाननेवाले तथा आचार्य्य रूप थे, वह बूढ़े ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य किस प्रकार अस्त्र शस्त्रोंसे मारे गये? हम लोगोंकी बातोंको न सहने योग्य होकर भी पाण्डवोंके निमित्त उन्होंने बहुत क्लेश सहा था। यही कारण है, कि जिसके निमित्त उन्होंने क्षमा की थी, उसी कर्म्मका यह फल दीख पड़ता है। पृथ्वीपर सम्पूर्ण धनुर्द्धारी योद्धा जिस द्रोणाचार्य्यसे शस्त्रविद्या सीखकर धनुर्द्धर गिने जाते हैं, उस सत्यवादी और सुकृती द्रोणाचार्य्यका पाण्डवोंने राज्यकी अभिलाषासे किस प्रकारसे वध किया? शीघ्रतासे शस्त्रोंका चलानेवाला, बलवान, दृढ़ धनुर्द्धारी और शत्रुओंका नाश करनेवाला जो कोई पुरुष विजयकी इच्छासे द्रोणाचार्य्यके निकटमें उपस्थित होता था, वह जीता हुए फिर अपने स्थान पर नहीं जा सकता था। इसके अतिरिक्त वेद पढ़ने वाले ब्राह्मणोंके वेद-स्वर और धनुर्वेद जाननेवाले राजाओंके धनु-टङ्कारका शब्द जिस द्रोणाचार्य्यका कभी भी सङ्ग नहीं छोड़ता था; उस महावीर अत्यन्त पराक्रमी पुरुषोंमें श्रेष्ठ लज्जाशील अपराजित सिंह और हाथीके समान पराक्रमी द्रोणाचार्य्यका वध मुझसे नहीं सहा जाता है। हे सञ्जय! जिस द्रोणाचार्य्यकी और जिसके बल और यशकी कोई कभी निन्दा नहीं कर सकता था, धृष्टद्युम्नने उस द्रोणाचार्य्यको दूसरे राजाओंके सम्मुखमें ही किस प्रकार रणभूमिमें मारा? उनकी रक्षा करनेके निमित्त किन किन पुरुषोंने उनके निकट और किन किन महारथियोंने उनके आगे होकर युद्ध किया था? किन महारथ वीरोंने कठिन कर्म्मोंके करनेवाले द्रोणाचार्य्यके रथके स्थित होके शत्रुओंके सङ्ग युद्ध किया किन महात्माओंने उनके रथके दहिने बायें चक्रकी रक्षा की थी? कौन कौन महारथी वीर युद्ध करनेवाले महा तेजस्वी द्रोणाचार्य्यके आगे आगे चले थे? उस समयमें कौन कौन वीर योद्धा शत्रुओंके अस्त्रोंसे शरीर त्याग कर मृत्युके मुखमें पतित हुए? उनके युद्धमें कौन कौन वीर योद्धा स्वर्ग लोकको गये? उनकी रक्षा करनेके निमित्त जो क्षत्रिय गण नियुक्त हुए थे, उन मूढ़ क्षत्रियोंने किस भयसे उन्हें त्याग कर रणभूमिसे पलायन किया? अथवा क्या किसीने भी उस समयमें रक्षा नहीं की थी? वह तो अत्यन्त विपद्में होकर भी शूरता और वीरतासे युक्त शत्रुओंके भयसे कभी पीठ नहीं दिखाते थे, फिर वह महातेजस्वी द्रोणाचार्य्य शत्रुओंके अस्त्रोंसे किस प्रकार मारे गये? हे सञ्जय! श्रेष्ठ पुरुष महाघोर विपदमें पड़ कर भी शक्तिके अनुसार पराक्रम करते हैं, यही शास्त्रोंकी विधि है;—वह भी जिस द्रोणाचार्य्यमें प्रतिष्ठित थी, हे तात! अब मेरा मन मुग्ध होरहा है, इस समय सब कथा यहां ही तक रहने दो, मैं फिर सावधान होकर तुमसे पूर्ण रीतिसे प्रश्न करूंगा।

८ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजा जनमेजय! धृतराष्ट्र सूतपुत्र सञ्जयसे ऐसा कहकर अपने मनके दुःखसे अत्यन्त ही कातर और पुत्रोंके विजयकी आशासे निराश होकर पृथ्वीमें गिर पड़े। उनको मूर्च्छित होके पृथ्वी पर गिरा हुआ देखकर परिचारिकाओंने उनके शरीरपर उत्तम और शीतल जल छिड़ककर सुगन्धयुक्त व्यजनों (पंखो) से वायु कर

लगीं। भरतकुलकी स्त्रियां राजा धृतराष्ट्रको गिरा देखकर उन्हें चारों ओरसे घेरकर बैठ गई और अपने कोमल करोंसे उनके शरीरको स्पर्श करने लगीं। उन उत्तम अङ्गनाओंका कण्ठ शोकसे रुद्ध होगया, उन्होंने धीरे धीरे राजा धृतराष्ट्रको उठाकर आसनपर बैठा दिया। उस समयमें राजा धृतराष्ट्र मूर्च्छित और चेष्टा-रहित आसनपर स्थित हुए, तब सम्पूर्ण स्त्रियां उनके समीपमें व्यजनोंसे वायु करने लगीं; अनन्तर राजा धृतराष्ट्र धीरे धीरे सावधान होकर कांपते हुए शरीरसे फिर सञ्जयसे पूछने लगे।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, जैसे अपने तेजसे अन्धकार दूर करके सूर्य्य उदित होता है, वैसे ही जब अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर द्रोणाचार्य्यके सम्मुख उपस्थित हुए, उस समयमें मदचूते हुए क्रुद्ध बलवान् और आशक्त चित्त दो मतवारे हाथी जैसे ऋतुमती हथिनीके सङ्गमके समय आपसमे युद्ध करते हैं, उसी भांति अजेय मतवारे हाथीके समान प्रसन्न चित्त राजा युधिष्ठिरको देखकर किन किन योद्धाओंने द्रोणाचार्य्यके पाससे निवारण किया था? जो पुरुषोंमें श्रेष्ठ धीरज धरनेवाले सत्यवादी युधिष्ठिर अकेले शत्रुपक्षके वीर योद्धाओंको अतिक्रम कर हो सकते हैं, जो महाबाहु युधिष्ठिर अपनी महा भयानक दृष्टिसे देखकर ही दुर्य्योधनकी सम्पूर्ण सेना भस्म कर सकते हैं; अधिक क्या कहूं, जो युधिष्ठिर अपने दृष्टि पातसे ही सृष्टिका नाश करनेमें समर्थ हैं; उस विजयकी इच्छा करनेवाले, अचय धनुर्द्धारी धर्म्मात्मा पूजाके योग्य युधिष्ठिरको किन किन योद्धाओंने युद्धसे निवारण किया था? मेरी सेनाके किन किन योद्धाओंने उस सत्य पराक्रमी पुरुषसिंह धनुर्धारी कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरके सम्मुख रणभूमिमें गमन किया था? जो महाबली, बड़े शरीरवाला, अत्यन्त ही उत्साही, दश हजार हाथियोंके समान पराक्रमी भीमसेन शत्रुसेनाके बीच कठिन कार्य्य करता रहता है, जिसने अत्यन्त वेगके सहित, रणभूमिमें आकर द्रोणाचार्य्यपर आक्रमण किया था, उस भीमको आते देखकर कौन कौन शूरवीर योद्धा उसके सम्मुख हुए थे? जिस समय धनुषरूपी बिजलीके प्रकाशसे युक्त, बादलके समान भयङ्कर, अत्यन्त पराक्रमी रथी, मेघवर्ण रथमें बैठे हुए, बादलके समान रथके चलनेके शब्द और बाणोंके शब्दसे युक्त, रोषरूपी वायुसे वेगवान् तथा मनके अभिप्रायके तुल्य शीघ्रगामी, मर्म्मभेदी बाणोंके ग्रहण करनेवाले तथा महा भयानक मूर्त्तिवाले अर्ज्जुनने इन्द्रके बादलोंके समान अपने धनुषका महा घोर शब्द और बज्रके समान बाणोंकी वर्षा करते हुए धनुषटङ्कार तथा रथके शब्दसे सब दिशाओंको पूर्ण और रुधिररूपी जलसे रणभूमिको पूरित करते तथा मरे हुए वीरपुरुषोंके शरीरसे संग्रामभूमिको परिपूर्ण करते हुए महा भयङ्कर रौद्रमूर्त्तिसे रणभूमिमें आगमन किया था; और बुद्धिमान् अर्ज्जुनने जिस समय निज धनुषको ग्रहण करके गिद्ध पङ्खसे युक्त, शिलापर घिसे हुए चोखे बाणोंसे दुर्य्योधनके अनुयायी राजाओंको पीड़ित किया था; उस समयमें तुम लोगोंका कैसा चित्त हुआ था? जिस समय कपिध्वजासे युक्त अर्ज्जुनने अपने बाणोंकी वर्षासे आकाशको पूरित करते हुए युद्धभूमिमें आगमन किया था, उस समयमें उस अर्ज्जुनको देखकर तुम लोगोंकी क्या दशा हुई थी? अर्ज्जुन जब महा भयङ्कर शब्द करता हुआ तुम लोगोंके निकट आया था, तब गाण्डीव धनुषके अत्यन्त घोर शब्दसे ही तो तुम्हारी सेनाका विनाश नहीं हुआ? जैसे वायु अपने प्रबल वेगसे बादलोंको तितर-बितर कर देता है, वैसे ही अर्ज्जुनने भी तो तुम
प्राण नष्ट नहीं किया? कि

सुनते ही सेनाके आगे चलनेवाले शूर-वीर पुरुष कांप उठते हैं, उस गाण्डीव धनुष ग्रहण करनेवाले अर्ज्जुनके बाणोंकी चोटको कौन पुरुष युद्धमें सह सकता है? उसी अर्ज्जुनके युद्धसे अवश्य ही मेरी सेनाके पुरुष कम्पित और भयभीत हुए होंगे। ऐसे अवसरमें किन किन वीरोंने द्रोणाचार्य्यका सङ्ग नहीं छोड़ा था? और कौन कौनसे क्षुद्र पुरुष, उस समय उन्हें छोड़के रणभूमिसे भागे थे? कौन कौन शूरवीर योद्धा उस समयमें देवताओंके समान पराक्रमी अर्ज्जुनके सङ्ग युद्ध करके मृत्यु मुखमें पतित हुए थे? मेरी सेनाके पुरुष उस श्वेतवाहन अर्ज्जुनके वेग और वर्षाकालके मेघगर्ज्जनके समान गाण्डीव-धनुषके शब्दको नहीं सह सकते हैं। कृष्ण जिसके सारथी और अर्ज्जुन जहां पर योद्धा है, मैं बोध करता हूं, कि वह रथ देवता और असुरोंसे भी अजेय है।

जिस समयमें सुकुमार, युवा, शूर, देखने योग्य, तेजस्वी, शस्त्रविद्यामें निपुण, बुद्धिमान्, सत्यपराक्रमी पाण्डुपुत्र नकुलने रणभूमिमें महा घोर शब्द करके अपने बाणोंसे द्रोणाचार्य्यपर आक्रमण किया था, उस समय किन किन शूरवीरोंने उसे युद्धसे निवारण किया था?

जब क्रुद्ध विषधर सर्पके समान बलवान् सहदेव मेरी सेनाको मर्दन करता हुआ रणभूमिमें उपस्थित हुआ था, तब उस श्रेष्ठ पुरुषोंके व्रतमें स्थित, अमोघ बाणधारी, लज्जाशील, अपराजित सहदेवको किन किन वीरोंने निवारण किया था? जिसने सौवीर राज्यकी महासेनाको भेद करके सर्वाङ्ग-सुन्दरी भोजकन्याको ग्रहण किया था, जो पुरुषश्रेष्ठ केवल सत्य, धैर्य्य, और ब्रह्मचर्य्य व्रतमें नित्य स्थित रहता है, जो बलवान् सत्य कर्म्मोंका करनेवाला, निर्भय, अपराजित और ...में श्रीकृष्णके समान है, जिसने कृष्णकी पाकर भी अर्ज्जुनके उपदेशसे सब अस्त्र शस्त्रों[में] निपुणता प्राप्त की है; उस शस्त्रविद्यामें अर्ज्जुनके समान सात्यकिको द्रोणाचार्य्यकी ओर युद्धके निमित्त आते देखकर किसने निवारण किया था? जो वृष्णिवंशीय श्रेष्ठ, शूर वीर, अस्त्र और पराक्रममें रामके समान है, जैसे कृष्ण तीनों लोकोंमें पूजित होके निवास करते हैं, उनके समान जिसमें सत्य, धृति, बुद्धि, वीरता और उत्तम ब्रह्मास्त्र स्थित है, उस देवताओंसे भी न जीते जानेके योग्य सब गुणोंसे पूर्ण महाधनुर्द्धारी सात्यकिको किन किन शूर वीरोंने युद्धमें निवारण किया था? जिसने अपने ह... बन्धु बान्धवोंको त्यागके अकेले ही पाण्डवोंका आसरा ग्रहण किया है, उस धृष्टकेतुको द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़ते देख किसने उसको युद्धभूमिमें रोका था? जिसमें सम्पूर्ण शस्त्रवि[द्या] अर्ज्जुनसे भी अधिक है, और जो सदा सर्व... सत्यव्रत और ब्रह्मचर्य्यमें स्थित रहता है; इ... पराक्रममें अर्ज्जुन, तेजमें सूर्य्य और बुद्धि[में] बृहस्पतिके समान है, उस बड़े नेत्रवाले अभिमन्युको द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़ते देख किन किन शूरवीरोंने युद्धभूमिमें रोका था? युवा अवस्था तथा तरुण बुद्धिवाले अभिमन्युने जिस समय द्रोणाचार्य्य पर आक्रमण किया था, उस समयमें तुम लोगोंकी कैसी दशा हुई थी? जैसे बड़ी बड़ी नदियां समुद्रकी ओर प्रबल वेगसे चलती हैं, वैसे ही जब द्रौपदीके पांचो [पुत्र] द्रोणाचार्य्यकी ओर बढ़े थे उस समयमें किन किन शूरवीरोंने उन्हें रणभूमिमें रोका था? जि[न्होंने] भीष्मके बालकोंने बालक्रीड़ा छोड़के बारह वर्ष तक निकट रह कर अस्त्रशिक्षा ग्रहण की थी, उन क्षत्रञ्जय, क्षत्रदेव, क्षत्रवर्म्मा और मानद,—इन धृष्टद्युम्नके चारों शूर वीर पुत्रोंको द्रोणाचार्य्यके सम्मुख आते देख किन किन शूरवीरोंने निवारण किया था? यदुवंशी लोग जिसको ... योद्धाओंसे भी अधिक बलवान् समझते हैं, ...

महाधनुर्द्धारी चेकितानको द्रोणाचार्य्यके सम्मुखसे किसने निवारण किया था? जिसने युद्धमें कलिङ्ग राजके निकटसे कन्या हरण की थी, उस वृद्धक्षेमपुत्र बलवान् अनाधृष्टिने जब द्रोणाचार्य्यपर आक्रमण किया था, तब उसको किसने युद्धसे रोका था? धर्म्मात्मा, सत्य पराक्रमी रक्तवर्णके अस्त्र-शस्त्र और लाल रङ्गकी ध्वजाओंसे युक्त पाण्डवोंकी मातृ स्वसाके पुत्र, केकयराज पांचो भाई जब द्रोणाचार्य्यके निमित्त उनकी ओर दौड़े थे, तब उन्हें उस समयमें किसने निवारण किया था? सब राजालोग बारणावत नगरमें क्रुद्ध और विजयकी इच्छासे छः महीने युद्ध करके भी जिस यूथपतिको पराजित नहीं कर सके, उन धनुर्द्धारियोंमें श्रेष्ठ, सत्यवादी महाबलवान् युयुत्सुको द्रोणाचार्य्यके सम्मुख आते देखकर किन किन योद्धाओंने निवारण किया था? जिन्होंने कन्या हरण करनेके समयमें वाराणसीमें काशिराजपुत्रको भल्लसे निपातित किया था, और जो द्रोणाचार्य्यका वध करनेके निमित्त उत्पन्न हुए हैं; पाण्डवोंके मन्त्री और दुर्य्योधनके अनर्थके मूल तथा कुरुसेनाको युद्धमें तितर बितर करदेनेवाले महारथ धृष्टद्युम्नको द्रोणाचार्य्यके सम्मुख आते देख किन किन शूरवीरोंने रोका था? और किन योद्धाओंने द्रुपदपुत्र शिखण्डीको द्रोणाचार्य्यके सम्मुख आते देखके निवारण किया? जिन्होंने अपने रथसे इस सम्पूर्ण पृथ्वीको चमड़ेके समान लपेट लिया था, जिन्होंने प्रजाओंको पुत्रके समान पालन करते हुए दश अश्वमेध और सर्व्वमेध यज्ञ निर्विघ्न समाप्त किया था, जिन्होंने गङ्गाके बालूके किरणोंकी गिनतीके बराबर गौओंका दान किया था, जिनके कठिन कर्म्मको देखकर देवताओंने कहा था, कि "पहिले किसी मनुष्यने ऐसा कर्म्म नहीं किया था और न भविष्यमें कोई कर सकेगा! स्थावर जंगम तथा तीनो लोकके बीच इस शिविवंशीय उशीनर राजाके समान यज्ञ कर्म्मको पूर्ण करनेवाला दूसरा कोई भी कभी उत्पन्न नहीं हुआ था, और न आगे उत्पन्न होगा" मर्त्यलोक-वासी मनुष्य जिसके समान श्रेष्ठ गति नहीं प्राप्तकर सकते, उस उशीनरके वंशमें उत्पन्न हुए शत्रुनाशन महारथ शैव्यको यमराजके समान द्रोणाचार्य्यकी ओर आते देखकर किन किन शूरवीरोंने निवारण किया था? जब मत्स्यराज विराटकी रथसेना द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़ी थी, तब किन वीरोंने उस सेनाको युद्धसे निवारण किया था? हे वीर! जिससे मुझे बहुत भय उत्पन्न होता है, उस भीमसेनके पुत्र महाबली, पराक्रमी, मायावी, पाण्डवोंकी विजय चाहने वाले और मेरे पुत्रोंको कण्टकरूपी खटकनेवाले राक्षसराज बड़े शरीरवाले घटोत्कचको द्रोणाचार्य्यके सम्मुख आते देख किन किन योद्धाओंने निवारण किया था? हे सञ्जय! ये सब और इनसे अतिरिक्त और भी अनेक वीर योद्धा जिसके निमित्त प्राण पर्य्यन्त त्यागनेमें उद्यत होरहे हैं, उनसे न जीतने योग्य कौन पुरुष है? पूर्णरीतिसे सब लोकोंके स्वामी सनातन पुरुष दिव्य भावसे युक्त पुरुषसिंह शार्ङ्ग धनुष धारण करनेवाले कृष्ण जिन पाण्डवोंकी रक्षा कर रहे हैं, जिनके हितकी कृष्ण अभिलाषा करते हैं तथा युद्धमें सहायता कर रहे हैं, उन लोगोंके पराजयकी सम्भावना कैसे हो सकती है? जिनके सम्पूर्ण दिव्य-कर्म्मोंको मनीषी पुरुष गाया करते हैं; इस समयमें मैं अपनी आत्म स्थिरताके निमित्त उनके उन्हीं सब कर्म्मोंका भक्तिपूर्व्वक गान करूंगा।

९ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! कृष्ण जिन कर्म्मोंको किया हैं, वे सब

पुरुषसे नहीं किये जा सकते ; मैं उनके किये हुए कर्म्मोंका वर्णन करता हूं, तुम चित्त लगाके सुनो। हे सञ्जय ! गोकुलमें जिस समय महात्मा कृष्ण बढ़े थे, उसी समयमें उनका बाहुबल तीनों लोकमें विख्यात हो गया था। उस समयमें कृष्णने यमुनाके तटपर वनमें रहनेवाले उच्चैःश्रवा घोड़ेके समान बलवान् अश्वराज और गौओंके उपस्थित मृत्युस्वरूप वृषभासुर नाम महा घोर दानवको अपने बाहुबलसे मारा। कमलनयन कृष्णने ही महा घोर प्रलम्ब असुरका वध किया था, उन्होंने ही नरकासुर, जम्भासुर और इन्द्रके समान पराक्रमी सुर नामक राक्षसका संहार किया था ; और जरासन्धसे रक्षित महा तेजस्वी कंसको अनुयायियोंके सहित मारके यमलोकमें भेज दिया। शत्रुओंके नाश करनेवाले कृष्णने बलदेवकी सहायतासे भोजराज कंसके सब भाइयों अर्थात् तपस्वी, बलवान्, सुनासा और युद्धमें पराक्रमी अक्षौहिणी-पति शूरसेन राजका सम्पूर्ण सेनाके सहित वध किया था। महा क्रोधी दुर्व्वासा ऋषिने स्त्रियोंसे युक्त श्रीकृष्णचन्द्रसे अत्यन्त ही पूजित होकर उन्हें नाना भांति वर प्रदान किया। कमलनेत्रवाले महावीर कृष्ण स्वयम्वरके बीच सम्पूर्ण राजाओंको पराजित करके गान्धारराजकी कन्याके सङ्ग विवाह किया था ; उस समयमें कितने ही पराक्रमी राजा कृष्णके अस्त्रोंसे क्षत विक्षत शरीर अत्यन्त ही पीड़ित हुए थे ; जनार्द्दन कृष्ण सम्पूर्ण अक्षौहिणीपति राजा जरासन्धको उपाय रचके दूसरेके हाथसे मरवा डाला। राजाओंमें प्रसिद्ध शिशुपालने जब कृष्णकी बहुत ही निन्दा की, तब उन्होंने उसी समय उसे पशुओंकी भांति मार डाला। यदुकुल शिरोमणि कृष्णने समुद्रके किनारेसे आक्रमण न होने योग्य शाल्व दैत्यसे रक्षित सौभ नामक ... को अपने अस्त्रोंके बलसे नष्ट करके पृथ्वीपर गिरा दिया था। श्रीकृष्णचन्द्रने युद्धमें अङ्ग, वङ्ग, कलिङ्ग, मागध ; काशी, अयोध्या, वात्स्य, गार्ग्य, करूप, पौण्ड्र ; उज्जैन नगरी, दाक्षिणात्य प्रदेश, कैवल्य, दाशेरक, काश्मीर, उरसरिक, पिशाच, दुन्दुभ, काम्बोज, वाटधान, चोल, पाण्ड्य, त्रिगर्त्त, मालव और महा पराक्रमी दरददेशीय वीर और बहुतसे दिशाओंसे आये हुए वीर योद्धा तथा खश और शकदेशीय राजाओं और सेनाके सहित यवनराजको पराजित किया था। कृष्णने मकर, उर्ग आदि जलजन्तुओंसे युक्त अपार समुद्रमें प्रवेश करके वरुणको जीता था। कृष्णने युद्धमें पाताल तलपर वास करनेवाले पञ्चजन्य नाम असुरका वध करके दिव्य पाञ्चजन्य शंखको प्राप्त किया था। महाबली कृष्णने संग अर्ज्जुनके खाण्डव वनको जलाके जब अग्निको तृप्त किया था उस ही समयमें अत्यन्त तेजस्वी अग्निके दिये हुए चक्ररत्नको पाया था। जब पराक्रमी कृष्ण गरुड़पर चढ़के इन्द्र पुरीमें गये थे, उस समयमें वह इन्द्रको भी भयभीत करके वहांसे कल्पवृक्ष हर लाए थे ; कृष्णका पराक्रम देख इन्द्रको भी कल्पवृक्षका हरण सहना पड़ा। श्रीकृष्णसे कोई राजा जो अजेय हैं, ऐसा मैंने नहीं सुना है। हे सञ्जय ! मेरे सम्मुख ही सभामें पुण्डरीकाक्ष कृष्णने जो आश्चर्य्यमय कर्म्म किया था, दूसरा कौन पुरुष वैसा कर्म्म कर सकता है? मैंने भक्तिपूर्व्वक उनका शरणापन्न होकर ईश्वर (कृष्ण) का दर्शन किया था, शास्त्रमें कहे हुए सम्पूर्ण कर्म्म मुझे प्रत्यक्ष रूपसे भली भांति विदित होगये हैं। हे सञ्जय। महा बुद्धिमान पराक्रमी हृषीकेश कृष्णके कर्म्मोंका अन्त नहीं मालूम हो सकता। गद, शाम्ब, प्रद्युम्न, विदूरथ, अगावह, अनिरुद्ध, चारुदेष्ण, सारण, उल्मुक, निशठ, पराक्रमी, झिल्लीवभ्रु, पृथु, विपृथु, समीक, अरिमेजय इत्यादि बलवान् प्रहार करनेमें निपुण यदुवंशीय शूरवीर योद्धाओं

यदि महात्मा कृष्णकी आज्ञासे पाण्डवोंकी सेनामें मिल कर कौरवोंके सङ्ग युद्ध करें, तो मेरे विचारमें सम्पूर्ण कौरवोंकी ही विजय होसकता है। जिस ओर जनार्दन कृष्ण हैं, उसी ओर अयुत हाथियोंके समान बलवान् हलधारी बलदेवको भी समझना चाहिये। हे सञ्जय! द्विज लोग उस ही कृष्णको सम्पूर्ण जगत्का पिता कहके वर्णन करते हैं। हे तात! यदि कृष्ण पाण्डवोंके निमित्त स्वयं वर्म्म धारण करके कौरवोंसे युद्ध करें, तो रणभूमिमें कोई भी उनके समान दूसरा वीर योद्धा मेरी सेनामें नहीं दीखता है। यदि मान लें, कि सम्पूर्ण कौरव मिलके किसी भांतिसे पाण्डवोंको जीत लेंगे; तो ऐसा होने पर भी यदुकुल शिरोमणि कृष्ण पाण्डवोंके निमित्त शस्त्र ग्रहण कर सम्पूर्ण अनुयायी राजाओंके सहित कौरवोंका वध करके कुन्तीको पृथ्वी प्रदान कर सकते हैं। जिसके कृष्ण सारथी और अर्ज्जुन योद्धा हैं, उस रथके समान दूसरा कौन रथ हो सकता है? कौन वीर अर्ज्जुनके समान रथ पर चढ़के उनसे द्वैरथ युद्ध कर सकता है? अस्तु, मैं किसी उपायसे भी कौरवोंकी जयकी सम्भावना नहीं समझता हूं। जो हो अब जिस प्रकारसे युद्ध हुआ था, वह सब वृत्तान्त तुम मुझसे कहो। अर्ज्जुन कृष्ण ही की आत्मा और कृष्ण भी उस अर्ज्जुनकी आत्मा है; अर्ज्जुनमें सदा ही विजय और कृष्णमें सनातन कीर्त्ति विद्यमान है। अर्ज्जुन सम्पूर्ण लोकोंसे अपराजित है और कृष्णके सम्पूर्ण गुण ही प्रधान हैं, तथा सम्पूर्ण गुण सदासे अपरिमित रूपसे कृष्णमें वर्त्तमान हैं। मूर्ख दुर्य्योधन अभाग्यसे ही दैवके वशमें होकर मृत्युके पाशमें बंधा हुआ है, इसीसे वह कृष्ण और अर्ज्जुनको नहीं पहिचान सकता है। दुर्य्योधन दैवहीकी प्रेरणासे दाशार्ह कृष्ण और पाण्डवोंमें श्रेष्ठ अर्ज्जुनको नहीं जान सकता है;—ये दोनों ही प्राचीन ऋषि महात्मा नर और नारायण हैं। यद्यपि ये दोनों एक ही आत्मा हैं, तथापि मर्त्यलोकवासी मनुष्य लोग इनको दो रूपसे देखते हैं। यही दोनों महा पराक्रमी यशस्वी पुरुष मन ही मन इच्छा मात्रसे ही इस सम्पूर्ण सेनाका नाश कर सकते हैं, तब मनुष्य शरीर धारण करके ही ऐसी इच्छा नहीं करते हैं। महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य्यका वध युग बदलनेकी भांति सब लोकोंको मोहित कर रहा है, इससे कोई पुरुष भी ब्रह्मचर्य्य, वेदाध्ययन, नित्य-क्रिया वा अस्त्रविद्यासे नहीं निस्तार पा सकता है। हे सञ्जय! लोकपूजित वीर सब शस्त्रोंसे शिक्षित युद्धमें महा पराक्रमी महावीर भीष्म और द्रोणाचार्य्यका वध सुनकर भी मैं जीवित हूं। पहिले युधिष्ठिरकी राजश्रीको देखकर जो हम लोगोंने उसकी निन्दा की थी, तथा उनकी राज्यश्रीका हरण किया था, इस समय भीष्म और द्रोणाचार्य्यका वध सुनके वह श्री उनकी अनुगता हो रही है, अर्थात् हम लोगोंसे अप्राप्त होरही है। हे सूत! कालके प्रभावसे पके हुए फलके समान जीवोंके वधके निमित्त तृण भी वज्रके समान होजाता है। आज जिसके कोपमें पड़के भीष्म और द्रोणाचार्य्य मारे गये, उस महा धनुर्द्धर राजा युधिष्ठिरने लोकके बीच इस अनन्त ऐश्वर्य्यको प्राप्त किया। प्रकृतिसे ही धर्म्म उस युधिष्ठिरको आश्रय कर रहा है, और हमारी ओर अधर्म्मकी बढ़ती होरही है; इससे यह महा क्रूर समय मेरे सर्व्वनाशके निमित्त उपस्थित हुआ है। हे सूत! मनस्वी बुद्धिमान् पुरुष किसी विषयको और भांतिसे विचारते हैं, परन्तु वह दैवकी इच्छासे दूसरी भांतिका होजाता है। इससे यह न रुकनेवाला, पुरुषार्थसे निवारण न होने योग्य, महाघोर विपदका मूल जो युद्ध व्यापार उपस्थित हुआ है, उस विषयमें

घटना हुई है, वह तुम मेरे समीपमें वर्णन करो।

१० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! द्रोणाचार्य्य जिस प्रकारसे पाण्डव और सृञ्जयोंके बीचमें पराक्रम प्रकाशित करके मारे गये, वह सब वृत्तान्त मैंने प्रत्यक्ष देखा है, उस सम्पूर्ण समाचारको मैं तुम्हारे समीपमें वर्णन करता हूं, तुम सुनो।

महाराज! भरद्वाज पुत्र द्रोणाचार्य्यने सेनापतिका पद ग्रहण करके तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनसे कहा, हे कुरुराज दुर्य्योधन! भीष्मके मारे जाने पर तुमने जो मुझे 'सेनापति बना कर मेरा सम्मान किया है, उसका फल तुम ग्रहण करो, मैं तुम्हारी कौनसी अभिलाष पूर्ण करूं? जो तुम्हारी अभिलाषा हो, वह तुम इच्छापूर्व्वक मुझसे कहो। अनन्तर कर्ण दुःशासन आदि वीरोंसे घिरे हुए राजा दुर्य्योधन उन विजयी श्रेष्ठ अत्यन्त पराक्रमी द्रोणाचार्य्य से बोले; हे आचार्य्य। यदि तुम मुझे वर दिया चाहते हो, तो तुम रथियोंमें श्रेष्ठ राजा युधिष्ठिरको जीते जी पकड़के मेरे निकटमें लाकर उपस्थित करो।

अनन्तर कौरवोंके गुरु द्रोणाचार्य्य तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनकी बात सुनकर, सम्पूर्ण सेनाके पुरुषोंको हर्षित करते हुए यह वचन बोले,— कुन्तीपुत्र राजा युधिष्ठिर धन्य हैं, क्योंकि तुम उनके वधकी इच्छा न करके जीते ही ग्रहण करनेकी अभिलाष करते हो। हे पुरुषसिंह दुर्य्योधन। तुम किस हेतुसे उसके वध करनेकी इच्छा नहीं करते हो? तुमने जो मेरे समीपमें उसके वधके निमित्त अभिलाष नहीं किया, उससे मुझे निश्चय यही होता है, कि ... युधिष्ठिरका शत्रु कोई भी नहीं है। तुमने जो उनके जीवनकी इच्छा की है, इससे मुझे बोध होता है, कि तुम अपने कुलकी रक्षा किया चाहते? हे भारत। अथवा तुम इस समय युद्धमें पाण्डवोंको जय करके अन्तमें युधिष्ठिरको राज्य देकर उनके सङ्ग सौभ्रात्र भावके विधानकी इच्छा करते हो? इससे बुद्धिमान राजा युधिष्ठिर धन्य है, और शुभ मुहूर्तमें उनका जन्म हुआ है। जब तुम भी उनके ऊपर प्रीति करते हो, तो वह यथार्थमें अजातशत्रु ही है।

हे भारत। जब द्रोणाचार्य्यने ऐसा वचन कहा, तब तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनके हृदयके भाव अकस्मात् प्रकाशित होगये। वृहस्पतिके समान पुरुष भी अपना अभिप्राय गोपन नहीं कर सकते। इससे राजा दुर्य्योधन प्रसन्नता पूर्वक कहने लगे, हे आचार्य्य! युधिष्ठिरका वध होनेसे मेरा विजय न होगा! क्योंकि युधिष्ठिरके मारे जाने पर अर्जुन अवश्य ही हम सब लोगोंका नाश कर देगा, देवता लोग भी पाण्डवोंको युद्धमें नहीं मार सकते, इससे उन लोगोंमेंसे जो कोई जीवित रहेगा, वही हम सब लोगोंका नाश कर देगा। परन्तु जब सत्य-प्रतिज्ञा करनेवाले राजा युधिष्ठिरको इस प्रकारसे ग्रहण करके तुम मेरे समीप ले आओगे, तब मैं फिर वन गमनकी बाजी (पण) रखके जूएके खेलमें उन्हें पराजित करूंगा; ऐसा होनेसे ही पाण्डव लोग उसके अनुगामी होकर फिर वनको गमन करेंगे। ऐसा करनेहीसे बहुत दिनोंके निमित्त मेरा विजय रहेगा, इससे मैं कभी धर्म्मराज युधिष्ठिरके वधकी इच्छा नहीं करता हूं। विषयोंके मर्म्मको जाननेवाले द्रोणाचार्य्यने दुर्य्योधनके इस कुटिल अभिप्रायको जान कर, चिन्ता छल पूर्व्वक उनको यह वर प्रदान किया, कि यदि पराक्रमी अर्जुन युद्धमें पाण्डवश्रेष्ठ युधिष्ठिरकी रक्षा न करे, तो तुम निश्चय जान रक्खो, कि मैं युधिष्ठिरको तुम

वशमें कर चुका! इन्द्र आदि देवता और असुर लोग भी युद्धमें अर्ज्जुनके सम्मुख होकर आगे नहीं बढ़ सकते, इससे मैं रणभूमिमें अर्ज्जुनको पराजित नहीं कर सकता। वह मेरा शिष्य है, परन्तु वह सुकृती, युवा अवस्थावाला, युद्धके सब कर्म्मोंको जानने वाला, और अस्त्र शस्त्रोंके प्रयोग करनेमें मुझसे भी श्रेष्ठ है। हे राजन् उसने इन्द्र और रुद्रके समीपमें जाकर नाना भांतिके अस्त्रोंको प्राप्त किया है, उस पर भी तुमने उसे कुपित कर दिया है, इससे मैं अर्ज्जुनको युद्धमें पराजित नहीं कर सकता हूं। तुम उस अर्ज्जुनको जिस प्रकारसे, युद्धभूमिसे पृथक् करो; तब तुम धर्म्मराज युधिष्ठिरको जीत सकोगे। हे पुरुषर्षभ! उनको ग्रहण करनेहीसे तुम्हारा विजय होगा, और उनका वध होनेसे किसी प्रकारसे भी तुम्हारी जय नहीं हो सकेगी, ऊपर कहे हुए उपायको अवलम्बन करने हीसे वह जीते जी पकड़े जावेंगे। हे राजन्! पुरुषसिंह कुन्तीपुत्र अर्ज्जुनके रणभूमिसे पृथक् होनेपर यदि राजा युधिष्ठिर मेरे सम्मुखमें मुहूर्त्त मात्र भी ठहरेंगे तो मैं उस सत्य प्रतिज्ञा करनेवाले युधिष्ठिरको ग्रहण करके तुम्हारे समीपमें लाकर उपस्थित करूंगा इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। हे राजन्! अर्ज्जुनके सम्मुख इन्द्र आदि देवता और असुर लोग भी रणभूमिमें युधिष्ठिरको आक्रमण नहीं कर सकते।

सञ्जय बोले, जब द्रोणाचार्य्यने इस भांति छलपूर्वक राजा युधिष्ठिरको ग्रहण करनेकी प्रतिज्ञा की, तब उस समयमें तुम्हारे मूर्ख पुत्रलोग राजा युधिष्ठिरको पकड़े हुए ही समझने लगे। तुम्हारे पुत्र लोग द्रोणाचार्य्यको पाण्डवोंका प्रीतिपात्र समझते थे, इसी कारणसे उनकी प्रतिज्ञाकी दृढ़ताके वास्ते इस विचारको सम्पूर्ण सैनिक पुरुषोंमें प्रकाशित कर दिया. दुर्य्योधनने युधिष्ठिरको ग्रहण करनेकी मन्त्रणा सम्पूर्ण सेनाके बीच शीघ्रताके सहित प्रकट किया।

११ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, द्रोणाचार्य्य राजा युधिष्ठिरको पराजित करेंगे, यह समाचार सुनके सम्पूर्ण कुरुसेनाके शूरवीर शंख बजाकर धनुषटङ्कार करते हुए सिंहनाद करने लगे। हे भारत! इसके अनन्तर धर्म्मराज युधिष्ठिरने भी विश्वासी दूतोंके मुखसे द्रोणाचार्य्यकी ऊपर कही हुई प्रतिज्ञाको यथार्थ रूपसे जान लिया। अनन्तर राजा युधिष्ठिरने अपने भाइयों और सम्पूर्ण राजाओंको निकट बुलाकर अर्ज्जुनसे यह वचन कहा, हे पुरुषसिंह! तुमने आज द्रोणाचार्य्यकी प्रतिज्ञा सुनी होगी, इस समय जिसमें उनकी प्रतिज्ञा सत्य न हो सके, तुम वैसे ही उपायका विधान करो। हे शत्रुनाशन! द्रोणाचार्य्यने जो प्रतिज्ञा की है, उसमें छल है; हे महा धनुर्धारी अर्ज्जुन! उन्होंने वह छल तुम्हारे ही ऊपर किया है, इससे तुम आज मेरे अगाड़ी स्थित होके शत्रु सेनासे युद्ध करो; जिससे द्रोणाचार्य्यके द्वारा दुर्य्योधनका मनोरथ पूर्ण न हो सके।

अर्ज्जुन बोले, हे राजन्! जिस प्रकार किसी भांतिसे मैं आचार्य्यका वध नहीं कर सकता, वैसे ही तुमको परित्याग करनेकी भी मुझे इच्छा नहीं है; तो मैं कभी द्रोणाचार्य्यकी विरुद्धता न करूंगा। दुर्य्योधन जब तुम्हें युद्धमें पराजित करके राज्य ग्रहण करनेकी इच्छा कर रहा है, तब उस पापीका यह मनोरथ इस मनुष्य लोकमें किसी प्रकारसे भी पूर्ण न हो सकेगा। यदि नक्षत्रमण्डलके सहित आकाशके सब लोग पृथ्वीपर गिर पड़े और पृथ्वी टुकड़े टुकड़े होजावे; तो भी मेरे जीवित रहते द्रोणाचार्य्य तुम्हें कभी पराजित नहीं कर सकेंगे। यदि वज्रधारी इन्द्र वा विष्णु सम्पूर्ण देवताओंके सहित स्वयं

घटना हुई है, वह तुम मेरे समीपमें वर्णन करो।

१० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! द्रोणाचार्य्य जिस प्रकारसे पाण्डव और सृञ्जयोंके बीचमें पराक्रम प्रकाशित करके मारे गये, वह सब वृत्तान्त मैंने प्रत्यक्ष देखा है; उस सम्पूर्ण समाचारको मैं तुम्हारे समीपमें वर्णन करता हूं, तुम सुनो।

महाराज! भरद्वाज पुत्र द्रोणाचार्य्यने सेनापतिका पद ग्रहण करके तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनसे कहा, हे कुरुराज दुर्य्योधन! भीष्मके मारे जाने पर तुमने जो मुझे 'सेनापति बना कर मेरा सम्मान किया है; उसका फल तुम ग्रहण करो, मैं तुम्हारी कौनसी अभिलाष पूर्ण करूं? जो तुम्हारी अभिलाषा हो, वह तुम इच्छापूर्व्वक मुझसे कहो। अनन्तर कर्ण दुःशासन आदि वीरोंसे घिरे हुए राजा दुर्य्योधन उन विजयी श्रेष्ठ अत्यन्त पराक्रमी द्रोणाचार्य्य से बोले; हे आचार्य्य। यदि तुम मुझे वर दिया चाहते हो, तो तुम रथियोंमें श्रेष्ठ राजा युधिष्ठिरको जीते जी पकड़के मेरे निकटमें लाकर उपस्थित करो।

अनन्तर कौरवोंके गुरु द्रोणाचार्य्य तुम्हारे पत्र दुर्य्योधनकी बात सुनकर, सम्पूर्ण सेनाके पुरुषोंको हर्षित करते हुए यह वचन बोले,— कुन्तीपुत्र राजा युधिष्ठिर धन्य हैं, क्योंकि तुम उनके वधकी इच्छा न करके जीते हो ग्रहण करनेकी अभिलाष करते हो। हे पुरुषसिंह दुर्य्योधन! तुम किस हेतुसे उसके वध करनेकी इच्छा नहीं करते हो? तुमने जो मेरे समीपमें उसके वधके निमित्त अभिलाष नहीं किया, उससे मुझे निश्चय यही होता है, कि धर्म्मराज युधिष्ठिरका शत्रु कोई भी नहीं है। तुमने जो उनके जीवनकी इच्छा की है, इससे मुझे बोध होता है, कि तुम अपने कुलको रक्षा किया चाहते? हे भारत। अथवा तुम इस समय युद्धमें पाण्डवोंको जय करके अन्तमें युधिष्ठिरको राज्य देकर उनके सङ्ग सौभ्रात्र भावके विधानकी इच्छा करते हो? इससे बुद्धिमान् राजा युधिष्ठिर धन्य है, और शुभ मुहूर्त्तमें उनका जन्म हुआ है। जब तुम भी उनके ऊपर प्रीति करते हो, तो वह यथार्थमें अजातशत्रु ही हैं।

हे भारत। जब द्रोणाचार्य्यने ऐसा वचन कहा, तब तुम्हारे पत्र दुर्य्योधनके हृदयके भाव अकस्मात् प्रकाशित होगये। बृहस्पतिके समान पुरुष भी अपना अभिप्राय गोपन नहीं कर सकते। इससे राजा दुर्य्योधन प्रसन्नता पूर्व्वक कहने लगे, हे आचार्य्य! युधिष्ठिरका वध होनेसे मेरा विजय न होगा! क्योंकि युधिष्ठिरके मारे जाने पर अर्ज्जुन अवश्य ही हम सब लोगोंका नाश कर देगा; देवता लोग भी पाण्डवोंको युद्धमें नहीं मार सकते, इससे उन लोगोंमेंसे जो कोई जीवित रहैगा, वही हम सब लोगोंका नाश कर देगा। परन्तु जब सत्य-प्रतिज्ञा करनेवाले राजा युधिष्ठिरको इस प्रकारसे ग्रहण करके तुम मेरे समीप लेआओगे, तब मैं फिर वन गमनकी बाजी (पण) रखके जूएके खेलमें उन्हें पराजित करूंगा; ऐसा होनेसे ही पाण्डव लोग उसके अनुगामी होकर फिर वनमें गमन करेंगे। ऐसा करनेहीसे बहुत दिनोंके निमित्त मेरा विजय रहेगा, इससे मैं कभी भी धर्म्मराज युधिष्ठिरके वधकी इच्छा नहीं करता हूं। विषयोंके मर्म्मको जाननेवाले द्रोणाचार्य्यने दुर्य्योधनके इस कुटिल अभिप्रायको जान कर, चिन्ता कुल पूर्व्वक उनको यह वर प्रदान किया, कि यदि पराक्रमी अर्ज्जुन युद्धमें पाण्डवश्रेष्ठ युधिष्ठिरकी रक्षा न करे, तो तुम निश्चय जान रक्खो, कि मैं युधिष्ठिरको तुम्हारे

वशमें कर चुका। इन्द्र आदि [illegible] लोग भी युद्धमें अर्जुनके [illegible] नहीं बढ़ सकते, [illegible] पराजित नहीं कर [illegible] है, परन्तु वह [illegible] सब कर्म्मोंको जानके [illegible] प्रयोग करनेमें [illegible] उसने इन्द्र और [illegible] भांतिके अस्त्रोंके [illegible] तुमने उसे [illegible] अर्जुनको युद्धमें [illegible] नहीं कर [illegible] तुम उस अर्जुनको [illegible] पृथक् करो; तब तुम [illegible] युधिष्ठिरको [illegible] सकोगे। हे पुरु[illegible] होसे तुम्हारा [illegible] और [illegible] होनेसे किसी [illegible] तुम्हारी [illegible] नहीं हो सकेगी, [illegible] करने होसे [illegible]

हे राजन्! पुरुषसिंह कुन्तीपुत्र अर्जुनके रणभूमिसे पृथक् होनेपर यदि राजा युधिष्ठिर मेरे सम्मुखमें मुहूर्त मात्र भी ठहरेंगे तो मैं उस सत्य प्रतिज्ञा करनेवाले युधिष्ठिरको ग्रहण करके तुम्हारे समीपमें लाकर उपस्थित करूंगा इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। हे राजन्! अर्जुनके सम्मुख इन्द्र आदि देवता और असुर लोग भी रणभूमिमें युधिष्ठिरको आक्रमण नहीं कर सकते।

सञ्जय बोले, जब द्रोणाचार्यने इस भांति छलपूर्वक राजा युधिष्ठिरको ग्रहण करनेकी प्रतिज्ञा की, तब उस समयमें तुम्हारे मूर्ख पुत्रलोग राजा युधिष्ठिरको पकड़े हुए ही समझने लगे। तुम्हारे पुत्र लोग द्रोणाचार्यको पाण्डवोंका प्रीतिपात्र समझते थे, इसी कारणसे उनकी प्रतिज्ञाकी दृढ़ताके वास्ते इस विचारको सम्पूर्ण सैनिक पुरुषोंमें प्रकाशित कर दिया. दुर्य्योधनने युधिष्ठिरको [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] प्रतिज्ञा की है, इसमें [illegible] हे महाबाहु अर्जुन! उन्होंने यह प्रण तुम्हारे ही ऊपर किया है, इससे तुम आज मेरे आगाड़ी स्थित होके इस सेनासे युद्ध करो; जिससे द्रोणाचार्यके द्वारा दुर्य्योधनका मनोरथ पूर्ण न हो सके।

अर्जुन बोले हे राजन्! जिस प्रकार किसी भांतिसे मैं आचार्यका बध नहीं कर सकता, वैसे ही तुमको परित्याग करनेकी भी मुझे इच्छा नहीं है; तो भी कभी द्रोणाचार्यकी [illegible] न करूंगा। दुर्य्योधन जब तुम्हें युद्धमें पराजित करके राजा ग्रहण करनेकी इच्छा कर रहा है, तब उस पापीका यह मनोरथ इस मनुष्य लोकमें किसी प्रकारसे भी पूर्ण न हो सकेगा। यदि नक्षत्र मण्डलके सहित आकाशके सब लोग पृथ्वीपर गिर पड़े और पृथ्वी टुकड़े टुकड़े हो जावे, तो भी मेरे जीवित रहते द्रोणाचार्य्य तुम्हें कभी पराजित नहीं कर सकेंगे। यदि इन्द्र वा विष्णु सम्पूर्ण देवताओंके

युद्धभूमिमें उपस्थित होके कौरवोंकी सहायता करे, तोभी युद्ध भूमिमें द्रोणाचार्य्य तुम्हें ग्रहण नहीं कर सकेंगे। हे राजेन्द्र! मेरे जीवित रहते ही सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यसे भय करना तुमको उचित नहीं है। हे राजन्! मैं और भी एक वचन तुम्हारे समीप कहता हूं, तुम उसे सुनो,—मेरी प्रतिज्ञा कभी मिथ्या नहीं होती, मैंने जो कभी मिथ्या वचन कहा है, युद्धमें पराजित हुआ हूं; अथवा कहे हुए वचनोंका पालन नहीं किया है,—ऐसा मुझे स्मरण नहीं होता है।

सञ्जय बोले हे महाराज! अनन्तर महात्मा पाण्डवोंके शिविरोंमें शंख भेरी मृदङ्ग नगाड़े आदि बाजोंके सङ्ग वीरोंके धनपटङ्कार और सिंहनादका शब्द सुनाई देने लगा। महातेजस्वी पाण्डवोंके शंख आदि बाजेके शब्दको सुनकर तुम्हारी सेनामें भी युद्धके बाजे बजने लगे। हे भारत! अनन्तर दोनों ओरकी सेनाके पुरुष लोग युद्ध करनेकी इच्छासे रणभूमिमें आकर उपस्थित हुए। तब पाण्डव कौरव और द्रोणाचार्य्य तथा पाञ्चाल योद्धाओंका रोएंको खड़ा करनेवाला भयङ्कर संग्राम होने लगा। सृञ्जय लोग बहुत यत्न करके भी द्रोणाचार्य्यसे रक्षित कुरुसेनाको पराजित न कर सके; और तुम्हारे पुत्र लोग तथा सब पराक्रमी योद्धा भी अर्जुनसे रक्षित पाण्डवोंकी सेनाको युद्धसे विचलित न कर सके। इसी प्रकारसे द्रोणाचार्य्य और अर्जुनसे रक्षित दोनों ओरकी सेना मानो रात्रिके समय फूले हुए वनके वृक्षोंके समान क्षण भर स्थित रही। हे राजन्! अनन्तर रुक्म-रथ पर सूर्य्यके समान बिराजमान द्रोणाचार्य्य पाण्डवोंकी सेनाको अपने अस्त्रशस्त्रोंसे पीड़ित करते हुए रणभूमिमें भ्रमण करने लगे। अकेले ही द्रोणाचार्य्य युद्धभूमिमें अपने रथपर चढ़े हुए हस्तलाघवके सहित बाणोंको चलाते समय इस प्रकारसे चारों ओर दिखाई देने लगे, कि पाण्डव और सृञ्जय लोग उनको अनेक रूपधारी समझके भयभीत होने लगे। हे राजन्! द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छूटे हुए सम्पन्न बाण चारों ओर पाण्डवोंकी सेनामें चलते हुए दिखाई देने लगे। दो पहरके समयमें महा प्रकाशमान सहस्र किरणधारी सूर्य्यका रूप जिस प्रकार सबको विकल करता है, द्रोणाचार्य्य भी ही शत्रुसेनाके बीच दिखाई देने लगे। हे भारत! जैसे दानव लोग युद्धमें क्रुद्ध हुए इन्द्रको ओर नहीं देख सकते, वैसे ही पाण्डवोंकी सेनामें कोई भी पुरुष युद्ध करते हुए प्रतापी द्रोणाचार्य्यकी ओर देखनेमें भी समर्थ न हुए। महा प्रतापी द्रोणाचार्य्य शीघ्रताके सहित समस्त सेनाको मोहित करते हुए धृष्टद्युम्नकी सेनाके शूरवीरोंको कंपाने लगे। और अपने दिव्य बाणोंसे सब दिशाओंको रुद्ध और आकाशमण्डलको पूरित कर जहांपर धृष्टद्युम्न थे उस स्थानपर पहुंच कर पाण्डवोंकी सेनाका [illegible] करने लगे।

१२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, जैसे अग्नि तृण आदिको भस्म कर देती है, वैसे ही द्रोणाचार्य्य पाण्डवोंकी सेनामें महा घोर युद्ध करके समर्थ शूरवीरोंको अपने अस्त्र शस्त्रोंसे जलाते हुए संग्रामभूमिमें चारों ओर घूमने लगे। सम्, सृञ्जय वीरयोद्धा द्रोणाचार्य्यको इस पाण्डवोंकी सेनाका संहार करते हुए देखकर कांपने लगे। युद्धभूमिमें वह ऐसी शीघ्रतासे अपने बड़े धनुषको आकर्षण करने लगे, कि उनके धनुष टङ्कारका शब्द वज्रके शब्दके भांति सुनाई देने लगा। उनके हस्तलाघवसे छूटे हुए अनेक बाण रथी, हाथी, घुड़सवार और पैदल चलनेवाले। वीरोंका नाश करने लगे। वह वर्षाकालके बार बार गर्जन करते

ाले मेघोंकी भांति सिंहनाद करके पत्थर
रसानेकी भांति शत्रुसेनाके ऊपर अपने
ाणोंकी वर्षा कर सम्पूर्ण वीरोंको भयभीत
रने लगे। हे राजन्! सेनापति द्रोणाचार्य्य
सी भांतिसे रणभूमिमें चारों ओर भ्रमण
रके शत्रुओंको छिन्न भिन्न करके उन्हें भय-
ीत करने लगे। जैसे बिजली बादलोंके बीच
राजमान होती है, वैसे ही उनका सुवर्ण-
षित धनुष चारों ओर घूमनेवाले रथरूपी
ादलके बीच बार बार दिखाई देने लगा। उस
त्यवादी बुद्धिमान् धर्मात्मा द्रोणाचार्य्यने
लयकालके समान रुद्ररूपी होकर रणभूमिमें
यङ्कर रुधिरकी नदी बहा दी। हे राजन्!
ह नदी क्रोधरूपी वेगसे उत्पन्न हुई, उसके
ारों ओर मांस भक्षण करनेवाले पक्षी
ूमने लगे। वह नदी सेनारूपी वृक्षोंको
पने प्रवाहके झोंकमें बहाने लगी,
स नदीमें रुधिर ही जल हुआ, रथ
वर, हाथी घोड़े तट, काष्ठ आदि पत्थर,
ांस उसमें पङ्क और मेद मज्जा और हड्डी
ी उसके बालू हुए। उस नदीमें वीरोंके वस्त्र
ेन रूपी दीख पड़ते थे। संग्राम रूपी बाद-
ोंसे युक्त परशु प्रास आदि अस्त्र शस्त्र उसमें
छली रूपी दीख पड़े। हाथी, घोड़े और
नुष्य इस नदीमें जलजन्तु रूपसे दिखाई देने
गे; बाणोंका वेग ही इस नदीका प्रवाह
ा; बहते हुए वीरोंके शरीर सूखे काष्ठोंकी
ांति दिखाई देने लगे। रथ आदिक जो
समें बहे जाते थे, वे नौकाके समान बोध
ोते थे; वीरोंका सिर ही इस नदीका पत्थ-
से निर्माण किया हुआ तटरूप हुआ, तल-
ार आदि मीन मच्छ, और रथ तथा हाथि-
ोंका यूथ ह्रद-रूप दीख पड़ता था। बड़े बड़े
थ नाना प्रकारके वस्त्र और रत्नोंसे प्रकाशित
ोकर बड़ी बड़ी नौकाओंके समान बहे जाते
ा, और पृथ्वीके जो दोनो सेनाके चलने पर
धूलि उड़ी, वह तरङ्गकी भांति दिखाई देने
लगी। इस रुधिरकी नदीको पराक्रमी महा-
बलवान् वीर लोग अपने पराक्रम और रथ
आदि वाहनों पर चढ़के पार होते थे, और
कायर लोग भयभीत होके इसके पार नहीं
जासकते थे। उस नदीके रुधिर रूपी जलमें
सैकड़ों तथा सहस्रों पुरुष मर मरके गिरने
लगे; कौवे, बगुले और गिद्ध आदि मांसभक्षी
पक्षी उसकी चारों ओर घूमने लगे। इस
महाभयङ्कर नदीके वेगमें पड़के सैकड़ों
सहस्रों महारथी योद्धा यमलोकमें गमन करने
लगे। शूरवीर योद्धा लोग सर्पके समान भ्रमण
करते हुए उस नदीमें दिखाई देन लगे। सम्पूर्ण
प्राणियोंका समूह उसकी सेवा करने लगा।
उस नदीमें कटे हुए छत्र, वर्म्म शरीरवाले
हंसोंके समान शोभित होने लगे और मुकुट
नाना भांतिके पक्षियोंके समान दिखाई देने
लगे। रथके चक्र कछुए, गदा मगरमच्छ,
और बाण छोटी मछलियोंके समान विराज-
मान हुए। हे राजेन्द्र! बलवान् द्रोणाचार्य्यने
ऐसी भयङ्कर कौए, बगुले गिद्ध और सियारोंके
समूहसे सेवित, सहस्रों मरे हुए पुरुषोंके शरीर
और केशरूपी सेवारोंसे युक्त कायरोंके भयको
बढ़ानेवाली नदी उत्पन्न करके सैकड़ों तथा
सहस्रों पुरुषोंको अपने बाणोंसे नाश कर उस
ही नदीके प्रवाहके जोरवेसे यमपुरीमें भेजने
लगे। युधिष्ठिरके अनुयायी सम्पूर्ण शूरवीर
योद्धा इस भांतिसे द्रोणाचार्य्यको पाण्डवोंकी
सेनाका नाश करते देखकर चारों ओरसे
उनकी ओर दौड़े। तुम्हारी ओरके सम्पूर्ण
पराक्रमी वीर लोग भी उन लोगोंको द्रोणा-
चार्य्यकी ओर आते हुए देखकर वेगपूर्वक उन
सब वीरोंके सम्मुख उपस्थित हुए। अनन्तर
फिर दोनो सेनाओंका महा घोर तुमुल संग्राम
होने लगा। सैकड़ो प्रकारकी माया-विद्यामें
निपुण शकुनिने सहदेव पर आक्रमण करके

उनको सारथी, ध्वजा और रथके सहित अपने तीच्ण बाणोंसे विद्ध किया। माद्रीपुत्र सहदेवने शीघ्रताके सहित शकुनिके धनुष, ध्वजा, घोड़े, सारथी और रथको काटके फिर साठ बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। सुबलपुत्र शकुनिने रथसे कूदके सहदेवके सारथीको गदासे मार डाला। हे राजन्! वे दोनों महाबली पराक्रमी योद्धा रथ रहित होके गदा ग्रहणकर शृङ्गके सहित पर्व्वतके समान रणभूमिमें क्रीड़ा करने लगे। द्रोणाचार्य्यने पाञ्चालराज द्रुपदको दश बाणोंसे विद्ध किया, तब द्रुपदने भी उन्हें अनेक बाणोंसे विद्ध किया। द्रोणाचार्य्य फिर दूसरी बार उनसे भी अधिक बाणोंको चलाकर राजा द्रुपदको विद्ध करने लगे। हे भारत! विवंशतिने सहसा भीमसेनके ध्वजा, धनुष और घोड़ोंको अपने अस्त्रोंसे काटके पृथ्वीमें गिरा दिया, तब सम्पूर्ण सेनाके पुरुष विविंशतिकी प्रशंसा करने लगे। भीमसेनने उस युद्धभूमिमें शत्रुका ऐसा पराक्रम न सहकर गदासे उनके अत्यन्त शिक्षित घोड़ोंको मार डाला। हे राजन्! महा बलवान, विविंशति तलवार ढाल ग्रहण करके घोड़ेसे रहित रथसे कूद पड़े, और जैसे एक मतवारा हाथी दूसरे मतवारे हाथी पर आक्रमण करता है, वैसे ही भीमसेनकी ओर दौड़े। पराक्रमी शल्य हंसते हंसते अपने प्यारे भानजे नकुलको मानो प्रीति और क्रोधसे युक्त होकर बाणोंसे विद्ध करने लगे। अनन्तर प्रतापी नकुलने युद्धभूमिमें उनके घोड़े, छत्र, ध्वजा सारथी और धनुषको अपने बाणोंसे काटके शंख बजाकर सिंहनाद किया। धृष्टकेतुने कृपाचार्य्यके चलाये हुए अनेक बाणोंको निवारण करके सत्तर बाणोंसे उन्हें विद्ध किया और तीन बाणोंसे उनके रथकी ध्वजा काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। ब्राह्मणश्रेष्ठ कृपाचार्य्य अपने बहुतसे बाणोंकी वर्षा करके उनके अस्त्रोंको निवारण करके घोर संग्राम करने लगे। सात्यकिने अपने बाणोंसे कृतवर्म्माके वक्षस्थलमें प्रहार करके फिर हंसते सत्तर बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। जैसे वायु महा वेगसे चलकर भी पर्व्वतको नहीं हिला सकता, वैसे ही कृतवर्म्मा सतहत्तर बाणोंसे प्रहार करके यदुवंशीय सात्यकिको युद्धसे विचलित नहीं कर सके। सेनापति धृष्टद्युम्नने सुशर्म्माके मर्म्मस्थानोंमें अपने बाणोंसे प्रहार किया, सुशर्म्माने भी तोमर से सात्यकिके हृदयके नीचे प्रहार किया। विराट मत्स्यदेशीय योद्धाओंसे युक्त हो युद्धभूमिमें सूर्य्यपुत्र कर्णको निवारण करने लगे। हे भारत! राजा द्रुपद भगदत्तके सम्मुख उपस्थित हुए, अनन्तर उन दोनोंका युद्ध होने लगा। पुरुषर्षभ भगदत्तने द्रुपदको तीच्ण बाणोंसे विद्ध करके फिर सारथी, ध्वजा और उनको विद्ध किया, अनन्तर राजा द्रुपदने क्रुद्ध होकर अपने बाणसे भगदत्तके वक्षस्थलमें प्रहार किया। अस्त्रविद्याके जाननेवाले भूरिश्रवा और शिखण्डी महाघोर संग्राम करने लगे। हे राजन्! पराक्रमी भूरिश्रवाने रणभूमिमें अपने शर समूह से याज्ञसेनि शिखण्डीको छिपा दिया। हे प्रजानाथ! अनन्तर शिखण्डीने क्रुद्ध होकर नौ बाणोंसे भूरिश्रवाके ऊपर प्रहार किया। भयङ्कर कर्म्मोंके करनेवाले घटोत्कच और अलम्बुष राचस आपसमें एक दूसरेको जीतनेकी अभिलाष करके महा भयङ्कर अद्भुत युद्ध करने लगे, वे दोनो अभिमान पूर्व्वक माया उत्पन्न करके तथा अन्तर्द्धान होके रणभूमिमें भ्रमण करते हुए सब पुरुषोंको विस्मित करके युद्ध करने लगे। देवासुर में जैसे युद्धमें बलवान् बलासुर और इन्द्रका युद्ध हुआ था, वैसे ही चेकितान अनुविन्दके सङ्ग युद्ध करने लगे। हे राजन्! पहिले समयमें जैसे विष्णुने हिरण्याच दैत्यके सङ्गमें युद्ध किया था, वैसे ही

क्रमण क्षत्रदेवके सङ्ग महाघोर संग्राम करने लगा। हे भारत! अनन्तर पौरव सिंहनाद करते हुए विधिपूर्व्वक उत्तम भांतिसे सज्जित रथ पर चढ़के अभिमन्युकी ओर दौड़े। अनन्तर महावलवान शत्रुनाशन अभिमन्यु भी युद्धकी इच्छा करके, वेगपूर्व्वक उनके सम्मुख आकर उपस्थित होकर युद्ध करने लगे। पौरवने अपने वाणोंसे सुभद्रानन्दन अभिमन्युको छिपा दिया। अर्ज्जुन-पुत्र अभिमन्युने उनके धनुष, ध्वजा और छत्रको काटकर पृथ्वीसे गिरा दिया; फिर सात तीक्ष्ण-वाणोंसे पौरवको विद्ध करके दूसरे पांच वाणोंसे उनके सारथी और रथके घोड़ोंको विद्ध किया। अनन्तर उन्होंने अपनी सेनाके पुरुषोंको आनन्दित करनेके वास्ते सिंहनाद करके पौरवका नाश करनके निमित्त एक भयङ्कर वाण ग्रहण किया। हृदिकनन्दन कृतवर्म्माने उस भयानक वाणको देखकर अपने दो वाणोंसे उस वाणके सहित अभिमन्युके धनुषको काटके गिरा दिया। शत्रुनाशन अभिमन्युने धनुष वाणको कटते देखके ढाल तलवार ग्रहण की; और अनेक नक्षत्रोंसे भूषित उत्तम ढाल और तलवार लेकर अनेक पुरुषोंके बीच अपने हस्तलाघवके सहित घुमाते हुए पराक्रम और गति विशेषसे युद्धभूमिमे भ्रमण करने लगे। हे राजन्! वह ढाल तलवार घुमाते, फिराते, गिराते, चलाते और फिर उठाकर इस प्रकारसे शीघ्रता पूर्व्वक रणभूमिमें चारो ओर भ्रमण करने लगे, कि उस ढाल और तलवारकी आकृति भी किसीको नही दीख पड़ती थी। अभिमन्यु क्रोधपूर्व्वक मानो गरुड़की भांति समुद्रको क्षोभित करते हुए सहसा कूदके पौरवके रथ पर जाचढ़े, और उनका केश पकड़के अपने चरणके प्रहारसे सारथीको नीचे गिरा कर तलवारसे रथकी ध्वजा काट डाली। सम्पूर्ण राजाओंने पौरवको अभिमन्युसे इस प्रकार पीड़ित देखा, मानो सिंहने वृषभपर आक्रमण किया है। परन्तु राजा जयद्रथ पौरवको इस प्रकारसे अभिमन्युके वशमें अनाथके समान पड़ा हुआ देखकर क्रोध पूर्व्वक अपने रथसे कूदके ढाल तलवार ग्रहण कर अभिमन्युकी ओर दौड़े। अनन्तर अभिमन्यु राजा जयद्रथको अपनी ओर आते देखकर पौरवको छोड़के वाजपक्षीकी भांति उस रथसे कूद पड़े; और सब दिशाओंसे शत्रुओंके चलाये हुए प्रास, पट्टिश और वाण तथा दूसरे सब अस्त्र शस्त्रोंको अपने ढालसे रोकते और तलवारसे काट कर पृथ्वीमें गिरा देते थे। बलवान् अभिमन्यु सम्पूर्ण सैनिक पुरुषोंको अपना बाहुबल दिखाते हुए पिताके अत्यन्त वैरी वृद्धक्षत्रके पुत्र जयद्रथकी ओर दौड़े। वे दोनों उस रणभूमिमें सिंह और व्याघ्रकी भांति आपसमें हर्ष पूर्व्वक तलवार, दांत, नख आदि आयुधोंसे युद्ध करने लगे। तलवार ढालके चलाने रोकने और प्रहार करनेमें कोई भी किसीसे कम न हुआ। उन लोगोंका तलवार चलाना, रोकना, बाहर और भीतर तलवारका प्रहार समान रूपसे दिखाई देने लगा। वे दोनो महात्मा वीर पक्षधारी पर्व्वतके समान रणभूमिमें गति विशेषसे बाहर और भीतरके मार्गोंमें युद्ध करते हुए दिखाई देने लगे। अनन्तर यशस्वी अभिमन्यु तलवार चला रहे थे, उसी समयमें जयद्रथने अपने तलवारसे अभिमन्युकी ढालपर प्रहार किया, सिन्धुराज जयद्रथका खड्ग बलपूर्व्वक अभिमन्युकी ढालपर गिरकर दो खण्ड होगया। तलवारको टूटी हुई देखकर राजा जयद्रथ शीघ्रतासे दौड़कर छः पग चलके अपने रथपर जाचढ़े; और अभिमन्यु भी अपने रथपर चढ़े। सम्पूर्ण क्षत्रिय योद्धाओंने रथपर चढ़े हुए अभिमन्युको चारों ओरसे घेर लिया। अनन्तर महा बलवान् अर्ज्जुनपुत्र अभिमन्यु जयद्रथकी ओर देखकर

उनको सारथी, ध्वजा और रथके सहित अपने तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध किया। माद्रीपुत्र सहदेवने शीघ्रताके सहित शकुनिके धनुष, ध्वजा, घोड़े, सारथी और रथको काटके फिर साठ बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। सुबलपुत्र शकुनिने रथसे कूदके सहदेवके सारथीको गदासे मार डाला। हे राजन्! वे दोनों महाबली पराक्रमी योद्धा रथ रहित होके गदा ग्रहणकर शृङ्गके सहित पर्वतके समान रणभूमिमें क्रीड़ा करने लगे। द्रोणाचार्य्यने पाञ्चालराज द्रुपदको दश बाणोंसे विद्ध किया, तब द्रुपदने भी उन्हें अनेक बाणोंसे विद्ध किया। द्रोणाचार्य्य फिर दूसरी बार उनसे भी अधिक बाणोंको चलाकर राजा द्रुपदको विद्ध करने लगे। हे भारत! विविंशतिने सहसा भीमसेनके ध्वजा, धनुष और घोड़ोंको अपने अस्त्रोंसे काटके पृथ्वीमें गिरा दिया; तब सम्पूर्ण सेनाके पुरुष विविंशतिकी प्रशंसा करने लगे। भीमसेनने उस युद्धभूमिमें शत्रुका ऐसा पराक्रम न सहकर गदासे उनके अत्यन्त शिक्षित घोड़ोंको मार डाला। हे राजन्। महा बलवान, विविंशति तलवार ढाल ग्रहण करके घोड़ेसे रहित रथसे कूद पड़े, और जैसे एक मतवारा हाथी दूसरे मतवारे हाथी पर आक्रमण करता है, वैसे ही भीमसेनकी ओर दौड़े। पराक्रमी शल्य हंसते हंसते अपने प्यारे भानजे नकुलको मानो प्रीति और क्रोधसे युक्त होकर बाणोंसे विद्ध करने लगे। अनन्तर प्रतापी नकुलने युद्धभूमिमें उनके घोड़े, छत्र, ध्वजा-सारथी और धनुषको अपने बाणोंसे काटके शंख बजाकर सिंहनाद किया। धृष्टकेतुने कृपाचार्य्यके चलाये हुए अनेक बाणोंको निवारण करके सत्तर बाणोंसे उन्हें विद्ध किया और तीन बाणोंसे उनके रथकी ध्वजा काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। ब्राह्मणश्रेष्ठ कृपाचार्य्य अपने बहुतसे बाणोंकी वर्षा करके उनके अस्त्रोंकी निवारण करके घोर संग्राम करने लगे। सात्यकिने अपने कृतवर्म्माके वक्षस्थलमें प्रहार करके फिर हं हंसते सत्तर बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। जै वायु महा वेगसे चलकर भी पर्वतको नहीं हिला सकता, वैसे ही कृतवर्म्मा ... बाणोंसे प्रहार करके यदुवंशीय ... युद्धसे विचलित नहीं कर सके। से... द्युम्नने सुशर्म्माके मर्म्मस्थानोंमें अपने बाणों प्रहार किया, सुशर्म्माने भी तोमर चला सात्यकिके हृदयके नीचे प्रहार किया। रा विराट मत्स्यदेशीय योद्धाओंसे युक्त हो ए भूमिमें सूर्य्यपुत्र कर्णको निवारण करने ल हे भारत! राजा द्रुपद भगदत्तके सम्मुख उपस्थित हुए, अनन्तर उन दोनोंका युद्ध होने लगा। पुरुषर्षभ भगदत्तने ... द्रुपदको तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध करके फिर ... सारथी, ध्वजा और उनको विद्ध किया, ... अनन्तर राजा द्रुपदने क्रुद्ध होकर अपने ... बाणसे भगदत्तके वक्षस्थलमें प्रहार किया। अस्त्रविद्याके जाननेवाले भूरिश्रवा और ... महाघोर संग्राम करने लगे। हे राजन्। परा क्रमी भूरिश्रवाने रणभूमिमें अपने प्रब समूह से याज्ञसेनि शिखण्डीको छिपा दिया। ... प्रजानाथ! अनन्तर शिखण्डीने क्रुद्ध होकर नौ बाणोंसे भूरिश्रवाके ऊपर प्रहार किया। भयङ्कर कर्म्मोंके करनेवाले घटोत्कच ... अलम्बुष राक्षस आपसमें एक दूसरेको ... नेकी अभिलाष करके महा भयङ्कर अद्भुत ... करने लगे, वे दोनों अभिमान पूर्वक सकड़ों माया उत्पन्न करके तथा अन्तर्द्धान होके ... भूमिमें भ्रमण करते हुए सब पुरुषोंको ... करके युद्ध करने लगे। देवासुर में जैसे युद्धमद बलवान् बलासुर और इन्द्रका युद्ध हुआ था, वैसे ही चेकितान अनुविन्दके सङ्ग युद्ध करने लगे। हे राजन्। पहिले समयमें जैसे विष्णुने हिर ण्याक्ष दैत्यके सङ्गमें युद्ध किया था, वैसे

दमण चवदेवके सङ्ग महाघोर संग्राम करने लगा। हे भारत। अनन्तर पौरव सिंहनाद करते हुए विधिपूर्व्वक उत्तम भांतिसे सज्जित रथ पर चढ़के अभिमन्युकी ओर दौड़े। अनन्तर महाबलवान शत्रुनाशन अभिमन्यु भी युद्धकी इच्छा करके, वेगपूर्व्वक उनके सम्मुख जाकर उपस्थित होकर युद्ध करने लगे। पौरवने अपने वाणोंसे सुभद्रानन्दन अभिमन्युको छिपा दिया। अर्ज्जुन-पुत्र अभिमन्युने उनके धनुष, ध्वजा और छत्रको काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया, फिर सात तीच्ण-वाणोंसे पौरवको विद्ध करके दूसरे पांच वाणोंसे उनके सारथी और रथके घोड़ोंको विद्ध किया। अनन्तर उन्होंने अपनी सेनाके पुरुषोंको आनन्दित करनेके वास्ते सिंहनाद करके पौरवका नाश करनेके निमित्त एक भयङ्कर वाण ग्रहण किया। हृदिकनन्दन कृतवर्म्माने उस भयानक वाणको देखकर अपने दो वाणोंसे उस वाणके सहित अभिमन्युके धनुषको काटके गिरा दिया। शत्रुनाशन अभिमन्युने धनुष वाणको कटते देखके ढाल तलवार ग्रहण की; और अनेक नचत्रोंसे भूषित उत्तम ढाल और तलवार लेकर अनेक पुरुषोंके बीच अपने हस्तलाघवके सहित घुमाते हुए पराक्रम और गति विशेषसे युद्धभूमिमें भ्रमण करने लगे। हे राजन्! वह ढाल तलवार घुमाते, फिराते, गिराते, चलाते और फिर उठाकर इस प्रकारसे शीघ्रता पूर्व्वक रणभूमिमें चारों ओर भ्रमण करने लगे, कि उस ढाल और तलवारकी आकृति भी किसीको नहीं दीख पड़ती थी। अभिमन्यु क्रोधपूर्व्वक मानों गरुड़की भांति समुद्रको चोभित करते हुए सहसा कूदके पौरवके रथ पर जाचढ़े, और उनका केश पकड़के अपने चरणके प्रहारसे सारथीको नीचे गिरा कर तलवारसे रथकी ध्वजा काट डाली। सम्पूर्ण राजाओंने पौरवको अभिमन्युसे इस प्रकार पीड़ित देखा, मानो सिंहने वृषभपर आक्रमण किया है। परन्तु राजा जयद्रथ पौरवको इस प्रकारसे अभिमन्युके वशमें अनाथके समान पड़ा हुआ देखकर क्रोध पूर्व्वक अपने रथसे कूदके ढाल तलवार ग्रहण कर अभिमन्युकी ओर दौड़े। अनन्तर अभिमन्यु राजा जयद्रथको अपनी ओर आते देखकर पौरवको छोड़के वाजपचीकी भांति उस रथसे कूद पड़े; और सब दिशाओंसे शत्रुओंके चलाये हुए प्रास, पट्टिश और वाण तथा दूसरे सब अस्त्र शस्त्रोंको अपने ढालसे रोकते और तलवारसे काट कर पृथ्वीमें गिरा देते थे। बलवान् अभिमन्यु सम्पूर्ण सैनिक पुरुषोंको अपना बाहुबल दिखाते हुए पिताके अत्यन्त वैरी वृद्धचत्रके पुत्र जयद्रथकी ओर दौड़े। वे दोनों उस रणभूमिमें सिंह और व्याघ्रकी भांति आपसमें हर्ष पूर्व्वक तलवार, दांत, नख आदि आयुधोंसे युद्ध करने लगे। तलवार ढालके चलाने रोकने और प्रहार करनेमें कोई भी किसीसे कम न हुआ। उन लोगोंका तलवार चलाना, रोकना, बाहर और भीतर तलवारका प्रहार समान रूपसे दिखाई देने लगा। वे दोनो महात्मा वीर पचधारी पर्व्वतके समान रणभूमिमें गति विशेषसे बाहर और भीतरके मार्गोंमें युद्ध करते हुए दिखाई देने लगे। अनन्तर यशस्वी अभिमन्यु तलवार चला रहे थे, उसी समयमें जयद्रथने अपने तलवारसे अभिमन्युकी ढालपर प्रहार किया, सिन्धुराज जयद्रथका खड्ग बलपूर्व्वक अभिमन्युकी ढालपर गिरकर दो खण्ड होगया। तलवारको टूटी हुई देखकर राजा जयद्रथ शीघ्रतासे दौड़कर छः पग चलके अपने रथपर जाचढ़े; और अभिमन्यु भी अपने रथपर चढ़े। सम्पूर्ण चत्रिय योद्धाओंने रथपर चढ़े हुए अभिमन्युको चारों ओरसे घेर लिया। अनन्तर महा बलवान् अर्ज्जुनपुत्र अभिमन्य जयद्रथकी ओर देखकर

उनकी तलवार ढालको काटकर सिंह नाद करने लगे। जैसे प्रचण्ड सूर्य्य सम्पूर्ण प्राणियोंको तपाकर भस्म करता है, वैसे ही शत्रुनाशन वीर अभिमन्यु जयद्रथको पराजित करके उनकी सम्पूर्ण सेनाको अपने बाणोंसे जलाने लगे। तब शल्यने अभिमन्युकी ओर जलती हुई अग्नि शिखाके समान एक लोहमयी शक्ति चलाई, जैसे गरुड़ सर्पोंको ग्रहण करते हैं, वैसेही अर्ज्जुनपुत्र अभिमन्युने कूदके उस भयङ्कर शक्तिको हाथसे ग्रहण किया। अत्यन्त तेजस्वी क्षत्रिय योद्धा अभिमन्युका पराक्रम देखके सिंहनाद करने लगे। शत्रुनाशन अभिमन्युने अपनी भुजाओंके बलसे उसी शक्तिको शल्यकी ओर चलाया। अभिमन्युके हाथसे छूटी हुई भयङ्कर सर्पके समान महा घोर शक्ति शल्यके रथपर आके उनके सारथीको मारकर पृथ्वीमें गिर पड़ी। अनन्तर विराट, द्रुपद, युधिष्ठिर, सात्यकि, केकेय, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, नकुल, सहदेव और द्रौपदीके पाचो पुत्र अभिमन्युको धन्य कहके प्रशंसा करने लगे; और युद्धमें पीछे न हटनेवाले अभिमन्युको हर्षित करनेके निमित्त युधिष्ठिरकी सेनामें धनुष बाणके शब्दके सहित वीरोंका सिंहनाद होने लगा। तुम्हारे पुत्र लोग शत्रुओंके विजयके लक्षणरूपी उस हर्ष भरे कोलाहलको न सह सके। हे राजन्! अनन्तर जैसे बादल पर्व्वतोंके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं, वैसे ही वे लोग मिलकर चारों ओरसे अपने तीक्ष्ण बाणोंको उन सब लोगोंके ऊपर बर्षाने लगे। शत्रुनाशन शल्य अपने सारथीको रथसे गिरते देख उसके प्रियकार्य्य करनेकी इच्छासे क्रुद्ध होकर अभिमन्युकी ओर दौड़े।

१३ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले; हे सञ्जय! तुमने नाना प्रकारका द्वन्द-युद्ध जिस प्रकारसे वर्णन किया है, वह सब वृत्तान्त सुनकर मुझे नेत्रवान् होनेकी इच्छा होरही है। सब मनुष्य देवासुर युद्धके समान इस कुरु-पाण्डवोंके युद्धको सदा गाया करेंगे। इस तुमुल युद्धके वृत्तान्तको सुनकर मेरी तृप्ति नहीं होती है, इससे तुम मेरे निकट शल्य और अभिमन्युके युद्धका वृत्तान्त फिर वर्णन करो।

सञ्जय बोले, अपने सारथीका मरना देख शल्य क्रुद्ध होकर महा घोर लोहमयी गदा लेकर रथसे कूदके अभिमन्युकी ओर दौड़े। भीमसेनने शल्यको प्रज्वलित कालाग्नि दण्डधारी यमराजके समान अभिमन्युकी ओर आते देखकर अपनी बड़ी गदा ग्रहण कर अत्यन्त वेगसे शल्यकीओर दौड़े। अभिमन्यु भी वज्रके समान एक भयङ्कर गदा ग्रहण क[illegible] भीमसेनने उन्हें निवारण किया, तौभी [illegible] शल्यको क्रोधपूर्व्वक युद्धभूमिमें प्रचारने [illegible] प्रतापी भीमसेन युद्धमें अभिमन्युको रोक[illegible] उस संग्रामभूमिमें शल्यके सम्मुख अचलरूप पर्व्वतके समान खड़े हुए; जैसे शार्दूल हाथी सम्मुख होता है, वैसे ही पराक्रमी शल्यभी सेनके सम्मुख उपस्थित हुए, अनन्तर सह[illegible] शङ्ख भेरी आदि बाजोंके सहित वीरोंके सिं[illegible] नादका शब्द होने लगा। तब कुरु-पाण्डव सेनाके सैकड़ों वीर उन दोनोंको इस प्रक[illegible] युद्धके निमित्त उपस्थित देखकर, दौड़ते हु[illegible] धन्य धन्य कहके उन दोनों वीरोंको प्रशंसा करने लगे। मद्रराज शल्यको छोड़के और कोई दूसरा पुरुष संग्रामभूमिमें भीमसेनके वेगको नहीं सह सकता, और भीमसेनके विना इस जगत्में दूसरा कोई भी पुरुष शल्यकी गदाके वेगको सहनेका उत्साह नहीं कर सकता। अनन्तर भीमसेन सुवर्णभूषित महाघोर गदाको जब घुमाने लगे, तब स[illegible]

प्रज्वलित होकर वहां पर सब लोगोंके चित्तको प्रफुल्लित करने लगी। इधर महात्मा शल्यभी बिजलीके समान अपनी महाघोर गदा लेकर जिस समय चारों ओर घूमते हुए मण्डलाकार फिराने लगे, उस समयमें उनकी वह भयङ्कर गदा अत्यन्त ही शोभित होने लगी। शल्य और भीमसेन दोनों वीर पुरुष गदारूपी शृङ्गको खड़े करके गर्ज्जनेवाले वृषभके समान मण्डलाकार गतिसे चारों ओर घूमने लगे। मण्डलाकार गति और गदाके घुमानेके विषयमें उन दोनों महाबली पुरुषोंमें कोई भी किसीसे अधिक नहीं हुआ। शल्यकी महा भयङ्कर गदाकी चोटसे भीमसेनकी प्रचण्ड गदा मानो वायुके झकोरसे अग्निकी शिखाके समान कम्पिता होने लगी; और भीमसेनकी गदा भी शल्यकी गदाकी चोटसे मानो वर्षाकालके समय खद्योतसे युक्त वृक्षके समान प्रकाशित हुई। हे राजन्! मद्रराज शल्यकी चलाई हुई गदा मानो रणभूमिमें अग्निकी वर्षा करती हुई आकाशमें प्रकाशित होने लगी। परन्तु भीमसेनके हाथसे छूटी महाभयङ्कर गदा शल्यके सम्मुख गिरकर उनकी सेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंको भयभीत करने लगी। गदा युद्ध करनेवाले योद्धाओंमें श्रेष्ठ उन दोनों पुरुषसिंहोंकी भयङ्करी गदा आपसमें मिलकर मानों लम्बी श्वास छोड़नेवाली दो नागिनियोंकी भांति रगड़ खाके अग्नि उत्पन्न करने लगीं। जैसे दो बलवान् व्याघ्र नखसे और दो मतवारे हाथी अपने दांतोंसे आपसमें युद्ध करते हैं, वैसे ही वे दोनों महाबलवान् गदाधारी योद्धा युद्ध करते हुए रणभूमिमें भ्रमण करने लगे। अनन्तर क्षण भरमें वे दोनों गदाकी चोटसे रुधिरसे पूरित हो, फले हुए पलाश वृक्षके समान रणभूमिमें दिखाई देने लगे। उन दोनों वीरोंको गदाकी खटपटाहटका शब्द इन्द्रके वज्रके समान सब दिशाओंमें सुनाई देने लगा। जैसे पर्व्वत भेदित होकर भी कम्पित नहीं होता, वैसे ही भीमसेन भी शल्यकी गदासे वायें और दाहिने पार्श्वसे घायल होके भी रणभूमिसे विचलित नहीं हुए। मद्रराज शल्य भीमसेन गदाकी चोटसे अत्यन्त पीड़ित होकर भी धीरज धारण करके मानो वज्रसे भेदित हुए पर्व्वतके समान अचल रूपसे युद्धभूमिसे नहीं हटे। तिसके अनन्तर वे दोनो बलवान् योद्धा गदा ग्रहण करके फिर मण्डलाकार घुमाते, अपना घात देखकर दूसरेकी ओर चलाते हुए युद्धभूमिके बाहर और भीतर मार्ग करके चारों ओर गति विशेषसे भ्रमण करते हुए युद्ध करने लगे। तिसके अनन्तर सहसा आठ पग तक लम्फ प्रदान करके लोहमयी गदासे आपसमें दोनोंने एक दूसरेके ऊपर प्रहार किया, और गदाकी चोटसे अत्यन्त पीड़ित होकर एक ही समयमें वे दोनों वीर इन्द्रध्वजाके समान पृथ्वीमें गिर पड़े। तब महाबलवान् कृतबर्म्मा विह्वल तथा लम्बी श्वासें छोड़ने वाले शल्यके समीपमें उस ही समय उपस्थित हुए। हे महाराज! महारथ कृतवर्म्मा मद्रराज शल्यको गदाकी चोटसे पीड़ित, गजराजके समान चेष्टा-रहित तथा मूर्च्छित देखकर, उन्हें अपने रथ पर उठाके शीघ्र ही रणभूमिसे पृथक् होगये। परन्तु महाबाहु भीमसेन रणभूमिमें क्षणभर विह्वल वा मूर्च्छित रह कर फिर गदा ग्रहण करके खड़े हुए। हे भारत! तुम्हारे पुत्र, गजपति घुड़सवार रथी और सम्पूर्ण सेनाके शूरवीर योद्धा मद्रराज शल्यको रणभूमिसे पृथक् होते देखकर भयसे कांपने लगे। पाण्डवलोग जयसूचक सिंहनाद करके अपने शंखोंको बजाने लगे। उसे देखकर तुम्हारी सम्पूर्ण सेना पीड़ित और भयभीत होकर मानो वायुके झोकेसे बादलोंके तितर बितर होनेके समान

उनकी तलवार ढालको काटकर सिंह नाद करने लगे। जैसे प्रचण्ड सूर्य्य सम्पूर्ण प्राणियोंको तपाकर भस्म करता है, वैसे ही शत्रुनाशन वीर अभिमन्यु जयद्रथको पराजित करके उनकी सम्पूर्ण सेनाको अपने बाणोंसे जलाने लगे। तब शल्यने अभिमन्युकी ओर जलती हुई अग्नि शिखाके समान एक लोहमयी शक्ति चलाई, जैसे गरुड़ सर्पोंको ग्रहण करते हैं, वैसेही अर्जुनपुत्र अभिमन्युने कूदके उस भयङ्कर शक्तिको हाथसे ग्रहण किया। अत्यन्त तेजस्वी चत्रिय योद्धा अभिमन्युका पराक्रम देखके सिंहनाद करने लगे। शत्रुनाशन अभिमन्युने अपनी भुजाओंके बलसे उसी शक्तिको शल्यकी ओर चलाया। अभिमन्युके हाथसे छूटी हुई भयङ्कर सर्पके समान महा घोर शक्ति शल्यके रथपर आके उनके सारथीको मारकर पृथ्वीमें गिर पड़ी। अनन्तर विराट, द्रुपद, युधिष्ठिर, सात्यकि, केकेय, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, नकुल, सहदेव और द्रौपदीके पांचो पुत्र अभिमन्युको धन्य कहके प्रशंसा करने लगे; और युद्धमें पीछे न हटनेवाले अभिमन्युको हर्षित करनेके निमित्त युधिष्ठिरकी सेनामें धनुष बाणके शब्दके सहित वीरोंका सिंहनाद होने लगा। तुम्हारे पुत्र लोग शत्रुओंके विजयके लक्षणरूपी उस हर्ष भरे कोलाहलको न सह सके। हे राजन्! अनन्तर जैसे बादल पर्व्वतोंके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं, वैसे ही वे लोग मिलकर चारों ओरसे अपने तीक्ष्ण बाणोंको उन सब लोगोंके ऊपर वर्षाने लगे। शत्रुनाशन शल्य अपने सारथीको रथसे गिरते देख उसके प्रियकार्य्य करनेकी इच्छासे क्रुद्ध होकर अभिमन्युकी ओर दौड़े।

१३ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले; हे सञ्जय! तुमने नाना प्रकारका द्वन्द्व-युद्ध जिस प्रकारसे वर्णन किया है, वह सब वृत्तान्त सुनकर मुझे नेत्रवान् होनेकी इच्छा होरही है। सब मनुष्य देवासुर युद्धके समान इस कुरु-पाण्डवोंके युद्धको सदा गाया करेंगे। इस तुमुल युद्धके वृत्तान्तको सुनकर मेरी तृप्ति नहीं होती। इससे तुम मेरे निकट शल्य और अभिमन्युके युद्धका वृत्तान्त फिर वर्णन करो।

सञ्जय बोले, अपने सारथीका मरना देख शल्य क्रुद्ध होकर महा घोर लोहमयी गदा लेकर रथसे कूदके अभिमन्युकी ओर दौड़े। भीमसेनने शल्यको प्रज्वलित कालाग्नि और दण्डधारी यमराजके समान अभिमन्युकी ओर आते देखकर अपनी बड़ी गदा ग्रहण करके अत्यन्त वेगसे शल्यकीओर दौड़े। अभिमन्यु भी वज्रके समान एक भयङ्कर गदा ग्रहण कर... भीमसेनने उन्हें निवारण किया, तो भीम शल्यको क्रोधपूर्व्वक युद्धभूमिमें प्रचारने लगे। प्रतापी भीमसेन युद्धमें अभिमन्युको रोकके उस संग्राममूमिमें शल्यके सम्मुख अचलराज पर्व्वतके समान खड़े हुए; जैसे शार्दूल हाथीके सम्मुख होता है, वैसे ही पराक्रमी शल्य भीमसेनके सम्मुख उपस्थित हुए; अनन्तर सहस्रों शङ्ख भेरी आदि बाजोंके सहित वीरोंके सिंहनादका शब्द होने लगा। तब कुरु-पाण्डवोंकी सेनाके सैकड़ों वीर उन दोनोंको इस प्रकार युद्धके निमित्त उपस्थित देखकर, दौड़ते हुए धन्य धन्य कहके उन दोनों वीरोंकी प्रशंसा करने लगे। मद्रराज शल्यको छोड़के और कोई दूसरा पुरुष संग्राममूमिमें भीमसेनके वेगको नहीं सह सकता, और भीमसेनके विना इस जगत्में दूसरा कोई भी पुरुष शल्यकी गदाके वेगको सहनेका उत्साह नहीं कर सकता। अनन्तर भीमसेन सुवर्णभूषित महाघोर गदाको जब घुमाने लगे, तब ग...

प्रज्वलित होकर वहां पर सब लोगोंके चित्तको प्रफुल्लित करने लगी। इधर महात्मा शल्य भी विजलीके समान अपनी महाघोर गदा लेकर जिस समय चारों ओर घूमते हुए मण्डलाकार फिराने लगे, उस समयमें उनकी वह भयङ्कर गदा अत्यन्त ही शोभित होने लगी। शल्य और भीमसेन दोनों वीर परुष गदारूपी शृङ्गको खडे करके गर्ज्जनेवाले वृषभके समान मण्डलाकार गतिसे चारों ओर घूमने लगे। मण्डलाकार गति और गदाके घुमानेके विषयमें उन दोनों महाबली पुरुषोंमें कोई भी किसीसे अधिक नहीं हुआ। शल्यकी महा भयङ्कर गदाकी चोटसे भीमसेनकी प्रचण्ड गदा मानो वायुके झकोरसे अग्निकी शिखाके समान कम्पिता होने लगी; और भीमसेनकी गदा भी शल्यकी गदाकी चोटसे मानो वर्षाकालके समय खद्योतसे युक्त वृक्षके समान प्रकाशित हुई। हे राजन्! मद्रराज शल्यकी चलाई हुई गदा मानो रणभूमिमें अग्निकी वर्षा करती हुई आकाशमें प्रकाशित होने लगी। परन्तु भीमसेनके हाथसे छूटी महाभयङ्कर गदा शल्यके सम्मुख गिरकर उनकी सेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंको भयभीत करने लगी। गदा युद्ध करनेवाले योद्धाओंमें श्रेष्ठ उन दोनों पुरुषसिंहोंकी भयङ्करी गदा आपसमें मिलकर मानों लम्बी श्वास छोड़नेवाली दो नागिनियोंकी भांति रगड़ खाके अग्नि उत्पन्न करने लगीं। जैसे दो बलवान् व्याघ्र नखसे और दो मतवारे हाथी अपने दांतोंसे आपसमें युद्ध करते हैं, वैसे ही वे दोनों महाबलवान् गदाधारी योद्धा युद्ध करते हुए रणभूमिमें भ्रमण करने लगे। अनन्तर क्षण भरमें वे दोनों गदाकी चोटसे रुधिरसे पूरित हो, फूले हुए पलाश वृक्षके समान रणभूमिमें दिखाई देने लगे। उन दोनों वीरोंकी गदाकी खटखटा शब्द इन्द्रके वज्रके समान सब दिशाओंमें सुनाई देने लगा। जैसे पर्व्वत भेदित होकर भी कम्पित नहीं होता, वैसे ही भीमसेन भी शल्यकी गदासे बायें और दाहिने पार्श्वसे घायल होके भी रणभूमिसे विचलित नहीं हुए। मद्रराज शल्य भीमसेन गदाकी चोटसे अत्यन्त पीड़ित होकर भी धीरज धारण करके मानो वज्रसे भेदित हुए पर्व्वतके समान अचल रूपसे युद्धभूमिसे नहीं हटे। तिसके अनन्तर वे दोनो बलवान् योद्धा गदा ग्रहण करके फिर मण्डलाकार घुमाते, अपना घात देखकर दूसरेकी ओर चलाते हुए युद्धभूमिके बाहर और भीतर मार्ग करके चारों ओर गति विशेषसे भ्रमण करते हुए युद्ध करने लगे। तिसके अनन्तर सहसा आठ पग तक लम्फ प्रदान करके लोहमयी गदासे आपसमें दोनोंने एक दूसरेके ऊपर प्रहार किया, और गदाकी चोटसे अत्यन्त पीड़ित होकर एक ही समयमें वे दोनों वीर इन्द्रध्वजाके समान पृथ्वीमें गिर पड़े। तब महाबलवान् कृतवर्म्मा विह्वल तथा लम्बी श्वासें छोड़ने वाले शल्यके समीपमें उस ही समय उपस्थित हुए। हे महाराज! महारथ कृतवर्म्मा मद्रराज शल्यकी गदाकी चोटसे पीड़ित, गजराजके समान चेष्टा-रहित तथा मूर्च्छित देखकर उन्हें अपने रथ पर उठाके शीघ्र ही रणभूमिसे पृथक् होगये। परन्तु महाबाहु भीमसेन रणभूमिमें क्षणभर विह्वलता मूर्च्छित रह कर फिर गदा ग्रहण करके खड़े हुए। हे भारत! तुम्हारे पुत्र, गजपति घुड़सवार रथी और सम्पूर्ण सेनाके शूरवीर योद्धा मद्रराज शल्यको रणभूमिसे पृथक् होते देखकर भयसे कांपने लगे। पाण्डवलोग जय-सूचक सिंहनाद करके अपने शंखोंको बजाने लगे। उसे देखकर तुम्हारी सम्पूर्ण सेना पीड़ित और भयभीत होकर मानो वायुके झोंकेमें बादलोंके तितर बितर होनेके समान

उनको तलवार ढालको काटकर सिंह-
नाद करने लगे। जैसे गरुड़ बड़े बड़े सर्पों
पक्षियोंको मारकर प्रसन्न होता है वैसे ही
शत्रुनाशन वीर अभिमन्यु जयद्रथको पराजित
करके उनकी सभामें सेनाको व्याप्त मारने
डराने लगे। तब शल्यने अभिमन्युको ओर
उनकी दृढ़ आग शिखाके समान एक लोहमयी
शक्ति चलाई, जैसे गरुड़ सर्पोंका ग्रहण
करते हैं, वैसे ही अर्जुननन्दन अभिमन्युने
कूदके उस भयङ्कर शक्तिको हाथसे ग्रहण
किया। अनन्तर तेजस्वी वीर योद्धा अभि-
मन्युका पराक्रम देखके सिंहनाद करने लगे।
शत्रुनाशन अभिमन्युने अपनी भुजाओंके
बलसे उसी शक्तिको घुमाया और चलाया।
अभिमन्युके हाथसे छूटी हुई भयङ्कर सर्पके
समान महा घोर शक्ति शल्यके रथपर जाके
उनके सारथीको मारकर पृथ्वीपर गिर पड़ी।
अनन्तर विराट, द्रुपद, धृष्टकेतु, सात्यकि,
केकय, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, नकुल,
सहदेव और द्रौपदीके पांचों पुत्र अभिमन्युको
धन्य कहके प्रशंसा करने लगे; और युद्धमें
पीछे न हटनेवाले अभिमन्युको हर्षित कर-
नेके निमित्त युधिष्ठिरको सेनामें धनुष बाणोंके
शब्दके सहित वीरोंका सिंहनाद होने लगा।
तुम्हारे पुत्र लोग शत्रुओंके विजयके लक्षण-
रूपी उस हर्ष भरे कोलाहलको न सह
सके। हे राजन्! अनन्तर जैसे बादल
पर्व्वतोंके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं, वैसे ही
वे लोग मिलकर चारों ओरसे अपने तीक्ष्ण
बाणोंको उन सब लोगोंके ऊपर वर्षाने लगे।
शत्रुनाशन शल्य अपने सारथीको रथसे गिरते
देख उसके प्रियकार्य्य करनेकी इच्छासे क्रुद्ध
होकर अभिमन्युकी ओर दौड़े।

१३ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! तुमने
नाना प्रकारके द्वन्द्व युद्ध जिस प्रकारसे
किया है, यह सब हमने सुनकर मन मे
जान लेनेकी इच्छा होती है, सब मुझ
देवासुर युद्धके समान उस इक-
युद्धके, सदा याद करते। उस तुमुल युद्धके
उत्पन्न हुए सुनकर मेरी तृप्ति नहीं होती
इससे तुम फिर विस्तार करके, और अभिमन्यु
युद्धका वृत्तान्त फिर वर्णन करो।

सञ्जय बोले, अपने सारथीको मरा हो
शल्य क्रुद्ध होकर शल्य और लोहमयी गदा
लेकर वेगसे कूदके अभिमन्युकी ओर दौड़े।
भीमसेनने प्रलयकालकी अग्निके
दण्डधारी यमराजके समान अभिमन्युकी ओर
आते देखकर अपनी बड़ी गदा ग्रहण कर
अत्यन्त वेगसे शल्यकी ओर दौड़े। अभिमन्यु
भी वज्रके समान एक भयङ्कर गदा ग्रहण क
भीमसेनने उनको निवारण किया, तो भी श-
ल्यको शीघ्रतापूर्वक युद्धभूमिमें प्रचारने को,
प्रतापी भीमसेन युद्धमें अभिमन्युको रोकक
उस संग्रामभूमिमें शल्यके सम्मुख पवर्ब्बतके
पर्व्वतके समान गाड़े हुए, जैसे गाड़ेका बाघ
सम्मुख होता है, वैसे ही पराक्रमी महाबलि
सेनके सम्मुख उपस्थित हुए, अनन्तर सब
शङ्ख भेरी आदि बाजोंके सहित वीरोंके सिंह
नादका शब्द होने लगा। तब कुरु-पाण्डव
सेनाके सैकड़ों वीर उन दोनोंको इस प्रकार
युद्धके निमित्त उपस्थित देखकर, दौड़ते हुए
धन्य धन्य कहके उन दोनों वीरोंकी प्रशंसा
करने लगे। मद्रराज शल्यको छोड़के और
कोई दूसरा पुरुष संग्राममूमिमें भीमसेनके
वेगको नहीं सह सकता, और भीमसेनके
विना इस जगत्में दूसरा कोई भी पुरुष
शल्यकी गदाके वेगको सहनेका उत्साह नहीं
कर सकता। अनन्तर भीमसेन सुवर्णभूषित
महाघोर गदाको जब घुमाने लगे, तब वह

प्रज्वलित होकर वहां पर सब लोगोंके चित्तको प्रफुल्लित करने लगी। इधर महात्मा शल्य भी बिजलीके समान अपनी महाघोर गदा लेकर जिस समय चारों ओर घूमते हुए मण्डलाकार फिराने लगे, उस समयमें उनकी वह भयङ्कर गदा अत्यन्त ही शोभित होने लगी। शल्य और भीमसेन दोनों वीर पुरुष गदारूपी शृङ्गको खडे करके गर्ज्जनेवाले वृषभके समान मण्डलाकार गतिसे चारों ओर घूमने लगे। मण्डलाकार गति और गदाके घुमानेके विषयमें उन दोनों महाबली पुरुषोंमें कोई भी किसीसे अधिक नहीं हुआ। शल्यकी महा भयङ्कर गदाकी चोटसे भीमसेनकी प्रचण्ड गदा मानो वायुके झकोरसे अग्निकी शिखाके समान कम्पिता होने लगी; और भीमसेनकी गदा भी शल्यकी गदाकी चोटसे मानो वर्षाकालके समय खद्योतसे युक्त वृक्षके समान प्रकाशित हुई। हे राजन्! मद्रराज शल्यकी चलाई हुई गदा मानो रणभूमिमें अग्निकी वर्षा करती हुई आकाशमें प्रकाशित होने लगी। परन्तु भीमसेनके हाथसे छूटी महाभयङ्कर गदा शल्यके सम्मुख गिरकर उनकी सेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंको भयभीत करने लगी। गदा युद्ध करनेवाले योद्धाओंमें श्रेष्ठ उन दोनों पुरुषसिंहोंकी भयङ्करी गदा आपसमें मिलकर मानों लम्बी श्वास छोड़नेवाली दो नागिनियोंकी भांति रगड़ खाके अग्नि उत्पन्न करने लगीं। जैसे दो बलवान् व्याघ्र नखसे और दो मतवारे हाथी अपने दांतोंसे आपसमें युद्ध करते हैं, वैसे ही वे दोनों महाबलवान् गदाधारी योद्धा युद्ध करते हुए रणभूमिमें भ्रमण करने लगे। अनन्तर क्षण भरमें वे दोनों गदाकी चोटसे रुधिरसे पूरित हो, फूले हुए पलाश वृक्षके समान रणभूमिमें दिखाई देने लगे। उन दोनों वीरोंकी गदाकी खटपटाहटका शब्द इन्द्रके वज्रके समान सब दिशाओंमें सुनाई देने लगा। जैसे पर्व्वत भेदित होकर भी कम्पित नहीं होता, वैसे ही भीमसेन भी शल्यकी गदासे बायें और दाहिने पार्श्वसे घायल होके भी रणभूमिसे विचलित नहीं हुए। मद्रराज शल्य भीमसेन गदाकी चोटसे अत्यन्त पीड़ित होकर भी धीरज धारण करके मानो वज्रसे भेदित हुए पर्व्वतके समान अचल रूपसे युद्धभूमिसे नहीं हटे। तिसके अनन्तर वे दोनो बलवान् योद्धा गदा ग्रहण करके फिर मण्डलाकार घुमाते, अपना घात देखकर दूसरेकी ओर चलाते हुए युद्धभूमिके बाहर और भीतर मार्ग करके चारों ओर गति विशेषसे भ्रमण करते हुए युद्ध करने लगे। तिसके अनन्तर सहसा आठ पग तक लम्फ प्रदान करके लोहमयी गदासे आपसमें दोनोंने एक दूसरेके ऊपर प्रहार किया, और गदाकी चोटसे अत्यन्त पीड़ित होकर एक ही समयमें वे दोनों वीर इन्द्रध्वजाके समान पृथ्वीमें गिर पड़े। तब महाबलवान् कृतवर्म्मा विह्वल तथा लम्बी श्वासें छोड़ने वाले शल्यके समीपमें उस ही समय उपस्थित हुए। हे महाराज! महारथ कृतवर्म्मा मद्रराज शल्यकी गदाकी चोटसे पीड़ित, गजराजके समान चेष्टा-रहित तथा मूर्च्छित देखकर उन्हें अपने रथ पर उठाके शीघ्र ही रणभूमिसे पृथक् होगये। परन्तु महाबाहु भीमसेन रणभूमिमें क्षणभर विह्वल वा मूर्च्छित रह कर फिर गदा ग्रहण करके खड़े हुए। हे भारत! तुम्हारे पुत्र, गजपति घुड़सवार रथी और सम्पूर्ण सेनाके शूरवीर योद्धा मद्रराज शल्यको रणभूमिसे पृथक् होते देखकर भयसे कांपने लगे। पाण्डवलोग जयसूचक सिंहनाद करके अपने शंखोंको बजाने लगे। उसे देखकर तुम्हारी सम्पूर्ण सेना पीड़ित और भयभीत होकर मानो वायुके झोकेसे बादलोंके तितर बितर होनेके समान

इधर उधर दौड़ने लगी। हे राजन्! महारथ पाण्डव लोग तुम्हारी सेनाके योद्धाओंको इस प्रकारसे पराजित करके प्रज्वलित अग्निके समान रणभूमिमें विराजमान हुए; और हर्षित होके बार बार सिंह- नाद करके शंख, भेरी मृदङ्ग, आदि युद्धके जुझाऊ बाजोंको बजाने लगे।

१४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! पराक्रमी वृषसेन तुम्हारी सेनाको इधर उधर छिन्न भिन्न होती देखकर, अकेले ही अपने अस्त्र विद्याके प्रभावसे उन सबलोगोंको फिर युद्धभूमिमें स्थित करके चारों ओर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे; वे सम्पूर्ण बाण शत्रु सेनाके मनुष्य, हाथी घोड़े और रथियोंके शरीरको भेदकर रणभूमिमें चारों ओर भ्रमण करते हुए दिखाई देने लगे। महाराज! वृषसेनके सहस्रों बाण आकाशमें सूर्य्य किरणके समान प्रकाशित होते हुए चारों ओर दिखाई देने लगे। हे राजन्! रथी घुड़सवार उसके बाणोंसे पीड़ित होके मानो प्रचण्डवायुके वेगसे टूटे हुए वृक्षके समान पृथ्वी पर गिरने लगे। महारथ वृषसेनने संग्राम-भूमिमें सैकड़ों सहस्रों रथी, घुड़सवार, गजपति और पैदल सेनाके वीरोंको अपने शस्त्रोंके बलसे मारके पृथ्वीमें गिरा दिया। हे राजन्! युद्धभूमिमें अकेले ही वृषसेनको चारो ओर भ्रमण करते हुए देखके सम्पूर्ण राजाओंने एकत्रित होके उन्हें घेर लिया। नकुल पुत्र शतानीकने वृषसेनके समीपमें उपस्थित होके मर्म्मभेदी दश बाणोंसे उनके ऊपर प्रहार किया। कर्ण पुत्र वृषसेनने भी शतानीकके धनुषको काटके फिर एक बाणसे रथकी ध्वजाको भी काट डाला। द्रौपदीके दूसरे और चारों पुत्र अपने भाई शतानीककी सहायता करनेके निमित्त समीप उपस्थित हुए; और शीघ्र ही बाणोंको चलाकर कर्ण पुत्र वृषसेनको दिया। हे राजन्! तब अश्वत्थामा महारथ योद्धा लोग सिंहनाद करते हुए बादल पर्व्वतों पर जलकी वर्षा करते हैं ही द्रौपदीके पुत्रोंको बाणोंसे आच्छादित करते हुए वेगपूर्व्वक उनकी ओर दौड़े उन महारथियोंको द्रौपदीपुत्रोंकी ओर देख पांचाल कैकेय मत्स्य और सञ्जय तथा पाण्डव लोग शस्त्र ग्रहण करके सहित उनकी ओर दौड़े। जैसे दानवोंके देवताओंका संग्राम हुआ था, वैसे ही सेनाके महारथ योद्धाओंके सङ्ग सेनाके शूरवीरोंका महाघोर रोएंको करनेवाला संग्राम होने लगा। इसी कौरव और पाण्डवोंकी सेनाके और सब विजयकी इच्छा करके क्रोधपूर्व्वक एक रेको ओर देखके आपसमें युद्ध करने महातेजस्वी युयुत्सु आदि शूरवीरों क्रोधके वशमें होकर आकाशमें स्थित और सर्पके समान दिखाई देने लगे। रणभूमि भीमसेन, कर्ण, कृपाचार्य्य, धृष्टद्युम्न और सात्यकि आदि तेजसे ऐसे शोभित हुए, जैसे सूर्य्यके होने पर सर्व्वत्र प्रकाश होजाता है। एक दूसरेके ऊपर शस्त्रोंको चलानेवाले महावीर योद्धाओंका ऐसा संग्राम होने जैसे महाबलवान् दानवोंके संग युद्ध हुआ था। अनन्तर समुद्रके मथनके शब्दके सहित युधिष्ठिरकी सेनाने सेनाके वीरोंके ऊपर प्रहार करना किया, उससे तुम्हारी सेनाके कितने एक रथ योद्धा भी भाग गये। द्रोणाचार्य्य सेनाको शत्रुओंके सम्मुखसे भागती हुई कर बोले, "हे शूरवीर महारथ पुरुषो!

रोगोंको युद्धसे भागना उचित नहीं है।" ऐसा चन कह कर महापराक्रमी द्रोणाचार्य्य क्रुद्ध के चार दांतवाले गजराजके समान वेगपूर्व्वक ाण्डवोंकी सेनामें प्रवेश करके राजा युधिष्ठिर र आक्रमण किया। युधिष्ठिर कङ्कपत्रयुक्त शाणित बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको विद्ध करने लगे। द्रोणाचार्य्य शीघ्र ही उनके धनुषको अपने बाणोंसे काटके शीघ्रताके सहित उनकी ओर दौड़े। जैसे तटकी भूमि समुद्रकी सीमासे आगे नहीं बढ़ने देती, वैसे ही युधिष्ठिरके रक्षक पाञ्चाल सेनाके किसी कुमार नामक लवान् योद्धाने द्रोणाचार्य्यको निवारण किया। द्रोणाचार्य्यको कुमारसे निवारित देखकर पाण्डवोंकी सेनाके सब शूरवीर योद्धा सिंहनाद र "धन्य धन्य" कहके उसकी प्रशंसा करने गे। महारथ कुमारने सहस्रों बाणोंसे द्रोणाचा- की निवारण करके उनका वक्षस्थल विद्ध या। ब्राह्मणश्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने उस शूरवीर ष्ठ पुरुषोंके व्रतमें स्थित महा अस्त्रोंके जानने- ले महारथ कुमारको अपने शस्त्रोंके बलसे रके पृथ्वीमें गिरा दिया। अनन्तर द्रोणाचार्य्य म्पूर्ण सेनाके बीचमें होकर अपनी सेनाकी ा करने लगे। उन्होंने बारह बाणोंसे खण्डी, बीस बाणोंसे नकुल, सातसे सहदेव, रह बाणोंसे राजा युधिष्ठिर, तीन तीन णोंसे द्रौपदीके पुत्रों, पांच बाणोंसे सात्यकि र दश बाणोंसे राजा विराटको विद्ध करके र मुख्य मुख्य वीरोंको अपने बाणोंसे पीड़ित रते हुए भयभीत करके अन्तमें कुन्तीपुत्र धिष्ठिरको ग्रहण करनेकी इच्छासे वेगपूर्व्वक नकी ओर दौड़े। हे राजन्! अनन्तर युगन्ध- ने वायुके झोंकेसे समुद्रकी तरङ्गके समान ापूर्व्वक द्रोणाचार्य्यको युधिष्ठिरके सम्मुख ाते देखकर अपने बाणोंकी वर्षासे उन्हें िवारण करने लगे। द्रोणाचार्य्यने अपने तीक्ष्ण ाणोंसे राजा युधिष्ठिरको विद्ध करके एक भल्लसे युगन्धरका बध करके रथसे पृथ्वीमें गिरा दिया। अनन्तर विराट, द्रुपद, केकयराज, सात्यकि, शिवि, पाञ्चाल योद्धा व्याघ्रदत्त, पराक्रमी सिंहसेन और दूसरे बहुतेरे-योद्धाओंने राजा युधिष्ठिरकी रक्षाके निमित्त आगे बढ़कर अनेक बाणोंको चलाकर द्रोणाचार्य्यके मार्गको रुद्ध करके उन्हें चारों ओरसे घेर लिया। हे राजन् पाञ्चाल योद्धा व्याघ्रदत्तने पचास तीक्ष्ण बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको विद्ध किया; उसे देखके पाण्ड- वोंकी ओरके योद्धा सिंहनाद करने लगे। सिंहसेनभी शीघ्रताके सहित द्रोणाचार्य्यको विद्ध कर शत्रुसेनाके वीरोंको भयसे व्याकुल करके सिंहनाद करने लगे। अनन्तर द्रोणा- चार्य्य सिंहसेनकी ओर क्रोधपूर्व्वक देखकर धनुषटङ्कारके शब्दसे युद्धभूमिको पूरित करते हुए सिंहसेनकी ओर दौड़े और दो भल्लास्त्रसे सिंहसेन और व्याघ्रदत्तके सिरोंको कुण्डलोंके सहित काटके पृथ्वीपर गिरा दिया। अनन्तर अपने अस्त्रोंके प्रभावसे युधिष्ठिरकी सेनाके सम्पूर्ण वीरोंको विकल करके यमराजके समान धर्म्मराज युधिष्ठिरके समीप उपस्थित हुए। युधिष्ठिरकी सेनामें "धर्म्मराज युधिष्ठिर मारे गये" ऐसा ही महा घोर कोलाहल होने लगा। तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा द्रोणाचा- र्य्यका पराक्रम देखकर कहने लगे, आज धृतराष्ट्रपुत्र राजा दुर्य्योधनका मनोरथ पूर्ण होगा, अब थोड़े ही समयमें द्रोणाचार्य्य धर्म्म- राज युधिष्ठिरको युद्धमें ग्रहण करके हर्षपू- र्व्वक दुर्य्योधनके समीप उपस्थित होंगे। तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग इसी भांति अनुमान कर रहे थे, उसी ही समय महारथ कुन्तीपुत्र अर्ज्जुन रथपर चढ़े हुए वेगपूर्व्वक अपने रथके शब्दसे पृथ्वीको अनुनादित करते, रुधिररूपी जल, रथरूपी नौका, शूरवीरोंके अस्थियोंसे परिपूर्ण भूत प्रेतोंसे सेवित, सम्पूर्ण प्राणियोंका संहार करनेवाली भयङ्करी नदी उत्पन्न करके

वहांपर आके उपस्थित हुए। वह सहसा अपने बाणोंकी वर्षासे कुरुसेनाके योद्धाओंको तितर वितर करते, सम्पूर्ण दिशाओंको बाणोंसे पूरित कर समस्त सेनाको मोहित करते हुए अपने बाणोंके समूहरूपी महाफेनसे युक्त प्रासास्त्ररूपी मकर मच्छसे युक्त रुधिरकी नदी वेगपूर्व्वक पार होकर द्रोणाचार्य्यकी सेनाके सम्मुख आकर उपस्थित हुए। यशस्वी कुन्तीपुत्र अर्जुन इतनी शीघ्रतासे बाणोंको सन्धान करने तथा चलाने लगे, कि उनकी ओर तनिक भी किसीने देखनेका अवकाश नहीं पाया। महाराज। उस समय अर्जुनके बाणोंसे दिशा, आकाश, और पृथ्वी आदि कुछ भी नहीं दीख पडती थी, सम्पूर्ण स्थान बाणमय होगया। गाण्डीव धनुष धारण करनेवाले अर्जुनने लगातार अपने बाणोंको चलाकर आकाश मण्डलको इस प्रकारसे छा लिया, कि सम्पूर्ण युद्धभूमिमें अन्धकार होगया उस समय सूर्य्य भी धूलिके उडनेसे अस्त प्राय होगये। तब उस दशामें शत्रु मित्र कोई भी नहीं बोध होता था। अनन्तर द्रोणाचार्य्य और दुर्य्योधन आदि कौरव लोगोंने अपनी सेनाको युद्धसे निवृत्त किया। अर्जुनने भी शत्रुओंको भयभीत और युद्धसे पराजित देखकर धीरे धीरे अपनी सेनाको भी युद्धसे निवृत्त किया। जैसे ऋषिलोग सूर्य्यदेवकी स्तुति करते हैं वैसे ही पाण्डव, सृञ्जय और पाञ्चाल योद्धा लोग प्रसन्न चित्तसे अर्जुनकी प्रशंसा करने लगे। इसी प्रकारसे शत्रुओंको जीतकर कृष्ण और अर्जुनने अपनी सम्पूर्ण सेनाको आगे करके अपने शिबिरोंकी ओर प्रस्थान किया। जैसे चन्द्रमण्डल नक्षत्रोंसे चित्रित आकाशमें विराजमान होता है, वैसे ही पाण्डुपुत्र अर्जुन अत्यन्त सुन्दर चन्द्रकान्त, मरकत, सूर्य्यकान्त, सुवर्ण, रौप्य, हीरा प्रवाल और स्फटिक मणियोंसे चित्रित रथपर प्रकाशित होने लगे।

१५ अध्याय समाप्त।

अब संशप्तक वध पर्व्व लिखेंगे।

सञ्जय बोले, हे प्रजानाथ! युद्धसे निवृत्त होनेपर दोनों सेना विधिपूर्व्वक अपने शिबिरोंपर उपस्थित हुई। तब द्रोणाचार्य्य दुर्य्योधनको देखके अत्यन्त लज्जित होकर यह वचन बोले, मैंने पहिले ही कहा था, कि युद्धभूमिमें अर्जुनके रहते देवता लोग भी युधिष्ठिरको ग्रहण कर सकेंगे। आपलोगोंके अत्यन्त यत्नवान् होने पर भी सम्मुख होमें अर्जुनने जैसा कार्य्य किया, वह सब आप लोगोंने नेत्रोंसे देखा हैं,—इससे "कृष्ण और अर्जुन लोग युद्धमें अजेय हैं" मेरे इस वचनमें भी शंका न करनी चाहिये। हे राजन! किसी उपायसे तुम श्वेतवाहन अर्जुनको युधिष्ठिरके समीपसे हटा सको, तो राजा युधिष्ठिर तुम्हारे वशमें हो सकेंगे। हे भारत! कोई बलवान् पुरुष युद्धके निमित्त अर्जुनको आवाहन करके दूसरे स्थानमें लेजावे, तो अर्जुन विना उसे युद्धमें पराजित किए कदापि निवृत्त न होसकेंगे। जिस समय अर्जुन युद्धमें प्रवृत्त रहेंगे, उस ही समयमें मैं पाण्डवोंकी सम्पूर्ण सेनाको भेद करके धृष्टद्युम्नके सम्मुख होमें धर्म्मराज युधिष्ठिरको ग्रहण करके लाऊंगा। युधिष्ठिर यदि मुझे युद्धमें आता हुआ देख कर अर्जुनके निकट न जाकर रणभूमि छोडके मेरे सम्मुखसे भाग जावेंगे, तो तुम उनको पकडा हुआ ही समझो। हे महाराज। इसी रीतिसे मैं धर्म्मराज युधिष्ठिरको उनके अनुयायिओंके सहित तुम्हारे वशमें कर दूंगा। धर्म्मराज युधिष्ठिरको जीते जी ग्रहण करना विजयसे भी श्रेष्ठ

सञ्जय बोले, हे राजन्! द्रोणाचार्य्यके वचनको सुनकर त्रिगर्त्तराज अपने भाइयोंके सहित यह वचन बोले, हे राजन्! गाण्डीव धारी अर्ज्जुनने वारम्बार हमलोगोंके सङ्ग शत्रुता की है, हमलोग निरपराधि थे, तौभी उसने हमारे ऊपर अत्याचार किया है। उसके उन सब अत्याचारोंको स्मरण करके हमलोग क्रोध-रूपी अग्निमें जले जाते हैं; रात्रिके समय हम-लोगोंको अच्छी प्रकारसे निद्रा भी नहीं लगती है। हम लोगोंकी प्रारब्धहीसे अर्ज्जुन रणभू-मिमें शस्त्रधारी होकर हमारे सम्मुख दीख पड़ा है; इससे हम लोगोंको जिस कार्य्यके करनेकी बहुत दिनसे अभिलाषा थी, उसे आज पूर्ण करेंगे। हम लोग उस अर्ज्जुनको संग्राम-भूमिसे बाहर बुला कर युद्ध करके उसका बध करेंगे; ऐसा होनेहीसे तुम्हारा प्रियकार्य्य और हमलोगोंका यश विख्यात होगा। आज पृथ्वी अर्ज्जुनसे रहित होगी, वा त्रिगर्त्तराजसे शून्य हो जावेगी। हमलोगोंने तुम्हारे समीपमें यह सत्य प्रतिज्ञा की है,—यह कदापि मिथ्या न होवेगी।

सञ्जय बोले, हे महाराज! सत्यरथ, सत्य-धर्म्मा, सत्यव्रत, सतोष और सत्यकर्म्मा— ये पांचों भाई शपथ करके दश हजार रथोंके सहित युद्ध करनेके निमित्त तैयार हुए, और मालव, तुण्डिक,देशीय योद्धा लोग तीस हजार रथोंके सहित युद्ध करनेको उद्यत हुए। त्रिगर्त्त देशीय प्रस्थलाधिपति पुरुष सिंह सुशर्म्मा दश हजार रथ और मावेल्लक, ललितमद्र देशीय सब योद्धा अपने भाइयोंके सहित युद्धके निमित्त-गमन करने लगे। अनन्तर मुख्य मुख्य शूर वीरोंमेंसे दश हजार रथी उस सम्पूर्ण रथसे-नासे निकलके इकट्ठे हुए। अनन्तर उनलो-गोंने अग्नि मंगा कर पृथक् रूपसे कुश, वस्त्र और विचित्र कवचोंको ग्रहण किया। सब वीर लोग सैकड़ों सहस्रों प्रकारकी दक्षिणा देने-वाले, वीर पदसे पुकारे जानेके योग्य, यज्ञ करने-वाले पुत्रवान् लोकमें विख्यात और कृतकृत्य थे। सब ही कवचधारी, घृतसे डूबे हुए कुश और चीर धारण करने वाले, मौर्व्वी-मेखला-धारी थे, शरीरकी आशा छोड़के यश और विजयके संग आत्माका योग करने अथवा ब्रह्मचर्य्य, वेदाध्ययन और उत्तम दक्षिणासे जो सब लोक प्राप्त होते हैं, उन लोकोंको धर्म्म युद्धसे प्राप्त करनेकी इच्छासे ब्राह्मणोंको पृथक् पृथक् वस्त्र, गऊ स्वर्णमुद्रा आदि दान देके तृप्त किया। फिर आपसमें दृढ़ निश्चयके सहित अग्नि जलाके युद्धव्रत स्थित करके अग्निके समीप खड़े हो सम्पूर्ण प्राणि-योंके बीच ऊंचे स्वरसे यह प्रतिज्ञा करने लगे। हम लोग यदि युद्धमें बिना अर्ज्जुनको पराजित किये ही निवृत्त होवें, अथवा उसके अस्त्रोंसे पीड़ित होके यदि भयसे युद्धभूमिसे पृथक् होवें; तो ऐसा होने पर जो लोग मिथ्या वादी, ब्रह्महत्यारे; मद्य पीनेवाले, गुरुपत्नीगामी, और जो लोग राजाके दिये हुए अन्नको भोग करके यथा समयपर राजकार्य्य नहीं करते, जो शर-णागत पुरुषोंको त्यागते, जो याञ्चा करनेवा-लोंको त्यागते, जो घरको जलादेते जो गऊ हत्या करते, जो सब प्राणियोंका अपकार करते, जो ब्राह्मणसे द्वेष करते, जो मोहके वशमें होकर ऋतुमती भार्य्यां गमन नहीं करते, जो लोग श्राद्ध करके उस ही दिन मैथुन करते हैं, जो अपने आत्माके यथार्थ भावको गोपन करके मिथ्या प्रकाशित करते हैं, जो दूसरेके धनको हरण करते, जो लोग प्रतिज्ञा पालन नहीं करते, जो नपुंसकोंके सङ्ग युद्ध करते हैं जो दीन दुःखियोंके धनको हरण कर लेते, जो नास्तिक अग्नित्यागी, मातृत्यागी और पितृत्यागी और जो लोग और भी दूसरे अनेक प्रकारके पापा-चरण करते हैं; वे सब शरीर ... न्तर जिन सब पाप लोकोंमें गमन

हमलोग भी उन्हीं लोकोंको पावें। यदि हम-लोग युद्धमें अलौकिक पराक्रम प्रकाशित करके कठिन कर्म्म करे सकें, तब तो हम लोगोंके अभिलाष लोक अवश्य ही प्राप्त होवेंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं है।

हे राजन्! वे लोग इसी प्रकारसे प्रतिज्ञा कर दक्षिण दिशाको ओर अर्जुनको आवाहन करके युद्धमें प्रवृत्त हुए। पराये देशके जीतने-वाले अर्जुन उन सम्पूर्ण राजाओंके बुलाने पर उसी समय धर्म्मराज युधिष्ठिरसे बोले, हे राजन्! मेरा यही व्रत है, कि यदि कोई युद्धके निमित्तमुझे आवाहन करेगा, तो मैं विना- उसका वध किये, कदापि युद्धसे निवृत्त न होऊंगा। इस समय राजा ओंने मेरे सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते शपथ किया है; वेही संशप्तक अर्थात् शपथ करनेवाले राजा लोग महाघोर युद्ध करनेके निमित्त मुझे आवाहन करते हैं यह सुशर्म्मा अपने भाइयोंके संग मिलकर मुझे आवाहन कर रहा है; इससे अनुयायि-योंके सहित इस सुशर्म्माके वधके निमित्त तुम मुझे युद्ध करनेके वास्ते आज्ञा दो। हे पुरुषर्षभ! मैं युद्धमें किसीके आवाहन को नहीं सह सकता। मैं तुम्हारे निकटमें यह सत्य प्रतिज्ञा करता हूं, कि युद्धमें शत्रु लोग अवश्य मारे जावेंगे; इसको आप निश्चय ही सत्य समझिये।

राजा युधिष्ठिर बोले, हे तात! तुमने द्रोणाचार्य्यके कर्त्तव्य कर्म्मका अभिप्राय सुना है, इससे जिसमें उनका मनोरथ सिद्ध न होसके उस ही उपायका विधान करो। हे महारथ अर्जुन! द्रोणाचार्य्य बलवान् और सब अस्त्र शस्त्रोंके जाननेवाले तथा युद्धमें अत्यन्त ही निपुण हैं, उन्होंने मेरे ग्रहण करनेकी प्रतिज्ञा की है।

अर्जुन बोले, हे राजन्! यह योद्धाओंमें श्रेष्ठ सत्यजित् आज तुम्हारी रक्षा करेंगे; इनके जीवित रहते आचार्य्य का मनोरथ न होसकेगा। हे राजेन्द्र! यदि यह पुरुष-सिंह सत्यजित युद्धमें मारे जावें, तो उस समय यदि सम्पूर्ण सेनाके योद्धा मिलकर भी रण भूमिमें तुम्हारी रक्षा करें, तो भी तुम कदापि युद्धभूमिमें न ठहरना।

सञ्जय बोले, अनन्तर राजा युधि[ष्ठिर] अर्जुनको प्रीति पूर्व्वक देखकर आलिङ्गन कि[या] फिर उनको युद्धके निमित्त आज्ञा दे[कर] अनेक प्रकारका आशीर्वाद प्रदान किया। ब[ल]वान् अर्जुन युधिष्ठिरसे ऐसाही कह उनकी आज्ञा लेकर त्रिगर्त्त राजकी ओर [उसी] प्रकारसे दौड़े जैसे भूखा सिंह अपनी [क्षुधा] शान्तिके निमित्त मृगोंके समूहकी ओर [दौड़ता] है। अनन्तर जब धर्म्मराज युधिष्ठिर [अर्जुन] रहित हुए, तब दुर्य्योधनको सम्पूर्ण [सेना] उनको ग्रहण करनेके निमित्त अत्यन्त ह[र्षित] होकर क्रुद्ध हुई। इसके अनन्तर जैसे [वर्षा] कालमें गङ्गा और सरयूनदीके प्रबल [जल]वेग आपसमें मिलता है, वैसे ही कौरव पाण्डवोंको सम्पूर्ण सेना दोनों ओरसे [वेग] पूर्व्वक युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुई।

१६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजान्! अनन्तर सं[श]प्तक वीर लोग समान भूमिमें अर्द्धचन्द्र व्यू[ह] बना कर परम हर्षके सहित युद्ध[के] निमित्त स्थित हुये। वे सब पुरुषसिंह [अर्जु]नको आते हुए देख कर सिंहनाद [करने] लगे। उन पराक्रमी शूरवीरोंके [शब्दसे] सम्पूर्ण दिशा और आकाश व्याप्त होगया सम्पूर्ण स्थान ही उन लोगोंके [शब्दसे] पूरित होगये; इसीसे उसकी [प्रतिध्वनि] सुनाई नहीं पड़ी। अर्जुन उन[को] अत्यन्त हर्षित देखकर हंसते हुए

बोले हे कृष्ण। यह देखो त्रिगर्त राज आज भाइयोंके सहित युद्धभूमिमें मरनेकी इच्छा करके रोनेके विषयमें हर्षित होरहे हैं। अथवा इन लोगोंका यथार्थ ही यह हर्षका समय है; क्योंकि अधम पुरुषोंके प्राप्त न होने योग्य उत्तम लोकोंमें ये सब शूरवीर योद्धा लोग गमन करेंगे। अर्ज्जुन महाबाहु श्रीकृष्णचन्द्रसे ऐसा वचन कहके युद्धभूमिमें व्यूहबद्ध त्रिगर्त्त-सेनाके समीप आके उपस्थित हुए। अनन्तर अर्ज्जुनने अपने देवदत्त नामक शंखको ग्रहण करके बलपूर्व्वक बजाया, उसके महा घोर शब्दसे सम्पूर्ण दिशा परिपूर्ण होगई। उस महा भयङ्कर शब्दको सुनकर संशप्तक वीरोंकी सम्पूर्ण सेना चेतरहितके समान युद्धभूमिमें खड़ी रही। उस सेनाके सम्पूर्ण वाहन भयसे विकल होके कान, पूंछ और गर्दन सिकोड़के मल-मूत्र त्यागने लगे। अनन्तर वे सम्पूर्ण योद्धा सावधान होकर अपने वाहनोंको नियमपूर्व्वक स्थिर करके एक ही बार अर्ज्जुनके ऊपर कङ्क-पत्र युक्त बाणोंको चलाने लगे। अर्ज्जुनने अपने पराक्रमको प्रकाशित करके उन सहस्रों बाणोंको पन्द्रह बाणोंसे काटके मार्गहीमें गिरा दिया। अनन्तर उन हर एक वीरोंने अर्ज्जुनको दश दश बाणोंसे विद्ध किया, अर्ज्जु-नने भी तीन तीन बाणोंसे उन लोगोंको विद्ध किया। हे राजन्! इसके अनन्तर उन लोगोंने पांच पांच बाणोंसे अर्ज्जुनको फिर विद्ध किया, तब अर्ज्जुनने दो दो बाणोंसे उन लोगोंको विद्ध किया। जैसे दैव जलकी वर्षा करके ताला-वोंको परिपूर्ण कर देता है, वैसे ही उन वीरोंने अपने बाणोंको वर्षा करके कृष्ण और अर्ज्जुनको फिर परिपूरित कर दिया! जैसे वनमें भंव-रोंका झुण्डले हुए वृक्षोंके ऊपर एकवारही गिरता है, वैसे ही सहस्रों बाण अर्ज्जुनके ऊपर गिरने लगे। अनन्तर सुबाहुने अर्ज्जुनके रत्नोंसे विभूषित सुन्दर किरीटको तीन बाणोंसे विद्ध किया। अर्ज्जुनका किरीट उन सुवर्ण-दण्डधारी बाणोंसे युक्त होकर अत्यन्त ही शोभित होने लगा, अर्ज्जुनने उसही समय अपने बाणोंको चलाकर भल्लास्त्रसे सुबाहुके अङ्गुलि त्राणको काट दिया और फिर अपने बाणोंकी वर्षासे उन्हें छिपा दिया। अनन्तर सुशर्म्मा, सुरथ, सुधर्म्मा, सुधन्वा और सुबाहु, इन पांचों महाबलवान् योद्धाओंने दश दश बाणोंसे फिर अर्ज्जुनको विद्ध किया। कपिध्वजावाले अर्ज्जुनने पृथक् रूपसे उन पाचों वीरोंको अपने बाणोंसे विद्ध करके उनके रथकी सुवर्ण-भूषित ध्वजाओंको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। अन-न्तर पहिले अपने बाणोंसे सुधन्वाके धनुषको काटके फिर तीक्ष्ण बाण चलाकर मुकुट सहित उनका सिर काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। उस बलवान् वीर सुधन्वाके मरनेपर उसके अनुयायी योद्धा लोग भयभीत होके दुर्य्योधनको सेनाकी ओर भागने लगे। जैसे सूर्य्य अपनी किरणोंसे अन्धकारका नाश कर देता है, वैसे ही इन्द्रपुत्र अर्ज्जुन क्रुद्ध होकर अपने तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करके उस महासेनाका संहार करने लगे। अनन्तर अर्ज्जुनके क्रुद्धहोनेपर वह सम्पूर्ण सेना तितर बितर होके चारोंओर भागने लगी। सेनाको इधर उधर भागते देखकर त्रिगर्त्त-राजके अनुयायी शूरवीर योद्धा लोग भयभीत होगये; वे सब अर्ज्जुनके तीक्ष्ण बाणोंसे अत्यन्त विकल होके डरे हुए मृग समूहकी भांति मुग्ध हो गये, अनन्तर त्रिगर्त्तराज क्रुद्ध होकर भागते हुए महारथ वीरोंसे बोले, हे शूरवीर महारथ पुरुषो! तुम लोग क्यों युद्धसे भाग जाते हो? तुम लोग कुछ भी भय मत करो। तुम सब लोगोंने मुख्य मुख्य पराक्रमी योद्धा होकर सम्पूर्ण सेनाके सम्मुखमें वैसी कठिन प्रतिज्ञा तथा शपथ करी है; इस समय तुम लोग दुर्य्यो-धनकी सेनामें जाकर क्या कहोगे? ऐसा कर्म्म करनेसे श्रेष्ठ पुरुषोंके बीचमें अवश्य ही तुम

लोगोंकी निन्दा और हंसी होगी। इससे तुम सब कोई मिलकर बची हुई सेनाके सहित युद्ध करनेके वास्ते लौट आओ। हे राजन्। उन पराक्रमी वीरोंने त्रिगर्त्तराजका ऐसा वचन सुन कर आपससे एक दूसरेको हर्षित करनेके निमित्त बार बार सिंहनाद करके अपने शङ्खोंको बजाने लगे। अनन्तर नारायणी और गोपाली सेनासे युक्त संशप्तक योद्धा लोग मृत्युहीको युद्धसे निवृत्त होनेका उपाय समझकर फिर लौटकर युद्ध करनेके निमित्त उपस्थित हुए।

१७ अध्याय समाप्त।

———

सञ्जय बोले, उन संशप्तक वीरोंको फिर युद्ध करनेके निमित्त उपस्थित देखकर अर्ज्जुन श्रीकृष्णचन्द्रसे बोले, हे हृषीकेश! संशप्तक वीरोंकी ओर मेरे रथको लेचलो, मैं बोध करता हूं कि ये लोग जीते जी संग्रामसे कदापि निवृत्त न होवेंगे। आज तुम मेरी भुजा, धनुष और भयङ्कर अस्त्र शस्त्रोंके बलको देखो! जैसे प्रलय समयमें महाकाल रुद्र सम्पूर्ण प्राणियोंका संहार करते हैं, वैसेही मैं इन सम्पूर्ण वीरोंका नाश करूंगा। अनन्तर श्रीकृष्ण हंसके कल्याणदायक वचनोंसे उन्हें आनन्दित करते हुए जहां जहां उन्होंने जानेकी इच्छा की थी, वहां वहां पर रथको उपस्थित करते हुए चारों ओर भ्रमण करने लगे। वह पाण्डुरवर्ण रथ शीघ्रतापूर्व्वक कृष्णके चलाने पर ऐसा शोभित होने लगा, जैसे आकाश मण्डलमें घूमता हुआ विमान शोभायमान लगता है। अनन्तर नारायणी सेनाने क्रुद्ध होकर नाना भांतिके अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके अर्ज्जुनको अपने बाणोंसे छिपाती हुई चारों ओरसे घेर लिया। हे राजन् सम्पूर्ण योद्धाओंने मुहूर्त्त भरके बीचमें अपने बाणोंकी वर्षासे कृष्ण अर्ज्जुनको छिपादिया। अर्ज्जुनने उस रणभूमिमें अत्यन्त क्रुद्ध होके बलपूर्व्वक गाण्डीवधनुष खींच कर अपने पराक्रमको प्रकाशित करने लगे, और क्रोधसे नेत्र लाल करके अपना देवदत्त महाशङ्ख बजाने लगे। अनन्तर शत्रुओंका नाश करनेके निमित्त उन्होंने त्वष्टा प्रजापतिके दिये हुये अस्त्रको शत्रु सेनाके ऊपर चलाया। उस प्रभावसे अर्ज्जुनके सहस्रों स्वरूप पृथक् पृथक् युद्धभूमिमें उत्पन्न हुए। वे सम्पूर्ण वीर लोग युद्धभूमिमें अनेक अर्ज्जुन देखकर अपनी सेनाके शूरवीरोंको ही अर्ज्जुन जानके एक दूसरेका वधकरने लगे। वे सब वीर योद्धा लोग उस अस्त्रके प्रभावसे मुग्ध होकर "यही कृष्ण! यही अर्ज्जुन, यही कृष्णअर्ज्जुन दोनों हैं," ऐसा ही कहते हुए आपससें एक दूसरेके शस्त्रोंसे मरकर पृथ्वीमें गिरने लगे। वे सम्पूर्ण योद्धा लोग आपसमें उस प्रबल अस्त्रके प्रभावसे एक दूसरेके ऊपर शस्त्रोंका प्रहार करके अन्तमें फूले हुए पलाश वृक्षके समान रणभूमिमें शोभित होने लगे। अनन्तर अर्ज्जुनके चलाये हुए त्वष्ट अस्त्रने शत्रुसेनाके सहस्रों बाणोंको भस्म करके उन सब वीरोंको यमलोकमें पहुंचा दिया अनन्तर अर्ज्जुन हसकर ललित्थ, मालव मावेल्लक और त्रैगर्त्तक योद्धाओंको अपने बाणोंसे अत्यन्त ही विद्ध करने लगे। वे सम्पूर्ण क्षत्रिय योद्धा अर्ज्जुनके बाणोंसे विकल होके भी मानो काल प्रेरित होकर अर्ज्जुनके ऊपर नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंकी बर्षा करने लगे। उन सम्पूर्ण वीर योद्धाओंके बाणोंसे छिप कर अर्ज्जुन कृष्ण और अर्ज्जुनका रथ भी उस समयमें नहीं दीख पड़ता था। अनन्तर कृष्ण-अर्ज्जुनको इस प्रकारसे बाणोंके जालसे छिपा हुआ देख वे सब योद्धा लोग अपने उद्देश्यको सिद्ध हुआ समझ कर हर्ष पूर्व्वक सिंहनाद करने लगे। "कृष्ण-अर्ज्जुन युद्धमें मारे गये," ऐसा समझके वे सब लोग शङ्ख भेरी मृदङ्ग आदि बाजोंको बजा कर हर्ष पूर्व्वक

सिंहनाद करने लगे। अनन्तर उस समयमें कृष्णके शरीरसे पसीना निकलनेलगा वह दुःखित होके अर्ज्जुन! तुम कहां हो! मैं तुमको नहीं देखता हूं। क्या तुम जीवित हो? अर्ज्जुनने कृष्णका वचन सुनकर शीघ्र ही वायव्य अस्त्र चला कर उन सब वीरोंकी वाणवृष्टिको निवारण किया। उस समयसे वायु प्रवल वेगसे चल कर सूखे पत्तोंके समान संशप्तक वीरोंको रथ, घोड़े आदि वाहनोंके सहित उड़ाने लगा। हे राजन्! जैसे वृक्ष परसे उड़ते हुए पक्षी शोभायमान लगते है, वैसे ही वे सब योद्धा वायव्य अस्त्रके प्रभावसे युद्धमें उडते हुए शोभित होने लगे। अर्ज्जुन उन सम्पूर्ण वीरोंको इस प्रकारसे अत्यन्त विकल करके फिर अपने चोखे वाणोंसे सहस्रो पुरुषोंका वध करने लगे। अपने वाणोंसे किसीके सिर, किसीके अस्त्र सहित भुजा, किसीके हस्तिसुण्डके समान जङ्घोंको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। किसीको वीचोंवीचसे काट डाला, किसीके पांव किसीके हाथ किसीकी अंगुली और किसी किसी पुरुषको दूसरे अंगोंसे हीन करदिया, और जगह जगह गन्धर्व्व नगरके समान उत्तम रथोंको खण्ड खण्ड करके राजाओंको घोड़े, रथ और हाथियोंसे रहित करदिया। किसी किसी स्थानमें रथमें रथकी ध्वजा इस प्रकारसे कटी हुई दिखाई देने लगीं, जैसे मुण्डित तालवन दीख पड़ता है जैसे सम्पूर्ण वृक्षोंके सहित पर्व्वत इन्द्रके वज्रकी चोटसे टुकडे टुकडे होकर पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं, वैसे ही अंकुश और ध्वजाओंके सहित उत्तम उत्तम हाथी सवारोंके सहित अर्ज्जुनके अस्त्रोंकी चोटसे मरमरके पृथ्वी पर गिरने लगे। चंवर, भूषण और कवचके सहित शिक्षित घोड़े घुड़सवारोंके सहित वाणोंकी चोटसे मरके पृथ्वी पर गिर पड़े। अर्ज्जुनके वाणोंके लगनेसे सहस्रों पैदल चलनेवाले योद्धा ढाल तलवार और गदा प्रास आदि अस्त्रोंके कटनेसे पीड़ित होके कायरोकी भांति पृथ्वी पर शयन करने लगे। कितने ही वाणोंकी चोटसे मरके गिर गये, कितने ही घायल हुए और कितने ही शस्त्रोंसे पीड़ित होकर पृथ्वीमें गिर पड़ते थे, कितने ही योद्धायुद्धभूमिमें इधर उधर घूमने लगे और कितने ही आर्त्तनाद करते हुए दिखाई देने लगे,—इस प्रकारसे मनुष्योंके समूहसे युक्त युद्धभूमि अत्यन्त ही भयङ्कर मालूम होने लगी, शूरवीरोंके पांवके धक्केसे जो प्रवल वेगसे धूलि उड़ी थी वह अर्ज्जुनके वाणोंसे रुधिरसे शान्त होगई। उस समय रणभूमिमें सैकड़ों कवन्ध उठके दौड़ते थे। अर्ज्जुनका रथ उस समय प्रलयकालके समय सब प्राणियोंके संहार करनेवाले रुद्रदेवके क्रीडास्थानके समान भयङ्कर और विकृत रूपसे प्रकाशित होने लगा। संशप्तक योद्धाओंको अर्ज्जुनके वाणोंसे अत्यन्त विकल और पीड़ित होने पर उनके घोड़े, हाथी और रथके वाहन भी व्याकुल होगये, वे सम्पूर्ण योद्धा इस प्रकारसे विकल और पीडित होकर भी इन्द्रलोकमें गमन करनेकी अभिलाषासे अर्ज्जुनके रथ हीकी ओर दौड़ने लगे। हे भारत! वह रणभूमि सब ओरसे गिरे पड़े घायल और मरे हुए महारथ वीर पुरुषोंके शरीरसे परिपूरित होगई। जब अर्ज्जुन इस प्रकारसे युद्धमें संशप्तक वीरोंके सङ्ग संग्रामसे प्रवृत्त हुए, तब अवसर देखकर महातेजस्वी द्रोणाचार्य्य अपनी सेनाको व्यूहवद्ध करके राजा युधिष्ठिरकी ओर दौड़े। तब युधिष्ठिरकी ओरके मुख्य मुख्य पराक्रमी योद्धा लोग अस्त्र शस्त्र ग्रहण करके द्रोणाचार्य्यसे उनकी रक्षा करनेके निमित्त वेग पूर्व्वक दौड़ कर द्रोणाचार्य्यको अपने अस्त्रोंसे निवारण करने लगे; इससे दोनों ओरकी सेनाओंका महाघोर तुमुल संग्राम होने लगा

१८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र! महाराज भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्यने उस रात्रिको बिता कर दुर्य्योधनको ऊपर कहे हुए अनेक प्रकारके वचनोंसे हर्षित करके अर्जुनके सङ्ग संशप्तक वीरोंका संग्राम करा दिया। जब अर्जुन संशप्तक वीरोंके सङ्ग युद्ध करनेके निमित्त उनकी ओर गये, तब उन्होंने अपनी सेनाका गरुड़ व्यूह बना कर धर्म्मराज युधिष्ठिरको ग्रहण करनेकी इच्छासे पाण्डवोंकी सेनाकी ओर युद्ध करनेके निमित्त प्रस्थान किया। युधिष्ठिरने उस समय द्रोणाचार्य्यके गरुड़ व्यूहको देखकर अपनी सेनाका मण्डलार्द्ध व्यूह बनाया।

अनन्तर द्रोणाचार्य्य उस गरुड़ व्यूहके मुखस्थलपर स्थित हुए। राजा दुर्य्योधन भाइयों और अनुयायियोंके सहित उस व्यूहके मस्तक हुए। बाणोंके चलानेमें मुख्य योद्धा कृतवर्म्मा उसके नेत्र स्थानपर स्थित हुए। भूतशर्म्मा, क्षेमशर्म्मा वीर्य्यवान्, करकाक्ष, कलिङ्ग योद्धा सिंहलदेशीय लोग, प्राच्य शूद्र और आभीरक, दाशेरक, शक, यवन, काम्बोज हंसपथ, शूरसेन दरद, मद्र और केकयदेशीय योद्धा लोग हाथी, घोड़े और रथोंसे युक्त होके उस व्यूहकी ग्रीवापर स्थित किये गये। भूरिश्रवा, शल्य, सोमदत्त और वाह्लिक, ये कई एक बलवान् राजा अक्षौहिणी सेनाके सहित उसके दहिने पक्षके स्थानपर स्थित हुए। अवन्तिराज विन्द-अनुविन्द और काम्बोजराज सुदक्षिण, ये लोग द्रोणाचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामाको आगे करके बामपक्षपर स्थित हुए। कलिङ्ग, अम्बष्ट, मागध, पौण्ड्र मद्रक, गान्धार, शकुन, प्राच्य, पार्व्वतीय और वशातिदेशीय योद्धालोग उसके पीठस्थानपर स्थित हुए। सूर्य्यपुत्र कर्ण बन्धु बान्धव पुत्र और नाना देशके राजाओंके सहित उस व्यूहके पूंछस्थलपर विराजमान हुए। हे राजन्! भीमरथ, सम्पाति, ऋषभ, जय, भूमिञ्जय, वृष, क्राथ और महाबलवान् निषधराज इत्यादि सम्पूर्ण योद्धा लोग ब्रह्म लोकमें गमन करनेकी अभिलाष करके उस गरुड़व्यूहके वक्षस्थलपर स्थित हुए। द्रोणाचार्य्यका बनाया हुआ हाथी घोड़े, रथ और पैदल चलनेवाले योद्धाओंसे युक्त व्यूह मानो वायुके वेगसे समुद्रकी तरङ्गके समान नृत्य करता हुआ दिखाई देने लगा। जैसे वर्षाकालमें चारों ओरसे बादल गर्जते हुए आकाशमें इधर उधर दिखाई देते हैं, वैसे ही उस व्यूहमें सम्पूर्ण सेनाके योद्धा सिंहनाद करते हुए चलने लगे। हे राजन्! प्राग्ज्योतिषराज भगदत्त उस व्यूहके बीच विधिपूर्व्वक सज्जित हुए अपने गजराजपर चढ़के ऐसे शोभित हुए जैसे उदयाचल पर्व्वतपर सूर्य्य शोभित लगते है। हे राजन्! कार्त्तिकमासके चन्द्रमा समान श्वेत छत्र उनके सिरपर अत्यन्त ही प्रकाशित होने लगा। श्यामवर्ण वाला ... मतवारा हाथी मानो बादलोंके समूहसे युक्त बड़े पर्व्वतके समान दिखाई देने लगा। वह अनेक प्रकारके अस्त्रशस्त्र और नाना भांतिके आभूषणोंको धारण करनेवाले पर्व्वत प्रदेशीय वीरोंके सहित युद्धके निमित्त पाण्डवोंकी ओर इस प्रकारसे जाने लगे, जैसे देवतोंके सहित इन्द्र चलते हैं।

अनन्तर राजा युधिष्ठिर शत्रुसेनाके उस अलौकिक और अजेय व्यूहको देखकर पारावत वर्णके समान रथपर स्थित धृष्टद्युम्नसे बोले, हे सेनापति धृष्टद्युम्न! आज जिससे मैं इस ब्राह्मणके बशमें न होऊं, तुम वैसाही उपाय करो।

धृष्टद्युम्न बोले, हे राजन्! द्रोणाचार्य्य तुम्हें ग्रहण करनेके निमित्त यत्नवान् होने पर भी ग्रहण न कर सकेगे। मैं आज द्रोणाचार्य्यको उनके अनुयायियोंके सहित रणभूमिमें निवारण करूंगा। हे भारत! मेरे जीवित रहते तुमको कुछ भी भय नहीं है; क्योंकि द्रोणाचार्य्य मुझको रणभूमिमें कदापि पराजित न कर सकेंगे।

सञ्जय बोले, पारावतके रूपके समान ोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़े हुए महारथ द्रुपद-त्र धृष्टद्युम्न ऐसा कर फिर अपने बाणोंको लाते हुए द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े । द्रोणा-ार्य्य धृष्टद्युम्नको सम्मुख आते देखकर अनिष्ट शनको जान कर क्षण भर तक भावित रहे ; से देखकर तुम्हारे पुत्र शत्रुनाशन दुर्म्मुखने नके प्रियकार्य्यके करनेकी इच्छासे धृष्टद्युम्नको ाक्रमण किया । हे भारत । महापराक्रमी धृष्ट-म्नके सङ्ग दुर्म्मुखका अत्यन्त भयङ्कर तुमुल ुद्ध आरम्भ हुआ । धृष्टद्युम्नने शीघ्रताके सहित पने बाणोंकी वर्षासे दुर्म्मुखको छिपा कर िर महाघोर अस्त्रोंसे द्रोणाचर्य्यकी निवारण रने लगे । उसे देख दुर्म्मुख क्रुद्ध हो धृष्ट-म्नको अपने अस्त्रोंसे विद्ध किया । पञ्चालराज-त्र धृष्टद्युम्न और दुर्म्मुखको युद्धमें प्रवृत्त देखकर ोणाचार्य्य अपने अनेक प्रकारके बाणोंको चला र युधिष्ठिरकी सेनाको भस्म करने लगे । से वायुके प्रबल वेगसे बादल आकाशमें चारों ोर छिन्नभिन्न होजाते हैं वैसे ही युधिष्ठिरकी म्पूर्ण सेना द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे इधर उधर तर बितर होने लगी । हे राजन् ! मुहूर्त र तक वह युद्ध सरलभावसे होता रहा, फिर न्मत्तोंके समान महाघोर विपरीत संग्राम ोने लगा । हे भारत ! तब उस युद्धमें पना और पराया कोई भी किसीको नहीं, ालूम होता था , उस समयमें केवल अनुमान ोर नाम ले लेकर ही सब योद्धा युद्ध करने लगे से अवसरमें शूरवीरोंके सिरके छत्र कण्ठकी ाला और अन्यान्य प्रकाशमान आभूषण हो ूर्य्यकी किरणोंके समान प्रकाशित होतेथे । हाथी, ोड़े और रथोंकी पताका उस रणभूमिमें बक ंक्तिसे विराजित बादलोंके समूहके समान ोभित होने लगी । उस समय क्रुद्ध होकर दल चलनेवाले वीर योद्धा लोग पैदल वीरोंसे ड़सवार घुड़सवारोंसे , गजपति योद्धा गज-सवारोंसे और रथी रथियोंके सम्मुख होकर एक दूसरेका वध करते हुए युद्ध करने लगे ।

क्षण भरके बीचमें उत्तम ध्वजाओंसे युक्त हाथियोंका आपसमें महाघोर युद्ध होने लगा । वे सम्पूर्ण हाथी अपने सूण्डोंसे एक दूसरेको अपनी ओर खींचने लगे, उन हाथियोंके दांतोंकी रगड़से धूएंसे युक्त अग्नि उत्पन्न होने मगी । उन सम्पूर्ण हाथियोंकी पताका फहराती और उनके दांतोंसे उत्पन्न हुई अग्निसे युक्त होकर मानो बादलोंसे युक्त बिजलीके समान प्रकाशित होने लगीं । कोई कोई हाथी एक दूसरेको उठाके फेंक देते थे, कोई बलपूर्व्वक चिग्घाड़ मारते थे, कोई कोई हाथी पृथ्वीमें गिर गये ; इससे वह रणभूमि मानो शरत् ऋतुमें बादलोंसे युक्त आकाशके समान बोध होती थी । हाथियोंके शरीरों पर बाण और तोमरोंकी वर्षा होने लगी, वे सम्पूर्ण हाथी उस समयमें वीरोंके अस्त्र शस्त्रोंसे पीड़ित होकर प्रलयकालके बादलोंके समान गर्ज्जने लगे । तोमर और बाणोंकी चोटसे विकल हुए हाथियोंके बीचमें कितने ही हाथी अत्यन्त पीड़ित होके भयसे विह्वल होगये ; कितने ही अत्यन्त विकल होकर जोरसे चिग्घाड़ मारने लगे । कितने ही हाथी दूसरे हाथियोंके दांतोंसे पीड़ित होकर उत्पात करनेवाले बादलोंके समान घोररूपसे चीत्कार करके आर्त्तनाद करने लगे । मुख्य मुख्य बलवान् हाथी जब अपने दांतोंसे दूसरे हाथियोंको पीड़ित करने लगे, तब वे सम्पूर्ण हाथी तीक्ष्ण अंकुशोंसे चलाये जाने पर भी उन बलवान् हाथियोंके शरीरमें अपने दांतोंसे प्रहार करने लगे । पीलवानोंने आपसमें एक दूसरेके ऊपर अपने बाण और तोमरोंसे प्रहार करना आरम्भ

अनन्तर कितने ही पीलवान

शस्त्रोंसे रहित होके पृथ्वी पर गिरने लगे। कितने ही हाथी मनुष्योंसे रहित होकर चिग्घाड़ मारते हुए दूसरे हाथियोंके दांत और बीरोंके अस्त्रोंसे पीड़ित होके पृथ्वी पर गिर गये। कितने ही बीर योद्धा हाथियोंके पीठही पर मरके गिर गये। और कितनेही गजपति योद्धाओंके अस्त्र शस्त्र गिर पड़े, अनन्तर कितने ही मतवारे हाथी अपने सवारोंको लेकर ही सब ओर वेगसे दौड़ने लगे। कितने ही हाथी तोमर ऋष्टि और परशु आदि अस्त्रकी चोटसे मरकर पृथ्वीमें गिर पड़े। उनके पर्व्वतके समान शरीरोंके इधर उधर गिरने से पृथ्वी कम्पित होने लगी।

गजपति योद्धा और पताकाओंके सहित मरे हुए हाथियोंके शरीरसे पूर्ण होकर सम्पूर्ण रणभूमि मानो पर्व्वतोंके समूहसे युक्त होकर अत्यन्त ही शोभित होने लगी। रथियोंने अपने अस्त्रोंसे हाथियोंके पील-वानोंको जब अत्यन्त ही विद्ध कर दिया, तब अस्त्रोंके सहित उनके अंकुश हाथोंसे छूटके पृथ्वीमें गिरने लगे, और वे लोग भी हाथी परसे पृथ्वीमें गिर पड़े। कितने हाथी शूर-वीरोंके बाणोंसे अत्यन्त ही पीड़ित होकर क्रौञ्च पक्षीके समान घोर शब्दसे चीत्कार करते हुए अपनी तथा शत्रुसेनाको अपने पांवोंसे मर्द्दन करते हुए मरकर पृथ्वीमें गिरने लगे। हे राजन्! उस समय पृथ्वी घोड़े, हाथी और वीर पुरुषोंके शरीरोंसे छिपकर रुधिर और मांससे युक्त होगई। बहुतेरे हाथी अपनेदोनों दांत और सूण्डोंसे बड़े बड़े रथोंको रथियोंके सहित उठाकर फेंकने लगे; उससे कितने ही रथचक्रसे रहित होगये और कितने ही ध्वजा सहित टूटके पृथ्वीमें पड़ेही रह गये। कितने ही रथ रथियोंसे, घोड़े घुड़-सवारोंसे और हाथी अपने सवारोंसे हीन होकर भयसे विकल होकर इधर उधर भागने लगे। उस महाघोर युद्धमें पुत्र पिताको पिता पुत्रका वध करने लगे। इस भयङ्कर संग्राममें कुछ भी बोध नहीं था। सम्पूर्ण मनुष्योंके दाढी मूंछ भी और मांसके लगनेसे लालवर्ण होगयी। बड़े बड़े वृक्ष जलती हुई अग्निके तेजसे प्रकाशित होते हैं, वैसेही मुकट, वस्त्र शस्त्र रथकी पताका आदि रुधिरसे युक्त होकर वर्ण दीख पड़ने लगे। रथी और मनुष्य समूह मरके पृथ्वीमें गिरने लगे और रथ चलनेसे और भी काट कटके टुकड़े टुकड़े लगे। सम्पूर्ण सेना उस समय चलते हाथियोंके समूह रूपी वेगवान् वायु, मरे मनुष्य रूपी सेवारों और चारों ओर करते हुए रथ समूह रूपी नौकासे युक्त समुद्रके समान प्रकाशित होने लगी। स्वरूप वणिक् लोग जय रूपी धनको करनेके अभिलाषी होकर वाहन रूपी पर सवार होके डूबते हुए भी उस सेना महाघोर समुद्रमें मोहित नहीं हुए। बर्षासे योद्धाओंका चिन्ह लोप होगया, तब समयमें कोई भी शत्रुको नहीं पहिचान सकता था। इस प्रकार महाघोर सं द्रोणाचार्य्य पाण्डवोंकी सम्पूर्ण सेना अपने अस्त्रोंसे मोहित करके युधिष्ठिर ग्रहण करनेकी इच्छासे उनकी ओर दौड़े।

१६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, अनन्तर राजा युधिष्ठिर द्रोणाचार्य्यको अपने निकट आया हुआ निर्भयचित्तसे उनके ऊपर अपने बाणोंकी वारके उन्हें विद्ध करने लगे। अनन्तर महाबलवान् सिंह हाथियोंके ग्रहण करनेके निमित्त उद्यत होता है ही जब द्रोणाचार्य्य युधिष्ठिरको ग्रहण करने

च्छासे उनकी ओर बढ़ने लगे, तब पाण्ड-
की सेनामें अत्यन्त ही कोलाहल होने लगा।
ग्र पराक्रमी सत्यजित् द्रोणाचार्य्यको राजा
धिष्ठिरको ग्रहण करनेकी इच्छासे उनकी
ार आते देखकर वेगपूर्व्वक द्रोणाचार्य्यकी
ार दौड़े। महाबलवान् द्रोणाचार्य्य और
्य जित्का उस समयमें इन्द्र और बलिराजके
मान युद्ध होने लगा, उन दोनो पराक्रमी
ुरुषसिंहोंका संग्राम देखकर सम्पूर्ण मनुष्य
ग्रभीत होगये। अनन्तर महा पराक्रमी सत्यजित्
पने प्रबल अस्त्रोंको चला कर द्रोणाचार्य्यके
ऊपर प्रहार करने लगे, और सारथीको अत्यन्त
ीच्ण पांच बाणोंसे विद्ध करके मूर्च्छित कर
दया। फिर शत्रुनाशन सत्यजित्ने क्रुद्ध होकर
श दश बाणोंसे द्रोणाचार्य्यके घोड़ोंको विद्ध
किया, अनन्तर मण्डलाकार गतिसे भ्रमण
रते हुए सत्यजित्ने अपने बाणोंसे द्रोणा
ार्य्यके रथकी ध्वजाको काटके गिरा दिया।
त्रुनाशन द्रोणाचार्य्य रणभूमिमें सत्यजित्का
सा प्राक्रम देखकर मनमें चिन्ता करने
ागे। उनका मृत्युकाल उपस्थित हुआ जान-
र शीघ्रताके सहित द्रोणाचार्य्यने दश
ाणोंसे उनके धनुषको बाण समेत काट कर
फर उनको अपने तीच्णबाणोंसे विद्ध किया।
हे राजन्! पराक्रमी सत्यजित्ने शीघ्रताके
सहित दूसरा धनुष ग्रहण करके कङ्क पत्रयुक्त
ीस बाणोंसे फिर द्रोणाचार्य्यको विद्ध किया।
हे राजन्! युद्धभूमिमें सत्यजित्ने मानो द्रोणा-
चार्य्यको ग्रास कर लिया; उनका पराक्रम
देखके पाण्डवोंको सेनाके सम्पूर्ण वीर योद्धा
हर्षित होकर सिंहनाद करने लगे। हे
भारत। उसही समयमें बलवान् वृकने भी
साठ बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको प्रहार किया, उस
समय वह युद्ध अद्भुतरूपसे दिखाई देने लगा,
महापराक्रमी महारथ द्रोणाचार्य्य उन लोगोंको
बाणवर्षासे छिपकर क्रोधसे प्रज्वलित होगये।
अनन्तर उन्होंने लाल नेत्र करके छः तीच्ण
बाणोंको ग्रहण किया, और उन्हींसे सत्य
जित्का धनुष काटके वृक और उनके सार-
थीको मार डाला। अनन्तर सत्यजित्ने
और एक दृढ़ धनुष ग्रहण करके अनेक बाणोंसे
रथ, सारथी और घोड़ोंके सहित द्रोणाचार्य्यको
विद्ध किया। द्रोणाचार्य्य इसी प्रकारसे
पाञ्चाल और सत्यजित्के बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित
होकर अत्यन्त ही क्रुद्ध होगये; अनन्तर वह
शीघ्रताके सहित सत्यजित्के बधके निमित्त
अपने भयङ्कर बाणोंको चलाने लगे। एक ही
बार सहस्रों बाणोंकी वर्षा करके द्रोणाचार्य्यने
सत्यजित्के रथ, घोड़े, ध्वजा धनुष और अस्त्र
शस्त्रोंके सहित उन्हें छिपा दिया। द्रोणाचा-
र्य्यने सत्यजित्के धनुषको बार बार काटके
पृथ्वीमें गिराया, तौ भी परम अस्त्रोंको जानने-
वाले सत्यजित् उनसे युद्ध करते ही रहे। द्रोणा-
चार्य्यने उस युद्धमें सत्यजितको इस प्रकारसे
अत्यन्त कठिन कर्म्म करते देखके अर्द्धचन्द्र
बाणसे उनका सिर काट डाला। उस महा
पराक्रमी विशाल शरीरवाले पाञ्चाल योद्धा
सत्यजित्के मरनेके अनन्तर राजा युधिष्ठिर
द्रोणाचार्य्यसे भयभीत होकर वेग पूर्व्वक अपने
रथके घोड़ोंको चला कर रणभूमिसे भागने
लगे। तब पाञ्चाल, केकय, चेदी, मत्स्य, कारुष
और कोशल देशीय योद्धाओंने हर्षित होकर
राजा युधिष्ठिरकी रचा करनेके निमित्त द्रोणा-
चार्य्यको आक्रमण किया। जैसे अग्नि रूईको
भस्म करती है, वैसे ही शत्रुनाशन द्रोणाचार्य्य
राजा युधिष्ठिरको ग्रहण करनेकी इच्छासे उन
सम्पूर्ण योद्धाओंको अपने अस्त्रोंसे भस्म करने
लगे।

मत्स्यराज विराटके छोटे भाई शतानीक
उस समय द्रोणाचार्य्यको सम्पूर्ण सेना भस्म
करते देखकर उनको ओर दौड़े। उन्होंने
शिला पर घिसे हुए छः बाणोंसे २ ।

विद्ध किया, उनको अपने वाणोंसे विद्ध करके शतानीकने सिंहनाद किया। द्रोणाचार्य्यने उस ही समय चुराखसे उनके कुण्डल भूषित सिरको काटके धड़से अलग कर दिया। द्रोणाचार्य्यका ऐसा पराक्रम देख मत्स्यदेशीय योद्धा लोग रणभूमिसे भागने लगे। द्रोणाचार्य्यने मत्स्य देशीय योद्धाओंको जीतकर बार बार चेदी, कारुष, कैकय, पाञ्चाल, सृञ्जय और पाण्डव सेनाके योद्धाओंको पराजित किया। जैसे अग्नि वनको भस्म कर देती है, वैसे ही क्रुद्ध द्रोणाचार्य्यको सम्पूर्ण सेना भस्म करते हुए देख कर सृञ्जय लोग कम्पित होने लगे। वह जिस समय उत्तम धनुष ग्रहण करके शीघ्रताके सहित शत्रुओंका वध करने लगे, उस समय उनके धनुषका शब्द चारो ओर सुनाई देने लगा, द्रोणाचार्य्यके हस्तलाघवसे छूटे हुए सम्पूर्ण बाण घोड़े, हाथी, रथी और पैदल चलनेवाले वीरोंको पीड़ित तथा प्राणरहित करके पृथ्वीमें गिराने लगे। जैसे हेमन्त ऋतुके अन्तमें बार बार गर्जते हुए प्रबल वायुके झकोरेसे युक्त होकर कभी कभी बादल शिलाको वर्षा करते हैं, वैसे ही वह बार बार अपने बाणोंको चला कर शत्रुसेनाको भयभीत करते हुए सिंहनाद करने लगे। अपने सुहृद् मित्रों और अनुयायी वीर योद्धाओंको अभय करके, उन्हें हर्षित करते हुए बलवान् द्रोणाचार्य्य रणभूमिमें चारों ओर भ्रमण करने लगे। उस समय महातेजस्वी द्रोणाचार्य्यका सुवर्ण भूषित उत्तम धनुष मानो बादलोंसे युक्त बिजलीके समान सब दिशाओंमें प्रकाशित होने लगा। हे भारत! जिस समय रथ पर चढ़के वह रणभूमिमें वेगपूर्वक चारों ओर भ्रमण करने लगे, उस समय उनके रथकी ध्वजा पर स्थित अत्यन्त शोभायमान विचित्र वेदी हिमालय पर्व्वतके शिखरके समान दिखाई देने लगी। जैसे सम्पूर्ण देवतोंमें पूजित भगवान् विष्णु दान-

वोंका नाश करते हैं, वैसे ही पराक्रमी द्रोणाचार्य्य पाण्डवोंकी सेनाके शूरवीर योद्धाओंको अपने अस्त्रोंके बलसे पराजित करने लगे। सत्यवादी, बुद्धिमान्, महाबली और सत्य पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने मानो प्रलयकालके रुद्रसे बनाई हुई प्राणियोंका संहार करनेवाली रणभूमिमें रुधिरकी अत्यन्त भयङ्करी नदी उत्पन्न कर दी। उस नदीमें कवच आदिके ध्वजा सहित टूटे रथ नौका रूपी दिखाई देते थे। मरे हुए योद्धा, हाथी, और घोड़ोंके शरीर उसमें मगर घड़ियालके समान दिखाई पड़ते थे। तलवार आदि अस्त्र ही उस नदीमें मछरी रूपसे देख पड़ते थे; वीरोंकी हड्डियां उसमें कंकड़ और बालूरूपसे बोध होती थी। भेरी नगाड़े आदि बाजे कछुएके समान उस भयङ्कर नदीमें दिखाई देते थे। बड़े बड़े रथ उस नदीमें नौकाके समान बहे जाते थे। वीरोंके केश ही सेवार, बाणोंका समूह प्रवाहका वेग, धनुष स्रोत और वीरोंकी कटी हुई भुजायें सर्पके समान दिखाई देती थीं। रणभूमि प्रवाहका स्थान, और बहने तथा प्रवाहित होनेवाली वस्तु उस युद्धभूमिमें कौरव तथा सृञ्जयोंकी सेनाके सब योद्धा लोग थे। मनुष्योंका सिर उस नदीमें पत्थर रूपी और शक्ति आदि अस्त्र-शस्त्र मत्स्य विशेषके समान बोध होते थे; उस नदीमें छत्र, मुकुट और वस्त्र आदिक सामग्री फेनके समान दीख पड़ती थीं। टूटे फूटे अस्त्र-शस्त्र ही उसमें बालू रूपसे बोध हुए, हाथी क्षुद्रग्राहके समान, और हाथियों पर लगी हुई ध्वजा नदीतीरके वृक्षके समान दीख पड़ते थे। घुड़सवारोंके समूह उस नदीमें कुम्भीरोंके समान बोध होते थे। महाभयङ्करी मृत पुरुषों और मरे हुए वाहनोंके बांधसे युक्त, धार रूपिणी, वीर पुरुषोंके संहार करनेवाली और यमलोक पर्य्यन्त प्रवाहित होनेवाली उस दुर्गम्य नदीमें क्षत्रि

लोग डूबने लगे। राक्षस, कुत्ते और सियार आदि मांस भक्षण करनेवाले भयङ्कर जीव वहां पर इधर उधर भ्रमण करने लगे। युधिष्ठिरकी सेनाके सम्पूर्ण राजा लोग महारथ-द्रोणाचार्य्यको यमराजके समान पाण्डवोंकी सेनाको भस्म करते देख कर क्रुद्ध होकर उनकी ओर दौड़े। जैसे सूर्य्य अपनी प्रखर किरणोंसे सम्पूर्ण प्राणियोंको तपा कर भस्म करता है, वैसे ही द्रोणाचार्य्यने अपने तीक्ष्ण अस्त्रोंकी वर्षासे पाण्डवोंकी सेनाके शूरवीरोंका विकलकर दिया। अनन्तर जब युधिष्ठिरकी ओरके सम्पूर्ण राजाओंने मिलकर चारों ओरसे द्रोणाचार्य्यको घेर लिया, तब तुम्हारी ओरके राजा और अस्त्रशस्त्र ग्रहण करके द्रोणाचार्य्यके समीप उपस्थित होकर शत्रुओंका निवारण करने लगे। अनन्तर शिखण्डीने पाच, उत्तमौजाने तीन क्षत्रदेवने सात, सात्यकिने सौ, युधामन्युने आठ, युधिष्ठिरने बारह, धृष्टद्युम्नने दश और चेकितानने तीन बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको प्रहार किया। अनन्तर सत्य पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने रथ-सेनाको अतिक्रम करके दृढ़सेनको मारके गिरा दिया। क्षेमराजा निर्भर अस्त्र चला रहे थे, द्रोणाचार्य्यने उन्हें नव बाणोंसे विद्ध किया। वह उनके बाणोंसे पीड़ित होकर रथपरसे पृथ्वीमें गिर पड़े। द्रोणाचार्य्य सम्पूर्ण सेनाके बीचमें घूमते हुए अपनी ओरके शूरवीरोंकी रक्षा करने लगे। परन्तु वह स्वयं किसीके भी रक्षाधीन नहीं हुए। उन्होंने बारह बाणोंसे शिखण्डी, और बीस बाणोंसे उत्तमौजाको विद्ध करके एक भल्लसे वसुदानको बध कर यमपुरीको भेज दिया। अनन्तर क्षेमधर्म्माकी अस्सीबाण सुदक्षिणको छब्बीस बाण और क्षत्रदेवको भल्लके प्रहारसे पीड़ित करके रथसे पृथ्वीपर गिराया। फिर चौसठ बाणोंसे युधामन्यु और तीस बाणोंसे सात्यकिको विद्ध करके राजा युधिष्ठिरकी ओर दौड़े। अनन्तर राजसत्तम युधिष्ठिर आचार्य्य द्रोणको सम्मुख आते देख, अत्यन्त वेगवान् घोड़ोंके रथपर बैठकर शीघ्रताके सहित रणभूमिसे भागने लगे, तब उस समयमें पाञ्चालराजपुत्रने द्रोणाचार्य्यको आक्रमण किया। द्रोणाचार्य्यने घोड़े, सारथी और धनुषके सहित उनको विद्ध किया; जैसे आकाशसे ज्योतिवाले पदार्थ पृथ्वीपर गिरते हैं वैसेही पाञ्चाल वीरोंमें वह यशस्वी राजपुत्र द्रोणाचार्य्यके अस्त्रोंसे मरकर पृथ्वीमें गिर पड़ा। जब वह पराक्रमी राजपुत्र मारा गया, तब "द्रोणाचार्य्यको मारो। द्रोणाचार्य्यको बध करो!" ऐसाही महाघोर शब्द पाण्डवोंकी सेनामें सुनाई देने लगा। महा बलवान् द्रोणाचार्य्य अत्यन्त क्रुद्ध होके पाञ्चाल, मत्स्य, केकय सृञ्जय और पाण्डवोंकी सेनाके शूरवीरोंको अपने बाणोंसे अत्यन्त ही पीड़ित करने लगे। द्रोणाचार्य्य कुरुसेनामें घिर कर सात्यकि, चेकितान, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, वृद्धक्षेमसुत, चित्रसेनपुत्र, सेनाविन्दु, सुवर्च्चा और दूसरे नाना देशोंसे आये हुए अनेक राजाओंको युद्धमें पराजित किया। हे महाराज! तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग युद्धमें जयी होकर चारों ओर दौड़ते हुए पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंका बध करने लगे। हे भारत! उससमयमें पाञ्चाल मत्स्य और केकय देशीय राजा लोग द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे पीड़ित होकर इस प्रकारसे कांपने लगे, जैसे इन्द्रके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर दानव लोग कम्पित होजाते हैं।

२० अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! उस युद्धमें जब पाण्डव और पाञ्चाल सेनाके योद्धा लोग द्रोणाचार्य्यके सम्मुखसे भाग गये, तब फिर कौनसे यशस्वी पुरुष लोग सत्पुरुषोंसे सेवित

सेहबुद्धि अवलम्बन करके युद्धमें प्रवृत्त हुए थे? सम्पूर्ण सेनाके भागने पर भी जो पुरुष युद्धमें प्रवृत्त होते हैं, वेही शूर और ऊंचे स्वभाववाले वीर योद्धा हैं। कैसे आश्चर्य्यका विषय है, कि जमुहाई लेते हुए व्याघ्रके समान तथा मदचूते हुए मतवारे हाथीकी भांति युद्धमें स्थित, संग्रामभूमिमें प्राण त्यागनेके निमित्त उद्यत हुए, महा धनुर्द्धारी शत्रुओंको भयभीत करनेवाले पुरुषसिंह द्रोणाचार्य्यको देखकर, उस समयमें उनके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त होवे, ऐसा क्या कोई भी पुरुष पाण्डवोंकी सेनामें नहीं था? हे सञ्जय। कौन कौन शूरवीर योद्धा इस प्रकारसे द्रोणाचार्य्यको रणभूमिमें स्थित देखकर, उनके सम्मुख हुए थे? वह तुम मेरे समीप वर्णन करो।

सञ्जय बोले, हे राजन्। जैसे समुद्रकी प्रबल तरङ्गसे नौका विचलित होती है, वैसे ही पाञ्चाल, पाण्डव, मत्स्य, चेदी, सृञ्जय और केकय देशीय वीरोंको द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छूटे हुए अस्त्रोंसे पीड़ित होकर भागते देख रथी, घुड़सवार, गजपति और पैदल सेनाके सहित कौरवोंने सिंहनाद किया और जुझाऊ बाजोंको बजाकर रणभूमिको सिंहनाद और बाजोंके शब्दसे परिपूर्ण सेनाके बीचमें स्थित, बन्धु बान्धवोंसे युक्त राजा दुर्य्योधन पाण्डवोंकी सेनाको इस प्रकारसे विकल देख, हर्षित होकर हसते हंसते कर्णसे यह बचन बोले,—हे कर्ण यह देखो, जैसे बनके हरिणोंका समूह सिंहको देखकर भयभीत होजाता है, वैसे ही पाञ्चाल योद्धा लोग द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे पीड़ित होके युद्धभूमिसे भागे जाते हैं। मुझे ऐसा बोध नहीं होता है, कि ये लोग फिर युद्ध करेंगे। जैसे प्रचण्ड वायुके वेगसे वृक्षोंके समूह टूटके गिरते हैं, वैसे ही ये लोग द्रोणाचार्य्यके तीक्ष्ण शस्त्रोंसे विकल होके भागे जाते हैं। ये सम्पूर्ण योद्धा लोग महात्मा द्रोणाचार्य्यके सुवर्ण पङ्खयुक्त बाणोंके प्रहारसे अत्यन्त विकल होकर युद्धभूमिसे तितर बितर होकर घूमते और भागे जाते हैं। यह देखो, कितने ही शूरवीर योद्धा लोग महात्मा द्रोणाचार्य्य और शूरवीर कौरवोंके बीचमें पड़कर मण्डलाकार गतिसे इधर उधर भ्रमण कर रहे हैं। द्रोणाचार्य्यके तीक्ष्ण बाण भ्रमरोंके झुण्डके समान उन योद्धाओंके ऊपर गिरते हुए दीख पड़ते हैं, इसहीसे वे लोग युद्धभूमिसे भागते और आपसमें एक दूसरेके धक्केसे इधर उधर गिरते हुए दिखाई दे रहे हैं। हे कर्ण! यह देखो, यह महा क्रोधी भीम दूसरे सम्पूर्ण पाण्डव और सृञ्जयोंकी सेनाके शूरवीरोंसे रहित होकर मेरी सेनाके शूरवीर योद्धाओंसे घिर गया है, इसे देखकर मैं बहुत ही आनन्दित होरहा हूं। मुझे यह निश्चय बोध होरहा है, कि मूर्ख भीम आज जगत्‌को द्रोणमय देखकर राज्य और जीवनकी आशासे निराश हो रहा है।

कर्ण बोले, हे पुरुषसिंह! महाबाहु भीम जीवित रहते कदापियुद्धसे न हटेगा, और इन सम्पूर्ण योद्धाओंके सिंहनादको भी न सहेगा। मेरे विचारमें पाण्डव लोग सब ही युद्धदुर्मद, बलवान; शूर और कृतास्त्र हैं, वे लोग युद्धसे भागनेवाले नहीं हैं। विशेष करके विष, अग्नि, जुएका खेल और बनवासके क्लेशोंको स्मरण करके वे लोग कदापि युद्ध परित्याग नहीं करेंगे। यह महाबाहु अत्यन्त तेजस्वी कुन्तीपुत्र वृकोदर युद्धमें प्रवृत्त होकर हम लोगोंके मुख्य मुख्य महारथ वीरोंका संहार करेगा। तलवार, धनुष, शक्ति, घोड़े, हाथी, मनुष्य, रथ और लोहमय दण्डसे हम लोगोंकी सेनाके समूहको नष्ट करेगा! सात्यकि प्रभृति महारथ योद्धा और पाञ्चाल, केकय, मत्स्य तथा पाण्डव सेनाके मुख्य मुख्य शूरवीर पुरुष उसका अनुमान कर रहे हैं। विशेष करके

दूसरे पाण्डव लोग भी शूरवीर, बलवान्, पराक्रमी तथा महारथ हैं, और उन सब लोगोंको युद्धके निमित्त उत्तेजित करनेवाला क्रोधी भीम है। इससे ये कुरुश्रेष्ठ पाण्डव लोग भीमको आगेकर चारों ओरसे द्रोणाचार्य्यको ऐसे आक्रमण करेंगे। जैसे बादल सूर्य्यको घेर-कर छिपा देते हैं। जैसे मुमुर्षु फतिङ्गे एक बार ही दीपकपर गिरते हैं, वैसे ही वे सब लोग एकत्रित होकर द्रोणाचार्य्यके समीप जाके अवश्य ही उन्हें अपने अस्त्रोंसे पीड़ित करेंगे। वे सब ही कृतास्त्र हैं, इससे द्रोणाचार्य्यको निवारण करनेमें अवश्य ही समर्थ होंगे, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। मैं बोध करता हूं, कि द्रोणाचार्य्यके ऊपर बहुत ही कठिन भार अर्पण किया गया है। इससे चलिये, जिस स्थान पर द्रोणाचार्य्य हैं, वहां पर ही हम लोग भी गमन करें। जिससे वे लोग वृकोंमें गजराजरूपी यशस्वी द्रोणाचार्य्यके युद्धभूमिमें वध न करसकें।

सञ्जय बोले, महाराज। राजा दुर्य्योधन ने कर्णका वचन सुनकर भाइयोंके साथ शीघ्रताके सहित द्रोणाचार्य्यके समीप जानेके निमित्त प्रस्थान किया। वहां पर नाना वर्णोंके घोड़ों पर चढ़े हुए द्रोणाचार्य्यके वधकी इच्छा करनेवाले तथा युद्धमें प्रवृत्त हुए पाण्डवोंकी सेनाके शूरवीरोंका महाघोर शब्द सुनाई देने लगा।

२१ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! भीम प्रभृति जो सब शूरवीर योद्धा लोग क्रुद्ध करनेके निमित्त द्रोणाचार्य्यके सम्मुख उपस्थित हुए थे, उन सम्पूर्ण शूरवीरोंके रथके चिन्ह तुम मेरे समीप वर्णन करो।

सञ्जय बोले, भीमसेनने चित्र वर्ण मृगोके समान घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़के गमन किया। उसे देख कर सात्यकि स्वर्ण वर्णवाले घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़के युद्ध करनेके निमित्त द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े, पराक्रमी युधामन्यु चातक पक्षीके समान वर्णवाले घोड़ोंसे युक्त रथपर चढ़के क्रोधपूर्व्वक द्रोणाचार्य्यके रथकी ओर दौड़े। पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्न सुवर्णभूषित पारावतके रूपके समान घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़के युद्धमें प्रवृत्त हुए। पराक्रमी क्षत्रधर्म्म पिताकी सहायता करनेके निमित्त स्वर्ण वर्णवाले घोड़ोंसे युक्त रथपर चढ़के युद्ध करनेके निमित्त चले। शिखण्डी-पुत्र क्षत्रदेव पद्मपत्र वर्णवाले घोड़ोंके रथ पर चढ़े। शुक पक्षीके समान वर्णवाले काम्बोज देशीय घोड़े नकुलके रथको लेकर तुम्हारी सेनाकी ओर दौड़े। बादलके रूपवाले घोड़े प्रसन्न और क्रुद्ध होकर उत्तमौजाके रथको लेकर द्रोणाचार्य्यकी ओर चले। तीतर पक्षीके समान शीघ्रगामी घोड़े उस घोर सग्राममें शस्त्रधारी सहदेवके रथको लेकर द्रोणाचार्य्यकी ओर चले। वायुके समान वेग-शील भयानक श्यामवर्ण पूंछ और हाथी दांतके समान रूपवाले घोड़े पुरुषसिंह युधिष्ठिरके रथको लेकर युद्धके निमित्त रणभूमिमें चलने लगे, सम्पूर्ण सेनाके शूरवीर योद्धा लोग वायुवेगी घोड़ों पर चढ़ कर राजा युधिष्ठिरका अनुगमन करने लगे। सुवर्ण भूषित कवच धारण करके राजा द्रुपद उस सम्पूर्ण सेनाके सहित महाराज युधिष्ठिरके पीछे पीछे चले। महाधनुर्द्धारी राजा द्रुपद युद्धभूमिमें सब प्रकारके शब्दोंको सहनेमें समर्थ मस्तकमें चिन्ह विशेषसे युक्त उत्तम घोड़ोंके सहित रथ पर चढ़के युद्ध करनेके निमित्त कौरवोंकी सेनाकी ओर चले। राजा विराट सम्पूर्ण महारथ वीरोंके सहित उनके अनुगामी हुए। शिखण्डी और धृष्टकेतु—ये लोग

सहित मत्स्यराज विराटका अनुगमन करने लगे। पाटलि पुष्प वर्णके घोड़े शत्रुनाशन विराटके रथमें अत्यन्त ही शोभित होने लगे। हरिद्रवर्णके घोड़े विराटपुत्र शंखके रथमें जोते गये। कैकय राजपांचों भाई वीरबधूटी वर्णके घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढके युद्धके निमित्त प्रस्थान करने लगे; वे पांचो भाई सुवर्णके समान प्रकाशित होने लगे, उनके रथकी लाल ध्वजा थीं, सुवर्णकी माला गलेमें डाले हुए सब युद्धविद्याके जाननेवाले वे पांचो भाई वर्म्म धारण करके कुरु सेनाके वीरोंके ऊपर अपने वाणोंकी वर्षाते हुए इस प्रकारसे गमन करने लगे, जैसे बादल आकाशसे जलकी वर्षा करता है। आपके पत्रके समान वर्ण वाले घोड़े रथ सहित शिखण्डीको लेकर युद्धभूमिमें द्रोणाचार्य्यकी ओर चले; बारह हजार पाञ्चाल योद्धाओंमेंसे छः हजार शूरवीर योद्धा शिखण्डीके अनुगामी हुए। हे भारत। सारङ्गके समान शवलवर्णके घोड़े शिशुपालपुत्र धृष्टकेतुको क्रीडा करते हुए रथ सहित लेकर कुरुसेनाकी ओर चलने लगे। अत्यन्त बलवान् चेदिराज धृष्टकेतु काम्बोजदेशीय खाकी घोड़ोंसे युक्त रथपर चढ़के कौरवोंकी सेनाकी ओर दौड़े। पलाल धूम्रवर्णके शीघ्रगामी घोड़े कैकयराज सुकुमार बृहत् चत्रके रथमें जोते गये। मल्लिकालोचन, पद्मवर्णवाले वाह्लिकदेशीय सुन्दर अलङ्कारोंसे भूषित घोड़े शिखण्डीपुत्र चत्रदेवको रथ सहित लेकर युद्धभूमिकी ओर चले। हे राजेन्द्र। क्षौम ग्रीवावाले, मन और वायुके समान शीघ्र गमन करनेवाले घोड़े प्रतिविन्ध्यके रथमें जोते गये। सुवर्णभूषित पीतवर्णके घोड़े सेनाविन्दको रथ सहित लेकर कुरुसेनाकी ओर चले। क्रौञ्चपचीके वर्णवाले घोड़े महारथ काशिराजपुत्रके रथमें जोते गये। माषपुष्पके समान वर्णवाले घोड़े भीमसेनके पुत्र सुतसोमके रथमें जोते गये। सहस्र सोमके समान वह भीमपुत्र कौरवोंके उपयेन्द्र नामकी पुरीमें सोमलताके बीच उत्पन्न हुए थे, इस ही कारणसे उनका नाम सुतसोम हुआ। शालपुष्प वर्णके घोड़े नकुलपुत्र शतानीकके रथमें जोते गये। मोरकी ग्रीवाके वर्ण समान उत्तम घोड़े सुवर्ण-भूषित वस्त्र अलङ्कारोंसे सज्जित होकर पुरुषसिंह द्रौपदीपुत्र यतकर्म्माको लेकर द्रोणाचार्य्यकी ओर चले। चापपत्रके समान वर्णवाले उत्तम घोड़े युद्धमें अर्ज्जुनके समान पराक्रमी शस्त्रोंके जाननेवाले द्रौपदीपुत्र श्रुतकीर्त्तिको लेकर युद्धभूमिकी ओर चले। जो युद्धभूमिमें कृष्ण और अर्ज्जुनसे भी अधिक पराक्रमका कार्य करता है, उस अभिमन्युको पिङ्गलवर्णके घोड़े रथ सहित द्रोणाचार्य्यकी ओर लेजाने लगे। पलालकाण्डवर्णके सुन्दर घोड़े उस युद्धमें पराक्रमी वाह्लीकके रथमें जोते हुए दीख पड़ते थे। जिन्होंने सम्पूर्ण धार्त्तराष्ट्रोंको त्याग कर युद्धमें पाण्डवोंका पक्ष-ग्रहण किया है, उस युयुत्सुके रथमें विशाल शरीरवाले घोड़े जोते हुए दिखाई देने लगे। श्यामवर्णके चरणवाले घोड़े कुमार सौचित्तिके रथमें जोते हुए रणभूमिमें भ्रमण करने लगे। पीठपर सुवर्णमय वस्त्रोंसे युक्त पीतवर्ण सुवर्ण माला धारण करनेवाले घोड़े श्रेणिमानको रथ सहित लेकर युद्धभूमिमें उपस्थित हुए। लालवर्णवाले घोड़े अस्त्रविद्या, धनुर्वेद और ब्राह्मवेदके जाननेवाले सत्यधृतिके रथको लेकर युद्धभूमिमें उपस्थित हुए। जिस सेनापति पाञ्चाल धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यको वध करनेके निमित्त अपने हिस्सेमें चुना था, उस धृष्टद्युम्नके रथमें पारावत वर्णके घोड़े जोते गये। जब धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यकी ओर चले, तब सत्यधृति, सौचित्ति, श्रेणिमान, वसुदान और काशिराजके पुत्र विभु—ये सब पराक्रमी योद्धा धृष्टद्युम्नके अनुगामी हुए। प्रभद्रक और काम्बोजदेशीय छः हजार योद्धा लोग वेगशील,सुवर्णकी माला धारण करनेवाले

नाना भांतिके मुख्य मुख्य घोड़ोंसे युक्त सुवर्णभूषित रथोंपर चढ़के धृष्टद्युम्नके पीछे पीछे चलने लगे। पीतवर्णके घोड़ोंसे युक्त रथपर चढ़के पराक्रमी चेकितान युद्धभूमिकी ओर चलने लगे। अर्जुनके मामा महारथ कुन्तिभोज राजपुरुजित् इन्द्र आयुधवर्ण घोड़ोंसे युक्त रथपर चढ़के युद्ध करनेके निमित्त शत्रुसेनाकी ओर चले। आकाश वर्णके समान घोड़े सुवर्णभूषित वस्त्रोंसे शोभित होकर राजा रोचमानके रथको लेकर युद्धभूमिमें भ्रमण करते हुए दीखने लगे। श्यामवर्ण चरण कपूरके समान सफेद उत्तम घोड़ोंसे युक्त रथपर चढ़के जरासन्धपुत्र सहदेव चले। बाजपक्षीके समान वेगशील चित्त घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़के पराक्रमी सुदाम चले। शशलोहितवर्ण रोमराजीसे युक्त घोड़ोंके रथपर चढ़के पाञ्चाल देशीय गोपतिके पुत्र सिंहसेन द्रोणाचार्य्यकी ओर चले। पाञ्चाल शूरवीर योद्धाओंमें विख्यात पुरुषसिंह जनमेजय सर्षप पुष्प वर्णवाले घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़के युद्धभूमिमें कुरुसेनाके सम्मुख द्रोणाचार्य्यके समीप उपस्थित हुए। दधिवर्ण विशाल शरीरवाले सुवर्ण मालासे शोभित उत्तम घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़के पराक्रमी पाञ्चाल्य चले। भद्रक देशीय शरकाण्डके समान पद्मवर्ण पराक्रमी घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़के महारथ दण्डधार चले। लालवर्णवाले घोड़े उछलते हुए रथ सहित व्याघ्रदत्तको लेकर युद्धभूमिकी ओर चलने लगे। विचित्र माल्य भूषित श्यामवर्णवाले घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़के पाञ्चाल योद्धाओंमें मुख्य सुधन्वा चलने लगे। इन्द्रके वज्र समान स्पर्श करनेवाले और वीरवधूटी कीटके समानवर्णवाले घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़के चित्रायुध कुरुसेनाकी ओर चले। सुवर्णमाला धारी चक्रवाकके समान रूपवाले घोड़ोंसे युक्त रथपर चढ़के कोशलराजपुत्र सुक्षत्र शत्रुसेनासे युद्धकरनेके निमित्त रणभूमिमें उपस्थित हुए। शवलवर्ण उत्तम और विशाल शरीरवाले घोड़ोंके रथपर चढ़के युद्धभूमिमें क्षेमपुत्र सत्यधृति उपस्थित हुए। शुक्ल शुक्लवर्णवाले धनुष, अस्त्र, घोड़े और शुक्लवर्णवाले रथ पर चढ़के युद्धके निमित्त चले! शशाङ्कके समान समुद्रसे उत्पन्न हुए घोड़े समुद्रसेनपुत्र महातेजस्वी चन्द्रसेनके रथमें जोते हुए दिखाई पड़ते थे। काले पत्थरके समान वर्णवाले चित्र विचित्र मालाओंसे शोभित घोड़ोंसे युक्त उत्तम रथ पर चढ़के चित्ररथ शैब्य युद्धके निमित्त शत्रुओंकी ओर चले। कलायपुष्पके रूपके समान श्वेत और लाल रोमराजीसे युक्त उत्तम घोड़ोंके रथ पर चढ़के युद्ध दुर्म्मद रथसेन युद्ध करनेके निमित्त चलने लगे। जिसको सब लोग पुरुषोंमें अधिक पराक्रमी कहके वर्णन करते है, उस पट्टचर हन्ता राजाको शुक्लवर्णवाले घोड़े रथ सहित लेकर युद्धभूमिमें उपस्थित हुए। किंशुक पुष्पके समान रूपवाले उत्तम घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़कर विचित्र अस्त्र, माला, ध्वजा और विचित्र वर्म्मवाले, पराक्रमी चित्रायुध चले नीलवर्णके घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़के नीलराजा काली ध्वजा, काला कवच और नीलवर्णवाले अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके शत्रुसेनाकी ओर दौड़े। चित्र नामक राजा रत्नचिन्हित आश्चर्य्य जनक वर्म्म, ध्वजा, धनुष और घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़के युद्धके निमित्त शत्रुसेनाकी ओर चले। पुष्कर वर्ण घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़के रोचमानके पुत्र हेमवर्ण शत्रुओंकी ओर शीघ्रतासे दौड़े। योध और भद्रकार देशीय श्वेतदण्ड विशिष्ट कुक्कुटाण्ड वर्णवाले घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़के दण्डकेतु चले, कृष्णके हाथसे जिसके पिता मारे गये,तथा कपाट टूटे और बन्धुबान्धव भागे थे; जिन्होंने उसी कारणसे भीष्म, बलराम, द्रोणाचार्य्य और

कृपाचार्य्यसे अस्त्रविद्या सीख कर कृतिन, कार्ण अर्ज्जुन और कृष्णके समान होके द्वारिका पुरीको नष्ट करने तथा सम्पूर्ण पृथ्वीको जीतनेकी इच्छाकी थी,—जो बुद्धिमान् हितैषी सुहृद्मित्रोंके निवारण करने पर कृष्णके सङ्ग शत्रुता त्यागके अपने राज्यका शासन करते हैं, वही ऐश्वर्य्य और पराक्रमसे युक्त पाण्ड्य राज सागर चिन्हित ध्वजाके सहित वैदूर्य्यमणि और चन्द्रकिरणके समान प्रकाशमान् घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़के अपने दिव्य धनुषको खींचते हुए द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। बासक पुष्पके समान वर्णवाले उत्तम घोड़े पाण्ड्यराजके अनुगामी चौदह हजार महारथ शूरवीरोंको लेकर द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। नाना वर्ण और नाना प्रकारके मुखवाले घोड़े रथचक्र चिन्हित ध्वजासे युक्त घटोत्कचकी रथ सहित लेकर शत्रु सेनाकी ओर चले। अकेले ही भरतवंशीय सम्पूर्ण पुरुषोंके मतको उल्लङ्घन और सम्पूर्ण अभीष्ट वस्तुओंको त्याग कर भक्तिपूर्व्वक युधिष्ठिरकी सहायताके निमित्त उनकी ओर हुए हैं, महा पराक्रमी बड़े शरीरवाले घोड़े ऊंची ध्वजासे युक्त सुवर्णमय रथके सहित लाल्मनेत्रवाले महाबाहु बृहन्तको लेकर युद्धभूमिकी ओर चले। सुवर्णके समान रूपवाले उत्तम घोड़ोंसे युक्त रथोंपर चढ़के राजा युधिष्ठिरके पृष्ठरक्षक शूरवीर योद्धा लोग युद्ध करनेके निमित्त शत्रु सेनाकी ओर चले। देवरूपी दूसरे कितने ही प्रभद्रक योद्धा लोग नानावर्णके उत्तम घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़के युद्धके निमित्त द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। हे राजेन्द्र! भीमसेनके सहित वह सब सुवर्ण ध्वजासे युक्त प्रभद्रक योद्धा लोग ऐसे शोभित हुए जैसे इन्द्रके सहित सम्पूर्ण देवता शोभायमान् लगते हैं। सेनापति धृष्टद्युम्न सम्पूर्ण सेनाको अतिक्रम करके सब शूरवीरोंके सहित प्रकाशित होने लगे। परन्तु द्रोणाचार्य्य उन सब शूरवीरोंको अतिक्रम करके अत्यन्त प्रकाशित हुए। हे राजेन्द्र! द्रोणाचार्य्यके उत्तम ध्वजा और सुवर्णमय कमण्डलु ही शोभित होने लगा। भीमसेनकी वैदूर्य्यमणि और सुवर्णभूषित सिंहचिन्हमें ध्वजा भी ही प्रकाशित होने लगी। कुरुश्रेष्ठ महातेजस्वी युधिष्ठिरकी ग्रहोंके चित्र तथा सुवर्ण चन्द्रमाके चिन्हसे युक्त उत्तम ध्वजा अत्यन्त सुन्दर दिखाई देने लगी। राजा युधिष्ठिर ध्वजा पर नन्द, उपनन्दनामके दो दिव्य मृदङ्ग थे बिना बजाये ही यन्त्रके द्वारा मधुर शब्दसे बजते हुये सब शूरवीरोंको हर्षित करने नकुलके रथ पर सुवर्णमय दण्डसे युक्त ऊंची शरभ चिन्हसे युक्त भयङ्कर ध्वजा देने लगी। सहदेवके रथ पर घण्टा और विशिष्ट शत्रुओंके शोकोंके शोकको ४८। स्वर्ण भूषित हंसचिन्हसे युक्त उत्तम दिखाई देने लगी। द्रौपदीपुत्र पांचो रथकी ध्वजा पर धर्म्म, वायु, इन्द्र, और अश्विनी कुमारोंकी प्रतिमा दीख पड़ अभिमन्युके रथकी ध्वजा पर उज्वल हुए स्वर्णके समान हिरण्मय शारङ्ग मूर्त्ति दीखने लगी। हे राजेन्द्र! घट रथ पर गिद्ध पक्षीके चिन्हसे युक्त ध्वजा शित होती थी। पहिले रावणके घोड़े कामगामी थे, वैसे ही घटोत्कचके घो प्रकाशित होने लगे।

२२ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! भीमसेन आदि जो सम्पूर्ण क्षत्रिय योद्धा युद्धमें उ हुए थे, वे सब देवताओंकी सेनाको पीड़ित कर सकते हैं। पुरुष प्रारब्धके वशमें होकर कार्य्योंके करनेमें प्रवृत्त हो

है और प्रारब्धहीसे नाना प्रकारके पुरुषार्थ प्रकाशित होते हैं। जो युधिष्ठिर बहुत दिनों एक जटाधारी होकर बन बनमें भ्रमण करते थे, और सब पुरुषोंसे अविदित होकर अपना दिन काटते थे, इस समय वेही दैवी संयोगसे युद्धके निमित्त बड़ी भारी सेना संग्रह करके रणभूमिमें उपस्थित हुए हैं। तब मेरे पुत्रोंके निमित्त इससे बढ़के और कौन सा अशुभ कर्म्म हो सकेगा? मनुष्य निश्चय ही प्रारब्धके अनुसार जन्म ग्रहण करता है, क्योंकि स्वयं जिस वस्तुकी इच्छा नहीं करता, प्रारब्ध उसे अवश्य ही प्रतिपालन कर देती है। देखो, युधिष्ठिर जुएके खेलमें हारके वनवासी हुए थे, और अब फिर प्रारब्धसे ही सहाय-सम्पन्न हुए हैं मूर्ख दुर्य्योधनने पहिले मेरे समीपमें यह वचन कहा था, कि "हे तात। इस समय कैकयराज, काशिराज और सब योद्धाओंके सहित कोशलराज मेरी ओर उपस्थित हैं, चेदिदेशीय शूरवीर और वङ्ग-देशीय सम्पूर्ण योद्धा मेरी ओर होगये हैं, पृथ्वीके अधिकांश लोग तथा अनेक राजा जितने मेरी ओर हैं, उतने पाण्डवोंकी ओर नहीं है। हे सूत। आज उसी सेनाके बीचमें रहकर भी जब द्रोणाचार्य्य रणभूमिमें धृष्टद्युम्नके हाथसे मारे गये, तब भाग्यके अतिरिक्त और क्या कहा जायगा? प्रारब्ध ही बलवान् है। नहीं तो सम्पूर्ण राजाओंके बीच रहनेवाले सदा युद्धकार्य्योंमें वन्दनीय, सब अस्त्रोंके जाननेवाले द्रोणाचार्य्यकी मृत्युकी कौन सी सम्भावना थी? मैं भीष्म और द्रोणाचार्य्यकी मृत्युका वृत्तान्त सुनके अत्यन्त ही सन्तापित और महामोहसे मुग्ध होगया हूं; अब मुझे जीवित रहनेकी इच्छा नहीं होती है।

हे तात। विदुरने मुझे पुत्रप्रेमके वशमें देखकर जो कुछ वचन कहा था मेरे और दुर्य्योधनके पक्षमें वेही सम्पूर्ण वचन दृष्टिगोचर हो रहे हैं। उनके वचनके अनुसार यदि मैं दुर्य्योधनको परित्याग करके शेष पुत्रोंके रक्षा करनेकी इच्छा करता, तो यह महा नीच कर्म्म क्यों उपस्थित होता? ऐसा करनेहीसे दूसरे सब पुत्र भी जीवित रहते। जो मनुष्य धर्म्म त्यागकर अर्थकी इच्छा करता है। वह लोक परलोक दोनोंसे रहित होकर क्षुद्र-भावको प्राप्त होता है। हे सञ्जय! इस समय मेरे प्रधान पुरुषोंका विनाश होनेसे इस राष्ट्रके सम्पूर्ण पुरुषोंका उत्साह भङ्ग होगया। सुतरां अब जो कोई शूरवीर पुरुष युद्धसे जीता बचेगा, ऐसी आशा मुझे नहीं होती हैं। जो क्षमाशील वीरधुरीण धर्म्मात्मा पुरुष भीष्म और द्रोणाचार्य्य मेरे सदा सर्व्वदा उपजीवी थे, जब वे लोग युद्धमें मारे गये, तब अब बाकी बचे हुए शूरवीर योद्धा लोग कैसे युद्धभूमिमें जीवित बच सकते हैं? हे सञ्जय? इस समय स्पष्टरूपसे वर्णन करो, कि किस प्रकारसे युद्ध हुआ था किन किन शूरवीरोंने युद्ध किया था? कौन कौन शूरवीर योद्धा रणभूमिमें मारे गये और किन अधम पुरुषोंने युद्धसे पलायन किया था। रथियोंमें श्रेष्ठ अर्जुनने जो कुछ इस महा घोर युद्धमें कर्म्म किया है, वह भी तुम मेरे समीपमें वर्णन करो। अर्जुन और भीम इन दोनों भाइयोंसे ही मुझे बहुत भय लगता है। हे सञ्जय। पाण्डवोंके युद्धमें प्रवृत्त होनेपर मेरी सेनामें जो लगातार शूरवीरोंका नाश होता है, वह किस प्रकारसे हुआ था, उसे तुम मेरे समीपमें वर्णन करो। हे तात! जब पाण्डव लोग युद्धके निमित्त रणभूमिमें उप-स्थित हुए थे, उस समयमें तुम लोगोंका चित्त कैसा हुआ था? और मेरी सेनाके किन किन शूरवीर पुरुषोंने उन्हें निवारण किया था?

२३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, जब सम्पूर्ण सेनाके सहित पाण्डवोंने द्रोणाचार्य्यको आक्रमण किया, उस समय मानो बादलोंके समूहमें सूर्य्यके समान छिपे हुए द्रोणाचार्य्यको उन सब वीरोंके अस्त्र शस्त्रोंकी बर्षासे छिपे हुए देखकर हम लोगोंको महाभय उत्पन्न हुआ। पाण्डवोंकी सेनाके चलनेसे जो धूलि उड़ी उससे तुम्हारी सेना छिप गई, उस समय हम लोगोंकी आंखोंसे कुछ भी नहीं दीख पड़ता था, हम लोगोंने समझा कि द्रोणाचार्य्य मारे गये, दुर्य्योधनने उन महा धनुर्द्धारी शूर-वीरोंको न करने योग्य कर्म्मको करनेके निमित्त उत्सुक देखकर अपनी सेनाके पुरुषोंसे यह वचन बोले, हे क्षत्रिय पुरुषो। तुम लोग अपनी शक्ति, उत्साह, पराक्रम और अवसरके अनुसार पाण्डवोंकी सेनाके वीरोंको निवारण करो अनन्तर तुम्हारे पुत्र दुर्म्मर्षणने भीमसेनको सम्मुख पहुंचा हुआ देखकर, द्रोणाचार्य्यकी प्राणरक्षा करनेके निमित्त अपने बाणोंको चलाते हुए भीमसेनकी ओर दौड़े और यमराजके समान क्रुद्ध होकर उन्हें अपने बाणोंकी वर्षासे छिपा दिया। भीमसेन भी अपने बाणोंसे उनको पीड़ित करने लगे, इसी प्रकारसे महाघोर युद्ध होने लगा। ऐसे ही तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण राजा लोग राज्य और प्राणकी आशा त्याग कर दुर्य्योधनकी आज्ञासे शत्रुओंकी ओर दौड़े। कृतवर्म्मा द्रोणाचार्य्यके सम्मुखमें आये हुए पराक्रमी सात्यकिको निवारण करने लगे। सात्यकि भी क्रुद्ध होकर अपने बाणोंकी वर्षासे कृतवर्म्माको निवारण करने लगे। जैसे एक मतवारा हाथी दूसरे मतवारे हाथीको आक्रमण करता है, वैसे ही कृतवर्म्मा सात्यकिको आक्रमण करके उन्हें अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे। सिन्धुराज प्रचण्ड धनुष धारण करनेवाले पराक्रमी जयद्रथ यत्नवान् होकर महाधनुर्द्धारी क्षत्रधर्म्माको निवारण करने लगे। क्षत्रधर्म्माने सिन्धुराज जयद्रथके बाणोंसे विकल होकर अपने तीक्ष्ण बाणोंको चला कर उनका धनुष और रथकी ध्वजा काट कर फिर दश बाणोंसे उनके समूह मर्म्म स्थानोंको विद्ध किया। राजा जयद्रथ शीघ्रतापूर्व्वक दूसरा धनुष ग्रहण करके फिर क्षत्रधर्म्माको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध करने लगे। सुबाहु यत्नवान् होकर पाण्डवोंकी ओरसे युद्धके निमित्त उपस्थित निज भ्राता पराक्रमी युयुत्सुको निवारण करने लगे। युयुत्सु ने अपने तीक्ष्ण बाणोंसे सुबाहुके परिघ समान भुजाओंको काट दिया, जैसे तट समुद्रके वेगको निवारण करता है, वैसे ही पराक्रमी मद्र पाण्डवोंमें श्रेष्ठ धर्म्मात्मा राजा युधिष्ठिरको निवारण करने लगे। धर्म्मराज युधिष्ठिर मर्म्मभेदी बाणोंसे मद्रराज शल्यको अत्यन्त ही विद्ध करने लगे। मद्रराज शल्य चौंसठ बाणोंसे राजा युधिष्ठिरको विद्ध करके बारम्बार गर्ज्जते हुए सिंहनाद करने लगे। अनन्तर युधिष्ठिरने दो क्षुरास्त्रसे मद्रराजके रथकी ध्वजा और उनका धनुष काट दिया, उनके ऐसे कर्म्मको देख कर सम्पूर्ण सेनाके पुरुष विस्मित हुए। राजा बाह्लिक अपनी सेनाके युक्त होकर तीक्ष्ण बाणोंसे राजा द्रुपदको सेनाके सहित निवारण करने लगे। जैसे दो मतवारे गजयूथपति हाथियोंका युद्ध होता है, वैसे ही सेनाके सहित उन दोनों महारथोंका संग्राम होने लगा। जैसे पहिले समयमें इन्द्र और अग्निने राजा बलिके सङ्ग युद्ध किया था, वैसे ही सम्पूर्ण सेनाके सहित अवन्तिराज विन्द और अनुविन्द मत्स्यराज बिराट और उनकी सेनाके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे, उससे मत्स्यदेशीय सेनाके सङ्ग कैकय देशीय सेनाका देवता और असुरोंके युद्धके समान महाघोर भयङ्कर संग्राम होने लगा। दोनों सेनाके रथी गजपति घुड़सवार

ौर पैदल चलनेवाले वीर योद्धा लोग निर्भय चत्तसे युद्ध करने लगे। सेनापति भूतकर्म्मा ाक्रमी नकुल पुत्रकी द्रोणाचार्य्यकी ओर द्धके निमित्त आता हुआ देखकर अपने तीक्ष्ण ाणोंसे निवारण करने लगे। अनन्तर नकुल-त्र शतानीकने तीन भल्लसे भूतकर्म्माकी दोनों जा और सिरको काट डाला। विविंशतिने राक्रमी सुतसोमको द्रोणाचार्य्यकी ओर आते खकर उन्हें अपने अस्त्रोंसे निवारण करने ागे। पराक्रमी सुतसोमने क्रुद्ध होकर शीघ्र-ाके सहित विविंशतिको क्षत-विक्षत करके र उनको सम्मुखसे आगे नहीं बढ़ने दिया; ोमरथने लोहमय छः बाणोंसे घोड़े और सारथी सहित साल्वको यमपुरीमें भेज दिया। हे ाजन्! चित्रसेन पुत्र मयूर-वर्णके घोड़ोंसे त्त रथ पर चढ़के तुम्हारे पुत्र क्षत्रवर्म्माको ावारण करने लगे। आपसमें एक दूसरेके धकी इच्छा करते हुए वे तुम्हारे दोनों पुत्र पने अपने पिताके प्रियकार्य्य करनेकी इच्छासे मुल युद्ध करने लगे। अश्वत्थामा उस युद्ध-मिमें प्रतिविन्ध्यको सम्मुखमें स्थित देखके पने पिता द्रोणाचार्य्यकी मानरक्षाके निमित्त न्हें युद्धसे निवारण करने लगे। प्रतिविन्ध्य पताकी मानरक्षाके निमित्त युद्धमें स्थित संह लांगूलवाली ध्वजासे युक्त क्रोधी अश्व-ामाको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे। हे ाजेन्द्र जैसे खेतमें किसान लोग बीज बोते , वैसे ही द्रौपदी पुत्रोंने अपने बाणोंकी र्षासे अश्वत्थामाको छिपा दिया। दुःशासनपुत्रने ्रौपदीके गर्भसे उत्पन्न हुए, अर्ज्जुनपुत्र श्रुत-ोर्त्तिको द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़ते हुए ेखकर उसे अपने बाणोंसे निवारण किया। ष्णके समान पराक्रमी द्रौपदीपुत्र श्रुतकीर्त्ति ीन भल्लसे दुःशासनपुत्रके रथके घोड़े, धनुष ौर सारथीको काटके द्रोणाचार्य्यकी ओर ाने लगे। हे राजन्! जो दोनों सेनाके बीच महा पराक्रमी योद्धा थे, उस पट्टचरहन्ताको लक्ष्मण निवारण करने लगे परन्तु वह पट्टचर हन्ता लक्ष्मणके धनुष और रथकी ध्वजाको काटके उनके ऊपर बाणोंकी वर्षा करते हुए अत्यन्त ही शोभित होने लगे। महा बुद्धिमान् विकर्ण युद्धभूमिमें दौड़ते हुए याज्ञसेनिपुत्र शिखण्डीको निवारण करने लगे शिखण्डीने अपने बाणोंकी वर्षासे उन्हें छिपा दिया। तुम्हारे पुत्र बलवान् विकर्ण भी अपने बाणोंसे शिखण्डीको अत्यन्त पीड़ित करके युद्धभूमिमें शोभित हुए। अङ्गद युद्धभूमिमें द्रोणाचार्य्यकी ओर उत्तमौजाको आते देखकर उन्हें अपने अस्त्रोंसे निवारण करने लगे। उन दोनोंके विचित्र संग्रामको देखके सम्पूर्ण सेनाके पुरुष प्रसन्न हुए। महाधनुर्द्धारी बलवान् दुर्म्मुख पुरुजितको द्रोणाचार्य्यके समीप उपस्थित देखकर वत्सदन्त बाणोंसे निवारण करने लगे। पुरुजित्ने नाराच अस्त्रसे दुर्म्मुखके दोनों भौंके मध्यस्थलमें प्रहार किया। उस बाणके भ्रूमध्यमें विद्ध होनेपर दुर्म्मुखका मस्तक मृणालयुक्त पद्मपुष्पके समान शोभित होने लगा कर्णने द्रोणाचार्य्यकी ओर केकयराज पाचो भाइयोंको आता हुआ देखकर उन्हें अपने बाणोंसे छिपा दिया। वे पाचो भ्राता क्रुद्ध होकर कर्णके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। कर्ण भी अपने बाणोंके जालसे उन लोगोंको बार बार छिपाने लगे। कर्ण और पाचो भाई केकयराज रथ घोड़ोंके सहित बाणोंकी वर्षासे इस प्रकार छिप गये, कि तनिक भी न दीख पड़ते थे! दुर्ज्जय, जय, और विजय तुम्हारे ये तीनों पुत्र नीलराज काश्मिराज और जयसेनको निवारण करने लगे। जैसे भालु, भैंसा और वृषभके सङ्ग सिंह व्याघ्र और तेंदुएका युद्ध होता है, वैसे ही उन लोगोंका महाघोर संग्राम होने लगा। उसे देखके दर्शक लोग अत्यन्त ही प्रसन्न

क्षेमभूर्त्ति और वृहत ये दोनों भाई युद्धभूमिमें द्रोणाचार्य्यकी ओर सात्वतको दौड़े आते देखके उन्हें अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे। जैसे बनमें दो मतवारे हाथियोंके सङ्ग अकेले ही सिंहका युद्ध होता है, वैसे ही उन लोगोंका अत्यन्त आश्चर्य्य युक्त संग्राम होने लगा। चेदि-राज क्रुद्ध होकर द्रोणाचार्य्यकी ओर युद्धके निमित्त अम्बष्टराजको बढ़े आते देखकर उन्हें अपने बाणोंसे निवारण करने लगे। अनन्तर अम्बष्ट राजने अस्थिभेदिनी शलाकासे उन्हें अत्यन्त ही बिद्ध किया; उससे चेदिराज धनुष बाण त्यागके रथसे पृथ्वी पर गिर पड़े। महा परा-क्रमी कृपाचार्य्य क्षुद्रक बाणसे वृष्णिवंशीय वृद्धक्षेमपुत्रको निवारण करने लगे। जिन्होंने विचित्र योद्धा कृपाचार्य्य और वृद्धक्षेमपुत्रके युद्धको देखा है, उन पुरुषोंका चित्त उन्हीं दोनों वीरोंके युद्धकौशलके देखनेमें लगा रहता है; उनका चित्त किसी ओर उस समयमें नहीं जाता था। द्रोणाचार्य्यके यशकी वृद्धिकी अभि-लाषसे सोमदत्तपुत्र भूरिश्रवा राजा मणिमा-नको युद्धमें द्रोणाचार्य्यके सम्मुखहीमें निवारण करने लगे। राजा मणिमानने शीघ्रताके सहित रथकी ध्वजा, धनुष सारथी और उनके छत्रको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे काटके गिरा दिया। अनन्तर शत्रुनाशन सोमदत्तपुत्र भूरिश्रवा शीघ्रताके सहित रथसे कूदे और हाथमें तलवार ग्रहण करके शीघ्रही मणिमानके समीप पहुंच कर ध्वजा, पताका, रथ, सारथी और घोड़ोंके सहित राजा मणिमानको काट डाला, तिसके अनन्तर फिर अपने रथपर चढ़के घोड़ोंकी बागडोर अपने ही हाथसे पकड़कर पाण्ड-वोंको सेनाके शूरवीरोंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे जलाने लगे। जैसे असुरोंकी ओर इन्द्र दौड़ते हैं, वैसे ही कुरुसेनाकी ओर पाराख्यराजको दौड़ते देखकर महारथ वृष-सेन उन्हें युद्धसे निवारण करने लगे। घटो-त्कच द्रोणाचार्य्यका वध करनेकी इच्छासे ग[दा] परिघ, पट्टिश, प्रस्तरास्त्र, मूषल, मुद्गर, श[ूल] भिन्दिपाल, परश्वध, पांशु, वात, अग्नि, ज[ल] भस्म, ढेले, तृण और वृक्षोंकी वर्षा करके कुरुसे-नाको भगाता मारता पीड़ित करता तथा भय-भीत करके तितर बितर करता हुआ द्रोणाचार्य्य-के समीप उपस्थित हुआ। अनन्तर राक्षसस[ेन]-म्बुषने क्रुद्ध होकर नाना भांतिके अस्त्रोंसे घटोत्क-चको पीड़ित करके उसे युद्धसे निवा[रण] किया। पहिले समयमें जैसे इन्द्र और श[म्ब]-रासुरका संग्राम हुआ था, वैसे ही राक्ष[सोंके] अग्रगणी उन दोनो राक्षस सरदारोंका महाघ[ोर] युद्ध होने लगा। इसी प्रकारसे दोनों ओ[र] सेनाके रथी, गजपति, घुड़सवार और [पैदल] चलनेवाले सहस्रों तथा लाखों शूरवीर यो[द्धा]-ओंका आपसमें महा भयङ्कर द्वन्द्वयुद्ध [होने] लगा। द्रोणाचार्य्यका वध और द्रोणाचार्य्य[के] जीवनरक्षा इन दोनों उद्देशोंसे युक्त होक[र] दोनो ओरकी सेनाके वीरोंका जैसा संग्रा[म] हुआ, वैसा युद्ध हम लोगोंने न कभी पहि[ले] देखा और न कभी सुना ही था। हे प्रजानाथ! इस अनेक भांतिके बड़े भारी संग्रामके सम[य] युद्धको पृथक् रूपसे देखनेसे वह युद्ध भया-नक आश्चर्य्यमय और तीव्ररूपका बोध होने लगा।

२४ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! इसी प्रका-रसे पाण्डवोंकी सेना और मेरी सेनाके ह[मारे] शूरवीरोंको यथा योग्य रीतिसे विभा[ग] अनुसार युद्ध करनेपर दोनों सेनाके पराक्रमी शूरवीरोंने कैसा संग्राम किया? और अर्जुनने संशप्तकोंसे और संशप्तक वीरोंने अर्जुनके सा[थ] किस प्रकारसे युद्ध किया?

सञ्जय बोले, जब दोनों सेनाके योद्धा औ[र]

। प्रकारसे प्रारब्धके अनुसार युद्धमें प्रवृत्त हुए, तुम्हारे पुत्र राजा दुर्य्योधन स्वयं हाथियोंकी ा लेकर भीमसेनकी ओर दौड़े। जैसे एक वारा हाथी दूसरे हाथीके अथवा एक बृषभ रे बृषभके सम्मुख होता है, वैसे ही युद्धकु- त बाहुवीर्य्यसे युक्त पराक्रमी भीमसेन राजा र्य्योधनकी सम्मुख आया देखकर हाथियोंकी ाकी ओर दौड़े; और शीघ्रताके सहित उस सेनाको तितर बितर करने लगे। पर्व्वतके ान मदचूते हुए कितने ही मतवारे हाथी ीमसेनके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित और मदसे ाहित हो युद्धभूमिसे भागने लगे। जैसे प्रबल ायु मेघमण्डलको छिन्न भिन्न कर देता है, ैसे ही पवन पुत्र भीमसेनने उस सम्पूर्ण गज- ेनाको तितर बितर कर दिया। जैसे जगत्के ीच सूर्य्यके उदय होनेसे सूर्य्य किरणें शोभित ोती हैं, वैसे ही भीमसेनके बाणोंसे सम्पूर्ण ाथी ग्रथित, पूरित तथा पीड़ित होके शोभित ोने लगे। राजा दुर्य्योधन भीमसेनको इस ांति हाथियोंकी सेना तितर बितर करते देख ्रुद्ध होकर अपने तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षासे उन्हें विद्ध करने लगे। अनन्तर भीमसेन लाल नेत्र ारके क्षण भरके बीचमें राजा दुर्य्योधनके नाश करनेकी इच्छासे उत्तम पानीसे बुझे हुए तीक्ष्ण बाणोंसे उन्हें विद्ध करने लगे। राजा दुर्य्योधन भीमसेनके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर मी हंसते हुए सूर्य्य किरणके समान प्रकाशमान ाणोंसे उनको प्रहार करने लगे। पाण्डुपुत्र ीमसेनने क्रुद्ध होकर शीघ्रही एक भल्लसे उनके रथकी ध्वजाकी मणिमय हाथीके चित्र सहित काटके गिरा दिया, फिर दूसरे एक वाणसे उनका धनुष भी काट डाला।

हे भारत! अनन्तर हाथी पर चढ़े हुए राजा अङ्गने दुर्य्योधनको भीमसेनके अस्त्रोंसे पीड़ित देखकर भीमको क्षोभित करनेकी इच्छासे अपना गजराज उनकी ओर चलाया। भीमसेनने राजा अङ्गके बादलके गर्ज्जनेके समान शब्दसे युक्त उस हस्तिराजको सम्मुख आते देखकर कितने ही तीक्ष्ण बाणोंसे उसके पेटके बीचमें प्रहार किया, वे सम्पूर्ण बाण उसके शरीरको भेदके पृथ्वीमें गिरे और वह गजराज भी मानों वज्रकी चोटसे टूटे हुए पर्व्वतके समान भीमके बाणोंके लगनेसे मरके पृथ्वी पर गिर पड़ा। हाथीके गिरते समयमें ज्योंही म्लेच्छराज अङ्ग उसके ऊपरसे कूद रहे थे, उस ही समय भीमसेनने शीघ्रताके सहित एक भल्लसे उनका शिर काट डाला। जब राजा अङ्ग मारे गये, तब उनकी सम्पूर्ण सेना युद्धभू- मिसे भागने लगी। हाथी घोड़े और घोड़ोंसे युक्त रथ पैदल चलनेवाले वीर योद्धाओंको मर्द्दन करते हुए रणभूमिमें दौड़ने लगी।

जब सम्पूर्ण सेना रणभूमिमें भागती हुई चारों ओर दौड़ने लगी, तब राजा भगदत्त अपने गजराज पर चढ़के भीमसेनकी ओर दौड़े! जिस हाथीके बलसे देवतोंके राजा इन्द्रने दैत्य दानवोंको युद्धमें पराजित किया था, राजा भगदत्तने उस ही वंशमें उत्पन्न हुए महा बलवान् हस्तिराज पर चढ़के भीमसेनको आक्रमण किया। उस महाबली विशाल हाथीने अपने दोनों पांव और सूण्डसे भीमसेनको आक्रमण करके क्रोधसे लाल नेत्र कर, मानो भीमसेनके बलको मथ कर उनके रथको घोड़ोंके सहित चूर चूर कर दिया। भीमसेन भी दोनों पांवोंसे पृथ्वी पर दौड़ कर उस हाथीके शरीरसे लिपट गये। वह अञ्जलिका- वेध विद्या जानते थे, इसीसे हाथीके उदरके नीचेसे बाहर नहीं निकले, उन्होंने उस क्रुद्ध गजराजको अपने वधके इच्छुक जान उसके उद- रके नीचे ही रहे, और अञ्जलिका वेध- विद्याकी निपुणतासे अपने हाथोंसे ही उसके शरीरमें प्रहार करने लगे। दश हजार हाथि योंके समान पराक्रमी वह भगदत्तका हाथी

उस समय भीमसेनके वधकी इच्छा करके शीघ्रताके सहित कुम्हारके चाकके समान घूमने लगा। इससे भीमसेन उसके उदरके नीचेसे निकलके आगे खड़े हुए। उस ही अवसरमें उस गजराजने भीमसेनको सूण्डसे पकड़के अपने दोनों पावोंसे उनके शरीरमें प्रहार किया; और उसी समय उनकी गर्दन पकड़के उनका वध करनेकी इच्छा की। भीमसेनने महा भयङ्कर आर्त्तनाद किया, उस ही अवसरमें उसको सूण्डसे छूटकर फिर उदरके नीचे होकर उसके शरीरसे लिपट गये। अनन्तर जब उन्होंने देखा, कि युधिष्ठिरकी सेनासे उसके समान दूसरा हाथी आकर उसके सम्मुख उपस्थित हुआ है, तब उस हाथीके उदरके नीचेसे निकल कर दूसरी ओर चले गये। हे भारत! अनन्तर सम्पूर्ण सेनाके योद्धा कहने लगे, 'ओहो! धिक्कार है! भीमसेन हाथीसे मारा गया।" ऐसा ही सम्पूर्ण सेनाके बीच महाघोर शब्द होने लगा। हे राजन्! पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा उस भगदत्तके हाथीसे भयभीत होकर जहां पर भीमसेन थे वहां पर सहसा दौड़ कर उपस्थित हुए।

अनन्तर राजा युधिष्ठिर भीमसेनको मरा हुआ जान कर, पाञ्चाल योद्धाओंके सहित मिलके राजा भगदत्तको चारो ओरसे घेर कर उनके ऊपर तीक्ष्ण-बाणोंकी वर्षा करने लगे। महाराज भगदत्तने उन सम्पूर्ण योद्धाओंके बाणोंको अपने अस्त्रोंसे निवारण करके फिर अपने गजराजको अंकुश देकर पाण्डव और पाञ्चाल योद्धाओंकी सेनाको अत्यन्त ही पीड़ित करने लगे। हे नरनाथ! उस समय हाथी पर चढ़के युद्ध करनेवाले राजा भगदत्तका मैंने अत्यन्त अद्भुत पराक्रम अवलोकन किया। दाशार्णाधिपतिने शीघ्रताके सहित एक महाबलवान् गजराजसे राजा भगदत्तके हाथीको आक्रमण किया। जैसे पहिले समयमें ... सहित दो पर्वतोंका आपसमें युद्ध हुआ था, वैसे ही भयङ्कर मूर्त्तिवाले उन दोनों गजराजोंका युद्ध होने लगा। राजा भ... हाथी पहिले युद्धसे निवृत्त हो कुछ दूर ... फिर वेगपूर्वक दौड कर दशार्णराजके ... कांखमें अपने दांतोंसे प्रहार किया, उसके प्रहारसे दशार्णराजका हाथी मरकर पृथ्वी[पर] गिर पड़ा। हाथीके मरते समय ज्यों[ही] दशार्णराज उस परसे कूदनेको हुए, उसी समय राजा भगदत्तने सूर्य्य किरणके समान प्रकाशमान् सात तोमरोंको चलाकर हा[थी] पर स्थित अपने शत्रु दशार्णराजका ... किया। तब राजा युधिष्ठिरने रथोंको ... लेकर भगदत्तको चारों ओरसे घेर लिया ... भगदत्त अपने महाबलवान् गजराज पर ... सम्पूर्ण रथियोंके बीचमें अपने गजराजको ... चारो ओर भ्रमण करने लगे। अनन्तर ... भगदत्तने अपने हाथीको सात्यकिकी ओर चलाया, उस गजराजने अपनी सूण्डसे सात्यकिके रथको उठाकर दूर फेंक दिया; ... सात्यकि वहांसे अत्यन्त शीघ्रताके सहित भाग गये। अनन्तर उनके सारथीने सिन्धु ... विशाल शरीरवाले घोड़ोंका फिर उठाकर रथ पर चढ़के सात्यकिके समीप उपस्थित किया अनन्तर वह गजराज अवसर पाकर शीघ्रताके सहित रथोंके समूहसे बाहर निकला, और चारों ओर रथ परस्थित राजाओंको रथके सहित सूण्डसे उठा उठाकर फेंकने लगा। सम्पूर्ण राजा लोग उस शीघ्रगामी हाथीसे अत्यन्त भयभीत होकर उस एक ही हाथीको सैकड़ों रूपसे बोध करने लगे। जैसे दानव लोग ऐरावत पर चढ़े हुए इन्द्रके अस्त्रोंसे पीड़ित हुए थे, वैसे ही पाण्डवोंकी सम्पूर्ण सेनाके योद्धा महाबलवान् गजराज पर चढ़े हुए राजा भगदत्तके अस्त्र शस्त्र और उनके

जराजके सूण्डसे पीड़ित होने लगे। उसी मय युधिष्ठिरकी सेनाके पाञ्चाल योद्धा इधर धर भागने लगे, तब दौड़ते हुए उनके हाथी और घोड़ोंका महाघोर भयानक शब्द होने लगा ।

इस प्रकारसे पाण्डवोंकी सेना जब भगतके अस्त्र शस्त्र और उनके बलवान् गजराजसे ष्ट होने लगी, तब भीमसेन अत्यन्त ही क्रुद्ध होकर फिर राजा भगदत्तके सम्मुख उपस्थित हुए। अनन्तर भगदत्तके हाथी अपने सूण्डकी जलधारासे भीमसेनके घोड़ोंको भिंगा कर उन्हें भयभीत कर दिया इससे वे घोड़े रथ सहित भीमसेनको लेकर वहांसे भाग गये। उसके अनन्तर आकृतीपुत्र रुचिपर्व्वा रथ पर चढ़के अपने बाणोंकी वर्षा करते हुए राजा भगदत्तकी ओर दौड़े। अनन्तर राजा भगदत्तने एक तीक्ष्ण बाणसे रुचिपर्व्वाका वध करके उसे यमपुरीमें भेज दिया। उस पराक्रमी रुचिपर्व्वाके मारे जाने पर सुभद्रापुत्र अभिमन्यु द्रौपदीके पांचों पुत्र चेकितान, धृष्टकेतु और युयुत्सु आदि महारथ योद्धा लोग भगदत्तके गजराजको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे पीड़ित करने लगे। वे सब योद्धा लोग उस हस्तिराजके वधकी अभिलाषा करके बलपूर्व्वक सिंहनाद करते हुए उसके ऊपर इस प्रकारसे अपने बाणोंकी वर्षाने लगे, जैसे पर्व्वतके ऊपर बादल आकाशसे जलकी वर्षा करते हैं। अनन्तर पराक्रमी भगदत्तने उस गजराजको अंकुश देकर पावके अंगूठेके इशारेसे उन महारथियोंकी ओर चलाया। तब उस गजराजने क्रोधसे लाल नेत्रकर तथा कान उठा और सूण्ड पसार कर शीघ्रताके सहित उन महारथ वीरोंके समीप पहुंच अपने पांवसे युयुत्सुके रथके घोड़ोंको मारकर फिर उनके सारथीको भी सूण्डसे पकड़ अपने पांवके नीचे दबाकर मार डाला। उस समय युयुत्सु शीघ्रताके सहित रथपरसे कूदके पृथक् होगये। परन्तु पाण्डवोंकी ओरके अन्य सब महारथ योद्धा लोग उस हाथीके विनाशके निमित्त अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। तुम्हारे पुत्र युयुत्सु उस गजराजसे भयभीत होकर अभिमन्युके रथपर जा चढ़े। जैसे सूर्य्य जगत्के बीच अपने किरणोंके तेजसे युक्त होकर प्रकाशित होता है, वैसे ही राजा भगदत्त उस महा बलवान् हाथीपर चढ़कर शत्रुओंके ऊपर अपने तीक्ष्ण बाणोंको बर्षाने लगे। परन्तु अभिमन्युने बारह, युयुत्सुने दश और द्रौपदीके पुत्रों तथा धृष्टकेतुने तीन तीन बाणोंसे राजा भगदत्तको विद्ध किया। जैसे प्रचण्ड बादल सूर्य्यकिरणसे शोभित होता है, वैसे ही वह हस्तिराज उन सम्पूर्ण महारथियोंके बाणोंसे पूरित होकर शोभित होने लगा। परन्तु वह गजराज शत्रुओंके बाणोंसे पीड़ित होकर भी अपने स्वामी राजा भगदत्तके चलानेपर शत्रुओंको दाहिनी ओर बायीं ओर उठाकर फेंकने लगा। जैसे वनमें पशुपालक पशुओंको लाठीसे ताड़ित करता है, वैसे ही राजा भगदत्त फिर पाण्डवोंकी सेनाको तितर बितर करने लगे। जैसे शीघ्रगामी बाजपक्षीके आक्रमण समयमें कौवे काव काव करते है, वैसे ही पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा भागते हुए महा घोर शब्द करने लगे। हे राजन्! जैसे समुद्रकी भयङ्कर लहरसे वणिक् लोग भयभीत होते है, वैसे ही वह हस्तिराज राजा भगदत्तके अंकुश देने तथा शत्रुओंकी ओर चलानेपर मानों पक्षयुक्त पर्व्वतके समान सम्पूर्ण पाण्डवोंकी सेनाके शूरवीरोंको भयभीत करने लगा। अनन्तर उस महाघोर संग्राममें सम्पूर्ण क्षत्रिय योद्धा रथ, हाथी और घोड़ोंके सहित रणभूमिसे भागने लगे। भागनेके समयमें उन सब योद्धाओंके भयानक शब्दसे पृथ्वी, आकाश, स्वर्ग और सम्पूर्ण दिशा

परिपूर्ण होगई। पहिले समयमें जैसे दैत्य-राज विरोचनने देवताओंकी सेनाको छिन्न भिन्न करके युद्ध भूमिसे भगादिया था, वैसे ही राजा भगदत्त अपने महाबलवान् हाथीसे पाण्डवोंकी सेनाको चारों ओर तितर बितर करके युद्धभूमिसे भगाने लगे। उस ही समय वायु प्रचण्ड वेगसे बहने लगा, उससे इतनी धूलि उड़ी, कि सम्पूर्ण योद्धा लोग बार बार नेत्रोंसे दिखाई भी नहीं पड़ते थे; और हाथी भी चारों ओर शीघ्रताके सहित दौड़ने लगे पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग उस एक ही भगदत्तके हाथीको हाथियोंके समूहके समान बोध करने लगे।

२५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! तुमने जो अर्जुनके युद्धका वृत्तान्त मुझसे पूछा है, उसे मैं वर्णन करता हूं; चित्त लगाके सुनो। जब राजा भगदत्तने इस प्रकारके युद्धकार्य्यका अनुष्ठान किया, तब उस समय रणभूमिमें अत्यन्त ही धूलि उड़ने लगी; और उनका हस्तिराज महा भयङ्कर शब्दसे चिल्ला रहा था। कुन्तीपुत्र अर्जुन उस धूलिका उड़ना और हाथीका चिल्लाना सुनकर कृष्णसे बोले, हे मधुसूदन! मैं बोध करता हूं, कि राजा भगदत्त अपने महा बलवान् गजराजपर चढ़के मेरी सेनाके योद्धाओंपर उपद्रव कर रहे हैं; उस ही हस्तिराजका ऐसा शब्द होरहा है। मेरे विचारमें राजा भगदत्त संग्राममें हाथीपर चढ़के लड़नेमें इन्द्रसे न्यून नहीं है। पृथ्वीमें हाथीपर चढ़के युद्ध करनेमें राजा भगदत्त सबसे श्रेष्ठ अथवा अद्वितीय रूपसे गिने जानेके योग्य हैं। उनका हस्तिराज भी श्रेष्ठ है, युद्धमें उस हाथीके समान पराक्रमी और दूसरा कोई हाथी भी इस पृथ्वीपर नहीं है। यह गजराज सम्पूर्ण शस्त्रोंको अतिक्रम कर सकता है, हाथी युद्धमें अत्यन्त पराक्रमी और न थकने वाला है। यह सम्पूर्ण शस्त्रोंके प्रहार और अग्निस्पर्श भी सह सकता है। यह हाथी आज अकेले ही पाण्डवोंकी सेनाका नाश कर सकता है। हम दोनोंके अतिरिक्त और कोई भी उस गजराजको निवारण करनेमें समर्थ न हो सकेगा। जहांपर राजा भगदत्त युद्ध कर रहे हैं, तुम शीघ्रताके सहित उस ही स्थानमें मेरे रथको ले चलो। अवस्था और बलके अभिमानमें मतवारे भगदत्तको आज मैं इन्द्रके प्रिय अतिथि स्वरूप करके स्वर्गमें भेजूंगा।

कृष्णने अर्जुनके वचनको सुनते ही जहांपर राजा भगदत्त पाण्डवोंकी सेनाको तितर बितर कर रहे थे, उस ही ओर रथको चलाया। अर्जुनको युद्ध छोड़कर दूसरी ओर जाते चौदह हजार संशप्तक योद्धा लोग अपनी सम्पूर्ण सेनाके सहित उनके पीछे गमन करके उन्हें युद्ध करनेके निमित्त आवाहन करने लगे इन चौदह हजार शूरवीर योद्धाओंमें दस हजार त्रिगर्त्त देशीय महारथ थे, और चार हजार कृष्णके अनुयायी महारथी योद्धा थे। हे राजेन्द्र! इधर राजा भगदत्त पाण्डवोंकी सेनाका नाश करते हुए दीख पड़ते थे, और दूसरी ओर संशप्तक योद्धा लोग अर्जुनको आवाहन करने लगे। इससे अर्जुन अपने मनमें चिन्ता करने लगे, कि, इस समय संशप्तक वीरोंसे युद्ध करनेके निमित्त पीछे फिरूंवा राजा युधिष्ठिरके समीपमें जाकर भगदत्तका बध करूं? इन दोनों कर्म्मोंके बीच कौन सा कार्य्य उत्तम है? इसी प्रकार चिन्ता करते हुए उनके मनमें द्वैधभाव उत्पन्न हुआ। हे राजन्! अन्तमें उन्होंने अपने विचारसे यह निश्चय किया, कि इस समय संशप्तक बीरोंके सङ्गमें ही युद्ध करना उचित है। महारथियोंमें श्रेष्ठ कपिध्वजावाले इन्द्रपुत्र अर्जुन

सहस्र सहस्र संशप्तक योद्धाओंको नाश करनेके निमित्त पीछे लौटके उनके संग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। दुर्योधन और कर्णकी अर्जुनके बधके विषयमें यही सम्मति हुई थी, कि एक ओर अर्जुनको संशप्तक योद्धा लोग युद्धके निमित्त आवाहन करें और दूसरी ओर राजा भगदत्त पाण्डवोंकी सेनाके ऊपर अपने महाबलवान् गजराजको चलाकर उपद्रव करना आरम्भ करे। एक ही समयमें दो कार्य्य दोनों ओरसे उपस्थित होनेपर अर्जुन मनमें चिन्ता करेगा, कि किस ओरकी रक्षा करूं ? ऐसी चिन्ता करनेसे उसके मनमें द्वैधभाव उत्पन्न होगा, तब ऐसा होनेसे उसका बध किया जायगा ऐसा विचारकर उन्होंने एक ही समयमें दो कार्य्योंका अनुष्ठान करके अर्जुनके मनमें द्वैधभाव उत्पन्न होनेकी कल्पना की थी। परन्तु अर्जुनने उस द्वैधभावसे ही उनके कल्पित उपायको परिवर्त्तित कर दिया, संशप्तक योद्धाओंके बीचसे मुख्य मुख्य बीरोंका बध करके दुर्योधन और कर्णके उक्त अभिप्रायको व्यर्थ कर दिया। हे राजन्! अनन्तर संशप्तक महारथ योद्धा लोग अर्जुनके ऊपर एकबारही सौ हजार बाणोंको छोड़ने लगे। अर्जुन कृष्ण और रथके घोड़े बाणोंके जालसे छिपकर उस समय दिखाई भी नहीं पड़ते थे; जब कृष्णके शरीरसे पसीना निकलने लगा और वह मोहित होगये; तब अर्जुन ब्रह्मास्त्रसे संशप्तक वीरोंका बध करने लगे। धनुष, बाण, रोदा और तनुत्राणके सहित सैकड़ों वीर योद्धा घोड़े, रथ ध्वजा और सारथीके सहित अर्जुनके ब्रह्मास्त्रसे मर कर पृथ्वीमें गिरने लगे। मैं हाथीके सहित पर्व्वतोंके शिखर और बादलकी घटाके समान सज्जित हुए हाथियोंके समूह सवारोंके सहित अर्जुनके बाणोंसे मरके पृथ्वीमें गिरने लगे। अर्जुनके बाणोंसे ध्वजावर्म्म और सवारोंके सहित उत्तम घोड़े मरके पृथ्वी पर गिर गये। शूरवीर पुरुषोंके ऋष्टि, प्रास, तलवार परिघ, मूषल, मुद्गर और परश्वध अस्त्रोंके सहित भुजा कटके पृथ्वीमें गिरती हुई दिखाई देने लगीं। हे भारत। कितने ही महारथ शूरवीरोंके सूर्य्य और चन्द्रमाके समान प्रकाशमान् शिर अर्जुनके तीक्ष्ण-बाणोंसे कट कर पृथ्वी पर गिर पड़े। जब अर्जुन क्रुद्ध होकर शत्रुओंका संहार करने लगे, तब उस समय सम्पूर्ण सेनाके योद्धा लोग नाना भांतिके बाणोंके समूहसे पूर्ण होकर शोभित होने लगे जैसे मतवारा हाथी कमलके वनको तोड़ता और मर्द्दन करता हुआ चारों ओर भ्रमण करता है, वैसे ही अर्जुन सम्पूर्ण सेनाके पुरुषोंको अपने अस्त्रोंसे पीड़ित करने लगे; और दर्शक वृन्द धन्य धन्य कहके उनकी प्रशंसा करने लगे। यदुकुल शिरोमणि श्रीकृष्णचन्द्र इन्द्रके समान अर्जुनके इस अद्भुत कर्म्मको देखकर विस्मित होकर यह बचन बोले, हे अर्जुन। तुमने आज युद्धभूमिमें जो कर्म्म किया है, मेरे विचारमें यह इन्द्रयम और कुवेरसे भी कठिनतासे सिद्ध होने योग्य है सैकड़ों तथा सहस्रों संशप्तक बीरोंको तुम्हारे बाणोंसे लगातार मर कर पृथ्वीमें गिरते हुए मैंने देखा है। महाराज! अनन्तर जो सब संशप्तक योद्धा वहां पर उस समय अवशिष्ट थे, अर्जुनने शीघ्रताके सहित उनका बध करके कृष्णसे, बोले, अब तुम मेरे रथको भगदत्तकी ओर ले चलो।

२६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, अनन्तर जब अर्जुनने द्रोणाचार्य्यकी सेनाके समीपमें जानेकी इच्छा की, तब श्रीकृष्णने वायु और मनके समान शीघ्रगमन करनेवाले उनके रथके श्वेत घोड़ोंको द्रोणाचार्य्यकी ओर चलाया। तब सुशर्म्मा और उनके भ्राताओंने अर्जुनको अपने भाइयोंको

नेके वास्ते द्रोणाचार्य्यकी ओर जाते देख उनके पीछे पीछे गमन करके उन्हें युद्धके निमित्त फिर आवाहन करने लगे। अनन्तर श्वेतवाहन अर्ज्जुन श्रीकृष्णसे बोले, हे कृष्ण। इधर सुशर्म्मा और उसके भ्राता लोग युद्ध करनेके निमित्त मुझको आवाहन कर रहे हैं, और उत्तर ओर हम लोगोंकी सम्पूर्ण सेनाका नाश होरहा है, इससे संशप्तकोंने आज मेरे मनको द्वैधीभूत कर दिया है। मैं आज संशप्तक वीरोंके सङ्ग युद्ध करूं, वा शत्रुओंसे पीड़ित अपने बन्धु बान्धवोंको रक्षा करूं? इन दोना कार्य्योंमें जो श्रेष्ठ तथा उत्तम होवे, उसे तुम विचार करके मुझसे कहो। कृष्णने अर्ज्जुनका ऐसा बचन सुनकर जिस ओर त्रिगर्त्तराज सुशर्म्मा उन्हें आवाहन कर रहे थे उस ही ओर अर्ज्जुनके रथको बढ़ाया। अनन्तर अर्ज्जुनने सात बाणोंसे सुशर्म्माको बिद्ध करके दो छुरास्त्रोंसे उनके रथ, ध्वजा और धनुषको काटकर गिरा दिया; फिर शीघ्रताके सहित त्रिगर्त्त राजके भ्राताको छः बाणोंसे रथ घोड़े और सारथीके सहित काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। अनन्तर सुशर्म्माने कृष्ण अर्ज्जुनको समयके अनुसार बचन कह कर अर्ज्जुनके ऊपर सर्पके समान भयङ्कर एक शक्ति और कृष्णके ऊपर एक तोमर चलाया। अर्ज्जुन तीन तीन बाणोंसे उस शक्ति और तोमरका काटकर अपने बाणोंसे सुशर्म्माको मूर्च्छित करके युद्धसे निवृत्त हुए। अनन्तर अर्ज्जुन अनेक बाणोंको बर्षाते हुए वेग पूर्व्वक तुम्हारी सेनाकी ओर आने लगे उस समय तुम्हारी सेनाके बीच कोई भी शूरवीर योद्धा अर्ज्जुनको निवारण करनेमें समर्थ न हुए। जैसे अग्निदृण और काष्ठ आदिको भस्म कर देती है, वैसे ही महारथ अर्ज्जुन अपने बाणोंसे तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंको जलाते हुए द्रोणाचार्य्यकी ओर आने लगे। जैसे सम्पूर्ण प्राणी अग्निस्पर्श नहीं कर सकते, वैसे ही सम्पूर्ण योद्धा अर्ज्जुनके वेगको न सह सके। वह अपने बाणोंसे शत्रु सेनाके योद्धाओंको पीड़ित करके पक्षीके समान वेगपूर्व्वक राजा भगदत्तकी ओर जाने लगे। मित्रोंके आनन्द और शत्रुओंके शोकको बढ़ानेवाले अर्ज्जुन अपने गाण्डीव धनुषको खींचते हुए क्षत्रियोंका नाश करनेके निमित्त भगदत्तकी ओर चले। हे राजेन्द्र! जैसे नौका पर्व्वतसे टक्कर खाकर टुकड़े टुकड़े होजाती है, वैसे ही तुम्हारी सेना अर्ज्जुनके बाणोंसे अत्यन्त ही पीड़ित होकर तितर बितर होने लगी। अनन्तर दश हजार योद्धा लोग युद्धके निमित्त दृढ़ निश्चय करके प्राणकी आशा छोड़ कर अर्ज्जुनके सम्मुख उपस्थित हुए। युद्धमें कठिन कर्म्मोंके करनेवाले अर्ज्जुन इस प्रकारके आपद् कालमें भी धैर्य्य रहित तथा भयभीत नहीं हुए। वह सब योद्धाओंको अपने तीक्ष्णबाणोंसे निवारण करने लगे। जैसे मदचूता हुआ साठबर्षकी अवस्थावाला बलवान् हाथी कमलवनको मर्द्दन करता है, वैसे ही अर्ज्जुन क्रुद्ध होकर सेनाका नाश करने लगे। जब इस प्रकार कुरुसेनाका नाश होने लगा तब राजा भगदत्त अपने उस महाबलवान् हाथी पर चढ़े सहसा अर्ज्जुनके सम्मुख उपस्थित हुए। पुरुषसिंह अर्ज्जुनने रथ परसे ही उस बलवान् गजराजको निवारण करना आरम्भ किया। अर्ज्जुनके सङ्ग उस हस्तिराजका महाघोर तुमुल संग्राम होने लगा। अर्ज्जुन और भगदत्त दोनों महावीर योद्धा विधिपूर्व्वक ही रथ और हाथी पर चढ़े हुए संग्रामभूमिके बीच चारों ओर युद्ध करते हुए भ्रमण करने लगे। अनन्तर राजा भगदत्त बादलके समान हस्तिराज पर चढ़ कर मेघवाहन इन्द्रके समान अर्ज्जुनके ऊपर बाणोंकी वर्षा करने लगे। इन्द्रपुत्र पराक्रमी अर्ज्जुन अपने बाणोंकी वर्षा

कर राजा भगदत्तके बाणोंको निकट न आते ही आते मार्ग ही में काट काट गिराने लगे। फिर राजा भगदत्त अर्ज्जुनकी बाणवर्षाको निवारण करके अपने बाणोंसे महाबाहु कृष्ण और अर्ज्जुनको बिद्ध करने लगे, अनन्तर अपने बाण जालसे कृष्ण-अर्ज्जुनको छिपा कर उनका बध करनेकी इच्छासे अपने उस महाबलवान् गजराजको उनकी ओर बढ़ाया। जनार्द्दन कृष्णने उस महाबली हाथीको क्रुद्ध हुए यम-राजके समान सम्मुख आते देख शीघ्रताके सहित बायीं ओर रथको लौटाया। अर्ज्जुनने उस समय दाहिनी ओर स्थित उस महा गज-राजको राजा भगदत्तके सहित बध करनेका अच्छा अवसर पाया; परन्तु धर्म्मको बिचार कर उस गजराज और राजा भगदत्तके बधकी इच्छा नहीं की।

२७ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! अर्ज्जुनने क्रुद्ध होकर राजा भगदत्तसे किस प्रकार युद्ध किया, और पराक्रमी भगदत्तने भी अर्ज्जुनके सङ्गमें कैसा संग्राम किया था! वह सब बृत्तान्त विस्तार पूर्व्वक तुम मेरे समीप वर्णन करो।

सञ्जय बोले, जब कृष्ण और अर्ज्जुन राजा भगदत्तके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए तब सम्पूर्ण शूरवीर योद्धा उनको मृत्युके कराल मुखमें ही पड़े हुए बोध करने लगे। हे भारत! राजा भगदत्त गजराज पर चढ़के रथ पर चढ़े हुए कृष्ण और अर्ज्जुनके ऊपर लगा-तार बाणोंकी वर्षा करने लगे। और बल-पूर्व्वक धनुषको कान पर्य्यन्त खींच कर शिला-पर घिसे हुए लौहमय कितने एक बाणोंसे देवकीपुत्र कृष्णको बिद्ध किया। भगदत्तके धनुषसे छूटे हुए अग्निके समान स्पर्श करनेवाले वे सम्पूर्ण बाण कृष्णके शरीरको भेद कर पृथ्वीमें गिरे। तब अर्ज्जुन राजा भगदत्तका धनुष और कवच अपने तीक्ष्ण बाणोंसे काटकर प्रसन्नता पूर्व्वक उनके सङ्ग युद्ध करने लगे। राजा भग-दत्तने सूर्य्य किरणके समान प्रकाशमान् चौदह तोमर अर्ज्जुनके ऊपर चलाये। अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे हर एक तोमरोंको तीन तीन टुकड़े करके पृथ्वीमें गिरा दिया। अनन्तर अर्ज्जुनने अपने बाणोंके जालसे राजा भगदत्तके हाथीका कवच काट दिया। अर्ज्जुनके बाणोंसे कवच कटनेपर उनके बाणोंसें अत्यन्त ही बिद्ध होकर मेघरहित जलधारासे युक्त पर्व्वतके समान शरी-रसे रुधिरकी वर्षा करता हुआ अत्यन्त शोभित हुआ। अनन्तर प्रतापी भगदत्तने कृष्णकी ओर सुवर्ण दण्डसे युक्त एक लौहमयी शक्ति चलाई। अर्ज्जुनने शीघ्रताके सहित उस शक्तिको मार्गहीमें काटके गिरा दिया, फिर उनको ध्वजा और छत्रको काटकर हंसते हुए दश बाणोंसे उन्हें बिद्ध किया। हे राजेन्द्र! भगदत्त अर्ज्जुनके कङ्कपत्रयुक्त बाणोंसे अत्यन्त बिद्ध और क्रुद्ध होकर कई एक तोमरोंको अर्ज्जुनके शिरपर चलाकर सिंहनाद करने लगे। उन तोमरोंसे अर्ज्जुनका किरीट छिप गया; अर्ज्जुन अपने मस्तकके किरीटको संवारते हुए राजा भगदत्तसे बोले, "तुम अब इस समय सम्पूर्ण लोकको भली भांति देख लो, क्योंकि फिर न देखसकोगे।" राजा भगदत्त अर्ज्जुनका ऐसा बचन सुनकर एक प्रचण्ड धनुष ग्रहण करके कृष्ण और अर्ज्जुनके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। अर्ज्जुनने शीघ्रताके सहित उनके धनुष और तूणीरको अपने बाणोंसे काट-कर फिर बहुतेरे बाणोंसे उनके सम्पूर्ण मर्म्म स्थानोंमें प्रहार किया। अनन्तर मर्म्मस्थानोंसे बिद्ध होकर राजा भगदत्त अत्यन्त ही पीड़ित हुए और वैष्णवास्त्रसे अङ्कुश अभिमन्त्रित करके अर्ज्जुनके वक्षस्थलको लक्ष्य करके छोड़ दिया।

कृष्णने अर्ज्जुनको छिपाकर उस सम्पूर्ण प्राणियोंके नाश करनेवाले अस्त्रको अपने वक्षस्थल पर ग्रहण किया। वह वैष्णवास्त्र कृष्णके वक्षस्थलपर गिरकर वैजयन्ती मालाके समान शोभित हुआ। अनन्तर अर्ज्जुन दुःखित होकर कृष्णसे बोले, हे पुण्डरीकाक्ष। तुमने यह प्रतिज्ञा किया, कि मै केवल तुम्हारे रथका सारथी बनकर घोड़ोंको चलाऊंगा और युद्ध नहीं करूंगा, इस समय तुमने उस प्रतिज्ञाकी रक्षा नहीं की। यदि मैं व्यसनी अथवा अस्त्र निवारण करनेमें असमर्थ होता, तो तुमको ऐसा कर्म्म करना भी उचित था, परन्तु मेरे उपस्थित रहते तुमको ऐसा कर्म्म करना उचित नहीं था। मैं धनुष बाण ग्रहण करके देवता और असुरोंके सहित सम्पूर्ण पृथ्वीको जीत सकता हूं, इसे तुम भी जानते हो। अनन्तर श्रीकृष्णचन्द्र अर्ज्जुनका यह अर्थयुक्त बचन सुनकर उनसे बोले, हे पापरहित अर्ज्जुन। तुम एक गुप्त और प्राचीन इतिहास मुझसे सुनो। मेरी चार सनातन मूर्त्ति है। मैं इस जगत्में प्राणियोंके परित्राणके निमित्त उद्यत हो निज आत्माको विभाग करके चार मूर्त्तियोंसे प्राणियोंका हित साधन किया करता हूं। मेरी एक मूर्त्ति मर्त्य लोकमें स्थित होके तपस्या कर रही है, दूसरी जगत्के सत् और असत् कर्म्मोंको देखती है; तीसरी मनुष्य लोकका आश्रय करके कर्म्म करती हैं, और चौथी मूर्त्ति सहस्र वर्ष पर्य्यन्त निद्रित होके शयन करती रहती है। जब मेरी वह चौथी मूर्त्ति सहस्र वर्षके अनन्तर निद्रासे जागके सावधान होकर उठती है, तब वही मूर्त्ति वरदान पानेके योग्य पुरुषोंको श्रेष्ठ, बर दिया करती है, एक समयमें उस ही मूर्त्तिके उठनेके समयमें पृथिवीने अपने पुत्र नरकासुरके निमित्त जो वरदान मागा था, वह मैं तुमसे कहता हूं।

पृथिवी बोली, मेरा पुत्र वैष्णवास्त्रसे युक्त होवे, जिससे देवता तथा दैत्य कोई भी उसका वध न कर सकें इस निमित्त तुम मुझे यही वरदान करो।" नमैंने पृथिवीकी प्रार्थना सुनकर उसी समय भूमि पुत्र नरकासुरको अपना अमोघ परम वैष्णव अस्त्र प्रदान किया और उस समय मैंने पृथ्वीसे यह बचन कहा था, कि हे पृथ्वी। मैंने इस वैष्णवास्त्रको तुम्हारे पुत्रकी रक्षा निमित्त दिया है, यह अमोघ अस्त्र है, इसके प्रतापसे तुम्हारे पुत्रको कोई भी युद्धमें न मार सकेगा। तुम्हारा पुत्र सदा-सर्व्वदा इस अस्त्रसे रक्षित होकर शत्रुओंको पीड़ित करता रहेगा और जगत्के बीच इस अस्त्रके बलसे तुम्हारा पुत्र महा पराक्रमी गिना जावेगा। मनस्विनी पृथ्वीदेवी ऐसा ही होवे, यह वचन कहकर कृतकार्य्य हो मेरे समीपसे चली गई। उसका पुत्र नरकासुर भी उस अस्त्रके प्रभावसे महा पराक्रमी हुआ था, और उसने अपने समस्त शत्रुओंको इसही अस्त्रके प्रतापसे युद्धमें पीड़ित किया था। हे,पुरुषर्षभ। वही मेरा अस्त्र इस समय में नरकासुरसे भगदत्तको मिला था, इन्द्र और रुद्र आदि देवता भी इस अस्त्रसे अवध्य नहीं है, इस ही कारणसे तुम्हारी रक्षाके निमित्त मैंने इस अस्त्रका अन्यथा परिवर्त्तित कर दिया है। हे अर्ज्जुन! इस समय यह पर्व्वतराज भगदत्त वैष्णवास्त्रसे रहित होगया है, इससे मैंने पहिले जिस प्रकारसे नरकासुरका बध किया था, वैसे ही तुम भी इस देवताके द्रोही महाबलवान भगदत्तका नाश करो। जब महात्मा कृष्णने अर्ज्जुनसे ऐसा बचन कहा, तब महारथ अर्ज्जुनने निर्भयचित्त होकर अपने तीक्ष्ण बाणोंसे राजा भगदत्तको छिपा दिया, फिर अर्ज्जुनने एक तीक्ष्ण बाणसे भगदत्तके गजराजके ऊपर प्रहार किया। हे नरनाथ! जैसे सर्प बिलके बीच प्रवेश करता है, तथा जिस प्रकारसे बज्र लगनेसे पर्व्वत-भेद होता है; वैसे ही अर्ज्जुनके धनुषसे छूटा हुआ तीक्ष्ण बाण भगदत्तके

हाथीके शरीरमें घुस गया। उस समय राजा भगदत्तने उस हाथीको बारम्बार उत्तेजित किया, परन्तु जैसे स्वामीके दरिद्र होनेपर उसकी भार्य्या उसके बचनको नहीं ग्रहण करती, वैसे ही उस गजराजने भगदत्तके प्रिय कार्य्यको नहीं किया, और सूण्ड सिकोड़ कर महाभयङ्कर आर्त्तनाद करके प्राण त्याग किया। तिसके अनन्तर अर्ज्जुनने अपने तीक्ष्ण और अर्द्धचन्द्र बाणसे राजा भगदत्तके हृदयमें प्रहार किया। राजा भगदत्त अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित होकर चेत-रहित होगये, अनन्तर उनके हाथसे धनुष और बाण छूटके पृथ्वीपर गिर पड़ा, जैसे कमल-नालको उखाड़नेसे कमलके मृणालसे उसके पत्र पृथक् होजाते है, वैसे ही उनके शिरके ऊपरसे उत्तम मुकुट पृथ्वीपर गिर पड़ा। जैसे भली भांति फला हुआ कर्णिकारका सुन्दर बृक्ष वायुके वेगसे टूटकर पर्व्वतकी शिखपर गिर पड़ता है, वैसे ही सुवर्ण माला विभूषित राजा भगदत्त उस पर्व्वतके समान ऊंचे हाथीसे पृथ्वीपर गिर पड़े। जैसे प्रचण्ड वायु बृक्षोंको उखाड़के फेंक देता हैं वैसे ही इन्द्रपुत्र अर्ज्जुनने युद्धमें इन्द्रके सखा महा पराक्रमी राजा भगदत्तका संहार करके तुम्हारी सेनाके अन्यान्य शूरवीरोंका बध करने लगे।

२८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, अर्ज्जुनने इन्द्रको प्रिय मित्र और सखा महातेजस्वी राजा भगदत्तका युद्धमें बध करके उनकी प्रदक्षिणा की। अनन्तर गान्धार-राजके शत्रु नाशन वृषक और अचल नामक दो पुत्र युद्धभूमिमें अर्ज्जुनको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे। वे दोनों मिलकर धनुष धारण कर अर्ज्जुनके आगे और पीछे स्थित होके उन्हें अत्यन्त ही पीड़ित करने लगे। अर्ज्जुनने अपने चोखे बाणोंसे सुवलपुत्र वृषकके घोड़े, सारथी, छत्र, ध्वजा और धनुषको काट दिया और नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंको चला कर उनके अनुयायी गान्धार योद्धाओंको अत्यन्त ही पीड़ित करने लगे। अनन्तर महाभुज वृषक घोड़ोंसे रहित रथसे उतरके अपने भाईके रथ पर जा चढ़े और दूसरा दृढ़ धनुष ग्रहण किया, इतने ही समयमें अर्ज्जुनने पांच सौ गान्धार वीरोंका बध करके उन्हें यमपुरीमें भेज दिया। अनन्तर वृषक और अचल दोनों भाई अपने बाणोंकी बर्षा करके अर्ज्जुनको बारम्बार विद्ध करने लगे। जैसे वृत्तासुर और बलासुरने मिल कर इन्द्रके ऊपर अपने अस्त्रोंसे प्रहार किया था, वैसे ही तुम्हारे साले शकुनिके पुत्र-दोनो बलवान् भाई वृषक और अचल बार बार अपने तीक्ष्णबाणोंको चला कर अर्ज्जुनके ऊपर प्रहार करने लगे। जैसे ग्रीष्म और बर्षा ये दोनों ऋतु धूप और जलकी बर्षासे सम्पूर्ण प्राणियोंको क्लेश देती हैं, वैसे ही लक्ष्य-(निशाने)-को वेधनेवाले उन दोनों गान्धार राजके पुत्रोंने अर्ज्जुनको अपने तीक्ष्णबाणोंसे पीड़ित करना आरम्भ किया। हे राजन्। अर्ज्जुनने एक महा भयङ्कर बाण चला कर एक ही रथमें स्थित पुरुषसिंह वृषक और अचल दोनों भाइयोंका संहार किया। वे एक ही रूपवाले सिंहके समान पराक्रमी महाभुज दोनों भाई मर कर रथसे पृथ्वी पर गिर गये। उन दोनों शूरवीरोंके शरीर उस युद्धभूमिमें सब ओर अपने पवित्र शूरवीरोंके यशको विस्तार करके अन्तमें पृथ्वी पर स्थित हुए। हे राजेन्द्र। तुम्हारे पुत्रोंने युद्धसे पीछे न हटनेवाले अपने दोनों मातुलेयोंको अर्ज्जुनके बाणोंसे मरे हुए देखकर क्रोधपूर्व्वक सव्यसाची अर्ज्जुनके ऊपर अपने बाणोंकी चलाना आरम्भ किया, अनन्तर सैकड़ों माया विद्याओंके जाननेवाले शकुनिने [illegible] दोनों भाइयोंको मरते देख कर [illegible] अर्ज्जुनको मोहित करनेके [illegible]

की। शकुनिकी मायाके प्रभावसे सैकड़ों शक्ति, शतघ्नी, गदा, परिघ, शूल, मुद्गर, पट्टिश, ऋष्टि, मूषल, परशु चराख, चुरप्र, नालीक, वत्सदन्त अस्थिसन्धि, चक्रविशिख, प्रास और दूसरे प्रकारके सैकड़ों तथा सहस्रों अस्त्र सब ओरसे अर्ज्जुनके ऊपर पड़ने लगे। अनन्तर ऊंट, गदहे, भैंसे, व्याघ्र, सिंह चित्ते, भेड़िये, वानर आदि पशु और गिद्ध कौवे, आदि पक्षी तथा नाना प्रकारके मांस भक्षण करनेवाले राक्षस क्षुधासे पीड़ित होकर अर्ज्जुनकी ओर दौड़े। अनन्तर दिव्य अस्त्रोंके जाननेवाले पराक्रमी कुन्तीपुत्र बलवान् अर्ज्जुनने अपने दिव्य अस्त्रोंको चला कर उस सम्पूर्ण मायाको नष्ट कर दिया; वे मायासे उत्पन्न हुए सब जन्तु अर्ज्जुनके प्रबल अस्त्रोंसे पीड़ित होकर प्राण त्यागते हुए महाभयङ्कर शब्द करने लगे। अनन्तर अर्ज्जुनके रथसे अन्धकार प्रकट हुआ और उस ही अन्धकारसे नाना प्रकारकी कड़ई बातें सुनाई देने लगीं अर्ज्जुनने उस महासंग्राममें महा, ज्योति अस्त्र चला कर उस भयङ्कर अन्धकारका नाश किया। अन्धकारके दूर होने पर महा भयङ्कर जलकी बर्षा होने लगी, तब अर्ज्जुनने जलवर्षाको निवारण करनेके निमित्त आदित्यास्त्र चलाया, उस अस्त्रके प्रभावसे सम्पूर्ण जल सूख गया। शकुनिने इसी प्रकार बहुतसी माया उत्पन्न की थी। परन्तु शकुनिने जिस समय जो माया उत्पन्न की, अर्ज्जुनने हंसते हंसते अपने दिव्य अस्त्रोंसे उसका नाश किया। इसी प्रकार सम्पूर्ण मायाके नष्ट होने पर अर्ज्जुनके बाणोंसे अत्यन्त ही पीड़ित होकर शकुनि साधारण मनुष्यकी भांति वेगगामी घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़ कर उनके सम्मुखसे भाग गये।

अनन्तर अर्ज्जुन शत्रुओंको अपना हस्तलाघव दिखानेके निमित्त कुरुसेनाके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। हे भारत। जैसे गङ्गा पर्व्वतको मार्गमें पाकर दो भागसे हुई हैं, वैसे ही तुम्हारी सेना अ॰ बाणोंसे पीड़ित होकर दो भागोंमें बंट गई। हे राजन्! अर्ज्जुनके बाणोंसे शूरवीर योद्धा द्रोणाचार्य्य और कितने ही लोग दुर्य्योधनके सभी पमें जाकर स्थित हुए। अनन्तर सेनाके पु॰ घोंके इधर उधर दौड़नेसे रणभूमिमें जो ॰ योद्धाओंके पांवोंके धक्केसे धूलि उड़ी, उससे अ॰ नको रथ छिप गया। केवल उस समय सब ॰ गाण्डीव धनुषका शब्दही सुनाई देता ॰ उस गाण्डीव धनुषका शब्द दुन्दुभी युद्धके शब्दोंको अतिक्रम करके आकाशमें ॰ होगया। अनन्तर दक्षिण दिशामें चि॰ वीरोंके सङ्ग अर्ज्जुनका युद्ध होने लगा, मैं॰ समय द्रोणाचार्य्यका अनुयायी हुआ था। भारत! युधिष्ठिरकी सेनाने इधर उधर सेनाके शूरवीरोंके ऊपर अपने अस्त्र ॰ प्रहार करने लगी। हे राजेन्द्र! जैसे ॰ अनुसार प्रबल वायु चल कर आकाशमें बादलोंके समूहको नष्ट करता हैं, वैसे ॰ शत्रुनाशन अर्ज्जुन शत्रुसेनाके ॰ तीक्ष्णबाणोंसे भस्म करने लगे। तुम्हा॰ सेनाकी ओर दौड़ते हुए इन्द्रके समान ॰ पुरुष-सिंह अर्ज्जुनको कोई भी शूरवीर यो॰ निवारण करनेमें समर्थ नहीं हुआ। तुम्हारी सम्पूर्ण सेना अर्ज्जुनके बाणोंसे अत्यन्त ही पीड़ित होकर तथा अपने अनेक इष्ट-मित्र वा योद्धाओंका नाश करा युद्धभूमिसे तित बितर होने लगी। अर्ज्जुनके धनुषसे छूटे हुए कङ्क पक्षसे युक्त अनेकमर्म्मभेदी बाण शलभ समूह भांति सब दिशाओंमें परिपूर्ण होगये। राजेन्द्र! वे ही सब बाण घोड़े, हाथी, और पैदल चलनेवाले योद्धाओंको भेद ॰ पृथ्वीमें प्रवेश करने लगे। अर्ज्जुन हाथी, और पैदल युद्ध करने वाले वीरोंके ऊपर ॰ बाण नहीं चलाते थे, वह हर एक ॰

एक बाणसे प्राण-रहित करके पृथ्वीमें राने लगे। उस समय वह संग्रामभूमि णोंसे विद्ध, घायल तथा मरे मनुष्य और थी घोड़ोंके शरीरसे पूरित होकर विचित्र रूपसे दीख पड़ती थी। कौवे, गिद्ध, कुत्ते और शृगाल आदि मांसभक्षी जीव मांस नेकी इच्छासे भयङ्कर बोली बोलते ए चारों ओर भ्रमण करने लगे। अर्जुनके बाणोंसे पीड़ित होकर पिताने पुत्रको और त्रने अपने सुहृद् मित्रको त्याग दिया; पने अपने प्राणकी रक्षाके निमित्त व्यग्रचित्त होकर कितने ही शूरवीर अपने वाहनोंको द्धभूमिमें त्यागने लगे।

२९ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जिस मय अर्जुनके बाणोंसे पीड़ित होकर मेरी म्पूर्ण सेना भागने लगी और तुम लोग भी यभीत होकर भागने लगे, उस समयमें तुम ोगोंके चित्तमें कैसा विचार उत्पन्न हुआ था,? म्पूर्ण सेना जब उसकी रक्षाका आश्रय-स्वरूप ोई भी न मिला, तब युद्धसे भागने लगी भागती ई सेनाको फिर लौटाकर युद्धमें प्रवृत्त रना बहुत कठिन होता है, परन्तु उस मयमें उन सम्पूर्ण योद्धाओंकी जैसी दशा हुई ो, वह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम मेरे समीपमें र्णन करो!

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र! उस समयमें तुम्हारे व लोग प्रिय कार्य्य करनेकी इच्छा तथा शकी रक्षा करनेके वास्ते द्रोणाचार्य्यकी हायता करनेके निमित्त उनके समीप उप-स्थित हुए। जब सब अस्त्र शस्त्रोंको धारण रनेवाली राजा युधिष्ठिरकी महासेना द्रोणा र्य्यके समीप उपस्थित हुई, तब उस महा-यङ्कर सग्राममें तुम्हारी ओरके वे शूरवीर योद्धा लोग क्षत्रियोंके योग्य श्रेष्ठ कर्म्मको करनेमें प्रवृत्त हुए, वे लोग महा तेजस्वी भीमसेन, सात्यकि और धृष्टद्युम्नके सम्मुख उपस्थित हुए। निठुर पाञ्चाल योद्धा लोग "द्रोणाचार्य्यका बध करो। द्रोणाचार्य्यका बध करो।" ऐसा बचन कह कह कर अपनी ओरके योद्धाओंको उत्तेजित करने लगे। पाण्डवोंकी सेनाके शूरवीरोंकापण (बाजी) द्रोणाचार्य्यके बधके लिये और तुम्हारी ओरके योद्धाओंका पण द्रोणाचार्य्यको रक्षाके लिये स्थिर हुआ। तुम्हारे पुत्र लोग अपनी सेनाके पुरुषोंको यह बचन कहके उत्तेजित करने लगे, कि जिससे शत्रु लोग द्रोणाचार्य्यका बध न कर सकें तुम लोग वैसा ही उपाय करो। इसी प्रकारसे द्रोणाचार्य्यको पण (बाजी) स्वरूप मान कर दोनों ओरकी सेनाके पुरुषोंका मानो जुआ रूपी युद्ध-क्रीड़ा आरम्भ हुई। द्रोणाचार्य्य पाञ्चाल सेनाके जिन जिन शूरवीरोंको अपने अस्त्रोंसे पीड़ित करने लगते थे, उन महात्माओंकी रक्षा करनेके निमित्त धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यके सम्मुख उपस्थित होते थे, इसी प्रकारसे दोनों सेनाके शूरबोर योद्धाओंने अपने अपने भागोंको त्याग कर विपर्य्यययुद्ध करना आरम्भ किया, और सम्पूर्ण योद्धा लोग एक दूसरेको आक्रमण करने लगे। अनन्तर सम्पूर्ण शूरबीर योद्धाओंको युद्ध करते देखकर डरपोक पुरुष भी शत्रुओंके सम्मुख उपस्थित होकर युद्ध करने लगे उस महा युद्धमें पाण्डव लोग शत्रु सेनाके शूरबीरोंके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर भी युद्धसे विचलित नहीं हुए। वरन वह लोग बनवास आदि क्लेशको स्मरणकरके हमलोगोंको युद्धसे विचिलित करनेलगे। महापराक्रमी लज्जावान् पाण्डव लोग क्रोधके वशमें होके अपने प्राणोंकी आशा त्याग कर द्रोणाचार्य्यको अस्त्र शस्त्रोंसे पीड़ित करने अपने प्राणोंकी आशा छोड़ कर

तुमुल युद्ध रूपी दानक्रीड़ा करने लगे। उन लोगोंके अस्त्र शस्त्र तुम्हारी सेनापर इसप्रकारसे पड़ने लगे, कि मानो आकाशसे लोहा और पत्थरकी शिलाकी वर्षा होरही है। हे महाराज। वृद्ध मनुष्योंने ऐसा संग्राम पहिले कभी देखा वा सुना था, यह किसीको भी स्मरण नहीं होता। उस वीर पुरुषोंको नाश करनेवाले महाघोर संग्राममें भागनेसे लौटती हुई महासेनाके भारसे पृथ्वी कांपने लगी। उस सम्पूर्ण सेनाके लौटनेके समय उन शूरवीरोंका सिंहनाद आकाशमें गूंज कर युधिष्ठिरकी महासेनामें प्रविष्ट हुआ। अनन्तर युद्धमें प्रशंसित द्रोणाचार्य्य पाण्डवोंकी सेनाके सहस्रों योद्धाओंको अपने तीक्ष्णबाणोंसे पीड़ित करके युद्धभूमिसे भगाने लगे। जब सम्पूर्ण सेना द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे विकल होकर रणभूमिसे भागने लगी, तब सेनापति धृष्टद्युम्न स्वयं ही द्रोणाचार्य्यके सम्मुख उपस्थित होकर उन्हें युद्धसे निवारण करनेमें प्रवृत्त हुए। उस समय द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नका अद्भुत युद्ध होने लगा! मुझे बोध होता है कि उस युद्धकी उपमा नहीं होसकती।

अनन्तर जैसे अग्नि सूखे तृण आदिकोंको भस्म करदेती है, वैसे ही नीलराजा अपने तीक्ष्णबाणोंसे कुरु सेनाको भस्म करने लगे। महाप्रतापी अश्वत्थामा नील राजाको तीक्ष्ण अस्त्रोंसे कुरु सेनाके शूरबीरोंको जलाते देख कर हंसते हुए उनसे यह बचन बोले, हे नील! तुम्हारे बाणरूपी अग्निसे अनेक योद्धाओंको भस्म करनेकी क्या आवश्यकता है? तुम केवल एकमात्र मुझसे ही युद्ध करो, तुम क्रोध पूर्व्वक मेरे ही ऊपर अपने तीक्ष्ण बाणोंका प्रहार करो। तब राजा नील अपने बाणोंसे पद्मपुष्पके समान वर्ण, कमलनेत्र और प्रसन्न बदनवाले अश्वत्थामाको विद्ध करने लगे। अश्वत्थामाने उनके बाणोंसे सहसा अत्यन्त ही विद्ध होकर अपने तीन तीक्ष्ण बाणोंको चलाकर रथकी ध्वजा, धनुष और छत्र काट दिया। राजा नीलने उत्तम तलवार और ढाल ... वाले पक्षीके समान रथसे कूदकर अश्वत्थामाके शिरको काटनेकी इच्छाकी। परन्तु अश्वत्थामाने हंसते हंसते एक बाणसे तलवार ... करनेवाले राजा नीलका मस्तक काट ... पृथ्वीमें गिरा दिया। पूर्णचन्द्रमाके समान मुख, पद्मपुष्पके समान नेत्र और विशाल शरीर ... राजा नील मरकर पृथ्वीपर गिरपड़े। महा तेजस्वी राजा नील अश्वत्थामाके बा... मरकर पृथ्वीमें गिरे तब पाण्डवोंकी ... अत्यन्त ही शोकित होकर भयभीत हो ... हे राजेन्द्र। उस समय पाण्डवोंके सब ... योद्धा चिन्ता करने लगे; कि अर्जुन इस ... दक्षिण ओर नारायणीसेना संसप्तक यु... रहे हैं; वह किस प्रकारसे आकर ... लोगोंको इस शत्रुके हाथसे बचावेंगे?

३० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, भीमसेनने शत्रुओंके शस्त्रोंसे अपनी सेनाके शूरवीरोंका नाश देखकर महाराज बाह्लिकको साठ और कर्णको दश बाणोंसे प्रहार किया। अनन्तर द्रोणा... भीमके प्राणको संहार करनेकी इच्छासे ... तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे उनके सम्पूर्ण स्थानको विद्ध किया; और फिर अग्निके ... स्पर्श करनेवाले तथा विषधर सर्पके ... भयङ्कर छब्बीस बाणोंसे प्रहार किया। ... बारह, राजा दुर्य्योधनने छः और अ... सात बाणोंसे भीमसेनको प्रहार किया। म... भीमसेन भी उन सब महारथियोंको अपने ... से विद्धकरने लगे!, भीमसेनने द्रोणाचा... पञ्चास, कर्णको दश, दुर्य्योधनको बारह अश्वत्थामाको आठ बाणोंसे विद्ध करके सिं...

किया। जब भीमसेन मृत्युका भय त्यागकर ग्राणकी आश छोड़ युद्ध करने लगे, तब राजा युधिष्ठिरने अपने अनुयायी योद्धाओंको भीमसेनकी रक्षा करनेके निमित्त आज्ञा दी। उनकी आज्ञासे महातेजस्वी सात्यकि और नकुल सहदेव भीमसेनके निकट उपस्थित हुए। वे सब भीमसेन आदि महा पराक्रमी महारथ योद्धा लोग क्रुद्ध होकर महा धनुर्द्धारी वीरोंसे द्रोणाचार्य्यकी सेनाको तितर बितर करने लगे। रथियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य निर्भय चित्तसे उन पाण्डव महारथियोंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे निवारण करने लगे। तुम्हारी ओरके महारथ योद्धा लोग अपने चित्तसे मृत्युका भय त्यागके पाण्डवोंकी सेनाके महारथियोंकी ओर दौड़े। उस समय घुड़सवार घुड़सवारोंके ऊपर अपने अस्त्रशस्त्रोंको चलाने लगे। उस महाघोर युद्धमें शक्ति, तलवार और परशु आदि अस्त्रोंसे दोनों सेनाके शूरवीरोंका अत्यन्त ही नाश होने लगा। तलवार ग्रहण करनेवाले शूरवीर योद्धाओं और गजपति योद्धा तथा हाथियोंका महा दारुण भयङ्कर संग्राम होने लगा। कोई हाथीपरसे और कोई कोई घोड़ों-परसे अस्त्रोंकी चोटसे मरकर पृथ्वीमें गिरने लगे। कितने ही रथी बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर रथसे पृथ्वीपर गिरने लगे। कितने ही पुरुष कवचसे रहित और बाणोंसे पीड़ित होकर पृथ्वीमें गिर पड़े, रणभूमिमें पड़ेहुए कितने पुरुषोंके शरीरोंसे मतवारे हाथियोंने आक्रमण करके अपने पावोंसे उनके शिरोंको तोड़ डाला, कितने ही हाथी रणभूमिमें मरे हुए हाथियोंको ही मर्द्दन करने लगे। कितने ही हाथी अपने दांतोंसे रथियोंको पीड़ित करने लगे। कितने हाथियोंके दांतोंमें जो वीर पुरुषोंके मस्त्र लगे थे, वे हाथी उन अस्त्रोंके सहित ही सैकड़ों मनुष्योंको मर्द्दन करते हुए रणभूमिमें भ्रमण करने लगे। कितने ही हाथी लोहेसे बने हुए कवचोंको धारण करनेवाले पृथ्वीमें पड़े हुए मनुष्य, घोड़े रथ और हाथियोंको कमल बनके समान मर्द्दते हुए चारों ओर घूमने लगे। क्षत्रिय योद्धा लोग मानो लज्जित होकर गिद्धपङ्खसे युक्त बाणोंसे विद्ध होकर पृथ्वीपर शयन करने लगे। इस प्रकारका मर्य्यादा रहित संग्राम आरम्भ हुआ, कि रथपरचढ़के एक दूसरेके सम्मुख होकर पिता पुत्रका और पुत्र पिताका बध करने लगे। कितने ही रथोंकी ध्वजा टूटी, कितनोंको रथचक्र और छत्र पृथ्वीमें टूटकर गिर पड़े, कितने ही घोड़े सवारोंसे रहित होकर रणभूमिमें दौड़ने लगे। कितने ही शूरवीरोंकी भुजा तलवार सहित कटके पृथ्वीपर गिर पड़ीं और कितनोंके शिर मुकुट और कुण्डलोंके सहित कटके युद्धभूमिमें गिर पड़े। कितने ही बलवान् हाथी रथोंका सूण्डसे उठाकर दूर फेंककर चूर्ण करने लगे। कितने ही हाथी रथियोंके बाणोंसे पीड़ित होकर तथा घुड़सवार और गजपतिओंके अस्त्रोंसे मरकर पृथ्वीमें गिरगये। उस महा दारुण मर्य्यादारहित संग्राममें कितनेही पुरुष "हा तात! हा पुत्र! हा मित्र! तुम कहां हो? इसी स्थानपर रहो! कहां दौड़े जाते हो? प्रहार करो, उसे मारो,"—ऐसे ही बचन बोलते हुए शूरवीर लोग हंसते रोते, चिल्लाते और कितने ही सिंहनाद करते हुए दिखाई देते थे। मनुष्य, हाथी और मरे हुए घोड़ोंके रुधिरसे रणभूमिकी उड़ती हुई धूलि शान्त होगई और कायरोंका चित्त व्याकुल होने लगा। कितने ही रथी योद्धा रथचक्र उठाकर शत्रुओंसे युद्ध करने लगे और कितने ही योद्धा अवकाश पाकर गदासे एक दूसरेके शिरको ताड़ने लगे। उस द्वीपरहित युद्धसागरमें द्वीप प्राप्त करने की ऐच्छासे शूरवी[illegible] आपसमें एक दूसरेके केशोंको [illegible] हुए मुक्के, नख और दांतोंसे [illegible]

लगे। किसीकी तलवार, किसीके धनुष बाण और किसी किसीकी भुजा अंकुशोंके सहित कटकर पृथ्वीमें गिरने लगीं। कोई कोई योद्धा एक दूसरेकी ओर क्रोधपूर्व्वक दौड़ते ही शस्त्र त्यागकर रणस्थलसे भागने लगे। कितने ही पुरुष शूरवीरोंके शब्दोंको सुनकर भयभीत होगये, और कितने ही पुरुष शस्त्रोंसे अपने तथा शत्रुसेनाके पुरुषोंके शिरको काटने लगे। कितने ही पर्व्वतके शृङ्ग समान हाथी शूरवीर पुरुषोंके अस्त्रोंसे मरकर पृथ्वीमें गिर पड़े। कितने ही पर्व्वतके समान मदचूते हुए हाथी अपने पावोंसे घोड़े, सारथी और रथोंको चूर्ण करके पथ्वीपर स्थित हुए। कृतास्त्र शूरवीरोंको रुधिर पूरित शरीरसे युक्त और शस्त्रोंको चलाते हुए देखकर कायरोंका चित्त भयसे कांपने लगा। जब सम्पूर्ण सेना वेगपूर्व्वक चारों ओर दौड़ने लगी, तब उसके पदके धक्केसे इतनी धूल उड़ी, उससे इधर उधर गमन करनेका मार्ग नहीं दीखपड़ता था; उस समय कुछ भी नहीं बोध होता था; ऐसे अवसरमें महाभयङ्कर उन्मत्तकी भांति संग्राम होने लगा।

अनन्तर सेनापति धृष्टद्युम्नने अपनी सम्पूर्ण सेनाके शूरवीरोंसे कहा, कि यही द्रोणाचार्य्यके बधका समय उपस्थित हुआ है, इससे शीघ्रताके सहित सब कोई उनकी ओर दौड़ो। जैसे हंसोंका समूह सरोवरमें उतरता है, वैसे ही सेनापति धृष्टद्युम्नकी आज्ञा सुनकर सम्पूर्ण पाण्डवोंकी सेनाके शूरवीर द्रोणाचार्य्यके रथके ऊपर अपने अस्त्रशस्त्रोंको चलाते हुए उनकी ओर दौड़ने लगे। पराक्रमी द्रोणाचार्य्यके रथके समीपमें आक्रमण करो, पकड़ लो निर्भयचित्त होकर शत्रुओंको काटो,—इसी प्रकारके महा घोर शब्द सुनाई देने लगे। अनन्तर द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य कर्ण, अश्वत्थामा, जयद्रथ, अवन्तिराज विन्द, अनुविन्द और शल्य अपने बाणोंकी वर्षासे उन योद्धाओंको निवारण करने लगे। क्योंकि धर्म्मके अनुयायी युद्धसे पीछे नहटने पाण्डव और पाञ्चाल योद्धाओंने बाणों अत्यन्त पीड़ित होकर भी द्रोणाचार्य्यको न परित्याग किया। अनन्तर द्रोणाचार्य्य अत्यन्त क्रुद्ध होकर सैकड़ों बाणोंकी वर्षा करके पाञ्चाल और पाण्डवोंकी सेनाके शूरवीर योद्धाओंका बध करने लगे। हे राजेन्द्र! उस वज्र समान उनके धनुषटङ्कार और तलवारोंका शब्द अनेक मनुष्योंको भयभीत चारों ओर सुनाई देने लगा। उस समय अर्ज्जुन अनेक संशप्तक वीरोंको करके जहांपर द्रोणाचार्य्य युद्ध करते उसी स्थानपर उपस्थित हुए। अर्ज्जुन अनेक संशप्तक योद्धाओंको मारकर वा वेगरूपी तरङ्गसे युक्त रुधिररूपी युक्त महाह्रदको पार होकर द्र समीप दिखाई देने लगे। मैंने समान तेजस्वी कीर्त्तिमान् अर्ज्जुनकी ध्वजाको अवलोकन किया। वह प्रलय कालके सूर्य्यके समान प्रकाशित हो अपने अस्त्रोंके प्रतापसे संशप्तक सेनारूपी द्रको शुष्क करके फिर कुरुसेनाके सम्मुख स्थित होकर सम्पूर्ण योद्धाओंको अपने पीड़ित करने लगे। जैसे प्रलय कालके धूमकेतु उदय होकर सम्पूर्ण प्राणियोंको करता है, वैसे ही अर्ज्जुन अपने अस्त्रोंके सम्पूर्ण कुरुसेनाके वीरोंको भस्म करने लगे हाथी, गजपति, घुड़सवार और पैदल चल वाले योद्धा लोग खुले हुए केशके सहित नके अस्त्र प्रभावसे मरके पृथ्वीमें गिरने लगे अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित होकर ही आर्त्तनाद करके रोदन करने लगे, कितने ही योद्धा प्राणरहित होकर पृथ्वी गिर पड़े। जो लोग शीघ्रतापूर्व्वक भागने

और जो लोग पीड़ित होकर पृथ्वीमें गिरे तथा युद्धसे विमुख होने लगे उन लोगोंके ऊपर अर्ज्जुनने योद्धाओंके नियमको स्मरण करके प्रहार नहीं किया। कितने ही योद्धाओंके रथ घोड़े और हाथी इधर उधर छिन्न भिन्न होगये वे सब योद्धा हाहाकार शब्द करते हुए प्रायः कर्ण कर्ण कहके रोदन करने लगे। कर्ण शरणकी इच्छा करनेवाले कौरवोंके रुदनको सुनकर वेगपूर्व्वक उस ही ओर गमन करके उन सम्पूर्ण योद्धाओंसे बोले, तुम लोगोंको कुछ भी भय नहीं है ऐसा वचन कहके कर्ण अर्ज्जुनके सम्मुख उपस्थित हुए। कुरुसेनाके बीच सम्पूर्ण रथियोंमें श्रेष्ठ सम्पूर्ण अस्त्रशस्त्रोंके जानने-वाले महाधनुर्द्धारी कर्णने सम्पूर्ण योद्धाओंके हर्षको बढ़ानेके निमित्त आग्नेयास्त्र चलाया। अर्ज्जुनने अपने बाणोंके जलसे प्रकाशमान धनुष बाण धारण करनेवाले कर्णके बाणोंको निवारण किया। कर्णने भी अपने बाणोंसे अर्ज्जुनके प्रकाशमान बाणोंको निवारण किया और फिर अर्ज्जुनके ऊपर भुण्डके भुण्ड बाणोंको चलाकर सिंहनाद करने लगे। तब महा रथ धृष्टद्युम्न सात्यकि और भीमसेनने कर्णके समीप जाकर अपने तीन तीन तीक्ष्ण बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। कर्णने अपने बाणोंकी वर्षासे अर्ज्जुनके अस्त्रोंको निवारण करके फिर तीन बाणोंसे तीनों महारथियोंका धनुष काट दिया। वे तीनों महारथ योद्धा धनुष कटनेपर बिषधारी सर्पके समान क्रुद्ध होगये। तब उन तीनो महारथियोंने अपने रथपरसे कर्णके ऊपर शक्ति चलाकर सिंहनाद किया। तेजसे जलती हुई सर्पके समान भयङ्कर शक्ति उन महारथियोंकी भुजासे छूटकर कर्णके सम्मुख चली। महा बलवान् कर्ण तीन तीन बाणोंसे उस तीनों शक्तियोंको काटकर अर्ज्जुनके ऊपर बाणोंकी वर्षा करके फिर सिंहनाद करने लगे। अर्ज्जुनने भी सात बाणोंसे कर्णको विद्ध करके फिर तीन तीक्ष्ण बाणोंसे उनके कनिष्ठ भ्राताका बध किया। अनन्तर उसी समय अर्ज्जुनने छः तीक्ष्ण बाणोंसे शत्रुञ्जयको मारकर फिर एक बाणसे बिपाटका शिर काटके रथसे पृथ्वीपर गिरा दिया। इसी प्रकारसे अकेले अर्ज्जुनने धृतराष्ट्र-पुत्रों तथा कर्णके सम्मुखमें ही उसके तीन भाइयोंका संहार किया। अनन्तर भीमसेनने अपने रथसे गरुड़ पक्षीकी भांति कूदके कर्णकी ओरके दश योद्धाओंको तलवारसे काट डाला; और फिर रथपर चढ़के दूसरा धनुष ग्रहण-कर दश बाणोंसे कर्णको विद्ध करके फिर पांच बाणोंसे उनके सारथी और रथके घोड़ोंको बिद्ध किया। धृष्टद्युम्नने प्रकाशमान तलवार और ढाल ग्रहण करके निषधराज बृहत्‌क्षत्र और चन्द्रवर्म्माका बध किया। अनन्तर अपने रथपर चढ़के फिर तिहत्तर बाणोंसे कर्णको बिद्ध किया। इन्द्रके समान तेजस्वी सात्यकिने भी दूसरा धनुष ग्रहण करके चौसठ बाणोंसे कर्णको बिद्ध करके सिंहनाद करने लगे। और तीन तीक्ष्ण बाणोंसे कर्णका धनुष काट-कर तीन बाणोंसे कर्णकी भुजा और वक्षस्थलमें प्रहार किया। अनन्तर राजा दुर्य्योधन, द्रोणाचार्य्य और जयद्रथने सात्यकिरूप समुद्रमें डूबते हुए कर्णका उद्धार किया। तुम्हारीसैकड़ों पत्ति शत्रुओंकी सेनाके शूरवीरोंको भयभीत करती हुई कर्णकी ओरसे युधिष्ठिरकी सेनाके योद्धाओंको पीड़ित करती हुई रणभूमिमें दौड़ने लगी। तब धृष्टद्युम्न, भीमसेन अभिमन्यु अर्ज्जुन, नकुल और सहदेव आदि योद्धा सात्य-किकी रक्षा करने लगे। इसी प्रकारसे प्राण देनेकाप्रण करके तुम्हारी सेनाके योद्धाओं और शत्रु सेनाके धनुर्द्धारी वीरोंका महाघोर दारुण युद्ध होने लगा। रथी गजपति, घुड़सवार और पैदल चलनेवाले योद्धा लोग रथी गजारोही घुड़सवार और पदाति सेनाके शूरवीरोंके सङ्ग

युद्ध करने लगे। अनन्तर रथी, गजपतियोंसे पैदल चलने वाले योद्धा घुड़सवारोंसे, कितने ही रथीयोद्धा पदाति सेनाके सङ्ग और कितने ही रथी घुड़सवारोंके सङ्ग युद्धकरने लगे। इसी प्रकारसे दोनों सेनाके शूरवीरोंका महाघोर यमराजके राष्ट्रको बढ़ानेवाला दारुण संग्राम होने लगा। अनन्तर मनुष्य, रथ हाथी और घोड़ोंसे कितने ही हाथी घुड़सवार और पैदल चलनेवाले योद्धा मरकर पृथ्वीमें गिर पड़े। हाथीसे हाथी, घोड़ोंसे घोड़े और पदाति सेनाके योद्धाओंसे पैदल योद्धा लोग शस्त्र ग्रहण करके युद्ध करते हुए एक दूसरेके अस्त्रोंसे मरकर पृथ्वीमें गिरने लगे। रथियोंके अस्त्रोंसे कितने ही मतवारे हाथी, कितने ही बड़े बड़े मतवारे हाथियोंसे सुन्दर घोड़े, घोड़ासे मनुष्य और कितने ही रथियोंके अस्त्रोंसे घुड़सवारोंकी सेना मरकर पृथ्वीमें गिरने लगी। किसीके दांत किसीको जीभ किसीके नेत्र बाहर निकले हुए भयङ्कर रूपसे दिखाई देने लगे। कितने ही योद्धाओंके कवच और भूषण कटके पृथ्वीमें गिर पड़े बहुतेरे योद्धा नाना भांतिके तीक्ष्ण अस्त्रोंसे मरकर पृथ्वीमें पड़े हुए अत्यन्त ही भयङ्कर बोध होते थे। कितने ही शूरवीर योद्धा हाथी और घोड़ोंके पांवोंके धक्केसे पृथ्वीमें गिर पड़ते थे और फिर उठकर युद्ध करते हुए दिखाई देते थे। कितने हो योद्धा टूटे हुए रथके काठ, कितने ही योद्धा घोड़ोंके खुर और कितने ही योद्धा रथके चक्रेसे क्षत-विक्षत शरीर होकर अत्यन्त ही व्याकुल होगये। उस महा भयङ्कर राक्षसोंके हर्षको बढ़ानेवाले मनुष्योंके नाशरूपी घोर युद्धमें महाबलवान् शूरवीर योद्धा लोग कुपित होकर आपसमें एक दूसरेका बध करते हुए रणभूमिमें भ्रमण करने लगे। हे भारत! अनन्तर सूर्य्यके अस्त होनेपर दोनों ओरकी सेना अत्यन्त ही पीड़ित और रुधिर-होकर आपसमें एक दूसरेकी ओर देखती हुई अपने अपने शिविरोंकी ओर धीरे धीरे गमन करने लगीं।

३१ अध्याय समाप्त।

अब अभिमन्यु बध प्रकरण लिखेंगे।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र। महातेजस्वी अर्जुनके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर जब हम लोग युद्धभूमिमें पराजित हुए और राजा युधिष्ठिर रक्षित होनेसे द्रोणाचार्य्यका सङ्कल्प निष्फल हुआ। तब तुम्हारी ओरके सम्पूर्ण योद्धा लोग अस्त्रधारी शत्रु सेनाके योद्धाओंसे अत्यन्त पीड़ित होकर ध्वजा कवचसे रहित होगये, और ... और अन्धकार उपस्थित होते देखकर द्रोणाचार्य्यकी आज्ञाके अनुसार युद्धसे निवृत्त हुए। अनन्तर बहुतेरे पुरुष अर्जुनके गुणोंकी ... और कृष्णके सङ्ग उनके सुहृद् भावको ... वर्णन करते हुए गमन करने लगे। उस समय तुम्हारी ओरके सम्पूर्ण योद्धा मानो शापग्रस्त कीभांति अत्यन्त ही चिन्ता करने लगे। उनके मुखसे बचन बाहर नहीं निकलता था। तिसके अनन्तर शिविरोंपर पहुंचकर विश्राम करनेके बाद वाक्यविशारद राजा दुर्योधन शत्रुओंकी वृद्धि देखकर दुःखित और क्रुद्ध होके सम्पूर्ण योद्धाओंके सम्मुखही में प्रीति और अभिमानके सहित द्रोणाचार्य्यसे यह बचन बोले, हे द्विजसत्तम! हम लोग अवश्य ही तुम्हारे बध्य पक्ष हुए हैं, क्योंकि तुमने युधिष्ठिरको अपने समीपमें पाकर भी ग्रहण नहीं किया। यदि तुम युद्धभूमिमें शत्रुको ग्रहण करनेकी इच्छा करो, तो वह पुरुष देवताओंके सहित पाण्डवोंसे रक्षित होकर भी तुम्हारे नेत्रके सामने आकर कदापि मुक्त नहीं हो सकता श्रेष्ठ पुरुष किसी प्रकारसे भी अपने भक्तोंकी आशा भङ्ग नहीं करते; परन्तु तुमने प्रीतिपूर्व्वक मुझे वर प्रदान करके फिर अन्यथा आचरण किया है।

द्रोणाचार्य्य राजा दुर्य्योधनका ऐसा वचन सुनकर अत्यन्त लज्जित होके उनसे बोले, महाराज। मैं सदा तुम्हारे प्रियकार्य्योंको करनेहीकी चेष्टा करता रहता हूं तुम मुझको अन्यथाचारी मत समझो। अर्ज्जुन जिसकी रक्षा करते हैं, उसको देवता, असुर, यक्ष, राक्षस सर्प और गन्धर्व्व आदि भी युद्धमें नहीं जीत सकते। जहांपर जगत्कर्त्ता गोविन्द और अर्ज्जुन सेनाकी रक्षा करते हैं, वहांपर देवोंके देव महादेवके अतिरिक्त और किसीकी सामर्थ्य है, कि वहांपर अपने पराक्रमको प्रकाशित कर सके? हे तात। मैं सत्य वचन कहताहूं यह कदापि अन्यथा न होगा, आज उन लोगोंके एक प्रधान महारथका बध करूंगा। हे राजन्! मैं आज एक ऐसे व्यूहकी रचना करूंगा, कि देवताओंको भी उस व्यूहको भेद करनेकीसामर्थ्य नहो, परन्तु आप लोग किसी उपायसे अर्ज्जुनको उन लोगोंके समीपसे हटाकर अन्यस्थानमें ले जाइये क्योंकि युद्धका कोई कर्म्म भी उससे असाध्य वा अज्ञात नहीं है वहदिव्य और समस्त मानुषिक अस्त्र शस्त्रोंके धर्म्मको जानता है।

हे राजन्। जब द्रोणाचार्य्यने ऐसा वचन कहा तब फिर सशप्तक योद्धाओंने दक्षिण ओर अर्ज्जुनको पुनर्व्वार युद्धके निमित्त आवाहन किया। अनन्तर संशप्तक वीरोंके सङ्ग अर्ज्जुनका ऐसा युद्ध होने लगा, कि वैसा युद्ध पहिले कभी न मैंने देखा औरन सुना ही था। इधर जैसे शरद्कालके मध्यान्हसमयमें भगवान् सूर्य्य अत्यन्त प्रचण्ड होकर सम्पूर्ण प्राणियोंको अपने तेजसे तपाके भस्म कर देते हैं, वैसे ही द्रोणाचार्य्यने भी प्रकाशमान चक्रव्यूहकी रचना की। हे भारत। अभिमन्युने राजा युधिष्ठिरकी आज्ञासे कठिनाईसे भेद होने योग्य उस चक्रव्यूहको अपने पराक्रमके अनुसार भेद किया था। वह बहुत ही कठिन कर्म्म करके तथा सहस्रो शूरवीर पुरुषोंका बध करके अन्तमें छः महारथियोंकी सहायतासे दुःशासन-पुत्रके वशवर्त्ती होकर युद्धमें मारा गया। अभिमन्युके मरनेसे पाण्डव लोग शोकसे अत्यन्त ही व्याकुल हुए, और हम लोग परम आनन्दित होकर उस दिन युद्धसे निवृत्त हुए।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! पुरुषसिंह अर्ज्जुनपुत्र सुकुमार अभिमन्युका बध सुनकर मेरा चित्त अत्यन्त ही दुःखित हो रहा है। धर्म्मशास्त्र बनानेवाले पण्डितोंने, इस क्षत्रिय धर्म्मको महा अनर्थका मूल करके सिद्ध किया हैं, जिस धर्म्मके आश्रयसे राज्यकी अभिलाषा करके शूरवीर योद्धाओंने बालकके ऊपर शस्त्र चलाया। हे सञ्जय। अभिमन्यु अत्यन्त ही सुखी बालक था, वह निर्भय-चित्तवाले योद्धाओंकी भांति जब रणभूमिमें भ्रमण कर रहा था, तब बहुतसे योद्धाओंने मिलकर किस प्रकारसे उसका बध किया? और महातेजस्वी उस बालकहोने किस प्रकारसे रथ सेनाको भेद करके युद्धकी इच्छासे रणभूमिमें क्रीड़ा की थी? वह सम्पूर्ण वृतान्त तुम मेरे समीपमें वर्णन करो।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र। तुमने अभिमन्युके बधके विषयमें मुझसे जो कुछ प्रश्न किया है? और कुमार अभिमन्युने सेनाको भेद करनेकी इच्छासे रणभूमिमें क्रीड़ा करते हुए महापराक्रमी वीरोंको जिस प्रकारसे पीड़ित किया था, वह सम्पूर्ण वृत्तान्तमैं तुम्हारे निकटमें विस्तारपूर्व्वक वर्णन करता हूं, तुम भली भांतिसे चित्त लगाकर सुनो! जिस प्रकारसे बहुतसे तृण, गुल्म और वृक्षोंसे युक्त वनमें दवाग्निके लगनेसे सम्पूर्ण वनवासी जीवजन्तु भयभीत होजाते हैं, इसी भांतिसे अभिमन्युके आक्रमणके समयमे तुम्हारी सेनाके शूरवीर योद्धा लोग भयभीत होगये थे।

३२ अध्याय समाप्त।

———

सञ्जय बोले; हे भारत! कृष्ण और पांचों पाण्डव युद्धमें अत्यन्त प्रचण्ड कर्म्मोंको करनेवाले और देवतोंसे भी न जीते जाने योग्य हैं; उनका परिश्रम समर्थ कर्म्मसे ही प्रसिद्ध है। पराक्रम, कर्म्म, अन्वय, बुद्धि कीर्त्ति, यश और श्री, इन सम्पूर्ण गुणोंसे युक्त महात्मा कृष्णके समान न कोई पुरुष पहिले हुआ और न भविष्यहीमें होगा। सत्यकर्म्मोंमें निष्ठावान् धर्म्मात्मा राजा युधिष्ठिर विप्रपूजा आदि गुणोंसे सदासर्व्वदा स्वर्ग प्राप्त करनेहीके योग्य हैं! प्रलय कालके यमराज, महापराक्रमी परशुराम और रथस्थित भीमसेन,—ये तीनों ही समान रूपसे वर्णन किये गये हैं। सत्य प्रतिज्ञा करनेवाले तथा गाण्डीव धनुष धारण करनेवाले अर्ज्जुनकी उपमा इस पृथ्वी पर नहीं मिल सकती। नकुलमें अत्यन्त ही गुरुभक्ति, धीरज, विनय दम, शम और वीरता ये छहों गुण सदासर्व्वदा विराजमान रहते हैं। वीर सहदेव शास्त्रके ज्ञान, गम्भीरता तेज, रूप और पराक्रममें दोनों अश्विनीकुमारोंके समान हैं। कृष्ण और पाण्डवोंमें जो कुछ गुण है, अभिमन्युमें भी वे सम्पूर्ण गुण विद्यमान थे; अभिमन्यु, धीरज धारण करनेमें युधिष्ठिर, चरित्रोंमें कृष्ण बलमें भीमसेन और रूप पराक्रम शस्त्र तथा अस्त्रोंके ज्ञानमें; अर्ज्जुन और विनयमें सहदेवके समान था।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! अपराजित अभिमन्यु, किस प्रकारसे युद्धभूमिमें मारा गया? इस वृत्तान्तको विस्तारपूर्व्वक सुननेकी मुझे अत्यन्त ही इच्छा है।

सञ्जय बोले, महाराज! मैं तुम्हारे समीपमें यह तुम्हारे बन्धुवान्धवोंका नाश होनेका सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन करता हूं, तुम शोक मत करो, चित्त लगाकर मेरे वचनोंको सुनो। हे राजेन्द्र, जब द्रोणाचार्य्यने चक्र-व्यूहकी रचना की उसमें इन्द्रके समान पराक्रमी राजा लोग यथास्थानमें स्थित और महातेजस्वी राजपुत्र लोग जगह जगह नियत किये गये; उस समय सम्पूर्ण राजा वा राजपुत्र उस चक्रव्यूहमें इकट्ठे हुए। सुवर्ण निर्म्मित ध्वजासे युक्त, लाल अम्बर धारण किये, लाल भूषणोंसे भूषित लालवर्णकी पताकाके सहित सुवर्णकी माला धारण करनेवाले, चन्दनचर्चित शरीरोंमें फूलोंकी माला पहिने हुए सम्पूर्ण योद्धा लोग एक ही समयमें कृतप्रतिज्ञ और युद्धके निमित्त उत्सुक होकर एकवारही अभिमन्युकी ओर दौड़े। उन लोगोंके बीचसे दश हजार धनुर्द्धारियोंने तुम्हारे पौत्र लक्ष्मणको आगे करके अभिमन्युकी ओर गमन किया। वे सब ही युद्धभूमिमें कठिन कर्म्म करनेवाले और सहायोंसे युक्त थे। हे राजेन्द्र! राजा दुर्य्योधन उस व्यूहके बीच महारथ कर्ण कृपाचार्य्य और दुःशासनके सङ्ग सेनाके बीच स्थिर होकर ऐसे शोभित हुए, जैसे देवताओंके बीचमें इन्द्र शोभायमान लगते हैं। उनके दोनों तरफ श्वेत चंवर और शिरके ऊपर सफेद छाता लगाया गया; अनन्तर राजा दुर्य्योधन उस सेनाके बीचमें सूर्य्यके समान प्रकाशित होने लगे। उस व्यूहके मुखस्थलपर सेनापति द्रोणाचार्य्य और पराक्रमी सिन्धुराज जयद्रथ सुमेरु पर्व्वतकी भांति विराजमान हुए। हे राजेन्द्र! देवताओंके समान तुम्हारे तीस पुत्र अश्वत्थामाको आगे करके सिन्धुराज ज[illegible] दाहिनी ओर स्थित हुए। गान्धारराज मायावी शकुनि, शल्य और भूरिश्रवा जयद्रथके बांई [illegible] स्थित हुए। अनन्तर मृत्यु ही इस युद्धमें निवृत्त होनेका उपाय है,—ऐसा विचारकर तुम्हारी सेना और शत्रुओंकी ओरके शूरवीरोंका महा भयङ्कर रोंएको खड़ा करनेवाला युद्ध होने लगा।

३३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, भीमसेनको आगे करके पाण्डव लोग द्रोणाचार्य्यसे रचित व्यूहबद्ध कुरुसेनाकी ओर दौड़े। । सात्यकि, चेकितान धृष्टद्युम्न पराक्रमी कुन्तिभोज, महारथ द्रुपद, अर्ज्जुनपुत्र क्षत्रधर्म्म वृहत्क्षत्र, पराक्रमी चेदिराज, धृष्टकेतु नकुल, सहदेव, घटोत्कच, युधामन्यु पराक्रमसे युक्त अपराजित शिखण्डी, महावली उत्तमौजा, महारथ विराट्, द्रौपदीके पांचो पुत्र और शिशुपालपुत्र आदि पराक्रमी राजा लोग सहस्रों युद्ध-विद्याके जाननेवाले अस्त्र-शास्त्रोंके प्रहारमें निपुण योद्धायोंके सहित द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। पराक्रमी द्रोणाचार्य्य ने भी अपना प्रचण्ड धनुष चढ़ाकर बाणोंकी वर्षा करके उन सम्पूर्ण राजाओंको युद्धसे निवारण करने लगे। जैसे,जलका प्रचण्ड प्रवाह अभेद पर्व्वत वा समुद्रके प्रबल वेगका प्रवाह तटके आगाड़ी नहीं जा सकता, वैसे ही वे सम्पूर्ण राजा लोग द्रोणाचार्य्यके समीप पहुंचकर आगे न बढ़ सके। हे राजेन्द्र! पाण्डव और सृञ्जय द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छूटे हुए बाणोंसे अत्यन्त ही पीड़ित होकर उनके सम्मुखमें न ठहर सके। उस समयमें मैंने द्रोणाचार्य्यका वह अद्भुत पराक्रम देखा, कि पाञ्चालयोद्धा सृञ्जयोंके सहित एकत्र होकर भी उनके सम्मुखमें खड़े न हो सके।

राजा युधिष्ठिरने उस सग्रामभूमिमें युद्धके निमित्त उपस्थित हुए अत्यन्त क्रुद्ध द्रोणाचार्य्यको देखकर उनको निवारण करनेके विषयमें नाना प्रकारसे चिन्ता करने लगे। अनन्तर द्रोणाचार्य्यको दूसरा कोई भी निवारण नहीं कर सकेगा, ऐसा विचारकर कृष्ण और अर्ज्जुनके समान पराक्रमी अभिमन्युके ऊपर इस दुस्सह तथा अत्यन्त कठिन युद्धके भारको समर्पित किया। वह शत्रुनाशन पराक्रमी अभिमन्युसे बोले, हे तात! चक्रव्यूह किस प्रकारसे भेद किया जाता है, उसे हम लोग नहीं जानते हैं; इससे जिसमें अर्ज्जुन आकर हम लोगोंकी निन्दा न करें, तुम वैसा ही उपाय करो। हे तात! अर्ज्जुन, कृष्ण, प्रद्युम्न, और तुम,—यही चार पुरुषोंके अतिरिक्त और कोई भी बलवान् योद्धा चक्रव्यूहको भेद करनेमें समर्थ नहीं है। हे तात। तुम अपने पितृकुल, मातृकुल, और इन सम्पूर्ण योद्धाओंके मनोरथको पूर्ण करो। तुम शीघ्रही अस्त्र ग्रहण करके द्रोणाचार्य्यकी सेनाका नाश करो, ऐसा होनेसे ही अर्ज्जुन संशप्तक योद्धाओंके युद्धसे लौटकर हम लोगोंको निन्दा नहीं कर सकेंगे।

अभिमन्यु बोले, मैं युद्धभूमिमें आप लोगोंकी विजयके निमित्त द्रोणाचार्य्यकी सेनाका महा प्रचण्ड और दृढ़ चक्रव्यूह भेद करूंगा। परन्तु पिताने मुझे केवल उसे भेद करनेहीकी युक्ति सिखाई है, उस व्यूहसे बाहर होनेका उपदेश नहीं दिया है। इससे यदि वहांपर कोई आपद् उपस्थित होगी, तो मैं उस व्यूहके भीतरसे निकल नहीं सकूंगा।

राजा युधिष्ठिर बोले, हे तात! हे योद्धाओंमें श्रेष्ठ। तुम उस सेनाके व्यूहको तोड़के हम लोगोंके प्रवेश करनेका मार्ग बना दो; तुम जिस मार्गसे गमन करोगे, हम लोग भी उस ही मार्गसे तुम्हारे पीछे पीछे गमन करेंगे। हे पुत्र! तुम युद्धमें अर्ज्जुनके समान हो, इससे हम लोग तुम्हारे अनुगामी बनकर तुम्हारी रक्षा करतेहुए शत्रुसेनाके शूरवीरोंसे युद्ध करेंगे।

भीमसेन बोले, मैं, धृष्टद्युम्न सात्यकि, पाञ्चाल केकय, मत्स्य और प्रभद्रक योद्धा इत्यादि,—हम सब लोग तुम्हारे पीछे पीछे चलेंगे। तुम एक वेर व्यूहको भेद करके जिस जिस मार्गसे गमन करोगे, हम लोग उस ही मार्गमें मुख्य मुख्य योद्धाओंका वध करके उन स्थलोंकी सम्पूर्ण सेनाका नाश कर

अभिमन्यु बोले जैसे पतङ्ग जलती हुई अग्निमें प्रवेश करते हैं वैसेही आज मैं क्रुद्ध होकर इस दुर्गम शत्रुसेनाके बीच प्रवेश करूंगा। आज मैं पितृ और मातृवंशके हित कर और पिता तथा मामाके प्रीतिजनक कर्मका अनुष्ठान करूंगा। मैं बालक हूं, परन्तु आज सम्पूर्ण प्राणी झुण्डके झुण्ड शत्रुसेनाके शूरवीरोंको मेरे अस्त्रशस्त्रोंके प्रहारसे मरकर पृथ्वीमें गिरे हुए देखेंगे। मेरे युद्धमें यदि आज कोई पुरुष मुझसे युद्ध करके जीवित मुक्त हो सके तो मैं पिता अर्जुन और माता सुभद्राका पुत्र ही नहीं हूं। यदि आज मैं अकेलेही एक रथपर चढके सम्पूर्ण क्षत्रिय वीरोंको युद्धभूमिमें तितर बितर न करूं, तो मैं अर्जुनका पुत्र ही नहीं हूं।

राजा युधिष्ठिर बोले, हे सुभद्रानन्दन। तुम साध्य, रुद्र, वायु, वसु, अग्नि आदित्यके समान पराक्रमसे युक्त, महाधनुर्धर, महाबली पुरुष-सिंहोंसे रक्षित दुर्गम द्रोणसेनाके व्यूहको भेद करनेका उत्साह प्रकाशित करतेहो, इससे तुम्हारे बलकी वृद्धि होवे।

सञ्जय बोले, राजा युधिष्ठिरका ऐसा वचन सुनकर अभिमन्यु सारथीसे बोले, हे सुमित्र! तुम द्रोणाचार्य्यकी सेनाके सम्मुख ही घोड़ोंको हांककर मेरे रथको लेचलो।

३४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजा! अभिमन्युने बुद्धिमान् राजा युधिष्ठिरके बचनको सुनकर सारथीको "चलो, चलो" कहके द्रोणाचार्य्यकी सेनाके निकट जानेकी आज्ञा दी। तब अभिमन्युका सारथी उनसे यह वचन कहने लगा, हे शत्रुनाशन। पाण्डवोंने तुम्हारे ऊपर अत्यन्त ही प्रचण्ड गुरुभार अर्पण किया है, परन्तु तुम अपने पराक्रमको विचारके देख लो, कि इस असाध्य कर्म्मके सिद्ध करनेमें तुम्हारी शक्ति है वा नहीं। तुमको बुद्धिसे भली भांति विचार करके इस युद्धमें प्रवृत्त होना उचित है। द्रोणाचार्य्य सम्पूर्ण अस्त्र विद्याओंमें और युद्ध करनेमें परिश्रमरहित हैं। तुम युद्ध विद्याको जानते हो, परन्तु अत्यन्त सुखपूर्वक पाले पोषे गयेहो।

अनन्तर अभिमन्यु हंसकर अपने सारथीसे बोले, हे सारथी। मैं सम्पूर्ण देवताओंसे युक्त ऐरावतपर चढ़े हुए इन्द्रके सङ्ग भी युद्ध कर सकता हूं, यह द्रोणाचार्य्य तथा दूसरे सम्पूर्ण क्षत्रियोंसे मुझे कुछ भी भय नहीं है। हे सूत। सम्पूर्ण कुरुसेना मेरे सोलह भागका एक भाग भी नहीं हो सकती। विश्व-विजयी मामा और पिता अर्जुनके सङ्ग युद्ध करनेमें भी कुछ भय नहीं होता।

अनन्तर अभिमन्युने सारथीके वचन न मानकर उसे द्रोणाचार्य्यकी सेनाके सम्मुख गमन करनेके निमित्त आज्ञादी। प्रसन्नचित्तसे तीन बर्षकी अवस्थावाले भूषित साजोंसे युक्त उत्तम घोड़ोंको द्रोणाचार्य्यसे रक्षित सेनाकी ओर चलानेलगा। हे राजेन्द्र। महावेगवान् पराक्रमी घोड़े सारथी चलानेपर द्रोणाचार्य्यकी ओर चले। तब द्रोणाचार्य्य आदि सम्पूर्ण कौरव अभिमन्युको इस प्रकारसे सम्मुख आते देख उसके सम्मुख उपस्थित हुए। पाण्डव लोग अभिमन्युके पीछे पीछे गमन करने लगे। जैसे किशोर बच्चा हाथियोंके झुण्डको आक्रमण करता है, वैसे ही सुवर्णभूषित कवच सुन्दर ध्वजासे युक्त महा बलवान् अभिमन्यु द्रोणाचार्य्य आदि महारथ वीरोंको आक्रमण करने लगे। वे सम्पूर्ण योद्धा लोग अभिमन्युको चक्रव्यूहमें प्रवेश करते देखकर प्रसन्नचित्त युद्ध करने लगे। जैसे गङ्गा और समुद्रका मिलनेसे मुहूर्त्तभरमें जलही जल उस

ेख पड़ता है। वैसे ही उस समयमें दोनों नाके शूरवीरोंका समागम हुआ। महाराज। िभिमन्युके द्रोणसेनाके बीच प्रवेशकरनेके मयमें दोनों सेनाके शूरवीर योद्धा लोग युद्धमें त्तहोकर एक दूसरेके ऊपर शस्त्रोंको हार करने लगे, उससे महा भयङ्कर तुमुल । होने लगा। जब इस प्रकारसे महा र युद्ध होने लगा, तब उस ही समय अभि-न्युने द्रोणाचार्य्यके सम्मुखहीमें व्यूहभेद रके शत्रुसेनाके बीच प्रवेश किया। गजपति ड़सवार, रथी, और पैदल सेनाके योद्धा-ग पराक्रमी अभिमन्युको आगे बढ़ते देख-र चारों ओरसे अस्त्रशस्त्र ग्रहण करके उन्हें रने लगे। वे सम्पूर्ण योद्धा लोग नाना प्रका-के युद्धके बाजोंको बजाते और तर्जन धनुष-ङ्कार तथासिंहनाद करके अभिमन्युको कार पुकारके कहने लगे,—"खड़ा रह! हा जायगा। यहांपर ही खड़ा रह! मेरे मुख होके युद्ध कर, मैं इधर हूं। यहांपर ड़ा हूं,— इसी प्रकारका वचन बार बार हते हुए हाथियोंके चिघाड़, घोड़ोंकी हिन-नाहट और रथोंकी घरघराहटके सहित म्पूर्ण योद्धा अभिमन्युकी ओर दौड़े। युद्ध द्याके जाननेवाले महावीर अभिमन्यु उन गोंको सम्मुख आते देखकर शीघ्रताके सहित मूहके समूह वीर योद्धाओंको मर्म्मभेद णोंसे विद्ध करके पृथ्वीमें गिराने लगे। जैसे तङ्गोंका समूह जलती हुई अग्निमें प्रवेश रता है, वैसे ही वे सम्पूर्ण योद्धा लोग भिमन्युके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर भी उसके मुख बढ़ने लगे। जैसे यज्ञस्थलमें कुशके मूहसे वेदी छिप जाती है वैसे ही अभिम-ुन उन सम्पूर्ण वीरोंके हाथ, पांव शिर आदि ङ्गोंको अपने अस्त्रोंसे काट कर संग्रामकी ूमिको पूर्ण कर दिया, मरे हुए वीरपुरुषोंके रीरोंसे उस स्थानमें पृथ्वी छिप गई, तलवार, ढाल अंकुश, घोड़ोंकी बागडोर, तोमर, परशु, गदा प्रास, ऋष्टि, पट्टिश, भिन्दिपाल पविष, शक्ति, ध्वजा, कोड़े, सुन्दर घड़े, पास तथा पत्थर आदि अस्त्रशस्त्रोंके धारण करनेवाले शूरवीर योद्धाओं तथा कवच और अङ्गुलित्राण से भूषित चन्दनचर्चित वीरोंकी उत्तम भुजा ओंको काटकाटकर गिराने लगे। हे महाराज! जैसे गरुड़के द्वारा काटे हुए पञ्चमुखवाले सर्पोंके समूहसे पृथ्वी शोभित होती है वैसे ही रुधिर पूरित कांपती हुई उन वीरोंकी कटी हुई भुजाओंसे संग्रामभूमि शोभायमान होने लगी। महापराक्रमी अभिमन्यु उत्तम नासिका, मुख, उत्तम केश और सुन्दर कुण्डलोंके सहित वीरोंके शिर तथा मुकुट छत्र शोभित कमलनालसे युक्त कमलपुष्पके समान प्रकाशित मणि और सुवर्ण युक्त रत्नोंसे भूषित, सूर्य्य और चन्द्रमाके समान प्रकाशमान, हितकारी और प्रियवादी पवित्र चन्दन आदि सुगन्धित वस्तु-ओंसे युक्त बहुत तेरे शत्रुसेनाके शूरवीरोंके शिरको अस्त्रशस्त्रोंसे काटकर संग्रामभूमिको पूरित कर दिया। महाराज! उस समयमें मैंने देखा, कि अर्ज्जुनपुत्र अभिमन्युने अपने अनेक तीक्ष्ण बाणोंको चलाकर सब ओर नाना प्रका-रके कल्पित गन्धर्व्व नगरके समानसहस्रों रथोंकी ध्वजा, धुरी, चक्र रथके ऊपर तथा नीचेके हिस्सोंको काटकर उन रथोंको रथियोंसे रहित कर दिया। रथोंके दण्ड और ध्वजा पताकाओंके सहित कितने ही रथोंको बाणोंसे काटके खण्ड खण्ड कर दिया। शत्रुसेनाके हाथी गजसवार, और उनकी पताका अंकुश, ध्वजा, तूणीर, वर्म्म हौदे, गलेके भूषण कम्बल (झौलपीठ) घण्टा, सूड़ दांत और पांव, माला और उनके पादरक्षक योद्धाओंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे काटडाला। वनवासी, पर्व्वतीय, काम्बोज और वाह्लिक देशीय स्थिर पूंछ उत्तम कर्ण और सुन्दर नेत्रोंसे युक्त वायुके

समान वेगगामी उत्तम उत्तम अनेक घोड़ोंकी शक्ति ऋष्टि और प्रास आदि अस्त्रोंको धारण करनेवाले अत्यन्त शिक्षित शूरवीर घुड़सवार योद्धाओंके सहित मारकर पृथ्वीमें गिराया। कितने ही घोड़ोंकी जिह्वा और कितनोंके नेत्र निकल आये, कितने ही घोड़ोंके पेट फट गये, और कितने ही घुड़सवारोंके सहित मरकर पृथ्वीमें गिर पड़े; कितने ही घोड़ोंके चवरोंके सहित जीनपोश कटके पृथ्वीमें गिर पड़े, कितने ही घोड़ोंके कवच कट गये और कितने ही वायुवेगी घोड़े घण्टारहित और सवारोंसे हीन होगये। कितने ही घोड़े अभिमन्युके बाणोंसे पीड़ित होके रुधिरयुक्त शरीरसे मूत्र-मल परित्याग करने लगे! वे सम्पूर्ण घोड़े इसी प्रकारसे रुधिरयुक्त होकर सम्पूर्ण शूरवीरोंके आनन्दको बढ़ाते हुए अभिमन्युके बाणोंसे मरकर पृथ्वीमें गिर पड़े। जैसे महातेजस्वी महात्मा विष्णुने अकेले ही पहिले समयमें अत्यन्त कठिन कर्म्मोंको किया, अर्थात् दैत्योंका नाश किया था, वैसे ही अभिमन्यु तुम्हारी सेनाका तीन भाग करके उसका नाश करने लगे। जैसे महातेजस्वी देवोंके देव महादेवने महाघोर असुरोंकी सेनाका संहार किया था, वैसे ही अभिमन्युने युद्धभूमिमें अत्यन्त कठिन कर्म्म करके तुम्हारी सम्पूर्ण पैदल चलनेवाली सेनाका उस स्थलमें नाश किया। जैसे पहिले समयमें देवतोंके सेनापति स्वामिकार्त्तिकने असुरोंकी सेनाका नाश किया था, वैसे ही सम्पूर्ण सेनाको अभिमन्युके तीक्ष्ण बाणोंसे अत्यन्त ही पीड़ित तथा मरते देखकर तुम्हारी ओरके पराक्रमी योद्धा तथा तुम्हारे सम्पूर्ण पुत्र शत्रुको जीतनेमें उत्साह-रहित होगये, और चकित होकर दशों दिशाओंको अवलोकन करने लगे। उन सब शूरवीरोंका मुख सूखने लगा शरीरसे पसीना बाहर हुआ और शरीरके रोंए खड़े होगये। अनन्तर वे सम्पूर्ण योद्धा अपने जीवनकी अभिलाष करके युद्धभूमिसे भागने लगे। वे सब लोग मरे तथा घायल पिता, पुत्र भा और दूसरे सम्बन्धियोंको संग्रामभूमिमें छो, कर उनके नाम और गोत्रको सुनाकर आपस एक दूसरेको आवाहन करते हुए शीघ्रत सहित घोड़े हाथियोंको चलाकर अभिमन्यु सम्मुखसे भागने लगे।

३५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, राजा दुर्य्योधन अपनी सेन महा पराक्रमी सुभद्रापुत्र अभिमन्युके उसम भागती हुई देखकर रथपर चढके अभिमन्यु ओर दौड़े। अनन्तर द्रोणाचार्य्य दुर्य्योध अभिमन्युके सम्मुख आते देखकर सम्पूर्ण राजा बोले कि पराक्रमी अभिमन्यु जबतक हमलो सम्मुखमें लक्ष्य (निशाना) नहीं विद्ध क हैं, तुम लोग उसके पहिले ही भय त्याग अभिमन्युके सम्मुख शीघ्रताके सहित जाकर राज दुर्य्योधनकी रक्षा करो। अनन्तर, कृत मित्र बलवान् और युद्धको जीतनेवाले राजा भय भीत होके भी दुर्य्योधनको चारो ओ घेरकर युद्धभूमिमें अभिमन्युके सम्मुख हुए, और द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामा, कृपाचार्य कर्ण कृतवर्म्मा, शकुनि, बृहद्बल, मद्रराज भूरिश्रवा, शल, पौरव और बृषसेन आदि पर क्रमी योद्धा लोग अपने तीक्ष्ण बाणोंकी व करके अभिमन्युको बाणोंसे छिपाने लगे उन सम्पूर्ण महारथ वीरोंने अपने बा वर्षासे अभिमन्युको मोहित करके उसके संमु पड़े हुए ग्रासके समान राजा दुर्य्योधनको मु किया; उन शूरवीरोंका यह कर्म्म अर्जु अभिमन्युसे नहीं सहा गया। उसने अ तीक्ष्ण बाणोंको चला कर घोड़े और सारथि योंके सहित उन महारथियोंको युद्धभू विमुख करके सिंहनाद किया। द्रो

आदि महारथ योद्धा ओंने मांसकी इच्छावाले सिंहस्वरूप अभिमन्युके सिंहनादको सुनकर अत्यन्त ही क्रोध किया, और फिर उनकी ओर दौड़े। अनन्तर उन सम्पूर्ण महारथियोंने चारों ओरसे रथोंके समूहसे अभिमन्युको घेरकर उसके ऊपर नाना भांतिके बाणोंकी वर्षा करने लगे। अर्ज्जुनपुत्र अभिमन्यु उन लोगोंके चलाये हुए बाणोंको आकाश मार्गहीमें अपने तीक्ष्ण बाणोंसे काटने लगे, और अपने चोखे बाणोंसे उन महारथ योद्धाओंको भी विद्ध करने लगे; वह युद्ध अद्भुत रूपसे दिखाई देने लगा। अनन्तर उन महारथियोंने अत्यन्त ही कुपित होकर विषधारी सर्पके समान तीक्ष्ण बाणोंको वर्षा कर अभिमन्युका बध करनेकी इच्छासे उन्हें चारों ओरसे घेर लिया। हे भारत! जैसे तट समुद्रको सीमा लङ्घन नहीं करने देता वैसे ही अकेले ही अभिमन्युने अपने पराक्रमसे तुम्हारे उन सम्पूर्ण सेनाके महारथ वीरोंको आगे नहीं बढ़ने दिया। आपसमें एक दूसरेके ऊपर बाणोंको चलानेवाले अभिमन्यु तथा तुम्हारी सेनाके महारथ योद्धाओंमेंसे कोई भी युद्धसे पीछे न हटा। उस महाघोर भयङ्कर युद्धमें दुःसहने नव, दुःशासनने बारह कृपाचार्य्यने तीन द्रोणाचार्य्यने विषैले सर्पके समान सात तीक्ष्ण बाण चलाये। विविंशतिने सत्तर कृतवर्म्माने सात, बृहद्बलने आठ भूरिश्रवाने तीन, अश्वत्थामाने सात, मद्रराज शल्यने छः शकुनिने दो और दुर्य्योधनने तीन बाणोंसे अभिमन्युको विद्ध किया। हे राजेन्द्र! उस महाधनुर्द्धारी प्रतापी अर्ज्जुनपुत्र अभिमन्युने मानो रणभूमिमें नृत्य करते हुए उस सम्पूर्ण महारथ वीरोंको तीन तीन बाणोंसे विद्ध किया। अनन्तर अभिमन्युने तुम्हारे पुत्रोंसे भयभीत और क्रुद्ध होकर अपने अस्त्रशिक्षा और पराक्रमको प्रकाशित करते हुए गरुड़ और वायुके समान वेगगामी उत्तम घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़कर सम्मुख आये हुए राजा अश्मकपुत्रको अपने अस्त्रशस्त्रोंसे निवारण किया, और "खड़ा रह। खड़ा रह।" कहके उन्हें दश बाणोंसे विद्ध किया; फिर हंसते हंसते एक बाणसे उसके सारथी चार बाणोंसे उसके रथके चारो घोड़े एक बाणसे रथकी ध्वजा दो बाणोंसे उनकी दोनों भुजा एक बाणसे धनुष और एक बाणसे उनका शिर काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। अनन्तर जब पराक्रमी वीर अश्मकपति अभिमन्युके अस्त्रोंसे मारे गये, तब तुम्हारी सम्पूर्ण सेना भयभीत होके अभिमन्युके सम्मुखसे भागने लगी। अनन्तर कर्ण, कृपाचार्य्य द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामा गान्धारराज शल शल्य, भूरिश्रवा, क्राथ, सोमदत्त विविंशति वृषसेन, सुसेन, कुम्भभेदी प्रतर्द्दन, वृन्दारक, ललित्थ, प्रवाह, दीर्घलोचन और दुर्य्योधन आदि योद्धा लोग क्रुद्ध होकर अभिमन्युके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। अभिमन्युने उन सम्पूर्ण महारथ धनुर्द्धारियोंके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर कर्णके ऊपर शत्रुदेह भेद करनेवाला एक तीक्ष्ण बाण चलाया। हे राजेन्द्र! जैसे सर्प बिलमें प्रवेश करता है, वैसे ही वह बाण कर्णके तनुत्राण और शरीरको भेद करके पृथ्वीमें गिरा। जैसे पर्व्वत कम्पित नहीं होता वैसेही कर्ण अभिमन्युके बाणके प्रहारसे व्यथित और विह्वल होकर भी कम्पित नहीं हुए। अनन्तर बलवान् अभिमन्युने फिर तीन तीक्ष्ण बाणोंको चलाकर दीर्घलोचन, सुषेन और कुम्भभेदी,— इन तीन शूर वीरोंका बध किया। तब कर्णने पचीस, अश्वत्थामाने बीस और कृतवर्म्माने सात बाणोंसे अभिमन्युको प्रहार किया। उस समय अर्ज्जुनपुत्र अभिमन्युका सम्पूर्ण शरीर उन महारथियोंके बाणोंसे परिपूर्ण होगया, और वह क्रुद्ध होकर पाशधारी यमराजके

समान सम्पूर्ण सेनाके बीच घूमते हुए दिखाई देने लगे, महाबाहु अभिमनुग्ने समीपमें जो स्थित महारथ शल्यको देख कर उन्हें अपने बाणोंसे छिपा दिया ; और तुम्हारी सेनाके योद्धाओंको भयभीत करके सिंहनाद करने लगे। हे राजन् ! शल्य अभिमनुके मर्म्मभेद बाणोंसे पीड़ित होकर रथदण्ड पकड़के मूर्च्छित होकर बैठ गये। सम्पूर्ण सेना शल्यको यशस्वी अभिमनुके बाणोंसे इस प्रकारसे पीड़ित देखकर द्रोणाचार्य्यके सम्मुखहीमें अभिमनुके आगेसे भागने लगी। तुम्हारी ओरके सम्पूर्ण योद्धा लोग महाबाहु शल्यको अभिमनुके बाणोंसे छिपे हुए देखकर युद्धभूमिसे इस प्रकार भागने लगे, जैसे सिंहसे पीड़ित होकर मृगोंका समूह भागता है। महात्मा अभिमनु आकाशमें स्थित पितर देवता, चारण, सिद्ध और पृथ्वीपर स्थित सम्पूर्ण पुरुषोंके बीच यशयुक्त और प्रशंसित होकर मानों अग्निमें पड़े हुए घृतके समान उस संग्रामभूमिमें प्रकाशित होने लगे।

३६ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जिस समय अर्ज्जुनपुत्र महाधनुर्द्धारी अभिमन्यु महारथ वीरोंको अपने बाणोंसे पीड़ित कर रहा था, उस समयमें मेरी ओरके किनकिन शूरवीर योद्धाओंने उसे निवारण किया ?

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र ! अर्ज्जुनपुत्र अभिमन्युने द्रोणाचार्य्यसे रक्षित रथसेनाको भेद करनेकी इच्छा करके जिस प्रकारसे कठिन कार्य्य किया था, वह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम सुनो। मद्रराज शल्यको अभिमन्युके बाणोंसे मूर्च्छित देखकर उनके छोटे भाई क्रुद्ध हो बाणवर्षा करते हुए अभिमन्युके सम्मुख उपस्थित हुए, उन्होंने दश बाणोंसे अभिमन्युका घोड़े और सारथीके सहित विद्ध करके "ठहर रह ! खड़ा रह !' कहके महाघोर शब्द सहित सिंहनाद किया। अभिमन्युने हस्त लाघवके सहित शीघ्रही उनके रथके चारो घोड़े सारथी, धनुष, हाथ, पांव, गर्द्दन, शिर ध्वजा रथके चक्र, रथकी धूरी तूणीर, और दो चक्र-रक्षक तथा रथकी सम्पूर्ण सामग्रियोंके सहित उन्हें इस प्रकार अपने तीक्ष्ण अस्त्रोंसे काट डाला, कि कोई पुरुष उन्हें देख सो न सका। जैसे प्रचण्डवायुके झोकेसे बड़े बड़े वृक्ष टूट पृथ्वीपर गिर पड़ते है वैसे ही वह अभिमन्युके अस्त्रोंसे कटकर पृथ्वीमें गिर पड़े, तब उनके अनुयायी सम्पूर्ण योद्धा भयभीत होकर अभिमन्युके सम्मुखसे इधर उधर भागते दिखाई देने लगे। हे भारत। अभिमन्युको इस प्रकारसे कठिन कर्म्म करते हुए देखकर आकाश और पृथ्वीपर स्थित सम्पूर्ण प्राणी धन्य धन्य कहके उसकी प्रशंसा करने लगे। हे भारत। जब राजा शल्यका कनिष्ठ भ्राता अभिमनुके अस्त्रोंसे मारा गया तब उसकी बहुतसी सेना अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपना कुल निवास, स्थान और नाम सुनाकर अभिमन्युकी ओर दौड़ी। उसमेंसे कितने ही शूरवीर योद्धा लोग रथ पर चढ़के चले, कितने ही हाथी, घोड़ेपर चढ़के अभिमन्युकी ओर दौड़े; और कितनेही पैदल ही उनकेसम्मुख उपस्थित हुए। उनके बाणोंके शब्द, रथकी घरघराहट, हाथियोंके चिङ्घाड़ घोड़ोंकी हिनहिनाहट-झङ्कार, सिंहनाद वीरोंके गर्जन धनुषटङ्कार और तनुत्राणके शब्दसे वह रणभूमि पूर्ण होगई। कोई शूरवीर योद्धा यह वचन करते हुए अभिमन्युकी ओर दौड़े, कि "तुम जीतेजी हमारे सम्मुखसे नहीं बच सकोगे" ऐसे बचन कहते हुए उन सम्पूर्ण योद्धाओंने अभिमन्युको आक्रमण किया। सुभद्रापुत्र अभिमनुने उन सम्पूर्ण वीरोंको इस प्रकारसे प्रलाप करते हुए सम्मुख आते देखा, और

उन योद्धाओंसे जिन जिन शूरवीरोंने पहिले उनके ऊपर प्रहार किया था, अभिमन्युने हंसते हुए उन्हें अपने तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध करना आरम्भ किया। उस समय पराक्रमी अभिमन्यु विचित्र रूपसे हस्तलाघवके सहित अस्त्र शस्त्रोंकी निपुणता दिखाते हुए मृदु युद्ध करने लगे। श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनके समीपसे अभिमन्युने जिन सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्रोंकी विद्या सीखी थी, उसे वह उस समयमें सम्पूर्ण शूरवीरोंके सम्मुख प्रकाशित करने लगे। वह इस अत्यन्त कठिन भार और भयको त्यागकर बार बार बाणोंको सन्धान करके उन सम्पूर्ण शूरवीरोंके ऊपर छोड़ने लगे, कि उनका धनुष मण्डलाकार रूपसे शरत्कालके सूर्य्य मण्डलके समान उस समय संग्रामभूमिमें प्रकाशित होने लगा। हे भारत। जैसे प्रलय कालके समय महा भयङ्कर बादलोंके गर्ज्जने और बिजली गिरनेके समय भयानक शब्द होता है, वैसे ही अभिमन्युके दृढ़ धनुष और तनुत्राणका शब्द युद्धभूमिमें सुनाई देने लगा। लज्जाशील, योग्य पुरुषोंके समान कर्म्म करनेवाले सुकुमार अभिमन्यु क्रोध पूरित मानो वैर योद्धाओंके सम्मान करनेके ही निमित्त उस समय महा घोर संग्राम करने लगे। हे राजेन्द्र। वह वर्षाके अनन्तर शरदऋतुके सूर्य्यके समान पहिले मृदु युद्ध करके फिर तीव्र रूपसे युद्ध करने लगे। जैसे सूर्य्य चारों ओर अपने किरणोंका विस्तार करके आकाशमें शोभित होते है, वैसे ही अभिमन्यु स्वर्णदण्ड युक्त सैकड़ों तथा सहस्रों अपने प्रकाशमान बाणोंको चलाकर युद्धभूमिमे शोभित होने लगे। उस महायशस्वी अभिमन्युने द्रोणाचार्य्यके सम्मुख क्षुरप्र, वत्सदन्त, विपाट नाराच, अर्द्धचन्द्र, भल्ल और अञ्जलिक अस्त्रोंको चलाकर शत्रुसेनाके रथियोंको छिपा दिया। अनन्तर सेनाके सम्पूर्ण योद्धा अभिमन्युके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर युद्धभूमिसे भागने लगे।

३७ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय। अभिमन्युने जो मेरी सेनाके योद्धाओंको युद्धभूमिमें निवारण किया था, उसे सुनकर मेरे चित्तमें लज्जा और सन्तोष दोनों ही उत्पन्न होरहे है। हे सूत। असुरोंके सङ्ग जैसे देवतोंके सेनापति कुमार स्वामिकार्त्तिकने युद्धभूमिमें क्रीड़ा किया था, वैसे ही कुमार अभिमन्युने रणभूमिमें जिस प्रकारसे क्रीड़ा की, है वह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम मेरे समीपमें विस्तारपूर्व्वक वर्णन करो।

सञ्जय बोले, हे महाराज। उस एक सुकुमार बालकके सङ्ग, तुम्हारी सेनाके जो बहुतेरे महारथ योद्धाओंका महा घोर तुमुल संग्राम हुआ था, वह सम्पूर्ण वृत्तान्त मैं तुम्हारे समीप विस्तारपूर्व्वक वर्णन करता हूं। उत्साहसे युक्त रथपर चढ़े हुए अभिमन्यु तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण उत्साही रथी और महारथियोंके ऊपर अपने बाणोंको वर्षाने लगे, और चक्रकी भांति रणभूमिमें चारों ओर घूमते हुए द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा, कर्ण, शल्य, भोजराज कृतवर्म्मा, वृहद्दल, दुर्य्योधन, सोमदत्तपुत्र भूरिश्रवा महा बलवान् शकुनि और दूसरे राजाओं तथा सेनाके योद्धाओंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध किया। हे भारत! उस प्रतापी अत्यन्त तेजस्वी अभिमन्युको उस समय रणभूमिमें चारों ओर सब पुरुष परम अस्त्रोंसे शत्रुओंको पीड़ित करते हुए देखने लगे। तुम्हारी सेना उस युद्धभूमिमे महातेजस्वी अभिमन्युके चरित्रको देखकर कांपने लगी हे भारत। अनन्तर महा बुद्धिमान् प्रतापी द्रोणाचार्य्य अभिमन्युकी युद्धमें निपुणता देखकर हर्षित होकर मानो

तुम्हारे पुत्रके मर्म्मको भेद करके ही कृपाचार्य्यसे यह बचन बोले,—यह तरुण अवस्थावाला अभिमन्यु सम्पूर्ण इष्टमित्र और राजा युधिष्ठिर नकुल, सहदेव भीमसेन तथा दूसरे बन्धुवर्ग, सम्बन्धी मध्यस्थ सुहृद् लोगोंको आनन्दित करता हुआ पाण्डवोंके आगे गमन कर रहा है; मैं बोध करता हूं, युद्धमें इसके समान कोई भी धनुर्द्धारी योद्धा नहीं है। यह इच्छा करनेसे सम्पूर्ण सेनाका नाश कर सकता है, परन्तु न जाने किस कारणसे इच्छा नहीं करता; मैं इस विषयको कुछ कह नहीं सकता हूं। तुम्हारे पुत्र लोग द्रोणाचार्य्यके प्रीतिसे युक्त इस बचनको सुनकर उनकी ओर देखकर हंस और फिर अत्यन्त ही क्रुद्ध हुए। अनन्तर कर्ण वाह्लिक दुःशासन मद्रराज शल्य और दूसरे वहांपर स्थित हुये सम्पूर्ण महारथियोंसे बोले, कि सम्पूर्ण राजाओंके गुरु ब्राह्मण श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य मोहित होकर इस रणभूमिमें अर्ज्जुनपुत्र अभिमन्युका बध करनेकी इच्छा नहीं करते हैं। मैं तुम लोगोंके समीप यह सत्य बचन कहता हूं, कि द्रोणाचार्य्यके क्रुद्ध होनेपर यमराज भी उनके समीपसे मुक्त नहीं हो सकते मनुष्यकी तो बात ही क्या है। वह अर्ज्जुनके पुत्रकोशिष्य समझकर उसकी रक्षा करते है। शिष्य, पुत्र और उनकी सन्तान भी धर्म्मशील पुरुषोंको प्रिय हुआ करती है। यह अभिमन्यु द्रोणाचार्य्यसे रक्षित होकर ही अपनेको बलवान् समझ रहा है; इससे तुम सब कोई इस अभिमानी मूढ़ अभिमन्युका संहार करो। हे भारत! सम्पूर्ण राजाओंने राजा दुर्य्योधनकी ऐसी आज्ञा सुनकर द्रोणाचार्य्यके सम्मुख ही अत्यन्त क्रुद्ध होकर अभिमन्युके बधकी इच्छा करके उसकी ओर दौड़े। कुरु शार्दूल दुःशासन दुर्य्योधनका वचन सुनकर उनसे बोले, हे महाराज। मै आपसे यह बचन कहता हूं, कि "मैं पाण्डव और पाञ्चाल योद्धाओंके सम्मुखमें ही इसका बध करूंगा।" जैसे राहु सूर्य्यको ग्रास करता हैं, वैसे ही मैं युद्धभूमिमें [illegible] ग्रास करूंगा। ऐसा कहकर फिर दुःशासन ऊंचे स्वरसे कुरुराज दुर्य्योधनसे बोले, [illegible] मानी कृष्ण और अर्ज्जुन अभिमन्युको मेरे हाथसे मरा हुआ सुनकर अवश्य ही प्राण त्याग करेंगे, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। पाण्डुके [illegible] सब पुत्र लोग इन दोनोंकी मृत्युका समाचार सुनकर बलहीन होकर अपने सुहृद मित्रों सहित एक ही दिनमें प्राणत्याग करेंगे; इस [illegible] तुम्हारे इस एक ही शत्रुके मारे जानेपर [illegible] सम्पूर्ण शत्रुओंका नाश होगा। महाराज! [illegible] मेरे कल्याणकी चिन्ता करो, मै अकेले ही [illegible] शत्रुका बध करूंगा। हे राजन्। तुम्हारे [illegible] दुःशासनने ऐसा बचन कहकर क्रुद्ध हो सिंहनाद करते और बाणोंकी बर्षाते हुए अभिमन्युकी ओर दौड़े। शत्रुनाशन अभिमन्यु दुःशासनको अत्यन्त क्रोध-पूर्व्वक अपनी ओर आता हुआ देखकर छब्बीस चोखे बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। क्रोधी दुःशासन मतवाले हाथीके समान उस रणभूमिमें अभिमन्युके सङ्ग युद्ध करने लगे; अभिमन्यु भी दुःशासनके संग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। रथशिक्षामें निपुण वे दोनों महारथ योद्धा रथकी गतिसे बाई और दाहिनी ओर मण्डलाकार गतिके सहित विचित्र रूपसे घूमते हुए युद्ध करने लगे। अनन्तर सम्पूर्ण योद्धा लोग लवण समुद्रके महा भयङ्कर शब्दकी भांति वीरोंके सिंहनाद और धनुष टङ्कारके सहित ढोल, नगाड़े मृदङ्ग, शंख भेरी और झांझ आदि बाजे बजाने लगे।

३८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, बाणोंसे क्षतविक्षत शरीरवाले बुद्धिमान् अभिमन्यु हंसते हुए निकटमें

यत शत्रु दुःशासनसे बोले, कि तुम शूरवीर, ...नी क्रोधी निठुर और धर्म्मत्यागी हो, ...रव्य होसे मैंने तुम्हें रणभूमिमें सम्मुख आये ...र देखा है। तुमने ही राजा धृतराष्ट्रके ...मुखमें धर्म्मराज युधिष्ठिरको कड़वी बातोंसे ...पित किया था। तुमने ही जुएके खेलमें ...यप्राप्त कर उन्मत्त होकर बाह बाह करके ...मसेनको कुपित किया था, उसही महात्माके ...पके वशमें होकर तुम इस युद्धभूमिमें उप-...यत हुए हो। रे नीच बुद्धिवाले मूढ़! तू ...राये धनके हरने, विवाद करने, क्रोध, लोभ, ...र्बुद्धिता, और महात्मा मेरे पिता पितृव्योंके ...षयमें उनकी बुराई करनेकी इच्छा, प्राण-...प्त होनेवाले नीच कर्म्मोंके अनुष्ठान, और ...ज्य हरण आदि दोषोंके कारणसे ही इस ...णभूमिमें उपस्थित हुआ है। तू उस सम्पूर्ण ...धर्म्मका फल शीघ्र ही पावेगा, आज मैं सम्पूर्ण ...नाके सम्मुखहीमें तुझे शासित करूंगा। आज रणभूमिमें सदासे क्रोधयुक्त कृष्णा और अर्ज्जु-...के क्रोधको शान्त करके उनकी अभिलाष ...र्ण करके ऋणरहित होऊंगा। आज मैं इस ...द्धभूमिमें भीमसेनके ऋणसे मुक्त होऊंगा। ...दि तुम युद्ध त्याग कर रणभूमिसे भाग न ...ओगे, तो मेरे समीपसे जीते हुए मुक्त न हो ...ओगे, ऐसेही वचन कह कर महाबाहु ...त्रु नाशन वीर अभिमन्युने दुःशासनके वधके ...मित्त महा भयङ्कर कालाग्निके समान प्रकाश-...ान और वायुके समान वेगशील बाण ...धान करके दुःशासनकी ओर चलाया। ...से सर्प बिलको भेद करके बाहर निक...ता है वैसे ही वह दुःशासनके वक्षस्थलमें ...गा और कोखको भेदकर पृथ्वीमें गिरा। ...नन्तर अभिमन्युने फिर अग्निके समान स्पर्श ...रनेवाले पच्चीस बाणोंको धनुषपर चढ़ाकर ...शासनके ऊपर चलाया। महाराज! उनसे ...शासन अत्यन्त विद्ध पीड़ित और मूर्च्छित हो रथका दण्ड पकड़के रथपर बैठ गये, उनके सारथीने उन्हें अभिमन्युके बाणोंसे पीड़ित और मूर्च्छित देखकर शीघ्रताके सहित रणभूमिसे पृथक् किया।

अनन्तर सम्पूर्ण पाण्डव द्रौपदीके पांचो पुत्र विराट, पाञ्चाल और केकय देशीय लोग अभिमन्युके इस कर्म्मको देखकर सिंहनाद करने लगे, पाण्डवोंको सेनाके सम्पूर्ण योद्धा हर्षित होकर युद्धके बाजे बजाने लगे। ध्वजाओंके अग्रभागमें धर्म्म, वायु इन्द्र, और अश्विनी कुमारोंकी प्रतिमासे युक्त रथोंपर स्थित द्रौपदीके पाचो महारथ पुत्र अत्यन्त बैरी दुःशासनको पराजित देखकर अभिमन्युकी प्रशंसा करने लगे। राजा युधिष्ठिरके अनुयायी सात्यकि चेकितान, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, केकय योद्धा, धृष्टकेतु, मत्स्यदेशीय योद्धा लोग और पाञ्चाल तथा पाण्डवोंके सम्पूर्ण योद्धा लोग प्रसन्न और हर्षित होकर द्रोणाचार्य्यकी सेनाको भेद करनेकी इच्छासे क्रोधपूर्व्वक आगे बढ़ने लगे। अनन्तर उन सम्पर्ण योद्धाओंके सङ्ग तुम्हारी ओरके शूरबीर पीछे न हटनेवाले योद्धाओंका महाघोर युद्ध होने लगा।

महाराज। उस भयङ्कर युद्धके उपस्थित होनेपर दुर्य्योधनने कर्णसे कहा, हे कर्ण। देखो वीर दुःशासन सूर्य्यके समान प्रतापवान् होकर शत्रुओंकी सेनाको भस्म करते रहते हैं परन्तु अभिमन्युके निकटमें आज वह परास्त हुए है। और ये सब बलके घमण्डसे मतवारे सिंहके समान पराक्रमी पाण्डव लोग क्रुद्ध होकर अभिमन्युकी रक्षा करते हुए चले आते है। अनन्तर तुम्हारे पुत्रके हितकी इच्छा करनेवाले कर्ण क्रुद्ध होकर अभिमन्युके ऊपर अपने अनेक तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करने लगे, और अत्यन्त तीक्ष्ण बाणोंसे अभिमन्युके अनुयायियोंको विद्ध करके उनको क हुए अपने बाणोंकी वर्षाने लगे

महायशस्वी अभिमन्यु, द्रोणाचार्य्यके समीपमें गमन करनेकी इच्छासे कर्णको तिहत्तर बाणोंसे बिद्ध किया। उस समयमें कोई भी योद्धा अर्ज्जुनपुत्र अभिमन्युको द्रोणाचार्य्यके सम्मुखमें जाते देख, उन्हें निवारण करनेमें समर्थ न हुए। अनन्तर सम्पूर्ण अस्त्रधारियोंमें अग्रणी, मानी और विजयकी इच्छा करनेवाले परशुरामके शिष्य महावीर कर्ण सैकड़ों तथा राहसी उत्तम अस्त्रोंको चलाकर रणभूमिमें अभिमन्युको पीड़ित करने लगे। देवतोंके समान पराक्रमी अर्ज्जुनपुत्र अभिमन्यु राधानन्दन कर्णकी अस्त्र-बर्षासे अत्यन्त पीड़ित होकर भी दुःखित नहीं हुए, बल्कि शिलापर घिसे हुए चोखे बाणोंसे दूसरे शूरवीर योद्धाओंके धनुषको काटकर, फिर हंसते मण्डलाकार गतिसे धनुष घुमाते हुए शीघ्रतापूर्व्वक विषैले सर्पके समान तीक्ष्ण बाणोंको चलाकर छत्र, ध्वजा, सारथी और घोड़ोंके सहित कर्णको पीड़ित करने लगे। कर्ण भी अनेक तीक्ष्ण बाणोंको अभिमन्युके ऊपर चलाने लगे, अर्ज्जुनपुत्र अभिमन्युने निर्भयचित्तसे कर्णके चलाये हुए उन सम्पूर्ण बाणोंको ग्रहण किया। अनन्तर पराक्रमी वीर अभिमन्युने मुहूर्त्त भरमें एक बाणसे कर्णकी ध्वजा और धनुषको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। अनन्तर कर्णका कनिष्ठ भ्राता उन्हें विपद्‌ग्रस्त देखकर दृढ़ धनुष चढ़ाकर अभिमन्युके समीप उपस्थित हुआ। अनन्तर सम्पूर्ण पाण्डव और उनके अनुयायी योद्धा लोग हर्षपूर्व्वक युद्धके बाजे बजाकर सिंहनाद करते हुए अभिमन्युकी प्रशंसा करने लगे।

३६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! कर्णका कनिष्ठ भ्राता अत्यन्त ही तर्ज्जन गर्ज्जन धनुषटङ्कार करते हुए उन दोनों महात्माओंके दोनों रथोंके बीचमें आकर उपस्थित हुए; और हंस... छत्र ध्वजा घोड़े और सारथीके सहित... कमी अभिमन्युको शीघ्रताके सहित दश... बिद्ध किया। तुम्हारी ओरके योद्धा लोग... और पितामहके समान अलौकिक कर्म... वाले अभिमन्युको उसके बाणोंसे पीड़ित... कर आनन्दित हुए। परन्तु अभिमन्यु... हुए धनुष खींचकर एक ही बाणसे... शिर काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। ... जैसे पर्व्वतके ऊपरसे वायुके झोंकेसे क... पुष्प गिरता है, वैसे ही अपने भाईक... पृथ्वीपर गिरता हुआ देखकर कर्ण अ... दुःखित हुए। अभिमन्यु कङ्कपतयुक्त... कर्णको युद्धसे विमुख करके शीघ्रतासे दूसरे धनुर्द्धारियोंकी ओर दौड़े। वह म... पराक्रमी अभिमन्यु क्रुद्ध होकर हा... और रथोंसे युक्त सम्पूर्ण सेनाको तित... करने लगे। उधर कर्ण अभिमन्यु... बाणोंसे बिद्ध तथा पीड़ित होकर... घोड़ोंसे युक्त रथपर चढ़े हुए युद्धभूमि... हुए, तब उनकी सम्पूर्ण सेना अ... उस्मुखसे भागने लगी।

हे राजेन्द्र! अभिमन्युके बाण... तथा जलधाराके समान आकाशको... करने लगे; उस समयमें कुछ भी दिख... देता था तुम्हारी ओरके सम्पूर्ण यो... मन्युके तीक्ष्ण बाणोंसे अत्यन्त ही पी... उन सब योद्धाओंके बीच केवल सिन्धु... द्रथको छोड़के और कोई भी युद्धभू... न हो सके। हे भरतर्षभ! अनन्तर अभिमन्यु अपना शंख बजाकर भारती सेनाकी ओर बढ़े, और अ... बाणोंसे शत्रुओंको इस प्रकारसे भ... लगे, जैसे अग्नि रूईको शीघ्र ही भस्म... है। उस सेनाके बीच प्रवेश करके अ... अपने चोखे बाणोंसे रथी, हाथी,

ल चलनेवाले योद्धाओंका बधकरके रण-मको सैकड़ोंकबन्धोंसे युक्त कर दिया। कितने शूरवीर योद्धा उसके तीक्ष्ण अस्त्रोंसे क्षत-त शरीर होके अपने जीवनकी रक्षाके निमित्त नी ओरके योद्धाओंका ही बध करते हुए भमन्युके समीपसे भागने लगे। उसके अनेक ङ्कर चोखे बाण रथी, गजपति और घुड़-रोंका बध करके पृथ्वीमें गिरने लगे। कितने वीरोंके अस्त्रशस्त्र, अंगुलित्राण गदा कवच णसे भूषित वीरपुरुषोंकी सुन्दर भुजा और र आदि काट काट कर पृथ्वीमें गिरते हुए खाई देने लगे। सहस्र सहस्र बाण, धनुष वार, कुण्डलोंके सहित शिर और मालासे भायमान योद्धाओंके मृत शरीरभूमिमें रते हुए दिखाई देने लगे। हे राजेन्द्र! ण भरके वीचमें भागते, और मरते हुए थी घोड़े, रथोंके समूह रथकी धुरी चक्र गा, ढाल, दण्ड, दूसरी अनेक युद्धकी समग्री, र योद्धाओंके शरीर धनुष, बाण, शक्ति और तम तलवारोंके इधर उधर गिरनेसे वह भूमि अत्यन्त ही भयङ्कर दिखाई देने लगी। ह्नोंकी चोटसे पीड़ित क्षत्रिय योद्धाओंके र्त्तनाद शब्दको सुनकर कादरोंके भयको नेवाला महाघोर शब्द उत्पन्न होने लगा। भारत! उस शब्दसे सम्पूर्ण दिशा परिपूर्ण गई, परन्तु अभिमन्यु हाथी घोड़े, रथ और ल चलनेवाले वीरोंका बध करते हुए सेनाके च भ्रमण करने लगे। जैसे अग्नि सूखे हुए णसमूहके वीच जलती हुई दीख पड़ती है से ही अर्जुनपुत्र अभिमन्यु कुरुसेनाके बीच त्रुओंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे भस्म करते हुए खाई देने लगे। हे भारत! उस समय अभि-यु सम्पूर्ण सेनाके पावके धक्कोंसे धूलि उड़नेसे समें छिप गये, और सेनाके बीच इधर उधर मण करनेसे हम लोग उन्हें देख न सके। ण भरके वीचमें मैंने फिर देखा, कि वह दोपहरके सूर्य्य समान प्रकाशित होकर शत्रुओंको पीड़ित करते, तथा हाथी घोड़े और पैदल चलनेवाले वीरोंका बध करते हुए रणभूमिमें भ्रमण कर रहे हैं। हे राजन्! अर्जुनपुत्र अभिमन्यु कुरुसेनाके बीच इन्द्रके समान प्रकाशित होने लगे।

४० अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! वह बालक अत्यन्त सुखी, अपने बाहु बलसे मतवारा, युद्धविद्याको जाननेवाला और युद्धवंशमें उत्पन्न हुआ था, वह जिस समय प्राणकीआशात्यागकर त्रिवर्षीय उत्तम घोड़ोंसे युक्त रथपर चढ़के हमारी सेनाके बीच प्रविष्ट हुआ, उस समय युधिष्ठिरकी सेनामेंसे कौन कौन बलवान् योद्धा उसके अनुगामी हुए थे?

सञ्जय बोले, महाराज! युधिष्ठिर भीमसेन, शिखण्डी, सात्यकि, नकुल, सहदेव धृष्टद्युम्न विराट, द्रुपद केकय धृष्टकेतु और मत्स्यदेशीय योद्धा क्रुद्ध होकर उससमय अभिमन्युका अनुगमन करते हुए तुम्हारी सेनाकी ओर दौड़े। पाण्डव और वृष्णिवंशीय योद्धा तथा ऊपर कहे हुए सम्पूर्ण महारथ योद्धा लोग सेनाको व्यूहबद्ध करके अभिमन्युकी रक्षाके निमित्त उसके अनुगामी हुए। तुम्हारी ओरके योद्धा लोग उन शूरवीर तथा पराक्रमी योद्धाओंको आते देखकर रणभूमिसे विमुख हुए। तुम्हारे तेजस्वी जामाता (दामाद) तुम्हारी सेनाको युद्धभूमिसे विमुख होते देख पाण्डवोंको निवारण करनेकी इच्छासे उनके सम्मुख आकर उपस्थित हुए। हे राजेन्द्र! सिन्धुराजके पुत्र जयद्रथ अभिमन्युकी रक्षा करनेवाले पाण्डवोंको सेनाके सहित युद्धभूमिमें निवारण करने लगे। जैसे मतवारा हाथी क्रमसे भूमिपर स्थित शत्रुओंको अनायास ही निवारण करता है, वैसे

प्रचण्ड धनुष ग्रहण करनेवाले महारथ जयद्रथने दिव्य अस्त्रोंको प्रकाशित करके उन लोगोंको युद्धसे निवारण किया।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय ! मैं बोध करता हूं, कि सिन्धुराज जयद्रथके ऊपर अत्यन्त कठिन भार अर्पित हुआ था, क्योंकि उन्होंने अकेले ही भ्रातृपुत्रकी रक्षा करनेवाले क्रुद्ध पाण्डवोंको रणभूमिमें निवारित किया? मैं सिन्धुराज जयद्रथको अत्यन्त अद्भुत पराक्रमी और बलवान् समझता हूं। तुम उनके उसही प्रबल बल पराक्रमसे युक्त युद्धके कर्म्मोंका वृत्तान्त मेरे समीपमें वर्णन करो। उन्होंने ऐसा कौनसा दान, होम, व्रत वा तपस्या की थी, कि जिससे अकेले ही युद्धभूमिमें क्रुद्ध पाण्डवोंको निवारण करनेमें समर्थ हुए?

सञ्जय बोले, राजा जयद्रथ द्रौपदीके हरण समयमें जो भीमसेनके सम्मुखसे पराजित हुए थे, उस ही निमित्त उन्होंने वर पानेकी इच्छासे अत्यन्त कठिन तपस्या की थी। वह विषयवासनासे इन्द्रियोंको निवृत्त करके भूख प्यास, सर्दी, गर्म्मी आदि क्लेशोंको सहकर शरीरसे कृशित हो अत्यन्त कठिन तपस्या करके सनातन ब्रह्म महादेवकी स्तुति करते हुए उनकी आराधना वा उपासना करने लगे। अनन्तर भक्तवत्सल महादेवने उनके ऊपर दया की, भक्तोंपर कृपा करनेवाले भोलानाथने सिन्धुराजसुत जयद्रथसे निद्राकालमें यह वचन कहा, "हे जयद्रथ ! मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हुआ हूं, तुम कौनसा वर मांगनेकी इच्छा करते हो? वह मुझसे स्पष्ट रूपसे कहो। महादेवका ऐसा वचन सुन व्रत करनेवाले जयद्रथने विनयपूर्व्वक हाथ जोड़कर यह वचन कहा, हे देवोंके देव! मैं युद्धमें अकेले ही रथपर चढ़के महाबली अत्यन्त पराक्रमी सम्पूर्ण पाण्डवोंको जीतनेकी इच्छा करता हूं। जब जयद्रथने इस प्रकारसे वर मांगा, तब देवोंके देव महादेव प्रसन्न होकर उनसे यह बोले, कि हे तात! मैं तुमको यह वर [illegible] हूं, कि अर्ज्जुनको छोड़ कर युद्धमें तुम [illegible] पाण्डवोंको जीत सकोगे। राजा जयद्रथ [illegible] देवके वचनोंको मानकर निद्रासे सावधान [illegible] महाराज। राजा जयद्रथ उस ही वरके [illegible] और दिव्य अस्त्रोंके बलसे अकेलेही [illegible] पाण्डवोंकी सेनाके सहित युद्धसे निवारण [illegible] था। उनके धनुषटङ्कार और तनुत्राणके शब्द सुनकर शत्रुसेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग भीत होगये, और तुम्हारी सेनाके शूर योद्धा अत्यन्त ही आनन्दित हुए। हे राजे[illegible] तुम्हारी ओरके योद्धाओंने सिन्धुराज जय[illegible] ऊपर सम्पूर्ण भार अर्पित देखकर [illegible] करते हुए युधिष्ठिरकी सेनाको [illegible] किया।

४१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र! तुम मुझसे [illegible] राजके बल और पराक्रमका विषय पूछते [illegible] इससे सिन्धुराज जयद्रथने पाण्डवोंके सङ्ग [illegible] प्रकारसे युद्ध किया, वह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम्हारे निकट वर्णन करता हूं, चित्त [illegible] सुनो। सारथीके वशमें चलनेवाले वायुके [illegible] वेगगामी सिन्धुदेशीय उत्तम घोड़े रथ [illegible] जयद्रथको लेकर पाण्डवोंके सम्मुख [illegible] उनका गन्धर्व्व नगरके समान विधिपूर्व्वक सज्जित रथ और वाराह चिन्हसे युक्त सुवर्णभूषित उत्तम ध्वजा अत्यन्त ही शोभित [illegible] लगी। जैसे आकाशमें तारोंके बीच [illegible] शोभित होता वैसे ही वह श्वेतछत्र श्वेत [illegible] श्वेत चंवर आदि नाना भांतिके राजचिह्न युक्त होकर सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंके बीच [illegible] होने लगे। उनके गलेमें मोतीकी माला, [illegible] मणि और सुवर्णभूषित लोहमयी कवच [illegible]

से युक्त होकर रणभूमिमें इस प्रकारसे शोभित होने लगा, जैसे तारोंके सहित आकाश शोभायमान लगता है। अभिमन्युने शत्रु सेनाके व्यूहका जो जो अंग विदारण किया, जयद्रथने अपने प्रचण्ड धनुषको फेरते हुए शत्रुओंके ऊपर अनेक बाणोंको वर्षा, कर उन सम्पूर्ण स्थानोंको अपनी सेनासे फिर पूर्ण कर दिया। उन्होंने तीन बाणोंसे सात्यकि, आठसे भीमसेन साठ बाणोंसे धृष्टद्युम्न दश बाणोंसे वैराट, पांचसे द्रुपद, सात बाणोंसे शिखण्डी, पचीस बाणोंसे केकय देशीय योद्धाओंको, तीन तीन बाणोंसे द्रौपदीके पुत्रोंको, और सत्तर बाणोंसे राजा युधिष्ठिरको विद्ध करके फिर अनेक बाणोंको वर्षाकर बाकी बचे हुए सम्पूर्ण योद्धाओंको विद्ध किया, उस समय जयद्रथका पराक्रम अद्भुत रूपसे दिखाई देने लगा। हे राजन्! अनन्तर महाप्रतापी राजा युधिष्ठिर हंसते हंसते एक तीक्ष्ण भल्ल ग्रहण करके जयद्रथसे बोले, यही तुम्हारा धनुष काटता हूं," ऐसा कहकर उस भल्लसे जयद्रथका धनुष काट दिया। जयद्रथने निमिष भरमें दूसरा धनुष ग्रहण करके दश बाणोंसे राजा युधिष्ठिर और तीन तीन बाणोंसे वहांपर स्थित दूसरे सम्पूर्ण योद्धाओंको विद्ध किया। भीमसेनने जयद्रथके हस्तलाघवको देखकर तीन बाणोंसे उनका धनुष, ध्वजा और छत्र काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया, महा बलवान् सिन्धुराज जयद्रथने फिर दूसरा धनुष ग्रहण करके उसपर शीघ्र ही रोदा चढ़ा लिया, और भीमसेनके रथकी ध्वजा, चारो घोड़े और धनुषको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे काट दिया। जैसे सिंह पर्व्वतके शृङ्गपर चढ़ता है, वैसे ही भीमसेन धनुषके कटने और घोड़ोंके रहित होनेपर अपने रथसे कूदकर सात्यकिके रथपर जा चढ़े। अनन्तर तुम्हारी ओरके सम्पूर्ण योद्धा लोग सिन्धुराज जयद्रथके इस अद्भुत विश्वास योग्य कर्म्मको देखकर आनन्दित होके धन्य धन्य कहकर उनकी प्रशंसा करने लगे। उन्होंने जो अकेले ही अपने अस्त्रोंके प्रभावसे क्रुद्ध हुए सम्पूर्ण पाण्डवोंको युद्धसे निवारण किया, उससे युद्ध देखनेवाले प्राणी उनके पराक्रम और युद्धके कर्म्मोंकी प्रशंसा करने लगे। पहिले सवारोंमें मुख्य गजपति और घुड़सवार योद्धा जो अभिमन्युके शस्त्रोंसे मरके पृथ्वीमें गिरे थे, उसीसे व्यूहके बीच पाण्डवोंके प्रवेश करनेका मार्ग दीख पड़ा था, परन्तु सिन्धुराज जयद्रथने उसे अपनी सेनासे फिर रुद्ध कर दिया। पाण्डव, मत्स्य, पाञ्चाल और केकय देशीय योद्धाओंने यत्नवान् होकर अकेले सिन्धुराज जयद्रथको ही आक्रमण किया जिन जिन वीरोंने यत्नवान् होकर द्रोणाचार्य्यका बनाया हुआ तुम्हारी सेनाका व्यूह तोड़नेकी इच्छा की जयद्रथने वरके प्रभावसे उन सम्पूर्ण वीरोंको ही युद्धभूमिमें निवारण किया।

४२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, जयकी इच्छा करनेवाले पाण्डव लोग जब सिन्धुराज जयद्रथके सम्मुखसे आगे न बढ़ सके, तब पाण्डवोंकी सेनाके सङ्ग तुम्हारी सेनाका महाघोर युद्ध होने लगा। जैसे मकर मच्छ समुद्रके जलको मथते हुए भ्रमण करते हैं वैसे ही महाबली तेजस्वी सत्यपराक्रमी अभिमन्यु, तुम्हारी व्यूह बद्ध सेनाके बीच प्रवेश करके अपने अस्त्रोंके बलसे उसे तितर बितर करने लगे। मुख्य मुख्य योद्धा लोग अभिमन्युको सम्पूर्ण सेनाका नाश करते देखकर उनके सम्मुख उपस्थित हुए। उन महारथ वीरोंके सङ्ग अभिमन्युका महाघोर भयङ्कर संग्राम होने लगा अर्ज्जुनपुत्र पराक्रमी अभिमन्युने उन सम्पूर्ण शत्रुओंके रथ समूहसे घिरकर शीघ्रगामी बाणों हुए

सेनके धनुषको काट कर उनके सारथीको भी तीक्ष्णबाण मारके पृथ्वीमें गिराया, और उनके रथके चारों घोड़ोंको भी अपने बाणोंसे बिद्ध किया। हयसेनके घोड़े बाणोंसे बिद्ध होकर वायुके समान गमन करते हुए शीघ्रही रणभूमिसे पृथक् हुए। अभिमन्युके सारथीने उसही समय अवसर पाकर अभिमन्युके रथको शीघ्रही वहांसे दूसरी ओर चलाया। उसके सारथीकी ऐसी निपुणता देखकर अभिमन्युके अनुयायी सम्पूर्ण रथी धन्य धन्य करके उसकी प्रशंसा करने लगे। उधर अभिमन्युका रथ वशातिराजके समीपमें जाकर स्थित हुआ। वशातिराज क्रुद्ध होकर सिंहके समान शत्रुओंका नाश करनेवाले अभिमन्युको अपने निकट देखकर शीघ्रही आक्रमण किया, और रुक्मपंख युक्त साठ बाणोंसे अभिमन्युको बिद्ध करके यह बचन बोले मेरे जीवित रहते तुम हमारे सम्मुखसे जीतेजी मुक्त न हो सकोगे। परन्तु अभिमन्युने लौहमय कवच धारण करनेवाले वशातिराजके हृदयमें एक तीक्ष्ण बाणसे प्रहार किया, उसके लगते ही वह प्राण-रहित होकर पृथ्वीमें गिर पड़े। हे राजन्! वशातिराजको मरते देखकर मुख्य मुख्य क्षत्रिय वीरोंने क्रुद्ध होकर अभिमन्युका वध करनेकी इच्छासे धनुष चढ़ाकर उन्हें चारों ओरसे घेर लिया। उस समूहमें उन सम्पूर्ण योद्धाओंके सङ्गमें अभिमन्युका महाघोर भयङ्कर संग्राम होने लगा। अर्ज्जुनपुत्र अभिमन्यु क्रुद्ध होकर उन सम्पूर्ण शूरवीरोंके धनुष बाण शरीर, माला और कुण्डलोंसे युक्त शिरोंको अपने अस्त्रोंसे काट काट कर पृथ्वीमें गिराने लगे तलवार, अङ्गुलित्राण, पट्टिश, परश्वध और सुवर्णसे भूषित बीरोंकी भुजा काट काट कर पृथ्वीमें गिरती हुई दिखाई देने लगीं। माला आभूषण वस्त्र, रथकी बड़ी बड़ी ध्वजा कवच, ढाल गलेके हार मुकुट छत्र, चंवर; रथके चक्र, धुरी, टूटे धनुष, पताका सारथी, घोड़े टूटे हुए रथ और हाथी, घोड़े तथा मरे हुए वीरपुरुषोंके शरीरसे वह रणभूमि परिपूरित होगई। नाना प्रकारके वीर योद्धा तथा अनेक देशोंसे आये हुए जयकी इच्छा करनेवाले वीर क्षत्रिय राजाओंके मृत शरीरसे वह रणभूमि अत्यन्त ही भयङ्कर बोध होने लगी। चारों ओर भ्रमण करनेवाले क्रुद्ध अभिमन्युकी मूर्ति उस समय रणभूमिके बीच नहीं देख पड़ती थी, केवल उसके धनुष, बाण कवच और दूसरे सब आभूषण जो सुवर्णयुक्त थे उन्हींकी चमक दमक देख पड़ती थी। वह जिस समय योद्धाओंसे सङ्गलोग धनुष चढ़ा कर अपने बाणोंको वर्षा करने लगे उस समय कोई पुरुष उनकी ओर देखनेमें भी समर्थ नहीं हुए।

४३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, जिस प्रकार समय पूर्ण होनेसे यमराज सम्पूर्ण प्राणियोंके प्राणको संहार करते हैं, वैसेही अभिमन्यु सम्पूर्ण शूरवीरोंका नाश करने लगे। वह महातेजस्वी इन्द्रके समान पराक्रमी इन्द्रपौत्र अभिमन्यु शत्रुओंकी सेनाको तितर बितर करके युद्ध करते हुए इन्द्रके समान रणभूमिमें शोभित होने लगे। हे राजेन्द्र! जैसे महाबलवान् क्रुद्ध सिंह हरिणको आक्रमण करता है, वैसेही क्षत्रिय योद्धाओंमें मुख्य यमराजके समान अभिमन्युने शत्रुसेनाके बीच प्रविष्ट होकर सत्यश्रवाको आक्रमण किया। सत्यश्रवाको अभिमन्युके अस्त्रोंसे पीड़ित देख कर महारथी योद्धा लोग नाना भांतिके अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके शीघ्रतापूर्वक अभिमन्युकी ओर दौड़े। पराक्रमी क्षत्रिय योद्धाओंने "पहिले मैं, पहिले मैं" ऐसा वचन कहते हुए क्रोधपूर्वक अभिमन्युका वध करनेकी

इच्छासे उनके सम्मुख उपस्थित हुए। जैसे समुद्रके बीचमें तिमिङ्गिल मत्स्य छोटी छोटी मछलियोंको सम्मुख पाकर निगल लेता है, वैसे ही अर्जुनपुत्र अभिमन्युने उन सम्पूर्ण महारथ वीरोंकी सेनाके पुरुषोंको अपनीओर बढ़ आते देखकर तीक्ष्ण बाणोंको चलाकर उनका नाश करने लगे। जैसे सम्पूर्ण नदी समुद्रमें पहुंचकर फिर आगे बढती हुई नहीं दीख पड़ती, वैसे ही युद्धमें पीछे न हटनेवाले जो शूरवीर योद्धा लोग अभिमन्युके समीप उपस्थित हुए, वे उसके सम्मुखसे बचकर फिर पीछे नहीं लौट सके। उस सेनारूपी समुद्रमें वे सम्पूर्ण योद्धा लोग मानो भयङ्कर ग्राहसे पकड़े गये, तथा वायुके वेगसे डगमगाती नौकाकी भांति कम्पित होने लगी।

अनन्तर मद्रराजके एक बलवान् रुक्मरथ नामक पुत्रने वहांपर उपस्थित होके उन भयभीत सेनाके पुरुषोंको धीरज देते हुए कहा, हे शूरवीर पुरुषो! तुम लोग क्यों भय करते हो? मेरे रहते यह क्या कर सकेगा? मैं ही इसके प्राणका नाश करूंगा, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। ऐसा वचन कहकर उस बलवान् रुक्मरथने अच्छे प्रकारसे सज्जित हुए प्रकाशमान रथपर चढ़के अभिमन्युको आक्रमण किया। उसने अभिमन्युके वक्षस्थलमें तीन दाहिनी भुजामें तीन और बायें भुजामें तीन बाणोंका प्रहार करके सिंहनाद किया। अर्जुनपुत्र अभिमन्युने उसके धनुष और दोनों भुजाओंको अपने बाणोंसे काटकर उसके सुन्दर शिरको भी काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। हे राजन्! अभिमन्युके प्राण-नाशकी इच्छा करनेवाले यशस्वी शल्यपुत्र महामानी रुक्मरथको उसके अस्त्रोंसे मरके पृथ्वीमें गिरता हुआ देखकर युद्धविद्याको जाननेवाले, शस्त्र चलानेमें निपुण, स्वर्ण भूषित ध्वजाओंसे युक्त रुक्मरथके सखायोंने महारथ योद्धाओंने ताल प्रमाण अपने दृढ़ धनुषोंको चढ़ाकर बाणोंकी वर्षासे अभिमन्युको छिपा दिया। युद्धभूमिमें अकेले पराक्रमी अभिमन्युको युद्ध विद्या जाननेवाले, अत्यन्त क्रोधी तरुण अवस्थावाले राजपुत्रोंके बाणोंके जालसे छिपे देखकर राजा दुर्य्योधन अत्यन्त ही हर्षित हुए, और मनमें समझा, कि अबकी बार अभिमन्यु अवश्य ही यमपुरीमें गमन करेगा। उन राजपुत्रोंने निमिषमात्रमें नाना प्रकारके सुवर्णदण्डसे युक्त तीन तीन बाणोंको चलाकर अर्जुनपुत्र अभिमन्युको छिपा दिया। हे राजन्! अभिमन्यु और उनके सारथी तथा रथके घोड़े और ध्वजाके सहित उनका रथ उन सम्पूर्ण राजपुत्रोंके बाणोंसे अदृश्यके समान बोध होने लगे। हे भारत! उन्होंने उन राजपुत्रोंके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध और अंकुशके प्रहारसे मतवारे हाथीके समान अत्यन्त क्रुद्ध होकर गान्धर्व्व अस्त्र और रथकी दुर्लंघ्य गतिका कौशल प्रयोग किया; उसहीसे अभिमन्युने सम्पूर्ण शत्रुओंको मोहित किया। हे राजेन्द्र! चक्रकी भांति रणभूमिमें भ्रमण करते और हस्तलाघवके सहित अस्त्रोंको चलाते हुए एक ही अभिमन्यु उस समयमें मानो सैकड़ों तथा सहस्रों अभिमन्युरूपसे दीख पड़ने लगे। हे भारत! शत्रुनाशन अभिमन्यु रथकी गति और अस्त्र-मायाके बलसे सैकड़ों तथा सहस्रों क्षत्रिय योद्धाओंको मोहित करके उनका नाश करने लगे। उसके तीक्ष्ण बाणोंसे सम्पूर्ण शूरवीर पुरुषोंका प्राण शरीरसे निकलकर परलोक गमन करने लगा, और उनके मृत शरीर पृथ्वीमें गिरते दिखाई देने लगे। उन्होंने उत्तम पानीसे बुझे हुए तीक्ष्ण बाणोंसे उन लोगोंके धनुष, घोड़, सारथी, ध्वजा, चन्दनचर्चित भुजा, और सुन्दर शिरोंको काटकर पृथ्वीमें गिराने लगे। फल लगे हुए पांच वर्षवाले आमका बाग टूटने समय जिस प्रकार दीख पड़ता वैसे ही वे सौराजपुत्र अभि

बाणोंसे मरकर पृथ्वीमें गिरते हुए दीख पड़े राजा दुर्य्योधनने क्रुद्ध सर्पके समान सुकुमार और सुख सेवित राजपुत्रोंको अकेले अभिमन्युके अस्त्रोंसे मरकर पृथ्वीमें गिरते हुए देखकर भयभीत हुए, रथी, गजपति और घुड़सवार योद्धा लोग पैदल चलनेवाले शूरवीरोंका मर्द्दन करते हुए ही युद्धभूमिसे भागने लगे; योद्धाओंको भागते देख दुर्य्योधन क्रुद्ध होके अभिमन्युकी ओर दौड़े। क्षण भरतक उन दोनों पुरुषसिंहोंका महाघोर तुमुल संग्राम हुआ, परन्तु अन्तमें तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन अभिमन्युके बाणोंसे पीड़ित होकर युद्धभूमिसे विमुख हुए।

४४ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! तुम अनेक पुरुषोंके सङ्ग अकेले अभिमन्युका अत्यन्त अद्भुत युद्ध विश्वास योग्य पराक्रम और उसकी विजयका वृत्तान्त वर्णन करते हो। परन्तु इस वृत्तान्तको सुनकर मैं कुछभी आश्चर्य्य नहीं मानता हूं, क्योंकि उसका पक्ष धर्म्मसे युक्त है। जो हो, सो राजपुत्रोंके मारे जाने और दुर्य्योधनके युद्धसे विमुख होनेपर मेरी ओरके योद्धाओंने अभिमन्युके सङ्ग युद्ध करनेके निमित्त कौनसे उपायको अवलम्बन किया?

सञ्जय बोले, महाराज। तुम्हारी ओरके सम्पूर्ण योद्धा लोग तनक्षीण, मनमलिन, चञ्चलचित्त, पसीनेसे युक्त, शत्रुके जीतनेमें उत्साह रहित होकर मरे हुए भाई, बन्धु, पिता, पुत्र तथा दूसरे सम्बन्धियोंको रणभूमिमें छोड़; अपने अपने रथ, घोड़े और हाथियोंपर चढ़के शीघ्रतापूर्वक युद्धभूमिसे भागने लगे। उन सम्पूर्ण शूरवीरोंको इस प्रकारसे भागते हुए देखकर द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा, कर्ण बृहद्बल, दुर्य्योधन, कृतवर्म्मा और शकुनि अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपराजित अभिमन्युकी ओर दौड़े। हे राजन्! महारथ योद्धा लोग भी अभिमन्युके बाणोंकी चोटसे विमुखप्राय हो गये।

अनन्तर केवल अस्त्रविद्याके जाननेवाले महातेजस्वी सुकुमार लक्ष्मण बालस्वभाव और अभिमानके कारण निर्भय चित्तसे अकेले ही अभिमन्युकी ओर दौड़े। पुत्रप्रेमी उनके पिता राजा दुर्य्योधन पुत्रको अभिमन्युकी ओर जाते देख फिर उसके पीछे पीछे गमन करने लगे; तब दूसरे महारथ योद्धा लोग भी दुर्य्योधनको युद्धके निमित्त अभिमन्युके सम्मुख जाते देखकर पुनर्व्वार राजा दुर्य्योधनका अनुसरण करते हुए युद्धभूमिमें अभिमन्युकी ओर दौड़े; जैसे बादल सम्पूर्ण पर्व्वतोंके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं, वैसे ही वे सम्पूर्ण महारथ योद्धा अर्ज्जुनपुत्र अभिमन्युके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। जैसे चारों ओरसे बहनेवाला वायु बादलोंको तितर बितर करती है, वैसे ही अकेले अभिमन्युने उन सम्पूर्ण महारथियोंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे पीड़ित किया। जैसे एक मतवारा हाथी दूसरे मतवारे हाथीको आक्रमण करता है, वैसे ही अभिमन्युने महातेजस्वी पिताके समीपमें स्थित धनुर्द्धारी सुकुमार कुबेरपुत्रके समान सुन्दर तुम्हारे पौत्र लक्ष्मणको आक्रमण किया। लक्ष्मण, सो उसके सम्मुख होकर शत्रुनाशन अभिमन्युकी दोनों भुजा और वक्षस्थलमें तीक्ष्ण बाणोंसे प्रहार किया। हे राजेन्द्र! अनन्तर अर्ज्जुनपुत्र अभिमन्यु मानो दण्डसे पीड़ित हुए सर्पके समान क्रुद्ध होकर दुर्य्योधनपुत्र लक्ष्मणसे बोले तुम इस समय इस सम्पूर्ण लोकको भली भांति देख लो, क्योंकि अब तुम शीघ्र ही परलोकमें गमन करोगे। मैं तुम्हारे बन्धुबान्धवोंके सम्मुख ही तुम्हें यमपुरीको भेजता हूं। शत्रुनाशन महाबाहु वीर अभिमन्युने ऐसा वचन कहकर विषधर सर्पके समान एक महाभयङ्कर भल्ल

...ल्लणकी ओर चलाया। यह अस्त्र अभिमन्युकी ...जासे छूटकर तेजस्वी लक्ष्मणकी सुन्दर ...ासिका, केश और प्रकाशमान कुण्डलके ...हित उनकाशिर काटके पृथ्वीमें गिरा। ...ाजपुत्र लक्ष्मणको मरता हुआ देखकर सम्पूर्ण ...रूपोंने हाहाकार किया। अनन्तर क्षत्रिय ...ेष्ठ राजा दुर्य्योधन अपने प्यारे पुत्रको पृथ्वीमें ...रते देखकर अत्यन्त क्रुद्ध हुए और सम्पूर्ण ...नाके महारथ योद्धाओंसे ऊंचे स्वरसे बोले, ...म लोग इस अभिमन्युका शीघ्र ही बध करो। ...नन्तर द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य अश्वत्थामा, ...हद्दल, कर्ण और हृदिकनन्दन कृतवर्म्मा इन ...: महारथियोंने अभिमन्युको चारों ओरसे ...र लिया। अभिमन्यु तीक्ष्ण बाणोंसे उन ...म्पूर्ण महारथियोंको विद्ध तथा युद्धसे विमुख ...रके क्रोध पूर्व्वक सिन्धुराज जयद्रथकी महा ...नाको आक्रमण करते हुए आगे गमन करने ...गे। कवच धारण करनेवाले कलिङ्ग और ...ागधदेशीय योद्धा तथा पराक्रमी क्राथराज- ...त्रने हाथियोंकी सेनालेकर अभिमन्युके गमन ...रनेका मार्ग रुद्ध किया। हे राजेन्द्र! उससमय ...न लोगोंका महादारुण भयङ्कर संग्राम होने ...गा। जैसे प्रबल वायु आकाशमें बादलोंको ...छिन्नभिन्न कर देता है, वैसे ही अभिमन्यु ...ाथियोंकी सेना अपने तीक्ष्ण बाणोंसे तितर ...बितर करने लगे। अनन्तर क्राथपुत्रने अपने ...बाणोंकी वर्षासे अर्ज्जुनपुत्र अभिमन्युको छिपा ...दिया; उसे देख द्रोणाचार्य्य आदि सम्पूर्ण ...सारथी योद्धालोग अभिमन्युके ऊपर अपने ...शस्त्र अस्त्रोंको चलाते हुए फिर क्रोध ...पूर्व्वक उसके सम्मुख उपस्थित हुए। अभिमन्यु ...ने अपने बाणोंसे उन सम्पूर्ण महारथियोंको ...निवारण करके क्राथपुत्रके बध करनेकी ...इच्छासे उनके ऊपर अनेक बाणोंकी वर्षा ...कर उन्हें पीड़ित किया, अनन्तर उनके ...रथ घोड़ेके सहित दोनों भुजा, ध्वजा, छत्र सारथी रथके घोड़े और किरीट शोभित शिरको एक ही समयमें काटके गिरा दिया। महाराज! कुल; शील, ज्ञानबल, कीर्त्ति और अस्त्रोंके बलसे युक्त उस पराक्रमी क्राथपुत्रके मरनेपर वहांपरस्थित सम्पूर्ण शूरवीर योद्धा लोग युद्धभूमिसे विमुख होके अभिमन्युके सम्मुखसे भागने लगे।

४५ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय! त्रिवर्षीय सुन्दर बलवान् उत्तम जातिवाले, आकाशमार्ग कूदनेवाले घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़े हुए युद्धमेंअपराजित तरुणअवस्थावाले अभिमन्युको कुलके अनुसार युद्धमें कठिन कर्म्म करते तथा सेनाके बीच प्रवेश करते देखकर मेरी सेनाके किन किन शूरवीरोंने उसे युद्धसे वारण किया था?

सञ्जय बोले, अर्ज्जुनपुत्र अभिमन्युने व्यूहके बीच प्रवेश करके अपने चोखे बाणोंसे तुम्हारे सम्पूर्ण राजाओंको युद्धसे विमुख किया। अनन्तर द्रोणाचार्य्य, कर्ण, अश्वत्थामा वृहद्दल और हृदिकनन्दन कृतवर्म्मा इन छः महारथियोंने अभिमन्युके सम्मुख उपस्थित होकर उसे चारों ओरसे घेर लिया। हे राजेन्द्र! तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग सिन्धुराज जयद्रथके ऊपर अत्यन्त कठिन भार अर्पित होते देखकर क्रोध पूर्व्वक युधिष्ठिरकी ओर दौड़े। दूसरे महाबलवान् शूरवीर योद्धा लोग तालके प्रमाण धनुषोंको खींचते हुए अभिमन्युके ऊपर अपने बाणोंको वर्षाने लगे। शत्रुनाशन वीर अभिमन्यु उस युद्धभूमिमें उन सम्पूर्ण महाधनुर्द्धारी युद्ध विद्याके जाननेवाले महारथियोंको अपने बाणोंसे स्तम्भित कर दिया, और द्रोणाचार्य्यको पचास वृहद्दलको बीस कृतवर्म्माको अस्सी कृपाचार्य्यको साठ और

कान पर्य्यन्त धनुष खींचकर अश्वत्थामाको दश बाणोंसे विद्ध किया। फिर सम्पूर्ण योद्धाओंके सम्मुखहीमें उत्तम पानीसे बुझे हुए कर्णि अस्त्रसे कर्णका कान विद्ध किया। अनन्तर अभिमन्युने कृपाचार्य्यके रथके घोड़े, पृष्ठ-रक्षक और सारथीको मार कर दश बाणोंसे उनके हृदयमें प्रहार किया। बलवान् अभिमन्युने तुम्हारे पुत्रोंके सम्मुखहीमें कुरुवंशकी कीर्त्तिको बढ़ानेवाले वीर वृन्दारकका वध किया। अश्वत्थामाने अभिमन्युको कुरुसेनाके मुख्य मुख्य वीरोंको निर्भय चित्तसे वधकरते देखकर उसके ऊपर पचीस क्षुद्रकास्त्र चलाये। हे राजेन्द्र! अभिमन्युने भी तुम्हारे पुत्रोंके सम्मुखमें तीक्ष्ण-बाणोंसे अश्वत्थामाको विद्ध किया अश्वत्थामा अभिमन्युको अत्यन्त चोखे बाणोंसे विद्ध करके भी कुरुसेनाके पर्व्वतके समान युद्धसे विचलित नहीं कर सके। महाबलवान् अत्यन्त तेजस्वी अभिमन्युने स्वर्ण दण्डयुक्त बहत्तर तीक्ष्ण बाणोंसे अश्वत्थामाको प्रहार किया। अनन्तर पुत्र-वत्सल द्रोणाचार्य्यने अभिमन्युके ऊपर एक सौ बाण चलाये और अश्वत्थामाने भी पिताकी रक्षाके निमित्त साठ बाणोंसे अभिमन्युके ऊपर प्रहार किया। कर्णने बीस, कृतवर्म्माने चौदह, बृहद्बलने पचास और कृपाचार्य्यने दश भल्लोंसे अभिमन्युको प्रहार किया। अभिमन्युने सब ओरसे उन महारथियोंके बाणोंसे पीड़ित होकर उन हर एक शूरवीरोंको दश दश बाणोंसे विद्ध किया। अनन्तर कोशलराज बृहद्बलने अभिमन्युके हृदयमें कर्णि अस्त्रका प्रहार किया। अभिमन्युने कोशलराज बृहद्बलके रथके घोड़े, सारथी रथकी ध्वजा और उनके धनुषको काट कर पृथ्वीमें गिरा दिया। तब कोशलराज बृहद्बलने रथ रहित होके तलवार और ढाल ग्रहण कर अभिमन्युके शरीरसे कुण्डल सहित उसके सुन्दर शिरको काटनेकी इच्छा की, उसही समय अभिमन्युने कोशल राज बृहद्बलके हृदयमें अत्यन्त तीक्ष्ण [illegible] प्रहार किया। उस बाणके लगते ही प्राण-रहित होकर पृथ्वीमें गिर पड़े। अनन्तर अभिमन्युने तलवार ढाल ग्रहण करनेवाले दश हजार क्षत्रिय वीरोंको कठोर [illegible] कहते हुए युद्धके निमित्त सम्मुख [illegible] होते देख कर अपने बाणोंको वर्षाकर [illegible] सम्पूर्ण शूरवीरोंको युद्ध-भूमिसे विमुख [illegible] दिया। अभिमन्यु इसी प्रकारसे कोशल[illegible] बृहद्बलका वध करके फिर अपने बाणोंको [illegible] कर तुम्हारी ओरके शूरवीरोंको पी[illegible] करने लगे।

४६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे भारत! अभिमन्युने [illegible] अत्यन्त कुपित करनेकी इच्छासे फिर [illegible] बाणसे उनका कान विद्ध किया, और [illegible] शीघ्रताके सहित पचास बाणोंसे कर्णको [illegible] किया। हे भारत! कर्णने भी अभिमन्यु[illegible] उतनेही बाणोंसे विद्ध किया। कर्णके [illegible] हुए बाणोंसे अभिमन्युका सम्पूर्ण शरीर पू[illegible] होनेपर वह अत्यन्त ही शोभित हुए, [illegible] क्रुद्ध होकर कर्णके शरीरको भी अपने त[illegible] बाणोंसे रुधिर-पूरित कर दिया। बलवान् क[illegible] भी अभिमन्युके बाणोंसे विद्ध होकर रुधिर[illegible] शरीरसे युद्धभूमिमें अत्यन्तही शोभित [illegible] लगे। अनन्तर अभिमन्युने कर्णके चित्रय[illegible] छः मन्त्रियोंके रथके घोड़े, सारथी ध्वजा [illegible] कर अपने तीक्ष्ण बाणोंसे उनका वध किय[illegible] फिर दश दश बाणोंसे दूसरे सम्पूर्ण महार[illegible] योंको विद्ध किया; अभिमन्युका यह परा[illegible] अद्भुत दीख पड़ा। अनन्तर छः तीक्ष्ण बाण[illegible] मगधराजके पुत्रका वध करके फिर घोड़े और सारथीके सहित तरुण अवस्थावाले अश्वकेतु[illegible] संहार करके उन्हें रथसे पृथ्वीपर गिरा दिय[illegible]

...नके अनन्तर एक क्षुरप्र अस्त्रसे हाथीकी ध्वजावाले मार्त्तिकावतदेशीय भोजको पीड़ित करके अपने बाणोंको बर्षाते हुए सिंहनाद करने लगे।

अनन्तर दुःशासनपुत्रने चार बाणोंसे अभिमन्युके चारों घोड़े और एक बाणसे उनके सारथीको विद्ध करके दश बाणोंसे अभिमन्युको विद्ध किया। अनन्तर अभिमन्युने क्रोधसे नेत्र लाल करके सात बाणोंसे दुःशासनपुत्रको विद्ध करके उससे यह वचन बोले, तुम्हारा पिता कायरकी भांति युद्धमें मेरे सम्मुखसे भाग गया है, भाग्यहीसे तुम युद्ध करना जानते हो; परन्तु आज मेरे सम्मुखसे बचकर न लौट सकोगे। ऐसा बचन कह उत्तम पानीसे बुझे हुए एक लोहा बाणको धनुषपर चढ़ाकर अभिमन्युने दुःशासनपुत्रकी ओर चलाया, परन्तु अश्वत्थामाने तीन बाणोंसे उस बाणको काटकर पृथ्वीमे गिरा दिया। तब अभिमन्युने अश्वत्थामाके रथकी ध्वजाको अपने बाणसे काटकर तीन बाणोंसे शल्यको पीड़ित किया शल्यने भी क्रुद्ध होकर निर्भय चित्तसे नव बाणोंसे अभिमन्युके हृदयमें प्रहार किया, उस समयमें शल्यका पराक्रम अद्भुत रूपसे दीख पड़ा। अनन्तर अभिमन्यु, शल्यका धनुष काटकर उनके पृष्ठरक्षक और सारथीका वध करके फिर लौहमय छः बाणोंसे शल्यको विद्ध किया। अनन्तर राजा शल्य घोड़े और सारथीसे रहित रथको छोड़कर दूसरे रथपर चढ़के अभिमन्युके सम्मुख उपस्थित हुए। अनन्तर अभिमन्युने शत्रुञ्जय, चन्द्रकेतु महामेधा सुवर्च्च और सूर्य्यभास इन पाच योद्धाओंका वध करके अपने बाणोंसे शकुनिको विद्ध किया। शकुनि अपने बाणोंसे अभिमन्युको विद्ध करके दुर्य्योधनसे बोले, कि हम सब कोई मिलकर शीघ्र ही इसका वध करें, नहीं तो एकएक करके यह सबका नाश कर देगा। अनन्तर सूर्य्यपुत्रकर्ण भी द्रोणाचार्य्यसे बोले; कि यह पहिले ही हम सब लोगोंका बध किया चाहता है, इससे आप शीघ्र ही इसके बधका उपाय कहिये, तबमहाधनुर्द्धर द्रोणाचार्य्य उन सम्पूर्ण महारथियोंसे बोले कि तुम लोगोंके बीचमें क्या कोई ऐसा पुरुष भी है, जो इस कुमारको क्षण भरके लिये भी अवकाश लेते देख सका हो? यह अपने पिताके समान युद्धभूमिमें सब ओर भ्रमण करता रहता है, देखो यह किस प्रकारसे हस्तलाघवके सहित अस्त्र-शस्त्रोंको चला रहा है। यह कुमार इतनी शीघ्रताके सहित बाणोंको सन्धान करके चलाता है, कि इसके रथके ऊपर केवल मण्डलाकार उसका धनुषही दीख पड़ता है। वह शत्रुनाशन सुभद्रापुत्र वीर अभिमन्यु बार बार बाणोंको चलाकर हम लोगोंके प्राणोंको पीड़ित और मोहित कर रहा है, परन्तु मैं उसका युद्धकार्य्य देखकर आनन्दित होरहा हूं। रणभूमिमें इसको शीघ्रतापूर्व्वक चारो ओर भ्रमण करते देखकर मुझे अत्यन्त ही आनन्द उत्पन्न होरहा है। सम्पूर्ण महारथ योद्धा अत्यन्त क्रुद्ध होकर भी इसका तनिक छिद्र नहीं देख सकते हैं। यह युद्धभूमिमें महाअस्त्रोंको जिस प्रकारसे चला रहा है, उससे यह गाण्डीवधारी अर्ज्जुनसे किसी भांति युद्ध करनेमें कम नहीं दीख पड़ता है। अनन्तर कर्ण अभिमन्युके बाणोंसे पीड़ित फिर द्रोणाचार्य्यसे बोले, मैं अभिमन्युके बाणोंसे पीड़ित होकर अब युद्धभूमिमें नहीं ठहर सकता हूं, परन्तु युद्धभूमिमें ही रहना उचित है, यही विचार कर संग्राममें स्थित हूं। इस तेजस्वी बालकके परम दारुण अग्निके समान स्पर्श करनेवाले बाण मेरे हृदयको पीड़ित कर रहे हैं। द्रोणाचार्य्य मन्द मुसकाकर कर्णसे बोले, इसका कवच अभेद है और यह तेजस्वी बालक युद्धमें महा पराक्रमी है। मैंने इसके पिताका कवच धारण करनेका उपदेश दिया था, यह शत्रुओंके देशको जीतनेवाला कुमार

अभिमन्यु अपने पितासे उसको कवचको धारण करनेका सम्पूर्णकौशल सीख लिया है। हे राजनन्दन कर्ण! तुम लोग यदि युद्धभूमिमें स्थित होके अपने बाणोंसे इसके धनुषका रोदा काटकर घोड़े सारथी और पृष्ठरक्षक वीरोंकावध कर सको तो ऐसा ही कार्य्य करो; पीछे इसे रथरहित करके फिर अस्त्र शस्त्रोंसे इसको प्रहार करना। इसके हाथमें धनुष बाण रहतेतक देवता और राक्षस इसका वध न कर सकेंगे। यदि इच्छा हो, तो इसे धनुष रहित करके इसकेऊपर प्रहार करो। कर्णनेद्रोणाचार्य्यका बचन सुनकर शीघ्रताके सहित अपने बाणोंसे बाण चलानेके समय अभिमन्युका धनुष काट दिया। अनन्तर भोजने अभिमन्युके रथके चारों घोड़े कृपाचार्य्यने उसके पृष्ठ रक्षक योद्धाओं और सारथीका बध किया, तिसके अनन्तर वहांपर स्थित सम्पूर्ण महारथ योद्धा लोग धनुषरहित उस बलकके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। वे छहों महारथ शीघ्रताके सहित दया रहित होकर लगातार अपने बाणोंकी वर्षासे उस रथरहित कुमार अभिमन्युका बारबार छिपाने लगे वह तेजस्वी बालक रथरहित तथा धनुष कटनेसे अपने क्षत्रिय धर्म्मके अनुसार तलवार ढाल ग्रहण करके रथसे कूद पड़ा, और पक्षिराज गरुड़की समान वेगपूर्व्वक अत्यन्त ही बल प्रकाशित करता हुआ अति शीघ्रताके सहित गति विशेषसे आकाश मार्गसे कूदता हुआ रणभूमिमें चारों ओर भ्रमण करने लगा। महाधनुर्द्धारी महारथ योद्धा लोग "यह तलवार ग्रहण करनेवाला अभिमन्यु मेरी ओर आ रहा है" ऐसा वचन करते हुए ऊपरको दृष्टि करके उसे अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे। महातेजस्वी शत्रुओंको जीतनेवाले द्रोणाचार्य्यने शीघ्रताके सहित क्षुरप्र बाणसे मुटठीमें ग्रहण किये हुए मणिजटित मूठसे शोभित अभिमन्यु की तलवारको काट डाला। कर्णने एक तीक्ष्ण बाणको चलाकर अभिमन्युकी उत्तम ढाल काटदी वह ढाल तलवार और सम्पूर्ण शरीरमें बाणोंसे परिपूर्ण होकर क्रुद्धचित्तसे कूदते हुए आकाशसे पृथ्वीपर आकर चक्र ग्रहण करके द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़ा। उसका शरीर चक्र धूलिसे सफेद होगया तथा ऊंचे हाथ चक्र ग्रहण किये हुए वह अत्यन्त ही शोभित होने लगा। वह हाथमें चक्र लेकर समान कठिन कार्य्य करके क्षण भरतक क्रूर रूपसे रणभूमिमें स्थित हुआ। दृढ़ कवचके भीतरसे रुधिर भर रहा अनन्तर वह अत्यन्त बलवान् अभिमन्यु सम्पूर्ण मुख्य मुख्य राजाओंके बीच भृकुटी मुख और भयङ्कर मूर्त्तिसे महा सिंहनाद करताहुआ अत्यन्तही प्रकाशित होने लगा।

४७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, सुभद्राके आनन्दको बढ़ानेवाला अतिरथ अभिमन्यु विष्णुके समान चक्र ग्रहण करके मानो दूसरे जनार्दन की तरह युद्धभूमिमें स्थित हुआ। सम्पूर्ण राजाओंने उसको वायुवेगसे उड़ते हुए खुले केश और चक्र ग्रहण करके युद्धके निमित्त तैयार तथा देवताओंसे भी न देखने योग्य उसके भयंकर शरीरको देखकर अत्यन्त ही व्याकुल होकर से उसके चक्रको अपने अस्त्रोंसे काट दिया तब महारथ अभिमन्युने एक महा भयंकर गदाको ग्रहण किया। शत्रुओंने उसको धनुष रथ तलवार और चक्रसे रहित भी कर दिया; तौभी वह हाथमें गदा ग्रहण करके अश्वत्थामाकी ओर दौड़े। पुरुषसिंह अश्वत्थामा अभिमन्युके उस प्रकाशमान वज्रकी

…भयङ्कर महावीर गदाको देखकर रथसे कूद-कर तीन पगदूर हट गये, परन्तु अभिमन्युने उस ही गदासे अश्वत्थामाके रथके घोड़े, पृष्ठ रक्षक और सारथीका संहार किया और सम्पूर्ण शरीरमें बाणोंसे परिपूर्ण होकर अत्यन्त ही शोभित होने लगे। अनन्तर अभि-मन्युने सुबलराजके दामाद कालिकेय और उनके अनुयायी गान्धारदेशीय सतहत्तर योद्धाओंका वध किया। फिर ब्रह्म और वशाति देशीय दश रथियों और केकयदेशीय सात हाथी तथा दश गजपति योद्धाओंका नाश कर दिया। अनन्तर उस ही गदासे दुःशासनपुत्रके रथको घोड़ोंके सहित चूर्ण कर दिया।

हे भारत! अनन्तर दुःशासनपुत्र अत्यन्त क्रुद्ध हो, गदा उठाकर खड़ा रह! खड़ा रह! पुकारता हुआ अभिमन्युकी ओर दौड़ा। जैसे पहिले समयमें महादेव और अन्धकासुरने आपसमें एक दूसरेके ऊपर अस्त्रोंका प्रहार किया था, वैसे ही वे दोनो भ्राता गदा लेकर एक दूसरेके बधकी इच्छा करते हुए प्रहार करने लगे। वे शत्रुनाशन दोनों वीर रणभूमिमें इसी प्रकार आपसमें एक दूसरेके ऊपर प्रहार करते हुए गदाकी चोटसे पीड़ित होकर दोनों ही इन्द्र ध्वजाकी भांति पृथ्वीमें गिर पड़े। अनन्तर कुरुकुलकी कीर्त्तिको बढ़ानेवाले दुःशासनपुत्र उठकर खड़े हुए। अभिमन्यु उठ रहे थे, उस ही समयमें दुःशासनपुत्रने उनके शिरमें गदासे प्रहार किया। शत्रुनाशन वीर अभिमन्यु, पहिलेहीसे युद्धभूमिमें चारोओर दौड़नेसे थके हुए थे उसपर भी अत्यन्त वेगपूर्व्वक उनके शिरपर गदाकी चोट लगनेसे वह चेतरहित होकर पृथ्वीमें गिर पड़े। हे राजेन्द्र! जैसे वनके बीच एक हाथी एक व्याधेके हाथसे मारा जाता है, वैसे ही वह पराक्रमी वीर अभिमन्यु तुम्हारी सम्पूर्ण सेनाको तितर बितर करते हुए अनेक योद्धाओंका बध करके; अन्तमें कई एक महारथियोंके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर दुःशासनपुत्रके हाथसे मरकर युद्धभूमिमें पड़े हुए दिखाई देने लगे। जैसे हेमन्त ऋतुके अन्तमें दावाग्नि प्रगट होके सम्पूर्ण बनके वृक्षोंको भस्म करके शान्त होजाती है, वैसे ही युद्धसे शान्त हुए और पृथ्वीमें गिरे अभिमन्युको तुम्हारी ओरके योद्धाओंने चारों ओरसे घेर लिया। जैसे प्रचण्ड वायु वृक्षोंकी शाखाओंको तोड़के गिरा देता है, अथवा जैसे सूर्य सम्पूर्ण जगत्के प्राणियोंको तपाकर सन्ध्याके समय अस्त होजाता है, वैसे ही कुरुसेनाके बाणोंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे भस्म करके तथा सम्पूर्ण योद्धाओंको युद्धभूमिसे भगाकर पराक्रमी अभिमन्यु अनेक वीरोंसे युद्धकर अन्तमें मरकर पृथ्वीमें गिर पड़े। उस राहुग्रस्त चन्द्रमा तथा सूखे हुए समुद्रके समान प्रकाशमान शरीरसे युक्त नेत्रमूंदे हुए अभिमन्युको देखकर तुम्हारी ओरके महारथी लोग अत्यन्त हर्षके सहित बार बार सिंहनाद करने लगे। हे राजेन्द्र! तुम्हारी ओरके सम्पूर्ण योद्धा लोग अत्यन्त हर्षित हुए, परन्तु पाण्डव तथा उनकी सेनाके योद्धाओंके नेत्रोंसे आसुओंकी की धारा बहने लगी। अन्तरिक्षमें निवास करनेवाले सम्पूर्ण प्राणी अभिमन्युको आकाशसे गिरे हुए चन्द्रमाके समान पृथ्वीमें पड़े हुए देखकर ऊंचे स्वरसे यह बचन बोले, 'द्रोणाचार्य्य आदि छः महारथियोंने एक बालकको मार कर पृथ्वीमे गिराया है, यह हम लोगोंके मतसे धर्म्मका कार्य्य नही हुआ है।" महाराज! जैसे तारोंके सहित आकाश पूर्ण चन्द्रमाके उदय होने पर शोभित होता है, वैसेही महावीर अभिमन्युके मर कर पृथ्वीमें गिरने पर इधर उधर रणभूमि प्रकाशित होने लगी। सुवर्णयुक्त बाण, कुण्डल और मुकुटोंके सहित प्रकाशमान वीरोंके शिर, छत्र, पताका, चंवर, टूटे हुए रथके चक्के, धुरी

कटे फटे उत्तम वस्त्र, रथ हाथी, घोड़े और मनुष्योंके उत्तम आभूषणोंसे युद्धभूमि प्रकाशित होने लगी। केचुलीसे सर्पके समान मियानसे निकसे हुए उत्तम तलवार, कटे हुए धनुष, वाण शक्ति, ऋष्टि, प्रास और दूसरे बहुतेरे रुधिरयुक्त अस्त्रशस्त्रोंसे पृथ्वी परिपूर्ण होकर अत्यन्त ही शोभित होने लगी। अभिमन्युके अस्त्रोंसे मरे हुए शरीरसे युक्त सवारोंके सहित घोड़े और हाथी रणभूमिमें पड़े हुए दिखाई देने लगे, कितने ही हाथी अंकुशधारी पीलवानोंके सहित ध्वजा पताका समेत पृथ्वीमें पड़े हुए दीख पड़ते थे। घोड़े सारथी और रथियोंसे रहित कितने ही टूटे हुए रथोंसे चारों ओर पृथ्वी परिपूर्ण होगई। कितने ही पैदल चलने वाले मरे हुए शूरवीरोंके शरीरसे वह रणभूमि अत्यन्त भयङ्कर घोर रूपसे दिखाई देने लगी, उसे देख कायर पुरुष अत्यन्त ही भयभीत होने लगे। उस चन्द्रमा और सूर्य्यके समान तेजस्वी अभिमन्युको मरे हुए पृथ्वीमें पड़े देख कर तुम्हारी ओरके योद्धा लोग बहुत ही हर्षित और आनन्दित हुए परन्तु पाण्डवोंकी ओरके शूरवीरोंको अत्यन्त ही दुःख तथा क्लेश हुआ है राजन्! उस सुकुमार बालक अभिमन्युके मारे जानेपर धर्म्मराज युधिष्ठिरकी सम्पूर्ण सेना उनके सम्मुखहीमें रणभूमिसे भागने लगी अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर अभिमन्युके मरनेपर अपनी सेनाको दुःखित और युद्धभूमिसे भागती हुई देखकर यह बचन बोले, हम लोगोंका महावीर अभिमन्यु युद्धभूमिमें पीछे न हटके शूरवीरोंके हाथसे मारा गया है; इससे उसको स्वर्ग लोक प्राप्त हुआ है, तुम लोग कुछ भी भय मत करो, रणभूमिमें स्थित होके युद्ध करो; हम लोग अवश्य शत्रुओंको जीतेंगे। वीरोंमें मुख्य महातेजस्वी पराक्रमी धर्म्मराज युधिष्ठिरने सेनाके सम्पूर्ण दुःखित पुरुषोंसे फिर ऐसे ही वचनोंको कहके उनके

दुःख और क्लेशको दूर किया, कि "हे शू[रवीर] पुरुषो! अभिमन्युने पहिले युद्धभूमिमें [...] समान अपने शत्रु राजपुत्रोंका वध [...] अन्तमें वह भी स्वर्ग लोकको गया है, अभिम[न्यु] युद्धभूमिमें कृष्ण और अर्ज्जुनके समान पराक्र[म] करके दश हजार योद्धा और महारथ कोश[ल] राजका वध करके इन्द्र-लोकमें गया है। पु[ण्य] कर्म्म करनेवाला अभिमन्यु उससे भी [...] होकर सहस्रों रथी, घुड़सवार, गजपति [...] पैदल चलनेवाले वीरोंका नाश करके पुण्या[त्मा] पुरुषोंके निवास योग्य प्रकाशित लोकमें ग[मन] किया है; इससे उसके निमित्त क्या शोक [...]

सञ्जय बोले, महाराज! हम लोग पा[ण्ड]वोंके उस मुख्य वीर अभिमन्युका वध [...] तथा उसके वाणोंसे क्षत विक्षत शरी[र] रुधिरयुक्त होकर, सन्ध्याको अपने शि[वि]रोंमें जानेके निमित्त गमन करने [...] मार्गमें चलते हुए हम लोगोंने देखा, पा[ण्ड]वोंकी ओरके सम्पूर्ण योद्धा लोग अत्यन्त [...] दुःखित और चेतरहितके समान होकर धी[रे] धीरे रणभूमिसे गमन कर रहे हैं। सूर्य्यदे[व] अस्त होके अस्ताचल पर्व्वतके ऊपर गम[न] किया, सियारोंके महा भयङ्कर शब्द चारों ओरसे सुनाई देने लगे, इसी प्रकारसे अ[...] और अद्भुत लक्षणोंके सहित वह सन्ध्याके समय उपस्थित हुआ। सूर्य्यदेवने मार्ग[...] उत्तम तलवार, शक्ति, ऋष्टि, ढाल कवच औ[र] आभूषणोंके प्रकाशको निन्दा करते हु[ए] आकाश तथा पृथ्वीको एक रूपसे करके अप[ने] प्रिय शरीरके सहित अग्निमें प्रवेश किया बज्रकी चोटसे गिरे हुए बादलोंके समूह त[था] पर्व्वतके शृङ्गके समान वैजयन्ती माला अङ्कु[श] वर्म्म और पीलवानोंके सहित मरे हुए हाथि[यों]के समूहसे पृथ्वी परिपूर्ण होकर महाभय[ङ्]कर दीख पड़ती थी। कितने ही बड़े ब[ड़े] रथ घोड़े, सारथी और रथियोंसे रहित प्रम[थे]

इधर उधर पड़े हुए दीख पड़ते थे; कितने ही टूटे हुए रथोंके नीचे बहुतसे पैदल चलनेवाले योद्धा लोग मरे हुए पड़े दिखाई देते थे। हे राजेन्द्र! जैसे शत्रुओंके हाथसे मनुष्योंका नाश होने पर सूना नगर दीख पड़ता है वैसे ही घोड़े सारथी और रथियोंसे रहित होनेपर युद्धभूमिमें सूने रथ दिखाई देते थे। कितने ही घुड़सवारोंके सहित उत्तम घोड़े मरे हुए पड़े थे, कितने ही घोड़ोंकी जीभ कितनोंके दांत, कितनोंके नेत्र बाहर निकले हुए दिखाई देते थे, कितने ही घोड़ों और सवारोंके कवच तथा आभूषण अस्त्रोंसे कटे हुए पृथ्वीपर गिरे हुए इधर उधर पड़े थे। इसी भांतिसे जगह जगह मरे हुए घोड़ों और वीरोंके शरीरसे रणभूमि अत्यन्त ही भयङ्कर दिखाई देने लगी। उत्तम वस्त्रोंसे युक्त मणिजटित शय्यापर शयन करने योग्य कितने ही पराक्रमी राजा लोग मरे हुए उस रणभूमिमें अनाथकी भांति पृथ्वीपर शयन करते हुए दिखाई देते थे। कौवे, बगुले, सियार, कुत्ते, भेड़िये और रुधिर पीनेवाले पक्षी मास भक्षण करके रुधिर पीते थे, भूत, प्रेत पिशाच लोग अत्यन्त हर्षित होकर मरे हुए मनुष्योंके शरीरोंको फाड़ मास मज्जा (चर्व्वी) और रुधिर खाते पीते तथा मृत पुरुषोंके शरीरोंको इधर उधर खींचते हुए दिखाई देते थे। कितने ही राक्षस हंसते हुए मृत मनुष्योंके शरीरसे प्राणोंको खींच रहे थे। उस रणभूमिके बीचसे वैतरणी नदीके समान महाभयङ्करी शूरवीर पुरुषोंके रुधिर रूपी जलसे युक्त नदी उत्पन्न होकर बहती हुई दिखाई देने लगी। रथ उस नदीमें नौकाके समान रथ बहे जाते थे। मरे हुए हाथी उस नदीके बीच पड़े हुए पर्वतके समान दिखाई देते थे। मनुष्योंके शिर उसमें पत्थरके टुकड़ेके समान दीख होते मांस ही उसमें कीचड़ रूपमें दीख पड़ता था; टूटे, फूटे कवच, आदि अस्त्रशस्त्र ही उस नदीमें फेन युक्त मालाके समान मालूम होते थे; और मरे तथा अधमरे योद्धा लोग उस नदीमें बहते हुए दिखाई देते थे। उस नदीमें प्राणियोंको भयभीत करनेवाले भूत प्रेत पिशाच, राक्षस लोग महा भयङ्करी बोली बोलते हुए मांस भक्षण करके रुधिर पीते थे; सियार कौवे बगुले और गिद्ध आदि पक्षी उस रुधिररूपी नदीके समीप मृत पुरुषोंके शरीरसे मास खाते और रुधिर पीते हुए अत्यन्त ही आनन्दित होते थे। जगह जगह सैकड़ों कबन्ध शस्त्र ग्रहण करके दौड़ते और युद्धभूमिमें नृत्य करते हुए चारों ओर कूदते हुए दीख पड़ते थे। महाराज सम्पूर्ण सेनाके पुरुष लोग इस प्रकारसे यमराजके राष्ट्रको बढानेवाली भयङ्करी रणभूमिको धीरे धीरे देखते हुए उससे पृथक् हुए। उन लोगोंने रणभूमिसे लौटते हुए इन्द्रके समान अभिमन्युको पृथ्वीमें पडे हुए देखा, उसके कवच आभूषण कटके शरीरसे पृथक् पड़े हुए इधर उधर दिखाई देते थे; और मरे हुए कुमार अभिमन्युका शरीर उस रणभूमिमें इस प्रकारसे प्रकाशित होरहा था, जैसे आहुति-रहितवेदीकी अग्नि प्रकाशमान दिखाई देती है।

४८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! उस रथ यूथपति अभिमन्युके मारे जानेपर सम्पूर्ण योद्धा लोग उसके शोकसे दुःखित होकर रथ कवच और धनुष बाण त्यागकर चारों ओरसे राजा युधिष्ठिरको घेरकर बैठ गये। अनन्तर राजा युधिष्ठिर महावीर भ्रातृपुत्र अभिमन्युके शोकसे अत्यन्त दुःखित होके रोदन करने लगे। हा! जैसे गौओंके बीचमें सिंह प्रवेश करता है, वैसे ही अभिमन्युने मेरे प्रिय

निमित्त निर्भयचित्तसे द्रोणाचार्य्यके बनाये हुए चक्रव्यूहको भेद करके उसमें प्रवेश किया था। जिसके अस्त्रोंके प्रभावसे युद्धदुर्म्मद महाधनुर्द्धर अत्यन्त ही शिक्षित शूरवीर योद्धा लोग युद्धभूमिसे भाग गये थे; जिस पराक्रमी वीर अभिमन्युने हमारे परम शत्रु दुःशासनको अपने अस्त्रोंसे पीड़ित करके युद्धभूमिसे भगा दिया था, वही बलवान् अभिमन्युरूप महासमुद्रके समान द्रोणाचार्य्यकी महासेनाको तितर बितर करके अन्तमें दुःशासनपुत्रकी गदाकी चोटसे सरकार सूर्य्य लोकको चला गया। इस समय अब मैं अर्ज्जुन और यशस्विनी सुभद्राके सम्मुख कैसे जाऊंगा? ओहो। अब वे अपने प्यारे पुत्र अभिमन्युको न देख सकेंगे। मैं कृष्ण और वीर अर्ज्जुनके समीपमें किस प्रकारसे अर्थशून्य इस रूखे सम्वादको सुनाऊंगा। मैंने ही स्वार्थके वशमें होकर कृष्ण अर्ज्जुन और सुभद्राके ऐसे अप्रियकार्य्यको किया है। लोभी पुरुष दोषकी ओर दृष्टि नहीं करता मनुष्योंको मोहके वशमें होकर ही लोभमें प्रवृत्ति होती है। जैसे धनकी इच्छावाला पुरुष पर्व्वतकी शिखरपर चढ़ता है, और अपने गिरनेकी सम्भावना नहीं समझ सकता; वैसे ही मैंने भी इस प्रकारकी महाघोर बिपद्को नहीं समझा था। भोजन, सवारी, शय्या और आभूषण देकर जिसका आनन्दित करना उचित था, हम लोगोंने ऐसे बालकको युद्धके निमित्त रणभूमिमें सबके आगे किया था। वह सोलह वर्षका बालक था युद्धके कार्य्योंमें भली भांतिसे निपुण नहीं हुआ था; तब महा सङ्कटरूपी युद्धभूमिमें अकेले गमन करनेसे किस प्रकारसे उसके कल्याणकी सम्भावना हो सकती थी? हाय! मैं भी आज क्रोधसे प्रज्वलित अर्ज्जुनकी क्रूर दृष्टिसे भस्म होकर पृथ्वीमें अभिमन्युके समान शयन करूंगा। जो लोभरहित बुद्धिमान्, लज्जाशील, क्षमावान् बलवान् दृढ धनुर्द्धारी मानी, धीर, लोकोंके प्यारे, सत्य पराक्रमी तेजस्वी, जिसके कर्म्म अत्यन्त ही पवित्र है; लोग जिसके कर्म्मोंकी सदा प्रशंसा किया है, जिसने युद्धमें निवातकवच और दानवोंका वध किया था, जिन्होंने निमेष हिरण्यपुरवासी इन्द्रके शत्रु पौलोमको अनुयायियोंके सहित मारकर गिरा दिया और जो पराक्रमी अर्ज्जुन अभय चाहनेवाले शत्रुओंको भी अभय दान करते हैं, हम आज भयसे युक्त होकर उनके प्यारे पुत्र अभिमन्युकी रक्षा युद्धभूमिमें नहीं कर सके परन्तु दुर्य्योधनकी सेनाके योद्धाओंको भय उपस्थित हुआ है, क्योंकि पुत्रके बधसे अत्यन्त ही क्रुद्ध होके कौरवोंका नाश कर देंगे। नीच बुद्धिवाला दुष्ट दुर्य्योधन अपने सहायोंका नाश देखके आतुर और दुःखित होकर अवश्य ही प्राणत्याग करेगा। महातेजस्वी अभिमन्युका नाश देखकर राज्य, अमरत्वकी प्राप्ति, अथवा शूरवीरोंके सहवास आदि कुछ भी सुभ्के इस समय अच्छा नहीं लगता है।

४८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, अनन्तर महर्षि कृष्णद्वैपायन कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरको विलाप करते जानकर अकस्मात् वहांपर उपस्थित हुए। भ्रातृपुत्रके शोकसे कातर राजायुधिष्ठिरने विधिपूर्वक उनकी पूजा की अनन्तर जब महर्षि कृष्णद्वैपायन आसनपर बैठे तब राजा युधिष्ठिर उनसे कहने लगे, हे ब्राह्मण! अधार्म्मिक महामहाधनुर्द्धर बहुतसे पुरुषोंने मिलकर अभिमन्युके सङ्ग युद्ध करके उसका वध किया है। शत्रुनाशन वीर अभिमन्यु बालक है यह ठीक है परन्तु उसकी बुद्धि बालकके

मान नहीं थी, उसने शस्त्ररहित होकर विशेष रूपसे युद्ध किया था। मैंने उससे हा था, कि तुम शत्रुओंको सेनामें प्रवेश रनेका द्वार कर दो; हम लोग उस ही र्गसे शत्रुसेनाके बीच प्रवेश करेंगे। अनन्तर ब उसने चक्रव्यूहके भीतर प्रवेश किया; उस मयमें सिन्धुराज जयद्रथने मार्ग रोककर हम गोंको भीतर नहीं जाने दिया। युद्ध करने- ले चत्रियोंको अपने समानके वीरोंसे ही युद्ध रना उचित है; परन्तु शत्रुओंने जो इस कारसे अन्याय युद्ध करके बालकका वध या है; उस ही निमित्त मैं अत्यन्त दुःखित र शोकित होरहा हूं। यही मैं बार बार च रहा हूं, परन्तु किसी प्रकारसे भी शान्ति भ नहीं कर सकता हूं।

सञ्जय बोले, महाराज! भगवान् वेदव्यास नि राजा युधिष्ठिरको अत्यन्त शोकित और कुलचित्तसे विलाप करते हुए देखकर उनसे ह वचन बोले, हे भरतर्षभ युधिष्ठिर! तुम हाबुद्धिमान् और सब शास्त्रोंके तत्वको ननेवाले हो; तुम्हारे समान महात्मा पुरुष पदमें मोहित नहीं होते। वह पुरुषोंमें ष्ठ पराक्रमी अभिमन्यु बालक होकर भी णभूमिमें अनेक शत्रुओंका नाश करके स्वर्ग कमें गया है। हे युधिष्ठिर! मृत्युको कोई रुष भी अतिक्रम नहीं कर सकता; मृत्यु वता दानव, और गन्धर्व्वोंका भी नाश रती है।

राजा युधिष्ठिर बोले, ये सब महाबलवान् राक्रमी राजा लोग सेनाके बीच रणभूमिमें त संज्ञा प्राप्त होकर पृथ्वीपर सोये पड़े हैं। नमेंसे कोई दश हजार हाथियोंके समान बल- न् और कितने ही वायुके समान वेग और राक्रमसंयुक्त थे, परन्तु वे लोग भी अपने समान नुष्योंके हाथसे मरकर पृथ्वीमें पड़े हैं। न योद्धाओंका व करने वाला कोई था, ऐसा बोध नहीं होता है; क्योंकि वे सबही बल, तेज और पराक्रमसे युक्त थे। सबहीको मन ही मन "मैं जीतूंगा, मैं जीतूंगा;" ऐसा ही निश्चय था। परन्तु वे सम्पूर्ण बुद्धिमान् राजा लोग प्राणरहित होकर पृथ्वीमें पड़े हैं, और मृतशब्द भी उनके निमित्त प्रयोग-होरहा है। ये सम्पूर्ण राजा लोग अत्यन्त पराक्रमी होकर भी मृत्युको प्राप्त हुए हैं। कितने ही राजपुत्र लोग भी शूरवीर थे, वे लोग भी क्रोधपूर्व्वक शत्रुओंके सङ्ग युद्ध करके अन्तमें शत्रुओंके वशमें हो अभिमानशून्य और चेष्टारहित होकर मृत्युके ग्रासमें पतित हुए। इस विषयमें मुझे यह संशय उत्पन्न होरहा है, कि मृत यह संज्ञा किस कारणसे होती है, मृत्यु क्या वस्तु है, किस प्रकार और कहांसे उत्पन्न हुई है, और मृत्यु प्राणियोंका किस प्रकारसे संहार करती है, तथा किस भांति इस लोकसे परलोकमें ले जाती है? हे देवतोंके समान पितामह! आप इस सम्पूर्ण वृत्तान्तको वर्णन करके मेरे सन्देहका नाश कीजिये। राजा युधिष्ठिरका ऐसा प्रश्न सुन भगवान् वेदव्यास उन्हें धीरज देते हुए यह वचन बोले, हे राजन्। पहिले समयमें नारद ऋषिने राजा अकम्पनको जो वृत्तान्त सुनाया था, पण्डित लोग इस ही स्थानपर उस पुराने इतिहासको उदाहरण रूपसे वर्णन करते हैं। हे राजेन्द्र! मेरे विचारसे राजा अकम्पन भी इसलोकमें न सहने योग्य पुत्रशोक पाया था। मैं उस ही उपाख्यानमें कही हुई मृत्युकी उत्पत्तिका सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन करता हूं, तुम चित्त लगाकर सुनो। हे तात! मैं इस पुराने इतिहासको विस्तारपूर्व्वक कहता हूं, उसके सुननेसे तुम स्नेहके बन्धनमें पड़े हुए दुःखसे मुक्त होओगे। यह उपाख्यान शोकदुःखका नाशक, आयुको बढ़ानेवाला, और कल्याणकारी है। हे महाराज! इस अत्यन्त प्रिय पवित्र और मनो-

इस उपाख्यानका पाठ करनेसे वेदाध्ययनके समान फल मिलता है। यश राज्य और आयुकी इच्छा करनेवाले तथा पुत्र चाहनेवाले राजाओंको नित्य ही प्रातःकाल सुनना चाहिये।

सतयुगमें पहिले अकम्पन नामक राजा थे, वह संग्रामभूमिके बीच शत्रुओंके वशवर्त्ती हुए, उनके हरिनामक एक पुत्र था। हरि बल तथा पराक्रममें नारायणके समान था। श्रीमान्, शस्त्रोंकी विद्या जाननेवाला और युद्धमें इन्द्रके समान बलवान था। उसने अनेक प्रकारसे शत्रुओंके बीच घिरकर रणभूमिमें बहुतेरे योद्धाओं और हाथियोंके ऊपर सहस्रों बाण चलाये थे। शत्रुनाशन हरि युद्धभूमिमें अत्यन्त कठिन कर्मोंको करके अन्तमें सेनाके बीच शत्रुओंके हाथसे मारे गये। राजा अकम्पनने युद्धहोनेके पश्चात उसका श्राद्ध आदि कर्म करके निवृत्त हुए। अनन्तर रात दिन उसके शोकसे चिन्ताकरने लगे; किसी प्रकारसे भी उसका शोक नहीं दूर हुआ। अनन्तर देवऋषि नारदने उन्हें पुत्रशोकसे दुःखित देखकर उनके निकट आगमन किया। राजा अकम्पनने देवर्षिसत्तम नारद मुनिको देखके उनकी यथा उचित पूजाकी और आसनपर बैठनेके अनन्तर उनसे अपना सम्पूर्ण वृत्तान्तवर्णन करने लगे। जिसप्रकारसे युद्ध हुआ था, उसमें जैसे शत्रुओंकी विजय हुई थी तथा जिस प्रकारसे उस संग्राममें उनके पुत्रका नाश हुआ था वह सम्पूर्ण वृत्तान्त नारदमुनिको सुनाकर फिर बोले, मेरा पुत्र महाबलवान् इन्द्र और विष्णुके समान पराक्रमी था; अनेक शत्रुओंने मिलकर युद्धभूमिमें मेरे पुत्रका बध किया है। हे महामुनि मृत्यु कौन है? मृत्युका बल, पराक्रम और पुरुषार्थ किस प्रकारका है? हे ऋषिश्रेष्ठ! मैं तुम्हारे समीपमें इस विषयकी विस्तारपूर्वक सुननेकी इच्छा करता हूं। उनका ऐसा वचन सुनकर वरदान देनेवाले नारदमुनि पुत्रशोकका नाश करनेवाले इस बड़े उपाख्यानको [illegible] पूर्वक कहने लगे।

नारदमुनि बोले, हे पृथ्वीनाथ। मैं [illegible] उपाख्यान विस्तारपूर्वक सुनाते, [illegible] अच्छी प्रकारसे चित्त लगाकर सुनो। [illegible] तेजस्वी पितामह ब्रह्माने पहिले सृष्टि [illegible] समयमें सम्पूर्ण प्रजाओंकोउत्पन्न किया। [illegible]न्तर इस संसारको धीरे धीरे सम्पूर्ण प्रा[illegible] योंसे पूर्ण होते देखकर उनका संहार कर[illegible] चिन्ता करने लगे। हे राजेन्द्र। ब्रह्मा [illegible] चिन्ता करनेपर भी जगत्के प्राणियोंका [illegible] करनेका कुछ उपाय स्थिर न कर सके। उनके शरीरसे क्रोध उत्पन्न हुआ और वही क्रोधसे आकाशमें अग्नि प्रकट हुई। अग्नि सम्पूर्ण जगत्का नाश करनेको [illegible] सम्पूर्ण-दिशातथा समस्त स्थानोंमें व्याप्त [illegible] अनन्तर वह अग्नि स्वर्ग पृथ्वी और आ[illegible] वासी सम्पूर्ण प्राणियोंको अपनी ज्वालासे विकल करके भस्म करने [illegible] स्थावर जङ्गम आदि सम्पूर्ण जीव [illegible] क्रोधाग्निसे जलते हुए अत्यन्त ही [illegible] हुए। अनन्तर जटाधारी भूत-प्रेत और [illegible]चोंके स्वामी देवोंकेदेव महादेव ब्रह्माके [illegible]रामें उपस्थित हुए। महादेव सम्पूर्ण [illegible] कल्याणके वास्ते जब जगत्पितामह [illegible] निकट उपस्थित हुए, तब जलती हुई [illegible] समान तेजस्वी ब्रह्मा उनसे बोले, हे पुत्र। तुम अपनी स्वेच्छापूर्वक उत्पन्न हुए हो वर ग्रहण करनेके योग्यपात्र हो; तुम्हारी जो इच्छा हो वह प्रकाश रूप समीपमें वर्णन करो, मैं तुम्हारी आ[illegible] पूरी करूंगा।

५० अध्याय समाप्त।

महादेव बोले हे विधाता! आपने उत्पन्न करनेके निमित्त यत्न किया था,

से नाना प्रकारके सम्पूर्ण प्राणी उत्पन्न कर क्रमशः बढ़ रहे हैं, इस समयमें उन ही पूर्ण प्राणियोंको तुम्हारे क्रोधाग्निसे जलते देखकर उन समस्त जीवोंके निमित्त मेरे यमें दया उत्पन्न हुई है। हे भगवन्! हे ! इससे आप प्रसन्न होइये।

ब्रह्मा बोले, हे महादेव! प्रजाओंको नाश नेको मेरी इच्छा नहीं है, तुम जो बचन ते हो, वही होगा; परन्तु पृथ्वीके हितके मित्त मेरे शरीरसे क्रोध उत्पन्न हुआ है। वसुन्धरा पृथ्वीदेवी इन बढ़े हुए प्रजा समू- भारसे पीड़ित होकर उनके नाशके निमित्त हसे अनुरोध कर रही है। मैंने इन अन- त प्रजासमूहका नाश करनेके निमित्त अनेक तिसे चिन्ता की परन्तु उनका नाश करनेके मित्त मेरे विचारमें कोई उपाय भी स्थिर हीं हुआ, उस ही कारण मेरे शरीरसे क्रोध ट हुआ है।

महादेव बोले, हे ब्रह्मन्! हे जगत्कर्त्ता प मेरे ऊपर प्रसन्न होइये। आप अपने इस धको शान्त कीजिये, जिससे सम्पूर्ण जगत्का श न होवे-आप वैसा ही उपाय कीजिये। भगवन्! तुम्हारी कृपासे यह जगत् भूत वर्त्त मान और भविष्यत् तीनों कालमें स्थित रहे। ने क्रुद्ध होकर अपने क्रोधसे अग्नि उत्पन्न है; वह अग्नि पर्व्वत वृक्ष, तालाव, नदी, घ और सम्पूर्ण वस्तुओंको ही भस्म कर ही है। हे भगवन्! आप जगत्के ऊपर कृपा के प्रसन्न होइये मेरी यही प्रार्थना है। हे लोके देव! यह सम्पूर्ण संसार नश्वर अर्थात् शमान है यह अवश्य नष्ट होवेगा; परन्तु समयमें आपके क्रोधसे नष्ट हुआ चाहता इस निमित्त अपने क्रोधको शान्त कीजिये, ह प्रचण्ड अग्निका तेज आपहीके शरीरमें न होजावे हे देव! आप सम्पूर्ण प्राणियोंके मित्त भली भांति इनको ओर कृपादृष्टि कीजिये, जिसमें सम्पूर्ण जीवोंकी रक्षा होवे आप उसहीका विधान कीजिये। जिसमें ये सम्पूर्ण प्रजा उत्पादक शक्तिसे रहित होकर नष्ट न होवें; आप वैसा ही कार्य्य कीजिये। हे लोकनाथ! आपने इस सम्पूर्ण लोकके बीच मुझको जगत्का संहार करनेके निमित्त नियुक्त किया है, और इस समय आप स्वयं ही जगत्का संहार करनेकी इच्छा करते हैं। आप मेरे ऊपर प्रसन्न हुए हैं, इस ही निमित्त मैं यह प्रार्थना करता हूं कि इस स्थावर जङ्गम सम्पूर्ण जगत्का नाश मत कीजिये।

नारद मुनि बोले, ब्रह्माने सम्पूर्ण प्रजाके कल्याणकारी महादेवके बचनको सुनके अपने तेजको फिर समेटकर निजआत्मामें धारण किया। अनन्तर जगत् पितामह ब्रह्माने अग्निको शान्त करके जगत्की सृष्टि और संहार करनेका सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन किया। महात्मा ब्रह्मान् जिस समयमें उस प्रचण्डअग्निका सम्पूर्ण तेज अपनी आत्मामें धारण किया, उस समय उनके समस्त लोमकूपसे एक कन्या प्रकट हुई। हे राजेन्द्र! उस स्त्रीका शरीर लाल पीला, और नीला वर्णसे युक्त था; उसकी जिह्वा, मुख और नेत्र काले थे। उस स्त्रीके कुण्डल आदि सम्पूर्ण भूषण सुवर्णके थे। वह उसी भांति ब्रह्माके लोमकूपसे प्रकट हो विश्वेश्वर महादेव और जगत् पितामह ब्रह्माको देखके हंसकर उनकी दाहिनी ओर स्थित हुई। हे राजन् अनन्तर जगत्के उत्पन्न और संहार करनेके ईश्वर ब्रह्माने उस कन्याको मृत्यु कहके आवाहन किया और उससे यह बचन बोले, तुम संहारबुद्धिसे युक्त होकर मेरे क्रोधसे उत्पन्न हुई हो। इससे मेरी आज्ञासे तुम स्थावर जङ्गम इस सम्पूर्ण जगत्के प्राणियोंका नाश करो, ऐसा कार्य्य करनेसे तुम्हारा कल्याण होगा।

वह कमल नैनी मृत्यु नाम्नी कन्या ब्रह्माकी ऐसी आज्ञा सुनकर अत्यन्त ही चिन्ता

मन्द स्वरसे रोदन करने लगी। पितामह ब्रह्माने सब प्राणियोंके हितके निमित्त दोनो हाथोंकी अङ्गुलियोंमें उसके आंसुओंको ग्रहण किया फिर जगत्के संहारके निमित्त उससे अत्यन्त ही विनती करने लगे।

५१ अध्याय समाप्त।

नारद मुनि बोले, उस कन्याने अपने दुःखको देखकर नीचे गिरी हुई लताके समान दोनों हाथ जोड़के पितामह ब्रह्मासे यह वचन बोली हे महा बुद्धिमान्! हे विधाता! तुमने किस प्रकारसे ऐसी स्त्रीको उत्पन्न किया। मैं जान बूझ कर किस भांति सम्पूर्ण प्राणियोंके अहित और क्रूरकर्म्मका अनुष्ठान करूंगी? हे भगवन्! मैं इस अधर्म्म कार्य्यसे भयभीत हो रही हूं, इससे आप मेरे ऊपर प्रसन्न होइये। जिसके प्यारे पुत्र, भाई पिता और पतिकी मृत्यु होगी वह उन लोगोंके निमित्त मेरे अनिष्टकी चिन्ता करेंगे; मैं उन लोगोंके भयसे भी डर रही हूं। हे भगवन्! वे लोग अत्यन्त दीनतापूर्व्वक रोदन करेंगे मैं उनके आंसू गिरनेके भयसे दुःखित होकर तुम्हारी शरणमें रहना चाहती हूं। हे देवोंकेदेव! मैं यमराजके भवनमें जाकर प्रजा समूहका नाश नहीं करूंगी। हे वरदेनेवाले पितामह! मैं हाथ जोड़ तथा शिर भुकाकर तुम्हारी प्रसन्नता चाहती हूं और तुमसे यह प्रार्थना करतीहूं, कि तुम्हारी कृपासे मैं तपस्याका अनुष्ठान करूं; हे भगवन्! आप मेरे ऊपर प्रसन्न होकर मुझे यही वर दान कीजिये। तुम्हारी आज्ञा मिलनेसे मैं धेनुका श्रममें गमन करूंगी। वहां जाकर तुम्हारी आराधनामें तत्पर होकर कठिन तपस्या करूंगी। हे देवेश! मैं रोदन तथा विलाप करनेवाले प्राणियोंको प्रिय प्राणको हरण नहीं करसकूंगी, आप मुझे इस अधर्म्म कर्म्मसे बचाइये।

ब्रह्मा बोले, हे मृत्यु! मैंने प्रजाके ... निमित्त सङ्कल्प करके तुम्हें उत्पन्न किया, अब तुम सम्पूर्ण प्राणियोंका संहार करो, विषयमें कुछ भी विचार मत करो; यह ... वचन अवश्य सत्य होगा यह कभी अन्यथा ... वाला नहीं है; तुम मेरे इस वचनको पा... करनेसे लोकके बीचमें निन्दासे रहित होगी।

नारद मुनि बोले, जब ब्रह्माने मृत्युसे ... वचन कहा, तब वह मृत्यु नाम्नी कन्या भय... हो हाथजोड़ कर उनके सम्मुखमें खड़ी हो... और प्रजासमूहके कल्याणकी अभिलाष... उनका नाश करनेकी इच्छा नहीं की।... पति पितामह ब्रह्मा उस समय शान्त ... शीघ्र ही प्रसन्न हुए। अनन्तर सम्पूर्ण ... ओर देखकर जगत् पितामह ब्रह्मा हंसे, ... सम्पूर्ण प्राणी उनकी प्रसन्न दृष्टिसे पहि... समान शान्त आकार स्थित हुए। उन ... जित बुद्धिमान् ब्रह्माका क्रोध शान्त होनेपर मृत्यु नाम्नी कन्याने उनके निकटसे ... किया। हे राजेन्द्र! वह कन्या ... संहार करनेके कार्य्यको अस्वीकार करके ... ही धेनुकाश्रममें पहुंची। अनन्तर प्रजाके ... तथा प्राणियोंके हितकी इच्छा कर इन्द्रियों... विषयोंसे निवृत्त करके वहांपर एक पांव... खड़ी होकर इक्कीस पद्म वर्ष पर्य्यन्त महा... अत्यन्त कठिन तपस्याका अनुष्ठान किया, फिर दूसरी बार एक ही चरणसे खड़ी हो... तेईस पद्म वर्षतक कठोर व्रतका अनुष्ठान ... तिसके अनन्तर दशसहस्र पद्मवर्ष ... मृगोंके सहित वनमें भ्रमण किया। ... पापरहित होके जलपूरित पवित्र नदीमें ... करके जलमें खड़ी होकर आठ सहस्र वर्ष ... व्रत किया। अनन्तर फिर नियम ... करके पहिले कौशिकीमें गमन करके ... भक्षण तथा जलपान करके नियमाचरण ... फिर उस पवित्रकर्म्मवाली कन्याने पञ्च...

और वेतस तीर्थमें गमन करके नाना प्रकारकी तपस्याका अनुष्ठान करके अपने शरीरको सुखा दिया। तिसके अनन्तर गङ्गा और सुख्य तीर्थ महामेरुमें जाकर प्राणायाम करती हुई चेष्टारहित होके स्थित हुई। फिर उस पवित्र चरित्रवाली कन्याने उसी पुण्य स्थानमें गमन किया, जहांपर देवताओंने पहिले समयमें यज्ञ किया था। उस हिमालय पर्व्वतके शृङ्गपर जाकर निखर्व्व वर्ष पर्य्यन्त केवल अङ्गूठेके सहारेसे खड़ीरही। तिसके बाद पुष्कर, गोकर्ण, नैमिषारण्य और मलय तीर्थमें गमन करके अभिलषित नियमका अनुष्ठान करती हुई अपने शरीरको सुखाने लगी। हे भारत। उसने लगातार दूसरे किसी देवताकी भी आराधना न करके निरन्तर पितामह ब्रह्माके ऊपर दृढ़ भक्तिपूर्व्वक केवल उनहीकी उपासना करके उन्हें प्रसन्न किया।

हे राजन्! अनन्तर जगत् पितामह ब्रह्मा सम्पूर्ण प्राणी और उस कन्याके ऊपर प्रसन्न होकर उससे यह वचन बोले, हे मृत्यु! तुम किस निमित्त इस प्रकारकी कठोर तपस्याका अनुष्ठान कर रही हो?

अनन्तर मृत्यु भगवान् ब्रह्मासे फिर बोली, हे देवोंके देव! मुझको प्रजाओंके स्वास्थ्यको भङ्ग करके उनका संहार करना न पड़े, वे सम्पूर्ण ऊंचे स्वरसे रोदन करेंगे, वह मुझसे नहीं सहा जायगा। मैं तुम्हारे निकटमें यही वर मांगती हूं कि मुझको प्रजा समूहका नाश न करना पड़े। मैंने अधर्म्मके डरसे भयभीत होकर तपस्याका अनुष्ठान किया है। हे लोक पितामह! आप इस भयसे दुःखिता कन्याके ऊपर कृपा करके अभयदान कीजिये। मैं निरपराधिनी कन्या हूं, मैं आर्त्त होकर तुमसे प्रार्थना कर रही हूं, आप मेरे ऊपर कृपा कीजिये।

अनन्तर भूत, वर्त्तमान और भविष्यत् वृत्तान्तोंके जाननेवाले पितामह ब्रह्मा उस कन्यासे यह वचन बोले, हे मृत्यु! इन सम्पूर्ण प्राणियोंका संहार करनेसे तुम्हें अधर्म्म नहीं होगा। हे भद्रे! मेरा वचन कभी मिथ्या नहीं होगा। हे कल्याणि! इससे तुम जरायुज, अण्डज, स्वेदज और उद्भिज्ज, इन चारों प्रकारकी प्रजाका संहार करो, ऐसा कार्य्य करनेसे सनातन धर्म्म तुमको पवित्र करेगा। लोकपाल यमराज और सम्पूर्ण व्याधि तुम्हारी सहायता करेंगे। इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण देवता और मैं तुम्हें वर प्रदान करूंगा; उसके प्रभावसे तुम सब पापोंसे छूटकर रजोगुणसे रहित होकर सम्पूर्ण लोकमें विख्यात हो जाओगी।

हे राजेन्द्र! जब मृत्युरूपी कन्यासे ब्रह्माने ऐसा वचन कहा तब वह कन्या, हाथ जोड़ शिर झुकाकर उन्हें प्रसन्न करके फिर यह वचन बोली,—हे प्रभो! यदि यह कर्म्म मेरे विना न सिद्ध होसकेगा; तो मैं तुम्हारी आज्ञा मानती हूं, परन्तु मैं जो कुछ आपके समीप निवेदन करती हूं, उसे सुनिये। लोभ, क्रोध, पाप, ईर्षा, मोह, निर्लज्जता और आपसके कठोर वचन,—ये सब पृथक् पृथक् रूपसे प्राणियोंके शरीरका नाश करेंगे।

ब्रह्मा बोले, हे मृत्यु! वैसा ही होगा, तुम्हारा कल्याण होवे, तुम सम्पूर्ण प्राणियोंको परलोकमें ले आना, तुम्हें अधर्म्म नहीं होगा। हे भद्रे! मैं तुम्हारे अनिष्टकी कभी चिन्ता नहीं करूंगा। मेरे अञ्जलीमें तुम्हारे आंसूकी जितनी बूंद गिरी हैं वेही प्राणियोंके शरीरमें व्याधि रूपसे प्रवेश करेंगी। वेही सम्पूर्ण व्याधि समयके अनुसार प्राणियोंके प्राणको हरण करेंगी। उससे तुम्हें कुछ भी अधर्म्म नहीं होगा; तुम भय मत करो। हे भद्रे! तुम्हें अधर्म्म नहीं होगा तथा तुम्ही प्राणियोंके धर्म्मस्वरूप और धर्म्मको चलानेवाली

इससे तुम धर्मपरायण धर्मपालिनी और धरित्री होकर सम्पूर्ण प्राणियोंको नियमित करोगी। तुम काम क्रोध त्याग करके सम्पूर्ण प्राणियोंको परलोकमें लाओगी, उससे सनातन धर्म तुमको पवित्र करेगा। जो सब प्राणी मिथ्याचारी हैं, अधर्म ही उन मिथ्याचारियोंका नाश करेगा; परन्तु तुम अपनेको पवित्र समझोगी। क्योंकि अधर्म ही पापियोंको उनके मिथ्याचरणके कारण उन्हें संहारके कर्म्ममें नियुक्त करेगा, उस ही निमित्त तुम अहंकार बुद्धि त्यागकर आजसे सम्पूर्ण जीवोंके प्राणको हरण करो।

नारद मुनि बोले, उस कन्याको जब ब्रह्माने मृत्यु नामसे सम्बोधन किया, तब वह शापके डरसे भयभीत होकर उनके समीपमें "बाढ़" कहके प्राणियोंका सहार करनेका कार्य्य स्वीकार किया। वही मृत्यु काम, क्रोध और आसक्तिरहित होकर अन्त समयमें प्राणियोंके प्राणको हरण करती है। आपत्कालमें प्राणियोंको स्वयं ही व्याधि उत्पन्न होती है, वही व्याधि रोग शब्दसे पुकारी जाती हैं, उसहीसे सम्पूर्ण जीव रोगी होते रहते हैं, वेही व्याधि अन्त समयमें प्राणियोंकी मृत्युके कारण होती हैं, इससे तुम वृथा शोक मत करो। हे राजेन्द्र प्राणियोंके मरनेके अनन्तर जैसे समस्त इन्द्रिय परलोकमें गमन करके वृत्तिमान होती है, और फिर वहांसे लौटती हैं, वैसे ही इन्द्र आदि देवता लोग भी मनुष्योंकी भांति परलोक गमन करते रहते हैं। इसके अतिरिक्त महा बलवान् भयङ्कर शब्दसे युक्त सर्व्वव्यापी अनन्त-तेजस्वी असाधारण वायु ही प्रचण्ड रूप होकर प्राणियोंके शरीरको भेद करता रहता है; उसकी कभी भी गति प्रत्यागति नहीं होती। हे राजेन्द्र! सम्पूर्ण देवता भी मर्त्तनामसे युक्त हैं, इससे तुम पुत्रके निमित्त शोक मत करो। तुम्हारा पुत्र अत्यन्त मनोहर वीर लोकमें गमन करके नित्य-सुखभोग कर रहा है, वह दुःखोंको छोड़कर पुण्यात्मा पुरुषोंके सङ्ग स्वर्ग लोकमें वास कर रहा है। ब्रह्माने स्वयं ही मृत्युको सम्पूर्ण जीवोंके प्राण हरण करनेके निमित्त उत्पन्न किया है, जब प्राणियोंका काल उपस्थित होता है, तब यही देवनिर्म्मित मृत्यु उन लोगोंका प्राण हरण किया करती है। सम्पूर्ण प्राणी स्वयं ही अपने नाशके मूल हैं; दण्डधारी यमराज उन लोगोंका नाश नहीं करते, इससे धीर पुरुष मृत्युको विधाताके उत्पन्न की हुई समझकर मरे हुए प्राणियोंके निमित्त शोक नहीं करते।

व्यास मुनि बोले, नारद ऋषिके इस पुण्य अर्थयुक्त वचन सुनकर राजा अकम्पनने नारद मुनिसे कहा, हे भगवन्! हे ऋषिसत्तम मैं आज तुम्हारी कृपासे इस इतिहासको सुन कृतार्थ, शोकरहित और प्रसन्न हुआ हूं; इससे आपको प्रणाम करता हूं। महाबुद्धिमान ऋषियोंमें श्रेष्ठ देवर्षि नारद मुनिने राजा अकम्पनसे इस प्रकारसे पूजित होकर शीघ्र ही नन्दन बनमें गमन किया। इस इतिहासको सुनानेसे तथा सुननेसे पुरुष पुण्यवान् यशस्वी आयुष्मान् और कीर्त्तिमान् होकर अन्त समयमें स्वर्ग लोकमें गमन करते हैं। हे युधिष्ठिर महापराक्रमी महारथ राजा अकम्पनने यह इतिहास सुनकर और क्षत्रिय शूरवीरोंका धर्म तथा उनके अनुसार परम गतिका लाभ होना जानकर अन्त समयमें स्वर्ग लोकमें गमन किया महाधनुर्द्धारी महारथ अभिमन्यु सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंके सम्मुख रणभूमिमें युद्ध करते हुए गदा तलवार और धनुष बाणसे बहुतेरे शत्रुओंका नाश करके अन्तमें उनके हाथसे मारे गये है। वह चन्द्रमाके पुत्र थे, युद्ध भूमिमें मृत्युकाल पहुंचनेसे प्राणरहित होकर फिर चन्द्र लोकमें गमन किया है। हे पाण्डुपुत्र! इससे तुम भाइयोंके सहित धीरज धारण कर

ोक विषाद तथा करुणासे रहित होकर फिर ीघ्र ही युद्धकी तैयारी करो।

५२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, अनन्तर धर्म्मराज युधिष्ठिरने त्युकी उत्पत्ति और उसके कर्म्मका मनोहर तिहास सुनकर व्यास मुनिको प्रसन्न करके नसे फिर बोले, हे ब्रह्मन् पुण्य कर्म्म करने-ले इन्द्रकेसमान पराक्रमी, गुरुके समान जनीय, सत्यवादी, पापरहित पुराने राजर्षि-ोंने जिन जिन कर्म्मोंका अनुष्ठान किया था, उनके विषयके यथार्थ वृत्तान्तको वर्णनकर आप फिर मेरे चित्तको शान्त करके मुझे धीरज ीजिये, किन किन महात्मा पुण्यवान् राजर्षि ोंने कितनी दक्षिणा दी तथा कितना दान किया था? वह सम्पूर्ण वृत्तान्त आप मेरे समीपमें वर्णन कीजिये।

व्यासमुनि बोले, श्वित्य राजाका पुत्र सृञ्जय नामक पहिले समयमें एकराजा थे, पर्व्वत और नारद दो ऋषि उनके मित्र थे। क समय ये दोनों ऋषि उनसे मिलनेके निमित्त उनके राजभवनमें गये, और राजासे विधिपूर्व्वक सम्मानित तथा पूजित होकर प्रसन्न चित्तसे सुखपूर्व्वक वहां पर निवास करने लगे। किसी समयमें राजा सृञ्जय उन दोनो ऋषियोंके ङ्ग सुखसे बैठे हुए वार्त्तालाप कररहे थे, स ही समय उनकी मृदुहासिनी परम सुन्दरी कन्या उसी स्थानपर आकर उपस्थित हुई और पिताको विधिपूर्व्वक प्रणाम करके उनकी गलमें खड़ी होगई। उसके पिता सृञ्जयने भी उसके योग्य आठ प्रकारके आशीर्व्वाद देकर उसे आनन्दित किया।

अनन्तर पर्व्वत ऋषि उस कन्याको देखकर हंसते हुए यह वचन बोले, यह सुन्दर अङ्गवाली ब लक्षणोंसे युक्त किसकी कन्या है? यह सूर्य्यकी ज्योति, अग्निकी शिखा या चन्द्रमाकी चन्द्रिका है? यह श्री, ह्री, कीर्त्ति, धृति, पुष्टि अथवा सिद्धि इनमेंसे कोई एक होगी।

राजा सृञ्जय देवर्षि पर्व्वतके ऐसे बचन सुनकर उनसे बोले, हे भगवन्! यह मेरी कन्या है, यह मेरे समीपमें आकर वर पानेकी प्रार्थना कर रही है।

नारद मुनि बोले, हे राजेन्द्र! यदि तुम अपने अत्यन्त कल्याणकी अभिलाष करतेहो, तो इस कन्याको मेरी भार्य्या बननेके निमित्त मुझे दान करो। सृञ्जयने प्रसन्न होकर नारद मुनिके निकट "दान करूंगा" कहके उनके वचनको स्वीकार किया। तब पर्व्वत मुनि अत्यन्त क्रुद्ध होकर नारद मुनिसे बोले, हे विप्र! मैंने इसके सङ्ग विवाह करनेकी इच्छासे इसे मन ही मन वरण किया है, इससे यह मेरी भार्य्या हुईहै, परन्तु मैंने जिसको वरण कियाथा, तुमने भी उसीको वरण किया है, इससे मैं तुम्हें शाप देता हूं, कि तुम इच्छाके अनुसार स्वर्ग लोकमें गमन नही कर सकोगे।

नारद मुनिने पर्व्वतके ऐसे वचनोंको सुनकर उन्हें उत्तर दिया। वरका "मेरी यह भार्य्या है" ऐसा ज्ञान होना, और 'मेरी यह भार्य्या है' ऐसा वचन कहना, उसपर कन्यादान करनेवालेका बुद्धिपूर्व्वक कन्यादान करना, लौकिक आचारके अनुसार कन्यादाता और कन्या ग्रहण करनेवालेके परस्पर शास्त्र वचनके अनुसार वरवधूका मिलाप, हाथमें जल और कुश लेकर दान, वरसे कन्याका पाणिग्रहण और विवाहके मन्त्र,—यह सात विवाहके लक्षण हैं, इन सम्पूर्ण लक्षणोंके सिद्ध होजाने पर भी जबतक सप्तपदी फेरी नहीं पूरी होती, तबतक भार्य्यात्वकी सिद्धि नहीं समझी जाती। इससे बिना कारणके ही तुमने जो मुझे अभिशाप दिया है, उस ही निमित्त मैं भी तुम्हें शाप देता हूं, कि तुम भी मुझे छोड़कर

नहीं जा सकोगे। इसी प्रकार वे दोनों ऋषि आपसमें एक दूसरेको शाप देकर उसी ही स्थानमें वास करने लगे।

अनन्तर उस राजाने पवित्र होकर पुत्र कामनासे अपनी शक्तिके अनुसार दान, पान तथा भोजन और वस्त्रोंसे ब्राह्मणोंकी सेवा करने लगा। अनन्तर कुछ दिनोंके बाद तपस्या और वेदपाठमें रत वेदवेदाङ्गके जाननेवाले ब्राह्मण लोग राजाके ऊपर प्रसन्न होकर नारद मुनिसे बोले, हे देवऋषि! राजाको उनकी इच्छाके अनुसार पुत्र दान कीजिये। ब्राह्मणोंका वचन सुनकर नारद मुनि राजा सृञ्जयसे बोले, कि हे राजर्षि सृञ्जय! ब्राह्मण लोग प्रसन्न होकर तुम्हारे पुत्रके निमित्त इच्छा करते हैं, तुम्हें जिस प्रकारके पुत्रकी इच्छा होवे, तुम वैसा ही वर मांगो।

राजाने हाथ जोड़ कर सबगुणोंसे पूर्ण, यशस्वी, कीर्त्तिमान् और शत्रुओंकानाश करनेवाले एक पुत्रके निमित्त वर मांगा। समयके अनुसार उनको एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उस पुत्रके शरीरसे मूत्र, मल और पसीना जो बाहर होता था, वह सुवर्ण होजाता था। इससे उस पुत्रका "सुवर्णष्ठीवी" नाम रक्खा गया। उस ही पुत्रके प्रभावसे राजा सृञ्जयके धनकी अत्यन्तही वृद्धि हुई और उन्होंने इच्छानुसार सम्पूर्ण वस्तुओंको सुवर्ण भूषित किया। राजमन्दिर राजसभा, दुर्ग (किला) ब्राह्मणोंके घर, शय्या आसन, सवारी, तथा भोजन करनेके पात्र आदि सम्पूर्ण वस्तुओंको, तथा राजभवनके भीतर और बाहरमें जितनी शिल्पकी वस्तुयें थीं वह सब राजाने धीरे धीरे सोनेकी बनवायी। एक समय चोर लोग राजाका ऐसा ऐश्वर्य्य सुनकर उनका धन चुरानेके निमित्त उद्यत हुए। उनमेंसे किसी किसीने कहा, कि चलो हम लोग राजाके पुत्रहीको चुरा लावें क्योंकि वही सम्पूर्णसुवर्णकी जड़ है, इससे उसहीको चुरानेके वास्ते हम सबप्रकारसे यत्न करेंगे। अनन्तर चोरोंने राजाके घरमें घुसके बलपूर्व्वक सुवर्णष्ठीवी राजपुत्रको हरण किया। उपाय न जाननेवाले चोरोंने जङ्गलमें ले जाकर उस राजपुत्रको टुकड़े करके काटडाला, परन्तु कुछभी धन न पाया इस प्रकारसे राजपुत्रका प्राणनाश होनेपर वर पाये हुए राजा सृञ्जयका सम्पूर्ण धन नाश होनेलगा। दुष्ट कर्म्म करनेवाले मूर्ख चोरोंने पृथ्वीके बीच उस अद्भुत राजपुत्रको नष्ट करके कुछ भी धन नहीं पाया, तब क्रोध पूर्व्वक आपसमें लड़के मरगये और इस पाप कर्म्म करनेसे महाघोर नरकमें पतित हुए। महातेजस्वी राजा सृञ्जय वरके प्रभावसे हुए पुत्रका प्राण नाश होनेपर अत्यन्त दुःखित होकर करुणाके सहित विलाप करने लगे। देवर्षि नारदने राजाको पुत्र शोकसे कातर और विलाप करते हुए जानकर उनके समीप उपस्थित हुए, और उन्होंने उस दुःखसे विह्वल और विलाप करनेवाले राजा सृञ्जयसे जो कुछ वचन कहा था, वह मैं तुम्हारे समीप वर्णन करता हूं, हे राजेन्द्र युधिष्ठिर! तुम चित्त लगाकर सुनो।

नारद मुनि बोले, हे सृञ्जय! जिसके घरमें हम लोग ब्रह्मवादी पुरुष वास करते हैं तुम इस प्रकारके पुरुष होकर भी तृप्त न होकर क्यों मरते हो? हे सृञ्जय! महा तेजस्वी पुत्रसे युक्त मरुत राजाका मरण सुना है, सम्वर्त्त बृहस्पतिके साथ स्पर्द्धा करके जिसके राज्य कर्म्ममें रत हुए थे, देवोंकेदेव महादेवने जिसे वरदान किया था जिसके नाना प्रकारके यज्ञोंके समाप्त होनेके समयमें बृहस्पतिके सहित सम्पूर्ण देवता हिमालय पर्व्वतके सुवर्णमय शिखर पर इकट्ठे होते थे; जिसके यज्ञकी सम्पूर्ण वस्तु सुवर्णभूषित थीं और जिस यज्ञमें ब्राह्मण क्षत्रिय आदि

…ोजन की इच्छा करके इच्छानुसार पवित्र …न्न घृत, दही दूध मधु आदि उत्तम उत्तम …ोजन पान और भक्षण करनेकी सम्पूर्ण वस्तु …ते थे जिसके सम्पूर्ण यज्ञोंहोमें वेद पढ़नेवाले …ह्मणोंको उत्तम वस्त्र आभूषण उनकी इच्छा अनुसार दियागया था, जिस राजऋषिके …हा मरुत्‌गण तथा विश्वे देव सभासद हुए थे …ौर जिस पराक्रमी मरुत राजाके यज्ञकी हवि …तृप्त होकर देवताओंने जल वर्षासे उनके …ाज्यके सम्पूर्ण अन्न और सम्पत्तियोंकी वृद्धि …ी थी; जिन्होंने ब्रह्मचर्य वेदाध्ययन औ सम्पूर्ण …कारके दानसे ऋषि, पितर, देवता तथा पुर-…ासियोंको प्रसन्न किया था, और शय्या आसन …वारी सुवर्ण तथा अनेक प्रकारकी वस्तु सदा …र्व्वदा ब्राह्मणोंको दान किया,था, इन्द्र जिसके …जाको आनन्दित करके सदा कृपा प्रकाशित …िया करते थे, उस श्रद्धावान् राजऋषिने भी …ण्य कर्म्मसे अक्षय स्वर्गलोकमें गमन किया। …न्होंने स्त्री, पुत्र क्षत्रिय योद्धा सेवक और बन्धु-…ान्धवोंके सहित सहस्र वर्ष पर्य्यन्त राज्य शासन …िया था।

व्यास मुनि बोले, नारद मुनि राजा सृञ्ज…से ऐसा वचन कहकर फिर उन्हें श्वित्यपुत्र …हकर यह वचन बोले महाप्रतापी मरुत राजा …दान समेत वित्त, गर्व्वरहित ज्ञान, क्षमासे …युक्त पराक्रम आसक्तिरहितभोग इन चारों …कारके श्रेष्ठ विषयोंमें तुम्हारे पुत्र और तुमसे …धिक पुण्यात्मा होकरभी मृत्युके कराल ग्रासमें …तित हुए। हे राजेन्द्र! तबतुम यज्ञशून्य दक्षिणा …रहित अपनेपुत्रके निमित्त शोक मत करो।

५३ अध्याय समाप्त।

———

नारद मुनि बोले हे सृञ्जय! सुहोत्र राजाकी …भी मृत्यु हुई है मैंने सुना, कि वह पृथ्वीके …बीच एक ही वीर तथा शत्रुओंका नाश करने-वाले थे, और सम्पूर्ण पुरुष जिसके दर्शनकी अभिलाष करते थे, जिसने धर्म्मके अनुसार राज्य पाकर ऋत्विक् पुरोहित तथा दूसरे ज्ञानवान् ब्राह्मणोंसे अपने कल्याणकी बातका विचार करके उन लोगोंके मतके अनुसार सब कार्य्य किया था। वह प्रजा पालन, धर्म्म, दान, यज्ञ, और शत्रुओंको जीतना इन सम्पूर्ण कार्य्योंको भली भांतिसे धर्म्मके अनुसार धन उपार्ज्जनकी इच्छा करते थे, जो धर्म्मके मुताबिक देवताओंकी उपासना, धनुर्व्विद्यासे शत्रुओंको वशमें करके और अपने नेत्रसे सम्पूर्ण प्राणियोंको प्रसन्न करते थे, जिससे इस समस्त पृथ्वीको म्लेच्छ और चोरोंसे रहित करके राज्य भोग किया था, बादलोंने जिसके राज्यमें सदा-सर्व्वदा सुवर्णकी वर्षाकीथी, उससे सम्पूर्ण नदी सुवर्णमयी होकर सर्व्व साधारण पुरुषोंके व्यवहारकी मूल हुई थीं; इन सम्पूर्ण नदियोंसे बहुतेरे नाना भांतिके सुवर्णमय ग्राह, केंकड़े और मछरी जलमें बहती हुई, दीख पड़ती थीं, जिसके राज्यमें बादलोंने सुवर्णमय विविध प्रकारकी अनेकभोगप्रद वस्तुओंकी वर्षा की थी, और कोष भरके बीच जिसके राज्यमें सुवर्णमयी वापी थी; जो सुवर्ण-मय नाना प्रकारके मकर मच्छसे युक्त वापियोंकोदेखकर आश्चर्य बोध करते थे, जिस राजऋषिने कुरुजाङ्गलमें विविध भांतिके यज्ञोंके अनुष्ठान करके उन सुवर्णमयी सम्पूर्ण वस्तुओंको ब्राह्मणोंको दानकिया था; उन्होंने सहस्र अश्वमेध सौ राजसूय, तथा अनेक दक्षिणासे युक्त क्षत्रिय धर्म्मके अनुसार अनेक प्रकारके यज्ञोंको पूर्ण करके अपनी इच्छाके अनुकूल परम गति प्राप्त की थी।

व्यास मुनि बोले, नारद मुनिराजा सृञ्जयको इतनी कथा सुनाकर फिर उन्हें पुकारके यह वचन बोले यह राजा सुहोत्र दानसमेत वित्त गर्व्वरहित ज्ञान, क्षमायुक्त पराक्रम और आस…

त्तिरहित भोग,—इन चारों प्रकारके श्रेष्ठ विषयोंमें तुम्हारे पुत्र तथा तुमसे भी श्रेष्ठ थे, हे सृञ्जय। जब ऐसे राजा भी कालके कराल ग्रासमें पतित हुए तब तुम यज्ञ और दान आदि उत्तम कर्म्मोंसे रहित अपने पुत्रके निमित्त शोक मत करो।

५४ अध्याय समाप्त।

नारद मुनि बोले सृञ्जय। मैंने सुना है, कि पौरवको भी कालके ग्रासमें पतित होना पड़ा है। जिसने दश लाख घोड़ोंको दान किया था, उस राजर्षिके अश्वमेध यज्ञमें नाना देशोंसे वेद पढ़नेवाले इतने ब्राह्मण आके इकट्ठे हुए थे, कि उनकी संख्या नहीं होसकती थी;—उस यज्ञमें वेदपाठी, शास्त्र तथा ब्रह्म-विद्या—जाननेवाले विनयसे युक्त ब्राह्मणोंको उत्तम अन्न, वस्त्र गृह, शय्या, आसन और नाना भांतिकी सवारी देकर उनका सम्मान किया गया था, और नृत्य करनेवाले नट, वेश्या, और गन्धर्व्व लोग उत्तम गीतोंको गाकर उन आये हुए ब्राह्मणोंको आनन्दित किया था। जिन्होंने हर एक यज्ञमें यथा समय पर भली भांतिसे दक्षिणा दी थी। और ऋत्विक् ब्राह्मणोंको छोड़के दूसरे ब्राह्मणोंको भी इच्छाके अनुसार दश हजार हाथी, दश सहस्र सुवर्णभूषित उत्तम शरीर-वाली प्रमदा स्त्री दश हजार सुवर्णभूषित ध्वजा पताकासे युक्त उत्तम रथ दान किया था, और दश लाख कन्याओंको सुवर्णके आभूषणोंसे भूषित करके हाथी, घोड़े और रथों पर चढ़ाके हर एक कन्याको गृह, भूमि और एक सौ करके गऊ प्रदान किया था; जिसने विशाल शरीरवाली एक करोड़ गऊ और सहस्रों दास दासी भी दक्षिणामें ब्राह्मणों दान किया था। इसके अतिरिक्त सोनेके सींग, रूपेके खुर; और दूध दुहनेके निमित्त कांसेके पात्रसे युक्त गौओंको बछड़ोंके सहित दान दिया था, फिर दासों, ऊंट गदहे और भेड़े तथा बकरोंका दान किया था। उन अनेक प्रकारके अनुष्ठानके समयमें उन्होंने बहुतसे समान अन्नकी राशियोंको भी दान किया था। पुराने इतिहासके जाननेवाले प्राचीन इस गाथाको गाया करते हैं, कि "अङ्गराजके यज्ञको सम्पूर्ण यज्ञ हो यथा उचित धर्म्म सिद्ध हुई थीं हर एक यज्ञ शुभसूचक सम्पूर्ण कामनाओंके पूर्ण करनेवाली हुई थीं।"

व्यास मुनि बोले, इतनी कथा सुना श्रीनारदमुनि राजा सृञ्जयसे फिर बोले, वह राजर्षि पौरव दानसहित विन रहित ज्ञान क्षमायुक्त पराक्रम और रहित भोग—इन चारों प्रकारके श्रेष्ठ तुम तथा तुम्हारे पुत्रसे श्रेष्ठ और पुण्यात्मा हे सृञ्जय! जब ऐसे राजाकी भी मृत्यु हुई तब तुम यज्ञ दक्षिणासे हीन अपने निमित्त क्यों शोक करते हो?

५५ अध्याय समाप्त।

नारद मुनि बोले, हे सृञ्जय। मैंने सुना कि उसीनरके पुत्र शिवि राजाको भी म हुई है। जिन्होंने इस समुद्र, पर्व्वत वन द्वीपोंके सहित सम्पूर्ण पृथ्वीको अपने र शब्दसे अनुनादित किया था, और चमड़े भांति अपने रथचक्रसे लपेट लिया, जो शि राजा मुख्य मुख्य शत्रुओंको जीतकर सपत्न करके प्रसिद्ध हुए थे। जिसने पूर्ण दक्षिणा प्रदान करके नाना प्रकारके यज्ञों अनुष्ठान किया था, उस लक्ष्मीवान् परा राजाने बहुत सा धन प्राप्त करके ब्राह्मणों दान किया था और युद्ध विषयमें सम्पूर्ण रा ओंकेबीच पूजित हुए थे। उन्होंने बिना वि इस सम्पूर्ण पृथ्वीको जीतकर अनेक अश्व

निर्व्विघ्न पूर्ण किया था। जिसने सहस्र
ोड़स्वर्ण मुद्रा ब्राह्मणोंको दान किया और
म भूमिको हाथी, घोड़े, दास गौ, बकरी
र भेड़के सहित ब्राह्मणोंको दान किया
बादलोंकी वर्षाके समय जितनी जलधारा
जलकी बूंद गिरती है आकाशमे जितने तारे
ख पड़ते हैं और गङ्गाके वालूके दाने, पहा-
में जितने पत्थरके टुकड़े और समुद्रमें जितने
तथा जीव जन्तु रहते हैं, राजा शिविने
नि यज्ञमें उतनी ही गौओंको दान
या था। दक्ष प्रजापतिको छोड़के और
ई राजा भी उनके समान यज्ञ नहीकर
ा; उनसे पहिले भी कोई राजा उनके
ान यज्ञ नही कर सके और न भविष्य-
मकरसकेंगे सम्पूर्ण कामनाओंका सिद्ध
नेवाली नाना भांतिकी यज्ञोंका अनुष्ठान
के पूर्ण किया था। इन सम्पूर्ण यज्ञोंमे
, आसन यज्ञके पात्र और तोरण-
ाका आदि सुवर्णके बने थे; अन्नपानकी सम्पूर्ण
तु उत्तम और पवित्र थीं, दही दूधकी बड़ी
ड़ी नदिया तालवोंसे युक्त होकर बहती हुई
ख पड़ती थीं, और उत्तम अन्नोंके ढेर
र्वतके समान दीख पड़ते थे, दश दश हजार
ा लाखों ब्राह्मण जिसके यज्ञमे आकर उत्तम
जन पान तथा प्यारे वचनोंसे सन्तुष्ट होकर
न्न हुए थे; उनके यज्ञमे इस प्रकारके वचन
ा ही सुनाई पड़ते थे, कि 'हे ब्राह्मण! स्नान
ो, भोजन-पान करो; आप लोगोंकी जैसी
भिलाषा होवे, वैसा ही करो।' भगवान्
इन जिसके पुण्य कार्य्यसे प्रसन्न होकर यह
दान किया था, कि 'दान करनेसे तुम्हारा
अक्षय होगा; और तुम्हारी श्रद्धा, कीर्त्ति,
प, सत्क्रिया, और प्राणियोंके ऊपर यथार्थ
मसे तुम्हें उत्तम स्वर्गका लाभ होगा।'
ा सम्पूर्ण उत्तम वर पाकर भी वह शिवि
ा समयके अनुसार स्वर्ग लोकमें गये।

व्यास मुनि बोले, नारद मुनि इतनी कथा सुनाकर सृञ्जयसे बोले, कि शिवि राजा तुम्हारे पुत्र और तुमसे भी श्रेष्ठ थे, वह दान सहित वित्त गर्व्वरहित ज्ञान, क्षमायुक्त पराक्रम और ममतारहित भोग,—इन चारों श्रेष्ठ विषयोंमें अत्यन्त ही पुण्यात्मा थे। हे सृञ्जय! वह भी जब मृत्युके कराल ग्रासमें पतित हुए, तब यज्ञ-दक्षिणासे हीन अपने पुत्रके निमित्त तुम क्यों शोक करते हो?

५६ अध्याय समाप्त।

नारद मुनि बोले, हे सृञ्जय! दशरथके पुत्र रामचन्द्रने भी लोकान्तरमें गमन किया है। सम्पूर्ण प्रजा रामको अपने प्रिय पुत्रके समान जानती थी; राम महातेजस्वी और सम्पूर्ण गुणोंसे पूर्ण थे। उन्होंने अपने पिताकी आज्ञाको मानकर अपनी भार्य्या सीताके सहित चौदह वर्ष पर्य्यन्त वनमे वास किया था; और मुनियोंके स्थानमें तपस्वियोंकी रक्षाके निमित्त चौदह हजार राक्षसोंका वध किया था। वह उस ही स्थानमें अपनी प्यारी भार्य्या सीतादेवीके सहित निवास कररहे थे, उस ही समयमें रावण नामके राक्षसने राम और लक्ष्मणको मायासे मोहित कर जानकीको हर ले गया। जैसे पहिले समयमें महादेव अन्धकासुरका वध किया था, वैसे ही महाबाहु रामचन्द्रने देवता और असुरोंसे अवध्य शत्रुओंसे अपराजित, देव ब्राह्मणोंके द्वेषी उस पुलस्त्यनन्दन रावणको उसके उस ही अपराधके निमित्त अनुयायियोंके सहित युद्ध भूमिमें मारा था। वह राम प्रजासमूहके ऊपर कृपा प्रकाश करते हुए देवता और देवऋषियोंमें पूजित हुए; और उनकी कीर्त्ति इस सम्पूर्ण संसारमें व्याप्त होगई। वह समस्त प्राणियोंके ऊपर कृपा प्रकाशित करतेथे। उन्होंने विधिपूर्व्व

करते हुए महायज्ञोंको पूर्ण किया था। रामने ब्राह्मणोंको द्विगुण दक्षिणा देकर सौ अश्वमेध यज्ञोंका अनुष्ठान करके उन यज्ञोंकी हविसे देवराज इन्द्र तथा सम्पूर्ण देवताओंको तृप्त किया था; फिर अनेक प्रकारकी दक्षिणा देकर नाना प्रकारके यज्ञोंको भी पूर्ण किया था। देहधारी जीवोंको जो कुछ रोग उत्पन्न होते हैं, रामने उन समस्त रोग तथा भूख-प्यास आदि सम्पूर्ण दुःखोंको जीत लिया था। यह अपने अनेक उत्तम गुण तथा तेजसे प्रकाशित होकर सम्पूर्ण प्राणियोंके तेजको अतिक्रम करके शोभित हुए थे। उनके राज्य शासनके समय पृथ्वीपर ऋषि, देवता और मनुष्योंका एकत्र सहवास होता था; उस समयमें प्राणियोंके बल, प्राणकी हानि तथा अपान और समान वायुका विकृतभाव नहीं होता था, तेजस्वी पदार्थ अपने तेजपुञ्जसे प्रकाशित रहते थे, सम्पूर्ण प्रजासमूहकी दीर्घायुथीं, युवा पुरुषोंकी मृत्यु नहीं होती थी, और पितर यथारीतिसे हव्य कव्य और पूर्ण हुई हविको ग्रहण करते थे। उनके राज्यमें मच्छड़, सर्प काटनेवाले जीवजन्तु उपद्रव नहीं करते थे, प्राणियोंकी मृत्यु उस समयमें अग्नि और जलसे नहीं होती थी; कोई पुरुष रामके राज्यमें अधर्मी, मूर्ख और लोभी नहीं था, सब ही पुरुषश्रेष्ठ और यज्ञ आदि उत्तम कर्म्मोंसे युक्त थे। मुनियोंके स्थानपर राक्षसोंने उपद्रव किया था, रामने उनका बध करके नाना प्रकारके यज्ञोंसे देवता, ऋषि और पितरोंको तृप्त किया था। उनके राज्य शासनके समयमें पुरुषोंकी आयु दश सहस्र वर्ष पर्य्यन्त थी, उनके सहस्र पुत्र होते थे और उस समयमें कनिष्ठको आद्ध जेष्ठको नहीं करना पड़ता था। महा बलवान् रामचन्द्र श्यामवर्ण, युवा, कमल नेत्र, मतवारे हाथीके समान पराक्रमी आजानु बाहु, अत्यन्त सुन्दर तेजस्वी और सिंहस्कन्ध उन्होंने ग्यारह हजार वर्षतक सम्पूर्ण [illegible] योंके चित्तको प्रसन्न करके इस पृथ्वी पर राज्य किया था। उस समयमें सम्पूर्ण [illegible] ओंके मुंहसे 'राम! राम!' इसी प्र[illegible] वचन सदा सर्व्वदा सुनाई पड़ते थे, [illegible] राज्य शासनसे सम्पूर्ण जगत् सुखका [illegible] हुआ था। अन्तमें रामने अपने और [illegible] भाइयोंसे उत्पन्न भये दो दो पुत्रोंको राज्य [illegible] अंश आठ हिस्सोंमें बाटकर उन्हें समर्पण [illegible] दिया और चारों प्रकारकी प्रजाके [illegible] उस ही शरीरसे स्वर्गको चले गये।

व्यास जी बोले, नारद मुनि इतनी [illegible] सुनाकर फिर सृञ्जयसे बोले "हे [illegible] रामचन्द्र तुम्हारे पुत्र और तुमसे भी [illegible] वह दान सहित वित्त, गर्व्वहीन ज्ञान, [illegible] पराक्रम और आसक्तिरहित भोग—इन [illegible] उत्तम विषयोंमें श्रेष्ठ और पुण्यात्मा थे वह जब इस पृथ्वीसे परलोकको चले गये, तब [illegible] यज्ञ और दक्षिणारहित अपने पुत्रके निमि[illegible] क्यों शोक करते हो?

५७ अध्याय समाप्त।

नारद मुनि बोले हे सृञ्जय! मैंने सुना [illegible] कि भगीरथ राजाकीभी मृत्यु हुई है। भगीरथ राजा भागीरथी गङ्गाको इस पृथ्वी[illegible] बीच लेआये थे और सुवर्णके भूषणोंसे [illegible] हजार कन्याओंको राजा और [illegible] दान किया था। जिन जिन कन्याओंको [illegible] किया था, उन हर एक कन्याओंके निमि[illegible] चार चार घोड़ोंसे युक्त एक एकसौ रथ, हर [illegible] रथोंके पीछे सुवर्ण मालाभूषित एक एक [illegible] हाथी, एक एक हाथियोंके सङ्ग एक एक घोड़े और एक एक घोड़ोंके सङ्ग एक एक गौ, और एक एक गौवोंके सङ्ग पांच पांच [illegible] भेड़ राजा भगीरथने दान किया था। [illegible]

र प्रवाहके समीप विविक्त स्थानमें ब्रह्मणोंको बहुत सी दक्षिणा प्रदान कर रहे थे, उस दक्षिणाके भारसे वह स्थान नीचे बैठ गया, उससे भागीरथी गङ्गा अत्यन्त व्यथित और पातालगामिनी होकर फिर जलरूपी प्रवाहसे वहकर भगीरथ राजाके क्रोड़में आकरबैठ गई थीं। जिस स्थानमें भगीरथ राजाकी क्रोड़में गङ्गा आकर बैठ गई थीं उन स्थानका नाम उर्व्वशी तीर्थ हुवा गङ्गा राजाके पूर्व्व पुरुषोंका उद्धार किया; इस ही कारणसे गङ्गा भगीरथ राजाकी दुहिता अर्थात् पुत्री कही जाती है। सूर्य्यके समान तेजस्वी गन्धर्व्वोंने प्रसन्न होकर प्रियवादी देवता और पितरोंको यह उत्तम गाथा सुनाई। "समुद्रगामिनी गङ्गा देवीने अनगिनत दक्षिणा देनेवाले इक्ष्वाकुनन्दन राजा भगीरथको पिता कहके पुकारा था। इन्द्रवरुण आदि देवताओंने राजा भगीरथके विघ्नरहित यज्ञोंमें प्रत्यक्ष रूपसे हव्य ग्रहण किया था। जिन जिन ब्राह्मणोंने जैसी जैसी अभिलाष की थी, भगीरथ राजाने उनको वह सम्पूर्ण वस्तु प्रदान की थी, जिन ब्राह्मणोंको जो धन प्रिय था, राजा भगीरथने उन्हें वही प्रदान किया था,। वह राजा भगीरथ अनेक यज्ञ करके तथा ब्राह्मणोंको अनेक भांतिसे दान देकर उस पुण्यके प्रभावसे ब्रह्म लोकमें गये सूर्य्य और चन्द्रमा जिस तेजसे युक्त होकर आकाशमें भ्रमण करते हैं, वैसे ही तेजसे युक्त कितने ही राजा लोग सब विद्याओंके जाननेवाले तेजस्वी उस भगीरथ राजाके आश्रित हुए थे।

व्यास मुनि बोले, नारद मुनि इतनी कथा सुनाकर फिर सृञ्जयसे बोले, राजा भगीरथ तुम्हारे पुत्र और तुमसे भी श्रेष्ठ थे, उन्होंने दान शमित चित्त, गर्व्वरहित ज्ञान, क्षमायुक्त पराक्रम और ममता रहित भोग, इन चारों श्रेष्ठ विषयोंसे युक्त और पुण्यात्मा थे हे सृञ्जय वह भी जब कालके कराल ग्रासमें पतित हुए हैं, तब तुम यज्ञ तथा दक्षिणारहित अपने पुत्रके निमित्त शोक मत करो।

५८ अध्याय समाप्त।

नारद मुनि बोले हे सृञ्जय! मैंने सुना है, कि इलविलापुत्र दिलीप राजाकी भी मृत्यु हुई है। उन्होंने सैकड़ों यज्ञ किया था, उन यज्ञोंमें दश दश हजार तथा लाख लाख तत्त्वज्ञान रखनेवाले पुत्र और पौत्र युक्त अग्निहोत्र करने वाले ब्राह्मण लोग इकट्ठे हुए थे। उन्होंने नाना प्रकारके यज्ञोंको करके इस सम्पूर्ण पृथ्वीको सब वस्तुओंसे पूर्ण करके ब्राह्मणोंको दान किया था। उनके यज्ञका सम्पूर्ण स्थान सुवर्णमय था। इन्द्र आदिक देवता राजा दिलीपको और यज्ञकी वेदी तथा यज्ञभूमिको मानो क्रीड़ाका स्थान समझकर वहां आगमन करते थे, उनके यज्ञमें राजषाडव नाम जल और अनेक प्रकारकी भक्षण और भोजनकी वस्तुसे तृप्त और मतवारे होकर कितने ही पुरुष मार्गमें होमें शयन करते हुए दीख पड़ते थे। उनका एक आश्चर्य्यमय कार्य्य देखकर सब पुरुष चकित होते थे, कि जलके ऊपर भी युद्ध करनेके समय उनके रथका चक्र पानीमें नहीं डूबता था; उनके उस रथकी उपमा नहीं हो सकती। जिन महात्माओंने दृढ़ धनुद्धारी राजा दिलीपका दर्शन किया; उन्होंने भी स्वर्ग लोकको प्राप्त किया है। उस दिलीप राजाके राजभवनमें वेदाध्ययन स्वर धनुष्टङ्कार और भोजन करो, पान करो,—इत्यादि शब्द सदा सुनाई पड़ते थे।

व्यास मुनि बोले नारद मुनि इतनी कथा सुनाकर क्षत्रियपुत्र राजा सृञ्जयसे फिर बोले, राजा दिलीप तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी अपेक्षा भी दानशील चित्त गर्व्वहीन ज्ञान, भाद

पराक्रम और आसक्तिरहित भोग,—इन चारों उत्तम विषयोंमें श्रेष्ठ और पुण्यात्मा थे। हे सृञ्जय! जब वह भी कालकी कराल ग्रासमें पतित हुए, तब तुम यज्ञ और दक्षिणासे रहित अपने पुत्रके निमित्त क्यों शोक करते हो?

५६ अध्याय समाप्त।

नारद मुनि बोले, हे सृञ्जय! मैंने सुना है, युवनाश्व राजाकेपुत्र मान्धाताकी मृत्यु हुई है। देवता असुर औरमनुष्योंके बीचमें राजा मान्धाता त्रिलोक विजयी थे। अश्विनी कुमार दोनो देवतोंने उनको पिताके उदरसे बाहर किया था। किसी समयमें राजा युवनाश्व शिकार खेलते हुए प्यासे हुए, उनका घोड़ा भी थक गया। वह उस ही स्थानमें उचित वस्तु देखकर पवित्र स्थानमें जाकर यज्ञसे शुद्ध भये पृषदाज्य वस्तुको भोजनकिया। उससे उनके उदरमें एक पुत्र उत्पन्न हुआ। वैद्यक विद्या जाननेवाले अश्विनीकुमारोंने उनके उदरमें पुत्रका सञ्चार होते जानकर यत्न पूर्व्वक उस पुत्रको बाहर करके राजा युवनाश्वके क्रोड़में समर्पणकिया। देवतालोग देवपुत्रके समान उस तेजस्वी बालकको अपने पिताकी गोदोमें सोते हुए देखकर आपसमें कहने लगे, यह बालक किसको ओर देखकर दूध पीनेकी इच्छाकरेगा? इन्द्रने, प्रथम हो कहा, यहबालकमुझे देखकर दुग्धपान करेगा।" अनन्तर इन्द्रकी अङ्गुलियोंसे अमृतके समान दुग्ध उत्पन्न हुआ। इन्द्रने जिस प्रकारसे करुणा पूरित वचनोंको कहा, "मान्धास्यति" अर्थात् मेरी ओर देखके यह दुग्ध पान करेगा, इस ही कारणसे उसका अद्भुत नाम मान्धाता हुआ। तिसके अनन्तर महात्मा युवनाश्व पुत्रके निमित्त इन्द्रके अङ्गुली और अंगुठेसे दूध और घृतकी धारा बाहर होने लगी, वह बालक इन्द्रकी हाथके अवलम्बसे दूधघृतको पान करके बढ़ने लगा। वह पराक्रमी बालक बारह दिनमें बारह वर्षकी अवस्थाके समान होगया। समयके अनुसार वह बालक मान्धाता नामको प्रसिद्ध राजा हुआ। वह धर्मात्मा, पराक्रमी, धीर सत्यवादी और जितेन्द्रिय हुआ था। उस धर्मात्मा मान्धाताने एक ही दिनमें इस समूची पृथ्वीको जीत लिया था। जनमेजय, सुधन्वा, गय, पुरु, वृहद्रथ असित, राम और समस्त पुरुषोंको युद्धमें पराजित किया था, सूर्य जहां उदय होते और जिस स्थानमें अस्त होते हैं। सम्पूर्ण स्थान मान्धाता राजाके अधिकारमें थे। उन्होंने सौ अश्वमेध और एक सौ राजसूय यज्ञ पूर्ण करके दश योजनको परिमाण तक पद्मराग मणियोंसे युक्त सुवर्णके बने हुए बड़े बड़े मत्स्य ब्राह्मणोंको दान किया था। उनके यज्ञमें बहुतेरे भक्ष्य, भोज्य आदि अन्नोंके बहुतसे पर्व्वतोंके ढेर लगे थे? और ब्राह्मणोंने भली भांतिसे भोजन पान किया था। ब्राह्मणोंके निमित्त भोजन करो भक्षण करो जल पान करो, ऐसे ही वचन उनके यज्ञस्थलमें सदा सुन पड़ते थे। अन्नके पर्व्वतोंसे वह यज्ञभूमि अत्यन्त ही शोभित हुई थी। घीके तालाब सूपपङ्क, दहीके फेन और गुड़के जलसे युक्त थे। मधु खीरसे युक्त अनेक नदियां पर्व्वतोंसे घिरी थीं। देवता, असुर, मनुष्य, यक्ष, गन्धर्व्व, सर्प, पक्षी, वेद वेदाङ्गके जाननेवाले ब्राह्मण आदि सब ही उस मान्धाता राजाके यज्ञमें उपस्थित हुए थे जो सब ब्राह्मण उस यज्ञभूमिमें उपस्थित हुए थे, उनके बीचमें कोई भी मूर्ख नहीं थे। राजा मान्धाताने इस सम्पूर्ण पृथ्वीको समस्त वस्तुओंसे पूरित कर ब्राह्मणोंको दान करके अन्तमें परलोकमें गये। उन्होंने समस्त दिशाओंमें यशसे युक्त होकर पुण्यात्मा पुरुषोंके प्राप्त होने योग्य लोकमें गमन किया।

व्यास मुनि बोले, नारद मुनि इतनी कथा सुनाकर श्वित्यपुत्र सृञ्जयसे फिर बोले राजा मान्धाता तुम्हारे पुत्र और तुमसे भी दान सहित वित्त अभिमानरहित दान क्षमायुक्त पराक्रम और आसक्तिरहित भोग,—इन चार प्रकारके उत्तम विषयोंमें श्रेष्ठ और पुण्यात्मा थे। हे सृञ्जय। वह भी जब मृत्युकी कराल ग्रासमें पतित हुए, तब तुम यज्ञ और दक्षिणारहित अपने पुत्रके निमित्त क्यों शोक करते हो।

६० अध्याय समाप्त।

नारद मुनि बोले, हे सृञ्जय। मैंने सुना है, कि नहुष राजाके पुत्र ययातिने भी परलोकमें गमन किया है। वह एक सौ अश्वमेध, एक सौ राजसूय, एक सौ वाजपेय, एक हजार पुण्डरीक एक हजार अतिरात्र, कामना सहित चातुर्मासिका व्रत अग्निष्टोम दूसरे नाना प्रकारके यज्ञोंको दक्षिणा सहित पूर्ण किया था। ब्राह्मणोंसे शत्रुता करनेवाले म्लेच्छोंका जितना धन पृथ्वीके बीचमें था, वह सम्पूर्ण धन उन्होंने उनलोगोंसे छीनकर ब्राह्मणोंको दान किया था, वह देवासुर संग्राममें देवताओंको सहायता करते थे। और पृथ्वीको चार भागोंमें बांटकर ऋत्विजोंको दान किया था। उस महात्मा ययातिने शुक्राचार्य्यकी कन्या देवयानी और शर्म्मिष्ठाके गर्भसे उत्तम पुत्रोंको उत्पन्न किया था। सब वेदोंके जाननेवाले राजा ययातिने इच्छानुसार सम्पूर्ण देवताओंके वनमें विहार किया था, राजा ययाति सुख भोग करके भी नाना प्रकारकी कामनाओंको समाप्त न कर सके, तब वह यह गाथा गाते हुए अपनी भार्य्याके सहित वनवासी हुए, कि इस पृथ्वीके बीचमें सम्पूर्ण वस्तु, धन, सुवर्ण, पशु, स्त्री आदि किसीसे भी किसीकी कामनाकी तृप्ति नहीं हो सकती है, इस समय त्याग कर मनुष्योंको शान्तिका अवलम्बन करना उचित है। महाराज ययाति ऐसा विचार कर धीरज धारण करके अपने पुरु नामके पुत्रको राज्य देकर वनको चले गये।

व्यासमुनि बोले, नारदमुनि इतनी कथा सुनाकर फिर श्वित्यपुत्र सृञ्जयसे बोले, राजा ययाति तुम्हारे पुत्र और तुमसे भी दान सहित वित्त, अभिमान रहित ज्ञान, क्षमायुक्त पराक्रम और आसक्ति रहित भोग, इन चारों उत्तम विषयोंमें श्रेष्ठ और पुण्यात्मा थे; हे सृञ्जय! जब ऐसे राजा भी मृत्युके ग्रासमें पड़के परलोकगामी हुए, तब यज्ञ और दक्षिणारहित अपने पुत्रके निमित्त तुमको शोक करना उचित नहीं है।

६१ अध्याय समाप्त।

नारदमुनि बोले, हे सृञ्जय! मैंने सुना है, नाभागपुत्र अम्बरीष राजाकी भी मृत्यु हुई है। उन्होंने एक रथ पर चढ़के दश लाख राजाओंको पराजित किया था, शस्त्रयुद्ध जाननेवाले दूसरे शत्रु राजाओंने जयकी इच्छा करके युद्ध करते हुए जब राजा अम्बरीषको आक्रमण किया, तब उन्होंने क्रीड़ाके समान उन लोगोंके शस्त्र ध्वजा रथ और प्रास आदि अस्त्रोंको अपने अस्त्रोंसे काटके उन्हें अपने वशमें किया, अन्तमें वे लोग धर्महीन और निर्बल होकर अपने प्राणकी आशा करके राजा अम्बरीषके शरणागत हुए थे। हे पापरहित! उन्होंने इसी प्रकारसे सम्पूर्ण राजाओंको जीत कर एक सौ यज्ञोंको पूर्ण किया उन यज्ञोंमें ब्राह्मण और दूसरे सम्पूर्ण पुरुष अत्यन्त ही प्रसन्न होकर नाना प्रकारके स्वाद युक्त उत्तम अन्न आदिका भक्षण और भोजन करके आनन्दित हुए थे। लड्डू, पूरी मिठाई शाक धमक (मीठे पक्वान्न) काला जीरा और दाखसे युक्त दहीके सालन दहीसे युक्त उत्तम अन्न उत्तम पक्वान्न दाख मैरेयक पूए, रागखाण्डव

(मिष्टान्न-युक्त लड्डू) और दूसरे अनेक सुगन्धित, कोमल और भली भांतिसे घी, दूध दही मधु आदिसे युक्त अनेक उत्तम स्वादसे युक्त फल मूल इत्यादि नाना प्रकारके भक्षण, भोजन और पीनेवाली वस्तुओंसे ब्राह्मणोंको तृप्त किया था। सहस्रों पुरुष अपनी अभिलाषाके अनुसार सुखपूर्वक नाना भांतिकी उत्तम पीने योग्य मधु आदि वस्तुओंको पीकर मतवार और प्रसन्न होकर नाभागनन्दन अम्बरीष राजाकी स्तुति युक्त उनके उत्तम चरित्रोंको गाकर नृत्य करते तथा प्रसन्न होते थे। इसी प्रकारके दश प्रयुत यज्ञोंको राजा अम्बरीषने पूर्ण किया था; और दश लाख राजाओंको ब्रह्मणोंको दक्षिणा रूपसे प्रदान किया था, वे सब राजा लोग सुवर्ण कवचधारी श्वेतछत्र शोभित सुवर्णभूषित रथोंमें चढ़े हुए थे, और उनके संगमें सम्पूर्ण सामान तथा उनके अनुयायी लोग भी थे। उन्होंने राजअङ्ग, राजदण्ड और राजकोषके सहित उन सब राजाओंको दक्षिणारूपसे ब्रह्मणोंको दान किया। था। महर्षियोंने प्रसन्न होकर यह बचन कहा था। कि राजा अम्बरीषने बहुतसी दक्षिणाके सहित जो सब यज्ञोंको पूर्ण किया है, इस प्रकारसे पहिले किसीने भी यज्ञके कार्य्यको पूर्ण नहीं किया था और भविष्यमें भी नहीं कर सकेगा!

व्यास मुनि बोले, नारद मुनि इतनी कथा सुनाकर श्वित्रपुत्र सृञ्जयसे फिर बोले हे राजेन्द्र नाभागपुत्र अम्बरीष तुम्हारे पुत्र और तुमसे भी दान सहित वित्त क्षमा युक्त पराक्रम, गर्व्व रहित ज्ञान और आसक्ति रहित भोग,— इन चारों श्रेष्ठ विषयोंमें मुख्य और पुण्यात्मा थे, हे सृञ्जय! जब ऐसे राजा भी कालके कराल ग्रासमें पतित हुए तब यज्ञ और दक्षिणारहित अपने पुत्रके निमित्त तुम क्यों शोक करते हो!

६२ अध्याय समाप्त।

नारद मुनि बोले, हे सृञ्जय! मैंने
कि राजा शशविन्दुकी भी मृत्यु हुई है
सत्य-पराक्रमी श्रीमान् शशविन्दु राजा
प्रकारके यज्ञोंका अनुष्ठान किया था
महात्मा शशविन्दु राजाके एक लाख
थीं, उन एक एक स्त्रियोंके एक एक ह
उत्पन्न हुए; वे सब राजपुत्र महा
वेदविद्याके जाननेवाले, सुवर्णके
धारण करनेवाले महाधनुर्द्धर राजा
उन्होंने पचास हजार यज्ञोंको पूर्ण कि
जब उन राजपुत्रोंने मुख्य मुख्य यज्ञों
ष्ठान किया था। और सबने मिलके
यज्ञको पूर्ण किया था। उन राजपुत्रोंके
राजाओंमें मुख्य शशविन्दुने उन सम्पूर्ण
ब्राह्मणोंको दान किया था। एक र
सङ्गमें सुवर्णभूषित आभूषणोंसे युक्त ए
सौ कन्या रथमें बैठी हुई उनके
गमन करती थीं एक एक कन्याके
एक एक सौ हाथी, एक एक
पीछे एक एक सौ रथ, एक एक
पीछे एक एक सौ सुवर्ण मालाधारी
घोड़े, एक एक घोडेके पीछे एक एक
गऊ, और एक एक गौके पीछे भेड़ औ
रियोंका झुण्ड था। महात्मा शशविन्दु
मेध यज्ञमें इसी प्रकारसे ब्राह्मणोंको अ
दक्षिणा दी थी; उस महाअश्वमेध
जितने कुण्ड और यज्ञकी वस्तु लकड़ीके
थीं, वे सम्पूर्ण सुवर्ण-भूषित हुई थीं
यज्ञमें ब्राह्मणोंके भोजन करनेके वास्ते स
अन्नका ढेर तैयार रहता था; यहां त
बल्कि एक कोस भरके बीचमें अन्नके
दीख पड़ते थे। उस शशविन्दुराजाके
ब्राह्मण लोग भोजन करके अत्यन्त ही
न्दित होते थे। उनके राज्य शासनके
सम्पूर्ण प्रजा हृष्टपुष्ट रोग शोकसे रहि
वहां सदा सुकाल रहता था। राजा

…हुत दिनोंतक राज्यका सुख भोग करके …न्त समयमें परलोकोंमें गमन किया।

व्यास मुनि बोले, इतनी कथा सुनाकर …नारद मुनि सृञ्जयसे बोले, कि राजा शश-…न्दु तुम्हारे पुत्र और तुमसे भी दान सहित …त्त, चमायुक्त पराक्रम; गर्व्वरहित ज्ञान और …ण्यात्मा थे, हे सृञ्जय। जब ऐसे राजा भी …ालके कराल ग्रासमें पतित हुए, तब यज्ञ …ौर दचिणारहित अपने पुत्रके निमित्त तुम …यों शोक करते हो?

६२ अध्याय समाप्त।

नारद मुनि बोले, हे सृञ्जय! मैंने सुना है, …क अमर्तमायाके पुत्र गय राजाकी भी मृत्यु …ई है, उन्होंने एक सौ वर्ष पर्य्यन्त यज्ञसे बचे …ए अन्नको भोजन करके व्रतका निर्व्वाह किया …ा। जब अग्निने उन्हें वरदान करनेकी इच्छा …ी, तब उन्होंने यही वर मांगा था, कि "मैं …पस्या, व्रत, ब्रह्मचर्य्य, नियम और गुरुकी …वासे वेदके तलको जाननेकी इच्छा करता … किसीकी हिंसा न करके अपनेको धर्म्मके …नुसार ही अचय धनप्राप्त करने इच्छा करता …, मुझे सदा सर्व्वदा ब्राह्मणोंको दान देनेके …निमित्त श्रद्धा बनी रहे; अपने वर्णवाली …ार्य्यासे पुत्र उत्पन्न होवे, अन्न दान करनेकी …दा श्रद्धा बनी रहे, और धर्म्मविषयमें मेरा …मन सदा ही रत रहे हे अग्नि! और भी मैं …क वर मांगनेकी अभिलाष करता हूं, कि मेरे …म उत्तम कर्म्मोंको समाप्तिमें किसी प्रकारका …धा न होवे।" अग्निने कहा "ऐसा ही होगा" यह वचन कहकर अग्नि अन्तर्द्धान हुए। गय राजाने इस प्रकारसे वर पाकर धर्म्मपूर्व्वक शत्रुओंको जीत लिया। उन्होंने एक सौ वर्ष पर्य्यन्त दर्श पौर्णमास नवशस्यागमन निमित्त यज्ञ, चातुर्म्मास्य यज्ञ और दूसरे अनेक प्रकारके यज्ञोंको दचिणा सहित पूर्ण किया था। उन्होंने एक सौ वर्ष पर्य्यन्त सवेरे ही उठकर एक लाख दश अयुत गौ दश हजार घोड़े और एक लाख सुवर्ण मुद्रा ब्राह्मणोंको दान किया था। हर एक नचत्रमें जो सब वस्तु दान करने योग्य थीं, उन्होंने वह सम्पूर्ण वस्तु ब्राह्मणोंके निमित्त दान करके चन्द्रमा और आङ्गिराके समान नाना भांतिके यज्ञोंको पूर्ण कियाथा। राजा गयने अश्वमेध महायज्ञमें रत्नरूपी कङ्कड़ोंसे युक्त सुवर्णकी पृथ्वी बनाकर ब्राह्मणोंको दान किया था। उनके यज्ञके सम्पूर्ण कुण्ड तथा यज्ञकी समस्त वस्तु सुवर्णभूषित और रत्नोंसे युक्त हुई थीं। उन्होंने सम्पूर्ण प्राणियोंको दान किया था। समुद्र, वन नदी नद तालाव, नगर राज्य, स्वर्ग और आकाशमें जितने प्राणी वास करते थे, उन सबोंने गय राजाके यज्ञसे तृप्त होकर यह वचन कहा था "गय राजाके समान और किसी राजाका भी यज्ञ नहीं हुआ।" उस यज्ञकी एक वेदी पश्चिम दिशामें बनी थी वह बत्तीस योजन लम्बी और तीस योजन चौड़ी थी और पूर्व्व दिशामें जो वेदी बनी थी वह चौबीस योजनके परिमाणमें थी। ये दोनों ही वेदी सुवर्णकी बनाई गई थीं और हीरा मोती आदि रत्नोंसे खचितथीं। उस यज्ञमें गय राजाने ब्राह्मणोंको वस्त्र आभूषण तथा बहुत सी दचिणा दी थी। उनके यज्ञके समयसे भोजन भचण और पान करनेके निमित्त अन्नकी राशि पर्व्वतके समान इकट्ठीथी; और दूध घृतकी इतनी नदी बहती, थी, कि पचीस अन्नके पर्व्वत और बहुतेरी उत्तम रसोंसे युक्त नदियां चारों ओर दीख पड़ती थीं इसके अतिरिक्त अलग अलग नाना भांतिके अन्नकेढेर और वस्त्र, आभूषण सुगन्धित वस्तु यज्ञके बची हुई दीख पड़ती थी: इस ही कर्म्मके प्रभावसे राजा गय जगतमें विख्यात हुए थे। उनका कीर्तिस्वरूप अचयवट और ब्रह्म सरोवर तीनों लोकमें विख्यात होकर जगत्में स्थित है।

व्यास मुनि बोले श्रीनारद मुनि इतनी कथा सुनाकर राजा सृञ्जयसे फिर बोले, राजा गय तुम्हारे पुत्र और तुमसे भी तपस्या, सत्य दया और दान,--इन चार प्रकारके उत्तम विषयोंमें श्रेष्ठ और पुण्यात्मा थे, हे सृञ्जय! जब ऐसे राजाकी भी मृत्यु हुई है, तब यज्ञ और दक्षिणासे रहित अपने पुत्रके निमित्त तुम क्यों शोक करते हो?

६४ अध्याय समाप्त।

नारद मुनि बोले, हे सृञ्जय! मैंने सुना है, कि महात्मा रन्तिदेव राजाकी भी मृत्यु हुई है। इस महात्मा राजाके यहां दो लाख भोजन बनानेवाले ब्राह्मण थे। उस रन्तिदेवके राजभवनमें अतिथि, अभ्यागत और ब्राह्मणोंको भक्षण भोजन और पीनेकी बहुतसी उत्तम सामग्री रात दिन तैयार रहती थीं; ब्राह्मणोंको भोजन कराकर अनगिनत दक्षिणा प्रदान कीजाती थी। उन्होंने चारों वेदोंको पढ़ाथा और न्यायपूर्व्वक धन उपार्ज्जन करके ब्राह्मणोंको दान किया था, तथा धर्म्मके अनुसार शत्रुओंको जीता था। वे ऐसे धर्म्मात्मा व्रत और यज्ञ करनेवाले हुए थे, कि बहुतेरे पशु स्वर्ग-गमन करनेकी अभिलाष करके स्वयं ही आकर उनके यज्ञमें प्राण देनेको तैयार होते थे। उनके अग्निहोत्रके समान महानसके चर्म्मराशिसे एक रसकी धारासे युक्त नदी उत्पन्न हुई थी, उसका नाम चर्म्मण्वती कहके विख्यात हुआ है। हे राजेन्द्र! उन्होंने अपनी सामर्थ्यके अनुसार ब्राह्मणोंको अनेक निष्क (स्वर्णमुद्रा) प्रदान किये थे। तुम्हें सुवर्णमुद्रा देता हूं, ऐसा कहकर राजा रन्तिदेव ब्राह्मणोंको लाखों निष्क (स्वर्णमुद्रा) दान करते थे। करोड़ों निष्क दान करनेपर भी आज बहुत थोडे निष्क ब्राह्मणोंको दान किये गये कह कर राजा रन्तिदेव फिर ब्राह्मणोंको प्रसन्न करते उन्हें धीरज देकर फिर स्वर्णमुद्रादान देते। हे राजन्! उन्होंने एकदिनमें जितने स्वर्ण प्रदान किये थे, दूसरा पुरुष अपनी समग्र अवस्था भरमें उतना धन दान नहीं सकेगा। राजा रन्तिदेव दान देनेके समय वचन कहते हुए धन दान करते थे, कि ... ब्राह्मण लोग दान नहीं पावेंगे, तो मुझे ... अत्यन्त कठिन दुःख भोगना पड़ेगा, इसमें ... भी सन्देह नहीं है। उन्होंने एक सौ ... भूषित गौ, उनके सङ्ग एक सहस्र स्वर्ण ... बैल, एक सौ नये पन्द्रह दिन पर्य्यन्त नित्य दान किया था; और ऋषियोंको अग्निहोत्र यज्ञके उपयोगी सम्पूर्ण वस्तुओंको दान ... था। इसके अतिरिक्त नानाप्रकारके ... करने और जलपीनेके बहुतसे पात्र ... दान किया था, घड़े स्थाली, शय्या, आ... सवारी, मन्दिर, घर, नाना भांतिके वृक्ष और उपवन आदि ब्राह्मणोंको प्रदान किया। इन सम्पूर्ण वस्तुओंको महात्मा रन्तिदेव सुवर्णमयी बनवा कर दान किया था। पुराने पुरुषोंने महात्मा रन्तिदेवकी अलौकिक तथा सम्पत्ति देखके विस्मित होकर ... गाथाको गाया था, कि "हमलोगोंने कुबेरके भवनमें भी इस प्रकारके सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य कभी नहीं देखा था, मनुष्योंकी तो कुछ ... ही नहीं है; रन्तिदेवका राजभवन निश्चय ... इन्द्रलोकके समान है।" महात्मा रन्ति... गृहमें जो एक रात्रि अतिथियोंने वास कि... था उसमें इक्कीस सहस्र गौवोंसे उनका ... किया गया था। मणि जटित कुण्डलोंसे भू... पाकशालामें रहनेवाले पुरुषोंने ऊंचे स्वरसे वचन कहा था, कि "नित्यनित्य जैसे मांस होता था उतना आज नहीं हुआ है, ... आज आप लोग अधिक परिमाणसे सूप (दाल)का भोजन कीजिये। राजा रन्तिदेवके राज...

न्दरमें जितना सुवर्ण था, वह सब उन्होंने ब्राह्मणोंको दान किया था। उनके यज्ञकी हव्य को देवता और पितर प्रकट होकर हाथ बढ़ा बढ़ाके ग्रहण करते थे, ब्राह्मण लोग भी अपनी इच्छाके अनुसार समस्त वस्तुओंको पाते थे।

व्यासमुनि बोले, हे राजन् युधिष्ठिर! नारदमुनि राजा सृञ्जयकी इतनी कथा सुनाकर बोले राजा रान्तिदेव तुम्हारे पुत्र और तुमसे भी धन, धर्म्म सुख और बलमें श्रेष्ठ, तथा पुण्यात्मा थे। हे सृञ्जय! जब वह भी कालके गाल ग्रासमें पड़के मर गये, तब यज्ञ और दक्षिणा रहित अपने पुत्रके निमित्त तुमको शोक करना उचित नहीं है।

६५ अध्याय समाप्त।

नारदमुनि बोले, हे सृञ्जय! मैंने सुना है, कि दुष्मन्तराजाके पुत्र भरतकी भी मृत्यु हुई है। उन्होंने बालक अवस्था होमें दूसरेसे न सिद्ध होने योग्य कठिन कर्म्म किये थे, वह ऐसे बलवान् थे कि नख, दांत रूपी अस्त्रोंसे युक्त श्वेतवर्णवाले बलवान् सिंहोंको अपने पराक्रमसे तेजहीन करके उन्हें पकड़के बांधते थे। अत्यन्त बली व्याघ्र आदि हिंसक पशुओंको वह अनायाससे अपने पराक्रमसे वशीभूत करते थे। महाबली वनके भैंसोंको पकड़के घसीट लाते थे, सैकड़ों बलवान् मतवार सिंहोंको ग्रहण करके उनका नाश करते थे, अत्यन्त हिंसक पशु घोर मतवार हाथियोंके दांतको पकड़के उनके ऊपर चढ़ जाते थे, और उन्हें अत्यन्त व्याकुल करके वशमें करते थे; बलवान् शूकर घोर गैंड़ा आदि पशुओंको पकड़के उनके गलेको बांधकर घसीटते हुए मूर्च्छित करके छोड़ देते थे। उनके इस कार्य्यको देखकर वनवासी ब्राह्मण और ऋषियोंने उनका "सर्व्वदमन" नाम रक्खा था।

उनकी माता उनको प्राणियोंकी हिंसा करनेके निमित्त निषेध करती थी। उस शकुन्तलापुत्र राजा भरतने सौ अश्वमेध यज्ञ यमुनाके तीर तीन सौ अश्वमेध सरस्वती नदीके किनारे और चार सौ अश्वमेध यज्ञोंको गङ्गाके तीर पर पूर्ण किया था। उन्होंने एक हजार अश्वमेध यज्ञ और एक सौ राजसूययज्ञोंको समाप्त करके फिर बहुतसी दक्षिणाओंके सहित बहुतेरे महायज्ञोंको पूर्ण किया था। अग्निष्टोम, उक्थ, विश्वजित् और सहस्रों वाजपेय यज्ञोंको समाप्त किया था। महायशस्वी भरत राजाने इनसम्पूर्ण यज्ञोंमें ब्राह्मणोंको तृप्त करके जाम्बूनद स्वर्णके बने हुए एक सहस्र पद्म स्वर्णमुद्रा कण्व ऋषिको दान किया था। उनके यज्ञका स्थान बहुत बड़ा बना था, इन्द्रादिक देवताओंने उन यज्ञोंमें आगमन करके ब्राह्मणोंके सहित उन यज्ञोंकी शोभाको बढ़ाया था। उन्होंने सैकड़ों सहस्रों लाखों तथा करोड़ों सुवर्णके भूषणोंसे भूषित हाथी, घोड़े ऊंट बछड़ेके सहित दूधवाली गऊ बकरी भेड़ सुवर्ण दास दासी अन्न, गांव घरभूमि नाना भांतिके वस्त्र तथा दूसरी अनेक प्रकारकी सामग्रियोंको ब्राह्मणोंके निमित्त दान किया था। महाराज भरत अत्यन्तही महात्मा, सार्व्वभौम, शत्रुविजयी और अपराजित थे।

व्यास मुनि बोले, हे राजन्! नारदमुनि इतनी कथा सुनाकर सृञ्जयसे बोले,—हे राजेन्द्र! राजा भरत तुम्हारे पुत्र और तुमसे तपस्या सत्य दया और दान आदि विषयोंमें श्रेष्ठ और पुण्यात्मा थे; हे सृञ्जय! जब ऐसे राजाकी भी मृत्यु हुई है, तब तुम यज्ञ और दक्षिणा हीन अपने पुत्रके निमित्त क्यों शोक करते हो।

६६ अध्याय समाप्त।

नारदमुनि बोले, सृञ्जय ! मैंने सुना है, कि वेणुराजाके पुत्र पृथुको भी मृत्युके कराल-ग्रासमें पतित होना पड़ा है। उनको महर्षियोंने राजसूय यज्ञमें इस पृथ्वीके साम्राज्यपर अभिषेक किया था ; वह महात्मा पृथुराज यत्न पूर्व्वक सम्पूर्ण शत्रुओंको पराजित करके पृथ्वीके बीच प्रसिद्ध हुए थे, इसही निमित्त सम्पूर्ण पुरुषोंने उन्हें पृथु नामसे सम्बोधन किया था; उन्होंने हम लोगोंको सम्पूर्ण विघ्नसे उबारा था, इसीसे क्षत्रिय कहके विख्यात हुए थे। वेणुपुत्र राजा पृथुको देखकर सम्पूर्ण प्रजाओंने कहा था, "हमलोग तुम्हारे अनुरक्त हैं" प्रजा समूहके ऐसे अनुरागके कारणसे उनका "राजा" नाम हुआ। उस पृथु राजाके समयमें खेतीके निमित्त भूमिको सींचना नहीं पड़ता था ; पृथ्वी इच्छानुसार सबको अन्न आदि वस्तु प्रदान करती थी ; सम्पूर्ण गऊ घड़े भर दूध देती थीं; फूलोंके हर एक दलमें मधु होती, कुश और दूब सुवर्णमय और स्पर्शमें अत्यन्त कोमल होते थे उन्हीं कुशोंके वस्त्रोंको सम्पूर्ण प्रजा पहनती और उस ही का बिछौना बनाकर शयन करती थी। उक्त समयमें सम्पूर्ण फल अमृतके समान स्वादयुक्त और कोमल होते थे, उनही फलोंको सम्पूर्ण प्रजा आहार करती थी, कोई उस समयमें भूखा नहीं रहता था उस समयमें सम्पूर्ण मनुष्य रोग रहित रहते थे, सम्पूर्ण कार्य्योंको सिद्ध करके अपने जीवनका काल बिताते थे, और वृक्षोंके नीचे वा पर्व्वतोंकी कन्दराओंमें बास करतेथे। राष्ट्र वा नगरके विभाग उस समयमें नहीं थे ; सम्पूर्ण प्रजा इच्छाके अनुसार अपने जीवनके समयको व्यतीत करती थी। राजा पृथु जब समुद्रयात्रा करते थे, तब समुद्रका जल स्तम्भित होजाता था, और पर्व्वतोंके मार्गसे गमन करने पर सम्पूर्ण पर्व्वत उन्हें मार्गप्रदान करते थे। उनके गमन कालके समयमें वृक्ष आदिकोंसे उनके रथको ध्वजाकी रुकावट वा

कोई बाधा नहीं उपस्थित होती थी।
एक समयमें राजा पृथु सुखसे बैठे
समयमें सम्पूर्ण बनस्पति पर्व्वत देवता
सप्त ऋषि गन्धर्व्व राक्षस आदिगण
लोग उसके समीपमें आकर यह
हे महाराज। तुम सम्राट् क्षत्रिय
रक्षक और पिता स्वरूप हो; इससे
लोगोंके स्वामी होकर हम सबके
वर दानकरो जिससे हमलोग
सदासर्व्वदा तृप्त होते रहैं। राजा
"ऐसा ही होगा" यह वचन कहकर
पूर्व्वक अप्रतिम महा प्रचण्डधनुष
सम्पूर्ण बाण और अस्त्र ग्रहण कर
बोले हे वसुन्धरे ! तुम आगमन क
आगमन करो। तुम्हारा कल्याण
तुम इन सम्पूर्ण प्राणियोंके निमित्त
इनकी इच्छाके अनुसार दुग्ध द
अनन्तर जिसको जो अन्न प्रदान क
है उसे मै वही दूंगा। पृथ्वी बोली
तुम मुझे कन्यारूपसे स्वीकार क
पृथु "ऐसा ही होवे" कहकर पृथ्वी
स्वीकार किया। तिसके अनन्तर
प्राणी पृथ्वीको दोहनेमें प्रवृत्त हु
बनस्पतियोंने दोहनेकी इच्छा प्रक
पृथ्वीबछड़ा दूध दोहनेवाला और दू
इच्छा करके स्थित हुई। तब
शाल वृक्ष बछड़ा पलाश वृक्ष दुग्ध
और उडुम्बर वृक्ष दूधका पात्र हुआ
नेसे जो अखुवा बाहर होते हैं, वही
पर्व्वत जब पृथ्वीको दोहनेमें प्रवृत्त
उदयाचल बछड़ा पर्व्वतोंमें श्रेष्ठ सु
दूध दोहनेवाला रत्न और सम्पूर्ण औ
और पत्थरमय दूध दूहनेका पात्र हु
इन्द्रने दूध दोहा तब देवता बछड़े और
हुआ। असुरोंने आमपात्रमें माया दो
उस समयमें द्विमुर्द्धा असुर दूध

बछड़ा बने। मनुष्योंने कृषि और शस्य … किया; उस समय पृथु दूध दोहनेवाले … मनु बछड़ा बने। नागोंने आलावू … विष दोहन किया; उस समय धृतराष्ट्र … दोहनेवाले और तक्षक नाग बछड़ा … कठिन कर्म्मोंके करनेवाले सप्त ऋषियोंने … दोहन किया, उस समय वृहस्पति दूध … वाले चन्द्र दूधके पात्र और सोमराज … बने। राक्षसोंने आम पात्रमें अन्तर्द्धान … किया; उस समय वैश्रवण दूध दोहने- … और वृषध्वज बछड़ा बने। गन्धर्व्व और … ओंने पद्मपात्रमें पुण्यगन्ध दोहन किया; … समय विश्वरुचि दूधदोहनेवाले और … य बछड़ा बने। पितरोंने सुवर्णके पात्रमें … दोहन किया; उस समयमें प्राणियोंका … करनेवाले यमराज दोग्धा और वैवस्वत बछड़ा बने। महाराज! उन सम्पूर्ण … योंने जिन सम्पूर्ण पात्र और बछड़ोंसे … को दोहनकिया था, उससे वे लोग … पर्य्यन्त अपने जीवनका समय सुखसे … कर रहे हैं। महाप्रतापी वेणुपुत्र … अनेक प्रकारके यज्ञोंका समाप्त करके … प्रजाओंको उनकी इच्छाके अनुसार वस्तु … दान करके सबको तृप्त किया था। और … कुछ वस्तु राज्यकी थी, वह सम्पूर्ण … भूषित करके ब्राह्मणोंको दान किया … । उन्होंने छाछट हजार स्वर्ण नाग ब्राह्म- … णोंको दान किया और इस सम्पूर्ण पृथ्वीको … सुवर्णभूषित करके विप्रोंको प्रदान किया था।

व्यास मुनि बोले हे राजन् युधिष्ठिर! नारद मुनि राजा सृञ्जयसे इतनी कथा सुनाकर बोले, हे राजेन्द्र! राजा पृथु तुम्हारे पुत्र और तुमसे अधिक तपस्या, सत्य दया और दान आदि विषयोंमें … और पुण्यात्मा थे; हे सृञ्जय! जब ऐसे राजाकी भी मृत्यु हुई है, तब यज्ञ और दक्षिणा रहित अपने पुत्रके निमित्त तुमको शोक करना उचित नहीं है।

६७ अध्याय समाप्त।

नारद मुनि बोले, हे सृञ्जय! शूरवीर पुरुषोंके नमस्कार करने योग्य जमदग्नि ऋषिके पुत्र महातपस्वी अत्यन्त यशस्वी महावीर परशुराम भी मृत्युके कराल ग्रासमें पतित होंगे। महात्मा परशुराम पृथ्वी, प्रदक्षिण करके सुखी करते हुए सन्ध्या समय अपने स्थानपर आगमन करते थे। अपरम्पार उत्तम ऐश्वर्य्योंको पाकर भी उनके चित्तमें कोई विकार तथा चञ्चलता उपस्थित नहीं हुई। अनुयायी क्षत्रियोंके सहित कार्त्तवीर्य्य अर्ज्जुनने परशुरामके पिताका वध करके कामधेनु गऊ छीनी थी। परशुरामने किसीकी भी सहायता न लेकर युद्धभूमिमें अकेले ही शत्रुओंसे अपराजित कार्त्तवीर्य्य अर्ज्जुनका वध किया उस समयमें सहस्रों क्षत्रिय मानों काल-रूपी परशुरामके समीप उपस्थित होकर उनके कुठाररूपी अग्निमें भस्म होगये थे। महा प्रतापी परशुरामने कार्त्तवीर्य्य अर्ज्जुनके अनुयायी चौसठ अयुत क्षत्रियोंको युद्धभूमिमें अपने तीक्ष्ण वाणोंसे मारा था; इसके अतिरिक्त ब्राह्मणोंसे वैर करनेवाले चौदह हजार क्षत्रिय और दन्तकूर-देशीय राजोंका नाश किया। परशुरामने मूष-लसे एक सहस्र, तलवारसे एक सहस्र और प्राससे एक सहस्र क्षत्रियोंका संहार किया। पिताके वधसे क्रुद्ध हुए बुद्धिमान् परशुरामके हाथसे हाथी घोड़े रथ पैदल सेना सहित हैहयवंशीय वीर क्षत्रिय मरकर पृथ्वीमें सोगये। उन्होंने दश सहस्र क्षत्रियोंके प्रलाप वचनको सुनकर क्रुद्ध होके फरसेसे उनके सिर काटडाले। ब्राह्मण लोग काश्मीर आदि देशोंके क्षत्रियोंसे पीड़ित होकर "हे भृगु नन्दन! हे परशुराम! तुम शीघ्र हम लोगोंको

रक्षाके निमित्त आगमन करो।" ऐसे ही वचन कहते हुए रोदन करने लगे। प्रबल प्रतापी परशुरामने काश्मीर दरद, कुन्ति, क्षुद्रक मालव अङ्ग वङ्ग कलिङ्ग विदेह ताम्रलिप्तक, रक्षोवाह वीतिहोत्र त्रिगर्त्त मार्त्तिकावत और शिवि आदि देशों तथा दूसरे सम्पूर्ण देशोंके युद्धमें इकट्ठे सहस्रों लाखों, तथा करोड़ों क्षत्रियोंको अपने अत्यन्त तीक्ष्ण बाणोंसे बध करके पृथ्वीमें सुला दिया। भृगुनन्दन परशुरामने इन्द्रगोप कोटके समान क्षत्रियोंके रुधिरसे सम्पूर्ण पृथ्वीको लाल वर्ण कर दिया और उन वीर क्षत्रियोंके रुधिरसे पांच तालावोंको परिपूर्ण कर दिया; फिर अठारहों द्वीपोंको वशीभूत करके अपरम्पार दक्षिणाके सहित एक सौ पुण्यजनक यज्ञोंका समाप्त किया। इस ही यज्ञमें महर्षि कश्यपको उत्तम भांतिसे सुवर्णकी बनी हुई सैकड़ों सहस्रों मणियोंसे खचित, सैकड़ों ध्वजा पताकासे शोभित, रत्न-जटित मालाओंसे युक्त अष्टनल परिमित सुन्दर वेदी ग्राम, पशु और वनपशुओंसे पूरित इस सम्पूर्ण पृथ्वी तथा सुवर्ण-भूषित लाखो हाथियोंको परशुरामने दान किया था। महात्मा परशुरामने पृथ्वीको दुष्टोंसे रहित और साधु तथा श्रेष्ठ पुरुषोंसे परिपूर्ण करके अश्वमेध महायज्ञमें कश्यप मुनिको दान किया। महावीर परशुरामने इक्कीस बार इस पृथ्वीको क्षत्रियोंसे रहित करके एक सौ यज्ञोंको समाप्त किया— और ब्राह्मणोंको अपरम्पार दक्षिणा प्रदान की थी। मरीचिपुत्र कश्यप इस सप्त द्वीपसे युक्त सम्पूर्ण पृथ्वीको परशुरामसे पाकर उनसे यह वचन बोले, तुम मेरी आज्ञाके अनुसार इस पृथ्वीपरसे पृथक् चले जाओ। वह योद्धाओंमें श्रेष्ठ परशुराम ब्राह्मण शासनको मानकर कश्यप मुनिके वचनके अनुसार जलनिधि समुद्रमें अपने बाणोंसे मार्ग बनाकर उसी मार्गसे गमन करते हुए महेन्द्र पर्वतपर जाकर निवास करने लगे। जमदग्नि पुत्र परशुराम इसी प्रकारसे भृगु कुलकी कीर्त्तिके बढ़ानेवाले अत्यन्त यशस्वी महातेजस्वी और सैकड़ों तथा अनेक गुणोंसे युक्त होकर भी परलोक गमन करेंगे।

व्यासमुनि बोले, हे युधिष्ठिर! इतनी कथा सुना कर नारदमुनि राजा सृञ्जयसे बोले, परशुराम तुम्हारे पुत्र और तुमसे भी दान शक्ति चित्त, क्षमायुक्त पराक्रम गर्व्व रहित ज्ञान और आसक्ति रहित भोग,—इन चारों उत्तम क्रियोंमें श्रेष्ठ और पुण्यात्मा थे, हे सृञ्जय! जब वह भी मृत्युके मुखमें पतित होंगे, तब तुम पुत्रके निमित्त शोक मत करो, क्योंकि प्राणी कालके वशमें होकर अवश्य परलोक गमन करेंगे।

६५ अध्याय समाप्त।

व्यासमुनि बोले, हे राजन् युधिष्ठिर! राजा सृञ्जय देवऋषि नारदके मुखसे इस पुण्यजनक और आयुके बढ़ानेवाले इन सोलह राजाओंके उत्तम उपाख्यानोंको सुनकर कुछ भी नहीं बोले,—वह चुपचाप बैठे ही रहे। भगवान् नारदऋषिने राजासृञ्जयको मौन व्रतधारी तथा चुपचाप आसनके ऊपर बैठे हुए, देख कर यह वचन कहा, हे महातेजस्वी सृञ्जय! मैंने जो इन उपाख्यानोंको तुम्हारे समीपमें वर्णन किया है, उन सम्पूर्ण विषयोंको सुनकर तुमने हृदयमें धारण किया है न? या शूद्रकी भांति मेरे वचन निष्फल होगये?

राजा सृञ्जयने नारदमुनिके ऐसे वचनोंको सुनके हाथ जोड़के उत्तर दिया, कि हे भगवन् यज्ञ करनेवाले तथा अनेक प्रकारकी दक्षिणा देनेवाले पुराने राज ऋषियोंके इन उत्तम उपाख्यानोंको सुनकर मैं अत्यन्तही आनन्दित हुआ हूं। जैसे सूर्य्यके उदय होने पर अन्धकारका नाश होजाता है, वैसे ही मेरे चित्तका

सम्पूर्ण शोक और दुःखका नाश होगया है, मैं पापरहित और ऋणशून्य हुआ हूं; इस समयमें मुझको कौनसा कार्य्य करना होगा—आप उसके निमित्त आज्ञा कीजिये।

नारद मुनि बोले, तुम प्रारब्धहीसे शोक रहित हुए हो, इस समय तुम जो वर पानेकी अभिलाष करोगे, मैं तुम्हें वही प्रदान करूंगा; इसमें कुछ भी सन्देह मत करना, क्योंकि मैं मिथ्यावादी नहीं हूं।

सृञ्जय बोले, हे भगवन्! तुम जो मेरे ऊपर प्रसन्न हुए हो, इसहीसे मैं सन्तुष्ट हुआ हूं; जिसके ऊपर आप प्रसन्न हुए हैं, उसे इस संसारमें कोई वस्तु भी दुर्लभ नहीं है!

नारदमुनि बोले, हे सृञ्जय। तुम्हारे पुत्रको चोरोंने निरर्थक ही मार डाला है, उससे वह कष्टदायक नरकमें गया है, अब मैं तुम्हारे पुत्रको नरकसे निकाल कर फिर तुम्हें प्रदान करता हूं।

व्यासमुनि बोले, हे धर्म्मराज युधिष्ठिर। तिसके अनन्तर देवऋषि नारदने प्रसन्न होकर कुवेरके समान उनके सुन्दर पुत्रको नरकसे बाहर करके राजा सृञ्जयको समर्पण किया। उस समयमें वह प्रकाशमान बालक अपने पिताके समीपमें प्रकट हुआ। राजा सृञ्जय पुत्र पाकर प्रसन्न हुए, अनन्तर बहुतेरी दक्षिणा दान करते हुए पुण्यजनक नाना प्रकारके यज्ञोंको पूर्ण किया।

हे राजन् युधिष्ठिर! राजा सृञ्जयका पुत्र अकृतार्थ, यज्ञ-दक्षिणा रहित तथा भयभीत था; और युद्धभूमिमें भी नहीं मरा था, इस ही निमित्त वह फिर जीवित हुआ। परन्तु तुम्हारा भ्रातृपुत्र अभिमन्यु, शूरवीर और कृतार्थ था। वह वीरताको प्रकाशित करके अपने अस्त्र शस्त्रोंके प्रतापसे सहस्रो वीर योद्धाओंका नाश करके सेनाके सामने युद्ध करते हुए रणभूमिमें मारा गया है, इससे ब्रह्मचर्य्य, वेदाध्ययन और यज्ञके कर्म्मोंसे पुण्यात्मा पुरुष अक्षय स्वर्ग लोकमें गमन करते हैं, अभिमन्युने भी उस ही प्रकाशमान लोकमें गमन किया है, विद्वान् पुरुष नित्य ही पुण्यकर्म्मोंसे स्वर्ग प्राप्त करनेकी इच्छा करते हैं, परन्तु स्वर्ग लोकवासी पुरुष इसलोकमें आनेके निमित्त अभिलाष नहीं करते, इससे युद्धमें मरे और स्वर्ग प्राप्त हुए अर्ज्जुन पुत्र अभिमन्युको इस मर्त्य लोकमें अल्प तथा क्षणिक भोग तथा सुखके निमित्त स्वर्ग लोकसे कोई पुरुष नहीं ला सकता है। ध्यान करनेवाले योगी पुरुष जिस उत्तम गतिको प्राप्त करते हैं; उत्तम यज्ञोंके करनेवाले पुण्यात्मा पुरुष जिन लोकोंको जाते हैं, तथा व्रत और तपस्या करनेवाले महात्मा पुरुष जिन प्रकाशमान लोकोंमें गमन करते हैं, तुम्हारा भ्रातृपुत्र अभिमन्यु उस ही अक्षय लोकमें पहुंचा है। महावीर अभिमन्यु क्षत्रियोंके धर्म्मके अनुसार उत्पन्न होकर अन्त समयमें वीरोंके धर्म्मके अनुसार युद्धमें मरके फिर चन्द्रसम्बन्धीय स्वाभाविक शरीर पाया है और अमृतरूपी आत्म-सुख पाकर चन्द्रमाके समान स्वर्ग लोकमें विराजमान है, इससे उसके निमित्त शोक करना उचित नहीं हैं। हे पापरहित धर्म्मराज युधिष्ठिर। तुम ऐसा ही समझ कर धीरज धारण करो और फिर शत्रुओंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त होजाओ। हम लोगोंको जीते हुए पुरुषोंके निमित्त ही शोक करना उचित है, स्वर्गमें पहुंचे हुए पुरुषोंके निमित्त किसी प्रकारसे भी शोक करना उचित नहीं है, महाराज। शोक चिन्ता करनेसे वह और भी बढ़ती ही रहती है, इस ही निमित्त ज्ञानी पुरुष, शोक चिन्ता तथा हर्ष और विषाद त्याग कर अपने कल्याणके निमित्त यत्न करते हैं। पण्डित लोग इन सब बातोंको भली भांतिसे जानकर मरे हुए पुरुषोंके निमित्त शोक नहीं करते; चिन्ता करनेहीसे शोक बढ़ता है, नहीं तो शोक क्या कर सकता है? तुम उठो और

समझके सावधान होकर उठके खड़े होजाओ शोक मत करो।

मृत्युकी उत्पत्ति, अत्यन्त, श्रेष्ठ तपस्या सब प्राणियोंमें समान दृष्टि, संसारकी सम्पूर्ण वस्तुओंको नश्वर और सृञ्जयका मरा हुआ पुत्र जिस कारणसे फिर जीवित हुआ था, वह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुमने सुना है, हे राजन् युधिष्ठिर! इससे तुम यह सम्पूर्ण विषय जानके अब शोक मत करो, मैं अपने श्रेष्ठ कार्य्यके साधन करनेके निमित्त तुम्हारे समीपसे विदा होता हूं। ऐसा कहकर भगवान् वेदव्यास अन्तर्द्धान होगये, हे राजेन्द्र। मेघवर्णके समान शरीरवाले बुद्धिमान् भगवान् वेदव्यासने जब युधिष्ठिरको धीरज देकर वहांसे गमन किया, तब राजा युधिष्ठिर इन्द्रके समान तेजस्वी न्यायसे उपार्जित वित्तसे युक्त पुराने राजसिंहोंके इस प्रकार यज्ञोंके वृत्तान्त सुनकर अपने मन ही मन उन लोगोंकी प्रशंसा करके शोक रहित हुए; और फिर कातर होके यह चिन्ता करने लगे, कि मैं अर्जुनसे क्या कहूंगा?

६६ अध्याय समाप्त।

अब प्रतिज्ञा प्रकरण लिखेंगे।

सञ्जय बोले, हे भारत। महाभयङ्कर युद्धमें प्राणियोंका नाश होने पर उस दिन युद्धसे सब योद्धा लोग निवृत्त हुए। सूर्य्यके अस्त होने पर सन्ध्याकाल उपस्थित हुआ; सम्पूर्ण सेना युद्धभूमिसे अपने शिविरों (डेरों) पर गई। उस ही सन्ध्याके समयमें कपिध्वजावाले प्रतापी अर्जुनने अपने दिव्य अस्त्रोंसे संशप्तक वीरोंका वधकरके जयसे युक्त रथ पर कृष्णके सहित चढ़के अपने शिविरकी ओर जाने लगे, और और शिविरके समीप पहुंचकर आंखोंमें आंसू भर कर कृष्णसे यह वचन बोले हे केशव। मेरा चित्त व्याकुल होरहा है, मेरे मुंहसे वचन बाहर नहीं निकलता है, अशुभ सूचक बायां अङ्ग फड़क रहा है, शरीर सुस्त हुआ जा मेरे चित्तमें अनिष्ठकी शंका होरही है शङ्का किसी प्रकारसे भी निवृत्त होती है; पृथ्वी, आकाश तथा चारों भयङ्कर उत्पात प्रकट होके मुझे भयभीत कर रहे हैं। मैं अनेक प्रकारके उत्पातोंको देख रहा हूं, मेरे ज्येष्ठ पूजाके योग्य महाराज युधिष्ठिर औ अनुयायियोंका कल्याण तो है?

श्रीकृष्ण बोले, हे अर्जुन। अवश्य भाई और उनके अनुयायी राजाओंके कुशल मङ्गल होवेगा, इसमें कुछ भी नहीं है, तौभी कुछ थोड़ा अनिष्ठ उसके निमित्त तुम शोक मत करो।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र। तिसके वे दोनों बीर सन्ध्योपासन करके फिर चढ़े और उस दिनके वीरोंकी मृत्युके युद्धवृत्तान्त वर्णन करते हुए शिविरको जाने लगे। संग्रामभूमिके कठिन वृत्तान्तको सुनते वे दोनो महात्मा शिविर पर पहुंचे। उन दोनो देखा, शिविर आनन्दहीन और रहित हो रहा हैं। अनन्तरशत्रुनाशन प्रकाश-रहित शिविरको देखकर कृष्णसे बोले, हे जनार्द्दन! आज म बाजोंका शब्द नहीं सुनाई पड़ता है। नगाड़े, वीरोंकी करताली और वीणा बाजोंके सहित कुछ भी शब्द नहीं पड़ता है, किसी सेनाके बीचमें बन्दीज लसूचक गीत और स्तुति पाठ नहीं क वीर योद्धा मुझे देखकर पहिले जिस कार्य्य करते थे, वह आज मुझे कुछभी वचन नहीं बोलते हैं, कोई पुरुष वार्त्तालाप भी नहीं कर बल्कि नीचे शिर झुकाकर मेरे हट जाते हैं। हे भारत। मेरे

षयमें कुछ अमङ्गल घटना तो नहीं हुई ? पने अनुयायी पुरुषोंको व्याकुल देखकर मेरा त्त जो शान्त नहीं होताहै। द्रुपद विराट हमारी सेनाके दूसरे महारथ योद्धाओंमेंसे सीकी प्राणहानि तो नहीं हुई है। हे आनन्द न्द कृष्ण! और दिनों जब मैं रथसे उतरता । तब अभिमन्यु अपने भाइयोंके सहित प्रसन्न त्तसे हंसते हुएमेरे समीपमें आता था, परन्तु ह आज मेरे समीपमें क्यों नहीं आता है!

सञ्जय बोले, ऐसी प्रकारसे बातचीत करते ए उन दोनों पुरुषसिंहोंने शिविरके भीतर वेश करके देखा, कि पाण्डव लोग अत्यन्त खित और कातर होरहे हैं। कपिध्वजावाले र्जुनने भ्राता पुत्र तथा भ्रातृपुत्रोंको अत्यन्त खित देखा और अभिमन्युको न देखकर ह वचन कहने लगे—मैं तुम लोगोंके मुख ोंको अप्रसन्न देखता हूं तुम लोग जैसे दूसरे न मुझे आनन्दित करते थे, वैसा आज नहीं रतेहो, और अभिमन्युको भी मैं आज हीं देखता हूं। मैंने सुना था, कि इधर द्रोणा- र्य्यने चक्रव्यूह बनाया था, उस बालकके सिवा ोर किसीकी भी सामर्थ्य नहीं थी जो उस क्रव्यूहको भेदकरे। मैंने उसे चक्रव्यूहको द करके उसके बीच प्रवेश करनेका उपदेश या था; परन्तु उस व्यूहसे निकलनेकी ा मैंने नहीं दी थी। तुम लोगोंने तो उस लकको शत्रुओंकी सेना चक्रव्यूहके बीच वेश नहीं कराया था? वह महाधनुर्द्धर द्धभूमिमें अपरम्पार शत्रुसेनाके बीच प्रवेश रके मारा तो नहीं गया? सिंहके समान राक्रमी कमलनेत्रवाला महाबाहु अभिमन्यु द्धमें किस प्रकारसे मारा गया है, वह त्तान्त तुमलोग मेरेसमीपमें वर्णन रो। मेरा अत्यन्त प्यारा महाधनुर्द्धर देवराज न्द्रका पौत्र कुमार अभिमन्यु युद्धमें कैसे ारा गया है, वह मुझसे कहो। पराक्रम शस्त्र और अस्त्रके ज्ञान तथा महात्म्यमें यदुकुल- भूषण कृष्णके समान प्रतापी अभिमन्यु किस प्रकारसे युद्धभूमिमें मारा गया? यदि मैं परम प्रिय सुभद्रापुत्र अभिमन्युको न देखूंगा, तो प्राणत्याग करूंगा। जिसके श्याम वर्ण अत्यन्त कोमल और घुंघरवारेकेश थे, जिसके नेत्र हरिणके किशोर बालकके समान सुन्दर थे, जिसका पराक्रम मतवारे हाथीके समान था जिसके शरीरका आकार शालवृक्षके समान ऊंचा था, जिसके वचन हास्यमिश्रित थे, जो बालक अवस्थामें भी युवा पुरुषोंके समान आचरण प्रकाशित करता था, और जिसने कभी गुरुके वचनोंको अतिक्रम नहीं किया जो कभी अप्रिय वचनोंका प्रयोग नहीं करता था, नीच पुरुषोंका अनुगमन नहीं करता था, जो युद्धमें कभी पराजित नहीं हुआ था, बरन युद्धमें सदा जयसे युक्त ही होता था जो युद्धमें शत्रुओंके ऊपर पहिले शस्त्र-प्रहार नहीं करता था; जो निर्भय होकर युद्ध करता था; जो शान्त, अभि- मानरहित महा उत्साही, महाबाहु, बड़े नेत्र वाला, भक्तोंके ऊपर कृपा करनेवाला जितेन्द्रिय कृतज्ञ ज्ञानसे युक्त सब शस्त्रोंको जाननेवाला, शत्रुओंके शोकको बढ़ानेवाला पिता और पितृ- व्योंके विजयकी इच्छा करनेवाला और अपने अनुयायियोंका प्यारा तथा उनके प्रियकार्य्यमें रत था,—यदि मैं अपने उस प्यारे पुत्र अभिमन्युको नहीं देखूंगा तो प्राण त्याग करूंगा माता कुन्तीदेवी सुभद्रा, द्रौपदी और कृष्ण इन सबका सदा प्यारा उस अभि- मन्युको काल-प्रेरित होकर किसने युद्ध- भूमिमें मारा है? जो रथियोंके बीच महा- रथ कहके विख्यात था जो प्रद्युम्न कृष्ण और मेरा प्रियशिष्य था, जो युद्धके कार्य्योंमें मुझसे भी श्रेष्ठ था, उस युवा पुत्र अभिमन्युको यदि न देखूंगा, तो मैं यमपुरीमें गमन करूंगा। उसके सुन्दर नासिका ललाट, नेत्र भौं और

सुन्दर ओठोंसे युक्त शोभायमान मुखको यदि मैं नहीं देखूंगा; तो मेरे चित्तमें कैसे शान्ति होसकेगी? उसके प्रसन्न मुखको यदि मैं नहीं देखूंगा और कोकिलके समान यदि उसके मीठे वचनोंको मैं नहीं सुनूंगा, तो मेरे चित्तमें शान्ति किस प्रकारसे होवेगी। उस शत्रुनाशन वीर अभिमन्युका देवदुर्लभ अत्यन्त सुन्दर रूप यदि आज मैंने देखूंगा तो मेरे हृदयमें शान्ति कहां है? प्रणाम करनेवाले अपने उस प्यारे पुत्रको यदि आज नहीं देखूंगा, तो मेरा चित्त कैसे शान्त होवेगा? वह वीरोंमें अग्रणी सनाथ बालक सदा सर्व्वदा कोमल शय्या पर शयन करनेके योग्य होकर भी अनाथके समान पृथ्वीमें शयन किया है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। मणि-रत्नोंसे भूपित उत्तम शय्यामें शयन करने पर अनेकों परिचारिका तथा वाराङ्गना उसकी सेवामें लगी रहती थीं, इस समय चत-विचत शरीरसे युक्त पृथ्वी पर शयन करनेसे अशुभ सूचक सियार आदिक जन्तु उसके समीप अमांगलिक वाणी बोल रहेंगे? पहिले शयन करने पर सूत; मागध और वन्दीजन जिसे स्तुतिपाठ सुनाकर निद्रासे जागरित करते थे इस समय भयानक पशु पक्षी अपने भयङ्कर शब्दोंसे उसे जागरित कर रहे हैं। जिसका सुन्दर मुखमण्डल छत्र छायाके योग्य था इस समय वही प्रसन्न सुख रणभूमिकी धूलिसे छिप गया है, इसमें कुछ सन्देह नहीं है। हा पुत्र! जो तुमको देखकर सदा सर्व्वदा अप्रसन्न रहते थे, उन भाग्य-हीन पुरुषोंके सम्मुखमें तुम काल प्रेरित होकर बलपूर्व्वक यमपुरीमें पहुंचे हो, इस समयमें उत्तमकर्म्म करनेवाले पुरुषोंके आश्रय स्थल वह वयमपुरीकी सभा तुम्हारे तेजसे अत्यन्त मनोहर और शोभायमान हुई है। वैवस्वत, वरुण इन्द्र और कुवेर तुम्हें भयरहित प्रियअतिथि पाकर तुम्हारी पूजा अर्च्चना कर रहे हैं।

महाराज! जलमें नौका डूब जाने पर वणिक् लोग व्याकुल होकर विलाप करते उसी प्रकारसे अर्ज्जुन वार वार विलाप हुए युधिष्ठिरसे पूछने लगे,—हे कुरुनन्दन! अभिमन्यु महारथ पुरुषोंके सङ्ग युद्ध करके सेनाको नाश करते हुए, युद्धभूमिमें स्वर्ग गया है? मुझे यह निश्चय बोध होता है, उस पुरुषसिंहके सङ्ग बहुतेरे शूरवीर इकट्ठे होकर जब युद्ध करने लगे होंगे, उसने सहायरहित होकर मुझे स्मरण होगा, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। मैं मान करता हूं, द्रोणाचार्य्य; कर्ण और आदि निठुर योद्धाओंने जब नाना तीक्ष्ण शस्त्रोंसे मेरे पुत्र अभिमन्युको किया था, उस समयमें उसने चे समान होकर मेरा स्मरण किया होगा, "मेरे पिता जो इस स्थलमें होते, तो मेरी करते" ऐसा वचन कहते हुए वारम्वार करके वह निठुर पुरुषोंके शस्त्रोंसे पृथ्वीमें गिरा होगा। नहीं नहीं। वह पुत्र, कृष्णका भानजा और सुभद्राके उत्पन्न हुआ था, वह कभी शरणकी करके ऐसे वचनोंके कहने योग्य नहीं मेरा हृदय मानो पत्थरसे बना हुवा कठोर है, कि विशाल भुजासे युक्त कमल वाले अपने पुत्रको बिना देखे क्यों नहीं जाता है? उन महाधनुर्द्धर निठुर योद्धाओंने किस प्रकारसे मेरे पुत्र तथा भानजेके ऊपर मर्म्मभेदक बाणोंको था। पहिले जब मैं शत्रुओंका बध करके पर आता था तो वह निर्भयचित्त वाला पुत्र मुझे अभिनन्दित करता था, वह कारणसे आज मुझे देखनेके निमित्त नहीं करता है? उसने अवश्य ही शरीरसे युक्त होकर सूर्य्यके समान अपने पृथ्वीको शोभित करके रणभूमिमें शयन

। मैं सुभद्राके निमित्त शोक करता हूं, वह हमें अपराजित अपने पुत्रका मरा हुआ सुनर दुःखित होके प्राणत्याग करेंगी, इसमें कुछ न्देह नहीं है। सुभद्रा और द्रौपदी अभिमन्युको न देखकर मुझे क्या कहेंगी ? मैं ही ला उन दुःखसे आरत हुई दुःखिताओंसे क्या हूंगा ? और पुत्रवधूका मैं क्या कहकर समाऊंगा ? मेरा हृदय अवश्य ही पाषाणसे र्मित है, क्योंकि शोक करनेवाली पुत्रवधूको दन करते हुए देखकर मेरा हृदय सहस्र कड़े नहीं हो जावेगा। धार्त्तराष्ट्रोंके अभिनयुक्त सिंहनादको मैंने सुना था और युयु.ने उन वीर पुरुषोंका जो तिरस्कार किया उसे भी श्रीकृष्णचन्द्रने सुना था। युयुत्सुने चे खरसे यह वचन कहकर उन योद्धाओंका रस्कार किया था, कि हे अधार्म्मिक महारथ रुषो। तुम लोग अर्ज्जुनको पराजित नकरके लकका वध करके क्या सिंहनादकर रहे हो? नके बाद पाण्डवोंका पराक्रम देखोगे। इस नय युद्धभूमिमें कृष्णार्ज्जुनको अप्रिय कार्य्य और नके शोकका बढ़ाकर तुम लोग प्रसन्न होकर ा सिंहनाद कर रहे हो ? तुम लोगोंको इस प कर्म्मका फल शीघ्रही मिलेगा। तुम गोने जो इस अधर्म्म कर्म्मको किया है, इसका ल शीघ्र ही तुम लोगोंको भोग करना पड़ेगा हात्मा विमा॥ वैश्यापुत्र युयुत्सु क्रोध और खसे सहित उन योद्धाओंको निन्दा करते हुए स्त्रशस्त्र त्यागकर रणभूमिसे पृथक् हुए थे। कृष्ण ! तुमने उसही समय रणभूमिमें मुझसे ह वृत्तान्त क्यों नहीं कहा था. मैं इस वृत्ताको जाननेसे ही उसी समय इन निठुर क्रूर हारथियोंको अपने बाणोंसे भस्म कर देता।

कृष्ण बोले, महाराज! अर्ज्जुनको पुत्र ... दुःखी. बाणोंसे बाल् भरे और ... अर्जुनको निन्दा करते देखकर ... "ऐसा मत करो" ऐसी बात कहकर उनका हाथ पकड़के यह वचन बोले, क्षत्रियोंके निमित्त युद्ध ही विशेष जीविका और धर्म्म है, इससे पराक्रमयुक्त युद्धसे पीछे न हटनेवाले सम्पूर्ण क्षत्रियोंका यही श्रेष्ठमार्ग है। हे भारत धर्म्मशास्त्र जाननेवाले ऋषियोंने युद्धसे पीछे न हटनेवाले शूरवीर पुरुषोंकी ऐसी ही गतिको श्रेष्ठ कहके वर्णन किया है। युद्धसे पीछे न हटनेवाले पुरुषोंको युद्धभूमिमें मरना ही उत्तम है, इससे अभिमन्युने पुण्यात्मा पुरुषोंके पानेयोग्य प्रकाशमान लोकमें गमन किया है, इसमें सन्देह नहीं है। हे भरतर्षभ। वीर लोग सदा यही अभिलाष करते हैं, कि मैं युद्धभूमिमें मरूं वह वीर अभिमन्यु महाबली और पराक्रमी राजपुत्रोंको रणभूमिमें संहार करके युद्ध करतेहुए वीरोंकी अभिलाषाके अनुसार मरकर स्वर्ग लोकमें गया है। हे पुरुषसिंह ! पुराने ऋषि तथा धर्म्मशास्त्र बनानेवाले पण्डितोंने क्षत्रियोंके निमित्त युद्धमें मरने हीको सनातन धर्म्म कहके वर्णन किया है, इससे तुम शोक मतकरो हे भरतसत्तम ! तुम्हारे शोक करनेमें ये तुम्हारे भ्राता, सुहृद्-मित्र और सम्पूर्ण राजा लोग कातर होरहे हैं; तुम इन लोगोंको धीरज प्रदान करो। जानने योग्य कुछ भी वस्तु तुमसे छिपी नहीं है, इससे तुम्हारे समान पुरुष शोक करनेके योग्य नहीं हैं।

अद्भुत कर्म्म करनेवाले कृष्णने जब अर्ज्जुनको इस प्रकारसे धीरज धारण कराया, तब अर्ज्जुन गद्गद होकर अपने भाइयोंसे यह वचन बोले, वह लम्बी भुजावाला विशाल स्कन्ध और बड़े पुण्डरीकनेत्रवाला अभिमन्यु युद्धभूमिमें किस प्रकारसे मारागया है. वह वृत्तान्त मैं सुननेकी इच्छा करता हूं। तुमलोग बतलाओ कि कौन कौनसे योद्धा मेरे पुत्रके वैरी हुए हैं. रथ हाथी घोड़े और पदातियोंके सहित उन लोगोंको युद्धभूमिमें तुम ... मेरे ... मरे हुये देखोगे ...

जाननेवाले तुम सब लोगोंके हाथमें शस्त्र-धारण करके युद्धभूमिमें उपस्थित रहनेपर वह वज्रधारी इन्द्रके सङ्गमें यदि संग्राम करता, तो क्या उसकी मृत्यु होसकती थी? यदि मैं पाण्डव और पाञ्चाल योद्धाओंको अपने पुत्रकी रक्षा करनेमें असमर्थ समझता, तो स्वयं ही उसकी रक्षा करता। तुम लोग रथ पर चढ़के जब बाण वर्षाकर रहे थे, उस समयमें शत्रु-ओंने किस प्रकारसे तुम लोगोंको पराजित करके अभिमन्युका वध किया? आहा! जिस स्थलमें तुम लोगोंके सम्मुखहीमें अभिमन्यु मारा गया है, तब मुझे यह निश्चय बोध हो रहा है, कि तुम लोगोंमें कुछ भी पुरुषार्थ और पराक्रम नहीं हैं। तुम लोगोंकी निन्दा निरर्थक है, परन्तु मैं अपनी ही निन्दा करता हूं। क्योंकि तुम लोग डरपोक, कादर, अकृत निश्चय और अत्यन्तही निर्बलहो, ऐसी अवस्थामें मैंने तुम लोगोंके ऊपर युद्धका भार अर्पण करके प्रस्थान किया था। जब तुम लोग रणभूमिमें मेरे पुत्रकी रक्षा नहीं कर सके, तब तुम लोगोंके अस्त्र-शस्त्र, कवच और सम्पूर्ण आयुध केवल देखनेहीके हैं, और तुम लोगोंके बड़े वचन केवल सभामें ही सुन पड़ते हैं। प्रचण्ड गाण्डीव धनुष और तलवार धारण करनेवाले अर्जुनने जिस समय खड़े होकर ऐसा वचन कहा, उस समय उनको और देखनेको भी कोई पुरुष समर्थ न हुए, वह पुत्रशोकसे अत्यन्त क्रुद्ध और दुःखित होकर बार बार लम्बी सांस लेते हुए यम-राजके समान क्रुद्ध होगये! उस समयमें श्रीकृष्णचन्द्र तथा युधिष्ठिरको छोड़के और कोई पुरुष उनसे कुछ बात चीत न करसके। श्रीकृष्ण और राजा युधिष्ठिर दोनों ही उनके मनके भावको जानते थे, और अर्जुन भी इन दोनों महात्माओंको परम प्रिय समझते तथा उनका उचित सम्मान करते थे; इस हीसे वे दोनों पुरुषसिंह सब अवस्थामें उनसे ... करनेमें समर्थ होते थे। अनन्तर युधिष्ठिर पुत्र शोकसे अत्यन्त ही पी... और क्रोधसे युक्त कमलनेत्र अर्जुनको ... वृत्तान्त सुनाने लगे।

३० अध्याय समाप्त।

राजा युधिष्ठिर बोले, हे महाबाहो! तुमने संशप्तक वीरोंके वध करनेके लि... यहांसे प्रस्थान किया, तब द्रोणाचार्य ... ग्रहण करनेके निमित्त अत्यन्त ही यत्न ... लगे। वह अपनी सेनाका व्यूह बनाके ... भूमिमें उपस्थित हुए, तब हम लोग भी ... रथसेनाका व्यूह बनाकर उन्हें नि... करनेमें प्रवृत्त हुए। हम लोगोंकी सेनाके ... और महारथी योद्धा लोग मेरी रक्षा ... लगे, और द्रोणाचार्यको भी युद्धसे नि... करने लगे। परन्तु वह अपने तीक्ष्ण बा... हम लोगोंको अत्यन्त ही पीड़ित करने ... वह हस्तलाघवके सहित बाणोंका ... हम लोगोंको इस प्रकारसे पीड़ित करने ... कि हम लोग उनके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर उनकी सेनाके व्यूहकी ओर देखने... भी समर्थ नहीं हुए, व्यूह भेद करनेकी ... तो दूर है। उस समय मैंने महाबली सुभद्रा... पुत्र अभिमन्युसे कहा, "हे पुत्र! तुम शत्रुसे... व्यूहका भेद करो।" वह पराक्रमी बालक आज्ञासे सिंहके समान अकेले ही इस ... भारको उठानेके निमित्त तैयार हुआ। ... क्रमसे युक्त वह बालक तुम्हारे सिखाये ... अस्त्रोंके बलसे इस प्रकार शत्रुसेनाके व्यूहमें प्रविष्ट हुआ, जैसे गरुड़ समुद्रमें प्रवेश कि... करते हैं। उस महावीरने जिस मार्गसे ... बीच प्रवेश किया हम लोगोंने भी उसके ... गामी बनकर उस ही मार्गसे व्यूहके

प्रवेश करनेकी इच्छा किया; परन्तु सिन्धुराजका पुत्र चुद्र अभिलाष करनेवाला जयद्रथ भगवान् रुद्रदेवके वर प्रभावसे हम सब लोगोको निवारण करने लगा, उससे हम लोग किसी प्रकारसे भी व्यूहके भीतर प्रवेश नहीं कर सके। हे तात! अनन्तर द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, कर्ण, अश्वत्थामा, कोशलराज बृहद्दल और कृतवर्म्मा,—इन छः महारथियोंने अभिमन्युको आक्रमण किया। वे सब महारथी लोग चारों ओरसे उस बालकको घेरकर अपने तीच्ण बाणोंसे पीड़ित करने लगे, परन्तु वह अपनी शक्तिके अनुसार उन सब वीरोंके सङ्गमें युद्ध करताहीरहा अन्तमें उन सम्पूर्ण महारथियोंने उसको रथरहित कर दिया तब वह रथहीन होकर सब अस्त्र शस्त्रोंसे हीन हुआ तब दुःशासनपुत्रने उस बालकका प्राणनाश किया। उस परम धर्म्मात्मा अभिमन्युने सहस्रों मनुष्य रथी गज पति और घुड़सवारोंका संहार किया। उसने आठ सहस्र रथी नव सौ हाथी, दोहजार राजपुत्र और दूसरे पैदल चलनेवाले बहुतेरे योद्धाओंको तथा राजा बृहद्दलको यमपुरीमे भेजकर अन्तमे युद्धभूमिमें मारा गया। वह पुरुषसिंह जो इस प्रकारसे स्वर्गमेंगया है, यहहम लोगोके शोकको अन्तिम सीमा हुई है।

अनन्तर अर्ज्जुनने धर्म्मराज युधिष्ठिरके वचनोंको सुनकर हा पुत्र! हा पुत्र! कहके लम्बी सांस छोड़ते हुए दुःखित होकर पृथ्वीमें गिर पड़े। उस समय अर्ज्जुनको कातर और चेतरहित होके पृथ्वीपर गिरते देखकर वहांपर खड़े हुए सम्पूर्ण योद्धालोग उन्हे ग्रहण करके एकटक नतसे उनकी ओर देखने लगे अनन्तर इन्द्रपुत्र अर्ज्जुन थोड़ी देरके बाद सावधानहोकर क्रोधसे मूर्च्छित और कांपते हुये शरीर बार बार लम्बी सांस छोड़ते तथा आखोंसे आंसू भरके उन्मत्तकेसमान इधर उधर देखते हुए यह वचन कहने लगे,—"मै तुम लोगोंके समीप यह सत्य प्रतिज्ञा करता हूं, कलह मैं जयद्रथका वध करूंगा; परन्तु यदि वह युद्धसे भीत होके धृतराष्ट्रपुत्रोंको छोड़के उनके समीपसे भाग नहीं जावें, अथवा यदि वह देवकीनन्दन कृष्ण वा युधिष्ठिरकी शरणमें नहीं आवेगा, तो कलह मैं उसका वध करूंगा। यदि कोई रणभूमिमें उसकी रचा करनेके निमित्त मेरे सङ्गमें युद्ध करेगा, ऐसा क्या यदि द्रोणाचार्य्य वा कृपाचार्य्य भी उसकी रचा करनेके निमित्त मेरे सङ्ग युद्ध करें उन्हे भी तीच्ण बाणोंसे छिपा दूंगा। हे पुरुष-श्रेष्ठ राजसिंहो। यदि युद्धभूमिमे मैं ऐसा कार्य्य नहीं करूं तो मैं शूरवीरोके मिलने योग्य उत्तम और पुण्यलोकोमें गमन न कर सकूं। मैं यदि जयद्रथका वध न करूं तो मातृहत्या करनेवाले पितृघाती गुरुकी स्त्रीसे कुकर्म्म करनेवाले, चुगुल साधुओंके सङ्ग दुष्ट आचरण करनेवाले निन्दक विश्वासघाती पहिले विवाह करी हुई स्त्रीकी निन्दा करनेवाले यशहीन ब्रह्मघाती, गोहत्यारे और जो घृत दुग्ध मधु उत्तम अन्न तथा शाक और मांस आदि वस्तुओंको विना देव और ब्राह्मणोंको समर्पण किये ही भोजन करते हैं—वे सम्पूर्ण पापी लोग जिन जिन लोकोंमें गमन करते हैं, मैं भी उन्ही लोकोमें गमन करूंगा। मैं यदि जयद्रथका प्राण नाशन करूं तो वेद पढ़नेवाले और अत्यन्त प्रशंसाके योग्य उत्तम ब्राह्मण बूढ़े साधु और गुरुलोगोंके अपमान करनेवाले पुरुष जिन लोकोंमें गमन करते हैं, मैं भी उन ही लोकोंमें गमन करूंगा। चरणसे ब्राह्मण गौ अग्निको स्पर्श करनेवाले और जलमें श्लेष्म मूत्र-मल त्याग करनेवाले पुरुषोंकी जो गति होती है मुझे भी वही प्राप्त होवे। मैं यदि जयद्रथका वध न करूं तो जो पुरुष नङ्गे स्नान करते हैं, जिनके घरमें अतिथिका आगमन निष्फल होजाता है जो कृपणता करते

पुरुष मिथ्या वचन बोलते हैं जो दूसरेको ठगते हैं जो अपने आत्माकी हिंसा करते हैं जो मिथ्या नीच पुरुष सेवक स्त्री तथा अपने आश्रितोंको उनका भाग विना उन्हें समर्पण किये ही मिष्टान्न भोजन करते हैं; उन सम्पूर्ण पुरुषोंको जो गति होती है मेरी भी वही गति होवे। यदि मैं जयद्रथका प्राणनाश न करूं तो शीतसे डरनेवाले ब्राह्मण और युद्धभूमिमें भयसे भीत होकर भागनेवाले क्षत्रियोंको जो गति होती है मेरी भी वही गति होवे। मैं यदि जयद्रथका वध न करूं तो जो दुष्टात्मा आज्ञाकारी उत्तम चरित्रवाले आश्रितोंका पालन नहीं करते और जो योग्यपात्रको श्राद्ध आदिमें उचित वस्तु दान नहीं करते सदा अयोग्य पात्र वा शूद्रादिकोंको श्राद्धकी सामग्री प्रदान करते हैं वे सम्पूर्ण पुरुष और मद पीनेवाले मर्य्यादा तोड़नेवाले कृतघ्न और भाईकी निन्दा करनेवाले पुरुषोंको जो गति होती है, मेरी भी शीघ्र वही गति होवे दूसरे भी जो बहुतसे धर्मरहित पुरुषोंका मैंने नाम नहीं लिया है, उनकी जो गति होती है, यदि मैं जयद्रथका वध न करूं, तो मुझे भी वही गति प्राप्त होवे। इसके अतिरिक्त और भी मैं दूसरी यह प्रतिज्ञा करता हूं उसे भी आप सब लोग सुनिये,—आजकी रात्रि बीतनेपर कल्ह सवेरेसे सूर्य्यके अस्त होने पर्य्यन्त यदि मैं उस पापी जयद्रथका वध न करूं तो इस ही स्थलपर मैं जलती हुई अग्निमें प्रवेश करके प्राण-त्याग करूंगा। देवता असुर मनुष्य यक्ष सर्प पक्षी पितर राक्षस ब्रह्मर्षि आदि तथा उनसे भी श्रेष्ठ जोकोई प्राणी होवें;—वे कोई भी कल्ह मेरे सम्मुखसे हमारे उस शत्रु जयद्रथकी रक्षा करनेमें समर्थ न हो सकेंगे। यदि वह स्वर्ग पाताल देवलोक वा दितिलोकोंमें भी प्रवेश करे, तौभी मै कल्ह उसके समीपमें गमन करके सैकड़ों तीक्ष्ण वाणोंसे उसका शिर काटकर गिराऊंगा;—ऐसा वचन कहके अर्ज्जुन बायें और दहिने हाथसे गाण्डीव धनुष ग्रहण किये हुए धनुषटङ्कार करने लगे, वह धनुष टङ्कार शब्द अर्ज्जुनके वचनोंको अतिक्रम कर आकाशमें व्याप्त होगया। जब अर्ज्जुनने इस प्रकारसे प्रतिज्ञा किया तब श्रीकृष्णने पाञ्चजन्य शङ्ख बजाया और अर्ज्जुन भी क्रुद्ध होकर अपने देवदत्त शंखको बजाने लगे। कृष्णके मुखसे पूरित पाञ्चजन्यशंखके शब्दके स्वर्ग मर्त्यलोक पाताल और सम्पूर्ण दिशा प्रलय कालके समयके अनुसार कम्पित होने लगीं। तिसके अनन्तर चारों ओरसे पाण्डवोंकी सेनामें झुझुभाऊ बाजोंके सहित वीरोंके सिंहनाद सुनाई देने लगे।

७१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज! सिन्धुराजके पुत्र राजा जयद्रथ पुत्रवत्सल पाण्डवोंके उस महा घोर शब्दको सुनकर तथा दूतके मुखसे अर्ज्जुनकी प्रतिज्ञाका सम्पूर्ण वृत्तान्त जानकर अपने शिविरसे उठे। वह शोकसे मोहित अत्यन्त दुःखित और आर्त्त होगये; तथा अगाध शोकसमुद्रमें डूबते हुए अपने मन ही मन अनेक प्रकारकी चिन्ता करते हुए राजाओंके समीपमें गमन किया। वह अभिमन्युके पिता अर्ज्जुनके डरसे भीत होकर लज्जापूर्व्वक राजाओंके समीप जाकर यह वचन बोले,—जो नीचबुद्धि पाण्डुके क्षेत्रमें कामी इन्द्रके वीर्य्यसे उत्पन्न हुआ है, वह केवल अकेले मुझे ही यमपुरीमें भेजनेकी इच्छा करता है। हे क्षत्रियश्रेष्ठ राजसिंह! आप लोगोंका कल्याण होवे मैं अपने प्राणरक्षाके निमित्त इसीसमय यहांसे गमन करके अपने घर पर जाऊं; अथवा हे वीर पुरुषो! आप लोग उरु अर्ज्जुनके विरुद्ध अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके मेरी रक्षा करके मुझे अभय कीजिये। द्रोणाचार्य्य दुर्य्योधन कृपाचार्य्य कर्ण

मद्रराज शल्य वाह्लिक, दुःशासन आदि आप सब कोई यमराजके हाथसे भी मनुष्यको रक्षा कर सकते हैं, परन्तु क्या अकेले अर्ज्जुनके हाथसे मुझे न बचा सकेंगे? पाण्डवोंके हर्षनादको सुनकर मैं अत्यन्त ही भयभीत होगया हूं मुमूर्षु पुरुषके समान मेरा शरीर कांप रहा है। गाण्डीव धनुषको धारण करनेवाले अर्ज्जुनने अवश्यही मेरे वधके निमित्त प्रतिज्ञा किया है नहीं तो पाण्डव लोग इस शोकके समयमें हर्ष पूर्व्वक सिंहनाद क्यों करेंगे। देवता असुर गन्धर्व्व सर्प्प और राक्षसलोग भी अर्ज्जुनकी प्रतिज्ञाको निष्फल करनेका उत्साह नहींकर सकते तो आप लोग मनुष्योंके राजा होकर क्या कर सकेंगे? इससे आप लोगोंका मङ्गल होवे आप सब कोई मुझे घर जानेकी आज्ञा दीजिये मैं इस प्रकारसे अदृश्य होकर गमन करूं जिसमें पाण्डवलोग मुझे न देख सकें।

राजा दुर्य्योधन अपने पक्षकी श्रेष्ठतासे युक्त होके विलाप करते हुए राजा जयद्रथको देखकर यह वचन बोले हे पुरुषश्रेष्ठ! तुम भय मत करो, इन सम्पूर्ण क्षत्रिय वीरोंके बीचमें रहनेसे कौन तुम्हें युद्धभूमिमें आवाहन कर सकेगा? मैं कर्ण दुःशासन चित्रसेन विविंशति भूरिश्रवा शल्य वृषसेन पुरुमित्र जय भोज काम्बोजराज सुदक्षिण सत्यव्रत महावाहु विकर्ण, दुर्मुख सुबाहु शस्त्रधारी कलिङ्गराज अवन्तिनगरीके राजा विन्द और अनुविन्द द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामा शकुनि और भी नाना देशोंसे आये हुए बहुतेरे राजाओंके संग हम लोग अपनी सेनाके सहित इकट्ठे होकर तुम्हारी रक्षा करेंगे इससे तुम अपने मानसिक शोकको दूर करो, तुम कुछ भी चिन्ता मत करो। हे रथातिरथिन्! तुम भी स्वयं शूरवीर तथा [illegible] श्रेष्ठ हो, इससे तुम किस निमित्त शत्रुओंसे डरते हो। विशेष करके मेरी यह ग्यारह अक्षौहिणी सेना तुम्हारी रक्षा करनेके निमित्त यत्नपूर्व्वक शत्रुओंके सङ्ग युद्ध करेगी। हे सिन्धुराज जयद्रथ! इससे तुम अपने चित्तके शोकको दूरकरो, तुम्हें कुछ भी भय नहीं है।

सञ्जय बोले हे राजन्! सिन्धुराज जयद्रथ तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनके ऐसे वचनोंको सुनकर धीरज धारण कर उस ही समय द्रोणाचार्य्यके समीप गये। अनन्तर राजा जयद्रथ द्रोणाचार्य्यको चरणवन्दना कर उनके समीपमें बैठके यह वचन बोले हे भगवन्! निमित्त निश्चय, दूर तक शस्त्र चलाने और हस्तलाघवमें मुझसे अर्ज्जुनमें कितनी विशेषता है; उसे आप वर्णन कीजिये। हे आचार्य्य! मुझसे अर्ज्जुनमें विशेष विद्या कौनसी है उसे मैं तुम्हारे समीपमें सुननेकी इच्छा करता हूं आप इस विषयको यथार्थ रीतिसे वर्णन कीजिये।

द्रोणाचार्य्य बोले हे तात! गुरुका उपदेश तुम दोनोंको समान मिला है परन्तु योग साधन और वनवासके दुःखोंको सहनेसे अर्ज्जुन तुमसे अधिक सामर्थ्यवान् हुआ है। तोभी तुम युद्धमें अर्ज्जुनसे तनिकभी भय मत करो क्योंकि मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। जो मेरे बाहुबलसे रक्षित होता है, उसके ऊपर देवता भी अपने बलको प्रकाशित करनेमें समर्थ नहीं होते। मैं कल्ह एक ऐसा व्यूह बनाऊंगा, कि अर्ज्जुन उसे भेद नहीं कर सकेगा; इससे तुम युद्ध करना, तुम कुछ भी भय मतकरो, तुम्हारे पितर और पितामह जिस मार्गसे गये हैं, तुम भी उस ही मार्गसे गमन करके अपने क्षत्रिय धर्म्मको पालन करो। तुमने विधिपूर्व्वक वेद पढ़के अग्निमें आहुति प्रदान किया है, तुमने बहुतसे यज्ञोंको पूर्ण किया है, तब तुम्हें मृत्युसे क्या भय है? तुमने प्रारब्धके अनुसार अत्यन्त दुर्लभ मनुष्य शरीर पाया है इससे उस ही शरीरसे अपने बाहुबलसे उपार्ज्जित दिव्य तथा श्रेष्ठ लोकमें गमन कर सकोगे। हे

कौरव, पाण्डव, यदुवंशी, मैं और मेरापुत्र सब ही को अस्थायी समझो, समयके अनुसार हम सब लोग नष्ट होकर अपने कर्म्मके अनुकूल परलोकमें गमन करेंगे। देखो, तपस्वी लोग तपस्या करके जिन सम्पूर्ण उत्तम लोकोंमें गमन करते हैं, क्षत्रिय-धर्म्मको अवलम्बन करनेवाले शूरवीर क्षत्रिय लोग भी उन ही श्रेष्ठलोकोंमें गमन करते है।

हे राजन्। भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्यके निकटमें इस प्रकारसे आश्वास तथा धीरजके वचन सुनकर सिन्धुराज जयद्रथको भय दूर हुई; और उन्होंने युद्ध करनेमें अपना चित्त लगाया। हे प्रजानाथ! तिसके अनन्तर तुम्हारी सेनाके शूरवीरोंके हर्षपूर्व्वक सिंहनाद शब्दके सहित जुझाऊ बाजे बजने लगे, और उससे अत्यन्त ही तुमुल शब्द उत्पन्न हुआ।

७२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र! जब अर्ज्जुनने सिन्धुराज जयद्रथके बध करनेके वास्ते प्रतिज्ञा किया तबवसुदेवपुत्र कृष्ण उनसे यह वचन बोले हे अर्ज्जुन! तुमने अपने भाइयोंके अभिप्रायके अनुसार बचनसे जो प्रतिज्ञा किया हैं मै कल्ह सिन्धुराज जयद्रथका बध करूंगा यह तुमने साहसका कर्म्म किया हैं। तुम मेरे सङ्ग विना परामर्श किये ही जो अत्यन्त कठिन भारके उठानेमें तैयार हुए हो; इससे जिसमें सम्पूर्ण पुरुषोंके बीच हम लोगोंकी हंसी न होवे मैं उस ही उपायको विचार रहा हूं। मैने धृतराष्ट्रकी सेनामें दूत भेजाथा उसने शीघ्रताके रहितआकर मुझे यह सम्वाद सुनाया है कि अर्ज्जुनने जिस समय सिन्धुराज जयद्रथके वध करनेके निमित्त प्रतिज्ञा किया उस समयमें यहा पर सिंहनाद और बाजे का महाघोर शब्द हुवा था; उसे जयद्रथके सहित धृतराष्ट्रके पत्रोंने सुना। उस ही शब्दो सुनकर उन लागोंने विना कारणके यह सिंहनाद नहीं होता है ऐसा समझकर भयभीत होके युद्धके निमित्त तैयार हुए। हे महाबाहो! उस समयमें उन लोगोंके अत्यन्त भयङ्कर रथके शब्द हाथी, घोड़े और पैदलचलनेवाले योद्धाओंका शब्द भी अत्यन्त तुमुल हुआ था। वे लोग यही समझ कर युद्धके निमित्त तैयार होके एहु हुए कि अर्ज्जुन अभिमन्युके बधका वृत्तान्त सुनकर दुःखसे आर्त्त और क्रुद्ध होकर आज रात्रिके समयमें ही युद्धके निमित्त शिविरसे बाहर होवेगा। हे अर्ज्जुन। उन लोगोंने प्रकारसे युद्धके निमित्त सावधान होने पर, जयद्रथके वधके निमित्त तुम्हारी दृढ़ प्रतिज्ञा सुनी और तुम्हें सत्य प्रतिज्ञा समझके सुयोधनके अनुयायी और जयद्रथ आदि योद्धा लोग क्षुद्र हरिणोंके समान भयभीत होगये। अनन्तर सिन्धु और सौवीर देशके राजाजयद्रथ अत्यन्त दुःखित तथा कातर होके अनुयायियोंके सहित उठकर अपने शिविरपर गये। अनन्तर उन्होंने अपने कल्याणके निमित्त आपसमें विचार करके सम्पूर्ण राजाओंकी सभामें जाकर सुयोधनके समीपमें यह वचन कहा जो नीचबुद्धिवाला पाण्डुके क्षेत्रमें इन्द्रके वीर्य्यसे उत्पन्न हुआ है वह अर्ज्जुन मुझे अपने पुत्रका वध करनेवाला कहकर कल्ह युद्धभूमिमें आक्रमण करेगा। अर्ज्जुनने सेनाके बीच मेरे वध करनेके निमित्त प्रतिज्ञा किया है। उस सत्यव्रत करनेवाले अर्ज्जुनकी प्रतिज्ञाको देवता गन्धर्व्व असुर, सर्प राक्षस आदि भी मिथ्या करनेका उत्साह नहीं कर सकते। इससे आप लोग युद्धभूमिमें मेरी रक्षा कीजिये जिससे वह आप लोगोके शिरके पददलित करके अपना लक्ष्य ग्रहण न कर आप लोग वैसे ही उपायका विधान कीजिये। यदि आप लोग सब कोई मिलके भी मेरी रक्षा न कर सके, तो हे कुरुनन्दन! हे राजा लोग!

…आज्ञा दो मैं घर जानेके निमित्त यहांसे …स्थान करूं। जब जयद्रथने सुयोधनसे ऐसा …चन कहा, तब सुयोधन तुम्हारी प्रतिज्ञा सुन…र शिर नीचाकर दुःखित होके चिन्ता करने …गे, सिन्धुराज जयद्रथ सुयोधनको दुःखितचित्तसे …न्ता करते हुए देखकर अपने हितके निमित्त …ोमल और कठोर यह वचन बोले मैं तुम्हारी …नाके बीच ऐसे किसी धनुर्द्धर पुरुषको गौ नहीं …खता हूं, जो युद्धमें अपने अस्त्रोंसे अर्ज्जुनके …स्त्रोंका निवारण कर सके। कृष्णको सहाय …से अगर अर्ज्जुन गाण्डीव धनुष ग्रहण करके …द्धभूमिमें अपने बाणोंको चलाता रहे तो इन्द्र …ो उसके विरुद्ध संग्राम भूमिमें सम्मुख नहीं …ड़े हो सकेंगे। मैने सुना है कि अर्ज्जुनने …हिमालय पर्व्वतके ऊपर पृथ्वीपर ही खड़ा …ोके अत्यन्त तेजस्वी महादेवके सङ्ग युद्ध किया …ा, और देवतोंके राजा इन्द्रकी आज्ञा अनु…ार एक रथपर ही चढ़के हिरण्यपुरवासी …जस्रों दानवोंका वध किया था। मेरे विचा…में यह निश्चय होता है, कि अर्ज्जुन कृष्णके …ङ्ग मिलके देव लोकके सहित तीनों लोकका …ो संहार कर सकता है। इससे आप आज्ञा …ीजिये, तो मैं घर जाऊं। अथवा यदि आपका …त होवे, तो द्रोणाचार्य्य अपने पराक्रमी …त्रोंके सहित मिलकर मेरी रक्षा करें। हे …र्ज्जुन! अनन्तर राजा दुर्य्योधनने जयद्रथकी …क्षाके निमित्त रुदन करके द्रोणाचार्य्यसे …नुरोध किया। उससे आचार्य्य द्रोणने रथ …क्षा तथा दूसरे उपायोंको स्थिर किया है, …र्ण, भूरिश्रवा, अश्वत्थामा, वृषसेन, पराक्रमी …ृपाचार्य्य, और मद्रराज शल्य,—ये महारथ …राजा जयद्रथके आगे युद्धभूमिमें स्थित होंगे। …द्रोणाचार्य्य बहुत व्यूह रचना करेंगे, उस …व्यूहके अगाड़ीका हिस्सा शकटाकार और …पिछेका आधा भाग पद्मके आकृतिके समान …होगा, इस ही पद्मके कर्णिकाके बीच राजा जयद्रथ स्थित होंगे; इस कर्णिकाके बीचमें और एक सूचीव्यूह बनावेंगे; उसही सूचीव्यूहके बीचमें युद्धदुर्म्मद सिन्धुराज जयद्रथ उन सम्पूर्ण महावीर योद्धाओंसे रक्षित होकर स्थित होंगे। धनुर्व्विद्या, अस्त्रोंके चलाने, पराक्रम और बलमें ये छहो रथी निश्चय ही न सहनेके योग्य हैं; उन लोगोंको उनके अनुयायियोंके सहित बिना पराजित किये तुम जयद्रथके समीपमें नहीं जा सकोगे। हे पुरुषसिंह! इन छहोंरथियोंमें से एक एकके बल पराक्रमको विचार करके देखो तो सही। उसपर भी उन छहोंके एक ही स्थानपर इकट्ठे होनेपर बोध होता है, कि उन लोगोंको किसी प्रकारसे भी बलपूर्व्वक पराजित करनेमें तुम समर्थ न हो सकोगे। हे अर्ज्जुन! हम लोग फिर इस विषयमें सब्यो अनुयायी राजा और सुहृद् मित्रोंके सहित अपने कार्य्यको सिद्ध करनेके निमित्त विचार करेंगे।

७३ अध्याय समाप्त।

अर्ज्जुन बोले, हे कृष्ण! तुम धार्त्तराष्ट्रोंके ऊपर कहे हुए छः रथियोंको अधिक बलवान् समझते हो, परन्तु मैं बोध करता हूं, उन लोगोंका बल पराक्रम मेरे आधे पराक्रमके समान भी न होगा। हे मधुसूदन! मैं जब जयद्रथके वध करनेकी इच्छा करूंगा, तब तुम उन सम्पूर्ण रथियोंके अस्त्रशस्त्रोंको मेरे अस्त्रोंसे कटकर पृथ्वीमें गिरते हुए देखोगे। मैं कल्ह सिन्धुराज जयद्रथके शिरको द्रोणाचार्य्यके सम्मुखहीमें काटकर गिरा दूंगा; उसे देखके द्रोणाचार्य्य अनुयायियोंके सहित विलाप करेंगे। जिसे देवता, साध्य, वसु, दोनों अश्विनीकुमार, असुर, पितर, गन्धर्व्व, गरुड़ सर्प, उरग, स्वर्ग, आकाश, पृथ्वी, सम्पूर्ण दिशा और दिक्पाल, ग्रामवासी और वनवासी

और सम्पूर्ण चराचर प्राणी भी यदि सिन्धु राज जयद्रथकी रक्षाकरें, तौभी मैं अपने शस्त्रोंको स्पर्श करके शपथ करता हूं, कि तुम सिन्धुराज जयद्रथको मेरे बाणोंसे कल्ह मरा हुआ देखोगे। महाधनुर्द्धारी द्रोणाचार्य्य जो उस पापीकी रक्षा करनेमें प्रवृत्त होवेंगे, तो मैं पहिले द्रोणाचार्य्यहीको आक्रमण करूंगा। हे कृष्ण! जयद्रथ वध पण (बाजी) विषयक उस युद्धरूपी जुएके खेलमें दुर्य्योधन जिसके पराक्रमसे अभिमान करता है, मैं उस होके सेनाका अग्रभाग भेद करके जयद्रथके समीप उपस्थित होऊंगा। तुम कल्ह युद्धमें मेरे तीक्ष्ण बाणोंसे उन महाधनुर्द्धर वीरोंको इस प्रकारसे क्षत-विक्षत शरीरसे युक्त देखोगे, जैसे बज्रकी चोटसे पर्व्वत विदीर्ण होता कल्ह तुम देखोगे, कि मेरे बाणोंसे मनुष्य, हाथी और घोड़ोंके मृत शरीर पृथ्वीपर गिर रहे हैं, और उन मृत शरीरोंसे रुधिर भर रहा है। कल्ह तुम देखोगे, मेरे गाण्डीवधनुषसे छूटे हुए सम्पूर्ण बाण मन और वायुके समान बेगशील होकर सहस्रों मनुष्य, हाथी और घोड़ोंको प्राणरहित करके पृथ्वीमें गिरा रहे हैं। मैंने यम, कुवेर, इन्द्र और बरुणके समीपमें जिन अस्त्रोंको प्राप्त किया है, उनको सम्पूर्ण मनुष्य देखेंगे जो लोग जयद्रथकी युद्धभूमिमें रक्षा करेंगे, तुम उन सम्पूर्ण योद्धाओंके अस्त्रोंको मेरे ब्रह्मास्त्रसे नष्ट होते हुए देखोगे। हे कृष्ण! तुम कल्ह मेरे बाणोंके वेगसे राज-पुरुषोंके शिरसे पृथ्वीको परिपूरित हुई देखोगे। मैं कल्ह मांसकी अभिलाष करनेवाले जीवोंको तृप्त करूंगा, शत्रुओंका तितर बितर करते हुए सुहृद्-मित्रोंको आनन्दित करके जयद्रथका वध करूंगा। वह कुसम्बन्धीय पापी राजा जयद्रथ मेरे अस्त्रोंसे मरकर अपने दुष्ट-मित्रोंको शोकित करेगा तुम सबके चीर और अन्नको भोजन करनेवाले उस पापी जयद्रथको अनु-यायियोंके सहित कल्ह मेरे बाणोंसे पृथ्वीपर गिरते हुए देखोगे। हे कृष्ण! मैं सवेरे ऐसा कार्य्य करूंगा उससे सब कोई समझेंगे, कि अर्ज्जुनके समान धनुर्द्धारी और दूसरा कोई भी नहीं है। हे भरत जहांपर गाण्डीव धनुष, मैं योद्धा और सारथी हो उस स्थलमें मुझसे अजेय कौ हे हृषीकेश! हे भगवन्! तुम्हारी रणभूमिमें मुझसे कोई कर्म्म भी असाध्य है, इन सब बातोंको जानकर भी तुम किस गासे मेरी निन्दा कर रहेहो? हे जन जैसे चन्द्रमामें निश्चय ही कलङ्कका चिह्न समुद्रमें सदा जल उपस्थित रहता है, प्रकारसे तुम हमारी इस प्रतिज्ञाको भी हो सत्य समझो। तुम हमारे सम्पूर्ण स्त्रोंकी अवमानना मतकरो। मैं गमन करके किसीके सम्मुखसे कभी नहीं होता वल्कि विजयी होता यह सत्य वचन प्रसिद्ध है तुम उसही जयद्रथको मेरे अस्त्रोंसे मरनेका निश्चय क जैसे ब्राह्मणोंमें निश्चय ही सत्य, साधु सदा नम्रता और अत्यन्त कार्य्यदक्ष समीप सदा ही लक्ष्मी विद्यमान रह वैसे ही नारायणमें निश्चय ही विजय रहती है।

सञ्जय बोले, इन्द्रपुत्र अर्ज्जुन साक्षात् माला स्वरूप हृषीकेश कृष्णसे ऐसा वच कर फिर यत्नपूर्व्वक सिंहनाद करके यह बोले हे कृष्ण! रात्रि वीतने पर सवेरे मेर जिस प्रकारसे सज्जित हुआ करता है, तुम उसी प्रकारसे मेरे रथको सज्जित तैयार रखना, क्योंकि कल्ह बहुत कार्य्य करना हैं।

७४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज। कृष्ण और अर्ज्जुन ानो ही उस रात्रिके समय शोक तथा दुःखसे ार्त्त होकर लम्बी सांस छोड़ने लगे, किसी कारसे उन्हें निद्राका सुख नहीं मिला। न्द्र आदिक सम्पूर्ण देवता नर नारायणको क्रुद्ध ौर दुःखित देखकर यह चिन्ता करने लगे, कि न जाने कल्ह कौनसी घटना होवेगी। उस मय कष्टजनक प्रचण्ड वायु बहने लगा, सूर्य्य-ण्डलमें कवन्धके सहित परिधि देख पड़ा, ादलहीन आकाशमें गर्ज्जन सुनाई देने लगा, बजली कड़कने लगी, और आकाशसे उल्का-ात होने लगा, वन उपवन और पर्व्वतोंके सहित थ्वी कांपने लगी तथा समुद्रका जल उथलने ागा। नदियां हर एक सोतेसे युक्त होकर वेग-त्वक बहने लगीं, मांस भक्षण करनेवाले पशु-ची हर्षित होकर डरावनी बोली बोलने लगे, ौर यमराजके राष्ट्रकी वृद्धि करनेके निमित्त थ, हाथी, घोड़े और मनुष्योंकी उलटी गति ोने लगी; सवारीके सम्पूर्ण वाहन मलमूत्र याग करते हुए रुदन करने लगे। हे भरतश्रेष्ठ ाजेन्द्र! रोएंको खड़े करनेवाले उन सम्पूर्ण हाभयङ्कर उत्पातोंको देख और महावीर र्ज्जुनकी अत्यन्त कठिन प्रतिज्ञा सुनकर म्हारी सेनाकेसम्पूर्ण वीर योद्धालोग व्याकुल ोगये। इधर इन्द्रपुत्र महाबाहु अर्ज्जुन कृष्णसे ोले, हे माधव। तुम्हारी बहन सुभद्रा और सकी पुत्रवधू अभिमन्युके शोकसे कातर हुई ोगी, तुम जाके उन्हें धीरज धारण कराओ। ययके अनुसार उचित वचन कहकर सुभद्रा, त्रवधू और उनकी सेवा करनेवाली परिचारि-काओं (दासियों) के शोकको दूर करो। अन-न्तर श्रीकृष्णचन्द्र अत्यन्त दुःखित होकर अर्ज्जु-नके मन्दिरमें जाकर शोक और दुःखसे अत्यन्त आर्त्त हुई अपनी बहिन सुभद्राको धीरज देते हुए ऐसे वचन कहने लगे।

श्रीकृष्ण बोले, हे सुभद्रे! तुम पुत्रके निमित्त शोक मत करो, पुत्रवधूको भी धीरज धारण कराओ। हे भीरु! कालने सम्पूर्ण प्राणियोंको, विशेष करके क्षत्रिय कुलमें उत्पन्न हुए वीरपुरुषोंकी ऐसी ही गतिका विधान किया है। पिताके समान पराक्रमी तुम्हारे महारथ पुत्रको प्रारब्ध होसे ऐसी मृत्यु हुई है इससे उसके निमित्त तुम शोक मत करो, तुम्हारे पुत्रने धर्म्मके अनुसार अनेक शूरवीर पुरुषोंको यमपुरीमें पहुंचाकर, अन्तमें वीर पुरुषोंकी अभिलाषित गतिको प्राप्त किया है। उसने पुण्यात्मा पुरुषोंके पाने योग्य श्रेष्ठ तथा अक्षय लोकमें गमन किया है। साधु पुरुष तपस्या ब्रह्मचर्य्य और बुद्धिसे जो गति पानेकी इच्छा करते हैं, तुम्हारे पुत्रने उस ही गतिको प्राप्त किया है। हे भद्रे! तुम वीरमाता, वीर पत्नी, वीरकन्या और वीर बन्धु-बान्धवोंसे युक्त हो, इससे परमगति पानेवाले अपने पुत्रके निमित्त शोक मत करो। हे वरारोहे! इस रात्रिके बीतने पर वह क्षुद्र अभिलाष करनेवाला शिशुघाती पापी सिन्धुराज जयद्रथ इष्टमित्र और बन्धु बान्धवोंके सहित अपने किये हुए अपराधका फल पावेगा। वह यदि इन्द्रपुरीमें प्रवेश करे, तो भी अर्ज्जुनके वाणोंसे जीता न बचेगा। कल्ह तुम सुनोगी, कि उसका शिर अर्ज्जुनके वाणसे कट कर गिरा हुआ है। इससे शोक त्याग करो, रुदन मत करो। हमलोग तथा दूसरे शस्त्रधारी वीर पुरुष जो गति पानेकी अभिलाष करते हैं, तुम्हारे बल और पराक्रमसे युक्त महारथ पुत्र अभिमन्युने उस ही गतिको प्राप्त किया है। अत्यन्त पराक्रमी महाबाहु तुम्हारा पुत्र अभिमन्यु स्वर्ग लोकमें गया है, उसके निमित्त तुम शोक मत करो। महा पराक्रमी महारथ महावीर अभिमन्यु पिता और मातृकुलका अनुगामी होकर सहस्रों शत्रुओंका नाश करके तब रणभूमिमें मरकर स्वर्ग लोकमें गया है। हे भद्रे। हे सुभद्रे।

तुम शोक त्याग कर पुत्रवधूको धीरज कराओ। कलह तुम बहुत बड़े अत्यन्त प्रिय सम्वादको सुनोगी इससे शोक करनेका इसमे कौनसा विषय है? अर्ज्जुनने जो प्रतिज्ञा करी है, वह अवश्य सिद्ध होवेगी, क्योंकि तुम्हारे पति जिस कार्य्यके करनेकी इच्छा करते हैं, वह कभी निष्फल नहीं होता। कलह सवेरा होने पर यदि मनुष्य सर्प पिशाच, देवता वा राक्षस भी रणभूमिमें सिन्धुराज जयद्रथको रक्षा करे तो भो वह तो जीवित वचेगा ही नहीं परन्तु उसके ये सम्पूर्ण रक्षक भी यमपुरीमें गमन करेंगे।

७५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महात्मा कृष्णके ऐसे वचनोंको सुनकर पुत्र शोकसे आरत हुई सुभद्रा अत्यन्त दुःखित होकर रुदन करने लगी। हा पुत्र! हा तात। मेरी कैसी अभाग्य है! तुम पिताके समान पराक्रमी होकर किस प्रकार रणभूमिमे मारे गये। हे तात। तुम्हारे श्यामवर्ण सुन्दर दांत और मनोहर नेत्रोंसे युक्त प्रसन्न मुखको इस समय रणभूमिकी धूलिसे छिपे हुए देखकर मैं कैसे धीरज धारण करूंगी हे पुत्र। तुम्हारा मुख गर्द्दन, भुजा और कन्धे कैसे मनोहर थे। तुम्हारा वक्षस्थल कैसा विशाल सुन्दर था, तुम्हारा उदर कैसा शोभायमान और सुडोल था। तुम बालक होकर भी शूरवीर योद्धा थे। तुम कभी पीछे नहीं हटते थे। इस समय सम्पूर्ण प्राणी तुमको मरे हुए पृथ्वीमें पड़े देख रहे हैं। हा पुत्र! तुम्हारे दोनों नेत्र क्या ही सुन्दर दीख पड़ते थे! तुम्हारा सम्पूर्ण अङ्गुत शरीर ही अत्यन्त मनोहर था, इस समय तुम्हारा वही शरीर अस्त्र-शस्त्रोंकी चोट से क्षत विक्षत हुआ है? सम्पूर्ण प्राणी तुम्हें रणभूमिमें उदित हुए दूसरे चन्द्रमाके समान देख रहे हैं। जो पहिले सुन्दर और कोमल वस्त्रोंसे युक्त उत्तम शय्या पर शयन करता था वही मेरा पुत्र अभिमन्यु आज अस्त्र शस्त्रोंसे क्षतविक्षत शरीर होकर पृथ्वी पर किस प्रकारसे शयन कर रहा है। जो महाबाहु वीर अभिमन्यु पहिले वाराङ्गनाओंकेसङ्ग शयन करता था वह रणभूमिमें गिर कर श्याल सियार आदि भयानक पशुओंके सङ्गमें कैसे शयनकर रहा है। पहिले सूत, मागध और वन्दीजन स्तुतिपाठ करते हुए प्रसन्नचित्त जिसकी उपासना करते थे आज उसकी बोली बोलनेवाले मांस भक्षी प्राणी उसकी उपासनाकर रहे हैं। हे विभु! हे कृष्ण! जब पाण्डव पाञ्चाल योद्धा लोग उसके सहायक थे तब वह किस प्रकारसे युद्धभूमिमें मारा गया? हे पुत्र हे पापरहित! मैं तुमको देखकर तृप्तका शेषफल नहीं प्राप्त कर सकी हाय! मैं बहुत ही अभागिनहूं मैं निश्चय ही आज यमलोकमें गमन करूगी। हाय! तुम्हारे बड़े बड़े नेत्र उत्तम केशोंसे युक्त मनोहर और मीठे बचनोंके कहनेवाले सुन्दर सुगन्धित मुखको मैं अब कैसे देख सकूंगी? हे पुत्र जिस कारणसे मैं अभागिनि तुम्हें देखकर तृप्त नहीं होसकी थी इससे आवो शीघ्र मेरी गोदीमें बैठकर दूधसे युक्त स्तनोंका पान करो। भीमसेन अर्ज्जुन धनुर्द्धारी सम्पूर्ण यदुवंशीय वीर योद्धा पाञ्चाल कैकेय चेदि मत्स्य और सृञ्जय देशीय योद्धा जब तुम्हें रणभूमिमें जाकर देख भी न सके तब उन सब लोगोंके बल और पराक्रमको धिक्कार है। आज मैं अभिमन्युको न देखकर शोक और दुखसे व्याकुल हो पृथ्वीको शोभारहित तथा सूनी देख रही हूं। हा! कृष्णके भानजे गाण्डीवधारी अर्ज्जुनके पुत्र और स्वय अतिरथी योद्धा थे, ऐसी अवस्थामें मैं तुम्हें कैसे रणभूमिमें गिरे हुए देख सकूंगी, हे पुत्र! तुम मेरे समीप स्वप्नमें मिले हुए धन

मान दिखाई देकर फिर नष्ट होगये। हा। मनुष्योंका प्राकृतिक जीवन पानीके बुल्लेकी भाँति चञ्चल और अनित्य हैं। हे पुत्र! तुम्हारी यह तरुणी भार्य्या तुम्हारे शोकसे अत्यन्त दुःखित और कातर हुई है मैं इसको बछड़े रहित गऊके समान कैसे रक्षा करूंगी? हा पुत्र। मैं फल दर्शन करनेके निमित्त अत्यन्त उत्सुक थी और तुम मुझे छोड़कर असमयमें ही चले गये। जब कृष्ण सहायता करनेके निमित्त उपस्थित थे तो भी तुम अनाथके समान युद्धभूमिमें मारे गये,—कालकी गति बुद्धिमानोंसे भी नहीं जानी जाती इसमें सन्देह नहीं है। हे पुत्र। यज्ञ करनेवाले दानी पुण्यात्मा धर्ममें निष्ठावान् ब्रह्मचारी पुण्य तीर्थोंमें कृतज्ञ विनययुक्त और गुरुकी सेवा करनेवाले पुरुषोंकी जो गति मिलती है, तुम्हें भी वही गति मिले। शूरवीर योद्धा लोग युद्धसे पीछे न हटके शत्रुओंका नाश करते हुए युद्धभूमिमें मरकर जिस गतिको प्राप्त करते हैं तुम भी वही गति प्राप्त करो। सहस्र गऊ दान करनेवाले यज्ञके निमित्त धन देनेवाले और इच्छानुसार गृह दान करनेवाले पुरुषोंकी जो उत्तम गति मिलती है तुम्हें भी वही गति मिले। हे पुत्र। जो लोग ब्राह्मण और शरणागत पुरुषोंको अभय करके उनका सत्कार तथा उन्हें योग्य वस्तुओंको अर्पण करते हैं उन पुरुषोंको जो उत्तम गति मिलती है तुम्हें भी वही गति प्राप्त होवे। जो पुरुष दण्डपानेवाले पुरुषोंको यथा उचित दण्ड देते हैं उनको जो श्रेष्ठ गति मिलती है, तुम्हें भी वही गति मिले। हे पुत्र! ध्याननिष्ठ योगी और मुनि लोग ब्रह्मचर्य्य व्रत करके जो गति प्राप्त करते हैं तुम्हें भी वही गति मिले। एक ही स्त्रीमें रत रहनेवाले पुरुषोंको जो गति मिलती है, तुम्हें भी वही गति मिले। हे पुत्र! राजाओंको उत्तम चरित्र और गृह आश्रमसे जो गति मिलती है तथा चारों आश्रम प्रतिपालक धर्मके अनुसार धर्म्म करनेवाले पुण्यात्मा पुरुषोंको जो गति मिलती है, और जो लोग दीन दुःखियोंके ऊपर कृपा करते हैं जो लोग सदा पुत्र-बालक और सेवकोंको अन्न और वस्त्रको विभाग करके उन्हें प्रदान करते हुए सब वस्तुओंको उपभोग करते हैं, और जो लोग धूर्त्ततासे निवृत्त रहते हैं उन सम्पूर्ण पुरुषोंको जो गति होती है, वही तुम्हारी भी होवे। हे पुत्र! गुरुकी सेवा करनेवाले व्रतमें निष्ठावान, धर्म्मात्मा पुरुषोंकी और जिसके घरसे अतिथि निराश होकर नहीं लौटजाते हैं,—उनको जो गति होती है गतिको तुमभी उसही कष्ट देनेवाले गतिको प्राप्त करो। हे पुत्र! व्यसन तथा और किसी विषयके उपस्थित होनपर शोक आदि क्लेशोंसे युक्त होकर भी जो पुरुष धैर्य्य अवलम्बन करके अपने आत्माको नियम अनुसार स्थित रखते हैं उन लोगोंकी जो गति मिलती है, तुम भी उस ही गतिको प्राप्त करो जो लोग माता पिताकी सदा सेवा टहल किया करते हैं, उन लोगोंको जो गति मिलती है, तुम भी उस ही गतिको प्राप्त करो! हे पुत्र जो मनस्वी पुरुष ऋतुकाल होनेपर अपनी भार्य्यामें समागम करते हैं, और पराई स्त्रीकी और दृष्टि नहीं करते, उन लोगोंकी जो गति होती है तुम्हारी भी वही गति होवे। हे पुत्र जो पुरुष अभिमान-रहित होकर सब प्राणियोंको प्रिय दृष्टिसे देखते हैं जो लोग दूसरेके मर्म्मपीड़क नहीं बनते जो क्षमावान् होते हैं, उन सम्पूर्ण पुरुषोंको जो गति होती है, तुम्हारी भी वही गति होवे। हे पुत्र! जो पुरुष मद्य मांस भक्षण करनेसे निवृत्त रहते हैं जो लोग क्रोध अभिमान मिथ्या व्यवहारोंको त्याग देते हैं, और जो दूसरेको दुःख देनेकी इच्छा नहीं करते उन लोगोंकी जो गति होती है तुम्हें वही गति मिले हे पुत्र! लज्जाशील सब शास्त्रोंके जाननेवाले ज्ञानसे तृप्त हुए जि-

न्द्रिय साधु पुरुषोंको जो गति मिलती है तुम्हें भी वही गति मिले।

हे राजन्! विराट राजाकी कन्या उत्तराके सहित सुभद्रा शोक और दुःखसे पीड़ित होकर इसी प्रकारसे विलाप करती हुई रुदन कर रही थी उस ही समयमें द्रौपदी वहांपर आके उपस्थित हुई। वे तीनो अत्यन्तही कातर होकर अपनी शक्तिके अनुसार रुदन औरविलाप करती हुई उन्मत्तके समान चेतरहित होकर पृथ्वीमें गिर पड़ी। पुण्डरीकाक्ष कृष्ण जल आदि सामग्रियोंके सहित वहांपर उपस्थित थे वह अत्यन्त ही दुःखिता स्त्रियोंको जलके छीटेसे सावधान कर समयके अनुसार धीरज धारण कराके दुःखित चेतरहितके समान रोदन करनेवाली, और कांपती हुई शरीरसे युक्त अपनी बहिन सुभद्रासे यह वचन बोले हे सुभद्रे! तुम पुत्रके निमित्त शोक मत करो,—हे द्रौपदी शोक त्याग करके उत्तराको धीरज प्रदान करो। क्षत्रियोंमें मुख्य अभिमन्युने प्रसिद्ध उत्तम गति प्राप्त किया है हे वरानने। तुम लोगोंके कुलमें और दूसरे जो सब मनस्वी पुरुष हैं वे सब लोग भी अभिमन्युके समान ही श्रेष्ठगति लाभ करें तुम्हारा पुत्र महाबलवान् अभिमन्युने अकेले ही जैसा कर्म्म किया है हम लोगोंके इष्ट मित्र और हम सब कोई भी युद्धभूमिमें वैसे ही कर्म्मोंको कर सकें। शत्रुनाशन महाबाहु कृष्ण अपनी बहिन सुभद्रा द्रौपदी और उत्तराको ऐसे ही बचनोंसे धीरज देकर अर्जुनके समीप उपस्थित हुए। हे राजन्! तिसके अनन्तर कृष्णने अर्जुन उनके भाईयों तथा दूसरे सम्पूर्ण राजाओंसे समयके अनुसार बातचीत करके अन्तःपुरमें प्रवेश किया और उन सम्पूर्ण राजाओंने भी अपने अपने शिविरोंमें गमन किया।

७६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, तिसके अनन्तर पुण्डरीकाक्ष श्रीकृष्णचन्द्रने अर्जुनके भवनमें जाकर आचमन करके विधिपूर्व्वक वैदूर्य्य मणियोंसे युक्त कुशोंकी शुभशय्या तैयार किया, फिर उत्तम उत्तम शस्त्रोंको चारो ओर उस शय्याके रक्षाके निमित्त स्थापित किया; और मङ्गलकारी सुगन्धित माला और शुभ वस्त्रोंसे उसे अलंकृत किया तिसके अनन्तर जब अर्जुनने आचमन किया तब परिचारिकाओंने रात्रिमें कही हुई रीतिके अनुसार शिवबलि उनके सम्मुख तैयार की। अनन्तर अर्जुनने प्रीतिपूर्व्वक उत्तम मालाओंसे कृष्णको अलंकृत करके रात्रिविहित सम्पूर्ण उपहारोंको उन्हें समर्पण किया। कृष्णने हंसके अर्जुनसे यह वचन कहा, अर्जुन तुम सुखसे शयन करो मैं तुम्हारे कल्याणके निमित्त गमन करता हूं, ऐसा वचन कहकर वसुदेवनन्दन कृष्णने अर्जुनके शिविरके दरवाजेपर पुरुषोंको खड़ाकरके दारुक सारथीके सहित अपने शिविरमें गमन किया। अनन्तर कृष्णने इस उपस्थित बृहत् कार्य्यकी चिन्ता करते हुए शुभ शय्यापर शयन किया। पृथ्वीके बीच राजाओंके भी स्वामी अर्जुनके प्यारे मित्र यदुवंशीय और पाण्डवोंके यशको बढ़ानेवाले भगवान् कृष्ण योग अवलम्बन करके अर्जुनके निमित्त उसके तेजकी वृद्धि और शोक तथा दुःखके दूर करनेवाले सम्पूर्ण उपायोंका अनुष्ठान करने लगे।

हे राजेन्द्र। उस रात्रिको पाण्डवोंके शिविरोंमें किसीको भी निद्रा न हुई सब पुरुष जागते हो रह गये। शत्रुनाशन महाबाहु गाण्डीव धनुष ग्रहण करनेवाले महात्मा अर्जुनने पुत्रशोकसे दुःखित तथा क्रुद्ध होकर जो सहसा जयद्रथके निमित्त प्रतिज्ञा किया है उसे वह किस प्रकारसे पूर्ण कर सकेंगे, ऐसा ही विचार करते हुए सम्पूर्ण पाण्डवोंकी ओरके योद्धा विलाप करने लगे। वे सब आपसमें कहने लगे, कि

महात्मा अर्जुनने इस अत्यन्त ही कठिन कर्म्मके करनेका निश्चय किया है; वह राजा जयद्रथ महाबली तथा पराक्रमी हैं और अर्जुनने पुत्र शोकसे क्रुद्ध होकर कठिन प्रतिज्ञा किया है। हम लोग विधातासे प्रार्थना करते है कि अर्जुन इस प्रतिज्ञासे पार होवे। दुर्य्योधनके सम्पूर्ण भ्राता महापराक्रमी है और सेना भी उनके समीपमें बहुतसी वर्त्तमान है उस समस्त सेनाको दुर्य्योधनने जयद्रथकी रक्षाके निमित्त नियुक्त किया हैं,—जो हो अर्जुन युद्धमें जयद्रथका वध करके कुशल पूर्व्वक फिर लौटे तथा शत्रुओंको पराजित करके अपनी प्रतिज्ञासे पार होजावे। अगर अर्जुन सिन्धुराज जयद्रथका वध नहीं करेंगेतो अवश्य ही अग्निमें प्रवेशकरके प्राणत्याग करेंगे; इसमें सन्देह नहीं है। अर्जुनके न रहने पर धर्म्मराज युधिष्ठिर कभी भी जीवित न रहेंगे क्योंकि अर्जुनहीके ऊपर सम्पूर्ण विजयके कार्य्यको निर्भर किये हैं। हमलोगोंने दान, होम वा दूसरे और भी जो फल दायक कर्म्मोंको किये हैं उन्हीं कर्म्मोंके बलोंसे अर्जुन शत्रुओंको जीतके अपनी प्रतिज्ञासे पार होवें।" अर्जुनके इसी प्रकारसे विजयकी अभिलाषकरके आपसमें वार्त्तालाप करते हुए उन सम्पूर्ण पुरुषोंको अत्यन्त कष्टसे रात्रि व्यतीत हुई।

उस ही रात्रिके समय जनार्द्दन कृष्ण निद्रासे सावधान होकर अपने दारुक सारथीसे वचन बोले हे दारुक। अर्जुनने पुत्रवधसे कातर और क्रुद्ध होकर जो जयद्रथके वध करनेके निमित्त प्रतिज्ञा किया है; दुर्य्योधनने इस प्रतिज्ञाको सुनकर मन्त्रियोंके सहित यह विचार किया है कि जिससे अर्जुन युद्धभूमिमें जयद्रथका वध न करसकें इसी उपाय करना चाहे इससे दुर्य्योधनकी जो सम्पूर्ण अक्षौहिणी सेना है वह जयद्रथकी रक्षा करेगी सब अस्त्रोंके विधिके जाननेवाले पुत्रसहित द्रोणाचार्य्य भी ... जयद्रथकी रक्षा करेंगे। युद्धभूमिमें द्रोणाचार्य्य जिसकी रक्षा करेंगे दैत्य-दानवोंके नाश करनेवाले देवतोंके स्वामी साक्षात् इन्द्रभी उस पुरुषका वध करनेमें उत्साह नहीं कर सकते। इससे अर्ज्जुन सूर्य्यके अस्त होने तक जिसमें जयद्रथका वध कर सकें मैं कल्ह वैसे ही उपायका विधान करूंगा मुझे कुन्ती-पुत्र अर्ज्जुनसे बढ़के स्त्री मित्र जाति बन्धुबान्धव कोई भी प्रिय नहीं हैं। हे दारुक! मैं इस जगत्को मुहूर्त मात्र भी अर्ज्जुन सूना न देख सकूंगा ऐसा होगा भी नहीं। मैं कल्ह अर्ज्जुनके निमित्त हाथी रथ घोड़ोंसे युक्त कौरवोंका सम्पूर्ण सेना और कर्ण तथा दुर्य्योधनको पराजित करके उनका संहार करूंगा। हे दारुक। कल्ह मैं अर्ज्जुनके निमित्त युद्धभूमिमें अपना पराक्रम करूंगा। मेरे बल वीर्य्य और पराक्रमको कल्ह तीनों लोकके प्राणी देखेंगे। कल्ह सहस्रों राजा तथा सैकड़ों राजपुत्र घोड़े हाथी और रथोंके सहित युद्धभूमिसे भाग जावेंगे। तुम देखोगे, कि कल्ह मैं पाण्डवोंके निमित्त युद्ध-भूमिमें क्रुद्ध होकर सम्पूर्ण राजाओंकी सेनाको चक्रसे विदारते हुए उन शत्रु-सेनाके पुरुषोंका वध करूंगा। जो मेरा प्यारा मित्र है इस बातको कल्ह देवता गन्धर्व्व सर्प पिशाच और राक्षस आदि सम्पूर्ण प्राणी भली भांति समझ जावेंगे। जो अर्ज्जुनसे शत्रुता करता है वह मेरा भी शत्रु है जो अर्ज्जुनका मित्र है वह मेरा भी मित्र ही है ऐसा क्या अर्ज्जुनको तुम मेरा आधा शरीर जानो। हे सूत! इससे रात बीतने पर सवेरे ही तुम मेरे उत्तम रथको शास्त्र विधिसे तैयार रखना। कौमोदकी गदा दिव्य शक्ति चक्र धनुष बाण तथा दूसरे रथके उपयोगी समस्त वस्तुओंको रथमें सज्जित करके रखना और रथ-भूमिमें शोभायमान मेरे वीर गरुड़ध्वजको भी रथके ऊपर लगा रखना। हे दारुक! ... ... और ... ...

समान प्रकाशमान दिव्य सुवर्णके आभूषणोंसे भूषित करके रथमें नियुक्त करके कवच पहन कर सावधान रहना। जब मेरे अत्यन्त भयङ्कर पाञ्चजन्य शंखके शब्दको सुनना उस ही समय शीघ्र रथको लेकर युद्धभूमिमें मेरे समीप आगमन करना। हे दारुक! मैं एक ही दिनमें अपने फूफ तथा फुफेरेभाइयोंके क्रोध और सम्पूर्ण दुःखोंको दूर कर दूंगा। अर्जुन जिसमें सम्पूर्ण धार्त्तराष्ट्रोंके सम्मुख होमें जयद्रथका वध कर सके मैं सब भांतिसे वही उपाय और यत्न करूंगा। हे सारथी। अर्जुन जिसको वध करनेके निमित्त यत्न करेंगे उस पुरुषको वह अवश्य युद्धमें जीतेंगे मैं ऐसी ही अभिलाष करता हूं।

दारुक बोला हे पुरुषोत्तम! आप जिसके सारथी हुए हैं उसकी पराजय किस प्रकार होसकती है। अवश्य ही उसकी जय होवेगी आपने जिस प्रकारसे मुझे आज्ञा दिया है, कल्ह सवेरे अर्जुनकी जयके निमित्त मैं वैसा ही कार्य्य करूंगा।

७७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले इधर अत्यन्त पराक्रमी कुन्तीपुत्र अर्जुन द्रोणाचार्य्य आदि महावीर शस्त्रधारी पुरुषोंके पराक्रमसे जयद्रथकी रक्षाका समाचार सुनके चिन्ता करने लगे, कि मेरी प्रतिज्ञा किस प्रकारसे पूर्ण हो सकेगी। यही सोचते विचारते हुए अर्जुन निद्रित होगये। महातेजस्वी कृष्ण शोक और दुःखसे युक्त अर्जुनके समीप स्वप्नोंमें उपस्थित हो अवस्थामें क्यों न रहें परन्तु कृष्णको अपने समीपमें आया हुआ देखकर भक्ति और प्रेम पूर्व्वक उठके खड़े होनेमें त्रुटि नहीं करते थे। इस समय उन्होंने कृष्णको देखकर स्वप्नमें भी बैठनेके वास्ते आसन प्रदान किया; परन्तु उस समयमें स्वयं बैठनेकी इच्छा नहीं करी। अनन्तर महातेजस्वी कृष्ण अर्जुनके मनके दुःखको जान कर बैठे उनसे यह वचन बोले। हे अर्जुन तुम शोक मत करो। क्योंकि कालकी बात जानी नहीं जाती काल ही सम्पूर्ण प्राणियोंको अवश्य होनेवाले विषयोंमें लगा देता है। हे बोलने वालोंमें श्रेष्ठ! तुम किस निमित्त इस विषाद करते हो उस वृत्तान्तको मेरे समीप वर्णन करो विद्वान् पुरुष किसी विषयमें भी कभी शोक नहीं करते; शोक ही कार्य्य विनाशका मूल है। इससे जो कार्य्य करने हैं, उसका अनुष्ठान करो, क्योंकि चेष्टा करनेवाले पुरुषोंको जो शोक होता है; वह उनका शत्रु होजाता है। शोकित होनेसे शत्रु लोग आनन्दित होते हैं तथा अपने सुहृद् बन्धु बान्धवोंको दुख उत्पन्न होता है, और शोक करनेवाला पुरुष अपना भी नाश करता है इससे तुम शोकसे व्याकुल क्यों होते हो।

महाबुद्धिमान् अपराजित, अर्जुनसे श्रीकृष्णने ऐसे वचन कहे तब अर्जुन उनसे अर्थयुक्त वचन बोले हे कृष्ण! "मैं अपने पुत्रके वध करनेवाले जयद्रथका वध करूंगा" यह जो मैंने बहुत कठिन प्रतिज्ञा किया है; उस ही प्रतिज्ञाके भङ्ग करनेके वास्ते धृतराष्ट्रके पुत्रोंके सम्पूर्ण महारथ वीर योद्धा लोग जयद्रथको अपने पीछे करके उसे रक्षा करेंगे। हे कृष्ण! उनकी दुःखसे जीती जाने योग्य ग्यारह अक्षौहिणी सेनाके बीच केवल एक अक्षौहिणी नष्ट हुई है; बाकी दश अक्षौहिणी से सहित सम्पूर्ण महारथ योद्धा उस दु जयद्रथको चारों ओरसे घेरकर उसकी करेंगे। जब सम्पूर्ण महारथ योद्धा दश अक्षौहिणी सेनाके सहित उसकी करेंगे तब मैं उसको और कैसे देख सकूंगा हे कृष्ण। अत्यन्त कठिन तथा दुःखसे सि होनेवाले कर्म्मको करनेके निमित्त मैं

मिं आया हुई है विशेष करके आजकल ह सूर्य्य हुत जलदी अस्त होजाते हैं; इसहीसे मैं ऐसा वन कह रहा हूं—कि "मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण न ो सकेगी और प्रतिज्ञा भङ्ग होनेसे मेरे समान हय कैसे जीवित रहसकेगा? महा तेजस्वी मननेवाले गरुड़ध्वज कृष्णने अर्ज्जुनके ऐसे ोकयुक्त वचनोंको सुनकर पूर्व्व और मुंह रके आचमन किया और फिर खड़े होकर र्ज्जुनके हितके निमित्त सिंधुराजके वधके पायमें उनसे वचन बोले हे अर्ज्जुन। देवोंके- व महादेवने युद्धमें जिस अस्त्रोंसे सम्पूर्ण दैत्योंका नाश किया था वही पाशुपत नामक नातन परम अस्त्र यदि तुमको इस समयमें दित होगा, तो तुम कल ह जयद्रथका वध र सकोगे; परन्तु यदि वह पाशुपत अस्त्र म्हें अविदित होवे तो तुम अपने मनही मन षभध्वज महादेवका ध्यान करो। हे अर्ज्जुन! म भक्तिपूर्व्वक उन ही देवोंके देव महादेवका यान करते हुए उनका जप करते रहो; तो म उन महेश्वरकी कृपासे उस पाशुपत नामक रम अस्त्रको पाओगे। अर्ज्जुनने श्रीकृष्णचन्द्रके चनको सुनकर पृथ्वीपर बैठकर आचमन कया और एकाग्रचित्त होकर महादेवका यान करने लगे। तिसके अनन्तर शुभ ब्राह्म मुहूर्त्तमें तैयार होकर अर्ज्जुन कृष्णके सहित महादेवके दर्शन करनेके वास्ते आकाश मार्गसे गमन करने लगे। जाते जाते प्रकाशमान, सिद्ध चारणोंसे सेवित हिमालय पर्व्वतके पुण्य-प्रशस्त गरि और मणिवान् पर्व्वतको देखा। अर्ज्जुन कृष्णके दहिने हाथको पकड़े हुए उनके सङ्ग वायुके समान वेगवान् गतिसे आकाश मार्गसे गमन करने लगे। उन दोनों महात्माओंने उत्तर [illegible] अनेक प्रकारके अद्भुत भावोंको देखते [illegible]; [illegible]। अनन्तर [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible],

नाना प्रकारसे मृग आदि सुन्दर पशु पक्षियोंसे युक्त जगह जगह पुण्यात्मा महात्माओंके आश्रम और मनोहर बोली बोलनेवाले पक्षियोंसे शोभायमान पद्मपुष्प और कुमुदिनी पुष्पोंसे युक्त मनको हरनेवाली गङ्गाको देखा। तिसके अनन्तर सोने रूपेके शृङ्गोंसे शोभित प्रकाशमान् फूले हुए मन्दारके वृक्षोंसे लहलहाते हुए मन्द- रगिरिका स्थान उन लोगोंको दृष्टिगोचर हुआ। तिसके अनन्तर उन्होंने अञ्जनवर्णके समान केशास पर्व्वतको ब्रह्मतुङ्ग और दूसरी कई एक नदी तथा जीवजन्तुओंसे युक्त देखा। फिर उत्तम एक सौ शृङ्गोंसे युक्त पर्व्वत, शयातिवन, पुण्य अश्वशिरका स्थान, अथर्व्वणका स्थान, अप्सरा और किन्नरोंसे शोभित पर्व्वतोंमें श्रेष्ठ वृषदंश और महामन्दरगिरि देख पड़े; कृष्णके सहित अर्ज्जुन उस ही पर्व्वत पर गमन करने लगे; वहांपर गमन करते हुए शुभ झरनोंसे युक्त सुवर्ण धातुसे भूषित चन्द्रकिरणके समान प्रका- शमान पुरस्वरूपीमालासे युक्त पृथ्वी और सम्पूर्ण रत्नोंके आकर स्थान (खान) समुद्रको देखा। फिर धनुषसे छूटे हुए बाण वेगके समान कृष्णके सहित अर्ज्जुनने विस्मित होकर आकाश पृथ्वी, स्वर्ग तथा अन्तरिक्षमें गमन किया। वहां पर ग्रह, नक्षत्र चन्द्रमा सूर्य्य और अग्निके समान प्रकाशमान एक सुन्दर पर्व्वत देखा। उस पर्व्वतपर जाके देखा, कि पर्व्वतके आगेके हिस्सेमें स्थित तपस्यामें रत महात्मा वृषभध्वज महादेव बैठे हुए हैं। त्रिशूल धारण करनेवाले जटाधारी भगवान् महा- देव अपने तेजसे सहस्रों सूर्य्यके समान प्रकाशित होरहे हैं। उनके वल्कल वसन मृग- छाला और उनका शरीर सहस्रों नेत्रोंसे विचित्र रूपका दिखाई दे रहा है। वह महातेजस्वी महादेव पार्व्वतीके सहित उसही प्रकाशमान पर्व्वतपर विराजमान होरहे हैं। सुन्दर भांति और मनोहर गान और बाजोंके [illegible]

सुन्दर पर्वत जगमगा रहा है ; पारिजातकी सुगन्धियोंसे वह शोभित होरहा हैं, और ब्रह्म-वादी मुनि लोग दिव्य स्तोत्रोंसे उस धनुर्द्धर अच्युत देवोंके देव सब प्राणियोंकी रक्षा कर-नेवाले महादेवकी स्तुति कर रहे है। अर्जुनके सहित महात्मा कृष्णने उनका दर्शनकरके पृथ्वीपर मस्तक झुकाकर उन्हें प्रणाम किया, और वह सम्पूर्ण लोकोंके रचनेवाले जन्मरहित ईशान अव्यय मनकी परम उत्पत्तिका स्थान, आकाशस्वरूप वायुरूपी ज्योतिके सागर जल धाराके आधारस्वरूप, पृथ्वीके परम प्रकृति, देवता, दानव, यक्ष और मनुष्योंके साधन योग-गम्य परब्रह्म ब्रह्मज्ञानियोंके निधिस्वरूप सम्पूर्ण चराचर जगतके उत्पन्नकर्त्ता और संहार करने-वाले, कालस्वरूप, क्रोधयुक्त महात्मा, इन्द्र और सूर्य्यके गुणोंको प्रकाशित करनेवाले देवोंके ईश्वर वृषभध्वजकी वचन मन और बुद्धिसे उनकी स्तुति करने लगे। विद्वान् पुरुष सूक्ष्म अध्यात्म उपदेशोंसे जिनका ध्यान करते हैं, कृष्ण और अर्जुन उस ही अज अविनाशी कारणात्मा महादेवके शरणमें उपस्थित हुए। अर्जुनने उनको भूत भविष्य और वर्त्तमान कालके उत्पा-दक जानकर बार बार स्तुति करके उन्हें प्रणाम किया। तिसके अनन्तर सम्पूर्ण देवतोंके स्वामी महादेव उन दोनों महात्मा नर-नारायणको अपने समीपमें आये हुए देखके प्रसन्नतापूर्व्वक हंसकर उनसे यह वचन बोले, हे पुरुषश्रेष्ठ। तुम लोगोंका शुभ आगमन हुआ है तुम लोगोंकी थकावट दूर होवे, तुम लोग उठके खड़े होजाओ, हे वीर पुरुषो! तुम्हारे मनमें कौनसी अभिलाषा है, वह शीघ्र ही मुझसे प्रकट करो, तुम लोग जिस कार्य्यके निमित्त मेरे समीपमें आये हो उसे मैं सिद्ध करूंगा,--- तुम लोग अपने कल्याणके निमित्त जिस वस्तुकी प्रार्थना करोगे, उसे मैं अवश्य प्रदान करूंगा। तिसके अनन्तर महाबुद्धिमान् कृष्ण और अर्जुन उनके वचनोंको सुनके खड़े हुए और [हाथ] जोड़के विनयपूर्व्वक स्तुति वचनोंसे उनको [स्तुति] करने लगे—हे प्रभो। तुम भव सर्व्वात्मा [वर] देनेवाले पशुपति नित्य उग्र और कपर्दी [हो]; हम लोग तुम्हें नमस्कार करते है। तुम म[हा]देव भीम त्र्यम्बक, शान्त ईशान भगनाम [के] नाशक और अन्धकासुरके संहार करनेवाले [हो] इससे तुम्हें नमस्कार है। तुम कुमार [स्वामि] कार्त्तिकके पिता, नीलग्रीव, वेधा पिनाकी [हवि] दान करने योग्य पात्र सत्य और सर्व्वदा वि[भु हो] इससे तुम्हें नमस्कार है। तुम विलो[हित] लोहितवर्ण, धूम्ररूप अपराजित [नित्य] त्रिशूलधारी और दिव्य नेत्रवाले हो इससे [हम] लोग तुम्हें नमस्कार करते है। तुम हर्त्ता [हो], त्रिनेत्र व्याधिरूप वसुरेता अचिन्त्य अम्बि[कापति] और सब देवोंके देव हो। इससे तुम्हें नम[स्कार है]। तुम वृषभध्वज पिङ्ग जटाधारी जलके बीच [तप] करनेवाले ब्रह्मण्य और अजित हो ; इससे [हम] लोग तुम्हें नमस्कार करते है। विश्वआत्मा, [विश्व] स्रष्टा, और संसारके बीच व्यापक होके [स्थित] होरहे हो इससे हम तुम्हें नमस्कार [करते] हैं। तुम सबके सेव्य और सम्पूर्ण प्राणी [तुम्हारे] सेवक हैं—तुम्हें बारम्बार नमस्कार है। [हे] शिव। तुम वेदमुख सब प्राणियोंके ईश्वर [बृह]स्पति और प्रजापति हो ; इससे हम तु[म्हें] प्रणाम करते हैं। तुम जगत्के नियन्ता [और] महत्तत्वोंके नियन्ता और सहस्रशिरा [हो], तुम्हारे क्रोधसे सहस्रों जीवोंका संहार [होता] है, तुम सहस्र नेत्र और सहस्र चरणवाले [हो]; इससे हम लोग तुम्हें नमस्कार करते हैं। [हे] प्रभु! तुम असंख्येय कर्म्मवाले हिरण्यवर्ण [हो], कवचधारी और भक्तोंके ऊपर सदा [दया] करनेवाले हो, इससे तुम हम दोनोंकी [अभिलाषा] सिद्ध करो।

सञ्जय बोले, श्रीकृष्ण चन्द्र और [अर्जुन] उस समय अस्त्र प्राप्त करनेकी इच्छ[ासे]

प्रकारसे स्तुति करते हुए महादेवको प्रसन्न किया ।

७८ अध्याय समाप्त ।

सञ्जय बोले, अनन्तर अर्ज्जुनने प्रसन्नचित्त होकर प्रकाशित नेत्रसे तेजके आधार वृषभध्वज महादेवका दर्शन किया, और उस अवश्य करने योग्य रात्रिके समयमें जो उपहार कृष्णको निवेदन किया था उसे महादेवके समीपमें अवलोकन किया । अनन्तर अर्ज्जुन शङ्कर और कृष्णकी मनही मन पूजा करके यह वचन बोले मैं दिव्य अस्त्रपानकी इच्छा करता हूं । जगत्के स्वामी महादेव अर्ज्जुनकी प्रार्थना सुनकर हंसके कृष्ण अर्ज्जुनसे यह वचन बोले हे पुरुषश्रेष्ठ दोनो वीर ! तुम्हारे मनकी अभिलाष मुझे विदित है हे तुमलोग जो अभिलाषा करके आये हो, तुम्हें वही वर प्रदान करता हूं। हे शत्रुओंके नाश करनेवाले! यह निकटहीमें जो अमृतमय दिव्य सरोवर है उसमें दिव्य धनुष और बाण पहिले ही रक्खा हुआ है, इसहीसे दिव्य पुरुषने पहिले युद्धमें मैंने देवताओंके शत्रु दैत्योंका नाश किया था; तुम लोग उस ही धनुष और बाणको उस सरोवरमेंसे उठाकर मेरे समीप लाओ ।

ऐसा वचन सुनकर दोनो वीरोंने जो आज्ञा कहके महादेवके पारिषदोंके सहित दिव्य आश्चर्योंसे युक्त उस दिव्य सरोवर [illegible] प्रस्थान किया । वृषभध्वज, [illegible] सरोवर [illegible] पुण्यजनक सरोवर [illegible] था, नरनारायण दोनो ऋषि निर्भय [illegible] उस सरोवर पर जा पहुंचे । वे [illegible] समान उस सरोवर पर पहुंचके [illegible] इस सरोवरमें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] समान

तेजस्वी तथा अत्यन्त श्रेष्ठ है, और उनके शरीरसे अत्यन्त ही ज्वाला निकल रही है । तिसके अनन्तर वेद जाननेवाले कृष्ण अर्ज्जुनने आचमन करके हाथ जोड़ उनके समीप खड़े हुए और सब भांतिसे अविनाशी वृषभध्वज महादेवके शरणागत होकर विनय पूर्व्वक शतरुद्रि श्रुतिका पाठ करने लगे । तब वे दोनो महाभयङ्कर सर्प रुद्र महात्म्य सुनकर अपने सर्प रूपको त्याग कर शत्रुओंके नाश करनेवाले धनुष और बाणरूपसे दीख पड़े । तब कृष्ण और अर्ज्जुनने उस प्रकाशमान धनुषबाणको ग्रहण करके महात्मा वृषभध्वज महादेवको समर्पण किया । उस समय पिङ्गलवर्णवाले नेत्रसे युक्त पीले और काले वर्णके शरीरसे शोभित तपस्याके आधार स्वरूप एक ब्रह्मचारी बलवान् पुरुष महादेवके समीपसे उठके उस श्रेष्ठ धनुष बाणको ग्रहण किया । अनन्तर उसने बायां पांव आगे और दाहिना पांव पीछे करके स्थिरचित्तसे सावधान होकर उस धनुषको विधिपूर्व्वक आकर्षण करके रोदा चढ़ाया । उस समय महा पराक्रमी अर्ज्जुनने जिस प्रकारसे मौर्व्वी आकर्षण करी गई जैसे मुट्ठीसे धनुष धारण किया गया, जिस भांतिसे चरण रखके खड़ा होना पड़ता है,— वह सम्पूर्ण देखकर और शिवके कहे हुए मन्त्रको सुनकर उस अस्त्रको ग्रहण किया । उस अत्यन्त बलवान् वीर ब्रह्मचारी पुरुषने उस बाणको धनुष पर चढ़ाके उस ही सरोवरमें छोड़ दिया, अनन्तर उस धनुषको भी फिर उस ही सरोवरमें फेंक दिया तिसके अनन्तर स्मरणशक्तिवाले अर्ज्जुनने महादेवको प्रसन्न जानकर "वनमें शिवने जो मुझे वरदान किया था, वह सार्थक होवे ! " ऐसे वचन कहते हुए मनही मन चिन्ता करने लगे महादेवने उनके मनका अभिप्राय जानकर उन [illegible] [illegible] [illegible] पर [illegible]

दिव्य पाशुपत अस्त्रको सम्पूर्ण प्राणियोंके ईश्वर महादेवके निकटसे फिर पाकर पराक्रमी अर्जुनके रोएं खड़े हो गये, अनन्तर अर्जुनने अपनेको कृतकार्य्य समझा। महाभाग असुरोंके नाश करनेवाले इन्द्र और विष्णु जिस प्रकार महादेवकी अनुमतिसे जम्भासुरके वधकेवास्ते गमन किया था; उस ही प्रकारसे कृष्ण और अर्ज्जुन दोनों वीर महादेवकी वन्दना करके प्रसन्न चित्तसे उसही समय उनकी अनुमति तथा आज्ञा पाकर अत्यन्त आनन्दित होकर अपने शिविरमें आकर उपस्थित हुए।

७९ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले हे राजेन्द्र! कृष्ण और दारुक सारथीकी ऐसी ही बार्त्तालापमें रात्रि व्यतीत हुई; और सवेरा हुआ, राजा युधिष्ठिर भी निद्रासे जागके सावधान हुए। उस समयमें पुरुषोंकी करतालिसे युक्त मीठे स्वरके सहित उत्तम गीतगानेवाले सूत मागध वन्दी माधुपार्किक, (मधुपर्क प्रदान करनेके समय स्तुति पाठ करनेवाले) बैतालिक (राजाको निद्रासे जगानेके समय प्रातःकालकी स्तुतिपाठ करनेवाले) ये सब कोई पुरुषश्रेष्ठ महाराज युधिष्ठिरकी स्तुति करने लगे। गीत गानेवाले तथा नृत्य करनेवाले राग-रागनियोंसे युक्त मधुर और मनोहर स्वरोंके सहित कुरुवंशकी स्तुतिसूचक गीतोंको गाते हुए नृत्य करनेलगे। बाजा बजानेवाले अच्छीभांतसे शिक्षित पुरुष लोग झांझी मृदङ्ग भेरी ढोल सहनाई नरसिंहे शंख और नगाड़ा आदि बाजोंको बजाने लगे। वह बादलके गर्ज्जनेके समान महाघोर शब्द आकाशको स्पर्श करने लगा, जब इस प्रकारसे बादलके गर्ज्जने समान भयङ्कर शब्द होने लगा तब महाराज युधिष्ठिर निद्रासे सावधान हुए। वह मणिजटित उत्तम शय्या पर शयन कर रहे थे— शय्यासे उठके आवश्यक कार्य्योंको करके स्नान करनेके स्थानमें गये। तिसके अनन्तर श्वेत वस्त्रोंको पहरानेवाले आठ सौ पुरुष जलसे भरे हुए सुवर्णके कलशोंको लेके राजा युधिष्ठिरको स्नान कराने लगे। अनन्तर राजा युधिष्ठिर उत्तम आसन पर बैठ कर चन्दन आदि सुगन्धित वस्तुओंसे युक्त पवित्र जलसे स्नान करने लगे। उत्तम शिक्षासे युक्त सेवकोंने उबटन आदि वस्तुओंसे उनके शरीरको मलते हुए सुगन्धित जलसे स्नानकराया। अनन्तर महाबाहु महाराज युधिष्ठिरके सेवकोंने उनके मस्तक तथा केश जलको सुखानेके निमित्त हंसके समान श्वेत वस्त्रको शिरपर डालके अच्छी प्रकारसे निचोड़ केशोंको सुखाया; अनन्तर उनके शरीरमें सुगन्धित चन्दन आदि वस्तु लगाई गयीं, वह उत्तम वस्त्र माला धारण करके तयार होके श्रेष्ठ आसन पर बैठ कर सन्ध्या उपासन प्रभृति नित्य कर्म्मोंका अनुष्ठान करनेके लिये नित्य कर्म्मोंका अनुष्ठान करके मन्त्रोंका जप करने लगे। तिसके अनन्तर प्रकाशमान अग्नि होत्रके स्थानमें जाकर मन्त्रउच्चारण करके अग्निमें आहुति पवित्र समिधा प्रदान करके अग्नि देवताकी पूजा अर्च्चना करके अग्निहोत्र गृहसे बाहर हुए।

पुरुषोंमें श्रेष्ठ महाराज युधिष्ठिरने तिसके अनन्तर उस स्थानके दूसरे हिस्सेसे जाकर देखा कि वहां पर सहस्रों सेवकोंके सहित वेद जाननेवाले वृद्ध सम-दम आदि गुणोंसे युक्त वैदिक व्रत करनेवाले ब्रह्मचारी तपस्या करनेवाले ये ब्राह्मण और उनसे अतिरिक्त आठ सहस्र ऊपर पुरवासी तथ नगर वा ग्रामवासी ब्राह्मण लोग उपस्थित थे। महाबाहु महाराज धर्म्म पुत्र युधिष्ठिरने उन सम्पूर्ण ब्राह्मणोंको चन्दन अक्षत फूल फल घृत मधु आदिसे पूजा करके और उनसे मङ्गल वाचन (स्वस्तिवाचन) कराके और उन हर एक ब्राह्मणोंको सुवर्ण नि

स्वर्ण मुद्रा) आभूषणोंसे भूषित एक एक सौ ...ड़े कई एक सोनकेसींग और रूपेके खुरसे युक्त ...बछड़ेके सहित दूध देनेवाली कपिला गऊ ...ब्राह्मणोंको उनकी इच्छाके अनुसार दक्षिणा प्रदान करके उन्हें प्रदक्षिणाकिया। अनन्तर स्वस्तिक, वर्द्धमान नन्द्यावर्त्त काञ्चन माला ...जलसे भरे हुए घड़े जलती हुई अग्नि अक्षतोंसे भरे हुए अक्षय पात्र अत्यन्त मनोहर सुन्दरी, आभूषणोंसे अलंकृत सब लक्षणोंसे युक्त कन्याओंका समूह दही घृत मधु जल और मङ्गल ...सूचक सम्पूर्ण पक्षी, इन सम्पूर्ण माङ्गलिक द्रव्य और इसके अतिरिक्त दूसरी भी पूजनके योग्य बहुतसी वस्तुओंके दर्शन तथा स्पर्श करते हुए स्थानके बाहरी हिस्से में आकर उपस्थित हुए। उन महाबाहु महाराज युधिष्ठिरके वहां पर उपस्थित होते ही सेवकोंने विश्वकर्माके बनाये हुए मोती और वैदूर्य्य मणियोंसे युक्त उत्तम वस्त्रोंसे भूषित, सब भांतिसे सुन्दर दिव्य सिंहासन उनके बैठनेके निमित्त प्रदान किया। महात्मा धर्म्मराज युधिष्ठिर जब सिंहासन पर बैठे तब सेवकोंने उनके यथायोग्य ...अङ्गोंमें महामूल्यवान् सफेद आभूषणोंको पहना दिया। महाराज! कुन्तीपुत्रमहात्मा युधिष्ठिर ...व मुक्ता आदि सम्पूर्ण आभूषणोंसे भूषित ...कर सिंहासन पर बैठे तब उनका रूप तथा ...नकी सुन्दरताई शत्रुओंके शोककी बढ़ाने ...। ... ... उनके समीप खड़े होकर ...ओं ... शोभित चन्द्रकिरणोंके समान शोभमान सफेद चंवरका लेकर डुलाने लगे ...त चंवरके इधर उधर होलने पर वह बादलसे युक्त ...के समान प्रकाशित होने लगे। ... मागध ... सुत सिंहासन उनकी वन्दना ...ने, और गन्धर्व्वोंके समान गीत गान- ... पुरुष ... सुन्दर गीतोंको गान ... ... शब्द, रथोंके ... शब्द,

घोड़ोंको हिनहिनाहट और उनके टापोंके शब्द चारों ओर सुनाई देने लगे। हाथियोंके चलने पर उनके होदे परसे लटकते हुए घण्टाका शब्द सुनाई देने लगा, मनुष्योंके पांवके धक्केसे पृथ्वी कांपने लगी। अनन्तर कुण्डल, कवच और अस्त्रधारी एक युवा द्वारपालने सर्व्वसाधरण पुरुषोंसे भरी हुई उस राजसभामें आकर दोनों घुटनोंको झुका कर पृथ्वीको स्पर्श किया और धर्म्मराज युधिष्ठिरको प्रणाम करके यह वचन बोले,—महाराज। हृषीकेश कृष्ण आये हैं। पुरुषश्रेष्ठ राजा युधिष्ठिरने माधवको सभामें लानेके निमित्त आज्ञा किया, अनन्तर उनका स्वागत पूछ कर अत्यन्त उत्तम आसन और अर्घ प्रदान किया तिसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर वृष्णिनन्दन कृष्णको अपने निकट लिवा लाये, और उन्हें श्रेष्ठ आसन पर बैठाया। अनन्तर कृष्णसे सत्कारपाकर फिर उनकी पूजा अर्चना करने लगे।

८० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, कुन्तीपुत्र राजा ... हुए अत्यन्त प्रसन्न होकर देवकी ... जनार्द्दन कृष्णको आनन्दित करके यह ... बोले हे मधुसूदन! तुम्हें सुखसे ... हुई थी न? तुमने सुख पूर्व्वक रात्र ... की है न? तुम्हें सम्पूर्ण ... ... हुआ है?

अनन्तर वसुदेव... ... भी युधिष्ठिरसे उनके योग्य ... ... लगे, वे दो... ..., महात्मा ... ... वार्त्तालाप ... रहे थे, ... आके ... किया, "... ... ..." ... राजाने ... ...

धृष्टकेतु द्रुपद, शिखण्डी नकुल, सहदेव, चेकितान, कैकेयराज युयुत्सु, पाञ्चाल उत्तमौजा युधामन्यु द्रौपदीके पांचो पुत्र और दूसरे बहुतेर क्षत्रिय पुरुष राजा युधिष्ठिरकी आज्ञाके अनुसार उस सभामें आकर उत्तम उत्तम शुभ आसनोंपर बैठ गये। महाबलशाली महातेजस्वी महात्मा कृष्ण और सात्यकि एक ही आसनपर बैठे। तिसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर उन सम्पूर्ण राजाओंके सम्मुख पुण्डरीक नेत्रवाले मधुसूदन कृष्णसे मधुर वचनोंसे वार्त्तालाप करते हुए यह वचन बोले। हे मधुसूदन! जैसे देवता लोग केवल सहस्र नेत्रवाले देवराज इन्द्रके आश्रयसे वास करते हैं। हम लोग भी उस ही प्रकारसे तुम्हारे आश्रयसे युद्धमें विजय करने तथा परम सुख प्राप्त करनेका अभिलाष करते हैं। तुम हम लोगोंके राज्य नाश, शत्रुविद्रोह और सम्पूर्ण नाना प्रकारके क्लेशोंको जानते हो। हे सबके स्वामी! हे मधुसूदन! हे भक्तवत्सल! हम सब लोगोंका सुख तुम्हारे ही अधिकारमें है, और तुम ही हम लोगोंके सब विषयोंमें उपाय स्वरूप हो। हे कृष्ण! जिस प्रकारसे तुम्हारे ऊपर लोगोंका मन लगा रहे तुम वैसे ही उपायका विधान करो, और जिस प्रकारसे अर्जुनकी करी हुई प्रतिज्ञा पूर्ण होवे तुम उस ही उपायका विधान करो। हे कृष्ण! हम लोग इस दुःखरूपी महासमुद्रसे पार होनेकी अभिलाष करते हैं, तुम नौकारूपी होकर इस दुःखरूपी घोर समुद्रसे हम लोगोंको पार उतारो। हे कृष्ण! युद्धस्थलमें सारथी यत्नवान् होकर जिस प्रकार कार्य्योंको कर सकता है, शत्रुओंके बधके निमित्त तैयार हुआ रथी वैसे कार्य्योंको नहीं कर सकता है। हे महाबाहो जनार्दन कृष्ण। जैसे सम्पूर्ण आपदाओंसे तुम यदुवंशियोंकी रक्षा करते रहते हैं हम लोगोंको भी इस महाघोर आपदासे उसही भांतिसे उबारनेके निमित्त चिन्ता करके अपना चित्त लगाओ। हे शंख-चक्र गदा ग्रहण करनेवाले। हम लोग इस समयमें नौकारहित होकर इस अगाध कुरुसागरमें डूब रहे हैं तुम नौकारूप होकर हम लोगोंको इस महा घोर कुरुसेनारूपी समुद्रसे पार करो। हे सम्पूर्ण देवेश ईश्वर। हे सनातन पुरुष। हे विश्व संहार करनेवाले। हे विष्णु। हे जिष्णो। हे हरे। हे कृष्ण! हे वैकुण्ठ वासिन्! हे पुरुषोत्तम! तुम्हें नमस्कार है। देवऋषि नारद तुम्हें पुरातन ऋषिसत्तम शार्ङ्ग धनुषधारी और वर देनेवाले नारायण कहके तुम्हारे चरित्रोंका वर्णन किया करते हैं। हे माधव! उन नारद मुनिके वचनोंको तुम सत्य करो! बोलनेवालोंमें श्रेष्ठ पुण्डरीक नेत्रवाले कृष्ण धर्मराज युधिष्ठिरसे राजसभाके बीच इस ही प्रकारसे पूजित तथा सत्कृत होकर बादलके समान गम्भीर स्वरसे धर्मराज युधिष्ठिरसे यह वचन बोले, हे पृथापुत्र धर्मराज युधिष्ठिर! अर्जुनके समान धनुर्धारी योद्धा इन्द्र लोक आदि किसी लोकमें भी नहीं है। वह पराक्रमी, सब अस्त्रशस्त्रोंके मर्मको जाननेवाले, सब समय युद्धमें पराक्रम प्रकाश करनेकी अभिलाष करनेवाले, मनुष्योंके बीच परम तेजस्वी, क्रोधी, युवा अवस्थावाले, वृषभके समान कन्धेसे युक्त, लम्बी भुजावाले महाबलवान् महाबली पराक्रमी सिंहकी चालसे गमन करनेवाले और श्रीमान् तथा महातेजस्वी हैं, वह अवश्य ही तुम्हारे शत्रुओंका नाश करेंगे। वह जिस प्रकार धृतराष्ट्र-पुत्रोंकी सेनाको अग्निके समान भस्म कर सकें मैं भी वैसा ही यत्न करूंगा। आज अर्जुन क्षुद्र अभिलाष करनेवाले पापी अभिमन्युके बध करनेवाले जयद्रथके शिरको काटके अपने बाणोंसे अदृश्य पथमें फेंक देंगे। कौवे बगुले बाज आदि मांस खानेवाले आज लाखों पक्षी और भेड़िये सियार आदिक मांस खानेवाले भयङ्कर पशु आज उसका मांस भक्षण करेंगे। महाराज! यदि इन्द्रके सहित सम्पूर्ण

देवता भी उसकी रक्षा करें, तौभी वह आज युद्धभूमिमें मरकर यमपुरीमें गमन करेगा। हे राजन्! अर्ज्जुन आज सिन्धुराज जयद्रथको वध करके तुम्हारे निकट आवेंगे, तुम आनन्दित होकर शोक और चिन्ता त्याग दो।

८१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले हे राजेन्द्र! वे दोनों आपसमें इसी प्रकार वार्त्तालाप कररहे थे उस ही समय अर्ज्जुन इष्ट मित्रोंके सहित भरतश्रेष्ठ महाराजा युधिष्ठिरसे मुलाकात करनेकी इच्छासे वहांपर उपस्थित हुए। वह उस सभा-मण्डपके भीतर जाकर महाराज युधिष्ठिरको प्रणाम करके आगे खड़े हुए। राजा युधिष्ठिरने उठके उन्हें प्रीतिपूर्व्वक आलिङ्गन किया। उन्होंने अर्ज्जुनके मस्तकको सूंघा और अपनी दोनों भुजाओंसे उन्हें आलिङ्गन किया फिर आशीर्व्वाद देकर हंसते हुए उनसे यह वचन बोले हे अर्ज्जुन! तुम्हारे शरीरकी कान्ति इस प्रकारसे दीख पड़ती है और जनार्द्दन कृष्णको भी मैं जिस भांतिसे प्रसन्न देखता हूं; इससे मुझे निश्चय ही बोध होता है, कि युद्धभूमिमें तुम्हारी अवश्य विजय होगी। तिसके अनन्तर अर्ज्जुन बोले महाराज! मङ्गल होवे; मैंने श्रीकृष्णकी कृपासे एक महा आश्चर्ययुक्त स्वप्न देखा है। ऐसा कहकर अर्ज्जुनने सुहृदमित्रोंको धीरज देनेके निमित्त जिस प्रकारसे रात्रिके समयमें स्वप्न देखा, और जिस भांतिसे महादेव त्रिनेत्रवाले [illegible]का दर्शन किया था, वह सम्पूर्ण [illegible] विस्तारपूर्व्वक वर्णन किया। तब वहां [illegible] सब राजा तथा वारवीर [illegible] होकर धन्य धन्य करते हुए [illegible] महादेव [illegible] प्रणाम किया।

अनन्तर सम्पूर्ण सुहृद-मित्र राजा युधिष्ठिरकी आज्ञाके अनुसार शीघ्रताके सहित अत्यन्त क्रुद्ध होकर सर्पपूर्व्वक युद्ध करनेके निमित्त अपने शिविरोंसे बाहर हुए। सात्यकि, कृष्ण और अर्ज्जुनने राजा युधिष्ठिरको प्रणाम करके प्रसन्नतापूर्व्वक उनकी सभासे निकलके युद्धके निमित्त प्रस्थान किया। महा पराक्रमी सात्यकि और श्रीकृष्णचन्द्र एक ही रथपर चढ़के अर्ज्जुनके शिविरपर उपस्थित हुए। हृषीकेश कृष्ण वहां पहुंचकर रथियोंमें श्रेष्ठ अर्ज्जुनके वानर ध्वजासे युक्त उत्तम रथको सारथीकी भांति भली भांति सज्जित करने लगे। बादल गर्ज्जनेके समान शब्दसे युक्त वह रथ उत्तम भांतिसे तपाये हुए सुवर्णसे सज्जित होकर ऐसे शोभित होने लगा; जैसे भोरके समयमें सूर्य्य प्रकाशित होता है। तिसके अनन्तर पुरुषसिंह कृष्णने स्वयं सज्जित होकर सन्ध्या उपासना आदि नित्यकर्म्मोंसे निवृत्त हुए अर्ज्जुनके समीपमें जाकर रथ सज्जित होनेका सम्वाद सुनाया। सुवर्णभूषित कवच वाण धनुष और किरीट धारण करनेवाले अर्ज्जुन उस रथके समीप जाकर उसकी प्रदक्षिणा करने लगे? अनन्तर विद्या वृद्ध अवस्थामें बड़े उत्तम कर्म्म करनेवाले जितेन्द्रिय परन्तप महारथ तेजस्वी अर्ज्जुनको विजयके निमित्त उन्हें शुभ आशीर्व्वाद प्रदान करने लगे। अनन्तर सूर्य्य जैसे उदयाचल पर्व्वतपर आरोहण करते हैं वैसे ही अर्ज्जुन जय युक्त युद्धमें विजय देनेवाले वेदमन्त्रोंसे अभिमन्त्रित होकर स्वर्ण वर्म्मसे भूषित होके, उस प्रकाशमान रथपर चढ़े, सुवर्णभूषित कवचधारी अर्ज्जुन सुवर्ण खचित उस उत्तम रथके ऊपर ऐसे शोभित हुए जैसे सुमेरु [illegible] शिखर शोभायमान करते हैं। [illegible] और [illegible] रथपर चढ़े। [illegible] राजाके [illegible] दोनों [illegible] मित्र हुए [illegible] और [illegible]

धृष्टकेतु द्रुपद, शिखण्डी नकुल, सहदेव, चेकितान, केकेयराज युयुत्सु, पाञ्चाल उत्तमौजा युधामन्यु द्रौपदीके पांचो पुत्र और दूसरे बहुतेरे क्षत्रिय पुरुष राजा युधिष्ठिरकी आज्ञाके अनुसार उस सभामें आकर उत्तम उत्तम शुभआसनोंपर बैठ गये। महाबलशाली महातेजस्वी महात्मा कृष्ण और सात्यकि एक ही आसनपर बैठे। तिसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर उन सम्पूर्ण राजाओंके सम्मुख पुण्डरीक नेत्रवाले मधुसूदन कृष्णसे मधुर वचनोंसे वार्त्तालाप करते हुए यह वचन बोले। हे मधुसूदन! जैसे देवता लोग केवल सहस्र नेत्रवाले देवराज इन्द्रके आश्रयसे वास करते है। हम लोग भी उसी प्रकारसे तुम्हारे आश्रयसे युद्धमें विजय करने तथा परम सुख प्राप्त करनेका अभिलाष करते है। तुम हम लोगोंके राज्य नाश, शत्रुविद्रोह और सम्पूर्ण नाना प्रकारके क्लेशोंको जानते हो। हे सबके स्वामी! हे मधुसूदन! हे भक्तवत्सल! हम सब लोगोंका सुख तुम्हारे ही अधिकारमें है, और तुम ही हम लोगोंके सब विषयोंमें उपाय स्वरूप हो। हे कृष्ण! जिस प्रकारसे तुम्हारे ऊपर लोगोंका मन लगा रहे तुम वैसे ही उपायका विधान करो, और जिस प्रकारसे अर्जुनकी करी हुई प्रतिज्ञा पूर्ण होवे तुम उसी ही उपायका विधान करो। हे कृष्ण! हम लोग इस दुःखरूपी महासमुद्रसे पार होनेकी अभिलाष करते हैं, तुम नौकारूपी होकर इन दुःखरूपी घोर समुद्रसे हम लोगोंको पार उतारो। हे कृष्ण! युद्धस्थलमें सारथी यत्नवान् होकर जिस प्रकार कार्य्योंको कर सकता है, शत्रुओंके वधके निमित्त तैयार हुआ रथी वैसे कार्य्योंको नहीं कर सकता है। हे महाबाहो जनार्द्दन कृष्ण। जैसे सम्पूर्ण आपदाओंसे तुम यदुवंशियोंकी रक्षा करते रहते हो हम लोगोंको भी इस महाघोर आपदासे उसी भांति उद्धार करनेके निमित्त चिन्ता करके अपना चित्त लगाओ। हे शंख-चक्र गदा ग्रहण करनेवाले। हम लोग इस समयमें नौकारहित होकर इस अगाध कुरुसागरमें डूब रहे है तुम नौकारूपी होकर, हम लोगोंको इस महा घोर कुरुसेनारूपी समुद्रसे पार करो। हे सम्पूर्ण देवोंके ईश्वर। हे सनातन पुरुष। हे विश्व संहार करनेवाले। हे विष्णो। हे जिष्णो। हे हरे। हे कृष्ण! हे वैकुण्ठवासिन्! हे पुरुषोत्तम। तुम्हें नमस्कार है। देवऋषि नारद तुम्हें पुरातन ऋषिसत्तम शार्ङ्ग धनुषधारी और वर देनेवाले नारायण कहके तुम्हारे चरित्रोंका वर्णन किया करते है। हे माधव! उन नारद मुनिके वचनोंको तुम सत्य करो। बोलनेवालोंमें श्रेष्ठ पुण्डरीक नेत्रवाले कृष्ण धर्म्मराज युधिष्ठिरसे राजसभाके बीच इसही प्रकारसे पूजित तथा सत्कृत होकर बादलके समान गम्भीर स्वरसे महाराज युधिष्ठिरसे यह वचन बोले, हे पृथापुत्र धर्म्मराज युधिष्ठिर! अर्जुनके समान धनुर्धारी योद्धा इन्द्र लोक आदि किसी लोकमें भी नहीं है। वह पराक्रमी, सब अस्त्रशस्त्रोंके मर्म्मको जाननेवाले, सब समय युद्धमें पराक्रम प्रकाशित करनेकी अभिलाष करनेवाले, मनुष्योंके बीच परम तेजस्वी, क्रोधी, युवा अवस्थावाले, वृषभके समान कन्धेसे युक्त, लम्बी भुजावाले महाबलवान् महाबली पराक्रमी सिंहकी चालसे गमन करनेवाले और श्रीमान् तथा महातेजस्वी हैं, वह अवश्य ही तुम्हारे शत्रुओंका नाश करेगे। वह जिस धृतराष्ट्र-पुत्रोंकी सेनाको अग्निके समान भस्म कर सके मैं भी वैसाही यत्न करूंगा। आज अर्जुन क्षुद्र अभिलाष करनेवाले पापी अभिमन्युके वध करनेवाले जयद्रथके शिरको काटके अपने बाणोंसे अदृश्य पथमें फेंक देंगे। कौवे बगुले बाज आदि मांस खानेवाले पक्षी और भेड़िये सियार आदिक मांस खानेवाले भयङ्कर पशु आज उसका मांस भक्षण करेंगे। महाराज! यदि इन्द्रके सहित सम्पूर्ण

देवता भी उसकी रक्षा करें, तौभी वह आज युद्धभूमिमें मरकर यमपुरीमें गमन करेगा। हे राजन्! अर्जुन आज सिन्धुराज जयद्रथका वध करके तुम्हारे निकट आवेंगे, तुम आनन्दित होकर शोक और चिन्ता त्याग दो।

८१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले हे राजेन्द्र! वे दोनों आपसमें इसी प्रकार वार्त्तालाप कररहे थे उस ही समय अर्जुन इष्ट मित्रोंके सहित भरतश्रेष्ठ महाराजा युधिष्ठिरसे मुलाकात करनेकी इच्छासे वहांपर उपस्थित हुए। वह उस सभा-मण्डपके भीतर जाकर महाराज युधिष्ठिरको प्रणाम करके आगे खडे हुए। राजा युधिष्ठिरने उठके उन्हें प्रीतिपूर्व्वक आलिङ्गन किया। उन्होंने अर्जुनके मस्तकको सूंघा और अपनी लम्बी भुजाओंसे उन्हें आलिङ्गन किया फिर आशीर्व्वाद देकर हंसते हुए उनसे यह वचन बोले हे अर्जुन! तुम्हारे शरीरकी कान्ति जिस प्रकारसे दीख पड़ती है और जनार्दन कृष्णको भी मैं जिस भांतिसे प्रसन्न देखता हूं, इससे मुझे निश्चय ही बोध होता है, कि युद्धभूमिमें तुम्हारी अवश्य विजय होवेगी। तिसके अनन्तर अर्जुन बोले महाराज! मङ्गल होवे; मैंने श्रीकृष्णकी कृपासे बहुत बड़ा आश्चर्य्ययुक्त स्वप्न देखा है। ऐसा कह कर अर्जुनने सुहृदमित्रोंको धीरज देनेके निमित्त जिस प्रकारसे रात्रिके समयमें स्वप्न देखा, और जिस भांतिसे महादेव त्रिनेत्रवाले शिवशङ्करका दर्शन किया था, वह सम्पूर्ण वृत्तान्त विस्तारपूर्व्वक वर्णन किया। तब वहां पर इकट्ठे हुए सम्पूर्ण राजा तथा शूरवीर सब विस्मित होकर धन्य धन्य करते हुए अपने मस्तकसे पृथ्वीको स्पर्श करके महादेव वृषभध्वजको प्रणाम किया।

अनन्तर सम्पूर्ण सुहृद्-मित्र राजा युधिष्ठिरकी आज्ञाके अनुसार शीघ्रताके सहित अत्यन्त क्रुद्ध होकर सर्पपूर्व्वक युद्ध करनेके निमित्त अपने शिविरोंसे बाहर हुए। सात्यकि, कृष्ण और अर्जुनने राजा युधिष्ठिरको प्रणाम करके प्रसन्नतापूर्व्वक उनको सभासे निकलके युद्धके निमित्त प्रस्थान किया। महा पराक्रमी सात्यकि और श्रीकृष्णचन्द्र एक ही रथपर चढके अर्जुनके शिविरपर उपस्थित हुए। हृषीकेश कृष्ण वहां पहुंचकर रथियोंमें श्रेष्ठ अर्जुनके वानर ध्वजासे युक्त उत्तम रथको सारथीकी भांति भली भांति सज्जित करने लगे। बादल गर्जनेके समान शब्दसे युक्त वह रथ उत्तम भांतिसे तपाये हुए सुवर्णसे सज्जित होकर ऐसे शोभित होने लगा; जैसे भोरके समयमें सूर्य्य प्रकाशित होता है। तिसके अनन्तर पुरुषसिंह कृष्णने स्वयं सज्जित होकर सन्ध्या उपासना आदि नित्यकर्म्मोंसे निवृत्त हुए अर्जुनके समीपमें जाकर रथ सज्जित होनेका सम्वाद सुनाया। सुवर्णभूषित कवच बाण धनुष और किरीट धारण करनेवाले अर्जुन उस रथके समीप जाकर उसकी प्रदक्षिणा करने लगे? अनन्तर विद्या वृद्ध अवस्थामें बड़े उत्तम कर्म्म करनेवाले जितेन्द्रिय पुरुष महारथ तेजस्वी अर्जुनको विजयके निमित्त उन्हें शुभ आशीर्व्वाद प्रदान करने लगे। अनन्तर सूर्य्य जैसे उदयाचल पर्व्वतपर आरोहण करते हैं वैसे ही अर्जुन जय युक्त युद्धमें विजय देनेवाले वेदमन्त्रोंसे अभिमन्त्रित होकर सुवर्ण वर्म्मसे भूषित होके, उस प्रकाशमान रथपर चढे, सुवर्णभूषित कवचधारी अर्जुन सुवर्ण खचित उस उत्तम रथमें चढकर ऐसे शोभित हुये जैसे सुमेरु शिखर शोभायमान लगते हैं। युयुधान और जनार्दन तथा अर्जुनके रथपर चढे। क्योंकि राजाके यज्ञमें इन्द्रके समीप जैसे दोनों अश्विनीकुमार शोभित हुए थे, वैसे ही नर और युयुधान [illegible]

शोभित होने लगी। जैसे मातलिने वृत्रासुरके वधके निमित्त युद्धभूमिमें गमन करनेवाले इन्द्रके रथके घोड़ोंकी बागडोर ग्रहण करी थी वैसे ही पुरुषोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णने अर्जुनके रथ पर चढ़के उनके घोड़ोंकी बागडोर (लगाम) ग्रहण किया। जैसे अन्धकार नाश करनेवाले चन्द्रमा बुध और शुक्र ग्रहके सहित सहित आकाशमें शोभित होते हैं अर्जुन भी सात्यकि और कृष्णके सहित रथपर चढ़े हुए उसी भांतिसे शोभित होने लगे; और जैसे वरुण और सूर्य्यके सहित देवराज इन्द्रने तारकासुरके युद्धमें गमन किया था वैसे ही शत्रुओंके नाश करनेवाले अर्जुनने सिन्धुराज जयद्रथके वधकी अभिलाष करके युद्धके निमित्त प्रस्थान किया। उस समयमें बाजा बजानेवाले पुरुषोंने नाना प्रकारके बाजे बजाये, और सूत मागध वन्दीजन शुभसूचक मङ्गलकारी स्तोत्रोंका पाठ करके अर्जुनकी स्तुति करने लगे। सूत मागधोंके जय आशीर्वाद और पुण्याहवाचनकी ध्वनि जुझाऊ बाजोंके शब्दके सङ्ग मिलकर उन्हें आनन्दित करने लगी। वायु शीतल मन्द तथा सुगन्धित गतिसे बहके अर्जुनको हर्षित करने लगा, और उधर शत्रुओंके शोकको बढाते हुए वायु प्रचण्डवेगसे बहने लगा। हे राजन्! उस ही समय पाण्डवोंके शुभसूचक नाना प्रकारके शकुन चारों ओर प्रकट हुए और तुम्हारी ओरकी सेनामें उससे उलटे अशकुन दिखाई देने लगे।

अर्जुन अपने विजयके विषयमें उत्तम तथा अनुकूल शकुन देखकर महाधनुर्धारी सात्यकिसे बोले हे सात्यकि! आज जिस प्रकारके सम्पूर्ण निमित्त लक्षण (शकुन) देख रहा हूं, उससे बोध होता है, कि आज युद्धमें अवश्य ही मेरी विजय होवेगी। सिन्धुराज जयद्रथ यमलोकमें गमन करनेकी इच्छासे वहांपर स्थित होके मेरा पराक्रमकी प्रतीक्षा कर रहा है; मैं उस ही स्थलमें गमन करता हूं। जैसे सिन्धुराज जयद्रथका वध करना मेरा बहुत बड़ा कार्य्य है वैसे ही धर्म्मराज युधिष्ठिरकी रक्षा करना भी वृहत् कार्य्य है। हे महाबाहो! इससे आज तुम धर्म्मराज युधिष्ठिरकी रक्षा करना। जैसे मैं उनकी रक्षा करता था, वैसे ही तुम भी आज धर्म्मराजकी रक्षा करना। तुम युद्ध करनेमें कृष्णके समान हो, युद्धभूमिमें तुम्हें पराजित कर सके, ऐसे मैं किसी पुरुषको इस पृथ्वीपर नहीं देखता हूं, देवतोंके राजा इन्द्र भी तुम्हें पराजित नहीं कर सकेंगे। हे पुरुषर्षभ! मै तुम्हारे वा प्रद्युम्नके ऊपर यह भार अर्पण करके विश्वास करकेतथा निश्चिन्त होकर सिन्धुराज जयद्रथके वधके निमित्त गमन कर सकता हूं। हे सात्यकी! तुम मेरे वास्ते किसी प्रकारसे भी चिन्ता मत करना, राजा युधिष्ठिरहीकी सब भांतिसे यत्नपूर्वक रक्षा करना। शत्रुनाशन सात्यकिने इस प्रकारसे अर्जुनके वचनोंको सुनके उनकी आज्ञाके अनुसार धर्म्मराज युधिष्ठिरके समीपमें गमन किया।

८२ अध्याय समाप्त।

अब जयद्रथ वध प्रकरण लिखेंगे।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! अभिमन्युके मरनेपर पाण्डवोंने रात्रि बीतनेके अनन्तर किन कार्य्योंका अनुष्ठान किया? मेरी सेनाके कौरव योद्धा लोग अर्जुनके बल पराक्रमको जानकर भी और उसके समीप अपराधी होकर किस प्रकारसे निर्भय हुए! वह वृत्तान्त तुम मेरे समीप मे वर्णन करो। पुत्र शोकसे अत्यन्त क्रुद्ध हुए प्राणियोंके नाश करनेवाले यमराजके समान उस पुरुषसिंह अर्जुनको मेरी सेनाके शूरवीर योद्धा लोग कैसे देख सके? पुत्र शोकसे आर्त्त हुए कपिध्वजावाले अर्जुनको,

गाण्डीवधनुष चढ़ाते देखकर मेरी ओरके शूर-वीरोंने किस कार्य्यका अनुष्ठान किया ? वह सब वृत्तान्त तुम मेरे निकट वर्णन करो। हे सञ्जय! संग्रामभूमिमें दुर्य्योधनकी सेनामें कैसी घटना हुई है ? आज कुछ भी हर्षध्वनि मेरे कानोंमें नहीं सुन पडती है, बल्कि विलापके शब्दही सुन पड़ते है। जयद्रथके शिविरमें पहिले मनोहर वेदध्वनि सुन पडती थी, वह सम्पूर्ण वेदध्वनिके शब्द इस समयमें नहीं सुन पडते हैं। मेरे पुत्रोंके शिविरोंमेंसे भी स्तुतिपाठ करनेवाले सूत मागध, बन्दी और नर्त्तकोंके शब्दभी आज नहीं सुन पडे। जिन लोगोंके शब्द बार बार मेरे कानमें सुनाई पडतेथे वे सम्पूर्ण योद्धा-हीनभावसे युक्त होगये है, इस हीसे उनके शब्द मेरे कानसे नहीं सुन पडते है। तात सञ्जय! पहिले मैं सावधान होकर भोरके समय सत्य पराक्रमी सोमदत्तके शिविरसे मनोहर शब्दोंको सुनता था, परन्तु इस समयमें वे शब्द मुझे नहीं सुनाई देते है। हा! मैं कैसा पुण्यहीन हूं कि मुझे अपने पुत्रोंके उन शिविरोंको इस समय उत्साह रहित और आर्त्त स्वरोंसे युक्त बोध करना पडा! विविंशति दुर्म्मुख चित्रसेन विकर्ण और दूसरे पुत्रोंके शिविरोंसे भी पहिलेके समान आज कोई शब्द नहीं सुनपडते है। ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य लोग शिष्य होकर जिसकी उपासना किया करते है जो मेरे महाधनुर्द्धर पुत्रोंके आश्रयस्वरूप हैं जो आपसमें वार्त्तालाप इच्छाके अनुसार नृत्यगीत और सुन्दर बाजोंसे सदा आनन्दित होते रहते है और बहुतेरे कौरव पाञ्चाल तथा यदुवंशी जिसकी उपासना करते रहते हैं, उस द्रोणाचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामाके डेरेसे जो शब्द नित्य सुनाई देता था, वह आज नहीं सुन पड़ता है। जिसके समीप गीत गाने और नाचनेवाले अश्वत्थामाकी उपासना करते रहते थे उन लोगोंके वह भी शब्द इस समय नहीं सुन पड़ते है। विन्द और अनुविन्दके शिविरसेसन्ध्याके समय जो शब्द सुनाई देते थे, वह इस समय मुझे नहीं सुनाई देते हैं, और कैकय राजके शिविरसे भी कुछ शब्द नहीं सुन पड़ता है। नृत्य करनेवाले जैसे ताल-स्वरके सहित प्रसन्नता पूर्व्वक गीत गाते हुए नृत्य करते थे; उन लोगोंके वह ताल स्वरसे युक्त गीतके शब्द इस समय नहीं सुन पडते हैं। बहुतसी यज्ञोंके अनुष्ठान करनेवाले यज्ञशील पुरुषसोमदत्तके पुत्र श्रुतनिधिकी उपासना करतेरहते है, उन लोगोंकी वेदध्वनि भी इस समयमें नहीं सुन पड़ती है। वेदध्वनि धनुषटकारके शब्द तोमर तलवार और रथके शब्द द्रोणाचार्य्यके शिविरसे लगा तार सुन पडते थे, वह भी इस समयमें नहीं सुन पडते हैं; और नाना स्थानोंसे जो गीत और बाजोंकी ध्वनि सुन पड़ती थी, वह भी आज नहीं सुनाई देती हैं। हे सूत! जिस समय जनार्द्दन कृष्ण कुरुपाण्डवोंमें सन्धि स्थापित करनेके निमित्त विराट नगरसे यहां आयेथे, मैंने उसही समय नीचबुद्धिवाले दुर्य्योधनसे कहा था, "हे पुत्र! तुम कृष्णके वचनोंको मानके पाण्डवोंके सङ्ग सन्धि करलो; मैं बोध करता हूं कि सन्धिकरनेका यही उचित समय है। हे दुर्योधन! तुम मेरे वचनोंको मत टालो। कृष्ण तुम्हारे हितके निमित्त ही शान्तिके निमित्त प्रार्थना कर रहे हैं इससे यदि तुम कृष्णके वचनोंको न मानोगे तो तुम्हारी विजय न होवेगी। उस समय सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंमें श्रेष्ठ दाशार्ह कृष्णने अनेक प्रकारसे विनय युक्त वचन कहे थे; परन्तु दुर्य्योधन दुष्टनीतिके वशमें होकर उनका अनुगामी नही हुआ; वरन उनको विरुद्धता किया था। तिसके अनन्तर वह नीचबुद्धि मेरा बातोंको न मानकर कालके वशमें होकर दुःशासन और कर्णका मतानुवर्त्ती हुआ। हे सञ्जय! जुएके खेलमें मेरी इच्छा नहीं थी; विदुरने

भी जूएकी प्रशंसा नहीं किया था; सिन्धुराज भीष्म शल्य भूरिश्रवा पुरुमित्र जय अश्वत्थामा कृपाचार्य्य और द्रोणाचार्य्य इन लोगोंमें किसी पुरुषने जुएके खेलकी अनुमोदन नहीं किया था; वरन जुआखेलनेसे निवारण किया था। मेरा पुत्र यदि इन लोगोंके मतके अनुसार चलता, तो जातिके लोग और इष्टमित्रोंके सहित आनन्दित होके सुखपूर्व्वक अपने जीवन समयको व्यतीतकरता। मैंने दुर्य्योधनसे कहा था, "हम लोगोंके जाति तथा कुलके बीच पाण्डव लोग मनको आनन्दित करनेवाले, मधुर प्यारे वचनोंके कहनेवाले, कुलके अनुसार उत्तम चरित्रवाले, सम्पूर्ण पुरुषोंमें आदरके योग्य और बुद्धिमान हैं वहलोग अवश्य सुख प्राप्त करेंगे: इसमें सन्देह नहीं है। क्योंकि धर्म्मात्मा पुरुष ही इस लोक और परलोकमें सुख पानेके अधिकारी होते हैं; सब साधनोंसे युक्त पाण्डव लोग समुद्र पर्य्यन्त इस सम्पूर्ण पृथ्वीको राज्य भोग करनेके योग्यपात्र हैं; विशेष करके इस पृथ्वीका राज्य उनके पिता पितामहसे चला आता है। वह राजपुत्र लोग राज्यपर अभिषिक्त होनेसे धर्म्म त्याग कर तुम्हारी अवज्ञा नहीं करेंगे, वह धर्म्मपथपर अवश्य स्थित रहेंगे! हम लोगोंमें अपने जातिके पुरुष ऐसे हैं, कि पाण्डव लोग अवश्य उनके वचनोंकी मान्य करेंगे। शल्य, सोमदत्त, महात्मा भीष्म द्रोणाचार्य्य, विकर्ण, वाह्लिक, कृपाचार्य्य तथा और भी दूसरे बहुतेरे वृद्ध भरतवंशीय महात्मा लोग तुम्हारे निमित्त पाण्डवोंसे जो वचन कहेंगे, पाण्डवलोग उन वचनोंको कभी भी निरादर नहीं कर सकते। तुम क्या किसीको ऐसा समझते हो, जो तुम्हारे विरुद्ध इन लोगोंसे दुष्ट वचन कह सके। कृष्ण कभी धर्मको त्याग नहीं करेंगे, और वह लोग भी इसके अनुयायी हैं; उन्हें पाण्डवोंसे जो वचन कहेंगे, उनके विरुद्ध वे लोग कदापि आचरण नहीं कर सकेंगे, और मैं भी धर्म्मके अनुसार वचन यदि उन शूरवीर पाण्डवोंसे कहूंगा, तो वे लोग कभी मेरे वचनोंको न मेटेंगे।" हे सूत! मैंने अपने पुत्र दुर्य्योधनको इसी प्रकारसे अनेक वचन कहा था परन्तु बोध होता है, कि उस मूढ़ने कालके वशमें होकर मेरे वचनोंको ग्रहण नहीं किया। हे सञ्जय! भीमसेन अर्ज्जुन, वृष्णिवंशीय सात्यकि, पाञ्चाल उत्तमौजा, युधामन्यु पराक्रमी धृष्टद्युम्न, अपराजित शिखण्डी, अश्मक और केकयदेशीय शूरवीर योद्धा, सोमकनन्दन चत्रधर्म्मा चेदिराज, चेकितान, काशिराजके पुत्र विभु द्रौपदीके पांचो पुत्र विराट महारथ द्रुपद पुरुषसिंह नकुल और सहदेव, ये सम्पूर्ण शूरवीर पुरुष जिस सेनाके योद्धा और मधुसूदन कृष्ण जिसके मन्त्री हैं, उस स्थलमें कौन पुरुष इस लोकमें जीवित रहनेकी इच्छा करके इन सम्पूर्ण योद्धाओंके सङ्ग युद्धकर सकता है? इन सम्पूर्ण पुरुषोंके दिव्य अस्त्र चलानेपर कौन पुरुष उनके अस्त्रोंकी चोट सह सकेगा? जनार्द्दन कृष्ण जिसके घोड़ेकी बागडोर ग्रहण करके सारथी हुए हैं और अर्ज्जुन जिस सेनाका मुख्य योद्धा है; उसके पराजयकी सम्भावना कैसे हो सकती है? तुमने मेरे समीप इस वृत्तान्तको वर्णन किया है पुरुषसिंह भीष्म और द्रोणाचार्य्य मारे गये हैं इससे दुर्य्योधन मेरे उन सम्पूर्ण विलापयुक्त वचनोंको क्या नहीं स्मरण करता है? बोध होता है मेरे पुत्र लोग दीर्घदर्शी विदुरके वचनोंको सफल होते हुए देखकर शोक कररहे हैं, और मेरी सेनाको सात्यकि तथा अर्ज्जुनके बाणोंसे नष्ट होती हुई देखकर भी शोकसे आर्त्त हुए हैं। जैसे वसन्त ऋतुके बीतनेपर अग्नि वायुके सहित मिलकर सर्व्वत्र तृण और काठोंको भस्म कर देती है, वैसे ही कृष्णकी सहायतासे अर्ज्जुन मेरी सेनाको भस्म

कर रहा है, इसमें कुछ सन्देह नहीं है। हे सञ्जय! इस सम्पूर्ण वृत्तान्तके वर्णन करनेमें निपुण हो, इससे युद्धमें जैसी घटना हुई है, वह सम्पूर्ण वृत्तान्त मेरे समीपमें वर्णन करो। तुम लोगमन्धाके समय उपाय रचकर जब अभिमन्युका बध करके अर्जुनके अपराधी हुए, तब उस समयमें तुम लोगोंका चित्त किस प्रकारका हुआ था? हे तात! मेरे पुत्र लोग गाण्डीवधनुद्धारी अर्जुनका बहुत बड़ा अपराध करके युद्धमें उसके पराक्रमके कार्योंको कभी भी सहनेमें समर्थ नहीं होसकते। दुर्योधन कर्ण और शकुनिने उस समयमें किन कार्य्योंका अनुष्ठान किया था? और नीच बुद्धिवाले दुर्य्योधनके सङ्ग मिलके मेरे सम्पूर्ण पुत्रोंने भी उस समयमें युद्धके निमित्त किन कार्य्योंका विचार किया थो? मूर्ख दुर्य्योधनका चित्त विषय वासनासे मुग्ध होगया है, उस नीचबुद्धिवाले दुर्य्योधनने लोभके वशमें होकर अपने आत्माके भावको अत्यन्त टेरा कर डाला है! हे सञ्जय! उसकी दुष्ट नीति होवे, अथवा सुनोति होवे, युद्धभूमिमें जो घटना हुई है वह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम मेरे समीपमें वर्णन करो।

८२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! युद्ध विषयक सम्पूर्ण कार्य्योंको मैंने प्रत्यक्ष देखा है; वह सम्पूर्ण समाचार मैं तुम्हारे समीप वर्णन करताहूं, आप चित्त लगाकर सुनिये। हे भरतर्षभ! आपका अनीतिका कार्य्य पापहीसे प्रकट हुआ है। जल निकलनेसे जैसे पुल बांधनेका कार्य्य निष्फल होता है, उसही प्रकारसे इस समयमें आपके ये विलाप वचन निष्फल होरहे हैं; इसलिये आप इस समय शोक मत कीजिये। [illegible] कालकी अद्भुत गतिको कोई भी नहीं रोक सकता है। यह प्राणियोंके नाश होनेका वृत्तान्त पहिले होसे सबको विदित है इससे उसके निमित्त आप शोक न कीजिये। यदि पहिले तुम युधिष्ठिर और अपने पुत्रोंको जूएके खेलसे रोकते तो इस समयमें सम्पूर्ण मनुष्योंका नाश न होता। युद्धके समय पहिले यदि आप अपने क्रोधी पुत्रोंको युद्ध करनेसे रोकते तो भी इस समयमें तुम्हें यह व्यसन उपस्थित न होता। तुमने पहिलेसे इसके निवारण करनेका यत्न नहीं किया, उसहोसे पाण्डव पाञ्चाल यदुवंशी और दूसरे सम्पूर्ण राजाओंने समझा था, कि तुम्हारी बुद्धि इस समय उलटी होगई है। आप यदि धर्म्ममार्ग पर स्थित रहते। पुत्रको श्रेष्ठ मार्गमें चला कर पिताके योग्य कर्म्मोंको करते; तो आपको ऐसे विपद्में न फंसना पड़ता। आप पृथ्वीके बीच बुद्धिमान् होकर भी सनातनधर्म्मको त्यागके दुर्य्योधन, कर्ण और शकुनिके मतानुवर्त्ती हुए। आपका अन्तःकरण अर्थ-लाभसे मुग्ध होगया था। इतने पर भी आप इस समयमें विलाप कर रहे हैं; इससे आपके विलाप वचनोंको विष मिले हुए मधुके समान मैं बोध कर रहा हूं। कृष्ण आपको पहिले जैसे मानते थे, राजा युधिष्ठिर, भीष्म और द्रोणाचार्य्यका वैसा नहीं मानते थे। जब उन्होंने आपको राजधर्म्मसे भ्रष्ट होते देखा उस ही समयसे फिर तुम्हारा वैसा मान नहीं किया। जिस समय तुम्हारे पुत्रोंने पाण्डवोंको कड़वे वचन सुनाकर उन्हें वनवासी बनाया था, उस समय आप जो राज्यके लोभमें पड़के पुत्रोंके वचनोंको क्षमा किया था। उसीका फल इस समयमें आप अनुभव कर रहे हैं। हे पापरहित! तुम्हारा वह पैतृक राज्य तो अनेक क्रमसे नष्ट होगई थी अनन्तर पाण्डवोंने इस सम्पूर्ण पृथ्वीको जीतकर तुम्हें समर्पण किया; तभीसे आप सम्पूर्ण पृथ्वीके राज्यको भोगरहे है। पाण्डुने जितना पृथ्वीके

राज्यको ग्रहण करके कुरुवंशके यशको बढ़ाया था, धर्म्मात्मा पाण्डवोंने उनसे भी अधिक विशाल राज्य ग्रहण करके यश प्राप्त किया है। उन लोगोंका ऐसा बड़ा कार्य्य तुम्हारे ही कारणसे निष्फल हुआ, क्योंकि तुमने उन लोगोंके ज्येष्ठतात होकर मांसकी अभिलाष करनेवाले पक्षीके समान राज्य लोभसे उन लोगोंको इकबारगी राज्यसे भ्रष्ट किया है। परन्तु इस समय युद्ध उपस्थित होने पर तुम अपने दोषोंको स्वीकार न करके पुत्रोंके ऊपर दोषारोपण कर रहेहो। यह उचित कार्य्य नहीं होता है; देखो क्षत्रिय श्रेष्ठ राजालोग युद्धमें प्रवृत्त होकर पाण्डवोंकी सेनाको तितर बितर करके भी अपने प्राणकी रक्षा नहीं कर सकते है। जिस सेनाकी कृष्ण-अर्ज्जुन तथा जिस सेनाकी सात्यकि और भीमसेन रक्षा करते है, कौरवोंको छोड़के उस सेनाके सङ्ग और दूसरा कौन पुरुष युद्ध कर सकता है? जिस सेनाके अर्ज्जुन योद्धा और कृष्ण मन्त्री है, जिस सेनाके रक्षक पराक्रमी सात्यकि और भीमसेन है, उस सेनासे कौरव तथा कौरवोंके अनुयायी पुरुषोंको छोड़के और कौन मरण-धर्म्मशील पुरुष उसके सङ्ग युद्ध करनेका उत्साह कर सकता है? कौरवोंकी ओरके क्षत्रिय धर्म्म अवलम्बन करने वाले शूरवीर राजा और पराक्रमी क्षत्रिय पुरुष भी अपनी सामर्थ्यके अनुसार युद्ध कर रहे हैं। जो हो, पुरुषसिंह पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंने कौरवोंके सङ्ग जिस प्रकारसे महाघोर संग्राम किया है। वह सम्पूर्ण वृत्तान्त मैं विस्तारपूर्व्वक कहता हूं, आप चित्त लगाकर सुनिये।

८६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र। उस रात्रिके बीत-नेपर जब सबेरा हुआ, तब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने अपनी सम्पूर्ण सेनाका व्यूह बनाना आरम्भ किया। क्रोधी बाहुबलसे मतवारे आपसमें एक दूसरेके बधकी अभिलाष करने-वाले शूरवीरोंके सिंह नादके सहित विचित्र शब्द सुनाई देने लगे। कितने ही शूरवीर योद्धा लोग धनुषपर रोदा चढ़ाकर हाथमें धनुष फेरते हुए लम्बी और गर्म्म सांस लेकर "इस समयमें वह अर्ज्जुन कहां हैं?" ऐसे वचनोंको कहते हुए सिंहनाद करने लगे। सहस्रों शूर वीर शस्त्रविद्या जाननेवाले योद्धा युद्ध करनेके निमित्त उत्सुक होकर धनुष, तलवार तथा दूसरे अस्त्र-शस्त्रोंको घुमाते हुए मार्गमें गमन करते हुए दिखाई देने लगे। कितने ही पराक्रमी योद्धा लोग घण्टायुक्त चन्दनचर्चित सुन्दर और हीरा रत्नोंसे प्रकाशमान गदा घुमाते हुए "कहां है अर्ज्जुन?" ऐसे ही वचनोंको कहते हुए चारों ओर भ्रमण करने लगे। कितने ही पराक्रमी वीर योद्धा अपने बाहुबलसे मतवारे होकर इन्द्रधनुषके समान परिघ उछालते हुए आकाशको अवलोकन करते गमन करने लगे। विचित्र माला और आ-भरणधारी नाना भांतिके शूरवीर योद्धा अपने नियमित स्थानोंपर स्थित होके युद्ध अभिलाष करके 'कहां है अर्ज्जुन? कि कृष्ण हैं? बल पराक्रमके अभिमानसे मतवारे वह भीमसेन कहां है? और उन पाण्डवोंके अनुयायी उनके सुहृद लोग कहां हैं?' ऐसे वचनोंको कहते हुए तुम्हारी ओरके पराक्रमी योद्धा लोग रणभूमिमें पाण्डवोंकी सेनाके शूर वीरोंको युद्धके निमित्त आवाहन करने लगे। द्रोणाचार्य्य अपना शंख बजाकर निज रथ सेनाके बीच चारों ओर घुमाते और इन सम्पूर्ण वीर योद्धाओंको यथायोग्य स्थानोंमें स्थित करते हुए सेनाका व्यूहबद्ध करके युद्धके निमित्त गमन करने लगे। हे महाराज! युद्ध करनेके अभि-लाषी उत्सुक उस सम्पूर्ण सेनाको व्यूहबद्ध

द्रोणाचार्य्य योद्धाओंको यथा योग्य स्थानोंमें स्थित किया। अनन्तर भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्य राजा जयद्रथसे यह वचन बोले हे सिन्धुराज। तुम सोमदत्तपुत्र भूरिश्रवा, महारथ कर्ण, अश्वत्थामा शल्य वृषसेन और कृपाचार्य्य,— इन छहों महारथियोंके सहित तुम एक लाख घुड़सवार, साठ हजार रथी चौदह हजार मतवार हाथियोंपर चढ़े हुए गजारोही योद्धा और इक्कीस हजार कवचधारी पैदल चलनेवाले शूरवीर योद्धाओंको सङ्ग लेकर मेरे समीपसे छः कोसकी दूरीपर जाकर सेनाके बीचमें निवास करो। तुम जब इस ही प्रकारसे उस स्थानमें स्थित रहोगे तो पाण्डवोंकी ता बात ही क्या है, सम्पूर्ण देवतोंके सहित इन्द्र भी तुम्हें युद्ध-भूमिमें आक्रमण नहीं कर सकेंगे।

सिन्धुराज जयद्रथसे जब द्रोणाचार्य्यने ऐसे वचन कहे तब उन्होंने धीरज धरके द्रोणाचार्य्यके बतलाये हुए उन सम्पूर्ण महारथवीरोंके बीचमें घिरकर प्रासधारी कवच पहने हुए यत्नशील घुड़सवारों और गान्धार-देशीय शूरवीरोंके सहित अपने निश्चित स्थानपर जानेके निमित्त प्रस्थान किया चवर और सुवर्णके आभूषणोंसे भूषित सात हजार उत्तम घोड़े और दो हजार सिन्धुदेशीय घोड़े उनके सङ्ग गमन करने लगे। तुम्हारे पुत्र दुर्म्मषण युद्ध विद्यामें निपुण घुड़सवार और भयङ्कर मूर्त्तिवाले युद्धमें भयानक कार्य्योंके करनेमें समर्थ मतवारे हाथियोंके सहित सम्पूर्ण सेनाके आगाड़ी स्थित हुए। तिसके अनन्तर तुम्हारे दो पुत्र दुःशासन और विकर्ण सिन्धुराज जयद्रथके प्रयोजनको सिद्ध करनेके निमित्त सेनाके आगाड़ीके हिस्से में स्थित हुए। भरद्वाज पुत्र द्रोणाचार्य्यने अपनी सेनाके बीच चारों ओर भ्रमण करके रथी घुड़सवार, गजपति पैदलचलनेवाले शूरवीर [illegible] और नाना देशोंसे आयेहुए पराक्रमी [illegible] यथा योग्य स्थानोंमें स्थित करते हुए अपनी महा विशाल सेनाका चक्रशकट व्यूह बनाया। इस व्यूहकी लम्बाई चौबीस कोसकी हुई और उसके पीछे सेनाके आधे हिस्सेमें जो चक्रव्यूह बनाया उसका विस्तार घेरा दश कोसका हुआ। उस दुःखसेभी न भेदहोनेवाले पद्मकी आकृतिके समान चक्र-व्यूहके बीचमें महात्मा द्रोणाचार्य्य सूचीव्यूह नामक एक गूढ़ व्यूह बनाया। इसी प्रकारसे पराक्रमी द्रोण महाव्यूहको सज्जित करके सम्पूर्ण सेनाके आगे स्थित हुए। महाधनुर्द्धर कृतवर्म्मा उस पद्मव्यूहके भीतर सूची व्यूहके मुखस्थल पर स्थित हुए। उनके पीछे काम्बोज और जलसन्ध खड़े हुए उनके पश्चात् अपने अनुयायी तथा सेवकोंसे घिरकर राजा दुर्य्योधन स्थित हुए, उनके बाद युद्धभूमिमें पीछे न हट-नेवाले एक लाख शूरवीर योद्धालोग युद्धके निमित्त खड़े हुए। उन सम्पूर्ण शकट व्यूहके मुखरक्षक योद्धाओंके पीछेके हिस्सेमें पाछले खड़े हुए सूचीव्यूहके चारों ओर बहुत बड़े सेनादलसे घिरकर राजा जयद्रथ स्थित हुए। द्रोणाचार्य्य शकटव्यूहके मुखस्थलपर स्थित हुए। महारथ कृतवर्म्मा उनके पीछे खड़े होकर उनकी रक्षा करनेमें प्रवृत्त हुआ। सफेद कवच और सफेद वस्त्रोंको धारण करनेवाले विशाल वक्षस्थलवाले महाबाहु द्रोणा-चार्य्य धनुष चढ़ाकर क्रुद्धयमराजके समान सम्पूर्ण सेनाके आगे स्थित हुए। कौरवलोग लालवर्णके घोड़ोंके सहित उनके सुन्दर रथ और पताकाके सहित उनके रथकी ध्वजाके ऊपर प्रकाशमान वेदीको देखकर हर्षित हुए। सिद्ध चारण आदि प्राणी उमड़ते हुये समुद्र समान द्रोणाचार्य्यके बनाये हुए उस अद्भुत व्यूहको देखकर अत्यन्त विस्मित हुए सम्पूर्ण प्राणी उस व्यूहको देखकर यह [illegible] करने लगे, कि यह सेनाका अद्भुत व्यूह सम्पूर्ण वसु-न्धराके मुख्य पर्वत, समुद्र और [illegible] सहित

सम्पूर्ण पृथ्वीको ग्रास कर सकता है। राजा दुर्योधन अनेकों रथ, मनुष्य, घोड़े, हाथी और पैदल सेनासे युक्त शत्रु सेनाके योद्धाओं तथा शत्रुओंको भयभीत करनेवाले अद्भुत रूपसे युक्त शत्रु-हृदयमें सालनेवाले, उस महा विकट शकट व्यूहको देखकर आनन्दित हुए।

८५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज! जब इस प्रकारसे कुरु-सेनाका व्यूह बनायागया तब व्यूहके बीच स्थित शूरवीर योद्धालोग बार बार सिंहनाद करके तर्ज्जन करने लगे। भेरी और मृदङ्ग आदि बाजे बजने लगे सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग महाघोर शब्दके सहित सिंहनाद करने लगे, और भी युद्धके जुझाऊ बाजोंके शब्द सेनाके बीच चारो ओर सुनाई देने लगे। वह सम्पूर्ण नाना प्रकारके शब्द एक सङ्ग मिलके अत्यन्त भयङ्कर बोधहोने लगे, और उस महाघोर तुमुल शब्दको सुनके रोएं खड़े होगये। अनन्तर तुम्हारी ओरके शूरवीर योद्धा हर्षित होकर धीरे धीरे शस्त्र चलानके निमित्त तैयार होकर युद्ध भूमिमें स्थित हुए। उस ही भयङ्कर समयमें सव्यसाची अर्ज्जुन वहा पर दीख पड़े। हे भारत! अर्ज्जुनके रथके आगे आगे मांसको अभिलाप करनेवाले सहस्रों पची तथा कौवे गिद्ध आदि हर्षित होकर गमन करने लगे। हमलोगोंने जब युद्धके निमित्त गमन किया तब हरिण और भयङ्कर रूपवाले सियार आदिक पशु हमलोगोंके दाहिनी ओर भयानक शब्द करने लगे। उस महाभयङ्कर युद्धके समयमें भयानक शब्दोंके सहित आकाशसे सहस्रों उल्कापात होने लगे और पृथ्वीकापने लगी। अर्ज्जुनके समागम होनेके समय वायु प्रचण्ड वेगसे युक्त होकर कङ्कड़ोंके सहित भयङ्कर रूपसे बहने लगा। नकुलपुत्र श....नीक और

पृषत्पुत्र धृष्टद्युम्न इन दोनों बुद्धिमान् पुरुषोंने उस समयमें पाण्डवोंकी सेनाका व्यूह बनाया महाराज! तुम्हारे पुत्र दुर्म्मषण एक सहस्र रथी एक सौ गजपति तीन हजार घुड़सवार दश हजार पैदल चलनेवाले शूरवीर योद्धा और पाच सौ धनुर्द्धारी योद्धाओंके बीचमें सब सेनाके आगे खड़े होकर यह वचन कहने लगे कि हे रथिश्रेष्ठ पुरुषो! तुम लोग केवल युद्धको अभिलाष करके यहापर खड़े रहो। मैं अकेले ही इन सम्पूर्ण शरवीरोंके सङ्ग युद्ध करके यशको बढ़ाऊंगा। जैसे तट समुद्रके वेगको रोकता है वैसे ही मैं आज शत्रुनाशन गाण्डीव धनुष धारण करनेवाले अर्ज्जुनको युद्धभूमिमें निवारण करूंगा हे राजेन्द्र! महाधनुर्द्धारी वीरोंके बीचमें स्थित हुए महाधनुर्द्धर महातेजस्वी महाबाहु दुर्म्मषण इसी प्रकारसे वचन कहते हुए सम्पूर्ण सेनाके आगे खड़े होकर शत्रुओंको आवाहन करने लगे। तिसके अनन्तर पाशधारी वरुण वज्रधारी इन्द्र दण्डधारी यमराज और त्रिशूलधारी महादेवके समान, निवातकवच नाम दानवोंके निमित्त यमरूपी सत्यवादी और विजयी विजय नामक पराक्रमी अर्ज्जुन जयद्रथ वधरूपी प्रतिज्ञासे पार होनेके निमित्त माना प्रलय कालको प्रज्वलित अग्निके समान फिर संसारका भस्म करनेकी अभिलाषसे क्रोध, अमर्ष, बल पराक्रमरूपी वायुसे युक्त और नारायणके अनुगामी होकर सफेदमाला श्वेतअम्बर और सफेद कवच पहनकर तीक्ष्ण धारवारे, तलवार सुवर्णमय किरीट, शोभायमान वस्त्र और सुन्दर कुण्डलोंको धारण करके, प्रकाशमान रथपर चढ़कर गाण्डीव धनुष फेरते हुए युद्धभूमिमें उदित हुए सूर्य्यके समान प्रकाशित होने लगे। प्रतापी अर्ज्जुनने अपने रथको शत्रु सेनामें बाण चलाने तकको दूरीपर खड़ा करके अपना शंख बजाया। अनन्तर कृष्णने भी अर्ज्जुनके सहित निर्भयचित्तसे बलपूर्व्वक शंखोंके

श्रेष्ठ अपना पाञ्चजन्य शंख वजाया। हे राजेन्द्र इन दोनों पुरुषसिंहोंके शङ्खके शब्दको सुनकर तुम्हारी सेनाके पुरुषोंके रोएं खड़ेहोगये, कितने ही पुरुष कांपने लगे और कितने मूर्च्छित होगये। जैसे वज्रके शब्दको सुनकर सम्पूर्ण प्राणी भयभीत होजाते हैं, उस ही प्रका रसे कृष्ण अर्ज्जुनके शङ्खके शब्दको सुनकर तुम्हारी सेनाके पुरुष भयभीत होगये, सवा- रोंके सम्पूर्ण वाहन मलमूत्र त्याग करने लगे। इसी प्रकारसे सम्पूर्णसेना मोहित होगई। हे राजन्! कुरुसेनाके सम्पूर्ण मनुष्य उन दोनों पुरुषसिंहोंके शङ्खके शब्द सुनकर उत्साहरहित होगये, कितनेही मूर्च्छित हुए, और कितने ही योद्धा भयभीत होगये। तिसके अनन्तर अर्ज्जुनकी ध्वजापर स्थित वानर मुंह पसारकर भूत प्रेतोंके सहित तुम्हारी सेनाके पुरुषोंको भय भीत करते हुए महा घोर शब्द करने लगा तिसके अनन्तर तुम्हारी सेनाके वीच शूरवीरोंके रूपको वढानेवाले शङ्ख भेरी मृदङ्ग ढाल और नगाड़े आदि युद्धके वाजे वजने लगे। नाना प्रकारके वाजोंका शब्द महारथ शूरवीरोंके धनुषटङ्कार और सम्पूर्ण वीर योद्धाओंका सिंह- नाद तुमाऊ वाजोंके सङ्गमिलकर शूरवीर पुरुषोंके रूप और कादरोंके भयको वढ़ता हुआ अत्यन्त तुमुल उत्पन्न होने लगा। अन- न्तर इन्द्रपुत्र अर्ज्जुन अत्यन्त हर्षित होकर श्रीकृष्णसे नीचे कहे हुए वचन वोले।

८६ अध्याय समाप्त।

अर्ज्जुन वोले, हे हृषीकेश। जहां दुर्म्मर्षण है उस ही स्थानपर मेरे रथको ले चलो मैं उस गज सेनाको भेद करके शत्रुसेनाके भीतर घुस जा गा।

सञ्जय वोले हे राजन्। जब सव्यसाची अर्ज्जुनने ऐसा वचन कहा, तव श्रीकृष्ण- चन्द्रने जिस स्थान पर दुर्म्मर्षण सेनाके सहित स्थित थे, उस ही ओर अर्ज्जुनके रथके घोंडोंको चलाया। अनन्तर अकेले अर्ज्जुनके सङ्ग अनेक रथ, हाथी और मनुष्योंका अत्यन्त भयङ्कर तुमुल संग्राम होने लगा। वादल जैसे पर्व्वतोंके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं, वैसे ही अर्ज्जुन अपने वाणोंको शत्रु सेनाके ऊपर वर्षाने लगे। वे सम्पूर्ण रथ योद्धा भी शीघ्रताके सहित कृष्ण अर्ज्जुनके ऊपर अपने वाणोंको वर्षा करने लगे तिसके अनन्तर पराक्रमी अर्ज्जुन शत्रु सेनाके वीरोंके अस्त्रोंसे विद्ध होकर भी क्रोधपूर्व्वक अपने वाणोंसे उन रथियोंके शिरको धड़से काट काटके पृथ्वीमें गिराने लगे। कितने ही कटे हुए शिरोंसे नेत्र वाहर होगये; कितनोंके ओठ लगे हुए दीख पड़ते थे। कितने ही शिर कुण्डलोंके सहित पृथ्वी पर गिरे हुए दिखाई देने लगे, उस समयमें वीरोंके कटे हुए शिरोंसे पृथ्वी परिपूरित होगई। योद्धाओंका मृतशरीर इधर उधर रणभूमिमें गिर कर टूटे हुए कमलवनके समान दिखाई देने लगा। शूरवी रोंके सुवर्णमय कवच रुधिरसे पूरित होकर मानों वादलोंसे युक्त विजलीके समान दिखाई देने लगे। समयके पके हुए तालवृक्षके फलोंके गिरनेसे जिस प्रकार शब्द होता है, वैसे ही पृथ्वी पर शूरवीरोंके कटे हुए शिरोंके गिरनेका शब्द होने लगा। तिसके अनन्तर रणभूमिमें चारों ओर कवन्ध उठके इधर उधर दौड़ने लगे। कितने ही कवन्ध धनुष चढा कर युद्ध करनेकी इच्छासे संग्रामभूमिके वीच खड़े हुए, कितने ही कवन्ध मियानसे तलवार निकालके वेगपूर्व्वक दौड़ते हुए दीख पड़ते थे। सम्पूर्ण वीर पुरुषोंने अर्ज्जुनको युद्धभूमिसे पराजित करके ही संग्रामसे निवृत्त होनेकी इच्छा करी थी, उन वीरोंके शिर भी शरीरसे कटकर पृथ्वीमें गिर पड़े, पर उन शूरवीरोंको मालूम नहीं न हुआ। घोड़े और महावतों

शिर तथा कितनेही हाथियोंके कटे हुए सूण्डोंसे पृथ्वीपरिपूर्ण होगई। हे राजेन्द्र। तुम्हारी सेनाके बीच सम्पूर्ण योद्धा लोग "यही अर्जुन! किस,प्रकारसे यहा पर अर्जुन आगया। यही अर्जुन है!" ऐसे ही वचनोंको कहते हुए आपससे युद्ध करने लगे। तुम्हारी ओरके सम्पूर्ण योद्धालोग रणभूमिको अर्जुन-मय देखने लगे। उन सम्पूर्ण योद्धाओंमें कितने ही कालके वशमें होकर मोहित होगये, और अपनी ओरके योद्धाओंको ही अर्जुन समझकर आपस हीमें युद्ध करके एक दूसरेके अस्त्रोंसे मरकर गिरने लगे। कितने ही शूरवीर योद्धा लोग अस्त्रोंकी चोटसे अत्यन्त पीड़ित होके रुधिर बहते हुए शरीरसे चेतरहित होकर पृथ्वीमें गिर पड़े और अपने बन्धुबान्धवोंका नाम लेकर कातर स्वरसे पुकारने लगे। लोह-मय परिघ और सर्पके समान शूरवीरोंकी विशाल भुजा भिन्दिपाल, तोमर शक्ति ऋष्टि प्रास, परशु, धनुष, बाण, बर्म्म अङ्गुलित्राण तथा दूसरे अनेक प्रकारके अस्त्र और गदाके सहित अर्जुनके महाअस्त्रोंसे कटके वेगपूर्वक इधर उधर गिरती और हाथ पसारकेशस्त्रोंको चलाती हुई दीख पड़ती थीं,कितने ही वीरोंकी भुजा कटके पृथ्वीमें गिर कर इधर उधर लुढ़-कती और कितने ही वीरोंकी विशाल भुजा इधर उधर भ्रमण करती हुई दीख पड़ी। जो पुरुष क्रोधपूर्वक दौड़के अर्जुनके सम्मुख हुए अर्जुनके बाणोंसे उन सम्पूर्ण योद्धाओंके शरीर कटके पृथ्वी पर गिर पड़े। अर्जुन मानो रथ पर चढ़ कर नृत्य करते हुए धनुष चढ़ा कर चारों ओर अपने तीक्ष्णबाणोंकी वर्षा करने लगे। उस समय कोई पुरुष तनिक भी उन्हें अवकाश लेते हुए नहीं देख सके। वह यत्नवान् होकर इस प्रकार शीघ्रताके सहित बाणोंको चलाने लगे, कि सम्पूर्ण सेनाके शूरवीर योद्धा लोग उनके हस्तलाघवको देखकर विस्मित होगये। वह गजपतियोंके सहित हाथी, सवारोंके सहित घोड़े और सारथि-योंके सहित रथियोंके शरीरको काटके गिराने लगे। मण्डलाकार गतिसे घूमनेवाले सम्मुख स्थित युद्ध करनेवाले पुरुषोंके बीच वहां पर ऐसा कोई भी बाकी न रह गया जिसको कि अर्जुनने अपने बाणोंसे मारकर पृथ्वी पर न गिराया हो। जैसे आकाशमें सूर्य्य उदय होके सम्पूर्ण अन्धकारको दूर कर देता है वैसे ही अपने बाणोंसे अर्जुन तुम्हारी सब सेनाका नाश करने लगे जैसे प्रलयकालके समय पर्व्वतोंके समूहसे पृथ्वी परिपूरित होजाती है वैसे ही तुम्हारी सेनाके बीच मरे हाथियोंके समूहसे रणभूमि परि पूरित हो गई। जैसे सन्ध्याके समयमें सम्पूर्ण प्राणि सूर्य्यको नहीं देख सकते वैसे ही शत्रु लोग अर्जुनको युद्धभूमिमें न देख सके। हे परन्तप। हे महाराज। अन तुम्हारे पक्षकी बहुतसी सेना अर्जुनके बाणों पीडित और भयभीत होकर युद्धभूमिसे भाग लगी। जैसे प्रचण्डवायुके वेगसे बादलोंका स तितर बितर होजाता है उस ही प्रकारसे सम्पूर्ण सेना अर्जुनके बाणोंसे तितर बितर लगी सेनाके योद्धा लोग अर्जुनकी ओर भी न सके। रथी और घुड़सवार योद्धा अर्जुनके बाणोंसे पीडित होकर कोई कोड़े कोई धनुषकी नोक कोई हुङ्कार कोई कठोर वचन कहते हुए अपने घोड़े युद्धभूमिसे लौटा कर अर्जुनके सम्मुखसे भा लगे। हाथियोंके समूह पीलवानोंके अङ्कुश पावके अंगूठेसे इधर उधर दौड़ने लगे; कितने ही शूरवीर योद्धा बाणोंकी मोहित उत्साह रहित होकर भ्रमपू अर्जुन हीकी ओर दौड़ने लगे।

८७ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय! सम्पूर्ण सेना जब अर्जुनके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर युद्धभूमिसे भागने लगी तब कौन कौन योद्धा उस समयमें अर्जुनके सम्मुख हुए थे! जो सम्पूर्ण वीरोंके सङ्कल्प निष्फल हुए और सब योद्धा द्रोणाचार्य रूपी दिवालका आश्रय कर शकटव्यूहमें प्रवेश करके भयसे रहित होकर स्थित हुए १

सञ्जय बोले हे पापरहित। जब उस सम्पूर्ण सेनाके शूरवीर बहुतेरे योद्धा अर्जुनके बाणोंसे मारे गये, तब बचे हुए योद्धा उत्साह रहित होकर युद्धभूमिमें अर्जुनके सम्मुखसे भागने लगे और बार बार बाणोंसे पीड़ित होने पर कोई पुरुष अर्जुनकी ओर देखनेमें भी समर्थ न हुए हे राजेन्द्र। तुम्हारे पुत्र दुःशासन सम्पूर्ण सेनाके योद्धाओंको इस प्रकार अर्जुनके सम्मुखसे भागते देखकर अत्यन्त क्रुद्ध हो युद्ध करनेके वास्ते अर्जुनकी ओर बढ़े। महापराक्रमी बलवान् दुःशासनने सुवर्ण भूषित विचित्र कवच और सुवर्ण भूषित शिरस्त्राण धारण करके बड़ी भयङ्कर हाथियोंकी सेना सङ्ग लेकर मानो पृथ्वीको ग्रास करते हुए सव्यसाची अर्जुनकी चारों ओरसे घेर लिया। हाथियोंके घंटे शूरवीरोंके सिंहनाद धनुषटङ्कार और हाथियोंके चिग्घाड़से सम्पूर्ण दिशा परिपूर्ण होगई। उस [illegible] समय भयङ्कर बोध होने लगा। पुरुष [illegible] अर्जुनने उन सम्पूर्ण सर्प्पके समान सूंड़वाले हाथियोंको अङ्कुश देकर चलाने पर क्रुद्ध [illegible] पाते देख बलपूर्व्वक सिंहनाद [illegible] और अपने तीक्ष्णबाणोंसे शत्रुओंकी [illegible] सब भांतिसे नष्ट करने लगे। जैसे [illegible] प्रचण्ड वायुके वेगसे महाभयङ्कर तरङ्ग [illegible] इधर उधर गिरती हुई दौड़ पड़ती है, [illegible] हाथियोंका समूह अर्जुनके बाणोंसे [illegible] होकर इधर उधर दौड़ते हुए शोभित [illegible] जैसे प्रचण्ड वायुके वेगसे उठती हुई महावेगवान् समुद्रकी तरङ्गमें प्रवेश करते हैं अर्जुनने उसही प्रकारसे उस गजसेनाके बीच प्रवेश किया। उस समय शत्रुनाशन अर्जुन प्रलय समयके दोपहरके सूर्य्य समान चारों ओर दिखाई देने लगे। घोड़ोंके टाप, रथोंकी घर घराहट वीरोंके सिंहनाद धनुषटङ्कार गाण्डीवधनुषके शब्द नाना भांतिके जुझाऊ बाजे पाञ्चजन्य और देवदत्त शंखके शब्दको सुनके तथा अर्जुनके विषधर सर्पके समान तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध होकर सम्पूर्ण हाथी चेतरहितके समान होकर धीरे धीरे आगे बढ़ने लगे, गाण्डीव धनुषसे छूटे हुए सैकड़ों तथा सहस्रों बाणोंसे क्षत विक्षत शरीर और अत्यन्त पीड़ित होकर बारबार महाघोर शब्द करते हुए वे सम्पूर्ण पक्षरहित पर्व्वतके समान मरकर पृथ्वीपर गिरने लगे। कितने ही हाथी दांत पेट पांव आदि सम्पूर्ण शरीरोंमें बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर क्रौञ्च पक्षीके समान शब्द करने लगे। हाथियोंके कन्धे और पीठपर स्थित पुरुषोंके शिर अर्जुनके तीक्ष्णबाणोंसे कटकर पृथ्वीमें गिरनेलगे। जिस समय उन सम्पूर्ण योद्धाओंके कुण्डलभूषित पद्मपुष्पके समान शिर अर्जुनके बाणोंसे कटकर पृथ्वीपर गिरने लगे, उस समय मानो कुन्तीपुत्र अर्जुन इष्टदेवको पद्मपुष्प निवेदन करनेलगे। हाथियोंके ऊपर अस्त्रशस्त्र ग्रहण करनेवाले जो यन्त्रबद्ध शूरवीर योद्धा थे वे सम्पूर्ण योद्धा लोग हाथियोंके चारों ओर भ्रमण करनेके समय अत्यन्त पीड़ित रुधिरसे पूरित और कवचरहित होके हाथियोंके हौदेपर इधर उधर झूलने लगे। अर्जुनके धनुषसे वेगपूर्व्वक छूटे हुए एक एक बाणोंसे दो, तीन वा उससे भी अधिक पुरुष मरकर पृथ्वीपर गिरने लगे। वृक्षयुक्त पर्व्वतके समान कितने ही हाथी सवारोंके सहित बाणोंसे [illegible]

रथियोंकी मौर्व्वी धनुष ध्वजा और रथके चक्रोंको काट काट गिराने लगे। उस समयमें बाण ग्रहण सन्धान करने और बाणोंको चलानेके समय कोई पुरुष भी अर्ज्जुनको न देख सके। केवल उस समयमें उनका धनुष ही मण्डलाकार रूपसे चारों ओर दीखपड़ता था। कितने ही हाथी अर्ज्जुनके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर मुहूर्त भरमें रुधिर उगिलतेहुए पृथ्वीपर गिर पड़े। महाराज! उस महाघोर भयङ्कर संग्रामके समय युद्धभूमिमें अनगिनत कवन्ध उठके चारों ओरसे दौड़ते हुए दिखाई देने लगे। कटी हुई सुवर्णभूषित वीरोंकी भुजा धनुष, बाण, तलवार और अङ्ग लित्राणके सहित इधर उधर युद्धभूमिमें गिरती हुई दिखाई देने लगीं। कितने ही टूटे पड़े और इधर उधर छिटके हुए रथके चक्र, धुरी ध्वजा आदि वस्तु, चक्रधारी, दण्ड ग्रहण करनेवाले मनुष्य आभूषण वस्त्र गलेकी माला रथकी विशाल ध्वजा और मरे हुए हाथी, घोड़े तथा क्षत्रिय योद्धाओंके मृत शरीरसे वह रणभूमि देखनेमें अत्यन्त ही भयङ्कर बोध होने लगी। महाराज! जब दुःशासनकी सेना अर्ज्जुनके बाणोंसे इस प्रकारसे नष्ट होने लगी तब बचे हुए सेनाके योद्धा लोग अर्ज्जुनके अस्त्रोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर उनके सम्मुखसे भागने लगे। तिसके अनन्तर सेनाके सहित पीड़ित होकर दुःशासनने भी भयभीत होके परित्राणकी अभिलाषसे द्रोणाचार्य्यके निकट जाकर शकटव्यूहमें प्रवेश किया।

८८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज! महारथ अर्ज्जुन दुःशासनकी सेना नष्ट करके सिन्धुराज जयद्रथके समीप जानेकी इच्छासे द्रोणाचार्य्यकी सेनाको ओर दौड़े। उन्होंने व्यूहके मुखपर द्रोणाचार्य्यको स्थित देखकर कृष्णकी परामर्शके अनुसार आचार्य्य द्रोणसे यह वचन कहा है ब्राह्मण आप मेरे मङ्गल और कल्याणकी चिन्ता करके स्वस्तिवाद कीजिये, मैं तुम्हारी कृपासे इस दुर्भेद्य शत्रुसेनाके व्यूहमें प्रवेश करनेकी अभिलाष करताहूं। मैं सत्य कहता हूं कि आप मेरे पिताके सदृश तथा धर्म्मराज युधिष्ठिर और कृष्णके समान मुझे प्रिय हैं। हे द्विजसत्तम! हे पापरहित! अश्वत्थामा जिस प्रकारसे तुम्हारी रक्षाके योग्य पात्र है मैंभी उस ही प्रकारसे तुमसे रक्षित होनेके योग्य हूं। हे पुरुषर्षभ! हे आचार्य्य! मैंने तुम्हारी कृपासे युद्धभूमिमें सिन्धुराज जयद्रथके बध करनेकी प्रतिज्ञा किया है। आज मेरी प्रतिज्ञाकी रक्षा कीजिये।

सञ्जय बोले जब द्रोणाचार्य्यसे अर्ज्जुनने ऐसा वचन कहा तब द्रोणाचार्य्यने हंसकर उन्हें यह उत्तर दिया कि हे अर्ज्जुन! तुम मुझे बिना पराजित किये जयद्रथको न जीत सकोगे। ऐसा वचन कहकर द्रोणाचार्य्यने हंसते हुए तीक्ष्ण बाणोंसे अर्ज्जुनको रथके घोड़े और सारथीके सहित छिपा दिया। तिसके अनन्तर अर्ज्जुनने भी अपने बाणोंके समूहसे द्रोणाचार्य्यके बाणोंको निवारण करके फिर अत्यन्त भयङ्कर अनेक बाणोंको चलाकर द्रोणाचार्य्यको आक्रमण किया। हे नरनाथ! तिसके अनन्तर अर्ज्जुनने द्रोणाचार्य्यको सम्मानित करके क्षत्रियधर्म्म अवलम्बन करनेसे फिर नव बाणोंसे उन्हें भि[illegible] किया द्रोणाचार्य्यने अपने बाणोंसे अर्ज्जुनके बाणोंको काटके विष तथा जलती हुई अग्निके समान भयङ्कर बाणोंको चलाकर अर्ज्जुन दोनोंको विद्ध किया। तब महात्मा अर्ज्जुनने द्रोणाचार्य्यके धनुष काटनेकी इच्छा किया, वह धनुष काटनेकी इच्छा करतेही थे कि उस ही समयमें पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने निर्भयचित्तसे अपने बाणोंसे अर्ज्जुनके धनुषका रोदा काट दिया, और [illegible]

अनन्तर उनके रथके घोड़े, ध्वजा और सारथीको विद्ध करके फिर हंसकर अर्ज्जुनको अपने बाणोंसे छिपा दिया। उस ही समय अर्ज्जुनने अपने प्रचण्ड गाण्डीव धनुषपर रोदा चढ़ाकर सम्पूर्ण अस्त्रोंके मर्म्मको जाननेवाले द्रोणाचार्य्यको अपनी युद्ध विषयक निपुणता दिखानेकी इच्छासे शीघ्रता पूर्व्वक छःसौ बाणोंको ग्रहण करके हस्तलाघवके सहित मानो एक ही बाण धनुषसे चलाया। तिसके अनन्तर सात सौ, फिर एक सहस्र,—इसी प्रकारसे लगातार दश दश हजार बाण एक एक बार अर्ज्जुन धनुषपर रखके द्रोणाचार्य्यकी ओर चलाने लगे। अर्ज्जुनके धनुषसे छूटे हुए वे सम्पूर्ण बाण द्रोणाचार्य्यकी सेनाका नाश करने लगे। विचित्र योद्धा पराक्रमी अर्ज्जुनके धनुषसे छूटे हुए उन सम्पूर्ण बाणोंसे विद्ध होकर मनुष्य,घोड़े,हाथी प्राण त्यागकर पृथ्वीमें गिरने लगे रथी योद्धा लोग सहसा अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित हो अस्त्रोंके कटनेसे, सारथी औरथके घोड़ोंसे रहितहोकरतीक्ष्ण बाणोंकी चोटसे मरकरपृथ्वी पर गिरने लगे। हाथी मानो वज्रसे टूटेहुए पर्व्वत, प्रचण्ड वायुके वेगसे तितर बितर हुए बादलोंके समूह और अग्निसे जलते हुएघरके समान अर्ज्जुनके बाणोंसे मरकर पृथ्वीपर गिरने लगे। सहस्रों घोड़े अर्ज्जुनके बाणोंसे कटकर इस भांति पृथ्वीपर गिरते हुए दिखाईदेनेलगे, जैसे हिमालयपर्व्वतपर जलधाराके वेगसे [illegible] समूह पर्व्वतके ऊपर गिरते हुए दिखाई देते। ऐसा क्या वरन समुद्रके समूहरथ, घोड़े हाथी और पैदल सेनाके सूरवीर योद्धा लोग अर्ज्जुनके हाथसे छूटे हुए प्रलय कालके सूर्य्य किरणके समान प्रकाशमानबाणोंसे [illegible] होकर उस समय नष्टहोने लगे। इस प्रकारसे अर्ज्जुनके सूर्य्यकिरण [illegible] बाणोंका जाल जब कुरुसेनाको सुखाने [illegible] करने लगा, तब द्रोणाचार्य्यने बादलरूपी अपने बाणोंकी वर्षा करके अर्ज्जुनके बाणोंको तथा अर्ज्जुनको इस प्रकार छिपा दिया जैसे बादल सूर्य्यको छिपा देते हैं।

अनन्तर द्रोणाचार्य्यने शत्रुओंके प्राण नाश करनेवाले एक भयङ्कर बाणको ग्रहणकरके वेगपूर्व्वक अर्ज्जुनके वक्षस्थलमें प्रहारकिया। जैसे भूकम्प होनेसे पर्व्वत विचलित नहीं होता, वैसे ही अर्ज्जुन उस बाणकी चोटसे विह्वल होके भी धीरज धारण कर द्रोणाचार्य्यको विद्ध करने लगे। द्रोणाचार्य्यनेभी फिरकृष्णको पांच बाणोंसे विद्ध करके अर्ज्जुनको तिहत्तर और उनके रथकी ध्वजाको तीनबाणोंसे विद्ध किया। अत्यन्त पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने शिष्यअर्ज्जुनको अपनी युद्ध विषयक निपुणता दिखानेकी इच्छासे निमिष भरके बीच अपने बाणोंकी वर्षासे रथ सहित अर्ज्जुनको इस प्रकार छिपा दिया कि उस समयमें कृष्णके सहित अर्ज्जुन युद्धभूमिमें देख भी नहीं पड़े। उससमयमें केवल द्रोणाचार्य्यके बाणोंको अर्ज्जुनके रथ पर गिरते और उनके धनुषको मण्डलाकार गतिसे चारो ओर भ्रमण करते हुए देखने लगा, हे राजन्! उस समय युद्धभूमिमें द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छूटे हुए कङ्कपत्र युक्त अनेको बाण कृष्ण और अर्ज्जुनके ऊपर पड़ने लगे।

महाबुद्धिमान् वसुदेव पुत्र कृष्ण उस समयमें द्रोणाचार्य्य और अर्ज्जुनका ऐसा युद्ध देखकर चिन्ता करने लगे, अनन्तर श्रीकृष्णचन्द्र अर्ज्जुनसे यह वचन बोले हे अर्ज्जुन! हमलोगोंका निरर्थक समय बीत रहा है इससे चलो हमलोग द्रोणाचार्य्यको परित्याग करके जिस बड़े कार्य्यको करनेकी इच्छासे आये हैं; उसहीके पूर्ण करनेके निमित्त गमन करें। कृष्णके ऐसे वचन सुनकर अर्ज्जुन उनसे बोले, तुम्हारी जैसी इच्छा है, वैसाही करो। तिसके अनन्तर महारथ अर्ज्जुन द्रोणाचार्य्यकी प्रदक्षिणा करके उनके समीपसे [illegible] के निमित्त [illegible]

किया। अर्ज्जुन अपने बाणोंको चलाते हुए दूसरे मार्गसे गमन करने लगे, तब उन्हें इस प्रकारसे गमन करते देखकर द्रोणाचार्य्य हंसके यह वचन बोले,—अर्ज्जुन! तुम किधर जारहे हो? तुम जो संग्राममें शत्रुको बिना पराजित किये निवृत्त नहीं होगे वह प्रतिज्ञा कहा गई? अर्ज्जुन बोले, आप हमारे गुरु है, शत्रु नहीं हैं, मैं भी तुम्हारा पुत्रके समान प्रिय शिष्य हूं; विशेष करके इस जगत्‌के बीच ऐसा कौन पुरुषहै, जो युद्धभूमिमें आपको पराजित कर सके।

सञ्जय बोले, महाराज। जयद्रथबधकी इच्छासे महाबाहुअर्ज्जुन ऐसे ही वचन कहते हुए शीघ्रता पूर्व्वक उसकी सेनाकी ओर दौड़े अर्ज्जुनके पृष्ठरक्षक पाञ्चाल देशीय युधामन्यु, और उत्तमौजा तुम्हारी सेनाके बीच अर्ज्जुनके प्रवेश करनेके समय उनके अनुगामी हुए। अनन्तर जय, सात्वत कृतवर्म्मा, काम्बोजराज और श्रुतायु अर्ज्जुनको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे। उनके अनुगामी दश हजार रथी और अभिषाह, शूरसेन, शिवि, वशाति, मावेल्लक, ललित्थ, कैकेय मद्रक देशीय योद्धा गोपाली नारायणी सेना और काम्बोज देशीय जो सम्पूर्ण शूरवीरोंमें पूजित और प्रशंसित सेना पहिले कर्णके सम्मुखसे पराजित हुई थी— वे सम्पूर्ण योद्धा लोग द्रोणाचार्य्यको आगे करके प्राणकी आशा छोड़के पुत्रशोकसे क्रुद्ध हुए प्राणियोंके नाश करनेवाले मृत्युके समान तुमुल युद्धमें प्राण त्याग करनेके निमित्त उत्सुक कवच धारण करनेवाले, विचित्र योद्धा हाथियोंके यूथपतिके समान शत्रुसेनाको मर्द्दन करनेवाले महा पराक्रमी धनुर्द्धर पुरुष सिंह अर्ज्जुनको युद्धमें निवारण करनेलगे। उस समय क्रोधित अर्ज्जुनके सङ्ग उन सम्पूर्ण योद्धाओंका रोएं खड़ा करनेवाला महा भयङ्कर तुमुल संग्राम होने लगा अर्ज्जुन और वे सम्पूर्ण योद्धा क्रुद्ध होकर आपसमें एक दूसरेकी ओर अपने अस्त्र शस्त्रोंको चलाने लगे। नाना प्रकारकी औषधी जैसे उत्पन्न हुई एक व्याधिको निवारण करती है, वैसे ही जयद्रथ बधके निमित्त गमन करनेवाले पुरुषसिंह अर्ज्जुनको वे सम्पूर्ण योद्धा लोग आपसमें मिलकर युद्धभूमिसे निवारण करनेमें प्रवृत्त हुए।

८६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, वे सम्पूर्ण योद्धा लोग महा बली अत्यन्त पराक्रमी अर्ज्जुनको आगे बढ़ते देख उन्हें रोकने लगे, और द्रोणाचार्य्य भी उस समय युद्ध करनेकी इच्छासे अर्ज्जुनके पीछे पीछे आकर उनके सम्मुख हुए! सूर्य्य जैसे अपनी किरणोंसे सर्व्वत्र प्रकाश करता है अथवा व्याधि उत्पन्न होकर जैसे देहका नाश करती है, वैसे ही अर्ज्जुन अपने बाणोंको बर्षाते हुए सम्पूर्ण योद्धाओंको पीड़ित करने लगे। कितने ही घोड़े बाणोंसे विद्ध हुए, कितने रथियोंके रथ टूट गये। गजसवारोंके सहित कितने ही हाथी मरकर पृथ्वीमें गिर पड़े कितने वीरोंके छत्र कटकर छिन्नभिन्न होगये, कितने ही रथोंके चक्र टूटे और कितने ही शूरवीर योद्धा लोग अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित होकर चारो ओर भागने लगे। उस समयमें ऐसा दारुण संग्राम होने लगा, कि कुछ भी वहांपर बोध नहीं होता था। पहिले वे सम्पूर्ण राजा और राजपुरुष शूरवीर योद्धा लोग अर्ज्जुनके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए थे, अर्ज्जुनने भी अपने बाणोंकी वर्षासे उन राजाओंकी सेनाके शूरवीरोंको बार बार पीड़ित करके उन्हें भयभीत किया था; परन्तु द्रोणाचार्य्यको आते हुए देखकर सत्यपराक्रमी श्वेतवाहन अर्ज्जुनने अपनी प्रतिज्ञाको सत्य करनेकी अभिलाषसे लाल वर्ण वाले घोड़ोंसे युक्त उत्तम रथपर

[illegible] हुए रथियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यको आक्रमण किया। द्रोणाचार्य्यने महाधनुर्द्धर शिष्य अर्ज्जुनके ऊपर मर्म्मभेदी पचीस बाण चलाये। सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ अर्ज्जुन उन बाणोंके निवारण करने योग्य बाणोंको शीघ्रताके सहित चलाते हुए द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। जब इस प्रकार वह शीघ्रताके सहित बाणोंको चला रहे थे तब उस ही समय महात्मा द्रोणाचार्य्य ब्रह्मास्त्र प्रकट करके नतपर्व्व बाणोंके समूहसे अर्ज्जुनके बाणोंको काट काट गिराने लगे। उस समय युद्धभूमिमें मैंने द्रोणाचार्य्यका अद्भुत पराक्रम तथा आश्चर्य्यमय कार्य्य अवलोकन किया कि युवा अर्ज्जुन यत्नवान् होकर भी उस वृद्ध आचार्य्य द्रोणको प्रतिविद्ध करनेमें समर्थ न हुए। महाघोर बादलोंका समूह जैसे सहस्रों धारासे जल वर्षा करते हैं, वैसेही द्रोणाचार्य्यरूपी बादलने अर्ज्जुनरूपी पर्व्वतके ऊपर बाणरूपी वर्षा करके उन्हे छिपा दिया। अर्ज्जुन भी ब्रह्मास्त्र प्रकट करके अपने बाणोंसे द्रोणाचार्य्यकी बाण वर्षाको निवारण करने लगे। परन्तु द्रोणाचार्य्यने पचास बाणोंसे अर्ज्जुन और सात बाणोंसे कृष्णके वक्षस्थल और [illegible] प्रहार किया, बुद्धिमान् अर्ज्जुन भी [illegible] हुए तीक्ष्ण बाणोंके चलानेवाले द्रोणाचार्य्यको अपने बाणोंसे निवारण करने लगे। [illegible] अर्ज्जुनके चक्ररक्षक युधामन्यु और [illegible] द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित [illegible] कालकी अग्निके समान तेजस्वी [illegible]के समीप युद्धसे पृथक् होगये। [illegible] धारण करनेवाले अर्ज्जुन भी द्रोणाचार्य्यके बाणोंके मार्गको छोड़के भोजराज [illegible] सेनामें प्रवेश करके शूरवार योद्धा-[illegible] करने लगे। वह मैनाक पर्व्वतके [illegible] द्रोणाचार्य्यको त्यागके कृत-[illegible] काम्बोजराज सुदक्षिणकी सेनाके [illegible]। तिसके अनन्तर भोजराज कृतवर्म्माने महापराक्रमी कुरुसत्तम अर्ज्जुनको शीघ्रताके सहित दश बाणोंसे विद्ध किया। अर्ज्जुनने कृतवर्म्माको पहिले एक बाणसे विद्ध करके फिर तीन बाणोंके प्रहारसे उन्हें मोहित कर दिया, परन्तु कृतवर्म्माने हंसके कृष्ण और अर्ज्जुनके ऊपर पचीस बाणोंसे प्रहार किया। अनन्तर अर्ज्जुनने कृतवर्म्माके धनुषको काटकर अग्निके समान स्पर्श करनेवाले सात बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। तिसके अनन्तर कृतवर्म्माने दूसरा धनुष ग्रहण करके पहिले पांच बाणोंसे अर्ज्जुनके वक्षस्थलमें प्रहार करके फिर पांच बाणोंसे उन्हें विद्ध किया; अर्ज्जुनने भी नव बाणोंसे दोनो स्तनोंके बीचमें प्रहार किया। वृष्णिनन्दन कृष्ण अर्ज्जुनको कृतवर्म्माके सङ्ग युद्धमें फंसे हुए देखकर यह वचन बोले, हे अर्ज्जुन! कृतवर्म्माके सङ्ग सम्बन्ध है, यह समझके तुम उसके ऊपर दया मत करो; उसे बाणोंसे पीड़ित करके शीघ्र विनष्ट करो। तिसके अनन्तर अर्ज्जुनने बाणोंसे कृतवर्म्माको मोहित कर वेगगामी घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़के काम्बोज सेनाके बीच प्रवेश किया। कृतवर्म्मा अर्ज्जुनको काम्बोज सेनाकी ओर जाते देख कर क्रोधपूर्व्वक धनुष फेरते हुए उनके दोनों पृष्ठरक्षकोंके सहित युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। उन्होंने उन दोनों वीरोंको आते देखकर उन्हे निवारण किया। तिसके अनन्तर उत्तम पार्नोसे युक्त हुए तीन बाणसे युधामन्यु और चार बाणोंसे उत्तमौजाको विद्ध किया। उन दोनोंने दश दश बाणोंसे कृतवर्म्माके ध्वजा और धनुषको काट दिया। कृतवर्म्माने क्रोधसे मूर्च्छित होकर दूसरा धनुष ग्रहण किया और उन दोनों वीरोंको धनुष रहित करके फिर अपने बाणोंकी वर्षासे उन्हें छिपा दिया। वे दोनों भी दूसरा धनुष ग्रहण करके भोजराज कृतवर्म्माको विद्ध करने लगे। [illegible] अर्ज्जुनने [illegible] सेनाके बीच प्रवेश किया। [illegible]

दोनों पुरुषसिंह तुम्हारे पुत्रकी सेनाके बीच प्रवेश करनेके निमित्त यत्नवान् होनेपर भी कृतवर्म्मासे निवारित होकर प्रवेश करनेमें समर्थ न हुए। शीघ्रताके सहित शत्रुनाशन श्वेतवाहन अर्जुनने शत्रुसेनाको पीड़ित करके गमन करते हुए कृतवर्म्माको युद्धमें पाकर भी उनका वध नहीं किया।

महा पराक्रमी राजा श्रुतायुध अर्जुनको इस प्रकार शत्रुसेनाका नाश करते हुए युद्धभूमिमें आगे बढ़े आते देखकर अपने बड़े धनुषको फेरते हुए उनकी ओर दौड़े। उन्होंने अर्जुनको तीन और कृष्णको सात बाणोंसे विद्ध करके एक तीक्ष्णधारवाले क्षुरप्र बाणसे उनके रथकी ध्वजाको विद्ध किया। जैसे महाबलवान् हाथीको कोड़ेसे प्रहार करते हैं वैसे ही अर्जुनने नतपर्व्व नव्वे बाणोंसे श्रुतायुधके ऊपर प्रहार किया। श्रुतायुधने भी अर्जुनके पराक्रमको न सहके उनके ऊपर सतहत्तर बाणोंसे प्रहार किया। अर्जुनने क्रोधपूर्व्वक राजा श्रुतायुधके धनुष-बाणको काट कर नतपर्व्व सात बाणोंसे उनके वक्षस्थलमें प्रहार किया। राजा श्रुतायुधने क्रोधमें भर कर दूसरा धनुषग्रहण करके नव बाणोंसे अर्जुनकी भुजा और वक्षस्थलमें प्रहार किया, हे भारत! तिसके अनन्तर महापराक्रमी शत्रुनाशन महारथ अर्जुनने हंसते हुए सहस्रा बाणोंसे राजा श्रुतायुधको पीड़ित करके शीघ्रताके सहित उनके चारों घोड़े तथा सारथीका वध किया और सत्तर बाणोंसे उन्हें फिर विद्ध किया। महा पराक्रमी राजा श्रुतायुध घोड़ोंसे रहित रथका त्याग कर गदा उठाके अर्जुनके रथकी ओर दौड़े। महाराज! राजा श्रुतायुधके पिता वरुणदेवथे और उनकी माता शीतल जलसे युक्त पर्णाशा नाम्नी नदीथी। एक बार पर्णाशाने पुत्रके वास्ते वरुणसे प्रार्थना किया कि "हे स्वामिन्! मेरा यह पुत्र जगत्के बीच अवध्य होवे मैं यह वर तुमसे मांगती हूं।" वरुण प्रसन्न होके पर्णाशासे बोले हे नदि प्रवरे! जिस प्रकारसे तुम्हारा यह पुत्र शत्रुओंसे अवध्य होगा उस निमित्त मैं इसको दिव्य अस्त्र प्रदान करता हूं। मनुष्य किसी प्रकारसे भी अमर नहीं होता जन्म लेनेसे अवश्य मरना पड़ता है; परन्तु तुम्हारा यह पुत्र मेरे दिये हुए अस्त्रके प्रभावसे सदा सर्व्वदा युद्धभूमिमें शत्रुओंको पराजित करता रहेगा, इससे तुम अपने इस पुत्रके निमित्त कुछ भी चिन्ता मत करो।" वरुणने ऐसा वचन कह कर पुत्रको मन्त्रके सहित एक गदा प्रदान किया उस गदाको पाकर राजा श्रुतायुध सम्पूर्ण लोकोंके बीच विख्यात होगये। भगवान् वरुण राजा श्रुतायुधसे फिर यह वचन बोले हे पुत्र! जो पुरुष युद्ध नहीं करे उसके ऊपर तुम इस गदासे प्रहार मत करना, यदि तुम युद्ध न करनेवाले पुरुषके ऊपर इस गदाको चलाओगे तो यह लौटकर तुम्हारे ही ऊपर गिरेगी। जो युद्धमें तुम्हारे विरुद्ध अस्त्र चलावेगा यह गदा उसही पुरुषका वध कर सकेगी। महाराज! श्रुतायुधने अपने पिताके वचन अनुसार कार्य्य नहीं किया, उन्होंने उस वीरघातिनी गदाको कृष्णके ऊपर चलाया। पराक्रमी कृष्णने अपने विशाल कन्धे पर उस महा घोर गदाकी चोटको ग्रहण किया। जैसे वायु विन्ध्याचल पर्व्वतको विचलित नहीं कर सकता वैसे ही वह गदा कृष्णको विचलित न कर सकी, बल्कि यज्ञके अग्निकी शिखाके समान घूमकर युद्धभूमिमें खड़े हुए अत्यन्त क्रुद्ध वीर श्रुतायुधके ऊपर गिरके उनका प्राण नाश करती हुई पृथ्वीमें गिर पड़ी शत्रुनाशन श्रुतायुधको अपने ही अस्त्रसे मरके पृथ्वी पर गिरते देखकर उनकी सेनाके सम्पूर्ण पुरुष तुमुल शब्दके सहित हाहाकार करने लगे हे राजेन्द्र! श्रुतायुधने उस गदाको युद्ध न करनेवाले कृष्णके ऊपर चलाया था इस ही कारणसे उस गदाने

चोटसे स्वयं प्राणरहित होकर युद्धभूमिमें गिर पड़े। वरुणने जैसावचन कहाया उसही वचनके अनुसार वह युद्धभूमिमें मारे गये। वह सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंके सम्मुख हीमें प्राणत्याग कर पृथ्वीमें गिर पड़े। तिसके अनन्तर सम्पूर्ण सेनाके योद्धा लोग सेनापति श्रुतायुधको मरे हुए देखकर युद्धभूमिसे भागने लगे। पर्णाशाके प्रिय पुत्र श्रुतायुध मानो वायुके वेगसे टूटे हुए अनेक शाखाओंसे युक्त वृक्षके समान पृथ्वी पर गिरके शोभित होने लगे। तिसके अनन्तर काम्बोजराजके पराक्रमी पुत्र सुदक्षिण वेगवान् घोड़ोंसे युक्त अपने सुन्दर रथपर चढ़के अर्जुनके सम्मुख उपस्थित हुए। अर्जुनने सुदक्षिणके ऊपर सात बाण चलाये वे सातो बाण सुदक्षिणके शरीरको भेदकर पृथ्वीपर गिरे। गाण्डीव धनुषसे छूटे हुए उन बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर सुदक्षिणने कङ्कपत्र युक्त दश बाणोंसे अर्जुनको ऊपर प्रहार किया; फिर दूसरी बार तीन बाणोंसे कृष्णको विद्ध करके पांच बाणोंसे अर्जुनको विद्ध किया अर्जुनने उनके धनुषको काट कर उनके रथकी ध्वजा काट दिया और अत्यन्त तीक्ष्ण दो भल्लसे उन्हें विद्ध किया। सुदक्षिणने भी तीन बाणोंसे अर्जुनको विद्ध करके सिंहनाद किया। तिसके अनन्तर सुदक्षिणने घण्टा युक्त एक महाघोर शक्ति अर्जुनकी ओर चलाया। प्रकाशमान उल्काके समान वह जलती हुई प्रचण्ड शक्ति महारथ अर्जुनके शरीरको भेद कर [illegible] प्रविष्ट हुई; उससे अर्जुन अत्यन्त [illegible] होकर मूर्च्छित होगये। अचिन्त्य पराक्रमी महातेजस्वी अर्जुन कुछ समय बीतने पर [illegible] सावधान हुए और दांत पीसते हुए [illegible] चौदह बाणोंसे घोड़े, ध्वजा, धनुष और [illegible] रहित काम्बोजराज सुदक्षिणके [illegible] बाणोंसे उनके [illegible] कर दिया। अनन्तर [illegible] बाणसे उनके हृदयको भेद करके उनके सङ्कल्प और पराक्रमको निष्फल कर दिया। उनका वर्म्म कट गया, अङ्ग विदीर्ण मुकुट और कवच कटके पृथ्वी पर गिर पड़े; वीर सुदक्षिण सम्मुख होकर ही यन्त्र-युक्त ध्वजाकी भांति रणभूमिमें गिर पड़े। जैसे पर्व्वतके शिर पर उत्पन्न हुए उत्तम शाखासे युक्त अत्यन्त विशाल शोभायमान कर्णिका का सुन्दर वृक्ष हेमन्त ऋतुके अन्तमें वायुके वेगसे टूट कर पर्व्वतके ऊपर गिरता है, वैसे ही सुदक्षिण अर्जुनके बाणकी चोटसे मरकर पृथ्वीपर गिरे हुए शोभित होने लगे। काम्बोजदेशीय उत्तम वस्त्रोंसे युक्त शोभायमान शय्यापर शयनकरने योग्य महामूल्यवान् प्रकाशमान आभूषणोंको पहने हुए राजा सुदक्षिण मर कर पर्व्वतके समान पृथ्वीपर शयन करने लगे। अग्निके समान तेजस्वी सुवर्णकी माला पहरे हुए लालनेत्रसे युक्त उत्तम शरीरवाले काम्बोजराजके पुत्र सुदक्षिण अर्जुनके बाणकी चोटसे प्राणरहित होकर पृथ्वीमें गिर कर भी अत्यन्त शोभित होने लगे। तिसके अनन्तर तुम्हारे पुत्रकी सम्पूर्ण सेनाके योद्धा लोग श्रुतायुध और काम्बोजराजके पुत्र सुदक्षिणको मरे हुए देखकर युद्ध भूमिसे भागने लगे।

९० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् महापराक्रमी वीर सुदक्षिण और श्रुतायुधके मरने पर तुम्हारा बहुतसी सेना कुपित होकर अर्जुनके ऊपर अस्त्र-शस्त्रोंकी वर्षा करती हुई वेगपूर्व्वक उनके सम्मुख आपहुंची। अभिषाह, शूरसेन, शिबि- और वसाति देशीय सेनाके शूरवीर योद्धा लोग अर्जुनके ऊपर सबके [illegible] बाणोंकी वर्षा करने लगे। [illegible]

वे लोग अर्ज्जुनके सम्मुखसे इस प्रकार भाग गये, जैसे व्याघ्रके सम्मुखसे छोटे हरिण भाग जाते है, परन्तु उन शूरवीरोंने फिर लौट कर क्रोध पूर्व्वक अर्ज्जुनको चारों ओरसे घेरलिया। उन लोगोंके लौटते ही अर्ज्जुनने अपने गाण्डीव-धनुष पर बाणोंको चढ़ा कर उनके शिर और भुजा आदि अंगोंको काटनाआरम्भ किया। उन लोगोंके कटे हुए शिरोंसे उस उस स्थलकी रणभूमि परिपूरित होगई, गिद्ध, कौवे बगुले आदि मांस भक्षण करनेवाले पक्षियोंने वहां पर उड़ते हुए आकाशमण्डलको मेघछायाकी भांति छिपा दिया। जब वह सम्पूर्ण सेना अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित होने लगी तब श्रुतायु और अच्युतायु अर्ज्जुनके सङ्ग युद्ध करने लगे। महाराज! महाबलवान् अत्यन्त पराक्रमी वे दोनो धनुर्धारी वीर महत् यश उपार्ज्जन करनेकी अभिलाषसे अर्ज्जुनके बध और तुम्हारे पुत्रके हितकी इच्छा करके शीघ्रताके सहित दहिनी ओर वायीं ओर स्थित होकर अर्ज्जुनके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। जैसे बादल जल वर्षा करके तालावोंको परिपूर्ण कर देते हैं वैसेही उन दोनों वीरोंने क्रुद्ध होकर नत पर्व्व सहस्र बाणोंसे अर्ज्जुनको छिपा दिया अनन्तर रथियोंमें मुख्य श्रुतायुने अत्यन्त क्रुद्ध होकर अर्ज्जुनके ऊपर शिला पर घिसे हुए तीक्ष्णधारसे युक्त एक तोमर चलाया शत्रुनाशन अर्ज्जुन उस बलवान् शत्रुके तोमरकी चोटसे अत्यन्त विद्ध होकर मूर्च्छित होगये, और कृष्णभी उस समय मोहित होगये। उस ही अवसरमें महारथ अच्युतायुने एक तीक्ष्ण त्रिशूलसे अर्ज्जुनके ऊपर प्रहार किया। उस समय अच्युतायुने त्रिशूलसे प्रहार करके मानो महात्मा अर्ज्जुनके कटे हुए घाव पर लोन लगा दिया, उस त्रिशूलकी चोटसे अर्ज्जुन अत्यन्त पीड़ित होकर रथके ध्वजाका दण्डपकड़के बैठ गये। उस समयमें अर्ज्जुनको मरा हुआ समझके तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण शूरवीर योद्धालोग महाघोर सिंहनाद करने लगे, तब कृष्ण अर्ज्जुनको मूर्च्छित देखकर मित्रोंके धर्म्म अनुसार धीरज देने लगे। लक्ष्य देखनेवाले उन दोनों वीरोंने उस ही समयमें रथके चक्र धुरी घोड़े ध्वजा और पताकाके सहित कृष्ण अर्ज्जुनको अपने बाणोंकी वर्षासे छिपा दिया वह युद्ध उस समयमें अद्भुतरूपसे दीख पड़ा। हे भारत। अनन्तर अर्ज्जुन धीरे धीरे सावधान हुए उस समय मानों अर्ज्जुन यमलोकमें जाकर फिर वहांसे लौट आये महारथ अर्ज्जुनने कृष्ण के सहित अपने रथको उन दोनों शूरवीरोंके बाणोंके जालसे छिपे हुएदेखकर और उन दोनों शत्रुओंको जलतेहुये अग्निके समान अवलोकन करके ऐन्द्र अस्त्र चलाया। उस ऐन्द्र अस्त्रसे सहस्र नतपर्व्व बाण छूटकर उन दोनों महाधनुर्द्धर वीरोंके बाणोंको निवारण करने लगे उन दोनों वीरोंके सम्पूर्ण बाण उस समय अर्ज्जुनके बाणोंसे कटते हुए आकाशमें भ्रमण करते हुए दिखाई देने लगे। पाण्डुपुत्र अर्ज्जुन उन दोनो शूरवीरोंको अपने बाणोंके वेगसे शीघ्र ही निवारण करके महारथियोंके सङ्ग युद्ध करते हुए इधर रणभूमिमें भ्रमण करने लगे वे दोनौ पराक्रमी वीर अर्ज्जुनके बाणोंसे भुजा और शिरसे रहित होकर मानो वायुके वेगसे टूटे हुए दो वृक्षोंके समान पृथ्वीपर गिर पड़े श्रुतायु और अच्युतायुका मरना समुद्र सूखनेके समान सम्पूर्ण पुरुषोंको विस्मित करने लगा तिसके अनन्तर अर्ज्जुनने उन दोनों महारथियोंके अनुयायी पचास रथियोंका बध करके फिर मुख्य मुख्य क्षत्रिय योद्धाओंका संहार करते हुए भारती सेनाके बीच प्रवेश किया। श्रुतायु और अच्युतायुका मरना देखकर उन लोगोंके दो पुत्र पुरुषश्रेष्ठ नियुतायु और दीर्घायु अपने पिताके मरनेपर अत्यन्त दुःखित और क्रुद्ध होकर अपने बाणोंको चलाते हुए अर्ज्जुन

[illegible] उपस्थित हुए। अर्ज्जुनने अत्यन्त क्रुद्ध होकर मुहूर्त भरके बीचमें उन दोनोंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे प्राणरहित करके यमपुरीमें भेज दिया। जैसे मतवारा हाथी कमलसे युक्त तालाबके कमलनालको तोड़ते हुए भ्रमण करता है, उस ही भांतिसे कुन्तीपुत्र अर्ज्जुन तुम्हारी सेनाको तितर बितर करने लगे; मुख्य मुख्य क्षत्रिय योद्धालोग यत्नवान् होकर भी अर्ज्जुनको निवारण करनेमें समर्थ नहीं हुए। अनन्तर अङ्गदेशीय पश्चिम और दक्षिण दिशाके महस्रों शूरवीर योद्धाओंने हाथी और घोड़ों पर चढ़के कलिङ्गदेशीय योद्धाओंको आगे कर क्रोध पूर्व्वक पर्व्वतकेसमान अपने हाथियोंके समूहसे आक्रमण किया। उन लोगोंको सम्मुख पहुंचते ही अर्ज्जुनने अपने गाण्डीव धनुषसे बाणोंको छोड़ते हुए शीघ्रताके सहित उन शूरवीर योद्धाओंके शिर और सुन्दर आभूषणोंसे भूषित भुजाओंको काट काटके पृथ्वीमें गिराने लगे। उन सम्पूर्ण कटे हुए शिरों और प्रकाशमान आभूषणोंके सहित सर्पके समान भुजाओंसे पृथ्वी मानो सुवर्णमयीके समान शोभित होने लगी जैसे वृक्षोंसे पक्षियोंका समूह उड़ते हुए दीख पड़ता है, वैसे ही अर्ज्जुनके बाणोंसे वीरोंके कटे हुए शिर और [illegible] इधर उधर गिरती हुई दिखाई देने लगी। बाणोंकी चोटसे सहस्रों हाथियोंके शरीरसे [illegible] रुधिरकी धारा बहती हुई दिखाई [illegible] पर्व्वतके ऊपरसे गेरूकी धारा [illegible] हुई दीख पड़ती है हाथियोंपर चढ़े [illegible] अर्ज्जुनके बाणोंसे प्राण-[illegible] होकर पृथ्वीमें गिरकर अत्यन्त ही भय-[illegible] दिखाई पड़ते हैं। नाना वेषधारी [illegible] नाना भांतिके अस्त्र शस्त्रोंको [illegible] अर्ज्जुनके [illegible] युद्ध करते हुए उन [illegible] मरकर रुधिरपूरित शरी-[illegible] [illegible]

और पैदल चलनेवाले शूरवीर योद्धा लोग अर्ज्जु-नके बाणोंसे पीड़ित होकर रुधिर वमन करने लगे; बहुतेरे हाथी चिग्घाड़ते हुए चारों ओर भ्रमण करके बाणोंसे मरकर पृथ्वीमें गिरने लगे; कितने ही हाथी भयभीत होगये और बहुतेरे हाथी क्रुद्ध होकर अपने सङ्ग-वाले हाथियोंसे ही युद्ध करने लगे! कितने ही मतवारे हाथी विषधारी सर्प्पके समान अर्ज्जुनके तीक्ष्ण बाणोंसे पीड़ित होके सवा-रोंके सहित सेनाके पुरुषोंको मर्द्दन करते और इधर उधर युद्धभूमिमें भागते हुए दिखाई देने लगे। तिसके अनन्तर महाघोर स्वरूप और भयङ्कर नेत्रवाले कालके समान शस्त्रधारी शस्त्र चलानेमें निपुण असुरमायाको जाननेवाले यवन पारद शक बाह्लिक गो योनिसे उत्पन्न हुए म्लेच्छ लोग, और दार्व्वाभिसार दरद, तथा पुण्ड्रदेशीय युद्धविद्याके जाननेवाले सहस्रों तथा लाखों म्लेच्छोंके दल जिनकी गिनती नहीं हो सकती—वे सम्पूर्ण म्लेच्छ अर्ज्जुनको आक्रमण करके उनके ऊपर अपने तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करने लगे अर्ज्जुनउन लोगोंके ऊपर शलभ समूहकी भांति झुण्डके झुण्ड बाण चलाने लगे। अर्ज्जुनने बाणोंसे आकाश मण्डलको मेघछायाकी भांति छालिया; और उन मूड़े हुए शिर अधमुण्डित शिर सम्पूर्ण शिर पर जटा बढ़ाये हुए अपवित्र सम्पूर्ण म्लेच्छोंके दलका अपने अस्त्रके प्रतापसे एकबारगी संहार किया। बाकी बचे हुए कितने ही पर्व्वतकी कन्दरा तथा पहाड़ों पर वास करनेवाले म्लेच्छ अर्ज्जु-नके सैकड़ों बाणोंसे [illegible] और भयभीत होकर रणभूमिसे भागने लगे। कौवे गिद्ध और सियार आदि मांस भक्षण करनेवाले प्राणी हर्षित होकर मरे हुए हाथी घोड़े और [illegible] भक्षण करके रुधिर पीने लगे [illegible] [illegible]

पुरुषोंके रुधिरके सहित घोड़े हाथी और रथरूपी (पुल) से युक्त बाणरूपी नौका रुधिर रूपी तरङ्ग कटीहुई अंगुलि रूपी छोटी छोटी मछरी, केशरूपी शिवार और मरे हुए हाथीरूपी द्वीपोंसे युक्त प्रलयकालके समान एक भयङ्करी नदी उत्पन्न कर दिया। जैसे बादलोंकी जलवर्षाके समयमें कोई गढ़ा भी जलसे खालीनहीं रह जाता, वैसे ही वह नीची ऊंची रणभूमि रुधिरसे युक्त होकर समान होगई। क्षत्रिय श्रेष्ठ अर्ज्जुनने छः हजार घुड़सवार और एक हजार मुख्य मुख्य क्षत्रिय योद्धाओंको यमपुरीमें भेज दिया। उत्तम भांतिसे सज्जित हुए सहस्रों हाथी अर्ज्जुनके बाणोंसे मर कर मानो वज्रकी चोटसे पक्ष रहित पर्व्वतकी भांति पृथ्वी पर गिरेहुए दिखाई देने लगे। जैसे मतवारा हाथी कमल वनको मर्द्दन करते हुए भ्रमण करता है, और जैसे अग्नि वायुसे प्रेरित होकर बहुतेरे वृक्ष लता, सूखे, तृण, काष्ठ और पत्थरोंसे युक्त जङ्गलको भस्म कर देती है, उसी प्रकारसे क्रुद्ध अर्ज्जुनरूपी अग्नि कृष्णरूपी वायुसे प्रेरित होकर बाण रूपी शिखासे वनरूपी तुम्हारी सेनाको भस्म करने लगे। उन्होंने क्रुद्ध होकर वज्र समान अपने तीक्ष्ण बाणोंसे रथोंको घोड़े और सारथि तथा रथियोंसे रहित करके मनुष्योंके रुधिरसे रणभूमिको परिपूर्ण करते और हाथमें गाण्डीव धनुषधारण कर सम्पूर्ण सेनाको तितर बितर करते हुए भारती सेनाके बीच प्रवेश किया। अम्वष्ठ श्रुतायु यत्नवान् होकर मार्गमें अर्ज्जुनके सम्मुख खड़े होकर उन्हें निवारण करने लगे। अर्ज्जुनने कङ्कपत्र युक्त तीक्ष्ण बाणोंसे अम्वष्ठके घोड़ोंका वध करके फिर अपने बाणोंसे उनका धनुष काट कर पराक्रम प्रकाशित किया! तब वीर अम्वष्ठने गदा ग्रहण कर कृष्ण और अर्ज्जुनके समीप आकर हंसते हुए रथ घेर कर गदासे कृष्णके ऊपर प्रहारकिया। शत्रुनाशन अर्ज्जुनने कृष्णको गदा पीड़ित देख कर अम्वष्ठके ऊपर अत्यन्त क्रुद्ध होकर सुवर्ण दण्डवाले बाणोंसे उन इस प्रकार छिपा दिया, जैसे बादल आकाश सूर्य्यको छिपा देते हैं फिर अनेक बाणों चलाकर पराक्रमी अर्ज्जुनने महात्मा अम्वष्ठ गदाको टुकड़े टुकड़े कर दिया, उस समय अर्ज्जुनका पराक्रम अद्भुतरूपसे दीख पड़ा। अम्व उस गदाको अर्ज्जुनके बाणोंसे नष्ट हुई दे दूसरी गदा ग्रहण करके कृष्ण-अर्ज्जुनके ऊ बार बार प्रहार करने लगे। तब अर्ज्जुनने क्षुरप्र बाणोंसे गदाके सहित उनकी दोनों भु और एक बाणसे उनका शिर काटकर पृथ्वी गिरा दिया। हे राजन्! पराक्रमी अम्वष्ठ म कर मानों यन्त्रसे छूटे हुए इन्द्रध्वजाकी भांति गिर कर पृथ्वीको अनुनादित करने लगे। उ समय अर्ज्जुन सैकड़ों हाथी घोड़े और र सेनाके बीच घिरकर उन सम्पूर्ण योद्धाओं अपने बाणोंसे तितर बितर करने लगे; उ समय अर्ज्जुन सम्पूर्ण सेनाके बीच घिरक मानो बादलोंके बीच सूर्य्यके समान छिपे हु दिखाई देने लगे।

९१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले हे भारत! कुन्तीपुत्र अर्ज्जुन सिन्धुराज जयद्रथके वधकी अभिलाष करक द्रोणाचार्य्य और कृतवर्म्माकी सेनाको भेदकर उ शकट व्यूहके बीच प्रवेश किया काम्बोजराज पुत्र सुदक्षिण और श्रुतायुध जब अर्ज्जुनक हाथसे मारे गये और सम्पूर्ण सेना अत्यन्त पीड़ित होके उनके सम्मुखसे भागने लगी तब तुम्हारे पुत्र दुर्योधन द्रोणाचार्य्यके समी गये। राजा दुर्योधन शीघ्रताके सहित अपने रथपर चढ़के द्रोणाचार्य्यके समीप जाकर य वचन बोले, हे ब्राह्मण! वह पुरुषसिंह अर्ज्जु

मेरी इस सम्पूर्ण सेनाको पीड़ित करते हुए तितरबितर करके आगे बढ़ा जा रहा है; इस समय मेरी सेनाके पुरुषोंका अत्यन्त ही नाश होरहा है, इससे उसे निवारण करनेके निमित्त जो कुछ कर्त्तव्य कार्य्य हो, उसका आप विचार कीजिये। वह पुरुषसिंह जिस प्रकार जयद्रथका वध न कर सके, आप उसही उपायका विधान कीजिये। आपका मङ्गल होवे, आपही हमलोगोंके परम आश्रयस्वरूप हैं। जैसे जलती हुई अग्नि सूखे हुए तृण-काष्ठ आदिको भस्म कर देती है; वैसे ही अर्जुनरूपी अग्नि क्रोधरूपी वायुसे प्रेरित होकर मेरी सेनाको अपने वाणोंसे जलारहा है। हे परन्तप! जब कुन्तीपुत्र अर्जुन सम्पूर्ण सेनाको भेदकर जयद्रथके समीप पहुंचेगा तो जयद्रथके सम्पूर्ण रक्षक योद्धाओंको अत्यन्त ही भय उत्पन्न होवेगा। हे ब्रह्मज्ञ सत्तम! राजाओंका यह निश्चय हुआ था, कि अर्जुन आपके रहते द्रोणाचार्य्यको कभी भी अतिक्रम नहीं कर सकेगा। हे महातेजस्विन्! जब अर्जुनने तुम्हारे सम्मुख ही व्यूहबद्ध सेनाको भेदकर इस सेनाके बीच प्रवेश किया है, तब मैं दोष करता हूं, मेरी सम्पूर्ण सेनाके योद्धा [illegible] आतुर होरहे हैं ऐसा क्या मेरी इस सम्पूर्ण सेनाको नष्ट हुई ही समझ लेना चाहिये। हे भारत! मैं आपको पाण्डवोंका [illegible] जानता हूं तोभी इस उपस्थित अत्यन्त [illegible] तुम्हारे ऊपर सम्पूर्ण भारका [illegible] मोहित होरहा हूं। हे [illegible] आपको उपजीविका भी यथाशक्ति [illegible] रहनेको देता रहता हूं, और [illegible] ऊपर शक्तिके अनुसार प्रीति भी [illegible], परन्तु आप इन बातोंका विचार [illegible] हैं। हे अनन्त पराक्रमिन्! [illegible] हे [illegible], तुम हमारे [illegible] करते भी, [illegible] हमलोगोंके शत्रुता करनेवाले पाण्डवोंके ऊपर आप प्रीति करते हो। आप हम लोगोंके यहांसे उपजीविका पाते हैं, और हमारे ही अप्रिय कार्य्योंके करनेमें प्रवृत्त होरहे हैं, इससे आप जो मधुयुक्त छूरेके समान हैं, उस बातको मैं नहीं जानता था। आप यदि पाण्डवोंको विरुद्धता करनेके निमित्त प्रतिज्ञा करके हम लोगोंको धीरज न देते, तो मैं सिन्धुराज जयद्रथको घर जानेके निमित्त न रोकता, मेरी बुद्धिहीनतासे ऐसा हुआ है, मैंने समझा था, कि आप सिन्धुराज जयद्रथकी रक्षा करेंगे! इस ही कारणसे जयद्रथको धीरज देकर मैंने यमराजके हाथमें समर्पण किया है। मनुष्य यमराजके कराल मुखमें प्रवेश करकेभी जीता बचसकता है, परन्तु जयद्रथ युद्धमें अर्जुनके वशमें होकर कभी भी जीते जी मुक्त न हो सकेंगे, जो हो, इस समय सिन्धुराज जयद्रथ जिस प्रकारसे बच सकें आप वैसे ही उपायका विधान करके जयद्रथकी रक्षा कीजिये। मैं इस समयमें आर्त्त होरहा हूं, इससे आप मेरे आर्त्तप्रलापको सुनकर क्रोध मत कीजिये।

द्रोणाचार्य्य बोले, हे राजन्! मैं तुम्हारी बातोंमें दोषारोपण नहीं करता हूं, तुम मुझे अश्वत्थामाके समान प्रिय हो। मैं तुमसे यह यथार्थ वचन कहता हूं, उसे तुम अच्छे प्रकारसे निश्चय करके हृदयमें धारण करो। कृष्ण सारथियोंमें मुख्य हैं और उसके रथके घोड़े महावेगवान हैं, इससे अर्जुन थोड़ासा मार्ग बना करके सेनाके बीच शीघ्र गमन कर सकता है। तुम क्या नहीं देखते हो, कि उसके धनुषसे छूटे हुए वाण उसके [illegible] रथसे एक कोसकी दूरी पर जाके गिरते हैं, [illegible] करके मुझे [illegible] [illegible]

पर नहीं रहूंगा, तो पाण्डवोंकी सेना मेरे इस व्यूहको तोड़ कर आगे बढ़ सकती है; और मैंने क्षत्रिय योद्धाओंके बीचमें यह प्रतिज्ञा किया है कि सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंके सम्मुखहीमें राजा युधिष्ठिरको जीतेही ग्रहण करूंगा। युधिष्ठिर भी इस समय अर्जुनसे रहित होकर मेरे सम्मुख उपस्थित हुआ है। हे महाबाहो! तुम और अर्जुन एकही वंशमें उत्पन्न हुए हो, विशेष करके तुम इस सम्पूर्ण पृथ्वीके राजा और सहायतासे युक्त हो, परन्तु अर्जुन सहायकोंसे रहित तुम्हारा शत्रु है, इससे तुम भय त्याग कर जाके उसके सङ्ग युद्ध करो। तुम राजा, शूरवीर कृतास्त्र तथा युद्धके सम्पूर्ण कार्य्योंके जाननेवाले हो, और तुमने हीं पाण्डवोंके सङ्ग शत्रुता उत्पन्न करी है, इस समय जहां पर अर्जुन तुम्हारी सेनाके सङ्ग युद्ध कररहा है उसही स्थान पर जाकर तुम उसके सङ्ग युद्ध करो।

दुर्य्योधन बोले, हे आचार्य्य? तुम सम्पूर्ण शस्त्रधारियोंमें अग्रगण्य हो, जब तुम्हे भी अर्जुनने अतिक्रम करके व्यूहबद्ध सेनाके बीच प्रवेश किया है तब मैं उसे किस प्रकारसे निवारण कर सकूंगा? युद्धमें वज्रधारी इन्द्रको भी पराजित किया जासकता है, परन्तु पराये देशके जीतनेवाले अर्जुनको पराजित नहीं किया जासकता जिस पाण्डुपुत्र अर्जुनने जलती हुई अग्निके समान अपने अस्त्रोंके बलसे भोजराज कृतवर्म्मा और देवतोंके समान पराक्रमी आपको जीत कर सेनाके बीच प्रवेश किया। है, और जिसने श्रुतायु राजासुदर्शन श्रुतायुध श्रुतायु अच्युतायु तथा दश दश हजार म्लेच्छोंका बध किया है उसके विरुद्ध मैं कैसे युद्ध करूंगा? मैं तुम्हारे आधीन हूं, यदि तुम मुझे अर्जुनके सङ्ग युद्ध करनेके योग्य समझते हो, तो जैसे अपने अनुयायी पुरुषकी रक्षा करी जाती है वैसेही आप मेरी रक्षा कीजिये।

द्रोणाचार्य्य बोले हे कुरुकुल शिरोमणे अर्जुन जो युद्धमें न जीतने योग्य है, यह तुमने सत्यही कहा है परन्तु जिस प्रकार तुम उसके अस्त्रोंको निवारण करनेमें समर्थ होगे मैं वही विधान करता हूं। आज सम्पूर्ण धनुर्द्धर योद्धा कृष्णके सम्मुख तुम्हें अर्जुनसे युद्ध करते हुए देखकर अचरज मानेंगे। महाराज! इस सुवर्णमय कवचको मैं तुम्हारे शरीरमें इस प्रकारसे पहना दूंगा, जिससे किसी अस्त्रको चोट तुम्हारे शरीरमें न लगेगी। यदि सुर, असुर, यक्ष, सर्प, राक्षस और मनुष्योंके सहित तीनों लोकके प्राणी इकट्ठे होकर युद्ध करें, तौ भी युद्धभूमिमें तुम्हें भय न होगा। न कृष्ण न अर्जुन और न दूसरा कोई शस्त्रधारी पुरुष,—कोई भी युद्धभूमिमें तुम्हारे इस कवचके भीतर अपने अस्त्रोंसे प्रहार नहीं कर सकेगा। इससे तुम इस कवचको पहन कर शीघ्रताके सहित उस क्रुद्ध अर्ज्जुनके समीप जाकर उसके सङ्ग युद्ध करो।

सञ्जय बोले, ब्रह्मज्ञसत्तम द्रोणाचार्य्य ऐसा वचन कह कर तुम्हारे पुत्रको उस महा-भयङ्कर युद्धके समयमें, विजयके निमित्त सम्पूर्ण प्राणियोंको विस्मित करनेके वास्ते शीघ्रताके सहित जलस्पर्श करके मन्त्रजप हुए अद्भुत प्रकाशमान एक वर्म्म (कवच) पहना दिया। अनन्तर दुर्य्योधनसे बोले हे भरतकुल भूषण ब्रह्मा तुम्हारे स्वस्तिको विधान करें, ब्राह्मण लोग तुम्हारी स्वस्ति करें; जो सम्पूर्ण सर्प हैं उनसे भी तुम्हारा स्वस्ति हो। ययाति नहुष धुन्धुमार भगीरथ और दूसरे राजऋषि लोग भी सर्व्वदा तुम्हारे स्वस्तिका विधान करें; और एक पाद वहुतसे पांववाले तथा पांवरहित जीवोंसे भी इस रणभूमिमें तुम्हारी स्वस्ति। हे पापरहित! स्वाहा स्वधा शची लक्ष्मी और अरुन्धती ये सब तुम्हारे स्वस्तिका विधान करें। धाता विधाता लोकपाल

दिशा दिग्पाल और षडानन स्वामि कार्त्तिक आज तुम्हें स्वस्ति प्रदान करें। असित देवल विश्वामित्र अङ्गिरा वशिष्ठ और कश्यप ये सम्पूर्ण ऋषि लोग तुम्हारी स्वस्तिका विधान करें। भगवान् विवस्वान् चारों दिशाके चारों दिग्गज पृथ्वी आकाश और सम्पूर्ण ग्रह तुम्हारी स्वस्ति का विधान करें। और जो पृथ्वीके नीचे रहकर इस सम्पूर्ण पृथ्वीको धारण करते हैं वह सर्पोंमें श्रेष्ठ शेषनाग तुम्हें स्वस्ति प्रदान करें। हे गान्धारी नन्दन। पहिले समयमें जब वृत्रासुर नामक दैत्यने पराक्रमको प्रकाशित करके सहस्रों देवताओंके सहित इन्द्रको पराजित किया था; तब सम्पूर्ण देवतोंके सहित क्षतविक्षत शरीर होकर इन्द्र बल और पराक्रमसे रहित होके वृत्रासुरके भयसे ब्रह्माके निकट गये। वे सम्पूर्ण देवता ब्रह्माके समीप जाकर उनसे यह वचन बोले कि हे द्विजसत्तम! वृत्रासुरने हम सब लोगोंको पीड़ित किया है, इस समय आप ही हम लोगोंके आश्रयस्वरूप हैं आप इस महाभयसे हम लोगोंकी रक्षा कीजिये।

उस समय ब्रह्माने विष्णु और इन्द्र आदि सम्पूर्ण देवताओंको दुःखित देखकर यह वचन कहा,—इन्द्रके सहित सम्पूर्ण देवताओं और द्विजातियोंकी सदा रक्षा करना मेरा कर्त्तव्य कार्य है। त्वष्टा ऋषिका तेज महाप्रचण्ड है [illegible] महात्मा ऋषिके तेजसे वृत्रासुर उत्पन्न [illegible] हे देवतो। त्वष्टाने पहिले दश [illegible] तपस्या करके महादेवको [illegible] वृत्रासुरको उत्पन्न किया है वह बल- [illegible] महादेवकी कृपासे ही देवताओंको [illegible] सम्पूर्ण देवतोंको पराजित कर [illegible] महादेवके समीप विना गये, [illegible] इनका दर्शन पाकर [illegible] [illegible] महादेवके समीप [illegible]

करो। महाराज देवता लोग ब्रह्माके सहित उसी स्थलपर गये जहां तपस्याके उत्पत्ति स्थान दक्ष यज्ञके नाश करने वाले पिनाकधारी सब प्राणियोंके ईश्वर भगदेवके नेत्र उत्पन्न करनेवाले महादेव थे। देवताओंने उस ही मन्दर पर्व्वतपर गमन करके सहस्र सूर्य्यके समान प्रकाशमान अत्यन्त तेजस्वी महादेवका दर्शन किया। महादेव बोले हे देवगण! मैं तुम्हारा स्वागत करता हूं, मैं तुम लोगोंका कौनसा कार्य्य करूं? मेरा दर्शन तुम लोगोंके पक्षमें निष्फल नहीं होगा; तुम लोगोंकी अभिलाषा सिद्ध हो वेगी महादेवने जब सम्पूर्ण देवताओंसे ऐसा वचन कहा; तब वे देवता लोग महादेवसे यह वचन बोले हे भगवन्! वृत्रासुरने हम लोगोंका तेज हरण किया है, इससे आप हम लोगोंके आश्रयस्वरूप होइये! हे महादेव! देखिये हम लोगोंका शरीर अस्त्रोंकी चोटसे क्षतविक्षत होरहा है; इससे हम लोग तुम्हारे शरणागत हुए आप हम लोगोंकी रक्षा कीजिये।

महादेव बोले हे देवता लोगो। त्वष्टा-ऋषिके तेजसे उत्पन्न हुए अत्यन्त बलवान् भयङ्कर मूर्तिवाला अग्निशिखास्वरूप वृत्रासुर कृतात्मा पुरुषोंसे भी पराजित नहीं होसकता यह मुझे विदित है, परन्तु सम्पूर्ण देवताओंकी सहायता करना मेरा कर्त्तव्य कार्य्य है। हे देवतोंके राजा इन्द्र! तुम मेरे शरीरसे उत्पन्न हुए इस प्रकाशमान कवचको ग्रहण करो और मन्त्र जपते हुए इसे अपने शरीरमें धारो।

द्रोणाचार्य्य बोले हे राजकुमार! वर दान करनेवाले महादेवने ऐसा वचन कहकर उस [illegible] इन्द्रको प्रदान किया। इन्द्रने उसको धारण; तदनन्तर वृत्रासुरकी सेनाके [illegible] निमित्त गमन किया। वृत्रासुर [illegible] [illegible] [illegible]

भेद नहीं कर सका। तिसके अनन्तर देवराज इन्द्रने युद्धभूमिमें वृत्रासुरका बध किया। अनन्तर मन्त्रके सहित उस ही वर्म्मको इन्द्रने अङ्गिराको प्रदान किया, अङ्गिराने पुत्र बृहस्पतिको बतलाया बृहस्पतिने अग्निवेशको प्रदान किया; और अग्निवेशने मन्त्र सहित उस वर्म्मको मुझे प्रदान किया मैंने आज तुम्हारे शरीरकी रक्षाके वास्ते उस ही वर्म्मको इस समय तुम्हें पहना दिया है।

सञ्जय बोले द्रोणाचार्य्य तुम्हारे महातेजस्वी पुत्र दुर्य्योधनसे ऐसा वचन कहकर फिर बोले। हे पृथ्वीनाथ! जैसे ब्रह्माने युद्धमें विष्णुको और तारकामय युद्धमें इन्द्रको कवच पहनाया था; वैसे ही मैंने भी ब्रह्मसूत्रसे इस वर्म्मको तुम्हें पहना दिया। द्रोणाचार्य्यने इसी प्रकारसे राजा दुर्य्योधनके शरीरमें विधिपूर्व्वक मन्त्रके सहित कवच बांधकर महा युद्धके निमित्त अर्ज्जुनके समीप भेजा। महाबाहु दुर्य्योधन महात्मा द्रोणाचार्य्यके समीपसे अभेद कवच पाकर अस्त्र शस्त्रोंके चलानेमें निपुण त्रिगर्त्तदेशीय एक हजार मतवारे हाथी एक नियुत घुड़सवार और दूसरे बहुतसे महारथ शूरवीरोंके सहित नाना प्रकारके जुझाऊ बाजे बजवाते हुए अर्ज्जुनके रथकी ओर जाने लगे, उस समय राजा दुर्य्योधनने विरोचनपुत्र राजा बलिकी भांति युद्ध करनेके निमित्त प्रस्थान किया। अगाध समुद्रके समान सेनाके सहित कुरुराज दुर्य्योधनको अर्ज्जुनकी ओर जाते देख तुम्हारी सेनाके शूरवीर योद्धा हर्षित होकर सिंहनाद करने लगे।

९२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज! इधर अर्ज्जुन और कृष्णने शत्रुसेनाके व्यूहके बीच प्रवेश किया; और दुर्य्योधन उनके पाछे पीछे युद्ध करनेके निमित्त गमन करने लगे। इधर चन्द्रवंशियोंके सहित पाण्डवोंने महातर्ज्जन गर्ज्जन करके कौरवोंको आक्रमण किया। इससे उस शकटव्यूहके अग्रभागमें कुरु-पाण्डवोंका अत्यन्त तुमुल रोएंको खड़ा करनेवाला प्रचण्ड युद्ध होने लगा। महाराज! उस दिन दो पहरके समय जिस प्रकार भयङ्कर युद्ध होने लगा, वैसा संग्राम मैंने पहिले कभी नहीं देखा और न सुना ही था। प्रहार करनेमें निपुण धृष्टद्युम्न और पाण्डव लोग अपनी सेनाकोव्यूह बनाकर द्रोणाचार्य्यकी सेनापर बाणोंकी वर्षा करने लगे। हेमन्तऋतुके अन्तमें जैसे बादलके दो टुकड़े वायुके वेगसे आगे बढ़ते हुए प्रकाशित होते हैं वैसे ही रथ भूषित अत्यन्त मनोहर दोनों सेनाओंका अग्रभाग प्रकाशित होने लगा। जैसे वर्षाकालमें तरङ्गमालासे युक्त गङ्गा और यमुना नदी आपसमें मिलकर महावेगवती होती हैं वैसे ही दोनों ओरकी सेना आपसमें वेगपूर्व्वक अपने अपने पराक्रमको प्रकाशित करने लगी। आगे बढ़ते हुए नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्ररूपी वायुसे युक्त गदारूपी बिजलीसे अत्यन्त भयङ्कर द्रोणाचार्य्यरूपी प्रचण्ड पवनके वेगसे चलते और हाथी घोड़े रथोंसे घिरे हुए अत्यन्त भयङ्कर महासंग्राममें कुरुसेनारूपी बादल पाण्डवोंकी सेनाके ऊपर सहस्रों बाणोंकी धारारूपी जलकी वर्षा करने लगे। जिस प्रकार ग्रीष्मऋतुके अन्तमें महाप्रचण्ड वेगवान् वायु समुद्रके जलको उथलित करता है वैसेही द्विजसत्तम द्रोणाचार्य्य पाण्डवोंकी सेनाको छिन्न-भिन्न करने लगे। जैसे अत्यन्त प्रबल जलका वेग पुलको तोड़ देता है, वैसे ही पाण्डवलोग कुरुसेनाके व्यूहको तोड़ते हुये द्रोणाचार्य्यको आक्रमण करने लगे। जैसे पर्व्वत बहते हुए जलराशिके स्रोतको रोकता है, वैसे ही द्रोणाचार्य्य भी पाण्डव पाञ्चाल और केकय देशीय योद्धाओं

युद्धभूमिमें निवारण करने लगे, और दूसरे महाबली पराक्रमी योद्धा लोग पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंको घेर कर पाञ्चाल वीरोंको युद्धभूमिसे निवारण करने लगे। अनन्तर पाण्डवोंके सहित पुरुषसिंह धृष्टद्युम्न शत्रु-सेनाको भेद करनेकी इच्छासे बार बार द्रोणाचार्य्यके ऊपर तीक्ष्ण बाणोंसे प्रहार करने लगे। द्रोणाचार्य्य धृष्टद्युम्नके ऊपर जैसे बाणोंकी वर्षा कर रहे थे, धृष्टद्युम्न भी उस ही भांति द्रोणाचार्य्यके ऊपर अपने बाणोंको बर्षाने लगे। तलवार, शक्ति प्रास ऋष्टिरूपी बिजली, धनुष टङ्कार रूपी गर्ज्जनसे युक्त धृष्टद्युम्न रूपी बादलने सम्पूर्ण दिशाओंमें अपने बाणोंको बना कर मानो शिला रूपी जल-धाराकी वर्षा करके तुम्हारी ओरके सुख्यरथी और घुड़सवारोंको युद्धसे तितर बितर करने लगे। द्रोणाचार्य्य अपने बाणोंकी वर्षासे पाण्ड-वोंकी सेनाके रथियोंको छिन्न और बिद्ध करने लगे थे, धृष्टद्युम्न उस ही स्थानोंसे द्रोणा-चार्य्यको निवारण करते थे। हे भारत! द्रोणा-चार्य्यके ऐसे सावधान होने पर भी उनकी सेना धृष्टद्युम्नके अस्त्रोंसे पीड़ित होके तीन दिशाओंमें बट गई। पाण्डवोंकी सेनासे पीड़ित होकर कितने ही कुरुसेनाके शूरवीर [illegible] कृतवर्म्माका आश्रय ग्रहण किया, [illegible] द्रोणाचार्य्य अपनी सेनाको [illegible] करके व्यूहबद्ध करते थे, [illegible] महारथ धृष्टद्युम्न उन योद्धा-[illegible] तीक्ष्ण-बाणोंसे पीड़ित करके [illegible] कर देते थे। जैसे वनके बीच [illegible] हिंसक जीवोंसे नष्ट होता [illegible] तुम्हारी सेना पाण्डव और [illegible] पीड़ित होकर तीन दिशाओंमें [illegible] लगी। उस समय सम्पूर्ण [illegible] कि इन [illegible] [illegible]

योद्धाओंको मोहित करके ग्रास कर रहा है। जैसे दुष्ट राजाकी राज्य चोर, व्याधि और दुर्भिक्षसे नष्ट होती है। वैसे ही तुम्हारी सेना पाण्डवोंके अस्त्रोंसे अत्यन्त ही पीड़ित होकर विपद सागरमें डूबने लगी। सेनाके पुरुषोंके अस्त्र शस्त्र और कवचों पर सूर्य्यकिरणोंके पड़ते तथा धूलिके उड़नेसे आंखोंमें चकाचौंध आती और उस समय कुछ भी नहीं दिखाई देता था। जब पाण्डवोंने द्रोणाचार्य्यकी सेनाको अपने अस्त्रोंसे पीड़ित करके तीन भाग कर दिया, तब द्रोणाचार्य्यने भी अत्यन्त क्रुद्ध होकर पाञ्चाल योद्धाओंको तितर बितर कर दिया। अपने तीक्ष्ण अस्त्रोंसे शत्रु सेनाको तितर बितर करते हुए योद्धाओंके वध करनेके समयमें द्रोणाचार्य्यका स्वरूप जलती हुई प्रलय कालकी अग्निके समान दिखाई देने लगा। महारथ द्रोणाचार्य्य एक एक बाणोंसे ही रथी गजपति घुड़सवार और पैदल सेनाके योद्धाओंका वध करने लगे। हे राजन्! उस समयमें ऐसा कोई पुरुष भी नहीं था जो द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छूटे हुए बाणोंको सहनेमें समर्थ होसके। सूर्य्यके प्रचण्ड उत्तापके समान पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग द्रोणाचार्य्यके तीक्ष्णबाणोंसे अत्यन्त बिकल होके इधर उधर भ्रमण करने लगे। तुम्हारी सेना भी धृष्टद्युम्नके बाणोंसे पीड़ित होकर इस प्रकार दौड़ने लगी जैसे जलते हुए वृक्ष जलती हुई अग्निके वेगसे भस्म हो जाते हैं तुम्हारी ओर द्रोणाचार्य्य पाण्डवोंकी ओर धृष्टद्युम्न,—इन दोनों पुरुषसिंहोंके बाणोंसे दोनों ओरकी सेना पीड़ित होकर नष्ट होने लगी, परन्तु दोनों सेनाके सम्पूर्ण योद्धा [illegible] [illegible] त्याग कर [illegible] [illegible] करने लगे। दोनों सेनाके [illegible] उस समय [illegible] नहीं था, [illegible] [illegible]

महारथ विकर्ण इन तीनों भाइयोंने भीमसे-नको आक्रमण किया। अवन्ती नगरीके राजा विन्द अनुविन्द और क्षेमकीर्त्ति ये तीनों महा-रथ योद्धा विविंशति आदि तुम्हारे तीनों पुत्रों के अनुगामी हुए उत्तम कुलमें उत्पन्न हुए महारथ और वाह्लिक राज अपनी सेना और अनुयायियोंको सङ्ग लेकर द्रौपदी पुत्रोंके ऊपर बाणवर्षा करने लगे सहस्र योद्धाओंके सहित गोवासन देशीय शैव्य राजा महाबलवान् परा-क्रमी काशिराज पुत्रको युद्धसे निवारण करने लगे। मद्रदेशके राजा शल्यने जलती हुई अग्निके समान तेजस्वी अजात शत्रु राजा युधि ष्ठिरको आक्रमण किया। पराक्रमी दुःशासन अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपनी सेनाको युद्धके निमित्त खड़ी करके रथियोंमें श्रेष्ठ सात्यकिके सङ्ग युद्ध करने लगे। मैं अपनी सेनाके सहित चार सौ धनुर्द्धारी वीरोंको सङ्ग लेकर युद्धभूमि में चेकितानको निवारण करने लगा। अव-न्तिराजा महाधनुर्द्धारी विन्द और अनुविन्दने राजा दुर्य्योधनके निमित्त प्राणकी आशा छोड़ के मत्स्यराज विराटको आक्रमण किया। वाह्लिक देशीय राजाने महाबली पराक्रमी याज्ञसेनि पुत्र शिखण्डीको युद्धमें प्रवृत्त देखकर यत्नपूर्व्वक उसे संग्रामसे निवारण करना आरम्भ किया। शकुनि अपनी सेनाके सहित धनुष बाण शक्ति तलवार ग्रहण करनेवाले सात सौ गान्धार देशीय योद्धाओंको सङ्ग लेकर माद्री पुत्र नकुल सहदेवको युद्धभूमिसे निवारण करने लगे अवन्ति देशके राजा सौवीर सेनाको संग लेकर प्रभद्रक वीरोंके सहित क्रोधी धृष्टद्युम्नको युद्ध-भूमिमें निवारण करने लगे। क्रुद्ध कर्म्म करने-वाले महा पराक्रमी राक्षस घटोत्कचको युद्धके निमित्त आगे बढ़ते आते देखकर राक्षस अल-म्बुषने उसे शीघ्रताके सहित आक्रमण किया। महारथ कुन्तिभोज अपनी बड़ी सेनाको संग लेकर राक्षसोंमें श्रेष्ठ क्रोधी अलम्बुषको निवा-रण करने लगे, हे राजेन्द्र! इसी प्रकार सैकड़ो द्वन्द्वयुद्ध दोनों ओरके योद्धाओंमें होने लगा। सिन्धुराज जयद्रथ सम्पूर्ण सेनाके पीछे थे, कृपाचार्य्य आदि महारथ योद्धा लोग जयद्रथकी रक्षा करनेमें नियुक्त हुए थे; दो महारथी योद्धा उनके चक्ररक्षक थे उनमेंसे अश्वत्थामा दहिने और कर्ण बाये चक्रकी रक्षा करते थे। सोमदत्त पुत्र भूरिश्रवाको आगे करके कृपा-चार्य्य वृषसेन शल और पराक्रमी—ये लोग राजा जयद्रथके पृष्ठधनुर्द्धर युद्धके सम्पूर्ण कार्य्योंके जाननेवाले सम्पूर्ण महारथ योद्धालोग राजा जयद्रथको रक्षाके निमित्त इस ही प्रका-रका विधान करके युद्ध करने लगे।

९३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज कौरव और पाण्डवोंका जिस प्रकारसे आश्चर्य्यमय युद्ध हुआ था, वह सम्पूर्ण वृत्तान्त मैं तुम्हारे समीपमें वर्णन करता हूं आप चित्त लगा कर सुनिये पाण्डवोंने द्रोणाचार्य्यकी व्यूहबद्ध सेनाको भेद करनेकी इच्छासे व्यूहके मुखस्थल पर स्थित द्रोणा-चार्य्यको आक्रमण किया। द्रोणाचार्य्य भी महत् यश उपार्ज्जन करनेकी इच्छासे अपनी व्यूह बद्ध सेनाकी रक्षा करते पाण्डवोंके सङ्ग युद्ध करने लगे। अवन्तिराज विन्द और अनुविन्दने क्रुद्ध होकर तुम्हारे पुत्रके हितकी अभिलाष करके दश बाणोंसे राजा विराटको विद्ध किया। राजा विराट भी अनु-यायी योद्धाओंसे घिरे हुए पराक्रमी विन्द और अनुविन्दके ऊपर अपने बाणोंको चलाने लगे जैसे वनके बीच दो मतवारे हाथियोंके सङ्ग एक सिंहका युद्ध होता है उस ही भांतिसे उन महारथ योद्धाओंका महा भयङ्कर संग्राम होने लगा। महा बलवान् शिखण्डीने वेगगामी वाह्लिककी मर्म्मस्थल और हड्डीके भेदनेवाले

शैलेयबाणोंसे विद्ध किया। इन दोनों महारथ वीरोंके बाण और शक्ति आदि अस्त्रोंसे इस प्रकार युद्ध होने लगा कि उस संग्रामको देखकर कादर पुरुष भयभीत होगये और शूरवीर योद्धा हर्षित होने लगे। बाह्लिकने अत्यन्त क्रुद्ध होकर शिलापर घिसे हुए सुवर्ण दण्डयुक्त दश बाणोंसे शिखण्डीको विद्ध किया। उस समय उन दोनों महारथ वीरोंके धनुषसे छूटे हुए बाणोंसे आकाश मण्डलके सहित सम्पूर्ण दिशा परिपूरित होगई उस समय कुछ भी नहीं दीख पड़ता था। जैसे एक मतवारा हाथी दूसरे मतवारे हाथीके सङ्ग युद्ध करता है वैसे ही गौतमगण शत्रु अपनी सेनाको सङ्ग लेकर महारथ काशिराज पुत्रके साथ संग्राम करने लगे। जैसे पांचों इन्द्रियोंके सङ्गमें मनका युद्ध होता है वैसे ही द्रौपदीके पांचों पुत्रोंके सङ्ग बाह्लिकराजका संग्राम होने लगा। जैसे इन्द्रियोंके पांचों विषय शरीरको क्लेश देते हैं वैसे ही द्रौपदीके पांचो पुत्र चारो ओरसे अपने बाणोंकी वर्षा करते हुए बाह्लिकराजको पीड़ित करने लगे। हे भारत ! तुम्हारे पुत्र दुःशासनने अतिवेगशील सात्यकिको नव तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध किया, महाधनुर्द्धर सत्यपराक्रमी सात्यकि दुःशासनके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर मूर्च्छित होगये, फिर सावधान होकर सात्यकिने शीघ्र ही तुम्हारे पुत्र दुःशासनको कङ्कपत्र युक्त दश बाणोंसे विद्ध किया। वे दोनों महारथ योद्धा आपसमें एक दूसरेके बाणोंसे रुधिरपूरित क्षत-विक्षत शरीर होकर फूले हुए पलाश वृक्षके समान रणभूमिमें शोभित होने लगे वह राक्षस [illegible] बाणोंसे राजा कुन्तिभोजको [illegible] इन्द्रके सहित सिंहनाद करने लगा, जैसे पहिले समयमें इन्द्रके सङ्ग [illegible] हुआ था। वैसे ही [illegible] होकर वे दोनों पराक्रमी योद्धा [illegible] दिखाई देने लगे।

माद्रीपुत्र नकुल और सहदेव अत्यन्त क्रुद्ध होकर शत्रुताकी जड़ उत्पन्न करनेवाले पराक्रमी शकुनिको अपने बाणोंसे पीड़ित करने लगे। हे राजेन्द्र। सम्पूर्ण वीरपुरुषोंके नाश होनेका मूल कारण तुमसे ही प्रकट हुआ है, कर्णने उस ही जड़को बढ़ाया है और तुम्हारे पुत्रोंने उस क्रोधरूपी अग्निको रक्षित किया है, इस समय वही क्रोधरूपी अग्नि सम्पूर्ण पृथ्वीको भस्म करनेके निमित्त उद्यत हुई है। अन्तमें शकुनि नकुल-सहदेवके बाणोंसे पीड़ित होकर उनके सम्मुखसे भाग गये। वह युद्धसे भागते हुए अपने मनमें विचार करने लगे, कि मैं इस समय क्या कार्य्य करूं परन्तु किसी कार्य्यका निश्चय न कर सके। महारथ नकुल और सहदेव उन्हें अपने सम्मुखसे पृथक् होते देखकर जैसे दो दिशासे दो टुकड़े बादलके एकही स्थलमें इकट्ठे होकर पर्व्वतके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं वैसे ही फिर उनके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। शकुनिने उन दोनों महारथ पुरुषोंके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर अपने वेगगामी घोड़ोंसे युक्त रथपर चढ़कर द्रोणाचार्य्यके समीप जानेके निमित्त प्रस्थान किया। महापराक्रमी राक्षस घटोत्कच सम्पूर्ण वेगके सहित महावेगशील राक्षस अलम्बुषके सङ्ग युद्ध करने लगा। जैसे पहिले समयमें राम रावणका संग्राम हुआ था, वैसे ही उन दोनों राक्षसोंका आश्चर्यमय युद्ध होने लगा। तिसके अनन्तर राजा युधिष्ठिरने मद्रराज शल्यको पचास बाणोंसे विद्ध करके फिर [illegible] बाणोंसे विद्ध किया। जैसे पहिले समयमें [illegible] [illegible] दोनों [illegible] [illegible] होने लगा। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लगे।

सञ्जय बोले महाराज। इसी प्रकार रोएं को खड़े करनेवाले भयङ्कर संग्रामके समय जब कौरवोंकी सेना तीन हिस्सोंमें बंट गई तब पाण्डव लोग तुम्हारी सेनाके योद्धाओंकी आक्रमण करने लगे। भीमसेनने महाबाहु जलसन्धको युधिष्ठिरने सेनाके सहित कृतवर्म्माको और धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यके ऊपर सूर्य्य-किरणके समान अपने प्रकाशमान बाणोंकी वर्षाना आरम्भ किया। कौरव और पाण्डवोंको ओरके सम्पूर्ण धनुर्द्धारी योद्धा लोग अत्यन्त क्रुद्ध और यत्नवान् होकर आपसमें युद्ध करने लगे। उस प्राणियोंके नाश होनेवाले भयङ्कर सग्रामके समयमें निर्भय चित्तसे द्वन्द्व युद्ध करनेवाले योद्धाओंके बीच महाबल द्रोणाचार्य्य और पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्न—ये दोनों पुरुषसिंह जब आपसमें एक दूसरके ऊपर बाणोंको चलाने लगे, तब उस समयमें वह युद्ध अद्भुत रूपसे दिखाई देने लगा। वे दोनों पुरुषसिंह चारों ओर टूटे हुए कमल वनके समान मनुष्योंके शिरको काट काटके युद्धभूमिमें गिराने लगे। सेनाके योद्धाओंके वस्त्र अभूषण शस्त्र, ध्वजा धनुष बाण कटकर इधर उधर गिरते हुए दीख पड़ते थे सुवर्णभूषित बर्म्मसे युक्त शूरवीर पुरुषोंके शरीर आपसमें सटके मानो बादलसे युक्त विजलीके समान दिखाई देते थे। कितने ही महारथी योद्धा ताल प्रमाण अपने धनुषोंको चलाकर अपने तीक्ष्ण बाणोंसे हाथी घोड़े और मनुष्योंका वध करके पृथ्वीमें गिराने लगे। महारथ शूरवीर पुरुषोंके तलवार, ढाल धनुष बाण कवच और कटे हुए शिरोंसे वह रणभूमि परिपूरित होगई। महाराज। जब इस प्रकारसे शूरवीरोंका अत्यन्त ही नाश होने लगा तब शिर कटे हुए बहुतेरे कवन्ध रणभूमिमें चारों ओर दौड़ते हुए दिखाई देने लगे गिद्ध कङ्क बगुले बाज कौवे और सियार आदि मांस भक्षी जीव उस रणभूमिमें चारों ओर दिखाई देने लगे वे सब मांस भक्षण करते रुधिर पीते मृत शरीरोंसे केश खींचते और आंतोंको बाहर निकाल कर इधर उधर लेकर दौड़ते तथा उड़ते हुए दिखाई देते थे। उस समय अस्त्र-शस्त्रोंके चलानेमें निपुण युद्धविद्या जाननेवाले सेनाके शूरवीर योद्धा लोग अपने विजयकी अभिलाष करके महाघोर संग्राम करने लगे। युद्ध करते हुए रुधिरपूरित शरीरसे कितने ही शूरवीर योद्धा तलवार घुमाते हुए रणभूमिमें चारों ओर भ्रमण करने लगे। कोई कोई ऋष्टि शक्ति प्रास त्रिशूल तोमर पट्टिश गदा और परिघसे युद्ध करते हुए आपसमें एक दूसरेका बध करने लगे, कितने ही शूरवीर योद्धा अस्त्र शस्त्रोंसे रहित होकर बाहुयुद्ध करते हुए एक दूसरेका नाश करने लगे। रथी रथीसे घुड़सवार घुड़सवारोंके सङ्ग हाथी हाथियोंसे और पैदल चलनेवाले सेनाके शूरवीर योद्धा लोग पैदल चलनेवाले योद्धाओंके सङ्ग युद्ध करने लगे। बहुतेरे मतवारे हाथी रणभूमिमें अत्यन्त मद मत्त तथा उन्मत्तके समान होकर दूसरे मतवारे हाथियोंसे युद्ध करते हुए आपसमें मरकर पृथ्वीमें गिरने लगे। हे राजन्! उस महाघोर संग्रामके समयमें धृष्टद्युम्नने रथके घोड़ोंको द्रोणाचार्य्यके रथके घोड़ोंके सग मिला दिया। उन दोनों पुरुषसिंहोंके महावेगशील रथके घोड़े एक ही स्थलपर मिलकर अत्यन्त ही शोभित हुए। धृष्टद्युम्नके पारावत-वर्ण और द्रोणाचार्य्यके लाल वर्णवाले घोड़े एक ही स्थानपर मिलके विजलीसे युक्त बादलके समान शोभित हुए। हे भारत! पराक्रमी धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यको अपने समीप स्थित देखकर धनुष बाण त्यागके ढाल तलवार ग्रहण किया। शत्रुनाशन पृषत् पुत्र धृष्टद्युम्नने कठिन कर्म्म करनेकी इच्छासे रथकी धुरी अतिक्रम करके द्रोणाचार्य्यके रथ पर चढ गये। जब वह शोभिताके सहित द्रोणाचार्य्यके रथ पर चढ़के उनके

घोड़ोंके पिछाड़ी स्थित हुए अद्भुत कर्म्मको देखकर पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग धृष्टद्युम्नकी प्रशंसा करने लगे। वह जिस समय द्रोणाचार्य्यके लालवर्णवाले घोड़ोंके ऊपर स्थित हुए उस समय पराक्रमी द्रोणाचार्य्य उनका तनिकसो छिद्र न देख सके, उस स्थलमें धृष्टद्युम्नका पराक्रम अद्भुत रूपसे दीख पड़ा। जैसे बाजपक्षी मांसको अभिलाष करके वनके बीच वेगपूर्व्वक अपने भक्ष्यकी ओर दौड़ता है वैसेही धृष्टद्युम्न वधकी इच्छा करके उनके रथपर चढ़ गये। तिसके अनन्तर द्रोणाचार्य्यने सौ बाणोंसे सौ-चन्द्र-मानमारे शोभित ढालको दश बाणोंसे उनके तलवार और चौसठ बाणोंसे उनके रथके घोड़ोंका वध करके दो बाणोंसे उनके रथकी ध्वजा तथा छत्र रक्षक और सारथीका वध किया तिसके अनन्तर शीघ्रताके सहित प्राणनाश करनेवाले एक भयङ्कर बाणको द्रोणाचार्य्यने धनुषपर चढ़ा कर इन्द्रके वज्र छोड़नेके समान धृष्टद्युम्नके ऊपर चलाया। सात्यकिने सम्पूर्ण [illegible] श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यके कराल ग्रासमें [illegible] पतित हुए देखकर उन्हें द्रोणा-[illegible] हाथसे मुक्त करनेकी इच्छासे अपने [illegible] द्रोणाचार्य्यके उस भयङ्कर बाणको [illegible] बाणोंसे गिरा दिया सात्यकीने सिंहके [illegible] पड़े हुए छोटे हरिणके समान द्रोणा-[illegible] धृष्टद्युम्नको मुक्त किया द्रोणाचा-[illegible] धृष्टद्युम्नकी रक्षा करते देखकर [illegible] बाणोंसे [illegible] कर उनको [illegible] अनन्तर [illegible] पोवला्यकिन [illegible] आम [illegible] दिया। [illegible] युद्ध [illegible] [illegible] युद्ध [illegible]

[illegible] समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय! वृष्णिवंशीयवीर सात्यकिने जब द्रोणाचार्य्यके बाणोंको काटकर धृष्टद्युम्नको उनके हाथसे छुड़ाया तब महाधनुर्धारी सम्पूर्ण शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने उस समयमें शिनि पौत्र पुरुषसिंह सात्यकिके संग किस प्रकारसे युद्ध किया।

सञ्जय बोले पुरुषसिंह द्रोणाचार्य्यने क्रोधसे लाल नेत्र करके क्रोधरूपी मुख तीक्ष्ण धारवाले बाणरूपी दांतसे युक्त महावेगशील लालवर्णवाले घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़े तथा गर्जते हुए महाभयङ्कर सर्पके समान शीघ्रताके सहित रुक्म पंखवाले बाणोंको चलाते हुए सात्यकिका आक्रमण किया। रणभूमिमें गमन करनेके समय उनके रथके घोड़े मानो उड़ते हुए पर्व्वतोंको सी आतिक्रम करके युद्धभूमिमें चारो ओर भ्रमण करने लगे। पराये देशके जीतनेवाले शत्रुनाशन सात्यकिने बाणोंकी वर्षा करनेवाले रथकी घरघराहट रूपी गर्ज्जन प्रकाशमान बाणरूपी बिजली शक्ति और तलवार रूपी वज्रधारी क्रोधरूपी वायुके वेगसे प्रेरित द्रोणाचार्य्यको बादलके समान सन्मुख आते देखकर अपने सारथिसे यह वचन कहा हे सारथि! दुर्य्योधनके आश्रय रूपी राजा युधिष्ठिरके दुःख और भयके कारण राजापुरुषोंके आचार्य्य अपने ब्राह्मण कर्म्मसे भ्रष्ट हुए क्रूर स्वभाववाले सदा सर्व्वदा वीरताके अभिमानसे मनवाले इस ब्राह्मणके समीप शीघ्र ही मेरे रथको लेचलो। तिसके अनन्तर सात्यकिके [illegible] चांदीके [illegible] अपने रथके सहित द्रोणाचार्य्यके समीप गमन किया। तिसके अनन्तर शत्रुनाशन द्रोणाचार्य्य और [illegible] द [illegible] पुरुषसिंह [illegible] दूसरेके ऊपर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

परिपूर्ण कर देते हैं वैसे ही वे दोनों महारथ योद्धा अपने बाणोंके जालसे आकाशमण्डल तथा दशों दिशाओंको परिपूरित करने लगे। उस समय सूर्य्यका प्रकाश कुछ भी नहीं दीख पड़ा वायु भी भलीभांति उस समय नहीं चल सकता था और चारों ओर बाणजाल परिपूरित होनेसे महाघोर अन्धकार उत्पन्न होगया उस समय सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग भयभीत होने लगे; शीघ्र शस्त्र चलानेवाले द्रोणाचार्य्य और सात्यकीके बाणवृष्टिके समयमें कोई पुरुष उन्हें तनिक अवकाश लेते हुए भी न देख सके। केवल इन्द्रके हाथसे छूटे हुए वज्रके समान उससे धनुषसे छूटे हुए बाणोंके शब्द ही चारोंओर सुनाई देने लगे; उन दोनों पुरुष-सिंहोंके बाण आपसमें एक दूसरेके बाणोंसे बिद्ध होकर सर्पसे पकड़े गये दूसरे सर्पके समान प्रकाशित होने लगे। महा पराक्रमी युद्ध विद्याके जाननेवाले उन दोनों शूरवीरोंके तनुत्राण और धनुष टङ्कारके शब्द इस प्रकार सुनाई देने लगे जैसे वज्र पर्वतके ऊपर गिर-कर भयंकर शब्दसे सुनाई देता है। केचुलीसे रहित सर्पके समान शीघ्र चलनेवाले चोखे बाणोंसे महा दारुण शब्द होने लगा। दोनोंको अपने अपने विजयकी अभिलाष थी, दोनों हीके छत्र और ध्वजा कट गये, तथा दोनों हीका शरीररुधिरसे परिपूरित हो गया। दोनोंके शरीरमें रुधिर बहने लगा उस समय वे दोनों ही वीर मद चूते हुए मतवारे हाथीकी भांति युद्ध करते हुए आपसमें एक दूसरेको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे बिद्ध करने लगे। महाराज! उस समय शूरवीरोंके गर्जन गर्जन सिंहनाद और नगाड़े आदि बाजोंके शब्द इधर सुनाई देने लगे। उस समय किसीके मुखमें कुछ वचन न निकलता था, सेनाके सम्पूर्ण योद्धालोग युद्धसे निवृत्त हुए। सम्पूर्ण पुरुष द्रोणाचार्य्य और सात्यकीके [illegible] युद्धको देखने लगे। रथी गजपति, घुड़सवार और पैदल सेनाके शूरवीर योद्धा लोग चारों ओरसे उन दोनों पुरुषसिंहोंको घेर कर उनका आश्चर्य्यमय युद्ध देखने लगे। गज पति घुड़सवार और रथियोंकी सेना व्यूहबद्ध होकर रणभूमिमें स्थित होके उन दोनों पुरुष-सिंहोंका संग्राम अवलोकन करने लगी। मणि, सुवर्ण मोती और रत्नोंसे चित्रित सुन्दर ध्वजा विचित्र आभूषण सुवर्णमयी कवच उत्तम [illegible] शिलापर घिसे हुये चोखे अस्त्र शस्त्र, घोड़ों पर लटकते हुए चंवर हाथियोंके गलेमें पड़ी हुई सुवर्ण युक्त रत्न जटित माला और उनके दांतोंके आभूषण इन सम्पूर्ण वस्तुओंके सहित युद्ध देखनेवाले सेनाके पुरुषोंको मैं हेमन्त ऋतुके बीतने पर बकपांतिसे युक्त खद्योत श्रेणीके सहित ऐरावत हाथी और बिजली युक्त बादलोंकी भांति देखने लगा। महात्मा द्रोणाचार्य्य और सात्यकिके उस भयङ्कर युद्धको दोनों ओरकी सेनाके योद्धा लोग रणभूमि खड़े होकर देखने लगे। आकाशमण्डल विमानों पर चढ़े हुए ब्रह्मा और चन्द्रमा आदि देवता सिद्ध चारण विद्याधर और सर्प आदि आकाशमें भ्रमण करनेवाले प्राणी उन दोनों पुरुषसिंहोंके शस्त्रचलानेकी नानाप्रकारकी [illegible] गति निवारण की प्रक्रिया और युद्ध विषय निपुणता देखकर विस्मित होगये। महाराज अत्यन्त पराक्रमी वे दोनों महारथ योद्धा [illegible] विषयक हस्तलाघव दिखातेहुए एक दूसरेको अपने अस्त्रोंसे विद्ध करने लगे। तिसके अनन्तर [illegible] पराक्रमी सात्यकिने अपने तीक्ष्ण-बाणोंसे म[illegible] तेजस्वी द्रोणाचार्य्यके धनुष बाणको शीघ्र [illegible] दिया। अनन्तर द्रोणाचार्य्यने क्षणभरके [illegible] दूसरे धनुष पर रोदा चढ़ालिया, सात्यकिने [illegible] ही समय उस धनुषको भी काट दिया। द्रोणा-चार्य्य जब दूसरे धनुषको लेकर उस पर [illegible] चढ़ाते थे, सात्यकि उस ही समय अपने [illegible] बाणोंसे उनके धनुषको काट देते थे। [illegible]

प्रकार सात्यकिने सोलह बार द्रोणाचार्य्यके धनुषको अपने बाणोंसे काटकर पृथ्वीमें गिराया हे राजेन्द्र । तिसके अनन्तर द्रोणाचार्य्यने युद्ध-भूमिके बीच सात्यकिका अलौकिक कर्म्म देखकर अपने मन ही मन चिन्ता किया, कि यदु-कुलभूषण सात्यकिका जिस ही भांति परशुराम कार्त्तवीर्य्य अर्जुन और पुरुषसिंह भीष्मका अस्त्र पराक्रम मैंने अवलोकन किया था, और पाण्डुपुत्र अर्जुनमें भी वैसा ही पराक्रम विद्य-मान है ऐसा विचार करते हुए द्रोणाचार्य्यने मन ही मन सात्यकिके पराक्रमकी प्रशंसा करी। अस्त्रशस्त्रोंके मर्म्मको जाननेवाले द्विज-सत्तम द्रोणाचार्य्य देवराज इन्द्रकी समान सात्य-किका हस्तलाघव देख जिस भांति प्रसन्न हुए, उस ही प्रकारसे इन्द्र आदिक देवता भी सात्य-किके पराक्रमको देखकर सन्तुष्ट हुए। देवता, गन्धर्व्व सिद्ध और चारण गण शीघ्र शस्त्र चलाने-वाले सात्यकिका ऐसा हस्तलाघव पहिले कभी नहीं देख सके थे परन्तु द्रोणाचार्य्यके वैसे कर्म्मको वे सब कोई जानते थे।

हे भारत! तिसके अनन्तर क्षत्रियोंके नाश करनेवाले सम्पूर्ण अस्त्रशस्त्रोंकी विद्या जानने-वाले पराक्रमी द्रोणाचार्य्य दूसरा धनुष लेकर [illegible] करने लगे। सात्यकि उनके अस्त्रोंको [illegible] करके तीक्ष्ण बाणोंसे द्रोणाचार्य्यके ऊपर प्रहार करने लगे, उस समय वह युद्ध [illegible] दीख पड़ा। सात्यकिका ऐसा [illegible] कर्म देखके तुम्हारी ओरके अस्त्र-[illegible] उसकी प्रशंसा करने लगे। [illegible] अस्त्रोंको चलाते थे, [illegible] चमत्कार [illegible] था। [illegible] युद्ध [illegible] अनुसार [illegible] अनन्तर [illegible]

नेकी इच्छा करके दिव्य अस्त्र [illegible] प्रकट किया। महाधनुर्द्धर सात्यकिने शत्रुओंके नाश करनेवाले उस महाअस्त्र आग्नेय [illegible] देखकर दिव्य वारुणास्त्र ग्रहण किया। उन दोनों पुरुषसिंहोंको अस्त्र ग्रहण किये हुए देखकर दोनों सेनाके बीच महा हाहाकार शब्द होने लगा। उस समय आकाशमें आका-शचारी प्राणी [illegible] नहीं [illegible] इन दोनों पुरुषोंने आग्नेयास्त्र और वारुणास्त्रको अपने धनुषोंपर चढ़ाया, परन्तु [illegible]। उस समय सूर्य्य पश्चिम दिशाकी ओर [illegible] कर रहे थे। तिसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर, भीम-सेन, नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्नके [illegible] विराट, कैकय, मत्स्य और शाल्वदेशी [illegible] शूरवीरोंको सङ्ग लेकर सात्यकिकी रक्षा करनेके वास्ते द्रोणाचार्य्यके समीप उपस्थित हुए और [illegible] राजपुत्र योद्धा लोग दुःशासनको आगे करके शत्रुओंके बीचमें घिर हुए द्रोणाचार्य्यकी रक्षा करनेके निमित्त पाण्डवोंके सम्मुख [illegible] थे। हे राजेन्द्र! तिसके अनन्तर पाण्डवोंके [illegible] तुम्हारी [illegible] धनुर्धारी [illegible] वीर युद्ध होने लगा। उस समय सम्पूर्ण [illegible] भूमिमें धूल उड़के और [illegible] अन्धकार [illegible] समय नहीं [illegible] पड़ता था [illegible] व्याकुल [illegible] लगे। उस समय [illegible] पड़ता। था।

८९ अध्याय [illegible]

[illegible]

अभिलाष करके युद्ध करने लगते थे। इसी प्रकार धीरे धीरे उस दिनका समय बीतने लगा दोनों सेनाके शूरवीर योद्धा विजयकी अभिलाष करके महा घोर युद्ध कर रहे थे अर्ज्जुन और कृष्ण सिन्धुराज जयद्रथके समीप जानेकी इच्छासे सेनाके बीच प्रवेश करते हुए आगे गमन कर रहे थे। कृष्ण जिस ओर अर्ज्जुनके रथको चलाते थे अर्ज्जुन उस ही ओर अपने तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करके रथके गमन करने योग्य मार्ग बना देते थे। महात्मा अर्ज्जुनका रथ जिस ओरसे गमन करता था, उस ही ओर सेनाके योद्धा लोग उनके बाणोंसे तितरबितर होने लगते थे। दाशार्हनन्दन पराक्रमी कृष्ण उत्तम मध्यम और मन्दरीतिसे मण्डलाकार गतिविशेषसे रथको चलाते हुए रथ चलानेकी निपुणता प्रकाशित करने लगे। उस रणभूमिमें जैसे मांस भक्षण करनेवाले पक्षी इधर उधर उड़ते और मृत पुरुषोंके शरीरसे रुधिर पीते हुए दीख पड़ते थे, वैसे ही अर्ज्जुनके धनुषसे छूटे हुए उनके नामसे अङ्कित, चोखे, प्रलयकालकी आगके समान भयङ्कर, पङ्खवाले, स्थूल, दूर पर्य्यन्त गमन करनेवाले, महाकठोर लोहमय बाण शत्रुसेनाके योद्धाओंका संहार करते हुए उनके शरीरमें घुसकर रुधिर पान करने लगे। अर्ज्जुनके रथपर चढ़के एक कोसकी दूरीतक शत्रुसेनाके ऊपर बाण चलाते थे, रथ चलनेके मार्गको एक कोसतक उल्लङ्घन करके तब वे सम्पूर्ण बाण शत्रुओंका संहार करते हुए पृथ्वीमें गिरते थे। श्रीकृष्ण शीघ्रताके सहित गरुड़ और वायुके समान वेगशील अर्ज्जुनके रथके घोड़ोंको चलाकर युद्धभूमिमें सम्पूर्ण प्राणियोंको विस्मित करते हुए गमन करने लगे। महाराज! मनके समान शीघ्र गमन करनेवाला अर्ज्जुनका रथ जिस प्रकारसे वेगपूर्वक युद्धभूमिमें गमन करने लगा, सूर्य, इन्द्र, वरुण, और कुवेरके रथ भी उस भांतिसे गमन नहीं कर सके थे। हे

राजेन्द्र! शत्रुनाशन कृष्ण संग्रामभूमिमें शत्रुओंकी सेनाके बीच प्रवेश करके रथके घोड़ोंको शीघ्रताके सहित चलाने लगे। अनन्तर अर्ज्जुनके रथके घोड़े युद्धभूमिमें बहुतेरे महाबली पराक्रमी योद्धाओंके नाना प्रकारके अस्त्र-शस्त्रोंकी चोटसे क्षत-विक्षत शरीरसे पीड़ित और भूख प्याससे अत्यन्त निर्बल होगये थे, और पर्व्वतके समान मरे हुए सहस्रों घोड़े, हाथी तथा मनुष्योंकी लोथोंको उल्लङ्घन करते हुए गमन करना पड़ता था, इससे शत्रुसेनाके रथियोंके समूहके बीचमें अत्यन्त क्लेशसे अर्ज्जुनके रथको खींचते हुए गमन करते हुए बार बार विचित्र गतिसे रणभूमिमें भ्रमण करने लगे। महाराज! उसही समय महापराक्रमी अवन्तिराज दोनों भाई विन्द अनुविन्दने अपनी सेनाको सङ्ग लेकर थके हुए रथके घोड़ोंसे युक्त अर्ज्जुनको आक्रमण किया। उन दोनो भाइयोंने हर्षित होकर चौसठ बाणोंसे अर्ज्जुन, सत्तरसे कृष्ण और सौ बाणोंसे उनके रथके घोड़ोंको विद्ध किया। युद्ध-विद्या जाननेवाले अर्ज्जुनने क्रुद्ध होकर मर्म्मभेदी नौ तीक्ष्ण बाणोंसे उन दोनो महारथ वीरोंको विद्ध किया। अनन्तर उन दोनों वीरोंने कृष्णअर्ज्जुनको अपने बाणोंसे छिपाकर सिंहनाद किया। परन्तु श्वेतवाहन अर्ज्जुनने दो भल्लसे उन दोनों महारथियोंके विचित्र धनुष और सुवर्णभूषित उनके रथकी दोनों ध्वजाओंको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया हे राजन्! वे दोनों भ्राता अत्यन्त क्रुद्ध होके दूसरा धनुष ग्रहण कर अपने तीक्ष्ण बाणोंसे अर्ज्जुनको पीड़ित करने लगे। पाण्डुनन्दन अर्ज्जुनने भी अत्यन्त क्रुद्ध होके उन दोनों महारथियोंके धनुषको फिर काट दिया, और शिलापर घिसे हुए रुक्मपङ्खवाले बाणोंसे उनके रथके घोड़े, सारथी और पृष्ठरक्षक योद्धाओंका संहार किया। तिसके अनन्तर एक क्षुरप्र बाणसे बड़े भाई विन्दके शिरको काटके पृथ्वीमें

गिरा दिया। महारथ विन्द मर कर मानो वायुके वेगसे टूटे हुए वृक्षके समान पृथ्वी पर गिर पड़े। रथियोंमें श्रेष्ठ महारथ महाबलवान् प्रतापी अनुविन्द अपने बड़े भाईके मरनेसे अत्यन्त दुःखित होके घोड़ोंसे रहित रथको त्याग कर एक गदा उठाकर मानो नृत्य करते हुए अर्जुनकी ओर दौड़े। अनन्तर अनुविन्दने उस गदासे श्रीकृष्णके ललाटमें प्रहार किया; परन्तु गदाके प्रहारसे अनुविन्द कृष्णको मैनाक पर्व्वतके समान विचलित नहीं कर सके। तब अर्जुनने छः बाणोंसे अनुविन्दके गर्द्दन, दोनों हाथ तथा शिरको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। अनुविन्द अर्जुनके बाणोंसे कट कर पर्व्वतके समान पृथ्वीमें गिर पड़े। तिसके अनन्तर उन दोनों भाइयोंको मरते हुए देखकर उनके अनुयायी सम्पूर्ण योद्धा लोग क्रोध पूर्व्वक सैकड़ों बाणोंको चलाते हुए अर्जुनकी ओर दौड़े। अर्जुन अपने तीक्ष्णबाणोंसे उन शूरवीरोंका संहार करके मानो हेमन्त ऋतुके अन्तमें वनको भस्म करनेवाले दावाग्निकी भांति प्रकाशित होने लगे। अनन्तर जैसे सूर्य्य बादलोंके मण्डलको भेद करके उदय होता है, वैसे ही अर्जुन विन्द अनुविन्दकी सेनाको अत्यन्त कष्टसे अतिक्रम करके सेनाके बीच प्रकाशित होने लगे। हे भारत! अर्जुनका ऐसा पराक्रम [illegible] के शूरवीर योद्धाओंने भयभीत [illegible] फिर चारों ओरसे अर्जुन [illegible] ये सम्पूर्ण योद्धाओंने अर्जुनको [illegible] सिंहनाद [illegible] दूर स्थित [illegible] सिंहनाद करके सम्पूर्ण [illegible] कर दिया। हे [illegible]

रदबदल नहीं होता। जब तुम पाण्डवोंके मन्त्री हुए हो, तो पाण्डव लोग अवश्यही अपने शत्रुओंको जीतेंगे। इससे मैं जो इस समय कर्त्तव्य कर्म्मका विचार करता हूं उसे सुनिये। हे माधव! घोड़ोंको रथसे खोलके उनके शल्योंको निकालो। जब अर्जुनने कृष्णसे ऐसा वचन कहा, तब कृष्ण बोले, हे अर्जुन! तुमने जो कहा है, उसमें मेरी भी सम्मति है। अर्जुन बोले, हे कृष्ण! तुम इस ही स्थानमें इस कार्य्यको पूर्ण करो, मैं सम्पूर्ण सेनाके योद्धाओंको निवारण करूंगा।

सञ्जय बोले अर्जुन निर्भय चित्तसे रथ परसे नीचे उतरे और गाण्डीव धनुष चढाये हुए अचल रूपसे पर्व्वतके समान पृथ्वी पर खड़े हुए। जब अर्जुन पृथ्वी पर खड़े हुए तब तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग यह उत्तम छिद्र देखकर विजयकी अभिलाषसे सिंहनाद करते हुए, उनकी ओर दौड़े। उन सम्पूर्ण योद्धाओंने क्रुद्ध होकर अनेक रथोंके समूहसे अर्जुनको घेर कर धनुष चढाते, विचित्र अस्त्रोंको प्रकाशित करते और बाणोंको धनुषसे खींचके इस प्रकार उनके ऊपर अस्त्र-शस्त्रोंकी वर्षा कर उन्हें अस्त्रोंके जालसे छिपाने लगे, जैसे बादल सूर्यको छिपा देते हैं। जैसे बहुतसे मतवारे हाथी एक सिंहको आक्रमण करनेके वास्ते दौड़ते हैं वैसे ही सम्पूर्ण महारथ क्षत्रिय योद्धा लोग क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ [illegible] अर्जुनको ओर वेगपूर्व्वक दौड़े। उस समय अर्जुनकी दोनों भुजाओंका [illegible]

से युक्त चत-विचत शरीर होके कितने ही हाथी, घोड़े रथी और पैदल सेनाके योद्धा लोग भयङ्कर शब्द करने लगे, शत्रुनाशन महाधनुर्द्धर योद्धा लोग इकट्ठे होकर अर्ज्जुनके सम्मुख उपस्थित हुए, उस समय सम्पूर्ण योद्धाओंके अस्त्रशस्त्रोंके प्रहार और इधर उधर दौड़नेसे अत्यन्त ही उत्ताप उत्पन्न हुआ। उस समय उन सम्पूर्ण इकट्ठे हुए रथियोंका समूह समुद्रके समान शोभित होने लगा। इस दुर्गम्य रथ सेनारूपी समुद्रमें बाणोंके वेग तरङ्ग, ध्वजा भंवर, पैदल सेनाके योद्धा लोग मकरी, शङ्ख नगाड़े आदि बाजोंके शब्द ही समुद्रके लहरके भयङ्कर शब्द, रथी योद्धा लोग कछुवे वीरोंके वस्त्र ही फेन और हाथियोंके शरीर ही पत्थरके टुकड़े रूपसे बोध होने लगे। अर्ज्जुन तटरूपी होकर उस महा भयङ्कर अपरम्पार रथ सेनारूपी महासमुद्रको अपने बाणोंके बलसे निवारण करने लगे। तिसके अनन्तर महाबाहु कृष्ण निर्भयचित्तसे पुरुषसत्तम अर्ज्जुनसे यह वचन बोले, हे अर्ज्जुन। घोड़ोंको पानी पीने और जलमें तैरनेकी इच्छा हुई है, और जिससे घोड़े जल पीवें और जलमें तैर सकें ऐसा कोई तालाब यहांपर नहीं है। अर्ज्जुनने निर्भयचित्तसे "यही तैयार है," ऐसा वचन कहकर चण भरके बीच पृथ्वीको अपने बाणोंके विद्ध करके घोड़ोंके जल पीने और तैरनेके योग्य अगाध जलसे युक्त एक बहुत बड़े उत्तम तालाबको रणभूमिमें उत्पन्न किया। उस सरोवरमें हंस, सारस और चक्रवाक आदि पची उसके चारों ओर भ्रमण करने लगे और उसका जल बहुत ही निर्मल था, उसमें भली भांतिसे फूले कमल हुए [illegible] अत्यन्त ही शोभित होने लगे, [illegible] गमन [illegible] सहरियोंसे वह तालाब परि[illegible] प्रकारसे [illegible] था। ऋषि लोग उस [illegible] कर रहे हैं; भगवान [illegible] मानो गमन [illegible] देखकर उसे और भी शोभित कर दिया। जैसे विश्वकर्म्मा अद्भुत कर्म्मको करते रहते हैं, वैसे ही अर्ज्जुनने बाणोंसे एक मनोहर तालाब बना दिया। जब अर्ज्जुनने उस महारणभूमिमें अपने बाणोंके प्रतापसे बाणोंके खंभेसे युक्त एकघर बना कर घोड़ोंके खूटे आदि सब वस्तुओंको ठीक करके इस प्रकार सरोबर तैयार किया, तब कृष्ण इस कार धन्यधन्य कहके उनके कर्म्मोंको प्रशंसा करने लगे।

९७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र! महात्मा कुन्तीपुत्र अर्ज्जुनने जब उस ही स्थानपर जल उत्पन्नकर, शत्रुसेनाके शूरवीरोंको निवारण और अपने बाणोंके प्रतापसे सुन्दर तालाब बना दिया; तब महातेजस्वी कृष्णने रथसे उतरबाणोंसे विद्ध हुये घोड़ोंको खोल दिया। पहिले कभी भी जो कर्म्म देखनेमें नहीं आया था, उस अलौकिक कार्य्यको देखकर सिद्ध, चारण और सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग अर्ज्जुनकी प्रशंसा करने लगे। अर्ज्जुनके पृथ्वीपर खड़े होकर युद्ध करनेपर भी मुख्य मुख्य योद्धा लोग जो उन्हें पराजित न कर सके वह अर्ज्जुनका पराक्रम अद्भुत रूपसे दीख पड़ा। रथोंके समूह और अनेक हाथियोंके झुण्डने उनपर आक्रमण किया, तौभी अर्ज्जुनके चित्तमें तनिक सी भय उत्पन्न नहीं हुआ, यह उनका अमानुषिक भाव कहना चाहिये। अनेक चत्रिय योद्धा लोग इकट्ठे होकर शत्रुनाशन अर्ज्जुनके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे, तौभी वह उनके अस्त्रोंकी चोटसे पीड़ित

तथा दुःखित नहीं हुए। पुरुषसिंह अर्ज्जुनके सम्मुखमें उन सम्पूर्ण शूरवीरोंके गदा प्रास और बाणोंके समूह इस प्रकारसे नष्ट होने लगे जैसे नदिया समुद्रसे पहुंचकर फिर नहीं दीख पड़तीं। उन्होंने अपनी दोनों भुजाओंके

...जाये ...किया। ...नाश करता ...ृथ्वी परस्थित ...भी समस्त ...द्धाओंकी निवारण किया। महाराज! ...व लोग कृष्णअर्ज्जुन का परम अद्भुत पराक्रम देखके यह वचन कहते हुए उनकी प्रशंसा करने लगे कि कृष्ण अर्ज्जुनने रणभूमिके बीच अपने घोड़ोंको रथसे पृथक् करके शल्य निकाला और उन्हें जल पिलाया है, इस प्रकारका अद्भुत कार्य्य क्या कभी फिर दीख पड़ेगा, वा कभी ऐसा हुआ था? इन दोनों पुरुषसिंहोंने रणभूमिके बीच निर्भय होके प्रचण्डतेज धारण कर हमलोगोंके ...सबमें अत्यन्त ही भय उत्पन्न किया है। हे ...भारत! कमलनेत्रवाले कृष्णने हंस कर तुम्हारी सम्पूर्ण सेनाके सम्मुख निर्भय चित्तसे अर्ज्जुनके ...बनाये हुए बाणोंके घरमें घोड़ोंको लेकर इस प्रकारसे गमन किया, जैसे पुरुष स्त्रियोंके बीच ...घरमें प्रवेश करते हैं। घोड़ोंके सम्पूर्ण ...कार्य्योंके जानने वाले कृष्णने घोड़ोंको थका-वट, ग्लानि, और बाणोंकी चोटसे उत्पन्न हुए ...पीड़ा दूर करके तथा दोनों हाथोंसे ...शरीरसे शल्य बाहर करके उन्हें नह-लाया किया! अनन्तर यथा रीतिसे ...इधर उधर घुमा कर जल पिलाया और ...खाने योग्य वस्तुओंको उन्हें खिला ...किया। जब घोड़े स्नान करके भोजन ...से रहित हुए, [illegible] अर्ज्जुनके रथमें उन [illegible] दिया। तिसके अनन्तर सब [illegible] तेजस्वी [illegible] और [illegible] रथ पर चढ़के आगे [illegible] रथमें स्थान [illegible]

होगये। वे हर एक योद्धा दांत टूटे हुए सर्पके समान लम्बी सांस छोड़ते हुए आपसमें कहने लगे, यह देखो, अर्ज्जुन और कृष्ण आगे बढ़े जाते हैं, ओहो! हमलोगोंको धिक्कार है।

महाराज! तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग कृष्ण अर्ज्जुनके अत्यन्त अद्भुत रोएंको खडे करनेवाले कर्म्मको देखकर आपसमें कहने लगे, तुमलोग भी ...ताके सहित क्यों नहीं अर्ज्जुनकी ओर दौड़ते हो? क्या हम लोगोंकी सेनाके ये सम्पूर्ण योद्धा वीर नहीं हैं? सिंहनाद करनेवाले बलवान् क्षत्रियोंके सम्मुख ही में ये दोनो वर्म्मधारी पुरुष तनिक भी न रुककर बालक्रीड़ाके समान लीलाके क्रमसे हम लोगोंकी सेनाकी अवज्ञा करके सम्पूर्ण क्षत्रियोंकी सेनाके बीच प्रवेश करते हुए गमनकर रहे हैं। कोई कोई योद्धा कहने लगे, कृष्ण अर्ज्जुनका शीघ्रताके सहित वध करो, क्योंकि वे दोनों सब धनुर्द्धारियोंके सम्मुखमें हमलोगोंके सैनिक वीरोंकी अवज्ञा करके जयद्रथके समीप जानेकी इच्छासे आगे बढ़े जाते हैं। कोई कोई रणभूमिके बीच कृष्ण अर्ज्जुनके पहिले कभी भी न देखे हुए उस अद्भुत कर्म्मको देखकर आपसमें कहने लगे, कि दुर्य्योधनके दोषसे सम्पूर्ण सेनाके क्षत्रिय योद्धा लोग और राजा धृतराष्ट्रका नाश होरहा है, तौ भी राजा धृतराष्ट्र नहीं समझ सकते हैं, इसी प्रकारसे वचन कहते हुए वे सम्पूर्ण क्षत्रिय योद्धा लोग भयभीत होगये, और बहुतेरे योद्धा लोग यह वचन भी कहने लगे, कि सिन्धुराज जयद्रथके यमलोकमें गमन करनेका [illegible] उपाय न जानने [illegible] अनुष्ठान करे।

तिसके अनन्तर [illegible]

ताके सहित गमन करने लगे। क्रुद्ध यमराजके समान तेजस्वी सब धनुर्द्धारियोंमें श्रेष्ठ महाबाहु अर्ज्जुन जब जयद्रथकी ओर गमन कर रहे थे, उस समय कोई भी शूरवीर योद्धा उन्हें निवारण करनेमें समर्थ न हुए। जैसे अकेला सिंह मृगोंके झुण्डको तितर बितर कर देता है, वैसे ही शत्रुनाशन पाण्डुपुत्र अर्ज्जुन शत्रुसेनाके योद्धाओंको तितर बितर करते हुए आगे बढ़ने लगे। वसुदेवपुत्र कृष्णने बहुतसी सेना उल्लङ्घन करके बकपातिके समान श्वेत अपना महाप्रचण्ड पाञ्चजन्य शंख बजाया। वायुके समान शीघ्रगामी घोड़े इतनी शीघ्रताके सहित गमन करने लगे कि अर्ज्जुन उस समयमें जितने बाण अगाड़ी चलाते थे वे सम्पूर्ण बाण उनके रथके पीछे गिरते हुए दिखाई पड़ते थे। बादलके समान शब्दसे युक्त, वायुके समान उड़ते हुए, ध्वजा पताकाके सहित ध्वजाके ऊपर बानर श्रेष्ठ हनुमान्‌की भयङ्कर मूर्त्ति और उस भयानक रथको देखकरही कितने शूरवीर योद्धा भयभीत होगये। उनके गमन करनेके समयमें सूर्य्य धूलिके उड़नेसे छिप गये; सेनाके शूरवीर योद्धा लोग अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित उनकी ओर देखनेमें भी समर्थ नहीं हुए। उत्तम रीतिसे रथमें जुते हुए सूर्य्य, चन्द्रमा और सुवर्णके वर्णवाले घोड़ोंसे युक्त वहरथ सेनाके योद्धाओंको तितर बितर करता हुआ बिना रोक ठोकके गमन करने लगा। अनन्तर बहुतेरे राजा दूसरे बहुतसे क्षत्रिय योद्धा लोग जयद्रथ बधकी इच्छा करनेवाले पुरुषश्रेष्ठ अर्ज्जुनके रथको चारों ओरसे घेरकर शंखोंको बजाने लगे। इससे पुरुषश्रेष्ठ अर्ज्जुनका रथ आगे बढ़नेसे रुक गया; तब राजा दुर्य्योधन अपने अनुयायियोंके सहित शीघ्रतापूर्व्वक अर्ज्जुनके समीप पहुंचनेको इच्छासे उनकी ओर गमन करने लगे।

९८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र! कृष्ण और अर्ज्जुनको देखकर तुम्हारी ओरके योद्धा लोग भयभीत होने लगे, परन्तु वे सब ही महात्मा और लज्जाशील थे, इसने प्रकृतिके अनुसार प्रेरित और क्रुद्ध होकर उन सम्पूर्ण योद्धाओंने अर्ज्जुनके समीप गमन किया, जो लोग उस समय क्रोधके वशमें होकर अर्ज्जुनके सम्मुख उपस्थित हुए, वे अर्ज्जुनके समीप पहुंचकर इस प्रकार नष्ट होगये, जैसे नदी समुद्रमें पहुंचकर लुप्त होजाती है। जैसे नास्तिक लोग वेदमें कहे हुए धर्म्मसे भ्रष्ट होकर नरकमें गमन करके पापको भोगते हैं, वैसे ही पापी पुरुष ही पाप भोग करनेके वास्ते उस समय रणभूमिसे भागने लगे। जैसे सूर्य्य, चन्द्रमा राहुके मुखसे छूटकर सम्पूर्ण प्राणियोंको दिखाई देतेहै वैसे ही वे दोनों पुरुषश्रेष्ठ कृष्णार्ज्जुन शूरवीरोंकी रथ सेनाको अतिक्रम करके उन सम्पूर्ण योद्धाओंसे मुक्त हुए दिखाई देने लगे। उस समय मैंने देखा, कि जैसे दो बड़े मत्स्य जालको फाड़के बाहर निकल आते हैं, वैसेही वेदोनों पुरुषसिंह व्यूहबद्धसेनाको तितर-बितर करते हुए आगे बढ़े। जैसे प्रलयकालके समय दोसूर्य्य उदय होते हैं उस ही प्रकारसे वे दोनों महात्मा अत्यन्त दुःखसे भेद होनेवाली द्रोणाचार्य्यकी सेना और उन शूरवीरोंके अस्त्रोंसे मुक्त हुए। वे दोनों पुरुषसिंह रथरूपी नौका और अस्त्ररूपी पतवारसे शत्रुओंको पीड़ित करते हुए कुरुसेनारूपी समुद्रके पार जानेकी इच्छासे आगे बढ़ने लगे। वे दोनो महात्मा अर्ज्जुन अग्निके समान स्पर्श करनेवाले मकर घड़ियालके मुखसे मुक्त हुए दो बड़े मछलियोंके समान शत्रुसेनाके शूरवीरोंके सम्मुखसे मुक्त हुए, और जैसे घड़ियाल समुद्रके जलको चलायमान करता हुआ भ्रमण करता है वैसे ही पराक्रमी अर्ज्जुन शत्रुसेनाके योद्धाओंको तितर बितर करने लगे। जिस समय वे दोनों महा

द्रोणाचार्य्यकी सेनाके समीप पहुंचे थे उस समय तुम्हारे पुत्रों और दूसरे सम्पूर्ण योद्धाओंने यह समझा था, कि वे दोनों पुरुषसिंह द्रोणाचार्य्यके सम्मुखसे आगे न बढ़ सकेंगे, परन्तु इस समय उन सम्पूर्ण योद्धाओंने महातेजस्वी इन दोनों पुरुषसिंहोंको द्रोणाचार्य्यकी सेनासे पार हुए देखकर सिन्धुराज जयद्रथकी प्राणरक्षाके निमित्त संशय किया। हे पृथ्वीनाथ! तुम्हारे पुत्रोंकी यह प्रबल आशा थी, कि द्रोणाचार्य्य और कृतवर्म्माके समीपसे कृष्ण अर्जुन आगे नहीं बढ़ सकेंगे; परन्तु वे दोनों शत्रुनाशन महात्मा तुम्हारे पुत्रोंकी उस आशाको निष्फल करके द्रोणाचार्य्य और कृतवर्म्माकी अपरम्पार सेनासे पार होगये। तब उस समयमें तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग उन दोनों पुरुषसिंहोंको जलती हुई अग्निके समान सेनाके योद्धाओंको तितर बितर करते और आगे बढ़ते देखकर सिन्धुराज जयद्रथके जीवनकी अभिलाषसे निराश होगये।

महाराज! शत्रुओंके भयको बढ़ानेवाले [illegible] निर्भय चित्तसे गमन करते हुए [illegible] वध विषयक वार्त्तालाप आपसमें [illegible], कि "वह सिन्धुराज जयद्रथ दुर्योधनादि [illegible] महारथ वीरोंसे युद्धभूमिमें [illegible] है, परन्तु वह हमलोगोंके [illegible] देखते कभी भी हमारे सम्मुखसे [illegible]। यदि देवराज इन्द्रके सहित [illegible] सिन्धुराज जयद्रथकी रक्षा [illegible] युद्धभूमिमें उसका वध करेंगा। [illegible] युद्धभूमिमें गमन करते [illegible] देखकर इस प्रकार [illegible] कर रहे थे, तुम्हारे पुत्रगण [illegible]। जैसे दो मत [illegible] दोनों [illegible] हुए [illegible] दोनों पुरुषसिंह

सेनाको अतिक्रम करके गमन करते हुए दिखाई देने लगे। जैसे दो वणिक्, सिंह बाघ और हाथी आदि जीवोंसे युक्त पहाड़के भयङ्कर मार्गको उलङ्घन करके जीते जागते फिर दीख पड़ते हैं, वैसे ही वे दोनों पुरुष तुम्हारी ओरकी भयङ्कर सेनाको अतिक्रम करके आगे बढ़ते हुए दिखाई देने लगे। तुम्हारी ओरके सम्पूर्ण योद्धा लोग इन दोनों पुरुषसिंहोंके मुखवर्ण उन ऊपर कहे हुए दोनों वणियोंके समान प्रफुल्लित देख तथा द्रोणाचार्य्यकी सेनासे मुक्त हुए देखकर चारों ओरसे महाघोर शब्द करने लगे। महाराज! जैसे मनुष्य समुद्रसे पार होता है, वैसे ही वे दोनों शत्रुनाशन पुरुषसिंह जलती हुई अग्निके समान द्रोणाचार्य्य और दूसरे क्षत्रिय योद्धाओं तथा द्रोणाचार्य्यकी सेनासे इस प्रकार मुक्त हुए दिखाई देने लगे, जैसे बादलोंके समूहसे सूर्य्य मुक्त होकर प्रकाशित होते हैं। वे दोनों पुरुषसिंह द्रोणाचार्य्य और कृतवर्म्माके अस्त्रोंसे क्षतविक्षत शरीर होके तथा अनेक शस्त्रधारी पुरुषोंके अस्त्रोंकी चोटसे बचकर इन्द्र और अग्निके समान प्रकाशित होने लगे। वे दोनों द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे परिपूर्ण और रुधिरसे युक्त होके कर्णिकार पुष्पसे शोभित हुए दो पर्व्वतके समान प्रकाशित हुए और मुख्य मुख्य क्षत्रिय [illegible] जल [illegible] सर्प [illegible] मकर, और द्रोणाचार्य्य रूपी [illegible] युक्त शत्रु-सेना रूपी [illegible] पार होकर प्रकाशित होने लगे। जैसे सूर्य्य [illegible] मुक्त होते हैं वैसे ही वे दोनों महात्मा [illegible] तथा [illegible] [illegible] द्रोणाचार्य्यके [illegible] मुक्त हुए। [illegible]

ऐसा समझने लगे जैसे कोई मकर मच्छसे युक्त वर्षा कालकी सिन्धु आदि छः नदियोंको अपने भुजाओंके बलसे तैरकर पार होता हुआ दिखाई देता हैं। जिस प्रकार व्याघ्र जलके समीप हरिणोंको खोजते हुए स्थिर होता है, वैसे ही वे दोनों पुरुषसिंह जयद्रथके बधकी अभिलाष करके उन्हें खोजते हुए गमन करने लगे। उस समय उन दोनो महात्माओंके सुख वर्णको देखकर तुम्हारी ओरके योद्धालोग राजा जयद्रथको मरा हुआ ही समझने लगे। कमलनेत्रवाले कृष्ण अर्ज्जुन यत्नपूर्व्वक सिन्धुराज जयद्रथको देखकर बार बार सिंहनाद करने लगे। घोड़ोंकी लगाम हाथमें ग्रहण किये हुए कृष्ण और धनुर्द्धारी अर्ज्जुनका तेज उस समय सूर्य्य और अग्निके समान दिखाईदेने लगा जैसे मास देखकर दो बाज पक्षी हर्षित होते और शीघ्रताके सहित उसके समीप गमन करते है, वैसे ही वे दोनों महात्मा द्रोणाचार्य्यकी सेनासे मुक्त होकर सिन्धुराज जयद्रथको समीप देखके हर्षित हुए और क्रोध पूर्व्वक शीघ्रताके सहित उनकी ओर गमन करने लगे। हे भारत! घोड़ोंके चलानेमें निपुण द्रोणाचार्य्यसे अभेद कवच पाकर महापराक्रमी तुम्हारे पुत्र राजा दुर्य्योधनने कृष्ण अर्ज्जुनको सेना अतिक्रम करते हुए देखकर अकेले ही रथ पर चढ़के सिन्धुराज जयद्रथकी रक्षा करनेके वास्ते शीघ्रताके सहित अर्ज्जुनकी ओर जाने लगे। राजा दुर्य्योधन महाधनुर्द्धर कृष्ण अर्ज्जुनको अतिक्रम करके उनके सम्मुख उपस्थित हुए, उस समयमें सम्पूर्ण सेनाके बीच हर्ष सूचक नाना प्रकारके युद्धके जुझाऊ बाजे बजने लगे और शंखके शब्दके सहित चारो ओरसे शूरवीरोंका सिंहनाद सुनाई देने लगा अग्निके समान तेजस्वी जो महारथ योद्धा लोग सिन्धुराज जयद्रथके रक्षक हुए थे, वे सब कोई तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनको कृष्णअर्ज्जुनके सम्मुख युद्धके वास्ते स्थित देखकर आनन्दि हुए। हे राजेन्द्र! श्रीकृष्णचन्द्र अनुयायियो सहित दुर्य्योधनको सम्मुख स्थित देखकर स[...] यके अनुसार यह वचन कहने लगे।

९९ अध्याय समाप्त।

श्रीकृष्ण बोले हे अर्ज्जुन! यह देखो सु[...] धन सम्मुख उपस्थित है, आज मैं उसे मृत्यु मुखमें पड़ा हुआ समझ रहा हूं: परन्तु उस[...] समान रथी कोई भी नहीं है। वह दूर त[...] बाण चलानेवाला महाधनुर्द्धारी अस्त्र-शस्त्रो[...] विद्या जाननेवाला, युद्धमें महापराक्रमी, [...] शस्त्रधारी विचित्र योद्धा और महाबलवान् है यह महारथ अत्यन्त सुखी मानी कृतास्त्र औ[...] पाण्डवोंका वैरी है। मैं बोध करता हूं, उस[...] सङ्ग युद्धकरनेका तुम्हारा यही समय उपस्थि[...] हुआ है। इस युद्धरूपी जुएके खेलमें जीत [...] हार तुम दोनोके सामर्थ्यके अनुसार है। महारथ पाण्डवोंके कष्टभोग करानेका कारण है तुम सदासे रुके हुए क्रोधको समय उसके ऊपर प्रकट करो; और वह तुम्हारे बाणोंके चलानेके मार्गमें आया तब तुम अपनी सफलता समझो कौन र[...] राज्यको अभिलाष करके तुम्हारे सङ्ग युद्ध [...] सकता है? अर्ज्जुन! प्रारब्धहीसे दुर्य्यो[...] तुम्हारे सम्मुख उपस्थित हुआ है; इसस[...] प्रकारसे-उसका प्राण नाश होवे तुम वैसे[...] कार्य्यका विधान करो! उसने ऐश्वर्य्यके [...] मानसे मतवारा होकर आजतक दुःख [...] नहीं किया है, उसही भांतिसे युद्धभूमिमें तुम्हारे बल और पराक्रमको भी नहीं जानता है, अर्ज्जुन! मनुष्य देवता और दानवोंके [...] तीनोंलोकके प्राणि इकट्ठे होकर भी तु[...] युद्धभूमिमें पराजित करनेका उत्साह नहीं [...] सकते तब युद्धभूमिके बीच अकेला दुर्य्यो[...]

तुम्हारा क्या कर सकेगा ? जब प्रारब्धके अनुसार वह तुम्हारे रथके समीप आया है, तो इन्द्रने जैसे वृत्रासुरका नाश किया था, वैसे ही तुमभी इस दुर्योधनका वध करो ! हे पापरहित ! हे महापराक्रमी अर्जुन ! दुर्योधनने तुम्हारे मारनेके वास्ते सदासे यत्न किया है, इस ही पापीने धर्मराज युधिष्ठिरको जुएमें छलसे जीता तथा ठगा है और तुम लोगोंके कुछ अपराध न रहनेपर भी इसने तुम लोगोंके सङ्ग अनेक भांतिसे निठुरताके सहित व्यवहार किया है। अर्जुन ! इससे तुम इस दुष्ट अभिलाष करनेवाले, नीचबुद्धि निठुर और स्वेच्छाचारी दुर्योधनके विषयमें कुछ भी विचार न करके इसका वध करो। इस ही दुष्टात्माके छलसे तुम्हारा राज्य हरण किया गया है, इसहीके कारण तुम लोगोंको वनवासी होना पड़ा है, तुम इस समय द्रौपदीके क्लेशको स्मरण करके अपना पराक्रम प्रकाशित करो। वह प्रारब्ध हीसे तुम्हारे बाण चलानेके मार्गमें आया है, प्रारब्धहीसे तुम्हारे कार्य्यमें विघ्न डालनेके वास्ते तुम्हारे सम्मुख उपस्थित हुआ है, और प्रारब्धहीसे तुम्हारे सङ्ग युद्ध करनेको अपना कर्त्तव्य कर्म्म समझ रहा है। हम लोगोंने इसके [illegible] इच्छा नहीं किया था, प्रारब्धहीसे वह इच्छा आज सफल हुई है। हे अर्जुन ! इससे [illegible] युद्धमें जैसे इन्द्रने जम्भासुरका वध किया था वैसे ही तुम इस नीच तथा अधम [illegible] वध करो। दुर्योधनके मारे जानेसे [illegible] सम्पूर्ण सेना अनाथ हो जावेगी, तब उसकी [illegible] योद्धाओंका मरण होनेसे सब हो सकेगा। [illegible] दुरात्मा पुरुषोंका मूल है, इसका [illegible] करके [illegible] करो।

[illegible] श्रीकृष्णने अर्जुनसे ऐसा वचन [illegible], तब अर्जुन उनके वचनोंको स्वीकार करके [illegible] — "यह आदि मेरे कर[illegible] [illegible] तुम और सम्पूर्ण [illegible]ओंको त्यागके सुयोधनके निकट रथसे चलो। जिसने हम लोगोंके राज्यको निष्कण्टक रूपसे बहुत दिनोंतक भोग किया है, युद्धमें पराक्रम प्रकाशित करके क्या मैं उसका शिर काट सकूंगा ? वे दोनो पुरुषसिंह इस ही प्रकार बातचीत करते हुए हर्षपूर्व्वक दुर्योधनको निकट जानेकी इच्छासे अपने रथके सफेद घोड़ोंको उसको और बढ़ाने लगे। तुम्हारे पुत्र दुर्योधनने कृष्ण अर्जुनके समीप पहुंचके अत्यन्त भयकी सम्भावना रहनेपर भी तनिक भय नहीं किया। वह जब निर्भय चित्तसे कृष्ण अर्जुनके सम्मुख होकर युद्ध करनेके वास्ते आगे बढ़े, तब सम्पूर्ण क्षत्रिय योद्धाओंने उनके इस कठिन कर्म्मकी अत्यन्त प्रशंसा किया अनन्तर राजा दुर्योधनको अर्जुनके सङ्ग युद्ध करते देख-कर तुम्हारी सेना बीच शूरवीरोंका महाघोर सिंहनाद शब्द होने लगा। उस महाघोर शब्द उत्पन्न होनेके समय तुम्हारे पुत्र दुर्योधन शत्रु अर्जुनके उद्देश्यको भङ्ग करनेके निमित्त उन्हें युद्धसे निवारण करने लगे। अर्जुन तुम्हारे पुत्रसे निवारित होकर फिर अत्यन्त क्रुद्ध हुए शत्रु-नाशन दुर्य्योधन भी अर्जुनके ऊपर क्रुद्ध हुए। उन दोनोंको एक दूसरेके ऊपर क्रुद्ध और उनके भयङ्कररूपको देखकर चारों ओरसे सम्पूर्ण योद्धा लोग उनका पराक्रम देखने लगे। अनन्तर तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनने अर्जुन और कृष्णको क्रुद्ध देखके हंसकर उन्हें युद्धके निमित्त आवाहन किया। अनन्तर कृष्ण अर्जुनने भी अत्यन्त हर्षित होकर सिंहनाद करके अपने शङ्ख बजाने लगे। उन दोनो पुरुषोंको हर्षित देखकर सम्पूर्ण कौरव तुम्हारे पुत्र दुर्योधनके जीवनसे निराश हुए; और कितने ही पुरुष तुम्हारे पुत्रको अग्निमें पड़े भाहुतिके समान शोच करते हुए शोकसे व्याकुल होगये। तुम्हारी सेनाके बहुतेरे योद्धा कृष्ण-अर्जुनको हर्षित देखकर भयभीत होगये और "राजा मारे गये, राजा मारे गये !" ऐसे

ऐसा समझने लगे जैसे कोई मकर मच्छसे युक्त बर्षा कालकी सिन्धु आदि छः नदियोंको अपने भुजाओंके बलसे तैरकर पारहोता हुआ दिखाई देता है। जिस प्रकार व्याघ्र जलके समीप हरिणोंको खोजते हुए स्थिर होता है, वैसे ही वे दोनों पुरुषसिंह जयद्रथके बधकी अभिलाष करके उन्हें खोजते हुए गमन करने लगे। उस समय उन दोनो महात्माओंके मुख वर्णको देखकर तुम्हारी ओरके योद्धालोग राजा जयद्रथको मरा हुआ ही समझने लगे। कमलनेत्रवाले कृष्ण अर्ज्जुन यत्नपूर्व्वक सिन्धुराज जयद्रथको देखकर बार बार सिंहनाद करने लगे। घोड़ोंकी लगाम हाथमें ग्रहण किये हुए कृष्ण और धनुर्द्धारी अर्ज्जुनका तेज उस समय सूर्य्य और अग्निके समान दिखाईदेने लगा जैसे मांस देखकर दो बाज पक्षी हर्षित होते और शीघ्रताके सहित उसके समीप गमन करते है, वैसे ही वे दोनों महात्मा द्रोणाचार्य्यकी सेनासे मुक्त होकर सिन्धुराज जयद्रथको समीप देखके हर्षित हुए और क्रोध पूर्व्वक शीघ्रताके सहित उनकी ओर गमन करने लगे। हे भारत। घोड़ोंके चलानेमें निपुण द्रोणाचार्य्यसे अभेद कवच पाकर महापराक्रमी तुम्हारे पुत्र राजा दुर्य्योधनने कृष्ण अर्ज्जुनको सेना अतिक्रम करते हुए देखकर अकेले ही रथ पर चढ़के सिन्धुराज जयद्रथकी रक्षा करनेके वास्ते शीघ्रताके सहित अर्ज्जुनकी ओर जाने लगे। राजा दुर्य्योधन महाधनुर्द्धर कृष्ण अर्ज्जुनको अतिक्रम करके उनके सम्मुख उपस्थित हुए, उस समयमें सम्पूर्ण सेनाके बीच हर्षसूचक नाना प्रकारके युद्धके जुझाऊ बाजे बजने लगे और शंखके शब्दके सहित चारो ओरसे शूरवीरोंका सिंहनाद सुनाई देने लगा अग्निके समान तेजस्वी जो महारथ योद्धा लोग सिन्धुराज जयद्रथके रक्षक हुए थे, वे सब कोई तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनको कृष्णअर्ज्जुनके सम्मुख युद्धके वास्ते स्थित देखकर आनन्दित हुए। हे राजेन्द्र। श्रीकृष्णचन्द्र अनुयायियोंके सहित दुर्य्योधनको सम्मुख स्थित देखकर समयके अनुसार यह वचन कहने लगे।

९९ अध्याय समाप्त।

श्रीकृष्ण बोले हे अर्ज्जुन। यह देखो सु[illegible]धन सम्मुख उपस्थित है, आज मै उसे मृत्यु मुखमें पड़ा हुआ समझ रहा हूं: परन्तु उ[illegible] समान रथी कोई भी नहीं है। वह दूर त[illegible] बाण चलानेवाला महाधनुर्द्धारी अस्त्र-शस्त्र विद्या जाननेवाला, युद्धमें महापराक्रमी, [illegible] शस्त्रधारी विचित्र योद्धा और महाबलवान् है यह महारथ अत्यन्त सुखी-मानी कृतास्त्र [illegible] पाण्डवोंका वैरी है। मैं बोध करता हूं, उसक[illegible] सङ्ग युद्धकरनेका तुम्हारा यही समय उपस्थि[illegible] हुआ है। इस युद्धरूपी जुएके खेलमें जीत [illegible] हार तुम दोनोके सामर्थ्यके अनुसार है। य[illegible] महारथ पाण्डवोंके कष्टभोग करानेका मु[illegible] कारण है तुम सदासे रुके हुए क्रोधको [illegible] समय उसके ऊपर प्रकट करो; और वह [illegible] तुम्हारे बाणोंके चलानेके मार्गमें आया [illegible] तब तुम अपनी सफलता समझो कौन रा[illegible] राज्यकी अभिलाष करके तुम्हारे सङ्ग युद्ध [illegible] सकता है? अर्ज्जुन! प्रारब्धहीसे दुर्य्यो[illegible] तुम्हारे सम्मुख उपस्थित हुआ है; इसस [illegible] प्रकारसे-उसका प्राण नाश होवे तुम वैसे [illegible] कार्य्यका विधान करो! उसने ऐश्वर्य्यके [illegible] मानसे मतवारा होकर आजतक दुःख अनुभ[illegible] नहीं किया है, उसही भांतिसे युद्धभूमिमें तुम्हा[illegible] बल और पराक्रमको भी नहीं जानता है। [illegible] अर्ज्जुन! मनुष्य देवता और दानवोंके [illegible] तीनोलोकके प्राणि इकट्ठे होकर भी तुम्[illegible] युद्धभूमिमें पराजित करनेका उत्साह नहीं [illegible] सकते तब युद्धभूमिके बीच अकेला दु[illegible]

तुम्हारा क्या कर सकेगा ? जब प्रारब्धके अनुसार वह तुम्हारे रथके समीप आया है, तो इन्द्रने जैसे वृत्रासुरका नाश किया था, वैसे ही तुमभी इस दुर्य्योधनका वध करो ! हे पापरहित ! हे महापराक्रमी अर्ज्जुन ! दुर्य्योधनने तुम्हारे नाशके वास्ते सदासे यत्न किया है, इस ही पापीने धर्म्मराज युधिष्ठिरको जुएमें छलसे जीता तथा ठगा है और तुम लोगोंके कुछ अपराध न रहनेपर भी इसने तुम लोगोंके सङ्ग अनेक भांतिसे निठुरताके सहित व्यवहार किया है। अर्ज्जुन ! इससे तुम इस दुष्ट अभिलाष करनेवाले, नीचबुद्धि निठुर और स्वेच्छाचारी दुर्य्योधनके विषयमें कुछ भी विचार न करके इसका वध करो। इस ही दुष्टात्माके छलसे तुम्हारा राज्य हरण किया गया है, इसहीके कारण तुम लोगोंको वनवासी होना पड़ा है, तुम इस समय द्रौपदीके क्लेशका स्मरण करके अपना पराक्रम प्रकाशित करो। वह प्रारब्ध हीसे तुम्हारे बाण चलानेके मार्गमें आया है, प्रारब्ध हीसे तुम्हारे कार्य्यमें विघ्न डालनेके वास्ते तुम्हारे सम्मुख उपस्थित हुआ है, और प्रारब्धहीसे तुम्हारे सङ्ग युद्ध करनेको अपना कर्त्तव्य कर्म्म समझ रहा है। हम लोगोंने इसके वधकी इच्छा नहीं किया था, प्रारब्धहीसे वह इच्छा सफल हुई है। हे अर्ज्जुन ! इससे [illegible] युद्धमें जैसे इन्द्रने जम्भासुरका वध किया था, वैसे ही तुम इस नीच तथा अधम [illegible] वध करो। दुर्य्योधनके मारे जानेसे [illegible] सेना अनाथ होवेगी, तब उसकी [illegible] सहजहीमें वध हो सकेगा। [illegible] दुरधोंका मूल है, उसका [illegible] करो।

[illegible] वासुदेवके ऐसा वचन [illegible], तब अर्ज्जुन उनके वचनोंको स्वीकार करके [illegible] — यह [illegible] मेरे कर्त्तव्य [illegible] और सम्पूर्ण योद्धा-ओंको त्यागके सुयोधनके निकट रथले चलो। जिसने हम लोगोंके राज्यको निष्कण्टक रूपसे बहुत दिनोंतक भोग किया है, युद्धमें पराक्रम प्रकाशित करके क्या मैं उसका शिर काट सकूंगा ? वे दोनों पुरुषसिंह इस ही प्रकार बातचीत करते हुए हर्षपूर्व्वक दुर्य्योधनके निकट जानेकी इच्छासे अपने रथके सफेद घोड़ोंको उसकी ओर बढ़ाने लगे। तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनने कृष्ण अर्ज्जुनके समीप पहुंचके अत्यन्त भयकी सम्भावना रहनेपर भी तनिक भय नहीं किया। वह जब निर्भय चित्तसे कृष्ण अर्ज्जुनके सम्मुख होकर युद्ध करनेके वास्ते आगे बढ़े, तब सम्पूर्ण क्षत्रिय योद्धाओंने उनके इस कठिन कर्म्मकी अत्यन्त प्रशंसा किया अनन्तर राजा दुर्य्योधनको अर्ज्जुनके सङ्ग युद्ध करते देखकर तुम्हारी सेना बीच शूरवीरोंका महाघोर सिंहनाद शब्द होने लगा। उस महाघोर शब्द उत्पन्न होनेके समय तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन शत्रु अर्ज्जुनके उद्देश्यको भङ्ग करनेके निमित्त उन्हें युद्धसे निवारण करने लगे। अर्ज्जुन तुम्हारे पुत्रसे निवारित होकर फिर अत्यन्त क्रुद्ध हुए शत्रुनाशन दुर्य्योधन भी अर्ज्जुनके ऊपर क्रुद्ध हुए। उन दोनोंको एक दूसरेके ऊपर क्रुद्ध और उनके भयङ्कररूपको देखकर चारों ओरसे सम्पूर्ण योद्धा लोग उनका पराक्रम देखने लगे। अनन्तर तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनने अर्ज्जुन और कृष्णको क्रुद्ध देखके हंसकर उन्हें युद्धके निमित्त आवाहन किया। अनन्तर कृष्ण अर्ज्जुनने भी अत्यन्त हर्षित होकर सिंहनाद करके अपने शङ्ख बजाने लगे। उन दोनों पुरुषोंको हर्षित देखकर सम्पूर्ण कौरव तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनके जीवनसे निराश हुए; और कितने ही पुरुष तुम्हारे पुत्रको अग्निमें पड़े आहुतिके तुल्य समान बोध करते हुए शोकसे व्याकुल होगये। तुम्हारी सेनाके बहुतेरे योद्धा कृष्ण-अर्ज्जुनको हर्षित देखकर भयभीत होगये और "राजा मारे गये, राजा मारे गये !" ऐसे

ही वचनोंको कहते हुए शोर मचाने लगे। जयकी अभिलाषा करनेवाले राजा दुर्य्योधन उन लोगोंके शब्दको सुनकर यह वचन बोले तुम लोग कुछ भय मत करो, मै कृष्ण अर्ज्जुनको यमपुरीमें भेजूंगा। अपनी सेनाके योद्धाओंसे ऐसा वचन कहके राजा दुर्य्योधन क्रोधपूर्व्वक अर्ज्जुनसे बोले। हे अर्ज्जुन! तुमने दिव्य और मानुषिक जिन सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्रोंकी विद्या सीखा है यदि तुम पाण्डुसे उत्पन्न हुए हो तो मेरे निकट अपने सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्रोंको शीघ्र प्रकाशित करो। तुम्हारा और कृष्णका जो कुछ बल और पराक्रम हो, वह मेरे ऊपर शीघ्र प्रकट करो, तुम्हारा कितना बल पराक्रम है उसे मैं देखूंगा। लोग कहते है तुमने प्रभु तथा गुरुके निकट सत्कार पाने योग्य कर्म्म किया है, परन्तु तुमने मेरे निकट अपना कुछ पराक्रम नहीं दिखायाहै, इससे तुम अपने बल-पराक्रमको इस समय मेरे निकट प्रकाशित करो।

१०० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, राजा दुर्य्योधनने ऐसा वचन कहके मर्म्मभेदी तीन बाणोंसे अर्ज्जुनके चार बाणोंसे उनके रथके घोड़ों और दश बाणोंसे कृष्णके हृदयमें प्रहार किया। तिसके अनन्तर फिर राजा दुर्य्योधनने एक बाणसे कृष्णके हाथमें स्थित उत्तम कोड़ेको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। अर्ज्जुनने निर्भय चित्तसे शीघ्रताके सहित शिलापर घिसे हुए चौदह बाण दुर्य्योधनकी ओर चलाये, परन्तु वे बाण दुर्य्योधनके वर्म्म पर लगते ही पृथ्वीमें गिर पड़े; उन चौदह बाणोंका निष्फल होते देख अर्ज्जुनने फिर चौदह बाण दुर्य्योधनकी ओर चलाये, वे बाण भी दुर्य्योधनके वर्म्म पर लगते ही छटकके पृथ्वीमें गिर पड़े। उन अट्ठाइस बाणोंको व्यर्थ होते देखकर शत्रुओंके नाश करनेवाले कृष्ण अर्ज्जुनसे यह वचन बोले,। हे अर्ज्जुन! जो मैंने पहिले कभी नहीं देखा था, वह आज देख रहा हूं। तुमने जो सम्पूर्ण बाण दुर्य्योधनके ऊपर चलाये, वे मानों पत्थरसे टक्कर खाकर निरर्थक ही खाली गये। पहिलेके समान क्या तुम्हारे गाण्डीवधनुषका बल नहीं है? आजका यह उपस्थित समय दुःखही प्राप्त होनेवाला है, परन्तु यह तुम्हारे वा शत्रुके पक्षमें निष्फल तो नहीं होगा। मैं यही तुमसे पूंछता हूं तुम मुझे इसका उत्तर दो। दुर्य्योधनके ऊपर चलाये हुए तुम्हारे बाणोंको व्यर्थ होते देखकर मैं अत्यन्त ही विस्मित हुआ हूं। हे अर्ज्जुन! आज यह कैसा आश्चर्य्यमय कार्य्य होरहा है? तुम्हारे वज्रके समान जो सम्पूर्ण बाण शत्रुओंके शरीरको विदारण करते रहते है, आज उन ही बाणोंका प्रहार होरहा है।

अर्ज्जुन बाले, हे कृष्ण! मुझे बोध होता है, कि द्रोणाचार्य्यने उसे अभेद कवच धारण करा दिया है, यह कवच अस्त्रोंसे अभेद है, तीनों लोकके प्राणी एकत्र होके भी उस कवचकी नही भेद कर सकते उसे अकेले द्रोणाचार्य्य ही जानते हैं, और मैं भी उस द्विजसत्तम द्रोणाचार्य्यकी कृपासे जानता हूं। यह कवच बाणोंसे किसी प्रकार भीभेदित नहीं होसकता। इन्द्र भी वज्र लेकर इस कवचको भेद करनेमें समर्थ नहीं हो सकते। हे कृष्ण। इन सम्पूर्ण वृत्तान्तोंको जानकर भी तुम मुझे क्यों मोहित कर रहे हो? तीनों लोकके बीच भूत, भविष्य, वर्त्तमान जो कुछ विषय है, वह सम्पूर्ण तुम्हें विदित है, इस बातको जैसा मैं जानता हूं, वैसा दूसरा कोई नहीं जानता है द्रोणाचार्य्यने इस दुर्य्योधनको कवच पहना दिया है, इसहीसे यह अभेद कवचधारी होकर निर्भयचित्तसे मेरे सम्मुख खड़ा है, यह ठीक है। परन्तु इस

कवचके विषयमें किन कार्य्योंका विधान करना होता है, उसे वह नहीं जानता ; स्त्रियोंके आभूषणके समान केवल उसने उस कवचको पहन किया है। जो हो, तुम मेरे धनुषका बल और बाणोंका पराक्रम देखो, इस कुरुराज दुर्य्योधनको कवचसे रक्षित होने पर भी मैं उसे पराजित करूंगा। देवराज इन्द्रने इस प्रकाशमान कवचकी विद्या अङ्गिराको सिखाया था, अंगिरासे बृहस्पतिने सीखा था, फिर इन्द्रने बृहस्पतिके समीपसे इस कवचको प्राप्त किया; अनन्तर इन्द्रने इस वर्म्मको सम्पूर्ण मन्त्र और इसके उपयोगी कर्म्मोंके सहित मुझे प्रदान किया है। यह वर्म्म देवता-ओंका बनाया है, वा ब्रह्माने स्वयं उसे तैयार किया हो, परन्तु आज मैं नीच बुद्धिवाले दुर्य्योधनको अपने बाणोंसे संहार करूंगा। यह कवच इसकी रक्षा नहीं कर सकेगा।

सञ्जय बोले, अर्ज्जुन कृष्णकी इतनी कथा सुनाकर कई एक बाणोंको चढाकर कान [illegible] खींचने लगे। उन सम्पूर्ण बाणोंको अर्ज्जुन धनुषपर चढाके खींच ही रहे थे उस [illegible] महापराक्रमी अश्वत्थामाने सर्व्वास्त्र-[illegible] अर्ज्जुनके बाणोंको उनके बाणों [illegible] धनुषके बीचहीमें काटके गिरा दिया। [illegible] गिरते हुए देखकर अर्ज्जुन [illegible] यह वचन बोले, हे कृष्ण! [illegible] दूसरी बार नहीं चलासकता। [illegible] अस्त्रोंको चलाऊंगा, तो वे [illegible] सेनाका [illegible] संहार [illegible] तिसके अनन्तर दुर्य्यो-[illegible] तीक्ष्ण बाणोंसे [illegible] बाणोंकी वर्षासे [illegible] छिपा दिया। तुम्हारी [illegible] क्रुद्ध अर्ज्जुनके [illegible] देखकर [illegible]

करने लगी। अनन्तर अर्ज्जुन अत्यन्त क्रुद्ध होकर ओठोंको काटते हुये दुर्य्योधनके छिद्रको देखने लगे। उस समय अर्ज्जुनने दुर्य्योधनके शरीरमें ऐसा कोई स्थान भी खाली नहीं देखा, जो कि वर्म्मसे रक्षित न हुआ हो तिसके अनन्तर अर्ज्जुनने यमराजके समान भयङ्कर तीक्ष्ण और चोखे बाणोंसे उनके रथके घोड़े सारथी पृष्ठरक्षक और उनके विचित्र धनुषको काट दिया। फिर उनके रथको टुकड़े टुकड़े करनेकी इच्छा किया। अनन्तर दुर्य्योधनको रथरहित करके दो तीक्ष्ण बाणोंसे अर्ज्जुनने उनके दोनो हथेलियोंमें प्रहार किया। महाधनुर्द्धर दुर्य्योधनको अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित और आपदग्रस्त देखकर तुम्हारी सेनाके कितने ही शूरवीर योद्धा लोग उनकी रक्षा करनेके निमित्त क्रुद्ध होकर कई हजार रथी गजपति घुड़सवार और पैदल सेनाके योद्धाओंको सङ्ग लेके चारों ओरसे अर्ज्जुनके रथको घेरकर उनके ऊपर अपने अस्त्र-शस्त्रोंकी वर्षा करने लगे। उन शूरवीर योद्धाओंके बीचमें घिरकर चारों ओरसे उनके अस्त्र-शस्त्रोंकी वर्षासे क्या कृष्ण, क्या अर्ज्जुन क्या उनका रथ उस समयमें नही दिखाई पड़ते थे। अनन्तर अर्ज्जुन अपने अस्त्रोंकी वर्षा करके उस सम्पूर्ण सेनाके योद्धाओंका वध करने लगे, उस समय अर्ज्जुनके अस्त्रोंसे सैकड़ों रथी और गजपति योद्धा प्राणरहित होके पृथ्वीमें गिरने लगे। उन शूरवीरोंके बीच कितने ही मरके पृथ्वीमें गिर पड़े, कितने ही उनके अस्त्रोंसे पीड़ित होके प्राणत्याग कर रहे थे, ऐसी अवस्थामें भी वे सम्पूर्ण योद्धा अर्ज्जुनके रथके ऊपर अपने अस्त्रोंसे प्रहार करने लगे; इससे अर्ज्जुनका रथ एक कोसके भीतर चारों ओरसे घिरकर उस योद्धाओंके बीचमें रुक गया।

तिसके अनन्तर यदुकुलभूषण पराक्रमी कृष्ण [illegible]

मैं अपना शङ्ख बजाता हूं। तब अर्ज्जुन अपने तनुत्राण शस्त्रके सहित धनुषको चढ़ाकर तीक्ष्ण बाणोंसे शत्रु सेनाके योद्धाओंका बध करने लगे; और कृष्णने भी अपना पाञ्चजन्य शङ्ख बजाया। उस समय कृष्णके नेत्रकी बरौनी और सम्पूर्ण शरीर धूलिसे परिपूरित होगया था; तथा उनके मुखपर पसीना हो आया था। उनके शङ्खके शब्द और अर्ज्जुनके धनुष टङ्कार शब्दको सुनकर क्या निर्ब्बल क्या बलवान् सम्पूर्ण सेनाके योद्धा लोग मोहित होके पृथ्वी पर गिरने लगे। अनन्तर जैसे बादल वायुके वेगसे नष्ट हुए दिखाई देते हैं वैसेही अर्ज्जुनका रथ उन सम्पूर्ण शूरवीरोंसे मुक्त होकर प्रकाशित होने लगा। उसे देखकर जयद्रथके सम्पूर्ण रक्षक महारथ योद्धा लोग अपने अनुयायी योद्धाओंके सहित अत्यन्त क्रुद्ध हुए। जयद्रथकी रक्षा करनेवाले वे सम्पूर्ण महारथी योद्धा लोग सहसा अर्ज्जुनको देखकर अपने महाभयङ्कर शब्दसे पृथ्वीको कम्पित करने लगे। उन महात्माओंके बाण छोड़नेके प्रचण्ड शब्द शंख और वीरोंके सिंहनादके सहित मिलकर महाघोर सुनाई देने लगे। कृष्ण अर्ज्जुन भी उन सम्पूर्ण योद्धाओंके महाघोर शब्दको सुनकर अपने शंख बजाने लगे। महाराज! उस समय वह सम्पूर्ण शूरवीरोंके शंख धनुष टङ्कार और महाघोर शूरवीरोंके सिंहनादके शब्दसे पर्व्वत, समुद्र द्वीप और पातालके सहित सम्पूर्ण पृथ्वी परिपूरित होगई; और कुरु पाण्डवोंकी सेनाके बीच दशो दिशामें व्याप्त होकर वह शब्द प्रतिध्वनित होने लगा। तुम्हारी ओरके महारथीयोद्धा लोग कृष्ण-अर्ज्जुनको देखकर अत्यन्तही विस्मित और क्रुद्ध हुए। अनन्तर वे सम्पूर्ण महारथीलोग कृष्ण अर्ज्जुनको वर्म्मधारी और क्रुद्ध देखकर उनकी ओर दौड़े उन महारथियोंकी अर्ज्जुनकी ओर गमन करनेके समय अद्भुत शोभा हुई।

१०१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, तुम्हारी ओरके महारथीयोद्धा लोग कृष्ण अर्ज्जुनको देखकर क्रोधके वशमें हो शीघ्रताके सहित उनकी ओर बढ़े, अर्ज्जुन भी उन लोगोंके बध करनेके निमित्त क्रुद्ध हो शीघ्रताके सहित आगे बढ़े। भूरिश्रवा, शल, कर्ण वृषसेन, जयद्रथ, कृपाचार्य्य मद्रराज शल्य, और अश्वत्थामा,—ये आठ रथी सुवर्ण चित्रित व्याघ्रके चमड़ेसे युक्त महाघोर शब्द करनेवाले अपने उत्तम उत्तम रथोंपर चढ़के तथा क्रोधी सर्पके समान सुवर्ण-खचित अपने दृढ़ धनुषोंको फेरते हुए जलती हुई अग्निके समान प्रकाशमान वायुके समान गमन करनेवाले घोड़ोंसे युक्त रथपर चढ़के मानो आकाशमार्गसे गमन करते हुए रणभूमिमें शोभित होने लगे। वर्म्मधारी और अत्यन्त क्रोधी उन सम्पूर्ण महारथियोंने बादलके गर्ज्जनेके समान रथ शब्दके सहित अपने तीक्ष्णबाणोंका बर्षाकर अर्ज्जुनको दशों दिशासे छिपा दिया। शीघ्र गमन करनेवाले उत्तम विचित्र घोड़े उन महारथियोंके रथको खींचते हुए दशों दिशा को प्रकाशित करके रणभूमिमें शोभित होने लगे। उन महारथियोंने महा वेगशील पर्व्वत नदी सिन्धु तथा दूसरे देशोंके उत्तम उत्तम घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़के तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनकी रक्षा करनेकी अभिलाषसे शीघ्रताके सहित अर्ज्जुनके रथको चारों ओरसे घेर लिया। उन महारथी योद्धाओंने अपने शंखोंको बजाके पृथ्वी और आकाशको परिपूरित करदिया; कृष्ण अर्ज्जुनने भी अपने अपने शङ्ख बजाये। अर्ज्जुन और कृष्ण सम्पूर्णप्राणियोंमें श्रेष्ठ हैं, उनके शङ्खभी सबके शङ्खोंसे श्रेष्ठ हैं; अर्ज्जुनके देवदत्त शङ्खसे पृथ्वी आकाश और सम्पूर्ण दिशा परिपूरित होगई। कृष्णके मुख वायुके वेगसे बजते हुए पाञ्चजन्य शङ्खकी शब्द सम्पूर्ण शब्दोंको अतिक्रम करके स्वर्ग, मर्त्य लोकमें परिपूर्ण होगया। शूरवीरोंके हर्ष और कादरोंके भयको बढ़ानेवाले शुभ शब्द

[illegible] शङ्खके समय अनेक ढोल नगाड़े [illegible] झांझ और मृदङ्ग आदि बाजे बजने लगे। दुर्योधनके हितैषी तुम्हारी सेनाके [illegible] नाना देशोंके राजाओं और मुख्य मुख्य महारथ वीरोंको कृष्ण अर्जुनके शङ्खका शब्द असह्य हुआ। वे लोग कृष्ण अर्जुनके कार्य्यका प्रतिकार करेंगे, ऐसा विचारके ऊंचे शब्दसे अपने अपने शङ्ख बजाने लगे। हे भारत! तुम्हारी सेनाके बीच मनुष्य, हाथी, घोड़े उस समय शब्दसे व्याकुल होगये जैसे वज्रके शब्दसे आकाश प्रतिनादित होता है, वैसे ही रणभूमि शङ्खोंके शब्दोंसे परिपूरित होगई और तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग अत्यन्त ही व्याकुल हुए। वह महा भयङ्कर शब्द प्रलय कालके महाघोर शब्दके समान सम्पूर्ण दिशाओंको प्रतिध्वनित करके तुम्हारी सेनाके पुरुषोंको भयभीत करने लगा। महाराज! तिसके अनन्तर राजा दुर्यो-धन और कर्ण आदि आठों महारथियोंने जय-द्रथकी रक्षा करनेके वास्ते अर्जुनको आक्रमण किया। अश्वत्थामाने तिहत्तर बाणोंसे कृष्ण [illegible] अर्जुन और पांच बाणोंसे अर्जुनके [illegible] तथा उनके रथके चार घोड़ोंको [illegible] प्रहार किया। [illegible] कृष्णके विद्ध होने [illegible] अत्यन्त क्रुद्ध होकर अश्वत्थामाके [illegible] बाण चलाया। फिर कर्णको दश [illegible] तीन बाणोंसे विद्ध किया; [illegible] धनुषको काटके काट दिया [illegible] करके अर्जुनको अपने [illegible] भूरिश्रवाने शिलापर [illegible] तीन बाणोंसे, [illegible] निष्ठ- [illegible] [illegible]

महारथियोंको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे। कर्णको और वृषसेनको तीन बाणोंसे विद्ध करके मद्रराज शल्यके धनुषका मुष्टिग्रह काट दिया। अनन्तर भूरिश्रवाको आठ कृपाचार्य्यको पचीस सिन्धुराज जयद्रथको एक सौ और अश्वत्थामाको अग्निके समान तेजस्वी सत्तर बाणोंसे विद्ध किया; परन्तु भूरिश्रवाने क्रुद्ध होकर कृष्णके हाथमें स्थित कोड़ेको काटके तिहत्तर बाणोंसे अर्जुनको विद्ध किया। तिस के अनन्तर श्वेतवाहन अर्जुनने क्रुद्ध होकर अपने सैकड़ों तीक्ष्ण बाणोंसे उन सम्पूर्ण महा रथियोंको इस प्रकारसे निवारण किया जैसे प्रबल वायु बादलोंको निवारण करता है।

१०२ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय! मेरी ओर के महारथियों और पाण्डवोंके रथकी जिस प्रकारकी शोभायमान ध्वजायें थीं वह तुम मेरे समीप वर्णन करो।

सञ्जय बोले हे राजेन्द्र! उन महात्मा पुरुषोंके रथकी ध्वजा नाना प्रकारकी थीं; उन सम्पूर्ण ध्वजाओंके नाम रूप और चिन्हके अनुसार मैं वर्णन करता हूं आप सुनिये। उन मुख्य मुख्य राजाओं तथा महारथियोंके रथकी नाना प्रकारकी ध्वजा अग्निके समान प्रकाशित होरही थीं। चारों ओरसे नाना भांतिकी पताकाओंसे सहित नाना वर्णवाली अनेक भांतिकी ध्वजा अत्यन्त शोभित होती थीं। सोनेकी माला सुवर्णमय छत्र और सुवर्ण दण्ड से युक्त वायुके झोंकेसे लहराती हुई सम्पूर्ण ध्वजा मानो स्वर्गके पर्वतके ऊपर सोनेके शिखरके समान शोभित होने लगीं। उन ध्वजा ओंकी सुन्दर पताका वायुके वेगसे इधर उधर [illegible] हुई मानो रङ्गभूमिमें नृत्य करती हुई [illegible] समान दिखाई देने लगीं। उन

सम्पूर्ण रथियोंके इन्द्रधनुषके समान प्रकाशमान समस्त पताका बार बार वायुके झकोरसे लहराती हुई उत्तम उत्तम रथोंके ऊपर शोभित होने लगीं।

महाराज। मैंने देखा कि अर्जुनके रथपर उग्रमुखवाले सिंह लाङ्गूलसे युक्त महाभयङ्कर रूपवाली वानर ध्वजा लगी है यह वन्दरकी रूपकी ध्वजा उत्तम पताकाओंसे शोभित होकर तुम्हारी सेनाके योद्धाओंको भयभीत करने लगी। अश्वत्थामाके रथपर लालवर्णवाली सिंहलाङ्गूलसेयुक्त सुवर्णमय इन्द्रध्वजाके समान प्रकाशमान ध्वजाका अग्रभाग वायुके झोंकेसे लहराता हुआ कौरवराज दुर्य्योधनको आनन्दित करने लगा। अधिरथपुत्र कर्णके रथपर सुवर्णमय हाथी कक्षा चिन्हसे युक्त सुन्दर पताका और स्वर्णमालासे शोभित उछलती हुई उत्तम ध्वजा वायुके वेगसे लहराती और आकाशको परिपूर्ण करती हुई शोभित होने लगी। यशस्वी द्विजसत्तम गौतमपुत्र कृपाचार्य्यके रथपर अत्यन्तसुन्दर वृषभचिन्हसे युक्त ध्वजा दीख पड़ती थी। जैसे त्रिपुरासुरके नाश करनेवाले महादेवके रथकी ध्वजा वृषभचिन्हसे शोभित होती है वैसे ही कृपाचार्य्यका रथ भी वृषभध्वजासे शोभायमान लगता था। वृषसेनके रथ पर नाना भांतिके रत्नोंने शोभित सुवर्णमयमयूरध्वजा लगी थी। वृषसेनके रथकी ध्वजाका वह मयूर मानो रणभूमिमें शोभित होकर बोलनेके निमित्त उद्यत हुआ दिखाई देता था। जैसे मोरों पर चढ़े हुए स्वामि-कार्त्तिक विराजमान होते है वैसे ही मयूरध्वजासे युक्त अपने उत्तम रथ पर चढ़े हुए महारथ वृषसेन शोभित होने लगे। मद्रराज शल्यके रथकी ध्वजा पर अग्निशिखाके समान मनोहर और शोभासे युक्त लाङ्गल रेखाका चिन्ह था। जैसे खेतको हलसे जोतने पर वोजोंके अंकुर शोभित होते है वैसे ही सुवर्ण चित्रित उनके ध्वजाकी लाङ्गलरेखा शोभित होने लगी। सिन्धुराज जयद्रथके रथकी ध्वजाका अग्रभाग सुवर्णमय था, वह ध्वजा ललाईसे युक्त सूर्यके समान प्रकाशमान सुवर्णके तारोंसे खचित थी तथा उस ध्वजाके ऊपर बराह चिन्ह विराजमान था। राजा जयद्रथ उस सुवर्णमय बराह ध्वजासे युक्त होकर इस प्रकार शोभित होने लगे जैसे पहिले समय देवासुर संग्राममें तेज पूषाकी शोभा हुई थी। यज्ञशील बुद्धिमान् सोमदत्तपुत्रके सूर्य्यके समान प्रकाशमान रथ पर [illegible] चिन्हसे युक्त ध्वजा लगी थी। उस यूप ध्वजा [illegible] चन्द्रमाकी प्रतिमा दीख पड़ती थी। जैसे राजसूय महा यज्ञमें प्रकाशमान होता यूप विराजमान है उस ही प्रकार उनकी सुवर्णमय यूपध्वजा रणभूमिमें शोभित होने लगी। राजा शल[illegible] रथकी ध्वजा सुवर्णमयी मतवारे हाथीके चिन्हसे युक्त थी और विचित्र हस्तीचिन्हसे युक्त सुर[illegible] लोंकी प्रतिमासे शोभित वह ध्वजा रणभूमिमें प्रकाशित होने लगी। जैसे सफेद महा गजराज देवतोंके राजा इन्द्रकी सेनाके बीच शोभित होता था वैसे ही तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनके उत्तम रथ पर सुवर्णके तारोंसे खचित और छोटी छोटी घण्टियोंसे युक्त ध्वजा पर सुवर्ण और रत्नोंसे चित्रित हाथीकी प्रतिमा तुम्हारी सेनाके बीच शोभित होने लगी। कुरुश्रेष्ठ तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन उस सफेद गजराज-चिन्ह वाली ध्वजासे अत्यन्त ही शोभायमान हुए; उस संग्रामभूमिमें तुम्हारी सेनाके बीच अश्वत्थामा आदि नव महारथियोंके सिंहलांगूल आदि चिन्हसे युक्त नव रथोंकी नव भांतिकी ध्व[illegible] वायुके झोंकेसे लहराती हुई प्रलय कालके सूर्य्य समान रणभूमिमें प्रकाशित होरही थीं। परन्तु अर्ज्जुनके रथकी ध्वजा पर अकेले श्री[illegible] केवल महा विकराल बन्दरकी मूर्त्ति थी [illegible] होसे अर्ज्जुनका रथ जलती हुई अग्निसे [illegible] हिमालय पर्व्वतकी भांति प्रकाशित होने [illegible]

[illegible] अनन्तर शत्रुओंके नाश करनेवाले उन महारथ वीरोंने अर्जुनको पीड़ित करनेके [illegible] अपने विचित्र दृढ़ और प्रकाशमान धनुषोंको ग्रहण किया, दिव्य कर्म करनेवाले शत्रुनाशन अर्जुनने भी गाण्डीवधनुष ग्रहण किया। महाराज! यह सम्पूर्ण युद्ध कार्य्य [illegible] अनीतिसे ही उपस्थित हुआ है और तुम्हारे ही दोषसे राजा लोग नाना देशोंसे [illegible] घोड़े हाथी और रथोंके सहित नष्ट हुए तथा सम्पूर्ण योद्धाओंका नाश होरहा है। दुर्योधन आदि सम्पूर्ण योद्धा और दिव्य कर्म करनेवाले अर्जुन ये सब लोग तर्जन गर्जन [illegible] करने लगे। शत्रुनाशन कुन्तीपुत्र अर्जुनने जिनके सारथी कृष्ण थे उन्होंने [illegible] यह अद्भुत कर्म किया कि अकेले [illegible] अनेक महारथियोंके सङ्ग युद्ध करने लगे। [illegible] महाबाहु अर्जुन उन सम्पूर्ण महारथ [illegible] तथा जयद्रथके वधकी इच्छासे क्रुद्ध [illegible] अपना गाण्डीवधनुष फेरते हुए रण-[illegible] शोभित हुए; उन्होंने सहस्रों बाणोंकी [illegible] तुम्हारी ओरके उन महारथियोंको [illegible] कर दिया। अनन्तर उन महारथ योद्धा [illegible] अपने बाणोंकी वर्षाकर [illegible] दिया। अब तुम्हारी ओरके [illegible] अपने बाणोंके समूहसे अर्जुनको [illegible] तुम्हारी सेनाके बीच शूरवी-[illegible] सिंहनाद शब्द सुनाई देने लगे।

[illegible] अध्याय समाप्त।

[illegible] अर्जुन जब [illegible] और [illegible] पाञ्चाल [illegible] होकर कोर [illegible] दिया [illegible] अयदके [illegible] कौरवोंका! महा-

भयङ्कर रोएं को खड़ा करनेवाला तुमुल संग्राम हुआ था, वह मानो द्रोणाचार्य्यको लेकर जुएका खेल होने लगा, अर्थात् द्रोणाचार्य्य पण रूपी हुए। पाञ्चाल योद्धा लोग द्रोणाचार्य्यके वध करनेकी इच्छासे हर्षित होके सिंहनाद करते हुए अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे, और कौरव लोग भी द्रोणाचार्य्यके रक्षा करनेकी इच्छासे पाञ्चाल योद्धाओंके ऊपर अपने अस्त्र शस्त्रोंको चलाने लगे। उन लोगोंका देवासुर युद्धके समान अत्यन्त भयङ्कर महाघोर तुमुल युद्ध होने लगा। पाण्डवोंके सहित पाञ्चाल योद्धा लोग द्रोणाचार्य्यके रथके निकट उपस्थित होकर उनकी व्यूह बद्ध सेनाके भेदकरनेकी इच्छासे अपने अस्त्र शस्त्रोंको चलाने लगे। रथी लोग रथ पर चढ़के धीरे धीरे आगे बढ़ द्रोणाचार्य्यके रथके समीप पहुंच कर उनकी सेनाके शूरवीर योद्धाओंको अपने अस्त्रोंसे पीड़ित करने लगे। केकय योद्धाओंके महारथ योद्धा बृहत्चत्रने इन्द्रके वज्रके समान तीक्ष्ण बाणोंको चलाते हुए द्रोणाचार्य्यको आक्रमण किया। महायशस्वी चेमधूर्त्तिने शीघ्रताके सहित सैकड़ों तथा सहस्रों बाणोंको चलाते हुए बृहत्चत्रको आक्रमण किया था, उस ही प्रकारसे पराक्रमी चेदिराज धृष्टकेतु शीघ्रतासे द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। उसको मुख बाये हुए कालके समान सम्मुख आते देख महाधनुर्द्धर वीर धन्वा शीघ्रताके सहित उनके सम्मुख उपस्थित हुए, तिसके अनन्तर पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने विजयकी अभिलाष करनेवाले युद्धभूमिमें स्थित महाराज युधिष्ठिरको उनकी सेनाके सहित निवारण करने लगे। तुम्हारे पुत्र महा बली पराक्रमी विकर्ण युद्धविद्या जाननेवाले पराक्रमी नकुलको युद्धभूमिमें निवारण करने लगे। शत्रुनाशन दुर्म्मुख सहदेवको सम्मुख आते देखकर सहस्रोंबाण चलाते हुए उनके

निकट उपस्थित हुए। व्याघ्रदत्त पुरुषश्रेष्ठ सात्यकिको वार बार अपने अस्त्रोंसे पीड़ित करते हुए युद्धसे निवारण करने लगे। रथियोंमें श्रेष्ठ सोमदत्त पुत्र क्रुद्ध होकर तीक्ष्णबाण चलानेवाले द्रौपदी पुत्रोंको निवारण करने लगे महारथी ऋष्यश्रृङ्गके पुत्र अलम्बुष अत्यन्त क्रुद्ध भीमसेनको सम्मुख आते देखकर उन्हें युद्धभूमिसे निवारण करने लगा। जैसे पहिले समयमें राम रावणका युद्ध हुआ था वैसे ही भीमसेन और अलम्बुषका युद्ध होने लगा श्रेष्ठ महारथ द्रोणाचार्य्यने अत्यन्त क्रुद्ध होकर महात्मा राजा युधिष्ठिरके धनुषको अपने बाणसे काट दिया। युधिष्ठिरने क्रुद्ध होके दूसरा धनुष ग्रहण करके द्रोणाचार्य्यके सम्पूर्ण मर्म्मस्थलोंमें प्रहार किया। द्रोणाचार्य्य युधिष्ठिरके बाणोंके प्रहारसे क्रुद्ध होके पचीस बाणोंसे राजा युधिष्ठिरके दोनों स्तनोंके बीचमें प्रहार किया महात्मा युधिष्ठिर अपना हस्तलाघव दिखाकर द्रोणाचार्य्यके बाणोंको निवारणकिया अनन्तर द्रोणाचार्य्यने शीघ्रताके सहित अपने बाणोंकी बर्षासे राजा युधिष्ठिरको छिपा दिया। सम्पूर्ण पुरुषोंने राजा युधिष्ठिरको द्रोणाचार्य्यके बाणोंके जालसे छिपे हुए देखकर समझा कि महाराज युधिष्ठिर मारे गये। किसी किसीने समझा कि राजा युधिष्ठिर युद्धभूमिसे भाग गये कसी किसीने समझा कि यशस्वी द्विजसत्तम द्रोणाचार्य्यने राजा युधिष्ठिरको हरण किया। महाबलवान् राजा युधिष्ठिरने द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर फिर अपना धनुष चढ़ाके उनके बाणोंको काट काटके पृथ्वीमें गिरा दिया वह युधिष्ठिरका पराक्रम उस समय अद्भुत रूपसे दीख पड़ा। राजा युधिष्ठिरने द्रोणाचार्य्यके उन सम्पूर्ण बाणोंको अपने बाणोंसे काटकर पर्वतको भी तोड़नेमें समर्थ एक महाघोर शक्तिको ग्रहण किया। सुवर्ण दण्डसे युक्त आठ घण्टियोंसे शोभित उस भयङ्कर शक्तिको द्रोणाचार्य्यके ओर चलाकर राजा युधिष्ठिरने बलपूर्ब्बक सिंहनाद किया, उनके सिंहनादके शब्दको सुनकर सम्पूर्ण प्राणी भयभीत होगये। धर्म्मराज युधिष्ठिरके हाथसे छूटी हुई उस भयङ्कर शक्तिको देखकर सम्पूर्ण प्राणी द्रोणाचार्य्यके स्वस्ति निमित्त ईश्वरसे प्रार्थना करने लगे। राजा युधिष्ठिरके हाथसे छूटी हुई केचुलीसे रहित सर्पके समान वह शक्ति सम्पूर्ण दिशा और आकाशमण्डलको प्रकाशित करती हुई द्रोणाचार्य्यकी ओर जाने लगी। हे राजेन्द्र! अस्त्रशस्त्रोंकी विद्या जाननेवाले द्रोणाचार्य्यने उस शक्तिको अपनी ओर आते देखकर ब्रह्मास्त्र प्रकट किया। पराक्रमी द्रोणाचार्य्य ब्रह्मास्त्रसे उस शक्तिको भस्म करके युधिष्ठिरके रथके समीप उपस्थित हुए। महाराज युधिष्ठिरने द्रोणाचार्य्यके चलाये हुए ब्रह्मास्त्रका ब्रह्मास्त्रसे ही निवारणकिया। फिर राजा युधिष्ठिरने शीघ्रताके सहित पांच बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको विद्ध करके एक क्षुरप्र बाणसे उनका दृढ़ धनुष काट दिया। क्षत्रियोंके नाश करनेवाले द्रोणाचार्य्यने उस कटे हुए धनुषको त्यागके युधिष्ठिरके ऊपर एक गदा चलाया। द्रोणाचार्य्यके हाथसे छूटी हुई उस गदाको सम्मुख आते देखकर शत्रुनाशन युधिष्ठिरने भी एक गदा ग्रहण करके द्रोणाचार्य्यकी ओर चलाया दोनों पुरुषसिंहोंके हाथसे छूटी हुई वे दोनों गदा आपसमें टक्कर खाके पृथ्वीमें गिर पड़ीं। तिसके अनन्तर द्रोणाचार्य्यने अत्यन्त क्रुद्ध होके चार बाणोंसे उनके रथके चारो घोड़ोंको मारकर एक बाणसे फिर इन्द्रधनुषके समान राजा युधिष्ठिरके धनुषको काट दिया। अनन्तर एक बाणसे उनके रथकी ध्वजा काटके तीन बाणोंसे द्रोणाचार्य्यने राजा युधिष्ठिरके ऊपर प्रहार किया। राजा युधिष्ठिर अश्वरहित घोड़ोंसे हीन रथसे कूदकर दोनों भुजा उठाके

[illegible] हुए। हे राजन्! द्रोणाचार्य्य [illegible] रहित और अस्त्रहीन देखकर हस्त-[illegible] सहित नाना बाणोंको चलाकर उनको [illegible] योद्धाओंको मोहित करने लगे। अन-[illegible] पराक्रमी सिंह हरिणकी ओर दौड़ता [illegible] ही द्रोणाचार्य्य अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर[illegible] वास्ते युधिष्ठिरकी ओर दौड़े। अनु-[illegible] द्रोणाचार्य्यको युधिष्ठिरकी ओर दौड़ते [illegible] पाण्डवोंकी सेनामें महा घोर हाहा-[illegible] होने लगा, और द्रोणाचार्य्यने [illegible] हरण किया द्रोणाचार्य्यने राजाको हरण किया। ऐसे ही तुमुल शब्द पाण्डवोंको [illegible] चारो ओरसे सुनाई देने लगे। तिसके अनन्तर कुन्तीपुत्र राजा युधिष्ठिर शीघ्रताके सहित सहदेवके रथपर [illegible] वेगपूर्व्वक घोड़ोंको दौड़ा कर रणभूमिसे [illegible] गए।

१०४ अध्याय समाप्त।

[illegible] हे राजेन्द्र! केकयराज महा-[illegible] सम्मुख आते देख, परा-[illegible] बाणोंसे उनके वक्षस्थलमें [illegible] किया। [illegible] शीघ्रताके सहित [illegible] सेनाको भेद करनेकी इच्छासे [illegible] ऊपर प्रहार किया। [illegible] एक तीक्ष्ण धारवाले बाण [illegible] धनुषको काटदिया, और रथि-[illegible] एक बाणसे [illegible] किया। [illegible] दूसरा धनुष [illegible] रथके [illegible] करके उनके रथ [illegible] और उनके [illegible] सुन्दर कुण्ड-[illegible] काटके पृथ्वीमें गिरा [illegible] और [illegible]

शोभित शिर पृथ्वीपर गिरके ऐसा शोभित हुआ, जैसे आकाशसे गिरे हुए ज्योतिवाले पदार्थ दीख पड़ते हैं। महाबलवान् पराक्रमी बृहत्क्षत्र क्षेमधूर्त्तिका वध करके प्रसन्न चित्तसे पाण्डवोंके प्रिय कार्य्यके करनेकेवास्ते तुम्हारी सेनाकी ओर बढ़े। हे भारत! महाधनुर्द्धारी पराक्रमी वीरधन्वा द्रोणाचार्य्यकी ओर धृष्टकेतुको आये हुए देख कर उनके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। वे दोनो अपने बल पराक्रमको प्रकाशित करते हुए आपसमें एक दूसरेके ऊपर सहस्रो बाणोंसे प्रहार करने लगे। जैसे महाघोर बनके बीच क्रुद्ध हुए दो मतवारे हाथी आपसमें युद्ध करते हैं, वैसेही उन दोनों पुरुषसिंहोंका आपसमें संग्राम होने लगा। वे दोनों ही एक दूसरेको वधकी अभिलाष करके मानो पर्व्वतकी कन्दरामें स्थित दो शार्दूलोंके समान अपने पराक्रमको प्रकाशित करने लगे। महाराज! उन दोनों वीरोंके अद्भुत युद्धको आकाशसे सिद्ध, चारण आदि सम्पूर्ण प्राणी देखने लगे। वीरधन्वाने क्रुद्ध होकर हंसते हुए एक बाणसे धृष्टकेतुके धनुषको काटके दो टुकड़े करदिया। महाराज! चेदिराज धृष्टकेतुने कटे हुए धनुषको त्यागकर स्वर्णदण्डसे युक्त लोहमयी एक प्रचण्ड शक्ति ग्रहण किया। उस महापराक्रमी धृष्टकेतुने उस शक्तिको बलपूर्व्वक वीरधन्वाके रथपर चलाया। वीरधन्वा उस शक्तिकी चोटसे प्राणरहित होकर पृथ्वीसे गिर पड़े। त्रिगर्त्तदेशीय महारथ पराक्रमी वीरधन्वाके मरनेपर पाण्डवलोग तुम्हारी सेनाके योद्धाओंको चारो ओरसे रणभूमिमें भगाने लगे। हे भारत! तुम्हारे पुत्र दुर्म्मुख सहदेवके ऊपर साठ बाणोंसे प्रहार करके बलपूर्व्वक सिंहनाद करने लगे। महाबली पराक्रमी माद्रीपुत्र सहदेवने क्रुद्ध होकर रणभूमिके बीच दुर्म्मुखको दश बाणोंसे बिद्ध किया। महाबलवान् सहदेवको बाणोंसे [illegible] देखकर दुर्म्मुखने भी

बाणोंसे फिर उनके शरीरमें प्रहार किया। परन्तु सहदेवने एक बाणसे दुर्मुखके रथकी ध्वजाको काटके चार तीक्ष्ण बाणोंसे उनके रथके चारो घोड़ोंको मार डाला। तिसके अनन्तर उत्तम पानीसे बुझे हुए एक तीक्ष्ण बाणसे कुण्डलशोभित उनके सारथीका शिर काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। फिर एक क्षुरप्र बाणसे दुर्म्मुखके धनुषको काटकर पांच बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। अनन्तर दुर्म्मुख घोड़ोंसे रहित रथको त्यागके निरमित्रके रथपर जाचढ़े। अनन्तर शत्रुनाशन सहदेवने क्रुद्ध होकर सेनाके बीच निरमित्रको तीक्ष्ण भल्लके प्रहारसे प्राणरहित कर दिया। हे भारत! त्रिगर्त्तराजके पुत्र अपने सेनाके योद्धाओंको दुःखित करते हुए पृथ्वीमें गिर पड़े। जैसे दशरथपुत्र रामचन्द्र महाबली पराक्रमी खरदूषण राक्षसको मारकर युद्धभूमिमें शोभित हुए थे, उसही भांति महाबाहु सहदेव निरमित्रका बध करके संग्रामभूमिमें प्रकाशित होने लगे। त्रिगर्त्तराजके पुत्र महापराक्रमी, निरमित्रको मरते देखकर त्रिगर्त्तसेनाके बीच महाघोर हाहाकार शब्द उत्पन्न हुआ।

हे राजन्! नकुलने तुम्हारे पुत्र बड़े नेत्रवाले, विकर्णको मुहूर्त्त भरके बीच युद्धभूमिमें पराजित किया, वह नकुलका पराक्रम अद्भुत रूपसे दीख पड़ा। व्याघ्रदत्तने रणभूमिके बीच अपने तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करके सात्यकिको घोड़े, सारथी और रथकी ध्वजाके सहित छिपा दिया। शिनिपुत्र बलवान् सात्यकिने हस्तलाघवके सहित उनके सम्पूर्ण बाणोंको निवारण किया और अपने तीक्ष्ण बाणोंसे घोड़े, सारथी और रथकी ध्वजाको काटकर व्याघ्रदत्तका भी बध करके उन्हें रथसे पृथ्वीपर गिराया। मगध राजके पुत्र व्याघ्रदत्तको मरते देख, मागधीसेनाके शूरवीरोंने क्रुद्ध होकर सात्यकिको आक्रमण किया। वे सम्पूर्ण शूरवीर योद्धालोग सहस्रों बाण; तोमर, भिन्दिपाल प्रास; मुद्गर और मूसल चलाते हुए युद्धविद्याके जाननेवाले सात्यकिके संग युद्ध करने लगे। युद्धमें कठिन कर्म्मोंके करनेवाले महाबाहु बलवान् सात्यकिने हंसते हुए उन सम्पूर्ण योद्धाओंको लीलाकी भांति युद्धभूमिमें पराजित किया। सात्यकिके बाणोंसे पीड़ित हुई तुम्हारी सेना मरनेसे बचे हुए मागधी-सेनाके शूरवीरोंको इधर उधर भागते देख युद्धभूमिमें भागने लगी। यदुवंशियोंकी कीर्त्तिको बढानेवाले यशस्वी सात्यकि तुम्हारी सेनाके योद्धाओंको युद्धभूमिमें पराजित करके अपने दृढ़-धनुषको फिरते हुए उस संग्रामभूमिमें अत्यन्त शोभित होने लगे। महाबाहु! महात्मा सात्यकिके बाणोंसे पीड़ित होकर भागती हुई वह सम्पूर्ण सेना युद्ध करनेके वास्ते फिर उनके सम्मुख नहीं हुई। तिसके अनन्तर महापराक्रमी द्रोणाचार्य्य अत्यन्त क्रुद्ध होके सात्यकिके सम्मुख स्वयं उपस्थित हुए।

१०५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले हे भारत! महायशस्वी सोमदत्तके पुत्रने महा धनुर्धारी द्रौपदी पुत्रोंको पांच पांच बाणोंसे विद्ध करके फिर सात सात बाणोंसे विद्ध किया। वे पांचो महापराक्रमी सौमदत्तिके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होके रणभूमिमें मोहित होगये। अनन्तर शत्रुनाशन नकुलपुत्र शतानीकने पुरुषश्रेष्ठ सोमदत्तिको दो बाणोंसे विद्ध करके सिंहनाद किया। और सुतसोम आदि महारथियोंने सावधान होके तीन तीन बाणोंसे सौमदत्तिको शीघ्रताके सहित विद्ध किया। महाराज! महा यशस्वी सौमदत्तिने उन पांचो महारथियोंके हृदयमें एक एक बाणसे प्रहार किया। तिसके अनन्तर वे पांचो भाई महात्मा सौमदत्तिको बाणोंसे

[illegible] करने लगे। अर्जुनपुत्रने अत्यन्त क्रुद्ध होके अपने [illegible] बाणोंसे उनके रथके चारों घोड़ोंको मार डाला। भीमसेनके पुत्रने उनका धनुष काट दिया और सिंहनाद करते हुए अपने [illegible] उन्हें [illegible] छिद्र करने लगा। युधिष्ठिरके पुत्रने रथकी ध्वजाको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। नकुलपुत्रने सारथीका वध किया [illegible] क्षुरप्र बाणसे सोमदत्तपुत्रके शिरको काटकर पृथ्वीमें गिराया। सुवर्णभूषित [illegible] कटा हुआ शिर पृथ्वीमें गिरकर [illegible] होने लगा। महात्मा सोमदत्त पुत्रको [illegible] तुम्हारी सेनाके योद्धालोग चारों ओर भागने लगे जैसे रावणपुत्र मेघनादने लक्ष्मणके संग युद्ध किया था, वैसे ही अलम्बुष [illegible] क्रुद्ध होके भीमसेनके संगयुद्ध करने लगा। अलम्बुष और भीमसेनको आपसमें [illegible] करते हुए देखकर सम्पूर्ण प्राणियोंको हर्ष और विस्मय उत्पन्न हुआ। भीमसेनने हंसके [illegible] क्रोधी अलम्बुषको अपने तीक्ष्ण [illegible] किया। वह राक्षस युद्धभूमिमें [illegible] बाणोंसे विद्ध होकर महाभयङ्कर [illegible] भीमसेन और उनके अनु-[illegible] दौड़ा। अलम्बुषने पांच [illegible] करके अपने अस्त्रोंसे [illegible] अनुगामी योद्धाओंका नाश [illegible] और [illegible] सेनाके चार सौ [illegible] एक बाणसे भीमसेनको [illegible] राक्षसने [illegible] [illegible] रथका दण्ड [illegible] भीमसेन [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और

महात्मा भीमके हाथसे अपने भाई बकका वध स्मरणकर भयङ्कर रूप धारण करके यह वचन बोला हे नीचबुद्धिवाला भीम! मेरे भाई राक्षसश्रेष्ठ बलवान् बकका जो तूने वध किया था वह मेरे सामने तूने अपना पराक्रम नहीं दिखलाया था, इस समय खड़ा रह, युद्धभूमिमें मेरा बल और पराक्रम देख, ऐसा कहकर उस ही समय अन्तर्द्धान हुआ और आकाशमें जाकर भीमसेनके ऊपर बाणोंकी वर्षा करने लगा। परन्तु उस राक्षसके अन्तर्द्धान होनेपर भीमसेन अपने चोखे बाणोंसे आकाशमण्डलको परिपूरित कर दिया। अनन्तर वह राक्षस आकाशमें पीड़ित होके क्षण भरके बीच रथपर चढ़े हुए पृथ्वीपर आके उपस्थित हुआ। और उस ही समय अन्तर्द्धान होके आकाशमें चला गया। अनन्तर नाना प्रकारके छोटे बड़े और मोटे अनेक भांतिके रूपधारणकर बादलके समान गर्जता हुआ चारों ओरसे भीमसेनको कड़वीबाते सुनाने लगा। उस समय आकाशसे जलधाराकी भांति बाणोंकी वर्षा होने लगी। शक्ति त्रिशूल, प्रास, पट्टिस, तोमर, मुद्गर परशु शतघ्नि परिघ भिन्दिपाल पत्थर तरवार और वज्र इन सम्पूर्ण अस्त्रोंको वर्षाता हुआ वह राक्षस भीमसेनकी सेनाके योद्धाओंका वध करने लगा। पाण्डवोंकी सेनाके बहुतेरे हाथी घोड़े रथी और पैदल चलनेवाले वीर योद्धा उस राक्षसके अस्त्रोंसे कटकर पृथ्वीमें गिरने लगे। उससे रथरूपी नौका मरे हुए हाथी घड़ियालरूपी चक्रहंसकीसी वीरोंकी भुजारूपी सर्प रुधिररूपी जल और मांसरूपी कीचड़से युक्त रणभूमिके बीच एक भयङ्कर नदी उत्पन्न हुई। उसमें राक्षस लोग मांस भक्षण करते हुए रुधिर पीने लगे. और चेदि, पाञ्चाल तथा सृञ्जय योद्धा लोग उस नदीके प्रवाहमें बहने लगे। [illegible] उस राक्षसको इस भांति पराक्रम

प्रकाशित करते हुए निर्भयचित्तसे रणभूमिमें बीच घूमते देख अत्यन्तही व्याकुल हुए। तुम्हारी ओरके योडाओंको महा हर्ष उत्पन्न हुआ वे सम्पूर्ण योडा लोग सिंहनाद करते हुए जुझाऊ बाजे बजाने लगे। भीमसेनने तुम्हारी सेनाके योडाओंके सिंहनाद और बाजोंके भयङ्कर शब्दको सुनकर मतवारे हाथीकी भांति उस शब्दको सहन नहीं किया। पवनपुत्र भीमसेन क्रोधसे लालनेत्र करके अग्निके समान प्रज्वलित होगये। और साक्षात् त्वष्टा-देवकी भांति त्वाष्ट्र अस्त्र प्रकट किया; उससे चारों ओर सहस्रों बाण उत्पन्न हुए। उन बाणोंकी वर्षासे तुम्हारी सेनाके पुरुष शीघ्रताके सहित रणभूमिसे भागने लगे। और वह अस्त्र राक्षसी मायाको नाश करके उस राक्षसको पीड़ित करने लगा। अनन्तर वह नाना भांतिसे पीड़ित होके भीमसेनको छोड़कर द्रोणाचार्यकी सेनामें चला गया। इस प्रकारसे जब वह अलम्बुष राक्षस महात्मा भीमसेनके सम्मुखसे पराजित हुआ, तब पाण्डवोंने अपने सिंहनादसे सम्पूर्ण दिशाओंको परिपूरित कर दिया। प्रह्लादके पराजित करनेपर मरुतगणोंने जैसे इन्द्रकी प्रशंसा करी थी वैसे ही पाण्डव लोग प्रसन्न होके भीमसेनकी प्रशंसा करने लगे।

१०६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज! अलम्बुषको रणभूमिमें निर्भयचित्तसे घूमते हुए देखकर हिड़म्बापुत्र घटोत्कच शीघ्र ही उसके समीप जाके उसे तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध करने लगा। जैसे पहिले समयमें इन्द्र और सम्बरासुरका संग्राम हुआ था, वैसेही वे दोनों राक्षस नाना भांति माया उत्पन्न करके भयङ्कर युद्ध करने लगे। उस समयमें उन दोनों राक्षसोंका युद्ध इस प्रकारसे होने लगा, जैसे पहिले राम-रावणका संग्राम हुआ था। अलम्बुषने अत्यन्त क्रुद्ध होकर घटोत्कच भी अलम्बुषके हृदयमें तीक्ष्ण बाणोंसे प्रहार करके बार बार सिंहनाद करने लगा। अनन्तर अलम्बुषने युद्धदुर्मद घटोत्कचको बार बार अपने बाणोंसे विद्ध करके हर्षित होकर चारों ओर आकाशको अपने भयङ्कर शब्दसे परिपूरित करदिया। महा-बली पराक्रमी वे दोनों राक्षस माया उत्पन्न करते हुए समान रूपसे युद्ध करने लगे। दो-ही माया युद्धमें निपुण और बलसे मतवारे इससे दोनों ही सैकड़ों प्रकारकी माया उत्पन्न करके एक दूसरेको मोहित करते हुए मायायुद्ध करने लगे, घटोत्कच जितनी माया उत्पन्न करता था, अलम्बुष मायासे ही उसकी मायाको नष्ट कर देता था। मायायुद्ध जाननेवाले क्रोधी अलम्बुषको इस प्रकार युद्ध करते देख महारथ पाण्डवोंने अत्यन्त क्रुद्ध होके चारों ओर अपने रथों पर चढ़के उसे घेर लिया और जैसे मशाल जलाके चारों ओरसे हाथीको पीड़ित करते हैं वैसेही वे सब कोई चारों ओरसे उसके ऊपर बाणोंकी वर्षा करते हुए उसे पीड़ित करने लगे। जैसे जलते हुए वनसे हाथी मुक्त होता है वैसे ही वह राक्षस उन सम्पूर्ण महारथोंके अस्त्रोंको अपनी मायासे नष्ट करके उन लोगोंके रथोंके बीचसे निकल कर पृथक् हुआ। अनन्तर उसने इन्द्रके वज्र समान शब्द करके अपना भयङ्कर धनुष चढ़ा कर भीमसेनको पच्चीस युधिष्ठिरको तीन सहदेवको सात घटोत्कचको पांच नकुलको तिहत्तर और द्रौपदीके पांचोपुत्रोंको पांच पांच बाणोंसे विद्धकरके सिंहनाद किया। अनन्तर भीमसेनने नौ सहदेवने सात युधिष्ठिरने सौ नकुलने चौसठ और द्रौपदीके पुत्रोंने तीन तीन बाणोंसे उस राक्षसको विद्ध किया। महाबलवान् घटोत्कचने उसे पचास बाणोंसे विद्ध किया, फिर सत्तर बाणोंसे विद्ध करके सिंहनाद करते लगा। महाराज! घटोत्कचके

[illegible] अन्तर्गत वन और समुद्रके सहित [illegible] लगी। महाबलवान अल-[illegible] महारथियोंके बाणोंसे अत्यन्त [illegible] फिर उन लोगोंको पांच पांच [illegible] किया। परन्तु घटोत्कच राक्षसने [illegible] अत्यन्त क्रुद्ध होके उस क्रोधी [illegible] बाणोंसे फिर विद्ध किया। अन-[illegible], महाबलवान अलम्बुप पराक्रमी [illegible] बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर स्वर्ग-[illegible] घिसे हुए अनेक तीक्ष्ण-[illegible] लगा। जैसे महा बलवान सर्प [illegible] पर्वतमें प्रवेश करते हैं वैसे [illegible] घटोत्कचके शरीरमें घुस गये [illegible] पाण्डव लोग व्याकुल होकर [illegible] बाणोंको उसकी ओर [illegible] और घटोत्कच भी उसके ऊपर [illegible] लगा। [illegible] जयको अभि-[illegible] पाण्डव लोग उसके ऊपर [illegible] कर रहे थे तब वह मानो [illegible] इस समय क्या करूं। [illegible] हुआ फिर कार्य्यका [illegible] सका। तिसके अनन्तर महा-[illegible], क्रोधी घटोत्कच [illegible] देख कर उसके वध [illegible] पड़ा और [illegible] समान [illegible] और [illegible] [illegible]

शरीरकी सम्पूर्ण हड्डियां छितरा गईं। उस समय उसका स्वरूप अत्यन्त भयङ्कर दिखाई देने लगा। क्रोधी घटोत्कचके बल पराक्रम और फुर्त्तीको देखकर सम्पूर्ण सेनाके योद्धालोग विस्मित होगये। उस राक्षसके मरनेपर पाण्डवलोग आनन्दित होके सिंहनाद करने लगे। तुम्हारी ओरके शूरवीर योद्धा लोग टूटे हुए पर्वतके समान अलम्बुषको मरते देखकर हाहाकार शब्द करने लगे। उस समय सम्पूर्ण प्राणी उस राक्षसको कौतुककी भांति पृथ्वी पर गिरे हुए अग्निके अङ्गारे समान प्रकाशमान देखने लगे। जैसे इन्द्रने बलासुरका वध करके सिंहनाद किया था, उस ही प्रकारसे महाबलवान् राक्षसराज घटोत्कचने अलम्बुषका बध करके बलपूर्वक सिंहनाद किया। घटोत्कचके पिता पितृव्य और दूसरे बन्धु बान्धव लोग उसे कठिन कर्म करते देख आदरके सहित उसकी प्रशंसा करने लगे। घटोत्कच भी उस समय पके हुए फल तोड़नेके समान अलम्बुषका बध करके अत्यन्त ही आनन्दित हुआ। तिसके अनन्तर पाण्डवोंकी सेनामें शङ्खके शब्द और जुझाऊ बाजोंके शब्दके सहित नाना भांतिके शब्द सुनाई देने लगे। उसे सुनकर कौरव लोग भी उसके विरुद्ध नाना भांतिके बाजोंके सहित महाघोर शब्द करने लगे। उससे अत्यन्त भयङ्कर शब्द उत्पन्न होकर सम्पूर्ण पृथ्वीमें परिपूरित हो गया।

१०७ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! सात्यकिने द्रोणाचार्य्यको किस भांति निवारण किया उसे सुननेके लिये मुझे अत्यन्त कौतूहल होता है, इससे तुम विस्तारपूर्वक मेरे समीप वर्णन करो।

[illegible] बोले, सात्यकि और उसके अनुयायी [illegible] द्रोणाचार्य्यका [illegible]

खड़ा करनेवाला तुमुल युद्ध हुआ था वह मैं वर्णन करता हूं, तुम एकाग्रचित्त होकर सुनो। सात्यकि जब तुम्हारी सेनाके पुरुषोंका वध कर रहा था तब सत्यपराक्रमी द्रोणाचार्य्य स्वयं उसकी ओर दौड़े। सात्यकिने महारथ भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्यको सहसा अपनी ओर आते देख उनके ऊपर पचीस छटक बाण चलाया। पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने भी सावधान चित्त और शीघ्रताके सहित पांच बाणोंसे सात्यकिको विद्ध किया। शत्रु-मांस भक्षण करनेवाले वे बाण सात्यकिके वर्मको भेद कर पृथ्वीमें घस गये। महाबाहु सात्यकि उन बाणोंसे विद्ध होकर मानो अङ्कुशसे विद्ध हुए गजराजके समान क्रुद्ध होकर अग्नि तुल्य पचास बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको विद्ध किया। महाबलवान् महाधनुर्द्धारी भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्य यत्नवान् सात्यकिके बाणोंसे विद्ध होकर क्रुद्ध हुए, और शीघ्रताके सहित अनेक बाणोंसे उसे विद्ध करके फिर एक नतपर्व्व बाणसे सात्यकिको पीड़ित किया। हे राजेन्द्र। सात्यकि उस समय द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे विद्ध होकर क्या कार्य्य करना उचित है, ऐसी ही चिन्ता करते हुए कुछ भी निश्चय नहीं कर सके, बल्कि द्रोणाचार्य्यको तीक्ष्ण बाण चलाते देखकर व्याकुल हो गये। तुम्हारे पुत्र और कुरुसेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग सात्यकिको इस प्रकार विकल देखकर आनन्दित हो बार बार सिंहनाद करने लगे।

राजा युधिष्ठिर उन योद्धाओंके भयङ्कर सिंहनाद और सात्यकिको द्रोणाचार्य्यके अस्त्रोंसे पीड़ित देखकर अपनी सेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंसे बोले जैसे राहु सूर्य्यको ग्रास करता है वैसे ही पराक्रमी द्रोणाचार्य्य यदुवंशियोंमें मुख्य बलवान् सात्यकिका ग्रास कर रहे हैं, इससे जहां-पर सात्यकि युद्ध कर रहा है उस ही स्थानपर तुम लोग गमन करो, जल्दी दौड़ो। तिसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्नसे बोले, हे पृषतनन्दन। तुम किस प्रकारसे निश्चिन्त हो रहे हो। क्या तुम नहीं देखते हो, द्रोणाचार्य्यसे हम लोगोंको महाभय उपस्थित हुआ है। इससे शीघ्र ही द्रोणाचार्य्यके निकट गमन करो। जैसे बालक पक्षीको रस्सीसे बझाकर खेल करते हैं, वैसे ही महाधनुर्द्धर द्रोणाचार्य्य युद्धभूमिमें सात्यकिको अपने बाणोंसे पीड़ित करते हुए क्रीड़ा कर रहे हैं। भीमसेन आदि महारथी लोग तुम्हारे सहित यत्नवान् होकर उसही स्थानपर गमन करें। तुम सब कोई मिलकर यमराजके कराल मुखमें पड़े हुए समान सात्यकिको इस समय द्रोणाचार्य्यके हाथसे छुड़ाओ, सेनाके सहित मैं भी तुम लोगोंके पीछे पीछे जाऊंगा।

राजा युधिष्ठिरने ऐसा कहके सम्पूर्ण सेनाके सहित सात्यकिकी रक्षाके वास्ते द्रोणाचार्य्यके समीप गमन किया। सम्पूर्ण पाण्डव और सृञ्जय लोग जब अकेले द्रोणाचार्य्यसे युद्ध करनेके वास्ते उनकी ओर गमन करने लगे, तब उन लोगोंका उस समय महाभयङ्कर शब्द होने लगा, अनन्तर वे सम्पूर्ण योद्धालोग इकट्ठे होके कङ्क और मोरपङ्खसे युक्त तीक्ष्ण बाणोंको द्रोणाचार्य्यके ऊपर बरसाने लगे। जैसे अतिथियोंको देखकर गृहस्थ-पुरुष आसन, जल आदि वस्तुओंको प्रदान करके उनका सत्कार करते हैं, वैसे ही द्रोणाचार्य्यने युद्धभूमिमें उनके ऊपर अनेक बाणोंकी वर्षा करके उनका युद्धके योग्य सत्कार किया। जैसे अतिथि लोग अतिथिशालामें पहुंचकर आसन आदि वस्तुओंको पाकर सम्मानित होते हैं, वैसेही वे सम्पूर्ण योद्धा भी महाधनुर्द्धारी द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छूटे हुए बाणोंसे सम्मानित हुए शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य सूर्य्यकिरणके समान अपने बाणोंको चारों ओर चलाकर पाण्डवोंको तथा सम्पूर्ण योद्धाओंको पीड़ित करने लगे। [illegible]

[illegible] द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे पीड़ित [illegible] हुए हाथीके समान किसीको [illegible] परित्राण करनेवाला न देख सके। [illegible] द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छूटे हुए सूर्य्य [illegible] समान प्रकाशमान बाण ही चारों [illegible] दिखाई देते थे। धृष्टद्युम्नके सम्मानित [illegible] पचीस महारथी योद्धा द्रोणा[illegible] मरकर पृथ्वीपर गिर पड़े। [illegible] महापराक्रमी द्रोणा[illegible] अकेला और पाञ्चाल सेनाके मुख्य [illegible] ही वध करते हुए देखने [illegible]। महाबाहु द्रोणाचार्य्यने केकयदेशीय [illegible] वध किया, और सम्पूर्ण [illegible] रणभूमिसे भगाकर मुंह पसारे [illegible] समान रणभूमिमें स्थित हुए। [illegible] केकय, मत्स्य, पाञ्चाल, सृञ्जय [illegible] और पाण्डवोंकी सेनाके योद्धा[illegible] पराजित किया। वे सम्पूर्ण [illegible] बाणोंसे पीड़ित होकर [illegible] हुए युद्धभूमिसे भागने [illegible] स्थित देवता गन्धर्व और [illegible] यह वचन कहने लगे। 'यह [illegible] पाञ्चाल योद्धाओंके सहित [illegible]। द्रोणाचार्य्य जब [illegible] वध कर रहे थे, [illegible] सम्मुख न जा सके। [illegible] कर रुके [illegible] हुए महा[illegible] पाञ्चजन्य [illegible]

धनुषके शब्दको न सुनकर राजा युधिष्ठिर दुःखित होकर चिन्ता करने लगे। "जब केवल पाञ्चजन्य शङ्खका शब्द सुनाई देता है, और कौरव लोग भी हर्षित होकर बार बार सिंह-नाद कर रहे हैं; तब अवश्य ही अर्जुनके स्वस्ति-विषयमें विघ्न उपस्थित हुआ है' इसी प्रकार चिन्ता करते हुए अजातशत्रु कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर व्याकुलचित्तसे बार बार मोहित होने लगे। और उस समयके कर्त्तव्य कार्य्यको विचारकर पराक्रमी सात्यकिसे यह वचन बोले, हे महाबाहु! युद्धमें सुहृद मित्रोंके कर्त्तव्य विषयमें पहिले समयके ऋषियोंने जो सनातन धर्म्म वर्णन किया है, उसका समय यही उपस्थित हुआ है। मैंने खूब सोच कर देखा, परन्तु सम्पूर्ण योद्धालोगोंके बीच तुमसे बढ़के सुहृद-पुरुष मैं किसीको भी नहीं समझता हूं। जो पुरुष सदा प्रेम करते और सर्व्वदा अपने अनुकूल रहते हैं, मेरे विचारसे युद्धसम्बन्धी कार्य्योंमें उन्हें ही नियुक्त करना उचित है। हे वृष्णिकुलभूषण! जैसे कृष्ण सदा पाण्डवोंके सहायक हैं, वैसेही कृष्णके समान पराक्रमी तुम भी पाण्डवोंके अवलम्ब-स्वरूप हो। इससे तुम्हारे ही ऊपर मैं यह भार अर्पण करता हूं, तुम इस भारको शीघ्र उठाने योग्य हो, और तुम कदापि मेरे अभिप्रायको व्यर्थ न करोगे। हे पुरुषश्रेष्ठ! अर्जुन तुम्हारे भाई, मित्र और गुरु हैं, इससे तुम इस सङ्कटके समय संग्रामभूमिके बीच उनकी सहायता करनेके वास्ते शीघ्र गमन करो। हे महाबाहो! तुम सत्य व्रत करनेवाले, शूर-वीर मित्रोंको अभय देनेवाले, सत्यवादी और [illegible] पृथ्वीके बीच विख्यात हो। हे [illegible] मित्रके निमित्त युद्धभूमिमें [illegible] और भी [illegible] भूमि [illegible] के समान पुण्यात्मा कहे जाते हैं। [illegible] राजा [illegible]

सम्पूर्ण पृथ्वीको ब्राह्मणोंको यथारीतिसे दान करके स्वर्गलोकको गये हैं। पापरहित। तुम्हारे समीप मैं हाथ जोड़कर यह प्रार्थना करता हूं, कि तुम मेरी इच्छा पूर्ण करो, तो तुम्हें पृथ्वीदान करनेके समान वा उससे भी अधिक पुण्य-फल मिलेगा। हे सात्यकि। अकेले कृष्ण मित्रोंके ऊपर प्रेम करते और उन्हें अभय देते हुए युद्धमें प्राणत्याग कर सकते हैं, और दूसरे तुम भी प्राणत्याग करनेमें समर्थ हो। जो युद्ध करके यश प्राप्त करनेकी अभिलाष करते हैं, वैसे पराक्रमी शूरवीरोंकी सहायता उन्हींके समान शूरवीर पुरुष कर सकते हैं, साधारण पुरुष उनको सहायता नहीं कर सकते। ऐसे भयङ्कर सग्राम-भूमिमें अर्ज्जुनकी रक्षा करनेवाला इस समय तुम्हें छोड़कर और कोई नहीं हो सकता। अर्ज्जुनने तुम्हारे सैकड़ों कर्म्मोंकी प्रशंसा करके मुझे हर्षित करते हुए बार बार तुम्हारे गुणोंका वर्णन किया है, कि सात्यकि हस्त लाघवसे अस्त्रचलानेवाला, पराक्रमी, बुद्धिमान् सब शस्त्रोंके मर्म्मको जाननेवाला, शूरवीर और युद्धमें कदापि भयभीत नहीं होता। वह ऊंचे कन्धे, चौड़ी छाती, लम्बी भुजा, महाधनुर्द्धारी महाबलवान्, महारथी, महात्मा तथा मेरा मित्र, शिष्य और प्रेमपात्र है, मेरे ऊपर भी उसकी प्रीति है, वह युद्धमें मेरा सहायक होकर कौरवोंका नाश करेगा। हे राजेन्द्र। यदि श्रीकृष्ण, बलराम, अनिरुद्ध, महारथी प्रद्युम्न गद, सारण अथवा सम्पूर्ण यदुवंशियोंके सहित साम्ब युद्धभूमिमें मेरी सहायता करेंगे, तो भी मैं पराक्रमी पुरुषसिंह सात्यकिको अपनी सहायताके निमित्त युद्धके कार्य्यमें नियुक्त करूंगा, उसके समान मेरा हितू कोई नहीं है। यह वचन अर्ज्जुनने मुझसे द्वैतावनके बीच महात्मा ऋषियोंकी सभामें तुम्हारे यथार्थ गुणोंको वर्णन करके कहा था। इससे तुम अर्ज्जुन, भीमसेन और मेरे इस आशाको व्यर्थ मत करो, और तुम्हारी जो अर्ज्जुनके ऊपर दृढ़ भक्ति और प्रेम है उसे हम लोग तीर्थाटन करते हुए जब द्वारिकाके समीप पहुंचे थे, उस ही समय सब मालूम कर लिया था। हम लोग जिस समय विराट नगरमें थे, उस समय भी हम लोगोंके ऊपर तुम्हारी जैसी भक्ति और मित्रता जान पड़ी थी, वैसी दूसरे किसी की भी नहीं मालूम हुई। हे महाबाहो। तुम्हारा जैसे उत्तम वंशमें जन्म हुआ है, हम लोगोंके ऊपर जैसी तुम्हारी भक्ति है, मित्रता और प्रेमके सहित अर्ज्जुनको अपना गुरु कहकर तुम जिस प्रकार उनका मान्य करते रहते हो, तथा तुम्हारी जैसी सत्यनिष्ठा है, उसहीके अनुरूप तुम्हें कार्य्य करनेमें प्रवृत्त होना उचित है, और कृपा करके भी तुम इस कार्य्यको कर सकते हो। द्रोणाचार्य्यने दुर्य्योधनको अभेद्य कवच पहना दिया है, इस होसे वह निडर होकर अर्ज्जुनके समीप गया है और जयद्रथकी रक्षा करनेवाले कौरवोंके महारथी योद्धा लोग पहिले होसे वहां युद्धके निमित्त तय्यार हैं, इस समय अर्ज्जुनके समीप महाभयङ्कर शब्द सुनाई दे रहा है, इससे तुम शीघ्र ही वहां जाओ। यदि द्रोणाचार्य्य तुम्हें रोकनेके निमित्त तुम्हारे सग युद्ध करेंगे, तो भीमसेन और सम्पूर्ण सेनाके सहित मैं यत्नपूर्व्वक उन्हें निवारण करूंगा।

हे महाबाहो। यह देखो सम्पूर्ण सेना इधर उधर भाग रही है, और रणभूमिमें महाघोर शब्द हो रहा है। जैसे महाप्रचण्ड वायुके वेगसे समुद्र उथलित होता है वैसे ही अर्ज्जुन कौरवोंकी सेनाको अपने बाणोंसे पीड़ित करके तितर बितर कर रहे हैं। रथी, गजारोही घुड़सवार और पैदल सेनाके योद्धाओंके इधर उधर दौड़नेसे धूलि उड़ रही है। [illegible] अर्ज्जुन अस्त्र-शस्त्र और प्रास चलानेवाले [illegible]

... सिन्धु और सौवीर देशीय शूरवीरोंके ... नहीं है। वे लोग जयद्रथके वास्ते ... तय्यार हैं, उन लोगोंको बिना ... किये अर्जुन जयद्रथको वध न कर ...। धनुष, बाण, शक्ति, ध्वजा, घोड़े और ... युक्त यह सम्पूर्ण धृतराष्ट्रकी सेना ... है। यह सुनो, नगाड़े और ... शब्द, शूरवीरोंके सिंहनाद, रथोंकी घर-घराहट हाथियोंकी चिग्घाड़ और घोड़ोंकी हिनहिनाहट और पैदल सेनाके शूरवीरोंके इतर ... महाघोर शब्द करते हुए इधर उधर ... पृथ्वी कांप रही है। द्रोणाचार्य्यकी सेनाके आगे और पीछे सिन्धुदेशीय ... ऐसा है, कि वह देवराज इन्द्रको भी पीड़ित कर सकता है। इस अपरम्पार ... पार कर यदि अर्जुन प्राणत्याग ... तो उनके न रहनेसे मेरे समान पुरुष ... जीवित रह सकेगा। मुझे जीवन धारण ... बड़ा ... होगा। श्यामवर्ण, ... हस्तलाघवके सहित अस्त्रोंके चलाने-... महाबाहु अर्जुन सूर्य्य-उदयके समय ... प्रविष्ट हुए हैं, इस ... बीत गया, यह जानित है, ... नहीं कर सकता हूं ... न सहने योग्य ... महारथोंके बीच महा-... प्रवेश किया है। ... भी ... सहित ... पीड़ित कर रहे ... युद्धभूमिमें ... रहे हैं, उसे तुम ... मोह नहीं ... अर्जुनकी और ... रहा ... हूं ...

निवारण करना, ये दो कार्य्य एकही समयमें उपस्थित हुए हैं। परन्तु तुम बुद्धिमान हो, इन दोनो कार्य्योंके बीच कौन कार्य्य बड़ा और कौन छोटा है, उसे तुम अपनी बुद्धिसे जान सकते हो। मेरे विचारमें सम्पूर्ण कार्य्योंके बीच यही श्रेष्ठ बोध होता है, कि सब भांतिसे अर्जुनकी रक्षा करना तुम्हारा कर्त्तव्य कार्य्य है। मैं दाशार्ह कृष्णके निमित्त चिन्ता नहीं करता, क्योंकि मैं यह सत्य वचन कहता हूं, कि जगत्प्रभु कृष्ण तीनों लोकके प्राणियोंके इकट्ठे होनेपर भी उनको रक्षा वा उन्हें पराजित कर सकते हैं, इसमें कुछ सन्देह नहीं है; तब उनका यह निर्बल धृतराष्ट्रकी सेना क्या कर सकती है? परन्तु हे सात्यकि! यदि अर्जुन युद्धभूमिमें बहुतेरे योद्धाओंके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर प्राणत्याग करे, तो उसही निमित्त मैं मोहित हो रहा हूं। इससे तुम्हें मैं अर्जुनके समीप भेजता हूं ऐसे समय सङ्कटमें पड़े हुए अर्जुनकी सहायता करनेके वास्ते तुम्हारे जैसे उनके निकट जा सकता है, तुम उस ही भांतिसे अर्जुनके समीप गमन करो। यदुवंशीय शूरवीरोंके बीच तुम और प्रद्युम्न दोनो ही अतिरथी कहके विख्यात हो। तुम अस्त्रोंके चलानेमें श्रीकृष्ण, बलमें बलराम और वीरतामें अर्जुनके समान हो। पृथ्वीके बीच इस समय भीष्म और द्रोणाचार्य्यसे भी तुम युद्धके सम्पूर्ण कार्य्योंमें निपुण हो। महात्मा लोग "युद्धमें सात्यकिसे असाध्य कोई कार्य्य नहीं है।" ऐसा कहके तुम्हारे पराक्रमका वर्णन करते हैं। हे महाबलवान्! इस समय मैं जो कुछ वचन तुमसे कहता हूं, उसे तुम पालन करो। सब कोई तुम्हारे पराक्रमकी ऐसी सम्भावना करते हैं, और मैं तथा अर्जुन दोनों ही जिस प्रकार तुम्हारी सहायताकी आशा करता हूं, इस उपस्थित युद्धमें उस आशाको व्यर्थ करना तुम्हें उचित नहीं है।

तुम प्राणकी आशा छोड़ निर्भय चित्तसे युद्ध-भूमिके बीच भ्रमण करो। हे सात्यकि! यदुवंशीय शूरवीर पुरुष युद्धमें अपने जीवनसे प्रीति नहीं करते और युद्धभूमिके बीच जाकर युद्ध न करना, सम्मुखमें खड़ा न होना और रणभूमिसे भागना; ये तीनो जो कादरोंके कार्य्य हैं, उसका सेवन यदुवंशीय योद्धा लोग नहीं करते। हे तात! बुद्धिमान् धर्म्मात्मा अर्ज्जुन तुम्हारे गुरु हैं, और उनके गुरु कृष्ण हैं, इन दोनो बातोंको जान कर मैं तुमसे यह वचन कहता हूं—मैं भी तुम्हारा गुरु हूं, तुम मेरे बचनोंकी अवमानना मत करना। मैंने जिस अभिप्रायसे तुमसे ऐसा बचन कहा है, वह कृष्ण अर्ज्जुन दोनो हीको प्रिय है, यह मैं तुमसे सत्य ही कहता हूं। हे सत्य-पराक्रमी! मेरी इस ही आज्ञाके अनुसार तुम अर्ज्जुनके समीप गमन करो, नीच बुद्धिवाले दुर्य्योधनकी सेनाके बीच प्रवेश करो, और महारथियोंके सङ्ग न्यायके अनुसार युद्धमें प्रवृत्त होकर अपनी सामर्थ्यके योग्य युद्ध करो।

१०८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे भरतर्षभ! शिनिपौत्र सात्यकि धर्म्मराज युधिष्ठिरके प्रीतिसे भरे, धर्म्म युक्त, समयके अनुसार युक्तिसे पूरित मीठे और मनोहर विचित्र बचनोंको सुनकर उनसे यह वचन बोले, हे पापरहित! आपने जो अर्ज्जुनके निमित्त यश बढ़ानेवाले, न्यायसे युक्त विचित्र बचनोंको मुझसे कहे; वह तुम्हारे सब वचन मैंने सुने। हे राजेन्द्र! ऐसे समयमें जिस प्रकार आप अर्ज्जुनको आज्ञा दे सकते हैं, वैसेही इस समय मेरे समान पुरुषको देखकर आज्ञा करना आपके उपयुक्त ही हुआ है। अर्ज्जुनके वास्ते किसी प्रकार मुझे प्राणरक्षा करना उचित नहीं है; विशेष करके मैं इस संग्रामके समय तुम्हारी आज्ञा पाकर क्या नहीं कर सकता हूं। देवलोक, मनुष्यलोक, और असुरलोकके सहित तीनो लोकके प्राणियोंके इकट्ठे होनेपर भी मैं उनके सङ्ग युद्ध कर सकता हूं, इससे मैं जो इस निर्ब्बल कुरुसेनाके सङ्ग युद्ध करूंगा उसकी बात ही क्या है? महाराज! मैं तुम्हारे निकट यह सत्य वचन कहता हूं, कि आज दुर्य्योधनकी सम्पूर्ण सेनाके सङ्ग युद्ध करके मैं विजय प्राप्त करूंगा, अर्ज्जुनको कुशल क्षेमसे युक्त और जयद्रथको मरा हुआ देखकर फिर कुशलपूर्व्वक मैं तुम्हारे समीप आऊंगा। परन्तु बुद्धिमान् कृष्णके समीप अर्ज्जुनने मुझसे जो वचन कहा है, वह सम्पूर्ण तुम्हें सुना देना उचित है। महाराज! सम्पूर्ण सेनाके बीच बुद्धिमान् कृष्णके सम्मुख अर्ज्जुनने बार बार यत्नपूर्व्वक मुझे यह आज्ञा दी है, 'हे सात्यकि! आज जब तक मैं जयद्रथका बध करके न लौटूं, तब तक तुम प्रमादरहित और युद्धमें सावधान होकर महाराज युधिष्ठिरकी रक्षा करना। हे महाबाहो! महारथी प्रद्युम्न और तुम्हारे समीप धर्म्मराज युधिष्ठिरको समर्पण करके आज मैं निश्चिन्त होकर सिन्धुराज जयद्रथके बधके वास्ते गमन कर सकता हूं। योद्धाओंसे सम्मानित द्रोणाचार्य्य जैसे वेगशील और पराक्रमी हैं, उसे तुम जानते हो, उन्होंने जो प्रतिज्ञा की है, उसे भी तुमने सुना है। वह धर्म्मराज युधिष्ठिरके ग्रहण करनेके अभिलाषी हुए हैं, और इस कार्य्यके पूरा करनेमें भी महात्मा द्रोणाचार्य्य समर्थ हैं। इससे पुरुषोंमें श्रेष्ठ महात्मा युधिष्ठिरको मैं तुम्हारे समीप समर्पण करके सिन्धुराज जयद्रथके बध करनेके वास्ते गमन करता हूं। यदि द्रोणाचार्य्य बलपूर्व्वक रणभूमिमें धर्म्मराज युधिष्ठिरको न ग्रहण करें, तो मैं अवश्य ही जय

[illegible] उनके समीप आऊंगा। [illegible] धर्मराज युधिष्ठिरको ग्रहण [illegible] सिन्धुराज जयद्रथका वध नहीं होगा [illegible] सन्तोष भी न हो सकेगा, वरन [illegible] ही इस लोगोंको वनवासी [illegible]गा। इससे यदि द्रोणाचार्य्यके हाथमें [illegible] युधिष्ठिर पकड़े जावेंगे, तो युद्धमें [illegible] विजय होनेपर भी वह व्यर्थ [illegible]। हे महाबाहो। इससे तुम युद्धमें जय [illegible] और मेरे सन्तोषके निमित्त युद्धभूमिमें [illegible] रक्षा करना।" हे प्रभो। [illegible] निमित्त सदा सर्व्वदा द्रोणा-[illegible] शङ्कित रहते हैं, इस हीसे [illegible] यह सब वृत्तान्त सुन कर तुम्हें [illegible] मुझे समर्पण किया है। उन्होंने [illegible] किया है, उसका फल भी तुम [illegible] रहे हो—द्रोणाचार्य्य सब समय [illegible] करनेकी इच्छा कर रहे हैं। [illegible] द्रोणाचार्य्यके सङ्ग युद्ध करने योग्य मुझे [illegible] प्रद्युम्नको छोड़के और किसी-[illegible] नहीं समझते हैं। [illegible] उपस्थित सम्भावनाको छोड़ [illegible] अर्जुनके वचनोंको [illegible] कर [illegible] करनेका मुझे उत्साह [illegible] कर मैं [illegible] वास्ते [illegible] जैसे [illegible] आज्ञा कर खेल- [illegible] सहित [illegible] रहे हैं। [illegible]

भी नहीं है, जो मेरे गमन करनेके अनन्तर जब तक मैं अर्जुनके समीपसे न लौट आऊं; तब तक तुम्हारी रक्षा करनेके वास्ते द्रोणाचार्य्यके सङ्ग युद्ध कर सके।

महाराज। आप अर्जुनके निमित्त कुछ भय न कीजिये, वह महाबाहु अर्जुन कोई भार ग्रहण करके कदापि दुःखित नहीं होते। सिन्धु सौवीर पौरव, उदीच्य दक्षिणी और दूसरे देशोंके सम्पूर्ण योद्धा तथा कर्ण आदि पृथ्वीके बीच विख्यात जो सम्पूर्ण महारथ योद्धा लोग कौरवोंकी सेनामें उपस्थित हैं, वे सब कोई क्रुद्ध अर्जुनके सोलहवें अंशके एक अंश नहीं हो सकते। देवता, असुर मनुष्य राक्षस, किन्नर, सर्प तथा स्थावर जङ्गम सम्पूर्ण पृथ्वीके प्राणी यद भमिमें खड़े होकर अर्जुनको पराजित करनेमें समर्थ नहीं हो सकते। आप यही समझके अर्जुनके ऊपर भयकी आशङ्का न कीजिये। यहां महाबली सत्य पराक्रमी महाधनुर्धारी दो कृष्ण एक ही स्थानपर विराजमान हैं, वहां किसी प्रकारकी कोई आपदाकी सम्भावना नहीं हो सकती। तुम्हारे भाई अर्जुनमें जैसी कृतज्ञता दया युद्धमें दवी अस्त्रोंकी कृतास्त्रता, योग और पराक्रम विद्यमान है, उसे आप विचार कर देखिये। मैं जब अर्जुनके समीप गमन करूंगा तब अस्त्र शस्त्रोंकी विद्या जाननेवाले द्रोणाचार्य्य जिस भांति अपने पराक्रमको प्रकाशित करेंगे, उसका भी विचार कर लीजिये। वह अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करनेके वास्ते तुम्हें ग्रहण करनेकी अत्यन्त अभिलाष कर रहे हैं। इससे आप अपनी रक्षाका उपाय कीजिये, मेरे यहांसे चले जानेपर तुम्हारा [illegible] और रक्षक होवेगा, जो इसके ऊपर विश्वास करके मैं अर्जुनके समीप जा सकूं? [illegible] इसे [illegible] कहता हूं, कि इस महावीर संग्राममें बिना किसी पराक्रमी

के निकट तुम्हें समर्पण किये, कहीं भी न जा सकूंगा। हे महाबुद्धिमान्। तुम इस विषयकी अपनी बुद्धिसे भली भांति विचार लो, फिर जैसा आपको उचित बोध होवे, मुझे वैसी आज्ञा कीजिये।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे यदुकुल श्रेष्ठ महाबाहु सात्यकि। तुमने जो कुछ वचन कहे वे सब यथार्थ ही है, परन्तु अर्ज्जुनके वास्ते मेरे चित्तमें शान्ति नहीं होती है। इससे मैं अपनी रक्षाके वास्ते अत्यन्त ही यत्न करूंगा, तुम मेरी आज्ञाके अनुसार अर्ज्जुनके समीप मेरी रक्षा करना और अर्ज्जुनके समीप गमन करना, ये दो कार्य्य उपस्थित हैं, इसमेंसे मैं अपनी बुद्धिसे विचार करके तुम्हारा अर्ज्जुनके निकट जाना ही उत्तम समझता हूं, इससे जिस स्थानपर अर्ज्जुन हैं, तुम उसही स्थानमे यत्नपूर्व्वक गमन करो। महाबलवान् भीमसेन, सहोदर भाइयोंके सहित धृष्टद्युम्न, द्रौपदीके पांचो पुत्र, और दूसरे बहुतेरे राजा मेरी रक्षा करेंगे, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। और केकयराज पांचो भाई, घटोत्कच राक्षस, विराट, द्रुपद, महारथ शिखण्डी, बलवान् धृष्टकेतु, कुन्तिभोज, नकुल, सहदेव, पाञ्चाल तथा सृञ्जय देशीय सम्पूर्ण सेनाके योद्धालोग मिलकर मेरी रक्षा करेंगे, इसमें सन्देह नहीं है। सेनाके सहित द्रोणाचार्य्य वा कृतवर्म्मा जो सहसा मेरे समीप पहुंच सकें अथवा मुझे पीड़ित करें, ऐसी सम्भावना भी नहीं हो सकती। जैसे तट समुद्रके वेगको रोकता हैं, वैसे ही द्रोणाचार्य्यको धृष्टद्युम्न युद्धभूमिसे निवारण करेंगे। युद्धभूमिमें जहां शत्रुनाशन धृष्टद्युम्न स्थित होंगे, उस स्थानकी सेनाको बलवान् द्रोणाचार्य्यके बध करने होके निमित्त अग्निसे तलवार ढाल, धनुषबाण और कवचसे भूषित होकर उत्पन्न हुए हैं। इससे तुम मेरे निमित्त कुछ भी सन्देह न करके अर्ज्जुनकी ओर गमन करो। रणभूमिमें धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यको युद्धसे निवारण करेंगे।

१०९ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्। पुरुषश्रेष्ठ पराक्रमी सात्यकिने धर्म्मराज युधिष्ठिरके वचनोंको सुनके अर्ज्जुनके निकट अपराधी होनेकी शङ्का करके भी "यदि मैं अर्ज्जुनके समीप न जाऊंगा, तो सब कोई मुझे डरपोक समझेंगे" इसी प्रकार अनेक भांतिकी चिन्ता करके लोकापवादको दूर करते हुए धर्म्मराज युधिष्ठिरसे यह वचन बोले,—हे प्रजानाथ। यदि तुम यह समझते हो, कि मेरी रक्षा हो सकेगी। तो तुम्हारा मङ्गल होवे, मैं अर्ज्जुनके समीप जानेके वास्ते प्रस्थान करता हूं। मै तुम्हारे समीप यह सत्य ही कहता हूं, कि तीनो लोकमें अर्ज्जुनसे बढ कर मुझे कोई भी प्रिय नहीं है; उसपर भी तुम्हारी आज्ञासे उनकी सहायताके वास्ते जाना पड़ेगा, इससे बढ़के दूसरा कार्य्य और कौन है? तुम्हारे निमित्त मैं किसी कर्म्मके करनेमें अवहेला करना नहीं चाहता। जैसे मुझे गुरु अर्ज्जुनके वचन मानने योग्य हैं, उससे भी बढके तुम्हारे वचनोंका मान्य करना उचित है। तुम्हारे दो भाई कृष्ण-अर्ज्जुन जैसे तुम्हारे कार्य्यमें रत हैं वैसे ही मुझे भी तुम उन लोगोंके प्रिय कार्य करनेमें रत हुआ हो समझो। मै तुम्हारी आज्ञाको माथेपर चढा कर इस दुःखसे भेद होनेवाली कुरुसेनाको भेद करनेके वास्ते गमन करूंगा। राजा जयद्रथ जिस स्थानमें स्थित है मैं द्रोणाचार्य्यकी सेनाके बीच प्रवेश करके उस स्थानपर इस भांति उपस्थित होऊंगा, जैसे मछली समुद्रमें प्रवेश करके एक स्थानसे दूसरे स्थानमें गमन करती है। अर्ज्जुनके भयसे

[illegible] राजा जयद्रथ सम्पूर्ण सेनाके अवलम्ब [illegible] अश्वत्थामा, कर्ण, तथा कृपाचार्य्य आदि [illegible] रक्षित होकर जिस स्थानमें निवास [illegible], मैं अनुमान करता हूं, कि उसी [illegible] जयद्रथ वधकी इच्छा करके अर्ज्जुन [illegible] उपस्थित हुए हैं। मैं अत्यन्त दृढता [illegible] पराक्रमके सहित जयद्रथ वधके पहिलेही [illegible] मार्गको अतिक्रम करके [illegible] समीप उपस्थित होऊंगा। कौन [illegible] आज्ञा पाकर युद्ध नहीं करता। [illegible] समान मनुष्य ही भला आपकी आज्ञा [illegible] न करेगा? मुझे जिस स्थान [illegible] होगा, उसे मैं जानता हूं। और [illegible] सब अस्त्र शस्त्र, शक्ति [illegible] तलवार, ढाल, ऋष्टि तोमर और [illegible] इत्यादि अस्त्रोंसे शत्रुसेनाके पुरुषोंको [illegible]। महाराज। ये जो सहस्रों [illegible] अञ्जन नाम दिग्हस्तीके [illegible] उत्पत्ति हुई है, वे सब ही [illegible] घोर युद्धमें महापराक्रमी हैं, [illegible] युद्ध कर- [illegible] करनेवाले वाद- [illegible] सवार हाथियोंके शरीरसे [illegible] गजारोही [illegible] रणभूमिमें कभी निवृत्त [illegible] हाथियोंके वध [illegible] नहीं [illegible] हाथियोंको [illegible]

इन राजपुत्रोंको नियुक्त किया है, और ये लोग इस स्थलमें दुःशासनके वशमें होकर स्थित हैं। श्रीकृष्ण सदा इन राजपुत्रोंको महारथी कहके उनकी प्रशंसा किया करते हैं, वे सम्पूर्ण राजपुत्र सदा कर्णके वशमें रहकर उनके प्रिय-कार्य्योंके करनेको अभिलाषा करते रहते हैं और कर्ण हीके वचनसे अर्ज्जुनके समीपसे युद्धसे निवृत्त हुए हैं। उनके वर्म्म दृढ हैं, वे युद्धमें न थकते और न घायल ही होते हैं मुझे निश्चय होता है, कि वे सब दुर्य्योधनकी आज्ञासे मेरे सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते युद्धभूमिमें स्थित हैं। परन्तु मैं तुम्हारी आज्ञासे उन महारथ राजपुत्रोंको अपने अस्त्रोंसे पीड़ित करके अर्ज्जुनकी सहायताके वास्ते आगे बढ़ूंगा।

महाराज। उसके अतिरिक्त ये जो वर्म्म पहने हुए सात सौ हाथी दीख पड़ते हैं, जिनके ऊपर किरात लोग चढे हुए हैं। पहिले किरातराज अर्ज्जुनके समीपसे पराजित होकर अपने जीवनकी रक्षाके वास्ते इन किरातोंको भूषणोंसे भूषित करके सेवक रूपसे अर्ज्जुनके हाथमें समर्पण किया था। ये सम्पूर्ण किरात पहिले तुम्हारे आज्ञाकारी दास थे, देखिये कालकी कैसी उलटी गति है। इस समय वेही सब तुम्हारे विरुद्ध युद्ध करनेकी इच्छा करते हैं। इन किरातोंके बीच मुख्य मुख्य किरात योद्धा हाथियोंकी शिक्षामें निपुण और युद्धमें महा पराक्रमी हैं, ये सब ही अग्निजाति हैं। ये सम्पूर्ण किरात लोग पहिले अर्ज्जुनके सङ्ग युद्ध करके पराजित हुए थे, इस समय दुर्य्योधनके वशवर्त्ती होकर तुम्हारे सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते अभिलाष करते हैं। इन सम्पूर्ण दृढ दुर्म्मद किरातोंको मैं अपने बाणोंसे नष्ट करते हुए [illegible] इच्छा करनेवाले अर्ज्जुनका [illegible] होऊंगा।

[illegible] सम्पूर्ण [illegible] हुए सवार हाथी [illegible] भूषित [illegible] होकर रणभूमिके

के निकट तुम्हें समर्पण किये, कहीं भी न जा सकूंगा। हे महाबुद्धिमान्! तुम इस विषयको अपनी बुद्धिसे भली भांति विचार लो, फिर जैसा आपको उचित बोध होवे, मुझे वैसी आज्ञा कीजिये।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे यदुकुल श्रेष्ठ महाबाहु सात्यकि! तुमने जो कुछ बचन कहे वे सब यथार्थ ही हैं, परन्तु अर्जुनके वास्ते मेरे चित्तमें शान्ति नहीं होती है। इससे मैं अपनी रक्षाके वास्ते अत्यन्त ही यत्न करूंगा, तुम मेरी आज्ञाके अनुसार अर्जुनके समीप मेरी रक्षा करना और अर्जुनके समीप गमन करना, ये दो कार्य्य उपस्थित हैं, इसमेंसे मैं अपनी बुद्धिसे विचार करके तुम्हारा अर्जुनके निकट जाना ही उत्तम समझता हूं, इससे जिस स्थानपर अर्जुन हैं, तुम उसही स्थानमें यत्नपूर्व्वक गमन करो। महाबलवान् भीमसेन, सहोदर भाइयोंके सहित धृष्टद्युम्न, द्रौपदीके पांचो पुत्र, और दूसरे बहुतेरे राजा मेरी रक्षा करेंगे, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। और केकयराज पांचो भाई, घटोत्कच राक्षस, विराट, द्रुपद, महारथ शिखण्डी, बलवान् धृष्टकेतु, कुन्तिभोज, नकुल, सहदेव, पाञ्चाल तथा सृञ्जय देशीय सम्पूर्ण सेनाके योद्धालोग मिलकर मेरी रक्षा करेंगे, इसमें सन्देह नहीं है। सेनाके सहित द्रोणाचार्य्य वा कृतवर्म्मा जो सहसा मेरे समीप पहुंच सकें अथवा मुझे पीड़ित करें, ऐसी सम्भावना भी नहीं हो सकती। जैसे तट समुद्रके वेगको रोकता है, वैसे ही द्रोणाचार्य्यको धृष्टद्युम्न युद्धभूमिसे निवारण करेंगे। युद्धभूमिमें जहां शत्रुनाशन धृष्टद्युम्न स्थित होंगे, उस स्थानकी सेनाको बलवान् द्रोणाचार्य्य वध करने होंके निमित्त अग्निसे तलवार ..., धनुषबाण और कवचसे भूषित होकर ... । इससे तुम मेरे निमित्त कुछ भी सन्देह न करके अर्जुनकी ओर गमन करो। रणभूमिमें धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यको युद्धसे निवारण करेंगे।

१०९ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! पुरुषश्रेष्ठ पराक्रमी सात्यकिने धर्म्मराज युधिष्ठिरके बचनोंको सुनके अर्जुनके निकट अपराधी होनेकी शङ्का करके भी "यदि मैं अर्जुनके समीप न जाऊंगा, तो सब कोई मुझे डरपोक समझेंगे" इसी प्रकार अनेक भांतिकी चिन्ता करके लोकापवादको दूर करते हुए धर्म्मराज युधिष्ठिरसे यह बचन बोले,—हे प्रजानाथ! यदि तुम यह समझते हो, कि मेरी रक्षा हो सकेगी। तो तुम्हारा मङ्गल होवे, मैं अर्जुनके समीप जानेके वास्ते प्रस्थान करता हूं। मैं तुम्हारे समीप यह सत्य ही कहता हूं, कि तीनों लोकमें अर्जुनसे बढ़ कर मुझे कोई भी प्रिय नहीं है; उसपर भी तुम्हारी आज्ञासे उनकी सहायताके वास्ते जाना पड़ेगा, इससे बढ़के दूसरा कार्य्य और कौन है? तुम्हारे निमित्त मैं किसी कर्म्मके करनेमें अवहेला करना नहीं चाहता। जैसे मुझे गुरु अर्जुनके बचन मानने योग्य हैं, उससे भी बढ़के तुम्हारे वचनोंका मान्य करना उचित है। तुम्हारे दो भाई कृष्ण अर्जुन जैसे तुम्हारे कार्य्यमें रत हैं, वैसे ही मुझे भी तुम उन लोगोंके प्रिय कार्य्य करनेमें रत हुआ ही समझो। मैं तुम्हारी आज्ञाको माथेपर चढ़ा कर इस दुःखसे भेद होनेवाली कुरुसेनाको भेद करनेके वास्ते गमन करूंगा। राजा जयद्रथ जिस स्थानमें स्थित हैं मैं द्रोणाचार्य्यकी सेनाके बीच प्रवेश करके उस स्थानपर इस भांति उपस्थित होऊंगा जैसे मछली समुद्रमें प्रवेश करके एक स्थानसे दूसरे स्थानमें गमन करती है। अर्जुनके मार्ग

[illegible] जयद्रथ सम्पूर्ण सेनाके अवलम्ब और [illegible], कर्ण, तथा कृपाचार्य्य आदि [illegible] रक्षित होकर जिस स्थानमें निवास [illegible], मैं अनुमान करता हूं, कि उसी [illegible] जयद्रथ वधकी इच्छा करके अर्जुन [illegible] उपस्थित हुए हैं। मैं अत्यन्त दृढता [illegible] जयद्रथ वधके पहिलेही [illegible] मार्गको अतिक्रम करके [illegible] उपस्थित होऊंगा। कौन [illegible] आज्ञा पाकर युद्ध नहीं करता। [illegible] समान मनुष्य ही भला आपकी आज्ञा [illegible] न करेगा? मुझे जिस स्थान [illegible], उसे मैं जानता हूं। और [illegible] शस्त्र, शक्ति [illegible], तलवार, ढाल, ऋष्टि, तोमर और [illegible] इत्यादि शस्त्रोंसे [illegible] करना पड़ेगा। महाराज! ये जो सहस्रों [illegible], अञ्जन नाम दिग्हस्तीके [illegible] उत्पन्न हुए हैं, वे सब ही [illegible] और युद्धमें महापराक्रमी हैं, [illegible] पर चढ़के युद्ध कर- [illegible]; [illegible] करनेवाले दाद- [illegible] शरीरसे [illegible] [illegible]

इन राजपुत्रोंको नियुक्त किया है, और वे लोग इस स्थलमें दुःशासनके वशमें होकर स्थित हैं। श्रीकृष्ण सदा इन राजपुत्रोंको महारथी कहके उनकी प्रशंसा किया करते हैं, वे सम्पूर्ण राजपुत्र सदा कर्णके वशमें रहकर उनके प्रिय-कार्य्योंके करनेकी अभिलाषा करते रहते हैं और कर्ण होके वचनसे अर्जुनके समीपसे युद्धसे निवृत्त हुए हैं। उनके वर्म्म दृढ हैं, वे युद्धमें न थकते और न घायल ही होते हैं मुझे निश्चय होता है, कि वे सब दुर्य्योधनकी आज्ञासे मेरे सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते युद्धभूमिमें स्थित हैं। परन्तु मैं तुम्हारी आज्ञासे उन महारथ राजपुत्रोंको अपने अस्त्रोंसे पीड़ित करके अर्जुनकी सहायताके वास्ते आगे बढ़ूंगा।

महाराज! उसके अतिरिक्त ये जो वर्म्म पहने हुए सात सौ हाथी दीख पड़ते हैं, जिनके ऊपर किरात लोग चढ़े हुए हैं। पहिले किरात-राज अर्जुनके समीपसे पराजित होकर अपने जीवनकी रक्षाके वास्ते इन किरातोंको भूप-णोंसे भूषित करके सेवक रूपसे अर्जुनके हाथमें समर्पण किया था। ये सम्पूर्ण किरात पहिले तुम्हारे आज्ञाकारी दास थे, देखिये कालकी कैसी उलटी गति है। इस समय वेही सब तुम्हारे विरुद्ध युद्ध करनेकी इच्छा करते हैं। इन किरातोंके बीच मुख्य मुख्य किरात योधा हाथियोंकी [illegible] निपुण और युद्धमें महा [illegible] हैं, [illegible] हैं। [illegible]

[illegible]

के निकट तुम्हें समर्पण किये, कहीं भी न जा सकूंगा। हे महाबुद्धिमान्। तुम इस विषयकी अपनी बुद्धिसे भली भांति विचार लो, फिर जैसा आपको उचित बोध होवे, मुझे वैसी आज्ञा कीजिये।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे यदुकुल श्रेष्ठ महाबाहु सात्यकि। तुमने जो कुछ बचन कहे वे सब यथार्थ ही है, परन्तु अर्ज्जुनके वास्ते मेरे चित्तमें शान्ति नहीं होती है। इससे मैं अपनी रक्षाके वास्ते अत्यन्त ही यत्न करूंगा, तुम मेरी आज्ञाके अनुसार अर्ज्जुनके समीप मेरी रक्षा करना और अर्ज्जुनके समीप गमन करना, ये दो कार्य्य उपस्थित है, इसमेंसे मैं अपनी बुद्धिसे विचार करके तुम्हारा अर्ज्जुनके निकट जाना ही उत्तम समझता हूं, इससे जिस स्थानपर अर्ज्जुन हैं; तुम उसही स्थानमें यत्नपूर्व्वक गमन करो। महाबलवान् भीमसेन, सहोदर भाइयोंके सहित धृष्टद्युम्न, द्रौपदीके पाचो पुत्र, और दूसरे बहुतेरे राजा मेरी रक्षा करेंगे, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। और केकयराज पाचो भाई, घटोत्कच राक्षस, विराट, द्रुपद, महारथ शिखण्डी, बलवान् धृष्टकेतु, कुन्तिभोज, नकुल, सहदेव, पाञ्चाल तथा सृञ्जय देशीय सम्पूर्ण सेनाके योद्धालोग मिलकर मेरी रक्षा करेंगे, इसमें सन्देह नहीं है। सेनाके सहित द्रोणाचार्य्य वा कृतवर्म्मा जो सहसा मेरे समीप पहुंच सकें अथवा मुझे पीड़ित करें, ऐसी सम्भावना भी नहीं हो सकती। जैसे तट समुद्रके वेगको रोकता हैं, वैसे ही द्रोणाचार्य्यको धृष्टद्युम्न युद्धभूमिसे निवारण करेंगे। युद्धभूमिमें जहा शत्रुनाशन धृष्टद्युम्न स्थित होंगे, उस स्थानकी सेनाको बलवान् द्रोणाचार्य्यके वध करनेहीके निमित्त अग्निसे तलवार ढाल, धनुषवाण और कवचसे भूषित होकर उत्पन्न हुए हे। इससे तुम मेरे निमित्त कुछ भी सन्देह न करके अर्ज्जुनकी ओर गमन करो। रणभूमिमें धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यको युद्धसे निवारण करेंगे।

१०९ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्। पुरुषश्रेष्ठ पराक्रमी सात्यकिने धर्म्मराज युधिष्ठिरके वचनोंको सुनके अर्ज्जुनके निकट अपराधी होनेकी शङ्का करके भी "यदि मैं अर्ज्जुनके समीप न जाऊंगा, तो सब कोई मुझे डरपोक समझेंगे" इसी प्रकार अनेक भांतिकी चिन्ता करके लोकापवादको दूर करते हुए धर्म्मराज युधिष्ठिरसे यह बचन बोले,—हे प्रजानाथ। यदि तुम यह समझते हो, कि मेरी रक्षा हो सकेगी। तो तुम्हारा मङ्गल होवे, मैं अर्ज्जुनके समीप जानेके वास्ते प्रस्थान करता हूं। मैं तुम्हारे समीप यह सत्य ही कहता हूं, कि तीनो लोकमें अर्ज्जुनसे बढ कर मुझे कोई भी प्रिय नहीं है; उसपर भी तुम्हारी आज्ञासे उनकी सहायताके वास्ते जाना पडेगा, इससे बढके दूसरा कार्य्य और कौन है? तुम्हारे निमित्त मैं किसी कर्म्मके करनेमें अवहेला करना नही चाहता। जैसे मुझे गुरु अर्ज्जुनके बचन मानने योग्य हैं, उससे भी बढके तुम्हारे वचनोंका मान्य करना उचित है। तुम्हारे दो भाई कृष्ण-अर्ज्जुन जैसे तुम्हारे कार्य्यमें रत हैं वैसे ही मुझे भी तुम उन लोगोंके प्रिय कार्य्य करनेमें रत हुआ ही समझो। मै तुम्हारी आज्ञाको माथेपर चढा कर इस दुःखसे भेद होनेवाली कुरुसेनाको भेद करनेके वास्ते गमन करूंगा। राजा जयद्रथ जिस स्थानमें स्थित है मैं द्रोणाचार्य्यकी सेनाके बीच प्रवेश करके उस स्थानपर इस भाति उपस्थित होऊंगा जैसे मछली समुद्रमें प्रवेश करके एक स्थानसे दूसरे स्थानमें गमन करती है। अर्ज्जुनके भयसे

[illegible] राजा जयद्रथ सम्पूर्ण सेनाके अवलम्ब [illegible] अश्वत्थामा, कर्ण, तथा कृपाचार्य्य आदि महारथियोंसे रक्षित होकर जिस स्थानमें निवास [illegible], मैं अनुमान करता हूं, कि उसी [illegible] जयद्रथ वधकी इच्छा करके अर्जुन [illegible] उपस्थित हुए हैं। मैं अत्यन्त दृढता [illegible] रक्षित जयद्रथ वधके पहिलेही [illegible] मार्गको अतिक्रम करके [illegible] उपस्थित होऊंगा। कौन [illegible] आज्ञा पाकर युद्ध नहीं करता! और [illegible] समान मनुष्य हो भला आपकी आज्ञा पाकर [illegible] न करेगा? मुझे जिस स्थान पर [illegible], मैं जानता हूं। और [illegible] सब अस्त्र शस्त्र, शक्ति [illegible], तलवार, [illegible], तोमर और [illegible] इत्यादि अस्त्रोंसे शत्रुसेनाके गरुपोंको [illegible] करता रहूंगा। महाराज। वे जो सहस्रों [illegible] अञ्जन नाम दिग्हस्तीके [illegible] उत्पन्न हुए हैं, वे सब ही [illegible] और युद्धमें महापराक्रमी हैं, [illegible] पर [illegible] पदके युद्ध कर- [illegible] वर्षा करनेवाले बाद- [illegible] शरीरमें [illegible] हाथी गजारोही [illegible] निवृत्त [illegible] इन हाथियोंके वध [illegible]

[illegible]

इन राजपुत्रोंको नियुक्त किया है, और ये लोग इस स्थलमें दुःशासनके वशमें होकर स्थित हैं। श्रीकृष्ण सदा इन राजपुत्रोंको महारथी कहके उनकी प्रशंसा किया करते हैं, वे सम्पूर्ण राजपुत्र सदा कर्णके वशमें रहकर उनके प्रिय-कार्य्योंके करनेकी अभिलाषा करते रहते हैं और कर्ण हीके वचनसे अर्जुनके समीपसे युद्धसे निवृत्त हुए हैं। इनके वर्म्म दृढ हैं, वे युद्धमें न थकते और न घायल ही होते हैं मुझे निश्चय होता है, कि वे सब दुर्य्योधनकी आज्ञासे मेरे सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते युद्धभूमिमें स्थित हैं। परन्तु मैं तुम्हारी आज्ञासे उन महारथ राजपुत्रोंको अपने अस्त्रोंसे पीड़ित करके अर्जुनकी सहायताके वास्ते आगे बढ़ूंगा।

महाराज। इसके अतिरिक्त वे जो वर्म्म पहने हुए सात सौ हाथी दीख पड़ते हैं, जिनके ऊपर किरात लोग चढे हुए हैं। पहिले किरात-राज अर्जुनके समीपसे पराजित होकर अपने जीवनकी रक्षाके वास्ते इन किरातोंको भूषणोंसे भूषित करके सेवक रूपसे अर्जुनके हाथमें समर्पण किया था। वे सम्पूर्ण किरात पहिले तुम्हारे आज्ञाकारी दास थे, देखिये कालकी कैसी उलटी गति है। इस समय वेही सब तुम्हारे विरुद्ध युद्ध करनेकी इच्छा करते हैं। इन किरातोंके साथ मुख्य मुख्य किरात योद्धा हाथियोंकी [illegible] निपुण और युद्धमें महा पराक्रमी [illegible] हैं। [illegible]

[illegible]

के निकट तुम्हें समर्पण किये, कहीं भी न जा सकूंगा। हे महाबुद्धिमान्। तुम इस विषयको अपनी बुद्धिसे भली भांति विचार लो, फिर जैसा आपको उचित बोध होवे, मुझे वैसी आज्ञा कीजिये।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे यदुकुल श्रेष्ठ महाबाहु सात्यकि। तुमने जो कुछ बचन कहे वे सब यथार्थ ही हैं, परन्तु अर्जुनके वास्ते मेरे चित्तमें शान्ति नहीं होती है। इससे मैं अपनी रक्षाके वास्ते अत्यन्त ही यत्न करूंगा, तुम मेरी आज्ञाके अनुसार अर्जुनके समीप मेरी रक्षा करना और अर्जुनके समीप गमन करना, ये दो कार्य्य उपस्थित हैं, इसमेंसे मैं अपनी बुद्धिसे विचार करके तुम्हारा अर्जुनके निकट जाना ही उत्तम समझता हूं; इससे जिस स्थानपर अर्जुन हैं, तुम उसही स्थानमें यत्नपूर्व्वक गमन करो। महाबलवान् भीमसेन, सहोदर भाइयोंके सहित धृष्टद्युम्न, द्रौपदीके पांचो पुत्र, और दूसरे बहुतेरे राजा मेरी रक्षा करेंगे, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। और केकयराज पांचो भाई, घटोत्कच राक्षस, विराट, द्रुपद, महारथ शिखण्डी, बलवान् धृष्टकेतु, कुन्तिभोज, नकुल, सहदेव, पाञ्चाल तथा सृञ्जय देशीय सम्पूर्ण सेनाके योद्धालोग मिलकर मेरी रक्षा करेंगे, इसमें सन्देह नहीं है। सेनाके सहित द्रोणाचार्य्य वा कृतवर्म्मा जो सहसा मेरे समीप पहुंच सकें अथवा मुझे पीड़ित करें, ऐसी सम्भावना भी नहीं हो सकती। जैसे तट समुद्रके वेगको रोकता है, वैसे ही द्रोणाचार्य्यको धृष्टद्युम्न युद्धभूमिसे निवारण करेंगे। युद्धभूमिमें जहां शत्रुनाशन धृष्टद्युम्न स्थित होंगे, उस स्थानकी सेनाको बलवान् द्रोणाचार्य्य कभी न लांघ सकेंगे। धृष्टद्युम्न ही द्रोणाचार्य्यके वध करने हीके निमित्त अग्निसे तलवार ढाल, धनुषबाण और कवचसे भूषित होकर उत्पन्न हुए हैं। इससे तुम मेरे निमित्त कुछ भी सन्देह न करके अर्जुनकी ओर गमन करो। रणभूमिमें धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यको युद्धसे निवारण करेंगे।

१०९ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्। पुरुषश्रेष्ठ पराक्रमी सात्यकिने धर्म्मराज युधिष्ठिरके वचनोंको सुनके अर्जुनके निकट अपराधी होनेकी शङ्का करके भी "यदि मैं अर्जुनके समीप न जाऊंगा, तो सब कोई मुझे डरपोक समझेंगे" इसी प्रकार अनेक भांतिकी चिन्ता करके लोकापवादको दूर करते हुए धर्म्मराज युधिष्ठिरसे यह बचन बोले,—हे प्रजानाथ। यदि तुम यह समझते हो, कि मेरी रक्षा हो सकेगी। तो तुम्हारा मङ्गल होवे, मैं अर्जुनके समीप जानेके वास्ते प्रस्थान करता हूं। मैं तुम्हारे समीप यह सत्य ही कहता हूं, कि तीनों लोकमें अर्जुनसे बढ़ कर मुझे कोई भी प्रिय नहीं है; उसपर भी तुम्हारी आज्ञासे उनकी सहायताके वास्ते जाना पड़ेगा, इससे बढ़कर दूसरा कार्य्य और कौन है? तुम्हारे निमित्त मैं किसी कर्म्मके करनेसे अवहेला करना नहीं चाहता। जैसे मुझे गुरु अर्जुनके वचन मानने योग्य हैं, उससे भी बढके तुम्हारे वचनोंको मान्य करना उचित है। तुम्हारे दोनों भाई कृष्ण-अर्जुन जैसे तुम्हारे कार्य्यमें रत हैं, वैसे ही मुझे भी तुम उन लोगोंके प्रिय कार्य्य करनेमें रत हुआ हो समझो। मैं तुम्हारी आज्ञाको माथेपर चढा कर इस दुःखसे भेद होनेवाली कुरुसेनाको भेद करनेके वास्ते गमन करूंगा। राजा जयद्रथ जिस स्थानमें स्थित हैं मैं द्रोणाचार्य्यकी सेनाके बीच प्रवेश करके उस स्थानपर इस भांति उपस्थित होऊंगा, जैसे मछली समुद्रमें प्रवेश करके एक स्थानसे दूसरे स्थानमें गमन करती है। अर्जुनके भी

हरे हुए राजा जयद्रथ सम्पूर्ण सेनाके अवलम्ब और अश्वत्थामा,कर्ण, तथा कृपाचार्य्य आदि महारथियोंसे रक्षित होकर जिस स्थानमें निवास करते हैं, मैं अनुमान करता हूं, कि उसी स्थानपर जयद्रथ वधकी इच्छा करके अर्जुन वहां पर उपस्थित हुए हैं। मैं अत्यन्त दृढता और पराक्रमके सहित जयद्रथ वधके पहिलेही इस बारह कोसके मार्गको अतिक्रम करके अर्जुनके समीप उपस्थित होऊंगा। कौन पुरुष गुरुकी आज्ञा पाकर युद्ध नहीं करता। और मेरे समान मनुष्य ही भला आपकी आज्ञा पाकर युद्ध क्यों न करेगा? मुझे जिस स्थान पर जाना होगा, उसे मैं जानता हूं। और वहां पर जानेके वास्ते सब अस्त्र शस्त्र, शक्ति गदा, प्रास, तलवार, ढाल, ऋष्टि तोमर और धनुष बाण इत्यादि अस्त्रोंसे शत्रुसेनाके पुरुषोंको [illegible]मित करना पड़ेगा। महाराज। ये जो सहस्रों [illegible]ाथी दीख पड़ते हैं, अञ्जन नाम दिग्गहस्तीके [illegible]शमें इनकी उत्पत्ति हुई है, वे सब ही [illegible]हार करनेमें श्रेष्ठ और युद्धमें महापराक्रमी हैं, [illegible]न हाथियों पर बहुतेरे म्लेच्छ चढ़के युद्ध कर-[illegible]के वास्ते तैयार हैं, वर्षा करनेवाले बाद-[illegible]लोंके समान इन मतवारे हाथियोंके शरीरसे [illegible]द चूरहा है। वे सम्पूर्ण हाथी गजारोही [illegible]लोगोंके चलाने पर युद्धभूमिमें कभी निवृत्त [illegible]ी होते, इससे बिना उन हाथियोंके वध [illegible]ये, यहांकी सेना पराजित होनेवाली नहीं [illegible]। तिसके अनन्तर यह जो हाथियोंका [illegible] दीख पड़ता है, वे सब योद्धा लोग [illegible] नामसे विख्यात राजपुत्र हैं। वे सबही [illegible]रथी, धनुर्वेदके जाननेवाले, रथ, घोड़े, [illegible]ी युद्ध, मुक्के, गदा, तलवार ढाल और [illegible] युद्धमें अत्यन्त ही निपुण हैं। ये [illegible] लोग युद्ध करनेकी सदा अभि-[illegible] और पुरुषोंके वध करनेके [illegible] सदा ही इच्छुक रहते हैं। कर्णने

इन राजपुत्रोंको नियुक्त किया है, और ये लोग इस स्थलमें दुःशासनके वशमें होकर स्थित हैं। श्रीकृष्ण सदा इन राजपुत्रोंको महारथी कहके उनकी प्रशंसा किया करते हैं, वे सम्पूर्ण राज पुत्र सदा कर्णके वशमें रहकर उनके प्रिय-कार्य्योंके करनेकी अभिलाषा करते रहते हैं और कर्ण होके वचनसे अर्जुनके समीपमें युद्धसे निवृत्त हुए हैं। उनके वर्म्म दृढ़ हैं, वे युद्धमें न थकते और न घायल ही होते हैं मुझे निश्चय होता है, कि वे सब दुर्य्योधनकी आज्ञासे मेरे सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते युद्धभूमिमें स्थित हैं। परन्तु मैं तुम्हारी आज्ञासे उन महा रथ राजपुत्रोंको अपने अस्त्रोंसे पीड़ित करके अर्जुनकी सहायताके वास्ते आगे बढ़ूंगा।

महाराज। उसके अतिरिक्त ये जो वर्म्म पह[illegible] हुए सात सौ हाथी दीख पड़ते हैं, जिनके ऊपर किरात लोग चढे हुए हैं। पहिले किरात-राज अर्जुनके समीपसे पराजित होकर अपने जीवनकी रक्षाके वास्ते इन किरातोंको भूष-णोंसे भूषित करके सेवक रूपसे अर्जुनके हाथमें समर्पण किया था। ये सम्पूर्ण किरात पहिले तुम्हारे आज्ञाकारी दास थे, देखिये कालकी कैसी उलटी गति है। इस समय वेही सब तुम्हारे विरुद्ध युद्ध करनेकी इच्छा करते हैं। इन किरातोंके बीच मुख्य मुख्य किरात योद्धा हाथियोंकी शिक्षामें निपुण और युद्धमें महा पराक्रमी हैं, ये सब ही म्लेच्छजाति हैं। ये सम्पूर्ण किरात लोग पहिले अर्जुनके सङ्ग युद्ध करके पराजित हुए थे, इस समय दुर्य्योधनके वशवर्त्ती होकर तुम्हारे सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते अभिलाष करते हैं। इन सम्पूर्ण दृढ़ दुर्म्मद किरातोंको मैं अपने बाणोंसे नष्ट करते हुए जयद्रथके वधकी इच्छा करनेवाले अर्जुनका अनुगामी होऊंगा।

यह जो सम्पूर्ण मदचूते हुए मतवारे हाथी सुवर्ण भूषित वर्म्मसे युक्त होकर रणभूमिके

बीच प्रकाशित हो रहे हैं, वे सम्पूर्ण हाथी अञ्जन हस्तीके वंशमें उत्पन्न हुए हैं; इन हाथियोंका स्वभाव अत्यन्त क्रूर है, ये सब शिक्षित और शत्रुको भयभीत करनेवाले हैं; ये सम्पूर्ण हाथी युद्धमें ऐरावत हाथीके समान कार्य्य किया करते हैं। काले और लालवर्ण-वाले वस्त्रको पहने हुए क्रूर स्वभाववाले निर्दयी डाकू लोग उन हाथियों पर चढके उत्तरीय पहाड़ोंसे आये हैं, उन योद्धाओंके बीच कितने ही गोयोनिसे, उत्पन्न हुए हैं, कितने ही बानर योनिसे कितने ही मनुष्ययोनि और कितनेही दूसरी बहुतेरी योनियोंसे पैदा हुए हैं। हिमालय पर्व्वतके दुर्गम स्थानोंमें निवास करनेवाले इन पापी म्लेच्छोंसे पापपूरित होकर वह सम्पूर्ण सेना धूएंके वर्ण समान प्रकाशित होरही है। दुर्य्योधन इन सम्पूर्ण राजाओं और रथियोंमें श्रेष्ठ कृपाचार्य्य, सोमदत्त पुत्र भूरिश्रवा, द्रोणाचार्य्यके पुत्र महारथ अश्वत्थामा, सिन्धुराज जयद्रथ और महारथ कर्णको पाकर अपनेको कृतार्थ समझ रहा है। परन्तु वे सब कोई आज मेरे बाणोंके सम्मुखसे मुक्त न हो सकेंगे। दुर्य्योधन उन लोगोंके बल-पराक्रमके अभिमानसे मतवारा होकर सदा उन लोगोंकी पूजा और सत्कार किया करता है, परन्तु आज वे लोग मेरे बाणोंसे पीड़ित होकर प्राण त्याग करेंगे।

महाराज! ये जो सब सुवर्णध्वज भूषित रथी दीख पड़ते हैं; उन लोगोंका नाम आपने सुना होगा, वे सब काम्बोज देशीय दुर्व्वारण नामक शूरवीर हैं वे सब कोई सम्पूर्ण युद्ध विद्या और धनुर्व्वेदके जाननेवाले तथा आपसमें एक दूसरेकी सहायता करनेके वास्ते युद्ध-भूमिमें इकट्ठे होकर स्थित हैं। दुर्योधनकी यह कई अक्षौहिणीसेना कुरुश्रेष्ठ वीरोंसे रक्षित, क्रुद्ध और यत्नवान् होकर मेरे सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते तैय्यार है, परन्तु जैसे अग्नि सूखे तृण-फूसको भस्म करती है, वैसेही उन सम्पूर्ण योद्धाओंको मैं अपने अस्त्रोंसे भस्म करते हुए गमन करूंगा। हे महाराज इससे रथसज्जा करनेवाले पुरुष मेरे रथमें स अस्त्र शस्त्र, धनुष तूनीर आदि युद्धके उपयो सम्पूर्ण वस्तुओंको उचित रीतिसे लाक इकट्ठी करें। इस संग्राममें नाना भांति अस्त्रशस्त्रोंको संग्रामके निमित्त रखना औ आचार्य्यके उपदेशके अनुसार रथको पंचगुणों युक्त करना उचित है। मुझे नानाभांति अस्त्र शस्त्र धारण करनेवाले, विषधारी सर्पके समान क्रोधी काम्बोज देशीय योद्धाओंके स रणभूमिमें युद्ध करना होगा राजा दुर्य्योधनसे सदा सत्कारपानेवाले उनके हितैषी प्रहार करनेमें निपुण विषधर सर्पके समान महाक्रूर किरातोंके सङ्ग मुझे युद्ध करना पड़ेगा। इन्द्रके समान पराक्रमी जलती हुई अग्निके समान तेजस्वी महाबली शक देशीय और दूसरे महापराक्रमी अत्यन्त भयङ्कर नाना भांतिसे युद्ध करनेवाले योद्धाओंके संग मुझे युद्ध करना होगा। इससे मेरा सारथी मेरे रथसे घोड़ोंको खोलके उन्हें जल पिलावे और बार बार पृथ्वीपर लुटा कर, उनकी थकावट दूर करके फिर मेरे रथमें जोतदेवे।

सञ्जय बोले, तिसके अनन्तर राजा युधि ष्ठिरने सात्यकिके रथमें तूणीर और युद्धके यो समस्त वस्तु तथा अस्त्र शस्त्रोंको रखवा दिया, और सेवकोंने सात्यकिके रथसे चारो घोड़ों खोल कर उन्हें उत्तम पीने योग्य मद पा कराया; फिर उन घोड़ोंके शल्यको निकालकर यथा रीतिसे उनकी थकावट दूर करनेके बाद बार बार पृथ्वीमें लुटा कर स्नान, पान और भो कराके उन्हें उत्तम रीतिसे सुन्दर आभूष अलङ्कृत किया। अनन्तर वे सब सुवर्णके समान प्रकाशित उत्तम शिक्षासे युक्त शीघ्रगामी घोड़े हर्षित होकर युद्धभूमिमें भ्रमण करनेके वास्त

उत्सुक हुए तब उन्हें सुवर्णभूषित करके अनेक शस्त्र, अस्त्रोंसे पूर्ण, सुवर्ण दण्डसे युक्त, छत्र शोभित, सुवर्णयुक्त मणि रत्नोंसे चित्रित छोटी छोटी पताका और सोनकी मालासे युक्त बादलके समान पाण्डुर वर्णवाली सिंह ध्वजासे सात्यकिके रथको अलंकृत किया ; और उन उत्तम घोड़ोंको उस रथमें जुतवा दिया। तिसके अनन्तर सात्यकिका प्यारा मित्र, दारुकका छोटा भाई इन्द्रके सारथी मातलिकी भांति सात्यकिके रथको सज्जित करके उनके निकट जाकर रथके सज्जित होनेका सम्वाद दिया। अनन्तर श्रीमान पुरुषोंके बीच अग्रगण्य माननीय सात्यकि स्नान करके पवित्र हुए और दूब लेकर एक सहस्र ब्राह्मणोंको स्वर्णमुद्रा दान किया, ब्राह्मणोंने सात्यकिको आशीर्वाद दिया। अनन्तर सात्यकि किरात देशीय मधुपान करके मदसे मतवारे लालनेत्रसे युक्त होकर द्विगुण तेजस्वी हुए, और अग्निके समान प्रकाशित होने लगे। फिर अत्यन्त हर्षित होकर कल्याण दायक दर्पणको स्पर्श किया। ब्राह्मण लोग उनको स्वस्तिवाचन करने लगे, और कन्या लोग सुगन्धित फूल तथा मालासे उन्हें आनन्दित करने लगीं। वह कवच तथा सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्रोंसे भूषित हुए, फिर धनुष बाण बगलमें लेकर हाथ जोड़ राजा युधिष्ठिरके दोनो पावोंको कूके प्रणाम किया, युधिष्ठिरने उनका मस्तक सूंघा, तब सात्यकि अपने उत्तम रथ पर चढ़े।

तिसके अनन्तर वायुके समान वेगगामी सिन्धुदेशीय हृष्ट पुष्ट अजेय घोड़े हिनहिनाते हुए सात्यकिके रथको लेकर आगे बढ़े और भीमसेन भी धर्मराज युधिष्ठिरकी आज्ञापाकर उन्हें प्रणाम कर सात्यकिके सङ्ग गमन करने लगे। द्रोणाचार्य आदि तुम्हारी सेनाके महारथी लोग सात्यकि और भीमसेनको अपनी सेनाके बीच प्रवेश करते देख, सावधान होके युद्ध करनेके वास्ते रणभूमिमें स्थित हुए। परन्तु महाबाहु सात्यकि भीमसेनको कवच धारण करके अपना अनुसरण करते हुए देख हर्षके सहित पुलकित होकर उन्हें आनन्दित करते हुए उनसे हर्षजनक यह बचन बोले, हे भीमसेन! इस समय धर्म्मराज युधिष्ठिरको रक्षा करना ही तुम्हारा सबसे श्रेष्ठ कार्य्य है। इससे तुम महाराज युधिष्ठिरकी रक्षा करो, मैं इन कालके वशमें हुए कुरुसेनाके पुरुषोंको तितर बितर करके इस महासेनाके बीच प्रवेश करूंगा। राजाकी रक्षा करना वर्त्तमान और भविष्य दोनो कालमें श्रेष्ठ तथा मङ्गलका कार्य्य है। इससे यदि तुम मेरे प्यारे कार्य्यको करनेकी इच्छा करते हो, तो यहांसे ही लौट जाओ ; तुम मेरे बल पराक्रमको जानते हो और मैं भी तुम्हारे बलको जानता हूं। भीमसेन सात्यकिके ऐसे बचन सुनके उनके बचन अनुसार कार्य्य करनेमें सम्मत हुए और सात्यकिसे यह वचन बोले, हे पुरुषश्रेष्ठ! तुम अपने कार्य्यको सिद्ध करनेके वास्ते गमन करो, मैं महाराज युधिष्ठिरकी रक्षा करूंगा। मधुकुलश्रेष्ठ सात्यकि भीमकी बात सुन कर उनसे फिर बोले, हे पार्थ! तुम शीघ्र गमन करो, क्योंकि तुम मेरे प्रीतिके पात्र, अनुरक्त और वशवर्त्ती हुए हो अर्थात् तुमने मेरे अभिप्रायके विरुद्ध कार्य्य नहीं किया है ; यह एक शुभ शकुन है, और दूसरे भी जो सब शुभ शकुन दीख पड़ते हैं, उससे आज मेरी अवश्य ही युद्धभूमिमें विजय होवेगी। पापी सिन्धुराज जयद्रथ जब महात्मा अर्जुनके अस्त्रोंसे मारा जावेगा, तब मैं वहांसे लौट कर महात्मा राजा युधिष्ठिरको आलिङ्गन करूंगा, इसमें सन्देह नहीं है। महात्मा सात्यकि भीमसेनसे ऐसा बचन कह कर तुम्हारी सेनाकी ओर इस प्रकार देखने लगे, जैसे हरिणोंके झुण्डको ओर सिंह देखता है। तुम्हारी सेनाके योद्धालोग

सात्यकिको उस महा सेनाके बीच प्रवेश करनेका इच्छुक जान, फिर मोहित होकर कांपने लगे। तिसके अनन्तर धर्म्मराजकी आज्ञाकी अनुसार अर्ज्जुनके देखनेकी इच्छा करनेवाले सात्यकिने सहसा तुम्हारी सेनाके बीच प्रवेश किया।

११० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र! जब उस सात्यकिने तुम्हारी सेनाके बीच प्रवेश किया। तब धर्म्मराज युधिष्ठिर अपनी सेनाके बीचसे घिर कर द्रोणाचार्य्यके रथके समीप जानेकी इच्छासे सात्यकिके पीछे पीछे गमन करने लगे। अनन्तर युद्धदुर्म्मद पाञ्चालराज पुत्र और राजा वसुदान पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंके बीच ऊंचे स्वरसे पुकारके यह बचन कहने लगे। हे शूरवीर पुरुषो। तुम लोग जल्दी बढ़ो, शस्त्र चलाओ, द्रोणाचार्य्यकी सेनाकी ओर दौड़ो, जिससे पराक्रमी सात्यकि सुख पूर्व्वक कौरवोंकी सेनाके बीच प्रवेश कर सके, क्योंकि बहुतेरे महारथी योद्धा सात्यकिको पराजित करनेके वास्ते यत्न करेंगे। पाण्डवोंकी ओरके महारथी योद्धालोग इसी प्रकार बचन कहते हुए बेग पूर्व्वक द्रोणाचार्य्यकी सेनाकी ओर दौड़ने लगे। हम लोग भी उन लोगोंके बधकी इच्छा करके उनकी ओर दौड़े। दोनो ओरकी सेनाके दौड़ने पर सात्यकिके रथके समीपमें महाघोर शब्द होने लगा; तुम्हारे पुत्रकी महासेना सात्यकिके बाणोंसे पीड़ित होकर तितर बितर होने लगी। उस सम्पूर्ण सेनाके योद्धाओंके तितर बितर होने पर शिनिपौत्र सात्यकि अग्निके समान तेजस्वी बाणोंसे शत्रु सेनाके अगाड़ी स्थित महाधनुधारी सात वीरोंका बध करके दूसरे देशोंसे आये हुए शूरवीरोंका संहार करके उन्हें यम पुरीमें भेजने लगे। उस समय सात्यकि एक एक बाणोंसे एक एक सौ मनुष्योंको और एक एक मनुष्योंको एक एक सौ बाणोंसे बिद्ध करने लगे। गजसवार, हाथी, घुड़सवार, घोड़े, तथा सारथियोंके सहित रथियोंका इसी प्रकार नाश करने लगे, जैसे भगवान् रुद्र सब प्राणियोंका संहार करते है। तुम्हारी सेनाके बीचसे कोई दल भी शस्त्र चलानेवाले सात्यकिके सम्मुख गमन करनेमें समर्थ नहीं हुए। सेनाके योद्धा लोग महाबाहु सात्यकिके बाणोंसे पीड़ित होकर तथा सात्यकिके बलपराक्रमको देख युद्धभूमिसे पृथक् होने लगे। युद्धविद्यामें निपुण शूरवीर योद्धालोग सात्यकिको युद्धभूमिमें भ्रमण करते देख, उसके तेजसे मोहित होकर एक ही सात्यकि बोध करने लगे। हे राजेन्द्र। टूटे रथ, रथके चक्के, धुरी, ध्वजा, पताका, दण्ड मनुष्योंके सुवर्ण भूषित शिरस्त्राण सर्पके समान लम्बी सुन्दर भुजा और हाथियोंके सूण्डसमान शूरवीरोंके कटे हुए जङ्घोंसे वह रणभूमि परिपूरित होगई। वृषभ और हरिणके समान नेत्रवाले सुन्दर और मनोहर कुण्डलोंसे शोभित शूरवीरोके कटे हुए शिरसे परिपूर्ण होके वह रणभूमि शोभित होने लगी। जैसे टूटे फूटे पर्व्वतोंके समूहसे पृथ्वी शोभित होती है, वैसे ही पर्व्वतके समान पृथ्वीमें पड़े—मरे हुए हाथियोंके समूहसे वह रणभूमि प्रकाशित होने लगी। सुवर्णकी माला और मोतियोंकी झालरसे युक्त कितने ही उत्तम घोड़े महाबाहु सात्यकिके बाणोंसे मर युद्धभूमिमें गिर कर शोभित होने लगे। सात्यकिने इसी भांति तुम्हारी सेनाके योद्धाओंका बध करके और सम्पूर्ण योद्धाओंको पराजित करके दूसरी सेनाके बीच प्रवेश किया था, सात्यकिने अर्ज्जुनके मार्गसे गमन करनेकी अभिलाष किया; परन्तु द्रोणाचार्य्यने उसे निवारण किया। क्रोधी सात्यकि द्रोणाचार्य्यके समीप पहुंच कर

अपने नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंको चला कर भी इस भांतिसे आगे नहीं बढ़ सके, जैसे समुद्रका वेग तटसे रुक कर आगे नहीं बढ़ सकता। द्रोणाचार्य्यने महारथ सात्यकिकी रोक कर उसे पांच तीक्ष्ण मर्म्मभेदी बाणोंसे विद्ध किया। सात्यकिने भी कङ्क पंखवाले सात बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको विद्ध किया। द्रोणाचार्य्यने छः बाणोंसे उसके रथके चारो घोड़े सारथी और सात्यकिको विद्ध किया। महारथ सात्यकिने द्रोणाचार्य्यके हस्तलाघव को न सहके सिंहनाद करके पहिले दश, फिर पांच और उसके बाद आठ बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको विद्ध करके फिर दश बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। अनन्तर सात्यकिने एक बाणसे द्रोणाचार्य्यके सारथी, चार बाणोंसे उनके चारो घोड़े और एक बाणसे उनके रथकी ध्वजा विद्ध किया। तिसके अनन्तर द्रोणाचार्य्यने शीघ्रताके सहित शलभसमूहके समान अपने बाणोंके समूहसे सात्यकिको घोड़े, सारथी, रथ और ध्वजाके सहित छिपा दिया। सात्यकिने भी उस ही भांति अपने अनेक बाणोंकी वर्षा करके द्रोणाचार्य्यको छिपा दिया।

तिसके अनन्तर द्रोणाचार्य्य सात्यकिसे बोले, हे सात्यकि! तुम्हारा गुरु कादरकी भांति युद्धभूमिमें मेरे सम्मुखसे हटके चला गया है, मैं युद्ध करता हो था, तोभी वह मुझे त्याग कर मेरी प्रदक्षिणा करके चला है। परन्तु तुम यदि अपने गुरुकी भांति मुझे त्यागके नहीं जाओगे तो आज मेरे सङ्ग युद्ध करके तुम कभी मेरे सम्मुखसे मुक्त न हो सकोगे।

सात्यकि बोले, हे ब्राह्मण! तुम्हारी कल्याण होवे, मैं धर्म्मराजकी आज्ञाके अनुसार अर्जुनका अनुसरण करके गमन करूंगा; ... शिष्य लोग आचार्य्यके दिखाये हुए मार्गसे सदा गमन करते हैं।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र। सात्यकिने ऐसा कहकर सहसा द्रोणाचार्य्यको त्यागके गमन किया। अनन्तर सात्यकि अपने सारथीसे यह वचन बोले, कि द्रोणाचार्य्य मुझे सब भांतिसे निवारण करनेके वास्ते यत्न करेंगे। तुम यत्नवान् होकर शीघ्रताके सहित रणभूमिमें अगाड़ी बढ़ो, और मेरी बातोंको सुनो;– यह देखो, यह महातेजस्वी अवन्ती नगरीकी सेना है, उसके अनन्तर दक्षिणी महासेना है, उसके बाद बाह्लिक देशीय बड़ी सेना दीख पड़ती है, और उसके आगे कर्णकी महासेना युद्धके निमित्त रणभूमिमें स्थित है। ये सब सेना अलग अलग युद्धमें स्थित हैं, परन्तु ये सम्पूर्ण सेना एक दूसरेके आसरेसे युद्धभूमिसे न हटेंगी। तुम उन सेनाके बीचमें होकर मध्यम वेगके सहित घोड़ोंको चलाओ। जिस स्थानमें नाना भांतिके अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके बाह्लिक देशीय सेना और सूतपुत्र कर्णके वशवर्त्ती अनेक दक्षिणी योद्धा, हाथी, घोड़े, रथोंके समूह और नाना देशीय पैदल सेनाके योद्धा लोग स्थित हैं; तुम उस ही स्थान पर मेरे रथको ले चलो। ऐसा वचन कहके द्विजसत्तम द्रोणाचार्य्यको त्यागके उनकी बायीं ओरसे सात्यकिने कर्णकी महासेनाके बीच प्रस्थान किया। महाराज! जब महाबाहु सात्यकि युद्धभूमिमें निवृत्त न होकर दूसरी ओरसे सेनाके बीच गमन करने लगे, तब द्रोणाचार्य्य क्रुद्ध होकर अनेक बाणोंको चलाते हुए सात्यकिके पीछे पीछे दौड़े! सात्यकिने अपने तीक्ष्ण-बाणोंसे कर्णकी महासेनाके योद्धाओंको विद्ध करते हुए, कुरु-सेनाके योद्धाओंको अपने अस्त्रोंसे निकृन्त करते हुए उस महा सेनाके बीच प्रवेश किया। जब सात्यकिने इस प्रकारसे कुरु-सेनाके बीच प्रवेश किया, और उनके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर सेनाके योद्धा इधर ...

भागने लगे, तब महारथ कृतवर्म्मा अत्यन्त क्रुद्ध होके सात्यकिको निवारण करने लगे। महापराक्रमी सात्यकिने कृतवर्म्माको सम्मुख आये हुए देख, छः बाणोंसे उनके ऊपर प्रहार किया, फिर चार बाणोंसे उनके रथके चारों घोड़ोंको विद्ध करके सोलह बाणोंसे कृतवर्म्माके हृदयमें प्रहार किया। महारथ कृतवर्म्मा सात्यकिके महातेजस्वी अनेक बाणोंसे विद्ध होकर भी विचलित नहीं हुए, उन्होंने सर्प और अग्निके समान तेजस्वी वत्सदन्त नाम एक बाण धनुषपर खींचके सात्यकिके वक्षस्थलमें प्रहार किया, वह बाण सात्यकिके कवच और शरीरको भेद कर रुधिर पीता हुआ उनके शरीरसे निकल कर पृथ्वीमें घुस गया। सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्रोंके जाननेवाले कृतवर्म्माने उसके बाद अत्यन्त क्रुद्ध होकर सात्यकिके धनुषको रोदा और बाणके सहित अपने तीक्ष्णबाणोंसे काट कर गिरा दिया, फिर दश तीक्ष्णबाणोंसे सात्यकिके हृदयमें प्रहार किया। तिसके अनन्तर महापराक्रमी सात्यकिने अपना धनुष कटता हुआ देख एक शक्ति ग्रहण करके कृतवर्म्माकी दाहिनी भुजामें प्रहार किया। अनन्तर फिर एक दृढ़ धनुष ग्रहण करके सात्यकिने कृतवर्म्माको सैकड़ों, सहस्रों बाणोंकी वर्षासे रथके सहित छिपा दिया। जैसे टीड़ियोंका समूह घोर शब्द करते हुए वृक्षको छिपा देता है, वैसेही सात्यकिके धनुषसे छूटे हुए उन सम्पूर्ण बाणोंने कृतवर्म्माको छिपा दिया। महाराज! सात्यकिने कृतवर्म्माको अपने बाणोंसे अदृश्य करके फिर एक भल्लसे उनके सारथीका सिर काटके पृथ्वीमें गिरा दिया, जब सारथि मरके उस महारथके ऊपरसे नीचे गिरा, तब कृतवर्म्माके रथके घोड़े सारथीसे रहित होकर दूसरी ओर रथको खींचते हुए दौड़ने लगे। अनन्तर भोजराज कृतवर्म्मा निर्भय चित्तसे घोड़ोंको रोक कर धनुषसे स्थित हुए। सेनाके सम्पूर्ण योद्धा कृतवर्म्माके इस कार्य्यको देख कर उनकी प्रशंसा करने लगे। वह मुहूर्त्त भरमें फिर तैयार होकर तथा घोड़ोंको आगे बढ़ा कर शत्रुओंको भयभीत करने लगे; परन्तु सात्यकिने वहांसे प्रस्थान किया, और कृतवर्म्मा भीमसेनकी ओर दौड़े।

हे राजेन्द्र! सात्यकिने भोजसेनासे निकल कर काम्बोज देशीय महासेनाके बीच प्रवेश किया। वहां पर अनेक शूरवीर योद्धा और महारथियोंने उन्हें आगे बढ़नेसे रोका, इसहीसे सात्यकि उस स्थानसे आगे नहीं बढ़ सके। उधर द्रोणाचार्य्य सेनाको यथायोग्य स्थानोंमें स्थित कर और भोजराज कृतवर्म्माके ऊपर सम्पूर्ण सेनाका भार समर्पण करके सात्यकिके सङ्ग युद्ध करनेकी इच्छासे उनकी ओर दौड़े; उन्हें सात्यकिके पीछे पीछे युद्ध करनेके वास्ते गमन करते देख भीमसेन आदि पाण्डव और पाञ्चाल देशीय अनेक शूरवीर योद्धा क्रुद्ध होकर द्रोणाचार्य्यको निवारण करनेमें प्रवृत्त हुए, परन्तु कृतवर्म्माके समीप पहुंचकर वे सब कोई उत्साह रहित होगये। महावीर कृतवर्म्मा अपने पराक्रमको प्रकाशित करके उन सम्पूर्ण योद्धाओंको निवारण करने लगे। पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण वाहन थके हुए थे; और उनकी सेनाके योद्धा बाणोंकी चोटसे पीड़ित होकर उत्साह रहित होगये थे; इससे अत्यन्त यत्नवान होकर भी कृतवर्म्माके सम्मुखसे आगे नहीं बढ़ सके। परन्तु वे सम्पूर्ण योद्धा भोजराज कृतवर्म्माके अस्त्रोंसे निवारित होकर भी यशकी अभिलाष करके भोजसेनाके योद्धाओंके आक्रमण करनेकी इच्छासे क्षत्रिय धर्म्मको स्मरण करके युद्धभूमिसे विमुख नहीं हुए।

१११ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! हमारी सम्पूर्ण सेना अनेक गुणोंसे युक्त है; और युद्धके सब कार्य्योंको जानती है, उसका यथा रीतिसे उत्तम व्यूह भी बनाया जाता है और वह गिनतीमें भी थोड़ी नहीं है। हम लोग उस सेनाका सदा सम्मान करते रहते हैं; और मेरी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा भी हमलोगोंके प्रिय कार्य्यके करनेकी अभिलाष किया करते हैं। वे सब योद्धा हृष्ट-पुष्ट, अद्भुत रूपवाले, युद्ध करनेमें निपुण और पराक्रमी हैं। मेरी सेनाके योद्धा लोग न बहुत बूढ़े हैं, न शरीरसे दुबले और न बहुत मोटे हैं। उस सम्पूर्ण योद्धाओंका मध्यम शरीर है। वे सब ही पराक्रमी और शीघ्र गमन करनेवाले हैं, सबही सावधान रोगरहित और कवचधारी हैं, वे सब कोई अनेक अस्त्रशस्त्रोंकी युद्ध जाननेवाले; घोड़े, हाथी और रथोंपर चढ़के लड़नेवाले, वाहनोंसे शीघ्रताके सहित उतरनेमें समर्थ, शत्रुसेनाके बीच प्रवेश करने और उससे बाहर निकलनेमें निपुण हैं। उन योद्धाओंका यथारीतिसे परीक्षा करके उनको यथा योग्य वेतन नियत किया गया है। उत्तम कुलमें उत्पन्न हुए वाहके तथा मित्रता और सम्बन्धके कारणसे उन्हें सेनामें नहीं नियुक्त किया गया है। वे सब बिना बुलाये, वा अपनी प्रार्थनाके अनुसार तथा नवीन रीतिसे मेरी सेनाके बीच नहीं नियुक्त हुए हैं। विशेष करके वे सब श्रेष्ठ कुलमें उत्पन्न हुए, श्रेष्ठ कुलके योग्य श्रेष्ठ कर्म्म करनेवाले, सन्तोषी, हृष्ट पुष्ट, यशस्वी और मनस्वी हैं इन लोगोंका सम्मान और उपकार भी किया जाता है। वे सब योद्धालोग मन्त्रियों तथा लोकपालोंके समान पराक्रमी मुख्य मुख्य सेनापतियोंसे परिपालित होते रहते हैं; और वे सब योद्धालोग मेरे प्रिय कार्य्यके करनेकी अभिलाष करते हैं, मुझसे अनुरक्त हुए राजा लोग अपनी अनुयायियोंके सहित उन योद्धाओंकी रणभूमिमें रक्षा करते हैं। चारों ओरसे आई हुई नदियोंके समूहकी भांति सम्पूर्ण सेना मेरी समुद्र समान महासेनामें मिल कर परिपूर्ण हुई हैं। यह सब सेना पक्षरहित और पक्षियोंके समान रथ, घोड़े और मदचूते हुए मतवारे हाथियोंसे परिपूरित है। हे सञ्जय। मेरी सेना ऐसी श्रेष्ठ होकर भी जब रणभूमिमें मारी जारही है; तब उसका कारण प्रारब्धको छोड़के और क्या कहा जासकता है? शूरवीर योद्धारूपी अगाध समुद्र; वाहन रूपी लहर, रथरूपी नौका; तलवार, गदा, प्रास परशु और बाणरूपी मछरियोंसे युक्त रत्न आभूषण, ध्वजा और वस्त्ररूपी कमलगणसे शोभित वायुरूपी दौड़ते हुए सम्पूर्ण वाहनोंसे उथलित, द्रोणाचार्य्यरूपी आधार और मकर मच्छसे युक्त कृतवर्म्मारूपी महाह्रदसे शोभित; जलसन्ध आदि मकर घड़ियालसे युक्त और कर्णरूपी चन्द्रके उदय होनेपर अत्यन्त भयङ्कर लहरसे युक्त समुद्रके समान मेरी महाभयङ्कर सेना है। शीघ्रताके सहित भेदकर भरतकुलश्रेष्ठ अर्जुन और सात्यकि अकेलेही रथ पर चढके जब मेरी महासेनाके बीच प्रविष्ट हुए हैं; मेरी सेनाके बीच जो कोई पुरुष जीवित बचेगा ऐसा पराक्रमी मैं किसीको नहीं देखता हूं। कालके वशमें हुए कौरवोंने अर्जुन और सात्यकिको वेगपूर्व्वक सेना अतिक्रम करते देख, तथा सिन्धुराज जयद्रथको गाण्डीवधनुर्धारी अर्जुनके समीप स्थित देखकर उस समय कौनसा कार्य्य किया? उस महाघोर संग्रामके समय उन लोगोंकी कैसी दशा हुई थी? हे तात! मैं बोध करता हूं, वे सब कालके वशमें होगये हैं; इस समय युद्धभूमिमें उनका पहिलेके समान पराक्रम नहीं दीख पड़ता है। कृष्ण अर्जुन

रहित शरीरसे मेरी सेनाके बीच प्रविष्ट हुए हैं, उन लोगोंको युद्धभूमिसे निवारण करे, ऐसा कोई भी पुरुष मेरी सेनाके बीच नहीं है। हे सञ्जय! मेरी सेनाके सैनिक महारथियोंको परीक्षा करके यथायोग्य वेतनके अनुसार और बहुतेरे महारथी वीरोंको मीठे वचनोंसे सम्मानित करके सेनाके बीच नियुक्त किया गया है; उन लोगोंके बीच कोई निरादरके सहित मेरी सेनाके बीच नहीं नियुक्त किया गया है, मेरी सेनाके सब पुरुष अपनी योग्यताके अनुसार अन्न और वेतन पाते हैं। मेरी सेनामें कोई वीर योद्धा थोड़े वेतन पर नियुक्त नहीं हैं। जातिके पुरुष बन्धु-बान्धवोंके सहित उन्हें दान, मान और आदरसे उन सम्पूर्ण सैनिक पुरुषोंको अपनी शक्तिके अनुसार सम्मानित करते हैं। परन्तु ऐसे योद्धालोग भी जब सव्यसाची अर्जुन और सातप्रकिके सम्मुखसे युद्धभूमिमें पराजित हुए हैं, तब उसका कारण भाग्यके अतिरिक्त और क्या कहा जासकता है? संग्रामभूमिमें जो महारथी उनकी रक्षा करते हैं, और जो योद्धा मेरे शूरवीर महारथियोंसे रक्षित होते हैं;—उन दोनोंको ही एक साधारण मार्ग होसे गमन करना पड़ता है। मेरे महामूर्ख पुत्र दुर्योधनने युद्धभूमिमें अर्जुनको सिन्धुराजके आगे स्थित और सातप्रकिको भी अपनी सेनाके बीच निर्भय चित्तसे प्रवेश करते देख, उस समयके अनुसार किस कार्य्यका निश्चय किया? मेरी सेनाके दूसरे महारथ योद्धाओंने रथियोंमें श्रेष्ठ अर्जुन और सातप्रकिका सब शस्त्रधारियोंको अतिक्रम करते हुए सेनाके बीच प्रवेश करते देख किस भांतिसे धीरज धारण किया? मुझे बोध होता है, कृष्ण-अर्जुनको सेना अतिक्रम करते और अपनी सेनाके योद्धाओंको भागते देख, दुर्योधन शोकित हुआ होगा और कृष्ण तथा सातप्रकिको अर्जुनके सहायक देख, मेरे सम्पूर्ण पुत्र शोकसे आर्त्त हुए होंगे। रथियोंको शत्रुजय करनेमें उत्साहरहित भागनेमें तत्पर और युद्धसे बिमुख होते देख, मेरे पुत्र अत्यन्त शोकित हुए होंगे। अर्जुन और सात्यकिको अपनी ओरके रथियोंका बध करते और सेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंका नाश करते देख, मेरे पुत्र शोकसे आर्त्त होगये होंगे। मनुष्य और घोड़ोंको अर्जुनके अस्त्रोंसे रथ रहित होते और व्याकुल होके इधर उधर दौड़ते देख मेरे पुत्र शोकसे व्याकुल हुए होंगे। महा मतवारे हाथियोंको अर्जुनके बाणोंसे पीड़ित होते, भागते, मरते और अधरेहो पृथ्वीमें गिरते देख मेरे पुत्र शोकसे आर्त्त होगये होंगे। झुण्डके झुण्ड पैदल सेनाके योद्धाओंको इधर उधर दौड़ते और भागते देख, मेरे पुत्र विजयकी इच्छाके निराश होके शोभित हुए होंगे। अपराजित कृष्ण और सात्यकिको थोड़े ही समयके बीच द्रोणसेनासे पार होते देख, मेरे पुत्र लोग शोकित हुए होंगे। हे तात! कृष्ण अर्जुन और सातप्रकिने घावरहित शरीरसे ही मेरी सेनाके बीच प्रवेश किया है, यह वृत्तान्त सुनकर मैं भी अत्यन्त शोकित होरहा हूं।

हे सञ्जय! शिनि पौत्र सातप्रकिने जब मेरी सेनाके बीच प्रवेश किया और भोजराज कृतवर्म्माको सेना अतिक्रम करके अगाड़ी गमन करने लगा, तथा पाण्डव लोग द्रोणाचार्य्यसे निवारित हुए, तब उस समय कैसा युद्ध हुआ था? वह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम मेरे समीप वर्णन करो। द्रोणाचार्य्य बलवान्, कृतास्त्र, शूरवीर अस्त्रविद्याके जाननेवाले, दृढ पराक्रमी और महाधनुर्द्धारी हैं, उनसे पाञ्चालराजसे शत्रुता है, पाञ्चाल योद्धा लोग भी धर्मराज युधिष्ठिरके विजयकी अभिलाष कर रहे हैं; और महारथ द्रोणाचार्य्य भी इनकी

पुरानी प्रवृता है। इससे पाञ्चाल योद्धाओंने द्रोणाचार्य्यसे किस प्रकार युद्ध किया? हे सञ्जय! तुम वचन बोलनेवालोंमें श्रेष्ठ हो; इससे यह सम्पूर्ण वृत्तान्त और अर्जुनने सिन्धुराज जयद्रथके वधके निमित्त जैसा कार्य्य किया था, वह सम्पूर्ण समाचार तुम मेरे समीप वर्णन करो।

सञ्जय बोले, हे भारत। तुम्हें अपने किये हुए अपराधसे ही ऐसे व्यसनमें फसना हुआ है, इससे आपको साधारण पुरुषोंके समान शोक करना उचित नहीं है। पहिले विदुर आदि बुद्धिमान पुरुषोंने तुमसे कहा था, कि हे राजन्! तुम पाण्डवोंको परित्याग मत करो, परन्तु आपने उन महात्मा पुरुषोंके वचनोंका नहीं सुना। जो पुरुष हित चाहनेवाले अपने सुहृदमित्रोंके वचनको नहीं सुनता, वह तुम्हारी भांति महा व्यसनमें पड़के शोकित होता है। महायशस्वी दाशार्ह कृष्णने पहिले सन्धि करनेके वास्ते तुमसे प्रार्थना किया था, परन्तु वह सन्धि करानेमें कृतकार्य्य न हो सके। वह तुम्हारी बुद्धिहीनता, पुत्रोंके निमित्त पक्षपात पाण्डवोंके ऊपर द्वेषभाव, मत्सरता, और कुटिलता जान कर इस समय इस महाघोर युद्धके वास्ते उद्योग कर रहे हैं। तुम्हारी दुर्नीतिके कारणसे ही बन्धु-बान्धव और स्वजनोंका नाश हो रहा है, आप इस दोषको दुर्योधनके ऊपर मत लगाइये। आपने पहिले वा मध्य समयमें भी कुछ विचार नहीं किया, इस समय विचार कर रहे है, इससे तुम ही इस पराजयके मूल हो। इस समयमें जो तुम व्याकुल होकर प्रलाप कर रहे हो, वह इस भांतिसे भाग्यमें स्वभाव माननेवाले बुद्धिमान पुरुषके हृदयमें शोभा नहीं देता, जैसे मरे हुए पुरुषके गलेमें माला शोभित नहीं होती है। आप सम्पूर्ण लौकिक व्यवहारोंको जानते है, इस समय स्थिर होकर देवासुर युद्धके समान कुरु-पाण्डवोंके भयङ्कर युद्धका वृत्तान्त विस्तार पूर्व्वक सुनिये।

महाराज। जब सत्य पराक्रमी सात्यकिने तुम्हारी सेनाके बीच प्रवेश किया, तब भीमसेन आदि पाण्डवोंकी ओरके योद्धा लोग तुम्हारी सेनाकी ओर दौड़े। पाण्डवोंको क्रोध पूर्व्वक अनुयायियोंके सहित अपनी सेनाकी ओर आते देख, महारथ कृतवर्म्माने अकेले ही उन सम्पूर्ण योद्धाओंको निवारण किया। उस समय कृतवर्म्माका मैंने यह अद्भुत पराक्रम देखा, कि पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा उन्हें अतिक्रम करके आगे न बढ सके। अनन्तर महाबाहु भीमसेनने तीन बाणोंसे कृतवर्म्माको विद्ध करके अपनी ओरके योद्धाओंको आनन्दित करते हुए अपना शख बजाया। तिसके अनन्तर सहदेवने बीस, धर्म्मराज युधिष्ठिरने पांच, नकुलने एक सौ, द्रौपदीके पांचो पुत्रोंने तिहत्तर, घटोत्कचने सात और धृष्टद्युम्नने तीन बाणोंसे कृतवर्म्माको विद्ध किया। विराट और राजा द्रुपदने भी तीन तीन बाणोंसे कृतवर्म्माको विद्ध किया। और शिखण्डीने पांच बाणोंसे कृतवर्म्माको विद्ध करके फिर हंसकर बीस बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। तिसके अनन्तर कृतवर्म्माने उन सम्पूर्ण महारथियोंको पांच पांच बाणोंसे विद्ध किया, फिर भीमके धनुष और ध्वजाको काटके रथसे पृथ्वीमें गिरा दिया, उसके बाद धनुष और रथसे रहित भीमसेनके हृदयमें सत्तर बाणोंसे प्रहार किया। जैसे भूकम्प होनेसे पहाड़ कम्पित होता है, वैसे ही बलवान भीमसेन हृदिकपुत्र कृतवर्म्माके प्रचण्ड बाणोंकी चोटसे अत्यन्त विद्ध होकर रणभूमिमें कांपने लगे। युधिष्ठिरके अनुयाई सम्पूर्ण योद्धा लोग भीमसेनकी वैसी दशा देख अपने तीक्ष्ण बाणोंको कृतवर्म्माके ऊपर बरसाते हुए उन्हें पीड़ित करने लगे, —वे सब योद्धा हर्ष पूर्व्वक भीमसेनकी रक्षा करनेके

वास्ते कृतवर्म्माको अपने रथोंके समूहसे घेर कर तीक्ष्ण-वाणोंसे उन्हें छिन्न करने लगे। परन्तु महाबलवान भीमसेन थोड़ी देरके बाद सावधान हुए और एक लोहमयी सुवर्णदण्ड-भूषित शक्ति ग्रहण करके शीघ्रताके सहित कृतवर्म्माके रथ पर चलाया। भीमसेनके हाथसे छूटी हुई केंचुलीसे रहित सर्पके समान वह भयङ्कर शक्ति जलती हुई अग्निके समान प्रकाशित होती हुई कृतवर्म्माके सम्मुख चली, परन्तु हृदिकनन्दन कृतवर्म्माने प्रलयकालकी अग्नि समान उस प्रकाशमान शक्तिको सम्मुख आती देख, दो वाणोंसे दो खण्ड करके पृथ्वीमें गिरा दिया। जैसे महाउल्का आकाशसे गिरते हुए दशों दिशामें प्रकाशित होते हैं वैसे ही सुवर्णभूषित वह शक्ति कृतवर्म्माके वाणोंसे कटके पृथ्वीमें गिर पड़ी। शक्ति कटती देख, महाबली भीमसेन क्रुद्ध होकर अत्यन्त भयङ्कर शब्द करनेवाले एक वेगशील धनुष चढ़ा कर कृतवर्म्माको अपने वाणोंसे छिपाने लगे, फिर भीमसेने पांच वाणोंसे कृतवर्म्माके दोनों स्तनोंके बीच प्रहार किया।

महाराज! यह सम्पूर्ण युद्धका कार्य्य तुम्हारे अविचारसे ही उपस्थित हुआ है। भोजराज कृतवर्म्मा भीमसेनके वाणोंसे विद्ध होकर फले हुए पलाश वृक्षके समान शोभित हुए। तिसके अनन्तर उन्होंने क्रुद्ध होकर तीन वाणोंसे भीमको विद्ध करके फिर हंसते हंसते पाण्डवोंकी ओरके सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंको अत्यन्त विद्ध किया। महारथी कृतवर्म्माने तीन तीन वाणोंसे उन यत्नवान पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण महारथियोंको विद्ध किया, और उन लोगोंने भी सात सात वाणोंसे कृतवर्म्माको विद्ध किया। तिसके अनन्तर महारथी कृतवर्म्माने एक क्षुरप्र अस्त्रसे शिखण्डीका धनुष काट दिया। धनुष कटने पर शिखण्डीने क्रुद्ध होकर एक सौ चन्द्र प्रतिमासे युक्त सुवर्णभूषित ढाल और तलवार ग्रहण किया; फिर उस तलवारको घुमा कर कृतवर्म्माके रथके ऊपर फेंक दिया; वह बड़ी तलवार वाणके सहित कृतवर्म्माके धनुषको काटकर आकाशसे गिरे हुए ज्योतिवाले पदार्थोंके समान प्रकाशित होकर पृथ्वीमें गिरी। तब अवसर पाकर शिखण्डी कृतवर्म्माको अपने वाणोंसे अत्यन्त विद्ध करने लगे। अनन्तर शत्रुओंके नाश करनेवाले कृतवर्म्माने कटे हुए धनुषको त्यागके दूसरा धनुष ग्रहण किया, और पाण्डवोंके सम्पूर्ण महारथियोंको तीन तीन वाणोंसे विद्ध करके शिखण्डीको पहिले तीन फिर सात वाणोंसे विद्ध किया। महायशस्वी शिखण्डी दूसरा धनुष ग्रहण कर कूर्म्मनखके समान मुखवाले वाणोंके समूहसे कृतवर्म्माको निवारण करने लगे। तिसके अनन्तर हृदिकपुत्र कृतवर्म्मा अत्यन्त क्रुद्ध होकर महात्मा भीष्मकी मृत्युके कारण महारथ शिखण्डीकी ओर इस प्रकारसे दौड़े जैसे हाथीकी ओर शार्दूल दौड़ता है। अनन्तर दिग्गजके समान तथा जलती हुई अग्निकी भांति वे दोनों पराक्रमी वीर अपने वाणोंसे एक दूसरेको विद्ध करते हुए रणभूमिमें युद्ध करने लगे। वे दोनो ही महारथी अपने प्रचण्ड धनुषको फेरते हुए सूर्य्य किरणके समान अपने सैकड़ों प्रकाशमान वाणोंको चलाने लगे। वे दोनो वीर अपने तीक्ष्ण-वाणोंसे एक दूसरेको पीड़ित करते हुए प्रलयकालके दो सूर्य्यके समान प्रकाशित होने लगे। कृतवर्म्माने पहिले महारथ शिखण्डीको तिहत्तर वाणोंसे विद्ध करके फिर एक सौ वाणोंसे विद्ध किया। शिखण्डी कृतवर्म्माके वाणोंसे अत्यन्त विद्ध पीड़ित और मूर्च्छित होकर धनुष वाण त्याग रथका दण्ड पकड़के बैठ गये। परन्तप! शिखण्डीको रणभूमिमें मूर्च्छित देख तुम्हारी ओरके शूरवीर योद्धालोग हर्षित होके कृतवर्म्माकी अत्यन्त प्रशंसा करने लगे। शिखण्डीका

सारथी उन्हें मूर्च्छित देखकर शीघ्रताके सहित रथके घोड़ोंको दौड़ा कर युद्धभूमिसे पृथक् हुआ। महाराज! पाण्डवोंकी सेनाके योद्धागन शिखण्डीको मूर्च्छित देख चारों ओरसे अपने रथोंके समूहसे कृतवर्म्माको घेर लिया। उस युद्धभूमिमें कृतवर्म्माका यह आश्चर्य्यमय पराक्रम दीख पड़ा कि उन्होंने अकेले ही पाण्डवोंकी ओरके सम्पूर्ण योद्धाओंको निवारण किया। महारथी कृतवर्म्माने पाण्डवोंको पराजित करके महाबलवान पराक्रमी चेदि, पाञ्चाल सृञ्जय और केकयदेशीय शूरवीरोंको पराजित किया। वे सम्पूर्ण योद्धा कृतवर्म्माके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर धीरज न धर सके; सब कोई इधर उधर दौड़ते हुए उनके सम्मुखसे भागने लगे। कृतवर्म्मा क्रोधपूर्व्वक पाण्डवोंको अनुयायियोंके सहित पराजित करके धूमसे रहित अग्निके समान प्रकाशित होकर युद्धभूमिमें स्थित हुए। वे सम्पूर्ण महारथी योद्धा कृतवर्म्माके वाणोंकी वर्षासे इधर उधर दौड़ते हुए युद्धभूमिसे विमुख हुए।

११२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र! आप जो वृत्तान्त सुननेसे पूछते थे, उसे चित्त लगा कर सुनिये। जब पाण्डवोंकी सेना महात्मा हृदिकानन्दन कृतवर्म्माके सम्मुखसे भागी और तुम्हारी सेना हर्षित हुई; तुम्हारी सेनाके योद्धाओंको हर्षित देख पाण्डवोंकी ओरके शूरवीर योद्धा लज्जित हुए। सात्यकि अगाध समुद्रके बीच डूबते हुए उन शूरवीरोंकी रक्षा करनेके वास्ते क्रोधस्वरूप होकर शीघ्रताके सहित तुम्हारी सेनाके योद्धाओंके भयङ्कर सिंहनाद सुनकर कृतवर्म्माकी ओर दौड़े। परन्तु कृतवर्म्माने क्रोधसे युक्त होकर अपने तीक्ष्ण वाणोंसे सात्यकिको छिपा दिया। सात्यकिने क्रोधपूर्व्वक एक भल्ल और चार वाण कृतवर्म्माकी ओर चलाया, उन चारों वाणोंसे कृतवर्म्माके रथके चारों घोड़े मरे भल्लसे उनका धनुष कटगया। तिसके अनन्तर सात्यकिने अपने तीक्ष्ण वाणोंसे कृतवर्म्माके सारथीको भी विद्ध किया; फिर कृतवर्म्माको रथरहित करके अपने तीक्ष्ण वाणोंसे उनकी सेनाके योद्धाओंको पीड़ित करने लगे। सात्यकिके वाणोंसे पीड़ित होकर कृतवर्म्माकी सेना भागने लगी, तब सात्यकिने शीघ्रताके सहित वहांसे प्रस्थान किया। महाराज! उसके अनन्तर पराक्रमी सात्यकिने तुम्हारी सेनाके बीच जैसा कार्य्य किया आप उसका वृत्तान्त सुनिये,—वह द्रोणाचार्य्यकी सेनासे पार होकर युद्धभूमिमें कृतवर्म्माको पराजित कर अपने सारथीसे प्रसन्न होकर यह वचन बोले, तुम निर्भय चित्तसे धीरे धीरे रथ आगे चलाओ।" तुम्हारी रथ घोड़े हाथी और पैदल चलनेवाले शूरवीर योद्धाओंसे युक्त महासेना देखकर सात्यकि फिर अपने सारथीसे बोले, यह जो द्रोणाचार्य्यकी सेनासे बायीं ओर बड़े बड़े हाथियोंकी सेना और उसके आगे रुक्मरथ नाम राजपुत्र स्थित हैं। वे सब ही महाधनुर्धारी महारथी और महापराक्रमी योद्धा हैं, ये सब दुःखसे भी निवारित न होंगे; और दुर्य्योधनके वास्ते मेरे सङ्ग युद्ध करके मरने तक युद्धसे निवृत्त न होंगे। यह जो त्रिगर्त्त देशीय सुवर्णभूषित ध्वजाके सहित राजपुत्र युद्धभूमिमें स्थित हैं, वे सब भी महाधनुर्द्धर योद्धा हैं, ये सब वीर मेरे सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते तय्यार हैं; तुम इस ही स्थान पर मेरे रथको शीघ्रताके सहित लेचलो। वहां पहुंचके मैं त्रिगर्त्त देशीय योद्धाओंके सङ्ग द्रोणाचार्य्यके सम्मुख होमें युद्ध करूंगा।

महाराज! तिसके अनन्तर सारथी सात्यकिकी आज्ञानुसार धीरे धीरे गमन करने लगा। वायुके समान शीघ्रगामी कुन्द इन्दु

और सुवर्णवाले उत्तम घोड़े कूदते तथा सातकिके रथको खींचते हुए गमन करने लगे। तिसके अनन्तर शीघ्रअस्त्र चलानेवाले शूरवीर योद्धाओंने शङ्ख वर्ण घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़े हुए सात्यकिको आते देख अपने बाणोंकी वर्षा करते हुए हाथियोंकी सेना लेकर सात्यकिको चारों ओरसे घेर लिया। जैसे ग्रीष्म ऋतुके बीतने पर बादल पहाड़ोंके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं, वैसे ही सात्यकि भी हाथियोंके ऊपर अपने तीक्ष्णबाणोंको वर्षा करते हुए युद्ध करने लगे। हाथियोंके समूह सात्यकिके धनुषसे छूटे हुए वज्रसमान बाणोंसे पीड़ित होकर चारों ओर दौड़ने लगे। इन सम्पूर्ण दौड़ते हुए हाथियोंके बीच कितनोंके शरीर रुधिरसे परिपूरित, किसी किसीके दांत टूट गये कितनोंके कान मुख और सुण्ड कट गये, किसी किसी हाथीके ऊपरसे ध्वजा कट गई और कितने हाथियोंके सवार मरके पृथ्वीमें गिर पड़े। कितने ही हाथियोंके बर्म्म कट गये, कितनोंके हौदेसे घण्टा टूटके गिर पड़े। बहुतेरे हाथी सात्यकिके धनुषसे छूटे हुए तीक्ष्णबाण वत्सदन्त भल्ल क्षुरप्र अञ्जलिक और अर्द्धचन्द्र बाणोंसे विद्ध होकर बलपूर्व्वक चिग्घाड़ते और रुधिरपूरित शरीर युक्त होकर मल मूत्र त्याग करते हुए पृथ्वीमें गिरने लगे। इसी प्रकार अग्नि और सूर्य्यके समान तेजस्वी सात्यकिके बाणोंसे पीड़ित होकर हाथियोंकी सेना चारों ओर भागने लगी। महाराज। जब इस प्रकार गजसेनाका वध होने लगा, तब महाबलवान पराक्रमी रुक्मरथ जलसन्धने सात्यकिके रथकी ओर अपना हाथी बढ़ाया। कवच कुण्डल किरीट और शंखधारी; लाल-चन्दनचर्चित शरीरसे युक्त सुवर्ण माला और प्रकाशमान कण्ठा पहने हुए जलसन्ध सातकिकी ओर बढ़े, वह हाथीके पीठ पर सुवर्णभूषित धनुष फेरते हुए बिजलीसे युक्त बादलके समान शोभित हुए। सातकिने मगधराज जलसन्धके हाथीको सहसा अपनी ओर आते देख उसे इस प्रकार निवारण किया जैसे तट समुद्रके वेगको रोकता है। महाबाहु महाबलवान जलसन्धने हाथीको सातकिके बाणोंसे निवारित हुए देख कर अत्यन्त क्रुद्ध होकर तीक्ष्ण बाणोंसे सात्यकिका बक्षस्थल विद्ध किया। अनन्तर बाण चलानेके समय जलसन्धने एक भल्लसे सातकिका धनुष काट दिया। जब सातकि धनुषसे रहित हुए, तब मगधराज जलसन्धने हंसके पांच बाणोंसे उन्हें फिर विद्ध किया। पराक्रमी सातकि महारथ जलसन्धके बहुतेरे बाणोंसे विद्ध होकर भी युद्धभूमिसे विचलित न हुए, उस समय सात्यकिका अनोखा पराक्रम दीख पड़ा, कि उसने जलसन्धके बाणोंको कुछ परवाह न करके दूसरा धनुष ग्रहण किया, और खड़ा रह, खड़ा रह कहके जलसन्धके विशाल बक्षस्थलमें साठ बाणोंसे प्रहार किया, फिर उत्तम पानीसे बुझे हुए एक क्षुरप्रसे उनके धनुषकी मुट्ठी काट कर तीन बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। तिसके अनन्तर महाबली जलसन्धने उस कटे हुए धनुष बाणको त्यागकर सात्यकिकी ओर एक तोमर चलाया। मगधराज जलसन्धकी भुजासे छूटा हुआ वह भयङ्कर तोमर, सात्यकिकी बायीं भुजा भेदकर पृथ्वीमें गिरा, बायीं भुजा विद्ध होने पर भी सात्यकिने तीस तीक्ष्ण बाणोंसे जलसन्धके ऊपर प्रहार किया। अनन्तर महाबलवान जलसन्धने एक सौ चन्द्र प्रतिमा भूषित ढाल और प्रकाशमान तलवार ग्रहण किया; उन्होंने उस प्रकाशमान तलवारको घुमा कर सात्यकिकी ओर चलाया। वह तलवार सात्यकिके धनुषको काटके पृथ्वीपर गिरके प्रकाशित होने लगी। अनन्तर यदुकुल श्रेष्ठ सातकिने क्रुद्ध होकर शालस्तम्भ सदृश और इन्द्रके वज्र समान शब्द करनेवाले एक महाभयङ्कर धनुष चढ़ाकर एक बाणसे बक्ष-

सम्यको विद्ध किया। अनन्तर हंसते हंसते दो च रप्रसे जलसन्धको दोनो भुजा काटके गिरा दिया। जैसे पहाड़के ऊपरसे पांचसिरवाले सर्प दीखते हैं वैसे ही परिघके समान उनकी दोनों भुजा उस श्रेष्ठ हाथीके ऊपरसे गिरती हुई दीख पड़ी। अनन्तर सात्यकिने एक चुरप्र अस्त्रसे जलसन्धके सुन्दर मनोहर नासिका, दांत और कुण्डलोंसे शोभित सिर काटके पृथ्वीमें गिराया। राजा जलसन्धके शरीरसे दोनों भुजा और सिर कटके पृथ्वीमें गिरे, परन्तु शरीरका रुण्ड भयङ्कर कबन्धरूपी हो अपने रुधिरसे रणभूमि परिपूरित करने लगा। सात्यकिने राजा जलसन्धका युद्धभूमिमें वध करके शीघ्रताके सहित हाथी पर स्थित उनके हाथीवानका भी वध किया। जलसन्धका बड़ा हाथी सातग्रकिके बाणों से अत्यन्त विद्ध और रुधिरसे परिपूरित होकर लटकते हुए उत्तम हौदेके सहित महाभयङ्कर आर्त्तनाद करके दौड़ता हुआ अपनी सेनाके योद्धाओंको मर्द्दन करते हुए गमन करने लगा। राजा जलन्धको पराक्रमी सातग्रकिके अस्त्रोंसे मरते देख तुम्हारी सेनाके बीच महा भयङ्कर हाहाकार शब्द होने लगा; और तुम्हारी ओरके योद्धा लोग शत्रुके जीतनेमें उत्साह रहित होकर रणभूमिमें चारो ओर इधर उधर भागने लगे। महाराज। उस ही समय शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ महापराक्रमी द्रोणाचार्य्य अपने वेगगामी घोड़ोंसे युक्त उत्तम रथपर चढ़े हुए सात्यकिके समीप उपस्थित हुए। कौरवोंकी सेनाके मुख्य मुख्य योद्धा लोग सातग्रकि को आगे बढ़ते देख क्रुद्ध होकर द्रोणाचार्य्यके सहित दौड़ कर उसके सम्मुख उपस्थित हुए। तिसके अनन्तर सात्यकिके सङ्ग द्रोणाचार्य और कौरव वालाओंका देवासुर युद्धके समान महाघोर संग्राम होने लगा।

१११ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज। शस्त्र चलानेमें निपुण कौरव योद्धा लोग सावधान होकर शीघ्रताके सहित सात्यकिके सङ्ग युद्ध करने लगे। द्रोणाचार्य्यने उत्तम पानीसे बुझे हुए सतहत्तर, दुर्म्मर्षणने बारह, दुःसहने दश और विकर्णने कङ्कपत्रयुक्त तीस तीक्ष्ण बाणोंसे सात्यकिको विद्ध किया। अनन्तर दुर्म्मुखने दश दुःशासन आठ और चित्रसेनने दो बाणोंसे सात्यकिको विद्ध किया, दुर्य्योधन तथा दूसरे महारथी योद्धा लोग अनेक बाणोंकी वर्षा करके सात्यकिको पीड़ित करने लगे। महारथ सात्यकिभी तुम्हारे पुत्रोंसे अत्यन्त विद्ध होकर उन हर एक महारथ वीरोंको पृथक पृथक अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे; द्रोणाचार्य्यको तीन दुर्म्मुखको दश विकर्णको पचीस चित्रसेनको सात दुर्म्मर्षणको बारह विविंशतिको आठ, सत्यव्रतको नव और विजयको दश बाणोंसे विद्ध किया। अनन्तर महारथ सात्यकि सुवर्णभूषित धनुष फेरते हुए शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ तुम्हारे महारथ पुत्र राजा दुर्य्योधनके समीप शीघ्रताके सहित गमन करके उन्हें अपने बाणोंसे अत्यन्त विद्ध करने लगे। अनन्तर उन दोनों पुरुषसिंहोंका महाघोर युद्ध होने लगा। वे दोनो महारथी धनुष चढ़ाकर अपने तीक्ष्णबाणोंकी वर्षासे रणभूमिके बीच एक दूसरेको अदृश्य करने लगे। जैसे चन्दनके वृक्षसे रस टपकता है, वैसेही कुरुराज दुर्य्योधनके बाणोंसे अत्यन्तविद्ध होकर सात्यकिके शरीरसे रुधिर बहने लगा, जब सात्यकिके शरीरसे रुधिर बहने लगा, उस समय सात्यकि रुधिर पूरित शरीरसे अत्यन्त शोभित हुए। तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन भी सात्यकिके बाणोंसे विद्ध होकर युद्धभूमिमें अत्यन्त शोभायमान हुए। यदुकुलभूषण सात्यकिने हंसते हंसते एक चुरप्र बाणसे दुर्य्योधनके धनुषको काटकर उन्हें अनेक बाणोंसे विद्ध किया। तब कुरुराज

दुर्य्योधनने हस्तलाघवसे शस्त्र चलाने वाले सात्यकिके बाणोंसे बिद्ध होकर शत्रुविजयकी लक्षणको सहन नहीं किया, उन्होंने सुवर्णभूषित एक दृढ़ धनुष ग्रहण करके सात्यकिको एकसौ बाणोंसे शीघ्रताके सहित विद्ध किया। सात्यकि महाबलवान् धनुर्धारी तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनके बाणोंसे अत्यन्त बिद्ध और क्रुद्ध होकर उन्हें अपने बाणोंसे पीड़ित करने लगे। तुम्हारी ओरके महारथियोंने राजा दुर्य्योधनको पीड़ित देख अपने बाणोंकी वर्षासे सात्यकिको छिपा दिया। महा यशस्वी सात्यकिने तुम्हारे महारथ पुत्रोंके बाणोंकी जालसे छिपकर उन हर एक महारथियोंको पांच पांच बाणोंसे विद्ध करके फिर सात सात बाणोंसे बिद्ध किया। अनन्तर सात्यकिने शीघ्रताके सहित दुर्य्योधनको आठ बाणोंसे विद्ध करके उनके दृढ़ धनुषको काट दिया; और फिर उनके रत्नजटित सुवर्ण भूषित ध्वजाको काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। तिसके अनन्तर चार बाणोंसे उनके रथके चारों घोड़ोंका वध करके एक क्षुरप्र बाणसे उनके सारथीका वध किया और इन सम्पूर्ण कार्य्योंके करनेके समयमें ही हर्षके सहित महारथी कुरुराज दुर्य्योधनको भी मर्म्मभेदी अनेक बाणोंसे छिपा दिया। तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन शिनि-पौत्र सात्यकिके बाणोंसे पीड़ित होकर घोड़े और सारथीसे रहित अपने रथसे कूद कर चित्रसेनके रथ पर जा चढ़े। आकाशमें राहुसे चन्द्रमा ग्रसित होनेके समान सात्यकिके अस्त्रोंसे कुरुराज दुर्य्योधनको पीड़ित देख तुम्हारी सेनाके बीच चारों ओरसे महा भयङ्कर हाहाकार शब्द होने लगा।

अनन्तर महारथी कृतवर्म्माने उस हाहाकार शब्दको सुनकर अपने सारथीको निन्दा करके उस सात्यकिके समीप शीघ्रताके वास्ते आज्ञा दिया; कृतवर्म्माका सारथी रथको बढ़ा कर सात्यकिके समीप शीघ्रतासे गमन करने लगा। कृतवर्म्माको मुख पसारे हुए कालके समान अपनी ओर आते देख सात्यकिने सारथीसे कहा, धनुर्धारियोंमें श्रेष्ठ महारथ कृतवर्म्मा वेगपूर्व्वक आरहे हैं तुम कृतवर्म्माके सम्मुख मेरा रथ लेचलो। तिसके अनन्तर सात्यकिका सारथी वेगवान घोड़ोंसे युक्त भली भांतिसे सज्जित उत्तम रथ पर चढ़े हुए धनुर्धारियोंमें मुख्य भोजराज कृतवर्म्माके सम्मुख अपने रथको बढ़ा कर उपस्थित हुआ। तिसके अनन्तर जलती हुई अग्निके समान तेजस्वी वेगगामी दो व्याघ्रोंके समान वे दोनों पुरुषसिंह आपसमें युद्ध करने लगे। सुवर्णभूषित ध्वजा और सुवर्ण खचित बर्म्मसे युक्त महारथ कृतवर्म्माने प्रचण्ड धनुषको चलाकर उत्तम पानीसे बुझे हुए छत्तीस तीक्ष्ण बाणोंसे सात्यकिको, सातबाणोंसे उनके सारथी और चार तीक्ष्णबाणोंसे उनके रथके उत्तम शिक्षा युक्त सिन्धुदेशीय चारों घोड़ोंको बिद्ध किया। फिर कृतवर्म्माने अपने बाणोंकी वर्षासे सात्यकिको छिपा दिया। तिसके अनन्तर अर्ज्जुनके दर्शनके अभिलाषी सात्यकिने कृतवर्म्माके ऊपर अस्त्रो बाण चलाये। जैसे भूकम्प होने पर पर्व्वत हिलने लगता है वैसे बलवान कृतवर्म्मा सात्यकिके बाणोंसे अत्यन्त बिद्ध होकर कम्पित होने लगे। सात्यकिने क्रुद्ध होकर उनके रथके घोड़ोंको तिहत्तर तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध करके उनके सारथीको भी सात बाणोंसे विद्ध किया। अनन्तर सुवर्ण दण्डयुक्त क्रोधी सर्पके समान यमदण्ड एक प्रकाशमान बाण धनुष पर चढ़ा कर सात्यकिने कृतवर्म्माकी ओर चलाया। वह यमदण्डके समान प्रचण्ड बाण सुवर्णभूषित कृतवर्म्माके प्रकाशमान वर्म्मको भेदकर उनके शरीरमें घुस गया और फिर शरीरको छेद कर रुधिर लिपटे हुए पृथ्वीमें गिर पड़ा। महापराक्रमी कृतवर्म्मा सात्यकिके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित और रुधिर पूरित शरीरसे युक्त हो धनुष बाण त्याग कर

सिंहके दांतके समान दांतोंको निकाल कर अपने उत्तम रथसे दोनो घुटनोंके बल पृथ्वी पर गिरे। शिनिपौत्र सात्यकि सहस्रबाहु कार्त्तवीर्य्यके समान पराक्रमी तथा अगाध समुद्रके समान अक्षोभ्य कृतवर्म्माको युद्धसे निवारण करके फिर आगे बढ़े, वह सम्पूर्ण सेनाके योद्धाओंके सम्मुख होके तलवार शक्ति धनुष बाणसे युक्त, हाथी; घोड़े और रथोंसे पूरित सैकड़ों शूरवीर क्षत्रिय योद्धाओं तथा सेनाके गरुषोंको रुधिर पूरित शरीरसे युक्त करते और सेनाको भेदके उसके बीच इस प्रकार प्रवेश करने लगे, जैसे वृत्रासुरने देवतोंकी सेनाके बीच प्रवेश किया था। उधर महाबली कृतवर्म्मा सावधान होकर अपना प्रचण्ड धनुष ग्रहण कर पाण्डवोंको युद्धसे निवारण करते हुए उस ही स्थान पर स्थित हुए।

११४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज। शिनिपौत्र सात्यकि जब इधर उधर तुम्हारी सेनाके योद्धाओंको तितर बितर करने लगे; तब द्रोणाचार्य्यने वहां गमन करके उन्हें अपने बाणोंसे छिपा दिया। जैसे इन्द्रके सङ्गमें राजा बलिका युद्ध हुआ था, वैसे ही द्रोणाचार्य्यके सङ्ग सात्यकिका महाघोर संग्राम होने लगा। द्रोणाचार्य्यने लोहमयी सर्पके समान रूपवाले तीन बाणोंसे सात्यकिका ललाट विद्ध किया। मस्तकमें विद्ध हुए उन तीनों बाणोंसे सात्यकि तीन शृङ्गवाले पर्व्वतके समान शोभित हुए। छिद्र देखनेवाले पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने इसके अनन्तर इन्द्रके वज्रसमान शब्दसे [illegible] बाण सात्यकीके ऊपर चलाये। परम अस्त्रोंके मर्मको जाननेवाले सात्यकिने द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छूटे हुए उन बाणोंको [illegible] मनोहर पंखवाले अपने दो बाणोंसे काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। द्रोणाचार्य्यने सात्यकिका ऐसा हस्तलाघव देख हंसकर शीघ्रताके सहित उसे बीस बाणोंसे विद्ध किया; और अस्त्रोंके चलानेमें अपना हस्तलाघव प्रकाशित करके सात्यकिके हस्तलाघवको तुच्छ करते हुए उसे फिर पचास, और उसके अनन्तर एकसौ बाणोंसे सात्यकिको विद्ध किया। जैसे महा प्रचण्ड सर्प बिलसे निकलके क्रोधपूर्व्वक जीभ निकालते हुए दीख पड़ते हैं, वैसे ही शत्रुओंके शरीरको भेदनेवाले बाण द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छूट कर सात्यकिके रथपर गिरने लगे। और वैसे ही सात्यकिके चलाये हुए सैकड़ों तथा सहस्रों बाण द्रोणाचार्य्यके रथको छिपाने लगे। द्विज-सत्तम द्रोणाचार्य्य और यदुकुल भूषण सात्यकि,—इस समयमें इन दोनों शूरवीरोंके बीच कोई भी हस्तलाघवमें एक दूसरेसे अधिक न होसके; वे दोनों परस्परसे समान रूपसे युद्धमें अपना पराक्रम प्रकाशित कर रहे थे। अनन्तर सात्यकिने अत्यन्त क्रुद्ध होकर नव नतपर्व्व बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको विद्ध करके उनके नेत्रके सम्मुखहीमें उनके रथ ध्वजा और सारथीको भी एकसौ बाणोंसे विद्ध किया। द्रोणाचार्य्यने सात्यकिका हस्तलाघव देख, उसे सत्तर बाणोंसे विद्ध करके फिर तीन तीक्ष्ण बाणोंसे उसके रथके चारों घोड़ोंको विद्ध किया फिर महात्मा द्रोणाचार्य्यने सुवर्ण पंखवाले एक भल्लसे सात्यकिका धनुष काटके उनके रथकी ध्वजाको भी एक बाणसे काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। तिसके अनन्तर सात्यकिने कटा धनुष त्याग कर एक बहुत बड़ी गदा ग्रहण कर द्रोणाचार्य्यकी ओर चलाया। द्रोणाचार्य्यने उस लोहमयी गदाको सम्मुख आती देख, अनेक बाणोंसे उसे निवारण किया। शत्रुनाशन सात्यकिने दूसरा धनुष ग्रहण कर अनेक बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको विद्ध करके सिंहनाद किया। शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने

सिंहनादको न सहके शीघ्रताके सहित एक स्वर्णदण्डवाली लोहमयी शक्ति उठा कर उसको रथपर चलाया। कालके समान भयङ्कर शब्दसे युक्त वह प्रचण्ड शक्ति सात्यकिके समीप न पंहुच कर उसके रथहीको भेद करके पृथ्वीमें गिर पड़ी। तिसके अनन्तर सात्यकि द्रोणाचार्य्यकी दहिनी भुजाको अपने बाणोंसे विद्व करके उन्हें पीड़ित करने लगे। द्रोणाचार्य्यने भी सात्यकिके धनुष रथ और सारथीको शक्तिके प्रहारसे अत्यन्त विद्ध किया। सात्यकिका सारथी द्रोणाचार्य्यकी शक्तिके प्रहारसे मूर्च्छित होगया, और मुहूर्त्त भर तक रथके ऊपर व्याकुल रहा। महाराज! उसही समय सात्यकिने यह अलौकिक कर्म्म किया कि उन्होंने द्रोणाचार्य्यके सङ्ग युद्ध भी किया और अपने घोड़ोंकी बागडोर भी ग्रहण किया। अनन्तर सात्यकिने एक सौ बाणोंसे द्विजसत्तम द्रोणाचार्य्यको विद्ध किया; तब द्रोणाचार्य्यने सात्यकिके ऊपर पांच बाण चलाये। वे बाण सात्यकिके वर्म्मको तोड़के उनके शरीरमें घुस कर रुधिर पीते हुए पृथ्वीमें गिरे, महारथी सात्यकि उन बाणोंसे अत्यन्त विद्ध और पीड़ित होकर सुवर्णयुक्त रथ पर चढ़े हुए द्रोणाचार्य्यके ऊपर अपने बाणोंको चलाने लगे; और एक बाणसे उनके सारथीका वध करके उसे पृथ्वीमें गिराया फिर उनके घोड़ोंको अपने बाणोंसे विद्ध किया। वे घोड़े सात्यकिके बाणोंसे विद्ध होके सारथीसे रहित रथको लेकर शीघ्रताके सहित रणभूमिमें दौड़ने लगे और सूर्य्यके समान उस प्रकाशमान रथको लेकर मण्डलाकार गतिसे सहस्रोंवार युद्धभूमिके बीच भ्रमण करने लगे। अनन्तर वहां पर तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण राजा और राजपुत्र लोग बलपूर्व्वक सेनाके पुरुषोंको पुकारके कहने लगे। दौड़ो द्रोणाचार्य्यके घोड़ोंको रोको, वे सम्पूर्ण योद्धालोग शीघ्रही सात्यकिको त्याग कर जहां पर द्रोणाचार्य्यके रथको उनके रथके घोड़े खींचते हुए दौड़े जाते थे उस ही ओर सहसा दौड़ने लगे। तब तुम्हारी सेनाके दूसरे योद्धा लोग अपनी ओरके उन शूरवीरोंको सात्यकिके बाणोंसे पीड़ित और उसके समीपसे भागते देख व्याकुल होकर फिर युद्धभूमिमें भागने लगे। सात्यकिके बाणोंसे पीड़ित रथ पर चढ़े हुए द्रोणाचार्य्य वायुके समान गमन करनेवाले घोड़ोंके सहित व्यूहके दर्वाजे पर आके फिर स्थित हुए। बलवान द्रोणाचार्य्यने पाण्डव और पाञ्चाल योद्धाओंके पराक्रमसे अपने व्यूहको भग्न हुए देखकर फिर सात्यकिको निवारण करनेके वास्ते यत्न नहीं किया, उस समय द्रोणाचार्य्य अपने व्यूह बद्ध सेनाकी रक्षा करनेमें ही प्रवृत्त हुए। वह क्रुद्ध होकर अग्निके समान प्रज्वलित होगये, अनन्तर पाण्डव और पाञ्चाल योद्धाओंको युद्धसे निवारण करके प्रलयकालके सूर्य्य-समान प्रकाशित होकर द्रोणाचार्य्य अपनी सेनाके व्यूहद्वार पर स्थित हुए।

११५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे कुरुश्रेष्ठ राजेन्द्र! पुरुषसिंह शिनिपौत्र बलवान सात्यकि द्रोणाचार्य और कृतवर्म्मा आदि तुम्हारी ओरके योद्धाओंको पराजित करके अपने सारथीसे बोले हे सारथी! हम लोग केवल निमित्त मात्र हुए हैं, क्योंकि हम लोगोंके शत्रु, कृष्ण अर्जुनके पराक्रमसे पहिलेसे ही भस्म होचुके हैं इन्द्रपुत्र पुरुषश्रेष्ठ अर्ज्जुनने इन सब योद्धाओंको पहिलेसे ही मार रक्खा है हमलोग उन मरे हुए योद्धाओंका ही वध कर रहे हैं। शत्रुनाशन धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी बलवान सात्यकि सारथीसे ऐसा वचन कहकर चारो ओर बाण चलाते हुए मानो मासकी इच्छासे भक्षक

ओर दौड़ते हुए बाज पक्षीकी भांति सहसा तुम्हारी सेनाके योद्धाओंके सम्मुख आके उपस्थित हुए। हे भारत। सूर्य्य समान तेजस्वी अत्यन्त पराक्रमी निर्भयचित्तसे गमन करनेवाले इन्द्र और सूर्य्यके समान प्रकाशित उस पुरुषसिंह सात्यकिको चन्द्रमा वा शङ्खवर्णके समान सफेद घोड़ोंसे युक्त उत्तम रथ पर चढ़के सेनाके शूरवीरोंको तितर बितर करते देख, सम्पूर्ण सेनाके बीचसे किसी सेनाके योद्धा भी उसे निवारण करनेमें समर्थ नहीं हुए। परन्तु अत्यन्त विचित्र योद्धा सुवर्ण वर्म्म धारण करनेवाले धनुर्द्धारी महारथ सुदर्शन सात्यकिको अकस्मात् सेनाके बीच आये हुए देख क्रुद्ध होकर उसे निवारण करनेमें प्रवृत्त हुए। सुदर्शनके सङ्ग सात्यकिका महाघोर संग्राम होने लगा। जैसे देवताओंने इन्द्र और वृत्तासुरके युद्धकी प्रशंसा किया था; वैसे ही तुम्हारी ओरके योद्धा तथा चन्द्रवंशी शूरवीर योद्धा उन दोनों पुरुषोंके युद्धको देख उनकी प्रशंसा करने लगे। सुदर्शनने अत्यन्त तीक्ष्ण सैकड़ों बाण सातयकिकी ओर चलाये, परन्तु सात्यकि उनके सम्पूर्ण बाणोंको समीप न आते ही अपने बाणोंसे मार्गहीमें काट काट गिराने लगे। वैसे ही इन्द्रके समान पराक्रमी सात्यकिने भी जितने बाण चलाये रथियोंमें श्रेष्ठ सुदर्शनने भी अपने चोखे बाणोंसे उन सम्पूर्ण बाणोंको टुकड़े टुकड़े करके पृथ्वीमें गिरा दिया। महातेजस्वी सुदर्शन उस समय अपने चलाये हुए बाणोंसे कटते देख अत्यन्त [illegible] हुए, और मानो रथ पर नृत्य करते हुए [illegible] जितने ही बाण सात्यकिकी ओर चलाये, और फिर उत्तम पानीसे बुझे हुए [illegible] बाणोंको धनुष पर चढ़ा कर सात्य[illegible] किया, वे तीनों बाण सात्यकिके [illegible] कर उनके शरीरमें घुस गये, [illegible] राजपुत्र सुदर्शनने चार बाणोंसे सात्यकिके चारों घोड़ोंको विद्ध किया। इन्द्रके समान पराक्रमी शिनिपौत्र बलवान सात्यकिने अत्यन्त तीक्ष्ण बाणोंसे सुदर्शनके रथके घोड़ोंका बध करके सिंहनाद किया; अनन्तर इन्द्रके वज्र समान एक बाणसे उनके सारथीका सिर काट कर फिर एक तीक्ष्ण-बाणसे उनका भी सिर काट कर पृथ्वीमें गिरा दिया। पहिले समयमें जैसे इन्द्रने महा बलवान बलासुरका सिर काटा था, वैसे ही सात्यकिने सुदर्शनके कुण्डलभूषित पूर्ण चन्द्रमाके समान प्रकाशमान सिरको काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। यदुकुलभूषण पुरुषसिंह सातयकि पितर और पितामहके धर्म्म अनुसार राजपुत्र सुदर्शनका युद्धभूमिमें बध करके अत्यन्त हर्षित होकर देवराज इन्द्रके समान प्रकाशित होने लगे। तिसके अनन्तर अर्ज्जुनने जिस मार्गसे गमन किया था, सात्यकि भी उत्तम घोड़ोंसे युक्त रथ पर चढ़के तुम्हारी सेनाके योद्धाओंको निवारित करते हुए उस ही मार्गसे गमन करने लगे। बाण चलानेके मार्गमें स्थित शत्रुओंको जब वह अपने बाणोंसे अग्निकी भांति भस्म कर रहे थे तब सम्पूर्ण योद्धा लोग मिल कर उनके उस आश्चर्य्य रूपी श्रेष्ठ और कठिन कर्म्मको अत्यन्त प्रशंसा करने लगे।

११६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! यदुवंशियोंमें श्रेष्ठ बुद्धिमान महात्मा सातयकि सुदर्शनका बध करके सारथीसे फिर बोले, हे प्यारे मित्र। जलसन्ध राजाकी सेना और राक्षस समान दूसरे अनेक सैनिक योद्धाओंसे परिपूरित रथ घोड़े और हाथियोंके समूहसे युक्त धनुष बाण और शक्ति रूपी तरङ्ग, तलवार रूपी मछरी, गदा रूपी ग्राह, शूरवीरोंके सिंहनाद और जुझाऊ बाजे रूपी महरके शब्दसे युक्त विजयको

इच्छा करनेवाले योद्धाओंसे परिपूर्ण महाभयङ्कर अगाध समुद्ररूपी द्रोणाचार्य्यकी सेनासे हम लोग पार होगये। इस बाकी जो सब सेनासे पार होना पड़ेगा, उन्हें थोड़े जलसे युक्त छोटी नदियोंके समान बोध करता हूं, तुम निर्भय चित्तसे इन सम्पूर्ण सेनाकी ओर रथ बढ़ाओ। पराक्रमी द्रोणाचार्य्य और योद्धाओंमें श्रेष्ठ कृतबर्म्माको उनके अनुयाइयोंके सहित पराजित करके इस समय मैं अपनेको अर्ज्जुनके समीप पहुंचा हुआ ही समझ रहा हूं। इस बहुतसी सेनाको देखकर मुझे तनिक भी भय नहीं होताहै; बल्कि ग्रीष्म ऋतुके समय जैसे जलती हुई अग्नि सूखे तृण काष्ठको भस्म कर देती है वैसे ही मैं इस सेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंको अपने बाणोंसे भस्म कर दूंगा। हे सारथी। यह देखो हाथी घोड़े रथ और मरे हुए पैदल सेनाके पुरुषोंके शरीरसे यह रणभूमि परिपूर्णहोकर भयङ्कर रूपसे दीख पड़ती है; यह अर्ज्जुनके तीक्ष्णबाणोंसे सब योद्धा मर कर पृथ्वीमें शयन कर रहे हैं। वह देखो जो सम्पूर्ण सेनाके योद्धा लोग दौड़ते हुए युद्धभूमिमें इधर उधर भाग रहे हैं; वह भी अर्ज्जुनकेहीके पराक्रमका फल है; और यह जो हाथी घोड़े रथ और पदातिसेनाके योद्धाओंके दौड़नेसे धूलि उड़ रही है वहीं अर्ज्जुनके सङ्ग कुरुसेनाके शूरवीरोंसे संग्राम होरहा है। यह सुनो महाप्रचण्ड गाण्डीव शब्द सुन पड़ता है; इससे बोध होता है कृष्ण सारथीके सहित श्वेतवाहन अर्ज्जुन समीपहीमें स्थित है। मेरे समीप सब शकुन दीख पड़ते हैं कि अर्ज्जुन सूर्य्य अस्त होनेके पहिले ही सिन्धुराज जयद्रथका वध करेंगे। हे सारथी! जहां पर दुर्य्योधनके अनुयाई कठोर कर्म्मोको करनेवाले वर्म्मधारण किये हुए धनुर्धारी अस्त्रचलानेमें निपुण काम्बोज यवन शक किरात दरद वर्व्वर तावलिप्तक और अनेक अस्त्र शस्त्रोको धारण करनेवाली म्लेच्छोंकी सेना मेरी ओर देखती हुई युद्धके निमित्त रणभूमिमें स्थित है, तुम सावधान होके घोड़ोंको अग्रसर्हित करते हुए उस ही ओर धीरे धीरे गमन करो। यह सम्पूर्ण रथी गजारोही घुड़सवार और पैदल सेनाके योद्धाओंका वध करके मैं अपनेको इस भयङ्कर दुर्ग (किला) से पार हुआ ही समझ रहा हूं।

सारथी बोला, हे सत्यपराक्रमी वृष्णिनन्दन सात्यकि। मैं जब तुम्हारी भुजासे रक्षित हूं, तब अत्यन्त क्रुद्ध जमदग्निके पुत्र परशुराम रथियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य अथवा मद्रराज शल्य भी यदि युद्धभूमिमें मेरे आगे स्थित होवे.तौभी मैं भयभीत नहीं हो सकूंगा। हे शत्रुनाशन। तुमने आज बहुतेरे योद्धाओंको युद्धभूमिमें पराजित किया है, उस समय भी मुझे तनिक भय नहीं बोध हुआ था; इस समय जो आपके सङ्ग छोटा छोटा युद्ध होगा, उसमें मुझे क्यों भय लगेगा? हे शत्रुनाशन! तुम्हें किस मार्गसे अर्ज्जुनके निकट लेचलें, तुम किसके ऊपर क्रुद्ध हुए हो? किसका मन आज यमपुरीमें जानेके वास्ते उत्सुक होरहा है? कौनसे योद्धा तुम्हें पराक्रमसे युक्त साक्षात यमराजके समान देखकर युद्धभूमिमें भागनेमें तत्पर होंगे। आज यमराज किसको स्मरण कर रहे है।

सात्यकिबोले,हे सारथी। जैसे इन्द्रने दानवोंका वध किया था वैसे ही आज मैं मुण्डित-सिर काम्बोजसेनाका संहार करूंगा, तुम उन योद्धाओंके समीप मेरे रथको लेचलो मैं अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करूंगा। आज मैं इस काम्बोज सेनाका नाश करके शीघ्र ही अर्ज्जुनके समीप गमन करूंगा। आज दुर्य्योधनके सहित सम्पूर्ण कौरव लोग मेरे बलपराक्रमको देखेंगे। आज मुण्डित सिरवाली सम्पूर्ण सेनाके शूरवीरोंका संहार होने पर तथा दूसरी सेनाके पुरुषों

नाश होने पर दुर्य्योधन जहां तहां भागते हुए इन कुरुसेनाके पुरुषोंका आर्त्त शब्द सुनकर दुःखित होवेगा। आज मैं संग्रामभूमिमें पाण्डवोंमें मुख्य श्वेतवाहन महात्मा आचार्य्य अर्ज्जुनको सिखाई हुई सम्पूर्ण अस्त्रशस्त्रोंकी विद्या समस्त योद्धाओंको दिखाऊंगा आज राजा दुर्य्योधन सहस्रों शूरवीरोंको मेरे अस्त्रोंसे मरते देख पश्चाताप करेंगे। आज मैं हस्तलाघवके सहित झुण्डके झुण्ड बाण चलाऊंगा। कौरव लोग आज मेरे धनुषको मण्डलाकार गतियुक्त कुम्हारके चाकके समान चारों ओर भ्रमण करते हुए अवलोकन करेंगे। आज सेनाके योद्धा लोगोंको मेरे बाणोंसे रुधिरपूरित शरीरसे युक्त होकर प्राण त्याग करते देख दुर्य्योधन दुःखित होवेगा। आज जब मैं क्रुद्ध होकर मुख्य मुख्य योद्धाओंका वध करने लगूंगा तब दुर्य्योधन समझेगा कि इस पृथ्वी पर दो अर्ज्जुन उपस्थित हैं। आज रणभूमिमें सहस्रों राजाओंको मेरे अस्त्रोंकी चोटसे मरते देख दुर्य्योधन पश्चाताप करेगा। आज मैं सहस्रों राजाओंका वध करके महात्मा पाण्डवोंके ऊपर अपने प्रेम और भक्तिको सम्पूर्ण राजाओंके समीप प्रकाशित करूंगा। आज कौरव लोग मेरे बलपराक्रम और पाण्डवोंके ऊपर मेरी कृतज्ञताको समझ सकेंगे।

सञ्जय बोले, सारथीने सात्यकिके ऐसे वचन सुनकर उत्तमशिखासे युक्त सफेद वर्णवाले घोड़ोंको शीघ्रताके सहित आगे बढ़ाये। वायु समान शीघ्र गमन करनेवाले घोड़ोंने मानो आकाश मार्गसे गमन करते हुए शीघ्रही यवन योद्धाओंके समीप सात्यकिको लाकर उपस्थित किया। उन सेनाके बीच बहुतेर युद्धसे पीठ न देनेवाले योद्धागण हस्तलाघवके सहित [illegible] सात्यकिको छिपा दिया [illegible] नाके सहित [illegible] नतपर्व्व [illegible] उन योद्धाओंके धनुष और दूसरे अस्त्र काट काट पृथ्वीमें गिराने लगे। उन योद्धाओंके चलाये हुए बाण सात्यकिके निकट पर्य्यन्त भी पहुंच न सके, उस समय सात्यकि प्रचण्ड रूपसे युक्त होकर स्वर्णपंख तथा गिद्ध पंखसे युक्त अपने तीक्ष्ण बाणोंसे उन योद्धाओंकी भुजा और सिरको काट काट गिराने लगे। सात्यकिके धनुषसे छूटे हुए वे सम्पूर्ण बाण सब योद्धाओंके लोहे और कांसेके वर्म्मको भेद करते हुए शरीरमें घुसकर पृथ्वीमें गिरने लगे। सैकड़ों म्लेच्छ योद्धा सात्यकिके बाणोंसे पीड़ित होकर प्राणत्याग हुए पृथ्वीमें गिरने लगे। वह कान पर्य्यन्त धनुष खींच कर झुण्डके झुण्ड बाण चलाते हुए एकबारमें पांच छः सात तथा आठ योद्धाओंका वध करने लगे। पुरुषसिंह सात्यकिके बाणोंसे मरके पृथ्वीमें गिरे हुए यवन काम्बोज किरात बर्ब्बर और पदातिक सेनाके योद्धाओंसे वह रणभूमि परिपूरित होगई। यदुकुल श्रेष्ठ सात्यकि इसीप्रकार यवन सेनाके योद्धाओंको पीड़ित करते तथा उनका वध करते हुए तुम्हारी सेनाका नाश करने लगे। सेनाके योद्धाओंके रुधिर और माससे वह रणभूमि कीचड़से युक्त होकर महाभयङ्कर दिखाई देने लगी। डाकु म्लेच्छोंके वस्त्र सहित उस रणभूमिमें इधर उधर गिर कर पंखरहित पक्षीके समान उनके मुण्डित सिरोंसे वह युद्धभूमि परिपूरित होगई। जैसे लालवर्णवाले बादलोंसे आकाश परिपूरित होकर शोभित होता है, वैसे ही रुधिरपूरित कबन्धोंके समूहसे वह प्रकाशित होने लगा। अनन्तर घोड़े और रथोंके सहित वह सम्पूर्ण सेना सात्यकिके पंखयुक्त वज्रके समान तीक्ष्णबाणोंसे नष्ट होकर पृथ्वीको परिपूर्ण करने लगी। महाराज! तुम्हारे उन वर्म्म धारण करनेवाले योद्धाओंके बीच थोड़े बहुत मरनेसे बाकी बचे योद्धा लोग सात्यकिके सम्मुखमें पराजित हुए; उन लोगोंका प्राण सङ्कटमें पड़ा; इसीसे वे सब भयभीत और

मोहित होकर रणभूमिमें भागने लगे। कोड़े और पांवके सहारेसे घोड़ोंको दौड़ा कर वे सम्पूर्ण योद्धा चारों ओर भागने लगे। पुरुषसिंह सत्यपराक्रमी सात्यकि काम्बोज यवन और शकदेशीय दुर्जय बहुत बड़ी सेनाको तितर बितर करके और तुम्हारी ओरके दूसरे और बहुतेरे योद्धाओंको पराजित करके आगे बढ़ानेके वास्ते फिर सारथीको उत्तेजित करने लगे। गन्धर्व्व और चारणोंने दूसरे पुरुषसे नहोने योग्य सात्यकिका पराक्रम देख उनको प्रशंसा किया। सात्यकि जब अर्ज्जुनकी पृष्ठरक्षा करनेके वास्ते गमन कर रहा था उस समय तुम्हारा सेनाके कोई भी पुरुष उसके सम्मुख खड़े न होसके।

११७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज! रथियोंमें श्रेष्ठ सात्यकि यवन और काम्बोज सेनाके योद्धाओंका पराजित कर तुम्हारी सेनाके बीच प्रवेश करके अर्ज्जुनके समीप जानेके वास्ते अगाड़ी बढ़ने लगा। जैसे व्याघ्र हरिणोंके झुण्डको गन्ध पाकर भयङ्कररूपसे गमन करता है, वैसे ही विचित्र कवच ध्वजा और बाणरूपी भयानक दाँतोंसे युक्त पुरुषसिंह सात्यकि तुम्हारी सेनाके पुरुषोंको भयभीत करता हुआ आगे गमन करने लगा। वह रथ पर चढ़के गमन करते हुए सुवर्ण चित्रित और सुवर्णमय मूंठसे युक्त महावेगशील धनुषको हाथमें लेकर फेरने लगे। उनके वर्म्म शिरस्त्राण कवच धनुष और ध्वजा ये सम्पूर्ण वस्तु सुवर्णमय थीं, इससे सुमेरुशृङ्ग समान रथ सहित महारथ सात्यकि प्रकाशित होने लगे। रणभूमिमें घूमता हुआ उनका मण्डलाकार धनुष शरद ऋतुके प्रकाशमान सूर्य्यके समान प्रकाशित होने लगा; इससे उस समय मानो दो सूर्य्य प्रकाशित हुए दीख पड़ते थे। वृषभस्कन्ध बड़े नेत्रवाले पराक्रमी सात्यकि तुम्हारी सेनाके बीच प्रवेश करते हुए इस भांति दिखाई देने लगे जैसे गौवोंके बीचमें वृषभ प्रवेश करता है। जैसे बहुतेरे व्याघ्र क्रुद्ध होकर एक मतवारे हाथीकी ओर दौड़ते हैं वैसे ही तुम्हारी ओरके योद्धा लोग मतवारे हाथीके समान गमन करनेवाले सात्यकिकी ओर दौड़े। द्रोणाचार्य्यकी सेना कृतबर्म्माकी सेना जलसन्धकी सेना और काम्बोज देशीय अगाधसमुद्रके समान अपरम्पार सेनासे जो सात्यकि पार हो गया है, वैसे पराक्रमी सात्यकिको तुम्हारी ओरके रथी लोग क्रुद्ध होकर चारों ओरसे घेर कर गमन करने लगे। जब सात्तकि आगाड़ी गमन कर रहा था, तब दुर्य्योधन चित्रसेन दुःशासन विविंशति शकुनि दुःसह दुर्म्मर्षण क्राथ और दूसरे बहुतेरे शस्त्रधारी सूरवीर रथी योद्धालोग क्रुद्ध होकर उसके पीछे पीछे दौड़े। उससे तुम्हारी सेनाके बीच मानों पर्व्वके दिन समुद्रकी लहर समान महाभयङ्कर शब्द होने लगा। शिनिपौत्र सात्यकि उन सम्पूर्ण योद्धाओंको अपनी ओर आते देख हंस कर सारथीसे यह वचन बोले, हे सारथी! धीरे धीरे रथ चलाओ, यह हाथी, घोड़े रथ और पैदल चलनेवाले शूरवीर पुरुषोंके सहित रथके शब्दसे सम्पूर्ण दिशा और आकाशको पूरित करती तथा समुद्रके सहित पृथ्वीको कपाती हुई दुर्य्योधनकी सेना मेरी ओर आरही है। हे तात! जैसे पूर्णमासीके दिन भयङ्कर तरङ्गसे युक्त समुद्रकी लहरको तट निवारण करता है वैसे हीं मैं इस समुद्रके समान महासेनाको निवारण करूंगा। इस महाघोर संग्राममें तुम मेरा इन्द्रके समान पराक्रम देखोगे मैं अपने चोखे बाणोंसे इस सम्पूर्ण शत्रुसेनाको भस्म कर दूंगा। तुम इस युद्धमें मेरे अग्नि-समान बाणोंसे हजारों पैदल चलनेवाले योद्धा घुड़सवार हाथी

और रथियोंकी क्षतविक्षत शरीरसे युक्त होते और अनेकोंको मरते हुए पृथ्वीमें गिरते देखेंगे। इसही समय सेनाके सम्पूर्ण योद्धा-लोग हर्षपूर्व्वक सात्यकिके समीप आपहुंचे। सम्पूर्ण योद्धा लोग आपसमें कहने लगे, मारो। दौड़ो। खड़ारह। मेरी ओर देख। जब सम्पूर्ण योद्धा इस प्रकार वचन कहने लगे उस ही समय सात्यकिने अपने तीक्ष्ण बाणोंसे उस सेनाके बीचसे मुख्य मुख्य तीन सौ योद्धाओं और चार सौ हाथियोंका वध किया। उन सम्पूर्ण योद्धाओंके सङ्ग देवासुर युद्धके समान सात्यकिका महाघोर भयङ्कर युद्ध होने लगा। सात्यकि बादलकी घटा समान तुम्हारे पुत्रकी उस महासेनाको अपने तीक्ष्ण बाणोंके समूहसे निवारण करने लगे। ऐसा क्या सात्यकिने उस समय तुम्हारी ओरके कितने ही मुख्य मुख्य योद्धाओंका वध किया। उस समय मैंने सात्यकिका यह आश्चर्यमय पराक्रम देखा कि उसके धनुषसे छुटे हुए एक बाण भी निष्फल न गये। रथ घोड़े और हाथी रूपी जलसे युक्त पदाति रूपसे पूरित वह महासेना रूपी समुद्र सात्यकि रूपी तटसे निवारित होने लगा। तुम्हारी रथ हाथी घोड़ोंसे युक्त वह महासेना सात्यकिके बाणोंसे पीड़ित और भयभीत होके बार बार युद्धभूमिमें भ्रमण करती हुई उनके निकट उपस्थित होने लगी। जैसे गौवोंका समूह सिंहको देखकर आर्त्तहोके चारो ओर भ्रमण करता है वैसे ही रथी घुड़सवार गज-सवार पैदल सेनाके योद्धा लोग सात्यकिके बाणोंसे पीड़ित होकर इधर उधर भ्रमण करने लगे। उस रणभूमिके बीच रथी गजसवार और घुड़सवार और मैंने ऐसे किसी पुरुषको भी नहीं देखा जो सात्यकिके बाणोंसे विद्ध न हुआ हो। ... सात्यकि जिस प्रकार सेनाका ... अर्जुनने उस प्रकारसे सेनाको ... किया था। शिनिपौत्र सात्यकि निर्भय चित्तसे हस्तलाघवके सहित अपनी कृतास्त्रता दिखाते हुए अर्जुनसे भी बढ़के युद्धमें पराक्रम प्रकाशित करने लगा। तिसके अनन्तर राजा दुर्य्योधनने तीन बाणोंसे सात्यकिके सारथी चार बाणोंसे उनके रथके चारों घोड़ों और तीन बाणोंसे सात्यकिको विद्ध करके फिर आठ बाणोंसे विद्ध किया। अनन्तर दुःशासनने सोलह शकुनिने पचीश चित्रसेन सात और दुःसहने पांच बाणोंसे सात्यकिके वक्षस्थलमें प्रहार किया। वृष्णिवंशिय पुरुषसिंह सात्यकिने इसी भांति उन महारथियोंके बाणोंसे विद्ध होकर हंसते हुए उन लोगोंको तीन तीन बाणोंसे विद्धकिया। महातेजस्वी शिनिपौत्र सात्यकिने शत्रुओंको अत्यन्त चोखे बाणोंसे विद्ध करके बाजपक्षीकी भांति रणभूमिमें भ्रमण करते हुए शकुनिके धनुष और अंगुलित्राणको काट दिया। अनन्तर सात्यकिने तीन बाणोंसे दुर्य्योधनके दोनों स्तनोंके बीच प्रहार किया। और चित्रसेनको एक सौ दुःसहको दश और दुःशासनको बीस बाणोंसे विद्ध किया। तुम्हारे साले शकुनिने दूसरा धनुष ग्रहण कर सात्यकिको आठ बाणोंसे विद्ध करके फिर पांच बाणोंसे विद्ध किया। अनन्तर दुःशासनने दश दुःसहने तीन और दुर्म्मुखने बारह बाणोंसे सात्यकिको विद्ध किया। दुर्य्योधनने तिहत्तर बाणोंसे सात्यकिको विद्ध करके फिर तीन बाणोंसे उसके सारथीको विद्ध किया। तिसके अनन्तर सात्यकिने उन इकट्ठे हुए सम्पूर्ण महारथियोंको पांच पांच बाणोंसे फिर विद्ध कर दुर्य्योधनके सारथीका एक भल्लसे वध करके पृथ्वीमें गिरा दिया। जब वह सारथी मारा गया तब वायुके समान गमन करनेवाले घोड़े उनके रथको खींचते हुए रणभूमिसे पृथक हुए। तुम्हारे पुत्र लोग और सेनाके सैकड़ो शूरवीर पुरुषोंने राजा दुर्य्योधनको ऐसी दशा देख सात्यकिकी ओर दौड़े। सात्यकिने

उस महासेनाके शूरवीरोंको अपनी ओर दौड़े आते देखकर शिलापर घिसे हुए रुक्म पंखवाले तीक्ष्णबाणोंसे उन सम्पूर्ण योद्धाओंको छिपा दिया, अनन्तर सम्पूर्ण सेनाके योद्धाओंको चारो ओर तितर बितर करते हुए सात्यकिने अर्ज्जुनके रथके समीप जानेके वास्ते वहांसे प्रस्थान किया। तुम्हारी ओरके योद्धाओंने सारथीकी रक्षा, बाण ग्रहण करके शत्रुओंकी ओर चलाना और अपनेको सङ्कटसे मुक्त करना आदि कठिन कर्म्मोंको देखकर सात्यकिकी अत्यन्त प्रशंसा किया।

११८ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! सात्यकिको उस बड़ी सेनाको तितर बितर करके गमन करते देख मेरे निर्लज्ज पुत्रोंने क्या किया! अर्ज्जुनके समान पराक्रमी सात्यकिको युद्धभूमिमें पाकर उस समय उन लोगोंने किस प्रकारसे धीरज धारण किया। मेरे पुत्र और दूसरे क्षत्रिय योद्धाओंने युद्धभूमिमें सात्यकिके सम्मुख पराजित होके उस समय कौनसा कार्य्य किया? महायशस्वी सात्यकि भी किस भांतिसे उस युद्धभूमिमें मेरी सेनाको अतिक्रम करके आगे बढ़ा? यह सम्पूर्ण वृत्तान्त मेरे समीप तुम विस्तार पूर्व्वक वर्णन करो। हे तात! मैंने तुम्हारे मुखसे अत्यन्त आश्चर्य्यमय वृत्तान्त सुना है, कि अनेक महारथियोंके सङ्ग एक ही पुरुषका युद्ध हुआ था, और उस युद्धमें जो सात्यकिने अकेलेही मेरे पुत्रोंको पराजित किया है; इसे मैं समयकी उलटी गति समझता हूं; हे सञ्जय! सम्पूर्ण पाञ्चालोंकी बात तो दूर रहो, मेरी सम्पूर्ण सेना केवल एक सात्यकिके सम्मुखमें नहीं ठहर सकती है। सात्यकि युद्ध दुर्म्मद सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्रके जाननेवाले द्रोणाचार्य्यको पराजित करके मेरे पुत्रोंको इस प्रकार पीड़ित कर रहा है, जैसे पशुपालक पशुओंको पीड़ित करते हैं। जिसे कृतवर्म्मा आदि अनेक शूरवीर यत्नवान होकर भी युद्धभूमिमें पराजित न कर सके, वह जो मेरे पुत्रोंको पराजित करेगा, इसमें कौनसा सन्देह है! महा यशस्वी शिनिपौत्र सात्यकिने जैसे युद्ध किया है, वैसा संग्राम अर्ज्जुनने भी नहीं किया था।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र! दुर्य्योधनकी दुष्ट नीति और तुम्हारे अविचारसे मनुष्य, घोड़े और हाथियोंके नाश रूपी जैसा सग्राम हुआ था, उसे मैं वर्णन करता हूं तुम सुनो। तुम्हारी ओरकी सेना आज्ञानुसार युद्धमें दृढ़ता और कठोर बुद्धि अवलम्बन कर तथा आपसमें प्रतिज्ञा करके फिर सात्यकिकी ओर लौटी। तीन हजार घुड़सवार, शक, काम्बोज, बाहीक, यवन, पारद, कुलिन्द, तङ्गन अम्बष्ठ, पैशाच, मन्दर, पत्थर ग्रहण करनेवाले पहाड़ी योद्धा और दूसरे पाच सौ शूरबीर, योद्धालोग दुर्य्योधनको आगे करके इस प्रकार सात्यकिकी ओर दौड़े जैसे फतिङ्गोंका समूह अग्निकी ओर दौड़ता है। एक हजार रथी, एक सौ महारथी, एक हजार हाथी, दो हजार घुड़सवारोंके महारथी योद्धालोग और बहुतेरे पैदल चलनेवाले योद्धाओंने अपने नाना भांतिके अस्त्र शस्त्रोंकी वर्षा करके सात्यकिको आक्रमण किया। दुःशासनने "सात्यकिका वध करो," ऐसे ही वचनोंको कहके अपनी सेनाके पुरुषोंको उत्तेजित करते हुए सात्यकिको चारों ओरसे घेर लिया। उस स्थलमें मैंने सात्यकिका यह अद्भुत कार्य्य देखा, कि वह अकेलेही युद्ध करने लगा। ऐसा क्या, सात्यकिने रथ सेना, गजसवार घुड़सवार, सम्पूर्ण डाकुओंकी सेना और पैदल सेनाके योद्धाओंमेंसे बहुत पुरुषोंका वध किया टूटे हुए रथके चक्के, अस्त्र शस्त्र, बाण, रथकी धुरी, रथके दण्ड, टूटे हुए रथ, ध्वजा, वर्म्म

ढाल और इधर उधर टूटके गिरे हुए माला आभूषण, वस्त्र और रथके नीचेके काठ आदि वस्तुओंसे पृथ्वी मानो तारोंसे युक्त आकाशकी भांति परिपूरित होकर प्रकाशित होने लगी। अञ्जन वामन, सुप्रतीक महापद्म और ऐरावत हाथियोंके वंशमें उत्पन्न हुए बहुतेरे पर्व्वतके समान मतवारे हाथी मर कर पृथ्वीमें शयन करने लगे। सात्यकिने वानायुज, पर्व्वतीय काम्बोज और वाह्लीक देशीय उत्तम घोड़ोंका वध किया, और दूसरे देशोंसे आये हुए नाना जातिके पैदल गमन करनेवाले सैकड़ों सहस्रों योद्धाओंका संहार किया। मरनेसे बचे हुए योद्धाओंको तितर बितर होके इधर उधर भागते देख, तुम्हारे पुत्र दुःशासन उन दस्यु जाति योद्धाओंसे बोले, "हे अधार्म्मिक पुरुषो! भागनेकी क्या आवश्यकता है, लौट कर युद्ध करो।" अनन्तर पत्थरकी युद्धमें निपुण पहाड़ी पाषाण योद्धाओंको भी भागते देखके दुःशासन उन लोगोंसे बोले, "युद्धकी इच्छा करनेवाला सात्यकि पाषाण युद्ध नहीं जानता, सम्पूर्ण कौरव लोग भी पाषाण युद्ध नहीं जानते। इससे तुम लोग सात्यकिका वध करो, उसकी ओर दौड़ो, कुछ भी भय मत करो। वह तुम लोगोंको अपने वाणोंके सम्मुखमें ही न प्राप्त कर सकेगा।

महाराज! जैसे मन्त्री लोग राजाके समीप गमन करते हैं, वैसे ही सम्पूर्ण पाहाड़ी पाषाण योद्धाओंने हाथमें पत्थरके टुकड़ोंको ग्रहण कर सात्यकिके समीप गमन किया। वे सम्पूर्ण योद्धा लोग तुम्हारे पुत्र दुःशासनकी आज्ञासे मतवार हाथियोंके समान पत्थरोंके टुकड़ोंको उठा कर सात्यकिके सम्मुख रणभूमिमें खड़े हुए और दूसरे अनेक प्रकारकी शस्त्र अस्त्र ग्रहण करके सात्यकिके वध करनेकी इच्छासे तैयार होके उन्हें चारों ओरसे घेर लिया। परन्तु शिक्षायुक्त करनेकी इच्छासे उन लोगोंको सम्मुख उपस्थित होते देख, सात्यकिने उनकी ओर तीस वाण चलाये, वे योद्धा लोग भी सात्यकिके ऊपर पत्थरोंकी वर्षा करने लगे। परन्तु शिनिपौत्र सात्यकि सर्पके समान अपने तीक्ष्णवाणोंसे उन योद्धाओंके चलाये हुए पत्थरोंको शिलाकी टुकड़े टुकड़े करके पृथ्वीमें गिराने लगे। उन योद्धाओंके चलाये हुए शिलाखण्ड सात्यकिके वाणोंसे टुकड़े टुकड़े होकर खद्योत समूहके समान प्रकाशित होकर उन्हीं लोगोंकी सेनाके पुरुषोंका नाश करने लगे; उनसे सेनाके बीच महा हाहाकार शब्द उत्पन्न हुआ। उन योद्धाओंके बीच पांच सौ योद्धाओंकी भुजा पत्थरोंकी शिलाके सहित सात्यकिके वाणोंसे कटके पृथ्वीमें गिर पड़ीं, और वे योद्धा लोग भी मरके पृथ्वीमें गिर पड़े। फिर एकलाख एक हजार पाषाणयुद्ध करनेवाले योद्धा लोग हाथमें पत्थरोंकी शिला ग्रहण करके सात्यकिकी ओर दौड़े; परन्तु समीपमें न पहुंचते ही सात्यकिने पाषाण शिलाके सहित उनकी भुजाओंको अपने तीक्ष्णवाणोंसे काट कर पृथ्वीमें गिरा दिया, वे सम्पूर्ण योद्धा भी पृथ्वीमें गिर पड़े। इसी प्रकार सात्यकिने यत्नवान होकर युद्धभूमिमें कई हजार पाषाणधारी योद्धाओंका वध किया, वह सात्यकिका कार्य्य अद्भुत रूपसे दीख पड़ा तिनमें वे सम्पूर्ण दरद, तङ्गन खश, लम्पाक और कुलिन्द सेनाके योद्धा लोग लोह और त्रिशूल हाथमें लेकर युद्धभूमिमें फिर स्थित हुए, और चारों ओरसे सात्यकिके ऊपर पत्थरोंकी वर्षा करने लगे। युद्धके सम्पूर्ण कार्य्योंके जानने वाले सात्यकि अपने तीक्ष्ण वाणोंको चलाकर उन योद्धाओंको विद्ध करने लगे। उन योद्धाओंके चलाये हुए पत्थरोंके टुकड़े सात्यकिके वाणोंसे आकाश मार्ग होमें कट कर पृथ्वीमें गिरते हुए दिखाई देने लगे। उन गिरते हुए पत्थरोंके शब्दसे हाथी,

और पैदल सेनाके योद्धा लोग इधर उधर दौड़ने लगे और सात्यकिके बाणोंसे चूर चूर होकर वे सम्पूर्ण पत्थरके टुकड़े रथी और मनुष्योंके ऊपर गिर कर उन्हें इस प्रकार पीड़ित करने लगे, जैसे भौरोंका झुण्ड किसीके ऊपर गिरके उसे अपने डङ्कसे पीड़ित करता है। उससे वे लोग रणभूमिमें खड़े होनेमें भी समर्थ न हुए कितने ही चत बिचत शरीरसे युक्त रुधिरसे परिपूरित हाथी उस समय सात्यकिके रथके निकटसे भागने लगे। जैसे पूर्णमासीके दिन समुद्रकी लहरका भयङ्कर शब्द होता है, सात्यकिके बाणोंसे पीड़ित तुम्हारी सेनाके योद्धाओंके दौड़नेके समयमें वैसाही महाघोर शब्द सुनाई देने लगा।

हे राजेन्द्र! द्रोणाचार्य्य उस तुमुल शब्दको सुनकर अपने सारथीसे बोले, यह यदुवंशियोंमें महारथी सात्यकि युद्धभूमिमें क्रुद्ध होकर सेनाके पुरुषोंको नाना प्रकारसे तितर करते हुए कालकी भांति भ्रमण कर रहा है, जहां पर यह तुमुल शब्द होरहा है तुम उसही स्थानमें मेरे रथको लेचलो, मुझे निश्चय होता है सात्यकि पाषाण योद्धाओंके सङ्ग युद्ध कर रहा है। बहुतेरे रथियोंको उनके रथके घोड़े इधर उधर रथको खींचते हुए भ्रमण कर रहे हैं। रथी लोग शस्त्र कवचसे रहित और सात्यकिके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर इधरउधर गिर रहे हैं, इस तुमुल युद्धमें सारथी लोग रथके घोड़ोंको स्थिर नहीं कर सकते हैं।

शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यके वचनको सुनकर उनका सारथी उनसे बोला, हे शत्रु-नाशन। देखिये इधर कौरवोंकी सेना चारों ओर छिन्न भिन्न होकर भाग रही है योद्धा लोग युद्धभूमिमें बाणोंसे पीड़ित होकर इधर उधर दौड़ रहे हैं, और दूसरी ओर पाण्डव तथा पाञ्चाल योद्धा लोग तुम्हारे वधकी अभि-लाष करके चारों ओरसे बढ़े आते हैं। हे शत्रु-नाशन! इससे तुम्हें इस स्थान पर रहना व सात्यकिके निकट जाना उचित है; उसे आ अच्छी भांति बिचार करके निश्चय कीजि सात्यकि भी बहुत दूर तक सेनाके बी चला गया है। द्रोणाचार्य्यके सङ्ग जब सार थीसे इस प्रकार बात चीत होरही थी, उस ई समय सात्यकिने तुम्हारी ओरके अनेक रथियोंक वध किया। कितने ही रथी सात्यकिके बाणों चत बिचत शरीर हो उसके रथको त्याग क द्रोणाचार्य्यकी सेनाकी ओर शीघ्रतासे गमन करने लगे; और पहिले दुःशासन जिन सम्पूर्ण रथियोंको सङ्ग लेकर सात्यकिके रथके समीप उपस्थित हुए थे; वे सम्पूर्ण रथी लोग सात्यकिके अस्त्रोंसे भयभीत होकर द्रोणाचार्य्यके रथके समीप आकर उपस्थित हुए।

११९ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! भरद्वाजपुत्र द्रोणा-चार्य्य अपने समीपमें दुःशासनके रथको स्थित देख, उनसे यह बचन बोले, हे दुःशासन! ये सम्पूर्ण महारथी योद्धा लोग क्यों भाग रहे हैं? राजा दुर्य्योधनके विषयमें मङ्गल तो हैं! सिन्धु राज जयद्रथ तो जीवित हैं न? तुम राजाके पुत्र राजाके भाई महारथी औरयुबराज होकर क्यों युद्धसे भागते हो? तुमने पहिले द्रौपदीको पुकारके कहा था "तुम्हारे स्वामी तुम्हें जुएमें दाव पर पण (बाजी) रखके जूएमें हार गये हैं इससे तुम हमारे जेठे भाई राजा दुर्य्यो धनकी इच्छाके अनुसार कार्य्य करनेवाली और वस्त्र ढोनेवाली दासी बनो। इस समय पाण्डव लोग तुम्हारे पति नहीं हैं, वे सब इस समय षण्डतिलके समान होगये हैं। तुम उस समय ऐसा बचन कहके इस समय क्यों युद्धभूमिसे भाग रहे हो? तुमने स्वयं पाण्डव और पाञ्चाल योद्धाओंके सङ्ग महाघोर शत्रुता उत्पन्न किया

है, इस समय अकेले सात्यकिके सङ्ग युद्ध करनेमें क्यों भयभीत हो रहे हो! पहिले जूएकी विजयके समयमें पासेको ग्रहण करके तुम नहीं जान सकेथे कि येही पासे भविष्यमें भयङ्कर सर्पके समान वाण रूपसे दीख पड़ेंगे? पहिले तुमहीने पाण्डवोंके अनेक अप्रिय और कठोर वचन कहे थे और तुम्हीं द्रौपदीके क्लेशके मूल हुए थे। हे वीर! इस समय तुम्हारा वह मान और घमण्ड कहां गया! और तुम्हारा उस समयका गर्ज्जन क्या हुआ! तुम सर्पके समान क्रोधी पाण्डवोंको कोपित करके इस समय कहां गमन करोगे! जब तुम राजा दुर्य्योधनके भाई होके उसके ऊपर दयारहित होकर युद्धसे भाग रहे हो तब यह सम्पूर्ण कुरुसेना और राजा दुर्य्योधन शोकके विषय हुए हैं, इसमें कुछ सन्देह नहीं है। आशा थी कि सेनाके भयभीत और आतुर होने पर तुम उसकी रक्षा करोगे, उसे न करके तुम युद्धभूमिसे भाग कर शत्रुओंके हर्षको बढ़ा रहे हो। हे शत्रुनाशन! तुम सेनापति होकर जब युद्धभूमिसे भाग रहे हो, तब तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग भयभीत होजावेंगे, इससे कौन पुरुष तुम्हारे भागने पर युद्धभूमिमें स्थित रह सकेगा? आज अकेले सात्यकिके सम्मुख ही तुम्हारी बुद्धि युद्धभूमिसे भागने में तत्पर हुई है; परन्तु जब तुम गाण्डीव धनुर्द्धारी अर्जुन भीमसेन नकुल सहदेवको युद्धभूमिमें देखोगे तब उस समय क्या करोगे? इस सात्यकिके छिन्न सम्पूर्ण वाणोंको देखकर युद्धभूमिसे भाग रहे हो। ये सब वाण अर्जुनके वाण समान [illegible] नहीं है, अर्जुनके वाण सूर्य्य और अग्निके समान तेजस्वी हैं इससे यदि भागने में बुद्धि हुई है तो धर्मराज युधिष्ठिरके [illegible] करके तुम उन्हें पृथ्वीका राज्य प्रदान करो। पहिले भीष्मने तुम्हारे भाई दुर्य्योधनसे कहा था, जब तक अर्जुनके धनुषसे छूटे हुए वाण तुम्हारे लोगोंके शरीरमें प्रवेश नहीं करते हैं, उस ही समयके बीच तुम पाण्डवोंके सङ्ग सन्धिकर लो, जब तब महात्मा पाण्डव लोग तुम्हारे एक सौ भाइयोंको मार कर पृथ्वी आक्रमण नहीं करते हैं, तभी तक तुम पाण्डवोंसे सङ्ग सन्धि करो। जबतें महाबाहु भीमसेनाको छिन्न भिन्न करके तुम्हारे सहोदर भाइयोंको पराजित नहीं करते हैं, तभी तक तुम पाण्डवोंके सङ्ग सन्धि कर लो। जब तक धर्म्मपुत्र राजा युधिष्ठिर और युद्धमें प्रशंसित कृष्ण क्रुद्ध नहीं होते हैं तभी तक पाण्डवोंके सङ्ग सन्धि होनी उचित हैं। पाण्डव लोग युद्धमें अजेय हैं इससे तुम पाण्डवोंके सङ्ग सन्धि करो। तुम्हारे भाई नीच वुद्धि दुर्य्योधनने भीष्मके इन वचनोंको नहीं माना, इससे तुम रणभूमिके बीच धीरज धारण कर यत्न पूर्व्वक युद्ध करो। जहां पर सात्यकि युद्ध कर रहा है उस ही स्थानमें रथ पर चढ़के शीघ्रताके सहित गमन करो। यह सम्पूर्ण सेना तुम्हें न देखकर युद्धभूमिसे भाग जावेगी। तुम अपने अनुयाई योद्धाओंके उत्साहको बढ़ानेके वास्ते सात्यकिके सङ्गमें युद्ध करो; जब द्रोणाचार्य्य तुम्हारे पुत्र दुःशासनसे यह वचन बोले तब उन्होंने कुछ भी उत्तर न देकर द्रोणाचार्य्यकी बातोंको सुनके सात्यकि जिस ओर गमन कर रहा था उस ही ओर गमन करने लगे। वह युद्धभूमिमें पीछे न हटने वाली म्लेच्छोंकी सेना सङ्ग लेकर सात्यकिके समीप पहुंचके उसके सङ्ग युद्ध करने लगे। रथियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य भी अत्यन्त क्रुद्ध होकर मध्य वेगके सहित पाण्डव और पाञ्चाल योद्धाओंकी ओर दौड़े। उन्होंने पाञ्चाल सेनाके बीच प्रवेश करके सैकड़ों सहस्रों योद्धाओंको तितर बितर कर दिया। अनन्तर द्रोणाचार्य्य अपना नाम सुनाकर रणभूमिके बीच पाण्डव पाञ्चाल और मत्स्य देशीय योद्धाओंका

बध करने लगे। द्रोणाचार्य्यको इधर उधर सम्पूर्ण सेनाके योद्धाओंको बिड़ारते देख पाञ्चाल राजके पुत्र वीरकेतुने उन्हें आक्रमण किया। उन्होंने पांच नतपर्व्व बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको विद्ध करके एक बाणसे उनके रथकी ध्वजा और सात बाणोंसे उनके सारथीको विद्ध किया। उस युद्धमें मैंने वीरकेतुका यह अद्भुत पराक्रम देखा कि द्रोणाचार्य्य ऐसे वेगशील होकर भी पाञ्चाल वीरकेतुके आगे न खड़े हो सके। राजा युधिष्ठिरके विजयकी इच्छा करनेवाले पाञ्चाल योद्धाओंने द्रोणाचार्य्यको वीरकेतुके सम्मुखमें रुके हुए देख उन्हें चारों ओरसे घेर लिया। अनन्तर उन सम्पूर्ण योद्धाओंने अकेले द्रोणाचार्य्यको चारों ओरसे घेरकर अग्निके समान तेजस्वी अनेक बाण-तोमर और दूसरे नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंसे छिपा दिया, अनन्तर जैसे एक ही प्रचण्ड वायु आकाशमें बादलोंको तितरबितर कर देता है वैसे ही द्रोणाचार्य्य अकेले ही उन सम्पूर्ण योद्धाओंके चलाये हुए अस्त्रशस्त्रोंको अपने बाणोंसे काटकर युद्धभूमिमें प्रकाशित होने लगे। तिसके अनन्तर शत्रुनाशन द्रोणाचार्य्यने सूर्य्य तथा अग्निके समान तेजस्वी एक महा वेगशील बाण धनुषपर चढ़ाकर वीरकेतुके रथकी ओर चलाया। हे भारत! द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छूटा हुआ जलती हुई अग्निके समान प्रकाशमान वह भयङ्कर बाण पाञ्चालराजपुत्र वीरकेतुके शरीरको शीघ्रताके सहित भेदकर रुधिर पीता हुआ पृथ्वीमें घुस गया। उसी बाणकी चोटसे पाञ्चालराजपुत्र वीरकेतु मरके इस प्रकार अपने रथसे पृथ्वीपर गिरे जैसे पर्व्वतके शृङ्गपरसे वायुके झोंकेसे टूटके चम्पाका वृक्ष गिर पड़ता है। महाराज! महाधनुर्द्धारी पाञ्चालराज पुत्रके मरनेपर पाञ्चालयोद्धाओंने शीघ्रताके सहित द्रोणाचार्य्यको चारों ओरसे घेर लिया। चित्रकेतु सुधन्वा चित्रवर्म्मा और चित्ररथ ये चारों वीर भा शोकसे कातर होकर आपसमें मिलके व कालके बादलोंकी भांति अपने बाणोंकी करते हुए द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। द्विजश्र द्रोणाचार्य्य उन राजपुत्रोंके बाणोंसे जहां त विद्ध होकर उनके संहार करनेके वास्ते क्र होकर उन चारोंके ऊपर अपने बाणोंकी व करने लगे। वे राजपुत्र लोग द्रोणाचार्य्य बाणोंसे पीड़ित होकर व्याकुल होगये। मह बल द्रोणाचार्य्यने हंसते हंसते उन चेतरहि राजपुत्रोंको घोड़े सारथी और रथसे रहि कर दिया। अनन्तर अपने तीक्ष्ण बाणोंसे उ लोगोंके सिरको इस प्रकारसे काटके पृथ्वी गिरा दिया जैसे माली फूले हुए वृक्षसे फू तोड़ गिराता है। जैसे देवासुर युद्धमें दै दानव मरके रणभूमिमें गिरे थे वैसे ही तेजस्वी राजपुत्र मरकर अपने रथोंके ऊपर पृथ्वीमें गिर पड़े। महाराज! भरद्वाजपु द्रोणाचार्य्य रणभूमिमें उन राजपुत्रोंका व करके अपने सुवर्णभूषित प्रचण्ड धनुषको फेरते हुए चारों ओर भ्रमण करने लगे। धृष्टद्यु देवतोंके समान पराक्रमी पाञ्चालराजपुत्र योद्धाओंको मरते देख दोनों आंखोंसे आंसूकी धारा बहाते हुए अत्यन्त क्रुद्ध होकर शीघ्रताके सहित द्रोणाचार्य्यके समीप गमन करके उनके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। तिसके अनन्तर द्रोणाचार्य्यको धृष्टद्युम्नके बाणोंसे सहसा छिपे हुए देख तुम्हारी सेनाके बीच महा हाहाकार शब्द उत्पन्न हुआ। परन्तु द्रोणाचार्य्य महात्मा धृष्टद्युम्नके अनेक बाणोंसे छिपकर भी पीड़ित नहीं हुए। बल्कि हंसकर उनके सङ्ग युद्ध ही करने लगे। महाराज! पाञ्चालपुत्र धृष्टद्युम्न क्रोधमें भरकर नौ बाणोंसे द्रोणाचार्य्यका वक्षस्थल विद्ध किया। महाराज! द्रोणाचार्य्य उन बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित और मूर्च्छित होकर रथमें बैठ गये। महाराज!

बलवान धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यको मूर्च्छित देख शीघ्र ही धनुष त्याग कर ढाल तलवार ग्रहण किया और क्रोधसे लालनेत्र कर द्रोणाचार्य्यके सिरको काटनेकी इच्छासे शीघ्र ही अपने रथसे कूद कर द्रोणाचार्य्यके रथ पर चढ़ गये। अनन्तर महाबलवान द्रोणाचार्य्यने सावधान होकर धृष्टद्युम्नको अपने समीप आया देख जिन बाणोंसे समीपहीमें स्थित शत्रुओंके सङ्ग सदा मर्य्यादा युद्ध किया जा सकता है बारह अंगुलके परिमाणवाले उन ही बाणोंसे महारथी धृष्टद्युम्नको विद्ध करने लगे। वितस्तिक नाम निकटवेधी वे सम्पूर्ण बारह अंगुलके परिमाणवाले बाण द्रोणाचार्य्यको विदित थे; उन्हीं बाणोंसे वह धृष्टद्युम्नको पीड़ित करने लगे। महारथी महाबलवान पराक्रमी धृष्टद्युम्न अनेक वितस्तिक बाणोंसे पीड़ित होकर शीघ्रता पूर्व्वक द्रोणाचार्य्यके रथसे कूदे और दौड़के अपने रथ पर जाचढ़े; फिर धनुष बाण ग्रहण करके महारथ धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे। द्रोणाचार्य्य भी महाबली पराक्रमी महारथी धृष्टद्युम्नको अपने अनेक बाणोंसे विद्ध करने लगे। जैसे तीनो लोकके राज्यकी अभिलाष करके इन्द्र और प्रह्लादने आपसमें युद्ध किया था वैसे ही उन दोनो पुरुषसिंहोका अद्भुत संग्राम होने लगा। युद्ध कार्य्यको जाननेवाले द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्न युद्धभूमिमें विचित्र मण्डलाकार गति यमक और दूसरी अनेक भांतिकी गति दिखाके भ्रमण कर युद्ध देखनेवाले पुरुषोंको मोहित करते हुए आपसमें एक दूसरेके ऊपर अपने बाणोंसे प्रहार करने लगे। वे दोनो महात्मा वर्षाकालके दो बादलोंकी भांति अपने बाणोंकी वर्षा करके आकाश तथा और सम्पूर्ण दिशाओंको परिपूरित करने लगे। आकाश स्थित प्राणी और पृथ्वी पर स्थित सम्पूर्ण क्षत्रिय योद्धालोग तथा युद्ध देखनेवाले सम्पूर्ण पुरुष उनके अद्भुत संग्रामको देखकर उन दोनों पुरुषसिंहोंकी प्रशंसा करने लगे। पाञ्चाल योद्धा लोग आपसमें कहने लगे, जब धृष्टद्युम्नके सङ्ग द्रोणाचार्य्य युद्ध कर रहे हैं, तब अवश्यही हमलोगोंके वशमें हो जावेंगे।" ऐसे वचनोंको कहते हुए पाञ्चाल योद्धा ऊंचे स्वरसे सिंहनाद करने लगे। परन्तु द्रोणाचार्य्यने शीघ्रताके सहित पके फल तोड़नेकी भांति धृष्टद्युम्नके सारथीका सिर काटके उसे पृथ्वीमें गिरा दिया। तिसके अनन्तर महात्मा धृष्टद्युम्नके रथके घोड़े सारथीसे रहित होकर उनके रथको लेकर वहांसे दौड़े। अनन्तर महापराक्रमी द्रोणाचार्य्य पांचाल और सृञ्जय योद्धाओंको इधर उधर तितर बितर करने लगे। महाप्रतापी पराक्रमी द्रोणाचार्य्य इसी प्रकार पाण्डव और पांचाल योद्धाओंको पराजित करके फिर अपने व्यूहकी रक्षा करते हुए उस व्यूहके दरवाजे पर स्थित हुए।

१२० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! तिसके अनन्तर कुरुकुल श्रेष्ठ दुःशासन नाना देशीय रथियोंकी बड़ी सेना लेकर, बादलके शब्द समान दशों दिशाकी सेनाके शूरवीर पुरुषोंके सिंहनादसे परिपूरित करते और अनेक बाणोंको सात्यकिकी ओर चलाते हुए वेगपूर्व्वक उनकी ओर दौड़े। महाबाहु सात्यकिने भी कुरुश्रेष्ठ दुःशासनको अपनी ओर आते देख, उनके सम्मुख जाके उन्हें अपने बाणोंसे छिपा दिया। दुःशासनके अनुयायी वे सम्पूर्ण शूरवीर योद्धा लोग सात्यकिके बाणोंसे पीड़ित होकर भयभीत हुए और दुःशासनके सम्मुख हीमें रणभूमिसे भागने लगे। परन्तु तुम्हारे पुत्र दुःशासन सम्पूर्ण सेनाके पुरुषोंके भागने पर भी स्वयं रणभूमिमें

स्थित ही रहे, और सात्यकिको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे पीड़ित करने लगे। उन्होंने चार बाणोंसे सात्यकिके रथके चारों घोड़े, तीन बाणोंसे उनके सारथी और एक बाणसे सात्यकिको विद्ध करके सिंहनाद किया। महाराज! तिसके अनन्तर यदुकुलभूषण सात्यकिने क्रुद्ध होकर रथ, सारथी और ध्वजाके सहित दुःशासनको अपने बाणोंसे छिपा दिया। अनन्तर पराक्रमी दुःशासनने शीघ्रताके सहित सात्यकिको अपने बाणोंसे छिपा दिया।

राजा दुर्य्योधनने दुःशासनको सात्यकिके बाणोंसे पीड़ित देखकर त्रिगर्त्तदेशीय सेनाको उनके रथके निकट भेज दिया। कठिन पराक्रम प्रकाशित करने वाले तीन हजार त्रिगर्त्तदेशीय रथियोंने सात्यकिके रथके समीप गमन किया। उन लोगोंने युद्धमें स्थिर-बुद्धि तथा पीछे न हटनेकी आपसमें प्रतिज्ञा करके चारों ओरसे अपने रथोंके समूहसे सात्यकिको घेर लिया। वे सम्पूर्ण योद्धा लोग यत्नपूर्व्वक सात्यकिके रथपर अपने बाणोंकी बर्षा कर रहे थे; उस ही समयके बीच पराक्रमी सात्यकिने सेनाके अगाड़ी स्थित मुख्य मुख्य पाच सौ योद्धाओंका बध किया। जैसे महा प्रचण्ड वायुके वेगसे वृक्षोंके समूह टूट टूटकर गिर पड़ते हैं वैसे ही वे सम्पूर्ण योद्धा सात्यकिके बाणोंसे शीघ्रताके सहित मरकर पृथ्वीमें गिरने लगे। बहुतेरे रथी घोड़े सुवर्णभूषित ध्वजा और मरे हुए रुधिर पूरित शरीरसे युक्त मनुष्योंके गिरनेसे वह रणभूमि फूले हुए पलाशके फूलसमान शोभित होने लगी। मरनेसे बचे हुए तुम्हारी सेनाके योद्धाओंने कीचड़में फंसे हुए हाथीके समान किसीको भी अपना रक्षक नहीं पाया। जैसे सर्प गरुड़के भयसे बिलके भीतर घुस जाते हैं वैसे ही वे सम्पूर्ण योद्धा द्रोणाचार्य्यके रथके निकट आके स्थित हुए। पराक्रमी सात्यकि विषधारी सर्पके समान अपने तीक्ष्ण बाणोंसे उनके बीचसे पाच सौ योद्धाओंका बध करके अर्ज्जुनके निकट जानेकी अभिलाषासे धीरे धीरे गमन करने लगे। पुरुषसिंह सात्यकि जब इस प्रकारसे आगे बढ़ने लगे तब तुम्हारे पुत्र दुःशासनने शीघ्रताके सहित नव तीक्ष्ण बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। महाधनुर्द्धर सात्यकिने भी गिद्धपङ्खवाले पाचबाणोंसे दुःशासनको विद्ध किया। तिसके अनन्तर दुःशासनने हंसते हंसते तीन बाणोंसे सात्यकिको विद्ध करके फिर पाच बाणोंसे विद्ध किया। अनन्तर सात्यकिने दुःशासनको पाच बाणोंसे विद्ध करके उनके धनुषको अपने तीक्ष्ण बाणसे काटके गिरा दिया; और फिर अर्ज्जुनके समीप जानेकी इच्छासे आगे गमन करने लगे। जब सात्यकि आगे बढ़ने लगे उस ही समय दुःशासनने उनके बधकी इच्छा करके एक लोहमयी भयङ्कर शक्ति सात्यकिकी ओर चलाया। सात्यकिने तुम्हारे पुत्र दुःशासनकी भुजासे छूटी हुई उस भयङ्कर शक्तिको कङ्कपत्रयुक्त अनेक बाणोंसे एक सौ टुकड़े करके पृथ्वीमें गिरा दिया। अनन्तर दुःशासनने दूसरा धनुष ग्रहणकर सात्यकिको दश बाणोंसे विद्ध करके सिंहनाद किया। परन्तु सात्यकिने क्रुद्ध होकर अग्निके समान तेजस्वी कई एक बाणोंसे दुःशासनके दोनों स्तनोंके बीच प्रहार करके उन्हें मूर्च्छित कर दिया। फिर सात्यकिने लौहमय आठ बाणोंसे दुःशासनको विद्ध किया; परन्तु दुःशासनने सावधान होकर पन्द्रह बाणोंसे सात्यकिको फिर विद्ध किया। तिसके अनन्तर सात्यकिने अत्यन्त क्रुद्ध होके दुःशासनके दोनों स्तनोंके बीच तीन नतपर्व्व बाणोंसे प्रहार किया। अनन्तर उनके रथके घोड़ोंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे मारके पृथ्वीमें गिराये और फिर छः तीक्ष्ण बाणोंसे उनके सारथी एक भल्लसे उनके रथकी ध्वजा एकसे धनुष और पांच भल्लसे उनके अङ्गुलित्राणको काट दिया;

फिर कई एक तीखे बाणोंसे उनके दो पृष्ठरक्षकोंका वध किया। धनुष कटने और रथके घोड़े तथा सारथीके मारे जानेपर त्रिगर्त्त सेनाके सेनापतिने दुःशासनको अपने रथपर चढ़ाकर युद्धभूमिसे पृथक किया। शिनिपौत्र महाबाहु सात्यकिने क्षण भर दुःशासनकी ओर दौड़ कर फिर भीमसेनकी प्रतिज्ञाको स्मरण करके उनका वध नहीं किया; क्योंकि भीमसेनने युद्धमें तुम्हारे सम्पूर्ण पुत्रोंके वध करनेके वास्ते सभाके बीच प्रतिज्ञा किया था। सात्यकि इसी भांति दुःशासनको पराजित करके शीघ्रताके सहित अर्जुनको देखनेकी इच्छासे बढ़ने लगे।

१२१ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! मेरी सेनाके बीच क्या ऐसे कोई भी महारथी नहीं थे जो सात्यकिके उस भांतिसे गमन करनेके समय उसका वध करते तथा उसे निवारण कर सकते? दैत्योंके सङ्गमें इन्द्रने जैसे सङ्ग्राम किया था, इन्द्रके समान सात्यकिने अकेले ही अपने पराक्रमको प्रकाशित करके कठिन कार्य्य किया है। जिस मार्गसे सात्यकिने अकेले ही बहुतेरे योद्धाओंका वध करके गमन किया है क्या उस मार्गमें कोई भी महारथी योद्धा नहीं थे? जब बहुतेरे योद्धा युद्ध कर रहे थे तब अकेले ही सात्यकि उन योद्धाओंको अतिक्रम करके कैसे चला गया। यह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम मेरे समीप वर्णन करो।

सञ्जय बोले महाराज! तुम्हारी ओर हाथी घोड़े रथ और पैदल सेनाके सहित शूरवीर पुरुषोंका समूह एकत्रित हुआ था। तुम्हारी ओरकी सेना इकट्ठी हुई है; मैं बोध करता हूं इस पृथ्वीके बीच ऐसी सेना कभी भी इकट्ठी नहीं हुई थी, यहांपर युद्ध देखनेकी इच्छासे आकाशमें स्थित देवता और चारणोंने कहा था पृथ्वीके बीच इस प्रकारसे एक ही स्थानपर इकट्ठी हुई यह सेना इसी स्थलपर देखी गई है फिर कभी ऐसी सेना इकट्ठी नहीं हो सकेगी।" हे प्रजानाथ! जयद्रथको अर्जुनके हाथसे बचानेके वास्ते द्रोणाचार्य्यने जैसे व्यूह बनाया था वैसा व्यूह भी कभी देखनेमें नहीं आया था। उन सम्पूर्ण समूहकी समूह सेनाके पुरुषोंके दौड़नेके समय अत्यन्त प्रबल वायुसे उथलते हुए समुद्रके समान महाभयङ्कर शब्द होने लगा। तुम्हारी और पाण्डवोंकी सेनाके बीच अनेक देशोंसे आये हुए सैकड़ों सहस्रों राजा थे वे सब ही युद्धमें दृढ़ पराक्रमी थे; वे सब ही अत्यन्त क्रुद्ध थे। युद्धके समय उन सम्पूर्ण राजाओंके भयङ्कर शब्दको सुनकर सम्पूर्ण पुरुषोंके रोएं खड़े होने लगे।

भीमसेन, धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव और धर्म्मराज युधिष्ठिर ऊंचे स्वरसे पुकारके अपनी सेनाके पुरुषोंसे कहने लगे। हे शूरवीर पुरुषो! आगे बढ़ो, शीघ्र दौड़ो कुरुसेनाके योद्धाओंके ऊपर प्रहार करो। कृष्ण अर्जुन दोनो पराक्रमी योद्धा जिससे जयद्रथ वधके वास्ते विना परिश्रम ही शत्रुसेनाके बीच प्रवेश करके गमन कर सकें तुम लोग शीघ्र वैसेही कार्य्योंका विधान करो। उन दोनो पुरुषसिंहोंके निमित्त यदि कोई विघ्न उपस्थित होवेगा तो हम सब कोई पराजित होवेंगे, और उससे कौरव लोग कृतकार्य्य होंगे। इससे तुम लोग सब कोई मिलकर शीघ्रताके सहित जैसे वायु समुद्रको उथलित करता है वैसे ही शत्रुसेनाके पुरुषोंको तितर बितर करके आगे बढ़ो। जब भीमसेन और धृष्टद्युम्नने ऐसा वचन कहा, तब महातेजस्वी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग अपने प्रिय प्राणको त्याग करनेकी इच्छाकरके कौरवोंकी सेनाके योद्धाओंको अनेक अस्त्र शस्त्रोंसे पीड़ित करने लगे। तुम्हारी ओरके योद्धा लोग भी अपने प्राणकी आशा त्याग कर पाण्डवोंकी

सेनाके शूरवीरोंके सङ्ग महाघोर युद्ध करने लगे। जब इस प्रकारसे महाभयङ्कर तुमुल संग्राम होने लगा तब सात्यकिने सम्पूर्ण सेनाके योद्धाओंको पराजित करके अर्जुनके समीप गमन किया। सेनाके योद्धाओंके प्रकाशमान कवचोंके ऊपर सूर्य्य-किरण पड़नेसे सेनाके पुरुषोंकी नजरें तिरमिरा गई। महाराज! जब पाण्डव लोग यत्नवान होके इस प्रकार युद्ध कर रहे थे, तब दुर्य्योधनने पाण्डवोंकी महासेनाके बीच प्रवेश किया। जब दोनो ओरकी महासेना आपसमें एक दूसरेकी ओर दौड़ी तब शूरवीर पुरुषोंका नाश होनेवाला महाघोर तुमुल संग्राम होने लगा।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सूत! इस प्रकारसे युद्धके निमित्त तैयार शत्रुसेनाके बीच दुर्य्योधन अकेले ही प्रवेश करके पीड़ित होकर भी क्या युद्धभूमिसे पराजित नहीं हुआ! एक पुरुषके सङ्ग अनेक योद्धाओंका युद्ध हुआ। विशेष करके दुर्य्योधन राजा है। अनेक पुरुषोंके सङ्ग राजाका युद्ध होना मेरे विचारमें उत्तम नहीं बोध होता है। अत्यन्त सुखी लक्ष्मीवान और सम्पूर्ण पृथ्वीका स्वामी दुर्य्योधन अकेले ही बहुतेरे योद्धाओंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त होकर पराजित तो नहीं हुआ?

सञ्जय बोले, महाराज! तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनने अकेले ही जो बहुतेरे योद्धाओंके सङ्गमें आश्चर्य्यमय युद्ध किया था, उस वृत्तान्तको मैं वर्णन करता हूं, आप सुनिये। जैसे मतवारा हाथी कमलसे युक्त तालाबको मथ डालता है वैसे ही राजा दुर्य्योधन उस रणभूमिमें पाण्डवोंकी सेना तितर बितर करने लगे। भीमसेन आदि पाण्डव और धृष्टद्युम्न आदि पाञ्चाल योद्धाओंने दुर्य्योधनके हाथसे पाण्डव तथा पाञ्चाल सेनाके शूरवीरोंको मरते देख उन्हें आक्रमण किया। जैसे यमराज क्रुद्ध होकर प्राणियोंका नाश करते हैं, वैसे ही सहदेव, विराट और द्रुपदको तीन २ शिखण्डीको एक सौ धृष्टद्युम्नको बीस, धर्म्मपुत्र युधिष्ठिरको सात, केकय वीरोंका दश, दश और द्रौपदीके पांचों पुत्रोंको तीन तीन बाणोंसे बिद्ध करके फिर अपने भयङ्कर बाणोंसे और भी बहुतेरे योद्धाओं तथा अनेक गजपति योद्धाओंको उनके हाथियोंके सहित बाणोंसे बिद्ध किया। वह अस्त्रशिक्षाकी निपुणता और अपने पराक्रमसे इस प्रकार शत्रुसेनाका नाश करने लगे, कि उन्हें धनुष पर बाण रखते अथवा चलाते हुए कोई पुरुष भी देख न सके। उस समय केवल मण्डलाकार गतिसे फिरताहुआ दुर्य्योधनका धनुष ही दीख पड़ता था, उस समय सम्पूर्ण प्राणी शत्रुओंके नाश करनेके समय लगातार मण्डलाकार गतिसे भ्रमण करते हुए दुर्य्योधनके सुवर्ण भूषित धनुषहीको देखने लगे। तिसके अनन्तर राजा युधिष्ठिरने युद्धभूमिमें यत्नवान दुर्य्योधनके धनुष को दो बाणोंसे काटके गिरा दिया। अनन्तर राजा युधिष्ठिरने शीघ्रताके सहित दश बाणोंसे राजा दुर्य्योधनको बिद्ध किया, परन्तु वे दशों बाण दुर्य्योधनके बर्म्म पर लगते ही टूट कर पृथ्वीमें गिर पड़े। अनन्तर महर्षि और देवता लोग जैसे पहिले वृत्रासुरके बधके समयमें इन्द्रको घेर कर खड़े हुए थे, वैसे ही पाण्डव लोग हर्षित होकर युधिष्ठिरको घेर कर युद्धभूमिमें स्थित हुए। तिसके अनन्तर राजा दुर्य्योधन एक दृढ़ धनुष ग्रहण करके खड़ा रह! खड़ा रह! कहते हुए युधिष्ठिरकी ओर दौड़े। विजयकी इच्छा करने वाले पाञ्चाल योद्धा दुर्य्योधनको युधिष्ठिरकी ओर आते देख, हर्ष पूर्ब्बक उनके सम्मुख उपस्थित हुए। परन्तु पर्ब्बत जैसे बादलोंकी वर्षाको ग्रहण करता है, वैसे ही महारथ द्रोणाचार्य्यने युद्धभूमिमें दुर्य्योधनकी रक्षा करनेकी अभिलाषसे उन सम्पूर्ण योद्धाओंको निवारण किया। महाराज! तब वहांपर पाण्-

वौंकी सेनाके सहित तुम्हारी ओरके योद्धाओंका श्मशानभूमिके समान सम्पूर्ण प्राणियोंके नाश करनेवाला महाभयङ्कर संग्राम होने लगा। उसही समय अर्जुनके निकटसे ऐसा शब्द उत्पन्न हुआ, कि वह सम्पूर्ण शब्दोंको अतिक्रम करके युद्धभूमिसे पूरित होगया, और उस शब्दको सुनके मनुष्योंके रोए' खड़े होगये। हे महाबाहो। व्यूहके बीच जहां पर राजा जयद्रथ थे, उसी स्थान पर तुम्हारी ओरके महा धनुर्द्धर वीरोंके सङ्ग अर्जुनका, व्यूहके बीचमें कुरुसेनाके सहित सात्यकि और व्यूहके दरवाजे पर शत्रुसेनाके सङ्गमें जो महाभयङ्कर द्रोणाचार्य्यका युद्ध होरहा था, उससे एक ही समय महाघोर शब्द उत्पन्न होने लगा। हे पृथ्वीनाथ। अर्जुन, द्रोणाचार्य्य और सातयकिके क्रुद्ध होकर युद्धमें प्रवृत्त होनेसे एक ही समयमें अनगिनत पुरुषोंका नाश होने लगा।

१२२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज। अपरान्ह समयमें बादलके गर्जन समान शब्दसे युक्त फिर चन्द्रकयोंके सङ्ग द्रोणाचार्य्यका महाघोर संग्राम होने लगा। महाधनुर्द्धारी महाबलवान अत्यन्त प्रतापी द्रोणाचार्य्यने तुम्हारे प्रिय और हितके कार्य्यमें रत होके सावधानीके सहित लालवर्ण घोड़ोंसे युक्त अपने रथ पर चढ़के मध्यम वेगसे सहित पाण्डवोंको आक्रमण किया। वह पाण्डवोंकी सेनाके बीचसे मुख्य मुख्य योद्धाओंके [illegible] इस प्रकार काट काट गिराने लगे, [illegible] उत्पन्न हुए वृक्षसे फूल तोड़ [illegible] है। केकय राज पांचों भाइयोंके [illegible] पराक्रमी बड़े भाई वृहत्क्षेत्रने [illegible] युद्ध करनेके वास्ते गमन [illegible] मत्त बादल पर बादल [illegible] उस ही प्रकारसे वह अपने तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करके द्रोणाचार्य्यको पीड़ित करने लगे। महाराज! द्रोणाचार्य्यने क्रुद्ध होकर शिलापर घिसे हुए स्वर्णपङ्खवाले पन्द्रह बाण वृहत्क्षेत्रकी ओर चलाये, वृहत्क्षेत्रने हर्षित होकर द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छूटे हुए बाणोंको अपने दश बाणोंसे काटकर गिरा दिया। द्विजसत्तम द्रोणाचार्य्यने वृहत्क्षेत्रका हस्तलाघव देख, फिर हंसकर आठ बाण उनकी ओर चलाये। वृहत्क्षेत्रने द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छूटे हुए तीक्ष्णबाणोंको अपनी ओर आते देख, सात बाणोंसे उन बाणों की निवारण किया। वृहत्क्षेत्रको ऐसा कठिन कर्म्म करते देख तुम्हारी ओरके योद्धाओंके चित्तमें विस्मय उत्पन्न हुआ। तिसके अनन्तर महातपस्वी द्रोणाचार्य्यने केकयराजसे अधिक पराक्रम प्रकाशित करनेकी इच्छासे ब्राह्म अस्त्र प्रकट किया। महाराज महा पराक्रमी वृहत्क्षेत्रने द्रोणाचार्य्यके चलाये हुए ब्राह्म अस्त्रको ब्रह्मास्त्रसेही निवारण किया। उन्होंने ब्राह्मण द्रोणाचार्य्यके ब्रह्मास्त्रको निवारण करके फिर शिलापर घिसे हुए साठ तीक्ष्ण बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। अनन्तर पुरुषश्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने वृहत्क्षेत्रकी ओर एक तीक्ष्ण बाण चलाये; वह बाण वृहत्क्षेत्रके कवचको काटके पृथ्वीमें गिरा। जैसे काला सांप फूटनेपर बिलके बीच प्रवेश करता है वैसे ही वह बाण वृहत्क्षेत्रके शरीरको भेदकर पृथ्वीमें घस गया। महाराज! केकयराज अस्त्र-विद्या जाननेवाले द्रोणाचार्य्यके बाणसे अत्यन्त विद्ध होकर महाक्रुद्ध हुए और क्रोधसे दोनों नेत्र लाल करके शिलापर घिसे हुए स्वर्ण पङ्खवाले सत्तर बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको विद्ध किया, फिर भल्लसे द्रोणाचार्य्यके सारथीकी दोनों भुजा और वक्षस्थलमें प्रहार किया। द्रोणाचार्य्यने वृहत्क्षेत्रके बाणोंसे जहां तहां विद्ध होके अत्यन्त चोखे बाणोंको वृहत्क्षेत्रके रथपर चलाकर उन्हें व्याकुल कर दिया, फिर

चार बाणोंसे उनके रथके चारों घोड़ोंका वध करके एक बाणसे उनके सारथीका संहार करके रथसे पृथ्वीमें गिराया; अनन्तर दो बाणोंसे उनके रथकी ध्वजा और छत्रको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। तिसके अनन्तर एक तीक्ष्ण बाणसे द्रोणाचार्य्यने वृहत्क्षत्रके हृदयमें प्रहार किया, उस ही बाणकी चोटसे वृहत्क्षत्र प्राणरहित होके पृथ्वीमें गिर पड़े। हे राजेन्द्र। जब केकयवीरोंमें महारथी वृहत्क्षत्र द्रोणाचार्य्यके हाथसे मारे गये; तब शिशुपालपुत्र अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपने सारथीसे बोले, हे सारथी। जहांपर पराक्रमी द्रोणाचार्य्य वर्म्म धारण करके पाञ्चाल और केकयदेशीय योद्धाओंका वध कर रहे हैं; तुम उस ही स्थानमें मेरे रथको ले चलो। सारथी उनका वचन सुन काम्बोजदेशीय वेगशील घोड़ोंसे युक्त उनके रथको द्रोणाचार्य्यके समीप लेगया। महाबलवान रथियोंमें श्रेष्ठ चेदिराज धृष्टकेतु द्रोणाचार्य्यकी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे पतङ्ग अपने प्राणनाशके वास्ते अग्निकी ओर दौड़ते हैं। अनन्तर चेदिराज धृष्टकेतुने साठ बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको घोड़े सारथी ध्वजा और रथके सहित विद्ध किया, तथा निद्रित-व्याघ्रको जगानेकी भांति धृष्टकेतुने फिर द्रोणाचार्य्यको तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध किया। द्रोणाचार्य्यने उसके चार बाणोंसे उनके चारो घोड़ोंका बध करके उनके सारथीका सिर काट डाला और फिर महा बलवान द्रोणाचार्य्यने धृष्टकेतुके धनुषको बीचों बीचसे काट दिया। महारथ शिशुपाल पुत्रने दूसरा धनुष ग्रहण करके द्रोणाचार्य्यको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध किया। तब द्रोणाचार्य्यने पचीस बाण धृष्टकेतुकी ओर चलाये। चेदिराज धृष्टकेतु घोड़े सारथीसे रहित रथसे कूद पड़े और सापिनके समान भयङ्करी एक गदा ग्रहण करके द्रोणाचार्य्यकी ओर चलाया। भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्यने उस सुवर्ण भूषित महा घोर गदाको सम्मुख आते देख सहस्रों बाणोंसे काटके पृथ्वी गिरा दिया। वह गदा द्रोणाचार्य्यके सहस्रों बाणों से कटके घोर शब्दके सहित पृथ्वीमें गिर पड़ी। गदाको कटके पृथ्वीमें गिरती देख धृष्टकेतुने सुवर्णभूषित तोमर और प्रकाशमान शक्ति द्रोणाचार्य्यकी ओर चलाया। महा बलवान प्रतापी द्रोणाचार्य्यने हस्तलाघवके सहित तीन बाणोंसे उस तोमरको काटकर गिराया, और उस प्रकाशमान शक्तिको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे काटके सौ टुकड़े कर दिया। अनन्तर द्रोणाचार्य्यने चेदिराज धृष्टकेतुके बधकी इच्छा करके एक तीक्ष्ण बाण उनकी ओर चलाये। वह बाण अत्यन्त बलवान धृष्टकेतुके कवच और हृदयको भेदकर पृथ्वीमें गिरा। जैसे भूखा पक्षी छोटे छोटे कीट पतङ्गोंको ग्रास करता है वैसे ही पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने उस महा घोर युद्धमें धृष्टकेतुका वध किया। चेदिराज धृष्टकेतुका प्राणात्मा शरीर त्यागके पितृलोकमें गया। धृष्टकेतुका पुत्र अस्त्रविद्यामें अत्यन्त निपुण था वह अपने पिताके मरनेपर क्रोधके वशंवर्त्ती होकर द्रोणाचार्य्यसे युद्ध करने लगा। द्रोणाचार्य्यने हंसते हंसते अपने तीक्ष्ण बाणसे इस प्रकार उसका बध करके उसे यमपुरीमें भेज दिया जैसे भूखा व्याघ्र हरिणके बच्चेका बध करता है। हे भरतर्षभ। जब पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंका इसप्रकार नाश होने लगा तब जरासन्धपुत्र हंसकर पराक्रम प्रकाशित करते हुए द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। जैसे बादल सूर्य्यको छिपा देते हैं वैसे ही उन्होंने अपने तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षासे द्रोणाचार्य्यको छिपा दिया। उसके वैसे हस्तलाघवको देख क्षत्रियोंके नाश करनेवाले द्रोणाचार्य्य एक एक बार एक एक सौ और सहस्र सहस्र बाण उसके ऊपर चलाने लगे, और सब धनुर्द्धारियोंके सम्मुखहीमें द्रोणाचार्य्यने

शरासनपुत्रको अपने बाणोंसे छिपाकर उसका वध किया। जो पुरुष उस समय द्रोणाचार्य्यके सम्मुख उपस्थित हुए, वे उनके अस्त्रोंसे प्राण त्यागकर इस प्रकार नष्ट हुए जैसे प्राणी यमराजके कराल ग्राससे पड़के फिर नहीं निकल सकते। तिसके अनन्तर महाधनुर्द्धर द्रोणाचार्य्य रणभूमिके बीच अपना नाम सुनाकर सहस्रों बाणोंकी वर्षा करके पाण्डवोंको मोहित करने लगे। स्वर्णपङ्खवाले शिलापर घिसे हुए द्रोण नामसे अङ्कित अत्यन्त तीक्ष्ण बाणोंसे उस समय घोड़े हाथी और मनुष्य मरके पृथ्वीमें गिरने लगे। जैसे महाबलवान असुरोंकी सेना इन्द्रके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर कम्पित हुई थी उसी प्रकार पाञ्चाल योद्धा द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे इस प्रकारसे दुःखित हुए; जैसे शीतसे जकड़े हुए गौवोंका समूह ठठुरके कांपने लगता है। हे भारत! उस समय पाण्डवोंकी सेना द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे पीड़ित होकर महा घोर आर्त्तनाद करने लगी। उस समय पाञ्चाल योद्धा लोग सूर्य्यकी तीक्ष्ण धूपसे तपके और द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर भयभीत होगये। महाराज! वे सम्पूर्ण योद्धा भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे मोहित होगये; पाण्डवोंके महारथ [illegible] पास मानो घड़ियाल मकर होकर [illegible]ओंको आगे बढ़नेसे रोकने लगे। महाराज! तिसके बाद चंदो सृञ्जय और चन्द्रवंशी [illegible] कुपित होकर द्रोणाचार्य्यको ओर [illegible]। चंदो पाञ्चाल और सृञ्जय योद्धालोग [illegible] द्रोणाचार्य्यका वध करो, द्रोणाचार्य्यको [illegible] ऐसे ही वचन आपसमें कहते हुए [illegible] द्रोणाचार्य्यके सम्मुख उपस्थित हुए। हे राजेन्द्र! [illegible] द्रोणाचार्य्यको [illegible] इच्छासे अनेक भांतिसे [illegible] करने लगे। परन्तु भर- [illegible] द्रोणाचार्य्यने [illegible] विशेष करके चंदी देशीय सेनाके मुख्य मुख्य शूरवीरोंका वध करके यमपुरीमें भेजने लगे। जब चंदी देशीय सेनाके मुख्य मुख्य योद्धाओंका नाश होने लगा तब पाञ्चाल योद्धालोग द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे पीड़ित होकर कांपने लगे। वे सम्पूर्ण योद्धा द्रोणाचार्य्यके ऐसा कठिन कर्म्मको देखकर भीमसेन और धृष्टद्युम्नको सुना कर चिल्लाते हुए यह वचन कहने लगे, इस ब्राह्मणने अवश्य ही अत्यन्त कठिन तपस्या किया था उस ही तपके प्रभावसे क्रुद्ध होकर ये क्षत्रिय योद्धाओंको भस्म कर रहे हैं। क्षत्रियोंका धर्म्म युद्ध; और ब्राह्मणोंका श्रेष्ठ धर्म्म तपस्या है। बुद्धिमान तपस्वी ब्राह्मण अपनी क्रोध रूपी दृष्टिसे देखकर ही शत्रुसेना भस्म कर सकते हैं। उस ही कारणसे बहुतेरे मुख्य मुख्य क्षत्रिय योद्धा अग्निके समान स्पर्श करनेवाले द्रोणाचार्य्यके महाघोर तीक्ष्ण अस्त्रोंसे पीड़ित होकर भस्म होरहे हैं। द्रोणाचार्य्य अपने बल, पराक्रम उत्साह और सामर्थ्यके अनुसार हमलोगोंके सम्पूर्ण सैनिक पुरुषोंको मोहित करके सेनाके समस्त योद्धाओंका वध कर रहे हैं। महाबली क्षत्रधर्म्मा उन योद्धाओंके ऐसे वचनको सुनकर क्षत्रिय धर्म्ममें निष्ठावान हो अत्यन्त वली क्रुद्ध द्रोणाचार्य्यके धनुषको बाणके सहित काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। तिसके अनन्तर क्षत्रियोंके नाश करनेवाले द्रोणाचार्य्यने क्रुद्ध होकर एक महावेगशील दृढ़ धनुष ग्रहण किया; और उस पर एक शत्रुओंके नाश करनेमें समर्थ भयङ्कर बाणको रखके क्षत्रधर्म्माकी ओर चलाया। वह बाण धृष्टद्युम्नपुत्र क्षत्रधर्म्माके प्राणको नाश करके पृथ्वीमें गिरा। क्षत्रधर्म्मा प्राणरहित होकर अपने रथके ऊपरसे पृथ्वीमें गिर पड़े। धृष्टद्युम्न पुत्र क्षत्रधर्म्माके मरने पर सम्पूर्ण योद्धा द्रोणाचार्य्यके भयसे कांपने लगे। अनन्तर महारथ चेकितानने द्रोणाचार्य्यको आक्रमण करके

चार वाणोंसे उनके रथके चारों घोड़ोंका वध करके एक वाणसे उनके सारथीका संहार करके रथसे पृथ्वीमें गिराया; अनन्तर दो वाणोंसे उनके रथकी ध्वजा और छत्रको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। तिसके अनन्तर एक तीक्ष्ण वाणसे द्रोणाचार्य्यने बृहत्क्षत्रके हृदयमें प्रहार किया; उस ही वाणकी चोटसे बृहत्क्षत्र प्राणरहित होके पृथ्वीमें गिर पड़े। हे राजेन्द्र! जब केकयवीरोंमें महारथी बृहत्क्षत्र द्रोणाचार्य्यके हाथसे मारे गये, तब शिशुपालपुत्र अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपने सारथीसे बोले, हे सारथी। जहांपर पराक्रमी द्रोणाचार्य्य वर्म्म धारण करके पाञ्चाल और केकयदेशीय योद्धाओंका बध कर रहे हैं; तुम उस ही स्थानमें मेरे रथको ले चलो। सारथी उनका वचन सुन काम्बोजदेशीय वेगशील घोड़ोंसे युक्त उनके रथको द्रोणाचार्य्यके समीप लेगया। महाबलवान रथियोंमें श्रेष्ठ चेदिराज धृष्टकेतु द्रोणाचार्य्यकी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे पतङ्ग अपने प्राणनाशके वास्ते अग्निकी ओर दौड़ते हैं। अनन्तर चेदिराज धृष्टकेतुने साठ वाणोंसे द्रोणाचार्य्यको घोड़े सारथी ध्वजा और रथके सहित विद्ध किया, तथा निद्रित-व्याघ्रको जगानेकी भांति धृष्टकेतुने फिर द्रोणाचार्य्यको तीक्ष्ण वाणोंसे विद्ध किया। द्रोणाचार्य्यने हंसके चार वाणोंसे उनके चारो घोड़ोंका बध करके उनके सारथीका सिर काट डाला और फिर महा बलवान द्रोणाचार्य्यने धृष्टकेतुके धनुषको बीचों बीचसे काट दिया। महारथ शिशुपालपुत्रने दूसरा धनुष ग्रहण करके द्रोणाचार्य्यको अपने तीक्ष्ण वाणोंसे विद्ध किया। तब द्रोणाचार्य्यने पचीस वाण धृष्टकेतुकी ओर चलाये। चेदिराज धृष्टकेतु घोड़े सारथीसे रहित रथसे कूद पड़े और नागिनके समान भयङ्करी एक गदा ग्रहण करके द्रोणाचार्य्यकी ओर चलाया। भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्यने उस सुवर्ण भूषित महा घोर गदाको सम्मुख आती देख सहस्रों वाणोंसे काटके पृथ्वी गिरा दिया। वह गदा द्रोणाचार्य्यके सहस्रों वाणों से कटके घोर शब्दके सहित पृथ्वीमें गिर पड़ी। गदाको कटके पृथ्वीमें गिरती देख धृष्टकेतुने सुवर्णभूषित तोमर और प्रकाशमान शक्ति द्रोणाचार्य्यकी ओर चलाया। महा बलवान प्रतापी द्रोणाचार्य्यने हस्तलाघवके सहित तीन वाणोंसे उस तोमरको काटकर गिराया, और उस प्रकाशमान शक्तिको अपने तीक्ष्ण वाणोंसे काटके सौ टुकड़े कर दिया। अनन्तर द्रोणाचार्य्यने चेदिराज धृष्टकेतुके बधकी इच्छा करके एक तीक्ष्ण वाण उनकी ओर चलाये। वह वाण अत्यन्त बलवान धृष्टकेतुके कवच और हृदयको भेदकर पृथ्वीमें गिरा। जैसे भूखा पक्षी छोटे छोटे कीट पतङ्गोंको ग्रास करता है वैसे ही पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने उस महा घोर युद्धमें धृष्टकेतुका वध किया। चेदिराज धृष्टकेतुका प्राणात्मा शरीर त्यागके पितृलोकमें गया। धृष्टकेतुका पुत्र अस्त्रविद्यामें अत्यन्त निपुण था वह अपने पिताके मरनेपर क्रोधके वशंवर्त्ती होकर द्रोणाचार्य्यसे युद्ध करने लगा। द्रोणाचार्य्यने हंसते हंसते अपने तीक्ष्ण वाणोंसे इस प्रकार उसका बध करके उसे यमपुरीमें भेज दिया जैसे भूखा व्याघ्र हरिणके बच्चेका बध करता है। हे भरतर्षभ! जब पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंका इसप्रकार नाश होने लगा तब जरासन्धपुत्र हंसकर पराक्रम प्रकाशित करते हुए द्रोणाचार्य्यको ओर दौड़े। जैसे बादल सूर्य्यको छिपा देते हैं वैसे ही उन्होंने अपने तीक्ष्ण वाणोंकी वर्षासे द्रोणाचार्य्यको छिपा दिया। उसके वैसे हस्तलाघवको देख क्षत्रियोंके नाश करनेवाले द्रोणाचार्य्य एक एक वार एक एक सौ और सहस्र सहस्र वाण उसके ऊपर चलाने लगे और सब धनुर्द्धारियोंके सम्मुखहीमें द्रोणाचार्य्य

[illegible] वास्ते अपने भाई भीमसेनको भेजूं। [illegible] अर्जुनके ऊपर मेरा जैसा प्रेम है, यदुकुलभूषण पुरुषसिंह सात्यकिके ऊपर भी मेरा वैसाही प्रेम और प्रीति है। शिनिपौत्र सात्यकिके ऊपर मैंने बहुत बड़े भारका अर्पित किया है, उस पाप रहित पराक्रमी सात्यकिने मित्रकी सहायता और मेरी गौरव रक्षाके वास्ते इस प्रकारसे भारती सेनाके बीच प्रवेश किया है, जैसे मकर घड़ियाल समुद्रके बीच प्रवेश करते हैं। पराक्रमी सात्यकिके सङ्ग युद्ध भूमिमें संग्राम करनेवाले तथा युद्धसे पीछे न हटने वाले शूरवीर पुरुषोंका शब्द सुनाई दे रहा है। मैंने अनेक भांतिसे विचार करके देखा, इस सङ्कटके समयमें जिस स्थानपर ऊपर कहे दो महारथी गये हैं, उस ही स्थानपर [illegible] भीमसेनका गमन करना ही उचित बोध होता है। पृथ्वीके बीच भीमसेनसे कोई कार्य असाध्य नहीं है, वह अपने बाहुबलके आसरेसे यत्नवान होकर पृथ्वीके बीच सम्पूर्ण धनुर्विद्याके व्यूहके विरुद्ध अकेले ही शत्रुसेनाके [illegible] युद्ध कर सकते हैं। इसी महात्माके बाहुबलके आसरे हम लोग वनवासके सम्पूर्ण दुःखोंसे पार हुए हैं, और किसीके सङ्ग कभी युद्धमें पराजित नहीं हुआ है। जब मेरे भाई भीमसेन यहांसे गमन करके सात्यकिके समीप उपस्थित होंगे, तब सात्यकि भी अर्जुनकी [illegible] करनेमें समर्थ होगा। परन्तु अर्जुन और सात्यकि चिन्ताके विषय नहीं हैं; क्योंकि [illegible] रक्षा कर रहे हैं, और वे दोनो [illegible] अस्त्रशस्त्रोंकी विद्याके जाननेवाले [illegible] चिन्ता उपस्थित हुई [illegible] निवारण करना चाहिये। इससे [illegible] रक्षा करनेके वास्ते भीमसेनको [illegible] करता हूं, सात्यकिके [illegible] अर्जुनका [illegible] होगा। [illegible] मन ऐसा निश्चय

करके सारथीसे बोले, हे सारथी! तुम मुझे भीमसेनके समीप ले चलो। घोड़ोंके चलानेमें निपुण सारथी धर्म्मपुत्र युधिष्ठिरके वचनको सुनकर उनके सुवर्णभूषित रथको भीमसेनके निकट ले गया। कुन्तीपुत्र राजा युधिष्ठिर भीमसेनके समीप पहुंचकर उस समयके उपस्थित विषयको कहनेके वास्ते उस कार्य्यको फिर स्मरण करके शोकित हुए। वह शोकित होके भीमसेनको बुलाकर यह वचन बोले, हे भीमसेन! जिन्होंने अकेले ही रथपर चढ़के देवता गन्धर्व्व और असुरोंको पराजित किया है, मैं तुम्हारे उस ही भ्राता अर्ज्जुनका कुछ सम्वाद नहीं पाता हूं। अनन्तर भीमसेन धर्म्मराज युधिष्ठिरको इस प्रकार मोहित देखकर उनसे यह वचन बोले, हे राजेन्द्र! तुम्हारी ऐसी कातरता पहिले न कभी देखी और न सुना हो था, पहिले जब हम लोग दुःखित होते थे, तब तुम हमलोगोंके दुःखको दूर करके धीरज धारण कराते थे। आप उठिये! सावधान हूजिये, मुझे हुक्म दीजिये, मैं तुम्हारे निमित्त कौनसा कार्य्य करूं? हे मान पानेके योग्य महाराज! मुझसे कोई कार्य्य भी असाध्य नहीं है। हे कुरुश्रेष्ठ आप अपने चित्तसे शोक दूर कीजिये; कहिये मुझे कौनसा कार्य्य करना होगा?

राजा युधिष्ठिर आंखोंमें आंसू भरके अत्यन्त दुःखित होकर काले सांपके समान लम्बी सांस छोड़ते हुए भीमसेनसे कहने लगे; हे भीमसेन! यशस्वी कृष्णके पाञ्चजन्य शंखका शब्द इस समय जिस प्रकारसे सुन पड़ता है, इससे बोध होता है, वह क्रुद्ध होकर अत्यन्त बल पूर्व्वक अपने शंखको बजा रहे हैं, मुझे बोध होता है, तुम्हारे भाई अर्ज्जुन अवश्य ही युद्धभूमिमें मारे गये। इनके मरनेसे श्रीकृष्ण स्वयं युद्ध कर रहे हैं। जिस महात्माका पुरुषसिंह [illegible], पराक्रमका आसरा करके

पाण्डवलोग जीवित हैं, कोई भय उपस्थित होनेसे जैसे देवता लोग इन्द्रको शरणमें जाते हैं, वैसेही कुछ विपद उपस्थित होने पर पाण्डव लोग कृष्णाकी शरण चाहते हैं। उस पराक्रमी अर्ज्जुनने सिन्धुराज जयद्रथके बधकी अभिलाष करके भारती सेनाके बीज प्रवेश किया है। परन्तु उस महाबाहु श्यामवर्ण युवा, जितेन्द्रिय, सुन्दर महारथी, विशाल वक्षस्थलसे युक्त, मतवारे हाथीके समान पराक्रमी चकोरलोचन, शत्रुओंको पीड़ित करनेवाले, और ताम्र वदनसे युक्त अर्ज्जुनके गमनको मैं नहीं जान सकता हूं, वह जो फिर लौट कर मेरे समीप आवेंगे वह सुझे नहीं मालुम होता है; यही मेरे शोकका मुख्य कारण है, हे महावाहो! अर्ज्जुन और सात्यकिके वास्ते मेरी शोकाग्नि मानो घृतके पड़नेसे प्रज्वलित हुई अग्निके समान वार वार बढ़ रही है। उस महाबाहु अर्ज्जुनके रथचिन्हको न देखकर मैं अत्यन्त दुःखित हुआ हूं, और पुरुषसिंह सात्यकिको तुम महारथी कहके जानते हो वह जो तुम्हारे भाईकी पृष्ठरक्षा करनेके वास्ते गये हैं, इससे उस महाबाहु सात्यकिको भी न देखकर मैं शोकित हुआ हूं। अर्ज्जुनके मरनेसे अवश्य पुरुषोत्तम कृष्णा युद्ध कर रहे हैं; परन्तु उनका कोई सहायक नही है, इससे भी मैं व्याकुल होरहा हूं। जिसके वल पराक्रमके आसरसे पाण्डव लोग, जीवित हैं, वह महावलवान पराक्रमी कृष्णा अवश्य अकेलेही शत्रुओंके सङ्ग युद्ध कर रहे हैं। जा, हो उन दोनो पुरुषसिंहोंके निमित्त मेरे चित्तमें शान्ति नहीं होती है। हे धर्म्म जाननेवाले! मैं तुम्हारा जेठा भाई हूं, मेरे वचनोको मानना यदि तुम्हारा कर्त्तव्य कार्य्य होवे, तो अर्ज्जुन और सात्यकिके पास तुम भी जाओ। सात्यकिने मेरे प्रिय कार्य्य करनेको महाभयङ्कर अपरपार सेनाके बीच अर्ज्जुनको सहायताको गया है। इससे अर्ज्जुनसे भी अधिक सात्यकिके समाचारको मालूम कर तुम्हारा कर्त्तव्य कार्य्य है। तुम कृष्णा अर्ज्जुन और सात्यकिका कुशल देखकर अपने सिंहनाद शब्दसे सुझे सम्वाद प्रदान करोगे।

१२४ अध्याय समाप्त।

भीमसेन बोले, महाराज! जिस रथ। पहिले ब्रह्मा शिव, इन्द्र और वरुणने गमन किया था, कृष्णा-अर्ज्जुन उसी रथ पर चढ़ शत्रुसेनाके बीच प्रविष्ट हुए हैं, इससे किसे भी उन्हें भय नहीं हो सकता। तब तुम्हारी आज्ञाको माथे पर चढ़ा कर मैं उन लोगोंकी सहायताके वास्ते गमन करता हूं, आप शोक न कीजिये, मैं उन पुरुषसिंहोंके समीप पहुंचके आपको सम्वाद दूंगा।

सञ्जय बोले, हे राजन्! महावली पराक्रमी भीमसेन ऐसा वचन करके धृष्टद्युम्न और दूसरे सुहृदपुरुषोंके निकट राजा युधिष्ठिरको समर्पण करके धृष्टद्युम्नसे वार वार यह वचन बोले, हे महावाहो! महारथ द्रोणाचार्य्य जिस प्रकारसे उपाय रचकर धर्म्मराज युधिष्ठिरको ग्रहण करनेके वास्ते युद्धभूमिमें स्थित हैं, वह तुम्हें विदित है। हे पार्षत! इससे हम लोगोंका द्रोणाचार्य्यके समीपसे धर्म्मराज युधिष्ठिरकी रक्षा करना जैसे प्रयोजनीय कार्य्य है, कृष्णा-अर्ज्जुनके समीप गमन करना उतना प्रयोजनीय कार्य्य नहीं है। परन्तु महाराजने सुझे अर्ज्जुनके समीप जानेके वास्ते आज्ञा दिया है, मैं उनको आज्ञा भङ्ग करनेका उत्साह नहीं कर सकता; क्योंकि धर्म्मराजको आज्ञासे सम्पूर्ण शङ्काओंको त्यागके पालन करना ही उचित है। इससे जहांपर आयुरहित जयद्रथ स्थित है, मैं उस ही स्थान पर अपने भाई अर्ज्जुन और वुद्धिमान सात्यकिकी सहायता करनेके वास्ते जाता हूं। आप युद्धभूमिमें यत्नवान होकर सब प्रकारसे महाराज युधिष्ठिरको

रक्षा करना। इस युद्धमें सम्पूर्ण कार्य्योंके बाद राजाकी रक्षा करना ही मुख्य कार्य है।

महाराज! धृष्टद्युम्न भीमसेनसे बोले, हे पार्थ! मैं तुम्हारे अभिलषित कार्य्यको पूर्ण करूंगा। तुम अर्ज्जुनके समीप जाओ; तुम कुछ भी चिन्ता मत करो। द्रोणाचार्य्य इस महायुद्धमें धृष्टद्युम्नको बिना वध किये, किसी प्रकारसे भी धर्म्मराज युधिष्ठिरको ग्रहण न कर सकेंगे। तिसके अनन्तर भीमसेनने महाराज युधिष्ठिरको धृष्टद्युम्नके निकट समर्पण करके जेठे भाई धर्म्मराजको प्रणाम किया। धर्म्मराजने उन्हें आलिङ्गन करके उनका मस्तक सूंघा और शुभआशीर्व्वाद प्रदान किया। तिसके अनन्तर भीमसेनने ब्राह्मणोंकी पूजा करके उन्हें प्रसन्न कर उनकी प्रदक्षिणा किया, फिर ब्राह्मण गौ अग्नि आदि आठ प्रकारकी माङ्गलिक वस्तु स्पर्श करके किरातदेशीय मधुपान करके मतवारे नेत्रसे युक्त होकर द्विगुण उत्साही होगये। ब्राह्मणोंने उस समय उनके विजयसूचक स्वस्त्ययन पाठ किया। उन्होंने विजयके निमित्त आत्मवृद्धि अनुभव करके यथार्थ प्रस्थान किया। भीमके प्रस्थान करनेके समय वायु उनके अनुकूल बहते हुए उनकी विजयकी सूचना करने लगा। महारथियोंमें श्रेष्ठ भीमसेनके कानमें सुन्दर कुण्डल, भुजाओंमें उत्तम आभूषण, हाथमें [illegible] और शरीरमें सुवर्णभूषित महा[illegible] लोहमय कवच था। इससे जैसे बिज[illegible] बादल पर्व्वतपर स्थित होके शोभित [illegible] वैसा ही कवच उनके शरीरसे [illegible] वैसे ही शोभित होने लगा। [illegible] इन्द्रधनुष शोभित जैसे आकाशमें बादल [illegible] वैसे ही लाल पीले काले और [illegible] तथा कण्ठत्राण पहरनेसे [illegible] होने लगे। तुम्हारी सेनाके [illegible] करनेकी अभिलाषासे जब भीमसेन प्रस्थान करने वास्ते तैयार हुए तब फिर पाञ्चजन्य शङ्खका शब्द सुनाई पड़ा। धर्म्मराज युधिष्ठिरने तीनो लोकोंको भयभीत करनेवाले उस भयङ्कर पाञ्चजन्य शङ्खके शब्दको सुनके फिर महाबाहु भीमसेनसे बोले, हे भीमसेन! सुनते हो! यह यदुकुलश्रेष्ठ कृष्ण पाञ्चजन्य शङ्ख बजा रहे हैं, उस ही पाञ्चजन्य शङ्खके शब्दसे पृथ्वी आकाश और सम्पूर्ण दिशा अनुनादित होरही है। सव्यसाची अर्ज्जुन अवश्य ही बड़े भारी व्यसनमें पड़े होंगे उसहीसे कृष्ण स्वयं चक्र ग्रहण करके सम्पूर्ण कौरवोंके सङ्ग युद्ध कर रहे हैं। आज कुन्ती माता द्रौपदी और सुभद्राके पक्षमें महा अनिष्ट दर्शन हुआ! हे भीम! तुम शीघ्र ही अर्ज्जुनके समीप गमन करो। मैं अर्ज्जुनके सम्वाद पानेकी इच्छासे और सात्यकिके निमित्त बुद्धिरहित होरहा हूं, मुझे सब दिशा सूनी बोध होरही है। अनन्तर प्रतापी भीमसेनको जब उनके बड़े भ्राता और गुरु धर्म्मराजने जाव जाव कहके आज्ञा दिया, तब उन्होंने तलत्राण धनुषटङ्कार करके धनुषधारी हो शङ्ख और नगाड़े बजवाते हुए बार बार सिंहनाद करके भयङ्कर रूपसे शत्रुओंकी ओर सहसा गमन किया। मन और वायुके समान शीघ्रगामी उनके रथके उत्तम घोड़े विशोक सारथीके चलाने पर हर्ष पूर्व्वक हिनहिनाते और भीमसेनके रथको खींचते हुए गमन करने लगे। पृथापुत्र भीम अपने हाथसे धनुषटङ्कार करके सेनाके आगे स्थित योद्धाओंको अपने अस्त्रोंसे नाना प्रकार पीड़ित करके सेनाको बिदारते हुए गमन करने लगे। जैसे देवता लोग इन्द्रका अनुगमन करते हैं, वैसे ही चन्द्रवंशी और पाञ्चाल योद्धा भीमसेनके पीछे पीछे गमन करने लगे। महाराज! दुःशासन चित्रसेन कुण्डभेदी विविंशति दुर्म्मुख दुःसह विकर्ण शल विन्द अनुविन्द सुमुख दीर्घबाहु सुदर्शन, वृन्दारक सुहस्त

सुखेन दीर्घलोचन अभय रौद्रकर्म्मा सुवर्म्मा और दुर्विमोचन ये सम्पूर्ण रथियोंमें श्रेष्ठ पराक्रमी सम्पूर्ण सहोदर भ्राता नाना प्रकारके अनुयाई सेनाके योद्धाओंके सहित दौड़ कर भीमसेनको घेर कर युद्धभूमिके बीच स्थित हुए। कुन्तीपुत्र पराक्रमी भीमसेन उन लोगोंको अपनी ओर आये देखके इस प्रकार वेगपूर्व्वक उनकी ओर दौड़े, जैसे सिंह छोटे हरिनोंकी ओर सिंह दौड़ता है। जैसे बादलोंका समूह उदय हुए सूर्य्यको छिपा देता है, वैसे ही वे सम्पूर्ण योद्धा लोग अपने बाणोंसे भीमसेनको छिपाकर दिव्य महा अस्त्रोंको प्रकाशित करने लगे। परन्तु वह वेगपूर्व्वक उन योद्धाओंको अतिक्रम करके द्रोणाचार्य्यकी सेनाकी ओर दौड़े, और सम्मुखमें स्थित गज सेनाके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। पाण्डुपुत्र भीमसेनने मुहूर्त्तभरके बीच उस गजसेनाको अपने बाणोंकी वर्षासे छिन्न भिन्न कर दिया। जैसे वनके बीच शरभके शब्दको सुनकर हरिनोंका समूह भाग जाता है, वैसे ही वे सम्पूर्ण हाथी भीमसेनका भयङ्कर शब्द सुन कर वहांसे भाग गये। तिसके अनन्तर भीमसेन शीघ्रताके सहित द्रोणाचार्य्यकी सेनाकी ओर दौड़े. जैसे समुद्रके वेगको तट रोकता है वैसे ही द्रोणाचार्य्यने भीमसेनको आगे बढ़नेसे रोका। और मानो हंसके द्रोणाचार्य्यने भीमसेनके ललाटमें बाण विद्ध किया। उससे पाण्डुपुत्र भीमसेन किरणधारी सूर्य्यके समान प्रकाशित होने लगे। "जैसे अर्ज्जुन मेरी मानरक्षा करके गये हैं वैसे ही भीमसेन भी करेंगे" यही विचार कर द्रोणाचार्य्य उनसे यह वचन बोले, हे भीमसेन! मैं शत्रु हूं, तुम आज युद्धभूमिमें मुझे बिना पराजित किये, आगे न जासकोगे। यद्यपि तुम्हारे भाईके सहित कृष्ण मेरी अनुमतिके अनुसार प्रविष्ट हुए हैं, परन्तु तुम मेरे समीपसे आगे न जासकोगे। निडर चित्त भीमसेन द्रोणाचार्य्यके वचनको सुन, क्रोधसे नेत्र लाल करके गर्मसांस छोड़ते हुए उनसे बोले। हे अधम ब्राह्मण! पराक्रमी अर्ज्जुन तुम्हारी अनुमतिसे सेनाके बीच प्रविष्ट हुए हैं यह सम्भव नहीं है, क्योंकि वह इन्द्रसे रक्षित सेनाके बीचमें भी प्रवेश कर सकते हैं। और यदि अर्ज्जुन तुम्हारी पूजा तथा सम्मान करके गये भी हों तो मैं वह दयालु अर्ज्जुन नहीं हूं। मैं भीमसेन तुम्हारा शत्रु हूं, हम सब कोई तुम्हें पिता गुरु तथा बन्धु कहके तुम्हारा मान किया करते हैं, और तुम्हारे समीप विनीत भावसे स्थित रहते हैं परन्तु तुमने आज जैसा वचन कहा, उससे उलटा भाव बोध होता है। यदि तुम अपनेको हम लोगोंका शत्रु समझते हो, तो वही होवे, मैं भी तुम्हारे शत्रुके अनुरूप भयङ्कर कर्म्म करता हूं। ऐसा कहके भीमसेनने यमराजके समान क्रुद्ध होकर कालदण्ड समान अपनी भयङ्करी गदा उठा कर द्रोणाचार्य्यके रथके ऊपर चलाया। द्रोणाचार्य्य उसी समय अपने रथसे कूदके पृथक् होगये, परन्तु घोड़े सारथी और ध्वजाके सहित उनका रथ चूर्ण होगया और जैसे प्रचण्ड वायुके वेगसे वृक्ष टूट टूट गिर पड़ते हैं वैसे ही बहुतेरे योद्धा भी उस गदाकी चोटसे नष्ट होगये। अनन्तर तुम्हारे महारथ पुत्रोंने फिर भीमसेनको घेर लिया। इधर शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य दूसरे रथपर चढ़के व्यूहके दरवाजेपर युद्धके निमित्त उपस्थित हुए। महाराज! तिसके अनन्तर भीमसेन अपने सम्मुख स्थित रथसेनाको तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षामें छिपाने लगे। परन्तु तुम्हारे महारथी पुत्र भीमसेनके बाणोंसे पीड़ित होकर भी विजयकी इच्छा करके युद्ध करने लगे। दुःशासनने क्रुद्ध होकर भीमसेनके वधकी इच्छा करके यमदण्डके समान एक भयङ्करी शक्ति चलाया। भीमने दुःशासनके हाथसे छूटी

इसे इस शक्तिको अपनी ओर आती देख, उसे अपने बाणसे दो खण्ड करके गिरा दिया; वह भीमका पराक्रम अद्भुत रूपसे दीख पड़ा। अनन्तर भीमसेनने क्रोधपूर्व्वक अपने तीक्ष्ण बाणोंसे कुण्डभेदी सुषेण और दीर्घनेत्र इन तीनों भाइयोंका तीन तीन बाणोंसे वध किया। तुम्हारे पुत्र पराक्रम प्रकाश करते हुए युद्ध कर रहे थे उस ही समयमें भीमसेनने उन लोगोंके बीचमें कुरुकुलकी कीर्त्ति बढ़ाने वाले वृन्दारकका वध करके फिर अभय रौद्रकर्म्मा और दुर्विमोचन इन तीनों वीरोंका तीन तीन बाणोंसे वध किया। तुम्हारे पुत्रोंने भीमसेनके बाणोंसे पीड़ित होकर भी मृत्युका भय त्यागकर उन्हें चारों ओरसे घेर लिया। जैसे ग्रीष्मकालके अनन्तर बादलोंके समूह पृथ्वीपर जलकी वर्षा करते हैं वैसे ही उस योद्धाओंने भीमपर अपने बाणोंकी वर्षा किया। शत्रुनाशन भीमसेनने हंसते हंसते शिलाकी वर्षा समान उन शूरवीरोंकी बाणवर्षाको अचल पर्व्वतके समान युद्धभूमिमें स्थित होकर ग्रहण किया; तुम्हारे पुत्रोंके बाणोंसे खिन्न होकर भीमसेन तनिकभी दुःखित न हुए वरन तुम्हारे पुत्र विन्द अनुविन्द और सुवर्म्माको हंसते हुए युद्धभूमिमें संहार किया। अनन्तर तुम्हारे पुत्र सुदर्शनको भीमसेनने ज्योंही अपने बाणसे छिन्न किया, त्योंही सुदर्शन प्राणरहित होकर पृथ्वीमें गिर पड़े। अनन्तर पाण्डुपुत्र भीमसेनने [illegible] उस सम्पूर्ण रथियोंकी सेनाको चारों ओर छिन्न भिन्न कर दिया। अनन्तर बहा- [illegible] हुए तुम्हारे पुत्र भीमसेनके बाणोंसे पीड़ित हो उनके भयंकर रथशब्दको [illegible] होके सिंहके सम्मुखसे [illegible] भागने लगे। महाबाहु [illegible] तुम्हारे पुत्रोंके पीछे पीछे गमन [illegible] सेनाके [illegible] पुरुषोंको अपने [illegible] करने लगे। तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा भीमसेनके अस्त्रोंसे क्षतविक्षत शरीर होकर उन्हें त्याग अपने अपने घोड़ोंको दौड़ाकर उनके सम्मुखसे पृथक होने लगे। महाबली भीमसेनने उन योद्धाओंको युद्धभूमिमें पराजित कर ऊंचे स्वरसे सिंहनाद बाहुशब्द और तलत्राणके भयङ्कर शब्दसे उन सम्पूर्ण रथियोंको भयभीत करके मुख्य मुख्य योद्धाओंका वध किया। अनन्तर सम्पूर्ण रथियोंको अतिक्रम करके द्रोणाचार्य्यकी सेनाको ओर दौड़े।

१२५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, भीमसेनने जब द्रोणाचार्य्यकी सेनाके योद्धायोंके वध करनेकी इच्छासे उनकी ओर गमन किया तब द्रोणाचार्य्य हंसते हंसते उन्हें निवारण करनेकी इच्छासे उनके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। परन्तु भीमसेन द्रोणाचार्य्यके चलाये हुए बाणोंके प्रवाहको मानो पान करते हुए सेनाके पुरुषोंको मायासे मोहित करके तुम्हारे पुत्रोंकी ओर दौड़े तुम्हारे पुत्रकी आज्ञासे सेनाके मुख्य मुख्य योद्धाओंने शीघ्रताके सहित उन्हें चारों ओरसे घेर लिया? भीमसेनने इस भांतिसे उन मुख्य मुख्य धनुर्धारी वीरोंके बीचमें घिरकर हंसके सिंहनाद किया; और शत्रुओंको नाश करने योग्य एक भयङ्करी गदा उठाकर इन योद्धाओंकी ओर चलाया, भीमसेनके हाथसे छूटी हुई वह भयङ्करी गदा तुम्हारे सैनिक पुरुषोंका नाश करती हुई घोर शब्दके सहित पृथ्वीमें गिरके तुम्हारे पुत्रोंको भयभीत करने लगी। तुम्हारी ओरके इसी सम्पूर्ण योद्धा लोग उस प्रकाशमान गदाको वेगपूर्व्वक अपनी ओर आती देख महाघोर शब्द करते हुए वहांसे भाग गये। जितने ही मनुष्य इस गदाके

असह्य शब्दको सुनकर पृथ्वीमें गिर पड़े और बहुतेरे रथी भी अपने रथसे पृथ्वीमें गिरे। अनन्तर भीमसेन हाथमें गदा लेकर तुम्हारी ओरके योद्धाओंको इस प्रकार नष्ट करने लगे कि वे सम्पूर्ण योद्धालोग सिंहके समान पराक्रमी भीमसेनको देखकर हरिनोंकी भांति भयभीत होकर युद्धभूमिसे भागने लगे। कुन्तीपुत्र भीमसेन उन सम्पूर्ण योद्धाओंको तितर बितर करके इस प्रकार सेनाके बीच वेग पूर्व्वक गमन करने लगे, जैसे पक्षिराज गरुड़ अत्यन्त वेगसे गमन करते हैं। महाराज। तब रथियोंमें श्रेष्ठ भीमसेनको पुरुषोंका नाश करता देख भरद्वाज-पुत्र द्रोणाचार्य्य उनके सन्मुख उपस्थित हुए, उन्होंने वेग पूर्व्वक भीमसेनको युद्धसे निवारण करके अपने भयङ्कर सिंहनादसे पाण्डवोंको भयभीत किया। महात्मा भीमसेनके सङ्ग उस समय द्रोणाचार्य्यका देवासुर संग्रामके समान महा घोर युद्ध होने लगा, जब भीमसेन द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छूटे हुए सैकड़ों सहस्रों बाणोंसे पीड़ित होने लगे, तब रथसे कूदकर क्रोधसे दोनोंनेत्र लाल करके द्रोणाचार्य्यकी ओर चले। जैसे वृषभ लीलाके अनुसार जलवर्षाकी धारा ग्रहण करता है वैसे ही पुरुषश्रेष्ठ भीमसेनने द्रोणाचार्य्यकी बाणवर्षाको अनायासही सहन किया। महाबली भीमसेन युद्धभूमिमें द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे छिप कर भी उनके रथके समीप उपस्थित हुए और रथको उठा कर दूर फेंक दिया। हे कुरुराज! द्रोणाचार्य्यका रथ जब भीमसेनके फेंकनेसे दूर गिरा; तब द्रोणाचार्य्य शीघ्रताके सहित रथ पर चढ़के फिर व्यूहके दरवाजे पर स्थित हुए। भीमसेनके सारथीने भी शीघ्रताके सहित उनके रथको आगे बढ़ाया। अनन्तर भीमसेनने अपने रथपर चढ़के शीघ्रताके सहित तुम्हारे पुत्रोंकी सेनाके बीच प्रवेश किया। जैसे प्रचण्ड वायु वृक्षोंको उखाड़के दूर फेंकता है वैसे ही भीमसेन क्षत्रिय योद्धाओंको मर्द्दन करते हुए वेगपूर्व्वक गमन करने लगे। अनन्तर भीमसेन हृदिकपुत्र कृतवर्म्माकी सेनाके बीच प्रवेश करके उन योद्धाओंको पीड़ित करते हुए आगे बढ़े। शार्दूल जैसे गौवोंके समूहको पीड़ित करता है वैसे ही भीमसेन अपने तलत्राण शब्दसे सम्पूर्ण सेनाके पुरुषोंको भयभीत करते हुए गमन करने लगे, इसी प्रकार भोजसेना म्लेच्छसेना और दूसरी युद्धविद्यामें निपुण बहुतेरी सेनाको अतिक्रम करके भीमसेनने महारथ सात्यकिको देखा। अनन्तर वह यत्नवान होकर अर्ज्जुनके देखनेकी अभिलाषसे तुम्हारे योद्धाओंको अतिक्रम करके वेग पूर्व्वक रथको चलाकर आगे बढ़े। अनन्तर कुछ दूर जाके जयद्रथ वधकी इच्छासे युद्ध करनेवाले पराक्रमी अर्ज्जुनको भीमसेनने अवलोकन किया। जैसे वर्षाकालके समय बादल गर्ज्जनेसे शब्द होता है वैसे ही पुरुषसिंह भीमसेनने अर्ज्जुनको देखकर महाभयङ्कर शब्दके सहित सिंहनाद किया। कृष्ण और अर्ज्जुनने भीमसेनके उस भयङ्कर सिंहनादको सुना। वे दोनों तेजस्वी वीर भीमसेनके शब्दको सुनकर उसको देखनेकी इच्छासे बार बार शब्द करने लगे। तिसके अनन्तर भीमसेन और सात्यकि भयङ्कर शब्द करनेवाले दो वृषभोंके समान महा घोर शब्द करते हुए उनके समीप जानेकी इच्छासे गमन करने लगे। महाराज। धर्म्मपुत्र राजा युधिष्ठिरने भीमसेन अर्ज्जुन, सात्यकि और कृष्णके शब्दको सुनकर अर्ज्जुनके विजयकी आशा किया। मतवारे हाथीके समान जब भीमसेन उस प्रकारसे सिंहनाद कर रहे थे, तब धर्म्मात्मा पुरुषोंमें अग्रणी धर्म्मपुत्र महाबाहु युधिष्ठिर उस शब्दको सुनकर हंसे और अपने हृदयके भावको विचारकर मन ही मन चिन्ता करने लगे। हे भीमसेन! तुमने

[illegible]र्ज्जुन आदिके सत्कारको प्रदान करके [illegible]की आज्ञा पालन किया है इससे तुम [illegible] जिसके द्वेषी होगे, उसकी विजय न हो [illegible]गी। युद्धभूमिमें प्रारब्धहीसे सव्यसाची [illegible]र्ज्जुन जीवित है, प्रारब्धहीसे सत्य पराक्रमी [illegible] कुशलपूर्व्वक युद्धभूमिमें स्थित है। [illegible]रब्धहीसे मैंने कृष्ण अर्ज्जुनके सिंहनाद [illegible] सुना है। जिन्होंने संग्राममें इन्द्रको [illegible]राजित करके अग्निको तृप्त किया है वह [illegible] अर्ज्जुन प्रारब्धहीसे जीवित है। [illegible] बाहुबलके सहारे हम लोग जीते हैं [illegible] शत्रुओंके नाश करने वाले अर्ज्जुन प्रार-[illegible] जीवित है। जिन्होंने देवताओंसे भी [illegible]पराजित निवातकवच दानवोंको एक धनुष [illegible] करके ही पराजित किया, वह [illegible]र्ज्जुन प्रारब्धहीसे जीवित हैं जिन्होंने मत्स्यदे-[illegible]में इकट्ठे हुए गौवोंके हरणकरनेवाले सम्पूर्ण [illegible] पराजित किया था वह अर्ज्जुन प्रार-[illegible] जीवित है। जिन्होंने अपने बाहुबलसे [illegible] हजार कालकेय असुरोंको महासंग्राममें [illegible] किया वह अर्ज्जुन प्रारब्धहीसे जीवित [illegible]। जिन्होंने दुर्य्योधनके वास्ते गन्धर्व्वराजको [illegible] पराजित किया; वह अर्ज्जुन प्रारब्धहीसे [illegible] है वह किरीटधारी पराक्रमी मेरा [illegible] अर्ज्जुन कृष्णसारथीके सहित प्रारब्ध[illegible] है। पुत्रशोकसे कातर होके [illegible] करनेकी इच्छासे जय-[illegible] किया है, परन्तु क्या वह [illegible] रक्षित [illegible] अपनी प्रति-[illegible] क्या मैं [illegible] देखकर [illegible] दुर्य्योधनके [illegible] क्या अर्ज्जुनके [illegible] शान्त [illegible] देखकर

को अर्ज्जुनके बाणोंसे मरा हुआ देखकर हम लोगोंके संग सन्धि स्थापित करेगा? युद्धभूमिमें अपने भाइयोंको मरते देख क्या वह मन्द बुद्धिवाला दुर्य्योधन हम लोगोंके संग सन्धि करेगा? नीचबुद्धिवाला दुर्य्योधन क्या दूसरे अनेक योद्धाओंको मरके पृथ्वीमें गिरे देख, पश्चाताप करेगा? अकेले भीष्मके वधसे ही क्या वह शत्रुता रूपी अग्नि शान्त होवेगी? बाकी बचे हुए पुरुषोंके जीवन रक्षाके वास्ते क्या दुर्य्योधन हम लोगोंके संग सन्धि स्थापित करेगा? हे राजेन्द्र! उस महाघोर संग्रामके समय दयालु राजा युधिष्ठिर इसी भांति अनेक चिन्ता करने लगे।

१२६ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! बादलके गर्ज्जन समान सिंहनाद करनेवाला भीमसेन जब उस प्रकार भयङ्कर शब्द कर रहा था, तब किन किन योद्धाओंने उसे युद्धसे निवारण किया? मैं तीनों लोकके बीच ऐसे किसी पुरुषको भी नहीं देखता हूं, जो क्रोधी भीमसेनके सम्मुख युद्धभूमिमें खड़ा हो सके। भीमसेनको महा-युद्धमें कालकी भांति गदा लेकर खड़े होनेपर मैं ऐसे किसी वीर पुरुषको नहीं देखताहूं जो युद्धभूमिमें उसके सम्मुख खड़ा होसके। जो रथसे रथ और हाथियोंसे हाथी नष्टकरता है इन्द्रके समान होकर भी कौन पुरुष उसके सम्मुख खड़ा होगा? भीमसेन क्रुद्ध होकर जब मेरे पुत्रोंका वध कर रहा था, तब दुर्य्योधनके हितकी इच्छा करनेवाले कौन कौन शूरवीर योद्धा उसके सम्मुख युद्ध करनेके वास्ते उपस्थित हुए थे! जब भीमसेन दावा-[illegible] मेरे पुत्रोंको भस्म करनेके निमित्त उद्यत हुआ, तब कौन कौन [illegible] पराक्रम प्रकट [illegible] करनेके

वास्ते उसके सम्मुख खड़े हुए थे। यमराज जैसे सम्पूर्ण प्राणियोंके संहार करनेके वास्ते उद्यत होते हैं वैसे ही भीमसेनके हाथसे कुरु सेना पीड़ित देख कौन कौन योद्धा उसे निवारण करनेमें प्रवृत्त हुए थे। भीमसेनसे मुझे जैसा भय लगता है वैसा भय अर्जुनकृष्ण और धृष्टद्युम्न आदिसे नहीं होता है। जब भीमसेनने अग्निके समान प्रज्वलित होकर मेरे पुत्रोंको भस्म करनेकी इच्छा किया, तब कौन कौन योद्धा युद्ध करने वास्ते उसके आगे खड़े हुए थे; वह वृत्तान्त तुम मेरे समीपमें वर्णन करो।

सञ्जय बोले महाराज। जब महाबली पराक्रमी भीमसेन उस प्रकार शब्द कर रहे थे, तब कर्ण उस शब्दको सुनकर उनके सम्मुख उपस्थित हुए। महाबली कर्णने अत्यन्त क्रोधित होके अपना प्रचण्ड धनुष चढ़ाकर निज पराक्रम प्रकाशित करते हुए धर्मयुद्ध करके भीमसेनके गमन करनेके मार्गको इस भांति रोका जैसे वृक्षोंके समूह वायुके बलको रोक देते हैं। भीमसेन महाबली कर्णको यत्नपूर्व्वक सम्मुख खड़े देख अत्यन्त क्रुद्ध हुए और शिलापर घिसे हुए वाणोंके समूह कर्णके ऊपर चलाने लगे। कर्णने भीमसेनके चलाये हुए वाणोंके वेगको सहके उनके ऊपर अनेक बाण चलाये। युद्धमें भीमसेनके सङ्ग कर्णका समागम देख और उन दोनोंके तलत्राण शब्द सुनकर रथी घुड़सवार और दूसरे सम्पूर्ण योद्धा लोग भयसे कांपने लगे। भीमसेनके भयङ्कर शब्दको सुनकर क्षत्रियोंने आकाश और पृथ्वीको अवरुद्ध हुई समझा। महात्मा भीमसेनके बार बार गर्ज्जन शब्दको सुनकर कितने ही योद्धाओंके हाथसे धनुष छूटकर पृथ्वीमें गिर पड़े; और घोड़े हाथी आदि वाहन भयभीत होकर मलमूत्र त्याग करने लगे। भीमसेनके सङ्ग जब कर्णका महा घोर तुमुल संग्राम होने लगा तब उस समय महा भयङ्कर उत्पात और अशकुन प्रकट हुए। गिद्ध कौवे और बगुले आदि मांस भक्षण करनेवाले पक्षियोंसे आकाश परिपूरित होगया। तिसके अनन्तर कर्णने बीस वाणोंसे भीमसेनको पीड़ित करके शीघ्रताके सहित पांच वाणोंसे उनके सारथीको विद्ध किया। प्रहार करनेवाले महाबलवान् भीमसेनने हंसकर चौसठ वाणोंसे कर्णको विद्ध किया। अनन्तर महाबली कर्णने भीमको ओर चार बाण चलाये। भीमसेनने अपना हस्तलाघव दिखाते हुए कर्णके चलाये उन वाणोंको समीप न आते ही आते नतपर्व्व वाणोंसे मार्गहीमें काटके गिरा दिया। अनन्तर कर्णने अनगिनत बाण चलाकर भीमसेनको छिपा दिया। भीमसेनने कर्णके बाण जालसे छिपकर उनके धनुषकी मुठी काट दिया; और बहुतसे नतपर्व्व वाणोंसे कर्णको विद्ध किया। भयङ्कर कर्म्म करनेवाले महारथी सूतपुत्र कर्णने दूसरा धनुष ग्रहण करके भीमसेनको विद्ध किया। भीमसेनने अत्यन्त क्रुद्ध होकर वेगशील कर्णके वक्षस्थलमें तीन नतपर्व्व वाणोंसे प्रहार किया, उन तीनों वाणोंसे विद्ध होकर महात्मा कर्ण उस समय तीन ऊंचे शृङ्गवाले पर्व्वतके समान शोभित होने लगे। जैसे पर्व्वतके ऊपरसे गेरूकी धारा बहती है, वैसे ही भीमसेनके वाणोंसे विद्ध होकर कर्णके शरीरसे रुधिर धारा बहने लगी। कर्ण भीमके वाणोंसे पीड़ित होकर तनिक भी विचलित न हुए और धनुषपर बाण चढ़ाकर भीमसेनको विद्ध करने लगे। कर्णने सौ सौ हजार बाण भीमसेनकी ओर चलाये दृढ़ धनुर्द्धारी कर्णके वाणोंसे छिपकर भीमने गर्व्व प्रकाश करते कर्णके धनुषको काट दिया; और एक भल्लसे उनके सारथीका वध करके उसे यमपुरीमें भेज दिया; तिसके अनन्तर भीमसेनने कर्णके रथके चारों घोड़ोंको मार डाला। महारथी कर्ण घोड़ेमें रहित

[illegible] दूसरे द्रुपदनके रथपर जा चढ़े। महा प्रतापी भीमसेनने इसी प्रकार कर्णको पराजित करके बादल गर्जनके समान महाभयङ्कर सिंहनाद किया; उस सिंहनादको सुनकर राजा युधिष्ठिर अत्यन्त ही आनन्दित हुए। पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंने कर्णको भीमसेनसे पराजित हुए देखकर चारों ओरसे अपने शंख बजाये। तुम्हारी ओरके योद्धाओंने शत्रुओंके शब्दको सुनकर महाघोर शब्द किया। अर्जुनने गाण्डीव धनुष चढ़ाके धनुषटङ्कार किया और कृष्णने पाञ्चजन्य शंख बजाये। परन्तु भीमसेनके गर्जनका शब्द सम्पूर्ण धनुर्धारियोंको अतिक्रम करके युद्धभूमिमें सुनाई देने लगा। तिसके अनन्तर कर्ण और भीमसेन पृथक रूपसे युद्ध करते हुए रणभूमिमें घूमने लगे। महारथी कर्ण कोमल रीतिसे और भीमसेन पूर्ण पराक्रमके सहित रणभूमिमें घूमते हुए युद्ध करने लगे।

१२७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! सिन्धुराज जयद्रथके वधके निमित्त अर्जुन सात्यकि और भीमसेनने जब तुम्हारी सेनाके बीच प्रवेश किया, तब तुम्हारी सम्पूर्ण सेना व्याकुल होके तितर [illegible] होने लगी। तब तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनने [illegible] कार्य्यको चिन्ता करके शीघ्र[illegible] रथपर चढ़कर द्रोणाचार्य्यके निकट [illegible] प्रणाम किया। वायु तथा [illegible] दुर्य्योधनका रथ शीघ्र ही [illegible] उपस्थित हुआ। दुर्य्योधन [illegible] करके द्रोणाचार्य्यसे बोले, हे [illegible] सात्यकि और भीमसेन [illegible] सेनाको परा[illegible] [illegible] समीप तक [illegible] महारथ[illegible] युद्ध करते हुए रणभूमिमें भ्रमण कर रहे हैं। यदि मानलें कि महाबली पराक्रमी अर्जुनने युद्धमें तुम्हें अतिक्रम करके गमन किया है; परन्तु सात्यकि और भीमसेनने किस प्रकार तुम्हें अतिक्रम करके मेरी सेनाके बीच प्रवेश किया है? सम्पूर्ण योद्धा तुम्हारे विषयमें यह वचन कह रहे हैं कि धनुर्वेद जाननेवाले द्रोणाचार्य्य किस प्रकार युद्धभूमिमें पराजित हुए हैं? आप पुरुषसिंह हैं; जब आपको इन तीनों महारथियोंने अतिक्रम करके गमन किया है, तब मेरी प्रारब्ध ही खोटी हुई है; मैं ऐसा ही समझ रहा हूं। इससे युद्धभूमिमें अवश्य ही मेरी मृत्यु होगी। इस समय आप मेरे कल्याणके वास्ते विचार कीजिये। इस उपस्थित कार्य्यके विषयमें जो कुछ कहना हो, वह मुझसे कहिये, और सिन्धुराज जयद्रथके विषयमें जो कुछ कर्त्तव्य कार्य्य करना हो आप उसका विधान कीजिये।

द्रोणाचार्य्य बोले, हे राजन्! चिन्ताके बहुतसे विषय हुए हैं परन्तु इस समय जो कुछ कर्त्तव्य कार्य्य करना होगा, उसे सुनिये। जब पाण्डवोंकी ओरके तीन महा रथिओंने व्यूहके बीच प्रवेश किया है तब व्यूहके पीछे और बीचमें दोनो स्थलों पर भयकी सम्भावना हुई है, परन्तु इन दोनो स्थानोंके बीच जहां पर कृष्ण अर्जुन हैं, उस ही स्थानको दृढ़ रखनेका विचार उत्तम बोध होता है। यद्यपि कुरुसेनाके आगे और पीछेका हिस्सा शत्रुओंसे आक्रान्त हुआ है, तो भी सिन्धुराज जयद्रथकी रक्षा करना ही मुख्य कार्य्य बोध होता है; क्योंकि सिन्धुराज जयद्रथ अकेले क्रोधी अर्जुनसे ही भयभीत हुए हैं; इस पर भी सात्यकि और भीमसेनने अर्जुनके समीप गमन किया है इससे सबसे पहिले सिन्धुराज जयद्रथकी रक्षा करना ही इस समयका कर्त्तव्य कार्य्य है, [illegible] अर्जुनके युद्धके ही समान

जूएका खेल हुआ था उसका फल इस समय उपस्थित हुआ है उस जूएकी खेलमें जो जीत और हार होती है वह प्रकृत जीत हार नहीं कही जाती। आज हम लोग पण (बाजी) रखके जूएकी खेलमें प्रवृत्त हुए हैं इसी जूएकी खेलमें जीत हार होनी ही प्रकृत जीतहार समझी जावेगी। शकुनिने कुरुसभामें पणकर जिन भयङ्कर पासोंको ग्रहण करके जूआ खेला था वे सब पासे नहीं हैं वे हम लोगोंके शरीरको भेदनेवाले चोखे बाण हैं। महाराज! आज इस युद्धको तुम जूएका खेल ही समझो यह जो सम्पूर्ण कौरवोंकी सेना है उसे कौठे और बाणोंको ही अक्ष (पासे) समझो। इस जूएको खेलमें तुम जयद्रथको पण (बाजी) रूपी जानो क्योंकि उस ही को लेकर आज महाघोर युद्ध होरहा है। उनकी प्राणरक्षा वा प्राणनाशसे ही इस युद्धरूपी जूएकी खेलमें जीत हार समझी जावेगी। इससे इस समय सब कोई अपने प्राणकी आशा त्याग कर सिन्धुराज जयद्रथकी रक्षा करनेके वास्ते युद्ध करनेको युद्धभूमिमें तत्पर होजाओ। हे वीर! जहां पर सम्पूर्ण महाधनुर्द्धर योद्धा लोग यत्नवान होकर सिन्धुराज जयद्रथकी रक्षाकर रहे हैं तुम उस ही स्थानमें जाकर अपना ओरके महारथ वीरोंकी रक्षा करो। और मैं वहांपर तुम्हारी सहायताके वास्ते बहुतेरे शूरवीर पुरुषोंकी सेना इसी स्थानसे भेजूंगा। मैं इसी स्थान पर स्थित होकर पाण्डवोंके सहित पाञ्चाल योद्धाओंका निवारण करूंगा। हे राजन्! अनन्तर राजा दुर्य्योधनने द्रोणाचार्य्यकी आज्ञा अनुसार अत्यन्त कठिन कर्म्म करनेके वास्ते तैयार होकर अपने अनुयाई योद्धाओंके सहित युद्ध करनेके निमित्त प्रस्थान किया। पहिले जिस समय अर्ज्जुनने युद्ध करनेकी इच्छासे तुम्हारी सेनाके बीच प्रवेश किया था उस समय उनके दोनों चक्ररक्षक शीघ्र अस्त्र चलानेवाले युधामन्यु और उत्तमौजा कृतवर्म्मासे निवारित हुए थे, इस समय वे दोनों सेनाके बाहरसे अर्ज्जुनके समीप जानेकी इच्छासे गमन कर रहे थे। बलवान राजा दुर्य्योधन उन दोनोंको सेनाके बगलसे व्यूहबद्ध अपनी सेनामें घुसते देख शीघ्रताके सहित उन लोगोंके संग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। युद्धमें वेगवान वे दोनों भाई भी धनुष चढ़ाकर दुर्य्योधनकी ओर दौड़े। युधामन्युनेकङ्कपत्रयुक्त तीस बाणोंसे कुरुराज दुर्य्योधनको बिद्ध करके बीसबाणोंसे उनके सारथी और चार बाणोंसे उनके रथके चारों घोड़ोंको बिद्ध किया। दुर्य्योधनने भी एक बाणसे युधामन्युकी ध्वजा एक बाणसे धनुष और एक भल्लसे उनके सारथीको काटके पृथ्वीमें गिराया, तिसके अनन्तर दुर्य्योधनने चार तीक्ष्ण बाणोंसे उनके रथके चारों घोड़ोंको बिद्ध किया। अनन्तर युधामन्युने अत्यन्त कुपित होकर अत्यन्त तीक्ष्ण तीस बाणोंको ग्रहण करके दुर्य्योधनके हृदयमें प्रहार किया, और उत्तमौजाने भी अपने तीक्ष्ण बाणोंसे राजा दुर्य्योधनके सारथीका बध किया। हे राजेन्द्र! दुर्य्योधनने उत्तमौजाके चारों घोड़े और दो पृष्ठरक्षक योद्धाओंका बध किया। रणभूमिमें जब उत्तमौजाके रथके घोड़े और सारथी मारे गये, तब वह घोड़ोंसे रहित रथको त्यागके अपने भाईके रथपर चढ़ गये। उन्होंने अपने भाईके रथपर चढ़के अनेक बाणोंसे राजा दुर्य्योधनके रथके घोड़ोंके ऊपर प्रहार किया, अनन्तर बाणोंकी चोटसे दुर्य्योधनके घोड़े प्राणरहित होकर उस ही समय पृथ्वीमें गिर पड़े। युधामन्युने अपने रथके घोड़ोंको मरते देखकर अपने अस्त्रोंके बलसे शीघ्र ही दुर्य्योधनके धनुष बाणको काट दिया। पुरुषश्रेष्ठ दुर्य्योधन घोड़े सारथीसे रहित रथको त्यागके गदा उठाकर दोनों पाञ्चालराजपुत्रोंकी ओर दौड़े, युधामन्यु उत्तमौजा शत्रुनाशन दुर्य्योधनको गदा लिए

अपनी ओर आते देख रथसे कूदकर पृथ्वीपर स्थित हुए। तिसके अनन्तर कुरुराज दुर्य्योधनने सुवर्ण विचित उस रथको घोड़े, सारथी और ध्वजाके सहित अपनी गदाके प्रहारसे चूर चूर कर दिया। तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन स्वयं रथहीन होकर भी पाञ्चाल राजपुत्रके रथको गदाके प्रहारसे चूर चूर करके शीघ्रताके सहित मद्रराज शल्यके रथपर जाचढ़े और उन दोनो पाञ्चालराजपुत्रोंने भी दूसरे रथपर चढ़के अर्ज्जुनके समीप गमन किया।

१२८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज। इस प्रकार रोएं खड़ा करनेवाले भयङ्कर संग्रामके उपस्थित होनेपर सम्पूर्ण सेनाके योद्धा लोग शत्रुओंके बाणोंसे पीड़ित होकर व्याकुल होने लगे ? तब जैसे वनके बीच एक मतवारे हाथी दूसरे मतवारे हाथीकी ओर दौड़ता है, वैसे ही राधापुत्र कर्ण युद्ध करनेकी इच्छासे भीमसेनकी ओर दौड़े।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! युद्ध करनेकी आसा एक दूसरके सम्मुख होनेवाले कर्ण और भीमसेन दोनो ही बलवान है, इससे अर्ज्जुनके रथके निकट उन दोनोंका किस प्रकार युद्ध हुआ, वह सब हमारे समीप तुम विस्तार पूर्व्वक वर्णन करो। [illegible] भीमसेनके निकट पराजित हुए थे [illegible] किस प्रकारसे उनके समीप युद्ध करनेको [illegible] गमन किया। [illegible] जो महा- [illegible] रथियोंमें श्रेष्ठ कहके [illegible] भीमसेन भी किस प्रकार उस सूत- [illegible] धर्म्मपुत्र युधिष्ठिरके [illegible] और जीतकी [illegible] [illegible] सहित [illegible] से दोनों [illegible]

थे वैसे महारथी सूतपुत्र कर्णके सङ्ग भीमसेनका कैसा संग्राम हुआ ? हे सञ्जय! जो कर्ण ब्राह्मणोंमें निष्ठावान अत्यन्त पराक्रमी युद्धसे पीछे न हटनेवाला और सम्पूर्ण योद्धाओंके बीच श्रेष्ठ है उसके सङ्ग भीमने किस प्रकारसे युद्ध किया ? जो हो उन दोनो वीरों कर्ण तथा भीमसेनका अर्ज्जुनके रथके निकट जैसा युद्ध हुआ था वह तुम मेरे समीप वर्णन करो। कर्णने कुन्तीके समीप पहिले पाण्डवोंके ऊपर अपना भ्रातृभाव मालूम किया था, और कर्ण स्वयं भी दयालु है, उन्होंने कुन्तीके वचनको स्मरण करके किसप्रकार भीमसेनके सङ्ग युद्ध किया। भीमसेनने पहिलेकी शत्रुता स्मरण करके कर्णके साथ कैसा युद्ध किया ? हे सूत। बुद्धहीन दुर्य्योधन सदा यह आशा करता था कि कर्ण युद्धमें एकत्रित हुए सम्पूर्ण पाण्डवोंको पराजित करेंगे। मेरे पुत्रोंकी विजयकी आशा जिस कर्ण पर निर्भर है भीमसेनने उस पराक्रमी कर्णके साथ कैसा संग्राम किया ? हे तात! जिस कर्णके आश्रयसे मेरे पुत्र लोग महारथ पाण्डवोंके साथ शत्रुता किये हैं और भीमसेन भी जिस सूतपुत्र कर्णकी सलाहसे दुर्य्योधनके किये हुए नाना प्रकारके अनिष्टोंको सदा स्मरण करता रहता है ऐसे स्थलमें भीमने कर्णके साथ किस प्रकार युद्ध किया! जिस महारथी पुरुषने एक ही रथ पर चढ़के अकेले ही इस सम्पूर्ण पृथ्वीको जीत लिया था, जो इस पृथ्वीके बीच कवच और कुण्डलके सहित उत्पन्न हुआ है ऐसे पराक्रमी सूतपुत्र कर्णके सहित भीमसेनका कैसा संग्राम हुआ ? हे सञ्जय! उन दोनो वीरोंका जैसा संग्राम हुआ था वह तुम मेरे समीप विस्तारपूर्व्वक वर्णन करो; क्योंकि तुम वर्णन करनेमें निपुण हो।

सञ्जय बोले महाराज! भीमसेनने रथियोंमें श्रेष्ठ राधापुत्र कर्णको त्यागके जहां पर [illegible] ... [illegible]

करो। जब वह कृष्ण अर्ज्जुनकी ओर जाने लगे, त्योंही राधापुत्र कर्णने दौड़कर उनके ऊपर कङ्कपत्र युक्त अपने तीक्ष्ण बाणोंकी ऐसी वर्षा करी जैसे बादल पर्व्वतके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं और प्रसन्नता पूर्व्वक हंसकर ऊंचे स्वरसे भीमसेनको आवाहन करके यह वचन बोले, हे भीमसेन! तुम रणभूमिमें पीठ दिखाओगे यह तुम्हारे शत्रुओंने स्वप्नमें भी नहीं अनुभव किया था, परन्तु आज तुम अर्ज्जुनके देखनेकी इच्छासे मुझे पीठ दिखा रहे हो। हे पाण्डुनन्दन! तुम कुन्तीके पुत्र हो पीठ दिखाना तुम्हें उचित नहीं है, इससे सम्मुख खड़े होकर अपने बाणोंकी वर्षासे मुझे प्रसन्न करो! भीमसेन कर्णके आवाहनको न सहकर लौटके उनके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। महायशस्वी भीमसेन सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ कर्णको द्वैरथ युद्धके वास्ते सम्मुख आया देख उनके ऊपर तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करने लगे। महाबली भीमसेन कर्णका संहार करके शत्रुता शेष करनेकी इच्छासे उन्हें अपने बाणोंसे पीड़ित करने लगे। शत्रुनाशन भीमसेन महारथ कर्ण और सेनाके दूसरे योद्धाओंके नाशकी इच्छा करके कुपित होकर कर्णके ऊपर भयङ्कर अस्त्रशस्त्रोंकी वर्षा करने लगे। महायशस्वी कर्णने भीमसेनकी बाणवर्षाको अपनी अस्त्रमायाके प्रभावसे संहार किया। महाधनुर्द्धर सूतपुत्र कर्णने धनुर्व्वेदमें अत्यन्त प्रतिष्ठा पाया था, इसीसे वह युद्धभूमिमें भीमके संग इस प्रकार संग्राम करने लगे जैसे आचार्य्य शिष्यके संग युद्ध करता है। क्रुद्ध स्वभाववाले राधापुत्र कर्ण भीमसेनको अभिमानके सहित अपनी ओर आते देख हंसकर उनके सम्मुख होकर युद्ध करने लगे। उस रणभूमिमें चारों ओर खड़े हुए सेनाके पुरुषोंके बीच कर्णने जो भीमसेनकी ऐसी अवज्ञा करी वह भीमसेनसे नहीं सही गई। बलवान भीमसेनने अत्यन्त क्रुद्ध होकर वत्सदन्त अस्त्रसे कर्णके हृदयमें इस प्रकार प्रहार किया जैसे मतवारे हाथीको अंकुशसे पीड़ित करते हैं। तिसके अनन्तर उत्तम पानीसे बुझे हुए इक्कीस बाण चलाकर कर्णके वर्म्ममें प्रहार किया। कर्णने भी पांच बाणोंसे सुवर्णके आभूषणोंसे भूषित वायुके समान वेगगामी भीमके रथके घोड़ोंको विद्ध किया। तिसके अनन्तर कर्णने इतने बाण चलाये कि अर्द्धनिमेष भरके बीच भीमसेनका रथ कर्णके बाणजालसे छिपकर केवल बाणमय दिखाई देने लगा, कर्णके धनुषसे छूटे हुए बाणोंसे सारथी घोड़े ध्वजा और रथके सहित भीमसेन अदृश्य होगये। सूतपुत्र कर्णने क्रुद्ध होकर चौसठ बाणोंसे भीमसेनके दृढ़ कवचको भेद किया और भीमसेनको भी मर्म्मभेदी बाणोंसे विद्ध करने लगे। अनन्तर भीमसेन कर्णके धनुषसे छूटे हुए बाणोंकी कुछ भी पर्वाह न करके उनके सङ्ग निर्भयचित्तसे युद्ध करने लगे। महाराज? भीमसेन कर्णके धनुषसे छूटे हुए विषधर सर्पके समान बाणोंकी चोटसे पीड़ित होकर भी दुःखित नहीं हुए, और पराक्रमके सहित बत्तीस तीक्ष्ण भल्लोंसे उन्होंने कर्णको विद्ध किया। कर्णने मानो खेलवाड़की भांति सिन्धुराज जयद्रथके वधकी इच्छा करनेवाले भीमसेनको अपने बाणोंके जालसे बिलकुल ही छिपा दिया। परन्तु राजपुत्र कर्ण कोमल युद्ध करते थे और भीमसेन पहिलेकी शत्रुता स्मरण करके क्रोधपूर्व्वक महा युद्ध करने लगे। शत्रुओंके जीतनेवाले भीमसेन कर्णके अनादरको सहन नहीं किया, और क्रुद्ध होकर शीघ्रताके सहित उनके ऊपर बाणों [illegible]की वर्षा करने लगे। वे सम्पूर्ण सारथी [illegible]सेनके धनुषसे छूटकर शब्द करनेवाले पक्षियोंके समान रणभूमिमें चारों ओर गिरते हुए दिखाई देने लगे। हे महाराज! वे स्वर

सर्वाभूषित बाण इस प्रकार कर्णके ऊपर गिरने लगे जैसे व्याघ्र छोटे पशुओंकी ओर वेगपूर्व्वक दौड़ते हैं। रथियोंमें श्रेष्ठ कर्ण रणभूमिमें चारों ओरसे भीमसेनके बाणजालसे छिप कर फिर उनके ऊपर अपने भयङ्कर बाणोंकी वर्षा करने लगे। भीमसेनने कर्णके वज्र समान बाणोंको निकट आते ही आते अनेक भल्लोंसे काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। परन्तु सूर्य्यपुत्र कर्णने अपने बाणोंकी वर्षासे फिर भीमसेनको छिपा दिया। हे भारत! उस समय भीमसेन कर्णके बाणोंसे ऐसे छिप गये कि उनका सम्पूर्ण शरीर बाणमय दिखाई देने लगा। महावीर भीमसेन कर्णके धनुषसे छूटे हुए प्रकाशमान बाणोंसे बिद्ध होकर किरणधारी सूर्य्यके समान संग्रामभूमिमें शोभित होने लगे उस समय जो भीमसेनके सम्पूर्ण शरीरसे रुधिर झर रहा था उससे वसन्त ऋतुमें फूले हुए अशोक वृक्षके समान उनकी शोभा हुई, परन्तु महाधनुर्धर भीमसेनने युद्धभूमिमें सूतपुत्र कर्णके [illegible] पराक्रमको सहन नहीं किया; उन्होंने [illegible] दोनों नेत्र लाल करके इस प्रकार पांच-[illegible] बाणोंसे कर्णको बिद्ध किया जैसे अत्यन्त विष-[illegible] भीतिको काटते हैं। इन्द्रके समान [illegible] भीमसेनने उस रणभूमिमें चौदह [illegible] बाणोंसे मर्मस्थलोंमें प्रहार किया। [illegible] गुणके सहित कर्णके एक [illegible] काट दिया, और अनेक [illegible] रहे थोड़े और सारथी-[illegible] कर्ण [illegible] समान प्रकाशमान [illegible] प्रहार किया; [illegible] सदृशको भेदकर [illegible] भीमसेनके धनु-[illegible] के शरीरको [illegible] दूसरे रथ पर चढ़के युद्धभूमिमें प्रस्थान किया।

१२८ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय। जिसके पराक्रमसे मेरे पुत्रोंने विजयकी अत्यन्त ही आशा किये थी, उस ही सूतपुत्र कर्णको दुर्य्योधनने भीमके निकटसे पराजित देखकर क्या कहा था। और कर्णने उस समय जलती हुई अग्निके समान तेजस्वी भीमसेनको देखकर किस कार्य्यका अनुष्ठान किया वह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम मेरे समीप वर्णन करो।

सञ्जय बोले, महाराज! कर्ण भली भांतिसे सज्जित हुए एक उत्तम रथ पर चढके वायुके वेगसे उछलते समुद्रके समान गमन करके शीघ्रताके सहित भीमसेनके सम्मुख उपस्थित हुए। तुम्हारे पुत्रलोग कर्णको क्रुद्ध हुए देखकर भीमसेनको मानो यमराजके कराल मुखमें पड़े हुएके समान ही बोध करने लगे। हे नरनाथ। जब राधापुत्र कर्ण भयङ्कर धनुष टङ्कार तलवाणके शब्दके सहित भीमसेनके समीप उपस्थित हुए तब महाघोर संग्राम होने लगा। वे दोनों ही क्रोधसे लाल नेत्र करके क्रोधी सर्पके समान सांस छोड़ते हुए आपसमें एक दूसरेकी ओर इसप्रकार देखने लगे मानो नेत्रसे देखकर ही एक दूसरेको भस्म कर देंगे। उन दोनों शत्रुनाशन वीरोंने युद्धभूमिमें अपने बाणोंकी वर्षासे एक दूसरेको क्षत विक्षत कर दिया। वे दोनों शीघ्रतासे गमन करनेमें बाजपक्षी और क्रोधमें व्याघ्र और शरभके समान क्रुद्ध होकर युद्ध करने लगे। हे शत्रुनाशन महाराज! भीमसेनने [illegible] और विराट नगरमें छिप-[illegible] करनेमें जो [illegible] पाया था, और [illegible]

हर लिया था, तुमने जो अपने पुत्रोंके सहित उन लोगोंको नाना प्रकारके दुःख दिये थे, विशेष करके तुमने जो निरपराधिन कुन्तिको पुत्रोंके सहित भस्म करनेकी इच्छा करी थी, सभामें जो तुम्हारे पुत्रोंने द्रौपदीको अनेक प्रकार अवज्ञा करी और दुःशासनने द्रौपदीके केशग्रहण किये थे; कर्णने कहा था, कि हे द्रौपदी। "तुम्हारे पति अब जीवित नहीं हैं, पाण्ड-तिलके समान इस समय कुन्तीके पुत्र नरकमें पतित हुए इससे तुम और किसीको अपना पति बना लो।" और तुम्हारे पुत्रोंने जो दासी भावसे द्रौपदीको भोग करने वास्ते तुम्हारे सम्मुख हो इच्छा करी थी; पाण्डव लोग जिस समय काले हरिनके चमड़े पहरके वनको जाने लगे; उस समय कर्णने तुम्हारे सम्मुखमें ही सभाके बीच उन लोगोंको जो सब कठोर वचन कहे थे; तुम्हारे पुत्रों जो उस समय अज्ञानताके कारणसे पाण्डवोंकी अवमानना करके अभिमानमें फूल कर नृत्य करने लगे थे तथा पाण्डवलोग बालक अवस्थासे तुम्हारे कारण जो कुछ क्लेश पाये थे धर्म्मात्मा भरतर्षभ भीमसेन उन सम्पूर्ण दुखोंको स्मरण करके अपने प्राणकी आशात्याग सुवर्ण चित्रित महाधनुष चढाकर सहारथ कर्णकी ओर दौड़े। भीमसेनने सूतपुत्र कर्णके रथ पर इस प्रकार अपने अस्त्रशस्त्रोंको वर्षा की, कि उनके शिला पर घिसे हुए प्रकाशमानवाणोंसे कर्णका रथ छिप गया और वहा पर सूर्य्यका प्रकाश नष्ट होगया। महाराज महाबाहु अधिरथ पुत्र कर्ण वलशाली पुरुषोंके बीच महा बलवान पराक्रमी अत्यन्त वेगशील और रथियोंके बीच महारथी कहके विख्यात हैं, उन्होंने भीम के चलाये हुए उन सम्पूर्ण वाणोंको शीघ्र ही अपने तीक्ष्ण वाणोंसे काटके गिरा दिया, और भीमको भी तीक्ष्ण वाणोंसे विद्ध किया। भीमसेनने कर्णके तीक्ष्ण वाणोंसे निवारित होकर

मानो अङ्कुशसे पीड़ित मतवारे हाथी तुल्य क्रुद्ध होकर कर्णकी ओर दौड़े। पाण्डुपुत्र भीमको अत्यन्त वेगके सहित अपनी ओर आते देख, कर्ण इस प्रकार वेगपूर्व्वक उनकी ओर दौड़े, जैसे एक मतवारा हाथी दूसरे मतवारे हाथीकी ओर दौड़ता है। अनन्तर उस समय सेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंने शङ्ख, भेरी नगाड़े आदि बाजोंके सहित हर्षपूर्व्वक महाशब्द किया भीमसेनने हाथी घोड़े और पैदल सेनाके योद्धाओंको हर्षित देख बाणोंकी वर्षासे कर्णको छिपा दिया। कर्णने भीमसेनको अपने बाणोंकी वर्षासे छिपाकर उनके भालू वर्णवाले घोड़ोंको निज घोड़ोंसे मिला दिया। महाराज। उन हंस वर्णवाले घोड़ोंके सङ्ग बायुके समान वेगशील भालूवर्णवाले घोड़ोंका मिलन देख कर तुम्हारे पुत्रोंकी सेनाके बीच अत्यन्त ही हाहाकार शब्द होने लगा। परन्तु उन हंस वर्ण और भालूवर्णवाले घोड़े आपसमें मिलकर इस प्रकार शोभित हुए, जैसे आकाशमें वगुलापांत शोभित होती हैं। महाराज क्रोधसे लालनेत्र किये हुए कर्ण और भीमसेनको अत्यन्त क्रुद्ध हुए देख तुम्हारी ओरके महारथी योद्धा भी भयसे कांपने लगे। परन्तु उन दोनोंका संग्राम यमपुरीके समान भयङ्कर और श्मशान भूमिके समान महाघोर दीख पड़ने लगा। महारथियोंकी मण्डलीने उन पुरुषसिंहोंके अद्भुत संग्रामको देखकर उन दोनोंमेंसे किसकी विजय होगी उसका निश्चय न कर सकी। हे पृथ्वीनाथ? वे सम्पूर्ण महारथी तुम्हारी अनीतिसे उन महाअस्त्र चलानेवाले दोनो पुरुष सिंहोंके भयङ्कर संग्रामको देखने लगे। वे दोनों अद्भुत पराक्रमी शत्रुनाशन कर्ण और भीमसेन आपसमें एक दूसरेको अपने वाणोंके जालसे छिपाते हुए आकाशमण्डलको भरने लगे। वे दोनों ही महारथी थे इनसे आपसमें एक दूसरेके वधकी इच्छासे अपने तीक्ष्ण वाणोंकी वर्षा

करते हुए इस प्रकार दिखाई देने लगे, जैसे वर्षाकालमें वर्षा करनेवाले आकाशमें दो बादल दीख पड़ते हैं। हे राजेन्द्र! उन दोनों अद्-भुत शरीरी सूर्यके समान अपने प्रकाशमान बाणोंको चलाकर आकाशको प्रकाशमय कर दिया। उन दोनोंके धनुषसे छूटे हुए बाण आकाशमें इस प्रकार श्रेणी बद्ध दिखाई देने लगे जैसे शरत ऋतुमें सारसोंकी पाँति आकाशमें दीख पड़ती है। महाराज! कृष्ण-अर्जुन भीमसेनको अधिरथपुत्र कर्णके सङ्ग युद्ध करते हुए देख उनके ऊपर अत्यन्त कठिन भार मानने लगे। परन्तु घोड़े सारथी और समेत कर्ण तथा भीमसेनके धनुषसे छूटे हुए बाणोंसे इधर उधर मरके गिरने लगे। [illegible] गरुड़ पक्षियोंके मर मर गिरनेसे उसमें धरतीमें गिरके मर गये कितने ही दूसरी भांतिसे नष्ट हुए, इसी प्रकार तुम्हारी सेनाके योद्धाओंका नाश होने लगा, मनुष्य घोड़े और हाथियोंके मृत शरीरसे रणभूमि सुहावने [illegible] परिपूरित होगई।

[illegible] अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय! भीमसेनके युद्धभूमिमें कृपशाल्यकोंके सहित कुन्तीपुत्रोंको पराजित करनेका उत्साह किया करता था, परन्तु भयङ्कर कर्म्म करनेवाले भीमसेनके समीप कर्णके बार बार पराजित होनेका वृत्तान्त सुन कर मैं मोहित हो रहा हूं; और अपने पुत्रोंकी दुष्टनीतिसे सम्पूर्ण कौरवोंको ही मरे हुए समझ रहा हूं क्योंकि कर्ण कभी भी युद्धभूमिमें महाधनुर्द्धर कुन्तीपुत्रोंको पराजित नहीं कर सकेगे, कर्णने पाण्डवोंके सङ्ग जितनी वार युद्ध किया है, उतनी बार पाण्डवोंके सम्मुखसे पराजित हुए हैं। हे तात! मनुष्योंकी बात तो दूर हैं पाण्डव लोग इन्द्रके सहित सम्पूर्ण देवताओंसे भी अजेय है। जैसे मधुका लोभी मूर्ख पुरुष पहाड़ पर चढ़के अपने गिरनेका विषय मालूम नहीं कर सकता वैसे ही मेरे पुत्र लोग कौरवोंके धन सम्पत्तिको हरण करके मूर्खताके कारण अपनी मृत्युका विषय नहीं समझ सकते हैं। वह छली दुर्य्योधन शठतासे महात्मा पाण्डवोंका राज्य हरण कर उन्हें पराजित समझके उनका अनादर किया करता है मैंने भी पुत्र स्नेहके वशमें होकर धर्मात्मा पाण्डुपुत्रोंको उनके ऐश्वर्य्यसे वञ्चित किया है। कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरने शान्तिकी इच्छा करके अनेक क्लेश सहन

सुनो। कर्णने क्रुद्ध होकर शत्रुनाशन क्रोधी भीमसेनको तीस बाणोंसे विद्ध किया। कर्णके धनुषसे छूटे हुए वे सम्पूर्ण बाण अत्यन्त वेगवान और उसके अग्रभाग अत्यन्त चोखे थे; परन्तु भीमसेनने बाण चलानेके समय कर्णका धनुष काट दिया। और एक भल्लसे उनके सारथीका वध करके रथसे पृथ्वीमें गिरा दिया। अनन्तर महाबलवान राधापुत्र कर्णने भीमसेनके बधकी इच्छा करके एक महाभयङ्कर शक्ति ग्रहण कर भीमसेनकी ओर चला कर सिंहनाद किया; तुम्हारे पुत्र कर्णके सिंहनादको सुन कर आनन्दित हुए। भीमसेनने कर्णके हाथसे छूटी हुई सूर्य्य और अग्निके समान प्रकाशमान उस शक्तिको सात बाणोंसे काटके गिरा दिया। वह उस समय केंचुलीसे रहित सर्पके समान भयङ्करी उस शक्तिको काट कर कर्णके नाश करनेकी इच्छासे क्रोधपूर्व्वक सुवर्ण चित्रित मोरखपंवाले अपने तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करने लगे। महाधनुर्द्धर कर्ण दूसरा धनुष ग्रहण करके भीमसेनके ऊपर अनेक बाणोंकी वर्षा करने लगे। पाण्डपुत्र भीमसेनने कर्णके चलाये हुए तीक्ष्ण बाणोंको सुवर्णभूषित नौ बाणोंसे काटके गिरा दिया। महाराज! वह कर्णके धनुषसे छूटे हुए बाणोंको अपने बाणोंसे काटकर सिंहकी भांति गर्ज्जने लगे। जैसे ऋतुमती गौके वास्ते दो वृषभ और मांसके वास्ते दो शार्दूल गर्ज्जते हैं वैसे ही वे दोनों परस्पर युद्धभूमिमें गर्ज्जने लगे। जैसे गौओंके समूहमें दो वृषभ आपसमें प्रहार करनेकी इच्छासे एक दूसरेकी ओर देखते हैं वैसे ही दूसरेके छिद्रकी अवलोकन करनेकी इच्छासे एक दूसरेकी ओर देखने लगे। और जैसे दो मतवारे हाथी आपसमें दूसरेको दांतोंके अग्रभागसे पीड़ित करते हैं वैसे ही वे दोनों कानपर्य्यन्त धनुष खींचकर बाणोंकी वर्षासे एक दूसरेके ऊपर प्रहार करने लगे। महाराज! वे दोनों क्रोधसे नेत्र लाल करके अपने बाणोंकी वर्षासे एक दूसरेको पीड़ित करने लगे। उस समय वे दोनों कभी ऊंचे स्वरसे हंसते कभी एक दूसरेकी निन्दा करते और बार बार शङ्ख बजाते हुए युद्ध करने लगे। महाराज! भीमसेनने फिर सूतपुत्र कर्णके धनुषकी मूठ काट दिया और फिर उनके सफेद घोड़ोंको अपने बाणोंसे पीड़ित करके यमपुरीमें भेज दिया। राजा दुर्य्योधन कर्णको इस प्रकार आपदग्रस्त देखकर क्रोधसे कम्पित होकर दुर्ज्जयसे बोले, हे दुर्ज्जय! शीघ्र ही गमन करो यह देखो सम्मुखमें पाण्डुपुत्र भीम कर्णके नाश करनेकी इच्छा करता है इससे तुम कर्णके सहायक होकर उस क्रोधी भीमसेनका संहार करो। तुम्हारे पुत्र दुर्ज्जय बड़े भाईकी आज्ञा मान अपने बाणोंका चलाते हुए कर्णके सङ्ग युद्ध करनेवाले भीमसेनकी ओर दौड़े। उन्होंने दश बाणोंसे भीमसेन आठ बाणोंसे उनके रथके घोड़ोंको छः बाणोंसे सारथी और तीन बाणोंसे उनके रथकी ध्वजा विद्ध करके फिर सात बाणोंसे भीमसेनके वक्षस्थलमें प्रहार किया। अनन्तर भीमसेनने शीघ्रताके सहित अपने बाणोंसे दुर्ज्जयको सारथीके सहित मारकर पृथ्वीमें गिरा दिया। कर्णने सुन्दर आभूषणोंसे शोभित तुम्हारे पुत्रको चेष्टारहित सर्पके समान पृथ्वीमें गिरते देख रुदन करते हुए उनकी प्रदक्षिणा, करी परन्तु भीमसेन कर्णको रथरहित करके पहिलेकी सम्पूर्ण शत्रुता स्मरण करके उन्हें अपने बाणोंसे इस प्रकार विद्ध करने लगे जैसे लोहेकी कीलसे कसी लोहेकी दण्डको विद्ध करते हैं, महाराज! अतिरथी कर्ण युद्धभूमिमें भीमसेनके बाणोंसे इस प्रकार विद्ध होकर भी उस क्रोधमूर्त्तिवाले भीमसेनके सम्मुखसे न हटे।

१३१ अध्याय समाप्त।

संजय बोले, हे महाराज! कर्ण भीमसेनके द्वारा रथरहित और पराजित होकर फिर दूसरे रथपर चढ़कर उनके सम्मुख उपस्थित हुए और भीमसेनको अपने बाणोंके जालसे [illegible] करने लगे। जैसे एक मतवारा हाथी दूसरे मतवारे हाथीके समीप जाकर अपने दांतसे उसके शरीरमें प्रहार करता है, वैसे ही वे दोनों रणभूमिमें घूमते हुए एक दूसरेके ऊपर अपने बाणोंको चलाने लगे। अनन्तर कर्णने भीमसेनको अपने बाणोंसे पीड़ित करके बल-पूर्वक सिंहनाद किया और फिर उनके वक्ष-स्थलमें अपने तीक्ष्ण बाणोंसे प्रहार किया। भीमसेनने भी दश बाणोंसे कर्णके हृदयमें प्रहार करके फिर उन्हें बीस बाणोंसे विद्ध किया; परन्तु कर्णने नव बाणोंसे भीमसेनके वक्षस्थलमें प्रहार करके एक तीक्ष्ण बाणसे उनके धनुषको छिन्न किया। तिसके अनन्तर भीम-सेनने तिहत्तर बाणोंसे कर्णको इस प्रकार विद्ध किया जैसे अंकुश देकर हाथीको उत्तेजित करते हैं। महावीर कर्ण यशस्वी पाण्डुपुत्र भीमसेनके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर क्रोधसे [illegible] ओठ काटते हुए भीमसेनको [illegible] ऊपर वज्र [illegible] समर्थ शरीरको विदारनेमें [illegible] बाण ग्रहण करके उनको [illegible] भय-[illegible] शरीरको भेद कर पृथ्वीमें [illegible]। तिसके अनन्तर महाबाहु भीम-[illegible] गदाके परि-[illegible] सर्पके समान भय-[illegible] [illegible]

अनेक बाणोंसे सारथीका वध किया। कर्ण घोड़े सारथी और ध्वजासे रहित उस रथको त्यागके पृथ्वीपर स्थित हुए। परन्तु उस स्थल पर हम लोगोंने पराक्रमी कर्णका अद्भुत पराक्रम देखा कि रथियोंमें श्रेष्ठ कर्ण रथरहित होकर भी भीमसेनको निवारण करने लगे। अनन्तर राजा दुर्योधन रथिश्रेष्ठ कर्णको रथरहित देखकर अपने भाई दुर्मुखसे बोले, हे दुर्मुख! देखो महारथी कर्ण भीमके अस्त्रोंसे रथ रहित हुए हैं; इससे तुम महा-रथी कर्णको शीघ्र ही रथपर चढ़ाओ। दुर्मुख दुर्योधनके वचनको सुन कर शीघ्रताके सहित रथ लेकर कर्णके समीप उपस्थित हुए और भीमसेनको भी अपने बाणोंसे निवारण करने लगे। वायुपुत्र भीमसेन युद्धभूमिमें दुर्मुखको कर्णका अनुगामी होते देख निर्भयचित्तसे कर्णको निवारण करके अपना रथ बढ़ा कर दुर्मुखके सम्मुख उपस्थित हुए, और उस ही समय नौ सन्नतपर्व बाणोंसे प्रहार करके दुर्मुखको यमलोकमें भेज दिया। दुर्मुखके मरने पर कर्ण उस ही रथ पर चढ़के प्रकाशमान सूर्य्यकी भांति शोभित होने लगे, परन्तु वह भीमसेनके बाणोंसे दुर्मुखको मरके पृथ्वीमें शयन करते देख आंखोंमें आंसू भरके मुहूर्त भर चिन्तित रहे। अनन्तर पराक्रमी कर्णने दुर्मुखके मृत शरीरके समीप जाकर उनकी प्रदक्षिणा किया; उस समय उन्होंने किसीसे कुछ वचन नहीं कहा, केवल लम्बी और गर्म सांस छोड़ने लगे। महाराज! भीम-सेनने [illegible] पाकर कर्णको और चौदह बाण [illegible]। भीमसेनके धनुषसे छूटे हुए वे चौदह बाण कर्णके [illegible] और शरीरको भेद रुधिर [illegible] हुए [illegible] पृथ्वीमें प्रविष्ट हुए [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] हे महा-

सुनो। कर्णने क्रुद्ध होकर शत्रुनाशन क्रोधी भीमसेनको तीस बाणोंसे विद्ध किया। कर्णके धनुषसे छूटे हुए वे सम्पूर्ण बाण अत्यन्त वेगवान और उसके अग्रभाग अत्यन्त चोखे थे; परन्तु भीमसेनने बाण चलानेके समय कर्णका धनुष काट दिया। और एक भल्लसे उनके सारथीका वध करके रथसे पृथ्वीमें गिरा दिया। अनन्तर महाबलवान राधापुत्र कर्णने भीमसेनाके बधकी इच्छा करके एक महाभयङ्कर शक्ति ग्रहण कर भीमसेनकी ओर चला कर सिंहनाद किया; तुम्हारे पुत्र कर्णके सिंहनादको सुन कर आनन्दित हुए। भीमसेनने कर्णके हाथसे छूटी हुई सूर्य्य और अग्निके समान प्रकाशमान उस शक्तिको सात बाणोंसे काटके गिरा दिया। वह उस समय केचुलीसे रहित सर्पके समान भयङ्करी उस शक्तिको काट कर कर्णके नाश करनेकी इच्छासे क्रोधपूर्व्वक सुवर्ण चित्रित मोरखपंवाले अपने तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करने लगे। महाधनुर्द्धर कर्ण दूसरा धनुष ग्रहण करके भीमसेनके ऊपर अनेक बाणोंकी वर्षा करने लगे। पाण्डुपुत्र भीमसेनने कर्णके चलाये हुए तीक्ष्ण बाणोंको सुवर्णभूषित नौ बाणोंसे काटके गिरा दिया। महाराज! वह कर्णके धनुषसे छूटे हुए बाणोंकी अपने बाणोंसे काटकर सिंहकी भांति गर्ज्जने लगे। जैसे ऋतुमती गौके वास्ते दो वृषभ और मांसके वास्ते दो शार्दूल गर्ज्जते हैं वैसे ही वे दोनों पुरुष युद्धभूमिमें गर्ज्जने लगे। जैसे गौओंके समूहमें दो वृषभ आपसमें प्रहार करनेकी इच्छासे एक दूसरेकी ओर देखते हैं वैसे ही दूसरेके छिद्रको अवलोकन करनेकी इच्छासे एक दूसरेकी ओर देखने लगे। और जैसे दो मतवारे हाथी आपसमें दूसरेको दांतोंके अग्रभागसे पीड़ित करते हैं वैसे ही वे दोनों कानपर्य्यन्त धनुष खींचकर बाणोंकी वर्षासे एक दूसरेके ऊपर प्रहार करने लगे। महाराज! वे दोनों क्रोधसे नेत्र लाल करके अपने बाणोंकी वर्षासे एक दूसरेको पीड़ित करने लगे। उस समय वे दोनों कभी ऊंचे स्वरसे हंसते कभी एक दूसरेकी निन्दा करते और बार बार शङ्ख बजाते हुए युद्ध करने लगे। महाराज! भीमसेनने फिर सूतपुत्र कर्णके धनुषकी मूठ काट दिया और फिर उनके सफेद घोड़ोंको अपने बाणोंसे पीड़ित करके यमपुरीमें भेज दिया। राजा दुर्य्योधन कर्णको इस प्रकार आपदग्रस्त देख कर क्रोधसे कम्पित होकर दुर्ज्जयसे बोले, दुर्ज्जय! शीघ्र ही गमन करो यह देखो सम्मुखमें पाण्डुपुत्र भीम कर्णके नाश करनेकी इच्छा करता है इससे तुम कर्णके सहायक होकर उस क्रोधी भीमसेनका संहार करो। तुम्हारे पुत्र दुर्ज्जय बड़े भाईकी आज्ञा मान अपने बाणोंको चलाते हुए कर्णके सङ्ग युद्ध करनेवाले भीमसेनकी ओर दौड़े। उन्होंने नौ बाणोंसे भीमसेन आठ बाणोंसे उनके रथके घोड़ोंको छः बाणोंसे सारथी और तीन बाणोंसे उनके रथकी ध्वजा विद्ध करके फिर सात बाणोंसे भीमसेनके वक्षस्थलमें प्रहार किया। अनन्तर भीमसेनने शीघ्रताके सहित अपने बाणोंसे दुर्ज्जयको सारथीके सहित मारकर पृथ्वीमें गिरा दिया। कर्णने सुन्दर आभूषणोंसे शोभित तुम्हारे पुत्रको चेष्टारहित सर्पके समान पृथ्वीमें गिरते देख रुदन करते हुए उनकी प्रदक्षिण, करी परन्तु भीमसेन कर्णको रथरहित करके पहिलेकी सम्पूर्ण शत्रुता स्मरण करके उन्हें अपने बाणोंसे इस प्रकार विद्ध करने लगे जैसे लोहेकी कीलसे कोई लोहेकी चद्दरको विद्ध करते हैं, महाराज। अतिरथी कर्ण युद्धभूमिमें भीमसेनके बाणोंसे इस प्रकार विद्ध होकर भी उस क्रोधमूर्त्तिवाले भीमसेनके सम्मुखसे न हटे।

१३१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! कर्ण भीमसेनके अस्त्रोंसे रथरहित और पराजित होकर फिर दूसरे रथपर चढ़कर उनके सम्मुख उपस्थित हुए और भीमसेनको अपने बाणोंके जालसे विद्ध करने लगे। जैसे एक मतवारा हाथी दूसरे मतवारे हाथीके समीप जाकर अपने दांतसे उसके शरीरमें प्रहार करता है, वैसे ही वे दोनों रणभूमिमें घूमते हुए एक दूसरेके ऊपर अपने बाणोंको चलाने लगे। अनन्तर कर्णने भीमसेनको अपने बाणोंसे पीड़ित करके बलपूर्व्वक सिंहनाद किया और फिर उनके वक्षस्थलमें अपने तीक्ष्ण बाणोंसे प्रहार किया। भीमसेनने भी दश बाणोंसे कर्णके हृदयमें प्रहार करके फिर उन्हें बीस बाणोंसे विद्ध किया; परन्तु कर्णने नव बाणोंसे भीमसेनके वक्षस्थलमें प्रहार करके एक तीक्ष्ण बाणसे उनके रथको विद्ध किया। तिसके अनन्तर भीमसेनने तिरसठ बाणोंसे कर्णको इस प्रकार विद्ध किया जैसे अंकुश देकर हाथीको उत्तेजित करते हैं। महावीर कर्ण यशस्वी पाण्डुपुत्र भीमसेनके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर क्रोधसे नेत्र लालकर ओठ काटते हुए भीमसेनकी ओर दौड़के जैसे इन्द्रने वृत्रासुरके ऊपर वज्र चलाया था वैसे ही सम्पूर्ण शरीरको विदारनेमें समर्थ एक भयङ्कर बाण ग्रहण करके उनकी ओर चलाया कर्णके धनुषसे छूटा हुआ वह भयङ्कर बाण भीमसेनके शरीरको भेद कर पृथ्वीमें घुस गया। तिसके अनन्तर महाबाहु भीमसेनने क्रोधसे नेत्र लाल कर चार हाथकी परिमाणवाली लोहमय छःशिर सुवर्णभूषित एक भयङ्करी शक्ति उठा कर कुछ भी विचार न करके कर्णके रथ पर चलायी जैसे इन्द्रने क्रुद्ध होकर वज्रसे असुरोंका नाश किया था वैसेही भीमसेनने सूतपुत्र कर्णके रथमें जुते उत्तम घोड़ोंको गदाके प्रहार मारसे डाला। तिसके अनन्तर दो तेज शस्त्रोंसे राधापुत्र कर्णके रथकी ध्वजा काट कर अनेक बाणोंसे सारथीका वध किया। कर्ण घोड़े सारथी और ध्वजासे रहित उस रथको त्यागके पृथ्वीपर स्थित हुए। परन्तु उस स्थल पर हम लोगोंने पराक्रमी कर्णका अद्भुत पराक्रम देखा कि रथियोंमें श्रेष्ठ कर्ण रथरहित होकर भी भीमसेनको निवारण करते लगे। अनन्तर राजा दुर्योधन रथिश्रेष्ठ कर्णको रथरहित देखकर अपने भाई दुर्म्मुखसे बोले, हे दुर्म्मुख! देखो महारथी कर्ण भीमके अस्त्रोंसे रथ रहित हुए हैं, इससे तुम महारथी कर्णको शीघ्र ही रथपर चढ़ाओ। दुर्म्मुख दुर्य्योधनके वचनको सुन कर शीघ्रताके सहित रथ लेकर कर्णके समीप उपस्थित हुए और भीमसेनको भी अपने बाणोंसे निवारण करने लगे। वायुपुत्र भीमसेन युद्धभूमिमें दुर्म्मुखको कर्णका अनुगामी होते देख निर्भयचित्तसे कर्णको निवारण करके अपना रथ बढ़ा कर दुर्म्मुखके सम्मुख उपस्थित हुए, और उस ही समय नो सन्नत पर्व्व बाणोंसे प्रहार करके दुर्म्मुखको यमलोकमें भेज दिया। दुर्म्मुखके मरने पर कर्ण उस ही रथ पर चढ़के प्रकाशमान सूर्य्यकी भांति शोभित होने लगे, परन्तु वह भीमसेनके बाणोंसे दुर्म्मुखको मरके पृथ्वीमें शयन करते देख आंखोंमें आंसू भरके मुहूर्त्त भर चिन्तित रहे। अनन्तर पराक्रमी कर्णने दुर्म्मुखके मृत शरीरके समीप जाकर उनकी प्रदक्षिणा कियी, उस समय उन्होंने किसीसे कुछ बचन नहीं कहा, केवल लम्बी और गर्म्म सांस छोड़ने लगे। महाराज! भीमसेनने अच्छा अवसर पाकर कर्णकी ओर चौदह बाण चलाये। भीमसेनके धनुषसे छूटे हुए वे चौदह बाण कर्णके वर्म्म और शरीरको भेद रुधिर पीते हुए इस भांति पृथ्वीमें प्रविष्ट हुए जैसे सर्प विलमें प्रवेश करते हैं। राधापुत्र कर्णने भी सुवर्ण चित्रित अत्यन्त भयङ्कर चौदह बाणोंसे भीमसेनको विद्ध किया, वे सब महा-

भयङ्कर बाण भीमसेनके बाये हाथको भेद कर इस प्रकार पृथ्वीमें घुस गये जैसे पक्षी घोसलेमें प्रवेश करते हैं। महाराज! जैसे सूर्य्यके अस्ताचल पर्व्वत पर गमन करनेके समय उनकी किरण प्रकाशित होती है वैसे ही कर्णके धनुषसे छूटे हुए बाण पृथ्वीमें प्रवेश करनेके समय शोभित होने लगे। जैसे पर्व्वतसे जल बाहर होता है, वैसे ही कर्णके मर्म्मभेदी बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर भीमसेनके शरीरसे रुधिर बहने लगा। तिसके अनन्तर भीमसेनने अत्यन्त क्रुद्ध होकर गरुड़केसमान वेगशील तीन बाणोंसे उनके सारथीको विद्ध किया। महाराज! महायशस्वी कर्ण भीमसेनके बाणोंसे पीड़ित होकर विह्वल होगये और युद्ध त्यागके वेगगामी घोड़ोंसे युक्त रथपर चढ़ कर वहांसे पृथक हुए; परन्तु अतिरथी भीमसेन सुवर्ण खचित अपना धनुष फेरते हुए जलती हुई अग्नि समान प्रकाशित हुए।

१३२ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जब अधिरथ नन्दन कर्ण भी भीमसेनको पराजित न कर सके वरन स्वयं भीमके सम्मुखसे पराजित हुए तब पुरुषार्थको धिक्कार है पुरुषार्थ अत्यन्त तुच्छ बोध होता है। दैव ही मेरे विचारसे श्रेष्ठ है। दुर्य्योधनके मुखसे मैंने सुना है कि कर्ण अकेले ही कृष्णके सहित पाण्डवोंको पराजित करनेका उत्साह कर सकते हैं, इस पृथ्वीके बीच में कर्णके समान योद्धा किसीको भी नहीं समझता हूं। उस मूढ़ने मुझसे यह भी कहा था कि कर्ण दृढ़ धनुषधारी, परिश्रम रहित पराक्रमसे युक्त और बलवान है! हे राजन्! इससे कर्ण यदि युद्धभूमिमें मेरी सहायता करेंगे तो अल्प-पराक्रमी बुद्धिहीन पाण्डवोंकी बात ही क्या है; देवता लोग भी मुझे पराजित करनेमें समर्थ नहीं है। इस समय कर्णको पराजित और विषरहित सर्पके समान भीमके सम्मुखसे पृथक हुए देख दुर्य्योधन क्या कहा था? हाय! अश्वत्थामा कृपाचार्य मद्रराज शल्य और कर्ण ये सब कोई मिल कर भी जिसके सम्मुख खड़े नहीं होसकते उस जलती हुई अग्निके समान भीमसेनको निः पतङ्गरूपी दुर्म्मुखको अकेले ही लौहके वश होकर दुर्य्योधनने भेजा था! और अश्वत्थामा आदि महारथी लोग भी वायुके समान तेज भीमसेनके बल क्रोध और पराक्रम विषयमें अजान नहीं है। उन सब लोगों उसकी निठर स्वभाव दशहजार हाथीके समान बल कठोर कर्म्मोंको करनेवाला और साक्षात् कालके समान जानकर भी उसे युद्धभूमिमें क्यों कोपित किया? यद्यपि महाबाहु कर्ण अपने बल पराक्रमके आसरेसे भीमसेन अनादर करके उसके सङ्ग युद्ध किया था; परन्तु इन्द्रने जैसे असुरोंको जीत लिया था भीम उसी भांति कर्णको पराजित किया है। कोई पुरुष भी ऐसा नहीं है जो रणभूमिमें भीमसेनको पराजित कर सके। विशेष करके उस जब अर्जुनको खोजके वास्ते द्रोणाचार्य्य सेना भेदकर मेरी सेनाके बीच प्रवेश किया तब प्राणकी आशा करके कौन पुरुष पीड़ित कर सकता है। हे सञ्जय! जैसे हाथ वज्र ग्रहण करके युद्धभूमिमें खड़े हुए इन्द्र सम्मुख ठहरनेमें दानव लोग उत्साह नहीं कर सकते वैसे ही गदा लेकर युद्धभूमिमें खड़े हुए भीमसेनके सम्मुख भी कोई पुरुष नहीं ठहर सकता, वरन कोई पुरुष भूतस्वामी महाकाल रुद्रके सम्मुखसे भी जी लौटसकता है परन्तु युद्धभूमिमें भीमसेनके सम्मुखसे कभीभी नहीं लौटसकता। जो थोड़ी बुद्धि वाले पुरुष अज्ञानके वशमें होकर क्रोधित भीमसेनके सम्मुख युद्धके निमित्त उपस्थित है

है वे मानों जलती हुई अग्निमें प्रवेश करनेवाले पतङ्गकी भांति भीमसेन रूपी अग्निमें प्रवेश करते हैं। पहिले क्रोधी और कठोर स्वभाववाले भीमसेनने जूएके खेलके समय सभाके बीचमें मेरे पुत्रोंके वधके वास्ते प्रतिज्ञा किया था, उस ही को चिन्ता करके तथा कर्णको भी भीमसेनके निकटमें पराजित देख दुःशासन अवश्य ही दुर्य्योधनके सहित युद्धमें उत्साह रहित हुआ होगा। नीचबुद्धिवाले दुर्य्योधनने पहिले बार बार कहा था कि मैं कर्ण और दुःशासन यही तीन पुरुष मिल कर युद्धभूमिमें पाण्डवोंको पराजित करेंगे। परन्तु इस समय वह कर्णको रथ-भ्रष्ट और पराजित देखकर कृष्णके बचनकी बिरुद्धताके वास्ते अवश्य ही दुःख करता होगा, इसमें सन्देह नहीं है। मेरे पुत्रोंको भीमसेनके हाथसे मरते देख अवश्य ही अपने अपराधके विषयमें दुर्य्योधन अत्यन्त ही शोक कर रहा है। किसी पुरुषके जीनेकी आशा नहीं है,—जो साक्षात् कालके समान युद्धभूमिमें स्थित भयङ्कर अस्त्रोंके ग्रहण करनेवाले क्रोधी भीमसेनके निकट युद्धके निमित्त गमन करेगा। मेरे विचारसे कोई कदापि वाड़वानलकी अग्निके बीच प्रवेश करके बच सकता है परन्तु युद्धभूमिमें भीमसेनके हाथमें पड़के कभी नहीं बच सकता। केवल भीमसेन ही क्यों? युद्धमें क्रुद्ध होनेसे सब ही पृथापुत्र पाञ्चालयोद्धा कृष्ण सात्यकि,— ये कोई भी अपने प्राणरक्षाकी अभिलाष नहीं करते। हे सूत! इससे मेरे पुत्रोंका जीवन अत्यन्त सङ्कटमें पड़ा हुआ है।

सञ्जय बोले, हे कुरुश्रेष्ठ महाराज! इस समय इस उपस्थित महा भयके निमित्त आप शोक कर रहे हैं परन्तु निःसन्देह इन सम्पूर्ण योद्धाओंके नाश करानेके मूल आप ही है। क्योंकि उस समय आप पुत्रोंके मतमें सहमत होकर जैसे मृत्युके समीप पहुंचा हुआ पुरुष औषधी और पथ्यकी इच्छा नहीं करता वैसे ही हितैषी पुरुषोंके बार बार निवारण करने पर भी आपने किसीके बचनको न मानकर स्वयं ही इस महाघोर शत्रुताको उत्पन्न किया है। महाराज! तुमने स्वय ही विष पी लिया है वह सहजहीमें जीर्ण होनेवाला नहीं है इससे इस समय उसका सम्पूर्ण फल आप ही भोग कीजिये। शूरवीर योद्धा लोग अपनी शक्तिके अनुसार युद्ध कर रहे हैं तौभी आप उनकी निन्दा कर रहे हैं। जो ही जिस प्रकारसे युद्ध हुआ था वह समस्त वृत्तान्त मैं वर्णन करता हूं, आप सुनिये। तुम्हारे महाधनुर्द्धारी पुत्र दुर्म्मर्षण दुःसह दुर्म्मद दुर्द्धर और जयने कर्णको भीमसेनके समीपमें पराजित हुए देखकर सहन नहीं किया; बल्कि वे पांचो भाई क्रुद्ध होकर भीमसेनकी ओर दौड़े। उन्होंने चारों ओरसे भीमसेनको घेर लिया और शलभ समूहकी भांति अपने वाणोंकी वर्षासे सब दिशाओंको परिपूरित कर दिया। भीमसेनने उन देवतोंके समान पराक्रमी तुम्हारे पुत्रोंको सहसा अपनी ओर आते देख हंसकर उन लोगोंको निवारण किया। राधापुत्र कर्ण तुम्हारे पुत्रोंको भीमसेनके सन्मुख युद्धके निमित्त स्थित देखकर वहांपर उपस्थित हुए, परन्तु भीमसेन तुम्हारे पुत्रोंसे निवारित होकर भी शिलापर घिसे हुए सोनेके पङ्खवाले वाणोंको चलाते हुए शीघ्रताके सहित कर्णकी ओर दौड़े। अनन्तर वे राजपुत्र लोग कर्णको सङ्ग लेकर भीमसेनके ऊपर चारों ओरसे अपने वाणोंकी वर्षा करने लगे। महाराज! भीमसेनने भयङ्कर धनुष ग्रहण करनेवाले तुम्हारे उन पांचों पुत्रोंको पचीस वाणोंसे घोड़े सारथीके सहित यमपुरीमें भेज दिया। जैसे नानावर्णके फूलोंसे युक्त वृक्ष वायुके वेगसे टूटकर गिरते हैं वे लोग उसी भांति भीमसेनके वाणोंसे प्राणरहित होकर सारथीके सहित

पृथ्वीमें गिर पड़े। उस स्थानमें मैंने भीमसेनका यह आश्चर्यमय पराक्रम देखा कि उन्होंने अपने बाणोंसे कर्णकी निवारण करनेके सङ्ग ही तुम्हारे पुत्रोंका बध किया। सूतपुत्र कर्ण चारों ओरसे भीमसेनके बाणोंसे निवारित होकर उनकी ओर क्रोधपूर्व्वक देखने लगे और भीमसेन भी अभिमानके सहित क्रोधसे नेत्र लालकर अपना प्रचण्डधनुष फेरते हुए बार बार कर्णकी ओर देखने लगे।

१३३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! प्रतापी कर्णने तुम्हारे पुत्रोंको मरे हुए पृथ्वीपर पड़े देख अत्यन्त ही क्रुद्ध होकर अपने प्राणकी आशाको त्याग दिया, विशेष करके उन्होंने सम्मुखमें तुम्हारे पुत्रोंको भीमसेनके अस्त्रोंसे मरकर गिरता हुआ देखकर अपनेको अपराधी समझा; उसके अनन्तर भीमसेन क्रुद्ध होकर निर्भय-चित्तसे कर्णकी ओरदौड़े। कर्णने भीमसेनका तिरस्कार कर पांच बाणोंसे उन्हें विद्ध किया, फिर शिलापर घिसे हुए दश बाणोंसे भीमसेनको पुनर्व्वार विद्ध किया; परन्तु भीमसेनने कर्णके चलाये हुए बाणोंकी कुछ भी पर्व्वाह न की बल्कि अपने सौ तीक्ष्ण बाणोंसे राधानन्दन कर्णको बिद्ध किया और पांच चोखे बाणोंसे कर्णका मर्म्मस्थल विद्ध करके फिर एक बाणसे उनका धनुष काट दिया। धनुष कटनेपर कर्णने क्रुद्ध होकर दूसरा धनुष ग्रहण करके शत्रुनाशन भीमसे-नको अपने बाणोंसे छिपा दिया। परन्तु भीम सेन उनके घोड़े और सारथीको मारकर शत्रुता शेष करनेकी इच्छासे बलपूर्व्वक सिंह-नाद करके हंसने लगे। अनन्तर उस ही समय पराक्रमी भीमसेनने कर्णके धनुषको फिर काट दिया। महाराज! वह सुवर्णभूषित कर्णका धनुष भीमके बाणोंसे कटकर घोर टङ्कार सहित पृथ्वीमें गिर पड़ा। तब महारथ कर्णने रथसे नीचे उतरकर गदा ग्रहण करी अनन्तर उस भयङ्कर गदाको, कर्णने भीमकी ओर चलाया। उस महाघोर गदाको सम्मुख आती देख भीमसेनने सम्पूर्ण योद्धाओंके सम्मुख हीमें उसे निवारण किया। तिसके अनन्तर महा पराक्रमी भीमसेन कर्णके वधकी इच्छा करके शीघ्रताके सहित सहस्र सहस्र बाण उनकी ओर चलाने लगे। कर्णने भीमसेनके चलाये हुए बाणोंको अपने बाणोंसे मार्गहीमें काटकर गिरा दिया। तिसके अन-न्तरसम्पूर्ण सेनाके सम्मुखमेंही अपने बाणोंसे भीमसेनका कवच काटकर पृथ्वीमें गिराया फिर पच्चीस बाणोंसे उन्हें अत्यन्त ही पीड़ित किया वह कर्णका पराक्रम अद्भुत रूपसे दीख पड़ा। अनन्तर महाबाहु भीमसेनने क्रुद्ध होकर कर्णकी ओर नौ बाण चलाये। हे राजेन्द्र। जैसे सर्प बिलमें प्रवेश करते हैं, वैसे ही भीमसेनकी धनुषसे छूटे हुए सम्पूर्ण बाण कर्णके कवच और दक्षिण भुजाको भेद-कर पृथ्वीमें घुस गये। कर्ण भीमसेनके धनु-षसे छूटे हुए बाणोंसे छिपकर फिर उनके समीपसे पृथक हुए। राजा दुर्य्योधन सूतपुत्र कर्णको भीमसेनके बाणोंसे पीड़ित होकर पैदल ही भागते देख अपने सहोदर भाइयोंसे बोले— हे पुरुषसिंहो। तुम लोग सब भांतिसे यत्नवान होकर शीघ्रताके सहित कर्णकी रक्षा करो। अनन्तर चित्र उपचित्र चित्राक्ष चारु-चित्र शरासन चित्रायुध और चित्रवर्म्मा तुम्हारे ये कईएक बलवान पुत्र अपने जेठे भाईकी आज्ञा सुन शीघ्रताके सहित बाणोंको चलाते हुए भीमसेनकी ओर दौड़े। भीमसेनने तुम्हारे पुत्रोंको शीघ्रताके सहित रणभूमिमें सम्मुख आया देख उन हर एकको एक एक बाणोंसे मार डाला। वे सब प्रचण्ड

वायुके वेगसे टूटे हुए वृक्षकी भांति भीमसेनके बाणोंसे मरकर पृथ्वीमें गिर पड़े। हे राजन्। महा पराक्रमी कर्ण तुम्हारे उन महारथी पुत्रोंको भीमसेनके बाणोंसे मरा हुआ देख आंखोंमें आसू भरकर विदुरके वचनोंको स्मरण करने लगे। अनन्तर शीघ्रताके सहित एक दूसरे रथको भली भांति सजाकर उसपर चढ़ और पराक्रम प्रकाशित करते हुए भीमसेनकी ओर दौड़े। वे दोनों आपसमें एक दूसरेको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध करके मानो सूर्य्य किरणसे युक्त दो बादलके टुकड़े समान शोभित होने लगे। पाण्डुपुत्र भीमसेनने क्रुद्ध होकर शिलापर घिसे हुए छत्तीस बाणोंसे कर्णका कवच काट दिया। महाबाहु कर्णने पचास बाणोंसे भीमसेनको अत्यन्त ही विद्ध किया। शरीरमें लाल चन्दन लगाये हुए वे दोनों क्षत विक्षत शरीर होकर सूर्य्यके समान प्रकाशित होने लगे। बाणोंसे दोनोंके कवच कट गये थे इससे दोनों ही उस युद्धभूमिमें ऐसे शोभित होते थे, जैसे केचलोंके त्यागनेसे सर्प शोभायमान लगता है। जैसे दो सिंह अपने तीक्ष्ण दांतरूपी अस्त्रोंसे एक दूसरेके ऊपर प्रहार करते हैं वैसे ही वे दोनों पुरुषसिंह कर्ण और भीम आपसमें एक दूसरेके ऊपर बाणोंसे प्रहार करके, क्षत विक्षत शरीर होकर अत्यन्त ही पीड़ित हुए। जैसे बादल आकाशसे पानीकी वर्षा करते हैं वैसे ही वे दोनों एक दूसरेके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। तथा जैसे दो मतवारे हाथी अपनेदांत और सूण्डोंसे आपसमें युद्ध करते हैं, वैसे ही दोनों पराक्रमी वीर अपने बाणोंसे एक दूसरे को विद्ध करके रुधिर पूरित शरीरसे अत्यन्त ही शोभित हुए, वे दोनों रथियोंमें श्रेष्ठपराक्रमी योद्धा सिंहनाद करते उछलते और मण्डलाकार गतिसे रथको घुमाते हुए रणभूमिमें क्रीड़ा करने लगे। सिंहके समान पराक्रमी वे दोनों पुरुषसिंह आपसमें सिंहनाद करते हुए क्रोधसे लालनेत्र करके इस प्रकार युद्ध करने लगे, जैसे पहले समयमें इन्द्र और राजा बलिका संग्राम हुआ था।

महाराज। अनन्तर महाबाहु भीमसेन अपना धनुष चढा कर मानो बिजलीसे युक्त बादलकी भांति रणभूमिमें विराजमान हुए। उनके रथका घरघराहट बादल गर्ज्जनके समान सुनाई देने लगा और उनका प्रचण्ड धनुष बिजलीके समास दीख पडता था। वह मेघरूपी होकर अपने बाणोंकी वर्षासे कर्णरूपी पर्व्वतको छिपाने लगे। हे भारत। महापराक्रमी भीमसेन इसीप्रकारके सहस्रों बाणोंसे कर्णको छिपाने लगे,—भीमने कर्णको इसी प्रकार अनेक बाणोंसे छिपा दिया; उसे देखकर तुम्हारे पुत्र अत्यन्त ही भयभीत हो गये। भीमसेन यशस्वी कृष्ण अर्ज्जुन सात्यकि और अर्ज्जुनके चक्ररक्षक पाञ्चाल देशीय दो राजकुमारोंको आनन्दित करते हुए युद्धभूमिमें कर्णको निवारण करने लगे। महाराज। तुम्हारे सम्पूर्ण पुत्र भीमसेनके पराक्रम धीरज और बाहुबलको देखकर उत्साह रहित होगये।

१३४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले हे राजेन्द्र! जैसे एक मतवारा हाथी दूसरे मतवारे हाथीका गर्ज्जना नहीं सह सकता; कर्णने भी उसी प्रकार भीमसेनके धनुष टंकार और तलत्राण शब्दको सहन नही किया। यद्यपि वह उस समय थोड़ी देर तक युद्धभूमिसे पृथक हुए थे तथापि भीमके बाणोंसे तुम्हारे पुत्रोंको मरता हुआ देख शोकित दुःखित होकर लम्बी सांस छोड़ते हुए भीमसेनकी ओर फिर दौड़े। वह क्रोधसे लालनेत्र

करके सिंहनाद करते और सूर्य्यकिरणकी भांति अपने प्रकाशमान बाणोंको चलाते हुए अत्यन्त शोभित हुए। हे भारत! भीमसेन सूर्य्य किरणके समान कर्णके धनुषसे छूटे हुए बाणोंकी जालमें एकबारगी छिप गए। जैसे पक्षियोंका समूह एकबारगी वृक्षके ऊपर आके गिरता है, वैसे ही कर्णके धनुषसे छूटे हुए बाण भीमसेनके सम्पूर्ण शरीरमें घुस गये और जितने ही मोर-पंखवाले तीक्ष्ण बाण आकाशमें समूहसे चलते हुए इस प्रकार शोभित होने लगे, जैसे उड़ता हुआ हंसोंका समूह शोभित होता, हे महाराज उस समय कर्णके धनुष उनके रथकी ध्वजा रथके चक्र, रथके ऊपर तथा नीचेके हिस्से और छत्र,—इन सम्पूर्ण स्थलोंमें बाण छूटते हुए दिखाई देने लगे। कर्णने आकाशचारी पक्षियोंकी भांति सुवर्ण-दण्डभूषित अनेक वेगवान विचित्र बाणोंको चलाकर आकाशमण्डलको परिपूर्ण कर दिया। भीमसेन कर्णको साक्षात कालके समान सम्मुख आते देखकर अपने प्राणकी आशा छोड़के तीक्ष्ण बाणोंको चलाते हुए उन्हें विद्ध करने लगे। कर्णका महाघोर पराक्रम देख और उनके चलाये हुए भयङ्कर बाणजालसे विद्ध होकर भी भीमसेन अपने बल तथा पराक्रमके प्रभावसे तनिक भी पीड़ित न हुए। वरन उनके धनुषसे छूटे हुए बाणोंको निवारण करके शिलापर घिसे हुए और तीक्ष्ण बाणोंसे कर्णको विद्ध किया। भीमसेन जिस प्रकार कर्णके बाण जालमें छिप गये थे वैसे ही उन्होंने भी अपने बाणोंकी वर्षासे कर्णको छिपा दिया। महाराज! रणभूमिमें भीमसेनका ऐसा पराक्रम देखकर चारण और तुम्हारी ओरके योद्धाओंने आनन्दित होके उन्हें धन्यवाद दिया। भूरिश्रवा कृपाचार्य्य अश्वत्थामा मद्रराज शल्य जयद्रथ उत्तमौजा युधामन्यु सात्यकि तथा और अर्जुन आदि कौरव तथा पाण्डवोंकी ओरके मुख्य मुख्य ये दस महारथी योद्धा धन्य धन्य करके सिंहनाद करने लगे। उस रोएं को खड़ा करनेवाले तुमुलशब्दको सुनकर तुम्हारे पु दुर्य्योधन शीघ्रताके सहित बहुतेरे राजपुत्र और अपने सहोदर भाइयोंसे यह वचन बोले। हे श्र वीर पुरुषो! आप लोगोंका मङ्गल होवे लोग कर्णकी रक्षाके निमित्त भीमसे समीप शीघ्र गमन करो। हे महा धनुर्द्धर पुरुषो! जब तक भीमसेनके धनुषसे छूटे बाण कर्णका नाश नहीं करते हैं उससे प ही तुम लोग सूत पुत्र कर्णकी रक्षाके नि यत्नवान होके भीमसेनसे युद्ध करो। तुम्हारे पुत्रोंने अपने जेठे भाई दुर्य्योधनकी आ नुसार क्रुद्ध हो भीमसेनके निकट जा उन्हें चारों ओरसे घेर लिया। जैसे वर्षा क बादलोंके समूह पर्वतोंके ऊपर जलकी करते हैं उसी प्रकार तुम्हारे पुत्रोंने भीमसेन चारों ओरसे घेर कर अपने बाणोंको उ ऊपर बरसाना आरम्भ किया। जैसे प्रलयका सात ग्रह एक चन्द्रमाको पीड़ित करते वैसेही वे तुम्हारे सातो पुत्र भीमसेनको पीि करने लगे। अनन्तर भीमसेनने अपना प्र धनुष बलपूर्वक खींचकर तीक्ष्ण बाणों चलाने लगे। उस समय उन्होंने पहिले वैर स्मरण करके अत्यन्त क्रुद्ध होकर मानो तुम्ह पुत्रोंके प्राण नाश करनेकी इच्छासे ही स किरणके समान प्रकाशमान सात बाणों धनुष पर चढ़ाकर उन सातों वीरोंकी ओ चलाया। भीमसेनके धनुषसे छूटे हुए स दण्डसे युक्त वे सातो भयङ्कर बाण भरत वं राजकुमारोंके शरीरको विदारण करके आक मण्डलमें चलते हुए दिखाई देने लगे। मह राज! सुवर्ण-दण्डभूषित वे सम्पूर्ण बा तुम्हारे पुत्रोंके हृदयको विदीर्ण करके उन शरीरसे रुधिरको पीकर मानो आकाशचा गरुड़ पक्षियोंके समूहकी भांति शोभित हुए

लगे। जैसे पर्व्वत पर उत्पन्न हुए बड़े बड़े वृक्ष मतवारे हाथियोंके सूण्डसे टूटकर पृथ्वी पर ार पड़ते हैं वैसे ही तुम्हारे सातो पुत्र भीमनके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर पृथ्वीमें ारपड़े। हे राजन। शत्रुञ्जय शत्रुसह चित्राध चित्रदृढ़ चित्रसेन और विकर्ण तुम्हारे सात पुत्र भीमसेनके अस्त्रोंसे मरकर पृथ्वीमें ारपड़े। पराक्रमसे युक्त महाबाहु भीमसेन ाधानन्दन कर्णके सम्मुख ही तुम्हारे पुत्रोंका ध करके मानो धर्म्मराज युधिष्ठिरको उस युद्ध वषयका सम्वाद देनेके निमित्त भयङ्कर सिंहाद करने लगे। धर्म्मपुत्र राजा युधिष्ठिर धनुारी भीमसेनके भयानक सिंहनादको सुनकर ासन्न हुए। उन्होंने प्रसन्नता पूर्व्वक नाना प्रकाके युद्धके बाजोंको बजवाकर भीमसेनके सिंहादको प्रतिग्रहण किया और उनके सिंहादसे जयसूचक सम्वाद पाकर अत्यन्त ही हर्षके सहित सम्पूर्ण शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ ोणाचार्य्यके संग युद्ध करनेके निमित्त आगे ढ़े। इधर तुम्हारे पुत्र राजा दुर्य्योधनने धीरे धीरे अपने इकतीस भाइयोंको भीमसेनके हाथसे मरता हुआ देखकर विदुरके पहिले कहे हुए सम्पूर्ण बचनोंको स्मरण किया, इस समय बुद्धिमान विदुरके वे अमोघ वचन सत्यही बोध हुए। दुर्य्योधनने इसी प्रकार चिन्ता करके कुछ उत्तर न दिया। उस अल्पबुद्धि नीच दुर्य्योधनने जूएकी खेलके समय द्रौपदीको सभामें बुलाकर जो कुछ बचन कर्णके सङ्ग मिलकर कहा था और कर्णने कहा, हे द्रौपदी तुम्हारे पति पाण्डव लोग जीते ही नष्ट होकर नरकगामी हुए इस समय तुम दूसरे किसी पुरुषको अपना पति बना लो। इसी प्रकार कठोर बचनोंसे पाण्डवोंके सम्मुखहीमें द्रौपदोको दुःखित किया था, उसको तुम और सभाके सम्पूर्ण कौरवोंने ही सुना था। उसहीका फल इस समय उपस्थित हुआ है। तुम्हारे पुत्रोंने उस समय महात्मा पाण्डवोंको कोपित करके उन्हें षण्डतिल आदि कहके जो नाना प्रकारकी कड़वी बचनोंको सुनाया था उसहीसे भीमसेन तेरह वर्ष पर्य्यन्त उस दबी हुई क्रोधाग्निको इस समय प्रकाशित करके तुम्हारे पुत्रोंका बध कर रहे हैं। महाराज! पहिले विदुरने शान्तिकी अभिलाष करके तुम्हारे समीप अनेक प्रकारसे विलाप किया था, परन्तु आपने उनके बचनोंको तनिक भी न सुना, इस ही कारणसे इस उपस्थित विपद-रूपी फलको आप पुत्रोंके सहित भोग कीजिये। जब आप बुद्धिमान पण्डित और समस्त कार्य्योंके तत्वको जाननेवाले होकर भी सुहृद पुरुषोंके बचनोंको नहीं सुना, तब प्रारब्धहीको ऐसे अवसरपर बलवान कहना पड़ेगा। हे पुरुषर्षभ! आप शोक न कीजिये क्योंकि शूरवीरोंके नाश होनेका यह भयङ्कर कार्य्य तुम्हारे अनीतिहीके कारण उपस्थित हुआ है इससे मेरे विचारमें तुम ही अपने पुत्रोंके नाश करनेके मूलकारण हो, देखिये पराक्रमी विकर्ण और चित्रसेन आदि तुम्हारे मुख्य मुख्य महारथी पुत्र मारे गये और तुम्हारे दूसरे जो पुत्र भीमसेनके सम्मुख हुए उन्होंने उस ही समय तुम्हारे पुत्रोंका बध किया, जो हो। तुम्हारे ही कारणसे व्यूहबद्ध सेनाके योद्धा लोग भीमसेन और कर्णके लगातार सहस्रों बाणरूपी अग्निसे भस्म होते दिखाई देने लगे।

१३५ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सूत। बोध होता है मेरे ही विशेष शोकके निमित्त यह महाघोर योद्धाओंके नाशका समय उपस्थित हुआ है, मैंने पहिले इसी प्रकार विचार किया था कि जो होनहार था सो हुआ है इस समय उसका प्रतिकार किस भांति करूंगा; इस ही वास्ते

मैं अत्यन्त व्याकुल हो रहा हूं! जो हो मैंने इस समय धीरज धारण किया है तुम मेरी अनीतिसे उत्पन्न हुए सेनाके शूरवीरोंके नाश होनेका सम्पूर्ण वृत्तान्त मेरे समीप वर्णन करो।

सञ्जय बोले, महाराज। महाबली पराक्रमी भीमसेन और कर्ण दोनों ही दो जलभरे बादलोंकी भांति लगातार वाण वर्षा करते युद्ध करने लगे। भीमनामसे अङ्कित शिलापर घिसे हुए स्वर्णपङ्खवाले चोखे वाण मानो कर्णके प्राण हरण करनेकी इच्छासे उनके शरीरमें प्रवेश करने लगे। उस ही प्रकार कर्णके धनुषसे छूटे हुए सैकड़ों और सहस्रों वाणोंने भीमसेनको छिपादिया। महाराज। उन दोनोंके चलाये हुए सम्पूर्ण वाण सेनाके बीच चारों ओर गिरने लगे; उससे सेनाके पुरुष इस प्रकार इधर उधरको भागने लगे जैसे वायुके झोंकसे समुद्रका जल उथलते दीख पड़ता है। भीमसेनके धनुषसे छूटे हुए भयङ्कर विषधारी सर्पतुल्य तीक्ष्ण वाणोंसे तुम्हारी व्यूहबद्ध सेनाके योद्धा लोग भी प्राणरहित होके पृथ्वीपर गिरने लगे। वह रणभूमि उस समय मरे हुए मनुष्य और हाथी घोड़ोंके मृत शरीरसे इस प्रकार परिपूर्ण होगई जैसे प्रचण्ड वायुके वेगसे वनके वृक्ष टूटकर पृथ्वीको परिपूरित कर देते हैं। तिसके अनन्तर तुम्हारी ओरके योद्धा लोग भीमसेनके वाणोंसे पीड़ित होकर यह क्या। यह क्या है। ऐसा वचन कहते हुए रणभूमिसे भागने लगे। सिन्धु सौवीर और कुरुसेनाके सम्पूर्णयोद्धा लोग कर्ण और भीमसेनके वाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर उनके समीपसे दूर हट गये। बहुतेरे शूरवीरोंके नष्ट होनेसे कोई हाथी कोई घोड़े और कोई रथसे रहित होकर युद्धभूमिमें भीमसेन और कर्णको त्यागकर भागते हुए यह वचन कहने लगे कि निश्चय हो अर्ज्जुनके निमित्त देवता लोग हम लोगोंको मोहित कर रहे हैं, क्योंकि भीमसेन और कर्णके वाणोंसे केवल हमारी ही सेनाके शूरवीर योद्धाओंका प्राण नाश होरहा है! महाराज। तुम्हारे ओरके योद्धा लोग भयभीत होकर भीमसेन और कर्णको वाण गिरने तकके स्थानको छोड़कर दूर खड़े होके उन दोनों पुरुषसिंहोंको युद्ध देखने लगे। हे प्रजानाथ। उस रणभूमिमें शूरवीरोंके हर्ष और कादरोंके भयको बढ़ानेवाले हाथी घोड़े और मनुष्योंके रुधिरसे एक भयङ्करी नदी उत्पन्न हुई। उस समय टूटे हुए रथ ध्वजा पताका रथकी धूरी टूटे हुए रथोंके ऊपर और नीचेसे छिन्न मनुष्य हाथी घोड़ोंके मृत शरीर तथा भीमसेन और कर्णके सुवर्ण भूषित महा प्रचण्ड शब्दवाले धनुषसे छूटे हुए केचुलीसे रहित सर्प समान सहस्रों सोनेके पंखवाले वाण नाराच प्रास तोमर तलवार फरसे सुवर्ण खचित गदा मूषल पट्टिश वज्रके समान नाना प्रकारकी शक्ति परिघ और विचित्ररूपी वाली शतघ्नि, आदि सम्पूर्ण अस्त्रोंसे वह रणभूमि परिपूरित होकर अत्यन्त शोभित होने लगी। इसके अतिरिक्त शूरवीरोंके शरीरसे कटे हुए वर्म (सनाह) कुण्डल मुकुट वाला अङ्गूठी उत्तम वस्त्र सुवर्णकी माला तलत्राण अङ्गुलीत्राण गलेके आभूषण वस्त्र कटे हुए छत्र चँवर और नाना प्रकारके अस्त्रशस्त्रोंसे कटे तथा इधर उधर पड़े हुए रुधिरयुक्त मनुष्योंके मृत शरीरसे वह रणभूमि, तारोंसे युक्त आकाशमण्डलकी भांति प्रकाशित होने लगी। उन दोनों पुरुषसिंहोंके अद्भुत और अलौकिक कर्म्मको देखकर सिद्ध और चारण आदि प्राणी विस्मित होने लगे। महाराज! जैसे वायुकी सहायतासे सूखे तृण काष्ठोंको जलाती हुई अग्नि अत्यन्तही प्रज्वलित होजाती है उसी प्रकार अधिरथपुत्र कर्ण युद्धभूमिमें भीमसेनको पाकर भयङ्कर तेजस्वी होगये। उन दोनों पुरुष सिंहोंका इस प्रकार महाघोर संग्राम होने लगा जैसे दो मतवाले

हाथियोंके आपसमें युद्ध करते समय कमल वन नष्ट होजाता है कितने ही रथोंकी ध्वजा टुकड़े टुकड़े होगईं कितने ही रथ शस्त्रोंकी चोटसे टूट गये, कितने हाथी घोड़े और मनुष्योंका नाश होगया। जैसे वायुसे बादल तितर बितर होजाते हैं वैसे ही तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा कर्ण और भीमसेनके बाणोंसे छिन्न भिन्न होगयी।

१:६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज। इसके अनन्तर कर्ण भीमसेनको तीन बाणोंसे विद्ध करके फिर उनके ऊपर अनेक विचित्र बाणोंकी बर्षा करने लगे। परन्तु महाबाहु भीमसेन सूतपुत्र कर्णके वैसे कठोर बाणोंसे भी विद्ध होकर दुःखित न हुए। वरन अचल पर्व्वतके समान स्थिरताके सहित युद्धसे विचलित न हुए। उन्होंने कर्णको उत्तम पानीसे बुझे हुए एक तीक्ष्ण कार्णक अस्त्रसे अत्यन्त विद्ध किया। तिसके अनन्तर कर्णके रत्नमय मनोहर कुण्डलोंको काट दिया। वह कुण्डल मानो आकाशसे गिरे हुए ज्योतिवाले पदार्थोंकी भांति पृथ्वीमें गिर कर प्रकाशित होने लगा। फिर उन्होंने क्रुद्ध होकर हंसते हुए एक भल्लसे कर्णके हृदयमे प्रहार किया। उसके बाद महाबाहु भीमने शीघ्रताके सहित विषधारी सर्पके समान दशबाणोंको ग्रहण करके सूतपुत्रकर्णको ओर चलाया। महाराज! जैसे साप बिलमें प्रवेश करते हैं वैसे ही भीमसेनके धनुषसे छूटे हुए वे सम्पूर्ण बाण कर्णके ललाटको भेद कर मस्तकके भीतर पविष्ट हुए। जैसे पहले नीलमकी माला पहरने पर कर्णकी शोभा हुई थी वैसे ही ललाटमें विद्ध हुए उन बाणोंसे महाबाहु कर्ण उस समय शोभितहोने लगे। वह बलवान भीमसेनकेबाणोंसे अत्यन्त विद्धहोकर दोनो आंखोंको मूंद रथका दण्ड पकड़ रथ पर स्थित हुए। शत्रुनाशन महापराक्रमी कर्ण मुहूर्त्त भरके बीच सावधान होकर अपने सम्पूर्ण शरीरको रुधिर पूरित देखकर क्रोधसे प्रज्वलित होगये। और दृढ़ धनुर्द्धारी भीमसेनके बाणोंसे पीड़ित होकर भी क्रोध और वेगके सहित उनके रथके समीप उपस्थित हुए। फिर अत्यन्त क्रुद्ध होकर कर्णने गिद्धपंख युक्त एक सौ बाण भीमसेनके ऊपर चलाये। परन्तु पाण्डुपुत्र भीमसेन कर्णका वैसा पराक्रम देखकर भी दुःखित न हुए। वरन उनका अनादर करते हुए उनके ऊपर अपने तीक्ष्णबाणोंकी वर्षा करने लगे, शत्रुनाशन कर्णने अत्यन्त कोध करके नौ बाणोंसे क्रोधी भीमसेनके वक्षस्थलमें प्रहार किया। महाराज! जैसे दो व्याघ्र आपसमें एक दूसरेके ऊपर दांत और नखोंसे प्रहार करते हैं वैसे ही वे दोनों पुरुषसिंह एक दूसरेके ऊपर अपने शस्त्रोंकी इस प्रकार वर्षाने लगे, जैसे बादल आकाशसे जलकी वर्षा करते हैं। वे दोनों ही अत्यन्त क्रुद्ध हुए दूसरेके वधके अभिलाषी थे वे दोनो तलत्राणके शब्द सहित अपने बाणोंके जालसे एक दूसरेको छिपाने लगे। इसके अनन्तर शत्रुओंके नाश करनवाले महाबाहु भीमसेनने एक तेज अस्त्रसे कर्णके धनुष को काट कर सिंहनाद किया। महारथी कर्ण उस कटे हुए धनुषको त्याग कर एक महाप्रचण्ड अत्यन्त वेगशील दृढ़ धनुष ग्रहण किया और सिन्धु तथा सौवीर सेनाके सहित कौरवोंकी सेनाका नाश भरे हुए हाथी घोड़े और मनुष्योंको इधर उधर पड़े देख उनके शरीरमें अत्यन्त क्रोध हुआ। वह सुवर्णभूषित बड़े धनुषको चढ़ाकर भयंकर नेत्रोंसे भीमसेनको ओर देखने लगे। और क्रुद्ध होकर भीमसेन के ऊपर लगातार बाणोंकी वर्षा करने लगे। वह शरत्कालके प्रचण्ड किरणधारी दीप-

होके सूर्य्य समान शोभित हुए। उनके शरीरमें भीमसेनके सैकड़ों वाण विद्ध हुए थे उससे वह किरणोंसे शोभित भगवान सूर्य्यकी भांति प्रकाशित हुए। वह किस समय तरकससे वाणोंको निकालते साधते कब धनुष पर खींचते और किस समय उन वाणोंको छोड़ते थे, उस विषयमें कोई भी पुरुष युद्धभूमिके बीच उनको देखनेमें समर्थ न हुए। महाराज! उस समय महावीर कर्णके बाईं और दहिनी ओर मण्डलाकार चक्रके भयंकर धनुषसे छूटे स्वर्ण पंखवाले अत्यन्त चोखे सम्पूर्ण वाण चारों ओर चलते हुए दिखाई देने लगे। कर्णके वाणोंसे सम्पूर्ण दिशा छिप गई, और सूर्य्यभी वाणोंसे छिपकर तेजरहित होगया। कर्ण और भीमसेनके वाणोंके जाल आकाशमण्डलमें नाना भांतिसे दिखाई देने लगे। विशेष कर कर्णके धनुषसे छूटे वाण आकाशमण्डलसे लगातार सारसपक्षीके समूहकी समान शोभित होने लगे। अधिरथपुत्र कर्ण गिद्धपंखयुक्त शिला पर घिसे हुए सुवर्णभूषित अत्यन्त चोखे महावेगवान वाणोंको अपने धनुषपर चढ़ाकर भीमसेनकी ओर छोड़ने लगे। सुवर्ण भूषित वे सम्पूर्ण वाण अत्यन्त वेगके सहित कर्णके धनुषसे छूटकर लगातार भीमसेनके रथपर गिरने लगे। महाराज! कर्णके चलाये हुए वे सम्पूर्ण वाण आकाश मण्डलमें झुण्डके झुण्ड टोड़ीदलकी भांति शोभित होने लगे। वे सम्पूर्ण वाण कर्णके धनुषसे छूटकर आकाशमण्डलमें मिलकर ऐसे शोभित हुए कि मानो वहुत बड़ा एक ही वाण दिखाई दे रहा है। अधिक क्या कहा जावे जैसे जल वर्षाने वाले बादल जल वर्षाकर पर्व्वतको छिपा देते हैं वैसे ही कर्णने क्रुद्ध होकर भीमसेनको अपने वाणोंकी वर्षासे छिपा दिया। उस स्थानपर तुम्हारे पुत्र लोग सेनाके योद्धाओंके सहित भीमसेनके बल पराक्रम और युद्धकार्य्यको देखकर चकित होगये। उन्होंने कर्णके धनुषसे छूटे हुए समुद्रकी समान उस वाण वर्षाकी तनिक भी पर्वाह किया, वल्कि क्रोधपूर्व्वक कर्णकी ओर दौड़े। भीमसेनका सुवर्णभूषित बड़ा धनुष खींचनेसे मण्डलाकार इन्द्रधनुषके समान जान पड़ने लगा। और उससे सन्नतपर्व्व स्वर्णपंखवाले वाणोंका जाल प्रगट होकर आकाशको परिपूरित करने लगा। इसके अनन्तर सूतपुत्र कर्णके चलाये हुए आकाशमें स्थित वे सम्पूर्ण वाण प्रारब्धके अनुसार भीमसेनके वाणोंसे कटकर पृथ्वीमें गिर पड़े। उन दोनोंके अग्नि-समान स्पर्श करनेवाले महावेगशील स्वर्णपंखयुक्त वाणोंसे आकाश परिपूरित होगया; सूर्य्यका तेज छिपा; और वायुकी गति रुक गई। बल्कि उस समय उनके वाणोंके जालसे चारों ओर अन्धकार होगया, वहां पर कुछ भी वस्तु दिखाई नहीं देता था। अनन्तर सूतपुत्र कर्ण भीमसेनके पराक्रमका अपमान करके उन्हें अनगिनत वाणोंसे छिपाते हुए युद्धभूमिमें भीमसेनसे प्रबल होगये। महाराज! जैसे दो दिशासे दोनों ओरकी वायु चलने पर अग्नि उत्पन्न होती दीखपड़ती है वैसेही पुरुषसिंह भीमसेन और कर्णके वाणोंके आपसमें रगड़ खानेपर आकाशमें भयंकर अग्नि उत्पन्न हुई। कर्णने क्रुद्ध हो भीमसेनके वधकी इच्छासे उत्तम पानीसे बुझे हुए सुवर्णभूषित अनेक तीक्ष्णवाण उनकी ओर चलाए। परन्तु महाबली क्रोधी भीमसेनने कर्णसे भी अधिक पराक्रम प्रकाशित करनेकी इच्छासे उनके चलाये वाणोंको निज वाणोंसे तीन तीन टुकड़े करके पृथ्वीमें गिराया। फिर कर्णको खड़ारह। खड़ारह! कहके क्रोधसे अग्नि समान प्रज्ज्वलित हो उनके वध करनेकी इच्छासे अपने भयंकर वाणोंको उनके ऊपर वर्षाने लगे। तिसके अनन्तर उन दोनोंका महाभयङ्कर धनुषटङ्कार तलत्राण सिंहनाद

के संग मिल करके युद्धभूमिके बीच तुमुल शब्द उत्पन्न हुआ। उस समय योद्धा लोग एक दूसरेके वधकी इच्छा करनेवाले भीम और कर्ण के युद्धको देखनेकी इच्छासे युद्धभूमिमें खड़े हुए। और देवऋषि गन्धर्व्व तथा विद्याधर उन दोनों पुरुषसिंहोंके ऊपर बार बार फूलोंकी वर्षा करके धन्य धन्य कहके उनकी प्रशंसा करने लगे। उसके अनन्तर अत्यन्त पराक्रमी महाबाहु भीमसेनने अपने अस्त्रोंके प्रभावसे कर्णके बाणजालको निवारण करके फिर क्रोधपूर्व्वक उन्हें अपने बाणोंसे विद्ध किया। महाबलवान् कर्णने भी युद्धभूमिमें भीमके बाणोंको काटकर विषधारी सर्पके समान नौ बाण उनकी ओर चलाये। परन्तु महाबाहु भीमसेनने कर्णके चलाये उन बाणोंको अपने नौ चोखे बाणोंसे मार्गहीमें काटकर गिरा दिया। फिर खड़ारह! खड़ा रह। कहके भीमसेनने यमदण्डके समान एक भयङ्कर बाण कर्णकी ओर चलाया। महाप्रतापी कर्णने भीमसेनके धनुषसे छूटे हुए उस बाणको अपनी ओर आते देख निर्भयचित्तसे अपने बाणोंसे काटकर गिरा दिया। पाण्डुपुत्र भीमने फिर उनके ऊपर अनेक तीक्ष्णबाणोंकी वर्षाकी परन्तु कर्णने निर्भय चित्तसे उनके सम्पूर्ण बाणोंको काट कर पृथ्वीमें गिराया। महाराज! जब भीमसेन इस प्रकार कर्णके सङ्ग युद्ध करने लगे, तब सूतपुत्र कर्णने अत्यन्त क्रुद्ध होके अस्त्रमायाका अत्यन्त विचित्र कौशल प्रकाशित किया। कर्णने सन्नतपर्व्व बाणोंसे भीमसेनके तरकस धनुषका रोदा घोड़ोंकी बागडोर और सारथीके हाथके कोड़ेको काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। तिसके अनन्तर उनके रथके चारों घोड़ोंको मार कर उनके सारथीको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे। भीमसेनका सारथी कर्णके बाणसे अत्यन्त पीड़ित होकर भीमके रथको त्यागकर युधामन्युके रथमें चला गया। तब अधिरथपुत्र कर्णने क्रोधसे प्रलयकालकी अग्नि समान प्रज्वलित होकर खिलवाड़की तरह भीमसेनके रथकी ध्वजा और पताका काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। महाबाहु भीमसेनने रोदारहित धनुषको त्याग करके बरछी उठा कर क्रोध पूर्व्वक कर्णकी ओर चलाया। कर्णने भयङ्कर लुकाके समान उस सुवर्णभूषित शक्तिको अपनी ओर आती देख, क्रोधके सहित बाणोंसे उस बरछीको काट कर पृथ्वीमें गिरा दिया। कर्णने अपने मित्र दुर्य्योधनके प्रयोजन-सिद्धिके वास्ते अद्भुतपराक्रम प्रकाशित करके निज बाणोंसे भीमसेनकी चलाई शक्तिकी दश टुकड़े करके पृथ्वीमें गिराया तब भीमसेनने मरना वा युद्धमें विजयकी इच्छा कर सुवर्णभूषित ढाल तलवार ग्रहण किया। परन्तु सूतपुत्र कर्णने निर्भय चित्तसे उनके उत्तम ढालको अपने भयङ्कर बाणोंसे काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। भीमसेन ढालके कटने और रथसे रहित होने पर क्रोधसे मूर्च्छित होगये। फिर शीघ्रताके सहित भीमसेनने उस बहुत बड़ी तलवारको घुमाकर कर्णके रथकी ओर चलायी। वह तलवार रोदेसे युक्त कर्णके धनुषको काट कर मानो क्रुद्ध सर्पके समान आकाशमण्डलसे पृथ्वीपर गिरी तिसके अनन्तर कर्णने क्रुद्ध होकर शत्रुओंके नाश करने वाले अत्यन्त वेगशील दूसरे धनुषपर रोदा चढ़ा लिया, और भीमसेनके वध करनेकी इच्छासे क्रोधपूर्व्वक उस धनुष पर स्वर्ण पंखवाले अत्यन्त चोखे एक एक हजार बाण चढ़ा कर एक ही बार उनके ऊपर छोड़ने लगे। तब बलवान भीमसेन कर्णके धनुषसे छूटे हुए उन अनेक बाणोंसे पीड़ित होकर कर्णको अपना पराक्रम दिखाते हुए रथपरसे आकाशकी ओर कूदे। सूतपुत्र कर्णने विजयकी अभिलाषा करनेवाले भीमसेनके उन अद्भुत कार्य्यको देख रथमें बैठकर भीमसेनकी अभिलाषाको निष्फल

किया। भीमसेन कर्णको रथमें बैठे देखकर उनके रथकी ध्वजाका दण्ड पकड़ पृथ्वीपर खड़े हुए। महाराज! जैसे पक्षिराज गरुड़ आकाशसे पृथ्वी पर सर्पको आक्रमण करते हैं वैसे ही भीमसेनको कर्णके बधकी अभिलाषासे आकाशकी ओर उछलते देख, कौरवोंकी ओरके योद्धा और चारण आदि आकाशवासी प्राणी भीमसेनके कार्य्यकी अत्यन्त प्रशंसा करने लगे। भीमसेन अपने रथको पीछे छोड़ क्षत्रिय धर्म्मके अनुसार अस्त्र-रहित होकर भी कर्णके संग युद्ध करनेके वास्ते पृथ्वी पर खड़े हुए। सूतपुत्र कर्ण इस प्रकारसे भीमसेनके आक्रमणको निष्फल कर उन्हें युद्ध करनेके वास्ते खड़ा देख क्रोधपूर्व्वक उनकी ओर दौड़े! महाबलवान पुरुषोंमें श्रेष्ठ कर्ण और भीमसेन आपसमें युद्ध करनेकी इच्छाकर वर्षाकालके बादलोंके समान गर्ज्जने लगे। तिसके अनन्तर वे दोनो पुरुषसिंह क्रोधसे मतवारे होकर देवासुर युद्धके समान महाघोर संग्राम करने लगे। परन्तु भीमसेन शस्त्र रहित थे इसीसे कर्णके अस्त्रोंसे अत्यन्त पीड़ित हुए, और पहिले अर्ज्जुनके वाणोंसे जो सब मरे हुए पर्व्वतके समान हाथियोंके समूह पड़े हुए थे उसे देख, इस स्थानपर अवश्य ही कर्णके रथकी गति न होसकेगी यही बिचार कर अस्त्र रहित होकर उस ही मरे हुए हाथियोंके समूहमें घुस गये। वह अपने प्राणरक्षाकी अभिलाष करके कर्णके रथकी गति रोकनेवाले उन मरे हुए हाथियोंके समूहमें घुस गये; और फिर कर्णके ऊपर प्रहार करनेका साहस न किया महाराज। शत्रुनाशन भीम अपने शरीरको छिपानेकी इच्छा कर अर्ज्जुनके वाणसे मरे हुए एक बड़े हाथीको उठाकर इस भांति स्थित हुए, जैसे महाबलवान हनुमानने अनेक औषधियोंसे युक्त गन्धमादन पर्व्वतको उठाया था। सूतपुत्र कर्णने भीमसेनके हाथमें मरे हुए हाथीको देख, उसे अपने वाणोंसे काट कर टुकड़े टुकड़े कर दिया। तब भीमसेन उस हाथीके कटे हुए अङ्गोंको उठा उठा कर कर्णकी ओर फेंकने लगे। यही नहीं वरन उस समय भीमने रणभूमिमें कटे हुए रथके चक्र अथवा कटे हुए घोड़े आदि जिन जिन वस्तुओंको देखा उन सम्पूर्ण वस्तुओंको क्रोध पूर्व्वक उठाकर कर्णकी ओर फेंकने लगे। परन्तु राधापुत्र कर्णने वार वार चलायी हुई भीमसेनकी सम्पूर्ण वस्तुओंको टुकड़े टुकड़े करके पृथ्वीमें गिरा दिया। तब भीमसेनने अत्यन्त भयङ्कर वज्र समान अपनी मुट्ठी बांध कर कर्णके नाश करनेकी इच्छा करी। परन्तु मुहूर्त्त भरके बीच अर्ज्जुनकी प्रतिज्ञाको स्मरण करके कर्णके ऊपर मुक्का नहीं चलाया। तिसके अनन्तर कर्ण भीमसेनको बार बार तीक्ष्णवाणोंसे विकल कर उन्हें मूर्च्छित करने लगे। परन्तु कर्णने पहिले समय कुन्तीको जो वर दिया था, उसे स्मरण करके भीमसेनका नाश नहीं किया। परन्तु उनके निकट जाकर उनके गलेमें अपना धनुष डाल उनकी हंसी करते हुए बार बार इन कठोर बचनोंको कहने लगे,—अरे पेटू तूबरक मूर्ख! तू केवल पेट पालन होमें वीर है अस्त्र शस्त्रोंकी विद्या तू कुछ भी नहीं जानता, अरे कादर! तू बालक है कभी भी मेरे समान पुरुषसे युद्धमें प्रवृत्त न होना। रे मूर्ख बालक! जहांपर नाना प्रकारकी खाने चाटने और पीनेकी वस्तु हो तू उसी स्थान पर रहनेके योग्य है, तू कदापि युद्धभूमिमें खड़े होने योग्य नहीं है। रे भीम! तेरा फल-मूल आहार करके नियम पूर्व्वक व्रत करते हुए वनवास करना ही उत्तम है क्योंकि तू युद्धके कार्य्योंमें महामूर्ख है। हे तात! युद्ध और मुनियोंके व्रतमें बहुत अन्तर हैं। इसहे तुम जङ्गलमें चले जाओ, विशेष करके जङ्गलमें रहन होको तुम्हारी रुचि अधिक देखी जाती

हैं। युद्ध करना तुम्हारे वास्ते किसी प्रकार भी अच्छा नहीं है। हे बुद्धिहीन भीमसेन। तू केवल भोजनके वास्ते शीघ्रता करके भोजन पाक करनेवाले और सेवकोंके ऊपर क्रोध करने अथवा वनवासी मुनियोंके व्रतके अनुसार फल मूल भोजन करनेके योग्य है। जङ्गलमें निवास करना ही तुम्हारे वास्ते उत्तम है, युद्धमें तुम्हारी कुछ भी निपुणता नहीं है। हे भीम। मैंने जान लिया कि तू फल मूलके भोजन करने और अतिथि-सेवा करने योग्य है। तू अस्त्र शस्त्रोंके चलानेमें अत्यन्त ही मूर्ख है।

महाराज। कर्ण भीमसेनको इसी प्रकार और बालक अवस्थाके किये हुए अनेक अप्रिय कार्य्योंके विषय तथा दूसरे नाना प्रकारके वचन सुनाने लगे। अनन्तर ऐसी बुरी अवस्थामें पड़े हुए पाण्डुपुत्र भीमको फिर कर्णने धनुषसे हिला कर कहा। रे राजपुत्र। तू अब कभी भी मेरे समान पुरुषके साथ युद्ध मत करना। तू अपने बराबर वालेके संग युद्ध किया कर, मेरे समान पुरुषके संग युद्ध करनेसे इसी प्रकारकी दशा होती है तथा इससे बढ़कर भी दूसरी दशा हो सकती है, इससे जहांपर कृष्ण अर्ज्जुन रणभूमिमें स्थित हैं; तू उसी स्थानपर चला जा, क्योंकि वे लोग युद्धभूमिमें तुम्हारी रक्षा करेंगे, अथवा तुम्हें घर लौट जाना उत्तम है तुम बालक हो, युद्धभूमिमें तुम्हारा कुछ भी प्रयोजन नहीं है। महाराज। सूतपुत्र कर्णने भीमसेनको इसी प्रकार वचन कहते हुए उन्हें रथभ्रष्ठ करके यदुकुलभूषण कृष्ण और महात्मा अर्ज्जुनके सम्मुख ही बार बार अपनी बड़ाई करके भीमसेनको छोड़ दिया। तब कपिध्वजा-वाले महावीर अर्ज्जुन कृष्णकी आज्ञाके अनुसार सूतपुत्र कर्णके ऊपर अनगिनत तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करनेलगे। वे सब सुवर्णभूषित बाण अर्ज्जुनके भुजबल तथा गाण्डीव धनुषसे छूटकर हंस श्रेणीकी भांति इस प्रकारकर्णके शरीरमें घुस गये जैसे क्रौञ्च पक्षी पर्व्वतके बीच प्रवेश करते हैं। अपने गाण्डीवधनुषसे छुटे हुए बाणोंके प्रभावसे भीमके समीपसे अर्ज्जुनने कर्णको पृथक किया, फिर अपने भाईकी पराजयसे अर्ज्जुन अत्यन्त क्रुद्ध हुए, और कर्णके धनुषको काटकर उन्हें अपने बाणोंसे बिद्ध किया। कर्ण उस ही समय भीमको छोड़कर अपने रथपर चढ़के अपनी सेनाके बीच स्थित हुए; और भीमसेन भी अपने भाई अर्ज्जुनके समीप जानेकी इच्छासे सात्यकिके रथकी ओर गमन करने लगे। तिसके अनन्तर पराक्रमी अर्ज्जुन यमराजके समान क्रुद्ध हुए और लालनेत्र करके कर्णकी ओर मृत्युके समान भयङ्कर एक बाण चलाया। जैसे पक्षिराज गरुड़ सर्प ग्रहण करनेकी इच्छासे वेगपूर्व्वक आकाशसे पृथ्वीपर उतरते हैं; वैसे ही अर्ज्जुनके धनुषसे छूटा हुआ वह बाण वेग पूर्व्वक कर्णकी ओर गमन करने लगा। परन्तु द्रोणाचार्य्य-पुत्र अश्वत्थामाने उस बाणको आकाश मार्गहीमें अपने बाणसे काट कर गिरा दिया। बाणको निष्फल होते देख अश्वत्थामाके ऊपर अर्ज्जुन अत्यन्त क्रुद्ध हुए। भागना मत खड़े होके युद्ध करो, ऐसा कहके अर्ज्जुनने अश्वत्थामाको चौसठ बाणोंसे बिद्ध किया। द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित होकर शीघ्रताके सहित मतवारे हाथियोंसे युक्त रथसेनाके बीच प्रवेश किया। तिसके अनन्तर कुन्तीपुत्र महावीर अर्ज्जुनने अपने गाण्डीव धनुषके शब्दसे रणभूमिमें स्थित सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंके धनुषको तुच्छ कर दिया। अनन्तर अश्वत्थामाको बहुत दूर न पहुंचते पहुंचते अपने बाणोंके प्रभावसे उन्हें भयभीत करने लगे। और कङ्कपत्र शोभित बाणोंसे हाथी घोड़े और मनुष्योंके शरीरको भेद करते हुए तुम्हारी सेनाका नाश करने लगे। महाराज। उस समय इन्द्रपुत्र अर्ज्जुन क्रोध पूर्व्वक

घोड़े और पैदल चलने वाले योद्धाओंसे युक्त तुम्हारी सेनाका इसी प्रकार नाश करने लगे।

१३७ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय! नित्य ही हमारी ओरके बहुतेरे योद्धा शत्रुओंके हाथसे मारे जाते हैं; इससे बोध होता है कि कालके प्रभावसे ही ऐसी घटना हो रही हैं; नहीं तो जिस स्थानमें अश्वत्थामा और कर्णसे रक्षित सेनाके बीच देवता लोग भी प्रवेश करनेमें समर्थ नहीं हैं; उस स्थलमें अकेले ही अर्जुनने मेरी वैसी सेनाके बीच प्रवेश किया है, उस पर भी अत्यन्त बलवान कृष्ण भीमसेन और सात्यकिकी सहायतासे उसके पराक्रमकी और भी बढ़ती हुई है। हे सञ्जय! मैं क्या कहूं उस ही समयसे मेरी शोकाग्नि हर घड़ी मेरे हृदयको भस्म किये डालती है, और इन सम्पूर्ण राजाओं तथा सिन्धुराज जयद्रथको मैं मरा हुआ ही समझ रहा हूं। विशेष करके सिन्धुराज जयद्रथने अर्जुनका अत्यन्त अप्रिय कार्य्य किया है, इससे वह इस समय अर्जुनकी आंखके सामने स्थित रह कर कैसे जीवित रह सकते हैं? हे सञ्जय! मैंने अनुमानसे ही जान लिया, सिन्धुराज युद्धसे परित्राण नहीं पासकेंगे। जो हो वह संग्राम जिस प्रकारसे हुआ था तुम उसका यथार्थ वृत्तान्त मेरे समीप वर्णन करो और जिसने अकेले ही कमल बनको नाश करनेवाले क्रुद्ध हाथीके समान अर्जुनकी सहायताके वास्ते बार बार मेरी सेनाके योद्धाओंको तितर बितर करके महासेनाके बीच प्रवेश किया था उस यदुकुल वीर सात्यकिके युद्धका वृत्तान्त भी मेरे समीप विस्तार पूर्व्वक वर्णन करो। हे सञ्जय! तुम वक्तता करनेमें अत्यन्त ही निपुण हो।

सञ्जय बोले महाराज! शिनिपौत्र सात्यकि राजाओंके सम्मुखमें पुरुषसिंह भीमसेनको बाणोंके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर उस भांतिसे गमन करते देख क्रोधसे शरत्कालके तीक्ष्ण किरणवाले सूर्य्यके समान प्रज्वलित होगये; और वर्षाकालके बादल समान गर्ज्जकर अपने दृढ़ धनुषके प्रभावसे तुम्हारे पक्षीयों सेनाको कंपाते और शत्रुओंका संहार करते हुए रथ बढ़ाकर भीमसेनके अनुगामी हुए। रणभूमिमें जब यदुवंशिय श्रेष्ठ महावीर सात्यकि शङ्ख वर्णवाले घोड़ोंसे युक्त रथपर चढ़के गर्ज्जन हुए गमन करने लगे तब तुम्हारी ओरके कोई भी पुरुष उन्हें निवारण करनेमें समर्थ नहीं हुए। युद्धसे पीछे न हटने वाले राजाओंमें श्रेष्ठ अलम्बुष सुवर्णमय वर्म धारणकर अपने प्रचण्डधनुषको घुमाके सात्यकिको युद्धभूमिमें निवारण करने लगे। उन दोनोंका जैसा संग्राम हुआ वैसा युद्ध कभी भी देखनेमें नहीं आया था। ऐसा क्या! उस समय तुम्हारी ओर तथा शत्रुओंकी ओरके सम्पूर्ण पुरुष उन दोनो पराक्रमी बीरोंका युद्ध देखने लगे। राजाओंमें श्रेष्ठ अलम्बुषने सात्यकिको दश बाणोंसे बिद्ध किया; सात्यकिने उनके बाणोंको अपने बाणोंसे मार्गहीमें काटके गिरा दिया। उन बाणोंको निष्फल होते देख, राजा अलम्बुषने अग्निके समान तेजस्वी तीन बाणोंसे सात्यकिको बिद्ध किया, वे तीनों बाण सात्यकिके वर्मको भेद कर उनके शरीरमें घुस गये। राजा अलम्बुषने उन वेगशील बाणोंसे सात्यकिको बिद्ध करके फिर उनके सुवर्णभूषित चारों घोड़ोंको चार बाणोंसे पीड़ित किया। कृष्णके समान पराक्रमी सात्यकिने अलम्बुषके बाणोंसे इस प्रकार बिद्ध होकर चार तीव्र बाणोंसे उनके चारों घोड़ोंका वध किया, और कालदण्ड समान भयङ्कर एक भल्लास्त्रसे उनका कुण्डल शोभित चन्द्रमाके समान प्रकाशमान सिर काटके पृथ्वीमें गिरा दिया।

महाराज । जब शत्रुओंके नाश करनेवाले महारथ सात्यकि राजा अलम्बुषका बध करके तुम्हारी सेनाके योद्धाओंको निवारण करते हुए अर्ज्जुनके समीप जानेकी इच्छासे गमन करने लगे । उस समय गौके दूध, चन्द्रमा वा बर्फके समान सिन्धुदेशीय अत्यन्त शिक्षित घोड़े इस प्रकार सारथीके वशमें होकर चलने लगे, कि पुरुषसिंह सात्यकिने जिस स्थानपर जानेकी इच्छा करी, उस ही स्थानपर उनका रथ उपस्थित होने लगा । हे अजमोढकुलभूषण ! जैसे प्रचण्ड वायु बादलोंके समूहको तितर बितर करता है वैसे ही सात्यकि शत्रुसेनाके योद्धाओंको पीड़ित करते हुए गमन करने लगे । इस प्रकार सात्यकिको आगे बढ़े आते देख तुम्हारे पुत्र लोग अपनी सेनाके योद्धाओंमें श्रेष्ठ दुःशासनको आगेकर सात्यकिको चारो ओरसे घेरकर अस्त्रशस्त्रोंसे उनके ऊपर प्रहार करने लगे । शत्रुनाशन सात्यकिने अपने बाणोंको चलाकर उन सम्पूर्ण योद्धाओंके बाणजालको निवारण किया । और अग्निके समान तेजस्वी बाणोंसे दुःशासनके चारो घोड़ोका बध किया । महाराज । कृष्ण और अर्ज्जुन पुरुषसिंह सात्यकिके कार्य्यको देखकर अत्यन्त ही हर्षित हुए।

१२८ अध्याय समाप्त ।

सञ्जय बोले, महाराज । त्रिगर्त्तसेनाके महारथी लोग सात्यकिको अगाध समुद्रके समान महासेनाके बीच प्रवेश करते और शीघ्रताके सहित दुःशासनके रथके समीप उपस्थित देखकर क्रोधपूर्व्वक चारो ओरसे उन्हें रथोंके समूहसे घेरकर लगातार उनके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे । परन्तु सत्यपराक्रमी सात्यकिने गदा प्रास, तलवार और धनुषोंके बीचमें घिरकर भी उन यत्नवान शूर-वीर योद्धाओंमेंसे पचास राजकुमारोंको पराजित किया । महाराज । उस समय मैंने सात्यकिका यह अद्भुत कार्य्य देखा कि उसे पश्चिम ओर देखकर पूर्व्वदिशामें दृष्टि किया तो उस ही समय उसको पूर्व्व दिशामें भी देखा ; उसी प्रकार पूर्व्वसे उत्तर और उत्तरसे दक्षिण दिशामें देखा जब जिस ओर दृष्टि करता था उस ही समय अकेले ही पराक्रमी सात्यकिको सब ओर घूमते हुए सैकड़ों रथियोंके समान देखने लगा । त्रिगर्त्तदेशीय योद्धा लोग सिंहके समान पराक्रमी सात्यकिके ऐसे अद्भुत कार्य्यको देख दुःखित होकर युद्धसे निवृत्त हुए ।

महाराज । जैसे मतवारे हाथीको वशमें करनेके निमित्त अङ्कुशसे पीड़ित करते हैं वैसे ही शूरसेनदेशीय कितने ही पराक्रमी योद्धालोग सात्यकिको अपने वशमें करनेके वास्ते उसे तीक्ष्ण बाणोंसे पीड़ित करने लगे । अत्यन्त पराक्रमी सात्यकिने क्षण भरके बीच उन सम्पूर्ण योद्धाओंको निवारण किया फिर कलिङ्गसेनाके बीच प्रवेश करके युद्ध करने लगे । अनन्तर महाबाहु सात्यकिने उस दुर्ज्जय कलिङ्ग सेनाको अतिक्रम करके अर्ज्जुनको देखा । हे भारत । जैसे कोई पुरुष जलमें तैरते हुए थककर किनारा पाके आनन्दित होता है वैसे ही सात्यकि पुरुषव्याघ्र अर्ज्जुनको देखकर प्रसन्न हुए श्रीकृष्ण अर्ज्जुनसे बोले हे अर्ज्जुन ! यह देखो शिनिपौत्र सात्यकि तुम्हारे समीप आ रहा हैं वह तुम्हारा मित्र और शिष्य है और वह महा पराक्रमी है । इस पुरुषसिंहने सम्पूर्ण योद्धाओंको तृणके समान समझकर उन्हें पराजित किया है । वह तुम्हें प्राणसे भी अधिक प्रिय है वही सात्यकि कौरवी सेनामें भयङ्कर उपद्रव मचाकर तुम्हारी ओर चला आता है उसने अपने अस्त्रोंके प्रभावसे द्रोणाचार्य्य और भोजराज कृतवर्म्माको तुच्छ समझा है, और अस्त्र शस्त्रोंकी विद्यामें निपुण

इस महावीर सातप्रकिने धर्म्मराज युधिष्ठिरको प्रिय-कामनासे मुख्य मुख्य योद्धाओंका वध किया है। उसने तुम्हें देखनेको इच्छासे कुरु-सेनाके बीच प्रवेश किया है,सात्यकिने एक रथपर चढ़कर ही द्रोणाचार्य्य आदि महारथियोंके सङ्ग युद्ध किया है। धर्म्मराज युधिष्ठिरको आज्ञासे सात्यकिने अपने भुज बलके आसरेसे शत्रुसेनाके योद्धाओंको तितर वितर किया है। इस समय सम्पूर्ण कौरवी सेनाके बीच भी सातप्रकिके समान कोई योद्धा नहीं मिल सकता। जैसे गौवोंके झुण्डसे सिंह अनायास ही मुक्त होता है वैसे ही सात्यकि अनेक योद्धाओंका वध करके कुरुसेनासे पार हुआ है। वह अपने शस्त्रबलसे सहस्रों राजा-ओंके सुन्दर सिरको कमलपुष्पकी भांति काटके उनके शरीरसे रणभूमिको परिपूर्ण करते हुए तुम्हारे समीप आरहा है आज सातप्रकिने सौ भाइयोंके सहित कुरुराज दुर्य्योधनको परा-जित करके राजा अलम्बुषका वध किया है। अधिक क्या कहें आज सातप्रकिने अपने शस्त्रके प्रभावसे कुरुसेनाके योद्धाओंको तृन समान समझकर उनके रुधिर मास और कीचड़से युक्त रुधिरकी नदी रण-भूमिके बीच उत्पन्न किया। तिसके अनन्तर अर्ज्जुन शोकित होकर कृष्णसे बोले, हे महाबाहो केशव! सात्यकिके आगमनसे मैं सन्तुष्ट नहीं होता हूं, धर्म्मराजको कैसी दशा हुई है, उसे मैं कुछ भी नहीं समझ सकताहूं; वह सातप्रकिके बिना जीवित है या नहीं मुझे इस विषयमें सन्देह है। हे कृष्ण! धर्म्म-राजकी रक्षा करना ही उसका कर्तव्यकार्य्य था। उसे न करके वह मेरे समीप क्यों आरहा है! धर्म्मराजको द्रोणाचार्य्यके हाथमें सम-र्पण किया गया है; जयद्रथ भी अभी तक नहीं मारा गया, और भूरिश्रवा इस समय सात्यकिकी ओर बढ़ रहे हैं, इससे जयद्रथके वधके वास्ते मुझे अत्यन्त कठिन भारको उठाना पड़ा। क्योंकि इस समय धर्म्मराजका सम्वाद, सात्यकिकी रक्षा और सिन्धुराज जय-द्रथका वध यह तीन अवश्य ही करने योग्य कार्य्य उपस्थित हुए हैं, परन्तु सूर्य्य अस्त हुआ चाहता है, इधर महारथ सात्यकि भी थके हुए हैं उनके अस्त्र-शस्त्र भी प्रायः निःशे-षित हुए हैं; तथा उनके रथके घोड़े और सारथी सब ही थक गये हैं, परन्तु भूरिश्रवा श्रमहीन और सहायतासे युक्त है। हे कृष्ण! इस समय भूरिश्रवाके सङ्ग युद्ध करनेसे क्या सात्यकिका मङ्गल होवेगा। महाबलवान सात्यकि समुद्रके समान महासेनासे पार होकर इस समयमें क्या गोपद प्राप्त होकर उसके पार न हो सकेंगे? अस्त्रविद्याके जाननेवाले कौरवोंमें मुख्य भूरिश्रवाके सङ्ग युद्ध करके क्या सात्यकि कुशलपूर्व्वक इस युद्धसे पार हो सकेंगे? हे कृष्ण! मेरे विचारमें धर्म्मराजने सात्यकिको मेरे समीप भेजकर बहुत ही अन्याय कार्य्य किया है। जैसे आकाशचारी बाजपक्षी मांस ग्रहण कर-नेके वास्ते चेष्टा करता है वैसे ही द्रोणाचार्य्य सदा ही युधिष्ठिरको ग्रहण करनेकी इच्छा कर रहे हैं, इससे धर्म्मराज कुशलसे हैं या नहीं इसमें मुझे सन्देह है।

१३९ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज। भूरिश्रवा युद्ध-दुर्म्मद सात्यकिको इस प्रकार आते हुए देखके क्रोध पूर्व्वक सहसा उनको ओर दौड़के यह वचन बोले, हे दाशार्ह! आज तुम प्रारब्धसे ही मेरी दृष्टिके सम्मुख उपस्थित हो, आज मैं युद्धभूमिमें अपनी सब दिनको मनोकामना पूर्ण करूंगा, यदि तुम युद्ध त्याग कर भाग न जाओगे, तो जीते जी मेरे निकटसे मुक्त न होओगे। तुम सदा ही अपने बलका अभिमान

करते हो परन्तु आज मैं तुम्हारा वध करके कुरुराज दुर्य्योधनको आनन्दित करूंगा आज तुम मेरे वाण रूपी अग्निसे भस्म होकर पृथ्वीमें गिरोगे तब महावीर कृष्ण अर्ज्जुन तुम्हें देखते ही रह जायंगे। धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर आज तुमको मेरे हाथसे मरेहुए सुन कर अत्यन्त लज्जित होंगे इसमेसन्देह नहीं है, क्योंकि उनकीआज्ञासे ही तुमने इस व्यूहके बीच प्रवेश किया है। तुम मेरे हाथसेमर कर रुधिर पूरित शरीरसे युक्त होकर पृथ्वीमे शयन करोगे तो पृथापुत्र अर्ज्जुन भी आज मेरे पराक्रमको मालुम करेंगे। पहिले राजा वलिके सङ्ग जैसे इन्द्रका युद्ध हुआ था मेरी सदासे ही इच्छा थी, कि तुम्हारे सङ्ग मेरा वैसा ही संग्राम उपस्थित होवे। हे सात्यकि! इससे मैं आज तुम्हारे सङ्ग महा घोर युद्धमें प्रवृत्त होऊंगा आज तुम मेरे वलवीर्य्य तथा पराक्रमको विपक्षको विशेषरूपसे मालूम करोगे। हे सात्यकि! जैसे लङ्कापति रावणका पुत्र लक्ष्मणके वाणसे मारा गया था आज तुम भी मेरे बाणोंके प्रहारसे मरकर यमलोकमें गमन करोगे। तुम्हारे मरनेसे धर्म्मराज युधिष्ठिर और कृष्ण अर्ज्जुन उत्साहरहित होकर आज युद्ध त्यागके गमन करेंगे। हे सात्यकि! आज मैं अपने चोखे वाणोंसे तुम्हारा वध करके तुम्हारे अस्त्रोंसे मरे हुए शूरवीर पुरुषोंकी विधवा स्त्रियोंको आनन्दित करूंगा। जब तुम मेरी दृष्टिके सम्मुख दिखाई पड़े हो तो मेरे सम्मुखसे आज इस भांति छुटकारा न पासकोगे जैसे छोटे हरिण सिंहके सम्मुखसे छुटकारा नहीं पाते। भूरिश्रवाका वचन सुन कर सात्यकिने हंसकर उन्हें यह उत्तर दिया,—हे कौरव्य! युद्धमें मुझे कभी भी भय नहीं होता, जो पुरुष रणभूमिमें मुझे अस्त्र रहित कर सकेगा वह मेरा वध करनेमें समर्थ हो सकेगा। नहीं तो केवल वचनसे मुझे भयभीत करनेको किसीकी भी सामर्थ्य नहीं है, युद्धभूमिमें जो पुरुष मेरा वध करेगा, वह बहुत दिनों तक इस संसारमें विघ्न रहित होके निवास कर सकेगा। जोहो, बहुत बात कहनेकी कुछ भी आवश्यकता नहीं है, तुमने जैसा वचन कहा है उसे कार्य्यसे करनेमें तत्पर हो जाओ। हे वीर! शरत् कालके बादलके निष्फल गर्ज्जनके समान तुम्हारे व्यर्थ गर्ज्जनको सुनकर मुझे हंसी लगती है। और तुम्हारे सङ्ग युद्ध करनेकी मुझे भी अत्यन्त इच्छा हो रही है। तुम्हारी जो मेरे सङ्ग युद्ध करनेकी सदासे इच्छा है सो आज सिद्ध होवेगी। हे अधम पुरुष! आज मैं बिना तुम्हारा वध किये कदापि युद्धसे निवृत्त न होऊंगा।

महाराज! महाधनुर्द्धारी शत्रुनाशन तेजस्वी पुरुषसिंह सात्यकि और भूरिश्रवा आपसमें एक दूसरेको वचन रूपी शलाकासे जिस प्रकार पीड़ित कर रहे थे वैसेही क्रुद्ध होकर एक दूसरेके ऊपर अस्त्रशस्त्रोंका प्रहार करने लगे, तथा जलकी वर्षा करनेवाले दो बादलोंकी भांति एक दूसरेके ऊपर अपने भयङ्कर वाणोंकी वर्षा करने लगे। महाराज! सोमदत्तपुत्र भूरिश्रवाने सात्यकिके वध करनेकी अभिलाष करके अपने शीघ्रगामी वाणोंसे उन्हें छिपा कर फिर दश तीक्ष्ण वाणोंसे उन्हें विद्ध किया, तिसके अनन्तर पुरुषसिंह भूरिश्रवा सात्यकिके नाश करनेकी इच्छा करके उनके ऊपर अगनित वाणोंकी वर्षा करने लगे। उन वाणोंको समीप न आते ही भांति सात्यकिने अपने अस्त्रोंके प्रभावसे मार्गहीमें काटके गिरा दिया। इसी प्रकारसे कुरुकुल श्रेष्ठ भूरिश्रवा और यदुकुलकी कीर्त्ति बढ़ानेवाले सात्यकि लगातार वाणोंकी वर्षा करने लगे। जैसे नखसे दो शार्दूल और दांतसे दो मतवारे हाथी आपसमें एक दूसरेके शरीर पर प्रहार करते हैं वैसेही वे दोनों

वीर शक्ति और अनेक बाणोंको चला कर आपसमें एक दूसरेके ऊपर प्रहार करने लगे। बाणोंकी चोटसे दोनोंके शरीर चत विचत होगये और उनके शरीरसे लगातार रुधिरकी धारा बहने लगी। महाराज! कुरु-कीर्त्ति बढ़ानेवाले वे दोनों महात्मा इसी प्रकार प्राणपणसे युद्ध करते हुए एक दूसरेको पीड़ित करके दो मतवारे यूथपति गजराजके समान युद्ध करने लगे।

ब्रह्मलोकमें प्रतिष्ठा पाने योग्य वे दोनों वीर शीघ्रतासे पुण्यलोकमें गमन करनेकी इच्छासे प्रसन्न होके सेनाके योद्धाओंके सम्मुख होमें एक दूसरेके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करके सिंहनाद करने लगे। महाराज! वे दोनो वीर मानो हथिनीको ग्रहण करनेकी इच्छा वाले दो मतवारे यूथपति गजराजके समान युद्ध करने लगे। उस समय सम्पूर्ण सेनाके योद्धा उन दोनों वीरोंका युद्ध देखने लगे। तिसके अनन्तर वे दोनों पुरुषसिंह एक दूसरेके रथके घोड़ोंका बध करके तथा आपसमें एक दूसरेके धनुषको काट कर दोनों रथ-रहित होगये, तब वे दोनो वीर तलवारको युद्ध करनेके वास्ते भली भांतिसे चित्रित मनोहर ढाल और उत्तम तलवार ग्रहण करके युद्धभूमिमें भ्रमण करने लगे। शत्रुनाशन भूरिश्रवा और सात्यकि यथारीतिसे मण्डलाकार गतिसे पैंतरोंके सहित युद्ध विषयक नाना प्रकारके कौशल दिखाते हुए दोनोही बार बार एक दूसरेके ऊपर प्रहार करने लगे। वे दोनो ही बार बार एक दूसरेके शरीरके ऊपर प्रहार करने लगे। वे दोनो यशस्वी वीर सुवर्णचित्रित सनाह तनत्राण सुन्दर आभूषण पहने हुए हाथमें तलवार लेकर इधर उधर घूमते एक दूसरेके ऊपर प्रहार करते साधते कूदते शीघ्रताके सहित तलवारको चलाते और नानाप्रकारकी गति दिखाते हुए अद्भुतरूपसे तलवार युद्ध करने लगे। वे दोनों युद्ध-विद्या जाननेवाले पराक्रमी वीर अपनी फुर्ती सावधनता और अस्त्रविद्याका बल दिखाते हुए दूसरेको पीड़ित करने लगे। और सम्पूर्ण सेनाके योद्धाओंके सम्मुखहीमें दोनों वीर आपसमें तलवारकी चोटसे अत्यन्त पीड़ित होकर मुहूर्त्त भर विश्राम करने लगे। तिसके अनन्तर पुरुषसिंह महाबाहु सात्यकि और भूरिश्रवा अपने तलवारोंसे चन्द्र प्रतिमाभूषित एक दूसरेके ढालको काटकर बाहु युद्ध करने लगे। चौड़ी छाती और लम्बी भुजावाले वे दोनो पुरुष अपनी लोहमयी परिघके समान भुजाओंसे आपसमें युद्ध करने लगे। महाराज! उन दोनों वीरोंकी युद्धनिपुणता भुजाका बन्धन और फिर छुड़ाकर युद्ध करना देखकर सम्पूर्ण सेनाके योद्धा लोग हर्षित होने लगे। जिस समय वे दोनों पुरुष इस प्रकार युद्ध करते थे उस समय ऐसा भयंकर शब्द उत्पन्न होने लगा, जैसे वज्रकी चोटसे पर्व्वत टूटनेपर महाघोर शब्द प्रगट होता है। जैसे दांतसे दो मतवारे हाथी और सींगोंसे दो बलवान बैल युद्ध करते हैं वैसे ही कुरुवंशकी कीर्त्ति बढ़ानेवाले भूरिश्रवा और यदुवंशियोंमें मुख्य सात्यकि भुजाओंसे भुजाके बन्धन, सिरसे सिरकी टक्कर चरणसे चरणकी घुटनेसे प्रहार करते हुए आपसमें संग्राम करने लगे, उससे ऐसा बोध होने लगा मानो अंकुशसे तोमर संयुक्त होरहा है। इसी प्रकार कभी चरणसे चरण बांधते कभी शरीर ग्रहण करते कभी पृथ्वी पर घुमाके फेंकते कभी दूर हट जाते फिर घूम कर युद्ध करने लगते; एक दूसरेकी निन्दा करते हुए ताल ठोकके हुंकार करके पृथ्वीमें गिरते, उठ खड़े होते, कूदते और नानाप्रकारके युद्ध कौशल दिखाते हुए आपसमें मल्लयुद्ध करने लगे। ऐसा क्या, बाहुयुद्धकी जो बत्तीस प्रकारकी क्रिया शास्त्रमें कही

गये हैं, युद्धमें प्रवृत्त हुए वे दोनों महाबली पुरुष रणभूमिमें सम्पूर्ण कौशल प्रकाशित करने लगे।

तिसके अनन्तर शस्त्र-रहित सात्यकिको इस प्रकार युद्ध करते देख श्रीकृष्णचन्द्र अर्जुनसे यह वचन बोले, हे अर्ज्जुन। यह देखो सब-धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ सात्यकि रथ रहित होकर युद्ध कर रहे हैं। उन्होंने तुम्हारा अनुगमन करके महाबली कौरवी सेनाको भेदकर सम्पूर्ण योद्धाओंके संग युद्ध किया है। इस समय बहुतसी दक्षिणा देनेवाले भूरिश्रवाने सात्यकिको अनेक योद्धाओंके सङ्ग युद्ध करके आगे बढ़ आते देख युद्धकी अभिलाषा करके उन्हें आक्रमण किया है यह बहुत ही अनुचित मालूम होता है। महाराज! श्रीकृष्ण इसी प्रकारसे कह रहे थे, उसी समय युद्ध दुर्म्मद भूरिश्रवा अत्यन्त क्रुद्ध हुए और जैसे एक मतवारा हाथी दूसरे मतवारे हाथीके शरीर पर प्रहार करता है वैसे ही सम्पूर्ण योद्धाओंमें अग्रणी रथमें बैठे हुए कृष्णअर्ज्जुनके सम्मुख होमें भूरिश्रवाने सात्यकिको उठा कर देमारा और लातसे उनके शरीरमें प्रहार करने लगे। महाबाहु कृष्ण सात्यकिकी ऐसी दशा देखकर फिर अर्ज्जुनसे बोले। हे पापरहित अर्ज्जुन! देखो जो पुरुष युद्धभूमिमें अनगिनित योद्धाओंमें अजेय था; आज यदुवंशी और अन्धकवंशियोंमें अग्रणी वही सात्यकि भूरिश्रवाके हाथमें पड़कर उनके वशमें होगया है। हे अर्ज्जुन। इससे तुम सात्यकिकी रक्षा करो। वह तुम्हारे शिष्य और अत्यन्त पराक्रमी योद्धा हैं और विशेष करके तुम शत्रुओंके नाश करनेमें समर्थ हो। हे पुरुषश्रेष्ठ जिससे तुम्हारी सहायता करनेके वास्ते आकर सात्यकि भूरिश्रवाके हाथसे न मारे जावें, तुम सावधान होकर शीघ्रताके सहित वही उपाय करो। श्रीकृष्णके वचनको सुनकर अर्ज्जुन प्रसन्नचित्तसे कहने लगे। हे महाबाहो! यह देखो, जैसे वनके बीच यूथपति सिंह महामतवारे हाथीको सग लेकर गमन करता है वैसे ही कौरवोंमें श्रेष्ठ भूरिश्रवा सात्यकिको ग्रहण करके क्रीड़ा कर रहे हैं।

सञ्जय बोले, महाराज। अर्ज्जुन श्रीकृष्णसे इसी प्रकार कह रहे थे उसी समय महाबाहु भूरिश्रवाने सात्यकिको उठाकर पृथ्वीपर पटका और उनके छातीमें लात मारी। उसे देख सम्पूर्ण सेनाके बीच हाहाकार शब्दके सहित अत्यन्त कोलाहल होने लगा जैसे सिंह हाथीको ग्रहण करके शोभित होता है वैसेही बहुतसी दक्षिणा देनेवाले भूरिश्रवा युद्धभूमिमे सात्यकिको पटकके शोभित होने लगे। तिसके अनन्तर भूरिश्रवाने मियानसे तलवार निकालकर एक हाथसे सात्यकिका केश पकड़ा और उसकी छातीमे लात मारी फिर उनके कुण्डल भूषित सिरको काटनेकी इच्छा करने लगे। परन्तु जैसे कुम्हार दण्डसे अपने चाकको घुमाते है वैसे ही सात्यकि भी भूरिश्रवाने जिस हाथसे उनका केश पकड़ा था उस केशके सहित अपने मस्तकको घुमाने लगे। महाराज। श्रीकृष्णचन्द्र सात्यकिको भूरिश्रवाके वशमें पड़े देख फिर अर्ज्जुनसे बोले, हे महाबाहो अर्ज्जुन। वृष्णि और अन्धकवंशियोंमें मुख्य सात्यकि इस समय सब भांतिसे भूरिश्रवाके वशमें पड़े है वह तुम्हारे शिष्य है और धनुर्व्विद्यामें भी तुमसे कम नहीं है परन्तु भूरिश्रवा उन्हे थका हुआ पाके उनसे अधिक पराक्रम प्रकाशित करके सात्यकिके सत्यपराक्रमी नामको व्यर्थ करनेका उपाय कर रहे है। अर्ज्जुन श्रीकृष्णके वचनको सुनकर मनहीमन इस प्रकार भूरिश्रवाको प्रशंसा करने लगे, कौरवोकी कीर्त्ति-बढ़ानेवाले भूरिश्रवा जो यदुवंशियोंमें श्रेष्ठ सात्यकिको खेलवाड़की भांति ग्रहण करके क्रीड़ा कर रहे हैं उससे मैं अत्यन्त आनन्दित

हो रहा हूं। कुन्तीपुत्र महाबाहु अर्ज्जुन इसी प्रकार भूरिश्रवाकी प्रशंसा करके श्रीकृष्णसे बोले, हे कृष्ण। मेरी दृष्टि सिन्धुराज जयद्रथकी ओर थी इसीसे मैंने सात्यकिको नहीं देखा। जो हो, इस समय मै यदुकुलभूषण सात्यकिके वास्ते अत्यन्त कठिनकर्म्म करनेके प्रवृत्त होऊंगा। महाराज। उस समय अर्ज्जुनने ऐसा वचन कहकर श्रीकृष्णकी अनुमतिसे अत्यन्त तीक्ष्णक्षुरास्त्र गाण्डीव धनुषपर चढ़ाया। अर्ज्जुनकी भुजासे वह छूटा हुआ वाण आकाशसे छूटे हुए लुक्कके समान टूटकर भूरिश्रवाके हस्तत्राण भूषित तलवारके सहित उनकी भुजाको काटकर पृथ्वीमें गिरा।

१४० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज ! भूरिश्रवाकी सुन्दर कवचभूषित तलवारके सहित दहिनी भुजा अर्ज्जुनके क्षुरास्त्रसे असावधानीमें कटनेसे सम्पूर्ण प्राणियोंके हृदयमें दुःख पैदा करके पांच सिरवाले सर्पके समान पृथ्वीमें गिर पड़ी। जब भूरिश्रवाकी भुजा अर्ज्जुनके अस्त्रसे कट गई, तब वह सात्यकिको परित्यागकर अर्ज्जुनकी निन्दा करने लगे। हे कुन्तीपुत्र अर्ज्जुन। तुम्हारा यह कार्य्य निन्दनीय हुआ है, क्योंकि मैं दूसरेके सङ्ग युद्ध कर रहा था, उस ही समय तुमने विना जनाये मेरी भुजा काटी है। जब धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर तुमसे यह वृत्तान्त पूछेंगे, तब तुम उनको यही उत्तर दोगे कि भूरिश्रवा सात्यकिके नाश करनेके निमित्त तयार होकर उनका वध किया चाहते थे ; इसी कारणसे मैंने भूरिश्रवाका वध किया है ? जो हो, भला कहो तो सही, इस प्रकारसे अस्त्र चलानेका उपदेश तुमने महात्मा इन्द्र वा द्रोणाचार्य्य अथवा कृपाचार्य्यके निकट कहां सीखा था ? तुमने इस पृथ्वीके बीच अस्त्र-शस्त्रोंके युद्धमें समान अथवा अधिक धर्म्मात्मा होकर रणभूमिके बीच दूसरे वीरसे युद्ध करनेवाले पुरुषके ऊपर कैसे शस्त्र चलाया ? महात्मा लोग डराहुआ रथ रहित पागल शरणागत और व्यसनमें फंसे हुए पुरुषोंके ऊपर कभी अस्त्र नहीं चलाते पण्डित लोग कहा करते हैं कि साधु लोग सदा सत्कार्य्योंका अनुष्ठान करते हैं कभी असत्कार्य्योंके करनेमें प्रवृत्त नहीं होते, परन्तु तुमने किस प्रकार नीच प्रकृतिवाले लोगोंकी भांति असज्जनोंसे सेवित अत्यन्त पापी पुरुषकी भांति कार्य्य किया है। जो हो मैंने जान लिया कि मनुष्य जैसी सङ्गतमें रहता है थोड़े ही समयके बीच उसके शरीरमें वैसे ही गुण उत्पन्न होजाते हैं। तुम्हारे इस कार्य्यको देखने होसे यह वचन बोध होरहा है नहीं तो तुमने राजवंश विशेष करके कुरुकुलमें जन्म लेकर और सब भी उत्तम कर्म्मोंका अनुष्ठान करनेवाले होकर किस प्रकार क्षत्रिय धर्म्मके विरुद्ध आचरण किया ? मुझे मालूम होता है कि कृष्णकी सम्मतिसे सात्यकिकी रक्षा करनेके वास्ते तुमने ऐसे निन्दितकर्म्मका अनुष्ठान किया है, क्योंकि यह सम्भव नहीं होता कि तुम ऐसे निन्दित कर्म्मको करोगे। कहो तो सही कृष्णके वशमें चलनेवाले पुरुषको छोड़कर और कौन पुरुष असावधान और दूसरेके सङ्ग युद्ध करनेवाले मनुष्यको इस प्रकार व्यसनमें फंसाता है ? वृष्णि और अन्धकवंशी सम्पूर्ण क्षत्री धर्म्मध्वजी तथा विड़ालवृत्तिवाले हैं ; वे वचन और प्रकारकी कहते हैं परन्तु कार्य्य दूसरी भांतिसे करते हैं वे लोग स्वभाव हीसे निन्दनीय हैं, परन्तु तुम किस कारणसे ऐसे निन्दित वशमें उत्पन्न हुए कृष्णकी आज्ञा पालन करनेमें तयार हुए ?

सञ्जय बोले, महायशस्वी महाबाहु भूरिश्रवा ऐसा वचन कहकर सात्यकिको छोड़कर बैठ गये। उन पुण्यात्मा राजा भूरिश्रवाने ब्रह्मलोकमें जानेकी अभिलाषा करके वाँये

हाथसे सम्पूर्ण अस्त्रोंको निकाल कर रख दिया और सूर्य्यकी ओर दृष्टि करके प्रसन्नताके सहित अपना चित्त चन्द्रमामें लगाया और मौनव्रत धारणकर योगकी क्रियासे उपनिषदमें कहे हुए ब्रह्मका ध्यान करने लगे। तिसके अनन्तर उस व्यूहबद्ध सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग कृष्ण अर्जुनकी निन्दा और पुरुषश्रेष्ठ भूरिश्रवाकी प्रशंसा करने लगे, परन्तु कृष्ण और अर्जुनने अपनी निन्दा सुनकर कुछ अप्रिय वचन नहीं कहा और भूरिश्रवा भी अपनी प्रशंसा सुनकर प्रसन्न नहीं हुए। महाराज! तुम्हारे पुत्र उसी भांति निन्दा करने लगे, तब उन लोगोंके और भूरिश्रवाके कहे हुए वचन अर्जुनसे न सहे गये! वह उन लोगोंको पहिले सम्पूर्ण वृत्तान्तोंको स्मरण कराकर आक्षेप करने लगे,—इस बातको सम्पूर्ण राजा लोग जानते हैं कि युद्धभूमिमें मेरा यह एक विशेष नियम है, कि संग्राम करते हुए मेरी ओरका कोई पुरुष मेरे बाण पहुंचनेके मार्गमें स्थित रहेगा तो उसका कोई बध न कर सकेगा। हे भूरिश्रवा! इस नियमको अच्छी भांति समझ कर मेरा तिरस्कार करना तुम्हें योग्य नहीं है, क्योंकि यथार्थ धर्म्मको बिना जाने कभी किसी की निन्दा न करनी चाहिये, तुम शस्त्रधारी होकर थके हुए रथ रहित सात्यकिके नाश करनेको तय्यार हुए थे, उस समय जो मैंने तुम्हारी भुजा काट डाली उसमें मेरा कौनसा धर्म्म-विरुद्ध कर्म्म हुआ है? परन्तु कहो तो सही शस्त्र, रथ और वर्म्मसे रहित बालक अभिमन्युके बधके विषयमें कौन धर्म्मात्मा पुरुष प्रशंसा करेगा? भूरिश्रवाने अर्जुनके वचनको सुन कर अपने मस्तकसे पृथ्वीको स्पर्श करके कड़वी वचनोंके निमित्त अर्जुनसे क्षमा मांगी और बांई भुजासे उस कटी हुई अपनी दहिनी भुजाको उठाकर अर्जुनकी ओर फेंक कर संकेतसे यह जनाया कि अर्जुनने अन्यायपूर्व्वक मेरी दहिनी भुजा नहीं काटी है यह कार्य्य धर्म्म युक्त हुआ है। तिसके अनन्तर महातेजस्वी भूरिश्रवाने अर्जुनके वचन समाप्त होने पर संकेतसे उन्हें ऐसाही वझाकर मौन व्रत धारण कर सिर नीचा कर लिया। तब महात्मा अर्जुन यह वचन बोले, हे भूरिश्रवा! धर्म्मराज युधिष्ठिर और बलवानोंमें अग्रणी भीमसेन नकुल तथा सहदेवके ऊपर मेरी जैसी प्रीति है तुम्हारे ऊपर भी वैसा ही स्नेह है इससे उशीतर तोनय शिविराज जिस लोकोंमें गये हैं तुम भी मेरी और महात्मा कृष्णकी अनुमतिसे उसी लोकमें गमन करो। जब अर्जुनने ऐसा वचन कहा तब श्रीकृष्ण भी कहने लगे। हे भूरिश्रवा! तुमने अग्निमें आहुति देकर सदा ही देवतोंको तृप्त किया है, इससे तुम चतुर्भुजी मूर्त्ति होकर गरुडके ऊपर चढके ब्रह्मादि श्रेष्ठ देवताओंके पाने योग्य मेरे पवित्र धाममें गमन करो;

सञ्जय बोले, महाराज! उस समय शिनिपौत्र सात्यकि भूरिश्रवाके हाथसे छूट गये और उठ कर उनके सिर काटनेकी इच्छासे तलवार ग्रहण किया। बहुतसी दक्षिणा देनेवाले अर्जुनके बाणसे मरे-हुएके समान योगमें आसक्त भूरिश्रवा भुजा कटनेसे सूण्ड कटे हुए हाथीकी भांति बैठे थे तौभी सात्यकिने उस निरपराधी पुरुषके प्राण नाश करनेकी इच्छा किया। सेनाके सम्पूर्ण पुरुष सात्यकिको ऐसे कार्य्यमें प्रवृत्त होते देख ऊंचेस्वरसे पुकार कर उसकी निन्दा करने लगे और महात्मा कृष्ण, अर्जुन भीमसेन युधामन्यु उत्तमौजा अश्वत्थामा कृपाचार्य्य कर्ण वृषसेन और सिन्धुराज जयद्रथ ये सब कोई सात्यकिको निवारण करने लगे, परन्तु सात्यकिने किसीके वचन न सुनकर उस उस योगमें आसक्त भूरिश्रवाका सिर काट लिया! महाराज! जब उस समय सात्यकिने अर्जुनके बाणोंसे भुजा कटे और योगयुक्त

चित्तसे पृथ्वीपर बैठे हुए भूरिश्रवाके सिरपर तलवारसे प्रहार किया, तब उस समय सेनाके बीच किसी पुरुषने भी सात्यकिके इस निन्दित कर्म्मकी प्रशंसा नहीं किया, क्योंकि उन्होंने अर्ज्जुनके बाणसे मरे हुएके समान भूरिश्रवाका वध किया। देवता सिद्ध चारण और मनुष्योंने इन्द्रके समान भूरिश्रवाको युद्धभूमिमें योगयुक्त चित्तसे बैठे और मरे हुए देखकर उनके कार्य्यसे विस्मित होकर प्रशंसा करने लगे। अनन्तर तुम्हारी ओरके योद्धा लोग भी आपसमें ऐसे वचन कहने लगे, जो होनहार था सो हुआ है इसमें सात्यकिका कुछ अपराध नहीं है; इस विषयमें हम लोगोंको क्रोध करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि क्रोध ही मनुष्यके दुःखका मूल है। विधाताने सात्यकिको ही भूरिश्रवाकी मृत्युरूपी किया था इससे उसीके हाथसे उनकी मृत्यु हुई; अब इस विषयमें कुछ भी शोच विचारकी जरूरत नहीं है। इन सम्पूर्ण वचनोंको सुन कर उस समय सात्यकि बोले, हे अधार्म्मिक कौरव लोगो। जो धर्म्मका नाम लेकर 'भूरिश्रवाका नाश मत करो भूरिश्रवाका नाश मत करो' ऐसा वचन कहकर मुझे धर्म्मका उपदेश कर रहे हो, परन्तु कहो तो सही जब तुम सब लोगोंने मिलकर शस्त्ररहित सुभद्रापुत्र अभिमन्युको युद्धभूमिमें मारा था उस समय तुम्हारा धर्म्म कहां था। परन्तु मैंने किसी समय प्रतिज्ञा किया कि जो कोई मुझे पटक कर लातसे मारेगा वह शत्रु यदि मुनियोंका व्रत अवलम्बन करे तौ भी मैं उसका वध करूंगा। तुम लोगोंने जो मुझे घावरहित और भूरिश्रवाके चोटकी बचानेसे यत्नवान देखकर भी मरा हुआ समझा था वह तुम्हारी बुद्धिकी लघुताही बोध हो रही हैं। हे कुरुसेनाके योद्धा लोगो। भूरिश्रवाका वध करना मेरा उचित कार्य्य हुआ है और महावीर अर्ज्जुनने जो मुझे वैसी अवस्थामें देखकर भूरिश्रवाकी भुजा काट डाली उससे मैं ही ठगा गया हूं, जो हो कोई होनहारका खण्डन करनेमें समर्थ नहीं हो सकता, उसे पूर्ण करनेके निमित्त दैव ही यत्नवान होता है; इससे भूरिश्रवाका वध करनेसे मुझे किसी प्रकार भी अधर्म्म नहीं हो सकता। इस विषयमें पहिले समय महर्षि वाल्मीकिकी बनाई हुई रामायण इतिहासमें यह वर्णन है कि जिस समय लङ्कापति रावण माया सीता काटनेको तय्यार हुआ उस समय महावीर हनुमानने स्त्री-हत्या करनेसे उसे निषेध किया, तब रावणने यह उत्तर दिया था, अरे बन्दर! तू स्त्री हत्या करनेसे मुझे निषेध करता है परन्तु जिस प्रकार हो सके शत्रुको पीडा पहुंचाना योग्य है।

सञ्जय बोले, महाराज। जब सात्यकिने ऐसा वचन कहा, तब कौरवोंकी ओरके मुख मुख्य योद्धाओंने कुछ भी उत्तर न दिया, केवल मन ही मन सब भूरिश्रवाकी प्रशंसा करने लगे। वनबासी मुनियोंकी भांति यज्ञ करनेवाले तथा सहस्रों स्वर्ण मुद्रा दान करनेवाले महायशस्वी भूरिश्रवाके बधके विषयमें किसीने सात्यकिकी बड़ाई नहीं किया; क्योंकि वह पराक्रमी भूरिश्रवा याचकोंकी सम्पूर्ण कामना पूरी करते थे। उस समय सुन्दर और काले केशोंसे युक्त पारावतके समान लालनेत्रके सहित उनका सिर युद्धभूमिमें गिरकर इस प्रकार शोभित होने लगा, जैसे आहुति देनेके निमित्त यज्ञमें कटे हुए घोड़ेका सिर शोभित होता है। महाराज। इसी प्रकार सम्पूर्ण याचकोंकी कामना पूरी करनेवाले सब पुरुषोंमें माननीय भूरिश्रवा युद्धभूमिमें शस्त्रकी चोटसे मरकर पवित्र हुए, और शरीर त्याग कर अपने तेजसे पृथ्वी आकाशको अतिक्रम करते हुए परम और परम धर्म्मसे उपार्ज्जित स्वर्ग लोकमें गमन किया।

१४१ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय। जिस महावीर सात्यकिने युधिष्ठिरके निकट प्रतिज्ञाकर युद्धभूमिमें द्रोणाचार्य्य कर्ण विकर्ण और कृतवर्म्मा आदि महारथियोंको पराजित करके समुद्रके समान कुरुसेनासे पार हुआ और जो युद्धमें सम्पूर्ण सेनाके पुरुषोंसे अजेय है उसी भूरिश्रवा किस कारणसे बलपूर्व्वक पकड़कर पृथ्वीमें गिरानेमें समर्थ हुए ?

सञ्जय बोले, महाराज। शिनिपौत्र सात्यकि और भूरिश्रवाकी जिस भांतिसे उत्पत्ति हुई है और आपको जो सन्देह हुआ है वह सम्पूर्ण वृत्तान्त मैं वर्णन करता हूं आप सुनिये। अत्रि महर्षिके पुत्र सोम हुए उनके पुत्र बुध बुधके पुत्र इला और इलाके गर्भसे राजा पुरुरवा उत्पन्न हुए; पुरुरवाके पुत्र आयु, आयुके पुत्र नहुष नहुषके पुत्र देवतोंके समान राजर्षि ययाति हुए और ययातिके जेठे पुत्र देवयानीके गर्भसे यदु उत्पन्न हुए। उस ही यदुके वंशमें प्रसिद्ध देवमीढ़की उत्पत्ति हुई। देवमीढके पुत्र तीनो लोकमें सम्मान पाने योग्य शूरसेन हुए उनके पुत्र पुरुषश्रेष्ठ महायशस्वी वसुदेव हुए। महात्मा शूरसेन युद्धमें कार्त्तवीर्य्य अर्जुनके समान धनुर्विद्याके जाननेवाले थे। उस ही वंशमें उन्हींके समान पराक्रमी शिनि नाम एक महात्मा पुरुष उत्पन्न हुआ। उसी समयमें महात्मा राजा देवककी कन्याका स्वयम्बर था, उस स्वयम्बरमें पृथ्वीके सम्पूर्ण राजा इकट्ठे हुए थे, उन सम्पूर्ण राजाओंके बीच आकर महात्मा शिनिने वसुदेवके वास्ते देवकीको हरके अपने रथमें बैठा लिया और हाथपर सम्पूर्ण राजाओंको पराजित किया। महाराज। महातेजस्वी राजा सोमदत्तने देवकीको शिनिके रथपर देख सहन नहीं किया, उन दोनों महाबलवान वीरोंका दोपहर दिनके समय अत्यन्त आश्चर्य्यमय युद्ध हुआ; परन्तु शिनिने चारों ओर युद्धभूमिमें स्थित राजाओंके सम्मुखमें ही सोमदत्तको उठाकर पृथ्वीपर पटक दिया और एक हाथसे उनका केश पकड़ दूसरे हाथमें तलवार लिये हुए उनके छातीमें लात मारा। तिसके अनन्तर तुम जीते रहो ऐसा कहके उन्हें छोड़ दिया। महाराज! सोमदत्त राजाओंके सम्मुख इस प्रकार अवमानित होकर क्रोधपूर्व्वक वहांसे आकर तपस्या करने लगे; और अपनी तपस्यासे महादेवको प्रसन्न किया। भक्तोंको वरदान देनेवाले देवोंके देव महादेवने उनको तपस्यासे सन्तुष्ट होकर उन्हें वर देना चाहा, तब सोमदत्तने यह बरदान मांगा, हे भगवन्! मैं एक ऐसे पुत्रकी इच्छा करता हूं जो युद्धभूमिमे सहस्रों राजाओंके सम्मुखमें शिनिके सन्तानको पृथ्वीपर पटकके लात मारे। महादेव सोमदत्तके इस बचनकोसुनकर ऐसा ही होगा, यह वचन कहके वहा ही अन्तरद्धान होगये। महाराज। सोमदत्तने महादेवके बरप्रभावसे अनेक दक्षिणा देनेवाले भूरिश्रवा ऐसा पुत्र पाया था; और इस ही कारणसे भूरिश्रवाने अनेक राजाओंके सन्मुखहीमें सात्यकिको पृथ्वीमें पटककर उनको छातीमें लात मारा था; नहीं तो पृथ्वीके बीच ऐसा कोई भी पुरुष नहीं है जो सात्यकिको पराजित करे। महाराज! तुमने जो विषय पूछा था, मैंने उस वृत्तान्तको तुम्हारे समीपमें वर्णन किया। संग्राममें सम्पूर्ण वृष्णिवंशी लक्ष्यवेधनेवाले और चित्रयोधी हैं युद्धभूमिमे वे लोग भयभीत नहीं होते, वे सब संग्राममें देवता दानव और गन्धर्व्वोंको भी जीत सकते है; युद्धभूमिमें वे किसीको सहायता नहीं चाहते, वे सब कोई अपने पराक्रमके अनुसार विजयकी इच्छा करते हैं। हे नरनाथ वृष्णिवंशियोंके सङ्ग दूसरे पुरुषकी पटतर दीजावे ऐसा मैं पृथ्वीके बीच किसीको नहीं देखता। उन लोगोंके समान पराक्रमी पहले भी कोई नहीं था न भविष्यमें ...

न इस ही समय कोई उपस्थित है। वे सब कोई वृद्ध पुरुषोंकी आज्ञामें चलनेवाले हैं वे लोग कदापि अपने जातिके पुरुषोंका अपमान नहीं करते। युद्धभूमिमें मनुष्योंकी बात तो दूर रहे उन लोगोंको देवता, असुर गन्धर्व यक्ष सर्प और राक्षस आदि कोई भी पराजित करनेमें समर्थ नहीं हैं। उन लोगोंके विषयमें देव-धन और गुरुधनकी बात तो दूर रहे वे लोग अपने जातिवालोंके भी धनपर इर्षा प्रकाश नहीं करते। और ब्राह्मण तथा जातिके पुरुष जब किसी प्रकारकी विपतमें फंसते हैं तब वे लोग सब भाँतिसे उनकी रक्षा किया करते हैं। वे लोग ऐश्वर्य्यमान होकर भी गर्व्व नहीं करते वे सब ही ब्राह्मणोंमें निष्ठा करनेवाले और सत्यवादी है। वे लोग समर्थ होकर भी किसी पुरुषका अवमान नहीं करते और दीन दुःखियोंको सदा बिपतसे बचाते रहते हैं। वे सब देवतेंमें निष्ठावान जितेन्द्रिय हैं। वे लोग अपने मुहसे अपनी बड़ाई नहीं करते, इस ही निमित्त पृथ्वीके बीच वृष्णिवंशियोंका प्रभाव कहीं निष्फल नहीं होता। यदि कोई पुरुष कभी सुमेरु पर्व्वतको उठाने और अपार समुद्रको तरनेमें समर्थ हो सके तौभी युद्धभूमिमें वृष्णिवंशियोंको पराजित नही कर सकेगा। हे राजेन्द्र! आपने जिस विषयमें सन्देह किया था वह सम्पूर्ण वृत्तान्त मैंने वर्णन किया, परन्तु इन सम्पूर्ण पुरुषोंके नाशके मूल आप ही है।

१४२ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय! कुरुवंशीय भूरिश्रवा जब इस प्रकारसे मारे गये तब किस प्रकार युद्ध हुआ था, वह मेरे समीप वर्णन करो।

सञ्जय बोले, महाराज! जब भूरिश्रवाने परलोकमें गमन किया तब महाबाहु अर्जुन श्रीकृष्णसे बोले, हे कृष्ण! जिस स्थानपर सिन्धुराज जयद्रथ स्थित है, तुम शीघ्रताके सहित मेरे रथको उसी स्थानपर ले चलो। जिससे मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो तुम वैसा ही यत्न करो। हे महाबाहो? यह देखो सूर्य्य जल्दी जल्दी अस्ताचल पर्व्वतपर गमन कर रहा है; मुझे जयद्रथ वधरूपी बहुत बड़ा कार्य्य करना होगा, परन्तु कौरवोंके औरके महारथी योद्धा लोग जयद्रथकी रक्षा कर रहे हैं। हे पुरुषसिंह कृष्ण! इससे तुम इस प्रकार घोड़ोंको चलाओ, जिससे मैं आज सूर्य्य अस्त होनेके पहिले ही जयद्रथका वध करके सत्यप्रतिज्ञ हो सकूं।

तिसके अनन्तर घोड़ेके हांकनेकी विद्या जाननेवाले श्रीकृष्ण अर्ज्जुनके रथके सुवर्णभूषित घोड़ोंको जयद्रथके रथकी ओर चलाने लगे। महाराज! वे शीघ्र गमन करनेवाले सम्पूर्ण घोड़े अमोघ अस्त्र धारण करनेवाले अर्ज्जुनके रथको खींचते हुए वेगपूर्व्वक गमन करने लगे, उस समय ऐसा बोध होता था मानो वे घोड़े उस समय आकाशमार्गसे उड़ते हुए गमन कर रहे है, राजा दुर्य्योधन, कर्ण, वृषसेन, मद्रराज शल्य कृपाचार्य्य और राजा जयद्रथ—ये सम्पूर्ण महारथी लोग अर्ज्जुनको आते देख, शीघ्रताके सहित उनकी ओर दौड़े। अर्ज्जुन सिन्धुराज जयद्रथको सम्मुख खड़े देख इस प्रकार क्रोधपूर्व्वक उनको ओर देखने लगे मानो दृष्टिसे देखकर ही उन्हें भस्म कर देंगे।

अनन्तर राजा दुर्य्योधन अर्ज्जुनको जयद्रथके रथके निकट गमन करते देख शीघ्रताके सहित कर्णसे बोले, हे महात्मा कर्ण! यही अब तुम्हारे युद्धका समय उपस्थित हुआ है इससे ऐसे समयमें इस सम्पूर्ण सेनाके योद्धाओंको तुम अपना पराक्रम और प्रभाव दिखाओ, जिससे अर्ज्जुन जयद्रथका वध न कर सके तुम वैसा ही यत्न करो! हे पुरुषसिंह! दिन बीतनेमें अब थोड़ाही समय बाकी है इस ही समय

तुम अपने बाणोंकी वर्षा करके अर्ज्जुनके कार्य्यमें विघ्न करो, क्योंकि सूर्य्य अस्त होते तक जयद्रथको रक्षा करनेसे ही कुन्तीपुत्र अर्ज्जुन मिथ्या प्रतिज्ञा करनेवाला होकर अवश्य ही अग्निमें प्रवेश करेगा। अर्ज्जुनके न रहने पर उसके भ्राता और उनके अनुयायी योद्धा लोग तो पृथ्वी पर जीवित रहनेकी इच्छा नहीं करेंगे, इसी प्रकार जब सम्पूर्ण पाण्डव नष्ट हो जावेंगे, तब हम लोग समुद्रके सहित इस सम्पूर्ण पृथ्वीको निष्कण्टक भोग करेंगे। हे मानी कर्ण! अर्ज्जुनने अभाग्यहोसे उलटी बुद्धि अवलम्बन कर कार्य्य अकार्य्यके ज्ञानसे रहित हो अपने ही नाशके लिये जयद्रथ वधकी प्रतिज्ञा किया है। हे राधापुत्र! इस पृथ्वीके बीच ऐसा कोई पुरुष भी नहीं दीख पड़ता जो युद्ध-भूमिमें तुम्हें जीत सके, इससे तुम्हारे रहते वो अर्ज्जुन किस प्रकार सूर्य्यके रहते ही जयद्रथका वध कर सकेगा? विशेष करके मद्रराज शल्य महात्मा कृपाचार्य्य अश्वत्थामा दुःशासन और मैं,—हम सब कोई मिलके रक्षा करेंगे, तब वह रणभूमिमें जयद्रथके समीप कैसे पहुंच सकेगा। इससे आज उसकी आयु पूरी होगई है, इधर बहुतसे योद्धा लोग उसके सङ्ग युद्ध करेंगे और उधर सूर्य्य भी अस्त हु·· चाहता है; मेरे बिचारमें अर्ज्जुन किसी प्रकार भी जयद्रथका वध न कर सकेगा। हे कर्ण! इससे तुम इस समय मेरे तथा मद्रराज शल्य अश्वत्थामा और दूसरे अनेक पराक्रमी योद्धाओंके सग मिलकर युद्धभूमिमें बिशेष यत्न करके अर्ज्जुनके सङ्ग युद्ध करो।

सञ्जय बोले महाराज! कर्णने तुम्हारे पुत्र दुर्योधनके वचनको सुन कर यह उत्तर दिया, हे राजन्! दृढ़ताके सहित लक्ष्य भेद करनेवाले धनुर्द्धारी महावीर भीमसेनके बाणोंकी चोटसे मेरा शरीर क्षत विक्षत हो गया है, इस समय युद्धभूमिमें ही रहना उचित है इस ही निमित्त मैं संग्रामभूमिमें स्थित हूं। मेरा शरीर भीमके बाणोंकी चोटसे ऐसा क्षत विक्षत हो रहा है कि हिलनेसे भी पीड़ा होती है तौ भी वह पाण्डवोंमे मुख्य अर्ज्जुन जिसमें सिन्धुराज जयद्रथका वध न कर सके; तुम्हारे प्रयोजनको सिद्ध करनेके निमित्त जब तक मेरे शरीरमें प्राण रहेगा, तब तक मैं अपनी शक्तिके अनुसार युद्ध करूंगा। युद्धभूमिमें यदि मैं अपने चोखे बाणोंकी वर्षाता रहूंगा तो अर्ज्जुन किसी प्रकारसे भी जयद्रथके समीप न पहुंच सकेगा। हे कुरुश्रेष्ठ! हितैषी और भक्तोंकी आशा पूरी करनेवाले पुरुषोंको जैसा कर्त्तव्य कार्य्य करना उचित है मैं अवश्य ही वैसा कार्य्य करूंगा परन्तु जीत हार दैवके आधीन है। हे पुरुषसिंह! आज मैं तुम्हारे वास्ते अपने पराक्रमके आसरेसे अर्ज्जुनके संग युद्ध करूंगा आज मैं तुम्हारे प्रिय कार्य्य करनेकी इच्छासे सिन्धुराज जयद्रथके निमित्त युद्धभूमिमें विशेष यत्न करूंगा; तब जीतना और हारना दैवके आधीन है। आज ये सम्पूर्ण सेनाके पुरुष रोएंको खड़ा करनेवाला हम दोनोंका भयङ्कर युद्ध देखें।

सञ्जय बोले महाराज! कर्ण और दुर्य्योधन इसी प्रकार आपसमें बात चीत कर रहे थे और इधर अर्ज्जुन अपने चोखे बाणोंसे तुम्हारी सेनाका नाश करते जाते थे। वह अपने तीक्ष्ण-बाणोंसे युद्धमें पीछे न हटनेवाले शूरवीरोंकी परिघ और हाथीके सूण्ड समान भुजाओंको काट काट गिराने लगे। महाराज! वह महाबाहु अर्ज्जुन लगातार बाणोंकी वर्षा करके कहीं हाथियोंकी सूण्ड घोड़ोंके गर्द्दन रथोंकी धुरी और किसी स्थानमें प्रास तोमर ग्रहण करनेवाले घुड़सवार और गजपति योद्धाओंके सिर अपने तीक्ष्ण क्षूरास्त्रसे दो दो तथा तीन तीन टुकड़े करके पृथ्वीमें गिराने लगे। इसी प्रकार युद्धभूमिमें सहस्रों बड़े बड़े हाथी घोड़े मनुष्य ध्वजा छत्र और सफेद

अर्जुनके बाणोंसे टुकड़े होकर पृथ्वीमें गिरने लगे। अधिक क्या कहें जैसे जलती हुई अग्नि शीघ्र ही तृणफूसको भस्म करती हैं वैसे ही महावीर अर्जुनने तुम्हारी सेनाके लोगोंको तितर बितर करके मरे हुए हाथी घोड़े और मनुष्योंके रुधिरसे पृथ्वीको परिपूरित कर दिया। महा तेजस्वी अत्यन्त पराक्रमी अर्जुन तुम्हारी सेनाके बीच अनेक योद्धाओंका बध करके जयद्रथके रथके समीप उपस्थित हुए। वह सात्यकि और भीमसेनसे रक्षित होकर अग्निके समान प्रकाशित होने लगे। परन्तु तुम्हारी ओरके मुख्य मुख्य पराक्रमी महारथियोंने युद्धभूमिके बीच अर्जुनको इस भांति युद्ध करते देख सहन नहीं किया। दुर्य्योधन कर्ण वृषसेन मद्रराज शल्य अश्वत्थामा कृपाचार्य्य और राजा जयद्रथ इन सम्पूर्ण महारथियोंने अर्जुनको धनुषटङ्कार और तलत्राण शब्दके सहित रथके ऊपर नृत्य करते देख; सावधान होकर चारों ओरसे उन्हें घेर लिया। वे सम्पूर्ण महारथ योद्धा लोग कृष्ण अर्जुनके वधकी इच्छा करके सूर्य्य अस्त होनेकी प्रतीक्षा करते हुए जयद्रथको पीछे करके निर्भयचित्तसे अर्जुनके सम्मुख स्थित हुए और सर्पके समान अपनी भुजाओंसे प्रचण्ड धनुष खींचकर सूर्य्य-किरणके समान प्रकाशमान सैकड़ों बाण कृष्ण अर्जुनके ऊपर चलाने लगे। युद्धमें पराक्रम प्रकाशित करनेवाले अर्जुनने उन महारथियोंके चलाये हुए बाणोंको अपने बाणोंसे तीन तीन खण्ड करके पृथ्वीमें गिरा दिया और उन हर-एक महारथियोंको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे। सिंह लांगूलवाली ध्वजासे शोभित रथ-पर चढ़े हुए शारद्वत पुत्र अश्वत्थामा अपना पराक्रम प्रकाशित करके अर्जुनको निवारण करने लगे। उन्होंने सिन्धुराज जयद्रथकी रक्षाके वास्ते अपने रथमें स्थित होके अर्जुनको दश और कृष्णको सात बाणोंसे विद्ध किया। तिसके अनन्तर कुरुसेनाके सम्पूर्ण महारथी लोग अर्जुनको अपने रथोंके समूहसे घेरकर धनुष चढ़ाकर उनके ऊपर बाणोंकी वर्षा करते हुए जयद्रथकी रक्षा करने लगे, परन्तु महावीर अर्जुनके भुजाका बल उनके दोनों तूणीरोंका अमोघपन और प्रचण्ड गाण्डीव धनुषकी दृढ़ता आश्चर्य्य रूपसे दिखाई देने लगा। उन्होंने अपने अस्त्रोंके प्रभावसे अश्वत्थामाके बाणोंको निवारण करके तुम्हारी ओरके महारथियोंको दश दश बाणोंसे पीड़ित किया। अनन्तर अर्जुनको अश्वत्थामाने पचीस दुर्य्योधनने सत्तर वृषसेनने सात और कर्णने दश बाणोंसे विद्ध किया। इसी भांति वे सम्पूर्ण महारथी योद्धा लोग वार वार सिंहनाद करके धनुष फिरते हुए अर्जुनको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे, और सूर्य्य अस्त होनेकी प्रतीक्षा करके अर्जुनको चारों ओरसे अपने रथोंके समूहसे इस भांति घेर लिया कि अर्जुनके निकलनेके निमित्त इधर उधर तनिक भी मार्ग न रहा। महाराज! परिघ समान भुजावाले महारथ योद्धा लोग सिंहनादके सहित धनुष चढ़ाकर अपने अस्त्र शस्त्र और दिव्य अस्त्रोंको प्रकाशित करके अर्जुनके ऊपर ऐसी बाण वर्षा करने लगे, जैसे बादलोंका समूह पर्वतके ऊपर जलवर्षा करता है, परन्तु अत्यन्त पराक्रमी अर्जुन तुम्हारी सेनाके अनगिनित योद्धाओंको यमपुरीमें भेज कर जयद्रथके रथके निकट जाने लगे। तब उस समय सूतपुत्र कर्ण सात्यकि और भीमसेनके सम्मुखहीसे अपने बाणोंसे अर्जुनको निवारण करने लगे। महाबाहु अर्जुनने भी सम्पूर्ण सेनाके सम्मुखमें ही कर्णको दश बाणोंसे विद्ध किया; फिर सात्यकिने तीन भीमसेनने भी तीन और अर्जुनने सात बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। महारथी कर्णने इन हर-एक वीरोंको साठ साठ बाणोंसे विद्ध किया।

इसी भाँति उन तीनों महारथियोंके साथ कर्णका अकेले युद्ध होने लगा। महाराज! उस समय सूर्य्यपुत्र कर्णका यह आश्चर्यमय पराक्रम दीख पड़ा कि, वह युद्धभूमिमें अकेले ही उन तीनो महारथियोंको क्रुद्ध होकर निवारित करने लगे। महाबाहु अर्ज्जुनने एक सौ बाणोंसे कर्णके सम्पूर्ण मर्म्मस्थानोंको पीड़ित किया। उस महा प्रतापी कर्णने रुधिरपूरित शरीरसे युक्त हो पचास बाणोंसे अर्ज्जुनको विद्ध किया। कर्णका ऐसा अस्त्रलाघव अर्ज्जुनसे न सहा गया, उन्होंने शीघ्र ही कर्णके धनुषको काटकर नव बाणोंसे उनके हृदयमें प्रहार किया, फिर अर्ज्जुनने जयद्रथवधके वास्ते आतुर हो कर्णके बधके निमित्त सूर्य्यकिरणके समान एक प्रकाशमान बाण चलाया। महाराज। द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने वेगपूर्व्वक उस बाणको कर्णकी ओर आते देख अपने तीक्ष्ण अर्द्धचन्द्र अस्त्रसे काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। उस ही समय महा प्रतापी कर्णने दूसरा धनुष ग्रहण कर इकबारगी सहस्र बाण चलाकर अर्ज्जुनको छिपा दिया। महाराज। जैसे बायु शलभ समूहको पृथक करता है वैसे ही बलबान अर्ज्जुनने कर्णके धनुषसे छूटे हुए बाणोंकी वृष्टिको निवारण किया, फिर अपना हस्तलाघव दिखाते हुए सम्पूर्ण सेनाके सम्मुखहीमें अपने बाणजालसे कर्णको छिपा दिया। शत्रुनाशन कर्ण भी अर्ज्जुनके बाणोंको निवारण कर अनगिनत बाणोंसे उन्हें छिपाने लगे। पुरुषसिंह महारथी अर्ज्जुन और कर्णने दो मतवारे बैलकी भांति गर्ज्जते हुए अपने बाणोंकी जालसे मुहूर्त्त भरके बीच आकाशमण्डलको छिपा दिया और दोनों ही एक दूसरेके बाणके जालसे ऐसे अदृश्य होगये कि किसीको देख भी न पड़ते थे। परन्तु वे दोनों पुरुषसिंह एक दूसरेके ऊपर बाणोंकी वर्षा करते ही जाते थे। उस समय वे दोनों पराक्रमी बीर हे कर्ण खड़े रहो। रे अर्ज्जुन हूं, हे अर्ज्जुन खड़ा रह! मैं कर्ण हूं, इसी प्रकार सिंहनाद शब्दके सहित गर्ज्जते हुए वे दोनों पुरुषसिंह अपने वचनरूपी सलाकासे एक दूसरेको दुःखित करते हुए आपसमें युद्ध करने लगे। वे दोनो पराक्रमी बीर अस्त्र लाघवके सहित अस्त्र चलाते और नाना प्रकारके युद्ध कौशल दिखाते हुए रणभूमिमें इस प्रकार युद्ध करने लगे, कि सब कोई इकटक नेत्रसे उनके पराक्रम देखते ही रह गये। महाराज! इसी भांति जब वे दोनो बीर एक दूसरेके बधकी इच्छा करके युद्ध कर रहे थे उस समय सिद्ध चारण और बायुमें गमन करनेवाले प्राणी लोग उन दोनो ही पुरुष सिंहोंकी प्रशंसा करने लगे। तिसके अनन्तर राजा दुर्य्योधन अपनी सेनाके पुरुषोंसे यह वचन बोले, हे बीरपुरुषो। आज महाबीर कर्णने मेरे समीप इस प्रकार प्रतिज्ञा किया है कि अर्ज्जुनको बिना मारे मैं युद्धसे निवृत्त न होऊंगा, इससे तुम सब कोई यत्नवान होकर कर्णकी रक्षा करो। राजा दुर्य्योधन अपनी सेनाके बीरोंसे ऐसा बचन कह रहे थे और उधर श्वेतबाहन अर्ज्जुनने कर्णका पराक्रम देख कान पर्य्यन्त खींचकर चार बाणोंसे कर्णके चारो घोड़ोंका बध किया, फिर एक भल्लास्त्रसे उनके सारथीको मार कर पृथ्वीमें गिराया और अनेक बाणोंको चलाकर दुर्य्योधनके सम्मुखसे ही कर्णको छिपा दिया। महाराज! इसी प्रकार कर्ण युद्धभूमिके बीच घोड़े सारथीसे रहित हुए और अर्ज्जुनके बाणजालमें छिपकर मोहित होगये तब वह अपने मनमें बिचारने लगे, कि इस समय कौनसा कार्य्य करूं परन्तु कुछ भी निश्चय न कर सके। उस ही समय द्रोणाचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामाने कर्णको रथ-रहित देख उन्हें अपने रथसे चढ़ा लिया, तब वह फिर अर्ज्जुनके सङ्ग युद्ध करने लगे। उससमय मद्रराज शल्यने अर्ज्जुनको तीस

विद्ध किया और कृपाचार्य्यने बीस बाणोंसे कृष्ण और बारह बाणोंसे अर्जुनके शरीरमें प्रहार किया। तिसके अनन्तर जयद्रथने चार और वृषसेनने सात बाणोंसे अर्जुनको विद्ध किया। इसी भांति तुम्हारी ओरके सम्पूर्ण महारथी योद्धा लोग कृष्ण अर्जुनको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे। अर्जुनने भी उन सम्पूर्ण महा-रथियोंको अपने बाणोंसे विद्ध किया, उन्होंने अश्वत्थामाको चौसठ मद्रराज शल्यको एक सौ जयद्रथको दश वृषसेनको तीन और कृपाचार्य्यको बीस बाणोंसे विद्ध करके सिंहनाद किया, तब तुम्हारी ओरके महारथी योद्धा लोग अर्जुनकी प्रतिज्ञा भङ्ग करनेकी इच्छासे सब कोई मिल-कर उनकी ओर दौड़े। अर्जुनने तुम्हारी सेनाके पुरुषोंको विस्मित करके महाअस्त्र प्रकट किया, परन्तु कौरव लोग भी अपने उत्तम रथोंपर चढ़के अर्जुनके ऊपर बाण वर्षा करते हुए उनकी ओर दौड़े। महाराज। उस समय सम्पूर्ण प्राणियोंको विस्मित करनेवाले अत्यन्त भयङ्कर तुमुल संग्राम उपस्थित होने पर भी किरीटधारी अर्जुन मोहित न हुए वरन जयद्रथको देखके लगातार वह अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। अत्यन्त पराक्रमी महात्मा अर्जुनने राज्यकी अभिलाष कर और कौरवोंके दिये हुए बनबासके क्लेशको स्मरण करके अपने गाण्डीव धनुषको चढ़ाकर बाणवर्षासे सम्पूर्ण दिशाओंको परिपूर्ण कर दिया। एक बाणके ऊपर दूसरा बाण रगड़ खानेसे अग्नि उत्पन्न होकर आकाशमण्डल जलते हुए लुक्कके समान प्रकाशित होने लगा। वे सब अनेक बाण पक्षियोंके समूहकी भांति मनुष्योंके शरीर पर गिरने लगे। उस समय अर्जुन महादेवके पिनाक धनुष समान अपना प्रचण्ड धनुष चढ़ाके तीक्ष्ण बाणोंसे योद्धाओंका वध करने लगे। शत्रुसेनाको जीतने वाले यशस्वी अर्जुन घुड़सवार और गजपति योद्धा-ओंके चलाये हुए अस्त्रोंको अपनी अस्त्रमायासे निवारण कर तीक्ष्ण बाणोंसे सेनाके पुरुषोंका वध करने लगे। तब शूरवीर क्षत्रिय योद्धा अत्यन्त क्रुद्ध हुए और भारी गदा लोहमय परिघ, तलवार और शक्ति आदि अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण कर अर्जुनकी ओर दौड़े। महाराज। उस समय महाधनुर्द्धारी अर्जुन प्रलय कालके बादल तथा इन्द्र धनुष समान शब्द करनेवाले गाण्डीव धनुषको कान पर्य्यन्त खींच अपने बाणोंसे तुम्हारी सेनाके योद्धाओंका वध करके परलोकमें भेजने लगे। इस प्रकार अर्जुन घुड़सवार रथी गजपति और पैदल चलने वाले शूरवीरोंसे युक्त तुम्हारी सेनाके पुरुषोंको प्राणरहित करके यमपुरी भेजने लगे।

१४३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र ! जिस समय महावीर अर्जुन गाण्डीव धनुष चढ़ाकर तीक्ष्ण बाण चलाने लगे, उस समय इन्द्रके वज्रसमान उनके धनुषका शब्द सुनकर तुम्हारी सेना भयसे व्याकुल होगयी, जैसे प्रलयकालके समय प्रचण्ड वायुके वेगसे मकर मच्छसे युक्त समुद्रका जल उथलित होता है, वैसे ही तुम्हारी सेनाके पुरुषोंका चित्त युद्धसे विचलित होने लगा। उस समय बाण चलाते हुए अर्जुन युद्ध भूमिके बीच इस प्रकार भ्रमण करने लगे। कि एक ही समय चारों ओर दीख पड़ते थे। महाराज ! उस समय अर्जुन हस्तलाघवके सहित कब तूणीरसे बाण ग्रहण करते, कब साधते, धनुष पर चढ़ाते और किस समय शत्रुओंकी ओर चलाते थे, वह किसीको दिखाई नहीं पड़ता था। महाबाहु अर्जुनने सम्पूर्ण कौरवी सेनाको भयभीत करके ऐन्द्र-अस्त्र प्रकट किया, उस ऐन्द्रास्त्रसे अग्निके समान प्रकाश

मान सैकड़ों सहस्रों बाण उत्पन्न हुए। गाण्डीव धनुषसे छूटे हुए अग्नि और सूर्य्य किरणके समान प्रकाशमान बाणोंसे आकाश-मण्डल लक्ष समूहकी भांति आश्चर्य रूपसे दिखाई देने लगा। इसी प्रकार सब दिशा प्रकाशमय-होगयीं। पहिले कुरुसेनाके चलाये हुए अस्त्र शस्त्रोंसे जो अन्धकार हो रहा था, जिसे कोई मनसे दूर नहीं कर सक्ता था. उसे अर्ज्जुनने अपने दिव्य अस्त्रोंके प्रभावसे ऐसे नष्ट कर दिया, जैसे भोरके समय सूर्य्य उदय होकर रात्रिसे उत्पन्न हुए अन्धकारको दूर कर देते हैं, और जैसे ग्रीष्म ऋतुके समयमें प्रचण्ड तेज-वाले सूर्य्य, छोटे तलाइयोंके जलको सुखा देता है, वैसे ही अर्ज्जुन अपने प्रकाशमान बाणोंसे कुरुसेनाका नाश करने लगे। जैसे सूर्य्यकी किरण सम्पूर्ण पृथ्वी पर प्रकाशित होती है, वैसे ही अस्त्रविद्या जाननेवाले अर्ज्जुनके बाण क्षण भरके बीच उस स्थानमें सम्पूर्ण सेनाके पुरुषोंको छिपाने लगे। महाराज। गाण्डीव धनुषसे छूटे हुए वे तीक्ष्ण बाण शूरवीरोंके शरीरपर पड़ने लगे। अधिक क्या कहूं उस समय तुम्हारी सेनाके जितने योद्धा मतवारे होकर अर्ज्जुनके समीप उपस्थित हुए वे सम्पूर्ण योद्धा अर्ज्जुनके समीप पहुंचके इस प्रकार नष्ट होगये जैसे जलती हुई अग्निमें पतिङ्गोंके समूह प्रवेश करके भस्म होजाते हैं, इसी भांति अर्ज्जुन शूरवीर योद्धाओंकी भांति रणभूमिमें घूमने लगे। वह अपने बाणोंसे किसीके मुकुट भूषित सिर किसीके हस्तत्राण युक्त विशाल भुजा किसी किसीके कुण्डल शोभित दोनों कान गजसवारोंके तोमर भूषित घुड़सवारोंके प्रास युक्त पैदल सेनाके शूरवीरोंकी तलवार ढाल रथियोंके धनुष बाण और सारथियोंके कोड़ेके सहित भुजाओंको काट पृथ्वीमें गिराते हुए रणभूमिके बीच इस प्रकार शोभित होने लगे, जैसे प्रचण्ड शिखासे युक्त जलती हुई अग्नि प्रकाशित होती है। महाराज। शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ इन्द्रके समान पराक्रमी कपिध्वजावाले महावीर अर्ज्जुन युद्धभूमिमें महाअस्त्र शस्त्रोंको चलाकर धनुष टंकार और तलत्राण शब्दके सहित मानो रथपर नृत्य करते हुए एक ही समय चारों ओर दिखाई देने लगे। तुम्हारी ओरके योद्धा लोग अत्यन्त यत्नवान होकर भी अर्ज्जुनको दोपहरके सूर्य्य समान देखनेमें भी समर्थ न हुए। जैसे वर्षाऋतुमें जल वर्षते हुए बादलोंके बीच इन्द्रधनुष प्रगट होकर शोभित होता है वैसे ही प्रकाशमान बाणोंके सहित अर्ज्जुनका गाण्डीव धनुष शोभित होने लगा। महाराज। इस भांति अर्ज्जुनके धनुषसे छूटे हुए भयङ्कर बाणरूपी लहरमें डूबते हुए योद्धाओंके बीच किसीके सिर किसीकी भुजा किसीकी हथेली किसीकी अंगुली कटके पृथ्वीपर गिरने लगीं। मतवारे हाथियोंके बीच कितने ही हाथियोंके दांत कट गये कितने ही हाथियोंके सुण्डके सहित सुन्दर दांत खण्ड खण्ड होकर पृथ्वीमें गिरने लगे। किसी किसी स्थानपर कितने ही वीरोंके अस्त्र-शस्त्र कटके गिर गये, किसीके चरण किसीकी भुजा कट गयीं, कितने ही शूर-वीरोंके सन्धि (अङ्ग जोड़के स्थान) कटनेसे वे लोग चेष्टा रहित होकर भयङ्कर शब्द करने लगे, महाराज! इसी भांति तुम्हारी चतुरङ्गिणी सेनाके योद्धा लोग अर्ज्जुनके बाणोंसे छिन्न भिन्न होकर पृथ्वीमें गिरने लगे, उस समय वह रण-भूमि मृत्युके निवासस्थान वा सम्पूर्ण प्राणि-योंके नाश करनेवाले महाकाल रुद्रके क्रीड़ा-स्थान समान भयङ्कर दिखाई देने लगी। उस रणभूमिके बीच कटे हुए हाथियोंके सूण्ड सर्पके समान दिखाई देते थे। कहीं कहीं रुधिर बहते शूरवीरोंके शरीर कमलके फूल समान दीख पड़ते थे कहीं कहीं कवच कुण्डल सुवर्ण भूषित तलत्राण मुकुट वस्त्र घोड़े और

हाथियोंके वर्म्म और सैकड़ों किरीट इधर उधर पड़े रहनेसे वह रणभूमि गौनहाई नवीन स्त्रीके समान शोभित होने लगी। तिसके अनन्तर रणभूमिके बीच कादर और साधारण पुरुषोंके भयको बढानेवाली वैतरनी नदीकी भांति भयङ्कर रुधिररूपी तरङ्गसे युक्त एक भयङ्करी नदी उत्पन्न हुई। रुधिर और मांस उसके कीचड़, केश उसमें शिवार, कटे हुए हुए सिर और भुजा उसमें पत्थरोंके टुकडे और छत्र उसमें नौकारूपी, कौवे कङ्क आदि पक्षी तरङ्गमाला सैकड़ोंरथ उसमें जल जन्तु, सियार उसमें मकर मच्छ तथा बड़े बडे गिद्ध उसमें घडियाल रूपी बोध होने लगे। वह नदी शूरवीरोंके वर्म्म और हड्डियोंसे युक्त होकर दुःखसे तरने योग्य बोध होने लगी। रथियोंके गिरे हुए शंख उस नदीके भीतर हड्डीरूपी बोध होने लगे। विचित्र ध्वजा, पताका और मरे हुए मनुष्य हाथी घोडोंके शरीर उस नदीके तट रूपी मालूम होते थे। रथके चक्र धुरी और टूटे हुए रथोंके इधर उधर पडे रहनेसे गमन करनेका मांग नहीं दीख पड़ता था। प्रास तरवार फरसे आदि अस्त्रशस्त्र उसमें सर्पके समान दिखाई देने लगे। सियारोंके भयङ्कर शब्दके सहित सहस्रों भूत प्रेत पिशाच हर्षित होकर नाच रहे थे उससे रणभूमिके बीच वह नदी अत्यन्त भयङ्करी मालूम होने लगी, शूरवीर पुरुषोंके मृत शरीर उस नदीमें बहे जाते थे। यमराज रूपी अर्जुनका ऐसा पराक्रम देख कुरुसेनाके योद्धाओंके चित्तमें अत्यन्त भय उत्पन्न हुआ।

कृष्ण सारथीके सहित अर्ज्जुन उस समय अपने अस्त्रोंके प्रभावसे तुम्हारी ओरके योद्धाओंके अस्त्रजालको निवारणकर अपना भयङ्कर पराक्रम प्रकाशित करने लगे। उस समय अर्ज्जुनने जयद्रथ वधकी इच्छा कर अपने वाणोंसे उन सम्पूर्ण रथियोंको मोहित कर दिया; और चारों ओर अपने तीक्ष्ण वाणोंको चला कर शीघ्रताके सहित रणभूमिमें घूमने लगे। उस समय हम लोग केवल अर्ज्जुनके धनुषसे छूटे हुए सैकड़ों सहस्रों वाण आकाशमण्डल में भ्रमण करते हुए देखने लगे। वह किस समय तूणीरसे वाण निकालते धनुषपर चढाते और किस समय चलाते थे वहकिसीको दिखाई नहीं देता था। उन्होंने अपनी वाण-वर्षासे सम्पूर्ण दिशाओंको परिपूरित तथा तुम्हारी ओरके रथियोंको पीड़ित करके जयद्रथकी ओर दौड़कर चौसठ तीक्ष्णबाणोंसे राजा जयद्रथको विद्ध किया। महाराज! तुम्हारी ओरके सम्पूर्ण योद्धालोग कुन्तीपुत्र अर्ज्जुनको सिन्धुराज जयद्रथकी ओर गमन करते देख उनके जीवनसे निराश होकर सग्रामसे निवृत्त होने लगे। उस समय जो वीर युद्धभूमिमें अर्ज्जुनके सम्मुख हुए उन्होंके शरीरोंपर अर्ज्जुनके चलाये हुए वाण पड़ने लगे। विजय करने वालोंमें श्रेष्ठ महारथी अर्ज्जुनने सूर्य्यकिरणके समान प्रकाशमान वाणोंसे तुम्हारी सेनाके सिर काट काट कर पृथ्वीमें गिरा दिया; उससे सेनाके बीच अनगिनत कवन्ध दौड़ने लगे।

महाराज! इसी भांति महावीर अर्ज्जुन तुम्हारी चतुरङ्गिनी सेनाके पुरुषोंको व्याकुल कर जयद्रथकी ओर दौड़के अश्वत्थामाको पचास वृषसेनको तीन वाणोंसे विद्ध करके कृपाचार्य्यको कृपा पूर्व्वक नव वाणोंसे विद्ध किया। तिसके अनन्तर शल्यको सोलह कर्णको बत्तीस और सिन्धुराज जयद्रथको पैंसठ वाणोंसे विद्ध करके सिंहनाद किया। सिन्धुराज जयद्रथने गाण्डीव धनुषधारी अर्ज्जुनके वाणोंसे विद्ध होकर उनके पराक्रमको सहन नहीं किया, बरन अङ्कुशसे विद्ध हुए मतवारे हाथीकी भांति क्रुद्ध होगये। उन्होंने बराहध्वजासे युक्त अपने सुन्दर रथपर चढे हुए शीघ्रतासे उत्तम पानीमें वर्म्म और क्रोधी सर्पके समान; तेजस्वी गिद्धपङ्खयुक्त

बहुतसे तीक्ष्णबाण अर्ज्जुनकी ओर चलाये। फिर राजा जयद्रथने तीन बाणोंसे कृष्ण छः बाणोंसे अर्ज्जुन आठ बाणोंसे उनके रथके चारों घोड़े और एक बाणसे उनके ध्वजाको विद्ध किया। उस समय अर्ज्जुनने जयद्रथके चलाये हुए बाणोंको अपने बाणोंसे काट कर एकही समय दो बाणोंसे उनके सारथीका सिर और जयद्रथकी सुन्दर ध्वजाको काटकर गिरा दिया अग्निशिखाके समान प्रकाशमान बराह-चिन्हयुत जयद्रथकी ध्वजा अर्ज्जुनके बाणसे कटके पृथ्वीमें गिर पड़ी। उस ही समय श्रीकृष्णने सूर्य्यको शीघ्रताके सहित अस्ताचल पर्व्वतपर गमन करते देख व्याकुल होकर अर्ज्जुनसे बोले, हे महाभुज अर्ज्जुन। यह देखो सिन्धुराज जयद्रथ अपने जीवनकी अभिलाषा करके तुम्हारे भयसे छः महारथ बीरोंके बीच स्थित हैं, तुम बिना इन छः महारथियोंको पराजित किये किसी भांतिसे भी सिन्धुराज जयद्रथका बध न कर सकोगे। इससे यत्नवान होकर युद्ध करो और मैं भी इस विषयमें सूर्य्यको छिपानेके वास्ते योगमाया प्रगट करूं; ऐसा करनेसे ही सिन्धुराज जयद्रथ इस सेनाके बीचसे पृथक होकर प्रकाश्य-रूपसे अकेला ही सूर्य्यकी ओर देखने लगेगा। वह पापी जयद्रथ समझेगा,—सूर्य्य अस्त होनेसे ही अर्ज्जुन प्राणत्याग करेंगे, वही विचारकर हर्षके सहित अपने प्राण-रक्षाके निमित्त उन छः महारथियोंके बीच कदापि स्थित न रहेगा, तुम उस ही समय वैसा औसर पाकर उसके ऊपर अपने अस्त्रसे प्रहार करना। सूर्य्य अस्त होगये हैं ऐसा समझकर उसके बध करनेमें तुम तनिक भी विलम्ब न करना। अर्ज्जुनने श्रीकृष्णके वचनोंको सुनकर ऐसा ही होगा कहके उनके वचनको स्वीकार किया। तिसके अनन्तर परम योगीश्वर महायोगी तीनों तापके हरनेवाले श्रीकृष्ण भगवानने सूर्य्यको छिपानेके वास्ते अपनी योगमायासे अन्धकार उत्पन्न किया। महाराज। जब कृष्णने इस प्रकार अन्धकार उत्पन्न किया तब कौरवोंने समझा कि सूर्य्य अस्त होगया। अब अर्ज्जुन स्वयं प्राणत्याग करेंगे; यही विचारके तुम्हारी ओरके योद्धा लोग महा हर्षके सहित प्रसन्न हुए। वे सम्पूर्ण योद्धा और राजा जयद्रथ प्रसन्न होकर सिर ऊंचा करके सूर्य्यकी ओर देखने लगे, जब सिन्धुराज जयद्रथ इस प्रकार सूर्य्यकी ओर देखने लगे तब श्रीकृष्ण फिर अर्ज्जुनसे बोले, हे अर्ज्जुन। यह देखो जयद्रथ तुम्हारे निकटमें ही निर्भय होकर सूर्य्यकी ओर देख रहा है। हे महाबाहो। इस पापीके बधके निमित्त यही ठीक समय उपस्थित हुआ है। इससे तुम शीघ्र ही उसका सिर काटके अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करो। पाण्डुपुत्र पराक्रमी अर्ज्जुन श्रीकृष्णकी आज्ञा सुन सूर्य्यकिरणके समान अपने प्रकाशमान बाणोंसे तुम्हारी ओरके योद्धाओंका नाश करने लगे। उन्होंने कृपाचार्य्यको बीस, और कर्णको पचास बाणोंसे विद्ध करके शल्य और दुर्य्योधनको छः छः बाणोंसे विद्ध किया। तिसके अनन्तर वृषसेनको आठ, जयद्रथको साठ, और तुम्हारी ओरके योद्धाओंको अनगिनित बाणोंसे विद्ध करके राजा जयद्रथकी ओर दौड़े। महाराज! तुम्हारी सेनाके जो सम्पूर्ण योद्धा लोग जयद्रथकी रक्षाके निमित्त वहां पर उपस्थित थे वे सब अर्ज्जुनको जलती हुई अग्निके समान अपने सम्मुख आये देख अत्यन्त ही शङ्कित हुए और विजयकी अभिलाष करके लगातार अर्ज्जुनके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। युद्धमें अपराजित कुन्तीपुत्र पुरुषसिंह अर्ज्जुन कुरु-सेनाके योद्धाओंकी बाण-वर्षासे छिपकर इस प्रकार क्रुद्ध हुए, कि कुरुसेनाके पुरुषोंके नाशकी इच्छा कर सम्पूर्ण युद्धभूमिमें बाण ही बाण कर दिये। उस समय तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा अर्ज्जुनके बाणोसे पीड़ित होकर

जयद्रथको त्यागकर युद्धभूमिसे हटने लगे। उस समय वे सम्पूर्ण योद्धा ऐसे भयभीत होगये कि दो पुरुष मिलकर भी एक सङ्ग गमन न कर सके। उस समय मैंने यशस्वी अर्जुनका ऐसा पराक्रम देखा, कि वैसा पराक्रम न कभी दीख पड़ा और न भविष्यहीमें दिखाई देगा। वह हाथीके सहित गजपति योद्धा, घोड़ेके सहित घुड़सवार और सारथियोंके सहित रथियोंका इस प्रकार वध करने लगे, जैसे भगवान रुद्र सम्पूर्ण प्राणियोंका नाश करते हैं। महाराज। उस रणभूमिमें घोड़े हाथी और मनुष्योंके बीच ऐसे कोई भी न दीख पड़े, जो अर्जुनके बाणोंसे पीड़ित न हुए होते। एक तो श्रीकृष्णने योगमायासे पहले ही अन्धकार कर दिया था, उसपर फिर बाणोंके गिरनेसे महाभयङ्कर अन्धकार उत्पन्न हुआ और शूरवीरोंके पावके धक्केसे ऐसी धूलि उड़ी कि सम्पूर्ण पुरुषोंकी आंखोंके सामने अन्धेरा छा गया। उन योद्धाओंकी आंखोंमें इतनी धूल भर गई, कि उस समय वे लोग आंख भी न खोल सकते थे सब चेत-रहित होगये; इससे कोई एक दूसरेको चीन्ह भी नहीं सकते थे। अर्जुनके बाणोंसे पीड़ित होकर कोई घूमने लगे कोई लड़खड़ाने लगे। कितने ही गिर गये, कितने ही थक गये और कितने ही दुःखित होके पृथ्वीपर बैठ गये। उस समय प्रलयकालके समान महाभयङ्कर दारुण संग्राम उपस्थित होनेपर वायुके वेगसे रुधिर बहके इधर उधर गिरनेसे धूलिका उड़ना बन्द होगया कितने रथके चक्के रुधिरमें डूब गये। सवारोंके मरनेसे सहस्रों हाथी बाणोंसे छिन्न भिन्न होकर अपनी सेनाके पुरुषोंको पावसे मलते हुए आर्त्तनादके सहित रणभूमिमें चारों ओर दौड़ने लगे। वैसे ही सवारों रहित सुन्दर घोड़े पैदल सेनाके शूरवीरोंके अस्त्रोंसे विकल होकर युद्धभूमिमें दौड़ते लगे। सेनाके सम्पूर्ण पुरुष कोई रुधिर बहते शरीरसे कोई खुले हुए केशके सहित और कोई वर्म रहित होकर भयपूर्व्वक चारों ओर दौड़ने लगे कोई अपना पांव ग्रहण करके उसी स्थान गिर पड़े, कितने ही योद्धा मरे हुए हाथियों समूहमें छिप गये। महाराज! महा अर्जुन इस ही भांति तुम्हारी चतुरङ्गि सेनाके योद्धाओंको तितर बितर करके म महाघोर बाणोंसे सिन्धुराज जयद्रथके रक्षक ऊपर प्रहार करने लगे। उन्होंने कर्ण अ त्थामा कृपाचार्य्य वृषसेन शल्य और सुयोधन अपने तीक्ष्ण बाणोंके जालसे छिपा दिया। उस समय पाण्डुपुत्र अर्जुन किस समय ध फेरते साधते और कब छोड़ते थे। उनके हाथोंके फुर्तीके कारण कुछ भी न दीखता था। वह पराक्रमी अर्जुन जिस स लगातार अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे, समय चारों ओर समूहके समूह बाण ह हुए दिखाई देते थे, और हाथमें फिर हुआ उनका गाण्डीव धनुष भी दिख देने लगा। उन्होंने कर्ण और वृषसेनके धनुषको काट कर एक भल्लास्त्रसे शल्यके सारथी वध करके उसे रथसे पृथ्वीमें गिरा दिया। तिस अनन्तर अर्जुनने कृपाचार्य्य और अश्वत्थामा भी अपने बाणोंसे अत्यन्त बिद्ध किया। महाराज। विजय करनेवालोंमें श्रेष्ठ अर्जुनने इस भांति तुम्हारी ओरके महारथियोंको व्याकुल कर इन्द्रके वज्र-समान अत्यन्त कठोर दि मन्त्रसे अभिमन्त्रित सदा फूल मालासे पूजि अग्निके समान तेजस्वी महा भयङ्कर एक बा अपने तूणीरसे निकाला। उस बाणको विधि पूर्व्वक वज्र अस्त्रके सहित संयुक्त करके शीघ्रता सहित गाण्डीव धनुष पर चढ़ाया।

हे भारत। जब अर्जुनने अग्निके सम उस तेजस्वी बाणको अपने धनुष पर चढा तब आकाशवासी प्राणी मारे डरके हाहाका

करने लगे। इधर श्रीकृष्ण शीघ्रताके सहित अर्जुनसे बोले, हे अर्जुन। यह देखो, सूर्य अस्त हुआ चाहता है, तुम इसी समय पापी जयद्रथके सिरको काट डालो, परन्तु जैसे जयद्रथका बध हो सकेगा उसकी युक्ति मैं तुमसे कहता हूं. जयद्रथके पिता पृथ्वीके बीचमें विख्यात वृद्धक्षत्र नाम सिन्धु देशके प्रसिद्ध राजा थे जब इस शत्रुनाशन जयद्रथको उन्होंने पुत्र रूपसे पाया उस समय बादलके गर्ज्जने तथा नगाड़ेके शब्द समान गम्भीरस्वरसे यह आकाश बाणी हुई, हे मनुष्योंके राजा सिन्धुराज वृद्धक्षत्र! इन्द्रिय निग्रह आदि गुणोंसे यह पुत्र सूर्य और चन्द्रवंशीय राजपुरुषोंके अनुसार ही प्रतापी होगा, शूरवीर पुरुष सदा इसका आदर करेंगे और क्षत्रियोंके बीच यह एक मुख्य महारथ योद्धा करके गिना जावेगा, परन्तु अनन्तर जब यह शत्रुओंके सङ्ग युद्धम प्रवृत्त होवेगा, उस समय एक प्रसिद्ध क्षत्रिय राजा क्रुद्ध होके युद्धभूमिके बीच इसका सिर काटेगा। शत्रुओंके नाश करनेवाले वृद्धक्षत्र इस प्रकार आकाशवाणी सुनकर बहुत देरतक चिन्ता किया फिर पुत्रके ऊपर प्रीति करके अपनी जातिके पुरुषोंके बीच यह वचन बोले, युद्ध भूमिके बीच जो पुरुष मेरे इस बीर धुरीण पुत्रका सिर काटके पृथ्वीमें गिरावेगा उसका सिर एक सौ टुकड़े होकर पृथ्वीमें गिर पड़ेगा। ऐसा कह कर राजा वृद्धक्षत्र जयद्रथको राज्य समर्पण कर वनके बीच जाकर कठिन तपस्या करनेमें प्रवृत्त हुए। वह तेजस्वी राजा इसी समन्तपञ्चकके बाहरी हिस्सेमें अत्यन्त कठोर तपस्या कर रहे हैं। हे शत्रुनाशन कपिध्वजवाले अर्जुन! तुम वायुपुत्र भीमसेनके भाई हो, इससे आज तुम युद्धभूमिके बीच यह अद्भुत कार्य दिखाओ,—सिन्धुराज जयद्रथके कुण्डलभूषित सिरको काटके तपस्या करनेवाले उनके पिताके गोदीमें गिरा दो, यदि तुम मेरे वचनको न मानकर जयद्रथके सिरको काटके पृथ्वीमें गिराओगे तो तुम्हारा सिर भी निःसन्देह एक सौ टुकड़े होके पृथ्वीमें गिर पड़ेगा। इससे तुम दिव्य अस्त्रके प्रभावसे ऐसी गुप्तरीतिसे जयद्रथका सिर उनके पिताके क्रोड़में रखदो जिससे वह तपस्वी राजा वृद्धक्षत्र यह न जान सकें कि मेरे ही पुत्रका सिर है। हे कुरुकुल भूषण अर्जुन! मैं तीनोलोकके बीच कोई भी ऐसा कार्य नहीं देखता हूं जो तुमसे असाध्य होवे, क्योंकि तुम इन्द्रके पुत्र हो। अर्जुनने श्रीकृष्णकी उपदेशको सुनकर महात्मा जयद्रथके सिरको काटनेके निमित्त सूर्यके समान तेजस्वी, वज्रके समान कठोर सदा फूल-मालासे पूजित और दिव्य-मन्त्रसे अभिमन्त्रित करके एक वेगगामी प्रचण्ड बाण ग्रहण करके जयद्रथकी ओर चलाया। अर्जुनकी भुजासे छूटा हुआ वह बाण, वेगगामी बाज पक्षीकी भांति जयद्रथके सिरको काटकर आकाशमार्गसे चलने लगा। शत्रुओंके शोक और सुहृद पुरुषोंके हर्षका बढ़ाता हुआ उस कटे हुए सिरको लेकर आकाशकी ओर उड़ा। उस ही समयके बीच महावीर अर्जुन बहुतसे बाणोंकी वर्षा कर कर्ण आदि छः महारथियोंके संग युद्ध करने लगे। तिसके अनन्तर हम लोगोंने उस स्थानपर अर्जुनका महा आश्चर्य पराक्रम देखा कि अर्जुनका चलाया हुआ वह दिव्य अस्त्र कटे हुए जयद्रथके सिरको लेकर समन्त पंचकके बाहरी हिस्सेमें उपस्थित हुआ। महाराज! महातेजस्वी राजा वृद्धक्षत्र उसी स्थान पर संध्या उपासना कर रहे थे, उस ही समय काले केशसे युक्त सुन्दर कुण्डलोंसे शोभित जयद्रथका कटा हुआ सिर अर्जुनके दिव्य अस्त्र प्रभावसे अलक्षित रूपसे उनकी गोदीमें गिरा। ज्योंही वह भयभीत हो उठके खड़े होने लगे त्योंही उनकी गोदीमेंसे जयद्रथका सिर पृथ्वीमें गिरा। जब जयद्रथका

सिर पृथ्वीमें गिरा तब राजा वृद्धक्षत्रका सिर भी एक सौ टुकड़े होकर पृथ्वीमें गिर पड़ा। तिसके अनन्तर सेनाके योद्धा लोग विस्मित होकर अर्ज्जुन और श्रीकृष्णकी अत्यन्त प्रशंसा करने लगे। जब सिन्धुराज जयद्रथ अर्ज्जुनके अस्त्रोंसे मारे गये तब श्रीकृष्णने अपनी योग-मायाके अन्धकारको दूर किया। उस समय अनुयायियोंके सहित तुम्हारे पुत्रलोग भली भांति जान गये, कि यह केवल श्रीकृष्णकी मायासे अन्धकार हुआ था। महाराज! तुम्हारे दामाद सिन्धुराज जयद्रथ आठ अक्षौहिणी सेनाका नाश कराके अन्तमें अत्यन्त तेजस्वी अर्ज्जुनके वाणसे मारे गये। तुम्हारे पुत्र लोग जयद्रथको मरा हुआ देख दुःखित होकर आसूंसे बहाने लगे और विजयकी इच्छासे निराश होगये। उधर श्रीकृष्ण जयद्रथको अर्ज्जुनके बाणोंसे मरा हुआ देख आनन्दित होके पाञ्चजन्य संख बजाने लगे। अनन्तर शत्रुनाशन महाबाहु अर्ज्जुन, भीमसेन पुरुषसिंह सात्यकि, पराक्रमी युधामन्य और उत्तमौजाने भी अपने सङ्ख बजाए। उन महाघोर सङ्खोंके शब्दको सुनकर धर्म्मराज युधिष्ठिरने जाना, कि महात्मा अर्ज्जुनके हाथसे जयद्रथ मारे गये। ऐसा समझ कर राजा युधिष्ठिर जुझाऊ बाजे बजवा कर अपनी सेनाके पुरुषोंको हर्षित करने लगे, और युद्धकी इच्छासे भरद्वाज पुत्र द्रोणाचार्य्यके सम्मुख उपस्थित हुए। सिन्धुराज जयद्रथके मारे जाने पर वे सम्पूर्ण महारथी लोग द्रोणाचार्य्यके वध करनेकी इच्छासे यत्न-पूर्व्वक उनके सङ्ग युद्ध करने लगे। सूर्य्य अस्त होनेके समय उन सम्पूर्ण योद्धाओंके सङ्ग द्रोणाचार्य्यका महाघोर रोएंको खड़ा करनेवाला संग्राम होने लगा। उस समय पाण्डव लोग जयद्रथके मरनेसे विजय हर्षके सहित आनन्दित हुए और द्रोणाचार्य्यके सङ्ग युद्ध करने लगे। महाराज! जैसे सूर्य्य उदय होकर अन्धकारको दूर कर देता है, और जैसे इन्द्रने दानवोंका नाश किया था, वैसे ही किरीटधारी महावीर अर्ज्जुनने जयद्रथ वधके विषयमें अपनी प्रतिज्ञा पूरा कर तुम्हारी सेनाके योद्धाओंको अपने बाणों छिन्न भिन्न कर दिया, फिर महात्मा अर्ज्जुन मुख्य मुख्य रथियोंके सङ्ग युद्ध करने लगे।

१४४ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जब महावीर सिन्धुराज जयद्रथ अर्ज्जुनके बाणोंसे मारे गये; उस समय कौरवोंने किस कार्य्यका अनुष्ठान किया, वह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम मेरे समीप वर्णन करो।

सञ्जय बोले, महाराज! सिन्धुराज जयद्रथके मरने पर शरद्वतपुत्र कृपाचार्य्य और उनके भानजे अश्वत्थामाने क्रुद्ध होकर अपने रथ पर चढ़के अर्ज्जुनको निज बाणोंसे छिपा दिया। रथियोंमें श्रेष्ठ वे दोनों पराक्रमी वीर दोनों ओरसे अपने रथोंपर चढ़कर अर्ज्जुनके ऊपर इस प्रकार तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करने लगे, जैसे बादल आकाशसे जलकी वर्षा करते है। रथियोंमें श्रेष्ठ महाबाहु अर्ज्जुन उन दोनों महारथियोंके बाणोंसे पीड़ित होकर अत्यन्त कातर हुए और आचार्य्य पुत्र अश्वत्थामा और कृपाचार्य्यके वधकी इच्छा करके गुरुकी भांति पराक्रम प्रकाशित करने लगे। अनन्तर अर्ज्जुनने अपने अस्त्रोंके प्रभावसे कृपाचार्य्य और अश्वत्थामाके बाणोंको निवारण कर उनके वधकी अभिलाष नहीं किया, केवल धीरे धीरे उनके ऊपर अपने बाण चलाने लगे। परन्तु मन्दगतिसे चलनेवाले बाण भी क्रमसे झुण्ड झुण्ड चलकर उन दोनों महारथियोंको अत्यन्त पीड़ित करने लगे, उससे शरद्वतपुत्र कृपाचार्य्य अर्ज्जुनके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर मूर्छित

रहित होकर मूर्च्छित होगये। उनका सारथी अपने स्वामी कृपाचार्य्यको मूर्च्छित देख समझा कि "ये प्राणरहित होगये" ऐसा बिचार शीघ्रताके सहित रथ लेकर वहांसे प्रस्थान किया। महाराज। कृपाचार्य्यको रणभूमिसे पृथक् होते देख, अश्वत्थामा भी अर्ज्जुनके समीपसे भाग गये। इधर कुन्तीपुत्र महाधनुर्द्धारी अर्ज्जुन, शरद्वतपुत्र कृपाचार्य्यको अपने बाणोंसे पीड़ित और मूर्च्छित देख कपिध्वजासे युक्त रथमें बैठकर बिलाप करने लगे, और आखोंमें आसू भरकर दीनताके सहित यह वचन बोले, कुल नाश करनेवाले, महापापी, दुष्टात्मा दुर्य्योधन जब उत्पन्न हुआ था तभी महाबुद्धिमान बिदुरने सम्पूर्ण भविष्य घटनाओंको जानकर धृतराष्ट्रसे यह वचन कहा था।" हे महाराज धृतराष्ट्र। इस कुलघाती पुत्रको इसी समय त्याग दीजिये, ऐसा करनेसे आपका कल्याण होवेगा, और यदि इसे त्याग नहीं करोगे तो इसके जरिये कुरुवंशका नाशकी महा भय उपस्थित होगी"। परन्तु अन्धे राजा धृतराष्ट्रने बिदुरके वचनोंको न माना। इस समय सत्यवादी बिदुरके बचन सफल हुए; और मैंने अपने गुरु कृपाचार्य्यको दुर्य्योधनके कारणसेही मरशय्यापर शयन कराया है। क्षत्रियोंके आचार बल और पुरुषार्थको धिक्कार है? कोंकि संसारके बीच मेरे समान कौन पुरुष ब्राह्मण द्रोही हो सकता है? ओहो। ऋषिपुत्र गुरु और मेरे पिताके परम मित्र होकर भी मेरे बाणोंसे पीड़ित होकर रथपर शयन कर रहे हैं। उन्हें पीड़ित करनेकी मुझे अभिलाष नहीं थी तोभी वह मेरे बाणोंसे पीड़ित होकर रथमें मूर्च्छित होगये हैं उससे मेरा चित्त अत्यन्त दुःखित हो रहा है। मैं पुत्रशोकसे अत्यन्त ही कातर और उनके चलाये हुए बाणोंसे पीड़ित होकर उन्मत्तके समान बिचाररहित होगया हूं। मैंने लगातार अपने बाणोंसे उनके ऊपर प्रहार किया है। हे कृष्ण! वह अपने रथपर पीड़ित होकर कातरता सहित बैठे हैं; तुम उनकी दशाको देखो उन्हें इस प्रकारसे देख अभिमन्युके बधसे मुझे जो शोक उत्पन्न हुआ था उससे भी बढ़के कृपाचार्य्यको चेतरहित देखकर मैं दुःखित हो रहा हूं। इस संसारके बीच जो उत्तम पुरुष गुरुके समीप विद्या सीखकर उन्हें उनकी इच्छानुसार दक्षिणा देते हैं वे देवलोकमें जाते हैं; परन्तु जो नीच पुरुष गुरुसे विद्या सीखकर उनके नाश करनेमें प्रवृत्त होते हैं, वे गुरुघाती, अधम-पुरुष महाघोर नरकमें पतित होते हैं। इससे मैंने आज गुरुको प्रसन्न करनेके बदले उन्हें चेतरहित करके नरकमें जानेका अनुष्ठान किया है! पहिले अस्त्रविद्या सिखानेके समय कृपाचार्य्यने मुझसे कहा था, हे तात! तुम कभी गुरुके ऊपर प्रहार मत करना, परन्तु मैंने उस साधु महात्मा गुरुके ऊपर अपने बाणोंसे प्रहार करके उनकी आज्ञा उल्लङ्घन किया है। अत्यन्त पूजनीय युद्धसे पीछे न हटनेवाले महात्मा कृपाचार्य्यको मैं नमस्कार करता हूं। हे कृष्ण मुझे धिक्कार है. क्योंकि मैंने गुरुके ऊपर प्रहार किया।

महाराज! सव्यसाची अर्ज्जुन कृपाचार्य्यके वास्ते इसी भांति बिलाप कर रहे थे उस ही समय कर्ण जयद्रथके बधसे कोपित होकर अर्ज्जुनकी ओर दौड़े, तब अर्ज्जुन राधापुत्र कर्णको अपने रथके समीप उपस्थित देख हंसते हुए श्रीकृष्णसे यह वचन बोले। हे कृष्ण! कर्णको मेरी ओर आते देख, युधामन्यु उत्तमौजा और सात्यकि उनके सम्मुख उपस्थित हुए हैं। देखो, अधिरथपुत्र कर्ण भूरिश्रवाका मरना न सहके सात्यकिकी ओर दौड़ रहे हैं, वह जिस स्थान पर जारहे हैं, उसी स्थलपर मेरा रथ ले चलो, जिससे कर्ण क्रुद्ध होकर भूरिश्रवाके समीप सात्यकिको न भेज सकें। महातेजस्वी

महाभुज श्रीकृष्ण अर्जुनके वचनको सुनकर बोले, हे अर्जुन! यह महाबाहु वृष्णिवंशीय सात्यकि अकेले ही कर्णके सङ्ग युद्ध करनेमें समर्थ है उस पर भी युधामन्यु और उत्तमौजा जब उनकी सहायता कर रहे हैं, तब सात्यकिके निमित्त कौनसी चिन्ता है? विशेष करके कर्णके समीप जब तक जलते हुए महाउल्काके समान इन्द्रकी दी हुई अमोघशक्ति वर्त्तमान है, तब तक कर्णके सङ्ग ईरथ युद्धमें तुम्हें प्रवृत्त होना उचित नहीं है। क्योंकि कर्ण उस अमोघशक्तिकी सदा पूजा अर्चा करके तुम्हारे ही वास्ते रक्खे हुआ है। हे शत्रुनाशन! इससे कर्ण सात्यकिकी ओर जिस भांतिसे गमन कर रहा है उसे वैसे ही गमन करने दो। इस दुष्टात्माके वधका समय मैं अच्छी प्रकार जानता हूं। जिस समय उसे तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध करके पृथ्वीमें गिराना होगा, वह समय मैं तुमसे बतला दूंगा।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! भूरिश्रवा और जयद्रथके मरने पर वृष्णिवंशीय सात्यकिका कैसा सग्राम हुआ? और रथ-रथित सात्यकि, युधामन्यु उत्तमौजा किसके रथ पर चढ़े? यह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम मेरे समीप बर्णन करो।

सञ्जय बोले, महाराज! मैं उस महासंग्रामका सम्पूर्ण वृत्तान्त बर्णन करता हूं, आप चित्त लगा कर सुनिये। हे राजन्! श्रीकृष्ण भगवान भूत भविष्य सम्पूर्ण बिषयोंको जानते हैं, सात्यकि भूरिश्रवाके निकट पराजित होंगे, इसे श्रीकृष्णने पहिले ही जान लिया था। इसही कारण उन्होंने कहा था तुम मेरे रथको सज्जित करके तयार रखना, और जब मेरे पाञ्चजन्य सङ्खका शब्द सुनना, उस ही समय रथ लेकर मेरे समीप उपस्थित होना। ऐसी ही आज्ञा किया। हे राजन्! इससे मनुष्य देवता गन्धर्व सर्प वा राक्षस आदि कोई भी इस संसारके बीच ऐसे नहीं हैं, जो कृष्ण अर्जुनको जीत सकें, अधिक क्या कहूं, पिता मह ब्रह्मा, देवता और सिद्ध लोग भी उन दोनोंके महाप्रभावके विषयको जानते हैं। जो हो जिस प्रकार युद्ध हुआ था, वह मैं तुम्हारे समीप बर्णन करता हूं। श्रीकृष्ण सात्यकिको रथ रहित और कर्णको युद्धके निमित्त उनकी ओर दौड़ते देख भयङ्कर शब्दवाला अपना पाञ्चजन्य सङ्ख बजाने लगे। दारुक सारथी कृष्णके सङ्खका शब्द सुन गरुड़ ध्वजावाले उनके रथको लेकर वहां उपस्थित हुआ। तब शिनिपौत्र सात्यकि कृष्णकी आज्ञासे सुवर्ण भूषित शीघ्रगामी शैव्य सुग्रीव मेघपुष्प और बलाहक नाम चारो घोड़ोंसे युक्त दारुक सारथीके चलानेसे चलते हुए अग्निके समान उस प्रकाशमान रथ पर चढ़े। वह उस विमान तुल्य रथ पर चढ़के अपने बाणोंको चलाते हुए राधापुत्र कर्णकी ओर दौड़े। परन्तु कर्ण भी अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपने बाणोंकी वर्षा करते हुए महा पराक्रमी सात्यकिकी ओर दौड़े। उन दोनो पुरुषसिंहोंका जैसा युद्ध हुआ, वैसा सग्राम पृथ्वी स्वर्ग देवता गन्धर्व असुर और राक्षसोंके बीच भी न कभी देखा गया, न सुनाही गया था। अधिक क्या कहूं, उन दोनोंके युद्ध कार्य्यको देखकर गज सवार, घुड़सवार, रथी और पैदल सेनाके योद्धा लोग तथा तुम्हारी चतुरङ्गिनी सेनाके योद्धा लोग चित्र लिखेके समान युद्धभूमिमें खड़े हुए और युद्धसे निवृत्त होकर उन दोनों पुरुषसिंहोंका अलौकिक सग्राम और दारुकके रथ चलानेकी निपुणताई देखने लगे। विशेष करके कश्यपकुलनन्दन दारुक सारथीके रथ चलानेकी नाना भांतिकी गतिसे आगे बढ़ना, पीछे लौटना, मण्डलाकार रथ घुमाना समीपमें रथको उपस्थित करना, इत्यादि रथ चलानेकी गतिसे कर्णके सङ्ग सात्यकिका युद्ध

देखकर आकाशमें स्थित देवता, दानव, और गन्धर्व्व आदि सम्पूर्ण प्राणी विस्मित हुए। महाराज। महातेजस्वी और देवतोंके समान पराक्रमी सात्यकि और कर्णने यत्नवान होकर अपने मित्रोंके कार्य्य-सिद्धिके वास्ते आपसमें युद्ध करना आरम्भ किया, परन्तु सात्यकि अपने बाणोंकी वर्षा करके कर्णको पीड़ित करने लगे। शत्रुनाशन कर्ण भी कुरुवंशी भूरिश्रवा और जलसन्धके वधसे अत्यन्त क्रुद्ध और शोकित हुए थे, इससे वह विषधर सर्पके समान लम्बी सांस छोड़ते हुए सात्यकिकी ओर इस प्रकार वेगपूर्व्वक दौड़ने लगे, मानो दृष्टिसे देखकर ही उसे भस्म कर देंगे। सात्यकिने कर्णको अत्यन्त कोपित देख जैसे एक हाथी दूसरे हाथीसे युद्ध करता है वैसे ही अनेक बाणोंकी वर्षा कर,कर्णके सङ्ग युद्ध करने लगे। महा पराक्रमी वे दोनो पुरुषसिंह आपसमें युद्ध करते हुए अपने बाणोंसे एक दूसरेकी शरीरको इस प्रकार छिन्न भिन्न करने लगे, जैसे दो व्याघ्र आपसमें युद्ध करते हैं। तिसके अनन्तर शिनि-पौत्र सात्यकि सर्व्वपार्शव बाणोंसे बार बार कर्णके शरीरको चत-विचत करने लगे। फिर सात्यकिने एक भल्लास्त्रसे उनके सारथीका वध करके पृथ्वीमें गिराया, और चोखे बाणोंसे उनके चारो घोड़ोंको मारडाला। अनन्तर कर्णके रथ और ध्वजाको एक सौ टुकड़े करके तुम्हारे पुत्रोंके सम्मुख होसें उन्हें रथरहित कर दिया। उससे तुम्हारी ओरके महारथ योद्धा, कर्णपुत्र वृषसेन, मद्रराज शल्य और द्रोणपुत्र अश्वत्थामा पहिले शोकित हुए फिर सबने मिल कर सात्यकिको चारो ओरसे घेर लिया। उस समय सम्पूर्ण रणभूमिमें ऐसा अन्धकार होगया, कि कुछ भी नही दीख पड़ता था। जब कर्ण सात्यकिके अस्त्रोंसे रथरहित हुए तब तुम्हारी सेनाके बीच महाघोर हाहाकार शब्द होने लगा। परन्तु कर्णने सात्यकिके अस्त्रोंसे रथ रहित होकर तुम्हारे दुर्य्योधनका सङ्ग बालक अवस्थासे जो मित्रता हुई थी, उसको स्मरण किया और दुर्य्योधनके समीप राज्य पानेके कारण जो पाण्डवोंको पराजित करनेके वास्ते प्रतिज्ञा किया था, उसे पूर्ण करनेके निमित्त लम्बी सांस छोड़ते हुए दुर्य्योधनके रथपर जा चढ़े। महाराज। जितेन्द्रिय सात्यकिने इस ही भांति रथरहित कर्ण औरदुःशासन आदि तुम्हारे शूरवीरपुत्रोंका नाशनहीं किया। उन्होंने भीम अर्ज्जुनकी करी हुई पहली प्रतिज्ञा स्मरण कर कर्ण और तुम्हारे पत्रोंका नाश न करके उन्हें केवल रथ रहित करके अपने चोखेबाणोंके प्रहारसे बिकल कर दिया। क्योंकि जुआ खेलनेके समय भीमसेनने तुम्हारे पत्रों और अर्ज्जुनने कर्णके वधके वास्ते प्रतिज्ञा कियाथा। जो हो कर्ण आदि महारथी योद्धालोग यत्नवान होकर भी सात्यकिका वध न कर सके, सात्यकिने स्वर्ग लोकमें गमन करनेकी अभिलाष और धर्म्मराज युधिष्ठिरके प्रिय कार्य्य करनेकी इच्छासे अश्वत्थामा कृतवर्म्मा तथा दूसरे सैकड़ों महारथी क्षत्रियोंको एक धनुषसे ही पराजित किया। महाराज। कृष्ण अर्ज्जुनके समान पराक्रमी सात्यकिने खेलवाड़की तरह तुम्हारे सम्पूर्ण सेनाको पराजित किया। ऐसे कार्य्य करनेवाले श्रीकृष्ण भगवान धनुर्द्धारी अर्ज्जुन और पुरुसिंह सात्यकिको छोड़कर पृथ्वीके बीच चौथा कोई भी पुरुष विद्यमान नहीं है।

राजा धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय। कृष्णके समान युद्ध विद्या जाननेवाले सात्यकिने कृष्णके अजेय रथ पर चढ़ कर कर्णको रथ रहित किया, परन्तु दारुककी सहायतासे युक्त और अपने बाहुबलसे मतवारे सात्यकि कृष्ण होके रथ पर स्थित रहे? वा दूसरे रथ पर चढ़े। मैं इस वृत्तान्तको सुननेकी इच्छा करता हूं, तुम समस्त वृत्तान्त मेरे समीप विस्तार पूर्व्वक वर्णन

बल-पराक्रम इन्द्र वा रुद्रके समान है। आज तुमने युद्धभूमिके बीच शत्रुओंको पराजित करके जैसा पराक्रम प्रकाशित किया है; इस संसारके बीच कोई भी पुरुष ऐसा कार्य्य नहीं कर सकता। इसी भांति पराक्रम प्रकाशित करके जब तुम पापी कर्णका अनुयाइयोंके सहित नाश करोगे; तब तुम्हारी विजय और बैरीकी हार देखकर मैं तुम्हें फिर आनन्दित करूंगा। अर्ज्जुन श्रीकृष्णके मुखसे अपनी प्रशंसा सुनके बोले, हे कृष्ण! मैं केवल तुम्हारी कृपासे ही देवतोंसे भी न पूर्ण होने योग्य प्रतिज्ञासे पार हुआ हूं। हे कृष्ण। तुम जिसकी सहायता कर रहे हो; उसकी विजय होगी,—इसमें कौनसा आश्चर्य है। राजा युधिष्ठिर अवश्य ही तुम्हारी कृपासे इस सम्पूर्ण पृथ्वीका राज्य फिर पावेंगे, हे कृष्ण। इस युद्धका समस्त भार तुम्हारे ऊपर अर्पित है; इससे आजकी जीत तुम्हारी हुई है, हम लोग तुम्हारी आज्ञामें चलनेवाले हैं इससे हम लोगोंको उत्साहित करना तुम्हारा कर्त्तव्य-कार्य्य ही है। इसी भांति बात चीत करते हुए श्रीकृष्ण धीरे धीरे रथ चलाकर अर्ज्जुनको भयङ्कर रणभूमि दिखाने लगे। श्रीकृष्ण बोले, हे अर्ज्जुन। देखो राजा लोग महा कीर्त्ति और विजयकी अभिलाष करके युद्धमें प्रवृत्त हुए थे। वे तुम्हारे बाणोंके प्रतापसे अपना प्रिय प्राण गंवा कर पृथ्वीमें शयन कर रहे हैं। उनके अस्त्र शस्त्र और आभूषण चारों ओर गिरे पड़े दिखाई दे रहे हैं। हाथी घोड़े और रथ आदि वाहनोंके मरने और मर्म्म स्थल कटके छिन्न भिन्न होनेसे वे लोग अत्यन्त शोचनीय दशामें पड़े हुए हैं। उन लोगोंके बीच कितने ही प्राण रहित और कोई इस समय तक जीवित हैं परन्तु जो प्राण रहित हो गये है वह भी अपने तेजसे जीते हुएके समान बोध होते हैं। देखो सम्पूर्ण राजाओंके स्वर्णपंखवाले बाण अनेक भांतिके तीक्ष्ण शस्त्र और चढ़नेके वाहनोंसे पृथ्वी परिपूरित हो गई है; और इधर उधर पड़े हुए ढाल तलवार वर्म्म कुण्डल भूषित सिर मुकुट चत्र माला चूड़ामणि वस्त्र कण्ठा तनत्राण प्रकाशमान सुन्दर, और दूसरे विचित्र आभूषणोंसे इस रणभूमिकी अपूर्व्व शोभा हो रही है और अनगिनत टूटे हुए रथ ध्वजा, पताका धुरी छतरी दण्ड टूटे हुए रथके चक्के विचित्र अक्ष कोड़े नाना भांतिके रथभूषण धनुष बाण परदे चांदनी विचित्र कम्बल परिघ अंकुश भिन्दिपाल शक्ति शूल परशु प्रास तोमर बड़े ऋष्टि शतघ्नि भुशुण्डी खड्ग कुठार मूषल मुद्गर गदा तूणीर सुवर्ण भूषित हाथियोंके हौदे नाना भांतिके झालर पर्दे और घण्टा तथा माला भूषित नाना भांतिके आभूषण और महा मूल्यवान वस्त्रोंके इधर उधर पड़े रहनेसे यह रणभूमि इस प्रकार शोभायमान होने लगी; जैसा नक्षत्र आदि ग्रहोंसे युक्त शरद ऋतुमें आकाश मण्डल शोभित होता है। देखो, सम्पूर्ण राजा लो दुर्य्योधनके वास्ते राज्यके अभिलाषी हुए थे वह लोग अपना प्रिय प्राण गंवा कर प्राणप्यारी स्त्रीकी भांति पृथ्वीको आलिङ्गन करके भूमि शय्यापर शयन कर रहे हैं, यह देखो जैसे वर्षा ऋतुमें पर्व्वतकी गुफासे जलके संग मिले हुए गेरूके पनारे चलते हैं वैसे ही पर्व्वतके समान और ऐरावतके समान अनेक हाथियोंके शरीर तुम्हारे अस्त्र शस्त्रोंसे कटके पर्व्वतकी गम्भीर गुफा समान दीख पड़ते हैं और उनके शरीरसे रुधिरकी धारा बह रही हैं। सुवर्णके आभूषणोंसे भूषित हुये सम्पूर्ण हाथी घोड़े तुम्हारे बाणोंसे छिन्न भिन्न होकर इधर उधर रण भूमिमें पड़े महाघोर विकट शब्द कर रहे हैं यह देखो सारथी और रथियोंसे रहित गन्धर्व्व नगर तथा विमानके समान कितने ही रथ ध्वजा पताका चक्र अक्ष धुरी रथके नीचे और

ऊपरके काष्ठ आदिके कट कर इधर उधर गिरने से जहां तहां दिखाई देते है और सैकड़ों सहस्रों धनुष तथा ढाल तलवार ग्रहण करनेवाले पैदल सेनाके योद्धा रुधिरपूरित शरीर और खुले हुए केशसे पृथ्वीमें शयन कर रहे हैं। यह देखो मरे हुए योद्धाओंके शरीर तुम्हारे वाणोंसे छिन्न भिन्न होगये है। हे पुरुषश्रेष्ठ अर्ज्जुन। देखो रणभूमिमें इधर उधर मरे हुए हाथी घोड़े और रथोंके पड़े रहने तथा मांस चर्बी और रुधिरके बहनेसे यह रणभूमि कीचड़से युक्त होगई है। इससे यह रणभूमि राक्षस प्रेत और भेड़िये आदि मासभक्षी पशुओंके हर्षको बढ़ानेवाली होकर अत्यन्त भयङ्कर दिखाई देती है, हे महाबाहो! यश बढ़ानेवाला आजके रणभूमिका बृहत्कार्य्य तुमसे और दानवोंके नाश करनेवाले देवराज इन्द्र हीसे होना सम्भव था। महाराज। शत्रुनाशन कृष्ण इसी भांति अर्ज्जुनको रणभूमि दिखाकर शीघ्रताके सहित रथ चलाके अजातशत्रु राजा युधिष्ठिरके समीप उपस्थित हुए और जयद्रथ वधका वृत्तान्त उन्हें सुनाने लगे।

१४६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्। तिसके अनन्तर श्रीकृष्ण राजा युधिष्ठिरके समीप जाकर प्रसन्न चित्तसे जयद्रथ वधका वृत्तान्त इस भांतिसे वर्णन करने लगे, हे पुरुषश्रेष्ठ राजेन्द्र! प्रारब्ध हीसे तुम्हारे शत्रुका नाश हुआ और तुम्हारे यशकी वृद्धि हुई। प्रारब्धहीसे तुम्हारे छोटे भाई अर्ज्जुनकी प्रतिज्ञा पूरी हुई।

शत्रुनाशन राजा युधिष्ठिरने कृष्णके मुहसे मङ्गलदायक सम्वाद सुनकर अत्यन्त हर्षके सहित रथसे उतरके कृष्णको आलिङ्गन किया। महाराज! उस समय राजा युधिष्ठिर ऐसे आनन्दमें मग्न हुए कि हर्षके वशमें होकर उस समय कुछ भी बचन न कह सके; बल्कि मुहूर्त भरकर चुपचाप खड़े रहे। फिर वह अत्यन्त हर्षके सहित आनन्दसे आंसू बहाते हुए गद्गद होकर प्रीतिके सहित श्रीकृष्णसे यह बचन बोले, हे कमलनयन कृष्ण। जैसे समुद्रको तैरके पार होनेवाला पुरुष तट पाकर आनन्दित होता है वैसे ही तुम्हारे मुखसे जयद्रथ वधकी वाणी सुनकर मेरे आनन्दकी सीमा नहीं है। हे कृष्ण! बुद्धिमान अर्ज्जुनने तुम्हारी सहायतासे जयद्रथका वध करके अत्यन्त अद्भुत कार्य्य किया है, परन्तु तुम जिसके अवलम्ब स्वरूप तथा सब यत्नोंके सहित प्रिय और हित कार्य्यमें रत हो उसके विषयमें जयद्रथ वध विशेष आश्चर्य्यका कार्य्य नहीं है। हे कृष्ण! जैसे देवासुर संग्रामके समय देवता लोग असुरोंके नाश करनेवाले इन्द्रका आसरा करके युद्धभूमिमें स्थित हुए थे वैसे ही हम लोग भी तुम्हारे आसरेसे इस महाघोर संग्राममें प्रवृत्त हुए है। हे जनार्द्दन कृष्ण। आज अर्ज्जुनने तुम्हारे बल पराक्रम और बुद्धिप्रभावसे जिस कार्य्यको पूर्ण किया है वह देवतोंसे भी पूर्ण नहीं हो सकता। मैंने तुम्हारे बालक अवस्थाके बहुतसे दिव्य और अलौकिक कार्य्योंकी कथा सुनी हैं इससे तुमने जब प्रेमपूर्व्वक हम लोगोंके ऊपर कृपा किया है, तबहीसे मैंने यह जान लिया है कि शत्रुओंका नाश हुआ और पृथ्वी मेरे अधिकारमें हुई है इसमें कुछ सन्देह नहीं है। हे पापरहित कृष्ण। तुम्हारे चरित्रके विषयमें देवऋषि नारद और मारकण्डेय मुनिने तुम्हारे प्रभाव और महात्मको मेरे समीपमें वर्णन किया था। और असित देवल महातपस्वी नारद और हमारे पितामह वेदव्यास मुनिने तुम्हें तेजस्वरूप परब्रह्म सत्य और महत् तपस्याके स्वरूप कहे है, तुम ही तीनों लोकके बीच श्रेष्ठ और यशकी मूर्त्ति हो तुम्ही जगतके कारण और कल्याण स्वरूप हो। यह स्थावर जङ्गम

आदि सम्पूर्ण प्राणियोंके गुरु हो; समस्त संसार तुम्हींसे उत्पन्न होता है और प्रलयके समय तुम्हींमें लीन होजाता है। वेद जाननेवाले ब्राह्मण लोग तुम्हें जन्म मरणसे रहित विश्व-आत्मा सृष्टिकर्त्ता प्रजापति धाता अज और अव्यक्त कहके वर्णन करते हैं। तुम सब प्राणि-योंको आत्मा अनन्त और विश्वनाथ हो। इस जगतके पालन करनेवाले और आदि कारण हो। तुम अव्यक्त हो; इससे देवता लोग भी तुम्हें नहीं जान सकते। तुम सब प्राणियोंके आश्रय स्वरूप देवोंके देव परमात्मा सबके ईश्वर ज्ञानके मूल तीनों तापके हरनेवाले, सर्व्वव्यापी और मुमुक्षु पुरुष तथा योगियोंकी गति हो। तुम परम पुरुष तथा सनातन हो, सम्पूर्ण पुरानी वस्तुओंमें तुम मुख्य हो। तुम्हीं इस जगतके परम पद तथा परम गति हो, तुम्हें पानेसे हो मनुष्य परम ऐश्वर्य्य प्राप्त कर सकते हैं। तुम्हीं वेदोंसे जानने योग्य हो चारों वेद तुम्हारे ही चरित्रोंको गाया करते हैं। तुम्हीं परमात्मास्वरूप हो, इससे तुम्हें प्राप्त करने होसे प्राणी लोग परम ऐश्वर्य्य भोग करनेमें समर्थ होसकते हैं। हे प्रभु! तुम्हारे गुणयुक्त भूत, वर्त्तमान और भविष्य-कर्म्मोंकी गिनती किसी भांति मनुष्य देवता-ओंसे भी नहीं होसकती परन्तु जब हम लोगोंने तुम्हें इस भांतिसे अपना मित्रस्वरूप पाया है तब इन्द्र आदि देवतोंसे भी सब भांति रक्षित हुए हैं।

महायशस्वी, श्रीकृष्णचन्द्र धर्म्मराज युधिष्ठिरके ऐसे स्तुतियुक्त वचनोंको सुनकर कहने लगे,—महाराज! इस प्रकारके वचन तुम्हारे ही योग्य हुए हैं। परन्तु तुम्हारी साधुता, सीधापन, कठोर तपस्या और धर्म्मके प्रभावसे ही पापी जयद्रथ मारा गया है। महाराज! पुरुषसिंह अर्ज्जुनने केवल तुम्हारे धर्म्म-प्रभावसे ही अत्यन्त तेजस्वी होकर सहस्रों योद्धाओंका नाश करके जयद्रथका वध किया है। इस जगतके बीच कृतास्त्र बाहु-पराक्रम, निर्भय शीघ्रता और लक्ष्य वेध करनेमें अर्ज्जुनके समान दूसरा कोई भी पुरुष विद्यमान नहीं है, इसी इन कारणोंसे ही तुम्हारे भाई अर्ज्जुन कुरु सेनाका नाश करके जयद्रथका सिर काटनेमें समर्थ हुए। अनन्तर नीतिनिपुण धर्म्मपुत्र युधिष्ठिरने अर्ज्जुनको आलिङ्गन किया, और उन्हें प्रसन्न तथा उत्साहित करते हुए यह वचन बोले, हे फाल्गुन! आज तुमने युद्धभूमिमें बहुत बड़ा कार्य्य किया है अधिक क्या कहा जावे यह कार्य्य इन्द्र आदि देवताओंसे भी न होने योग्य है। हे शत्रुनाशन! प्रारब्ध होसे तुम शत्रुका वध करके कठिन भारसे पार हुए प्रारब्ध होसे जयद्रथका वध करके तुमने अपनी प्रतिज्ञा पूरी करी। महायशस्वी धर्म्मात्मा युधिष्ठिरने गुणाकेश अर्ज्जुनसे ऐसा वचन कह अपने सुगन्धित हाथोंसे उनकी पीठ ठोंकी।

महात्मा कृष्ण और अर्ज्जुन धर्म्मराज युधिष्ठिरके वचनको सुन कर कहने लगे, महाराज! सिन्धुराज पापी जयद्रथ तुम्हारी कोपरूपी अग्निसे भस्म हुआ है और धृतराष्ट्र पुत्रोंको इस महा सेनाके बीच जा युद्धमें मारे गये मरते हैं और मरेंगे उन सबका नाश तुम्हारे क्रोधाग्निसे ही होरहा है। महाराज! ये सम्पूर्ण कौरव तुम्हारे कोप होसे मर रहे हैं; ऐसा ही आप समझ लीजिये क्योंकि आप जिसको और अपनी कोपदृष्टिसे एक बार देखें वह उसी समय नष्ट हो सकता है, आप वीर पुरुष हैं, इससे दुष्टबुद्धि दुर्य्योधनने जब आपको कोपित किया तब अवश्य ही वह, बान्धवोंके सहित उसका नाश होगा। देखिये; कौरवोंमें वृद्ध भीष्म पितामह देवतोंसे भी अजेय थे, परन्तु वह तुम्हारे क्रोधसे ही पराजित होकर शरशय्या पर शयन कर रहे हैं। हे शत्रुनाशन महाराज! इसी

तुम जिसके ऊपर क्रोध करो उसको युद्धमें जीत होनी अत्यन्त ही कठिन है विशेष करके निश्चय ही उसे मृत्यु के कराल-ग्रासमें पड़ा हुआ हो समझ लीजिये। हे मानप्रद! आप जिसके ऊपर क्रोध करें अवश्यही थोड़े समयके बीच उसका राज्य प्राण पुत्र और सम्पूर्ण सुखका नाश होजावे। हे शत्रु नाशन महाराज! कौरवोंके ऊपर जब आप अत्यन्त ही कोपित होरहे हैं तब मैं कौरवोंको पुत्र पौत्र बन्धु बान्धवोंके सहित मरा हुआ ही समझ रहा हूं। तिसके अनन्तर अस्त्रशस्त्रोंसे क्षत विक्षत शरीरसे युक्त भीमसेन और सात्यकिने गुरुके समान धर्म्मराज युधिष्ठिरको प्रणाम किया और पाञ्चाल सेनाके बीचमें घिरकर पृथ्वी पर खड़े हुए। कुन्तीपुत्र धर्म्मराज युधिष्ठिर सात्यकि और भीमसेनको प्रसन्नतापूर्व्वक हाथ जोड़के सम्मुख खड़े देख उन दोनोंको आनन्दित करते हुए यह वचन कहने लगे। हे पुरुषमें दोनो वीर। प्रारब्धसे ही मैंने आज तुम लोगोंको द्रोणाचार्य्य रूपी ग्राह, हृदिक-पुत्र कृतवर्म्मा रूपी मकरसे युक्त समुद्र समान कौरवोंकी महासेनासे मुक्त हुए देखा है। प्रारब्धसे ही तुम दोनोंने पृथ्वीके सम्पूर्ण राजाओंको पराजित किया है। प्रारब्धसे ही मैंने तुम दोनोंको युद्धमें जययुक्त होकर यहां पर आये हुए देखा है। प्रारब्धसे ही तुम दोनोंने अनेक भांतिके अस्त्र शस्त्रोंसे महाबली द्रोणाचार्य्य कृतवर्म्मा, पुरुषश्रेष्ठ कर्ण और शल्यको पराजित किया है। मैंने प्रारब्धहीसे अपने दोनो भाइयोंको घाव-रहित शरीरसे अपने समीपमें आये हुए देखा है। तुम दोनो वीर सदा मेरी आज्ञा पालन और मेरी गौरव रक्षाके वास्ते युद्ध करनेमें तत्पर रहते हो इससे प्रारब्धसे ही मैंने तुम लोगोंको युद्धरूपी महाघोर समुद्रसे पार होते देखा है, तुम दोनों ही मुझे प्राणसमान प्रिय युद्धमें अपराजित और रणभूमिके बीच प्रशंसा पानेके योग्य हो; इससे प्रारब्धसे ही मैं तुम दोनोंको फिर युद्धभूमिसे कुशलपूर्व्वक लौटे हुए देख रहा हूं। कुन्तीपुत्र राजा युधिष्ठिर पुरुषसिंह भीमसेन और सात्यकिको आलिङ्गन करके आनन्दके सहित आंसूकी धारा बहाने लगे। तिसके अनन्तर पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण योद्धालोग प्रफुल्लित चित्तसे हर्ष पूर्व्वक युद्धके वास्ते फिर उद्योग करने लगे।

१४७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज! जयद्रथके मारे जानेपर तुम्हारे पुत्र दुर्योधन दीनता पूर्व्वक लम्बी सांस छोड़ने लगे और शत्रुओंके जीतनेसे उत्साह-रहित होगये। उस समय वह दुःखित होके दांत टूटे हुए सर्पके समान गर्म्म सांस छोड़ने लगे। युद्धमें जययुक्त अर्जुन भीमसेन और सात्यकिके अस्त्रोंसे अपनी सेनाके योद्धाओंका नाश देखकर राजा दुर्योधन दुःखित हुए उनके शरीरका वर्ण फीका पड़ गया, और सम्पूर्ण शूरवीर पुरुषोंके नाशके सम्बन्धमें अपनेको अपराधी समझके अत्यन्त दुःखित हुए। अनन्तर दीनताके सहित रुदन करते हुए अपने मनमें यह समझने लगे, कि इस पृथ्वीके बीच अर्जुनके समान कोई भी योद्धा विद्यमान नहीं है। द्रोणाचार्य्य और अश्वत्थामा,—ये कोई भी युद्धभूमिमें क्रोधी अर्जुनके सम्मुख खड़े होनेमें समर्थ नहीं है। जब अर्जुनने मेरी ओरके सम्पूर्ण महारथियोंको पराजित करके सिन्धुराज जयद्रथका वध किया है और कोई भी उसे निवारण करनेमें समर्थ नहीं हुए, तब साक्षात् इन्द्र भी आकर मेरी हुईके समान मेरी इस कुरुसेनाकी रक्षा नहीं कर सकेंगे। जिसके आसरेसे युद्ध करनेका उद्योग किया गया था,—वही कर्ण इस समय पराजित हुए और जयद्रथ अर्जुनके अस्त्रसे

मारे गये। जिसके बल पराक्रमका आसरा करके मैंने पाण्डवोंको अवमानित किया है अर्जुनने वैसे पराक्रमी कर्णको भी पराजित करके जयद्रथका वध किया है। श्रीकृष्णने जब शान्ति स्थापित करनेके वास्ते प्रार्थना किया था, उस समय मैंने जिसके बल पराक्रमके आसरेसे उन्हें तृणके समान समझ कर उनका निरादर किया था; इस समय वैसे पराक्रमी कर्ण भी युद्धभूमिमें पराजित हुए।

महाराज! सम्पूर्ण राजाओंमें अपराधी तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन इसी प्रकारसे दुखित होकर द्रोणाचार्य्यसे भेंट करनेकी इच्छासे उनके समीप उपस्थित हुए। तिसके अनन्तर राजा दुर्य्योधन द्रोणाचार्य्यके निकट शत्रुओंकी विजय अपनी पराजय तथा कुरुसेनाके शूरवीरोंके नाशका सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन करने लगे। हे आचार्य्य! महा पराक्रमी भीष्म पितामह और युद्ध करनेवाले बहुतेरे राजा लोग जो युद्धभूमिमें मरे हुए पड़े हैं,—उन्हें देखिये, चपल-स्वभाववाले शिखण्डीने भीष्म पितामहका वध करके अपना मनोरथ पूरा किया है; इस समय वही शिखण्डी तथा तुम्हारे और भी बहुतसे शिष्य लोग पराक्रमी धृष्टद्युम्नको अपना सेनापतिको बनाके पाण्डवोंकी सेनाके अगाड़ी स्थित हैं। और भी देखिये सव्यसाची अर्जुनने सात अक्षौहिणी सेनाको भेद करके सिन्धुराज जयद्रथका वध किया है। जो हो इस समय जो सब उपकारी सुहृद-मित्र हम लोगोंके बिजयकी अभिलाषा करके यमपुरीमें गये हैं मैं किस भांतिसे उन लोगोंकी ऋणसे मुक्त होऊंगा? हाय! जिन सम्पूर्ण राजाओंने मेरे वास्ते इस सम्पूर्ण पृथ्वीके राज्यकी अभिलाष किया था, इस समय वे सब कोई पृथ्वीके सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य त्यागकर वीरशय्यापर शयन कर रहे हैं। मैं अत्यन्त ही कापुरुष हूं! मैं अपने मित्रोंका नाश कराके सहस्र अश्वमेधसे भी आत्माको पवित्र नहीं कर सकूंगा। मुझ अधर्म्मी पापी तथा लोभीके वास्ते ही विजयकी इच्छा करके सम्पूर्ण राजा लोग इस महाघोर संग्राममें मरकर स्वर्गलोकमें गये हैं। राजाओंके बीच मुझ मित्रद्रोहीके वास्ते पृथ्वी भी क्यों नहीं स्थान प्रदान करती है? जब सम्पूर्ण राजाओंके बीच रहकर भी भीष्म पितामहने रुधिरपूरित शरीरसे शरशय्यापर शयन किया है और हम लोग किसी भांति उनकी रक्षा नहीं कर सके तब मेरे समान अधर्म्मी मित्रद्रोही अनार्य्य और नीच पुरुष दूसरा कौन है? विशेषकर पराये देशको जीतनेवाले भीष्म पितामह इन्द्र-लोकमें जाके मुझे क्या कहेंगे? और भी देखो, महाबली पराक्रमी राजा जलसन्ध युद्धभूमिमें मेरे वास्ते प्राणकी आशा त्यागके सात्यकिके सङ्ग युद्ध करके उसके हाथसे मारे गये हैं। काम्बोजराज सुदक्षिण अलम्बुष और दूसरे बहुतेरे सुहृद मित्र राजाओंको मरे हुए देखकर अब मुझे जीवित रहनेकी कौनसी आवश्यकता है? ये सम्पूर्ण युद्धमें पीछे न हटनेवाले राजा और शूरवीर योद्धा लोग शत्रुओंको जीतनेकी इच्छासे अपनी शक्तिके अनुसार युद्ध करके रण-भूमिमें मारे गये हैं। हे शत्रुनाशन आचार्य्य! इससे मैं भी अपनी शक्ति प्रकाशित करके इन सम्पूर्ण मरे हुए राजाओंके ऋणसे मुक्त होकर पीछे यमुना जलसे उनलोगोंका तर्पण करूंगा। हे शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ आचार्य्य! मैं बल पराक्रम और पुत्रकी शपथ करके तुम्हारे समीप सत्य प्रतिज्ञा करता हूं कि पाण्डवोंके सहित सम्पूर्ण पाञ्चाल योद्धाओंका वध करके शान्त होऊंगा; अथवा उन लोगोंके हाथसे मर कर राजाओंके पाने योग्य श्रेष्ठ लोकमें गमन करूंगा। विशेष करके वे सम्पूर्ण पुरुषश्रेष्ठ राजा लोग मेरे वास्ते युद्ध करके इस महासंग्राममें अर्जुनके अस्त्रोंसे मर कर जिस लोकमें गये हैं मुझे भी

उस ही स्थानमें गमन करना उचित है। हे महाबाहु आचार्य्य! इस समय बचे हुए जो पुरुष मेरी सहायता करनेवाले हैं उनके बीच मैं ऐसा किसीको भी नहीं देखता जो शत्रु-ओंसे अनिरुद्ध नहीं है क्योंकि वह लोग जिस प्रकार पाण्डवोंके कल्याणकी अभिलाषा करते हैं वैसी मेरे कल्याणकी मङ्गलकामना नहीं करते। देखिये सत्यसन्ध भीष्म पितामहने स्वयं ही अपनी मृत्युका वृत्तान्त युधिष्ठिरसे कह दिया; और आप भी अर्ज्जुनके ऊपर प्रेम करके युद्धमें उपेचा करते रहते हैं। इससे मेरी ओरके विजयकी अभिलाष करने-वाले सब लोग युद्धमें मारे गये हैं; इस समय केवल महारथ कर्ण ही मेरे विजयके निमित्त अभिलाष करते हुए दीख पड़ते हैं। जो बुद्धि-हीन पुरुष शत्रुको न जानके उसे मित्र सम-भके अपने कार्य्योंमें नियुक्त करता है, अवश्य ही उसे राज्य अर्थ तथा कार्य्यसिद्धिसे निष्फल मनोरथ होना पड़ता है। मैं भी बुद्धिहीन लोभी और पापी हूं इसीसे कुटिल आचरण करनेवाले पुरुषोंको मित्र समभके विश्वास कर रहा हूं। भीतरी शत्रु और ऊपरसे मित्रता जनाकर कुटिल पुरुषोंने सब भांतिसे मेरे कार्य्यकी हानि करी हैं, इस ही कारणसे परा-क्रमी राजा जयद्रथ भूरिश्रवा, अभिषाह, शूरसेन शिवि और वशाति देशीय शूरवीर पुरुष युद्ध-भूमिमें मारे गये। इससे हे पाण्डुपुत्रोंके आचार्य्य! इन सम्पूर्ण पुरुषश्रेष्ठ शूरवीरोंने मेरे निमित्त युद्ध करके जिस स्थानमें गमन किया है, मैं भी उस ही स्थानमें गमन करूंगा, इस समय आप मुझे अनुमति दीजिये।

१४८ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, जब सिन्धुराज जयद्रथ अर्ज्जुनके हाथसे और भूरिश्रवा सात्यकिके हाथसे मारे गये तब तुम लोगोंका मन कैसा हुआ था; दुर्य्योधनने जब कौरवोंके बीच द्रोणा-चार्य्यके निकट इस भांतिसे दुःख प्रकाशित किया, तब उन्होंने उसे कैसा उत्तर दिया था, यह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम मेरे समीपमें वर्णन करो।

सञ्जय बोले महाराज! सिन्धुराज जयद्रथ और कुरुश्रेष्ठ भूरिश्रवाको मरे हुए देख तुम्हारी सेनाके बीच महाघोर कोलाहल होने लगा। उन सम्पूर्ण योद्धाओंने तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनकी मन्त्रना (राय) पर श्रद्धा नहीं किया क्योंकि दुर्य्योधनके अविचारहीके कारणसे सैकड़ों सहस्रों चत्रिय श्रेष्ठ वीरोंका नाश हुआ। परन्तु द्रोणाचार्य्य तुम्हारे पुत्रके वच-नको सुनके दुःखित होके मुहूर्त्त भरतक चिन्ता करके फिर दुर्य्योधनसे यह वचन बोले, हे दुर्य्योधन! मैं तुमसे सदा ही यह वचन कहता चला आता हूं, कि सव्यसाची अर्ज्जुन इस संसारके बीच अजेय है तब तुम किस कार-णसे मुझे वचनरूपी बाणसे दुःखित कर रहे हो। अर्ज्जुनसे रचित होकर शिखण्डीने जब युद्धभूमिमें भीष्मका बध किया उस ही समयसे अर्ज्जुनके पराक्रमका पूरा प्रमाण मिल चुका हैं। देवता और दानवोंसे भी अवध्य कुरुकुल शिरोमणि भीष्मदेवको मरते देख मैंने उस ही समयसे जान लिया है कि इस भारती सेनाके शूरवीरोंकी अब रचा नहीं होसकती। जिसे हम लोग इस संसारके बीच सबसे श्रेष्ठ शूर-वीर समझते थे; उस वीरवर भीष्मके मारे जाने पर अब कौन ऐसा पुरुष है कि हमलोग जिसके आसरेसे युद्धभूमिमें स्थित रह सकेंगे? हे तात दुर्य्योधन! पहिले कुरुसभाके बीच शकुनिने जिन पासोंको ग्रहण करके जूआ खेला था वे सब पासे नहीं थे वे ही इस समय शत्रुओंको पीड़ित करनेवाले चोखे बाण हुए हैं। पहिले विदुरने बार बार निवारण किया था तौ भी तुम्हें कुछ नहीं मालूम हुआ था

वेही सम्पूर्ण पापे इस समय बाण रूपी होकर अर्ज्जुनके धनुषसे छूटकर हम लोगोंका नाश कर रहे हैं। हे दुर्य्योधन महात्मा विदुरने बारम्बार विलाप करके तुमसे बहुतसे हितकर बचन कहे थे, तो भी तुमने उनके बचन नहीं सुने; उनहीं बचनोंकी अवमानना करनेके कारणसे तुम्हारे निमित्त ही सम्पूर्ण शूरवीरोंका नाश होरहा है। जो मूढ़ आत्मीय और सुहृद-मित्रोंके हितकारी वचनोंकी अवमानना करके इच्छानुसार कार्य्य करनेमें प्रवृत्त होते हैं वे शीघ्र ही सोचनेके योग्य होजाते हैं। हे गान्धारीपुत्र। तुम जो पुरुषोंकी सभाके बीच न लाने योग्य सब लक्षणोंसे युक्त उत्तम कुलमें उत्पन्न हुई द्रौपदीको हम लोगोंके सम्मुखमें ही सभाके बीच ले आये, और अन्याय पूर्व्वक पाण्डवोंको जूएके खेलमें पराजित करके उन्हें काले हरिनके चमड़े पहनाके वनवासी बनाया था, उस ही अधर्म्मका फल तुम्हें इस समय मिल रहा है। परन्तु यदि इस लोकमें तुम्हारी ऐसी दशा न होती तो परलोकमें इससे बढ़के तुम्हें अपने पापोंके फल भोगने पड़ते। इस समय मुझे छोड़के और दूसरा कौन धर्म्मका आचरण करनेवाला पुरुष सदा सर्व्वदा धर्म्मके कार्य्य करनेवाले पुत्रके समान प्रिय पाण्डुपुत्रोंसे द्वेष करनेमें प्रवृत्त हो सकता है? उस समय तुमने कुरुसभाके बीच शकुनिके सङ्ग मिल कर धृतराष्ट्रकी सम्मतिसे जो पाण्डवोंके कोपको बढ़ाया था दुःशासनने उसकी जड़ दृढ़ करी-कर्णने उसे बढ़ाया और तुमने विदुरके बचन को न मान कर बार बार पाण्डवोंके क्रोधकी वृद्धि करी है। जयद्रथकी रक्षा करनेके वास्ते तो तुम लोग सब कोई यत्नवान हुए थे, तुम लोग अर्ज्जुनके सम्मुखसे क्यों पराजित हुए! और तुम लोगोंके बीचमें रहते भी सिन्धुराज किस प्रकार मारे गये? हे कुरुराज दुर्य्योधन! तुम, कर्ण, कृपाचार्य्य शल्य और अश्वत्थामा

जीवित रहते सिन्धुराज जयद्रथ किस कारण
मारे गये! जयद्रथकी रक्षा करनेके वास्
सम्पूर्ण राजाओंने भी तो प्राणपणसे अपने पर
क्रमको प्रकाशित करके युद्ध किया था, त
भी सिन्धुराज जयद्रथ तुम लोगोंके बीचमें र
कर किस प्रकारसे मारे गये। विशेष करक
सिन्धुराज जयद्रथने तुम्हारे और मेरे ही आग
मेरे अर्ज्जुनके हाथसे बचने की आशा किया थ
परन्तु वह अर्ज्जुनके हाथसे परित्राण न पाय
के। इससे मैं अब इस समय अपने प्राणरक्षाक
कोई उपाय नहीं देखसकता हूं, मैं जबतक धृष्ट
द्युम्न शिखण्डी और सम्पूर्ण पाञ्चाल योद्धाओंक
संहार नहीं कर सकता हूं तब तक धृष्टद्युम्नके
कुटिलतारूपी कीचड़में अपनी आत्माको निमग्
हुआ ही बोध कर रहाहूं। हे भारत। इस
जब मैं सिन्धुराज जयद्रथको अर्ज्जुनके हाथ
बचानेमें स्वयं असमर्थ होके दुःखित होरह
हूं तब तुम क्यों मुझे वचन रूपी बाणसे विद्ध क
रहे हो? और युद्धभूमिके बीच कठिन कर्म्म
करनेवाले सत्य पराक्रमी भीष्मके सुवर्णमयी
ध्वजाको भी न देखकर तुम किस प्रकारसे
अपने विजयकी इच्छा कर रहे हो? जिस
स्थान पर कौरवोंमें मुख्य भूरिश्रवा और सिन्धु
राज जयद्रथ सम्पूर्ण महारथियोंके बीचमें रह
कर भी मारे गये है उस स्थानपर अब तुम
किसे जीवित समझ रहे हो? पराक्रमी कृपा-
चार्य्य यदि सिन्धुराजके अनुगामी न होकर
जीवित होंगे, तो मैं उनकी विशेष प्रशंसा
करता हूं। जबसे मैंने इन्द्र आदि देवतोंसे
भी अबध्य महाबली अत्यन्त पराक्रमी भीष्मको
दुःशासनके सम्मुख होमें मरते हुए देखा तभीसे
मेरे हृदयमें यह विचार हुआ है कि यह वसु
न्धरा पृथ्वी तुमसे विमुख हुई है। यह देखो
पाण्डव और सृञ्जय योद्धा इकट्ठे होकर मेरी
ओर दौड़े हुए चले आरहे हैं, इससे आज मैं
युद्धभूमिमें तुम्हारे हितके वास्ते अच्छी प्रकारसे

अनुष्ठान करूंगा मैं सम्पूर्ण पाञ्चाल योद्धाओंका बिना वध किये अपना कवच नहीं उतारूंगा। हे राजन्! तुम मेरे पुत्र अश्वत्थामासे कहना कि वह जीतेजी सोमकवंशी तथा पाञ्चाल योद्धाओंको न छोड़े। एक भी कहना कि हे अश्वत्थामन्! तुमने अपने पिताके समीप जो सम्पूर्ण विद्या सीखी हैं उसे पूर्णरीतिसे पालन करो, अर्थात् सरलता दम सत्य और अनृशंसतामें निष्ठा करो। धर्म्म अर्थ और काममें निर्भयपूर्व्वक तत्पर रहके धर्म्म अर्थके अविरोधी कार्य्योंका अनुष्ठान करना। ब्राह्मणोंको नेत्र और वचनसे सम्मानित और सन्तोषित करके अपनी शक्तिके अनुसार उनकी पूजा तथा सत्कार करना कभी ब्राह्मणोंके अप्रियकार्य्यके करनेमें प्रवृत्त न होना क्योंकि ब्राह्मण अग्निशिखा समान तेजस्वी हैं। हे दुर्य्योधन! और अधिक तुमसे क्या कहूं इस समय मैं तुम्हारे वचनसे पीड़ित हुआ हूं आज मैं महाघोर युद्ध करनेके वास्ते शत्रुसेनाके बीच प्रवेश करूंगा। तुम भी यदि समर्थ हो तो इस सेनाके योद्धाओंकी रक्षा करनेमें प्रवृत्त होजाओ क्योंकि आज अत्यन्त क्रुद्ध हुए कौरव और सृञ्जय लोग रात्रिके समयमें युद्ध करेंगे। महाराज! जैसे सूर्य्य नक्षत्रों (तारों) के तेजको हरण करते हैं, वैसे ही क्षत्रियोंके तेजको हरनेवाले द्रोणाचार्य्यने तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनसे ऐसा वचन कह कर पाण्डव और सृञ्जयोंकी सेनाके बीच प्रवेश किया।

१४६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज! तिसके अनन्तर तुम्हारे पुत्र राजा दुर्य्योधनने द्रोणाचार्य्यके समीप इसी भांतिसे तिरस्कृत होकर क्रोधपूर्व्वक युद्धके निमित्त दृढ़ सङ्कल्प किया; और उस ही समय कर्णको अपने समीप देख कर कहने लगे, हे कर्ण! देखो कृष्णकी सहायतासे युक्त अर्ज्जुनने देवतोंसे भी न भेद होने योग्य द्रोणाचार्य्यके बनाये ऐसे कठिन व्यूहको खेलवाड़की भांति भेद किया और द्रोणाचार्य्य तुम तथा मुख्य मुख्य महारथी योद्धा लोग युद्ध करते भी थे तौ भी सिन्धुराज जयद्रथ अर्ज्जुनके अस्त्रसे मारे गये। देखो जैसे सिंह छोटे पशुओंका बध करता है, वैसे ही अर्ज्जुनने अकेले ही इस पृथ्वीके बीच युद्धकी सम्पूर्ण विद्या जाननेवाले सिन्धुराज जयद्रथका वध किया है। हे शत्रुनाशन कर्ण! रणभूमिके बीच मैं स्वयं युद्ध करनेमें प्रवृत्त था तौ भी अर्ज्जुनने मेरी सेनाके पुरुषोंका नाश करके अब थोड़ीसी सेना बाकी रक्खी हैं। परन्तु यदि द्रोणाचार्य्य स्थिरचित्तसे युद्ध करनेमें प्रवृत्त रहते तो अर्ज्जुन किस प्रकार इस दुर्भेद व्यूहको भेद कर सकता? हे कर्ण। इससे देखो ये सब इन्द्रके समान पराक्रमी राजा लोग केवल द्रोणाचार्य्यकी उपेक्षासे ही अर्ज्जुनके बाणोंसे मर कर रणभूमिमें शयन कर रहे हैं और आचार्य्यने उपेक्षा किया इस ही कारणसे अर्ज्जुनने जयद्रथका बध करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी की है। हे वीर! रणभूमिमें यत्नवान तेजस्वी द्रोणाचार्य्यकी यदि इच्छा न रहती तो पाण्डुपुत्र अर्ज्जुन किस प्रकारसे इस दुर्भेद व्यूहको भेद करनेमें समर्थ होता? अर्ज्जुन महात्मा द्रोणाचार्य्यको अत्यन्त ही प्रिय है इस ही कारणसे उन्होंने बिना युद्धके ही उसे व्यूहके बीच प्रवेश करनेका मार्ग प्रदान किया था। देखो मेरी भाग्यहीनतासे ही द्रोणाचार्य्यने जयद्रथको अभयदान करके भी अर्ज्जुनको व्यूहके बीच प्रवेश करनेका मार्ग प्रदान किया, वह यदि पहिले ही सिन्धुराज जयद्रथको घर जानेके वास्ते अनुमति देते तो इस प्रकार मेरी सेनाके पुरुषों और राजा जयद्रथका नाश न होता। ओहो! जब सिन्धुराज राजा जयद्रथ

अपने प्राणकी अभिलाषासे घर जानेके वास्ते उद्यत हुए थे उस समय मैंने द्रोणाचार्य्यके समीप अभय पाकर अपनी मूर्खताके कारण उन्हें घर जानेके वास्ते निवारण किया था। हाय। मैं कैसा निठुर तथा दुष्टात्मा पुरुष हूं। देखो आज यज्ञभूमिमें चित्रसेन आदि सहोदर भाई हमलोगोंके सम्मुख होमें भीमसेनके हाथसे मारे गये।

राजा दुर्य्योधनके ऐसे आक्षेप युक्त वचन सुनकर कर्ण बोले, महाराज। द्रोणाचार्य्य अपने बल उत्साह और शक्तिके अनुसार ही युद्ध कर रहे हैं इससे आप उनकी निन्दा न कीजिये यद्यपि श्वेतवाहन अर्जुनने उन्हें अतिक्रम करके व्यूहके बीच प्रवेश किया है तथापि उस विषयमें द्रोणाचार्य्यका तनिक भी कुछ दोष नहीं दीख पड़ता है। क्योंकि अर्जुन युवा अवस्थावाला बलवान युद्धमें निपुण कृतास्त्र और शीघ्रताके सहित पराक्रम प्रकाशित करनेवाला है। विशेष करके कृष्ण जिस रथ पर बैठकर घोड़ोंकी वागडोर ग्रहण करके रथ हांकते है,—उस रथ पर बैठा हुआ बलवान अर्जुन बन्दर ध्वजावाले रथसे युक्त दिव्य अस्त्रोंके सहित अभेद कवच पहने हुए अपने भुज-बलसे मतवारा होकर चोखे वाणोंकी बर्षा करते हुए जो द्रोणाचार्य्यको अतिक्रम करके तुम्हारी व्यूहवद्ध सेनाके बीच प्रवेश करेगा यह अर्जुनके विषयमें कुछ असम्भव वार्त्ता नहीं हैं महाराज! द्रोणाचार्य्य बूढ़े शीघ्र गमन करनेमें असमर्थ और भुजबलसे शीघ्रतासे शस्त्र चलानेमें अर्जुनके सामान समर्थवान नहीं हैं इसही कारणसे श्रीकृष्ण सारथीसे युक्त श्वेतवाहन अर्जुनने द्रोणाचार्य्यको अतिक्रम किया है; इससे द्रोणाचार्य्यका इस विषयमें कुछ भी दोष नहीं मालूम होता है। महाराज! युद्धभूमिमें पाण्डवोंको द्रोणाचार्य्य अजेय समझते हैं, इस ही कारण अर्जुनने उन्हें अतिक्रम करके तुम्हारी व्यूहवद्ध सेनाके मध्य प्रवेश किया। हे राजन्! मेरे विचारमें मन हरी यह निश्चय होरहा हैं कि दैव जिस वि यके अनुकूल रहता है कोई भी पुरुष कि प्रकारसे उस विषयके अन्यथा कार्य्य कर समर्थ नहीं हो सकता, क्योंकि हम लं अपनी पूरी शक्तिके अनुसार युद्ध कर रहे हैं तौभी सिन्धुराज जयद्रथ मारे गये इससे दैव इस स्थलमें प्रबल कहना पड़ेगा। और देखिये रणभूमिके बीच हम लोग तुम्हारे स मिलकर सदाही कपटता और अपने पराक्रम तुम्हारे विजयकी अभिलाषा करते रहे तौभी दैव हम लोगोंके पुरुषार्थको नष्ट कर हमारे उपायको निष्फल कर रहा है महाराज। भाग्यहीन पुरुष किसी समय या कितने ही यत्नसे कोई कार्य्य करे परन्तु दैव यदि उससे विमुख रहता हैं तो उसके सम्पूर्ण अनुष्ठान बार बार नष्ट हो जाते। परन्तु कर्म्मोंके अनुष्ठान करनेवाले पुरुषोंक शङ्कारहित होकर अवश्य करने योग्य कर्म्मोंक सदासर्व्वदा करना योग्य है; कभी कर्त्तव्य कर्म्मोंके अनुष्ठानसे पीछे हटना उचित नहीं है; तब कार्य्यका होना और न होना दैवके आधीन है। देखिये हम लोगोंने कुन्तीपुत्रोंक विष पिलाया जतुगृहमें जलाया, और जूऐ खेलमें कपटताके सहित उन्हें ठगके नाना भातिके क्लेश दिये और राजनीतिके अवलम्ब उन्हें बनवासी बनाया। इस प्रकारसे जिन जि कर्म्मोंके अनुष्ठान हम लोगोंने यत्नपूर्व्वक किये दैवकी इच्छासे वे सम्पूर्ण कर्म्म निष्फल हुए। जो हो इस समय आप यत्नवान होकर प्राणपणसे युद्ध करनेमें प्रवृत्त होइये। हम लोगोंके दोनों सेनामें दैव यत्नवान् सेनाका पक्ष ही अवलम्बन करेगा, क्योंकि पाण्डवोंने वुद्धिपूर्व्वक किसी सत्कार्य्यका अनुष्ठान किया है और आपने वुद्धिहीनताके कारण किसी प्रकार

कार्य्यका अनुष्ठान किया है ऐसा निश्चय नहीं होता है—तब जो उन लोगोंके किये हुए सम्पूर्ण कार्य्य सद्रूपसे और तुम्हारे अनुष्ठित कार्य्य असद्रूपसे परिणत हुए हैं भाग्य ही उस विषयमें प्रमाण स्वरूप है। क्योंकि भाग्य प्राणियोंके निद्राकालमें भी जागता रहता है। जिस समय यह युद्ध उपस्थित हुआ, उस समय तुम्हारी ओर ही बहुतसी सेना तथा अनगिनत योद्धा थे; पाण्डुपुत्रोंकी उतनी सेना नहीं थी, परन्तु क्या ही आश्चर्य्यका विषय है, कि उनकी सेनाके पुरुषोंके थोड़े होने पर भी तुम्हारे अनगिनत योद्धाओंका वध होता है, हम लोगोंका बल पुरुषार्थ जो नष्ट होरहा है, वह सब दैवकी इच्छा ही समझनी चाहिये।

सञ्जय बोले, महाराज! राजा दुर्य्योधन और कर्ण आपसमें इसी प्रकार अनेक भांतिकी बात चीत कर रहे थे, उस समय युद्धभूमिमें पाण्डवोंकी सेना दिखाई देने लगी। तिसके अनन्तर तुम्हारे और पाण्डवोंकी ओरके रथी रथीसे गजपति गजपतिसे और पैदल चलनेवाले शूरवीर योद्धा लोग पदाति सेनाके शूरवीरोंके सम्मुख होकर अपने समान पुरुषोंके सङ्ग महाघोर संग्राम करने लगे। महाराज! तुम्हारा अविचार ही इस महाघोर संग्रामका मूल है।

१५० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! तुम्हारी हाथी, घोड़े और रथोंसे युक्त सम्पूर्ण सेना पाण्डवोंकी सेनाकी ओर दौड़ी और सम्पूर्ण योद्धा आपसमें युद्ध करने लगे। कौरव और पाञ्चाल योद्धालोग यमराजके समान क्रुद्ध होकर स्वर्ग लोकमें गमन करनेकी इच्छासे एक दूसरेके सम्मुख होकर धनुष बाण तोमर आदि अस्त्रोंसे लड़ने लगे। एक दूसरेके ऊपर शस्त्रोंसे प्रहार करनेवाले रथियोंका आपसमें महाघोर दारुण युद्ध होने लगा। उस समय युद्धमें मतवारे हाथी क्रुद्ध होकर दूसरे मतवारे हाथियोंके हृदयमें अपने दांतोंसे प्रहार करने लगे। उस महाघोर संग्रामभूमिमें घुड़सवार योद्धा लोग घुड़सवारोंके सम्मुख उपस्थित होकर अपने धनुष बाण शूल शक्ति और प्रास आदि अस्त्रोंसे एक दूसरेके शरीरको चत-विचत करने लगे। उस ही प्रकार सैकड़ों सहस्रों पैदल सेनाके योद्धा लोग नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके यत्नपूर्व्वक अपना पराक्रम प्रकाशित करते हुए एक दूसरेका नाश करने लगे। महाराज! जब पांचाल योद्धा लोग कुरुसेनाके सम्मुख स्थित होकर युद्ध करने लगे उस समय यह नहीं मालूम हो सकता था, कि कौनसे कुरुसेनाके योद्धा हैं; और कौनसे पाञ्चाल सेनाके वीर हैं, केवल उन लोगोंके मुखसे उनके नाम गोत्र और कुलका वृत्तान्त सुनकर हम लोग कुरुसेनाके और पाञ्चाल सेनाके पुरुषोंको मालूम करने लगे। इसी भांतिसे दोनों ओरके योद्धा लोग निर्भयचित्तसे रणभूमिके बीच घूमते हुए बाण शक्ति और फरसे आदि अस्त्रोंसे शत्रुसेनाके पुरुषोंका वध करके एक दूसरेको यमपुरीमें भेजने लगे।

महाराज! सूर्य्यके अस्त होने पर भी उन लोगोंके धनुषसे छूटे तथा हाथसे चलाये हुए बाण आदि अस्त्रशस्त्र चारो ओरसे इकबारगी इतनी अधिकतासे चलने लगे, कि सन्ध्याके समय कुछ भी सूझ न पड़ता था, परन्तु पाण्डवोंकी सेनाके पुरुष इस प्रकारसे युद्ध कर रहे थे, उस ही समय कुरुराज दुर्य्योधनने शत्रुसेनाके बीच प्रवेश किया। उस समय राजा दुर्य्योधनने सिन्धुराज जयद्रथके मरनेसे अत्यन्त दुःखित होकर अपने प्राणकी आशा छोड़के पाण्डवोंकी सेनाके बीच प्रवेश किया, तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनने शत्रुसेनाके वीरोंके सम्मुख जानेके समय रथकी घरघराहटसे पृथ्वीको कम्पाते

और दसोंदिशाको अनुनादित करते हुए पाण्ड-वोंकी सेनाके बीच गमन किया। उस समय पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंकेसङ्ग राजा दुर्य्यो धनका महाघोर संग्राम होने लगा। जब तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन अपने वाणरूपी अग्निसे शत्रु-सेनाके पुरुषोंको पीड़ित करने लगे उस समय ऐसा मालूम होने लगा, मानो दोपहरके सूर्य्य अपनी प्रचण्ड किरणोंसे जगतके प्राणियोंको भस्म किये डालते हैं। उस समय पाण्डवोंकी सेनाके पुरुष भरतकुलभूषण दुर्य्योधनकी ओर देखनेमें भी समर्थ नहीं हुए। वे सम्पूर्ण योद्धा लोग शत्रुओंके जीतनेमें उत्साह रहित होकर रणभूमिमें दुर्य्योधनके सन्मुखसे भागनेमें तत्पर हुए। महाराज! पाञ्चाल योद्धा लोग धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी महात्मा दुर्य्योधनके चोखे वाणोंसे पीड़ित होके इधर उधर भागने लगे और पाण्डवोंकी सेनाके योद्धा लोग भी राजा दुर्य्योधनके तीक्ष्ण बाणोंसे मरकर पृथ्वी में गिरने लगे। उस समय तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन ने युद्धमें जैसा कर्म्म किया, तुम्हारी ओरके कोई पुरुष भी वैसे कर्म्मको करनेमें समर्थ नहीं हुए। जैसे मतवारा हाथी तालावमें फूले हुए कमलपुष्पोंके समूहको तोड़के नष्ट कर देता है, वैसे ही राजा दुर्य्योधन पाण्डवी सेनाके योद्धाओंको अपने बाणोंसे छिन्नभिन्न करके उनका नाश करने लगे। कमलके फूलोंसे युक्त तालाव जैसे सूर्य्य और वायुके प्रभावसे सूख कर शोभा रहित होजाता है, वैसे ही पाण्ड-वोंकी सेना भी तुह्मारे पुत्र दुर्य्योधनके तेज तथा पराक्रमके प्रभावसे तेज रहित होगई।

भीमसेन और पाञ्चाल सेनाके मुख्य मुख्य योद्धा लोग तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनके अस्त्रोंसे अपनी सेनाके पुरुषोंका नाश होते देख, सब कोई मिलकर उनकी ओर दौड़े। कुरुराज दुर्य्योधनने भीमसेन आदि पाण्डवोंको अपनी ओर आते देखकर भीमसेनको दस, नकुल सहदेवको तीन तीन, विराट और द्रुपदको छः, शिखण्डीको एक सौ, धृष्टद्युम्नको सत्तर, राजा युधिष्ठिर को सात और केकय तथा चेदीदेशीय योद्धाओंको अनगिनत तीक्ष्ण वाणों से विद्ध किया। तिसके अनन्तर सात्यकिको पांच, द्रौपदीके पुत्रों और घटोत्कचको तीन तीन वाणोंसे विद्ध करके सिंहनाद किया। उस महाघोर संग्रामके समय वह प्रजा समूहके नाश करनेवाले यमराज के समान क्रुद्ध होकर घोड़े, हाथी, रथी और पैदल- सेना के सैकड़ों योद्धा ओंको अपने अत्यन्त तीक्ष्ण वाणोंसे खण्ड खण्ड करके पृथ्वीमें गिराने लगे। महाराज! पाण्डवोंकी सेनाके पुरुष तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनके वाणोंसे पीड़ित होकर रणभूमिसे चारों ओर भागने लगे। अधिक क्या कहा जावे उस समय पाण्डवोंकी सेनाके योद्धा लोग प्रचण्ड तेजस्वी सूर्य्यकी भांति कुरुराज दुर्य्योधनको अपनी सेनाके पुरुषोंको तीक्ष्ण वाणोंसे भस्म करते देख उनकी ओर देखनेमें भी समर्थ न हुए।

तिसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर क्रुद्ध होकर विजयकी इच्छासे कुरुराज दुर्य्योधनकी ओर दौड़े। उस समय शत्रुनाशन पराक्रमी कुरु नन्दन राजा युधिष्ठिर और दुर्य्योधन राज्यके निमित्त युद्धभूमिमें एक दूसरेके सन्मुख उपस्थित हुए। पहिले राजा दुर्य्योधनने क्रुद्ध होकर दस तीक्ष्ण बाणोंसे युधिष्ठिरको विद्ध करके फिर एक बाणसे उनके रथकी ध्वजाका दण्ड काट दिया। अनन्तर तीन बाणोंसे दुर्य्योधनने युधि ष्ठिरके सारथी इन्द्रसेनके ललाटमें प्रहार किया। फिर एक वाणसे उनके धनुषको काट कर चार वाणसे उनके रथके चारों घोड़ोंको विद्ध किया। तब धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर क्षणभरके बीच दूसरा धनुष ग्रहण करके वेगपूर्व्वक दुर्य्यो धनके सङ्ग युद्ध करने लगे। उन्होंने सूर्य्यकिरणोंके समान प्रकाशमान एक प्रचण्ड वाण धनुषपर चढ़ाकर अरेतू अब मरा चाहता है, ऐसा कहके

दुर्य्योधनकी ओर चलाया। कुरुराज दुर्य्योधन राजा युधिष्ठिरके चलाये हुए उस वाणसे अत्यन्त बिद्ध और मूर्च्छित होकर रथमें बैठ गये। महाराज! उस समय युद्धभूमिमें चारों ओरसे पाञ्चाल योद्धा लोग प्रसन्न होकर कहने लगे "कुरुराज दुर्य्योधन मारे गये! राजा दुर्य्योधन मारे गये।" इसी भांति चारों ओरसे तुमुल शब्द होने लगा और वाणोंके शब्दके सहित मिलकर महाघोर शब्द उत्पन्न हुआ। उस ही समय द्रोणाचार्य्य शीघ्रताके सहित युद्धभूमिमें वहांपर उपस्थित हुए और दुर्य्योधन भी सावधान होकर एक दृढ़धनुष ग्रहण करके हर्ष पूर्व्वक युधिष्ठिरको "खड़ा रह खड़ा रह!" कहके उनकी ओर दौड़े। तब पाञ्चाल योद्धा लोग विजयकी इच्छा करके शीघ्रताके सहित दुर्य्योधनकी ओर दौड़े। महाराज! जैसे प्रचण्ड वायु पत्थरकी वर्षा करने वाले बादलोंको वेगपूर्व्वक छिन्न भिन्न कर देता है, वैसे ही द्रोणाचार्य्य कुरुराज दुर्य्योधनकी रक्षाके वास्ते यत्नवान होकर दुर्य्योधनकी ओर आये हुए पाञ्चाल योद्धाओंको रोकके उनका वध करने लगे। तिसके अनन्तर युद्धभूमिमें विजयकी इच्छा करनेवाले कौरव और पाण्डवोंको सेनाके योद्धाओंका महाघोर तुमुल युद्ध होने लगा।

१५१ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय। उस समय जब पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने शासनको अतिक्रम करनेवाले तथा नीच बुद्धिवाले दुर्य्योधनको तिरस्कृत करके पाण्डवोंकी सेनामें प्रवेश किया; और जब अत्यन्त पराक्रमी महाधनुर्द्धर द्रोणाचार्य्य शत्रुसेनाके बीच प्रवेश करके स्थिरताके सहित रणभूमिमें घूमने लगे तब पाण्डवोंने किस भांतिसे उन्हें निवारण किया? उस महा घोर संग्रामके समय जब द्रोणाचार्य्य अनगिनत शत्रुसेनाके पुरुषोंके नाश करनेमें प्रवृत्त हुए तब मेरी सेनाके किन किन योद्धाओंने दहिने चक्र और कौनसे योद्धाओंने उनके बायें चक्रकी रक्षा करी थी और वह महा धनुर्द्धर द्रोणाचार्य्य जब युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए तब मेरी ओरके कौनसे योद्धा लोग उनकी पृष्ठरक्षा करनेमें प्रवृत्त हुए थे? हे सञ्जय! मुझे बोध होता है कि जिस समय द्रोणाचार्य्य पाञ्चाल सेनाके बीच प्रविष्ट हुए होंगे उस समय वे सम्पूर्ण योद्धा इस भांतिसे भयभीत होगये होंगे जैसे शीतकालमें अत्यन्त शीतसे पशुओंके समूह कांपते हुए दीख पड़ते हैं। मुझे निश्चय होरहा है कि उस समय शत्रुसेनाके योद्धा लोग शिशिरऋतुके गौओंके समूहकी भांति कांपने लगे थे।

सञ्जय बोले महाराज! पृथापुत्र महाधनुर्द्धर अर्ज्जुन और सात्यकि राजा जयद्रथका वध करनेके अनन्तर धर्म्मराज युधिष्ठिरसे भेंट करके फिर युद्ध करनेके वास्ते द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। तिसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर और भीमसेन अलग अलग सेना लेकर द्रोणाचार्य्यकी ओर बढ़े। महाराज! इसी प्रकारसे द्रोणाचार्य्यके सङ्ग युद्धकी इच्छा करके पराक्रमी सहदेव बुद्धिमान नकुल और विराट भी केकय मत्स्य और शाल्व देशीय शूरवीरोंके सहित द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। इसके अतिरिक्त पाञ्चाल-सेनासे रक्षित धृष्टद्युम्नके पिता पाञ्चालराज द्रुपद द्रोपदीके पांचो पुत्र और राक्षस घटोत्कच ये सब कोई अपनी अपनी सेनाके सहित तेजस्वी द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। युद्धविद्यामें निपुण छः हजार पाञ्चाल और प्रभद्रक योद्धा लोग शिखण्डीको अगाड़ी करके द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। इसके अतिरिक्त पाण्डवोंकी सेनाके और भी दूसरे बहुतेरे महारथ योद्धा लोग पुरुष शार्द्दूल ब्राह्मणश्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यके सम्मुख उपस्थित हुए। महाराज! जब

वे सम्पूर्ण योद्धा इस प्रकारसे युद्धभूमिमें इकट्ठे होकर संग्राम करनेमें प्रवृत्त हुए तब प्राणियोंके अकल्याणकारी शूरवीरोंके नाश करनेवाली और कादरोंकोभयभीत करनेवाली अत्यन्त भयङ्करी रात्रिका समय उपस्थित हुआ। क्योंकि उस महाघोर रात्रिके समय अनगिनत हाथी घोड़े और मनुष्योंका प्राणनाश हुआ था। उस 'महा भयङ्करी रात्रिके समय सियार अपने बिकट मुखोंको बाये हुए चारों ओरसे डरावनीबोली बोलते हुए महाभयका विषय सूचित कराने लगी। विशेष करके कौरवोंकी सेनाके बीच नाना प्रकारके अशकुन तथा मांस भक्षण कर-नेवाले जीव और उल्लू आदि पक्षी आनेवाली महाभयकी सूचना देने लगी। महाराज! तिसके अनन्तर सैकड़ों ढोल मृदङ्ग औरनगाड़े आदि बाजोंके शब्द हाथियोंकी चिंगाघाड़ घोड़ोंकी हिनहिनाहट और टापका शब्द भेरी आदि युद्धके जुभाऊ बाजोंके सङ्ग मिलकर महाघोर तुमुल शब्द उत्पन्न हुआ। उस ही रात्रिके समय पाञ्चाल और सृञ्जयोंके सङ्ग द्रोणाचार्य्यका महाघोर भयङ्कर संग्राम होने लगा। उस समय महाघोर अन्धकारसे सम्पूर्ण दिशा छिप गयीं और वीरोंके पावके ठोकरोंसे इतनी धूलि उड़के आकाश मण्डलमें पूरित होगयी कि उस समय कुछ भी न सूझ पड़ता था'परन्तु क्षण भरके अनन्तर हाथीघोड़े और मनुष्योंके रुधिर बहनेसे हम लोग मोहित होकर उस रणभूमिको धूलिरहित ही सम-झने लगे महाराज। रात्रिके समय पर्वत तथा बांसके जङ्गलोंके बीच अग्निके लगनेसे जैसा शब्द उत्पन्न होता है वैसे ही सेनाके शूरवी-वीरके अस्त्र शस्त्रोंकी बार बार खटपटाहटसे रणभूमिके बीच महाघोर शब्द सुनाई देने लगा। मृदङ्ग बांसुरी झांझ ढोल और नगाड़े आदि जुझाऊ बाजोंके सहित घोड़े हाथी मनुष्य और अस्त्र शस्त्रोंका शब्द मिलकर वह शब्द सम्पूर्ण दिशा और आकाशमण्डलमें गूंज उठा। उस रात्रिके समय चारों ओर अन्धेरा छा रहा था इससे दोनों सेनाके पुरुष उन्मत्तके समान दिखाई देने लगे। अधिक क्या कहा जावे उस समय अपनी सेना और शत्रुसेनाके कोई पुरुष भी नहीं चीन्ह पड़ते थे। उसके अनन्तर जैसे रुधिर बहनेसे धूलिका उड़ना बन्द होगया वैसे ही शूरवीर पुरुषोंके सुवर्ण भूषित वर्म्म और नाना प्रकारके आभूषणोंकी चमक दमकसे कुछ अन्धकार दूर होगया; और उस समय मणिरत्नोंसे भूषित वह भारती सेना इस प्रकार शोभित होने लगी जैसे तारोंके समूहसे आकाश शोभायमान लगता है। शक्ति आदि अस्त्र शस्त्र और ध्वजा पताकासे युक्त वह सेना कौवे कङ्क गिद्ध तथा सियारोंकी डरावनी बोली और हाथी घो[illegible] शूरवीरोंके सिंहनाद और अस्त्र शस्त्रोंकी [illegible] पटाहटके शब्दसे अत्यन्त ही भयानक मा[illegible] होने लगी। उस समय रोएं को खड़ा क[illegible] वाला इस प्रकार महाघोर कोला[illegible] होने लगा मानो सम्पूर्ण दिशाओं[illegible] स्तम्भित करके इन्द्रके वज्रका शब्द सुन[illegible] देरहा है। रात्रिके समयमें वह भारती सेना कवच कुण्डल, स्वर्णमुद्रा तथा नाना प्र[illegible] रके अस्त्र-शस्त्रोंसे प्रकाशित होकर अत्य[illegible] शोभित हुई और उस सेनाके बीच सुवर्णभूषि[illegible] हाथियोंके समूह इस प्रकार शोभित होने [illegible] जैसे बिजलीसे युक्त बादल शोभायमान लग[illegible] है। शक्ति ऋष्टि गदा बाण मूसल फरसे [illegible] पट्टिश आदि अस्त्र शस्त्रोंके चलनेसे उस स[illegible] ऐसा मालूम होने लगा, मानो चारों ओर अग्निकी वर्षा होरही है। महाराज! तिस अनन्तर सेनाके बीच द्रोणाचार्य्य और पाञ्[illegible] रूपी बादलोंका उदय हुआ, कुरुराज दुर्यो[illegible] उन बादलोंको अगाड़ी बढ़ानेवाले वायुरू[illegible] हुए; रथ हाथी और घोड़े ही उस सम

बकपांति रूपी बोध हुए, जुझाऊ बाजोंका शब्द ही उसमें बादल गर्ज्जनके समान मालूम होने लगा धनुष और ध्वजा बिजलीके समान दीख पड़ते थे तलवार शक्ति और गदा आदि अस्त्र उसमें वज्र समान मालूम होते थे और लगातार वाणोंका चलाना ही उसमें जल-वर्षाके समान बोध होने लगा। युद्धकी अभिलाष करनेवाले शूरवीर पुरुषोंने उस महाघोर भयङ्कर दुःखसे तरने योग्य भारती सेनाके बीच प्रवेश किया। महाराज। शूरवीरोंके हर्ष और कादरोंके भयको बढ़ानेवाली महाघोर कोलाहल युक्त भयङ्कर रात्रिके समय दोनों सेनाके पुरुषोंका दारुण युद्ध होने लगा; पाण्डव और सृञ्जय योद्धा लोग मिलकर क्रोधपूर्व्वक द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। परन्तु जो बीरपुरुष उस समय महात्मा द्रोणाचार्य्यके सम्मुख उपस्थित हुए द्रोणाचार्य्यने उन सम्पूर्ण योद्धाओंको युद्धभूमिसे विमुख कर दिया और कितने ही शूरवीरोंका बध करके पृथ्वीमें गिरा दिया। तिसके अनन्तर द्रोणाचार्य्यने उस रात्रिके समय अपने तीक्ष्ण वाणोंसे एक हजार हाथी दश हजार रथी पचास हजार पैदल सेनाके योद्धाओं और एक अर्व्बुद घोड़ोंको छिन्न भिन्न कर तथा उनका बध करके पृथ्वीमें गिरा दिया।

१५२ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय। युद्धभूमिमें महापराक्रमी अत्यन्त बलवान धनुर्द्धारी द्रोणाचार्य्यने जब क्रोधपूर्व्वक सृञ्जयोंकी सेनामें प्रवेश किया उस समय तुम लोगोंका चित्त कैसा हुआ था? और उन्होंने शासन अतिक्रम करनेवाले मेरे पुत्र दुर्य्योधनका तिरस्कार करके जब पाण्डवोंकी सेनामें प्रवेश किया उस समय पृथापुत्रोंने किस कार्य्यका अनुष्ठान किया? क्योंकि युद्धमें अपराजित महातेजस्वी द्रोणाचार्य्य महा-वीर जयद्रथ और भूरिश्रवाके बधसे क्रुद्ध होकर पाञ्चाल सेनाकी ओर दौड़े थे। इससे जब वह पराक्रमी धनुर्द्धारी शत्रुनाशन द्रोणाचार्य्यने शत्रु-सेनाके बीच प्रवेश किया उस समय तुम लोगोंके चित्तमें कैसा विचार उत्पन्न हुआ था और दुर्य्योधनने भी उस समयके अनुसार किस कर्त्तव्य कार्य्यका अनुष्ठान किया था? हे सञ्जय। दुर्य्योधनकी अभिलाषाको पूरी करनेके वास्ते जब द्रोणाचार्य्यने शत्रुसेनाकी ओर गमन किया था तब मेरी ओरके कौन कौन योद्धा उनके अनुगामी हुए थे? और युद्ध करनेके समय कौनसे योद्धा उनके पृष्ठरक्षामें नियुक्त हुए थे? फिर रणभूमिके बीच जब वह शत्रुओंके संहार करनेमें प्रवृत्त हुए तब पाण्डवोंकी सेनाके कौन कौन बीर उनके सम्मुख उपस्थित हुए? हे सञ्जय! मुझे बोध होता है जैसे शिशिर ऋतुमें शीतसे कांपते हुए गौवोंका समूह कम्पित होता है वैसे ही भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्यके वाणोंसे पीड़ित होकर पाण्डव लोग भी कांपने लगे होंगे। ओहो। वह शत्रुओंके नाश करनेवाले पुरुष शार्द्दूल महाधनुर्द्धर द्रोणाचार्य्य पाञ्चाल सेनाके बीच प्रवेश करके किस प्रकार मारे गये? उस रात्रिके समय जब युद्धके निमित्त रणभूमिमें अपनी सेना सहित इकट्ठे हुए महारथ योद्धा लोग इधर उधर अपने समान वीरोंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त होकर चारों ओर शत्रु-सेनाको तितर बितर करने लगे उस समय तुम लोगोंके चित्तमें कैसा विचार उत्पन्न हुआ था? तुम कहते हो कि मेरी ओरके योद्धा लोग उस रात्रिके समय बहुतेरे मारे गये कितने ही युद्ध-भूमिसे भागे कितने ही पराजित हुए और रथियोंकी सेनाके बीच कितने ही रथभ्रष्ट होगये थे। भला कहो तो सही, उस महाघोर अन्धकारके समय जब तुम लोग पाण्डवोंकी सेनाके वीरोंके सम्मुखसे तितर बितर होकर रणभूमिके बीच मोहित होगये थे तब तुम-

लोगोंकी वृद्धि कैसे स्थिर रह सकती थी ? तुम यह भी कहते हो कि पाण्डवोंकी सेनाके पुरुष जययुक्त हर्षित उत्साही और आनन्दित थे; और मेरी सेनाके पुरुष भयभीत तथा शत्रुओंके जीतनेमें उत्साहरहित होगये थे जो हो उस रात्रिके समय संग्राममें पीछे न हटनेवाले कौरव और पाण्डवोंका जैसा युद्ध दीख पड़ाथा वह तुम मेरे समीप वर्णन करो।

सञ्जय बोले महाराज! जब उस रात्रिके समय भयङ्कर सग्राम होने लगा तब पाण्डव लोग सोमकवंशियोंके सहित मिलकर द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। परन्तु द्रोणाचार्य्यने धृष्टद्युम्नके पुत्रों और कैकय देशीय वीरोंका अपने तीक्ष्ण बाणोंसे बध करके उन्हें यमपुरीमें भेज दिया। महाराज! उस समय जब महारथी भरद्वाज पुत्र द्रोणाचार्य्य पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंका नाश करने लगे, तब प्रतापवान शिविराज उनके सम्मुख उपस्थित हुए। द्रोणाचार्य्यने पाण्डवोंकी ओरके महारथ योद्धा शिविराजको अपने सम्मुख आते देख, लोहमय दस बाणोंसे उन्हें विद्ध किया; शिविराजने भी तीस बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको विद्ध करके फिर गर्व्व पूर्व्वक उनके सारथीको भल्लास्त्रसे मारकर पृथ्वीमें गिरा दिया। तब द्रोणाचार्य्यने महात्मा शिविराजके सारथी और घोड़ोंका बधकरके एक बाणसे उनके शिरस्त्राण भूषित सिरको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। अनन्तर दुर्य्योधनने द्रोणाचार्य्यके रथ हांकनेके वास्ते एक दूसरा सारथी भेज दिया, उसने आके द्रोणाचार्य्यके घोड़ोंकी बागडोर ग्रहण करी, तब पराक्रमी द्रोणाचार्य्य फिर शत्रुओंकी ओर दौड़े। महाराज! पहिले भीमसेनने कलिङ्गराजका वध किया था, इसही कारण इस समय कलिङ्गराजके पुत्र अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपनी सेनाके सहित भीमसेनकी ओर दौड़े, कलिङ्गराजपुत्रने भीमसेनको पहिले पांच बाणोंसे विद्ध करके फिर सात बाणोंसे विद्ध किया। तिसके अनन्तर फिर उन्होंने तीन बाणोंसे भीमसेनके सारथी विशोकको और एक बाणसे उनके रथकी ध्वजाको विद्ध किया। तब भीमसेन क्रुद्ध होके अपने रथसे कूदके कलिङ्गराज पुत्रके रथ पर जा चढ़े और उस क्रोधी वीर राजपुत्रके शरीरमें मुष्टिकासे प्रहार किया। भीमकी मुष्टिका प्रहारसे कलिङ्गराजपुत्रकी हड्डियां छितरा गयीं और वह प्राणरहित होके पृथ्वीमें गिर पड़े। महाराज! भीमसेनका वैसा कर्म्म देखकर कर्ण और कर्णके भाइयोंसे न सहा गया, वे सब कोई मिलकर विषधर सर्पके समान तीक्ष्ण बाणोंसे भीमसेनके ऊपर प्रहार करने लगे। तिसके अनन्तर भीमसेन कलिङ्ग राजपुत्रके रथसे उतरकर ध्रुवके समीप उपस्थित हुए। ध्रुव लगातार भीमके ऊपर बाणोंकी वर्षा करने लगे, परन्तु भीमसेनने एक मुष्टिकाके प्रहारसे उन्हें भी चेत रहित करके पृथ्वीमें गिराया। महाबली भीमसेन ध्रुवका बध करके जयरातके रथपर जा चढ़े और बारबार सिंहनाद शब्द सहित गर्ज्जने लगे अनन्तर भीमसेनने जयरातको बायें हाथसे उठाकर एक ही थप्पड़से कर्णके सम्मुखहीमें उन्हें प्राणरहित करके पृथ्वीमें गिराया। तब कर्णने एक सुवर्णभूषित शक्ति ग्रहण करके भीमसेनकी ओर चलायी, पाण्डपुत्र पराक्रमी भीमसेनने कर्णके हाथसे छूटी हुई उस शक्तिको निर्भयचित्तसे ग्रहण करके उसे फिर कर्ण हीकी ओर चलाया, शकुनिने उस शक्तिको सहसा कर्णकी ओर आते देख उत्तम पानीसे बुझे हुए अपने तीक्ष्ण बाणोंसे मार्गहीमें काटके गिरा दिया। महाराज! अद्भुत पराक्रम प्रकाशित करनेवाले भीमसेन रणभूमिके बीच इसी प्रकारसे अद्भुत कार्य्य करके फिर अपने रथपर चढ़कर तुम्हारी सेनाकी ओर दौड़े। तब तुम्हारे पुत्र लोग भीमसेनको क्रोधी यमराजके समान आते

बढ़े आते देखकर अत्यन्त क्रुद्ध हुए और अपने बाणोंकी वर्षासे उन्हें छिपाने लगे। तिसके अनन्तर भीमसेनने बाणोंसे युद्धभूमिमें स्थित दुर्म्मदके घोड़े और सारथीका बध करके यमलोकमें भेजा। दुर्म्मद घोड़े और सारथीसे रहित रथसे कूदकर अपने भाई दुष्कर्णके रथपर चढ़ गये। महाराज! जैसे देवासुर संग्राममें मित्रावरुण दैत्यसत्तम तारककी ओर दौड़े थे वैसेही शत्रुनाशन वे दोनों भाई युद्धभूमिमें एक ही रथपर चढ़के भीमसेनकी ओर दौड़े। इसी भांतिसे एक ही रथपर चढ़े हुए दुर्म्मद और दुष्कर्ण अपने बाणोंके समूहसे भीमसेनको बिद्ध करने लगे। महाराज। शत्रुओंके नाश करनेवाले पाण्डुपुत्र भीमसेनने कर्ण अश्वत्थामा दुर्य्योधन, कृपाचार्य्य सोमदत्त और वाह्लिकके सम्मुखहीमें दुष्कर्णके उस रथको अपने चरणप्रहारसे खण्ड खण्ड करके पृथ्वीमें गिरा दिया अनन्तर भीमसेनने बलवान पराक्रमी दुर्म्मद और दुष्कर्णको मुष्टिकाके प्रहारसे चेतरहित करके सिंहनाद किया। महाराज। सेनाके पुरुष भीमसेनके ऐसे कठिन कार्य्यको देखकर हाहाकार शब्दके सहित महाघोर कोलाहल करने लगे। राजा लोग कहने लगे ये निश्चय ही रुद्र है भीमरूप धारण करके कौरवोंकी सेनाके सङ्ग युद्ध कर रहे हैं। राजा लोग ऐसे ही बचन कहते हुए कातर होके अपने हाथी और घोड़ोंको चलाकर युद्धभूमिसे भागने लगे। अधिक क्या कहा जावे उस समय तुम्हारी सेनाके पुरुष ऐसे भयभीत होगये कि दो पुरुष एक सङ्ग मिलके गमन न कर सके।

महाराज। उस रात्रिके समय जब तुम्हारी सेना इस प्रकारसे छिन्न भिन्न होगई। तब कमलनेत्र और प्रफुल्लित चित्तवाले महाबलवान भीमसेनने मुख्य मुख्य राजाओंमें प्रशंसित होकर अपनी सेनाके सहित धम्मराज युधिष्ठिरके समीप उपस्थित होके उन्हें प्रणाम किया। धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर नकुल सहदेव द्रुपद विराट और केकय आदि देशोंके सम्पूर्ण राजा लोग भीमसेनका वैसा कठिन कार्य्य देखकर अत्यन्त हर्षित हुए। जैसे अन्धकासुरके मरने पर देवताओंने हर्षित होकर अन्धकासुरके नाश करनेवाले महादेवकी पूजा किया था वैसे ही उन सम्पूर्ण राजाओंने भीमसेनका अत्यन्त ही सन्मान किया। महाराज! वरुण पुत्रोंके समान पराक्रमी तुम्हारे पुत्र लोग पाण्डवोंको हर्षित देखकर बहुत ही क्रोधित हुए और हाथी घोड़े रथ तथा पैदल चलनेवाले योद्धाओंकी चतुरङ्गिनी सेनाके सहित महात्मा द्रोणाचार्य्यको अगाड़ी करके युद्धके वास्ते दृढ़ताके साथ चारो ओरसे भीमसेनको घेर लिया। तिसके अनन्तर उस महाघोर अन्धकारसे युक्त रात्रिके समय कौवे गिद्ध और भेड़िये आदि मांसभक्षी जीवोंके हर्षको बढ़ानेवाले महात्मा क्षत्रियोंका आपसमें महाघोर भयङ्कर तथा अद्भुत संग्राम होने लगा।

१५३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज! जयद्रथ बधके समय युद्धभूमिके बीच पृथ्वीपर बैठे हुए सोमदत्तपुत्र भूरिश्रवा सात्यकिके हाथसे मारे गये थे; इस समय भूरिश्रवाके पिता सोमदत्त सात्यकिके ऊपर अत्यन्त क्रुद्ध होकर यह वचन कहने लगे। हे सात्यकि। पहिले महात्मा देवताओंसे जिस प्रकार क्षत्रियोंका धर्म्म निश्चित किया गया है; तुम उस धर्म्मको छोड़के क्यों डाकुओंके धर्म्ममें रत हुए। क्षत्रीयधर्म्ममें निष्ठावान बुद्धिमान पुरुष रणभूमिसे भागनेवाले कातर और अस्त्ररहित पुरुषके ऊपर कैसे शस्त्रसे प्रहार कर सकते हैं! विशेष करके वृष्णिवंशियोंके बीच तुम और प्रद्युम्न दोनों

हो महारथी कहके विख्यात हो, तब तुमने किस भांति अर्जुनके बाणोंसे भुजा कटनेपर रणभूमिके बीच बैठे हुए मेरे पुत्र भूरिश्रवाके ऊपर नीच पुरुषोंकी भांति प्रहार करके नरकमें गमन करनेका कार्य्य किया है ? अरे नीच पुरुष दुष्टात्मा। चाहे जो हो इस समय तूं अपने किये हुए कर्म्मोंका फल भोग करेगा। अरे मूढ़ ! मैं सुकृत धर्म्म और पुत्रोंकी शपथ करके कहता हूं कि आज मैं अपने पराक्रमको प्रकाशित करके अवश्य ही अपने बाणोंसे तुम्हारा सिर काटूंगा। अरे वृष्णीकुल कलङ्क ! तू अपनी वीरताका अत्यन्त ही अभिमान करता है परन्तु यदि पृथापुत्र अर्जुन आज रात्रिके समय तेरी रक्षा न करेंगे तो मैं इस ही रात्रिके बीच तेरे भाई और पुत्रोंके सहित तेरा बध करूंगा ; यदि तुम्हारा बध न कर सकूं तो मैं अवश्य ही महाघोर नरकमें पतित होऊंगा। महाबली सोमदत्तने ऐसा बचन कहके क्रोध पूर्ब्बक शंख बजा कर सिंहनाद किया।

तिसके अनन्तर कमल नेत्रवाले सिंहके समान पराक्रमी बलवान सात्यकि अत्यन्त क्रुद्ध होकर सोमदत्तसे बोले, हे कौरव्य। तुमसे अथवा दूसरे चाहे जिस पुरुषके सङ्गमें युद्ध क्यों न होवे मेरे चित्तमें युद्ध करनेके समय तनिक भी भय नहीं होता। अधिक का कहूं, यदि तुम सम्पूर्णसेनासे रक्षित होकर भी मेरे सङ्ग युद्ध करो तो भी मेरे चित्तमें किञ्चित मात्र भी भय नहीं हो सकता। हे कौरव ! मैं क्षत्रीय धर्म्ममें स्थित हूं इससे तुम साधुपुरुषोंसे असम्भव केवल वाक्युद्धके प्रभावसे मुझे भयभीत न कर सकोगे। यदि मेरे सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते तुम्हें अभिलाषा हुई है तो तुम पहिले दयारहित होकर मेरे शरीर पर अपने तीक्ष्ण बाणोंसे प्रहार करो। जैसे तुम्हारे वीरपुत्र भूरिश्रवाके मरनेसे उनके भाई शलने भी भ्रातृशोकसे पीड़ित होकर यमलोकमें गमन किय है, आज मैं तुम्हें भी बन्धुबान्धव और पुत्रों सहित यमलोकमें पहुंचाऊंगा। तुम कुरुकुल उत्पन्न हुए हो विशेष करके महारथ यो कहके विख्यात हो, इस समय यत्नवान होक युद्धभूमिमें स्थित रहो। जिसमें दान इन्द्रि निग्रह सदाचार अहिंसा लज्जा धैर्य्य और क्षम आदि सम्पूर्ण गुण निवास करते हैं, जिस रथकी ध्वजा पर मृदङ्ग लगे हैं—उस धर्म्मरा युधिष्ठिरके तेजसे ही शकुनि और कर्ण आदि तुम सब कोई पहिलेसेही मृत-प्राय होगये हो इस समय संग्रामभूमिमें केवल मृत्युके मुख गमन करोगे। अरे पापी। यदि तू युद्धसे डरके रणभूमिसे भाग जावे तभी मेरे हाथसे बच सकेगा, नहीं तो मैं युद्धभूमिमें क्रुद्ध होकर यदि पुत्रोंके सहित तुम्हारा नाश न करूं तो कृष्णके चरण और अपने सुकृत आदि कर्म्मोंकी शपथ करके कहता हूं कि, ऐसा न करनेसे मुझे नरकमें जाना पड़ेगा। पुरुषश्रेष्ठ सोमदत्त और सात्यकि आपसमें ऐसे ही बचन कहके शस्त्र चलानेमें प्रवृत्त हुए।

तिसके अनन्तर राजा दुर्य्योधन एक हजार रथी और दश हजार हाथी लेकर सोमदत्तको घेर युद्धभूमिमें स्थित हुए। महाराज! सम्पूर्ण शस्त्रधारियोंमें मुख्य तुम्हारे शाले बज्रके समान शरीरवाले महाबाहु युवा शकुनि भी इन्द्रके समान पराक्रमी पुत्र पौत्र और भाइयोंके सहित उस ही स्थानपर स्थित हुए। अनन्तर बुद्धिमान शकुनिकी ओरसे एक लाख महाधनुर्द्धर घुड़सवार सोमदत्तकी चारो ओरसे घेरकर उनकी रक्षा करने लगे। इस प्रकार राजा सोमदत्त अनेक मुख्य मुख्य श वीरोंसे रक्षित होकर अपने बाणोंकी वर्षा सात्यकिको छिपाने लगे। तब धृष्टद्युम्न सात्यकिको सोमदत्तके तीक्ष्णबाणोंके जालमें छिपे देख कर क्रोधपूर्ब्बक अपनी बड़ी सेनाके सहित आ

पर उपस्थित हुए। महाराज! उस समय जब दोनों सेनाके योद्धा लोग आपसमें एक दूसरेके ऊपर अस्त्र-शस्त्रोंसे प्रहार करते हुए युद्ध करने लगे, उस समय उन शूरवीरोंके संग्रामके समय ऐसा शब्द सुनाई देने लगा; जैसे प्रचण्ड वायुके चलनेसे समुद्रकी प्रबल लहरका शब्द सुन पड़ता है। तिसके अनन्तर सोमदत्तने नव बाणों से सात्यकिको विद्ध किया; सात्यकिने भी कौरवोंमें मुख्य सोमदत्तको नव बाणोंसे विद्ध किया। सोमदत्त दृढ़ धनुर्द्धारी बलवान सात्यकिके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध हुए और मूर्च्छित होकर रथका दण्ड पकड़के रथमें बैठ गये। उनके रथका सारथी अपने स्वामी महावीर सोमदत्त को मूर्च्छित देखकर शीघ्रताके सहित रथ हांकके रणभूमिसे पृथक हुआ। द्रोणाचार्य्य सोमदत्तको सात्यकिके बाणोंसे पीड़ित तथा मूर्च्छित देखकर उसके बध करनेकी इच्छासे वहांपर उपस्थित हुए। राजा युधिष्ठिरने द्रोणाचार्य्यको सात्यकिके समीप आया हुआ देख कर उसकी रक्षा करनेके वास्ते अपनी सम्पूर्ण सेना सङ्ग लेकर महात्मा द्रोणाचार्य्यको चारों ओरसे घेर लिया। तिसके अनन्तर जैसे तीनों लोकके विजयकी इच्छासे देवता और असुरोंका युद्ध हुआ था, वैसे ही द्रोणाचार्य्यके सङ्ग महात्मा पाण्डवोंका महाघोर संग्राम होने लगा। महातेजस्वी भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्य अपने तीक्ष्ण बाणोंसे पाण्डवोंकी सेनाको परिपूरित करके राजा युधिष्ठिरको विद्ध करने लगे। तिस के अनन्तर द्रोणाचार्य्य सात्यकिको दश, धृष्टद्युम्नको पचीस, भीमसेनको नव, नकुलको पांच सहदेवको आठ, शिखण्डीको एक सौ, द्रौपदी के पांचो पुत्रोंको पांच पांच, मत्स्यराज विराट को आठ, राजा द्रुपदको दश, युधामन्युको तीन, उत्तमौजाको छः और सेनाके दूसरे सम्पूर्ण पुरुषोंको अनगिनत बाणोंसे विद्ध करके युधिष्ठिरकी ओर दौड़े। महाराज! पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होके भयपूर्व्वक आर्त्तनाद करते हुए चारों ओर भागने लगे। कुन्तीपुत्र अर्ज्जुन अपनी सेनाके पुरुषोंको द्रोणाचार्य्यके सम्मुख से भागते देख, अत्यन्त क्रुद्ध होकर शीघ्र ही गुरुकी ओर दौड़े। महाराज! द्रोणाचार्य्य तुम्हारे पुत्रोंके सङ्ग मिलकर अपने तेजबाणोंसे इस प्रकार पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंको भस्म करने लगे, जैसे अग्नि रूईके समूहको भस्म करती है। युधिष्ठिरकी सेनाके पुरुष अर्ज्जुनको द्रोणाचार्य्यके समीप उपस्थित होते देखकर फिर लौटे और उनके सङ्ग महाघोर संग्राम करने लगे। प्रचण्ड सूर्य्य और जलती हुई अग्निके समान तेजस्वी द्रोणाचार्य्यके मण्डलाकार धनुषसे अग्निशिखाके समान लगातार अनेक बाण छूटकर शत्रुसेनाके पुरुषोंको भस्म करने लगे। उस समय शत्रुसेनाके योद्धा लोग उन्हें जगत्को तपानेवाले सूर्य्यके समान सम्पूर्ण योद्धाओंका नाश करते देख कोई भी निवारण करनेमें समर्थ न हुए, अधिक क्या कहा जावे उससमय जो पुरुष द्रोणाचार्य्यके सम्मुख उपस्थित हुए उन सम्पूर्ण वीरोंके सिर द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे कटके पृथ्वीमें गिर पड़े। इसी भांतिसे पाण्डवोंकी सेना द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे पीड़ित और भयभीत होकर अर्ज्जुनके सम्मुखमें ही फिर युद्धभूमिमेंसे भागने लगी। हे राजेन्द्र! उस रात्रिके समय सव्यसाची अर्ज्जुनने अपनी सेनाके पुरुषोंको द्रोणाचार्य्यके समीप गमन करनेके वास्ते अनुरोध किया। श्रीकृष्ण अर्ज्जुनके वचनोंको सुनकर दूध वा चन्द्रमाके समान सफेद घोड़ोंसे युक्त रथको द्रोणाचार्य्यकी ओर चलाने लगे। उस समय भीमसेन अर्ज्जुनको द्रोणाचार्य्यकी ओर जाते देख अपने सारथीसे बोले, हे सारथी! मुझे द्रोणाचार्य्यके समीप ले चलो। भीमसेनके सारथी विशोकने अपने स्वामीकी आज्ञा सुनकर अर्ज्जुनके

पीछे अपने रथको चलाता हुआ द्रोणाचार्य्यके समीप जानेकी इच्छासे गमन करने लगा। पाञ्चाल, सृञ्जय, महारथी केकयदेशीय शूरबीर योद्धा मत्स्य चेदी करुष और कौशल देशीय सेनाके पुरुष भी अर्ज्जुन और भीमसेनको द्रोणाचार्य्यको ओर जाते देख उनके अनुगामी हुए। महाराज! तिसके अनन्तर रोएंको खड़ा करनेवाला महाघोर दारुण संग्राम होने लगा। उस समय भीमसेन और अर्ज्जुनने बहुतेरे रथियोंके समूहके सहित तुम्हारी सेनाका उत्तर और दक्षिणका हिस्सा आक्रमण किया। महाबलवान धृष्टद्युम्न और सात्यकि भी पुरुषसिंह भीमसेन और अर्ज्जुनको द्रोणाचार्य्यको ओर गमन करते देखकर वहां पर उपस्थित हुए। तिसके अनन्तर दोनों सेनाके योद्धा लोग आपसमें संग्रान करने लगे, उससे ऐसा कोलाहल होने लगा। जैसे प्रचण्डबायुके वेगसे समुद्रका जल उथलित होनेसे शब्द होता हैं। उस ही समय द्रोणाचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामा सात्यकिको रणभूमिमे देखकर भूरिश्रवाके बधसे अत्यन्त क्रुद्ध होके उनके नाश करनेकी अभिलाषासे शीघ्रताके सहित सात्यकिकी ओर दौड़े। भीमसेन पुत्र घटोत्कच अश्वत्थामाको सात्यकिकी ओर गमन करते देखकर लोहमय काले वर्म्मसे युक्त काले चमड़ेसे घिरे हुए अनेक भांतिके यन्त्रोंसे परिपूरित आठ चक्रोंसे युक्त और बादलके समान गम्भीर स्वरसे पूरित एक बड़े रथ पर चढ़ा। उसके उस बड़े रथमें हाथीके आकार वाले विचित्र बाहन जुते हुए थे, परन्तु न वे बाहन हाथी थे और न घोड़े ही थे। उस रथकी ऊंची ध्वजा पर विशाल शरीरवाला एक बड़ा गिद्ध बैठ कर अपने चरण और पंखोंको फटकारता हुआ भयानक स्वरसे डरावनी बोली बोल रहा था। हिड़म्बा-पुत्र घटोत्कच रुधिरमें भीगी हुई पताकासे युक्त उस ही बड़े रथपर चढ़के पत्थर हाथ त्रिशूल और मुद्गर ग्रहण करनेवाले भयानक स्वरूपसे युक्त एक अक्षौहिणी राक्षसी सेनाको सङ्ग लेकर द्रोणाचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामाको युद्धभूमिमें निवारण करने लगा। तुम्हारी ओरके राजा लोग घटोत्कचको हाथमें प्रचण्ड धनुष ग्रहण किये हुए प्रलयकालके दण्डधारी यमराजकी भांति देखकर भयभीत होगये। तुम्हारे पुत्रोंकी सेनाके सब योद्धा लोग पर्व्वतके शृंग समान मूर्त्ति भयङ्कर दांत और बिकट शरीर बड़े बड़े कान नेत्र मुख किरीटसे युक्त बड़े सिरके सहित सम्पूर्ण प्राणियोंके भयको बढ़ानेवाले जलती हुई अग्नि और यमराजके समान शत्रुओंको क्षोभित करनेवाले राक्षसराज घटोत्कचको हाथमें प्रचण्ड धनुष ग्रहण करके सम्मुख आते देख इस प्रकार विचलित होने लगे जैसे वायुके वेगसे गंगाका जल उथलित होता है। अधिक क्या कहा जावे उस समय घटोत्कचके सिंहनादसे हाथी घोड़े आदि सम्पूर्ण प्राणी भयभीत होकर मलमूत्र त्याग करने लगे और मनुष्य लोग अत्यन्त ही दुःखित तथा पीड़ित हुए।

रात्रिके कारण राक्षस लोग अधिक पराक्रम प्रकाशित करके चारों ओरसे पत्थरकी शिला बर्षाने लगे। और लोहमय चक्र भूशुण्डी प्रास तोमर शूल शतघ्नी और पट्टिश आदि अस्त्र शस्त्र लगातार चारों ओरसे तुम्हारी सेनाके ऊपर पड़ने लगे। महाराज! उस अत्यन्त निठुर राक्षसोंका भयङ्कर संग्राम देख सम्पूर्ण राजा तुम्हारे पुत्र लोग और कर्ण आदि सम्पूर्ण बीर कातर होकर चारों ओर दौड़ने लगे। उस रणभूमिके बीच अस्त्रबलसे अत्यन्त प्रशंसित केवल पराक्रमी अश्वत्थामाने निर्भय चित्तसे स्थित होकर घटोत्कचकी सम्पूर्ण मायाको अपने दिव्य अस्त्रोंके प्रभावसे भस्म किया। माया नष्ट होनेसे घटोत्कच क्रुद्ध होकर महाघोर बाणोंकी वर्षा करने लगा। वे

सम्पूर्ण बाण अश्वत्थामाके शरीरसें घुस गये। महाराज! जैसे सर्प क्रोधसे मूर्च्छित होकर बिलके भीतर प्रवेश करते हैं वैसे ही घटोत्कचके चलाये स्वर्ण पंखवाले चोखे बाण अश्वत्थामाके शरीरको भेदकर रुधिर लिपटे हुए पृथ्वीमें घुस गये। तब प्रतापी अश्वत्थामाने अत्यन्त क्रुद्ध होकर हस्तलाघवके सहित दश बाणोंसे घटोत्कचके शरीरको भेद किया। घटोत्कच द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके बाणोंसे पीड़ित होकर अत्यन्त कातर हुआ; अनन्तर घटोत्कचने सौ सहस्र छूर धारवाला एक चक्र ग्रहण किया। भीमसेन पुत्र घटोत्कचने क्रोधके वशमें होकर बालसूर्य्यके समान प्रकाशमान वज्रके समान कठोर छूरधारवाले उस चक्रको उठाकर अश्वत्थामाकी ओर चलाया। महाराज! जैसे भाग्यहीन मनुष्यका सङ्कल्प निष्फल होजाता है वैसे ही महावेग पूर्व्वक घटोत्कचके हाथसे छूटा हुआ वह चक्र द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके बाणोंके प्रभावसे उलटके पृथ्वीमें गिर पड़ा। जब वह दारुण चक्र पृथ्वीमें गिर पड़ा तब घटोत्कच पुत्र अञ्जनपर्व्वाने अपने बाणोंसे अश्वत्थामाको इस प्रकार छिपा दिया जैसे राहु सूर्य्यको आच्छादित करता है। जैसे बड़ा पर्व्वत वायुकी गतिको रोक देता है वैसे ही कज्जलगिरि पर्व्वतके समान रूपवाले घटोत्कचपुत्र पराक्रमी अञ्जनपर्व्वाने अश्वत्थामाको सम्मुख आते देख निवारण किया। अश्वत्थामा भीमसेन पौत्र अञ्जनपर्व्वाके बाणोंकी वर्षासे इस प्रकार शोभित हुए जैसे जलकी वर्षासे सुमेरुगिरि शोभित होता है। तिसके अनन्तर रुद्र विष्णु और इन्द्रके समान पराक्रमी महावीर अश्वत्थामाने निर्भयचित्तसे अञ्जनपर्व्वाके रथकी ध्वजाको काट दिया। फिर अश्वत्थामाने दो बाणोंसे उसके सारथी, चार बाणोंसे उसके चारों घोड़ोका वध करके तीन बाणोंसे उसके रथको त्रिवेणु और एक बाणसे उसके हाथमें स्थित धनुषको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। अञ्जनपर्व्वाने रथभ्रष्ट और धनुषरहित होकर सुवर्णभूषित एक भयङ्कर तलवार ग्रहण किया। अश्वत्थामाने एक तेजबाणसे उस तलवारको दो टुकड़े करके पृथ्वीमें गिराया। तलवार कटनेपर अञ्जनपर्व्वाने शीघ्रताके सहित सुवर्णतार खचित एक गदा उठाकर अश्वत्थामाकी ओर चलाया। वह गदा अञ्जनपर्व्वाके हाथसे छूटते ही अश्वत्थामाके बाणोंसे निवारित होकर पृथ्वीमें गिर पड़ी। तिसके अनन्तर अञ्जनपर्व्वा आकाशमें चला गया और वहांसे वर्षाकालके बादल समान गर्ज्जता हुआ अश्वत्थामाके ऊपर वृक्ष बर्षाने लगा। महाराज! जैसे सूर्य्य अपनी प्रखर किरणोंसे बादलोंके समूहको भेद करता है वैसे ही पराक्रमी अश्वत्थामा उस आकाश स्थित घटोत्कच पुत्र अंजनपर्व्वाको अपने तेज बाणोंसे विद्ध करने लगे। महाराज कज्जलगिरिके समान भयङ्कर मूर्त्तिवाला तेजस्वी अञ्जनपर्व्वा आकाशसे उतरके फिर सुवर्णभूषित रथमें स्थित हुआ; तब द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने लोहमयी बर्म्म धारण करनेवाले उस भीमपौत्र अञ्जनपर्व्वाको इस भांतिसे प्राणरहित कर दिया, जैसे महादेवने अन्धकासुरका नाश किया था। उस समय भारद्वतीपुत्र अश्वत्थामाके अस्त्रोंसे पाण्डवी सेनाके शूरवीरोंको भस्म करते और उसके हाथसे अपने पुत्र अञ्जनपर्व्वाको मरते देख घटोत्कचका हस्तत्राण ढीला होगया; तिसके अनन्तर घटोत्कच निर्भयचित्तसे अश्वत्थामाके समीप आकर यह बचन कहने लगा, हे द्रोणपुत्र! खड़े रहो तुम मेरे सम्मुखसे जीते जी किसी प्रकारसे भी मुक्त न होसकोगे। जैसे अग्निपुत्र स्वामिकार्त्तिकने क्रौञ्चपर्व्वतको विदीर्ण किया था, आज मैं भी उस ही भांतिसे तुम्हारे शरीरको विदीर्ण करूंगा। घटोत्कचके इस

वचन सुनकर अश्वत्थामा बोले। हे तात ! हे हिड़म्बापुत्र । जाओ दूसरे पुरुषके सङ्ग युद्ध करो ; क्योंकि मैं तुम्हारे पिताके समान हूं, इससे पिताके सङ्ग पुत्रको युद्धमें प्रवृत्त होना उचित नहीं हैं। मैं अपने अन्तःकरणसे निश्चय करके यह बचन कहता हूं कि तुम्हारे ऊपर मुझे तनिक भी क्रोध नहीं हैं, परन्तु जब प्राणी क्रोधके वशमें होते हैं तब अपने आत्मीय पुरुषोंके नाश करनेमे भी मुंह नहीं मोड़ते।

सञ्जय बोले, पुत्र शोकसे कातर घटोत्कचने अश्वत्थामाके ऐसे बचनोंको सुनकर क्रोधसे नेत्र लाल करके उत्तर दिया। हे द्रोणपुत्र। तुमने जो कुछ वचन कहे वे सम्पूर्णवचन साधु पुरुषोंसे सम्मत नहीं हैं। क्या मैं साधारण पुरुषोंकी भांति युद्धसे कातर हुआ हूं! जो तुम बचनसे मुझे भयभीत कर रहे हो? तुम इस बातको जानते हो, कि मैं इस विशाल कौरवकुलमें भीमसेनके वीर्य्यसे उत्पन्न हुआ हूं; विशेष करके मैं युद्धमें पीछे न हटनेवाले पाण्डवोंका पुत्र रावणके समान बलवान और राक्षसोंका राजा हूं। जो इस समय तुम क्षण भरतक युद्धभूमिके बीच खड़े रहोगे तो मेरे हाथसे जीते जी किसी प्रकारसे भी न बच सकोगे। आज मैं रणभूमिके बीच तुम्हारी युद्धकी अभिलाषा पूरी कर दूंगा। महाराज! क्रुद्धसिंह जैसे गजराजकी ओर दौड़ता है वैसे ही बलवान राक्षस घटोत्कच ऐसा बचन कहके क्रोधपूर्व्वक अश्वत्थामाकी ओर दौड़ा; और अश्वत्थामाके ऊपर इस प्रकार अपने भयङ्कर बाणोंकी वर्षा लगा जैसे बादल आकाशसे पृथ्वीके ऊपर जलकी बर्षा करते हैं। द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने घटोत्कचके धनुषसे छूटी हुई बाण-वर्षाको समीप न पहुंचते ही पहुंचते मार्गमें ही अपने बाणोंके प्रभावसे निवारण किया। परन्तु उन दोनोंके धनुषसे छूटे हुए बाणोंके आपसमें रगड़ खानेसे अग्नि उत्पन्न होने लगी; और उससे आकाशमण्डल खद्योतसमूहकी भांति प्रकाशित होने लगा। तब युद्धविद्या जाननेवाले अश्वत्थामाके अस्त्रोंके प्रभावसे घटोत्कचके सम्पूर्ण अस्त्र निष्फल हुए। तब उसने अन्तर्द्धान होकर राक्षसी माया प्रकट करी। उसने त्रिशूल फरशे मूशल, तलवार रूपी जलके झरने और वृक्षोंसे युक्त शिखरसे शोभित अत्यन्त ऊंचे एक बड़े पर्व्वतका रूप धारण किया, द्रोणपुत्र अश्वत्थामा घटोत्कचको कज्जलगिरिके समान पर्व्वतका स्वरूप धारण करते और उससे अनेक भांतिके शस्त्रकी वर्षा होते देख तनिक भी कातर न हुए और निर्भय चित्तसे अपने दिव्य अस्त्रोंको प्रकट किया। अश्वत्थामाके दिव्यअस्त्रके प्रभावसे वह मायामय पर्व्वत उसही समय भस्म होगया। जब मायाका पर्व्वत नष्ट हुआ तब घटोत्कच आकाशमें जाकर इन्द्रधनुष शोभित अत्यन्त भयङ्कर बादलका रूप धारण करके अपने बाणवर्षासे अश्वत्थामाको छिपाने लगा। शस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठ महावीर अश्वत्थामाने वायव्य अस्त्र चलाकर उस मायामय बादलका नाश किया, फिर लगातार अपने तेज बाणोंके चलाकर दशों दिशाको परिपूरित करके एक लाख रथियोंका बध किया। तिसके अनन्तर घटोत्कच फिर रथ पर चढ़के धनुष फेरता हुआ राक्षसी सेना सङ्ग लेकर रणभूमिमें उपस्थित हुआ। उसकी सेनाके राक्षसोंके बीच कितने ही सिंह और शार्दूलके समान रूपवाले थे; वे सम्पूर्ण राक्षस मतवारे हाथीके समान पराक्रमी थे; उन सम्पूर्ण राक्षसोंके बीच कितने हो हाथी घोड़े और कितनेही राक्षस रथोंपर चढ़े हुए थे। परन्तु वे सब ही भयङ्कर शरीर, सिर, कान, आंख और भयानक गर्द्दन वाले थे। उन सम्पूर्ण तामसी प्रकृतिवाले राक्षसोंके बीच कितनेही हिड़म्ब और कितने ही पुलस्त्य

वंशीय राक्षसोंके वंशमें उत्पन्न हुए थे। वे सब ही राक्षस इन्द्रके समान पराक्रमी क्रोधसे लाल नेत्र किये हुए नाना भांतिके अस्त्रशस्त्रोंको धारण किये और अनेक प्रकारके कवच पहने हुए रणभूमिके बीच उपस्थित हुए। महाराज। तुम्हारे पुत्र राजा दुर्य्योधन भयङ्कर शब्द करने वाले उन सम्पूर्ण युद्धदुर्म्मद राक्षसोंके सहित रणभूमिमें घटोत्कचको आया हुआ देखकर अत्यन्त ही दुःखित हुए। राजा दुर्य्योधनको दुःखित देख, द्रोणपुत्र अश्वत्थामा उन्हें इस भांतिसे धीरज धारण कराने लगे। हे महाराज दुर्य्योधन। तुम्हें भयभीत होना उचित नहीं है, इस समय तुम इन्द्रके समान पराक्रमी राजाओं और महावीर सहोदर भाइयोंके सहित रणभूमिमें स्थित होकर सेनाके पुरुषोंको धीरज धारण कराओ। तुम्हारी कदापि पराजय न होसकेगी, मैं तुम्हारे समीप सत्य-प्रतिज्ञा करता हूं, कि युद्धभूमिमें अवश्य तुम्हारे शत्रुओंका वध करूंगा। महाराज। दुर्य्योधनने अश्वत्थामा के इस प्रकार धैर्य्यपूरित बचनको सुनकर उन्हें यह उत्तर दिया। हे शारद्वतीपुत्र। जब तुम्हारा चित्त ऐसा ऊंचा और हम लोगोंके ऊपर अनुरक्त है, तब मुझे इस विषयमें कुछ आश्चर्य नही मालुम होता है।

सञ्जय बोले, महाराज! तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन अश्वत्थामासे ऐसा वचन कहकर सौ हजार घुड़सवारोंको सेनासे घिरे हुए सुबल-पुत्र शकुनिसे यह वचन बोले, हे मामा! तुम साठ हजार रथियोंकी सेना लेकर अर्ज्जुनके विरुद्ध युद्ध करनेके वास्ते गमन करो। कर्ण, वृषसेन, कृपाचार्य्य, नील, कृतवर्म्मा, पुरुमित्र, श्रुतार्पण दुःशासन, निकुम्भ, कुम्भभेदी, पुरुक्रम, पुरञ्जय, दृढरथ पताकी, हेमकम्पन शल्य आरुणि, इन्द्रसेन सञ्जय, विजय, जय, कमलाक्ष पुरुक्राथा जयवर्म्मा और सुदर्शन-आदि महारथी योद्धाओंके सहित उदीच्य देशीय शूरवीर और साठ हजार पैदल गमन करने वाले योद्धालोग तुम्हारे अनुगामी होंगे। हे मामा! मेरी सम्पूर्ण विजयकी आशा तुम्हारे ऊपर निर्भर है, इससे जैसे देवराज इन्द्रने असुरों का संहार किया था वैसे ही तुम भी भीमसेन नकुल, सहदेव और युधिष्ठिरका नाश करो। विशेष करके कुन्तीपुत्र आचार्य्य पुत्र अश्वत्थामाके बाणोंसे अत्यन्त ही पीड़ित होकर क्षत-विक्षत शरीरसे युक्त होरहे हैं, इस समय में तुम उन लोगोंको इस भांतिसे नष्ट करो जैसे अग्निपुत्र स्कन्दने दानवोंका नाश किया था। महाराज। सुबलपुत्र शकुनिने राजा दुर्य्योधन-के इस प्रकारके बचन सुनकर तुम्हारे पुत्रों की इच्छा पूरी करनेके वास्ते पाण्डवोंके वधकी अभिलाषा कर शीघ्रताके सहित युद्ध करनेके वास्ते उनकी ओर गमन किया।

इधर उस महावीर रात्रिके समय इन्द्र और प्रह्लादके समान द्रोणपुत्र अश्वत्थामा और राक्षस घटोत्कचका आपसमें अत्यन्त भयङ्कर दारुण संग्राम होने लगा। घटोत्कचने अत्यन्त क्रुद्ध होके विष और अग्निमें बुझाये हुए दश तीक्ष्ण बाणोंसे अश्वत्थामाके वक्षस्थलमें प्रहार किया। शारद्वतीपुत्र अश्वत्थामा घटोत्कच-के दृढ बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर इस प्रकार रथमें विचलित हुए, जैसे वायुके चलनेसे वृक्ष विचलित होने लगते हैं। घटोत्कचने फिर एक अञ्जलिक अस्त्रसे द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके हाथमें स्थित अत्यन्त दृढ धनुषको काट दिया। तब पराक्रमी अश्वत्थामा एक दूसरा दृढ धनुष ग्रहण करके जलकी वर्षा करनेवाले बादलकी भांति तेज बाणोंकी वर्षा करने लगे। तिसके अनन्तर अश्वथामा आकाशचारी राक्षसोंके ऊपर सुवर्ण दण्डभूषित शत्रुओंके नाश करनेवाले आकाश गामी बाण चलाने लगे। महाराज! तिसके अनन्तर अश्वत्थामाके बाणोंसे पीड़ित होके चौड़ी छातीवाले राक्षसोंके समूह इस प्रकार विकल

होगये, जैसे सिंहके आक्रमणसे मतवारे हाथियोंका समूह व्याकुल होजाता है। जैसे प्रलय कालके समय प्रचण्ड अग्नि प्रज्वलित होकर सम्पूर्ण प्राणियोंको भस्म कर देती है वैसे ही अश्वत्थामा अपने तेज बाणरूपी अग्निसे राक्षसोंको जलाकर घोड़े, हाथी और सारथियोंके सहित रथियोंको भस्म करने लगे। महाराज! पहिले समयमें जैसे देवोंके देव महादेव आकाशमें स्थित त्रिपुरको जलाकर शोभित हुए थे वैसे ही द्रोणपुत्र अश्वत्थामा एक अक्षौहिणी राक्षसी सेना भस्म करके रणभूमिके बीच शोभित होने लगे। विजय करनेवालोंमें श्रेष्ठ द्रोणपुत्र अश्वत्थामा तुम्हारे शत्रुओंका नाश करके प्रलयकालकी प्रचण्ड अग्निकी भांति प्रकाशित होने लगे। तिसके अनन्तर घटोत्कचने क्रोधपूर्वक भयङ्कर मूर्त्तिवाली अपनी राक्षसी सेनाके पुरुषोंको आज्ञा दिया, कि तुमलोग अश्वत्थामाका वध करो।" महाराज! विकट रूप, जीभ निकले हुए, भयानक मुखसे युक्त, सम्पूर्ण प्राणियोंको भयभीत करनेवाले राक्षस लोग घटोत्कचकी आज्ञा सुनकर अत्यन्त क्रुद्ध हुए और लाल नेत्र करके नाना भांतिके अस्त्रशस्त्रोंको ग्रहण कर अपने सिंहनादके शब्दसे पृथ्वीको परिपूरित करते हुए अश्वत्थामाके वधके वास्ते शीघ्रताके सहित उनकी ओर दौड़े। अनन्तर वे महाघोर पराक्रमशाली राक्षस लोग क्रोधसे लाल नेत्र करके शक्ति शतघ्नि परिघ शूल पट्टिश तलवार गदा भिन्दिपाल मूशल प्रास तोमर पत्थर तेजधार कम्पन हूल भूषुण्डी काले रूपवाले लोहमय स्थूणा शत्रुओंके शरीरको विदीर्ण करनेवाले भयङ्कर मुद्गर इत्यादि अनेक भांतिके सैकड़ों सहस्रों अस्त्र शस्त्रोंको इकवारगी द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके ऊपर चलाने लगे। महाराज! तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण पुरुष अश्वत्थामाके ऊपर इस प्रकार अस्त्र शस्त्रोंकी वर्षा होती देखकर अत्यन्त ही भयभीत हुए। परन्तु महातेजस्वी द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने निर्भयचित्तसे शिलापर घिसे हुए अपने वज्रसमान बाणोंसे उन सम्पूर्ण राक्षसोंके चलाये हुए अस्त्रशस्त्रोंको निवारण किया। और शीघ्र ही दिव्य अस्त्र प्रकट करके सुवर्ण पङ्खवाले बाणोंसे राक्षसीसेनाके शूरवीरोंके ऊपर प्रहार करने लगे। चौड़ी छातीवाले राक्षस लोग अश्वत्थामाके बाणोंसे पीड़ित होकर इस भांति विकल होगये जैसे सिंहके आक्रमणसे मतवारे हाथियोंका समूह व्याकुल होजाता है। परन्तु अत्यन्त क्रोधी महाबलवान राक्षस लोग अश्वत्थामाके बाणोंसे इस प्रकार पीड़ित होकर भी उनके वधकी अभिलाष करके फिर उनकी ओर दौड़े।

महाराज! उस स्थलमें द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने ऐसा आश्चर्य्यमय पराक्रम प्रकाशित किया कि वैसा कर्म्म सम्पूर्ण प्राणियोंसे भी असाध्य बोध हुआ, क्योंकि महा अस्त्र शस्त्रोंकी विद्या जाननेवाले अश्वत्थमाने मुहूर्त्त भरके बीचमें अकेलेही जलती हुई अग्निके समान प्रकाशमान बाणोंसे राक्षसराज घटोत्कचके सम्मुखमें ही सम्पूर्ण राक्षसी सेनाको भस्म कर दिया। संग्रामभूमिके बीच पराक्रमी अश्वत्थामा राक्षसी सेनाका नाश करके प्रलयकालकी अग्निसमान प्रकाशित हुए। अधिक क्या कहें जिस समय द्रोणपुत्र अश्वत्थामा विषधर सर्पके समान अपने तेज बाणोंसे राक्षसोंका वध कर रहे थे उस समय महाबली राक्षसेन्द्र घटोत्कचको छोड़के पाण्डवोंकी ओरके सहस्रों राजाओंके बीच कोई भी अश्वत्थामाकी ओर देखनेमें भी समर्थ न हुए। तब घटोत्कच क्रोधसे दोनों नेत्र लाल करके ओठ काटता हुआ अपने सारथीसे बोला, हे सारथी! तुम मुझे अश्वत्थामाके समीपमें ले चलो। ऐसा कह कर घटोत्कच अपने उस भयानक रथ पर चढ़के द्वैरथ युद्ध करनेके वास्ते अश्वत्थामाके समीप

उपस्थित हुआ। अनन्तर शत्रुनाशन अत्यन्त पराक्रमी भीमसेन पुत्र घटोत्कचने भयङ्कर शब्दके सहित सिंहनाद करके आठ घण्टि-योंसे युक्त देवताओंकी बनाई एक महाघोर शक्ति घुमाकर अश्वत्थामाकी ओर चलायी। द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने अपना धनुष रखके रथसे कूद कर उस शक्तिको ग्रहण करके घटोत्कचकी ओर चलाया। उस भयङ्कर शक्तिको सम्मुख आती देख घटोत्कच रथसे कूद कर पृथ्वी पर स्थित हुआ, अनन्तर वह प्रकाश मान महाघोर शक्ति घटोत्कचके घोड़े सारथी और ध्वजाके सहित रथको भस्म करके पृथ्वीमें घुस गई। परन्तु द्रोणपुत्र पराक्रमी अश्वत्था-माने जो उस भयङ्करी शक्तिको कूदके ग्रहण किया, उसे देखकर सम्पूर्ण प्राणी उनके इस कार्य्यकी अत्यन्त प्रशंसा करने लगे। घटोत्कच धृष्टद्युम्नके रथ पर चढ़के इन्द्रधनुषके समान अपना प्रचण्ड धनुष फेरते हुए अपने चोखे बाणोंसे अश्वत्थामाके वक्षस्थलमें प्रहार करने लगा। उस ही समय धृष्टद्युम्न भी विषधर सर्पके समान तेजस्वी बहुतसे तेज बाणोंसे अश्वत्थामाके वक्षस्थलमें प्रहार करने लगे। उस समय अश्वत्थामा उन दोनोंके ऊपर एक-बारही एक एक हजार बाण चलाने लगे; अश्व-माके चलाये बाणोंको सम्मुख न आतेही उन दोनों वीरोंने अग्निके समान तेजस्वी अपने तेज बाणोंसे काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। महाराज! इसी भांति धृष्टद्युम्न और घटोत्कचके सङ्ग द्रोणपुत्र अश्वत्थामाका शूरवीरोंके हर्षको बढ़ानेवाला महाघोर संग्राम होने लगा। उस ही समय भीमसेन एक हजार रथ, तीन सौ हाथी और छः हजार घुड़सवारोंकी सेना लेकर वहां उपस्थित हुए। भीमसेनके उस स्थान पर उपस्थित होने पर भी धर्म्मात्मा अश्वत्थामा निर्भय चित्तसे सम्पूर्ण योडाओंसे युक्त धृष्टद्युम्न और घटोत्कचके संग युद्ध करने लगे।

महाराज! द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने उस समय जैसा पराक्रम प्रकाशित किया वैसा कर्म्म सम्पूर्ण प्राणियोंसे भी असाध्य है। उन्होंने क्षण भरके बीच अपने अत्यन्त चोखे बाणोंके प्रभावसे भीमसेन घटोत्कच धृष्टद्युम्न नकुल, सहदेव धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर श्वेत-वाहन अर्ज्जुन और श्रीकृष्णके सम्मुखमें ही घोड़े सारथी और हाथियोंसे युक्त एक अक्षौहिणी राक्षसी सेनाका नाश किया। उस समय हाथियोंके समूह अश्वत्थामाके वेग-गामी बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर मानों शृङ्गसे युक्त पर्व्वतके समान मर कर पृथ्वीमें गिरने लगे। बाणोंकी चोटसे कितने ही हाथियोंके सूण्ड़ कटकर रणभूमिमें सर्पके समान पड़े हुए दिखाई देने लगे। राजाओंके सफेद छत्र और सुवर्णमय कटे हुए कवच रणभूमिमें गिर कर ऐसे प्रकाशित हो रहे थे जैसे चन्द्र सूर्य्य आदि ग्रहोंसे युक्त प्रलयकालके समय आकाश-मण्डल शोभित होता है। इसी प्रकार द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने उस युद्धभूमिके बीच बड़े बड़े हाथी घोड़े और शूरवीर मनुष्योंके मृतशरीरसे युक्त उनके रुधिरसे भयङ्करी नदी उत्पन्न कर दी। कटी हुई ध्वजा उस नदीमें मेढ़क भेरी उसमें बड़े शरीरवाले कछुवे और छत्र उसमें हंसोंकी पातकी भांति बहते हुए दिखाई देते थे। चंवर उसमें फेनके समान दीख पड़ते थे कौवे गिद्ध आदि पक्षी उसमें ग्राहरूपी बोध होते थे। इधर उधर गिरे पड़े बहुतेरे अस्त्र-शस्त्र उसमें मछरी मांस-मज्जा उस नदीके कीचड़ मरे हुए हाथि योंके समूह उसमें पत्थरोंकी चट्टान समान दीख पड़ते थे मरे हुए घोड़ोंके शरीर उसमें मकर रूपी मालूम होते थे टूटे हुए रथ उसमें नौकाके समान बहे जाते थे? उत्तम दण्डके सहित पताका मानो नदीके किनारे वाले वृक्ष की भांति दिखाई देती थीं केश उसमें काले रङ्गवाली शिवारकी भांति दिखाई देते—

योद्धाओंका आर्त्तनाद ही उस नदीके हरहरा हट शब्दके समान बोध होता था। और योद्धाओंके कटे हुए शरीरसे जो रुधिर बह रहाथा वही उसमें जलकी समान मालूम हो रहा था। वह रुधिर की नदी यमराज रूपी महा सागरसे मिलकर तथा मांसभची पशु पची और राचसोंसे सेवित होकर अत्यन्त ही भयङ्करी होकर कादर पुरुषोंके भयको बढ़ाने लगी।

महाराज। द्रोणपुत्र अश्वत्थामा फिर अत्यन्त क्रुद्ध होकर भीमसेन धृष्टद्युम्न और बहुतेरे राचसोंको अपने तीच्ण वाणोंसे पीड़ित करके हिड़म्बापुत्र घटोत्कचको अपने तेज वाणोंसे विद्ध करने लगे। इसी प्रकार महावल युद्धविद्या ज्ञाता अश्वत्थामाने भीमसेन आदि वीरोंको अपने तीच्ण वाणोंसे विद्ध करके पाञ्चालराज द्रुपदके पुत्र सुरथका बध किया। तिसके अनन्तर उन्होंने सुरथके भ्राता शत्रुञ्जय बलानीक जयानीक और जयाश्वको यमपुरीमें भेज दिया, फिर सिंहके समान ऊंचे स्वरसे सिंहनाद करके अपने तेज वाणोंसे पृषध्र और महामानी चन्द्रदेवका शिर काट कर दश वाणोंसे कुन्तिभोज राजाके दश पुत्रों का बध किया। उस ही समय उन्होंने सुवर्ण पंखवाले अत्यन्त चोखे तीन वाणोंसे राजाओंमें श्रेष्ठ श्रुतायु रुक्ममाली और महावली शत्रुञ्जयका बध करके पृथ्वीमें गिराया। तिसके अनन्तर अश्वत्थामा अत्यन्त क्रुद्ध हुए और एक यमदण्डके समान भयङ्कर वाण धनुष पर चढ़ा कर घटोत्कचकी ओर चलाया। वह भयङ्कर वाण अश्वत्थामाके धनुषसे छूटकर हिड़म्बापुत्र घटोत्कचके हृदयको भेद करके वेगपूर्व्वक पृथ्वीमें घुस गया। उस भयङ्कर वाणकी चोटसे घटोत्कच पृथ्वीमें गिर पड़ा, महारथी धृष्टद्युम्न घटोत्कचको मरा हुआ समझके शीघ्रताके सहित रथ हांक कर द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके समीपसे भाग गये। इसी भांति जब सम्पूर्ण महारथी योद्धा युद्धभूमिसे भाग गये तब महावीर द्रोणपुत्र अश्वत्थामा सेनापतिसे रहित युधिष्ठिरकी सम्पूर्ण सेनाको पराजित करके सिंहनाद करने लगे। उस समय तुम्हारे पुत्रोंके सहित सम्पूर्ण प्राणी अश्वत्थामाकी प्रशंसा करने लगे। महाराज! उस समय पर्व्वतके शिखर समान रूपवाले बहुतेरे राचस लोग जो अश्वत्थामाके सैकड़ों वाणोंसे मरे अधमरे और कटे हुए शरीरसे रणभूमिके बीच चारों ओर पड़े थे उससे वह रणभूमि अत्यन्त ही भयङ्कर बोध होती थी। इस अद्भुत कर्म्मको देखकर देवता, पितर सिद्ध गन्धर्व्व, अप्सरा, राचस, भूत, पिशाच पची और सर्प आदि सम्पूर्ण प्राणी द्रोणपुत्र अश्वत्थामाकी प्रशंसा करने लगे।

१५४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज। धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर, भीमसेन सात्यकि और धृष्टद्युम्न,—इन सब वीरोंने द्रुपद और कुन्तिभोज राजाके पुत्रों और अनगिनत राचसोंको द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके वाणोंसे मरते देख सावधान होकर युद्ध करना आरम्भ किया। परन्तु कुरुवंशीय सोमदत्त सात्यकिको युद्धभूमिमें देखकर क्रोधपूर्व्वक अपने वाणोंकी वर्षासे उन्हें छिपाने लगे। अनन्तर तुम्हारी और पाण्डवोंकी सेनाके शूर वीरोंका आपसमें अत्यन्त भयङ्कर महाघोर संग्राम होने लगा। उसी समय भीमसेन सोमदत्तको सात्यकिकी ओर आते देख सात्यकिकी सहायता करनेकी इच्छासे शिलापर घिसे हुए दश वाणोंसे सोमदत्तको विद्ध किया। सोमदत्तने भी पराक्रमी भीमसेनको एक वाणोंसे विद्ध किया। अनन्तर सात्यकिने अत्यन्त क्रुद्ध होकर नहुषपुत्र ययातिके समान समुच

गुणोंसे युक्त पुत्र शोकसे दुःखी बूढ़े सोमदत्तको अत्यन्त चोखे दश तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध किया। तिसके अनन्तर सात्यकिने एक शक्तिसे सोमदत्तके शरीरको भेद करके फिर उन्हें सात बाणोंसे विद्ध किया। उस ही समय भीमसेनने सात्यकिकी सहायता करनेकी अभिलाषासे एक भयङ्कर परिघ चला कर सोमदत्तके सिरमें प्रहार किया। महाराज! उन दोनों वीरोंके चलाये हुए परिघ और बाण एक ही समय सोमदत्तके शरीरपर गिरनेसे वह उसी समय मूर्च्छित होकर रथमें बैठ गये। अपने पुत्र सोमदत्तको मूर्च्छित देखकर राजा बाह्लिक लगातार अपने बाणोंकी बर्षा करते सात्यकिकी ओर ऐसे दौड़े जैसे बादल आकाशसे इकबारगी जलकी बर्षा करते हैं। भीमसेन सात्यकिकी रक्षाके वास्ते रणभूमिमें स्थित नव बाणोंसे दृढताके सहित बाह्लिकको विद्ध किया। तब महाबाहु प्रतीपनन्दन बाह्लिक अत्यन्त क्रुद्ध हुए और इन्द्र जैसे वज्र चलाते हैं, वैसे ही एक शक्ति ग्रहण करके भीमसेनके वक्षस्थलमें प्रहार किया तुम्हें ... महाबली भीमसेन उस शक्तिके लगनेसे ... अत्यन्त पीड़ित होकर मूर्च्छित होगये, परन्तु फिर सावधान होकर भीमसेनने एक गदा ... ग्रहण करके बाह्लिककी ओर चलाया। वह भयानक गदा भीमसेनके हाथसे छूटकर बाह्लिकके सिरपर गिरी और उस ही गदाकी चोटके बाह्लिकका सिर टुकड़े टुकड़े होगया। उस ही समय प्राण ... गया। राजा बाह्लिक पृथ्वीमें गिर ... रहित होकर इस प्रकार ... भांति पड़े जैसे बज्रकी चोटसे पर्व्वत टुकड़े टुकड़े होके पृथ्वीपर गिर पड़ता है।

महाराज! जब पुरुषश्रेष्ठ महावीर बाह्लिक मरे गये तब दशरथपुत्रके समान पराक्रमी ... रे दशपुत्र भीमसेनकी ओर दौड़े, सम्मुख आते ही भीमसेनने दशो वीरोंका वध किया। अनन्तर पराक्रमी भीमसेन अपने बाणोंसे कर्णपुत्र वृषसेनको छिपाने लगे। उस ही समय कर्णके भाई वृषरथने अपने बाणोंसे भीमसेनके शरीरमें प्रहार किया; महाबली भीमसेनने उसी समय उसे मारडाला। तिसके अनन्तर पाण्डुपुत्र भीमसेनने तुम्हारे सालोंके बीच सात रथियोंका वध करके शतचन्द्रको भी मार डाला। गवाक्ष और शरभ आदि युद्धविद्यामें निपुण शकुनिके पराक्रमी भ्राता शतचन्द्रका मरना न सहके क्रोधपूर्व्वक भीमसेनकी ओर दौडे; और अपने तीक्ष्णबाणोंके समूहसे भीमसेनको पीड़ित करने लगे। जैसे बलवान वृषभ जलकी बर्षासे पीड़ित होता है वैसे ही पराक्रमी भीमसेनने उन शूरवीर योद्धाओंके बाणोंकी चोटसे पीड़ित होकर पांच बाणोंसे उन पांच महारथियोंका वध किया। महाराज! सम्पूर्ण राजा लोग उन शूरवीरोंको मरते देख भयभीत होगये। उसी ... समय राजा युधिष्ठिर क्रुद्ध होकर ... द्रोणाचार्य्य और दुर्य्योधनके सम्मुख ... ही तुम्हारी सेनाके योद्धाओंका नाश करने लगे। वह क्रुद्ध होकर अम्बष्ठ मालव त्रिगर्त्त और शिविदेशीय योद्धाओंका बध करके उन्हें यमपुरीमें भेजने लगे। उस समय राजा युधिष्ठिरने अभिषाह शूरसेन बाह्लिक और वशातिदेशीय वीरोंको अपने अस्त्रोंसे खण्ड खण्ड करके उनके रुधिरसे रणभूमिको पूरित कर दिया; और यौधेय मालव और मद्रदेशीय अनगिनत शूरवीरोंको अपने तीक्ष्ण बाणोंके प्रहारसे प्राण रहित करके यमलोकमें भेजा। महाराज! उस समय युधिष्ठिरके रथके निकट पकड़ो, मारो काटो! इसी प्रकार महाघोर तुमुल शब्द सुनाई देने लगा। परन्तु द्रोणाचार्य्य राजा युधिष्ठिरकी सेना तितर बितर करते देख दुर्य्योधनकी आज्ञासे अपने तीक्ष्ण बाणोंसे उन्हें छिपाने लगे। तिसके अनन्तर द्रोणाचार्य्यने अत्यन्त क्रुद्ध होकर वायव्यास्त्र चलाया, युधिष्ठिरने उसे दिव्यास्त्रसे निवारण किया। वायव्यास्त्रको निष्फल होते देख द्रोणाचार्य्यने

कुपित होकर युधिष्ठिरके वधकी अभिलाषा करके वारुणास्त्र याम्य आग्नेय त्वाष्ट्र और सावित्र इत्यादि बहुतसे दिव्य अस्त्रोंको प्रकट किया। महाराज! भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्यके चलाये हुए दिव्य अस्त्रोंको महाबाहु धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर निर्भयताके सहित अपने दिव्य अस्त्रोंसे निवारण करने लगे। तब तुम्हारे पुत्रके हितकी इच्छा करनेवाले द्रोणाचार्य्यने धर्म्मपुत्र युधिष्ठिरके बधकी इच्छा तथा अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनेकी अभिलाषासे प्राजापत्य और ऐन्द्र अस्त्र प्रकट किया। मतवारे हाथी और सिंहके समान [illegible] क्रमी लाल नेत्रसे युक्त महातेजस्वी युधिष्ठि[illegible] त्यन्त प्रचण्ड महेन्द्रास्त्र प्रकट करके द्रोणाचा[illegible] चलाये हुए उन दोनों दिव्य अस्त्रोंको नि[illegible] किया। इसीभांति जब बार बार सम्पूर्ण अस्त्र [illegible] लगे तब द्रोणाचार्य्यने महाकोप करके युधिष्ठि[illegible] बधकी अभिलाषसे ब्रह्मास्त्र चलाया। महारा[illegible] ब्रह्मास्त्र छूटने पर सम्पूर्ण दिशाओंमें इस प्रकार महाघोर अन्धकार हो गया कि उस समयमें हमलोगोंको कुछ भी मालूम नहीं होता था और उस अस्त्रके तेजसे सम्पूर्ण प्राणी भयभीत होगये। परन्तु कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरने ब्रह्मास्त्र चलाकर ही द्रोणाचार्य्यके चलाये हुए ब्रह्मास्त्रको निवारण किया। उससे सेनाके योद्धालोग सम्पूर्ण युद्धविद्या जाननेवाले धनुषधारियोंमें अग्रणी पुरुषश्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य और युधिष्ठिरकी प्रशंसा करने लगे।

तिसके अनन्तर द्रोणाचार्य्य युधिष्ठिरको त्यागके क्रोधपूर्व्वक वायव्यास्त्र चलाकर पाञ्चाल सेनाके योद्धाओंको भस्म करने लगे। पाञ्चाल योद्धा द्रोणाचार्य्यके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर महात्मा भीमसेन और अर्ज्जुनके सम्मुखसे ही रणभूमिसे भागने लगे। अपनी ओरके योद्धाओंको भागते देख, पराक्रमी भीमसेन और किरीटमाली अर्ज्जुन तुम्हारी सेनाके उत्तर और दक्षिण भागसे आक्रमण करके द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े और उनके ऊपर लगातार अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। उस ही समय महातेजस्वी पाञ्चाल, सृञ्जय और मत्स्यदेशीय सेनाके योद्धा लोग सात्यकिकी सेनाके योद्धाओंके सङ्ग मिलकर भीमसेन और अर्ज्जुनके अनुगामी हुए। कुरुसेनाके योद्धा लोग पहिलेसे ही निद्रा और अन्धकारसे व्याकुल थे, उसपर फिर अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित होने लगे, अनन्तर कुरुसेनाके योद्धा छिन्न भिन्न होकर रणभूमिसे भागने लगे। उस समय उन योद्धाओंको द्रोणाचार्य्य और राजा दुर्य्योधन स्वयं भागनेसे निषेध करने लगे परन्तु किसी भांतिसे भी उन योद्धाओंको लौटानेमें समर्थ न हुए।

१५५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज! कुरुराज दुर्य्योधन पाण्डवोंकी महासेनाको वेगपूर्व्वक बढ़ी भांति देख तथा पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंको निवारण करनेमें असमर्थ होकर कर्णसे बोले हे मित्रवत्सल कर्ण! मनुष्य जिस कार्य्यके वास्ते मित्रकी इच्छा करते हैं इस समय मित्रोंके मित्रता दिखानेका यही समय उपस्थित हुआ है। यह देखो मेरी ओरके महारथी योद्धालोग बार बार लम्बी श्वास छोड़नेवाले क्रोधी सर्पके समान पाञ्चाल केकय मत्स्य और पाण्डवोंकी सेनाके महारथ योद्धाओंके बीचमें घिर गये हैं इसे तुम उन लोगोंको इस विपतसे उबारो। ये सम्पूर्ण [illegible] पराक्रमी बहुतेरे पाञ्चालदेशीय रथी योद्धा और जयकी अभिलाष करनेवाले पाण्डव लोग अत्यन्त ही हर्षपूर्व्वक सिंहनाद कर रहे हैं।

दुर्य्योधनके वचनको सुनकर कर्ण बोले महाराज। पृथापुत्र अर्ज्जुनकी सहायता करनेके वास्ते यदि इन्द्र स्वयं आके युद्धभूमिमें उपस्थित होंगे, तो मैं उन्हें भी पराजित करके अर्ज्जुनको

वध करूंगा। हे राजेन्द्र! मैं तुम्हारे निकट सत्य प्रतिज्ञा करता हूं, कि इस रणभूमिमें इकट्ठे हुए पाण्डव और पञ्चालसेनाके योद्धाओंका नाश करूंगा, इससे तुम धीरज धरो। हे राजन! जैसे अग्निसे उत्पन्न हुए स्वामिकार्त्तिकने इन्द्रकी विजयके वास्ते प्रतिज्ञा किया था, वैसे ही मैं भी तुम्हारी विजयके निमित्त प्रतिज्ञा करता हूं। अधिक क्या कहूं,—मैं तुम्हारे प्रिय कार्य्यको पूर्ण करनेहीके वास्ते अब तक जीवित हूं। हे मानप्रद! देखिये कुन्ती पुत्रोंके बीच अर्ज्जुन ही सबसे अधिक पराक्रमी है। इससे मैं इन्द्रकी अमोघशक्ति उसीके ऊपर छोड़ूंगा। क्योंकि धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी अर्ज्जुनके मारे जाने पर उसके भ्राता लोग या तो तुम्हारे बशमें होजावेंगे अथवा फिर बनवासी होंगे। आप दुखी न होइये मैं अवश्य ही युद्धभूमिमें सम्पूर्ण सेनाके सहित इकट्ठे हुए पाण्डवोंको पराजित करूंगा, और पाञ्चाल, केकय तथा वृष्णिवंशियोंको अपने बाणोंसे खण्ड खण्ड करके यह सम्पूर्ण पृथ्वी तुम्हें प्रदान करूंगा।

सञ्जय बोले महाराज! सूतपुत्र कर्णने जब ऐसे बचन कहे तब शरद्वत-पुत्र महाबाहु कृपाचार्य्य मानो कर्णकी अवज्ञा करते हुए यह बचन बोले हे कर्ण! वाह वा: क्या कहना है यदि वचनसे ही कार्य्य सिद्ध होजावे तो अकेले तुम्हारी सहायतासे ही कुरुराज दुर्य्योधन सहाय सम्पन्न हुए हैं इसमें सन्देह नहीं है। तुम सदा ही कुरुराज दुर्य्योधनके समीप इसी भांति अपनी बड़ाई किया करते हो; परन्तु किसी समय भी तुम्हारा वैसा पराक्रम या उनके अनुसार कोई फल नहीं दीख पड़ते। हे सूतपुत्र! रणभूमिमें पाण्डुपुत्रोंके सङ्ग तुमसे कई बार युद्ध हुआ है परन्तु तुम ही हर एक में पराजित हुए हो। हे कर्ण! जिस समय धृतराष्ट्रपुत्र दुर्य्योधनको गन्धर्व्वोंने हरण किया था उस समय सम्पूर्ण सेनाके पुरुष युद्ध कर रहे थे तौभी तुम सबसे पहिले ही रणभूमिसे भागे थे। इसके अतिरिक्त बिराटनगरमें सम्पूर्ण सेनाके सहित इकट्ठे हुए कौरव लोग और अपने भाइयोंके सहित तुम भी अर्ज्जुनके सम्मुखसे पराजित हुए थे। युद्धभूमिमें जब तुम अकेले अर्ज्जुनसे ही युद्ध करनेमें असमर्थ हो तब कृष्णके सहित इकट्ठे हुए सम्पूर्ण सेनासमेत पाण्डवोंको पराजित करनेके निमित्त कैसे उत्साह कर रहे हो? हे सूतपुत्र! तुम बार बार अपनी बड़ाई करते हो परन्तु, जो मनुष्य कुछ भी न कहके केवल समय पर पराक्रम प्रकाशित करते हैं उनके वही कार्य्य सत्पुरुषोंके योग्य व्रत कहके गिने जाते हैं इससे तुम वाग-डम्बर त्यागके युद्ध करो। हे सूतपुत्र तुम जल रहित शरद कालके बादलकी भांति वृथा गर्ज्जन करके जनसमाजके बीच हास्यास्पद होरहे हो परन्तु राजा दुर्य्योधन इस बातको नहीं समझते है। हे कर्ण! जो हो,तुम जबतक अर्ज्जुनको नहीं देखते हो तभीतक गर्ज्जना कर लो, क्योंकि अर्ज्जुनको समीपमें देखकर ऐसा गर्ज्जना दुर्लभ होजावेगा। जबतक तुम्हारा अर्ज्जुनके बाणोंके सङ्ग सामना नहीं होता है तभीतक ऐसा गर्ज्जता सुन पड़ता है अर्ज्जुनके बाणोंसे बिद्ध होनेपर ऐसा गर्ज्जना दुर्लभ होजावेगा। क्षत्रिय पुरुष अपने भुजाके बल ब्राह्मण वाक्यबल और अर्ज्जुन अपने धनुषके बलसे शूरवीर कहके विख्यात हैं, परन्तु कर्ण केवल एक मात्र मनोरथसेही शूर-वीर बनते हैं।

महाराज! योद्धाओंमें श्रेष्ठ कर्णने शरद्वत पुत्र कृपाचार्य्यके ऐसे अवज्ञा-सूचक बचनोंको सुनके अत्यन्त क्रुद्ध होकर उन्हें यह उत्तर दिया। शूर वीर पुरुष जैसे वर्षाकालके जल-युक्त बादलोंकी भांति गर्ज्जते हैं, वैसे ही यथा उचित समयमें रोपित हुए बीजकी भांति शीघ्र

ही फल भी प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त युद्धभूमिके बीच शूरवीर पुरुष जैसा भार उठानेका उत्साह करते हैं, अवश्य ही दैव उस विषयमें उनकी सहायता करता है। हे विप्र! मैं भी यदि इस युद्धका भार उठाकर युद्धभूमिके बीच कृष्ण और सम्पूर्ण सेनाके सहित पाण्डवोंको पराजित करने तथा उनके नाश करनेके वास्ते उत्साही होकर गर्ज्जन करता हूं, तो उसमें तुम्हारी कौनसी नुकसानी है? और तुम यह भी समझ रक्खो कि बुद्धिमान शूरवीर पुरुष कभी भी शरदकालके बादलकी भांति वृथा गर्ज्जन नहीं करते; वह अपनी सामर्थका विचार करके ही गर्ज्जना किया करते है। हे कृपाचार्य्य! इससे मैं आज यत्नपरायण कृष्णकी सहायतासे युक्त अर्ज्जुनको पराजित करूंगा, ऐसा ही निश्चय करके उत्साहपूर्व्वक गर्ज्ज रहा हूं। हे विप्र! इस समय तुम मेरे गर्ज्जनका फल प्रत्यक्ष देखो; आज मैं युद्धभूमिमें अनुयाइयोंके सहित तथा कृष्णकी सहायतासे युक्त पाण्डु पुत्रोंको मारकर राजा दुर्य्योधनको निष्कण्टक पृथ्वीका राज्य प्रदान करूंगा।

महाराज! कर्णके ऐसे अभिमानयुक्त वचनोंको सुनकर कृपाचार्य्य बोले, हे सूतपुत्र, तुम जो धर्म्मराज युधिष्ठिर और कृष्ण अर्ज्जुनको पराजित करनेकी इच्छा करते हो, उस तुम्हारे व्यर्थ मनोरथ तथा प्रलापयुक्त वचनोंको मैं नहीं मान सकता। तुम इस बातको अपने चित्तमें भली भांतिसे जान रक्खो कि युद्धभूमिमें इकट्ठे हुए देवता यक्ष, गन्धर्व्व मनुष्य, सर्प और राक्षसोंसे भी अजेय सम्पूर्ण युद्धविद्या जाननेवाले कृष्ण अर्ज्जुन जिस सेनामें स्थित हैं उसी ओरकी जय होगी। विशेष करके धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर ब्राह्मणोंमें निष्ठावान, सत्यवादी; जितेन्द्रिय गुरु और देवताओंकी पूजा करनेवाला, सदा ही धर्म्मके कार्य्योंमें रत कृतास्त्र, बुद्धिमान और कृतज्ञ है, उसके सहोदर भाई भी कृतास्त्र बलवान, यशस्वी गुरुकी आज्ञामें चलनेवाले बुद्धिमान और धर्म्मात्मा हैं। इसके अतिरिक्त उन लोगोंके सम्बन्धी महा अस्त्रोंके जाननेवाले राजा द्रुपद तथा उनके पुत्र धृष्टद्युम्न शिखण्डी दौर्म्मुखि जनमेजय चन्द्रसेन भद्रसेन, कीर्त्तिवर्म्मा, ध्रुव;धर, वसुचन्द्र दामचन्द्र सिंहचन्द्र और सुतेजन, — ये सम्पूर्ण वीर इन्द्रके समान पराक्रमी शस्त्र चलानेमें निपुण और युधिष्ठिरके अनुरक्त हैं। इसके अतिरिक्त सुदर्शन गजानीक श्रुतानिक, श्रुतध्वज बलानीक जयानीक, जयाश्व रथवाहन चन्द्रोदय और कामरथ, इन समर्थ कृतविद्य भाइयोंकी सहायतासे युक्त मत्स्यराज विराट जिसकी प्रयोजनसिद्धिके वास्ते यत्नवान होकर रणभूमिमें स्थित हैं; और पराक्रमी नकुल सहदेव द्रौपदीके पांचो पुत्र घटोत्कच तथा इनके अतिरिक्त और भी बहुतेरे आत्मीय सुहृद पुरुष जिसके वास्ते युद्ध कर रहे हैं उनका किसी प्रकारसे भी नाश नहीं होसकता अधिक क्या कहूं, देवता मनुष्य, यक्ष, राक्षस, हाथी और घोड़े आदि प्राणियोंसे युक्त इस सम्पूर्ण संसारको अकेले भीमसेन और अर्ज्जुन अपने भुजबलके प्रभावसे ही नष्ट कर सकते हैं, और राजा युधिष्ठिर भी अपनी कोप-दृष्टिसे इस सम्पूर्ण जगतको जलानेमें समर्थ हैं। हे कर्ण! चाहे जोहो, अत्यन्त बली यदुकुल शिरोमणि कृष्ण जिस अर्ज्जुनकी रक्षाके वास्ते सन्नद्ध होकर रणभूमिमें स्थित है तुम वैसे पराक्रमी शत्रुको युद्धभूमिमें पराजित करनेके वास्ते कैसे उत्साह कर रहे हो? हे कर्ण! तुम जो सदा सर्व्वदा कृष्ण और अर्ज्जुनके सङ्ग युद्ध करनेका उत्साह किया करते हो वह तुम्हारे वास्ते महा अनर्थका विषय मालूम होरहा है।

सञ्जय बोले महाराज! राधापुत्र कर्णने कृपाचार्य्यके ऐसे वचनोंको सुन हंसकर उत्तर दिया। हे ब्राह्मण! पाण्डवोंके विषयमें तुमने जो कुछ

वचन कहे, वह सम्पूर्ण सत्य हैं; ऐसा क्या, वे लोग तुम्हारे कहे हुए बचनोंके अतिरिक्त और अनेक गुणोंसे युक्त हैं। यद्यपि पृथापुत्र यक्ष गन्धर्व्व पिशाच सर्प राक्षस असुर और देवतोंके सहित इन्द्रसे भी अजेय हैं; तौ भी मैं उन लोगोंको इन्द्रकी दी हुई अमोघ-शक्तिसे रण-भूमिमें पराजित करूंगा, हे विप्र! मैं इन्द्रकी दी हुई अमोघ शक्तिसे अवश्य ही रणभूमिके बीच अर्ज्जुनका वध करूंगा। पाण्डुपुत्र अर्ज्जुनके मरने पर उसके सहोदर भाई और श्रीकृष्ण किसी प्रकारसे भी अर्ज्जुन रहित पृथ्वीको भोगनेमें समर्थ न होसकेंगे। हे गोतमपुत्र। यदि कृष्ण और पाण्डव लोग इसी भांतिसे नष्ट होजावें तो बिना यत्नके ही यह सम्पूर्ण पृथ्वी कुरुराज दुर्य्योधनके वशमें होजावेगी। देखो इस संसारमें सुनीतिके अवलम्बसे समस्त कार्य्योंकी सिद्धि होती है इसमें कुछ सन्देह नहीं है, मैं इस विषयको जान कर ही गर्ज्ज रहा हूं। परन्तु तुम एक तो ब्राह्मण, उस पर भी बूढ़े, युद्ध करनेमें असमर्थ हो और पाण्डवोंके ऊपर प्रीति भी करते हो। इससे उस ही अज्ञानताके कारण तुम मुझे इस भांतिसे अवमानित कर रहे हो। हे दुष्टबुद्धिवाले ब्राह्मण। यदि फिर कभी मेरे समीप ऐसे अप्रिय बचनोंका प्रयोग करोगे, तो मैं अपनी इस तलवारसे तुम्हारी जीभ काट लूंगा। हे नीच बुद्धिवाले ब्रह्मण। तुम जो इस सम्पूर्ण कुरुसेनाको भयभीत करके पाण्डवोंकी स्तुति कर रहे हो, उस विषयमें भी मैं जो कुछ वचन कहता हूं उसे सुनो। हम कुरुराज दुर्योधन द्रोणाचार्य्य शकुनि, दुर्मुख जय दुःशासन वृषसेन मद्रराज शल्य, सोमदत्त, भूरि, द्रोणपुत्र अश्वत्थामा और विविंशति; ये सब युद्धविद्या जाननेवाले शूरवीर जिसस्थान पर इकट्ठे होकर व्यूहबद्ध सेनाके सहित रणभूमिमें स्थित रहें; उस स्थल पर [illegible] योंको और इन्द्रके समान पराक्रमी पुरुष भी आवे तो क्या उसकी विजय हो सकेगी? ये सब कोई शूर कृतास्त्र बलवान धर्म्मात्मा और युद्ध करनेमें अत्यन्त निपुण हैं; ऐसा क्या यदि ये सबकोई मिलकर स्वर्गलोकके राज्य लेनेकी अभिलाषासे युद्ध करें तो सम्पूर्ण देवतों सहित इन्द्रको भी पराजित कर सकते हैं। इससे ये सम्पूर्ण शूरवीर पुरुष व्यूहबद्ध कुरुसेनाके सहित दुर्य्योधनके विजय और पाण्डवोंके बधकी इच्छासे रणभूमिके बीच स्थित रहेंगे। परन्तु जिस स्थलमें महाबाहु भीष्म पितामह सौ सौ बाणोंके छिदे हुए शरीरसे युक्त होकर शर-शय्या पर शयन कर रहे हैं, उस स्थान पर महाबलवान होने पर भी मेरे विचारमें विजय लाभ दैवके आधीन है। हे अधम पुरुष। युद्धभूमिमें विकर्ण चित्रसेन बाह्लिक जयद्रथ भूरिश्रवा जय, जलसन्ध सुदक्षिण रथियोंमें मुख्य शल और पराक्रमी भगदत्त आदि महारथी और दूसरे भी बहुतसे महाबलवान देवतोंसे भी अपराजित अनगिनत शूरबीर राजा लोग जब पाण्डवोंके हाथसे मारे गये तब दैवको प्रतिकूलताके अतिरिक्त और तुम क्या समझ रहे हो? हे विप्र। तुम जो दुर्य्योधनके शत्रुओंकी सदा स्तुति करते रहते हो, इस समय देखो उन लोगोंके भी सैकड़ों तथा सहस्रों महाबलबान शूरवीर मारे गये हैं। इससे पाण्डवोंकी ओरके शूरवीरोंके द्वारा की अनगिनत कुरुसेनाके वीरोंका नाश हो रहा है उसमें मुझे पाण्डुपुत्रोंका कुछ भी प्रभाव नहीं दीख पड़ता है। चाहे जो हो, हे अधम ब्राह्मण। तुम जिन लोगोंको सदा सर्व्वदा बलवान समझते रहते हो, मैं दुर्य्योधनके हितकी अभिलाषसे रणभूमिके बीच उन्हीं पाण्डवोंके सङ्ग युद्ध करनेमें अपनी शक्तिके अनुसार यत्न करूंगा; तब विजय होनी दैवके आधीन है।

१५९ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज द्रोणपुत्र अश्वत्थामा अपने मामा कृपाचार्य्यको कर्णके वचनोंसे अपमानित होते देख मियानसे तलवार खींचकर कुरुराज दुर्य्योधनके सम्मुखमें ही इस प्रकार वेगपूर्व्वक कर्णकी ओर दौड़े जैसे क्रोधी सिंह हाथीकी ओर दौड़ता है। अनन्तर सम्पूर्ण राजाओंके सम्मुखमें ही अश्वत्थामा इस प्रकारके वचन कहने लगे। अरे नीचबुद्धिवाले अधम पुरुष! मामाने अर्ज्जुनके यथार्थ गुणोंका वर्णन किया है तोभी तू शूरवीरोंके द्वेषसे युक्त होकर उनकी निन्दा कर रहा है। तुम इस शूरता और अभिमानसे मतवारे होकर किसीकी कुछ भी पर्व्वाह न करके इन सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंके सम्मुखमें ही अपनी बड़ाई कर रहे हो; परन्तु गाण्डीव धनुर्द्धारी अर्ज्जुनने जब तुम्हें पराजित करके रणभूमिमें तुम्हारे सम्मुखमें ही जयद्रथका वध किया था उस समय तुम्हारा पराक्रम और अस्त्रोंका बल कहां गया था? अरे सूतकुलकलङ्क! पहिले जिस अर्ज्जुनने महादेवके सङ्ग युद्ध किया था; उस अर्ज्जुनको जो तुम जीतनेकी अभिलाषा करते हो वह तुम्हारे मनकी व्यर्थ कल्पना मात्र है। रे नीच बुद्धि सूत! जब कि सम्पूर्ण असुर और इन्द्र आदि देवता लोग भी इकट्ठे होकर सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ कृष्णकी सहायतासे युक्त अर्ज्जुनको पराजित करनेमें समर्थ नहीं हैं तब तुम क्या जगतके सम्पूर्ण प्राणियोंसे अजेय अद्वितीय वीर अर्ज्जुनको इन सम्पूर्ण राजाओंके सङ्ग मिलकर जीत सकते हो? अरे नीचबुद्धिवाले कर्ण! इस समय खड़ा रह, यह देखो मैं तुम्हारा सिर इसी क्षण शरीरसे पृथक किये देता हूं।

सञ्जय बोले, महाराज! अश्वत्थामा ऐसा कहकर वेगपूर्व्वक कर्णकी ओर दौड़े। अश्वत्थामाको कर्णकी ओर दौड़ते देख, बोलनेवालोंमें श्रेष्ठ कृपाचार्य्य और राजा दुर्य्योधनने उन्हें निवारण किया। उसे देखकर कर्ण कुरुराज दुर्य्योधनसे बोले, हे कुरुसत्तम! शूर और युद्धमें प्रशंसित यह अधम ब्राह्मण आके मेरे पराक्रमको मालूम करे आप उसे न रोकिये। तब अश्वत्थामा बोले, रे नीचबुद्धिवाले सूतपुत्र! मैंने तेरा यह अपराध क्षमा किया परन्तु अर्ज्जुन तुम्हारे इस बढ़े हुए अभिमानका नाश करेंगे, महाराज! राजा दुर्य्योधन उन दोनोंको इसी प्रकार आपसमें विवाद करते देख अश्वत्थामासे बोले, हे माननीय अश्वत्थामा! आप शान्त होइये, सूतपुत्रके ऊपर क्रोध करना तुम्हें उचित नहीं है; इससे आप प्रसन्न होइये। देखिये आप कर्ण कृपाचार्य्य मद्रराज शल्य और सुबलपुत्र शकुनि इन कई एक वीरोंके ऊपर मेरे बहुत बड़े कार्य्यका भार अर्पित है हे द्विजसत्तम! इससे आप प्रसन्न होइये। हे ब्राह्मण! यह देखो पाण्डव लोग चारों ओरसे कर्णको आवाहन करते हुए युद्ध करनेके वास्ते उनके सम्मुख आरहे हैं।

सञ्जय बोले महाराज! क्रोध और अमर्षसे युक्त महात्मा द्रोणपुत्र अश्वत्थामा दुर्य्योधनकी प्रार्थनासे कर्णके ऊपर प्रसन्न हुए। तिसके अनन्तर महात्मा कृपाचार्य्य अपने सुन्दर स्वभाव धीरता और मृदुताके सहित कर्णसे बोले, हे दुष्ट बुद्धिवाले सूतपुत्र! मैंने तुम्हारे इस अपराधको क्षमा किया, परन्तु अर्ज्जुन तुम्हारे इस बढ़े हुए अभिमानका नाश करेंगे।

सञ्जय बोले महाराज! इधर यशस्वी पाण्डव और पाञ्चाल योद्धा लोग इकट्ठे होकर चारों ओरसे सिंहनाद करते हुए युद्ध करनेकी इच्छासे कर्णके सम्मुख आके उपस्थित हुए। उन योद्धाओंको सम्मुख आते देखकर महापराक्रमी अत्यन्त तेजस्वी रथियोंमें श्रेष्ठ कर्ण भी अपने बाहुबलके आसरे और देवतोंसे घिरे हुए इन्द्रकी भांति मुख्य मुख्य कौरवोंके बीचमें स्थित होकर अपना धनुष चढ़ाके युद्धभूमिमें स्थित

हुए। महाराज। तिसके अनन्तर पाण्डवोंके संग क्रोधी कर्णका सिंहनाद शब्दके सहित महाघोर युद्ध होने लगा। पाण्डव लोग और यशस्वी पाञ्चाल योद्धा उस रणभूमिके बीच कर्णको देखकर यही कर्ण है कहां है कर्ण! अरे नीच! रे दुष्ट! मेरे संगमें आके युद्ध कर! इसी प्रकार महाघोर शब्दके सहित कोलाहल मचाने लगे। दूसरे कोई पुरुष राधापुत्र कर्णको देखते ही क्रोधसे दोनों नेत्र लाल करके यह वचन कहने लगे। हे राज शार्दूल पुरुषो! आप लोग सब कोई मिल कर इस नीच तथा अभिमानी सूतपुत्रका शीघ्र ही नाश करो; इसे जीवित रखनेकी कौनसी आवश्यकता है क्योंकि यह पापी सदा ही दुर्य्योधनके मत पर चलता है, यही कुन्तीपुत्रोंका वैरी और उनके दुःखकी जड़ है इससे इसका ही इस समय वध करना उचित है। यह वचन कहके महारथ क्षत्रिय योद्धा लोग राजा युधिष्ठिरकी आज्ञासे अपने अनेक वाणोंकी वर्षासे सम्पूर्ण दिशाओंको परिपूरित करते हुए कर्णके वधके निमित्त उनकी ओर दौड़े। महाराज! युद्धमें अपराजित महाबली सूतपुत्र कर्ण उन सम्पूर्ण महारथियोंको अपनी ओर आते देख तनिक भी भयभीत नहीं हुए। वह तुम्हारे पुत्रोंके हितकी इच्छा करके उथलते हुए समुद्रके समान युधिष्ठिरकी सेनाके पुरुषोंको सैकड़ों अस्त्र शस्त्रोंसे निवारण करने लगे। वैसे ही पाण्डवोंकी ओरके महारथी योद्धा लोग भी पराक्रमी कर्णको अपने अस्त्र शस्त्रोंसे निवारण करने लगे। हे राजेन्द्र! वे सम्पूर्ण राजा लोग अपने धनुषको फेरते हुए इस प्रकार राधापुत्र कर्णके संग युद्ध करने लगे जैसे दानवोंके राजाने इन्द्रके संग युद्ध किया था। राजाओंके धनुषसे उससमय जब चारो ओरसे वाणोंकी वर्षा होने लगी, तब पराक्रमी कर्णने अपने अनेक वाणोंको चला कर उन लोगोंके चलाये हुए वाणोंको निवारण किया। जैसे देवासुर युद्धके समय दानवोंके सहित देवराज इन्द्रका युद्ध हुआ था वैसे ही आपसमें एक दूसरेके वधकी अभिलाष करनेवाले उन शूरवीरोंका आपसमें महाघोर संग्राम होने लगा। महाराज! उस समय हम लोगोंने सूतपुत्र कर्णका अत्यन्त आश्चर्यमय हस्तलाघव और शस्त्र चलानेकी फुर्त्तीको अवलोकन किया कि उस समय सम्पूर्ण शत्रु सेनाके योद्धा लोग अपनी शक्तिके अनुसार पराक्रम प्रकाशित करके भी कर्णको अपने वशमें न कर सके। महारथ राधापुत्र कर्णने क्षण भरके बीच उन सम्पूर्ण राजाओंके चलाये हुए वाणजालको निवारण करके कर्ण नामसे अङ्कित सुवर्णभूषित अनेक वाणोंको किसीके रथ किसीकी ध्वजा किसीके हाथी किसीके घोड़े और किसीके सारथीके ऊपर चलाया। वे सम्पूर्ण राजालोग इसी प्रकार कर्णके वाणोंसे पीड़ित होकर उनके सम्मुख खड़े होनेमें समर्थ नहीं हुए वे लोग गौवोंके भांति इधर उधर दौड़ने लगे। उस समय में हाथी घोड़े और मनुष्योंको केवल कर्णके वाणोंसे पीड़ित होकर इधर उधर भागते हुए देखने लगा। महाराज! युद्धमें पीछे न हटनेवाले उन शूरवीरोंके कटे हुए अनगिनत सिरों और भुजाओंसे वह रणभूमि एकवारगी परिपूर्ण होगई। कहीं कहीं मरे हुए हाथी घोडे और किसी किसी स्थानमें मृत पुरुषोंके शरीरसे वह रणभूमि ऐसी भयङ्कर दिखाई देने लगी कि साक्षात यमपुरीके समान बोध होने लगी। महाराज! तिसके अनन्तर राजा दुर्य्योधन कर्णका ऐसा पराक्रम देखकर अश्वत्थामासे यह वचन बोले, हे आचार्य्यपुत्र! कर्ण अकेले ही युद्धभूमिमें स्थित होकर पाण्डवोंकी ओरके सम्पूर्ण राजाओंके सङ्ग युद्ध कर रहे हैं, यह देखो जैसे असुरोंकी सेना पार्व्वतीपुत्र स्वामिकार्त्तिकके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर इधर उधर भाग गई थी वैसेही

कर्णके तेज वाणोंसे पीड़ित होकर पाञ्चाल योद्धा लोग चारों ओर भाग रहे हैं; परन्तु अर्जुन बुद्धिमान कर्णके वाणोंसे अपनी सेनाके पुरुषोंको पराजित होते देखकर क्रोधपूर्व्वक कर्णकी ओर आ रहे हैं। इससे पाण्डुपुत्र अर्जुन जिससे तुम्हारे सम्मुखमें हो महारथ सूतपुत्र कर्णका वध न कर सके, आप वैसेही उपायका विधान कीजिये। तिसके अनन्तर द्रोणपुत्र अश्वत्थामा कृपाचार्य्य, शल्य और हृदिकपुत्र कृतवर्म्माने सूतपुत्र कर्णकी रक्षाके वास्ते अर्जुनके सम्मुख गमन किया। देवराज इन्द्रको असुरोंकी ओर आते देख जैसे वृत्रासुर उनकी ओर दौड़ा था, वैसे ही कर्ण अर्जुनको कुरुसेनाकी ओर आते देख उनकी ओर दौड़े।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! सूर्य्यपुत्र कर्णने क्रोधी यमराजके समान अर्जुनको सम्मुख आते देख उस समयके अनुसार किस कार्य्यका अनुष्ठान किया? क्योंकि वह महारथी सूतपुत्र कर्ण सदा ही अर्जुनसे द्वेष किया करता है और महायुद्धमें अर्जुनके जीतनेकी आशा भी करता है; इससे सदासे शत्रुभावयुक्त अर्जुनको सम्मुख आया देख, अपने कर्त्तव्य-कर्म्मके विषयमें क्या निश्चय किया?

सञ्जय बोले महाराज! जैसे एक मतवारे हाथीको देखकर दूसरा मतवारा हाथी उसकी ओर दौड़ता है वैसे ही राधापुत्र कर्ण अर्जुनको अपनी ओर आते देख निर्भयचित्तसे उनकी ओर दौड़े। महातेजस्वी शत्रुनाशन अर्जुन भी सूतपुत्र कर्णको वेगपूर्व्वक अपनी ओर आते देख अपने तेज वाणोंकी वर्षासे उन्हें निवारण करने लगे। हे भारत! तब राधापुत्र कर्ण अपने वाणोंके जालसे अर्जुनको छिपाकर फिर तीक्ष्ण वाणोंसे उन्हें विद्ध करने लगा, परन्तु महाबली शत्रुनाशन पृथापुत्र अर्जुनसे कर्णका हस्तलाघव न सहा गया, उन्होंने कर्णके ऊपर शिलापर घिसे हुए तीन सौ तेज वाणोंको चलाया। महाराज! प्रतापी अर्जुनने क्रुद्ध होकर एक वाणसे कर्णके बांये हाथको हथेलीको विद्ध किया। महाराज! हथेली विद्ध होतेही कर्णके हाथसे धनुष गिर पड़ा; परन्तु उस महाबलवान ने आधे निमिषमें फिर धनुष ग्रहण करके पानी चढ़े हुए तेज वाणोंसे फिर अर्जुनको छिपा दिया। परन्तु अर्जुनने निर्भय होकर कर्णके चलाये हुए वाणोंको अपने वाणोंसे निवारण किया। महाराज! इसी प्रकार धनुर्धारियोंमें अग्रणी महारथ पृथापुत्र अर्जुन और कर्ण एक दूसरेके वधकी इच्छा करके बाणोंकी वर्षासे एकदूसरेको छिपाने लगे। जैसे ऋतुमती हथिनीके वास्ते दो मतवारे हाथियोंका आपसमें युद्ध होता है, वैसे ही उन दोनों वीरोंका आपसमें महाघोर युद्ध होने लगा। अनन्तर महाधनुर्द्धर शत्रुनाशन अर्जुनने कर्णका पराक्रम देख शीघ्रतासहित उनके धनुषकी मूंठी काट दिया। अनन्तर भल्लास्त्रसे उनके रथके चारों घोड़ोंको मारकर फिर एक वाणसे उनके सारथीका शिर काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। तिसके अनन्तर अर्जुनने धनुष घोड़े और सारथीसे रहित कर्णको चार वाणोंसे विद्ध किया। तब पुरुषश्रेष्ठ कर्ण अर्जुनके वाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर घोड़ोंसे रहित रथसे कूदकर कृपाचार्य्यके रथपर जा चढ़े। हे राजेन्द्र! तुम्हारी ओरके शूरवीर अर्जुनके वाणोंसे क्षतविक्षत शरीरसे युक्त थे उसपर भी कर्णको पराजित देखकर चारों ओर भागने लगे। तुम्हारा पुत्र दुर्य्योधन अपनी सेनाके योद्धाओंको भागते देख उन्हें निवारण करते हुए कहने लगे। हे क्षत्रिय श्रेष्ठ शूरवीर पुरुषो? तुम लोग क्यों भागते हो लौटके युद्ध करो, मैं अर्जुनका वध करनेके निमित्त स्वयं युद्धभूमिमें उसके सम्मुख गमन करता हूं। मैं पाञ्चाल और चन्द्रवंशियोंके सहित

ण्डवोंका नाश करूंगा। आज मैं गाण्डीव-नुष धारण करनेवाले अर्ज्जुनके संग युद्धमें युक्त होऊंगा; आज कुन्तीके पुत्र प्रलयकालके मराज समान मेरा पराक्रम देखेंगे। आज रवीर योद्धा लोग मेरे धनुषसे छूटे हुए शलभ-मूहकी भांति अनगिनत शरोंको अर्ज्जुनकी ओर चलते हुए देखेंगे। आज जब मैं युद्धभूमिके च अथवा धनुष चढ़ा कर लगातार बाणोंको ने लगूंगा, तब सेनाके पुरुष मुझे जलको र्षा करनेवाले बादलकी भांति मालूम करेंगे। शूरवीर पुरुषो। आज मैं अपने तीक्ष्णबाणों अवश्य ही अर्ज्जुनको पराजित करूंगा, इससे म लोग भय त्यागके निर्भयताके सहित रण मिमें स्थित रहो। जैसे समुद्रके वेगको तट कता है, वैसे ही अर्ज्जुन भी मेरा पराक्रम खकर आगे बढ़नेमें असमर्थ होजावेगा।

महाराज। पराक्रमी राजा दुर्य्योधन ऐसा चन कह कर क्रोधसे नेत्र लाल करके अपनी हासेनाके बीच घिर कर अर्ज्जुनकी ओर ड़े। तब शरद्वतपुत्र कृपाचार्य्य राजा दुर्य्यो-नको अर्ज्जुनको ओर गमन करते देख अपने ानजे अश्वत्थामासे यह वचन बोले। देखो धसे वशमें होकर कुरुराज दुर्य्योधन अर्ज्जु-की ओर इस प्रकार गमन कर रहे है, जैसे तङ्ग अग्निकी ओर दौड़ते हैं, इससे जबतक जा दुर्य्योधन अर्ज्जुनके समीप पहुंच कर ाण त्याग नहीं करते हैं उससे पहिले ही तुम न्हें अर्ज्जुनकी ओर जानेसे निवृत्त करो। जब क पराक्रमी दुर्य्योधन अर्ज्जुनके बाणके सम्मुख हीं उपस्थित होते हैं उससे पहिले ही तुम उन्हें युद्धभूमिसे निवृत्त करो। जब तक अर्ज्जु-के गाण्डीव धनुषसे छूटे हुए केंचुलीसे रहित र्पके समान तेजस्वी बाण कुरुराज दुर्य्योधनको भक्षण नहीं करते हैं उससे पहिले ही तुम उन्हें अर्ज्जुनके समीप जानेसे निवृत्त करो। हे प्यारे त्थामा ! मैं इस कार्य्यको अत्यन्त ही अनु-चित समझ रहा हूं, कि हम सब लोगोंके रहते ही राजा दुर्य्योधन सहायकोंसे रहित पुरुषकी भांति स्वयं ही अर्ज्जुनकी ओर युद्धके वास्ते गमन कर रहे हैं। विशेष करके कुरु-राज दुर्य्योधन यदि अर्ज्जुनके सङ्ग आज युद्ध करनेमें प्रवृत्त होंगे, तो शार्दूलके सङ्ग युद्ध करते हुए हाथीकी भांति उनका प्राण बचनेमें अत्यन्त ही कठिनता होवेगी।

महाराज! शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणपुत्र अश्वत्थामा अपने मामाकी आज्ञा सुनकर शीघ्र-ताके सहित दुर्य्योधनके समीप जाकर यह वचन बोले, हे गान्धारीपुत्र! देखो, तुम्हारे हितकी सदा अभिलाष करनेवाला मैं जीवित हूं, मेरा अनादर करके स्वयं युद्ध करनेके वास्ते अर्ज्जुनके समीप जाना तुम्हें उचित नहीं है। अर्ज्जुनको पराजित करनेके वास्ते तुम कुछ भी चिन्ता मत करो। तुम यहां ही स्थित रहो मैं अर्ज्जुनको युद्धसे निवारण करूंगा।

महाराज! तुम्हारे पुत्र राज दुर्य्योधन गुरुपुत्र अश्वत्थामाके वचनोंको सुनकर बोले, हे द्विजसत्तम! देखिये आचार्य्य रणभूमिमें पाण्डुपुत्रोंको अपने पुत्रकी भांति रक्षा करते रहते हैं, और तुम भी सदा उन लोगोंको युद्धभूमिमें देखकर उपेक्षा करते हो। इसके अतिरिक्त मेरे अभाग्यसे होवे अथवा धर्म्मराज युधिष्ठिर और द्रौपदीके प्रियकार्य्यको करनेके निमित्त ही होवे,-युद्धभूमिमें जो आप लोगोंका पराक्रम पूर्णरूपसे प्रकाशित नहीं होता इसका कारण मुझे मालूम नहीं होता है। मुझे धिक्कार है! मुझ लोभीके वास्ते ही ये सम्पूर्ण बन्धु-बान्धव लोग सदा सुख भोग करनेके योग्य होकर भी दुख पारहे हैं। सब शस्त्रधारियोंमें अग्रणी और युद्धमें महादेवके समान पराक्रमी होकर भी तुम्हारे अतिरिक्त दूसरा कौन पुरुष शत्रुओंके विषयमें उपेक्षा कर सकता है? हे पापरहित अश्वत्थामा! आप मेरे ऊपर प्रसन्न

छोड़िये। देखिये, तुम्हारे बाणोंके सम्मुखसे देवता लोग भी नहीं ठहर सकते! इससे आप मेरे शत्रुओंका नाश कीजिये। हे द्रोणपुत्र! आप अनुयाइयोंके सहित सोमकवंशी और पाञ्चाल योद्धाओंका नाश कीजिये; फिर हम लोग तुमसे रक्षित होकर बाकी बचे हुए शत्रुओंका वध करेंगे! यह देखिये यशस्वी पाञ्चाल और सोमकवंशीय योद्धा लोग क्रुद्ध होकर दावाग्निकी भांति मेरी सेनारूपी बनमें भ्रमण कर रहे हैं। हे महाबाहो द्रोणपुत्र अश्वत्थामा! इससे जब तक पाण्डवोंकी सेनाके पुरुष अर्जुनसे रक्षित होकर मेरी सेनाके योद्धाओंका नाश नहीं करते हैं, उससे पहिले ही आप केकय और पाञ्चाल सेनाके वीरोंका नाश कीजिये। हे शत्रुनाशन अश्वत्थामा! आगे हो चाहे पीछे हो; आप शीघ्र ही शत्रुओंके विरुद्ध युद्धके निमित्त रणभूमिमें गमन कीजिये; यह तुम्हारा ही कर्त्तव्य कर्म्म है। हे पापरहित अश्वत्थामा। देखो पाञ्चाल वीरोंके नाश करनेहीके वास्ते तुम उत्पन्न हुए हो; इससे तुम अवश्य ही इस जगत्को पाञ्चाल योद्धालोगोंसे रहित करोगे। विशेष करके सिद्ध लोग भी जब तुम्हारे विषयमें ऐसा बचन कहा करते हैं तब यह कार्य्य अवश्य ही पूर्ण होवेगा। हे पुरुषशार्दूल! इससे आप अनुयाइयोंके सहित पाञ्चाल वीरोंका नाश कीजिये। मैं तुमसे यह यथाथ बचन कहता हूं, कि पाञ्चाल और पाण्डवोंकी तो कुछ बात ही नहीं है, इन्द्रके सहित सम्पूर्ण देवता भी तुम्हारे अस्त्रोंके सम्मुख नहीं ठहर सकते। हे वीर! मुझे पूरा निश्चय है, कि सोमकवंशियोंके सहित पाण्डव लोग कभी भी रणभूमिमें पराक्रम प्रकाशित करके तुम्हारे सङ्ग युद्ध करनेमें समर्थ न हो सकेंगे। यह देख, मेरी सेनाके योद्धा लोग अर्जुनके बाणोंसे पीड़ित होकर चारों ओर भाग रहे हैं। इससे अब हम लोगोंको बृथा समय बितानेकी कुछ भी आवश्यकता नहीं है; आप शीघ्रताके सहित शत्रुओंके सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते गमन कीजिये हे महाबाहो! आप अपने दिव्य तेज तथा पराक्रमके प्रभावसे पाञ्चाल योद्धाओं और पाण्डुपुत्रोंको पराजित करनेमें समर्थ हैं।

१५७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले; महाराज! तुम्हारे पुत्र राजा दुर्य्योधनके ऐसे बचनोंको सुनकर युद्धदुर्म्मद महाबाहु द्रोणपुत्र आश्वत्थामा उनसे यह बचन बोले,—हे महाबाहो कुरुराज दुर्य्योधन! तुमने जो कुछ बचन कहे, वह सब सत्य है अर्थात पाण्डव लोग जैसे मुझे और मेरे पिताको प्रिय हैं वैसे ही हम दोनों भी उन लोगोंके प्रीतिके पात्र हैं; परन्तु युद्धके समय यह बात नहीं रहती। हे भ्राता! युद्धके समय हम लोग निर्भयचित्तसे प्राणकी आशा छोड़ युद्ध किया करते हैं। हे राजेन्द्र! रणभूमिमें यदि पाण्डव लोग उपस्थित न रहें, तो मैं कर्ण शल्य, मेरे मामा कृपाचार्य्य और हृदीकपुत्र कृतवर्म्मा इत्यादि हम लोग निमेष भरमें पाण्डवोंकी सम्पूर्ण सेनाका नाश कर सकते हैं, और हम लोग यदि युद्धभूमिमें स्थित रहें; तो पाण्डव लोग भी अर्द्धनिमेष भरमें तुम्हारी सेनाके पुरुषोंका नाश कर सकते हैं; परन्तु पाण्डव लोग और हम लोग अपने शक्तिके अनुसार युद्ध करनेमें प्रवृत्त हैं इससे आपसमें एकके तेजका प्रभाव दूसरेके सम्मुख शान्त होजाता है। इससे मैं तुमसे यह निश्चय बचन कहता हूं कि पाण्डु पुत्रोंके जीवित रहते यत्नपूर्व्वक उनकी सेनाको पराजित करना असाध्य कर्म्म समझियेगा। हे भारत! पाण्डव लोग सब कोई सामर्थवान हैं, इससे वह लोग अपने प्रयोजनकी सिद्धिके निमित्त यह बल

रहे हैं तब तुम्हारी सेनाके पुरुषोंका नाश क्यों न करेंगे? आप अत्यन्त ही लोभी अभिमानी, कपटबुद्धिसे युक्त और सम्पूर्ण विषयोंमें शङ्कित हैं इस ही निमित्तसे आप हम लोगोंके विषयमें शङ्का किया करते हैं। हे शत्रुनाशन महाराज दुर्य्योधन! चाहे जैसा ही होवे तुम्हारे निमित्त मैं अपने प्राणकी आशा छोड़के यत्नवान होकर रणभूमिमें गमन करता हूं। आज मैं तुम्हारे प्रिय कार्य्यको सिद्ध करनेके वास्ते सोमकवंशी आदि पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंके सङ्ग युद्ध करके मुख्य मुख्य योद्धाओंका बध करूंगा। आज मेरे तीक्ष्ण बाणोंकी चोटसे पाञ्चाल तथा चन्द्रवंशी शूरवीर योद्धा इस प्रकार रणभूमिके बीचसे चारों ओर भाग जावेंगे जैसे सिंहको सम्मुखसे भयभीत होकर गौवोंका समूह इधर उधर भाग जाता है। आज चन्द्रवंशियोंके सङ्ग मुझे युद्ध करते देखकर राजा युधिष्ठिर इस संसारको अश्वत्थामामय समझेंगे। आज राजा युधिष्ठिर पाञ्चाल और चन्द्रवंशी वीरोंको मेरे अस्त्रोंसे मरे हुए देखकर अत्यन्त ही दुःखित होवेंगे: हे वीर कुरुराज दुर्य्योधन! मैं तुमसे अधिक क्या कहूं आज जो पुरुष मेरे सम्मुख आके युद्ध करेंगे मैं अवश्य ही उन्हें अपने अस्त्रोंके प्रभावसे प्राणरहित करके यमपुरीमें भेज दूंगा क्योंकि मेरी भुजाके भीतर आके वे लोग किसी प्रकारसे भी जीते हुए न लौट सकेंगे।

हे राजेन्द्र! महाबाहु अश्वत्थामाने तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनसे ऐसा वचन कहकर पाण्डव तथा पाञ्चाल योद्धाओंके सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते प्रस्थान किया। अनन्तर अपने सम्मुखमें पाञ्चाल और केकय योद्धाओंको स्थित देखकर पराक्रमी अश्वत्थामा उनसे यह वचन बोले हे महारथो शूरवीरो! तुम लोग सब कोई मिलकर अपने अस्त्रशस्त्रोंसे मेरे ऊपर प्रहार करो; और अपना हस्तलाघव दिखाते हुए स्थित होके मेरे सङ्ग युद्ध करो। अश्वत्थामाके ऐसे वचन सुनकर पाञ्चाल और चन्द्रवंशी योद्धा लोग उनके ऊपर इस प्रकार अस्त्रशस्त्रोंकी वर्षा करने लगे, जैसे बादल आकाशसे जलकी वर्षा करते हैं। महाराज! द्रोण पुत्र अश्वत्थामाने पाण्डवों और धृष्टद्युम्नके सम्मुखमें ही उन लोगोंके बीचसे दश पराक्रमी वीरोंका बध किया। पाञ्चाल और सृञ्जय योद्धा लोग अश्वत्थामाके बाणोंसे पीड़ित होकर युद्धभूमिसे हटके चारों ओर भागने लगे। पाञ्चालराजपुत्र महारथी धृष्टद्युम्न उन योद्धाओंको भागते देख युद्धसे पीछे न हटनेवाले सजल बादलकी भांति गम्भीर शब्दसे गर्ज्जनेवाले एक सौ शूरवीरोंके सङ्गमें घिरकर अश्वत्थामाकी ओर दौड़े; और अपनी सेनाके योद्धाओंका नाश होते देख अश्वत्थामासे बोले हे द्रोणपुत्र! सेनाके साधारण पुरुषोंका बध करके तुम कौनसा प्रशंसित पराक्रम प्रकाशित कर रहे हो, आके मेरे सङ्ग युद्ध करो, यदि तुम शूरवीर पुरुष हो, तो मेरे सम्मुख खड़े होकर युद्ध करो, मैं अवश्य ही तुम्हें यमपुरीमें भेज दूंगा। प्रतापी धृष्टद्युम्न ऐसा वचन कहके अश्वत्थामाके ऊपर अत्यन्त तीक्ष्ण मर्म्मभेदी बाणोंसे प्रहार करने लगे। महाराज! जैसे मधुके लोभी भौरोंके समूह चारों ओरसे घूमकर फूले हुए वृक्षके ऊपर वेगपूर्व्वक गिरते हैं वैसे ही धृष्टद्युम्नके चलाये हुए शरीरको भेद करनेवाले चोखे बाणोंके समूह अश्वत्थामाके ऊपर पड़ने लगे। महामानी अश्वत्थामा धृष्टद्युम्नके बाणोंसे अत्यन्त बिद्ध होकर इस प्रकार क्रुध हुए जैसे पांवसे पूछ दबनपर सर्प क्रुद्ध होता है। अनन्तर अश्वत्थामा हाथमें एक बाण ग्रहण करके बोले, हे धृष्टद्युम्न! तुम क्षण भर मेरे सम्मुख युद्धभूमिमें रहो तो सही, मै इस ही समय अपने तीक्ष्ण बाणोंसे तुम्हारा बध करके तुम्हें यमपुरीमें भेजता हूं।

शत्रुनाशन अश्वत्थामाने धृष्टद्युम्नसे ऐसा वचन कहके अपना हस्तलाघव प्रकाशित करते हुए लगातार अपने बाणोंकी वर्षाकर चारों ओरसे धृष्टद्युम्नको छिपा दिया। तिसके अनन्तर पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्न अश्वत्थामाके बाणजालसे छिपकर उन्हें निवारण करते हुए यह वचन कहने लगे—हे विप्र! तुम मेरी उत्पत्ति और प्रतिज्ञाके विषयसे अजान नहीं हो। अरे दुष्टबुद्धिवाले! मैं पहिले द्रोणाचार्य्यका बध करके पीछे तेरा भी प्राण नाश करूंगा; द्रोणाचार्य्यके जीवित रहते आज तुम्हारा बध नहीं करूंगा। हे नीचबुद्धिवाले ब्राह्मण! आज इस ही रात्रिके समय सबेरा होनेसे पहिले ही युद्धभूमिमें तुम्हारे पिताका बध करके पीछे तुम्हें भी यमपुरीमें भेजूंगा, मैंने अपने मनमें ऐसा ही निश्चय किया है। कुन्तीपुत्रोंके ऊपर तुम्हारा जैसा द्वेष और कौरवोंके ऊपर तुम्हारी जैसी भक्ति है, युद्धभूमिमें स्थित होके आज तुम उसका फल पूर्ण रीतिसे देखोगे, परन्तु जीते जी तुम मेरे सम्मुखसे मुक्त न हो सकोगे। हे ब्राह्मणाधम! जो ब्राह्मण तेरी भांति ब्राह्मणका कर्म्म छोड़के क्षत्रिय धर्म्ममें रत होता है वह सम्पूर्ण पुरुषोंका ही वध्य होजाता है। महाराज! द्विजसत्तम अश्वत्थामा धृष्टद्युम्नके ऐसे कड़वे वचनोंको सुनकर अत्यन्त क्रुद्ध होकर इस प्रकार उनकी ओर देखने लगे मानो दृष्टिसे देख कर ही उसे भस्मकर देंगे। अनन्तर अश्वत्थामा सर्पके समान बारबार लम्बी और गर्म्म सास छोड़के खड़ा रह! खड़ा रह! करके अपने अनेक बाणोंकी वर्षासे धृष्टद्युम्नको छिपाने लगे। पाञ्चाल सेनाके बीच घिरे हुए रथियोंमें मुख्य धृष्टद्युम्न अश्वत्थामाको ओर अनेक तीक्ष्ण बाण चलाने लगे। इसी भांति वे दोनो महाधनुर्द्धारी बीर प्राणपणसे रणभूमिके बीच स्थित होके एक दूसरेके बधकी इच्छा करके अपने बाणोंसे एक दूसरेके ऊपर प्रहार करके दोनों ही पीड़ित हुए फिर जलधाराकी भांति चारों ओर लगातार अपने बाणोंकी वर्षाने लगे। पृषत बंशीय धृष्टद्युम्न और द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके महाघोर भयङ्कर युद्धको देखकर सिद्ध चारण और वायुमें गमन करनेवाले प्राणी उन दोनो वीरोंकी अत्यन्तही प्रशंसा करने लगे। उन दोनों बीरोंने अपने बाणोंको चलाकर सब दिशा और आकाशमण्डलको परिपूरित करके ऐसा अन्धकार उत्पन्न किया, कि दोनों ही अदृश्य होकर युद्ध करने लगे। आपसमें एक दूसरेके बधकी इच्छा करनेवाले यत्नवान और महाबलवान वे दोनों बीर मण्डलाकार गतिसे धनुष फेरते तथा एक दूसरेको जीतनेकी अभिलाषासे नाना भांतिके युद्ध कौशल दिखाते हुए सहस्रों सेनाध्यक्ष पुरुषोंसे प्रशंसित होकर युद्ध करने लगे। महाराज! सेनाके लोग दोनको दो मतवारे हाथीकी भांति रणभूमिमें युद्ध करते देख हर्षपूर्वक बार बार शंख और युद्धके सैकड़ों सहस्र जुझाऊ बाजे बाजाकर सिंहनाद करने लगे कादरोंके भयको बढ़ानेवाले उस महाघोर तुमुल संग्रामके समय मुहूर्त्त भरतक उन दोनोंका समभावसे युद्ध होता रहा। तिसके अनन्तर, द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने महात्मा धृष्टद्युम्नके रथकी ध्वजा, दण्ड, छत्र, चारों घोड़े, सारथी दो पृष्टरक्षक योद्धाओं और उनके धनुषको काट दिया। अनन्तर पराक्रमी अश्वत्थामा धृष्टद्युम्नको ओर दौड़े। उस समय अत्यन्त तेजस्वी अश्वत्थामा सैकड़ों सहस्रों पाञ्चाल योद्धाओंको अपने बाणोंके प्रहारसे पीड़ित करके उन्हें छिन्नभिन्नकरके युद्धभूमिसे भगाने लगे। हे राजन्! रणभूमिके बीच द्रोणपुत्र अश्वत्थामाका इन्द्रके समान पराक्रम देखकर पाण्डव और पाञ्चाल सेनाके सम्पूर्ण योद्धा भयभीत होगये; क्योंकि महा

रथी अश्वत्थामाने एक सौ बाणोंसे एक सौ और तीन चोखे बाणोंसे तीन महारथियोंका बध किया। अधिक क्या कहा जावे, उस समय पाञ्चाल सेनाके जितने योद्धा अश्वत्थामाके सन्मुख उपस्थित हुए पराक्रमी अश्वत्थामाने अर्ज्जुन और धृष्टद्युम्नके सन्मुखमें ही उन शूरवीरोंके बीचसे अनेक योद्धाओंका बध करके उन्हें यमपुरीमें भेज दिया। इसी भांति पाञ्चाल और सृञ्जय योद्धालोग अश्वत्थामाके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर ध्वजा दण्ड आदि टूटे हुए रथोंपर चढ़के उनके सन्मुखसे भागने लगे। उस समय महारथी द्रोणपुत्र अश्वत्थामा रणभूमिके बीच अनगनित शत्रुओंको पराजित करके वर्षाकालके बादलकी भांति सिंहनाद करके गर्ज्जने लगे। और जैसे प्रलयकालकी अग्नि सम्पूर्ण प्राणियोंको भस्म करके प्रकाशित होती है, वैसे ही पराक्रमी अश्वत्थामा भी शत्रुओंका नाश करके युद्धभूमिके बीच शोभित हुए। जैसे देवराज इन्द्र दानवोंकी सेनाका नाश करके शोभित हुए थे वैसेही प्रतापी अश्वत्थामा भी युद्धभूमिके बीच सहस्रों शत्रुओंका नाश करके कौरवोंसे सम्मानित तथा प्रशंसित होकर शोभित होने लगे।

१५८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज। तिसके अनन्तर भीमसेन और धर्म्मपुत्र युधिष्ठिरने चारों ओरसे अश्वत्थामाको घेर लिया। वैसे ही कुरुराज दुर्य्योधन भी भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्यके सहित पाण्डवोंकी ओर दौड़े। अनन्तर डरपोक पुरुषोंके भयको बढ़ानेवाला उन शूरवीरोंका आपसमें महाघोर दारुण संग्राम होने लगा। उस समय धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर अम्बष्ट मालव बङ्ग शिवि और त्रिगर्त्त देशीय योद्धाओंका बध करके उन्हें यमपुरीमें भेजने लगे। भीमसेनने भी युद्ध दुर्म्मद अभिशाह और शूरसेन देशीय क्षत्रियोंको खंड खंड करके उनके रुधिरसे पृथ्वीको कीचड़मयी कर दिया। उस ही समय किरीटमाली अर्ज्जुन भी योध अम्बष्ट और मद्र देशीय वीरोंको अपने चोखे बाणोंसे प्राण विहीन करके यमपुरीमें भेजने लगे। सेनाके बीच बहुतेरे मतवारे हाथी अर्ज्जुनके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर दोशृङ्गवाले पर्व्वतकी भांति मरकर रणभूमिमें गिरने लगे। रणभूमिमें गिरे हुए तथा कटे हुए कितने ही हाथियोंके सूण्ड रणभूमिमें गिर कर सर्पके समान दिखाई देते थे; और सुवर्णचित्रित राजाओंके छत्र जो इधर उधर कटके पृथ्वीमें पड़े थे उससे वह रणभूमि इस प्रकार प्रकाशित होरही थी जैसे प्रलयकालके समय सूर्य्य चन्द्रमा और और तारोंसे युक्त आकाशमण्डल शोभित होता है। महाराज। उस समय मारो अस्त्र चलाओ निर्भय होके विद्ध करो! काटो, लाल घोड़ोंसे युक्त द्रोणाचार्य्य रथके निकट इसीप्रकार शब्द सुनाई देने लगे। जैसे प्रचण्ड वायु बादलोंके समूहको छिन्न भिन्न कर देता है वैसे ही क्रुद्ध द्रोणाचार्य्यके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर पाञ्चाल योद्धालोग महात्मा भीमसेन और अर्ज्जुनके सन्मुखमें ही रणभूमिमें भागने लगे। तिसके अनन्तर भीमसेन और अर्ज्जुनने बहुतसी रथियोंकी सेना सङ्ग लेकर क्रमसे उत्तर और दक्षिणसे द्रोणाचार्य्यको आक्रमण करके उनके ऊपर अनेक तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करने लगे। तब मत्स्य और सोमकवंशीय वीरों सहित पाञ्चाल योद्धा उनके अनुगामी हुए। वैसे ही तुम्हारी सेनाके भी मुख्य मुख्य योद्धा लोग सेनाके अनेक पुरुषोंके सहित द्रोणाचार्य्यकी सहायतामें उपस्थित हुए; परन्तु अन्धकार और निद्रासे दुःखित हुए कुरुसेनाके योद्धा लोग अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित होकर फिर

छिन्न भिन्न होगये। उस समय उन योद्धाओंको भागते देख, पराक्रमी द्रोणाचार्य्य और तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनने स्वयं निवारण किया; परन्तु तौभी वे लोग भागनेसे निवृत्त नहीं हुए। महाराज! उस महाघोर अन्धकारके समय तुम्हारे पुत्रोंकी सेना पाण्डुपुत्रोंके अस्त्रोंकी चोटसे व्याकुल होके चारों ओर दौड़ने लगी। सेनापति योद्धा तथा पराक्रमी राजा लोग अपने वाहनोंको त्याग करके भयभीत होकर चारों ओर भागने लगे।

१५९ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज! इस ही समय सात्यकि सोमदत्तको धनुष फेरते देख, अपने सारथीसे बोले, हे सूत! तुम मुझे सोमदत्तके समीप लेचलो। मैं सत्य वचन कहता हूं कि आज मैं विना इस कुरुकुलाधम सोमदत्तको मारे युद्धसे निवृत्त न हो ऊंगा। सारथीने सात्यकिका बचन सुनकर मनके समान शीघ्र गमन करनेवाले शङ्खके समान सफेद सिन्धुदेशीय सुन्दर घोड़ोंको वेगपूर्व्वक सोमदत्तकी ओर चलाया। महाराज! जैसे असुरोंके नाश करनेवाले देवराज इन्द्रके रथके घोड़े उनके रथको खींचते हुए रणभूमिमें गमन करते हैं, वैसे ही मन और बायुके समान शीघ्र गमन करनेवाले घोड़े सात्यकिके रथको खींचते हुए रणभूमिके बीच गमन करने लगे। महाबाहु सोमदत्तने सात्यकिको वेगपूर्व्वक अपनी ओर आते देख जैसे जलयुक्त बादल सूर्य्यको छिपाता है वैसेही सात्यकिको अपने बाणोंसे छिपाते हुए निर्भयचित्तसे उनकी ओर दौड़े। सात्यकि भी निर्भयचित्तसे अपने बाणोंकी वर्षा करके चारों ओरसे कौरवोंमें मुख्य सोमदत्तको छिपाने लगे। तिसके अनन्तर सोमदत्तने आठ बाणोंसे यदुवंशी। सात्यकिके वक्षस्थलमें प्रहार किया और सात्यकिने भी अनेक तीक्ष्ण बाणोंसे सोमदत्तको बिद्ध किया। महाराज! इसी भांति कौरव और वृष्णिवंशके यशको बढ़ानेवाले पुरुषश्रेष्ठ सोमदत्त और सात्यकि आपसमें एक दूसरेके बाणोंकी चोटसे रुधिरपूरित तथा क्षतविक्षत शरीरसे युक्त होकर फूले हुए पलाश वृक्षकी भांति रणभूमिमें शोभित हुए; और इस भांति दोनों आपसमें एक दूसरेको देखने लगे, मानो देखकर ही एक दूसरेको भस्म कर देंगे। दोनों शत्रुनाशन वीर मण्डलाकार गतिसे रथपर घूमते हुए इस प्रकार अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे जैसे बादल जलकी वर्षा करते हैं। उस समय वे दोनों वीर आपसमें एक दूसरेके बाणोंसे इस प्रकार बिद्ध हुए कि उन दोनोंके शरीर बाणमय दिखाई देने लगे। और वे दोनों वीर बाणोंसे परिपूरित शरीर होकर मानो वर्षाकालके खद्योतसमूहसे युक्त दो वृक्षकी भांति मालूम होने लगे। इसी प्रकार महारथी सोमदत्त और सात्यकि आपसमें एक दूसरेके बाणोंसे पीड़ित होकर मानो रणभूमिमें लुकसे युक्त दो हाथियोंकी भांति युद्धभूमिमें बिराजमान हुए। तिसके अनन्तर महारथी सोमदत्तने यदुवीर सात्यकिके बड़े धनुषको काट दिया और पचीस बाणोंसे उन्हें बिद्ध करके शीघ्रताके सहित फिर दश बाणोंसे विद्ध किया। तब सात्यकिने एक दृढ़ धनुष ग्रहण करके पांच बाणोंसे सोमदत्तको विद्ध किया। तिसके अनन्तर सात्यकिने फिर एक बाण चलाकर बाह्लिकपुत्र सोमदत्तके रथकी सुवर्णदण्डभूषित ध्वजा काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। सोमदत्तने अपने रथकी ध्वजाको सात्यकिके बाणसे कटती देख निर्भयचित्तसे शिनिपौत्र सात्यकिके शरीरमें वीस बाणोंसे प्रकार किया। अनन्तर सात्यकिने अत्यन्त क्रुद्ध होकर एक तेज क्षुरप्र अस्त्रसे सोमदत्तका धनुष काट दिया। और दांत टूटे

हुए हाथीकी भांति सोमदत्तको धनुष सहित सुवर्णदण्डवाले अनेक तीक्ष्ण बाणोंसे छिपाने लगे। अनन्तर महाबली सोमदत्त दूसरा धनुष ग्रहण करके अपने बाणोंकी बर्षाकर सात्यकिको छिपाने लगे। इसी प्रकार वे दोनों बीर क्रुद्ध होकर अपने अनगिनत बाणोंसे एक दूसरेको पीड़ित करने लगे। इस ही समय भीमसेनने सात्यकिकी सहायता करनेके वास्ते दश बाणोंसे सोमदत्तके शरीरमें प्रहार किया; परन्तु सोमदत्त निर्भय चित्तसे केवल सात्यकिको ही अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे। तिसके अनन्तर घटोत्कचने सात्यकिकी सहायता करनेकी इच्छासे अत्यन्त दृढ़ एक परिघ उठाकर सोमदत्तकी ओर चलाया। महाराज! कौरवोंमें मुख्य सोमदत्तने उस भयानक परिघको अपनी ओर आते देख निर्भयताके सहित तीक्ष्ण बाणोंसे काटके दो खण्ड कर दिया। महाराज! वह लौहमय परिघ सोमदत्तके बाणोंसे दो टुकड़े होकर इस प्रकार पृथ्वीमें गिरा जैसे वज्रकी चोटसे पर्व्वत टुकड़े टुकड़े होके गिर पड़ता है। उसे देखकर शिनिपौत्र सात्यकिने शीघ्रताके सहित भल्लास्त्रसे उनका धनुष काट कर पांच बाणोंसे उनके हस्तत्राण और चार बाणोंसे उनके रथके चारों घोड़ोंको मार डाला। फिर हंसते हंसते एक तीक्ष्ण भल्लास्त्रसे उनके सारथीका सिर काटके धड़से अलग कर दिया। तिसके अनन्तर सात्यकिने सिला पर घिसे हुए महाभयङ्कर बाण ग्रहण करके सोमदत्तकी ओर चलाये। महाराज! अत्यन्त भयङ्कर वह बाण शिनिपौत्र बलवान सात्यकिके धनुषसे छूटकर शीघ्रही सोमदत्तके वक्षस्थल पर गिरा। रथियोंमें मुख्य महाबाहु सोमदत्त उस बाणसे अत्यन्त विद्ध होके उसही समय ...र कर पृथ्वीमें गिर पड़े।

...सेनाके योद्धा लोग महारथी सोमदत्तको ...रते देख महाघोर बाणोंकी वर्षा करते हुए सात्यकिकी ओर दौड़े। धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर सात्यकिको तुम्हारी सेनाके वीरोंके बाणजालमें छिपे देख अपनी बड़ी सेनाके सहित द्रोणाचार्य्यकी सेनाकी ओर दौड़े। उस समय राजा युधिष्ठिर क्रुद्ध होकर द्रोणाचार्य्यके सम्मुखमें ही तुम्हारी महासेनाके योद्धाओंको रणभूमिमें तितर बितर करने लगे। तब द्रोणाचार्य्य राजा युधिष्ठिरको अपनी ओरके योद्धाओंको छिन्न भिन्न करते देख क्रोधसे लालनेत्र करके उनकी ओर दौड़े और सात तीक्ष्णबाणोंसे उन्हें विद्ध किया। राजा युधिष्ठिरने अत्यन्त क्रुद्ध होकर पांच बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको विद्ध किया। महाबाहु द्रोणाचार्य्यने युधिष्ठिरके तीक्ष्णबाणोंसे अत्यन्त क्रुद्ध हो दांत पीसते हुए उनका धनुष और उनके रथकी ध्वजाको अपने तीक्ष्णबाणोंसे काट दिया। धनुष कटने पर राजा युधिष्ठिरने शीघ्रताके सहित फिर एक दृढ़ धनुष ग्रहण करके घोड़े सारथी और रथके सहित द्रोणाचार्य्यको अनगिनत बाणोंसे विद्ध किया, उस समय युधिष्ठिरका पराक्रम अद्भुतरूपसे दीख पड़ा। द्रोणाचार्य्य राजा युधिष्ठिरके बाणोंसे पीड़ित होकर ऐसे कातर हुए कि मुहूर्त्त भर तक रथ पर मूर्च्छित रहे। थोड़ी देरके बाद द्रोणाचार्य्यने सावधान होकर क्रोध पूर्व्वक वायव्य अस्त्र चलाया। महाराज! पराक्रमी कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरने निर्भयचित्तसे अपने अस्त्रोंके प्रभावसे वायव्य अस्त्रको निवारण करके द्रोणाचार्य्यका धनुष काट दिया। उस ही समय श्रीकृष्णजी कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरको पुकारके यह वचन बोले, हे महाबाहु युधिष्ठिर मैं तुमसे जो कुछ कहता हूं उसे सुनो; आप द्रोणाचार्य्यसे युद्ध न कीजिये, क्योंकि वह युद्धभूमिमें तुम्हें पकड़नेके वास्ते हर समय आशा कर रहे हैं; विशेष करके द्रोणाचार्य्यके सङ्ग तुम्हारा संग्राम उचित नहीं मालूम होता है, जिन्होंने द्रोणा-

चार्य्यके बध करनेके वास्ते इस पृथ्वी पर जन्म लिया है, वही धृष्टद्युम्न कल्ह भोरके समय द्रोणाचार्य्यका बध करेंगे। आप द्रोणाचार्य्यको त्यागके जहां पर राजा सुयोधन स्थित है उस ही स्थानमें गमन किजिये क्योंकि राजा लोगोंका राजाके सङ्ग ही युद्ध करना उचित है। हे राजेन्द्र। इस स्थलमें पुरुषसिंह भीमसेन और अर्ज्जुन केवल अकेले मेरी सहायतासे ही शत्रुओंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त है। आप हाथी घोड़े और रथियोंकी सेनाके सहित दुर्य्योधनके समीप गमन कीजिये। धर्म्मराज युधिष्ठिर श्रीकृष्णके वचनको सुनकर क्षण भर तक उस महाघोर संग्रामके विषयको विचारते रहे,फिर जिस स्थान पर शत्रुनाशन भीमसेन दृढ़ताके सहित रणभूमिमें स्थित होके वर्षाकालके बादल गर्ज्जनेकी भांति अपने रथके गम्भीर घरघराहटके शब्दसे दशोंदिशा तथा पृथ्वीको अनुनादित करते हुए तुम्हारी सेनाके योद्धाओंका बध कर रहे थे, उस ही स्थान पर जाकर धर्म्मराज युधिष्ठिर शत्रुनाशन भीमसेनकी पृष्टरक्षा करने लगे। उस महाघोर रात्रिके समय द्रोणाचार्य्य पाण्डव और पाञ्चाल योद्धाकोंको अपने अस्त्ररूपी अग्निसे भस्म करने लगे।

१९० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज! अन्धकार और धूलिसे सम्पूर्ण रणभूमि और आकाशमण्डल परिपूर्ण होगया, उस ही समय दोनों ओरकी सेनाके वीरोंका महाभयङ्कर संग्राम होने लगा। रणभूमिमें स्थित योद्धा लोग उस समय एक दूसरेको नहीं देख सकते थे, उस समय वे सम्पूर्ण योद्धा लोग केवल अपने नामको सुनाते हुए अनुमानसे ही हाथी, घोड़े और मनुष्योंका नाश करते हुए महाघोर युद्ध करने लगे। उस ही समय हमलोगोंकी ओरसे द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य, कर्ण और शत्रुओंकी ओरसे भीमसेन और सात्यकि,—ये महारथी योद्धा लोग युद्धमें प्रवृत्त होकर आपसमें एक दूसरेकी सेनाको छिन्न भिन्न करके रणभूमिसे भगाने लगे। महाराज! सेनाके योद्धा लोग पहिलेसे ही अन्धकार और धूलिके उड़नेसे व्याकुल होरहे थे; उस पर फिर भी महारथियोंके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर चारों ओर भागने लगे। वे शूरवीर योद्धा लोग जब भयभीत होकर इधर उधर दौड़ रहे थे; उस समय दौड़ते हुए भी महारथियोंके बाणोंसे कितने ही योद्धा मर कर पृथ्वीमें गिर पड़े। ऐसा क्या! उस महाघोर अन्धकारके समयमें तुम्हारे पुत्रकी अनीतिसे ही सहस्रों महारथियोंने आपके ओरके ही सहस्रों योद्धाओंका बध किया। जब चारों ओर अन्धेरा छा गया, तब सम्पूर्ण सेनाके योद्धा तथा सेनापति लोग भी मोहित होगये।

राजा धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय! उस समय जब तुम लोग पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंके महाशस्त्रोंसे पीड़ित और अन्धकारसे व्याकुल हुए थे, उस समयमें तुम लोगोंकी बुद्धि किस प्रकार युद्धभूमिमें स्थिर हुई; और मेरी सेना तथा पाण्डवोंकी सेनामें किस भांति प्रकाश हुआ?

सञ्जय बोले महाराज! तिसके अनन्तर मरनेसे बचो हुई सेना सेनापतियोंकी आज्ञासे फिर व्यूहबद्ध होकर युद्धभूमिमें स्थित हुई। उस रात्रिके समय तुम्हारी व्यूहबद्ध सेनाके आगाड़ी द्रोणाचार्य्य और पांवके स्थानमें राजा शल्य स्थित हुए उस व्यूहके दहिने पार्श्वमें अश्वत्थामा और बायें पार्श्वमें सुबलपुत्र शकुनि स्थित हुए। राजा दुर्य्योधन भी सम्पूर्ण सेनाकी रक्षा करते हुए स्वयं शत्रुओंकी ओर गमन करने लगे; और पैदल योद्धायोंसे यह वचन बोले, कि तुम लोग उत्तम शस्त्रोंको त्यागके जलते हुए मशाल ग्रहण क

ल चलनेवाले वीरोंने राजाकी आज्ञा सुन-
प्रसन्न चित्तसे शीघ्र ही जलते हुए लुक्क,
पक तथा मशाल ग्रहण किये। महाराज!
ही भांति उन जलते हुए लुक्क तथा दीप-
से तुम्हारी सेना प्रकाशित होने लगी, उस
स्वन्न सेनाके पैदल चलनेवाले योद्धा लोग
शमान अस्त्रोंको शत्रुओंके ऊपर फेंककर
पक ग्रहण करके रणभूमिके बीच शोभित
ने लगे। रात्रिके समय सेनाके सम्पूर्ण
द्धा लोग हाथमें दीपक ग्रहण करनेवाले
दल सेनाके पुरुषोंसे युक्त होकर ऐसे
काशित हुए, जैसे आकाशमें बिजलीसे युक्त
दल शोभित होते हैं। उस ही समयमें सुवर्ण
धारी पराक्रमी द्रोणाचार्य्य अग्निके समान
सेनाके पुरुषोंको चारों ओरसे तपाते
ए प्रचण्ड किरणवाले दो पहरके सूर्य्य समान
णभूमिमें विराजमान हुए। हे अजमीढ़कुल-
त्पन्न! उस समय दीपक, सुवर्णके रत्नजटित
भरण सुन्दर सुवर्णभूषित धनुष और शिला-
र घिसे हुए अस्त्रशस्त्रोंके प्रकाशसे शूरवीरोंके
ण धनुषसे छूटकर शत्रुसेनाके पुरुषोंके
पर पड़ने लगे। शिकल करी हुई लोहमयी
दा सफेद परिघ और शक्ति आदि अस्त्र शस्त्र
नको शूरवीर योद्धा लोग हाथमें ग्रहण
करके फेरते जाते थे, उन अस्त्रोंके ऊपर दीप-
की ज्योति पड़नेसे चकाचौंध आती थी।
स ही प्रकारसे युद्धमें प्रवृत्त हुए क्षत्रियोंके
धर उधर घूमनेसे उनके छत्र चंवर, मणि-
टित माला और प्रकाशमान खड्ग लूकको
भांति प्रकाशित होने लगे। शूरवीरोंके रत्न-
जटित कवच और रुधिर लिपटे हुए प्रकाश
मान अस्त्रशस्त्र इस भांतिसे प्रकाशित होने
लगे जैसे बादलोंके समूहमें बिजली प्रकाशित
होती है। आपसमें शस्त्र चलानेमें प्रवृत्त दूसरी
सेनाके वेगसे पीछे हटते हुए शूरवीरोंका
शरीर इस प्रकार शोभित होने लगा, जैसे

वायुसे हिलते हुए फूलोंसे युक्त कमलोंके वन
शोभित होते हैं। अधिक क्या कहा जावे, उस
समय ऐसा बोध होने लगा, जैसे देवदारुके
महावन प्रचण्ड दावाग्निके लगनेसे जलते हुए
सूर्य्यकी किरणसे और भी प्रकाशित होते हैं
वैसे ही वे सम्पूर्ण सेनाके योद्धा लोग दीपक
और शस्त्रशस्त्रोंके सहित अत्यन्त ही शोभित
होने लगे। तब पाण्डवोंने हम लोगोंकी
सेनाके बीच प्रकाश देखकर शीघ्र ही अपनी
सेनाके पैदल गमन करनेवाले योद्धाओंको भी
हाथमें जलते हुए दीपक ग्रहण करनेके वास्ते
आज्ञा दिया; उन लोगोंने उस ही समय
जलते हुए लुक्क और मशाल ग्रहण किये।
उसी भांति हर एक हाथियोंपर सात सात;
रथोंपर दश दश घोड़ोंपर दो दो और रथकी
ध्वजा सेनाके दहिने बायें और पीछे बहुतसे
दीपक जलाये गये। इसी भांति सम्पूर्ण सेनाके
बीच आगे पीछे दहिने बायें तथा सम्पूर्ण
स्थलोंमें पैदल चलनेवाले शूरवीर योद्धाओंने
चारों ओर दीपक जलाकर पाण्डवोंकी सेनाको
प्रकाशित किया। इसके अतिरिक्त और भी
बहुतेरे मनुष्य हाथमें जलते हुए लुक्क ग्रहण
करके दोनों सेनाके बीच भ्रमण करने लगे।
महाराज! इसी भांति दोनों ओरकी सेनामें
पैदल चलनेवाले पुरुषोंने हाथमें दीपक ग्रहण
करके हाथी घोड़े और रथोंको प्रकाशित किया,
तिसके बीच शत्रुओंकी सेना पाण्डवोंसे रक्षित
होकर प्रकाशित हुई। जैसे प्रचण्ड किरण-
वाले भगवान सूर्य्यके तेजसे अग्नि अत्यन्त ही
उत्तापित होती है वैसे ही तुम्हारी सेनाके
पुरुष शत्रुसेनाके पुरुषोंको देखकर और भी
प्रकाशित होने लगे। उसी समय आकाश पृथ्वी
तथा सम्पूर्ण दिशाको अतिक्रम करके दोनों-
सेनाके दीपज्योतिका प्रकाश शोभित होने
लगा; दीपकके प्रकाशसे दोनों ओरकी सेना
अत्यन्त प्रकाशित होने लगी। उस समय दीप-

कोंके प्रकाशसे आकाशमण्डल प्रकाशित होगया तब आकाशचारी देवता यक्ष गन्धर्व्व अप्सरा और सिद्ध लोग फिर युद्ध देखनेके वास्ते आकाशमें इकट्ठे हुए। उस ही समय शूरवीर योद्धा रणभूमिमें मर कर स्वर्गलोकमें जाने लगे। देवता गन्धर्व्व यक्ष आदि आकाशमें स्थित होकर कुरु पाण्डवोंके महाघोर युद्धको देखने लगे। उस रात्रिके समय हाथी घोड़े और रथोंके सहित दीपकसे युक्त वह सम्पूर्ण सेना क्रुद्ध हुए योद्धाओंके अस्त्रोंके प्रहारसे पीड़ित होकर इधर उधर दौड़ती हुई व्यूहबद्ध दानव और देवताकी सेनाकी भांति बोध होने लगी। महाराज! वह रात्रिका संग्राम प्रलय कालके समयके समान मालूम होने लगा। शक्ति आदि अस्त्रशस्त्र ही उसमें प्रचण्ड वायु घोड़े और रथोंके समूह उसमें भयानक बादलोंके समूह अस्त्र-शस्त्रोंका चलना ही उसमें जलकी वर्षा और रुधिरका झरनाही उसमें जलधारा बहनेके समान मालूम होता था। उस रणभूमिमें अग्निके समान तेजस्वी ब्राह्मण-श्रेष्ठ प्रतापी द्रोणाचार्य्य शरद ऋतुके प्रचण्ड किरण धारण करनेवाले दोपहरके सूर्य्यकी भांति प्रकाशित होकर पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंको अपने तीक्ष्णबाणोंसे विकल करते हुए रणभूमिके बीच घूमने लगे।

१६१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! अन्धकार और धूलि उड़नेसे जो सम्पूर्ण दिशा छिप गई थीं वे फिर प्रकाशित हुईं। शूरवीर योद्धा लोग इकट्ठे होकर प्रास तलवार आदि नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके एक दूसरेके वधकी इच्छासे छिद्र खोजते हुए आपसमें एक दूसरेकी ओर क्रोधपूर्व्वक देखने लगे, चारों ओर सेनाके बीच सहस्रों दीपक जल रहे थे, उससे वह रणभूमि तारोंसे युक्त आकाशमण्डलकी भांति शोभित होने लगी। और सैकड़ों लुक्कोंके इधर उधर जलनेसे वह रणभूमि मानो प्राणियोंसे रहित अग्निसे जलने हुई पृथ्वीकी भांति मालूम होने लगी। उसी समय दीपक लुक्क तथा मशालोंके जलनेसे सम्पूर्ण दिशा इस भांति प्रकाशमय होगईं, जैसे वर्षा ऋतुमें खद्योत समूहसे युक्त वृक्ष शोभित होते हैं। महाराज! उस महाघोर भयङ्करी रात्रिके समय तुम्हारे पुत्रकी आज्ञासे तुम्हारी ओरके शूरवीर योद्धा लोग पृथक२ रथी रथीसे गजपति गजपतिसे और घुड़सवार घुड़सवारोंके सम्मुख होकर अपनी शक्तिके अनुसार युद्ध करने लगे। इस ही समय महावीर अर्ज्जुन सम्पूर्ण राजाओंको अपने बाणोंसे पीड़ित करके कुरुसेनाको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे भस्म करने लगे।

राजा धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय! युद्धमें अतुल पराक्रमी श्वेतवाहन अर्ज्जुनने जब क्रोधपूर्व्वक मेरी सेनाके बीच प्रवेश किया, उस समय तुम लोगोंके चित्तमें कैसा बिकार उत्पन्न हुआ था? उसने जब मेरी सेनाके बीच प्रवेश किया, तब हमारे सैनिक पुरुषोंने किस कार्य्यका अनुष्ठान किया और दुर्य्योधनने ही उस समयके अनुसार किस कार्य्यका विधान किया था? और मेरी ओरके कौन कौन शत्रुनाशन पराक्रमी योद्धा अर्ज्जुनके सम्मुख उपस्थित हुए? कौन कौनसे योद्धाओंने युद्धके समय द्रोणाचार्य्यके दहिने और बायें चक्रकी रक्षा किया, तथा कौनसे शूरवीर योद्धा उनके पृष्ठरक्षामें नियुक्त हुए थे और जब वहां धनुर्द्धारियोंमें श्रेष्ठ युद्धमें अपराजित पराक्रमी पुरुषश्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य अपने रथ पर चढ़कर रणभूमिके बीच घूमते हुए पाञ्चाल सेनाके बीच प्रवेश करके शत्रुओंका नाश करने लगे, तब शत्रुओंकी सेनाके कौन कौन योद्धा लोग युद्ध करनेके वास्ते उनके सम्मुख उपस्थित

हुए थे? ओहो! जो द्रोणाचार्य्य क्रुद्ध होकर धूएंसे रहित अग्निकी भांति अपने शस्त्रोंसे पाञ्चालसेनाको भस्म करते थे वह किस प्रकार युद्धभूमिमें मारे गये? हे सञ्जय! जो हो तुम शत्रुओंकी ओरके पुरुषोंको युद्धमें स्थित सावधान अपराजित प्रसन्न और मेरी सेनाकी ओर दौड़ते हुए कहके वर्णन करते हो, और मेरी सेनाके योद्धाओंको इससे विपरीत तथा उत्साह रहित कहके वर्णन कर रहे हो। मेरी सेनाके पुरुषोंको घावसे युक्त पीड़ित रथियोंको रथभ्रष्ट और नाना भांतिसे विपतसे युक्त सुना रहे हो।

सञ्जय बोले महाराज! राजा दुर्य्योधन उस रात्रिके समय युद्धके अभिलाषी द्रोणाचार्य्यके अभिप्रायको जानकर विकर्ण चित्रसेन महावाहु दीर्घबाहु,और दुर्द्धर्ष आदि आज्ञाकारी भ्राताओं और सेनाके पुरुषोंसे यह वचन बोले,—हे पराक्रमशाली शूरवीर पुरुषो! तुम सब कोई यत्नवान होकर द्रोणाचार्य्यकी पृष्ठरक्षा करो, हृदीकपुत्र कृतवर्म्मा और मद्रराज शल्य द्रोणाचार्य्यके दहिने और वायें चक्रकी रक्षा करें। हे राजेन्द्र! तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनने ऐसा वचन कहकर फिर अगाड़ी स्थित मरनेसे बचे हुए त्रिगर्त्तदेशीय शूरवीर और महारथियोंसे यह वचन बोले,—इस समय द्रोणाचार्य्य अत्यन्त ही सावधानताके सहित युद्ध करनेमें तत्पर हुए हैं और पाण्डव लोग भी यत्नवान होकर रणभूमिमें स्थित हैं; इससे, तुम सब कोई मिलकर अत्यन्त ही यत्नवान होके सावधानीके साथ द्रोणाचार्य्यकी रक्षा करो। महावली प्रतापी द्रोणाचार्य्य अत्यन्त ही हस्तलाघवके सहित अस्त्र शस्त्रोंको चला सकते हैं। द्रोणाचार्य्यके क्रुद्ध होनेपर सोमकवंशियोंके सहित पाण्डवोंकी तो बात ही क्या है, पराक्रमी आचार्य्य अपने पराक्रमसे देवताओंको भी जीत सकते हैं। हे महारथी शूरवीर पुरुषो! इससे तुम लोग सब कोई इकट्ठे होकर सब भांतिसे यत्नपूर्व्वक महावलवान धृष्टद्युम्नसे द्रोणाचार्य्यकी रक्षा करो। हे राजा लोगो! पाण्डवोंकी सेनाके बीच में धृष्टद्युम्नको छोड़के और ऐसे दूसरे किसी पुरुषको भी नहीं देखता हूं कि जो द्रोणाचार्य्यके सङ्ग युद्ध कर सके। इससे सब प्रकार यत्नपूर्व्वक भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्यकी रक्षा करना मैं बहुत ही उत्तम कार्य्य समझता हूं। वह रक्षित होनेसे ही सोमकवंशी क्षत्रियों तथा सृञ्जयोंका नाश कर सकेंगे। व्यूहके दरवाजेपर सम्पूर्ण सृञ्जय योद्धाओंके मरे जाने पर अश्वत्थामा अवश्य ही धृष्टद्युम्नका वध करेंगे। महावीर कर्ण अर्ज्जुनका नाश करेंगे और मैं स्वयं युद्धभूमिमें भीमसेनको पराजित करूंगा, तिसके अनन्तर तेजरहित पाण्डवोंको गोपाली सेनाके योद्धा लोग ही नाश कर देंगे। ऐसा होनेसे ही बहुत दिनोंके वास्ते स्पष्टरूपसे मेरी जय होवेगी। इससे युद्धभूमिमें तुम लोग सबसे पहिले द्रोणाचार्य्यकी ही रक्षा करो।

हे भरतर्षभ! तुम्हारे पुत्र राजा दुर्य्योधनने ऐसा वचन कहके जब उस महाघोर रात्रिके समय सेनाके पुरुषोंको युद्ध करनेके वास्ते आज्ञा दिया, तब उस भयानक रात्रिके समय विजयकी इच्छासे दोनों सेनाके योद्धाओंका आपसमें महाघोर युद्ध होने लगा। अर्ज्जुन कौरवोंकी सेनाको और कुरुसेनाके योद्धा लोग अर्ज्जुनको अपने अस्त्रशस्त्रोंसे पीड़ित करने,लगे। इस ही समय द्रोणपुत्र अश्वत्थामा पाञ्चालराजको और पराक्रमी द्रोणाचार्य्य सृञ्जयोंको अपने अनगिनत तीक्ष्ण वाणोंसे छिपाने लगे। महाराज! इसी,भांति जब पाण्डव पाञ्चाल और कुरुसेनाके योद्धा लोग आपसमें युद्ध करने लगे,तब उस समय महाघोर कोलाहल होने लगा। उस रात्रिके समय जैसा भयङ्कर युद्ध हुआ वैसा संग्राम पूर्व्वपुरुष लोग

और हम लोगोंने न कभी देखा और न सुना ही था।

१६२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! जब सम्पूर्ण प्राणियोंके नाश करनेवाले रात्रिके समय महाघोर संग्राम होने लगा, तब धर्म्मपुत्र युधिष्ठिरने शत्रुओंके हाथी घोड़े रथ और मनुष्योंके वध करनेके वास्ते पाण्डव पाञ्चाल और सोमकवंशीय योद्धाओंको आज्ञा दिया,—हे शूरवीर पुरुषो! तुम लोग सावधानीके सहित शीघ्र ही द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़ो। हे राजेन्द्र! पाञ्चाल और सृञ्जय योद्धा लोग राजा युधिष्ठिरकी आज्ञाको सुनके भयङ्कर शब्दके सहित सिंहनाद करते हुए द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। उन योद्धाओंको अपनी ओर बढ़े आते देख हम लोग भी पराक्रम उत्साह और शक्तिके अनुसार गर्ज्जते हुए उन लोगोंके सम्मुख उपस्थित हुए। महाराज! उस ही समय राजा युधिष्ठिर द्रोणाचार्य्यके सङ्ग युद्ध करनेकी इच्छासे उनकी ओर गमन करने लगे। अनन्तर जैसे एक मतवारा हाथी दूसरे मतवारे हाथीकी ओर दौड़ता है वैसे ही हृदीकपुत्र कृतवर्म्मा राजा युधिष्ठिरकी ओर दौड़े। इसी भांति रणभूमिमें स्थित शिनिपौत्र सात्यकिको चारों ओर बाण बर्षाते देख कुरुवंशीय पराक्रमी भूरि उनके सम्मुख उपस्थित हुए। अनन्तर मुख बाये हुए यमराज और साक्षात मृत्युकी भांति सम्मुख आये हुए भीमसेनको राजा दुर्य्योधन स्वयं निवारण करने लगे, सम्पूर्ण युद्धविद्या जाननेवाले योद्धाओंमें मुख्य नकुलको सुबलपुत्र शकुनि युद्धभूमिमें निवारण करने लगे। द्रोणाचार्य्यके वधकी अभिलाषासे उनके सम्मुख उपस्थित हुए महारथी शिखण्डीको शरद्वतपुत्र कृपाचार्य्य निवारण करने लगे। मयूरवर्णवाले घोड़ोंसे युक्त प्रतिविन्ध्यको सम्मुख आया देख महारथ दुःशासन उन्हें निवारण करनेमें प्रवृत्त हुए। सैकड़ों राक्षसी माया जानने वाले भीमसेनपुत्र घटोत्कचको द्रोणाचार्य्यकी ओर आते देख, पराक्रमी अश्वत्थामा अपने पिता द्रोणाचार्य्यका सम्मान करते हुए उसे युद्धभूमिमें निवारण करने लगे। अनुयाई और सेनाके स[...] महारथ द्रुपदको द्रोणाचार्य्यके सम्मुख आ[...] देख महारथ वृषसेन उन्हें निवारण कर[...] लगे। महाराज! द्रोणाचार्य्यके वधको राजा विराटको उनकी ओर आते देख मद्रराज शल्य क्रुद्ध होकर मत्स्यराज विराटकी ओर दौड़े। नकुलपुत्र शतानीकको वेगपूर्व्वक द्रोणाचार्य्यकी ओर आते देख पराक्रमी चित्रसेन शीघ्रताके सहित उन्हें निवारण किया। शीघ्रताके सहित द्रोणाचार्य्यकी ओर आते हु[...] योद्धाओंमें मुख्य महारथी अर्ज्जुनको राक्षसराज अलम्बुष निवारण करने लगे, उसही समय धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी पराक्रमी द्रोणाचार्य्य जब शत्रुओंके नाश करनेमें प्रवृत्त हुए तब उन्हें पाञ्चालराजके पुत्र पराक्रमी धृष्टद्युम्न निवारण करने लगे।

महाराज! इसी भांति पाण्डवोंकी ओरके जिन महारथी योद्धाओंने द्रोणाचार्य्यके समीप गमन किया, उन्हें तुम्हारी ओरके महारथी योद्धा पराक्रमके सहित यत्नवान होकर युद्धभूमिमें निवारण करने लगे। उस महाभयङ्कर रात्रिके समय सैकड़ों सहस्रों गजसवार योद्धा लोग गजपतियोंकी ओर दौड़ कर युद्ध करते हुए दीख पड़ते थे, घुड़सवार योद्धा अपने घोड़ों पर चढ़े हुए एक दूसरेकी ओर दौड़ते और युद्ध करते हुए इस प्रकार [...] भूमिमें शोभित होते थे जैसे दोनों ओर प[...] वाले दो पर्व्वत दीख पड़ते हैं। प्रास, शक्ति और ऋष्टि ग्रहण करनेवाले घुड़सवार योद्धा लोग भयंकर सिंहनाद करते हुए युद्ध करने[...]

वाले घुड़सवारोंके सम्मुख उपस्थित हुए। उस ही भांति पैदल चलनेवाले योद्धालोग भी गदा और मूषल आदि नाना भांतिके शस्त्रोंको ग्रहण करके आपसमें एक दूसरेके सम्मुख उपस्थित होकर युद्ध करने लगे।

उस समय हृदीकपुत्र कृतवर्म्माने राजा युधिष्ठिरको इस प्रकार निवारण किया जैसे तट समुद्रके वेगको रोकता है। युधिष्ठिरने भी पांच वाणोंसे कृतवर्म्माको विद्ध करके फिर खड़ा रह। खड़ा रह! कहके बीस वाणोंसे विद्ध किया। तब कृतवर्म्माने अत्यन्त क्रुद्ध होकर भल्लास्त्रसे राजा युधिष्ठिरका धनुष काट दिया, और शीघ्रताके सहित उन्हें सात वाणोंसे विद्ध किया। राजा युधिष्ठिरने दूसरा धनुष ग्रहण करके दश वाणोंसे कृतवर्म्माके भुजा और वक्षस्थलमें प्रहार किया। महाराज! यदुवंशीय कृतवर्म्मा युधिष्ठिरके वाणोंसे विद्ध होकर क्रोधसे कांपने लगे और सात तीक्ष्ण वाणोंसे धर्म्मपुत्र युधिष्ठिरको पीड़ित किया। पृथापुत्र युधिष्ठिरने अपने तेज वाणोंसे कृतवर्म्माके धनुष और हस्तावापको काट दिया; फिर शिला पर घिसे हुए पांच तीक्ष्णवाणोंसे कृतवर्म्माके शरीरमें प्रहार किया। जैसे सर्प विलके भीतर प्रवेश करते हैं वैसे ही युधिष्ठिरके धनुषसे छूटे हुए वे चोखे वाण कृतवर्म्माके सुवर्ण चित्रित महामूल्यवान कवचको काटके पृथ्वीमें घुस गये। कृतवर्म्माने निमिष भरमें दूसरा धनुष चढ़ाकर राजा युधिष्ठिरको साठ और उनके सारथीको नौ वाणोंसे विद्ध किया। तब पराक्रमी महात्मा युधिष्ठिरने अपना बड़ा धनुष रथमें रख कर सूर्यके समान रूपवाली एक बरछी ग्रहण करके कृतवर्म्माकी ओर चलायी। युधिष्ठिरके हाथसे छूटी हुई वह सुवर्णभूषित भयङ्करी बरछी कृतवर्म्माकी दहिनी भुजाको छेद करके पृथ्वीमें गिर पड़ी। उस ही समय धर्म्मराज युधिष्ठिर फिर अपना धनुष ग्रहण करके तीक्ष्ण वाणोंसे कृतवर्म्माको छिपाने लगे। तिसके अनन्तर रथियोंमें मुख्य वृष्णिवंशीय महाबलवान कृतवर्म्माने निमेषभरमें राजा युधिष्ठिरके रथके घोड़े और सारथीको प्राणरहित करके पृथ्वीमें गिरा दिया। घोड़े और सारथीको मरते देख धर्म्मराज युधिष्ठिरने ढाल तलवार ग्रहण किया; यदुवंशियोंमें मुख्य कृतवर्म्माने उस ही समय उनके ढाल तलवारको अपने तेज वाणोंसे काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। ढाल तलवारको कटते देख राजा युधिष्ठिरने शीघ्रताके सहित एक भयङ्कर तोमर ग्रहण करके कृतवर्म्माकी ओर चलाया। युधिष्ठिरके हाथसे छूटे हुए तोमरको अपनी ओर आते देख हृदीकपुत्र कृतवर्म्माने हस्तलाघवके सहित निर्भयचित्तसे अपने वाणोंसे उसे दो टुकड़े करके पृथ्वीमें गिरा दिया; अनन्तर कृतवर्म्माने अत्यन्त ही क्रुद्ध होकर रणभूमिमें स्थित धर्म्मपुत्र राजा युधिष्ठिरको सैकड़ों वाणोंसे छिपाकर अपने तेज वाणोंसे उनका कवच काट दिया। महाराज! महात्मा राजा युधिष्ठिरका कवच हृदीकपुत्र कृतवर्म्माके अनगिनत वाणोंसे कटके इस प्रकार रणभूमिमें गिरके प्रकाशित होने लगा, जैसे आकाशसे गिरते हुए तारोंके समूह शोभित होते हैं। धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर कृतवर्म्माके अस्त्रोंसे रथभ्रष्ट धनुषरहित तथा कवचसे हीन होकर उनके वाणोंसे अत्यन्त ही पीड़ित हुए और शीघ्रताके सहित वहांसे भाग गये। महाबलवान कृतवर्म्मा इसी भांति धर्म्मराज युधिष्ठिरको पराजित करके फिर द्रोणाचार्य्यकी चक्ररक्षा करनेमें प्रवृत्त हुए।

१६३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! कुरुवंशीय भूरि द्रोणाचार्य्यकी ओर सात्यकिको आते देख उन्हें इस प्रकार निवारण करने लगे जैसे मतवारा

हाथी ऊंची भूमिसे धीरे धीरे नीचे उतरता है। शिनिपौत्र सात्यकिने क्रुद्ध होकर पांच तेज बाणोंसे भूरिके हृदयमें प्रहार किया, उससे भूरिके वक्षस्थलसे उस ही समय रुधिर बहने लगा। तिसके अनन्तर पराक्रमी भूरिने भी दशबाणोंसे युद्धदुर्मद सात्यकिके वक्षस्थलमें प्रहार किया। महाराज! इसी भांति वे दोनों पराक्रमी वीर क्रोधसे नेत्र लाल करके धनुष फेरते हुए दूसरेके शरीरको अपने तेज बाणोंके प्रहारसे क्षत-विक्षत करने लगे। उस समय लतातार बाण चलानेवाले यमराज तथा मृत्युकी भांति क्रोधी भूरि और सात्यकिके भयङ्कर बाणोंकी वर्षा होती हुई दीख पड़ने लगी। जब युद्धभूमिमें स्थित वे दोनों वीर एक दूसरेको अपने बाणोंसे छिपाने लगे, उस समय मुहूर्त्त भर तक उन दोनों वीरोंका संग्राम समभावसे ही होता रहा। तिसके अनन्तर शिनिपौत्र सात्यकिने अत्यन्त क्रुद्ध होकर मानो हंसके ही महात्मा कुरुवंशीय भूरिके धनुषको काट दिया, फिर खड़ा रह। खड़ा रह! कहके अपने नौ तेज बाणोंसे उनके हृदयमें प्रहार किया। शत्रुनाशन भूरि बलवान सात्यकिके बाणोंसे अत्यन्त ही विद्ध होकर कटा हुआ धनुष त्याग कर दूसरा धनुष ग्रहण करके फिर सात्यकिको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे। हे राजेन्द्र! कुरुकुलकी किर्त्ति बढ़ानेवाले भूरिने अपने बाणोंसे सात्यकिको विद्ध करके एक तेज भल्लास्त्रसे उनका धनुष काट दिया। धनुष कटने पर सात्यकिने क्रोधसे मूर्च्छित होकर एक बरछी चला कर भूरिके हृदयमें प्रहार किया। महाराज! पराक्रमी भूरि सात्यकीके हाथसे छूटी हुई उस ही बरछीकी चोटसे प्राणरहित होकर अपने उत्तम रथसे इस प्रकार पृथ्वी पर गिरके प्रकाशित हुए मानो आकाशमण्डलसे प्रकाशमान मङ्गल ग्रह पृथ्वी पर गिरे हुए प्रकाशित होरहे हैं। महारथी अश्वत्थामा युद्धभूमिमें पराक्रमी भूरिको मरते देख शीघ्रताके सहित सात्यकिकी ओर दौड़े और खड़ा रह! खड़ा रह! कहके सात्यकिके ऊपर इस प्रकार अपने बाणोंकी वर्षाने लगे जैसे बादल आकाशसे पर्व्वतके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं। रथियोंमें मुख्य पराक्रमी घटोत्कच अश्वत्थामाको क्रोधपूर्व्वक सात्यकिकी ओर गमन करते देख ऊंचे स्वरसे उनसे यह वचन कहने लगा,—हे द्रोणपुत्र अश्वत्थामा! आज तुम जीते हुए मेरे समीपसे गमन नहीं कर सकोगे। जैसे स्कन्दराजने महिषासुरका वध किया था, वैसे ही मैं भी युद्धभूमिमें तुम्हारे युद्धकी अभिलाषाको पूरी करके आज ही तुम्हारा वध करूंगा। शत्रुनाशन राक्षस घटोत्कच ऐसा वचन कहके क्रोधसे नेत्र लाल करके इस प्रकार अश्वत्थामाकी ओर दौड़ा, जैसे क्रुद्ध सिंह मतवारे हाथीकी ओर दौड़ता है। अनन्तर राक्षस घटोत्कच अश्वत्थामाके ऊपर अपने मोटे मोटे तेज बाणोंको इस प्रकार चलाने लगा, जैसे बादल आकाशसे पृथ्वीके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं। द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने घटोत्कचके चलाये हुए बाणोंको खेलवाड़की भाति अपने तेजबाणोंसे निवारित किया। तिसके अनन्तर पराक्रमी अश्वत्थामा शत्रुओंके नाश करनेवाले राक्षसराज घटोत्कचको सैकड़ों बाणोंसे पीड़ित करने लगे। भीमसेनपुत्र प्रतापी घटोत्कचका शरीर अश्वत्थामाके बाणोंसे परिपूरित होकर इस प्रकार शोभित होने लगा जैसे काटोंसे युक्त शल्यकी शोभित होती है। फिर घटोत्कच अत्यन्त ही क्रुद्ध होकर क्षुरप्र, अर्द्धचन्द्र, नाराच वराहकर्ण नालिक सुतीक्ष्ण और विकीर्ण इत्यादि वज्रके समान अनेक शस्त्रों और अनगिनत बाणोंको चलाकर अश्वत्थामाके शरीरको क्षत विक्षत करने लगा; वे वज्रके समान शब्दसे युक्त

ात्यन्त भयङ्कर बाण लगातार अश्वत्थामाके ऊपर पड़ने लगे। अनन्तर जैसे प्रचण्ड वायु ादलोंके समूहको छिन्नभिन्न कर देता है, ैसे ही पराक्रमी अश्वत्थामाने अपने अनेक भयङ्कर बाणोंको चलाकर घटोत्कचके चलाये हुए बाणोंको निवारण किया। उससे ऐसा ालूम हुआ, कि मानो आकाशमण्डलमें शूर-ीर योद्धाओंके हर्षको बढ़ानेवाला बाणयुद्ध हो हा है उन बाणोंके आपसमें रगड़ खानेसे नसे अग्निकी चिनगारी प्रकट होके इधर धर गिरती हुई इस प्रकार दिखाई देने गीं;—जैसे रात्रिके समय उड़ते हुए खद्यो-ोंके समूह शोभित होते हैं। महाराज! उस मय द्रोणपुत्र अश्वत्थामा तुम्हारे पुत्रोंके प्रिय-ार्य्यको पूर्ण करनेकी इच्छा करके अपने ाणोंसे सम्पूर्ण दिशाको परिपूरित करके घटो-्कचको तेज बाणोंसे पीड़ित करने लगे। इसी ांति उस महाघोर रात्रिके समय इन्द्र और ्हादकी भांति पराक्रमी अश्वत्थामा और ाचसराज घटोत्कचका महाघोर संग्राम ोने लगा। अनन्तर घटोत्कचने अत्यन्त क्रुद्ध ोकर मृत्युके समान भयङ्कर दश बाणोंसे श्वत्थामाके वक्षस्थलमें प्रहार किया। महा-ाज। द्रोणपुत्र पराक्रमी अश्वत्थामा घटोत्क-चके अत्यन्त चोखे बाणोंसे विद्ध होकर वायुके ेगसे कम्पित होते हुए वृक्षकी भांति विचलित हुए। उस समय अश्वत्थामा घटोत्कचके ाणोंकी चोटसे मोहित होके रथदण्ड पकड़के सपर स्थित हुए। उस समय तुम्हारी ओरके ोद्धा लोग हाहाकार शब्दके सहित महाघोर कोलाहल करने लगे और सेनापतियोंने समझा कि अश्वत्थामा मारे गये। उस ही समय ाञ्चाल और सञ्जय योद्धा लोग अश्वत्थामाको मूर्च्छित देख, हर्षित होके सिंहनाद करने लगे। इतने ही समयमें शत्रुनाशन अश्वत्था-माने सावधान होकर बायें हाथसे अपने प्रचण्ड धनुषकी मूंठीको दृढ़ताके सहित ग्रहण किया और शीघ्र ही यमदण्डके समान भयङ्कर एक बाण धनुषपर रखके कान पर्य्यन्त धनुष खींचके घटोत्कचकी ओर चलाया। वह भयङ्कर बाण राक्षसराज घटोत्कचके हृदयको भेदकर शीघ्रताके सहित पृथ्वीमें घुस गया। महाबली राक्षसेन्द्र घटोत्कच अश्वत्थामाके बाणकी चोटसे अत्यन्त विकल होके रथमें बैठ गया। उसके सारथीने उसे मूर्च्छित देख भयभीत होकर शीघ्रताके सहित रथ हांकके अश्वत्था-माके समीपसे प्रस्थान किया। महारथी द्रोणपुत्र अश्वत्थामा राक्षसेन्द्र घटोत्कचको इसी भांति मूर्च्छित करके ऊंचे स्वरसे सिंहनाद करने लगे। महाराज! उस समय पराक्रमी अश्वत्थामा तुम्हारे पुत्र और सम्पूर्ण योद्धा-ओंमें प्रशंसित होकर इस प्रकार प्रकाशित होने लगे जैसे शरदकालके समय दो पहरके सूर्य्य अपने तेजसे प्रकाशित होते हैं। इधर द्रोणाचार्य्यके समीप भीमसेनको युद्धमें प्रवृत्त देखकर राजा दुर्य्योधन स्वयं उन्हें अपने चोखे बाणोंसे विद्ध करने लगे। भीमसेनने भी उन्हें दश बाणोंसे विद्ध किया, तब दुर्य्योधनने फिर बीस बाणोंसे भीमसेनके शरीरमें प्रहार किया। रणभूमिमें वे दोनों वीर एक दूसरेके बाणजालमें इस प्रकार छिप गये, जैसे बादलोंके समूहमें घिरे हुए सूर्य्य और चन्द्रमा दीख पड़ते हैं। तिसके अनन्तर कुरुराज दुर्य्योधनने भीमसेनको खड़ा रह! कहके उन्हें पांच बाणोंसे विद्ध किया। तब भीमसेनने दश बाणोंसे उनका धनुष और रथदण्ड काटके नव बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। अनन्तर राजा दुर्य्योधनने क्रुद्ध होकर एक दृढ़-धनुष ग्रहण किया और सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंके सम्मुखमें ही भीमसेनको अपने बाणोंसे पीड़ित करने लगे। भीमसेनने दुर्य्यो-धनके धनुषसे छूटे हुए बाणोंको निवारण करके उन्हें पचीस क्षुद्रकास्त्रसे पीड़ित किया।

महाराज! दुर्य्योधनने अत्यन्त क्रुद्ध होके क्षुरप्रअस्त्रसे भीमसेनका धनुष काटकर उन्हें दश बाणोंसे विद्ध किया। महाबली भीमसेनने शीघ्र ही दूसरे धनुष पर रोंदा चढ़ाया और शीघ्रताके सहित सात चोखे बाणोंसे कुरुराज दुर्य्योधनको विद्ध किया। महाराज! विजयी श्रेष्ठ तुम्हारे पुत्र पराक्रमी दुर्य्योधनने उस ही समय हस्तलाघवके सहित बाण चलाकर भीमसेनके उस धनुषको भी काटके गिरा दिया; इसी भांति दूसरे, तीसरे, चौथे पांचवें तथा जितनी वार भीमसेनने कटे धनुषको त्यागके अन्य धनुष ग्रहण किया, दुर्य्योधनने वार वार उनके धनुषको काट काटके पृथ्वीमें गिराया। उस समय वार वार दुर्य्योधनके बाणोंसे अपने धनुषोंको कटते देख, भीमसेनने लोहमयी एक दृढ़ बरछी ग्रहण करके दुर्य्योधनकी ओर चलायी। महाराज! आकाशमण्डलमें जलते हुए लूककी भांति उस महाभयङ्करी बरछीको समीप न पहुंचते ही पहुंचते दुर्य्योधनने महात्मा भीमसेन और सम्पूर्ण योद्धाओंके सम्मुखमें ही उसे अपने बाणोंसे दो टुकड़े करके पृथ्वीमें गिरा दिया। उसे देखकर भीमसेनने एक प्रकाशमान लोहमयी भारी गदाको घुमाके दुर्य्योधनके रथ पर फेंक दिया। महाराज! वह अत्यन्त ही भारी गदा भीमसेनके हाथसे छूट कर कुरुराज दुर्य्योधनके रथ पर गिरी और उस गदाकी चोटसे दुर्य्योधनका सारथी और उनके रथके घोड़े प्राणरहित होकर गिर पड़े; तुम्हारे पुत्र राजादुर्य्योधन उस सुवर्णभूषित रथसे कूद कर नन्दकके रथ पर चढ़ गये। परन्तु भीमसेन दुर्य्योधनको मरा हुआ समझके कौरवोंके बीच वार वार गर्ज्जते हुए सिंहनाद करने लगे; भीमसेनका गर्ज्जना तथा उनके सिंहनादको सुनकर तुम्हारी ओरके भी बहुतेरे वीरोंने समझा, कि कुरुराज दुर्य्योधन मारे गये; ऐसा समझके तुम्हारी सेनाके पुरुष हाहाकार शब्दके सहित चारों ओरसे महाघोर कोलाहल मचाने लगे। राजायुधिष्ठिरने भयसे व्याकुल कौरवी सेनाके योद्धाओंके हाहाकार शब्द और महात्मा भीमसेनके सिंहनादको सुन कर दुर्य्योधनको मरा हुआ जाना और जिस स्थान पर भीमसेन रणभूमिमें स्थित थे राजा युधिष्ठिर शीघ्रताके सहित उस ही स्थान पर उपस्थित हुए। अनन्तर पाञ्चाल केकय सृञ्जय और मत्स्य देशीय योद्धालोग सब भांतिसे यत्नवान होकर द्रोणाचार्य्यकी ओर गमन करने लगे। अनन्तर उस भयङ्करी रात्रिके समय वहां दोनों सेनाके पुरुष आपसमें युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। तब शत्रुओंके सङ्ग द्रोणाचार्य्यका महाघोर युद्ध होने लगा।

१६४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! युद्धभूमिमें शिर विकर्त्तन-पुत्र कर्ण सहदेवको द्रोणाचार्य्यकी ओर गमन करते देख उन्हें निवारण करने लगे। सहदेवने राधानन्दन कर्णको नौ बाणोंसे विद्ध करके फिर शीघ्रताके सहित दश बाणोंसे विद्ध किया। कर्णने भी एक सौ बाणोंसे सहदेवको विद्ध करके शीघ्रतापूर्व्वक रोदेके सहित उनका धनुष काट दिया। धनुष कटनेपर माद्रीपुत्र सहदेवने दूसरा धनुष ग्रहण करके बीस बाणोंसे कर्णको विद्ध किया उस समय सहदेवका पराक्रम अद्भुत रूपसे दीख पड़ा! तब कर्णने क्रुद्ध होकर अपने तेज बाणोंसे सहदेवके रथके घोड़ोंको प्राणरहित करके उनके सारथीको भी एक भल्लास्त्रसे मारकर यमपुरीमें भेज दिया। महाराज! रथसे रहित होनेपर माद्रीपुत्र सहदेवने ढाल तलवार ग्रहण किया; कर्णने उनके ढाल तलवारको भी खेलवाड़की भांति अपने तेज बाणोंसे काटके गिरा दिया। अनन्तर सहदेवने सोनेके तारोंसे खचित एक भ-

बड़ी और भारी गदाको कर्णकी ओर चलाया, सहदेवको भुजासे छूटी हुई उस गदाको अपनी ओर आती देख, कर्णने बाणोंको चलाकर उसे मार्गहीमें रोकके पृथ्वीमें गिरा दिया। गदाको निष्फल होती देख सहदेवने शीघ्रताके सहित कर्णकी ओर एक शक्ति चलाई कर्णने उस बरछीको भी अपने बाणोंसे काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। महाराज! इसी भांति सम्पूर्ण शस्त्रोंके निष्फल होनेपर माद्रीपुत्र सहदेवने शीघ्रताके सहित रथसे कूदकर एक रथचक्र उठाकर कर्णकी ओर चलाया। साक्षात् कालचक्रकी भांति उस रथचक्रको सम्मुख आते देख कर्णने कई हजार बाणोंसे उसे काटके पृथ्वीमें गिराया। महात्मा कर्णके बाणोंसे रथचक्रको कटते देख सहदेव रथके दण्ड धुरी काष्ठ रणभूमिमें पड़े हुए हाथी, घोड़े और मृत पुरुषोंके शरीरको उठा उठाकर कर्णकी ओर फेंकने लगे। कर्णने अपने बाणोंके प्रभावसे उन सम्पूर्ण सामग्रियोंको काट काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। इसी भांतिसे माद्रीपुत्र सहदेव कर्णके बाणोंसे निवारित होकर रणभूमि छोड़कर उनके सम्मुखसे भागे, परन्तु कर्णने उसी समय दौड़के उन्हें पकड़ लिया। और हंसते हंसते यह बचन कहने लगे। हे माद्रीपुत्र! तुम मेरी बातोंका मत टालो जो मैं कहता हूं उसे सुनो। तुम अपने समान पुरुषके सङ्ग युद्ध करो, कभी अपनेसे अधिक बलवान लोगोंके सङ्ग युद्ध मत करना। तिसके अनन्तर कर्ण सहदेवको धनुषके अग्रभागसे पीड़ित करके यह बचन बोले,—रे माद्रीपुत्र! यह देख! अर्जुन यत्नवान होकर कौरवोंके सङ्ग युद्ध कर रहा है, तुम उसी स्थानपर चले जाओ अथवा यदि इच्छा होवे तो घर भी जासकते हो। कर्णने हंसते हंसते सहदेवसे ऐसा बचन कहकर उन्हें छोड़के पाण्डव और पाञ्चालसेनाके बीच प्रवेश किया। महाराज! सत्यनामक महार थी सत्यपराक्रमी कर्णने युद्धभूमिके बीच सहदेवको अपने वशमें करके भी कुन्तीको जो बरदान दिया था, उसे स्मरण करके सहदेवका बध नहीं किया। परन्तु सहदेव कर्णके बाणोंसे पीड़ित और उनके बचनरूपी शलाकासे बिद्ध होकर ऐसे दुःखित हुए कि उस समय उन्हें जीवन धारण करना भी भारी मालूम होने लगा। तिसके अनन्तर वह पाञ्चालराजपुत्र रथियोंमें मुख्य जनमेजयके रथपर जा चढ़े। इस ही समय मद्रराज शल्य सेनाके सहित महारथ बिराटको द्रोणाचार्य्यकी ओर गमन करते देख अपने बाणोंसे उन्हें छिपाने लगे। महाराज! जैसे पहिले समयमें इन्द्र और जम्भासुरका संग्राम हुआ था, वैसे ही रणभूमिके बीच स्थित दृढ़ धनुर्द्धारी दोनों बीरोंका युद्ध होने लगा। महाराज! मद्रराज शल्यने शीघ्रताके सहित अपने चोखे बाणोंसे सेनापति बिराटके शरीरमें प्रहार किया। तब मत्स्यराज बिराटने नव चोखे बाणोंसे शल्यको बिद्ध करके फिर तिहत्तर और उसके अनन्तर एक सौ बाणोंसे उन्हें बिद्ध किया। अनन्तर मद्रराज शल्यने चार बाणोंसे राजा बिराटके रथमें जुते हुए चारों घोड़े और दो बाणोंसे उनके सारथी और रथकी ध्वजाको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। मत्स्यराज बिराट घोड़े और सारथीसे रहित रथसे कूद कर पृथ्वीपर स्थित हुए और अपना धनुष फेंकते हुए शल्यके ऊपर तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करने लगे। राजा बिराटको रथ रहित देखकर उनके भाई शतानीक सम्पूर्ण पुरुषोंके सम्मुखमें ही अपने रथको बढ़ा कर वहां पर उपस्थित हुए। मद्रराज शल्यने शतानीकको अपने सम्मुख आते देख उन्हें अनेक बाणोंसे बिद्ध करके उसी समय यमपुरीमें भेज दिया, महावीर शतानीकके मरने पर रथियोंमें मुख्य राजा बिराट ध्वजा पताकासे शोभित अपने भाईके रथ पर शीघ्रताके सहित चढ़ गये।

अनन्तर राजा विराट क्रोधसे नेत्र लाल करके दूना पराक्रम प्रकाशित करते हुए, मद्रराज शल्यके रथको अपने वाणोंके समूहसे छिपाने लगे। तब मद्रराज शल्यने एक सौ चोखे वाणोंसे सेनापति विराटके वक्षस्थलमें प्रहार किया। हे राजेन्द्र। राजा विराट शल्यके वाणोंकी चोटसे अत्यन्त विद्ध होकर मूर्च्छित होके रथमें बैठ गये; सारथीने राजा विराटके शरीरको क्षत-विक्षत और उन्हें मूर्च्छित देखकर वहांसे प्रस्थान किया। तिसके अनन्तर उस रात्रिके समय मत्स्यदेशीय बड़ी सेना शल्यके सैकड़ों वाणोंसे पीड़ित होकर चारों ओर भागने लगी। महाराज! कृष्ण अर्जुनने सेनाके उन सम्पूर्ण पुरुषोंको भागते देख, जिस स्थानमें मद्रराज शल्य स्थित थे उस ही स्थलमें गमन किया। उसी समय राक्षसराज अलम्बुष घोड़ेके रूप समान आकृतिवाले भयङ्कर पिशाच जुते हुए रक्तवर्णको पताकासे युक्त लाल मालासे भूषित ऋक्षके चमड़ेसे घिरे हुए, आठ चक्रोंसे युक्त काले रङ्गवाले एक बहुत बड़े रथ पर चढ़के कृष्ण अर्जुनके सम्मुख उपस्थित हुआ। उसके रथकी ऊंची ध्वजा पर बैठा हुआ विचित्र पंखोंसे शोभित एक भयङ्कर गिद्ध डरावनी बोली बोल रहा था। महाराज! कज्जलगिरिके समान रूपवाले उस राक्षसने अपने रथपर चढ़के सैकड़ों वाणोंको चलाते हुए कृष्ण अर्जुनको इस भांति आगे बढ़नेसे रोक दिया, जैसे सुमेरु पर्व्वत वायुकी गतिको रोक देता है। उस समय मनुष्य और राक्षसका ऐसा कठिन युद्ध होने लगा, कि देखनेवाले अत्यन्त ही आनन्दित हुए और कौवे गिद्ध कङ्क उल्लू और सियार आदि मांसभक्षी जीव हर्षित होके मास खाते और रुधिर पीते जाते थे। तिसके अनन्तर अर्जुनने एक सौ वाणोंसे उसे पीड़ित करके फिर नौ चोखे वाणोंसे उसकी रथकी ध्वजा, तीन वाणोंसे सारथी तीनसे त्रिवेणु एक वाणसे धनुष और चार वाणोंसे उसके रथके चारों घोड़ोंको काट डाला। उस राक्षसने रथहित होकर तलवारको ग्रहण किया, अर्जुनने उस तलवारको भी एक तेज वाणसे दो टुकड़े करके पृथ्वीमें गिरा दिया, और शिला पर घिसे हुए चार चोखे वाणोंसे उसे पीड़ित किया। वह राक्षस अर्जुनके वाणोंसे अत्यन्त ही पीड़ित होकर अपना प्राण बचा कर उनके सम्मुखसे भाग गया। उस समय अर्जुन उस राक्षसको पराजित करके हाथी, घोड़े और मनुष्योंके ऊपर अनगिनत वाण चलाते हुए शीघ्रताके सहित द्रोणाचार्य्यकी ओर गमन करने लगे। महाराज! तुम्हारी सेनाके योद्धा पाण्डुपुत्र यशस्वी अर्जुनके वाणोंसे पीड़ित होके इस प्रकार पृथ्वीमें गिरने लगे जैसे प्रचण्ड वायुके वेगसे बहुतेरे वृक्ष टूटके पृथ्वीमें गिर पड़ते हैं। इसी भांति जब बहुतसे शूरवीर योद्धाओंका अर्जुनके वाणोंसे नाश होने लगा, तब उस समय तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनकी सम्पूर्ण सेना चारों ओर भागने लगी।

१६५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! नकुलपुत्र शतानीक वेगपूर्व्वक अपने वाणरूपी अग्निसे कौरवोंकी सेनाको भस्म करने लगे; सेनाको नष्ट होते देख तुम्हारे पुत्र चित्रसेन शतानीकको निवारण करने लगे। तब शतानीकने नाराचास्त्रसे चित्रसेनको पीड़ित किया; चित्रसेनने भी अपने चोखे वाणोंसे शतानीकको वि करके फिर उत्तम पानी चढ़े हुए नव वाणोंसे उनके हृदयमें प्रहार किया। अनन्तर शतानीकने अनेक वाणोंको चला कर चित्रसेनका कवच काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। महाराज! तुम्हारे पुत्र चित्रसेन कवचसे हीन होकर केचुली रहित सर्पके समान शोभित हुए।

तिसके अनन्तर नकुलपुत्र शतानीकने अपने चोखे बाणोंसे युद्धभूमिमें यत्नवान चित्रसेनको ध्वजा और धनुषको काटके पृथ्वीमें गिराया। चित्रसेनने युद्धभूमिमें वर्म्मसे रहित हो तथा धनुष कटने पर क्रोधपूर्व्वक दूसरा धनुष ग्रहण करके नव बाणोंसे शतानीकको विद्ध किया। उससे पुरुषश्रेष्ठ शतानीकने अत्यन्त ही क्रुद्ध होकर चित्रसेनके रथके चारों घोड़े और उनके सारथीका वध किया। बलवान चित्रसेन घोड़े सारथीसे रहित रथसे कूदकर पृथ्वीपर स्थित हुए और पृथ्वीपर खड़े होकरही पचीस बाणोंसे शतानीकको पीड़ित किया; जब चित्रसेन पृथ्वीपर खड़े होकर युद्ध करने लगे, तब नकुलपुत्र शतानीकने शीघ्रताके सहित उनके रत्नभूषित धनुषको अर्द्धचन्द्र बाणसे काट दिया। चित्रसेन घोड़े रथ सारथी और धनुष-रहित होकर शीघ्रताके सहित महात्मा हृदीकपुत्र कृतवर्म्माके रथपर चढ़ गये।

कर्णपुत्र वृषसेन राजा द्रुपदको द्रोणाचार्य्यकी ओर सेनाके सहित युद्धके निमित्त गमन करते देख सैकड़ों सहस्रों बाणोंसे महारथी द्रुपदको छिपाते हुए वेगपूर्व्वक उनकी ओर दौड़े। महाराज। पाञ्चालराज यज्ञसेनने साठ बाणोंसे महारथी वृषसेनकी भुजा और वक्षस्थलमे प्रहार किया, उससे कर्णपुत्र वृषसेनने अत्यन्त क्रुद्ध होकर अनेक तीक्ष्ण बाणोंसे राजा द्रुपदके हृदयमें प्रहार किया। उस समय वे दोनों वीर एक दूसरेके बाणोंसे पीड़ित और विद्ध होकर कांटोंसे युक्त शल्यकीके समान शोभित हुए। तपाये हुए सोनेके समान रूपवाले वे दोनों पराक्रमी वीर एक दूसरेके चलाये हुए चोखे बाणोंके प्रहारसे कवचरहित और रुधिरपूरित शरीरसे युक्त होकर कल्पवृक्ष वा पलाश वृक्षके फूलकी भांति युद्धभूमिमें शोभित हुए! तिसके अनन्तर पराक्रमी वृषसेनने द्रुपदको नव बाणोंसे विद्ध करके फिर तिहत्तर बाणोंसे विद्ध किया। महाराज! इसी भांति कर्णपुत्र महारथ वृषसेन सहस्रों बाणोंको एक ही बार चलाते हुए जलकी वर्षा करनेवाले बादलकी भांति युद्धभूमिमें शोभित हुए। उस रात्रिके समय राजा द्रुपदकी सम्पूर्ण सेना वृषसेनके बाणोंसे कवचरहित होके युद्धभूमिसे भागने लगी। भागनेके समय सेनाके पुरुषोंके हाथसे जलते हुए दीपक छूटके पृथ्वीपर गिर पड़े, उससे वह रणभूमि इसी प्रकार शोभित होने लगी जैसे बादलसे रहित होनेपर तारोंसे युक्त आकाश शोभित होता है। शरीरसे कवच कटके पृथ्वीपर इस प्रकार शोभित होरहे थे जैसे बादलके बीच बिजली शोभित होती है। जैसे देवासुर युद्धमें दानव लोग भयभीत होकर इन्द्रके सम्मुखसे भाग गये थे वैसे ही सोमकवंशीय योद्धा लोग वृषसेनके भयसे चारो ओर भागने लगे। युद्धभूमिमें सोमकवंशीय योद्धा लोग यद्यपि वृषसेनसे भयभीत होकर दीपक फेंककर चारों ओर भाग रहे थे तौभी उस महाघोर अन्धकारसे युक्त रात्रिके समय इधर उधर दीपकके प्रकाशसे दिखाई देते थे। कर्णपुत्र वृषसेन चन्द्रवंशी योद्धाओंको पराजित करके सहस्र किरणधारी दोपहरके सूर्य्यकी भांति युद्धभूमिके बीच शोभित हुए। महाराज! उस समय तुम्हारी सेना और शत्रुओंकी ओरके सहस्रों राजाओंकी मण्डलीके बीच अकेले वृषसेन ही जलती हुई अग्निकी भांति रणभूमिमें स्थित रहे। इसी भांति कर्णपुत्र वृषसेनने चन्द्रवंशियों तथा महारथी शूरवीर योद्धाओंको पराजित करके जिस स्थानपर राजा युधिष्ठिर युद्धभूमिमें स्थित थे उस ही स्थलपर शीघ्रताके सहित गमन किया।

सञ्जय बोले, महाराज! उसी समय युधिष्ठिरपुत्र प्रतिविन्ध्य क्रुद्ध होकर कुरुसेनाके पुरुषोंको अपने बाणोंसे भक्ष करने लगे, तब

अनन्तर राजा विराट क्रोधसे नेत्र लाल करके दूना पराक्रम प्रकाशित करते हुए, मद्रराज शल्यके रथको अपने वाणोंके समूहसे छिपाने लगे। तब मद्रराज शल्यने एक सौ चोखे वाणोंसे सेनापति विराटके वक्षस्थलमें प्रहार किया। हे राजेन्द्र! राजा विराट शल्यके वाणोंकी चोटसे अत्यन्त विद्ध होकर मूर्च्छित होके रथमें बैठ गये; सारथीने राजा विराटके शरीरको क्षत-विक्षत और उन्हें मूर्च्छित देखकर वहांसे प्रस्थान किया। तिसके अनन्तर उस रात्रिके समय मत्स्यदेशीय बड़ी सेना शल्यके सैकड़ों वाणोंसे पीड़ित होकर चारों ओर भागने लगी। महाराज! कृष्ण अर्ज्जुनने सेनाके उन सम्पूर्ण पुरुषोंको भागते देख, जिस स्थानमें मद्रराज शल्य स्थित थे उस ही स्थलमें गमन किया। उसी समय राक्षसराज अलम्बुष घोड़ेके रूप समान आकृतिवाले भयङ्कर पिशाच जुते हुए रक्तवर्णको पताकासे युक्त लाल मालासे भूषित ऋक्षके चमड़ेसे घिरे हुए, आठ चक्रोंसे युक्त काले रङ्गवाले एक बहुत बड़े रथ पर चढ़के कृष्ण अर्ज्जुनके सम्मुख उपस्थित हुआ। उसके रथकी ऊंची ध्वजा पर बैठा हुआ विचित्र पंखोंसे शोभित एक भयङ्कर गिद्ध डरावनी बोली बोल रहा था। महाराज! कज्जलगिरिके समान रूपवाले उस राक्षसने अपने रथपर चढ़के सैकड़ों वाणोंको चलाते हुए कृष्ण अर्ज्जुनको इस भांति आगे बढ़नेसे रोक दिया, जैसे सुमेरु पर्व्वत वायुकी गतिको रोक देता है। उस समय मनुष्य और राक्षसका ऐसा कठिन युद्ध होने लगा, कि देखनेवाले अत्यन्त ही आनन्दित हुए और कौवे गिद्ध कङ्क उल्लू और सियार आदि मांसभक्षी जीव हर्षित होके मांस खाते और रुधिर पीते जाते थे। तिसके अनन्तर अर्ज्जुनने एक सौ वाणोंसे उसे पीड़ित करके फिर नौ चोखे वाणोंसे उसकी रथकी ध्वजा, तीन वाणोंसे सारथी तीनसे त्रिवेणु एक वाणसे धनुष और चार वाणोंसे उसके रथके चारों घोड़ोंको काट डाला। उस राक्षसने रथरहित होकर तलवारको ग्रहण किया, अर्ज्जुनने उस तलवारको भी एक तेज वाणसे दो टुकड़े करके पृथ्वीमें गिरा दिया, और शिला पर घिसे हुए चार चोखे वाणोंसे उसे पीड़ित किया। वह राक्षस अर्ज्जुनके वाणोंसे अत्यन्त ही पीड़ित होकर अपना .. बचा कर उनके सम्मुखसे भाग गया। उस समय अर्ज्जुन उस राक्षसको पराजित करके हाथी घोड़े और मनुष्योंके ऊपर अनगिनत वाण चलाते हुए शीघ्रताके सहित द्रोणाचार्य्यकी ओर गमन करने लगे। महाराज! तुम्हारी सेनाके योद्धा पाण्डुपुत्र यशस्वी अर्ज्जुनके वाणोंसे पीड़ित होके इस प्रकार पृथ्वीमें गिरने लगे जैसे प्रचण्ड वायुके वेगसे बहुतेरे वृक्ष टूटकर पृथ्वीमें गिर पड़ते हैं। इसी भांति जब बहुतसे शूरवीर योद्धाओंका अर्ज्जुनके वाणोंसे नाश होने लगा, तब उस समय तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनकी सम्पूर्ण सेना चारों ओर भागने लगी।

१६५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! नकुलपुत्र शतानीक वेगपूर्व्वक अपने वाणरूपी अग्निसे कौरवोंकी सेनाको भस्म करने लगे, सेनाको नष्ट होते देख तुम्हारे पुत्र चित्रसेन शतानीकको निवारण करने लगे। तब शतानीकने नाराचोंसे चित्रसेनको पीड़ित किया; चित्रसेनने भी अपने चोखे वाणोंसे शतानीकको विद्ध करके फिर उत्तम पानी चढ़े हुए नव वाणोंसे उनके हृदयमें प्रहार किया। अनन्तर शतानीकने अनेक वाणोंको चला कर चित्रसेनका कवच काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। महाराज! तुम्हारे पुत्र चित्रसेन कवचसे हीन होकर केचुली रहित सर्पके समान शोभित हुए।

तिसके अनन्तर नकुलपुत्र शतानीकने अपने चोखे बाणोंसे युद्धभूमिमें बलवान चित्रसेनको ध्वजा और धनुषको काटके पृथ्वीमें गिराया। चित्रसेनने युद्धभूमिमें बर्म्मसे रहित हो तथा धनुष कटने पर क्रोधपूर्व्वक दूसरा धनुष ग्रहण करके नव बाणोंसे शतानीकको विद्ध किया। उससे पुरुषश्रेष्ठ शतानीकने अत्यन्त ही क्रुद्ध होकर चित्रसेनके रथके चारों घोड़े और उनके सारथीका बध किया। बलवान चित्रसेन घोड़े सारथीसे रहित रथसे कूदकर पृथ्वीपर स्थित हुए और पृथ्वीपर खड़े होकरही पच्चीस बाणोंसे शतानीकको पीड़ित किया; जब चित्रसेन पृथ्वीपर खड़े होकर युद्ध करने लगे, तब नकुलपुत्र शतानीकने शीघ्रताके सहित उनके रत्नभूषित धनुषको अर्द्धचन्द्र बाणसे काट दिया। चित्रसेन घोड़े रथ सारथी और धनुष-रहित होकर शीघ्रताके सहित महात्मा हृदीकपुत्र कृतवर्म्माके रथपर चढ़ गये।

कर्णपुत्र वृषसेन राजा द्रुपदको द्रोणाचार्य्यकी ओर सेनाके सहित युद्धके निमित्त गमन करते देख सैकड़ों सहस्रों बाणोंसे, महारथी द्रुपदको छिपाते हुए वेगपूर्व्वक उनकी ओर दौड़े। महाराज! पाञ्चालराज यज्ञसेनने साठ बाणोंसे महारथी वृषसेनकी भुजा और वक्षस्थलमें प्रहार किया; उससे कर्णपुत्र वृषसेनने अत्यन्त क्रुद्ध होकर अनेक तीक्ष्ण बाणोंसे राजा द्रुपदके हृदयमें प्रहार किया। उस समय वे दोनों वीर एक दूसरेके बाणोंसे पीड़ित और बिद्ध होकर कांटोंसे युक्त शल्यकीके समान शोभित हुए। तपाये हुए सोनेके समान रूपवाले वे दोनों पराक्रमी वीर एक दूसरेके चलाये हुए चोखे बाणोंके प्रहारसे कवचरहित और रुधिरपूरित शरीरसे युक्त होकर कल्पवृक्ष वा पलाश वृक्षके फूलकी भांति युद्धभूमिमें शोभित हुए। तिसके अनन्तर पराक्रमी वृषसेनने द्रुपदको नव बाणोंसे विद्ध करके फिर तिहत्तर बाणोंसे विद्ध किया। महाराज! इसी भांति कर्णपुत्र महारथ वृषसेन सहस्रों बाणोंको एक ही बार चलाते हुए जलकी वर्षा करनेवाले बादलकी भांति युद्धभूमिमें शोभित हुए। उस रात्रिके समय राजा द्रुपदकी सम्पूर्ण सेना वृषसेनके बाणोंसे कवचरहित होके युद्धभूमिसे भागने लगी। भागनेके समय सेनाके पुरुषोंके हाथसे जलते हुए दीपक छूटके पृथ्वीपर गिर पड़े, उससे वह रणभूमि इस प्रकार शोभित होने लगी जैसे बादलसे रहित होनेपर तारोंसे युक्त आकाश शोभित होता है। शरीरसे कवच कटके पृथ्वीपर इस प्रकार शोभित होरहे थे जैसे बादलके बीच बिजली शोभित होती है। जैसे देवासुर युद्धमें दानव लोग भयभीत होकर इन्द्रके सम्मुखसे भाग गये थे वैसे ही सोमकवंशीय योद्धा लोग वृषसेनके भयसे चारों ओर भागने लगे। युद्धभूमिमें सोमकवंशीय योद्धा लोग यद्यपि वृषसेनसे भयभीत होकर दीपक फेंककर चारों ओर भाग रहे थे तौभी उस महाघोर अन्धकारसे युक्त रात्रिके समय इधर उधर दीपकके प्रकाशसे दिखाई देते थे। कर्णपुत्र वृषसेन चन्द्रवंशी योद्धाओंको पराजित करके सहस्र किरणधारी दोपहरके सूर्य्यकी भांति युद्धभूमिके बीच शोभित हुए। महाराज! उस समय तुम्हारी सेना और शत्रुओंकी ओरके सहस्रों राजाओंकी मण्डलीके बीच अकेले वृषसेन ही जलती हुई अग्निकी भांति रणभूमिमें स्थित रहे। इसी भांति कर्णपुत्र वृषसेनने चन्द्रवंशियों तथा महारथी शूरवीर योद्धाओंको पराजित करके जिस स्थान पर राजा युधिष्ठिर युद्धभूमिमें स्थित थे उस ही स्थलपर शीघ्रताके सहित गमन किया।

सञ्जय बोले, महाराज। उसी समय युधिष्ठिरपुत्र प्रतिविन्ध्य क्रुद्ध होकर कुरुसेनाके पुरुषोंको अपने बाणोंसे भस्म करने लगे, तब

तुम्हारे पुत्र दुःशासन पराक्रमी प्रतिविन्ध्यको निवारण करने लगे। हे राजेन्द्र! जैसे बादलसे रहित आकाशमण्डलमें बुध और सूर्य्य ग्रहका समागम होता है वैसे ही उन दोनों वीरोंका अद्भुत संग्राम होने लगा। अनन्तर दुःशासनने युद्धभूमिमें कठिन कर्म्म करनेवाले प्रतिविन्ध्यके ललाटमें प्रहार किया। महाराज! महाबाहु प्रतिविन्ध्य बलवान् दुःशासनके बाणोंसे अत्यन्त बिद्ध होकर शृङ्गयुक्त पर्व्वतकी भांति शोभित हुए। अनन्तर महारथी प्रतिविन्ध्यने दुःशासनको नव बाणोंसे विद्ध करके फिर सात बाणोंसे विद्ध किया। उसी समय तुम्हारे पुत्र दुःशासनने युद्धभूमिके बीच अत्यन्त कठिन कर्म्म किया; क्योंकि उन्होंने अपने तेज बाणोंसे प्रतिविन्ध्यके घोड़े भल्लास्त्रसे उनके सारथी और ध्वजाको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। फिर दुःशासनने अपने चोखे बाणोंसे प्रतिविन्ध्यके रथ, घोड़ोंकी बागडोर रथकी धुरी, और तूणीरके सहित उनके उत्तम रथका टुकड़े टुकड़े कर दिया। तब धर्म्मात्मा प्रतिविन्ध्य रथसे रहित होकर हाथमें धनुष लेकर पृथ्वीपर स्थित हुए और सैकड़ों बाणोंको चलाते हुए तुम्हारे पुत्र दुःशासनके सङ्ग युद्ध करने लगे। प्रतिविन्ध्यका पराक्रम देख तुम्हारे पुत्र दुःशासनने एक क्षुरप्र अस्त्रसे उनका धनुष काटा और दश बाणोंसे फिर उन्हें पीड़ित किया। प्रतिविन्ध्यके भ्राता लोग उन्हें रथसे रहित देख अपनी सेनाके सहित उनके समीप उपस्थित हुए। तब प्रतिविन्ध्य अपने भाई सुतसोमके रथपर चढ़के धनुष फेरते हुए दुःशासनको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे। अनन्तर तुम्हारी ओरके योद्धा लोग भी बड़ी सेनाके सहित दुःशासनको घेरकर युद्धभूमिमें स्थित हुए। महाराज! तिसके अनन्तर उस महाघोर रात्रिके समय दोनों ओरके शूरवीरोंका यमपुरीकी वृद्धि करनेवाला महाघोर दारुण संग्राम होने लगा।

१६६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! पाण्डुपुत्र नकुल वेगपूर्व्वक तुम्हारी सेनाके पुरुषोंका नाश करने लगे; उसे देख सुबलपुत्र शकुनि खड़ा रह। खड़ा रह! कहके नकुलकी ओर दौड़े। पहिलेकी शत्रुताको स्मरण करके वे दोनों वीर कान पर्य्यन्त धनुष खींच कर अपने बाणोंसे एक दूसरेके शरीरमे प्रहार करने लगे। महाराज! युद्धभूमिके बीच नकुल जिस भांतिसे अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे, वैसे ही युद्धविद्या जाननेवाले शकुनि भी लगातार अपने बाणोंको बर्षाने लगे। उस समय उन दोनोंका शरीर एक दूसरेके बाणोंसे इस प्रकार परिपूरित होगया जैसे कांटोंसे युक्त शल्लकीका वृक्ष शोभित होता है! तपाये हुए सुवर्णकी भांति प्रकाशमान विचित्र शरीरवाले वे दोनों वीर एक दूसरेके स्वर्णपङ्खवाले तेज बाणोंके प्रहारसे कवचरहित होकर रुधिरपूरित शरीरसे इस प्रकार शोभित हुए जैसे कल्पवृक्ष वा फूले हुए पलाशके वृक्ष शोभित होते हैं। उस समय उन दोनोंका शरीर बाणोंसे परिपूर्ण होकर इस प्रकार शोभित हुआ जैसे कांटोंसे युक्त सेमलका वृक्ष शोभित होता है। महाराज! वे दोनों वीर क्रोधसे नेत्र लाल करके इस प्रकार एक दूसरेकी ओर टेढ़ी दृष्टिसे देखने लगे, मानो दृष्टिसे देखकर ही एक दूसरेको भस्म किये डालते हैं! तिसके अनन्तर तुम्हारे शाले शकुनिने अत्यन्त क्रुद्ध होके एक तीक्ष्ण कर्णिक अस्त्रसे खेलवाड़की भांति माद्रीपुत्र नकुलके वक्षस्थलमें प्रहार किया। पाण्डुपुत्र नकुल तुम्हारे शाले धनुर्द्धारी शकुनिके अस्त्रसे अत्यन्त विद्ध होकर चेतरहितकी भांति

मूर्च्छित होकर रथमें बैठ गये। शकुनि अत्यन्त ही बैर-भावसे युक्त तेजस्वी शत्रु नकुलको मूर्च्छित देख, वर्षाकालके बादलकी भांति गम्भीर स्वरसे गर्जते हुए सिंहनाद करने लगे। थोड़ी देरके बाद नकुल सावधान होकर मुख बाये हुए यमराजकी भांति शकुनिकी ओर दौड़े और क्रोधपूर्वक उन्हें साठ बाणोंसे विद्ध करके फिर एक सौ बाणोंसे विद्ध किया। तिसके अनन्तर पराक्रमी नकुलने बाणोंके सहित शकुनिके धनुषकी मूंठो और रथकी ध्वजाको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। महाराज। तुम्हारे शाले शकुनि नकुलके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होके मूर्च्छित हुए, और जैसे कामी पुरुष कामिनीके कन्धेको ग्रहण करते हैं, वैसे ही रथ दण्ड पकड़के रथमें बैठ गये। हे पापरहित राजेन्द्र। तुम्हारे शाले शकुनिको मूर्च्छित होकर रथमें बैठे हुए देख, उनके सारथीने शीघ्रताके सहित रथ हांकके वहांसे प्रस्थान किया। शकुनिको पराजित होते देख सेनाके सहित पाण्डव लोग ऊंचे स्वरसे सिंहनाद करने लगे। शत्रुनाशन नकुल इसी भांति शकुनिको पराजित करके क्रोधपूर्व्वक अपने सारथीसे यह बचन बोले, मेरे रथको द्रोणाचार्य्यकी सेनाके बीच लेचलो। सारथी बुद्धिमान नकुलके बचनको सुनकर जहां पर द्रोणाचार्य्य युद्ध कर रहे थे उस ही स्थल पर उनके रथको लेकर उपस्थित हुआ। इस समय शरद्वतपुत्र कृपाचार्य्य शिखण्डीको द्रोणाचार्य्यकी ओर आते देख यत्नवान होकर वेगपूर्वक उसकी ओर दौड़े। शिखण्डीने द्रोणाचार्य्यकी सहायताके वास्ते कृपाचार्य्यको वेगपूर्वक सम्मुख आये देखकर नव बाणोंसे शत्रुनाशन कृपाचार्य्यको विद्ध किया। महाराज। तुम्हारे पुत्रोंके प्रियकार्य्य करनेवाले कृपाचार्य्यने पहिले शिखण्डीको पांच बाणोंसे विद्ध करके फिर बीस बाणोंसे विद्ध किया। देवासुर संग्राममें जैसे इन्द्रके सङ्ग सम्बरासुरका युद्ध हुआ था, वैसे ही कृपाचार्य्यके सङ्ग शिखण्डीका महाघोर भयङ्कर संग्राम होने लगा। महाराज! अन्धकारमय रात्रिके समय आकाशमण्डल, स्वभाविक ही घोररूपसे दिखाई देरहा था, इस पर भी वर्षा कालके बादलकी भांति युद्धदुर्म्मद महारथी कृपाचार्य्य और शिखण्डीके बाणोंसे परिपूरित होकर अत्यन्त ही भयानक दिखाई देने लगा। अधिक क्या कहूं, वह भयङ्करी रात्रि युद्ध करने वाले शूरवीर योद्धाओंके निमित्त कालरात्रि स्वरूप होगई। तिसके अनन्तर शिखण्डीने गौतमपुत्र कृपाचार्य्यके धनुषको रोदे और बाणसमेत अपने अर्द्धचन्द्र बाणसे काटके गिरा दिया। धनुष कटनेपर कृपाचार्य्यने क्रुद्ध होकर सुवर्णदण्डयुक्त अत्यन्त ही तेजधारवाली एक भयानक शक्ति ग्रहण करके शिखण्डीकी ओर चलायी। शिखण्डीने उस प्रकाशमान भयङ्कर बरछीको अनेक बाणोंसे काट डाला, तब वह कटी हुई भयङ्करी बरछी पृथ्वीमें गिरके प्रकाशित होने लगी। इतने ही समयमें कृपाचार्य्य दूसरा धनुष ग्रहण करके अपने तीक्षण बाणोंसे शिखण्डीको छिपाने लगे। रथियोंमें मुख्य शिखण्डी कृपाचार्य्यके बाणोंसे पीड़ित होकर मूर्च्छित होगये; और चेतरहितके समान रथमें बैठ गये। महाराज। शरद्वतपुत्र कृपाचार्य्य शिखण्डीको मूर्च्छित देख अनेक बाणोंको चलाकर उसके शरीरमें प्रहार करने लगे। पाञ्चाल और सोमकवंशी वीर योद्धालोग शिखण्डीको मूर्च्छित और युद्धसे विमुख देखकर उन्हें चारों ओरसे घेरकर युद्धभूमिमें स्थित हुए। वैसे ही तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग और तुम्हारे पराक्रमी पुत्र बड़ी सेनाको सङ्ग लेकर द्रोणाचार्य्यको घेर कर रणभूमिके बीच स्थित हुए। फिर दोनों ओरके महाघोर युद्ध होने लगा। इस ही योद्धा लोग एक दूसरेको ओर

रणभूमिमें गर्जते हुए बादलकी भांति शूरवीरोंका महाघोर शब्द सुनाई देने लगा। अनन्तर घुड़सवार योद्धा लोग दोनों सेनाके बीचमें पृथक् होके आपसमें एक दूसरेकी ओर दौड़ने लगे उस समय वह रणभूमि अत्यन्त ही भयङ्कर दिखाई देने लगी। इस भांति एक दूसरेकी ओर दौड़ते हुए पैदल सेनाके वीरोंके पांवकी ठोकरसे पृथ्वी भयभीत हुई स्त्री की भांति कांपने लगी। महाराज! अनगिनत रथी योद्धा लोग भी वेगपूर्व्वक शत्रुसेनाके रथियोंकी ओर गमन करके महाघोर युद्ध करने लगे। इसी समय मदचूते हाथी शत्रुसेनाके मतवारे हाथियोंके समीप गमन करके आपसमें दांत और सूण्डोंसे युद्ध करने लगे। इसी भांति घुड़सवार और पैदल सेनाके योद्धा लोग क्रोधपूर्व्वक आपसमें एक दूसरी सेनाके वीरोंको आक्रमण करके कोई दूसरी सेनाके वीरोंको पीछे न हटा सके। परन्तु उस रात्रिके समय दोनों सेनाके वीरोंके बार बार दौड़ने भागने फिर युद्धके निमित्त लौटनेसे रणभूमिके बीच महाघोर कोलाहल होने लगा। महाराज! हाथी घोड़े और रथोंसे गिरते हुए दीपक आकाशसे गिरते हुए लुक्कीकी भांति दिखाई देने लगे। अधिक क्या कहूं वह रणभूमि चारों ओर दीपकके प्रकाशसे युक्त होकर दिनकी भांति शोभित होने लगी। जैसे सूर्य्य उदय होने पर जगत्का सम्पूर्ण अन्धकार नष्ट होजाता है वैसे ही दीपकोंके प्रकाशसे उस रणभूमिमें इधर उधर अन्धकार नष्ट हो गया। परन्तु जब चारों ओर दीपकके प्रकाश फैल गये तब शूरवीर पुरुषोंके अस्त्र शस्त्र कवच और मणिजटित आभूषणोंका प्रकाश इकवारगी छिप गया। महाघोर रात्रिके समय जब भयङ्कर कोलाहलके सहित शूरवीरोंका युद्ध होने लगा तब योद्धाओंको मैं अमुक पुरुष हूं यह ज्ञान भी न रहा। उस समय मोहके वशमें होकर पिता पुत्रका, पुत्र पिताका, मामा भानजेका और भानजे मामाका बध करने लगे। इसी भांति आत्मीय पुरुष अपने आत्मीय लोगोंके ऊपर और शत्रु शत्रुओंके ऊपर अपने अस्त्र शस्त्रोंसे प्रहार करने लगे। उस भयङ्करी रात्रिके समय कादरोंके भयको बढ़ानेवाला मर्य्यादारहित युद्ध होने लगा।

१३७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज! जब महाभयङ्कर तुमुल युद्ध होने लगा तब धृष्टद्युम्न अपने बड़े धनुषको ग्रहण करके बार बार धनुष टङ्कार करते हुए द्रोणाचार्य्यके सुवर्णभूषित रथकी ओर दौड़े। जब धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यके बधकी इच्छासे उनकी ओर गमन किया, तब धृष्टद्युम्नके अनुयाई पाण्डव और पाञ्चाल योद्धाओंने चारों ओरसे द्रोणाचार्य्यको घेर लिया। तुम्हारे पुत्र उस महाघोर संग्राम समय द्रोणाचार्य्यको शत्रुओंके बीच घिरे देख कर सब भांतिसे यत्नपूर्व्वक उनकी रक्षा करने लगे। प्रचण्ड वायुके वेगसे उथलते हुए जैसे दो समुद्र बढ़के आपसमें मिलकर भयङ्कर रूपसे दीख पड़ते हैं वैसे ही रात्रिके समय समुद्र समान दोनों ओरकी महासेना आपसमें एक ही स्थान पर मिल गई। तिसके अनन्तर पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्नने शीघ्रताके सहित पांच बाणोंसे द्रोणाचार्य्यके हृदयमें प्रहार करके सिंहनाद किया। तब द्रोणाचार्य्यने पचीस बाणोंसे धृष्टद्युम्नको विद्ध करके एक भल्लास्त्रसे उनका धनुष काट दिया। महाराज! प्रतापी धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होके क्रोधपूर्व्वक ओठ काटते और दांत कटकटाते हुए कटे धनुषको त्यागकर द्रोणाचार्य्यके बधकी इच्छा करके दूसरा दृढ़ धनुष ग्रहण किया। अनन्तर शत्रुनाशन धृष्टद्युम्न अपने विचित्र धनुषको कान पर्य्यन्त और

कर द्रोणाचार्य्यको नाश करनेमें समर्थ एक महाभयङ्कर बाण उनकी ओर चलाया। महाराज! उस महाघोर संग्रामके समय वह भयङ्कर बाण धृष्टद्युम्नके धनुषसे छूटकर तुम्हारी सेनाके पुरुषोंको इस भांति सन्तापित करने लगा जैसे सूर्य्य उदय होके अपने तेजसे सम्पूर्ण प्राणियोंको तपाके विकल कर देते हैं। अधिक क्या कहूं उस समय उस भयङ्कर बाणको देखकर देवता गन्धर्व्व और मनुष्य द्रोणाचार्य्यके मङ्गलकामनाकी इच्छासे स्वस्तिवाचन करने लगे। परन्तु कर्णने उस भयङ्कर बाणको द्रोणाचार्य्यके रथकी ओर आते देख अपना हस्तलाघव प्रकाशित करते हुए अपने तेजबाणोंसे बारह टुकड़े करके पृथ्वीमें गिरा दिया। वह बाण धनुर्द्धर कर्णके बाणोंसे टुकड़े टुकड़े होकर विषरहित सर्पकी भांति शीघ्र ही पृथ्वीमें गिर पड़ा। उस बाणको काटकर कर्णने दश तीक्ष्ण बाणोंसे धृष्टद्युम्नको विद्ध किया। तिसके अनन्तर द्रोणाचार्य्यने सात शल्यने नौ दुःशासनने तीन दुर्य्योधनने बीस और शकुनिने सात बाणोंसे पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्नको विद्ध किया, पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यकी रक्षा करनेवाले छः महारथी और स्वयं द्रोणाचार्य्यके सहित सात महारथियोंके बाणोंसे विद्ध होकर द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामा, कर्ण और तुम्हारे पुत्र आदि सबको तीन तीन बाणोंसे विद्ध किया। रथियोंमें मुख्य उन सम्पूर्ण वीरोंने युद्धभूमिके बीच धनुर्द्धर धृष्टद्युम्नके बाणोंसे विद्ध होकर उन लोगोंने फिर वेगपूर्व्वक धृष्टद्युम्नको अपने बाणोंसे विद्ध किया। महाराज! उस ही समय द्रुमसेनने अत्यन्त क्रुद्ध होकर धृष्टद्युम्नको एक बाणसे विद्ध करके फिर खड़ा रह! खड़ा रह! कहके तीन बाणोंसे विद्ध किया। तब पराक्रमी धृष्टद्युम्नने शिलापर घिसे हुए अत्यन्त चोखे तीन बाणोंसे द्रुमसेनको विद्ध किया। अनन्तर धृष्टद्युम्नने एक भल्लास्त्रसे सुवर्ण कुण्डल भूषित द्रुमसेनके प्रकाशमान सिरको इस भांति काटके शरीरसे पृथक करके गिरा दिया जैसे प्रचण्ड वायुके वेगसे पके हुए तालके फल वृक्षसे टूटके पृथ्वीपर गिर पड़ते हैं। अनन्तर पाञ्चालराजपुत्र महावीर धृष्टद्युम्न अपने तेजबाणोंसे फिर तुम्हारी ओरके महारथियोंको विद्ध करने लगे और भल्लास्त्रसे महाघोर कर्णका धनुष काट दिया। महाराज! सिंह जैसे अपनी पूंछको कटती देख नहीं सह सकता; वैसे ही राधापुत्र कर्णने भी धृष्टद्युम्नके अस्त्रसे अपना धनुष कटता हुआ देखकर सहन नहीं किया। वह क्रोधसे लाल नेत्र करके दूसरा धनुष ग्रहणकर बाणोंको वर्षाते हुए महाबलवान धृष्टद्युम्नकी ओर दौड़े। कर्ण और अश्वत्थामा आदि छः महारथियोंने क्रुद्ध होकर धृष्टद्युम्नके बधकी अभिलाषा करके शीघ्रताके सहित उन्हें चारों ओरसे घेर लिया।

महाराज! उस समय हम लोग धृष्टद्युम्नको कर्ण और ऊपर कहे हुए छः महारथियोंके सम्मुखमें स्थित देखकर उसे मृत्युके मुखमें पड़ा हुआ ही समझने लगे। उस ही समय यदुवंशीय सात्यकि धृष्टद्युम्नको बचानेके वास्ते अपने बाणोंको चलाते हुए वहांपर उपस्थित हुए; इसी भांति जब महाधनुर्द्धर युद्धदुर्म्मद सात्यकि आके वहांपर उपस्थित हुए तब कर्णने दश तेज बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। महाराज! अनन्तर सात्यकि सम्पूर्ण योद्धाओंके सम्मुखमें ही कर्णको भागना मत खड़े रहो ऐसा बचन कहके दश बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। तब कर्ण और सात्यकिका इन्द्र और बलिकी भांति युद्ध होने लगा। क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ सात्यकिने अपने तलत्राणके शब्दसे सम्पूर्ण क्षत्रियोंको भयभीत करके राजीवलोचन कर्णको अपने बाणोंसे विद्ध किया वैसे ही महाधनुर्द्धर कर्ण भी अपने धनुषटङ्कारके शब्दसे पृथ्वीको कंपाते

हुए सात्यकिके सङ्ग युद्ध करने लगे। कर्णने विपाट कर्णिक नाराच वत्सदन्त और क्षुरप्र आदि सैकड़ों अस्त्रोंसे शिनिपौत्र सात्यकिको विद्ध किया। रथियोंमें मुख्य वृष्णिवंशीय सात्यकि भी उसी भांति अस्त्रोंको चला कर कर्णको विद्ध करने लगे। कुछ समय तक उन दोनों वीरोंका युद्ध समभावसे ही होता रहा। तिसके अनन्तर तुम्हारी ओरके रथी योद्धा और कर्णके पुत्र लोग इकट्ठे होकर अपने बाणोंको चलाकर चारों ओरसे सात्यकिको विद्ध करने लगे। उसे देखके यदुवंशी सात्यकिने अत्यन्त क्रुद्ध होकर कर्ण और उनके पुत्रोंके चलाये हुए बाणोंको निवारण करके वृषसेनके हृदयमें अपने बाणसे प्रहार किया। पराक्रमी वृषसेन सात्यकिके बाणकी चोटसे अत्यन्त पीड़ित होकर धनुष त्यागके मूर्च्छित होकर रथमें गिर पड़े। उससे कर्ण अपने पुत्र महारथी वृषसेनको मरा हुआ समझ कर पुत्र शोकसे अत्यन्त ही दुःखित हुए और अपने बाणोंसे सात्यकिको पीड़ित करने लगे। महारथी सात्यकी कर्णके बाणोंसे पीड़ित हो शीघ्रताके सहित अनेक बाणोंको चला कर कर्णको बार बार विद्ध करने लगे। तिसके अनन्तर सात्यकिने कर्णको दश और सावधान हुए वृषसेनको सात बाणोंसे विद्ध करके फिर उन दोनोंके अंगुलित्राण और धनुषको काट दिया। तब कर्ण और वृषसेन दूसरे धनुष पर रोंदा चढ़ाकर सात्यकिको अनगिनत बाणोंसे विद्ध करने लगे। महाराज! उस समय वीरोंके नाश करनेवाले उस महाघोर संग्रामके समय हम लोगोंको महाभयङ्कर गाण्डीव धनुषका शब्द सुनाई देने लगा। सूतपुत्र कर्ण गाण्डीव धनुष और अर्ज्जुनके रथका शब्द सुन कर तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनसे यह वचन बोले, महाराज! जिस स्थलमें इन्द्रके धनुषके समान लगातार अर्ज्जुनके गाण्डीव धनुष और उसके रथका शब्द सुन पड़ता है अवश्य ही उस स्थान पर मह[illegible] धनुर्द्धारी पृथापुत्र अर्ज्जुन मुख्य मुख्य सम्[illegible] शिवि और पुरुष श्रेष्ठ पौरवोंका वध करते धनुषटङ्कार कर रहा है मुझे यह स्पष्ट मालूम होरहा है कि अर्ज्जुन अपने पराक्रमके अनुसार ही कर्म्म कर रहा है। यह देखे यह व्यूहबद्ध भारती सेना इधर उधर भा[illegible] रही है। जैसे प्रबल वायुके वेगसे बादलोंके समूह छिन्न भिन्न होजाते हैं वैसे ही अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित होके सेनाके पुरुष कि[illegible] प्रकारसे भी युद्धभूमिमें खड़े नहीं होसक[illegible] हैं। अधिक क्या कहें, जैसे छोटी नौका समु[illegible] द्रके लहरसे उलट जाती हैं, वैसे ही य[illegible] भारती सेना अर्ज्जुनके बाणोंसे तितर बित[illegible] होके भाग रही है। हे राजेन्द्र। यह देखे गाण्डीव धनुषसे छूटे हुए बाणोंसे पीड़ित होके भागते हुए मुख्य मुख्य सैकड़े योद्धाओं[illegible] महाघोर कोलाहल सुनाई देरहे हैं। रात्रि[illegible] समय आकाशमें स्थित बादल गर्ज्जनेकी भां[illegible] अर्ज्जुनके रथके समीपमें नगाड़ोंके शब्द शूर[illegible] रोंके हाहाकार और सिंहनाद आदि अने[illegible] भांतिके शब्द सुनाई देरहे हैं। पर इस स्थानमें हम सब लोगोंके बीचमें [illegible] यदुवंशियोंमें मुख्य सात्यकिको यदि [illegible] रूपसे प्राप्त कर सकें तो अवश्य ही सम्पूर्ण श[illegible] ओंको पराजित कर सकेंगे। यह दे[illegible] द्रोणाचार्य्यके सङ्ग युद्धमें प्रवृत्त हुए पाञ्चा-राज धृष्टद्युम्न तुम्हारे शूरवीर सहोदर भा[illegible] योंके बीच चारों ओरसे घिर गये हैं। [illegible] समय यदि हम लोग सातयकि और पृ[illegible] कुलभूषण धृष्टद्युम्नका नाश कर सकें तो अव[illegible] ही हम लोगोंकी जीत होवेगी। सुभद्रापु[illegible] अभिमन्युकी भांति हमलोग वृष्णि और पृ[illegible] वंशीय महारथी सातयकि और धृष्टद्युम्नको चारों ओरसे घेर कर उनके नाश करनेका यत्न करेंगे। यह देखिये सम्मुखमें [illegible]

अर्ज्जुन सात्यकिकी अनेक कुरुसेनाके वीरोंके सङ्ग युद्ध करते हुए देखकर द्रोणाचार्य्यकी सेनाकी ओर आरहा है; इससे जबतक अर्ज्जुन विशेषरूपसे यह न जान सके कि सात्यकि अनेक योद्धायोंके बीचमें घिर गया है उससे पहिले ही हम लोगोंकी ओरसे बहुतसे मुख्य मुख्य रथी लोग उसकी इधर आनेमें बाधा देनेके वास्ते शीघ्रताके सहित उसके समीप गमन करें। और यहां पर जितने योद्धा लोग स्थित हैं वे लोग शीघ्रताके सहित लगातार इस प्रकार सात्यकिके ऊपर अपने बाणोंको बर्षावें जिसमें यदुवंशीय सात्यकि शीघ्र ही यमलोकमें गमन करे।

महाराज! तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनने कर्णके अभिप्रायको समझके जैसे देवराज इन्द्र यशस्वी विष्णुकी आज्ञाको पूर्ण करते हैं वैसे ही राजा दुर्य्योधन कर्णकी आज्ञा सुनके शकुनिसे बोले हे मामा! आप युद्धमे पीछे न हटनेवाले दश हजार हाथी और दश सहस्र रथियोंके सहित अर्ज्जुनके विरुद्ध युद्ध करनेके वास्ते गमन करो, और दुःशासन दुर्म्मिसह ाङ्ग और दुष्प्रधर्षण आदि मेरे सहोदर भ्राता भी अनेक पैदल चलनेवाले शूरवीरोंके सहित तुम्हारे अनुगामी होंगे। हे महाभुज तुल! तुम युद्धभूमिमें जाकर कृष्ण, अर्ज्जुन, राज युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव और भीमका वध करो। देखिये जैसे देवताओंकी य देवराज इन्द्र पर निर्भर रहती है वैसे मेरी भी विजयकी आशा तुम्हारी ऊपर र है। जैसे स्वामकार्त्तिकने असुरोंकी ाको नाश किया था; वैसे ही आप भी ोपुत्रोंका नाश कीजिये।

सञ्जय बोले महाराज। सुबलपुत्र शकुनिने ाज दुर्य्योधनकी ऐसी आज्ञा सुनकर सन आदि राजपुत्रों और बड़ी सेनाके त कौरवोंके प्रिय कार्य्यको करनेकी इच्छासे कुन्तीपुत्रोंके बधके वास्ते उनकी ओर गमन किया। इसी भांति जब शकुनिने पाण्डवोंकी सेनाके बीच प्रवेश किया तब शत्रुओंके सङ्ग तुम्हारी सेनाके योद्धाओंका महाघोर युद्ध होने लगा। इधर सूतपुत्र कर्ण बड़ी सेनाके बीच घिरकर अनगिनत बाणोंकी बर्षा करते हुए शीघ्रताके सहित सात्यकिकी ओर दौड़े। तिसके अनन्तर सम्पूर्ण राजाओंने चारों ओरसे सात्यकिको घेर लिया। उस रात्रिके समय महावीर धृष्टद्युम्न और पाञ्चाल योद्धाओंके सङ्ग द्रोणाचार्य्यका अत्यन्त ही अद्भुत महाघोर संग्राम होने लगा।

१६८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज। तिसके अनन्तर कुरुसेनाके शूरवीर योद्धा लोग निर्भय चित्तसे क्रोधपूर्व्वक शीघ्रताके सहित सात्यकिके रथकी ओर दौड़े। उन लोगोंने सोने और चांदीसे भूषित उत्तम रथोंपर चढ़के घुड़सवार और गजपतियोंके समूहसे चारों ओरसे सात्यकिको घेर लिया। इसी भांति तुम्हारी सेनाके महारथी योद्धा लोग चारो ओरसे सात्यकिको घेरकर सिंहनाद शब्दके सहित बार बार गर्ज्जने लगे। महावलवान कौरव लोग यदुवंशीय मुख्य सत्य पराक्रमी सात्यकिके बधकी अभिलाष करके लगातार उसके ऊपर तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करने लगे। शत्रुनाशन शिनिपौत्र सात्यकिने उन सम्पूर्ण योद्धाओंको वेगपूर्व्वक अपनी ओर आये हुए देखकर अनगिनत बाणोंको चलाकर उन योद्धाओंको निवारण करने लगे। महाराज! उस ही समय धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी युद्धदुर्म्मद सात्यकि अपने तेजबाणों और चरम अस्त्रसे तुम्हारी सेनाके बहुतेरे योद्धाओंके सिर भुजा हाथियोंके सूण्ड और घोड़ोंकी गर्द्दन काट काट कर पृथ्वीमें गिराने लगे। उस

वह रणभूमि इधर उधर पड़े हुए चवंर सफेद छत्र आदि वस्तुओंसे युक्त होकर इस प्रकार शोभित हुई जैसे तारोंसे युक्त आकाशमण्डल शोभित होता है; और सात्यकिके सङ्ग युद्ध करते हुए योद्धाओंके ऐसे महाघोर तुमुल शब्द सुनाई देने लगे मानो भूत प्रेत रुदन कर रहे हैं। महाघोर शब्दसे पृथ्वी परिपूरित होगई और रात्रि भी अत्यन्त ही भयङ्कर होकर प्राणियोंको डरावनी बोध होने लगी। उस भयङ्करी रात्रिके समय अपनी सेनाके पुरुषोंको भागते देख तथा उन लोगोंके महाघोर आर्त्तशब्दको सुनकर राजा दुर्य्योधन बार बार अपने सारथीसे बोले कि जिधर यह महाघोर शब्द सुन पड़ता है, उसी ओर घोड़ोंको ले चलो। सारथी राजा दुर्य्योधनकी आज्ञा सुनकर उत्तम घोड़ोंसे युक्त उनके रथको सात्यकिके रथकी ओर चलाने लगा। अनन्तर युद्धमें श्रमरहित महाबलवान शीघ्र अस्त्र चलानेवाले दृढ़ धनुर्द्धारी कुरुराज दुर्य्योधनने सात्यकिके समीप पहुंचकर कान पर्य्यन्त धनुषको खींचके रुधिर पीनेवाले बारह बाणोंको चलाकर उसके हृदयमें प्रहार किया। शिनिपौत्र सात्यकि पहिले दुर्य्योधनके बाणोंसे पीड़ित हुए फिर क्रोधपूर्व्वक दशबाणोंसे उन्हें विद्ध किया। उस समय कौरव और पाञ्चाल योद्धाओंका महाघोर भयङ्कर युद्ध होने लगा। तिसके अनन्तर सात्यकिने अत्यन्त क्रुद्ध होकर अस्सी बाणोंसे तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनके हृदयमें प्रहार किया; फिर अनेक बाणोंसे उनके रथके घोड़ोंका वध करके एक बाणसे सारथीको भी मार कर रथसे पृथ्वी पर गिरा दिया। महाराज! तुम्हारे पुत्र राजा दुर्य्योधन घोड़ोंसे रहित रथ पर ही स्थित होकर सात्यकिके रथकी ओर पचास बाण चलाये, सात्यकिने हस्तलाघवके सहित दुर्य्योधनके चलाये हुए बाणोंको टुकड़े टुकड़े करके पृथ्वीमें गिराया और एक भल्लास्त्रसे तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनके धनुषकी मूंठी काट दिया। उस समय राजा दुर्य्योधन धनुषके कटने पर घोड़ोंसे रहित रथसे उतरके कृत वर्म्माके प्रकाशमान रथ पर जाचढ़े। हे प्रजानाथ? उस रात्रिके समय जब तुम्हारे पुत्र दुर्योधन सात्यकिके सम्मुखसे पराजित हुए तब पराक्रमी सात्यकि अपने बाणोंको वर्षा कर तुम्हारे सेनाके योद्धाओंको छिन्न भिन्न करने लगे। इस ही समय शकुनि सहस्रों रथी हाथी घो घुड़सवारोंकी सेना लेकर चारों ओरसे अर्जुनको घेरकर उनके ऊपर लगातार अनेक प्रकारके बाणोंको वर्षाने लगी। महाराज! सम्पूर्ण क्षत्रिय योद्धा लोग कालके वशमें होकर महा अस्त्रोंको चलाते हुए अर्जुनके सङ्ग युद्ध करने लगे। तब अर्जुन क्रोधपूर्व्वक तुम्हारी महासेनाके योद्धाओंके नाश करनेमें प्रवृत्त हुए और सहस्रों गजसवार घुड़सवार और रथियोंको युद्धभूमिसे निवारण करने लगे। जब अर्जुन इसी भांति शत्रुसेनाके पुरुषोंका नाश करने लगे तब शकुनिने क्रोधसे नेत्र लाल करके उन्हें बीस बाणोंसे दृढ़ताके सहित विद्ध किया तिसके अनन्तर शकुनि सैकड़ों बाणोंको चलाकर कपिध्वजासे युक्त अर्जुनके रथको छिपाने लगे। अनन्तर अर्जुनने बीस बाणोंसे शकुनि और अन्य महारथियोंको तीन तीन बाणोंसे विद्ध किया। महाराज! इतने ही समयके बीच महावीर अर्जुन शत्रुओंके चलाये हुए बाणोंको निवारण करके फिर वज्रके समान वेगगामी बाणोंको चलाकर तुम्हारी सेनाके योद्धाओंका प्राण नाश कर उन लोगोंको यमपुरीमें भेजने लगे। उस समय हाथीके सूण्डसमान शूरवीर पुरुषोंकी भुजा अर्जुनके बाणसे कटके पृथ्वी पर गिरने लगीं उससे वह रणभूमि मानो पांच सिरवाले सर्पोंकी भांति उन कटी हुई भुजाओंसे पूरित होगई। इसी भांति सुवर्णमुद्रा चूड़ा मणि किरीट और कुण्डलोंसे शोभित मनोहर

नासिकाके सहित शूरवीर पुरुषोंके बहुतेरे सिर शरीरसे कटके पृथ्वीपर गिरने लगे। ओहो! जिन क्षत्रियोंके शरीरसे सदा सर्व्वदा प्रिय बचन सुनाई देते थे इस समय वे क्रोधके वशमें होकर ओठ काटते हुए युद्धमें प्रवृत्त हुए और उस ही भांति अर्ज्जुनके बाणोंसे उनके सिर कटके पृथ्वीमें गिरे हुए कमलके पुष्पकी भांति शोभित होते थे। महापराक्रमी अर्ज्जुनने युद्धभूमिके बीच ऐसा भयङ्कर कर्म्म करके फिर पांच तीक्ष्ण बाणोंसे शकुनि और तीन बाणोंसे उनके पुत्र उलूकको पीड़ित किया। उलूकने अर्ज्जुनके बाणोंसे विद्ध होकर अपने बाणोंसे श्रीकृष्णको परिपूरित किया और अनेक बाणोंसे पृथ्वीको परिपूरित करके सिंह-नाद किया। अनन्तर अर्ज्जुनने अनेक बाण चलाकर शकुनिका धनुष काटा और उनके चारों घोड़ोंका बध करके पृथ्वीमें गिराया। शकुनि घोड़ोंसे रहित रथसे कूदके उलूकके रथपर जा चढ़े। महाराज! जैसे दो बादल पर्व्वतके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं वैसे ही एक रथपर चढ़े हुए पिता पुत्र शकुनि और उलूक अर्ज्जुनके ऊपर लगातार अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। अनन्तर पाण्डुपुत्र अर्ज्जुन अपने तेज बाणोंसे उन दोनोंको विद्ध करके फिर तुम्हारी व्यूहबद्ध सेनाके अनगिनत योद्धाओंको अपने बाणरूपी अग्निसे भस्म करने लगे। जैसे प्रचण्ड वायुके वेगसे बादलोंके समूह छिन्नभिन्न हो जाते हैं वैसे ही कुरुसेनाके योद्धा लोग अर्ज्जुनके बाणोंसे चारों ओर तितर बितर होगये। महाराज! उस महाघोर रात्रिके समय तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग भयभीत और अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित होकर चारों ओर देखते हुए वेगपूर्व्वक भागने लगे। उस महाघोर अन्धकारके समय भागते हुए योद्धाओंके बीच कितने ही योद्धा हाथी, घोड़े आदि अपने वाहनोंको शीघ्रताके सहित दौड़ाकर और कितने ही पुरुष अपने वाहनोंको त्यागकर पैदल ही भागने लगे। हे भारत! श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन इसी भांति शत्रुओंको पराजित करके हर्षपूर्व्वक अपने शङ्ख बजाने लगे।

उस ही समय धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यको तीन बाणोंसे विद्ध करके शीघ्रताके सहित एक तेज बाणसे उनके धनुषका रोदा काट दिया। तब क्षत्रियोंके नाश करनेवाले महावीर द्रोणाचार्य्यने रोदेसे रहित धनुषको रथमें रखकर महावेगशील दूसरा धनुष ग्रहण किया; अनन्तर द्रोणाचार्य्यने धृष्टद्युम्नको सात बाणोंसे विद्ध करके पांच बाणोंसे उनके सारथीको विद्ध किया। महाराज! महारथी धृष्टद्युम्नने अपने बाणोंकी वर्षासे मुहूर्त्तभरके बीच द्रोणाचार्य्यको निवारण किया; और जैसे देवराज इन्द्रने दानवोंकी सेनाका नाश किया था; वैसे ही कौरवी सेनाका नाश करने लगे। महाराज! इसही भांति जब तुम्हारे पुत्रकी सेनाके पुरुष मरने लगे, तब दोनों सेनाके बीच यमलोकमें स्थित वैतरनी नदीकी भांति भयङ्करी एक रुधिरकी नदी बह निकली, उसमें हाथी, घोड़े रथ नौका और जलजलन्तुरूपी होकर बहने लगे। महाराज! उस समय प्रतापवान धृष्ट-द्युम्न कुरुसेनाके योद्धाओंको छिन्न भिन्न करके अपनी सेनके बीचमें घिरकर इस प्रकार रण-भूमिमें स्थित हुए जैसे देवताओंके बीचमें इन्द्र विराजमान होते हैं। अनन्तर पाण्डुपुत्र भीम-सेन, नकुल, सहदेव भी शिखण्डीके सङ्ग मिल-कर अपने अपने शङ्ख बजाने लगे, इसी प्रकार युद्धमें पराक्रमी महारथी पाण्डव लोग तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन, राधापुत्र कर्ण, कृप और द्रोणाचार्य्य और अश्वत्थामाके सम्मुखमें ही कुरु-सेनाके सहस्रों रथियोंको पराजित करके सिंहकी भांति भयङ्कर शब्दके सहित सिंहनादकर।

१६८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! तुम्हारे पुत्र राजा दुर्य्योधन पाण्डवोंकी ओरके कई एक महारथियोंके अस्त्रोंसे अपनी सेनाके पुरुषोंको पीड़ित होकर भागते देख अत्यन्त ही क्रुद्ध हुए, और विजयीश्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य और कर्णके समीप जाकर यह वचन बोले, रणभूमिमें अर्जुनके बाणोंसे सिन्धुराज जयद्रथको मरते देखकर आप लोगोंने ही यह संग्राम आरम्भ किया है; इस समय आप लोग मध्यस्थकी भांति हमारी सेनाको नष्ट होती हुई देख रहे हैं। मुझे यदि आप लोगोंको त्याग करनेकी ही इच्छा थी, तो पहिले "हम युद्धभूमिमें पाण्डुपुत्रोंको पराजित करेंगे," ऐसा वचन बोलना उचित नहीं था। क्योंकि आप लोगोंका यदि मैं वैसा अभिप्राय जानता, तो कभी पाण्डुपुत्रोंके सङ्ग शत्रुता करके अपनी सेनाके पुरुषोंका नाश न कराता। हे पुरुषश्रेष्ठ! यदि मैं आप दोनोंके त्याग किये जानेके योग्य न होऊं, तो आप लोग दोनों जैसे बल पराक्रमसे युक्त है, उसके अनुसार ही युद्ध करनेमें प्रवृत्त होइये।

महाराज! महावीर द्रोणाचार्य्य और कर्ण दुर्य्योधनके वचनरूपी कोड़ेसे विद्ध होकर क्रुद्ध हुए सर्पकी भांति युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। इसी भांति सम्पूर्ण लोकोंके बीच धनुर्द्धर रथियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य और कर्ण सात्यकि आदि पाण्डवोंकी सेनाकी ओर दौड़े। पाण्डव लोग भी उसी भांति अपनी सेनाके बीच घिरकर बार बार सिंहनाद करनेवाले द्रोणाचार्य्य और कर्णकी ओर दौड़े। तिसके अनन्तर सम्पूर्ण शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी द्रोणाचार्य्यने क्रुद्ध होकर दश बाणोंसे शिनिपौत्र सात्यकिको विद्ध किया। फिर कर्णने दश दुर्य्योधनने सात वृषसेनने दश और सुबलपुत्र शकुनिने सात बाणोंसे सात्यकिको विद्ध किया। अधिक क्या कहूं उस समय उस सम्पूर्ण योद्धाओंने शिनिपौत्र सात्यकिको अपने बाणजालसे छिपा दिया। सोमकवंशी योद्धा लोग द्रोणाचार्य्यको इस भांति पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंका नाश करते देखकर शीघ्रताके सहित उनके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। उस ही समय द्रोणाचार्य्य चारों ओर अपने बाणोंको चलाकर इस प्रकार क्षत्रियोंका बध करने लगे जैसे सूर्य्य चारों ओर अपनी किरणोंके प्रकाशसे अन्धकारको नष्ट कर देते हैं। उस समय द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे पीड़ित हुए पाञ्चाल योद्धाओंका महाघोर तुमुल शब्द सुनाई देने लगा। उस समय वे सम्पूर्ण योद्धा लोग कोई पुत्र कोई पिता, कोई भ्राता कोई मामा और कोई भानजे कोई मित्र और कोई अपने सम्बन्धी तथा बन्धु, बान्धवोंको रणभूमिमें त्यागके वेगपूर्वक भागने लगे। कोई-कोई योद्धा मोहित होकर द्रोणाचार्य्यहीकी ओर दौड़े। उस रात्रिके समय पाण्डवोंकी सेनाके योद्धा लोग महात्मा द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे अत्यन्त ही पीड़ित होकर भीमसेन अर्जुन श्रीकृष्ण नकुल, सहदेव और धृष्टद्युम्नके सम्मुखमें स्थित सहस्रो लुक्का इधर उधर फेंकके युद्धभूमिसे भागने लगे। जिस समय वे सम्पूर्ण योद्धा लोग लुक्का फेंकके भागने लगे, यद्यपि उस समय लुक्कोंके फेंक देनेसे अन्धकारके कारण कुछ भी मालूम होनेकी सम्भावना नहीं थी; परन्तु तुम्हारी ओरकी सेनाके बीच जो दीपकोंका प्रकाश हो रहा था, उससे भागते हुए शत्रु सेनाके योद्धा लोग स्पष्टरूपसे दिखाई देने लगे। महाराज। महारथी द्रोणाचार्य्य और कर्ण उन भागते हुए सेनाके पुरुषोंके पीछे अनगिनत बाणोंको चला कर उनके शरीरमें प्रहार करने लगे। इसी भांति जब पाञ्चाल योद्धा चारों ओर भागते हुए द्रोणाचार्य्य और कर्णके बाणोंसे नष्ट होने लगे, तब जनार्द्दन कृष्ण दुःखित होकर अर्जुनसे यह

वचन बोले, हे अर्ज्जुन! यह देखो धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी द्रोणाचार्य्य और कर्ण पाञ्चाल योद्धाओंके सहित धृष्टद्युम्न और सात्यकिके ऊपर अपने बाणोंसे अत्यन्त ही प्रहार कर रहे हैं। अधिक क्या कहा जावे, उन दोनोंकी बाण-वर्षासे हमलोगोंकी सेनाके महारथ योद्धा लोग बार बार युद्धभूमिसे विमुख होरहे हैं; उससे सेनाके पुरुष बार बार निवारित किये जाने पर भी युद्धभूमिमें स्थित नहीं हो सकते हैं। इससे चलो हम लोग शस्त्र ग्रहण किये हुए सेनाके योद्धाओंके सङ्ग मिल कर सूतपुत्र कर्ण और द्रोणाचार्य्यकी रोकनेके वास्ते विशेषरूपसे यत्न करें, क्योंकि इन दोनों कृतास्त्र बलवान और जय प्रभावसे युक्त वीरोंके विषयमें यदि हम लोग उपेक्षा करेंगे तो इसी रात्रिके बीच ये लोग तुम्हारी सेनाके पुरुषोंका नाश कर देंगे। श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन इसी भांति विचार कर रहे थे उसी समय महाबलवान पराक्रमी भीमसेन शीघ्र ही भागती हुई सेनाको लौटा कर रणभूमिमें द्रोणाचार्य्यकी ओर गमन करने लगे। भीमसेनको सेना सहित रणभूमिमें द्रोणाचार्य्यकी ओर आते देख श्रीकृष्ण अर्ज्जुनसे बोले हे पाण्डुपुत्र अर्ज्जुन! युद्धमें प्रशंसित भीमसेन क्रुद्ध होकर सोमकवंशी आदि सेनाके इतेरे योद्धाओंके सहित वेगपूर्व्वक महारथी द्रोणाचार्य्य और कर्णकी ओर गमन कर रहे हैं। तुम अपनी सेनाके पुरुषोंको धीरज देते हुए महारथी पाञ्चाल योद्धाओं और भीमसेनके सङ्ग मिलकर शत्रुओंके सङ्ग युद्ध करो।

महाराज! पुरुषसिंह कृष्ण और अर्ज्जुन इसी भांति आपसमें बातचीत करके द्रोणाचार्य्य और कर्णकी ओर देखते हुए युद्धभूमिमें स्थित हुए। इधर युधिष्ठिरकी महासेना जिस स्थानमें द्रोणाचार्य्य और कर्ण शत्रुओंका नाश कर रहे थे उसी स्थलमें फिर लौटके उपस्थित हुई। जैसे पूर्णमासीके दिन समुद्रकी तरङ्ग उठती हैं वैसे ही कौरव और पाण्डवोंकी सेनाका आपसमें महाघोर संग्राम होने लगा। अनन्तर तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग उन्मत्तकी भांति हाथमें स्थित दीपकोंको फेंक कर निर्भय चित्तसे पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंके सङ्ग युद्ध करने लगे। परन्तु उस समय अन्धकार और धूलि उड़नेसे कुछ भी नहीं सूझ पड़ता था, तब विजयकी इच्छासे वीर लोग केवल अपना नाम और गोत्र सुना कर युद्ध करने लगे। महाराज! जैसे स्वयम्बरके बीच राजाओंके नाम और गोत्र सुन पड़ते हैं, वैसे ही युद्धभूमिके बीच युद्ध करते हुए राजाओंके नाम और गोत्र सुनाई देने लगे। महाराज! उस समय रणभूमिके बीच थोड़े समय तक सन्नाटा छागया, पर फिर जब सेनाके पुरुष क्रुद्ध होकर युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए; तब युद्धमें पराजित और जययुक्त दोनों ओरकी सेनाके बीच महाघोर कोलाहल होने लगा। हे राजेन्द्र! उस समय जिस स्थान पर दीपकका प्रकाश दिखाई देता था शूरवीर पुरुष पतङ्गकी भांति उसी ओर दौड़के युद्ध करने लगते थे। इसी भांति जब कौरव और पाण्डव लोग रणभूमिके बीच युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए, तब क्रमसे वह महाघोर रात्रि अत्यन्त ही भयङ्कर मालूम होने लगी।

सञ्जय बोले, महाराज! तिसके अनन्तर शत्रुनाशन कर्णने पृषतकुल भूषण धृष्टद्युम्नके वक्षस्थलमें दश मर्म्मभेदी बाणोंसे प्रहार किया। धृष्टद्युम्नने कर्णके बाणोंसे विद्ध होकर निर्भयताके सहित खड़ा रह! खड़ा रह! कहके दश बाणोंसे कर्णको विद्ध किया। इसी भांति वे दोनों महारथी योद्धा कान पर्य्यन्त धनुष खींचके अपने बाणोंकी वर्षाकर एक दूसरेको छिपाने लगे। अनन्तर सूतपुत्र कर्णने रणभूमिके बीच पाञ्चाल योद्धाओंमें मुख्य धृष्टद्युम्नके रथके चारों घोड़ोंको मारके गिरा दिया और अनेक बाणोंसे

सञ्जय बोले, महाराज ! तुम्हारे पुत्र राजा दुर्योधन पाण्डवोंकी ओरके कई एक महारथियोंके अस्त्रोंसे अपनी सेनाके पुरुषोंको पीड़ित होकर भागते देख अत्यन्त ही क्रुद्ध हुए, और विजयीश्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य और कर्णके समीप जाकर यह वचन बोले, रणभूमिमें अर्जुनके वाणोंसे सिन्धुराज जयद्रथको मरते देखकर आप लोगोंने ही यह संग्राम आरम्भ किया है; इस समय आप लोग मध्यस्थकी भांति हमारी सेनाको नष्ट होती हुई देख रहे हैं। मुझे यदि आप लोगोंको त्याग करनेकी ही इच्छा थी, तो पहिले "हम युद्धभूमिमें पाण्डुपुत्रोंको पराजित करेंगे," ऐसा वचन बोलना उचित नहीं था। क्योंकि आप लोगोंका यदि मैं वैसा अभिप्राय जानता, तो कभी पाण्डुपुत्रोंके सङ्ग शत्रुता करके अपनी सेनाके पुरुषोंका नाश न कराता। हे पुरुषश्रेष्ठ ! यदि मैं आप दोनोंके त्याग किये जानेके योग्य न होऊं, तो आप लोग दोनों जैसे बल पराक्रमसे युक्त है, उसके अनुसार ही युद्ध करनेमें प्रवृत्त होइये।

महाराज! महावीर द्रोणाचार्य्य और कर्ण दुर्योधनके वचनरूपी कोड़ेसे बिद्ध होकर क्रुद्ध हुए सर्पकी भांति युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। इसी भांति सम्पूर्ण लोकोंके बीच धनुर्द्धर रथियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य और कर्ण सात्यकि आदि पाण्डवोंकी सेनाकी ओर दौड़े। पाण्डव लोग भी उसी भांति अपनी सेनाके बीच घिरकर बार बार सिंहनाद करनेवाले द्रोणाचार्य्य और कर्णकी ओर दौड़े। तिसके अनन्तर सम्पूर्ण शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी द्रोणाचार्य्यने क्रुद्ध होकर दश बाणोंसे शिनिपौत्र सात्यकिको बिद्ध किया। फिर कर्णने दश दुर्योधनने सात वृषसेनने दश और सुवलपुत्र शकुनिने सात बाणोंसे सात्यकिको बिद्ध किया। अधिक क्या कहूं उस समय उस सम्पूर्ण योद्धाओंने शिनिपौत्र सात्यकिको अपने बाणजालसे छिपा दिया। सोमकवंशी योद्धा लोग द्रोणाचार्य्यको इस भांति पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंका नाश करते देखकर शीघ्रताके सहित उनके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। उस ही समय द्रोणाचार्य्य चारों ओर अपने बाणोंको चलाकर इस प्रकार क्षत्रियोंका बध करने लगे जैसे सूर्य्य चारों ओर अपनी किरणोंके प्रकाशसे अन्धकारको नष्ट कर देते हैं। उस समय द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे पीड़ित हुए पाञ्चाल योद्धाओंका महाघोर तुमुल शब्द सुनाई देने लगा। उस समय वे सम्पूर्ण योद्धा लोग कोई पुत्र कोई पिता, कोई भ्राता कोई मामा और कोई भानजे कोई मित्र और कोई अपने सम्बन्धी तथा बन्धु, बान्धवोंको रणभूमिमें त्यागके वेगपूर्वक भागने लगे। कोई कोई योद्धा मोहित होकर द्रोणाचार्य्यहीकी ओर दौड़े। उस रात्रिके समय पाण्डवोंको सेनाके योद्धा लोग महात्मा द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे अत्यन्त ही पीड़ित होकर भीमसेन अर्जुन श्रीकृष्ण नकुल, सहदेव और धृष्टद्युम्नके सम्मुखमें स्थित सहसा लुक इधर उधर फेंकके युद्धभूमिसे भागने लगे। जिस समय वे सम्पूर्ण योद्धा लोग लुक फेंकके भागने लगे, यद्यपि उस समय लुकोंके फेंक देनेसे अन्धकारके कारण कुछ भी मालूम होनेकी सम्भावना नहीं थी; परन्तु तुम्हारी ओरकी सेनाके बीच जो दीपकोंका प्रकाश होरहा था, उससे भागते हुए शत्रु सेनाके योद्धा लोग स्पष्ट रूपसे दिखाई देने लगे। महाराज। महारथी द्रोणाचार्य्य और कर्ण उन भागते हुए सेनाके पुरुषोंके पीछे अनगिनत बाणोंको चला कर उनके शरीरमें प्रहार करने लगे। इसी भांति जब पाञ्चाल योद्धा चारो ओर भागते हुए द्रोणाचार्य्य और कर्णके बाणोंसे नष्ट होने लगे, तब जनार्द्दन कृष्ण दुःखित होकर अर्जुनसे बो

वचन बोले, हे अर्ज्जुन! यह देखो धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी द्रोणाचार्य्य और कर्ण पाञ्चाल योद्धाओंके सहित धृष्टद्युम्न और सात्यकिके ऊपर अपने बाणोंसे अत्यन्त ही प्रहार कर रहे हैं। अधिक क्या कहा जावे, उन दोनोंकी बाणवर्षासे हमलोगोंकी सेनाके महारथ योद्धा लोग बार बार युद्धभूमिसे विमुख होरहे हैं; उससे सेनाके पुरुष बार बार निवारित किये जाने पर भी युद्धभूमिमें स्थित नहीं हो सकते हैं। इससे चलो हम लोग शस्त्र ग्रहण किये हुए सेनाके योद्धाओंके सङ्ग मिल कर सूतपुत्र कर्ण और द्रोणाचार्य्यको रोकनेके वास्ते विशेषरूपसे यत्न करें, क्योंकि इन दोनों कृतास्त्र बलवान और जय प्रभावसे युक्त बीरोंके विषयमें यदि हम लोग उपेक्षा करेंगे तो इसी रात्रिके बीच ये लोग तुम्हारी सेनाके पुरुषोंका नाश कर देंगे। श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन इसी भांति विचार कर रहे थे उसी समय महाबलवान पराक्रमी भीमसेन शीघ्र ही भागती हुई सेनाको लौटा कर रणभूमिमें द्रोणाचार्य्यकी ओर गमन करने लगे। भीमसेनको सेना सहित रणभूमिमें द्रोणाचार्य्यकी ओर आते देख श्रीकृष्ण अर्ज्जुनसे बोले हे पाण्डुपुत्र अर्ज्जुन! युद्धमें प्रशंसित भीमसेन क्रुद्ध होकर सोमकवंशी आदि सेनाके बहुतेरे योद्धाओंके सहित वेगपूर्व्वक महारथी द्रोणाचार्य्य और कर्णकी ओर गमन कर रहे हैं। तुम अपनी सेनाके पुरुषोंको धीरज देते हुए महारथी पाञ्चाल योद्धाओं और भीमसेनके सङ्ग मिलकर शत्रुओंके सङ्ग युद्ध करो।

महाराज! पुरुषसिंह कृष्ण और अर्ज्जुन इसी भांति आपसमें बातचीत करके द्रोणाचार्य्य और कर्णकी ओर देखते हुए युद्धभूमिमें स्थित हुए। इधर युधिष्ठिरकी महासेना जिस स्थानमें द्रोणाचार्य्य और कर्ण शत्रुओंका नाश कर रहे थे उसी स्थलमें फिर लौटके उपस्थित हुई। जैसे पूर्णमासीके दिन समुद्रकी तरङ्ग उठती हैं वैसे ही कौरव और पाण्डवोंकी सेनाका आपसमें महाघोर संग्राम होने लगा। अनन्तर तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग उन्मत्तकी भांति हाथमें स्थित दीपकोंको फेंक कर निर्भय चित्तसे पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंके सङ्ग युद्ध करने लगे। परन्तु उस समय अन्धकार और धूलि उड़नेसे कुछ भी नहीं सूझ पड़ता था, तब विजयकी इच्छासे वीर लोग केवल अपना नाम और गोत्र सुना कर युद्ध करने लगे। महाराज! जैसे स्वयम्वरके बीच राजाओंके नाम और गोत्र सुन पड़ते हैं, वैसे ही युद्धभूमिके बीच युद्ध करते हुए राजाओंके नाम और गोत्र सुनाई देने लगे। महाराज! उस समय रणभूमिके बीच थोड़े समय तक सन्नाटा छागया, पर फिर जब सेनाके पुरुष क्रुद्ध होकर युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए; तब युद्धमें पराजित और जययुक्त दोनों ओरकी सेनाके बीच महाघोर कोलाहल होने लगा। हे राजेन्द्र! उस समय जिस स्थान पर दीपकका प्रकाश दिखाई देता था शूरवीर पुरुष पतङ्गकी भांति उसी ओर दौड़के युद्ध करने लगते थे। इसी भांति जब कौरव और पाण्डव लोग रणभूमिके बीच युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए, तब क्रमसे वह महाघोर रात्रि अत्यन्त ही भयङ्कर मालूम होने लगी।

सञ्जय बोले, महाराज! तिसके अनन्तर शत्रुनाशन कर्णने पृषतकुल भूषण धृष्टद्युम्नके वक्षस्थलमें दश मर्म्मभेदी बाणोंसे प्रहार किया। धृष्टद्युम्नने कर्णके बाणोंसे बिद्ध होकर निर्भयताके सहित खड़ा रह! खड़ा रह! कहके दश बाणोंसे कर्णको बिद्ध किया। इसी भांति वे दोनों महारथी योद्धा कान पर्य्यन्त धनुष खींचके अपने बाणोंकी वर्षाकर एक दूसरेको छिपाने लगे। अनन्तर सूतपुत्र कर्णने रणभूमिके बीच पाञ्चाल योद्धाओंमें मुख्य धृष्टद्युम्नके रथके चारों घोड़ोंको मारके गिरा दिया और अनेक बाणोंसे

उनके सारथीको बिद्ध करके एक तेज बाणसे धृष्टद्युम्नका धनुष काट दिया; अनन्तर कर्णने भल्लास्त्रसे धृष्टद्युम्नके सारथीका वध करके उसे रथसे पृथ्वी पर गिरा दिया। तब धृष्टद्युम्नने घोडे और सारथीसे रहित रथसे उतरके एक परिघ चलाकर कर्णके रथके चारों घोड़ोंको मारके पृथ्वीमें गिरा दिया। परन्तु धृष्टद्युम्न कर्णके धनुषसे छूटे हुए विषधर सर्प समान वाणोंसे अत्यन्त ही विद्ध हुए थे, इससे पैदल ही दौड़के युधिष्ठिरकी सेनाके बीच प्रवेश करके सहदेवके रथपर जा चढ़े। इधर कर्णके सारथीने भी अत्यन्त वेगवान सिन्धुदेशीय सफेद रङ्गके उत्तम घोड़ोंको लेकर कर्णके रथमें जोत दिया। महाराज! जैसे जलसे युक्त बादल पर्व्वतके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं, वैसे ही लक्ष्य वेधनेवालोंमें श्रेष्ठ महावीर कर्ण पाञ्चाल सेनाके महारथियोंको अपने वाणोंसे पीड़ित करने लगे। पाञ्चाल योद्धा कर्णके वाणोंसे पीड़ित होकर इस प्रकार रणभूमिमें चारों ओर भागने लगे, जैसे सिंहसे भयभीत होके हरिणोंके समूह चारों ओर भागने लगते हैं। उस समय मैंने देखा, कि सेनाके पुरुष कर्णके वाणोंकी चोटसे मरकर हाथी, घोड़े और रथोंके ऊपरसे लगातार पृथ्वीमें गिरने लगे। उस महाघोर सङ्ग्रामके समय जो सब घुड़सवार गजपति पैदल गमन करनेवाले योद्धा लोग युद्धभूमिसे भाग रहे थे, कर्णने क्षुरप्र अस्त्रसे उन लोगोंके बीचसे कितने ही योद्धाओंके कुण्डल भूषित सिर भुजा और चरणोंको काट काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। अधिक क्या कहूं, उस समय बहुतेरे महारथी योद्धा भी युद्धभूमिके बीच कर्णके सम्मुखसे भागने लगे। परन्तु भागनेके समय कब उनके वाहन और शरीर कटके गिर पड़े यह उन लोगोंको मालूम भी नहीं हुआ। महाराज! कर्णके वाणोंसे पीड़ित होकर पांचाल और सृञ्जय योद्धा लोग इस भांति मोहित होगये थे कि तृण हिलने पर भी कर्णको आया हुआ समझने लगे। और अपनी ओरके योद्धाओंको भी भागते देख कर्ण आता है ऐसा जानके भयभीत होकर वेग पूर्व्वक भागने लगे। परन्तु कर्ण उन भागते हुए योद्धाओंके ऊपर वाण चलाते हुए उनके पीछे पीछे दौड़े। महात्मा कर्णके वाणोंसे पीड़ित और मोहित होकर शत्रुसेनाके योद्धा लोग अपने कर्त्तव्य कर्मके विषयमें कुछ भी निश्चय न कर सके बल्कि आपसमें एक दूसरेकी ओर देखने लगे और युद्धभूमिमें किसी भांति भी खड़े होनेमें समर्थ न हुए। इसी प्रकार पाञ्चाल-योद्धा लोग कर्ण और द्रोणाचार्य्यके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर चारों ओर देखते हुए वेगपूर्व्वक भागने लगे तिसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर अपनी सेनाके योद्धाओंको भागते देख स्वयं भी रणभूमिसे भागनेकी इच्छा करके अर्जुनसे बोले, हे अर्जुन। यह देखो धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी पराक्रमी कर्ण हाथमें धनुष ग्रहण करके अपने वाणोंसे इस महाघोर रात्रिके समय मेरी सेनाके पुरुषोंको दूसरे सूर्यकी भांति भस्म कर रहे हैं। तुम्हारे आत्मीय बन्धु-बान्धव कर्णके वाणोंसे क्षतविक्षत शरीरसे युक्त होकर अनाथकी भांति आर्त्तनादके सहित महाघोर कोलाहल मचा रहे हैं और यह सूतपुत्र कर्ण जिस प्रकार वाण साधता धनुषपर रखता और चलाता है, उससे उसका तनिक भी छिद्र नहीं दीख पड़ता है; इससे कर्ण अवश्य ही हम लोगोंका नाश कर देगा। इस उपस्थित समयमें कर्ण वधके विषयमें जिस कर्त्तव्य कर्मको करना उचित होवे उसे विचारके शीघ्र ही उस कार्य्यका अनुष्ठान करो।

महाराज! अर्जुन राजा युधिष्ठिरके वचनको सुनकर कृष्णसे बोले, हे कृष्ण! आज धर्मपुत्र युधिष्ठिरके कर्ण पराक्रमका प्रभाव देखकर

भयभीत हुए हैं; विशेष करके जब कर्णकी सेनाके पुरुष धीरे धीरे महाप्रचण्ड होके पराक्रम प्रकाशित कर रहे हैं, तब उन लोगोंके विषयमें जो कुछ कार्य्य करना होवे। शीघ्र ही उसका अनुष्ठान करो। क्योंकि हमारी सेनाके योद्धा लोग रणभूमिमें पीठ दिखाके भाग रहे हैं। यह देखो सेनाके पुरुष अकेले द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे ही चतविचत शरीरसे युक्त होकर युद्धभूमिसे विचलित होरहे हैं; उस पर कर्णके अस्त्रोंसे भयभीत होकर किसी प्रकार भी रणभूमिके बीच नहीं ठहर सकते हैं। हे वृष्णिकुलभूषण कृष्ण। जैसे सर्प किसीके पांवकी चोटको नहीं सह सकता वैसे ही हम लोगोंके सम्मुखमें हो कर्णके ऐसे व्यवहारको मैं नहीं सह सकता हूं।

अर्ज्जुनके ऐसे वचनोंको सुनके श्रीकृष्ण बोले, हे कुन्तीपुत्र! आज मैं मनुष्योंसे अधिक पराक्रमशाली पुरुषसिंह कर्णको देवराज इन्द्रकी भांति युद्धभूमिके बीच घूमते हुए देख रहा हूं। हे पुरुषश्रेष्ठ! तुम और राक्षस घटोत्कच इन दो पुरुषोंको छोड़के और कोई भी ऐसा पुरुष वर्त्तमान नहीं है जो इस समय युद्ध करनेके वास्ते रणभूमिके बीच सूतपुत्र कर्णके विरुद्ध गमन कर सके। परन्तु, जबतक कर्णके समीप महाउल्काकी भांति प्रकाशमान इन्द्रकी दी हुई अमोघशक्ति विद्यमान है तबतक मैं तुम्हें कर्णके सङ्ग द्वैरथ युद्धमें प्रवृत्त होना उत्तम नहीं समझता हूं; क्योंकि कर्ण उस अमोघ शक्तिको तुम्हारे बधके ही वास्ते रक्खे हुआ है और उस ही शक्तिके प्रभावसे उसने अत्यन्त ही भयङ्कर मूर्त्ति धारण की है। इससे महाबलवान राक्षस घटोत्कच ही इस समय राधापुत्र कर्णके सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते उसके समीप गमन करे; घटोत्कच महाबली भीमसेनके वीर्य्यसे उत्पन्न हुआ है और वह स्वयं भी महा पराक्रमी है; और दिव्य राक्षस आदि नाना प्रकारके अस्त्रोंकी विद्यामें भी राक्षस घटोत्कच निपुण है विशेष करके घटोत्कच तुम लोगोंके ऊपर अनुरक्त है, और तुम्हारे हितकी इच्छा भी करता है इससे वह जो युद्धभूमिमें कर्णको पराजित करेगा, उसमें मुझे तनिक भी सन्देह नहीं मालूम होता है।

सञ्जय बोले, महाराज! कमलनेत्रवाले महाबाहु श्रीकृष्णने अर्ज्जुनसे ऐसा बचन कहके घटोत्कचको आह्वान किया। आवाहन करते ही राक्षस घटोत्कच धनुष बाण और तलवार ग्रहण करके कृष्ण अर्ज्जुनके समीप जाके उन दोनों महात्माओंको प्रणाम करके बोला, यही मैं उपस्थित हूं, कहिये क्या आज्ञा है। तिसके अनन्तर दाशार्ह कृष्ण उज्ज्वल कुण्डलोंसे प्रकाशमान मेघवर्ण शरीरवाले राक्षस घटोत्कचसे हंसके यह वचन बोले, हे पुत्र घटोत्कच! मैं जो कुछ बचन कहता हूं उसे तुम भली भांतिसे सुनो। इस समय किसीके बल पराक्रमसे कार्य्य सिद्ध न होवेगा; इससे अब तुम्हारे पराक्रमको प्रकाशित करनेका समय उपस्थित हुआ है। तुममें अनेक प्रकारके अस्त्रशस्त्र और नाना भांतिकी राक्षसी माया प्रतिष्ठित हैं; इससे तुम डूबते हुए बन्धु बान्धवोंके निमित्त नौकारूपी होकर सबका उद्धार करो। यह देखो, युद्धभूमिके बीच कर्णके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर पाण्डवोंकी सेनाके पुरुष इस प्रकार भयभीत होगये हैं जैसे गोपालककी लाठीके प्रहारके भयसे गौवोंका समूह भयभीत होकर चारों ओरसे दौड़ते हुए एक स्थानमें सिमिटके स्थित होजाता है। यह महाधनुर्द्धारी दृढ़ पराक्रमी बुद्धिमान कर्ण पाण्डवोंकी सेनाके मुख्य मुख्य योद्धाओंका बंध कर रहा है। दृढ़ धनुर्द्धारी क्षत्रिय योद्धा लोग लगातार बाणोंकी वर्षा रहे हैं तौभी कर्णके बाणरूपी अग्निसे पीड़ित होकर किसी प्रकारसे भी युद्धभूमिमें नहीं ठहर सकते हैं। यह देखो पाञ्चाल सेनाके सम्पूर्ण

पुरुष कर्णके बाणोंसे पीड़ित होकर इस प्रकार युद्धभूमिसे भाग रहे हैं, जैसे सिंहके भयसे हरिनोंके समूह चारों ओर भाग जाते हैं। हे भयङ्कर पराक्रम प्रकाशित करनेवाले भीमपुत्र महाबाहु घटोत्कच! इस समय सूतपुत्र कर्ण जिस प्रकार हम लोगोंकी सेनाकी ओर दौड़ रहा है, उससे तुम्हें छोड़के और कोई पुरुष भी ऐसा विद्यमान नहीं है जो सूतपुत्र कर्णको रणभूमिमें निवारण कर सके। इससे तुम पितृकुल मातृकुल और अपने बल पराक्रमके अनुसार कार्य्य करनेमें प्रवृत्त हो जाओ। हे हिड़म्बापुत्र घटोत्कच! जिस प्रकार हो सके तुम हम लोगोंकी इस विपदसे रक्षा करो, इसी समयके वास्ते मनुष्य लोग पुत्रकी इच्छा करते हैं, इससे तुम अपने बन्धु-बान्धवोंको इस विपदसे उबारो। हे भीमपुत्र! यदि तुम युद्ध करते रहो तो कोई पुरुष भी तुम्हारी माया और तुम्हारे भयङ्कर अस्त्रशस्त्रोंसे परित्राण नहीं पा सकेगा। हे शत्रुनाशन! तुम इस रात्रिके समय धार्त्तराष्ट्र सेनारूपी समुद्रमें डूबते हुए पाण्डवी सेनाके वास्ते तटस्वरूप होके अपने आत्मीय पुरुषोंकी रक्षा करो, क्योंकि रात्रिके समय बलवान राक्षस लोग ही अत्यन्त पराक्रमी शूर और प्रतापी हुआ करते हैं; इससे तुम इस समय अपनी मायाके प्रभावसे युद्धभूमिमें स्थित राधापुत्र कर्णका नाश करो। ऐसा होनेसे ही धृष्टद्युम्न आदि पाण्डव लोग द्रोणाचार्य्यका वध कर सकेंगे।

सञ्जय बोले, महाराज! श्रीकृष्णके वचनोंको सुनकर अर्जुन भी उस समय राक्षस घटोत्कचसे बोले, हे घटोत्कच! हम लोगोंकी इस सेनाके बीच भीमसेन महाबाहु सात्यकि और तुम—येही तीन वीर मेरे मनमें श्रेष्ठ हो, इससे तुम इस रात्रिके समय कर्णके सङ्ग द्वैरथयुद्धमें प्रवृत्त हो जाओ; इस युद्धमें महारथी सात्यकि तुम्हारे पृष्ठरक्षक बनेंगे। पहिले जैसे देवराज इन्द्रने स्वामि कार्त्तिककी सहायतासे तारकासुरका वध किया था, वैसे ही तुम भी सात्यकिकी सहायतासे युद्धभूमिके बीच महावीर कर्णका वध करो।

कृष्ण अर्जुनके वचनोंको सुनके घटोत्कच कहने लगा, हे पुरुषश्रेष्ठ! महात्मा पुरुषो! युद्धभूमिके बीच द्रोणाचार्य्य कर्ण अथवा चाहे और कोई कृतास्त्र महात्मा क्षत्रिय पुरुष क्यों न होवें मैं इन सम्पूर्ण योद्धाओंके सङ्ग युद्ध करनेमें समर्थ हूं। आज इस रात्रिके समय मैं सूतपुत्र कर्णके सङ्ग ऐसा युद्ध करूंगा, कि मनुष्य लोग पृथ्वीके बीच उस संग्रामको बहुत दिनोंतक गाया करेंगे। इस युद्धमें मैं भयभीत वा हाथ जोड़के शरणमें आये हुए किसी पुरुषको भी नहीं छोडूंगा, वरन राक्षसधर्म्मके अनुसार उन सम्पूर्ण पुरुषोंका वध करूंगा।

सञ्जय बोले, महाराज! शत्रुओंको नाश करनेवाला हिड़म्बापुत्र घटोत्कच ऐसा वचन कहके तुम्हारी सेनाके पुरुषोंको भयभीत करके महाघोर तुमुल संग्राम करते हुए युद्धभूमिके बीच स्थित कर्णकी ओर दौड़ा। धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी सूतपुत्र कर्णने प्रकाशमान क्रोधी सर्पकी भांति घटोत्कचको क्रोधपूर्व्वक अपनी ओर आते देख अपने बाणजालसे उसे आगे बढनेसे रोक दिया। हे राजेन्द्र! तिसके अनन्तर सिंहनाद शब्दके सहित गर्ज्जते हुए कर्ण और राक्षस घटोत्कचका इन्द्र और प्रह्लादकी भांति महाघोर संग्राम होने लगा।

१७१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन युद्धभूमिके बीच क्रोधपूर्व्वक शीघ्रताके सहित घटोत्कचको सूतपुत्र कर्णकी ओर आते देख अपने भाई दुःशासनसे बोले—हे भ्राता! यह राक्षस कर्णके वेग और पराक्रमको देखकर

शीघ्रताके सहित उनकी ओर दौड़ रहा है; इससे तुम इस महारथी घटोत्कचको निवारण करो। महारथ सूतपुत्र कर्ण इस राक्षसके सङ्ग युद्ध करनेकी इच्छासे रणभूमिके बीच जिस स्थलपर गमन कर रहे हैं; तुम उस ही स्थानपर अपनी बड़ी सेनाके सहित गमन करो। हे वीर! तुम सेनाके सहित यत्नवान होकर कर्णकी रक्षा करो; जिससे यह भयानक शरीरवाला राक्षस असावधानीमें कर्णका वध न कर सके, तुम युद्धभूमिमें वैसा ही यत्न करना। महाराज! जब दुर्य्योधनने इस प्रकार शासनकी आज्ञा दी, उस ही समय महाबलवान जटासुरका पुत्र अलम्बल उनके निकट आके यह वचन बोला महाराज! मैं तुम्हारी आज्ञासे तुम्हारे शत्रु युद्धदुर्म्मद पाण्डवोंको अनुयायियोंके सहित नाश करनेकी इच्छा करता हूं। क्योंकि इन नीच स्वभाववाले पाण्डवोंने पहिले मेरे पिता जटासुरका वध किया है; इससे मैं भी तुम्हारी आज्ञासे उन लोगोंका नाश करके पिताके ऋणसे मुक्त होनेकी इच्छा करता हूं।

कुरुराज दुर्य्योधन बार बार उस राक्षसकी प्रार्थना सुन कर यह वचन बोले,—मैं द्रोणाचार्य्य और कर्णके सङ्ग मिलकर अपने शत्रुओंको नाश करनेमें समर्थ होऊंगा, परन्तु तुम मनुष्यके वीर्य्य और राक्षसीके गर्भसे उत्पन्न हुए कठिन कर्म्म करनेवाले राक्षस घटोत्कचका वध करो। यह दुष्टात्मा युद्धभूमिके बीच सदा पाण्डवोंके हितकी अभिलाष करके मेरी सेनाके हाथी घोड़े और रथियोंका नाश कर रहा है; इससे तुम पहिले आकाशचारी घटोत्कच राक्षसका वध करो। कुरुराज दुर्य्योधनके ऐसे वचनको सुनकर विशाल शरीर वाला जटासुर पुत्र अलम्बलने कहा "ऐसा ही होगा"। ऐसा कहके वह राक्षस भीमसेन-पुत्र घटोत्कचको बुलाकर करके उसके ऊपर नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंकी वर्षा करने लगा। महाराज! जैसे प्रचण्ड वायु बादलोंके समूहको छिन्न भिन्न कर देता है वैसे ही घटोत्कच राक्षस अकेले ही राक्षस अलम्बल, कर्ण और कुरुसेनाके पुरुषोंको अपने अस्त्रोंसे पीड़ित करने लगा। अनन्तर महाबलवान अलम्बल घटोत्कचको मायाबलसेयुक्त देख नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंसे उसे पीड़ित करने लगा। इसी प्रकार घटोत्कचको अनेक बाणोंसे विद्ध करके फिर अनेक बाणोंसे पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंको तितर बितर करने लगा। उस रात्रिके समय पाण्डवोंकी सेनाके पुरुष अलम्बलके बाणोंसे पीड़ित होकर इस प्रकार चारो ओर छितर बितर होने लगे, जैसे वायुके वेगसे बादल छिन्न भिन्न होजाते हैं। इसी समय कुरुसेनाके योद्धा लोग भी घटोत्कचके बाणोंसे पीड़ित होकर हाथमें स्थित सहस्रों लुकाओंको इधर उधर फेंक कर रणभूमिसे भागने लगे। उस महाघोर संग्रामके समय अलम्बलने दश तीक्ष्ण बाणोंसे घटोत्कचके शरीरमें इस प्रकारसे प्रहार किया जैसे अंकुशसे हाथीको पीड़ित करते हैं। अनन्तर अलम्बलके पराक्रमको देखकर घटोत्कच राक्षस उसके रथ, सारथी और अस्त्रोंको तिलके परिमाणके अनुसार काटके भयानक शब्दसे सिंहनाद करने लगा। तिसके अनन्तर घटोत्कच राक्षसने अलम्बल कर्ण और दूसरे कुरुसेनाके सहस्रों योद्धाओंके ऊपर इस प्रकार अपने अस्त्र-शस्त्रोंको बर्षाया, जैसे बादल सुमेरु पर्व्वतके ऊपर जलकी वर्षा करते है। महाराज! उस समय तुम्हारी चतुरङ्गिनी सेना उस राक्षसके बाणोंसे ऐसी पीड़ित हुई कि बहुतेरे पुरुष अपनी सेनाके पुरुषोंको ही मर्द्दन करते हुए अपने बाहनोंको दौड़ा कर युद्धभूमिसे भागने लगे। तुम्हारी सेनाके पुरुषोंको भागते देख रथ सारथी और घोड़ोंसे रहित जटासुरपुत्र अलम्बलने घट।

रमें मुष्टिकासे प्रहार किया। भूकम्प होनेसे जैसे वृक्ष और लताके सहित पर्व्वत हिलने लगता है वैसे ही घटोत्कच अलम्बलके मुक्केसे विचलित हुआ। अनन्तर घटोत्कचने परिघके समान अपनी विशालभुजा उठाकर एक भयङ्कर मुक्केसे अलम्बलके शरीरमें प्रहार किया; और फिर क्रोध पूर्व्वक उसे पीड़ित करके इन्द्रध्वजाकी भांति अपनी लम्बी भुजाओंसे उसे उठाकर पृथ्वी पर देमारा। अनन्तर बलवान अलम्बल किसी प्रकार घटोत्कचके हाथसे छूटकर वेग-पूर्व्वक उसकी ओर दौड़ा और क्रोधपूर्व्वक उसे उठाके पृथ्वीपर पटक दिया; फिर उसके शरीरमें प्रहार करने लगा; महाराज! इसी भांति बड़े शरीर वाले राक्षस घटोत्कच और अलम्बलका रोएंको खड़ा करनेवाला महाभयङ्कर तुमुल संग्राम होने लगा। बलि और इन्द्रके समान महाबलवान राक्षसी मायामें निपुण वे दोनो वीर क्षण क्षणके बीच एक दूसरेके अधिक पराक्रम प्रकाशित करते हुए महाघोर युद्ध करने लगे। उस समय वे दोनों एक दूसरेके बधकी इच्छा करते हुए सैकड़ों भांतिकी माया उत्पन्न करके कभी अग्नि कभी समुद्र गरुड़ सर्प बादल, वायु, बज्र, पर्व्वत, हाथी, शार्दूल और कभी राहु और सूर्य्यकी मूर्त्ति धारण करके गदा परिघ प्रास मुद्गर पर्व्वतके शिखर समान मूषल आदि अनेक भांतिके अस्त्रशस्त्रोंसे एक दूसरेके ऊपर प्रहार करते हुए अद्भुत-रूपसे युद्ध करने लगे। महाराज! इसी भांति वे दोनों राक्षसोंमें मुख्य मायावी घटोत्कच और अलम्बल कभी हाथी कभी घोड़े और कभी रथोंपर चढ़के लड़ते और कभी पैदल हो युद्ध भूमिमें स्थित होके युद्ध करने लगते थे। तिसके अनन्तर घटोत्कच अत्यन्त क्रुद्ध होकर अलम्बलके बधकी इच्छा करके, बाजपक्षीकी भांति कूदके वेगपूर्व्वक उसको ग्रहण करके उठाकर इस प्रकार पृथ्वीमें फेंक दिया जैसे विष्णुने मयदानवको पृथ्वीमें गिराया था। इससे वह भयङ्कर रूपवाला राक्षस अलम्बल इधर उधर छटपटाते हुए भयानक शब्दसे चिल्लाने लगा। उस समय अत्यन्त पराक्रमी घटोत्कचने अद्भुत रूपवाली अपनी तलवारको मियानसे खींचकर उसके भयङ्कर सिरको शरीरसे अलग कर दिया फिर रुधिर बहते हुए उस अलम्बल राक्षसके सिरके केशको पकड़के घटोत्कच दुर्य्योधनके रथकी ओर दौड़ा। महाराज! तिसके अनन्तर महाबाहु घटोत्कच अलम्बलके उस कटे हुए भयङ्कर सिरको दुर्य्योधनके रथपर फेंकके वर्षाकालके बादलकी भांति भयानक शब्दके सहित गर्ज्जने लगा और अभिमानपूर्व्वक उनसे कहने लगा। हे दुर्य्योधन! तुमने इतने समय तक जिसके पराक्रमको देखा था यह वही तुम्हारा बन्धु अलम्बल मारा गया, अब इसी भांति पराक्रमसे युक्त कर्णकी भी तुम ऐसी ही दशा देखोगे। महाराज! घटोत्कच ऐसा वचन कहके कर्णके ऊपर सैकड़ों तीक्ष्ण बाणोंकी बर्षाता हुआ उनकी ओर दौड़ा। अनन्तर कर्ण और राक्षस घटोत्कचका सम्पूर्ण प्राणियोंको विस्मित करनेवाला अत्यन्त भयङ्कर महाघोर युद्ध आरम्भ हुआ।

१७२ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले; हे सञ्जय! सूर्य्यपुत्र कर्ण और राक्षस घटोत्कच जब उस रात्रिके समय रणभूमिमें युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए, तब उन दोनों वीरोंका किस प्रकार संग्राम हुआ था? युद्धके समय उस भयङ्कर रूप वाले राक्षसने कैसा स्वरूप धारण किया और उसके घोड़े रथ तथा अस्त्रशस्त्र किस भांतिके थे और उसके धनुष रथकी ध्वजा रथ और घोड़ोंकी लम्बाई चौड़ाईका कितना परिमाण था? और उसका बर्म्म तथा शिरस्त्राण कैसा

था? हे सञ्जय! तुम वचन बोलनेमें अत्यन्त निपुण हो इसलिये मैं जो कुछ पूंछता हूं वह सम्पूर्ण वृत्तान्त मेरे समीप वर्णन करो।

सञ्जय बोले महाराज। उस उस बड़े शरीरवाले राक्षसका उदर बड़ा नेत्र लाल और तोए खड़े थे; उसकी कमर मोटी, कान हाथीके कानके समान, केश सिंहके शरकी भांति दीख पड़ते थे, उसके कपोल जीभ ओठ और मुख लालवर्णके थे; मुखमें बड़े बड़े लम्बे चौड़े मोटे और चोखे भयङ्कर दांत दीख पड़ते थे उससे वह राक्षस मानो रौद्ररसका स्वरूप हो मालूम होता था। उसकी नासिका लाल और सम्पूर्ण अङ्ग काले थे। इसके अतिरिक्त उसका शरीर पर्व्वतके समान भयंकर दीख पड़ता था, उस बड़े शरीरवाले बलवान महाबाहु भयंकर राक्षसका सिर बहुत बड़ा था, उसके शरीरका चमड़ा अत्यन्त कड़ा था। जानुके ऊपरका हिस्सा मांससे अत्यन्त पुष्ट था और बिकट रूपसे दीख पड़ता था। कटिके पीछेका भाग अत्यन्त ही स्थूल और नाभिस्थान गभीर (गहिरा) था। वह अनेक राक्षसी माया जाननेवाला राक्षस बहुतसे अपने खाने पीनेकी अभिलषित अन्न आदि वस्तु सहज होमें खाने पीनेमें समर्थ था। महाराज! जैसे पर्व्वत अग्निकी लपट रूपी मालासे शोभित होते हैं वैसे ही वह राक्षस सुवर्णके कवच सुन्दर और हाथमें पहिरने योग्य आभूषणोंको पहरके शोभित होरहा था। उसके सिरके ऊपर सफेद वर्ण तोरण आकृतिसे युक्त अनेक भांतिके रत्नोंसे जटित सुवर्णमय एक किरीट शोभित होता था। उस राक्षसने बालसूर्य्यकी प्रभाके समान प्रकाशमान दोनों कुण्डल और रत्नमयी मालासे अलंकृत होके प्रकाशमान कांसेके कवचको धारण किया; और सैकड़ों किङ्किणि शब्दसे युक्त लालवर्णकी ध्वजासे शोभित ऋक्षके चमड़ेसे घिरा हुआ उत्तम अस्त्र शस्त्रोंसे परिपूरित अनेक पताकाओंके सहित आठ चक्रोंसे युक्त बादलकी भांति गभीर शब्दसे परिपूर्ण चार सौ हाथके परिमाणवाले एक बड़े रथपर चढ़ा था। उस रथमें मतवारे हाथीके समान रूपवाले लाल नेत्रसे युक्त वर्ण धारण किये हुए अत्यन्त वेगगामी महाबली भयङ्कर मूर्त्तिवाले एक सौ घोड़े जुते हुए थे। वे परिश्रमसे न थकनेवाले अनेक केशरोंसे शोभित बार बार हिनहिनाते और उस भयंकर रूपवाले राक्षसके रथको खींचते हुए रणभूमिके बीच गमन करने लगे। महाराज! उसका सारथी भी प्रकाशमान सफेद कुण्डलोंसे शोभित एक भयंकर मूर्त्तिवाला राक्षस था, वह सूर्य्य किरणके समान प्रकाशमान घोड़ोंकी रासको ग्रहण करके उन घोड़ोंको हांकता था। महाराज! राक्षस घटोत्कच ऐसे रथ और सारथीसे युक्त होकर बादलोंसे युक्त बड़े पर्व्वत तथा अरुणसे युक्त सूर्य्यकी भांति शोभित हुआ। उसके रथकी ऊंची ध्वजा आकाशमें लहरा रही थी; उसके ऊपर लालनेत्रसे युक्त मांसभक्षी एक भयंकर गिद्ध विराजमान था। घटोत्कच इस प्रकार रथ पर चढ़के इन्द्रधनुषके समान अपने प्रचण्ड धनुष पर रोदा चढ़ाके मोटे मोटे बाणोंसे सम्पूर्ण दिशाको परिपूरित करके उस भयङ्करी रात्रिके समय कर्णको ओर दौड़ा। महाराज! जब वह राक्षस अपने रथ पर स्थित होके धनुषटंकार करने लगा; उस समय सम्पूर्ण शब्दोंको अतिक्रम करके बज्रके समान उसके धनुष टङ्कारका शब्द सुनाई देने लगा। उससे तुम्हारी सेनाके पुरुष भयभीत होके इस प्रकार कांपने लगे जैसे वायुके वेगसे समुद्रकी तरङ्ग कम्पित होती है। उस भयङ्कर मूर्त्तिवाले राक्षसको इस भांतिसे अपनी ओर आते देख राधापुत्र कर्ण शीघ्रताके सहित ... भांति उसे निवारण करने लगे।

और यूथपति ऋषभ क्रुद्ध होकर एक दूसरेकी ओर दौड़ते हैं वैसे ही कर्ण अपने बाणोंकी वर्षा करते हुए राक्षस घटोत्कचकी ओर दौड़े। हे राजेन्द्र! उस समय कर्ण और राक्षस घटोत्कचका इन्द्र और सम्बरासुरकी भांति संग्राम होने लगा। वे दोनों वीर महावेगशील भयङ्कर टङ्कार शब्दसे परिपूरित प्रचण्ड धनुष ग्रहण करके अपने महा अस्त्रोंसे क्षत-विक्षत शरीरसे युक्त होकर अपने बाणजालसे एक दूसरेको छिपाने लगे। अनन्तर कान पर्य्यन्त धनुष खींच कर अपने बाणोंके समूहसे वे दोनों वीर एक दूसरेके कवचको भेद करके फिर अपने बाणोंसे एक दूसरेको क्षत विक्षत करने लगे। जैसे दो शार्दूल नखोंसे और दो हाथी अपने दांतोंसे युद्ध करते हैं वैसे ही वे दोनों शक्ति आदि अस्त्र और अनेक बाणोंकी वर्षा कर बाणोंकी चोटसे क्षतविक्षत शरीरसे युक्त होगये। इसी भांति वे दोनो कभी बाण साधते कभी अस्त्रोंको चलाके एक दूसरेके शरीरमें प्रहार करते और कभी अपने अस्त्ररूपी अग्निसे एक दूसरेको भस्म करनेकी इच्छासे अस्त्र शस्त्रोंको चलाते हुए; इस प्रकार युद्ध करते थे कि सेनाके बहुतेरे पुरुष उन दोनोंके युद्धको देखनेमें भी समर्थ न हुए; अधिक क्या कहा जावे उस समय उन दोनों वीरोंका शरीर बाणोंसे परिपूरित होगया, और उनके शरीरसे इस प्रकार रुधिर बहने लगा जैसे पर्व्वतोंके ऊपरसे गेरूकी धारा बहती है। आपसमें एक दूसरेके बाणोंसे पीड़ित होके उन दोनो वीरोंने एक दूसरेके शरीरको अपने बाणोंसे क्षतविक्षत कर दिया यह ठीक है; परन्तु यत्नवान होकर भी कोई किसीको युद्धभूमिसे विचलित न कर सका। महाराज! प्राणपणसे युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए कर्ण और राक्षस घटोत्कचका संग्राम बहुत समय तक समभावसे ही होता रहा। परन्तु घटोत्कचको निर्भय चित्तसे बाण साधते और चलाते देख तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण पुरुष उसके धनुषटङ्कारके शब्दसे भयभीत हो गये। महाराज! सब अस्त्र शस्त्रोंकी विद्या जाननेवाले महावीर कर्ण जब किसी प्रकारसे भी घटोत्कचसे अधिक न हो सके; तब वह दिव्य अस्त्रोंको प्रकट करने लगे। भीमसेन पुत्र घटोत्कचने कर्णको दिव्य अस्त्र प्रकट करते देख, राक्षसी मायाको उत्पन्न किया। उससे वह क्षण भरके बीच शूल मुद्गर वृक्ष और पत्थर ग्रहण करने वाली और भयङ्कर रूपवाली राक्षसी सेनासे युक्त होगया, राजा लोग सम्पूर्ण प्राणियोंके नाश करनेवाले दण्डधारी यमराजके समान हाथमें धनुष ग्रहण किये और राक्षसोंकी महासेनासे युक्त घटोत्कचको सम्मुख आते देख अत्यन्त ही शङ्कित हुए। ऐसा क्या उस समय उसके सिंह नाद शब्दसे भयभीत होकर हाथी घोड़े मल मूत्र त्याग करने लगे और सेनाके पुरुष अत्यन्त ही कातर हुए। अनन्तर उस समय रात्रिके प्रभावसे स्वाभाविक ही अधिक बलवान राक्षसोंकी सेनाके पुरुषोंके हाथसे रणभूमिमें चारों और शिलाओंकी वर्षा होने लगी। लोहमय चक्र भुशुण्डी, शक्ति, तोमर, शूल शतघ्नी और पट्टिश आदि अनेक भांतिके अस्त्र शस्त्र चारों ओरसे तुम्हारी सेनाके ऊपर पड़ने लगे। महाराज! तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग उस भयङ्कर युद्धको देखकर भयभीत होकर चारों ओर भागने लगे। उस समय केवल अस्त्रबलमें प्रशंसित अकेले कर्ण ही युद्धसे कातर नहीं हुए बरन अपने दिव्य अस्त्रके प्रभावसे घटोत्कचकी सम्पूर्ण मायाको भस्म कर दिया। माया नष्ट होने पर घटोत्कच क्रुद्ध होके सूतपुत्र कर्णके ऊपर महाघोर बाणोंकी वर्षा करने लगा, वे सम्पूर्ण बाण कर्णके शरीरमें घुसे गये। महाराज! वे सम्पूर्ण बाण कर्णके शरीरको छेद कर रुधिर पिये

हुए पृथ्वीमें गिरे। तब प्रतापी कर्णने क्रुद्ध होकर हस्तलाघवके सहित दश बाणोंसे घटोत्कचके शरीरको भेद किया। महापराक्रमी सूतपुत्र कर्णके बाणोंसे घटोत्कचके मर्म्मस्थल अत्यन्त ही पीड़ित हुए, तब उसने अत्यन्त क्रुद्ध होकर एक सहस्र चूरधारसे युक्त देवताओंके बनाये हुए चक्रको ग्रहण करके कर्णकी ओर चलाया। महाराज। जैसे भाग्यहीन पुरुषके मनोरथ निष्फल होजाते हैं वैसे ही अत्यन्त वेगसे घुमाके चलाया हुआ वह चक्र कर्णके बाणोंके प्रभावसे उलटके पृथ्वीमें गिर पड़ा। चक्रको निष्फल होते देख, घटोत्कचने अपने बाणजालसे इस प्रकार कर्णको छिपा दिया; जैसे राहु सूर्य्यको छिपा देता है। वैसे ही रुद्र विष्णु और इन्द्रके समान पराक्रमी सूतपुत्र कर्णने भी निर्भयचित्तसे अपने बाणजालसे घटोत्कचके रथको शीघ्रताके सहित छिपा दिया। तब घटोत्कचने क्रुद्ध होकर सुवर्ण-तारसे खचित एक भारी गदाको घुमाकर कर्णकी ओर फेंक दिया, वह गदा भी कर्णके बाणोंसे निवारित होकर पृथ्वीमें गिर पड़ी। अनन्तर बड़े शरीर वाला वह राक्षस घटोत्कच आकाशमें चला गया और आकाशसे कर्णके ऊपर वृक्षोंकी वर्षा करने लगा। उसे देख सूतपुत्र कर्ण अपने प्रकाशमान बाणोंको चलाकर उसके रथके घोड़े और सारथीका नाश करके इस प्रकार घटोत्कचके शरीरको छेदने लगे, जैसे सूर्य्य अपनी किरणोंसे अन्ध-कारको नष्ट कर देता है। कर्ण जब राक्षसी मायामें निपुण भीमसेनपुत्र घटोत्कचके रथ और घोड़ोंको टुकड़े टुकड़े करके गिरा कर जलकी वर्षा करनेवाले बादलकी भांति उसके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे, तब उस समय घटोत्कचके शरीरमें ऐसा दो अङ्गुल स्थान भी बाकी न रहा, जो कर्णके बाणोंसे विद्ध न हुआ हो। अधिक क्या कहा जावे उस समय घटोत्कचका शरीर मुहूर्त्त भरके बीच कर्णके बाणोंसे इस प्रकार परिपूरित होगया, जैसे कांटोंसे युक्त शल्यकीका वृक्ष शोभित होता है। महाराज! उस समय राक्षस घटोत्कच कर्णके बाणोंसे इस प्रकार छिप गया, कि कोई पुरुष उसे देख भी न सके। परन्तु मायाविद्या जाननेवाला घटोत्कच कर्णके चलाये हुए दिव्य अस्त्रोंको अपने दिव्य अस्त्रोंसे निवारण करता हुआ मायामयी युद्ध करने लगा। जब वह मायासे शीघ्रताके सहित कर्णके सङ्ग युद्ध करने लगा, उस समय आकाशमण्डलसे अनगिनत बाणोंकी वर्षा होती हुई दिखाई देने लगी। हे राजेन्द्र! मायाविद्यामें निपुण बड़े शरीरवाला वह राक्षस इसी भांति अपनी मायासे तुम्हारी सम्पूर्ण सेनाके पुरुषोंको मोहित करके रणभूमिमें घूमने लगा। उसका मुख स्वभाविक ही भय-ङ्कर था, उसपर भी उसने मायाबलसे मुख बनाकर कर्णके चलाये हुए बाणोंको ग्रास किया। तिसके अनन्तर वह बड़े शरीरवाला राक्षस युद्धसे उत्साहहीन और प्राणरहितके समान होकर कटके सैकड़ों टुकड़े होके आकाशसे गिरते हुए दीख पड़ा। तब उसके शरीरको कटके गिरते देख कुरुसेनाके योद्धा-ओंने समझा, कि घटोत्कच मारा गया, ऐसा समझके तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग सिंहनाद करने लगे। वह उस ही समय मायाके प्रभा-वसे अनेक शरीर धारण करके एकही समय चारों ओर दिखाई देने लगा। वह मायाके प्रभावसे-कभी एकसौ सिर, एकसौ उदरवाला बड़ा शरीर धारण करके मैनाक पर्व्वतकी भांति दिखाई देने लगा। कभी अंगुष्ठ मात्र होकर फिर उठती हुई समुद्रकी तरङ्गकी भांति बक्र गतिसे ऊप-रको बढ़ने लगा। कभी पृथ्वीको विदारण करके जलके बीच छिप जाता था, क्षण भरके बीच दूसरे स्थानपर प्रकट होके फिर उसी

और यूथपति ऋषभ क्रुद्ध होकर एक दूसरेकी ओर दौड़ते हैं वैसे ही कर्ण अपने बाणोंकी वर्षा करते हुए राक्षस घटोत्कचकी ओर दौड़े। हे राजेन्द्र। उस समय कर्ण और राक्षस घटोत्कचका इन्द्र और सम्बरासुरकी भांति संग्राम होने लगा। वे दोनों बीर महावेगशील भयङ्कर टङ्कार शब्दसे परिपूरित प्रचण्ड धनुष ग्रहण करके अपने महा अस्त्रोंसे क्षत-विक्षत शरीरसे युक्त होकर अपने बाणजालसे एक दूसरेको छिपाने लगे। अनन्तर कान पर्य्यन्त धनुष खींच कर अपने बाणोंके समूहसे वे दोनों बीर एक दूसरेके कवचको भेद करके फिर अपने बाणोंसे एक दूसरेको क्षत विक्षत करने लगे। जैसे दो शार्दूल नखोंसे और दो हाथी अपने दातोंसे युद्ध करते हैं वैसे ही वे दोनों शक्ति आदि अस्त्र और अनेक बाणोंकी वर्षा कर बाणोंकी चोटसे क्षतविक्षत शरीरसे युक्त होगये। इसी भांति वे दोनो कभी बाण साधते कभी अस्त्रोंको चलाके एक दूसरेके शरीरमें प्रहार करते और कभी अपने अस्त्ररूपी अग्निसे एक दूसरेको भस्म करनेकी इच्छासे अस्त्र शस्त्रोंको चलाते हुए, इस प्रकार युद्ध करते थे कि सेनाके बहुतेरे पुरुष उन दोनोंके युद्धको देखनेमें भी समर्थ न हुए; अधिक क्या कहा जावे उस समय उन दोनो बीरोंका शरीर बाणोंसे परिपूरित होगया, और उनके शरीरसे इस प्रकार रुधिर बहने लगा जैसे पर्व्वतोंके ऊपरसे गेरूकी धारा बहती है। आपसमें एक दूसरेके बाणोंसे पीड़ित होके उन दोनो वीरोंने एक दूसरेके शरीरको अपने बाणोंसे क्षतविक्षत कर दिया यह ठीक है; परन्तु यत्नवान होकर भी कोई किसीको युद्धभूमिसे विचलित न कर सका। महाराज! प्राणपणसे युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए कर्ण और राक्षस घटोत्कचका संग्राम बहुत समय तक समभावसे ही होता रहा। परन्तु घटोत्कचकी निर्भय चित्तसे बाण साधते और चलाते हैं तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण पुरुष उसके धनु टङ्कारके शब्दसे भयभीत हो गये। महाराज! सब अस्त्र शस्त्रोंकी विद्या जाननेवाले महावीर कर्ण जब किसी प्रकारसे भी घटोत्कचसे अधिक न हो सके, तब वह दिव्य अस्त्रोंको प्रकट करने लगे। भीमसेन पुत्र घटोत्कचने कर्णको दिव्य अस्त्र प्रकट करते देख, राक्षसी मायाको उत्पन्न किया। उससे वह क्षणभरके बीच शूल मुद्गर वृक्ष और पत्थर ग्रहण करने वाली और भयङ्कर रूपवाली राक्षसी सेनासे युक्त होगया, राजा लोग सम्पूर्ण प्राणियोंके नाश करनेवाले दण्डधारी यमराजके समान हाथमें धनुष ग्रहण किये और राक्षसोंकी महासेनासे युक्त घटोत्कचको सम्मुख आते देख अत्यन्त ही शङ्कित हुए। ऐसा क्या उस समय उसके सिंहनाद शब्दसे भयभीत होकर हाथी घोड़े मल मूत्र त्याग करने लगे और सेनाके पुरुष अत्यन्त ही कातर हुए। अनन्तर उस समय राक्षसोंके प्रभावसे स्वाभाविक ही अधिक बलवान राक्षसोंकी सेनाके पुरुषोंके हाथसे रणभूमिमें चारों ओर शिलाओंकी वर्षा होने लगी। लोहमय चक्र भुषण्डी, शक्ति, तोमर, शूल शतघ्नी और पट्टिश आदि अनेक भांतिके अस्त्र शस्त्र चारों ओरसे तुम्हारी सेनाके ऊपर पड़ने लगे। महाराज! तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग उस भयङ्कर युद्धको देखकर भयभीत होकर चारों ओर भागने लगे। उस समय केवल अस्त्रबलमें प्रशंसित अकेले कर्ण ही युद्धसे कातर नहीं हुए वरन अपने दिव्य अस्त्रके प्रभावसे घटोत्कचकी सम्पूर्ण मायाको भस्म कर दिया। माया नष्ट होने पर घटोत्कच क्रुद्ध होके सूतपुत्र कर्णके ऊपर महाघोर बाणोंकी वर्षा करने लगा; वे सम्पूर्ण बाण कर्णके शरीरमें घुस गये। महाराज। वे सम्पूर्ण बाण कर्णके शरीरको छेद कर रुधिर पीके

हुए पृथ्वीमें गिरे। तब प्रतापी कर्णने क्रुद्ध होकर हस्तलाघवके सहित दश बाणोंसे घटोत्कचके शरीरको भेद किया। महापराक्रमी सूतपुत्र कर्णके बाणोंसे घटोत्कचके मर्म्मस्थल अत्यन्त ही पीडित हुए, तब उसने अत्यन्त क्रुद्ध होकर एक सहस्र चूरधारसे युक्त देवताओंके बनाये हुए चक्रको ग्रहण करके कर्णकी ओर चलाया। महाराज! जैसे भाग्यहीन पुरुषके मनोरथ निष्फल होजाते हैं वैसे ही अत्यन्त वेगसे घुमाके चलाया हुआ वह चक्र कर्णके बाणोंके प्रभावसे उलटके पृथ्वीमें गिर पड़ा। चक्रको निष्फल होते देख, घटोत्कचने अपने बाणजालसे इस प्रकार कर्णको छिपा दिया; जैसे राहु सूर्य्यको छिपा देता है। वैसे ही रुद्र विष्णु और इन्द्रके समान पराक्रमी सूतपुत्र कर्णने भी निर्भयचित्तसे अपने बाणजालसे घटोत्कचके रथको शीघ्रताके सहित छिपा दिया। तब घटोत्कचने क्रुद्ध होकर सुवर्णतारसे खचित एक भारी गदाको घुमाकर कर्णकी ओर फेंक दिया, वह गदा भी कर्णके बाणोंसे निवारित होकर पृथ्वीमें गिर पड़ी। अनन्तर बड़े शरीर वाला वह राक्षस घटोत्कच आकाशमें चला गया और आकाशसे कर्णके ऊपर वृक्षोंकी वर्षा करने लगा। उसे देख सूतपुत्र कर्ण अपने प्रकाशमान बाणोंको चलाकर उसके रथके घोडे और सारथीका नाश करके इस प्रकार घटोत्कचके शरीरको छेदने लगे, जैसे सूर्य्य अपनी किरणोंसे अन्धकारको नष्ट कर देता है। कर्ण जब राक्षसी मायामें निपुण भीमसेनपुत्र घटोत्कचके रथ और घोडोंको टुकडे टुकड़े करके गिरा कर जलकी वर्षा करनेवाले बादलकी भांति उसके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे, तब उस समय घटोत्कचके शरीरमें ऐसा दो अङ्गुल स्थान भी बाकी न रहा, जो कर्णके बाणोंसे बेध न हुआ हो। अधिक क्या कहा जावे उस समय घटोत्कचका शरीर मुहूर्त्त भरके बीच कर्णके बाणोंसे इस प्रकार परिपूरित होगया, जैसे कांटोंसे युक्त शल्यकीका वृक्ष शोभित होता है। महाराज! उस समय राक्षस घटोत्कच कर्णके बाणोंसे इस प्रकार छिप गया, कि कोई पुरुष उसे देख भी न सके। परन्तु मायाविद्या जाननेवाला घटोत्कच कर्णके चलाये हुए दिव्य अस्त्रोंको अपने दिव्य अस्त्रोंसे निवारण करता हुआ मायामयी युद्ध करने लगा। जब वह मायासे शीघ्रताके सहित कर्णके सङ्ग युद्ध करने लगा, उस समय आकाशमण्डलसे अनगिनत बाणोंकी वर्षा होती हुई दिखाई देने लगी। हे राजेन्द्र! मायाविद्यामें निपुण बड़े शरीरवाला वह राक्षस इसी भांति अपनी मायासे तुम्हारी सम्पूर्ण सेनाके पुरुषोंको मोहित करके रणभूमिमें घूमने लगा। उसका मुख स्वभाविक ही भयङ्कर था, उसपर भी उसने मायाबलसे मुख बनाकर कर्णके चलाये हुए बाणोंको ग्रास किया। तिसके अनन्तर वह बड़े शरीरवाला राक्षस युद्धमें उत्साहहीन और प्राणरहितके समान होकर कटके सैकड़ों टुकड़े होके आकाशसे गिरते हुए दीख पड़ा। तब उसके शरीरको कटके गिरते देख कुरुसेनाके योद्धाओंने समझा, कि घटोत्कच मारा गया, ऐसा समझके तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग सिंहनाद करने लगे। वह उस ही समय मायाके प्रभावसे अनेक शरीर धारण करके एकही समय चारों ओर दिखाई देने लगा। वह मायाके प्रभावसे कभी एकसौ सिर, एक सौ उदरवाला बड़ा शरीर धारण करके मैनाक पर्व्वतकी भांति दिखाई देने लगा। कभी अंगुष्ठ मात्र होकर फिर उठती हुई समुद्रकी तरङ्गकी भांति वक्र गतिसे ऊपरको बढ़ने लगा। कभी पृथ्वीको विदारण करके जलके बीचे छिप जाता था, क्षण भरके बीच दूसरे स्थानपर प्रकट होके फिर उसी

स्थलपर दीख पड़ता था। इसी भांति बहु राक्षस मायाके प्रभावसे पृथ्वी आकाश और सम्पूर्ण दिशामें घूमकर फिर कवच और कुण्डल पहने हुए सुवर्णमय रथपर चढ़के सूतपुत्र कर्णके रथके समीप उपस्थित हुआ। और निर्भयताके सहित उनसे कहने लगा,—हे सूतपुत्र! खड़ारह! अब तू जीते हुए मेरे सम्मुखसे कहां जासकता है? आज रणभूमिके बीच, मैं तुम्हारी युद्धकी अभिलाषा पूर्ण कर दूंगा। महाराज। अत्यन्त पराक्रमी घटोत्कच ऐसा बचन कहके क्रोधपूर्वक आकाशमें गया और भयानक स्वरसे हंसता हुआ कर्णके शरीरमें इस प्रकार अपने वाणोंसे प्रहार करने लगा, जैसे सिंह गजराजके ऊपर प्रहार करता है। उस समय घटोत्कच रथियोंमें मुख्य, कर्णके ऊपर अपने मोटे मोटे बाणोंको आकाशसे इस प्रकार बर्षाने लगा; जैसे बादल पृथ्वीके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं, पर कर्ण उसके चलाये हुए बाणोंको समीप न पहुंचते ही अपने वाणोंके प्रभावसे मार्गहीमें काट काटके गिराने लगे। महाराज! कर्णके अस्त्रोंसे माया निष्फल होती देख, घटोत्कचने फिर अन्तर्द्धान होके राक्षसी माया उपजायी। उस समय वह मायाके प्रभावसे शूल प्रास, मूशल आदि शस्त्ररूपी जलके झरनेसे युक्त, अनेक शिखरोंसे शोभित, वृक्षलतासे परिपूर्ण एक बहुत ऊंचे बड़े पर्व्वतका रूप धारण किया। महाराज! कर्ण अञ्जनगिरिके समान जलझरनेके स्थलमें, अनेक अस्त्र शस्त्रोंको निकलते हुए उस पर्व्वतको देखकर तनिक भी भयभीत नहीं हुए; वरन उत्साहपूर्व्वक दिव्य अस्त्रोंको प्रकाशित किया। कर्णके दिव्य अस्त्रोंके प्रभावसे वह पर्व्वत क्षणभरमें टुकड़े टुकड़े होकर नष्ट होगया। उसे देखकर घटोत्कच आकाशमें इन्द्रधनुष शोभित काले बादलका रूप धारण करके वहांसे ही सूतपुत्र कर्णके ऊपर शिला बर्षाने लगा। तब अस्त्रधारियोंमें मुख्य कर्णने वायव्य अस्त्र चलाकर उसकाले मेघमण्डलको आकाशमें छिन्न भिन्न करके नष्ट कर दिया। तिसके अनन्तर कर्णने अपने वाणोंसे सम्पूर्ण दिशाको परिपूर्ण करके घटोत्कचके चलाये हुए अस्त्रोंको अपने अस्त्रोंसे निवारण किया। अनन्तर महाबलवान भीमसेनपुत्र घटोत्कच ऊंचे स्वरसे हंसके महारथी कर्णके समीप महाघोर माया प्रकाशित करने लगा। उस समय रथियोंमें मुख्य घटोत्कच घोड़े हाथी और रथों पर चढ़े हुए नाना भांतिके कवचोंसे भूषित, मतवारे हाथीके समान पराक्रमी सिंह और शार्दूलकी आकृतिवाले अनगिनत क्रूर स्वभाववाले राक्षसोंको सेनासे युक्त होकर इस प्रकार युद्ध भूमिमें आगमन करने लगा, जैसे मरुत गणोंसे घिरे हुए इन्द्र आगमन करते हैं। घटोत्कचको रथ पर चढ़े हुए निर्भय चित्तसे फिर अपनी ओर आते देख महा धनुर्द्धर कर्ण यत्नवान होकर उसके सङ्ग युद्ध करने लगे। घटोत्कचने पहिले कर्णको पांच बाणोंसे विद्ध किया, फिर सम्पूर्ण राजाओंको भयभीत करते हुए भयानक शब्दसे सिंहनाद करने लगा। तिसके अनन्तर घटोत्कचने अञ्जलिक अस्त्रसे कर्णके हाथमें स्थित उनके दृढ़ धनुषको बाण और रोदेके सहित काटके गिरा दिया। तब कर्ण इन्द्रधनुषके समान एक महावेगवान प्रचण्ड धनुष ग्रहण करके बलपूर्व्वक धनुष खींच कर आकाशचारी राक्षसोंके ऊपर स्वर्ण दण्डवाले तीक्ष्ण बाणोंको चलाने लगे। महाराज! ऊंची छातीवाले वे सम्पूर्ण राक्षस कर्णके वाणोंसे पीड़ित होकर इस प्रकार विकल होगये जैसे सिंहसे पीड़ित होकर हाथियोंका समूह व्याकुल होजाता है। जैसे प्रलय कालके समय अग्नि सम्पूर्ण प्राणियोंको भस्म कर देती है वैसे ही युद्ध विद्याके जाननेवाले सूतपुत्र कर्ण हाथी घोड़े

रथ और सारथियोंके सहित उन सम्पूर्ण राक्षसोंको बलपूर्व्वक अपने बाणरूपी अग्निसे भस्म करने लगे।—हे राजेन्द्र! जैसे पहिले समयमें देवोंके देव महादेव त्रिपुरको जलाकर शोभित हुए थे वैसे ही सूतपुत्र कर्ण भी सम्पूर्ण राक्षसी सेनाका नाश करके युद्धभूमिके बीच शोभित हुए। अधिक क्या कहा जावे उस समय पाण्डवोंकी ओरके सहस्रों राजाओंके बीच भयानक बल और पराक्रमसे समान महाबलशान राक्षसराज घटोत्कचको छोड़के और दूसरे कोई पुरुष कर्णकी ओर देखनेमें भी समर्थ न हुए। उस समय वह राक्षस ऐसा क्रुद्ध हुआ कि जैसे जलते हुए महालुक्कके ऊपर तेल पड़ता है। अनन्तर उसके दोनों नेत्रोंसे लगातार अग्निके कण निकलते हुए दिखाई देने लगे। अनन्तर घटोत्कच पिशाच बदनके समान रूप और विशाल शरीरवाले खरजुते और मायासे बने हुए रथपर चढ़के क्रोधसे ओंठ चाटता हुआ सारथीसे बोला हे सारथी! तुम मुझे सूतपुत्र कर्णके समीपमें ले चलो। हे राजेन्द्र! रथियोंमें मुख्य राक्षस घटोत्कच इसी भाँति भयङ्कर मूर्त्ति धारण करके फिर सूतपुत्र कर्णसे युद्ध करनेकी इच्छासे उनकी ओर गमन करने लगा, और अत्यन्त क्रुद्ध होकर आठ योजन लम्बी एक योजन चौड़ी आठ चक्रसे युक्त अनेक शूलोंसे परिपूरित लोहमयी महा भयङ्करी महादेवकी बनाई हुई एक तलवार ग्रहण करके सूतपुत्र कर्णकी ओर चलायी। उसे देखकर कर्णने अपने बड़े धनुषको रथमें रखके उस समय रथसे कूदकर उस भयङ्करी तलवारको ग्रहण करके फिर उसे घटोत्कचहीकी ओर चलाई। घटोत्कच उसी समय रथसे कूदकर पृथ्वीपर स्थित हुआ, पर कर्णकी भुजासे छूटी हुई वह प्रकाशमान तलवार घटोत्कचके घोड़े सारथी और रथको भस्म करके पृथ्वीमें प्रविष्ट हुई। कर्णके ऐसे कठिन कर्म्मको देखकर देवता लोग अत्यन्त ही विस्मित हुए। अधिक क्या कहूं, उस समय कर्णने जो सहसा कूदके महादेवकी बनाई उस प्रचण्ड तलवारको ग्रहण किया उसे देख सम्पूर्ण प्राणियोंने सूतपुत्र कर्णकी अत्यन्त ही प्रशंसा किया। अनन्तर शत्रुनाशन कर्ण रणभूमिके बीच ऐसा कठिन कर्म्म करके फिर अपने रथपर चढ़के घटोत्कचकी ओर अनेक तेज बाण चलाने लगे। हे प्रजानाथ! उस भयङ्कर संग्रामके समय कर्णने जैसा कर्म्म किया; वैसे कर्म्मको करनेमें सम्पूर्ण प्राणियोंके बीच कोई भी पुरुष समर्थ नहीं हैं। जो हो; जैसे पर्व्वतके ऊपर लगातार जलकी वर्षा होती हैं वैसे ही घटोत्कच लगातार कर्णके बाणोंसे पीड़ित होकर इन्द्रजालसे बनी हुई वस्तुकी भांति फिर अन्तर्द्धान हुआ। महाराज। महाघोर राक्षसी मायासे युक्त शत्रुओंको नाश करनेवाले उस राक्षसने मायाबल और हस्तलाघवके सहित अपने अस्त्रोंसे कर्णके चलाये हुए सम्पूर्ण दिव्य अस्त्रोंको निवारण किया। परन्तु मायाके प्रभावसे बार बार सम्पूर्ण अस्त्रोंके निष्फल होने पर भी कर्ण निर्भयचित्तसे उस राक्षसके सङ्ग युद्ध करने लगे। कर्णका पराक्रम देख भीमसेन पुत्र घटोत्कचने अनेक रूप धारण किये; उससे सिंह बाघ तेंदुए अग्निजिह्वा और लोहमुख आदि पशुपक्षियोंका रूप धारण करके चारों ओरसे अनेक राक्षस रणभूमिके बीच उपस्थित हुए। महाराज। वह इस प्रकार युद्धभूमिमें उपस्थित होने पर भी कर्णके धनुषसे छूटे हुए बाणोंसे पीड़ित होकर संग्रामभूमिके बीच सम्मुख खड़े होनेमें असमर्थ होकर उस समय फिर इस भांति अन्तर्द्धान होगया, जैसे इन्द्रजालके बने हुए नगर पर्व्वत और जङ्गल लोप होजाते हैं। तिसके अनन्तर भयङ्कर मुखवाले अनगिनत राक्षस पिशाच अपनी सेनाके सहित भेड़िये और शियाररूपसे कर्णको भक्षण

करनेके वास्ते चारों ओरसे दौड़ने लगे। और वे सब राक्षस तथा पिशाच लोग रुधिर लिपटे हुए अनेक भांतिके भयङ्कर अस्त्रशस्त्रोंको ग्रहण करके कठोर वचन कहते हुए कर्णको भयभीत करने लगे; कर्ण उन हर एक राक्षसोंको अनगिनत बाणोंसे विद्ध करने लगे। अनन्तर दिव्य अस्त्रोंके प्रभावसे कर्णने राक्षसी मायाका नाश किया। फिर अनेक चोखे बाणोंसे घटोत्कचके रथके घोड़ोंके शरीरमें प्रहार किया, उन घोड़ोंका कर्णके बाणोंसे सम्पूर्ण शरीर क्षतविक्षत हो गया, और वे सम्पूर्ण घोड़े घटोत्कचके सम्मुखहीमें प्राणरहित होकर पृथ्वीसे गिर पड़े। महाराज! इस प्रकार जब सम्पूर्ण माया नष्ट हुई तब हिड़म्बापुत्र घटोत्कचने कर्णसे कहा "अब मैं तुम्हारी मृत्युका उपाय करता हूं" ऐसा कहके फिर अन्तर्द्धान हुआ।

१७६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! जब कर्ण और घटोत्कचका ऐसा युद्ध होने लगा, उसी समय पराक्रमी राक्षसराज अलायुध पुरानी शत्रुताके स्मरण करके नानावर्णवाले सहस्रों पराक्रमी और भयंकर राक्षसोंकी सेनाके सहित दुर्य्योधनके समीप उपस्थित हुआ। पहिले भीमसेनने उसको जातिके पराक्रमी विप्रघाती वक किर्म्मीर और उसके मित्र हिड़म्बका बध किया था। इस समय उससे रात्रिके युद्धके विषयको जानके अपने जाति-बधरूपी बहुत दिनोंकी शत्रुताको स्मरण करके भीमसेनके बधकी अभिलाषा किया। तब मतवारे हाथीकी भांति वह राक्षस क्रुद्ध होकर दुर्य्योधनके निकट उपस्थित होके इस प्रकार प्रार्थना करने लगा, हे राजेन्द्र! पहिले भीमसेनने मेरे बन्धु वक, किर्म्मीर और हिड़म्बको जिस प्रकारसे मारा था, वह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम्हें विदित हैं। विशेष करके उसने दूसरे राक्षस और मेरी अवमानना करके कन्या अवस्थामें हिड़म्बाका धर्म्म नष्ट किया था, इससे आज मैं हाथी घोड़े, रथ और पैदल सेनाके सहित पाण्डवोंको और अनुयाइयोंके सहित हिड़म्बापुत्र घटोत्कचके बधकी इच्छा करके स्वयं तुम्हारे समीप आके उपस्थित हुआ हूं। आज मैं कृष्ण के सहित कुन्ती-पुत्रोंको मारके अपने अनुयायी राक्षसोंके सहित उनका मांस भक्षण करूंगा। इससे तुम अपनी सेनाके पुरुषोंको युद्धभूमिसे निवृत्त करो; हम लोग पाण्डवोंके सङ्ग युद्ध करेंगे।

भाइयोंके बीचमें घिरे हुए महाराज दुर्य्योधन अलायुधराक्षसके वचनको सुनकर प्रसन्नताके सहित उसका सत्कार करके यह वचन बोले, हे वीर! मेरी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा शत्रुताको शेष करनेके वास्ते उद्यत होकर पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंके सङ्ग युद्ध कर रहे हैं इससे वे लोग किसी प्रकारसे भी युद्धसे निवृत्त न होंगे, पर हम लोग उन्हें और तुम्हारी सेनाके योद्धाओंको अगाड़ी करके शत्रुओंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त होंगे।

सञ्जय बोले महाराज! राक्षसराज अलायुध दुर्य्योधनके वचनको सुनकर ऐसा ही होगा कहके घटोत्कचका जैसा शरीर था, वैसा ही प्रकाशमान शरीर धारण करके सूर्य्यके समान प्रकाशमान रथपर चढ़ा और मनुष्योंको भक्षण करनेवाले राक्षसोंकी सेनाको सङ्ग लेकर शीघ्रताके सहित घटोत्कचकी ओर दौड़ा! अलायुधका रथ भी बहुत बड़ा सुन्दर गम्भीर घरघराहट शब्दसे युक्त भालूके चमड़ेसे घिरा हुआ और तोरण पताकासे शोभित था। उसके रथके घोड़े भी घटोत्कचके घोड़ोंकी भांति शीघ्रगामी हाथीके समान शरीरवाले गधेकी भांति शब्द करनेवाले और मांसभोजी थे, उनकी संख्या भी एकसौसे कम नहीं थी। उसका

धनुष भी घटोत्कचकी भांति दृढ़ रोदेसे युक्त और सुवर्णके तारोंसे प्रकाशित होरहा था। शिलापर घिसे हुए सोनेके पंखवाले उसके बाण भी शोभित होरहे थे। इसी भांति उसके रथके ऊपर ऊंची ध्वजा अग्नि और सूर्य्यकी भांति प्रकाशित होरही थी, वह ध्वजा गीदड़ोंके समूहसे रक्षित थी। वह स्वयं भी घटोत्कचकी भांति भुजबलमें समान था, उसके भयङ्कर रूपको देख सम्पूर्ण प्राणी व्याकुल हुए। महाराज। उस समय वह हाथीके समान रूप धारण करके सफेद किरीट कवच आभूषण माला आदि वस्तुओंसे शोभित हुआ और धनुष तलवार गदा भुषण्डी मूषल और हल आदि अनेक भांतिके अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके अग्निके समान अपने प्रकाशिमान रथपर चढ़के चारो ओर पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंको छिन्नभिन्न करता हुआ इस प्रकार युद्धभूमिके बीच घूमने लगा, जैसे आकाशमें स्थित बिजलीसे युक्त जलकी वर्षा करनेवाले बादल चारो ओर आकाशमण्डलमें भ्रमण करते हैं। उसे इस प्रकार युद्धभूमिके बीच घूमते देख तुम्हारी सेनाके महाबलवान सुख्य सुख्य राजा लोग भी कवच धारण किये हुए तथा अस्त्रशस्त्रोंसे सज्जित होकर प्रसन्नचित्तसे पाण्डवोंकी सेनाके वीरोंके सङ्ग युद्ध करनेमे प्रवृत्त हुए।

१७४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! उस समय कौरव लोग इस भयङ्कर रूपवाले उन राक्षसराजको युद्धमें प्रवृत्त देख कर अत्यन्त ही हर्षित हुए, और दुर्य्योधन आदि तुम्हारे पुत्रोंने अलायुधको पाकर इस प्रकार स्वागत प्रश्न करके उसका आदर किया, जैसे समुद्रसे पार होनेकी इच्छावाले पुरुष नौका रहित होकर फिर नौकाको पाकर प्रसन्न होते हैं। हे भारत! कर्ण और घटोत्कचका उस रात्रिके समय जब महाघोर भयङ्कर संग्राम होने लगा, उस समय हिड़िम्बापुत्र घटोत्कच और महावीर कर्णके पराक्रमको देखते हुए शत्रुसेनाके सम्पूर्ण राजा और पाञ्चाल सेनाके योद्धा लोग विस्मित होकर केवल मध्यस्थ पुरुषोंकी भांति उन दोनों वीरोंका युद्ध देखने लगे और अश्वत्थामा द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य आदि तुम्हारी ओरके महारथी योद्धा लोग भयभीत होकर ऊंचे स्वरसे पुकारके कहने लगे सम्पूर्ण योद्धाओंका नाश हुआ चाहता है! विशेष करके तुम्हारी सेनाके पुरुष कर्णके जीवनसे निराश होकर हाहाकार शब्दके सहित कोलाहल मचाने लगे। उस ही समय कुरुराज दुर्य्योधन कर्णको घटोत्कचके अस्त्रोंसे अत्यन्त पीड़ित देख राक्षसराज अलायुधको आवाहन करके उससे यह वचन बोले,—हे वीर! यह देखो वैकर्त्तन कर्ण रणभूमिके बीच घटोत्कचके सङ्ग अपनी शक्तिके अनुसार युद्ध कर रहे हैं; तौ भी मेरी सेनाके बहुतेरे योद्धा और राजा लोग घटोत्कचके नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंसे पीड़ित होकर इस प्रकार पृथ्वीमें गिर रहे हैं, जैसे हाथीके सूण्डसे टूटके बहुतेरे वृक्ष पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं। हे वीर। इससे जब तक यह पापी राक्षस मायाबलके आसरेसे शत्रुनाशन कर्णका वध नहीं करता है, उससे पहिले ही तुम पराक्रम प्रकाशित करके घटोत्कचका वध करो, क्योंकि तुम्हारी अनुमतिसे ही इस राक्षसको मैंने तुम्हारा भाग निश्चित किया है। जब राजा दुर्य्योधनने ऐसा वचन कहा, तब महापराक्रमी महाबाहु अलायुध राक्षस उनके वचनको स्वीकार करके घटोत्कचकी ओर दौड़ा। भीमपुत्र घटोत्कच भी युद्धभूमिमें कर्णको त्यागके सम्मुख आये हुए निज शत्रु अलायुधको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे पीड़ित करने लगा। महाराज! उस समय उन

क्रोधी राक्षसराज घटोत्कच और अलायुधका इस प्रकार महाघोर युद्ध होने लगा जैसे वनके बीच हथिनीके वास्ते दो मतवारे हाथियोंका युद्ध होता है।

इधर महारथियोंमें मुख्य कर्ण घटोत्-कचसे मुक्त होकर उस समय सूर्य्यके समान अपने प्रकाशमान रथ पर चढ़के भीमसेनकी ओर दौड़े ! परन्तु कर्ण इस प्रकार भीमसेनकी ओर गमन कर रहे थे तो भी भीमसेन सिंहसे पकड़े गये वृषभकी भांति अपने पुत्र घटोत्कचको अलायुध राक्षसके अस्त्रोंसे पीड़ित देखकर कर्णसे युद्ध न करके सूर्य्य किरणके समान प्रकाशमान रथपर चढ़के अपने बाणोंको चलाते हुए अलायुधके रथकी ओर गमन करने लगे। अलायुधने भीमसेनको अपनी ओर आते देख घटोत्कचको त्यागके युद्धभूमिमें भीमसेन ही को आवाहन किया। राक्षसोंके नाश करनेवाले भीमसेन राक्षसी सेनाके सहित राक्षसराज अलायुधको आक्रमण करके उसे अपने बाणोंसे पीड़ित करने लगे। उसी भांति अलायुध भी भीमसेनके ऊपर शिलापर घिसे हुए तीक्ष्ण बाणोंका चलाने लगा। और उसकी सेनाके भयङ्कर रूपवाले राक्षस लोग भी नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके कौरवोंके विजयकी इच्छा करते हुए भीमसेनकी ओर दौड़े। महाबलवान भीमसेनने इसी भांति राक्ष-सोंके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर उन हर एक राक्षसोंको पांच पांच बाणोंसे विद्ध किया। खरवंशीय राक्षस लोग भीमसेनके बाणोंसे पीड़ित होकर महाघोर कोलाहल मचाते हुए चारों ओर भागने लगे। महा बलवान अलायुध राक्षस अपनी सेनाके राक्षसोंको भयभीत देख,वेग पूर्व्वक भीमसेनकी ओर दौड़के उन्हें अपने बाणोंसे छिपाने लगा। वैसे ही भीमसेन भी अपने तीक्ष्ण-बाणोंको अलायुधके ऊपर वर्षाने लगे ; अलायुधने भीमसेनके चलाये हुए कितने ही बाणोंको अपने तेज बाणोंसे काटके गिराया और कितने ही बाणोंको शीघ्रताके सहित ग्रहण किया। उसे देखकर भीमसेनने वज्रके समान गदा उठाके अलायुधको ओर चलायी। महाराज ! अग्निके समान प्रकाशमान उस गदाको सम्मुख आती देख अलायुधने अपनी गदाको चलाकर भीमसेनकी गदाके निवारण किया। अलायुधकी गदासे निवारित होकर वह गदा भीमसेनकी ही ओर चली अनन्तर कुन्तीपुत्र भीमसेन अलायुध राक्षसको अनगिनत बाणोंसे छिपाने लगे। परन्तु उस अपने तीक्ष्णबाणोंके प्रभावसे भीमसेनके सम्पूर्ण बाणोंको निष्फल किया।

उस रात्रिके समय अलायुधकी आज्ञा महापराक्रमी राक्षलोग पाण्डवोंकी गजसेनाः नाश करने लगे। उस समय बड़े बड़े हा घोड़े और पाञ्चाल सृञ्जय आदि योद्धा राक्षसोंके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर युद्धभूमि विचलित होने लगे। पुण्डरीकाक्ष कृष्ण उस महाभयङ्कर संग्रामके उपस्थित होने पर अर्ज्जुनसे यह वचन बोले—हे अर्ज्जुन! या देखो, महाबाहु भीमसेन अलायुध राक्षसके वशमें होगये हैं इससे कुछ भी विचार न करके भीमसेनकी सहायताके वास्ते गमन करो। हे पुरुषशार्द्दूल ! तुम्हारी आज्ञाके अनुसार महारथी धृष्टद्युम्न शिखण्डी युधामन्यु, उत्तमौजा और द्रौपदीके पाच पुत्र मिलकर कर्णके विरुद्ध युद्ध करनेके वास्ते उनके समीप गमन करें ; पराक्रमी सात्यकि नकुल और सहदेव अलायुधकी सेनाके राक्षसोंका नाश करें। और द्रोणाचार्य्यसे रचित इस व्यूहबद्ध सेनाके योद्धाओंको तुम स्वयं निवारण करो ; क्योंकि इस समय महाभय उपस्थित हुआ है। जब कृष्णने जब ऐसे वचन कहे, तब ऊपर कहे हुए महारथी योद्धा लोग वैकर्त्तन कर्ण और अलायुध राक्षसकी सेनाकी ओर दौड़े।

महाराज। इतने ही समयके बीच महाबली प्रतापी राक्षसराज अलायुधने विषधर सर्पके समान तेजस्वी बाणोंसे भीमसेनके धनुष घोड़े और सारथीको काट डाला। घोड़े सारथीके मरने और धनुष कटने पर भीमसेनने रथमेंसे एक भारी गदा उठाके गर्जते हुए अलायुध राक्षसकी ओर चलायो। उस महाघोर गदाको भयङ्कर शब्दके सहित अपनी ओर आती देख भयङ्कर रूपवाला अलायुध राक्षस अपनी गदाको चला कर भीमसेनकी गदाको निवारण करके सिंहनाद करने लगा। महाराज। भीमसेनने उस राक्षस श्रेष्ठ अलायुधके ऐसे महाघोर भयङ्कर कर्म्मको देख फिर हर्षित होकर गदा ग्रहण किया। जब इसी भांति उन दोनों वीरोंका युद्ध होने लगा तब गदाके खटपट शब्दसे पृथ्वी कांपने लगी। तिसके अनन्तर वे दोनों वीर गदा फेंकके एक दूसरेको ग्रहण करके अपने मुक्केसे प्रहार करने लगे और रथके चक्र धुरी काष्ठ, तथा और जो कुछ वस्तु उन दोनोंने अपने समीपमें पाया वह सब वस्तु उठा उठाके एक दूसरेके ऊपर प्रहार करने लगे। तिसके अनन्तर एक दूसरेको ग्रहण करके मल्लयुद्ध करते हुए मतवारे हाथीकी भांति एक दूसरेको अपनी ओर आकर्षण करने लगे। उस समय उन दोनों वीरोंके शरीरसे लगातार रुधिरकी धारा बहने लगी। पाण्डवोंके हितैषी श्रीकृष्ण उन दोनो वीरोंका ऐसा युद्ध देखकर भीमसेनकी रक्षाके वास्ते घटोत्कचसे यह वचन बोले।

१७५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! श्रीकृष्णचन्द्र युद्धभूमिके बीच भीमसेनको राक्षसके वशमें होते देख घटोत्कचसे बोले। हे तपस्वी श्रेष्ठ महाबाहु घटोत्कच! यह देखो यह भीमसेन तुम्हारे और सम्पूर्ण सेनाके सम्मुखमें ही राक्षसके वशमें होगये हैं; इससे तुम इस समय कर्णको त्यागके अलायुध राक्षसका वध करो; पीछे कर्णका नाश करना। पराक्रमी घटोत्कच वृष्णिनन्दन कृष्णके ऐसे वचनको सुनकर अलायुध राक्षसके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुआ, अनन्तर उस रात्रिके समय उन दोनों राक्षसोंका महाघोर तुमुल संग्राम होने लगा। इसी समय जब अलायुधकी सेनाके भयानक रूपवाले राक्षस लोग धनुष चढ़ाकर पाण्डवोंकी सेनाकी ओर दौड़े तब शस्त्रधारियोंमें मुख्य सात्यकि नकुल और सहदेव अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपने तीक्ष्ण बाणोंसे उन सम्पूर्ण राक्षसोंके शरीरको खण्ड खण्ड करके पृथ्वीमें गिराने लगे। इधर किरीटमाली अर्जुन अपने बाणोंको चलाकर मुख्य मुख्य क्षत्रियोंको पीड़ित करने लगे। वैसे ही सूतपुत्र कर्ण धृष्टद्युम्न शिखण्डी आदि पाञ्चाल सेनाके महारथी राजाओंको छिन्नभिन्न करके युद्धभूमिमें भगाने लगे। महापराक्रमी भीमसेन उन महारथी वीरोंको कर्णके बाणोंसे पीड़ित देखकर अपने बाणोंकी वर्षा करते हुए शीघ्रताके सहित कर्णकी ओर दौड़े। महाराज। इस ही समय सात्यकि नकुल और सहदेव क्षणभरके बीच राक्षसोंका वध करके जिस स्थानपर सूतपुत्र कर्ण युद्ध कर रहे थे उस ही स्थलपर आके उपस्थित हुए। अनन्तर जब वे लोग कर्णके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए तब पाञ्चाल सेनाके योद्धा लोग द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। इधर शत्रुनाशन अलायुधने एक बड़ा परिघ उठाके घटोत्कचके ऊपर प्रहार किया। घटोत्कच अलायुधके परिघकी चोटसे मूर्च्छितप्राय होगया। तिसके अनन्तर घटोत्कचने सावधान होकर एक सौ घण्टियोंसे युक्त एक भयंकर गदाको ग्रहण करके अलायुधकी ओर चलायो। महाराज! वह भयङ्करी गदा पराक्रमी

हाथसे छूटकर महाघोर शब्दके सहित अला-युधके रथपर गिरी, उस गदाकी चोटसे अला-युधके घोड़े सारथी और रथ टुकड़े टुकड़े होकर पृथ्वीमें गिर पड़े। तब अलायुध ध्वजा, धुरी, चक्र घोड़े और सारथीसे रहित रथसे उतरके राक्षसी माया प्रकट करके रुधिरकी बर्षा करने लगा। उस समय आकाशमण्डल बादलोंसे परिपूरित होकर अन्धकारसे युक्त होगया उस समय आकाशमें बादल गर्ज्जने लगी बिजली चमकने लगी और बज्रका शब्द सुनाई देने लगा। उस समय उस महाघोर संग्रामभूमिमें अस्त्रशस्त्रोंके चलनेसे खटपट शब्द होने लगा। तब हिड़म्बापुत्र घटोत्कच अलायुध राक्षसकी ऐसी महाघोर मायाको देखकर आकाशमें गया और मुहूर्त्त भरके बीच अपनी मायासे उसकी मायाको नष्ट कर दिया। मायावी अलायुध राक्षस अपनी मायाको नष्ट होती देख घटोत्कचके ऊपर शिलाकी बर्षा करने लगा, शिलाकी बर्षाको देखकर पराक्रमी घटोत्कच राक्षस सम्पूर्ण दिशाओंको अपने बाणोंसे परिपूरित करके इस प्रकार अपने बाणोंको बर्षाने लगा, कि उससे क्षण भरके बीच शिलाकी बर्षा नष्ट होगई, उस समय घटोत्कचका पराक्रम अद्भुत रूपसे दीख पड़ा। तिसके अनन्तर वे दोनो बीर लोहमय परिघ शूल गदा मूषल मुद्गर पिनाक करवाल तोमर प्रास कम्पन नाराच तेजधारवाले भाले बाण चक्र फरशे भिन्दिपाल आदि अनेक भांतिके अस्त्रोंको चलाते हुए एक दूसरेके ऊपर प्रहार करने लगे। फिर बड़े बड़े शाखाओंसे युक्त कीकर पाकर शमी चम्पा इङ्गुद बदरी फुले हुए काञ्चन पलाश अरिमेद प्लक्ष और पीपल आदि अनेक प्रकारके बड़े वृक्ष और नाना भांतिकी धातुओंसे युक्त पर्व्वतके शिखरको उखाड़के एक दूसरेके ऊपर प्रहार करने लगे। उस समय पर्व्वतके शिखरोंसे जब वे दोनों बीर युद्ध करने लगे तब उस समय दोनों पर्व्वतके शिखरोंके टक्करका शब्द बज्रके शब्दकी भांति सुनाई देने लगा। महाराज! उस समय अलायुध और घटोत्कचका ऐसा महाभयङ्कर संग्राम होने लगा जैसे पहिले समयमें बानरराज बालि और सुग्रीवका युद्ध हुआ था। इसी भांति वे दोनों बड़े शरीरवाले महाबलवान राक्षस बहुत समयतक नाना भांतिके अस्त्रशस्त्रोंसे युद्ध करके फिर दोनों उत्तम पानी चढ़े हुए तलवारको ग्रहण करके तलवारयुद्ध करने लगे। अनन्तर उन दोनोंने दौड़के एक दूसरेके केशको ग्रहण किया। महाराज! उस समय उन दोनोंके शरीरसे इस प्रकार पसीना और रुधिर बाहर होने लगा, जैसे पर्व्वतके ऊपरसे जलकी धारा बहती है। अनन्तर हिड़म्बापुत्र घटोत्कचने शीघ्रताके सहित अलायुधको घुमाकर पृथ्वीमें पटका और तलवारसे उसका सिर काट डाला। उस समय घटोत्कच अलायुधके कुण्डल शोभित सिरको काटके गम्भीर स्वरसे गर्जने लगा। पाञ्चाल योद्धा और पाण्डव लोग बक राक्षसके भाई अलायुध राक्षसको मरते देख, आनन्दित होके महाघोर सिंहनाद करने लगे, और सहस्रों भेदी शंख ढोल मृदङ्ग आदि युद्धके जुझाऊ बाजोंको बजाने लगे। महाराज। जब युद्धभूमिमें अलायुध राक्षस मारा गया, तब चारों ओरसे दीपकके प्रकाशसे शोभित पाण्डवोंकी सेना उस रात्रिके समय जययुक्त होकर अत्यन्त ही प्रकाशित होने लगी। उसी समय महाबलवान घटोत्कचने अलायुध राक्षसके कटे हुए सिरको उठाकर विह्वलचित्तसे युक्त दुर्य्योधनके सम्मुख फेंक दिया। हे महाराज! राजा दुर्य्योधन अलायुधको मरा हुआ देखकर अपनी सेनाके पुरुषोंके सहित अत्यन्त ही व्याकुल हुए; क्योंकि अलायुधने पाण्डवोंको पुरानी शत्रुताको स्मरण करके तुम्हारी सेनाके बीच स्वयं

आके दुर्य्योधनके समीप "मैं भीमसेनका बध करूंगा," ऐसा कहके प्रतिज्ञा कियी थी; उससे दुर्य्योधनने यह समझा था, कि इसके हाथसे भीमसेन अवश्य ही मारा जावेगा, और भीमसेनके मरनेसे भाइयोंके सहित मेरा जीवन बहुत दिनों तक निर्व्विघ्नताके सहित बीतेगा। परन्तु इस समय भीमसेनपुत्र घटोत्कचके हाथसे अलायुधको ही मरते देखकर दुर्य्योधनने समझा, कि अब अवश्य ही भीमसेनकी प्रतिज्ञा पूर्ण होवेगी।

१७६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज। घटोत्कच अलायुध राक्षसका बध करके अपने सेनाके अगाड़ी स्थित होकर भयानक शब्दसे सिंहनाद करने लगा। उस समय हाथियोंके यूथको भी कम्पित करनेवाले उसके भयङ्कर शब्दको सुनकर हारी सेनाके योद्धा लोग अत्यन्त ही भयभीत हुए। हे भारत। इसके पहिले महाबाहु कर्णने भीमसेनपुत्र घटोत्कचको अलायुधके युद्धमें प्रवृत्त देखकर पाञ्चाल योद्धाओंके जैसा संग्राम किया था; इस समय उस युद्धके वृत्तान्तको भी सुनिये। उस समय कर्णने कान पर्य्यन्त धनुष खींचके दश तीक्ष्ण वाणोंसे दृढ़ताके सहित धृष्टद्युम्न और शिखण्डीको विद्ध करके फिर अपने तेजवाणोंके प्रहारसे युधामन्यु उत्तमौजा और सात्यकिको पीड़ित किया। वैसे ही जब वे पाण्डवोंकी ओरके सम्पूर्ण महारथी योद्धा लगातार कर्णके ऊपर अपने वाणोंकी वर्षा करने लगे तब उस समय केवल मण्डलाकार गतिसे घूमते हुए उन महारथियोंके धनुष ही दीख पड़ते थे। उस रात्रिके समय उन महारथियोंके धनुषटङ्कार, तलत्राण और रथकी घरघराहटके शब्द वर्षाकालके बादल गर्जनेकी भांति सुनाई देते थे। इसी भांति धनुषटङ्कारका शब्द बादलका गर्ज्जन, ध्वजापताका और शूरवीरोंके धनुष बिजली, वाणोंका चलना ही जलकी वर्षा और वह युद्ध ही मेघमण्डलरूपी बोध होने लगा। परन्तु महापर्व्वतके समान निर्भय स्वभाववाले शत्रुनाशन कर्णने उन सम्पूर्ण महारथियोंकी वाणवर्षाको क्षण भरके बीच अपने अस्त्रोंके प्रभावसे भस्म कर दिया। तिसके अनन्तर महात्मा कर्ण तुम्हारे पुत्रके हितकी अभिलाष करके बज्रके समान वेगगामी हलास्त्र और सुवर्ण चित्रित पङ्ख युक्त चोखे वाणोंसे शत्रुओंका नाश करने लगे। उस समय सात्यकि आदि पाण्डवोंकी ओरके महारथी योद्धा लोग मुहूर्त्त भरके बीच कर्णके वाणोंके प्रहारसे कोई पीड़ित कोई क्षत विक्षत शरीरसे युक्त कोई कटीहुई ध्वजा कोई सारथीसे रहित होगये और कितने ही योद्धा कर्णके सम्मुख युद्धभूमिमें खड़े भी न होसके वे सब कोई अन्तमें वहांसे भागकर युधिष्ठिरकी सेनामें जाघुसे। घटोत्कच अपनी ओरके सम्पूर्ण योद्धाओंको भागते देख अत्यन्त ही क्रुद्ध हुआ; औ सुवर्ण रत्न चित्रित अपने उत्तम रथ पर चढ़ महाघोर सिंहनाद करते हुए कर्णके समी जाके उन्हें वज्रके समान तीक्ष्ण वाणोंसे वि करने लगा। अनन्तर उन दोनों बीरोंने कर्णी नाराच, वत्सदन्त, असन, बराह कर्ण विपाट शृङ्ग क्षुरप्र आदि अस्त्र तथा वाणोंकी चलाके आकाशमण्डलको परिपूरित कर दिया। वे सम्पूर्ण स्वर्ण पङ्खवाले वाण जब टीडीदलकी भांति आकाशमें परिपूरित होगये, उस समय आकाशमण्डल विचित्र पुष्पमालासे युक्त हुएकी भांति शोभित होने लगा। अत्यन्त बल और पराक्रमसे युक्त जब वे दोनों वीर युद्धभूमिमें स्थित होकर अपने उत्तम अस्त्रोंसे युद्ध करने लगे। उस समय कोई पुरुष उन दोनों बीरोंके बीच किसीको भी विशिष्ट होते न देख सके।

महाराज। उस समय आकाशस्थित राहु और सूर्यके समागमकी भांति सूर्य्यपुत्र कर्ण और घटोत्कच राक्षसके शस्त्रोंकी खटपटाहटसे परिपूरित सम्पूर्ण प्राणियोंको दुःखित करनेवाला अत्यन्त भयङ्कर अद्भुत संग्राम होने लगा। परन्तु अस्त्र शस्त्रोंकी विद्यामें अत्यन्त निपुण सूतपुत्र कर्ण जब किसी प्रकार भी घटोत्कचसे अधिक न हो सके तब उन्होंने भयङ्कर दिव्य अस्त्रोंको प्रकट किया, उससे घटोत्कचका रथ सारथी और घोड़ोंके सहित उस ही समय भस्म होगया; परन्तु घटोत्कच रथसे भ्रष्ट होकर अन्तर्द्धान होगया।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जब वह कूटयुद्ध करनेवाला मायावी राक्षस चकित होकर अन्तर्द्धान हुआ, उस समय मेरी ओरके योद्धाओंने जिस कार्य्यका अनुष्ठान किया था, वह वृत्तान्त तुम मेरे समीप वर्णन करो।

सञ्जय बोले महाराज। कौरव लोग घटोत्कचको अन्तर्द्धान होते देख, आपसमें कहने लगे यह कूटयोधी राक्षस छिपके किसी प्रकारसे असावधानीमें सूतपुत्र कर्णका वध न करे ऐसे ही वचन कहते हुए महाघोर कोलाहल मचाने लगे। अनन्तर अत्यन्त हस्तलाघवके सहित महावीर कर्णने अपने अनगिनत बाणोंको चलाकर सम्पूर्ण दिशा और आकाशमण्डलको इस प्रकार परिपूरित करके अन्धकारमय कर दिया; कि उस समय वहां पर प्राणीमात्र इधर उधर चलने फिरनेमें असमर्थ होगये। महाराज! इसी प्रकार जब सूर्य्यपुत्र कर्ण हस्तलाघवके सहित लगातार बाणोंको चारों ओर वर्षाने लगे तब उन्हें बाण ग्रहण करते साधते छोड़ते और अपने तूणीरसे निकालते हुए कोई पुरुष भी न देख सके। तिसके अनन्तर घटोत्कचने आकाशमें अत्यन्त भयंकर महाघोर माया उत्पन्न किया, उस हम लोग अग्निशिखाके समान प्रकाशमान लाल वर्णवाले एक बादलको प्रकट हुआ देखने लगे। उस बादलके बीचसे बार बार सैकड़ों लुक और बिजली प्रकट होके जलती हुई प्रकाशित होने लगीं फिर सहस्रों नगाड़ोंके शब्दके समान उस बादलसे महाघोर शब्द सुनाई देने लगा। तिसके अनन्तर स्वर्णपंखवाले अनगिनत बाण शक्ति ऋष्टि प्रास, मूषल शिकल किये हुए फरशे प्रकाशमान तलवार तेज धारवाले तोमर पट्टिश प्रकाशमान परिघ अत्यन्त सुन्दर सैकड़ों पुरुषोंको नाश करने वाली विचित्र गदा तीक्ष्ण-धारवाले सहस्रों शस्त्र शतघ्नी अग्नियुक्त वज्र, चक्र और जलते हुए अनगिनत चूरप्र आदि अस्त्र शस्त्र चारों ओरसे रणभूमिके बीच गिरने लगी। अग्निशिखाकी भांति जब प्रकाशमान भयानक बरछी पत्थर फरशे प्रास और मुद्गर आदि अस्त्र शस्त्रोंकी वर्षा होने लगी, तब कर्ण उसे अपने बाणोंसे निवारण करनेमें समर्थ नहीं हुए उस समय बाणोंसे घोड़े वज्रास्त्रसे हाथी और पत्थरोंकी शिला वर्षनेसे शूरवीर योद्धा लोग मरके पृथ्वीमें गिरने लगे; उस समय रणभूमिके बीच तुम्हारी सेनाके वीरोंका महाघोर आर्त्तनाद शब्द सुनाई देने लगा। महाराज! घटोत्कचके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर कुरुसेनाके योद्धा लोग जब इधर उधर भ्रमण करने लगे, उस समय बोध होने लगा जैसे वायुके वेगसे समुद्रका जल उथलित होने लगता है। उस समय तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग चारों ओर दौड़ते और हाहाकार करते हुए जगह जगह घटोत्कचके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर रणभूमिमें गिरने लगे। परन्तु पुरुषसिंह महारथी योद्धा लोग वीर-धर्म्मको स्मरण करके युद्धभूमिमें किसी प्रकार भी पीछे न हटे। तुम्हारे पुत्र और घटोत्कचके महाघोर भयङ्कर अस्त्र शस्त्रोंकी वर्षासे अपनी सेनाके पुरुषोंका नाश होते देख अत्यन्त ही भयभीत हुए। अनन्तर जलती हुई

अग्निके समान प्रकाशमान जीभ निकाले हुए सैकड़ों गीदड़ भयङ्कर डरावनी बोली बोलने लगे। राक्षस लोग गर्ज्जने लगे, उसे देखके तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग अत्यन्त ही कातर हुए। महाराज। वे प्रकाशमान जीभ दांत और शरीरसे युक्त पर्व्वतके समान शरीर धारण किये हुए राक्षस लोग आकाशमण्डलसे जल-वर्षा करनेवाले बादलोंकी भांति तुम्हारी सेनाके ऊपर अपने तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करने लगे। उस समय बाण बरछी गदा प्रकाशमान परिघ तलवार पिनाक वज्र और सैकड़ों पुरुषोंके नाश करनेमें समर्थ बहुतेरे चक्र आदि अस्त्र शस्त्रोंकी चोटसे मर कर बहुतसे शूरवीर योद्धा लोग पृथ्वीमें गिर पड़े; और शूल भुषण्डी दण्ड शतघ्नी और स्थूणा आदि अस्त्र शस्त्र तुम्हारे पुत्रकी सेनाके ऊपर पड़ने लगे; उस समय सेनाके पुरुषोंका अत्यन्त ही नाश होने लगा। उस समय किसीके अस्त्र इधर उधर गिर पड़े, किसीके सिर टुकड़े टुकड़े हो गये, कितने ही पुरुषोंके हाथ पांव टूट गये और कितने ही पुरुष मरकर पृथ्वीमें गिर पड़े। इसी प्रकार हाथी घोड़े और मनुष्योंके शरीर राक्षसोंके अस्त्रोंसे कटने लगे और रथ पत्थरोंकी शिलाके वर्षनेसे चूर चूर होके पृथ्वीमें गिरने लगे। महाराज! घटोत्कचकी मायासे उत्पन्न हुए सम्पूर्ण लोकोंको भयभीत करनेवाले राक्षसोंने इसी प्रकार अनेक अस्त्रशस्त्रोंको वर्षा कर प्रार्थना करनेवाले और भयभीत आदि किसी पुरुषको भी न छोड़ा। कालके प्रभावसे जब उन राक्षसोंके अस्त्रोंसे क्षत्रियोंका नाश होने लगा, उस समय युद्धभूमिसे भागते हुए योद्धा लोग चिल्लाते हुए यह वचन कहने लगे,—हे कौरव लोगो! आज पाण्डवोंकी सहायता करनेकी इच्छासे इन्द्र आदिक देवता लोग प्रत्यक्ष ही हम लोगोंकी सेनाके पुरुषोंका नाश कर रहे हैं, आज कोई भी जीता न बचेगा इससे तुम लोग युद्धभूमिसे भाग कर पृथक हो जाओ। ऐसे ही वचन कहके तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग महाघोर शब्दसे कोलाहल मचाते हुए वेगपूर्व्वक भागने लगे। महाराज! इस प्रकार विपद सागरमें डूबते हुए कौरवोंके वास्ते उस समय केवल सूर्य्यपुत्र कर्ण ही द्वीप-स्वरूप हुए। उस भयङ्कर तुमुल संग्रामके समय कुरुसेनाके पुरुषोंके मरने तथा इधर उधर भागनेसे व्यूह भङ्ग हो गया; तब कौरव और पाण्डवोंकी सेनाके पुरुष चीन्हे नहीं पड़ते थे। अधिक क्या कहा जावे उस मर्य्यादारहित भयङ्कर उपद्रवके समय हम लोग सब दिशाओंको ही सूनी समझने लगे। उस समय हम लोगोंने केवल अकेले सूर्य्यपुत्र कर्णको ही उन सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्र और बाणोंकी वर्षाको निर्भयचित्तसे अपने वक्षस्थल पर धारण करते देखा। ऐसे अवसरमें तेजस्वी कर्ण तनिक भी मोहित नहीं हुए; बल्कि बीर-धर्म्मको स्मरण करके कठिन कार्य्य करनेकी इच्छासे राक्षसी मायाको नष्ट करनेके वास्ते आकाशको अपने दिव्य अस्त्रोंसे परिपूर्ण कर दिया; उस समय सिन्धु और बाह्लीक देशीय योद्धा लोग एकटक नेत्रसे कर्ण और घटोत्कचके युद्धको देखने लगे; और घटोत्कचको विजय लाभमें असमर्थ और कर्णका अत्यन्त पराक्रम देख सब कोई सूतपुत्रकी प्रशंसा करने लगे। उस ही समय घटोत्कचकी चलायी हुई चक्रयुक्त एक शतघ्नी अकस्मात सूतपुत्र कर्णके घोड़ोंके ऊपर गिरी और उसके प्रहारसे कर्णके रथके घोड़े प्राणरहित होकर दांत आंख और जीभ निकालके पृथ्वीमें गिर पड़े। अनन्तर घटोत्कच मायाके प्रभावसे बार बार कर्णके दिव्य अस्त्रोंको निष्फल करने लगा; और उसके अस्त्रोंके प्रभावसे कुरुसेनाके योद्धा लोग भागने लगे! तब कर्ण शीघ्रताके सहित घोड़ोंसे रहित रथसे उतरे; पर घटोत्कचकी माया तथा अस्त्रोंसे कर्ण

तनिक भी मोहित न होकर उस समयके अनुसार कर्त्तव्य कार्य्यके विषयमें विचार करने लगे। इसी समय दुर्य्योधन आदि कौरव लोग घटोत्कचकी भयङ्कर माया देखकर कर्णसे बोले—हे कर्ण! आज कौरवोंकी सेनाके सम्पूर्ण पुरुषोंका नाश हुआ चाहता है, इससे अब तुम इन्द्रकी दी हुई उसी अमोघ शक्तिसे इस राक्षसका बध करो, भीमसेन अर्ज्जुन हम लोगोंका क्या कर सकेंगे? तुम इस रात्रिके समय मेरी सम्पूर्ण सेनाको पीड़ित करनेवाले इस पापी राक्षसका नाश करो। हम लोगोंके बीचसे जो पुरुष इस भयङ्कर महासंग्रामसे जीवित बचेगा वह अवश्य ही पृथापुत्रोंके सङ्ग युद्ध करनेमें समर्थ होगा। हे कर्ण! इन्द्रके समान पराक्रमी कौरव लोगोंका सम्पूर्ण योद्धाओंके सहित जिसमें नाश न होजावे—इस वास्ते तुम इसी समय इन्द्रकी दी हुई अमोघशक्तिसे इस भयङ्कर मूर्त्तिवाले राक्षसका बध करो। कर्णने उस रात्रिके समय कुरुसेनाके सम्पूर्ण पुरुषोंको भयभीत कौरवोंके आर्त्तनादको सुनकर तथा स्वयं भी घटोत्कचके अस्त्रोंसे पीड़ित होके इन्द्रकी दी हुई अमोघ शक्तिको चलानेकी इच्छा किया। क्रुद्धस्वभाववाले सूर्य्यपुत्र कर्णने सिंहकी भांति क्रुद्ध होकर घटोत्कचके अस्त्र लाघवको सहन नहीं किया। उन्होंने घटोत्कच राक्षसके बधकी अभिलाषा करके सम्पूर्ण प्राणियोंसे भी असह्य उस उत्तम वैजयन्ती महा अमोघशक्तिको ग्रहण किया। महाराज! सूतपुत्र कर्णने जिस शक्तिको कई वर्ष पर्य्यन्त आदरपूर्व्वक अर्ज्जुनके बधके वास्ते रक्खा था जिस अमोघशक्तिको पहिले देवराज इन्द्रने कर्णको प्रदान किया था; और उन्होंने जिस प्रकाशमान अमोघशक्तिको गर्भसे ही उत्पन्न हुए अपने अभेद कवच-कुण्डलके पलटेमें इन्द्रसे पाया था। मृत्युके समान भयङ्करी तथा जलते हुए लूककी भांति प्रकाशमान यमराजके पाशसे युक्त कालरात्रि स्वरूपिणी घोर अग्निके समान तेजस्विनी उस महाघोर अमोघशक्तिको कर्णने इस समय बलपूर्व्वक घटोत्कचके बधके निमित्त उसको ओर चलाये। महाराज! घटोत्कचने सम्पूर्ण प्राणियोंके शरीरको बिदारण करनेवाली इन्द्रकी दी हुई अग्निकी भांति उस अमोघशक्तिको कर्णके हाथमें देखते ही विन्ध्याचल पर्व्वतके समान शरीर धारण करके भागनेकी इच्छा किया। अधिक क्या कहूं कर्णके हाथमें स्थित उस अमोघशक्तिको देखते ही आकाशवासी सम्पूर्ण प्राणी भयभीत होकर हाहाकार शब्दके सहित चिल्लाते हुए कांपने लगे। उस समय प्रचण्ड वायु अत्यन्त ही वेगपूर्व्वक बहने लगा, वज्र तलवार आदि अस्त्र पृथ्वीको विदारण करके भूभमें प्रविष्ट होने लगे। इतने ही समयमें कर्णकी चलाई हुई जलती अग्निकी भांति वह अमोघशक्ति सम्पूर्ण राक्षसी मायाको भस्म करके घटोत्कचके हृदयको बिदारण करती हुई प्रकाशित होके आकाशमार्गसे नक्षत्रमण्डलमें प्रविष्ट हुई। महाराज! महावीर घटोत्कच राक्षसने अनेक भांतिके विचित्र अस्त्रशस्त्र तथा मायासे मनुष्य और राक्षसोंके सङ्ग वीरनाद शब्दके सहित युद्ध करके अन्तमें इन्द्रकी दी हुई कर्णके भुजासे छूटी हुई अमोघशक्तिसे अपने प्रिय प्राणको परित्याग किया। उस समय वह अमोघशक्तिसे सम्पूर्ण मर्म्मस्थल विदारित होने पर भी शत्रुओंके नाश करनेके वास्ते अत्यन्त आश्चर्य्यमय रूप धारण करके पर्व्वत और बादलकी भांति प्रकाशित होने लगा। महाराज! अमोघशक्तिसे शरीर बिदारित होने पर भी महापराक्रमी भीमसेनपुत्र राक्षसराज घटोत्कचने प्राण त्यागनेके समयमें ऐसी भयङ्कर मूर्त्ति धारण करी, कि उस बड़े शरीरको धारणकर वेगपूर्व्वक आकाशसे गिरके तुम्हारी सेनाके एक भागको अपने शरीरके

नीचे दवाके बहुतसे योद्धाओंका नाश किया। अनन्तर कौरव लोग राक्षसीमायाको भस्म हुई और घटोत्कचको मरते देख, आनन्दित होके सिंहनाद करने लगे। अनन्तर तुम्हारी सेनाके पुरुषोंके सिंहनादके सङ्ग मिलकर बहुयसे शंख भेरी, ढोल झांझ और नगाडे आदि युद्धके जभाज बाजोंके शब्द सुनाई देने लगे। जैसे वृत्रासुरबधके समयमें देवराज इन्द्र देवताओंसे पूजित हुए थे; इस समय कर्ण भी उसी भांति कौरवोंसे पूजित और सत्कृत होकर तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनके पीछे पीछे गमन करके अपनी सेनाके बीच जाकर विराजमान हुए।

१७७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय वोले, महाराज! जैसे पर्व्वत वज्रकी चोटसे टुकड़े टुकड़े होकर गिर पड़ता है, वैसे ही हिड़म्बापुत्र घटोत्कचको अमोघशक्तिसे मरते देख, पाण्डव लोग तथा उनकी सेनाके पुरुषोंको शोकसे आखोंमें आंसू भर आये, परन्तु श्रीकृष्ण अत्यन्त हर्षके सहित आनन्दित होकर अर्जुनको आलिङ्गन करने लगे। उस समय श्रीकृष्ण घोड़ोंकी रास छोड़के सिंहनाद करते हुए आनन्दित होके इस प्रकार नाचने लगे, जैसे वायुके चलनेसे वृक्षके पत्ते हिलते हुए नृत्य करने लगते हैं। रथपर स्थित बुद्धिमान कृष्ण अर्जुनको अपनी ओर स्थित करके फिर वार वार ताली वजाके अत्यन्त गम्भीर स्वरसे सिंहनाद करने लगे।

महावली अर्जुन श्रीकृष्णको अत्यन्त ही आनन्दित देख, दुःखितचित्तसे यह वचन वोले हे मधुसूदन कृष्ण! हिड़म्बापुत्र घटोत्कचके मरनेसे हमारी सेनाके पुरुषोंको शोक हुआ है; परन्तु तुम्हें इस अनुचित समयमें भी हर्ष उत्पन्न होरहा है। देखिये, घटोत्कचको मरा हुआ देखकर मेरी सम्पूर्ण सेनाके पुरुष युद्धभूमिसे भाग रहे हैं; अधिक क्या कहूं उसके मरनेसे मैं भी अत्यन्त ही व्याकुल होरहा हूं। हे शत्रुनाशन जनार्द्दन कृष्ण! मुझे मालूम होता है, कि इस विषयमें कोई विशेष कारण होगा। जो हो, तुम सत्यवादियोंमें अग्रगण्य हो इससे मैं पूछता हूं,—तुम इस विषयको यथार्थरूपसे वर्णन करो। आज तुम्हारा यह कार्य्य समुद्र सूखने और सुमेरु पर्व्वतके कांपनेकी भांति मुझे असम्भव मालूम होता है। इससे यदि यह विषय छिपाने योग्य न होवे, तो तुम अपने इस धैर्य्यच्युतिके कारणको प्रकट करके वर्णन करो।

अर्जुनके ऐसे वचनोंको सुनकर श्रीकृष्ण वोले, हे महावुद्धिमान अर्जुन! मेरे एकवारगी चित्त प्रसन्न होनेके कारण और इस हर्षके विषयको सुनो। आज घटोत्कचके मरनेसे कर्ण इन्द्रकी दी हुई अमोघ शक्तिसे रहित होगया; इससे अब तुम कर्णको मरा हुआ ही समझ रक्खो। दूसरे स्वामि कार्त्तिककी भांति कर्ण यदि युद्धभूमिके बीच हाथमें इन्द्रकी अमोघशक्ति लेकर खड़ा होवे, तो इस पृथ्वीके बीच ऐसा कोई भी पुरुष नहीं है, जो कर्णके सम्मुख खड़े होनेमें समर्थ होसके। हे अर्जुन! तुम्हारी प्रारब्धसे वह पहिले अपने शरीरके सङ्गसे ही उत्पन्न हुए कवच और कुण्डलोंसे रहित होगया है; और इस समय भी तुम्हारी प्रारब्धसे ही उसने अमोघशक्तिको घटोत्कचके ऊपर चलाया है। यदि यह वलवान कर्ण उस अभेद कवचकुण्डलको पहरके युद्धभूमिके बीच उपस्थित होता, तो देवताओंके सहित तीनों लोकको पराजित कर सकता। इन्द्र, कुवेर वरुण और यमराज ये कोई भी रणभूमिके बीच कर्णके विरुद्ध गमन करनेमें समर्थ न होसकते। अधिक क्या कहूं, तुम गाण्डीव धनुष और मैं सुदर्शनचक्र ग्रहण करके भी इस पुरुष श्रेष्ठ कर्णको पराजित न कर

सकता। हे अर्ज्जुन! पहिले देवराज इन्द्रने तुम्हारे हितकी अभिलाषासे शत्रुनाशन कर्णको मायाके प्रभावसे मोहित करके उसे कवच कुण्डलोंसे रहित किया था। कर्णने देवराज इन्द्रको कवच कुण्डल प्रदान किया, इसीसे वह पृथ्वीके बीच वैकर्त्तन नामसे विख्यात हुआ है। परन्तु इस समय वह मन्त्रके प्रभावसे स्तम्भित पराक्रमसे युक्त क्रोधी विषधर सर्प और शिखारहित अग्निकी भांति मालूम होरहा है। हे अर्ज्जुन। जबसे इन्द्रने सूतपुत्र कर्णको अमोघशक्ति प्रदान किया था, आज जो शक्ति घटोत्कचके ऊपर छूटके उसका प्राण नाश करके शान्त हुई है, उस अमोघशक्तिको कर्णने अपने दिव्य कवच कुण्डलके पलटेमें इन्द्रसे ग्रहण किया था। और उस शक्तिको पाकर युद्धभूमिमें तुम्हें मरा हुआ ही समझता था। हे पुरुष शार्द्दूल! मैं सत्यके द्वारा शपथ करके कहता हूं कि यद्यपि कर्ण कवच कुण्डल और अमोघ शक्तिसे रहित होगया है; तौभी तुम्हें छोड़ कर और दूसरे किसी पुरुषकी भी सामर्थ्य नहीं है, जो युद्धभूमिमें कर्णका वध कर सके। यह सूतपुत्र कर्ण सदा ब्रताचरण करनेवाला, सत्यवादी तपस्वी ब्राह्मणोंमें निष्ठावान और शत्रुओंके ऊपर सदा दया करता रहता है इस ही कारण वह इस लोकके बीच वृष नामसे विख्यात हुआ है। यह युद्धदुर्म्मद महाबाहु कर्ण हाथमें धनुष लेकर युद्धभूमिमें विपक्षी सेनाके रथियोंके अभिमानको इस प्रकार नाश करता रहता है, जैसे वनके बीच पराक्रमी सिंह हाथियोंके गर्व्वको नष्ट किया करता है। हे पुरुषश्रेष्ठ अर्ज्जुन! तुम्हारी ओरके मुख्य मुख्य महात्मा क्षत्रिय योद्धा लोग बाण वर्षा करते हुए जिस कर्णको सहस्रकिरण धारण करनेवाले दोपहरके सूर्य्यकी भांति युद्धभूमिमें देखनेमें भी समर्थ नहीं हैं, वह कर्ण जलकी वर्षा करनेवाले बादलोंकी भांति यदि लगातार अपने दिव्य शस्त्ररूपी जलकी वर्षा करता रहे; तो और पुरुषोंकी तो कुछ बात ही नहीं है; देवता लोग भी चारों ओरसे अपने अस्त्र शस्त्रोंकी वर्षा करके इस महारथी कर्णको पराजित करनेमें समर्थ नहीं है; वरन उन्हीं लोगोंके शरीरसे मांसके सहित रुधिरकी धारा बहती रहेगी। आज वही कर्ण कवच कुण्डल और इन्द्रकी दी हुई अमोघशक्तिसे रहित होके सामान्य मनुष्य भावको प्राप्त हुआ है। परन्तु उसके विषयमें एक विशेष उपाय है; जब तुमसे कर्णका द्वैरथ युद्ध होगा तब उसके रथके चक्र पृथ्वीमें घुस जावेंगे, उस समय जब वह दुःखित होके विपदग्रस्त होगा, उसी समय तुम सावधानताके सहित मेरे सङ्केतके अनुसार उसका नाश करना। क्योंकि यह अपराजित कर्ण जो अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके युद्धभूमिमें खड़ा रहे तो वीरोंमें अग्रणी पुरुषोंके पराक्रमको नाश करनेवाले इन्द्र भी यदि हाथमें वज्र लेकर युद्धभूमिके बीच आगमन करें; तौभी कर्णका वध न कर सकेंगे।

हे अर्ज्जुन! पहिले मैंने तुम्हारे हितके निमित्त ही महाबाहु महात्मा जरासन्ध, चेदिराज शिशुपाल, निषादराज एकलव्य आदि वीरोंका पृथक् पृथक् नाना उपाय रचके उनका नाश किया है। इसी प्रकार राक्षसराज हिडम्ब किर्म्मीर बक शत्रुनाशन अलायुध और कठिन कर्म्म करनेवाले पराक्रमी घटोत्कच आदि राक्षस और तामसी प्रकृतिवाले बहुतेरे क्षत्रिय योद्धा भी अनेक उपायसे मारे गये हैं।

१७८ अध्याय समाप्त।

श्रीकृष्णके वचनोंको सुनकर अर्ज्जुन बोले, हे जनार्द्दन कृष्ण! आपने किस प्रकार हम

लोगोंके हितके वास्ते किन किन उपायोंसे जरा-सन्ध आदि राजाओंका नाश किया है ?

श्रीकृष्ण बोले, हे अर्ज्जुन! मगधराज जरा-सन्ध, चेदिराज शिशुपाल और महाबलवान् निषादराज एकलव्य आदि दुष्ट राजा लोग यदि पहिले न मारे गये होते, तो इस समय वे लोग अत्यन्त ही भयङ्कर हो जाते; क्योंकि इस युद्धमें दुर्य्योधन उन रथियोंमें मुख्य राजाओंको अवश्य ही वरन करता और वे लोग भी हम लोगोंके ऊपर पहिलेसे ही शत्रुता रखते थे इससे वे लोग कौरवोंके ही पक्षको अवलम्बन करते, इसमें कुछ सन्देह नहीं है। ऐसा होने पर वे सब धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी दृढ़ पराक्रमी कृतास्त्र वीर लोग युद्धभूमिमें देवताओंकी भांति कुरुसेनाके योद्धाओंकी रक्षा करते। अधिक क्या कहूं सूतपुत्र कर्ण मगधराज जरासन्ध चेदिराज शिशुपाल और निषादराज एकलव्य यदि दूर्य्योधनके पक्षको अवलम्बन करके युद्धभूमिमें स्थित होते, तो सम्पूर्ण पृथ्वीके योद्धाओंको अपने अस्त्रोंसे पीड़ित कर सकते। हे अर्ज्जुन! उन राजाओंके वधसे तुम्हारा कैसा हित साधित हुआ है, वह तुमने जाना; अब वे पराक्रमी राजा लोग जिन जिन उपायोंसे मारे गये उस वृत्तान्तको भी सुनो। उपायके बिना वे अपराजित वीर राजा लोग युद्धभूमिमें देवताओंसे भी अवध्य थे। हे अर्ज्जुन! उनसब राजाओंकी बात तो दूर रही उनके बीच एक एक वीरमें इतनी सामर्थ्य थी, कि लोकपालोंसे रक्षित सम्पूर्ण देवताओंकी सेनाके सङ्गमें भी वह लोग युद्ध कर सकते। पहिले जरासन्धने रोहिणीपुत्र बलदेवके निकटसे पराजित होके क्रोध पूर्व्वक हम लोगोंके वधके वास्ते एक सब लोहकी गदा उठाकर हमारी ओर चलायी। अग्निके समान प्रकाशमान उस गदाके गिरनेके समय ऐसा मालूम होने लगा, मानो इन्द्रके हाथसे छूटा हुआ वज्र आकाशमण्डलको प्रकाशित करता हुआ पृथ्वीपर गिर रहा है। रोहिणी पुत्र बलदेवने उस गदाको सम्मुख आती देख उसे निवारण करनेके वास्ते स्थूणाकर्ण नाम अस्त्र चलाया। उस अस्त्रको वेगसे गदा निवारित होने पर ऐसा हुआ मानो वह गदा पर्व्वतोंको कंपाती और पृथ्वीको विदारण करती हुई आकाशसे गिरी। उस ही स्थलपर महा पराक्रमसे युक्त जरा नामकी भयङ्करी राक्षसी वास करती थी; जिसने पहिले जन्मके समयमें शत्रुनाशन जरासन्धको दोनों फांकोंको जोड़ा था; क्योंकि वह राजकुमार जन्मके समयमें दो माताके गर्भसे दो फांक होके उत्पन्न हुआ था और जरा राक्षसीने उन दोनों फांकोंको एकमें जोड़ दिया था इस ही कारण वह राजकुमार जरासन्ध नामसे विख्यात हुआ था। वह जरा राक्षसी स्थूणाकर्ण अस्त्र और गदाके गिरनेसे उसके नीचे दबके पुत्र और बन्धुबान्धोंके सहित मर गई, और जरासन्ध उस गदासे रहित होनेसे ही तुम्हारे सम्मुखमें भीमसेनके हाथसे मारा गया। यदि वह प्रतापी जरासन्ध हाथमें उस गदाको लेकर युद्धभूमिमें स्थित होता; तो इन्द्र आदिक देवता लोग भी युद्धभूमिके बीच उसका नाश न कर सकते। हे अर्ज्जुन! देखो पहिले तुम्हारे हितको अभिलाषा करके द्रोणाचार्य्यने कपट वेषसे निषादराजके समीप जाकर आचार्य्यपना जनाकर गुरुदक्षिणामें सत्यपराक्रमी निषादराजको अगूठेसे रहित किया था। क्योंकि वह दृढ़ पराक्रमी निषादराज अङ्गलित्राण धारण करके वनके बीच सदा अस्त्रशस्त्रोंका अभ्यास करके परशुरामके समान अस्त्रोंका ज्ञाता हुआ था। अधिक क्या कहूं यदि वह अङ्गूठेसे युक्त होता तो देवता दानव राक्षस और सर्प आदि कोई भी उसे युद्धभूमिमें पराजित न कर सकते और मनुष्य लोग तो युद्धभूमिमें उसकी ओर देख भी न सकते। मैंने

उस दृढ़ पराक्रमी कृतास्त्र सदा अस्त्र चलनेमें समर्थ निषादराज एकलव्यको तुम्हारे हितके निमित्त ही युद्धभूमिमें मारा है। इसके अतिरिक्त देवता और असुरोंसे अजेय चेदिराज शिशुपालको भी मैंने तुम्हारे सम्मुखमें ही मारा है। हे पुरुषसिंह अर्ज्जुन! तुम यह निश्चय समझ रक्खो कि मैंने इस जगतके हितकामनासे शिशुपाल और दूसरे देवद्रोही दुष्ट पुरुषोंके नाश करनेके ही वास्ते तुम्हारे सहित अवतार लिया है। इससे ब्राह्मण और यज्ञके नाशक रावणके समान पराक्रमी हिड़म्ब वक और किर्म्मीर आदि राक्षसोंको भीमसेन मेरे ही प्रभावसे मारनेमें समर्थ हुए। इसी भांति अलायुध राक्षसको हिड़म्बापुत्र घटोतकचके हाथसे नष्ट कराया और घटोतकचको भी उपाय रचके कर्णके हाथसे मरवाया है। परन्तु कर्ण यदि आज इन्द्रकी अमोघ शक्तिसे घटोत्कचको न मारता तो मैं भविष्यमें अपने हाथसे घटोतकचका वध करता, तब पहिले जो मैंने घटोतकचका वध नहीं किया वह तुम लोगोंके प्रियकामनाकी इच्छा ही समझनी चाहिये। क्योंकि यह राक्षस सदा यज्ञ और ब्राह्मणोंका द्वेषी धर्म्मनाश करनेवाला और पापी था इस ही कारण युद्धभूमिमें मारा गया। और कौशलके प्रभावसे इन्द्रकी दी हुई कर्णके हाथमें स्थित अमोघ शक्तिको भी मैंने कर्णके समीपसे पृथक किया है। हे अर्ज्जुन! मैंने धर्म्म स्थापन करनेके वास्ते पहिले इस प्रकारसे दृढ़ प्रतिज्ञा करी है कि जो धर्म्मको लोप करेगा मैं अवश्य ही उसका वध करूंगा। मैं तुम्हारे समीप सत्य ही शपथ करके कहता हूं कि जिस स्थानपर वेद सत्य इन्द्रियसंयम पवित्रता धर्म्म लज्जा सौभाग्य धृति और क्षमा निवास करती है मैं सदासर्व्वदा उस ही स्थानमें वास करता हूं। इससे कर्णवधके वास्ते तुम दुःखित न होना, उस विषयमें मैं ऐसी उपाय बताऊंगा जिससे तुम कर्णका अनायास ही वध कर सकोगे। इसके अतिरिक्त पाण्डुपुत्र भीमसेन भी युद्धभूमिके बीच जिस प्रकारसे सुयोधनका वध करनेमें समर्थ होंगे मैं उस विषयमें भी उत्तम उपायको तुम्हारे समीप वर्णन करूंगा। इस समय सेनाके पुरुषोंके परित्राण करनेके वास्ते तुम यत्नवान होकर युद्ध करो; क्योंकि शत्रुसेनाके बीच महाघोर हर्षनाद हो रहा है। देखो लक्ष्यवेधनेवाले कुरुसेनाके योद्धा लोग तुम्हारी सेनाके व्यूहको भङ्ग करनेमें प्रवृत्त होरहे हैं; और योद्धाओंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य भी तुम्हारी सेनाको अपने अस्त्रोंसे भस्म कर रहे हैं।

१७९ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय! यदि इन्द्रकी दी हुई कर्णके हाथमें स्थित अमोघ शक्ति एक ही पुरुषको मारके कर्णके समीपसे पृथक होजावेगी,—ऐसे गुणसे युक्त थी तो कर्णने किस निमित्त सम्पूर्ण पुरुषोंको त्यागके उसे अर्ज्जुनके ऊपर नहीं चलाया। अर्ज्जुनके मारे जानेसे ही पाण्डव और सृञ्जय आदि सम्पूर्ण योद्धा विनष्ट होते। जिस स्थानमें एक ही वीरके नाश होनेसे ही विजय लाभ होना संभव था वैसे विजय लाभको किस कारणसे हम लोग नहीं प्राप्त कर सके? विशेष करके जब अर्ज्जुनको मैं युद्धभूमिमें आवाहन करनेसे कदापि निवृत्त न होऊंगा, ऐसी प्रतिज्ञा है तब सूतपुत्र कर्णका अर्ज्जुनको युद्धभूमिमें आवाहन करना ही कर्त्तव्य कार्य्य था। हे सञ्जय! ऐसी उपायके उपस्थित रहते भी कर्णने किस कारणसे द्वैरथ युद्धमें अर्ज्जुनको आवाहन करके उसका वध नहीं किया? तुम यह सम्पूर्ण वृत्तान्त मेरे समीप वर्णन करो। इस समय मेरा पुत्र एकवारगी सहायकोंसे रहित और

बुद्धिहीन हुआ है इसमें सन्देह नहीं है। जब शत्रुओंने उसे इस प्रकारसे उपाय रहित किया है तब वह अब किस प्रकारसे उन लोगोंको पराजित कर सकेगा? ओहो। जो इन्द्रकी दी हुई अमोघ शक्ति मेरे पुत्रके वास्ते परमशक्ति और विजय प्राप्त करनेके विषयमें परम आश्रय स्वरूप थी, श्रीकृष्णने वैसी शक्तिको भी घटोत्कच राक्षसके ऊपर छुड़वाके उसे निष्फल कर दिया। हे सञ्जय! जैसे कुष्ट आदि पीड़ासे युक्त किसी पुरुषके हाथमें स्थित श्रीफल कोई बलवान पुरुष हर लेता है वैसेही कर्णके हाथमें स्थित अमोघ शक्ति घटोत्कचके ऊपर छोड़ी जाने पर कर्णके समीपसे पृथक होगई; वह श्रीकृष्णके उपायके बलसे कर्णके समीपसे पृथक करी गयी हो मालूम होरही है। हे बुद्धिमान सञ्जय! जैसे युद्धमें प्रवृत्त हुए सूकर और कुत्तेके बीचसे एकके नाश होनेसे चाण्डालको अवश्य ही लाभ होता है, मेरे विचारमें कर्ण और घटोत्कचके युद्धमें श्रीकृष्णको भी उसी भांतिसे लाभ है। युद्धभूमिके बीच यदि घटोत्कच कर्णको वध कर सके तो पाण्डवोंका परम उपकार होगा और यदि सूतपुत्र कर्ण घटोत्कचका वध करेगा तो भी अमोघ शक्तिके निष्फल होनेसे बहुत बड़ा कार्य्य सिद्ध होवेगा; बुद्धिमान कृष्णने ऐसा ही विचारके पाण्डवोंके प्रियकार्य्य करनेकी अभिलाषासे सूतपुत्र कर्णके हाथसे घटोत्कचका वध कराया।

सञ्जय बोले महाराज! मधुदैत्यको नाश करनेवाले महा बुद्धिमान जनार्द्दन कृष्णने कर्णके ऐसे अभिप्रायको जानके ही इन्द्रकी दी हुई अमोघ शक्तिको निष्फल करनेकी इच्छासे कर्णके संग घटोत्कचको द्वैरथ युद्धमें प्रवृत्त किया था, परन्तु यह सब घटना तुम्हारी दुष्ट नीतिसे ही होती हुई समझनी उचित है। हे कुरुराज! श्रीकृष्ण यदि रणभूमिके बीच अर्जुनको महारथी कर्णके हाथसे न बचाते तो हम लोग उस ही समय कृतकार्य्य हो सकते थे। सर्व्व शक्तिमान परम योगेश्वर जनार्द्दन कृष्ण रणभूमिके बीच यदि अर्जुनकी रक्षा न करते होते तो अवश्य ही घोड़े रथ और ध्वजाके सहित अर्जुन प्राण-रहित होके पृथ्वीमें गिर पड़ते इसमें कुछ भी सन्देह नहीं हैं। अर्जुन कृष्णसे रक्षित रहते हैं उस ही कारण युद्धभूमिमें सम्मुख उपस्थित हुए महारथी शत्रुओंको पराजित करनेमें समर्थ होते हैं। जो ही कृष्णने अमोघ शक्तिसे अर्जुनको विशेष रूपसे रक्षा करी है नहीं तो कर्णकी भुजासे छूटी वह अमोघ शक्ति कुन्तीपुत्र अर्जुनके शरीरको इस प्रकार विदारण कर देती जैसे वज्रकी चोटसे पर्व्वत विदीर्ण होजाते हैं।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! मेरा पुत्र दुर्य्योधन केवल बुद्धिमान पुरुषोंका अपमान करनेवाला, विरोधी और दुष्ट विचारमें निपुण है, नहीं तो अर्जुनके वधके विषयमें क्या ऐसी उपाय भी निष्फल होती। और सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ बुद्धिमान कर्णने ही किस कारणसे अर्जुनके ऊपर उस अमोघ शक्तिको नहीं चलाया? हे गवलगणपुत्र! उस समय क्या तुम्हारी भी बुद्धि भ्रमयुक्त होगई थी? यदि तुम्हारी बुद्धि भ्रमित नहीं थी तो तुमने क्यों नहीं अमोघ शक्ति चलानेका विषय कर्णको स्मरण कराया?

सञ्जय बोले, महाराज! दुर्य्योधन शकुनि दुःशासन और मैं—हम सब कोई प्रति दिन रात्रिके समय अपनी बुद्धिसे स्थिर करके कर्णसे यह वचन कहते थे, हे कर्ण! कल्ह सवेरे तुम सबको छोड़के अर्जुनको ही मारो! अर्जुनके मरनेसे ही हम लोग दूसरे सम्पूर्ण पाण्डव और पाञ्चाल योद्धाओंको सहजमें पराजित करेंगे तब उन्हें अपने वशमें करके इस सम्पूर्ण पृथ्वीके राज्यको भोग करेंगे; अथवा

अर्ज्जुनके मारे जानेपर यदि वृष्णिनन्दन कृष्ण पाण्डवोंकी ओरसे दूसरे वीरको युद्धके कार्य्यमें नियुक्त करें इससे कृष्णहीको मारो, क्योंकि कृष्ण ही पाण्डवोंके सब कार्य्योंके सिद्ध करनेके मूल हैं। अर्ज्जुन कृष्णरूपी वृक्षकी बड़ी शाखा दूसरे पाण्डव लोग छोटी शाखा और पाञ्चालयोद्धा लोग उसके पत्रस्वरूप हैं। अधिक क्या कहा जावे, कृष्ण ही पाण्डवोंके आश्रय बल और सहायक हैं। जैसे सूर्य्य सम्पूर्ण ज्योतिवाले पदार्थोंके आश्रय हैं वैसे ही कृष्ण भी पाण्डवोंके परम आश्रयस्वरूप हैं; हे कर्ण! इससे तुम शाखा और पत्र आदि सबको छोड़के पाण्डववृक्षके मूल स्वरूप कृष्णहीका सबसे पहिले नाश करो। हे राजेन्द्र! हम लोग कर्णसे ऐसे ही बचन कहके फिर दुर्य्योधनसे कहते थे,—हे राजन्! सूतनन्दन कर्ण यदि यदुकुलभूषण दाशार्ह कृष्णका वध कर सकें तो यह सम्पूर्ण पृथ्वी तुम्हारे वशमें होजावेगी; इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। हे राजेन्द्र! यदुवंशियों और पाण्डवोंके आनन्दको बढ़ानेवाले कृष्ण मरके पृथ्वीपर शयन करें तो निश्चय ही बन पर्व्वत और समुद्रके सहित यह सम्पूर्ण पृथ्वी तुम्हारे अधिकारमें होजावेगी। महाराज! इसी भांति सदा सर्व्वान्तर्य्यामी तीनों लोकके ईश्वर श्रीकृष्णके वधके विषयमें नित्य रात्रिके समय हम लोग अपनी बुद्धिसे ऐसा ही निश्चय करते थे तो भी सबेरे युद्धके समय हम लोगोंकी बुद्धि मोहित होजाती थी। जबतक कर्णके निकट इन्द्रकी दी हुई अमोघ-शक्ति उपस्थित थी तब तक श्रीकृष्ण नित्य ही कर्णसे अर्ज्जुनकी रक्षा करते थे अर्थात् श्रीकृष्ण कभी भी कर्णके सम्मुख अर्ज्जुनके रथको खड़ा नहीं करते थे। किस प्रकारसे राधापुत्र कर्णके निकटसे अमोघ शक्तिको निष्फल कराऊं, इसी भांति चिन्ता करके श्रीकृष्ण पाण्डवोंकी ओरके अन्य महारथियोंको कर्णके सम्मुख युद्धके निमित्त भेजते थे। महाराज! जब पुरुषोत्तम महाबुद्धिमान कृष्णने अर्ज्जुनको इस प्रकार कर्णके हाथसे बचाया है तब अपनी रक्षा वह क्यों नहीं कर सकेंगे? इससे मैं भली भांति विशेष रूपसे विचार करके देखता हूं, कि तीनों लोकके बीच ऐसा कोई भी पुरुष नहीं है जो सुदर्शन चक्रधारी शत्रुनाशन जनार्द्दन कृष्णका बध कर सके।

विशेष करके रथियोंमें मुख्य सत्य पराक्रमी सात्यकिने भी कर्णके विषयमें महाबाहु कृष्णसे पूंछा था, हे कृष्ण! इन्द्रकी दी हुई शक्ति अत्यन्त पराक्रमशालिनी और अमोघ है,—उस विषयमें कर्णको दृढ़रूपसे विश्वास था, तब उसने किस कारणसे उस अमोघ शक्तिको अर्ज्जुनके ऊपर नहीं चलाया?

सात्यकिके बचनको सुन कर श्रीकृष्ण बोले हे शिनिकुल भूषण सात्यकि! दुर्य्योधन दुःशासन, शकुनि और सिन्धुराज जयद्रथ;—ये सब कोई प्रति दिन रात्रिके समय आपसमें यह विचार करके स्थिर करते थे, हे अत्यन्त पराक्रमी कर्ण! हे महाधनुर्द्धर विजयी पुरुषोंमें श्रेष्ठ महाबाहु कर्ण! कुन्तीपुत्र अर्ज्जुनके अतिरिक्त और किसी पुरुषके ऊपर तुम इस अमोघ शक्तिको मत चलाना। क्योंकि जैसे देवतोंके बीचमें इन्द्र हैं, वैसे ही पाण्डवोंके बीचमें अर्ज्जुन ही मुख्य वीर और यशस्वी है; इससे अर्ज्जुनके मारे जानेसे ही अग्निहीन देवतोंकी भांति सृञ्जय और पाण्डव लोग सब कोई सहजमें ही नष्ट हो सकेंगे। हे सात्यकि! कर्णने उन लोगोंके वचनको सुनके ऐसा ही होगा यह बचन कहके प्रतिज्ञा की थी; और उस ही समयसे गाण्डीवधारी अर्ज्जुनके बधके विषय उसके अन्तःकरणमें नित्य ही स्थित रहता था; केवल मैं ही योद्धाओंमें श्रेष्ठ राधापुत्र कर्णको मोहित करता था, इस ही कारण

उसने श्वेतवाहन अर्ज्जुनके ऊपर अमोघ शक्ति नहीं चलायी। हे योद्धाओंमें श्रेष्ठ सात्यकि! मैंने उस इन्द्रकी अमोघ शक्तिको अर्ज्जुनसे निवारित न होनेवाली तथा अर्ज्जुनकी मृत्यु स्वरूप जानके अपने चित्तसे हर्ष सुख त्याग किया था, मझे इस ही चिन्तामें रात्रिको नींद नहीं लगती थी। आज घटोत्कचके ऊपर वह शक्ति छूटके कर्णके निकटसे पृथक् हुई है; उसे देखकर अब मैं अर्ज्जुनको मृत्युके मुखसे छूटा हुआ ही समझ रहा हूं। अधिक क्या कहूं, युद्धभूमिमें अर्ज्जुन मुझे जैसे रक्षणीय है; पिता माता, तुम लोग तथा भाई बन्धु आदि कोई भी वैसा रक्षणीय नहीं है, अधिक क्या कहूं मुझे अपना प्राण भी वैसा प्रिय नहीं है। हे सात्यकि! यदि तीनों लोककी राज्यसे भी दुर्लभ कोई दूसरी वस्तु होवे तौ भी मैं अर्ज्जुनको त्यागके उस दायको भी ग्रहण करनेकी इच्छा नहीं करता, इससे मैं आज मृत्युके मुखमें पड़े हुए मान अर्ज्जुनको कर्णके हाथसे मुक्त हुआ देखकर इस प्रकारसे हर्षित और आनन्दित होरहा हूं। इसके अतिरिक्त मैंने जो आज घटोत्कचको युद्ध करनेके वास्ते कर्णके सम्मुख भेजा था उसका कारण अपनी बुद्धिसे मैंने यही विचारके देखा था, कि आज रात्रिके समय कर्णको कोई भी वीर निवारण करनेमें समर्थ न होगा;

सञ्जय बोले, महाराज! अर्ज्जुनकी अत्यन्त ही प्रिय और सदा ही उसके हितकार्य्यमें रत कृष्णने उस समय सात्यकिसे ऐसे ही वचन कहे थे।

१८० अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे तात! हे सञ्जय! कर्ण, दुर्य्योधन और सुबलपुत्र शकुनि और विशेष करके तुमने अत्यन्त ही अन्याय कार्य्य किया है, क्योंकि जब तुम लोगोंने निश्चय करके जाना था, कि, कर्णके हाथकी अनिवार्य्य शक्ति इन्द्र आदि देवतोंसे भी असह्य है और रणभूमिके बीच एक महावीरका नाश करके कर्णके समीपसे इन्द्र लोकमें चली जावेगी; तब कर्णने पहिले युद्धमें प्रवृत्त हुए अर्ज्जुन अथवा देवकीपुत्र कृष्णके ऊपर उस अमोघ शक्तिको क्यों नहीं चलाया?

सञ्जय बोले, हे कुरुकुलश्रेष्ठ महाराज! हम लोग प्रतिदिन युद्धसे निवृत्त होने पर शिविरमें आके रात्रिके समय इसीप्रकार मन्त्रणा करके कर्णसे कहते थे,—हे कर्ण! तुम कल्ह सवेरा होते ही श्रीकृष्ण वा अर्ज्जुनके ऊपर अवश्य इस अमोघ शक्तिको छोड़ना। परन्तु भोर होते ही दैवके प्रभावसे कर्ण तथा दूसरे सम्पूर्ण योद्धाओंकी बुद्धि भ्रष्ट होजाती थी। अधिक क्या कहा जावे, जब कर्णकी हाथमें वैसी अमोघ शक्तिके रहते भी देवकीपुत्र कृष्ण वा अर्ज्जुन नहीं मारे गये; तब मेरे विचारमें प्रारब्ध ही बलवान मालूम होती है। हे राजेन्द्र! कर्णने निश्चय ही देवमायाके प्रभावसे बुद्धि भ्रष्ट और मोहित होके देवकीपुत्र कृष्ण और महावीर अर्ज्जुनके ऊपर इन्द्रकी दी हुए अमोघशक्ति नहीं चलायी।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! तुम लोग अवश्य ही देवमाया कृष्णकी युक्ति और अपनी बुद्धिके दोषसे पराजित होके नष्ट हुए, क्योंकि इन्द्रकी दी हुई वैसी अमोघ शक्ति कर्णके हाथसे छूटकर तृणके समान घटोत्कचको नाश करके निष्फल होगई। इस ही दुर्नीतिके दोषसे मैं अपने पुत्रोंको कर्ण तथा अपनी सेनाके सम्पूर्ण राजाओंको मृत्युके मुखमें पड़े ही समझ रहा हूं। जो हो हिड़म्बापुत्र घटोत्कचके मारे जानेपर कौरव और पाण्डवोंका कैसा संग्राम हुआ वह सब वृत्तान्त तुम मेरे

समीप वर्णन करो; और उस समय पाण्ड-वोंकी ओरके कौन कौन योद्धा व्यूहबद्ध सेनाके सहित द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। और सृञ्जय तथा पाञ्चाल योद्धाओंने भी द्रोणाचार्य्यके सङ्ग किस भांतिसे युद्ध किया? हे सञ्जय! द्रोणा-चार्य्य सोमदत्तपुत्र भूरिश्रवा और सिन्धुराज जयद्रथके मारे जानेसे अत्यन्त ही क्रुद्ध हुए थे; उन्होंने अपने प्राणकी आशाको छोड़के क्रोधी सिंह तथा दण्डधारी यमराजकी भांति जब पाण्डवोंकी सेनाके बीच प्रवेश करके अपने प्रचण्ड धनुषको फिरते हुए लगातार बाणोंकी बर्षाने लगे उस समय पाण्डव और सृञ्जय लोग किस प्रकार द्रोणाचार्य्यके सम्मुख स्थित हुए? हे तात सञ्जय! उस महाघोर युद्धके समय मेरी सेनाके किन किन योद्धाओंने द्रोणा-चार्य्यकी रक्षा करी थी? और कृपाचार्य्य अश्व-त्थामा कर्ण तथा दुर्य्योधन आदि मेरी सेनाके महारथी योद्धाओंने उस समय किस कार्य्यका अनुष्ठान किया? द्रोणाचार्य्यके बधकी इच्छा करनेवाले भीमसेन और अर्जुनको मेरी सेनाके बीरोंने किस प्रकार निवारण किया? उस समय जयद्रथ बधके कारण कौरवों और घटो-त्कचके मारे जानेसे पाण्डवोंने अत्यन्त दुःखित और क्रुद्ध होके उस रात्रिके समय किस प्रकार युद्ध किया वह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम मेरे समीप वर्णन करो।

सञ्जय बोले, महाराज। उस महाघोर रात्रिके समय जब कर्णके हाथसे घटोत्कच राक्षस मारा गया, तब तुम्हारी ओरके योद्धा लोग युद्धकी अभिलाषासे हर्षित होकर सिंह-नाद करते हुए महावेगपूर्व्वक पाण्डवोंकी सेनाकी ओर दौड़े। अनन्तर समूहके समूह अपनी सेनाके पुरुषोंका नाश होते देख राजा युधिष्ठिर अत्यन्तही दुःखित होके भीमसेनसे बोले, हे महाबाहु भीमसेन! मैं हिडिम्बापुत्र घटोत्कचके मारे जानेसे दुःखित और मोहित होरहा हूं इससे तुम इस समय अकेले ही कौरवोंकी सेनाको निवारण करो। रा[illegible] युधिष्ठिर भीमसेनको ऐसी आज्ञा देकर र[illegible] बैठकर आंसू बहाते हुए बार बार लम्बी स[illegible] छोड़ने लगे; और कर्णके भयानक पराक्रम[illegible] देखकर विह्वल होगये।

श्रीकृष्ण राजा युधिष्ठिरको इस प्रकार वि[illegible] देखकर उनसे यह बचन बोले, महारा[illegible] तुम ऐसी कातरता परित्याग करो क्यों[illegible] साधारण पुरुषोंकी भांति तुम्हें इस प्र[illegible] शोकित होना उचित नहीं है। आप उठ खड़े होजाइये और इस बहुत भारी युद्ध भारको उठाइये। इस समयमें यदि तुम [illegible] प्रकार बिह्वल होके शोक करते हुए र[illegible] करोगे तो तुम्हारी विजय होनेमें संशय उत[illegible] होगा।

धर्म्मराज युधिष्ठिर श्रीकृष्णके वचन[illegible] सुनकर हाथसे आंसू पोंछकर उनसे यह ब[illegible] बोले, हे महाबाहु जनार्द्दन कृष्ण। धर्म्म[illegible] परम गति मुझे मालूम है, जो पुरुष दूसरे[illegible] किये हुए उपकारको स्मरण नहीं करता उ[illegible] अवश्य हो ब्रह्महत्याके समान पाप लगता मैं इसे जानकर भी कैसे स्थिर रह सक[illegible] हूं? हम लोगोंको बनवासके समय हिडिम्[illegible] पुत्र घटोत्कचने बालक होके भी बहुत सहायता किया था। जिस समय श्वेतवा[illegible] अर्जुन अस्त्रशस्त्रोंकी विद्या सीखनेके वा[illegible] स्वर्गमें गये थे उस समय इस महाधनु[illegible] घटोत्कचने हम लोगोंके समीप उपस्थि[illegible] होकर यबतक अर्जुन स्वर्गसे नहीं आये त[illegible] तक हम लोगोंके सङ्ग काम्यक बनमें वा[illegible] किया था और गन्धमादन पर्व्वतकी यात्रा[illegible] महात्मा घटोतकचने हम लोगोंको बहुत[illegible] दुर्गम तथा कठिन मार्गोंसे पार किया था, बिशेष करके थकी हुई द्रौपदीको पीठ पर उठाके मार्गमें हम लोगोंके सङ्ग गमन करता

था। इसके अतिरिक्त इस युद्धके आरम्भ होनेके समयमें महात्मा घटोतकचने इस महासंग्राममें मेरे वास्ते जिन सम्पूर्ण कठिन कर्म्मोंको किया है उन सम्पूर्ण कर्म्मोंको मैं दूसरे पुरुषसे असाध्य समझता हूं। हे जनार्द्दन कृष्ण! अधिक कहनेसे क्या होगा,—सहदेवके ऊपर मेरी जैसे प्रीति है वैसे ही राक्षसराज घटोतकचके ऊपर भी मेरी परम प्रीति थी। वह महाबाहु घटोतकच मेरा अत्यन्त भक्त और परम प्रिय था तथा हम लोग भी उसके अत्यन्त ही प्रियपात्र थे। इस ही कारण मैं शोकसे व्याकुल और मोहित होरहा हूं। हे वृष्णिनन्दन कृष्ण! यह देखो मेरी सेनाके पुरुष कौरवोंकी सेनाके योद्धाओंके अस्त्रोंसे पीड़ित होकर चारों ओर युद्धभूमिमे भाग रहे हैं; द्रोणाचार्य्य और कर्ण अत्यन्त ही यत्न परायण होकर मेरी सेनाके योद्धाओंका नाश कर रहे हैं। जैसे मतवारा हाथी कमलवनको मर्द्दन करता है वैसे ही ये दोनों वीर हमारी सेनाके पुरुषोंका नाश कर रहे हैं। हे कृष्ण! यह देखो राजा दुर्य्योधन द्रोणाचार्य्य और कर्ण आदि योद्धा अर्ज्जुनके अस्त्रकौशल और भीमसेनके बाहुबलका अनादर करके युद्धभूमिमें घटोतकचको मार कर आनन्दपूर्व्वक सिंहनाद कर रहे हैं। हे कृष्ण! तुम तथा हम लोगोंके जीवित रहते सूतपुत्र कर्ण किस प्रकार घटोत्कचका वध करनेमें समर्थ हुआ? हाय! कर्णने हम लोगोंको अस्त्र-रहित करके सव्यसाची अर्ज्जुनके सम्मुखमें ही महाबलवान घटोतकचका संहार किया है। हे जनार्द्दन कृष्ण! जिस समय दुष्टात्मा कौरवोंने अभिमन्युका वध किया था, उस समय अर्ज्जुन युद्धभूमिके बीच वहां पर उपस्थित नहीं थे और हम सब लोग दुष्टात्मा जयद्रथसे निवारित होकर चक्रव्यूहके भीतर न जासके; उस समय अश्वत्थामाके सहित द्रोणाचार्य्य ही अभिमन्युकी मृत्युके कारण हुए थे क्योंकि द्रोणाचार्य्यने स्वयं अभिमन्युके वधके उपायको महारथियोंके समीप वर्णन किया था, विशेष करके जब वह केवल एक मात्र तलवारको ग्रहण करके ही युद्ध करता था उस समय आचार्य्यने ही अपने बाणसे उसके तलवारको काटके दो टुकड़े किया था। कृतवर्म्माने नीच पुरुषोंकी भांति कार्य्य करके विपदमें पड़े हुए उस बालकके रथके घोड़े और दोनों पृष्ठरक्षक वीरोंका वध किया। फिर अन्तमें दूसरे कई एक महाधनुर्द्धर योद्धाओंने एकत्रित होके इसी प्रकार नाना भांतिसे सुभद्रापुत्र अभिमन्युको अस्त्र-रहित करके युद्धभूमिमें मारा था। हे कृष्ण! गाण्डीव धनुर्द्धारी अर्ज्जुनने बहुत थोड़े अपराधसे सिन्धुराज जयद्रथका वध किया है; इससे जयद्रथके वधसे मेरा विशेष प्रिय-कार्य्य नहीं हुआ है। हे यादवश्रेष्ठ कृष्ण! पाण्डवोंको यदि शत्रुओंका नाश करना ही कर्त्तव्य कार्य्य होवे तो मेरे विचारमें सबसे पहिले द्रोणाचार्य्य और कर्णका नाश करना ही उचित है। ये दोनों वीर ही मेरे समस्त दुःखोंके मूल है; इन्ही दोनों वीरोंके आसरेसे दुर्य्योधन अपनेको बलवान समझता है। ओहो कैसे आश्चर्यका विषय है कि हम लोगोंने समझा था कि—महाबाहु अर्ज्जुन अनुयाइयोंसे सहित द्रोणाचार्य्य और कर्णका नाश करेंगे! उसे न करके अर्ज्जुनने दूर देशवासी सिन्धुराज जयद्रथका वध किया। जो हो हम लोगोंको अवश्य ही सूतपुत्र कर्णको पराजित करना पड़ेगा। इस समय महाबाहु भीमसेन द्रोणाचार्य्यकी सेनाके सेनाके सङ्ग युद्ध कर रहे हैं इससे मैं स्वयं ही कर्णके वधके निमित्त उसके समीप गमन करूंगा। राजा युधिष्ठिर ऐसा वचन कहके अत्यन्त वेगपूर्व्वक अपने बड़े धनुषको फिरते और भयङ्कर शंख बजाते हुए कर्णकी ओर गमन करने लगे।

तिसके अनन्तर पाञ्चालराजपुत्र शिखण्डी एक हजार रथी तीन सौ हाथी पांच हजार पाञ्चाल और प्रभद्रक सेनाके योद्धाओंको सङ्ग लेकर शीघ्रताके सहित युधिष्ठिरके अनुगामी हुए। उसी समय राजा युधिष्ठिरके सहित पाण्डव और पाञ्चालसेनाके योद्धा लोग सैकड़ों शङ्ख और भेरी आदि बाजोंको बजाते हुए सिंह-नाद करने लगे। श्रीकृष्णचन्द्र राजा युधिष्ठिरको स्वयं कर्णकी ओर गमन करते देखकर अर्जुनसे बोले, हे अर्जुन! यह देखो धर्म्मराज युधिष्ठिर सूतपुत्र कर्णको नाश करनेके वास्ते स्वयं उसकी ओर गमन कर रहे हैं इससे इस विषयमें अब उपेक्षा करना उचित नहीं है। श्रीकृष्णचन्द्र ऐसा बचन कहके शीघ्रगामी अर्जुनके रथके घोड़ोंको दौड़ाकर राजा युधिष्ठिरके पीछे पीछे गमन करने लगे। उस ही समय-भगवान वेदव्यास अग्निसे जलते हुए वज्रकी भांति राजा युधिष्ठिरको दुःखित और शोकित चित्तसे सहसा कर्णके बधकी अभिलाषासे उसकी ओर गमन करते देख उनके सम्मुख उपस्थित होकर यह बचन बोले, हे तात युधिष्ठिर! भाग्यसे ही अर्जुन कई बार कर्णके सन्मुख उपस्थित होकर भी जीवित है क्योंकि कर्ण अर्जुनके बधके ही वास्ते इन्द्रकी दी हुई अमोघ शक्तिको यत्नपूर्व्वक रक्खे हुआ था! भाग्यसे ही अर्जुन आजतक कर्णके सङ्ग द्वैरथ युद्धमें प्रवृत्त नहीं हुए; यदि दोनोंका द्वैरथ युद्ध होता, तो दोनों ही क्रुद्ध होकर दिव्य अस्त्रोंको चलाना आरम्भ करते इसमें कुछ सन्देह नहीं है। तिसके अनन्तर अर्जुनके अस्त्रोंके प्रभावसे जब बार बार सम्पूर्ण दिव्य अस्त्र निष्फल होते और वह स्वयं भी अर्जुनके अस्त्रोंसे पीड़ित होता तो कर्ण इन्द्रकी अमोघ शक्तिको अवश्यही अर्जुनके ऊपर चलाता; तो अर्जुनके मरनेसे तुम्हें महा घोर विपदमें फंसना पड़ता। हे युधिष्ठिर! तुम्हारी प्रारब्धसे ही सूतपुत्र कर्णने अमोघशक्तिसे घटोत्कच राक्षसका नाश किया है, इन्द्रकी शक्ति घटोत्कचकी मृत्युके विषयमें केवल निमित्त मात्र है यथार्थमें कालने ही उसका संहार किया है। हे तात! तुम्हारे कल्याणके ही वास्ते घटोत्कच मारा गया है, इससे तुम अपने मानसिक शोक और क्रोधको दूर करो; क्योंकि प्राणिमात्रकी यही गति हैं अर्थात् मृत्यु सम्पूर्ण प्राणियोंका नाश करती है। इस समय तुम महात्मा भ्राताओंके और सम्पूर्ण राजाओंके सहित एकत्रित होके कौरवोंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त होजाओ? हे पुरुषश्रेष्ठ! आजसे पांचवें दिन अवश्य ही यह पृथ्वी तुम्हारे हाथमें होजावेगी। तुम सदा धर्म्मके कार्य्योंमें रत रहते हो, और अनृशंसता, तपस्या दान और क्षमा गुण तुममें सदा विराजमान रहते हैं। जहां धर्म्म है, वहीं विजय होती है।

सञ्जय बोले, महाराज! सत्यवती पुत्र भगवान व्यासदेव राजा युधिष्ठिरसे ऐसा वचन कहके उसी समय वहां ही अन्तर्द्धान होगये।

१८१ अध्याय समाप्त।

अथ द्रोणबध प्रकरण।

सञ्जय बोले, हे भरतश्रेष्ठ महाराज! धर्म्मपुत्र राजा युधिष्ठिर वेदव्यासके वचनोंको सुनकर कर्णके बधकी इच्छा त्यागकर शान्त होकर उसकी ओर गमन-करनेसे निवृत्त हुए; परन्तु सूतपुत्रके हाथसे घटोत्कचके मारे जानेसे वह दुःख राजा युधिष्ठिरसे नहीं सहा गया। उस समय वह भीमसेनको अकेले ही कुरुसेनाके योद्धाओंको निवारण करते देख धृष्टद्युम्नसे बोले, हे वीर! तुम द्रोणाचार्य्यको निवारण करो। हे शत्रुनाशन! तुम द्रोणाचार्य्यके बध करनेके निमित्त ही धनुष बाण तलवार और कवचके सहित अग्निसे उत्पन्न हुए हो, इससे द्रोणा-

चार्य्यसे तुम्हें कुछ भी भय नहीं है; तुम सन्नताके सहित उत्साहपूर्व्वक द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़ो, और जनमेजय शिखण्डी तथा दौर्म्मुखि आदि शूरवीर योद्धा लोग यशकी अभिलाषा करके द्रोणाचार्य्यके विरुद्ध युद्ध करनेके वास्ते उनके समीप गमन करें। तिसके अनन्तर नकुल सहदेव द्रौपदीके पांचो पुत्र, प्रभद्रक योद्धा लोग और भाई तथा पुत्रोंके सहित राजा विराट, द्रुपद सात्यकि और पाण्डुपुत्र अर्जुन द्रोणाचार्य्यके वधके निमित्त इनके सम्मुख गमन करें। अधिक क्या कहूं, मेरी सेनाके जितने रथी गजपति घुड़सवार और पैदल सेनाके योद्धा हैं, वे सब कोई इकट्ठे होकर युद्धभूमिमें द्रोणाचार्य्यका वध करें।

महाराज! जब महात्मा राजा युधिष्ठिरने ऐसी आज्ञा दी, तब सम्पूर्ण सेनाके योद्धा लोगोंने सेनापतियोंके सहित अत्यन्त वेगपूर्व्वक द्रोणाचार्य्यके वधके निमित्त उनकी ओर गमन किया। पाण्डवोंकी ओरके सम्पूर्ण योद्धा लोग यत्नपूर्व्वक सहसा द्रोणाचार्य्यकी ओर गमन करने लगे, तब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने उसही समय अपने अस्त्र-प्रभावसे उन लोगोंको आगे बढ़नेसे रोक दिया; और राजा दुर्य्योधन भी सब भांतिके उद्योगके सहित द्रोणाचार्य्यकी रक्षा करनेकी अभिलाषासे क्रुद्ध होकर पाण्डवोंकी सेनाकी ओर दौड़े। अनन्तर थके हुए वाहन और थके हुए दोनों सेनाके पुरुषोंका आपसमें गर्ज्जते हुए सिंहनाद शब्दके सहित महाघोर शब्द आरम्भ हुआ। महाराज! दोनों सेनाके महारथी योद्धा लोग पहिले तो दिन रात थके हुए थे; उस पर अब रात्रिके समय निद्राके वशमें होके चेतरहितके समान नींदसे युक्त होगये; उस समय वह महाभयङ्करी शूरवीरोंके प्राणका हरण करनेवाली त्रियामा रात्रि उन योद्धाओंके वास्ते सहस्र रात्रिके समान बोध होने लगी। जो हो, इसी प्रकार निद्रासे झूमते हुए योद्धाओंको युद्ध करते करते आधी रात बीत गई। परन्तु उस समय क्या कौरवोंकी सेनाके योद्धा और क्या पाण्डवोंकी ओरके वीर लोग इस प्रकार निद्राके वशमें होगये, कि उन लोगोंके हाथसे अस्त्र शस्त्र छूट छूट पृथ्वीमें गिरने लगे और और कितने ही पुरुष चेतरहितके समान नींदसे मतवारे होकर इधर उधर सेनाके बीच गिर पड़े। तो भी पराक्रमी मुख्य मुख्य शूरवीर योद्धाओंने वीर धर्म्मको स्मरण करके अपनी सेनाके व्यूहको परित्याग नहीं किया। परन्तु और सम्पूर्ण योद्धा लोग निद्राके वशमें होके अस्त्र शस्त्रोंको त्याग कर कोई रथ कोई हाथी और कोई घोड़ोंके ऊपर शयन करने लगे। उस समय बहुतसे राजा लोग भी ऐसे निद्रित होगये, कि दूसरे योद्धाओंने उनका प्राण नाश किया, तो भी वे लोग कुछ न जान सके। उस महा संग्राममें और कितने ही योद्धा नींदमें पड़े हुए स्वप्न देखकर शत्रुओंको सम्मुख उपस्थित हुए समझके अज्ञानताके कारण कोई अपनेको कोई अपनी ओरके ही पुरुषोंको और कोई कोई शत्रुसेनाके योद्धाओंका वध करने लगे। महाराज! उस समय शत्रुओंकी अपेक्षा तुम्हारी सेनाके अनगिनत योद्धा लोग निद्रित होकर भी युद्ध करनेकी इच्छासे रणभूमिके बीच स्थिर थे। उस महाघोर रात्रिके समय नींदमें पड़े हुए बहुतेरे शूरवीर योद्धा पावके नीचे पड़के प्राणरहित होगये। बहुतेरे योद्धा ऐसे नींदमें पड़के चेतरहितके समान होगये थे, कि शत्रुओंके हाथसे मारे जाने पर भी कुछ न मालूम कर सके। महाराज! उस ही समय पराक्रमी अर्जुन दोनों सेनाके योद्धाओंका इस प्रकार नाश होते देख ऊंचेस्वरसे सम्पूर्ण दिशाओंको अनुनादित करते हुए यह वचन बोले—हे कौरव और पाण्डवों! ओरके शूरवीर पुरुषो! तुम लोग प

नोंके सहित बहुत ही थके तथा निद्रासे युक्त होगये हो और सेनाके सम्पूर्ण पुरुष धूलिके उड़ने और अन्धकारसे छिप गये हैं, इससे यदि इच्छा होवे तो थोड़ी देरके वास्ते युद्धसे निवृत्त होके इसी रणभूमिके बीच सो सकते हो और चन्द्रमाके उदय होने पर तुम लोग निद्रासे सावधान होकर स्वर्ग प्राप्त होनेकी अभिलाषासे फिर युद्ध करना। हे प्रजानाथ! धर्म्मात्मा सेनापति और सेनाके शूरवीर योद्धा लोग दयालु अर्ज्जुनका वचन सुनकर सब कोई इस विषयमें सम्मत हुए; और सब कोई ऊंचे स्वरसे पुकारके कहने लगे, हे कर्ण! हे महाराज दुर्य्योधन! यह देखो पाण्डवोंकी सम्पूर्ण सेना युद्धसे निवृत्त होरही हैं, इससे आप लोग युद्ध करनेसे शान्त होइये।

सञ्जय बोले, महाराज! इसी भांति अर्ज्जुनके वचनके अनुसार कौरव और पाण्डवोंकी सेना युद्धभूमिसे निवृत्त हुई। उस समय देवता महात्मा ऋषि लोग और सेनाके सम्पूर्ण पुरुष आनन्दित होके अर्ज्जुनके वचनको अत्यन्त ही प्रशंसा करने लगे। विशेष करके थके हुए योद्धाओंने अर्ज्जुनके दयायुक्त वचनोंकी अत्यन्त ही प्रशंसा करी और थोड़े समयके वास्ते सो गये। महाराज! तुम्हारी सेनाके पुरुष सुखपूर्व्वक विश्राम करके इस प्रकार अर्ज्जुनकी प्रशंसा और मङ्गलकामना करने लगे। हे महाबाहु अर्ज्जुन! हे वीर! तुममें ही सम्पूर्ण वेद, बुद्धि पराक्रम, धर्म्म और समस्त अस्त्रशस्त्र भली भांतिसे विराजमान हैं; और सम्पूर्ण प्राणियोंके ऊपर तुम्हारे शरीरमें दया है; हे पृथापुत्र अर्ज्जुन! हम लोग विश्राम करके सुखी होकर जिस भांति तुम्हारे मङ्गल कामनाकी अभिलाषा करते हैं; वह अवश्य ही सिद्ध होवेगी अधिक क्या कहा जावे, तुम्हारी शीघ्र ही अभीष्ट-कामना पूर्ण होवेगी। इसी भांति वे महारथी योद्धा लोग अर्ज्जुनकी प्रशंसा करते हुए निद्रित होगये। अनन्तर कोई हाथी कोई घोड़े कोई रथोंमें और कितने ही योद्धा पृथ्वीपर शयन करने लगे। उस समय वे सम्पूर्ण योद्धा लोग कवच, आभूषण और अस्त्रशस्त्रोंको धारण किये हुए ही पृथक् पृथक् रणभूमिके बीच शयन करने लगे। निद्रासे मतवारे होकर कितने ही हाथी सर्पसमान अपने सूण्डोंसे सांस लेते तथा सांस छोड़ते हुए पृथ्वीको शीतल करने लगे। जब वे सम्पूर्ण हाथी निद्रित होकर रणभूमिके बीच वार बार सांस छोड़ने लगे उस समय सूण्डोंके सहित उनके शरीर मानो सर्पोंसे युक्त पर्व्वतकी भांति दिखाई देने लगे। और सुवर्णभूषित कवचोंसे युक्त घोड़े अपने पांवसे पृथ्वीको खोदते और लोटते हुए श्रमरहित हुए और वे सम्पूर्ण घोड़े रथोंमें जुते हुए ही निद्रित होगये। इसी प्रकार अत्यन्त ही थके हुए हाथी घोड़े और सेनाके योद्धा लोग युद्धसे निवृत्त होकर रणभूमिके बीच शयन करने लगे। महाराज! उस समय जब वे सम्पूर्ण योद्धा वाहनोंके सहित इस प्रकार शयन करने लगे, उस समय ऐसा बोध होता था, मानो उत्तम शिल्पी पुरुषोंने हाथी घोड़े और मनुष्योंके सहित चित्रपटमें चित्र खींच रक्खा है। आपसमें एक दूसरेके बाणोंसे क्षत-विक्षत शरीरसे युक्त और सुन्दर कुण्डलोंसे शोभित क्षत्रिय योद्धा लोग हाथियोंके ऊपर शयन करते हुए इस प्रकार दीख पड़ते थे मानो कामिनियोंके दोनों कुचोंके ऊपर शयन कर रहे हैं। तिसके अनन्तर नेत्रोंको आनन्द देनेवाले पाण्डुरवर्ण चन्द्रमा महेन्द्राचलकी ओरसे उदय होते दीख पड़े। वह उदयाचलवासी केशरीकी भांति पूर्व्व दिशारूपी गुफासे बाहर होकर किरण केशरसे सम्पूर्ण दिशाओंको प्रकाशित करके हस्ति यूथरूपी अन्धकारको नष्ट करते हुए उदय हुए। महाराज! हर-हपाङ्ग समान श्वेतवर्णवाले नवीन

बारवधूके हांसीकी भांति प्रकाशित अत्यन्त मनोहर कामदेवके कांन पर्य्यन्त खिंचे हुए धनुषकी भांति मण्डलाकार रूपसे उदय होकर भगवान कुमुदबन्धु चन्द्रमा मुहूर्त्त भरके बीच सम्पूर्ण ज्योति वाले पदार्थोंके प्रकाशको हरण करके शश-चिन्हके अग्रभागको लालवर्णसे प्रदर्शित करने लगी। तिसके अनन्तर सुवर्णवर्णवाली अपनी किरणोंको धीरे धीरे चारो ओर फैलाने लगी। इसी भांति चन्द्रमाका प्रकाश अन्धकारको नष्ट करता हुआ धीरे धीरे सम्पूर्ण दिशा और पृथ्वीमें व्याप्त होगया। चन्द्रमाके उदय होनेसे सम्पूर्ण दिशा प्रकाशमय होगई और अन्धकार उस समय एकबारगी दूर हो गया। इसी भांति जब चन्द्रमाके उदय होनेपर जगत् प्रकाशमय होगया तब रात्रिचारी जीवजन्तु-ओमेंसे कितने ही इधर उधर भ्रमण करनेसे निवृत्त होगये और कितनेही जीवजन्तु रण-भूमिमें घूमते हुए भी दीख पड़ते थे; जैसे सूर्य्यकी किरण पड़नेसे कमलका बन प्रफु-ल्लित होता है वैसे ही निद्रित हुए सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग चन्द्रमाके प्रकाशसे निद्रासे जागके सावधान होगये। जैसे पूर्णमासीके दिन चन्द्रमाके उदय होनेसे समुद्रकी भयङ्कर तरङ्ग बहुत ऊंची उठती हुई दीख पड़ती है, वैसे ही वह सेनारूपी समुद्र चन्द्रमाके उदयसे वेगपूर्वक बढने लगा। अनन्तर स्वर्ग लोकको गमन करनेकी इच्छासे शूरवीर योद्धाओंका आपसमें फिर महाघोर युद्ध आरम्भ हुआ।

१८२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज! इसही समय राजा दुर्य्योधन क्रोधपूर्व्वक द्रोणाचार्य्यके समीप आकर उनके तेज और दर्पको बढ़ाते हुए यह वचन बोले, हे आचार्य्य! युद्धभूमिके बीच यदि शत्रु लोग मन मलिन होकर तथा आन्तरिक थकके विश्राम करनेके वास्ते प्रार्थना करें तो लब्धलक्ष्य पुरुषोंको उस समय किसी प्रकारसे भी क्षमा करनी उचित नहीं है; परन्तु बल-वान पाण्डव लोग युद्धभूमिमें थक गये थे तोभी हम लोगोंने तुम्हारे प्रिय कामनाको इच्छासे ही उन लोगोंके विषयमें क्षमा किया है। देखिये तुमसे रक्षित होकर पाण्डव लोगोंके पराक्रमकी बार बार वृद्धि होरही है और हम लोग क्रमसे तेज तथा बलसे सब भांति हीन हुए जाते हैं। मुझे यह निश्चय है कि इस जगतके बीच ब्राह्म और दिव्य जितने अस्त्र शस्त्र हैं वे सम्पूर्ण तुममें विराजमान हैं। इससे मैं तुम्हारे समीप शपथ करके यह वचन कहता हूं कि आप यदि दृढरूपसे युद्धमें प्रवृत्त होवें तो क्या पाण्डव और क्या हम लोग तथा पृथ्वीके बीच और भी जो धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी वीर हैं, वे कोई भी तुम्हारे समान नहीं हो सकते। हे द्विजसत्तम! अधिक मैं क्या कहूं आप जिस भांति सम्पूर्ण दिव्य अस्त्रोंको जानते हैं; उससे निश्चय ही देवता असुर और गन्धर्वोंके सहित सम्पूर्ण लोकको अपने दिव्य अस्त्रोंके प्रभावसे नष्ट करनेमें समर्थ हैं। पाण्डव लोग आपसे विशेष रूपसे हीन हैं तोभी उन्हें आपना शिष्य समझके वा मेरे अभाग्यके कारणसे ही आप सदासर्व्वदा पाण्ड-वोंके विषयमें क्षमा किया करते हैं।

सञ्जय बोले, महाराज! द्रोणाचार्य्य तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनके इसी प्रकार बहुतसे वचनोंको सुनके कोपित और उत्तेजित होकर क्रोध-पूर्व्वक उनसे ऐसे वचन बोले, हे दुर्य्योधन! मैं वृद्ध होकर भी परम शक्तिके अनुसार युद्ध करता हूं तोभी तुम मेरे विषयमें शङ्का कर रहे हो। जो हो इसके अनन्तर अब मैं तुम्हारे विज-यकी अभिलाषासे नीच कर्म्म करनेमें प्रवृत्त होऊंगा। ये सब सेनाके पुरुष विशेष रूपसे

अस्त्र शस्त्रोंकी विद्याकी नहीं जानते, मैं अस्त्रज्ञ होकर भी इन लोगोंका नाश करूंगा। जब तुम मुझे आज्ञा देते हो तो चाहे शुभ हो अथवा अशुभ ही होवे मैं अवश्य ही उस कार्य्यको करनेमें तत्पर होऊंगा। हे राजन्! मैं इन अस्त्रोंको स्पर्श करके शपथ करता हूं कि आज मैं पराक्रम प्रकाशित करके युद्धभूमिके बीच समस्त पाञ्चाल योद्धाओंका नाश करके तब पीछे अपना कवच उतारूंगा। हे कुरुराज दुर्य्योधन! तुम जो कुन्तीपुत्र अर्ज्जुनको थका हुआ समझ रहे हो वह तुम्हारा केवल भ्रम मात्र है, मैं यथार्थ रूपसे उसके बल और पराक्रमके विषयको वर्णन करता हूं चित्त लगा कर सुनो। उस सव्यसाची अर्ज्जुनके क्रुद्ध होने पर देवता गन्धर्व्व यक्ष वा राक्षस कोई भी उसे पराजित करनेका उत्साह नहीं कर सकते। खाण्डव वन जलानेके समय जब भगवान इन्द्र जलकी वर्षा करने लगे उस समय जिस महात्मा अर्ज्जुनने अपने अस्त्रोंके प्रभावसे उन्हें निवारण किया था और उस समय यक्ष सर्प तथा दैत्य आदि जो कोई अपने बलसे मतवारे होकर उसके सम्मुख उपस्थित हुए, पुरुषश्रेष्ठ अर्ज्जुनने उस समय सन्मुख उपस्थित हुए उन सम्पूर्ण प्राणियोंका नाश किया था वह सब वृत्तान्त तुम्हें भी विदित हैं। देखिये घोषयात्राके समय जब चित्रसेन आदि गन्धर्व्व तुम लोगोंको हरण करना चाहते थे तब दृढ़ धनुर्द्धारी अर्ज्जुनने ही उनको पराजित करके तुम्हें छुड़ाया था। निवातकवच दैत्य सदासे देवतोंके शत्रु थे, देवता लोग किसी प्रकारसे भी उन दैत्योंका नाश नहीं कर सके; परन्तु पुरुषश्रेष्ठ अर्ज्जुनने उन निवातकवच दैत्योंको तथा हिरण्यपुर वासी सहस्रों दानवोंका वध किया था; इससे ऐसे पराक्रमी अर्ज्जुनको मनुष्य किस भांति पराजित करनेमें समर्थ हो सकेगा! हे प्रजानाथ दुर्य्योधन। हमलोग विशेष रूपसे यत्नपूर्व्वक युद्ध कर रहे हैं तो भी अर्ज्जुन जिस प्रकार तुम्हारी सेनाका नाश कर रहा है उसे तुम प्रत्यक्ष देख रहे हो।

सञ्जय बोले, महाराज! द्रोणाचार्य्य जब इसी भांति अर्ज्जुनकी प्रशंसा करने लगे; तब दुर्य्योधन क्रुद्ध होकर फिर उनसे यह वचन बोले,—आज मैं दुःशासन कर्ण और मेरे मामा शकुनि,—हम लोग एकत्रित होकर सेनाको दो हिस्से में विभक्त करके युद्धभूमिमें अर्ज्जुनका नाश करेंगे।

महाराज! भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्य दुर्य्योधनके वचनको सुन कर कुछ भी प्रतिवाद न करके हंसते हंसते उनसे यह बोले—महाराज! तुम्हारा मङ्गल होवे, परन्तु प्रभावमें जलती हुई अग्निके समान युद्धमें अक्षय स्वरूप क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ गाण्डीव धनुष धारण करनेवाले अर्ज्जुनका वध कर सके पृथ्वीके बीच ऐसा क्षत्रिय योद्धा कौन है? कोई भी तो नहीं दीख पड़ता है। मनुष्योंकी तो कुछ बात ही नहीं हैं, यदि अर्ज्जुन अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके युद्धभूमिके बीच स्थित रहे तो यक्षोंके स्वामी कुवेर, इन्द्र, यमराज, वरुण असुर, सर्प और राक्षस आदि कोई भी अर्ज्जुनका वध करनेमें समर्थ नहीं हैं। हे राजन्! तुमने जो कुछ कहे मूढ़ पुरुष ही ऐसे वचनोंको कहा करते हैं। कौन पुरुष अर्ज्जुनके सङ्ग युद्धमें प्रवृत्त होकर कुशलपूर्व्वक लौट कर घर जा सकता है? परन्तु तुम अत्यन्त ही पाप-बुद्धिसे युक्त क्रूर और सबके ऊपर शङ्का करते रहते हो; इस ही कारण जो पुरुष तुम्हारे हितके कार्य्योंमें रत हैं, उनके विषयमें इसी प्रकार कटूक्ति किया करते हो। हे राजेन्द्र! तुम भी तो श्रेष्ठ क्षत्रिय कुलमें उत्पन्न हुए हो; और उस कुन्तीपुत्र अर्ज्जुनके सङ्ग सदा युद्ध करनेकी इच्छा करते रहते हो; इससे तुम रणभूमिमें उसके सम्मुख जाकर

नौद्रही उसका नाश करो, विशेष करके तुम ही इस शत्रुताके मूल स्वरूप हो; तब इन निरपराधी राजाओंके नाशकी क्या आवश्यकता है? तुम स्वयं युद्ध भूमिके बीच अर्ज्जुनके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त होजाओ। हे गान्धारी पुत्र! सम्पूर्ण अनिष्टके मूल स्वरूप जुआडी बुद्धिमान और चत्रिय धर्म्ममें रत तुम्हारा मामा शकुनि अर्ज्जुनके विरुद्ध युद्धको करने गमन करे। वह कुटिल, कपटी शठ दुष्टोंमें अग्रणी है, उसीने बाजी लगाके जूआ खेला था; इस समय युद्धमें भी शकुनि पाण्डवोंको पराजित करेगा इसमें सन्देह नहीं है। और तुमने हर्ष पूर्व्वक कर्णके सङ्ग अज्ञानताके कारण बार बार राजा धृतराष्ट्रके समीप जैसे व्यर्थ बड़ाई की थी, कि "हे पिता! मैं, कर्ण और मेरा भाई दुःशासन, हम तीन पुरुष युद्धभूमिमें पाण्डुपुत्रोंका नाश करेंगे।" पहिले प्रायः प्रति सभामें ही तुम इसी भांति अपनी बड़ाई किया करते थे; इस समय कर्ण आदि वीरोंके सङ्ग मिलके उस प्रतिज्ञाको पूर्ण करके अपना वचन सत्य करो। यह देखो अजेय शत्रु पाण्डुपुत्र अर्ज्जुन तुम्हारे आगाड़ी स्थित है। यदि तुम चत्रिय धर्म्मकी रचा करो, तो इस युद्धमें विजयलाभकी अपेचा तुम्हारी मृत्यु, भी प्रशंसनीय गिनी जावेगी। हे दुर्योधन। इस पृथ्वी पर तुमने दान, अध्ययन और भोग आदि बहुतकुछ किया है, अधिक क्या कहा जावे, तुमने इच्छानुसार सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य लाभ किया है, तुम देवता और पितरोंके ऋणसे मुक्त होकर एक प्रकार कृतकार्य्य भी होगये हो। इससे अब भय मत करो, स्वयं अर्ज्जुनके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हो जाओ। द्रोणाचार्य्य ऐसा वचन कहके जिस स्थान पर राजा लोग युद्ध करनेके वास्ते तैय्यार थे, वहां पर उपस्थित हुए; और राजा दुर्योधन भी सेनाके दो भाग बना कर युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए।

१८२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! रात्रिके तीन भाग व्यतीत हुए और एक भाग बाकी था; उस समयमें फिर हर्षित होके कौरव और पाण्डव-लोग महाघोर संग्राम करने लगे। तिसके अनन्तर सूर्य्यके आगाड़ी स्थित अरुण चन्द्रमाका सम्पूर्ण प्रकाश हरण करते हुए सूर्य्यको लाल वर्ण करके उदय हुए उस समय आकाशमें अरुणाई छागई। इसी समय जब कौरवोंकी सेना दो हिस्सोंमें विभक्त हुई, तब द्रोणाचार्य्य दुर्योधनको आगाड़ी करके सोमक पाण्डव और पाञ्चाल योद्धाओंकी ओर दौड़े।

श्रीकृष्णचन्द्र कौरवोंकी सेनाको दो हिस्सोंमें विभक्त हुई देखकर अर्ज्जुनसे बोले, हे सव्यसाची अर्ज्जुन! तुम इन शत्रुओंको बांयीं ओर कर दो। अर्ज्जुन श्रीकृष्णसे "ऐसा ही होवे" यह वचन कहके धनुर्द्धारियोंमें अग्रगण्य द्रोणाचार्य्य और कर्णको बायीं ओरकी सेनामें किया। युद्ध-भूमिके बीच स्थित शत्रुनाशन भीमसेन श्रीकृष्णके अभिप्रायको समझ कर अर्ज्जुनसे बोले, हे अर्ज्जुन! मैं जो कुछ कहता हूं, उसे सुनो। चत्रियोंकी माता जिस कार्य्यके वास्ते पुत्र उत्पन्न करती हैं उसका समय अब उपस्थित हुआ है। हे योद्धाओंमें श्रेष्ठ अर्ज्जुन! ऐसा समय प्राप्त होने पर भी यदि तुम अपने कल्याणके वास्ते उपाय नहीं करोगे, तो अत्यन्त नृशंसताका कार्य्य कहा जावेगा; और पृथ्वीके बीच तुम्हारी अकीर्त्ति होवेगी, इससे वामभागमें स्थित कौरवोंकी सेनाको भेद करके अपने पराक्रमके अनुसार सत्य धर्म्म यश और लक्ष्मीके समीप अऋणी होजाओ।

महाराज। श्रीकृष्णकी आज्ञासे अर्ज्जुन और भीमसेनने द्रोणाचार्य्य और कर्णको अतिक्रम करके सम्पूर्ण सेनाके योद्धाओंको आक्रमण किया। जब वे दोनों पराक्रमी वीर अपने अस्त्र रूपी अग्निसे तुम्हारी सेनाके शूरवीर चत्रिय योद्धाओंको भस्म करते हुए तुम्हारी सेनाके

प्रविष्ट हुए, उस समय तुम्हारी सेनाके मुख्य मुख्य योद्धा लोग अपनी शक्तिके अनुसार पराक्रमको प्रकाशित करके भी निवारण करनेमें समर्थ नहीं हुए। दुर्योधन, कर्ण और सुबलपुत्र शकुनि उन दोनों वीरोंके ऊपर अनगिनत बाणोंकी वर्षा करने लगे। अस्त्र-शस्त्रोंकी विद्या जाननेवाले अर्जुन उन लोगोंके चलाये हुए बाणोंको अपने बाणजालसे निवारण करके लगातार उन लोगोंके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। इसी प्रकार हस्त-लाघवके सहित अर्जुनने उन लोगोंके चलाये हुए अस्त्रशस्त्रोंको निवारण करके उन हर एक योद्धाओंको दश दश बाणोंसे बिद्ध किया। उस समय धूलिके उड़ने बाणोंके चलने और शूर-वीरोंके सिंहनादसे वह रात्रि अन्धकारमय होकर भयङ्कर बोध होने लगी। उस समय सम्पूर्ण दिशा, आकाश तथा पृथ्वी कुछ भी नहीं दीख पड़ते थे, विशेष करके सेनाके पुरुषोंके पांवके धक्केसे जो धूलि उड़ी उससे सब कोई रणभूमिके बीच अन्धेकी भांति आंखोंको मूंदके युद्धभूमिमें स्थित हुए। उस समय क्या शत्रुसेनाके पुरुष और क्या अपनी सेनाके पुरुष कोई भी नहीं चीन्ह पड़ते थे, उस समय राजा लोग केवल अनुमानसे ही युद्ध करने लगे। रथी योद्धा रथ-रहित होके आपसमें बाहु युद्ध और केशोंको आकर्षण करते हुए युद्ध करने लगे। कितने ही रथी घोड़े सारथीसे रहित होनेपर भयभीत होकर पृथ्वीपर गिरके चेष्टारहित हुएकी भांति मालूम होते थे। इसी भांति घुड़वार योद्धा लोग भी घोड़ोंके सहित पर्वतके समान मरे हुए हाथियोंके समूहमें छिपकर मरे हुए की भांति दिखाई देते थे। इस ही समय द्रोणाचार्य संग्रामभूमिमें उत्तर ओर गमन करके धूएंसे रहित जलती अग्निकी भांति मालूम होने लगे, पाण्डवोंकी सेनाके पुरुष द्रोणाचार्यको युद्धभूमिसे पृथक् देखकर उनसे भयभीत होकर कांपने लगे। महाराज। उस समय शत्रु लोग द्रोणाचार्यको दिव्य श्रीसे युक्त जलती हुई अग्निके समान तेजस्वी देखकर भयभीत उत्साह रहित होकर युद्धभूमिसे विचलित होने लगे। जैसे दानव लोग देवराज इन्द्रको पराजित करनेमें उत्साह रहित होगये थे, वैसे ही पाण्डवोंने शत्रुसेनाको आवाहन करनेवाले मदचूते हाथोकी भांति द्रोणाचार्यको पराजित करनेकी आशा नहीं किया। राजाओंके बीच कितने ही योद्धा उत्साह रहित और भयभीत होगये थे; परन्तु कोई कोई निर्भयचित्तवाले शूरवीर पुरुष अत्यन्त ही क्रुद्ध होकर ओठ काटते दांत कटकटाते और अस्त्रोंको चलाते हुए उनकी ओर गमन करने लगे। कितने ही महाबलवान शूरवीर योद्धा लोग अपने प्राणकी आशा त्यागके वेग पूर्व्वक द्रोणाचार्यकी ओर दौड़े। विशेष करके पाञ्चालयोद्धा द्रोणाचार्यके बाणोंसे पीड़ित तथा भयभीत होकर भी महाघोर संग्राम करने लगे।

इसी समय युद्धदुर्म्मद द्रोणाचार्य जब इस प्रकार प्रबल वेगके सहित युद्धभूमिमें घूमने लगे, तब पाञ्चालराज द्रुपद और मत्स्यराज विराट युद्ध करनेके वास्ते उनके सम्मुख उपस्थित हुए। महाराज! तिसके अनन्तर राजा द्रुपदके तीन पौत्र और महाधनुर्द्धर चेदिदेशी योद्धा लोग द्रोणाचार्यकी ओर दौड़े। उन लोगोंको सम्मुख आते देख द्रोणाचार्यने अपने तेजबाणोंसे राजा द्रुपदके तीनों पौत्रोंको प्राण रहित करके पृथ्वीमें गिरा दिया। तिसके अनन्तर भरद्वाजपुत्र महारथी द्रोणाचार्यने युद्धभूमिमें स्थित चेदी, केकय, सृञ्जय और सम्पूर्ण मत्स्यदेशीय योद्धाओंको पराजित किया। सेनाके पुरुषोंको भागते देख राजा द्रुपद और विराट क्रुद्ध होकर द्रोणाचार्यके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। अनन्तर क्षत्रियोंके नाश

करनेवाले द्रोणाचार्य्यने उन लोगोंकी बाणा वर्षाको निवारण करके राजा द्रुपद और विराटको अपने बाणजालसे छिपा लिया। तब क्रुद्ध स्वभाववाले वे दोनो राजा अत्यन्त क्रुद्ध होकर द्रोणाचार्य्यको अनगिनत बाणोंसे विद्ध करने लगे। महाराज! उस समय द्रोणाचार्य्यने अत्यन्त क्रुद्ध होकर तीक्ष्ण धारवाले भालेसे उन दोनो राजाओंके धनुषको काट दिया। धनुष कटनेपर वे दोनों पराक्रमी राजा बहुत ही क्रुद्ध हुए अनन्तर विराटने दश तोमर और दश बाण चलाये; राजा द्रुपदने सर्पके समान सुवर्णभूषित लौहमयी एक शक्ति ग्रहण करके द्रोणाचार्य्यको ओर चलाई। उसे देखकर द्रोणाचार्य्यने तेज धारवाले भालोंसे राजा विराटके बाण और तोमरोंको काटके फिर अनगिनत बाणोंसे राजा द्रुपदकी भुजासे छूटी हुई सुवर्णभूषित उस प्रकाशमान शक्तिको निवारण किया। तिसके अनन्तर शत्रुनाशन द्रोणाचार्य्यने तेज धारवाले दो भल्लोंसे राजा विराट और द्रुपदका वध करके उन दोनों वीरोंको यमपुरीमें भेज दिया।

महाराज! जब राजा द्रुपद और विराट, अनगिनत केकय चेदी मत्स्य पाञ्चालदेशीय बहुतेरे शूरवीर योद्धा तथा राजा द्रुपदके तीन पौत्र मारे गये, तब महाबली धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यके इस भयङ्कर कर्मको देखकर दुःख और क्रोधसे परिपूर्ण होके सम्पूर्ण महारथियोंके बीच इस प्रकार प्रतिज्ञा की,-- आज यदि मैं युद्धभूमिमें द्रोणाचार्य्यके निकटसे पराजित होऊं, अथवा यदि आज द्रोणाचार्य्य मेरे हाथसे मुक्त होसकें; तो मैं यश कीर्त्ति धर्म्म और क्षत्रियोंके धर्म्मसे भ्रष्ट होजाऊंगा।" इसी भांति वह पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्न सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंके सम्मुख ऐसी प्रतिज्ञा करके द्रोणाचार्य्यके वधके वास्ते रणभूमिमें [illegible] उस ही समय पाण्डव और पाञ्चाल सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग इकट्ठे होकर द्रोणाचार्य्यके ऊपर प्रहार करने लगे। उसे देखकर अपने मुख्य मुख्य बलवान भाइयोंके सहित राजा दुर्य्योधन कर्ण और सुबलपुत्र शकुनि द्रोणाचार्य्यको रक्षा करनेमें प्रवृत्त हुए, जब द्रोणाचार्य्य रणभूमिमें तुम्हारी ओरके महारथी योद्धाओंसे रक्षित हुए उस समय पाञ्चाल योद्धा लोग यत्नवान होकर भी द्रोणाचार्य्यको ओर देखनेमें समर्थ न हुए। तब भीमसेन अत्यन्त क्रुद्ध होकर कठोर बचनोंसे मानो धृष्टद्युम्नको उत्तेजित करते हुए कहने लगे,—महाराज द्रुपदके कुलमें उत्पन्न होकर और सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्रोंकी विद्या जानके तथा क्षत्री धर्म्म अवलम्बन करनेवाला कौन पुरुष सम्मुख स्थित शत्रुओंके विषयमें उपेक्षा कर सकता है? विशेष करके पिता और पुत्रोंके बधको देखकर राजाओंके बीच प्रतिज्ञा करके भी कौन शत्रुको युद्धभूमिके बीच परित्याग कर सकता है? इस समय द्रोणाचार्य्य धनुष बाणरूपी काष्ठोंसे अग्निके समान प्रज्वलित होकर जलती हुई अग्निकी भांति क्षत्रियोंको भस्म कर रहे हैं। इससे तुम लोग इस ही स्थानपर स्थित होके मेरा पराक्रम देखो। पाण्डवोंकी सेनाको निःशेषित करनेके पहिले ही मैं स्वयं द्रोणाचार्य्यके सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते उनके समीप गमन करूंगा, ऐसा वचन कहके भीमसेनने अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपने बाणजालसे कुरुसेनाके योद्धाओंको तितर बितर करके व्यूहके बीच प्रवेश किया। उस ही समय पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्न भी उस महाव्यूहके बीच प्रवेश करनेमें प्रवृत्त हुए; उस समय दोनों ओरके वीरोंका महाघोर भयङ्कर संग्राम होने लगा। महाराज! उस रात्रिके समय सूर्य्य उदय होनेके पहिले जैसा युद्ध आरम्भ हुआ मैंने पहिले वैसा युद्ध न कभी देखा और न सुना होगा। उस समय बहुतेरे रथी और

पैदल योद्धाओंके मरनेसे लोथके ऊपर लोथ गिरने लगी; कितने ही पुरुषोंके शरीरकी हड्डियें छितरा गयीं; कितने ही योद्धा युद्धभूमिमें भागते हुए दूसरे वीरोंके अस्त्रोंकी चोटसे मरकर पृथ्वीमें गिरने लगे। कितने ही पुरुष पीछे और दाहिने बायें स्थित शत्रु सेनाके योद्धाओंके अस्त्रोंसे पीड़ित होने लगे। इसी भांति उस समय महाघोर संग्राम होने लगा, तब क्षण भरके बीच सूर्य्यदेव प्रकाशित हुए।

१८४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज! सहस्र किरण-धारी भगवान सूर्य्यको उदय होते देख, युद्ध-भूमिमें स्थित कौरव और पाण्डवोंको सेनाके योद्धा लोग व्यूहबद्ध होकर ही सूर्य्यदेवकी उपासना करने लगे। उस समय तपाये हुए सुवर्णके समान प्रकाशसे युक्त सूर्य्यके उदय होने पर सम्पूर्ण जगत् प्रकाशित हुआ, और दोनों सेनाके वीरोंका आपसमें फिर महाघोर संग्राम होने लगा, सूर्य्यके उदय होनेके पहिले जो पुरुष जिसके सङ्ग द्वैरथ युद्धमें प्रवृत्त थे फिर वह लोग उस ही पुरुषके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। घुड़सवार रथियोंके सङ्ग गजसवार घुड़सवारोंके सङ्ग कितने ही पैदल सेनाके योद्धा लोग गजसवारोंके सङ्ग और कितने ही पैदल सेनाके पुरुष पैदल सेनाके योद्धाओंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए, उस समय महाघोर संग्राम होने लगा। महाराज! सम्पूर्ण योद्धा लोग रातके समय अपनी शक्तिके अनुसार युद्ध करके थक गये थे इस समय सूर्य्यकी धूपसे अत्यन्त ही उत्तापित होके भूख प्याससे विकल होकर एकवारगी विह्वल होगये। उस समय लगातार शंख मृदङ्ग भेरी आदि बाजे बजने लगे, हाथी चिग्घाड़ने लगे शूरवीरोंके सिंहनाद और धनुषटङ्कार सुनाई देने लगे। पैदल चलनेवाले योद्धा सिंहनाद करके अस्त्र चलाते हुए शत्रुओंकी ओर दौड़ने लगे; उस समय चलते हुए अस्त्र शस्त्रोंके खटपटाहटका महाघोर शब्द सुन पड़ता था। घोड़े हिनहिनाते हुए इधर उधर दौड़ने लगे और रथोंकी घरघराहटका शब्द इन सम्पूर्ण शब्दोंके सङ्ग मिल कर आकाश मण्डल और सम्पूर्ण दिशामें परिपूरित होगया। महाराज! उस समय अनेक भांतिके अस्त्रोंकी चोटसे कितने ही पुरुषोंके शरीर क्षतविक्षत होगये, कितने ही मर गये। कितने ही घायल होके पृथ्वीमें गिरते और उठके खड़े होजाते थे; और कितने ही पुरुषोंके हाथ पाव आदि अंग कट जानेसे वे लोग चिल्ला रहे रहे थे, उस समय रणभूमिमें चारों ओर आर्त्तनाद सुनाई पड़ता था; उससे वह रणभूमि अत्यन्त ही भयङ्कर दीख पड़ती थी। इसी भांति जब दोनों सेनाके सम्पूर्ण योद्धा युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए, तब दोनों ओरके शूरवीर पुरुष इस भांति मोहित होगये, कि उस समय किसीको अपनी और शत्रु सेनाके पुरुषोंका विचार भी न रहा; जिसने उस समयमें जिसको अपने सम्मुख पाया उसीके ऊपर अस्त्र शस्त्रोंसे प्रहार करने लगा। हाथियोंके शरीर पर शूरवीर योद्धा लोग तलवारसे प्रहार करने लगे। जब दोनों सेनाके शूरवीर हाथसे तलवार आदि शस्त्र चलाने लगे, तब उन अस्त्र शस्त्रोंकी खटपटाहट शब्द सुनाई देने लगा, क्रमसे दोनों सेनाके वीर लड़ते लड़ते तलवार तोमर परशु आदि अस्त्रोंको चलाते हुए महाघोर युद्ध करने लगे। अनन्तर हाथी, घोड़े और मनुष्योंके रुधिरसे प्रकट होकर अस्त्र शस्त्ररूपी मछलियोंसे युक्त मांस मज्जारूपी कीचड़से परिपूरित एक नदी उत्पन्न हुई। शूरवीरोंका आर्त्तनाद ही नदीके प्रवाहका शब्दरूपी बोध होता था; वस्त्र और पताका उसमें फेन रूपी दीख पड़ते थे।

लोक रूपी समुद्र पर्य्यन्त इस नदीकी सीमा थी उसमें मृत पुरुषोंके शरीर बहते हुए दिखाई दे रहे थे। महाराज! हाथी घोड़े आदि सम्पूर्ण वाहन रात्रिके युद्धमें बाण शक्ति आदि अस्त्रोंसे पीड़ित होकर बिकल हो गये थे; इससे सबेरेके समय वे सम्पूर्ण वाहन थकावटके कारण चलने फिरनेसे रहित होकर चित्र लिखेके समान जहां तहां खड़े होकर स्थित हुए। उस समय कटी हुई भुजा कवच और कुण्डलोंसे भूषित बहुतेरे शूरवीरोंके सिर अनेक प्रकारके अस्त्र शस्त्र मरे और अधमरे पुरुषोंका शरीर तथा अनेक मांसभक्षी जीव जन्तुओंसे वह रणभूमि एकबारगी इस प्रकार परिपूरित होगई कि उस समय रथके चक्के भी नहीं दीख पड़ते थे और उस समय रुधिर तथा मांसमय कीचड़ोंमें रथके चक्र इधर उधर फंसने लगे। तब महाबलवान हाथीके समान पराक्रमी उत्तम घोड़े बाणोंसे पीड़ित तथा इधर उधर दौड़नेसे थक गये थे तौ भी यथा शक्ति अपने पराक्रमके अनुसार अत्यन्त कष्टसे सहित उन रथोंको खींचते हुए गमन करने लगे। महाराज! उस समय केवल द्रोणाचार्य्य और अर्ज्जुनको छोड़के दोनों सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग थकके तथा अस्त्रोंकी चोटसे पीड़ित होकर भयभीत होगये। उस समय ऊपर कहे हुए वे दोनों वीर सम्पूर्ण प्राणियोंके संहार करनेवाले और भयभीत पुरुषोंके आश्रय स्वरूप हुए; और इन दोनों वीरोंके अस्त्र शस्त्रोंसे मरके दोनों सेनाके योद्धा लोग यमपुरीमें गमन करने लगे। हे राजेन्द्र! कौरव और पाञ्चाल योद्धाओंकी वह बड़ी सेना उन दोनों महावीर पुरुषोंके अस्त्र प्रहारसे व्याकुल होकर भी महाघोर संग्राम करनेमें प्रवृत्त हुई। उस समय कोई पुरुष युद्ध करते हुए चीन्ह भी नहीं पड़ते थे; यमराजके क्रीड़ास्थलके समान तथा कादरोंके भयको बढ़ानेवाले दोनों सेनाके शूरवीरोंके भयङ्कर संग्रामके समय वीर पुरुषोंके पांवके धक्केसे जो धूलि उड़ी उससे वह रणभूमि परिपूरित होगई। उस समय कर्ण, द्रोणाचार्य्य अर्ज्जुन युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल, सहदेव, पांचालराजपुत्र शिखण्डी धृष्टद्युम्न सात्यकि दुःशासन, अश्वत्थामा, दुर्योधन, सुबलपुत्र शकुनि कृपाचार्य्य मद्रराज शल्य, कृतवर्म्मा; सम्पूर्ण दिशा, पृथ्वी, अपना शरीर तथा दूसरे पुरुषोंके शरीर इत्यादि उस समय कुछ भी नहीं दीख पड़ते थे। उस समय सम्पूर्ण प्राणियोंको विस्मित करनेवाले अत्यन्त भयङ्कर लाल वर्णके बादल प्रकट हुए तब फिर सब कोई सन्ध्याकालका समय ही बोध करने लगे। उससे वहां कौरव पाण्डव पाञ्चाल सम्पूर्ण दिशा आकाश पृथ्वी समानभूमि तथा ऊंची नीची भूमि इत्यादि उस समय कुछ भी नहीं मालूम होते थे। उस समय विजयकी इच्छा करनेवाले योद्धा लोग अपनी ओरके पुरुषों तथा शत्रुसेनाके योद्धाओंने अपने हाथसे टटोलके जिसको पाया उसहीका प्राणनाश किया। अनन्तर वायु वेगपूर्ब्बक बहने लगा, और धूलिसे आकाशमण्डल परिपूरित होगया था, परन्तु शूरवीर पुरुषोंके रुधिर बहनेसे रणभूमिमें धूलिका उड़ना बन्द हुआ। उस समय हाथी, घोड़े रथी और पैदल सेनाके योद्धा लोग रुधिरपूरित शरीरसे युक्त होकर फूले हुए पलाश तथा कल्पवृक्षकी भांति शोभित होने लगे। महाराज! दुर्योधन, कर्ण, दुःशासन और द्रोणाचार्य्य, तुम्हारी सेनाके ये चारों महारथी योद्धा पाण्डवोंकी ओरके चार महारथियोंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। अपने भाइयोंके सहित राजा दुर्योधन नकुलसहदेवके सङ्ग, कर्ण भीमसेनके साथ और द्रोणाचार्य्य अर्ज्जुनके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। उस समय सम्पूर्ण सेनाके शूरवीर योद्धा लोग इन महारथियोंके समीप स्थित होकर उन लोगोंके

महाभयङ्कर अलौकिक युद्धको देखने लगे। सम्पूर्ण रथी लोग विस्मित होकर महापराक्रमी महारथ योद्धाओंके अस्त्रकौशल और रथ चलानेकी गतिके सहित महाघोर विचित्र युद्धको देखने लगे! उपर कहे हुए द्रोणाचार्य आदि महारथी योद्धा लोग यत्नवान होकर वर्षाकालके जल वर्षानेवाले बादलोंकी भांति अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। वे सब पुरुष-श्रेष्ठ महाबलवान महात्मा योद्धा लोग सूर्य्य-किरणके समान प्रकाशमान रथोंपर चढ़के बिजलीकी भांति शोभित होने लगे। महाराज! उस समय और भी बहुतेरे महाधनुषधारी योद्धा क्रुद्ध होकर धनुष चढ़ाके यत्नपूर्व्वक मतवारे हाथीकी भांति एक दूसरेकी ओर दौड़े। परन्तु बिना समयके पहुंचे किसी पुरुषकी मृत्यु नहीं होती इस कारण एकवारगी सबका नाश नहीं हुआ। उस समय कहीं कटी हुई भुजा, कुण्डलभूषित बहुतेरे सिर, धनुष बाण, प्रास, तलवार फरसे पट्टिश चूर, नाराच, शक्ति, तोमर तथा और भी बहुतसे भांति भांतिके अस्त्र शस्त्र मृत पुरुषोंके शरीर टूटे हुए रथ, और मरे हुए हाथी घोड़ोंके शरीर इधर उधर पड़े थे। कहीपर नाना भांतिके आभूष-णोंसे भूषित शूरवीर योद्धा और सारथीके मारे जानेसे उनके रथके घोड़े छूछे रथको लेकर रणभूमिके बीच इधर उधर दौड़ते हुए दीख पड़ते थे; उस समय वे छूछे रथ घोड़ोंके दौड़नेसे इस प्रकार दिखाई देने लगे जैसे वायुके वेगसे उड़ते हुए वस्त्र दीख पड़ते हैं। कहीं कहीं चंवर, कवच, ध्वजा, छत्र, अनेक भांतिके आभूषण अस्त्र सुगन्धित माला किरीट मुकुट किङ्किणि मणिजटित कण्ठा, मुहर और चूड़ा-मणि आदि नाना भांतिकी वस्तुओंके पड़े रह-नेसे वह रणभूमि तारासमूहसे युक्त आकाश-मण्डलकी भांति शोभित होने लगी। अनन्तर अभिमानी राजा दुर्य्योधन क्रुद्ध होकर क्रोधी नकुलके सङ्ग युद्ध करने लगे। महाराज! माद्रीपुत्रने तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनकी दाईं ओर करके उन्हें एक सौ बाणोंसे विद्ध किया; उस समय वहांपर महाघोर तुमुल कोलाहल होने लगा। तिसके अनन्तर क्रुद्धस्वभाववाले दुर्य्यो-धनने नकुलके दाईं ओर होकर उनके परा-क्रमको सहन नहीं किया; बल्कि उन्होंने शीघ्र ही नकुलको दाईं ओर करनेकी चेष्टा करी। उस समय युद्धविद्या जाननेवाले परा-क्रमी नकुल दुर्य्योधनको निवारण करने लगे। अनन्तर नकुलने कुरुराज दुर्य्योधनको र भांतिसे निवारित और अपने बाणजालसे पीड़ि करके उन्हें युद्धभूमिसे पराजित किया; औ तुम्हारी दुष्टनीतिके कारण उन्होंने पहिले ज कुछ क्लेश सहन किया था, उसे स्मरण कर दुर्य्योधनको खड़ा रह। खड़ा रह! कह आवाहन करने लगे, उससे सम्पूर्ण योद्धा लो नकुलकी प्रशंसा करने लगे।

१८५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज। तिसके अनन्तर दुःशासन क्रुद्ध होकर अपने रथके वेगसे पृथ्वीको कंपाते हुए नकुलकी ओर दौड़े। पराक्रमी दुःशासनको वेगपूर्व्वक अपनी ओर आते देख, माद्रीपुत्र नकुलने शीघ्रताके सहित एक भल्ल स्त्रसे शिरस्त्राणके सहित उनके सारथीका सिर काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। महाराज! दुःशा सनके सारथीका सिर नकुलके अस्त्रसे किस समय कटके पृथ्वीमें गिर पड़ा, उसे दुःशासन तथा सेनाके कोई पुरुष भी न जान सके। जब सारथीसे रहित होकर घोड़े इधर उधर दौड़ने लगे, तब दुःशासनने समझा, कि मेरा सारथी मारा गया। उस समय घोड़ोंकी विद्या जान नेवाले दुःशासन हस्तलाघवके सहित स्वयं घोड़ोंको चलाते हुए युद्ध करने लगे। इस

समय जब दुःशासन सारथीसे रहित होनेपर भी स्वयं घोड़ोंको चलाते हुए रणभूमिमें निर्भयचित्तसे भ्रमण करते हुए युद्ध करने लगे, तो तुम्हारी सेना तथा शत्रुसेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग उनके इस कठिन कर्म्मकी प्रशंसा करने लगे। उस समय सहदेवने शीघ्रताके सहित अपने तीक्ष्ण बाणोंसे उनके घोड़ोंके शरीरमें प्रहार किया; तब दुःशासनके रथके घोड़े सहदेवके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर वेगपूर्व्वक चारों ओर दौड़ने लगे। उस समय दुःशासनको घोड़ोंकी रास ग्रहण करनेके समय धनुष त्यागना पड़ा और धनुष ग्रहण करनेके समय घोड़ोंकी बागडोर छोड़नी पड़ी; इतने ही समयके बीच माद्रीपुत्र सहदेवने दुःशासनके ऊपर अनेक बाण चलाये; तब कर्ण दुःशासनकी रक्षा करनेके-वास्ते सहदेवके समीप स्थित हुए। कर्णको सहदेवकी ओर गमन करते देख भीमसेनने तीन भालोंसे कर्णके वक्षस्थलमें प्रहार करके सिंहनाद किया। अनन्तर कर्ण अत्यन्त क्रुद्ध होकर सहदेवके समीपसे लौटके सैकड़ों बाणोंसे भीमसेनको विद्ध करके उन्हें निवारण करने लगे; उस समय उन दोनों वीरोंका महाघोर तुमुल संग्राम होने लगा। वे दोनो क्रोधसे नेत्र लाल करके सिंहनाद करते हुए एक दूसरेकी ओर दौड़े। उस समय उन दोनो वीरोंके रथ इस भांति एक ही स्थान पर मिल गये कि उन लोगोंको बाण चलानेका बीचमें स्थान ही न रहा। इससे उन दोनों वीरोंको गदायुद्धमें प्रवृत्त होना पड़ा, अनन्तर भीमसेनने अपनी गदासे कर्णके रथको खण्ड खण्ड कर दिया यह भीमसेनका पराक्रम अद्भुत रूपसे दीख पड़ा, तब महाबलवान राधापुत्र कर्णने एक भयङ्कर गदा घुमाके भीमसेनकी ओर चलायी; भीमसेन गदासे कर्णकी चलायी हुई गदाको निवारण करके और एक भारी गदा उठाके अधिरथनन्दन कर्णकी ओर चलाई। उसे देखकर कर्णने पंखयुक्त महावेगशील दश बाणोंसे और उसके अनन्तर अनगिनत बाणोंसे भीमसेनकी चलाई हुई गदामें प्रहार किया; मन्त्रके प्रभावसे कर्णके धनुषसे छूटे हुए बाणोंके प्रहारसे फिर वह गदा वेगपूर्व्वक भीमसेनकी ओर चली। महाराज! जब वह गदा कर्णकी ओरसे घूमकर भीमसेनके रथपर गिरी; तब उस गदाकी चोटसे भीमसेनका सारथी मूर्च्छित हुआ और उनके रथकी ध्वजा टूटकर पृथ्वीमें गिर पड़ी। तब शत्रुनाशन भीमसेनने क्रुद्ध होकर आठ बाण ग्रहण कर कर्णके धनुष बाण और ध्वजाको लक्ष्य करके चलाये, और उन चोखे बाणोंसे सूतपुत्र कर्णके बाण सहित धनुष और रथकी ध्वजाको काटके गिरा दिया। अनन्तर पराक्रमी कर्णने दूसरा धनुष ग्रहण करके रथशक्ति चलाकर भीमसेनके भालू वर्णवाले चारों घोड़े और पृष्ठ-रक्षक योद्धाओंका वध किया। घोड़ोंके मरने और पृष्ठरक्षकोंसे रहित होने पर शत्रुनाशन भीमसेन इस प्रकार अपने रथसे कूदके नकुलके रथपर चढ़ गये जैसे सिंह एक स्थानसे उछलके दूसरे स्थानपर चला जाता है। महाराज! इधर सब अस्त्रशस्त्रोंके जाननेवाले महाबलवान गुरु शिष्य द्रोणाचार्य्य और अर्ज्जुन शीघ्रताके सहित अस्त्र साधते, धनुषपर रखते एक दूसरेकी ओर चलाते और रथकी विचित्र गतिसे युद्धभूमिके बीच घूमते तथा इन्द्रजालकी भांति अपने युद्ध कौशलसे सबके चित्तको मोहित करते हुए आश्चर्य्यमय युद्ध करने लगे। उस समय सम्पूर्ण योद्धा लोग द्रोणाचार्य्यके उस अद्भुत तथा आश्चर्य्यमय संग्रामको देखने लगे; परन्तु महावीर द्रोणाचार्य्य और अर्ज्जुन अपने रथकी विचित्र गतिसे भ्रमण करते हुए एक दूसरेको बाईं ओर करनेकी इच्छा करने लगे। उस समय दोनो सेनाके योद्धा लोग विस्मित होकर उन दोनों वीरोंके पराक्रमको देखने लगे। आकाशमें स्थित मांसको

इच्छा करनेवाले दो बाज पक्षियोंकी भांति द्रोणाचार्य्य और अर्ज्जुनका महाघोर संग्राम होने लगा। उस समय द्रोणाचार्य्यने अर्ज्जुनकी पराजयके निमित्त जिन जिन अस्त्रोंको प्रकट किया अर्ज्जुनने अपने अस्त्रोंके प्रभावसे उनके सम्पूर्ण अस्त्रोंको निवारण किया। महाराज! जब द्रोणाचार्य्य किसी भांति भी पाण्डुपुत्र अर्ज्जुनसे अधिक न हो सके,तब उन्होंने दिव्य अस्त्रोंको चलाना आरम्भ किया। उस समय ऐन्द्र,वायव्य,पाशुपत त्वाष्ट्र और वारुणास्त्र आदि जितने अस्त्र द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छूटकर अर्ज्जुनकी ओर चले, पराक्रमी अर्ज्जुनने उन सम्पूर्ण अस्त्रोंको अपने दिव्य अस्त्रोंसे निवारण किया। इसी भांति पाण्डुपुत्र अर्ज्जुनने जब अपने अस्त्रोंके प्रभावसे द्रोणाचार्य्यके दिव्य अस्त्रोंको निवारण किया, तब द्रोणाचार्य्यने परम दिव्यास्त्रोंको चला कर अर्ज्जुनको छिपा दिया, अधिक क्या कहा जावे उस समय द्रोणाचार्य्यने अर्ज्जुनको पराजित करनेकी इच्छासे जिन जिन अस्त्रोंको अर्ज्जुनकी ओर चलाया, अर्ज्जुनने उन अस्त्रोंके निवारण करने योग्य अपने दिव्य अस्त्रोंको प्रकट करके आचार्य्यके चलाये हुए सम्पूर्ण दिव्य अस्त्रोंको निष्फल कर दिया। अर्ज्जुनके अस्त्रोंसे अपने अस्त्रोंको निष्फल होते देख द्रोणाचार्य्यने मनही मन अपने शिष्य अर्ज्जुनकी प्रशंसा किया; और अपने शिष्य अर्ज्जुनको युद्धविद्यामें अत्यन्त ही निपुण देखकर पृथ्वीके सम्पूर्ण अस्त्रज्ञ पुरुषोंसे अपनेको अधिक समझने लगे; और द्रोणाचार्य्य यत्नवान होकर युद्धभूमिमें स्थित थे तो भी महात्मा राजाओंके बीच अर्ज्जुनसे निवारित होकर अधिक प्रसन्न हुए।

तिसके अनन्तर देवता गन्धर्व्व सहस्रों ऋषि और सिद्ध लोग युद्ध देखनेकी अभिलाषासे आकाशमें विमानो पर स्थित हुए। उस समय आकाशमण्डल धीरे धीरे अस्परा यक्ष और राक्षसोंसे परिपूर्ण होकर अत्यन्त ही शोभित होने लगा; उस समय आकाशमण्डलसे बार बार महात्मा द्रोणाचार्य्य और अर्ज्जुनके स्तुतिसूचक आकाशवाणी सुनाई देने लगी। जब उन दोनों महात्माओंके धनुषसे छूटे अस्त्र सम्पूर्ण दिशामें प्रकाशित होने लगे, तब उस समय आकाशमें इकट्ठे हुए ऋषि और सिद्ध लोग आपसमें कहने लगे, 'इस युद्धको न मनुष्य न आसुर न राक्षस और न गान्धर्व्व युद्ध ही कहा जा सकता है—यह निश्चय परम ब्राह्म युद्ध है ऐसा विचित्र और विस्मय उत्पन्न करनेवाला संग्राम न कभी देखा गया और न सुना ही गया था। कभी द्रोणाचार्य्य अर्ज्जुनको और कभी अर्ज्जुन द्रोणाचार्य्यको अतिक्रम करते थे, उस समय रणभूमिके बीच कोई पुरुष उन दोनों महाबलवान महात्मा पुरुषोंके छिद्रको देखनेमें समर्थ नहीं हुए। यदि भगवान रुद्र अपनेको दो हिस्से में विभक्त करके अपने सङ्ग आप ही युद्ध करें तो इस युद्धकी उपमा सकती है, इसके अतिरिक्त और किसी युद्धकी उपमा नहीं हो सकती। जिस भांति सम्पूर्ण अस्त्रशस्त्रोंका ज्ञान अकेले द्रोणाचार्य्यमें विद्यमान हैं, उसी भांति ज्ञान और योग दोनों ही अर्ज्जुनमें प्रतिष्ठित हैं, द्रोणाचार्य्य शूरता तथा वीरताके आधार हैं वैसे ही अर्ज्जुन भी बल और वीरताके आधार हैं। इससे इन दोनों महाधनुर्द्धारी पुरुषोंको रणभूमिके बीच कोई भी शत्रु पराजित करनेमें समर्थ नहीं हैं। परन्तु ये लोग यदि इच्छा करें तो देवतोंके सहित इस सम्पूर्ण जगतका नाश कर सकते हैं।" महाराज! उन दोनों पुरुष श्रेष्ठ महाधनुर्द्धर पराक्रमी वीरोंके अलौकिक युद्धको देखकर आकाशवासी देवता गन्धर्व्व यक्ष राक्षस सिद्ध ऋषि तथा पृथ्वी पर स्थित सम्पूर्ण प्राणी द्रोणाचार्य्य और अर्ज्जुनके विषयमें इसी भांतिके वचन आपसमें कहने

हुए उन दोनों महात्माओंकी प्रशंसा करने लगे। अनन्तर महाबुद्धिमान द्रोणाचार्य्यने अर्ज्जुन तथा आकाशवासी सम्पूर्ण प्राणियोंको विस्मित करके ब्राह्म अस्त्र चलाया; उससे पर्व्वत वन और समुद्रके सहित सम्पूर्ण पृथ्वी कांपने लगी, वायु प्रबल वेगसे बहने लगा और समुद्रका जल उथलित होने लगा। अधिक क्या कहा जावे उस समय जब द्रोणाचार्य्यने ब्रह्मअस्त्र चलाया, तब कौरव और पाण्डवोंकी सेनाके शूरवीर योडा तथा सम्पूर्ण प्राणी भयभीत होगये; परन्तु अर्ज्जुन युद्ध भूमिसे तनिकभी विचलित नहीं हुए, बल्कि द्रोणाचार्य्यके चलाये हुए ब्राह्मअस्त्रको ब्रह्मास्त्रसे ही निवारण किया; ब्राह्म अस्त्रके निवारित होने पर सम्पूर्ण दिशा फिर प्रकाशित हुईं। इसी भांति वे दोनों पराक्रमो वीर जब दिव्य अस्त्रोंको चलाकर एक दूसरेसे अधिक न हो सके तब दिव्यअस्त्रोंको न चलाकर शीघ्र ही एक दूसरेके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। महाराज। उस समय जब अस्त्र शस्त्रोंसे द्रोणाचार्य्य और अर्ज्जुनका संग्राम होने लगा, तब वहां पर कुछ भी मालूम नहीं होता था उस समय आकाशमण्डल बादलोंके समूह की भांति द्रोणाचार्य्य और अर्ज्जुनके बाणोंसे परिपूरित होगया उस समय आकाशचारी प्राणी भी आकाशमण्डलमें गमन करनेमें समर्थ नहीं हुए।

१८६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज। हाथी घोड़े और मनुष्योंके नाश करनेवाले उस महाघोर संग्रामके समय पराक्रमी दुःशासन धृष्टद्युम्नके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। उस समय धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यके सङ्ग युद्ध कर रहे थे, परन्तु तुम्हारे पुत्र दुःशासनके बाणोंसे पीड़ित होकर घोड़ोंके और रथके सहित दुःशासनको अपने बाणोंसे छिपा दिया। क्षण भरके बीच धृष्टद्युम्नके बाणजालसे ध्वजा सारथी और घोड़ोंके सहित दुःशासनका रथ ऐसा परिपूरित होगया, कि उस समय तनिक भी न दीख पड़ा। अधिक क्या कहा जावे, उस समय दुःशासन धृष्टद्युम्नके बाणोंसे पीड़ित होकर उनके सम्मुख खड़े होनेमें भी समर्थ नहीं हुए, पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्न दुःशासनको पराजित करके सहस्रों बाण चलाते हुए द्रोणाचार्य्यकी ओर गमन करने लगे। उसे देख हृदीकपुत्र कृतवर्म्मा और दुर्य्योधनके तीन भाइयोंने इकट्ठे होकर धृष्टद्युम्नको घेर लिया। उस समय जलती हुई अग्निकी भांति धृष्टद्युम्नको द्रोणाचार्य्यकी ओर गमन करते देख, पराक्रमी नकुल और सहदेव धृष्टद्युम्नकी रक्षा करनेके वास्ते उनके अनुगामी हुए। महाराज। इसी भांति दोनों सेनाके सात महारथी योडा लोग क्रोधपूर्व्वक प्राणकी आशा छोड़के आपसमें महाघोर संग्राम करने लगे। एक दूसरेको जीतनेकी कामना करनेवाले वे महाबलवान महात्मा सदाचारसे युक्त पराक्रमी योडा लोग स्वर्ग प्राप्तिकी अभिलाषा करके न्यायपूर्व्वक आपसमें युद्ध करने लगे। वे सब उत्तम वंशमें उत्पन्न हुए धर्म्मात्मा बुद्धिमान और मनुष्योंके राजा थे, इससे उत्तम गति पानेकी अभिलाषासे सबकोई आपसमें धर्म्मयुद्ध करने लगे। उसस्थानमें शठतापूर्ण और शस्त्ररहित युद्ध नहीं हुआ। अधिक क्या कहा जावे, उस समय वहांपर कर्णी विषमें बुझाये हुए नालीकास्त्र वस्तकास्त्र अनेक कांटोंसे युक्त सूची अस्त्र जलते हुए कांटोंसे युक्त कपीश नामक अस्त्र, गोशृङ्ग तथा हाथीकी हड्डीके बने हुए किसी भांतिके भी दूषित अस्त्र नहीं थे, बल्कि उन सम्पूर्ण वीरोंने धर्म्मयुद्धमें कीर्त्ति और परलोक प्राप्त होनेकी अभिलाषासे शुद्ध और सरल अस्त्र शस्त्रोंको धारण किया था। उस समय पाण्ड-

वोंकी ओरके तीन महारथियोंके सङ्ग तुम्हारी सेनाके चार महारथियोंका धर्मयुद्ध होने लगा। अनन्तर धृष्टद्युम्नने देखा, कि केवल नकुल सहदेव ही कुरुसेनाके चार महारथियोंको निवारण कर रहे हैं, उसे देख पराक्रमी धृष्टद्युम्नने हस्तलाघवके सहित अपने बाणोंको चलाते हुए द्रोणाचार्य्यकी ओर गमन किया, परन्तु तुम्हारी ओरके कृतवर्म्मा आदि चार महारथी योद्धाओंने नकुल सहदेवके सम्मुखसे निवारित होकर अपना अपमान समझा; अनन्तर वे लोग इस भांति वेगपूर्व्वक नकुल सहदेवकी ओर दौड़े, जैसे प्रचण्ड वायु प्रबल वेगसे पर्व्वतके ऊपर चलते हुए दीख पड़ता है। महाराज! नकुल सहदेव दोनों भाई क्रमसे दो दो महारथियोंके सङ्ग और धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। उस ही समय राजा दुर्य्योधन कृतवर्म्मा आदि चार महारथियोंको नकुल सहदेवके सङ्ग और धृष्टद्युम्नको द्रोणाचार्य्यके साथ युद्ध करते देख अपने तीक्ष्ण बाणोंको बर्षाते हुए वहांपर उपस्थित हुए। दुर्य्योधनको धृष्टद्युम्न और नकुल सहदेवकी ओर गमन करते देख महारथी सात्यकि शीघ्रताके सहित दुर्य्योधनकी ओर दौड़े। वृष्णि और कुरुवंशीय सात्यकि और राजा दुर्य्योधन आपसमें एक दूसरेके समीपमें संग्रामभूमिमें सम्मुख उपस्थित होके निर्भयचित्तसे युद्ध करने लगे। महाराज! वे दोनों पुरुषसिंह बालक अवस्थाके सम्पूर्ण वृत्तान्तोंको स्मरण करके अत्यन्त ही प्रसन्न हुए और आपसमें एक दूसरेको देखकर बार बार हंसने लगे।

अनन्तर राजा दुर्य्योधन अपने क्षत्रीयधर्म्मोंकी निन्दा करके अपने प्रिय सखा सात्यकिसे बोले, हे मित्र! क्रोध मोह लोभ और दूर्षाको धिक्कार है, और हम लोगोंके क्षत्रीय आचार तथा बल पुरुषार्थको भी धिक्कार है क्योंकि इस समय हम दोनों ही एक दूसरेके ऊपर शस्त्र चलानेके वास्ते उद्यत हुए हैं। मैं अपने बाल्य वृत्तान्तको स्मरण करके देखता हूं, कि हम समय हम दोनों ही एक दूसरेको प्राणसे भी बढ़के प्रिय थे, परन्तु इस रणभूमिमें उपस्थित होनेसे हम लोगोंके बाल्य अवस्थाकी मित्रता एकबारगी नष्ट होगई क्योंकि इस समय हम लोग आपसमें युद्ध कर रहे हैं, इससे क्रोध और लोभसे बढ़के हानिकारक वस्तु और कौनसी है? राजा दुर्य्योधनके वचनोंको सुन कर परम अस्त्रशस्त्रोंकी विद्या जाननेवाले सात्यकिने तीक्ष्ण शस्त्रोंको ग्रहण करके हंसते हंसते उन्हें यह उत्तर दिया; हे राजपुत्र! पहिले हम लोग जिस स्थानमें इकट्ठे होकर खेलते थे यह वह सभास्थान तथा आचार्य्यालय नहीं है। सात्यकिके वचनको सुनकर दुर्य्योधन बोले, हे शिनिपौत्र सात्यकि! हम लोगोंके बाल्य अवस्थाके खेल कहां चले गये! हा! इस समय सम्पूर्ण शूरवीरोंको नाश करनेवाला महाघोर युद्ध होरहा है, इसमें कालको अतिक्रम करना बहुत असाध्य कार्य्य है। देखो धनलाभकी इच्छासे हम लोगोंके निमित्त कैसा भयङ्कर कार्य्य उपस्थित हुआ है। धनके लोभसे ही सब कोई रणभूमिके बीच इकट्ठे होकर युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए हैं।

सञ्जय बोले, महाराज! राजा दुर्य्योधनने जब ऐसा कहा तब यदुवंशीय सात्यकि उनसे यह बचन बोले, हे राजेन्द्र! क्षत्रियोंका यही आचार है क्षत्रीय पुरुष रणभूमिके बीच गुरुके ऊपर भी अस्त्रशस्त्रोंसे प्रहार किया करते हैं। हे भरतश्रेष्ठ! यदि मैं तुम्हारा प्रिय मित्र हूं, तो तुम शीघ्र ही मेरा वध करो, ऐसा होनेसे मैं तुम्हारे हाथसे मरकर स्वर्ग लोकमें गमन करूंगा। हे दुर्य्योधन! अधिक क्या कहूं तुम्हारी जहांतक शक्ति और बल है तुम शीघ्र

ही मुझे अपना सम्पूर्ण पराक्रम दिखाओ ; मैं अब मित्रोंके इस बहुत बड़े व्यसनको नहीं देख सकता हूं। सात्यकि राजा दुर्योधनसे ऐसा वचन कहके निठुर और निर्भयचित्तसे दुर्योधनकी ओर दौड़े। महाबाहु शिनिपौत्र सात्यकिको अपनी ओर वेगपूर्व्वक आते देख तुम्हारे पुत्र राजा दुर्योधन अनगिनत बाणोंको चलाकर उन्हें निवारण करने लगे। महाराज! कौरव और यदुवंशकी कीर्त्तिको बढ़ानेवाले वे दोनों पुरुषसिंह क्रोधी सिंह तथा मतवारे हाथीकी भांति महाघोर संग्राम करने लगे। अनन्तर राज दुर्योधनने क्रुद्ध होकर कान पर्य्यन्त धनुष खींचकर दश चोखे बाणोंसे युद्ध दुर्म्मद सात्यकिको विद्ध किया। इसी भांति सात्यकिने भी पहिले पचास उसके अनन्तर तीस बाणोंसे कुरुराज दुर्योधनको विद्ध करके फिर अनगिनत बाणोंसे उन्हें छिपा दिया। सात्यकिके पराक्रमको देखकर तुम्हारे पुत्र राजा दुर्योधनने तीस चोखे बाणोंसे सात्यकिको विद्ध करके एक क्षुरप्र अस्त्रसे बाणके सहित उनके धनुषको दो टुकड़े करके पृथ्वीमें गिराया। अनन्तर शिनिपौत्र सात्यकिभी हस्तलाघवके सहित एक दृढ़ धनुष ग्रहण करके तुम्हारे पुत्र दुर्योधनके ऊपर अनगिनत बाण चलाने लगे। सात्यकिके धनुषसे छूटे हुए उन तेज बाणोंको अपनी ओर आते देख राजा दुर्योधनने अपने अस्त्रोंके प्रभावसे टुकड़े टुकड़े करके पृथ्वीमें गिरा दिया, दुर्योधनके ऐसे कठिन कर्म्मको देखकर सेनाके सम्पूर्ण योद्धा सिंहनाद करने लगे। इसी समय दुर्योधनने कान पर्य्यन्त धनुष खींचके शिलापर घिसे हुए स्वर्णपंखवाले तिहत्तर बाणोंसे पूर्ण कर सात्यकिको पीड़ित किया और फिर धनुष पर बाण रखके सात्यकिके पराक्रमका विचार किया; उस समय सात्यकिने भी पराक्रमी दुर्योधनके शीघ्रता पूर्व्वक बाणके सहित उनके धनुषको काटके फिर उन्हें अनेक बाणोंसे विद्ध किया। कुरुराज दुर्योधन सात्यकिके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध और पीड़ित होकर उसके सम्मुखसे रथ लौटा कर वहांसे पृथक होगये। तिसके अनन्तर थोड़ी देरके बाद राजा दुर्योधन फिर अपने बाणोंको बर्षाते हुए सात्यकिकी ओर गमन करने लगे। दुर्योधनको अपनी ओर आते देख सात्यकि लगातार उनके रथके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे, उससे दुर्योधनका रथ सात्यकिके बाणोंसे परिपूरित होगया। उस समय उन दोनों पुरुषसिंहोंके धनुषसे छूटे हुए सम्पूर्ण बाण सेनाके पुरुषोंके ऊपर पड़ने लगे, उस समय जलती हुए अग्निके शब्दकी भांति बाणोंके गिरनेका शब्द सुनाई देने लगा, अधिक क्या कहा जावे उस समय उन दोनों पराक्रमी वीरोंके सहस्रों बाणोंके इधर उधर गिरनेसे वह रणभूमि बाणोंसे परिपूरित होगई और आकाशमण्डल भी उन दोनों पुरुषोंके बाणजालसे इस भांति परिपूर्ण होगया, कि उस समय आकाशचारीप्राणी आकाशमार्गसे गमन करनेमें समर्थ नहीं हुए। अनन्तर रथियोंमें मुख्य यदुवंशीय सात्यकिको अधिक पराक्रम प्रकाशित करते देखकर कर्ण तुम्हारे पुत्रकी जीवनरक्षाकी अभिलाषासे वहां पर शीघ्रताके सहित उपस्थित हुए। परन्तु महाबलवान भीमसेन सात्यकिकी रक्षा करनेके वास्ते अनेक बाणोंको चलाते हुए शीघ्रताके सहित कर्णकी ओर दौड़े।

कर्णने हंसते हंसते भीमसेनके धनुषसे छूटे हुए बाणोंको अपने बाणोंसे निवारण करके बाणके सहित उनका धनुष काट दिया, फिर कर्ण भीमसेनके सारथीके ऊपर अपने बाणोंसे प्रहार करने लगे। तब भीमसेनने गदाग्रहण करके राधापुत्र कर्णके ध्वजा धनुष सारथीको विनष्ट करके उनके रथका एक गदाके प्रहारसे भङ्ग कर दिया। कर्ण इधर शैलराजकी भांति

उस एक चक्र टूटे हुए रथ ही पर स्थित रहे। महाराज। उस समय कर्णके रथके घोड़े उनके एक चक्र रहित रथहीको खींचते हुए युद्ध-भूमिमें भ्रमण करने लगे; उस समय एक सौ घोड़ोंसे युक्त सूर्य्यके एक चक्रवाले रथकी भांति कर्णका रथ दीख पड़ता था। रथ चक्र भङ्ग होनेसे सूतपुत्र कर्ण अत्यन्त क्रुद्ध होकर अनेक भांतिके अस्त्रशस्त्रोंको चलाते हुए भीमसेनके सङ्ग युद्ध करने लगे। क्रुद्ध स्वभाववाले भीमसेन भी उसी भांति कर्णके सङ्ग युद्ध करने लगे। जब इस भांतिसे महाघोर युद्ध आरम्भ हुआ, तब पुरुषश्रेष्ठ धर्म्मराज युधिष्ठिर मत्स्य और पाञ्चाल देशीय योद्धाओंसे यह बचन बोले। हे शूरवीर पुरुषो! जो सब पुरुष श्रेष्ठ महारथी योद्धा हम लोगोंके प्राण और मस्तक स्वरूप हैं, वे सब कोई कौरवोंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए हैं। अब तुम लोग मोहित होकर किस वास्ते युद्धभूमिमें जड़ वस्तुकी भांति स्थित हो! जिस स्थान पर मेरी ओरके महारथी योद्धा लोग कौरवोंके संग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हैं तुम लोग शीघ्रताके सहित उस ही स्थान पर गमन करो। तुमलोग क्षत्रीय धर्म्मके अनुसार निर्भयचित्तसे युद्ध करके युद्धभूमिके बीच मारे जाओगे तौ भी जययुक्त होकर अपनी इच्छाके अनुसार श्रेष्ठ गति पाओगे। इससे यदि हो सके तो तुम लोग युद्धभूमिमें शत्रुओंको पराजित करके बहुतसी दक्षिणासे युक्त यज्ञोंको पूर्ण करते हुए जीवनका समय व्यतीत करो; अथवा शत्रुओंके हाथसे मरके दिव्य शरीर धारण कर पवित्र लोकमें गमन करो।" महाराज! उन सम्पूर्ण महारथी योद्धाओंने राजा युधिष्ठिरकी आज्ञा सुनके क्षत्रीय धर्म्म अवलम्बन करके युद्ध करनेके वास्ते शीघ्रताके सहित द्रोणाचार्य्यके समीप गमन किया। इसी समय पाञ्चाल योद्धा लोग दो हिस्सेमें विभक्त होकरे भीमसेनको अगाड़ी करके एक ओरसे द्रोणाचार्य्यको निवारण और दूसरी ओरसे द्रोणाचार्य्यके संग युद्ध करने लगे। अनन्तर पाण्डवोंकी ओरसे नकुल सहदेव और भीमसेन,—ये तीनों महारथी कोटिल्य व्यवहार अवलम्बन करके ऊंचे स्वरसे अर्ज्जुनको आवाहन करने लगे,—हे अर्ज्जुन। हे अर्ज्जुन! शीघ्र ही यहां पर आके द्रोणाचार्य्यके समीपसे कौरवोंको पृथक् करो, क्योंकि जब द्रोणाचार्य्य अरक्षित होंगे, तो पाञ्चाल योद्धा लोग अनायास ही उनका वध कर सकेंगे। उन लोगोंके वचनको सुनकर अर्ज्जुन कौरवोंकी ओर दौड़े; और द्रोणाचार्य्य भी धृष्टद्युम्न आदि पाञ्चाल योद्धाओंके सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते उनकी ओर दौड़े।

१८७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज! जैसे पहिले समयमें देवराज इन्द्रने क्रुद्ध होकर दानवोंका नाश किया था वैसे ही पराक्रमी द्रोणाचार्य्य लगातार पाञ्चाल योद्धाओंका वध करने लगे, परन्तु पराक्रमी महारथी पाञ्चाल योद्धा लोग द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे पीड़ित होकर भी भयभीत नहीं हुए। अनन्तर पाञ्चाल और सृञ्जय योद्धा लोग इकट्ठे होकर तुम्हारी ओरके सम्पूर्ण रथियोंको मोहित करके द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े; द्रोणाचार्य्यके बाणबर्षासे पाञ्चाल योद्धा लगातार मरने लगे, तब उस समय भयङ्कर कोलाहल होने लगा। इसी भांति जब पाञ्चाल योद्धा महात्मा द्रोणाचार्य्यके अस्त्रोंसे पीड़ित तथा व्याकुल होके इधर उधर दौड़ने लगे, उस समय पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा भयभीत होगये। उस समय रथ हाथी घोड़े आदि पाण्डवोंकी चतुरङ्गिनी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग अपनी ओरके योद्धाओंको द्रोणाचार्य्यके अस्त्रोंसे मरते देख इकबारगी विजयकी आशासे निराश होगये; और मन ही मन चिन्ता

करने लगे कि जैसे ग्रीष्म ऋतुमें जलती हुई अग्नि तृण समूहको भस्म कर देती है वैसे ही परम अस्त्रोंके जाननेवाले पराक्रमी द्रोणाचार्य्य आज हम सब लोगोंका नाश कर देंगे। इस समय कोई पुरुष उनकी ओर देखनेमें भी समर्थ नहीं है और धर्म्मात्मा अर्ज्जुन कदापि द्रोणाचार्य्यके सङ्ग युद्ध नहीं करेंगे।

उस समय पाण्डवोंके हितकी अभिलाषा करनेवाले श्रीकृष्णचन्द्र कुन्तीपुत्रोंको द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे पीड़ित और भयभीत देखकर अर्ज्जुन आदि पाण्डवोंसे यह वचन बोले। हे पाण्डवगण। यदि धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी द्रोणाचार्य्य हाथमें धनुष ग्रहण करके युद्धभूमिके बीच स्थित रहें तो इन्द्रआदि देवता भी उन्हें पराजित करनेमें समर्थ नहीं हैं, परन्तु अस्त्र रहित होने पर सामान्य मनुष्य भी उनका बध कर सकेगा। इस वास्ते इस समय धर्म्म युद्ध त्याग कर जिस भांति लालवर्णके घोड़ोंसे रथसे स्थित द्रोणाचार्य्य तुम सब लोगोंका नाश न कर सकें, वैसाही उपाय अवलम्बन करो। मुझे निश्चय होता है, कि अश्वत्थामाका मरना सुनके द्रोणाचार्य्य युद्ध करनेमें समर्थ न होंगे; इससे कोई पुरुष उनके समीप जाकर अश्वत्थामाके मरनेका वृत्तान्त उन्हें सुनावे। जब श्रीकृष्णने ऐसा वचन कहा तब अर्ज्जुनने किसी प्रकार उनके वचनोंको स्वीकार नहीं किया; परन्तु दूसरे सम्पूर्ण योद्धा लोग और राजा युधिष्ठिरने भी अत्यन्त कष्टसे श्रीकृष्णके वचनको स्वीकार किया। इस ही समय भीमसेन तुम्हारी सेनाके बीच प्रवेश करके मालवदेशीय राजा इन्द्रवर्म्माके अश्वत्थामा नामक हाथीको गदाके प्रहारसे मारकर लज्जासे सिर नीचा करके द्रोणाचार्य्यके समीप जाकर अश्वत्थामा मारे गये; ऐसा वचन कहके ऊंचे स्वरसे सिंहनाद करने लगे। भीमसेन ऐसा वचन कहनेके बाद अश्वत्थामा नामक हाथी मारा गया, इस

वचनको अपने मनहीमें कहके प्रकट रूपसे 'अश्वत्थामा मारे गये' यह मिथ्या वचन कहने लगे। महाराज! द्रोणाचार्य्य भीमसेनके उस कठोर तथा अप्रिय वचनको सुनके जलयुक्त बालुकामय भूमिकी भांति अपने मनही मन शोकित होके मूर्च्छित हुए परन्तु द्रोणाचार्य्य अपने पुत्रके बल पराक्रमको जानते थे इस ही कारण अपने मनमें तर्क वितर्क करके अश्वत्थामाके मरनेका सम्वाद सुनके भी धैर्य्यरहित नहीं हुए। क्षण भरके बीच द्रोणाचार्य्य सावधान होकर अपने पुत्रके पराक्रमको शत्रुओंसे असह्य समझकर धनुष बाण ग्रहण करके युद्धभूमिमें स्थित और अपनी मृत्यु स्वरूप पृषतपुत्र धृष्टद्युम्नके सम्मुख जाकर उनके बधकी अभिलाषासे कङ्कपत्रयुक्त सहस्रों बाणोंको उनकी ओर चलाने लगे। उस समय द्रोणाचार्य्य अङ्गिराके दिये हुए दिव्य धनुष और ब्रह्मदण्डके समान बाणोंको ग्रहण करके धृष्टद्युम्नके सङ्ग युद्ध करने लगे। द्रोणाचार्य्यने मुहूर्त्त भरके बीच क्रुद्धस्वभाववाले धृष्टद्युम्नको अपने बाणोंकी वर्षासे छिपाकर उसे क्षत विक्षत कर दिया। तिसके अनन्तर द्रोणाचार्य्यने अपने चोखे बाणोंके प्रभावसे पाञ्चालराज पुत्र धृष्टद्युम्नके चलाये हुए सहस्रों बाणोंको सैकड़ों खण्ड करके काटके गिराया फिर उनके रथकी ध्वजा धनुष और सारथीको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। तब धृष्टद्युम्नने दूसरा दृढ़ धनुष ग्रहण करके तेज धारवाले बाणोंसे द्रोणाचार्य्यके वक्षस्थलमें प्रहार किया। महाधनुर्द्धारी द्रोणाचार्य्य धृष्टद्युम्नके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर क्षणभरतक व्याकुल रहे। परन्तु क्षण भरके बाद पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने तेज धारवाले भालेसे फिर धृष्टद्युम्नके धनुषको काट दिया अधिक क्या कहूं उस समय शत्रुनाश द्रोणाचार्य्यने धृष्टद्युम्नको गदा और त[illegible] छोड़के सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्रों तथा [illegible]

अपने अस्त्रोंके प्रभावसे काटके गिरा दिये, फिर क्रुद्ध होकर धृष्टद्युम्नके बधकी इच्छासे उन्हें भी बाणोंसे बिद्ध किया। तिसके अनन्तर महाबलवान महात्मा द्रोणाचार्य्यने ब्रह्मास्त्र चलाकर अपने रथके घोड़ोंको धृष्टद्युम्नके रथके घोड़ोंके संग मिला दिया। महाराज! उस समय पारावत और लाल वर्णके रथके घोड़े एकही स्थलपर मिलके अत्यन्त ही शोभित हुए। शरद ऋतुके आरम्भमें बिजलीसे युक्त गर्जते हुए बादलोंकी जैसी शोभा होती है, तैसे ही रणभूमिके बीच उन दोनो महात्माओंके घोड़ोंके एक ही स्थानपर मिलनेसे अत्यन्त ही शोभा हुई। इस ही समय द्रोणाचार्य्यने धृष्टद्युम्नके रथको धुरी और चक्रको टुकड़े टुकड़े कर दिया। तब महावीर पराक्रमी पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्नने धनुष, ध्वजा, सारथीसे रहित होकर उस भयङ्कर बिपदके समयमें गदा ग्रहण किया, सत्य पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने क्रुद्ध होकर अपने तेज बाणोंसे धृष्टद्युम्नकी गदाको भी काटके गिर दिया। गदाको कटती देख पुरुषसिंह धृष्टद्युम्नने प्रकाशमान तलवार और एक सौ चन्द्र प्रतिमाभूषित ढालको ग्रहण किया। महाराज। वैसी अवस्थामें पड़के भी धृष्टधुम्न भयभीत नहीं हुए, और महात्मा द्रोणाचर्य्यके बधका यही समय है,—ऐसा बिचारके उनके बधकी अभिलाषासे उस प्रकाशमान तलवार और ढालको ग्रहण करके रथके दण्डके सहारेसे द्रोणाचार्य्यके समीप गमन करनेमें प्रवृत्त हुए। हे राजेन्द्र! महारथी धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यके बधकी इच्छा करके कभी पीछे, कभी घोड़ोंके बीच और कभी रथ पर चढ़ते हुए द्रोणाचार्य्यके समीप चारो ओर भ्रमण करने लगे; धृष्टद्युम्नके इस कठिन कर्म्मको देखकर सेनाके सम्पूर्ण योद्धा उनकी प्रशंसा करने लगे। अधिक क्या कहूं; उस समय धृष्टद्युम्नको अपने रथ तथा घोड़ोंके ऊपर चढ़नेके समय स्वयं द्रोणाचार्य्य भी उनके छिद्रको देखनेमें समर्थ नहीं हुए; उस समय धृष्टद्युम्नका पराक्रम अद्भुत रूपसे दीख पड़ा; जैसे बाजपक्षी मांसकी इच्छासे इधर उधर भ्रमण करते हुए दीख पड़ता है, वैसे ही धृष्टद्युम्न भी द्रोणाचार्य्यके बधकी अभिलाषासे उनकी ओर झपटते हुए दीख पड़े। अनन्तर द्रोणाचार्य्यने रथशक्तिके प्रहारसे धृष्टद्युम्नके पारावतवर्ण समान घोड़ोंको प्राणरहित करके पृथ्वीमें गिरा दिया. जब धृष्टद्युम्नके रथके घोड़े मरकर पृथ्वीमें गिर पड़े, तब द्रोणाचार्य्यके घोडे रथ बन्धनसे मुक्त हुए। द्विजसत्तम द्रोणाचार्य्यके शस्त्रसे अपने रथके घोड़ोंको मरते देख तलवारयुद्ध जाननेवाले योद्धाओंमें मुख्य धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यके पराक्रमको सहन नहीं किया; और रथ भ्रष्ट होकर भी केवल तलवारको ही ग्रहण करके इस प्रकार द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े, जैसे गरुड़ सर्पकी ओर दौड़ता है। महाराज। जैसे पहिले समयमें हिरण्यकश्यपके बधके समय विष्णुका भयङ्कर स्वरूप दीख पडा था, द्रोणाचार्य्यके बधकी इच्छा करनेवाले धृष्टद्युम्नका भी उस समय वैसाही भयङ्कर रूप दिखाई देने लगा। उस समय धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यके बधकी इच्छा करके ढाल तलवार ग्रहण करके नाना प्रकारकी गति विशेषसे चारो ओर घूमते, दौड़ते उछलते आगे बढ़ते, लौटते तलवार चलाते, उठाते, घुमाते हुए भारत कौशिक और सात्वत आदि इक्कीस प्रकारकी तलवार युद्धकी गति प्रकाशित करते हुए युद्धभूमिके बीच भ्रमण करने लगे। उस समय युद्धभूमिमें स्थित सम्पूर्ण योद्धा और आकाशमें विमानो पर चढके युद्ध देखनेवाले देवता लोग ढाल तलवार ग्रहण करनेवाले धृष्टद्युम्नकी इस प्रकार गति विशेषसे द्रोणाचार्य्यके सम्मुख घूमते देखकर विस्मित

हुए। तिसके अनन्तर द्विजसत्तम द्रोणाचार्य्यने एक हजार बाणोंको चलाकर धृष्टद्युम्नके हाथमें स्थित उस प्रकाशमान तलवार और एक सौ चन्द्र प्रतिमाभूषित ढालको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। उस समय द्रोणाचार्य्यने जिन सम्पूर्ण बाणोंको धृष्टद्युम्नकी ओर चलाये वे सब बाण बारह अंगुलके परिमाण वाले थे, उनका नाम वितस्तिक बाण था, जब कोई शत्रु अत्यन्त ही निकट पहुंच जाता है, और उस समय उसके ऊपर बाण चलानेको कुछ उपाय नहीं रहती, उस ही समय वितस्तिक बाणोंको चलाना पड़ता है। निकटवर्ती शत्रुओंके सङ्ग युद्ध करनेवाले पुरुषोंके बीच ये वितस्तिक नामक बाण केवल द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, कुन्तीपुत्र अर्जुन, अश्वत्थामा, सात्यकि और प्रद्युम्नके समीप उपस्थित हैं और अभिमन्यु भी इन बाणोंका प्रयोग करना जानता था,—इन पुरुषोंके अतिरिक्त और दूसरे किसी पुरुषके निकट ये बाण उपस्थित नहीं थे। द्रोणाचार्य्यने अपने शिष्य पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्नके बधकी इच्छा करके एक दृढ़ दिव्यास्त्रको ग्रहण किया परन्तु शिनिपौत्र सात्यकिने महात्मा कर्ण और राजा दुर्य्योधनके सम्मुखमें ही उस अस्त्रको दश बाणोंसे निवारण करके द्रोणाचार्य्यके अस्त्रसे धृष्टद्युम्नको बचा लिया, उस समय महात्मा कृष्ण और अर्जुन वहां पर उपस्थित हुए। और सत्यपराक्रमी सात्यकिको द्रोणाचार्य्य कर्ण और कृपाचार्य्य आदि महारथियोंके मण्डलोंके बीच रथ पर चढ़के भ्रमण करते और उन लोगोंके चलाये हुए दिव्य अस्त्रोंको निवारण करते हुए देखकर धन्य धन्य कहके उसकी प्रशंसा करने लगे। अनन्तर [illegible] हुआ। यह वृष्णिवंशी [illegible] सात्यकि द्रोणाचार्य्य आदि महारथियोंके [illegible] करते हुए नकुल, सहदेव [illegible] राजा युधिष्ठिर और मुझको अत्यन्त ही आनन्दित कर रहा है, यह वृष्णिवंशकी कीर्त्तिको बढ़ानेवाला सात्यकि सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्रोंकी विद्या जाननेवाले शत्रु सेनाके महारथियोंके सङ्ग मानो खेड़वाड़की भांति युद्ध करते हुए युद्धभूमिके बीच भ्रमण कर रहा है। यह देखो, सम्पूर्ण सिद्ध और सेनापति लोग सात्यकिको अपराजित समझकर धन्य धन्य कहके उसकी प्रशंसा कर रहे हैं, तथा दोनों सेनाके योद्धा भी सात्यकिके अलौकिक युद्धको देखकर उसकी अत्यन्त ही प्रशंसा कर रहे हैं।

१८८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! अनन्तर कृपाचार्य्य, कर्ण और दुर्य्योधन आदि तुम्हारे पुत्र लोग सात्यकिके ऐसे कठिन कर्म्मको देखकर अपने तेजबाणोंकी वर्षा करते हुए, उसे निवारण करनेमें प्रवृत्त हुए। उसे देखकर राजा युधिष्ठिर पराक्रमी भीमसेन माद्रीपुत्र नकुल सहदेव सात्यकिकी रक्षा करनेकी अभिलाषासे उसे घेरकर युद्धभूमिमें स्थित हुए। गौतमनन्दन कृपाचार्य्य कर्ण और दुर्य्योधनने अपने भयङ्कर बाणोंको वर्षाकर सात्यकिको छिपा दिया। शिनिपौत्र सात्यकि उस भयङ्कर बाणवर्षाको निवारण करते हुए उन सम्पूर्ण महारथियोंके संग युद्ध करने लगे; और उन महारथियोंके चलाये हुए दिव्य अस्त्रोंको अपने दिव्य अस्त्रके प्रभावसे निवारण करने लगे। उस महाघोर संग्रामके समय वह रणभूमि सम्पूर्ण प्राणियोंके नाश करनेवाले रुद्रदेवके क्रीड़ास्थलके समान बोध होने लगी। इधर कटे पड़े हुए बहुतेरे पुरुषोंके सिर भुजा धनुष छत्र चंवर टूटे हुए रथके चक्के टूटे हुए रथ रथकी ध्वजा मरे हुए हाथी घोड़े और मनुष्योंके शरीरसे वह रणभूमि परि-

होगई। उस समय अस्त्रशस्त्रोंकी चोटसे घायल होके बहुतेरे योद्धा रणभूमिमें पड़े हुए दिखाई देने लगे।

उस देवासुर संग्रामके समान भयङ्कर युद्धके समय धर्म्मराज युधिष्ठिर युद्धभूमिमें चत्रीय योद्धाओंको आवाहन करके उनसे यह बचन बोले हे शूरवीर महारथी योद्धा लोगो! तुम सब कोई यत्नवान होकर महारथी द्रोणाचाचार्य्यकी ओर दौड़ो, यह देखो, पृषतकुलभूषण धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यके संग युद्ध करनेमें प्रवृत्त होकर उन्हें अपने वशमें करनेकी अभिलाषासे शक्तिके अनुसार युद्ध कर रहे हैं। इस समय धृष्टद्युम्नका रूप जैसा भयङ्कर दीख पड़ता है, उससे यह मुझे निश्चय बोध होरहा है कि धृष्टद्युम्न आज रणभूमिके बीच क्रुद्ध होकर द्रोणाचार्य्यका बध करेंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं है, इससे तुम सब कोई इकट्ठे होकर द्रोणाचार्य्यके संग युद्ध करनेमें प्रवृत्त होजाओ। महाराज! जब राजा युधिष्ठिरने अपनी सेनाके पुरुषोंको ऐसी आज्ञा दिया, तब महारथी पाञ्चाल और सृञ्जय योद्धा लोग अत्यन्त यत्नवान होकर द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। जब वे सम्पूर्ण योद्धा इस प्रकार द्रोणाचार्य्यकी ओर गमन करने लगे, तब भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्य मरनेका निश्चय करके वेगपूर्व्वक उन योद्धाओंकी ओर बढ़े। सत्यपराक्रमी द्रोणाचार्य्यके पाञ्चाल और सृञ्जयोंकी सेनाकी ओर गमन करनेके समय सम्पूर्ण प्राणियोंको भयभीत करते हुए वायु प्रचण्ड वेगसे बहने लगा और पृथ्वी कांपने लगी। इस ही समय दोनो सेनाके पुरुषोंको सन्तापित करते हुए सूर्य्यमण्डलसे उल्का पात होने लगा, और भरद्वाजपुत्र महात्मा द्रोणाचार्य्यके सम्पूर्ण अस्त्र उस समय प्रज्वलित होने लगे, उनके रथका भयङ्कर शब्द सुनाई देने लगा, और रथके घोड़ोंकी आंखोंसे आंसूकी धारा बहती हुई दिखाई देती थी; उस समय पराक्रमी द्रोणाचार्य्य स्वयं भी निस्तेज होगये; उस समय उनकी बायीं आंख और बायीं भुजा फड़कने लगी; विशेष करके धृष्टद्युम्नको अपने सम्मुख स्थित देखकर द्रोणाचार्य्य युद्धसे बिरत हुए; और ब्रह्मवादी ऋषियोंके गमन करने योग्य स्वर्ग लोक प्राप्त होनेकी इच्छासे धर्म्मयुद्धके अनुसार प्राण त्यागनेमें प्रवृत्त हुए। पाञ्चालसेनाके योद्धाओंने उन्हें चारों ओरसे घेर लिया। उस समय पराक्रमी द्रोणाचार्य्य अगिनत चत्रिय योद्धाओंको अपने अस्त्रोंके प्रभावसे भस्म करके रणभूमिमें चारों ओर घूमने लगे। उस समय चत्रियोंको नाश करनेवाले द्रोणाचार्य्यने अपने तेज धारवाले अस्त्रशस्त्रोंको चलाकर एक लाख बीस हजार योद्धाओंका बध किया। तिसके अनन्तर वह चत्रित पुरुषोंके नाशकी इच्छा करके ब्राह्म अस्त्र प्रकट करके धूएंसे रहित जलती हुई अग्निकी भांति युद्धभूमिमें बिराजमान हुए।

इधर महाबली शत्रुनाशन भीमसेन शीघ्रताके सहित रथ और अस्त्रशस्त्रोंसे रहित बिपदग्रस्त धृष्टद्युम्नके समीप अपना रथ बढ़ाकर उपस्थित हुए और उन्हें शीघ्र ही अपने रथ पर चढ़ा लिया। अनन्तर भीमसेन उस समय द्रोणाचार्य्यको लगातार अस्त्र शस्त्रोंकी बर्षा करते देख धृष्टद्युम्नसे बोले,—हे वीर! इस समय तुम्हें छोड़के और कोई पुरुष भी ऐसा नहीं है, जो युद्धभूमिमें द्रोणाचार्य्यके अस्त्र प्रहारको सह सके इससे तुम शीघ्र ही द्रोणाचार्य्यके बधके निमित्त उनके समीप गमन करो; क्योंकि इस युद्धका सम्पूर्ण भार तुम्हारे ही ऊपर अर्पित हुआ है। भीमसेनके बचनको सुनकर महाबाहु पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्नने उस ही समय एक दृढ धनुष और अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके अत्यन्त पराक्रमी द्रोणाचार्य्यको निवारण करनेकी इच्छासे क्रोधपूर्व्वक अपने बाणोंकी बर्षा कर उन्हें छिपा दिया। युद्धबिद्या

जाननेवाले वे दोनों वीर क्रुद्ध होकर रण-भूमिके बीच अत्यन्त ही शोभित हुए; अनन्तर उन दोनों वीरोंने उस समय दिव्य और ब्राह्म अस्त्रोंको प्रकट किया। अनन्तर धृष्टद्युम्नने अपने अस्त्रोंके प्रभावसे द्रोणाचार्य्यके चलाये हुए अस्त्रोंको निवारण करके उन्हें अनगिनत वाणोंसे छिपा दिया। तिसके अनन्तर पराक्रमी धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यकी रक्षाके वास्ते युद्धभूमिमें स्थित शिवि, वशाति, वाह्लिक और कुरुसेनाके योद्धाओंको भस्म करने लगे। इस ही समय पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्न अपने वाणोंसे सम्पूर्ण दिशाओंको परिपूरित करके किरणधारी प्रचण्ड सूर्य्यकी भांति रणभूमिके बीच प्रकाशित होने लगे। तिसके अनन्तर द्रोणाचार्य्यने धृष्टद्युम्नके धनुषको काटके अपने तेज वाणोंसे उनके मर्म्मस्थानोंमें प्रहार किया; उस समय धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यके वाणोंसे पीडित होकर अत्यन्त ही कातर हुए। जब द्रोणाचार्य्य इस प्रकार रणभूमिके बीच भ्रमण करने लगे, तब उस समय बीस हजार पाञ्चाल योद्धाओंने अपने वाणोंकी वर्षासे उन्हें छिपा दिया। महारथी द्रोणाचार्य्य उन सम्पूर्ण योद्धाओंके वाण-जालसे इस प्रकार छिप गये, जैसे सूर्य्य बादलोंके समूहमें छिप जाते हैं, उस समय हम लोग द्रोणाचार्य्यको न देख सके। अनन्तर शत्रु-नाशन महारथी द्रोणाचार्य्यने क्रुद्ध होकर उन योद्धाओंके चलाये हुए वाणोंके समूहको निवारण करके उन लोगोंके नाश करनेकी इच्छासे भयङ्कर ब्राह्म अस्त्र प्रकट किया। उस महावीर संग्रामके समयमें द्रोणाचार्य्य अपरिमित सोमकवंशीय वीरोंको यमपुरीमें भेज-कर पाञ्चाल योद्धाओंके सुवर्णवर्म्म युक्त परिघ समान भुजा और उनके सिर काट काटके पृथ्वीमें गिराने लगे। सबही योद्धालोग द्रोणाचार्य्यके अस्त्रोंके प्रहारसे लगातार प्राणरहित होकर पृथ्वीमें गिरने लगे। जैसे प्रचण्ड वायुके प्रबल वेगसे वृक्ष टूट टूटके पृथ्वीमें गिर पड़ते हैं। इसी भांति मरे हुए हाथी घोड़े और मनुष्योंके शरीरसे वह रणभूमि परिपूर्ण होके रुधिर और मांससे कीचड़मयी होकर अत्यन्त ही भयङ्कर बोध होने लगी। इसी भांति भरद्वाज पुत्र प्रतापी द्रोणाचार्य्य क्षण-भरके बीच पाञ्चाल देशीय बीस हजार रथी योद्धाओंका वध करके धूएंसे रहित जलती हुई अग्निकी भांति युद्धभूमिमें स्थित हुए। तिसके अनन्तर उन्होंने क्रुद्ध होकर भल्लास्त्रसे वसुदानका सिर काटके पृथ्वीमें गिरा दिया; और पांच सौ मत्स्यदेशीय योद्धा छः हजार हाथी, दश हजार घुडसवारोंको प्राणरहित करके पृथ्वीमें गिरा दिया।

महाराज! उस समय ऋषिलोग द्रोणा-चार्य्यको क्षत्रियोंके नाश करनेमें प्रवृत्त देखकर भगवान् अग्निको आगे करके शीघ्रताके सहित द्रोणाचार्य्यके निकट उपस्थित हुए। विश्वा-मित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, गौतम, वसिष्ट, कश्यप, अत्रि, सिकत, पृश्नि, गर्ग, वालखिल्य, मरीचि भृगु, और अङ्गिरा गोत्रीय तथा सूक्ष्म शरीर धारण करनेवाले महर्षि लोग द्रोणाचार्य्यको ब्रम्हलोकमें ले चलनेकी इच्छासे यह वचन बोले। हे द्रोण! तुम अधर्म्म युद्ध कर रहे हो, अब तुम्हारा मरणकाल उपस्थित हुआ है, इस समय अस्त्रशस्त्र परित्याग करके हम लोगोंकी ओर देखो; इसके अनन्तर इस क्रूर-कर्म्ममें प्रवृत्त न होना। तुम वेद वेदाङ्गके जानने-वाले विशेष करके सत्यधर्म्ममें रत ब्राह्मण हो; इससे यह युद्धका क्रूर कर्म्म तुम्हारे करने योग्य नहीं है। हे अमोघास्त्र! तुम्हारा मनुष्य लोकमें निवास करनेका समय पूर्ण होगया, इससे अस्त्र त्यागके सत्यपथमें स्थित होजाओ। हे विप्र! तुम जो अस्त्र विद्या न जाननेवाले मनुष्योंको ब्रह्मास्त्रसे भस्म कर रहे हो; यह तुम उत्तम कार्य्य नहीं करते हो; इस लिये

इस समय तुम शीघ्र अस्त्रोंको परित्याग करो, अब ऐसे पापयुक्त कार्य्यको करनेमें प्रवृत्त न होना।

महाराज! द्रोणाचार्य्यने ऋषियोंके उपदेश और भीमसेनके पूर्व्वोक्त वचनोंको सुनके विशेष करके धृष्टद्युम्नको सम्मुख स्थित देख, युद्धसे अपना मन हटा लिया। इस ही समय द्रोणाचार्य्यने शोकरूपी अग्निसे भस्म तथा कातर होके कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरको पुकारके उनसे पूछा, कि "हे युधिष्ठिर! मेरा पुत्र अश्वत्थामा जीवित है; या मारा गया?" ब्राह्मण श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यको यह निश्चय था, कि "युधिष्ठिर तीनों लोकके ऐश्वर्य्य मिलनेके वास्ते भी कदापि मिथ्या वचन नहीं कहेंगे। क्योंकि द्रोणाचार्य्य बालक अवस्थासे ही युधिष्ठिरको सत्यवादी समझते थे, इस ही कारण और किसीके वचनका विश्वास न करके उन्होंने राजा युधिष्ठिरसे ही अश्वत्थामाके विषयमें प्रश्न किया। उस ही समय श्रीकृष्ण योद्धाओंमें अग्रणी द्रोणाचार्य्यको 'ये यदि थोड़े समय तक और जीवित रहेंगे, तो पृथ्वीको पाण्डवोंसे सूनी कर देंगे,' ऐसा विचारके कातरताके सहित युधिष्ठिरसे यह वचन बोले,—महाराज! मैं तुमसे सत्य वचन कहता हूं, कि यदि द्रोणाचार्य्य क्रुद्ध होकर अर्द्ध दिवस और युद्ध करेंगे; तो तुम्हारी सम्पूर्ण सेनाके योद्धाओंका नाश कर देंगे। इससे द्रोणाचार्य्यसे अपना परित्राण करनेके वास्ते तुम्हें सत्यकी अपेक्षा मिथ्या वचन बोलना कल्याणकारी है;—प्राणरक्षा करनेके वास्ते मिथ्या वचन बोलनेसे पाप नहीं लगता। महात्मा द्रोणाचार्य्यके विषयमें श्रीकृष्ण और राजा युधिष्ठिर इसी भांतिसे वार्त्तालाप कर रहे थे; उस ही समय उनके वचनोंको सुनकर भीमसेन राजा युधिष्ठिरसे बोले, महाराज! मैंने कौरवोंकी सेनाके बीच प्रवेश करके अपने पराक्रमसे मालव देशीय इन्द्रवर्म्मा राजाके ऐरावत हाथीके समान विख्यात हाथीका बध करके, द्रोणाचार्य्यके समीप गमन करके उनसे यह वचन कहा था, कि "हे ब्राह्मण! अश्वत्थामा मारे गये इससे अब आप युद्धसे निवृत्त होइये" परन्तु ब्राह्मणश्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने मेरे वचनका विश्वास नहीं किया। इससे आप हम लोगोंके विजयकी इच्छा करनेवाले श्रीकृष्णके वचनको मानके द्रोणाचार्य्यके समीप "अश्वत्थामा मारे गये" ऐसा वचन प्रकाश रूपसे कहिये; जब आप ऐसा कहेंगे, तब सम्भव है कि द्रोणाचार्य्य कदापि युद्ध न करेंगे; क्योंकि तीनों लोकके बीच आप सत्यवादी कहके विख्यात हैं। राजा युधिष्ठिर भीमसेनके वचनको सुनके विशेष करके श्रीकृष्णकी अनुमति और अवश्यम्भावीके कारण मिथ्या बोलनेमें प्रवृत्त हुए। महाराज! उस समय धर्म्मराज युधिष्ठिर मिथ्या वचन बोलनेके भयसे व्यग्र और विजयकी आशासे आसक्त होकर मनमें हाथीका नाम लेकर प्रकटमें "अश्वत्थामा मारे गये" ऐसा वचन बोले। पहिले राजा युधिष्ठिरके रथके पहिये पृथ्वीसे चार अङ्गुल ऊपर उठे रहते थे, परन्तु उस समय ऐसा मिथ्या व्यवहार करनेके कारण उनके रथके पहिये पृथ्वीको स्पर्श करके भूमि पर चलने लगे। इधर महारथी द्रोणाचार्य्य युधिष्ठिरके मुखसे पुत्रके विषयमें ऐसी विपद वार्त्ता सुनके शोक रूपी अग्निसे जलते हुए जीनेकी आशाको त्याग दिया। विशेष करके उन्होंने ऋषियोंके वचनको सुनकर पाण्डवोंके निकट अपनेको अपराधी समझा; और अपने पुत्रके मरनेका वृत्तान्त सुनकर अत्यन्त ही व्याकुल और चेत-रहित समान होगये थे, उस पर भी धृष्टद्युम्नको सम्मुख देखकर पहिलेकी भांति युद्ध करनेमें समर्थ नहीं हुए।

१८९ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! राजा द्रुपदने देवताओंको आराधना करके महायज्ञमें जिस पुत्रको पाया था; जो द्रोणाचार्य्यके वधके वास्ते जलती हुई यज्ञकी अग्निसे उत्पन्न हुए, वही पाञ्चालराज पुत्र धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यको पुत्रशोकसे अत्यन्त व्याकुल और चेतरहितके समान देखकर इन्द्रधनुषके समान भयङ्कर टङ्कार शब्दसे युक्त दिव्य धनुष और शत्रुओंको नाश करनेवाले विषधर सर्पके समान भयङ्कर वाणोंको ग्रहण करके द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। अनन्तर जलती हुई प्रचण्ड अग्निके समान द्रोणाचार्य्यके वधकी इच्छा करके धृष्टद्युम्नने अग्निके समान प्रकाशमान एक भयङ्कर वाणको धनुषपर चढ़ाया। महाराज! उस समय धृष्टद्युम्नके रोंदे युक्त धनुषके बीचमें स्थित वह भयानक वाण तीक्ष्ण किरणधारी शरदकालके सूर्य्यकी भाति शोभित हुआ। तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंने धृष्टद्युम्नको उस भयङ्कर धनुष और वाण ग्रहण करते देख समझा, कि अब द्रोणाचार्य्यका अन्तिम समय उपस्थित हुआ है। अधिक क्या कहूं, प्रतापी भरद्वाज पुत्र द्रोणाचार्य्यने भी उस भयङ्कर वाणको धृष्टद्युम्नके धनुषपर स्थित देखकर अपनी मृत्युको समीप पहुंची हुई स्थिर की। अनन्तर महात्मा द्रोणाचार्य्य उस वाणको निवारण करनेके वास्ते विशेष यत्न करने लगे; परन्तु उनके अस्त्र उस समय प्रकट नहीं हुए। महाराज! उन्होंने चार दिन और एक रात्रि लगातार अपने वाणोंको चलाया था, पाचवें दिनके प्रथम पहरमें उनके अस्त्रशस्त्र निःशेषित हुए। इसी भांति वह शस्त्ररहित, पुत्रशोकसे दुःखित और चित्तकी व्यग्रताके कारण अनेक भांतिके दिव्य अस्त्रोंको भूल गये; और ऋषियोंकी आज्ञाके अनुसार शस्त्र परित्याग करनेकी इच्छा करके द्रोणाचार्य्यने पहिलेकी भांति [illegible] तथा पराक्रमके अनुसार युद्ध नहीं किया। इसी समय भीमसेन अत्यन्त क्रुद्ध होकर द्रोणाचार्य्यके रथको पकड़के मृदुस्वरसे उनसे कहने लगे,—यदि अस्त्रशस्त्रोंकी विद्या जाननेवाले अधम ब्राह्मण लोग अपने जातीय कर्त्तव्य कर्म्मोंके अनुष्ठानसे विरत होकर युद्ध न करते तो कदापि क्षत्रियोंके कुलका नाश न होता। हे ब्राह्मण! देखो सब शास्त्रोंमें अहिंसाहीको पण्डितोंने श्रेष्ठधर्म्म कहके वर्णन किया है, ब्राह्मण ही उस धर्म्मके आश्रयस्वरूप है और आप भी ब्रह्मज्ञ पुरुषोंमें अग्रगण्य ब्राह्मण हैं, तब पुत्र, स्त्री, और धनकी अभिलाषामें रत होकर आप अज्ञानताके कारण मूर्ख चाण्डालकी भांति म्लेच्छ आदि नाना जातिके पुरुषोंको विशेष करके एक पुत्रके निमित्त अधर्म्मियोंकी भांति क्षत्रियधर्म्ममें रत बहुतेरे क्षत्रियोंका अधर्म्मपूर्व्वक वध करके क्यों नहीं लज्जित होते है? आप जिसके वास्ते शस्त्र धारण तथा जिसके मुखको देखकर जीवन धारण करते है; आज वही तुम्हारे पुत्र अश्वत्थामा मरकर पृथ्वीमें शयन कर रहे हैं,—आप धर्म्मराज युधिष्ठिरके कहे हुए इस वचनमें तनिक भी सन्देह न कीजिये। महाराज! धर्म्मात्मा द्रोणाचार्य्य भीमसेनके इन सम्पूर्ण वचनोंको सुनकर शस्त्र परित्याग करनेकी इच्छासे अपना धनुष फेंककर यह वचन बोले,—हे महाधनुषधारी कर्ण! हे कर्ण! हे कृपाचार्य्य! हे दुर्य्योधन! तुम सब कोई रणभूमिमें यत्नवान होके युद्ध करो; मैं बार बार कहता हूं पाण्डवोंसे तुम लोगोंका अमंगल न होवे। परन्तु मैंने अब अपने इन शस्त्रोंको परित्याग किया। हे राजेन्द्र! उस समय द्रोणाचार्य्य ऐसा वचन कहके अश्वत्थामाका नाम लेकर ऊंचे स्वरसे रोदन करने लगे और उस रणभूमिमें शस्त्र परित्याग करके रथमें बैठकर योगयुक्त पुरुषकी भांति परमेश्वरके ध्यानमें रत होकर सम्पूर्ण प्राणियोंको

अभय दान किया। प्रतापी धृष्टद्युम्नने यह अच्छा अवसर पाया; उस समय वह बाण सहित भयङ्कर धनुषको रथमें रखके तलवार ग्रहण करके रथसे कूदकर द्रोणाचार्य्यकी ओर दौड़े। महाराज। द्रोणाचार्य्यको इस प्रकार धृष्टद्युम्नके वशमें होते देखकर मनुष्य तथा सम्पूर्ण प्राणी 'ओहो! धिक्कार है। धिक्कार है!' ऐसे ही वचन कहते हुए हाहाकार करने लगे। इधर महातपस्वी द्रोणाचार्य्यने भी कर्ण आदि ऊपर कहे हुए वीरोंको सावधान करके अस्त्र परित्याग कर परम शान्त भाव अवलम्बन किया, और योगबलसे तेजोमय रूप धारण करके परम पुरुष सनातन विष्णु भगवानका मनही मन ध्यान करने लगे। तिसके अनन्तर वह ज्योतिर्म्मयी मूर्त्ति महातपस्वी द्रोणाचार्य्यके अगाड़ी सिर नवाके वक्षस्थल स्तम्भित और आंख मूंदके शुद्धभावसे हृदयमें धृति अवलम्बनपूर्व्वक सृष्टिपालक और लयकर्त्ता देवोंके देव अविनाशी ओंकार रूप एकाक्षर परब्रह्मको स्मरण करके पूर्व्वोक्त ऋषियोंके संग दुर्लभ स्वर्ग लोकको गये। महाराज! जब उन्होंने इस भांति स्वर्ग लोकमें गमन किया, उस समय उनके रथसे लेकर आकाशमार्ग दिव्यप्रकाशसे परिपूरित होगया; और हम लोगोंने भी उस समय समझा, कि आकाशमें दो सूर्य्य उदय हुए हैं। बरन द्रोणाचार्य्यके मरनेके समय सूर्य्यकी ज्योति पहिलेसे अधिक प्रकाशयुक्त दीख पड़ी थी; परन्तु निमेषभरके बीच वह ज्योति अन्तर्द्धान होगई।

इसी भांति द्रोणाचार्य्य जब ब्रह्म लोकको गये और धृष्टद्युम्न मोहित हुए, तब उस समय देवता लोग प्रसन्नचित्तसे युक्त तथा आनन्दित हुए। जिस समय योगयुक्त महात्मा द्रोणाचार्य्य परमगतिको प्राप्त हुए; उस समय मनुष्योंके बीचमें केवल मैं पृथापुत्र अर्ज्जुन शरद्वतपुत्र कृपाचार्य्य वृष्णिनन्दन कृष्ण और धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर हम लोग पांच पुरुषोंने उनका दर्शन किया था। देवताओंको भी कठिनतासे मालूम होने योग्य ब्रह्मलोकमें गमन करनेवाले योगयुक्त बुद्धिमान भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्यकी उस महिमाको दूसरे कोई पुरुष भी जाननेमें समर्थ नहीं हुए; मनुष्य लोग शत्रुनाशन द्रोणाचार्य्यके परम गति प्राप्त होनेके विषयको भी न जान सके। अनन्तर धृष्टद्युम्नने जब अस्त्ररहित बाणोंसे क्षत-विक्षत और उनके रुधिरपूरित शरीरको आक्रमण किया, उस समय सम्पूर्ण प्राणी उसे धिक्कार प्रदान करने लगे। पाञ्चाल राजपुत्र धृष्टद्युम्नने मौनावलम्बी प्राणरहित शरीर वाले द्रोणाचार्य्यके केशको ग्रहण करके तलवारसे उनका सिर काट डाला। इसी भांति जब द्रोणाचार्य्य मारे गये, तब धृष्टद्युम्न हर्षपूर्व्वक अपने तलवारको घुमाते हुए भयङ्कर सिंहनाद करने लगे। महाराज। उस श्यामवर्ण रूपवाले आचार्य्यके केश पक गये थे और उनकी अवस्था भी पचासी वर्षकी थी; तौभी वह तुम्हारे हितकी अभिलाषासे सोलह वर्षवाले युवा पुरुषकी भांति युद्धभूमिमें भ्रमण करते थे। उनके बधके समय कुन्तीपुत्र अर्ज्जुनने बार बार धृष्टद्युम्नसे कहा था कि हे द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्न! आचार्य्यका बध मत करो, तुम उनको जीते ही ले आओ, और उस समय सम्पूर्ण सेनापति लोग भी आचार्य्यका वध मत करो, ऐसे ही बचनोंको कहते हुए धृष्टद्युम्नकी ओर दौड़े। महाराज! अर्ज्जुन और सम्पूर्ण राजा लोग इसी भांति धृष्टद्युम्नको पुकारके उन्हें द्रोणाचार्य्यके बध करनेसे निवारण कर रहे थे, तौभी पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्नने रथमें बैठे हुए द्रोणाचार्य्यका बध किया। हे राजेन्द्र! जब द्रोणाचार्य्य रुधिरपूरित शरीरसे युक्त होकर रथसे पृथ्वी पर गिरे, उस समय ऐसा मालूम हुआ मानो अरुणकान्तिवाले महातेजस्वी सूर्य्य पृथ्वीपर पड़े हुए हैं। इसी प्रकार सम्पूर्ण

नाके पुरुषोंने द्रोणाचार्य्यको रणभूमिके [illegible] मरते हुए देखा।

इधर महाधनुर्द्धर धृष्टद्युम्नने भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्यके सिरको काटके तुम्हारी सेनाके पुरुषोंकी ओर फेंक दिया। कौरव लोग द्रोणाचार्य्यके कटे हुए सिरको देख कर उत्साहरहित होकर रणभूमिसे चारों ओर भागने लगे। इसही समय द्रोणाचार्य्य आकाश मार्ग अतिक्रम करके धीरे धीरे नक्षत्रमण्डलमें प्रविष्ट हुए। उनके मृत्युके इस अद्भुत व्यापारको पहिले कहे हुए श्रीकृष्ण, अर्ज्जुन, कृपाचार्य्य युधिष्ठिर और सत्यवतीपुत्र भगवान वेदव्यासकी कृपासे मैंने भी अवलोकन किया था। जब महातेजस्वी द्रोणाचार्य्य धूएंसे रहित प्रज्वलित लूकको भांति प्रकाशित होते हुए आकाशमार्गसे गमन करने लगे, तब हम लोग इकटक नेत्रसे आकाश मार्गकी ही ओर देखने लगे।

द्रोणाचार्य्यके मरने पर पाण्डव और सृञ्जय लोग उत्साह रहित कौरवोंकी ओर दौड़े; उससे क्षण भरके बीच तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा छिन्न भिन्न होकर चारों ओर भागने लगे। भागनेके समय तुम्हारी सेनाके कितने ही पुरुष शत्रुओंके तेज बाणोंसे मर गये और कितनेही घायल होके पृथ्वी पर गिरने लगे। अधिक क्या कहा जावे, द्रोणाचार्य्यके मरनेसे तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग उत्साहरहित होकर चेत रहितकी भांति दिखाई देने लगे। उस समय कुरुसेनाके सम्पूर्ण वीर अपनी पराजय और परिणाममें महाभय उपस्थित हुआ समझके इस प्रकार [illegible] लगे, कि किसी भांति युद्धभूमिमें खड़े [illegible]। उस समय सेनापति तथा राजा [illegible] युक्त रणभूमिमें बीच [illegible] द्रोणाचार्य्यके [illegible] शरीरको चारों ओर खोजके [illegible]।

इधर पाण्डव लोग उस समय विजय लाभ और भविष्यमें बहुत बड़ा यश विस्तार हुआ, ऐसा समझके धनुष टङ्कार करते हुए शंख बजा कर महाघोर सिंहनाद करने लगे। इस ही समय पृषत्पुत्र धृष्टद्युम्न पाण्डवोंकी व्यूहबद्ध सेनाके बीच प्रवेश करके भीमसेनसे मिले और उन दोनोंने आपसमें उस समय एक दूसरेको आलिङ्गन किया। अनन्तर भीमसेन शत्रुनाशन धृष्टद्युम्नसे बोले,—हे पाञ्चालराजपुत्र! जब पापी सूतपुत्र और दुर्य्योधनके मरने पर तुम विजय लाभ करोगे; तब मैं फिर तुम्हें आलिङ्गन करूंगा। ऐसा बचन कहके भीमसेनने अत्यन्त हर्षके सहित ताल ठोंका, उस समय भीमसेनके बाहुशब्दसे पृथ्वी कांपने लगी। तुम्हारी ओरके योद्धा लोग भीमसेनकी भुजाके शब्दसे भयभीत होकर क्षत्रिय धर्म्मको त्याग कर युद्धभूमिमें चारों ओर भागने लगे। महाराज! इसी भांति पाण्डव लोग विजय लाभ करके हर्षित हुए; और उन लोगोंके प्रबलशत्रु द्रोणाचार्य्य युद्धभूमिमें मारे गये, इस कारण वे लोग अत्यन्त ही आनन्दित और हर्षित होकर अपार सुख अनुभव करने लगे।

१६० अध्याय समाप्त।

अथ नारायण अस्त्र-प्रयोग पर्व्व।

सञ्जय बोले, महाराज! द्रोणाचार्य्य तथा मुख्य मुख्य शूरवीरोंके मारे जाने पर शत्रुओंके अस्त्रोंसे पीड़ित कुरुसेनाके पुरुषोंका नाश होने लगा, और वे लोग महाघोर शोक रूपी समुद्रमें डूबने लगे। विशेष करके शत्रुसेनाके पुरुषोंको बार बार हर्षपूर्व्वक अपनी ओर दौड़ते देख, तुम्हारी सेनाके पुरुष भयभीत होगये, उस समय उन लोगोंकी आंखोंसे आंसू भर आये और वे सम्पूर्ण योद्धा लोग द्रोणा-

चार्य्यके मरनेके शोकसे अत्यन्त ही कातर हुए। महाराज। जैसे पहिले समयमें हिरण्याच दैत्यके मारे जानेपर असुर लोग रुधिर पूरित शरीरसे युक्त, उत्साहरहित और दुःखित होकर आखोंसे आंसू बहाते और दशों दिशाको अवलोकन करते हुए, हिरण्यकाश्यपको घेरकर स्थित हुए थे, वैसे ही कुरुसेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग द्रोणाचार्य्यके मरनेसे तेजरहित और उत्साह शून्य होकर आर्त्तनाद करते हुए तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनको घेरकर स्थित हुए। जैसे सिंह छोटे छोटे मृगोंके समूहमें घिरकर शोभित होता है, वैसे ही पुरुषसिंह राजा दुर्य्योधन उन योद्धाओंके बीचमें घिरकर सिंहकी भांति विराजमान हुए, परन्तु द्रोणाचार्य्यके मरनेसे राजा दुर्य्योधन युद्धभूमिमें स्थित न होसके; और शीघ्रताके सहित भागने लगे। उस समय सेनाके योद्धा लोग पहिलेसे ही भूख प्याससे कातर होरहे थे, उसपर भी सूर्य्यकी प्रचण्ड किरणोंसे उत्तप्त होकर अत्यन्त ही व्याकुल हुए, अधिक क्या कहूं, समुद्र सूखने सूर्य्यके पृथ्वीपर गिरने, सुमेरपर्व्वतके धरतीसे मिल जाने तथा देवराज इन्द्रकी पराजयकी भांति भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्यकी मृत्युरूपी असम्भव व्यापारको देखकर कुरुसेनाके मुख्य सेनापति भी भयभीत होकर युद्धभूमिसे भागने लगे। गान्धारराज शकुनि द्रोणाचार्य्यके मरनेका वृत्तान्त सुनके अत्यन्त भयभीत होके भयातुर रथियोंकी सेनाके सहित भागे। सूतपुत्र कर्ण युद्धभूमिसे भागनेकी इच्छा करनेवाली व्यूहबद्ध महासेनाके योद्धाओंको युद्धसे निवृत्त करके युद्धभूमिसे भागने लगे। मद्रराज शल्य हाथी, घोड़े और रथोंसे युक्त अपनी सेनाको आगे करके चारों ओर देखते हुए भयभीत होके भागने लगे। शरद्वतपुत्र कृपाचार्य्य अनेक पताकाओंसे शोभित शूरवीरोंसे रहित बहुतसे हाथियोंकी सेनामें घिरकर हा कष्ट! हा कष्ट! ऐसे ही वचनको कहते हुए भागनेमें प्रवृत्त हुए। कृतवर्म्मा युद्धविद्यामें शिचित भोज, कलिंग, अरट्ट और वाह्लिकदेशीय सेनाके सहित महावेगगामी घोड़ोंसे युक्त रथपर चढ़के युद्धभूमिसे भागे। शकुनिपुत्र उलूक द्रोणाचार्य्यको मरते देख, पैदल सेनाके योद्धाओंके सहित अत्यन्त भयभीत होके युद्धभूमिसे भागे। पराक्रमी राजपुत्र वीर दुःशासन अत्यन्त ही व्याकुल हुए और गज सेनाके सहित वेगपूर्व्वक भागने लगे। कर्णपुत्र वृषसेनने द्रोणाचार्य्यको मरते देख, दश हजार रथ और तीन हजार हाथियोंकी सेनाके सहित युद्धभूमिसे प्रस्थान किया। अधिक क्या कहूं। महारथी राजा दुर्य्योधन हाथी, घोड़े रथी आदि चतुरङ्गिनी सेनाके सहित युद्धभूमिसे भागने लगे। संशप्तक सेनाके नायक सुशर्म्माने द्रोणाचार्य्यको मरे हुए देखकर अर्ज्जुनके अस्त्रोंके प्रहारसे मरनेसे बची हुई संशप्तक सेनाके सहित युद्धभूमिसे प्रस्थान किया। इसी भांति द्रोणाचार्य्यको मरते देख, कुरुसेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंने युद्धभूमिके बीच दूसरे पुरुषोंके हाथी घोड़े और रथ आदि जो वाहन सम्मुख पाये, उस ही पर चढ़के पिता, पुत्र, भाई, मामा, मित्र, भानजे और कोई अपनी सेनाके पुरुषों तथा कोई कोई अपने सम्बन्धीय पुरुषोंको युद्धभूमिसे लौटाकर शीघ्रतापूर्व्वक रणभूमिसे भागने लगे। भागनेके समय दो दूकड़े भी गमन न कर सके, केवल अब "किसीकी रचा नहीं हो सकेगी," ऐसा विचारके वे और उत्साहसे हीन होगये तथा कवच उतार ऊंचे स्वरसे एक दूसरेको आवाहन करते हुए वेगपूर्व्वक भागने लगे। महाराज। वे सम्पूर्ण योद्धा लोग दूसरे पुरुषोंके "ठहरो ठहरो" ऐसे वचनोंको सुन कर चण भर भी युद्धभूमिके बीच खड़े न होसके। अधिक क्या कहा जाय उस समय सेनाके शूर वीर योद्धा [illegible]

पागल हो गये थे, कि अपने रथोंके सुन्दर अलङ्कारोंसे भूषित घोड़ोंको ही रथसे खोलके उसी पर चढ़कर दौड़ाते हुए वेगपूर्व्वक भागने लगे। जब तेजरहित तथा भयभीत होकर तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण शूरवीर योद्धा लोग भागने लगे, उस समय द्रोणपुत्र अश्वत्थामा शत्रुओंकी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे महाबलवान ग्राह समुद्रकी लहरके वेगमें निर्भर चित्तसे सीधा चढ़ता है। उस समय शिखण्डी आदि पाञ्चाल, प्रभद्रक, चेदी और केकय देशीय योद्धाओंके सङ्ग अश्वत्थामाका महाघोर संग्राम हुआ। अनन्तर मतवारे हाथीकी भांति महापराक्रमी युद्ध दुर्म्मद अश्वत्थामा पाण्डवोंकी बहुतसी सेनाका नाश करके फिर अत्यन्त कष्टके सहित उस महाघोर सङ्कटसे मुक्त हुए; तिसके अनन्तर अश्वत्थामा कौरवोंकी सेनाको भागनेमें तत्पर तथा भयभीत होके चारों ओर भागती देख, दुर्य्योधनके समीप जाकर उनसे बोले हे भारत! तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग इस प्रकारसे क्यों भयभीत होगये हैं? और आप इन सम्पूर्ण योद्धाओंको भागते देखकर क्यों नहीं लौटाके युद्धमें प्रवृत्त करते हैं? मैं तुम्हें भी पहिलेकी भांति सावधान नहीं देखता हूं! विशेष करके कर्ण आदि सेनापति भी युद्धभूमिमें स्थित नहीं होते हैं; ऐसा क्यों हो रहा है! कभी तो किसी युद्धमें सेनाके योद्धा इस प्रकार नहीं भागे थे। हे महाबाहु महाराज दुर्य्योधन! तुम्हारी सेनामें कुशल मङ्गल तो है। किस रथिश्रेष्ठके मरनेसे सेनाके योद्धाओंकी ऐसी दशा हुई है; वह सम्पूर्ण वृत्तान्त मेरे निकट प्रकाशरूपसे वर्णन करो।

महाराज! राजाओंमें श्रेष्ठ कुरुराज दुर्य्योधन द्रोणाचार्य्यके मरनेसे शोकरूपी समुद्रमें स्थित [illegible] अश्वत्थामाको देखकर तथा उनके वचनोंको सुनकर घोरवज्र रूपी भयङ्कर [illegible] देनेमें समर्थ नहीं हुए। उस समय दुर्य्योधन लज्जित होकर कृपाचार्य्यसे यह वचन बोले, कि सेनाके सम्पूर्ण पुरुष किस कारणसे भाग रहे हैं; आप उस वृत्तान्तको गुरुपुत्र अश्वत्थामाके समीप वर्णन कीजिये। तब शरद्वतपुत्र कृपाचार्य्य बार बार शोक प्रकाश करके जिस प्रकार द्रोणाचार्य्य मारे गये, वह सम्पूर्ण वृत्तान्त अश्वत्थामाके समीप वर्णन करने लगे।

कृपाचार्य्य बोले, हे अश्वत्थामन्! हम लोग पृथ्वीके सम्पूर्ण रथियोंमें अग्रगण्य द्रोणाचार्य्यको आगेकर पाञ्चाल योद्धाओंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए थे। अनन्तर युद्धभूमिमें दोनो ओरकी सेनाके पुरुष आपसमें युद्ध करके एक दूसरेका बध कर रहे थे, उस युद्धके समय कौरवोंकी ओरके अनगिनत योद्धाओंका नाश होने लगा; तब पुरुषश्रेष्ठ पराक्रमी द्रोण भल्लास्त्रसे शत्रुओंकी ओरके सैकड़ों सहस्रों योद्धाओंका बध करने लगे। पाण्डवोंकी ओरके केकय मत्स्य विशेष करके पाञ्चाल देशीय सेनाके योद्धालोग काल प्रेरित होकर द्रोणाचार्य्यके रथके समीप पहुंचते ही प्राण रहित होके पृथ्वीमें गिर पड़े। उस समय उन्होंने ब्रह्मास्त्रके प्रभावसे पाण्डवोंकी सेनाके एक हजार मुख्य मुख्य योद्धाओं और और दो हजार हाथियोंको यमपुरीमें भेज दिया। वह श्यामस्वरूपवाले द्रोणाचार्य्य केश पकने तथा पचासी वर्षकी अवस्था होने पर भी रणभूमिमें सोलहवर्षवाले युवापुरुषकी भांति चारों ओर घूमने लगे। इसी भांति जब पाण्डवोंकी सेना नष्ट होने लगी और शूरवीर राजा लोग द्रोणाचार्य्यके अस्त्रोंसे पीड़ित हुए। तब पाञ्चाल योद्धा लोग क्रुद्ध होकर भी उनके सम्मुख खड़े न होसके। धीरे धीरे पाञ्चाल सेनाके बहुतसे योद्धा मारे गये और मरनेसे बाकी बचे हुए पाञ्चाल योद्धा लोग उनके सम्मुखसे भाग गये। उस समय शत्रुनाशन

द्रोणाचार्य्य दिव्यास्त्रके प्रभावसे सूर्य्यकी भांति प्रकाशित होने लगे। अधिक क्या कहा जावे, उस समय तुम्हारे पिता द्रोणाचार्य्य पाण्डवोंकी सेनाके बीच प्रवेश करके सहस्र किरणधारी सूर्य्यकी भांति शोभित हुए। रणभूमिमें स्थित पाण्डवोंकी सेना द्रोणाचार्य्यके अस्त्ररूपी अग्निसे भस्म,तेज रहित उत्साह शून्य और चेतरहितके समान होगयी। पाण्डवोंके हितैषी श्रीकृष्ण सम्पूर्ण योद्धाओंकी द्रोणाचार्य्यके अस्त्रोंसे मरते तथा पीड़ित होते देखकर उन लोगोंसे बोले,—रथ यूथपतियोंके भी यूथपति शस्त्रधारीपुरुषोंमें अग्रगण्य द्रोणाचार्य्यको मनुष्य लोग कदापि पराजित नहीं कर सकेंगे; औरकी तो कुछ बात ही नहीं है, स्वयं वज्रधारी इन्द्र भी द्रोणाचार्य्यको पराजित करनेमें समर्थ नहीं हैं। हे पाण्डवगण! लाल घोड़ेसे युक्त द्रोणाचार्य्य जब तक तुम लोगोंका नाश नहीं करते हैं, उससे पहिले ही तुम लोग विशेष रूपसे सावधान हो जाओ। मेरे विचारमें तुम लोगोंको इस समय धर्म्म त्यागके विजय प्राप्त करनेमें यत्नवान होना उचित है, कि अश्व-त्थामाका मरना सुनके द्रोणाचार्य्य युद्ध करनेमें समर्थ न होंगे,इससे कोई पुरुष "अश्वत्थामा मारे गये" यह मिथ्या वचन उनके समीपमें जाकर सुनावे। कुन्तीपुत्र अर्ज्जुन श्रीकृष्णके इस वचन में सहमत नहीं हुए; परन्तु और सब कोई तथा राजा युधिष्ठिरने भी श्रीकृष्णके इस वचन को स्वीकार किया। तिसके अनन्तर भीमसेन लज्जापूर्व्वक तुम्हारे पिताके निकट जाके "अश्वत्थामा मारे गये' ऐसा वचन बोले; परन्तु उन्होंने भीमसेनके वचनका विश्वास नहीं किया; परन्तु उस मिथ्या वचनसे शङ्कित होकर तुम्हारे वात्सल्य प्रेमसे मरना सत्य है, वा मिथ्या है; उसे जाननेके वास्ते उन्होंने युधिष्ठिरसे पूंछा, कि हे युधिष्ठिर! क्या मेरा पुत्र अश्वत्थामा मारा गया? तब मिथ्या बोलनेसे भयभीत और विजयकी आशासे आसक्तचित्त होके राजा युधिष्ठिर मालवराज इन्द्रवर्म्माके बड़े शरीरवाले अश्वत्थामा नाम हाथीको भीमसेनके हाथसे मरा हुआ देखकर द्रोणाचार्य्यके समीप गमन करके ऊंचेस्वरसे उनसे यह वचन बोले, 'हे आचार्य्य। आप जिसके वास्ते अस्त्रशस्त्रोंको धारण किये हैं; तुम्हारे वही अत्यन्त प्रिय पुत्र अश्वत्थामा मरकर सिंह पुत्रकी भांति पृथ्वी पर शयन कर रहे हैं।' हे तात! राजा युधिष्ठिर मिथ्या बोलनेके दोषको जानके भी द्विजसत्तम द्रोणाचार्य्यके निकट यह सम्पूर्ण वचन कहके अन्तमें मन ही मन धीरेसे 'हाथी मारा गया है, ऐसा वचन बोले।' अनन्तर द्रोणाचार्य्य संग्रामभूमिमें तुम्हारा मरना सुनके अत्यन्त शोकित हुए उस समय उन्होंने दिव्य अस्त्रोंको परित्याग करके पहिलेकी भांति युद्ध नहीं किया। तब उस समय निठुर स्वभाववाले क्रुद्ध पाञ्चालराज पुत्र धृष्टद्युम्न अत्यन्त व्याकुल तुम्हारे मरनेके शोकसे दुःखित द्रोणाचार्य्यको चेतरहित प्राय होते देख, उनकी ओर दौड़े। लोकतत्वके जाननेवाले द्रोणाचार्य्य धृष्टद्युम्नको विधाताकी रची हुई अपनी मृत्यु स्वरूप जान कर सम्पूर्ण दिव्य अस्त्रोंको त्यागके उस रण भूमिमें अपने रथमें बैठ कर योगयुक्त चित्तसे परब्रह्म परमेश्वरका ध्यान करने लगे। अनन्तर शूरवीर पुरुष चारों ओरसे पुकारके उनका वधकरनेसे उसे निवारण कर रहे थे, तौभी धृष्टद्युम्नने बायें हाथसे उनके केश पकड़ और दहिने हाथसे तलवार चलाकर सिर काट लिया। उस समय सम्पूर्ण पुरुष "आचार्य्यका वध मत करो, वध मत करो,' ऐसे वचनोंको कहते हुए धृष्टद्युम्नको निवारण करने लगे। विशेष करके धर्म्मात्मा अर्ज्जुन शीघ्रताके सहित अपने रथसे उतरे और दोनों भुजा उठाके धृष्टद्युम्नको पुकारके, "आचार्य्यको

वध मत करो, उन्हें जीते ही ले आओ," इसी प्रकार बार बार वचन कहते हुए उस ही ओर दौड़े। कौरव लोग तथा अर्ज्जुनने इस भांतिसे निवारण किया था ; तौभी उस पापी धृष्टद्युम्नने तुम्हारे पिता द्रोणाचार्य्य का वध किया। हे पापरहित अश्वत्थामान् ! इसी प्रकार तुम्हारे पिताके मारे जानेसे सेनाके सम्पूर्ण योद्धा तथा हम लोग उत्साहरहित भयभीत और शोकित होकर युद्धभूमिसे भाग रहे हैं।

सञ्जय बोले, महाराज ! अश्वत्थामा युद्धभूमिमें पिताके मरनेका वृत्तान्त सुनके इस प्रकार अत्यन्त क्रुद्ध हुए, जैसे पांवसे पूंछ दबनेपर सर्प क्रुद्ध होता है। जैसे घृत और काष्ठके पड़नेसे अग्नि अत्यन्त ही प्रज्वलित होती है, वैसे ही द्रोणपुत्र अश्वत्थामा क्रोधसे ओठ चाटते, दांत कटकटाते हुए बार बार विषधर सर्पकी भांति लम्बी सांस छोड़ने लगे ; उस समय क्रोधसे अश्वत्थामाके दोनों नेत्र लाल होगये।

१९१ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय ! अश्वत्थामाने अपने पिता ब्राह्मणश्रेष्ठ बूढ़े द्रोणाचार्य्यको अधर्म्म पूर्व्वक मरे हुए सुनके क्या कहा ? जिसमें मनुष्य वारुण, आग्नेय, ब्राह्म, ऐन्द्र और नारायण आदि अस्त्र सदा प्रतिष्ठित रहते थे, उस धर्म्मात्मा आचार्य्यका मरना सुनके उनके पुत्र अश्वत्थामाने किस कार्य्यका अनुष्ठान किया ? जिस महात्मा द्रोणाचार्य्यने भृगुनन्दन परशुरामके निकटसे सम्पूर्ण धनुर्वेद सीखकर पुत्रको अपनेसे भी अधिक गुणवान करनेकी इच्छासे सम्पूर्ण धनुर्विद्या तथा अस्त्रशस्त्रोंकी विद्याको सिखाया था ; उनके पुत्र अश्वत्थामाने उस समय किस कार्य्यका अनुष्ठान किया ? इस लोकमें ऐसी रीति है, कि सम्पूर्ण मनुष्य सबको त्यागके निज पुत्रको अपनेसे भी अधिक गुणवान करनेकी इच्छा करते हैं। महात्मा आचार्य्य पुरुषोंके समीप जो कुछ विद्याके रहस्य विषय रहते हैं, उसे वे अपने पुत्र और प्रिय शिष्यको ही सिखाते हैं। पराक्रमी शारद्वतीकुमार अश्वत्थामा उनके पुत्र और शिष्य हैं, इससे वह द्रोणाचार्य्यके समीपसे सम्पूर्ण अस्त्रशस्त्रोंकी विद्या सीखकर पिताके समान ही धनुर्वेदमें निपुण हुए हैं। युवा अश्वत्थामा अस्त्रशस्त्रोंके चलानेमें परसुरामके समान युद्धमें इन्द्र, पराक्रममें कार्त्तवीर्य्य अर्ज्जुन, बुद्धिमें वृहस्पति स्थिरतामें हिमालय, तेजमें अग्नि गम्भीरतामें समुद्र और क्रोधमें विषधर सर्पके समान हैं ; अधिक क्या कहूं, वह युद्धमें न थकनेवाले दृढ़ धनुर्द्धारी अश्वत्थामा पृथ्वीके बीच सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंमें अग्रगण्य हैं। वह युद्धभूमिके बीच क्रोधी यमराज तथा वेगगामी वायुकी भांति भ्रमण करते हैं। जिसके वाणोंकी वर्षासे पृथ्वी विदीर्ण हो सकती है, जो सत्यपराक्रमी वीर युद्धभूमिमें भयभीत नहीं होता, जिसने यथा रीतिसे वेद पढ़के ब्रह्मचर्य्य व्रत समाप्त किया है, जो धनुर्वेदमें दशरथ पुत्र रामचन्द्रके समान सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्रोंके ज्ञाता और समुद्रकी भांति गम्भीर हुए हैं, वह पराक्रमी अश्वत्थामा धर्म्मात्मा द्रोणाचार्य्यको अधर्म्मपूर्व्वक धृष्टद्युम्नके हाथसे मरे हुए सुनकर क्या बोले। हे सञ्जय ! विधाताने धृष्टद्युम्नको द्रोणाचार्य्यके निमित्त मृत्युरूपी उत्पन्न किया है, वैसे ही अश्वत्थामाको भी धृष्टद्युम्नकी मृत्युस्वरूप बनाया है। इससे उस क्रूर अदूरदर्शी पापी नीच धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यका वध किया है, इस वचनको सुनकर अश्वत्थामाने किस कार्य्यका अनुष्ठान किया।

१९२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज ! अश्वत्थामा पाण्डवोंकी कपटता और पापी धृष्टद्युम्नके हाथसे पिताका मरना सुनकर क्रोधसे परिपूरित होगये, और उनके दोनों नेत्र आंसूसे युक्त होकर लालवर्ण होगये। उस समय क्रोधी अश्वत्थामाकी मूर्त्ति सम्पूर्ण प्राणियोंके नाश करनेवाले प्रलय कालके समय क्रुद्ध हुए महाकाल रुद्रकी भांति भयङ्कर दिखाई देने लगी। अनन्तर वह बार बार आंखोंसे आंसू पोंछ कर क्रोधसे सांस छोड़ते हुए दुर्य्योधनसे बोले। महाराज। नीच स्वभाववाले पुरुषोंने जिस रीतिसे मेरे पिताको अस्त्र त्याग करा कर उनका वध किया है, और धर्म्मध्वजी युधिष्ठिरने जैसा पापाचरन किया है, वह सम्पूर्ण वृत्तान्त मुझे विदित हुए; तथा मैंने उस अनार्य्य कपटी युधिष्ठिरके सम्पूर्ण विवरणको श्रवण किया। युद्धमें प्रवृत्त हुए पुरुषोंकी जीत वा हार अवश्यम्भावी तथा होतव्यताके अनुसार स्वयं हुआ करती है; परन्तु पराजयकी अपेक्षा मृत्यु ही प्रशंसनीय है। युद्धभूमिके बीच युद्ध करनेवाले पुरुषोंकी यदि न्यायके अनुसार मृत्यु होती है, तो वह मृत्यु दुःखकी कारण नहीं होती; क्योंकि पण्डितोंने युद्ध करनेवाले पुरुषोंकी ऐसीही गतिको श्रेष्ठ करके वर्णन किया हैं; इससे मेरे पिताने भी निश्चय वीरलोकमें गमन किया है। हे पुरुष शार्दूल। जब पिताने इस प्रकारसे वीरलोक प्राप्त किया है, तब उनके वास्ते शोक करना उचित नहीं है। तब जो वह अस्त्रशस्त्र परित्याग करके ईश्वरके ध्यानमें प्रवृत्त हुए थे, वैसी अवस्थामें जो धृष्टद्युम्नने सम्पूर्ण सेनाके सम्मुखमें उनका केश ग्रहण किया है, उस ही को स्मरण करके मेरे मर्म्मस्थानोंमें पीड़ा होरही है। हाय! मेरे जीवित रहते ही जब मेरे पिताके केशको पकड़के धृष्टद्युम्नने उनका वध किया हैं, तब अन्य पुरुष किस कार्य्यके वास्ते पुत्रकी इच्छा करेंगे? मनुष्य लोग काम, क्रोध, अभिमान, लोभ, अज्ञानता और बालकभावसे युक्त होकर अधर्म्मके कार्य्योंमें प्रवृत्त होते हैं। दुष्टात्मा धृष्टद्युम्नने भी मेरी अवज्ञा करके इस महा अधर्म्म कार्य्यको किया है, इसमें कुछ सन्देह नहीं; इससे वह थोड़े ही समयके बीच इस अधर्म्मका फल पावेगा। इसके अतिरिक्त उस मिथ्याचारी धर्म्म पुत्र युधिष्ठिरने अत्यन्त ही असत्कार्य्य किया है, उसने जब कपटतासे अपने गुरुको अस्त्र त्याग कराया है, तब आज पृथ्वी भी उस ही उसके रुधिरको पान करेगी। महाराज! मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि यदि मैं सम्पूर्ण पांचाल योद्धाओंका वध न करूं, तो सुकृत कर्म्म यश और धर्म्मसे भ्रष्ट होजाऊं। अधिक क्या कहूं, पाञ्चाल योद्धाओंके वध के वास्ते मैं यथा शक्तिके अनुसार यत्न करूंगा। विशेष करके पापी धृष्टद्युम्नका मैं अवश्य युद्धमें प्राणनाश करूंगा। हे कुरुराज! मृदु हो अथवा कठोरतासे हो होवे, चाहे किसी कर्म्मसे क्यों न होवे; मैं पांचाल योद्धाओंका नाश करके तब शान्त होऊंगा। हे पुरुषसिंह! मनुष्य लोक और परलोकमें महाभयसे परित्राण पानेके वास्ते ही पुत्रकी कामना किया करते हैं; परन्तु मेरे समान पुत्र तथा शिष्य रूपसे वर्त्तमान रहते भी मेरे पिता अनाथकी भांति ऐसी दशाको प्राप्त हुए। मेरे समान पुत्रको पाके भी शत्रुओंने मेरे पिताका केश ग्रहण किया है, तब मेरे दिव्य अस्त्र बाहुबल और पराक्रमको धिक्कार है। हे भरतसत्तम! इस समय मैं ऐसा कार्य करूंगा, जिससे परलोक प्राप्त हुए पिताके ऋणसे मुक्त होसकूं। आचार्य्य पुरुषोंको अपने पराक्रमकी प्रशंसा करनी उचित नहीं है, परन्तु पिताके वधसे दुःखित होकर आज मैं अपने पुरुषार्थका वर्णन करता हूं। आज मैं प्रलय कालके रुद्रकी भांति

[श]त्रुसेनाका नाश करने लगूंगा तब कृष्णके सहित पाण्डव लोग मेरे पराक्रमको देखेंगे। हे पुरुषश्रेष्ठ! आज मैं रथपर चढ़के जब युद्धभूमिमें स्थित होऊंगा, तो उस समय देवता, गन्धर्व, असुर वा राक्षस आदि कोई प्राणी भी मुझे पराजित करनेमें समर्थ न होंगे। इस पृथ्वीके बीच कोई पुरुष भी मेरे और अर्जुनके समान अस्त्रवेत्ता नहीं है। आज शत्रुसेनाके बीच प्रवेश करके प्रचण्ड किरण धारनेवाले सूर्य्यकी भांति अपने दिव्य अस्त्रोंकी वर्षा करूंगा। आज मेरे धनुषसे छूटे हुए तीक्ष्ण बाण लगातार युद्धभूमिमें शत्रुसेनाका नाश करेंगे। महाराज! आज सम्पूर्ण प्राणी सम्पूर्ण दिशाओंको मेरे बाणोंसे इस प्रकार पूर्ण हुई देखेंगे, जैसे जलकी वर्षा होने पर सम्पूर्ण दिशा तथा पृथ्वी आकाश परिपूरित होजाते हैं। आज मैं लगातार चारों ओर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगूंगा, तो शत्रु-सेनाके शूरवीर योद्धा लोग भयानक शब्दसे चिल्लाते हुए मरके इस प्रकार पृथ्वीमें गिरने लगेंगे, जैसे प्रचण्डवायुके वेगसे भयङ्कर शब्दके सहित वृक्ष टूट टूटके पृथ्वीमें गिर पड़ते हैं। हे कौरवगण! प्रयोग और प्रतिसंहारसे युक्त ये सब अस्त्र मुझमें प्रतिष्ठित हैं; उसे अर्जुन, कृष्ण, युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल, सहदेव, सात्यकि, शिखण्डी और पापी धृष्टद्युम्न आदि कोई भी नहीं जानते। पहिले किसी समयमें भगवान नारायण ब्राह्मण रूपसे मेरे पिताके निकट उपस्थित हुए थे, पिताने यथारीतिसे उन्हें प्रणाम करके उनकी पूजा की थी, नारायणने मेरे पिताकी पूजा ग्रहण करनेके वास्ते प्रसन्न हुए, तब पिताने उनके निकटसे नारायण नामक परमास्त्र ग्रहण करनेकी प्रार्थना की। तब भगवान नारायण बोले, हे द्रोण! [illegible] युद्धमें दूसरा कोई पुरुष भी [illegible] नहीं होगा, हे विप्र! तुम ऐसा कभी मत समझना, कि यह अस्त्र किसी प्राणी विशेषका नाश नहीं कर सकेगा; यह अस्त्र अवध्य प्राणीका भी नाश करेगा; इससे बिना सङ्कट समयके उपस्थित हुए अस्त्रको चलाना उचित नहीं है। हे परन्तप! कदाचित यदि यह महाअस्त्र चलाया जावे, तो इसके निवारण करनेको उपाय केवल रथ आदि वाहन और सम्पूर्ण अस्त्रशस्त्रोंको परित्याग करके युद्धसे विमुख होना है, अथवा शत्रु यदि प्राण दान मांगे, शरणागत होवे, तभी यह महा अस्त्र निवृत्त हो सकता है; इसके अतिरिक्त और किसी भांतिसे भी यह अस्त्र निवारित नहीं हो सकता। परन्तु जब सब भांतिसे शत्रुओंके अस्त्रोंसे पीड़ित होगे, तब इस अस्त्रको चलानेसे ही अवध्य शत्रुका भी नाश होगा। इस अस्त्रके प्रभावसे तुम रणभूमिके बीच दिव्य तेजसे प्रकाशित होकर असंख्य अस्त्रोंकी वर्षा करनेमें समर्थ होगे। सर्व्व शक्तिमान भगवान नारायणने इसी प्रकार उपदेश देकर मेरे पिताको नारायण अस्त्र प्रदान करके उसी समय आकाशमार्गसे गमन किया। पिताने इसी भांति नारायण अस्त्र पाकर कुछ दिनके अनन्तर मुझे भी उस अस्त्रके चलाने और निवृत्त करनेकी रीतिको यथाउचितसे उपदेश किया था। महाराज! शचिपति इन्द्र जिस प्रकार दानवोंका नाश किया करते हैं, वैसे ही आज मैं भी उस नारायण अस्त्रके प्रभावसे पाण्डव, पाञ्चाल, मत्स्य और केकय देशीय सेनाके शूरवीरोंको युद्धभूमिमें चारों ओर छिन्नभिन्न कर दूंगा। महाराज! आज मैं जिस स्थानपर इच्छा करूंगा, उस ही स्थलमें शत्रुओंके मरनेपर भी उनके ऊपर समूहके समूह बाणजाल गिरते हुए दीख पड़ेंगे। और उस महाघोर नारायण अस्त्रके प्रभावसे पाण्डवोंको पराजित करके लगातार इकट्ठे पत्थरोंको

सञ्जय बोले, महाराज ! अश्वत्थामा पाण्डवोंकी कपटता और पापी धृष्टद्युम्नके हाथसे पिताका मरना सुनकर क्रोधसे परिपूरित होगये, और उनके दोनों नेत्र आंसूसे युक्त होकर लालवर्ण होगये। उस समय क्रोधी अश्वत्थामाकी मूर्त्ति सम्पूर्ण प्राणियोंके नाश करनेवाले प्रलय कालके समय क्रुद्ध हुए महाकाल रुद्रकी भांति भयङ्कर दिखाई देने लगी। अनन्तर वह बार बार आंखोंसे आंसू पोंछ कर क्रोधसे सांस छोड़ते हुए दुर्य्योधनसे बोले। महाराज। नीच स्वभाववाले पुरुषोंने जिस रीतिसे मेरे पिताको अस्त्र त्याग करा कर उनका बध किया है, और धर्म्मध्वजी युधिष्ठिरने जैसा पापाचरन किया है, वह सम्पूर्ण वृत्तान्त मुझे विदित हुए; तथा मैंने उस अनार्य्य कपटी युधिष्ठिरके सम्पूर्ण विवरणको श्रवण किया। युद्धमें प्रवृत्त हुए पुरुषोंकी जीत वा हार अवश्यभावी तथा होतव्यताके अनुसार स्वयं हुआ करती है; परन्तु पराजयकी अपेक्षा मृत्यु ही प्रशंसनीय है। युद्धभूमिके बीच युद्ध करनेवाले पुरुषोंकी यदि न्यायके अनुसार मृत्यु होती है, तो वह मृत्यु दुःखकी कारण नहीं होती; क्योंकि पण्डितोंने युद्ध करनेवाले पुरुषोंकी ऐसीही गतिको श्रेष्ठ करके वर्णन किया हैं; इससे मेरे पिताने भी निश्चय वीरलोकमें गमन किया है। हे पुरुष शार्दूल। जब पिताने इस प्रकारसे वीरलोक प्राप्त किया है, तब उनके वास्ते शोक करना उचित नहीं है। तब जो वह अस्त्रशस्त्र परित्याग करके ईश्वरके ध्यानमें प्रवृत्त हुए थे, वैसी अवस्थामें जो धृष्टद्युम्नने सम्पूर्ण सेनाके सम्मुखमें उनका केश ग्रहण किया है, उस ही को स्मरण करके मेरे मर्म्मस्थानोंमें पीड़ा होरही है। हाय! मेरे जीवित रहते ही जब मेरे पिताके केशको पकड़के धृष्टद्युम्नने उनका बध किया हैं, तब अन्य पुरुष किस कार्य्यके वास्ते पुत्रकी इच्छा करेंगे? मनुष्य लोग काम, क्रोध, परिहास, लोभ, अज्ञानता और बालकभावसे युक्त होकर अधर्म्मके कार्य्योंमें प्रवृत्त होते हैं। दुष्टात्मा धृष्टद्युम्नने भी मेरी अवज्ञा करके इस महा कार्य्यको किया है, इसमें कुछ सन्देह नहीं। इससे वह थोड़े ही समयके बीच इस अधर्मका फल पावेगा। इसके अतिरिक्त उस मिथ्याचारी धर्म्मपुत्र युधिष्ठिरने अत्यन्त ही असत्कार्य किया है; उसने जब कपटतासे अपने गुरुसे अस्त्र त्याग कराया है, तब आज पृथ्वी अवश्य ही उसके रुधिरको पान करेगी। महाराज! मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि यदि मैं सम्पूर्ण पांचाल योद्धाओंका बध न करूं, तो सब सुकृत कर्म्म यश और धर्म्मसे भ्रष्ट होजाऊं। अधिक क्या कहूं, पाञ्चाल योद्धाओंके नाशके वास्ते मैं यथा शक्तिके अनुसार यत्न करूंगा विशेष करके पापी धृष्टद्युम्नका मैं अवश्य ही युद्धमें प्राणनाश करूंगा। हे कुरुराज। चाहे मृदु ही अथवा कठोरतासे ही होवे अथवा चाहे किसी कर्म्मसे क्यों न होवे; मैं पाञ्चाल योद्धाओंका नाश करके तब शान्त होऊंगा। हे पुरुषसिंह ! मनुष्य लोक और परलोकमें महाभयसे परित्राण पानेके वास्ते ही पुत्रकी कामना किया करते हैं; परन्तु मैं ... समान पुत्र तथा शिष्य रूपसे वर्त्तमान हूं, तो भी मेरे पिता अनाथकी भांति ऐसी दशाको प्राप्त हुए। मेरे समान पुत्रको पाके भी ... मेरे पिताका केश ग्रहण किया है, तब ... दिव्य अस्त्र बाहुबल और पराक्रमको धिक्कार है। हे भरतसत्तम। इस समय मैं ऐसा ... कार्य करूंगा, जिससे परलोक प्राप्त हुए पिताके ऋणसे मुक्त होसकूं। आचार्य्य पुरुषोंको अपने पराक्रमकी प्रशंसा करनी उचित नहीं है, परन्तु पिताके बधसे दुःखित होकर आज मैं अपने पुरुषार्थका वर्णन करता हूं। आज मैं प्रलय कालके रुद्रकी

...सेनाका नाश करने लगूंगा तब कृष्णके ...हत पाण्डव लोग मेरे पराक्रमको देखेंगे। ... पुरुषश्रेष्ठ। आज मैं रथपर चढ़के जब ...भूमिमें स्थित होजगा, तो उस समय ...ता, गन्धर्व, असुर वा राक्षस आदि कोई ...णी भी मुझे पराजित करनेमें समर्थ न ...गे। इस पृथ्वीके बीच कोई पुरुष भी मेरे ...र अर्जुनके समान अस्त्रवेत्ता नहीं है। आज ...शत्रुसेनाके बीच प्रवेश करके प्रचण्ड किरण ...रनेवाले सूर्य्यकी भाँति अपने दिव्य अस्त्रोंको ...ीं करूंगा। आज मेरे धनुषसे छूटे हुए तीक्ष्ण ...ण लगातार युद्धभूमिमें शत्रुसेनाका नाश ...ंगे। महाराज। आज सम्पूर्ण प्राणी ...पूर्ण दिशाओंको मेरे बाणोंसे इस प्रकार ...पी हुई देखेंगे, जैसे जलकी वर्षा होने पर ...पूर्ण दिशा तथा पृथ्वी आकाश परिपूरित ...जाते हैं। आज मैं लगातार चारों ओर ...ने बाणोंकी वर्षा करने लगूंगा, तो शत्रु-...ाके शूरवीर योद्धा लोग भयानक शब्दसे ...जाते हुए मरके इस प्रकार पृथ्वीमें गिरने ...ंगे, जैसे प्रचण्डवायुके वेगसे भयङ्कर शब्दके ...हत वृक्ष टूट टूटके पृथ्वीमें गिर पड़ते हैं। ...कौरवगण! प्रयाग और प्रतिसंहारसे युक्त ...सब अस्त्र मुझमें प्रतिष्ठित हैं; उसे अर्जुन, ...ण, युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल, सहदेव, सात्य-...कि, शिखण्डी और पापी धृष्टद्युम्न आदि कोई ...नहीं जानते। पहिले किसी समयमें भग-...वान नारायण ब्राह्मण रूपसे मेरे पिताके ...कट उपस्थित हुए थे, पिताने यथारीतिसे ...हें प्रणाम करके उनकी पूजा की थी; नारा-...यण मेरे पिताकी पूजा ग्रहण करनेके वास्ते ...गत हुए, तब पिताने उनके निकटसे नारा-...यण नामक परमास्त्र ग्रहण करनेको प्रार्थना ...। तब भगवान नारायण बोले, हे द्रोण। ...अस्त्रके प्रभावसे दूसरा कोई पुरुष भी ...हारे समान योद्धा नहीं होगा, हे विप्र!

तुम ऐसा कभी मत समझना, कि यह अस्त्र किसी प्राणी विशेषका नाश नहीं कर सकेगा; यह अस्त्र अवध्य प्राणीका भी नाश करेगा; इससे बिना सङ्कट समयके उपस्थित हुए अस्त्रको चलाना उचित नहीं है। हे परन्तप! कदाचित यदि यह महाअस्त्र चलाया जावे, तो इसके निवारण करनेकी उपाय केवल रथ आदि बाहन और सम्पूर्ण अस्त्रशस्त्रोंको परित्याग करके युद्धसे विमुख होना है, अथवा शत्रु यदि प्राण दान मांगे, शरणागत होवे, तभी यह महा अस्त्र निवृत्त हो सकता है; इसके अतिरिक्त और किसी भांतिसे भी यह अस्त्र निवारित नहीं हो सकता। परन्तु जब सब भांतिसे शत्रुओंके अस्त्रोंसे पीड़ित होगे, तब इस अस्त्रको चलानेसे ही अवध्य शत्रुका भी नाश होगा। इस अस्त्रके प्रभावसे तुम रणभूमिके बीच दिव्य तेजसे प्रकाशित होकर असंख्य अस्त्रोंकी वर्षा करनेमें समर्थ होगे। सर्व्वशक्तिमान भगवान नारायणने इसी प्रकार उपदेश देकर मेरे पिताको नारायण अस्त्र प्रदान करके उसी समय आकाशमार्गसे गमन किया। पिताने इसी भांति नारायण अस्त्र पाकर कुछ दिनके अनन्तर मुझे भी उस अस्त्रके चलाने और निवृत्त करनेकी रीतिको यथाउचितसे उपदेश किया था। महाराज! शचिपति इन्द्र जिस प्रकार दानवोंका नाश किया करते हैं, वैसे ही आज मैं भी उस नारायण अस्त्रके प्रभावसे पाण्डव, पाञ्चाल, मत्स्य और केकय देशीय सेनाके शूरवीरोंको युद्धभूमिमें चारों ओर छिन्नभिन्न कर दूंगा। महाराज! आज मैं जिस स्थानपर इच्छा करूंगा, उस ही स्थलमें शत्रुओंके मरनेपर भी उनके ऊपर समूहके समूह बाणजाल गिरते हुए दीख पड़ेंगे। और उस महाघोर नारायण अस्त्रके प्रभावसे पाण्डवोंको पराजित करके लगातार बहुतेरे पत्थरकी

शिला, लोहमय आकाशगामी बाण और तेजधारवाले परशु आदि अस्त्रोंकी वर्षाकर महारथी शत्रुओंको युद्धभूमिमें तितरबितर करूंगा। मित्र, गुरु, और ब्राह्मण द्रोही, सर्व्व लोकनिन्दित कुटिलस्वभावसे युक्त पाञ्चालराज-कुलकलङ्क पापी धृष्टद्युम्न आज मेरे सम्मुखसे जीते जी मुक्त न होसकेगा। महाराज! भागती हुई कुरुसेनाके सम्पूर्ण योद्धा द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके ऐसे वचनोंको सुनके फिर लौटकर युद्ध करनेके वास्ते उद्यत हुए। और पुरुषश्रेष्ठ सेनापति भी प्रसन्नचित्तसे हर्षित होकर अपने अपने शंख बजाने लगे! तिसके अनन्तर वहां सहस्रों भेरी, ढोल मृदङ्ग और नगाड़े आदि युद्धके जुझाऊ बाजे बजने लगे, और घोड़ोंके टाप और रथकी घरघराहटसे पृथ्वीपर ऐसा शब्द प्रकट हुआ, कि उस महाभयङ्कर तुमुल शब्दसे आकाश और पृथ्वीसे प्रतिध्वनि उत्पन्न होने लगी। पाण्डवोंकी सेनाके मुख्य मुख्य रथी योद्धा गर्ज्जते हुए बादलके भयङ्कर शब्दको भांति कुरुसेनाके वीरोंके भयानक शब्दको सुनके सब कोई इकट्ठे होकर आपसमें विचार करने लगे। इधर अश्वत्थामाने भी पवित्र होके जल स्पर्श करके नारायण नामक दिव्यास्त्रको प्रकट किया।

१८३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! नारायण अस्त्र प्रकट होनेके समय आकाश मण्डल बादलोंसे रहित था, तोभी जलबिन्दुयुक्त महाभयङ्कर शब्दके सहित वायु प्रबल वेगसे बहने लगा, पृथ्वी कांपने लगी, समुद्रका जल उथलित होने लगा, नदियें उलटी गतिसे बहने लगीं। पहाड़ोंके शिखर टूट टूटके गिरने लगे। मृगोंके समूह पाण्डवोंकी बांयी ओरसे दौड़ने लगे। घोर घोर सूर्य्यका प्रकाश मन्द होगया और सम्पूर्ण दिशा अन्धकारसे छिप गईं। उस ही समय आकाशमण्डलसे मांसभक्षी प्राणी महाभयङ्कर बोली बोलते हुए दौड़े। उस भयङ्कर उत्पातको देखकर देवता, दानव और गन्धर्व्व आदि प्राणी भयभीत होगये और मनुष्य लोग आपसमें वार्त्तालाप करनेमें भी समर्थ नहीं हुए। विशेष करके पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण राजा लोग द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके उस महाघोर भयङ्कर अस्त्रको देखकर अत्यन्त कातर और भयभीत हुए।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! पिताके शोकसे दुःखित और क्रुद्ध होकर अश्वत्थामा जब मेरी भागती हुई सेनाको फिर लौटाके युद्ध करनेके वास्ते पाण्डवोंकी ओर वेगपूर्व्वक गमन करने लगे, तब उस समय अश्वत्थामाको युद्ध करनेके वास्ते अपनी ओर आते देख पाण्डवोंने धृष्टद्युम्नकी रक्षा करनेके विषयमें जिस प्रकार आपसमें विचार किया, वह सब वृत्तान्त तुम मेरे समीप वर्णन करो।

सञ्जय बोले, महाराज! राजा युधिष्ठिर पहिले कुरु-सेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंको भागते हुए देखा था; अब फिर उन लोगोंके सिंहनादको सुनके अर्ज्जुनसे बोले, हे अर्ज्जुन! पहिले जैसे देवराज वज्रधारी इन्द्रने वृत्रासुरका नाश किया था; वैसेही धृष्टद्युम्नसे द्रोणाचार्य्यके मारे जानेपर कौरव लोग विजयसे निराश होकर कातर और भयभीत होके अपने प्राणको बचाके युद्धभूमिसे भागे थे; जिन सम्पूर्ण रथोंकी ध्वजा छत्र, पताका धुरी चक्र आदि अस्त्रोंके प्रहारसे कट गये थे, उन रथोंमें बैठे हुए बहुतेरे रथी, सारथी और राजा लोग व्याकुल होकर इधर उधर घूमकर युद्धभूमिसे पृथक् हुए थे। कितने ही रथी टूटे हुए रथोंको युद्धभूमिमें छोड़के रथके घोड़ोंको खोलके उसीपर चढ़के वेगपूर्व्वक दौड़ाकर युद्धभूमिसे भागे थे; घुड़सवार लोग आसनरहित घोड़े

मद्धी पीठसे युक्त घोड़ोंपर ही चढ़े हुए रण-भूमिसे भाग गये थे। कितनेही गजसवार बाणोंसे पीड़ित होकर हाथियोंको दौड़ाके इधर उधर भाग गये थे। उस समय शस्त्र और कवचसे हीन होकर बहुतेरे योद्धा हाथी, घोड़े और हाथी, घोड़ोंके पांवके नीचे दबके मर गये। कितने ही मोहित होकर आपसमें एक दूसरेको चीन्ह भी न सके, उस समय हे पिता! हे पुत्र! कहके चिल्लाते हुए कुरुसेनाके बहुतेरे योद्धा भयभीत होकर युद्धभूमिसे भागे थे। कोई अत्यन्त चत विचत शरीरसे युक्त पितापुत्रको युद्धभूमिसे पृथक् करके कवच उतारके जल सेचन करते थे। हे अर्जुन! द्रोणाचार्य्यके मरनेसे कुरुसेनाके योद्धाओंकी ऐसी हीन दशा हुई थी। परन्तु अब फिर किस कारणसे कुरुसेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग लौटकर हर्षपूर्वक युद्ध करनेके वास्ते हम लोगोंकी ओर बढ़े आते हैं? यदि तुम इस वृत्तान्तको जानते हो, तो मेरे समीप वर्णन करो। यह देखो, घोड़ोंको हिनहिनाहट, हाथियोंके चिग्घाड़ और रथोंको घरघराहटके सङ्ग मिलकर कुरुसेनाके योद्धाओंके सिंहनादका शब्द अत्यन्त ही भयङ्कर सुनाई दे रहा है। कुरु-सेनारूपी समुद्रसे बार बार यह महाभयङ्कर शब्द प्रकट होके मेरी, सेनाके योद्धाओंको कम्पित कर रहा है। जिस प्रकार यह महा-घोर तुमुल रोएंको खड़ा करनेवाला भयङ्कर शब्द हो रहा है, उससे मुझे बोध होता है, इन्द्र आदि दिकपालोंके सहित तीनों लोकका नाश होगा इसमें कुछ सन्देह नहीं है अथवा यह भयङ्कर सिंहनाद वज्रधारी इन्द्रका भी होसकता है; द्रोणाचार्य्यके मरनसे मुझे निश्चय होता है, कि कौरवोंकी ओरसे युद्ध करनेके वास्ते स्वयं देवराज इन्द्र आगमन कर रहे हैं। हे अर्जुन! हमारी सेनाके मुख्य मुख्य रथी और महारथी योद्धा लोग भी इस अत्यन्त भयङ्कर शब्दको सुनके व्याकुल होगये हैं, तथा मेरी सेनाके सब लोग भयभीत हुए हैं और उनके शरीरके रोएं खड़े होगये हैं। द्वितीय देवराज इन्द्रके समान पराक्रमी यह कौन महारथी भागती हुई कुरुसे-नाके योद्धाओंको लौटाकर हम लोगोंके सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते रणभूमिकी ओर आरहा है?

युधिष्ठिरके वचनको सुनके अर्जुन बोले, महाराज! जब अस्त्र परित्याग करनेके अन-न्तर गुरु द्रोणाचार्य्य मारे गये, और उस समय कौरवोंकी सेना छिन्न भिन्न होकर युद्धभूमिसे भाग गई थी; अब फिर कौन महारथी उन योद्धाओंको भागनेसे निवृत्त करके सिंहनाद कर रहा है, इस विषयमें जो बात है, और जिसके पराक्रमके आसरेसे कौरव लोग इस कठिन कार्य्यके करनेमें उद्यत होकर पराक्रमके सहित सिंहनाद कर रहे हैं; मैं उस मतवारे हाथीके समान गमन करनेवाले कौरवोंके अभयप्रद कठिन कर्म्म करनेवाले श्रीमान् महा-बाहु वीरके विषयको वर्णन करता हूं, सुनिये जिसके उत्पन्न होनेसे द्रोणाचार्य्यने ब्राह्मणोंको दश सौ गोदान किया था, वेही अश्वत्थामा गर्ज्जन कर रहे हैं, जिस वीरने उत्पन्न होते ही उच्चैःश्रवा घोड़ेकी भांति शब्द किया था, और उस शब्दसे सम्पूर्ण लोक कम्पित हुए थे, उस शब्दको सुनके किसी अलक्षित प्राणीने उनका अश्वत्थामा नाम रक्खा था; इस समय वही पराक्रमी अश्वत्थामा सिंहनाद कर रहे हैं। पृषतपुत्र धृष्टद्युम्नने जिसे अनाथकी भांति आक्रमण करके अत्यन्त नीचताके सहित वध किया था, इस समय उनके सहायस्वरूप उनका पुत्र अश्वत्थामा युद्ध करनेके वास्ते उपस्थित हुआ है। पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्नने जब मेरे गुरुका अस्त्रत्याग करने पर भी केश पकड़ उनका वध किया है, तब आत्मगुरुपार्थके

जाननेवाले अश्वत्थामा कदापि चमा नहीं करेंगे। महाराज! चाहे जो हो, जब आपने धर्म्मात्मा होकर भी राज्यके वास्ते गुरुके समीप मिथ्या व्यवहार किया है; उससे महाघोर अधर्म्म हुआ है। अधिक क्या कहा जावे कपटतासे द्रोणाचार्य्यका वध करानेसे सदा सर्व्वदा इस पृथ्वी पर आपकी अकीर्त्ति इस प्रकार विद्यमान रहेगी, जैसे वालिका वध करनेसे रामचन्द्रकी अकीर्त्ति भूमण्डल पर फैल रही है। क्योंकि आचार्य्य ने समझा था, कि युधिष्ठिर धर्म्मात्मा और मेरे शिष्य हैं, कभी मेरे समीपमें मिथ्या वचन नहीं कहेंगे, ऐसा ही विचारके तुम्हारा विश्वास किया। परन्तु "हाथी मारा गया है," इस सत्यकञ्चुकताके अवलम्बसे आपने गुरुके समीप मिथ्या वचन कहा है। महाराज! आचार्य्य सम्पूर्ण शत्रु-ओंके नाश करनेमें समर्थ थे, तौ भी तुम्हारे वच-नको सुनते ही अस्त्रपरित्याग करके संयतेन्द्रिय होकर योगयुक्त चित्तसे ईश्वरके ध्यानमें रत हुए थे, आपने यह सब प्रत्यक्ष देखा है। हाय! आपने शिष्य होकर भी सनातन धर्म्म परित्याग करके पुत्रवत्सल शोकातुर और रणभूमिमें अस्त्रशस्त्र त्याग करनेपर भी गुरुका वध कराया है। आपने अधर्म्मसे अस्त्र रहित गुरुका वध कराया है, इस समय यदि सामर्थ्य होवे, तो अनुयाइयोंके सहित इकट्ठे होकर धृष्टद्युम्नकी रक्षा करो। अधिक क्या कहूं, पिता वधसे क्रुद्ध हुए आचार्य्य पुत्र अश्वत्थामासे धृष्टद्युम्नकी करनेमें हम सब कोई इकट्ठे होकर भी समर्थ न होंगे। जो सब प्राणियोंके ऊपर दया प्रकाशित करते हैं, वह अलौकिक पराक्रमी अश्वत्थामा अपने पिताके केश ग्रहण करनेके विषयको सुनकर युद्धभूमिमें सब लोगोंको ही भस्म कर देंगे। मैं आचार्य्यके जीवनकी रक्षा इच्छासे बार बार चिल्ला रहा था, तौ भी धृष्टद्युम्नने धर्म्म त्यागके शिष्य होकर भी गुरुका वध किया है। हम लोगोंकी बहुतसी अवस्था बीत गई, अब थोड़ी सी और बाकी है; इस समय अन्तिम अवस्थामें धर्म्म विकार उत्पन्न हुआ है महाघोर अधर्म्म कार्य्य किया गया है, इसमें कुछ सन्देह नहीं है। महाराज! जो सदा सुहृदतासे युक्त और धर्म्मा-नुसार हम लोगोंके पिता समान थे, इस अल्पार्द राज्यके वास्ते आपने कैसे गुरुका वध कराया। देखिये, राजा धृतराष्ट्र और भीष्मने द्रोणाचा-र्य्यको निज पुत्रोंके सहित सम्पूर्ण पृथ्वी समर्पण किया थी। आचार्य्य ऐसी श्रेष्ठ वृत्ति प्राप्त करके तथा कौरवोंसे सदा सम्मानित होकर भी हम लोगोंके ऊपर अपने पुत्रसे भी अधिक प्रीति करते थे। महाराज! आचार्य्य ने केवल तुम्हारे विश्वासपर ही अस्त्र त्याग किया; यदि आचार्य्य युद्ध करते रहते, तो देवराज इन्द्र भी उनका वध न कर सकते। जो हो, हम लोग अत्यन्त ही मूर्ख हैं जो राज्यके लोभसे सदा उपकारमें रत वृद्ध आचार्य्यका अन्याय पूर्व्वक वध कराके महाघोर पाप कार्य्य किया है। ओहो! हम लोगोंने जब राज्य और सुखके लोभसे गुरुका वध कराया है, तब हम लोगोंसे अधिक पापी और कौन होगा? आचार्य्य द्रोणको यह निश्चय था, कि अर्जुन मेरे वास्ते अपने पिता, पुत्र, भ्राता, स्त्री और प्राण पर्य्यन्त भी त्याग कर सकेगा।

१६४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज! अर्ज्जुनके वचनको सुनके महारथी योद्धा लोग प्रिय वा अप्रिय कुछ भी वचन न बोले, परन्तु महाबाहु भीमसेन क्रुद्ध होकर अर्ज्जुनकी निन्दा करते हुए यह वचन बोले,—हे अर्ज्जुन! वनवासी मुनि और दण्डरहित ब्रह्मचारी परमहंस जिस प्रकार धर्म्म उपदेश करते रहते हैं, वैसे ही तुम भी

आज धर्म उपदेश कर रहे हो। जो स्त्री और साधुओंके विषयमें क्षमा करते हैं, युद्धमें अपने को तथा दूसरेको परित्राण करनेमें समर्थ होते हैं, वे क्षत्रीय पुरुष शीघ्र ही पृथ्वीके बीच धर्म, यश और लक्ष्मी प्राप्त कर सकते है। तुम भी इन सम्पूर्ण क्षत्रीय गुणोंसे युक्त और वीर धुरीण-पुरुष हो, परन्तु आज कल्याणकारी वक्तृताकरके मूर्खकी भांति शोभित होरहे हो, हे अर्ज्जुन! तुम्हारा पराक्रम शचिपति इन्द्रके समान है, और जैसे समुद्र मर्य्यादाको उलङ्घन नहीं करता, वैसे ही तुम भी धर्मको अतिक्रम नहीं करते। तुम जो तेरह वर्ष बनवासके क्लेशसे उत्पन्न हुए क्रोधको त्यागके इस समय धर्मको अभिलाषा कर रहे हो; इसमें कौन पुरुष तुम्हारी प्रशंसा नहीं करेगा? हे तात! प्रारब्धसे ही तुम्हारा मन इस समय स्वधर्ममें रत हुआ है; प्रारब्धसे ही तुम्हारी बुद्धि अनृशंसतासे विचलित नहीं होती है। महाराज युधिष्ठिर सदा धर्मके कार्य्योंमें रत रहते हैं, तोभी शत्रुओंने अधर्मसे हम लोगोंको राज्य को हरण किया और द्रौपदीको सभाके बीच लाके अवमानित किया था, हम लोग राज्य के यथार्थ अधिकारीथे, तोभी शत्रुओंने वल्कल वसन पहना कर तेरह वर्ष पर्य्यन्त हम लोगोंको वनवासी बनाया था। इतने कष्ट तथा दुःखोंको सहके भी हम लोगोंने उन लोगोंके स्थिर किये हुए नियमोंको पालन किया है। हे अर्ज्जुन! इस समय उस अधर्मके विरुद्ध हम लोग राज्य हरण करनेवाले शत्रुओंको वन्धुबान्धवोंके सहित संहार करनेके वास्ते युद्धभूमिमें उपस्थित हुए हैं, और सेना इकट्ठी करके युद्ध करनेमें प्रवृत्त होरहे हैं। विशेष करके तुमने पहिले हम लोगोंको धीरज धारण कराके युद्ध करनेके वास्ते प्रतिज्ञा की थी, इसीसे हम सब कोई रणभूमिके बीच उपस्थित हुए हैं, और यथा शक्ति समसार युद्ध भी कर रहे हैं; परन्तु तुम इस समय हम लोगोंकी निन्दा कर रहे हो। इससे अब मैंने समझा, कि तुम क्षत्रीय धर्म जाननेके अभिलाषी नहीं हो, इस ही कारण वृथा जल्पना कर हो। इस समयमें एक तो मेरी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा भयभीत होरहे हैं, दूसरे तुम कटे हुए घावपर निमक लगानेकी भांति अपने वचन रूपी वाणोंसे हम लोगोंके मर्म स्थलोंको छेदन कर रहे हो। हे अर्ज्जुन! अधिक क्या कहूं, तुम्हारे वचन रूपी शलाकासे विद्ध होकर मेरा हृदय विदीर्ण हुआ चाहता है। तुम अपने तथा हम सब लोगोंके प्रशंसा करनेके पात्र होकर भी जो प्रशंसा नहीं करते हो, इससे अत्यन्त अधर्मका कार्य्य होरहा है। हे अर्ज्जुन! श्रीकृष्णके वर्त्तमान रहते जो अश्वत्थामा तुम्हारे सोलहवोंका एक अंश भी नहीं है, तुम वैसे द्रोणपुत्रकी किस प्रकार प्रशंसा कर रहे हो; तुम्हें अपने मुखसे अपना दोष वर्णन करते लज्जा नहीं होती है। तुम धर्मात्मा होकर भी इस विषय को नहीं समझ सकते हो। मैं क्रुद्ध होनेसे सम्पूर्ण पर्व्वतोंको चूर्ण और पृथ्वीको विदीर्ण कर सकता हूं, और इस सुवर्णभूषित प्रचण्ड गदाको ग्रहण करके वृक्ष लतासे युक्त पर्व्वतोंको तोड़के पृथ्वीमें मिला सकता हूं; और मैं अपने वाणोंके प्रभावके इन्द्रके सहित सम्पूर्ण देवता, दानव, यक्ष, गन्धर्व्व और सर्पोंके सहित मनुष्य लोकका नाश कर सकता हूं। हे अर्ज्जुन! तुम स्वयं महा पराक्रमी वीर योद्धा हो, और मैं तुम्हारा ऐसा बलवान सहोदर भ्राता वर्त्तमान हूं; इसे भली भांतिसे न जान कर द्रोणपुत्र अश्वत्थामासे भय करना तुम्हें उचित नहीं है। यदि इच्छा हो तो तुम सहोदर भाइयोंके सहित इस ही स्थल पर स्थित रहो, मैं अकेले ही गदा ग्रहण करके इस महा युद्धमें अश्वत्थामाका वध करूंगा।

तिसके अनन्तर जैसे पहिले समरमें नर-

सिंह रूप धारी विष्णु भगवानको गर्ज्जते देख, हिरण्यकशिपुने उनसे समयानुसार बचन कहा था, वैसे ही धृष्टद्युम्न भी अर्ज्जुनसे यह बचन बोले, हे अर्ज्जुन! "अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन, दान और प्रतिग्रह, ये छः कर्म्म ब्राह्मणोंके अनुष्ठान करनेके वास्ते धर्म्मशास्त्रमें वर्णन किये गये हैं, परन्तु बताओ तो सही, इन छः कर्म्मोंमें कौनसा कर्म्म द्रोणाचार्य्यमें प्रतिष्ठित था? तब जो मैंने ऐसे धर्म्म रहित ब्राह्मणका बध किया है, उसके वास्ते तुम क्यों मेरी निन्दा कर रहे हो? जिस नीच कर्म्म करनेवाले ब्राह्मणने धर्म्मसे भ्रष्ट होकर क्षत्रीय धर्म्म अवलम्बन किया था, जिसने अलौकिक अस्त्रोंसे मेरी सेनाके योद्धाओंका बध किया है, वैसे असह्य कपट आचार करनेवाले अधम ब्राह्मणका जो पुरुष कपटता अवलम्बन करके बध करे, क्या उसके सङ्ग सद्व्यवहार करना उचित नहीं है? जो हो, मैंने उस दुःशील ब्राह्मणका बध किया है उस ही कारण अश्वत्थामा क्रुद्ध होकर भयङ्कर शब्द कर रहा है, और द्रोणपुत्र अश्वत्थामा जो इस समय गर्ज्जन कर रहा हैं, इसे मैं कुछ आश्चर्य्य विषय नहीं समझता हूं। वह केवल गर्ज्जके कौरवोंको युद्ध करनेके वास्ते लौटाकर फिर युद्धभूमिमें उपस्थित करेगा; परन्तु अन्तमें उन योद्धाओंके परित्राण करनेमें असमर्थ होकर सम्पूर्ण शूरवीरोंका नाश करावेगा। हे अर्ज्जुन! तुम जो धर्म्मात्मा होके मुझे गुरुघाती कहके मेरी निन्दा कर रहे हो, क्या तुम इस विषयको नहीं जानते, कि मैं द्रोणबधके ही वास्ते पाञ्चालराजके पुत्र रूपसे अग्निसे उत्पन्न हुआ हूं? हे अर्ज्जुन! युद्धके समयमें जिसे कार्य्याकार्य्यका ज्ञान समभावसे था; वैसे पुरुषको तुम ब्राह्मण वा क्षत्रीय किस प्रकारसे निश्चय करोगे? विशेष करके जिन्होंने अस्त्रविद्या न जाननेवाले साधारण योद्धाओंको ब्रह्मास्त्रसे संहार किया, उसे जिस उपायसे होसके बध करना क्या उचित नहीं है? हे धर्म्म अर्थके तत्वको जाननेवाले अर्ज्जुन! धर्म्म जाननेवाले पुरुषोंने विधर्म्मीको विषके समान परित्याग करने योग्य कहके वर्णन किया है; तुम इन सम्पूर्ण विषयोंको जानके भी क्यों मेरी निन्दा कर रहे हो? उस दुष्ट ब्राह्मणको मैंने रथमें ही आक्रमण कर उसका बध किया है, इससे मैं प्रशंसाके योग्य हूं; तब तुम क्यों नहीं मेरी प्रशंसा करते हो? हे अर्ज्जुन! मैंने साक्षात् प्रलय कालकी अग्नि सूर्य्यके समान तेजस्वी होके द्रोणाचार्य्यका सिर काटा है, इससे तुम किस कारणसे मेरी प्रशंसा नहीं करते हो? द्रोणाचार्य्यने केवल मेरे ही बन्धु बान्धवोंका नाश किया है, दूसरेका नहीं; इससे मैं उनका सिर काटके भी अभीतक शोक रहित नहीं हुआ हूं। जयद्रथके सिरकी भांति; जो मैंने द्रोणाचार्य्यके सिरको कुत्ते और सियारोंको समर्पण नहीं किया इससे मेरे मर्म्म स्थल विदीर्ण होरहे हैं। हे अर्ज्जुन! यह बचन प्रसिद्ध है, कि शत्रुका बध न करनेसे अधर्म्म होता है; क्योंकि जिस स्थलमें शत्रुका बध न होसके, वहां पर शत्रुके हाथसे मरना ही क्षत्रीय पुरुषोंका धर्म्म निश्चित हुआ है। हे अर्ज्जुन! तुमने जिस धर्म्मको अवलम्बन करके पितृसखा भगदत्तका बध किया हैं, मैंने भी उस ही धर्म्मको अवलम्बन करके अपने शत्रुका नाश किया है। इसके अतिरिक्त तुम यदि भीष्मपितामहका बध करके धर्म्मका कार्य्य समझ सकते हो, तो मैं भी अपने अनिष्टकारी शत्रुका बध करके क्यों नहीं धर्म्मका कार्य्य समझूंगा। जैसे हाथी आरोहीके सम्मुख अवनत होकर अपने ही शरीरको सोपान स्वरूप कर देता है, वैसे ही मैं भी सम्बन्धके कारण तुम्हारे समीप अवनत होरहा हूं; इस ही कारण तुम मेरे विषयमें ऐसे कठोर बचनोंका प्रयोग कर रहे हो। जो हो, केवल द्रौपदी

और उनके पुत्रोंके अनुरोधसे मैंने तुम्हारे इस अपराधको क्षमा किया है। हे पाण्डव! द्रोणाचार्य्यके सङ्ग हम लोगोंके कुल क्रमागत शत्रुताके विषयको ये सम्पूर्ण पुरुष जानते हैं, तुम इस विषयको नहीं जानते हो। हे अर्ज्जुन! तुम्हारे जेष्ठ भ्राता युधिष्ठिर मिथ्यावादी नहीं हैं? और मैंभी आधार्म्मिक नहीं हूं; पापी द्रोणाचार्य्य शिष्यद्रोही था, इस ही कारण मारा गया; इससे तुम युद्ध करो, तुम्हारी विजय होवेगी, इसमें सन्देह नहीं है।

१६५ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय। जिस महात्माने लोकानुरोधके कारण यथा रीतिसे अङ्गोंके सहित सम्पूर्ण वेदको पढ़ा था, और जिसके समीप धनुर्वेद मूर्त्तिमान रूपसे उपस्थित था; और जिसकी कृपासे पुरुषश्रेष्ठ राजा लोग युद्धभूमिमें देवतोंसे भी न होने योग्य कठिन और अलौकिक कार्य्योंको कर रहे हैं; वह महर्षि भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्य जब नीच प्रकृतिवाले पापी गुरुघाती तुच्छ धृष्टद्युम्नके हाथसे मारे गये; उस समय कोई क्षत्रिय योद्धा उस पापी धृष्टद्युम्नके ऊपर क्रुद्ध नहीं हुए, ऐसे क्रोध और क्षत्रीय कुलको धिक्कार है। हे सञ्जय! चाहे जोहो, उस समय धृष्टद्युम्नके वचनको सुनके महाधनुर्द्धर अर्ज्जुन तथा अन्य राजाओंने उसे क्या उत्तर दिया; उस वृत्तान्तको इस समय तुम मेरे समीप वर्णन करो।

सञ्जय बोले, महाराज! क्रूरकर्म्म करनेवाले धृष्टद्युम्नके वचनोंको सुनकर उस समय राजाओंने कुछ भी उत्तर नहीं किया; अर्ज्जुन तिरछी दृष्टिसे उनकी ओर देखकर धिक्कार है। ऐसा वचन कहके लम्बी सांस छोड़ते हुए आंखोंसे आंसू बहाने लगे। युधिष्ठिर भीमसेन, नकुल सहदेव और श्रीकृष्णचन्द्र अत्यन्त लज्जित हुए। उस समय केवल सात्यकिने इस प्रकार उत्तर किया। ओहो! इस स्थानमें क्या ऐसा कोई भी पुरुष वर्त्तमान नहीं है; जो इस अन्याय वचन बोलनेवाले अधम तथा पापी पुरुषका शीघ्र ही नाश कर सके? रे धृष्टद्युम्न! ब्राह्मण लोग जैसे चाण्डालकी निन्दा करते हैं; वैसे ही तुम्हारे पापचरणसे पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण पुरुष तुम्हारी निन्दा करते हैं। तूं लोकसमाजमें इस प्रकार साधु पुरुषोंसे निन्दित अत्यन्त वृहत् पाप कर्म्मको करके भी निधड़क वचन बोलनेमें लज्जित नहीं होता है? रे नीचबुद्धिवाले! क्या तू गुरुहत्या करके अधर्म्मसे पतित नहीं हुआ, है? इस समय भी तुम्हारा शिर तथा तुम्हारी जिह्वा सौ टुकड़े क्यों नहीं होजाती? तुम जिस कर्म्मको करके जनसमाजके बीच अपनी बड़ाई कर रहे हो; उससे तुम पाण्डव, वृष्णि और अन्धकवंशियोंके समीप पतितके समान मालूम होरहे हो, तुम जब ऐसे नीच कर्म्मको करके भी आचार्य्यकी निन्दा कर रहे हो, तो इस समय अब तुम्हारा वध करना ही उचित है, क्षणभर भी तुम्हें जीवित रखनेकी आवश्यकता नहीं है। रे अधम पुरुष! तुझे छोड़के और कौन पुरुष गुरुका केश आकर्षण करके वध कर सकता है? तुम द्रुपदके वंशमें ऐसे कुलकलङ्क उत्पन्न हुए, कि तुम्हारे ही कारणसे तुम्हारे वंशके सात पीढ़ी नीचेके और सात पीढ़ीतुमसे पहिलेके पुरुष अर्थात चौदह पीढ़ीके पुरुष यशसे भ्रष्ट होकर नरकमें पतित हुए। और तू जो पुरुषश्रेष्ठ अर्ज्जुनके हाथसे भीष्मके मृत्युका विषय कह रहा था, वैसी मृत्युका महात्मा भीष्मने स्वयं ही विधान किया था; परन्तु भीष्मका भी वध करनेवाला तेरा सहोदर भ्राता पापी शिखण्डी है। इस पृथ्वीके बीच पाञ्चालराजपुत्रोंके अतिरिक्त और दूसरा ऐसा कौन पुरुष है, जो इस प्रकार अधर्म्मके कार्य्यों

को करेगा? तेरे पिताने भीष्मवधको ही निमित्त शिखण्डीको उत्पन्न किया था। अर्ज्जुनने युद्धभूमिके बीच शिखण्डीकी रक्षा करी थी, यह ठीक है; परन्तु महात्मा भीष्मकी मृत्युका कारण शिखण्डी ही है;। मित्र और गुरुद्रोही नीचस्वभाववाले पाञ्चाल लोग तुझे और शिखण्डीको पुत्ररूपसे पाकर ही धर्म्मभ्रष्ट और जनसमाजमें धिक्कार पानेके योग्य हुए हैं। तू यदि फिर मेरे सम्मुख ऐसे अन्याययुक्त वचनोंको कहेगा, तो मैं अपनी इस बज्रके समान भयङ्कर गदासे तेरा सिर तोड़ दूंगा। अरे पापी! मनुष्य लोग ब्रह्महत्यारेको देखकर प्रायश्चित्तके वास्ते सूर्य्यका दर्शन करते हैं। तुझे भी ब्रह्महत्याका पाप लगा है, इससे तेरा मुख देखकर भी ऊपर कही हुई रीतिसे प्रायश्चित्त करना होगा। रे नीच पाञ्चालराजपुत्र! तू मेरे सम्मुख मेरे गुरु तथा गुरुके गुरुकी बार बार निन्दा करके भी लज्जित नहीं होता है? तू मेरी गदाका प्रहार एक बार सहन तो कर; मैं तेरी गदाके प्रहारको अनेक बार सहन करूंगा।

महाराज। सात्यकिने क्रुद्ध होकर जब धृष्टद्युम्नसे ऐसे कठोर वचन कहके उनका तिरस्कार किया; तब धृष्टद्युम्न अत्यन्त क्रुद्ध होकर भी उस समय सात्यकिसे यह वचन बोले,— हे सात्यकि। मैंने तुम्हारे वचनोंको सुना और क्षमा भी किया क्योंकि दुष्ट तथा नीच पुरुष सदा साधुपुरुषोंको अवमानित करनेकी इच्छा किया करते हैं। इस लोकमें क्षमा ही प्रसंशनीय है, क्षमासे कोई अनिष्ठ नहीं हो सकता; परन्तु पापी तथा दुष्ट लोग क्षमावान पुरुषको ये पराजित हुए ऐसा समझने लगते हैं। तू भी उसी भांति पापी और नीच व्यवहार करनेवाला है; तेरा पांवके नखसे लेकर शिखा पर्य्यन्त सम्पूर्ण शरीर निन्दनीय है, उसमें भी तू दूसरेकी निन्दा करनेकी इच्छा करता है? कैसे आचार्य्यका विषय है, तुझे बारम्बार सब योद्धाओंने निषेध किया तौभी अर्ज्जुनके बाणसे भुजा कटनेपर रणभूमिके बीच योगयुक्त चित्तसे बैठे हुए अस्त्ररहित भूरिश्रवाका तूने वध किया था, इससे बढ़ और दूसरा पाप कर्म्म कौनसा होगा? रे क्रूरस्वभाववाले। यद्यपि द्रोणाचार्य्य अस्त्ररहित थे; तथापि कुरुसेनाके वीरोंसे रक्षित थे मैंने उस ही समय दिव्य अस्त्रसे उनका वध किया है; उससे क्या अधर्म्म होसकता है? हे सात्यकि। जिसने दूसरेके अस्त्रसे भुजा कटनेपर युद्धसे विरत, योगयुक्त चित्तसे मौनावलम्बन करके बैठे हुए अस्त्ररहित पुरुषका वध किया है, वह दूसरेको किस प्रकार अधर्म्मी कह सकता है? पराक्रमी भूरिश्रवाने जिस समय तुझे पृथ्वीपर गिराके तेरी छातीमें लातसे प्रहार किया था, उस समय तेरा बल पुरुषार्थ कहां गया था, क्यों नहीं तू उस समय पुरुषार्थ प्रकाशित करके भूरिश्रवाका वध कर सका? प्रतापवान पराक्रमी सोमदत्तपुत्र भूरिश्रवा जब पहिले अर्ज्जुनके बाणसे भुजा कटनेपर युद्धसे विरत होकर योगयुक्त चित्तसे ईश्वरके ध्यानमें रत हुए, उस समय तूने नीचता प्रकाशित करके उनका वध किया है; परन्तु जिस जिस स्थलपर द्रोणाचार्य्य पाण्डवोंकी सेनाको छिन्नभिन्न करके भगानेमें प्रवृत्त हुए थे, मैं उन स्थानोंमें सहस्रों बाणोंको चलाते हुए उनके सम्मुख उपस्थित हुआ हूं, जो हो, स्वयं चाण्डालके समान कार्य्य करके जनसमाजके बीच निन्दनीय होकर तू मुझे किस कारण कठोर वचन कहनेकी इच्छा करता है। रे वृष्णिकुलकलङ्क। तू स्वयं पाप कर्म्म करनेवाला तथा कुकर्म्मके मार्गोंमें गमन करनेवाला है, मैं अधर्मी नहीं हूं, इससे अब मेरे विषयमें कटूक्ति न करना। नीच पुरुषोंकी भांति मेरे विषयमें जो कुछ वचन बोलनेकी इच्छा कर रहा

है, उसे फिर कभी न कहना, मौनावलम्बन कर। इसके अनन्तर यदि मूर्खताके कारण ऐसे वचनोंका प्रयोग करेगा, तो मैं अपने तीक्ष्ण बाणोंके प्रहारसे तेरा बध करके तुझे यमपुरीमें भेज दूंगा। अरे मूर्ख! केवल धर्मसे ही विजय लाभ नहीं होसकता। कौरवोंने जो सम्पूर्ण अधर्म आचरण किये हैं, उसे सुन। पहिले ही उन लोगोंकी कपटतासे राजा युधिष्ठिर ठगे गये और द्रौपदीने कैसे क्लेश पाये। तिसके अनन्तर पाण्डव लोग द्रौपदीके सहित छलसे राज्य नष्ट होने पर वनावासी बनाये गये, और उन लोगोंने छलसे तथा अधर्म अवलम्बन करके मद्रराज शल्यको अपनी ओर किया, तथा अधर्म युद्ध करके सुभद्रापुत्र अभिमन्युका वध किया है। वैसे ही पाण्डवोंने भी अधर्मसे भीष्म पितामहका बध किया, और तूंने भी अधर्म अवलम्बन करके भूरिश्रवाका वध किया, इसी प्रकार वीर कौरव और पाण्डव लोगोंने अपनी विजयके वास्ते अधर्म आचरण किये हैं। हे सात्यकि! परम धर्म और अधर्मके विषयोंको जानना बहुत ही कठिन है, इससे इस समय क्रुद्ध होकर तू अपने पिताके समीप यमलोकमें गमन करनेकी इच्छा क्यों करता है कौरवोंके सङ्ग युद्ध कर।

सञ्जय बोले महाराज! महारथी सात्यकि धृष्टद्युम्नके ऐसे कटूक्तियुक्त वचनोंको सुन कर अत्यन्त क्रुद्ध हुए उस समय क्रोधसे उनके दोनों नेत्र लाल होगये और वह धनुषबाणको रथमें रखके सर्पकी भांति सांस लेते हुए अपनी गदाको ग्रहण करके रथसे कूद पड़े और अभिमानके सहित धृष्टद्युम्नसे यह वचन बोले,—तू वधके योग्य है, इससे तुझे अब क्षमा न करके तेरा वध करूंगा महाबलवान सात्यकि यमराजके दण्ड समान भयङ्कर गदा ग्रहण करके वेगपूर्वक धृष्टद्युम्नकी ओर दौड़े। तब महाबली भीमसेनने कृष्णकी आज्ञासे शीघ्रताके सहित रथसे कूदके अपनी दोनों भुजाओंसे सात्यकिको ग्रहण किया। बलवान सात्यकि उस समय भीमसेनको लेकर ही गमन करने लगे। अनन्तर भीमसेनने बलपूर्व्वक अपने दोनों पांवोंके सहारे पृथ्वीपर बलपूर्व्वक स्थित होके छठें चरणमें बलवान सात्यकिको आगे बढ़नेसे रोक रक्खा। महाराज! बलवान भीमसेनने जब शीघ्रताके सहित रथसे उतरके सात्यकिको इस प्रकार ग्रहण किया, तब सहदेव मधुर वचनोंसे सात्यकिसे बोले,—हे पुरुषसिंह सात्यकि! वृष्णि, अन्धक तथा पाञ्चाल योद्धाओंके अतिरिक्त और कोई भी हम लोगोंको अधिक प्रिय इस पृथ्वीके बीच नहीं है। उसी भांति वृष्णि तथा अन्धक वंशवालों विशेष करके कृष्णको हम लोगोंके अतिरिक्त और कोई भी अधिक प्रिय मित्र नहीं है; और पाञ्चाल योद्धा लोग वृष्णि तथा अन्धकवंशियोंके समान मित्र इस सम्पूर्ण पृथ्वीके बीच भी खोजके नहीं पावेंगे। इससे जैसे आप लोग हम लोगोंके और हम लोग तुम्हारे मित्र हैं, वैसे ही धृष्टद्युम्न भी हमारे तथा तुम्हारे मित्र ही हैं। हे शिनिपौत्र सात्यकि! तुम सम्पूर्ण धर्मके तत्वको जानते हो; इससे क्रोध त्यागके धृष्टद्युम्नके ऊपर तुम्हें प्रसन्न होना उचित है। देखिये, क्षमासे श्रेष्ठ और दूसरी कोई भी वस्तु नहीं है, इस ही निमित्त हम लोग इस विषयमें शान्त हुए हैं, इस समय आप लोग आपसमें एक दूसरेके वचनोंको क्षमा कीजिये। महाराज! जब सहदेवने इस प्रकार सात्यकिको शान्त किया, तब पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्न हंसते हुए यह वचन बोले, हे भीमसेन! तुम इस युद्धदुर्म्मद शिनिपौत्र सात्यकिको छोड़ दो शीघ्र परित्याग करो; जैसे वायु पर्व्वतमें जाके लीन होजाता है, वैसे ही वह मेरे समीप पहुंचके प्राणरहित होजावेगा। मैं इसी समय अपने तीक्ष्ण बाणोंके प्रभावसे युद्धकी अभि-

लाषा पूरी करके इसका प्राण नाश करूंगा। इस समय देखो कौरव लोग वेगपूर्व्वक मेरी सेनाकी ओर आरहे हैं, इससे अब मैं उन लोगोंका क्या कर सकूंगा; क्योंकि पाण्डुपुत्रोंका यह बहुत बड़ा कार्य्य उपस्थित हुआ है, अथवा अर्ज्जुन अकेले ही कौरवोंको निवारण करेंगे, मै पहिले अपने तेज बाणोंसे सात्यकिका सिर काटूंगा; सात्यकिने क्या मुझे भुजा रहित भूरिश्रवा समझा है? हे भीमसेन! तुम उसे छोड़ दो, यातो मैंही उसका प्राण नाश करूंगा, अथवा वही मेरा बध करेगा। भीमसेनको दोनो भुजाके बीचमें स्थित बलवान सात्यकि धृष्टद्युम्नके ऐसे अभिमानयुक्त बचनोंको सुनकर क्रोधसे कम्पित होने लगे। इसी प्रकार जब वे दोनो महाबलवान वीर दो पराक्रमी वृषभकी भांति बार बार गर्ज्जने लगे; तब श्रीकृष्णचन्द्र और धर्म्मराज युधिष्ठिरने शीघ्रताके सहित वहांपर उपस्थित होकर अत्यन्त यत्नपूर्व्वक उन दोनोंको शान्त किया। अनन्तर मुख्य मुख्य पराक्रमी क्षत्रिय वीर लोग उन दोनो महाधनुर्द्धारियोंको निवारण करके कुरुसेनाके योद्धाओंके सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते उनके सम्मुख उपस्थित हुए।

१६६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले महाराज! इधर द्रोणपुत्र अश्वत्थामा उस समय काल प्रेरित मृत्युकी भांति शत्रुसेनाके योद्धाओंका नाश करने लगे, उस समय उन्होंने भल्लास्त्रसे शत्रुओंका नाश करके उनके मृत शरीरसे रणभूमिको परिपूरित कर दिया, उस समय शत्रुसेनाके मृतपुरुषोंके शरीर रणभूमिमें इतने अधिक परिमाणसे इकट्ठे होगये थे, कि वहां पर्व्वतके समान दीख पड़ते थे, ध्वजा पताका उस पर्व्वतके वृक्षस्वरूप, शस्त्र उसके शृङ्ग, मरे हुए हाथी घोड़ोंके शरीर ही उसमें शिला खण्डके समान बोध होते थे; वह मृत पुरुषोंके शरीररूपी पर्व्वत मांसभक्षी पशुपक्षियोंके डरावनी बोलीसे युक्त और भूतप्रेत यक्ष तथा राक्षसोंसे सेवित होकर अत्यन्त भयङ्कर मालूम होने लगा। अनन्तर पुरुषश्रेष्ठ अश्वत्थामाने भयङ्कर शब्दसे सिंहनाद करके फिर तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनसे अपनी प्रतिज्ञा सुनाई। अश्वत्थामा बोले महाराज! धर्म्मध्वजी युधिष्ठिरने जब मिथ्या वचन कहके गुरुसे अस्त्रत्याग कराया है, तब मैं उसके सम्मुखहीमें उसकी सम्पूर्ण सेनाको युद्धभूमिसे छिन्न भिन्न करके भगा दूंगा, और सम्पूर्ण सेनाके पुरुषोंको पराजित करके उस क्रूरस्वभाववाले धृष्टद्युम्नका बध करूंगा। महाराज! आप सम्पूर्ण योद्धाओंको युद्ध करनेमें प्रवृत्त करो, मैं तुम्हारे समीप सत्यप्रतिज्ञा करता हूं, कि आज शत्रुसेनाके बीचसे जो पुरुष मेरे सम्मुख उपस्थित होंगे, मैं उन सबका ही बध करूंगा। हे राजेन्द्र! तुम्हारे पुत्र राजा दुर्य्योधनने गुरुपुत्र अश्वत्थामाके ऐसे बचनको सुनकर हर्षपूर्व्वक भयङ्कर सिंहनाद करते हुए अपनी सेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंको लौटाकर शत्रुसेनाके योद्धाओंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त किया। तिसके अनन्तर उठती हुई लहरसे युक्त दो समुद्रकी भांति कौरव और पाण्डवोंकी महासेनाका आपसमें अत्यन्त ही भयङ्कर युद्ध होने लगा। उस समयमें कौरव लोग अश्वत्थामाके पराक्रमसे गर्व्वित और पाञ्चाल योद्धा लोग द्रोणाचार्य्यके मरनेसे उत्साहयुक्त हुए थे, इससे उन दोनों सेनाके योद्धा लोग अपनी विजयके लक्षणको विचारके क्रोध और अभिमानके सहित महाघोर संग्राम करने लगे। उस समय दोनों सेनाके बीच महाघोर भयानक कोलाहल होने लगा। महाराज! जैसे पर्व्वतसे पर्व्वत और लहरयुक्त समुद्रसे समुद्रकी टक्कर होनेसे भयङ्कर शब्द

उत्पन्न होता है वैसेही कौरव और पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंके संग्रामके समय अस्त्रशस्त्रोंकी खटपटाहटसे महाघोर शब्द सुनाई देने लगा। अनन्तर दोनों सेनाके बीच सहस्रों तथा लाखों शङ्ख भेरी ढोल और नगाड़े आदि जुझाऊ वाले बजने लगे। परन्तु उस समय कुरुसेनाके बीचसे समुद्र मथनके समान महाभयङ्कर शब्द उत्पन्न हुआ। उस ही समय द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने जब पाण्डव और पाञ्चालसेनाको लक्ष्य करके नारायण अस्त्र चलाया; तब उस नारायण अस्त्रसे सहस्रों भांतिके प्रकाशमान विषधर सर्प समान भयङ्कर सहस्रों तथा लाखों-वाण प्रकट होने लगे, और मुहूर्त्त भरके बीच जगतके अन्धकारकी भांति वे वाण सम्पूर्ण दिशा और आकाशमण्डलमें परिपूरित होगये, और उस समय उन वाणोंसे शत्रुओंकी सेनाके सम्पूर्ण पुरुष छिप गये। उस समय आकाशमण्डलमें ज्योति वाले पदार्थोंकी भांति प्रकाशमान लोहमय भयङ्कर चार चक्र और दोचक्रे युक्त बहुतसी शतघ्नी, हल, गदा, और सूर्य्य मण्डलके समान प्रकाशित छुरधारवाले बहुतसे भयङ्कर चक्र इधर उधर शत्रुसेनाके बीच चलते हुए दिखाई देने लगे। उस समय पाण्डव, और सृञ्जय योद्धा लोग सम्पूर्ण दिशा और आकाशमण्डलको नाना भांतिके अस्त्रशस्त्रोंसे परिपूरित देखकर अत्यन्त ही व्याकुल हुए महाराज! उस समय जहां पाण्डवोंकी ओर महारथी योद्धा लोग तुम्हारी सेनाके वीरोंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त थे, उस ही ओर नारायण अस्त्रका भयङ्कर प्रभाव दिखाई देने लगा। शत्रुसेनाके योद्धा इस प्रकार पीड़ित होकर भस्म होने लगे, जैसे अग्नि तृण काष्ठोंको भस्म कर देती है। अधिक क्या कहा जावे, जैसे ग्रीष्म ऋतुमें वनके बीच अग्नि प्रकट होकर जङ्गलको भस्म कर देती है, वैसे ही नारायण अस्त्रके प्रभावसे अश्वत्थामा शत्रुसेनाके योद्धाओंको भस्म करने लगे। महाराज! जब इस प्रकार भयङ्कर नारायण अस्त्रके प्रभावसे शत्रु सेनाके योद्धाओंका नाश होने लगा, तब उस समय धर्म्म पुत्र राजा युधिष्ठिर अत्यन्त ही भयभीत हुए। अनन्तर राजा युधिष्ठिर अपनी सेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंको अश्वत्थामाके अस्त्रसे पीड़ित तथा समस्त शूरवीरोंको रणभूमिसे चारों ओर छिन्न भिन्न होते और अर्जुनको मध्यस्थ पुरुषकी भांति युद्धभूमिमें स्थित देखकर यह बचन बोले। धृष्टद्युम्न! तुम सम्पूर्ण पाञ्चाल सेनाके सहित युद्धभूमिसे भाग जाओ; हे सात्यकि। तुम भी वृष्णि और अन्धकवंशियोंकी सेनाके सहित घर चले जाओ, और धर्म्मात्मा कृष्ण स्वयं ही अपनी रक्षाकी उपाय कर लेंगे, वह जब तीनोंलोकके कल्याणमें दत्तचित्त रहते तथा सबकी रक्षा करते हैं तब अपनी रक्षा क्यों नहीं कर सकेंगे। हे शूरवीर पुरुषो। मैं तुम सब लोगोंको कहता हूं कि अब युद्ध करनेकी कुछ भी आवश्यकता नहीं है; मैं अपने सहोदर भाइयोंके सहित अग्निमें प्रवेश करूंगा। हाय। मैंने कादरोंको भयको बढ़ानेवाले भीष्म, द्रोण रूपी समुद्रसे पार होकर अब इस समय बन्धुबान्धवोंके सहित अश्वत्थामारूपी गोपद जलमें डूब रहा हूं, मैंने अपने कल्याणकी इच्छा करनेवाले द्रोणाचार्य्यका वध कराया है, उससे अर्ज्जुन मेरे ऊपर अत्यन्त हो विरक्त हुए हैं, इससे अब उन्हींकी इच्छा पूरी होवे। कि जिन्होंने युद्धभूमिमें बालक अभिमन्युकी रक्षा न करके कई एक युद्धर्म्मद योद्धाओंके हाथसे उसका प्राणनाश कराया था, कौरवसभाके बीच दासीकी भांतसे युक्त होकर जब द्रौपदीने प्रश्न किया था, उस समय उपेक्षा करके जिन्होंने पुत्रके सहित कुछ भी उत्तर नहीं दिया; जिन्होंने जयद्रथवधके दिन युद्धमें प्रवृत्त और थके हुए घोड़ोंसे युक्त अर्ज्जुनके बधके वास्ते अभिलाषा

की थी, और जिन्होंने उस दिन अमोघकवच पहनाके दुर्य्योधनकी रक्षा की थी; जिन्होंने सिन्धुराज जयद्रथकी रक्षाके वास्ते विशेष यत्न किया था; जिन्होंने मेरे विजयकी अभिलाषा करनेवाले सत्यजित् आदि पाञ्चाल वीरोंको ब्रह्मास्त्रसे पुत्रपौत्र और अनुयाइयोंके सहित समूलसे नष्ट कर दिया है; कौरवोंने जब हमको राज्यसे पृथक् करके वनवासी बनाया था, उस समयमें जिन्होंने उन लोगोंको निवारण नहीं किया, और युद्धके समय जिन्होंने मेरी ओर न होके कौरवोंका पक्ष ग्रहण करके युद्ध किया है, अधिक क्या कहूं, जिन्होंने ऊपर कहे हुए नानाप्रकारसे हम लोगोंके विषयमें सुहृद भाव प्रदर्शित किया था, हम लोगोंके ऐसे परम सुहृद द्रोणाचार्य्य मारे गये हैं, इससे इसही कारण अब हम लोगोंको बन्धु बान्धवोंके सहित यमलोकमें गमन करना पड़ेगा। कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरने जब ऐसा वचन कहा, तब यदुकुल भूषण कृष्ण उस ही समय अपने भुजाके सङ्केतसे निवृत्त करके उन लोगोंसे बोले, हे शूरवीर योद्धा लोगो! तुम लोग शीघ्र ही अस्त्रशस्त्रोंको परित्याग करके अपने अपने वाहनों पर चढ़के युद्धसे निवृत्त होजाओ। भगवान् नारायणने इस शस्त्रके प्रतिकारका यही उपाय स्थिर किया है। तुम सब कोई शीघ्रही अस्त्र त्याग करके तथा हाथी घोड़े आदि वाहनोंसे उतरके पृथ्वीपर स्थित हो जाओ; तब यह अस्त्र तुम लोगोंका वध नहीं करेगा। युधिष्ठिरकी सेनाके योद्धालोग जिस जिस स्थल-पर युद्ध करेंगे, उन्हीं स्थानमें कुरुसेनाके योद्धा प्रबल होजावेंगे। जो लोग अपने वाहनोंसे उतरके अस्त्र परित्याग करेंगे, उन लोगोंका यह अस्त्र वध नहीं करेगा। अधिक क्या कहा जावे, यदि कोई मनसे भी इस अस्त्रके प्रति-कारको इच्छा करेगा, तो वह पाताल लोकमें गमन करने परभी न बचेगा। युधिष्ठिरकी ओरके सम्पूर्ण योद्धाओंने श्रीकृष्णके वचनोंको सुनकर अपने अन्तःकरणसे अस्त्रशस्त्र त्याग नेकी इच्छा किया। उस समय भीमसेन उन योद्धाओंको अस्त्र त्याग करते देख, सम्पूर्ण शूरवीरोंके हर्षको बढ़ाते हुए यह वचन बोले, हे शूरवीर पुरुषो! तुम लोग कोई भी अस्त्र शस्त्रोंको परित्याग मत करो, मैं अपने अस्त्रके प्रभावसे द्रोणपुत्रके अस्त्रको निवारण करूंगा, अथवा सुवर्णभूषित अपनी भयङ्करी गदासे द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके अस्त्रोंको नष्ट करके प्रलयकालके रुद्र समान युद्धभूमिमें भ्रमण करूंगा। जैसे कोई प्रकाशमान वस्तुओंमें सूर्य्यके समान ज्योति नही है वैसे ही कोई पुरुष भी युद्धभूमिमें मेरे समान पराक्रमकर्त्ता नही है। तुम लोग हाथीके शुण्डसमान मेरी इन दोनो भुजाओंका अवलोकन करो, इन भुजाओंसे मैं हिमालय पर्व्वतको भी तोड़के पृथ्वीमें मिला सकता हूं। देवतोंमें देवराज इन्द्र सबसे अधिक पराक्रमीहै, वैसे ही मनुष्योंके बीच केवल मैं ही दश हजार हाथीके समान बलवान हूं, आज सब कोई अश्वत्थामाके जलते हुए अस्त्रको निवारण करनेके विषयमें मेरी दोनों भुजाका पराक्रम देखेंगे, यद्यपि इस नारायण अस्त्रके विरुद्ध कोई योद्धा भी स्थित नहीं होसकता, तौभी मैं सम्पूर्ण कौरव और पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंके सम्मुखमें ही इस अस्त्रके विरुद्ध युद्धभूमिमें स्थित होके युद्ध करूंगा। ऐसा वचन कहके भीमसेन सूर्य्यकिरणके समान प्रकाशमान अपने रथपर चढ़के शत्रुनाशन द्रोणपुत्र अश्वत्थामाकी ओर दौड़े। उस महाबलवान भीमसेनने निमेष भरके बीच हस्तलाघवके सहित अपने बाणजालसे अश्वत्थामाको छिपा दिया। द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने भीमसेनको अपनी ओर आते देख, हंसकर अग्नि-पुञ्जसे पूरित नारायण अस्त्रके प्रभावसे बन-

गिनत प्रकाशमान बाणोंकी वर्षाके उन्हें छिपा दिया; उस समय भीमसेनका सम्पूर्ण शरीर सुवर्णके समान अग्निपुञ्जसे इस प्रकार परिपूरित होगया, जैसे सन्ध्याके समय खद्योत समूहसे युक्त होकर पर्व्वत शोभित होता है; तब द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने उस अस्त्रको भीमसेनको ओर चलाया, तब वह अस्त्र प्रचण्ड शिखासे युक्त जलती हुई अग्निकी भांति क्रमसे बढ़ने लगा। महाराज! वह महाभयङ्कर नारायण अस्त्र पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण पुरुषोंको परित्याग करके केवल भीमसेनहीको लक्ष्य करके सम्पूर्ण प्राणियोंको भयभीत करने लगा। उसे देख, पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग अस्त्रशस्त्र परित्याग करके हाथी, घोड़े, और रथोंसे नीचे उतरे, इसी प्रकार जब सम्पूर्ण योद्धा लोग अस्त्रशस्त्रोंको त्यागके वाहनोंसे नीचे उतरे, तब वह अस्त्र प्रबलवेगके सहित केवल भीमसेनके ही सिरपर गिरने लगा। उस समय भीमसेनको नारायण अस्त्रसे उत्पन्न हुई प्रचण्ड अग्निमें छिपे देखकर सम्पूर्ण प्राणी विशेष करके पाण्डव लोग हाहाकार करने लगे।

१६७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! अर्ज्जुनने भीमसेनको नारायण अस्त्रमें छिपे हुए देखकर उस अस्त्रके तेजको किञ्चित शान्त करनेके वास्ते उन्हें वारुणास्त्रसे छिपाया; उन्होंने जो उस अग्निपुञ्जके बीचमें वारुणाको चलाके भीमसेनको छिपाया, उसे अर्ज्जुनके हस्तलाघव तथा विशेष करके नारायण अस्त्रके तेजसे भीमसेनके छिपे रहनेसे कोई भी उनके वारुणास्त्रको न देख सके। इधर घोड़े सारथी और रथके सहित भीमसेन द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके नारायण अस्त्रसे उत्पन्न हुए अग्निपुञ्जमें छिपकर सहित इस ज्वालामुखी पर्व्वतकी भांति भयङ्कर दीख पड़ती थी। रात्रि शेष होने पर जैसे सम्पूर्ण ज्योतिवाले पदार्थ अस्ताचल पर्व्वत पर गमन करते हैं, वैसेही समूहके समूह प्रकाशमान बाण भीमसेनके रथ पर पड़ने लगी। उस समय भीमसेन घोड़ों और सारथीके सहित द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके अस्त्रसे छिपके अग्निपुञ्जमें निवास करने लगी महाराज जब भीमसेन उस अस्त्रसे छिप गये तब उस समय यही मालूम होने लगा मानो प्रलयकालकी अग्नि सम्पूर्ण जगत्को भस्म करके भगवान रुद्रके मुखमें प्रविष्ट हुई है; और जैसे सूर्य्यमण्डलमें अग्नि और अग्निमें सूर्य्यके प्रविष्ट होने पर शोभा होती है, वैसे ही भीमसेनके शरीरमें प्रवेश करती हुई नारायण अस्त्रसे उत्पन्न हुई अग्नि उसी भांति शोभित होने लगी। उस समय द्रोणपुत्र अश्वत्थामाको अद्वितीय रूपसे युद्धमें अधिक पराक्रम प्रकाशित करते, पाण्डवोकी अस्त्ररहित सेनाको चेतरहितके समान, युधिष्ठिर आदि महारथियोंको युद्धभूमिसे भागते और भीमसेनके रथपर लगातार प्रकाशमान बाणोंकी वर्षा होते देख, महातेजस्वी कृष्ण-अर्ज्जुन रथसे कूदके वेगपूर्व्वक भीमसेनकी ओर गमन करने लगे। उस समय महाबलवान उन दोनों वीरोंने माया बलसे द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके अस्त्र प्रभावसे उत्पन्न हुई अग्निके बीच प्रवेश किया। महाराज! वे दोनों ही महात्मा अस्त्र शस्त्रोंसे रहित थे, और उन लोगोंमें असाधारण प्रभाव तथा पराक्रम था और इसके अतिरिक्त वारुणास्त्रका भी प्रयोग हुआ था, इस ही कारणसे उस अस्त्रसे उत्पन्न हुई अग्नि उन दोनों महात्मा पुरुषोंको भस्म न कर सकी। अनन्तर वे महाबलवान नर नारायण रूपी कृष्ण अर्ज्जुन नारायण अस्त्रको शान्त करनेके वास्ते भीमसेनके निकटसे सब अस्त्र शस्त्रोंको बलपूर्व्वक फेंक कर उन्हें भी खींच कर रथमे नीचे उतारने लगे। कृष्ण अर्ज्जुनने जब भीमसेनको बलपूर्व्वक ग्रहण करके रथसे

नीचे उतारना चाहा तब भीमसेन भयङ्करशब्द के सहित चिल्लाने लगे उससे द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके हाथसे छूटा हुआ महाप्रचण्ड नारायण अस्त्र और भी अधिक प्रबल वेगसे बढ़ने लगा। तब श्रीकृष्णचन्द्र बोले, हे पाण्डुपुत्र भीमसेन। तुम निवारण करने पर शान्त नहीं होते हो, यह तुम्हें इस समय कैसा मोह उत्पन्न हुआ हैं? इस समय यदि कौरवोंकी पराजय होसकती, तो इन सम्पूर्ण पुरुष श्रेष्ठ राजाओंके सङ्ग मिलकर हम लोग अवश्य ही युद्ध करते। यह देखो हम लोग सब कोई रथसे नीचे उतरके पृथ्वीपर स्थित हुए है; इससे तुम भी शीघ्र ही रथसे उतरो। ऐसा वचन कहके श्रीकृष्णने सर्पके समान लम्बी सांस छोड़नेवाले लालनेत्रसे युक्त भीमसेनको रथसे उतारके पृथ्वी पर स्थित किया।

महाराज। जब कृष्ण अर्ज्जुनने बलपूर्व्वक भीमसेनको अस्त्रशस्त्रोंसे रहित करके उन्हें रथसे उतारके पृथ्वी पर स्थित किया; उसही समय शत्रुओंको भस्म करनेवाला नारायण अस्त्र शान्त होगया। इसी प्रकार उपायसे उस अत्यन्त कठिन और दुर्ज्जय नारायण अस्त्रका तेज शान्त हुआ; तब पहिलेकी भांति सुखजनक वायु बहने लगा। सम्पूर्ण दिशा निर्म्मल होगयीं, पशुपच्छी और शूरवीर योद्धाओंके हाथी घोड़े आदि वाहन फिर पहिलेकी भांति स्थित हुए। विशेष करके जब उस नारायण अस्त्रकी अग्नि शान्त होगई, उस समय भीमसेन इस प्रकार शोभित हुए जैसे रात्रिके बीतने पर भोरके समय सूर्य्य उदय होते हुए आकाशमें शोभित होते हैं। इसी प्रकार नारायण अस्त्र निवर्त्तित होने पर मरनेसे बचे हुए पाण्डव और पाञ्चाल सेनाके योद्धा लोग फिर निर्लज्ज पुरुषोंको भांति कौरवोंके सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते रणभूमिमें स्थित हुए, महाराज! जब नारायण अस्त्रका प्रभाव शान्त होगया और पाण्डवसेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग कौरवोंके सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते फिर रणभूमिके बीच स्थित हुए तब राजा दुर्य्योधन द्रोणपुत्र अश्वत्थामासे बोले, हे अश्वत्थामान्। यह देखो, पाञ्चाल योद्धा लोग फिर युद्ध करनेके निमित्त युद्धभूमिमें स्थित हुए हैं; तुम इस समय शीघ्रताके सहित फिर उस नारायण अस्त्रको चलाओ। अश्वत्थामा तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनके बचनको सुनके अत्यन्त शोकके सहित लम्बी सांस छोड़ते हुए उनसे यह बचन बोले, हे राजेन्द्र! ऐसा नहीं हो सकता, अर्थात् नारायण अस्त्र दो बार नहीं चलाया जा सकता; दूसरी बार प्रयोग करनेसे यह नारायण अस्त्रचलानेवालेका ही निस्सन्देह प्राण नाश करता है। महाराज। क्या कहूं, श्रीकृष्णने स्वयं इस अस्त्रके निवारण होनेका उपाय किया है; नहीं तो अवश्य ही सम्पूर्ण शत्रुओंका युद्धभूमिके बीच प्राण नाश हो जाता। जो हो युद्धभूमिके बीच याती पराजय होती है, अथवा मृत्यु ही उत्तम है। शत्रुओंने जब पराजित होके अस्त्रशस्त्रोंको परित्याग किया है, तब उन लोगोंको मरे हुए ही समझना चाहिये।

दुर्य्योधन बोले, हे अस्त्र धारियोंमें अग्रगण्य आचार्य्यपुत्र अश्वत्थामान्। यदि इस अस्त्रको दो बार चलानेका उपाय नहीं है, तो अन्यान्य अस्त्रोंसे गुरुघाती शत्रुओंका आप नाश कीजिये। अत्यन्त तेजस्वी देवोंके देव महादेव और तुममें सम्पूर्ण दिव्य अस्त्र विद्यमान हैं; आप यदि इच्छा करें, तो क्रुद्ध हुए देवराज भी तुम्हारे अस्त्रोंसे मुक्त नहीं होसकते।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! कपटतासे द्रोणाचार्य्यके मारे जाने और नारायण अस्त्रके निवृत्त होने पर दुर्य्योधनके वचनोंको सुनके तथा नारायण अस्त्रसे मुक्त हुई पाण्डवोंको रणभूमिके बीच स्थित देखकर द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने किस कार्य्यका अनुष्ठान किया?

सञ्जय बोले, महाराज! सिंहलाङ्गूलवाली

राजासे शोभित रथ पर चढ़े हुए अश्वत्थामा द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्नको पिताकी मृत्युका कारण समझके अत्यन्त क्रुद्ध होकर निर्भय चित्तसे उनकी ओर दौड़े, पहिले बीस चुद्रकास्त्रसे और फिर पांच बाणोंसे उन्होंने धृष्टद्युम्नको विद्ध किया। अनन्तर पराक्रमी धृष्टद्युम्नने भी जलती हुई अग्निके समान प्रकाशमान तिरसठ बाणोंसे अश्वत्थामाको विद्ध किया। तब महावीर अश्वत्थामाने स्वर्णपङ्ख युक्त शिलापर घिसे हुए बीस बाणोंसे धृष्टद्युम्नके सारथी और चार बाणोंसे उनके रथके चारों घोड़ोंको विद्ध किया। इसी भांति अश्वत्थामा बार बार धृष्टद्युम्नको अपने तेज बाणोंसे विद्ध करके पृथ्वीको कंपाते हुए सिंहनाद करने लगे; उस समय ऐसा मालूम होता था, कि मानो अश्वत्थामा इस महाघोर संग्राम भूमिमें सम्पूर्ण प्राणियोंको ही नाश कर देंगे। परन्तु कृतास्त्र, धृष्टद्युम्नने भी अपने प्राणकी आशाको त्यागके द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके समीप गमन किया। तिसके अनन्तर महापराक्रमी रथियोंमें मुख्य पाञ्चाल राजपुत्र धृष्टद्युम्न लगातार अश्वत्थामाके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। अनन्तर अश्वत्थामाने अत्यन्त क्रुद्ध होकर अनगिनत बाणोंसे धृष्टद्युम्नको छिपा दिया; और पिता वधको स्मरण करके दश चोखे बाणोंसे उनके शरीरमें प्रहार किया; तिसके अनन्तर दो क्षुरप्र बाणोंसे अश्वत्थामाने धृष्टद्युम्नका धनुष और उनके रथकी ध्वजाको काट दिया; फिर अनेक बाणोको चलाकर उन्हें पीड़ित करने लगे। इसी भांति द्रोणपुत्र अश्वत्थामा पाञ्चाल राजपुत्र धृष्टद्युम्नको घोड़े, सारथी और रथसे रहित करके क्रोधपूर्व्वक उनके अनुयाई योद्धाओंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे पीड़ित करके युद्धभूमिमें छिन्नभिन्न करके चारोंओर भ्रमण करने लगे। इससे पाञ्चालसेनाके सम्पूर्ण योद्धा श्रान्त और भयभीत होके व्याकुल होगये, उस समय वे लोग किसीकी ओर देखनेमें भी समर्थ नहीं हुए। उस समय शिनिपौत्र सात्यकि पाञ्चालसेनाके योद्धाओंको युद्धभूमिसे भागते और धृष्टद्युम्नको अश्वत्थामाके बाणोंसे पीड़ित देख, शीघ्रताके सहित अपना रथ चलाकर वहांपर उपस्थित हुए और क्रुद्धहोकर अश्वत्थामाको पहिले आठ बाणोंसे विद्ध करके फिर बीस बाणोंसे विद्ध किया। अनन्तर सात्यकिने अपने तेज बाणसे अश्वत्थामाके सारथीको विद्ध करके फिर चार बाणोंसे उनके चारों घोड़ोंको विद्ध किया। फिर हस्तलाघवके सहित बाण चलाकर उनके धनुष और ध्वजाको काट दिया। तिसके अनन्तर सात्यकिने सुवर्णभूषित अश्वत्थामाके रथके घोड़ोंको प्राणरहित करके उनके वक्षस्थलमें तीस बाणोंसे प्रहार किया महाबली अत्यन्त पराक्रमी अश्वत्थामा सात्यकिके बाणजालसे छिपकर अत्यन्तही पीड़ित होकर मूर्च्छित होगये।

महाराज! गुरुपुत्र अश्वत्थामाको मूर्च्छित देख तुम्हारे पुत्र महारथी दुर्य्योधन, कृपाचार्य्य और कर्ण आदि सैकड़ों महारथी योद्धाओंने चारों ओरसे सात्यकिको घेर लिया, दुर्य्योधनने बीस, कृपाचार्य्यने तीन, कृतवर्म्माने दश, कर्णने पचास, दुःशासनने एक सौ और वृषसेनने सात बाण सात्यकिकी ओर चलाये; इसी भांति वे सब कोई मिलकर चारों ओरसे अपने तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करते हुए शीघ्रताके सहित सात्यकिको विद्ध करने लगे। उसे देख, सात्यकिने क्षण भरके बीच उन सम्पूर्ण महारथियोंको रथभ्रष्ट करके युद्धसे विमुख किया। उस समय अश्वत्थामा सावधान होकर दुःख और क्रोधसे बार बार लम्बी सास छोड़ते हुए चिन्ता करने लगे; अनन्तर अश्वत्थामा शीघ्रही दूसरे रथपर चढ़के एक एक बार सैकड़ों बाणोंको चलाते हुए सात्यकिको निवारण करनेमें प्रवृत्त हुए। महारथी शिनि

पौत्र सात्यकिने द्रोणपुत्र अश्वत्थामाकोयुद्धभूमि में अपनी ओर आते देखकर उन्हें फिर रथ-रहित करके युद्धसे विमुख किया। पाण्डवोंकी ओरके सम्पूर्ण योद्धा लोग सात्यकिके ऐसे असाधारण पराक्रमको देखकर हर्षित होके सिंहनाद करने लगे। महाराज सत्यपराक्रमी सात्यकिने इसी भांति अश्वत्थामाको रथरहित करके महारथी वृषसेनके अनुयाई तीन हजार रथी, कृपाचार्य्यकी दश हजार रथियोंकी सेना और शकुनिकी सेनाके पचास हजार घुड़सवारोंका वध किया। उसे देखकर पराक्रमी द्रोणपुत्र अश्वत्थामा अत्यन्त क्रुद्ध होके सात्यकिके बधकी अभिलाषासे फिर एक रथपर चढ़के युद्ध करनेके वास्ते उसके सम्मुख उपस्थित हुए। शत्रुनाशन सात्यकि अश्वत्थामाको फिर अपनी ओर आते देख, तेज बाणोंको चलाकर बार बार उन्हें विद्ध करने लगे। महाधनुर्द्धारी अश्वत्थामा सात्यकिके नानाप्रकारके बाणोंसे विद्ध होकर अत्यन्त क्रुद्ध हुए और हंसके सात्यकिसे यह बचन बोले, हे शिनिपौत्र सात्यकि! गुरुघाती धृष्टद्युम्नके ऊपर तुम्हारा जैसा प्रेम है, उसे मैं जानता हूं; परन्तु मैं जब उसके बधके वास्ते दृढ़ संकल्प करूंगा तो उसकी रक्षा करनी तो दूर रही, तुम मेरे बाणोंसे अपनी भी रक्षा न कर सकोगे। मैं तुम्हारे समीप सत्य और तपस्याके प्रभावसे यह शपथ करता हूं, कि मैं सम्पूर्ण पाञ्चाल योद्धाओंका नाश करके तब शान्त होऊंगा। तुम इस स्थान पर पाण्डव और सोमक वंशियोंकी जितनी सेना है, उसे इकट्ठी करके मेरे सम्मुख स्थित करो; मैं सोमवंशी तथा पाञ्चाल योद्धाओंको अवश्यही संहार करूंगा, ऐसा वचन कहके द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने सूर्य्यकिरणके समान प्रकाशमान एक भयङ्कर बाणग्रहण करके सात्यकिके शरीरमें इस प्रकार प्रहार किया, जैसे इन्द्रने वृत्रासुरके ऊपर वज्र चलाया था। द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके हाथसे छूटा हुआ वह भयङ्कर बाण कवचके सहित सात्यकिके शरीरको भेदकर इस प्रकार पृथ्वीमें प्रविष्ट हुआ जैसे सर्प बिलके बीच प्रवेश करते है। पराक्रमी सात्यकि कवचरहित रुधिरपूरित तथा क्षत विक्षत शरीरसे युक्त होकर धनुष बाण परित्याग करके मतवारे हाथीके भांति मूर्च्छित होकर रथमें बैठ गये। उनके सारथीने उस ही समय उन्हें द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके समीपसे पृथक् किया। पाञ्चालराजपुत्र पहिलेसेही अश्वत्थामाके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध हुए थे, इस समय सात्यकिके पराजित होने पर फिर अश्वत्थामाके तीक्ष्णबाणोंसे पीड़ित होकर मूर्च्छित हुए और रथ दण्ड ग्रहण करके रथमें बैठ गये। महाराज। जैसे सिंहसे हाथी भयभीत होता है वैसे ही अश्वत्थामाके बाणोंसे धृष्टद्युम्नको पीड़ित तथा मूर्च्छित देखकर अर्ज्जुन, भीमसेन, पुरुवंशीय वृद्धक्षत्र चेदीदेशीय युवराज और मालवराज सुदर्शन, ये पांचो महारथी धनुष ग्रहण करके हाहाकार करते हुए वेगपूर्व्वक अश्वत्थामाकी ओर दौड़े। उन वीरोंने वीस पग आगे बढ़के पांच पांच बाणोंको धनुष पर चढ़ा कर एक ही बार द्रोणपुत्र अश्वत्थामाकी ओर चलाया। अश्वत्थामाने पचीस बाणोंको चला कर उन पांचो महारथियोंके चलाये हुए बाणोको काटके दो दो टुकड़े करके पृथ्वीमें गिरा दिया। तिसके अनन्तर अश्वत्थामाने सात तेज बाणोंसे महारथी वृद्धक्षत्रको, तीन बाणोंसे मालवराजको, एक बाणसे अर्ज्जुनको और छः बाणोंसे भीमसेनको पीड़ित किया। अनन्तर पाण्डवोंकी ओरके वे पांचो महारथी योद्धा लोग कभी एक ही बार और कभी पृथक् रूपसे मिलाकर विमुख हुए अपने तेज बाणोंको धनुष पर चढ़ाकर अश्वत्थामाकी ओर चलाने लगे। फिर चेदिदेशीय युवराजने वीस, अर्ज्जुनने आठ और भद्र

महारथियोंने तीन तीन बाणोंसे अश्वत्थामाके शरीरमें प्रहार किया। तब द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने अर्ज्जुनको छः श्रीकृष्ण और भीमसेनको दश दश बाणोंसे विद्ध करके चेदोदेशीय युवराजको चार और मालवराज तथा पौरवराजको दो दो बाणोंसे पीड़ित किया। तिसके अनन्तर पराक्रमी अश्वत्थामाने छः बाणोंसे भीमसेनके सारथी और असंख्य बाणोंसे अर्ज्जुनको विद्ध किया, फिर दो बाणोंसे भीमसेनका धनुष और उनके रथकी ध्वजाको काटके सिंहनाद करने लगे। महाराज! जब द्रोणपुत्र अश्वत्थामा इसी भांति लगातार अपने तेज बाणोंकी वर्षा करने लगे, उस समय उनके आगे पीछे सम्पूर्ण दिशा, तथा पृथ्वी, आकाश, नक्षत्रमण्डल आदि सम्पूर्ण स्थानोंमें केवल बाणही बाण दीख पड़ते थे। तिसके अनन्तर महापराक्रमी अनन्त तेजस्वी अश्वत्थामाने रथके समीप सुदर्शनको स्थित देखकर इन्द्रध्वजाको भांति उनकी दोनो भुजा और सिरको क्षुरास्त्रसे काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। फिर अश्वत्थामाने पौरव बृहत्क्षत्रको और एक शक्ति चलाकर अपने तेज बाणोंसे उनके रथको तिल तिलके परिमाणसे काट डाला और भल्लास्त्रसे उनकी चन्दनचर्चित भुजा और सिरको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। तिसके अनन्तर युवा चेदिराजको आक्रमण करके जलती हुई अग्निके समान प्रकाशमान बाणोंसे विद्ध कर घोड़े और सारथीके सहित प्राणनाश करके उन्हें यमपुरीमें भेज दिया। पाण्डुपुत्र महाबाहु भीमसेन अपने सम्मुखमें ही मालव, पौरव और चेदीराजको अश्वत्थामाके शरोंसे मरते देख, अत्यन्त क्रुद्ध हुए। अनन्तर शत्रुनाशन भीमसेनने क्रुद्ध सर्पके समान भयङ्कर तीक्ष्णधारवाले सैकड़ों बाण द्रोणपुत्र अश्वत्थामाको ओर चलाकर उन्हें छिपा दिया। उसे देखकर महापराक्रमी द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने क्रुद्ध होकर भीमसेनके चलाये हुए सम्पूर्ण बाणोंको निष्फल करके अपने तीक्ष्ण-बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। तब महाबली भीमसेन क्षुरप्रअस्त्रसे अश्वत्थामाके धनुषको काटके अपने तेज बाणोंसे उन्हें भी विद्ध किया। तब महाबलवान महात्मा द्रोणपुत्र अश्वत्थामा कटे हुए धनुषको परित्याग कर दूसरा धनुष ग्रहण करके भीमसेनको असंख्य बाणोंसे विद्ध करने लगे। इसी भांति महाबली पराक्रमी अश्वत्थामा और भीमसेन युद्धभूमिके बीच जलको वर्षा करनेवाले दो बादलों की भांति लगातार अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। इसही समय भीमनामसे अङ्कित शिलापर घिसे हुए स्वर्णदण्डवाले अनगिनत बाणोंने अश्वत्थामाको इस प्रकार छिपा दिया, जैसे बादलोंके समूह सूर्य्यको छिपा देते हैं। उसी भांति अश्वत्थामाके धनुषसे छूटे हुए सैकड़ों सहस्रों बाणजालमें मुहूर्त्त भरके बीच भीमसेन भी छिप गये। महाराज! भीमसेन युद्ध विद्या तथा अस्त्र शस्त्रोंके प्रयोगमें निपुण अश्वत्थामाके तीक्ष्ण-बाणजालसे छिप कर भी दुःखित नहीं हुए, वह भीमसेनका साहस अद्भुत रूपसे दीख पड़ा। अनन्तर भीमसेनने यमदण्डके समान भयङ्कर सुवर्णभूषित तेजधारवाले दश बाण अश्वत्थामाकी ओर चलाये, वे दशों बाण द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके शरीरको भेद कर इस प्रकार पृथ्वीमें घुस गये जैसे सर्प बिलके भीतर प्रवेश करते हैं। महाराज! अश्वत्थामा पाण्डुपुत्र भीमसेनके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध हुए और मूर्च्छित होकर ध्वजाका दण्ड ग्रहण करके रथमें बैठ गये। परन्तु मुहूर्त्त भरके बीच सावधान होकर रुधिर पूरित शरीरसे युक्त और अत्यन्त क्रुद्ध होकर वेगपूर्व्वक भीमसेनके रथको ओर गमन करने लगे। अनन्तर विषधर सर्पके समान भयङ्कर तीक्ष्ण धारवाले एक सौ बाणोंको धनुषपर चढ़ाके अश्वत्थामाने भीमसेनको ओर चलाये। युद्धमें प्रशंसित भीमसेन उनके चलाये

हुए बाणोंकी कुछ भी चिन्ता न करके अपने तेजस्वी बाणोंको अश्वत्थामाकी ओर चलाने लगे। उसे देख अश्वत्थामा अत्यन्तही क्रुद्ध हुए और अपने बाणसे भीमसेनके धनुषको काटके फिर तीक्ष्ण बाणोंसे उनके वक्षस्थलमें प्रहार किया। तब भीमसेनने क्रुद्ध होकर कटा धनुष त्यागके एक दृढ़ धनुष ग्रहण करके पांच तीक्ष्ण बाणोंसे द्रोणपुत्र अश्वत्थामाको विद्व किया। इसी भांति वे दोनों वीर क्रोधसे लाल नेत्र करके जलकी वर्षा करनेवाले दो बादलोंकी भांति अपने बाणोंकी वर्षासे एक दूसरेको छिपाने लगे और क्रोधपूर्व्वक एक दूसरेके अस्त्रोंके प्रतिकारकी अभिलाषासे महाघोर तलत्राण और धनुष्टङ्कारके शब्दसे एक दूसरेको भयभीत करते हुए भयङ्कर युद्ध करने लगे। अनन्तर अश्वत्थामा भीमसेनको बाण चलाते देख, शरदकालके दोपहरके सूर्य्यके समान प्रकाशित होके सुवर्णभूषित अपने प्रचण्ड धनुषको फेरते हुए क्रोधपूर्व्वक भीमसेनकी ओर देखने लगे। तिसके अनन्तर अश्वत्थामा जब बाण ग्रहण करने, साधने और भीमसेनकी ओर चलाने लगे, तो उस समय कोई पुरुष उन्हें तनिक भी अवकाश लेते हुए न देख सके। उस समय बाण वर्षा करनेवाले द्रोणपुत्र अश्वत्थामाका धनुष कुम्हारके चाकके समान मण्डलाकार गतिसे फिरता हुआ चारों ओर दिखाई देने लगा; उनके धनुषसे छूटे हुए सैकड़ों सहस्रों बाण आकाशमण्डलमें शलभसमूहकी भांति चलते हुए दिखाई देने लगे। महाराज! वे सुवर्णभूषित सम्पूर्ण बाण लगातार भीमसेनके रथके ऊपर वेगपूर्व्वक पड़ने लगे। परन्तु उस स्थलमें मैंने भीमसेनके भी बल पराक्रम वीरताका प्रभाव और असाधारण कार्य्यको अवलोकन किया। वह चारों ओरसे अश्वत्थामाके बाणोंको अपने ऊपर गिरते देख, उसे जल वर्षाके समान ही समझने लगे; परन्तु महापराक्रमी भीमसेन भी द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके बधकी इच्छा करके वर्षाकालके बादलकी भांति लगातार उनके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। महाराज! उस समय उनका सुवर्णभूषित प्रचण्ड धनुष बार बार आकर्षण करनेसे इन्द्रधनुषकी भांति शोभित होता था। भीमसेनके धनुषसे छूटे हुए सैकड़ों सहस्रों बाणोंसे द्रोणपुत्र अश्वत्थामा छिप गये। उस समय वे दोनों पराक्रमी वीर इस प्रकार अपने बाणोंको चलाने लगे, कि वायु भी उस स्थानमें इधर उधर चलनेमें समर्थ नहीं हुआ। अनन्तर अश्वत्थामा भीमसेनके बधकी इच्छा करके उत्तम पानी चढ़ेहुए तीक्ष्ण बाणोंको उनकी ओर चलाने लगे। पाण्डुपुत्र बलवान भीमसेनने अश्वत्थामाके विशेष हस्तलाघव प्रकाशित करते हुए, उन बाणोंको आकाशमार्गमेंही अपने बाणोंके प्रभावसे तीन तीन टुकड़े करके पृथ्वीमें गिरा दिया। और क्रोधपूर्व्वक अश्वत्थामाको खड़ा रह! खड़ा रह! कहके उनके बधकी अभिलाषासे अपने महाभयङ्कर बाणोंको उनकी ओर चलाने लगे। तब महाअस्त्रशस्त्रोंकी विद्या जाननेवाले द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने अस्त्रमायाके प्रभावसे भीमसेनके धनुषसे छूटे हुए सम्पूर्ण बाणोंको शीघ्रताके सहित निवारण करके उनके धनुषको काट दिया और क्रोधपूर्व्वक उन्हें भी अनगिनत बाणोंसे विद्व करने लगे। बलवान भीमसेनने धनुषरहित होकर एक महाभयङ्कर शक्ति उठाकर वेगपूर्व्वक अश्वत्थामाके रथकी ओर चलायी। महाउल्काकी भांति उस शक्तिको अपनी ओर आती देख, द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने हस्तलाघवके सहित उसे दश बाणोंसे काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। इतनेही अवसरमें भीमसेन दूसरा धनुष ग्रहण करके हंसते हंसते द्रोणपुत्र अश्वत्थामाको विद्व करने लगे। उसे देखकर अश्वत्थामाने क्रुद्ध होकर एक शतपर्व्व

वाणसे भीमसेनके सारथीके मस्तकमें प्रहार किया। भीमसेनका सारथी बलवान अश्वत्थामाके वाणसे अत्यन्त विद्ध होकर मूर्च्छित हुआ उसके हाथसे घोड़ोंकी रास छूट गयी। महाराज! जब भीमसेनका सारथी मूर्च्छित होगया, तब उनके रथके घोड़े सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंके सम्मुखमें ही अश्वत्थामाके सम्मुखसे भागके भीमसेनके रथको खींचते हुए वेगपूर्व्वक रणभूमिमें दूसरी ओर दौड़ने लगे। शत्रुओंसे अजेय अश्वत्थामा भीमसेनको युद्धभूमिसे पृथक् होते देख, हर्षपूर्व्वक अपने शङ्खको बजाने लगे। इसी प्रकार जब भीमसेन युद्धसे बिमुख हुए, तब सम्पूर्ण पाञ्चाल योद्धा लोग धृष्टद्युम्नके सहित रणभूमि छोड़के वेगपूर्व्वक चारों ओर भागने लगे। उस समय पराक्रमी अश्वत्थामा उस भागती हुई पाञ्चाल सेनाके योद्धाओंके ऊपर सहस्रों वाणोंको बर्षाते हुए उन्हें आक्रमण करके उनके पीछे पीछे दौड़े। महाराज! उस समय वे सम्पूर्ण क्षत्रीय योद्धा द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके वाणोंसे पीड़ित तथा थकित होके ऐसे भयभीत होगये, कि उस समय चारों ओर द्रोणपुत्र अश्वत्थामा स्थित है, ऐसाही समझने लगे।

१६८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! महापराक्रमी महात्मा कुन्तीपुत्र अर्ज्जुन अपनी ओरके सम्पूर्ण योद्धाओंका भागते देख, द्रोणपुत्र अश्वत्थामाको मारनेकी इच्छा करके अपनी सेनाके योद्धाओंको भागनेसे निवृत्त करने लगे। परन्तु पाञ्चाल तथा पाण्डवोंकी सेनाके योद्धा लोग किसी प्रकारसे भी युद्धभूमिमें खड़े न होसके। अनन्तर कृष्ण और अर्ज्जुनने अत्यन्त यत्नके सहित उन शूरवीर योद्धाओंको फिर लौटाकर युद्धभूमिमें स्थित किया। उस समय अर्ज्जुन अकेलेही चन्द्रवंशी और मत्स्यसेनाके योद्धाओंको सङ्ग लेकर कौरवोंसे युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। अनन्तर सव्यसाची अर्ज्जुन सिंहलाङ्गलवाली ध्वजासे शोभित रथपर चढ़े हुए महाधनुर्द्धारी अश्वत्थामाको शीघ्रताके सहित आक्रमण करके उनसे यह बचन बोले, हे अश्वत्थामन्! तुम्हारी धृतराष्ट्रपुत्रोंके ऊपर जैसी प्रीति और हम लोगोंके ऊपर तुम्हारा जैसा द्वेषभाव तथा तुम्हारा जहांतक अस्त्रविज्ञान, शक्ति वा पुरुषार्थ है, अधिक क्या कहूं तुम्हारा जो कुछ प्रभाव है, वह सब तुम आज मुझे दिखाओ। यह द्रोणाचार्य्यका बध करनेवाला धृष्टद्युम्नही तुम्हारे अभिमानको दूर कर देगा। शत्रुओंके नाश करनेवाले युद्धमें कालाग्निके समान धृष्टद्युम्न और कृष्णके सहित मेरे सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त होजाओ! तुम सबको तुच्छ समझ रहे हो, आज मैं युद्धभूमिमे तुम्हारे अभिमानको दूर कर दूंगा।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! द्रोणपुत्र बलवान अश्वत्थामा सम्पूर्ण क्षत्रीय पुरुषोंमें पूजनीय हैं, विशेष करके अर्ज्जुनके ऊपर उनकी अधिक प्रीति है, और वह भी महात्मा अर्ज्जुनको प्रिय हैं, ऐसी अवस्थामे कुन्तीपुत्र अर्ज्जुनने अपने मित्र तथा सखा अश्वत्थामाको ऐसे कड़वे वचन क्यों सुनाये? इसके पहिले तो अर्ज्जुनने कभी भी अश्वत्थामाके विषयमें ऐसे कड़वे बचनोंका प्रयोग नहीं किया था।

सञ्जय बोले, महाराज! चेदीदेशीय युवराज पुरुवंशीय वृद्धक्षत्र और अस्त्रशस्त्रोंकी विद्यामेंनिपुण मालवराज सुदर्शनके मारे जाने, धृष्टद्युम्न सात्यकि तथा भीमसेनके पराजित होनेसे और राजा युधिष्ठिरके आक्षेप युक्त वचनोंको सुनकर अर्ज्जुनका चित्त विचलित हुआ था। विशेष करके अपनी सेनाके बीच अन्तर्भेदको स्मरण करके उस समय पराक्रमी अर्ज्जुन दुःख और क्रोधके वशवर्त्ती हुए। इस ही कारण उन्होंने

कादर पुरुषकी भांति आचार्य्य-पुत्र अश्वत्थामाके विषयमें इस प्रकारके मानहानि करनेवाले अप्रिय और अश्लील वचनोंका प्रयोग किया था। महाराज! उनके क्रोधपूरित मर्म्म-भेदी वचनोंको सुनकर धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी द्रोणपुत्र अश्वत्थामा अर्ज्जुन और कृष्णके ऊपर अत्यन्त क्रुद्ध हुए। तिसके अनन्तर शत्रुओंको नाश करनेवाले महावीर पराक्रमी अश्वत्थामाने युद्धभूमिसे स्थित होकर जलस्पर्श करके दृश्य और अदृश्य शत्रुओंके बधके उद्देश्यसे देवताओंसे भी असह्य आग्नेयास्त्रको ग्रहण किया, और धूएंसे रहित अग्निकी भांति प्रकाशमान उस अस्त्रको अभिमन्त्रित करके क्रोधपूर्व्वक कृष्ण अर्ज्जुन तथा उनके अनुयाई योद्धाओंकी ओर चलाया। अनन्तर आकाशमण्डलसे अग्नि प्रबल वेगसे प्रकट हुई और उससे असंख्य बाण प्रकट होकर अर्ज्जुनके ऊपर पड़ने लगे, उस समय रथके सहित कृष्ण अर्ज्जुन अश्वत्थामाके बाणजालसे इकबारगी छिप गये, उस ही समय आकाशमण्डलसे उल्कापातहोने लगा, और व्यूहबद्धसेनाके बीच महाघोर अन्धकार प्रकट हुआ, उससे सम्पूर्ण दिशा छिप गयीं। राक्षस, पिशाच इकट्ठे होकर भयानक शब्द करने लगे, वायु अत्यन्त ही प्रबल वेगसे बहने लगा, सूर्य्यका प्रकाश मन्द हुआ, कौवे गिद्ध कर्कश बोली बोलने लगे। आकाशसे बादलोंके समूह गर्ज्जते हुए रुधिरकी वर्षा करने लगे,। उस समय पशु, पक्षी तथा स्थिर चित्तवाले मुनि भी शान्त न रह सके, सहस्र किरण धारण करनेवाले भगवान सूर्य्य तेजरहित हुए और उस समय सम्पूर्ण प्राणी व्याकुल होगये, इसी प्रकार तीनों लोकमें हाहाकार मच गया और सम्पूर्ण पुरुष भयभीत होगये। उस समय युद्ध-भूमिके बीच हाथियोंके समूह आग्नेयास्त्रके तेजसे विकल होकर बार बार चिग्घाड़ते और लम्बी सांस छोड़ते हुए प्राण रहित होकर पृथ्वीमें गिरने लगे। अधिक क्या कहा जावे, उस समय आग्नेयास्त्रके प्रभावसे जलमें वास करनेवाले जीवजन्तु भी भस्म होने लगे, जलचारी जीव भी अग्निकी ज्वालासे ऐसे विकल होगये, कि उन्हें किसी प्रकार भी शान्ति प्राप्त न होसकी। उसही समय सम्पूर्ण दिशा तथा आकाशसे गरुड़ और सर्पके समान वेगगामी असंख्य बाणोंकी वर्षा होने लगी। शत्रुसेनाके सूरवीर योद्धा द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके वज्रसमान तीक्ष्ण बाणोंसे पीड़ित तथा प्राण रहित होके इस प्रकार पृथ्वीमें गिरने लगे,जैसे अग्निके वेगसे वनके वृक्ष भस्म होके गिर पड़ते हैं। बड़े बड़े मतवारे बहुतेरे हाथी अग्नितेजसे विकल होके पर्व्वत टूटनेकी भांति भयङ्कर शब्द करते हुए मरके पृथ्वीमें गिरने लगे। कितनेही हाथी जैसे बनमें दावाग्नि लगनेसे पहिले चारों ओर भयभीत होके भ्रमण करते थे, वैसे ही इस समय आग्नेयास्त्रकी अग्निसे भयभीत होकर युद्धभूमिमें इधर उधर चारो ओर वेगपूर्व्वक भयभीत होके भागने लगे। जैसे वनके बीच दावाग्नि प्रकट होनेसे वृक्षोंकी डाल शाखा तथा चोटी भस्म होनेसे ठूठे वृक्ष दीख पड़ते हैं, वैसे ही घोड़ोंसे युक्त ध्वजा पताकासे शोभित होकर रथोंके समूह भी ठूठे वृक्षकी भांति दिखाई देने लगे! महाराज! इसी प्रकार उस आग्नेयास्त्रकी अग्नि सम्पूर्ण प्राणियोंको भस्म करनेवाली प्रलयाग्निकी भांति भयभीत हुए पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंको भस्म करने लगी। कौरव लोग पाण्डवोंकी सेनाको भस्म होती देख हर्षित और आनन्दित होके सिंह नाद करने लगे, और अपनी विजयका लक्षण देख प्रसन्नचित्तसे सहस्रों ढोल भेरी शंख और नगाड़े आदि युद्धके जुझाऊ बाजे बजाने लगे।

महाराज! जब सम्पूर्ण रणभूमि अन्धकारसे परिपूरित होगई, उस समय पूरी एक अक्षौहिणी सेनाके सहित अर्ज्जुन तनिक भी दीख

। पड़े। जब क्रुद्ध होकर द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने आग्नेयास्त्र प्रकट किया, उस समय जैसी घटना हुई हमलोगोंने इसके पहिले ऐसा कभी न देखा और न सुना ही था। अनन्तर अर्जुन ने समस्त अस्त्रोंके निवारण करनेमें समर्थ प्रजापति ब्रह्माके दिये हुए ब्रह्मास्त्रको प्रकट किया उससे चण भरके बीच अन्धकार दूर होगया शीतल वायु बहने लगा और सम्पूर्ण दिशा निर्मल होगईं। परन्तु उस स्थलमें मैंने एक अद्भुत और आश्चर्य्य कार्य्यको अवलोकन किया कि, वह एक अचौहिणी सेना जो अर्जुनके सहित कौरवोंसे युद्ध करनेके वास्ते रणभूमिमें उपस्थित हुई थी, वह अश्वत्थामाके आग्नेयास्त्रके तेजसे इस प्रकार भस्म होगई, कि कोई पुरुष उस एक अचौहिणी सेनाके योद्धाओंको भस्म होते हुए देख भी न सके। तिसके अनन्तर एक रथ पर स्थित महाधनुर्धारी और कृष्ण-अर्जुन अन्धकारसे मुक्त होकर वहां इस प्रकार शोभित हुए, जैसे बादलोंके समूहसे मुक्त होके आकाशमें सूर्य्य और चन्द्रमा दीख पड़ते हैं; और ध्वजा, पताका, घोड़े तथा उत्तम अस्त्र शस्त्रोंसे परिपूरित कौरवोंकी सेनाको भयभीत करनेवाला कपिध्वजासे युक्त अर्जुनका दिव्य रथ भी रणभूमिके बीच प्रकाशित होने लगा। कृष्ण अर्जुनको घाव रहित शरीरसे मुक्त हुए देख, पाण्डवोंकी सेनाके रूप प्रसन्न और हर्षित होके शंख भेरी आदि बाजोंको बजाते हुए सिंहनाद करने लगे, महाराज! पहिले कौरव और पाण्डव सेनाके शूरोंने कृष्ण अर्जुनको अश्वत्थामाके चलाये हुए आग्नेयास्त्रकी अग्निमें छिपे देखकर यह समझा था कि ये दोनों ही आज जीते जी न रहेंगे,— परन्तु इस समय उन दोनों ही श्रेष्ठ पुरुषोंको घावरहित शरीरसे मुक्त होते और पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंको हर्षसे सिंहनाद करते तथा शंख बजाते देखकर तुम्हारी सेनाके योद्धालोग अत्यन्तही दुःखित हुए। विशेष करके द्रोणपुत्र अश्वत्थामा कृष्ण अर्जुनको आग्नेयास्त्रसे मुक्त होते देखकर दुःखित चित्तसे मुहूर्त भर तक "यह क्या हुआ।" इसी भांति चिन्ता करने लगे। तिसके अनन्तर वह शोक और चिन्तासे युक्त होके लम्बी तथा गर्म्म सांस छोड़ते हुए क्रमसे अत्यन्त ही दुःखित हुए और धनुष फेंककर वेगपूर्व्वक रथसे कूदके "इन अस्त्रोंको धिक्कार है, ये सब मिथ्या हैं।" ऐसा बचन कहके रणभूमिसे प्रस्थान किया। महाराज! उस ही समय द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने अपने सम्मुखमें स्थित प्रसन्नमूर्त्ति, चारों वेदोंके जाननेवाले साचात् धर्म्मस्वरूप पापरहित श्रीवेदव्यास ऋषिका दर्शन किया। उन्होंने वेदव्यास ऋषिको अपने अगाड़ी स्थित देख, रुद्धकण्ठसे अत्यन्त दीनताके सहित प्रणाम करके यह प्रश्न किया,— हे भगवान्! यह क्या दैवी माया है। वा और कोई घटना है? मैं इसे कुछ भी मालूम न कर सका? इस अस्त्रके निष्फल होनेका क्या कारण है? क्या मेरी बुद्धि विपरीत हुई थी? यह क्या सम्पूर्ण लोकोंके नाश होनेका समय उपस्थित हुआ है? क्योंकि वे दोनों कृष्ण-अर्जुन जीते ही मेरे अस्त्रसे मुक्त हुए हैं! जो हो, कालकी गति कुछ जानी नहीं जाती; नहीं तो मेरे चलाये हुए आग्नेयास्त्रको असुर, राचस, गन्धर्व्व, पिशाच, सर्प, मनुष्य आदि कोई प्राणी भी निवारण तथा निष्फल करनेमें उत्साही नहीं हो सकते। ऐसी अवस्थामें सम्पूर्ण प्राणियोंको संहार करनेवाली जलती हुई प्रलयकालकी अग्निके समान तेजस्वी मेरा चलाया हुआ महाभयङ्कर आग्नेयास्त्र केवल एकही अचौहिणी सेना भस्म करके शान्त होगया। हे महर्षि वेदव्यास! मैं आपसे यह पूछता हूं, कि कृष्ण-अर्जुन दोनों ही सत्यधर्म्मावलम्बी हैं;

तब मेरे हाथसे छूटे हुए आग्नेयास्त्रने किस कारणसे उनका नाश नहीं किया? मैं इस विषयके यथार्थ वृत्तान्तको सुननेकी इच्छा करता हूं।

श्रीवेदव्यास मुनि बोले, हे द्रोणपुत्र अश्वत्थामन्! इस विषयमें जो तुम विस्मित होके मुझसे प्रश्न कर रहे हो; मैं वह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम्हारे समीप वर्णन करता हूं, तुम चित्त लगाकर सुनो। जो प्रजापति आदि देवतोंके भी पूर्व्व पुरुष विश्वाधार नारायण हैं, उन्होंने किसी प्रयोजनकी सिद्धिके निमित्त धर्म्मके पुत्र होकर अवतार लिया। कमलनेत्रवाले सूर्य्यके समान तेजस्वी उस पुरुषने मैनाक पर्व्वतपर गमन करके दोनों भुजा उठाकर अत्यन्त कठिन तपस्या की। उन्होंने छाछठ हजार वर्ष पर्य्यन्त वायु भक्षण करके इसी प्रकार तपस्यासे अपने शरीरको सुखाकर फिर उससे द्विगुण समयतक तपस्या करके अपने तेजसे पृथ्वी आकाशको परिपूरित किया; जब वह तपस्याके प्रभावसे साक्षात् ब्रह्मरूप हुए; तब उन्होंने जगन्नियन्ता, विश्वके कारण, अत्यन्त कठिनतासे बोध होने योग्य, सम्पूर्ण देवतोंसे बन्दित बृहत् वस्तुओंसे भी बृहत् और सूक्ष्मसे सूक्ष्म जगत्स्रष्टा विश्वेश्वरका दर्शन किया। वह विश्वेश्वर, रुद्र, ईशान, ऋषभ, हर, शम्भु, कपर्दी, चेतनस्वरूप और स्थावर जङ्गम आदि सम्पूर्ण भूतोंके परम कारण हैं; वह सर्व्वेश्वर, नेत्रसे अगोचर, अखण्ड, अविनाशी, महात्मा सर्व्वकर्त्ता प्रचेता, दिव्य शरासन और तृणीरधारी, हिरण्यवर्म्मा अत्यन्त पराक्रम तथा बलसे युक्त हैं। वह पिनाक, वज्र, प्रकाशमान, शूल, परश्वध, गदा और दिव्य खड्ग धारण करनेवाले हैं; उनके ललाटपर चन्द्रमा और सिर पर जटा शोभित हैं। उनकी दोनों भौं सुन्दर हैं, वह बाघम्बर पहरनेवाले महादेव परिघ और दण्डधारी हैं; उनके गलेमें सर्पोंका यज्ञोपवीत शोभित है और भुजा मनोहर अङ्गद भूषित है। वह सम्पूर्ण प्राणी तथा भूतोंके स्वामी हैं। वह सदा एक रूप, तपस्याके निधिस्वरूप हैं, प्राचीन ऋषि लोग उनकी इष्ट बचन तथा वेदवाक्योंसे स्तुति करते रहते हैं। जो पृथ्वी, जल, आकाश, वायु, अग्नि, चन्द्र, सूर्य्य तथा सम्पूर्ण जगतके परम कारण हैं, दुष्ट तथा ब्रह्मद्वेषी पुरुष उस भव अविनाशी परम पुरुषके दर्शन करनेमें समर्थ नहीं होते। परन्तु शोकादि रहित साधु पुरुष पापरहित ब्राह्मण लोग ज्ञान नेत्रसे उनका दर्शन कर सकते हैं। बासुदेव नारायण ऋषि उनके अत्यन्त भक्त हैं; इससे वह अपने उग्र तपस्याके प्रभावसे दिव्य तेजसे प्रकाशित साक्षात धर्म्मस्वरूप जगत् बन्दनीय विश्वव्यापक महादेवके दर्शन करनेमें समर्थ हुए।

हे अश्वत्थामन्! कमलनेत्रवाले नारायण ऋषिने तेज स्वरूप, रुद्राक्षकी माला धारण करनेवाले, जगत्स्रष्टा वृषभवाहन अत्यन्त मनोहर अङ्गवाली पार्व्वतीके सङ्ग सदा क्रीड़ा करनेवाले, भूत प्रेतोंसे घिरे हुए अज अव्यक्त सम्पूर्ण चराचर प्राणियोंके कारणात्मा महात्मा रुद्र ईशानका दर्शन करके मन और वचनसे आनन्दित होकर उनकी वन्दना की। अनन्तर नारायण ऋषि अन्धकासुरके नाश करनेवाले विरूपाक्ष रुद्रदेवको नमस्कार करके भक्तिभावसे युक्त होकर इस प्रकार स्तुति करने लगे। हे बरदान करनेवाले! हे देवोंके देव। जो इस जगत्के रक्षक, सम्पूर्ण प्राणियोंके सृष्टिकर्त्ता, देवताओंके पूर्व्व प्रजापति हैं, वह तुमसे ही प्रकट होके पृथ्वी प्रकृतिके बीच प्रवेश करके तुम्हारी बनाई हुई पुरातनी सृष्टिकी रचना करते हैं। देवता, असुर, गन्धर्व्व, यक्ष राक्षस, सर्प और पक्षी आदि सम्पूर्ण प्राणी तुम्हारेही प्रभावसे उत्पन्न होते हैं, यह मुझे विदित है। इन्द्र, यम, वरुण, कुवेर और चन्द्रमा आदि दिक्पाल तथा त्वष्टा आदि प्रजापति तुम्हारे ही

प्रभावसे अपने अधिकारके कार्य्योंका निर्वाह करते हैं। शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, पृथ्वी, आकाश, वायु, जल, अग्नि, काल, ब्रह्मा, वेद और ब्राह्मण, — ये सब तुमसे ही उत्पन्न हुए हैं। जैसे पानीके बबूले पानीसे ही उत्पन्न होके फिर जलही में लीन होजाते हैं, वैसेही यह विश्व संसार प्रलयकालमें नष्ट होकर फिर तुम्हारे ही शरीरमें लीन होजाता है। तत्वज्ञानी पण्डित लोग तुम्हें प्राणियोंकी उत्पत्ति और उनके लयके कारण जानकर ही तुम्हारी कृपासे सायुज्य मुक्ति लाभ करते हैं। हे देवोंके देव। तुम्हीं मानस वृक्ष पर चढ़े हुए जीव और ईश्वर रूपी दो पक्षी और वेदमें कहेहुए अनेक शाखासे युक्त सप्तलोक रूप फलके भोक्ता और द्रष्टा हो। सम्पूर्ण शरीरको प्रतिपालन करनेवाली जो दश इन्द्रियां हैं; तुम उन्हें उत्पन्न करके स्वयं पृथक् रूपसे निवास करते हो। तुम भूत भविष्य और वर्त्तमान रूपी काल हो। यह सम्पूर्ण संसार तुमसे ही उत्पन्न हुआ है। मैं तुम्हारा भक्त हूं, तुम मेरे ऊपर कृपा करो। मैं तुम्हारा कैसा भक्त हूं, वह तुम्हें भली भांति विदित है; इससे मुझे निराश न कीजिये। हे सर्व्वेश्वर। तत्वज्ञानी पुरुष तुम्हें अपनी आत्मासे अभिन्न जान कर ही उस पवित्र ब्रह्मको प्राप्त होते हैं। मैं तुम्हें आत्मस्वरूप जानकर भी तुम्हारे सम्मानकी इच्छासे तुम्हारी स्तुति कर रहा हूं, तुम मेरी स्तुतिसे प्रसन्न हो मेरे अभिलषित दुर्लभ वर प्रदान करो। आप मेरे प्रतिकूल न होइये।

व्यास मुनि बोले, पिनाकधारी नीलकण्ठ महादेवने उस ऋषिकी स्तुतिसे प्रसन्न होकर उस माननीय महर्षिकी अभिलषित वर प्रदान किया, — रुद्र भगवान बोले, हे नारायण ऋषि। तुम मेरे प्रसादसे देव, गन्धर्व्व सर्प और मनुष्य लोकके बीच अत्यन्त पराक्रमशाली होगे; देवता, असुर, सर्प, पिशाच यक्ष, गन्धर्व्व, राक्षस पक्षी तथा सम्पूर्ण अयोनिसे उत्पन्न हुए प्राणी भी तुम्हारे युद्धको सहन करनेमें समर्थ न होंगे। अधिक क्या कहूं, देवताओंके बीच भी कोई तुम्हें पराजित नहीं कर सकेगा। किसी प्रकारके अस्त्र, वज्र, अग्नि, वायु, जल आदि द्रव पदार्थ तथा सूखे पत्थर आदि स्थावर वस्तुओंसे कोई पुरुष भी मेरे प्रसादसे तुम्हें पीड़ित करनेमें समर्थ न होगा। ऐसा क्या, युद्धभूमिमें तुम मुझसे भी अधिक पराक्रम प्रकाशित करोगे।

हे अश्वत्थामन्! पहिले नारायण ऋषिने इसी प्रकार महादेवके निकटसे वर प्राप्त किया था, — इस समय वही नारायणऋषि कृष्णरूपसे अवतार लेके जगत्को मोहित करते हुए पृथ्वी पर भ्रमण कर रहे हैं; और नारायण ऋषिके ही तपस्यासे प्रकट हुए उन्हींके समान प्रभावसे युक्त जो नर-ऋषि नामक महात्मा हैं, वही अर्जुनरूपसे उत्पन्न हुए हैं। वे दोनों ही देवताओंके पुरातन परम ऋषि कहके वेदमें वर्णित हुए हैं। लोकयात्रा विधानके निमित्त वे दोनों महात्मा प्रतियुगमें अवतार लेते हैं। वैसे ही तुम भी सम्पूर्ण कर्मस्वरूप अपने बृहत् तपस्याके प्रभावसे तेज और क्रोध धारण करके रुद्र अंशसे उत्पन्न हुए हो। पहिले तुम महाबुद्धिमान एक मुनि थे, इस जगत्को शिवमय जानकर महादेवकी प्रीतिकी इच्छासे तपस्यामें रत होकर तुमने अपने शरीरको सुखा दिया था। हे मानद। तुमने जप, होम और उपवास आदि व्रतसे अपने शरीरको पापरहित करके देवोंके देव महादेवकी पूजा की थी। इसी प्रकार देवोंकेदेव महादेव तुम्हारे पहिले उत्पन्न हुए अनेक शरीरोंसे पूजित होकर तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हुए थे। हे विद्वन्! इस ही कारण भगवान रुद्रने तुम्हारी अभिलाषाके अनुसार तुम्हें उत्तम वर प्रदान किया था, इससे नर नारायण ऋषि और तुम्हारा अर्थात् तुम तीनों ही महात्माओंके उत्तम कर्म श्रेष्ठ हैं और तुम

तीनोंहीमें तपस्याका प्रभाव है; जैसे उन दोनों महात्माओंने प्रतियुगोंमें महादेवके लिङ्गकी पूजा करी है। वैसे ही तुमने भी प्रतिमा बनाकर महादेवकी पूजा की है। विशेष करके रुद्र भक्त कृष्णने रुद्रनिष्ठामें रत होकर निग्रहानुग्रहमें समर्थ महादेवको सम्पूर्ण विश्वकी उत्पत्ति और लयके कारण जानकर रुद्रलिङ्गकी पूजा की है; इसही कारण कृष्णमें सनातन आत्मयोग और शास्त्रयोग प्रतिष्ठित है। इसी भांति देवता, सिद्ध और परम ऋषि लोग भी महादेवकी पूजा करके परम पद पानेकी इच्छा किया करते हैं। परन्तु सबके स्वामी कृष्ण भी यज्ञादिकोंसे पूजित होने योग्य हैं; क्योंकि वह सर्व्व शक्तिमान महादेवको सम्पूर्ण चराचर प्राणियोंकी आत्मा जानकर शिवलिङ्गकी पूजा किया करते हैं, और वृषभध्वज महादेवकी भी कृष्णके ऊपर आन्तरिक प्रीति है।

सञ्जय बोले, महाराज! महारथी द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने वेदव्यासके वचनको सुनकर भगवान् रुद्रको नमस्कार किया और श्रीकृष्णकोभी अत्यन्त ही पूजनीय समझा। अनन्तर पराक्रमी अश्वत्थामाने अपने चित्तको बशमें किया; और लोमाञ्चित शरीरसे युक्त होकर अपनी सेनाके बीच जाकर सम्पूर्ण योद्धाओंको युद्ध करनेसे निवृत्त किया। कौरवोंकी सेनाको युद्धसे निवृत्त होती देख पाण्डवोंने भी अपनी सेनाके योद्धाओंको युद्धसे निवृत्त किया। हे प्रजानाथ! युद्धभूमिके बीच द्रोणाचार्य्यके मारेजानेपर इसी भांति दीनभावसे युक्त कौरव और उत्साहयुक्त पाण्डवोंने उस दिन अपनी सेनाको युद्धसे निवृत्त किया। वेदविद्या जाननेवाले ब्राह्मण द्रोणाचार्य्य पांच दिन युद्ध करके शत्रुओंकी सेनाके असंख्य योद्धाओंका संहार करके अन्तमें ब्रह्मलोकको गये।

१६६ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जब अतिरथी द्रोण मारे गये, तब पाण्डव और मेरी ओरके योद्धाओंने किस कार्य्यका अनुष्ठान किया?

सञ्जय बोले, महाराज! जब अतिरथी द्रोणाचार्य्य पृषत्पुत्र धृष्टद्युम्नके हाथसे मारे गये और कौरवोंकी सेना युद्धभूमिसे पराजित हुई, उस समय कुन्तीपुत्र अर्जुनने विस्मय उत्पन्न करनेवाली अपनी अद्भुत विजय देख, तथा इच्छानुसार व्यासदेवको अपने समीपमें आये हुए देखकर उनसे पूछा है महर्षि! युद्धभूमिके बीच जब मैं अपने तेज बाणोंसे शत्रुओंको नाश करनेमें प्रवृत्त हुआ था, उस समय मैंने देखा कि मेरे अगाड़ी अग्निके समान तेजस्वी एक पुरुष प्रकाशमान त्रिशूल ग्रहण करके जिधर दौड़ने लगा, उस ही ओर शत्रुओंकी सेना छिन्न भिन्न होकर भागने लगी। उस समय उस महातेजस्वी पुरुषके सम्मुखसे भागती हुई सेनाको सब कोई मेरे ही प्रभावसे भागती हुई समझने लगी। परन्तु मैंने केवल भागती हुई सेनाके योद्धाओंके पीछे पीछे गमन करके उसके ऊपर बाण चलाया था। उस महातेजस्वी पुरुषने न अपने पावोंसे पृथ्वीको स्पर्श किया और न अपना प्रकाशमान त्रिशूल ही चलाया था; उनके तेज प्रभावसे उस हाथमें स्थित शूलसे ही सहस्रों शूल निकलने लगे। हे भगवान्! सूर्य्यसमान तेजस्वी अलौकिक प्रभाव युक्त त्रिशूलधारी वह काले पुरुषोत्तम कौन हैं! आप मेरे समीप वर्णन कीजिये।

श्रीवेदव्यास मुनि बोले, हे अर्जुन! जो प्रजापतिसे भी पहिले निग्रहानुग्रह करनेमें समर्थ, सम्पूर्ण प्राणी तथा सम्पूर्ण लोकोंके आदि कारण, सब लोकोंके सृष्टिकर्त्ता, सर्व्वव्यापी, तेजस्वरूप, शङ्कर, ईशान, वरदाता और तेजस पुरुष हैं, तुमने उन्हींका दर्शन किया है; इससे उस वृषभवाहन सम्पूर्ण जगत्के स्वामी देवोंके देव महादेवके शरणागत हो। वह महादेव, महात्मा, ईशान, जटिल, शिव, त्रिनेत्र, महा

भुज, रुद्र, शिखी, चीरवासा, महादीप्तिमान, हर, स्थाणु, वरद, जगन्नियन्ता, जगत्प्रधान, अजेय, जगत्पति और सम्पूर्ण प्राणियोंके ईश्वर हैं। वही इस सम्पूर्ण जगत्के उत्पन्न करनेवाले, मूलस्वरूप, सर्व्वजयी, जगत्की गतिस्वरूप, विश्वात्मा, विश्वस्रष्टा विश्वमूर्त्ति, यशस्वी, विश्वेश्वर, विश्वचर, सम्पूर्ण कर्म्मोंके नियोग कर्त्ता, प्रभु, शम्भु, स्वयम्भू, समस्त भूतोंके स्वामी, भूत, भविष्यत् और वर्त्तमान कालके अधिष्ठान, योगमूर्त्ति, योगीश्वर, सर्व्वमय और सर्व्व लोकोंके ईश्वरके भी नियन्ता हैं। वह सर्व्व श्रेष्ठ, जगत् श्रेष्ठ, वरिष्ठ, परमेष्ठी तीनों लोकके विधाता, और तीनों लोकके अद्वितीय आश्रय स्वरूप हैं, वह दुर्ज्जेय जगन्नाथ जन्म, मृत्यु और जरा अवस्थासे रहित है। वह ज्ञानात्मा, ज्ञानगम्य, ज्ञानप्रधान, और कठिनाईसे जानने योग्य हैं, वही प्रसन्न होके भक्तोंको अभिलषित वर प्रदान करते हैं। वामन, जटिल,मुण्ड,ह्रस्व-ग्रीव, महोदर, महाकाय महोदर, महो त्साह और महाकर्ण आदि विकृताननं, विकृत, चरण, विकट वेष, अनेक रूपधारी दिव्य मूर्त्तिवाले उनके बहुतसे पारिषद हैं, वह महादेव अपने उन पारिषदोंसे सदा पूजित हुआ करते हैं। हे तात अर्ज्जुन! वह तेजस्वी महादेव ही प्रसन्नताके सहित रणभूमिमें तुम्हारे आगे आगे गमन करते हैं। धनुर्द्धर वीरोंमें अग्रगण्य अनेक रूपधारी देवोंके देव महादेवके अतिरिक्त इस महाघोर रोएंको खड़ा करनेवाले भयङ्कर रणभूमि बीच भीष्म, द्रोण, कर्ण और कृपाचार्य्य आदि युद्धमें प्रशंसित महाधनुर्द्धर वीरोंसे रक्षित कौरवोंको क्या कोई मनसे भी पराजित करनेका उत्साह कर सकता है? परन्तु महादेवको सम्मुख स्थित देख कोई भी उनके विरुद्ध साहसी नहीं हो सकता, क्योंकि तीनों लोकके बीच कोई भी भगवान रुद्रके समान पराक्रमी नहीं है। अधिक क्या कहूं, संग्रामभूमिमें यदि भगवान् शम्भु क्रुद्ध होकर स्थित होवें, तो शत्रुलोग उन्हें देखकर ही कांपते हुए चेतरहितके समान पृथ्वीमें गिर पड़ते और कितने ही चेतरहितके समान होजाते हैं। देवता, मर्त्त्य और स्वर्ग लोकवासी मनुष्य लोग सब कोई उस ही महादेवको नमस्कार करके स्वर्ग लोकमें वास करते है। अधिक क्या कहूं, जो लोग अत्यन्त ही भक्ति पूर्व्वक वरदाता रुद्रदेव, उमापति शिवको प्रणाम करते हैं, वे इस लोकमें परम सुख पाके अन्त समय परम गति प्राप्त करते है। हे अर्ज्जुन! उस शान्त, रुद्र, शितिकण्ठ,कनिष्ठ, महातेजस्वी, कपर्द्दी, कराल, हरिनेत्र, वरदाता, याम्य, अव्यक्त केश; सदाचार, शङ्कर, काम्यदेव, पिङ्गल नेत्र, स्थाणु, पुरुष प्रधान, पिङ्गल केश, मुण्ड, कृश, उद्धार कर्त्ता, भास्कर, सुतीर्थ, वेगवान, बहुरूप, सर्व्व प्रिय, प्रियवासा, देवोंके देव महादेवको नमस्कार है। उस उष्णीष धारी, सुवक्त्र, सहस्राक्ष, पूजनीय, प्रशान्त, यतिस्वरूप, चीरवासा, गिरीश, कपर्द्दी; कराल, उग्र, दिक्‌पति, पर्ज्जन्यपति, भूतस्वामी को नमस्कार है। जिसके विश्राम करनेका स्थान नाना भांतिके वृक्षोंसे शोभित है, उस सेनानायक, मध्यम, ध्रुवहस्त, धन्वी, भार्गव, बहुरूप, विश्वपति, चीरवासा, सहस्र सिर, सहस्रनेत्र, सहस्रबाहु, सहस्र चरण महादेवको नमस्कार है। हे अर्ज्जुन। तुम उस ही दक्ष-यज्ञके नाश करनेवाले विरूपाक्ष, वरदाता त्रिलोकेश्वर उमापतिके शरणागत हो। मैं भी उस प्रजापति अव्यग्र, अव्यय, भूतपति, कपर्द्दी, वृषावर्त्त, वृषनाभ, वृषभध्वज, वृषदर्प, वृषपति, वृषशृङ्ग, वृषश्रेष्ठ, वृषाङ्क, वृषभोदर, वृषभेक्षण, वृषशर, वृषमूर्त्ति,महेश्वर, महोदर, महाकाय, बाघाम्बर धारण करनेवाले, लोकेश्वर, वरदाता, मुण्ड, ब्रह्मण्यदेव, ब्राह्मण प्रिय, त्रिशूलपाणि,वरप्रद, तलवार ढाल ग्रहण करने वाले, निग्रहानुग्रहमें समर्थ, पिनाकी खड्ग-

परशु, लोकपालोंके ईश्वर, चीरवासा, शरण्य-देवके शरणापन्न हुआ हूं। उस वैश्रवणसखा सुरेश्वरको नमस्कार है। सुवासा, सुधन्वी, सुव्रतको सर्व्वदा नमस्कार है। उस धनुर्द्धर, प्रियधन्वा, धन्वन्तर, धनुराचार्य्य और धनुर्मूर्त्ति देवको नमस्कार है। उस उग्रायुध देवतोंमें श्रेष्ठ महादेवको नमस्कार है। बहुमूर्त्ति बहुधन्वीको नमस्कार है। उस त्रिपुर और भगहन्ताको नमस्कार है। उस बनस्पति प्रभु और मनुष्यपतिको नमस्कार है। उस गोपति और यज्ञपतिको सर्व्वदा नमस्कार है। पूषाके दांतको तोड़नेवाले त्रिनेत्र, बरदाता, नीलकण्ठ, पिङ्गलवर्ण, सुवर्ण केश शिवको नमस्कार है। जलपति और सुरपतिको सर्व्वदा नमस्कार है। हे कुन्तीपुत्र अर्ज्जुन! उस बुद्धिमान महादेवके जिन सम्पूर्ण दिव्य कर्म्मोंको मैंने सुना है, उसे मैं अपनी बुद्धिके अनुसार तुम्हारे समीप वर्णन करता हूं; तुम सुनो। उनके कोपित होनेसे देव, गन्धर्व्व, राक्षस आदि प्राणी यदि पर्व्वतकी कन्दरामें प्रवेश करें, तौ भी सुखी नहीं रह सकते। पहिले जब दक्षप्रजापति यज्ञकी सम्पूर्ण सामग्रियोंको इकट्ठी करके वेद-विधिसे यज्ञ करने लगे, तब उसमें महादेव अपना भाग न देखकर उनके यज्ञको विध्वंश करनेमें प्रवृत्त हुए। उस समय जब भगवान रुद्र अपने प्रचण्ड धनुषको ग्रहण करके भयङ्कर बाणोंको चलाने और महाभयानक शब्दके सहित सिंहनाद करने लगे, तब उस समय देवता लोग सम्पूर्ण स्थानोंमें भ्रमण करके भी किसी स्थानमें सुखपूर्व्वक निवास करनेमें समर्थ नहीं हुए। इसी भांति जब महादेव क्रुद्ध होकर सहसा यज्ञको नाश करनेमें प्रवृत्त हुए, तब उनके धनुषके टङ्कार और तलत्राण शब्दसे सम्पूर्ण लोक व्याकुल होगये। हे अर्ज्जुन! अधिक क्या कहा जावे, उस समय देवता, असुर आदि सम्पूर्ण प्राणी उनके वशवर्त्ती होके इधर उधर चेतरहितके समान गिरने लगे। समुद्रका जल उथलने लगा और पृथ्वी कांपने लगी। इसके अतिरिक्त पर्व्वतोंके शिखर टूट टूटके गिरने लगे, चारों दिशाके दिग्गज मोहित हुए और सम्पूर्ण दिशा अन्धकारसे इस प्रकार छिप गयीं, कि उस समय कुछ भी नहीं दीख पड़ता था। तिसके अनन्तर उन्होंने सूर्य्य आदि देवताओंके, प्रभाव तथा तेजको हीन कर दिया। उसे देख ऋषि लोग पहिले भयभीत होकर कोलाहल मचाने लगे, फिर अपने और सम्पूर्ण प्राणियोंके हितैषी होकर प्रशान्त हुए। उस ही समय पूषाने यज्ञकी हविको भक्षण किया, इस ही कारण महादेवने क्रुद्ध होकर उनका दांत तोड़ दिया। उसे देखकर सम्पूर्ण देवता लोग भयभीत होकर कांपते हुए महादेवके सम्मुखसे भागने लगे। तब महादेव फिर अपने प्रचण्ड धनुषको ग्रहण करके जलते हुए अग्निके तुल्य तथा बिजलीके समान प्रकाशमान भयङ्कर तथा तीक्ष्ण बाणोंको देवताओंकी ओर चलाने लगे। तब सम्पूर्ण देवतालोग भगवान रुद्रसे भयभीत होकर विशेष रूपसे उनके वास्ते यज्ञका भाग स्थापित करके उन्हींके शरणापन्न हुए। तब महादेवका क्रोध शान्त हुआ और उन्होंने उस समय दक्ष प्रजापतिके नष्टप्राय यज्ञको पूर्ण करके देवताओंको यथा-योग्य स्थानोंमें फिर स्थित किया। पर देवता लोग अब भी महादेवके क्रोधसे भयभीत हैं।

पहिले आकाशमें महाबलवान असुरोंकी लोहे, सोने और चादीसे बनी हुई तीन नगरी थीं, उनमेंसे सुवर्णकी पुरी कमलाक्षकी, चादीकी पुरी तारकाक्षकी और तीसरी लोहमयी नगरी विद्युन्मालीकी बनाई हुई थी। देवराज इन्द्र अपने सम्पूर्ण अस्त्रशस्त्रोंको चला कर भी उन असुरोंकी तीनों पुरीको नष्ट करनेमें समर्थ नहीं हुए। अनन्तर असुरोंसे पीड़ित सम्पूर्ण देवता लोग एकट्ठे होकर भगवान

रुद्रके शरणमें आके यह वचन बोले, हे देवोंके देव महादेव! त्रिपुरवासी भयङ्कर असुरोंने ब्रह्माके निकटसे वर प्राप्त किया है, उस ही वरके प्रभावसे सम्पूर्ण प्राणियोंको अत्यन्त पीड़ित कर रहे हैं। हे देवोंके प्रभु महादेव! तुम्हारे अतिरिक्त और ऐसा कोई भी पुरुष विद्यमान नहीं है, जो उन असुरोंका बध कर सके। इससे आप उन देवद्रोही असुरोंका नाश कीजिये। हे रुद्र! हे सम्पूर्ण प्राणियोंके ईश्वर! आप यदि इन भयङ्कर असुरोंका नाश करेंगे,तो सम्पूर्ण प्राणी नियमपूर्व्वक अपने अपने कार्य्योंमें नियुक्त रहेंगे। महाप्रतापी पिनाकधारी महादेवने देवताओंके ऐसे वचनको सुनकर "ऐसा ही होगा" कहकर उन लोगोंके वचनको स्वीकार किया। अनन्तर उन लोगोंके हितकी अभिलाषासे उस त्रिनेत्र महादेवने समुद्ररूपी वस्त्रको धारण करनेवाली पृथ्वीको रथ स्वरूप करके गन्धमादन और बिन्ध्याचल पर्व्वतको उस रथकी ध्वजा बनाई। सांपोंके राजा अनन्त नाग उस रथके अक्षकाष्ठ हुए। चन्द्र सूर्य्य उस रथके चक्र हुए, एलपत्र और पुष्पदन्त उस उस रथके यूप स्वरूप हुए, मलयाचल पर्व्वत उस रथका यूपकाष्ठ हुआ; तक्षक सर्प उस काठके जोड़नेके वास्ते बन्धन स्वरूप हुए। सम्पूर्ण भूत उसके योत्राङ्ग, चारों वेद उस रथके चारों घोड़े और उपवेद उन घोड़ोंकी लगाम हुए। गायत्री और सावित्री उन घोड़ोंके साज तथा बागडोर, ओंकार कोड़ा और ब्रह्मा सारथी हुए। अनन्तर वह सर्व्व सामरिक श्रेष्ठ तीनों लोकोंके स्वामी सम्पूर्ण देवोंके देव महादेवने मन्दरगिरिको गाण्डीव, वासुकी नागको उस धनुषका रोदा, विष्णुको श्रेष्ठ बाण, अग्निको शल्य, वायुको उपर कहे हुए बाणके दोनों पंख, वैवस्वत यमको उस बाणकी पूंछ, बिजली को निर्वाण और सुमेरु पर्व्वतको रथके अगाड़ी स्थित होनेवाली ध्वजा बनाया। अनन्तर भगवान रुद्रने उपर कहे हुए उस ही दिव्य रथ पर चढ़के त्रिपुर नाश करनेके वास्ते यात्रा किया। हे अर्ज्जुन! उस समय असुरोंके नाश करनेवाले अत्यन्त पराक्रमी श्रीमान् महादेवने तपस्यामें रत ऋषि और देवताओंके स्तुतिको सुनते हुए माहेश्वर नामक एक दिव्य स्थान निर्णय करके उन असुरोंकी तीनों पुरीको एक ही स्थानमें स्थित होनेकी प्रतीक्षा करके एक हजार वर्ष तक उस ही स्थानमें निवास किया। जिस समय वह त्रिपुर आकाशमें एक ही स्थान पर मिलित हुआ; उस समय उन्होंने त्रिपर्व्व और त्रिशल्य युक्त बाणसे उसका नाश किया। दानव लोग विष्णु और सोम संयुक्त प्रलयकालको अग्निके समान उस बाण वा आकाश स्थित त्रिपुरको देखनेमें भी समर्थ न हुए। त्रिपुर भस्म होनेके समय देवी भगवती पांच शिखासे शोभित एक बालककी गोदी (क्रोड़) में लेकर वहां पर कौतुक देखने गयी थीं। अनन्तर उमाने देवताओंसे पूछा, कि यह बालक कौन है? उस समय देवराज इन्द्र पाप तथा क्रोधके वशमें होके उस बालकके ऊपर बज्र चलानेमें उद्यत हुए। तब निग्रहानुग्रहमें समर्थ सम्पूर्ण लोकोंके स्वामी भगवान त्रिलोचन महादेवने हंसके क्रोधी इन्द्रकी वज्रके सहित भुजाको उस ही समय स्तम्भित कर दिया। जब इन्द्रकी भुजा स्तम्भित हो गई, तब वह शीघ्रताके सहित सम्पूर्ण देवताओंको संग लेकर सृष्टिकर्त्ता ब्रह्माके निकट गमन करके उनके शरणागत हुए, सबने पृथ्वी पर सिर रखके उन्हें प्रणाम किया और हाथ जोड़के उनसे यह वचन बोले हे ब्रह्मण! पार्व्वतीके क्रोड़में बालक रूपधारी एक अद्भुत मूर्त्तिवाले पुरुषको देखकर हम लोग यह न जान सके कि वह कौन हैं। उन्होंने बालक होके भी इन्द्र आदि देवताओं अर्थात् हम लोगोंको खेलवाड़की भांति पराजित

किया है; इससे हम लोग आपसे पूंछते हैं, कि वह बालक कौन है? अनन्तर ब्रह्मज्ञ पुरुषोंमें अग्रगण्य भगवान स्वयम्भू ब्रह्मा उन अत्यन्त तेजस्वी देवताओंके बचनको सुनके थोड़ी देर तक चिन्ता करके उन लोगों से बोले, हे देवता लोगो! तुम सब लोगोंने पार्व्वतीके सहित जिस अमित तेजस्वी पुरुषका दर्शन किया है, वेही इस सचराचर जगत्‌का स्वामी भगवान हर हैं;। उस महेश्वरसे श्रेष्ठ लोकमें कोई भी वस्तु नहीं है। उस ही सर्वेश्वर महादेवने पार्व्वतीके निमित्त बालक रूप धारण किया था। वह सबके प्रभु, षड़ैश्वर्य्यशाली, आनन्द और सम्पूर्ण जगत्‌के नियन्ता हैं, इससे चलो हम सब कोई उनके समीप गमन करके उनके शरणागत होवें। प्रजापति आदि सम्पूर्ण देवताओंके बीच कोई भी उस बाल-सूर्य्यके समान तेजस्वी जगत्प्रभुके प्रभावको नहीं जान सकते। अनन्तर पितामह ब्रह्मा वहां पर उपस्थित होके महादेवका दर्शन करके "येही सम्पूर्ण लोकमें श्रेष्ठ हैं," ऐसा जानके उनकी स्तुति तथा बन्दना करने लगे।

ब्रह्मा बोले, हे देवोंके देव! तुम ही इस लोकके बीच यज्ञस्वरूप, गति और सबके आश्रय हो। तुम ही महादेव, भव, परमधाम परम पद हो, यह स्थावर जङ्गमात्मक सम्पूर्ण जगत् तुमसे ही व्याप्त होरहा है। तुम भूत, भविष्यत् और बर्त्तमान कालके ईश्वर, लोकनाथ और जगत्पति हो। हे देवोंके देव! इन्द्र तुम्हारी क्रोधरूपी अग्निसे दग्ध प्राय होरहे है।; इससे इन्द्रके ऊपर आप प्रसन्न होइये।

वेदव्यास मुनि बोले, महादेव पद्मयोनि ब्रह्माके इस प्रकार स्तुतियुक्त बचनोंको सुनके प्रसन्न हुए, और प्रसन्नताके सहित अट्टहास किया। उसे देखकर सम्पूर्ण देवता लोग पार्व्वतीके सहित रुद्रदेवको प्रसन्न करनेमें प्रवृत्त हुए; तब इन्द्रकी भुजा पहिलेकी भांति फिर प्रकृतिस्थ हुई। हे अर्ज्जुन। इसी प्रकार सम्पूर्ण देवोंमें श्रेष्ठ, दक्ष यज्ञको नाश करनेवाले पार्व्वतीके सहित भगवान वृषभध्वज देवताओंसे प्रसन्न हुए थे। वह रुद्र, शिव, अग्नि, सर्व्वज्ञ, शर्व्व, इन्द्र, वायु, दोनों अश्विनीकुमार और विद्युत रूप हैं; वही भव, महादेव, सनातन, ईशान, चन्द्र, सूर्य्य, वरुण और जलस्वरूप हैं, वही कालरूपी अन्तक, मृत्यु, यम, रात्रि और दिन हैं। वही पक्ष, मास, ऋतु, दोनों सन्ध्या और सम्वत्सर हैं। वही धाता, विधाता, विश्वात्मा और विश्वको उत्पन्न करनेवाले हैं। वह शरीर रहित होकर भी सम्पूर्ण देवतोंके रूपसे स्थित रहते हैं, इस ही कारण देवता लोग उन्हें शत, सहस्र, लक्ष और अनेक रूपधारी कहके उनकी स्तुति किया करते है। वेद जाननेवाले ब्राह्मण लोग उस देवोंके देव महादेवकी घोरा "और" "शिरा" नाम्नी दोनों मूर्त्तियोंको जानते हैं, परन्तु वही दानों मूर्त्ति अनेकरूपसे विस्तृत होती हैं। विष्णु, अग्नि और सूर्य्य उनकी घोर मूर्त्ति और चन्द्रमा, जल तथा ज्योतिवाले अन्य पदार्थ उनकी सौम्य मूर्त्ति है। पुराण, वेदाङ्ग और अध्यात्म निश्चयात्मक उपनिषत् जो कुछ गोपनीय वस्तु हैं, वह सम्पूर्ण स्वप्रकाश महेश्वररूप हैं। हे अर्ज्जुन! जन्म मृत्यु रहित भगवान महादेव इसी प्रकार तथा इससे भी परे हैं। हे पाण्डुपुत्र अर्ज्जुन! मैं यदि सहस्र वर्ष प्रर्य्यन्त वर्णन करता रहूं, तौभी भगवान शङ्करके गुणोंको वर्णन न कर सकूंगा। मनुष्य लोग यदि सम्पूर्ण ग्रहोंसे पीड़ित और अनेक पापोंसे युक्त होकर भी उनके शरणागत होते हैं, तौभी महात्मा शिव अपने शरणागत भक्तोंके ऊपर प्रसन्न होके उन्हें सम्पूर्ण विपज्जालसे मुक्त कर देते हैं। वह प्रसन्न होनेपर मनुष्योंको आयु, आरोग्यता, ऐश्वर्य्य, धन और उत्तम उत्तम अभिलषित भोगवस्तु प्रदान करते हैं; और

कोपित होकर विपतके भंवरमें डाल देते हैं। इन्द्रादिक देवताओंका जो कुछ ऐश्वर्थ्य दीख पड़ता है, वह सब भगवान शम्भुकाही ऐश्वर्थ्य कहा जाता है, क्योंकि वही मनुष्योंके शुभाशुभ कर्म्मोंके परिचालक हैं। वह अपने ऐश्वर्य्यके प्रभावसे मनुष्योंकी सम्पूर्ण कामनाओंको पूर्ण करनेमें समर्थ हैं, वही महाभूतोंके नियन्ता हैं; सम्पूर्ण प्राणी उन्हें ही ईश्वर तथा महेश्वर कहके उनके चरित्रोंकी गाथा करते हैं। वह नाना भांतिके असंख्य रूप धारण करके इस जगत्में स्थित हैं। उस ही महादेवका जो मुख समुद्रमें स्थित होकर जलरूपी हविको पान कर रहा है, वही वाड़वानल नामसे बिख्यात हुआ है। वह महातेजस्वी रुद्र सदा श्मशान में निवास करते हैं; मनुष्य लोग वहांपर उन्हें और स्थानमें स्थित ईश्वर कहके उनकी पूजा किया करते हैं, उनके अनगिनत प्रकाशमान और भयङ्कर रूप हैं; मनुष्य लोग सदा ही उनकी पूजा करके भगवान् रुद्रके गुणोंकी गाथा करते हैं। कर्म्ममहत्त्व और ईश्वरत्वसे सम्पूर्ण प्राणी उन्हें अनगिनत सार्थक नामोंसे उनका गुणगान करते हैं। वेदमें उस महात्मा रुद्रदेव की शतरुद्रि अनन्तरुद्रिमें उनके उपासनाकी विधि वर्णित है। वह मनुष्य और देवताओंको इच्छानुसार फल देनेवाले हैं। वह विश्वव्यापी, महत्, निग्रहानुग्रहमें समर्थ, स्वयं प्रभु और ईश्वर हैं। वही देवताओंके आदि पुरुष हैं; उन्हींके मुखसे अग्नि आदि वस्तु उत्पन्न हुई हैं। इस ही कारण ब्राह्मण और मुनि लोग उन्हें श्रेष्ठसे श्रेष्ठ तथा आदि कारण कहके उनके रूपका दर्शन करते हैं। वह सब भांतिसे पशु अर्थात् जीवोंका पालन, उनके सङ्ग क्रीड़ा और उनके ऊपर ऐश्वर्थ्य विस्तार करते हैं; इस ही कारण सब कोई पशुपति नामसे उनका गुणानुवाद करते हैं। इनकी एक मूर्त्ति ब्रह्मचर्य व्रतमें तत्पर तथा लोकमें स्थित होकर सबको आनन्दित कर रही हैं, इस ही कारण वह महेश्वर नामसे बिख्यात हुए हैं। देवता, गन्धर्व्व, और ऋषि लोग सदा उस मूर्त्तिकी पूजा अर्च्चना करते हैं; वह मूर्त्ति ऊर्द्ध मुखसे जगत्में स्थित है। भूत, बर्त्तमान, भविष्य और स्थावर जङ्गमात्मक उनके अनेक रूप हैं; इस ही कारण वह बहुरूप नामसे बिख्यात हुए हैं। वह एक चक्षु वा सर्व्वचक्षु होकर प्रकाशमान रूपसे विराजमान हैं। क्रोधसे उन्होंने इस लोकके बीच प्रवेश किया है इसहीसे उनका नाम शर्व्व हुआ है। धूम्रवर्णवाली उनकी एक मूर्त्ति है, इस ही कारण वह धूर्ज्जटि नामसे प्रसिद्ध हुए हैं। सम्पूर्ण देवता लोग उन्हीमें प्रतिष्ठित हैं, इसीसे उनका विश्वरूप नाम हुआ है। पृथ्वी, जल आकाश यह तीन देवमूर्त्ति सदा उनका आश्रय करती हैं, इसीसे उनका त्रम्बक नाम प्रसिद्ध हुआ है। वह मनुष्योंकी मङ्गल कामनासे सम्पूर्ण कार्य्योंके अर्थको परिवर्द्धित करते हैं। वह सहस्राक्ष, अयुताक्ष और सर्व्वतश्चक्षु नामसे प्रसिद्ध हैं। वह इस जगत्की पालन करते हैं, इसहीसे उनका नाम महादेव हुआ है। वह सदा ऊर्द्धमें स्थित होकर अपने तेजसे प्रज्वलित होरहे हैं, वही प्राणकी उत्पत्ति, स्थितिके कारण और सदा स्थिर रूप हैं; इस ही कारणसे वह स्थाणु नामसे विख्यात हैं। सूर्य्य और चन्द्रमा उसही त्रम्बकके तेजसे प्रकाशित होकर जगत्के अन्धकारको दूर कररते हैं, इससे उनका नाम व्योमकेश हुआ है। वह ब्रह्मा; इन्द्र, वरुण, यम और कुवेर आदिकी निगृहीत करके हरण अर्थात् उनका संहार करते हैं, इस ही कारण उनका नाम हर प्रसिद्ध हुआ है। भूत, भविष्य और वर्त्तमानकाल उस ही महादेवसे उत्पन्न होते हैं इससे वह भूत, भविष्य और वर्त्तमान कालके आधारभूत नामसे विख्यात हुए हैं। वह

प्राणियोंके शरीरमें सम और विषमस्थ वायु तथा शरीरके प्राण और अपान वायु नामसे प्रसिद्ध हुए हैं। जो पुरुष महादेवके लिङ्ग-मूर्त्तिकी पूजा करते हैं, वह सदा सर्व्वदा सौभाग्य लाभ करते हैं। उनके दोनों पार्वोंके अर्द्धभाग आग्नेय और अर्द्धभाग सौम्य हैं; शेष शिवामूर्त्ति है। ऐसा भी वर्णन किया गया है, कि उनके सम्पूर्ण शरीरका अर्द्धभाग अग्नेय और अर्द्धभाग सौम्यमूर्त्ति है, परन्तु उनकी जो महातेजसे युक्त मूर्त्ति देवलोकमें विराज-मान है, वही शिवामूर्त्ति है; और सूर्य्यके समान तेजसे युक्त जो मूर्त्ति मनुष्य लोकमें प्रतिष्ठित है, वही अग्निमय मूर्त्ति घोरा नामसे प्रसिद्ध है। वह परमेश्वर अपनी शिवा मूर्त्तिसे सदा ब्रह्मचर्य्य व्रत और दूसरी घोरा मूर्त्तिसे सम्पूर्ण लोकका संहार करते हैं। क्योंकि वह महादेव अग्नि, तीक्ष्ण और उग्र मूर्त्ति हैं और इन्हीं मूर्त्तियोंसे वह मांस रुधिर तथा मज्जा भक्षण करते हैं; इस ही कारणसे उनका नाम रुद्र कहके जगत्में विख्यात है। कपि शब्दका अर्थ श्रेष्ठ और वृष शब्दका अर्थ धर्म्म है; इस ही कारण वह वृषाकपि नामसे प्रसिद्ध हैं। उस महेश्वरने अपने दोनों उन्मीलित नेत्रोंसे पृथक् निज मस्तकके बीच बलपूर्व्वक एक तीसरे नेत्रको उत्पन्न किया है; इस ही कारण उनका नाम त्र्यम्बक विख्यात हुआ है। हे पापरहित अर्ज्जुन! युद्धभूमिके बीच तुमने जिस देवको अपने अगा-ड़ीमें शत्रुओंकी सेनाको संहार करते देखा था और सिन्धुराज जयद्रथ बधकी प्रतिज्ञाके दिन कृष्णने स्वप्नयोगमें कैलाश पर्व्वतके शिखर पर जाके जिनका दर्शन कराया था; वे वही पिना-कधारी महादेव हैं, जो तुम्हारे रथके आगे आगे गमन करते रहते हैं, और जिन्होंने तुम्हें पाशुपत आदि अस्त्र प्रदान किये थे; जिससे कि तुमने दुर्ज्जय दानवकुलको संहार किया है वे वही भगवान भर्ग तथा शिव हैं। हे अर्ज्जुन। मैंने लोकमें तथा आयुकी बढ़ानेवाली, धन और पवित्र वेदसम्मत इस शतरुद्रिकी व्याख्या की है। यह अत्यन्त ही पुण्यदायक, सम्पूर्ण अर्थोंको सिद्ध करनेवाली, समस्त पापोंकी नाशक और अज्ञान, दुःख तथा भयको नाश करनेवाली है। जो मनुष्य इन चार प्रकार स्तोत्रोंको सुनते हैं, वह शत्रुओंको जीत कर अन्त समयमें रुद्रलोकमें गमन करते हैं, इसमें कुछ सन्देह नहीं है। जो पुरुष महात्मा महादेवके इस दिव्य और मङ्गलजनक सांग्रामिक कथा तथा शतरुद्रीको पढ़ते हैं, उनकी सदा उन्नति होती है; मनुष्यलोकमें जो भक्त महादेवको प्रसन्न कर सकता है, वह शीघ्र ही अपने अभिलषित वस्तु पाता है। हे कुन्तीनन्दन जनार्द्दन कृष्ण जब तुम्हारे रक्षक, सहायक और मन्त्री हुए हैं, तब कभी भी तुम्हारी पराजय न होगी; इससे जाओ, युद्ध करो।

सञ्जय बोले, व्यासदेवने युद्धभूमिमें अर्ज्जुनसे ऐसा कहके अपने स्थान पर गमन किया।

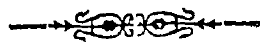
२०० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, महाराज! महाबलवान ब्राह्मण द्रोणाचार्य्य इसी भांति पाच दिन पर्य्यन्त महाभयङ्कर युद्ध करके रणभूमिके बीच मरके ब्रह्मलोकको गये। इस पर्व्वमें युद्ध करनेवाले क्षत्रियोंके महत् यश और मुक्तिके विषय वर्णित हैं; इस पर्व्वको पढ़नेसे वेद अध्ययन करनेका फल मिलना है। जो सदा नित्य नेमसे इस पर्व्वको पढते वा सुनते हैं; वह भयानक कर्म्म और महापापसे छूट जाते हैं। इसके पढ़नेसे ब्राह्मणोंको सदा यज्ञ करनेका फल, क्षत्रियोंको भयङ्कर युद्धमें विजय लाभ होता है और वैश्य आदि शेष वर्ण अपनी इच्छानुसार पुत्र, पौत्र प्रभृति अभिलषित वस्तुओंको पाते हैं।

२०१ अध्याय समाप्त।

द्रोण पर्व्व सम्पूर्ण।

महाभारत।



कर्णपर्व्व।

नारायण, नरश्रेष्ठ-नर, सरस्वती देवी और व्यासको नमस्कार करके जयका प्रारम्भ करे।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय। जब द्रोणाचार्य्य मारे गये, तब दुर्य्योधन आदि राजा लोग अत्यन्त दुःखित मन होके द्रोणाचार्य्यके पुत्रके पास गये, वे सब राजा लोग जिनका तेज शोकसे नष्ट होगया था, द्रोणाचार्य्यको सोचते हुए, अश्वत्थामाके पास गये। वे राजा लोग दोघड़ी तक शास्त्रकी रीतिसे अश्वत्थामाको समझाते रहे और सन्ध्याके समय सब अपने अपने डेरोको चले गये। हे कुरुनन्दन। उन महीपति लोगोंको अपने डेरोंमें भी सुख प्राप्त न हुआ, वह लोग दुःख और शोकसे युक्त होकर मरे हुए वीरोंकी चिन्ता करने लगे। विशेष करके राजा दुर्य्योधन, कर्ण, दुःशासन और महाबल सुबलपुत्र उस दिन रात्रि भर दुर्य्योधनके डेरेमें बैठे हुए सोचते रहे और पाण्डवोंके पुराने दुःखोंका स्मरण करते रहे। जैसे जुएमें पाण्डवोंको दुःख दिया था, जैसे द्रौपदीको सभामें लाये थे उसको स्मरण करके वे बहुत घबड़ाते थे। हे राजन् धृतराष्ट्र! उनको इस प्रकारसे सोच करते वह रात्रि ऐसी बीती जैसे सौ वर्ष बीतें। इसके पश्चात् [illegible] और [illegible] दर दैवकी पाशोंमें रहनेवाले उन राजा लोगोंने शास्त्रकी रीतिसे प्रातःकाल के करने योग्य कर्म्मोंको किया। हे भारत! उन राजा लोगोंने नित्य कर्म्मोंको करके सवारियोंको जोड़नेकी आज्ञा दी और युद्ध करनेके वास्ते चले। कर्णको सेनापति बना कर, आनन्दके साथ मङ्गलाचरण करके, और दही के पात्र घीव और अक्षतोंसे उत्तम ब्राह्मणोंकी पूजा करके युद्ध करनेको चले। गाय, घोड़े, सुवर्ण इत्यादि महाधनको पाकर सूत, मागध और भाट प्रसन्न हुए, उनसे जय जयकार और आशीर्वाद सुनते हुए दुर्य्योधन आदि राजा लोग युद्ध करनेको चले। हे राजन्! ऐसे ही पाण्डव लोग प्रातःकालकी नित्य क्रिया करके शीघ्रताके साथ युद्ध करनेका निश्चय करके अपने डेरोंसे चले। इसके पश्चात् एक दूसरेको मारनेकी इच्छा रखनेवाले कौरव और पाण्डवों का ऐसा भयानक युद्ध हुआ। जिसको देखकर रुएं खड़े होजायं। हे राजन्। कर्णके सेनापति रहते कौरव और पाण्डवोंकी सेनाका युद्ध दो दिन तक ऐसा हुआ जिसको देखकर आश्चर्य्य होता था। इसके पश्चात् अर्जुनने शत्रुकी महा सेनाको नाश करके धृतराष्ट्रके पुत्रोंके देखते देखते कर्णको मार डाला। इसके अनन्तर सञ्जयने शीघ्रताके साथ हस्तिनापुरमें

जाके धृतराष्ट्रसे कुरुक्षेत्रका सब वृत्तान्त वर्णन करना आरम्भ किया।

राजा जनमेजय बोले, हे मुनिवर! जो अम्बिकानन्दन वृद्ध राजा धृतराष्ट्र गङ्गापुत्र भीष्मको और महारथी द्रोणाचार्य्यको मरा हुआ सुनके महा दुःखको प्राप्त हुए थे। हे ब्राह्मणश्रेष्ठ। वही राजा धृतराष्ट्र, दुर्य्योधनके हितकारी कर्णकी मृत्युको सुनके किस प्रकारसे जीते रहे? कुरुनन्दन पृथ्वीनाथ धृतराष्ट्र जिसके द्वारा अपने पुत्रोंके विजयकी आशा लगाये थे, उस कर्णके मर जाने पर उन्होंने अपने प्राणको कैसे रक्खा। कर्णकी मृत्युको सुनके जो राजा धृतराष्ट्र जीते रहे इससे मैं जानता हूं कि मनुष्यको कैसाही दुःख पड़े किन्तु वह अपनी इच्छासे नहीं मर सक्ता है। हे वैशम्पायनमुने! शान्तनुपुत्र भीष्म, बूढ़े वाह्लीक द्रोणाचार्य्य; सोमदत्त और भूरिश्रवा ऐसे ही और और मित्र तथा पुत्र और पौत्रोंको मरा हुआ सुनकर जो धृतराष्ट्रने अपने प्राणको त्याग नहीं किया इसे मैं बहुत ही कठिन काम समझता हूं। हे महामुनि वैशम्पायन! इस सब कथाको आप बिस्तार पूर्व्वक कहिये मैं अपने पुरखोंके चरित्रको सुनता हुआ तृप्त नहीं होता हूं।

१ अध्याय समाप्त।

श्री वैशम्पायन मुनि बोले, हे जनमेजय! कर्णके मारे जानेपर गालवगणके पुत्र सञ्जय बहुत दीन होकर वायुके समान चलनेवाले घोड़ोंके रथपर बैठकर रात्रिमें हस्तिनापुरको चले। बहुत घबड़ाये हुए सञ्जय हस्तिनापुरमें पहुंचके वन्धु वान्धवहीन धृतराष्ट्रके राजभवनमें गये। सञ्जयने राजाको दुःखसे मलिन देखके हाथ जोड़के और अपने सिरको राजाके चरणोंमें रखके प्रणाम किया। सञ्जयने राजा धृतराष्ट्रका यथायोग्य सम्मान करके और ... कष्ट। कहके यों बोलना आरम्भ किया। ... पृथ्वीनाथ! मैं सञ्जय हूं, आप सुखी तो हैं? अपनेही अपराधों से आपत्तिमें फंसकर ... आप मोहको प्राप्त तो नहीं होते हैं? विदु... भीष्म और श्रीकृष्ण महाराज जो हितकी बा... कही थीं पर आपने उनकी बातोंको ग्रह... नहीं किया था, अब उनको स्मरण करके आ... को दुःख तो नहीं होता है? बलराम, नार... और कण्वऋषिने जो सभामें हितकारी वच... कहे थे, आपने उनको ग्रहण नहीं किया था... अब उन्हें स्मरण करके आपको दुःख तो नहीं होता है? जो भीष्म और द्रोणाचार्य्य आ... मित्र आपके हितकारी थे उनको संग्राममें मरा हुआ सुनके आप दुःखी तो नहीं हैं?

हे राजन् जनमेजय! राजा धृतराष्ट्र, सूतपु... सञ्जयको हाथ जोड़े ऐसे बचन कहते हु... देखके कहने लगे।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! दिव्य अस्त्रोंको जाननेवाले शूर गङ्गानन्दन भीष्म और महाधनुर्द्धारी द्रोणाचार्य्यके मरनेसे मेरा मन बहुत ही दुखी है। जो वसुका अवतार तेजस्वी भीष्म शस्त्रादिसे सजे हुए दश हजार रथोंको प्रतिदिन मारते थे उन भीष्मको द्रुपदके पुत्र शिखण्डीने पाण्डवोंकी सहायतासे मार डाला, इस हालको सुनके मेरा मन बड़ा दुःखी होता है। जिसने बालकपनमें परशुरामसे धनुर्व्वेद सीखा था, जिसे परशुरामने महासंग्राममें दिव्य अस्त्र दिये थे। जिसकी दयासे कुन्तीपुत्र राजकुमार तथा और और राजा लोग महारथी बने थे, उन सत्य प्रतिज्ञा करनेवाले द्रोणाचार्य्यको युद्धमें धृष्टद्युम्नने मार डाला, यह सुनके मेरा मन बड़ा दुःखी होता है। त्रि... दोनोंके समान चार प्रकारके अस्त्रोंको जानने... कोई भी नहीं जानता, उन द्रोणाचार्य्य और भीष्मको मरा हुआ सुनके मेरा मन बड़ा

दुःखी होता है। जिन द्रोणाचार्य्यके समान अस्त्र विद्याका जाननेवाला तीनों लोकमें कोई पुरुष नहीं है, उन द्रोणाचार्य्यकी मृत्युको सुनके हमारे पुत्रोंने क्या किया सो तुम कहो? पाण्डुपुत्र महात्मा अर्जुनसे युद्ध करके संसप्तकगण जब मारे गये, और बुद्धिमान अश्वत्थामाका नारायणअस्त्र जब विध्वंस होगया, तथा जब सेना इधर उधरको भाग गई तब मेरे पुत्रोंने क्या किया? मुझे जान पड़ता है कि उस समय मेरे पुत्र शोकसागरमें ऐसे डूबे होंगे जैसे नावके टूट जानेसे समुद्रमें मनुष्य डूबते हैं। उस समय मेरे पुत्र भाग गये होंगे। दुर्य्योधन, कर्ण, कृतवर्म्मा, मद्रराज शल्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और मेरे बचे हुए पुत्रोंके मुखका रङ्ग अपनी सेनाको भागती देखके कैसा होगया? हे गावल्गणपुत्र सञ्जय! वह सब वृत्तान्त तथा मेरे और पाण्डवोंके पराक्रमको तुम वर्णन करो।

सञ्जय बोले, हे महाराज! तुम्हारे अपराधसे जो कुछ हुआ उसको सुनके दुःख मत करो क्योंकि होनेवाले और नहोनेवाले कार्य्य अवश्य हो जाते हैं, उसकी प्राप्ति और अप्राप्तिसे पण्डित लोग दुःखी नहीं होते।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! मुझे अधिक दुःख नहीं है, तुम अपनी इच्छानुसार वर्णन करो।

२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! जब महाधनुर्धारी द्रोणाचार्य्य मर गये, तब महारथ तुम्हारे पुत्रोंका मुख मलिन होगया और चित्त व्याकुल होगया। हे राजन्! सब शस्त्रधारी शोकसे व्याकुल मायाकुल किये एक दूसरेको देखते हैं और भी आपसमें बात नहीं करते हैं। इन सबको दुःखी देखकर आपकी सेना भयभीत होकर ऊपरको देखने लगी। हे राजेन्द्र! युद्धमें द्रोणाचार्य्यको मरा हुआ देखकर रक्तमें भरे हुए इन लोगोंके हाथोंसे शस्त्र छूट छूट गिरने लगे। हे भारत! उस समय अनेक कुशकुन होने लगे। जैसे आकाशसे तारोंका गिरना ऐसे हो और भी उत्पात होने लगे। हे महाराज! अपनी सेनाको रुकी हुई और बलहीन देखकर राजा दुर्य्योधन बोले, आप लोगोंके भुजबलके आश्रयसे हो मैंने पाण्डवोंको युद्ध करनेको बुलाया है और यह संग्राम रचा है। परन्तु द्रोणाचार्य्यके मरनेसे सब व्याकुल दीखते हैं और शत्रु लोग हमारे योद्धाओंको मार रहे हैं। संग्राममें लड़नेवालोंको विजय होती है वा मृत्यु होती है इसमें आश्चर्य्यही क्या है? सब लोग युद्ध करो। और दिव्य अस्त्रोंके सहित युद्धमें विचरते हुए विकर्त्तनपुत्र महाधनुर्द्धारी, महाबली महात्मा कर्णको देखो। जिसके भयसे मन्द कुन्तीनन्दन अर्जुन युद्धसे ऐसा भागता है जैसे छोटा मृग सिंहको देखकर भागे। जिस कर्णने मनुष्य रीतिके युद्धमें ही दस हजार हाथीके बलवाले भीमसेनकी बुरी दशा कर दी थी। जिस कर्णने दिव्य शस्त्रोंके जाननेवाले मायावी घटोत्कचको अमोघ शक्तिसे मारा था, उस महाबली, सत्यप्रतिज्ञ बुद्धिमान् कर्णके बलको आज युद्धमें देखो। आज पाण्डुपुत्र विष्णु और इन्द्रके समान अश्वत्थामाके और कर्णके बलको देखो। आप लोगोंमेंसे एक एक ही पाण्डवोंकी सेनाके सहित जीतनेमें समर्थ है और सबके मिलकर लड़नेकी तो कथा ही क्या है? आप सब बलवान परस्पर बलको दिखावें।

सञ्जय बोले, हे पापरहित! ऐसा कहके आपके महाबली पुत्रने अपने भाइयोंके सहित कर्णको सेनापति बनाया। हे राजन्! सेनापति बनके महारथी कर्ण सिंहके समान गर्जकर, मतवाला होके युद्ध करने लगा। कर्णने सृञ्जय

पाञ्चाल, केकय और विदेहवंशी बीरोंको व्याकुल कर दिया, कर्णको धनुषसे पङ्ख लगी बाणोंकी सैकड़ों धारा ऐसी निकलने लगीं, जैसी भौरोंकी पंक्ति। कर्ण पाञ्चाल और प्रतापी पाण्डवोंको पीड़ा देकर और सहस्रों बीरोंको मारकर अर्ज्जुनके हाथसे मारा गया।

३ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे महाराज! अम्बिकापुत्र धृतराष्ट्र इस कथाको सुनकर और अपार शोकको विचारकर, समझे कि दुर्य्योधन अब मारा गया। धृतराष्ट्र व्याकुल और निःशक्त होके भूमिमें गिर पड़े। राजा धृतराष्ट्रके व्याकुल होके भूमिमें गिरते ही स्त्रियोंके रोनेका दुःखदाई हल्ला होने लगा। हे भरतनन्दन! स्त्रियोंके शब्दसे सम्पूर्ण पृथ्वी भर गई। कुरुकुलकी सम्पूर्ण स्त्रियां महा शोकसागरमें डूब गईं और व्याकुलचित्त होकर रोने लगीं। हे भरतश्रेष्ठ! गन्धारी राजा धृतराष्ट्रके पास जाके चेतनाहीन होकर भूमिमें गिर पड़ी। हे राजन्! तब सञ्जयने उन नेत्रोंसे जल गिरानेवाली महाव्याकुल हुई स्त्रिओंको समझाया और वे स्त्रियां बारम्बार शोकके साथ रोती हुई चिन्ता करने लगीं। उन स्त्रियोंकी उस समय ऐसी दशा थी जैसे केलेकी दशा आंधीमें होती है। तब कुरुकुलनाथ राजा धृतराष्ट्रके ऊपर जल छींटकर विदुरने उनको समझाया। हे पृथ्वीनाथ! राजा धृतराष्ट्र धीरे धीरे चैतन्य हुए और स्त्रियोंको देखकर उन्मत्तके समान चुप होके बैठ गये। बहुत देरतक ध्यान करके और बारम्बार सास लेकर अपने पुत्रोंकी निन्दा करने लगे और पाण्डवोंको उत्तम समझा! राजा धृतराष्ट्र अपनी और शकुनिकी बुद्धिकी निन्दा करने लगे। राजा धृतराष्ट्र अपने मनको थामकर और धीर्य्य धारण करके गावल्गणकेपुत्र सञ्जयसे फिर ऐसा पूछने लगे।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जो बचन तुमने कहे वह मैंने सुने, हे सूत! जयकी इच्छा रखनेवाला दुर्य्योधन जयसे निराश होकर मरतो नहीं गया? हे सञ्जय! अपनी कही हुई इस कथाको फिर कहो?

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय। राजा धृतराष्ट्रके बचन सुनके सूत सञ्जय बोले। हे राजन् धृतराष्ट्र! विकर्त्तनपुत्र महारथ कर्ण अपने पुत्रोंके तथा अपने महाधनुर्द्धारी भाइओंके सहित मारा गया। ऐसे ही यशस्वी मध्यम पाण्डवने दुःशासनको मार डाला और उसके रुधिरको भीमसेनने संग्राममें पान किया।

४ अध्याय समाप्त।

महर्षि वैशम्पायन बोले, हे महाराज! अम्बिकानन्दन धृतराष्ट्र सञ्जयके इस बचनको सुन और शोकसे व्याकुल चित्त होके सञ्जयसे कहने लगे। हे प्यारे! शीघ्र नष्ट होनेवाले मेरे पुत्रकी पापसे जो कर्ण मारा गया इस कथाको सुनके मेरे शरीरके मर्म्म स्थानोंको शोक काटे डालता है, मैं इस दुःखसे छूटना चाहता हूं, इस लिये तुम यह बर्णन करो कि कौरववंशी और सृञ्जय बंशियोंमें कौन मरे और कौन कौन जीते हैं और मेरे सन्देहको दूर करो।

सञ्जय बोले, हे राजन्! शान्तनुपुत्र शत्रुओंसे जीतनेके अयोग्य प्रतापी भीष्म पाण्डवोंके अरब बीरोंको दशदिनमें मार कर मारे गये। ऐसे ही महाधनुर्द्धारी द्रोणाचार्य्य पाञ्चाल लोगोंके अनेक महारथोंको मारकर युद्धमें मारे गये। फिर रुक्मरथ मारा गया। महाराज! भीष्मसे और द्रोणाचार्य्यसे जो पाण्डवोंकी सेना बच गई थी उनमेंसे आधीसेनाको मार कर सूर्य्यपुत्र कर्ण भी मारा गया। हे महाराज! महाबलवान् राधापुत्र कर्ण भी मारा गया। हे महाराज! महाबलवान राजपुत्र विविंशति

आनर्त्त देशके सैकड़ों वीरोंको मारकर संग्राममें मारा गया। आपके पुत्र विकर्णके जब शस्त्र और रथ विनष्ट होगये तब उस वीरको क्षत्रियोंके धर्म्म स्मरण करते हुए शत्रुओंके सम्मुख दुर्य्योधनके दिये हुए महा दुःख और अपनी प्रतिज्ञाको याद करके भीमसेनने उसे मार डाला।

अवन्तिकापुरीके राजपुत्र विन्द और अनुविन्द कठिन कर्म्म करके यमराजके भवनको चले गये। सिन्धुदेशके राजाको आदि लेके दश राजा जिस वीरके आधीन थे और जो सदा आपकी आज्ञामें रहता था, जिसने अपने तीक्ष्ण वाणोंसे ग्यारह अक्षौहिणी सेनाको जीता था उस जयद्रथको अर्ज्जुनने मार डाला, ऐसे ही तेजस्वी युद्धमें मत्त होनेवाले और अपने पिताकी आज्ञामें रहनेवाले दुर्य्योधनके पुत्रको सुभद्रानन्दन अभिमन्युने मार डाला, ऐसे ही महाबली, रणमत्त दुःशासनके पुत्रको द्रौपदीके पुत्रने मार डाला। समुद्रके खादर अर्थात् अनूपदेशके किरातोंका स्वामी और देवराज इन्द्रका प्यारा मित्र, सदा क्षत्रियोंके धर्म्ममें स्थिर रहनेवाला राजा भगदत्त अर्ज्जुनसे युद्ध करके यमराजके स्थानको चला गया। ऐसे ही कौरवोंका पटैत महायशस्वी शत्रुहीन और शूर भूरिश्रवाको भी युद्धमें सात्यकीने मार डाला। क्षत्रियोंमें धुरन्धर, युद्धमें निर्भय होके घूमनेवाले अम्बष्ठ श्रुतायुको भी अर्ज्जुनने मार डाला। हे राजन्! शस्त्रविद्याका अभ्यासी रणमत्त और सदाका क्रोधी तुम्हारा पुत्र दुःशासन भी भीमसेनके हाथोंसे मारा गया। जिसके सङ्ग सहस्रो हाथी थे उस राजा सुदक्षिणको अर्ज्जुनने मार डाला। कोशलदेशका राजा बड़े बड़े शत्रुओंको मारकर अभिमन्युसे युद्ध करके मारा गया। महारथी भीमसेनसे युद्ध करके आपका पुत्र चित्रसेन भी मारा गया।

शत्रुओंको भय देनेवाले खड्ग और ढाल को रखनेवाले मद्रराजके पुत्रको सुभद्रानन्दन अभिमन्युने मार डाला। दृढ़ पराक्रम, महातेजस्वी कर्णके सम्मुख ही वृषसेनको अर्ज्जुनने अभिमन्युकी मृत्युको सुनके और अपनी प्रतिज्ञाको याद करके मार डाला। जो राजा श्रुतायु सदा पाण्डवोंसे बैर रखता था, वह राजा श्रुतायु अर्ज्जुनसे बैरके कारण मारा गया। महापराक्रमी शल्यपुत्र रुक्मरथको अपने मामाका पुत्र होनेपर भी सहदेवने युद्धमें मार डाला। राजा भगीरथ, वृद्ध केकय यह महाबली दोनो राजा भी मारे गये, हे राजन् धृतराष्ट्र! बुद्धिमान महाबली भगदत्तके पुत्रको नकुलने मार डाला। आपके महापराक्रमी पितामह बाह्लीक लोगोंके सहित भीमसेनके हाथसे मारे गये। हे राजन्! जरासन्धके पुत्र मगधदेशके राजा जयत्सेनको सुभद्राके पुत्र महात्मा अभिमन्युने मार डाला। अपनेको वीर माननेवाले आपके पुत्र दुर्म्मुख और सहको भीमसेनने गदासे मार डाला। दुर्म्मर्षण, दुर्व्विषह और महारथ दुर्ज्जय युद्धमें कठिन कर्म्म करके यम लोकको चले गये। कालिङ्ग और वृषक दोनों भाई भी युद्धमें भयानक कर्म्म करके मारे गये। हे महाराज! आपका मन्त्री महाबली वीर वृषवर्म्माभी भीमसेनसे युद्ध करके मारा गया। ऐसे ही राजा पौरव जिसमें दश सहस्र हाथियोंके समान बल था उसे भी पाण्डुनन्दन अर्ज्जुनने मार डाला। हे महाराज! युद्धमें लड़नेवाले दो सहस्र वसाति और पराक्रमी शूरसेन भी युद्धमें मारे गये। कवच पहिरनेवाले अभिषाह लोग, शिवी लोग और उदार लोग कलिङ्ग लोगोंके सहित मारे गये। जो महाक्रोधी अपाकृतक वीर गाम्रोंके सङ्ग रहकर बढ़े थे उन्हें भी अर्ज्जुनने मार डाला। जिन संशप्तकगणोंकी सहस्रों श्रेणी थीं वह भी अर्ज्जुनके सम्मुख जाके नष्ट होगये।

हे महाराज! आपके साले राजा वृषक और अचल भी आपके निमित्त अर्जुनके हाथसे मारे गये। उज्वल कर्म्म और नामवाले महाधनुर्द्धारी, महभुज राजा शाल्वको भीमसेनने मार डाला। हे महाराज! ऐसे ही वीरोंमें श्रेष्ठ क्षेमधूर्त्तिकोभी भीमसेनने गदासे मार डाला। हे राजन्! ऐसे ही महा धनुर्द्धारी, महाबली राजा जलसन्धको युद्धमें सात्यकिने मारडाला। खच्चरके रथमें बैठनेवाले राचसोंके स्वामी अलम्बुषको घटोत्कचने मार डाला। राधापुत्र कर्ण उसके भाई और केकयबंशियोंको अर्ज्जुनने मार डाला। मालवदेशी, मद्रदेशी और उग्रकर्म्म करनेवाले द्राविड़देशी, यौधेय, ललित्य, चुद्रक, उशीनर, मावेल्लक, तुण्डीकेर, सावित्रीपुत्र, पूर्व्वदेशी, उत्तरदेशी पश्चिमदेशी और दक्षिणदेशके निवासी पदाति और घुड़सवारोंकी सहस्रों सेना मारी गई। घोड़े हाथी और रथोंकी लचों सेना मारी गई, ध्वजा, पताका; शस्त्र दिव्यवस्त्र और आभूषण युक्त जो समय पाकर बहुत बढ़े थे, उन सबको अर्ज्जुनने नाश कर दिया। ऐसे ही अतुल बलवान और एक दूसरेको मारनेकी इच्छा करनेवाले वीर युद्धमें मारे गये, हे महाराज! इनके अतिरिक्त और भी सहस्रों राजा लोग युद्धमें मारे गये। जो आपने मुझसे पूंछा था सो मैंने कहा। कर्ण और अर्ज्जुनका युद्ध ऐसे ही हुआ जैसे इन्द्र और वृत्रासुरका, अथवा राम और रावणका। जैसे कृष्णने नरकासुरको वा मुरको मारा था अथवा जैसे परशुरामने कार्त्तवीर्य्यको मारा था ऐसे ही कर्णको अर्ज्जुनने मारा। जातिके लोगोंके और भाय्योंके सहित तीन लोककी अचरजमें डालनेवाले युद्धमें कर्णको अर्ज्जुनने मारा। जैसे स्कन्दने महिषासुरको; महादेवने अन्धकको मारा था, वैसे ही युद्धदुर्म्मद कर्णको अर्ज्जुनने युद्धमें मारा। जिस कारणसे कर्णसे ही दुर्य्योधनको जयकी आशा थी और वही बैरकी आदि था; इससे उसके मरनेसे पाण्डव उसके पार होगये जिसे तुम पहिले नहीं समझे थे। हे महाराज! यह सब दुःख प्राप्त हुए, तुमने और तुम्हारे पुत्रोंने जो कर्म्म किये थे उनके ही यह सब फल प्राप्त हुए।

५ अध्याय समाप्त।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे प्यारे सञ्जय! पाण्डवोंने हमारे मनुष्योंको मारा उनका तुमने वर्णन किया अब उनका भी वर्णन करो पाण्डवोंके जिन मनुष्योंको हमारे वीरोंने मारा।

सञ्जय बोले, युद्धमें बड़े तीक्ष्ण महा पराक्रमी और महाबली कुन्तलोगोंकी सेना और मन्त्रियोंके सहित राजा भीष्मने मार डाला। नारायण,बलभद्र और अनुरक्त जातिके वीरोंको ऐसे ही और जातिके सैकड़ों वीरोंको महारथ भीष्मने युद्धमें मार डाला। सत्यजित् युद्धमें अर्ज्जुनके समान बल और उत्साह युक्त था उसे सत्यबादी द्रोणाचार्य्यने युद्धमें मार दिया। पाञ्चाल देशके महाधनुर्द्धारी और युद्धविद्याको जाननेवाले सब वीर द्रोणाचार्य्यसे युद्ध करके यमराजके स्थानको चले गये। ऐसे ही राजा बिराट् और राजा द्रुपद इन दोनों मित्रके निमित्त युद्ध करनेवालोंको द्रोणाचार्य्यने युद्धमें मारडाला। हे महाराज! जिसको बालक अवस्था होमें अर्ज्जुनने, श्रीकृष्णने और बलभद्रने शिचा दी थो जो महारथी युद्धको जानता था, उस अभिमन्युको जब कोई एकला न मार सका, तब द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य, कर्ण, शल्य और कृतवर्म्मा इन ६ महारथियोंने मिलकर अर्ज्जुनकी ईर्षासे मार डाला। रथहीन, चत्रियोंके धर्म्ममें रहनेवाले अभिमन्युको दुःशासनके पुत्रने युद्धमें मारा। शत्रुओंको मारनेवाला महासेनासे युक्त जो अम्बष्ठका पुत्र मित्रके वास्ते पराक्रम दिखाता था, मा

दुर्योधनके पुत्र लक्ष्मणसे युद्ध करके यमराजके घरको चला गया। महा धनुर्धारी, शस्त्रविद्याका जाननेवाला, रणमत्त वृहन्त नामका राजा दुःशासनसे युद्ध करके यमराजके घरको चला गया। युद्धमें मत्त रहनेवाले, राजा मणिमान और दण्डधार मित्रके निमित्त बल दिखानेवालोंको द्रोणाचार्य्यने युद्धमें मार डाला। महा रथी अंशुमान् और भोजराजको उनकी सेनाके सहित महर्षि भरद्वाजके पुत्र द्रोणाचार्य्यने मार डाला। समुद्रके राजा चित्रसेनको उसके पुत्र समुद्रसेनके सहित द्रोणाचार्य्यने यमपुरीको भेज दिया। अनूपदेशके रहनेवाला नील और व्याघ्रदत्त अश्वत्थामा और विकर्णसे युद्ध करके यमलोकको चले गये। चित्र युद्धको करनेवाला राजा चित्रायुध चित्र मार्गसे युद्ध करके और शत्रुओंको व्याकुल करके युद्धमें विकर्णके हाथसे मारा गया। जो कैकय युद्धमें भीमके समान था वह अपने साथी कैकय वीरोंके सहित अपने भाई कैकयके साथ युद्ध करके मारा गया। जो गदायुद्धमें निपुण पहाड़ी देशका राजा, प्रतापवान् जनमेजय था उसे तुम्हारे पुत्र दुर्मुखने मार डाला, जिन दो भाइयोंका एक ही नाम था, जो नरसिंह ग्रहोंके समान प्रकाशित थे उन रोचमान नामक दोनों भाइयोंको द्रोणाचार्य्यने एक ही समय मार डाला। हे राजन् धृतराष्ट्र! युद्धमें पराक्रम दिखाते और युद्ध करते हुए अर्जुनके मामा पुरुजित् और कुन्तिभोज युद्धमें कठोर कर्म करके यमपुरको चले गये। यह दोनो भी द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे मारे गये। अभिभू और काशिराज, अनेक काशीवासी वीरोंके सहित वसुदानके पुत्रसे युद्ध करके मर गये। महातेजस्वी युधामन्यु और प्रतापी उत्तमौजा सैकड़ों वीरोंको मार कर हमारे वीरोंके हाथसे मारे गये। हे महाराज पाञ्चाल और मित्र इन दोनो महाधनुर्धारियोंको द्रोणाचार्य्यने यमपुरको भेज दिया। युद्ध करनेवालोंके स्वामी शिखण्डीके पुत्र क्षत्रदेवको तुम्हारे पौत्र लक्ष्मणने मार डाला। सुचित्र और चित्रवर्म्मा युद्धमें विचरनेवाले इन महारथी पितापुत्रोंको युद्धमें द्रोणाचार्य्यने मार डाला। हे महाराज! जो समुद्रके समान गम्भीर था वह वार्द्धक्षेमी शस्त्रागममें मारा गया। शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ सेनाविन्दुके पुत्रको कौरवराज बाह्लीकने मार डाला। हे महाराज! चेदि देशके राजाओंमें श्रेष्ठ धृष्टकेतु भी कठोर कर्म्म करनेके अनन्तर यमपुरीको चला गया। ऐसे ही सत्यधृति युद्धमें शत्रुओंका नाश करके पाण्डवोंके वास्ते शरीर त्याग कर यमपुरको चले गये। कुरुश्रेष्ठ सेनाविन्दु युद्धमें घमसान मचा कर मारा गया। शिशुपालका पुत्र राजा सुकेतु युद्धमें शत्रुओंको मार कर रणभूमिमें द्रोणाचार्य्यके हाथसे मारा भया। ऐसे ही सत्यधृति वीर बलवान् मदिराश्व विकराल सूर्य्यदत्त भी द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे मारे गये। हे महाराज! श्रेणिमान् युद्धमें कठोर कर्म्म करके यमराजके भवनको चला गया। हे राजन् धृतराष्ट्र! शत्रुके वीरोंको मारनेवाला, परम शस्त्रोंको जाननेवाला, युद्धमें घोर रूपधारी मगध देशका राजा भीष्मके बाणोंसे मारा गया; जो अब रणभूमिमें पड़ा सोता है। राजा विराटके पुत्र शंख और उत्तर यह दोनो महारथी युद्धमें भयानक कर्म्म करके यमराजके घरको चलेगये। वसुदानभी संग्राममें महाघोर कर्म्म करके और भरद्वाजके पुत्र द्रोणाचार्य्यसे युद्ध करके मर गये। हे राजन्! इनको आदिलेके पाण्डवोंके अनेक महारथी वीर द्रोणाचार्य्यके हाथसे मारे गये। जो आपने मुझसे पूछा था वह मैंने कहा।

६ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय ! भीष्म, द्रोणाचार्य्य आदि प्रधान पुरुषोंके मारेजानेसे मेरी सेनाका रस ऐसे सूखा जाता है, जैसे खेतका जल निकल जानेसे खेत सूख जाता है। अब मुझे इसका बचाव नहीं दीखता है। महाधनुर्द्धारी वीर भीष्म और द्रोणाचार्य्यको अपने निमित्त मरा हुआ सुनके मुझे तुच्छ जीवनसे कुछ प्रयोजन नहीं है। मैं उस शोभायुक्त कर्णका कुछ शोच नहीं करता हूं जिसकी भुजाओंमें सैकड़ों हाथियोंका बल था। हे सञ्जय ! जैसे तुमने मरे हुओंका वर्णन किया वैसे जीवते वीरोंका भी वर्णन करो कि कौन कौन जीते हैं। तुमने जो मरे हुए कहे परन्तु जो जीते हैं मेरी बुद्धिमें वह भी मरे ही हैं।

सञ्जय बोले, हे महाराज ! जिस वीरको ब्राह्मणश्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने विचित्र और प्रकाशयुक्त चार प्रकारके दिव्य शस्त्र प्रदान किये थे। वही महारथी पुण्यवान शीघ्र शस्त्र चलानेवाले दृढ़ शस्त्रवाले, दृढ़ मुट्ठीवाले, दृढ़ बाणवाले महा बलवान् द्रोणपुत्र अश्वत्थामा आपके निमित्त युद्ध करनेको तयार है। हृदीकका पुत्र, सात्वत वंशियोंमें श्रेष्ठ आनर्त्तदेशका रहनेवाला, महारथी सब शस्त्रोंको जाननेवाला स्वयम् कृतवर्म्मा आपके निमित्त युद्ध करनेको तयार है। समरमें न कांपनेवाला तुम्हारी सेनाके आगे चलनेवाला, जिसने अपने बचनको सत्य करनेके वास्ते अपने भानजे वा भगनीको परित्याग कर दिया, जिसने प्रथम युधिष्ठिरसे प्रण किया था, कि मैं युद्धमें कर्णके बलको नाश करूंगा वही शल्य आपके वास्ते युद्ध करनेको प्रस्तुत है। गन्धार देशका राजा अजानेय, सिन्धुदेशी, पर्व्वतवासी, नदी तटवासी; काम्बोज देशी, और वनायु देशी लोगोंसे पूर्ण अपनी सेनाके साथ आपके निमित्त युद्ध करनेको दृढ़ायु खड़ा हुआ है। हे राजन् धृतराष्ट्र ! महाभुज, अनेक भांतिके शस्त्रोंसे युद्ध करनेवाले कृपाचार्य्य अपने विचित्र धनुषको लेकर आपकी ओर युद्ध करने को डटे खड़े हैं। केकय देशके राजका महारथी पुत्र उत्तम घोड़ोंसे युक्त, ध्वजासे शोभायमान रथपर बैठ कर आपकी ओरसे युद्ध करने को खड़ा हुआ है। ऐसे ही कुरुकुलमें श्रेष्ठ आपका पुत्र पुरुको मित्र बनाके और सूर्य्य समान प्रकाशमान् रथ पर बैठके ऐसा शोभित है जैसे मेघरहित आकाशमें सूर्य्य सुशोभित होता है। दुर्योधन सुवर्ण जटित रथमें बैठा युद्ध करता ऐसा शोभायमान है, जैसे हाथियोंके झुंडमें सिंहकी शोभा होती है। दुर्योधन सुवर्णका कवच पहिने ऐसा शोभायमान है जैसे कमल, अथवा धुआं रहित अग्नि, वा मेघोंके बीच में सूर्य्य। हाथमें खड्ग और ढाल लिये आपका पुत्र सुषेण और वीर सत्यसेन यह दोनों ही चित्रसेनके सहित प्रसन्न चित्तसे युद्ध करनेको खड़े हैं। सदा लज्जाको धारण करनेवाला, प्रचण्ड शस्त्रधारी शीघ्र खानेवाला, भरतराजका पुत्र सुदर्श, जलसन्धिका पहिला और धीरपुत्र चित्रायुध और श्रुतवर्म्मा, शल, सत्यव्रत, दुःशल, यह सब नर श्रेष्ठ सेनाके सहित युद्ध करनेको खड़े हैं। कैतव्य लोगोंका स्वामी अपनेको वीर माननेवाला, हरएक रणमें शत्रुओंको मारनेवाला शकुनी आपकी ओरसे युद्ध करनेको खड़ा है। जो राजपुत्र रथ घोड़े, हाथी और पैदल सेनाके साथ चलता है वही वीर श्रुतायु ध्रुतायु चित्राङ्गद और चित्रसेन यह सब नरश्रेष्ठ युद्धकी इच्छासे खड़े है। यह सब लड़नेमें कुशल, मानी और सत्य बोलनेवाले हैं। सच्ची प्रतिज्ञावाला महात्मा कर्णपुत्र भी संग्राममें युद्धकी इच्छासे खड़ा है, हे नरेन्द्र ! ऐसेही उत्तम शस्त्रधारी, शीघ्र शस्त्र छोड़नेवाले शत्रुओंसे जीतनेके अयोग्य सेनाको लिये कर्णके और दो पुत्र युद्धकी इच्छासे खड़े हुए हैं।

सञ्जय बोले, हे राजन् ! धृतराष्ट्र ! इनको आदि लेके और और मुख्य और अतुल प्रभाव

वाले वीरोंके सहित कुरुराज दुर्योधन समरभूमिमें जयके निमित्त खड़ा हुआ ऐसा शोभायमान है, जैसे हाथियोंके झुंडमें गजेन्द्रकी शोभा होती है।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! तुमने जो जीते हुए वीरोंका ठीक ठीक वर्णन किया, इसके फलसे मैं समझ गया हूं कि मेरे पुत्रोंकी जय न होगी।

वैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! अम्बिकापुत्र धृतराष्ट्र सञ्जयसे अपनी सेनाके वीरोंको हारे और थोड़े रथोंको बाकी रहा सुनके उक्त वाक्यको कहते मूर्च्छित होगये! धृतराष्ट्रकी इन्द्रिया शोकसे व्याकुल होगईं और घबड़ा कर सञ्जयसे बोले, हे सञ्जय! क्षणभर ठहर जाओ, हे प्यारे! बहुत अप्रिय बातको सुनकर मेरा मन घबड़ाता है और अङ्ग कांपते हैं। मैं इनको रोक नहीं सकता हूं। यह वचन कहके अम्बिकापुत्र राजा धृतराष्ट्र भ्रान्तचित्त होगये।

७ अध्याय समाप्त।

महाराज जनमेजय बोले, हे महामुने। महाराज धृतराष्ट्रने युद्धमें कर्णको और अपने पुत्रोंको मरा सुनके और थोड़ा विश्राम लेके क्या कहा? पुत्रके मरनेके महादुःखको पाकर उस कालमें महाराज धृतराष्ट्रने जो कहा हो वह आप मुझे सुनाइये, यही मैं आपसे पूछता हूं।

वैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! विश्वास करनेके अयोग्य, प्राणियोंको मोहमें डालनेवाला भयानक कर्णका मरना ऐसा था जैसे मेरु पर्वतका चलना, अथवा महा बुद्धिमान परशुरामको मोह पाना, अथवा इन्द्रका भयानक कर्मवाले शत्रुओंसे हारना, अथवा सूर्यका आकाशसे पृथ्वीमें गिरना, वा अक्षय जलसे भरे सागरका सूख जाना, वा पृथ्वी आकाश, दिशा और जलका सर्व्वनाश हो जाना अथवा पुण्य वा पापरूपी कर्म्मके फलका न मिलना। ऐसे असम्भव मरनेको सुनके राजा धृतराष्ट्र बिचारने लगे कि कर्ण नहीं मरा बरन और सब लोग मर गये; अर्थात् अब हमारी सेनाको कोई नहीं बचा सकता है। राजा धृतराष्ट्र कर्णके मरनेको सुनके शोककी अग्निसे ऐसे जलने लगे जैसे भट्टीमें लोहा जलता है। राजा धृतराष्ट्रके अङ्ग कांपने लगे और हाय हाय कह दीनताके साथ अम्बिकापुत्र धृतराष्ट्र बिलाप करने लगे।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! अतिरथी बीर सिंहके समान बलवान, बैलके तुल्य कन्धोंवाला, वृषभाक्षके सदृश चलनेवाला जैसे इन्द्र जल वर्षाता है, ऐसे ही कर्ण भी बाण बर्षाता था, वह युद्धमें पीछे नहीं हटता था, यदि वज्र मारनेवाला इन्द्र भी उसके सामने आवे तौ भी वह नहीं डरता था। जिसकी धनुषटङ्कार और बाणवृष्टिसे मनुष्य, घोड़े और रथयुद्धमें नहीं ठहरते थे। जिस महाभुजके आश्रयसे दुर्य्योधनने शत्रुओंको जीतनेको इच्छासे महारथी पाण्डवोंसे वैर किया था, उस नरसिंह महाबली कर्णको अर्ज्जुनने किस प्रकारसे युद्धमें मारा? इस सहनेके अयोग्य कथाको मुझसे कहो। जो कर्ण अपने भुजबलके अभिमानसे कृष्ण अर्ज्जुन तथा और वृष्णिवंशियोंको कुछ नहीं समझता था, जो राज्यकी इच्छा रखनेवाले लोभसे मोहित दुर्य्योधनसे सदा यही कहता था, मैं एकला दिव्य रथपर बैठके शार्ङ्ग धनुष और गाण्डीव धनुषके धारण करनेवाले कृष्ण और अर्ज्जुनको युद्धमें मार डालूंगा। जिसने सम्पूर्ण काम्बोजदेश, अवन्तिकादेश, केकयदेश, गान्धार देश, मद्रदेश, मत्स्यदेश, त्रिगर्त्तदेश, तङ्गणदेश, शकदेश, पाञ्चालदेश, विदेह, कलिन्द, काशी, कोशला, समुद्र, मद्र, अङ्ग, बङ्ग, निषाद, पुण्ड्रचीर,

खस कलिङ्ग, अश्मका, ऋषीक इन देशोंको जीतकर प्रथम जिसने दुर्योधनकी वृद्धिके वास्ते रत्न पङ्क लगे हुए और पैने बाणोंसे समरमें जीतकर कर लिया था, उस राधातनय सूर्य्य-पुत्र, दिव्यास्त्रोंको जाननेवाले, दानी, सेनार-च्चक कर्णको बलवान् बीर पाण्डवोंने युद्धमें कैसे मारा? जल बरषानेके कारणसे देवतोंमें इन्द्र और दान करनेसे मनुष्योंमें कर्ण ही वृष कहाते हैं। हमने जगत्में किसी और को वृष पदवी नहीं सुनी। घोड़ोंमें उच्चैश्रवा, राजोंमें कुवेर, देवतोंमें इन्द्र और युद्ध करनेवालोंमें कर्ण श्रेष्ठ है। जो शक्तिमान और बलवान राजोंसे नहीं जीता गया और जिसने दुर्य्योध-नके निमित्त सब पृथ्वीको जीता, जिसकी मित्र-तासे मगधदेशका राजा बलवान हुआ था, जिसने कौरव और यादवोंको छोड़के सब राजोंको घेर लिया था, उस कर्णको अर्जुनने मारडाला इस बातको सुनके मैं शोकसागरमें ऐसा डूबा हूं जैसे टूटी हुई नाव डूबती है। उस दानी कर्णको अर्जुनके हाथसे मरा हुआ सुनके मैं शोकसागरमें ऐसा डूबा हूं जैसे बिना नावके मनुष्य समुद्रमें डूबता है।

हे सञ्जय। ऐसे दुःखोंसे जो मैं नहीं मरता हूं इससे मैं अपने हृदयको हीरासे भी कठोर समझता हूं। मेरे सिवाय कौन ऐसा मनुष्य होगा जो अपने जातिवाले, बान्धव और मित्रोंकी हारको सुनके जीता रहे? हे सञ्जय। मैं चाहता हूं कि विष खाके, अग्निमें जलके वा पहाड़से गिरके मर जाऊं क्योंकि मुझसे यह कष्ट और दुःख नहीं सहा जाता है।

८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! आजकल महात्मा लोग लक्ष्मी, कुल, यश, तपस्या और विद्यासे आपको नहुषपुत्र ययातिके समान मानते हैं। हे राजन्! आप विद्यामें महाऋषि-योंके तुल्य हैं, इस लिये अपने मनको स्थिर कीजिये और किसी प्रकारका हृदयमें दुःख न कीजिये।

धृतराष्ट्र बोले, सालवृक्षके समान शरीरवाले कर्ण युद्धमे मारे गये इस बातको सुन हमें निश्चय है कि प्रारब्ध ही बड़ी बलवान है, निरर्थक पौरुषको धिक्कार हैं। हे महाराथ। कर्ण युधि-ष्ठिरकी सेना और पाञ्चालदलके अनेक महा रथोंको मारकर तथा बाणोंसे सब वीरोंको व्याकुल करके सब पाण्डवोंको व्याकुल करके कर्ण किस प्रकार मर गये? हा बीर कर्णने इस प्रकार पाण्डवोंको पीड़ित किया जैसे वज्रधारी इन्द्र दानवोंको युद्धमें दुःख देते हैं। सो वह महारथ आज वायुसे टूटे हुए वृक्षके समान पृथ्वीमें पड़े हैं। मैं अपने शोकसमुद्रका पार नहीं देखता। मुझे बहुत चिन्ता बढ़ती जाती है और मूर्च्छा आयी जाती है।

हे सञ्जय। कर्णका मरना और अर्जुनकी विजय सुनकर हमें निश्चय नहीं होता कि कर्ण मर गया! मेरा हृदय वज्रसे भी अधिक कठोर है जो कर्णकी मृत्यु सुनकर भी नहीं फटा। कर्णकी मृत्यु सुनने पर भी मैं अभीतक जीता हूं इससे निश्चय होता है कि ब्रह्माने मेरी आयु बहुत बनायी है। हे सञ्जय! हमारे जीनेको धिक्कार है, जिसके सब मित्र मरते जाते हैं, अब मैं बहुत दुर्दशामें पड गया। पहले मैं सब लोकसे श्रेष्ठ था, परन्तु वही मैं अब सबलोकसे नीच होगया। हे सञ्जय! कर्णको शत्रुओंने मारडाला यह सुनकर मुझे घोर दुःख हुआ है, परन्तु न जाने कौनसा दुःख भोगनेके लिये मेरा जीव निकलता नहीं। भीष्म, द्रोणाचार्य्य और सूतपुत्र महात्मा कर्णके मरनेसे अपनी ओर किसीको योद्धा नहीं देखता। मेरे पुत्रोंको यह विश्वास था कि कर्ण सब पाण्डवोंको मारेगा, परन्तु वही कर्ण

वाणोंको छोड़ता हुआ आज युद्धमें मारा गया।

हे सूत! जहां अधिरथपुत्र कर्ण वाणोंसे पीड़ित होकर पृथ्वीपर गिर गये तहां मैं जीता रहकर क्या करूंगा? अब रुधिर भरे कर्ण अपने तेजसे पृथ्वीको इस प्रकार प्रकाशित कर रहे हैं, जैसे वज्रसे कटा पर्व्वतका शिखर। जो हमारे पुत्रोंका वल और पाण्डवोंके लिये महाभय था, उसही कर्णको अर्जुनने आज इस प्रकार मारडाला, जैसे हाथी हाथीको मार डालता है। जो कर्ण धनुषधारीकी उपमा थे और जो सब शत्रुओंको भय देते थे, उन्हींको आज अर्जुनने मारा। इन्द्रके वज्रसे कटे हुए पर्व्वतके समान आज कर्ण पृथ्वीपर गिरे पड़े हैं। जैसे पंगुका मार्ग चलना दरिद्रीकी इच्छा और प्यासेको पानीकी इच्छा ऐसे हो कर्णके मरनेसे दुर्य्योधनके सब अभिप्राय नष्ट होगये। प्रारब्ध बड़ी वलवान है और समय बड़ा कठिन है। मनुष्य एक कामको विचारता है परन्तु होजाता है दूसरे प्रकारसे। हे तात! कर्णके मरनेके पश्चात दीन वलहीन हमारा दुर्य्योधन कैसे रहा? और उन्होंने युद्धमें क्या किया? उस पराक्रमी वीरको अनेक क्षत्रियोंके सामने किस प्रकार भीमने मारा। हाय युधिष्ठिरने जो कहा था कि युद्ध मत करो, वह वचन मुझे पद स्मरण होता है। मूर्ख दुर्य्योधनने उनके वचनोंको इस प्रकार नहीं माना, जैसे मरनेवाला रोगी औषधि नहीं खाता। शरशय्यापर सोते हुए महात्मा भीष्मने जब पाण्डवोंसे जल मांगा तब अर्जुनने पृथ्वी तोड़ कर जल धारा निकाल दी थी, उस जलधाराको देख महाबाहु भीष्मने कहा, हे दुर्य्योधन! तुम युधिष्ठिरके साथ सन्धि करलो, इससे तुम्हारी और सबकी हित होगी तुम पाण्डवोंके सहित [illegible] राज्य करो।

परन्तु मूर्ख दुर्य्योधनने उनका वचन न माना, इसीसे यह इस आपत्तिमें पड़ा है। हे सञ्जय! अग्रसोची भीष्मके वचन अब दिखायी देते हैं। पुत्रोंके मरनेसे मैं भी मराही हुआ हूं। हे सञ्जय! यह उसी जुयेका फल है जो शकुनिने युधिष्ठिरके साथ खेला था। इस समय मै पंख कटे पक्षीके समान तड़फ रहा हूं। जैसे बालक पक्षीको पकड़ कर उसके पङ्ख उखाड़ देते हैं और फिर वह उड़ नहीं सक्ता, वैसी हो मेरी दशा हो गयी है। मेरा धन जन और वंश भी नाश होगया।

श्रीवैशम्पायन बोले, हे राजन् जनमेजय! राजा धृतराष्ट्र इस प्रकारसे बहुत रोए फिर शोकसे व्याकुल होकर सञ्जयसे बोले, जिसने कार्य्यसिद्धिके लिए युद्धमें सब काम्बोज, अवन्ति विदेह, कैकय और गान्धारोंको जीत लिया था। जिसने दुर्य्योधनकी वृद्धिके लिये सब पृथ्वीको जीत लिया था, वही पराक्रमी कर्ण आज पाण्डवोंके हाथसे मारा गया। हे सञ्जय! महाधनुषधारी कर्णके मरनेके पश्चात् कौन वीर युद्धमें खड़े रहे? सो हमसे कहो। क्या पाण्डवोंने हमारे किसी वीरको जीता न छोड़ा? जैसे शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ शिखण्डीने भीष्मको मारा इसी प्रकार शस्त्रत्यागी योग करते हुए द्रोणाचार्य्यको धृष्टद्युम्नने मारा। इन दोनों वीरोंको पाण्डवोंने छलसे मारा, हमें यह निश्चय था कि भीष्म और द्रोणाचार्य्यको साक्षात् इन्द्र भी नहीं मार सक्ते! इसी प्रकार दिव्य शस्त्र चलाते हुए कर्णको भी न्यायसे कोई नहीं युद्धमें मार सक्ता। जिसको सब शत्रुओंको नाश करनेवाली सुवर्ण भूषित शक्ति इन्द्रने कुण्डलोंके बदलेमें दी थी उस इन्द्रके समान पराक्रमी कर्णकी मृत्यु कैसे होगयी? जिसका वाण सुवर्णभूषित और सब शत्रुओंके नाश करनेवाला था, वह कर्ण आज आकाशसे गिरे चन्द्रमाके समान पृथ्वी पर पड़ा है। जो महारथ भीष्म और द्रोणाचार्य्य आदि वीरोंका निरादर करते थे, जिन्होंने परशुरामसे महाघोर ब्रह्म शस्त्र सीखा था, वही कर्ण

आज मरा हुआ पृथ्वीपर पड़ा है। जो अभिमन्युके बाणोंसे पीड़ित महात्मा द्रोणाचार्य्यकी युद्धसे विरक्त देखकर स्वयं युद्ध करने लगे थे और उनके धनुषको काट दिया। जिसने हजार हाथीके समान बलवान वज्रके समान पराक्रमी भीमसेनका रथ काट दिया था। जिसने सात बाणोंसे सहदेवको जीता था, जिसने सहदेवको धर्म्म जानकर नहीं मारा था, जिसने अनेक प्रकारकी मायासे युद्ध करनेवाले भीमपुत्र घटोत्कच राक्षसको इन्द्रकी शक्तिसे मारा था वही कर्ण मरकर आज पृथ्वीमें गिर गया। जिसके ये सब पराक्रम देखकर अर्ज्जुन डरते रहते थे वह कर्ण आज किस प्रकार अर्ज्जुनके हाथसे मारा गया? अर्ज्जुनने विचारा था कि संशप्तकोंको मारकर कर्णको मारेंगे परन्तु उनसे पहले ही कर्णसे क्यों लड़े? कर्णका न धनुष कटा, न रथ कटा, तब अर्ज्जुनने उनको किस प्रकार मार डाला? धनुष खींचते हुए कर्णको कौन मार सक्ता था? अर्ज्जुनने बिना शस्त्र काटे कर्णको कैसे मारा? शार्दूलके समान पराक्रमी दिव्य अस्त्र और घोर बाणोंको छोड़ते हुए कर्णको युद्धमें कौन मार सक्ता? हमें निश्चय होता है कि कर्णका धनुष कट गया रथ पृथ्वीमें धस गया होगा और शस्त्र कट गये होंगे तभी कर्ण मरे होंगे, क्योंकि इन कारणोंके सिवाय कर्णके मरनेका कोई कारण नहीं दीखता। कर्णने प्रतिज्ञा की थी कि मैं बिना अर्ज्जुनके मारे पैर नहीं धोऊंगा वे कर्ण आज कैसे मारे गये? जिनके डरके मारे धर्म्मराज युधिष्ठिरको निद्रा नहीं आती थी, जिसके डरसे धर्म्मराज युधिष्ठिर तेरह वर्ष सुखसे नहीं बैठे थे, वह कर्ण आज किसप्रकार मर गये? जिनके पराक्रमका आश्रय करके दुःशासन द्रौपदीको बाल पकड़ कर खींच लाया था और द्रौपदीकी ओर देख पाण्डवोंके आगे ही हंसे थे जिन्होंने सब राजोंके बीच द्रौपदीको दासस्त्री कहा था और यह भी कहा था कि हे द्रौपदी। पाण्डव तेरे पति नहीं हैं। हे सुन्दरी! तुम किसी दूसरेको पति बनाओ। इत्यादि रूखे बचन जिन्होंने सभामें कहे थे, वही सूतपुत्र आज शत्रुओंके हाथसे कैसे मारे गये। जो बीर भीष्म, महारथ द्रोणाचार्य्य और दुर्य्योधनसे कहा करते थे, कि आप लोग निसन्देह होकर बैठिये हम पाचो पाण्डवोंको मारेंगे जो कहा करते थे कि मेरे बाणोंके आगे गाण्डीव और अक्षय तूणीर क्या करेंगे। जो गाण्डीवसे छूटे हुए बज्रके समान बाणोंको कुछ भी नहीं समझते थे वह कर्ण आज किस प्रकार मारे गये? जो पाण्डुके पुत्रोंसे कुछ भी नहीं डरते थे वह कर्ण कैसे मारे गये? जो अपने बाहुबलके आगे किसी बीरका आदर नहीं करते थे, जिसको इन्द्रादिक देवता भी नहीं जीत सक्ते थे, वे कर्ण मारे गये यह हमें निश्चय नहीं होता। शत्रुओंकी घोर सेनाकी ओर दौड़ते हुए और धनुषका शब्द करते हुए कर्णसे कौन युद्ध कर सकता है। पाण्डवोंकी तो कथा ही क्या है। कर्ण अपने सूर्य्य और चन्द्रमाके समान तेज बाणोंसे पृथ्वीको भी तोड़ सक्ते हैं। जो भाइयोंके सहित दुःशासन युद्धसे न भागनेवाले मूर्ख दुर्य्योधनको मरनेसे बचाते थे, सो कर्ण आज कैसे मारे गये? जिस मूर्ख दुर्य्योधनने दुःशासनको सहायतासे कृष्णके बचनको नहीं माना था, वह आज मतवाले बैलके कंधेके समान कंधेवाले कर्णको मरा देख और दुःशासनको मरा देख निश्चयही सोच करता होगा। कर्णको अर्ज्जुनसे मरा दुर्म्मर्षण और वृषसेनको भीमसेनके हाथसे मरा देख दुर्य्योधनने क्या कहा? अपनी सेनाको भागते, अपने पक्षी राजोंको उत्साह रहित और पाण्डवोंको प्रबल देख दुर्य्योधनने क्या कहा? हमको निश्चय है कि मूर्ख, इन्द्रियोंको न जीतनेवाला दुर्य्योधन अपने महारथोंको

भागते देख बहुत ही सोच करता होगा? जो मित्रोंके मना करनेपर भी नहीं माना था? उस दुर्य्योधनने अपनी सेनाको भागते देख क्या कहा था? जब भीमसेनने जीते हुए दुःशासनका रुधिर पिया तब दुर्य्योधनने क्या कहा? दुर्य्योधनने जो शकुनीके सहित सभामें कहा था, कि कर्ण अर्ज्जुनको युद्धमें मारेंगे सो कर्णके मरनेपर दुर्य्योधनने क्या कहा? हे तात। जिस सुवलपुत्र शकुनिने पाण्डवोंको छला था और जुआ खेलकर जो प्रसन्न हुआ था उसने कर्णको मरा देख क्या कहा था? हृदीकपुत्र महारथ महाधनुषधारी कृतवर्म्माने कर्णको मरा देख क्या कहा? हे सञ्जय! जिससे बुद्धिमान सुन्दर वीर ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य धनुर्व्विद्या सीखते हैं उस अश्वत्थामाने कर्णको मरा देख क्या कहा? जो धनुर्वेदके आचार्य्य हैं उन महारथ गौतमवंशी शारद्वतपुत्र कृपाचार्य्यने कर्णको मरा देख क्या कहा? मद्र देशके राजा महारथोंमें श्रेष्ठ कर्णके सारथी सभाको शोभित करनेवाले शल्यने कर्णको मारा देख क्या कहा? हे सञ्जय! और भी सब राजा और बचे योद्धाओंने कर्णको मरा देख क्या कहा? महारथ पुरुषसिंह द्रोणाचार्य्यके मरनेके पीछे हमारी सेनामें कौन कौन वीर प्रधान हुए? मद्रराज शल्य किस प्रकार कर्णके सारथी बने? सो हमसे कहो। सूतपुत्र कर्णके दावें और वायें पहियोंको कौन रक्षा करता था? और उनके रथके पीछे कौन था? किन किन वीरोंने कर्णको नहीं छोड़ा; और कौन कादर छोड़ कर भाग गये और किस प्रकार अर्ज्जुनने सेनाके बीच महारथ कर्णको मारा; और पाण्डव नदीके समान [illegible] हुए आप ही किस प्रकार युद्धमें [illegible] कर्णका [illegible] कपमुख वाण किस प्रकार [illegible] यह सब कथा हमसे कहो। हमारा सेनाका वर्ग रूपी कंगूरा गिरनेसे उत्साह नष्ट होगया। अब कोई वीर नहीं रहा। हमारे लिये भीष्म और द्रोणाचार्य्य मर गये अब हम जीकर क्या करेंगे? अब हम सौ हाथियोंके समान पराक्रमी कर्णका बार बार शोच नहीं करेंगे। हे सञ्जय! द्रोणाचार्य्यके मरनेके पश्चात् कौरवोंने क्या किया? जैसे शत्रुनाशन कर्णने पाण्डवोंके साथ युद्ध किया और मर गये, सो कहो।

९ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! जिसदिन महाधनुषधारी द्रोणाचार्य्य मारे गये और जब महारथ अश्वत्थामा घोर प्रतिज्ञा कर चुके, उस समय कौरवोंकी बड़ी सेना इधर उधर भागने लगी, तब महाराज युधिष्ठिर अपने भाइयोंके समेत अपनी सेनाका व्यूह बनाकर खड़े होगये। हे भारत! जिस समय तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधनने देखा कि महाराज युधिष्ठिर अपनी सेनामें खड़े हैं और हमारी सेना भागी जाती है। तब उन्होंने बहुत यत्नसे अपनी सेनाको स्थिर किया, उस समय राजा दुर्य्योधन आप ही अपने बलसे युद्ध करने लगे और बहुत समय तक युद्ध करके सन्ध्या समय जान उन्होंने अपनी सेनाको लौटाया। अनन्तर राजा दुर्य्योधन सब सेनापतियोंको उनके डेरोंमें पहुंचाकर आप अपने डेरोंमें गये, वहां अपने मन्त्रियोंको बुलाकर विचार करने लगे, वे सब लोग कोई उत्तम पलङ्ग और कोई उत्तम आसनोंपर बैठे, उस समय उनकी शोभा ऐसी बढ़ी जैसे स्वर्गमें देवतोंकी। तब राजा दुर्य्योधनने बहुत शान्तिके सहित उन धनुषधारियोंसे समयके अनुसार ऐसे वचन कहे।

महाराज दुर्य्योधन बोले, हे बुद्धिवानोंमें श्रेष्ठ राजा लोगो! आप लोग शीघ्र अपनी अपनी सम्मतिके अनुसार कहिये, कि इस समय हमको कौन काम करना चाहिये?

सञ्जय बोले, राजा दुर्य्योधनके ऐसे वचन सुन सिंहासनोंपर बैठे राजा लोग अनेक प्रकारकी चेष्टा करने लगे, उन युद्धमें प्राण देनेवालोंकी चेष्टा और प्रातःकालके सूर्य्यके समान राजा दुर्य्योधनका मुख देख वाक्यके अर्थको जाननेवाले द्रोणाचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामा बोले, पण्डितोंने राजाके लिये चार उपाय कहे हैं। एक स्वामिभक्ति। दूसरा देश और कालको विचारकर काम करना। तीसरा बलसे काम करना और चौथा नीतिसे विचारकर अपने प्रयोजनको देखना। पर ये चारो उपाय प्रारब्धके अधीन हैं। हमारी ओरके जो देवतोंके समान जगत् प्रसिद्ध बीर थे, जो नीतिके जाननेवाले काम करने योग्य और राजाके भक्त शूरबीर थे, सो सब मारे गये, परन्तु उनके मरनेपरभी हम लोगोंको अपनी विजयकी आशा न छोड़नी चाहिये, क्योंकि जिनकी नीति अच्छी है और जिनके पास सब सामग्री है, उनकी प्रारब्ध भी सीधी होजाती है। इस लिये हम सब लोग सब मनुष्योंमें श्रेष्ठ सब गुणोंसे भरे कर्णको सेनापति बनावें। हमको पूर्ण आशा है, कि कर्णको सेनापति करनेसे हम लोग अवश्य सब शत्रुओंका नाश करेंगे, क्योंकि कर्ण महाबलवान शस्त्र जाननेवाले और युद्धको जीतने योग्य है। कर्ण यमराजके समान योद्धा है। इस लिये ये इस युद्धको जीत सकते हैं। हे राजन्! अश्वत्थामाके ऐसे वचन सुन तुम्हारे पुत्रने कर्णकी बहुत आशा करी। हे भारत! दुर्य्योधनको यह निश्चय होगया, कि भीष्म और द्रोणाचार्य्यके मरनेपर भी कर्ण पाण्डवोंको जीत लेगा। अनन्तर राजा दुर्य्योधनने अपने प्यारे, प्रयोजन सिद्धि करनेवाले उत्तम वचन सुन और अपने मनको स्थिर कर तथा अपने बलका अभिमान करके राधापुत्र कर्णसे कहा।

महाराज दुर्य्योधन बोले, हे कर्ण! हे महाबाहो! यद्यपि हम तुम्हारे बलको जानते हैं कि तुम हमसे बहुत प्रेम रखते हो, तो भी कुछ कल्याणसहित वचन कहना चाहते हैं हमारे बचनोंको सुनकर आपको जो अच्छा ल सो करना, क्योंकि आप परम बुद्धिमान औ हमको दुःखोंसे बचानेवाले हैं। पहले मह रथ भीष्म और द्रोणाचार्य्य हमारे सेनाप हुए थे, वे दोनों हमारा कल्याण चाहते अब आप उनसे भी अधिक हमारे मित्र हैं इस लिये सेनापति हूजिये। हे राधापुत्र वे दोनों धनुषधारी बूढ़े थे और अर्ज्जुनकी र करते थे, परन्तु तुम्हारे ही वचनसे मैं उ दोनोंका सम्मान करता था। हे प्यारे भीष्मने पाण्डवोंको अपना पोता जानकर द दिनतक न मारा। जिस समय तुमने शस्त्र छो दिये, उसी समय शिखण्डीको आगे कर अर्ज्जुनने भीष्म पितामहको मारा। हे पुरुष सिंह! जिस समय महा धनुषधारी भीष्म मर कर शरशय्यापर सोगये, तब तुम्हारे कहनेके अनुसार द्रोणाचार्य्य सेनापति हुए उन्होंने भी शिष्य जानकर पाण्डवोंकी रक्षा की। उस बूढे को भी युद्धमें धृष्टद्युम्नने मार डाला। इन दोनों प्रधान बीरोंके मरनेपर हमारी बुद्धिमें हमारी ओर तुम्हारे समान और कोई बीर नहीं रहा। इसमें सन्देह नहीं, कि पहले, पीछे और बीचमें तुम्हीसे हमारी विजय होसकती है, इस लिये आप हमारे सेनापति हूजिये। और युद्धका भार अपने ऊपर लीजिये। जैसे भगवान् स्वामि कार्त्तिक देवतोंके सेनापति हैं, वैसे ही आप हमारे सेनापति होकर हमारी शोभाको बढ़ाइये। हे महारथ! जैसे इन्द्र राक्षसोंका नाश करते हैं, तैसे आप हमारे शत्रुओंको जीतिये। तुमको युद्धमें खड़ा हुआ देख पाञ्चाल और महारथ पाण्डवलोग इस प्रकार युद्धसे भाग जायंगे, जैसे इन्द्रको देख दानव भाग जाते हैं, इस लिये आप साधारणहीसे इस सेनाको जीत सकते हैं। आपको युद्धमें देखते ही मूर्ख पाण्डव

लोग अपने मन्त्रियोंके सहित तथा सञ्जय और पाञ्चालोंके साथ युद्धसे भाग जायगे। जैसे सूर्य्य अपने तेजसे अन्धकारको दूर करता है, तैसे आप अपने तेजसे हमारे शत्रुओंको नाश कीजिये।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! भीष्म और द्रोणाचार्य्यके मरने पर तुम्हारे पुत्रोंको यह निश्चय हो गया, कि कर्ण अवश्य ही पाण्डवोंको जीतेगा। तब दुर्य्योधनने कर्णसे कहा, हे सूतपुत्र! हमें यह निश्चय है, कि अर्जुन तुम्हारे आगे खड़े होकर युद्ध नहीं करेंगे।

कर्ण बोले, हे गन्धारीपुत्र! हमने तुमसे पहले ही कहा था, कि हम अकेले सब पाण्डवोंको सहायकोंके सहित मार डालेंगे। अब हम आपके सेनापति होंगे, अब आप स्थित हूजिये और समझ लीजिये कि, पाण्डवोंका नाश होगया।

सञ्जय बोले, हे महाराज धृतराष्ट्र! कर्णके ऐसे वचन सुन राजा दुर्य्योधन राजोंके समेत इस प्रकार उठे, जैसे देवतोंके सहित इन्द्र उठते हैं। अनन्तर, सब राजोंने कर्णका इस प्रकार अभिषेक किया, जैसे देवतोंने स्वामकार्त्तिकका अभिषेक किया था। उस समय दुर्य्योधन आदिक राजोंने सोनेके घड़ोंमें जल भरकर मन्त्रोंके सहित कर्णको स्नान कराया। अनन्तर पवित्र सुगन्धोंसे भरे जलको पवित्र वर्त्तनोंमें अर्थात् गैंड़ेके सींगके बने और हाथी दांतके बने हुए पात्रोंमें जल भर कर स्नान कराया। अनन्तर गूलरके काठके सिंहासन पर रेशमका बिछौना कर कर्णको बिठाया। फिर शास्त्रमें लिखी विधिके अनुसार सब सामग्री इकट्ठी करके कर्णका अभिषेक किया। अनन्तर ब्राह्मण, [illegible] और शूद्र उनकी स्तुति करने लगे। हे राजेन्द्र! जिस समय कर्ण सेनापति होगये, [illegible] सहसे धन और गाएं ब्राह्मणोंको दान किया। [illegible] ब्राह्मण और बन्दीजन

कहने लगे हे कर्ण! तुम हृदय और सहायकोंके सहित पाण्डवोंको युद्धमें जीतो। हे राधापुत्र! जैसे सूर्य्य उदय होकर अपनी किरणोंसे अन्धकारका नाश करता है, तैसे ही तुम पाण्डवोंका नाश करो। जैसे सूर्य्यकी तेज किरणोंको उल्लू नहीं सह सक्ते, तैसे ही कृष्ण और पाण्डव तुम्हारे बाणोंको नहीं सह सक्ते। जैसे इन्द्रको देख दानव युद्धमें नहीं खड़े होते, वैसे ही पाचाल और पांण्डव तुम्हारे आगे खड़े नहीं होंगे।

उस समय कर्णका ऐसा तेज बढ़ा, जैसे सूर्य्यका तेज बढ़ता है। हे राजेन्द्र! जिस समय कालके बसमें पड़े तुम्हारे पुत्रने राधापुत्रको सेनापति किया, तब उसने जाना कि मैं अपने सब कार्य्य सिद्ध कर चुका, कर्णने भी सेनापति होकर आज्ञा दी कि, हम सूर्य्य उदय होते ही युद्धमे जावेंगे। उस समय तुम्हारे पुत्रोंके सहित कर्णकी ऐसी शोभा बढ़ी, जैसे तारकासुरके युद्धमें देवतोंके सहित स्वामकार्त्तिककी शोभा बढ़ी थी।

१० अध्याय समाप्त।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जब कर्ण सेनापति हो चुका, और राजाके भाईके समान प्रेम भरे वचन सुन चुका तथा प्रातःकाल होते ही युद्ध करनेकी प्रतिज्ञा कर चुका, इसके पश्चात् महा बुद्धिवान कर्णने क्या किया? सो हमसे कहो।

सञ्जय बोले, हे भरतकुल सिंह! जब आपके पुत्रोंने कर्णको सेनापति किया और प्रातःकाल युद्ध करनेका निश्चय किया। तब सब लोग बहुत प्रसन्न हुए। जब रात्रि तीन पहर बीत गई, तब तुम्हारी सेना युद्धके लिये उपस्थित होने लगी, उस समय आपकी सेनामें बड़ा भारी शब्द हुआ। हे पृथ्वीनाथ! हाथी, रथ घोड़े, और मनुष्योंके चलनेका तथा उप-

स्थित होनेका शब्द होने लगा, सेनाके योधा परस्पर गरजने लगे। उनका शब्द सब दिशाओंमें फैल गया। उसी समय सूतपुत्र कर्ण सफेद ध्वजा बिजली समान घोड़े सोनेकी बनी धनुष, सांप युक्त ध्वजा, सैकड़ों तूनीर, गदा, शतघ्नी घण्टा लगी सांगि आदि शस्त्रोंसे भरे हुए रथमें बैठकर युद्धको चलनेके लिये दिखलाई दिये। उस समय धनुषयुक्त कर्णके रथका ऐसा तेज बढ़ा जैसा उदय होते हुए सूर्य्यका बढ़ता है। महाधनुषधारी महारथ कर्णको सोनेके तारोंसे खिंचा हुआ संख बजाते धनुष घुमाते और युद्धको चलते हुए देख, तुम्हारे पुत्रोंने जाना, कि कर्ण महा तेजस्वी तपस्यासे भरे हैं; इनके कार्य्यमें कोई विघ्न नहीं कर सकता। उस समय सब लोगोंने जाना कि कर्ण भीष्म और द्रोणाचार्य्यसे भी अधिक बलवान हैं, कोई वीर इनके समान पराक्रमी नहीं है। कर्णने अपने शङ्खके शब्दसे सब योद्धाओंको युद्धके लिये उपस्थित किया और उस बड़ी सेनाके सङ्ग आपभी युद्ध करनेको चले। महाधनुषधारी कर्णने पाण्डवोंसे युद्ध करनेके लिये मकर व्यूह बनाया। हे राजन्! उस मकर व्यूहके मुखमें विकर्ण पुत्र, नेत्रोंमें महारथ शकुनी और उलूक, सिरमें अश्वत्थामा, गलेमें आपके सब पुत्र, पेटमें बहुत सेनाके सहित राजा दुर्य्योधन थे। हे राजेन्द्र! बायें पैरमें महायुद्ध करनेवाले ग्वालियोंके सहित कृतवर्म्मा, दहने पैरमें महा धनुषधारी त्रिगर्त्त देशके क्षत्री और दक्षिणी वीरोंके सहित कृपाचार्य्य। बायें पैरके पास मद्र देशकी महा सेनाके सहित राजा शल्य, दहिने पैरके पास तीनसौ हाथी और एक सहस्र रथोंके सहित महा पराक्रमी सुषेण। बाईं कोखमें बहुत सेनाके सहित चित्र और चित्रसेन नामक दोनों भाई खड़े हुए।

हे राजेन्द्र! कर्णके इस व्यूहको देखकर महाराज युधिष्ठिर अर्जुनसे बोले, हे वीर! देखो कर्णने धृतराष्ट्र पुत्रोंकी सेनाको कैसा बनाया है। देखो कैसे कैसे वीर रक्षा कर रहे हैं। हमारी बुद्धिमें इस सेनाके सब प्रधान वीर मर चुके हैं, अब यह तिनके समान रह गई है, इस सेनामें एकला कर्ण ही वीर दीखता है। यह सूतपुत्र महारथ कर्ण एकला ही रथ पर बैठकर देवता, गन्धर्व्व, राक्षस और सर्पोंके सहित चराचर तीनों लोकोंको जीत सक्ता है। हे महाबाहो! जब तुम इसको मारोगे, तब हो हमारी विजय होगी और हमें बारह वर्ष बनमें रहनेका फल मिलेगा। इस लिये जैसी तुम्हारी इच्छा हो वैसा व्यूह बनाओ। अपने भाईके ऐसे बचन सुन अर्जुनने अपनी सेनाका अर्द्धचन्द्र व्यूह बनाया। उस व्यूहके बाईं ओर महा बलवान भीमसेन, दहिनी ओर धृष्टद्युम्न, बीचमें अर्जुन, नकुल और सहदेव। महाराज युधिष्ठिर पीछे खड़े हुए। उसदिन अर्जुनके रथके पहियोंकी रक्षा करनेके लिये पाञ्चाल देशके महापराक्रमी युधामन्यु और उत्तमौजा खड़े हुए, अर्जुन भी इन दोनोंकी रक्षा करते रहे। पाण्डवोंके और सब वीर भी अपने अपने स्थान उत्साह और बलके अनुसार व्यूहमें लड़नेको खड़े हुए। हे राजेन्द्र! इस प्रकार पाण्डव और तुम्हारे पुत्रोंने अपनी अपनी सेनाका व्यूह बना कर युद्धकी इच्छा करी। कर्णके सहित अपनी सेनाके व्यूहको देखकर तुम्हारे पुत्रोंने जाना कि पाण्डवोंका नाश होगया। इसी प्रकार अपनी सेनाके व्यूहको देखकर महाराज युधिष्ठिरने कर्णके सहित आपके पुत्रोंको मरा हुआ जान लिया। तब दोनों ओरसे शङ्ख भेर नगारे और झांझ बजने लगी। बाजा बजते ही दोनों ओरके वीर अपनी अपनी जयकी इच्छासे गर्ज्जने लगे; हे पृथ्वीनाथ! कहीं घोड़े बोलने लगे, कहीं हाथी गर्ज्जने लगे, कहीं रथोंके पहियोंका शब्द होने लगा। यह घोर शब्द सब दिशाओंमें पूरित होगया। उस समय

कर्ण की सेनाके आगे खड़ा देखकर सब लोग द्रोणाचार्य्यके दुःखको भूल गये। उस समय उन दोनों सेनाओंके वीर प्रसन्नचित्त होकर युद्ध करनेकी इच्छासे खड़े होगये। उन दोनों सेनाओंमें प्रसन्नचित्त कर्ण और अर्ज्जुन घूमने लगे, वे दोनों सेना उस समय ऐसी मालूम होती थीं मानों नाच रही हैं। उस समय दोनों सेना समान होगईं। उससे उन दोनों व्यूहोंसे वीर लोग युद्ध करनेको निकलने लगे। हे राजन्। तब घोड़े, हाथी, रथ और वीरोंका युद्ध होने लगा।

११ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, वे दोनों भारी सेना इस प्रकार प्रसन्न होकर युद्ध करने लगीं, जैसे पहले समयमें देवता और राक्षसोंका युद्ध हुआ था। तब घोड़े, हाथी और रथों पर चढ़े वीर तथा पैदल लोग शत्रुओंके मारनेके लिये शस्त्र चलाने लगे। उत्तम सुगन्धित कमलके समान मुखवाले वीरोंके सिर कट कट कर पृथ्वीमें गिरने लगे। वीरोंके सिर अर्द्धचन्द्र, भाले, छुरे, खड्ग और पट्टिशोंसे कट कटकर पृथ्वीपर गिरने लगे। बलवान और बली बड़े हाथवाले वीरोंने गदाओंसे बलवान और बड़े हाथोंवाले वीरोंके हाथोंको तोड़कर पृथ्वीमें गिरा दिया, कटे हुए हाथोंसे और फरकती हुई अङ्गुलियोंसे वह युद्धभूमि ऐसी शोभित भयी, जैसे गरुड़के मारे हुए पांच मुखवाले फरकते हुए सर्प हों। घोड़े, हाथी और रथोंसे मरे हुए वीर इस प्रकार गिरने लगे, जैसे पुण्य नाश होनेपर विमानोंसे देवता गिरते हैं। किसी वीरने किसी शत्रुको भारी गदासे, किसीने शक्तिसे और किसीने किसी शत्रुको परिघसे मारकर गिरा दिया। उस युद्धमें हाथीसे हाथी घोड़ोंसे घोड़े रथ रथसे और पैदल पैदलसे लड़ने लगे। कहीं हाथीपर चढ़े वीर घोड़ेपर चढ़े वीरोंको, कहीं रथपर चढ़े वीर हाथीपर चढ़े वीरोंको और कहीं घोड़ेपर चढ़े वीर पैदलोंको मारने लगे। रथोंसे हाथियोंसे, घोड़ोंसे पैदल पैदलोंसे और घुड़चढ़े पैदलोंसे युद्ध करने लगे। रथ घोड़े और हाथियोंपर चढ़े वीरोंने दूसरी सेनाके रथ हाथी और घोड़ोंपर चढ़े वीरोंके हाथ पैर और शस्त्रोंको काटकर और मारकर गिरा दिया। जिस समय उस युद्धमें घोर मारकाट होने लगी, तब पाण्डवोंकी ओरके योद्धा भीमसेनको आगे करके युद्ध करनेको आये। धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, द्रौपदीके पांचो पुत्र, प्रभद्रक, सात्यकि और चेकितान गौड़देशकी सेना सङ्गमें लेकर युद्ध करनेको निकले। पाञ्चाल और केरल देशके बड़े हाथ बड़े नेत्र और बड़े हृदयवाले वीर व्यूहबनाकर युद्ध करनेको आये। ये सब वीर महायोद्धा लाल दांतवाले अनेक प्रकारके वस्त्र धारण किये मतवाले हाथीके समान पराक्रमी और अनेक प्रकारकी सुगन्ध लगाये हुए थे। ये सब वीर फांसी और खड्गको हाथमें लेकर युद्ध करनेको आये। इनके सिवाय लम्बेबालवाले धनुषधारी पैदल और घोड़ोंपर चढ़े वीर भी युद्ध करने लगे। इसके पीछे चेदि पाञ्चाल, केकय, कारुष कोशला काञ्ची और मगधदेशके चत्री लोग भी युद्ध करने को चले। उनकी सेनाके हाथी घोड़े और रथोंपर बैठे वीर तथा पैदल लोग हंसने और नाचने लगे; उस सेनाके बीचमें प्रधान सेनापतियोंके सहित तुम्हारे पुत्रोंसे युद्ध करनेको लिये भीमसेन आये। उस समय हाथीपर बैठे हुए भीमसेनकी ऐसी शोभा बढ़ी जैसे उदयाचलके शिखरपर उदय होते हुए सूर्य्य। भीमसेनके लोहेके कवचमें [illegible] लगे, जैसे कार्त्तिकके [illegible] हैं। भीमसेन हाथमें [illegible] इस प्रकार [illegible]

प्रहरका सूर्य्य प्रजाको तपाता है ! भीमसेनको हाथीपर चढ़ा हुआ देख, हाथीपर चढ़े क्षेमधूर्तीने पुकारा और युद्ध करनेको भीमसेनकी ओर दौड़ा। क्षेमधूर्ती और भीमसेनके हाथी का इस प्रकार युद्ध हुआ जैसे वृक्षवाले दो पर्व्वतोंका होता है। भीमसेन और क्षेमधूर्ती परस्पर सूर्य्यकी किरणोंके समान परिघोंसे युद्ध करते हुए गर्ज्जने लगे। फिर वे दोनों धनुष लेकर अद्भुत युद्ध करने लगे, उन दोनोंके बाण धनुष और गर्ज्जनेके शब्दसे दोनोंके हाथियोंने अपने अपने सूंड़ ऊपरको उठा दिया और दोनोंकी ध्वजा वायुसे उड़ने लगीं, इन दोनोंने दोनोंकी धनुष काट दीं, फिर जैसे वर्षाकाल का मेघ वर्षता है तैसे ही साङ्गि और खड्गों की वर्षा करने लगे; फिर क्षेमधूर्तीने बहुत शीघ्रता करके भीमसेनकी छातीमें सात तोमर मारे, उन सात तोमरोंके लगनेसे क्रोधभरे, भीमसेनकी ऐसी शोभा बढ़ी जैसे सात मेघोंके सहित सूर्य्यकी। तब भीमसेनने सूर्य्यके समान प्रकाशमान लोहेसे बना हुआ तेज गतिवाला एक तोमर क्षेमधूर्तिके शरीर में मारा। तब कुलतदेसके राजाने अपने धनुषपर बाण चढ़ाकर उनसे भीमसेनके शरीरमें साठ बाण मारे, फिर भीमसेनने मेघके समान शब्दवाले धनुषपर बाण चढ़ाके क्षेमधूर्तिके हाथीके शरीरमें मारे, भीमसेनके बाणोंसे व्याकुल होकर क्षेमधूर्तिका हाथी इस प्रकार युद्धमें खड़ा रहा जैसे मेघोंकी वर्षाके समय पर्व्वत। भीमसेनका हाथी क्षेमधूर्तिके हाथीकी ओर इस प्रकार दौड़ा जैसे वायुके बशमें होकर मेघ मेघकी तरफ दौड़ता है। प्रतापी क्षेमधूर्तिने अपने हाथीको लौटाकर भीमसेनके दौड़ते हुए हाथीके शरीरमें अनेक बाण मारे, अनन्तर एक तेज बाणसे भीमसेनके धनुषको काटकर उनके हाथीको मारने लगा, तब क्षेमधूर्तिने क्रोध करके भीमसेनके हाथीके मर्म्मस्थानोंमें बाण मारे, तब भीमसेनका हाथी मरकर पृथ्वीमें गिर पड़ा और भीम हाथीसे उतरकर पृथ्वी में खड़े होगये, भीमसेनने भी अपनी गदासे क्षेमधूर्तिके के हाथीको मारडाला, तब क्षेमधूर्ति भी पृथ्वी पर खड़े होगये, फिर क्षेमधूर्ति खड्ग लेकर भीमसेनकी तरफ दौड़े, भीमसेनने गदा मार कर क्षेमधूर्तिको मारडाला। जैसे इन्द्रका बज्र लगनेसे पर्व्वत पृथ्वीमें गिर जाते हैं और जैसे बज्र लगनेसे सिंह मरता है, तैसे हो भीमने उस कूलूतदेशके राजाको मारकर भूमिपर गिरा दिया, उसके मरनेपर आपकी सेना इधर उधर भाग गई।

१२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्। धृतराष्ट्र। तब महाधनुर्द्धारी बीर कर्ण अपने तेज बाणोंसे पाण्डवोंकी सेनाको मारने लगे। इसी प्रकार महारथ क्रोधी पाण्डव लोग भी कर्णके देखते तुम्हारे पुत्रोंकी सेनाका नाश करने लगे। हे राजन्! कर्णके बाणोंसे व्याकुल होकर हाथी बैठने लगे, चिल्लाने लगे, मरने लगे, और भागने लगे। जब सूर्य्यपत्र कर्ण पाण्डवोंकी सेनाका नाश करने लगे तब उनसे युद्ध करनेको नकुल आये। जिस प्रकार नकुलने कर्णका निवारण किया तैसे ही भीमसेनने घोर कर्म्म करनेवाले अश्वत्थामाको और विन्द तथा अनुविन्दको सात्यकीने निवारण किया। चित्रकर्म्माके राजा श्रुतिवर्म्मा प्रतिविन्द्से विचित्र धनुषधारी चित्रकर्म्मा युद्ध करने लगे, दुर्य्योधन महाराज युधिष्ठिरसे युद्ध करने लगे। अर्ज्जुन क्रोधसे संशप्तक नामक बीरोंकी ओर चले, धृष्टद्युम्न कृपाचार्य्यसे और शिखण्डी कृतवर्म्मासे श्रुतिकीर्त्ति शल्यसे और सहदेव दुःशासनसे युद्ध करने लगे। केकेयदेशके राजाने सात्यकिपर अनेक बाण चलाये, तैसे ही सात्यकिने भी

अपने बाणोंको वर्षासे उन दोनोंको छालिया। उन दोनों वीर भाइयोंने सात्यकिके हृदयमें ऐसे तेज बाण मारे जैसे वनमें दो हाथी एक हाथीको दांतोंसे मारते हैं, हे भारत। सात्यकिने हंसकर उन दोनो वीर भाइयोंके बाणोंको काट दिया। फिर अपने बाणोंसे दशो दिशा पूर्ण कर दीं, उन दोनोंने सात्यकिके बाणोंको काट दिया, और सात्यकिके रथको अपने बाणोंसे छा दिया। अनन्तर महायशस्वी सात्यकिने उन दोनोंके विचित्र धनुषको काट दिया और उनके हृदयमें तेज बाण मारे, फिर उन दोनोंने दूसरे धनुष लेकर सात्यकिको अपने बाणोंसे छा दिया, उन दोनोंके पंख लगे बाण धनुषसे छूट कर चारो ओर प्रकाशित होने लगे। हे राजन्! उन दोनोंके बाणोंसे अन्धकार होगया, फिर इन तीनों महारथोंने तीनोंके धनुष काट दिये, हे महाराज! तब सात्यकिको युद्धमें बहुत क्रोध हुआ और उसने दूसरा धनुष ग्रहण किया, फिर एक तेज बाणसे सात्यकिने अनुविन्दके शिरको काटकर पृथ्वी पर गिरा दिया। हे राजन्! अनुविन्दका कुण्डलभूषित शिर इस प्रकार पृथ्वीमें गिरा जैसे सम्बरका शिर काटकर गिरा था! वह अनुविन्दका शिर सब केकय देशियोंको शोच कराता हुआ पृथ्वीमें गिर पड़ा, उस शूरवीरको मरा हुआ देखकर उसका महारथ भाई दृढ़ धनुष लेकर सात्यकिसे युद्ध करने लगा, उस वीरने पहले सात्यकिके साठ बाण सात्यकिके मारे और खड़ारहु खड़ारहु कहने लगा, फिर उस केकय देशके महारथने सात्यकिके हृदय और हाथोंमें सहस्रों बाण मारे। हे राजन्! उन बाणोंके लगनेसे सात्यकिके सब शरीरसे रुधिर बहने लगा, उस समय सात्यकि ऐसी शोभा पाता जैसे फूले हुए टेसूका वृक्ष। फिर सात्यकिने भी हंस कर विन्दके पच्चीस बाण मारे, फिर इन दोनों महारथोने दोनोंके धनुष काट दिये, तथा सारथी और घोड़ोंको मार डाला, फिर वे दोनों सौ चन्द्रमाओंके समान प्रकाशित खड्ग लेकर रथोंसे उतरे, फिर वे दोनो वीर इस प्रकार खड्ग युद्ध करने लगे जैसा देवासुर संग्राममें इन्द्र और जम्भासुरने किया था, वे दोनों युद्धमें विचित्र गतिसे लड़ने लगे, वे एक दूसरेको मारनेका यत्न करने लगे फिर सात्यकिने विन्दको ढालको काट दिया, हे राजन्। इसी प्रकार विन्दने भी सात्यकिको अनेक सितारे युक्त ढालको काट दिया। तब सात्यकि खड्ग लेकर अनेक प्रकारकी गतिसे युद्धमें घूमने लगे, फिर सात्यकिने केकय देशके राजाके एक खड्ग मारा, उसके लगनेसे वह राजा कवचके समेत दो टुकड़े होकर पृथ्वी पर गिर गया; वह महारथ इस प्रकार पृथ्वी पर गिरा जैसे वज्रके लगनेसे पर्व्वत गिरता है। उस महावीरको मार कर महारथ सात्यकी युधामन्युके रथ पर चढ़ गये, फिर दूसरे रथपर चढ़ कर और उत्तम धनुष धारण करके सात्यकि उस केकय देशको सेनाको मारने लगे, अनन्तर सात्यकिको छोड़ कर वह सेना इधर उधर भागने लगी।

१३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! राजा श्रुतकर्म्माने राजा चित्रसेनके शरीरमें पचास तेज बाण मारे। हे राजन्! फिर अभिसार देशके राजा चित्रसेनने श्रुतिकर्म्माके शरीरमें नौ बाण मारे और एक बाणसे उसके सारथीको मार डाला, फिर श्रुतिकर्म्माने क्रोध करके चित्रसेनके मर्म्म स्थानमें एक तेज पांचमुखवाला बाण मारा, उस बाणके लगनेसे वीर राजा चित्रसेनको मूर्च्छा आगयी, उसी समय महा यशस्वी राजा श्रुतिकीर्त्तिने उसको तेज बाणोंसे छा दिया, इतने समयमें राजा चित्रसेन

होकर उनका धनुष काट दिया और उनके शरीरमें सात बाण मारे, श्रुतिकर्म्माने दूसरा धनुष लेकर चित्रसेनके शरीरमें सुवर्ण भूषित अनेक बाण मारे, उन बाणोंके लगनेसे विचित्रमालाधारी राजा चित्रसेनकी ऐसी शोभा बढ़ी, जैसे गौओंके धनमें जवान् साड़की शोभा होतीहै, फिर उसने क्रोध करके राजा श्रुतिकर्माके हृदयमें एक तीक्ष्ण बाण मारा और कहा कि खड़ारह, उस बाणके लगनेसे राजा श्रुतिकर्माके शरीरसे इस प्रकार रुधिर बहने लगा जैसे पर्व्वतसे गेरूके पनारे बहते हैं, उस रुधिरके बहनेसे राजा श्रुतिकर्माकी ऐसी शोभा बढ़ी जैसे फूले हुए कचनारकी। फिर श्रुतिकर्माने क्रोध करके अपने शत्रुका धनुष काट दिया। हे राजन्! फिर राजा श्रुतिकर्माने राजा चित्रसेनके शरीरमें तीनसौ तेजबाण मारे, फिर दूसरे तेजबाणसे महात्मा चित्रसेनके सिरको काट कर पृथ्वीपर गिरा दिया। राजा चित्रसेनका शरीर इस प्रकार कट कर पृथ्वी पर गिरा, जैसे आकाशसे चन्द्रमा टूटकर पृथ्वीमें गिरता है। राजा चित्रसेनको मरा हुआ देख उसकी सेना इधर उधर भागी। अनन्तर राजा श्रुतिकर्मा क्रोध करके उस भागती हुई सेनाको इस प्रकार मारने लगे, जैसे प्रलय समयमें यमराज क्रोध करके प्रजाका नाश करता है। जब तुम्हारे पोतेने इस प्रकार उस सेनाका नाश किया तब वह सेना युद्धको छोड़ कर इस प्रकार भागी जैसे जलते हुए वनको छोड़ कर हाथी भागे। उस भागती हुई सेनाके पीछे श्रुतिकर्मा बाण छोड़ते हुए दौड़े, प्रतिविन्ध्यने चित्रके शरीरमें तेज चलनेवाले पांच बाण मारे, एक बाणसे उसके सारथीको मारा, और एकसे ध्वजाको काट कर गिरा दिया, राजा चित्रने भी, प्रतिविन्ध्यके हाथ और हृदयमें तेज नौ बाण मारे। हे भारत! फिर प्रतिविन्ध्यने क्रोध करके चित्रके धनुषको काट दिया, और पांच बाण उसके हृदयमें मारे। हे राजेन्द्र! फिर प्रतिविन्ध्यने क्रोध करके सोनेके घण्टोंसे भूषित आगकी ज्वालाके समान एक सांगी तुम्हारे पौत्रके मारा। प्रतिविन्ध्यने हंस कर उस बिजलीके समान आती हुई सांगीको मार्ग हीमें काट कर दो टुकड़े कर दिया, वह सांगी प्रतिविन्ध्यके बाणोंसे कट कर इस प्रकार पृथ्वीमें गिरी जैसे प्रलयकालमें सब प्रजाको डराता हुआ वज्र गिरता है। उस सांगीको गिरी हुई देख चित्रसेनने एक सोनेके तारोंसे खिची हुई भारी गदा उठा कर प्रतिविन्ध्यकी ओर चलाई, उस गदासे प्रतिविन्ध्यके घोड़े सारथी और रथका चूर्ण होगया, उसी समय प्रतिविन्ध्य अपने रथसे कूदे और एक सोनेके दण्डवाली सांगि चित्रसेनके मारी और चित्रसेनने हंस कर उस सांगीको पकड़ लिया और फिर उसीको प्रतिविन्ध्यकी ओर चलाई, वह सांगि बीर प्रतिविन्ध्यके दहने हाथको छेद कर पृथ्वी पर गिर गई, उसके गिरनेसे बिजलीके समान प्रकाश हुआ। हे भारत! प्रतिविन्ध्यने चित्रके मारनेकी इच्छासे एक तोमर चलाया, वह तोमर चित्रसेनके कवच सहित हृदयको छेदकर इस प्रकार पृथ्वीपर गिरा जैसे बड़ा सर्प तलावको छेद कर पातालको चला जाता है। वह राजा अपने परिघके समान हाथोंको फैला कर पृथ्वीमें गिर पड़ा, चित्रको मरा देख तुम्हारे बीर पुत्र सब ओरसे प्रतिविन्ध्यकी ओर दौड़े, वे लोग चारों ओरसे प्रतिविन्ध्यके ऊपर शतघ्नी आदि अनेक शस्त्र चलाने लगे, उन सबसे प्रतिविन्ध्य ऐसे छिप गये जैसे काले मेघोंसे सूर्य्य छिप जाते हैं। उन सबको मार कर महाबाहु प्रतिविन्ध्यने तुम्हारी सेनाको इस प्रकार भगा दिया, जैसे राक्षसोंकी सेनाको इन्द्र भगातेहैं, हे राजेन्द्र! तुम्हारी सेना प्रतिविन्ध्यके आगेसे ऐसे भागी जैसे वायुके लगनेसे मेघ भागते हैं। जब वह सब सेना मरने

और भागने लगी तब एकले अश्वत्थामा महा बलवान भीमसेनकी ओर दौड़े, तब अश्वत्थामा और भीमसेनका इस प्रकार युद्ध होने लगा जैसे वृत्रासुर और इन्द्रका हुआ था।

१४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र। उस युद्धमें हाथकी शीघ्रता दिखला अश्वत्थामाने भीमसेनके शरीरमें एक बाण मारा फिर भीमके शरीरके सब मर्मोंमें मर्म्म जाननेवाले अश्वत्थामाने नव्वे तेज बाण मारे, हे राजन्। उन बाणोंके लगनेसे भीमसेन किरणसहित सूर्य्यके समान शोभित होने लगे, फिर भीमसेनने भी सिंहके समान गर्ज्जके अश्वत्थामाके शरीरमें एक सहस्र बाण मारे। हे राजन्। अश्वत्थामाने उन सब बाणोंको काट कर भीमसेनके माथेमें तेज बाण मारे, उस माथेमें लगे हुए बाणको भीमसेनने इस प्रकार धारण किया जैसे मतवाला गैंड़ा वनमें सींगको धारण करता है। फिर भीमने युद्धमें पराक्रम करते हुए अश्वत्थामाके माथेमें तीन तेज बाण मारे, उन तीन बाणोंके लगनेसे ब्राह्मण अश्वत्थामा इस प्रकार शोभित हुए जैसे वर्षा कालमें तीन शिखरवाला पर्व्वत शोभित होता है। फिर अश्वत्थामाने भीमसेनके शरीरमें सौ बाण मारे, उन बाणोंके लगनेसे भीमसेन इस प्रकार कांपे जैसे हवा लगनेसे पर्व्वत। इसी प्रकार अश्वत्थामाको भी भीमसेन युद्धमें इस प्रकार न कंपा सके, जैसे मेघकी धारासे पर्व्वत नहीं कांपता है। वे दोनों महाबल और महारथ वीर घोर बाणोंकी वर्षा करते हुए युद्धमें शोभित होने लगे, उस समय उन दोनोंकी ऐसी शोभा बढ़ी, जैसे प्रलयकालके तेज सूर्य्यकी शोभा बढ़ती है। वे दोनों वीर फिर युद्धमें एक दूसरेके बाणोंको काटने लगे, और अपने अपने विजयका यत्न करने लगे, वे दोनों वीर युद्धमें धनुष लेकर भयानक सिंहोंके समान घूमने लगे। किसी समय बाणोंसे ऐसे छिप जाते थे, जैसे चन्द्रमा और सूर्य्य मेघोंके बीचमें आ जाते हैं। फिर किसी समय बाणोंके जालसे इस प्रकार बाहर निकलकर प्रकाशित होने लगते थे, जैसे मेघोंसे निकलकर मङ्गल और बुध। उस घोर युद्धमें अश्वत्थामाने भीमको अपने बाईं ओर कर लिया और उनके ऊपर इस प्रकार बाण बर्षाने लगे, जैसे पर्व्वतके ऊपर मेघ बर्षता है। परन्तु भीम अपने शत्रुकी इस विजयको न देख सके और अपने रथको दहने ओर करके उनके बाणोंको काट दिया। फिर ये दोनों पुरुषसिंह परस्पर घोर युद्ध करने लगे अनेक प्रकारकी गतियोंसे रथोंको घुमाने लगे, एक दूसरेके बाणोंको काटने लगा, और एक दूसरेका मारनेका यत्न बिचारने लगा, तब महारथ अश्वत्थामाने युद्धमें दिव्य अस्त्र चलाये। हे महाराज! भीमसेनने भी अपने अस्त्रोंसे अश्वत्थामाके अस्त्रोंको काट दिया, तब पुनः दोनोंके बाणोंका अस्त्र-युद्ध होने लगा। उन दोनोंके बाणोंका आकाशमें दो ग्रहोंके समान युद्ध होने लगा, उनके बाणोंसे समस्त आकाश प्रकाशित होगया। हे भारत! उनके बाणोंके घिसनेसे अग्नि निकलकर युद्धमें बिजलीसी गिरने लगी। हे भारत। वह अग्नि दोनों सेनाओंको जलाने लगी, सिद्ध लोग स्वास्ति कहने लगे, सब सिद्ध लोग कहने लगे कि ऐसा युद्ध कभी न होगा। इन दोनों ब्राह्मण और क्षत्रियको धन्य है, इन दोनोंके पराक्रम, तेज बल, शस्त्र विद्या और साहसको धन्य है, ये दोनों यमराज और कालके समान युद्ध कर रहे हैं, ये दोनों दो शिव, दो सूर्य्य और दो यमराजके समान युद्ध कर रहे हैं। इस सिद्ध वाणोंको सुनकर दोनों वीर गर्ज्जने लगे, और देवता लोग धन्य धन्य करने लगे, इस

और विचित्र युद्धको देखकर सिद्धचारण और गन्धर्व्वोंको आश्चर्य्य होने लगा, तब सब गन्धर्व्व कहने लगे, कि हे महाबल भीम! हे महापराक्रमी अश्वत्थामा! तुम दोनोंको धन्य है। हे राजन्! वे दोनों वीर एक दूसरेकी ओर आंख फैलाकर और क्रोधमें भरकर देखने लगे, क्रोधके मारे उन दोनोंके नेत्र लाल होगये, होठ फरकने लगे, और दोनों दांत चबाने लगे, उन दोनोंने बाणोंकी वर्षा करके बिजलीके समान प्रकाश कर दिया। इन दोनोंने सौ बिजलीके समान रथी, घोडे, ध्वजा और शरीरोंमें अनेक बाण मारे फिर दोनोंने क्रोधकरके एक एक बाण चलाया। हे महाराज! वे दोनों बाण परस्पर इस प्रकार मिले, जैसे दो वज्र, उस बाणके लगनेसे अश्वत्थामा और भीमसेन दोनोंको मूर्च्छा होगयी, तब दोनोंके सारथियोंने रथोंको युद्धसे हटा लिया।

१५ अध्याय समाप्त।

महाराज! धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! अर्ज्जुन और संशप्तकोंका युद्ध किस प्रकार हुआ? तथा और सब राजाओंका किस प्रकार सो हमसे कहो? फिर अश्वत्थामा और भीमसेनका युद्ध कैसे हुआ सो हमसे कहो?

सञ्जय बोले, हे राजन्! जिस प्रकार घोर युद्ध उन वीरोंका हुआ, सो हमसे सुनो। अर्ज्जुनने संशप्तक सेनामें इस प्रकार प्रवेश किया, जैसे समुद्रमें वेगसे वायु जाता है, अर्ज्जुनने अपने तेज बाणोंसे अनेक वीरोंके चन्द्रमाके समान मुखवाले शिर काटकर पृथ्वीपर गिरा दिये। चन्दन और अगर लगे हुए हाथ और शिरोंसे वह भूमि इस प्रकार भर गई; जैसे कमल और कमलकी डण्डियोंसे तलाव भर जाता है, अर्ज्जुनने पच्च और शस्त्रोंके सहित शत्रुओंके हाथ काटकर पृथ्वीमें गिरा दिये। वे हाथ पांच शिरवाले सांपोंके समान तड़पने लगे, अर्ज्जुनने अनेक सारथी, घोड़े, धनुष और ध्वजाओंको काट डाला। हे राजन्! अर्ज्जुनके बाण लगनेसे सहस्रो हाथी, घोड़े और वीर यमलोकको चले गये। अनेक वीर क्रोध करके गौके लिये मतवारे बैलोंके समान नाचते हुए अर्ज्जुनसे युद्ध करने लगे, वे लोग भी अर्ज्जुनके ऊपर अनेक प्रकारके बाण चलाने लगे, ऐसा घोर युद्ध हुआ, जिसको देखकर वीरोंके रोमाञ्च खड़े होने लगे। यह ऐसा युद्ध हुआ, जैसा इन्द्र और राक्षसोंका हुआ था। अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे उनके बाणोंको निवारण करके अनेक सारथी, रथ और योडाओंको काट डाला। संशप्तक लोगोंके शस्त्र, तूणीर ध्वजा, घोड़ोंकी लगाम और रथ कट गये, अर्ज्जुनने किसी रथकी धुरी किसीके पहिये और किसीके जुए काट दिये, वे रथ इस प्रकार घूमने लगे, जैसे वायुसे फटे हुए मेघ। अर्ज्जुनने सब योडाओंको आश्चर्य्य देकर हजार महारथोंके समान युद्ध किया। देवता गन्धर्व्व, देवऋषि और चारण अर्ज्जुनकी प्रशंसा करके नगाड़े बजाने और फूल-बर्षाने लगे, आकाशमें खड़े ब्रह्मा, शिव और अग्नि आदि देवता कहने लगे, कि एक रथपर बैठे हुए, चन्द्रमा और सूर्य्यके समान तेजस्वी कृष्ण और अर्ज्जुनकी विजय होगी, दोनों नर और नारायणके अवतार हैं। अनन्तर अश्वत्थामा चैतन्य होकर अर्ज्जुन और कृष्णकी ओर दौड़े, अर्ज्जुनने आते हुए अश्वत्थामाके बाणोंको अपने बाणोंसे काट दिया। फिर एक बाण हाथमें लेकर, हंसते हुए; अश्वत्थामा अर्ज्जुनसे बोले, हे अर्ज्जुन! मैं अतिथि ब्राह्मण, तुम्हारे पास आया हूं, सो तुम प्रसन्न होकर युद्धभिक्षा हमें दो। महावीर अश्वत्थामाके ऐसे वचन सुन अर्ज्जुनने अपनेको धन्य माना; और कृष्णसे बोले, हे माधव! हमने संशप्तकोंके मारनेकी प्रतिज्ञा की है और अब

अश्वत्थामा हमें युद्ध करनेको पुकारते हैं, इस समय जो करने योग्य हो सो कहिये ! अश्वत्थामा हमसे भिक्षा मांगते हैं। यदि आपकी इच्छा हो तो हम इनको भिक्षा दें। अर्जुनके ऐसे वचन सुन कृष्णने इस प्रकार अश्वत्थामाकी ओर रथ चलाया, जैसे इन्द्र यज्ञकी ओर जाते हैं। उनके पास जाकर कृष्णने स्थिरचित्त अश्वत्थामासे कहा। हे आचार्य्यपुत्र ! अब तुम सावधान होकर युद्ध करो। इस समय समस्त कुरुकुलके सेवकोंका पिण्ड देनेका समय आगया है, अब सबको उनका उद्धार करना चाहिये, ब्राह्मणोंका विचार बहुत सूक्ष्म है; और क्षत्रियोंका जीतना हारना मोटा विचार है। जिस पाण्डवको भूलसे पुकारते हो उसके सङ्ग स्थिर होकर युद्ध करो। कृष्णके ऐसे वचन सुन अश्वत्थामाने कहा बहुत अच्छा, कृष्णके शरीरमें साठ और अर्जुनके शरीरमें तीन बाण मारे। अर्जुनने क्रोध करके अश्वत्थामाका धनुष काट दिया, अश्वत्थामाने दूसरा और धनुष लेकर रोदा चढ़ाया फिर एक पलभरमें तीन सौ बाण कृष्णके शरीरमें और एक सहस्र बाण अर्जुनके शरीरमें मारे, फिर अश्वत्थामाके सहस्रों, लाखों और करोड़ों बाण अर्जुनके हाथ, पांव, मुख, नाक, कान, धनुष, रोदे, सब बाणोंसे छागये। [illegible] भेदनेवाले अश्वत्थामाके बाण ध्वजा, रथ और रथ अङ्गोंमें छागये, इस प्रकार कृष्ण और अर्जुनके शरीरको पूरित करके अश्वत्थामा मेघके समान गर्जे, उसके गर्जनेको सुन कर अर्जुन बोले, हे कृष्ण ! हमारे गुरुपुत्र हमसे [illegible] करते हैं, हमको बाणोंके बीचमें जान कर मरा हुआ मान लिया, देखो हम अपनी [illegible] और बलसे इन सब बाणोंको काटे डालते हैं।

[illegible] पर अर्जुनने अश्वत्थामाके [illegible] समान बाण बर्षाने लगे, फिर अर्जुन संशप्तक बीरोंके हाथी घोड़े, ध्वजा और बीरोंको मारने लगे। जितने बीर उस समय उस सेनामें दीखते थे, उन सबने अपने शरीरोंको बाणोंसे भरा हुआ देखा। अर्जुनकी गाण्डीव धनुषसे छूटे हुए विचित्र बाण एक कोश तक खड़े हुए हाथी और बीरोंको मारने लगे. अर्जुनके बाणोंसे कट कर हाथियोंकी सुण्ड इस प्रकार पृथ्वी पर गिरने लगी, जैसे कुल्हाड़ीसे कटकर वृक्ष।

पीछे बैठे हुए बीरोंके सहित हाथी इस प्रकार गिरे, जैसे इन्द्रका बज्र लगनेसे पर्व्वत गिरते हैं। अर्जुनने उत्तम घोड़े और बीरोंसे युक्त गन्धर्व्व नगरीके समान रथोंको अपने बाणोंसे काट दिया। अर्जुनके बाणोंसे मर कर अनेक पैदल और घोड़ोंपर चढ़े बीर पृथ्वीपर सो गये, अर्जुनरूपी प्रलय कालके सूर्य्यने अपने बाणरूपी किरणोंसे संशप्तक समुद्रको सुखा दिया, फिर अश्वत्थामाकी ओर इस प्रकार बाण चलाये, जैसे इन्द्र पर्व्वत पर बज्र चलाता है; अश्वत्थामा क्रोध करके अर्जुनसे युद्ध करनेको आये और घोड़े और सारथीके शरीरमें अनेक बाण मारे अर्जुनने भी क्रोध करके उन सब बाणोंको काट दिया, तब अश्वत्थामाने क्रोध करके अर्जुनके ऊपर अस्त्र चलाये, फिर संशप्तकोंको छोड़ कर अर्जुन इस प्रकार अश्वत्थामाकी ओर चले जैसे दानी नीच भिखारियोंको छोड़ कर कुलीन अतिथिकी ओर जाता है।

१६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र ! अनन्तर अर्जुन और अश्वत्थामाका इस प्रकार युद्ध हुआ, जैसे शुक्र और बृहस्पतिका, वे दोनो तेजस्वी और अपनी बाण रूपी किरणोंसे लोकोंको तपाने लगे। उनके [illegible] और तारोंके

समान प्रकाशित होने लगे। फिर अर्ज्जुनने क्रोध करके अश्वत्थामाकी भौंहोंके बीचमें एक बाण मारा, उसके लगनेसे अश्वत्थामाकी ऐसी शोभा बढ़ी जैसे ऊंची किरणवाले सूर्य्यकी। फिर अर्ज्जुनने अश्वत्थामा पर सहस्रों बाण चलाये उन बाणोंके छोड़नेसे अर्ज्जुन सहस्र किरण धारी सूर्य्यके समान शोभित हुए, फिर अश्वत्थामाने भी अर्ज्जुनके शरीरमें सहस्रो बाण मारे उनके लगनेसे इन दोनोंके शरीरसें रुधिर बहने लगा। तब अर्ज्जुनने भी क्रोध करके वज्रके समान अनेक बाण अश्वत्थामाके शरीरमें मारे। अनन्तर महा तेजस्वी अश्वत्थामाने भी क्रोध करके शीघ्र चलनेवाले महाघोर बाण अर्ज्जुन और श्रीकृष्णके शरीरकी सन्धियोंमें मारे; वे बाण ऐसे तेज थे, जिनके लगनेसे मृत्यु भी कांपने लगी। अर्ज्जुनने अश्वत्थामाके सब बाणोंको काट कर अपने बाणोंसे उनके घोड़े सारथी और रथोंको छा दिया, अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे धनुष तूणीर, हाथ और हाथके शस्त्रोंको छा दिया और योद्धाओंके भी छत्र घोड़े, रथ, ढाल, खड्ग कवच, शिर और हाथोंको काट दिया, भागते हुए बीरोंके माला, भूषण और वस्त्र भी काट कर पृथ्वीमें गिर गये बीरोंने अपने घोड़े और हाथियोंको बहुत यत्नसे खड़ा किया परन्तु फिर भी अर्ज्जुनके बाणोंके मारे कोई हाथी घोड़ा न खड़ा रह सका। उनके सङ्ग ही उन पर चढ़े हुए बीर भी गिरने और भागने लगे। पूर्ण चन्द्रमा-कमल और सूर्य्यके समान सुन्दर किरीट मुकुट और कुण्डलोंसे शोभित अनेक शिर पृथ्वी पर गिर गये, फिर, कालिङ्ग, बङ्ग, अङ्ग; और निषाद देशके उत्पन्न हुए बीर राक्षसोंके हाथियो के समान हाथियों पर चढ़ कर राक्षसोंके मारनेवाले अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको आये, अर्ज्जुनने उन सब हाथियोंके चमड़े सूंड़ महावत ध्वजा, और पैरोंको काटडाला, फिर वे हाथी इस प्रकार पृथ्वीमें गिरे जैसे वज्रके लगनेसे पर्वतके शिखर गिरते हैं। जब वे सब वीर भाग गये, तब अर्ज्जुन ने अपने गुरुपुत्र अश्वत्थामाको सूर्य्यके समान प्रकाशमान बाणोंसे छा दिया, तब अश्वत्थामाने अर्ज्जुनके बाणोंको तेज बाणोंसे काट कर सूर्य्य और चन्द्रमाके समान सुन्दर कृष्ण और अर्ज्जुनके ऊपर अनेक बाण चलाये और प्रलय कालके मेघके समान गर्ज्जने लगे फिर अर्ज्जुनने तुम्हारी सेना और अश्वत्थामाको पीड़ित करके बाणोंका अन्धकार कर दिया और अश्वत्थामाके सब बाणोंको काट दिया। उस समय यह न मालूम होता था कि अर्ज्जुन कब बाण निकालते हैं, कब चढाते और कब खींचते हैं तथा कब छोड़ते हैं। और कब शत्रुओंके लगता है। केवल मरे हुए शत्रुओंसे जान पड़ता था, कि अर्ज्जुन बाण चला रहे हैं। अनन्तर अश्वत्थामाने अपने धनुषपर एक बार दश बाण चढा कर पांच अर्ज्जुनके और पांच कृष्णके शरीरमें मारे, इन्द्र और कुबेरके समान पराक्रमी अर्ज्जुन और कृष्णके शरीरमें जब वे बाण लगे, सबने जाना कि सब विद्या जाननेवाले सब मनुष्योंसे मुख्य कृष्ण और अर्ज्जुन मर गये, उस समय श्रीकृष्ण अर्ज्जुनसे बोले, हे अर्ज्जुन। इस समय तुम भूल क्यों करते हो? तुम शीघ्र इस शत्रुको जीतो, क्योंकि औषधी न करनेसे रोग असाध्य हो जाता है। कृष्णके वचन सुन सावधान अर्ज्जुनने बहुत अच्छा कहकर अश्वत्थामाके चन्दन लगे हाथ, हृदय और माथेमें अनेक तेज बाण मारे। इस प्रकार अश्वत्थामाके शरीरमें बाण मारकर अर्ज्जुनने उनके घोड़ेकी लगाम काट दी, फिर घोड़ोंके शरीरसें बाण मारे, तब घोड़े रथको लेकर युद्धसे भाग गये, जब वायुके समान वेगवाले अश्वत्थामाके घोड़े युद्धसे भाग गये, और अर्ज्जुनके बाण अश्वत्थामाके शरीरमें बहुत लगे। तब बुद्धिमान अश्वत्थामाने फिर अर्ज्जुनसे

युद्ध करनेका विचार किया। कुरुश्रेष्ठ अर्ज्जुनकी विजय होगी, यह जानकर भी अङ्गिरा कुलश्रेष्ठ अश्वत्थामाने अपने घोड़ोंको ठीक किया फिर अपने चित्तको सावधान करके हाथी घोड़े और मनुष्योंसे भरी हुई कर्णकी सेनामें चले गये; अश्वत्थामाके घोड़े उनको लेकर इस प्रकार युद्धसे भाग गये जैसे मन्त्र औषधि और प्रयोगके बलसे शरीरको छोड़कर रोग भाग जाता है, फिर कृष्ण और अर्ज्जुन मेघके समान शब्दवाले उत्तम ध्वजा युक्त रथपर बैठकर संशप्तक सेनासे युद्ध करनेको चले गये।

१७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र। फिर उसी समय बाण और खड्गोंसे कटती हुई, पाण्डवोंकी सेनामें घोड़े, हाथी और मनुष्योंका घोर शब्द उठने लगा। तब गरुड़ और वायुके समान वेगवाले घोड़ोंको हांकते हुए, श्रीकृष्णने अर्ज्जुनसे कहा हे अर्ज्जुन। मगधदेशका राजा [illegible] और बलमें भगदत्तसे कम नहीं है, पहले इसको मारकर तब संशप्तकोंका मारना। ऐसा कहकर कृष्णने अर्ज्जुनको राजा दण्डधारके पास पहुंचा दिया, वह मगधदेशका राजा [illegible] निपुण शत्रुओंको जीतनेयोग्य [illegible] समान [illegible] इस प्रकार पाण्डवोंकी सेनाका नाश करने लगा, जैसे उत्पातके समय [illegible] प्रजाका नाश करता है। वह दण्डधार [illegible] समान हाथीपर चढ़कर [illegible] समान अपार पाण्डव सेनाका नाश करने लगा। अपने बाणोंसे सहस्रों हाथी, [illegible] और रथपर बैठे वीरोंको पृथ्वीमें गिराने [illegible] हाथी [illegible] पैरोंसे घोड़े, [illegible] रथोंको पीसने लगा, [illegible] समान घूमकर [illegible] मारने लगा; तब राजा दण्डधारने अनेक लोहेके कवच पहने हुए वीरोंको घोड़ोंके सहित मारकर भूमिपर गिरा दिया, अनन्तर अर्ज्जुन धनुषकी टङ्कार, रथके पहियोंका शब्द, मृदङ्ग और नगारोंके शब्दसे पूरित सेनाके सहित रथमें बैठे हुए उस मतवाले हाथीकी ओर दौड़े, अनन्तर राजा दण्डधार अर्ज्जुनके शरीरमें बारह और कृष्णके शरीरमें सोलह और चारों घोड़ोंके शरीरमें तीन तीन बाण मार हंसने और गर्ज्जने लगा, अनन्तर अर्ज्जुनने बाण और रोदेके सहित राजा दण्डधारके रोदेको काट दिया, फिर महावत और हाथीकी रक्षा करनेवालोंको मारडाला। तब राजा दण्डधारको बहुत क्रोध हुआ तब क्रोध करके राजा दण्डधारने मेघके समान काले मतवाले हाथीको चलाकर कृष्ण और अर्ज्जुनके शरीरमें तोमर मारे, तब अर्ज्जुनने हाथीके सूंडके समान सुन्दर राजा दण्डधारके दोनों हाथ और पूर्णचन्द्रमाके समान सुन्दर मुख सहित शिरको तीन बाणोंसे काट दिया। फिर हाथीके ऊपर सैकड़ों बाण छोड़े, वह सोनेका कवचवाला हाथी सुवर्ण लगे हुए अर्ज्जुनके बाणोंसे ऐसा शोभित हुआ जैसे औषधि और जलती हुई अग्निसे पर्व्वत रातको शोभित होता है। उन बाणोंके लगनेसे वह मेघके समान शब्दवाला हाथी घूमने लगा। चिल्लाने लगा, अन्तको वज्रसे कटे हुए, पर्व्वतके समान पृथ्वीमें गिर गया। अपने बड़े भाईको मरा हुआ देख हिमाचलशिखर समान सुन्दर मतवाले हाथी पर बैठकर दण्ड नामक राजा इन्द्रके समान प्रकाशमान तीन तोमर अर्ज्जुनके और पांच श्रीकृष्णके मारे, तब अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे उसके दोनों हाथ काट लिये, चन्दन लगे तोमर सहित उस राजाके दोनों सुन्दर हाथ हाथीपरसे कट कर इस प्रकार गिरे जैसे पर्व्वतके शिखरसे दो सर्प गिरते हैं। फिर अर्ज्जुनने एक बाणसे उसका शिर

पृथ्वीमें गिरा दिया। वह रुधिरसे भरा हुआ सिर इस प्रकार हाथीपरसे गिरा, जैसे सन्ध्या समय अस्ताचलसे पश्चिम दिशामें सूर्य्य गिरते हैं। फिर सफेद मेघकी समान सुन्दर हाथीको अर्ज्जुनने सूर्य्यकी किरणोंके समान बाणोंसे मारा, वह शब्द करता हुआ वज्रसे कटे हुए पर्व्वतकी समान पृथ्वीमें गिर पड़ा। तब अर्ज्जुनने उसकी समान और भी अनेक हाथियोंको मार कर गिरा दिया, तब सब सेना इधर उधरको भाग गई, सेनाके भागनेसे अनेक घोड़े रथ और मनुष्य पिस गये, अनन्तर अर्ज्जुनकी सेनाके सब मनुष्य आकर कहने लगे, हे वीर! जो शत्रु हमको दुख देता था, उसको आपने मार डाला। हे शत्रुनाशन। यदि आप अपनी डरी हुई सेनाको इस शत्रुके हाथसे न बचाते तो वे लोग ऐसे ही प्रसन्न होते जैसे उनके मरनेसे हम लोग प्रसन्न हो रहे हैं। अपने सेनापतियोंके ऐसे बचन सुन कर और उनको उचित उत्तर देकर अर्ज्जुन फिर संशप्तक सेनासे युद्ध करनेको चले गये।

१८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! अर्ज्जुनने फिर संशप्तक सेनामें आकरके रथको अनेक प्रकार चलाकर उनका इस प्रकार नाश करना आरम्भ किया, जैसे मङ्गल ग्रह प्रजाका नाश करते हैं। हे भारत। अर्ज्जुनके बाण लगनेसे अनेक हाथी घोड़े और मनुष्य मरने लगे; कांपने लगे; और डरने लगे। धुर और धुरों पर बैठे हुए बीर, सारथी, रथ, हाथ, हाथके शस्त्र और शिरोंको काट दिया। अर्ज्जुनने तेज धारवाले, अर्द्धचन्द्र बत्सदन्त आदि बाणोंसे अनेक युद्ध करते हुए शत्रुओंको काट डाला जैसे एक गौके लिये एक बैलसे अनेक बैल युद्ध करनेको आते हैं वैसे ही अर्ज्जुनसे लड़नेको अनेक बीर आते थे, उन सबके सङ्ग अर्ज्जुनने ऐसा घोर युद्ध किया जैसे तीनों लोकोंके विजयके लिये इन्द्रने दानवोंके सङ्ग किया था, तब उग्रायुधके पुत्रने शीघ्र चढनेवाले बहुत तेज तीन बाण मारे, तब अर्ज्जुनने अपने बाणसे उसका सिर काट दिया, तब सब बीर क्रोध करके अर्ज्जुनकी ओर इस प्रकार आए कि जैसे वायु लगनेसे हिमाचलकी ओर मेघ दौड़ते हैं। अर्ज्जुनने अपने शस्त्रोंसे उनके शस्त्रोंको काट कर अनेक बीरोंको मार डाला, अनेक रथ टूट गये। किसीके सारथी मर गये, और किसीके पहिये टूट गये, किसी बीरके पैर किसीके शिर कट गये, किसी रथके घोड़ोंकी लगाम कट गई, किसीके सारथी मर गये, कोई रथ टूट कर दूर जा पड़ा। वे टूटे हुए रथ उस युद्धभूमिमें इस प्रकार शोभित हुए, जैसे आग या पानीसे नष्ट हुए धनिकोंके घर। अनेक हाथी बाणोंसे कट कर इस प्रकार गिरे जैसे बिजलीकी आगसे जल कर पर्व्वतोंके शिखर गिरते हैं। अर्ज्जुनके बाणोंसे अनेक घोड़ों पर चढे बीर रुधिरसे भींग कर पृथ्वीमें गिरे; किसी बीरकी आंख किसीकी आंत और किसीकी जीभ निकल कर गिर गई, अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित होकर अनेक हाथी घोड़े और मनुष्य घूमने बोलने और मरने लगे, अनेक तेज बाणोंसे अर्ज्जुनने शत्रुओंको इस प्रकार मारा जैसे इन्द्र वज्रसे दानवोंको मारते हैं। अर्ज्जुनके बाणसे अनेक बीर घोड़े ध्वजा और रथोंके सहित मर कर पृथ्वी पर सो गये, अनेक धर्मात्मा लोग युद्धमें इस शरीरको छोड कर अपने कर्म्मके अनुसार स्वर्गको चले गये। अनन्तर महारथ अर्ज्जुनकी ओर तुम्हारी सेनाके प्रधान बीर क्रोध करके सेनाके सहित दौडे। घोड़े हाथी और रथों पर चढे बीर तथा पैदल योद्धा अनेक प्रकारके शस्त्र चलाते हुए अर्ज्जुनकी ओर आये, उस सेना रूपी मेघसे बर्षती

न्य वर्षाको अर्जुन रूपी वायुने दूर कर दिया, हाथी, घोड़े, रथ और पैदलरूपी जलसे भरे हुए, शस्त्ररूपी तरङ्ग युक्त उस सेनासमुद्रको अर्जुन वाणोंका पुल बांध पार होने लगे। उस समय श्रीकृष्ण अर्जुनसे बोले, हे पाप रहित पाण्डव! तुम इन सबके सङ्ग क्यों खेल कर रहे हो? इनका नाश कर कर्णके मारनेका शीघ्र उपाय करो। श्रीकृष्णके ऐसे वचन सुन अर्जुनने कहा बहुत अच्छा फिर तेज वाण चला कर उनका इस प्रकार नाश करने लगे जैसे इन्द्र दैत्योंका। उस समय अर्जुनका कर्म यह न मालूम होता था, कि कब धनुष खींचते हैं; कब वाण चलाते और कब छोड़ते हैं। हे भारत! अर्जुनका ऐसा वचाव देखकर श्रीकृष्ण आश्चर्य करने लगे। फिर वे दोनों उस सेनामें इस प्रकार घुसे जैसे तालाबमें दो हंस घुसें। तब श्रीकृष्णने मरे शत्रुओंसे भरी हुई युद्धभूमि देखकर अर्जुनसे कहा, हे कुन्ती पुत्र! देखो दुर्योधनके दोषसे आज सब कुरुकुल और राजाके नाश होनेका समय आ गया। हे भारत! यह देखो अनेक धनुषधारियोंके सोनेके धनुष तूणीर और शस्त्र पड़े हैं। देखो तलसे घायल हुए, विषमें बुझे हुए, सोनेके पङ्खवाले अनेक वाण भरे हुए, सांपोंके समान पड़े हैं। हे भारत! देखो सोनेके तारोंसे खिंचे हुए, अनेक सुन्दर तोमर पड़े हुए हैं, और सोनेकी पीठवाली कटी हुई ढालें पड़ी हैं, देखो अनेक सुवर्णभूषित प्रास शक्ति और गदा पड़ी हैं, सोनेके भाले पट्टिश और सोनेके दण्डवाले फरसे पृथ्वीमें पड़े हैं, परिघ भिन्दिपाल, भुशुण्डी और लोहेके भारी भारी मूशल पड़े हैं, ये देखो, अनेक वीर हथियार लिये हुए युद्ध करनेको खड़े हुए हैं। परन्तु इनका बल नाश हो चुका है, ये देखो, गदा और मूशलोंसे मरे हुए हाथी पड़े हैं और रथोंसे गिरे हुए अनेक वीर पृथ्वी- पर पड़े हैं। हे भारत! ये देखो गदा, शक्ति, वाण और मूशलोंसे मरे और रुधिरसे भीजे मनुष्योंसे युद्धभूमि भर गई।

हे भारत! चन्दन, अगर, बाजूबन्द, पञ्जे और छल्ले युक्त अनेक कटे हुए, हाथोंसे यह रणभूमि पूरित होगयी है। यह भूमि वीरोंके अङ्गूठी युक्त पञ्जों और हाथीके सूण्डके समान सुन्दर भूषणयुक्त कटी हुई जांघोंसे भर गई है, ये देखो कुण्डल और मुकुट सहित अनेक सिर कटे हुए पड़े हैं, घण्टायुक्त अनेक रथ टूटे पड़े है; ये देखो रुधिरसे भीगे अनेक घोड़े पड़े हैं, कहीं कटी हुई ध्वजा और पताका पड़ी हुई हैं। देखो योद्धाओंके ये अनेक शंख पृथ्वीपर पड़े हैं, ये देखो अनेक वैजयन्ती माला पड़ी हैं, ये सहस्रों हाथियोंपर चढ़नेवाले वीर मरे पड़े हैं; ये फूल सहित हाथी पड़े हैं, ये देखो बहुत मोलवाली हाथियोंकी सहस्रों विचित्र झूल पड़ी हैं; ये हाथियोंके घण्टा टूटनेसे चूरा होगये हैं, ये देखो, लहसुनिया रत्नसे जड़े हुए, सहस्रों अंकुश पड़े हुए हैं, ये देखो घोड़ोंके रत्नोंसे जड़े हुए, खोगीर पृथ्वीमें पड़े हैं, ये देखो सोनेके तारोंसे बने मणियोंसे जड़े घोड़ोंके जीनपोश पृथ्वीमें पड़े हैं, ये अनेक ध्वजा और पताकाओंके साथ टूटे पड़े हैं; ये देखो सोनेकी बनी हुई अनेक वस्तु पड़ी हुई हैं। ये देखो राजोंके मुकुट पृथ्वीपर पड़े हैं, ये सोनेकी माला छत्र चमर और पंखे पृथ्वीमें पड़े हैं, ये कुण्डल और मुकुटके सहित अनेक सिर पड़े हैं, इन सुन्दर मुखोंसे यह भूमि ऐसी जान पड़ती है, जैसे कमल और कुमुदिनीसे भरा हुआ तालाब, जैसे चन्द्रमा और निर्मल तारोंसे आकाश शोभित होता है, वैसे ही सुन्दर मुखोंसे भरी हुई यह पृथ्वी दिखाई देती है। हे अर्जुन! यह भूमि ऐसी सुन्दर दिखाई देती है, जैसे नक्षत्र और तारोंसे भरी शरदकालकी रात्रि। तुमने जो युद्ध किया, सो तुम्हारे और इन्द्रके सिवाय दूसरा नहीं

कर सकता। इस प्रकार अर्जुनको युद्धभूमि दिखलाते हुए कृष्णने दुर्योधनकी सेनामें शङ्ख और भेरका शब्द सुना। उस घोड़े,हाथी, और शस्त्रोंके शब्दसे भरी हुई सेनाकी ओर कृष्णने अर्जुनके तेज घोड़ोंको हांके; अर्जुनने जाकर देखा कि पाण्ड्यदेशके राजाने तुम्हारी सेनाको व्याकुल कर दिया है; तब अर्जुनने भी उस सेनापर अनेक बाण चलाने आरम्भ किये, अर्जुन उस सेनाको इस प्रकार नाश करने लगे, जैसे यमराज प्रजाका नाश करता है। पाण्ड्यदेशके राजाने शत्रुओंके बाणोंको अपने बाणोंसे काटकर उनका इस प्रकार नाश किया; जैसे दानवोंका इन्द्रने।

१८ अध्याय समाप्त।

———

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! तुमने हमसे पहले कहा था कि पाण्ड्यदेशका राजा जगत बिदित महापराक्रमी और महावीर है। परन्तु उसके युद्धका तुमने हमसे कुछ बर्णन नहीं किया, अब तुम उस बिदित वीरके कर्म्म, विद्या, प्रभाव, अभिमान और तेजका बर्णन करो।

सञ्जय बोले, हे राजन्! तुम जो भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा, अर्जुन और कृष्ण आदि महारथोंको जानते हो कि इन लोगोंने धनुर्वेदकी विद्याको समाप्त कर दिया। इन सबको वे अपने समान नहीं समझते हैं; और अपने बलके आगे किसी राजाके बलको नहीं मानते, सो अपनेको भीष्म, द्रोण, कृष्ण और अर्जुनके समान मानते हैं। उन महा पराक्रमी पाण्ड्यदेशके राजाने कर्णकी सेनाको क्रोध करके इस प्रकार नाश करना आरम्भ किया, जैसे प्रलय कालमें क्रोध करके यमराज प्रजाका नाश करता है। घोड़े, हाथी और पैदलोंसे भरी हुई, सेना पाण्ड्य देशके राजाके बाणोंसे पीड़ित होकर कुम्हारके चाकके समान घूमने लगी। पाण्ड्य देशके राजाने अपने बाणोंसे उस हाथी और घोड़ोंसे भरी सेनाको इस प्रकार नाश किया, कि जैसे वायु मेघोंको उड़ा देता है। हाथी, और हाथियों पर चढ़े वीरोंको ध्वजा, शस्त्र और रक्षा करने वालोंके सहित मार कर इस प्रकार गिरा दिया जैसे इन्द्र वज्रसे मार कर दानवोंको गिराते हैं। पुलिन्द, खस, वाह्लीक, निषाद अन्धक और कुन्तल देशके उत्पन्न हुए वीरोंको पाण्ड्य देशके राजाने बाणोंसे शक्ति प्रास तूणीरें और घोड़ोंके सहित मार कर पृथ्वी पर गिरा दिया। इसी प्रकार बड़े योद्धा दक्षिण और भोज देशके क्षत्रियोंको भी कवच प्राण रहित करके पृथ्वी पर गिरा दिया। इस प्रकार पाण्ड्य देशके राजाको कौरवोंकी चतुरङ्गिनी सेनाका नाश करते देख अश्वत्थामा सावधान होकर युद्ध करनेको आये, अश्वत्थामाने वहां आकर हस करके मीठे बाणी बोल बेडर पाण्ड्य देशके राजाको युद्ध करनेको पुकारा और कहा, कि हे राजन्! हे कमलनेत्र! आपका पराक्रम जगत्में प्रसिद्ध है। आपके बाण बज्रके समान हैं। जगत्में ऐसा कोई पुरुष नहीं जो आपके पुरुषार्थको नहीं जानता हो, आप दोनों बड़े बड़े हाथोंसे धनुष घुमाते हो और सुन्दर शोभित हुए बड़े मेघके समान युद्धमें घूम रहे हो। आप अपनी बाणोंकी बर्षासे शत्रुओंका नाश कर रहे हैं। इस लिये, हम इस सेनामें आपसे लड़ने योग्य अपने सिवाय किसी वीरको नहीं देखते, आप हाथी, घोड़े, रथ और पैदलोंको इस प्रकार काट रहे हैं जैसे सिंह वनमें निडर हो मृगोंको मारता है, हे राजन्! आप रथके महा शब्दसे आकाश और पृथ्वीको पूरित करते हुए हमारी सेनाका इस प्रकार नाश कर रहे हैं जैसे कुसमयका मेघ धानके खेतोंको

[illegible]छूवाता है। आप विषीले सांपके समान बाणोंको अपने तूणीरसे निकाल कर केवल हमारे ही ऊपर छोड़िये आपका और हमारा ऐसा युद्ध होगा जैसे पहले समयमें शिव और अन्धक राक्षसका हुआ था। राजा मलयध्वजने अश्वत्थामाके वचनोंको स्वीकार किया, और कहा कि आप बाण चलाओ और एक बाण अश्वत्थामाके शरीरमें मारा। अनन्तर पढ़ाने वालोंमें श्रेष्ठ अश्वत्थामाने हंसकर मलयध्वजकी ओर सन्धि काटनेवाले आगकी ज्वालाके समान तेज बाण चलाये फिर अश्वत्थामाने बहुत तेज धारवाले अनेक बाण दशवीं गतिकी रीतिसे राजा मलयध्वजकी ओर चलाये। तब राजा मलयध्वजने बहुत शीघ्रतासे उन बाणोंको अपने नौ बाणोंसे काट दिया। और चार बाणोंसे अश्वत्थामाके घोड़ोंको मार डाला। फिर अश्वत्थामाके बाणोंको काट कर अपने [illegible]ज बाणोंसे उनके सारथीको मार कर धनुष [illegible]दिको काट दिया। फिर शत्रुनाशन अश्वत्थामा दूसरे दिव्य रथ पर चढ़ और एक दृढ़ धनुष लेकर दूसरे सारथी घोड़ोंके सहित युद्धमें [illegible]ये, फिर अश्वत्थामाने सहस्रों बाण मलयध्वजकी ओर चलाये उन बाणोंसे सब आकाश [illegible]रित हो गया। अश्वत्थामाके बाणोंका नाश [illegible] न कर सका। ऐसा जान कर भी राजा [illegible]यध्वज अपने बाणोंसे उन बाणोंको काटने [illegible]गे। बहुत यत्न करके राजा मलय ध्वजने [illegible]मामाके उस बाणोंको काट दिया। फिर [illegible]मामाके पहियोंकी रक्षा करनेवालोंको [illegible] बाणोंसे मार डाला। अपने शत्रुकी [illegible]भा देखकर अश्वत्थामाने अपने धनुष [illegible] इस प्रकार बाण बर्षाये जैसे मेघ जल [illegible]। आठ [illegible] आठ बछड़े भरे [illegible] अश्वत्थामाने हाथी परसे चलाये [illegible]। और महावतके [illegible] था। उसका ऐसा देखकर, [illegible]

वीरोंको मूर्च्छा आती थी, जैसे बर्षाकालमें मेघ अपनी जलधाराओंसे पर्वत और वृक्षोंके सहित पृथ्वीको भिगो देता है, तैसे ही अश्वत्थामाने अपने बाणोंसे उस सब सेनाको पीड़ित कर दिया, अश्वत्थामा रूपी मेघसे छूटी हुई उस बाणवर्षाको मलयध्वज रूपी वायुने अपने बाणोंके वेगसे नष्ट कर दिया। अश्वत्थामाने चन्दन और अगर लगी हुई राजा मलयध्वजकी ध्वजाको काटकर गिरा दिया फिर उसके चारों घोड़ोंको मार डाला। फिर एक बाणसे सारथीको मारकर बड़े मेघके समान शब्दवाले रथको तिलके समान काट दिया, फिर राजा मलयध्वजके धनुषको काट दिया; अश्वत्थामाने अपने शस्त्रोंसे राजा मलयध्वजके सब शस्त्रोंको काट दिया, तब मलयध्वज मरनेके समीप पहुंचे, परन्तु अश्वत्थामाने युद्ध करनेकी इच्छासे उन्हें न मारा, उसी समय महाबलवान कर्ण गजसेनाको नाश करके पाण्डवोंकी दूसरी सेनापर दौड़े, उन्होंने अनेक वीरोंके रथोंको काट दिया, अनेक हाथी और घोड़ोंको मारकर पृथ्वी पर गिरा दिया, उसी समय अश्वत्थामाने महारथ शत्रुनाशन मलयध्वजको रथहीन देखकर और युद्धकी इच्छा करके न मारा। उस समय एक मतवाला हाथी अपने स्वामीको अश्वत्थामाके बाणसे मरा हुआ देख गर्जता और वेगसे दौड़ता हुआ आया, उस पर्वतके समान हाथीको पास आया हुआ देख हाथीके युद्धको जाननेवाले राजा मलयध्वज गर्जकर उसकी पीठपर इस प्रकार चढ़ बैठे जैसे गर्जता हुआ सिंह पर्वतके शिखर पर चढ़ बैठे। पर्वतदेशके राजा मलयध्वजने सूर्यकी किरणके समान प्रकाशमान एक तोमर हाथमें लेकर और गर्जकर द्रोणपुत्र अश्वत्थामाकी ओर चलाया, उत्तम रत्नोंसे जड़े हुए, [illegible] भूषित उस तोमरको चलाते समय राजा मलयध्वजने कहा कि अश्वत्थामा मारा

गया। उस तोमरसे अश्वत्थामाका मुकुट गिर गया, वह सूर्य्य, चन्द्रमा, तारे और अग्निके समान सुन्दर मुकुट तोमरके लगनेसे इस प्रकार गिरकर टूट गया जैसे इन्द्रका वज्र लगनेसे पर्व्वतका शिखर पृथ्वीमें गिरता है। उसके गिरनेसे अश्वत्थामाको ऐसा क्रोध हुआ जैसे लातके लगनेसे सर्पको क्रोध होता है! तब यमराजके दण्डके समान चौदह बाण ले पांच बाणोंसे हाथीके सूंड़ और पैरोंको तीनसे राजा मलयध्वजके दोनो हाथ और शिरको काट दिया। शेष छः बाणोंसे राजा मलयध्वजके रक्षा करनेवाले छःमहारथोंको मार दिया। रत्न, मोती और सोनके भूषणोंसे युक्त चन्दन लगे, मोटे और लम्ब राजा मलयध्वजके दोनों हाथ कटकर इस प्रकार पृथ्वीमें गिरे जैसे गरुड़के मारे सांप। पूर्ण चन्द्रमाके समान मुख और क्रोध भरे लालनेत्रवाला शिर कुण्डलोंके सहित कटकर इस प्रकार गिरा, जैसे विशाखाके सहित चन्द्रमा गिरता है। अश्वत्थामाने अपने चौदह बाणोंको इस प्रकार मारा जैसे यज्ञ करनेवाला यज्ञके दश भाग कर दे। राजा मलयध्वज अपने बाणोंसे अनेक हाथी घोड़ और मनुष्योंको मारकर राजोंको तृप्त करके अन्तमें जैसे जलसे अग्नि शान्त होती है, तैसे आप देवताके लोकको चले गये। राजा मलयध्वजके मरनके पश्चात् तुम्हारे पुत्रोंने समस्त विद्या जाननवाले और समस्त कर्म्मोका समाप्त करनेवाले अश्वत्थामाकी इस प्रकार स्तुति करी, जैसे बलिके जीतनेपर देवतोंने बिष्णुकी की थी।

२० अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! राजा मलयध्वजके मरनेके पश्चात् जब महावीर कर्णने पाण्डवोंकी सेनाको भगाया। तब अर्ज्जुनने क्या कहा? क्योंकि अर्ज्जुनने समस्त धनुर्वेद पढा है, और साक्षात शिवने उसे आशीर्वाद दिया। है, कि तुम किसीसे युद्धमें नहीं हारोगे, इस लिये हम शत्रुनाशन अर्ज्जुनसे बहुत डरते हैं। कुन्ती पुत्र अर्ज्जुनने जो कर्म्म किया हो सो हमसे कहो।

सञ्जय बोले, हे राजन्! राजा मलयध्वजके मरनेके पश्चात् कृष्णने अर्ज्जुनसे कहा, हमराजा युधिष्ठिरको नहीं देखते हैं। और हमारी सेना फिर लौटी और देखो कौरवोंकी सेना भागने लगी, देखो अश्वत्थामा लड़ रहे हैं। देखो कर्ण सहस्रों हाथी, घोड़े और रथोंको नाश कर रहे हैं। श्रीकृष्णके ऐसे बचन सुन युद्धको देख, और अपने भाईके दुखको जान अर्ज्जुनने श्रीकृष्णसे कहा हमारे घोड़ोंको शीघ्र चलाओ, अर्ज्जुनके बचन सुन, श्रीकृष्णने बहुत वेगसे घोड़ोंको चलाया, परन्तु मार्गमें बुरे शकुन होने लगे। उसी समय भीमसेनको आगे करके युधिष्ठिरकी सेना और कर्णको आगे करके हमारी सेना बेडर होकर युद्ध करने लगी, हे महाराज! अनन्तर यमराजकी पुरीको भरनेवाला घोर युद्ध होने लगा। योद्धा लोग, धनुष, बाण, खड्ग, पट्टिश तोमर, मूसल, भुशुण्डी, साङ्गि, कटार, फरशे, गदा, भिन्दिपाल, प्रास, कुन्तल, और अंकुश लेकर एक दूसरेको मारने लगे। बीरोंके धनुष, बाण और तालियोंके शब्दसे दिशा, कान और आकाश पूरित, होगए। उस शब्दसे प्रसन्न होकर युद्धका अन्त करनेको बीर लोग बीरोंसे युद्ध करने लगे। उस युद्धमें गर्ज्जते हुए हाथी और धनुष और पैदलोंका घोर शब्द होने लगा, धनुष और तालोंके शब्दको सुनकर कादर मरने और डरने लगे। इस प्रकार गर्ज्जते हुए बीरोंको महारथ कर्ण अपने शस्त्रोंसे मारने लगे। कर्णने अपने बाणोंसे पञ्चाल देशके पांच महारथ और पन्द्रह हाथियों

को मार कर गिरा दिया। तब पाण्डवोंकी सेनाके प्रधान सेनापति शीघ्र शस्त्र चलाते हुए कर्णके चारों ओर आघिरे। तब कर्णने अपने बाणोंसे उस सेनाको इस प्रकार मथा, जैसे मतवाला हाथी मरे हुए तालावको मथता है। राधापुत्र कर्ण अपनो धनुषको घुमाते हुए युद्धमें घूमने लगे। अनेक शत्रुओंके सिरोंको काटकर पृथ्वीमें गिराते हुए वीरोंकी ढाल और कवच काटकर पृथ्वीमें गिर गये। वह सेना सूर्य्यके समान तेजस्वी कर्णके बाणोंको न सह सकी, कर्णने अपने बाणोंसे इस प्रकार सेनाके वीरोंको मारा जैसे सारथी घोड़ोंको कोड़े मारता है। पाञ्चाल, सृञ्जय या और जो पाण्डवोंकी सेनाका वीर कर्णके बाणोंके आगे आया वही मर गया। तब कर्णसे युद्ध करनेके लिये द्रौपदीके पांच पुत्र, नकुल, सहदेव और युयुधान आये, उनसे युद्ध करनेके लिए प्यारे प्राणोंका मोह छोड़ कर अनेक योद्धा चले। महाबलवान क्षत्री लोग कवच और खड्ग लेकर युद्ध करनेको आए; वीर लोग, यमराजके दण्डके समान शस्त्र लिए, नाचते, कूदते, पसारते और गर्जते हुए युद्ध करनेको आए [illegible] शत्रुओंको मारने लगा, कोई मर कर गिरने लगा। किसीके शरीरसे रुधिर बहने लगा, किसीका शिर फट गया। किसीको आखें [illegible] पड़ीं किसीके शिर कट कर दांत [illegible] इस प्रकार पड़े थे जैसे खिला हुआ, [illegible] मरे मनुष्य रुधिरसे भीगे [illegible] इस प्रकार पड़े थे मानो सोतेही हैं। [illegible] खड्गसे कोई तोमरसे [illegible] मर कर गिर गए। कोई काटने [illegible] मनुष्योंको [illegible] लगा, अनेक [illegible] और रुधिरसे भीग कर पृथ्वीमें [illegible] रुधिरसे भीगे वीरोंके; [illegible] [illegible] गिर गए। शार्दूलोंने

हाथियोंको और घोड़ोंने घोड़ोंको मार डाला। ध्वजा शिर, छत्र, हाथियोंके सुंड मनुष्योंके हाथ काटकर पृथ्वीमें गिर गये। वीरोंने अनेक वीरोंको काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। ध्वजाओंके सहित अनेक हाथी, और रथ, पहाड़ोंके समान कटकर पृथ्वीमें गिर गये, पैदलोंने घुड़चढ़ोंको मारा और घुड़चढ़ोंने पैदलोंको मारा; मरे हुए वीरोंके मुखोंकी ऐसी शोभा बढ़ी जैसे खिलीहुई कमलमालाकी। हे राजन्! बहुत सुन्दर हाथी, घोड़े और मनुष्योंकी मरनेसे शोभा नष्ट होगई।

२१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! तुम्हारे पुत्रकी आज्ञा सुनकर हाथीपर बैठे हुए, वीर धृष्टद्युम्नको मारनेको चले। अङ्ग, पूर्व्व, दक्षिण, वङ्ग, अङ्ग, मगध और ताम्रदेशके गजयुद्ध जाननेवालोंने धृष्टद्युम्नको चारो ओरसे घेर लिया। हे भारत! मेकल, कौशल, मद्र, दशार्ण, निषध, और कलिङ्गदेशके क्षत्रियोंके सहित अनेक वीर धृष्टद्युम्नसे युद्ध करनेको आये, वे सब लोग धृष्टद्युम्नके ऊपर इस प्रकार बाण और तोमरोंकी वर्षा करने लगे। जैसे मेघ जल बर्षाते हैं, धृष्टद्युम्नने एक, छः और आठ बाणोंसे अनेक हाथियोंको इस प्रकार काट दिया, जैसे इन्द्र वज्रसे पर्व्वतोंको गिरा देता है। उस समय जैसे मेघ सूर्य्यको घेर लेते हैं, इस प्रकार हाथियोंने धृष्टद्युम्नको घेर लिया, तब गरजते हुए, पाण्डव और पाञ्चाल दौड़े, वे सब वीर अपने बाणोंसे हाथियोंको काटते हुए, नाचते कूदते और गर्जते कौरवोंकी सेनापर टूटे। नकुल, सहदेव द्रौपदीके पांचो पुत्र, प्रभद्रक सात्यकि शिखण्डी, चेकितान आदि वीरोंने इस हाथी सेनाके ऊपर इस प्रकार बाण बर्षाये जैसे मेघ पर्व्वतोंके ऊपर

बर्षाता है, इन सब बीरोंने क्रोध करके म्लेच्छ-सेनाके हाथी, घोड़े, रथ और मनुष्योंको मार-डाला। हाथियोंने पैरोंसे बीरोंको पीस दिया दांतोंसे पेट चीर दिये, और सूंड़ोंसे अनेक बीरोंको मार डाला। सात्यकिने आगे खड़े हुए हाथीपर चढ़े अङ्गदेशके बीरके शरीरमें तेज बाण मारे, जब वह अङ्गदेशका बीर सात्यकिके बाणोंसे व्याकुल होगया, तब सात्यकिने उसके हृदयमें एक बाण मारा तब वह मरकर हाथीसे गिर गया। पुण्ड्रदेशके राजाके चलते हुए पर्व्वतके समान हाथीको सहदेवने बाणोंसे व्याकुल कर दिये; पुण्ड्रदेशके राजाके हाथी महावत धनुष और कवचके दोदो टुकड़े करके सहदेव अङ्गदेशके राजासे लड़नेको चले गये। नकुलने सहदेवको अङ्ग देशके राजासे लड़नेको रोक दिया। और आप ही यमराजके दण्डके समान बाणोंसे लड़ने लगे। तीन बाण हाथीके शरीरमें और सौ राजाके अङ्गमें मारे, अङ्गदेशके राजाने सूर्य्यकी किरणके समान आठ तोमर नकुलकी ओर चलाये, परन्तु नकुलने बाणोंसे आठोंके तीन तीन टुकड़े कर दिये। एक अर्द्धचन्द्र बाणसे नकुलने उसका शिर काट दिया। तब म्लेच्छ हाथी समेत मरकर गिर गया। जब हाथीके युद्धको जाननेवाला वह राजा मर गया, तब अङ्गदेशके बीर क्रोध करके नकुलसे युद्ध करनेको आये, अङ्गदेशके बीर प्रकाशमान पताकाओंके सहित अपने हाथियोंको दौड़ाते हुए इस प्रकार नकुलसे युद्ध करनेको आये, जैसे जलते हुए पर्व्वत दौड़ते हैं। नकुलके ऊपर मेकल, उत्कल, कलिङ्ग, निषध और ताम्रलिप्तदेशके बीर बाण और तोमर बर्षाने लगे, उन सबसे नकुल इस प्रकार छिप गये। जैसे मेघोंसे सूर्य्य छिप जाते हैं। तब पाण्डव पाञ्चाल और सोमकवंशी चत्री क्रोध करके युद्ध करनेको आये, तब यह बीर हस्ती युद्ध हुआ। बीर लोग दोनों ओरसे बाणोंकी वर्षा करने लगे। हाथियोंके सूंड़ दांत और पैर प्रभृति बाणोंसे काट काटकर पृथ्वीपर गिरने लगे। अनन्तर सहदेवने अपने तेज बाणोंसे बीरोंके सहित आठ हाथियोंको पृथ्वी पर गिरा दिया। इसी प्रकार महाप्रतापी नकुलने भी अपने तेज चलनेवाले बाणोंसे अनेक हाथियोंको काट डाला। तब धृष्टद्युम्न सात्यकि, शिखण्डी और द्रौपदीके पुत्रोंने अपने बाणोंसे अनेक हाथियोंको मारा, वे सब हाथी उन बीरोंके बाणोंसे इस प्रकार मरने लगे, जैसे बज्रसे पर्व्वत कटते हैं। हे राजन्! तुम्हारी उस सब सेनाको इस प्रकार बीरोंने काट डाला। तब वह सेना बांध टूटी नदीके समान दीखने लगी। ये युधिष्ठिरके बीर तुम्हारी सेनाको इस प्रकार मारकर कर्णसे युद्ध करने चले गए।

२२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! जिस समय क्रोधी सहदेव तुम्हारी सेनाको नाश करने लगे, तब तुम्हारा पुत्र दुःशासन उनसे युद्ध करनेको चला। उन दोनो भाइयोंका घोर युद्ध देख कर सब बीर गर्ज्जने और वस्त्र घुमाने लगे। हे भारत! तब तुम्हारे बलवान पुत्रने क्रोध करके पाण्डुपुत्र सहदेवके हृदयमें तीन बाण मारे। हे राजन्! तब सहदेवने तुम्हारे पुत्र के शरीरमें सत्तर बाण मारे, और तीनबाण सारथीके शरीरमें। हे राजन्! तब दुःशासनने सहदेवके धनुषको काट दिया, फिर उनके हाथ और हृदयमें सत्तर बाण मारे, तब सहदेवने क्रोध करके तुम्हारे पुत्रके रथकी ओर खड्ग चलाया, वह खड्ग तुम्हारे पुत्रके धनुष रोदा और बाणको काटकर सर्पके समान पृथ्वीमें गिर गया। तब प्रतापवान सहदेवने दूसरा धनुष लेकर एक तेजबाण दुःशासनको

ओर चलाया। उस समय यमराजके दण्डके समान बाणको आते देख दुःशासनने तेज खड्गसे काट दिया। पश्चात दुःशासनने उस खड्गको छोड़कर दूसरे धनुषपर बाण चढ़ाया, तब सहदेवने हंसकर आते हुए खड्ग को अपने तेज बाणसे काट दिया। हे भारत। तुम्हारे पुत्रने सहदेवके रथकी ओर चौसठ बाण चलाये, तब सहदेवने उन बाणोंको वेगसे आते देख अपने पांच बाणोंसे काट दिया, उन सब बाणोंको काटकर सहदेवने तुम्हारे पुत्रकी ओर अनेक बाण चलाये। तुम्हारे पुत्रने सहदेवके सब बाणोंको तीन तीन बाणोंसे काट दिया, फिर इस प्रकार गर्जे मानों पृथ्वी फाड़डालेंगे। हे राजन्। तब दुःशासनने माद्रीपुत्र सहदेवके शरीरमें अनेक बाण मारे और उनके सारथीके भी शरीरमें तीन बाण मारे। हे महाराज। तब सहदेवने महा क्रोध करके मृत्यु, काल और यमराजके समान एक बाण धनुषपर चढ़ाया, महाबलवान सहदेवने कान-तक धनुष खींचकर दुःशासनके शरीरमें बाण मारा, वह बाण, कवच, शरीर और रथको छेदकर इस प्रकार पृथ्वीमें गिरा, जैसे बिलसे निकलकर सांप चलता है, उस बाणसे दुःशासन मूर्च्छित होगये, उनको विकल देखकर सारथी रथको युद्धसे हटा दिया। इस प्रकार [illegible] जीतकर सहदेव दुर्य्योधनकी सेनासे [illegible] लगे। हे राजन्। जिस [illegible] चींटियोंका दल [illegible] है, ऐसे ही तुम्हारी सेनाको [illegible] जाता।

[illegible] अध्याय समाप्त।

[illegible] हे राजन् धृतराष्ट्र [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

लगे, तब कर्ण उनसे युद्ध करनेको आये; नकुल कर्णको देखकर हंसकर कहने लगे, हमने तुम्हें बहुत दिनमें देखा, यह हमारी प्रारब्धहीका फल है। हे पापी! तुम इस युद्धमें हमारे पराक्रमको देखो, तूही इस सर्व्व-नाश करनेवाले युद्धका मूल है, तूही इस वंशके वैरकी जड है, तेरे ही दोषसे हमारे समस्त कुलका नाश हुआ जाता है, आज तुझे युद्धमें मारकर मैं कृतार्थ और सावधान हूंगा, महा-धनुषधारी नकुलके ऐसे वचन सुन कर्णने राज-कुमारके योग्य उत्तर दिया। हे वीर। हम तुम्हारे बलको देखते हैं; तुम शस्त्र चलाओ कुछ कर्म्म करके वीर गर्ज्जते हैं वृथा नहीं। हे प्यारे! वीर लोग विना कुछ कहे ही युद्ध करते हैं। तुम अपनी शक्तिके अनुसार हमसे लड़ो, हम तुम्हारे अभिमानको नाश करेंगे। ऐसा कहकर सूतपुत्र कर्णने पाण्डुपुत्र नकु-लकी ओर सत्तर बाण चलाये, नकुलने भी विषैले सर्पके समान अस्सीबाण कर्णकी ओर चलाये, तब कर्णने अपने सोनेके पङ्खवाले बाणोंसे नकुलका धनुष काट दिया। और उनके शरीरमें बीस बाण मारे, वे बाण नकु-लका कवच तोड कर इस प्रकार उनका रुधिर पीने लगे, जैसे विषैले सांप पृथ्वी तोड़ कर पीते हैं। अनन्तर नकुलने सुवर्ण भूषित घोर धनुष लेकर कर्णको ओर सत्तर और उनके सारथीकी ओर तीन बाण चलाये, हे महा-राज। तब शत्रुनाशन नकुलने महा क्रोध कर बाणसे कर्णका धनुष काट दिया। फिर धनुष रहित महावीर कर्णके ऊपर महारथ नकुलने तीन सौ बाण चलाये, नकुलके बाणोंसे कर्णको व्याकुल देखकर सब देवता और वीर लोग, आश्चर्य करने लगे। [illegible] कर्णने दूसरा धनुष [illegible] नकुलके शरीरमें पांच बाण मारे। [illegible] नकुलकी ऐसी शोभा [illegible] प्रकाश करते हुए सूर्य [illegible]

अनन्तर नकुलने क्रोधसे कर्णके शरीरमें अनेक बाण मारे और धनुषके रोदेको फिर काट दिया। कर्णने दूसरा धनुष लेकर अपने तेज चलनेवाले बाणोंसे नकुलके रथको चारों ओरसे घेर लिया, नकुलने अपने बाणोंसे कर्णके सब बाणोंको काट दिया। उस समय इन दोनोंके बाणोंसे आकाश इस प्रकार छागया जैसे वर्षाकालकी रात्रिमें जुगुनुओंसे छा जाता है। हे पृथ्वीनाथ! इन दोनोंके बाण आकाशमें टीड़ियोंके समान छागये। हे महाराज! उन दोनोंके सुवर्णभूषित बाणोंके झुण्ड क्रौंचों अर्थात् कुरचोंके झुण्डके समान उड़ने लगे। जब आकाश बाणोंसे छागया, और सूर्य छिप गये। तब कोई आकाशकी वस्तु पृथ्वीमें न गिर सकी, उस समय उन दोनोंने आकाशका मार्ग बन्द कर दिया। युद्ध कालमें उन दोनोंकी ऐसी शोभा बढ़ी जैसे प्रलय कालमें दो सूर्य उदय होते हैं। कर्णके बाणसे पत्रास और पीड़ासे व्याकुल होकर सोमक देशके वीर मरने और डरने लगे। इसी प्रकार नकुलके बाणोंसे व्याकुल होकर तुम्हारी महासेना चारों ओरको इस प्रकार भागने लगी जैसे वायुके वेगसे मेघ भागते हैं। उन दोनों वीरों के बाणोंसे व्याकुल होकर भी वे दोनों सेना युद्ध देखनेको खड़ी रहीं। थोड़े समयमें दोनों सेनाओंके दोनों वीर एक दूसरे पर बाण चलाने लगे। नकुल और कर्ण अपनी बाण विद्याको दिखलाते हुए एक दूसरेके ऊपर दिव्य बाण चलाने लगे। और एक दूसरेको मारने की इच्छासे घोर युद्ध करने लगे। नकुलके धनुषसे छूटे हुए गिद्ध और कौओंके पङ्ख लगे बाणोंने सूतपुत्र कर्णके रथको चारों ओरसे छिपा दिया। इसी प्रकार कर्णके बाणोंने भी नकुलके रथ और आकाशको छिपा दिया। जैसे सूर्य और चन्द्रमा मेघोंके आनेसे नहीं दीखते वैसे ही बाणोंके बीचमें आनेसे नकुल और कर्ण किसीको न दिखलाई दिये। त[ब] कर्णने महा क्रोध करके नकुलको चारों ओरसे अपने बाणोंसे छालिया, हे राजन्! इनके बाणोंसे छिपनेसे नकुल सूर्यके समान अपना प्रकाश करने लगे। अनन्तर नकुलने हंसकर कर्णके सब बाणोंको काट दिया। और सहस्रों बाण कर्णकी ओर छोड़े, उस समय नकुलके बाण मेघके समान आकाशमें छागए, हे महाराज! तब कर्णने नकुलका धनुष [काट] दिया, और उनके सारथीको मार कर पृ[थ्वी] में गिरा दिया। फिर चार तेज बाणोंसे न[कु]लके चारों घोड़ोंको भी मार डाला। [फिर] रथको तिलके समान काट दिया, तथा ग[...] और खड्गों सहित पहियोंकी रक्षा करने[वा]लोंको भी मार डाला। सौ चन्द्रमाके सम[ान] प्रकाशमान नकुलके खड्ग और ढालको [भी] काट दिया। हे राजेन्द्र! तब कवच, धनु[ष] खड्ग, ढाल, रथ, घोड़े और सारथी रहि[त] होकर नकुल शीघ्रतासहित रथसे उतरे औ[र] एक परिघ लेकर कर्णकी ओर दौड़े, त[ब] कर्णने अपने तेज बाणोंसे नकुलके परिघको [भी] काट दिया। अनन्तर नकुलको शस्त्र रहि[त] देखकर अनेक बाण उनके शरीरमें मारे परन्[तु] मार नहीं डाला। बलवान कर्णके बाणों[से] पीड़ित होकर नकुल युद्ध छोड़कर भागे, त[ब] हंसते हुए कर्ण भी उनके पीछे दौड़े, फि[र] उन्हें पकड़कर उनके गलेमें अपना धनुष डा[ल] दिया। उस गलेमें पड़े धनुषसे नकुलकी ऐसी शोभा बढ़ी जैसे चन्द्रमाके मण्डलके बीच मेघकी, अथवा शक्रकी छायामें पड़े चन्द्रमाकी। तब कर्णने नकुलसे कहा, तुमने पहले वृथा ही बक बक करी थी, यदि अब कुछ शक्ति है, तो प्रसन्न होकर बोलो, हे पाण्डव! तुम बलवान कौरवोंके साथ कभी युद्ध न करना, अपने समान वीरोंसे लड़ो और इस हारकी कुछ लज्जा भी न करना। हे माद्री पुत्र! तुम

...अथवा घरको चले जाओ, अथवा जहां कृष्ण ... अर्ज्जुन हैं वहां जाओ। कुन्तीके वचन स्मरण ... करके धर्म्मात्मा कर्णने नकुलको जीता ही ... छोड़ दिया। धनुषधारी कर्णसे छूटकर नकुल ... लज्जित होकर युधिष्ठिरके रथकी ओर चले, ... फिर मान लेते हुए, युधिष्ठिरके रथपर इस ... प्रकार चढ़े, जैसे घड़ेमें बन्द हुआ सांप। नकुलको जीत कर कर्ण भी अपनी ध्वजा उड़ाते हुए पाञ्चाल देशके क्षत्रियोंकी ओर लड़नेको चले गए। सेनापति कर्णको पञ्चालोंकी ओर जाते देख, पाण्डवोंकी सेनामें महाशब्द हुआ, हे महाराज। उस समय सूर्य्य दो पहर दिन बिता चुका था, तब कर्ण कुम्हारके चाकके समान सेनामें घूम कर वीरोंको मारने लगे, किसीके पैर कट गई, किसीके घोड़े, किसीके सारथी मर गए, उस समय हमने पाञ्चालोंके रथ, हाथी, और घोड़ोंके झुण्डोंके झुण्डोंको भागते, मरते और घूमते देखा, उस समय किसी हाथीका सूंड़ कट गया, किसीका पैर कट गया, तब वे इस प्रकार चिल्लाते भागे, जैसे जलते हुए वनको छोड़ कर हरिन भागते हैं। ... पूंछ और पैर कटे हाथी मेघोंके समान पृथ्वीमें गिर गए, अनेक हाथी बाण और तोम-रोंसे ... क्रोधमें भरकर इस प्रकार कर्ण ... दौड़े जैसे अग्निमें जलनेको पतङ्ग दौड़ते हैं। अनेक खड़े हुए हाथियोंके शरीर ... पर्व्वतोंके झरनेके समान रुधिर बहने लगा, हे राजन्। हाथियोंकी गदी अम्बारी, ... और ... कटकर पृथ्वीमें गिर गए। ... धनुष, कवच, तूणीर, छत्र और भूषण ... । हमने मरते और मरे हुए ... पृथ्वीमें पतित देखा। उत्तम ... गिरने लगे। ... और ... पृथ्वीमें गिर ... मरते हुए और

कांपते हुए अनेक वीरोंको देखा। अनेक अङ्गहीन हाथियोंकोभी मरते देखा; सारथी और वीरोंके मरनेसे अनेक उत्तम घोड़ोंवाले रथ युद्ध भूमिमें घूमने लगे। किसी रथके पहिए कट गए, किसीकी धुरी टूट गई, किसीके जुए, पताका और ध्वजा टूट गई, हे पृथ्वीनाथ। अनेक रथ पर बैठे हुए वीरोंको सूतपुत्र कर्ण अपने तेजबाणोंसे मारने लगे, अनेक शस्त्रसहित और अनेक शस्त्ररहित वीरोंको युद्धमें देखा, इसी प्रकार झूल और घण्टासहित मरे हुए हाथियोंको भी देखा, इसी प्रकार अनेक रङ्गवाली ध्वजाओंसे युक्त हाथियोंको दौड़ते देखा, हमने पार्थके बाणोंसे कटे हुए अनेक हाथ, पैर और शिर पड़े हुए पृथ्वीमें देखे; कर्णसे युद्ध करनेवाले अनेक वीर मरकर पृथ्वीमें गिर गये। कर्णके बाणोंसे पीड़ित होनेपर भी सृञ्जयवंशी क्षत्री इस प्रकार कर्णकी ओर दौड़ते थे, जैसे अग्निकी ओर पतङ्ग।

प्रलयकालकी अग्निके समान तेजस्वी कर्णको युद्ध करते देख, अनेक प्रधान क्षत्री उनसे युद्ध करने लगे, पाञ्चालदेशके थोड़े बचे हुए वीर युद्धको छोड़कर भाग। तब कर्ण भी बाण छोड़ते हुए उनके पीछे दौड़े। तेजस्वी कर्ण अपने बाणोंसे कवच और शस्त्ररहित क्षत्रियोंको मारने लगे। उस समय कर्णका तेज दोपहरके सूर्य्यके समान दीखता था।

२४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! तुम्हारी सेनाको मारते हुए देख युयुत्सुके सङ्ग युद्ध करनेके लिये खड़े रहो, खड़े रहो! कहता हुआ ... आया। हे राजन्! तब युयुत्सुने ... समान ... महा... उलूकके शरीरमें मारा, ... और ... युयुत्सुका धनुष काट दिया, युयुत्सुने ...

करके दूसरा धनुष धारण किया। और शकुनिपुत्र उलूकके शरीरमें आठ तथा सारथीके शरीरमें तीन बाण मारे, उलूकने भी क्रोध करके युयुत्सुके शरीरमें सुवर्णभूषित बीस बाण मारे, और एक बाणसे उनकी सोनेकी ध्वजा काट दी, अपनी ध्वजाको कटी देख युयुत्सुको महाक्रोध हुआ और पांच बाण उलूकको छातीमें मारे। हे भरतकुलश्रेष्ठ! उलूकने भी एक तेलमें भीगे बाणसे युयुत्सुके सारथीका सिर काट लिया। युयुत्सुका सारथी टूटे हुए तोमरके समान कटकर पृथ्वीमें गिर पड़ा। फिर उलूकने उनके शरीरमें भी अनेक बाण मारे, बलवान युयुत्सु बाणोंसे पीड़ित होकर दूसरे रथपर चढ़ गये। हे राजन्। युयुत्सुको युद्धमें जीतकर उलूक अपने तेज बाणोंसे पाण्डवोंकी सेनाको मारते हुए सृञ्जय और पाञ्चालदेशके क्षत्रियोंसे लड़नेको चले गये। हे राजन्। उसी समय तुम्हारे पुत्र श्रुतकर्म्माने क्षणमात्रमें शतानीकके सारथी और घोड़ोंको मार डाला, तब महारथ शतानीकने एक भारी गदा तुम्हारे पुत्रपर चलाई, वह गदा श्रुतकर्म्माके घोड़े, सारथी और रथका चूरा करके पृथ्वीमें गिर गई, तब वे दोनो कुरुवंशी बीर पृथ्वीमें खड़े होकर एक दूसरेको देखने लगे, तब तुम्हार पुत्र श्रुतकर्म्मा घबराकर विविंशतिके रथपर चढ़ गये, इसी प्रकार शतानीक भी प्रतिविन्ध्यके रथपर जा चढ़े। शकुनिने श्रुतसोमके शरीरमें अनेक बाण मारे, परन्तु श्रुतसोम इस प्रकार युद्धमें खड़े रहे जैसे बर्षामें पर्व्वत। हे भारत! श्रुतसोमने अपने पिताके महाशत्रुको आगे खड़ा देख सहस्रों बाण उसकी ओर चलाये। शस्त्रविद्याके जानने वाले विजयी शकुनिने श्रुतसोमके सब बाणोंको काट दिया, अनन्तर शकुनिने क्रोध करके श्रुतसोमकी ओर तीन बाण चलाये, हे महाराज! अनन्तर तुम्हारे साले शकुनिने श्रुतसोमके घोड़े सारथी और रथको काट डाला, तब सब हाहाकार करने लगे, परन्तु महावीर श्रुतसोम रथ, सारथी, ध्वजा कटनेपर भी धनुष लेकर पृथ्वीपर खड़ा होगया। श्रुतसोमने पृथ्वीपर खड़े होकर तुम्हारे सालेके रथको सुवर्णपङ्खवाले बाणोंसे छा दिया; टीड़ीदलके समान श्रुतसोमके बाणोंको देखकर भी सुबलपुत्र शकुनि कुछ न डरे, और अपने बाणोंसे श्रुतिसोमके सब बाणोंको काट डाला। तब सब योद्धा और आकाशमें खड़े सिद्ध बहुत प्रसन्न हुए, नीचे खड़े हुए, श्रुतसोम रथमें बैठे हुए शकुनिसे युद्ध करते थे, यह देख सिद्धोंने बड़ी प्रशंसाकी। तब शकुनीने अपने तेज बाणोंसे उनके धनुष, रोदे, सब तूणीरोंको काट दिया। खड्ग और रथहीन श्रुतसोम लहसनिया और पन्नाके समान सुन्दर और हाथीदांतकी मूठ वाले खड्गको लेकर गर्ज्जने लगे। उस निर्मल आकाशके समान खड्गको लेकर श्रुतसोम घुमाने लगे, उस समय उस खड्गका तेज साक्षात् यमराजके दण्डके सामान दीखता था, हे महाराज! शिक्षा और बलसे भरे हुए बुद्धिमान श्रुतसोम चौदह प्रकारकी गतियोंसे युद्धमें घूमने लगे। श्रुतसोमने अपनी गतियोंमें संभ्रान्त, उद्भ्रान्त, आविद्ध, आप्लुत, विप्लुत, सृत, सम्पात, और समुदीर्ण रीतियोंको दिखलाया। सुबलपुत्र शकुनि भी श्रुतसोमके ऊपर तेज बाण चलाते रहे, परन्तु श्रुतसोमने खड्गसे उन सब बाणोंको काट दिया। हे महाराज! तब शत्रुनाशन शकुनिने क्रोध करके विषैले सांपोंके समान बाण चलाये, गरुड़के समान पराक्रमी श्रुतसोमने अपने विद्याबल और शीघ्रतासे उन सब बाणोंको काट दिया। हे राजन्! युद्धमें घूमते हुए श्रुतसोमके प्रकाशमान खड्गको शकुनिने एक तेज बाणसे काट दिया। हे राजन्! वह खड्ग कट कर आधा पृथ्वीमें गिर पड़ा और आधा श्रुतसोमके हाथमें

[illegible] गया, हे राजन्! अपने खड्गको कटा हुआ देखकर महारथ श्रुतसोम छः बार कूदे और उसी आधे खड्गसे शकुनीका रोदे सहित धनुष काट दिया। वज्रके समान वह धनुष कट कर पृथ्वीमें गिर गया, तब शकुनिने दूसरा धनुष लिया, उतने समयमें श्रुतसोम दौड़कर श्रुतकीर्त्तिके रथ पर चढ़ गये, वहां एक घोर धनुष धारण करके घोर युद्ध करने लगे। शकुनि भी दूसरा धनुष लेकर पाण्डवोंकी सेनाका नाश करने लगे। उस समय पाण्डवोंकी सेनामें घोर शब्द होने लगा, हे राजन्! पाण्डवोंकी सेनामें निडर शकुनि इस प्रकार घूमने लगे, जैसे दैत्योंकी सेनामें इन्द्र घूमते हैं। शस्त्रधारी पाण्डवोंकी सेना शकुनिके बाणोंसे व्याकुल होकर इधर उधर भागने लगी।

२५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र। धृष्टद्युम्नने युद्ध करते कृपाचार्य्यका इस प्रकार रोक दिया, जैसे वनमें सिंहको शरभ रोकता है। हे भारत! गौतमवर्म्मा बलवान कृपाचार्य्यसे धृष्टद्युम्न युद्ध करने लगा। धृष्टद्युम्नके रथको और कृपाचार्य्यका रथ [illegible] देख सब योधा लड़ने लगे, [illegible] निश्चय होगया, कि धृष्टद्युम्न जीते [illegible] इस समय रथ, हाथी, और घोड़ा [illegible] तथा पैदल लोग कहने लगे। [illegible] द्रोणाचार्य्यके मरनेसे कृपाचार्य्यको क्रोध हुआ है [illegible] इसी लिये, यह धृष्टद्युम्नसे लड़नेको आये हैं। गौतमवर्म्मा महातेजस्वी कृपाचार्य्य [illegible] ईश्वर इनके हाथसे [illegible] बचावें। ईश्वर [illegible] [illegible] इस [illegible] हाथसे [illegible] [illegible] मारनेमें समर्थ [illegible] कि [illegible] इस समय यमराजके समान हो रहा है। इससे यह भी धृष्टद्युम्नको हाथसे आज ही द्रोणाचार्य्यके पास पहुंचेगे, कोई कहने लगा, कि कृपाचार्य्य धनुर्वेदके जाननेवाले, शीघ्र शस्त्र चलानेवाले, बलवान और सदा युद्ध जीतनेवाले हैं। इस समय कृपाचार्य्यको क्रोध भरा देख, धृष्टद्युम्न भागना चाहते हैं। इस प्रकार तुम्हारी और पाण्डवोंकी सेनामें अनेक प्रकारकी बातें होने लगीं। हे राजेन्द्र! इन सब बातोंको सुनते हुए महात्मा कृपाचार्य्यने क्रोधसे भरकर अनेक सांस लिये, फिर धृष्टद्युम्नको सन्धियोंमें अनेक बाण मारे, उस समय धृष्टद्युम्न ऐसे मोहित हुए कि कुछ न कर सके, तब उनके सारथीने कहा। हे महाराज कुमार! आप कुशलसे तो हैं? हमने इससे पहले किसी युद्धमें ऐसी आपकी दशा नहीं देखी थी, आज हमारी प्रारब्धसे आपके शरीरमें बाण लग रहे हैं। ब्राह्मणश्रेष्ठ कृपाचार्य्य आपके मर्म्म स्थानोंमें बाण मार रहे हैं। इस लिये हमारी इच्छा यह है कि जैसे समुद्रको देखकर नदीका वेग थाम होजाता है तैसे आपके रथको युद्धसे लौटावे। ब्राह्मण अवध्य है इसीलिये आपका बल नष्ट होगया। सारथीके ऐसे वचन सुन धृष्टद्युम्न धीरेसे बोले, हे सारथी! मेरी बुद्धि नष्ट होगयी, मन घबड़ा रहा है। शरीर पसीनेसे भीगा जाता है, रोवें खड़े हुए जाते हैं, और अङ्ग कांप रहे हैं। हे सारथि! तुम हमारे रथको इस ब्राह्मणके रथसे बचाकर जहां अर्जुन वा भीमसेन हों वहां लेचलो। हमको निश्चय है कि भीमसेन या अर्जुनके पास जानेहीसे हमारा कल्याण होगा। धृष्टद्युम्नके ऐसे वचन सुन सारथीने घोड़ोंको शीघ्र हांका [illegible] समयमें जहां भीमसेन युद्ध कर रहे थे, वहां जा पहुंचे। हे राजन्! धृष्टद्युम्नको भागते देख [illegible] कृपाचार्य्य [illegible] और [illegible] उनके पीछे दौड़े, कृप

धृष्टद्युम्नको इस प्रकार डराया जैसे इन्द्रने नमुचिको। अनन्तर भीष्मके मारनेवाले महापराक्रमी शिखण्डीसे हार्दिक्य युद्ध करने लगे, शिखण्डीने कृतवर्म्माके ऊपर पांच तेज बाण चलाये, महारथ कृतवर्म्माने हंसकर उन सब बाणोंको अपने बाणोंसे काट दिया और एक बाणसे शिखण्डीका धनुष काट दिया। और साठ बाण शिखण्डीके ऊपर चलाये, तब बलवान शिखण्डीने क्रोध करके दूसरा धनुष धारण किया, और कृतवर्म्मासे कहा खड़ा रह! अनन्तर शिखण्डीने सोनेके पङ्खवाले नव्वे तेज बाण कृतवर्म्माकी ओर चलाये, वे बाण कृतवर्म्माके कवचमें लगकर पृथ्वीमें गिर गये। फिर एक बाणसे कृतवर्म्माका धनुष काट दिया। और उनके शरीरमें अनेक बाण मारे। धनुष कटनेसे कृतवर्म्मा टूटे सींगवाले बैलके समान खड़े रह गये, अनन्तर हाथ पैर और हृदयमें घाव होनेसे कृतवर्म्माको अत्यन्त क्रोध हुआ, कृतवर्म्माके शरीरसे इस प्रकार रुधिर बहने लगा जैसे फूटे झरनेसे पानी बहता है। कृतवर्म्माके शरीरसे इस प्रकार रुधिर बहा जैसे वर्षामें भीगनेसे गेरूके पहाड़से झरने बहते हैं, अनन्तर कृतवर्म्माने दूसरे धनुषपर रोदा चढ़ाकर शिखण्डीके कन्धेमें बाण मारे, उन बाणोंके लगनेसे अनेक शाखायुक्त वृक्षके समान शिखण्डी दीखने लगे, तब ये दोनों वीर रुधिरसे भीग गये, ये दोनों महारथ एक दूसरेके मारनेका उपाय करने लगे। उस समय इन दोनोंके शरीरसे ऐसा रुधिर बहा, जैसे सींगोंके काटनेसे बैलके शरीरसे बहै। हे महाराज! इन दोनोंके रथ अनेक प्रकारकी गतियोंसे युद्धमें घूमने लगे। अनन्तर कृतवर्म्माने सोनेके पङ्खवाले सत्तर बाण शिखण्डीकी ओर चलाये, एक बाण शत्रुनाशन शिखण्डीके शरीरमें मारा, उस बाणके लगनेसे महारथ शिखण्डीको मूर्च्छा होगयी, और वह ध्वजाके बांसको पकड़कर बैठ गया, तब सारथीने उनके रथको युद्धसे हटा दिया। कृतवर्म्माके बाणोंसे शिखण्डी बार बार सांस लेने लगे, द्रुपदके पुत्र महारथ शिखण्डीको युद्धसे हटता हुआ देखकर पाण्डवोंकी सेना इधर उधर भागने लगी।

२९ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! जैसे वायु रुईको उड़ाता है। तैसे ही अर्ज्जुनने तुम्हारी सेनाको मारना और भगाना आरम्भ किया। उनसे लड़नेके लिये त्रिगर्त्त, शिवी, कौरव, शाल्व संशप्तक और नारायणी सेनाके वीर चले। हे भारत। सत्यसेन, चन्द्रदेव, मित्रदेव, शत्रुञ्जय सौश्रुति, चित्रसेन, मित्रवर्म्मा और महा धनुषधारी त्रिगर्त्त देशका राजा अपने भाई और पुत्रोंके सहित अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको आये। ये सब युद्धविद्याके जाननेवाले महाधनुषधारी वीर अर्ज्जुनके ऊपर इस प्रकार बाण बर्षाने लगे, जैसे मेघ इकट्ठे होकर पर्व्वतपर जल बर्षाते हैं। अर्ज्जुनके पास आते ही वे सहस्रों योधा इस प्रकार शान्त होगये कि जैसे गरुड़को देख सांप। हे महाराज। जैसे पतङ्ग जलने पर भी अग्निको नहीं छोड़ते वैसेही उन वीरोंने मरने पर भी अर्ज्जुनको नहीं छोड़ा; सत्यसेनने तीन, मित्रदेवने तिरसठ, चन्द्रसेनने सात, मित्रवर्म्माने तिहत्तर, सौश्रुतिने सात, सञ्जयने चौदह और सुशर्म्माने नौ बाण चलाये, अर्ज्जुनने भी मित्रवर्म्माके शरीरमें नौ, सुशर्म्माके आठ, राजा शत्रुञ्जयको अनेक तीक्ष्ण-बाण मारे; फिर सौश्रुतिके शिरको टोपके सहित काटकर पृथ्वी पर गिरा दिया। फिर सोमदेवकोभी बाणोंसे मार कर यमलोक पहुंचा दिया, और सब महारथोंको पांच पांच बाणसे मार डाला राजा सत्यसेनने क्रोध करके और शिखर

[illegible] एक भारी तोमर श्रीकृष्णके [illegible]। [illegible] के दण्ड वाला, तोमर श्रीकृ[illegible] दाएं हाथको छेदकर पृथ्वीमें चला गया। [illegible] पृथ्वीनाथ। महात्मा श्रीकृष्णके हाथमें तो[illegible] लगनेसे घोड़ोंकी रास और चाबुक छूट [illegible] कृष्णको अत्यन्त व्याकुल देखकर अर्जुन [illegible] बहुत क्रोध हुआ और कृष्णसे बोले, हे [illegible]! तुम हमारे घोड़ोंको शीघ्र सत्यसेनके [illegible] पास ले चलो, मैं इस दुष्टको अपने तेज [illegible] अभी मारूंगा। अर्जुनका बचन [illegible] श्रीकृष्णने दूसरा कोड़ा लिया, और रास [illegible] कर घोड़ोंको सत्यसेनकी ओर हांका। [illegible] अर्जुनने कृष्णके हाथमें घाव देख सत्य[illegible] ऊपर अनेक बाण चलाये अर्जुनने अपने [illegible] बाणोंसे उस राजाके शिरको कुण्डल सहित [illegible] पर गिरा दिया। उसको मार कर मित्र[illegible] युद्ध करने चले। और एक वत्सदन्त [illegible] उसके सारथीका सिर काट लिया। फिर अर्जुन अपने बाणोंसे सहस्त्रों संशप्तक वध [illegible] अनन्तर महारथ अर्जुनने चांदीके पङ्ख[illegible] [illegible] मित्रसेनका सिर काट लिया। फिर [illegible] हृदयमें क्रोध करके बाण मारे [illegible] संशप्तकोंने अर्जुनको चारों ओरसे घेर लिया, क्रोध करके अनेक शस्त्र चलाने लगे, हे [illegible]। उनके शस्त्रोंसे व्याकुल होकर इन्द्र [illegible] पराक्रमी अर्जुनने इन्द्रास्त्र चलाया, तब [illegible] अनेक बाण निकलने लगे। उन [illegible] तुणीर और अनेक रथ [illegible]। [illegible] रथके पहिये, किसीको [illegible] किसीकी लगाम किसीकी [illegible] कट गई, कहीं घोड़े मरकर गिरने [illegible]। कहीं [illegible] पट्टिश और तोमरोंसे घोड़े [illegible] और [illegible] हाथ पैर शरीरके भूषण [illegible] गिरने लगे। कहीं [illegible] गिरने लगे। [illegible] कहीं [illegible] सहित

मुकुट कट कर पृथ्वीमें गिर गये, हे पृथ्वीनाथ, उस युद्धमें कहीं वीरोंके घोर शब्द सुनाई देने लगे। अनेक शिर इस प्रकार पृथ्वीमें दीखने लगे, जैसे आकाशमें तारे दीखते हैं। युद्ध गन्धर्वोंके नगरके समान हुआ। अनेक राजपुत्र और अनेक हाथी और अनेक घोड़े मर कर पृथ्वीमें गिर गये। वीरोंके मरनेसे वह युद्धभूमि अगम्य हो गई। उस समय महात्मा अर्जुनके रथ चलनेको मार्ग न रहा। हे राजन्! हाथी, घोड़े और वीरोंको मारते हुए अर्जुन उस युद्धमें घूमने लगे। जिस समय अर्जुन उस रुधिर भरे घोर युद्धमें घूम रहे थे, तब उनको कहीं मार्ग भी नहीं मिलता था, उस समय महारथ अर्जुनके मन और वायुके समान वेगवाले घोड़े युद्धभूमिमें चल नहीं सक्ते थे। हे महाराज! पाण्डुपुत्र अर्जुनने उस सेनाको इस प्रकार जीत लिया, तब इस प्रकार शोभित हुए जैसे धूमरहित अग्नि शोभित होती है।

२७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! अनेक बाण छोड़ते हुए निडर राजा दुर्योधन राजा युधिष्ठिरसे युद्ध करनेको गये। तुम्हारे महारथ पुत्रको आते देख राजा युधिष्ठिरने कहा खड़ा रह। खड़ा रह। राजा युधिष्ठिरने अपने तेज नौ बाणोंसे राजा दुर्योधनके सारथीको मार डाला। हे राजन! तब युधिष्ठिरने सोनेके पङ्खवाले, तेरह बाण दुर्योधनकी ओर चलाए। चार बाणोंसे चारों घोड़ोंको मार डाला। और पांचवें बाणसे सारथीको मार डाला, छठेसे ध्वजा, सातवेंसे धनुष, आठवेंसे खड्गको काटकर पृथ्वीपर गिरा दिया। और पांच बाण धर्मराजने तुम्हारे पुत्रके शरीरमें मारे, तब तुम्हारे पुत्र उस टूटे रथसे उतरे, बहुत दुःखी होकर भूमिपर खड़े होगये, राजा

दुर्य्योधनको ऐसे दुःखमें पड़ा देख अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और कर्ण आदिक वीरोंने राजा दुर्य्योधनको चारों ओरसे घेर लिया, इसी प्रकार सब पाण्डवोंने राजा युधिष्ठिरको घेर लिया। हे राजन्! तब सबसे उनका घोर युद्ध होने लगा, तब अनेक प्रकारके बाजे युद्धमें बजने लगे, जहांपर पाञ्चाल और कौरवोंका घोर युद्ध होरहा था, वहां कौरव और पञ्चालोंने घोर शब्द किया; मनुष्य मनुष्यसे, हाथी हाथीसे, रथ रथसे, घोड़े घोड़ोंसे युद्ध करने लगे, और पैदल पैदलोंसे लड़ने लगे, हे राजन्। यह घोर युद्ध ऐसा हुआ जिसमें असंख्य शस्त्र चले। वे महाबलवान् योद्धा लोग एक दूसरेको मारनेके लिये शीघ्र हलके हाथोंसे और सुन्दरतासे शस्त्र चलाने लगे। एक दूसरेको मारने लगा, और वे लोग सामने खड़े युद्ध करते रहे, कदापि पीछे हटनेको इच्छा न की। हे राजन्। थोड़े समय यह युद्ध मर्य्यादासे होता रहा पीछे किसीको कुछ ध्यान न रहा, तब रथमें बैठा वीर अपने तेज बाणोंसे हाथीपर बैठे वीरोंको मारने लगा, हाथी पकड़कर घोड़ोंको अपनी सूंड़से मारने लगे, घोड़ोंपर चढ़े वीर अपनी ताली बजाते हुए, घूमने और मरने लगे, भागते और गिरते हुए, हाथियोंको आगे पीछे और दहने बायेंसे घोड़ोंपर चढ़े वीर मारने लगे, इसी प्रकार मतवाले हाथियोंने अपने दांतोंसे अनेक घोड़ोंको मार डाला। किसी हाथीने चढ़े हुए मनुष्यके सहित घोड़ेको अपने सूंडसे दूर फेंक दिया, इसी प्रकार पैदलोंने अनेक हाथियोंको मारा। वे चिल्लाते हुए चारों ओरको भागे, भागते हुए पैदलोंके भूषण पैदलोंने उतार लिये और युद्धको पुकारने लगे, अनेक हाथी नीचे हो होकर मनुष्योंकी पगड़ी उतारने लगे, अनेक शिक्षित हाथियोंने अपनी शूंड़से मनुष्योंको पकड़कर आकाशको फेंक दिया, और गिरते समय दांतसे चीर दिया, अनेक हाथियोंने सेनाके बीचमें घुसकर मनुष्योंके पेट दांतसे चीर दिये, हे राजन्! अनेक मनुष्योंको हाथियोंने पकड़ घुमाते मार डाला, अनेक हाथियोंके महावत मरकर पृथ्वीमें गिर गये, अनेक हाथियोंकी सूंडमें और सिरमें शक्ति, प्रास, और साङ्गि लगी। अनेक हाथी चलते हुए, रथ और घोड़ोंको रगड़से मर गये, अनेक घोड़ोंपर चढ़े वीर घोड़ोंके सहित पृथ्वीपर गिरकर मर गये, उनके गिरनेसे नीचे खड़े पैदल भी मर गये, कहीं वस्त्रोंके सहित रथोंको हाथीने अपने पैरोंसे पीस दिया। कहीं रथोंको उठाकर ऊपरको फेंक दिया, कहीं महाबल हाथी बाणोंसे मरकर पृथ्वीमें गिर गये। युद्धमें पड़े हाथी ऐसे दीखते थे, जैसे कटे पर्व्वतोंके शिखर। कहीं दो वीर घूसोंसे लड़ रहे थे। कोई किसीके बाल पकड़कर खींचता था। कोई किसीके थप्पड़ मारता था और किसीको फेंक देता था। कोई छातीपर पैर रखकर शत्रुका शिर काटता था; कोई भूमिमें गिरतेहुए शत्रुको मार रहा था। हे भारत। कोई जीते हुए शत्रुके पेटमें कटार मारता था। कोई किसीको घूंसे मारता था, कोई किसीके बाल पकड़कर खींचता था, कोई किसीसे बाहुयुद्ध कर रहा था, कोई अपनेसे अधिक बलवान् शत्रुके सङ्ग युद्ध कर रहा था। उस घोर युद्धमें कोई अनेक प्रकारके शस्त्रोंसे अपने शत्रुके शरीरके टुकड़े कर रहा था, उस युद्धमें सहस्रों कबन्ध नाच रहे थे, रुधिरमें भीगे हुए, अनेक शस्त्र और कवच भूमिमें पड़े हुए थे। वे कवच लाल रंगे हुए वस्त्रोंके समान हो रहे थे; यह घोर युद्ध इस प्रकार हुआ, उस समय इस युद्धमें ऐसा घोर शब्द उठा जैसे पहाड़ोंमें घूमती हुई गङ्गाका। उस समय यह किसीको नहीं जान पड़ता था कि यह हमारी सेनाका मनुष्य है, वा दूसरेका, उस समय राजा लोग अपने दूसरे

सेनासे विजयके लिये लड़ रहे थे, किन्तु ने और परायेको नहीं पहचानते थे, हे जन्! दोनों सेना भागते और गिरते हुए रथ वियोंसे व्याकुल होगई थीं, मरे हुए हाथी र मनुष्योंके गिरनेसे वह भूमि जाने योग्य हीं रही थी। उस युद्धमें छिन मात्रमें रुधि-की नदी बहने लगी। पाञ्चालोंको कर्ण और गर्त्तोंको अर्ज्जुन मारने लगे, इसी प्रकार भीमसेन भी कौरवोंकी गजसेनाका नाश करने गे। हे महाराज! इस प्रकार यह कौरव र पाण्डवोंकी सेनामें घोर युद्ध हुआ, इस कार यश प्राप्त करनेकी इच्छासे वीरोंने पहर युद्ध किया।

२८ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! हमने तुम्हारे खसे न सहने योग्य अनेक दुःखकी बातें सुनी, हमने भी सुना कि हमारे पुत्रोंका नाश होता ता है, जैसा युद्ध हुआ वैसा ही हमसे तुमने हा। हे सूत! हमें यह निश्चय है कि इस द्धमें सब कौरवोंका नाश होजायगा। महारथ र्म्मराज युधिष्ठिरने दुर्य्योधनका रथ काट दिया ा उस युद्धमें धर्म्मराज युधिष्ठिर और दुर्य्यो-धनने क्या किया सो हमसे कहो? हे सञ्जय! स घोर युद्धमें दोपहरके पश्चात् क्या हुआ सो ी हमसे कहो; क्योंकि तुम इस विषयको च्छी प्रकार जानते हो।

सञ्जय बोले, हे पृथ्वीनाथ! जब धर्म्मराज युधिष्ठिर तुम्हारी सेनाको मारने लगे, और [illegible] का रथ कट गया, तब तुम्हारे पुत्र दुर्य्यो-धन [illegible] सर्पके समान क्रोध करके और [illegible] धर्म्मराजसे युद्ध करना आरम्भ [illegible], [illegible] दुर्य्योधनने अपने सारथीसे कहा [illegible] हमारे रथको [illegible] युधिष्ठिरके पास [illegible] [illegible] [illegible] प्रकार [illegible]।

राजाके वचन सुन सारथीने घोड़ोंको महाराज धर्म्मराजकी ओर हांका, महाराज युधिष्ठिर जो मतवाले हाथीके समान खड़े थे, अपनी ओर दुर्य्योधनको आते देख अपने सारथीसे कहा तुम शीघ्र हमारे रथको दुर्य्योधनकी ओर हांको; थोड़े समयमें दोनों रथ पास आगये, वे दोनों महारथ और महाधनुषधारी राजा युद्ध करने लगे। तब राजा दुर्य्योधनने अपने तेज बाणोंसे धर्म्मात्मा युधिष्ठिरका धनुष काट दिया। राजा युधिष्ठिर अपने इस अपमानको क्षमा न कर सके और मारे क्रोधके नेत्र लाल होगये, उन्होंने दूसरा धनुष लेकर सब सेनाके आगे दुर्य्योधनकी ध्वजा और धनुषको काट दिया, दुर्य्योधनने भी दूसरा धनुष लेकर धर्म्मराजकी ओर अनेक बाण चलाये, वे दोनों अपनी विजयकी इच्छासे सिंहके समान गर्ज्जने और युद्ध करने लगे, एक दूसरेको मारनेके लिये समय देखने लगा। तब दोनोंके शरीरमें बाणोंके घाव होगये, हे राजन्! रुधिर बहनेसे उन दोनोंकी ऐसी शोभा बढ़ी जैसे फूले हुए कचनारकी, वे दोनों राजा कभी धनुषटङ्कारते थे, कभी शङ्ख बजाते थे, वे दोनों राजा अपने बाणोंसे एक दूसरेको पीड़ा देने लगे। तब राजा युधिष्ठिरने तुम्हारे पुत्रकी ओर तीन बाण चलाये। वे वज्रके समान तीनों बाण दुर्य्योधनकी छातीमें आकर लगे, तब तुम्हारे पुत्रने भी युधिष्ठिरके हृदयमें तीन बाण मारे, हे भारत! तुम्हारे पुत्रने युधि-ष्ठिरके बाणोंको अपने पांच बाणोंसे काटकर उनकी ओर एक शक्ति चलाई, [illegible] [illegible] [illegible] नाश करनेवाली बिजलीके [illegible] [illegible] हुई आगिरी धर्म्मराज युधिष्ठिरने [illegible] [illegible] तीन बाणोंसे काटा और [illegible] [illegible] दुर्य्योधनकी ओर चलाई। वह [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बाणोंसे कटकर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कटकर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गिर गई। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

निष्फल देखा, तब युधिष्ठिरके शरीरमें नौ बाण मारे, शत्रुनाशन युधिष्ठिर बलवान शत्रुके बाण लगनेसे क्रोधमें भर गये, और एक घोर बाण अपने तूनीरसे निकाल कर धनुष पर चढ़ाया, फिर पराक्रमी युधिष्ठिरने क्रोधमें भरकर और धनुष खींच कर एक बाण छोड़ा, वह बाण राजा दुर्य्योधनके शरीरको छेद कर पृथ्वीको छेदगया। उसके लगनेसे राजा दुर्य्योधनको मूर्च्छा होगयी तब मूर्च्छा जागने पर दुर्य्योधनने महा क्रोध किया। अनन्तर इस युद्धको समाप्त करनेके लिये एक गदा लेकर युधिष्ठिरकी ओर दौड़े, दण्डधारी यमराजके समान दुर्य्योधनको आते देख धर्म्मराज युधिष्ठिरने जलती हुई मशालके समान एक सांगि दुर्य्योधनकी ओर चलाई उस सांगिसे दुर्य्योधन पृथ्वीमें गिर गये, और मूर्च्छा आगयी। दुर्य्योधनको इस दुर्द्दशामें देख भीमसेनने युधिष्ठिरसे कहा, हे महाराज! इसको मारनेकी मैंने प्रतिज्ञाकी है। भीमसेनके वचन सुन युधिष्ठिर दूसरी ओर चले गये। हे राजन्! दुःखसे पीड़ित तुम्हारे पुत्र राजा दुर्य्योधनकी रक्षा करनेके लिये बहुत शीघ्रतासे कृतवर्म्मा आये। इधर भीमसेनने भी सोनेके तारोंसे जड़ी हुई गदाको लेकर कृतवर्म्माकी ओर वेगसे दौड़े, तब तुम्हारी और युधिष्ठिरकी सेना अपनी जीतके लिये उस तीसरे पहरमें युद्ध करने लगी।

२९ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! तब तुम्हारी सब वीर सेनाने कर्णको आगे करके फिर देवासुरके संग्रामके समान युद्ध करना आरम्भ किया। हाथी, मनुष्य, रथ, घोड़े और शङ्खके शब्दोंसे और अनेक प्रकारके अस्त्र चलनेसे प्रसन्न होकर हाथी घोड़े रथों पर बैठे तथा पैदल वीर क्रोध करके युद्ध करने लगे। अनेक हाथी, घोड़े और मनुष्योंको वीरोंने परश्वध, पट्टिश, खड्ग और अनेक प्रकारके बाणोंसे मार डाला। इसी प्रकार वाहनोंने मनुष्योंको और मनुष्योंने वाहनोंको मार डाला। कमल, सूर्य्य और चन्द्रमाके समान सुन्दर मुखवाले, दांत, मुकुट, और कुण्डल सहित कटे हुए शिरोंसे पृथ्वी भर गई सहस्रों हाथी, परिघ, मूसल, सांगि, तोमर और नखांसे कटकर पृथ्वीमें गिर गये, और युद्धमें रुधिरकी नदी बहने लगी। जैसे प्रलय कालमें यमराजकी पुरी भयानक होती है, वैसे ही मरे हुए हाथी, घोड़े और मनुष्योंसे वह रणभूमि भयानक मालूम होने लगी। हे नरदेव! इसके पश्चात् तुम्हारी सब सेना और तुम्हारे सब पुत्र कर्णको आगे करके सात्यकिसे युद्ध करनेको चले, तब उस युद्धमें रुधिरकी नदी बह निकली और समुद्रके समान शब्द होने लगा, अनन्तर वे दोनों सेना देवता और राक्षसोंकी सेनाके समान युद्ध करने लगीं। घोड़े हाथी, और मनुष्योंसे भरी वह सेना समुद्रके समान गर्ज्जने लगी; अनन्तर इन्द्र और उपेन्द्रके समान पराक्रमी कर्णने सूरज किरणके समान प्रकाशमान बाणोंसे सात्यकिको मारना आरम्भ किया। शिनीवंश श्रेष्ठ सात्यकिने भी युद्धमें अपने बाणोंसे कर्णके घोड़े सारथी और रथको छिपा दिया। महारथ कर्णके घोड़ोंको सात्यकिके बाणोंसे पीड़ित देखकर रथ घोड़े और हाथियों पर चढ़ कर तुम्हारी सेना पाण्डवोंकी सेनाकी ओर दौड़ी। तब उधरसे भी धृष्टद्युम्न आदि प्रधान वीर युद्ध करनेको चले, तब यह हाथी घोड़े और मनुष्योंका नाश करनेवाला घोर युद्ध होने लगा। अनन्तर पुरुष श्रेष्ठ कृष्ण और अर्ज्जुन मध्यान्हकी सन्ध्या करके और जगत्पति शिवकी पूजा करके तुम्हारी सेनाका नाश करनेको आये। शत्रुओंने वायुसे उड़ते हुए पताकावाले मेघके समान गर्जते हुए सफेद घोड़े युक्त अर्ज्जुनके रथको देखा अनन्तर अर्ज्जुनने अपनी धनुषपर टङ्कार देके

[illegible]शुन बाणोंसे आकाशको पूरित कर दिया, अर्ज्जुन अपने बाणोंसे सारथियोंके सहित विमा-[illegible]के समान अनेक रथोंको काटने लगे । हाथी महावत, माला और शस्त्रोंके सहित वीर, और घोर घोड़ोंपर चढ़े अनेक वीरोंको अर्ज्जुनने मारडाला, कालके समान क्रोधी अर्ज्जुनको आते हुए देख कोई वीर रोक न सका । परन्तु तब एक दुर्य्योधन घोर शस्त्र [illegible]हुए अर्ज्जुनकी ओर आये, अर्ज्जुनने [illegible] घोड़े सारथीको मार रथको तोड़ डाला और एक बाणसे छत्र भी काट दिया, फिर [illegible] बाण दुर्य्योधनका प्राण नाश करनेको [illegible] परन्तु उस बाणको अश्वत्थामाने बीचही में काट डाला । अर्ज्जुनने अश्वत्थामाके घोड़े सारथी और रथको काटकर कृपाचार्य्यके [illegible] धनुषको काट दिया । फिर कृतवर्म्माकी ध्वजाको काट कर घोड़ोंको मार दिया, अन-न्तर दुःशासनके धनुषको काटकर कर्णसे युद्ध करनेको चले गये । कर्णने सात्यकिको छोड़कर अर्ज्जुनको [illegible] तीन बाण चलाये, और कृष्णके शरीरमें [illegible] बाण मारे । जिस प्रकार युद्ध करते हुए [illegible] नहीं थकते, वैसेही बार बार [illegible] और शत्रुओंको मारते कर्ण भी [illegible] । तब सात्यकिने दौड़कर कर्णके शरीरमें [illegible] मारे, तब कर्ण सात्यकिसे ही युद्ध करने लगे । कर्णसे लड़नेको युधामन्यु, [illegible] द्रौपदीके पांचो पुत्र, प्रभद्रक, उत्त-[illegible], [illegible], सहदेव, और [illegible] [illegible] वहां बलवान [illegible], महाराज धर्म्मराज युधिष्ठिर भी [illegible] रथ, घोड़े और बलवान [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] काट दिया, [illegible] [illegible] तब

कर्णने अपने बाणोंसे महावतोंके सहित हाथी सारथियोंके सहित रथ और सवारोंके सहित अनेक घोड़ोंको मार डाला । हमने देखा कि कर्णके बाणोंसे पाण्डवोंकी सेनाके हाथ, पैर, शस्त्र, वस्त्र, कटकर गिर गये, जब वह सब सेना भागने लगी, तब अर्ज्जुनने कर्णके सब बाणों को अपने बाणोंसे काट दिया, और दशों दिशा पूरित कर दीं, कोई बाण मूशलके समान, कोई परिघके समान तथा कोई शक्ति और तेज वज्रके समान चले, उन सब वीरोंके बाणोंसे व्याकुल होकर दोनों सेना आंख बन्दकर घूमने और चिल्लाने लगी, तब यह युद्ध घोर रूपसे हुआ, अनेक हाथी, घोड़े, मनुष्य मरने गिरने और भागने लगे । उस समय तुम्हारी ओरसे युद्ध करनेको विजयी संशप्तक सेना चली, उसी समय भगवान सूर्य्य अस्ताचलके शिखरपर पहुंच गये । हे राजन् ! तब अन्धकार और धूलसे हम कुछ शुभ और अशुभ न देख सके । तब सब सेनापतियोंने अपने सब वाहनोंको एकत्र किया, उस रात्रीसे डरकर कर्णने पहले अपनी सेनाको पीछे हटाया । कौरवोंके जानेके पश्चात् पाण्डवोंके सेनापतियोंने अपनी सेनाको डेरोंमें जानेकी आज्ञा दी, पाण्डवोंकी सेनाने चलते समय बाजे बजाये, बार बार गर्ज्जकर कौरवों की प्रशंसा करने लगे । हे पृथ्वीनाथ ! सेनाके लौटते समय सब योद्धाओंने उच्च स्वरसे युधिष्ठिरकी जय हुई, ऐसा शब्द पुकारा । सेनाको लौटाकर और यथायोग्य स्थानोंमें सबको सुलाकर पांचो पाण्डव और हृष्ट पुष्ट अपने अपने डेरोंमें प्रसन्न होकर चले गये । उस घोर स्मशानरूपी भूमिमें राक्षस, भूत, पिशाच, उल्लू और सियार आदि अनेक मांस भक्षक जन्तु आगये ।

[illegible] अध्याय समाप्त ।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! अर्ज्जुन अपनी इच्छासे सब बीरोंको मार सकते हैं; उस बीरसे साक्षात यमराज भी नहीं युद्ध कर सकता। एकले अर्ज्जुन सुभद्राको छीन लाये थे, एकलेने ही अग्निको तृप्त किया। एकले अर्ज्जुनने सब राजोंका जीत युधिष्ठिरको कर दिलाया; एकलेने निवातकवचोंको मारा और एकलेही अर्ज्जुनने किरात रूपी शिवसे युद्ध किया। उस एकहीने सब कुरुवंशकी रक्षाकी और एकलेहीने सब तेजस्वी राजोंको जीता। हम पाण्डवोंकी निन्दा नहीं करते, क्योंकि युद्धमें जीतना और हारना प्रारब्धके आधीन है। सेना लौटनेके पश्चात् दुर्य्योधन और कर्णने क्या किया? सो हमसे कहो।

सञ्जय बोले, हे राजन्! जिस समय मरनेसे बचे कवच शस्त्र रहित तुम्हारी सेनाके बीर युद्धसे हटे, तब दीन वाणीसे परस्पर बात करते हुए डेरोंको चले, सब सेनाको डेरोमें सुलाकर प्रधान कौरव लोग एक डेरेमें इकट्ठे हुए और विषके दांत टुटे हुए तथा लात मारे हुए सापोंके समान सम्मति करने लगे। उन सबके बीचमें क्रोधी सांपके समान सांस लेते हुए हाथसे हाथ मीजते और तुम्हारे पुत्रोंकी ओर देखते हुए कर्ण बोले, अर्ज्जुन स्वभाव हीसे धनुष विद्याके जाननेवाले, और महा पराक्रमी हैं! तिस पर भी कृष्ण उनको समय समय पर उपदेश करते हैं। इसी लिये आज हम लोग युद्धको नहीं जीत सके, परन्तु प्रातःकाल होते ही हम अर्ज्जुनके सब अभिमानको तोड़ देंगे। कर्णके ऐसे वचन सुन दुर्य्योधनने कहा कि बहुत अच्छा। इसके पश्चात् सब मन्त्री और राजोंको सोनेकी आज्ञा दी। वे सब लोग आज्ञा पाकर अपने अपने डेरों पर सोनेको चले गये। सुखसे रात्रिको बिताकर कौरवोंके योद्धा उठे तो देखा कि धर्म्मराज युधिष्ठिरने अपनी सेनाका कठिन व्यूह बना रक्खा है। राजा दुर्य्योधनने बृहस्पति और शुक्रके समान बुद्धिमान कुरुकुलश्रेष्ठ युधिष्ठिरके बनाये व्यूहको देखकर इन्द्र और उपेन्द्रके समान योद्धा सेनापति कर्णका स्मरण किया। कार्त्तवीर्य्यके समान पराक्रमी कर्णको महाराज दुर्य्योधनने बुलाया, राजाने सूतपुत्रको अपने भाई और मन्त्रियोंके समान आदरसे बुलाया।

धृतराष्ट्र बोले, हे सूत! कर्णके स्मरण करनेके पश्चात् क्या किया? सो हमसे कहो। जिस समय दूसरे दिन सेना युद्धको उपस्थित हुई और जैसे शीतसे व्याकुल मनुष्य सूर्य्यको देखता है, वैसे ही जब दुर्य्योधनने राधापुत्र कर्णको देखा, उसके पश्चात क्या हुआ? सो कहो। विकर्त्तनपुत्र कर्णने पाण्डवोंके साथ कैसे युद्ध किया? और पाण्डव कैसे कर्णसे लड़े, हमको निश्चय है, कि एकले कर्ण सृञ्जयोंके सहित पाण्डवोंका नाश कर सत्ते हैं। क्योंकि वह इन्द्रके समान पराक्रमी है। महात्मा कर्ण महाबलवान और शस्त्रविद्याके जाननेवाले हैं। इन्हींके भरोसे दुर्य्योधन उन्मत्तके समान बैठा रहता है। पाण्डवोंसे पीड़ित दुर्य्योधनको देखकर और पाण्डवोंका बल बढा हुआ देखकर महारथ कर्णने क्या किया? सो कहो। हमें यही आश्चर्य्य आता है कि मूर्ख दुर्य्योधन कर्णका आश्रय लेकर पुत्र बान्धव और कृष्णके सहित पाण्डवोंको जीतना चाहता है। हमें यह स्मरण करके बहुत दुःख होता है कि तेजस्वी कुरुवंशी भी पाण्डवोंको युद्धमें न जीत सके। इसमें प्रारब्ध ही प्रधान है। हाय यह उसी जुएका फल है। हे तात! मैं दुर्य्योधनके दिये हुए अनेक दुःख सह रहा हूं, वे दुख मेरे हृदयमें घावके समान लगे हुए हैं, मूर्ख दुर्य्योधनने उस समय शकुनिको नीति जाननेवाला समझा था, हे सञ्जय! कर्ण सदासे तेज स्वभाववाला है और दुर्य्योधन उसीकी बातको मानता है, इसीसे यह घोर युद्ध हुआ। हे सञ्जय! हम

शोक सुनते हैं कि आज हमारे इतने पुत्र मरे और इतने हारे, परन्तु यह कभी नहीं सुना कि पाण्डव भी हारे। पाण्डव लोग हमारी सेनाको स्त्रियोंके समान मार डालते हैं। इसमें प्रारब्धके सिवाय और किसका दोष है?

सञ्जय बोले, हे राजन्! आप अपने पहले किये अधर्म्मकार्य्यको विचारिये, जो समय बीतने पर कार्य्यकी चिन्ता करता है, उसको कुछ फल नहीं मिलता और चिन्तासे नष्ट हो जाता है। तुमने जो पहले हानि और लाभ विचार कर काम काम नहीं किया, उसीका यह फल है। परन्तु अब चिन्ता करनेसे कुछ नहीं होगा। हे पृथ्वीनाथ! हमने बहुत बार आपसे कहा था, कि पाण्डवोंसे युद्ध न कीजिये परन्तु आपने पुत्रोंके मोहमें पड़कर हमारी बातको नहीं माना, तुमने पाण्डवोंके साथ अनेक अन्याय किये हैं, उसीसे यह राजोंका और वीरोंका नाश हो रहा है। आप इस शोच न कीजिये और बीती हुई बातको भुला दीजिये, अब युद्धका वर्णन सुनिये। प्रातःकाल होतेही बलवान कर्ण दुर्य्योधनके पासमें गये, और कहने लगे, हे राजन्! आज हम यशस्वी अर्ज्जुनके साथ युद्ध करनेको जाते हैं, हम उसको आज युद्धमें मारेंगे या वही हमको मारेगा। हे राजन्! हमारे और अर्ज्जुनके सिर बहुत कामोंका भार है, इसीसे हमारा और उनका कलह [illegible] नहीं हुआ था, हे भारत! आज हम निश्चय करके जाते हैं, कि बिना अर्ज्जुनके मारे नहीं लौटेंगे। हे राजन्! जब मैं उनकी [illegible] मारूंगा। तब मुझे इन्द्रकी [illegible] रहित जानकर अर्ज्जुन युद्ध करनेको आवेंगे, हे राजन्! इस समय मेरे [illegible] दिव्य अस्त्रोंकी शक्तिको आप [illegible] इस समय आपसे निवेदन करूंगा [illegible] इस प्रकार, दूर चलाना, ठीक लक्ष पर मारना और सुन्दरतासे चलानेमें अर्ज्जुन हमारे समान नहीं है। यह भी आपको निश्चय हो जायगा, कि अर्ज्जुन बल, तेज, युद्धविद्या, शकुन और ज्ञानमें हमारे समान नहीं है। जो विश्वकर्म्माने इन्द्रको प्रसन्न करनेके लिये बनाया था, जो सब शस्त्रोंमें श्रेष्ठ है, जिसके शब्दसे राक्षस कटते थे, जिसको धारण करके इन्द्रने अनेक दानवोंको मारा था, वही धनुष उन्होंने प्रसन्न होकर परशुरामको दिया था, परशुरामने वही महा शब्दवाला दिव्य धनुष मुझे दिया है। आज हम वही धनुष धारण करके विजयी अर्ज्जुनसे इस प्रकार युद्ध करेंगे जैसे राक्षसोंसे इन्द्र। यह धनुष गाण्डीवसे भी उत्तम है। इस धनुषके अनेक कर्म्म मुझसे परशुरामने कहे थे, आज इसी धनुषसे अर्ज्जुनके साथ युद्ध करूंगा। हे दुर्य्योधन! अब हम वीर अर्ज्जुनको मार कर हो भाइयों समेत आपका दर्शन करेंगे। हे राजन्! आज अर्ज्जुनके मरनेसे वन पर्व्वत और समुद्रके सहित पृथ्वीमें आपका राज्य होगा, और बहुत पीढ़ीतक राज स्थिर रहेगा। जैसे ब्रह्मचारीको कोई सिद्धि दुर्लभ नही होती ऐसे ही ऐसा कोई काम नहीं जो हम आपके लिये नही कर सकें। जैसे वृक्ष अग्निको नहीं सह सक्ता, ऐसे ही मुझे युद्धमें कोई नही सह सक्ता, परन्तु अर्ज्जुन ही मुझसे कुछ युद्ध कर सक्ते हैं। जैसे अर्ज्जुनका दिव्य धनुष है और अक्षय तूणीर है, सो उन सबका हमें कुछ भय नहीं है। परन्तु जैसे अर्ज्जुनके कृष्ण सारथी हैं, वैसा हमारा सारथी नहीं है। जैसे अर्ज्जुनका गाण्डीव दिव्य धनुष है, तैसा ही मेरा भी विजय धनुष है। मैं इस धनुषके कारण अर्ज्जुनसे श्रेष्ठ हूं। परन्तु अर्ज्जुन [illegible] हो सकेगा। अर्ज्जुनके सारथी [illegible] हैं, और अग्निका दिया हुआ रथ है इसीसे अर्ज्जुन हमसे श्रेष्ठ है। अर्ज्जुनके घोड़े मनके समान शीघ्र चलने

हैं और उनकी दिव्य ध्वजापर भयङ्कर बन्दर रहता है, जगत्कर्त्ता कृष्ण उनके रथकी रक्षा करते हैं,—हम इन सब सामग्रियोंसे हीन हैं, तौ भी अर्ज्जुनसे युद्ध करनेका साहस रखते हैं। राजा शल्य कृष्णके समान घोड़े हांकने जानते हैं, यदि ये मेरे सारथी बनें तो निश्चयही आपका विजय होय। आज राजा शल्य हमारे सारथी बनें और गिद्धपङ्ख लगे बाणोंसे भरे छकड़े हमारे सङ्ग रहैं, हे भरतकुलसिंह! हमारी सेनाके प्रधान योद्धा रथोंमें बैठकर हमारे पीछे रहैं; ऐसा होनेसे हम अर्ज्जुनसे अधिक बलवान हो जायंगे, क्योंकि शल्य कृष्णसे और हम अर्ज्जुनसे अधिक हैं। जैसे शत्रुनाशन कृष्ण घोड़ोंकी विद्या जानते हैं, वैसे ही महारथ शल्य भी जानते हैं। जगत्में मद्रराज शल्यके समान कोई पराक्रमी नहीं है; ऐसे ही मेरे समान बाणविद्यामें कोई नहीं है, शल्यके समान कोई घोड़ोंकी विद्या नहीं जानता, इस लिये यह कृष्णसे उत्तम है, सो आज ये हमारा रथ हांके। हे कुरुश्रेष्ठ! ऐसा होनेसे हम अर्ज्जुनसे अधिक बलवान होंगे और आपकी विजय होगी। हे शत्रुनाशन! शल्य सारथीके सहित हमसे देवतोंके सहित इन्द्र भी नहीं जीत सकते। हे राजन्! आप इस कामको सिद्ध कीजिये, क्योंकि अब समय नहीं है, विलम्ब न होना चाहिये। ऐसा होनेसे हम अवश्य अर्ज्जुनको जीतेंगे, तब आप युद्धमें हमारे पराक्रमको देखेंगे, हम निश्चय युद्धमें पांचों वीर पाण्डवोंको जीतेंगे। हे राजन्! मेरे आगे देवता और राक्षस भी नहीं युद्ध कर सकते, फिर मनुष्य पाण्डवोंकी तो बात ही क्या है?

सञ्जय बोले, महा पराक्रमी राधापुत्रके वचन सुनकर हंसकर और हाथ पकड़ दुर्य्योधन बोले, हे कर्ण! तुम जो कहते हो हम वैसा ही करेंगे, तुम्हारे सङ्ग अनेक रथ घोड़े सहित रहेंगे। हे कर्ण! छकड़ोंमें भरे हुए बाण तुम्हारे सङ्ग रहेंगे और हम सब राजा लोग तुम्हारे पीछे रहेंगे, हे राजन्! कर्णसे ऐसे कहकर प्रतापी दुर्य्योधन मद्रराज शल्यसे ऐसा वचन बोले।

३१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले हे राजन्! राजा दुर्य्योधन महारथ शल्यके पास जाकर विनयपूर्व्वक उन्हें प्रसन्न करके ऐसा वचन बोले, हे सत्यव्रत! हे महाभाग! आपसे सब शत्रु कांपते हैं, हे मद्रराज! आप युद्धमें असाधारण हैं। आपने कर्णके वचन सुने! अब हम सब राजोंको नाश करनेवाले हैं, इस लिये हम आपको शिरसे प्रणाम करते हैं, और एक वर दान मांगते हैं। हे महारथ! आप पाण्डवोंके नाश और हमारे कल्याणके लिये कर्णके सारथी बन जाइये, तुमको सारथी बनाकर कर्ण मेरे सब शत्रुओंको जीतेंगे, तुम्हारे सिवाय कर्णके घोड़े हांकने योग्य और कोई नहीं है आप कृष्णके समान योद्धा हैं, जैसे ब्रह्मा शिवकी रक्षा करते हैं, तैसे तुम कर्णकी रक्षा करना। हे मद्रेश्वर! जैसे कृष्ण अर्ज्जुनकी सब आपत्तियोंमे रक्षा करते हैं, ऐसे ही आप राधापुत्रकी रक्षा कीजिये। भीष्म द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, कर्ण, कृतवर्म्मा, आप, अश्वत्थामा सुबलपुत्र शकुनि और हम अपनी सेनाके प्रधान है। हे पृथ्वीनाथ! हमने इस सेनाके प्रधान नौ भाग किये थे। उसमें भीष्म और द्रोणका भाग नष्ट होगया। उन दोनोंने मेरे शत्रुओंको मार मारकर अपने भागको समाप्त कर दिया, परन्तु पाण्डवोंने उन दोनों धनुषधारी वूढ़ोंको छलसे मारडाला और भी हमारे अनेक वीर अपनी शक्तिके अनुसार पराक्रम करके स्वर्गको चले गये, अब हमारी सेना मरनेसे थोड़ीसी रह गई है। पाण्डवोंने पहलेही इसको नाश करने

[illegible] था, अब उनको इतनी सेनाका मारना क्या कठिन है? हे पृथ्वीनाथ। पाण्डव लोग महात्मा सत्य पराक्रमी और विजयी हैं। जिस प्रकार वे लोग हमारी बची सेनाको न मार सकें सोही आप उपाय कीजिये। हे पृथ्वीनाथ। इस बची हुई सेनाकी रक्षा करनेके लिये एक कर्ण ही समर्थ हैं; क्योंकि वह सदा हमारा कल्याण चाहते हैं। हे पुरुष सिंह। महारथ कर्णकी यह इच्छा है कि, आपकी सहायतासे पाण्डवोंके साथ युद्ध करें। हे मद्रराज। हमको यह निश्चय है कि कर्ण ही हमारे सब शत्रुओंको जीत सक्ते हैं। परन्तु पृथ्वीमें आपके सिवाय उनके घोड़े हांकनेके योग्य और कोई मनुष्य नहीं है। जैसे अर्जुनके कृष्ण सारथी हैं, वैसे ही आप कर्णके सारथी बन जाइये। कृष्णकी सहायतासे अर्जुन जो जो युद्धमें कार्य्य करते हैं, सो सब प्रत्यक्ष ही है। जैसे अर्जुन इस समय शत्रुओंको मार रहे हैं, वैसे कभी नहीं मारते थे। यह केवल कृष्णकी सहायताकाही फल है। कृष्णके सहित अर्जुन हमारी सेना मारते और भागते देखते हैं। हे महातेजस्वी! अब आपका और कर्णका भाग शेष है। सो अब आप कर्णके सहित अपने भागको कीजिये। जैसे अरुणके सहित सूर्य्य अन्धकारका नाश करते हैं, वैसे ही आप कर्णके साथ पाण्डवोंकी सेनाका नाश करो। जैसे दो सूर्य्य उदय होकर अन्धकारका नाश करते हैं, वैसे ही आप और कर्ण [illegible] का नाश कीजिये। जैसे अरुण और [illegible] अन्धकारका नाश होता है, वैसे ही [illegible] पाञ्चाल और सृञ्जय [illegible] पाण्डवों सहित [illegible] जायगा। [illegible] हैं, वैसे ही आप [illegible]। [illegible] न कभी [illegible]। जैसे [illegible] अर्जुनकी [illegible] है, वैसे ही युद्धमें

आप कर्णकी रक्षा कीजिये। हे पृथ्वीनाथ! आपको सारथी बनाकर कर्ण देवतोंके सहित इन्द्रकी भी जीत सकते हैं, फिर पाण्डवोंकी तो कथा ही क्या है! आप हमारे वचनमें कुछ सन्देह न कीजिये।

सञ्जय बोले, हे राजन्! दुर्य्योधनके ऐसे वचन सुन शल्य क्रोधसे भर गये, भौंहें चढ़ाकर हाथोंको बार बार भूमिमें मारने लगे। शल्यके नेत्र क्रोधसे लाल होगये, और दुर्य्योधनको दपट कर ऐसा बोले। हे गान्धारी पुत्र। तुझे हमारा कुछ विश्वास नहीं है; जो निरादर करके कहता है, कि कर्णके सारथी बनो। तू हमसे कर्णको अधिक जानकर उसकी प्रसंसा कर रहा है, परन्तु मैं राधापुत्रको किसी अवस्थामें अपने समान योद्धा नहीं समझता। तुम हमसे किसी योधाको इस सेनामें अधिक बताओ, उसीको हम जीतकर अपने देशको लौट जायंगे, अथवा इस सब युद्धका भार हमारे शिर पर दो और फिर हमारे पराक्रमको देखो, किस प्रकार हम तुम्हारे शत्रुओंका नाश करते हैं। हम लोग अपने आदर और निरादरको देखकर काम करते हैं। तुम हमसे किसी प्रकारकी शङ्का मत करो, हम तुम्हारे शत्रुओंका नाश करेंगे। तुम युद्धमें हमारा निरादर मत करो, हमारे वज्रके समान हाथोंको देखो, तुम हमारे विचित्र धनुषको, सर्पके समान बाणोंको और वायुके समान तेज चलनेवाले घोड़ेयुक्त रथको देखो। हे गान्धारीपुत्र! हमारी इस सोनेसे भूषित गदाको देखो, यह सब वृक्षों और पर्व्वतोंको तोड़ सक्ती है। मैं अपने तेजसे समुद्रको भी सुखा सक्ता हूं। ऐसे समर्थ मुझको तुम राधापुत्रके रथ हांकनेको कहते [illegible] महात्मा पापीका दास नहीं होगा [illegible] प्रीतिसे आये हुए महात्मा [illegible] उसका ऐसा है, वह पाप [illegible]

ब्राह्मणोंको मुखसे चत्रीको हाथोंसे, वैश्योंको जङ्घासे और शूद्रलोगोंको पैरोंसे ब्रह्माने बनाया है। उन्हीं चार वर्णोंसे अनेक जाति उत्पन्न हुई हैं। हे भारत! ये चारो वर्ण तथा और जातियोंकी भी रचा, पालन और पोषणके लिये, चत्रियोंको ब्रह्माने बनाया है। पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, कराना, दान देना और शुद्ध दान लेना ये ब्राह्मणके कर्म्म है। धर्म्मसे प्रजाका पालन करना, वेद पढ़ना, यज्ञ करना और युद्धसे न हटना, यह चत्रियोंके धर्म्म है। खेती करना, पशुओंका पालना और व्यापार करना ये वैश्योंके कर्म्म है, और ब्राह्मण, चत्री, तथा वैश्यकी सेवा करना शूद्रका काम है। ब्राह्मण, और चत्रियोंकी सूत जाति सेवक है। चत्री कभी नहीं सूतकी आज्ञाको सुन सक्ता। मैं राजऋषियोंके कुल में उत्पन्न हुआ, अभिषिक्त किया गया, राजा महारथ, प्रसिद्ध और शत्रुओंके नाश करनेमें समर्थ हूं। सूतोंको उचित है, कि हमारी स्तुति करें। हे शत्रु नाशन! मैं ऐसा उत्तम होकर सूतपुत्रका रथ कैसे हांकूंगा? मैं अपने अपमानको सहकर फिर युद्ध नहीं करूंगा, अब हम तुमसे पूछ कर अपने घरको जाते हैं।

सञ्जय बोले, हे राजन्। ऐसा कह कर महावीर शल्य क्रोधमें भर कर राजोंके बीचसे उठ कर चले। फिर तुम्हारे पुत्रने शल्यको पकड़ लिया, और बहुत विनयपूर्वक शान्ति सहित अपना प्रयोजन सिद्ध करनेको ऐसे वचन बोले। हे शल्य। आप जो कहते हैं, सो सब सत्य है, परन्तु मेरा जो अभिप्राय है, सो सुनिये, हे पृथ्वीनाथ। कर्ण आपसे अधिक बलवान नहीं हैं, और न मैं आपसे किसी प्रकारको शङ्का करता हूं, क्योंकि मुझे निश्चय है कि जो आप कहेंगे सो कदापि मिथ्या नहीं होगा। आपके सब पुरुषा लोग सत्य बोलते थे, इसी लिये आपके गोत्रका नाम आर्तायनी है। आप शत्रुओंके हृदयमें कांटेके समान शालते रहते हैं। इसी लिये आपका नाम शल्य है; हे धर्मज्ञ! आपने जो पहले वरदान दिया था, कि हम तुम्हारा कल्याण करेंगे, उस अपने वचनको आज सत्य कीजिये। कर्ण अथवा हम आपसे अधिक बलवान नहीं हैं परन्तु आप घोड़ों की विद्याको जानते हैं, इसीसे हम आपको सारथी होनेको कहते हैं; मैं और सब जगत् कर्णको अर्ज्जुनके और आपको कृष्णके समान जानते हैं; हे पुरुषसिंह! कर्ण अर्ज्जुनसे शस्त्र विद्यामें और आप कृष्णसे घोड़ोंकी विद्यामें अधिक हैं। हे मद्रराज! आप कृष्णसे दूनी घोड़ोंकी विद्या जानते हैं।

शल्य बोले, हे गान्धारीपुत्र! तुमने जो सब सेनाके बीचमें हमें कृष्णसे अधिक कहा, इस लिये हम तुमसे प्रसन्न हुए, हे वीर! हम अब यशस्वी कर्णके सारथी बने, अब कर्ण निर्भय हो कर अर्ज्जुनसे युद्ध करें, परन्तु राधापुत्रके सङ्गमें एक प्रतिज्ञा कर लेता हूं; मेरी जो इच्छा होगी, सो कर्णको कहूंगा, परन्तु वह उत्तर नहीं दे सकेंगे।

सञ्जय बोले, हे राजन्! तुम्हारे पुत्रने और कर्णने शल्यको बातको स्वीकार कर लिया।

३२ अध्याय समाप्त।

दुर्य्योधन बोले, हे पृथ्वीनाथ! हे मद्रराज! देवासुर संग्राममें जो बात हुई थी सो आपसे हम कहते हैं सुनो। आप हमारी बातमें कुछ सन्देह न कीजिये। जब देवता और राचसोंका युद्ध हुआ था, हमने सुना है कि उस पहले युद्धमें तारकासुर दैत्योंका राजा था, तब देवतों ने दानवोंको जीत लिया था। उसके पश्चात तारकासुरके तीन बेटे शेष रह गये थे, उनके नाम ये हैं ताराच, कमलाच, विद्युन्माली। हे शत्रुनाशन! वे तीनों घोर तप करके अपने

[illegible] सखाने लगे, उनके तप, नियम, और [illegible] प्रसन्न होकर ब्रह्मा वरदान देनेको आये, उन तीनोंने ब्रह्मासे मांगा कि हमको कभी कोई न मार सके। उनके वचन सुन सब जगके [illegible] ब्रह्माने कहा, कि जगत्में कोई अमर नहीं रहता, इस लिये तुम दूसरा वरदान मांगो। तब उन दैत्योंने परस्पर सम्मति करके ब्रह्माको प्रसन्न करके कहा कि, हे पितामह! यदि आप हम लोगोंको वरदान देना चाहते हैं, तो हम लोग जगत्में अपने तीन नगर बनाकर रहैं। हे पापरहित! हमारे नगर हजार वर्षतक जगत्में घूमा करें और फिर मिल जाया करें; जो हमारे तीनों नगरो [illegible] एकही बाणसे नाश कर सके, उसके हाथसे हमारी मृत्यु हो। ब्रह्मा यही वर देकर स्वर्ग [illegible] गये। तब वे तीनों दैत्य भी प्रसन्न होकर अपने घर गये, फिर दैत्य और दानवोके [illegible] मय नामक दैत्यको तीन नगर [illegible] आज्ञा दी। तब मयने अपनी विद्याके [illegible] सोने, चांदी और लोहेके तीन नगर बनाए। हे पृथ्वीनाथ! सोनेका नगर स्वर्गमें चांदीका आकाशमें और लोहेका नगर पृथ्वीमें [illegible]। एक एक नगर सौ सौ योजन लम्बा और [illegible] सौ योजन चौड़ा था, उनके भीतर [illegible], स्थान और तोरन बने थे। [illegible] मार्ग और अनेक सुन्दर स्थान [illegible] विचित्र नगरमें महात्मा [illegible] नगरमें कमलाक्ष और लोहेके [illegible] राजा हुआ। वे तीनों दैत्य- [illegible] राज्य करने [illegible] और दानव भी [illegible] दानव इन [illegible]

भोग देनेवाला तारकाक्षका हरि नाम एक महा बलवान पुत्र हुआ; उसने ऐसा घोर तप किया, जिससे ब्रह्मा प्रसन्न होगये, तो उसने ब्रह्मासे यह वरदान मांगा कि हमारे नगरमें अनेक बावड़ी बन जावें, उन बावड़ियोंके जलमें यह प्रताप रहै, कि जो शस्त्रसे मरा वीर उसमें पड़े तो जी जाय और बलवान होजावे, ब्रह्माने उसको यही वरदान दिया। हे राजन्! उसने अपने नगरमें आकर बावड़ी बनाई, उसका यह प्रताप होगया कि जो जिस रूपसे दैत्य मरे उसमें डालनेसे उसी रूपसे फिर जी जाता था। उन मरे हुए वीरोंको जिलाकर इसने तीनों लोकोंमें अपना राज्य कर लिया। तब ब्रह्माके वरदानके बलसे दैत्योंका नाश न होने लगा, तब देवतोंको बड़ा भय उत्पन्न होने लगा। तब राक्षसोंको लोभ और मोह उत्पन्न हुआ, लज्जा जाती रही और अनेक प्रकारके उपद्रव होने लगे, वरदानके अभिमानसे सब देवतोंको मार कर उनके स्थानोंमें आप विहार करने लगे। देवतोंके प्यारे बाग और ऋषियोंके पवित्र आश्रम और रमणीय नगरोंमें आप विहार करने लगे। इस प्रकार दुष्ट दानवोंने सब लोकोंकी मर्यादाका नाश करदिया। तब इन्द्र मरुत आदि देवतोंको सङ्ग लेकर त्रिपुरासुरसे लड़ने चले, वहां जाकर वज्रसे अनेक दिन लड़ते रहे, परन्तु राक्षसोंका नाश न हुआ, न नगरोंको तोड़ सके। तब इन्द्रने जाना कि ये नगर ब्रह्माके वरदानसे टूट नहीं सकते, ऐसा जानकर इन्द्र लौट आये. हे महाराज! इन्द्र सब देवतोंके सहित [illegible] ब्रह्माके निकट गये, उन्होंने [illegible] भगवान ब्रह्माको सिरसे प्रणाम किया और त्रिपुरासुरके मारनेका यत्न पूछा। [illegible] ब्रह्माने कहा, कि जिन्होंने [illegible] किया है वे हमारे भी [illegible] देवतोंका अप- [illegible]

हैं; मैं सब जगत्को समान समझता हूं, परन्तु अधर्म्मीको मारना धर्म्मीकी रक्षा करना ही हमारा प्रण है। जो कोई एक बाणसे उन तीनों नगरोंको नाश करै वही उनको मार सक्ता है। यह शक्ति सिवाय शिवके और किसीकी नहीं है; सो तुम लोग जगत् स्वामी बरदानदाता और महायुद्ध करनेवाले शिवजीसे प्रार्थना करो, वे सब दानवोंका नाश करेंगे। ब्रह्माके ऐसे बचन सुन और उनको सङ्ग ले सब देवता शिवकी शरण गये, देवता ऋषि और मुनियोंके सहित अपने मनको स्थिरकर शिव की स्तुति करने लगे।

जिनकी शक्तिसे सब जगत् व्याप्त है,जो सब भयोंको नाश करते हैं। देवता उन्हींकी स्तुति करने लगे, जो अनेक तपोंसे आत्माको जानते है, आत्मा सदा जिनके बशमें रहते हैं, उस जगत्कर्त्ता शिवको देवतोंने देखा। पापरहित तेजोंके समूह असाधारण शिवको देखकर अपनी इच्छानुसार शिवके रूपोंकी कल्पना करने लगे। तब सबने अपनी इच्छानुसार शिव-को देखा, एक देवता दूसरेको शिवके रूपसे देखने लगे, ऐसा देखकर देवतोंको बहुत आ-श्चर्य हुआ, और उन्होंने शिवको सर्व्वव्यापक जाना; शिवको देखकर सब देवताओं और ऋषियोंने शिवको शिरसे प्रणाम किया। शिवने उनको उठाकर कुशल पूछा, शिवजीने कहा तुम लोग अपने आनेका प्रयोजन कहो। तब देव-तोंने सावधान होकर कहा, कि आप देवतोंके देवता हैं इसलिये हम आपको प्रणाम करते है! हम लोग वनमाला और धनुषधारी शिव को प्रणाम करते हैं। हम स्तुति करने योग्य, स्तुतिकिये हुए, दक्षको यज्ञ नाश करनेवाले, प्रजापति और प्रजापतियोंके स्वामी आपको प्रणाम करते हैं। लाल वर्ण रुद्र, नीलकण्ठ, शूलधारी, अनन्त, मृगपुत्र और उत्तम शस्त्रोंसे युद्ध करनेवाले आपकी स्तुति करते हैं। योग्य शुद्ध, दक्ष प्रजापतिके नाश करनेवाले, दुःखको निवारण करने योग्य, ब्रह्मचारी आपको प्रणाम करते हैं। जगत्स्वामी अनन्तर जगतको नियमसे चलानेवाले, गजचर्म्मधारी, तप करनेवाले, व्रतधारी, और दिगम्बर शिवको प्रणाम करते हैं। स्वामकार्त्तिकके पिता, त्रिनेत्र उत्तम शस्त्र-धारी, दुखियोंका दुःख नाश करनेवाले और ब्राह्मणोंके वैरियोंको नाश करनेवाले, शिवको प्रणाम करते हैं। व्रत, मनुष्य, गौ और यज्ञोंके स्वामी शिवको प्रणाम करते हैं, गणोंके सहित त्रिनेत्रधारी आपको नमस्कार है। हे महातेजस्वी देव। हम लोग मन, वचन और शिरसे आपको प्रणाम करते हैं, आप हमारी रक्षा कीजिये। इस स्तुतिको सुनकर शिवजी बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे, कि हम तुम्हारा कौनसा काम करें?

२३ अध्याय समाप्त।

दुर्य्योधन बोले, हे राजन् शल्य! जब शिव देवता, ऋषि और पितरोंको अभय दान दे चुके, तब ब्रह्माने कहा, हे देव। हम आपके दिये हुए प्रजापति पदका भोग करते हैं। इसीसे हमने दानवोंको महा बरदान दिया है। हे जगन्नाथ। अब उन दानवोंने सब मर्यादायोंका नाश कर दिया। अब आपके सिवाय उन्हें कोई नहीं मार सक्ता। इस लिये अब आप उनके मारनेका उपाय कीजिये, हे शङ्कर। हे देवनाथ। सब देवता आपकी शरण आये है। और आप प्रसन्न होकर इनके शत्रुओंको मारिये। हे वरदान दायक। आपकी कृपासे सब जगत्को सुख होता है, आप शरण आयेको रक्षा करते हैं; इस लिये हम लोग आपकी शरण हैं।

शिवजी बोले, हम तुम्हारे शत्रुओंको मारेंगे परन्तु वे लोग बहुत सेनाके सहित रहते हैं।

[illegible] लिये हम अकेले नहीं मार सक्ते, तुम [illegible] इकट्ठे होकर हमारे आधे तेजसे इन सब दानवोंको मार डालो। देवता बोले, हम लोगोंने दानवोंका बल देखा है। हमारे [illegible] उनका बल दूना है। तब शिवजी बोले, जिन्होंने आपका अपराध किया है, वे सब मरनेके योग्य है। इसलिये हमारे आधे तेजसे इन सबको मार डालिये। तब देवता बोले, हम लोग आपके आधे तेजको सम्हाल नहीं [illegible] इस लिये आपही हम लोगोंके आधे तेजसे शत्रुओंका नाश कीजिये। तब शिवजी [illegible] बोले, यदि तुम लोग हमारे आधे तेजको नहीं धारण कर सक्ते हो तो हम ही तुम्हारे आधे तेजसे उनका नाश करेंगे।

हे राजेन्द्र! तब देवताने शिवके वचनोंको स्वीकार किया। और उनका आधा बल पानेसे शिवजी बहुत तेजस्वी होगये, देवताओंका तेज पानेसे शिव सबसे अधिक बलवान होगये। उसी दिनसे उनका नाम महादेव [illegible] गया। शिव बोले, हम धनुष धारण करके [illegible] तुम्हारे शत्रुओंका नाश करेंगे। तुम [illegible] हमारे रथ, धनुष और बाणको देखो, [illegible] त्रिपुरासुरका नाश करते हैं। देवता [illegible] हे [illegible]! हम लोग मूर्त्ति धारण [illegible] तेजस्वी रथ बनाते हैं। तब [illegible] देवतोंने शिवका रथ [illegible] चन्द्रमा रथके पहिये बने, [illegible] नाम [illegible], ब्रह्मा इस रथके [illegible] और [illegible] पर्वत [illegible] और [illegible] रथ बनो, मन्दरा- [illegible] पहियोंका नाभि [illegible] रथका परिवार, नारि [illegible] रथका इन्द्र [illegible] हुआ [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible]

समुद्र रथ बांधनेकी उत्तम रस्सी बनी, सप्तऋषियोंका मण्डल पहियोंकी हाल, गङ्गा, सिन्धु, सरस्वती और आकाश धुरी और जल, रथ बांधनेकी छोटी छोटी रस्सी। रात, दिन, वसंत ग्रीस, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर, काल और काष्ठा ये खटोला बने। तारे रथकी रक्षाके लिये जाल बने, धर्म्म, अर्थ और काम ये रथके तीनवांस बने, फूल सहित सब छोटे बड़े वृक्ष घण्टा बने; सूर्य्य, चन्द्रमा पहिये, रात दिन दोनो पक्ष अर्थात दोनो अङ्ग, सास लेते हुए धृतराष्ट्र आदि दश नागराजोंकी लगाम, और द्वापर युगका पहिया बनाया। सुवर्त्तक आदि मेघ खटोलेके नीचेका चमड़ा बनाए गए। नहुष, कालपृष्ठ, करकोटक, और धनञ्जय आदि सर्प घोड़ोंके बालबन्धन। दिशा और कोन घोड़ोंका रास, सन्ध्या, धृति, मधा, स्थिति सन्तति, ग्रह नक्षत्र तार सहित आकाश छतरी, इन्द्र, वरुण, यम और कुवेर चारो घोड़े; कृष्णपक्षकी चतुर्दशी शुक्लपक्षकी चतुर्दशी अमावस और पूर्णमासीकी रात्रि घोड़ोंकी लगाम और पितर लगामके काटे; धर्म्म, तप, सत्य, अर्थ ये रास, मन बिछौना और विद्या इस रथकी [illegible] बनी।

अनेक वर्ण उस रथकी विचित्र पताका जिन्हें पवन उड़ाने लगा। बिजली और इन्द्रधनुषके सहित वह रथ प्रकाशित होने लगा। वषट्कार, कोड़ा, गायत्री, [illegible], महात्मा शिवके [illegible] यज्ञोंके लिये वह बनाया है वही धनुष और सावित्री बड़ी मजबूत [illegible] बनी। [illegible] दिव्य रत्नभूषित [illegible] और निर्म्मल [illegible] बनाया, [illegible] [illegible] बनाया और [illegible] सहित मेघ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

देवतोंने महात्मा शिवसे कहा, हे पुरुषसिंह शल्य। देवतोंके वचन सुन और रथको तैयार देख देवतोंके सहित शिव उस रथपर बैठे और दिव्य शस्त्रोंको पास रख लिया। फिर आकाशको ध्वजाका वास मानकर उसपर बैलको बिठा दिया; ब्रह्मदण्ड, रुद्रदण्ड, कालदण्ड और सवज्वर चारों ओरसे सब दिशाओंको प्रकाशित करते हुए रथकी रक्षा करने लगे, अथर्वा और अङ्गिरा मुनि रथके पहियोंके रक्षक बने। ऋग्वेद, सामवेद, और पुराण आगे चलनेलगे। इतिहास यजुर्वेद पीछेसे रथकी रक्षा करने लगे, उत्तम वाणी और सब विद्या पास बैठीं। हे राजेन्द्र शल्य। स्तोत्र वषट्कार औ स्वधाकार शिवके मुखमें शोभित होगये। शिवने छओं ऋतुओंके सहित बर्षको विचित्र धनुष बनाया। भगवान रुद्र ही काल हैं, बर्ष उनका धनुष है, रात्रि उनको रोदा है, इसी लिये रात्रियोंके नाम कालरात्रि और रुद्ररात्रि है। चन्द्रमा, विष्णु और अग्नि तीनो बाण बने। अग्नि और चन्द्रमा तेजके कर्त्ता हैं। और विष्णु भो जगत्के कर्त्ता है, और वेही विष्णु अनन्त तेजस्वी शिवको आत्मा है; इसी लिये जगत्को वैष्णव कहते हैं। इसो लिये इन तीनोंने शिवको धनुषके रोदेको नहीं छूआ। तब शिवने क्रोधसे उन बाणोंको छोड़ा, भृगु और अङ्गिरा उस घोर क्रोधको अग्निका रूप होगये। वे बाण उस क्रोधकी अग्निसे प्रकाशित होगये। शिव भी लाल नेत्र सहस्रों सूर्य्योंके समान तेजस्वी और भयङ्कर होगये। धर्म्म, अधर्म्म युक्त ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, और शूद्रोंके नाश करनेवाले तथा पापोंको छुड़ानेवाले शिव सब देवतोंके तेजसे बहुत प्रकाशित होगये, घोर रूपी गण और अपने गुणोंसे भगवान शिव आप ही प्रकाशित होने लगे। उसी शिवके शरीरोंमें सब जगत् स्थित है। हे राजन्! सब चर और अचर उसीसे स्थिर हैं; उस रथको देखकर शिवने कवच पहना और धनुष पर वही दिव्य विष्णु, चन्द्रमा, और अग्निरूपो बाण चढ़ाए। हे राजन्! फिर देवनोंने उत्तम सुगन्ध भरे वायुको शिवके पास भेजा। अनन्तर शिव देवतोंको डराते और पृथ्वीको कंपाते हुए उस रथपर बैठे। रथ पर बैठे हुए शिवकी देवता, गन्धर्व, अप्सरा और सिद्ध स्तुति करने लगे। नाचनेवाली अप्सरा गन्धर्व और ब्रह्मऋषियोंकी स्तुति सुनते हुए खड्ग, धनुष और कवचधारी वर दान देनेवाले शिवजीने हंसकर देवतोंसे कहा कि सारथी कौन बनेगा? देवता बोले, हे देवराज! आप जिसको सारथी बनाना चाहें वही आपके रथको हांकेगा। तब शिवने कहा तुम लोग आप ही हमसे श्रेष्ठ देवका विचार कर सारथी बनाओ। महात्मा शिवके वचन सुन सब देवता ब्रह्माके पास गये, और उन्हें प्रसन्न कर ऐसे बोले, हे देव! आपने जैसा कहा था हम लोगोंने शिवसे वैसा ही कहा, इस लिये शिव हमसे प्रसन्न होगये। हम लोगोंने अनेक विचित्र शस्त्रोंके सहित एक रथ भी बना लिया है, परन्तु उसका सारथी कौन होगा; सो हम नहीं जानते। हे देवश्रेष्ठ। अब आप कोई उत्तम सारथी बतलाइये और अपने वचनको सत्य कीजिये। आपने पहले हम लोगोंसे कहा था, कि हम तुम लोगोंका कल्याण करेंगे, अब उस बचनको सत्य कीजिये। हे देव! वह शत्रुओंको डरानेवाला घोर रथ हम लोगोंने बना लिया है। शिव उसमें बैठकर और दानवोंको डराकर युद्ध करेंगे; इसी प्रकार चारो वेद घोड़े बने हैं। महात्मा शिवने वन और पर्व्वतोंके सहित पृथ्वी रथ और तारा आदि सब रथ सामग्री बनाए हैं। अब केवल सारथी होका विलम्ब है। हे देव! रथ, घोड़े और योद्धाके अनुसार जो सब देवतोंमें श्रेष्ठ हो उसे सारथी बनाइये। कवच, धनुष और बाण आदि सब चीजें बन चुकी हैं। अब आपके सिवाय किसीको सारथी

सदा रहते हैं। आप सब देवतोंमें श्रेष्ठ और जगतके स्वामी हैं, इस लिये आपही शिवके घोड़ोंको हांकिये! आपके सारथी बननेसे देवतोंको विजय और दानवोंका नाश होगा।

हमने सुना है कि देवतोंके ऐसे वचन सुन ब्रह्मा सारथी बननेको प्रसन्न होगये।

ब्रह्मा बोले, हे देवताओ! जो तुमने कहा उसको हम मानते हैं! अब हम युद्ध करते हुए, शिवके घोड़ोंको हांकेंगे। तब सब जगतके कर्त्ता भगवान् ब्रह्मा देवतोंकी प्रार्थनासे लोकपूजित शिवके सारथी बने, ब्रह्माके बैठते हुए सब घोड़ोंने प्रणाम किया। तब तेजस्वी शिवजी भी रथ पर बैठे। तब भगवान् ब्रह्माने कोड़ा और रास हाथमें लेकर उन वायुके समान वेगवाले घोड़ोंको उठाया। तब शिवने ब्रह्मासे कहा तुम भी रथमें बैठो। तब शिवने विष्णु, चन्द्रमा और अग्नि रूपी बाणको धनुष पर धारण किया। उससे सब दानव कांपने लगे, और ऋषि शिवकी स्तुति करने लगे। खड्ग, बाण और धनुषधारी शिवकी देवता गन्धर्व और अप्सरा स्तुति करने लगे। शिवने रथमें बैठ कर तीनों लोकोंको अपने तेजसे प्रकाशित किया। फिर इन्द्रादिक देवता बोले, तुम मनमें यह मत जानो कि त्रिपुरासुर नहीं मरा और किसी प्रकारका भय मत करो, अब हम [illegible] त्रिपुरासुरको मारते हैं। देवतोंके वचन सुन [illegible] जो आप कहते हैं सो सब सत्य होगा। [illegible] निश्चय होगया कि त्रिपुरासुर मारा गया। ऐसा कहकर देवता बहुत [illegible] और सब देवतोंके सहित शिव चले। [illegible] अपने पार्षदोंके सहित उस [illegible] लगे। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लगे। [illegible] [illegible]

देवता प्रसन्न हुए। हे राजन्! अनेक ऋषियोंने शिवका तेज बढ़ानेको अनेक स्तोत्र बनाये। अनेक गन्धर्व अनेक प्रकारके बाजे बजाने लगे। जब वरदान देनेवाले शिव दानवोंको मारने चले, तब सब देवता साधु साधु कहने लगे। शिवने ब्रह्मासे कहा, हे देवराज! तुम सावधान होकर घोड़ोंको हांको और शत्रुओंको मारते हुए हमारे बाहुबलको देखो। तब ब्रह्माने वायु और मनके समान शीघ्र चलनेवाले घोड़े आकाशको उड़ते हुएके समान शीघ्र चलाए और दानवोंके नगरसे पहुंचे। मार्गमें शिवका बैल अपने शब्दसे दिशा दिशावोंको पूरित करने लगा। बैलका भयङ्कर शब्द सुनकर दानव युद्ध करनेको भी खड़े होगये। तब शूलधारी शिवको बड़ा क्रोध हुआ। जब शिवने बाणको धनुष पर चढ़ाया, तब तीनों लोक कांपने लगे, और घोर शकुन होने लगे। अग्नि चन्द्रमा और विष्णुके तेजसे तथा ब्रह्मा, शिव और रथके वेगसे सब जगत् कांपने लगा। तब विष्णु बालरूप धारण कर उस बाणसे निकले, तब वह रथ नाचकर दबने लगा और दानव नाचने लगे। तब शिव वेगसे गर्जने लगे। बैलके शिर और घोड़ोंकी कमर पर बैठ शिवने दानवोंके नगरको देखा, हे नरोत्तम! शिव बैल घोड़े दोनों पर चढ़े थे, उन्होंने बैलके खुरको बीचसे काट दिया, उसी दिनसे गौके खुर फटे रहते हैं। इसी प्रकार शिवने घोड़ोंके स्तन काट दिये उस दिनसे घोड़े स्तनहीन होते हैं। अद्भुत कर्म करनेवाले शिवके बलसे घोड़े पीड़ित होगये। तब शिवने धनुष पर बाण चढ़ाया और पाशुपत मन्त्रसे युक्त करके त्रिपुरासुरकी चिन्ता करी। हे महाराज! जब शिवने धनुष चढ़ाया तब वे तीनों नगर इकट्ठे होगये। उसी दिनसे उसका नाम त्रिपुर हुआ, तब सब देवता शिव और महा- [illegible]

लगे। उस समय महा तेजस्वी शिवने अपने धनुषको खींचा। हे महाभाग! तब शिवने त्रिपुरासुरकी ओर वह तीन लोक श्रेष्ठ बाण चलाया। उस बाणके छूटते ही वे तीनों नगर नष्ट होगये, और घोर शब्द होने लगा, तब शिवने उन तीनों नगरोंको भस्म करके पश्चिमके समुद्रमें डाल दिया। शिवने त्रिपुरासुरको मार तीन लोकके कल्याणके लिये तब सब दानवोंको मार डाला, फिर अपने क्रोधसे उत्पन्न हुई अग्निसे कहा तुम हमारे पास चले आओ। तीनों लोकोंको भस्म मत करो। ऐसे कहकर अग्निको अपने पास बुला लिया। अनन्तर सब देवता और ऋषि सावधान हो-कर महातेजस्वी शिवकी स्तुति करने लगे। अनन्तर शिवको आज्ञा लेकर ब्रह्मादिक देवता अपने अपने घर चले गये। इस प्रकार देवता असुर और मनुष्योंके स्वामी जगत्कर्त्ता शिवने त्रिपुरासुरको मारा। इस प्रकार अविनाशी जगत्कर्त्ता भगवान ब्रह्माने शिवके घोड़े हांके थे। इसी प्रकार आप भी महात्मा राधापुत्रके घोड़े हांकिये। हे राजेन्द्र! आपहीसे हमें राज्य और जीवनकी आशा है। आपहीको सारथी बनाकर कर्ण युद्धमें विजय पावेंगे। तुम्हारे बलसे हम, कर्ण और हमारा राज्य स्थिर है, इस लिये आप कर्णके घोड़े हांकिये। अब हम आपसे एक दूसरा इतिहास कहते हैं, यह हमारे पितासे एक ब्राह्मणने कहा था। इस प्रयोजन भरे इतिहासको सुनकर आप बिना विचारे कर्णके सारथी बनिये। भार्गवके कुलमें यमदग्नि नाम एक मुनि हुए, उनके महाते-जस्वी जगतप्रसिद्ध परशुराम नामक पुत्र हुआ, परशुराम अपनी इन्द्रियोंको वशमें करके शस्त्रो के लिये शिवका घोर तप करने लगे, उनकी भक्ति और नियमसे प्रसन्न होकर तथा अन्तः-करणका अभिप्राय जानकर शिव प्रगट हुए।

शिवजी बोले, हे परशुराम! हम तुम्हारा अभिप्राय जानकर प्रगट हुए, अब तुम अपनी आत्माको पवित्र करो, तुम्हारा प्रयोजन भी सिद्ध होगा। हे भार्गव। जब तुम पवित्र होजा ओगे, तब हम तुम्हें शस्त्र देंगे, क्योंकि अशुद्ध और अयोग्य मनुष्यको शस्त्र भस्म कर देता है। शूलधारी देवतोंके देवता महात्मा शिवके वचन सुन परशुराम शिरसे प्रणाम कर बोले, हेदेव! यदि आप हमें योग्य समझें तो शस्त्र दीजिये।

दुर्य्योधन बोले, तब परशुराम नियम संयम होम, मन्त्र और बलिदानोंसे अपनी आत्माको पवित्र करने लगे, तब महात्मा परशुराम फिर बलि, होम और मन्त्रोंसे पूजा करने लगे। इस प्रकार बहुत दिन तपस्या करनेसे शिव बहुत प्रसन्न हुए, तब शिवने पार्व्वतीसे इनकी प्रशं- करके कहा। कि परशुराम मेरा पूरा भक्त औ विश्वासी है, इसी प्रकार देवता और पितरों आगे भी शिवने उनके गुण वर्णन किये। उ समय दानवोंका बहुत बल बढ़ गया ह उन्होंने अपने बल और अभिमानसे सब दे लोकों जीत लिया। तब सब देवतोंने मिलक उनके मारनेके यत्न किये, परन्तु मार न सके। तब सब देवता शिवके पास गये, और उ प्रसन्न करके कहने लगे कि, हे देव! अ हमारे शत्रुओंका नाश कीजिये। तब शिव प्रतिज्ञा की कि, हम तुम्हारे शत्रुओंका ना करेंगे। अनन्तर परशुरामसे कहा, हे भार्गव तुम देवतोंके शत्रुओंको मारो, इनके मारने जगत्की और हमारी प्रसन्नता होगी। शिव बचन सुन परशुराम त्रिनेत्रधारी शिवजी बोले, हे वरदायक देवराज! बिना श जाने हमारी क्या शक्ति है जो हम म शस्त्रधारी दानवोंसे युद्ध करने जायं

शिवजी बोले, हे परशुराम! तुम हमा आज्ञासे युद्ध करने जाओ, तुम हमारी कृपा सब दानवोंका नाश करोगे, शत्रुओंके ना करनेसे तुम्हें बहुत गुण प्राप्त होंगे। शिवके ए

[illegible] परशुरामने स्वीकार किया । अनन्तर [illegible] कराकर परशुराम युद्ध करने चले, और दानवोंसे बोले, हे अभिमानसे [illegible] हुए मतवाले दानवो । तुम लोग हमारे [illegible] युद्ध करो, हमें तुम लोगोंको जीतनेके लिये भगवान शिवने भेजा है । उनके ऐसे वचन [illegible] युद्ध करने लगे । तब उन सबको युद्धमें [illegible] भृगुकुलश्रेष्ठ परशुरामने उन सबको [illegible] वज्रके समान बाणोंसे मारडाला, और [illegible] दानवोंके बाणोंसे परशुरामके शरीरमें भी [illegible] घाव लगे । तब परशुराम शिवके पास गये । शिवने उनके सब घाव अच्छे कर दिये और उनके इस कर्मसे प्रसन्न हुए और उनको [illegible] प्रकारके वरदान दिये. और प्रसन्न होकर कहा कि तुम हमसे अब दिव्य शस्त्रोंको [illegible] करो । हे भृगुनन्दन । दानवोंके शस्त्र [illegible] जो तुम्हारे शरीरमें घाव हुए थे, उनको [illegible] निश्चय हुआ कि तुमने मनानुरूप कर्म किया । अब तुम अपनी इच्छानुसार हमसे [illegible] करो ।

[illegible] बोले. हे राजन् शल्य ! तब शिवने परशुरामको [illegible] और इच्छानुसार वरदान दिये । [illegible] परशुराम शिवसे वरदान और [illegible] पाकर शिवको प्रणाम करके और [illegible] पाकर, अपने घरको चले गये । इस [illegible] मुनिने हमारे पितासे कहा [illegible] [illegible]

समान तेजस्वी सिंहपुत्रको हरिणी कैसे उत्पन्न कर सक्ती है ? देखो शत्रुनाशन कर्णकी छाती कितनी ऊंची है ? हे राजेन्द्र । प्रतापी कर्ण साधारण मनुष्य नहीं हैं । वे परशुरामके शिष्य और महा प्रतापी हैं ।

३४ अध्याय समाप्त ।

दुर्य्योधन बोले, इस प्रकार भगवान सर्व्व लोककर्त्ता ब्रह्माने शिवके घोड़े हांके थे, और शिवने अधिक गुणवाले ब्रह्माको अपना सारथी बनाया था । तैसे ही हम लोगोंने आपको कर्णसे अधिक गुणवान जानकर उनका सारथी बनाया है । जैसे ब्रह्माने शिवके घोड़े हांके थे, तैसे ही आप भी महातेजस्वी राधापुत्रके घोड़े हांकिये ।

शल्य बोले, हे नर श्रेष्ठ । जैसे ब्रह्माने शिवके घोड़े हांके थे, सो कथा मैंने भी बहुत बार सुनीथी । जैसे शिवने सब राक्षसोंको एक बाणसे मारा था, ये भी हम जानते हैं । जैसे भगवान ब्रह्मा शिवके सारथी बने थे, इस कथाको कृष्ण भी अच्छी भांतिसे जानते हैं । यही जान कर कृष्ण अर्ज्जुनके सारथी बने हैं । वे दोनों ब्रह्मा और शिवके समान मिले हैं । यदि अर्ज्जुनको कर्ण मार डालेंगे, तब कृष्ण आप ही युद्ध करने लगेंगे । अर्ज्जुनके मरनेके पश्चात् महात्मा कृष्ण शङ्ख, चक्र और गदा लेकर तुम्हारी सेनाका नाश करेंगे । हे राजन् ! कृष्णको क्रोध भरे देख कोई तुम्हारी सेनाका वीर युद्धमें खड़ा न रहेगा ।

[illegible] बोले, हे शत्रुनाशन । ऐसे वचन सुन महा पराक्रमी दुर्य्योधन बोले, हे महाबाहो । [illegible] [illegible]

युद्धमें घटोत्कच किस प्रकार भागा था, उसने अनेक माया करीं, तोभी कर्णके हाथसे जीता न बचा। अर्जुन भी कर्णसे युद्ध नहीं कर सक्ते, अर्जुन इनसे सदा डरते रहते हैं। भीमसेनको जीत कर इन्होंने धनुषके कोनेसे पकड़ लिया था! हे राजेन्द्र। इन्होंने महारथी नकुल और सहदेवको दरिद्रके समान जीत लिया था। इन्होंने यदुकुलश्रेष्ठ महापराक्रमी सात्यकिको जीतकर किसी विशेष कारणसे जीता छोड़ दिया था। इन्होंने महारथ धृष्टद्युम्नका रथ काट दिया था, और उनके सहित सब सृञ्जयवंशी क्षत्रियोंको जीत लिया था। इन्होंने सबको युद्धमें जीता है। इन महारथ कर्णको पाण्डव लोग किस प्रकार जीत सकेंगे? सब विद्या और शस्त्रोंके जाननेवाले कर्ण आपको सारथी बनाकर वज्रधारी इन्द्रको भी जीत सक्ते हैं। आपके समान पृथ्वी पर बलवान और शस्त्र-विद्या जाननेवाला और कोई नहीं है। आप शत्रुओंके हृदयमें कांटेके समान दुःख देते हैं, हे राजन्! इसीलिये आपका नाम शल्य है। आपके पराक्रमके आगे कोई यादव युद्धमें नहीं ठहर सकते, आपके आगे कृष्ण क्या हैं? और अर्जुनके मरनेसे तो और भी बलहीन होजायंगे। जैसे अर्जुनकी आपत्तिके समय कृष्ण सेनाको स्थिर रखते हैं, तैसे ही आप भी कर्णकी आपत्तिके समय हमारी सेनाकी रक्षा कीजियेगा। आप पाण्डवोकी सेनाको क्यों नहीं मारेंगे? हम आपहीकी कृपासे राज्य पानेकी इच्छा करते हैं। हम अपने बीर भाई और राजोंके सहित आपकी कृपासे सुख भोगनेकी इच्छा करते है।

शल्य बोले, हे प्रिय गान्धारीपुत्र! तुम जो सब सेनाके आगे हमें कृष्णसे अच्छा कहते हो, इसीसे हम तुम्हारे ऊपर प्रसन्न है। हे वीर! अब हम अर्जुनसे युद्ध करते हुए महात्मा राधापुत्रके सारथी बनते हैं, परन्तु हम कर्णसे एक प्रतिज्ञा कराना चाहते हैं। हमारी जो इच्छा होगी सो हम इन्हें कहेंगे। शल्यके ऐसे बचन सुन दुर्य्योधन बहुत प्रसन्न हुए और कर्णसे मिले फिर कर्णकी प्रशंसा करके बोले, जैसे इन्द्र दानवोंको जीतते हैं, ऐसे ही तुम सब पाण्डवोंको जीतो। कर्ण यह सुनकर कि शल्य हमारे सारथी बनेंगे, बहुत प्रसन्न हुए और दुर्य्योधनसे बोले, हे राजन्! शल्य प्रसन्न होकर नहीं बोलते, इस लिये आप इन्हें मीठी वाणीसे फिर प्रसन्न कीजिये। तब सब शस्त्रोंके जाननेवाले बुद्धिमान महा पराक्रमी राजा दुर्य्योधन मद्रराज शल्यसे बोले।

राजा दुर्य्योधन मेघके समान गम्भीर वाणीसे कहने लगे। हे शल्य! अब कर्ण अर्जुनसे युद्ध करनेको जाते हैं। हे राजन्! कर्णकी इच्छा है कि पाण्डवोंके सब वीरोंको मारकर अर्जुनको मारें, इस लिये आप उनके घोड़ोंको हांके। जैसे कृष्ण अर्जुनके सारथी और मन्त्री हैं, तैसे ही आप भी कर्णके सारथी बनो, हम यह भिक्षा आपसे बार बार मांगते हैं; जैसे कृष्ण अर्जुनकी रक्षा करते हैं; तैसे ही आप भी राधापुत्रकी रक्षा कीजिये।

सञ्जय बोले, तब राजा शल्य बहुत प्रसन्न होकर और दुर्य्योधनका हाथ पकड़ बोले, हे गान्धारीपुत्र। यदि तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है, तो तुम्हें प्रसन्न करनेके लिये हम सब कुछ करेंगे। हे भरतकुलश्रेष्ठ। हम जिस कामको कर सकते हैं सो तुम प्रसन्न होकर हमसे कह दिया करो, और युद्धमें जो हम कठोर या कोमल बचन कहैं उसको तुम और कर्ण क्षमा करना।

कर्ण बोले, हे मद्रराज! जैसे शिवके ब्रह्मा और अर्जुनके कृष्ण सारथी हैं, वैसे ही तुम हमारे सारथी बनो। शल्य बोले, हमारी यह प्रतिज्ञा है कि अपनी प्रशंसा दूसरोंकी निन्दा अथवा अपनी निन्दा दूसरोंकी प्रशंसा नहीं

[illegible]रते । हे विद्वन् ! तुम्हारे निश्चयके लिये हम [illegible] कहते हैं यद्यपि उसमें हमारी प्रशंसा [illegible] तौभी तुम सुनो । मैं इन्द्रके सारथी मात-[illegible] समान घोड़ोंका हांकना, फिराना, [illegible]ड़ाना, पहचाना और उनके रोगोंकी चिकि-[illegible] जानता हूं । हे पापरहित सूतपुत्र ! [illegible] तुम अर्जुनसे युद्ध करोगे, तबमें तुम्हारे घोड़ोंको हाकूंगा, तुम निश्चिन्त रहो ।

३५ अध्याय समाप्त ।

— ———

दुर्योधन बोले, हे कर्ण ! जैसे इन्द्रके मातली सारथी हैं, तैसे ही शल्य तुम्हारे सारथी बनेंगे, हे [illegible] बहुत अधिक गुणवान हैं ; जैसे मातलि घोड़ोंको हाकते हैं तैसे ही शल्य भी घोड़े हांकना जानते हैं । तुम जहां योद्धा और शल्य सारथी तहां अर्जुन अवश्य हो [illegible] जावेंगे ।

[illegible] बोले, मद्रराज शल्यके ऐसे वचन [illegible] प्रतापसे दुर्योधन बोले, हे राजन् शल्य ! [illegible] होते ही आपको युद्धमें जाना होगा । [illegible] होगया आप राधापुत्रके घोड़े [illegible] । [illegible] आपसे रक्षित होकर युद्धमें अर्जु-[illegible] मार ले. ऐसा कहकर दुर्योधनने शल्यको [illegible] दिया और शल्यने घोड़ोंकी [illegible], तब कर्णने शल्यसे कहा । हे [illegible] तुम हमारे रथको शीघ्र तैयार करो । [illegible] समान विशाल रथको [illegible] कि रथ तैयार है । [illegible] विधिपूर्वक उस रथकी पूजा [illegible] [illegible] [illegible] रथपर चढ़े और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

मेघके समान शोभित होने लगी. एक रथपर बैठे कर्ण और शल्य अग्नि और सूर्य्यके समान शोभित हुए । वह रथ अग्नि और बिजलीके सहित मेघके समान शोभित हुआ, जैसे ऋषि और मुनियोंकी स्तुति सुनकर अग्नि और इन्द्र प्रसन्न होते हैं । तैसे ही कर्ण और शल्य प्रसन्न हुए, तब शल्यने कर्णके घोड़ोंकी रास पकड़ी । कर्ण रथपर बैठकर अपने धनुषको घुमाने लगे, उस समय धनुष बाणधारी कर्ण सूर्य्यके समान शोभित हुए, महातेजस्वी कर्ण रथमें बैठकर मन्दराचलपर उदय होते हुए, सूर्य्यके समान् शोभित होने लगे । युद्धको जाते हुए महातेजस्वी कर्णसे दुर्योधन बोले, जो कर्म भीष्म और द्रोणाचार्य्यने भी नहीं किया, सो घोरकर्म्म तुम युद्धमें आज करो । हम जानते थे कि भीष्म और द्रोणाचार्य्य महारथ हैं, यह भी मुझको निश्चय था कि, वे दोनों पाण्डवोंको मारेंगे, हे वीर ! इस घोर युद्धमें इन दोनोंने जो कर्म्म नहीं किया, तुम उस घोर कर्म्मको करो । हे राधापुत्र ! तुम दूसरे इन्द्रके समान युद्ध करो , चाहे युधिष्ठिरको पकड़ लो, चाहे अर्जुनको मार डालो, चाहे भीमसेन, नकुल, सहदेव इनमेंसे किसी एकको मार डालो, इनके मरनेहीसे हमारी विजय होगी । ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे, तुम युद्ध करो पाण्डवोंके सब प्रधान वीरोंको मारो । उसी समय जैसे आकाशमें मेघ गरजते हैं तैसेही सेनामें अनेक भेर और नगाड़े बजने लगे । महारथ कर्णने दुर्योधनके वचनको स्वीकार किया । फिर बुद्धि-मान [illegible], हे महाराज ! आप हमारे [illegible] युधिष्ठिर, भीम, [illegible], [illegible], और [illegible] मारेंगे । हे [illegible] [illegible] पाण्ड-[illegible] और [illegible] [illegible]

शल्य बोले, हे सूतपुत्र। सब शस्त्र जाननेवाले महापराक्रमी पाण्डवोंकी निन्दा क्यों करता है? सब पाण्डव कभी युद्धमें नहीं हटते, वे महापराक्रमी और बलवान हैं; उन्हें कोई नहीं जीत सकता, वे साक्षात इन्द्रसे भी नहीं भय करते। हे राधापुत्र! जब तू मेघ और बिजलीके समान अर्जुनके धनुषका शब्द सुनेगा तब ऐसा नहीं कहेगा। जब तुम देखोगे कि भीमसेन हाथियोंकी सेनाका नाश कर रहे हैं, तब ऐसा न कहोगे, जब तुम देखोगे कि युधिष्ठिर, नकुल और सहदेवने अपने बाणोंसे मेघके समान आकाशको छा लिया है, तब ऐसा नहीं कहोगे, जब तुम अनेक राजोंके शत्रुओंको मारते देखोगे तब ऐसा न कहोगे।

सञ्जय बोले, मद्रराज शल्यके वचनोंका निरादर कर कर्णने कहा चलो चलो।

३६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! महाधनुषधारी कर्णको युद्धकी ओर जाते देख कौरवोंकी सेना प्रसन्न हो गर्जने लगी, तब अनेक प्रकारके भेर और नगारे बजने लगे। धनुषोंकी टङ्कार होने लगा, और घोड़े, हाथी चिंघाडने लगे, तुम्हारे पुत्र मृत्युका निश्चय करके युद्ध करनेको चले। हे राजन्! जिस समय कर्ण युद्ध करनेको चले, तब सब योद्धा प्रसन्न हुए और पृथ्वी हिलने लगी। कर्णके चलते ही सातों महाग्रह दीखने लगे, तारे टूटने लगे, दिशा जलने लगीं, बिना मेघ बिजली गिरने लगी, वायु कठोर चलने लगा, हरिण और पक्षी तुम्हारी सेनाके बाईं ओर रोने लगे। उस समय और भी अनेक भयानक अशकुन होने लगे, कर्णके दौडते हुए घोड़े बैठ गये, आकाशसे भयङ्कर हड्डी वर्षने लगी, शस्त्र आपसे आप जलने लगे, ध्वजा कांपने लगीं, हाथी घोडोंके आंखोंसे आंसू बहने लगे। इसी प्रकार और भी अनेक प... द्भुत हुए, जिनसे जाना गया कि कौरवोंका ... होगा परन्तु प्रारब्धवशसे किसीने उन ... शकुनोंको न गिना और जाते हुए कर्णको ... कहने लगे और सबने जाना कि पाण्डवों... जीत लिया।

हे राजन्! अनन्तर सूर्य और अग्नि... समान तेजस्वी कर्ण अपने रथपर बैठकर भी... और द्रोणाचार्यका निरादर करते हुए ... और अभिमानसे भरकर तथा अर्जुनके परा... क्रमको विचारकर शल्यसे बोले, मैं धनुष... समेत जब रथमें बैठता हूं तब साक्षात् वज्रधारी इन्द्रसे भी नहीं डरता, अब भीष्म और द्रोण... मरा देख मैं घोर युद्ध करूंगा। यद्यपि गिरि... और इन्द्रके समान पराक्रमी शत्रुओंकी सेना... को मारनेवाले भीष्म और द्रोणाचार्य म... गये, तौभी मैं युद्धसे कुछ नहीं डरता। मुझे... आश्चर्य होता है कि, सब शस्त्रविद्याको जान... नेवाले महापराक्रमी द्रोणाचार्यने हाथी, घो... सारथियोंको क्यों नहीं मारा? हम अप... सेनाके बीरोंको शत्रुओंके हाथसे मरा दे... बड़े व्याकुल हो रहे हैं। हे कौरवो!... द्रोणाचार्यका स्मरण करके सत्य कहते... कि हमारे सिवा मृत्युके समान घोररूपी ... नको और कौन हटा सक्ता है। मह... द्रोणाचार्य शिक्षा, विद्या, बल, बुद्धि... नीतिसे भरे थे, जब वही मारे गये, तब और... निर्बल हैं। गुरु द्रोणाचार्यके मरनेके ... हमें निश्चय नहीं रहा कि अब प्रातःकाल... हुए हमारे सिवाय कौन निःसन्देह ... करेगा। विद्या, शस्त्र, पराक्रम और ... सब मनुष्यकी रक्षा करनेमें समर्थ नहीं... इन सब गुणोंसे भरे हुए साक्षात गुरु ... चार्य ही शत्रुओंके हाथसे मारे गये। वह... अग्नि, पराक्रममें विष्णु और तेजमें इन्द्र, ... बृहस्पति और शुक्रके समान थे। वह भी...

शस्त्रसे न बच सके। इस समय दुर्य्योधनकी सेनाके वीरोंकी स्त्रियां और लड़के रोरहे हैं, और दुर्य्योधनका कुछ उपाय नहीं चलता, इसलिये हमारे रथको पाण्डवोंकी सेनामें ले चलो, हम सबको मारेंगे। जिस सेनामें साक्षात् धर्मराज युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्ज्जुन, नकुल, सहदेव, सात्यकि, श्रीकृष्ण, और साक्षात् धृष्टद्युम्न खड़े हों, वहां हमारे सिवाय और दूसरा कौन जा सक्ता है? इसलिये, हे शल्य। तुम हमारे रथको शीघ्र सृञ्जय, पाञ्चाल और पाण्डवोंकी ओर हांको। या तो मैं इन सबको मारूंगा, या द्रोणाचार्य्यके समान मैं भी मर जाऊंगा। मैं अपने मित्र दुर्य्योधनके द्रोहियों पर क्षमा नहीं कर सक्ता, इसलिये रथको शीघ्र हांको। या तो हम ही उन्हें मारेंगे, या मर जायंगे। हे विद्वान्। मूर्ख और पण्डित दोनों ही यमराजके यहां जाते हैं। और इस उलट फेरको देख भी नहीं सक्ते; इसलिये आज पाण्डवोंसे युद्ध करनेको जाते हैं। विचित्रवीर्य्यपुत्र धृतराष्ट्रके पुत्र राजा दुर्य्योधन सदा हमारा कल्याण करते रहे हैं, सो आज हम भी उनके लिये अपने प्यारे सुख भोग और न त्यागने योग्य प्राणोंको छोड़ते हैं। परशुरामने मुझे सिंहकी चमड़ेसे मढ़ा घोर शब्दवाला सोनेके आसन, चांदीके पहिये और उत्तम घोड़ोंसे युक्त यह रथ दिया है। हे शल्य। तुम हमारी विचित्र धनुष, घोर बाण, उत्तम ध्वजा, प्रकाशमान खड्ग, गदा और घोर शब्दवाले हमारे सङ्खको देखो। आज हम उत्तम सफेद घोड़ोंसे युक्त पताकावाले रथपर बैठे हुए उत्तम तूणीरधारी अर्ज्जुनको पराक्रमसे युद्धमें मारेंगे। बज्रके समान शब्दवाले रथपर बैठे हुए अर्ज्जुनको यदि सर्व्वनाशक मृत्यु भी रक्षा करे, तो उसके समेत अर्ज्जुनको मारूंगा, अथवा वही हमें मारेगा। हम बहुत कहां तक कहें, यदि आज साक्षात् इन्द्र, वरुण, यम, और कुवेर भी अपनी सेनाके सहित अर्ज्जुनकी रक्षा करेंगे, तो मैं उनके समेत अर्ज्जुनको मारूंगा।

सञ्जय बोले, मद्रराज शल्य कर्णके वचन सुन, उनका निरादर कर इस प्रकार उत्तर देने लगे।

शल्य बोले, रे कर्ण! चुप रह। तैंने बहुत बक बक की है। भला कहा पुरुषसिंह अर्ज्जुन और कहां अधम तू। अर्ज्जुनके सिवाय ऐसा कौन वीर है जो देवतोंसे सहित इन्द्रसे रक्षित स्वर्गके समान यादवोंके घरसे सुभद्राको ला सक्ता? ऐसा कौन वीर है, जो एक हरिनके लिये देवोंके देव शिवका निरादर करके उनसे युद्ध करे, यह बल इन्द्रके समान अर्ज्जुनमेंही है। देवता राक्षस, पिशाच, गरुड़, और सर्पोंको मारकर उन्होंने अग्निको तृप्त किया, क्या तुम्हें यह स्मरण नहीं है? जब गन्धर्वोंने कौरवोंको मारकर दुर्य्योधनको पकड़ लिया था, तब अर्ज्जुनने सूर्य्यकी किरणोंके समान अपने तेज बाणोंसे उन्हें मारकर दुर्य्योधनको छुड़ाया था, जब धृतराष्ट्रके पुत्र आप ही युद्ध करने लगे, और वहां पकड़े गये, तब पाण्डवोंने उन्हें छुड़ाया। क्या तुम्हें स्मरण नहीं है कि, जब तुम लोग बिराट नगर पर चढ़े थे, तब एकले अर्ज्जुनने भीष्म, द्रोणाचार्य्य और तुम्हें जीत लिया था, तुमने तभी अर्ज्जुनको क्यों नहीं मारा? हे सूतपुत्र! अब यह तुम्हारे मरनेके लिये दूसरा युद्ध आगया, यदि आज तुम डरकर नहीं भागोगे, तो यहीं रह जाओगे।

सञ्जय बोले, महाप्रतापी मद्रराज शल्यके ऐसे कठोर वचन सुन, शत्रुनाशन कुरुसेनापति कर्ण बोले, सच सच तुम सच कहते हो, आज हमारा और अर्ज्जुनका युद्ध होगा। यदि हमको वह मार डालेगा, तो तुम्हारे ये वचन सत्य होंगे।

सञ्जय बोले, शल्यने कहा तुम जैसा कहते हो वैसा ही होगा। कर्णने कहा रथ हांको। तब शल्यने उस रथको इस प्रकार अर्ज्जुनकी

और हांका, जैसे अन्धकार दूर करनेवाले सूर्य्य चले आवैं। उस सिंहके चमड़ेसे मढ़े हुए रथपर चढ़कर कर्ण अर्ज्जुनकी ओर चले।

३७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! कर्णके चलते समय तुम्हारी सब सेना बहुत प्रसन्न हुई और सब पाण्डवोंको ढूढ़ने लगी। कर्ण बोले, आज हमें जो कोई महात्मा अर्ज्जुनको दिखलावेगा, उसे मैं इच्छानुसार धन दूंगा; यदि उस धनसे प्रसन्न न होगा, तो रत्नोंसे भरा हुआ छकड़ा उसे दूंगा; यदि उसपर भी वह प्रसन्न न हो, तो दोहनी सहित सौ गौ दूंगा; यदि इससे भी वह प्रसन्न न हो तो सौ गांव और सफेद खचरिओंका रथ दूंगा। यदि अर्ज्जुनका दिखनेवाला मनुष्य इसपर भी न प्रसन्न हो तो उसे मैं अर्ज्जुनके समान काली घोड़ीवाला रथ दूंगा। अर्ज्जुनके दिखलानेवाले मनुष्यको मैं हाथीके समान छः बैलवाला छकड़ा सोनेसे भरकर दूंगा और आभूषण पहने सौ स्त्री दूंगा। अर्ज्जुनको दिखलानेवाले मनुष्यको नाचने गानेमें निपुण कण्ठमें सोनेका आभूषण धारण किये सोलह वर्षकी अनेक स्त्री दूंगा। सौ हाथी, सौ ग्राम, सौ रथ और सुवर्ण भूषित सौ घोड़े दूंगा, वे घोड़े ऋद्धि और गुणसे भरे और रथ ले चलनेमें समर्थ होंगे। अर्ज्जुनके दिखलानेवालेको सौ बछड़ोंके समेत सौ गायें दूंगा। यदि इसपर भी प्रसन्न न हो तो सुन्दर रत्न और सुवर्णसे भूषित पाच सौ सफेद घोड़े दूंगा। इसी प्रकार मिंचित अठारह घोड़े और एक सुवर्णका सुन्दर रथ दूंगा, उनमें काम्बोजदेशके घोड़े जुते रहेंगे। यदि इसपर भी वह प्रसन्न न हो, तो सुवर्णकी माला, अम्बारी और झूल सहित छः सौ हाथी दूंगा, उन सिंचित हाथियोंके छः छः सौ महावत भी दूंगा। यदि इसपर भी वह प्रसन्न न हो, तो वन और जलके निकट धन और अन्नसे भरे बनियोंके चौदह गांव दूंगा; इसी प्रकार निर्भय क्षत्रियोंके भी चौदह गांव दूंगा। जो मुझे अर्ज्जुनको बतावेगा, उसे नवीन अवस्था और सोनेके आभूषणवाली मगधदेशमें उत्पन्न हुई सौ दासी दूंगा। यदि इसपर भी वह मनुष्य प्रसन्न न हो, तो जो कुछ वह मांगे वही उसे दूंगा। मैं अपनी स्त्री, पुत्र और सुख भोग जो कुछ मांगे सो उसे दे दूंगा। जो मुझे कृष्ण और अर्ज्जुनको बतावेगा, मैं कृष्ण अर्ज्जुनको मारकर उन दोनोंका धन उसीको दे दूंगा! इत्यादि।

ऐसे बचन कहकर कर्णने समुद्रसे उत्पन्न हुआ उत्तम शब्दवाला शङ्ख बजाया।

हे महाराज! कर्णके सब बचन सुन दुर्योधन बहुत प्रसन्न हुए और उनके सङ्ग चले, तब नगाड़े, मृदङ्ग और अनेक भेर बजने लगे, हाथी घोड़े और बीर गर्ज्जने लगे। हे महाराज पुरुषसिंह! तब सब बीर प्रसन्न होकर गर्ज्जने लगे। जब इसप्रकार सेना प्रसन्न हुई और शत्रुनाशन कर्ण गर्ज्जने लगे, तब मद्रराज शल्य हंसकर कर्णसे बोले।

३८ अध्याय समाप्त।

हे सूतपुत्र! तुम काहेको बैल, छकड़े और हाथी दान करोगे! अर्ज्जुन आप ही तुम्हारे पास आ जावेंगे। हे राधापुत्र! तुम तो जन्महीसे कुबेरके समान दानी हो, परन्तु अब तुम बिना दानके ही अर्ज्जुनको देख लोगे। तुम तो मूर्खके समान बातें कर रहे हो सो अयोग्यको दान देनेसे जो दोष होते हैं, सो तुम नहीं जानते। हे सूत! तुम जो बहुत धन बतलानेवालेको दिया चाहते हो, उससे तुम अनेक यज्ञ कर सकते हो। तुम जो कृष्णको मारनेको कहते हो, सो तुम्हारी मूर्खताकी बात है, क्योंकि हम

इस बातको नहीं सुन सकते कि, स्यारने सिंहको मारा! तू न प्राप्त होनेकी वस्तुको मांगता है, क्या तेरा कोई भी मित्र नहीं, जो तुझे जलती हुई आगमें गिरनेसे बरजे? तू करने और न करने योग्य कामको नहीं जानता। इसका कारण यही है कि, तेरा अब काल आगया है। ऐसा कौन जीनेकी इच्छा करनेवाला मनुष्य है, जो न मरने योग्य अर्ज्जुनके मारनेकी इच्छा करे? जैसे मनुष्य गलेमें शिला बांधकर समुद्र तैरनेकी इच्छा करे, और जैसे कोई पर्व्वतसे गिरकर बचनेकी इच्छा करे, तैसे ही तुम्हारी इच्छा है। यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो, तो अनेक योद्धाओंको अपने सङ्ग लेकर अर्ज्जुनसे युद्ध करो। यदि तुम जीनेकी इच्छा करते हो, तो सब वीरोंको सङ्गमें लेकर अर्ज्जुनसे युद्ध करो। हम ये बचन तुम्हारे बिरोधसे नहीं कहते हैं, बरन दुर्य्योधनकी बिजयके लिये कहते हैं।

कर्ण बोले, हम अपने भुजाओंके बलसे अर्ज्जुनसे युद्ध करना चाहते हैं। तुम भीतरसे शत्रु और ऊपरसे मित्र होकर हमें डाराना चाहते हो! ऐसी ऐसी बातें कहकर साक्षात् बज्रधारी इन्द्र भी हमें नहीं लौटा सकते, फिर मनुष्यकी तो सामर्थ हो क्या है?

सञ्जय बोले, हे राजन्! कर्णके बचन सुन मद्रराज शल्य बहुत क्रोधकर बोले, हे कर्ण। जिस समय महाबाहु अर्ज्जुनके धनुषसे छूटे हुए अति शीघ्र चलानेवाले बाण तुम्हारी ओर चलेंगे, तब तुम जानोगे कि अर्ज्जुन कैसा बीर है। हे सूतपुत्र! जिस समय दिव्य धनुष धारण करके अर्ज्जुन तुम्हें तेज बाणोंसे मारेंगे, तब तुम पछताओगे, जैसे कोई माताकी गोदमें सोया बालक चन्द्रमाके प्राप्त करनेकी इच्छा करता है, तैसे ही तुम अर्ज्जुनके मारनेकी इच्छा करते हो। हे कर्ण! तुम तेजधारवाले त्रिशूलको अपने हाथसे अपने शरीरमें मारनेसे भी इस घोर कर्म्मसे नहीं बचोगे। हे सूतपुत्र कर्ण। हिरनका मूर्ख बच्चा जैसे सोते हुए महापराक्रमी सिंहको युद्ध करनेके लिये बुलावे, तैसे ही तू भी बलवान अर्ज्जुनको युद्ध करनेको बुला रहा है। हे सूतपुत्र! तू स्यारके समान है और राजपुत्र अर्ज्जुन महासिंहके तुल्य है। इसलिये उससे युद्ध करनेकी इच्छा मत कर! जैसे बड़े दांतवाले मतवाले हाथीको कोई खरगोश युद्ध करनेको बुलावे तैसे ही तू अर्ज्जुनको बुलाता है। तू क्रोधी विषसे भरे बिलमें बैठे काले सांपको छड़ीसे मारता है जो अर्ज्जुनको युद्ध करनेको बुलाता है। हे कर्ण! तू मूर्खतासे इसप्रकार अर्ज्जुनका नाम लेकर गर्ज रहा है, जैसे मूर्ख स्यार सिंहके आगे नाचता है। हे कर्ण! जैसे कोई छोटा सांप महा तेजस्वी पक्षिश्रेष्ठ बिनतापुत्र गरुडको बुलाता है, तैसे ही तू पुरुषसिंह अर्ज्जुनसे युद्ध करना चाहता है। अनेक मछलीसे भरे भयानक पूर्णमासीकी रात्रिके चढ़े जलसे पूर्ण समुद्रको तुम बिना नावके तैरना चाहते हो। हे कर्ण! जैसे मतवाले बैलको कोई छोटासा बछड़ा युद्ध करनेको बुलाता है, तैसे ही तुम महायोद्धा अर्ज्जुनको युद्ध करनेको बुलाते हो। हे कर्ण! महाघोर रूपी प्रजाको जल देनेवाले महामेघके समान अर्ज्जुनको तू मेड़कोंके समान युद्ध करनेके लिये बुलाता है। जैसे घरमें बैठा कुत्ता शेरकी ओर भोंकता है, तैसे ही तू पुरुषसिंह अर्ज्जुनको युद्ध करनेको पुकारता है। जैसे सिंहको बिना देखे बनमें बैठा स्यार खरगोशोंके बीचमें सिंह बनता है, तैसे ही तुम कौरवोंके बीचमें गर्ज्ज रहे हो। हे राधापुत्र! इसी प्रकारसे तुम भी पुरुषसिंह अर्ज्जुनको बिन देखे सिंह बन गये हो, तुम तभी तक सिंह बन रहे हो, कि जबतक एक रथपर बैठे हुए सूर्य्य और चन्द्रमाके समान कृष्ण और अर्ज्जुनको नहीं देखते। जबतक तुम गाण्डीवका

शब्द नहीं सुनते, तबतक जो इच्छा हो सो बको। अभी तो तुम सिंह बन रहे हो, पर धनुष और रथका शब्द करते हुए अर्ज्जुनको देखते ही स्यार होजाओगे। हे मूर्ख! तू सदाका स्यार अर्ज्जुन सदा सिंह है। इसी लिये तू मुझे स्यार समान दीख पड़ता है। बलमें जैसे मूसा और बिलार, कुत्ता और भेड़िया; जैसे स्यार और सिंह; खरगोश और मतवाला हाथी, झूठ और सत्य; विष और अमृत हैं; ऐसे ही तुम और अर्ज्जुन भी जगत्में प्रसिद्ध हो।

३६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! महा तेजस्वी शल्यके बचन सुन कर्णको बड़ा क्रोध हुआ और बोला, हे शल्य! गुणवानके गुणको गुणी ही जानता है। तुम गुणहीन गुणीको क्या पहचानो? हे शल्य! महात्मा अर्ज्जुनके बल, बुद्धि, धनुष और बाणोंको हम जान सक्ते हैं, तुम नहीं। पुरुषसिंह अर्ज्जुनके गुण मैं जानता हूं, तुम नहीं जानोगे। हे शल्य! मैं गाण्डीव धारी अर्ज्जुनके पराक्रमको अच्छी प्रकार हृदयमें जानता हूं। मेरा एक यह बाण सदा रुधिर पीता है, देखो इसके कैसे सुन्दर पङ्ख हैं। यह सदा तूणीरमें रहता है, सदा चन्दनसे पूजा जाता है। इस सांपके समान विष भरे बाणसे अनेक हाथी घोड़े और बीरोंको मारा है। ये घोर रूपी और महा भयानक बाण है। इसीसे क्रोध करके सुमेरुको भी तोड़ सक्ता हूं, इससे बड़े बड़े बीरोंके कवच कट जाते हैं। इस बाणको हम देवकीपुत्र कृष्ण और अर्ज्जुनके सिवाय दूसरे पर नहीं छोड़ेंगे। हम सत्य कहते हैं कि आज क्रोध करके अर्ज्जुन और कृष्णके सङ्ग इस बाणसे युद्ध करेंगे। सब यदुवंशियोंमें कृष्ण श्रेष्ठ हैं, इसी प्रकार पाण्डवोंमें अर्ज्जुन ही विजयी हैं। इन दोनों बीरोंके आगे जाकर कौन युद्धसे हटेगा? और ये दोनों पुरुषसिंह मामा फूफूके भाई हैं। आज दोनों ही मुझसे युद्ध करनेको चले आते हैं। गरुड़ और हनुमानकी ध्वजावाले गाण्डीव और चक्रधारी ये दोनों बीर आज मेरे बाणोंसे इस प्रकार छिद जायंगे, जैसे मणि छिद जाती हैं। हे शल्य! तुम मूर्ख हो और महा युद्धोंकी विद्या नहीं जानते, इसीलिये इस उत्साहके समयमें डरावने बचन कहते हो। हे दुष्ट देशमें उत्पन्न हुए शल्य! तू किस कारणसे अर्ज्जुनको अवध्य बताता है! और किस लिये अर्ज्जुनकी स्तुति करता है। रे पाप बुद्धे! दुष्ट देशीय क्षत्रियाधम! आज मैं कृष्ण और अर्ज्जुनको मार कर तुझे भी बन्धु बान्धवोंके सहित मारूंगा। तू ऊपरसे मित्र और भीतरसे हमारा शत्रु है। आज कृष्ण और अर्ज्जुनको मारूंगा अथवा वेही मुझे मारेंगे। मैं हजार कृष्ण और सौ अर्ज्जुनोंसे भी नहीं भय करता, क्योंकि मैं अपने बाहुबलको जानता हूं। हे कुदेशीय! तू चुप रह, मैं एकला ही कृष्ण और अर्ज्जुनको मारूंगा। प्रायः बालक, बूढ़े, स्त्री और नाचने गानेवाले मनुष्य मद्र देशके मनुष्योंको जैसे कहते हैं सो हमसे सुन। हे मूर्ख! राजोंके आगे ब्राह्मण लोग, जैसा तुम लोगोंका बर्णन करते हैं, उसको सुनकर चुप रहो, या उत्तर दो। मद्र देशके मनुष्य मद्यपीनेवाले, कृतघ्न, बिश्वासघाती और दुष्ट होते हैं, इन दुष्टोंसे न कभी मित्रता करनी चाहिये, न बिश्वास करना चाहिये। हमने सुना है, कि मद्रदेशके मनुष्य दुरात्मा, कठिन और कठोर होते हैं। जगत्में जितने पाप और दुष्टता है, ये सब उन्होंमें भरे रहते हैं। पिता, माता, भाई, पुत्र, मामा, श्वसुर, जमाई, बेटी और पोते भी उस देशमें अपने बन्धुओंसे प्रेम नहीं करते। चाहे अभ्यागत हो, चाहे मित्र हो, चाहे दासी हो, चाहे दास हो, कोई किसीका मोह नहीं

करता। स्त्रियां अपनी इच्छानुसार जाने और बिन जाने मनुष्योंके साथ घूमा करती हैं। स्त्रियां घरमें बचे हुए अन्न और गोमांसको खाकर मद्य पीती है। हंसती है, और खेलती हैं, अनेक पुरुष कामके बशमें होकर अनेक प्रकार क्रीडा करते हैं, ऐसे दुष्टोंमें धर्म्म कहांसे आया? मूर्ख और पापी मद्रदेशवालोंसे मित्रता और वैर दोनों ही न करना चाहिये। ये लोग बड़े मैले रहते हैं, और गन्धार देशियोंके समान ये भी अपवित्र रहते हैं। जैसे शूद्रकी रसोई बनानेवाले, राजाके याचक और मूर्ख ब्राह्मणको देनेसे खीर नष्ट होजाती है, और जैसे शूद्रका अन्न खानेवाला ब्राह्मण भ्रष्ट हो जाता है; जैसे ब्राह्मणका मारनेवाला पतित होजाता है; तैसे ही मद्रदेशियोंका मित्र भी पतित होता है। जैसे अथर्व्वके मन्त्र जाननेवाला बीछीके विषको नाश कर देता है, वैसे ही हमने तुझे शान्त कर दिया। परन्तु बीछीसे काटे हुए बुद्धिमान मनुष्य अपनी औषधि करते हैं। हे विद्दन्! यह समझ कर आप चुप रहिये। मद्रकी स्त्रियां मद्य पीकर नङ्गी होकर नाचने लगती हैं, और मैथुनके लिये अनेक प्रकार पुरुषकी इच्छा करती हैं। उनका पुत्र मद्रदेशी किस प्रकार धर्म्म कह सक्ता है? जिस देशकी निलज्ज और अधर्म्मिनी स्त्री गधीके समान या ऊंटनीके समान खड़ी होकर मूतती हैं, तुम उन्हीं स्त्रियोंके पुत्र होकर धर्म्म कहनेकी इच्छा करते हो। जिस देशकी स्त्री कांजी मांगनेके लिये चूतड़ हिलाती फिरती है। जिनको देनेवाली कहते हैं, कि हमसे कोई हमारी प्यारी कांजीको मत मांगो। जिस देशकी कम्बलधारणी निर्लज्ज स्त्रियां कहती हैं कि हम पतिको देंगी, पुत्रको देंगी. परन्तु कांजी न देंगी। हमने सुना है कि उस देशके मनुष्य निलज्ज और दुष्ट होते हैं, उनके गुण हम क्या कोई भी नहीं कह सकता। मद्र, सिन्धु और सौवीर देशके मनुष्य पापियोंमें बड़े हैं, वे लोग धर्म्मको क्या जाने! तुम पापदेशमें उत्पन्न हुए और म्लेच्छ हो, तुम धर्म्मको क्या जानो! जो क्षत्री युद्धमें मरे वही धर्म्मात्मा है। हमने सुना है कि क्षत्रीको शस्त्रहीसे मारना चाहिये, इसीसे मैं तुझे नहीं मारता। मैं मरकर स्वर्ग जाऊंगा यह हमारा प्रथम सङ्कल्प है। दुर्य्योधन मेरा प्यारा मित्र है, हे पापदेशी! मैं आप उस बुद्धिमान मित्रके लिये अपना धन और जीवन-तक भी दे सकता हूं। तू पाण्डवोंका मित्र और हमारा शत्रु है। परन्तु तेरे ऐसे सैकड़ोंके कहनेपर भी मैं पाण्डवोंसे नहीं डरूंगा। तू नास्तिक, धूर्त्त और व्याधके समान धर्म्मको वर्णन करता है और हमें युद्धसे हटाना चाह-ता है। मैं युद्धमें शरीर छोड़नेवाले, युद्धसे न हटनेवाले पुरुषसिंह क्षत्रियोंके धर्म्ममें स्थित हूं, सो कदापि नहीं डरूंगा। शत्रुओंका नाश और मित्रोंका उद्धार करनेके लिये परशु-रामने जो विद्या मुझे बतायी है, सो सब मुझे याद है। हे मद्रराज। मैं पुरुरवावंशी क्षत्रियोंके धर्म्मको मानता हूं। सो तीन लोकमें अपने समान कोई बीर नहीं देखता। हे विद्दन्। ऐसा कोई नहीं है जो मुझको युद्धसे लौटा सके, यह बिचारकर तुम चुप होजाओ; बहुत बकनेसे क्या होगा? हे मद्रका अधम! मैं धृतराष्ट्र और दुर्य्योधनके भयसे तेरा मांस काटकर पक्षियोंको नहीं खिलाना चाहता। हे मद्रराज। मैं अपने दुर्नाम दुर्य्योधन और धृत-राष्ट्रकी इच्छा तथा अपनी कृपासे तुझे जीता छोड़े देता हूं, यदि फिर ऐसे बचन कहे जायगा, तो बज्रके समान गदासे तेरा शिर तोड़ डालूंगा। सब सुननेवाले तुम्हारी दुर्द्दशाको देखेंगे। चाहे कर्ण अर्ज्जुनको मारे, और चाहे अर्ज्जुन कर्णको मारे।

हे पृथ्वीनाथ। ऐसा कहकर राधापुत्रने फिर मद्रराज शल्यसे कहा कि चलो चलो।

४० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे धृतराष्ट्र! महायोद्धा अधिरथपुत्र कर्णके वचन सुन शल्य बोले, हम यज्ञ करनेवाले, युद्धसे न हटनेवाले महात्मा राजोंके वंशमें उत्पन्न हुए और सब धर्म्मोंको जाननेवाले हैं। तू मद पीए हुए बैलके समान नाच रहा है, सो हम मित्र जानकर तेरी दवा करते हैं। रे नीच! नीच कुलमें उत्पन्न हुए हम एक कौआका इतिहास तुमसे कहते हैं, इसको सुन कर जो इच्छा हो सो करना। सारथीको उचित है कि रथमें बैठे हुए बीरको हानि लाभ बतावे। इसलिए यह इतिहास कहना हमको बहुत आवश्यक है। सारथीको नीचा ऊंचा मार्ग घोड़ोंकी थकाई, पसीना और शत्रुका बल रथीसे कहना चाहिये। शस्त्र और हरिण तथा पक्षियोंका शकुन अधिक बोझ और बाणोंके घावकी पीड़ा आदि सारथीको कहनो चाहिये। मैं इस रथका सारथी हूं, इस लिये शकुन, युद्ध और शस्त्रोंको सुभी देखना चाहिये। हे कर्ण! इसीलिए हम तुमसे यह इतिहास कहते हैं।

समुद्रके तटपर एक महाधनवान बनियां रहता था। वह अपने धर्म्मके अनुसार अनेक यज्ञ और दान किया करता था, उसके अनेक बेटी, बेटा थे और सब पर कृपा करता था। धर्म्मात्मा राजा उसपर कृपा करते थे, इस लिए वह निर्भय होकर निवास करता था, उसके बालक यशस्वी पुत्रोंको एक जूठ खानेवाला कौआ अच्छा लगा। वे लोग उस कौआको प्रतिदिन जूठा देने लगे। मास, भात, दही, दूध खीर, घी और सहत खाकर वह कौआ बहुत मोटा हुआ और सब पक्षियोंका निरादर करने लगा। कभी हंस भी उस नगरमें आगए, उन हन्सोंको गरुड़के समान उड़ते हुए देख कर बनिएके बेटे प्रसन्न होकर कौआसे बोले, हे कौआ। तुम सब पक्षियोंमें श्रेष्ठ हो। यह बचन सुन उन हंसोंने कहा कि यह बात झूंठ है, परन्तु अभिमानसे भर कौआने कहा कि सच है। तब बनियेके बेटोंने कहा तुम दोनोंमें कौन श्रेष्ठ है? हमारी बुद्धिमें तो जूंठ खानेवाला कौआ हंस आदि सब पक्षियोंसे अधिक उड़ सकता है। ऐसे वचन सुन मूर्ख कौआने हंसको बुलाया, तब हंस कौवाके पास आये और कौवाके वचन सुनकर बोले, हम लोग मानसरोवरके रहनेवाले हंस हैं, सदा पृथ्वीमें घूमते रहते हैं और सब पक्षियोंसे अधिक उड़ते हैं। अरे दुर्बुद्धे! तू कौआ होकर हंसोके समान कैसे उड़ेगा? रे मूर्ख नीच कौआ! तू हमारे समान कैसे उड़ सकेगा? हंसोंके बचन सुन मूर्ख कौआ उनको निन्दा करके कहने लगा, हम तुम्हारे समान नहीं उड़ सकते! मैं एकसौ---एक प्रकारसे उड़ना जानता हूं और एक एक चालसे बारम्बार सौ कोस उड़ सकता हूं, मेरी गति बहुत विचित्र और अद्भुत है, उनके नाम सुनो। उड्डीन, अवडीन, प्रडीन, डीन, निडीन, संडीन, तिर्य्यक डीन, विडीन, परिडीन, पराडीन, सुडीन, अभिडीन, महा डीन, निर्डीन, अतिडीन, अवडीन; प्रडीन, सण्डीन, डीनडीन, सण्डीनोड्डीन, डीन, पुनर्डीन, विडीन, सम्पात, समुद्दीष, अतिरित्त, गतागत, प्रतिगत, बहुवो, निकुलीन, इत्यादि और भी अनेक गति हम जानते हैं। अब तुम लोग हमारा बल देखो, मैं इन कही हुई गतियोंमसे किसी एकसे आकशमें उड़ूंगा। तुम लोग निश्चय करके कहो कि मैं कौनसी गतिसे उड़ूं? परन्तु तुम लोगोंको भी निराधार आकाशमें उसी चालसे उड़ना होगा। कौआके वचन सुन एक हंस हंसकर बोला, हे कौवा! तू एकसौ-एक चालका उड़ना जानता है, परन्तु और सब पक्षी एकही प्रकारसे उड़ते हैं; मैं उसी एक चालसे उड़ूंगा, क्योंकि मैं दूसरी चाल नहीं जानता। हे कौवा! तेरी इच्छा हो तो उस ही चालसे हमारे सङ्ग उड़। हंसके बचन सुन सब हंस हंसने लगे। कौवे हंसके वचन सुन हंसकर

कहने लगे। इस कौआको एकसौ--एक गतियोंको एक गतिसे हंस कैसे जीतेगा ? कौआ बड़ा बलवान और हंस बड़े दुर्व्वल हैं। तब वे दोनो कौवा और हंस उडे। उनको उड़ता देख सब पक्षी कहने लगे कि देखें, सौ चालवाला कौआ पहले गिरता है, वा एक चालवाला हंस। सब पक्षियोंको आश्चर्य देकर कौआ हंसके सङ्ग उड़ने लगा, थोड़े समयमें उसकी सब विचित्र चाल नष्ट होगई, कौआकी विचित्र गतियोंको देखकर सब कौवे प्रसन्न होकर और ऊंचे स्वरसे कांव कांव करने लगे। हंस उसकी गतियोंको हंसी और निन्दा करने लगे। वे सब उड़ने लगे। हंस हंसकी कौवे कौआकी विजयके लिये अनेक प्रकारके शब्द करने लगे। हंस अपनी एक ही कोमल गतिसे कौआसे आगे निकल गया। तब सब हंस कौआकी निन्दा करके ऐसा बोले, यह कौआ पश्चिमकी ओर गिर पड़ा, कौआ क्रमसे गिरता गिरता समुद्रमें गिरा और गिरते ही मूर्च्छित होगया। गिरते हुए कौवाने द्वीपके वृक्षोंको देखा और विचारने लगा, कि किस पर गिरूं यह समुद्र सहस्रों जन्तुओंसे भरा और आकाशके समान बड़ा है। हे कर्ण! उस कौवा को समुद्रका कहीं अन्त न जान पड़ा,तब कौआ उस ही अपार समुद्रमें गिर पड़ा, हंस भी थोड़ी देर उड़ कर इधर उधर कौवाको देखने लगा, ज्योंही कौवाको न पाया, तब विचारने लगा, कि कौवाको निकालना चाहिये। थका हुआ कौआके पास फिर हंस गया, डूबते हुए लज्जित कौवाको देख महात्माओंका स्मरण करके हंस बोला, हे कौवा! तैंने हमसे उड़नेकी अनेक चाल बताई थी, परन्तु यह चाल छिपा रक्खी थी, यह जो तुम अपनी चोंच और पङ्खोंसे जलमें फड़फड़ा रहे हो इस चालका क्या नाम है ? हे कौवा! जिस चालसे अब उड़ रहे हो, सो उनमेंसे जो हमको बताई थीं कौन सी है ? अब तू मत डर हम तुझे बचानेको आते हैं।

शल्य बोले, रे दुष्टात्मा कर्ण। जब वह कौआ जल पीने और डूबने लगा जब कौवाने समुद्रका पार न देखा और थक कर गिर गया, तब हंससे बोला, हे हंस। हम कौवा हैं, तुम्हारे समान कैसे उड़ सकते हैं ? अब हमारा प्राण जाता है, तुम बचाओ! समुद्रमें मरते डूबते कौवाको देख हंसने यों कहा, हे कौवा। तुझे तो एकसौ--एक प्रकारसे उड़ना आता है। तैने अपनी पहले बड़ी प्रशंसाकी थी, मैं एक ही चालसे उड़ा और तू एकसौ—एक चाल जानने पर भी थक कर क्यों गिरा ? तब रोता हुआ, कौवा उड़ते हुए हंससे बोला, हे हंस। मैं तुम्हारी शरण हूं, इसलिये मेरी रक्षा करो, हे हंस! मैं जूंठ खाकर बहुत अभिमानी होगया था, इसीसे मैंने अपनेको गरुड़के समान मानाथा और कौवे आदि पक्षियोंका अनादर करने लगा, हे हंस! अब मेरा प्राण जाता है, तुम मुझे जलसे पार करो; जो मैं जीता हुआ घर पहुंच जाऊंगा तो फिर कभी किसी पक्षीका निरादर नहीं करूंगा। तुम इस आपत्तिसे मेरा उद्धार करो,दीन और दुर्व्वल कौवाके वचन सुन हंसने उस दुर्द्दशामें पड़े हुए और जलमें भींगे हुए कौवाको कृपा करके उठा लिया। हे सखे! उसको उठाकर ऊपरको फेंक दिया। और फिर अपनी पीठ पर रख लिया। फिर जहांसे उड़ेथे, उसी स्थानमें आकर हंसने कौवाको पृथ्वीमें डाल दिया, और समझाकर शीघ्रवेगी हंस अपने देशको चले गये। इस प्रकार जूंठ खाने वाले कौवाको हंसने जीत लिया। जैसे बनियोंका जूठा खानेवाला कौआ बल और अभिमानको छोड़कर शान्त होगया था, इसी प्रकार तू भी धृतराष्ट्रके पुत्रोंका जूंठ खानेवाला है। इसीसे सबका निरादर करता है, द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा और भीष्मसे रक्षित होकर

तैंने एकाली अर्ज्जुनको बिराट नगरमें क्यों नहीं मारा था ? जिस समय तुम सबको अलग अलग और एक स्थान पर स्यारोंके समान सिंहरूपी अर्ज्जुनने जीत लिया था, तब तेरा पराक्रम कहां गया था ? जब सब कौरवोंके बीचमें अर्ज्जुनने तुम्हारे भाईको मार डाला था तब तुम पहले ही युद्ध छोड़कर भाग गये थे। हे कर्ण ! जिस समय बनमें गन्धर्वोंके सङ्ग युद्ध हुआ था। तब सब कौरवोंको छोड़कर पहले तूही युद्धसे भागा था, उस समय स्त्रियोंके सहित दुर्य्योधनको अर्ज्जुनहीने छुड़ाया था और उसके शत्रुओंको मारा था, हे कर्ण। परशुरामने भी राजसभामें अर्ज्जुन और कृष्णका पराक्रम कहा था, जिस समय भीष्म और द्रोणाचार्य्यने राजसभामें यह कहा था कि कृष्ण और अर्ज्जुन अबध्य हैं। तब क्या तैंने नहीं सुना था, जैसे सब मनुष्योंमें ब्राह्मण श्रेष्ठ है, तैसे ही तुमसे और सब क्षत्रियोंसे अर्ज्जुन श्रेष्ठ है। तुम इसी समय सब मनुष्योंमें श्रेष्ठ रथमें बैठे हुए कृष्ण और अर्ज्जुनको देखोगे। जैसे अपनी बुद्धिके अभिमानसे कौआ हंसके साथ उड़ा था; तैसे ही तू भी अर्ज्जुन और कृष्ण साथ युद्ध कर। हे कर्ण ! जब तुम एक रथ पर बैठे हुए महारथ पराक्रमी अर्ज्जुन और कृष्णको देखोगे तब ऐसा नहीं कह सकोगे। जब अर्ज्जुन अपने सैकड़ों बाणोंसे तेरे अभिमानको नाश करेंगे तब तुझे अपने और अर्ज्जुनके पराक्रममें अन्तर जान पड़ेगा। कृष्ण और अर्ज्जुन देवता, असुर और मनुष्योंमें प्रसिद्ध हैं। वे सूर्य्य और चन्द्रमाके समान है। और तू जगनूके समान है इस लिये तू उनकी निन्दा मत कर। कृष्ण और अर्ज्जुन अपने तेजसे सूर्य्य और चन्द्रमाके समान प्रसिद्ध हैं और तुम्हे सब मनुष्य जुगनूके समान मानते हैं। हे सूतपुत्र! कृष्ण और अर्ज्जुन मनुष्योंमें सिंहके समान हैं। तुम उनकी निन्दा मत करो और चुप रहो।

४१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र ! महात्मा कर्णने मद्रराजके कठोर बचन सुन इस प्रकार उत्तर दिया। कृष्ण और अर्ज्जुनमें जो बल और बुद्धि है उसको हम अच्छे प्रकारसे जानते हैं। हे शल्य। अर्ज्जुनका रथ हांकनेवाले कृष्ण और महात्मा अर्ज्जुनके बल, शस्त्र, बुद्धि और पराक्रमको जैसा मैं जानता हूं तैसा तुम नहीं जानते, मैं आज बेडर होकर उन शस्त्र जाननेवालोंमें श्रेष्ठ कृष्ण और अर्ज्जुनसे युद्ध करूंगा। केवल ब्राह्मण श्रेष्ठ परशुरामके शापका मुझे भय है' हे शल्य ! मैं ब्राह्मण बनकर परशुरामसे दि[व्य] अस्त्र सीखने गया था। तहां अर्ज्जुनके हित चाह[ने] वाले इन्द्रने मेरे सीखनेमें अनेक बिघ्न किये, ए[क] दिन परशुराम मेरी जांघपर शिर रक्खे सो[ते] थे। उसी समय इन्द्र कीड़ा बनकर मेरी जां[घ] काटने लगे। उसके काटनेसे मेरे शरीरसे बहुत रुधिर निकला परन्तु गुरुके डरसे मैंने अपनी जांघ हटाई नहीं, तब रामने उठकर मुझे देखा, उन्होंने मुझे अत्यन्त धीरजवान देखकर कहा कि तू ब्राह्मण नहीं है, सत्य बता तू कौन है ? तब मैंने उनसे सत्य सत्य कह दिया कि मैं सूत हूं, महातपस्वी परशुरामने मेरे बचन सुन बहुत क्रोध किया और शाप दिया कि तैंने जो मुझसे दिव्य अस्त्र सीखे हैं, सो समयपर काम नहीं आवेंगे और उस समय अर्थात जब तुम्हें शस्त्रोंका स्मरण नहीं रहे, तभी जानना कि हमारी मृत्यु आगयी। सो आज मुझे उस मुनीश्वरके बचनका बहुत भय होता है। हे शल्य। जो कुरुकुलमें बैर उत्पन्न हुआ है, हमें निश्चय है कि इससे सब पृथ्वीके वीर क्षत्रियोंका नाश होजायगा। हे शल्य ! आज मैं महापराक्रमी, महाधनुषधारी, सत्यवादी अर्ज्जुनको युद्धमें अवश्य मारूंगा। मैं आज युद्धमें उन बाणोंको चलाऊंगा, जिनसे शत्रुओंके भुण्ड नाश हों और उसी बाणसे महाधनुषधारी महातेजस्वी अर्ज्जुनको भी मारूंगा। जैसे

अनेक मनुष्योंसे भरी नाव समुद्रमें डूब जाती है तैसे ही आज अर्ज्जुन हमारे बाहुबलसे नष्ट होगा।

मैं महापराक्रमी महावीर और महाधनुषधारी अर्ज्जुनको अब मारूंगा। जैसे बहुत बढ़ते हुए समुद्रको तटके पर्व्वत रोक लेते हैं, तैसे ही आज मैं घोर बाण चलाते महापराक्रमी अर्ज्जुनको युद्धमें मार सकूंगा। धनुष खींचते हुए, समुद्रके समान गम्भीर, महापराक्रमी, कुन्तीपुत्र अर्ज्जुनको आज हम युद्धमें अपने बाणोंसे अवश्य मारेंगे। अपने वेगसे राजोंको मारते हुए समुद्रके समान अर्ज्जुनको पर्व्वतके समान रोकेंगे, हम इस सेनामें उसके समान धनुषधारी किसीको नहीं देखते। जो महाअभिमानी अर्ज्जुन देवता मनुष्य और राक्षसोंके समान युद्ध करता है, आज मैं उन्हींसे घोर युद्ध करूंगा और उसे युद्धमें मारूंगा, सूर्य्यके समान तेजस्वी सब दिशाओंको तपाते हुए अर्ज्जुनके बाणोंको अपने बाणोंसे काटकर उन्हें मारूंगा। जैसे मेघ सूर्य्यको छिपा लेते हैं तैसे ही मैं वीरोंका नाश करते हुए, ज्वाला और धुएंके सहित अग्निके समान तेजस्वी अर्ज्जुनको अपने बाणोंसे छिपा दूंगा, अग्निरूपी अर्ज्जुनको मेघके समान अपनी बाण वर्षासे ठण्ढा कर दूंगा, अर्ज्जुन विषैले सांपके समान क्रोधी है, मै उसे आज अपने बाणोंसे शान्त करूंगा। महा पराक्रमी, महाशस्त्रधारी, शत्रुओंका नाश करनेवाले, महा क्रोधी, कुन्तीपुत्र अर्ज्जुनको आज मैं अपने बाणोंसे मारूंगा, युद्धमें वीर महारथ, महाक्रोधी और महाबलवान् अर्ज्जुनको बाण वर्षाको आज हम हिमाचल पर्व्वतके समान स्थिर होकर सहेंगे। आज जगत्में उसके समान धनुषधारी कोई नही है, जिस अर्ज्जुनने इस समस्त पृथ्वीको जीत लिया है और जिसने खाण्डव वनमें सब प्राणियोंको मारकर अग्निको तृप्त किया था, आज हम उसी अर्ज्जुनसे युद्ध करेंगे, मेरे सिवाय ऐसा कौन पराक्रमी, दिव्य अस्त्रोंके जाननेवाला, शीघ्र बाण चलानेवाला और शत्रुनाशन वीर है जो सफेद घोड़ेवाले बलवान अर्ज्जुनसे लड़ सके। हे शल्य! आज मैं युद्धमें मरूंगा, या दुर्य्योधनको जीतही होगी। मैं अपने तेजबाणोंसे आज अर्ज्जुनका शिर काटकर पृथ्वीमें गिरा दूंगा, मेरे सिवाय और ऐसा कोई वीर नहीं है जो रथमें बैठकर एकला अर्ज्जुनसे युद्ध करे। यद्यपि अर्ज्जुन मेरा वैरी है तौभी मैं उसके बलको सब क्षत्रियोंके आगे वर्णन करता हूं। तुम मूर्ख पागल कठोर और क्रोधी हो तुम हमसे अर्ज्जुनके पराक्रमका क्या वर्णन करते हो? तुम्हारे समान मनुष्य किसीका कुछ वर्णन नहीं कर सकता। हे मूर्ख! हे पापी! मैं तेरे ऐसे सौ मनुष्योंको मार सकता हूं, परन्तु क्षमाके वशमें होकर कुछ नहीं कर सकता, तुम हमें डराता है और पाण्डवोंकी प्रशंसा करता है। यह समय बड़ा कठोर है, आज दुर्य्योधन युद्ध करनेको जाते हैं; वे मेरे मित्र हैं, इसीलिये मित्रद्रोही और तुझ सरीखे पापियोंपर हम क्षमा करते हैं। हम सब प्रकारसे अपने मित्र दुर्य्योधनकी सहायता करेंगे, क्योंकि जो आपत्तियोंसे बचावे, चित्तको प्रसन्न करे और सब प्रकारकी सहायता करे, उसे ही मित्र कहते हैं। मैंने जो मित्रोंके गुण कहे सो हममें सब हैं और राजा दुर्य्योधन भी हमारे सब गुणोंको जानते हैं। शत्रुका अर्थ काटने, निकालने, मारने और रुलाने वालेका है और उपसर्ग लगानेसे उसहीका अर्थ नाश करनेवालेका होजाता है सो ये सब गुण हमारी ओरसे तुममें भरे हैं। दुर्य्योधनके यश, कल्याण, अपने सुख और ईश्वरके लिये [illegible] मैं क्षमा और अर्ज्जुनसे युद्ध [illegible]। तुम हमारे पराक्रमको देखना [illegible] हमारे [illegible] ब्राह्मण और मनुष्य [illegible] देखो।

मतवाला हाथी महा मतवाले हाथोको जीतता है तैसे ही आज मैं महा पराक्रमी अर्ज्जुनको युद्धमें जीतूंगा। आज मैं अपने मनसे निश्चय करके पराक्रमी अर्ज्जुनकी ओर ब्रह्मास्त्र चलाउगा, यदि वह भी मेरे लिये ब्रह्मास्त्र चलावेंगे तब दोनों शस्त्रोंका घोर युद्ध होगा। दण्डधारी यम, फांसीधारी वरुण, गदाधारी कुवेर और वज्रधारी इन्द्र अथवा अन्य किसी शत्रुसे भी मैं कुछ नहीं डरता तब कृष्ण और अर्ज्जुनकी तो बात ही क्या है ? हे राजन्। आज उसी अर्ज्जुनसे हमारा युद्ध होगा आज युद्धमें हमारे और अर्ज्जुनके घोर वाण चलेंगे, मैं अर्ज्जुनके घोर बाणोंको अपने बाणोंसे काटूंगा चाहे मूर्खतासे चलावे और चाहे सावधान होकर। हे शल्य ! मैं जब परशुरामके यहां शस्त्रविद्या सीखता था, तब एक मुनीश्वरकी गौका बच्चा चर रहा था, मैंने भूलसे उसे मार डाला तब मुनिने मुझे शाप दिया कि तैंने भूलसे मेरी यज्ञकी गौका बच्चा मारा इससे तू जब जगत्में घोर युद्ध करेगा, तब ही पृथ्वीमें तेरे रथका पहिया अटक जायगा सो उसही शापसे आज मैं बहुत डर रहा हूं। ब्राह्मण सोम पीते हैं और सबको सुख दुःख दे सकते हैं, उनके शापसे मैं आज बहुत डर रहा हूं। हे मद्रराज शल्य ! फिर मैंने उन्हें छःसौ बैल, और एक सहस्र गौ दीं परन्तु वह ब्राह्मण प्रसन्न न हुआ, फिर मैंने सात सौ दासी और एक सौ दास दिये तो भी वह ब्राह्मण श्रेष्ठ महामुनि मुझसे प्रसन्न न हुआ, फिर मैंने चौदह सहस्र सफेद बछड़े वाली काली गाय दीं, तो भी उस ब्राह्मणने प्रसन्न होकर इस शापका उद्धार न किया। मैंने सब सुख और धनसे भरा घर भी अपना उसको देना चाहा परन्तु तो भी वह प्रसन्न न हुआ। जब मैंने बहुत ही प्रार्थनाकी तो उस ब्राह्मणने कहा कि, हे सूत! हमने जो कहा है सो वैसा ही होगा हमारी वाणी मिथ्या नहीं होती, हम यदि झूठ बोलें तो प्रजाका नाश होजाय! इस लिए हम लोग मूल धर्मकी रक्षाके लिये सदा सत्य ही बोलते हैं। तुम ब्राह्मणोंके वाक्योंको मिथ्या मत करो और प्रायश्चित करो, ब्राह्मणोंके वाक्यको जगत्में कोई नहीं उठा सक्ता। तुमको अपना शत्रु और बक बक करनेवाला जानकर भी हमने यह कथा सुनायी, अब हमारे वचन सुनो और चुप रहो।

४२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! उसके पश्चात् शत्रुनाशन राधापुत्र मद्रराजको चुप करके फिर बोले, हे शल्य! तुमने जो हमको अपने बचनोंसे डराना चाहा था, सो हम डरने योग्य नहीं है। यदि सब देवताओं सहित साक्षात् इन्द्र भी मुझसे लड़नेको आवें तो भी मैं नहीं डरूंगा और अर्ज्जुन कृष्णकी तो कथा ही क्या है ? मैं केवल बचनसे डरनेवाला नहीं, यदि तुम्हारी और कुछ सामर्थ्य हो तो करो; हे दुर्म्मति! दूसरेकी कठोर बात कहना ही मूर्खोंका बल है। हमारे गुण वर्णन करनेकी तेरी शक्ति नहीं। हे शल्य। कार्य्य भयके लिये नहीं उत्पन्न हुए मैंने पराक्रम और यशके लिये जन्म लिया है। हे शल्य। तुम मित्र, पक्षपाती और हमारे सुभचिन्तक होनेसे अबतक जीते हो, हे शल्य! इस समय धृतराष्ट्रपुत्र राजा दुर्य्योधनके बड़े भारी कार्य्यका समय है, और उसका भार मेरे ही ऊपर है, इसलिये तुम जीते बच रहे हो, हे शल्य! हमने पहिले यह प्रतिज्ञा करली है, कि तुम जो कठोर वचन कहोगे, सो हम क्षमा करेंगे। इसीसे तुम अब तक जीते हो; मित्रद्रोही महापापी होता है इसीसे तुम अबतक बचे हो।

४३ अध्याय समाप्त।

शल्य बोले, हे कर्ण! तू जो बक बक कर रहा है, इसको मैं मिथ्या समझता हूं। मैं एकला हजार कर्णोंसे जीतने योग्य नहीं अर्थात् तुम्हारे हजारोंके समान मैं एकला हूं।

सञ्जय बोले, शल्यके कठोर वचन सुन कर्णने उनसे दुगुने वचन उन्हें फिर कहे। कर्ण बोले, हे मद्रदेशीय महाराज! मैं जो धृतराष्ट्र पुत्रके आगे तुमसे कहता हूं, उसे सुनो। अनेक देशोंमे घूमते हुए ब्राह्मणोंने राजा धृतराष्ट्रसे आकर ये वचन कहे थे। एक दिन एक बूढ़ा ब्राह्मण राजा धृतराष्ट्रके पास आकर मद्रदेशी मनुष्योंकी निन्दा करता हुआ कहने लगा। गङ्गा, यमुना, सरस्वती, कुरुक्षेत्र, और हिमाचलसे जो देश दूर हैं, तिनका तथा रावी, चिनाव, झेलम, सतलज, व्यासा, सिन्धु तटके देश और वाल्हीक देशसे जो दूर रहते हैं, उनको छूना नहीं चाहिये, हमने अपनी बालक अवस्थासे देखा है कि, ऊपर कहे देशोंसे अलग, गौओंको मारना और मद्यके बर्त्तनोंको घरमें रखना ही राजोंका चिन्ह है, मैं एक अत्यन्त गुप्त कार्य्यसे उन देशोंमें गया था, तब ही मैंने सबका आचार देखा, एक नदीके तट पर शाकल नाम नगर है, उसमें वाह्लीक जातिके नीच मनुष्य बसते हैं। उनका चरित्र बहुत बुरा है, वे सब धान और गुड़का मद्य बनाकर पीते हैं। और लहसनके साथ गोमांसको खाते हैं, और नित्य ही मांस और भुने हुए जौ खाते हैं। वहाकी स्त्री अपने शरीरमें चन्दनादि सुगन्ध लगा कर अभूषण पहन कर मद्य पीकर और नङ्गी होकर घर द्वार और नगरके बाहर नाचती और गाती है। उन स्त्रियोंका गला ऊंट और गधोंके समान होता है, वे उन्मत्त होकर जाती हैं, और मैथुनसे कभी तृप्त नहीं होतीं। वहांकी स्त्रियां सोती हुई परस्पर कहती है कि मेरा पति तेरा पति, मेरा पुत्र तेरा पुत्र! पर्व्वतके द्वारोंमें नाचती, गाती और गाली देती हैं। उन मतवाली स्त्रियोंको देखकर मैं कुरु देशमें आया हूं। उस देशकी स्त्री उत्सवोंमें अपने पतियोंको गाली देती हैं। कोई दुष्ट स्त्री अप्रसन्न होकर गाली देती है, चाहे वो थोड़ी अवस्थाकी सुन्दर हो क्यों न हो तो भी कम्बल पहन कर अपने पतिको गाली देती है। इस प्रकार मैं उत्तर कुरुदेशको देखकर सतलज और रमणीय इरावती नदीके पार उतरा, वहासे मैं यह विचार करता चला कि मैं अपने देशमें जाकर उत्तम सोनेके समान गोरे रङ्गवाली उत्तम मुखवाली और सर्वाङ्ग सुन्दरी स्त्रियोका देखूंगा। उस देशकी स्त्री कम्बलधारिणी निर्लज्ज और दुष्ट देखीं, वे सब मृदङ्ग भेरी और झांझ बजाकर नाचती और गाती हैं। वे सब कहती थीं कि, हम उत्तम मार्गोंसे गधे और खच्चरोंके रथ पर चढ़कर और मतवारी होकर करीलके बनमें जांय। उस देशके मूर्ख दुरात्मा मनुष्य यही इच्छा करते हैं, कि हम लोग, कब जङ्गलमें जाकर मांस, सत्तू अन्न और मठा खाते हुए पथिकोंके वस्त्र छीनेंगे और उन्हें मारेंगे। उस देशके मनुष्योंके सङ्ग क्षण भर नहीं रहना चाहिये। इस प्रकार उस ब्राह्मणने वाह्लीक देशके दुष्ट मनुष्योंका वर्णन किया।

तब धृतराष्ट्रने कहा तुम जिनकी निन्दा करते हो, उनके पुण्य और पापका छटा भाग तुमको प्राप्त होगा! तब ब्राह्मण बोला, वाह्लीक लोग बड़े दुष्ट है, उनका चरित्र हमसे सुनो। वहीं कृष्ण पक्षकी चतुर्दशीको इस प्रकार राक्षसी गीत गाती थीं,—इस शाकल नगरमें आज बहुत गाय बैल मारे गये हैं, उनसे प्रसन्न होकर मैं गीत गा रही हूं। अब फिर ये गीत कब गाऊंगी? मैं अब गोमांस खाकर और गुड़का मद्य पीकर तृप्त होगई और सोलह वर्षको स्त्रियोंके सङ्ग नाचकर भी तृप्त होगयी, अब गधे ऊंट और मृगोंका मांस तथा प्याज

खाऊंगी। उस देशके मनुष्य भी मदसे उन्मत्त होकर गाते हैं कि जो मूर्ख भेड़का मांस नहीं खाते उनका जन्म निरर्थक है। हे शल्य! जिस देशके बूढ़े और बालक इसी प्रकार बकते हैं, वे धर्मको कैसे जानेंगे? हम तुमसे कुछ और कहते हैं। इसी प्रकार एक दूसरे ब्राह्मणने कहा था, कि जहां वे ऊपर लिखी पांच नदी बहती हैं वहां पीलू और दाखका बहुत बन है; उसी देशमें सतलज, व्यासा इरावती, चिनाब, झेलम और छठी सिन्धु नदी बहती है। उन देशोंका नाम आरट्ट है। वहांके मनुष्य अधर्मी, मूर्ख और यज्ञके निन्दक होते हैं. इस लिये उन देशोंमें नहीं जाना चाहिये। अधर्मी वाह्लिकोंके पिण्डादिकोंको देवता और पितर नहीं ग्रहण करते। युगन्धर नगरमें सब मनुष्य ऊंटनीका दूध पीते हैं, अर्थात् भच्याभच्यका कुछ विचार नहीं है, फिर तेलमें स्नान करते हैं। इन मनुष्योंको स्वर्ग कैसे होगा? उस ब्राह्मणने यह भी कहा कि अधर्मी वाह्लिक मिट्टी और काठके वर्त्तनोंमें खाते हैं, उन्हीं सत्तू लगे वर्त्तनोंको कुत्ता चाट जाता है; फिर उसीमें वे लोग गधी, घोड़ी और ऊंटनीका दूध पीते हैं। हे शल्य! आरट्ट, और वाह्लिक इन दोनोंको नहीं छूना चाहिये। हम तुमसे और वर्णन करते हैं, सुनो। हे शल्य! एक ब्राह्मणने मुझसे महाराज धृतराष्ट्रकी सभामें कहा था, कि युगन्धर नगरके मनुष्य ऊंटनीका दूध पीते हैं, और अपवित्र स्थानोंमें रहते हैं। उस देशके ब्राह्मण, चत्री और बनिये आदि सब मनुष्य एक तालावमें स्नान करते हैं! उनको स्वर्ग कैसे होसकता है? उन वाह्लिकोंके सङ्ग आर्य्यको बसना उचित नहीं। विपासाके तटपर वहि और हीकी नाम जातिके मनुष्य रहते हैं, ये पिसाचोंके तुल्य हैं, उनको वाह्लीक कहते हैं, ये सृष्टिमें नीच मनुष्य अनेक प्रकारके धर्मको क्या जानें? कारस्कर, महिष्क, कालिङ्ग, केरल, कर्कोटक, वीरक और दुष्ट मदेशके मनुष्योंको नहीं छूना चाहिये। इस प्रकार तीर्थोंमें घूमते हुए एक ब्राह्मणसे एक राचसीने कहा था, वह ब्राह्मण रात्रिभर एक स्थानमें रहता था और केवल लगोटी ही रखता था। हे पृथ्वीनाथ! उस देशका नाम आरट्ट और वहांके बासियोंका नाम वाह्लिक है, उस देशमें भी नीच ब्राह्मण उत्पन्न होते हैं। उनमें कोई वेदपाठी, वैद्य, यज्ञ करानेवाला नहीं है। उन सबके जनेऊ होनेका कोई समय नहीं है, नौकरी करके वृत्ति चलाते हैं, इस लिये देवता और पितर उनका पिण्ड दान ग्रहण नहीं करते। प्रस्थल, मद्र, गान्धार, आरट्ट खश, वस, सिन्धु, और सौवीर ये सब नीच हैं।

४४ अध्याय समाप्त।

कर्ण बोले, हे शल्य! हमने जो कहा, सो तुमने सुना? अब हम और कहते हैं, एकाग्रचित होकर सुनो। एक अतिथि ब्राह्मण हमारे घर आया था, वह हमारे आचारको देख बहुत प्रसन्न हुआ और कहने लगा, कि मैं एकला ही हिमाचलके शिखर और अनेक देशोंमें घूमा हूं, वेद जाननेवाले ब्राह्मणोंने जैसा धर्म कहा है सो मैं तुमसे कहता हूं। यह सब प्रजा धर्मसे विरुद्ध नहीं रहती, अर्थात् सब जगतके मनुष्य कुछ न कुछ धर्म करते हैं। हे महाराज! हम अनेक देशोंमें घूमते हुए वाह्लिकदेशमें पहुंचे, उस देशमें जो जन्म लेता है, सो पहले ब्राह्मण फिर चत्री, फिर वैश्य, फिर शूद्र, फिर नाई होता है! नाईसे ब्राह्मण और ब्राह्मणोंसे दास होजाता है! एक वंशके अनेक ब्राह्मण अधर्म करने लगे हैं। गान्धार, वाह्लिक और मद्रदेशके मनुष्य मूर्ख होते हैं। ये धर्मकी वाणी नेने वहीं मूर्ख

थी । हे शल्य ! समस्त पृथ्वीसे बाह्लिक नीच हैं । हमने कहा सो तुमने सुना ! अब और कहते हैं सुनो । उस ब्राह्मणने बाह्लिकोंकी निन्दा करके यह भी कहा था,- कि किसी आरट्टने एक पतिव्रता स्त्रीको उसके पतिसे छीन लिया था, उससे चोरोंने छीन ली । तब उस सतीने आरट्टको शाप दिया, "तैंने अधर्म्मसे मुझे मेरे पतिसे छीन लिया, इसलिये तुम्हारे देशकी सब स्त्रिया कुलटा और वेश्या होजायंगी । वे मूर्ख उस शापको सुनकर भी उस पापसे निवृत्त न हुए, इसलिये उनके धनका पुत्र और भगिना, भागी नहीं होता । कुरु, शलत्र, पाञ्चाल, मत्स्य, नैमिष, कौशल, काश, पौण्ड्र, कलिङ्ग, मागध, और चेदिदेशके उत्पन्न हुए महात्मा मनुष्य ही जानते है, सब देशोंमें दुष्ट और साधु रहते हैं; परन्तु बाह्लिक केवल दुष्ट हो है । मत्स्यदेशसे कुरु और पाञ्चाल देशके मनुष्य अच्छे हैं, और नैमिष देशसे चेदिदेशके अच्छे हैं । पञ्चनद और मद्र देशको छोड़कर अन्य देशके महात्मा लोग सनातन धर्म्मसे अपनी वृत्ति चलाते हैं । हे राजेन्द्र ! आप पण्डित, प्रजाके स्वामी और सब पाप पुण्यके छठे भागके भागी हो, अथवा तुम केवल प्रजाके अधर्म्महोके भागी हो, क्योंकि प्रजाकी रक्षा नहीं करते । प्रजाकी रक्षा करनेवाला राजा धर्म्मका भागी होता है । ब्रह्माने सब देशोंमें सनातन धर्म्मको देख और पञ्जाबमें नीच धर्म्मको देख उस देशको बहुत धिक्कार दिया । तुम्हारा देश पतित है, उस देशके मनुष्य सब दास और महापापी होते हैं । तुम भी इसी देशमें उत्पन्न हुए हो, तुम धर्म्म क्या जानो ? तुम्हारे देशकी ब्रह्माने निन्दा की है । उस देशके अपने अपने धर्म्म करनेवाले मनुष्य भी उत्तम नहीं माने जाते है । हे शल्य ! हमने जो कहा, सो आपने समझा ? और भी कहते है, उसे सुनो । कल्माषपादक नाम राक्षसने तलावमें स्नान करते हुए यह कहा था, क्षत्रियोंकी भीख मागना, ब्राह्मणोंकी दान न करना और स्त्रियोंको जैसा मद्यपीना नीचता है, तैसे ही पृथ्वीमें वाह्लीक देश नीच है । किसी राजाने उस राक्षसको जलसे निकाला और पूछा, उसने जो कुछ उत्तर दिया सो हम तुमसे कहते है । मनुष्योंमें म्लेच्छ म्लेच्छोंसे तेली, तेलियोंसे खरट और खरटोंसे राजपुरोहित नीच है । राजपुरोहितका जो यज्ञ कराता है, और जो मद्र देशके मनुष्योंका भोजन करता है, इन दोनोंको जो पाप होता है, सो तुम्हें इसें न छोड़नेसे होगा । यह राक्षसोंका बल नाश करनेवाला मन्त्र अथवा औषधि है, यह सिद्ध बचन है । पञ्चालदेशीय ब्राह्मणोंके भक्त, मत्स्यदेशीय यज्ञ करनेवाले; पूर्व्वके दास; दक्षिण देशके धर्म्मात्मा, वाह्लीक चोर; सौराष्ट्र देशके मनुष्य वर्णसङ्कर हैं । कृतघ्नता, पराई स्त्रियोंसे अधर्म्म करना, चोरी, मद्य पीना, गुरुकी स्त्रीसे अधर्म्म करना, कठोर बचन कहना, गाय मारना, रात्रिको बाहर घूमना, दूसरेके वस्त्र पहनना—जिनके येही धर्म्म हैं, उन आरट्ट और पञ्चनद देशके मनुष्योंको धिक्कार है ।

पाञ्चाल, कुरु, नैमिष और मत्स्य देशके मनुष्य भी धर्म्मको जानते है । इसी प्रकार उत्तर मगध और अङ्ग देशके उत्तम मनुष्य धर्म्म पालन करते है । पूर्व्वमें अग्नि आदि देवता रहते हैं । और यमराजसे रक्षित दक्षिण दिशामें पितर निवास करते हैं । बलवान वरुण पश्चिमके देवतोंकी रक्षा करते है । उत्तर दिशाकी भगवान चन्द्रमा ब्राह्मणोंके सहित रक्षा करते हैं । हे महाराज ! पर्व्वत श्रेष्ठ हिमाचल पर राक्षस और पिशाच रहते हैं । गन्धमादन पर गुह्यक रहते है, ध्रुव भी उत्तर ही दिशामें रहते हैं । भगवान् विष्णु सब जगत्की रक्षा करते है । मगध देशके मनुष्य शरीरके चिन्होंसे मनुष्यको

हैं। कोशल देशीय देखकर; कुरु और पाञ्चाल देशके मनुष्य आधी बात सुनकर; शाल्वदेशके मनुष्य सब बात सुनकर। पर्व्वत नीची ऊंची पृथ्वी और शिवी देशके मनुष्य भी शाल्व देशके मनुष्योंके तुल्य हैं।

हे राजन्! यवन सर्व्वज्ञ और बड़े शूरवीर होते हैं। जिन मनुष्योंको हमने नहीं कहा, वे सब म्लेच्छ हैं। हे शल्य। बाह्लीक और मद्र देशके मनुष्य कठोरवादी होते है। अब तुम हमारे इस बचनके उत्तर देने योग्य नहीं रहे। पृथ्वीके सब देशोंका मल मद्र देश है, मद्य पीना, गुरुके पलङ्गपर सोना, गर्भ गिराना और दूसरोंका धन छीनना ही इनका धर्म्म है। ऐसे आरट्ट और पञ्चनद देशियोंको धिक्कार है, यह समझ कर तुम चुप होजाओ, नहीं तो पहले तुम्हें मारकर फिर कृष्ण और अर्ज्जुनको मारेंगे।

शल्य बोले, हे कर्ण। शरणागत आयेको छोड़ना, अपनी स्त्री और पुत्रोंको बेचना, ये सब अङ्गदेशके मनुष्योंके धर्म्म हैं और तुम उसी देशके राजा हो। रथसंख्यामें जो कुछ भीष्मने तुममें दोष बताये थे। अपने उन सब दोषोंको विचारकर चुप होजाओ क्रोध मत करो। सब देशोंमें ब्राह्मण, चत्री, वैश्य, शूद्र और उत्तम चरित्रवाली पतिब्रता स्त्री है। सब देशके मनुष्य परस्पर ऐसे करते है और सब देशमें स्त्री पुरुष मैथुन करते है। दूसरेके दोष कहनेमें सब निपुण होते है, परन्तु अपने दोषोंको जानकर भुला देते है। दुष्टोंको दण्ड देनेवाले धर्म्मात्मा राजा सब देशोंमें है। हे कर्ण! सब देश भरके मनुष्य पापी नहीं हैं। जैसे सब देवता एक स्वभावके नहीं होते, तैसे ही सब मनुष्य भी एक स्वभावके नहीं है।

सञ्जय बोले, हे राजन्! तब राजा दुर्य्योधनने कर्णको मित्रभावसे और राजा शल्यको हाथ जोड़कर शान्त किया। हे राजन्! दुर्य्योधनके वचन सुन कर्ण और शल्य दोनों चुप रह गये। तब कर्णने हंसकर शल्यसे कहा कि रथ हांको।

४५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! तब कर्णने सेनासे बाहर निकलकर धृष्टद्युम्नका बनाया हुआ पाण्डवोंकी सेनाका घोर व्यूह देखा, और देखा कि, धृष्टद्युम्न धनुष लिये उसकी रक्षा कर रहे हैं। कर्ण अनेक प्रकारके बाजे और रथके शब्दसे पृथ्वीको कंपाते हुए उस सेनाकी ओर चले। हे भरतकुलसिंह! महायशस्वी, महायोद्धा कर्ण उस समय क्रोधसे कांप रहे थे, तब उन्होंने अपनी सेनाका व्यूह बनाया। इसके पश्चात् जैसे इन्द्र राक्षसोंकी सेनाका नाश करते है, तैसे कर्ण पाण्डवोंकी सेनाको मारने लगे, और युधिष्ठिरके रथको बांये करके उनके शरीरमें अनेक बाण मारे।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! एकले कर्णने भीमसेनसे रक्षित, धृष्टद्युम्न आदि वीरोंसे कैसे युद्ध किया? ये सब वीर महाधनुषधारी महायोद्धा और देवतोंसे भी हारने योग्य नहीं हैं। हमारी सेनाके व्यूहमें कौन कौन वीर कहां खड़े हुए? इसके पीछे किसने कैसे युद्ध किया? पाण्डवोने हमारे पुत्रोंसे युद्ध करनेको कैसा व्यूह बनाया? यह घोर युद्ध किस प्रकार हुआ? और जिस समय कर्ण चले थे, तब युधिष्ठिरकी ओर अर्ज्जुन कहां था? क्योंकि अर्ज्जुनके पास रहनेसे युधिष्ठिरके पास जानेकी किसकी शक्ति है? एकले अर्ज्जुनने खाण्डव वनमें सब प्राणियोंको जीता था। कर्णके सिवाय और ऐसा कौन वीर है, जो जीनेको इच्छा करके अर्ज्जुनसे युद्ध करे?

सञ्जय बोले, हे राजन्! आप व्यूहोंकी रचना और अर्ज्जुन आदि सब राजोंका युद्ध सुनिये। आपके व्यूहके दहने पक्षमें कृपाचार्य्य,

महापराक्रमी मागध और यदुकुलश्रेष्ठ कृतवर्म्मा खड़े हुए, उस पक्षके पास महारथ शकुनि और उलूक घुड़चढ़े वीरोंके सहित स्थित होकर सेनाके सहित सेनाकी रक्षा करने लगे। उनके पास महापराक्रमी गान्धार देशकी सेना और भयानक रूपवाले पिशाच टीड़ीदलके समान खड़े हुए। बाये पक्षमें युद्धसे न भागनेवाले महापराक्रमी चौदह सहस्र संशप्तक खड़े हुए; वहीं तुम्हारे अनेक पुत्र भी स्थित हुए; इन्हों ने अर्ज्जुन और कृष्णके मारनेकी इच्छा करी थी। उसके समीप काम्बोज, शक और यवन सेना खड़ी हुई। कर्णकी आज्ञासे रथ और घोड़ोंपर चढ़े सब वीर अर्ज्जुन और महापराक्रमी कृष्णको पुकारने लगे। सेनाके मुखमें माला, कवच और बाजू पहनकर और सब शस्त्र लेकर कर्ण खड़े हुए और सेनाके मुखकी रक्षा करने लगे, उनके पास सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ उनके महारथ पुत्र खड़े हुए। उनके पास मतवाले हाथियोंपर चढ़कर महाबलवान पिङ्गाक्ष और प्रियदर्शन खड़े हुए, ये दोनों सूर्य्य और अग्निके समान तेजस्वी थे। सेनाके पिछले भागमें अनेक वीरोंके सहित दुःशासन खड़े हुए, इनकी रक्षा करनेको साक्षात् राजा दुर्य्योधन खड़े हुए, कवच और विचित्र शस्त्रधारी मद्र और केकयदेशके वीर इनकी रक्षा करने लगे।

हे राजन्! उस समय राजा दुर्य्योधनकी ऐसी शोभा बढ़ी जैसे देवतोंके सहित इन्द्रकी। और अश्वत्थामा आदि सब वीर मतवारे हाथियोंके सङ्ग राजा दुर्य्योधनकी रक्षा करने लगे। उस सेनाकी ऐसी शोभा बढ़ी जैसी बर्षती हुई घटाकी। महावत, वैजयन्ती माला, चमकते हुए शस्त्र और वीरोंके सहित वे हाथी वृक्षवाले पर्व्वतोंके समान दीखने लगे। उन हाथियोंके पैरोंकी रक्षाके लिये सहस्रों युद्धसे न लौटनेवाले खड़्ग आदि शस्त्र धारण करके वीर चले। घोड़े, सजे हुए हाथी, रथ और पैदलोंसे भरा हुआ उस सेनाका व्यूह देवासुर संग्रामकी सेनाके समान शोभित हुआ। बुद्धिमान कर्णने यह जो शत्रुओंको भय देनेवाला व्यूह बनाया, इसका नाम बारहस्पति व्यूह है। इसमें घोड़े, हाथी, नाचते हुएके समान दीखते थे। उसके पक्ष और पक्षोंके समीप हाथी, घोड़े और रथोंपर चढ़े हुए वीर बर्षाकालके मेघके समान चलने लगे।

कर्णको सेनाके मुखमें खड़ा देख महाराज युधिष्ठिरने शत्रुनाशन महावीर अर्ज्जुनसे कहा, हे अर्ज्जुन! यह देखो कर्णने पक्ष और प्रतिपक्षके सहित कैसा उत्तम व्यूह बनाया है। यह सेना जिस प्रकार हमारी सेनाको दुःख न दे सके, ऐसा उपाय करो। महाराजके वचन सुन अर्ज्जुन हाथ जोड़कर बोले, हे महाराज! आप जैसा कहते है वैसा ही होगा। हे भारत! इस व्यूहको तोड़ने और कर्णके मारनेका जो प्रधान उपाय है सो हम करते हैं।

महाराज युधिष्ठिर बोले, आज तुम राधापुत्र कर्णसे, भीमसेन दुर्य्योधनसे, वृषसेनसे नकुल, शकुनिसे सहदेव दुःशासनसे शतानीक, कृतवर्म्मासे सात्यकि, धृष्टद्युम्न अश्वत्थामासे युद्ध करें और कृपाचार्य्यसे हम आप लड़ेंगे और हमारे सब पुत्र शिखण्डीके सहित धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे युद्ध करें।

सञ्जय बोले, धर्म्मराज युधिष्ठिरके ऐसे वचन सुन अर्ज्जुनने कहा ऐसा ही होगा। इसके पश्चात् सब वीरोंको महाराजकी आज्ञा सुनाकर आप व्यूहके मुखकी ओर गये, जिस रथमें पहले अग्नि, ब्रह्मा चन्द्रमा आदि देवता घोड़े बनकर जुड़े थे और जो रथ पहले अग्निसे उत्पन्न हुआ था; जिसकी ब्राह्मण बहुत प्रशंसा करते हैं। जिसपर क्रमसे ब्रह्मा, शिव, इन्द्र और वरुण चढ़े थे, उसी आदि रथपर चढ़कर कृष्ण और अर्ज्जुन चले। उस

रथको आते देख अधिरथपुत्र कर्णसे शल्य बोले, देखो सफेद घोड़े और कृष्ण सारथीके सहित प्रारब्धके समान निवारण न करने योग्य अर्ज्जुनका रथ चला आता है। हे कर्ण। तुम जिस अर्ज्जुनको पूछ रहे थे, यह मेघके समान उसीके रथका शब्द आरहा है और वही कुन्तीपुत्र अर्ज्जुन शत्रुओंको नाश करते हुए चले आते हैं। वह देखो महात्मा कृष्ण और अर्ज्जुनके रथकी धूल उड़कर आकाशको चली जाती है, यह देखो उनके रथके पहियोंसे पृथ्वी कांपने लगी। तुम्हारी सेनाके चारों ओर घोर वायु चलने लगा। हे कर्ण! यह देखो मांस खानेवाले जन्तु बोलने लगे और हरिन रोने लगे। यह घोर शकुन लोकके नाश करनेका है, यह देखो शिर कटे मनुष्यके समान मेघने सूर्य्यको घेर रक्खा है। हमारी सेनाके बाईं ओर हरिनोंके झुण्ड चले जाते हैं। यह देखो अनेक शार्दूल गिद्ध और कौवे मांस खाकर तृप्त होगये हैं। हे कर्ण। यह देखो ये सब मांस खाने वाले पक्षी परस्पर बोलते हुए तुम्हारी ओर चले आते हैं। ये देखो तुम्हारे पहियोंकी हालसे अग्नि निकलने लगी। ये देखो तुम्हारे शीघ्र चलने और बड़े शरीर वाले घोड़े कांपने लगे और तुम्हारी ध्वजा हिलने लगी और पहिये प्रकाशित होने लगे। ये देखो तुम्हारे गरुड़के समान शीघ्र चलनेवाले सुन्दर घोड़े कांप रहे हैं। इन शकुनोंसे हमें निश्चय होता है, कि आज पृथ्वीमें सहस्रों राजा मर कर सोवेंगे, ये देखो अनेक शङ्खोंका घोर शब्द होरहा है, इससे वैरीके रूवें खड़े हुए जाते हैं। इसी प्रकार भेर, नगारे, बाण, हाथी और घोड़ोंके शब्द चारों ओर हो रहे हैं। ये देखो धनुष और महात्माओंके तालोंका कैसा शब्द होता है? सोने और चांदीके तारोंसे गुहे हुए वस्त्र परस्पर किस प्रकार घिस रहे हैं, ये देखो चन्द्रमा, सूर्य्य और तारे आदिके चिन्होंसे युक्त घण्टा वाली अनेक रथोंकी पताका फहरा रही हैं। ये देखो अर्ज्जुनके रथ पर मेघमें बिजलीके समान अनेक पताकाओंका फन फन शब्द हो रहा है। इधर देखो पताका युक्त रथों पर बैठे हुए महात्मा पाञ्चाल विमानों पर बैठे हुए देवतोंके समान विराज रहे हैं। और देखो शत्रुओंको कंपाते हुए हनुमानकी ध्वजा युक्त रथ पर बैठे महायोद्धा अर्ज्जुन चले आते हैं। ये देखो अर्ज्जुनकी ध्वजा पर शत्रुओंको भय बढ़ानेवाले भयानक रूपधारी हनुमान बैठे हैं। ये देखो दूसरे रथ पर श्रीकृष्णके शार्ङ्ग धनुष, चक्र, पांचजन्य शङ्ख रक्खे हैं। उनके हृदयमें कौस्तुभ मणि कैसी शोभा देरही है, यही शार्ङ्ग धनुष, कौमोदकी गदा और सुदर्शन चक्रधारी श्रीकृष्ण अर्ज्जुनके सफेद घोड़ोंको हांक रहे हैं। ये देखो अर्ज्जुनके गाण्डीव धनुषका शब्द भी यहां आने लगा, और ये शीघ्र बाण चलानेवाले अर्ज्जुनके बाण तुम्हारी सेनाके वीरोंको मारने लगे। ये देखो कमल नेत्र सुन्दर मुख वाले, युद्धसे न भागने वाले, राजोंके शिर कट कट कर पृथ्वीमें गिरने लगे। ये देखो चन्दन और अगर लगे हाथीके सूंड़के समान सुन्दर शस्त्रधारी वीरोंके हाथ कट कट कर पृथ्वीमें गिरे, ये देखो आख कान, जीभ और सिर कटे घोड़े वीरोंके सहित पृथ्वी में गिर गये, और गिरे और गिर रहे हैं, ये देखो अनेक हाथी, बाण लगने और शरीर कटनेसे पर्वतोंके समान इधर उधर घूम रहे हैं। ये देखो गन्धर्व नगरोंके समान अनेक रथ वीरोंसे खाली हो गये, इस समय इनकी शोभा देव रहित गिरते हुए विमानोंके तुल्य हो रही है। ये देखो जैसे सिंहके घुसनेसे हरिनोंका झुण्ड व्याकुल हो जाता है तैसे ही तुम्हारी सेना अर्ज्जुनके आनेसे होरही है। ये देखो सब पाण्डव तुम्हारी सेनाके हाथी, घोड़े,

रथ और पैदलोंके झुण्डोंको नाश कर रहे हैं। ये देखो मेघमें छिपे सूर्य्यके समान बाणोंमें छिपे अर्ज्जुन नहीं दीखते परन्तु उनके धनुष और तालका शब्द सुनाई देता है। हे कर्ण! जिसको तुम पहले पूछते थे, अब उसी सफेद घोड़े और कृष्ण सारथी युक्त अर्ज्जुनको अपनी सेनाका नाश करते देखोगी, तुम अभी एक रथ पर बैठे लाल नेत्रवाले शत्रुनाशन कृष्ण और अर्ज्जुनको देखोगे। जिसके कृष्ण सारथी और गाण्डीव धनुष है यदि उस अर्ज्जुनको आज मारोगे तो तुम ही हमारे राजा हो जाओगे। देखो अर्ज्जुनको संशप्तक सेनाने पुकारा और ये उनसे युद्ध करनेको जाते हैं। आह! अर्ज्जुनने अनेक संशप्तकोंको मार भी डाला। मद्रराज शल्यके वचन सुन कर्णने महाक्रोध करके कहा, ये देखो संशप्तकोंने क्रोध करके अर्ज्जुनको चारों ओरसे घेर लिया, अब अर्ज्जुन मेघमें छिपे सूर्य्यके समान नहीं दिखाई देते। हे शल्य! ये देखो इस सेनासमुद्रमें अर्ज्जुन डूबा ही चाहता है।

शल्य बोले, जलसे वरुणको और इन्धनसे अग्निको कौन मार सक्ता है। भला समुद्रको कौन पीसक्ता है? और वायुको कौन रोक सक्ता है? मैं इन्हीं सबके समान अर्ज्जुनको भी मानता हूं। उन्हें राक्षस और देवतोंके सहित इन्द्र भी नहीं जीत सक्ते और यदि तुम वचनोंहीसे जीत समझते हो तो अपने मनमें कहकर प्रसन्न हुआ करो। अर्ज्जुनको युद्धमें जीत सकते नहीं हो इस लिए कोई दूसरा मनोर्थ करो। जो अर्ज्जुनको युद्धमें मार सके वह अपने हाथोंपर पृथ्वीको उठा सकता है और क्रोध करके प्रजाको भस्म कर सक्ता है और देवतोंको स्वर्गसे गिरा सक्ता है।

ये देखो महायोद्धा भीमसेन मेरु पर्व्वतके समान खड़े हुए तुम्हारी सेनाको मार रहे हैं। ये देखो सदाके क्रोधी सदा युद्ध करने वाले महाबाहु कुन्तीपुत्र भीमसेन बहुत दिनका वैर स्मरण कर आज युद्ध करनेको खड़े हैं।

ये देखो सब धर्म्मधारियोंमें श्रेष्ठ शत्रुओंका नाश करनेवाले युद्धमें शीघ्र बाण चलानेवाले साक्षात महाराज युधिष्ठिर खड़े हैं।

ये देखो अश्विनीकुमारोंके समान सुन्दर महापराक्रमी युद्धसे न हटनेवाले पुरुषसिंह नकुल और सहदेव खड़े हैं।

ये देखो द्रौपदीके पांचो पुत्र युद्ध करनेको इच्छासे पर्व्वतोंके समान खड़े हैं। ये पांचो अर्ज्जुनके समान योधा हैं।

ये देखो शत्रुओंको जीतनेवाले महातेजस्वी धृष्टद्युम्न अपने भाइयोंके सहित खड़े हैं।

ये देखो इन्द्रके समान योद्धा यदुकुलश्रेष्ठ सात्यकि युद्ध करनेको इच्छासे क्रोध भरे यमराजके समान चले आते हैं।

शल्य और कर्णकी ये बातें होते ही होते दोनों सेना गङ्गायमुनाके समान आमिलीं।

४६ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! इस प्रकार सेना मिलनेके पश्चात् अर्ज्जुनने संशप्तकोंको और कर्णने पाण्डवोंकी सेनाके सङ्ग कैसे युद्ध किया? तुम इस सब निश्चयको जानते हो, इस लिये हमसे बिस्तारपूर्व्वक कहो, हम बीरोंका पराक्रम सुनकर तृप्त नहीं होते।

सञ्जय बोले, तुम्हारे पुत्रकी बड़ी भारी सेनाका व्यूह देखकर अर्ज्जुनने भी अपनी सेनाका व्यूह बनाया। उस हाथी, घोड़े और पैदलोंसे भरे हुए पाण्डवोंकी सेनाके व्यूहके मुखमें सेनापति धृष्टद्युम्न खड़े होकर शोभित होने लगे। उस समय कबूतर और चन्द्रमाके रङ्गके समाय घोड़ोंके रथपर चढ़े हुए, धृष्टद्युम्नका तेज सूर्य्य और चन्द्रमाके समान बना। उस समय धृष्टद्युम्नको सब देहधारी कालके समान देखने लगे। शार्दूलके समान परा-

क्रमी दिव्य कवच और शस्त्रधारी द्रौपदीके पांचो पुत्र अपने मामा धृष्टद्युम्नकी रक्षा करने लगे। उस समय शस्त्रधारी द्रौपदीके पुत्रादि अनेक बीरोंके बीचमें खड़े हुए धृष्टद्युम्न तारोंके बीच चन्द्रमाके समान शोभित हुए। इस प्रकार व्यूह रचना होनेपर अर्ज्जुन भी क्रोध करके अपने धनुषको घुमाते हुए संशप्तकोंसे युद्ध कारनेको चले। इसी प्रकार संशप्तक भी मरनेका निश्चय समझकर अर्ज्जुनको मारनेके लिये उनकी ओर युद्ध करनेको आये। वह हाथी, घोड़े, रथ और पदातियोंसे भरी हुई सेना शीघ्र अर्ज्जुनके पास पहुंची। जैसे हमने सुना था कि निवातकवचोंके सङ्ग अर्ज्जुनने युद्ध किया, तैसे ही संशप्तकोंके सङ्ग किया। अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे हाथी, रथ, घोड़े, ध्वजा, लड़ते हुए पदाति, बाण, धनुष, खड्ग, चक्र, परश्वध, शस्त्रोंके सहित उठे हुए हाथ, अनेक प्रकारके शस्त्र और शत्रुओंके सहस्रों शिर काट दिये। उस समुद्ररूपी सेनामें अर्ज्जुनके रथको डूबता हुआ देख संशप्तक गर्ज्जने लगे। जैसे प्रलयकालमें शिव क्रोध करके प्रजाका नाश करते है, तैसे ही अर्ज्जुन पूर्व्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, दिशाओंमें घूमकर शत्रुओंको मारने लगे। हे राजन्! उधर तुम्हारी सेनाके सङ्ग सृञ्जय पांञ्चाल और चेदि देशके क्षत्री घोर युद्ध करने लगे। तुम्हारी ओरसे कृपाचार्य्य, कृतवर्मा और सुबलपुत्र शकुनि प्रसन्न हो पाण्डवोंके रथमें बैठे हुए वीरोंको मारने लगे। ये लोग कोशल, काशी, मत्स्य, कारुस, कैकय और सूरसेन देशके क्षत्रियोंसे युद्ध करने लगे। यह घोर युद्ध क्षत्री, वैश्य और बीर शूद्रोंको स्वर्ग पहुंचानेवाला, और पाप तथा देहका नाश करनेवाला हुआ। हे भरतकुल सिंह! अनन्तर राजा दुर्योधन अपने भाइयोंके समेत कुरु और मद्रदेशके महारथ बीरोंके सहित चेदि कैकय, पाण्डव, सात्यकि, और पाण्डवोंके बीरोंसे युद्ध करते हुए कर्णकी रक्षा करने लगे। कर्णभी अपने तेज बाणोंसे पाण्डवोंकी सेनाको मार कर युधिष्ठिरसे युद्ध करने लगे, अनेक बीरोंको वस्त्र शस्त्र और कवचोंसे रहित करके तथा अनेकोंको स्वर्ग पहुंचाकर अपनी सेनाको प्रसन्न किया। हे धृतराष्ट्र! इस प्रकार यह सृञ्जय और कुरुवंशी क्षत्रियोंका नाश करनेवाला तथा हाथी, घोड़ोंका नाश करनेवाला युद्ध देवासुर संग्रामके तुल्य हुआ।

४७ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! पाण्डवोंके सेनामें प्रवेश करके और अनेक बीरोंका नाश करके कर्णने धर्म्मराजसे किस प्रकार युद्ध किया? सो हमसे कहो। पाण्डवोंके कौनसे बीरोंने युद्ध किया? और उनको जीतकर कर्ण युधिष्ठिरके पास कैसे पहुंचे?

सञ्जय बोले, हे राजन्! जब शत्रुनाशन कर्णने धृष्टद्युम्न आदि बीरोंको युद्धमें खड़ा देखा, तब क्रोध करके उनकी ओर दौड़े। कर्णको देख विजयी पाञ्चाल बीर उनकी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे हंस सरोवरको दौड़ते है। उसी समय दोनों ओरसे भेर और शंखोका भयानक शब्द होने लगा। दोनों ओरसे हाथी, घोड़े बीर गर्ज्जने लगे। बाण चलने लगे, और रथोंके पहियोंका शब्द होने लगा। उस शब्दसे वृक्ष और पर्व्वतोंके सहित पृथ्वी, वायु, मेघ, नक्षत्र, चन्द्रमा और सूर्य्यके सहित आकाश कांपने लगा, जिन बलवान जन्तुओंने उस शब्दको सुना वे सब कांपने लगे और दुर्व्वल जन्तु मर गये। तब कर्णने क्रोध करके अपने तेज बाणोंसे पांण्डवोंकी सेनाको इस प्रकार मारना आरम्भ किया, जैसे इन्द्र राक्षसोंका नाश करते हैं। कर्णने पाण्डवोंके सेनामें अनेक बीरोंको मार डाला, और अपने

तेज बाणोंसे सतहत्तर प्रभद्रक वशी प्रधान वीरोंको मारा। उसी समय महारथ कर्णने अपने तेज पच्चीस बाणोंसे पञ्चाल देशके पच्चीस चत्रियोंको मारा और शत्रुओंको नाश करनेवाले उत्तम पङ्ख युक्त तेज बाणोंसे चेदि देशके सहस्रों चत्रियोंको मारा।

महारथ कर्णको इस प्रकार घोर कर्म्म करते देख पञ्चाल देशके महारथ युद्ध करनेको आये। हे भारत। तब कर्णने अपने धनुष पर पांच बाण चढ़ाये और उनसे पांच पाञ्चाल चत्रियोंको मारा, उन पांचोंके नाम ये थे, भानुदेव, चित्रसेन, विदु, तपन, शूरसेन, इन प्रधान पांच वीरोंके मरनेसे पांचाल सेनामें हाहाकार होने लगा। इसके पश्चात् दश महारथ पाञ्चाल कर्णसे युद्ध करनेको आये, कर्णने उनको भी बाणोंसे मार डाला। हे राजन्! कर्णके पुत्र सुखेण, और सत्यसेनने जो उनके रथके पहियोंकी रचा कर रहे थे, वे भी अपने प्राणकी आशा छोड़कर घोर युद्ध करने लगे। कर्णका बड़ा बेटा वृषसेन कर्णके रथकी पीछेसे रचा कर रहा था, वह भी घोर युद्ध करने लगा। तब कर्णसे युद्ध करनेको धृष्टद्युम्न, सात्यकि, द्रौपदीके पांचो पुत्र, भीमसेन जनमेजय, शिखण्डी, प्रभद्रक, चेदि, पञ्चाल, केकेय, मत्स्यदेशी चत्री, नकुल और सहदेव शस्त्र लेकर दौड़े। जैसे वर्षा कालमें पर्व्वतके ऊपर मेघ बर्षते हैं, इसी प्रकार वे सब वीर कर्णके ऊपर अनेक प्रकारके बाण बर्षाने लगे। हे राजन्! तुम्हारी ओरसे कर्णके पुत्र आदि अनेक वीर उन वीरोंसे युद्ध करने लगे। सुषेणने अपने बाणसे भीमसेनका धनुष काट दिया, और उनके हृदयमें पांच बाण मार कर गर्ज्जने लगे। अनन्तर महाबलवान भीमसेनने दूसरा धनुष लेकर उस पर रोदा चढ़ाया, और एक बाणसे सुषेणका धनुष काट दिया। फिर क्रोध करके सुषेणके शरीरमें दश और कर्णके शरीरमें तिहत्तर बाण मारे। अनन्तर भानुसेनके शरीरमें दशबाण मारकर उसके घोडे सारथी और ध्वजाको काट दिया। फिर सब बंधुओंके बीचमें उसका शिर काट कर पृथ्वीमें गिरा दिया। भानुसेनका चन्द्रमुखवाला सिर इस प्रकार कटकर पृथ्वीमें गिरा जैसे डण्डीसे टूट कर कमल गिरता है। कर्णके पुत्रको मार कर भीमसेन अन्य वीरोंसे युद्ध करने लगे। उन्होंने कृपाचार्य्यके धनुष काटकर उनको और अनेक बाण चलाये। दुःशासनके हृदयमें तीन बाण शकुनिके छःबाण मारे। इसके पश्चात् अपने तेज बाणोंसे उलूक और पतत्रिको रथ हीन कर दिया। इसके पश्चात् वृषसेनकी ओर तीच्ण बाण चलाकर कहा कि तुम मर गये। कर्णने उस बाणको अपने बाणसे काट दिया और भीमसेनके हृदयमें तीन बाण मारे। तब भीमसेनने दूसरा तेज बाण सुषेणकी ओर चलाया, कर्णने उसको भी काट गिराया। अनन्तर कर्णने अपने पुत्रकी रचाके लिये घोर पराक्रमी भीमसेनके हृदयमें सत्तर बाण मारे। सुषेणने घोर धनुष धारण करके नकुलके हृदय और हाथोंमें अनेक बाण मारे। नकुलने सुषेणके शरीरमें बीस बाण मारे और गर्ज्जने लगे। नकुलके गर्ज्जनेसे कर्ण बहुत डरे। हे महाराज! अनन्तर महारथ सुषेणने अपने तेज बाणसे नकुलका धनुष काट दिया, और उनके शरीरमें दस बाण मारे। अनन्तर नकुलने क्रोध करके दूसरा धनुष लिया और सुषेणको नौ बाण मारे, नकुलने अपने बाणोंसे सब दिशाओंको पूरित कर दिया। सुषेणके घोड़े और सारथीको मार डाला। और तीन बाण उनके हृदयमें मारे अनन्तर तीन तेज बाणोंसे उनका धनुष काट दिया। फिर सुषेणने क्रोध करके दूसरा धनुष लिया और नकुलके शरी-

रमें साठ और सहदेवके सात बाण मारे। यह युद्ध देवासुर युद्धके समान हुआ, एक वीर दूसरेको मारनेकी इच्छासे घोर बाण चलाने लगे। सात्यकिने तीन बाणसे वृषसेनके सारथीको मार डाला। एक बाणसे धनुष, सात बाणोंसे घोड़े और एकसे ध्वजा काट दी, फिर तीन बाण उसके हृदयमें मारे, उन बाणोंके लगनेसे चण भरके लिये उन्हें मूर्च्छा होगयी; अनन्तर उस सारथी और घोड़े रहित रथसे खड्ग और ढाल लेकर उतरे और सात्यकिको मारनेके लिये दौड़े। सात्यकिने उन्हें आते देख वराहकर्ण नामक दश बाणोंसे खड्ग और ढाल काटके गिरा दिया। दुःशासनने वृषसेनको रथ और शस्त्रहीन देखकर अपने रथपर चढ़ा लिया और युद्धसे हटा दिया। अनन्तर महारथ वृषसेन दूसरे रथपर चढ़कर युद्धमें आये और द्रौपदीपुत्रोंके तीन तीन, सात्यकिके पाच, भीमसेनके चौंसठ और सहदेवके पांच बाण मारे, नकुलके तीस शतानीकके सात, शिखण्डीके दस और महाराज युधिष्ठिरके सौ बाण मारे। हे राजन्! और भी सब वीरोंको वृषसेनने अपने बाणोंसे युद्धमें व्याकुल कर दिया; इसके पश्चात् फिर महाबली वृषसेन कर्णके रथकी रचा करने लगे। फिर सात्यकिने दुःशासनके हृदयमें नौ बाण मारे, फिर उनके रथ, सारथी और घोड़ोंको मार डाला और उनके माथेमें तीन बाण मारे। तब दुःशासन अनेक शस्त्रोंसे भरे रथपर चढ़े और कर्णका बल बढ़ानेके लिये पाण्डवोंसे युद्ध करने लगे। तब धृष्टद्युम्नने क्रोध करके कर्णके शरीरमें दश बाण मारे, द्रौपदीके पुत्रोंने तिहत्तर, भीमसेनने चौसठ, सहदेवने सात, नकुलने तीस, शतानीकने सात, वीर शिखण्डीने दश, धर्म्मराज युधिष्ठिरने सौ बाण मारे, उस घोर युद्धमें इनको आदि लेकर और भी अनेक वीर अपनी विजयकी इच्छासे कर्णसे युद्ध करने लगे। सूर्य्य पुत्र कर्णने अपने रथमें बैठे हुए इन सब वीरोंके शरीरमें दश दश बाण मारे। हे महाभाग! हमने उस समय महापराक्रमी कर्णके अस्त्र बल और शीघ्रताको देखा, उस समय उन्होंने अद्भुत कर्म्म किया; हमने उस समय कर्णको बाण निकालते, चढ़ाते नहीं देखा केवल मनुष्योंके मरनेसे जान पड़ाता था कि कर्ण बाण चला रहे हैं। आकाश, अन्तरिच, पृथ्वी और दिशा बाणोंसे पूरित होगईं, आकाश लाल बादलोंसे पूरित सा दीखने लगा। उस समय महाप्रतापी धनुषधारी कर्ण नाचते हुए मनुष्यके समान दीखते थे, जिसने कर्णके शरीरमें जो बाण मारे थे, कर्णने उनसे तिगुने उसको बाण मारे, तब कर्णने फिर दश दश बाणोंसे सब वीरोंको मारा।

उस समय कर्णने पाण्डवोंके घोड़े, रथ और सारथियोंको बाणोंसे व्याकुल कर दिया। तब पाण्डवोंके वीर कर्णके आगेसे हट गये, कर्ण भी उन सब वीरोंको जीतकर हाथियोंकी सेनामें पहुंचे। महापराक्रमी कर्णने अपने बाणोंसे रथमें बैठे हुए तीन सौ चेदिदेशी चत्रियोंको मारा और फिर युधिष्ठिरसे युद्ध करने लगे। हे राजन्! भीमसेन, नकुल, सहदेव, शिखण्डी और सात्यकि युधिष्ठिरकी रचा करनेको दौड़े। इसी प्रकार तुम्हारा ओरके वीर चारो ओरसे महायोद्धा कर्णकी रचा करने लगे। हे राजन्! उस समय दोनों ओरसे अनेक प्रकारके बाजे बजने लगे। इसी प्रकार वीर लोग सिंहके समान गर्ज्जने लगे। इसके पश्चात् युधिष्ठिरको आगे करके सब पाण्डव और कर्णको आगे करके हम लोग युद्ध करनेको चले।

४८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! महाबलवान् कर्ण उस सेनाके मुखको तोड़कर सहस्रों हाथी, घोड़े और पदातियोंके सहित युधिष्ठिरकी ओर दौड़े। पाण्डवोंकी ओरसे अनेक प्रकार चलते हुए शस्त्रोंको काटकर सावधान कर्णने सब वीरोंके शरीरमें अपने तेज बाण मारे, किसीका सिर किसीका हाथ और किसीके पैर काट डाले। कोई मरकर पृथ्वीमें सो गया, कोई डरकर भाग गया। सात्यकिकी आज्ञासे फिर कर्णको मारनेके लिये द्राविड़ और निषाददेशकी सेना चली। जैसे वायु चलनेसे शालके वृक्ष टूटकर पृथ्वीमें गिर जाते हैं तैसे ही कर्णके बाण लगनेसे सहस्रों वीर मरने लगे। इस प्रकार कर्णने सहस्रों वीरोंको मारकर जगतमें अपना यश फैलाया। जैसे वैद्य मन्त्र और औषधियोंसे रोगको रोकता है, ऐसेही प्रलयकालमें क्रोध भरे यमराजके समान कर्णको पाञ्चाल पाण्डवोंने घेर लिया। जैसे मन्त्र और औषधियोंको न मानकर रोग बढ़ता है तैसे ही सब वीरोंको जीतकर कर्ण युधिष्ठिरकी ओर दौड़े। जैसे योगीको मृत्यु नहीं मार सकती तैसेही रथकी रक्षा करते हुए पाञ्चाल और पाण्डव कर्णको न मार सके। अनन्तर शत्रुनाशन कर्णको रुका देख महाराज युधिष्ठिर क्रोधकर बोले, रे सूतपुत्र कर्ण! तू वृथा ही इधरको दौड़ा चला आता है! तू हमारे वचन सुन। तू सदा बली अर्जुनके सङ्ग युद्ध करनेकी इच्छा करता है, सदा ही धृतराष्ट्रपुत्रके मतमें रहकर हमारी हानि किया करता है; आज तुझे जो कुछ बल पराक्रम हो, सो दिखला। तेरे मनमें पाण्डवोंकी ओरसे जो कुछ वैर या द्वेष हो सो दिखला, आज हम इस घोर युद्धमें तेरी युद्धकी इच्छा नाश कर देंगे। ऐसा कहकर महाराज युधिष्ठिरने सोनेके पङ्खवाले दश बाण चलाए। शत्रुनाशन महाबलवान कर्णने भी दश बाण युधिष्ठिरकी ओर चलाये, उन बाणोंके लगनेसे महाराज युधिष्ठिरको ऐसा क्रोध बढ़ा जैसे अग्निमें घी डालने पर अग्नि बढ़ती है। क्रोध बढ़े महाराजका स्वरूप ऐसा दीखने लगा, मानों जगत्का नाश करनेके लिये प्रलय कालके सम्वर्त्तक अग्निने देह धारण किया है। तब महाराज युधिष्ठिरने अपने भारी धनुष पर टङ्कार देकर ऐसा घोर बाण चढ़ाया जिससे पर्व्वत भी कट सक्ते थे, तब महाराजने सूतपुत्रको मारनेके लिये उस यमराजके दण्डके समान बाणको कान तक खींचकर छोड़ा, वह बलवान् युधिष्ठिरके धनुषसे छूट कर और महारथ कर्णके कवचको काट कर उनकी बाईं पसुलीमें घुस गया, उस बाणके लगनेसे महाबाहु कर्णके शरीर कांपने लगी, हाथसे धनुष गिर गया, और मूर्च्छा खाकर रथमें गिर गये, उस समय कर्णकी ऐसी दशा हो गई, मानो प्राण निकल गया। परन्तु महाराजने अर्जुनकी प्रतिज्ञा पूरी होनेके लिये कर्णको नहीं मारा।

कर्णको मरा हुआ जान तुम्हारे पुत्र और तुम्हारे सब वीरोंका रङ्ग उड़ गया, और सब लोग हाहाकार कर रोने लगे। अपने राजाका पराक्रम देख पाण्डवोंकी सब सेना गर्ज्जने और हंसने लगी, इतने समयमें महा पराक्रमी कर्ण मूर्च्छासे जागे और महाराज युधिष्ठिरको मारनेकी इच्छा की अनन्तर पराक्रमी कर्णने विजय नामक धनुषपर टङ्कार देकर युधिष्ठिरकी ओर सहस्रों बाण चलाये। अनन्तर महाराज युधिष्ठिरके रथके पहियोंकी रक्षा करनेवाले, पञ्चाल देशी चन्द्रदेव और दण्डधारको दश बाणोंसे मार डाला। वे दोनों महाराज युधिष्ठिरकी दोनों ओर इस प्रकार मर कर गिरे जैसे चन्द्रमाके पास पुनर्व्वसु। महाराजने कर्णके शरीरमें तीस तथा सुषेण और वसुसेनके शरीरमें तीन तीन बाण मारे, शल्यके शरीरमें

नब्बे बाणोंके शरीरमें तिहत्तर और उनके रक्षकोंके तीनतीन बाण मारे। तब अधिरथ पुत्र कर्ण हंसने लगे और अपनी धनुषको घुमाने लगे, अनन्तर युधिष्ठिरके हृदयमें एक बाण मारकर साठ बाण और मारे। अनन्तर महाराजकी रक्षा करनेके लिये पाण्डवोंकी सेनाके प्रधान बीर क्रोध करके कर्णके ऊपर बाण बर्षाते दौड़े। सात्यकि, चेकितान, युयुत्सु, पाण्ड्य, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और द्रौपदीके पुत्र और प्रभद्रक, नकुल, सहदेव, भीमसेन, और शिशुपालका पुत्र सहदेव, कारुष, मत्स्य, कैकेय, काशी, कौशल आदि सब क्षत्री शीघ्रता करके महाराजके पास पहुंचे और वसुसेनके ऊपर बाण चलाने लगे। उस समय पांचाल देशीय जनमेजय शीघ्र चलनेवाले, वाराह कर्ण नामक बाण कर्णकी ओर चलाने लगे। वत्सदन्त, विपाठ, क्षुरप्र, चरका सुख आदि अनेक प्रकारके शस्त्र हाथी घोड़े और रथोंपर चढ़े बीर कर्णकी ओर चलाने लगे। इस प्रकार पाण्डवोंके प्रधान बीरोंसे घिरकर कर्ण भी ब्रह्म अस्त्रकी विधिसे अनेक अस्त्र चलाते रहे। तब बाणरूपी ज्वालायुक्त कर्णरूपी अग्नि चारों ओर घूमकर पाण्डवरूपी बनको जलाने लगी। अनन्तर महापराक्रमी महाधनुषधारी कर्णने हंसकर अनेक प्रकारके बाणोंसे महाराजका धनुष काट दिया। अनन्तर क्षण मात्रमें कर्णने तेज बाणोंसे महाराजका कवच काट दिया। जैसे आकाशसे बिजली गिरती है, तैसे ही महाराजका सोनेका रत्नजटित कवच कटकर पृथ्वीमें गिरा। महाराजका रत्नजड़ा कवच इस प्रकार पृथ्वीपर गिरा जैसे अनेक तारे रातमें टूट कर गिरते हैं। रुधिरसे भरे हुए कवचरहित महाराजने एक लोहेकी सांगी कर्णपर चलाई, महा धनुषधारी कर्णने उस जलती हुई अग्निके समान आती हुई सांगको अपने बाणोंसे काट कर गिरा दिया। तब युधिष्ठिरने कर्णके हाथ, शिर और हृदयमें चौदह तोमर मारे और प्रसन्न होकर गर्जने लगे। उनके लगनेसे कर्णने लात लगे सर्पके समान क्रोध किया। अनन्तर एक बाणसे महाराजकी ध्वजा काटकर तीन बाण हृदयमें मारे अनन्तर उनके तूणीरको काटकर रथ भी तिलके समान काट दिया। अनन्तर सफेद घोड़ोंके रथपर चढ़कर महाराज युधिष्ठिर युद्धसे हट गये, इस प्रकार रथ, घोड़े और सारथियोंके मरनेसे महाराज युधिष्ठिर युद्धसे भाग गए। जिस समय महाराज युधिष्ठिर कर्णके आगे खड़े न हो सके, तब राधापुत्र कर्ण अपने रथसे उतरकर अपने शरीरको पवित्र करनेके लिए ध्वजा, छत्र, अङ्कुश और कलस आदि चिन्ह युक्त शङ्खसे महाराजका कन्धा छूने लगे और कुछ ऐसी इच्छा हुई कि महाराजको पकड़ लेजाऊं। परन्तु शल्यने उसी समय पुकारकर कहा कि, सावधान महाराजको मत छुओ, यदि तुम उनको छुओगे तो वे तुमको मारकर भस्म कर देंगे। तब शल्यके वचन सुनकर युधिष्ठिरकी निन्दा करते हुए कर्ण बोले, आप क्षत्रियोंके उत्तम कुलमें उत्पन्न हुए क्षत्रिय धर्ममें स्थित होकर भी प्राणोंके भयसे युद्ध छोड़कर भागे, इससे हमने जान लिया कि आप क्षत्री धर्ममें निपुण नहीं हैं। केवल पढाना और यज्ञ कराने आदि ब्राह्मणोंके धर्मको ही जानते हैं। हे कुन्तीपुत्र! आप कभी हमसे या हमारे बीरोंसे युद्ध मत कीजिये, न हमारे पक्षपतियोंको बुरा कहिये, कौरवोंसे युद्ध करनेकी इच्छा न कीजियेगा, क्योंकि हम लोगोंके संग युद्ध करनेसे यही दशा होती है। हे महाराज! आप अपने घरको चले जाइये, अथवा कृष्ण और अर्जुनके पास चले जाइये, वह आपको कदापि नहीं मार सकता। ऐसा कहकर बलवान् कर्णने महाराजको छोड़ दिया। अनन्तर जैसे इन्द्र दानवोंका नाश

करते हैं; तैसे ही कर्ण पाण्डवोंकी सेनाका नाश करने लगे।

महाराज भी लज्जित होकर एक ओरको चले गये। महाराजके जानेके पश्चात् कर्णके आगेसे चेदि और पञ्चाल देशके क्षत्री पाण्डवोंके सहित भागे, नकुल, सहदेव, महारथ, द्रौपदीके पाचो पुत्र चले गये, पाण्डवोंकी सेनाको भागते देख सब कौरवोंके सहित कर्ण बहुत प्रसन्न हुए और पीछे दौड़े उस समय तुम्हारी सेनामें अनेक शङ्ख, भेर, मृदङ्ग बजने लगे, तुम्हारे पुत्र सिंहके समान गर्ज्जने लगे, कुरुकुल श्रेष्ठ युधिष्ठिर भी सुतकीर्त्तिके रथपर शीघ्रतासे चढ़े फिर कर्णका पराक्रम और अपनी सेनाको भागते देख क्रोध करके अपने सब वीरोंसे बोले, ये क्या होरहा है? मारो मारो इन्हें मारो। महाराजकी आज्ञा सुनते ही भीमसेन आदि महारथ तुम्हारे पुत्रोंसे युद्ध करनेको लौटे।

हे भारत! उस समय दोनों ओरसे हाथी घोड़े, वीर और शस्त्रोंका घोर शब्द होने लगा। उस घोर युद्धमें एक दूसरेसे कहने लगा आओ, शस्त्र चलाओ, युद्ध करो; चारो ओर यही शब्द होता था। वीर गर्ज्जने और लड़ने लगे, उस समय बाण मेघके समान आकाशमें छा गये, एक वीर दूसरेको मारने लगा। अनेक राजा, ध्वजा, पताका, छत्र और सारथियोंसे हीन होगये, अनेक राजोंके शरीर कट गए, अनेक मरकर पृथ्वीमें गिर गये, जैसे पर्व्वत वज्रके लगनेसे गिरते हैं। ऐसे ही महावतके सहित हाथी गिर गये और उनके शरीरसे झरनेके समान रुधिर बहने लगा। उनके माला आदि आभूषण टूटकर पृथ्वीमे गिर गये, सहस्रों घोड़े वीरोंके सहित मर कर पृथ्वीमें गिरे; अनेक रथमें बैठे वीर शस्त्रोंके सहित रथोंसे गिर गये, अनेक चन्द्रमाके समान मुख और कमलके समान नेत्रवाले पदाति शस्त्रोंसे मरकर पृथ्वीमें गिरगये।

वीरोंके कटे हुए, शिरोंसे पृथ्वी, आकाश और दशो दिशामें शब्द पूरित होगया।

आकाशमें विमानोंमें बैठी हुई, अप्सरा अनेक प्रकार गीत गाकर बाजे बजाने लगीं। मरे हुए वीरोंको अपने अपने विमानमें बिठलाकर स्वर्गको लेजाने लगीं, इस आश्चर्य्यको देखकर सब वीर स्वर्ग जानेकी इच्छासे प्रसन्न होकर युद्ध करने लगे। रथी रथीसे विचित्र युद्ध करने लगे। हाथी हाथीसे घोड़े घोड़ेसे युद्ध करने लगे। जिस समय यह घोर युद्ध होने लगा और दोनों सेनाओंमें धूल उड़ने लगी, तब पाण्डवों और कौरवोंकी सेना आपस होमें एक दूसरेको मारने लगीं, कोई किसीके बाल पकड़कर खींचने लगे और कोई किसीको नखूनोंसे नोचने लगे कोई दांतोंसे काटने लगे। उस मनुष्य हाथी, घोड़ेके नाश करने वाले युद्धमें वीरोंकी मुक्कामुक्की होने लगी। अनन्तर रुधिरकी नदी बह चली, उसमें हाथी घोड़े और मनुष्योंके शरीर बहने लगे, दोनों तटपर हाथी, घोड़े और मनुष्योंके मांसका कीचड़ होगया। उसके दोनों तटपर खड़े होकर विजयकी इच्छासे अनेक क्षत्रियोंको मारकर बहाने लगे। अनेक वीर उसमें तिरने लगे, अनेक डूबने लगे। उस नदीमें जानेसे वीरोंके कपड़े, कवच और शस्त्र लाल होगये, अनेक उसमें स्नान करने लगे। कोई कोई अपने रथोंको वा घोड़ोंको वा हाथियोंको पार लेजाने लगे; हमने वस्त्र, शस्त्र, वाहन, भूमि, आकाश तारे और दशों दिशा लाल ही लाल देखीं।

हे भारत! वहां रुधिरके शब्द, गन्ध, स्पर्श, रूप और रससे दोनों सेना घबड़ाने लगीं, उस समय सात्यकि, भीमसेन और धृष्टद्युम्न आदि वीर तुम्हरी सेनाकी ओर लौटे।

हे राजन्! उन सबके न सहने योग्य पराक्रमको देख तुम्हारी सेना भाग चली उस समय तुम्हारी सेनामें सब ओरसे पाण्डवोंके वीर घुसे, तब तुम्हारी सेना इस प्रकार भगी जैसे सिंहोंके घुसनेसे हाथियोंके झुण्ड भगें। किसीका कवच कट गया। किसीका टोप गिर गया। किसीके शस्त्र गिर गये और किसीकी ध्वजा टूट गई।

४६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! पाण्डवोंके भयसे अपनी सेनाको भागते और पाण्डवोंकी अपनी सेनाकी ओर आते देख दुर्योधनने रोका। हे महाराज! दुर्योधनके पुकारनेपर भी तुम्हारी सेनाके वीर न रुके। अनन्तर पत्त और प्रपत्तकी सेनाके सहित अनेक शस्त्र धारण करके सुबलपुत्र शकुनि आदि कौरवोंके वीर भीमसेनकी ओर दौड़े। कर्णने आपके पुत्र आदि सब वीरोंको भागते देख मद्रराज शल्यसे कहा कि आप हमारे रथको भीमसेनके रथके पास ले चलिये, कर्णके वचन सुन मद्रराज शल्यने हंस वर्णवाले घोड़ोंको भीमसेनकी ओर हांका। महापराक्रमी शल्यके हांकनेसे कर्णके घोड़े वेगसे भीमसेनकी ओर चले।

हे भरतकुलसिंह! कर्णको अपनी ओर आते देख भीमसेनने महा क्रोध किया। और उसके मारनेका विचार करने लगे। अनन्तर उन्होंने महावीर सात्यकि और सेनापति धृष्टद्युम्नसे कहा कि, तुम दोनों महाराज युधिष्ठिरकी रक्षा करो, हमें आज बहुत क्रोध हुआ है, आज हमारे देखते कर्णने महाराजको इतना दुःख दिया था। दुर्योधनकी प्रसन्नताके लिये आज कर्णने महाराजको इतना दुःख दिया था। हे धृष्टद्युम्न! अब मैं इसको मार कर इस दुःखके पार जाऊंगा, आज इस युद्धमें हम कर्णको मारेंगे, या वही हमें मारेगा; अब हम महाराजको रक्षाका भार तुम्हारे ऊपर देते हैं। तुम सब सावधान होकर महाराजको रक्षा करो, महाबाहु भीमसेन ऐसा कहकर अपने शब्दसे दशो दिशाः पूरित करते हुए कर्णसे युद्ध करने चले। महापराक्रमी भीमसेनको आते देख मद्रराज शल्यने कर्णसे कहा।

शल्य बोले, हे कर्ण! देखो यह महा पराक्रमी भीमसेन क्रोध किये, तुम्हारी ओरको दौड़े आते हैं। ये बहुत दिनका इकट्ठा किया हुआ क्रोध आपके ऊपर डालेंगे। हे कर्ण! अभिमन्यु और घटोत्कचके मरने पर भी भीमसेनका ऐसा रूप नहीं देखा था, जैसा आज है। ये तीनों लोकको क्रोध करके नाश कर सकते हैं। इनका रूप इस समय प्रलय कालकी अग्निके समान होरहा है।

सञ्जय बोले, मद्रराज शल्यके ऐसे वचन कहते कहते ही भीमसेन क्रोध करके कर्णके पास पहुंच गये। महायोद्धा भीमसेनको अपने पास आया देख राधापुत्र कर्ण हंस कर शल्यसे बोले, हे मद्रराज! आपने जो हमसे भीमसेनके विषयमें कहा सो सब सत्य है, ये महापराक्रमी और महायोद्धा हैं, इन्हें अपने शरीर और प्राणका मोह नहीं है; और बलमें भी ये सबसे अधिक हैं। ये जिस समय छिप कर विराट नगरमें रहते थे तब द्रौपदीके हितके लिये केवल अपने बाहुबलसे रूप छिपा कर भाइयोंके समेत कीचकको मार डाला था, वही भीमसेन आज क्रोध करके हमसे युद्ध करनेको आये हैं। क्या होगा? यदि साक्षात् यमराज भी दण्ड लेकर मेरे सम्मुख आवे तो मैं युद्धमें उनको भी मारूं और भीमसेनको तो मारनेकी मेरी बहुत दिनसे इच्छा ही थी, अर्जुन नहीं मुझे मारे चाहे मैं अर्जुनको मारूं, इसको

भसे युद्ध करनेकी क्या सक्ति है ? भीमसेनके रनेसे अथवा इनका रथ कटनेसे अर्ज्जुन मुझसे द्ध करनेको आवेंगे, सो मेरे लिये अच्छा ही होगा इसमें जो आपकी सम्मति हो सो हमसे कहिये, हम वैसा ही करेंगे। कर्णके बचन सुन शल्य बोले, हे कर्ण ! हमारी येही सम्मति है, कि तुम भीमसेनसे युद्ध करो, भीमसेनको मार कर तुम अर्ज्जुनसे युद्ध कर सकोगे यही तुम्हारी बहुत दिनसे इच्छा थी, सो हे कर्ण ! भीमसेनको मरते ही अर्ज्जुन तुमसे युद्ध करनेको आवेंगे। शल्यके बचन सुनते ही कर्ण बोले, हम अर्ज्जुनको युद्धमें मारेंगे, या वह हमको मारेंगे, जो हो अब तुम युद्धकी इच्छासे भीमसेनके रथकी ओर रथ हांको।

सञ्जय बोले, हे पृथ्वीनाथ ! कर्णका ऐसा बचन सुन शल्यने रथको उधर ही हांका जहां भीमसेन तुम्हारी सेना मारते थे, हे राजेन्द्र ! जब कर्ण और भीमसेन सन्मुख हुए तब दोनो ओरसे शङ्ख, मृदङ्ग, भेर बजने लगे, इतने ही समयमे महा बलवान भीमसेनने उस घोर सेनाको व्याकुल कर दिया। हे राजेन्द्र ! भीमसेन और कर्णका यहां घोर युद्ध हुआ। हे पृथ्वीनाथ ! तब भीमसेन महा दानी कर्णकी ओर दौड़े, उनको देख महा पराक्रमी कर्णने क्रोध कर एक बाण भीमसेनके मारा और फिर उनकी ओर अनेक बाण चलाये तब क्रोध करके भीमसेनने कर्णके हृदयमें नौ बाण मारे, फिर उनकी ओर अनेक बाण चलाये। तब कर्णने क्रोध करके अनेक बाणोंसे भीमसेनका धनुष काट दिया। और उनके हृदयमें अनेक बाण मारे और एक बाणसे भीमसेनका कवच तोड़ दिया। तब भीमसेनने दूसरा धनुष लेकर कर्णके मर्म्म स्थानोंमें अनेक बाण मारे और गर्ज्जने लगे। उनके गर्ज्जनेसे पृथ्वी कांपने लगी, जैसे आग जलाकर मतवाले हाथीको मारते हैं, तैसे ही कर्णने भीमसेनके शरीरमें पच्चीस बाण मारे; उन बाणोंके लगनेसे भीमसेनके शरीरसे रुधिर बहने लगा, और कर्णको मारनेके लिये उन्होने लाल नेत्र कर लिये; अनन्तर उन्होंने पर्व्वतको चीरनेवाला एक महाघोर बाण धनुष पर चढ़ाया। महा धनुषधारी भीमसेनने क्रोध करके धनुषको कान तक खोंचा और कर्णके मारनेको बाण छोड़ा, वह बाण बलवान भीमसेनके धनुषसे छूट कर कर्णके हृदयमे इस प्रकार घुस गया जैसे बज्र पर्व्वतमें घुस जाता है। हे कुरु कुलश्रेष्ठ। उस भीमसेनके बाण लगनेसे तुम्हारे सेनापति कर्ण मूर्छा खाकर रथमें गिर पड़े, महापराक्रमी कर्णको मूर्च्छित देख मद्रराज शल्यने रथको युद्धसे हटा दिया। कर्णके पश्चात् भीमसेन तुम्हारी सेना पर इस प्रकार दौड़े जैसे इन्द्र राक्षसों पर दौड़ते हैं।

५० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् ! राधापुत्र कर्णको युद्धसे भगा देख तुम्हारे पुत्रने अपने भाइयोंसे कहा, तुम लोगोंका कल्याण हो देखो भीमसेन रूपी समुद्रमें कर्ण डूबे जाते हैं। तुम लोग शीघ्र जाकर उनकी रक्षा करो। अपने भाईके बचन सुन वे सब लोग क्रोध कर भीमसेन पर इस प्रकार दौड़े जैसे दीपकपर पतङ्ग। श्रुतवीर्य्य, दुर्द्धर क्राथ, विवित्सु, बिकट, सोम, निषङ्गी, कवची, पाशी, नन्द, उपनन्द, दुष्प्रधर्ष, सुबाहु, बातवेग, सुवर्चा, धनुर्ग्राह, दुर्म्मद, जलसन्ध, शल और सह ये सब महारथ तुम्हारे पुत्र भीमसेनके पास आये, और उन्हे चारों ओरसे घेर लिया और वे चारो ओरसे भीमसेनके ऊपर बाण चलाने लगे। इनके बाणोंसे पीड़ित होकर महा पराक्रमी भीमसेनने अपने बाणोंसे तुम्हारे चौदह पुत्रोंको रक्षा करनेवाले पचास रथियोंको मार डाला। हे राजेन्द्र ! अनन्तर भीमसेनने एक बाणसे विवित्सु

पुत्रका सिर काट लिया। हे पृथ्वीनाथ! जिस समय विवित्सु का चन्दन लगा सिर टोपके समेत पृथ्वी पर गिरा तब तुम्हारे पुत्रोंने महा क्रोध कर महा पराक्रमी भीमसेनकी ओर अनेक बाण चलाये। तब भीमसेनने दोबाणोंसे तुम्हारे दो पुत्रोंके शिर काट लिये वे दोनों इस इस प्रकार पृथ्वी पर गिरे जैसे आंधीसे वृक्ष गिर जाते हैं। इस प्रकार देवपुत्रोंके समान पराक्रमी बिकट और सहको मार कर बलवान भीमसेनने क्राथको मार डाला। हे पृथ्वीनाथ! जब तेज बाण लगनेसे क्राथ पृथ्वीमें गिरे, तब तुम्हारी सेनामें महा हाहाकार होने लगा। इस प्रकार तुम्हारे बलवान् महा धनुष धारी पुत्रोंको मार भीमसेन तुम्हारी सेनाकी ओर दौड़े, और भीमसेनने नन्द और उपनन्दको यमके यहां पहुंचा दिया। उनके मारनेसे तुम्हारे सब पुत्र घबड़ाये और युद्ध छोड़ भागे। तुम्हारे पुत्रोंको मरा हुआ और भीमसेनको यमराजके समान बढ़ता देख सूतपुत्र कर्ण बहुत दुखी हुए और घबड़ाये, और अपने हंसके समान वर्णवाले घोड़ोंको भीमसेनकी ओर हांका। हे पृथ्वीनाथ! जब कर्ण भीमसेनका रथ सन्मुख हुआ, तब इन दोनोंका घोर युद्ध हुआ। महारथ कर्ण और भीमसेनका समागम देखकर हमें यह सोच हुआ, कि यह युद्ध कैसे समाप्त होगा। तब महायोद्धा भीमसेन ने तुम्हारे पुत्रोंके देखते कर्णको बाणोंसे छा दिया। अनन्तर कर्णने क्रोध करके भीमसेनकी ओर नौ बाण चलाये, शस्त्र जाननेवाले कर्णके बाण लगनेसे महापराक्रमी भीमसेनने कान तक खींच कर कर्णके शरीरमें सात बाण मारे, उन बाणोंके लगनेसे महा पराक्रमी कर्ण विषैले सांपके समान सांस लेने लगे। अनन्तर महारथ कर्णने अपने बाणोंसे भीमसेनके रथको छिपा दिया। इसी प्रकार भीमसेनने भी कर्णके रथको बाणोंसे छा दिया।

अनन्तर सब कौरवोंके बीचमें महा पराक्रमी भीमसेन गर्जने लगे। तब कर्णने महा क्रोध करके एक दृढ़ धनुष हाथमें लिया और भीमसेनके शरीरमें तेज दश बाण मारे, एकसे रथ और एकसे उनका धनुष काट दिया। अनन्तर भीमसेनने क्रोध करके सोनेसे विभूषित कालदण्डके समान परिघको चलाया परिघको आते देख कर्णने सांपके समान अनेक बाणोंसे काट दिया। इतने ही समयमें भीमसेनने एक अत्यन्त दृढ़ धनुष धारण किया और अनेक बाणोंसे शत्रुनाशन कर्णके रथको छा लिया, तब कर्ण और भीमसेनका फिर घोर युद्ध हुआ। जैसे एक दूसरेको मारनेके लिये बालि और सुग्रीव लड़े थे, इसी प्रकार इन दोनोंका युद्ध हुआ। अनन्तर कर्णने भीमसेनको ओर तीन बाण चलाये, वे बाण महा पराक्रमी कर्णके धनुषसे छूट कर महाबली और महा धनुषधारी भीमसेनके कानोंको जड़में लगे। तब भीमसेनको महा क्रोध हुआ, और अपने धनुष पर कर्णको मारनेवाला बाण चलाया वह बाण धनुषसे छूट कर कर्णके कवच और शरीरको छेद कर पृथ्वीमें घुस गया। वह बाण कर्णके कवच शरीर और रथको छेद इस प्रकार पृथ्वीमें घुस गया कि मानों सांप बिलमें घुस जाय। हे महाराज! उस बाणके लगनेसे कर्ण रथ समेत इस प्रकार हिलने लगे, जैसे भूकम्पमें जगत् हिलने लगता है। अनन्तर कर्णने क्रोध करके भीमसेनके शरीरमें पचीस बाण मारे और एकसे उनकी ध्वजा काट दी, एक बाणसे धनुष और दूसरेसे सारथीको मार डाला। हे राजेन्द्र! अनन्तर थोड़े समयमें कर्णने हंसते हंसते महा पराक्रमी भीमसेनका रथ भी काट दिया। अनन्तर महाबाहु भीमसेन हंसते हुए गदा हाथमें लेकर बहुत शीघ्रतासे रथसे कूदे और तुम्हारी सेनाको गदासे मार कर इस प्रकार भगाने लगे जैसे आंधी मेघको भगाती

है। शत्रु नाशन भीमने क्रोध करके महावत और वीरोंके सहित बड़े दांतवाले सात सौ हाथियोंको मार डाला। मर्म्म जाननेवाले महाबली भीमसेनने हाथियोंके दांत, सूंड़, सिर पसली और सब मर्म्म तोड़ डाले, अनन्तर शेष हाथी भीमसेनके आगेसे भागने लगे। उस हाथी सेनामें भीमसेनकी ऐसी शोभा बढ़ी जैसे मेघोंमें सूर्य्यकी। भूमिमें खड़े भीमसेनने अपनी गदासे महावत, योधा और अम्बारियोंके सहित उन सातसौ हाथियोंको इस प्रकार मारकर गिरा दिया जैसे इन्द्र वज्रसे पर्व्वतोंको गिरा देते हैं। अनन्तर कुन्तीपुत्र शत्रु नाशन भीमसेन शकुनिकी सेनामें गये, और बावन हाथियोंको मारा। इसी प्रकार योधाओंके सहित सौ रथ और सहस्रों पैदलोंका नाश किया। तब तुम्हारी सेना बहुत डरने लगी जैसे अग्निमें पड़नेसे चमड़ा जरता है, तैसेही भीमसेन और सूर्य्यके तेजसे तुम्हारी सेना जलने लगी। हे भरतकुलसिंह! अनन्तर तुम्हारी सेना भीमसेनके भयसे सब ओरको भागने लगी। अनन्तर पांच सौ रथी और अनेक वीर बाण चलाते हुए भीमसेनको ओर दौड़े। जैसे विष्णु दानवोंको मारते हैं तैसे ही भीमसेनने अपनी गदासे उन पांच सौ रथियोंकी पताका, ध्वजा और रथोंके सहित मारडाला। अनन्तर शकुनिकी आज्ञासे शक्ति, साङ्गि और भाले लिये तीन सहस्र घुड़चढ़े भीमसेनकी ओर दौड़े, अनन्तर शत्रुनाशन भीमसेन भी उनपर दौड़े और अनेक प्रकारकी गतियोंसे मारने लगे। हे भारत! जैसे पहाड़ोंपर पत्थर गिरनेका शब्द होता है तैसे ही इन वीरोंके मरने और गिरनेका शब्द होने लगा। इस प्रकार शकुनिके तीन सहस्र घुड़चढ़ोंको मारडाला, इतने समयमें उनका सारथी दूसरा रथ ले आया, अनन्तर उस रथपर चढ़कर और क्रोध करके कर्णकी ओर दौड़े। इस बीचमें कर्णने अपने बाणोंसे धर्म्मराज युधिष्ठिरको छा लिया और उनके सारथीको मारडाला। तथा अनेक बाण वर्षाते हुए महाराजको ओर दौड़े।

कर्णको राजाकी ओर जाते देख बाण वर्षाते भीमसेन इनकी ओर दौड़े। भीमको आते देख शत्रुनाशन राधापुत्र उनकी ओर लौटे और अपने बाणोंसे उन्हें छा लिया। अनन्तर भीमसेनके रथकी ओर दौड़ते हुए कर्णके ऊपर महापराक्रमी सात्यकि बाण वर्षाने लगे और भीमसेनकी रक्षा करने लगे, सात्यकिके अनेक बाण लगनेपर भी कर्ण भीमसेनके युद्धसे निवृत्त न हुए, अनन्तर वे दोनों महाधनुषधारी युद्ध करने लगे। हे राजन्! भीमसेन और कर्ण घोर बाण चलाने लगे। इनके बाणोंसे सब आकाश पूरित होगया।

हे राजन्! जिस समय दो पहर हुआ तब हमें और पाण्डवोंको कुछ न दीखा, अर्थात् बाणोंसे अन्धकार होगया। उस समय भीमसेनसे शकुनि कृतवर्म्मा, अश्वत्थामा, और कृपाचार्य्यको युद्ध करते देख सब कौरव लौटे। हे पृथ्वीनाथ! उन सबके लौटते हुए घोर शब्द होने लगा। जैसे दो समुद्र बढ़कर घोर शब्द करते हुए मिलते हैं, ऐसे ही ये दोनों सेना युद्ध करनेको भिड़ीं, उस दो पहरमें दोनों सेना प्रसन्न होकर युद्ध करने लगीं। जैसा यह घोर युद्ध हुआ वैसा न कभी देखा न सुना था दोनों सेना समुद्रके समान लड़ने लगीं। जैसे शब्द करती नदी समुद्रमें जा मिलती है, तैसे ही तुम्हारी सेना पाण्डवोंकी सेनासे जा मिली। तब दोनों ओरसे बाणोंका घोर शब्द होने लगा। हे पृथ्वीनाथ! जैसे दो नदी एकमें मिल जाती हैं, तैसेही ये दोनों सेना मिलकर घोर युद्ध करने लगीं। पाण्डव और कौरवोंकी सेनाके वीर अपने यशके लिये गर्ज्जने और युद्ध

करने लगे। हे राजन्! हमने उस युद्धमें अनेक वीरोंके माता और पिताओंके नाम सुने अनेक वीर अपना ही नाम लेकर कर्म्म करते थे, चारो ओर गर्जते हुए वीरोंका शब्द सुनाई देता था। उन महातेजस्वी वीरोंके क्रोधभरे शरीरोंको देखकर मुझे यह निश्चय होगया कि अब जगत्में कोई नहीं बचेगा और मुझे यह भ्रम भी हुआ कि अब क्या होगा? अनन्तर महारथ पाण्डव और कौरव अपने तेज बाणोंसे एक दूसरेको मारने लगे।

५१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! तब दोनों ओरके क्षत्री परस्पर बैर बढ़ाकर अपनी अपनी विजयके लिये एक दूसरेको मारने लगे। हे राजन्! हाथी, घोड़े, रथ और पदातियोंके झुण्ड परस्पर युद्ध करने लगे। दोनों ओरसे गदा परिघ, खड्ग, प्रास, भिन्दिपाल और भुसुण्डी चलने लगे। हे राजन्! हमें उस घोर युद्धमें शस्त्रके शिवा और कुछ न सूझा। बाणोंकी वृष्टि टोड़ीदलके समान दीखने लगी। हाथी हाथीसे, घोड़े घोड़ोंसे, रथी रथीसे और पदाति पदातियोंसे लड़ने लगे। थोड़े समयके पश्चात् हाथीपर चढ़े वीर पैदलोंसे पैदल घोड़ेवालोंसे और घोड़ेवाले रथियोंसे युद्ध करने लगे। हे राजन्। शीघ्र चलनेवाले हाथी अपने दांत, सूंड़ और पैरोंसे अनेक मनुष्योंको मारने लगे। हे भारत! मरते, पुकारते और युद्ध करते हुए वीरोंका घोर शब्द होने लगा, वीरोंने मनुष्योंको पशुओंके समान मार डाला। थोड़े समयमें वह पृथ्वी मांस और रुधिरसे भर गई। जैसे वर्षामें पृथ्वी वीर बहूटियोंसे लाल हो जाती है, और जैसे वस्त्रको लाल रङ्गसे रङ्ग देते हैं, वैसे ही उस युद्धमें सब लाल होगये। जैसे सोलहवर्षकी स्त्री लाल कपड़े पहनकर शोभित होती है; जैसे मांस और रुधिरसे भरा सोनेका पत्र शोभित होता है तैसे ही उस युद्धमें भूमिकी शोभा बढ़ी। हे भारत! अनेक सुन्दर मुखवाले शिर, हृदय, वलय और अनेक भूषण कटकर पृथ्वीमें गिर पड़े, सोनेके भूषण वीरोंके धनुष, बाण, हाथ सहित हाथ और पताका कटकर पृथ्वीमें गिर गये। जैसे पर्व्वतोंसे गेरूके पनारे चलते हैं, वैसे ही हाथियोंके शरीरसे रुधिर बहने लगा। हाथी घोड़ोंपर चढ़े वीरोंके चलाये हुए तामरोंको सूंड़में पकड़ कर उन्हीं वीरोंको मारने और शस्त्रोंको तोड़ने लगे। हे राजन्! अनेक हाथीयोंके कवच कट गये, तब वे शीतकालमें मेघरहित पर्व्वतोंके समान दीखने लगे। हे भारत! जैसे आग लगनेसे पर्व्वत शोभित होते हैं, तैसे ही सोनेके पङ्खवाले बाण लगनेसे हाथीयोंकी शोभा बढ़ी; किसी हाथीने हाथीको मार डाला वह पङ्ख रहित पर्व्वतके समान पृथ्वीमें गिर गया अनेक हाथी घाव और बाणोंसे व्याकुल होकर भागने लगे, किसीका सूंड़ और किसीका शिर कटकर गिर गया। कोई हाथी घूमने कोई सिंहके समान गर्जने और कोई भागनेलगे, घोड़े सोनेके साज सहित मरने, भागने, गिरने और घूमने लगे, अनेक बाण और तोमरोंसे पीड़ित होकर और पृथ्वीमें गिरकर पैर पीटने लगे। अनेक वीर पृथ्वीमें गिरकर चिल्लाने लगे, कोई अपने बाप, भाई, बेटे, दादाको मरा देख रोने लगे। कोई दूसरेको पकड़कर खींचने लगा, कोई भागतेके पीछे भागने लगा और कोई अपने गोत्र और नामकी प्रशंसा करने लगा। हे राजन्! किसीका भूषण सहित हाथ कटकर पृथ्वीमें गिर गया, कोई मरकर तड़फने लगा कोई गिरकर उठा और फिर लड़ने लगा। कोई वेगसे पांच मुखवाले सांपके समान हाथसे शस्त्र चलाने लगे। हे राजन्! वे सांपके फणोंके समान हाथ सोनेके भूषणोंके सहित गिरकर

ऐसे शोभित हुए जैसे सोनेके दण्डवाली ध्वजा। इस प्रकार यह घोर युद्ध हुआ। हे राजन्! धूल उड़नेसे ऐसा अन्धकार होगया कि वहां कोई किसीको नहीं देख सकता था। सब लोग अपनी सेनासे मारनेमें तत्पर हुए, उस घोर युद्धमें रुधिरकी नदी बहने लगी। उस नदीके दोनों ओर कटे हुए शिरोंका बाध बंध गया बाल सिवारके समान बहने लगे। हड्डी मछलियोंके समान चमकने लगी; धनुष, गदा और बाण बेड़ा और डोंगियोंके समान डोलने लगे। मास कीचड़के समान जम गया। इस प्रकार यह रुधिरकी घोर रूपी नदी उस युद्धमें बह निकली। उन नदियोंको देखकर कायर डरने और वीर प्रसन्न होने लगे। हे पुरुष-सिंह! उस नदीको देखकर मास खानेवाले जन्तु नाचने लगे और क्षत्री लोग उसे देखकर अति प्रसन्न हुए। यह घोर युद्ध होनेसे वह भूमि साक्षात् यमराजकी पुरीसी दीखने लगी। अनेक कबन्ध खड़े होगये, भूत, पिशाच मांस खाकर और प्रसन्न होकर नाचने लगे। हे भारत! रुधिर और चर्बी पीकर अनेक पिशाची गीत गागाकर नाचने लगीं, कौवे, गिद्ध, बगुले मांस रुधिर और चर्बी खाकर आकाशमें प्रसन्न होकर उड़ने लगे। हे राजन्! क्षत्री भयको छोड़कर उस युद्धमें घोर कर्म्म करने लगे। वीर लोग उस शक्ति और बाणोंसे भरे हुए, गिद्ध, स्यार और कौओंसे शोभित युद्धमें बेडर होकर अपना पराक्रम प्रकाशित करने लगे। हे पृथ्वीनाथ! सब वीर अपने अपने पिता और गोत्रका नाम पुकार-कर युद्ध करते थे, इस प्रकार सब वीर शक्ति, तोमर और पट्टिश चलाते थे, हेराजन्! इस प्रकार यह घोर युद्ध होनेसे तुम्हारी सेना इस प्रकार घबड़ायी कि जैसे समुद्रमें डूबती हुई नावके मनुष्य घबड़ाते हैं।

५२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले. हे राजन्! जब क्षत्रियोंका नाश करनेवाला, यह घोर युद्ध हो रहा था, तहां गाण्डीवका शब्द सुनायी दिया। जहां कौशल देशीय क्षत्री नारायणी सेना और संशप्तक गणोंका नाश कर रहे थे। वहां अनेक वीर अर्ज्जुनको मारनेके लिये दौड़े। अर्ज्जुन इन सबके बाणोंको काटते हुए और शत्रुओंको मारते हुए साहस और शीघ्रताके सहित कौरवोंकी सेनामें घूमने लगे। उस रथसेनाको नाश करके धनु-र्धारी सुशर्म्मासे युद्ध करनेको गये। अर्ज्जुनने सुशर्म्माके ऊपर अनेक बाण चलाये, महारथ सुशर्म्माने उनके ऊपर अनेक बाण चलाये; इसी प्रकार संशप्तक सेना भी अर्ज्जुन पर बाण चलाने लगी। अनन्तर राजा सुशर्म्माने क्रोध करके अर्ज्जुनके शरीरमें दश और कृष्णके दहने हाथमें तीन बाण मारे, और अर्ज्जुनकी ध्वजामें एक बाण मारा उस बाणके लगनेसे विश्वकर्म्माका बनाया हुआ बन्दर तुम्हारी सेनाको डरानेके वास्ते वेगसे गर्ज्जा उसका शब्द सुनकर तुम्हारी सेना कांपने लगी। तुम्हारी सेना अपने सब कामोंको भूल गई और बढ़ी रह गई; तब उसकी ऐसी शोभा बढ़ी जैसे अनेक फूलोंसे भरे हुए नन्दन बनके वृक्ष। तब वे सब अर्ज्जुनके रथकी ओर दौड़े और जैसे मेघ पर्व्वत पर जल वर्षाते हैं, ऐसे ही अर्ज्जुनके ऊपर बाण वर्षाने लगे। कोई मरने लगा, कोई सिंहके समान गर्ज्जने लगा और किसीने कृष्णके दोनों हाथ जाकर पकड़ लिये। हे महाराज! कोई क्रोध करके अर्ज्जुनके रथमें घुस गये, और उनके हाथ पकड़ लिये। जब कृष्ण और अर्ज्जु-नके ये हाथ पकड़ते थे, तो झटका देकर वे उन्हें गिरा देते थे। जैसे मतवाला हाथी अनेक हाथियोंको मार डालता है, तैसे ही इन दोनों वीरोंने अनेक वीरोंको मारकर गिरा दिया। तब उन महारथोंसे घिरने पर अर्ज्जु-नको बड़ा क्रोध हुआ। अपने रथको घिरा

और कृष्णको व्याकुल देख अर्जुनने अपने बाणोंसे अनेक रथी और पदातियोंके हाथ, पांव और शिर काट डाले और पास आये हुए बीरोंको मारकर कृष्णसे यों बोले, हे महाबाहु कृष्ण। ये देखो सहस्रों संशप्तक कैसा घोर युद्ध कर रहे हैं। उनमेंसे सहस्रों मारे भी जाते हैं। हे यदुकुलश्रेष्ठ! जगत्में मेरे सिवाय और ऐसा कोई बीर नहीं है जो इस रथव्यूहको तोड़ सके।

ऐसा कह कर अर्जुनने देवदत्त और कृष्णने पाञ्चजन्य शङ्ख बजाया; इस शब्दसे सब दिशा पूरित होगई। उस शङ्खके शब्दको सुन संशप्तकोंकी सेना कांपने और भागने लगी। अनन्तर अर्जुनने नाग बाण चलाकर सब बीरोंके पैर बांध दिये।

हे राजन्! पैर बन्धनेसे वह सब सेना कर्म्म हित होकर पत्थरके समान खड़ी रह गयी; अनन्तर महात्मा अर्जुनने उन सब योद्धाओंको इस प्रकार मारा, जैसे तारकासुरके युद्धमें इन्द्रने दानवोंको मारा था। तब उन सब योद्धाओंने अर्जुनके रथको छोड़ दिया; और शस्त्र भी फेंक दिये।

हे राजन्! वे बन्धे हुए बीर कुछ भी न कर सके, तब अर्जुनने अपने बाणोंसे उन्हें मारना आरम्भ किया। अर्जुनने जिन योद्धाओंकी ओर नाग बाण चलाया था, वे सब सांपोंसे बंध गये। हे राजन्। महारथ सुशर्म्माने अपनी सेनाको इस आपत्तिमें पड़ा देख गरुड़ बाण चलाया, उसके चलाते ही अनेक गरुड़ उत्पन्न होगये। और सांपोंको खाने लगे, गरुड़ोंको देख सब सांप इधर उधर भाग गये। हे पृथ्वीनाथ! जैसे मेघोंसे छूटकर सूर्य चारो ओर प्रकाश करने लगता है, ऐसे ही तुम्हारी सेना सांपोंसे छूट कर प्रकाश करने लगी। उन सांपोंसे छूटते ही वे सब योधा अर्जुनकी ओर बाण और शस्त्र चलाने लगे। उस आठों दिशामें छाई हुई बाणवर्षाको अर्जुनने अपने बाणोंसे काट दिया, और अनेक बीरोंको मार डाला। तब राजा सुशर्माने एक तेजवान अर्जुनके हृदयमें मारा, और फिर तीन बाण मारे; उनके लगनेसे अर्जुन कांपने लगे; और धनुष रख कर रथमें बैठ गये। तब तुम्हारी सेनाके सब बीर पुकारने लगे, कि अर्जुन मारा गया! अर्जुन मारा गया! यह एकबार शब्द सुनते ही तुम्हारी सेनामें चारों ओरसे शङ्ख भेर, नगारे और मृदङ्ग बजने लगे, अनेक बीर गर्ज्जने लगे। उतने ही समयमें अर्जुनकी मुर्च्छा खुल गयो, तब शीघ्रता सहित उन्होंने इन्द्र बाण मारा उससे सहस्रों बाण उत्पन्न हुए वे बाण चारो दिशामें घूम कर तुम्हारी सेनाके सहस्रों हाथी, घोड़े, रथ और पदातियोंको काटने लगे। उन बीरोंके मरनेसे नारायणी सेना और संशप्तक सेना बहुत डरने लगी। कोई ऐसा बीर उस समय न था, जिसने अर्जुनकी ओर बाण न चलाया हो, परन्तु अर्जुनने सबको मारा। इस प्रकार अर्जुनने सब सेनाको व्याकुल कर दिया, और दश सहस्र बीरोंको मारा।

हे भारत! उस समय अर्जुनका तेज धुआं रहित अग्निके समान बढ़ गया। चौदह सहस्र पदाति दश सहस्र रथ और तीन हजार हाथी इतने योद्धा संशप्तकोंमें शेष रह गये। तब ये सब इकट्ठे होकर अर्जुन पर दौड़े। हे पृथ्वीनाथ! उन्होंने निश्चय कर लिया कि हमें एक दिन अवश्य ही मरना है। सो याती मरेंगे, या विजय करेंगे। तब उनके सङ्ग अर्जुनका घोर युद्ध होने लगा, महात्मा पराक्रमी अर्जुन भी उनके सङ्ग घोर युद्ध करने लगे।

५३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! कृतवर्मा कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा, कर्ण, उलूक, शकुनि और अपने

भाइयों समेत राजा दुर्य्योधनने अर्ज्जुनकी भयसे अपनी सेनाको व्याकुल और समुद्रमें डूबती हुई नावके समान देखकर युद्ध करना आरम्भ किया। तब यह घोर युद्ध होने लगा, उनको देखकर कायर डरने और बीर प्रसन्न होने लगे। कृपाचार्य्यने अपने बाणोंसे टीड़ीदलके समान खड़े हुए सृञ्जयबंशी क्षत्रियोंको छा लिया, तब शिखण्डी क्रोध करके बाण बर्षाते हुए कृपाचार्य्यकी ओर दौड़े। शस्त्र जाननेवाले कृपाचार्य्यने शिखण्डीके सब बाण काट दिये। और उनके शरीरमें दश बाण मारे, तब शिखण्डीने क्रोध करके कृपाचार्य्यके शरीरमें शीघ्र चलनेवाले सात तेज बाण मारे। कृपाचार्य्यने उन बाणोंसे पीड़ित होकर शिखण्डीके सारथी और घोड़ोंको मारकर रथको काट दिया। महारथ शिखण्डी खड्ग और ढाल लेकर उस रथसे कूद कर कृपाचार्य्यकी ओर दौड़े। शिखण्डीको आते देख कृपाचार्य्यने अनेक बाणोंसे छा दिया। हे राजन्! जैसे नदीमें तैरते हुए पत्थरोंको देखकर सब मनुष्य आश्चर्य्य करते हैं, ऐसे ही कृपाचार्य्यके इस अद्भुत कर्म्मको देखकर हम आश्चर्य्य करने लगे। उस समय शिखण्डी कर्म्मरहित खड़े रह गये, तब उनकी यह दशा देख महारथ धृष्टद्युम्न दौड़े। जब कृपाचार्य्यकी ओर धृष्टद्युम्नको जाते देखा तो महारथ कृतवर्म्माने रोका। तब कृपाचार्य्यसे युद्ध करनेके लिये पुत्र और बहुत सेनाके सहित महाराज युधिष्ठिर आये, परन्तु अश्वत्थामाने इन्हें भी रोक रक्खा। तब शिखण्डीकी रक्षा करनेके लिये महापराक्रमी नकुल और सहदेव चले, परन्तु उनसे राजा दुर्य्योधन युद्ध करने लगे। हे भारत! कारूष, सृञ्जय और कैकयदेशकी सेनाके सहित भीमसेनको कर्णने रोक दिया। तब चारों दिशाओंको भस्म करते हुए अग्निके समान कृपाचार्य्यने शिखण्डीके मारनेके कारण बाण चलाने आरम्भ किये। चारों ओरसे उन सोनेके पङ्खवाले बाणोंको आते हुए देख शिखण्डीने अपने खड्गसे काट दिया और खड्गको घुमाने लगे। तब कृपाचार्य्यने अपने बाणोंसे शिखण्डीकी प्रकाशमान ढालको काट दिया, तब पाण्डवोंकी सेनामें हाहाकार होने लगा। तब केवल खड्ग ही लेकर और उपाय रहित शिखण्डी कृपाचार्य्यकी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे रोगी मृत्युकी ओर। कृपाचार्य्यके बशमें पड़े हुए शिखण्डीको अत्यन्त व्याकुल देख राजा चित्रकेतुके पुत्र सुकेतु दौड़े। महापराक्रमी सुकेतु कृपाचार्य्यके ऊपर अनेक बाण बर्षाते हुए बेगसे आये। सुकेतुको अपनी ओर आते और व्रतधारी कृपाचार्य्यको युद्ध करते देख महाबलवान शिखण्डी सुकेतुके रथकी ओर चले। हे राजन्! सुकेतुने कृपाचार्य्यके शरीरमें नौ बाण मारकर, सत्तर बाण मारे, फिर तीन बाण मारे, फिर एक बाणसे कृपाचार्य्यका बाणसहित धनुष काट दिया और एक बाण उनके सारथीके मर्म्मस्थानमें मारा। तब कृपाचार्य्यने क्रोध करके दूसरा नवीन दृढ़ धनुष धारण किया और सुकेतुके मर्म्मस्थानमें बीस बाण मारे, जैसे भूकम्पमें शालका वृक्ष हिलने लगता है ऐसे ही इन बाणोंसे सुकेतु कांपने लगे। सुकेतुके शरीरसे कृपाचार्य्यने पगड़ी, टोपी और कुण्डल समेत शिर काट दिया, अनन्तर वह शिर इस प्रकार कटकर गिरा जैसे बाजके मुखसे मांस, पीछे उसका शरीर भी गिर गया। सुकेतुके मरनेसे उनकी सब सेना इधर उधरको भाग गयी। हे भारत! धृष्टद्युम्नको कृतवर्म्माने रोककर कहा खड़े रहो। खड़े रहो। जैसे मांसके लिये क्रोध करके दो बाज लड़ते हैं तैसे ही कृतवर्म्मा और धृष्टद्युम्नका युद्ध होने लगा। धृष्टद्युम्नने क्रोध करके हृदीकपुत्र कृतवर्म्माके हृदयमें नौ बाण मारे, धृष्टद्युम्नके बाण लगनेसे कृतवर्म्माको बहुत क्रोध

हुआ और उन्होंने अपने बाणोंसे सारथी और घोड़ोंके सहित उनके रथको छा दिया। जैसे बर्षते हुए मेघोंमें छिपकर सूर्य नहीं दिखायी देते हैं तैसे ही उन बाणोंके बीचमें धृष्टद्युम्न छिप गये, धृष्टद्युम्नके शरीरमें अनेक घाव होगये, परन्तु उन्होंने इन सब बाणोंको अपने बाणोंसे काट दिया। अनन्तर सेनापति धृष्टद्युम्नने क्रोध करके कृतबर्म्माकी ओर हजारों बाण चलाये, उस घोर बाणधाराको कृत-वर्म्माने सहस्रों बाणोंसे काट दिया। अपनी घोर बाणधाराको कटी देख धृष्टद्युम्नने कृत-वर्म्माकी ओर अनेक बाण चलाये, फिर एक तेज बाणसे कृतबर्म्माके सारथीको मारकर गिरा दिया। बलवान धृष्टद्युम्नने अपने बल-वान शत्रु कृतबर्म्माको जीतकर अन्य कौरवोंको युद्धसे निवारण किया। तब तुम्हारे अनेक योद्धा सिंहके समान गर्ज्जते हुए धृष्टद्युम्नकी ओर दौड़े।

५४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! जिस समय अश्वत्थामाने देखा कि सात्यकि युधिष्ठिरको रक्षा कर रहे हैं, तब प्रसन्न होकर उनसे युद्ध करनेको चले गये। अश्वत्थामा अस्त्रोंको शीघ्र छोड़ते, बाणविद्या और रथकी अनेक गति दिखलाते हुए तथा सुवर्णके पहाड़ोंके पङ्खवाले बाण चलाते हुए युधिष्ठिरकी ओर चले। महाअस्त्रोंके जाननेवाले अश्वत्थामाने युधिष्ठिरकी ओर मन्त्रसहित इतने बाण चलाये कि उनसे आकाश भर गया। उन बाणोंके मारे आकाशमें कुछ नहीं दीखता था और ऐसा जान पड़ता था कि सब युद्धमें इनके बाण ही छा रहे है। हे भरतकुलश्रेष्ठ! सोनेके पङ्खवाले वितान (शामियाना) के समान वे बाण छा गये।

हे राजन्! उन बाणोंके छोड़नेसे आकाश इस प्रकार छा गया जैसे मेघ छा जाते हैं। उन बाणोंके छानेसे कोई आकाशको वस्तु पृथ्वीमें नहीं गिरती थी। अनेक यत्न करनेपर भी सात्यकि महाराज युधिष्ठिर और भी सब वीर अश्वत्थामासे पार न पासके। हे महाराज! द्रोणपुत्रकी शीघ्रताको देख सब महारथ आश्चर्य करने लगे। उस समय कोई अश्व-त्थामाकी ओर देख नहीं सकता था। राजा लोग अश्वत्थामाकी ओर इस प्रकार न देख सके, जैसे दो पहरके सूर्य्यको कोई नहीं देख सकता। इस प्रकार अपनी सेनाको मरते देख द्रौपदीके पांचो महारथ पुत्र, सात्यकि, महा-राज युधिष्ठिर और सब पाञ्चालदेशके वीर मृत्युका भय छोड़कर अश्वत्थामाकी ओर दौड़े। सात्यकिने अश्वत्थामाके शरीरमें सत्ताइस बाण मार कर फिर सुवर्ण भूषित सात बाण मारे। युधिष्ठिरने तिहत्तर, प्रतिबिन्ध्यने सात, श्रुति-कर्म्माने तीन, श्रुतकीर्त्तिने सात, श्रुतसोमने नौ और शतानीकने सात बाण चलाये और वीरोंने भी अश्वत्थामाकी ओर सहस्रों बाण चलाये।

हे राजन्! तब अश्वत्थामाने क्रोध करके और विष भरे सांपके समान सांस लेकर सात्यकीके शरीरमें पचीस श्रुतकीर्त्तिके नौ श्रुतसोमके पांच, श्रुतकर्म्माके आठ, प्रति-विन्ध्यके तीन शतानीकके नौ और महाराज धर्म्मराजके पांच बाण मारे और शेष वीरोंके दो दो बाण मारे। अनन्तर महारथ श्रुतिकीर्त्तिका धनुष तेजबाणोंसे काट दिया। अनन्तर श्रुति-कीर्त्तिने दूसरा धनुष धारण किया।

हे महाराज! अनन्तर श्रुति कीर्त्तिने अश्वत्थामाके शरीरमें तीन बाण मार कर फिर अनेक बाण चलाये, अनन्तर अश्वत्थामाने क्रोध करके उन सब सेनाको बाणोंसे व्याकुल कर दिया। अनन्तर एक बाणसे धर्म्मराजका धनुष काट दिया। फिर हसकर धर्म्मराज युधिष्ठिरके

शरीरमें तीन बाण मारे। अनन्तर धर्म्मराज दूसरा धनुष धारण करके अश्वत्थामाके शरीरमें सत्तर बाण मारे अनन्तर सात्यकि युद्ध करते हुए अश्वत्थामाका धनुष अर्द्धचन्द्र बाणसे काट कर गर्ज्जने लगे। तब महा बलवान् अश्वत्थामाने एक सांगीसे उनके सारथीको मार डाला, और उतने ही समयमें दूसरा धनुष लेलिया, और सात्यकिकी ओर सहस्रों बाण चलाये। सारथीके मरनेसे सात्यकिके घोड़े इधर उधरको भागने लगे। उस समय युधिष्ठिरकी ओरके अनेक बीर अश्वत्थामाके ऊपर अनेक बाण वर्षाने लगे। उन क्रोधी बीरोंको अपनी ओर आते देख शत्रुनाशन अश्वत्थामा हंसकर युद्ध करने लगे। महारथ द्रोणपुत्र बाण रूपी अग्निसे सेनाको इस प्रकार जलाने लगे जैसे अग्नि सूखे काठको जलाती है। वह युधिष्ठिरकी सेना अश्वत्थामाके बलको देख इस प्रकार घबड़ा उठी, जैसे बड़ी मछलीके आजानेसे छोटी नदी। सबने जान लिया कि आज पाण्डवोंकी सेनामें जीता कोई नहीं बचेगा। उसी समय द्रोणाचार्य्यके शिष्य महारथ युधिष्ठिरने क्रोधसे भरकर अश्वत्थामासे कहा, तुम कुछ प्रेम और उपकारको नहीं मानते हो, क्योंकि आज हमहीसे युद्ध करनेको खड़े होगये। ब्राह्मणको तप, दान और विद्या पढ़ना चाहिये। क्षत्रीको धनुष धारण करना चाहिये। सो तुम ब्राह्मण हो! देखो तुम्हारे आगे हम कौरवोंको जीत लेंगे। रे ब्राह्मण अधम! तुम अवश्य हो ब्राह्मणोंमें नीच हो। अच्छा अपनी शक्तिके अनुसार पराक्रम करो।

धर्म्मराजके बचनोंको यथार्थ समझकर अश्वत्थामाने कुछ उत्तर न दिया, और बिना कुछ कहे ही धर्म्मराजके ऊपर सहस्रों बाण चलाये। जैसे प्रलय कालमें यमराज क्रोध करके प्रजाका नाश करते हैं, ऐसे ही अश्वत्थामा युधिष्ठिरकी सेनाको मारने लगे। उसी समय अर्ज्जुन उस ओर संशप्तकोंको छोड़ अश्वत्थामासे युद्ध करनेको दौड़े, उनको आते देख धर्म्मराज युधिष्ठिर युद्धसे हट गये। तब अर्ज्जुन प्रसन्न होकर अश्वत्थामासे युद्ध करने लगे। महाराज युधिष्ठिर भी अश्वत्थामाको छोड़कर बीरोंका नाश करनेके लिये तुम्हारी सेनामें घुसे।

५५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! पाञ्चाल और कैकयदेशकी सेनाके सहित भीमसेनसे कर्ण युद्ध करने लगे। भीमसेनके देखते देखते कर्णने अपने तेज बाणोंसे चेदि, कारूष और सृञ्जय देशके अनेक बीरोंको मार डाला। तब भीम कर्णको छोड़कर जलती हुई अग्निके समान कौरव सेनाकी ओर दौड़े। इसी प्रकार कर्णने पाण्डवोंकी सेनामें जाकर सृञ्जय, कैकय और पाञ्चालदेशीय सेनाके सहस्रों बीरोंको मार डाला। पाञ्चालोंका कर्ण, कौरवोंका महारथ भीम और संशप्तकोंका अर्ज्जुन नाश करने लगे। हे राजन्! तुम्हारी दुर्बुद्धिसे यह क्षत्रियोंका नाश हुआ। वे तीनों बीर अग्निके समान सेनाका नाश करने लगे।

हे भरतकुल श्रेष्ठ। अनन्तर दुर्य्योधनने क्रोध करके नकुलके शरीरमें नौ बाण और घोड़ोंके एक एक बाण मारा, अनन्तर तुम्हारे महा पराक्रमी पुत्रने एक बाणसे सहदेवके रथकी सोनेकी ध्वजाको काटकर गिरा दिया, तब नकुल और सहदेवने क्रोध करके दुर्य्योधनके शरीरमें सात और पांच बाण मारे। अनन्तर दुर्य्योधनने उन दोनों धनुष धारियोंके शरीरमें पांच पांच बाण मारे। फिर एक एक बाणसे उनके धनुष काट दिये और इक्कीस इक्कीस बाण मारे। तब वे दोनों बीर इन्द्रधनुषके समान युद्धमें शोभित हुए तब वे दोनों भाई अपने चचेरे भाई दुर्य्योधन पर इस प्रकार

बाण चलाने लगे, जैसे दो मेघ पर्व्वत पर जल बर्षावें। हे महाराज! तब तुम्हारे महारथ पुत्रने क्रोध करके दोनों पाण्डवोंके ऊपर अनेक बाण चलाये। हे राजेन्द्र! उस समय दुर्य्योधनके केवल धनुष और घूमते हुए बाण ही दिखाई देते थे, जिस प्रकार सूर्य्यकी किरण जगत्में छा जाती हैं ऐसे ही दुर्य्योधनके बाण सब आकाशमें छागये। उस समय नकुल और सहदेवने दुर्य्योधनको यम और मृत्युके समान देखा, तुम्हारे पुत्रका यह पराक्रम देख सब महारथोंने जाना कि नकुल और सहदेव मर गये। तब पाण्डवोंके सेनापति महारथ धृष्टद्युम्न उधरको दौड़े जिधर महारथ नकुल और सहदेव दुर्य्योधनसे युद्ध कर रहे थे। हे महाराज! धृष्टद्युम्नने दुर्य्योधनकी ओर अनेक बाण चलाये। क्रोधी दुर्य्योधनने भी धृष्टद्युम्नके शरीरमें अनेक बाण मारे। फिर पुरुषसिंह दुर्य्योधनने धृष्टद्युम्नके शरीरमें पच्चीस बाण मारे। फिर पैंसठ बाण मार कर गर्ज्जने लगे। अनन्तर एक बाणसे बाण सहित धनुष और चमड़ेका पञ्जा अर्थात् हत्थी काट दी, शत्रुनाशन धृष्टद्युम्नने उस धनुषको फेंक कर एक नवीन धनुष शीघ्रतासे धारण किया। उस समय क्रोधके मारे धृष्टद्युम्नके नेत्र लाल होगये। अनन्तर महापराक्रमी धृष्टद्युम्नने सांस लेते हुए सांपके समान पन्द्रह बाण अपने धनुष पर चढ़ाये, अनन्तर धृष्टद्युम्नने दुर्य्योधनके मारनेके लिये वे बाण छोड़े, वे राजा दुर्य्योधनका सोनेका कवच काट कर और शरीरको छेद कर पृथ्वीमें घुस गये। उन पङ्खवाले बाणोंके लगनेसे राजा दुर्य्योधनके शरीरमें बहुत पीड़ा हुई, दुर्य्योधनके शरीरसे रुधिर बहने लगा, उस समय इनकी शोभा ऐसी बढ़ी जैसे बसन्त ऋतुमें फूले हुए कचनारकी। अनन्तर उन्होंने क्रोध करके धृष्टद्युम्नका धनुष काट दिया। अनन्तर शीघ्रताके सहित दश बाण उनके माथेमें मारे, उन तेज बाणोंसे धृष्टद्युम्नका मुख रसलोभी भमरोंके सहित कमलके समान होगया। अनन्तर धृष्टद्युम्नने प्रसन्न होकर उस टूटे हुए, धनुषको फेंक दिया और दूसरा धनुष लेकर उसपर सोलह बाण चलाये, चार घोड़े और एकसे सारथीको मार डाला, एकसे धनुष एकसे छत्र, रथ, खड्ग और गदा आदि सब शस्त्र काट दिये। अनन्तर धृष्टद्युम्नने दश बाणोंसे तुम्हारे पुत्रके मणिजटित आभरण काट दिये, सब बीरोंने देखा कि दुर्य्योधनकी ध्वजा, रथ, शस्त्र, कवच कट गये। हे राजन्! तब उनके भाई उनकी रक्षा करनेको दौड़े, उसी समय राजा दण्डधारने दुर्य्योधनको अपने रथपर चढ़ा लिया और सावधान होकर धृष्टद्युम्नके आगेसे हटा दिया, सात्यकीको जीतकर कर्ण भी दुर्य्योधनको रक्षाको चले, वहां जाकर द्रोणाचार्य्यके मारनेवाले धृष्टद्युम्नके ऊपर अनेक बाण वर्षाने लगे। इनके पीछे अनेक बाण वर्षाते हुए सात्यकी दौड़े, जैसे मतवाला हाथी किसी हाथीको दांतसे मारता हुआ दौड़ता है, ऐसे ही सात्यकी कर्णके पीछे दौड़े। हे राजन्! यह बीरोंका घोर युद्ध हुआ जिस समय पाण्डव और दुर्य्योधनकी बिजयके लिये दोनों सेनापति युद्ध करने लगे। तब दोनों ओरसे कोई बीर युद्धसे न भगा। हे नरश्रेष्ठ! कर्णको धृष्टद्युम्नकी ओर जाते देख अनेक पाञ्चालीय योद्धा दौड़े, उस समय अनेक हाथी घोड़े और मनुष्य मर गये, जिस समय बिजयी पाञ्चाल धृष्टद्युम्नकी रक्षाको चले, उसी समय दूसरा प्रहर दिनका बात चुका, ये सब बीर कर्णकी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे टीड़ीदल वृक्षपर दौड़े। उस समय सब यत्न करते हुए, पराक्रमी योद्धाओंको बाणोंसे मारने लगे। इनके प्रधान व्याघ्रकेतु, सुशर्म्मा, चित्र, उग्रायुध, जयशत्रु, रोचमान, सिंहसेन और दुर्ज्जय युद्ध करने लगे। वे सब बीर रथोंपर चढ़कर कर्णको ओर दौड़े।

हे पृथ्वीनाथ! बाण छोड़ते हुए, महायोद्धा कर्णसे सब ओर युद्ध करने लगे। कर्ण भी तीक्ष्ण बाणोंसे इनके सङ्ग लड़ने लगे महाप्रतापी राधापुत्र कर्णने अपने आठ बाणोंसे आठ वीरोंको मारा फिर और वीरोंको सहस्रों बाणोंसे मारडाला। इन्द्रके समान पराक्रमी अर्ज्जुन, देशापि, भद्र, चित्र, चित्रायुध, हरि सिंहकेतु, रोचमान, कहारथ, शलभ और चेदि-देशके अनेक वीरोंको अपने बाणोंसे कर्णने व्याकुल कर दिया और उनके शरीरसे प्राण निकाल दिये। हे भारत! उस समय कर्णका शरीर रुधिर भीगे शिवके समान दीखता था, इसी प्रकार उन्होंने अनेक बाणोंसे हाथियोंको मार डाला। हाथी कर्णके बाणोंसे व्याकुल होकर पृथ्वीमें गिर गये और अनेक इधर उधरको भाग गये जैसे वज्रके लगनेसे पर्व्वत गिरते हैं वैसेही वे हाथी कर्णके बाणोंसे चिल्लाते हुए गिर गये। अनेक मनुष्य और घोड़े भी मरकर पृथ्वीमें गिर गये। जैसे कर्णने वीरोंको मारा ऐसा भीष्म, द्रोणाचार्य्य आदि तुम्हारे ओरके किसी योद्धाने नहीं मारा था। हाथी, घोड़े और रथोंके बीचमें जैसा कर्णने घोर युद्ध किया ऐसा किसीने नहीं किया था, जैसे हरिणोंके बीचमें सिंह वेडर होकर घूमता है। ऐसा ही कर्ण उस सेनाका नाश करते हुए घूमने लगे। जैसे सिंहको देख हरिण भागते हैं। तैसे ही कर्णको देख पाञ्चाली योद्धा भागने लगे। जैसे सिंहके आगे आकर कोई हरिन नहीं बचता, ऐसे जो योद्धा कर्णके आगे आया वे भी न बचा। जैसे अग्निमें पड़कर सब जल जाते हैं। वैसे ही सञ्जयवंशी चत्री कर्णरूपी अग्निमें पड़कर भस्म होगये। हे भारत! कर्णने कैकेय, चेदि, पाञ्चालोंको अपना नाम सुनाकर मारडाला। कर्णका पराक्रम देख हमें यह निश्चय होगया कि आज कर्णके हाथसे कोई पाञ्चाल योद्धा नहीं बचेगा, कर्णको पाञ्चालोंका नाश करते देख धर्म्मराज युधिष्ठिर धृष्टद्युम्न द्रौपदीके पुत्र और भी सहस्रों वीर राधापुत्र कर्णसे युद्ध करनेको आये, इनके सिवाय शत्रुनाशन कर्णसे युद्ध करनेको शिखण्डी, सहदेव, नकुलके पुत्र जनमेजय, सात्यकी और अनेक प्रभद्रकवंशी चत्री दौड़े, ये सब महापराक्रमी वीर धृष्टद्युम्नको आगे कर अनेक बाण चलाते हुए कर्णसे युद्ध करने लगे। जैसे एकला गरुड़ अनेक सर्पोंसे युद्ध करता है, ऐसे ही एकले कर्ण चेदि, पाञ्चाल और पाण्डवोंसे युद्ध करने लगे। हे राजन्! पहले जैसे देवता और दानवोंका युद्ध हुआ था। ऐसे ही पाण्डव और कर्णका युद्ध हुआ। जैसे अन्धकारको सूर्य्य नाश करता है ऐसे ही एकले कर्णने सावधान होकर उन सब वीरोंको अपने बाणोंसे व्याकुल कर दिया। जिस समय कर्ण पाण्डवोंसे युद्ध करने लगे। तब यमराजके दण्डके समान बाण छोड़ते हुए, भीमसेन क्रोध करके तुम्हारी सेनाका नाश करने लगे। भीमसेनने अपने बाणोंसे बाह्लिक, केकय, मत्स्य, वासत्य, मद्र और सिन्धदेशके, वीरोंको व्याकुल करदिया। एकले भीमसेन अनेक वीरोंसे युद्ध करने लगे। उन्होंने अनेक हाथियोंको मर्म्म-स्थानमें बाण मारकर गिरा दिया अनेक हाथी, घोड़े, वीरोंके सहित पृथ्वीमें गिर गये, इसी प्रकार अनेक पदाति प्राणरहित होकर पृथ्वीमें सोगये इन सबके गिरनेसे पृथ्वी कांपने लगी। अनेक रथी रुधिरमें भीगकर और शस्त्रहीन होकर पृथ्वीमें गिर गये, अनेक हाथी, घोड़े और रथोंपर चढ़े वीर तथा पदाति भीमसेनके डरसे पृथ्वीमें गिर गये।

भीमसेनके बाणोंसे सब युद्ध-भूमि भर गई, उनके भयसे सेना कुछ न कर सकी, उस युद्धमें दुर्य्योधनकी सेना घावोंसे व्याकुल होकर उत्साह रहित होगई, जैसे शरदऋतुमें समुद्र अचल होजाता है, ऐसे ही भीमसेनके आनेसे

उत्साह रहित होकर तेज हीन होगई। हे भरत कुलश्रेष्ठ! वह सेना रुधिरसे भीगकर व्याकुल होगई, तब एक बीर दूसरेको मारने लगे। इसी प्रकार सूतपुत्र कर्ण भी क्रोध करके पाण्डवोंकी सेनाका नाश करने लगे। इसी प्रकार भीमसेन कौरवोंकी सेनाको भगाने लगे। उस समय यह अद्भुत और घोर युद्ध हुआ अनेक संशप्तक-बीरोंको मारकर महा बिजयी अर्ज्जुन कृष्णसे बोले, हे कृष्ण! देखो हमने अनेक संशप्तकोंको मारा, अब ये युद्ध छोड़ कर भागे जाते हैं। जैसे सिंहके शब्दको सुन कर हिरण भागते है। ऐसे ही मेरे बाणोंको न सह कर ये सेना भागी जाती है, ये देखो महाराज युधिष्ठिरका हाथी घूम रहा है, वह सेनाके बीचमें घूमते हुए कर्णको ध्वजा दीखती है। मेरे सिवाय कर्णको युद्धमें और कोई नहीं जीत सक्ता, आप कर्णके बलको जानते हो हैं जहां महारथ कर्ण युद्ध कर रहे हैं वहीं हमारे रथको ले चलो, जहां कर्ण हमारी सेनाको मार रहे हैं आप हमारे रथको शीघ्र वहां ले चलिये। हे कृष्ण! हमारी तो यही इच्छा है आगे आपकी जो इच्छा हो, तो अर्ज्जुनके ऐसे बचन सुन कृष्ण हंसकर बोले, हे अर्ज्जुन! तुम कौरवोंको युद्धमें जीतो अनन्तर कृष्णने रथको तुम्हारी सेनाकी ओर चलाया। मेघके समान शब्दवाले बानर ध्वजा युक्त रथ पर बैठे अर्ज्जुन चारों ओरसे तुम्हारी सेना पर बाण चलाने लगे। जैसे बिमान पर बैठे देवता घूमते हैं ऐसे ही रथ पर चढ़े कृष्ण और अर्ज्जुन तुम्हारी सेनामें घूमने लगे। वे दोनों महापराक्रमी बीर क्रोधसे लाल नेत्र करके तुम्हारी सेनाका नाश करने लगे, जैसे किसी यज्ञमें ब्रह्माके बुलाये अश्विनी कुमार आते हैं ऐसे ही ये दोनो बीर तुम्हारी सेनामे आये और क्रोध करके अनेक प्रकारके शस्त्र चलाने लगे। जैसे मतवाला हाथी बनमें वृक्षोंको फेंकता है, वैसे ही अर्ज्जुन अपने बाणोंसे तुम्हारी सेनाका नाश करने लगे। हे भरत! जैसे फांसी लेकर यमराज जगत्में घूमते हैं ऐसे ही अर्ज्जुन तुम्हारी सेनामें घूमने लगे। अपनी सेनाका नाश होते देख तुम्हारे पुत्रने संशप्तकोंको फिर अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको भेजा, तब एक सहस्र रथ, तीन सौ हाथी, चौदह सहस्र घोड़े और दो लाख धनुषधारी पदाति अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको आये, वे सब प्रसिद्ध पराक्रमी संशप्तक अर्ज्जुनके ऊपर बाण वर्षाने लगे। हे राजन्! शत्रुनाशन! अर्ज्जुन चारों ओरसे उनके बाणोंसे छिप गये। अनन्तर अर्ज्जुन क्रोध करके इस प्रकार संशप्तकोंका नाश करने लगे। जैसे यमराज फांसी लेकर प्रजाका नाश करते है। संशप्तकोंका नाश करते हुए अर्ज्जुनका रूप अत्यन्त सुन्दर दीखता था, तब सोनेके पङ्खवाले, बिजलीके समान प्रकाशमान अर्ज्जुनके बाणोंसे समस्त आकाश भर गया, जैसे सर्पोंके उड़नेसे आकाशको कोई वस्तु नहीं दिखाती ऐसे ही अर्ज्जुनके बाणोंसे कुछ न दीखने लगा। अर्ज्जुनने तेज धार और सोनेके पङ्खवाले बाणोंसे दश दिशाओंको पूरित कर दिया, अर्ज्जुनके ताल शब्दसे ऐसा जान पड़ता था, मानों आकाश, पृथ्वी, पर्वत और समुद्र फटे जाते हैं। दश सहस्र बीरोंको मार कर अर्ज्जुन उस सेनासे बाहर हुए, उस सेनासे बाहर होकर अर्ज्जुनने काम्बोज देशकी सेनामें प्रवेश किया। और उनको इस प्रकार मारने लगे। जैसे इन्द्र दानवोंको मारते हैं। अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे बलवान् शत्रुओंके शस्त्र, हाथ, पैर और शिर काट डाले। जैसे शाखा टूटे वृक्ष बायुके चलनेसे गिर पड़ते हैं। ऐसे ही हाथ, पैर, शिर कटे हुए बीर गिरने लगे। अर्ज्जुनको हाथी घोड़े और पदातियोंका नाश करते देख राजा सुदक्षिणका छोटा भाई उन पर बाण बर्षाने लगा, तब अर्ज्जुनने क्रुद्ध होकर दो बाणोंसे

सके दोनों हाथ और एक बाणसे पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखवाला शिर काट कर पृथ्वीमें गेरा दिया। जैसे मैनसिलसे भरा हुआ पर्व्वतका शिखर वज्रसे लगनेसे गिरता है। ऐसे ही रुधिरमें भीग कर वह गिरा, कमलके समान नेत्रवाले महासुन्दर काम्बोज देशीय सुन्दर सुदक्षिणके भाईको सोनेके खम्भे अथवा सोनेके पर्व्वतके समान गिरा हुआ देख उस देशके वीर अर्जुनके सङ्ग महायुद्ध करने लगे। उन महा युद्ध करते हुए वीरोंके अनेक रूप दीखने लगे, काम्बोज यवन और शकदेशके अनेक घोड़े बाणोंके लगनेसे मर गये, अनेक रथ घोड़े सारथी और वीरोंसे रहित होगये। मरे घोड़ोंके शरीरसे रुधिर बहने लगा। अनेक घोड़ों पर चढ़े वीर मर कर पृथ्वीमें गिर गये। अनेक हाथी, योद्धा और महावतोंके मरनेसे इधर उधर घूमकर मनुष्योंको मारने लगे, जिस समय अर्जुनने व्यूहके उस पक्ष और प्रपक्षको नाश कर दिया। तब उनसे युद्ध करनेके लिये अश्वत्थामा दौड़े, जैसे सूर्य्य अपनी किरणोंको जगत्में फैलाते हैं तैसे ही सुवर्ण भूषित धनुषको खींच कर अश्वत्थामा घोर बाण चलाने लगे। क्रोध और पराक्रमसे भरे बलवान् अश्वत्थामाके नेत्र लाल हो रहे थे, और मुंह फैल रहा था, उस समय इनका रूप ऐसा दीखता था, जैसे प्रलयकालमें दण्डधारी यमराजका। अश्वत्थामाने पाण्डवोंकी सेनामें बैठे हुए कृष्णको देखकर इनकी ओर सहस्रों तेज बाण छोड़े। हे महाराज। अश्वत्थामाके बाणोंसे रथपर बैठे हुए कृष्ण और अर्जुन छिप गये, अनन्तर प्रतापवान अश्वत्थामाने अपने सैकड़ों बाणोंसे कृष्ण और अर्जुनको उद्योग रहित कर दिया। अर्जुन और कृष्णकी यह दशा देख सब हाहाकार करने लगे। सब सिद्ध और चारण इधर उधर घूम कर जगत्का कल्याण हो ऐसा कहने लगे। हे राजन्। अश्वत्थामाने जैसा उस समय पराक्रम किया वैसा मैंने कभी नहीं देखा था। जैसे जङ्गलमें सिंह गर्जता है तैसे ही युद्धमें अश्वत्थामाका शब्द सुनायी देता था। जैसे घूमते हुए मेघके बीचमें बिजली चमकती है वैसे दहने बांये घूमते हुए अश्वत्थामाके रथमें धनुष चमकने लगा।

अश्वत्थामाको देखते ही महापराक्रमी शीघ्र शस्त्र चलानेवाले, अर्जुन सब उपायोंसे रहित होकर मूर्खके समान खड़े रह गये, अर्जुनने जान लिया कि हमारा सब पराक्रम नष्ट होगया, उस समय महायशस्वी अर्जुनका रूप देखने योग्य था, हे महाराज! जब अर्जुन और अश्वत्थामाकी वृद्धि हुई और अर्जुनका पराक्रम नष्ट हुआ तब कृष्ण एकाएक महा क्रोधमें भर गये, उनके होठ फरकने लगे और नेत्र लाल होगये। उन्होंने अश्वत्थामाकी ओर इस प्रकार देखा मानो भस्म कर देंगे, फिर अर्जुनकी ओर देख कर बोले, हे भरत! हमको तुम्हारी दशा देख बहुत आश्चर्य होता है कि अश्वत्थामा तुम्हारी ओर अनेक बाण चला रहे हैं और तुम कुछ नहीं करते। हे अर्जुन! कहो तुम्हारी भुजाओंमें बल पहलेका सा है या नहीं? कहो तुम्हारे हाथमें गाण्डीव धनुष तो है? तुम रथमें तो बैठे हो? कहो तुम्हारे हाथ तो अच्छे हैं। तुम्हारी मुट्ठीमें बल तो है, यह देखो युद्धमें अश्वत्थामाके बलकी कैसी वृद्धि हो रही है, कुन्तीपुत्र! तुम इसे अपना गुरुपुत्र जानकर छोड़ो मत, क्योंकि यह समय किसीको छोड़ते नहीं है। कृष्णके वचन सुनतेही अर्जुनने अपने धनुष पर चौदह बाण चढ़ाये और उनको छोड़कर शीघ्रता सहित अश्वत्थामाका धनुष काट दिया, अनन्तर ध्वजा, छत्र, पताका, रथ, सांगी और गदाको काट दिया और कवच, काट दिया और वत्सदन्त बाण उसके गलेमें मारा। हे महाराज! उस बाणके लगनेसे अश्वत्थामाको मूर्च्छा आगई तब वे

ध्वजाके बांसको पकड़कर बैठ गये, तब उनको मूर्च्छित और व्याकुल जानकर उनके सारथीने उन्हें अर्ज्जुनके आगेसे हटा दिया। उसी समय शत्रुनाशन अर्ज्जुनने तुम्हारे पुत्र और अश्वत्थामाके देखते देखते तुम्हारे सहस्रों वीरोंको मार डाला। हे राजन्! यह तुम्हारी और पाण्डवोंकी सेनाका नाश केवल तुम्हारी दुर्बुद्धीसे हुआ। अर्ज्जुनने संशप्तकोंको भीमसेनने कौरवोंको और पाञ्चालोंको व्याकुल कर दिया। हे राजन्! इस वीरोंकी प्रलयमें अनेक कबन्ध खड़े होगये, राजा युधिष्ठिर भी घावोंसे अत्यन्त व्याकुल होकर कर्णसे एक कोसपर जाकर खड़े होगये।

५६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! तब राजा दुर्य्योधन कर्णके पास जाकर कर्ण और शल्य आदि सब वीरोंसे बोले, हे कर्ण! आज प्रारब्धहीसे तुम लोगोंके लिये स्वर्गका द्वारा खुला है, बड़े प्रारब्धी चत्री ऐसे दिनको पाते हैं।

हे राधापुत्र! अपने समान पराक्रमीसे युद्ध करना चत्रियोंको बड़ी प्रारब्धसे प्राप्त होता है। आज वही दिन आगया है तुम लोग पाण्डवोंको मारकर सब जगत्का राज्य करो, अथवा उनके हाथसे मरकर स्वर्गको जाओ।

दुर्य्योधनके बचन सुन सब चत्री प्रसन्न होकर गर्ज्जने लगे और अनेक प्रकारके बाजे बजने लगे। जब तुम्हारी सेना इस प्रकार प्रसन्न हुई तब उनका उत्साह बढ़ानेको अश्वत्थामा इस प्रकार बोले, सब सेना और तुम लोगोंके देखते शस्त्रत्यागी मेरे पिताको धृष्टद्युम्नने मारडाला। उस क्रोधसे और अपने मित्र दुर्य्योधनकी विजयके लिये हम जो सत्य प्रतिज्ञा करते हैं, उसे आपलोग सुनो, धृष्टद्युम्नको विना मारे मैं कवच नहीं उतारूंगा। यदि इस प्रतिज्ञाको मैं सत्य न कर सकूं तो मुझे स्वर्ग प्राप्त न हो। यदि साचात् अर्ज्जुन और भीमसेन भी उसकी रचा करेंगे, तो भी मैं उसे अपने वाणोंसे अवश्य मारूंगा।

अश्वत्थामाके ऐसे वचन सुन सब वीर पाण्डवोंसे युद्ध करनेको चले गये, इसी प्रकार पाण्डवोंके योद्धा भी कौरवोंसे युद्ध करने लगे। हे राजन्! यह कौरव और सृञ्जयवंशी प्रधान वीरोंका प्रलयकालके समान घोर युद्ध हुआ, इस युद्धके देखनेके लिये देवता, अप्सरा और गन्धर्व्व आदि सब वीर आये। वे सब इन मनुष्य श्रेष्ठ चत्रियोंका युद्ध देखकर बहुत प्रसन्न होगये। युद्ध करते हुए वीरोंके ऊपर अप्सरा प्रसन्न होकर अनेक प्रकारके फूल, सुगन्धि माला और रत्न वर्षाने लगीं। उस सुगन्धिको लेकर पवन भी सब वीरोंकी सेवा करने लगा; शीतल वायुसे प्रसन्न होकर योद्धा एक दूसरेको मारने लगे। अनेक प्रकारकी माला और सोनेके पङ्खवाले बाणोंसे भरी हुई युद्धभूमि तारोंके सहित आकाशके समान शोभित होने लगी। अनन्तर विमानोंपर चढ़े देवता, साधु साधु कहकर बाजे बजाने लगे। उस बाजेसे प्रसन्न होकर वीर लोग अपने धनुषपर टङ्कार देने और युद्ध करने लगे।

५७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! इस प्रकार अर्ज्जुन, कर्ण और भीमसेनका युद्ध हुआ। अश्वत्थामा आदि महारथोंको जीतकर अर्ज्जुनने श्रीकृष्णसे कहा। हे महाबाहो कृष्ण! यह देखो हमारी सेना भागी जाती है, यह देखो कर्ण हमारे महारथोंको मार रहे हैं। हे महाबाहो! हम महाराज युधिष्ठिरको नहीं देखते हैं और न उनकी ध्वजा ही देखायी देती है। हे कृष्ण! अब दिनके तीन

भाग गये, परन्तु कोई वीर मुझसे युद्ध करनेको न आया, इसलिये हमारी प्रसन्नताके लिये आप महाराजके पास हमारा रथ ले चलिये। हम उन्हें भाइयों समेत प्रसन्न देख कर फिर युद्ध करनेको आवेंगे अर्जुनके वचन सुन कृष्णने शीघ्र घोड़ोंको हांका उस समय राजा युधिष्ठिर और सृञ्जयवंशी क्षत्री नित्यको अवश्य होनेवाली जानकर तुम्हारी सेनासे युद्ध कर रहे थे, उस युद्धमें घोर युद्धभूमिको देख कर श्रीकृष्ण अर्जुनसे बोले

हे अर्जुन! देखो यह दुर्य्योधनके दोषसे भरतकुल और क्षत्रियोंका कैसा नाश हुआ है, हे भारत! यह देखो महाधनुषधारी क्षत्रियोंके सोनेके धनुष और अनेक तूणीर पृथ्वी पर पड़े हैं। ये देखो सोनेके पंखवाले तेलमें धोये हुए अनेक बाण सांपोंके समान पृथ्वीमें पड़े हैं; इधर देखो हाथीदांतकी मूठवाले सोनेके तारोंसे गुहे हुए उत्तम खड्ग और सोनेके तारोंके कवच कटे हुए पड़े हैं। ये देखो सोनेके तारोंसे खिचे प्रास, सोनेके दण्डवाली शक्ति और गदा पड़ी हैं। ये देखो सोनेके भाले, सोनेके दण्डवाले, पट्टिश और सोनेके ही दण्डवाले परश्वध पड़े हैं। ये देखो घोड़ोंके साज, विचित्र शतघ्नी और अनेक परिघ और भारी मूसल पड़े हैं। टूटे हुए चक्र, तोमर आदि अनेक प्रकारके शस्त्र युद्धभूमिमें पड़े हैं। ये देखो अनेक शस्त्रधारी मरे हुए, योद्धा अभीतक जीतेहीसे जान पड़ते हैं। उन वीरोंका शिर गदा और मूसलसे टूट गया है। यह देखो सहस्रों वीर, रथ, हाथी और घोड़ोंसे दबकर मर गये हैं। वे वीर शत्रुओंके खड्ग, गदा और पट्टिशोंसे मरे हैं।

ये रुधिरमें भीगी मनुष्य, परिघ, और लोहेके परश्वधोंसे मरे हैं।

हे शत्रुनाशन! यह रणभूमि चन्दन लगे, बाजू सहित हाथ, तलश्री, अङ्गूठी और अङ्गुलि त्राण सहित पञ्जे, हाथीके सूंड़के समान वीरोंकी जांघ कुण्डल और मुकुट सहित शिर और बड़े नेत्रवाले मरे मनुष्योंसे यह युद्ध भूमि भर गई है।

ये देखो मुण्डरहित कबन्ध रुधिरमें भीगे हुए घूम रहे हैं। यह भूमि इस समय ऐसी जान पड़ती है। जैसे शान्त हुई अग्नि। ये देखो ये घण्टा सहित रथ टूटे पड़े हैं। ये देखो लगाम आदि साजोंसे रहित अनेक घोड़े मरे पड़े हैं। अनेक ध्वजा और पताका कटी पड़ी हैं, ये देखो अनेक रथी वीरोंके सफेद शङ्ख टूटे पड़े हैं। ये देखो पर्व्वतके समान हाथी जीभ निकाले पड़े हैं।

ये देखो अनेक विचित्र वैजयन्ती माला पड़ी हैं। अनेक हाथी घोड़े मरे पड़े हैं। ये देखो हाथियोंकी अम्बारी, गद्दे, भूल, टूटे हुए अंकुश और टूटे हुए घण्टा पड़े हैं। ये देखो लहसनिये रत्नके दण्डवाले अंकुश पड़े हैं। इधर सोनेके दण्डवाले, अनेक कोड़े पड़े हैं। ये देखो सोनेके तारोंसे खिचे हुए घोड़ोंके सुन्दर साज पड़े हैं। ये देखो अनेक राजोंके शिरकी मणि, सोनेकी विचित्र माला, कटे हुए छत्र, चमर और अनेक पङ्ख पड़े हैं। ये देखो चन्द्रमा और तारोंके समान सुन्दर अनेक भूषण कुण्डलादि युक्त खड़ी मूछवाले वीरोंके सिर पृथ्वी पर पड़े हैं। ये देखो इस पृथ्वीमें मांस और रुधिरका कीचड़ होगया है। अनेक जीते हुए वीर घायल होकर चिल्ला रहे है। ये देखो इन मरे हुओंके पास इनके भाई बन्धु शस्त्र डाल कर खड़े हुए रोरहे हैं। ये देखो अनेक वीर, घोड़े और घायल योद्धाओंको अच्छी भूमिमें लेजा रहे हैं। और उन्हें वहां रखकर आप क्रोध करके फिर युद्ध करने जाते हैं। ये देखो अनेक योद्धा अपने पड़े हुए बन्धुओंको पानी देनेको दौड़े जाते हैं। ये देखो अनेक वीर अपने बन्धुओंको जल देकर

चले आते हैं, आइए! उनके आते ही आते वे मर गये।

ये देखो उन्हें मरा देख इन्हें भी मूर्च्छा होगयी। हे शत्रुनाशन! ये देखो अनेक वीर पानीके लिये दौड़ रहे हैं। अब ये पानी पीके लौटते हैं। इन्हें पानी नहीं मिला, ये अपने मरे हुए बन्धुओंको छोड़कर भागे जाते हैं।

हे पुरुष श्रेष्ठ! ये देखो अनेक वीर भौंह टेढ़ी किये ओठ चबाते हुए दूसरेको देख रहे हैं।

ऐसा कहते हुए श्रीकृष्ण और अर्जुन महाराज युधिष्ठिरका दर्शन करने चले गये।

अर्जुन बार बार कहते थे, कि शीघ्र घोड़ों को चलाओ इस प्रकार युद्धभूमि दिखाते हुए श्रीकृष्ण अर्जुनसे बोले, हे कुन्तीपुत्र! वह देखो अनेक राजोंके सहित महाराज खड़े हैं। ये देखो कर्ण युद्धमें जलती हुई अग्निके समान प्रकाश कर रहे हैं। ये देखो महा धनुषधारी भीमसेन युद्धसे लौटते हैं, ये देखो इनके पीछे धृष्टद्युम्न आदि अनेक प्रधान योद्धा जाते हैं। हे अर्जुन यह देखो पाण्डवोंको लौटता देख कौरवोंकी सेना भगी जाती है, और उनको कर्ण बलसे रोक रहे हैं। ये देखो इन्द्रके समान पराक्रमी महातेजस्वी महाधनुषधारी अश्वत्थामा तुम्हारी सेनाका नाश कर रहे हैं। ये देखो उसी अश्वत्थामासे युद्ध करनेको महारथ धृष्टद्युम्न दौड़े जाते हैं। ये देखो अनेक सृञ्जय और पाञ्चाल मरे पड़े हैं।

जिस समय श्रीकृष्ण अर्जुनसे यह कह रहे थे उसी समय उधर घोर युद्ध होने लगा, दोनों सेनाके वीर मृत्युको आगे करके सिंहके समान गर्जने और घोर युद्ध करने लगे।

हे महाराज! यह जो क्षत्रियोंका नाश हुआ सो केवल तुम्हारी बुद्धी और बुरी सम्मति हीका फल है।

५८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! अनन्तर युधि आगे करके सृञ्जय और कर्णको आगे हम लोग युद्ध करने लगे। तब कर्ण और पाण्डवोंका घोर संग्राम हुआ, उसमें सार मनुष्य मरे, उसे देखकर वीरोंके रोएं खड़े होने लगे। जब यह रुधिर बहानेवाला घो युद्ध होने लगा, तब बचे हुए संशप्तक भी युद्ध करने लगे।

धृष्टद्युम्न पाण्डव आदि सब राजोंके सहि कर्णसे युद्ध करनेको चले। जैसे अनेक नदि योंके वेगको पर्वत रोकता है तैसेही इन प्रसन्न विजयी वीरोंको आते देख एकले कर्णने रोका, जैसे पर्वतके पास आकर जल इधर उधरको फै जाता है। वैसे ही कर्णके पास आकर ये स महारथ इधर उधर होगये। हे महाराज! धृष्टद्युम्न और कर्णका घोर युद्ध हुआ तब धृष्ट द्युम्नने एक बाण कर्णको ओर चलाया और कहा कि, खड़े रहो! खड़े रहो! तब महारथ कर्ण भी अपने विजय धनुषको घुमा कर एक बाणसे धृष्टद्युम्नका धनुष काट दिया, अनन्तर उस अङ्गमें तेज नौ बाण मारे। हे पाप रहित! उन बाणोंने महात्मा धृष्टद्युम्नका सुवर्ण भूषित कवच काट दिया फिर रुधिरमें भीगकर वीर बहौटीके समान दीखने लगे। महाराज धृष्टद्युम्नने उस कटे धनुषको फेंककर क्रोधयुत सहित दूसरा धनुष लिया और विषैले सांपके समान बाण चढ़ा कर सत्तर बाण कर्णके शरीरमें मारे, कर्णने भी अनेक विषैले बाण धृष्टद्युम्नके शरीरमें मारे। अनन्तर महावीर कर्णने द्रोणनाशक धृष्टद्युम्नको अपने बाणोंसे छिपा दिया अनन्तर कर्णने एक सोनेके पंख वाले यमराजके दण्डके समान बाण धृष्टद्यु म्नकी ओर चलाया उस घोर बाणको आते देख महा शस्त्रधारी सात्यकीने सो टुकड़े करके गिरा दिया।

अपने बाणको कटा देख कर्णने सात्य

थोंकी ओर अनेक बाण चलाये। अनन्तर कर्णने सात्यकिके शरीरमें सात बाण मारे। सात्यकिने भी सोने के पङ्खवाले, अनेक बाण कर्ण की ओर चलाये तब चारों ओर यह घोर और विचित्र युद्ध होने लगा, इसे सुन कर और देखकर डरोंको भय होता है। कर्ण और सात्यकिका घोर युद्ध देखकर सब वीरोंके रोए खड़े होगए, इसी बीचमें महापराक्रमी शत्रुनाशन अश्वत्थामा धृष्टद्युम्नसे युद्ध करनेको चले। धृष्टद्युम्नको देख शत्रुनाशन अश्वत्थाम बोले, रे हत्यारे! खड़ा रह खड़ा रह! आज तू हमसे जीता नहीं बचेगा। ऐसा कहकर वीर अश्वत्थामाने धृष्टद्युम्नको ओर सहस्रों तेज बाण चलाये। धृष्टद्युम्न भी इनके बाणोंको काटनेका उपाय करने लगे। और अश्वत्थामा उनके मारनेका यत्न करने लगे। धृष्टद्युम्नने अश्वत्थामाको अपना काल रूप देख, इसलिये दुखी होकर युद्ध करने लगे। जैसे प्रलयमें यमराज कालसे युद्ध करनेको जाते है, इसी प्रकार धृष्टद्युम्न अपनेको शस्त्रसे मरने योग्य न जानकर अश्वत्थामासे युद्ध करनेको दौड़े। हे राजेन्द्र। अश्वत्थामाने धृष्टद्युम्नको खड़ा देख क्रोधमें भर अनेक सासलिये और उनसे युद्ध करनेको चले। जब ये दोनो इस प्रकार घोर युद्ध करने लगे, तब महाप्रतापी अश्वत्थामा बोले, रे नीच पाञ्चाल। आज मैं तुझे यमराजके यहां भेजूगा! तैंने जो ब्राह्मण द्रोणाचार्य्यको मार कर पाप किया है, उसका फल तुझे अभी मिलेगा। रे मूर्ख! हम सत्य कहते हैं कि आज तेरी कुशल नहीं है। यदि तू युद्धको छोड़ कर नहीं भागेगा तो साक्षात् अर्ज्जुनसे रक्षित होने पर भी जीता नहीं बचेगा।

उनके वचन सुन प्रतापी धृष्टद्युम्न बोले, तेरे वचनका उत्तर हमारा वही खड्ग देगा, जिसने तेरे बापका शिर काटा है। जिस खड्गसे यत्न करते हुए तेरे बापको मारा है, वही तुझे मारेगा, हमने जब अपने बलसे तेरे बापही को मार डाला, तब तुझे क्यों न मारेंगे? ऐसा कहकर महापराक्रमी सेनापति धृष्टद्युम्नने एक तेज बाण अश्वत्थामाके शरीरमें मारा। अश्वत्थामाने भी क्रोध करके अनेक तेज-बाण चलाये, उन बाणोंसे धृष्टद्युम्न, रथ, योद्धा और आकाश कुछ न दीखने लगा। जैसे अश्वत्थामाके बाण सब ओर छा रहे थे, ऐसे ही धृष्टद्युम्नके बाण भी अश्वत्थामाको ओर फैल रहे थे।

राधापुत्र कर्णके देखते ही देखते धृष्टद्युम्नने अश्वत्थामाको छिपा दिया। कर्ण भी पाञ्चाल और पाण्डवोंके साथ घोर युद्ध करने लगे। एकले कर्णने द्रौपदीके पांचोंपुत्र, सात्यकि और युधामन्युको रोक दिया। धृष्टद्युम्नने अश्वत्थामाका धनुष काट दिया, तब अश्वत्थामाने दूसरा धनुष धारण करके सांपके समान अनेक बाणोंसे धृष्टद्युम्नकी गदा, शक्ति, ध्वजा और धनुष काट दिया। अनन्तर क्षणमात्रमें उनके घोड़े सारथी और रथको काट दिया। अनन्तर धृष्टद्युम्न उस घोड़े और सारथी सहित रथ प्रकाशमान खड्ग और ढाल लेकर उतरे, परन्तु अश्वत्थामाने उसे भी अपने तेज बाणोंसे काट दिया। महापराक्रमी महाशस्त्रधारी शीघ्र बाण चलानेवाले अश्वत्थामाका यह पराक्रम देख वीर आश्चर्य्य करने लगे। उस समय रथ और धनुष रहित धृष्टद्युम्नके शरीरमें अनेक घाव लगे थे, तौभी अश्वत्थामा अपने अनेक तेज बाणोंसे उनको मार न सके। तब महात्मा अश्वत्थामाने धनुषको फेंक दिया और रथसे कूदकर धृष्टद्युम्नकी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे गरुड़ सांपपर। उसी समय श्रीकृष्णने अर्ज्जुनसे कहा, हे अर्ज्जुन! धृष्टद्युम्नके मारनेको अश्वत्थामा कैसे यत्न कर रहे हैं! वे अवश्य इन्हें मार डालेंगे। हे महाबाहो! शत्रुनाशन अर्ज्जुन! अब तुम मृत्यु-

रूपी अश्वत्थामाके मुखमें पड़े धृष्टद्युम्नकी रक्षा करो। ऐसा कहकर कृष्णने घोड़ोंको अश्वत्थामाकी ओर हांका। वे चन्द्रमाके समान घोड़े कृष्णके हांकनेसे आकाशकी उड़ते हुए पक्षियोंके समान अश्वत्थामाकी ओर दौड़े, महापराक्रमी अर्जुन और कृष्णको आते देख अश्वत्थामा शीघ्रता सहित धृष्टद्युम्नके मारनेका यत्न करने लगे। धृष्टद्युम्नको अश्वत्थामासे खिंचता हुआ देख अर्जुनने अनेक बाण चलाये। जैसे सांप बिलमें घुसता है ऐसे ही सोनेके पङ्खवाले अर्जुनके छोड़े बाण अश्वत्थामाके शरीरमें घुसने लगे। महापराक्रमी अश्वत्थामाने उन बाणोंसे पीड़ित होकर महातेजस्वी धृष्टद्युम्नको छोड़ दिया, फिर अपने अपने रथपर चढ़कर और धनुष धारण करके अर्जुनकी ओर अनेक बाण चलाने लगे। उसी समय महापराक्रमी सहदेव शत्रुनाशन धृष्टद्युम्नकी रक्षा करनेको आये; तब धृष्टद्युम्न उनके रथपर चढ़ गये। अर्जुनने भी क्रोध करके अश्वत्थामाके शरीरमें अनेक बाण मारे, इसी प्रकार अश्वत्थामाने भी बाण चलाये। तब अर्जुनने क्रोध करके एक यमराजके दण्डके समान घोर बाण अश्वत्थामाकी ओर चलाया।

हे महाराज! वह तेजबाण अश्वत्थामाके कन्धेमें लगा। उस बाणके लगते ही वे व्याकुल होगये और मूर्च्छा खाकर रथमें गिर गये। उसी समय कर्ण अपने बिजय धनुषको घुमाते हुए अर्जुनके सङ्ग युद्ध करनेके लिये क्रोधमें भरकर युद्धमें आये। इधर अश्वत्थामाको व्याकुल देख सारथीने उन्हें युद्धसे हटा दिया। अश्वत्थमाको भगे और धृष्टद्युम्नको छूटा देख पाञ्चालदेशके वीर गर्ज्जने लगे। इस अद्भुत कर्म्मको देखकर पाण्डवोंकी सेनामें अनेक प्रकारके बाजे बजने लगे और अनेक वीर सिंहके समान गर्ज्जने लगे। इस युद्धको पश्चात् अर्जुनने श्रीकृष्णसे कहा, हे कृष्ण! तुम हमारे रथको संशप्तकोंकी ओर ले चलो, उनका मारना ही हमारा धर्म्म है। अनन्तर अर्जुनके वचन सुन श्रीकृष्णने पताका युक्त मन और वायुके समान शीघ्रवेगी रथको संशप्तकके सेनाकी ओर हांका।

५६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले; हे राजन्! उसी समय धर्म्मराज युधिष्ठिरको दिखलाते हुए श्रीकृष्ण अर्जुनसे बोले, हे अर्ज्जुन! देखो यही तुम्हारे भाई धर्म्मराज युधिष्ठिर महापराक्रमी धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे युद्ध कर रहे हैं। ये देखो ये वीरोंकी सेनाके पीछे दौड़े जाते हैं। और उनके पीछे उनकी रक्षा करते हुए महापराक्रमी महा योद्धा पांचालदेशी चले जा रहे हैं। ये देखो सब जगतका राजा दुर्य्योधन रथ सेनाके सहित महाराजसे युद्ध करनेको चला आता है। ये देखो इनके सङ्ग सब युद्धविद्याके जाननेवाले, इनके भाई भी महाराजको मारनेको जा रहे हैं। ये देखो जैसे अनेक भिक्षुक दानीके पास जाते है वैसे ही ये धृतराष्ट्रके पुत्र हाथी घोड़े और रथोंके सहित महाराजके पास जाते हैं। ये देखो भीमसेन और सात्यकिने इस सेनाको इस प्रकार रोक रखा है जैसे इन्द्र और अग्नि लड़ते हुए दानवोंको रोकते हैं। हे महारथ! जैसे वर्षा कालमें अनेक नदी समुद्रमें जाती है, वैसे ही यह सेना भीमसेनकी ओर जा रही है। ये अनेक वीर गर्जते, शङ्ख बजाते और धनुष टङ्कारते युद्ध करनेको जाते हैं। आहह! ये देखो महाराज दुर्य्योधनके वशमें होगये, जैसे अग्निमें पड़कर आहुति भस्म होजाती हैं, वैसे ही महाराज दुर्य्योधनके हाथसे मरना चाहते हैं। आज दुर्य्योधनकी सेनाका जैसा व्यूह बना है।

इसमें पड़नेसे इन्द्रभी नहीं बच सक्ते जैसे यम-राजके वलको कोई नहीं सह सक्ता, ऐसे ही बलवान दुर्य्योधनके शीघ्र चलते हुए बाणोंको सहनेकी किसकी सामर्थ है?

वीर दुर्य्योधन, अश्वत्थामा, सरद्वतीपुत्र कृपाचार्य्य और कर्णके बाण पर्व्वतोंको भी काट सक्ते है। ये देखो सब अस्त्रोंके जाननेवाले, महापराक्रमी शीघ्र शस्त्र चलानेवाले, महाराजको कर्णने युद्धसे बिमुख कर दिया। महापराक्रमी शूरवीर धृतराष्ट्र पुत्रोंके सहित कर्ण महाराजका युद्धमें जीत सक्ते है। ये देखो इन सबसे अथवा और बीरोंसे भी एकले महाराज युद्ध कर रहे हैं। इस समय युधिष्ठिरके कर्म्म अद्भुत दिखायी देते है। हमारे महाराज व्रत करते करते दुबले होगये हैं। ये सदा ब्राह्मणोंके समान शील बृत्तिसे, रहते है। कभी क्षत्रियोंके समान क्रोध नहीं करते, आज महाराज युधिष्ठिर कर्णसे युद्ध कर रहे है। सो हमें सन्देह होता है। गर्ज्जते हुए कौरवोंके सिंह समान शब्दको भीमसेन खड़े हुए सुन रहे हैं। इससे हमें जान पड़ता है कि, महाराज नहीं जीते। देखो विजयी धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे कह रहा है, कि महाराज युधिष्ठिर मारे गये। हे अर्ज्जुन। स्थूणाकर्ण और इन्द्रजाल आदि अनेक शस्त्र राजाके रथपर घूम रहे हैं। ये देखो अनेक पाञ्चाल और पाण्डव महाराजकी घोर दौड़ जाते है। इससे जान पड़ता है। कि वे किसी घोर आपत्तिमे पड़े है। इसलिये तुम भी उन्हीके पास चलो, ये देखो अनेक शस्त्र जाननेवाले, प्रधान योद्धा डूबते हुए महाराजको उद्धार करनेको दौड़े हुए जाते हैं। देखो शिखण्डी, सात्यकि, नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्न, शतानीक, भीमसेन, सब पाञ्चाल और समस्त चेदिदेशी क्षत्रियोंके देखते देखते कर्णने महाराजकी ध्वजा काट दी। जैसे तालाबमें घुसकर हाथी कमलोंका नाश करता है। वैसे ही कर्ण तुम्हारी सेनाको मार रहे है। हे पार्थ! देखो तुम्हारी सेनाके महारथ वीर भागे जाते हैं। हे अर्ज्जुन। ये देखो ये हाथी कर्णके बाणोंसे पीड़ित होकर चारों ओरको भागे जाते हैं। शत्रुनाशन! ये रथोंके झुण्ड कर्णसे डर कर भागे जाते हैं। हे उत्तम ध्वजावाले! ये देखो हाथियोंके झुण्डमें कर्णकी ध्वजा फहरा रही है। ये देखो तुम्हारी सेनाको मारते और अनेक बाण छोड़ते राधापुत्र भीमसेनकी ओर जा रहे है। जैसे इन्द्रको देख युद्ध छोड़ कर दैत्य भागते हैं। ऐसे ही महारथ पाञ्चाल भागे जाते है। ये देखो कौरवोंके बीचमें खड़े हुए कर्ण इस प्रकार धनुष खींच रहे हैं। जैसे दानवोंको जीत कर देवतोंके बीचमें इन्द्र।

कर्णका पराक्रम देखकर कौरव गर्ज्ज रहे है। और तुम्हारी सेनाको डरा रहे हैं। देखो राधापुत्र तुम्हारी सेनाको जीतकर अपनी सेनाके पीछे खड़े हैं। ये अपनी सेनाको आज्ञा दे रहे हैं। कि तुम लोग जल्दी दौड़ो मारो कोई सृञ्जय जीता न जाने पावे।

ये इस आज्ञाको देकर सेनाके पीछे चले गये। और वहींसे बाण चला रहे हैं। देखो कर्ण युद्धमें सफ़ेद छत्र धारण किये इस प्रकार बिराज रहे हैं, जैसे चन्द्रमाके सहित हिमाचल, ये देखो सफेद छत्रधारी कर्ण अब केवल तुम्हारी ही ओर देख रहे हैं। अब ये रथको शीघ्र चलाकर तुमसे घोर युद्ध करनेको आया चाहते है। ये देखो कर्ण अपने धनुष पर चढ़ाकर सर्पके समान बाण चला रहे हैं।

हे शत्रुनाशन! ये कर्ण तुम्हारे ध्वजाके वानरको देखकर तुमसे युद्ध करनेको लौटे आते है। हे भारत! जैसे अग्निमें जलनेको पतङ्ग दौड़ते हैं, वैसे ही, कर्ण तुमसे युद्ध करनेको चले आते हैं। कर्णको शीघ्र आते देख यह धृतराष्ट्रका दुष्ट पुत्र सब सेनाके सहित

उनकी रक्षाके हेतु चला आता है। आज यत्न करके इन सबको मारना चाहिये। यदि तुम राज्य सुख और यशकी इच्छा करते हो तो इसे मारो। तुम दोनों जगत् प्रसिद्ध बलवान् और शूर वीर हो जैसे देवासुर संग्राममें देवता और दानव लड़ेथे, वैसे ही तुम और कर्ण युद्ध करो, आज तुम्हारे पराक्रमको सब कौरव देखेंगे। हे भारत कुलसिंह। तुम्हें और कर्णको घोर युद्ध करते देख दुर्य्योधन क्रोध करेगा परन्तु कुछ कर नहीं सकेगा, देखो इस दुष्ट राजा पुत्र कर्णके अब मरनेका समय आगया इसलिये तुम अपनी बुद्धि स्थिर करके इस सेनापति कर्णसे युद्ध करो।

हे महारथ! ये पांच महातेजस्वी प्रधान योद्धा हैं। सो युद्ध करनेको चले आते हैं। ये महा पराक्रमी तेजस्वी वीरोंके पांच सहस्र हाथी और दश हजार घोड़े चले आते हैं। दश लाख पदाति चले आते हैं। ये सब सेना एक दूसरेकी रक्षा करती हुई तुम्हारी ही ओर चली आती है। ये सेनाके आगे जगत्‌विख्यात महापराक्रमी वीर अश्वत्थामा चले आते है तुम यत्न करके इनको नाश करो। हे भारतकुलसिंह! इस रथ झुण्डको मारकर महाधनुषधारी सूतपुत्रसे युद्ध करना। हे भारतकुलसिंह! अब शीघ्र इसी सेनाकी ओर चलो, ये देखो श्रीमान महाराजा युधिष्ठिर कुशलपूर्व्वक युद्ध कर रहे हैं। ये महाबाहु भीमसेन सेनाके मुखमें खड़े है; ये देखो इनके पास सृञ्जयवंशी क्षत्रियोंके सहित सात्यकि खड़े है, ये कौरव तेजबाणोंसे तुम्हारी सेनाका नाश कर रहे है। ये देखो महापराक्रमी पाञ्चाल धृष्टद्युम्न और भीमसेनने कौरवोंकी सेनाको बाणोंसे व्याकुल करके भगा दिया, जैसे पकीहुई खेतीको किसान काटता है, तैसे ही भीमसेन अपने बाणोंसे सेनाको काट रहे हैं; ये वीर रुधिरमें भीगे जाते हैं। हे कुन्तीपुत्र। पराक्रमी भीमसेनको लोटते देख यह दुर्य्योधनकी सेना भागी जाती है, वे विपीले सांपके समान क्रोधी भीमसेन कौरवोंकी सेनाको भगा रहे हैं। ये सफेद, लाल, काली, पीली, चन्द्रमा, तारे और सूर्य्यके चिन्होंसे युक्त ध्वजा कटी पड़ी हैं। ये अनेक छत्र पृथ्वीमें पड़े हैं। ये देखो अनेक सोने चांदी और लोहेके दण्डवाली पताका पृथ्वीमें पड़ी हैं; ये अनेक हाथी, घोड़े, मरकर पृथ्वीमें गिरते हैं। ये देखो अनेक वीर मरकर रथोंसे गिर रहे हैं। हे धनञ्जय! ये देखो युद्धको न छोड़नेवाले पाञ्चालोंके अनेक प्रकारके बाणोंसे मरे हुए, वीर रहित हाथी घोड़े और रथ फिरते हैं। ये महापराक्रमी पाञ्चाल भीमसेनके आग्रहसे दुर्य्योधनकी सेनाकी ओर दौड़े जाते हैं। ये पाञ्चाल अपने प्राणोंका मोह छोड़कर शत्रुओंकी सेनाको मार रहे हैं, गरज रहे हैं और शङ्ख बजा रहे हैं। यह तुम अपने वीर पाञ्चालोंका पराक्रम देखो, ये लोग अपने बाणोंसे क्षत्रियोंका किस प्रकार नाश कर रहे हैं। जैसे क्रोधी सिंह हाथियोंका नाश करते हैं तैसे ही ये पाञ्चाल शत्रुओंको मार रहे है। इन्होंने किसीका शस्त्र काट दिया और किसीका शिर काट लिया है। ये अपने तेज बाणोंसे क्षत्रियोंको मार रहे हैं और गर्ज रहे है। उनके शस्त्रोंसे शत्रुओंके शिर और हाथ काट काटकर पृथ्वीमें गिरते हैं। यह धृतराष्ट्रकी महासेना चारों ओरसे हाथी, घोड़े और रथोंके सहित आपत्तिमें पड़ गयी हैं। जैसे हंसोंका झुण्ड आनेसे गङ्गाका पानी गदला होजाता है। ऐसे ही पाञ्चालोंके घुसनेसे यह सेना घबड़ा उठी। इनके रोकनेकी सेनामें किसीको सामर्थ नहीं है। कृपाचार्य्य और कर्ण आदि वीर भीमसेनके बाणोंसे इस प्रकार व्याकुल होगये हैं जैसे साधारण बैल सांड़के सींगोंसे। ये महापराक्रमी धृष्टद्युम्न आदि वीर पाञ्चाल

सेनाके सहित महारथ धृतराष्ट्रपुत्रोंसे युद्ध कर रहे हैं। ये महापराक्रमी भीमसेन बेडर होकर धृतराष्ट्रकी सेनाका नाश कर रहे हैं। इस समय पाञ्चालोंके बलसे शत्रु महादुःखित हो रहे हैं। ये भीमसेनके भयसे अनेक रथ भागे जाते हैं ये भीमसेनके बाणोंसे हाथी मर कर गिर रहे हैं, इन मरे हुए हाथियोंकी ऐसी शोभा बढ रही है, जैसे इन्द्रके वज्रके काटते हुए पर्व्वतके शिखरोंकी, ये भीमसेनके बाणोंसे व्याकुल होकर अपनी सेनाके वीरोंको मारते हुए हाथी भाग रहे हैं। कोई योडा इस समय भीमसेनके शब्दको नहीं सह सक्ता। ये महापराक्रमी भीमसेन गर्ज्ज रहे हैं। ये निषादपुत्र मतवाले हाथीपर चढ़कर भीमसेनसे युद्ध करनेको चले आते हैं। ये तोमर लिये दण्डधारी यमराजके समान क्रोधमें भरे भीमसेनकी ओर चले आते हैं। ये देखो भीमसेनने गर्ज्ज कर इनके तोमर सहित हाथ काट दिये। भीमसेनने अग्निके समान दश बाणोंसे निषादपुत्रको मारडाला अब यह इसरे वीरोंसे लड़नेको चले, ये देखो अञ्जनके समान काले महावतोंसे युक्त हाथियोंपर बैठे हुए अनेक वीर शक्ति तोमर और बाणोंसे भीमसेनको मार रहे हैं।

हे पार्थ! देखो तुम्हारे बड़े भाई भीमसेनने अपने तेज बाणोंसे सात सात हाथियोंको मारडाला और ध्वजा कटकर पृथ्वीमें गिर गई इधर देखो भीमसेनने अपने दश दश बाणोंसे एक एक हाथीको मार डाला। इस समय कोई धृतराष्ट्रका पुत्र कहीं नहीं गर्ज्जता। ये देखो जहां इन्द्रके समान पराक्रमी भीमसेन क्रोध करके युद्ध कर रहे हैं। तहां दुर्य्योधनकी तीन अक्षोहिणी सेना इकट्ठी हैं। परन्तु एकले पुरुषसिंह भीमसेन इन सबको रोक रहे हैं। जैसे दुर्ब्बल नेत्रवाले मनुष्य दो पहरके सूर्य्यकी ओर नहीं देख सकते, तैसे ही इस समय कोई राजा भीमसेनके मुखको नहीं देख सकता। जैसे सिंहसे डरकर हरिण भागते हैं। ऐसे ही ये सब राजा भीमसेनके बाणोंसे व्याकुल होकर कहीं सुख नहीं पाते।

सञ्जय बोले, श्रीकृष्णके बचन सुन और भीमसेनके इस महाघोर पराक्रमको देख अर्ज्जुन अपने बाणोंसे बचे हुए संशप्तकोंको मारने लगे। अनेक संशप्तक मरकर स्वर्गका सुख भोगने चले गये और शेष डरकर इधर उधरको भागने लगे। अर्ज्जुन भी अपने बाणोंसे तुम्हारी चारों प्रकारकी सेनाको मारने लगे।

६० अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जिस समय महाबलवान भीमसेन और महाराज युधिष्ठिर हमारी सेनाको मारनेको लौटे तब कैसा युद्ध हुवा?

सञ्जय बोले, हे राजन्! महापराक्रमी भीमसेनका बल देखकर सूतपुत्र कर्ण लाल नेत्र करके उनकी ओर दौड़े और तुम्हारी सेनाको भागते देख बड़े यत्नसे उन्होंने स्थिर किया। अपनी सेनाको स्थिर करके महापराक्रमी पाण्डवोंसे युद्ध करनेको चले, कर्णको आते देख पाण्डवोंकीसेनाके अनेक महारथ धनुष खींचते और बाण छोड़ते दौड़े। भीमसेन, सात्यकि, शिखण्डी, जनमेजय, बलवान धृष्टद्युम्न और सब प्रभद्रक ये सब विजयी महापराक्रमी पुरुषसिंह दौड़कर तुम्हारी सेनाको चारों ओरसे मारने लगे। इसी प्रकार तुम्हारी सेनाके महारथ पाण्डवोंकी सेनाको मारने लगे। हे पुरुषसिंह! उस समय हाथी, घोड़े, रथ और पदातियोंसे भरो अनेक ध्वजाओंसे शोभित दोनो सेनाओंका रूप अद्भुत होगया। हे महाराज! शिखण्डी कर्णसे धृष्टद्युम्न बहुत

सेना सहित तुम्हारे पुत्र दुःशासनसे नकुल वृषसेनसे युधिष्ठिर चित्रसेनसे सहदेव उलूकसे सात्यकि शकुनिसे और द्रौपदीके पुत्र सब कौरवोंसे युद्ध करने लगे। इसी प्रकार अर्जुनसे युद्ध करनेको महारथ अश्वत्थामा चले, महाधनुषधारी युधामन्युसे कृपाचार्य्य उत्तमौजासे कृतबर्म्मा हे शत्रुनाशन। इसी प्रकार भीमसेन तुम्हारे सब पुत्रोंसे युद्ध करनेको चले, महाबाहु भीमसेनने सेनाके सहित तुम्हारे सब पुत्रोंको व्याकुल कर दिया। हे महाराज! भीष्मके मारनेवाले शिखण्डीने पाण्डवोंकी सेनामें घूमते हुए बेडर कर्णको अपने बाणोंसे रोक दिया; उन बाणोंके लगनेसे क्रोधके मारे कर्णके होंठ फरकने लगे। तब उन्होंने तीन बाण शिखण्डीकी भौंहमें मारे उन बाणोंसे शिखण्डीकी शोभा ऐसी बढ़ी जैसे तीन शिखरयुक्त चांदीका पर्व्वत शोभित होता है। महाधनुषधारी शिखण्डीने उन तीन बाणोंसे व्याकुल होकर भी कर्णके शरीरमें नव बाण मारे। महारथ कर्णने तीन बाणोंसे शिखण्डीके घोड़े और सारथीको मारा; एकसे ध्वजा काटी शत्रुनाशन महारथ शिखण्डी एक शक्ति कर्णकी ओर चलाकर उस रथसे कूद पड़े। हे भारत! कर्णने अपने तीन बाणोंसे उस शक्तिको काट दिया और नौ बाण शिखण्डीके शरीरमें मारे। उस समय पुरुषश्रेष्ठ शिखण्डीके शरीरमें अनेक घाव होगये थे, तब वे कर्णके बाणोंको बचाते हुए युद्धसे भाग गये। जैसे वायु रूईको उड़ाता है तैसे ही शिखण्डीके भागनेपर कर्ण पाण्डवोंकी सेनाका नाश करने लगे। हे महाराज! जब दुःशासनने धृष्टद्युम्नकी ओर अनेक बाण चलाये तब दुःशासनने एक सोनेके पङ्खवाला तेजबाण धृष्टद्युम्नके दहने हाथमें मारा, तब धृष्टद्युम्नने क्रोध करके एक घोर बाण दुःशासनकी ओर चलाया। हे पृथ्वीनाथ! धृष्टद्युम्नके उस घोर बाणको आते देख तुम्हारे पुत्रने तीन बाणसे काट दिया। अनन्तर सोनेसे भूषित शीघ्र चलनेवाले सत्तरह बाण धृष्टद्युम्नके हृदय और हाथोंमें मारे, तब धृष्टद्युम्नने क्रोध करके एक तेज बाणसे तुम्हारे पुत्रका धनुष काट दिया, तब सब वीर उनकी प्रसंसा करने लगे। तब तुम्हारे पुत्रने हंसकर दूसरा धनुष लिया और सहस्रों बाणोंसे धृष्टद्युम्नको छा दिया; महात्मा दुःशासनके इस पराक्रमको देख सब वीर अप्सरा और सिद्ध आश्चर्य करने लगे। जैसे सिंह मतवाले हाथीको रोक लेता है। ऐसे ही दुःशासनने धृष्टद्युम्नको रोक दिया; हमने उस समय धृष्टद्युम्नको नहीं देखा तब अनेक महारथ पाञ्चाल धृष्टद्युम्नकी रक्षा करनेको चले। हे शत्रु नाशन! तब पाण्डव और तुम्हारी सेनाका घोर युद्ध हुआ। वृषसेनने कर्णके पास खड़े होकर नकुलके शरीरमें तीन बाण मारकर और भी तीन बाण मारे। तब और नकुलने हंसकर एक तेज बाण वृषसेनके हृदयमें मारा; उस बाणसे व्याकुल होकर वृषसेनने नकुलके शरीरमें बीस बाण मारे, नकुलने भी उनके पांच बाण मारे तब वे दोनों वीर एक दूसरे पर सहस्रों बाण चलाने लगे। और सेनाका नाश करने लगे। तब नकुलके बाणोंसे पीड़ित होकर तुम्हारी सेना भागने लगी, यह देख कर्णने अपने बलसे अपनी सेनाको स्थिर किया।

जब कर्ण लौटे तब नकुल कौरवोंसे युद्ध करने लगे। वृषसेन नकुलके आगेसे भग कर अपने पिताके रथके पहियोंको रक्षा करने लगा।

हे भारत! सहदेवने उलूकको अपने बाणोंसे व्याकुल कर दिया। तब महा प्रतापी सहदेवने चार बाणसे उलूकके घोड़े और एक बाणसे सारथीको मार डाला। हे पृथ्वीनाथ!

उलूक उस रथसे कूद कर त्रिगर्त्त देशकी सेनाकी ओर भाग गये। सात्यकीने हंसकर शकुनिके शरीरमें बीस बाण मारे और एक बाणसे उनकी ध्वजा काट डाली। हे राजन्! प्रतापवान् शकुनिने भी क्रोध करके सात्यकिका कवच और एक बाणसे सोनेकी ध्वजा काट दी, सात्यकिने क्रोध करके अनेक तेज बाण शकुनिके शरीरमें मारे और तीन बाण सारथीके मारे अनन्तर चार बाणोंसे चारों घोड़े मार डाले। तब शकुनि उस रथसे कूदे और महात्मा उलूकके रथपर चढ़कर युद्धसे भाग गये। तब सात्यकि वेगसे तुम्हारी सेनाकी ओर दौड़े तब तुम्हारी सेना इधर उधरको भागने लगी, सात्यकिके बाणोंसे व्याकुल होकर तुम्हारे अनेक वीर मर गये और कुछ इधर उधर को भागने लगे। जब दुर्य्योधन भीमसेनसे युद्ध करने को चले, तब इन्होंने तुम्हारे पुत्रके घोड़े और सारथीको मार डाला। फिर रथ और ध्वजा भी काट दी, भीमसेनके इस पराक्रमको देख पाण्डवोंकी सेना बहुत प्रसन्न हुई दुर्य्योधन रथसे उतर भीमसेनके आगेसे भाग गये। तब कौरवोंकी सब सेना क्रोध करती हुई भीमसेनकी ओर दौड़ी।

युधामन्युने कृपाचार्य्यके शरीरमें अनेक बाण मारे, फिर एक बाणसे उसका धनुष काट दिया, कृपाचार्य्यने हंसकर दूसरा धनुष लिया और अपने बाणोंसे युधामन्युके सारथी, ध्वजा और छत्र काट दिया। तब महारथ युधामन्यु अपने हाथसे रथ हांकते हुए भागे।

जैसे मेघ पर्व्वतके ऊपर जल बर्षाता है, ऐसेही उत्तमौजा महा पराक्रमी कृतवर्म्माके ऊपर बाण बर्षाने लगे। हे पृथ्वीनाथ! इन दोनों वीरोंका ऐसा घोर युद्ध हुआ जैसा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। तब कृतवर्म्माने उत्तमौजाके हृदयमें एक बाण मारा तब उत्तमौजा मूर्च्छा खाकर रथमें गिर पड़े तब उनके सारथीने उन्हें युद्धसे हटा दिया।

भीमसेन समस्त कुरु सेनाके सङ्ग युद्ध करने लगे। शकुनि और दुःशासन अपने सङ्ग बहुत गज सेना लेकर भीमसेनसे युद्ध करनेको आये और अनेक बाण बर्षाये, तब भीमसेनने अपने तेज बाणोंसे व्याकुल करके दुर्य्योधनको भगा दिया और फिर गज सेनाकी ओर लौटे भीमसेनने क्रोध करके उस गजसेनाकी ओर दिव्य बाण चलाये जैसे इन्द्रके बज्रसे कटकर पर्व्वत गिरते हैं। ऐसे ही भीमसेनके बाणसे हाथी मर कर गिरने लगे। उस समय भीमसेनके बाण टीड़ीदलके समान आकाशमें छा रहे थे, तब सहस्रों हाथियोंके झुण्डोंको भीमसेनने इस प्रकार मार डाला, जैसे वायु मेघोंको उड़ा देता है। वे सोनेकी झूल औरमणियोंसे शोभित हाथी बिजलीके समेत मेघोंके समान शोभित होने लगे।

हे राजन्। भीमसेनके बाणोंसे अनेक हाथी इधर उधरको भागने लगे। और अनेक मरकर पृथ्वीमें गिर गये। उन पड़े हुए और गिरते हुए हाथियोंसे वह पृथ्वी ऐसी शोभित हुई जैसे गिरे पर्व्वतोंसे, जैसे पुण्य नाश होनेसे तारे टूटकर पृथ्वीमें गिरते हैं। वैसेही अनेक भूषणधारी योद्धा हाथियों परसे गिरे। किसी हाथीका पैर कट गया, किसीका शिर और किसीकी सूंड़ कट गयी। किसीके मुखसे रुधिर गिरने लगा। कहीं सैकड़ों हाथियोंके झुण्ड बाणोंसे व्याकुल होकर इधर उधरको भागने लगे। पर्व्वतके समान हाथियोंके शरीरसे गेरूके झरनोंके समान रुधिर बहने लगे। उस समय चन्दन और अगर लगे, भीमसेनके दोनों हाथ केवल धनुष खींचते ही दीखते थे, भीम सेनके बज्रके समान तालशब्दको सुनकर हाथी पेशाब करते भागते थे, महापराक्रमी भीम सेनका स्वरूप उस समय प्रलय करते शिवके समान दीखता था।

६१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! सफेद, घोड़े और कृष्ण सारथीके सहित अर्जुन ऐसे युद्धकरने आए जैसे वायुके लगनेसे समुद्रका पानी इधर उधरको फैलने लगता है। तैसे ही अर्जुनको देख तुम्हारी सेना इधर उधर भागने लगी, तब महाबलवान् दुर्य्योधन आधी सेनाके सङ्ग क्रोध करके युधिष्ठिरसे युद्ध करनेको दौड़े। उन्होंने क्रोध करके युधिष्ठिरके शरीरमें तिहत्तर बाण मारे।

तब कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरने क्रोध करके तुम्हारे पुत्रके अङ्गमें तीस बाण मारे, तब युधिष्ठिरसे युद्ध करनेके लिये अनेक महारथ कौरव दौड़े।

इधरसे भी महाराजकी रक्षा करनेके लिये नकुल, सहदेव और धृष्टद्युम्न एक अक्षौहिणी सेना लेकर दौड़े।

भीमसेन जहां तुम्हारी सेनाको मार रहे थे, तहांसे उन्होंने देखा कि महाराजको शत्रुओंने घेर लिया, तब वे भी उनकी रक्षा करनेको दौड़े, इन सबसे युद्ध करनेके लिये तुम्हारी ओरसे एकले कर्ण चले, महाधनुषधारी कर्णने अपने बाणोंसे सब महारथोंको रोक दिया, वे लोग भी कर्णकी ओर बाण और तोमर चलाने लगे। सब शस्त्रधारी वीर अनेक यत्न करने पर भी महाधनुषधारी कर्णकी ओर नहीं देख सके। एकले कर्णने इन सबको अपने बाणोंसे व्याकुल कर दिया, अनन्तर महाप्रतापी सहदेवने दुर्य्योधनके शरीरमें बीस बाण मारे, उन बाणोंके लगनेसे दुर्य्योधन शिखर सहित पर्व्वत अथवा रुधिर बहते मतवाले हाथीके समान शोभित हुए, तुम्हारे पुत्रको सहदेवके बाणोंसे व्याकुल देख महारथ कर्ण बाण बर्षाते हुए दौड़े, उन्होंने अपने बाणोंसे युधिष्ठिकी सेना सहित धृष्टद्युम्नको व्याकुल कर दिया।

हे महाराज। कर्णके बाणोंसे व्याकुल होकर इधर उधरको सब सेना भागने लगी। उस समय सूतपुत्र कर्णके बाण सब आकाशमें छा गये और सेनामें घूमघूमकर वीरोंका नाश करने लगे। जैसे टीड़ीदल आकाश और वृक्षोंमें छा जाता है। ऐसे ही कर्णके बाण सब ओर छा गये, युद्धमें बाण घिसनेसे अग्नि निकलने लगी।

चन्दन और अगर लगे कर्णके दोनों हाथ केवल धनुष खींचते और शत्रुनाशक बाण छोड़ते दीखते थे।

हे राजन्। कर्ण मणि और सुवर्णभूषित हाथोंसे सब दिशाओंमें बाण बर्षाने और शत्रुओंको मारने लगे। अनन्तर कर्ण धर्म्मराज युधिष्ठिरसे युद्ध करनेको चले, तब धर्म्मराज युधिष्ठिर भी क्रोधसे भर गये और कर्णके शरीरमें पचास तेज बाण मारकर युद्धमें बाणोंसे अन्धकार कर दिया, और सेनाके अनेक वीरोंको मार डाला। हे पृथ्वीनाथ। उस समय तुम्हारी सेनामें हाहाकार होने लगा। हे भरत कुलसिंह! युधिष्ठिरने बाण, शक्ति, तोमर, मूसल और अनेक प्रकारके भालोंसे तुम्हारी सेनाके सहस्रों वीरोंको मार डाला। धर्म्मात्मा युधिष्ठिर जिधरको देखते थे, उधर ही तुम्हारी सेनाका नाश होजाता था, तब कर्णने क्रोध करके युधिष्ठिरकी ओर अनेक अर्द्धचन्द्र और वत्सदन्त बाण चलाये। महापराक्रमी कर्णका मुख क्रोधसे कांपने लगा और अनेक बाण चलाते हुए युधिष्ठिरकी ओर दौड़े। युधिष्ठिरने भी हंसकर सिली पर घिसे सोनेके पङ्खयुक्त अनेक बाण कर्णपर चलाये। कर्णने भी उनपर अनेक बाण चलाये अनन्तर कर्णने क्रोध करके धर्म्मराज युधिष्ठिरके हृदयमें बाण मारे, उनसे राजा अत्यन्त व्याकुल होगये और रथमें बैठकर सारथीको चलनेको आज्ञा दी।

तब तुम्हारी सब सेना प्रसन्न होकर गर्ज्जने लगी तब तुम्हारी सेनाके प्रधान वीर युधिष्ठरको पकड़नेको दौड़े, अनन्तर महा-

पराक्रमी कैकय और पाञ्चालोंने उन्हें रोक लिया, तब दोनों ओरसे वीरोंका नाश होने लगा, उसी समय महापराक्रमी भीमसेन और दुर्य्योधन युद्ध करनेको सम्मुख हुए।

६२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्। कर्ण भी महाधनुषधारी कैकयदेशी महारथोंको बाणोंसे मारने लगे। उन्होंने कर्णके निवारण करनेका बहुत यत्न किया, परन्तु रोक न सके, तब कर्णने उनके पाच सौ वीरोंको मार डाला।

कर्णके बाणोंसे पीड़ित वीरोंने कर्णको महायोद्धा जान और भीमसेनको आते देख घोर युद्ध किया। कर्ण भी उस सेनाको छोड़कर केवल एक रथसे अनेक बाण चलाते हुए और कौरवोंकी सेनाका नाश करते हुए युधिष्ठिरकी ओर दौड़े, उस समय महाराज युधिष्ठिर घावोंसे अत्यन्त पीड़ित होगये थे। और नकुल सहदेवके सहित अपनी सेनाको देख रहे थे, उसी समय दुर्य्योधनको प्रसन्न करनेके लिये राधापुत्रने उनके शरीरमें तीन तेजबाण मारे, तब महाराजने क्रोध करके कर्णके हृदयमें तीन बाण मारे और फिर एक बाण सारथी और चार बाण चारों घोड़ोंको मारे।

राजा युधिष्ठिरके रथके पहियोंकी रक्षा करनेवाले नकुल और सहदेव भी कर्णकी ओर दौड़े, उन दोनोंने बहुत यत्न करके कर्णकी ओर सहस्रों बाण चलाये। महाधनुषधारी कर्णने भी शत्रुनाशन नकुल और सहदेवके शरीरमें एक एक तेज बाण मारा। तब कर्णने अपने सफेद उत्तम घोड़ोंको युधिष्ठिरकी ओर दौड़ाया, तब हसकर महाधनुषधारी युधिष्ठिर टोपको काट दिया। इसी प्रकार बुद्धिमान नकुलके घोड़ोंको भी मारकर रथ और धनुषको काट दिया और युधिष्ठिरके भी रथको काट दिया, तब ये दोनों भाई व्याकुल होकर सहदेवके रथपर चढ़ गये, अपने भानजोंको रथ हीन और घावोंसे व्याकुल देखकर मद्रराज शल्य दयासे भरकर कर्णसे बोले, तुमने कहा था कि, हम आज अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको जाते हैं। तब धर्म्मराज युधिष्ठिरसे क्रोध करके क्यों लड़ते हो, जब तुम्हारे पास बाण नहीं रहेंगे, हम और घोड़े भी थक जायंगे, तब अर्ज्जुनसे युद्ध करनेमें तुम्हारी हसी होगी।

बुद्धिमान मद्रराजके वचन सुन कर्णने युधिष्ठिर नकुल और सहदेवके शरीरमें अनेक बाण मारे। महाराज युधिष्ठिर उनके बाणोंसे बहुत व्याकुल होगये, उस समय शल्य हंसकर कर्णसे बोले, हमे ऐसा जान पड़ता है कि दुर्य्योधनने तुम्हारा और युधिष्ठिरके मारने ही के लिये, इतना सत्कार किया था, परन्तु यह बात ठीक नहीं दुर्य्योधनने केवल अर्ज्जुनके मारनेके लिये तुम्हारा इतना सत्कार किया है। इसलिये तुम उन्ही अर्ज्जुनको जीतो, युधिष्ठिरके मारनेसे क्या होगा? यह घोर शब्द अर्ज्जुनके शङ्खका सुनाई दे ा है। देखो यह वर्षाकालके मेघके समान अर्ज्जुनके धनुषका शब्द चला आता है। यह तुम्हारी सेनाके महारथोंका नाश कर रहे हैं। हे कर्ण! ये देखो अर्ज्जुन आज हमारी सब सेनाका नाश किये देते हैं। उनकी रथकी रक्षा उत्तमौजा और युधामन्यु कर रहे है। इनके बाएं पहियेको सात्यकि और दहनेको साक्षात् धृष्टद्युम्न रक्षा करते हैं।

और ये देखो भीमसेन साक्षात् राजा दुर्य्योधनसे युद्ध कर रहे हैं। ऐसा न हो कि हमारे सबके देखते देखते ये उनको मार डालें। ये देखो भीमसेनने दुर्य्योधनको व्याकुल कर दिया। तुम ऐसा उपाय करो कि ये भीमसेनके हाथसे बचें, यदि तुम्हारी कृपासे आज दुर्य्योधन बच जावेंगे तो तुम्हारी बहुत कीर्त्ति होगी। इसलिये तुम दौड़कर दुर्य्यो-

धनको आपत्तिसे बचाओ। नकुल, सहदेव और युधिष्ठिरको मार कर क्या करोगे?

हे पृथ्वीनाथ। शल्यके ऐसे वचन सुन और दुर्य्योधनको भीमसेनके बाणोंसे व्याकुल देख नकुल, सहदेव और युधिष्ठिरको छोड़ कर्ण दुर्य्योधनकी रक्षाके लिये दौड़े, उस समय मद्र-राज शल्यने घोड़ोंको बहुत तेज हांका, जान पड़ता था, कि रथ आकाशको उड़ा जाता है। हे शत्रुनाशन। कर्णके जानेके पश्चात् नकुल, सहदेव और युधिष्ठिर चले गए, नकुल और सहदेवके सहित राजा लज्जामें भरकर और घावोंसे व्याकुल होकर डेरोंको चले गये। वहां जाकर रथसे उतरे और शरीरोंमें लगे बाणोंको निकाल कर हृदयमें दुखित होकर पलङ्ग पर लेट रहे, और नकुल तथा सहदेवसे कहा कि तुम दोनो जाकर भीमसेनको रक्षा करो। क्यो कि, भीमसेन मेघके समान गर्ज्जते हुए युद्ध कर रहे है।

महाराजको आज्ञा पाते हो महारथ नकुल रथपर चढ़कर चले, इसी प्रकार शत्रुनाशन सहदेव भी वायुके समान शीघ्र चलानेवाले घोड़ोके रथपर चढ़कर भीमसेनको रक्षाके लिये चले गये वहा जाकर उन्होंने अपनी सेनाका व्यूह बनाया और युद्ध करनेको खड़े होगये।

६२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! अश्वत्थामा भी रथ और सेनाके सहित अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको दौड़े, जैसे समुद्रके वेगको पर्व्वत रोकते हैं। तैसे ही कृष्ण सहित अर्ज्जुनने अश्वत्थामाको रोका। हे महाराज! तब महाप्रतापी अश्व-त्थामाने क्रोध करके कृष्ण और अर्ज्जुनको ओर अनेक बाण चलाये, कृष्ण और अर्ज्जुनको बाणोंमें छिपा हुआ देख तुम्हारी सेनाके महा-रथ आश्चर्य्य करके देखने लगे। तब अर्ज्जुन हंसकर एक तेज बाण चलाया, परन्तु अश्व-त्थामाने उसे काट दिया, अर्ज्जुन अश्वत्थामाके मारनेको जो बाण चलाते थे, उसीको महा धनुषधारी अश्वत्थामा काट देता था। अ इस प्रकार यह भयङ्कर अस्त्र युद्ध होने लगा तब हमने अश्वत्थामाको मुह फैलाये कालके समान देखा उन्होंने अपने तेज चलनेवाले बाणोंसे दिशा और आकाशको पूरित करके कृष्णके दहने हाथमें तीन बाण मारे, तब अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे महात्मा अश्वत्थामाके चारों घोड़ोंको मारकर उनकी सेनाके अंदर वीरोंको मारडाला। अर्ज्जुनने सब वीरोंको डरानेवाली परलोक गामिनी रुधिरको नदी बहा दी। अर्ज्जुनके बाणोंसे अनेक रथ न गये और उनमें वैठे वीर मर गये। जब अर्ज्जुन और अश्वत्थामाका यह घोर युद्ध हुआ तब सब वीर सवारी छोड़कर लड़ने लगे। अंदर रथोके वीर, सारथी और घोड़े मर गये। कहीं किसी वीरका घोड़ा मर गया। कही घोड़ेपर चढ़ा वीर मर गया, कहीं हाथी कहीं महावत और कहीं हाथोके चढ़नेवाले वीर मर गये। हे राजन्! अर्ज्जुनने युद्धमे सहस्रो मनुष्योंको मारडाला। अनेक रथोंमे वैठे हुए वीर मर गये। अनेक घोड़े लगाम कटनेसे इधर उधर भाग नेलगे। अर्ज्जुनके उस पराक्रमको देख कर अश्वत्थामाको महाक्रोध हुआ और सुवर्ण भूषित धनुषको घुमाते हुए अर्ज्जुनकी ओर दौड़े और अर्ज्जुनके ऊपर बाण चलाने लगे। क्रोध करके एक बाण अर्ज्जुनके हृदयमें मारा, उस बाणके लगनेसे अर्ज्जुनको बहुत पीड़ा हुई अनन्तर उन्हाने क्रोध करके अश्व-त्थामाको ओर सहस्रोबाण चलाये और एक बाणसे उनका धनुष काट दिया, वह धनुष अर्ज्जुनके बाणसे कटकर वज्रसे कटे पर्व्वतके समान पृथ्वीमें गिर गया। हे महाराज! तब

अश्वत्थामाने क्रोध करके अर्ज्जुनकोओर इन्द्रास्त्र चलाया, तब महातेजस्वी अर्ज्जुनने अश्वत्थामाके इन्द्रजालको देख महेन्द्र बाण चलाया। उस बाणको काटकर अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे अश्वत्थामाके रथको छा दिया। अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित होकर अश्वत्थामाने उनके सब बाणोंको काट दिया और प्रकाशित होकर कृष्णके शरीरमें अनेक बाण मारकर अर्ज्जुनके शरीरमे तीनसौ बाण मारे, तब अर्ज्जुनने तुम्हारे पुत्रोंके देखते देखते गुरुपुत्र अश्वत्थामाके मर्म्मस्थानोंमें सौ बाण मारे, फिर उनके घोड़े, सारथी और धनुषको काट डाला, अश्वत्थामाको अपने बाणोंसे व्याकुलकर शत्रुनाशन अर्ज्जुनने सारथीको एक बाणसे मारकर गिरा दिया। तब अश्वत्थामा आप ही घोड़े हाकने लगे और अपने बाणोंसे कृष्ण, अर्ज्जुनको छा दिया। अश्वत्थामाके इस कर्म्मको देखकर हम सब आश्चर्य करने लगे। अर्ज्जुनसे युद्ध करना और घोड़ोंको हाकना इन दोनो कर्म्मोंको करते देख सब योद्धा अश्वत्थामाकी प्रशंसा करने लगे। तब अर्ज्जुनने एक बाणसे घोड़ोंकी रास काट दी और एक एक बाण चारों घोड़ोंके शरीरमें मारा तब वे घोड़े अश्वत्थामाको लेकर भागे, उस समय तुम्हारी सेनामें महा हाहाकार होने लगा।

पाण्डवोंकी सेना अपनो विजय जानकर तुम्हारी सेनाके ऊपर चारों ओरसे बाण चलाती हुई पीछे दौड़ी, पाण्डवोंने भी तुम्हारी सेनाको बार बार नाश किया।

उस समय विचित्र युद्ध करनेवाले तुम्हारे पुत्र, शकुनि और कर्ण देखते ही रह गये। पाण्डवोंकी सेनासे पीड़ित होकर तुम्हारी सेना रोकनेपर भी किसी प्रकार खड़ी न हुई, यद्यपि कर्ण सेनाको बहुत रोकते रहे, परन्तु वह सेना व्याकुल होकर खड़ी न रह सकी। तुम्हारी सेनाको भागते देख पाण्डवोंकी विजयी सेना गर्ज्जने लगी। तब दुर्य्योधनने कर्णसे विनय सहित कहा। हे कर्ण! यह देखो हमारी सेना पाञ्चालोंके भयसे भागी जाती है। हे शत्रुनाशन! तुम्हारे आगे भी हमारी सेनाको यह दुर्द्दशा हो रही है यह महाशोककी बात है, अब जो कुछ करने योग्य हो सो कहो। हे बीर! हे पुरुषोत्तम! पाण्डवोंके भयसे भागते हुए हमारे सहस्रों योद्धा केवल तुम्हेंही पुकार रहे हैं।

दुर्य्योधनके बचन सुन कर्ण हंसकर शल्यसे बोले, हे पृथ्वीनाथ! आप हमारे शस्त्र और हाथोंके बलको देखिये, हम अभी पाण्डवोंके सहित सब पाञ्चालोंको मारते हैं। हे पुरुषसिंह! अब निःसन्देह आप हमारे घोड़ोंको हाकिये, ऐसे कहकर प्रतापवान कर्णने प्राचीन विजय धनुषपर रोदा चढ़ाया और सत्य प्रतिज्ञा करके सब योद्धाओंको लौटा लिया, अनन्तर अपने धनुषपर परशुरामका दिया हुआ बाण चढ़ाया। हे राजन्! महाबलवान कर्णके उस अस्त्रसे सैकड़ों सहस्रों लाखों और करोड़ों बाण निकलकर युद्धमे घूमने लगे। उन गिद्धोंके सुखयुक्त जलते हुए बाणोंसे पाण्डवोंकी सेना छा गयी, और कुछ न दीखने लगा। हे पृथ्वीनाथ! बलवान कर्णके बाणोंसे व्याकुल होकर पाञ्चाल सेना हाहाकार करने लगी। हे पुरुषसिंह! अनेक हाथी, घोड़े, रथ और मनुष्य कट कटकर गिर गये, उनके गिरनसे पृथ्वी कांपने लगी और सब सेना व्याकुल होगयी एकले शत्रुनाशन कर्ण धुवा-रहित अग्निके समान पाण्डवोंकी सेनाको जलाने लगे। जैसे वनमें आग लगनेसे हाथी भागते हैं। ऐसे ही कर्णके बाणोसे व्याकुल होकर चेदि और पाञ्चालसेना भागी, उन सबके बीचमें पुरुषसिंह कर्ण गर्ज्जने लगे और वे सब हाहाकार करके इधर उधर भागने लगे। जैसे प्रलयकालमें सब जगत् हाहाकार करता

है, ऐसे ही उस समय पाण्डवोंकी सेना डरकर हाहाकार करने लगी। इस प्रकार कर्णके हाथसे पाण्डवोंकी सेनाका नाश होते देख सब पशु पची भी डरने लगे।

कर्णके बाणोंसे व्याकुल होकर सृञ्जय और पाञ्चाल बार बार कृष्ण और अर्ज्जुनको पुकारने लगे। जैसे यमराज अपनी पुरीमें दुःखियोंका शब्द सुनते हैं, तैसे ही अर्ज्जुनने कर्णके बाणोंसे व्याकुल हुई अपनी सेनाका शब्द सुना और यह जाना कि कर्णने परशुरामका दिया हुआ, घोर बाण छोड़ा है, तब कृष्णसे बोले, हे महाबाहो। ये देखो कर्णने यह घोर परशुरामका बाण छोड़ा है। इसको जगत्में कोई नहीं सह सक्ता। हे कृष्ण। ये देखो कर्ण यमराजके समान क्रोध करके हमारी सेनाका नाश कर रहे हैं। ये देखो कर्ण अपने घोड़ोंको शीघ्र हाकते हुए हमारी ओरको देख रहे हैं हमें कोई वीर ऐसा नहीं दीखता, जो कर्णको युद्धमें मार भगावे। हे हृषीकेश। जीता हुआ मनुष्य युद्धमें कभी हारता है, कभी जीतता है।

बुद्धिमान और शत्रुनाशन अर्ज्जुनके ऐसे बचन सुन श्रीकृष्ण समयानुसार बोले, हे कुन्तीपुत्र! कर्णने महाराजको बाणोंसे बहुत व्याकुल कर दिया है। तुम पहले उनको देखकर और धीरज देकर कर्णको मारिये, ऐसा कहकर और यह जानकर कि कर्ण इतने समयमें और भी थक जायगे। श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन युधिष्ठिरको देखने चले, मार्गमें अर्ज्जुन सेनाको देखते चले गये। परन्तु युधिष्ठिरको कहीं न पाया, इन्द्रके समान पराक्रमी महाधनुषधारी गुरुपुत्र अश्वत्थामाको जीतकर युधिष्ठिरके दर्शनको चले गये।

६४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! महाधनुषधारी शत्रुओंके नाश करनेवाले अर्ज्जुन अश्वत्थामाको जीतकर और कठिनतासे करने योग्य घोर कर्म करके अपनी सेनाको देखने लगे। अनन्तर सेनाके मुखमें खड़े युद्ध करते वीरोंका उत्साह बढ़ाकर पहले मरे वीरोंकी प्रशंसा करने लगे। और जीते हुए रथोंमें बैठे हुए वीरोंकी अनेक प्रशंसाकी, महाराज युधिष्ठिरको सेनामें न देख कर शीघ्रता सहित भीमसेनके पास जा कर पूछा, महाराज कहां? भी कैसे हैं?

भीमसेन बोले, कर्णके बाणोंसे व्याकुल धर्म्मराज युधिष्ठिर यहांसे चले गये हैं। परन्तु जीते हैं, या नहीं सो हम नहीं कह सक्ते।

अर्ज्जुन बोले, हे कुरुश्रेष्ठ। आप शीघ्र युद्ध छोड़कर महाराजके पास चलिये, वे कर्णके बाणोंसे अत्यन्त व्याकुल होकर डेरेको चले गये हैं। जो महापराक्रमी द्रोणाचार्य्यके तेज बाणोंसे भी अपनी विजयके लिये बिना द्रोणके नाश हुए युद्धसे नहीं हटे थे, वही महात्मा पाण्डव श्रेष्ठ युधिष्ठिर आज कर्णके बाणोंसे जीवनके सन्देहमें पड़ गये हैं। इसलिये आप उनके पास जाइये और हम आपके स्थान पर खड़े होकर शत्रुओंको रोकेंगे।

भीमसेन बोले, हे अर्ज्जुन। तुम ही कुरुकुलसिंह महाराजके दर्शनको जाओ, हम नहीं जावेंगे। क्यो कि हमारे जानेसे सब कोई कहेंगे, कि भीमसेन डर कर भाग गये, तब अर्ज्जुनने भीमसेनसे कहा कि यह संशप्तक सेना हमारे आगे खड़ी है, इसका बिना मारे मैं युद्धसे नहीं जा सक्ता।

ऐसा सुन अपने पराक्रमका अभिमान कर भीमसेन बोले, हे अर्ज्जुन! तुम जाओ हम सब संशप्तकोंको मार डालेंगे, अपने भाई भीमसेनको शत्रुओंके बीचमें घोर बचन सुनकर कि हम इन सब संशप्तकोंको मार डालेंगे। महात्मा महापराक्रमी अर्ज्जुनने जगत् कर्त्ता श्रीकृष्णसे ऐसे बचन कहे। हे यदुकुलश्रेष्ठ! अब आप महाराजके दर्शनको चलिये। हे

केशव । हम महाराज युधिष्ठिरके दर्शन करना चाहते हैं। इसलिये आप इस समुद्रके समान सेनाको छोड़कर महाराजके पास चलिये ।

सञ्जय बोले, हे राजन् ! तब सब यदुकुल-श्रेष्ठ श्रीकृष्णने घोडोंको हांका और चलते समय भीमसेनसे कहा कि, यह कर्म्म आपके लिये कुछ भारी नहीं है, अब आप शत्रुओंका नाश कीजिये हम जाते हैं।

तब श्रीकृष्णने महाराजको देखनेके लिये घोड़ोंको बहुत शीघ्र हांका और उस सब सेना और युद्धका भार भीमसेनके सिर पर छोड़ कर चले।

महाराजके पास जाकर दोनों वीर रथसे उतरे और पलङ्गपर एकले लेटे हुए धर्म्मराजके चरणोंको प्रणामकी ।

इन दोनों वीरोंको कुशलसे आया हुआ देख युधिष्ठिर ऐसे प्रसन्न हुए जैसे अश्वनी-कुमारको देख इन्द्र। जैसे जम्भासुरके मरनेके पश्चात् वृहस्पतिने विष्णु और इन्द्रका सत्कार किया था, ऐसे ही युधिष्ठिरने कृष्ण और अर्ज्जुनका सत्कार किया। शत्रुनाशन युधिष्ठिरने जाना कि कर्ण मर गये । तब प्रसन्न होकर बोले ।

सञ्जय बोले, हे राजन् । महावीर कृष्ण और अर्ज्जुनको रुधिरमें भीगे और घावोंसे व्याकुल देख महाराज युधिष्ठिर ऐसा वचन बोले, उन्होंने वचन कहनेके पहले ही कृष्ण और अर्ज्जुनको सग आये देख जान लिया कि कर्णको अर्ज्जुनने मार डाला, तब भरतकुल-श्रेष्ठ उन दोनोंकी प्रशंसा करके बहुत शान्ति पूर्व्वक ऐसे वचन बोले ।

६५ अध्याय समाप्त ।

युधिष्ठिर बोले, हे कृष्ण ! हे अर्ज्जुन ! तुम्हें धन्य है, तुम्हारे आनेसे हम बहुत प्रसन्न हुए, तुम दोनोंने सब शस्त्रोंके जाननेवाले, महापरा-क्रमी सांपके समान क्रोधी कर्णको मारा । यह कर्ण सब धृतराष्ट्रके पुत्रोंमें श्रेष्ठ था, यह सदा दुर्य्योधनका कल्याण करता था, और वृषसेन तथा धनुषधारी सुषेण उसकी रक्षा करते थे, यह कर्ण परशुरामके शिष्य सब शस्त्रोंके जानने वाले सब लोकोंमें विख्यात और सब योद्धाओंमें श्रेष्ठ था, यही सदा धृतराष्ट्रके पुत्रोंकी रक्षा करते थे, उनकी सेनाके आगे चलते थे, और क्षत्रियोंका नाश करते थे, इनको देवतोंके सहित इन्द्र भी युद्धमें नहीं जीत सक्ते थे, यही सदा दुर्य्योधनके कल्यानके लिये हमें दुःख दिया करते थे, ये बल और तेजमें वायु और अग्निके समान थे, गम्भीरतामें समुद्रके समान थे, इनको देख सब मित्र प्रसन्न होते थे जैसे राक्षसोंको जीत कर दो देवता इन्द्रके पास जाते हैं। ऐसे ही हमारे मित्रोंके मारनेवाले, कर्णको जीत कर तुम प्रारब्धसे हमारे पास आये हो आज मैंने भी उससे घोर युद्ध किया था, परन्तु जैसे प्रलयकालमें यमराज प्रजाका नाश करते हैं, ऐसे ही उसने हमारी सेनाका नास किया । उन्होंने सात्यकिके आगे ही मेरी ध्वजा काट दी, सारथी और घोड़ोंको मार डाला। द्रौप-दीके पाचो पुत्र। महावीर, धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव और सब पाञ्चाल योद्धा देखते ही रह गये। हे महाबाहो ! अनेक यत्न करने पर भी इन सबको जीतकर कर्णने मुझे जीत लिया। फिर हमारे पास आकर उस महा योद्धाने अनेक दुर्व्वचन कहे। हे अर्ज्जुन। मैं जो जीता बचा हूं सो केवल भीमसेन हो के बलका प्रभाव है । अधिक क्या कहैं, हम किसी प्रका-रसे उसके सङ्ग युद्ध न कर सके। हे अर्ज्जुन। इसीके भयसे वनमें रह कर तेरह वर्ष तक रात दिन सुखसे नहीं सोये। हे अर्ज्जुन ! जैसे चमड़ेमें बंधकर पक्षी व्याकुल होता है। ऐसे ही कर्णके डरसे हम सदा व्याकुल रहते थे, मैं बहुत दिनसे यही सोचा करता था,

किस प्रकारसे युद्धमें कर्णको मारूंगा ? हे कुन्ती पुत्र! मैं सदा सोता जागता कर्णहीको देखता था, मुझे यह जान पड़ता था, कि सब जगत् कर्णरूप होगया। हे अर्जुन! मैं कर्णके भयसे जहां जहां जाता था, वहीं उसे खड़ा देखता था, उस ही वीरने मुझे रथ, घोडे और सारथीके समेत जीत लिया और मरनेकी अवस्थाको पहुंचा दिया, उस समय मैंने विचारा कि, जब कर्णने मेरे शरीरमें इतने बाण मारे तो अब जी कर और राज्य लेकर क्या करूंगा ? जो दशा महारथ भीष्म और द्रोणाचार्य्यसे नहीं हो सकाथा, सो आज उसने मेरी दशा करदी, हम तुमसे कुशल पूछते हैं। जिसके पश्चात् हमसे कहो तुमने कर्णको कैसे मारा? हे पुरुषसिंह! जैसे शब्दवाला सिंह हरिणको मारता है। तैसे तुमने आज सब मित्रोंके बीचमें कर्णको मारा, जो कर्ण सब ओर युद्ध करनेके लिये तुम्हे देखता था, उसीको आज तुमने अपने तेज बाणोंसे मार डाला। आज तुमने दुरात्मा सूतपुत्रको मारकर पृथ्वीमें सुला दिया, इससे हम बहुत प्रसन्न हुए। जो सदा ही धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे जीविका पाकर तुमसे युद्ध करनेकी इच्छा किया करता था। आज उसी अभिमानी कर्णको मार डाला। हे प्यारे अर्जुन! जो सदा हाथी, घोड़े और सोनेके रथोंके सहित तुमसे युद्ध करनेकी इच्छा करता था, आज उस पापी कर्णको तुमने कैसे मारा? जो महा अभिमानमें भरकर सदा कौरवोंकी सभामें गरजा करता था और दुर्य्योधनका प्यारा मित्र था उस पापीको आज तुमने कैसे मारा? आज वह पापी तुम्हारी धनुषसे छूटे रुधिरमें भीगे पक्षियोंके समान शीघ्र चलनेवाले बाणोंसे कटकर कैसे पृथ्वीमें गिर गया? आज दुर्य्योधनके हाथ कट गये। जो मूर्ख अभिमानी दुर्य्योधनको प्रसन्न करनेके लिये सदा कहा करता था कि मैं अर्जुनको मारूंगा, आज उसने अपनी प्रतिज्ञाको सत्य क्यों नहीं किया जो मूर्ख सदा कहा करता था कि जबतक अर्जुन जीता है, तबतक मैं पैर नहीं धोऊंगा उसको तुमने कैसे मारा? जिस मूर्ख कर्णने सब वीर कौरवोंकी सभामें द्रौपदीसे कहा था कि पाण्डव खण्डित मूर्ख और दुर्ब्बल हैं। इनको तू छोड़। उसको आज तुमने कैसे मारा जिसने तुम्हारा पराक्रम जानकर भी दुर्य्योधनसे यह प्रतिज्ञाकी थी, कि हम तुम्हारे लिये कृष्ण और अर्जुनको बिना मारे नहीं छोड़ेंगे, आज वही पापी तुम्हारे बाणोंसे कटकर पृथ्वीमें सोता है। कहो कुरु और सृञ्जयोंके युद्धमें जो हमारी दशा हुई सो तुमने कैसे जानी? और तुमने उस दुरात्माको कैसे मारा? हे सव्यसाची! तुमने अपने धनुषसे छूटे, बिजलीके समान प्रकाशित बाणोंसे उस पापीका सूर्य्यके समान प्रकाशित कुण्डल सहित शिर काटकर कैसे पृथ्वीमें गिराया? हे वीर! जिस समय कर्णने मुझे बाणोंसे व्याकुल किया था, उसी समय मैंने उसका नाश होनेके लिये तुम्हारा ध्यान किया था, कहो तुमने मेरी इस इच्छाको कैसे जान लिया? और कर्णको मार डाला, जिसके आश्रयसे दुर्य्योधन अभिमानसे भरकर हमको देखता था, आज तुमने अपने बलसे उस कर्णको मारकर दुर्य्योधनका आश्रय तोड़ दिया। इस मूर्ख सूतपुत्रने कौरवोंकी सभाके बीचमें हमें नपुंसक कहा था, उस क्रोधीको आज युद्धमें तुमने कैसे मारा? जिस मूर्ख सूतपुत्रने जुएके समय हमें शकुनिसे हारा जान द्रौपदीसे कहा था, कि तू किसी दूसरेको अपना पति बनाले, उसीको तुमने आज मार डाला। हे महात्मन्! जो मूर्ख सब शास्त्र जाननेवालोंमें श्रेष्ठ हमारे पितामह भीष्मकी निन्दा किया करता था, और जिसे वीर अर्धरथ कहते थे, उस अधिरथके पुत्रको तुमने कैसे मारा? हमें यह आशा है, कि बहुत दिनसे

हमारे हृदयमें जलती आगको "हमने कर्णको मारा" ऐसा कह कर करकूता आगे वृत्तासुरके मरनेके पश्चात् भगवान् विष्णुने इन्द्रका ध्यान किया था, वैसे ही हम कर्णके मरनेके पश्चात् तुम्हारा ध्यान कर रहे थे, अब तुम हमको यह दुर्लभ वाणी सुनाओ कि तुमने कर्णको कैसे मारा ?

६६ अध्याय समाप्त ।

सञ्जय बोले, हे राजन् ! क्रोधमें भरे महारथ धर्मात्मा महापराक्रमी महाराज युधिष्ठिरके वचन सुन महाबलवान् अर्ज्जुन बोले, हे महाराज। मैं इस समय संशप्तक सेनासे युद्ध कर रहा था, वहां कौरवोंकी सेनाके अग्रगामी महारथ अश्वत्थामा विषैले सांपके समान तेज और पक्षियोंके समान शीघ्र चलनेवाले वाण चलाते हुए आये, हे महाराज। मेघके समान शब्दवाले, मेरे रथको सेनाके आगे खड़ा देख कौरवोंकी सेना दौड़ी। तब मैं पांचसौ हाथियोंको मार कर अश्वत्थामाके पास पहुंचा, हे महाराज! वह मुझे देखकर मेरी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे हाथी सिंह पर दौड़े। हे महाराज। उन्होने मरते हुए कौरवोंकी रक्षाकी तब सब कुरु सेनामें श्रेष्ठ आचार्य्यपुत्र अनेक अग्नि और विषके समान वाण वर्षाते हुए घोर युद्ध करने लगे। और मुझे तथा कृष्णको व्याकुल कर दिया। जैसे वायु मेघोंको काट देता है, ऐसे ही मैंने आठ बैल लगे हुए आठ छकड़े भरे वाण उसके काट दिये। अनन्तर अश्वत्थामाने शिक्षावल और विद्याके आश्रयसे कान तक खींच कर सहस्रों वाण इस प्रकार चलाये जैसे मेघ जल वर्षाता है। हमने उस समय अश्वत्थामाको वाण चलाते, निकालते, चढ़ाते नहीं देखा और यह भी नहीं जान सके कि उस दहने हाथसे वाण चलाते हैं या बाऐंसे। उस समय केवल उनका घूमता हुआ धनुष ही दीखता था, अनन्तर उन्होंने मेरे और कृष्णके शरीरमें अत्यन्त तेज पांच पांच वाण मारे। मैंनेभी एक पलकमें तीस वाण वज्रके समान अश्वत्थामाके शरीरमें मारे, उन वाणोंके लगनेसे अश्वत्थामाका शरीर सेहियेके तुल्य हो गया। तब उसके शरीरसे रुधिर बहने लगा, अनन्तर मेरे वाणोंसे अपनी सेनाको व्याकुल देख पांचसौ मुख्य वीरोंके सहित हमसे युद्ध करनेको कर्ण आये, परन्तु मैं उस सब सेनाको मारकर और कर्णको छोड़ आपके दर्शन करनेको चला आया हूं। जैसे सिंहको देख गौ भागती है, तैसे ही हमारी सेना कर्णको देखकर भागती है। जैसे मृत्युके मुंहमें पड़कर कोई नहीं बचता ऐसे ही कर्णके आगे जाकर सात सौ प्रभद्रक वंशी चत्री मारे गये। हे राजन् ! इतना युद्ध करने पर भी उसने जबतक मुझे नहीं देखा तबतक घबड़ाया नहीं, तब उसने अश्वत्थामासे कहा कि हमने महाराजको वाणोंसे व्याकुलकर दिया है। हे महाराज। हे अचिन्त्य कर्म्म करनेवाले। मैंने यह जाना कि दुष्ट कर्णने आपको बहुत ही दुःख दिया है। क्यों कि मैंने उसकी शस्त्रविद्या पहले युद्धमें देखी थी, और महापराक्रमी सात्यकि और धृष्टद्युम्न मेरे पहियोंकी रक्षा कर रहे थे, इसी प्रकार वीर युधामन्यु और उत्तमौजा मेरे रथको पीछेसे रक्षा करते थे, इनके सिवाय और कोई ऐसा वीर न था जो कर्णसे युद्ध कर सक्ता। उसी समय महाप्रतापी शत्रुओंकी सेनाके मारनेवाले, कर्ण आपसे युद्ध कर रहे थे, इसी लिये मैंने कर्णको नहीं मारा अब मैं जैसे इन्द्र राक्षसोंसे लड़ते हैं। ऐसे ही सूतपुत्रसे युद्ध करूंगा। हे महाराज ये देखिये जैसे सिंहके आगेसे हरिण भागते हैं। तैसे हमारी सेना भागी जाती है। अब आप चलकर देखिये कि आपकी विजयके लिये अर्ज्जुनसे

कैसा युद्ध करते हैं। हे महाराज! हमारे साथ छः सहस्र राजपुत्र मरनेको उपस्थित हैं। यदि हम आज बान्धवों सहित कर्णको बिना मारे युद्धसे लौटें तो बात कहकर न करनेवाले, मनुष्योंको जो पातक होता है, सो हमें होय, हे राजसिंह! आज हम कर्णके सहित सब शत्रुओंको मारेंगे, ये देखिये धृतराष्ट्रके पुत्र भीमसेनसे युद्ध कर रहे हैं। अब आप हमें युद्धमें जानेकी आज्ञा दीजिये।

६७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! कर्ण जीता है, यह सुनकर महातेजस्वी कर्णके बाणोंसे व्याकुल युधिष्ठिर क्रोध करके अर्जुनसे ऐसे बोले, हे प्यारे अर्जुन! तुम्हारी सेना भागी जाती है। जब तुम कर्णको नहीं मार सके, तब भीमसेनको एकला छोड़ कर्णके डरसे हमारे पास भाग आये हो। तुम भीमसेनको अकेला छोड़ युद्धसे भाग आये, इससे तुमने कुन्तीके गर्भमें वृथा ही जन्म लिया हमें निश्चय है, कि जब तुम कर्णको नहीं मार सके तभी तुम भागे, तुमने जो द्वैतबनमें प्रतिज्ञाकी थी कि हम एकले ही कर्णको मारेंगे, सो आज उस बचनको मिथ्या-कर भीमसेनको एकला छोड़ कर्णके डरसे क्यों भाग आये? हे अर्जुन! यदि तुम हमसे बनमें कहते कि, हे महाराज! हम कर्णसे युद्ध नहीं कर सकेंगे, तो हम समयानुसार कुछ और ही प्रबन्ध कर लेते। हे बीर! हमको निश्चय था कि तुमने कर्णको मारा परन्तु वैसा नहीं हुआ। हे राजपुत्र! हमने अपने कल्याणके लिये सदा ही तुमको शिक्षा दी थी। परन्तु तुमने आज हमारे उस परिश्रमको नष्ट कर दिया जैसे माली वृक्षको पालता है और उसपर फल नहीं लगता जैसे मांससे लपेटकर कोई किसीको कांटा खानेको दे और जैसे कोई उत्तम भोजनमें लपेटकर विष दे, तैसे ही तुमने हमें दर्शन दिये, हम राज्यकी इच्छा कर रहे थे और तुमने विनाशस्वरूप दिखलाया। जैसे किसान जल बर्षनेकी आशासे बीज बोकर बैठा रहता है, तैसे ही हम सब भी तेरह वर्ष तुम्हारी आशापर वनमें रहे परन्तु आज तुमने हमको नरकमें डुबा दिया। रे मूर्ख! जब तू उत्पन्न हुआ था, तब कुन्तीने आकाशबाणी सुनी थी कि यह तेरा पुत्र इन्द्रके समान पराक्रमी है। सब शत्रुओंको अपने बाणोंसे जीतेगा। यही महापराक्रमी खाण्डव बनमें सब जन्तुओंको जलावेगा। यही मद्र, कलिङ्ग, कैकय और कौरवोंका नाश करेगा। इसके समान कोई धनुषधारी नहीं होगा इसको कोई जगतमें नहीं जीत सकेगा। यह सब विद्याओंको पढेगा, और अपनी इच्छासे सब जगत्को वशमें कर लेगा। सुन्दरतामें काम और चन्द्रमा, बलमें वायु, स्थिरतामें मेरु, क्षमामें पृथ्वी, तेजमें सूर्य्य, धनमें कुवेर, धीरजमें इन्द्र और बलमें विष्णुके तुल्य होगा। हे कुन्ती! यह तुम्हारा पुत्र ऐसा होगा जैसे आदितिके वामन, ये अपनी विजयसे सब शत्रुओंका नाश करेंगे और इन्हींसे तुम्हारा वंश चलेगा, ये बाणी कुन्तीने ऋषियोंके आगे बनमें सुनी थी, परन्तु सत्य न हुई। इससे हमें निश्चय होता है कि देवता भी झूंठ बोलते हैं और भी धनुषधारियोंसे तुम्हारी प्रसंशा सुनकर हमने सदा तुम्हारा सत्कार किया और कभी दुर्य्योधनका भय नहीं माना परन्तु हम नहीं जानते थे, कि तुम कर्णसे डरकर भाग आओगे। पहले भी दुर्य्योधनने कहा था कि महाबलवान कर्णके आगे अर्जुन नहीं ठहर सकेंगे, सो मैंने मूर्खतासे उस बचनको नहीं माना था, इसीसे मैं इस समय इस घोर आपत्तिमें पड़ा हूं, यदि तुम हमसे पहले ही कह देते कि हम कर्णसे युद्ध नहीं करेंगे, तो हम आज इस दुःखको न

ागते? यदि मैं पहले यह जानता तो अपने मित्र
ंकय और सृञ्जयोंको युद्धके लिये क्यों बुलाता?
ाव कर्णसे युद्ध होने लगा। इस समयमें क्या
ारसक्ता हूं? हे कृष्ण! मुझे धिक्कार है कि
र्योधनकी ओरसे जो बीर आये उनको
ीतकर सूतपुत्रसे हार गया, जिस समय कर्णने
ुझे जीता था। तब सब कौरव और हमारे मित्र
ौर अनेक योद्धा देखते थे। यदि आज महा-
थोंके जीतनेवाला महा पराक्रमी अभिमन्यु
ीता होता तो मेरा यह निरादर न होता,
ादि आज महाबलवान घटोत्कच जीता होता
ो मैं युद्ध छोड़कर काहेको भागता? मेरे पूर्व
न्मके पापोंसे ये दोनों पुत्र मारे गये, तुमको
तनकेके समान समझकर दुरात्मा कर्णने मेरी
ऐसी दुर्दशाकी जैसे कोई शत्रु किसीकी नहीं
करता, पुराने मुनि कहते हैं कि, जो किसीको
प्रेम करके आपत्तिसे निकाल दे वही उसका
बन्धु है, महात्मा लोग सदासे इसी धर्मको करते
हैं। तुम इस उत्तम शस्त्रवाले विश्वकर्म्माके
बनाये सुन्दर ध्वजायुक्त रथपर बैठकर सोनेकी
मूठवाले खड्ग और ताड़के बराबर गाण्डीव
धनुष लेकर तथा कृष्णको सारथी बना कर भी
कर्णसे डरकर युद्ध छोड़ भाग आये, अब यह
धनुष कृष्णको दो और तुम घोड़े हांको तब
ये जिस प्रकार इन्द्रने वज्र हाथमें लेकर वृत्रा-
सुरको मारा था। तैसे ही हमारी सेनामें
घूमते हुए महा पराक्रमी राधापुत्र कर्णको
मारेंगे, हमें निश्चय होगया कि तुम कर्णके
मारनेमें समर्थ नहीं हो। अथवा जो तुमसे
अधिक शस्त्रविद्या जानता हो उस ही राजाको
यह अपना गाण्डीव धनुष दे दो, अर्थात् तुम
कुन्तीके गर्भसे पांचवे महीने नष्ट हो जाते
अथवा उनके गर्भसे जन्म न लेते तो आज
हमको पुत्र, स्त्री और राज्यसे भ्रष्ट सब लोक
क्यों देखता? और हम इस घोर पापमें क्यों
पड़ते। अरे दुरात्मा राजपुत्र! तू युद्धको
छोड़ कर भाग आया। यह अच्छा नहीं
किया। इसलिये तेरे गाण्डीव धनुष, बाहुबल
और असंख्य बाणोंको धिक्कार है तेरी, बानर-
ध्वजाको धिक्कार है और अग्निके दिये हुए
रथको भी धिक्कार है।

६८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! कुन्तीपुत्र अर्ज्जुनने युधिष्ठिरके ऐसे बचन सुन क्रोध करके उनके मारनेके लिये खड्ग उठाया उनकी चेष्टा देखकर और मनका भाव समझ कर श्रीकृष्ण बोले, हे अर्ज्जुन! यह क्या है? तुमने यहां खड्ग क्यों उठाया? सब धृतराष्ट्रके पुत्रोंको बुद्धिमान भीमसेन मार ही रहे हैं तब तुम यहां किससे लड़नेको खड्ग उठाते हो? हमें तुम्हारा शत्रु यहां कोई नहीं दीखता तुम युद्धसे यह कहकर आये थे कि, हम महारा-जके दर्शन करने जाते हैं। सो तुमने कुशल सहित महाराजके दर्शन किये, तुमने शार्दूलके समान पराक्रमी राजोंमें शार्दूल युधिष्ठिरके दर्शन किये सो इस प्रसन्नताके समयमें यह क्या भूल करते हो? तुम्हारे चित्तमें क्या भ्रम आगया है? यहां कोई तुमसे लड़नेवाला नहीं, तब किसके ऊपर खड्ग चलाना चाहते हो? हे कुन्तीपुत्र! हम तुमसे पूछते हैं। कि तुम्हारे मनमें क्या है? तुमने इतनी शीघ्रता सहित खड्ग क्यों खींच लिया।

कृष्णके ऐसे वचन सुन युधिष्ठिरकी ओर देखते हुए महा पराक्रमी अर्ज्जुनने क्रोध करके श्रीकृष्णसे कहा कि मेरी यह प्रतिज्ञा है। कि जो मुझसे कहेगा कि अपना धनुष दूसरेको दे दो, मैं उसका शिर काट लूंगा सो आज महा पराक्रमी महाराजने हमसे ऐसा ही कहा। हे कृष्ण! यह बात आपने भी सुनी है। हम इसे क्षमा नहीं कर सक्ते इसलिये हम

आज धर्म्मात्मा महाराजका शिर काटेंगे, हे यदुनन्दन! आज सब मनुष्योंमें श्रेठ युधिष्ठिरको मारकर हम अपनी प्रतिज्ञाको सत्य करेंगे, इसी लिये, हमने खड्ग उठाया है। हे जनार्द्दन! हम युधिष्ठिरको मारकर सत्य पालन करेंगे, तथा शोक और दुःखोंसे रहित होंगे, अथवा आप बताइये इस समय हमें क्या करना चाहिये? क्यों कि आप सब जगत्के व्यवहारोंको जानते हैं। आप जैसा कहेंगे हम वैसा ही करेंगे।

सञ्जय बोले, हे राजन्! तब श्रीकृष्णने अर्ज्जुनसे कहा कि तुम्हें धिक्कार है। हे अर्ज्जुन! तुम्हें इतने शीघ्र क्रोध आगया इससे हमें जान पड़ता है। कि तुमने वृद्धोंकी सेवा नहीं की। हे अर्ज्जुन! जैसे मूर्ख तुम हो ऐसा जगत्में और कोई नहीं ऐसा बुरा कर्म्म कौन बुद्धिमान कर सक्ता है? हे अर्ज्जुन! जो काम नहीं करने योग्य हैं उसको करनेवाला और करने योग्य कामको न करनेवाला मनुष्य नीच कहाता है। जो बिस्तार और संक्षेपको जाननेवाले महात्मा धर्म्म वर्णन करते हैं तुम उनके सिद्धान्तोंको नहीं जानते, जो मनुष्य करने योग्य कामोंको नहीं जानता वह परवश होकर दुर्द्दशामें पड़ता है। इस समय तुम भी हमें मूर्खके समान दीखते हो।

कोई मनुष्य केवल अपनी बुद्धिसे करने और न करने योग्य कामको नहीं जानता केवल विद्याहीसे जान सकता है सो विद्या तुमको किञ्चित भी नहीं तुम धर्म्म जानकर भी कहते हो कि हम मनुष्यको मारकर अपनी प्रतिज्ञाको सत्य करें। वाह वाह? यह तुम्हारी बुद्धि बहुत अच्छी है।

तुम्हें यह नहीं जान पड़ता कि मनुष्यको मारना सबसे बड़ा पाप है। हमारी सम्मतिमें सबसे बड़ा पाप हिंसा ही है, चाहे मनुष्य झूठ बोल दे, परन्तु किसीको मारे नहीं सो तुम सब धर्म्मोंको जानकर भी साधारण मनुष्योंके समान सब धर्म्मके जाननेवाले बड़े भाई राजा युधिष्ठिरको कैसे मारते हो? मस्तरहित बिनायुद्ध करते युद्धसे भागते और डरे हुए शत्रुको भी नहीं मारना चाहिये। जो हाथ जोड़कर अपनी शरण आवे और जो मदपीये हो उनको मारना उचित नहीं, युधिष्ठिरमें ये सब गुण हैं। परन्तु विशेष कर ये तुम्हारे गुरु हैं।

हे अर्ज्जुन! तुमने यह प्रतिज्ञा बालकपनमें की थी, अब उसका पालना मूर्खता ही है। हे कुन्तीपुत्र! सो तुम धर्म्मको सूक्ष्म गतिको न जानकर अपने गुरुको मारनेको क्यों दौड़े? हे पाण्डव! अब हम तुमसे धर्म्मकी एक गुप्त कथा कहते हैं। इस कथाको केवल भीष्म और युधिष्ठिर ही कह सक्ते हैं। इस कथाको विदुर और यशस्विनी कुन्ती भी जानती है। सो यह गुप्त कथा हम तुमसे कहते हैं।

हे अर्ज्जुन! सत्यवादी महात्मा कहाता है और सत्यसे बढ़कर कोई धर्म्म भी नहीं है। परन्तु सत्यके तत्वको जानना बड़ा कठिन है। कहीं बात कहनेसे सत्य रहती है और कहीं न कहनेसे सत्य रहती है और कहनेसे झूठ होजाती है। कहीं कहनेसे सत्य और न कहनेसे झूठ होजाती है। शास्त्रमें इन पांच जगह झूठ बोलनेसे पाप नहीं होता यह लिखा है, बिवाहमें, स्त्री प्रसङ्गमें, किसीके प्राण जानेके समयमें, सर्व्व धन छिननेमें और ब्राह्मणके हितके लिये झूठ बोलना उचित है। इन स्थानोंपर झूठभी सत्य हो जाता है। मूर्ख मनुष्य जिन कारणोंसे, अपनी वाणीको सत्य ठहराता है। उन्हीं कारणोंसे वही वाणी झूठ होजाती है, बिना कही सब वाणी सत्य हैं। और जो काम कर चुके, उसे कहना चाहिये, इस प्रकार जो सत्य और असत्यका विचार करता

है वही धर्म्मात्मा कहाता है। क्या आश्चर्य है कि कभी दुष्ट मनुष्य भी उत्तम गतिको प्राप्त होजाता है। जैसे बालकको अन्धेके मारनेसे ही उत्तम गति मिल गयी। कहीं मूर्ख धर्म्मके लिये यत्न करने पर भी पापी होजाता है; जैसे नदीके तटपर कौशिक।

अर्ज्जुन बोले, हे भगवन्! आप हमको ज्ञान होनेके लिये बलाक, अन्धे, कौशिक और नदीकी कथा कहिये।

श्रीकृष्ण बोले, हे भारत! पहले समयमें एक बलाक नाम व्याध था। वह अपने कुटुम्बके पालनेको हरिनोंको मारा करता था परन्तु किसीकी हत्या अपने लिये नहीं करता था। अपने बूढ़े माता, पिता और सब कुटम्बको पालता था। सदा सत्य बोलता था किसीकी बढ़तीसे दुखी नहीं होता था, और न कभी अपने धर्म्मको छोड़ता एक दिन वह वनमें बहुत घूमा परन्तु कहीं हरिण न मिला थोड़े समयमें एक जल पीते अन्धे पशुको देखा, बलाकने उसे पहले कभी नहीं देखा था एक बाणसे उसे मार दिया। अन्धे पशुके मरते ही आकाशसे उसके ऊपर फूल बरसने लगे। थोड़े समयमें गाते बजाते अप्सराओंके सहित स्वर्गसे एक बिमान बलाकके लेनेको आया। वह जन्तु सब जगत्का नाश करनको उत्पन्न हुआ था। बहुत तप करनेपर ब्रह्माने वरदान देते समय उसे अन्धा कर दिया था। बलाकने उसे मारकर सब जगत्की रचाका, इसीसे वह स्वर्गको प्राप्त हुआ सो धर्म्मकी गात बहुत काठनतासे जानी जाती है।

प्राचीन समयमें कौशिक नाम एक ब्राह्मण था या वह तपस्वी तो था परन्तु पण्डित न था। नदीके तटपर गांवके पास रहा करता था। हे अर्ज्जुन! उसने यह प्रतिज्ञा करली थी कि मैं सदा सत्य ही बोलूगा, इसलिये उसका नाम सत्यवादी प्रसिद्ध होगया था। एक दिन कई मनुष्य डाकुओंके डरसे उस वनमें आछिपे, डाकू वहां भी यत्न करके उन्हें ढूंढ़ने लगे। अनन्तर उन चोरोंने सत्यवादी कौशिकसे जाकर पूछा कि, हे भगवन्! इस मार्गसे कई मनुष्य गये हैं? यदि आप सदा सत्य बोलते हैं और उन्हें यदि आप जानते हैं तो कह दीजिये? तब कौशिकने सत्य सत्य कह दिया कि इस अनेक लता और वृक्ष वाले वनको ओर वे गये हैं। हमने सुना है, तब उन चोरोंने दौड़ कर उन सबको मार डाला। इसी पापसे कौशिक धर्म्मको न जानने और मूर्खताके कारण घोर नरकमें गया, इसीसे हम कहते हैं, कि धर्म्मको जानना बहुत सूक्ष्म है। तुम धर्म्म और अधर्म्मका बिना निश्चय किये और बूढ़ोंसे बिना पूछे जो कर्म्म करते हो इससे नरकमें जाओगे कोई महात्मा कहते हैं, कि वेद ही धर्म्मका मूल है, कोई कोई कहते है, कि जो तर्कोंसे सिद्ध हो वही धर्म्म है, परन्तु हम जानते हैं, कि धर्म्मको जानना बहुत कठिन है। हम ऊपर कहे किसी लक्षणका खण्डन नहीं करते हैं परन्तु यह अवश्य कहते हैं, कि मनुष्योंकी उन्नतिके लिये ही मुनियोंने समयके अनुसार धर्म्मके लक्षण बना लिये है। हमारी बुद्धिमें किसीकी हिंसा न करना केवल यही धर्म्म है, मुनिओने हिंसकोंको हिंसाके रोकनेके लिये ही धर्म्मके अनेक वचन लिख दिये हैं। जो धारण किया जाय अथवा प्रजा जिसे धारण करे वही धर्म्म कहाता है इसलिये जो वस्तु धारण करने योग्य हो वही धर्म्म ठहरो। यों मूर्ख ही कहते हैं, कि पराई स्त्रीके पास जाना और जन्तुओंको मारना ही धर्म्म है, उन वेद विरोधियोंकी मोक्ष नहीं होती, उनसे धर्म्मात्माओंको बात भी नहीं करनी चाहिये। जहां सत्य कहनेमें कुछ शङ्का हो अर्थात् सत्य कहनेसे किसीका नाश होता हो तहां न सत्यकहे।

न झूठ कहे, अर्थात चुप होजाय और जो चुप न रह सके तो झूठ कहे, वह झूठ सत्य-होके समान होता है, जो कपटी अपने मनमें एक कामको दूसरे प्रकारसे बिचारे और करें दूसरे प्रकारसे, उसे उस कामका फल यथार्थ नहीं होता। प्राण नाशके समय बिवाह वा सब जातिके नाश होनेमें आपत्ति और घोर समयमें झूठ बोलनेसे पाप नहीं होता। यदि झूठी शपथ खाने पर भी कोई बन्धनसे छूटे तो धर्म्मात्मा पुरुष उस अधर्म्मको भी धर्म्म ही कहते हैं। इन स्थानों पर कही हुई झूठ बात भी सत्य मानी जाती है। परन्तु चोरोंको धन नहीं देना चाहिये, क्यों कि ऐसा करनेसे नर्क होता है। इसलिये किसीको बचानेके लिये झूठ बोलना पाप नहीं है, मैंने तुम्हारे कल्याणकी इच्छासे अपनी बुद्धिके अनुसार ये धर्म्मके लक्षण तुमसे कहे। हे अर्ज्जुन! यह सुन कर भी तुम्हारी इच्छा युधिष्ठिरके मारनेकी रह गयी ?

अर्ज्जुन बोले, हे भगवन्! आप बड़े बुद्धिमान और बड़े पण्डित हैं। आपने जो कहा मैं वैसा ही करूंगा, आप हमारे माता और पिताके समान हैं। इसी लिये हमारे कल्याणके बचन कहते हैं। हे कृष्ण! तुम ही हमारी गति हो तीनोलोकोंमें ऐसी कोई बात नहीं जो आप नहीं जानते, जगत्के सब धर्म्मोंको आप जानते हैं। इसलिये अब हमने जान लिया कि धर्म्मराज युधिष्ठिर मारने योग्य नहीं हैं परन्तु हमने जो प्रतिज्ञाकी थी वह झूठ हुई जाती है। इसलिये उसके उद्धारका कुछ यत्न बताइये क्यों कि आप हमारे सङ्कल्पको जानते हैं, कि जो मनुष्य हमसे कहेगा कि अपना धनुष दूसरेको देदो वह कैसा ही योद्धा और उत्तम मनुष्य क्यों न हो मै उसे मार डालूंगा ऐसे ही भीमसेनकी यह प्रतिज्ञा है, कि जो उन्हें अधिक खाने वाला, बतावेगा उसे मार डालेंगे, सो आपके आगे महाराजने कहा कि तुम दूसरेको धनुष दे दो अब यदि मैं महाराजको मारता हूं तो क्षण भर भी नहीं जी सकूंगा, और मेरा बल बीर्य्य तेज नष्ट हो जायगा तथा इस पापसे भी कभी नहीं छूटूंगा। हे धर्म्मधारियोंमें श्रेष्ठ! जिसमें हमारी प्रतिज्ञा भी सत्य हो और हम दोनों भाई जीते भी रहैं ऐसी कोई बुद्धि हमें बताइये।

श्रीकृष्णचन्द्र बोले, हे वीर! महाराज सदा कर्णके दुःखसे व्याकुल रहते हैं, और इस समय उसने इनके शरीरमें अनेक घाव भी कर दिये हैं। इसीसे बहुत थक भी गये हैं, इसी लिये इन्होंने न कहने योग्य तुमको कही और यह भी इन्होंने बिचार लिया, कि मैं यदि अपनी बातोंसे अर्ज्जुनको क्रोध न दिलाऊंगा तो ये कर्णको नहीं मारेंगे। हे कुन्तीपुत्र। महाराज इस बातको अच्छी प्रकार जानते हैं, कि जगत्में पापी कर्णसे तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं लड़ सक्ता, इसी लिये इन्होंने कठोर बचन कहे धर्म्मात्मा महाराजने यह भी बिचार लिया कि कर्ण सदा युद्ध करता रहता है और इसीने जुआ खिलाया था, यदि यह मारा जायगा तो सब कौरव आपसे आप हार जावेंगे, इसलिये तुमको ये कठोर बचन सुनाये, अब राजा मारने योग्य नहीं हैं परन्तु तुम्हें भी अपनी प्रतिज्ञा सत्य करनी है, इसलिये जिसमें दोनों बात सिद्ध हों ऐसे बचन सुनो। महात्माओंने कहा है, कि उत्तम मनुष्य जबतक आदरसे जिये तभीतक जीता है, और जब उसका निरादर होगया तभी मर गया, तुम भीमसेन, नकुल, सहदेव और जगत्के जितने बुद्धिमान मनुष्य हैं। सबको महाराज धर्म्मराजका सत्कार करना चाहिये परन्तु तुमने इन्हें कठोर बाणी कही इसमें ये मर गये, जो तुम्हारी इच्छा हो, सो और भी कहला उसीसे ये मर जायंगे। हे भारत! तुम महाराजको

आपके स्थानपर तुम कह दो बस इतने ही से मर गये। हे कुरुकुल श्रेष्ठ कुन्तीपुत्र। तुम यही व्योहार महाराजके सङ्ग करो तुम्हारे लिये यही अधर्म्म बहुत है। और अङ्गिरा मुनिने ये बचन कहे हैं। धर्म्म चाहनेवालोंको ये अवश्यही करने चाहिये गुरुको, 'तुम' कहना ही उन्हें मार डालना है, इसलिये तुम धर्म्मराजसे ऐसा ही कहदो ये कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर तुम्हारे बड़े भाई और धर्म्मके जाननेवाले और सब लोकके राजा है। इसलिये तुम्हें इनके ऊपर कुछ भी क्रोध न करना चाहिये, अब तुम इस घोर पापसे छूटे अब चलकर कर्ण को मारो।

६६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! श्रीकृष्णके ऐसे बचन सुन और उनको शान्तकर धर्म्मराज युधिष्ठिरके पहले कहे बचनोंको क्षमा कर अर्ज्जुन बोले, हे राजन्। तुम हमें कठोर बचन मत कहो युद्धसे एककोश दूरपर हैं। भीमसेन सब वीरोंसे लड़ रहे हैं। वही हमारी निन्दा कर सकते हैं। भीमसेन अपने पराक्रमसे हाथी घोड़े और रथोंपर चढ़े अनेक राजोंको मार रहे हैं। उन्होंने अनेक शत्रुओंको मार डाला है और अनेक वीरोंको मारकर भगा दिया है। उन्होंने आज एक सहस्रसे ऊपर हाथियोंको मारा अब काम्बोजदेशकी सेनासे मेघके समान गर्ज्जते हुए इस प्रकार युद्ध कर रहे हैं। जैसे हरिणोंसे सिंह युद्ध करे, ऐसा घोर कर्म्म कर रहा हैं, जैसा तुम कभी नहीं कर सकते रथसे उतरकर अपनी गदासे अनेक हाथी, घोड़े और मनुष्योंको मार रहे हैं। महापराक्रमी भीमसेन खड्ग, चक्र, धनुष, पैर और हाथोंसे हाथी और मनुष्योंको मार रहे हैं, इस समयमें कुबेर और यमराजके समान शत्रुओंका नाश कर रहे हैं, वही हमारी निन्दा कर सकते हैं, तुम नहीं। क्योंकि सदा मित्र लोग तुम्हारी रक्षा करते हैं। अकेले भीमसेन अनेक हाथी, घोड़े और बीरोंको मारकर धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे लड़ रहे हैं, वही हमारी निन्दा कर सकते हैं। जो भीमसेन, कलिङ्ग, वङ्ग, काले मेघके समान मतवाले अङ्ग और निषाददेशी योद्धाओंको मार रहे हैं वही हमारी निन्दा कर सकते हैं। जो भीमसेन उत्तम रथपर बैठकर धनुष घुमाकर मेघके समान बाण वर्षा रहे हैं और जिन्होंने अपने बाणोंसे उत्तम सूंड़ और कुम्भवाले आठ सौ मतवाले हाथियोंको मारडाला। हे भारत। ब्राह्मणोंको बचन और क्षत्रियोंको हाथका बल होता है। तुम्हें केवल बचनहीका बल है। तुम बड़े निष्ठुर हो और हमारा जैसा पराक्रम हैं, जैसा तुम जानते हो हम स्त्री, पुत्र, धन और अपने शरीरसे भी सदा तुम्हारा कल्याण करनेको उपस्थित रहते हैं, तौभी तुम ऐसे तीक्ष्ण बचन बाणोंसे हमें मारते हो, तथा हम तुम्हारे सिवाय अपना सुख और कुछ नहीं समझते। हे भारत। हे द्रौपदीपति। हम तुम्हारे सिवाय कुछ भी अपना सुख नहीं समझते अब हम तुम्हारे लिये अनेक महारथोंको मारेंगे, तुम बड़े निष्ठुर हो, तुम्हारे लिये ही सत्यबादी भीष्मने अपनी मृत्यु बतादी, उनको पराक्रमी द्रुपदपुत्र शिखण्डीने मेरी सहायतासे मारडाला। हम तुम्हारे राज्यकी प्रशंसा भी नहीं करते, उस समय भी तुमने पापका मूल जुआ खेला। अब अपने आप ही सबसे शत्रुता बढ़ाकर हम चारोंके द्वारा शत्रुओंको जीता चाहते हो, सहदेवने उस ही समय जुएके अनेक दोष तुम्हे दिखलाये थे, परन्तु उनको न मानकर तुमने यह पाप कर्म्म किया, उसीसे हम सब इस घोर आपत्तिमें पड़े हैं, तथापि हम चारो तुम्हारे सिवाय और किसीको अपना सुख नहीं समझते, तुमने आप ही पाप किया और हमें ही कठोर बचन सुनाते हो हम

न झूठ कहे, अर्थात चुप होजाय और जो चुप न रह सके तो झूठ कहे, वह झूठ सत्यहीके समान होता है, जो कपटी अपने मनमें एक कामको दूसरे प्रकारसे बिचारे और करें दूसरे प्रकारसे, उसे उस कामका फल यथार्थ नहीं होता। प्राण नाशके समय बिवाह वा सब जातिके नाश होनेमें आपत्ति और घोर समयमें झूठ बोलनेसे पाप नहीं होता। यदि झूठी शपथ खाने पर भी कोई बन्धनसे छूटे तो धर्म्मात्मा पुरुष उस अधर्म्मको भी धर्म्म ही कहते हैं। इन स्थानों पर कही हुई झूठ बात भी सत्य मानी जाती है। परन्तु चोरोंको धन नहीं देना चाहिये, क्यों कि ऐसा करनेसे नर्क होता है। इसलिये किसीको बचानेके लिये झूठ बोलना पाप नहीं है, मैंने तुम्हारे कल्याणकी इच्छासे अपनी बुद्धिके अनुसार ये धर्म्मके लक्षण तुमसे कहे। हे अर्ज्जुन! यह सुन कर भी तुम्हारी इच्छा युधिष्ठिरके मारनेकी रह गयी?

अर्ज्जुन बोले, हे भगवन्! आप बड़े बुद्धिमान और बड़े पण्डित हैं। आपने जो कहा मैं वैसा ही करूंगा, आप हमारे माता और पिताके समान हैं। इसी लिये हमारे कल्याणके बचन कहते हैं। हे कृष्ण! तुम ही हमारी गति हो तीनोलोकोंमें ऐसी कोई बात नहीं जो आप नहीं जानते, जगत्के सब धर्म्मोंको आप जानते हैं। इसलिये अब हमने जान लिया कि धर्म्मराज युधिष्ठिर मारने योग्य नहीं हैं परन्तु हमने जो प्रतिज्ञाकी थी वह झूठ हुई जाती है। इसलिये उसके उद्धारका कुछ यत्न बताइये क्यों कि आप हमारे सङ्कल्पको जानते हैं, कि जो मनुष्य हमसे कहेगा कि अपना धनुष दूसरेको देदो वह कैसा ही योद्धा और उत्तम मनुष्य क्यो न हो मै उसे मार डालूंगा ऐसे ही भीमसेनकी यह प्रतिज्ञा है, कि जो उन्हें अधिक खाने वाला, बतावेगा उसे मार डालेंगे, सो आपके आगे महाराजने कहा कि तुम दूसरेको धनुष दे दो अब यदि मैं महाराजको मारता हूं तो क्षण भर भी नहीं जी सकूंगा, और मेरा बल वीर्य्य तेज नष्ट हो जायगा तथा इस पापसे भी कभी नहीं छूटूंगा। हे धर्म्मधारियोंमें श्रेष्ठ जिसमें हमारी प्रतिज्ञा भी सत्य हो और हम दोनों भाई जीते भी रहैं ऐसी कोई बुद्धि हमें बताइये।

श्रीकृष्णचन्द्र बोले, हे वीर! महाराज सदा कर्णके दुःखसे व्याकुल रहते हैं, और इस समय उसने इनके शरीरमें अनेक घाव भी कर दिये हैं। इसीसे बहुत थक भी गये हैं, इसी लिये इन्होंने न कहने योग्य तुमको कही और यह भी इन्होंने बिचार लिया, कि मैं यदि अपनी बातोंसे अर्ज्जुनको क्रोध न दिलाऊंगा तो ये कर्णको नहीं मारेंगे। हे कुन्ती पुत्र! महाराज इस बातको अच्छी प्रकार जानते हैं, कि जगत्में पापी कर्णसे तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं लड़ सक्ता, इसी लिये इन्होंने कठोर बचन कहे धर्म्मात्मा महाराजने यह भी बिचार लिया कि कर्ण सदा युद्ध करता रहता है और इसीने जुआ खिलाया था, यदि यह मारा जायगा तो सब कौरव आपसे आप हार जावेंगे, इसलिये तुमको ये कठोर बचन सुनाये, अब राजा मारने योग्य नहीं है परन्तु तुम्हें भी अपनी प्रतिज्ञा सत्य करनी है, इसलिये जिसमें दोनों बात सिद्ध हों ऐसे बचन सुनों। महात्माओंने कहा है, कि उत्तम मनुष्य जबतक आदरसे जिये तभीतक जीता है, और जब उसका निरादर होगया तभी मर गया, तुम भीमसेन, नकुल, सहदेव और जगत्के जितने बुद्धिमान मनुष्य हैं। सबको महाराज धर्म्मराजका सत्कार करना चाहिये परन्तु तुमने इन्हें कठोर बाणी कहीं इससे वे मर गये, जो तुम्हारी इच्छा हो, सो और भी कहला इससे वे मर जायंगे। हे भारत! तुम महाराजको

ापके स्थानपर तुम कह दो बस इतने ही से र गये। हे कुरुकुल श्रेष्ठ कुन्तीपुत्र! तुम ही व्योहार महाराजके सङ्ग करो तुम्हारे लिये यही अधर्म्म बहुत है। और अङ्गिरा ुनिने ये बचन कहे हैं। धर्म्म चाहनेवालोंको अवश्यही करने चाहिये गुरुको, 'तुम' कहना ही उन्हें मार डालना है, इसलिये तुम धर्म्म-ाजसे ऐसा ही कहदो ये कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर ुम्हारे बड़े भाई और धर्म्मके जाननेवाले और ब लोकके राजा हैं। इसलिये तुम्हें इनके ऊपर कुछ भी क्रोध न करना चाहिये, अब तुम इस घोर पापसे छूटे अब चलकर कर्णको मारो।

६९ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! श्रीकृष्णके ऐसे वचन सुन और उनको शान्तकर धर्म्मराज युधिष्ठिरके पहले कहे बचनोंको चमा कर अर्ज्जुन बोले, हे राजन्। तुम हमें कठोर बचन मत कहो युद्धसे एककोश दूरपर हैं। भीमसेन सब वीरोंसे लड रहे हैं। वही हमारी निन्दा कर सकते हैं। भीमसेन अपने पराक्रमसे हाथी घोड़े और रथोंपर चढे अनेक राजोंको मार रहे हैं। उन्होंने अनेक शत्रुओंको मार डाला है और अनेक वीरोंको मारकर भगा दिया है। उन्होंने आज एक सहस्रसे ऊपर हाथियोंको मारा अब काम्बोजदेशकी सेनासे मेघके समान गर्ज्जते हुए इस प्रकार युद्ध कर रहे हैं। जैसे हरिणोंसे सिंह युद्ध करे, ऐसा घोर कर्म्म कर रहा हैं, जैसा तुम कभी नहीं कर सकते रथसे उतरकर अपनी गदासे अनेक हाथी, घोड़े और मनुष्योंको मार रहे हैं। महापराक्रमी भीमसेन खड्ग, चक्र, धनुष, पैर और हाथोंसे हाथी और मनुष्योंको मार रहे हैं, इस समयमें कुवेर और यमराजके समान शत्रुओंका नाश कर रहे हैं, वही हमारी निन्दा कर सकते हैं, तुम नहीं। क्योंकि सदा मित्र लोग तुम्हारी रक्षा करते हैं। एकले भीमसेन अनेक हाथी, घोड़े और वीरोंको मारकर धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे लड़ रहे हैं, वही हमारी निन्दा कर सकते हैं। जो भीमसेन, कलिङ्ग, वङ्ग, काले मेघके समान मतवाले अङ्ग और निषाददेशी योद्धाओंको मार रहे है वही हमारी निन्दा कर सकते हैं। जो भीमसेन उत्तम रथपर बैठकर धनुष घुमाकर मेघके समान बाण वर्षा रहे हैं और जिन्होंने अपने बाणोंसे उत्तम सूंड़ और कुम्भवाले आठ सौ मतवाले हाथियोंको मारडाला। हे भारत। ब्राह्मणोंको बचन और चत्रियोंको हाथका बल होता है। तुम्हें केवल बचनहीका बल है। तुम बड़े निष्ठुर हो और हमारा जैसा पराक्रम हैं, जैसा तुम जानते हो हम स्त्री, पुत्र, धन और अपने शरीरसे भी सदा तुम्हारा कल्याण करनेको उपस्थित रहते है, तोभो तुम ऐसे तीक्ष्ण बचन बाणोंसे हमें मारते हो, तथा हम तुम्हारे सिवाय अपना सुख और कुछ नहीं मसभते। हे भारत। हे द्रौपदीपति। हम तुम्हारे सिवाय कुछ भी अपना सुख नहीं समझते अब हम तुम्हारे लिये अनेक महारथोंको मारेंगे, तुम बड़े निष्ठुर हो, तुम्हारे लिये ही सत्यबादी भीष्मने अपनी मृत्यु बतादी, उनको पराक्रमी द्रुपदपुत्र शिखण्डीने मेरी सहायतासे मारडाला। हम तुम्हारे राज्यको प्रशंसा भी नहीं करते, उस समय भी तुमने पापका मूल जुआ खेला। अब अपने आप ही सबसे शत्रुता बढ़ाकर हम चारोंके द्वारा शत्रुओंको जीता चाहते हो, सहदेवने उस ही समय जुएके अनेक दोष तुम्हे दिखलाये थे, परन्तु उनको न मानकर तुमने यह पाप कर्म्म किया, उसीसे हम सब इस घोर आपत्तिमें पड़े हैं, तथापि हम चारों तुम्हारे सिवाय और किसीको अपना सुख नहीं समभते, तुमने आप ही पाप किया और हमें ही कठोर बचन सुनाते हो हम

चारोंकी मारी हुई कौरवोंकी सेना पृथ्वीमें सोरही है, अनेक आधे कटे योद्धा फिरते हैं। हम लोगोंका यह कर्म है। और तुमने वह कर्म किया कि जिससे कौरवोंका नाश हो गया, हमारे और कौरवोंके वीरोंने युद्धमें घोर कर्म किये हैं। पूर्व्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिणके सब क्षत्री मारे गये। हे राजन्! हे नरेन्द्र! तुमने जुआ खेला इसीसे हम चारोंको घोर आपत्ति भोगनी पड़ी, अब तुम हम लोगोंको कठोर बचन कह कर क्रोध मत कराना तुम बड़े मन्दभाग्य हो तुम्हारे ये बचन कोड़ाके समान लगते हैं।

सञ्जय बोले, बुद्धिमान महात्मा अर्ज्जुन ये सब कठोर बचन कह कर पीछे इस पापसे बहुत घबड़ाकर और मलीन होकर चुप होगये, अनन्तर बहुत पछता कर अर्ज्जुनने फिर अपना खड़्ग खींचा तब श्रीकृष्णने कहा कि; हे अर्ज्जुन। अब तुमने फिर खड़्ग क्यों निकाला? तुम अपने मनका प्रयोजन कहो तो हम फिर तुमको उसका उत्तर देंगे, श्रीकृष्णके ऐसे बचन सुन अर्ज्जुन दुखित होकर बोले, अब मैं अपने शरीरहीको नाश करूंगा। यही सब दुःखोंका मूल है। इसीने धर्म्मराज युधिष्ठिरको अनेक दुर्वाक्य कहे हैं।

श्रीकृष्ण बोले, हे अर्ज्जुन। हे किरीटी। तुमने राजाको जो कहा इसीसे अब दुःख करते हो और इसीसे अपने शरीरको नाश करना चाहते हो यह बात ठीक नहीं महात्मा लोग इस व्यवहारकी निन्दा करते है।

हे वीर! यदि तुम अपने खड़्गसे धर्म्मात्मा युधिष्ठिरको न मारते और वे बचन भी न कहते तो धर्म्मात्मा कैसे कहलाते? और जगत्में क्या उत्तर देते? हे कुन्तीपुत्र! धर्म्म बहुत सूक्ष्म वस्तु है। उसको पण्डित लोग भी कठिन्तासे जान सकते हैं। हम जो तुमसे कहते हैं सो तुम सुनो। अपनी अथवा भाईकी हत्या करके नरकमें जानेका प्रबन्ध मत करो। तुम अपने गुणोंका स्मरण करो और आत्महत्या मत करो।

श्रीकृष्णके बचन सुन बहुत अच्छा कह और धनुष उठाकर अर्ज्जुन महाराज युधिष्ठिरसे बोले, हे महाराज! हे पृथ्वीनाथ! हम आपसे सत्य कहते हैं, कि भगवान् शिवको छोड़कर और जगत्में हमारे समान धनुषधारी कोई नहीं है। हे पृथ्वीनाथ! मैं आपकी आज्ञासे क्षण भरमें चर और अचरको नाश कर सक्ता हूं। हमने सब राजोंके सहित समस्त पृथ्वी जीत कर आपके वशमें कर दी है, मेरे ही प्रतापसे आपने दक्षिणाके सहित राजसूय यज्ञ समाप्त किया मैंने आपके लिये उत्तम सभा बनवाई आप हमारे हाथ, धनुष और दिव्य बाणोंको देखिये मेरे पैरमें रथ और ध्वजाका चिन्ह है, इसलिये मेरे समान मनुष्यको युद्धमें कोई नहीं जीत सक्ता। मैंने पूर्व्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिणके सब क्षत्रियोंको जीता है! हे राजन्! मैंने देवतोंकी सेनाके तुल्य कौरवोंकी आधी सेना मार डाली, संसप्तक भी थोड़े ही शेष हैं। मेरे मारे हुए अनेक वीर पृथ्वीमें सो रहे हैं। मैं अस्त्र जाननेवालोंसे अस्त्रोंहीसे युद्ध करता हूं। इसलिये जगत्को भस्म कर सक्ता हूं। अब हम और कृष्ण रथपर बैठकर कर्णको मारने जाते हैं। हे कृष्ण! अब चलिये हम आज अपने बाणोंसे कर्णको अवश्य मारेंगे अब महाराज निर्विघ्न सब लोकका राज्य करें।

ऐसा कह कर अर्ज्जुन फिर धर्म्मधारियोंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिरसे बोले, हे महाराज। अब हम आपसे सत्य प्रतिज्ञा करते हैं कि, या तो आज कर्णकी माता कर्णसे हीन अथवा कुन्ती मुझसे रहित होजायगी, अब हम कर्णके मारे बिना अपना कवच नहीं खोलेंगे।

सञ्जय बोले, हे राजन्! ऐसा कह कर अर्ज्जुनने अपने खड़्गको म्यानमें रक्खा और धनुष बाण पृथ्वीमें रखकर हाथ जोड़ कर

पैरोंमें शिर रखके अत्यन्त नम्र बातोंसे युधिष्ठिरसे बोले, हे महाराजाधिराज! हम आपके चरणोंमें प्रणाम करते हैं। आप हमसे प्रसन्न हूजिये, आप मेरी इन सब बातोंको क्षमा कीजिये, तब राजाने इनका सब अपराध क्षमा किया। अनन्तर अर्ज्जुन फिर हाथ जोड़कर बोले, अब मैं युद्ध करनेको जाता हूं जो आपको इस समय सोच है, सो बहुत समय तक नहीं रहेगा। हे राजन्! अबमें भीमसेनको युद्धसे छुड़ा दूंगा, और आज कर्णको अवश्य मारूंगा। मैं सत्य कहता हूं कि, आपकी प्रसन्नताके लिए अपना जीवन भी दे सक्ता हूं। ऐसा कह कर तेजस्वी अर्ज्जुन महाराजके पैरोंमें गिर पड़े, अर्ज्जुनके ऐसे वचन सुन धर्म्मात्मा युधिष्ठिर अपने पलङ्गसे उठे और खड़े होकर कहने लगे। हे कुन्तीपुत्र! हमने अच्छा काम नहीं किया कि जिससे तुम लोगोंको ये सब दुःख भोगने पड़े। इसलिये हम बड़े पापी, मूर्ख, आलसी, कादर, कुलको नाश करनेवाले, और पापी हैं। सो तुम हमारा शिर काट दो मैंने बुढ़ोंकी सेवा नहीं की इसीसे दुष्ट हूं। अब तुम हमारा सिर काटडालो पहले कठोर बचन कह कर अब प्रणाम करनेसे क्या होगा। और यदि तुम हमको न मारोगे तो हम वनको चले जावेंगे, तुम हमारे बिना सुखसे रहना। भीमसेन राजा होनेके योग्य है, मैं नपुंसक राज्य क्या करूंगा। हम तुम्हारे और कठोर बचन नहीं सह सक्ते भीमसेन राजा होंय अब हम और जीना नहीं चाहते ऐसा कह कर राजा पलंगसे उतरे और वनको जानेके लिये उपस्थित हुए, तब श्रीकृष्णने दण्डवत करके कहा; हे राजन्! आप जानते हैं, कि अर्ज्जुनने यह प्रतिज्ञाकी थी कि जो कोई हमसे कहै कि तुम अपना गाण्डीव धनुष दूसरेको दे दो, तो उसको हम मार डालेंगे। आपने वैसा ही कहा इसलिये सत्यवादी अर्ज्जुनने भी अपनी प्रतिज्ञा पूरी करली। हे पृथ्वीनाथ! मेरे ही हठसे अर्ज्जुनने आपका इतना अपमान किया गुरुओंका अपमान करना ही उनका मार डालना है इसलिये आप हमारा और अर्ज्जुनका अपराध क्षमा कीजिये, ये अपराध हम लोगोंने सत्य की रक्षाके लिये किया था। हे महाराज। अब हम दोनों आपको शरण हैं। और मै अब प्रणाम करके आपसे यही भिक्षा मागता हूं, कि आप क्षमा करें आज भूमि पापी राधापुत्रका खून पियेगी अब आप जानिये कि कर्ण मारा गया अब आप सत्य जानिये कि आप मनसे जिसे मारना विचारते हैं, वह मर गया, श्रीकृष्णके ऐसे बचन सुन और उन्हें अपने चरणोंमें पड़ा देख महाराजने उठाया और आदर सहित ऐसा बोले, हे गोविन्द! हे माधव! तुम जैसा समझते हो सो सब ठीक है, तुम्हारी सहायतासे हम सब दुःखोंसे पार हुए है। तुमने हम लोगोंको घोर दुःखसे छुड़ाया है। यदि तुम्हारी सहायता न होती तो हम इस दुःखसे न छूटते हम दोनों मूर्खता और अज्ञानके वशमें होकर इस घोर दुःख और शोकके समुद्रमें डूबे जाते थे, परन्तु तुम्हारी बुद्धिरूपी नावकी सहायतासे पार होगये अब हम अपने मन्त्रियोंके सहित आपसे सनाथ हुए।

७० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! धर्म्मराज युधिष्ठिरके ऐसे बचन सुन धर्म्मात्मा यदुकुलश्रेष्ठ श्रीकृष्ण अर्ज्जुनको मलीन देख धर्म्मराजके बचनोंका उत्तर देकर अर्ज्जुनसे बोले, हे कुन्तीपुत्र! यदि तुम कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरको तेज धारवाले खड्गसे मार डालते तो इस समय तुम्हारी क्या दशा होती? उन धर्म्मात्माको

कहनेसे मलीन हो रहे हो, जिन बड़े भाईको तुम कहकर तुम्हारी यह दशा होरही है, तो उनके मारनेसे तुम्हारी क्या दशा होती? हमारी सम्मतिमें तो तुम सब धर्म्मधारियोंमें श्रेठ कुरुकुल तिलक महाराजको प्रसन्न करो, धर्म्मराज युधिष्ठिरको अपनी भक्तिसे प्रसन्न करके हम और तुम सूतपुत्र कर्णसे युद्ध करनेको चलेंगे। हे वीर! तुम अपने तेज बाणोंसे इसी समय सूतपुत्रको मारकर धर्म्मराज युधिष्ठिरको बहुत प्रसन्न करना।

सञ्जय बोले, हे महाबाहो! अब समयके अनुसार हमारी यही सम्मति है। ऐसा ही करनेसे तुम्हारा कल्याण होगा। हे महाराज धृतराष्ट्र! तब अर्ज्जुनने बहुत लज्जासे अपना शिर नीचा करके महाराज युधिष्ठिरके चरणोंमें रख दिया अनन्तर हाथ जोड़कर बहुत नम्रतासे कहा कि, हे महाराज! मैंने जो धर्म्मसे डर आपसे कुबचन कहे, सो आप क्षमाकीजिये और प्रसन्न हुजिये, जब युधिष्ठिरने रोते हुए अर्ज्जुनको अपने पैरोंमें पड़ा देखा तब उन्होंने उठाकर अपने हृदयसे लगा लिया और खूब रोने लगे। थोड़े समय तक दोनों तेजस्वी भाई रोते रहे फिर सोचकर परस्पर प्रसन्न होगये, तब धर्म्मराज युधिष्ठिरने प्रेमसे हृदय लगाकर प्रेम सहित अर्ज्जुनका माथा सूंघा और बार बार प्रशंसा करने लगे। अनन्तर महाधनुषधारी अर्ज्जुनसे बोले, हे महाबाहो! सब सेनाके देखते देखते कर्णने मेरा कवच, ध्वजा, धनुष, शक्ति, घोड़े और बाणोंको अपने बाणोंसे काट दिया मैंने युद्धमें अनेक यत्न भी किये परन्तु कुछ कर नहीं सका, मैं उसके घोर कर्म्मको देखकर बहुत दुःखी हुआ हूं। यदि अब तुम युद्धमें उसको नहीं मारोगे, तो मैं अपने प्राणको त्याग दूंगा। कर्णके जीनेसे मैं जीकर क्या करूंगा?

अर्ज्जुन बोले, हे पृथ्वीनाथ! हम आप, भीमसेन, नकुल और सहदेवकी शपथकर[ते] हैं कि आज आपकी कृपासे कर्णको [मार]कर पृथ्वीमें गिरावेंगे, अथवा मैं मर जा[ऊंगा] नहीं तो आजसे शस्त्र नहीं छूऊंगा, राजा[से यह] बचन कह श्रीकृष्णसे बोले, हे कृष्ण! आ[प] निःसन्देह कर्णको युद्धमें मारेंगे, तुम्हारा क[ल्याण] हो तुम्हारी कृपासे आज यह पापी मारा जा[वे]गा। अर्ज्जुनके बचन सुन श्रीकृष्ण राजासे बो[ले] हे कुन्तीपुत्र! आप कर्णको मारनेमें समर्थ और मेरी भी बहुत दिनसे यही इच्छा है कर्ण मारा जावे; परन्तु आप उसे युद्धमें मारते? आपको यही उचित है कि उस दु[ष्टको] मारनेके लिये अर्ज्जुनहीको आज्ञा दें, इस[से] उनका उत्साह बढ़ेगा। हे पाण्डुपुत्र! आप कर्णके बाणोंसे पीड़ित हैं, यह सुनकर ही मैं आपके दर्शन करनेको हम आये थे। हे पा[ण्डुपुत्र] रक्षित। आप हमारी प्रारब्धहीसे उसके हाथ[से] नहीं मारे गये और न पकड़े गये अब अर्ज्जुनको युद्ध करनेको आज्ञा दीजिये और अपनी वि[ज]यका निश्चय कर लीजिये।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे प्यारे अर्ज्जुन! तुम हमारे पास आवो तुमने जो कुछ कहा [सो] हमने सब क्षमा किया। हे कुन्तीपुत्र! हे धनञ्जय! हम तुम्हारे बलको जानते हैं, [अब] तुम कर्णको जीतो और हमने जो कुछ कहा है। उसपर क्रोध भी मत करना।

सञ्जय बोले, हे राजन्! तब अर्ज्जुनने हाथ जोड़कर अपना शिर महाराजके चरणोंमें रख दिया, तब राजाने दुःखित अर्ज्जुनको उठाकर छातीसे लगाकर माथा सूंघा और ऐसे बचन कहे। हे महाबाहो! हे धनञ्जय! तुमने हमारा बहुत सत्कार किया अब युद्धमें जाकर बिजय करो।

अर्ज्जुन बोले, हे महाराज! आज मैं उ[स] पापी अभिमानी दुष्ट राधापुत्रको अपने बाणों[से] सहायकोंके सहित मारूंगा, उसने धनुषसे कु[छ]

अनेक बाणोंसे आपको पीड़ा दी है सो आज अपने कर्म्मका फल पावेगा। हे महाराज! अब आप कुछ सोच मत कीजिये मैं उसको मारकर ही अब आपके दर्शन करूंगा, मैंने यह प्रतिज्ञा आपके रोनेहीसे कर ली है। हे पृथ्वीनाथ! हम सत्य शपथ करते हैं कि बिना कर्णके मारे आपके दर्शन न करूंगा।

सञ्जय बोले, हे राजन्! अर्ज्जुनके ऐसे बचन सुन महाराज युधिष्ठिर अक्षय यश देनेवाले जीवन और इच्छाको बढ़ानेवाले अर्ज्जुनके उत्साह वर्द्धक और अक्षय बचन बोले, हम जो कुछ चाहते हैं सब देवता तुम्हारे लिये वैसा ही करें अब तुम जाओ और जैसे इन्द्रने वृत्रासुरको मारा था, वैसे ही तुम कर्णको मारो।

७१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! युधिष्ठिरको इस प्रकार प्रसन्नकर और कर्णके मारनेका निश्चय कर अर्ज्जुन प्रसन्नता पूर्व्वक श्रीकृष्णसे बोले, अब हमारे रथमें उत्तम घोड़े जोड़े जाय, और सब प्रकारके शस्त्र रक्खे जावें अनेक शिक्षित और उत्तम घोड़ोंपर चढ़कर बीर सब सामग्री सहित हमारे सङ्ग चलनेको शीघ्र आवें। हे गोविन्द! आप शीघ्र कर्णके मारनेको चलिये महात्मा अर्ज्जुनके ऐसे बचन सुन कृष्णने दारुकसे कहा कुरुकुलश्रेष्ठ महाधनुषधारी अर्ज्जुनने जो कुछ कहा सो सब तुम ठीक कर दो। हे राजन् धृतराष्ट्र! श्रीकृष्णको आज्ञासे दारुकने, अर्ज्जुनके उत्तम रथमें घोड़े जोड़े और सब सामग्री ठीक की। फिर महात्मा अर्ज्जुनसे आकर कहा कि आपका रथ उपस्थित है। अनन्तर धर्म्मराज युधिष्ठिरकी आज्ञा लेकर ब्राह्मणोंसे आशीर्व्वाद ले और स्वस्तिवाचन सुन अर्ज्जुन उत्तम रथपर बैठे अनन्तर बुद्धिमान धर्म्मराजने अनेक आशीर्व्वाद दिये और आप भी रथसे चढ़कर कर्णसे युद्ध करनेको चले महाधनुषधारी अर्ज्जुनको आते देख सबने कर्णको मारा जान लिया। उन्हें चलता देख सब दशा बिमल होगयी नीलकण्ठ, मोर और कुञ्ज बोलने लगे, और भी अनेक उत्तम पक्षी अर्ज्जुनकी दहिनी ओर मङ्गल शब्द बोलने लगे। हे पृथ्वीनाथ। उस समय अर्ज्जुनके रथके आगे मास खानेके लिये गिद्ध, बाज, कौवे इस प्रकार उड़ने लगे। मानो इन्हें युद्धके लिये शीघ्र बुलाते हैं और भी अनेक शकुन हुए और उस समय अर्ज्जुनको पसीना आगया और चित्तमें बहुत चिन्ता हुई कि आज किस प्रकार इस घोर प्रतिज्ञासे पार हूंगा? श्रीकृष्णने अपने मनमें जान लिया कि इस समय अर्ज्जुन बहुत शोचमें हैं।

श्रीकृष्ण बोले, हे गाण्डीव धनुषधारी अर्ज्जुन! तुमने जिन बीरोंको जीता है उनको जीतनेवाला तुम्हारे सिवाय इस जगत्में कोई नहीं है। हमने अनेक इन्द्रके समान पराक्रमी वीरोंको युद्धमें देखा परन्तु वे सब तुमसे युद्ध करते ही मर गये! भला तुम्हारे सिवाय भीष्म, द्रोणाचार्य्य, भगदत्त, उज्जैनके बिन्द और अनुविन्द काम्बोज देशी सुदक्षिण, महाबली श्रुतायुध और अच्युतायुध इन बीरोंके आगे जाकर कौन जीता बच सक्ता है? तुम्हारे शस्त्र बहुत तेज हैं। बलसे शीघ्र चलाना भूल न करना और बुद्धिमानीसे युद्ध करना ये सब गुण तुममें हैं। हे अर्ज्जुन! तुम लक्ष्यको बहुत शीघ्र देखते हो और तुम अपने बलसे देवता, गन्धर्व्व और सब मनुष्योंके सहित चराचरका नाश कर सक्ते हो, जगत्में जितने धनुषधारी क्षत्री हुए तुम उनमें सबसे अधिक हो हमने देवता और मनुष्योंमें तुम्हारे समान बीर कोई ना देखा और ना सुना। ब्रह्माने सब सृष्टि बनानेके समय इस दिव्य गाण्डीव धनुषको बनाया था, उसी गाण्डीवसे तुम युद्ध करते हो इसलिये तुम्हारे

समान कोई योद्धा नहीं है, परन्तु तुम कर्णका अपमान भी मत करो, क्योंकि वह शस्त्र विद्या जाननेवाले, महा बलवान, महा योद्धा और महारथ हैं। हे पाण्डव! कर्ण विचित्र योद्धा बुद्धिमान् और देश कालके जाननेवाले हैं, अधिक उनके गुण कहां तक कहैं हम संक्षेप-रूपसे कहते हैं सो सुनो। हम महारथ कर्णको तुम्हारे समान अथवा तुमसे भी अधिक योद्धा जानते हैं। इसलिये बहुत यत्न करके उसे मारना; सिंहके समान पराक्रमी कर्ण तेजमें अग्नि, बलमें वायु और क्रोधमें यमराजके समान है। महाबाहु कर्ण बड़े अभिमानी, शूरवीर, सुन्दर और ऊंची छातीवाले हैं, इनमें वीरोंके सब गुण भरे हैं। वही कर्ण सदासे पाण्डवोंके बैरी और मित्रोंको सुख देनेवाले, है। और धृतराष्ट्रके पुत्रोंके शुभ चिन्तक है। हमारी बुद्धिमें राधापुत्रको तुम्हारे सिवाय देवतोंके सहित इन्द्रकी भी मारनेकी शक्ति नहीं है। इसलिये तुम आज उसे मार डालो। यदि सब देवता और सब योद्धा रुधिरसे भीगकर भी युद्ध करें तो भी कर्णको नहीं जीत सक्ते। हे पाण्डव! आज तुम उस पापी, दुष्ट, मूर्ख और अपने द्वेषीको मारकर निश्चिन्त हो। आज उस महारथ सूतपुत्रको मार कर धर्म्मराजको प्रसन्न करो हम तुम्हारे बलको जानते हैं।

देवता और राक्षस भी तुम्हें युद्धमें नहीं जीत सक्ते परन्तु यह दुष्ट सूतपुत्र सदा पाण्डवोंका अपमान किया करता है। हे धनञ्जय! यह मूर्ख अपनेको बीर मानता है। और दुर्य्योधन भी इसीके बलसे बहुत अभिमान कर रहा है। आज इस सब बैरके मूलको काटकर सावधान हो धनुष, सुख, खड्ग, जीभ और बाणरूपी दांतवाले, कर्णरूपी शार्दूल-को आज तुम मारो, जैसे सिंह हाथीको मारता है। ऐसे ही तुम आज कर्णको मारो, हम तुम्हारे बल और वीर्य्यको जानते हैं। जिसके पराक्रमसे दुर्य्योधन तुम्हारा अपमान किया करता है उस कर्णको आज तुम मारो।

७२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे भारत! तब अर्जुनने मनमें कर्णके मारनेका दृढ़ सङ्कल्प जान श्रीकृष्ण फिर बोले, हे अर्जुन! हाथी, घोड़े और मनुष्योंको मरते आज सतरह दिन होगये अब तुम्हारी सेना शत्रुओंसे युद्ध करते बहुत थोड़ी बची है। पहले कौरवोंके सङ्ग बहुत हाथी, घोड़े और रथ थे, परन्तु अब तुम उनको नष्ट कर दिया ये सब सृञ्जय आदि सब राजा तुम्हारी ओरसे युद्ध करनेको आये हैं और तुम्हारे ही आश्रयसे सब पाण्डव युद्ध कर रहे हैं। तुमने पाञ्चाल, पाण्डव, मत्स्य, कारुष और चंदेरीके शत्रुनाशन क्षत्रियोंकी सहायतासे अपने शत्रुओंका नाश किया और अपनी सेनाकी रक्षा भी की। हे अर्जुन! तुमसे रक्षित महारथ पाण्डवोंके सिवाय कौरवोंको कौन जीत सक्ता? तुम अपने बलसे देवता और राक्षसोंके सहित तीनों लोकोंको जीत सक्ते हो तब कौरवोंकी सेनाकी तो कथा ही क्या है! हे कुरुकुलशार्दूल! राजा भगदत्तके जीतनेको तुम्हारे सिवाय और किस इन्द्रके समान मनुष्यकी शक्ति थी? तुमसे रक्षित इस सेनाको कोई राजा आंखोंसे भी नहीं देख सक्ता तुम्हारी ही सहायतासे धृष्टद्युम्न और शिखण्डीने भीष्म और द्रोणाचार्य्यको मार डाला! इन्द्रके समान पराक्रमी कौरवोंके सेनापति भीष्म और द्रोणाचार्य्यसे कौन युद्ध कर सक्ता था? शान्तनु पुत्र भीष्म द्रोणाचार्य्य, कर्ण, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा, भूरिश्रवा, कृतवर्म्मा, सिन्धु देशी राजा जयद्रथ, मद्रराज शल्य, और राजा दुर्य्योधन इन सब शस्त्र जाननेवाले, वीरोंसे तुम्हारे सिवाय कौन युद्ध कर सक्ता था? ये सब युद्धमें न लौटनेवाले, अक्षौहिणीपति, वीर पराक्रमी

और महा योद्धा थे। तुमने अनेक योद्धा क्षत्रियोंकी पंक्ति, हाथी, घोड़े और अनेक देशी वीरोंको नाश कर दिया। गोवास, दासमीय, वसाती पूर्वी, वाट धान और अभिमानी भोजवंशी क्षत्रियोंकी हाथी, घोड़े और रथोंसे भरी सेना तुमने और भीमसेनने नाश कर दी। तुषार, यवन, खश, दार्व सार, शक माठर, तङ्गण, आंध्र, पुलिन्द, किरात, पराक्रमी म्लेच्छ, पर्व्वती और समुद्र तटके सब योद्धा केवल दुर्य्योधनके अपराधसे मारे गये, ये सब क्रोधी घोर कर्म्म करनेवाले, महापराक्रमी युद्धसे न हटनेवाले, बलवान् और दण्डधारी थे, हे शत्रुनाशन! तुम्हारे सिवाय इन सबको और कोई नहीं जीत सक्ता था। उस समुद्रके समान भारी धूर उड़ाती हुई दुर्य्योधनकी महासेनाको तुम न होते तो कौन मारता? और कौन पाण्डवोंकी रक्षा करता? तुम्हारी ही सहायतासे कौरवोंकी सेनाको व्याकुल करके मगध देशके महाबलवान् राजा जयत्सेनको आज सात दिन हुए कि अभिमन्युने मारा था। अनन्तर भीमसेनने उसी दिन अपनी गदासे दश हाथी मारे और उस राजाकी सेनाको नाश कर दिया।

हे पाण्डव। उस घोर युद्धमें तुमने और भीमसेनने कौरवोंकी सेनाका हाथी, घोड़े और रथोंके सहित नाश किया था। इस प्रकार जब पाण्डवोंके बाणोंसे सब कौरवोंकी सेनाका मुख टूट गया, तब भीष्मने चेदि, काशी, कारुष, पाञ्चाल, मत्स्य और कैकय देशसे आई हुई तुम्हारी सेनापर बाण वर्षाने आरम्भ किये, शस्त्रविद्या जाननेवाले भीष्मके धनुषसे छूटे हुए बाणोंसे तुम्हारी सेनाका नाश होगया उन सोनेके पङ्खवाले शीघ्रगामी भीष्मके बाणोंसे आकाश पूरित होगया? उन भीष्मके बाणोंसे एक लाख बलवान मनुष्य और हाथी मारे गये, पश्चात् दशवें गतिसे उन बाणोंने अनेक घोड़े, हाथी और रथोंको काट दिया, भीष्मने दशदिन तक बाणोंकी नौ गति छोड़कर अर्थात् दशवीं गतिसे तुम्हारी सेनाका नाश किया भीष्मने शिव और विष्णुके समान अपना रूप दिखलाकर रथोंको वीरोंसे शून्य कर दिया और हाथी घोड़ोंको मारडाला। भीष्मने अपने बलसे चेदि, पाञ्चाल और कैकय देशके अनेक राजोंको मारा। डूबते हुए दुर्य्योधनको उद्धार करनेके लिये भीष्मने अपने बाणोंसे पाण्डवोंकी सेनाका नाश कर दिया। उनको सूर्य्यके समान सेनामें घूमते देख सहस्रों शस्त्रधारी, पदाति और सृञ्जय आदि राजा उनको देख नहीं सके। विजयी भीष्मने अनेक यत्न करके पाण्डव और सृञ्जयोंको नाशकर दिया उस समय सेनामें केवल भीष्म ही भीष्म दीखते थे, तब शिखण्डीने तुम्हारी सहायतासे अपने तेज बाणोंसे उन पुरुषसिंहको मारडाला, वे ही भीष्म अभी शरशय्यापर सोते हैं। इसी प्रकार द्रोणाचार्य्यने भी पाच दिनतक तुम्हारी सेनाका नाश किया। अमोघ व्यूह बनाकर महारथोंको मारकर और जयद्रथकी रक्षा करके रात्रिके घोर युद्धमें अपने बाणरूपी अग्निसे तुम्हारी सेनाको भस्म किया, पश्चात् महाप्रतापी द्रोणाचार्य्यको धृष्टद्युम्नने मारा, यदि आज तुम कर्ण आदि महारथीको नहीं मारोगे, तो निश्चय जान लेना कि द्रोणाचार्य्य नहीं मारे गये। तुमने दुर्य्योधनकी सब सेनाको भगा दिया है। धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यको मारा अब कर्णको तुम्हारे सिवाय कौन क्षत्रिय मार सक्ता है? तुमने जयद्रथको मारनेके दिन बहुत सेनाको निवारण करके अनेक राजा और वीरोंको मारा था। इस कर्म्मको तुम्हारे सिवाय और कौन क्षत्री कर सक्ता है? तुमने जो अपने शस्त्रोंसे जयद्रथको मारा उसका आश्चर्य्य आजतक है। हमें निश्चय है कि तुम एक दिनमें सब क्षत्रियोंका नाश कर सकते हो। हे पार्थ! हम यह जानते हैं कि आज कौरवोंकी सब

सेना नष्ट होगी जिस समय भीष्म और द्रोणाचार्य्य मर गये थे, तब ही हमने जान लिया था कि सेनाका नाश होगया और अब तो अनेक योद्धा भाग गये और हाथी घोड़े और रथोंका नाश होगया। हे महापराक्रमी अर्जुन। इस समय कौरवोंकी सेना ऐसी होगयी है, जैसे सूर्य्य, चन्द्रमा और तारोंसे रहित आकाश। जैसे इन्द्रने दानवोंकी सेनाका नाश कर दिया था ऐसे ही तुमने उस सेनाका नाश किया अब उधर केवल पांच महारथ शेष रहे हैं। अश्वत्थामा, कृतवर्म्मा, कर्ण, मद्रराज शल्य, और कृपाचार्य्य बचे हैं आज इन पांचोंको मारकर राजा युधिष्ठिरको बन, नगर, आकाश, पाताल, जल और द्वीपोंके सहित पृथ्वी दो। और शत्रुओंका नाश करो जैसे पहले समयमें विष्णुने दानवोंको मारकर इन्द्रको स्वर्गका राज दिया था ऐसे ही आज तुम इन सबको मारकर युधिष्ठिरको पृथ्वीका राज्य दो जैसे दानवोंके मरनेसे देवता प्रसन्न हुए थे, तैसे ही आज कौरवोंके मरनेसे पाञ्चाल प्रसन्न होयं। अब महाराज युधिष्ठिर सब जगत्के राजा होयं यदि तुम अश्वत्थामाको गुरुपुत्र और कृपाचार्य्यको गुरु जानकर इन दोनोंपर कृपा करो तो और सब बान्धवोंपर दयाकरो तो अपनी माताका अत्यन्त सम्बन्ध समझकर कृतवर्म्माको भी मत मारना। हे कमलनेत्र! यदि तुम राजा शल्यको अपना मामा समझकर न मारो तो भी इस पापी सदासे पाण्डवोंके द्वेषी कर्णको अपने तेजबाणोंसे अवश्य मारो हम भी जानते हैं कि कर्णके मारनेमें तुमको कुछ दोष न लगेगा और इस समय यही काम करना तुम्हें अवश्य है। देखो दुष्ट दुर्य्योधनने पुत्रोंके सहित तुम्हारी माताको जलानेका प्रबन्ध किया था, जुएमें बुलाकर, तुम लोगोंसे कैसा अधर्म्म किया था? तुम्हारे इन सब दुःखोंका मूल यह पापी कर्ण ही है और इसका दुर्य्योधनको बड़ा आश्रय है। हे अर्जुन! जब धर्म्मराजका दूत बनकर उसके घर गया तब उनसे मेरे पकड़नेका भी ठीक प्रबन्ध किया था। उस समय उसने कहा था एकले कर्ण ही निःसन्देह सब पाण्डवोंको युद्धमें जीतेंगे, कर्णहीका आश्रय लेकर दुर्य्योधनने यह युद्ध किया है दुर्य्योधनने तुम्हारे बलको जानता था तो भी उसने केवल कर्णके भरोसे यह युद्ध किया। कर्ण सदा कहता है, कि हम युद्धमें सब पाण्डवोंको महारथ कृष्णके सहित युद्धमें जीतेंगे, इन बातोंसे दुष्ट दुर्य्योधन प्रसन्न होता है जो कर्ण सदा सभामें गर्ज्जता था उसे आज तुम जीतो। दुर्य्योधनने जो तुम्हारे सङ्ग पाप किये हैं, इन सबका मूल महापापी कर्ण है। सुभद्रापुत्र, विशाल नेत्र द्रोण, अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य आदि महारथोंसे युद्ध करते हुए, हाथी घोड़े और महारथोंको काटते रथोंको वीरोंसे शून्य करते कौरवोंकी सेनाको भगाते बैलके कन्धेके समान ऊंचे कन्धेवाले कौरव और यदुकुलके यश बढ़ानेवाले अभिमन्युको जो छः महारथोंने मिलकर मारा हम शपथ खाकर सत्य कहते हैं कि उससे हमारा हृदय जला जाता है। वह अभिमन्यु अपने बलसे दुर्य्योधनकी सेनाको भस्म कर रहा था उस समय भी इसी दुर्य्योधनकी सहायतासे दुष्ट कर्णहीने हमारा द्वेष किया था। जब सुभद्रा पुत्र अभिमन्युके बाणोंसे इस दुष्टके शरीरसे रुधिर बहने लगा और सन्धि कटने लगीं तब उसके आगे खड़ा होकर युद्ध न कर सका तब अपने जीवनसे निराश होकर क्रोधसे सांस लेता हुआ युद्ध छोड़कर भाग गया, फिर एक कोनेमें जाकर और बाणोंसे व्याकुल होकर खड़ा होगया तब द्रोणाचार्य्यके समय अनुसार दुष्ट वचन सुनकर कर्णने उनका धनुष काट दिया तब उन्हें शस्त्रहीन जानकर छः महारथोंने मिलकर अधर्म्मसे मारडाला उस वीरके मरने

ही सब दुःखसे व्याकुल होगये; देखो सभामें भी दुष्ट दुर्योधन और कर्णही द्रौपदीको देखकर हंसे थे और द्रौपदीसे सब कौरवोंके बीचमें कहा था कि, हे कृष्णे! पाण्डवोंका नाश होगया। हे उत्तम कपर और बचनवाली। अब तू धृतराष्ट्रकी दासी होगयी, अब तू किसी दूसरेको अपना पति बनाले। हे कमल नयनी। अब पाण्डव तुम्हारे पति नहीं रहे अब तू धृतराष्ट्रके घरमें जाकर दासीका कामकर। हे सुन्दरी पाञ्चाली। अब तू दासकी स्त्री और दासी होगयी, दुर्योधन सब जगत्के राजा होगये। हे भद्रे। इस समय सब राजा दुर्योधनकी सेवा करते हैं। और पाण्डव नष्ट होगये, ये सब दुर्योधनके तेजसे परस्पर देख रहे हैं? ये सब पाण्डव नपुंशक होगये, और घोर आपत्तिमें पड़गये। अब ये सब राजाके दास होगये इनको आज्ञामें चलना पड़ेगा। यह बड़ा पापी है। इस दुष्टने जो कुछ वचन सुनाये थे, उन सबका उत्तर आज तुम्हारे सोनेके पङ्खवाले, शिला पर घिसे धनुषसे छूटे घोर बाण देंगे उस पापीके शरीरको काटेंगे तुम्हारे सोनेके पङ्खवाले, बिजलीके समान प्रकाशित बाणोंको देखकर दुरात्मा कर्ण, भीष्म और द्रोणाचार्य्यके बचनोंको स्मरण करे, आज तुम्हारे धनुषसे कूटकर तुम्हारे घोर बाण कर्णका कवच तोड़कर मर्म्मस्थान काट कर रुधिर पियेंगे। इस समय अब तुम्हारे घोर बाण कर्णको मारकर यमराजके घर पहुंचावेंगे, अब तुम्हारे बाणोंसे व्याकुल होकर अनेक बान्धव पृथ्वीमें पड़े शस्त्र रहित रुधिरसे भीगे कर्णको देखें आज कर्णकी रक्षा करनेवाला हाथियोंका झुण्ड तुम्हारे बाणोंसे व्याकुल होकर कांपता हुआ पृथ्वीमें गिरे, ध्वजा भी पृथ्वीमें गिरे, सहस्रों योद्धा और सुवर्ण भूषित रथके कटनेसे शल्य डरकर युद्ध छोड़कर भागे। हे अर्जुन! यदि तुम कर्णको देखते उसके पुत्रको प्रतिज्ञा करके मारोगे तो दुष्ट कर्ण भीष्म और द्रोणाचार्य्यके बचनोंको स्मरण करेगा, अधिरथ पुत्र कर्णको तुम्हारे बाणोंसे मरा हुआ देख दुर्योधन राजासे निरास होजायगा। हे भारत-कुल श्रेष्ठ! ये देखो कर्णके तेज बाणोंसे व्याकुल होकर पाण्डवोंको पुकारते हुए पाञ्चाल भाग जाते हैं। पाञ्चाल, द्रौपदीके पुत्र, धृष्टद्युम्न शिखण्ड, धृष्टद्युम्नके पुत्र, नकुल पुत्र, शतानीक, नकुल, सहदेव, दुर्मुख, जनमेजय, सुधर्मा और सात्यकी ये सब कर्णके बाणोंसे व्याकुल होगये हैं। हे शत्रुनाशन। ये देखो कर्णके बाणोंसे व्याकुल होकर तुम्हारे संबन्धी पाञ्चाल चिल्ला रहे हैं। ये महाधनुषधारी पाञ्चाल बड़े योद्धा हैं। मृत्युसे भी नहीं डरते देखो अभीतक इन्होंने युद्धको नहीं छोड़ा जिस अकेलेने अपने बाणोंसे पाण्डवोंकी सब सेनाको व्याकुल कर दिया था उस भीष्मसे भी पाञ्चाल नहीं भागे थे, जो पाञ्चाल नित्य अपना नाश देखकर भी उस समय युद्धसे नहीं भागे थे अब कर्णसे क्या भागेंगे, इसी प्रकार पाञ्चाल सब सेनामें मृत्युके समान घूमते हुए यह सब जगत्को धनुषधारियोंके गुरु द्रोणाचार्य्यके शस्त्ररूपी अग्निसे जलकर भी युद्धसे बिमुख नहीं हुए, ये सदा युद्धके लिये उत्साह करते रहते है सो आज कर्णके आगे क्यों भागेंगे? हे शूर। देखो बीर पाञ्चाल बाण छोड़ते हुए कर्णकी ओर इस प्रकार दौड़ रहे हैं। जैसे अग्निकी ओर पतङ्ग दौड़े। हे बीर। यह देखो ये पाञ्चाल कर्णकी ओर दौड़े चले जाते हैं। और कभी पीछेको हट जाते हैं। आहह? कर्णने इनकी कैसी दशा कर दी है, तथापि ये लोग अपने मित्रकी बिजयके लिये युद्धसे बिमुख नहीं होते, परन्तु कर्ण उनका नाश किये देता है। हे भारत! अब अगाध कर्णरूपी समुद्रमें डूबते हुए पाञ्चालोंको तुम नावके समान होजाओ, कर्णने जो ऋषिश्रेष्ठ यमदग्निपुत्र परशुरामसे शस्त्र बिद्या सीखी

हैं। यह उसीका महाप्रताप दीख रहा है, यह शस्त्र अपने तेजसे प्रकाशित होकर सब सेनाको व्याकुल और नाश कर रहा है, ये कर्णके बाण तुम्हारी सेनाको दुख देते हुऐ बनमें भौरोंके झुण्डके समान घूम रहे हैं।

हे भारत। ये पाञ्चाल कर्णके शस्त्रसे व्याकुल होकर चारों दिशाओंको भागे जाते हैं। इस शस्त्रको साधारण मनुष्य निवारण नहीं कर सक्ता। ये महा क्रोधी भीमसेन सृञ्जयोंके सहित अपने बाणोंसे कर्णको व्याकुल कर रहे हैं। जैसे रोग शरीरका नाश कर देता है ऐसे ही इस समय इस शस्त्र छोड कर कर्ण सृञ्जय, पाञ्चाल और पाण्डवोंका नाश कर देगा, युधिष्ठिरकी सेनामें तुम्हारे सिवाय और किसीको ऐसा वीर नहीं देखते जो कर्णसे युद्ध करके कुशल पूर्व्वक अपने घरको चला जाय, हे पुरुष सिंह। आज उस कर्णको अपने तेज बाणोंसे मार कर तुम अपनी प्रतिज्ञाको सत्य करो क्यों कि तुम ही एक कर्णको कौरवोंके सहित जीतनेमें समर्थ हो। हे नरोत्तम! इस महा कर्म्मको करके अर्थात् कर्णको मार कर तुम सुखी हो।

७२अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे भारत। कृष्णके ऐसे वचन सुन अर्जुन क्षण भर में आनन्द होगये तब कर्णके मारनेके लिये धनुष पर रोदा चढ़ाया और बहुत प्रसन्नता सहित युद्ध करनेको चले और बोले कि, हे कृष्ण! आप हमारे नाथ हैं। आपको नाथ पाकर सदा हमारी विजय होती है, आप जगत्के भूत और भविष्यतिके स्वामी हैं। हे कृष्ण। आपकी सहायतासे हम तीनों लोकोंको जीत सक्ते हैं। कर्ण बिचारेकी तो कथा ही क्या है? हे कृष्ण। आपकी कृपासे हम स्वर्गको भी जीत सक्ते हैं। देखो कर्ण बेडर होकर हमारी सेनामें घूम रहा हैं। और पाञ्चाल सेना भागी जाती है। हे कृष्ण। इस समय सब और इन्द्रके हाथसे छूटे हुए बज्रके समान कर्णका छोड़ा भार्गवास्त्र ही दिखाई देता हैं। जब तक पृथ्वी रहेगी, तभी तक मनुष्य हमारे और कर्णके युद्धका वर्णन करेंगे। हे कृष्ण! आज हमारे बाण गाण्डीवसे छूट कर कर्णका नाश करेंगे।

आज धृतराष्ट्र अपनी उस बुद्धिकी निन्दा करेंगे, जिससे उन्होंने आयोग्य दुर्य्योधनको राज दिया था, आज राजा धृतराष्ट्र राज्य, सुख, लक्ष्मी, सेवक, नगर और पुत्रोंसे छूट जांयगे हे कृष्ण। जो मूर्ख राजा गुणवानका निरादर और मूर्खोंका आदर करता है। उसे नाश होनेके पश्चात् शोच करना पड़ता है। हे कृष्ण। जैसे कोई मनुष्य आमका बन काट कर पीछे शोच करता है। इसी प्रकार आज सूतपुत्रके मारे जानेसे दुर्य्योधन निरास होजांयगे।

हे कृष्ण। हम आपसे सत्य कहते हैं, कि कर्णके मारे जानेसे राज्य और जीवनसे दुर्य्योधन निरास हो जावेंगे। आज कर्णको मेरे बाणोंसे कटा हुआ देख राजा तुम्हारे शांति भरे बचनोंको स्मरण करें। आज सुबलपुत्र शकुनि, मण्डलाकार गाण्डीवसे छूटे बाण और मेरे रथको देखकर अपने पापोंको स्मरण करेगा। हे कृष्ण। आज हम अपने तेज बाणोंसे कर्णको मार कर महाराज कुन्तीपुत्रका सब दुःख दूर करेंगे। आज मेरे बाणोंसे कर्णको मरा देख कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर बहुत प्रसन्न होकर सुख भोग करेंगे। हे कृष्ण। आज मैं शत्रुओंके नाश करनेवाला, घोर बाण कर्णको और चलाऊंगा, उसीसे वह मर जायगा, उस दुष्टने यह प्रतिज्ञाकी है, कि मैं बिना अर्जुनके मारे पैर नहीं धोऊंगा, आज उस पापीको यह प्रतिज्ञा झूठी करके अपने बाणोंसे मार कर पृथ्वीमे गिराऊंगा। जो जगत्में अपने

समान योद्धा किसीको नहीं समझता आज भूमि इसी कर्णका रुधिर पीवेगी। सूतपुत्र कर्णने जो धृतराष्ट्रकी सभामें द्रौपदीको कहा था कि पाण्डु तेरे पति नहीं हैं और अपने गुणोंको प्रशंसाकी थी, आज सांपके समान विष भरे मेरे बाण उस बचनका उत्तर देंगे, और रुधिर पियेंगे, आज मेरे धनुषसे छूटे हुए बिजलीके समान बाण कर्णको परमगति देंगे, कर्णने जो पाण्डवोंकी निन्दा करके द्रौपदीको कठिन बचन कहे थे, आज उनको स्मरण करके बहुत ही दुःख पावेगा। जो पाण्डव उस समय नपुंसक थे वही आज दुरात्मा सूत-पुत्रके मरनेसे महा पुरुष होजायगी, कर्णने जो, अपनी प्रशंसा करके धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे कहा था, कि हम पाण्डवोंसे तुम्हारी रक्षा करेंगे, सो उस बचनका मेरे बाण मिथ्या कर देंगे। जिस कर्णने यह कहा था कि, हम एकले ही पुत्रों सहित पाचों पाण्डवोंको मार डालेंगे आज उस कर्णके मरनेसे पाण्ड-वोंका सब उद्योग सफल होगा। जिसके बलके आश्रयसे धृतराष्ट्रका पुत्र अपनी मूर्खता और दुष्टतासे पाण्डवोंका निरादर करता था, आज उस कर्णको हम सब धनुषधारियोंके देखते देखते मारेंगे। उसके मरनेसे हमारे भाई बहुत प्रसन्न होंगे, आज मैं अपने कान-तक अनेक बाण खींचकर छोड़ेंगे और शत्रु-ओंको डरावेंगे। हाथी, घोड़े और मनुष्योंको गिराकर भूमिकी शोभा बढावेंगे। उसी घोर युद्धमें महा बलवान कर्णको अपने बाणोंसे मारेंगे, उसके मरनेसे धृतराष्ट्रके पुत्र राज्यके सहित इधर उधरको ऐसे भागेंगे जैसे सिंहके डरसे मृग। आज कर्ण मरनेसे राजा दुर्य्यो-धन अपने आत्माको शोचेंगे, आज बन्धु बान्धव सहित कर्णको मारूंगा। बन्धु बान्धव सहित कर्णको मरा आज देख महाबलवान धृतराष्ट्रपुत्र अपने आत्माको शोचेंगे। आज दुर्य्योधन पुत्र, पौत्र और बान्धवोंके सहित कर्णको मरा देखकर जानेगी कि अर्जुनके समान जगत्में कोई धनुषधारी नहीं है। आज बन्धु बान्धव और सेवकोंके सहित राजा धृत-राष्ट्र अपने राज्यसे भ्रष्ट होंगे। आज कर्णके मांसको गिद्ध, कौवे और शियार खांयगी। हे मधुसूदन! आज राधापुत्रके शरीरको कौवे खांयगे, और इधर उधर लेकर उड़ेंगे। आज तेज शिलापर घिसे हुए बाणोंसे सब धनुषधारि-योंके देखते देखते हम कर्णका शिर काटेंगे। आज मैं युद्धमें दुरात्मा राधापुत्रके शरीरोंको काटूंगा, आज महाराज युधिष्ठिर बहुत दुःखसे छूट जावेंगे। हे केशव! जब हम बान्धवोंके सहित कर्णको मारेंगे, तब महाराज युधि-ष्ठिर अपने हृदयके दुःखको अवश्य छोड़ेंगे। आज हम कर्णको मारकर महाराज युधिष्ठि-रको बहुत प्रसन्न करेंगे। आज मैं सुवर्णके कवच और मणिजटित कुण्डलधारी बीरोंको मारकर पृथ्वीको पूरित कर दूंगा। हे मधु-सूदन। हे कृष्ण! आज मैं अभिमन्युके सब शत्रुओंका शिर काटकर अपने भाई महाराज युधिष्ठिरको सब कौरवोंको मारकर पृथ्वीका राज्य दूंगा।

हे केशव! अथवा आज तुम पृथ्वीको अर्जु-नसे रहित देखोगे, आज मैं धनुषधारियोंके ऋणसे छूटूंगा। आज मैं क्रोध, कौरवोंका ऋण और तेरह बरष इकट्ठा हुआ, जो दुःख है उससे छूटूंगा। जैसे इन्द्रने शम्बरासुरको मारा था, तैसे ही आज मैं कर्णको मारूंगा, उसके मरनेसे सोमकवंशी महारथ बहुत प्रसन्न होंगे और हमारे कर्णके बलको समझेंगे। हे माधव! ये सब मित्रोंके लिये युद्ध करनेको आये थे सात्यकि भी हमारे इस कर्मसे सन्तुष्ट होंगे, आज मैं कर्णके महारथ पुत्रको भी मारूंगा। इससे भीमसेन, नकुल, सहदेव, सात्यकि, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, और

देशीय वीर प्रसन्न होंगे, आज मैं सब ऋणोंसे छूटूंगा। आज वीर अर्ज्जुनके पराक्रमको सब योद्धा देखें, हम आपके आगे अपनी प्रशंसा करते हैं। जिस समय हम सूतपुत्रको मारेंगे और धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे युद्ध करेंगे, तब सब योद्धा हमारे बलको देखेंगे, मेरे समान धनुर्वेदका जाननेवाला, बलवान, क्रोधी, क्षमावान, और योद्धा जगत्में कोई नहीं है, मैं अपने बलसे धनुष धारण करके देवता और राक्षसोंके सहित सब जगत्को नाश कर सक्ता हूं जैसे गर्मीके दिनोंमें अग्नि काष्टको जलाती है, ऐसे ही मैं गाण्डीवसे छूटे बाणोंसे इस सब सेनाको नाश कर सक्ता हूं। मेरे हाथमें पैरोंमें अनेक उत्तम रेखा हैं। मेरे समान मनुष्योंको युद्धमें कोई नहीं जीत सक्ता ऐसे कहते कहते अर्ज्जुनके नेत्र लाल होगये, तब वे भीमसेनको युद्धसे छुड़ानेके लिये और युद्ध करनेको गये।

७४ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे तात सञ्जय! इस कौरव और सञ्जयोंके समागममें जिस समय हमारे पुत्रोंको घोर आपत्तिका समय आया और अर्ज्जुन कर्णसे युद्ध करनेको चले तब आगे क्या हुआ?

सञ्जय बोले, हे राजन्! वह इकट्ठी हुई सेना उस समय अनेक ध्वजाओंसे शोभित थी अनेक मेघोंके समान भेर और नगारे बज रहे थे, उस सेनामें हाथी, बाण पानीकी धार; सेनिके कवच और शस्त्र बिजलीके समान दीख पड़ते थे, वह घोररूपी रुधिरको बहानेवाला, चमकते हुए खड्गोंसे युक्त, क्षत्रियोंको नाश करनेवाला, दुःखदायक, प्रजाका नाश करनेके लिये ऊपर लिखा मेघ वर्षने लगा। कहीं अनेक वीर एक वीरसे युद्ध करने लगे, कहीं अनेकसे और कहीं एक एकसे युद्ध करने लगे। कहीं रथमें बैठे हुए वीरने घोड़े, सारथी और योद्धोंके सहित रथको काट दिया। कहीं हाथीपर चढ़े एक वीरने अनेक और रथोंको नाश कर दिया। अर्ज्जुनने व बाणोंसे रथ, सारथी, घोड़े, वीर, घोड़ चढ़े वीर और अनेक हाथियोंको मारडा कृपाचार्य्यसे शिखण्डी, दुर्य्योधनसे, सात्य श्रुतसोम, अश्वत्थामासे, युधामन्य, चि नसे, महारथ कर्णपुत्र सुषेणसे, सृञ्जयः उत्तमौजा और जैसे शार्दूल सिंहको ओर दं ताहै ऐसे ही शकुनीसे युद्ध करनेको स चले, नकुलके पुत्र तरुण, शतानीक, कर्ण वृषसेनसे युद्ध करनेको चले, तब शतानी कर्णके पुत्रको ओर, कर्णके पुत्रने शतानी शरीरमें सहस्रों बाण मारे, महापरा विचित्र योद्धा माद्रीपुत्र नकुलने कृतवर्म्मा और बाण चलाये, सेनापति पाञ्चालदेशके राजा धृष्टद्युम्न एकले ही सेनाके सहित कर्णसे युद्ध करने लगे। हे भारत! तुम्हारी संशप्तक सेनाके सहित बली दुःशासन शस्त्र जाननेवा लोंमें श्रेष्ठ भीमसेनसे युद्ध करनेको उपस्थित हुए उत्तमौजा क्रोध करके कर्णके पुत्रसे युद्ध करने लगे। अनन्तर एक बाणसे उसका शिर काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया, वह शब्दसे आकाश और भूमिको पूरित करता हुआ पृथ्वीमें गिर पड़ा। उस अपने पुत्रका शिर कटा देख कर्ण रोने लगे और क्रोध करके उत्तमौजाके रथ, घोड़े, ध्वजाको काट दिया तब महापराक्रमी उत्तमौजा भी कर्णके बाणोंसे व्याकुल होकर खड्ग लेकर रथसे उतरे और कृपाचार्य्यके रथके पहियोंकी रक्षा करनेवा लोंको मारकर शिखण्डीके रथपर चढ़ गये। शिखण्डीने कृपाचार्य्यके रथको काट दिया, परन्तु विरथ कृपाचार्य्यको फिर मारना धर्म्म न समझा तब अश्वत्थामाने कृपाचार्य्यको अपने रथपर चढ़ाकर इस प्रकार बचाया जैसे कीच-

ड़में फसी गायको कोई बचावे, जैसे गर्मीके समयमें दो पहरका सूर्य्य प्रजाको तपाता है ऐसे ही सुवर्ण कवचधारी भीमसेनने अपने बाणोंसे दुःशासनकी सेनाको दुःख देने लगे।

७५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! इस घोर युद्धमें एक वीर अनेक वीरोंसे युद्ध करने लगा। तब भीमसेनने अपने सारथीसे कहा तुम हमारे रथको दुःशासनकी ओर ले चलो। हे सारथी! तुम बहुत वेगसे इस धृतराष्ट्रके पुत्रकी सेनाकी ओर जाओ हम अपने बाणोंसे इस सब सेनाका नाश करेंगे। भीमसेनके ऐसे वचन सुन उनका सारथी तुम्हारे पुत्रकी सेनाकी ओर चला जहां भीमसेनकी जानेकी इच्छा थी वहीं सारथी बहुत शीघ्रता सहित लेगया, तब तुम्हारी ओरसे भी अनेक हाथी, घोड़े और रथोंपर चढ़े योद्धा तथा पदाति भीमसेनसे युद्ध करनेको चले उन्होंने महावेगवान भीमसेनके रथकी ओर सहस्रों बाण चलाये उन बाणोंको आते देख महावीर भीमसेनने उन सब बाणोंको काट दिया। हे राजेन्द्र! वे सोनेके पङ्खवाले बाण भीमसेनके बाणोंसे कटकर पृथ्वीमें गिर गये, इतने ही समय है भीमसेनने तुम्हारी सेनाके कितने ही हाथियोंको मारडाला अनेक घोड़े और रथ काट कर पृथ्वीमें गिर गये। उस समय भीमसेनके बाणोंसे कट कर गिरते हुए हाथियोंका ऐसा शब्द होता था, जैसे वज्रसे कटतेहुए पर्व्वतोंका, जैसे फूलयुक्त वृक्षपर अनेक पक्षी दौड़ते हैं। ऐसेही तुम्हारी सेनाके अनेक वीर भीमसेनकी ओर दौड़े तब भीमसेनने अपने घोर पराक्रमको प्रगट किया, जैसे प्रलयकालमें दण्ड धारण करके यमराज प्रजाको नाश करनेके लिये दौड़ते हैं। ऐसे ही भीमसेन तुम्हारी सेनाका नाश करने लगे। उस समय महा पराक्रमी भीमसेनके शस्त्रोंको कोई योद्धा न सह सका। हे भारत! जैसे प्रलयकालमें कोई नाश करते यमराजको नहीं देख सक्ता। ऐसे ही कोई योद्धा भीमसेनकी ओर न देख सका, इस प्रकारसे सेनाका नाश करते देख तुम्हारी सेना चारों ओरको इस प्रकार भागने लगी जैसे वायुके लगनेसे मेघ। तब महा बुद्धिमान भीमसेनने प्रसन्न होकर अपने सारथीसे कहा, हे सूत! हम इस समय युद्ध कर रहे हैं। इस-लिये हमें अपनी और कौरवोंकी सेना नहीं देखाई देती है। परन्तु तुम सबकी ध्वजाओंको पहचानते हो, इसलिये तुम ऐसी युक्ति करना जिससे हम अपनी सेनाको बाणोंसे न मार सकें। हे सूत! इस समय हमारे सब शत्रु प्रसन्न हो रहे है। और हमें यह जान पड़ता है कि महाराज! बहुत पीड़ित हैं। क्यों कि अर्ज्जुन उन्हें देखकर अभीतक नहीं लौटे इसीसे हमारा हृदय इस समय दुःखसे व्याकुल हो रहा है। हमें यह विचार कर बहुत दुःख होता है। कि धर्म्मराज हमें युद्धमें अकेला छोड़कर चले गये, न जाने वे अब जीते हैं कि मर गये। अर्ज्जुन भी अभीतक लौट कर नहीं आये, जो हो अब हम इस घोर सेनाका नाश किये विना न लौटेंगे। इन सबको मार कर तुम्हारे सहित प्रसन्न होंगे, हे सारथे! तुम शीघ्र हमारे रथमें देखो कि कौनसी जातिके कितने बाण तूणीर शेष बचे हैं?

विशोक बोला, हे कुन्तीपुत्र वीर! इस समय आपके रथमें साठ हजार मार्गण क्षुरप्र और भल्ल दश दश सहस्र, दो सहस्र नाराच, तीन सहस्र प्रदर शेष हैं। ये सब अस्त्र इन छः बैल-वाले छकड़ोंसे अलग हैं। हे विद्वन्! आप इनको छोड़िये पश्चात् आपके हाथोंका धनुष गदा तो रक्खी हो है, तुम अपने शस्त्रोंको थोड़ा जान कर घबड़ाओ मत अभी रथमें अनेक खड्ग, मुद्गर, भाले और सांगी भरे हैं।

भीमसेन बोले, हे सूत! अब तुम भीमसेनके बाणोंसे राजोंको मरते सूर्य्यको छिपे और आकाशको पूरित देखोगे, अब मैं इस सेनाको यमराजकी पुरीके समान करे देता हूं। आजसे सब राजोंको यह बात स्मरण रहेगी कि एकले भीमसेनने सब कौरवोंको जीत लिया। आज ये सब कौरव मरकर पृथ्वीमें गिरे या सब मिल-कर अकेले भीमसेनको गिरावे, आजसे यह कीर्त्ति सदाके लिये स्थिर हुई इस समय मेरी यही आशा है। सब देवता इसकी पूर्ण करो, जैसे यज्ञमें इन्द्र जाते हैं। तैसे ही इस समय शत्रुनाशन अर्ज्जुन यहां पहुंच जायं इधर देखो ये कौरवोंकी सेनाके प्रधान राजा क्यों भागे जाते हैं। निश्चय अर्ज्जुन आगये, और इसी सेनासे युद्ध कर रहे हैं। हे विशोक! ये देखो ये हाथी, घोड़े भगे चले आते हैं। ये अनेक बाण शक्ति और तोमरोंसे व्याकुल अनेक वीर, इधर उध-रको भाग रहे हैं। अब तुम खड़े होकर अर्ज्जु-नकी ध्वजा देखो, ये अर्ज्जुनकी सुवर्ण पङ्खवाले, बाणोंसे पीड़ित कौरवोंकी सेना इधरको भागी जाती है, जैसे बनमें आग लगनेसे हरिन भागते हैं तैसे हाथी, घोड़े, रथ और पदाति अपनी सेनाको मारते हुए भागे जाते हैं। हे विशोक! ये देखो अनेक हाथी हाहाकार करते हुए इधर उधरको भाग रहे हैं।

विशोक बोला, हे भीमसेन! क्या तुम्हारे कान फूट गये? तुम क्रोध भरे अर्ज्जुनके हाथसे खिचते हुए गाण्डीवका घोर शब्द नहीं सुनते? हे पाण्डव। अब आपके सब काम सिद्ध होगये, ये देखो इस हाथी सेनामें काले मेघोंमें वर्षा-न्तमें बिजलीके समान बानर युक्त ध्वजा दीख रही है, और ये अर्ज्जुनका घूमता हुआ धनुष भी देख पड़ता है ये शत्रुनाशन अर्ज्जुनकी ध्वजा पर बैठा हुआ वंदर चारों ओर देखता है, और शत्रुओंको डराता है, मैं भी इसे देख--डर रहा हूं, ये देखो अर्ज्जुनके माथेपर मुकुट कैसा शोभा देता है, इसके बीचमें यह मणि सूर्य्यके समान चमक रही है, ये देखो इनके पास उत्तम शब्दवाला अत्यन्त सफेद देवदत्त शङ्ख रक्खा है, ये कृष्ण घोड़ोंकी रास लिये शत्रुओंकी सेनामें रथको घुमा रहे हैं। देखो कृष्णके पास अत्यन्त तेज वज्रके समान दृढ़ सदा यादवोंसे पूजित चक्र रक्खा है, ये देखो अर्ज्जुनके बाणोंसे कटकर वृक्षके समान हाथि-योंके सूंड़ कटते हैं। और घोड़े वीरोंके सहित मर कर गिर रहे हैं। हे कुन्तीपुत्र! ये चन्द्र-माके समान सफेद पाञ्चजन्य शङ्ख श्रीकृष्णके पास रक्खा है। और ये इनके हृदयमें कौस्तुभ मणि चमक रही है, निश्चय महारथ अर्ज्जुन अपने बाणोंसे शत्रुओंका नाश करते हुए बहुत उत्तम सफेद मेघके समान रङ्गवाले, घोड़ोंके रथ पर बैठे हुए इधर ही को चले आते हैं, जैसे गरुड़के पङ्खका वायु लगनेसे बनके वृक्ष गिरते हैं ऐसेही इन्द्रके समान तेजस्वी अर्ज्जुनके बाणोंसे ये हाथी, घोड़े और पदाति गिर रहे हैं।

अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे इतने ही समयमें घोड़े और सारथियों समेत चार सौ रथ, सातसौ हाथी और अनेक घोड़े और पदाति मारडाले, अब ये बलवान् अर्ज्जुन हमारे पास चले आते हैं ईश्वर करे आपकी अवस्थाकी और बलकी वृद्धि हो अब शत्रुओंका नाश होगा।

भीमसेन बोले, हे विशोक! तुमने जो हमें अर्ज्जुनको दिखाया इससे हम प्रसन्न होकर तुम्हें चौदह बड़े बड़े गाम, सौ दासी और बीस रथ, देते हैं।

७६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! भीमसेनका सिंह-नाद और रथका शब्द सुनकर अर्ज्जुन श्रीकृष्णसे बोले कि, रथ शीघ्र हांको अर्ज्जुनके बचन सुन श्रीकृष्ण बोले, अब हम भीमसेनके पास शीघ्र हां-

जाते हैं। अनन्तर सोनेकी मणि और मोतियोंसे भूषित शङ्खके समान घोड़ोंको श्रीकृष्णने शीघ्र हांका। उस समय अर्ज्जुन इस प्रकार युद्ध करनेको चले, जैसे जम्भासुरको मारनेके लिये इन्द्र वज्र लेकर चले थे, अर्ज्जुनके घोड़ोंके खुर पहिये और धनुषका शब्द सुन कर अनेक योद्धा क्रोध करके जयके लिये चले, अनेक हाथी, घोड़े और रथ भी चले, जैसे बिजयी इन्द्रने तीन लोकके सुखके लिये दानवोंसे युद्ध किया था, ऐसे ही अर्ज्जुनने एकले ही उन सबके हाथ और शिर अनेक अर्द्धचन्द्र, क्षुर और अनेक भल्लोंसे काट दिये, जैसे आंधी चलनेसे वनके वृक्ष गिर जाते हैं, तैसे ही अर्ज्जुनके बाण लगनेसे छत्र, चमर और पङ्खोंके सहित अनेक राजा मर कर पृथ्वीमें गिर गये, जैसे जलते हुए वन शोभित होते हैं ऐसे ही स्वर्ण जाल ध्वजा और वीरोंके सहित बाण लगनेसे हाथी शोभित हुए, जैसा पहले समयमें इन्द्रबल नामक राक्षसको मारने गये थे, ऐसे ही अर्ज्जुन भी अपने वज्रके समान बाणोंसे हाथी, घोड़े, रथ और पदातियोंसे भरी हुई सेनाको मार कर कर्णको मारने गये। जैसे मगर समुद्रमें जाता है, ऐसे ही महाबाहु, पुरुषसिंह, शत्रुनाशन अर्ज्जुनने भी तुम्हारी सेनामें प्रवेश किया। हे राजन्! तुम्हारी ओरसे भी अनेक योद्धा हाथी, घोड़े रथ और पदातियोंके सहित अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको चले, जैसे चढ़ते हुए समुद्रका सब्द होता है ऐसे ही इस तुम्हारी सेनाका घोर शब्द हुआ, तुम्हारी सेनाके वीर मरनेका भय छोड़ कर अर्ज्जुनकी ओर इस प्रकार दौड़े, जैसे सिंह सिंहपर दौड़े, जैसे आंधी मेघोंको व्याकुल कर देती है, ऐसे ही उस शस्त्र चलाती सेनाको अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे व्याकुल कर दिया, अनन्तर सब वीर इकट्ठे हो रथोंपर बैठकर अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको आये, तब अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे सहस्रों हाथी, घोड़े और मनुष्योंको मार डाला। अर्ज्जुनके बाणोंसे व्याकुल होकर वे सब वीर अपने अपने स्थानोंपर मूर्च्छित होने लगे। अर्ज्जुनने उस समय अत्यन्त यत्न करते हुए चार सौ वीरोंको मार डाला अनन्तर अर्ज्जुनके उन महा घोर बाणोंसे व्याकुल होकर वे सब बीर इधर उधरको भागने लगे। जैसे समुद्रका जल पर्व्वतमें लगनेसे गर्ज्जता है, ऐसे ही उस भागती हुई सेनाका शब्द होने लगा। उस सेनाको अपने बाणोंसे व्याकुल करके अर्ज्जुन कर्णकी सेनाकी ओर चले, जैसे सांपोंके कुण्डमें आते हुए गरुड़का शब्द होता है, ऐसे ही सेनामें जाते हुए अर्ज्जुनका घोर शब्द होने लगा, उस शब्दको सुनकर महाबलवान भीमसेन बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने अर्ज्जुनको देखनेकी इच्छा की, अर्ज्जुनको आते सुन महाप्रतापी भीमसेन प्राणोंका भय छोड़कर तुम्हारी सेनाका नाश करने लगे। वह वायुके समान पराक्रमी वायुके समान चलनेवाला वायुपुत्र भीमसेन तुम्हारी सेनामें वायुके समान घूमने लगे। हे महाराज। तुम्हारी सेना भीमसेनके बाणोंसे ऐसे व्याकुल होगयी जैसे टूटी हुई नाव समुद्रमें व्याकुल होजाती है भीमसेन उस समय अपने हाथोंकी शीघ्रता दिखाते हुए अपने बाणोंसे तुम्हारी सेनाका नाश करने लगे। जैसे प्रलयकालमें यमराजका रूप देखकर प्रजा घबराती है ऐसे ही इस समय भीमसेनका रूप देखकर तुम्हारी सेनाके वीर डरने लगे, अपने महाबलवान वीरोंको भीमसेनके बलसे व्याकुल देखकर राजा दुर्य्योधन ऐसे वचन बोले, तुम सब साधारण और प्रधान योद्धा भीमसेनको मारो, इसके मारे जानेसे पाण्डवोंकी सब सेना आपसे आप मर जायगी।

तुम्हारे पुत्रकी ऐसी आज्ञा सुन सब राजोंने भीमसेनको बाणोंसे छा दिया, अनेक पैदल और हाथियोंपर चढ़े बीर भी भीमसे-

नको ओर दौड़े अनेक रथपर चढ़े योडा भी भीमसेनसे युद्ध करने लगे। वीर भीमसेन इन सब वीरोंसे घिरकर इस प्रकार शोभित हुए, जैसे पूर्ण चन्द्रमा तारोंके सहित होवे, उस समय पुरुषश्रेष्ठ भीमसेन साक्षात् अर्ज्जुनके समान दीखने लगे। वे सब राजा भी क्रोधसे लालनेत्र करके भीमसेनको मारनेके लिये अनेक प्रकारके बाण बर्षाने लगे। जैसे मछली जालसे निकल जलमें घूमने लगती है, ऐसे ही भीमसेन उस सेनाको मारकर बाहर निकले, भीमसेनने उस समय युद्धसे न लौटनेवाले दश सहस्र हाथी मारे और दो सौ मनुष्य मारे, पांच सहस्र घोड़े और सौ रथ काट डाले। उस स्थानमें रुधिरकी नदी बहने लगी, उस नदी में रुधिर जल, रथ भवर, हाथी ग्राह, मनुष्य मछली, घोड़े नक्र, और बाल सिवारसे देखने लगी, मणियुक्त कटे हुए हाथ साप, जाघ ग्राह, चर्बी कीचड़, और शिर पत्थरसे दीखते थे, धनुष कांश, बाण घासके समान दीखने लगे। गिरे हुए गदा और परिघ दोनों तट छत्र हंस, ध्वजा, जन्तु गिरी हुई पगड़ी फेनके समान होगई। हार पद्म और धूल तरङ्गके समान उठने लगी, उस नदीको वीर लोग सुखसे पार होते थे, और डरपोक देखकर भागते थे। वह वीररूपी ग्राहोंसे भरी नदी उस युद्धसे बहकर यमलोकको चली, जैसे बैतरनीको देखकर पापी डरते है ऐसे ही उस घोर नदीको देखकर कादर डरने लगे। जहां जहां महारथ भीमसेन जाते थे, वहीं सैकड़ों और सहस्रों वीरोंका नाश करते थे। दुर्य्योधन इस भीमसेनके घोर कर्मको देख शकुनिसे बोले, हे मामा। इस महाबलवान भीमसेनको युद्धमें जीतो इसके जीतनेसे पाण्डवोंकी सब सेना हार जायगी। तब महापराक्रमी सुबल पुत्र शकुनि अपने भाइयोंके सहित भीमसेनसे घोर युद्ध करनेको , जैसे पर्व्वतमें लगनेसे समुद्रका वेग कम-

होजाता है ऐसे ही शकुनिके आनेसे भीमसे
नका वेग कम होगया, तब भीमसेनने भी क्रो
करके शकुनिसे युद्ध करनेकी इच्छाकी, उ
समय शकुनिने भीमसेनके बाए हाथको सनि
सोनेके पङ्खवाले अनेक बाण मारे। वे बा
महात्मा भीमसेनके कवचको काटकर शरीर
घुस गये, उन सोने और पक्षियोंके पङ्खोंसे यु
बाणोंके लगनेसे भीमसेनने क्रोध करके ए
सोनेके पङ्खवाला तेजबाण शकुनिको भे
चलाया, उसे आता देख शत्रुनाशन शकुनि
शीघ्रतासे अपने बाणोंसे सात खण्डकरके गि
दिया। हे राजन्। उसके कटनेसे भीमसेन
महाक्रोध हुआ, फिर हंसकर एक बाणसे श
निका धनुष काट दिया। प्रतापी शकुनि
भी उस धनुषको फेंककर शीघ्रता सहित दूस
धनुष लेकर सोलह बाण चलाये उनमेंसे
सारथीके सात भीमसेनके एक ध्वजामें दो छ
और चार चारों घोड़ोंके मारे, तब प्रता
भीमसेनने महाक्रोध किया और एक घ
साङ्गि शकुनिकी ओर चलायी वह भीमसेन
हाथसे छूटकर सापकी जीभके समान लहरा
हुई शकुनिकी ओर चली तब शकुनिने उ
सुवर्णमयी शक्तिको हाथसे पकड़कर क्रोध व
भीमसेनपर चलायी वह महात्मा भीमसेन
बायें हाथको छेदकर आकाशसे गिरी हु
बिजलीके समान पृथ्वीमें गिर गई उस समय
आपकी सेना प्रसन्न होकर चारों ओरसे गर्जन
लगी, परन्तु भीमसेनने उस गर्जनेको सहा
नहीं किया और शीघ्रतासे फिर धनुष लेकर
मृत्युके भयको छोड़ कर शकुनिकी स
सेनाको क्षण मात्रमें बाणोंसे छा दिया, अनन्तर
बहुत शीघ्रता सहित शकुनिके घोड़े और
सारथीको मारके ध्वजा काट दी तब शकुनि
क्रोधसे सास लेते उस रथसे उतरे और ला
नेत्र करके धनुषको टङ्कारने लगे और बड़े
भीमसेनकी ओर अनेक बाण चलाने लगे

परन्तु प्रतापी भीमसेनने इनके सब शस्त्रोंको काट दिया, और एक बाणसे उसका धनुष काटकर उनके शरीरमें अनेक बाण मारे, शत्रुनाशन शकुनि बलवान शत्रुके बाणोंसे पीड़ित होकर मूर्च्छित हो पृथ्वीमें गिर पड़े। हे पृथ्वीनाथ! इन्हें व्याकुल देख तुम्हारे पुत्रने अपने रथपर चढा भीमसेनके आगेसे भगा दिया, उस समय अकेले भीमसेनने सब सेनाको जीत लिया, जिस समय शकुनि भीमसेनके बाणोंसे व्याकुल हुए, उस समय तुम्हारी सेना डरके मारे इधर उधर भागने लगी, तब तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन भी भयसे व्याकुल होकर शकुनि बचेंगे कि नहीं यह शोच करते हुए रथको दौड़ाकर युद्धसे भागे। स्वयं राजाहीको युद्धसे भागते देख तुम्हारी सेनाके सब प्रधान वीर भागने लगी, उन्हें भागता देख अनेक बाण छोड़ते हुए भीमसेन उनके पीछे दौडे। हे राजन्! तब वे सब तुम्हारे पुत्र भीमसेनके बाणोंसे व्याकुल होकर कर्णके पास जाकर खड़े हुए, जैसे डूबते हुए मनुष्य द्वीप अर्थात् थाहमें पहुंचकर सुख पाते हैं। ऐसे ही वे सब योद्धा महवीर कर्णके पास जाकर सुखी हुए, हे पुरुषसिंह! जैसे डूबते हुओंको नाव मिलती है। ऐसे ही तुम्हारे पुत्रोंको कर्ण मिल गये, वहां आकर सब सावधान हुए, और एक दूसरेसे कुशल पूछने लगे, थोड़े समयके पश्चात फिर युद्ध करनेको चले, और यह समझ लिया कि मृत्यु रोकनेसे नहीं रुकती है।

७७ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जब भीमसेनके डरसे हमारी सेना भागी तब दुर्य्योधन और शकुनिने क्या किया? विजय करनेवालोंमें श्रेष्ठ कर्ण, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा, कृतवर्म्मा, और दुःशासन आदि हमारे वीरोंने क्या किया? हमें भीमसेनका यह पराक्रम सुनकर बहुत ही आश्चर्य्य होता है। कि वह अकेला ही हमारी सब सेनासे युद्ध करता रहा अकेले राधापुत्र शत्रुनाशन कर्णने भी अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार शत्रुओंका नाश किया, उस समय हमारी सेनाकी रक्षा और कल्याणका भार कर्णही पर था। उन्होंने कुन्तीपुत्रका ऐसा घोर पराक्रम देख क्या किया? अथवा हमारे महापराक्रमी पुत्र और महारथ राजोंसे क्या किया? सो तुम हमसे कहो, क्यों कि ये सब विषय तुम्हारा जाना है।

सञ्जय बोले, हे महाराज! जिस समय भीमसेनके देखते कर्णने सोमकवंशका नाश किया। उस समय दिनके दो भाग बीत गये थे, भीमसेनने भी अपने बलसे तुम्हारी सेनाका नाश किया, तब कर्णने शल्यसे कहा कि हमारा रथ पाञ्चाल सेनामें ले चलो। भीमसेनके बलसे अपनी सेनाको व्याकुल देख कर्ण पाञ्चाल सेनाकी ओर चले, महाबलवान मद्रराज शल्यने कर्णके बचन सुन अत्यन्त शीघ्र चलनेवाले, सफेद घोड़ोंको चेदि, पाञ्चाल और करुष देशीय सेनाकी ओर हांका, वहां जाकर मद्रराजने कर्णको इच्छानुसार घोडोंको हांका उस सिंहके चमड़ेसे मढ़े हुए और मेघके समान शब्दवाले रथको देखकर पाण्डवोंकी सेना डरने लगी, हे पृथ्वीनाथ! उस समय युद्धभूमिमें उस रथका ऐसा शब्द हुआ जैसे मेघ गर्ज्जता है, अथवा पर्व्वत फटता है। कर्णने अपने कान तक बाण खींचकर पाण्डवोंके सहस्रों योद्धाओंको मारडाला, इस प्रकार अपनी सेनाका नाश होते देख पाण्डवोंके प्रधान महारथ बिजयी कर्णसे युद्ध करनेको चले, शिखण्डी, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव, द्रौपदीके पुत्र और सात्यकि ये सब इकट्ठे होकर कर्णके ऊपर बाण बर्षाने लगी। सात्यकिने बीस बाण कर्णके कण्ठमें मारे, और शिखण्डीने पचीस,

धृष्टद्युम्नने सात, द्रौपदीके पुत्रोंने चौंसठ, सहदेवने सात और नकुलने सौ तेजबाण कर्णके शरीरमें मारे, उसी समय महापराक्रमी भीमसेनने क्रोध करके कर्णके कण्ठमें नब्बे तेजबाण मारे। तब महापराक्रमी कर्णने क्रोध करके अपना उत्तम धनुष घुमाया और अनेक तीक्ष्ण बाण छोड़े। हे भरत कुलसिंह! कर्णने सब वीरोंके शरीरमें पांच पांच बाण मारे, सात्यकिका धनुष और ध्वजा काट दी, और नौ बाण सात्यकिके हृदयमें मारे, फिर क्रोध करके भीमसेनकी ओर बीस बाण चलाये एक बाणसे सहदेवकी ध्वजा काट दी और तीन बाण उनके सारथीके मारे और द्रौपदीके पुत्रोंके रथ काट दिये। कर्णके क्षण भरमें ये कर्म देखकर सब वीर आश्चर्य करने लगे, इन सबको इस प्रकार विमुख करके चंदेरी और पाञ्चाल देशीय महारथोंको मारने लगे। सब वीर कर्णके बाणोंसे व्याकुल होकर उनकी ओर सहस्रों बाण चलाने लगे। सूतपुत्र कर्ण भी उन्हें अपने तेज बाणोंसे मारने लगे। उनके बाणोंसे व्याकुल होकर वे सब कर्णसे डरकर इस प्रकार भागे, जैसे सिंहसे डरकर हरिन भागते हैं। उस समय हमने यह आश्चर्य देखा कि अकेले प्रतापी सूतपुत्र कर्ण अत्यन्त यत्न करते हुए अनेक धनुषधारियोंसे युद्ध करते रहे। हे महाराज! हे भारत! अकेले कर्णने पाण्डवोंके अनेक वीरोंको अपने बाणोंसे निवारण कर दिया, महात्मा कर्णकी शीघ्रतासे देवता और सिद्ध बहुत प्रसन्न हुए। तुम्हारे पुत्रोंने भी पुरुषश्रेष्ठ कर्णका बहुत सत्कार किया। शत्रुओंकी सेनाको नाश करते हुए धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ महारथ कर्ण अत्यन्त शोभित हुए जैसे आग काठको जलाती है ऐसे कर्णने पाण्डवोंकी सेनाको जला दिया, इनके बाणोंसे व्याकुल होकर पाण्डवोंकी सेना रणसे इधर उधर भागने लगी, उस समय भागती पाञ्चाल सेनाका घोर शब्द होने लगा, कर्णके धनुषका शब्द सुनकर पाण्डवोंकी सेना डरसे व्याकुल होगयी, सबने जान लिया कि कर्णके समान कोई योद्धा नहीं है, तब शत्रुनाशक कर्णने फिर विचित्र कर्म्म करना आरम्भ किया, जैसे पानी पर्व्वतमें लगनेसे इधर उधरको फैल जाता है। ऐसे ही पाण्डवोंकी सेना कर्णको देखकर इधर उधर भागी। कोई पाण्डवोंके वीर उस समय कर्णकी ओर न देख सका। हे राजन्! उस समय कर्णका रूप ऐसा हुआ जैसे धुंआ रहित जलती अग्नि। महात्मा कर्णने अपने बाणोंसे वीरोंके शिर, कुण्डल सहित कान और अनेक वीरोंके हाथ काट दिये। हाथी दांतके मूंठवाले, खड्ग, ध्वजा, शक्ति, घोड़े, हाथी और रथोंको भी काट दिया, पहिये और पहियोंकी नाभि, धुरे, घोड़ोंकी लगाम कर्णने काट दिये, उनके बाणोंसे अनेक घोड़े और हाथी मर गये। उस समय अनेक हाथी, घोड़े और पैदलोंके मरनेसे पृथ्वीमें मांस और रुधिरकी कीच होगयी। किसीको वहां जानेकी शक्ति नहीं रही और पृथ्वी ऊंची नीची होगयी। कटे हुए हाथी और रथोंसे इधर कुछ नहीं जाना जाता था, कोई योद्धा अपने और पराये को नहीं पहचानता था, राधापुत्रके छूटे हुए बाणोंसे चारों ओर अन्धकार होरहा था, हे महाराज! राधापुत्रने बार बार अपने बाणोंसे समरभूमिमें पराक्रमी पाण्डवोंके महारथोंको व्याकुल कर दिया, तब वे सब युद्ध छोड़ कर ऐसे भागे, जैसे वनमें सिंहको देख मृग भागते हैं। महायशस्वी कर्णने पाञ्चाल आदि महारथोंको डराकर भगा दिया, जैसे भेड़ियेको देख बकरी भागती हैं, ऐसे ही पाण्डवोंकी सेना कर्णको देख भागी। पाण्डवोंकी सेनाको भागते देख तुम्हारे पुत्र दुर्योधन अपने धनुर्धारी भाइयोंके सहित बहुत प्रसन्न होते हुए

कर्णके पास गर्ज्जते हुए आये और अनेक प्रकारके बाजे बजानेकी आज्ञा दी तब महाधनुषधारी पाञ्चाल युद्ध छोड़कर भाग गये, और फिर वे मृत्युका निश्चय करके लौटे उन वीरोंको लौटता देख शत्रुनाशन कर्णने अनेक वीरोंको मार डाला। कर्णने वीस पाञ्चाल महारथोंको मारा सौ घोड़े और रथों पर चढ़े चली मारे गये। अनेक हाथी वीरोंसे रहित होगये, पदाति युद्धको छोड़ कर भाग गये, उस समय कर्णका तेज दोपहरके सूर्य्यके समान दीखता था, उस समय मनुष्य, घोड़े और हाथियोंको मारते हुए वीर कर्ण यमराजके समान दीखने लगे, जैसे महा बलवान् यमराज प्रजाका नाश करके खड़े होते हैं। ऐसे ही चत्रियोंको मार कर कर्ण खड़े हुए। मैंने उस समय कर्णसे युद्ध करते पाञ्चालोंका विचित्र बल देखा। उस समय उन्होंने वाणोंसे पीड़ित होकर भी युद्धको नहीं छोड़ा। राजा दुर्य्योधन, दुःशासन, शरद्वतीपुत्र कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा, कृतवर्मा और महाबलवान् शकुनि भी पाण्डवोंके सहस्रों वीरोंको मारने लगे। कर्णके दोनों महारथ पुत्र भी पाण्डवोंकी सेनाका नाश करने लगे। इसी प्रकार पाण्डवोंकी ओरसे वीर धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, द्रौपदीके पांचो पुत्र क्रोध करके तुम्हारी सेनाका नाश करने लगे। इस प्रकार यह घोर युद्ध प्रलय कालके समान हुआ तुम्हारी सेना भी महा पराक्रमी भीमसेनसे घोर युद्ध करने लगी।

७८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! अर्ज्जुनने भी चतुरङ्गिनी सेनाका नाश करके और कर्णको क्रोधमें भरा देखकर मांस, चर्बी, हड्डी और रुधिरकी कीच करके पत्थरोंके ढेरके समान मनुष्योंके शिर काट कर, रुधिरकी नदी बहा कर, मरे हुए हाथियोंके तट बनाकर रुधिरकी नदी बहा दी। इस नदीसे कटे हुए छत्र हंसोंके समान दीखने लगे। मरे और टूटे वृक्षोंके समान बहने लगे। हार, पद्म, पगड़ी, फेन, धनुष, बाण, ध्वजा और मनुष्योंके कपाल बहने लगे, ढाल और कवच भंवरके समान घूमने लगे। रथ, डोंगीके समान दीखने लगे, उसको देख वीर लोग प्रसन्न और कायर डरने लगे। इस प्रकार पुरुषसिंह अर्ज्जुन इस घोर नदीको बहाकर श्रीकृष्णसे ऐसे बोले, हे कृष्ण! यही ध्वजा महारथ सूतपुत्रकी दीख पड़ती है। उनसे भीमसेन आदि योद्धा युद्ध कर रहे हैं। हे जनार्द्दन! ये देखो कर्णके डरसे पाञ्चाल भागे जाते हैं, ये सफेद छत्रधारी राजा दुर्य्योधन खड़े हैं, ये महारथ कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा और कृतवर्म्मा खड़े हैं। यह हमारी सेना भागी जाती है। ये सब वीर कर्णकी सहायतासे दुर्य्योधनकी रक्षा करते हैं। यदि अब हम इन्हें न मारेंगे तो हमारी सेनाका नाश होजायगा। ये घोड़ोंकी विद्या जाननेवाले शल्य सूतपुत्रका रथ हांकते शोभित होरहे हैं। आज मैंने यह प्रतिज्ञा की है कि कर्णको बिना मारे नहीं लौटूंगा। इसलिये अब मेरी सम्मतिमें रथ इसीकी ओर हांकिये। हे कृष्ण! आप ऐसा उपाय कीजिये जिसमें कर्ण हमारे देखते देखते सोमक और पाञ्चालोंका नाश न कर सकें, अर्ज्जुनके ऐसे वचन सुन श्रीकृष्णने कर्णसे युद्ध करनेको शीघ्रतासे रथ हांका। श्रीकृष्ण अर्ज्जुनकी सम्मतिसे अपनी सेनाको प्रसन्न करते हुए कर्णसे युद्ध करनेको चले, उस समय अर्ज्जुनके रथका शब्द ऐसा हुआ जैसा बिजली सहित बादलका। महापराक्रमी अर्ज्जुन अपने रथका शब्द करते हुए, और तुम्हारी सेनाको जीतते हुए कर्णसे युद्ध करनेको चले।

उस समय श्रीकृष्ण सारथी और सफेद घोड़ोंसे युक्त अर्ज्जुनकी ध्वजाको देख

शल्य कर्णसे बोले, हे कर्ण ! जिसको तुम पूछते थे, यह सफेद घोड़े और कृष्ण सारथी सहित शत्रुओंका नाश करते हुए उसी अर्जुनका रथ चला आता है, ये देखो रथके भीतर गाण्डीव धनुष धारण किये अर्जुन बैठे हैं। तुम उनको आज युद्धमें मारो तो हमारा सबका कल्याण होगा।

हे कर्ण । जैसे आकाशमें बिजली चमकती है ऐसे ही धनुषके रोदे चन्द्रमा और तारोंसे युक्त यह अर्जुनकी ध्वजा चमक रही है। ये वीरोंको भय देनेवाले चारों ओर देखते हुए भयङ्कर बन्दर अर्जुनकी ध्वजापर बैठे हुए दीख रहे हैं। ये घोड़े हांकते हुए, श्रीकृष्णके शङ्ख, चक्र, गदा और शार्ङ्ग धनुष रक्खे हैं। ये अर्जुनके धनुषका शब्द आ रहा है, इधर उनके तेज बाणोंसे अनेक वीर मर रहे हैं, ये देखो युद्धसे न भागनेवाले लाल कमलके समान बड़े नेत्रवाले राजोंके शिरोंसे यह भूमि भरी जाती है, देखो चन्दन आदि सुगन्ध लगे। परिघके समान सुन्दर वीरोंके कटे हुए हाथ शस्त्रों सहित कटे जाते हैं। ये अनेक घोड़े आंख फैलाये जीभ निकाले पृथ्वीमें गिर पड़े हैं, ये कवच पहननेवाले योद्धा भी मर गये हैं ! हिमाचलकी तराईके हाथी अर्जुनके बाणोंसे कटकर टूटे हुए पर्वतोंके समान पृथ्वीमें गिर रहे हैं, जैसे बड़े बड़े बिमानोंसे पुण्य नाश होनेपर देवता गिरते हैं, ऐसे ही इन रथोंसे वीर गिर रहे हैं। जैसे सिंहको देख सहस्रों हरिण व्याकुल होजाते हैं। ऐसे ही इस समय अर्जुनके बाणोंसे तुम्हारी सेना व्याकुल होरही है।

हे राधापुत्र! ये प्रधान वीरोंको नाश करते अर्जुन तुम्हींसे युद्ध करनेको चले आते हैं। इनके वेगको और कोई नहीं सह सक्ता। इसलिये तुम ही इनसे युद्ध करनेको चले आते हो, येदेखो अर्जुनके बाणोंसे व्याकुल होकर धृतकी सेना भागी जाती है। ये महातेजस्वी अर्जुन सब सेनाको छोड़कर केवल तुम्हारी ही ओर चले आते हैं। इस समय भीमसेनको व्याकुल देख अर्जुनको बहुत क्रोध हुआ है, इससे हमें निश्चय होता है कि ये तुम्हारे सिवाय किसीसे नहीं लड़ेंगे, आज महाराज धर्मराजको रथहीन और घावोंसे बहुत व्याकुल देखकर, शिखण्डी धृष्टद्युम्न, सात्यकि, द्रौपदीके पुत्र युधामन्यु, उत्तमौजा, नकुल सहदेव दोनों भाई ये क्रोधसे नेत्र लाल किये, सब राजोंको मारनेकी इच्छासे अर्जुन तुम्हारी ही ओर चले आते हैं ।

हे कर्ण ! तुम इस सब सेनाको छोड़कर शीघ्रता सहित केवल अर्जुनहीसे युद्ध करनेको चलो क्यों कि तुम्हारे सिवाय और किसी धनुषधारीकी शक्ति उनसे युद्ध करनेकी नहीं है। हम तुम्हारे सिवाय लोकमें दूसरे वीरको ऐसा नहीं देखते जो क्रोध भरे अर्जुनसे युद्ध कर सके, देखो अपने प्रारब्धके फलको, देखो अर्जुनके आगे पीछे कोई रक्षा करनेवाला नहीं है, वे एकले ही तुमसे लड़नेको चले आते हैं। हे राधापुत्र ! तुमही कृष्ण और अर्जुनसे लड़ सकते हो इनके मारनेका भार तुम्हारे ही शिर है, इसलिये तुमही इससे लड़नेको जाओ तुम भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य और अश्वत्थामाके समान बली हो, इसलिये अर्जुनसे युद्ध करो। हे कर्ण ! जैसे कोई मनुष्य लहराते सांप, मतवाले सांड़ और बलवान सिंहसे युद्ध करता है ऐसे ही आज तुम अर्जुनसे युद्ध करो ये तुम्हारी सेनाके महारथ अर्जुनके बाणोंसे पीड़ित होकर और युद्धकी इच्छा छोड़कर भागे आते हैं। हे सूतपुत्र ! अब इन भागते हुए वीरोंका भय नाश करनेमें तुम्हारे सिवाय और कोई समर्थ नहीं। हे पुरुषसिंह ! विदेह, मगध, काम्बोज, मगध और गान्धारदेशके सब क्षत्रियोंको जिस बलसे तुमने जीता था आज उसी बलसे अर्जुनके सङ्गमें युद्ध करो। हे महा-

हुए। परम साहससे अर्जुनके समत कृष्णसे युद्ध करनेको चलो।

कर्ण बोले, हे महाबाहो शल्य! मैं इस समय अत्यन्त सावधान हूं, इसलिये तुम अर्जुनसे कुछ मत डरो, अब तुम हमारे बाहु और शिक्षाका बल देखो आज मैं अकेला ही पाण्डवोंकी सब सेनाका नाश करूंगा। हे पुरुषसिंह! आज मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि बिना कृष्ण और अर्जुनके मारे युद्धसे नहीं लौटूंगा, अथवा वे ही मुझे मार डालेंगे, क्यों कि युद्धमें जय और पराजयका कुछ निश्चय नहीं रहता। जो हो दोनों ही प्रकारसे मेरा कल्याण है।

शल्य बोले, हे कर्ण! सब महारथ अकेले अर्जुनहीको अजेय अर्थात् अजीत कहते हैं और इस समय तो साक्षात् श्रीकृष्ण उनकी रक्षा कर रहे हैं, इस समय उसके जीतनेका कौन साहस कर सक्ता है?

कर्ण बोले, हे शल्य! हमने जहांतक सुना है तहांतक अर्जुनके समान योद्धा नहीं सुना सो हम आज उसीसे युद्ध करेंगे, तुम हमारे पराक्रमको देखो। ये कौरव राजपुत्र महारथ अर्जुन सफेद घोड़ोंके रथपर चढ़े हुए सेनामें घूम रहे हैं सो आज हमें मारेंगे वा इन्हें मार कर हम ही सब पाण्डवोंका नाश करेंगे, इन राजपुत्रके बड़े बड़े हाथोमें धनुषकी ठेठ पड़ गई हैं तो भी कांपते नहीं और न पसीना ही आता है, इनके समान शीघ्र अस्त्र चलानेवाला और योद्धा जगत्में कोई नहीं है ये अनेक बाण हाथमें लेकर एक बाणके समान शीघ्रता सहित छोड़ते हैं, वे सब बाण एक कोसतक जा सकते हैं। ऐसे वीर अर्जुनसे कौन युद्ध कर सक्ता है? इन्हीं अर्जुनने महारथ और महातेजस्वी कृष्णकी सहायतासे खाण्डव वनमें अग्निको तृप्त किया था। वहींसे श्रीकृष्णको चक्र और अर्जुनको धनुष मिला था। वहींसे यह उत्तम अश्ववाला सफेद घोड़ोंके सहित रथ, दिव्य अक्षय तूणीर और अनेक दिव्य अस्त्र मिले थे, इन्होंने देवलोकमें जाकर असंख्य कालकेय नामक दानवोंको मारा था। तब देवदत्त शङ्ख पाया था, उन अर्जुनके सङ्ग कौन युद्ध कर सक्ता है?

जिस महानुभावने अपने बाणोंसे महादेवको युद्धमें प्रसन्न किया था, जिनको शिवने प्रसन्न होकर तीन लोकको नाश करनेमें समर्थ महा घोर पाशुपत अस्त्र दिया, जिनको सब लोकपालोंने अलग अलग महा घोर अस्त्र दिये हैं। जिन्होंने उन्हीं अस्त्रोंसे समस्त कालकेय दानवोंका नाश किया जिस एकलेने हम सबको विराट नगरमें जीत कर गौ छीन ली थीं और सब महारथोंके वस्त्र उतार लिये थे। हे शल्य! आज हम उस ही वीर सब गुणोंसे भरे सब क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ अर्जुनसे साहसके समेत पुकार कर युद्ध करेंगे। सो अर्जुन आज पराक्रमी सब लोकोंके स्वामी साक्षात् नारायण श्रीकृष्णसे रक्षित हैं। अब उनके गुण तीनों लोक इकट्ठे होकर सहस्र वर्ष तक कहैं। तो भी पार नहीं पा सक्ते, हे शल्य! महात्मा शङ्ख, चक्र और गदाधारी जगत्को जीतनेवाले बसुदेव पुत्र श्रीकृष्ण और अर्जुनको एक रथ पर बैठा देख मैं भयसे कांपता हूं। हमें निश्चय है, कि अर्जुन महा धनुषधारी और कृष्ण चक्र युद्धमें अहतोय हैं, चाहे हिमाचल अपने स्थानसे चल जाय परन्तु ये दोनों युद्धमें नहीं हारेंगे। हे शल्य! ये दोनों महारथ महा शस्त्रधारी और महायोद्धा हैं। इन दोनोंसे मेरे सिवाय और कौन युद्ध कर सक्ता है। हे मद्रराज! बहुत दिनसे महा पराक्रमी अर्जुनसे जो मेरी इच्छा है, सो आज तक पूरी न हुई इससे अधिक और क्या आश्चर्य होगा? आज मैं या तो इन दोनोंको मारूंगा। या मुझे वे ही मार डालेंगे, ऐसे कह कर शत्रुनाशन कर्ण मेघके समान गर्ज्जने लगा, अनन्तर दुर्योधन, कृपाचार्य्य, कृतवर्म्मा, और भाइयोंके सहित शकुनिसे ऐसा

बोले, तथा अश्वत्थामा अपने छोटे भाई तथा और भी सब पैदल हाथी, घोड़े और रथोंपर चढ़े वीरोंसे कहा कि तुम सब केवल अर्ज्जुनसे युद्ध करना और इन दोनोंको थका दो। हे वीरों! तुम लोग अर्ज्जुन और कृष्णको घावोंसे व्याकुल कर दो, तब मैं सुखसे इन्हें मारलूंगा, कर्णके वचन सुन सब लोग, अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको गये। और कर्णके बचनानुसार अर्ज्जुनके ऊपर अनेक प्रकारके शस्त्र बरसाने लगे, जैसे समुद्र सब नदियोंको शान्त कर देता है, तैसे ही अर्ज्जुनने भी उन सब वीरोंको शान्त कर दिया, अर्ज्जुन किस समय बाण लेते हैं। किस समय चढ़ाते हैं। किस समय छोड़ते हैं। सो कोई नहीं देख सक्ते थे, केवल मरते हुए मनुष्य हाथी और घोड़े दीखते थे, जैसे रोगयुक्त नेत्रवाले, मनुष्य सूर्य्यकी ओर नहीं देख सक्ते, वैसे ही बाण किरण और धनुष मण्डलवाले, अर्ज्जुनको कोई शत्रु नहीं देख सक्ता था। हे राजेन्द्र! जैसे जेठ बैशाखका सूर्य्य अपनी किरणोंसे जगत्के जलको खींचता है ऐसे ही अर्ज्जुन अपने बाणोंसे तुम्हारी सेनाके प्राण लेने लगे। जैसे पर्व्वतके ऊपर मेघ जल बर्षाते है। ऐसे ही कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा, महारथ कृतवर्म्मा और अर्ज्जुनके ऊपर बाण वर्षाने लगे अर्ज्जुनने उनके बाण काट कर सबके हृदयमें तीन तीन बाण मारे जैसे जेठ बैशाखका सूर्य्य जगत्को तपाता है, ऐसे ही बाण किरण और धनुष मण्डलवाले, अर्ज्जुनरूपी सूर्य्य तुम्हारी सेनाको तपाने लगे। तब अश्वत्थामाने दस बाण अर्ज्जुनके, तीन श्रीकृष्णके और एक एक चारों घोड़ोंको मारकर अर्ज्जुनकी ध्वजामें अनेक बाण मारे तब अर्ज्जुनने क्रोध करके एक बाणसे उनके सारथी, चारसे चारों घोड़े और एकसे ध्वजा काट दी अनन्तर अश्वत्थामा सुवर्ण और रत्नोंसे जटित महा सांपके समान भयङ्कर धनुष लेकर — रथसे इस प्रकार कूदे जैसे घोर सर्प पर्व्वतसे गिरता है फिर अपने सब शस्त्र रथ खींचकर पृथ्वीमें गिरा दिये और अनेक बाण कृष्ण तथा अर्ज्जुनकी ओर चलाये जैसे सूर्य्यकी ओर अनेक मेघ दौड़ते हैं। ऐसे युद्धमें खड़े पाण्डव श्रेष्ठ अर्ज्जुनकी ओर बाण वर्षाते हुए, कृपाचार्य्य, कृतवर्म्मा और दुर्योधन दौड़े। जैसे वज्रधारी इन्द्रने बलिको अपने बाणोंसे व्याकुल कर दिया था, ऐसे ही सहस्र बाहुके समान अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे कृपाचार्य्यके घोड़े, सारथी, ध्वजा और बाणोंके सहित धनुष काट दिये, जैसे अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे भीष्मको व्याकुल कर दिया था, ऐसे ही घोड़े, सारथी, ध्वजा कटनेसे कृपाचार्य्य व्याकुल होगये। इसी प्रकार दुर्योधनके घोड़े और सारथीको मारकर ध्वजा और धनुष काट दिया, फिर कृतवर्म्माके घोड़ोंको मार डाला, फिर हाथी, घोड़े और रथोंपर चढ़े अनेक वीरोंको मारने लगे। जैसे बांध टूटनेसे पानी चारों ओर फैल जाता है। इसी प्रकार इन वीरोंके व्याकुल होनेसे तुम्हारी सेना इधर उधर भागने लगी, तब कृष्णने बहुत शीघ्रतासे अर्ज्जुनके रथको सब शत्रुओंकी दहिनी ओर पहुंचा दिया। जैसे इन्द्र वृत्रासुरके मारनेको चले थे, वैसे ही अर्ज्जुन भी कर्णको मारने चले, तब अनेक महारथ ध्वजा उड़ाते हुए उत्तम घोड़ोंके रथोंपर चढ़कर अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको आये परन्तु अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे सबको रोक दिया।

उधर शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, सात्यकि और नकुल सहदेव गर्ज्ज गर्ज्ज कर अपने तेज बाणोंसे तुम्हारी सेनाका नाश करने लगे। हे शत्रुनाशन! जैसे देवता और दानवोंका युद्ध हुआ था, इसी प्रकार यह कौरव पाण्डवोंका युद्ध हुआ सब वीर अपनी अपनी विजयकी इच्छासे युद्ध करने लगे। अनेक योद्धा, हाथी और रथोंसे गिरकर स्वर्गको चले गये। अनेक योद्धा परस्पर गर्ज्ज कर तेज बाण चलाने लगे।

उस समय युद्धभूमिमें बाणोंका अन्धकार हो-गया, हे पृथ्वीनाथ। चारों दिशा कोने और सूर्य्य भी बाणोंसे छिप कर अन्धकार हो गया।

७८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! जैसे कोई डूबते हुए मनुष्यका बचानेके लिये दौड़ता है, ऐसे ही तुम्हारे प्रधान बीरोंसे युद्ध करते हुए अर्ज्जुन भीमसेनकी ओर चले, और कर्णकी सेनामें जाकर अनेक बीरोंको मार डाला, तब अर्ज्जुनके बाण सब आकाशमें छा गये, और तुम्हारी सेनाका नाश करने लगे। अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे पक्षियोंके समान आकाशको पूरित कर दिया, तब अनेक प्रकारके तेज बाणोंसे अर्ज्जुनने बीरोंके शिर और शरीर काट डाले, उस समय मुण्ड रहित शरीर और शरीर रहित मुण्डोंसे वह रणभूमि पूरित होगयी, वह भूमि अर्ज्जुनके बाणोंसे कटे हुए अङ्ग-रहित हाथी, घोड़े और मनुष्य और रथोंसे पूरित होगयी।

हे राजन्। वह रणभूमि भयानक कुरूप और दुर्गम होगयी, जैसे यमलोककी वैतरणी नदी। कटे हुए रथ और घोड़ोंके सहित, कहीं घोड़ोंके रहित, कही सारथी युक्त, कहीं विना सारथी पृथ्वीमें गिर गये, कहीं मतवाले, हाथी सोनेके कवचवाले बीरोंके सहित मरकर गिर गये। इस प्रकार अँकुश और क्रोधी महावतों सहित चार सौ हाथी कटकर पृथ्वीमें गिर गये, वह पृथ्वीमें गिरे हाथियोंसे इस प्रकार शोभित हुई जैसे पर्व्वतोंके शिखर गिर-नेसे। जैसे सूर्य्य मेघोंको काटकर निकलता है, ऐसी अर्ज्जुन मतवाले हाथियोंको काट कर सेनासे बाहर निकाले उस भूमिमें अनेक हाथी, घोड़े, रथ और महा योद्धा मनुष्य शस्त्र रहित होकर और मरकर गिर गये। गाण्डीव धनु-षपर घोर टङ्कार देते हुए अर्ज्जुनने गिरे हुए शस्त्रोंसे मार्गको पूरित कर दिया। जैसे बिजली और बज्रका शब्द आकाशमें होता है ऐसे ही अर्ज्जुनके धनुषका शब्द होने लगा तब वह सेना बाणोंसे व्याकुल होकर इधर उधरको भागने लगी। जैसे समुद्रमें कोई नाव वायुसे व्याकुल होजाती है, ऐसे ही गाण्डीवसे छूटे अनेक प्रकारके बाणोंसे वह सेना व्याकुल होगयी। जैसे बनमें आग लगनेसे बांस जलते हैं, तैसे ही बिजली और बज्रके समान बाणोंसे तुम्हारी सेना भस्म होने लगी। अर्ज्जुनने तुम्हारी सेनाका नाश कर दिया। जैसे बनमें आग लगनेसे हरिन भागते हैं, तैसेही तुम्हारी सेना अर्ज्जुनके बाणोंसे इधर उधरको भागने लगी। तब सब प्रधान योद्धा भीमसेनको छोड़ कर अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको आये, उस समय तुम्हारी सब सेना युद्धसे बिमुख होकर इधर उधरको भागने लगी। तब अर्ज्जुन भीमसेनके पास गये और थोड़े समयतक खड़े होकर कुछ सम्मति करते रहे। उन्होंने भीमसेनसे महा-राजका कुशल कहा और फिर उनकी आज्ञा लेकर युद्ध करनेको चले गये, उस समय उनके रथके शब्दसे पृथ्वी और आकाश पूरित होगये तब जैसे कोई मनुष्य आग जलाकर हाथीको डराता है ऐसे ही दुःशासनसे छोटे महायोद्धा तुम्हारे दशपुत्र अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको चले, वे सब धनुषधारण करके उनसे युद्ध करनेको आये, तब श्रीकृष्णने उन सबोंके रथोंको अपने रथके बायें कर दिया। तब उन सब बीरोंने जाना कि अब हम नहीं बचेंगे ऐसा बिचार-कर वे सब युद्धसे भाग गये, अर्ज्जुनने अपने तेज नाराच और अर्द्धचन्द्र बाणोंसे उनके घोड़े, ध्वजा और धनुष काट दिये, फिर दश बाणोंसे ओठ चबाते लाल नेत्रवाले दशों बीरोंके शिर काट डाले। वे दशों शिर पृथ्वीमें गिरकर कमलके समान शोभित होने लगे, इस प्रकार

दस बाणोंसे दश कौरवोंको सुवर्ण भूषणधारण किये मारकर शत्रुनाशन अर्ज्जुन अगाड़ी चले।

८० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! बानर युक्त ध्वजावाले अर्ज्जुनको शीघ्र चलनेवाले घोड़ोंके रथपर चढ़े जाते देख तुम्हारी सेनाके नब्बे महारथ युद्ध करनेको चले, ये सब संशप्तक प्रतिज्ञा करके और मृत्युका निश्चय करके अर्ज्जुनकी ओर इस प्रकार चले, जैसे अनेक सिंह सिंहकी ओर जाते हैं, परन्तु कृष्णने मोतियोंके जालयुक्त सफेद बहुत शीघ्र चलनेवाले घोड़ोंको कर्णहीकी ओर हांका। शत्रुनाशन अर्ज्जुनको कर्णके रथकी ओर जाते देख बाण बर्षाते हुए संशप्तक योद्धा दौड़े उनको अपनी ओर आते देख अर्ज्जुनने तेज बाणोंसे इन सबको घोड़े, सारथी और धनुषोंके सहित काट डाला। जैसे पुण्य नाश होनेसे बिमानोंके सहित देवता पृथ्वीमें गिरते हैं, ऐसे ही अर्ज्जुनके अनेक रङ्गवाले बाणोंसे वे सब योद्धा मरकर गिर गये। हे कुरुकुलश्रेष्ठ! जब अनेक कौरव निर्भय होकर कुरुकुलश्रेष्ठ अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको चले तब हाथी, घोड़े, रथ मनुष्योंसे भरी हुई तुम्हारे पुत्रोंकी महासेनाने अर्ज्जुनको चारों ओरसे घेर लिया। महाधनुषधारी कौरवोंमें कुरुकुलश्रेष्ठ अर्ज्जुनके ऊपर शक्ति, तोमर, गदा, प्रास और बाण चलाये और खड्गोंसे युद्ध करने लगे। जैसे सूर्य्य अपनी किरणोंसे अन्धकारका नाश कर देते हैं ऐसे ही अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे उस आकाशमें छायी हुई बाण वर्षाको काट दिया। तब तेरह सौ हाथियोंपर चढ़ म्लेच्छ तुम्हारे पुत्रकी आज्ञासे अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको आये। वे सब रथपर बैठे हुए अर्ज्जुनकी ओर बाण, तोमर, प्रास, शक्ति, मूसल और भिन्दिपाल चलाने लगे अर्ज्जुनने उन हाथियोंपर चढ़े वीरोंके छोड़े हुए बाणोंको अर्धचन्द्र और नाराच नामक बाणोंसे काट दिया जैसे इन्द्र वज्रसे अनेक पर्व्वतोंको काट दिया था, ऐसे ही अर्ज्जुनने भी उन सब हाथियोंकी पताका, ध्वज और वीरोंके सहित काट डाला। जैसे अग्निकी ज्वाला सहित अनेक पर्व्वत कटकर पृथ्वीमें गिरते हैं, ऐसे ही वे सब हाथी सोनेके पङ्खवाले बाणोंसे व्याकुल होकर पृथ्वीमें गिर गये। हे पृथ्वीनाथ! इस समय मरते हुए हाथी, मनुष्य और गाण्डीव धनुषका घोर शब्द होने लगा हे पृथ्वीनाथ! अनेक हाथी बाण लगनेसे इधर उधरको भागने लगे, वीरोंके मरनेसे घोड़े भी मरने लगे। हे महाराज! सहस्रों रथ, सारथी और वीरोंसे रहित होकर गन्धर्व्व नगरोंके समान इधर उधर फिरने लगे। इसी प्रकार अर्ज्जुनके बाणोंसे व्याकुल होकर अनेक घुड़चढ़े इधर उधर घूमने लगे। उस समय अर्ज्जुनने ऐसा पराक्रम किया कि हाथी, घोड़े और रथों पर चढ़े सब वीरोंको जीत लिया। तब महाबाहु भीमसेन अर्ज्जुनको तीन प्रकारकी महासेनासे घिरा हुआ देख तुम्हारी बची हुई सेनाको छोड़ अर्ज्जुनके रथकी ओर वेगसे चले, भीमसेनको अर्ज्जुनकी ओर जाते देख वह बची हुई सब सेना इधर उधरको भागने लगी, अर्ज्जुनसे जो सेना बची थी उस सबको बलवान भीमसेनने गदासे मारडाला। तब भीमसेन कालरात्रिके समान भयानक मनुष्य, हाथी और घोड़ोंको खानेवाली, छारदीवारी (पुरकोट) अटारी और नगरके द्वारोंको तोड़नेवाली महाभयङ्कर गदा, घोड़े, हाथी और मनुष्योंपर चलाने लगे। उससे तुम्हारी सेनाका नाश होने लगा। भीमसेनने लोहेके कवच पहने अनेक हाथी और मनुष्योंको अपनी गदासे मारकर पृथ्वीमें गिरा दिया, अनेक वीर हाथ, पैर और शिरसे रहित होकर दांत निकालकर पृथ्वीमें गिर पड़े, गिद्ध और

स्थार उनका मांस खाने लगे। वह गदा मांस, चर्बी, रुधिर और हड्डियोंको खाती हुई कालरात्रिके समान भयानक दीखने लगी और मांस रुधिरसे तृप्त हो गई। दश सहस्र घोड़ोंको मारकर क्रोध भरे भीमसेन गदा लेकर इधर उधर घूमने लगे।

हे महाराज। गदाधारी भीमसेनको देखकर तुम्हारी सेनाने साक्षात् दण्डधारी यमराज समझ लिया, महापराक्रमी मतवाले हाथीके समान भीमसेन उस सेनाका नाश करके तुम्हारी हाथी सेनामें इस प्रकार घुसे जैसे भारी मगर जलमें घुसता है। भीमसेनने क्रोध करके क्षणमात्रमें अपनी गदासे उन सब हाथियोंको मारडाला। हमने उस समय झूल अम्बारी और वीरोंके सहित अनेक हाथियोंको पङ्खयुक्त पर्व्वतोंके समान गिरते देखा, इस प्रकार उस सब गजसेनाका नाश करके भीमसेन फिर अपने रथपर बैठे और पीछेसे अर्ज्जुनकी रक्षा करने लगे।

हे महाराज। उस समय जो तुम्हारी सेना मरनेसे बची सो उत्साह रहित और शस्त्रोंसे व्याकुल होकर इधर उधर भागने लगी। उस सेनाकी ऐसी दशा देख अर्ज्जुनने प्राण नाशक बाण चलाये, जैसे फूले हुए कदम शोभित होते हैं ऐसेही अर्ज्जुनके बाणोंसे मनुष्य, हाथी और घोड़े दीखने लगे। हे महाराज! उस समय अर्ज्जुनके बाणोंसे व्याकुल तुम्हारी सेनाके हाथी, घोड़े और मनुष्योंका घोर शब्द होने लगा, तुम्हारी सेनामें हाहाकार होने लगा एक मनुष्य दूसरेकी आड़ लेनेकी इच्छा करने लगा थोड़े समयमें वह सब सेना कुम्हारके चाकके समान घूमने लगी यहं महाबलवान पाण्डवोंके सङ्ग कौरवोंका घोर युद्ध हुआ, ऐसा हाथी या घोड़ा कोई न था जिसके शरीरमें शस्त्र न लगा हो, जैसे फूले हुए अशोकोंका वन शोभित होता है ऐसेही रुधिरमें भीगी बाणोंसे व्याकुल टूटे कवचवाली तुम्हारी सेना दीखने लगी, सब कौरवों अर्ज्जुनके इस पराक्रमको देखकर कर्णके जीनेकी आशा छोड़ दी। अर्ज्जुनके बाणोंको न सहकर और अर्ज्जुनने हारकर कौरवोंकी सब सेना पीछेको लौटने लगी। ये सब वीर बाणोंसे व्याकुल होकर कर्णको छोड़कर चिल्लाते हुए युद्धसे भागे उन भागते हुए वीरोंपर अर्ज्जुन अनेक बाण छोड़ने लगे। इसने भीमसेन आदि पाण्डवोंके सब वीर बहुत प्रसन्न हुए, हे महाराज! जैसे अगाध समुद्रमें डूबते मनुष्य द्वीपको और जाते हैं। ऐसे ही तुम्हारे पुत्र कर्णके रथकी ओर भागे, हे महाराज। उस समय अर्ज्जुनके भयसे सब कौरव विषरहित सांपोंके समान कर्णके रथकी ओर भागे, जैसे सब कर्म्म करनेवाले मनुष्य मृत्युके भयसे धर्म्मको शरण जाते हैं। ऐसे ही महात्मा अर्ज्जुनके भयसे तुम्हारे पुत्र महा धनुषधारी कर्णकी शरण गये। उन रुधिरसे भीगे बाणोंसे पीड़ित आपत्तिमें पड़े वीरोंसे कर्णने कहा तुम लोग कुछ मत डरो और हमारे संग रहो अपनी सेनाको अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ित देख कर्णने धनुष पर टङ्कार दिया और शत्रुओंको नाश करनेको उपस्थित हुए उन सब कौरवोंको भागते देख शस्त्रधारियोंमें श्रेठ कर्णने सांस लेकर अर्ज्जुनके मारनेका विचार किया, तब अधिरथपुत्र कर्ण अपने धनुष पर टङ्कार देकर अर्ज्जुनके आगेसे पाञ्चाल सेनाको ओर दौड़े, जैसे अनेक मेघ पर्व्वत पर जल बर्षाते हैं, ऐसे ही पाण्डवोंकी ओरके अनेक राजा क्रोधसे लाल नेत्र करके कर्णके ऊपर बाण बर्षाने लगे। हे मनुष्य श्रेष्ठ। तब कर्णने भी अपने बाणोंसे सहस्रों पांचालोंको मार डाला। हे बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ! उस समय मित्रके लिये युद्ध करते हुए कर्णके बाणोंसे व्याकुल पांचाल सेनाको घोर शब्द होने लगा।

८१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् ! जैसे वायु मेघोंको व्याकुल कर देता है। तैसे ही सूतपुत्र कर्णने अपने बाणोंसे पांचाल देशीय राजपुत्रोंको व्याकुल कर दिया कर्णने अपने बाणोंसे राजपुत्र शतानीक और श्रुतसोमके घोड़े और सारथीको मारकर धनुष काट दिया, फिर उनके शरीरमें अनेक बाण मारे, तब धृष्टद्युम्नके शरीरमें छः बाण मार कर उनके घोड़े मार डाले, फिर सात्यकिके घोड़े मार कर राजपुत्र कैकय देशीय विशोकसे युद्ध करनेको गये। और उसे मार डाला, राजपुत्र विशोकको मरा देख उसका सेनापति उग्रकर्म्मा तीक्ष्ण बाण बर्षाते हुए कर्णकी ओर दौड़ा और कर्णके पुत्र प्रसेनको मारने लगा। कर्णने तीन अर्द्धचन्द्र बाणोंसे उग्रकर्म्माके दोनों हाथ और शिर काट लिया, वह शाल वृक्षके समान पृथ्वीमें कट कर गिर गये। तब कर्णपुत्र प्रसेनने घोड़े रहित रथपर बैठे हुए सात्यकि की ओर तीक्ष्ण बाण चलाये, तब सात्यकिने अपने बाणोंसे उसे मार कर गिरा दिया, पुत्रके मरनेसे कर्णको महा क्रोध हुआ और सात्यकिको मारनेके लिये मनमें इच्छाकी फिर सात्यकी मारे गये, ऐसा कह कर एक शत्रुनाशन घोर बाण उनपर चलाया तब शिखण्डीने उस बाणको तीन बाणोंसे काट दियां, और तीन बाण कर्णके शरीरमें मारे, कर्णने अपने दो बाणोंसे शिखण्डीकी ध्वजा और एक बाणसे धृष्टद्युम्नके पुत्रका शिर काट दिया। फिर महात्मा कर्णने श्रुतसोमको और अनेक बाण चलाये धृष्टद्युम्नके पुत्रके मरनेसे पाण्डवोंकी सब सेनामें हाहाकार होने लगा, तब श्रीकृष्णने अर्ज्जुनसे कहा कि, हे कुन्तीपुत्र ! कर्ण पाञ्चालोंका नाश किये देता है, इसलिये तुम चल कर उसे जीतो, तब पुरुषसिंह अर्ज्जुनने हंसकर अपनी सेनाकी रक्षा के लिये और कर्णको मारनेके लिये चले और [illegible] ष धनुषके रोदेपर घोर टंकार देकर हाथी, घोड़े और मनुष्योंको मारकर बाणोंसे अन्धकार कर दिया, जिस समय अर्ज्जुन कर्णसे युद्ध करनेको चले उस समय रौद्रमुहूर्त्त था, उनके धनुषके शब्दसे ऐसी प्रतिध्वनि हुई मानो पर्वतोंकी गुफा फटने लगी। इनके पीछे रक्षा करते हुए महावीर भीमसेन चले, ये दोनों शत्रुनाशन राजपुत्र कर्णको मारने चले, इसी बीच महारथ सूतपुत्रने सोमक और पांचालोंसे घोर युद्ध किया पाण्डवोंकी ओरसे भी क्रोध करके उत्तमौजा, जनमेजय, युधामन्यु, शिखण्डी और धृष्टद्युम्न युद्ध करने लगे। जैसे महात्मा मनुष्यको इन्द्री नहीं जीत सक्ती, ऐसे ही पाञ्चालदेशी पाञ्च महारथ कर्णके धैर्य्य और रथको न तोड़ सके, इन सबके घोड़े, सारथी और ध्वजाओंको अपने तेज बाणोंसे काट कर कर्ण सिंहके समान गर्ज्जने लगे, उस समय शत्रुओंको मारते हुए कर्णके धनुषके शब्दसे पृथ्वी फट जायगी ऐसा जानकर और बन तथा पर्वत फट जायंगे, ऐसे विचार कर सब जगत् डरने लगा, जैसे जेठ, बैशाखका सूर्य्य अपनी किरणोंसे तेज दिखाई देता है। ऐसे ही इन्द्रधनुषके समान अपनी धनुषसे बाण छोड़ते हुए कर्ण भी महातेजस्वी दीखने लगे, शिखण्डीके शरीरमें बारह, उत्तमौजाके छः युधामन्युके तीन, सोमक राजपुत्र और शिखण्डीके तीन तीन बाण मारे। जब महारथ सूतने इन पाचों महारथोंको जीत लिया, तब सब लोग निरुद्यम होकर खड़े होगये। जैसे कोई उत्तम मनुष्य समुद्रमें डूबते हुए बनियोंको अपनी नाव पर चढ़ाकर बचाता है, ऐसे ही अपने मामाओंकी रक्षा करनेको द्रौपदीके पांचोंपुत्र अपने रथोंपर बैठे हुए तेज बाण बर्षाते हुए कर्णसे युद्ध करनेको आये, तब सात्यकिने क्रोध करके अपने तेज बाणोंसे कर्णके सब बाण काट डाले, और दुर्य्योधनके शरीरमें आठ बाण मारे। तब कृपाचार्य्य, कृतवर्म्मा राजा दुर्य्योधन घोर कर्ण

अपने तेज बाणोंसे अकेले सात्यकिसे युद्ध करने लगे। अकेले सात्यकि भी इन चारों वीरोंसे इस प्रकार लड़े, जैसे चार लोकपालोंसे दैत्य-राज लड़े, जैसे आकाशमें सूर्य्य शीघ्र चलते हैं ऐसे ही उस समय घोर धनुषधारी सात्यकि धनुष टङ्कारते हुए उस युद्धभूमिमें घूमने लगे। उस समय बाण बर्षाते हुए सात्यकिको ओर कोई नहीं देख सक्ता था, जैसे दैत्योंसे लड़ते हुए इन्द्रकी रक्षा करनेको मरुत नामक देवता दौड़ते हैं ऐसे ही उत्तम रथों पर चढ़ कर महारथ पाञ्चाल देशी अनेक योद्धा सात्यकिकी रक्षा करनेको इकट्ठे होकर आये, जैसे पहले समयमें देवता और राक्षसोंका घोर युद्ध हुआ था। वैसाही यह युद्ध भी हुवा उस समय रथ, घोड़े, हाथी और मनुष्य दुःखसे पीड़ित होकर घोर शब्द करने लगे। और मर मर कर पृथ्वीमें गिरने लगे, उसी समय दुर्य्योधनके छोटे भाई तुम्हारे पुत्र दुःशासन बेडर होकर बाण बर्षाते हुए भीमसेनकी ओर दौड़े। भीमसेन भी दुःशासनकी ओर इस प्रकार चले, जैसे महासिंह छोटे हरिण पर दौड़े, तब ये दोनों क्रोधमें भरकर प्राणोंकी आशा छोड़ कर महाघोर बाणोंसे इस प्रकार युद्ध करने लगे, जैसे पहले समयमें वीर सवर और इन्द्र लडे थे, जैसे एक हथिनीके लिये दो काम मोहित हाथी युद्ध करते हैं, ऐसे ही ये दोनों शरीर नाश करनेवाले, बाणोंसे घोर युद्ध करने लगे, और दोनोंके शरीरसे रुधिर बहने लगा, तब भीमसेनने क्रोध करके एक एक बाणसे तुम्हारे पुत्रकी ध्वजा और धनुष काट दिये। और उनके माथेमें अनेक बाण मारे, फिर सारथीका शिर काट कर पृथ्वीमें गिरा दिया. तब राजपुत्र दुःशासन आप ही घोडे हांकने लगा, और अपने तेज बारह बाण भीमसेनके शरीरमें मारे, तब एक इन्द्रके वज्रके समान घोर सुवर्ण और नीलम आदि मणियोंसे जटित भीमसेनको मारनेमें समर्थ घोर बाण दुःशासनने छोड़ा, उस बाणके लगनेसे भीमसेनका कवच कट गया, शरीरसे रुधिर बहने लगा और हाथ पैर फैलकर मरे हुएके समान रथमें गिर पड़े थोड़े समयमें फिर उठकर गर्ज्जने लगे।

८२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! उस समय युद्ध करते हुए राजपुत्र दुःशासनने घोर कर्म्म किया एक बाणसे भीमसेनका धनुष काट दिया, और साठ बाण उनके सारथीके शरीरमें मारे अनन्तर महात्मा राजपुत्रने भीमसेनके शरीरमें नौ तेजबाण मारकर फिर अनेक बाण मारे, तब तेजस्वी भीमसेनने क्रोध करके एक जलती हुई बिजलीके समान शक्ति दुःशासनकी ओर चलाई उसे आते देख तुम्हारे पुत्रने कानतक खींच कर दश बाण मारे और उनसे वह शक्ति काट-कर पृथ्वीमें गिर गई। दुःशासनका यह कर्म्म देखकर सब योद्धा प्रसन्न होकर दुःशासनकी प्रशंसा करने लगे तब फिर एक तेजबाण उन्होंने भीमसेनके हृदयमें मारा उसके लगनेसे भीमसेन क्रोध करके बोले, हे वीर! हम तुम्हारे बाणोंसे अत्यन्त व्याकुल होगये अब तुम भी हमारी गदाका एक प्रहार सहो, ऐसा कह भीमसेनने दुःशासनके मारनेको गदा उठाई और बोले कि, हे दुरात्मा। अब हम तेरा इन सब वीरोंके देखते देखते रुधिर पीयेंगे, भीमसेनके ऐसे वचन सुन दुःशासनने एक मृत्युके समान घोररूपी शक्ति चलाई तब भीमसेनने क्रोध करके गदाको घुमाया उससे दुःशासनकी साङ्गि टूट गई और गदा उनके शिरमें लगी उसके लगनेसे दुःशासनके शिरसे रुधिर बहने लगा और दश धनुष पीछे जाकर गिरा उस वेगवती गदाके लगनेसे कांपते हुए दुःशासन कवच, माला और वस्त्रोंसे रहित होकर पृथ्वीमें गिर पड़े। हे महाराज! इसी गदासे दुःशा-

सनके रथ, घोड़े, सारथी आदिका चूरा होगया, दुःशासनकी यह दशा देख पाञ्चाल और पाण्डव प्रसन्न होकर सिंहके समान गर्जने लगे। हे आजमीढ़! दुःशासनको गिराकर भीमसेन प्रसन्न होकर गर्जने लगे, उस शब्दसे पास खड़े सब वीरोंको मूर्च्छा आगई, तब बलवान भीमसेन तुम्हारे पुत्रोंके बैरको स्मरण करके शीघ्रता सहित अपने रथसे उतरे और दुःशासनकी ओर दौड़े, उस घोर युद्धमें दुःशासनकी यह घोर दशा देख सब प्रधान वीरोंके बीचमें घोर कर्म्म करनेवाले भीमसेनने द्रौपदीके वस्त्र और बाल खींचने, रजस्वला दशामें सभामें लाने, पतियोंके आगे कठोर बचन कहने आदि दुःखोंको स्मरण करके ऐसा क्रोध किया जैसे जलती अग्निपर घी पड़नेसे अधिक ज्वाला होती है। तब कर्ण, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा और कृतवर्म्मासे कहा, अब हम दुःशासनको मारते हैं तुम सब इकट्ठे होकर उसकी रक्षा करो, ऐसा कहकर वेगसे उसकी ओर दौड़े जैसे सिंह मतवाले हाथीको पकड़ लेता है, ऐसे ही बलवान भीमसेनने दौड़कर दुर्य्योधन और कर्णके आगे दुःशासनको पकड़ लिया अनन्तर कांपते हुए दुःशासनके गलेपर पैर रखकर खड्ग खींचा और क्रोध करके उसकी ओर देखने लगे, और क्रोध करके बोले, हे दुरात्मन्! बोल तूही है जो राजसूय यज्ञमें द्रौपदीके केश पवित्र हुए थे उनको तैने कर्ण और दुर्य्योधनके आगे अपने हाथसे पकड़ा था। अब भीमसेन पूछते हैं कि तुझमें कुछ शक्ति है? भीमसेनके ऐसे बचन सुन और उनको ओर देख क्रोध करके कौरव और सृञ्जयोंके बीचमें राजपुत्र दुःशासनने ऐसे घोर बचन कहे, हे भीम! ये देखो हाथीको सूंड़के समान सुन्दर सहस्रों गौओंको देनेवाले और क्षत्रियोंका नाश करनेवाला यही मेरा हाथ है जिसने प्रधान कौरव और तुम्हारे सबके देखते ते द्रौपदीके केश खींचे थे। ऐसे कहते हुए, राजपुत्रकी छातीको भीमसेनने अपने हाथोंके बलसे दबाकर फिर पुकारकर सब योद्धाओंसे कहा, जिस क्षत्रीका अपने बलका अभिमान हो वह मरते हुए दुःशासनको बचावे। मैं अभी इस दुष्टके हाथ तोड़ूंगा, ऐसा कहकर भीमसेनने वज्रके समान हाथसे दुःशासनका हाथ उखाड़ लिया। फिर छाती चीरकर उसका गर्म्म रुधिर पिया और फिर उसका शिर काट लिया अपनी प्रतिज्ञा सत्य करनेके लिये दुःशासनका रुधिर चाखते हुए बोले, मैंने ऐसा स्वाद माताके दूध, घी, शहत और उत्तम जलमें भी नहीं पाया था। और भी जगत्‌में जो अमृतके समान वस्तु हैं, उनमें भी ऐसा स्वाद नहीं पाया जैसा आज इस दुष्ट दुःशासनके रुधिरमें पाया। दुःशासनको मरा देख क्रोधमें भरकर भीमसेन फिर बोले, भाई अब मैं तेरा क्या कर सक्ता हूं? अब मृत्यु तेरी रक्षा कर रही है। रुधिर पीते भीमसेनको देख सब क्षत्री डरके मारे इधर उधरको भागने लगे, और भीमसेन प्रसन्न होते हुए दुःशासनको छोड़ चल दिये। जो डरके मारे नहीं भगे उनके हाथसे शस्त्र गिर गये और अनेक क्षत्री आंख बन्द कर पृथ्वीमें बैठ गये, दुःशासनका रुधिर पीते देख भीमसेनको सब क्षत्री भयसे व्याकुल हो यह मनुष्य नहीं है, ऐसा कहते हुए भागने लगे। सब क्षत्री कहने लगे भीमसेन राक्षस है तब राजा चित्रसेन भी युद्धको छोड़ भागे, उनको भागते देख अनेक बाण छोड़ते हुए निडर युधामन्यु उनके पीछे दौड़े और सात बाण उनके शरीरमें मारे। जैसे चोट लगनेसे भागता हुआ विषभरा सांप किसीपर काटनेको दौड़ता है ऐसे ही चित्रसेन उन बाणोंके लगनेसे लौटे और तीन बाण राजपुत्र युधामन्यु और छः बाण उनके सारथीके मारे, तब युधामन्युने क्रोध करके एक अत्यन्त वेग उत्तम पङ्खवाला घोर बाण कानतक खींचकर

नकसेनपर चलाया उससे उनका शिर कटकर पृथ्वीमें गिर गया। अपने भाईको मरा देख कर्णको महाक्रोध हुआ, तब वे अपने बाणोंसे पाण्डवोंकी सेनाको व्याकुल करते नकुलसे युद्ध करनेको गये, भीमसेन भी दुःशासनको मारकर एक अञ्जली रुधिर लेकर गर्ज्जते हुए सब कौरवोंको सुनाकर बोले, अब मैं इस नीचका रुधिर कण्ठतक पीऊंगा, यही मूर्ख सभामें पाण्डवोंको बैल कहकर नाचता था, अब वही बैल मरा हुआ पड़ा है अब हम भी इस बैलको मारकर बैल बैल कहकर नाचते हैं। और इसके बैल होनेका प्रमाण भी देते हैं उन मूर्खोंने कृष्णाको पकड़ना चाहा था, हमें लाखके घरमें जलाना चाहता था, जुआ खेलकर कपटसे हमारा राज्य छीना और तेरह वर्षके लिये वनको भेजा। इसी दुष्टने द्रौपदीके बाल पकड़कर खींचे थे, इसीसे युद्धमें और घरमें हमें शस्त्रोंसे मारना चाहता था, उन्हीं दुष्टोंने शकुनि और राधापुत्रको सम्मतिसे हम पाचोंको विराट नगरमें रखकर अलग अलग दुःख दिये थे, हमें यह निश्चय है कि जितने दुःख पड़े हैं इन सबका मूल यही दुष्ट था। हमने पुत्रों सहित धृतराष्ट्रके राज्यमें सदा दुःख ही पाया सुख कभी नहीं, ऐसा कहकर और बिजय पाकर भीमसेन, कृष्ण और अर्ज्जुनसे बोले, हे वीर! मैं क्रोधी भीमसेन हूं इस समय मैंने जो दुःशासनका रुधिर पिया है वही मेरे मुखसे बह रहा है मैंने जो सभामें प्रतिज्ञा की थी सो सत्य कर ली अब मैं सब कौरवोंके बीचमें दूसरी प्रतिज्ञा करता हूं कि, इस यज्ञमें अपने पैरसे दुरात्मा दुर्य्योधनरूपी पशुका शिर पीसकर बलिदान करूंगा तभी शान्त हूंगा। जैसे वृत्रासुरको मारकर इन्द्र प्रसन्न हुए थे ऐसे ही महाबलवान महात्मा भीमसेन दुःशासनको मारकर प्रसन्न होकर गर्ज्जने और नाचने लगे।

८२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! दुःशासनके मरनेपर युद्धसे न भागनेवाले महारथ तुम्हारे पुत्रोंको महा क्रोध हुआ तब निषङ्गी, कवची, पाशी, दण्डधारी, धनुग्रधारी, अलोलुप, सह, षढ़, वातवेग और सुवर्च्चा ये सब दुःशासनके शोकसे व्याकुल होकर भीमसेनके ऊपर घोर बाण बर्षाने लगे। भीमसेन उन महारथोंके बाणोंसे व्याकुल होकर क्रोधके मारे यमराजके समान होगये और अत्यन्त शीघ्र चलनेवाले दश बाणोंसे उन दशों बीरोंका शिर सुवर्ण कवच सहित काट डाला उन दशोंके मरनेसे तुम्हारी सेना इधर उधरको भागने लगी उस समय कर्ण भी देख रहे थे, और तुम्हारी सेना भाग चली। तब कर्ण भी भयसे कांपने लगे, यमराजके समान भीमसेनका पराक्रम देख कर्ण बहुत डर गया, उनकी चेष्टा देख पराक्रमी शल्य समयानुसार यों बोले, हे राधापुत्र। तुम डरो मत डरना तुमको अनुचित है, ये देखो तुम्हारी ओरके सब राजा भीमसेनके डरसे भागे जाते हैं। राजा दुःशासनके शोचसे मूर्छित होगये हैं इस समय धृतराष्ट्रके पुत्र दुःशासनका रुधिर पिया जानेसे मूर्खके समान खड़े हैं। और कुछ नहीं कर सक्ते, ये सब कृपाचार्य्य आदिके बीर और बचे हुए भाई राजा दुर्य्योधनको समझा रहे हैं। ये सब अर्ज्जुन आदि बीर पाण्डव बिजय पाकर केवल तुम्हारी सेना हीसे लड़नेको चले आते हैं। हे पुरुष शार्द्दूल। अब तुम क्षत्रियोंके धर्मानुसार अत्यन्त उत्साह करके अर्ज्जुनसे लड़नेको चलो, हे महाबाहो! दुर्य्योधनने युद्धका सब भार तुम्हारे ही भरोसे छोड़ दिया, सो अब तुम अपने बल और उत्साहके अनुसार उनका उपकार करो, हे राधापुत्र! विजय होनेसे अचल कीर्त्ति होगी और मरनेसे सदैवके लिये स्वर्ग मिलेगा, वे तुम्हारे पुत्र क्रोधी वृषसेन खड़े हैं। ये तुमको डरा हुआ देखकर आप ही पाण्ड-

वोंसे युद्ध करने जाना चाहते हैं। महा तेजस्वी शल्यके ऐसे वचन सुन कर्णने लड़नेका दृढ़ सङ्कल्प किया तब दण्डधारी यमराजके समान गदाधारी भीमसेनको कौरवोंसे युद्ध करते देख वृषसेन उनसे लड़नेको चले, उनको आते देख घोर बाण बर्षाते हुए नकुल इस प्रकार दौड़े जैसे अपने शत्रु जम्भको मारनेके लिये इन्द्र दौड़े थे, तब नकुलने एक बाणसे कर्णके पुत्रकी स्फटिक दण्डवाली, ध्वजा काट दी और एक बाणसे सुवर्ण भूषित धनुष काट दिया, वृषसेनने उस धनुषको फेंककर शीघ्रतासे दूसरा धनुष लिया और नकुलको ओर शस्त्रविद्याके अनुसार अनेक दिव्य बाण चलाये। जैसे आहुति देनेसे अग्नि बढ़ती है ऐसे ही अपनी बुद्धि, बल और बाण लगने और क्रोधसे कर्णका पुत्र प्रकाशित होने लगा, अनन्तर कर्णके पुत्रने सोनेके जालवाले शीघ्रगामी अति उत्तम बाणोंसे नकुलके सफेद घोड़ोंको मार डाला, तब नकुल उस मरे हुए घोड़ोंवाले रथसे आकाशके समान निर्म्मल चन्द्रमाके समान चमकते हुए खड्‌ग और ढाल लेकर कूदे और खड्‌गको घुमाते हुए उस युद्धमें पक्षीके समान घूमने लगे, तब बिचित्र योद्धा नकुलने कूद कूद कर अनेक हाथी, घोड़े और मनुष्योंको मार डाला, वह सब इस प्रकार मर मरकर पृथ्वीमें गिरे, जैसे अश्वमेध यज्ञमे पशु, एकले नकुलने अपनी विजयके लिये अनेक देशोंके उत्पन्न हुए महा योद्धा, सत्यवादी चन्दन आदिसे विभूषित दो सहस्र क्षत्रियोंको मारा, इस प्रकार युद्ध करते नकुलके शरीरमें कर्णके पुत्रने अनेक बाण मारे, उन बाणोंके लगनेसे बीर नकुलको और भी क्रोध बढ़ा उसी समय भीमसेन उनकी रक्षा करने लगे, तब नकुलने और भी अनेक क्षत्रियोंका नाश किया एकले नकुलको ऐसा घोर कर्म्म करते देख कर्णके पुत्रको महा-शोक हुआ, हे राजन्! तब उन्होंने खेलते हुए नकुलके शरीरमें अठारह तेज बाण मारे, उ बाणोंके लगनेसे बीर तेजस्वी नकुल कर्ण पुत्रको मारनेके लिये हाथ फैला कर इ प्रकार दौड़े जैसे कोई बाज पङ्ख फैला मांसके लिये पक्षीकी ओर दौड़ता है, यद्यपि वृषसेनने बीर नकुलके मारनेके लिये अनेक बाण चलाये परन्तु उन्होंने उन सबको अपनी चालोंसे काटदिया, इस प्रकार विचित्र गतियोंसे घूमते हुए विचित्र योद्धा नकुलकी अनेक तारोंवाली ढालको वृषसेनने सहस्रों बाणोंसे काट दिया, तब नकुल घोर शत्रुओंके नाश करनेवाली महा प्रकाशमान् सर्पके समान विष भरे केवल खड्‌ग ही को घुमाने लगे, त कर्णके पुत्रने छः तेज बाणोंसे उनका खड्‌ग भी काट दिया, और अनेक बाण उनके हृदयमें मारे, तब अन्य मनुष्योंसे न करने योग्य यह घो कर्म्म करके और बाणोंसे व्याकुल होक नकुल दौड़कर भीमसेनके रथपर चढ गये। अर्ज्जुनके देखते देखते माद्रीपुत्र नकुल वृषसे नके बाणोंसे पीड़ित होकर भीमसेनके रथप इस प्रकार कूदकर चढ़े, जैसे सिंह पर्वतप चढ़े। तब बीर वृषसेनने महा क्रोध कर एक रथपर बैठे दोनों महा रथोंपर अने बाण बर्षाये।

जब बीर नकुलका खड्‌ग और रथ क गया, तब अनेक कौरव इकट्ठे होकर बा बर्षाते हुए उन पर दौड़े। तब भीमसेन औ अर्ज्जुन भी अग्निके समान क्रोधसे भरकर कौर वोंकी ओर अनेक बाण चलाने लगे। त अर्ज्जुनने भीमसेनसे कहा, इस कर्णके पु हमारी सेना और नकुलको बहुत व्याकुल कि है, इसलिये आप इससे युद्ध करनेको जाइ ऐसा कहकर अर्ज्जुनने अपने रथको भीमसे रथके पास पहुंचा दिया तब नकुलने अर्ज्जु कहा कि, इस वृषसेनको आप ही मारिये, भी सेनके आगे नकुलके ऐसे बचन सुन अर्ज्जु

वानर ध्वजा और कृष्ण सारथी वाला रथ वृषसेनको ओर शीघ्र चलाया।

८४ अध्याय समाप्त।

नकुलको खड्ग, धनुष और रथसे हीन सुनकर तथा वृषसेनके बाणोंसे व्याकुल जानकर द्रुपदके पांचों महारथपुत्र सात्यकी और द्रौपदीके पांचो पुत्र ध्वजा उड़ाते घाड़ोंको कुदाते रथोंपर बैठे शिक्षित सारथियोंके सहित दौड़े। ये सब महापराक्रमी वीर सांपोंके समान बाणोंसे तुम्हारे हाथी, घोड़े, और पदातियोंका नाश करने लगे। तुम्हारी ओरसे भी उन सबको मारनेके लिये मेघ और हाथीके समान शब्दवाले रथोंपर चढ़कर कृपाचार्य्य, कृतवर्म्मा, राजा दुर्य्योधन, अश्वत्थामा, उलूक और वृक, क्राथ, देव और अवध दिव्य धनुष धारण करके दौड़े। हे महाराज! ये सब वीर पहले कहे पाण्डवोंके ग्यारह वीरोंपर बाण बर्षाते हुए चले, तब नवीन काले मेघके समान काले, कर्णवाले, पर्व्वतोंके शिखरके समान भारी शीघ्र चलनेवाले, हाथियोंपर चढ़कर कौशलदेशके चवौ दौड़े, जैसे बिजलियोंके सहित काले मेघ आकाशमें शोभित होते है, तैसे ही सुवर्ण जालवाले, शिक्षित महावतो सहित महावीर योद्धासे युक्त थे, हाथी शोभित होने लगे। तब कुलिन्द देशके राजपुत्रने अपने बाणोंसे कृपाचार्य्यको घाड़ोके सहित व्याकुल कर दिया, अनन्तर कृपाचार्य्यने हाथीके सहित उसे मारडाला उसके छोटे भाईने सूर्य्यको किरणोंके समान अनेक तोमर कृपाचार्य्यके रथको ओर चलाये, तब शकुनिने बाणोंसे उसका शिर काट लिया, इन दोनों राजपुत्रोंके मरनेसे तुम्हारी सेना बहुत प्रसन्न हुई सब योद्धा शंख बजानेलगी। फिर बाण बर्षाते हुए कुलिन्द देशको सेनापर दौड़े। तब पाञ्चाल, सृञ्जय और कौरवोंका घोर युद्ध होने लगा, अनेक शक्ति, खड्ग, गदा और बाण चलने लगे। तथा हाथी, घोड़े, और मनुष्य मरने लगे। जैसे बड़ी आंधी चलनेसे बिजलीके सहित मेघ सब दिशाओंमें गिरने लगते हैं। ऐसे ही शस्त्रधारी हाथी, घोड़े, और रथोंपर चढ़े तथा पैदल योद्धा मर मर कर गिरने लगे। तब शतानीकको सेनाके मतवाले, हाथियोंको और रथी तथा अनेक पदातियोंको कृतवर्म्माने मारकर पृथ्वीमें गिरा दिया, तब अश्वत्थामाने भी वीर और महावतोंके सहित तीन मतवाले, हाथियोंको मारकर इस प्रकार पृथ्वीमें गिरा दिया। जैसे इन्द्र अपने बज्रसे काटकर पर्व्वतोंको गिराते हैं। कुलिन्द राजके तीसरे भाईने तुम्हारे पुत्रके शरीरमें अनेक बाण मारे, उन्होंने भी अपने तेज बाणोंसे उसे हाथीके समेत मारकर गिरा दिया, दुर्य्योधनके बाण लगनेसे उस हाथीके शरीरसे इस प्रकार रुधिर बहने लगा। जैसे वर्षा कालमें गेरुके पर्व्वतसे जल बहता है, तीसरे कुलिन्द राजपुत्रके हाथीने दौड़कर घोड़ोंके समेत क्राथका रथ उलटा कर तोड़ डाला। परन्तु क्राथ बच गये, तब उन्होंने अपने बाणोंसे राजकुमार सहित हाथीको मारकर इस प्रकार गिरा दिया। जैसे इन्द्र बज्रसे काटकर पर्व्वतको गिराते हैं। तब एक पर्व्वतबासी कुलिन्ददेशके हाथीपर चढ़े योद्धाने अपने बाणोंसे राजा क्राथको मारकर इस प्रकार गिरा दिया, जैसे वायु बृक्षको गिरा देता है। तब वृकने उस वीरको ओर बारह बाण चलाये उसी समय उस हाथीने दौड़कर अपने चारो पैरोंसे घोड़े सारथी और रथके सहित वृकका चूरा कर दिया। अनन्तर बभ्रूकेपुत्रने उस हाथीको महावतके सहित मारडाला उसे सहदेवकेपुत्रने मारकर पृथ्वीमें गिरा दिया। तब कुलिन्द देशका चौथा राजपुत्र बड़े दांतवाले मतवाले हाथीपर चढ़कर शकुनिको मारने

दौड़े। तब शकुनिने अपने बाणोंसे उसका शिर काट लिया, इतने ही समयमें शतानीकने तुम्हारे अनेक हाथी, घोड़े और मनुष्योंको इस प्रकार मार डाला जैसे गरुड़ सांपोंको मार डालता है। तब कलिङ्गदेशके राजपुत्रने क्रोध करके नकुलपुत्र शतानीककी ओर अनेक बाण चलाये, शतानीकने एक बाणसे उसका कमलके समान मुखयुक्त शिर काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया, तब कर्णके पुत्रने क्रोध करके शतानीकके शरीरमें तीन, अर्ज्जुनके तीन, कृष्णके बारह, भीमसेनके तीन और नकुलके सात बाण मारे, वृषसेनका यह अमानुष कर्म्म देख सब कौरव बड़े प्रसन्न हुए परन्तु अर्ज्जुनके पराक्रम जाननेवाले वीरोंने जाना कि यह आगमें घी पड़ रहा है। तब शत्रुनाशन अर्ज्जुन अपने भाई नकुलको सब सेनाके बीचमें रथहीन और कृष्णको घावोंसे व्याकुल देख कर्णके आगे वृषसेनकी ओर दौड़े सहस्रों बाणधारी महापराक्रमी वीर अर्ज्जुनको अपनी ओर आते देख वीर वृषसेन इस प्रकार दौड़े जैसे पहले समयमें नमुची इन्द्रकी ओर दौड़ा था, तब वीर कर्ण पुत्रने एक तेजबाण अर्ज्जुनके हृदयमें मारा, फिर वेगसे इस प्रकार गर्जे जैसे इन्द्रके शरीरमें बाण मारकर नमुची गर्ज्जे थे, फिर अर्ज्जुनके शरीरमें अनेक तेज बाण मारे फिर कृष्णके शरीरमें नौ बाण मारकर अर्ज्जुनके शरीरमें पहलेके समान नौ बाण मारे तब अर्ज्जुनने कर्णपुत्रको मारनेके लिये युद्धमें क्रोधसे भौंह टेढ़ीकी फिर शस्त्र छोड़कर और यमराजके समान लाल नेत्र करके कर्णसे बोले, हे कर्ण! मैं तुम्हारे और दुर्य्योधन तथा अश्वत्थामाके आगे वृषसेनको मारता हूं, तुम सब लोगोंने मेरे पुत्र बलवान अकेले अभिमन्युको मेरे पीछे मिलकर मारडाला था परन्तु मैं तुम्हारे सबके देखते देखते इस कर्णके पुत्रको मारता हूं। रे मूर्ख! अर्ज्जुन हूं, इस तेरे पुत्रको मार कर पीछे तुझे भी मारूंगा; रथमें बैठे सब क्षत्रियोंको उचित है कि इसीकी रक्षा करें, अब मैं वृषसेनको मारता हूं, अब मैं सब वैरके मूल तुझे मारकर दुर्य्योधनका आश्रय तोड़ूंगा थोड़े ही समयमें दुर्य्योधनको भी भीमसेन मारडालेंगे, इस नीच मूर्ख दुर्य्योधनकी दुर्बुद्धिसे यह क्षत्रियोंका नाश हुआ ऐसा कहकर अर्ज्जुनने धनुषपर टङ्कार दी और वृषसेनको लक्ष्य करके युद्धमें अनेक बाण चलाये, फिर हंसकर दश बाण उसको मारनेके लिये मर्म्मस्थानोंमें मारे, फिर चार बाणोंसे उसके दोनों हाथ धनुष और शिर काट दिये, तब वह पृथ्वीमें गिर गया जैसे पर्व्वतका शिखर गिरनेसे फला फूला शालका वृक्ष टूट जाता है ऐसे अर्ज्जुनका बाण लगनेसे कर्णका पुत्र पृथ्वीमें गिरा उसको रथसे गिरता देख बलवान् कर्ण शोक और क्रोधमें भर कर अर्ज्जुनको मारने दौड़े, महाराज कर्ण क्रोधमें भरकर कृष्ण और अर्ज्जुनको मारने चले।

८५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! उस समुद्रके समान बड़े शरीरवाले सूतपुत्रको अपनी ओर आते देख और देवतोंसे भी न हारने योग्य जानकर श्रीकृष्णने अर्ज्जुनसे कहा यह सफेद घोड़े और शल्य सारथीवाला कर्णका रथ चला आता है। हे पाण्डव अर्ज्जुन! अब तुम सावधान हो आज इसीसे तुम्हें युद्ध करना होगा। यह सफेद घोड़ेवाला राधापुत्र कर्ण अनेक पताका और अनेक घोड़ोंवाला रथ, तुम्हारे पास आगया, ये देखो यह कर्णका सफेद घोड़ेवाला रथ, आकाशमें उड़ते विमानके समान चला आता है। ये सांप युक्त कर्णकी ध्वजा फहरा रही है इस समय इस अत्यन्त ऊंची ध्वजाकी शोभा इन्द्रधनुषके समान दीख रही है,

र्य्योधनकी विजयके लिये रथमें बैठे सूतपुत्र
ले आते हैं। ये साक्षात् मद्रदेशके राजा महा-
ाज शल्य तेजस्वी कर्णके रथपर बैठे घोड़ोंको
ांक रहे हैं, ये मेघकी धाराके समान कर्णके
ाण चले आते हैं इधर अनेक नगारे और सङ्ख
ज रहे हैं, ये देखो चारों ओर महा तेजस्वी
र्णके गर्ज्जनेका शब्द चला आता है, इससे
सब शब्द छिपे जाते हैं, ये कर्णके धनुषका
ब्द सुनकर पाञ्चाल महारथ भागेजाते हैं।
स समय उनकी दशा ऐसी हो रही जैसे बनमें
ंहकी देख कर हरिणोंकी, तुम ही इसे मारो
यों कि तुम्हारे सिवाय जगत्में ऐसा कोई
ानुष्य नहीं है जो इनके वाणोंको सह सके।
म देवता, राक्षस और गन्धर्व्वोंके सहित चर
चर तीनों लोकोंको युद्धमें जीत सकते हो,
मने तीन नेत्रधारी भगवान् शिवको प्रसन्न
किया है उन्हें कोई देख भी नहीं सक्ता है
रन्तु तुमने उन्हींसे युद्ध किया तुमने उन्हें
द्धमें प्रसन्न किया है। और सब देवताओंसे
रदान पाये हैं, तुम देव देव महादेवकी कृपासे
र्णको इस प्रकार जीतो जैसे इन्द्रने नमुचीको
ीता था। हे अर्ज्जुन! हे महाबाहो! तुम्हारी
दा कल्याण हो अब युद्धमें विजय करो।

अर्ज्जुन बोले, हे मधुनामक दानवके मारने-
ाले कृष्ण! जब तीनलोकके कर्त्ता आप मुझ-
र प्रसन्न हुए तो युद्धमें निश्चय ही मेरी जीत
ोगी मैं कदापि हारूंगा नहीं। हे महारथ
ृष्ण! आप यह निश्चय जान लीजिये कि कर्णके
ारे बिना आज अर्ज्जुन नहीं लौटेंगे, अब
ाप हमारे घोड़ोंको हांकिये। हे गोविन्द!
ब हमारे वाणोंसे कर्णको अथवा कर्णके
ाणोंसे हमें आप मरा देखेंगे, आज यह ऐसा
ोर युद्ध होगा कि जबतक पृथ्वी रहेगी तबतक
सका वर्णन भी रहेगा।

महारद कृष्णसे ऐसा कहकर अर्ज्जुन
र्णकी ओर इस प्रकार चले, जैसे मतवाला
हाथी मतवाले हाथीपर दौड़े फिर अर्ज्जुनने
श्रीकृष्णसे कहा। हे कृष्ण! बहुत समय नष्ट
हुआ जाता है घोड़ोंको शीघ्र हांको महात्मा
पाण्डवके ऐसे बचन सुनकर श्रीकृष्णने पाण्ड-
वोंकी जय ऐसा कहकर घोड़ोंको वायुके समान
हांका थोड़े समयमें वह वायुके समान तेज रथ
कर्णके रथके आगे जा पहुंचा।

८६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! वृषसेनको मरा
देख महातेजस्वी कर्ण पुत्रके शोकसे रोने लगे,
फिर क्रोधसे लालनेत्र करके अर्ज्जुनको पुकारते
हुए युद्ध करनेको चले, वे दोनों सिंहके चमड़ेसे
मढ़े हुए रथ उस समय उदय हुए दो सूर्य्यके
समान दीखने लगे। सफेद घोड़ोंके रथपर
चढ़े हुए शत्रुओंको मारनेवाले दोनों बीर
आकाशमें उदय हुए चन्द्रमा और सूर्य्यके
समान दीखने लगे। उन दोनोंको तीन लोकके
जीतनेके लिये इन्द्र और बैरचोनके समान खड़े
हुए देख सब बीर आश्चर्य्य करने लगे। वे
दोनों बीर सब राजोंके आगे धनुष, ताल और
गर्ज्जनेका शब्द करने लगे, कर्णकी नाग युक्त
और अर्ज्जुनकी वानर युक्त ध्वजा देखके सब
कोई आश्चर्य्य करने लगे। हे भारत! उन
दोनों रथोंको एक स्थान पर खड़ा देख दोनों
ओरके बीर सिंहोंके समान गर्ज्जकर साधु साधु
कहने लगे। उन दोनोंको युद्धके लिये उप-
स्थित देख सब योद्धा लोग प्रसन्न होकर ताल
ठोंकने लगे। कर्णको प्रसन्न करनेके लिये चारों
ओरसे शङ्ख आदि बाजे बजाते हुए तुम्हारी
ओरके अनेक योद्धा उनके पास गये, इसी प्रकार
पाण्डवोंके योद्धा भी अर्ज्जुनको प्रसन्न करनेके
लिये चारों ओरसे शङ्ख आदि अनेक बाजे
बजाने लगे, उस कर्ण और अर्ज्जुनके समागममें
बीरोंके ताल और गर्ज्जनेके शब्दसे सब

पूरित होगई, उन दोनों पुरुषसिंहको धनुष, बाण, ध्वजा युक्त कवच और हत्थी पहने उत्तम शङ्ख धारण किये सफेद घोड़ोंके रथोंपर बैठे देख उनके सुन्दर रूपसे सब प्रसन्न होगये। उत्तम लाल चंदन लगे, ध्वजा और पताकायुक्त रथोंपर बैठे उत्तम वाणोंसे युद्ध करनेवाले, दोनों बीर ऐसे शोभित हुए जैसे दो सूर्य्य, ये दोनों महारथ सफेद छत्र, चमर, पङ्खे तथा कृष्ण और शल्य सारथीके सहित एक समान दीखने लगे, ये दोनों सिंहके समान कन्धे, लम्बी भुजा और लाल नेत्रवाले, दोनों बीर एक दूसरेको मारनेके लिये, अपनी विजयकी इच्छा करके इस प्रकार दौड़े जैसे दो बैल युद्ध करनेको चलते हैं। ये दोनों सूर्य्य और चन्द्रमाके समान तेजस्वी, यम-राज और मृत्युके समान क्रोधी विषैले सर्पोंके समान तेज; इस प्रकार युद्ध करनेको चले जैसे इन्द्र और वृत्रासुर चले थे। जैसे दो ग्रह प्रलय करनेको उदय होते हैं। ऐसे ही ये दोनों देव पुत्रोंके समान पराक्रमी बीर युद्ध करनेको उप-स्थित हुए, जैसे इच्छानुसार सूर्य्य और चन्द्रमा इकट्ठे होजांय, ऐसे हो ये दोनों बीर अनेक प्रकारके शस्त्र धारण करके यद्ध करनेको उप-स्थित हुए। हे पृथ्वीनाथ! उन दोनों पुरुषसिं-होंको शार्द्दूलके समान खड़ा देखकर तुम्हारी सेना बहुत प्रसन्न हुई, कर्ण और अर्ज्जुनको युद्धके लिये खडा देख दोनों ओरके बीरोंको अपनी अपनी विजयमें सन्देह होगया, वे दोनों उत्तम शस्त्र धारण किये दोनों युद्धसे थके बीर अपने तालके शब्दसे आकाशको पूरित करने लगे, ये दोनों समान बलवान योद्धा समान पराक्रमी जगत् प्रसिद्ध बलमें इन्द्र और सम्बरके तुल्य थे, दोनों हो कृतबीर्य्यपुत्र अर्ज्जुन दशरथ पुत्र राम विष्णु और शिवके समान योद्धा ये वे दोनों युद्धमें सफेद घोड़े उत्तम सारथी और उत्तम रथोंके सहित खड़े हुए, हे महाराज!

दोनोंको युद्धमें खड़े देख सब योद्धा आश्चर्य्य करने लगे। हे महाराज! तुम्हारे सब पुत्र शीघ्रता सहित बहुत सेना सङ्गमें लेकर बीर कर्णकी रक्षा करने लगे इसी प्रकार धृष्टद्युम्न आदि अनेक योद्धा अद्वितीय बीर अर्ज्जुनकी रक्षा करने लगे। हे पृथ्वीनाथ। उस समय दोनों ओरसे कर्ण और अर्ज्जुन जुवारियोंके दांवके समान होगये और सब बीर सभासदोंके समान खड़े होकर देखने लगी और जय और पराजयका सबको निश्चय होगया उस समय जय और पराजयका दांव रख हम और पाण्डव युद्धरूपी जुवा खेलने लगे। हे महाराज। तब वे दोनों बीर एक दूसरेको मारनेकी इच्छासे युद्ध करनेको खड़े हुए जैसे दो ग्रह धूएंसे भरकर उदय होते हैं इन्द्र और वृत्रासुर जैसे इकट्ठे हुए थे, ऐसे ही ये दोनों बीर लड़नेको उपस्थित हुए, हे भरतकुल सिंह। आकाशमें घूमते हुए सिद्धोंका कर्ण और अर्ज्जुनकी बिजयके लिये बिवाद होने लगा, कोई कहता था कि अर्ज्जुन, देवता, दानव, गन्धर्व पिशाच, सर्प और राक्षस आदि सब जगत निवासी जीव इन दोनोंकी विजयके लिये, बिवाद करने लगे। सब आकाशके देवता कर्ण और अर्ज्जुनका पक्ष लेकर विवाद करने लगे। जिस प्रकार आकाशके घूमनेवाले, सिद्धोंने माताके समान कर्णका पक्ष धारण किया था। ऐसे ही नदी, समुद्र, वृक्ष और लताओंके सहित पृथ्वीने अर्ज्जुनका पक्ष लिया, हे शत्रुनाशी। उस समय असुर, राक्षस और गुह्यकोंने प्रसन्न होकर कर्णका पक्ष किया, मुनि, चारण, सिद्ध, गरुड़, और पक्षी, रत्न खानि, वेद, इतिहास, उपवेद, उपनिषद, रहस्य और संग्रह, वासकी, चित्रसेन, तक्षक और मणिक आदि, कद्रूके पुत्र सब विषैले सर्प अर्ज्जुनकी ओर हुए, ऐरावत और मय और शालेय आदि साप ये सब भी अर्ज्जुन हीकी ओर थे। और छोटे छोटे सांप कर्णकी ओर हुए। भेड़िये

ारिया, खरहे, मोगल्य आदि सब जोव जन्तु, अर्ज्जुनकी बिजयकी इच्छा करने लगे। इन्द्र, मरुत, साध्य, रुद्र, विश्वदेव, अश्विनीकुमार, अग्नि, चन्द्रमा, वायु, दशों दिशा, ये सब अर्ज्जुनकी ओर और आदित्य नामक देवता कर्णके पक्षमें हुए, हे राजन्! बनिये शूद्र, सूत और सब वर्णसङ्कर कर्णकी बिजय चाहने लगे। देवता पितर और इनके सब सेवक, वरुण, कुबेर और यमराज अर्ज्जुनकी बिजयकी इच्छा करने लगे। ब्राह्मण, क्षत्री, यज्ञ और दक्षिणा सब अर्ज्जुनकी ओर हुए। भूत, प्रेत, पिशाच और मांस खानेवाले, सब जीव जन्तु, राक्षस, चर, अचर, कुत्ते, और गीदड़ कर्णकी ओर हुए। देवऋषि, ब्रह्मऋषि और राजऋषियोंने अर्ज्जुनका पक्ष लिया। तुम्बुरु आदि सब गन्धर्व्व, अप्सरा और मुनिपुत्र भी अर्ज्जुनही की ओर हुए। जैसे वायुसे मेघ भाग जाते हैं। ऐसे ही रथको देखकर भेड़िये, पक्षियोंके झुण्ड, पदाति और रथ भागने लगे। अर्ज्जुन और कर्णका युद्ध देखनेके लिये, देवता, दानव, गन्धर्व्व, नाग, यक्ष और पक्षी आये, इसी प्रकार वेद जाननेवाले महऋषि श्राद्धखानेवाले, पितर, अनेक रूप धारनी विद्या, तपस्या, औषधी भी आकाशमें गर्ज्जती हुई घूमने लगी। हे राजन्! इस समय प्रजापति और ब्रह्मऋषियोंके सहित ब्रह्मा भी दिव्य विमान पर चढ़कर शिव भी महात्मा कर्ण और अर्ज्जुनका युद्ध देखने आये। इन्द्रने कहा कि, अर्ज्जुन कर्णको जीते और सूर्य्यने कहा कि कर्ण अर्ज्जुनको जीते इन्द्र कहने लगे। हमारा पुत्र अर्ज्जुन कर्णको मार विजय पावे, इसी प्रकार देवश्रेष्ठ सूर्य्य और इन्द्र अपना अपना पक्ष लेकर विवाद करने लगे। हे भारत' उस समय सब देवता और दानवोके दो पक्ष होगये। दोनों बीरोंको एकत्र खड़ा देख सिद्ध और देवतोंके सहित तीनोंलोक कांपने लगे। सब देवता अर्ज्जुन और सब राक्षस कर्णकी प्रशंसा करने लगे। इसी प्रकार दोनों सेनाके मनुष्य अपने अपने बीरोंकी प्रशंसा करने लगे, प्रजापतियोंके सहित ब्रह्माको आये देख सब देवतोंने उनसे कहा, हे देव! इन पुरुषसिंह बीरोंमें किसीकी विजय होगी? हमलोगोंको जान पड़ता है कि, ये दोनों समान ही रहेंगे। हे प्रभु! इन दोनोंके युद्धमें सब जगत्को सन्देह है। इसमें जो कुछ सत्य है, सो आप हमसे कहिये, हे ब्रह्मन्! आप ऐसा उपाय कीजिये, जिसमें ये दोनों समान ही रहें। देवतोंके ऐसे बचन सुन इन्द्र ब्रह्माको प्रणाम करके बोले, हे भगवन्! आपने पहले कहा था कि, कृष्ण और अर्ज्जुनकी निश्चय बिजय होगी। हम आपको प्रणाम करते हैं अब आप अपने पहले बचनको सिद्ध कीजिये, तब ब्रह्मा और शिव बोले, जिस अर्ज्जुनने खाण्डव बनमें अग्निको तृप्त किया था। और जिसने स्वर्गमें जाकर तुम्हारी सहायताकी थी, उसी अर्ज्जुनकी विजय है, कर्ण दानवोंके पक्षमें है, इसलिये हार जांयगे, हे देवनाथ! ऐसा ही होनेसे देवतोंका कल्याण होगा जगत्में सबको अपना कल्याण प्यारा है। इसलिये ऐसा ही करना चाहिये, महात्मा अर्ज्जुन सत्यवादी और धार्म्मिक है। इसलिये इन्हींको विजय होनी चाहिये, हे सहस्र नेत्रधारी! जिस अर्ज्जुनने युद्धमें शिवको प्रसन्न किया है। सो कर्णको क्यों नहीं जीत सकेंगे? जिनके रथको सब शस्त्र जाननेवाले, बलवान् शूरवीर तीनलोकके स्वामी साक्षात् श्रीकृष्ण हांक रहे हैं। और जो आप भी सब शस्त्र विद्याको जानते हैं। इनकी बिजय क्यों नहीं होगी? और ये तो देवतोंका काम है, महात्मा पाण्डवोंने बनमें रहकर बहुत दुःख भोगा है। इससे ये ही जीतेंगे, पुरुषसिंह अर्ज्जुन कर्णको जीतनेमें समर्थ भी हैं। यदि अर्ज्जुन युद्धमें न जीते तो प्रारब्ध ही उलटा हो सक्ता है। और उसके लौटनेसे सब जगत्का नाश हो सक्ता है। ये ही पुरुषसिंह कृष्ण

और अर्ज्जुन जगत्के पति हैं। इसलिये इनसे कोई नहीं बच सक्ता। श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन प्राचीन नर और नरायण ऋषि हैं, ये जगत्को अपने नियममें रखते हैं। और आप भी नियमसे चलते हैं। इससे इनके शत्रुओंका नाश होगा, इनके समान कोई मनुष्य और देवता भी नहीं है। सब सिद्ध और चारण तीनों लोकोंके सहित इनके पीछे चलते हैं, सब देवता आदि चर, अचर जगत इन्हीं दोनोंकी शक्तिसे चलता है महापराक्रमी कर्ण मरकर स्वर्गको जाय और अर्ज्जुनकी विजय होय। कर्ण, भीष्म और द्रोणाचार्य्यके सहित चाहे स्वर्गलोकमें निवास करें चाहे वसुओंके लोकमें रहें देव देव ब्रह्मा और शिवके वचन सुन इन्द्रने सब देवतोंको अपने पास बुलाकर ऐसे वचन कहे जो कुछ इन दोनों ईश्वरोंने जगतके कल्याणके लिये कहा सो तुम लोग सुनो, अब ऐसा ही होगा तुम सब सुखी हो। हे राजन्। इन्द्रके ऐसे वचन सुन सब देवता प्रसन्न हुए और आश्चर्य करके इन्द्रकी प्रशंसा करने लगे और प्रसन्न होकर सुगन्धियोंसे भरे अनेक प्रकारके फूल बर्षाने लगे। पुरुषसिंह अर्ज्जुन और कृष्णका युद्ध देखनेको सब देवता स्थिर हुए सफेद घोडोंयुक्त रथमें बैठे हुए महात्मा कृष्ण और अर्ज्जुनको सब प्रसन्न होकर देखने लगे, तब इधरसे कृष्ण और अर्ज्जुनने उधरसे कर्ण और वीर शल्यने अपने अपने शङ्ख बजाये, तब इन दोनोंका भयानक युद्ध इस प्रकार होने लगा जैसे परस्पर इन्द्र और सम्बरका हुआ था। हे भारत! रथपर चढो इन दोनोंकी निर्मल ध्वजा आकाशमें प्रलयके समय उदय हुए राहु और केतुके समान दीखने लगी। कर्णके रथपर इन्द्रधनुष और सांपके समान हाथीके चिन्हसे युक्त सुवर्ण और मणियोंसे जटित उत्तम ध्वजा लगी थी इसी प्रकार सूर्य्यके समान तेजस्वी हनुमान ... ध्वजापर बैठे हुए हनुमान अपने नेज और दांतोंसे मनुष्योंको डरा रहे थे, युद्ध इच्छा करके महातेजस्वी वन्दर अर्ज्जुनके ध्वजासे कर्णकी ध्वजापर जाते हुए जान पड़े थे जैसे गरुड़ सांपोंको मारडालते हैं ऐसे ही हनुमानने कूदकर कर्णकी ध्वजाके हाथीको चीर डाला। कर्णकी लोहेकी बनी ध्वजा भी उस वन्दरसे लडनेको दौड़ी उनका घोर युद्ध होनेके पहिले ही इनकी ध्वजायोंमें घोर युद्ध होने लगा, दोनोंके घोड़े परस्पर देख कर बोलने लगे, श्रीकृष्णने अपने तेज नेत्ररूपी बाण शल्यके मारे, इसी प्रकार शल्यने श्रीकृष्णको घोर देखा परन्तु दोनोंके नेत्र युद्धमें श्रीकृष्ण जीते, इसी प्रकार नेत्र युद्धमें कर्णको अर्ज्जुनने जीत लिया तब कर्णने शल्यको पुकारकर ऐसे वचन कहे। हे शल्य। आप सत्य सत्य कहो यदि अर्ज्जुन मुझे युद्धमें मार डालेंगे तो आप क्या कीजियेगा?

शल्य बोले,, हे कर्ण! यदि अर्ज्जुन युद्धमें तुमको मारडालेंगे तो मैं एकला ही कृष्ण और अर्ज्जुनको मार डालूंगा।

सञ्जय बोले, हे राजन्! इसी प्रकार अर्ज्जुनने श्रीकृष्णसे पूछा तब श्रीकृष्णने हंसकर कहा कि, हे कुन्तीपुत्र। तुम जो कहते हो सो सत्य है। परन्तु चाहे समुद्र सूख जाय, अग्नि ठण्डी होजाय, सूर्य्य अपने स्थानसे गिर जायं परन्तु कर्ण तुमको न मार सकेगा, यदि यह सब जगत उलट जाय और कर्ण तुमको मारडालें तो मैं केवल अपने हाथोंहीसे कर्ण और शल्यको पीस दूंगा।

श्रीकृष्णके ऐसे वचन सुन अर्ज्जुन हंसकर ऐसे बोले, हे कृष्ण! मैं एकला ही घोडे, रथ पताका और ध्वजाके सहित कर्णके मारनेमें समर्थ हूं। हे कृष्ण! आप थोडे समयमें देखेंगे कि मेरे शत्रु कर्णके छत्र, धनुष, बाण और शक्ति सब कट गये, जैसे कोई हाथी वनमें वृक्षका चूरा कर देता है ऐसे ही मैं कवच

घोड़े, शक्ति, बाण, धनुषके सहित कर्णको मार कर गिरा दूंगा। हे माधव! आज राधापुत्रकी सब स्त्री बिधवा होजायंगी निश्चय आज रातकी उन्होंने बुरे स्वप्न देखे होंगे इसने जो हमारा पहले दोष किया है सो मेरा क्रोध शान्त नहीं हुआ इसलिये आप इसकी सब स्त्रियोंको बिधवा देखेंगे जिस समय द्रौपदी सभामें आई थी तब इस मूर्ख अदूरदर्शीने हंसकर हम लोगोंको और द्रौपदीको अनेक दुर्व्वचन कहे थे। जैसे मतवाला हाथी फूले फले वृक्षको तोड़ डारता है, ऐसे ही मैं आज कर्णको मार डालूंगा। हे मधुसूदन यदुकुल श्रेष्ठ! अब आप कर्णके मरनेके पश्चात् इन मीठे बचनाको सुनेंगे कि प्रारब्धसे कर्ण मारा गया। हे जनार्द्दन! अब तुम्हारे पिताकी बहन कुन्ती और तुम्हारी बहन अभिमन्युकी माता प्रसन्न होंगी, अब तुम अपने अमृतके समान बचनोंसे रोते हुई उन दोनोंको और धर्म्मराज युधिष्ठिरको प्रसन्न करोगे।

८७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्। उस समय देवता, सांप, राक्षस, सिद्ध, गन्धर्व्व, यक्ष और अप्सराओंके झुण्डसे आकाश भर गया और विचित्र रूपी हो गया। नीचे खड़े हुए सब वीरोंने उस समय आकाशमें गीत, बाजे और नाच देखकर बहुत आश्चर्य किया और उत्तम वस्तुओंको देख बहुत प्रसन्न हुए दोनो ओरके सब योद्धा प्रसन्न होकर अनेक प्रकारके बाजे और शङ्ख, बजाकर शत्रुओंको मारने लगे। उस समय हाथी, घोड़े और मनुष्योंसे भरी हुई शक्ति, आदि शस्त्रोंसे शोभित और मरे हुए शरीरोंसे भरी हुई वह युद्धभूमि रुधिरसे भरजानेके कारण अत्यन्त शोभित हुई, डरके समीप कादरके जानेकी सामर्थ्य न थी, जिस प्रकार देवता और राक्षसोंका युद्ध हुआ था, ऐसे ही यह कौरव और पाण्डवोंका घोर युद्ध हुआ। तब अर्ज्जुन और कर्ण भी घोर बाण चलाने लगे। उस समय अर्ज्जुन कर्णके मारनेके लिये और कर्ण अर्ज्जुनके मारनेके लिये अपने बाणोंसे सेनाको मारने लगे। उस समय सब दिशाओंमें छाये हुए बाणोंसे युद्धमें अन्धकार होगया। तब दोनों ओरके बीरोंको कुछ नहीं दीखा, तब सब योद्धा भयसे कर्ण और अर्ज्जुनके पास खड़े होगये, उस समय ये दोनों एक दूसरेके बाण काटते हुए इस प्रकार युद्ध करने लगे। उन दोनोंके बाण परस्पर ऐसे मिलने लगे, जैसे पूर्व्व और पश्चिमके वायु मिल जाते हैं। उस घोर अन्धकारमें अर्ज्जुन और कर्ण दो सूर्य्यके समान प्रकाश करने लगे। यद्यपि वे और बीरोंसे युद्ध करनेको कहते थे। तो भी वहां कोई नहीं जाता था, जैसे सम्बर और इन्द्रने अपने बाणोंसे देवता और राक्षसोंकी सेनाको पूरित कर दिया था, ऐसेही इन दोनोंने भी दोनों दलोंको व्याकुल कर दिया अनेक शंख, नगारेके शब्द सुनकर दोनों पुरुषसिंह सिंहके समान गर्ज्जने लगे। ये दोनों रथोंमें बैठे हुए धनुष घुमाते सहस्रों बाणरूपी किरणधारी दोनों बीर इस प्रकार शोभित हुए, जैसे मेघोंके बीचमें सूर्य्य और चन्द्रमा, जैसे जगत्को जलानेके लिये प्रलयकालमें अग्नि और एक सूर्य्य इकट्ठे होजाते हैं। ऐसे ही दूसरेके मारनेके लिये ये दोनों अजेय बीर युद्ध करनेको उपस्थित हुए, जैसे निर्भय होकर इन्द्र और यम युद्ध करनेको खड़े हुए थे, ऐसे ही महाधनुषधारी कर्ण और अर्ज्जुन घोर बाण छोड़ते हुए युद्ध करनेको खड़े हुए।

हे राजन्! तब ये दोनों पुरुषश्रेष्ठ अपने बाणोंसे अनेक हाथी, घोड़े और मनुष्योंको मारने लगे। तब दोनों ओरकी सेना फिर भागने लगी, जिस समय तुम्हारी सेना सिंहसे

डरे हुए हरिणोंके समान भागने लगे तब दुर्य्योधन, कृतवर्म्मा, कृपाचार्य्य और सूतपुत्र शकुनि कृष्ण और अर्ज्जुनके ऊपर शरीर काटनेवाले, वाण छोड़ने लगे, तब अर्ज्जुनने क्षणमात्रमें इन पाचों महारथोंके अपने वाणोंसे घोड़े, सारथी ध्वजा, रथ और धनुष काट दिये, तब अर्ज्जुनने इन सबको अपने वाणोंसे व्याकुल करके सूतपुत्रके शरीरमें बारह बाण मारे, उस समय अनेक मतवाले हाथी, दुर्य्योधनकी रक्षा और वीर अर्ज्जुनसे युद्ध करने लगे। इसी प्रकार घोड़ोंपर चढ़कर शक, तुषार, यवन और काम्बोज अनेक प्रकारके तेज वाण वर्षाते हुए अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको आये, अर्ज्जुनने अपने वाणोंसे उस सेनाके अनेक वीरोंके शिर काट दिये, अर्ज्जुनने अपने वाणोंसे युद्ध करते हुए वीरोंके हाथी, घोड़े, और रथोंको काट डाला, उस समय आकाशमें खड़े हुए देवता साधु साधु कहकर अनेक प्रकारके बाजे बजाने लगे। और प्रसन्न होने लगे। अनेक सुगन्धसे युक्त वायु आकाशसे फूल वर्षाने लगा। इस फूल वर्षाको देख वे सब वीर आश्चर्य्य करने लगे। परन्तु कर्ण और दुर्य्योधन कुछ घबराये न कुछ आश्चर्य्यमें आये, तब अश्वत्थामाने दुर्य्योधनका हाथ पकड़ कर ऐसे बचन कहे, हे महाराज दुर्य्योधन! आप प्रसन्न हूजिये और पाण्डवोंसे सन्धि कर लीजिये लड़ाईको धिक्कार है। देखो सब शस्त्रोंके जाननेवाले, ब्रह्माके समान बुद्धिमान तुम्हारे गुरु और भीष्म आदि अनेक बीर मारे गये, हम और कृपाचार्य्य अवध्य हैं। इसीलिये अभीतक नहीं मरे, आप पाण्डवोंसे मिलकर बहुत दिन तक राज्य कीजिये, मैं अर्ज्जुनको युद्धसे रोक देता हूं। कृष्ण युद्धको चाहते ही नहीं महाराज युधिष्ठिर सदा ही जगत्का कल्याण चाहते हैं। भीमसेन, नकुल और सहदेव उनकी आज्ञाहीमें हैं। अब सन्धि होना आपकी इच्छा ही पर है, आपका और पाण्डवोंका मेल होनेसे प्रजा बहुत दिन तक सुख पावेगी दोनों ओर सम्बन्धी अपने अपने घर चले जांय, सेना युद्धसे निवृत्त होय। हे महाराज! यदि आप हमारे इन वचनोंको नहीं सुनियेगा तो शत्रुओंके हाथसे मरकर बहुत दुःख पाइयेगा। तुमने और सब जगत्ने अर्ज्जुनके इस पराक्रमको देखा, ऐसा काम इन्द्र, यमराज, ब्रह्मा, और साक्षात् कुवेर भी नहीं कर सक्ते। ये सब होनेपर भी पाण्डव हमारे वचनको नहीं टालेंगे। वे सदा आपकी आज्ञामें रहेंगे, हे राजोंके महाराज! आप सन्धि कर लीजिये, और प्रसन्न हूजिये, हम कर्णको भी युद्धसे रोक देंगे। हे महाराज! पण्डित लोग मित्रों और शत्रुओंके लिये साम, दाम, दण्ड और भेद यही चार उपाय बतलाते हैं। सो पाण्डवोंके सङ्ग आप चारों ही कर सक्ते हैं। हे राजन्! हे महाराज! हे वीर! पाण्डव लोग सदाहीसे आपके बन्धु हैं। आप प्रसन्न होकर इनसे सन्धि कीजिये ऐसा होनेसे सब जगत्का कल्याण होगा।

गुरुपुत्रके ऐसे वचन सुन दुर्य्योधन लम्बी सांस लेकर और विमन होकर बोला, हे आचार्य्यपुत्र! आप जो कहते हैं। सो सभी सत्य है, परन्तु मेरे भी कुछ वचन सुनिये, इस दुष्ट भीमसेनने जो दुःशासनको मारते समय आपके आगे शार्दूलके समान गर्ज्जकर वचन कहे थे सो मेरे हृदयमें शालते हैं। भला अब उन वचनोंको सुनकर सन्धि कैसे हो सक्ती है। जैसे वायु पर्व्वतराज मेरुको नहीं उड़ा सक्ता ऐसे ही अर्ज्जुन कर्णको नहीं मार सकते और मुझसे बैर करके अत्यन्त यत्न करने पर भी पाण्डव बहुत दिन नहीं जी सकेंगे। हे गुरुपुत्र! आप इस समय कर्णसे यह भी नहीं कह सक्ते हैं कि युद्ध मत करो क्योंकि अर्ज्जुन बहुत थक गये हैं। अब कर्ण इन्हें अवश्यही मारडालेंगे, ऐसा कहकर दुर्य्योधनने नीचा शिर कर

लिया और फिर अपने वीरोंसे कहा, तुम लोग क्यों चुपचाप खड़े हो, अब शीघ्र शस्त्र लेकर शत्रुओंका नाश करो।

८८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्। तब पुरुषश्रेष्ठ कर्ण और अर्ज्जुन शङ्ख और भेरी आदिका शब्द सुनाते हुए युद्ध करनेको उपस्थित हुए, जैसे एक हथिनीके लिये बड़े दांतवाले हिमाचलकी तराईके दो मतवाले हाथी युद्ध करते हैं ऐसे ही कर्ण और अर्ज्जुन भी युद्ध करने लगे जैसे दो मेघ या दो पर्व्वत युद्ध करनेको चलते हैं ऐसे ही वे दोनों वीर ताल, धनुष और रथके शब्द करते हुए युद्ध करनेको चले, जैसे दो पर्व्वत अनेक वृक्ष और फली फूली लताओंके सहित युद्ध करनेको चलते हैं ऐसे ही इन दोनोंके रथ चले, इनके घोर बाण इस प्रकार चले जैसे पहले समयमें इन्द्र और विरोचनके चले थे। इन बाणोंको उन दोनोंके सिवाय दूसरा कोई नहीं सह सकता था, तब दोनोंके शरीरसे रुधिर बहने लगे, जैसे मछली कछवे आदि जन्तुओंसे भरे, वायुसे तरङ्ग लेते, पक्षियोंसे शोभित दो तालाब मिलते हैं, ऐसे ही ये ध्वजा युक्त दोनों रथ मिल गये। ये दोनों इन्द्रके समान बलवान्, इन्द्रके समान उत्साही वीर इन्द्र और वृत्रासुरके समान वज्र तुल्य बाणोंसे युद्ध करने लगे। अर्ज्जुन और कर्णको रथमें बैठा देख घोड़े, हाथी और रथ तथा आकाशके देवता आश्चर्य्य करके कांपने लगे। जिस समय मतवाले हाथीको ओर मतवाले हाथीके समान अर्ज्जुन कर्णकी ओर चले, तब सब योद्धा वस्त्र और पत्तोंके सहित हाथ फैलाकर सिंहके समान गर्ज्जने लगे। सब पाञ्चाल कहने लगे, हे अर्ज्जुन! आप कर्णको मारिये इसका शिर काटकर दुर्योधनको राज्यसे भ्रष्ट कीजिये इसी प्रकार हमारी ओरके योद्धा कहने लगे कि, हे कर्ण! तुम जाओ और अपने तेज बाणोंसे शीघ्र अर्ज्जुनको मारो और युधिष्ठिरके लिये फिर बहुत दिनको बनवास दो। तब कर्णने अर्ज्जुनके शरीरमें दश बाण मारे, तब अर्ज्जुनने भी हंसकर अत्यन्त तेज बाण कर्णकी कोखमें मारे, तब वे दोनों प्रसन्न होकर एक दूसरेकी ओर अनेक तेज बाण चलाने लगे और घोर युद्ध करने लगे। तब अर्ज्जुनने अपने हाथ फटकारकर और धनुष घुमाकर अनेक नालीक नाराच, वराह, कर्ण और अर्द्धचन्द्र बाण चलाने आरम्भ किये, जैसे सन्ध्याके समय पक्षी शीघ्रता सहित वृक्षकी ओर दौड़ते हैं ऐसे ही अर्ज्जुनके बाण कर्णके रथकी ओर सब ओरसे दौड़े। हे राजन! विजयी अर्ज्जुन अपनी भौंह टेढ़ी करके जितने बाण छोड़ते थे उन सबके झुण्डको कर्ण अपने बाणोंसे काट देते थे, तब अर्ज्जुनने शत्रुओंका नाश करनेके लिये आग्नेय बाण चलाया उससे भूमि, आकाश और सूर्य्यके मार्गतक आग फैल गई। सब वीरोंके कपड़े जलने लगे और सेना भागने लगी तब वहां ऐसा शब्द उठा जैसा जलते हुए वनमें होता है। प्रतापी सूत-पुत्र कर्णने अपनी सेनाको जलते देख उसकी शान्तिके लिये वरुणास्त्र चलाया तब वह सब अग्नि ठण्डी होगयी, तब अनेक पर्व्वत तुल्य मेघ आकाशमें आगये और जल बर्षने लगा और पृथ्वी जलसे भर गयी, उन मेघोंसे आकाश और सब दिशा पूरित होगयी तथा अर्ज्जुनका शस्त्रभी शान्त होगया उस समय ऐसा अन्धकार होगया कि किसीको कुछ नहीं दीख पड़ता था, तब अर्ज्जुनने उस शस्त्रकी शान्तिके लिये वायव्य चलाया और उससे सब मेघ उड़ गये फिर अर्ज्जुनने मन्त्रसे अपनी शिखा बांधकर और भलपढ़कर गाण्डीव धनुषपर इन्द्रका प्यारा वज्र चढ़ाया, शत्रुनाशन अर्ज्जुनके गाण्डीव धनुष

अनेक वज्रके समान चूर, प्राञ्जलिक, अर्द्ध- चन्द्र, नालीक, नराच और वराह कर्ण निकने लगे। ये सब बाण कर्णके घोड़े, पहिये, रथ, ध्वजा, शरीर और धनुषमें लगे। जैसे गरुड़के डरसे सांप पृथ्वीमें घुस जाते हैं ऐसे ही वे बाण कवच काटकर कर्णके शरीरमें घुस गये तब कर्ण रुधिरसे भीग गये और क्रोधसे आखें फाड़के अर्ज्जुनकी ओर देखने लगे। तब कर्णने क्रोधकरके भार्गवास्त्र चलाया उससे अर्ज्जुनके चलाये सब अस्त्र कट गये, इन्द्रके समान पराक्रमी कर्णने उस भार्गवास्त्रसे अर्ज्जुनके बाण काटकर अनेक हाथी, घोड़े और पैदलोंको काट डाला। प्रतापी सूतपुत्रने क्रोध करके सोनेके पंखवाले शिलापर घिसे घोर बाणोंसे अनेक पाञ्चाल वीरोंको मार- डाला। हे राजन्! सोमक और पाञ्चालोंने भी क्रोध करके और उनके बाणोंसे व्याकुल होकर चारों ओरसे इकट्ठे होकर कर्णके ऊपर अनेक तेज बाण चलाये सूतपुत्रने भी क्रोधसे भर कर पाञ्चाल देशीय हाथी, घोड़े और रथोंपर चढ़े तथा पदातियोंके झुण्डके झुण्ड बाणोंसे काट- डाले, जैसे महावनमें महापराक्रमी सिंहके मारे हुए शरीर टूटे हाथी गिर पड़ते हैं ऐसे ही सूतपुत्रके बाणोंसे व्याकुल होकर तथा मर- कर अनेक पाञ्चाल योद्धा गिर गये। हे राजन्! इस समय पाण्डवोंके अनेक वीरोंको मारकर प्रतापी कर्ण इस प्रकार शोभित हुए जैसे दोप- हरमें सूर्य्य। हे कौरवेन्द्र! कर्णकी इस विजयको देख और यह जानकर कि कर्णने कृष्ण और अर्ज्जुनको बहुत व्याकुल कर दिया, तुम्हारी सेनाके वीर सिंहके समान गर्ज्जने लगे, इस प्रकार कर्णके पराक्रमको बढ़ते और अर्ज्जुनके शस्त्रका नाश देखकर महापराक्रमी भीमसे- नने क्रोधकर अपने हाथ मीज और सत्यवादी अर्ज्जुनसे ऐसे वचन कहे, हे अर्ज्जुन! इस पापी [illegible]। सूतके बेटेने तुम्हारे देखते देखते इतने प्रधान पाञ्चाल वीरोंको क्यों मार डाला? हे किरीटधारी। तुमने पहले सब कालकेयोंको मारा था, और युद्धमें साक्षात् शिवको भी प्रसन्न किया था, तब सूतके बेटेने तुम्हारे शरीरमें दश बाण कैसे मार दिये? हमें बहुत आश्चर्य्य होता है कि तुम्हारे चलाये हुए सब बाण काट दिये, क्या तुम्हें द्रौपदीका कुछ भी दुःख याद न रहा? स्मरण करो कि इसीने हमको सभाके बीचमें नपुसंक कहा था, हे सव्यसाची! इसी मूर्ख दुष्ट पापी दुरात्मा सूतके बेटेने हमलोगोंको कठोर और रूखी वाणी सुनायी थी, उन सबको स्मरण करके इसे युद्धमें जीतो। हे किरीटधारी! तुम अब इसे क्यों छोड़ रहे हो? यह छोड़नेका समय नहीं है, जैसे तुमने पहले खाण्डव बनमें अग्निको तृप्त किया था, वैसे ही अब इसे जीतो, यातो तुम इसको उसी बुद्धिसे जीतो नहीं तो मैं इस गदासे इसका चूरा करे देता हूं, तब श्रीकृष्णने भी कर्णके बाणोंको प्रबल देखकर अर्ज्जुनसे कहा। हे अर्ज्जुन! तुम ऐसे क्यों चुप चाप बैठे हो? ये चारों ओरसे कर्णके बाण चले आते हैं। ये कौरव प्रसन्न होकर गर्ज्ज रहे हैं, तुम्हें इस समय क्या होगया? तुम्हारे शस्त्रको कर्णके शस्त्रसे कटा देख, ये सब कर्णके सहित प्रसन्न होरहे हैं। जिस शस्त्रसे तामस अस्त्रका नाश किया था, और जिस विद्यासे युग युगमें घोर राक्षसोंका नाश किया है, और जिससे दुष्ट दानवोंको मारा है, उसी साहससे कर्णको जीतो, अब तुम इस तेज बाणसे इस शत्रुका सिर काट लो तुमने अपने बाहुबलसे युद्धमें किरात रूपधारी भगवान् शिवको प्रसन्न किया था, ऐसे जैसे इन्द्रने नमुचीका नाश किया था, ऐसे हमारे इस चक्रसे इस दुष्ट कर्णका नाश करो, हे वीर! यदि तुम अपने बाणोंसे आज इस सूतपुत्रको मारोगे तो देशमें नगर, ग्राम और तुम्हें अतुल यश मिलेगा, श्रीकृष्णके ऐसे वचन

सुन महात्मा बलवान अर्ज्जुनने कर्णके मारनेका विचार किया, श्रीकृष्ण और भीमसेनके ऐसे वचन सुन, और अपने बलका स्मरण कर तथा अपनी सेनाकी दशा देख अर्ज्जुन श्रीकृष्णसे ऐसे बोले, अब मैं जगत्के कल्याण और सूतपुत्रके मारनेके लिये यह घोर शस्त्र चलाता हूं। आप, सब देवता और सब शस्त्र विद्या जाननेवाले, हमारे इस वचनको सुनें, अब इस यह शस्त्र छोड़ते हैं। श्रीकृष्णसे ऐसे कह पराक्रमी अर्ज्जुनने ब्रह्माको प्रणाम किया, और न सहने योग्य ब्रह्म अस्त्रका प्रकाश किया, परन्तु कर्णने मेघकी धाराके समान बाण चलाकर अर्ज्जुनके उस शस्त्रको भी निष्फल कर दिया अर्ज्जुनके उस बाणको भी वृथा देखकर क्रोधसे लाल होकर महा पराक्रमी भीमसेन सत्यवादी अर्ज्जुनसे बोले, हे अर्ज्जुन! जब जगत् तुम्हें शस्त्रविद्याका जाननेवाला कहता है, और यह बाण भी निष्फल होनेवाला नहीं हैं। इसलिये फिर तुम दूसरा बाण चलाओ, भीमसेनके ऐसे वचन सुन अर्ज्जुनने अपने धनुष पर शस्त्र चढ़ाया उस समय तेजस्वी अर्ज्जुनके बाणोंसे सब दिशा और कोने पूरित होगये, जैसे विषीले सांप सब ओर फैल जाते हैं, ऐसे ही गाण्डीवसे छूटे हुए सूर्य्यकी किरणोंके समान प्रकाशित बाण भरत कुलसिंह अर्ज्जुनने सहस्रों छोड़े वे सोनेके पङ्खवाले बाण प्रलय कालकी अग्नि और सूर्य्यके समान कर्णके रथके चारों ओर छा गये, तब अनेक चक्र, त्रिशूल और प्रकाशित परश्वध तथा अनेक नाराच उस शस्त्रसे निकल कर अनेक वीरोंका नाश करने लगे। किसी योद्धाका शिर कट कर पृथ्वीमें गिर गया, दूसरा योद्धा डरके मारे पृथ्वीमें गिरगया; तीसरा उसको देखकर मर गया किसीका हाथीकी सूंडके समान सुन्दर हाथ खड़्गके सहित कट गया, किसीका शरीर गिर कटनेसे कवचके सहित पृथ्वीमें गिर गया, इस प्रकार अर्ज्जुनने अनेक प्रधान वीरोंको मार डाला जैसे अर्ज्जुनने अपने तेज और घोर बाणोंसे तुम्हारी सेनाका नाश किया ऐसे ही कर्णने भी युद्धमें सहस्रों बाण चलाये वे सब बाण अर्ज्जुन, श्रीकृष्ण और भीमसेनके शरीरमें लगे, तेजस्वी कर्णके बाण इस समय बर्षते हुए मेघकी धाराके समान चलने लगे। फिर महाबलवान् कर्ण तीनोंके शरीरमें तीन तीन बाण मार कर सिंहके समान गर्ज्जने लगे। उन बाणोंके लगनेसे तथा श्रीकृष्ण और भीमसेनको अत्यन्त व्याकुल देखकर और क्रोध करके अर्ज्जुनने फिर अठारह बाण चलाये। एक ध्वजामें तीन कर्णके शरीरमें और चार शल्यके मारे, शेष दश बाण सुवर्ण कवचधारी राजकुमार सभापतिके शरीरमें मारे, उन बाणोंके लगनेसे उस राजपुत्रके हाथ, शिर, सारथी, ध्वजा, घोड़े, धनुष और केतु सब कट गये। वह अपने रथसे इस प्रकार गिरा जैसे कुल्हाड़ीसे कटा शाल वृक्ष। फिर अर्ज्जुनने कर्णके शरीरमें तीन, आठ, दो, दश और चार बाण मारे, फिर शस्त्रधारी वीरोंके सहित चार सौ हाथी, और आठ सौ रथोंका नाश कर दिया। एक सहस्र घोड़ोंपर चढ़े वीरोंको मारकर आठ सहस्र पैदलोंको मारा। फिर इतने तेजबाण चलाये, कि कर्ण घोड़े सारथी और रथके सहित छिप गये। तब अर्ज्जुनके बाणोंसे व्याकुल होकर सब कौरव कर्णको पुकारने लगे। हे कर्ण। अर्ज्जुन हमारा नाश किये देता है। इसलिये, तुम इसके मारनेके लिये शीघ्र बाण चलाओ, सब कौरवोंके ऐसे वचन सुन कर्ण घोर बाण चलाने लगे। वे रुधिरमें भीगे मर्म्म काटनेवाले, बाण पाण्डवोंकी सेनामें जाकर पाञ्चालोंका नाश करने लगे। इस प्रकार सब शत्रुओंका नाश करनेवाले महापराक्रमी कर्ण और अर्ज्जुन घोर बाणोंसे दोनों सेनाओंका नाश करने लगे, उसी समय मन्त्र और औषधियोंसे घावोंको

अच्छा करके सावधान होकर अपने मित्र और वैद्योंकी संमतिसे सोनेका कवच पहन कर युद्ध देखनेके लिये, महाराज युधिष्ठिर आये। धर्म्मराज युधिष्ठिरको आता देख सब लोग प्रसन्न होकर जय जय पुकार करने लगे। उस समय महाराजकी शोभा ऐसी बढ़ रही थी जैसे राहुसे छूटे चन्द्रमाकी उन दोनों शत्रुनाशन प्रधान वीरोंको युद्ध करते देख पृथ्वी और आकाशके सब देवता और मनुष्य खड़े रह गये, धनुष और तालका घोर शब्द उत्तम वाणोंका चलना और वाणोंका वाणोंसे कटना देखने योग्य था, तब अर्ज्जुनके अपने धनुषकी अत्यन्त वेगसे खींचनेसे रोदा टूट गया। इतने ही समयमें सूतपुत्रने अर्ज्जुनके शरीरमें सौ वाण मारे, फिर केंचुलीसे निकले सांपके समान तेलमें धोये हुए पची पङ्ख युक्त साठ वाण श्रीकृष्णके शरीरमें मारे, और फिर साठ वाण अर्ज्जुनके मारे, फिर प्रतापी कर्णने भीमसेनके मर्म्मस्थानोंमें अनेक वाण मारकर कृष्ण और अर्ज्जुनको वाणोंसे व्याकुल करके नकुल और सहदेवके शरीरमें अनेक वाण मारकर अनेक पाञ्चाल चत्रियोंको मारडाला, जैसे मेघ सूर्य्यको छिपा देते हैं। ऐसे ही उन वीरोंने भी कर्णके रथको अपने वाणोंसे छिपा दिया। उनको आते देख शस्त्रविद्या जाननेवाले, कर्णने अपने वाणोंसे रोक दिया। इनके चलाये हुए वाणोंको काटकर अनेक हाथी, घोड़े और मनुष्योंको काट डाला, अनेक प्रधान वीर भी मर गये। वे सब शब्द करते हुए कर्णके वाणोंसे व्याकुल होकर पृथ्वीमें गिर गये, और मर गये, जैसे बलवान् सिंह बड़े बड़े कुत्तोंको मारड़ालता है। ऐसे ही कर्णने पाञ्चालोंको मार डाला, तब और पाञ्चाल सेना गर्ज्जती हुई कर्ण और अर्ज्जुनके रथके बीचमें घुस गयी, परन्तु बलवान् कर्णने अपने वाणोंसे उन सबको मारडाला। तब री और वीरोंने अपनी विजय देखकर ताली बजाई और सिंहके समान गर्ज्जने लगे। उस समय सबने जान लिया। कि कृष्ण और अर्ज्जुन कर्णसे हार गये, तब अर्ज्जुनने बहुत शीघ्रतासे धनुषपर दूसरा रोदा चढाकर अपने वाणोंसे कर्णके सब वाण काट दिये, और अनेक वीरोंको मारडाला। उस समय अर्ज्जुनका शरीर रुधिरसे भीज गया था। फिर धनुषके रोदेको हाथसे मलकर अपने वाणोंसे अन्धकार कर दिया। फिर अर्ज्जुनने वाणोंसे कर्ण, शल्य और सब कौरवोंको व्याकुल कर दिया। उस समय आकाशमें ऐसा अन्धकार होगया था, कि कोई पची भी नहीं उड सकता था, आकाशमें घूमते हुए देवतोंकी आज्ञासे सुगन्धयुक्त वायु चलने लगी। तब अर्ज्जुनने हंसकर शल्यके कवचमें दश वाण मारे, फिर कर्णके शरीरमें बारह वाण मारकर सात वाण मारे, उन शीघ्र वेगवाले, उत्तम पङ्खयुक्त अर्ज्जुनके वाण लगनेसे कर्णके शरीरमें बहुत पीड़ा हुई अनेक वाण लगनेसे रुधिरमें भीगे कर्ण शिवके समान शोभित होगये। उस रौद्रमुहूर्त्तमें कर्ण श्मशानमें घूमते हुए शिवके समान घूमने लगे। तब कर्णने इन्द्रके समान पराक्रमी अर्ज्जुनके शरीरमें तीन और कृष्णके शरीरमें मारनेके लिये अग्निके समान प्रकाशित जलते हुए पांच वाण मारे, वे वाण उनके कवच काटकर वेगसे रुधिरमें भीगकर पृथ्वीमें घुस गये कर्णने वी कृष्णको ओर तचकपुत्र अश्वसेनके मन्त्रयुक्त पांच वाण कृष्णकी ओर चलाये थे, उनको अर्ज्जुनने अपने दश वाणोंसे काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। कर्णके वाणोंसे निकले हुए सांपोंसे कृष्णको व्याकुल देख अर्ज्जुन इस प्रकार क्रोधसे जलने लगे। जैसे काठमें दबी हुई अग्नि एकवार जलती है। तब अर्ज्जुनने कर्णके शरीरमें कानतक खींचकर शरीर नाश करनेके योग्य अनेक वाण मारे, उनके लगनेसे कर्ण कांपने लगे। परन्तु प्रारब्ध और धीरज

भाग नहीं सके जैसे कुहर बरसनेसे आकाश छिप जाता है ऐसे ही अर्ज्जुनके बाणोंसे दिशा सूर्य्यको किरण और कर्णका रथ ये सब छिप गये। दुर्य्योधनकी आज्ञासे आये हुए कर्णके रथके आगे पीछे और इधर उधर रक्षा करनेवाले रथपर चढ़े अनेक वीरोंको अर्ज्जुनने मार डाला। हे राजन्! उस समय कुरुकुलश्रेष्ठ महावीर अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे तुम्हारी सेनाके दो सहस्र वीरोंको रथ, घोड़े और हाथियोंके सहित मारडाला। तब बचे हुए तुम्हारे बेटे और पोते घावोंसे व्याकुल होकर चिल्लाते हुए कर्णको छोड़कर युद्धसे भागे, अर्ज्जुन भी उन भागते हुओंपर अनेक बाण छोड़ने लगे। सब सेनाको भागते देख और अपनेको युद्धमें अकेला जानकर भी कर्ण कुछ न डरे और बाण वर्षाते हुए प्रसन्न होकर अर्ज्जुनकी ओर दौड़े।

८६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! मोरकी ओर जाते बिजलीके समान अर्ज्जुनके बाणोंको चमकाते आते देख कौरवोंकी सेना इधर उधरको भागने लगी, इस घोर युद्धमें अर्ज्जुनने जो क्रोध कर्णके मारनेके लिये शस्त्र छोड़ा था, जिसके बाण आकाशमें पूरित होरहे थे, कर्णने अपने शस्त्रसे काट दिया, कर्णने मेघके समान शब्दवाले अपने घोर धनुषपर टङ्कार देकर कौरवोंका नाश करते हुए अर्ज्जुनके अस्त्रको अपने बाणोंसे काटकर फिर अनेक बाण चलाये महात्मा कर्णने परशुरामके दिये हुए शत्रुओंका नाश करनेवाले घोर बाणसे अथर्व्व वेदके अनुसार अर्ज्जुनके उस अस्त्रका नाश कर दिया। हे राजन्। जैसे दो मतवाले हाथी अपने दांतोसे घोर युद्ध करते हैं। ऐसे ही अधिरथपुत्र कर्ण और अर्ज्जुन अपने बाणोंसे एक दूसरेके मारनेको घोर युद्ध करने लगे। उस समय सब युद्धभूमि बाणोंसे पूरित होगई इसी प्रकार कर्ण और अर्ज्जुनके बाणोंसे सब आकाश भी भर गया, उस बाणोंके अन्धकारमें पाञ्चाल और कौरवोंको बाणोंके जालके सिवाय और कुछ नहीं दीखता था, दोनों धनुषधारी वीर अपने अपने अभ्यासके अनुसार शीघ्रता सहित अनेक बाण चलाते हुए अनेक प्रकारकी गतियां दिखलाने लगे। राजोंके बीचमें युद्ध करते हुए इन दोनोंमें कभी विद्या बल और साहसमें कर्ण और कभी अर्ज्जुन अधिक दीखने लगते थे। उन दोनोंके दूसरेसे न सहने योग्य घोर बाण घाव देखकर सब योद्धा आश्चर्य्य करते थे। हे पृथ्वीनाथ! तब आकाशमें खड़े हुए सब देवता कर्ण और अर्ज्जुनको प्रशंसा करने लगे। उस समय आकाशसे यही शब्द सुनाई देता था कि कर्णको धन्य है और अर्ज्जुनने बहुत पराक्रम किया, जहां इस प्रकार घोड़े, हाथी और मनुष्योंका नाश होरहा था तथा पृथ्वी रुधिरमें भर गई थी। तहां अर्ज्जुनका वैरी अश्वसेन नामक सांप जो खाण्डव वनके जलाते समय भागकर बचा था और पृथ्वीमें रहता था कर्ण और अर्ज्जुनका ऐसा घोर युद्ध देखकर शीघ्रता सहित क्रोधमें भरकर दौड़ा, उस दुष्टने यह जाना कि अर्ज्जुनसे वैर लेनेका यही समय है, तब बाणका रूप बनाकर कर्णके तूनीरमें घुस गया तब कर्ण और अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे समस्त आकाश पूरित कर दिया उस बाणोंके घोर अन्धकारमें कौरव और पाञ्चालोंको सिवाय बाणोंके और कुछ न दीखा, इन दोनोंके बाण आकाशमें छा गये, तब ये दोनों जगत् प्रसिद्ध धनुषधारी महापराक्रमी वीर पुरुषसिंह युद्धमें थक गये, तब एक दूसरेकी ओर देखने लगा, उसी समय उन दोनोंकी ओरके मनुष्य दोनोंके ऊपर चन्दन मिला जल छिड़कने लगे आकाशमें घूमती हुई

अप्सरा उन दोनोंकी पूजा करने लगी, सूर्य्य और इन्द्रने अपनी किरणोंसे दोनोंके मुख निरमल कर दिये, जब वाणोंसे पीड़ित कर्ण किसी प्रकार अर्ज्जुनसे अधिक न होसके तब एक वीर अर्ज्जुनको मारनेकी इच्छाकी और बहुत दिनसे अर्ज्जुनके लिये रक्खा हुआ तेलमें भीगा अत्यन्त तेज सांप मुखवाला वाण धनुषपर चढाया, तब कर्णने सोनेके तगीरमें सोनेवाले, सदा चन्दन आदि सुगन्धोंसे पूजित, उस महा-तेजस्वी वाणको कान तक खींचकर अर्ज्जुनकी ओर छोड़ा। वह ऐरावत वंशमें उत्पन्न हुआ वाण अपने तेजसे सब दिशाओंको प्रकाशित करने लगा, उस सांप युक्त वाणके धनुष पर चढ़ते ही इन्द्रादि सब देवता हाहाकार करने लगे। परन्तु कर्णने यह नहीं जाना कि इसमें सांप घुसा है, उस सांपको वाणमें घुसा हुआ देख देवराज इन्द्र यह जाना कि अर्ज्जुन मर जायगा, बहुत घबराए तब जगत् कर्त्ता कमलसे उत्पन्न हुए ब्रह्माने कहा तुम कुछ मत डरो तब महापराक्रमी शल्यने वाण छोड़ते हुए कर्णसे कहा। हे कर्ण! तुम्हारा लक्ष्य ठीक नहीं है, यह वाण धनुषसे छूट कर अर्ज्जुनके कण्ठमें नही लग सकेगा। इसलिये अर्ज्जुनका शिर देखकर वाण छोड़ो तब कर्णने क्रोध करके शल्यसे कहा, हे शल्य। हमारे समान मनुष्य दो, बार लक्ष्य नहीं देखते और एक बार वाण चढ़ा कर फिर उसे नहीं चढ़ाते ऐसा कह कर कर्णने जोरसे पुकारा कि अर्ज्जुन मारा गया, ऐसा कह कर उस घोर वाणको कर्णने छोड़ दिया। वह घोर सूर्य्य और अग्निके समान वाण कर्णके धनुषसे छूट कर आकाशमें जाकर प्रकाश करने लगा, श्री कृष्णने उस घोर वाणको आते देख अपनी लीलासे अपने पैरोंसे रथको ऐसा दबाया कि घोड़ों सहित रथ पृथ्वीमें घुस गया, और चन्द्र-माके समान सफेद सोनेके उत्तम जालवाले, घोड़ोंको बिठला दिया, श्रीकृष्णका यह अद्भुत कर्म्म देख आकाशमें खड़े हुए सब देवता श्रीकृष्णकी प्रशंसा करते हुए बाजा बजाने लगे। जब श्रीकृष्णने अपने बलसे उस रथको पृथ्वीमें धसा दिया तब आकाशसे फूलोंकी वर्षा होने लगी और सब देवता सिंहके समान गर्ज कर अनेक प्रकारके वचन कहने लगे। अनन्तर उस वाणसे इन्द्रका दिया हुआ स्वर्ग भूमि और पातालमें प्रसिद्ध बहुत उत्तम मुकुट कट गया, क्रोधी सूतपुत्रने इस सर्पयुक्त वाणसे मोती, नीलम आदि मणियोंसे जड़ा हुआ सोनेका बना सूर्य्यकी किरणोंके समान प्रकाशित अर्ज्जुनका मुकुट काट दिया, यह सुगन्धिसे भरा धारण करनेवालेकी शोभा बढानेवाला उत्तम मुकुट ब्रह्माने बहुत तप करनेके पश्चात् इन्द्रके बना कर दिया था, जिस समय अर्ज्जुनने इन्द्र वरुण, यम, कुवेर, शिव और विष्णुके शत्रु दानवोंको मारा था, तभी इन्द्रने यह मुकुट उन्हें दिया था, जिस किरीटको देवता भी नहीं काट सक्ते थे, उसे सांप युक्त वाणसे कर्णने काट दिया परन्तु उस दुष्ट सांपकी प्रतिज्ञा पूरी न हुई अर्थात् अर्ज्जुन न मरा उस सांपने तेजसे सुवर्णसे बना हुआ प्रकाशमान उत्तम मुकुट काट कर पृथ्वीमें गिरा दिया, जैसे अस्त होते समय सूर्य्यका लाल मण्डल अस्ताचलसे गिरता है ऐसे ही उस वाणके वेग और सांपके विषसे कटकर अर्ज्जुनका सुन्दर मुकुट पृथ्वीपर गिर गया, जैसे फूलेफले वृक्षोंकेसहित पर्व्वतका शिखर इन्द्रके वज्रसे कटकर गिरता है, ऐसे अर्ज्जुनका मणिजटित मुकुट गिरा, जैसे बहुत आंधी अथवा बहुत जल आनेसे पृथ्वी और आकाश कांपने लगते हैं ऐसे ही उस मुकुटके गिरनेसे सब जगत् कांपने लगा, मुकुट गिरनेसे श्याम सुन्दर तरुण अर्ज्जुन ऐसे शोभित हुए जैसे बड़ा भारी भौंरा। तब अर्ज्जुनने सावधान होकर सफेद कपड़ेसे अपने बिखरे हुए बालोंको

बांधा उस कपड़ेसे अर्जुनकी ऐसी शोभा बढ़ी जैसे सूर्य्यके सहित उदयाचलकी। जिस चक्षु-श्रवा सर्पिणीको अर्जुनने खाण्डव वनमें मारा था, उसके पुत्रने कर्णके वाण पर बैठ कर कर्णके धनुषसे छूट कर प्रकाशित सूर्य्यकी किरणोंके समान सुन्दर मुकुटको काट दिया, परन्तु घोड़ोंकी रासको खींचने पर दीखता हुआ अर्जुनका शिर न कट अर्जुन भी गलेमें सांपके न लगनेसे न मरे। वह कर्णके हाथसे छूटे हुए वाण पर बैठा हुआ अग्नि और सूर्य्यके समान प्रकाशमान सर्प अर्जुनका मुकुट काट कर पृथ्वी पर गिर गया, तब उस गिरे मुकुटको उसी सांपने अपने विषसे भस्म कर दिया और फिर कर्णके पास चला उनसे कहा। हे कर्ण! तुमने मुझे बिना देखे छोड़ दिया था, इसीसे मैंने अर्जुनका शिर नहीं काटा अब तुम देखकर हमें छोड़ो तो हम उस तुम्हारे और अपने शत्रुको अवश्य मारेंगे, तब सूतपुत्रने उससे कहा तुम महातेजस्वी कौन हो? साप बोला, मैं अर्जुनका शत्रु हूं, इसने मेरी माताको मार डाला था, तुम मुझे वाण पर चढ़ाकर छोड़ो तो यदि साक्षात् इन्द्र भी इनकी रक्षा करें तो भी मैं उन्हें मार डालूंगा।

कर्ण बोले, हे नाग! कर्ण दूसरेके बलसे अपनी विजय करना नहीं चाहता, हे नाग! यदि सौ अर्जुन मुझसे युद्ध करनेको आवें तो भी मैं एक वाणको दो वार नहीं धनुष पर चढाऊंगा, तब सापने फिर कर्णसे कहा, हे कर्ण! मैं आप ही क्रोधमें भरके नागवाणसे अर्जुनको मार डालूंगा, तुम सुखसे अपने घरको चले जाओ साप ऐसे कठोर वचन कहकर और घोर रूप धारण करके आपही अर्जुनको मारने चला, उसके वचन सुन शत्रुनाशन गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन श्रीकृष्णसे बोले, यह कौन सांप है? जो मुझे गरुड़के मुखमें आपसे आप चला आता है।

श्रीकृष्ण बोले, हे अर्जुन। तुमने जो अग्निको तृप्त करते समय खाण्डव वनमें अपनी मातासे रक्षित एक सांपको एक शरीर जान कर मारा था, हे शत्रुनाशन! उस समय इसकी माता मर गई थी, और यह बच गया था, सो उसी वैरको स्मरण करके यह तुम्हारे हाथसे मरनेको आता है, देखो यह आकाशमें उड़ता हुआ जलती हुई मसालके समान चला आता है।

सञ्जय बोले, हे राजन्! तब अर्जुनने छः तेज वाणोंसे टेढ़े उड़ते हुए सापको काट दिया वह कटकर पृथ्वीमें गिर गया, जिस समय इस प्रकार वह सर्प मरगया, तब श्रीकृष्णने रथसे उतर कर अपने हाथोंसे रथ और घोड़ोंको उठाया, उतने ही समयमें वीर कर्णने टेढ़ी दृष्टि करके शिला पर घिसे हुए मोरपङ्खयुक्त दशवाण अर्जुनके शरीरमें मारे तब अर्जुनने भी अत्यन्त तेज बारह वाण कर्णके शरीरमें मार कर फिर एक घोर नाराच कानतक खींचकर छोड़ा वह घोर वाण अर्जुनके धनुषसे छूट कर कर्णका कवच काट रुधिर पी और रुधिरमें भीग कर पृथ्वीमें घुस गया, जैसे बड़ा सर्प लट्ठी लगनेसे क्रोधमें भर कर विष छोड़ता है, ऐसे ही उस वाणके लगनेसे क्रोधमें भरकर कर्णने उत्तम वाण छोड़ने आरम्भ किये। तब श्रीकृष्णके शरीरमें नौ वाण मार कर अर्जुनके शरीरमें निन्नानवे वाण मारे फिर एक घोर वाणमार कर गर्जने और हंसने लगे। परन्तु अर्जुनने उसके हंसनेको क्षमा न किया और मर्मोंमें इस प्रकार सैकड़ों वाण मारे जैसे इन्द्रने बल नामक दैत्यके मारे थे, तब अर्जुनने यमराजके दण्डके समान नब्बे वाण कर्णके शरीरमें मारे उनके लगनेसे वे इस प्रकार कांपने लगे, जैसे वज्र लगनेसे पर्व्वत, तब अर्जुनने सोनेका बना हुआ नीलम आदि मणियोंसे जड़ा कर्णका मुकुट काट कर पृथ्वीमें

गिरा दिया, और उत्तम कुण्डल भी काट दिये जिस मुकुटको अनेक सुनारोंने बहुत यत्न करके बहुत दिनमें बनाया था, उसको अर्ज्जुनने चण भरमें काट दिया, तब अर्ज्जुनने इनको मुकुट रहित शिरमें चार घोर बाण मारे, उनके लगनेसे कर्ण ऐसे व्याकुल होगये जैसे बात, पित्त और कफके ज्वरसे रोगी, तब अर्ज्जुनने शीघ्रता सहित अपनी बुद्धि और बलसे कर्णके सब मर्म्मोंमें अनेक बाण मारे। वीर बलवान अर्ज्जुनके बाण लगनेसे कर्ण बहुत व्याकुल हो गये और उनके शरीरसे इस प्रकार रुधिर बहने लगा, जैसे पर्व्वतसे गेरु बहता है तब अर्ज्जुनने अग्नि और यमराजके दण्डके समान सोनेके पङ्खवाले अत्यन्त शीघ्र चलनेवाले, नौ तेज बाण कर्णके हृदयमें इस प्रकार मारे जैसे स्वामकार्त्तिकने क्रौंच पर्व्वतमें शक्तिमारी थी, हे पृथ्वीनाथ! तब कर्णके हाथसे वह इन्द्र धनुषके समान धनुष गिर गया, मुट्ठी ढीली होगयी और रथमें मूर्च्छा आगयी, तब अर्ज्जुनने महात्माओंके कर्मानुसार मूर्च्छित कर्णको मारनेकी इच्छा न की तब श्रीकृष्णने कहा, हे अर्ज्जुन। तुम यह क्या भूल करते हो? कोई पण्डित दुर्व्वल शत्रुओंको भी नहीं छोड़ता है। विशेष कर आपत्तिमें शत्रुओंको मारनेसे यश और धर्म्म प्राप्ति होता है, तुम अपने शत्रु महावीर कर्णको मारनेके लिये शीघ्रता करो, नहीं तो यह फिर समर्थ होकर तुम्हारी हानि करेगा, तब श्रीकृष्णके बचनको स्वीकार करके कुरुकुल-श्रेष्ठ अर्ज्जुनने कर्णके शरीरमें इस प्रकार बाण मारे जैसे पहले इन्द्रने बलिके शरीरमें मारे थे। हे भारत! उस समय अर्ज्जुनने सोनेके पङ्खवाले वत्सदन्त बाणोंसे दशों दिशा, कर्णका रथ और घोड़े सब छिपा दिये, जैसे फूले हुए कचनार, ढाक और चन्दनके वृक्षोंसे युक्त पर्व्वत शोभित होता है ऐसे ही ऊंचे हृदयवाले कर्ण अर्ज्जुनके बाणोंसे शोभित हुए, हे पृथ्वीनाथ! अनेक बाण लगनेसे कर्णकी ऐसी शोभा हुई जैसे फूले कचनार सहित गुफावाले पर्व्वतकी। तब कर्ण भी अनेक बाण चलाने लगे, उस समय रुधिर भीगे कर्ण ऐसे दीखते थे जैसे अस्ताचलको जाते हुए लाल मण्डलवाले सूर्य। कर्णके हाथोंसे छूटे हुए सांपके समान तेज बाणोंको काटकर अर्ज्जुनके घोर बाण सब दिशाओंमें दीखने लगे। तब कर्णने बाणोंसे व्याकुल होकर और क्रोधमें भरकर क्रोधी सांपके समान तेज बारह बाण अर्ज्जुनके और श्रीकृष्णके मारे। तब अर्ज्जुनने महा क्रोध करके लोहेका बना सर्प अग्नि और विषके समान एक घोर बाण शिवका मन्त्र पढ़कर चलाना चाहा, हे महाराज! कालकी गति बहुत विचित्र है। इसे कोई नहीं जान सकता जब कर्णके मरनेका समय आया तब अचानक पृथ्वीने रथके चक्के पकड़ लिये, हे वीर! कर्णने परशुरामसे जो बाण सीखे थे सो भूल गये। हे राजन्। उस समय उस ब्रह्मास्त्रके आदेशसे वह रथ इधर उधरको न हिल सका अर्थ रथकी यह दशा देख सूतपुत्र बहुत घबड़ाये पृथ्वीसे पकड़े हुए रथपर परशुरामका मन्त्र भूलकर कर्ण इस प्रकार बैठे रह गये जैसे कोई चितापर बैठता है। जब अर्ज्जुनने उस सांप मुखवाले घोर बाणको काट दिया और कर्ण शस्त्रको भूल गये, तब क्रोधमें भरकर और अपनेको धिक्कार देते हुए हाथ पटकने लगे। और कहने बोले, धर्म्म करनेवाले मनुष्य का धर्म्म अवश्य ही रचा करता है हम अपनी शक्ति और विद्याके अनुसार सदा ही धर्म्म करते रहे हैं। परन्तु वह धर्म्म हमारी इस समय रचा नहीं करता, इससे जान पड़ता है कि पहले कहे पण्डितोंके वचन झूठ हैं, ऐसे कहते हुए कर्ण अर्ज्जुनके बाणोंसे व्याकुल होकर कांपने लगे, मर्म्ममें बाण लगनेसे कर्म सब कार्म्म करनेसे असमर्थ होकर बार बार

र्म्मकी निन्दा करने लगे। फिर साहस
रके धनुष उठाया और श्रीकृष्णके हाथमें तीन
ौर अर्ज्जुनके शरीरमें सात घोर बाण मारे तब
र्ज्जुनने क्रोध करके वज्रके समान कठोर
ागके समान प्रकाशित शीघ्र चलनेवाले सत्रह
ाण कर्णके शरीर में मारे, वे उनके शरीरको
धकर पृथ्वीमें चले गये, तब कर्ण बहुत कांपने
गे। परन्तु साहससे ऐसा यत्न किया कि कोई
ान न सका, तब फिर साहस और शक्तिको
ार करके ब्रह्मास्त्र चलाया, तब अर्ज्जुनने
द्र बाण चलाया। शत्रुनाशन अर्ज्जुनने धनुष,
दे और बाणोंको मन्त्रित करके इस प्रकार
ल वर्षाये, जैसे मेघ पानीको बर्षाता है। तब
उत्तम प्रकाशित बाण अर्ज्जुनको धनुषसे छूट-
: कर्णके रथके चारों ओर फैल गये, तब
ारथ कर्णने अपने बाणोंसे अर्ज्जुनके सब
ोंका नाश कर दिया। उसी समय श्रीकृष्ण
ुनसे बोले, हे कुन्तीपुत्र! कर्ण तुम्हारे
ोंका नाश किये देता है। इसलिये तुम भी
: घोर बाण चलाओ। श्रीकृष्णके ऐसे बचन
अर्ज्जुनने भी ब्रह्मास्त्र चलाया, अर्ज्जुनने
े बाणोंसे कर्णके सब बाण काट दिये, तब
ने अर्ज्जुनके धनुषका रोदा काट दिया।
तर अर्ज्जुनने दूसरा रोदा चढ़ाया, कर्णने
भी काट दिया। इसी प्रकार कर्णने सौ
काट दिये, तब अर्ज्जुनने एक रोदा मन्त्रित
े धनुषपर चढ़ाया, और बिषैले, सांपके
... न अनेक बाण कर्णकी ओर चलाये।
कर्णका रोदा काटना और अर्ज्जुनका चढ़ाना
इस अद्भुत शीघ्रताको कोई न देख सका, उस
समय भी अर्ज्जुनके सब बाण काटकर कर्णने
अपना पराक्रम उनसे अधिक दिखलाया। तब
श्रीकृष्णने अर्ज्जुनको बाणोंसे कर्णको व्याकुल
देखकर कहा तुम इस समय चुप मत बैठो
शीघ्र शस्त्र चलाओ, तब शत्रुनाशन अर्ज्जुनने
तीरका बना अग्नि, बिष और सांपके समान
भयानक एक दिव्य बाण निकालके उसपर मन्त्र
पढ़ा और रुद्रास्त्रसे युक्त करके चलानेकी
इच्छाकी, उसी समय पृथ्वीने कर्णको रथ दूसरा
पहिया भी पकड़ लिया। तब राधापुत्र कर्ण
रथसे नीचे उतरे, और हाथके बलसे रथके
पहियेको उठाने लगे। उस समय कर्णने द्वीप
और नगरोंके सहित सब पृथ्वीको चार अङ्गुल-
तक उठा लिया। उस समय क्रोधके भरे,
कर्णकी आंखसे आंस बहने लगे। और अर्ज्जु-
नको बाण चढ़ाये देख ऐसे बचन बोले, हे
महाधनुषधारी अर्ज्जुन! तुम क्षणभर ठहर
जाओ, जबतक मैं पहियेको ना निकाल लूं,
तबतक बाण मत छोड़ो। हे पार्थ! प्रारब्धसे
पृथ्वीने मेरे रथके दहने पहियेको पकड़ लिया
है। इस समय बाण चलाना, तुम्हारी कादरता
है। तुम जगत् प्रसिद्ध महाबीर हो, इसलिये,
यह नपुंसक कर्म्म मत करो। हे पाण्डव! तुम
उत्तम कर्म्म करने योग्य हो और यह भी जानते
हो कि, भागते हुए, ब्राह्मण, हाथ जोड़ते, शर-
णागत, शस्त्रत्यागी, समय मागते हुए, बाणहीन,
कवचहीन, टूटे और गिरे शस्त्रवाले, मनुष्यपर,
उत्तम शस्त्रधारी बीर शस्त्र नहीं चलाते तुम
जगत् प्रसिद्ध महाबीर और महात्मा हो तुम
युद्धके विषयोंको जाननेवाले, सब शास्त्रोंके
पण्डित, शस्त्रोंके जाननेवाले, और कृतबीर्य्यपुत्र
अर्ज्जुनके समान योद्धा हो। हे महाबाहो!
हम जबतक इस रथके पहियेको पृथ्वीसे न
निकालें तबतक तुम बाण मत छोड़ो क्यो कि
हम व्याकुल होकर पृथ्वीपर खड़े हैं। और
तुम रथपर बैठे हो, हम तुमसे और कृष्णसे
कुछ नहीं डरते हैं। परन्तु तुम क्षत्रियोंके
उत्तम कुलमें उत्पन्न हुए हो इसलिये हम
तुमसे कहते हैं। कि क्षणमात्र ठहर जाओ।

६० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! तब श्रीकृष्णने रथमें बैठे बैठे कर्णसे कहा कि, हे राधापुत्र! तुमने आज प्रारब्धसे धर्मका स्मरण किया। तुम्हारे समान नीच मनुष्य आपत्तियोंमें प्रारब्धकी निन्दा और धर्मका स्मरण करते हैं। हे कर्ण! जिस समय तुम दुःशासन, दुर्योधन और सुबलपुत्र शकुनिने एक वस्त्रवाली द्रौपदीको सभामें बुलाया था। तब तुमने धर्म नहीं समझा था? जब जुआ, न जाननेवाले, महाराजको शकुनिने दुष्टतासे सभामें जीता था। तब तुम्हारा धर्म कहां गया था? हे कर्ण! जब तेरह वर्ष बनमें रहकर पाण्डव आये, तो भी तुमने उनको राज्य न दिया। तब तुम्हारा धर्म कहां रहा? जब तुम्हारी सम्मतिसे दुर्योधनने भीमसेनको बिष खिलाकर नदीमें डाल दिया था। तब तुम्हारा धर्म कहां गया था? हे राधापुत्र। जब वारणावत नगरमें लाखके घरमें तुमने सोते हुए पाण्डवोंको जलाया था। तब तुम्हारा धर्म कहां चला गया था? हे कर्ण। जब दुःशासनसे पकड़ी हुई रजस्वला द्रौपदीको देखकर तुम हंसे थे, त‍ तुम्हारा धर्म कहां गया था? हे राधापुत्र। जब सभामें रोती हुई द्रौपदीको देख सब दुष्ट हंस रहे थे, और तुमने कुछ बल नहीं किया था। तब तुम्हारा धर्म कहां गया था? जब तुमने द्रौपदीसे कहा था कि "हे गजगामिनी। पाण्डव नष्ट होगये, इन्हें और दुःख भोगना पड़ेगा। इसलिये तुम दूसरा पति कर लो" तब तुम्हारा धर्म कहां गया था। हे कर्ण! जब राज्यके लोभसे पाण्डवोंके सङ्ग तुमने युद्ध करना बिचारा था। और जब शकुनिके आश्रयसे जुआ खेला था। तब तुम्हारा धर्म कहां गया था? जब तुमने अनेक वीरोंसे मिलकर बालक अभिमन्युको मारा था। तब तुम्हारा धर्म कहां गया था? उन सबोंमें धर्म नहीं था? अब इस समय धर्म है? अब अधिक कहनेसे सुख सखनेके सिवाय और कुछ लाभ नहीं है। हे सूतपुत्र! अब हमारे पास आकर धर्म सुन, कुछ भी बल कर जीता न बचेगा। नल पुष्करसे जुएमें राज्य हारकर फिर राज्य और यशको प्राप्त हुए थे ऐसे ही पाञ्चालों सहित पाण्डव अपने बाहुबलसे शत्रुओंका नाश करके राजा हुए धार्म्मिक पाण्डवोंने धृतराष्ट्रके बंशका नाश कर दिया।

सञ्जय बोले, हे राजन्! श्रीकृष्णके ऐसे बचन सुन कर्णने लज्जासे अपना मुख नीचा कर लिया और कुछ उत्तर न दिया और क्रोधसे हाथ फटकाकर धनुष उठाकर वहींसे अर्ज्जुनके सङ्ग घोर युद्ध करने लगा, तब श्रीकृष्णने अर्ज्जुनसे कहा तुम इसी समय इसे दिव्य बाणसे मारो। कृष्णके बचन सुनते ही अर्ज्जुनको महा क्रोध आगया उन सब बचनोंको स्मरण करके अर्ज्जुनको ऐसा क्रोध आया कि सब रोमोंसे ज्वाला निकलने लगी, अर्ज्जुनका ऐसा घोर रूप देखकर कर्णने ब्रह्मास्त्र चलाया और अनेक बाण मार कर धनुषको रख पहियेको उठाने लगा, तब अर्ज्जुनने ब्रह्मास्त्रसे ही उसके बाण काट कर उस शस्त्रको घात कर दिया और फिर अग्नि बाण चलाया। उस प्रकाशमान बाणको अग्निको कर्णने वरुण अस्त्रसे शान्त कर दिया उस समय सब दिशाओंमें मेघ छागये और घोर अन्धकार होगया। तब अर्ज्जुनने वायु बाण चला कर कर्णके देखते देखते सब मेघोंको उड़ा दिया फिर जलती हुई अग्निके समान घोर बाण कर्णने अर्ज्जुनके मारनेको धनुष पर चढ़ाया जब वह श्रेष्ठ बाण धनुष पर चढा उस समय पर्व्वत और बनोंके सहित पृथ्वी कांपने लगी, और वायु धूलके सहित चलने लगा, हे पृथ्वीनाथ! सूतपुत्रके उस बाणको देखकर आकाशमें घूमते हुए देवता हाहाकार करने लगे, और पाण्डवोंकी सेना भी बहुत मलीन हो गयी। वह बज्रके समान घोर बाण कर्णके धनुषसे छूटकर अर्ज्जुनकी छातीमें लगकर इस

प्रकार घसा जैसे सांप बिलमें। उस बाणके लगनेसे महात्मा अर्ज्जुन कांपने लगे। और धनुष हाथसे गिर गया जिस प्रकार भूकम्पमें पर्व्वत हिलने लगते हैं। ऐसे ही शत्रुनाशन अर्ज्जुन कांपने लगे, इतना समय पाकर महारथ कर्ण पृथ्वीसे पहिया उठाने लगा, तब कर्णने बहुत बलसे पहिया निकालनेका यत्न किया पर निकल न सका, इतने ही समयमें अर्ज्जुनने चैतन्य होकर यमराजके दण्डके समान घोर बाण चढ़ाया तब श्रीकृष्णने अर्ज्जुनसे कहा कि, जब तक यह रथपर न चढ़े तभी तक इस दुष्टका शिर काट लो, श्रीकृष्णके वचनोंको स्वीकार करके अर्ज्जुनने रथ पहिया हाथमें लिये कर्णको ओर वह घोर बाण छोड़ा वह हाथीके चिन्हसे युक्त सोने, मोती और हीरे आदि मणियोंसे बनी हुई बहुत युक्तिसे शिल्पकारोंको बनाई हुई तुम्हारी सेनाके विजयका स्थान शत्रुओंका डरानेवाला नाश करने योग्य जगत् प्रसिद्ध सूर्य्यके समान तेजस्वी चन्द्रमा अग्निके समान प्रतापी, ध्वजाको कर्णके महारथसे महारथ अर्ज्जुनने अग्नि और सूर्य्यके समान प्रकाशित होनेसे पङ्खवाले एक बाणसे गिरा दिया। कौरवोंके यश, प्रताप, बल और सुख सबके उस ध्वजाके सङ्ग ही गिर गये। सबके हृदय फटने लगे, और सेनामें हाहाकार शब्द होने लगा, हे भारत कुरुकुल श्रेष्ठ! अर्ज्जुनके बाणसे कर्णकी ध्वजा कटी हुई देख तुम्हारे पुत्र अपनी विजयसे निराश होगये, अनन्तर अर्ज्जुनने शीघ्रता सहित कर्णके मारनेके लिये सूर्य्य, अग्नि और यमराजके दण्डके समान घोर, इन्द्रके वज्रके समान दृढ़, अञ्जली नामक बाण अपने तूणीरसे निकाला। वह मर्म्म काटनेवाला, रुधिर और मांससे भीगा, हाथी, घोड़े और मनुष्योंको मारनेवाला सीधी गतिसे चलने वाला, तीन रत्नोंका बाण इन्द्रके वज्र, यमराजके दण्ड, शिवके त्रिशूल, विष्णुके चक्र और अग्निके समान घोर था, वह इस प्रकार निकाल कर प्रकाशित होने लगा, जैसे प्रलय कालमें यमराज। जिसे देवता भी नहीं निवारण कर सक्ते थे, और जिसकी पूजा विजयके समय देवता, मनुष्य और राक्षस करते थे, उस शत्रुनाशन घोर बाणको अर्ज्जुनने अपने तूणीरसे काट लिया। युद्धमें उस महाघोर बाणको निकलते देख सब चराचर जगत् कांपने लगा, और सब ऋषि कल्याण कल्याण कहने लगे, उस महाघोर शस्त्रको निकाल कर गाण्डीव धनुषधारी अर्ज्जुनने मन्त्र पढ़ फिर धनुष पर चढ़ा कर कानतक खींचा और ऐसे वचन बोले यदि मैंने गुरुओंकी सेवाकी हो और कुछ तप किया हो और बन्धुओंके वचन सुने हों तो यह मन्त्रसे युक्त शत्रुओंका नाश करनेवाला, मेरा छोड़ा हुआ घोर बाण उन्हीं सब तपस्याओंके बलसे हमारे घोर शत्रु कर्णको मारे। ऐसा कह अर्ज्जुनने बाणको छोड़ दिया, वह बाण अथवा और अङ्गिरा मुनिकी बनाई हुई मृत्युको भी जीतनेवाली, मायाके समान अर्ज्जुनके धनुषसे छूटकर चला, तब अर्ज्जुनने पुकारके कहा कि, इसी बाणसे हमारी विजय होगी अपने बिजयी बाणको अर्ज्जुनने फिर कहा। मेरा यह सूर्य्य और चन्द्रमाके समान उग्र प्रभाववाला बाण कर्णको मारे। अर्ज्जुनके हाथसे छूटकर सूर्य्यके समान बाणने दश दिशामें प्रकाश कर दिया और वीर अर्ज्जुनने कर्णके मरनेका निश्चय कर लिया, जैसे इन्द्रने वृत्रासुरका शिर वज्रसे काट लिया था, ऐसे ही अर्ज्जुनने उस बाणसे कर्णका शिर काट लिया।

हे राजन्। जिस समय महामंत्र युक्त अञ्जलिक बाणसे कर्णका शिर काटा तब दिनका चौथा पहर था उस आकाशमें घूमते हुए सूर्य्यके समान तेजस्वी बाणने कर्णका शिर काट कर पहले पृथ्वी पर गिराया पीछे धड़ गिर पड़ा, जैसे लाल मण्डलवाले, सूर्य्य अस्ताचलसे गिरते

हैं, ऐसे कर्णका शिर काटकर पृथ्वीमें गिर गया। तब सुख भोगने योग्य अत्यन्त सुन्दर उत्तम कर्मकारी कर्णका धड़ भी प्राण रहित होकर गिरा, धड़ और शिर दोनों अत्यन्त कठिनतासे इस प्रकार अलग हुए जैसे धन भरे घरसे स्वामी, जैसे पर्व्वतसे गेरूके भरने बहते हैं ऐसे ही तेजस्वी कर्णके शरीरसे रुधिर बहने लगा, जैसे वज्रसे काटकर पर्व्वतका शिखर गिरता है, ऐसे ही कर्णका शिर काटकर पृथ्वीमें गिर गया और जीव सूर्य्यलोकके पास चला गया, कर्णके जीवको जाते हुए सब वीरोंने देखा कर्णको मरा देख पाण्डव प्रसन्न होकर शङ्ख बजाने लगे, उसी समय अर्ज्जुन, कृष्ण, नकुल और सहदेव प्रसन्न होकर शङ्ख बजाये, सेना समेत कर्णको मरा देख पाञ्चाल प्रसन्न होकर सिंहके समान गर्ज्जने लगे, सब पाण्डवोंकी सेना प्रसन्न होकर बाजे बजाने लगी, और वस्त्र घुमाकर ताली बजाकर नाचने लगी, फिर अर्ज्जुनको धन्यवाद देनेको उनके पास सब वीर आये, कर्णको अपने बाणोंसे कटा हुआ और रथसे नीचे पड़ा देख परस्पर मिलकर नाचने कूदने और गर्ज्जने लगे, जैसे पर्व्वतका टूटा हुआ शिखर, यज्ञके अन्तकी अग्नि और अस्त हुआ सूर्य्यका मण्डल दीखता है ऐसे ही मरे हुए कर्णका शिर दीखने लगा, जैसे किरणों सहित अस्त होनेके समय सूर्य्य दीखते हैं, ऐसे ही मरे हुए कर्णका शरीर बाण युक्त दीखने लगा अपने बाणरूपी किरणोंसे शत्रुकी सेनाको तपा कर अर्ज्जुन। समयके बसमें होकर कर्णरूपी सूर्य्य अस्त होगये। जैसे सूर्य्य अपने किरणोंके सहित अस्त होजाता है ऐसे ही वह बाण कर्णका प्राण लेकर शीघ्र शांत होगया। हे महाराज! दिनके चौथे भागमें अर्ज्जुनने अञ्जलिक बाणसे शीघ्रता सहित कर्णका शिर काट कर सेनाके आगे युद्ध गिरा दिया। महा पराक्रमी वीर कर्णको बाणोंसे कटा और पृथ्वीमें पड़ा देख मद्रराज शल्य ध्वजा रहित रथको लेकर डेरोंको चले गये; कर्णके मरनेके पश्चात् घावोंसे व्याकुल अर्ज्जुनकी ध्वजासे डरते हुए तुम्हारी सेनाके वीर युद्ध छोड़कर भागे इन्द्रके समान कर्म्म करनेवाले कर्णका सहस्र पंखुरी वाले कमलके समान मुखयुक्त शिर इस प्रकार काट कर पृथ्वीमें गिर पड़ा जैसे सहस्र किरण वाला सूर्य्य सन्ध्याको अस्ताचलसे गिरता है।

९१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! शल्य, अर्ज्जुन और कर्णके घोर युद्धमें बाणोंकी गति और बलको देख कर तथा कर्णको पदाति मरा छोड़, टूटे फूटे रथको ले डेरोंमें गये, अपनी सेनाके हाथी घोड़े और मनुष्योंको मरा देख और कर्णको पृथ्वीमें पड़ा देख दुर्योधन ऊंचे स्वांस लेकर आखोंमें आंसू भरकर कुछ समय तक रोते रहे अपनी इच्छासे गिरे हुए सूर्य्यके समान कर्णको पृथ्वीमें गिरा और बाणोंसे कटा जान कर सब सेनाके वीर देखनेको आये कोई कर्णको पड़ा देख प्रसन्न हुआ कोई शोकसे व्याकुल हो रोने लगे, कोई जैसे खड़े थे, वैसे ही रह गये और कोई आश्चर्य करने लगे। इस प्रकार सबने अपने स्वभावके अनुसार कर्णका शोक किया। जैसे सांड़के मरनेसे गौ व्याकुल होकर बनमें भागने लगती हैं ऐसे ही अर्ज्जुनके बाणोंसे कवच और भूषण रहित कर्णको मरा सुन तुम्हारी सेना भागने लगी, कर्णके मरनेके पश्चात् भीमसेन ताल ठोंककर अपने घोर शब्दसे जगत्को कंपाते हुए और तुम्हारे पुत्रोंको डराते हुए नाचने और कूदने लगे, इसी प्रकार पाञ्चाल और सृञ्जय वंशी क्षत्री परस्पर मिलकर प्रसन्न होकर शङ्ख बजाने लगे सब कहने लगे, वीर अर्ज्जुनने कर्णको इस

प्रकार मारा जैसे सिंह हाथीको मारता है, इसके मरनेसे अर्जुनकी प्रतिज्ञा पूरी होगयी और वैर समाप्त होगया राजा शल्य भी मूर्खके समान ध्वजा रहित रथको दौड़ाते हुए दुर्य्योधनके डेरे पर जाकर दुःखसे भरे ऐसे बचन बोले, ये देखो तुम्हारी सब सेना हाथी और घोड़े रथोंसे रहित होकर इधर उधरको भाग गयी, पाण्डवोंने पत्थरोंके समान बाणोंसे इसका नाश कर दिया, हे भारत! जैसा ये युद्ध हुआ वैसा कभी नहीं हुआ। कर्णने अपने बाणोंसे कृष्ण आदि तुम्हारे सब शत्रुओंका नाश कर दिया। क्या करें, प्रारब्ध बड़ी बलवान् है, वह सदा पाण्डवोंको रक्षा और हमारा नाश करती है, उसीके वशमें होकर पाण्डवोंके हाथसे तुम्हारे सब योद्धा मारे गये, तुम्हारी ओरके बीर इन्द्र, कुबेर और यमराजके समान गुणोंसे भरे थे और उनको कोई नहीं मार सक्ता था परन्तु पाण्डवोंने मारडाला सो तुम इसका कुछ सोच मत करो प्रारब्ध बड़ी बलवान् है, साहस रक्खो मद्रराज शल्यके ऐसे बचन सुन और अपने अधर्म्मोको विचार राजा दुर्य्योधन बार बार ऊंचे स्वांस लेकर रोने लगे।

९२ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! इस प्रकार कर्ण और अर्जुनका घोर युद्ध होनेके पश्चात् बाणोंसे व्याकुल कुरु और पाञ्चाल सेनाका रूप कैसा होगया था?

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र! आप सावधान होकर सुनिये उस समय युद्धमें मनुष्य, हाथी, घोड़ोंके मरनेके पश्चात् जो कुछ हुआ सो हम कहते हैं। जब कर्णको मारकर अर्जुन सिंहके समान गर्ज्जतेभी तुम्हारे पुत्र डरसे कांपने लगे। उस समय तुम्हारे वीर सेनाको सम्हाल न सके और न आपही युद्ध कर सके। जैसे नाव टूटनेपर अपार समुद्रमें डूबते हुए बनिये घबराते हैं। और पार जानेकी इच्छा करते हैं। ऐसे ही अर्जुनके हाथसे कर्णको मरा देख तुम्हारे पुत्र घबराये। जैसे सिंहको देखकर हरिण डरकर भागते हैं। ऐसे ही कर्णके मरनेपर घावोंसे व्याकुल तुम्हारी सेना इधर उधरको भागने लगी। और रक्षा करनेवालेको ढूढ़ने लगी। जैसे सींग टूटनेसे बैल और दांत टूटनेसे सांप दुर्ब्बल हो जाता है। ऐसे ही सन्ध्याके समय अर्जुनसे डरी हुई तुम्हारी सेना इधर उधरको भागने लगी। हे राजन्! कर्णके मरनेके पश्चात् और प्रधान बीरोंके नाश होनेपर तुम्हारे पुत्र शस्त्रोंसे और डरसे व्याकुल होकर इधर उधर भाग गये। यन्त्र और कवचोंसे रहित घबराये हुए डरसे व्याकुल चारों ओर देखते हुए एक दूसरेको मारते हुए और हमारी ही ओर अर्जुन और भीमसेन चले आते हैं। यह बिचारते हुए गिरने और भागने लगे। कोई अनेक महारथ हाथी, घोड़े और रथोंपर चढ़कर पदातियोंको छोड़कर वेगसे भागे रथी, हाथियोंपर घोड़ेवाले, रथोंपर और पैदल घोड़ोंपर चढ़कर भागे। जैसे हाथी और सिंहोंसे भरे हुए बनमें बटोही घबराते हैं। ऐसे ही सूतपुत्रके मरनेसे तुम्हारी सेना घबराई। अपनी सब सेनाको भीमसेनके डरसे भागते देख आप ही दुर्य्योधनने हाहाकार करके अपने सारथीसे कहा, हमें धनुष लेके अर्जुन नहीं जीत सकेगा इसलिये तुम धीरे धीरे घोड़ोंको हांको जैसे तटके पर्व्वतको समुद्र नहीं नाघ सक्ता ऐसे ही युद्ध करते हमें अर्जुन नहीं जीत सकेगा, मैं इसी समय अर्जुन, कृष्ण और अभिमानी भीमसेन तथा बचे हुए, सब शत्रुओंको मारकर कर्णके ऋणसे उतरूंगा। कुरुकुलराज दुर्य्योधनके ऐसे बीर और महात्माओंके समान बचन सुनकर सोनेके जालयुक्त घोड़ोंको सारथीने

धीरे धीरे हांका। उनके सङ्ग हाथी, घोड़े और रथोंसे हीन केवल पच्चीस सहस्र पैदल थे, उनसे युद्ध करनेके लिये, चतुरङ्गिनी सेनाके सहित बाण बर्षाते हुए, महाक्रोध भरे भीमसेन और धृष्टद्युम्न युद्धभूमिमें आये, तब वह सेना धृष्टद्युम्न भीमसेनसे युद्ध करने लगी। और अनेक वीर उनका नाम लेकर पुकारने लगे, तब भीमसेन क्रोध करके गदा लेकर रथसे उतरे और उन सबको मारने लगे, परन्तु भीमसेनने धर्म्मके अनुसार भूमिमें खड़े होकर रथपर बैठे वीरोंसे युद्ध नहीं किया, जैसे यमराज दण्ड लेकर जगत्‌का नाश करते हैं। ऐसे ही सोनेसे जड़ी गदासे भीमसेन तुम्हारी सेनाका नाश करने लगे। दुर्य्योधनके सङ्गके पदाती भी इकट्ठे होकर और प्यारे प्राणोंका मोह छोड़कर भीमसेनकी ओर इस प्रकार दौड़े, जैसे आगमें जलनेको पतङ्ग दौड़ते हैं। जैसे यमराजको देखकर जगत्‌का नाश हो जाता है। ऐसे ही भीमसेनके पास आकर वे महापराक्रमी पदाती मारे गये, जैसे पक्षियोंके बीचमें बाज घूमता है। ऐसे ही महाबलवान् भीमसेन गदा लेकर वीरोंमें घूमने और मारने लगे। इसही प्रकार धृष्टद्युम्न भी उस सेनाका नाश करके एक स्थानपर खड़े होगये। इसी प्रकार बली अर्ज्जुन रथ सेनासे युद्ध करने लगे। नकुल, सहदेव और महारथ सात्यकी दुर्य्योधनकी सेनाका नाश करके घोर बाण वर्षाते हुए शकुनिकी ओर चले गये, उस समय शकुनिकी सेनामें घोर युद्ध होने लगा। इसी प्रकार अर्ज्जुन भी तुम्हारी रथ सेनामें जाकर जगत् विख्यात गाण्डीव धनुषको घुमाने लगे। कृष्ण सारथी और सफेद घोड़ोंसे युक्त रथको आते देख और महायोद्धा अर्ज्जुनको बाण छोड़ते देख बाणोंसे व्याकुल तुम्हारी सेना भागी, धृष्टद्युम्नने पचीस सहस्र पदातियोंको मारकर [भी]मसेनके सहित प्रसन्न होकर खड़े होगये, उस समय सफेद घोड़ोंके रथपर चढ़े, महापराक्रमी श्रीमान् धृष्टद्युम्न कचनार ध्वजायुक्त शोभित हुए। उन्हें देखकर तुम्हारी सेना इधर उधरको भागने लगी। शीघ्र शस्त्र चलानेवाले गान्धारराज शकुनिके पास आकर महायशस्वी नकुल और सहदेव, सात्यकी द्रौपदीके पांचो पुत्र और शिखण्डी तेज बाण बर्षाते [हुए] उन सबने तुम्हारी सेनाका नाश करके [अ]पने शङ्ख बजाये। तब तुम्हारी सेना भा[गने] चली, तुम्हारी बची हुई सेनाको खड़े देख [बल]वान अर्ज्जुनको बहुत क्रोध हुआ और [इस] प्रकार दौड़े जैसे हारे हुए, बैलपर बलवान बैल दौड़ता है। जगत प्रसिद्ध गाण्डीव धनुषको घुमाकर अर्ज्जुनने अनेक बाण चलाये उस समय भूमिसे ऐसी धूल उठी कि [स]लोकमें अन्धकार होगया और कुछ न दीखने लगा। हे पृथ्वीनाथ! हे महाराज! [फिर] तुम्हारी सेनाके योद्धा इधर उधरको भागने लगे। अपनी सेनाको भागते देख और पाण्डवोंको एकले बढ़ते देख दुर्य्योधनने पाण्डवोंके सब वीरोंको अपनी ओर पुकारा और आप उससे लड़नेको चला, तब सब योद्धा दुर्य्योधनके और इकट्ठे होकर ऐसे दौड़े जैसे दैत्य बलीकी ओर दौड़े थे, वे सब क्रोध करके अनेक प्रकारके बाण बर्षाते हुए और दुर्य्योधनको डपटते हुए दौड़े दुर्य्योधन भी निर्भय होकर इन सबकी ओर बाण बर्षाने लगे। दुर्य्योधनने पाण्डवोंकी सेनाके सैकड़ों [और] सहस्रों मनुष्योंको मारडाला, हमने उस समय दुर्य्योधनका अद्भुत पराक्रम देखा, वे अकेले [ही] सब पाण्डवोंके सङ्ग युद्ध करते रहे, हे राजेन्द्र! तुम्हारे पुत्र महात्मा दुर्य्योधनने अपनी सेनाको व्याकुल देखकर सावधान किया, और अपनी सेनाको प्रसन्न करते हुए ऐसे वचन बोले, हम ऐसा देश कोई नहीं देखते जहां डरसे भाग कर तुम लोग बचोगे, इस समय पाण्डवोंके

ना बहुत थोड़ी रह गई है तथा अर्ज्जुन और ...या घावोंसे बहुत व्याकुल होरहे हैं अब हम ...न सबको मारकर निश्चय अपनी विजय करेंगे, ...दि तुम भागोगे तो पाण्डव तुम्हें पीछे दौड़-...र मारडालेंगे, इससे युद्धहीमें मरना क्षत्रि-...योंका धर्म्म है और इसीसे कल्याण होता है। ...हे क्षत्रियो! मरा हुआ मनुष्य दुःख देखनेको ...नहीं आता और युद्धमें मरनेसे अनन्तर सुख ...होता है जब शूर और कादर दोनोंहीको यम-...राज मारडालता है तो ऐसा कौन मूर्ख क्षत्री ...होगा जो हमारे समान युद्ध न करे? भागते ...हुए तुमको भी भीमसेन मार ही डालेंगे, तब ...अपने पुरुषोंके धर्म्मको क्यों छोड़ते हो? हे ...वीरो! क्षत्रियोंको युद्धसे भागना इसके समान ...कोई पाप नहीं और युद्ध करनेके समान धर्म्म ...नहीं तुम सब युद्धमें मरकर बहुत दिनतक ...स्वर्ग सुख भोगो।

सञ्जय बोले, तुम्हारे पुत्रके ऐसे बचन सुन-...कर भी घावोंसे व्याकुल महा योद्धा युद्ध कर-...नेको न लौटे।

६३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! दुर्य्योधनकी ...सेना लौटाते देख मद्रराज शल्य भयसे व्याकुल ...होकर ऐसे बचन बोले।

शल्य बोले, ये अनेक घोड़े और मनुष्योंसे ...भरी पृथ्वी पर्वतोंके समान इन हाथियोंसे ...पूरित होरही है, अनेक कटे ढाल खड्ग ...लिये, वीर पृथ्वीमें पड़े हैं मरे हुए हाथी ऐसे ...दीखते हैं जैसे वज्रसे कटे वृक्ष और लता रहित ...पर्वत अनेक हाथी कवच रहित होकर इधर-...उधर तड़फ रहे हैं सोनेके भालोंसे सहित रुधि-...रसे भीगे बाणोंसे कटे घण्टा और अङ्कुशोंसे ...रहित अनेक हाथी पड़े हैं। इसी प्रकार रुधि-...रसे भीगे अश्वसर घोड़े हट पटाते हैं, ये दुःखसे

धीरे धीरे बोलते पृथ्वीमें पड़े आंख फैलाये अनेक हाथी, घोड़े और योद्धा चिल्ला रहे हैं। कोई मर गयाहै। और कोई मरने चाहता है, इन मरे हाथी, घोड़ोंसे यह पृथ्वी वैतरणीके समान दीख रही है, ये दुःखसे चिल्लाते हुए सूंड, पैर और दांत टूटे हाथी, घोड़े, मरे पड़े हैं हाथियोंके शरीरसे रुधिर बह रहा है यह पृथ्वी टूटे जुये, पहिये ध्वजा और पताका वाले, सोनेके जालोंसे युक्त कटे हुए रथोंसे ऐसी दीखती है जैसे मेघोंसे भरा आकाश। ये देखो ये बुझी हुई आगके समान कवच और शस्त्र रहित हाथी, घोड़े और रथों पर चढ़े तथा अनेक यशस्वी पैदल मरे पड़े हैं, जैसे रातका आकाश अत्यन्त प्रकाशवाले, गिरते हुए तारोंसे अत्यन्त शोभित होता है ऐसे ही बाणोंसे मरे महा पराक्रमी वीरोंसे यह पृथ्वी शोभित हो रही है, ये कौरव और पाञ्चाल योद्धा अर्ज्जुन और कर्णके बाणोंसे मर कर पृथ्वीमें पड़े हैं, और अनेक मूर्छित होकर सांस ले रहे हैं, ये अर्ज्जुन और कर्णके बाण हाथी घोड़े और मनुष्योंको काट कर पातालको जानेवाले सर्पोंके समान पृथ्वीमें घुस गये हैं। हे नरेन्द्र! ये अर्ज्जुन और कर्णके बाणोंसे कटे हाथी, घोड़े, मनुष्य और रथोंसे पृथ्वी जानेयोग्य नहीं रही ये अनेक शस्त्र और ध्वजा युक्त टूटे पहिये और टूटे जुए वाले रथ पड़े हैं। सारथी और योद्धा भी मर गये हैं। ये सब जोटत टूटे जुए वाले रथोंसे अनेक योद्धा और सारथी गिर पड़े हैं, इन सबसे पृथ्वी ऐसी शोभा दीखती है, जैसे कात्तिकके मेघोंसे आकाशकी। ये बहुत शीघ्र चलनेवाले, राजोंके रथोंमें लगे मरे हुए मनुष्योंके झुण्डोंमें घूमते हुए अनेक घोड़े मर पड़े हैं, ये सोनेके पत्रोंसे जड़े परिघ, सुफेद त्रिशूल, मूसल, मुद्गर, चमकदार तेग, खड्ग और सोनेसे जड़ी गदा आदि अनेक शस्त्र पड़े हैं। सोनेसे जड़े धनुष, बाण, पीले निरमल नये

माले, सोनेके दण्डवाले प्राप्त, चक्र, कटे हुए पङ्खे, कटी हुई विचित्र माला, हाथियोंकी झूल, पताका, भूषण, उत्तम किरीट, माला, सुन्दर मुकुट अनेक टूटे और बिना टूटे छोरे और मोतियोंकी हार, केयूर, बाजू गोभ, सोनेके सूतमें गुथे निष्क (सुहर) उत्तम मणि और सुवर्णमें जड़े रत्न पड़े हैं। ये सुख भोगने योग्य शरीर, चन्द्रमाके समान सुन्दर मुखवाले, शिर पड़े हैं ; ये सब चली शरीर, वस्त्र और जगत्के सुखोंको छोड़कर यशको बढ़ाकर सनातन स्वर्गको चले गये। हे नरेन्द्र दुर्य्योधन! ये देखो सूर्य्य अस्ताचलको जाता है। इसलिये अब सब सेना अपने अपने डेरोंको जाय और तुम भी लौट-कर अपने डेरेको जाओ, हाकर्ण! हाकर्ण! ऐसा कहकर राते हुए मूर्खके समान खड़े, आंसू बहाते दुर्य्योधनसे ऐसा कहकर राजा शल्य शोकसे व्याकुल होकर चुप होगये। फिर अश्वत्थामा आदि सब वीर यससे भरी ध्वजाको देखकर दुर्य्योधनके पास आये, और उन्हें सम-भाने लगे। उस समय मनुष्य, हाथी और घोड़ोंके रुधिरसे भीगकर पृथ्वी लाल वस्त्रवाली वेश्याके समान दीखने लगी थी, उस रौद्र मुहू-र्त्तमें उस पृथ्वीको देखकर कोई कौरव खड़ा न रह सका, और सबने मरनेका निश्चय कर लिया, उस समय कौरवोंकी सेनामें चारो ओरसे हाकर्ण! हाकर्ण! यही शब्द सुनायी देता था। सूर्य्यको लाल देखकर दुर्य्योधनने अपनी सेनाको लौटाया और आप भी सब कौरवोंके सङ्ग अपने डेरोपर चलेगये, उस समय रुधिरसे भीगे, पंखवाले, गाण्डीवसे छूटे शिली-पर घिसे बाणोंसे मरे हुए कर्ण सूर्य्यके समान दीखते थे, उस समय ऐसा जान पड़ता था। मानो भगवान सूर्य्य कर्णके शोकसे व्याकुल होकर और अपनी किरणोंसे उनके रुधिरको लेकर लाल होगये हैं। और अब शोक दूर करनेके लिये, पश्चिम समुद्रमें स्नान करनेको जाते हैं, यही विचार कर देवता और ऋषि अपने अपने घरको चले गये। उस अद्भुत सं[illegible] और अर्ज्जुनके रथको देखकर सब दे[illegible] उसीकी प्रशंसा करते हुए अपने अपने डेरोंको चले गये, बाणोंसे भरे हुए और रुधिरसे भीगे हुए कर्णका तेज उस समय भी नष्ट नहीं हुआ था। सोनेके समान सुन्दर, अग्नि और सू[illegible] समान तेजस्वी वीर कर्णको इस समय मनुष्योंने जीता ही जाना।

हे महाराज! जैसे मरे हुए सिंहको दे[illegible] हरिण डरते हैं। ऐसे ही मरे हुए कर्ण[illegible] पाण्डवोंके योद्धा डरने लगे। महात्मा पुरु[illegible] सिंह कर्ण मरे हुए भी जीते हुएके समा[illegible] दिखलाई देते थे, उनका कोई स्वरूप न[illegible] बिगड़ा था। सूतपुत्र कर्ण पूर्ण चन्द्रमा[illegible] समान मुख, उत्तम किरीट और भूषण धार[illegible] किये। और सोनेके बाजू सहित मरे हुए ऐ[illegible] दीखते थे, जैसे टूटा हुआ वृक्ष, अर्ज्जुनके बाण[illegible] मरे हुए कर्ण ऐसे दीखते थे, जैसे शान्त हु[illegible] अग्नि और उनके भूषण भी ऐसे ही दीखते [illegible] जैसे मेघ अग्निको बुता देता है। ऐसे [illegible] अर्ज्जुनरूपी मेघने कर्णरूपी अग्निको ठ[illegible] कर दिया। अपने यशसे जगत्को पूरित कर[illegible] और बाणोंसे सब दिशाओंको तपाकर त[illegible] पाण्डव और पाञ्चालोंको व्याकुल करके पु[illegible] सहित कर्ण मर गये। जैसे सूर्य्य अपनी कि[illegible] णसे जगत्को व्याकुल कर देता है। ऐसे [illegible] अपने बाणोंसे पाण्डवोंको सेनाको व्याकुल कर[illegible] पुत्र सहित कर्ण मर गये। मानो भिक्षु[illegible] रूपी पक्षियोंका कल्पवृक्ष टूट गया। [illegible] धार्म्मिक कर्ण सदा भिक्षुकोंसे यही कहते [illegible] कि "देते हैं" जिन्होंने कभी भिक्षुकको "नहीं" नहीं की वही महात्मा कर्ण अर्ज्जुनके हाथ[illegible] मारे गये। जिस महात्माने अपना सब ध[illegible] ब्राह्मणोंहीका समझ रक्खा था। जो अपन[illegible] जीवन तक भी ब्राह्मणोंको देना चाहते थे, [illegible]

स्त्रियोंको सदा प्यारे, ब्राह्मणोंके लिये, दानी और वीरोंमें महारथ गिने जाते थे, सोही कर्ण अर्जुनके बाणोंसे मरकर परम धामको गये। जिनको आशापर तुम्हारे पुत्रोंने पाण्डवोंसे वैर किया था। वही कर्ण उनको विजयकी आशा कल्याण और रक्षा सङ्गमें लेकर स्वर्गको चले गये। कर्णके मरनेसे बहती नदी बन्द होगयीं, भगवान सूर्य्य अस्त होगये। बुध ग्रह लाल होकर टेढ़े उदय हुए उनका रङ्ग उस समय जलती अग्निके समान दीखने लगा। आकाश भयानक होगया, पृथ्वी कांपने लगी, वायु रूखा चलने लगा। सब दिशा धुएके सहित और जलती हुई सी दीखने लगी समुद्र घोर शब्द करके उमड़ने लगे। बनोंके सहित पर्व्वत कांपने लगे, सब जगत्‌के जन्तु डर गये। बृहस्पति, रोहिणी और चन्द्रमाके सहित उदय होगये, उस समय आकाशमें ऐसा जान पड़ता था कि, मानों सूर्य्य और चन्द्रमा एक सङ्ग ही उदय होगये हैं। कर्णके मरनेके पश्चात् सब दिशा और कोने जलने लगी। आकाशमें अन्धकार छागया। पृथ्वी हिलने लगी, आकाशसे अग्निके समान बिजली गिरी और राक्षस प्रसन्न होगये। जब अर्जुनने अपने तेज बाणसे पूर्णचन्द्रमाके समान मुखवाला कर्णका शिर काटा तब आकाशमें सब देवता हाहाकार करने लगे।

हे राजन्! जैसे वृत्रासुरको मारकर महातेजस्वी इन्द्र शोभित हुए थे, ऐसे ही देवता गन्धर्व्व और मनुष्योंसे पूजित कर्णको मारकर अर्जुन प्रसन्न हुए। तब बरफ, चन्द्रमा और स्फटिकके समान सफेद ध्वजा युक्त, अनेक मेघोंके समान शब्दवाले, आकाशमें घूमते हुए सूर्य्यके समान तेज भरे इन्द्रके रथके समान सुन्दर रथपर बैठकर इन्द्रके समान पराक्रमी मणि और मोतीयुक्त अनेक भूषण पहने असाधारण तेजस्वी, अग्नि और सूर्य्यके समान तेजस्वी श्रीकृष्ण और अर्जुन बेडर होकर युद्धमें ऐसे शोभित हुए जैसे एक रथपर बैठे विष्णु और इन्द्र। अपने धनुष और तालके शब्द तथा बाणोंसे सब शत्रुओंका नाश करके और अपने बाणोंसे कौरवोंका नाश करके श्रीकृष्ण और अर्जुन प्रसन्न होकर शत्रुओंका हृदय चीरनेके लिये सोनेके तारोंसे खिंचे हुए उत्तम शब्दवाले बर्फके समान सफेद शङ्ख दोनो वीरोंने एकही बार बजाये। पांचजन्य और देवदत्तका शब्द पृथ्वी, आकाश और दशों दिशामें पूरित होगया। हे महाराज! श्रीकृष्ण और अर्जुनके उस शङ्ख शब्दको सुनकर तुम्हारी सब सेना डरने लगी, इस प्रकार तुम्हारे पुत्रकी सेना पर्व्वत और बनोंको तपाकर श्रीकृष्ण और अर्जुन युधिष्ठिरको प्रसन्न करनेको चले गये। हे भारत! उस शङ्खके शब्दको सुनकर तुम्हारी सब सेना शल्य और दुर्य्योधनको छोड़कर इधर उधरको भाग गयी। जैसे उदय होते सूर्य्यको सब मनुष्य प्रणाम करते हैं ऐसे ही श्रीकृष्ण और अर्जुनको सब मनुष्य धन्यवाद देने लगे। जैसे अपनी किरणोंके सहित सूर्य्य और चन्द्रमा अन्धकारको नाश करके शोभित होते है ऐसेही अपने शरीरमे लगे कर्णके बाणोंसे अर्जुन और श्रीकृष्ण दीखने लगे। जैसे बुलाये हुए विष्णु और इन्द्र सभामें आते हैं ऐसे ही इन सब वीरोंको निकालकर मित्रोंके सहित श्रीकृष्ण और अर्जुन डेरोंको गये। महायुद्धमें कर्ण मरनेके पश्चात् उन दोनोंको देवता, गन्धर्व्व, मनुष्य, चारण, महाऋषि, यक्ष और साप जयका आशीर्वाद देने लगे। इस प्रकार अपनी कीर्त्ति और गुणोंको सुनते हुए अपनी सेनाको इस प्रकार सावधान करने लगे, जैसे देवतोंको इन्द्र और विष्णु।

८४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! जिस समय विकर्त्तन पुत्र कर्ण मर गये तब कौरव भयसे व्याकुल होकर सब दिशाओंको देखते हुए इधर उधरको भागने लगे। तुम्हारे पुत्रोंने व्याकुल और युद्धसे असमर्थ होकर अपनी सेनाको चारों ओरसे शल्यकी सम्मतिके अनुसार अपनी सब सेनाको लौटाया। हे महाराज! बची हुई नारायणी सेना और थोड़े रथोंके सहित कृतवर्म्मा अपने डेरोंको चले गये, बचे हुए गन्धार देशके वीरोंके सहित शकुनी भी अपने डेरोंको गये। हे भारत! इसी प्रकार मेघोंके समान हाथियोंकी सेनाके सहित कृपाचार्य्य भी अपने डेरोंको गये। वीर अश्वत्थामा भी पाण्डवोंकी विजय देख सांस लेते हुए अपने डेरोंको चले। बचे हुए संशप्तक भी राजा सुशर्माके सहित भयसे व्याकुल होकर अपने डेरोंको चले गये। राजा दुर्य्योधन भी अपने बान्धवोंके मरनेसे शोचते हुए शोकसे व्याकुल होकर अपने डेरेको चले गये, महाराज शल्य भी टूटी हुई ध्वजावाले रथको लेकर दशों दिशाओंको देखते हुए अपने डेरेको गये। इसी प्रकार पाण्डवोंके और सब सैनिक भी भयसे व्याकुल होकर इधर उधरको भागने लगे। । कर्णको मरा देख रुधिरमें भीगे भयसे व्याकुल कौरव दशों दिशाओंको भागने लगे। हे कुरुकुलश्रेष्ठ! उस समय कोई अर्ज्जुन और कोई कर्णकी प्रशंसा करने लगे। उन बचे हुए तुम्हारे सहस्रों वीरोंसे ऐसा कोई नहीं था जो युद्धके लिये इच्छा करे, उस समय सब कौरव धन, स्त्री, राज्य और जीवनसे निराश होगये। उन सबका बहुत यत्नसे बुलाकर शोक और दुःखसे भरे, दुर्य्योधनने विश्राम करनेकी आज्ञा दी, हे महाराज! दुर्य्योधनकी आज्ञा शिरपर रखकर दुःखसे व्याकुल सब वीर अपने अपने डेरोंको गये।

९५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! कर्णके मरने और तुम्हारी सेना भागनेके पश्चात् श्रीकृ प्रसन्न होकर और अर्ज्जुनका हाथ पकड़कर ये वचन बोले, जैसे इन्द्रने वृत्रासुरको मारा था ऐसे ही तुमने कर्णको मारा इन दोना कथ ओंको मनुष्योंको मनुष्य बहुत दिनतक कहेंगे। तेजस्वी इन्द्रने वज्रसे वृत्रासुरको मारा और तुमने केवल धनुष और बाणहीसे कर्णको मारडाला। अब यह तुम्हारा यश और बल सदाके लिये प्रसिद्ध रहेगा, अब चलो ये सब समाचार महाराजाधिराजसे निवेदन करें। महाराज धर्म्मराज बहुत दिनसे कर्णका मरना चाहते थे आज यह समाचार सुनाकर तुम उनके ऋणसे छूटोगे। जिस समय तुम्हारा और कर्णका घोर युद्ध हो रहा था। उसी समय महाराज खड़े हुए देखते थे, परन्तु कर्णके बाणोंसे व्याकुल थे, इसलिये खड़े नहीं हुए डेरोंको चले गये। अब वहीं चलो श्रीकृ ष्णके वचन सुन अर्ज्जुनने कहा बहुत अच्छा चलो, तब उन्होंने सावधान होकर महाराज अर्ज्जुनका रथ लौटाया तब अर्ज्जुनने अपनी सब सेनासे पुकारकर कहा। तुम्हारा सबका कल्याण हो जबतक कौरवोंकी सब सेना न भाग जाय तबतक सावधान होकर युद्धमें खड़े रहो। फिर श्रीकृष्णने धृष्टद्युम्न, युधामन्यु, नकुल, सहदेव और सात्यकीसे ऐसे वचन कहे जबतक हम महाराजको कर्णके मरनेका समाचार सुनाकर न आवें तबतक आप लोग तथा और सब राजा लोग सावधान होकर युद्धभूमिमें खड़े रहें, उन सबकी सम्मतिसे श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन महाराजकी समीपको चले गये और शानके उत्तम पलङ्गपर लेटे हुए महाराजको देखा और दोनो दौड़कर उनके पैरोंमें गिर पड़े महाराजने उन्हें प्रसन्न देखकर जान लिया कि कर्ण मारा गया और प्रसन्न होकर उन दोनोंको छातीसे लगाकर प्रेम सहित ऐसे वचन कहे,

हम प्रारब्धसे तुम दोनों को देखते हैं। तब इन दोनोंने कर्णके युद्ध और मरनेका सब समाचार उनसे कह दिया, कृष्णने हंसकर और हाथ जोड़कर महाराज से सब निवेदन करदिया, कृष्णने कहा, हे महाराज! प्रारब्धसे आप, भीमसेन, अर्जुन, नकुल और सहदेव कुशलसे हैं। हे पाण्डव! इस प्रलय कालरूपी घोर युद्धसे आप सब बच गये अब आगे जो कुछ करने योग्य काम हो सो कीजिये, हे राजेन्द्र। हे भारत! प्रारब्धसे सूतपुत्र कर्ण मारा गया, और आपकी उन्नति हुई, जो मूर्ख द्रौपदीको सभामें आई देख हंसा था, आज भीम उसका रुधिर पी रहे हैं। हे कुरुकुलश्रेष्ठ! अब तुम्हारा शत्रु बाणोंसे कटा हुआ पृथ्वीमें सो रहा है। आप उसे चलकर देखिये। उसके शरीरमें कितने बाण लगे हैं। हे महाबाहो। अब आप हम लोगोंके सहित सावधान होकर इस पृथ्वीका निष्कण्टक राज्य और सब सुख भोग कीजिये।

सञ्जय बोले, हे महाराज! श्रीकृष्णके ऐसे वचन सुन महात्मा धर्मराज प्रसन्न होकर ऐसा बोले, हे महाबाहो! हे देवकी नन्दन! हम प्रारब्धहीसे आपको देखते हैं। आपने जो काम किया, सो आपके लिये कठिन नहीं, हे महाबाहो। आपकी सहायतासे जो अर्जुनने यत्न करके शत्रुको मारा सो आपकी बुद्धिके भारी, कठिन काम नहीं फिर श्रीकृष्णका बाजू सहित दहिना हाथ पकड़ कर धर्मात्मा युधिष्ठिर दोनोंसे बोले, मुझसे नारद मुनिने कहा था। कि अर्जुन और कृष्ण, धर्मात्मा, महात्मा, नारायण, और नरका अवतार हैं, तत्वके जाननेवाले, महात्मा व्यासने भी मुझसे यह उत्तम कथा कही थी। हे कृष्ण! आपही की कृपासे अर्जुन सदा शत्रुओंके सन्मुख खड़े होकर युद्ध करते हैं। और कभी युद्धसे विमुख नहीं होते हैं जिस समय तुम अर्जुनके सारथी बने थे, तभी हमने जान लिया था। कि हमारी विजय होगी, पराजय कदापि नहीं। भीष्म, द्रोण, कर्ण और कृपाचार्य आदि जो दुर्योधनके सङ्गी थे, और हैं सो सब कर्णके मरनेसे नष्ट होगये। श्रीकृष्णसे ऐसा कहकर सफेद घोड़ेवाले, सोनेके रथमें बैठकर और अपनी निज सेनाके सहित वीर कृष्ण और अर्जुनसे बात करते हुए युद्धभूमि देखनेको चले। इस प्रकार उन दोनोंकी बातें सुनते हुए महाराज वहां पहुंचे और पृथ्वीमें सोते हुए कर्णको देखा जैसे कदम्बका फूल चारों ओर पखुरियोंसे भरा रहता है। ऐसे ही बाणोंसे पूरित महाराजने कर्णको देखा। तब महाराजने सुगन्धित तेलोंसे भरे, सोनेके अनेक दीपक जलवाकर कर्णके सब शरीर देखे, बाणोंसे छिन्नभिन्न पुत्र सहित कर्णको पृथ्वीमें पड़ा देख महाराजने पुरुषसिंह कृष्ण और अर्जुनकी बहुत प्रशंसा की। हे कृष्ण! आप ऐसे बुद्धिमान और वीरको स्वामी पाकर आज हम भाइयोंके सहित सब पृथ्वीके राजा हुए, आज राधापुत्रको मरा हुआ सुन दुर्योधन भी निराश होजायगा। हे पुरुषसिंह! कर्णके मरनेसे दुर्योधनका राज्य और जीवन नष्ट होगया, तथा हम लोग आपकी कृपासे कृतार्थ होगये, हे गोविन्द! प्रारब्धसे आपने इस शत्रुको मारा, प्रारब्धसे हमारी विजय हुई और प्रारब्धहीसे गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन युद्धमें जीते। हे महाबाहो। हम लोगोंने तेरह वर्ष बनमें जागते जागते बिताये आज रातको आपकी कृपासे सुखसे सोवेंगे, इस प्रकार धर्मराज युधिष्ठिरने कृष्ण और कौरवश्रेष्ठ अर्जुनकी बहुत प्रशंसा की।

सञ्जय बोले, हे महाराज। महाराज युधिष्ठिरने पराक्रमी अर्जुनके बाणोंसे पुत्रसहित कर्णको मरा देख अपना नवीन जन्म समझा। तब सब महारथ आकर महाराज युधिष्ठिरकी जै जै करने लगे। तब नकुल,

सहदेव, भीमसेन यदुकुल श्रेष्ठ महारथ सात्यकी धृष्टद्युम्न और शिखण्डी आदि सब पाञ्चाल योद्धा और सृञ्जय वंशी वीर कर्णके मरनेसे महाराजकी प्रशंसा करने लगे, वे सब महा शस्त्र चलानेवाले, महावीर विजय करके और महाराजकी धन्यवाद देकर कृष्ण और अर्ज्जुनकी प्रशंसा करके प्रसन्नता सहित अपने अपने डेरोंको चले गये, हे राजन्! यह मनुष्योंका नाश केवल आपकी दुर्बुद्धिसे हुआ अब शोच करनेसे क्या होगा?

श्रीवैशम्पायन बोले, सञ्जयसे ऐसे कठोर वचन सुनकर अम्बिकापुत्र महाराज धृतराष्ट्र जड़ कटे वृक्षके समान पृथ्वीमें गिर गये, इसी प्रकार पतिव्रता गान्धारी भी रोती हुई और कर्णका शोच करती हुई पृथ्वीमें गिर पड़ी तब विदुर और सञ्जय महाराजको उठाकर समझाने लगे, इसी प्रकार कुरुकुलकी स्त्रियोंने गान्धारीको उठाकर समझाया। राजा धृतराष्ट्रने प्रारब्ध और होनहारको बलवान समझा फिर महा तपस्वी महाराज धृतराष्ट्र चिन्ता मोह और डरसे व्याकुल होनेपर भी कुछ सावधान हुए, तब विदुर और सञ्जय फिर समझाने लगे। और महाराज! चुप होकर बैठ गये। हे महाराज जनमेजय! इस कृष्ण और कर्णके युद्धरूपी यज्ञको जो पढ़े सुने उसे विधि पूर्व्वक किये हुए यज्ञका फ मिलता है। भगवान् विष्णुहीको महात्म लोग यज्ञ, अग्नि, सूर्य्य और चन्द्रमा कहते हैं इससे जो उनकी इस कथाको सावधान होक सुने वह सर्व्वत्र सुखी रहेगा, जो श्रद्धाके सहि इस पुस्तकका पाठ करते हैं, उन्हें निःसन्दे धन धान्य, यश और सुख प्राप्त होते हैं। इस लिये कथाको श्रद्धा समेत सुनना चाहिये इसके श्रोतासे भगवान् विष्णु और शिवजी प्रस होते हैं। इसके पढ़नेसे ब्राह्मणोंको विद्य क्षत्रियोंको बल, बनियोंको धन और शूद्रोंक सुख प्राप्त होता है, इस पुस्तकमें महामुनि भगवान् कृष्ण द्वैपायन वेदव्यासने भगवा कृष्णका चरित्र कहा है। इससे इसके सुनने वाले, मनुष्य सुखी होते हैं। और धन धान्य पाते हैं, जो एक बर्षतक प्रतिदिन बछड़े सहि कपिला गौ दान देनेका फल पाते हैं। वही कर्ण पर्व्व सुननेसे होगा।

९६ अध्याय समाप्त।

इति श्रीभाषा महाभारते कर्ण पर्व्व सम्पूर्णम्।



महाभारत।



शल्यपर्व्व।

नारायण नरोंमें श्रेष्ठ नर और दिव्य स्वरूप-
वाली सरस्वतीको प्रणाम करके जय
कीर्त्तन करना उचित है।

महाराज जनमेजय बोले, हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! वैशम्पायन मुने! जब अर्ज्जुनने कर्णको इस प्रकार मार डाला, तब बचे हुए कौरवोंने क्या किया? राजा दुर्य्योधनने पाण्डवोंकी सेनाको बढ़ते हुए देख समयानुसार क्या उपाय किया! हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! मैं अपने पूर्व्व पुरुषोंका चरित्र सुनकर तृप्त नहीं होता इसलिये इस कथाको सुनना चाहता हूं आप मुझसे कहिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे महाराज! कर्णके मरनेके पश्चात् राजा दुर्य्योधन शोक समुद्रमें डूब गये और विजयसे निराश होकर बार बार हाकर्ण! हाकर्ण! कहकर रोने लगे, इस प्रकार रोते हुए राजोंके सहित बहुत कठिनतासे अपने डेरोंमें पहुंचे यद्यपि अनेक राजोंने शास्त्रमें लिखे अनेक उपायकर राजा दुर्य्योधनको बहुत समझाया तो भी उन्हें सूत-पुत्र कर्णके शोकसे शान्ति न हुई, परन्तु होन-हार और प्रारब्धको बलवान् समझ कर राजा दुर्य्योधन फिर युद्धको चले. उसी समय उन्होंने राजा शल्य को सेनापति बनाया और बचे हुए राजोंके समेत युद्धको चले, हे भरत कुलश्रेष्ठ! तब पाण्डव और कौरवोंकी सेनाका देवासुर संग्रामके समान घोर युद्ध हुआ। हे महाराज! शल्यने पाण्डवोंकी सेनाका बहुत नाश किया, परन्तु दो पहर समयके पश्चात् महाराज युधिष्ठिरके हाथसे मारे गये, तब राजा दुर्य्योधन अपने सब बन्धुओंको मरा देख युद्ध छोड़ कर भाग गये, और शत्रुओंके भयसे एक भयानक तालावमें घुसकर रहने लगे, उसी दिन दो पहरके पश्चात् भीमसेनने अपने बन्धुओंके सहित राजा दुर्य्योधनको तलावमेंसे पुकार कर मारडाला। हे राजन्! जब महा धनुषधारी राजा दुर्य्योधन मारे गये, तब तीन महारथोंने क्रोध करके रात्रिको सृञ्जय, सोमक और पाञ्चाल बंशी राजपूतोंका नाश कर दिया, तब युद्धके डेरोंसे चलकर दूसरे दिनके पहले पहरमें दुःख और शोकसे व्याकुल होकर सञ्जय हस्तिनापुरमें आये, सूतपुत्र सञ्जय शोकसे व्याकुल दोनों हाथ उठाये रोते हुए राज भवनमें पहुंचे और हाय राजा दुर्य्योधन हाय राजा कह कर रोने लगे, और कहने लगे। हाय उस महात्माके मरनेसे हम सब नष्ट होगये, प्रारब्ध बड़ी बलवान है, और बल निरर्थक है, देखो इन्द्रके समान महा पराक्रमी सब वीरोंको पाण्डवोंने मार डाला।

हे राजन् जनमेजय! जिस समय सञ्जयने नगरमें प्रवेश किया, उनका देखते हो सब नगर निवासी बालक, बूढ़े, जुवा हा महाराज! हा महाराज! कहकर सब स्थान और मार्गोंमें

रोने लगे। जिस समय सञ्जयके मुखसे सुना कि महाराज दुर्य्योधन मर गये, तब सब नगर निवासी घबड़ाकर इधर उधर छटपटाने लगे। उस समय हमने उन नगर निवासियोंको चेतनारहित और पागलके समान देखा, इसी प्रकार सञ्जय भी घबड़ाते और रोते हुए राजभवनमें पहुंचे, वहां जाकर सब जगत्के स्वामी बुद्धिरूपी नेत्रवाले, अर्थात् अन्धे, पापरहित महाराज धृतराष्ट्रको बेटोंकी बहू, गान्धारी, विदुर तथा और मन्त्री, हित चाहनेवाले, बन्धुओंके सहित बैठे और सूतपुत्र कर्णके मरनेके पश्चात् युद्धमें क्या हुआ, यह शोचते हुए देखा और रोकर तथा दुःखी होकर ऐसे वचन कहे। हे पुरुषसिंह भरतकुल श्रेष्ठ! मैं सञ्जय आपके चरणोंमें प्रणाम करता हूं। हे महाराज। महाराज मद्रराज शल्य, सुबलपुत्र शकुनी, पुरुषसिंह महाबली महावीर उलूक सब संशप्तक सब काम्बोज, शक, म्लेच्छ, पर्व्वती, यवन, पूर्व्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तरके सब क्षत्री राजा राजपुत्र और आपकी ओरके सब क्षत्री मारे गये, इसके पश्चात् पाण्डुपुत्र भीमसेनने अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार अर्थात् जङ्घा तोड़कर राजा दुर्य्योधनको मारडाला। हे महाराज। आज राजा दुर्य्योधन जङ्घाहीन होकर धूलमें लपटे हुए पृथ्वीमें सोरहे हैं धृष्टद्युम्न, शिखण्डी उत्तमौजा, युधामन्यु, प्रभद्रक, सब पाञ्चाल, पुरुषसिंह राजा चेदिराजवंश समेत मारे गये। आपके सब पुत्र, द्रौपदीके पाचो पुत्र और महा वीर कर्णपुत्र वृषसेन भी मारे गये, सब रथी पदाति घोड़े और हाथियोंपर चढ़नेवाले वीर मारे गये। हे पृथ्वीनाथ। अब पाण्डव और कौरवोंके डेरोंमें बहुत थोड़े मनुष्य रह गये, वे सब परस्पर लड़कर मर गये, इस समय जगत्में केवल स्त्री ही बच गयीं हैं पाण्डवोंकी ओरसे सात और दुर्य्योधनकी ओरसे केवल तीन वीर बचे हैं उधर पाचो भाई पाण्डव, श्रीकृष्ण और सात्यकी

और इधर कृपाचार्य्य, कृतवर्म्मा और [illegible] अश्वत्थामा बचे हैं। हे महाराज! उन [illegible] रह अक्षौहिणियोंमें केवल ये दश वीर बच[े] हैं और सब मारे गये। हे भरतकुलश्रे[ष्ठ] यह ऐसा समय आया कि सब जगत् मर [illegible] इस समय केवल दुर्य्योधनका वैर हेतु होगया और सब समयके अनुसार ही हु[आ]

वैशम्पायन मुनि बोले, हे महाराज! [illegible] धृतराष्ट्र इस कठोर वचनको सुनते ही मू[र्च्छित] होकर पृथ्वीमें गिर गये, उनके गिरते ही बुद्धिमान् विदुर भी शोकसे व्याकुल [होकर] गिर गये, इसी प्रकार गान्धारी आदि सब कुलकी रानी मूर्च्छित हो गिर गईं, उस [समय] समस्त राज सभा मूर्च्छित होनेके [कारण] कागज पर लिखे हुए चित्रके समान [दीखने] लगी, थोड़े समयके पश्चात् महाराज धृ[तराष्ट्र] चैतन्य होकर पुत्रके शोकसे व्याकुल होकर धीरे विदुरसे बोले, हे भरतकुलश्रेष्ठ! मा[हा] बुद्धिमान् इस समय तुम ही हमारी गति [हो] इस समय मेरे सब पुत्र मारे गये, मैं अना[थ] होगया ऐसा कह फिर मूर्च्छित हो भूमिपर गिर गये, महाराजको मूर्च्छित देख सब बान्धव शीतल जल छिड़कने लगे, और पङ्खासे हवा करने लगे, बहुत समयके पश्चात् पुत्र शोकसे व्याकुल राजा धृतराष्ट्र सावधान हुए जैसे घड़ेमें बन्द सांप ऊंचे स्वांस लेता है, ऐसे ही राजा धृतराष्ट्र भी ऊंचे स्वांस लेने लगे। राजाको व्याकुल देखकर सञ्जय भी रोने लगे, इसी प्रकार सब स्त्रियों समेत यशस्विनी गान्धारी भी रोने लगी, फिर बार बार रोते हुए राजा धृत[राष्ट्र] विदुरसे सब स्त्रियों सहित यशस्विनी गान्धारीको विदा करो, मेरा मन इस समय बहुत घबड़ा रहा है, इसलिये सब सभासद अपने अपने घरको जांय, विदुरने ऐसी आज्ञा सुनकर सब सभासद और स्त्रियोंको विदा कर दिया, उस समय विदुरका शरीर भी दुःखसे का[ंपने]

हा था, मुखसे वचन नहीं निकलता था, राजा को व्याकुल देख सब स्त्री और सभासद चले गये, तब राजाको अत्यन्त व्याकुल जानकर सञ्जय हाथ जोड़ कर और विदुर मीठे मीठे वचनोंसे सांस लेते हुए और रोते हुए राजाको समझाने लगे।

१ अध्याय समाप्त।

वैशम्पायन बोले, हे राजन्! जब सब स्त्री चली गईं तब अम्बिकापुत्र धृतराष्ट्र अत्यन्त दुःखसे व्याकुल होकर रोने लगे, थोड़े समयके पश्चात् ऊंची स्वांस लेकर हाथ पटकते हुए ऐसे वचन बोले।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! हाय बड़े दुःखकी बात है, कि मैं तुम्हारे मुखसे पाण्डवोंको कुशल सहित जीता सुनता हूं मेरा हृदय वज्रसे भी अधिक कठोर है जो पुत्रोंकी मृत्यु सुनकर भी नहीं फटता, हे सञ्जय! अपने पुत्रोंके खेल और मृत्युको स्मरण करके मेरा मन व्याकुल हुआ जाताहै, मैंने अन्धा होनेके कारण उनका रूप नहीं देखा था, तोभी पुत्रोंका मुझे बहुत प्रेम था, हे पाप रहित! मेरे पुत्र बालक अवस्थासे युवा अवस्थाको प्राप्त हुए यह सुन कर मैं बहुत प्रसन्न हुआ था, आज उनका धन और बल नष्ट हो गया, और वे भी मर गये, यह सुनकर मुझे कहीं शान्ति नहीं होती मैं अपने पुत्रोंके दुःखसे व्याकुल हो गया हूं।

हे महाबाहो राजेन्द्र! हे पुत्र दुर्य्योधन! तुम मेरे पास आओ आओ अब तुम्हारे बिना मेरी कौन रक्षा करेगा? हे तात! आज तुम मारे हुए राजोंको छोड़कर साधारण राजाके समान पृथ्वीमें मरे हुए क्यों पड़े हो? हे महाराज! हे धीर! तुम सब राजा और सब सम्बन्धियोंकी गति थे, आज मुझ अन्धेको छोड़ कर कहां चले जाते हो? तुम्हें युद्धमें कोई नहीं जीत सक्ता था, आज पाण्डवोंने युद्धमें प्रीति, आदर और कृपा आदि तुम्हारे गुण कैसे नष्ट कर दिये? हे वीर! अब तुम्हारे बिना मुझे प्रतिदिन पिता महाराज और लोकनाथ कौन कहेगा? हे पुत्र! तुम प्रेमसे आंसू भर कर और कण्ठमें लेकर मीठे वचनोंसे कहो कि, हे कुरुराज! मुझे कुछ आज्ञा दीजिये, तुमने पहले हमसे कहा था कि इस समस्त पृथ्वीपर जैसा हमारा अधिकार है ऐसा पाण्डवोंका नहीं, हमारी ओर भगदत्त, कृपाचार्य्य, शल्य, विन्द, अनुविन्द, जयद्रथ, भूरिश्रवा, सोमदत्त, महाराज वाल्हीक, अश्वत्थामा, कृतवर्म्मा, मगधराज, अतिबली काशिराज, सुबलपुत्र शकुनि, सहस्रों म्लेच्छ, शक, यवन, काम्बोज देशी सुदक्षिण, त्रिगर्त्तदेशी सुशर्म्मा, पितामह भीष्म, भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्य श्रुतायु, अयुतायु, बलवान शतायु, जलसन्ध, ऋष्य,शृङ्गी, अलायुध राक्षस महाबाहु अलम्बुष और महारथ सुबाहु, इनको आदि लेकर और भी अनेक राजा लोग मेरे लिये प्राण और धनका मोह छोड़कर युद्ध करनेको उपस्थित हैं। मैं इन सबके बीचमें खड़ा होकर अपने भाइयोंके सहित समस्त पाञ्चाल, सृञ्जय और पाण्डवोंसे युद्ध करूंगा। हे राजसिंह! मै एकला ही चन्देरीके राजा द्रौपदीके पांचोपुत्र सात्यकी कुन्ति भोज, और भोज घटोत्कच राक्षसको युद्धमें निवारण करूंगा। जिस समय मैं क्रोध करके युद्धमें अकेला जाऊंगा, उसी समय पाण्डवोंके सब वीरोंको जीत लूंगा। फिर इन वीरोंके सहित युद्ध करनेको तो कया ही क्या है? ये सब पाण्डवोंके शत्रु हैं। अथवा ये सब राजा पाण्डवोंके सहायकोंसे युद्ध करेंगे, तथा उन्हें मारेंगे। और एकले कर्ण ही मेरी सहायतासे पांचो पाण्डवोंका मार डालेंगे। पाण्डवोंके मरनेके पश्चात् सब राजा और वीर मेरी आज्ञामें चलेंगे। हे राजन्! जो महा-

बलवान श्रीकृष्णचन्द्र पाण्डवोंके प्रधान है, सो कदापि युद्ध करनेको खड़े नहीं होंगे इत्यादि अनेक वचन तुमने कर्णके आगे मुझसे कहे थे, सो आज मैं प्रारब्धसे उन पाण्डवोंको तो जीता देखता हूं। और तुम्ही उनके हाथसे काल वश हुए।

हे सञ्जय! देखो जैसे सियार सिंहको मार डालता है। ऐसे शिखण्डीने महाप्रतापी लोकनाथ भीष्मको युद्धमें मारडाला, यहां प्रारब्धके सिवाय और कौन बलवान कहा जा सकता है? ब्राह्मणश्रेष्ठ सब शत्रुनाशन अस्त्रविद्या जाननेवाले द्रोणाचार्यको धृष्टद्युम्नने मारडाला, कहो इसमें प्रारब्धके सिवाय किसको दोष दें? महाबलवान दिव्य शस्त्र जाननेवाले, कर्णको युद्धमें अर्जुनने मारडाला, यहां प्रारब्धके सिवाय और किसको बलवान कहें? देखो भूरिश्रवा, महाराज बाल्हीक भी युद्धमें मारे गये, इसमें प्रारब्धके सिवाय और किसको दोष दें? जहां गजयुद्धमें पण्डित भगदत्त और महावीर जयद्रथ मारे गये, तहां प्रारब्धको छोड़ किसको दोष दें? देखो सुदक्षिण, पुरुवंशी जलसन्ध, श्रुतायु, अयुतायु, महाबलवान सर्व्व शास्त्रज्ञ महाराज पाण्डव, महाबली मगधदेशका राजा उग्रायुध, विक्रांत, प्रतिमान, विन्द, अनुविन्द, राजा त्रिगर्त्तदेशीय, संशप्तक, अलम्बुष राक्षस, अलायुध, ऋषिशृङ्गी महाबली नारायणी सेना असंख्य म्लेच्छ, सुबलपुत्र शकुनी, महाबलवान उलूक, वीर सुबल इनको आदि लेकर और भी अनेक वीर शस्त्रविद्याके जाननेवाले, परिघके समान हाथवाले राजा और राजपुत्र युद्धमें मारे गये, यहां प्रारब्धको छोड़ किसे बली कहें।

हे सूतपुत्र सञ्जय! ये सब अनेक देशोंसे आये हुए बली शूरवीर शस्त्रविद्याके जाननेवाले और इन्द्रके समान बलवान थे सो सब तथा मेरे बलमेरे और पोते मारे गये। यहां प्रारब्धके सिवाय किसको बलवान कहें? मेरी ही ... व्यसे मेरे सब भाई और मित्र मारे गये, मनुष्य प्रारब्धहीके वशमें होकर जन्म लेता है। हे सञ्जय! प्रारब्धहीसे जगत्‌में सुख होता है, मैं अत्यन्त मन्द भाग्य हूं। इसहीसे मेरे सब पुत्र मारे गये। हे सञ्जय! अब मैं बूढ़ा होकर शत्रुओंके वशमें कैसे रहूंगा? इसलिये वनवास करना ही मेरे लिये अच्छा है, मुझे वनमें जानेके सिवाय और किसी बातमें कल्याण नहीं होगा। इसलिये वनहीको चला जाऊंगा। हे सञ्जय! मैं इस समय पङ्खरहित पक्षीके समान होगया हूं। देखो दुर्य्योधन और शल्य मारे गये, जिस भीमसेनने दुर्य्योधन, दुःशासन विविंशति और महाबलवान विकर्ण आदि मेरे सौ पुत्रोंको मारडाला। उसके वचन मैं कैसे सुनूंगा? जिस एकलेने मेरे दुर्य्योधन आदि पुत्रोंको मारा उस भीमसेनके कठोर वचनों मैं कैसे सुनूंगा।

श्रीवैशम्पायन बोले, इस प्रकार बूढ़े राजा धृतराष्ट्र पुत्रोंके शोकसे व्याकुल होकर बारबार मूर्च्छित होने और रोने लगे। इस प्रकार बहुत समय तक रोकर और अपने निरादरको स्मरण करके और दुःखसे व्याकुल होकर फिर सञ्जयसे ऐसा प्रश्न किया।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! मेरे पुत्रोंने भीष्म, द्रोण और कर्णको मरा देख किसको सेनापति बनाया? हाय! मेरे पुत्र जिसको सेनापति बनाते हैं। उसीको पाण्डव चटपट मार डालते हैं। देखो तुम्हारे देखते देखते अर्जुनने भीष्मको मारडाला, इसी प्रकार द्रोणाचार्य्य और प्रतापी कर्ण भी मारे गये। देखो महात्मा विदुरने हमसे जो कहा था, कि "दुर्य्योधनके दोषसे सब प्रजाका नाश होजायगा। ये सब सभासद मूर्ख होगये हैं। कुछ नही समझते और समझकर भी उपाय नहीं करते"।

सोही-दीर्घदर्शी महात्मा विदुरका मत

आज मुझ मूर्खके आगे आगया, सत्यवादी विदुरने जो कुछ कहा था सो सभी सत्य हुआ। हे सञ्जय! मैंने जो प्रारब्धके वशमें होकर अन्याय किया था। उसीका यह फल हुआ, अब तुम शल्य और दुर्य्योधनके युद्ध करनेका वृत्तान्त हमसे कहो; कर्णके मरनेके पश्चात् कौन सेनापति हुआ? अर्ज्जुन और कृष्णसे कौन महारथ युद्ध करनेको गया? और मद्रराज शल्यके दहिने पहियेकी रक्षा किसनेकी और बांये पहियेकी किसनेकी और उनके रथकी रक्षाहेतु पीछे कौन रहा? कहो हमारे सब वीरोंके बीचमें पाण्डवोंने मद्रराज शल्य और दुर्य्योधनको कैसे मार डाला? जिस प्रकार हमारा पुत्र दुर्य्योधन युद्धमें मारा गया और भरतवंशका नाश हुआ सो सब कथा हमसे कहो। कहो सब सेनाके सहित पाञ्चालदेशी धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और द्रौपदीके पांचों पुत्र कैसे मारे गये? कहो पांचो पाण्डव, सात्यकी, कृतवर्म्मा, कृपाचार्य्य और अश्वत्थामा कैसे जीते बचे?

हे सञ्जय! तुम इस विषयको भली भांति जानते हो इसलिये तुम हमसे इस सब युद्धको भली भांति वर्णन करो।

२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! अब आप सावधान होकर कौरव और पाण्डवोंका जिस प्रकार परस्पर युद्ध हुआ सो कथा हम कहते हैं सुनो। हे राजेन्द्र! जिस समय महात्मा अर्ज्जुनने कर्णको मारडाला और तुम्हारी सब सेना इधर उधरको भागने लगी और अनेक उत्तम वीर मरकर पृथ्वीमें गिरने लगे तब अर्ज्जुन सिंहके समान गर्ज्जे तब तुम्हारे पुत्र डरसे व्याकुल होगये, वे लोग अपनी सेनाको न सम्भाल सके और न युद्ध कर सके। जैसे समुद्रमें नाव टूटनेसे बनिये घबड़ा जाते हैं ऐसे ही तुम्हारे पुत्र कर्णके मरनेसे अथाह शोक और भय समुद्रमें डूबने लगे। जैसे अपार समुद्रमें डूबते मनुष्य पार जानेकी इच्छा करते हैं ऐसे ही अर्ज्जुनके बाणसे कर्णरूपी द्वीप टूटनेपर तुम्हारे पुत्रशोक समुद्रके पार जानेकी इच्छा करने लगे, जैसे सिंहसे व्याकुल हरिण, सींग टूटे बैल और दांत टूटे सांप घबड़ाते हैं वैसे ही कर्णके मरनेसे तुम्हारे पुत्र अनाथ होकर घबड़ाने लगे। सन्ध्याके समय कवच और ध्वजासे हीन होकर अर्ज्जुनके बाणोंसे व्याकुल तुम्हारे पुत्र युद्धसे लौटे, उस समय तुम्हारे पुत्र ऐसे व्याकुल हुए कि उन्हें दिशाका भी ज्ञान न रहा, उस समय उन सबको यही ज्ञान होता था कि हमारे ही पीछे अर्ज्जुन और भीमसेन दौड़े चले आते हैं, अपनी सेनाको आप ही नाश करते थे और चारों ओरको देखते हुए भागे चले जाते थे, कोई डरता था, और कोई घबड़ाकर भागता था, कोई हाथी, कोई घोड़े और कोई महारथ रथोंपर चढ़कर युद्धसे भागते थे, और पदातियोंको मारते थे, जैसे सांप और चोरोंसे भरे हुए बनको छोड़कर पथिक भागते हैं, तैसे ही तुम्हारी सेना व्याकुल होकर भागी, हाथियोंने रथोंको तोड़ डाला, और घोड़ोंकी झपटसे आकर अनेक पदाति मर गये, अनेक हाथियों पर चढ़े वीर मर गये। किसी हाथीका सूंड़ कट गया, उस समय तुम्हारी सब सेनाको जगत् अर्ज्जुन रूप दीखता था, भीमसेनके भयसे अपनी सेनाको भागते देख राजा दुर्य्योधनने अपने सारथीसे कहा जब मैं धनुष धारण करके युद्धमें जाऊंगा तब अर्ज्जुन मुझे नहीं जीत सकेगा, मैं अभी कुन्तीपुत्र अर्ज्जुनको युद्धमें मारूंगा, तुम घोड़ोंको शीघ्र हांको जैसे समुद्र तटके पहाड़को नहीं लांघ सक्ता, ऐसे ही अर्ज्जुन मुझे नहीं जीत सकेंगे, मैं अभी अर्ज्जुन, श्रीकृष्ण, और अभिमानी भीमसेनको मारकर कर्णके ऋ॰।

छूटूंगा। राजाके वीर और आर्योंके समान वचन सुनकर सारथीने सोनेके जालसे ढके हुए घोड़ोंको धीरे धीरे हांका, राजा दुर्य्योधनके सङ्ग घोड़े हाथी और रथोंसे हीन केवल पच्चीस सहस्र पदाति धीरे धीरे चले, उन सबको भीमसेन और धृष्टद्युम्नने अपनी चतुरङ्गिनी सेनाके सहित बाणोंसे मार डाला, उन्होंने भी उनके सङ्ग घोर युद्ध किया कोई भीमसेन और कोई धृष्टद्युम्नका नाम लेकर पुकारने लगा। तब भीमसेनने पराक्रमी महाक्रोध किया। तब धर्मात्मा भीमसेनने भूमिमें खड़े हुए वीरोंसे रथमें बैठकर युद्ध करना धर्म्म न समझा इसलिये गदा लेकर रथसे नीचे उतरे केवल उस ही सोनेसे जड़ी हुई गदासे भीमसेन घोर युद्ध करने लगे, जैसे दण्डधारी यमराज प्रजाका नाश करते हैं, तैसे ही भीमसेनने अपनी गदासे उन सब वीरोंको प्राण और बन्धुओंसे छुड़ा दिया, वे सब वीर इस प्रकार भीमसेनकी ओर चले, जैसे पतङ्ग आगकी ओर जाते हैं, उनके पास जाते ही सब नष्ट होगये जैसे यमराजको देख प्रजाका नाश होजाता है, तैसे ही भीम-सेनको देख तुम्हारी सेनाका नाश होगया भीमसेन खड्ग और गदा लेकर उस सेनामें इस प्रकार घूमने लगे, जैसे पक्षियोंमें बाज, इस प्रकार पराक्रमी भीमसेनने तुम्हारे पच्चीस सहस्र पदातियोंको मार डाला, इस प्रकार भीमसेन् और धृष्टद्युम्न सब सेनाका नाश करके एक स्थान पर खड़े होगये। अर्ज्जुन भी रथ सेनासे युद्ध करने लगे, इसी प्रकार नकुल, सहदेव और सात्यीक, तुम्हारी सेनाका नाश करते हुए शकुनिसे युद्ध करने लगे, उस समयमें सब वीर बहुत प्रसन्नता और वेगसे युद्ध करते थे, इन तीनोंने शकुनिके सङ्गके घुड़चढे वीरोंको मारकर शकुनिसे महायुद्ध किया, इसी प्रकार त्रिलोक विख्यात गाण्डीव धनुषको घुमाते अर्ज्जुन उस रथ सेनामें घोर युद्ध करने लगे, कृष्ण सारथी और सफेद घोड़ों युक्त अर्ज्जुनको आते देख तुम्हारी सेना इधर उधर भागने लगी। किसीका रथ टूट गया, किसीके घोड़ मर गये, इस प्रकार पच्चीस सहस्र पदाति अर्ज्जुनकी ओर चले, उस सब सेनाको धृष्टद्युम्नने भीमसेनकी सहायतासे मार डाला। उत्तम कबूतरके समान सफेद रङ्गवाले, घोड़े और कचनार वृक्षयुक्त ध्वजावाले, धृष्टद्युम्नके रथको देखकर तुम्हारे पुत्र इधर उधरको भागने लगे, महा यशस्वी नकुल, सहदेव और सात्यकिने शीघ्रता सहित शकुनिके पास जाकर घोर युद्ध करके उन्हें जीत लिया, इसी प्रकार चेकितान शिखण्डी और द्रौपदीके पांचोपुत्र तुम्हारी सेनाको मार कर शङ्ख बजाने लगे। जैसे भागते हुए बैलोंके पीछे बलवान बैल दौड़ते हैं, तैसे ही तुम्हारी सेनाको भागते देख पाण्डवोंके वीर दौड़े, हे राजन्! तुम्हारी बची हुई सेनाको आगे खड़ा देख पाण्डु पुत्र अर्ज्जुनको महा क्रोध हुआ तब अर्ज्जुन उस सेनाके ऊपर सहस्रों बाण बर्षाने लगे। उस समय अन्धकार और धूलसे कुछ नहीं दीखता था, हे महाराज! उस समय चारों ओर बाण ही बाण दीखते थे, तब तुम्हारी सेना व्याकुल होकर इधर उधरको भागने लगी। हे राजेन्द्र! जब इस प्रकार तुम्हारी सेना भागने लगी, तब दुर्य्योधन अपनी और पाण्डवोंकी सेनाका मारने लगे, हे राजन्! तब बलवान् दुर्य्योधन युद्धमें खड़े होकर सब पाण्डवोंको युद्धके लिये, इस प्रकार ललकारने लगे, जैसे पहले समयमें बलिने देवतोंको पुकारा था, पाण्डवोंके वीर भी दुर्य्योधनको गर्ज्जता हुआ देख अनेक शस्त्र बर्षाते और डराते हुए दौड़े। दुर्य्योधन भी सावधान होकर एकले ही उन सब वीरोंसे युद्ध करने लगे, उनके इस पराक्रमको देख हम सब लोग चकित होगये। हे राजेन्द्र! उस समय पाण्डवोंके सब योद्धा एक ओर और एकले दुर्य्योधन एक

घोर थे, परन्तु उन्हें कोई भी न जीत सका, तब उन्होंने अपनी सेनाको व्याकुल देखकर उसे ठीक करनेकी इच्छा की। अपने योद्धाओंका उत्साह बढ़ाते हुए महाराज दुर्य्योधन ऐसा वचन बोले, हमें पृथ्वी और पर्व्वतोंमें ऐसा कोई स्थान नहीं दीखता जहां भाग कर तुम लोग, पाण्डवोंके हाथसे बच जाओगे, इसलिये भागनेसे क्या होगा? अब इनकी सेना बहुत थोड़ी रह गई है, तथा कृष्ण और अर्ज्जुन भी घावोंसे व्याकुल होगये हैं। यदि हम लोग सब इकट्ठे होकर इनसे लड़ेंगे तो अवश्य ही जीत लेंगे, और जो तुम भाग जाओगे तो पाण्डवोंकी जीत होगी, और यह भी तुम लोग जानते हो कि युद्धमें मरना चत्रियोंका धर्म्म है, और भाग कर मरना पाप है। इसलिये युद्ध करो, हमारी सेनाके सब चत्री सुनें कि मराहुआ मनुष्य दुःख देखनेको नहीं आता और युद्धमें मरनेसे स्वर्ग होता है, जो तुम लोग भागोगे तो दौड़ कर भीमसेन तुम्हारा नाश कर देंगे। इसलिये अपने पुरुषोंका धर्म्म मत छोड़ो। हे वीरों! चत्रीके लिये युद्ध करनेके समान धर्म्म और युद्धसे भागनेके समान दूसरा पाप नहीं है, चत्रीको युद्ध करने होसे स्वर्ग होता है, जो लोग बहुत दिन तपस्या करनेसे नहीं मिलते सो चत्रियोंको केवल युद्ध करनेसे प्राप्त हो सक्ते हैं।

राजाके ऐसे वचन सुन सब योद्धा इनकी प्रशंसा करने लगे, तब सब योद्धा युद्धको इच्छा और अपनी जीतकी इच्छा करके फिर पाण्डवोंसे लड़नेको लौटे। तब फिर तुम्हारी और पाण्डवोंकी सेनाका ऐसा घोर युद्ध हुआ जैसा देवता और दानवोंका हुआ था, हे महाराज! उस समय अपनी सेनाको लेकर राजा दुर्य्योधन महात्मा युधिष्ठिरादिक पाण्डवोंसे घोर युद्ध करने लगे।

३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! युद्धभूमिमें मरे वीर, कटे रथ, हाथी और घोड़े देखकर सब वीर घबड़ाने लगे, उस समय यह युद्धभूमि श्मशानके समान भयानक दीखती थी, तहां सैकड़ों सहस्रों राजा मरे पड़े थे, कोई अपने मरे हुए बन्धुओंको नहीं पहचानता था, तब राजा दुर्य्योधन कर्णके शोकसे व्याकुल होकर युद्ध छोड़कर चले गये, तब तुम्हारी सेना भी अर्ज्जुनके पराक्रमको देखकर इधर उधरको भागने लगी, हे भरत! जब तुम्हारी सेना दुःखसे व्याकुल होकर इधर उधर भागने लगी, तब मरते हुए वीरोंका शब्द सुनकर और प्रधान वीरोंकी इच्छा जानकर तपस्वी, बूढे, सब वचनोंका अर्थ जाननेवाले, तेजस्वी कृपाचार्य्य दया और क्रोधमें भरकर दुर्य्योधनके पास जाकर कहने लगे। हे पापरहित महाराज कुरुवंशी दुर्य्योधन! हम जो तुमसे कहते हैं। सो सुनो और यदि अच्छा जान पड़े तो वैसा ही करो। हे चत्रिय श्रेष्ठ महाराज! यह बात ठीक है कि, चत्रीको युद्धके समान दूसरा सुखका मार्ग नहीं है इसीसे चत्री युद्ध करते हैं। इसीलिये चत्री युद्धमें भाई, बेटे, साले, श्वसुर और बाप आदि बन्धुओंको भी नहीं मानते हैं। शत्रुओंको मारना ही धर्म्म और युद्धको छोड़ना ही अधर्म्म है। हाय। आज हम लोग इसी जीविकाके लिये इस घोर आपत्तिमें पड़े हैं। तो भी तुमसे कुछ हितके वचन कहते हैं। अब भीष्म, द्रोणाचार्य्य और महारथ कर्ण नहीं हैं। देखो तुम्हारे बहनोई जयद्रथ, दुःशासन आदि भाई और पुत्र लक्ष्मण भी मारे गये, अब कौन बचा है, कि जिसके आश्रयसे हमलोग रहें? जिनके आश्रयसे और जिनके लिये, हम लोग राज्यकी इच्छा करते थे, वे सब शरीर छोड़ स्वर्गको चले गये। हमलोग भी अब उन महारथ वीरोंके बिना दुःखसे दिन काट रहे हैं। और राजाओंका नाश कर रहे हैं। जितने

जीते हैं, यदि सब मिलकर अर्जुनसे लड़े तो भी उसे जीत नहीं सकेंगे, क्यों कि आप श्रीकृष्ण ही उनके सारथी है। इन्द्रके धनुषके समान ऊंची बानरकी ध्वजा देखते ही तुम्हारी सेना भागने लगती है। गाण्डीव धनुष कृष्णका पाञ्चजन्य शंख और भीमसेनका गर्ज्जना सुन हम लोगोंके रोएं खड़े होजाते हैं। अर्ज्जुनका धनुष, बिजलीके समान जलती हुई आगके समान और चक्रके समान घूमता हुआ चारों ओर युद्धमें दीखता है। जैसे बादलमें बिजली दीखती है, ऐसे ही हम लोगोंको सोनेके तारोंसे खिचा हुआधनुष चारों ओर दिखाई दे रहा है। हमें चारों ओर बहुत वेगसे चलनेवाले, चन्द्रमा और काशके फूलके समान सफेद अर्ज्जुनके घोड़े ऐसे दिखाई देते हैं। मानों आकाशको उड़े चले जाते हैं। हमें चारों ओर ऐसा दिखाई देता है, मानों कृष्ण सोनेके जालवाले, अर्ज्जुन युक्त रथको इस प्रकार उड़ाये जाते हैं। जैसे मेघोंको वायु। हे राजन्! शस्त्रविद्या जाननेवाले, अर्ज्जुनने तुम्हारी सेनाका इस प्रकार नाश कर दिया जैसे गर्मीमें घोर बढी हुई अग्नि सूखे काठको जलाती है। हमें चारों ओरसे इन्द्रके समान पराक्रमी अर्ज्जुन ही आता दीखता है, और हम उसे देखकर ऐसे डरते हैं। जैसे चार दांतवाले, हाथीको देखकर साधारण मनुष्य। जैसे दुर्व्वल कमलको हाथी उखाड़कर फेंक देता है। ऐसे ही तुम्हारी सेनाको मारते और राजोंको डराते अर्ज्जुनहीको हम चारों ओर देख रहे हैं। जैसे सिंहको देख हरिण घबड़ाते हैं, तैसे ही हम अपने वीरोंको मारते और धनुष टङ्कारते अर्ज्जुनको देखकर डरते हैं। सब जगत्के वीरोंसे श्रेष्ठ धनुषधारी कृष्ण और अर्ज्जुनने अभी तक कवच नहीं उतारा है। हे राजन्! आज सत्रह दिन हुए कि, घोर युद्ध होरहा है, और लाखों वीरोंका नाश हो चुका तो भी उन्होंने कवच नहीं खोला, जैसे शरदकालके मेघ [illegible] लगनेसे फट जाते हैं, ऐसे,ही अर्ज्जुनको देख तुम्हारी सेना भागी जाती है। जैसे समु[illegible] पड़ी नावको वायु हिला देता है। ऐसे [illegible] अर्ज्जुनने तुम्हारी सेनाको भगा दिया है। अर्ज्जु[illegible]नके आगे सूतपुत्र कर्ण सहायकों सहित द्रोणा[illegible]चार्य्य क्या थे? हम, तुम, कृतवर्म्मा भाइयों सहित तुम्हारे भाई दुःशासन, अर्ज्जुनके बाण[illegible] आगे क्या वस्तु हैं? देखो जयद्रथके मर[illegible] समय ऊपर लिखे सभी वीर तो थे, पर सबको जीतकर और सबके शिरपर हो[illegible] सबके देखते देखते उसको मारडाला, अब [illegible] ऐसा वीर बचा है जो अर्ज्जुनको जीते[illegible] महात्मा अर्ज्जुन दिव्य शस्त्रोंको जानते हैं। उ[illegible] धनुष टङ्कार सुनते ही धीर जाता रहता [illegible] जैसे चन्द्रमाके विना रात्रि शून्य होजाती [illegible] ऐसे ही हमारी सेना भी सेनापतिके मर[illegible] शून्य होगयी है, जैसे तटके वृक्षोंको हाथी तो[illegible]कर नदीमें गिरा देता है। और वह नदी इध[illegible] उधरको बहने लगती है। ऐसे ही हमारी सेना व्याकुल होगयी है। हे महाबाहो! जै[illegible] जलती हुई अग्नि वनमें घूमती है। ऐसे ही अर्ज्जुन भी तुम्हारी सेनामें घूम रहे हैं। सात्यकी और भीमसेनका बल ऐसा भारी है, जिससे पर्व्वत फट सकते हैं। समुद्र सूख सकते हैं। हे राजन्। भीमसेनने जो सभामें प्रतिज्ञाकी थी, उसको उन्होंने सत्य कर दिखाया और जो रही है, उसे करेंगे। हे राजन्! जिस समय कर्ण जीते ही थे, तभी भीमसेनने अपनी सेनाकी कैसी रक्षा की थी और अर्ज्जुनने कैसा घोर व्यूह बनाया था। हम लोगोंने महात्मा पाण्डवोंके सङ्ग वैसा ही अधर्म्म किया है। जैसा दुष्टोंके साधुओंके सङ्ग करना चाहिये, उसीका यह फल हो रहा है। हे भरतकुलसिंह पुत्र दुर्य्योधन! तुमने अपने सुखके लिये यत्न करके सब क्षत्रियोंका नाश कराया और अपनी भी रक्षा न कर[illegible]

सके, हे पुत्र ! तुम अपनी रक्षा करो क्यों कि अपनी रक्षासे सब सुख होते हैं। अपना शरीर ही सब सुखोंका पात्र है। पात्र टूटनेसे उसमें रक्खी सब वस्तु गिर जाती है। बृहस्पतिने कहा है कि, जब अपना पक्ष दुर्व्वल हो, या कुछ हानि होगई हो, तब शत्रुसे मेल कर लेना चाहिये और जब अपनी बढ़ती हो तब फिर लड़ना उचित है। हे पृथ्वीनाथ। इस समय हम लोगोंका पक्ष पाण्डवोंसे बहुत ही दुर्व्वल है, इसलिये अब उनसे सन्धि करलेनी चाहिये, जो मूर्ख कल्याणको कल्याण नहीं समझता और दुःखके मार्गमे चलता है ! उसका राज्य शीघ्र ही नाश होजाता है। और वह महा-दुःख भोगता है। हे राजन्। यदि आज हसको राजा युधिष्ठिरको दण्डवत् करनेसे भी राज्य मिले तो भी अच्छा है। परन्तु मूर्खतासे मरना अच्छा नहीं है। महाराज धृतराष्ट्र और श्रीकृष्णके कहनेसे युधिष्टिर तुम्हें अवश्य राज्य दे देगें, श्रीकृष्ण पाण्डवोंसे जो कुछ कहेंगे लोग निःसन्देह वैसा ही करेंगे हमें यह निश्चय है कि, महाराज धृतराष्ट्रके वचनको महात्मा श्री कृष्णचन्द्र मानेंगे और श्रीकृष्णचन्द्रके वचनको युधिष्ठिर अवश्य मानेंगे। हम पाण्डवोंसे डरकर अपने प्राणोंकी रक्षाके लिये ऐसे कुछ नहीं कहते, वरन सब जगत्के कल्याणके ही लिये कहते हैं कि पाण्डवोंसे मेल करना अच्छा है, हे राजन् ! हम ये तुमसे ये वचन कहते हैं, जैसे वैद्य रोगीको पथ्य देता है, यदि अब भी न मानोगे तो बहुत पछताओगे, ऐसा कहकर बूढ़े कृपाचार्य्य ऊंची श्वास लेकर रोने लगे और मूर्छित होगये।

४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे पृथ्वीनाथ ! तपस्वी गौतमपुत्र कृपाचार्यके ऐसे वचन सुन राजा दुर्य्यो-धन ऊंचा स्वास लेकर चुप रह गये। थोड़े समयके पश्चात् शत्रुनाशन दुर्य्योधन शरद्वतपुत्र कृपाचार्य्यसे ऐसे वचन बोले, हे भगवन् ! मित्रोंको जो कुछ कहना चाहिये आपने वैसा ही हमसे कहा और इसमें भी कुछ सन्देह नहीं कि आपने हमारे लिये प्राणोंका भी मोह छोड़कर सब कुछ किया। सब वीरोंने देखा कि महारथ पाण्डवोंके सङ्ग आपने घोर युद्ध किया, यद्यपि आपने सब वचन हमारे कल्याणहीके कहे तो भी मुझे इस प्रकार बुरे लगे, जैसे मर-नेवाले रोगीको औषधि। हे ब्राह्मणश्रेष्ठ ! मैं क्या करूं आपके वचन कारण और अर्थोंसे भरे हैं तोभी मुझे अच्छे नहीं लगे। हमें यह सन्देह है कि जिस महाधनवाले राजा युधिष्ठि-रको अधर्म्मसे जुएमें जीतकर राज्यसे निकाल दिया था, वे अब हमारा विश्वास काहेको करेंगे ? वह युधिष्ठिर अब मेरी बातोंका कैसे विश्वास करेंगे ? और यह भी आप जानते हैं कि कृष्ण सदा पाण्डवोंहीका कल्याण चाहते हैं। हे ब्राह्मणश्रेष्ठ ! हमने बिना विचारे श्रीकृष्णका निरादर किया था, सो अब वो हमारी बात कैसे मानेंगे ? सभामें जो द्रौपदी रोई थी और हमने पाण्डवोंको राज्यसे निकाल दिया था, भला कृष्ण इन बातोंको कब क्षमा करेंगे ? हे गुरुजी ! हमने जो पहले सुना था, कि कृष्ण और अर्ज्जुनका एक ही प्राण है सो अब प्रत्यक्ष देख लिया। अपने भानजेको मरा सुनकर क्या कृष्ण सुखसे सोते हैं ? कदापि नही। हम लोगोंने उनके बहुत अपराध किये हैं, इसलिये वे हमारे ऊपर क्षमा न करेंगे, अभिमन्युके मरनेसे अर्ज्जुनको बहुत दुःख हुआ है सो हमारे कल्याणका यत्न क्यों करेंगे ? फिर भीमसेन महाक्रोधी हैं, वे शरीरके टुकड़े होनेपर भी हमसे मेल न करेंगे, आप जानते हैं कि नकुल और सहदेव यम और मृत्युके समान वीर हैं, तथा

रसे मनमें भारी बैर रखते हैं इसी लिये, त दिन कवच पहने हो रहते हैं भला वे वे क्षमा करेंगे ? हे ब्राह्मणश्रेष्ठ। धृष्टद्युम्न र शिखण्डीके मनमें मेरी ओरसे कितना र हैं सो आप जानते हो हैं, भला वे मुझसे ाहिको मेल करेंगे ? दुःशासनने रजस्वला ौर एक वस्त्र धारिणी द्रौपदीको जो सब ोगोंके आगे दुःख दिया था पाण्डवोंको अभी- क द्रौपदीकी वही दशा दिखाई देती है, उन त्रु नाशन वीरोंको युद्धसे कोई नहीं रोक सक्ता। जिस दिनसे मैंने अपने नाशके लिये द्रौपदीको दुःख दिया है, तभी से वह पृथ्वीमें सोती है और जबतक बैरका बदला न हो चुकेगा तबतक सोवेगी। द्रौपदी अपने पतियोंको विजयके लिये घोर तपस्या कर रही है और कृष्णाकी बहन सुभद्रा दासीके समान उनकी सेवा कर रही है, पाण्डव लोग इन बातोंको कैसे भूलेंगे ? अभिमन्युके मरनेके पश्चात् अब राजा युधिष्ठिर मुझसे कैसे सन्धि करेंगे ? मैंने समुद्र पर्य्यन्त पृथ्वीका राज्य किया है और सब राजोंके शिरपर अपना तेज सूर्य्यके समान प्रकाशित किया है, सो मैं अब पाण्डवोंका दिया हुआ राज्य कैसे भोगूंगा ? सब राज्यका भोग करके अब युधिष्ठिरके पीछे दासके समान कैसे चलूंगा ? अनेक भारी भारी दान देकर और सब भोगोंको भोगकर अब दरिद्री पाण्डोंके सङ्ग दरिद्र कैसे भोगूंगा ? मैं आपके वचनोंकी निन्दा नहीं करता, क्योंकि आपने हमारे हितके लिये मोटे वचन कहे हैं। परन्तु ऊपर लिखे कारणोंसे सन्धि करना भी स्वीकार नहीं करता। इस समय केवल युद्धहीसे पाण्डवोंका जीतना अच्छा जानता हूं। हे शत्रुनाशन! हम अनेक यज्ञ कर चुके और ब्राह्मणको मन भरके दक्षिणा भी दे चुके, अब कायर बनकर युद्ध छोड़ना अच्छा नहीं इस समय हमें अपने पराक्रमसे घोर युद्ध करना ही उचित है, हे भगवन्! हमें अब क्या करना शेष है। देखिये सब योग भोग चुके, वेद पढ़े, शत्रुओंको जीता, दासोंका पालन करा, दुखियोंको दुःखसे छुड़ाया अपने राज्यकी रक्षाकी और शत्रुओंके राज्य छीन लिये, सो हम अब पाण्डवोंसे दीन वचन नहीं कह सक्ते, मैंने सब भोग भोगे, धन धर्म और सब काम प्राप्त किये पितरोंसे भी अनृण होगया, और क्षत्री धर्मका भी पालन होगया, अब बिना युद्ध किये सब यश और कीर्त्ति कहां प्राप्त हो सक्ती है, क्षत्रियोंकी घरमें मरना बहुत लज्जाकी बात है, हम घरमें मरनेका पाप नहीं करेंगे, जो क्षत्री जन्मभर अनेक यज्ञ करके बनमें तपस्यासे या युद्धमें लड़ कर शरीर छोड़ता है, उसे धन्य है, और वही श्रेष्ठ कहाता है। जो मूर्ख क्षत्री बुढ़ापेसे कांपता हुआ दुःखसे पीड़ित रोता हुआ, रोती हुई स्त्रियोंके बीचमें शरीर छोड़ता है। उसे धिक्कार है और वह नपुंसक है। जो महात्मा हमारे लिये उत्तम उत्तम कर्म करके स्वर्गको चले गये, हम भी अब घोर युद्ध करके उन्होंके पास जाना चाहते हैं। जो महात्मा बीर अपने जन्ममें उत्तम कर्म और बड़े यज्ञ करते हैं। तथा युद्धसे कभी नहीं लौटते और युद्धमें मरते हैं। उन्हें अवश्य ही स्वर्गमें वास मिलता है, युद्धमें अनेक अप्सरा खड़ी हुई यही विचार किया करती हैं। कि कौनसा बीर मरे और हम लेजांय। स्वर्गमें बीरोंके सङ्ग अनेक अप्सरा रहती हैं, और उनके पितर अथवा देवता देखकर प्रसन्न होते हैं। जिस मार्गपर देवता और युद्धसे न लौटनेवाले, बीर जाते हैं, हमलोग भी उसीसे स्वर्गमें जाना चाहते हैं। बूढ़े पितामह भीष्म, गुरु द्रोणाचार्य्य, जयद्रथ, कर्ण और दुःशासन आदि अनेक प्रधान क्षत्री और राजा लोग हमारे लिये रुधिरमें भीगे मरे हुए पृथ्वीमें पड़े हैं। ये सब बुद्धिमान बलवान और घोर योद्धा थे, ये सब यश

रनेवाले, शस्त्र विद्याके पण्डित और वीर थे, व शरीर छोड़कर इन्द्र लोकमें विहार करते , उन सब महात्माओंने कठिनतासे जाने योग्य वर्गका मार्ग सीधा कर दिया है। यदि इस मय हमलोग चूक जायगे, तो फिर वह मार्ग पावेंगे, जो योद्धा मेरे लिये मर गये हैं। उनका कर्म देखकर मुझे ऐसा जान पड़ता है क मैं उनका बहुत ऋणी हूं। इसीसे अब राज्य करनेकी इच्छा नहीं करता। भाई, मित्र, पितामह और गुरु आदि महात्माओंको मरवा कर यदि मैं अब अपनी रक्षा करूं तो लोग मुझे धिक्कार देंगे। भाई और मित्रोंके बिना अब मै क्या राज्य करूंगा? और विशेष कर युधिष्ठिरको प्रणाम करके? सो अब हमने दृढ़ सङ्कल्प यही किया है, कि जगत्में अपनी अपकोर्त्ति न करावो युद्धमें मरकर स्वर्गको जाय। राजा दुर्य्योधनके ऐसे वचन सुन सब क्षत्री प्रसन्न होकर धन्य धन्य कहने लगे। और अपनी विजयकी इच्छा करके युद्ध करनेको उपस्थित हुए। तब सब क्षत्री अपने डेरामें गये फिर आठ कोसतक घूमकर घोड़े, हाथी, और उटोंको सावधान करके पवित्र वृक्ष रहित हिमाचलकी तरहटीमें जाकर सबने पवित्र सरस्वतीका जल पिया। फिर राजा दुर्य्योधनका उत्साह देखकर सब क्षत्री अपने अपने डेरोंसे एक दूसरेको धीरज देते हुए राजाके पासको चले, हमने उसी समय निश्चय कर लिया कि इन सबका भी काल आगया।

५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! अनन्तर [illegible] निर्मल हिमाचलके शिखरपर चढ़ गये, [illegible] शल्य, चित्रसेन, महारथ शकुनि, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, भोज वंशी कृतवर्म्मा, [illegible], परिमर्दन, इतसेन, जयद्रथसेन और राजा दुर्य्योधन इकट्ठे हुए और सब लोगोंने वहीं रात्रिको बिताया, हे राजन्। वीर कर्णके मरनेके पश्चात विजयी पाण्डवोंसे डरे हुए तुम्हारे पुत्रोंको हिमाचलके सिवाय और कहीं सुख न मिला।

हे राजन्! उन सब क्षत्रियोंने राजा दुर्य्योधनके आगे राजा शल्यको प्रशंसा करके युद्धके लिये ऐसे वचन कहे। हे राजन् दुर्य्योधन! आप ऐसे वीरको सेनापति कीजिये जिससे रक्षित होकर हमलोग क्षत्रियोंको जीत सकें। तब राजा दुर्य्योधन अपने रथमें बैठकर महारथोंमें श्रेष्ठ, सब युद्ध विद्याओंके जाननेवाले, यमराजके समान वीर, सुन्दर शरीर वाले, टोप पहने, शङ्खके समान गलेवाले, मीठे वचन बोलनेवाले, फूले कमलके समान नेत्रवाले, सिंहके समान मुखवाले, मेरुके समान भारी, शिवके समान महात्मा, बैलके समान ऊंचे कंधे गभोर वाणी और बड़े नेत्रवाले, मन्द चलनेवाले मोटे और लंबे हाथवाले, ऊंची एंड़ी छाती युक्त बल और वेगमें गरुड़के, तेजमें सूर्य्यके, बुद्धिमें बृहस्पतिके, शान्ति शोभा और सुखमें चन्द्रमाके समान, सोनेके टुकड़ोंके समान दृढ़ सन्धिवाले, सुन्दर गोल जङ्घा, कमर और पिण्डलीवाले, सुन्दर चरण और अङ्गुली नखनवाले, जिनको ब्रह्माने गुणोंसे ढूंढ़ ढूंढ़के भरा था। सब लक्षणोंसे भरे, विद्याके समुद्र, शीघ्रता सहित शत्रुओंको जीतनेवाले, आप किसीसे न हारनेवाले, व्रत, सीखन, धारण करना, अभ्यास करना, स्मरण रखना, छोड़ना शत्रुको मारना, औषधि करना, शस्त्रको तेज करना, खींचना, इन दसों अङ्ग और उपदेश, सेनाको शिक्षा, अपनी रक्षा और लड़ाईकी सब सामग्रीको ठीक रखना इन चारों चरणोंके सहित धनुर्वेदको जाननेवाले अङ्गोंके सहित चारों वेद और इतिहासके पण्डित जिन्होंने अनेक तपोंसे शिवको प्रसन्न किया था। जो बिना

योनिसे उत्पन्न हुए द्रोणाचार्य्यके वीर्यसे विना योनिसे उत्पन्न हुई कृपीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे गुणोंके समुद्र निन्दा रहित, सब विद्याओंके पार जानेवाले, गुण और रूपसेभरे अश्वत्थामाके पास गये, और यों बोले, हे गुरुपुत्र। हम आपकी शरण हैं। आप हमारे सबके स्वामी हैं। जिसको आज्ञा कीजिये वही हमारा सेनापति होवे परन्तु वह ऐसा होना चाहिये जिसके आश्रयसे हमलोग पाण्डवोंको जीत लें।

अश्वत्थामा बोले, हे महाराज! शल्य, यश, बल, कीर्त्ति कुल और तेजसे भरे हैं। इसलिये यही हमारे सेनापति होयं। हम और सब राजोंकी अपेक्षा इनके अधिक कृतज्ञ है क्यों कि ये अपने सगे भानजोंको छोड़कर हमारी ओर आये हैं। इनके बड़े हाथ और बड़ी सेना हैं, और ये बलमें भी राजा महासेनके तुल्य है। इन महाराजको सेनापति बनाकर हमलोगोंकी विजय हो सक्ती है। जैसे स्वामकार्त्तिक देवतोंकी सेनाको रक्षा करते है। ऐसे ही ये हमारी सेनाको रक्षा करेंगे।

गुरुपुत्र अश्वत्थामाके ऐसे वचन सुन सब क्षत्री सेनापति शल्यकी जय हो; सेनापति शल्यकी जय हो; पुकारने लगे, और प्रसन्न होकर युद्ध करनेको उद्यत होगए। तब राजा दुर्य्योधन पृथ्वीमें खड़े होकर और हाथ जोड़कर उत्तम रथमें बैठे हुए भीष्म और द्रोणाचार्य्यके समान योद्धा राजा शल्यसे बोले, हे महावीर! जब पण्डित लोग मित्र और शत्रुको पहचानते है। अब हमारा वही समय आगया है, इसलिये, आप हमारे सेनापति होकर हम लोगोंको अपनी आज्ञामें चलाइये। हे वीर! आपको युद्धमें खड़ादेख मूर्ख पाण्डव अपने मन्त्री और पाञ्चालोंके सहित भाग जायगे।

मद्रदेशाधिपति सब शास्त्रोंके जाननेवाले, राजा शल्य दुर्य्योधनके वचन सुन सब राजोंके बीचमें ऐसा बोले।

हे कुरुराज! तुम जो कहोगे मैं सो करूंगा क्यों कि मेरे राज्य, धन और प्राण तुम्हारे ही लिये हैं।

दुर्य्योधन बोले, हे मामा! आप महापराक्रमी और राजोंमें श्रेष्ठ हैं, इसलिये हम आपसे यही वरदान मांगते हैं। कि आप सेनापति होकर हमारी इस प्रकार रक्षा कीजिये जैसे स्वामकार्त्तिकने देवतोंकी की थी। हे वीर! आप अपना अभिषेक कीजिये और जैसे इन्द्र दानवोंको मारते है, ऐसे पाण्डवोंको मारिये।

६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र। राजा दुर्य्योधनके वचन सुन मद्रराज शल्य ऐसा बोले, राजा दुर्य्योधन! हे महाबाहो! हे अर्थ जाननेवालोंमें श्रेष्ठ! तुम हमारे वचन सुनो तुम जो कृष्ण और अर्जुनको बड़ा बलवान जानते हो सो दोनोही हमारे तुल्य नहीं है। मैं समस्त देवता, राक्षस और मनुष्योंके सहित जगत् भरके वीरोंसे युद्ध कर सक्ता हूं। तब पाण्डव क्या हैं! अब हम सब पाण्डव और पाञ्चालोंको युद्धमें जीतेंगे। अब हम निःसन्देह तुम्हार सेनापति बनकर ऐसा व्यूह बनावेंगे जिसको पाण्डव कभी न तोड़ सकें। हे दुर्य्योधन! हम तुमसे जो कहते हैं सब सत्य मानो।

राजा शल्यके ये वचन सुन राजा दुर्य्योधनने शास्त्रमें लिखी विधिके अनुसार राजा शल्यका अभिषेक किया। हे भरत! जब शल्यका अभिषेक होने लगा। तब तुम्हारी सेनामें अनेक बाजे बजने लगे, और क्षत्री गर्जने लगे। सब मद्रदेशी वीर बहुत प्रसन्न हुए और सब क्षत्री और राजा शल्यको प्रशंसा करने लगे कि, हे राजन्! हे महाबल! आपको जय हो। आप पाण्डवोंको जीतिये, तुम्हारे बाहुबलसे धृतराष्ट्रके पुत्र बलवान दुर्य्योधन शत्रुओंको मारकर

सब जगत्का राज्य पावैं। आप देवता और राक्षसोंको भी युद्धमें जीत सकते हैं, फिर पाञ्चालोंकी तो बात ही क्या है? इस प्रकारकी स्तुति सुनकर बलवान शल्य ऐसे प्रसन्न हुए जैसे सूर्ख लोग नहीं हो सकते।

शल्य बोले, आज युद्धमें पाञ्चालोंके सहित पाण्डवोंको या तो मारेहोंगे या हमही मर जायेंगे। आज हम कैसे निडर हो युद्ध करते हैं सो सब लोग देखो, आज पांचो पाण्डव तथा, सात्यकि, द्रौपदीके पाचो पुत्र धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और सब प्रभद्रक चत्री हमारे पराक्रम और धनुषविद्याको देखे। आज सब गन्धर्व सिद्ध और चारणोंके सहित देखें मैं कितनी धनुषविद्या जानता हूं। आज मेरे शीघ्र बाण चलाने। हाथोंके बल और अस्त्रविद्याको सब पाण्डवोंके महारथ देखकर यत्न-रहित होजांय; आज पाण्डवोंकी सेनाके प्रधान मेरा हमारे बाणोंके काटनेका यत्न करें, आज पाण्डवोंकी सब सेनाको भगा देंगे। हे दुर्योधन! आज तुम्हारे हितके लिये वह काम करूंगा। जो भीष्म, द्रोणाचार्य्य और कर्णने नहीं किया था।

सञ्जय बोले, हे राजन्! शल्यका अभिषेक होतेही तुम्हारी सेनाके सब योद्धा कर्णका युद्ध भूल गये. सब लोग बहुत प्रसन्न हुए और मनमें निश्चय कर लिया कि, शल्यने सब पाण्डवोंको मारडाला। हे राजन्! तुम्हारी सब सेनाने वह रात बड़े आनन्दसे बिताई।

[illegible] सेनाका ऐसा प्रसन्न शब्द सुनकर राजा युधिष्ठिर सब क्षत्रियोंके बीचमें श्रीकृष्णसे यों बोले हे माधव! दुर्य्योधनने सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ [illegible] महाराज शल्यको सेनापति बनाया [illegible] इस समय विचारकर जो कुछ करने योग्य [illegible] नीतिसे कहो कि आपही हमारे [illegible] और बहुत कुछ मानने चला-

ऐसे वचन सुन श्रीकृष्ण युधिष्ठिरसे बोले, हे पृथ्वीनाथ! हे भारत! मैं अच्छी प्रकारसे शल्यके बलको जानता हूं, राजा शल्य बलवान तेजस्वी शीघ्र शस्त्र चलानेवाले विचित्र योद्धा और विशेषकर धर्मात्मा है मेरी बुद्धिसे भीष्म, द्रोणाचार्य्य और कर्ण जैसे बलवान थे, शल्य उनसे कुछ अधिक है। हे पृथ्वीनाथ! मैं इस समय यही विचार रहा हूं कि हमारी ओर ऐसा कौन वीर है जो शल्यसे लड़ सके? परन्तु अभीतक मेरी बुद्धमें कोई स्थिर नहीं हुआ शिखण्डी अर्ज्जुन, भीमसेन, सात्यकी और धृष्टद्युम्नसे शल्य अधिक बलवान है। हे महाराज। सिंह और मतवाले हाथोंके समान बलवान शल्य हमारी सेनामें इस प्रकार घूमेंगे जैसे यमराज क्रोध करके जगत्में घूमते हैं। हे पुरुषसिंह! हे शार्दूलके समान वीर! हम अपनी ओर शल्यसे लड़ने योग्य आपके सिवाय और किसीको नहीं पाते। हे कुरुनन्दन! देव लोक और मनुष्य लोकमें आपके सिवाय ऐसा कोई वीर नहीं जो क्रोध भर शल्यको युद्धमें मार सके यही शल्य प्रतिदिन आपकी सेनाका नाश करता है, इसलिये आप इसको इस प्रकार मारिये जैसे इन्द्रने सम्बरको मारा था। हे पृथ्वीनाथ! एकले शल्यको ही कोई नहीं जीत सकता जिसपर भी धृतराष्ट्रके पुत्रने सेनापति बनाया है। हमें यह निश्चय है कि शल्यके मरनेहीसे आपकी विजय होगी। हे महाराज। शल्यके मरनेहीसे सब धृतराष्ट्रके पुत्र मर जायेंगे। हे महाराज! आप हमारे वचनोंको स्वीकार करके महारथ शल्यसे युद्ध करनेको जाइये और जैसे इन्द्रने नमुचिको मारा था तैसे शल्यको आप मारें। हे महाराज! यह हमारा मामा है ऐसा विचारकर आप उसपर दया मत कीजिये क्योंकि क्षत्रियोंका ऐसा ही धर्म है आपने भीष्म और द्रोणाचार्य्यरूपी समुद्र और कर्णरूपी तालाबको भी तैरा [illegible]

शल्यरूपी गायके पैरमें भाइयोंके सहित मत डूबियो आज हम आपकी तपस्या और हाथोंका बल देखेंगे, आप चत्रियोंके अनुसार इस महारथ शल्यको मारिये ।

राजा युधिष्ठिरसे ऐसा वचन कहकर और उनकी आज्ञा लेकर श्रीकृष्ण सोनेके लिये अपने डेरेमें चले गये; श्री कृष्णके जानेके पश्चात् महाराज युधिष्ठिरने अपने सब भाई, पाञ्चाल और सोमकवंशी चत्रियोंको सोनेकी आज्ञा दी फिर आप भी सुखी मतवाले हाथीके समान सोरहे, अनन्तर अपने अपने डेरोंमें जाकर सब पाञ्चाल और पाण्डव कर्णके मरनेसे प्रसन्न होकर सुखसे सोये, कर्णके मरनेसे राजा युधिष्ठिरकी सब सेनाको यह निश्चय होगया कि हमारी जीत होगई ।

७ अध्याय समाप्त ।

सञ्जय बोले, हे राजन्! जब तीन पहर रात बीत चुकी तब राजा दुर्य्योधन उठे और सब सेनाको युद्धके लिये तैयार होनेकी आज्ञा दी, राजाकी आज्ञा सुनते ही सब योद्धा तैयार होने लगे, कोई अपने रथको ठीक करने लगा, कोई हाथी और कोई घोड़ेको कसने लगा, कहीं सहस्रों रथ इकट्ठे होने लगे और कहीं पैदलोंके झुण्ड बंधने लगे। हे राजन्! उस समय सेनाको ठीक करनेके लिये और वीरोंका उत्साह बढ़ानेके लिये तुम्हारी सेनामें अनेक प्रकारके बाजे बजने लगे। हे राजन्! तब सब बची हुई सेना एक दिन अवश्य ही मरना होगा यह विचार युद्धको उपस्थित होगई। तब महापराक्रमी महारथ सेनापति शल्यने सब सेनाका विभाग किया तिसके पीछे कृपाचार्य्य, कृतवर्म्मा, अश्वत्थामा और सुबलपुत्र शकुनि आदि सब प्रधान वीर शल्यको आगे करके राजा ...धनके पास आये और उनसे सत्कार पाकर ऐसा विचार करने लगे, कि हम लोग किस प्रकार पाण्डवोंसे युद्ध करें, मद्रराज शल्य यह आज्ञा दी कि जो हमारी ओरका वीर एकला पाण्डवोंसे युद्ध करेगा, या लड़ते हुए पाण्डवोंको छोड़ कर हटैगा, उसे पांच महा पाप और सब छोटे छोटे पाप लगेंगे, आज हम सब महारथ एक स्थानपर खड़े होकर एक दूसरेकी रचा करते हुए युद्ध करेंगे, ऐसा कह कर आप सबसे आगे, और सब योद्धा उनके पीछे युद्ध करनेको चले ।

हे राजन्! उधर पाण्डवोंने भी युद्ध करनेके लिये अपनी सेनाका व्यूह बनाया और युद्ध करनेको चले, हे महाराज! वह रथोंसे भरी सेना इस प्रकार चली जैसे शुक्ल पचमें समुद्र बढ़ता है ।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! हमने भीष्म, द्रोण और कर्णका मरना सुना अब शल्य और दुर्य्योधनके मरनेका वर्णन करो राजा युधिष्ठिरने शल्यको और भीमसेनने दुर्य्योधनको कैसे मारा ।

सञ्जय बोले, हे राजन्! आप स्थिर होकर हमसे मनुष्य हाथी और घोड़ोंके नाश होने और घोर संग्रामका वर्णन सुनो, हे शत्रुनाशन! भीष्म, द्रोणाचार्य्य और कर्णके मरनेके पश्चात् तुम्हारे पुत्रोंको यह ठीक निश्चय होगया कि राजा शल्य सब पाण्डवोंको मार डालेंगे। हे महाराज! इस आशासे तुम्हारे सब पुत्र राजा शल्यको आगे करके और उनकी प्रशंसा करके युद्ध करनेको चले, अपनेको स्वामी सहित माना, तब पाण्डवोंके योद्धा भी सिंहके समान गर्ज्जने लगे। हे महाराज! जब कर्ण मरे थे, तब तुम्हारे सब वीरोंकी अपनी जीतकी आशा नहीं थी, परन्तु प्रतापी मद्रराज शल्यने उन सबको सावधान किया और आप भी युद्ध करनेको चले तब प्रतापी शल्यने घोर सर्व्वतोभद्र व्यूह बना, फिर सिंधुदेशके घोड़ोंसे युक्त रथपर बैठकर शत्रु

ओंको नाश करनेवाले, घोर और विचित्र धनुषको घुमाते हुए युद्ध करनेको चले, हे महाराज! राजा शल्यके रथमें बैठते ही उनका सारथी भी बैठ गया तब शत्रुनाशन वीर शल्यकी बहुत शोभा बढ़ी, हे राजन्! आपके पुत्रोंके भय नाशक राजा शल्य, महायोद्धा कर्णके बेटे और मद्रदेशके प्रधान क्षत्रियोंके सहित सावधान होकर व्यूहके मुखमें खड़े होगये। बाईं ओर त्रिगर्त्त देशके क्षत्रियोंके सहित कृतवर्म्मा, कृपाचार्य्य, शक, यवन वीरोंके सहित दहिनी ओर, और अश्वत्थामा काम्बोजदेशी वीरोंके सहित पीछे और राजा दुर्य्योधन प्रधान कुरुवंशी क्षत्रियोंसे रक्षित होकर व्यूहके बीचमें खड़े हुए। सुबलपुत्र जुवारी शकुनि घुड़चढ़ी सेनाको लेकर अलग हो पाण्डवोंसे युद्ध करनेको चले।

शत्रुनाशन पाण्डवोंने भी अपना व्यूह बनाकर सेनाके तीन टुकड़े किये, पहलेमें धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और महारथ सात्यकि शल्यकी सेनासे युद्ध करनेको खड़े हुए। दूसरे भागको लेकर और अपने सब प्रधान वीरोंके सहित महाराज युधिष्ठिर शल्यको मारनेके लिये दौड़े। अर्जुन, महाधनुषधारी कृतवर्म्मा, और संशप्तकोंसे युद्ध करनेको गये, गौतम वंशी कृपाचार्य्यसे लड़नेको महारथ पाञ्चालोंके सहित भीमसेन चले नकुल शकुनिको मारनेको और सहदेव उलूकको, मारनेको चले। इन दोनोंके सङ्ग भारी सेना शकुनि और उलूककी सेनासे युद्ध करनेको चली। इसी प्रकार और भी सहस्रों योद्धा अपने अपने समान वीरोंसे भिड़गये। हे राजन्! इस समय दोनों ओरके अनेक शस्त्रधारी वीरोंको घोर क्रोध आगया।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! हमें ऐसा जान पड़ता है, कि भीष्म, द्रोणाचार्य्य, और महारथ कर्णके मरने पर दोनों ओर थोड़े ही वीर बचे होंगे। जिस समय पाण्डवोंने फिर युद्धमें चढ़ाई करी, उस समय हमारे और कितने वीर बचे रहे?

सञ्जय बोले, हे राजन्! जिस समय हमलोग और पाण्डव युद्ध करनेको खड़े हुए, उस समय जितनी सेना बची थी, उसकी गिन्ती सुनो हमारी ओर ग्यारह सहस्र रथ, दश हजार सातसौ हाथी, दो लाख घुड़चढ़े और तीन करोड़ पैदल थे। और पाण्डवोंकी ओर छः सहस्र रथ, छः सहस्र हाथी, दश हजार घुड़चढ़े और केवल एक करोड़ पैदल थे, ये सब योद्धा पहले कहे भागोंके अनुसार उपस्थित होगये तब शल्यने अपनी सब सेनाके वीरोंको आज्ञादी कि, पाण्डवोंको मारो और अपनी विजय करो, इसी प्रकार विजयी पाण्डवोंने भी यशस्वी और वीर पाञ्चालोंके सहित अपनी सेनाको युद्ध करनेको आज्ञादी तब ये दोनों सेना लड़नेके लिये भिड़ गईं। हे पृथ्वीनाथ! उस ही समय सूर्य्य भी आकाशमें उदय हुए तब दोनों ओरके वीर एक दूसरेको मारनेके लिये घोर युद्ध करने लगे।

८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र! तब कुरुवंशका नाश करनेवाला सृञ्जय और कौरवोंका घोर युद्ध होने लगा। पैदल, रथी, हाथी और घोड़ों पर चढ़े वीर एक दूसरेको मारने लगे, जैसे वर्षा कालमें मेघ गर्ज्जते हैं। तैसे ही भागते हुए भारी हाथियोंका शब्द सुनाई देने लगा, कोई रथ वीरोंके समेत हाथियोंके पैरोंसे पिस गये। कहीं हाथियोंसे डरकर पैदल भागने लगे। अनेक हाथियोंकी रक्षा करनेवाले, रथोंपर बैठे और पैदल वीर बाणोंके लगनेसे परलोकको चले गये। हे राजन्! अनेक घोड़ोंपर चढे वीर अपनी शिक्षासे रथोंको घेरकर उनमें बैठे वीरोंको खड्ग और भालोंसे काटने लगे, कहीं अनेक पैदल अपने बाणोंसे रथमें बैठे वीरोंको मारकर परलोकको भेजने लगे, कहीं

एक ही मनुष्य अनेक वीरोंको मारने लगा। कोई महारथ अपने बाणोंसे काटकर सामग्रीके सहित रथ और हाथियोंको पृथ्वीमें गिराने लगा। कहीं अनेक बाण चलाते हुए रथमें बैठे वीरोंको हाथियोंने मारडाला। हे भरत। कहीं हाथी हाथीकी ओर रथी रथीकी ओर दौड़कर बाण और प्रास आदि शस्त्र चलाने लगे। कहीं हाथी, घोड़े और रथोंकी झपेटमें आकर अनेक पदाति मर गये, कहीं चमरोंके युक्त घोड़े इस प्रकार दौड़ने लगे। मानो सब पृथ्वीमें घूम आवेंगे। उनकी शोभा ऐसी दीखती थी, जैसे हिमाचल पर उड़ते हुए हंसोंकी। हे पृथ्वीनाथ! घोड़ोंके खुरोंसे खुदी हुई पृथ्वी ऐसी दीखती थी, जैसे नखूनोंके लगनेसे स्त्री, घोड़ोंके खुर रथके पहियोंके शब्द पदातियोंके गर्ज्जने हाथियोंके चिंघाड़नेसे सेनाके बाजे और वीरोंके शङ्ख शब्दसे पृथ्वी ऐसी जान पड़ती थी, मानों आज ही प्रलय होगी, खिचती हुई धनुषकी टङ्कार, शस्त्र और कवचोंके चमकनेसे कुछ जान नहीं पड़ता था, कहीं हाथीके सूंड़के समान कटे हुए हाथ तड़फ रहे थे। कभी उठते थे, कभी गिर जाते थे, कहीं वीरोंके शिर कटकर इस प्रकार पृथ्वीमें गिरते थे, जैसे ताड़के फल वृक्षसे गिरते हैं। कटे हुए रुधिरमें भीगे सोनेके समान रङ्गवाले खुले नेत्र बलहीन शिरोंसे पृथ्वी ऐसी सुन्दर दीखने लगी जैसे कमलोंसे भरा तलाव।

हे पृथ्वीनाथ! जैसे अनेक इन्द्र धनुषोंसे भरा हुआ आकाश सुन्दर दीखता है, ऐसे ही बाजूबन्द सहित कटे हाथोंसे भरी पृथ्वी दीखने लगी, हे राजन्। इसी प्रकार अनेक राजोंके कटे हुए सध्य शरीरोंसे पृथ्वी भर गई। जैसे अनेक रङ्गोंके फूलोंसे भरा हुआ वन शोभित होता है ऐसे ही कटे हुए शिर और कटे छत्र, चमर आदिसे भरी हुई सेना दिखाई देने लगी; हे राजन्। वहां रुधिरमें भीगे घूमते हुए योद्धा फूले हुए टेसुओंके समान दिखाई देने लगे और बेडर होके घूमने लगे। अनेक हाथी, तोमर और बाण लगनेसे मेघके समान काटकर पृथ्वीमें गिर गये। जैसे वायु चलनेसे मेघ फट जाते हैं वैसे ही वीरोंके बाण लगनेसे हाथियोंके झुण्ड चारों ओरको भागने लगे। जैसे प्रलयकालमें वज्र लगनेसे पर्वत पृथ्वीमें गिरते हैं तैसे ही बाणोंके लगनेसे हाथी पृथ्वीमें गिर गये। चारों ओर चढ़े हुए वीरोंके सहित मरे हुए घोड़ोंके पहाड़ोंके समान ढेर होगये, तब उस युद्ध भूमिमें परलोकको जाने वाली रुधिरकी नदी बहने लगी उसमें रथ, भौंरे, पताका, टूटे हुए वृक्ष, हड्डियोंका चूरा बाल, हाथ नाक, धनुष, सोते, तटपर पड़े हुए हाथी पर्व्वत, घाड़े पत्थर, चर्व्वी कीच, छत्रहंस गदा, डोंगी पगड़ी और कवच सिवार, जड़ वृक्ष चक्र चकवी चकवाके समान दीखने लगे, उस नदीको देखकर वीर प्रसन्न और कायर डरने लगे। उसमें कौरव और सृञ्जयवंशी वीर आनन्द पूर्व्वक घूमने लगे। इस वैतरणीके समान घोर नदीको बलवान वीर वाहनरूपी नावोंपर बैठकर तैरने लगे। हे पृथ्वीनाथ। इस समय यह चतुरङ्गिणी सेनाके नाश करने वाला मर्य्यादा रहित देवता और राक्षसोंके समान घोर युद्ध होने लगा। कोई अपने बन्धुओंको पुकारने लगा, कोई बन्धुओंका पुकारना सुनकर ही डरके मारे युद्धको न लौटा, उस घोर युद्धमें अर्ज्जुन और भीमसेन तुम्हारी सेनाका नाश करने लगे; जैसे मतवाली स्त्री कामदेवसे व्याकुल होजाती है ऐसे ही तुम्हारी सेना पाण्डवोंके बाणोंसे व्याकुल होगई, इस प्रकार उस सेनाको व्याकुल करके भीमसेन और अर्ज्जुन सिंहके समान गर्ज्जने और शङ्ख बजाने लगे। उनके शब्दको सुनकर धृष्टद्युम्न और शिखण्डी धर्म्मराज युधिष्ठिरकी रक्षा करते हुए शल्यसे युद्ध करनेको चले।

हे महाराज। अनेक वीर एकले शल्यसे
द्ध करने लगे। शल्य भी एकलेही सबसे लड़ते
हे, यह देखकर हमको बड़ा आश्चर्य्य हुआ
सी प्रकार महापराक्रमी महाशस्त्रधारी वीर
कुल और सहदेव भी तुम्हारी सेनाका नाश
रते हुए शीघ्रता सहित घूमने लगे। हे
जन्! तब विजयी पाण्डवोंके बाणोंसे व्याकुल
कर तुम्हारी सेना घोर युद्ध करने लगी
हारी सेना तुम्हारे पुत्रोंके देखते ही देखते
ा चारों ओरको भागने लगी। हे राजन्!
ई वीर हा! हा! कर करता हुआ भागता
और कोई खड़ा रह खड़ा रह पुकारता
। अनेक तुम्हारी ओरके क्षत्री जय चाहने-
पाण्डवोंके वीरसे डरकर भागने लगे।
ारत। वीर अपने प्यारे बेटे, मित्र, दादा,
ा, मामा और भाइयोंको छोड़कर युद्धसे
। हे भरतकुलसिंह। केवल अपने प्राण
नेके लिये वीर लोग हाथी और घोड़ोंको
ाते हुए युद्धसे भागे।

९ अध्याय समाप्त।

ञ्जय बोले, हे राजन्! अपनी सेनाको
देख महाप्रतापी शल्यने अपने सारथीसे
कि, घोड़ोंको बहुत तेज हांको यह देखो
पुत्र महाराज युधिष्ठिरका सफेद छत्र
रहा है तुम हमारे रथको ठीक उन्हींके
ले चलो और हमारा बल देखो। युधि-
ामसे कदापि युद्ध नहीं कर सकते हैं।
ये वचन सुन सारथीने सत्यवादी महा-
ाधिष्ठिरकी ओर रथ हांका, शल्यको
ख पाण्डवोंके सैकड़ों प्रधान योद्धा
ा रहा और उनसे युद्ध करनेको दौड़े
एकले शल्यने उन सबको इस प्रकार रोक
ैसे समुद्रके तटमें पर्व्वत समुद्रको तर-
ेसे रोक तब आकर समुद्रकी तरह

आगे नहीं बढ़ सकते। ऐसे ही पाण्डवोंके वीर
शल्यके पास जाकर आगे न चल सके। राजा
शल्यको घोर युद्ध करते देख तुम्हारे वीर
मृत्युका निश्चय करके युद्धको लौटे। हे राजन्!
इस सेनाके लौटनेपर राजा शल्यने फिर व्यूह
बनाया और फिर घोर युद्ध होने लगा। उसी
समय नकुल चित्रसेनके ऊपर बाण बर्षाने
लगे। दोनों महापराक्रमी वीर विचित्र धनुष
लेकर घोर युद्धको उपस्थित हुए, जैसे दक्षिण
और उत्तरको बर्षनेवाले दो मेघ जल बर्षाते है,
तैसे ही ये दोनों भी बाण बर्षाने लगे, नकुल,
और सुषेणकी शस्त्रविद्यामें हमें कुछ भेद नहीं
दिखाई देता था। क्यों कि दोनों ही शस्त्रवि-
द्यामें निपुण और महावीर थे। ये दोनों एक
दूसरेके मारनेका यत्न करने लगे। तब चित्रसे-
नने एक विषमें बुझे तेज बाणसे नकुलका धनुष
बीचसे काट दिया, और उनके शरीरमें भी
अनेक सोनेके पङ्खवाले बाण मारे, फिर तीन
तेज बाण माथेमें मारकर चार बाणोंसे घोड़ोंको
मारडाला, फिर तीन तीन बाणोंसे ध्वजा और
सारथीको काटडाला। हे राजन्! उन माथमें
लगे तीन बाणोंसे नकुल तीन शिखरवाले पर्व्व-
तके समान शोभित होने लगे। फिर खड्ग
और ढाल लेकर इस प्रकार रथसे कूदे जैसे पर्व्व-
तकी चोटीसे सिंह। उन्हें कूदते देख सुषेण
बाण बर्षाने लगे। नकुल भी उन सब बाणोंको
ढालसे बचाते हुए और विचित्र युद्ध करते हुए
सुषेणके रथतक पहुंच गये और सब वीरोंके
देखते देखते रथपर चढ़गये, फिर शीघ्रता सहित
चित्रसेनके कुण्डल मुकुट, सुन्दर नाक और बड़ी
बड़ी आखोंके सहित शिर काट लिया। जैसे
सन्ध्याका सूर्य्य अस्त होजाते हैं। ऐसे ही नकु-
लके हाथसे शिर कटकर चित्रसेन रथमें गिर
गये। चित्रसेनको मरा देख पाण्डव और
पाञ्चाल नकुलकी प्रशंसा करके सिंहके समान
गर्ज्जने लगे। तब अपने भाईको मरा देख

महारथ सुषेण और सत्यसेन बाण बर्षाते हुए महारथ नकुलकी ओर इस प्रकार दौड़े, जैसे वनमें एक हाथीके मारनेको दो सिंह दौड़े। जैसे दो मेघ पानी वर्षाते हुए दौड़ते हैं। ऐसे ही कर्णके पुत्र महारथ नकुलकी ओर बाण चलाते दौड़े। उन बाणोंके लगनेसे पाण्डपुत्र नकुल बहुत प्रसन्न हुए, इतनेहीमें उनका दूसरा रथ आगया, तब रथ पर बैठकर नकुलने धनुष धारण किया, उस समय क्रोध भरे नकुलका रूप ऐसा दीखता था मानो साक्षात् यमराज प्रलय करनेको आये हैं। तब कर्णके दोनों पुत्र भी अपने तेज बाणोंसे नकुलका रथ काटनेका यत्न करने लगे। तब नकुलने हंसकर चार बाणोंसे सत्यसेनके चारों घोड़ोंको मारडाला। फिर एक शिलापर घिसे सोनेके पङ्खवाले बाणसे धनुष भी काट दिया। तब सत्यसेनने दूसरे रथपर बैठ दूसरा धनुष लिया, तब फिर दोनों भाई सावधान होकर नकुलसे घोर युद्ध करने लगे। प्रतापी नकुल भी एकले ही दोनोंसे लड़ने लगे, और दो दो बाण दोनोंके शरीरमें मारे, तब सुषेणने क्रोध करके एक बाणसे नकुलका धनुष काट दिया, तब नकुलने क्रोधसे व्याकुल होकर दूसरा धनुष लेकर पांच बाण सुषेणके शरीरमें मारे, एकसे ध्वजा काट दी, फिर दो बाणोंसे चित्रसेनका धनुष और तलहत्थी काट दी, नकुलकी इस शीघ्रताको देख पाण्डव गर्ज्जने और कौरव घबड़ाने लगे, इतने ही समयमें सत्यसेनने दूसरा धनुष धारण किया। और बाणोंसे नकुलको छिपा दिया परन्तु नकुलने क्षण मात्रमें सब बाणोंको काटकर दोनोंके शरीरमें दो दो बाण मारे, उन दोनोंने भी अनेक तेज बाण नकुलके शरीरमें मारे, फिर दोनोंने मिलकर नकुलके सारथीको मारडाला। सुषेणने धनुष और रथके आसनको काट दिया। तब प्रतापवान महारथ नकुलने सोनेके दंडवाली जिसमें [illegible] चमकती हुई, तेज धारवाली, सांपकी जीभके समान लपकती, विष भरी नाग कन्याके समान भयानक, एक सांग सत्यसेनकी ओर चलाई उससे सत्यसेनकी छाती फट गई और मरकर पृथ्वीमें गिर गये, अपने भाईको मरा देख सुषेणको महाक्रोध हुआ, फिर पांच बाणोंसे नकुलकी ध्वजा और चारसे चारों घोड़ोंको मारडाला। फिर नकुल रथसे नीचे उतरे अपनी विजय देख सुषेण सिंहके समान गर्ज्जने लगा, अपने पिताको रथहीन देख द्रौपदीपुत्र महारथ श्रुतसेन वेगसे दौड़े, तब नकुल भी दौड़कर उनके रथपर चढ़ गये। उस समय रथ पर बैठे नकुलकी ऐसी शोभा बढ़ी, जैसे पर्वतके शिखर पर चढ़नेसे सिंहकी; तब दूसरा धनुष लेकर सुषेणसे युद्ध करने लगे। दोनों महारथ घोर बाण बर्षाते हुए एक दूसरेको मारनेका यत्न करने लगे। तब सुषेणने क्रोध करके नकुलके हाथ और छातीमें तीन और श्रुतसोमके बीस बाण मारे, हे महाराज। तब शत्रुनाशन महापराक्रमी नकुलने महाक्रोध करके अपने बाणोंसे सुषेणके रथको छिपा दिया। तब एक महातेज अर्द्धचन्द्र बाण धनुषपर चढ़ाकर कर्ण पुत्रकी ओर चलाया, उस बाणसे सुषेणका शिर कटकर पृथ्वीमें गिर पड़ा। नकुलके इस अद्भुत पराक्रमको देखकर हम सब लोग आश्चर्य करने लगे। जैसे नदीके वेगसे टूटकर वृक्ष गिर पड़ता है। ऐसे ही नकुलके बाणोंसे कटकर सुषेण पृथ्वीमें गिरे। हे भरत कुलश्रेष्ठ! नकुलके इस पराक्रमको देखकर और कर्णके बेटोंको मराहुआ, जानकर तुम्हारी सेना चारों ओरको भागने लगी, हे महाराज। अपनी सेनाको भागते देख सेनापति शल्यने स्थिर किया, अपनी सेनाको स्थिर करके प्रतापी शल्य बेडर होकर सिंहके समान गर्ज्जने और धनुषकी टङ्कारने लगी, शल्यको खड़ा देख तुम्हारी सब सेना प्रसन्न होकर युद्धको लौटी, हे महाराज। तुम्हारे सब प्रधान योद्धा महारथ शल्यकी रक्षा करने

लगा। वीर युद्धको उपस्थित हुए इसी प्रकार सात्यकि, भीमसेन, नकुल और सहदेव युधिष्ठिरकी रक्षा करने लगे। और युद्धको उपस्थित होगये। पाण्डवोंके सब वीर युधिष्ठिरको घेर कर कूदने और शङ्ख बजाने लगे, इसी प्रकार तुम्हारे सब प्रधान वीर शल्यको घेर कर युद्ध करने लगे। हे महाराज! तब तुम्हारे और पाण्डवोंके वीरोंका घोर युद्ध होने लगा, सबने मृत्युको अवश्य होनेवाली समझ लिया। इस युद्धको देख कायर भागने लगे, जैसे पहले देवता और राक्षसोंका युद्ध हुआ था, ऐसे ही यह भी हुआ। उसी समय संशप्तक सेनाका नाश करके अर्जुन भी उसी सेनाकी ओर लौटे। तभी धृष्टद्युम्न और शिखण्डी आदि पाण्डवोंके प्रधान वीर भी अपने अपने कामोंको समाप्त करके उस ही सेनाकी ओर लौटे और घोर बाण वर्षाने लगे, पाण्डवोंके प्रधान वीरोंको आते देख तुम्हारी सब सेना घबड़ा उठी किसीको दिशाओंका भी ज्ञान न रहा, पाण्डवोंके वीरोंने अपने बाणोंसे तुम्हारी सेनाके व्यूहको तोड़ डाला। और वीरोंको व्याकुल कर दिया। जिस प्रकार उन वीरोंने तुम्हारी सेनाको व्याकुल किया, ऐसे ही इधरके वीरोंने भी पाण्डवोंकी सेनाको व्याकुल कर दिया, तुम्हारे पुत्रोंने बहुतसे पाण्डवोंके वीरोंको मार डाला, तब दोनों सेना व्याकुल होगई जैसे वर्षा ऋतुमें नदी अपनी मर्य्यादा छोड़ कर बहने लगती है वैसे ही वे दोनों सेना टकड़े टकड़े होकर युद्ध करने लगी। ऐसा होनेसे तुम्हारी ओरके शल्य आदि प्रधान वीर और उधर धृष्टद्युम्न आदि सब डरने और घबड़ाने लगे।

१० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! ऐसा घोर युद्ध होनेसे किसीको दिशाका ज्ञान न रहा इसलिये, हाथी, घोड़े और पदाति इधर उधरको भागने लगे, कहीं पड़े हुए मनुष्य और पैदलोंके कण्ठसे आह आह का शब्द निकलने लगा, कहीं अनेक प्रकारके शस्त्र चलने लगे। कहीं सहस्रों मनुष्य गिरकर मरने लगे। कहीं रथ और हाथी कटने लगे। ऐसा देखकर वीर प्रसन्न होने लगे। और कायर डरके मारे कांपने लगे, एक वीर दूसरेके मारनेकी घात देखने लगा, वीरोंके जीव शरीरोंको छोड़कर यमपुरीको जाने लगे। सब पाण्डवोंके प्रधान वीर तुम्हारी और तुम्हारे वीर पाण्डवोंकी सेनाका नाश करने लगे। इस प्रकार युद्ध होते होते दिनका पहला पहर समाप्त हुआ।

हे राजन्! दूसरे पहरमें महात्मा युधिष्ठिरसे रक्षित होकर पाण्डवोंकी सेना तुम्हारी सेनाको मारने लगी, जैसे वनमें आग लगनेसे हरिण घबड़ाते हैं ऐसे ही चारों ओरसे प्रतापी पाण्डवोंके बाण वर्षनेसे तुम्हारी सेना घबड़ाने लगी। जैसे कीचड़में फसी हुई गौकी रक्षा करनेको कोई मनुष्य दौड़ता है ऐसे ही अपनी सेनाको बचानेको शल्य पाण्डवोंकी ओर दौड़े। मद्रराज शल्य क्रोध करके घोर धनुष लेकर बाण वर्षाते हुए सब पाण्डवोंकी ओर एकले ही दौड़े। पाण्डव भी अपने बाणोंसे शल्यको मारने लगे। तब महारथ शल्यने अपने सहस्रों बाणोंसे युधिष्ठिरके देखते देखते इनकी सेनाको व्याकुल करदिया, उस समय अनेक बुरे शकुन होने लगे, पर्व्वत और वनोंके सहित पृथ्वी हिलने लगी, सूर्य्यके मण्डलसे बिना मेघोंके भाले और दण्डके समान बिजली गिरी। अनेक हरिण और भैंसे तुम्हारी सेनाके दहिनी ओरसे बाईं ओरको जाने लगे, उल्लू आदि पक्षी बोलने लगे, उसी समय सब राजोंके देखते देखते पाण्डवोंकी सेनाकी ओर शुक्र, मङ्गल बुध उदय हुए तुम्हारी सेनामें शस्त्रोंसे अग्नि निकलने लगी कौवे और उल्लू ध्वजा और सिरों

पर बैठने लगी। हे पृथ्वीनाथ! तब दोनों ओरके सेना पतियोंने अपनी अपनी सेनाओंको ठीक करके घोर युद्ध करनेकी आज्ञादी और भयानक युद्ध होने लगा, जैसे इन्द्र अपने बाणोंसे दानवोंको व्याकुल कर देते हैं। ऐसे ही शल्यने भी पाण्डवोंकी सेनाको व्याकुल कर दिया फिर धर्म्मात्मा युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल, सहदेव, सात्यकि, द्रौपदीके पांचो पुत्र, धृष्टद्युम्न और शिखण्डीके शरीरमें एक एक बाण मार कर इस प्रकार बाण बर्षाये जैसे मेघ जल बर्षाते हैं। उस समय शल्यके बाणोंसे सहस्रों सोमक और प्रभद्रक बंशी चत्री गिरते और गिरे हुए दीखते थे, जैसे टींड़ीदल भ्रु ंड भौरोंके और मेघसे जलकी धारा छूटती है ऐसे ही शल्यके बाण चारोंओर दिखाई देने लगे, उनसे हाथी, घोड़े और रथोंपर चढ़े बीर कांपने, घूमने और गिरने लगे, जैसे प्रलय कालमें यमराज अपना अस्त्र दिखाते हैं। ऐसे शल्य भी घोर कर्म्म करके अपना बल दिखाने लगे, और शत्रु-ओंको बाणोंसे मारने लगे। जैसे बर्षाऋतुमें मेघ गर्ज्जकर जल बरसाता है ऐसेही मद्रराज शल्य भी गर्ज्जते हुए बाण बर्षाने लगे। उनके बाणोंसे सेनाको व्याकुल होकर पाण्डवोंकी सेना महा-राज युधिष्ठिरकी शरण गई। तब शीघ्र बाण चलानेवाले राजा शल्य युधिष्ठिरकी ओर अनेक बाण चलाने लगे। उनको अपनी ओर आते देख राजा युधिष्ठिरको महाक्रोध हुआ और तेज बाणोंसे उनके सब बाण काटकर उनके शरीरमें अनेक बाण मारे। जैसे अङ्कुश लगनेसे हाथीको क्रोध होता है ऐसे ही युधिष्ठिरके बाण लगनेसे शल्यको क्रोध हुआ अनन्तर एक तेज बाण युधिष्ठिरके शरीरमें मारा वह महात्मा युधिष्ठिरके शरीरमें लगकर पृथ्वीमें घुस गया, तब भीमसेनने क्रोध करके शल्यके सात बाण मारे। सहदेवने पांच, नकुलने दश और द्रौप-दीके पुत्रोंने अनेक बाण शल्यके ऊपर इस प्रकार बर्षाये जैसे मेघ पर्वतपर जल। तब शल्यको चारों ओरसे पाण्डवोंसे घिरा देख कृतबर्म्मा, कृपाचार्य्य, महावीर उलूक, सुबलपुत्र शकुनि, महावीर अश्वत्थामा और तुम्हारे सब पुत्र दौड़कर शल्यकी रक्षा करने लगे। कृतबर्म्माने क्रोध करके भीमसेनके शरीरमें तीन बाण मारकर अनेक बाण बर्षाये, शकुनिने क्रोध करके धृष्टद्युम्न और द्रौपदीके पुत्रोंके ऊपर अनेक बाण चलाये और नकुल सहदेवसे अश्वत्थामा युद्ध करनेको दौड़े। इसी प्रकार महापराक्रमी बीर दुर्य्योधन कृष्ण और अर्जुनसे युद्ध करने और अनेक बाण बर्षाने लगे।

हे पृथ्वीनाथ! इस प्रकार दोनों ओरके दो दो बीर मिलकर घोर और विचित्र युद्ध करने लगे। कृतबर्म्माने अपने बाणोंसे भीम-सेनके चारों घोड़ोंको मारडाला, फिर भीमसेन गदा लेकर रथसे कूदे और दण्डधारी यमरा-जके समान घोरयुद्ध करने लगे। उतने ही सम-यमें शल्यने सहदेवके घोड़े मारडाले। सहदेव भी खड्ग लेकर रथसे नीचे उतरे और शल्यके बेटेका शिर काटडाला। इसी प्रकार साव-धान और यत्न करते हुए धृष्टद्युम्नसे कृपाचार्य्य युद्ध करने लगे। हंसते हुए अश्वत्थामाने भी द्रौपदीके पांचों पुत्रोंकोदस दस बाण मारे भीमसेन गदा लेकर दण्डधारी यमराजके समान कृतबर्म्माकी ओर दौड़े और घोड़े तथा रथको चूर करडाला, तब कृतबर्म्मा उस रथसे उतरकर भागे, शल्य भी अनेक पाञ्चालोंका नाश करके फिर युधिष्ठिरकी ओर बाण चलाने लगे। तब भीमसेनने युधिष्ठिरको व्याकुल देखकर दांतोंसे ओठ चबाये और हम इस समय शल्यको मारेंगे ऐसा बिचारकर यमराजके दण्डके समान ऊंची, कालरात्रिके समान भयानक, हाथी, घोड़े और मनुष्योंको मारने वाली, सोनेके तारोंसे मढ़ी, जलती हुई मशालके समान चमकती, बिष भरी नागिन

समान चरपराती, इन्द्रके वज्रके समान भयावनी, चन्दन और अगर लगी अपनी स्त्रीके समान भीमसेनकी प्यारी चर्बी और मेदसे भरी, यम-राजकी जिह्वाके समान घोर सैकड़ों घण्टा लगी, इन्द्रके वज्रके समान सुन्दर, क्रोध भरे सांपके समान भयानक, हाथमदसे भरी, शत्रुओंको डरानवाली, अपनी सेनाको अत्यन्त प्रसन्न करनवाली, मनुष्य लोकमें प्रसिद्ध, पर्व्वताको ताड़नेवाली, गदा लेकर दौड़े। जिस गदाको लेकर बलवान भीमसेनने क्रोध करके कुवे-रको युद्ध करनेको पुकारा था, जिसकी सहा-यतासे द्रौपदीकी प्रसन्नताके लिये कुवेरके स्थानमें अनेक मायाविगुह्यकोंको मारा था उस ही मणिजटित वज्रके समान दृढ़ गदाको लेकर गर्ज्जते हुए गदायुद्धको जाननेवाले भीम-सेन शल्यकी ओर वेगसे दौड़े और शल्यके चारों घोड़ोंको मारडाला तब वीर शल्य सिंहके समान गर्ज्जने लगे। और क्रोध करके एक तोमर भीमसेनकी छातीमें मारा, उसके लगनसे भीमसेनकी छातीमें घाव होगया परन्तु भीम-सेन कुछ न घवड़ाये और उस ही तोमरको छातीसे निकालकर शल्यके सारथीको मारा, उसके लगनेसे शल्यका सारथी मरकर गिर गया, भीमसेनका पराक्रम देख आश्चर्य्य करने लगे। तब धर्मात्मा शल्य भी गदा लेकर रथसे कूदे और भीमसेनकी ओर क्रोध करके देखने लगे। भीमसेनका अद्भुत कर्म्म देखकर पाण्ड-वोंकी सब सेना गर्ज्जने और बाजे बजाने लगी।

११ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! अपने सारथीको मरा देख महाराज शल्य लोहेकी गदा लेकर पर्व्वतके समान खड़े, उनके कालकी उठती हुई आग, फांसे लिये काल, शिखरधारी कैलाश [illegible] वज्र धारी इन्द्र और शूलधारी शिवके समान खड़ा देख भीमसेन गदा लेकर इस प्रकार दौड़े, जैसे वनमें सिंह हाथीको ओर दौड़ता है। तब दोनो ओरसे प्रसन्न करनेके लिये शङ्ख और अनेक बाजे बजने लगे तथा दोनों ओरके वीर गर्ज्जने लगे। दोनोंका गदायुद्ध देख-कर दोनों ओरके वीर प्रशंसा करने लगे और युद्ध देखने लगे। तब कहने लगे कि भीमसेनकी गदाको यदुकुल श्रेष्ठ बलराम और शल्यके सिवाय कोई नहीं सह सक्ता। इसी प्रकार भीम-सेनके सिवाय शल्यकी गदाको भी कोई नहीं सह सक्ता, वे दोनों मतवाले बैलके समान गर्ज्जने और अनेक गतियोंसे लड़ने लगे, गदाको चलाने और चलनेमें भीमसेन और शल्य समान ही दीखते थे, उस समय तपे हुए सोनेसे मढ़ी हुई शल्यकी गदा जलती मसालके समान दीखने लगी। इसी प्रकार अनेक गतियोंसे घूमते हुए महात्मा भीमसेनकी गदा भी बिजलीके समान चमकने लगी, भीमसेन और शल्यकी गदा लग-नेसे दोनोंसे अग्निके पतङ्गे गिरने लगे। जैसे दांतोंसे दो मतवारे हाथी, और सीगोंसे दो बैल लड़ते हैं। ऐसे ही भीमसेन और शल्य गदा-युद्ध करने लगे। थोड़े समयमें दोनो रुधिरसे भीग गये और फूले हुए टेसूके समान सुन्दर दीखने लगे। शल्यकी अनेक गदा लगनेपर भी भीमसेन पर्व्वतके समान इधर उधरको न हटे इसी प्रकार भीमसेनकी अनेक गदा लगने-पर शल्य भी न घवड़ाये, भीमसेनकी गदा शल्यके शरीरमें ऐसी लगती थी जैसे पहाड़में हाथीके दांत। जैसे बिजली गिरनेका शब्द होता है। ऐसे ही उन दोनोंको गदाका शब्द चारो ओर सुनायी देने लगा, कभी दोनो पीछेको हटकर और पैतरे बदल कर फिर भिड़ जाते थे, कभी आठ पैर आगे बढ़कर लोहेकी गदासे एक-दूसरेको मारता था। इन दोनोंका यह कर्म मनुष्योंकी शक्तिसे अधिक था, दोनो एक दूस-रेका छिद्र [illegible]

अपनी अपनी घात देखते थे किसो विद्या और बलमें कुछ भेद जान नहीं पड़ता था। कभी गदा उठाकर शिखर सहित पर्व्वतके समान दौड़ते थे, और एक दूसरेको मारते थे, कभी अनेक प्रकारके पैंतरे बदलते थे, कभी गोड़ी टेककर पर्व्वतके समान स्थिर होजाते थे, कभी एक दूसरेको बलसे गदा मारता था, एक समय भीमसेनकी गदा शल्यके शिरपर और शल्यकी भीमसेनके शिर जा लगी। तब दोनो एक ही बार मूर्च्छित होकर गिर गये, इन दोनोंको इन्द्रकी पताकाके समान गिरा देख दोनो ओर हाहाकार होने लगा। दोनोंके मर्म्मस्थान गदाओंसे टूट गये, और पीड़ासे व्याकुल होगये, तब कृपाचार्य्यने शल्यको उठाकर अपने रथमें डाल दिया, और युद्धसे हटा दिया उतने ही समयमें भीमसेन चैतन्य हुए और फिर गदा लेकर खड़े होगये और शल्यको पुकारने लगे, तब इस शब्दको शल्य न सुनें, इसलिये तुम्हारो सेनामें अनेक बाजे बजने लगे, और बीर गर्ज्जने लगे। तब फिर घोर युद्ध होने लगा, तब दुर्य्योधन आदि बीर पाण्डवोंसे युद्ध करनेको चले, उस सेनाको आते देख पाण्डव भी सिंहके समान गर्ज्जते हुए दौड़े। तब दुर्य्योधनने चेकितानकी छातीमें एक प्रास मारा, उसके लगनेसे वे रथमें गिर पड़े, तब चेकितानको मरा देख पाण्डवोंकी ओरके सब महारथ तुम्हारी सेनापर बाण बर्षाने लगे। इधरसे भी कृपाचार्य्य, कृतवर्म्मा, सुबलपुत्र शकुनि आदि बीर शल्यको आगे, करके फिर युधिष्ठिरसे युद्ध करने लगे। राजा दुर्य्योधन महापराक्रमी द्रोणाचार्य्यके मारनेवाले, धृष्टद्युम्नसे युद्ध करनेको चले, इसी प्रकार तीन सहस्र बीरोंको सङ्ग लेकर प्राणोंकी आशा छोड़कर अपनी विजयके लिये अश्वत्थामा अर्ज्जुनसे युद्ध करने लगे। तुम्हारे बीर इस प्रकार पाण्डवोंकी सेनामें घुसे जैसे तालाबमें हंस, तब दोनो ओरसे घोर युद्ध होने लगा। हे राजन्! दोनों ओरके बीर अपने अपने शत्रुओंको मा लगे, और प्रसन्न होकर युद्धकरने लगे।

हे महाराज! पहले एकबार बड़ी धूल उससे किसीको कुछ नहीं दीखने लगा। समय केवल युधिष्ठिर और दुर्य्योधनका लेनेसे ही शत्रु और मित्रोंका ज्ञान होता परन्तु फिर रुधिर बहनेसे धूल पृथ्वीमें जम और सब जगह प्रकाश होगया उस समय ओरसे कोई बीर नहीं भगा, और सबने विजयकी निश्चय करली थी, साधारण बीरों भी स्वामीके ऋण चुकानेका यही समय और प्राणोंका मोह छोड़ घोर युद्ध करने लगे। सब बीर स्वर्ग जानेका निश्चय करके अनेक प्र रके शस्त्र चलाने और युद्ध करने लगे। चारों ओर बीरोंको काटते हुए बीरोंका यही श सुनाई देने लगा, कि मारो काटो, पकड़ो, बांधो तब राजा शल्यने धर्म्मराज युधिष्ठिर और उन्हें मारनेके लिये अनेक तेज बाण च तब महारथ युधिष्ठिरने चौदह तेज शल्यके मर्म्मस्थानमें मारे। तब महापराक्र शल्यने उनके सब बाणोंको काटकर अनेक बाण मारे, फिर एक तेज बाण शल्यो युधिष्ठिरके शरीरमें मारा, तब युधिष्ठिरको महाक्रोध हुआ। और श शरीरमें सत्तर बाण मारे, इसी प्रकार नको ६४ बाणोंसे मारडाला। पहियेको करनेवाले, द्रुमसेनको मरा देख राजा श पचीस प्रधान चक्री चन्देलोंको मारडा फिर सात्यकिके शरीरमें पचीस, भीम पांच नकुलके सौ और सहदेवके सौ तेज मारे, इस प्रकार युद्धमें घूमते हुए शल्यके ष्ठिरने अनेक बाण मारे, फिर उनकी ध्व काट दिया, महात्मा युधिष्ठिरके बाणसे क शल्यकी ध्वजा इस प्रकार गिरी जैसे प शिखर टूटकर गिर पड़े अपनी ध्वजाको और युधिष्ठिरको बधके लिये, खड़

शल्यने क्रोध करके इस प्रकार बाण बर्षाये जैसे वर्षाकालमें मेघ जल बरषाता है। क्षत्रियश्रेष्ठ शल्यने केवल युधिष्ठिरहीकी ओर बाण नहीं चलाये वरन सात्यकि, भीमसेन, नकुल, और सहदेव आदि सब क्षत्रियोंको व्याकुल करदिया। शल्यने सबके शरीरमें एक एक बाण मारकर युधिष्ठिरकी ओर सहस्रों बाण चलाये, तब धर्म्मराजकी छातीमें बाणोंका जाल सा दिखाई देने लगा। उस समय युधिष्ठिरका रूप ऐसा दीखता था, जैसे मेघोंके बीचमें सूर्य्य, तब शल्यने सब ओरसे युधिष्ठिरके रथको बाणोंसे छिपा दिया उस समय राजा युधिष्ठिर शल्यके बाणोंसे ऐसे व्याकुल होगये, जैसे वृत्रासुरके बाणोंसे इन्द्र।

१२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! युधिष्ठिरको शल्यके बाणोंसे व्याकुल देख सात्यकि, भीमसेन, नकुल और सहदेव शल्यको अपने बाणोंसे व्याकुल करने लगे। अनेक महारथोंसे एकले शल्यका लड़ते देख सब सिद्ध, चारण और मुनि आश्चर्य करके धन्य धन्य कहने लगे। लगी हुई हृदयकी फासके समान शल्यको [illegible]ता देख भीमसेनने पहले एक फिर सात, सात्यकिने सौ, सहदेवने पांच और नकुलने धर्म्मराज युधिष्ठिरकी रक्षा करनेके लिये पांच बाण मारकर फिर सात बाण मारे, और सिंहके समान गर्जने लगे। इन सब महारथोंसे पीड़ित होनेपर भी वीर शल्यने अपने [illegible]र धनुषको खींचकर सात्यकिके सत्तर नकुलके सात बाण मारे, फिर एक बाणसे महाधनुर्धारी सहदेवका धनुष काटकर उनके शरीरमें [illegible] बाण मारे, सहदेवने भी क्रोध करके [illegible] धनुषपर रोदा चढ़ाकर शीघ्रतासे तेजस्वी मामा शल्यमें पांच बाण मारे, फिर विषधर सर्पके समान घोर तेज बाणोंसे शल्यके सारथीको मारकर गिरा दिया, फिर क्रोध करके शल्यके शरीरमें जलती आगके समान अनेक बाण मारे, फिर भीमसेनने सत्तर, सात्यकिने नौ और धर्म्मराज युधिष्ठिरने चौंसठ बाण मारे। उन बाणोंके लगनेसे शल्यके शरीरसे इस प्रकारसे रुधिर बहने लगा, जैसे पर्व्वतसे गेरूके झरने। तब इन सबके शरीरमें फिर पांच पांच बाण मारे, शल्यकी इस शीघ्रताको देख सब वीर आश्चर्य करने लगे। फिर एक बाणसे रोदा सहित धर्म्मराजका धनुष काट दिया, तब उन्होंने दूसरे धनुषपर रोदा चढ़ाकर घोड़े, सारथी, रथ और ध्वजा सहित शल्यको अपने बाणोंसे छिपा दिया। तब शल्यने क्रोध करके युधिष्ठिरके शरीरमें दश बाण मारे, युधिष्ठिरको व्याकुल देख सात्यकिको महाक्रोध हुआ तब शल्यके शरीरमें पांच बाण मारे, फिर शल्यने उनका धनुष काट डाला। और भीमसेन आदि सब क्षत्रियोंके शरीरमें तीन तीन बाण मारे, तब सात्यकिने क्रोध करके एक सोनेके दण्डवाला भारी तोमर शल्यके शरीरमें मारा, भीमसेनने एक बाण, नकुलने शक्ति सहदेवने गदा और धर्म्मराजने शतघ्नी मारी परन्तु शल्यने उन सब अस्त्रोंको अपने बाणोंसे काट दिया। हे भारत! प्रतापी वीर शल्यने एक बाणसे सात्यकिके तोमर भीमसेनके बाण दोसे नकुलकी भयानक शक्ति, एकसे सहदेवकी गदा और दोसे युधिष्ठिरकी शतघ्नीको काट दिया। पाण्डवोंके आगे, ऐसा घोर कर्म्म करके शल्य सिंहके समान गर्जने लगे। परन्तु सात्यकि शत्रुकी इस प्रसन्नता और विजयको क्षमा न कर सके और दूसरे धनुषपर रोदा चढ़ाकर दो बाण शल्यके और तीन उनके सारथीके मारे; इस समय सात्यकि मारे क्रोधके कांप रहे थे, तब शल्यने इन पांचों महारथोंके शरीरमें दो दो बाण इस प्रकार मारे जैसे महावत हाथीको अंकुश मारता है।

हे शत्रुनाशन! उस समय शल्यकी विद्या और बल देखकर किसी महारथको यह शक्ति न रही कि युद्धमें खड़ा रहे, शल्यका यह पराक्रम देख राजा दुर्य्योधनने यह निश्चय कर लिया, कि पाण्डव पाञ्चाल और सब सृञ्जय मारे गये, हे राजन्! तब महाबाहु प्रतापी भीमसेन प्राणोंका मोह छोड़कर शल्यसे युद्ध करने लगे, इसी प्रकार नकुल, सहदेव और महारथ सात्यकि भी सब ओरसे शल्यके ऊपर बाण वर्षाने लगे परन्तु इन चारों महारथोंसे घोर युद्ध करने पर भी शल्य कुछ न घबड़ाये, तब राजा युधिष्ठिरने एक बाणसे उनके पहियेकी रक्षा करनेवालेको मारडाला। अपने महारथ चक्र रक्षककी मरा देख शल्यको महाक्रोध हुआ और युधिष्ठिरके प्रधान वीरोंको मारने लगे। अपनी सेनाको व्याकुल देख युधिष्ठिर सोचने लगे, कि कृष्णका वचन किस प्रकार सत्य होगा? हम शल्यको कैसे मार सकेंगे? ये तो हमारी सब सेनाका नाश करे देते हैं, तब युधिष्ठिरने सब हाथी, घोड़े, रथ और पैदल सेनाके सहित प्रधान वीरोंको केवल शल्यसे ही युद्ध करनेकी आज्ञा दी और आप भी लड़ने लगे, तब शल्यके ऊपर इस प्रकार शस्त्र बर्षने लगे। जैसे बर्षा कालमें पानीकी धारें। परन्तु शल्य कुछ न घबड़ाये और जिधरको देखते थे, उधर ही युधिष्ठिरकी सेना इस प्रकार फट जाती थी। जैसे आंधीके चलनेसे मेघ। हमने इस समय सोनेके पङ्खवाले, आकाशमें घूमते हुए शल्यके बाण टीड़ी दलके समान दीखते थे।

हे पृथ्वीनाथ! इस समय युधिष्ठिरकी सेनामें कोई ऐसा स्थान न था जहां शल्यके बाण न दीखते हों। उस समय बाणोंसे अन्धकार होगया था, इसलिये हम और पाण्डव अपनी ओरके वीरोंको नहीं पहचान सके। हम केवल इतना ही कह सक्ते हैं कि, बलवान बाणोंसे पीड़ित पाण्डवोंकी समुद्र रूपी सेना सब ओर बहती सी दीखती थी, शल्यके इस पराक्रमको देख सब देवता, सिद्ध और गन्धर्व आश्चर्य करने लगे। फिर सब महारथोंको बाणोंसे व्याकुल करके युधिष्ठिरको बाणोंसे छिपा दिया और सिंहके समान गर्जने लगे तब युधिष्ठिर और भीमसेन आदि किसी वीरकी यह शक्ति न हुई कि शल्यसे युद्ध कर सके, परन्तु युद्धमें शल्यको छोड़कर भागनेकी भी इच्छा न हुई।

१२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! अश्वत्थामा और त्रिगर्तदेशी अनेक महारथोंने अर्जुनको और अनेक बाण चलाये तब अर्जुनने अश्वत्थामा आदि सब वीरोंको तीन तीन बाण चलाये और फिर सहस्रों बाण छोड़े अर्जुनके बाणोंसे व्याकुल होनेपर भी अश्वत्थामा आदि वीरोंने इन्हें छोड़ा नहीं और अर्जुनको चारों ओरसे घेरकर बाण बरषाने लगे। इनके छोड़े हुए सोनेके पङ्खवाले बाण अर्जुनके रथके चारों ओर दिखाई देने लगे, कृष्ण और अर्जुनके शरीरमें अनेक घाव होगये, छतुरी, जुआ और धुरी बाणोंसे भर गयी। हे राजन्! जैसे अर्जुनके ऊपर बाण बरसते उस समय देखे ऐसे पहले कभी न देखे न सुने थे।

हे राजन्! इस समय अर्जुनका रथ अनेक मसालयुक्त विमानके समान दीखता था, तब अर्जुनने इस सेनापर इस प्रकार बाण बरसाये जैसे मेघ पर्वतपर जल बरसाते हैं। अर्जुनके बाणोंसे व्याकुल होकर उस सेनाको चारों ओर अर्जुन ही अर्जुन दीखने लगे। इस समय ऐसा जान पड़ता था, मानो क्रोधरूपी वायुसे बढ़ता हुआ बाणरूपी ज्वाला युक्त अर्जुनरूपी अग्नि तुम्हारी सेनाको भस्म कर देती है। कहीं बाणोंसे कटकर पहिये, कहीं धुर तूणीर कहीं

झण्डे, कहीं भाण्डी, कहीं रथ, कहीं जुवा, कहीं सेल और कहीं रथके आसन पड़े दीखते थे कहीं पहियेकी नाभि, कहीं ढाल कहीं, घोड़ेकी लगाम कहीं जोड़े, कहीं कुण्डल पगड़ी सहित कटे शिर, कहीं हाथ, कहीं छत्र और कहीं कटे हुए मुकुटोंके ढेर पड़े थे। उस समय जिधरको क्रोधभरे अर्जुनका रथ निकल जाता था, उधर ही कायरोंको डरानेवाली और वीरोंका उत्साह बढ़ानेवाली मांस और रुधिरकी कीच होजाती थी। हे राजन्! वह रणभूमि महाश्मशानके समान होगयी थी। अर्जुन दो सहस्र वीरोंको मारकर ऐसे प्रकाशित हुए जैसे बिना धुएंकी अग्नि और प्रलयके समय घोर रूपधारी शिव। अर्जुनका यह पराक्रम देख अश्वत्थामा अपनी पताका उड़ाते हुए युद्ध करनेको दौड़े तब इन दोनों पुरुषसिंह महा धनुषधारी वीरोंका घोर युद्ध होने लगा। हे भरतकुलसिंह! जैसे वर्षाकालमें मेघ वर्षते हैं, तैसे ही ये दोनों वीर बाण बरषाने और युद्ध करने लगे।

हे महाराज! जैसे दो बैल सींगोंसे युद्ध करते हैं ऐसे ही ये दोनों वीर बहुत समयतक लड़ते रहे उस युद्धमें अनेक प्रकारके दिव्य अस्त्र भी चले तब अश्वत्थामाने सोनेके पङ्खवाले नौ बाण अर्जुनके शरीरमें और दश कृष्णके शरीरमें मारे। तब अर्जुनने प्रसन्न होकर गाण्डीव धनुषपर टङ्कार दी अर्जुनने जो इतने समयतक अश्वत्थामाको बाणोंसे व्याकुल नहीं किया इसका कारण केवल गुरुपुत्रका आदर ही था, फिर थोड़े ही समयमें अश्वत्थामाके घोड़े, सारथि और रथको काटडाला। फिर [illegible] अनेक बाण इनके शरीरमें भी मारे, अश्वत्थामा भी बिना घोड़ेके रथमें बैठे रहे और [illegible] मूसल उठाके फिर एक सोनेके तारोंसे मढ़ा हुआ परिघके समान भारी मूसल अर्जुनकी ओर चलाया, तब शत्रुनाशन अर्जुनने उसी मार्गहीमें बाणोंसे काटकर सात टूकड़े कर दिया। अपने मूसलको कटा देख युद्धके पण्डित अश्वत्थामाने क्रोध करके एक पर्वतके शिखरके समान भारी परिघ अर्जुनकी ओर चलाया क्रोध भरे यमराजके दण्डके समान परिघको आते देख अर्जुनने पांच बाणोंसे मार्गहीमें काटडाला। अर्जुनके बाणोंसे अश्वत्थामाका केवल परिघ ही कटकर नहीं गिरा वरन उसके सङ्ग ही दुर्य्योधन आदि राजाओंके हृदय भी फट गये तब फिर महात्मा बलवान अर्जुनने अश्वत्थामाके शरीरमें तीन बाण मारे अनेक बाण लगनेपर भी महात्मा अश्वत्थामा कुछ नहीं डरे।

अनन्तर उस ही घोड़े हीन रथपर बैठे हुए अश्वत्थामाने पाञ्चालदेशी महारथ सुरथके ऊपर अनेक बाण बरषाये सुरथ भी अपने मेघके समान रथको दौड़ाते हुए अश्वत्थामाके पास आये और अत्यन्त दृढ़ शत्रुओंके नाश करनेवाले धनुषको खींचकर जलती अग्नि और विष भरे सांपके समान बाण छोड़ने लगे। उस पाञ्चालवंशी महारथके बाण लगनेसे अश्वत्थामाको ऐसा क्रोध हुआ जैसे डण्डा लगनेसे सांपको। तब भौंह टेढ़ी करके दांत और ओठ चबाने लगे फिर क्रोधसे सुरथकी ओर देखकर और धनुषके रोदेको हाथसे मलकर यमराजके दण्डके समान एक बाण उनकी छातीमें मारा, वह उनकी छाती और रथको काटकर इस प्रकार पृथ्वीमें घुस गया जैसे इन्द्रका वज्र। जैसे वज्र लगनेसे पर्वतका शिखर गिर जाता है। वैसे ही उस बाणके लगनेसे सुरथ पृथ्वीमें गिर पड़े।

सुरथको मारकर अश्वत्थामाने उस ही रथमें दूसरे घोड़े जुड़वाये और फिर संशप्तकोंके सहित अर्जुन होसे घोर युद्ध करनेको चले, जिस समय यह अर्जुन अश्वत्थामा, और संशप्तकोंका घोर युद्ध होरहा था, तब ही भगवान

सूर्य्यने दिनका दूसरा पहर समाप्त किया, अर्जुन एकले ही सब वीरोंसे युद्ध करते रहे यह देखकर हम सबको आश्चर्य होगया, जैसे पहले समयमें इन्द्रने अनेक दानवोंके सङ्ग घोर युद्ध किया था तैसे ही अर्जुन अनेक वीरोंसे लड़ते रहे।

१४ अध्याय समाप्त

सञ्जय बोले, हे राजन्! इसी प्रकार राजा दुर्य्योधन और धृष्टद्युम्न भी बाण और सांगियोंसे घोर युद्ध करने लगे। हे राजन्! उन दोनोंके धनुषसे छूटे हुए बाण ऐसे दिखाई देते थे, मानो बर्षाकालमें दो मेघ बर्ष रहे हैं राजा दुर्य्योधनने द्रोणाचार्य्यके मारनेवाले धृष्टद्युम्नके शरीरमें पांच बाण मारकर फिर सात बाण मारे, महापराक्रमी धृष्टद्युम्नने भी एक ही बार दुर्य्योधनके शरीरमें अनेक बाण मारे, उन बाणोंके लगनेसे राजा दुर्य्योधन बहुत व्याकुल होगये, उनको व्याकुल देख उनके भाई बहुत सेनाके सहित धृष्टद्युम्नसे लड़ने लगे। हे राजन्! अनेक महारथोंसे घिरनेपर भी वीर धृष्टद्युम्न अपनी शस्त्रविद्याको दिखाते हुए युद्धमें घूमने लगे। इसी प्रकार शिखण्डी, कृतवर्म्मा और महाधनुषधारी कृपाचार्य्यसे एकले लड़ते रहे और सब पाञ्चाल शिखण्डीकी रक्षा करते रहे।

हे राजन्! उस समय कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा भी अपने प्राणोंका मोह छोड़कर शिखण्डीके सङ्ग घोर युद्ध करने लगे।

उधर शल्यभी अपने बाण वर्षाते हुए युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल सहदेव और सात्यकिसे युद्ध करने लगे। उस समय यमराजके समान वीर केवल नकुल और सहदेव ही अपने बल और बाणोंसे युद्ध करते रहे। उस समय ऐसा जान पड़ता था, मानो अब जगत्में पाण्डवोंकी रक्षा करनेवाला कोई नहीं है, अपने भाईको व्याकुल देख महारथ नकुल अपने मामा शल्यको मारनेको वेगसे दौड़े और अपने बाणोंसे शल्यके रथको छिपाकर फिर हंसकर दस बाण उनकी छातीमें मारे, सब लोहेके बने विषमें बुझे सोनेके पङ्खवाले नकुलके धनुष और यन्त्र (कलसे) छूटे बाणोंके लगनेसे शल्य बहुत व्याकुल होगये, फिर सावधान होकर अपने भानजेके शरीरमें अनेक तेज बाण मारे तब राजा युधिष्ठिर, भीमसेन, माद्रीपुत्र, सहदेव और सात्यकी शल्यकी ओर दौड़े उनके रथोंके शब्द और वेगसे पृथ्वी हिलने लगी, तब हमारे सेनापति शत्रुनाशन शल्य एकले ही उन सबसे लड़ने लगे। युधिष्ठिरके तीन, भीमसेनके पांच, सहदेवके तीन और सात्यकिके सौ बाण मारे, फिर अनेक तेज बाणोंसे महारथ नकुलका धनुष काट कर पृथ्वीमें गिरा दिया, तब महारथ नकुलने भी शीघ्रतासे दूसरा धनुष लेकर इतने बाण चलाये कि शल्यका रथ भर गया उसी समय सहदेव और युधिष्ठिरने भी शल्यकी छातीमें दश दश बाण मारे भीमसेनने साठ और सात्यकिने भी दश बाण मारे, तब शल्यने क्रोध करके सात्यकिके शरीरमें नौ बाण मारकर फिर सत्तर बाण चलाये फिर बाण सहित धनुष काट कर चारों घोड़ोंको मार डाला, इस प्रकार सात्यकिको विरथ करके फिर उनके शरीरमें सौ बाण मारे, फिर युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल और सहदेवके भी शरीरमें दश दश बाण मारे, चारों पाण्डव और सात्यकि पराक्रमी शल्यको नहीं जीत सके, यह देखकर हम लोगोंको बहुत आश्चर्य्य हुआ इतने ही समयमें महावीर सात्यकि दूसरे रथपर बैठ गये और पाण्डवोंको शल्यके बाणोंसे व्याकुल देखकर वेगसे दौड़े उनको आते देख महावीर शल्य भी उनकी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे मतवाला हाथी मतवाले हाथीकी ओर। उस समय

और सात्यकि और मद्रराज शल्यका ऐसा घोर युद्ध हुआ जैसे सम्बर दैत्य और देवराज इन्द्रका हुआ था, तब सात्यकिने शल्यसे खड़ा रह, ऐसा कह कर उनके शरीरमें दश बाण मारे, तब महात्मा शल्यने भी सात्यकिकी ओर अनेक बाण चलाये तब चारों पाण्डव भी अपने मामाको मारनेके लिये विशेष यत्न करने लगे, उस समय युद्ध भूमिमें रुधिर बहने लगा और लड़ते हुए वीर ऐसे दीखने लगे, जैसे नाचते हुए सिंह। ये सब वीर इस प्रकार युद्ध करने लगे। जैसे मासके लिये गर्ज्जकर बाज युद्ध करते हैं उस समय पृथ्वी और आकाशमें केवल बाणही बाण दीखते थे; महात्मा वीरोंके बाण आकाशमें ऐसे लागते थे, जैसे वर्षाकालमें मेघ। बाणोंके मारे सब युद्धभूमिमें अन्धेरा होगया था। उस अन्धेरेमें सोनेके पङ्खवाले घूमते हुए बाण चमकते थे, एकले शत्रुनाशन शल्य अनेक वीरोंसे लड़ते रहे यह बहुत अद्भुत कर्म्म हुआ शल्यके हाथोंसे छूटे मोर और कौवेके पङ्खलगे, बाणोंका शब्द सब ओर सुनायी देता था। उस समय युद्धमें घूमते शल्यका रथ ऐसा दिखाई देता था, जैसे दानवोंके नाश करते समय इन्द्रका।

१५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! फिर तुम्हारे सब वीर शल्यको प्रधान बना सब वेगसे शल्यकी ओर चले उस समय पाण्डवोंके गर्ज्जन हाथियोंकी चिंघाड़, घोड़ोंके शब्द और शङ्ख आदिके शब्दसे ऐसा जान पड़ता था। मानों पृथ्वी फट जायगी उस समयको धारे देख राजा शल्य और दुर्य्योधन भी युद्ध करनेको चले, वे दोनों इस प्रकार युद्ध करने लगे। जैसे उदयाचल और अस्ताचल वर्षाकी जलधाराको सहते हैं। तब महावीर शत्रुनाशन युधिष्ठिरके ऊपर इस प्रकार बाण बर्षाने लगे। जैसे इन्द्रने शम्बरके ऊपर बर्षाये थे. राजा युधिष्ठिरने भी विचित्र धनुष लेकर शीघ्रता सहित विचित्र और अद्भुत बाण बर्षाने आरम्भ करे; उस समय यह जान पड़ता था कि, युधिष्ठिर भी द्रोणाचार्य्यके एक प्रधान शिष्योंमें हैं, उस समय किसी वीरको यह शक्ति नहीं थी कि, इस बातको जान सके कि युधिष्ठिर कब बाण निकालते हैं, कब चढ़ाते हैं, कब धनुष खींचते हैं। और कब छोड़ते हैं, राजा शल्य भी उस समय इसी प्रकार बाण छोड़ते थे, उस समय ये दोनों राजा ऐसे दिखाई देते थे। मानों दो शार्द्दूल मासके लिये लड़रहे है। तब भीमसेन भी वीर दुर्य्योधनसे लड़ने लगे। धृष्टद्युम्न, सात्यकि, नकुल और सहदेव आदि वीर शकुनि आदि क्षत्रियोंसे लड़ने लगे।

हे राजन्! तब फिर दोनों ओरके वीर अपनी अपनी विजयके लिये घोर युद्ध करने लगे। यह केवल आपकी उस बुरी सम्मतिहीका फल हुआ, तब दुर्य्योधनने एक बाणसे सोनेके दण्डवाली भीमसेनकी ध्वजा काट दी। वह अनेक घण्टाओंसे युक्त सुन्दर ध्वजा भीमसेनके देखते देखते कटकर पृथ्वीपर गिर गई। हे पृथ्वीनाथ। फिर एक तेज बाणसे हाथीके सूंड़के समान भीमसेनका धनुष काट दिया। तेजस्वी भीमसेनने एक तेज साङ्गी दुर्य्योधनके हृदयमे मारी, तब राजा दुर्य्योधन मूर्च्छा खाकर रथमें गिर पड़े राजाको मूर्च्छित करके फिर भीमसेनने एक तेज बाणसे सारथीको शिर काट लिया सारथीके मरनेसे दुर्य्योधनके घोड़े रथ लेकर इधर उधरको भागने लगे। तब उनकी सेनामें हाहाकार होन लगा। उनकी रक्षा करनेको महारथ अश्वत्थामा, कृतवर्म्मा और कृपाचार्य्य दौड़े तब भीमसेनसे डरकर यह सेना इधर उधरको भागने लगी, तब अर्ज्जुनने अपने धनुषपर टङ्कार दी और बाणोंसे उन्हें मारने लगा। राजा युधिष्ठिर भी निर्म्मल दांतोंके समान

सफेद घोड़ोंको शीघ्र दौड़ाते हुए क्रोधमें भरकर राजा शल्यकी ओर दौड़े, उस समय राजा युधिष्ठिरका स्वरूप हमने अद्भुत देखा क्यों कि पहले वे परम शान्त और इस समय महातेज होगये थे, उस समय राजा युधिष्ठिरके पुत्र लाल होरहे थे, शरीर कांप रहा था तब उन्होंने अपने बाणोंसे सैकड़ों और सहस्रों वीरोंको मारडाला। उस समय महाराज जिस सेनाकी ओर चले जाते थे, उसकी बाणोंसे इस प्रकार काटडालते थे, जैसे इन्द्र अपने बज्रसे पर्व्वतोंको जैसे एकला वायु अनेक मेघोंको उड़ा देता है। ऐसे ही एकले बलवान महाराजने रथ, ध्वजा, पताका, सारथी और घोड़ोंके सहित अनेक महारथोंको मारकर पृथ्वीमें गिरा दिया। जैसे भगवान शिव प्रलयकालमें क्रोध करके जगत्‌का नाश करते हैं। ऐसे ही महाराजने घोड़ोंके सहित वीर और सहस्रों घोड़ोंको मारडाला। इस प्रकार सेनाको मार कर राजा शल्यकी ओर दौड़े और ऊंचे स्वरसे बोले कि, रे शल्य। खड़ा रह महावीर युधिष्ठिरके इस अद्भुत कर्म्मको देखकर तुम्हारी ओरके सब वीर डरने लगे। परन्तु शल्य वेडर होकर इनसे लड़नेको चले, तब ये दोनों राजा क्रोधमें भरकर अपने अपने शङ्ख बजाने लगे और एक दूसरेको ललकारके डराने और युद्ध करनेको पुकारने लगे। शल्यने युधिष्ठिरके ऊपर और युधिष्ठिरने शल्यकी ओर सहस्रों बाण चलाये, युधिष्ठिरसे युद्ध करनेको चले तुम्हारे सब वीर व्याकुल होनेपर भी पाण्डवोंकी सेनासे युद्ध करने लगे। और बहुत होनेके कारण उन्होंने पाण्डवोंकी सेनाको व्याकुल कर दिया। यद्यपि भीमसेनने बहुत रोका तौ भी पाण्डवोंकी सेना खड़ी न हो सकी और कृष्ण तथा अर्ज्जुनके देखते देखते भागने लगी, तब अर्ज्जुनने महाक्रोध करके कृतवर्म्मा और कृपाचार्य्यके ऊपर बाण वर्षाने आरम्भ करे, सहदेव सेना सहित शकुनिसे युद्ध क[रने]
लगे। नकुलने शल्यके पास जाकर क्रोधसे उन[की]
ओर देखा द्रौपदीके पांचों बेटेने अनेक राजों[को]
युद्धमें रोक दिया, शिखण्डीने अश्वत्थामा[को]
व्याकुल कर दिया, भीमसेन भी गदा ले[कर]
रथसे उतरे और राजा दुर्य्योधनसे लड़ने, त[ब]
और एकले महाराज युधिष्ठिर शल्यसे घ[ोर]
युद्ध करने लगे, तब दोनों ओरकी सेना
जहां तहां घोर युद्ध करने लगी, हमने
समय भी शल्यके कर्म्मको अद्भुत देखा
एकले ही सेना सहित युधिष्ठिरसे लड़ते
उस समय गोरे रङ्गवाले, युधिष्ठिरके भागे
काले शल्य चन्द्रमाके पास शनैश्चरसे दीखते
युधिष्ठिरको बाणोंसे व्याकुल करके फिर
बाण बर्षाते हुए भीमसेनकी ओर दौड़े, शल
इस शस्त्र विद्या और अभ्यासको देख दोनों
ओरके वीर धन्य धन्य कहने लगे, युधिष्ठिर
व्याकुल देखकर उनकी ओरके प्रधान वी[र]
शल्यके बाणोंसे बहुत व्याकुल होने परभी यु[द्ध]
करनेको दौड़े। अपनी सेनाको व्याकुल दे[ख]
महाराज युधिष्ठिरको शल्यके ऊपर महाक्रोध
आया, तब महारथ युधिष्ठिरने यह निश्चय क[र]
लिया कि या तो शल्यको मारेंगे या मर ही
जायंगे। तब उनके ऊपर अनेक बाण बर्षाने
लगे, फिर अपने सब भाई, सेनापति मन्त्री और
कृष्ण आदि मित्रोंको बुलाकर कहने लगे तुम
सब लोगोंने अपने अपने भाग और सम्बन्धके
अनुसार भीष्म और द्रोणाचार्य्य आदि सब दुर्य्यो[-]
धनकी ओरके राजोंको मारा। अब केवल
हमारा ही भाग शेष रह गया है। उसमें राजा
शल्य ही आगये इसलिये तुम लोगोंके भा[ग]
हम इसके मारनेकी प्रतिज्ञा करते हैं अब
हम जो कहते हैं, सो तुम लोग सुनो, हमारी
यह इच्छा है कि वीर नकुल और सहदेव
हमारे रथके पहियोंकी रक्षा करें क्यों कि
हमें यह निश्चय है, कि इन दोनोंको युद्ध[में]

साक्षात् इन्द्र भी नहीं जीत सक्ते इनके बल, पराक्रम, शस्त्र विद्या और क्षत्रिय धर्म्मको सब कोई जानते हैं, इन दोनोंको जगत्के महायोडा पराक्रमी महावीर चक्री कहते हैं, ये शल्यको जीतनेमें समर्थ हैं हम इन दोनों आदर पाने योग्य वीरोंको अपना सहायक बनाते हैं, और तुम लोगोंको आशीर्वाद देते हैं, कि ईश्वर सबका कल्याण करे अब यातो हम शल्यको मारेंगे, या वे ही हमें मारेंगे, तुम सब अपने अपने स्थानपर जाओ। हे जगत् प्रसिद्ध वीर! और राजो! तुम हमारी एक और सत्य प्रतिज्ञा सुनो; आज हम क्षत्रियोंका धर्म्मधारण करके अपने मामासे भी युद्ध करेंगे, आज हम मृत्यु, या जीतका निश्चय करके मामासे लड़ेंगे, परन्तु उनके पास अस्त्र आदि युद्धकी सामग्री हमसे अधिक हैं, अब सब वीर हमारी आज्ञासे शस्त्र भरे रथोंमें बैठो और इस प्रकार हमारे सङ्ग रहो अगाड़ीके दोनो पहियोंकी रक्षा करनेको नकुल और सहदेव, पिछले इन पहियेकी रक्षाको सात्यकि, बायेंकी सेनापति धृष्टद्युम्न,पीछेसे हमारे रथकी रक्षाके लिये अर्जुन और रथके आगे सब अस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठ भीमसेन रहे। ऐसा होनेसे हम शल्यसे अधिक बलवान् होजायगे, राजाकी ऐसी आज्ञा सुन सब [illegible] होकर बहुत अच्छा बहुत अच्छा कहने लगे और इसी प्रकार खड़े होगये तब पाण्डवोंकी [illegible] फिर अत्यानन्द होने लगे, विशेषकर पाञ्चाल, [illegible], सोमक और मत्स्य देशी क्षत्री बहुत [illegible]। [illegible] समय राजा युधिष्ठिरने शल्यके [illegible] प्रतिज्ञाकी तब पाञ्चाल वीर गर्ज्जन [illegible] लगे, [illegible] शंख, भेर और नगारे [illegible] लगे, तब दोनों राजोंके शरीरसे रुधिर [illegible]। [illegible] शरीरोंमें बाण लग गये उस [illegible] दोनों महात्मा [illegible] [illegible]

हे भरत! उस समय दोनों ओरके वीरोंमेंसे किसीको यह निश्चय नहीं था कि कौन जीतेगा? कोई कहेगा कि आज शल्यको मारकर महाराज युधिष्ठिर चक्रवर्त्ती राजा होंगे और कोई विचार रहा था, कि आज राजा शल्य युधिष्ठिरको मारकर दुर्य्योधनको महाराज बनावेंगे, तब युधिष्ठिरके सारथीने अपना रथ शल्यके दहनी ओर लगा दिया तब, राजा शल्यने युधिष्ठिरके शरीरमें सौ बाण मारे और फिर एक तेज बाणसे उनका धनुष काट दिया तब युधिष्ठिरने शीघ्र दूसरा धनुष लेकर शल्यके शरीरसे तीन बाण मारे, फिर एक बाणसे उनका धनुष काटकर चार बाणोंसे चारों घोड़ोंको मारडाला। फिर एक तेज बाणसे सारथी और एकसे रक्षा करनेवालेको मारडाला। फिर एक महातेज बाणसे उनकी ध्वजा भी काट दी, तब दुर्य्योधनकी सेना इधर उधरको भागने लगी तब इनकी रक्षा करनेको अश्वत्थामा दौड़े और उन्हें अपने रथमें बिठाकर युद्धसे भाग गये, तब राजा युधिष्ठिर सिंहके समान गर्ज्जने लगे। थोड़ी ही दूर जानेपर राजा शल्यका दूसरा रथ आगया, तब राजा शल्य अश्वत्थामाके रथसे उतरकर उस मेघके समान शब्दवाले शत्रुओंको कपानेवाले सब युद्धकी सामग्रीसे भरे उत्तम घोड़े और सारथीसे युक्त रथपर बैठे।

१६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! तब दूसरा धनुष लेकर शल्यने युधिष्ठिरके शरीरमे बाण मारे, और सिंहके समान गर्ज्जने लगे। तब क्षत्रियश्रेष्ठ महापराक्रमी शल्य वीर युधिष्ठिरके ऊपर इस प्रकार बाण बर्षाने लगे। जैसे मेघ जल बर्षाते हैं। फिर सात्यकिके दश भीमसेनके तीन और नकुलको तीन बाण मारकर

युधिष्ठिरके अनेक बाण मारे, फिर सब बीरोंको घोड़े, सारथी और रथोंके सहित इस प्रकार व्याकुल कर दिया, जैसे मनुष्य मसालोंसे हाथीको भगाते हैं। महारथ शल्यने अपने बाणोंसे हाथी, रथ और घोड़ोंपर चढ़े वीरोंको बाहनोंके सहित काट डाला, अनेक बीरोंके हाथ काट डाले, और मरे हुए शरीरोंसे पृथ्वी इस प्रकार भर दी जैसे होम करनेवाले, ब्राह्मण वेदीपर कुशा बिछाते हैं। तब पाण्डव, पाञ्चाल और सोमकवंशी प्रधान बीर उनकी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे यमराज मृत्युकी ओर दौड़ते हैं। तब महापराक्रमी युधिष्ठिरसे लड़ते हुए शल्यको भीमसेन, बीर नकुल, सहदेव और सात्यकि अपनी अपनी ओर पुकारने लगे। हे महाराज! तब ये सब बीर अपने तेज बाणोंसे वीर शल्यको युद्धमें रोककर बाण चलाने लगे, अनन्तर भीमसेन, नकुल और सहदेव आदि सब बीर युद्ध छोड़कर केवल राजाकी रक्षा करने लगे। तब राजा युधिष्ठिरने शल्यको छातीमें तीन बाण मारे, इनके लगनेसे राजा शल्य व्याकुल होगये तब दुर्य्योधनकी आज्ञासे अनेक बीर राजा शल्यकी रक्षा करनेको दौड़े, तब राजा शल्यने शीघ्र सात बाण युधिष्ठिरके मारे, महाराज युधिष्ठिरने भी उस समय नौ बाण मारे, तब ये दोनो महारथ राजा एक दूसरेकी ओर तेज बाण चलाने लगे। दोनों महापराक्रमी शत्रुनाशन राजा एक दूसरेके मारनेको घात देखने लगे, और तेज बाण बर्षाने लगे, मद्रदेशके राजा और महाबीर महाराज युधिष्ठिरके उस युद्धमें चारो ओर धनुष और तालका ऐसा शब्द सुनाई देता था, जैसे बिजली गिरनेका। उस समय ये दोनो वीर युद्धमें इस प्रकार लड़ रहे थे, जैसे मांसके लिये दो सिंह लड़ते हैं। जैसे एक मतवाला हाथी दूसरे मतवाले हाथीके शरीरमें दांत मारता है, ऐसे ही ये दोनोंभी बाण चला रहे थे। तब महात्मा शल्यने महा-बीर युधिष्ठिरके हृदयमें एक अग्नि और सूर्य्यके समान तेज बाण मारा; तब कुरुकुल श्रेष्ठ महा पराक्रमी महात्मा युधिष्ठिरने भी उनके छातीमें एक वैसा ही बाण मारा और बहुत प्रसन्न हुए उसके लगनेसे शल्यको मूर्छा होगई तब फिर चैतन्य होकर इन्द्रके समान वीर शल्यने युधिष्ठिरकी ओर बाण चलाये, तब राजा युधिष्ठिरने क्रोध करके सोनेके बने राजा शल्यके कवचको काटकर छः तेज बाण उनके छातीमें मारे, तब राजा शल्यने क्रोध करके अपना धनुष खींचा और दो बाणोंसे कुरुकुल श्रेष्ठ युधिष्ठिरका धनुष काट दिया तब महात्मा युधिष्ठिरने एक दूसरा घोर धनुष लेकर शल्यको अपने बाणोंसे इस प्रकार व्याकुल कर दिया जैसे इन्द्रने नमुचिको व्याकुल किया था, तब महात्मा शल्यने अपने तेज बाणोंसे भीमसेन और राजा युधिष्ठिरके सोनेके कवचोंको काट कर दोनोंके हाथोंमें अनेक बाण मारे, और फिर एक तेज बाणसे महाराज युधिष्ठिरके धनुष काट दिया उसी समय कृपाचार्य्यने उनके सारथीको मारकर गिरा दिया, तब राजा शल्यने चार बाणोंसे घोड़े भी मारडाले, और अनेक वीरोंको भी मारड़ाला। तब राजाको व्याकुल देख महात्मा भीमसेनने एक तेज बाणसे शल्यका धनुष काटकर दो बाण उनकी छातीमें मारे, फिर क्रोध करके एक बाणसे सारथी और चारसे चारों घोड़ोंको मारडाला, तब सब धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ अनेक वीरोंसे एकले युद्ध करते हुए वीर शल्यके शरीरमें भीमसेन और सहदेवने सौ सौ बाण मारे, उनसे राजा शल्यका कवच कटकर पृथ्वीमें गिर पड़ा तब राजा शल्य घबड़ाकर सहस्रो फूलवाली ढाल और खड्ग लेकर रथसे उतरे और युधिष्ठिरकी ओर दौड़े, तब नकुलको अपनी ओर आते देख उनके रथका जुआ काट दिया, राजा शल्यको क्रोध भरे यमराजके समान युधिष्ठि

रथकी ओर दौड़ते देख धृष्टद्युम्न अपने भानजोंके सहित रथसे उतर कर राजाकी रक्षा करनेको दौड़े। इतनेही समयमें भीमसेनने नौ बाणोंसे शल्यके खड्ग और ढालको काट दिया और गर्जने लगे, भीमसेनकी जीत और शल्यकी हार देखकर उधरके वीर प्रसन्न होकर चन्द्रमाके समान सफेद शंख बजाने लगे। उस शब्दसे और बाणोंसे व्याकुल होकर तुम्हारी सेना इधर उधरको भागने लगी। उन भीमसेन आदि वीरोंके बाणोंको सहते हुए टूटा खड्ग लिये राजा शल्य युधिष्ठिरकी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे बड़ा सिंह छोटे हरिणपर दौड़ता है। राजा युधिष्ठिर सारथी और घोड़ोंके मरनेसे क्रोधमें भरकर अग्निके समान प्रकाशित होने लगे। शल्यको अपनी ओर आते देख और यदुकुलश्रेष्ठ श्रीकृष्णके वचनको स्मरण करके शल्यके मारनेका विचार करने लगे। फिर महात्मा शल्यके पराक्रमको विचारकर श्रीकृष्णका वचन सत्य करनेके लिये शक्ति चलानेको इच्छाकी तब युधिष्ठिरने उस सोनेके दण्डवाली, रत्नोंसे जड़ी, शक्तिको हाथमें लेकर घोर क्रोधसे आंख फैला कर शल्यकी ओर देखा।

हे राजन्! पापरहित राजोंके महाराज महावीर राजा युधिष्ठिरके क्रोध भरे नेत्रोंके देखनेसे राजा शल्य भस्म न होगये, यही देखकर हम सब आश्चर्य करने लगे. तब कुरुकुलश्रेष्ठ महात्मा युधिष्ठिरने वह रत्न जड़े सोनेके दण्डवाली शक्ति वेगसे शल्यकी ओर चलाई वह जलती हुई वेगसे दौड़ती हुई शक्तिको सब देख रहे वीरोंने यह जाना कि यह प्रलय कालकी दिव्य आकाशसे चली आती है, वह शक्ति जैसे कालरात्रिके समान घोर यमराजकी मायाके समान भयानक, ब्रह्माके दण्डके समान घोर और जलती हुई आगके समान [illegible] युधिष्ठिरके हाथसे छूटी, युधिष्ठिरने जिसे अनेक वर्षोंसे सुगन्ध, माला और भोजनोंसे पूजा था जो बहुत दिनसे पाण्डवोंके घरमें थी, उसी शक्तिको अथर्वा और अङ्गिरा मुनिकी बनाई हुई मायाके समान छोड़ा वह शक्ति प्रलयकालकी जलती हुई अग्निके समान चली। इस शक्तिको विश्वकर्म्माने शिवके लिये बनाया था यह सब शत्रुओंका मांस खानेवाली तथा आकाश, पाताल और भूमिके सब वीरोंको मारनेमें समर्थ थी, यह राक्षसोंके मारनेवाली अत्यन्त यत्नसे विश्वकर्म्माकी बनाई, घोर शक्ति पन्ना सोनेके दण्डवाली, घण्टा जड़ी और मणियोंसे भरी थी, इसीको महाराज युधिष्ठिरने घोर मन्त्रोंसे मन्त्रित करके अत्यन्त बल और यत्नसे शल्यके मारनेको छोड़ा धर्म्मराजने उस शक्तिको इस प्रकार चलाया जैसे शिवने अन्धक दानवके मारनेको बाण छोड़ा था। फिर क्रोधसे नाचते हुए धर्म्मराज दोनों हाथ उठाकर शल्यसे बोले, रे पापी! तू मारा गया जैसे घी पड़नेसे आग बढ़ती है ऐसे ही उस युधिष्ठिरके बलसे भरी हुई न निवारण करने योग्य साङ्गको अपनीओर आते देख राजा शल्यका क्रोध भड़क उठा और उसे बचानेको उन्होंने बहुत यत्न किये परन्तु कुछ न होसका वह शक्ति महाराज शल्यके मर्म्मस्थान और हृदयको काटती हुई उनके यशके सहित इस प्रकार पृथ्वीमें घुस गई। जैसे कोई लकड़ी जलमें घुस जाती है, तब राजा शल्यके आंख, नाक, कान और हृदयसे रुधिर बहने लगा और इस प्रकार पृथ्वीमें गिर पड़े जैसे जड़ कटनेसे बड़ा वृक्ष। पर्वत और इन्द्रके हाथीके समान पराक्रमी महात्मा शल्य वज्रसे कटे पर्वतके शिखरके समान पृथ्वीपर हाथ फैलाकर गिर गये। राजा शल्य मरते हुए भी दोनो हाथ फैलाकर इन्द्रको ध्वजाके समान राजा युधिष्ठिरके आगेहीको गिरे, मनुष्योंमें श्रेष्ठ राजा शल्य सब शरीर कटनेपर पृथ्वीमें पड़े ऐसे दीखते हैं, मानों अभी बहुत प्रसन्न हैं, जैसे

अपनी प्यारी स्त्रीसे बहुत दिन भोग करके विदेश चलते समय पति अपने हृदयसे उसे लगाता है ऐसे ही बहुत दिन भूमिको भोग करके पृथ्वीमें पड़े राजा शल्य दीखते थे मानों इसे अपने हृदयसे लगा रहे हैं।

उस समय धर्म्मात्मा युधिष्ठिरकी शक्तिसे धर्म्मयुद्धमें मरे हुए राजा शल्य ऐसे दीखते थे मानो सब शरीरोंसे अपनी प्यारी स्त्रीसे लपटे हुए सोते हैं। जैसे अनेक आहुति पाई यज्ञकी अग्नि शान्त होजाती है ऐसे ही राजा शल्य भी शान्त होगये। ध्वजा और शस्त्र नाश होनेपर भी और शक्तिसे मरनेपर भी राजा शल्यका तेज नाश नहीं हुआ।

तब राजा युधिष्ठिर इन्द्रकी धनुषके समान धनुष लेकर शत्रुओंको इस प्रकार मारने लगे। जैसे गरुड़ सांपको मारे, तब राजा युधिष्ठिरके बाण तुम्हारी सब सेनामें दीखने लगे और योद्धा आंख बन्द करके इधर उधरको भागने लगे। उनके भागनेसे उन्हींकी सेनाका नाश होने लगा, तुम्हारी सेनाके सब वीरोंके शरीरसे रुधिर बहने लगा। राजा शल्यके मरनेके पश्चात् उनका छोटा भाई रथमें बैठकर युधिष्ठिरसे युद्ध करनेको आया और अनेक बाण चलाने लगा। ये भी राजा शल्यहीके समान सब गुणोंसे भरा था उसकी यह इच्छा थी कि अपने मरे हुए भाईका बदला लूं तब धर्म्मराजने शीघ्रता सहित उसके शरीरमें छः बाण मारे फिर एक बाणसे धनुष और एकसे ध्वजा काट दी फिर एक तेजबाणसे कुण्डल और मुकुट सहित उसका शिर काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। रथसे गिरता हुआ उसका शिर ऐसा दीखा जैसे पुण्य नाश होनेपर आकाशसे तारा टूटता है। जब रुधिरमें भीगा शिर रहित उसका शरीर पृथ्वीमें गिरा तब उसके सङ्गके सब वीर इधर उधरको भागने लगे। शल्यके भाईको मरा देख तुम्हारी सेनामें हाहाकार होने लगा और सब लोग प्राणोंकी आशा छो[ड़] रोते और चिल्लाते इधर उधरको भागने लगे। तुम्हारी सेनाकी यह दशा देख महारथ महा[न्] धनुषधारी सात्यकी बाण बर्षाते दौड़े। उनके आते देख कृतवर्म्मा बेडर होकर युद्ध कर[ने] लगे। ये दोनों वृष्णिवंशी वीर उत्तम घो[ड़ों] युक्त रथोंपर बैठकर मतवाले सिंहोंके समा[न] लड़ने लगे। ये दोनों सूर्य्यके समान ते[जस्वी] वृष्णिकुल सिंह वीर तरुण सूर्य्यकी किरणों[के] समान तेज बाण चलाने लगे। हमने उस सम[य] इनके बाण वेगसे उड़ते हुए पक्षियोंके समा[न] आकाशमें देखे तब कृतवर्म्माने सात्यकीके श[री]रमें तीन और घोड़ोंके एक एक बाण मा[रे] फिर एक बाणसे उनका धनुष काट दिया सात्यकीने उस धनुषको फेंककर शीघ्रतासे ए[क] दूसरा श्रेष्ठ धनुष लिया और कृतवर्म्माक[ी] छातीमें दश बाण मारकर रथ काट दिया औ[र] रक्षकोंको भी मारडाला उनको रथ देख[कर] बलवान कृपाचार्य्य दौड़े और अपने रथमें बि[ठा]कर युद्धसे उन्हें हटा दिया। शल्यके मारे जा[ने] और कृतवर्म्माके भागनेपर दुर्य्योधनकी सब से[ना] इधर उधरको भाग गई परन्तु उस समय इत[नी] धूल उठी कि, पाण्डवोंको कोई भागता हु[आ] न दीखा, जब यह दुर्य्योधनकी सब सेना भा[ग] गई और भूमि शान्त होगई तब सबने युद्ध[भू]मिमें किसीको न देखा दुर्य्योधन अपनी सेना[को] भागते देख तथा पाण्डव और धृष्टद्युम्नको र[थ]पर चढ़े अपनी ओर आते देख एकलेही स[ब]से युद्ध करने लगे, उनको लड़ते देख तुम्हा[री] ओरके और वीर भी लौटे तब कृतवर्म्मा दू[सरे] रथमें बैठकर फिर युद्ध करनेको आये, तब मा[र्ग]रथ महाराज युधिष्ठिर बहुत शीघ्रतासे इन[के] चारों घोड़ोंको मारडाला। और कृपाचार्य्य[के] शरीरमें छः बाण मारे, तब अश्वत्थामाने कृ[त]वर्म्माको अपने रथपर बिठलाकर युधिष्ठि[रके] आगेसे हटा दिया तब कृपाचार्य्यने युधिष्ठि[र]

वीरमें छः बाण मारकर इनके घोड़ोंको आठ बाणोंसे मारडाला। हे भरत! हे महाराज! इस प्रकार यह अन्त समयमें घोर युद्ध हुआ। इसका कारण केवल आपकी और आपके पुत्रोंकी दुष्टता है। युधिष्ठिरकी सांगीसे महाधनुर्धारी शल्यको मरा हुआ देख पाण्डवोंके प्रधान वीर सब अपने अपने शङ्ख बजाने और प्रसन्न होकर गर्ज्जने लगे। युधिष्ठिरकी सेनामें चारों ओर बाजे बजने लगे। तब सब वीर उनके पास आकर इस प्रकार प्रशंसा करने लगे, जैसे वृत्तासुरको मारने पर देवतोंने इन्द्रकी स्तुति की थी।

१७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! मद्रराज शल्यके मरनेपर उनकी सेनाके सात सौ, महारथ अपनी सब सेनाके सहित अपने देशको चले, तब राजा दुर्य्योधन एक मतवाले हाथी पर चढ़के उन्हें लौटानेको चले और जाकर कहने लगे। कि आपलोगोंको युद्ध छोड़कर जाना उचित नहीं राजा दुर्य्योधनकी बहुत प्रार्थना सुनकर मद्रदेशी सेना फिर लौटी और पाण्डवोंकी सेनासे फिर घोर युद्ध करने लगी और उन सब वीरोंने यह निश्चय कर लिया कि, केवल युधिष्ठिरहीको मारेंगे, उनके धनुषोंके शब्दसे पृथ्वी कांपने लगी, और युधिष्ठिरके सङ्ग घोर युद्ध करने लगे, राजा शल्यको मरा और युधिष्ठिरको उनकी सेनासे घिरा सुनकर गाण्डीव धनुषपर टङ्कार देते हुए अर्जुन दौड़े, उनके रथके शब्दसे सब दिशा पूरित होगईं तब भीमसेन, अर्जुन, नकुल, सहदेव, पुरुषसिंह सात्यकि, द्रौपदीके पांचोंपुत्र धृष्टद्युम्न और शिखण्डी आदि पाञ्चाल और सोमकवंशी प्रधान वीर युधिष्ठिरको चारों ओरसे घेरकर तुम्हारी सेनासे घोर युद्ध करने लगे। उस समय तुम्हारी सेना इस प्रकार व्याकुल होगई जैसे बड़े मगरके आनेसे समुद्र, उस समय दुर्य्योधनकी ओरके वीर ऐसे कांपते थे, जैसे आंधीके चलनेसे वृक्ष; जैसे कोई छोटी नदी गङ्गाका जल आनेसे इधर उधरको बहने लगता है। ऐसे ही मद्रदेशी सेना घुसनेसे पाण्डवोंकी सेना व्याकुल होगई, थोड़े समयके पश्चात् पाण्डवोंको व्याकुल करके मद्रदेशी महात्मा योद्धा चारों ओरसे पुकारने लगे, कि जिनने हमारे राजाको मारा था, वह राजा युधिष्ठिर इस समय कहां है? उनके वीर चारों भाई, धृष्टद्युम्न, महारथ शिखण्डी, सात्यकि आदि कोई वीर यहां दीखता नहीं। तब युयुधान और महारथ द्रौपदीके पुत्र उनसे युद्ध करनेको दौड़े।

हे राजन्! उन्होंने किसीके रथका पहिया और किसीकी ध्वजा काट डाली। तब तुम्हारी सेना फिर व्याकुल होगई, तब अपनी सेनाको भागते देख राजा दुर्य्योधन शान्तिपूर्व्वक लौटाने लगे। परन्तु उस समय इनकी आज्ञा किसीने न सुनी तब सुबलपुत्र शकुनि बोले, हे दुर्य्योधन! बहुत शोककी बात है। कि हमारे देखते देखते मद्रदेशी योद्धा मरे जाते हैं। हे राजन! तुम्हारे बैठे हुए ऐसा होना उचित नहीं इसलिये हम सब इकट्ठे होकर युद्ध करेंगे, ऐसा हम लोगोंने पहले विचार किया था, तब अब बैठे हुए क्यों देखते हो?

दुर्य्योधन बोले, हमने पहले इस भागती हुई सेनाको बहुत लौटाया परन्तु किसीने हमारी बात नहीं सुनी इसीसे सब सेनाका नाश होरहा है।

शकुनि बोले, युद्धमें यह नियम है, कि क्रोध भरे, वीर राजाकी आज्ञाको नहीं सुनते हैं। इसलिये आप इनपर क्रोध मत कीजिये क्यों कि यह समय क्रोध करनेका नहीं है। इसलिये हम सब लोग, हाथी घोड़े और रथोंको इकट्ठा करके घोर युद्ध करेंगे, ऐसा

हम इन मद्रदेशी वीरोंकी अवश्य रक्षा करेंगे और वे हमारी भी रक्षा करेंगे तब लोग इसी बातको स्वीकार करके अपनी सेनाके पास युद्ध करनेको गये।

सञ्जय बोले, शकुनिका वचन सुनकर राजा दुर्य्योधन अपने सङ्ग बहुत सेना लेकर पृथ्वीको कपाते हुए युद्ध करनेको चले, तब तुम्हारी सेनाके वीर सिंहके समान गर्ज्जते हुए मारो, बांधो, पकड़ो, काटो ऐसा शब्द पुकारने लगे, मद्र देशकी सेनाको आते देखकर धृष्टद्युम्नने अपनी सब सेनाका व्यूह बनाया और राजाको बीचमें करके लड़ने चले, तब क्षणभरमें चारों ओर कटे हुए मद्र देशी वीर दिखाई देने लगे। तब हमारी सेनाभी घोर युद्ध करने लगी। पाण्डवोंकी सेनामें प्रसन्नताका शब्द होने लगा सहस्रों कबन्ध नाचने लगे। सूर्य्यके मण्डलसे बिजली गिरी, चारों ओर टूटे हुए रथ और पहिये दीखने लगे। कहीं मरे हुए घोड़े पड़े थे और कहीं खाली पहिये ही लिये घोड़े दौड़े फिरते थे, कहीं कोई टूटे हुए रथके घोड़ोंको सम्हाल रहा था कहीं कोई किसीको मार रहा था कहीं आधे रथको और कहीं पूरे रथको और कहीं केवल बम लिये ही घोड़े दौड़ रहे थे। कहीं महारथ वीर इस प्रकार रथोंसे गिरते थे जैसे पुण्य नाश होनेसे तारे टूटते हैं। मद्रदेशी वीरोंको मार कर हमारी आती हुई सेनाको पाण्डवोंने देखा तब धनुष टङ्कारते, शङ्ख बजाते और बाण चलाते हुए दौड़े। हमारी सेनाके पास आकर वे सब वीर धनुष टङ्कारते हुए बाण चलाने और गर्ज्जने लगे, वीर शल्य और उनकी सब सेनाको मरा देख पाण्डवोंके बाणोंसे व्याकुल होकर सब सेना फिर भागने लगी, यह सेना महा धनुषधारी पाण्डवोंके बाणोंसे बहुत ही व्याकुल होगई।

१८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! जब महापराक्र वीर शल्य मारे गये, तब तुम्हारे सब पुत्र बची हुई सेना इधर उधर भागने लगी, जै समुद्रमें टूटी नाव पर बैठे बनिये डूबनेके सम घबड़ाते हैं और अपार समुद्रके पार जानेकी इच्छा करते हैं, ऐसे ही वीर शल्यके मरने प तुम्हारी सेनाकी दशा होगई। जैसे सींग टू बैल, दांत टूटे हाथी और सिंहसे डरे हरि अनाथ होकर किसीकी शरण जाना चाहते हैं ऐसे ही तुम्हारी सेना भी व्याकुल होगई, उ समय हमारी ओरके प्रधान वीरोंने दो पहर महात्मा युधिष्ठिरसे हार कर सेनाका प्रब करना विचारा और किसीने युद्ध करने इच्छा न की।

हे राजन्! भीष्म, द्रोणाचार्य्य और कर्ण मरनेसे हमारी ओरके वीरोंको जो भय हु था और जैसी उनकी इच्छा हुई थी, शल मरनेसे भी वैसी ही हुई परन्तु इतना वि हुआ कि महारथ वीर शल्यके मरनेसे किसी अपनी जीतकी आशा न रही क्यों कि सब बड़े वीर मारे गये, और बचे हुए वीर पा वोंके बाणोंसे व्याकुल हो रहे थे, तब कं हाथी, कोई घोड़े और कोई रथोंपर चढ़ इधर उधरको भागे। कोई पैरों ही भा लगे, शल्यके मरनेके पीछे पर्व्वतोंके समान सहस्र हाथी वेगसे भाग गये। उस समय चारों ओरसे तुम्हारी सेना भागती ही दीख थी, उनको उत्साह रहित और भागते पाञ्चाल, सोमक, सृञ्जय और पाण्डव सिं समान गर्ज्जते बाण वर्षाते और शङ्ख बजाते दे भयसे व्याकुल और भागती हुई तुम्हारी सेन देखकर पाण्डवोंकी ओरके वीर प्रसन्न लगे, सब पाञ्चाल पुकार उठे कि अब जग सत्यवादी महाराज युधिष्ठिरका कोई शत्रु नहीं रहा। आज राजा दुर्य्योधन राज लक्ष्मी हीन होगये। अब राजा धृतराष्ट्र दुर्य्योधनक

मरा हुआ सुन मूर्च्छित होंगे, अब सब जगत् महाराज युधिष्ठिरके दल, धनुष और प्रतापको जानेगा, आज मूर्ख धृतराष्ट्र अपने कपटको स्मरण करें, दुर्बुद्धि धृतराष्ट्र विदुरके वचनोंको स्मरण करें, आजसे राजा धृतराष्ट्र महाराज युधिष्ठिरके सेवक होकर रहें और उन दुःखोंको भोगें जो पहले पाण्डवोंने भोगे थे, आज कृष्णकी सम्मतिका फल, अर्ज्जुनके धनुषकी टङ्कार, अस्त्र और बाहुबलको राजा धृतराष्ट्र जानें, आज दुर्य्योधनके मरने पर राक्षसोंको मारनेके समय इन्द्र जो कर्म्म करतेहैं वैसे ही दुःशासनके मारनेमें महात्मा भीमसेनने जो कर्म्म किया था, उसका स्मरण करें। आज शल्यको मरा सुनकर महाराज युधिष्ठिरके बलको जानें, युधिष्ठिरने ऐसा महाघोर कर्म्म किया है, जो देवतोंसे भी नहीं होसक्ता, भीमसेनने इस युद्धमें जो कर्म्म किया सो दूसरेमें करनेकी सामर्थ नहीं थी. आज सब वीरोंके सहित वीर शकुनिको मरा सुन राजा धृतराष्ट्र जानेंगे कि नकुल और सहदेव कैसे बलवान हैं? जहां राजा तो साक्षात् युधिष्ठिर, सेनापति साक्षात् धृष्टद्युम्न, आज्ञा करनेवाले साक्षात् जगत स्वामी श्रीकृष्ण आश्रय देनेवाले धर्म्म युद्ध करनेवाले, अर्ज्जुन, भीमसेन, नकुल, सहदेव, सात्यकि, द्रौपदीके पांचो पुत्र और महारथ शिखण्डी हैं उनपर विजय क्यों न हो।

साक्षात् भीष्म द्रोणाचार्य्य, कर्ण, मद्रराज शल्य आदि [illegible] महाबलवान राजा और वीरोंको महाराज युधिष्ठिरको छोड़ और [illegible] जो सदा ही श्रीकृष्णको आश्रय [illegible] हैं. उनके सिवाय सब और [illegible] कौन [illegible] है? ऐसा कहते [illegible] तुम्हारी सेनाके [illegible] और [illegible] सब सेनाको मार [illegible] और [illegible] अपनी सेनाको भीमसेनके डरसे भागते देख राजा दुर्य्योधन अपने सारथीसे बोले, जैसे समुद्र तटके पर्व्वतको नहीं लांघ सक्ता ऐसे ही जब मैं धनुष लेकर युद्ध करूंगा। तब भीमसेन जीत नहीं सकेंगे, इसलिये हमारे रथको सेनाके आगे खड़ाकर दो देखो हमारी सेना चारों ओर भागी चली जाती है। ये देखो कैसी धूल उड़ रही है, ये पाण्डवोंकी ओरके वीर कैसे गरज रहे हैं। जिनसे हमारी सेना डर रही है, इसलिये तुम व्यूहकी जङ्घाकी रक्षा करते हुए धीरे धीरे हमारे घोड़ोंको हांको हम जब युद्ध करेंगे, तब पाण्डव रुक जायगे और हमारी सेना फिर युद्ध करनेको लौटेगी।

राजाके वीर और महात्माओंके समान वचन सुन सारथीने सोनेके जालवाले, घोड़ोंको धीरे धीरे हांका राजाको चलते देख अनेक देश और अनेक नगरोंमें रहनेवाले इक्कीस सहस्र पैदल युद्धको लौटे, इन सबकी यह इच्छा थी कि हमारा यश जगत्में फैले, उस समय दोनोंके वीर फिर घोर और भयानक युद्ध करने लगे। तब पराक्रमी भीमसेन और धृष्टद्युम्न चतुरङ्गिणी सेना लेकर उस सेनासे युद्ध करनेको चले और सबको मारने लगे। तुम्हारी ओरके अनेक महा वीर केवल भीमसेन हीसे लड़ने लगे। कोई स्वर्ग जानेके लिये कूदते गर्ज्जते और उछलते योद्धा भीमसेनसे युद्ध करने लगे। सब तुम्हारे पुत्र भीमसेनको मारनेके लिये केवल उन्हीसे लड़ने लगे। जैसे मैनाक पर्व्वत चारो ओरसे समुद्रकी तरङ्ग लगनेसे भी अपने स्थानसे नहीं चलता ऐसे ही चारो ओरसे पैदलोंसे घिरने और अनेक शस्त्र लगनेसे भी भीमसेन अपने स्थानसे नहीं हटे तब अनेक वीरोंने महात्मा भीमसेनको आगे पकड़नेका विचार किया तब भीमसेनने महाक्रोध किया और गदा लेकर रथसे [illegible] उनको मारने लगे [illegible] तुम्हारी सेनाका इस प्रकार नाश करने लगे। जैसे यमराज अपने दण्डसे प्रजाका

नाश करते है। इस प्रकार थोड़े ही समयमें पुरुषसिंह भीमसेन और धृष्टद्युम्नने इक्कीस सहस्र पैदलोंको मारडाला। रुधिरमें भीगे पृथ्वीमें पड़े मरे पैदल ऐसे दीखने लगे जैसे आंधीसे टूटे हुए कचनारके वृक्ष, ये सब अनेक प्रकारके भूषण और शस्त्रधारी वीर अनेक जाति और अनेक देशोंके थे, उनके मरनेसे उनके झण्डे और पताका सब टूट गए तब वह सेना बहुत भयानक दीखने लगी। उधर युधिष्ठिरभी प्रधान सेना सङ्ग लेकर दुर्य्योधनसे युद्ध करने चले, जैसे समुद्र पर्व्वतको नहीं नांघ सक्ता ऐसे ही पाण्डवोंका कोई महारथ दुर्य्योधनको न जीत सका, सब पाण्डव इकट्ठे होनेपर भी दुर्य्योधनको न जीत सके यह देखकर हम लोग आश्चर्य्य करने लगे। अपनी भागती हुई और बाणोंसे व्याकुल थोड़ी दूर गई हुई सेनासे दुर्य्योधन बोले, हमें ऐसा कोई देश या पर्व्वत नहीं दीखता जहां भागकर तुम लोग पाण्डवोंके हाथसे बच जाओगे, इसलिये भागनेसे क्या होगा? अब पाण्डवोंकी सेना बहुत थोड़ी रह गई है, तथा कृष्ण और अर्ज्जुन घावोंसे व्याकुल होगये हैं। यदि इस समय हम लोग मिलकर युद्ध करें तो अवश्यही हमारी विजय होगी, यदि तुमलोग भाग जाओगे तो तुम्हारे वैरी पाण्डव वहां भी तुमको मारहींगे, इसलिये, युद्धमें मरना ही अच्छा है। जितने क्षत्री यहां है सो सब हमारे बचनोंको सुने "यमराज" कादर और वीर सबहीको मारता है ऐसा बिचारकर ऐसा कौन मूर्ख क्षत्री होगा जो युद्धमें मरनेकी इच्छा न करे? हम लोगोंको यही अच्छा होगा कि क्रोध भरे भीमसेनके आगे खड़े होकर युद्ध करें? मनुष्यको घरमें पड़कर भी अवश्यही मरना होगा, इससे क्षत्रियोंको युद्धहीमें मरना अच्छा है सो तुम लोग क्षत्रियोंके धर्मानुसार युद्ध करो क्षत्रियोंका यही धर्म्म है, कि युद्धमें मरे क्यों कि युद्धमें शत्रुको मारनेसे राज्य और मरनेसे स्वर्ग मिलता है क्षत्रियोंके लिये युद्धमें मरनेके सिवाय और कोई सुख नहीं है, राजाके वचन सुन उनकी प्रशंसा करके सब क्षत्री फिर पाण्डवोंसे युद्ध करनेको लौटे। पाण्डवलोग भी उनको आते देख अपनी सेनाका व्यूह बनाकर विजयके लिये क्रोधमें भरकर दौड़े अर्ज्जुन भी तीन लोकोंमें विख्यात गांडीव धनुषपर टङ्कार देते हुए युद्ध करनेको चले। नकुल, सहदेव और महारथ सात्यकि बहुत प्रसन्न होकर शकुनिकी सेनाकी ओर चले।

१८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! जब यह सब सेना लड़नेको उपस्थित होगई तब म्लेच्छदेशका राजा महापराक्रमी शाल्व पांडवोंकी सेनासे युद्ध करनेको खड़ा हुआ राजा शाल्व पर्व्वतके समान भारी और ऐरावतके समान मतवाले शत्रुनाशक हाथी पर बैठकर युद्ध करनेको आये जो हाथी भद्रक बंशमें उत्पन्न हुआ था, राजा दुर्य्योधन सदा ही जिसकी सेवा करते थे, जो सदा युद्ध करनेवाले, हाथियोंके आगे रहता था, उस शास्त्र जाननेवाले, सेवकोंसे कसे हुए हाथीपर चढ़कर राजा शाल्व युद्ध करने को आया। उस हाथीपर चढ़े राजा शाल्व ऐसे दीखते थे, जैसे उदयाचलपर प्रातःकालके सूर्य्य। तब वह हाथी राजा शाल्वके सहित पाण्डवोंकी ओर चला राजा शाल्व अपने बज्रके समान बाणोंसे पाण्डवोंके वीरोंको मारने लगे।

हे राजन्! उस समय पाण्डवोंके योद्धा राजा शाल्वके बाणोंमें अन्तर नहीं देखते थे, अर्थात किसीको यह नहीं जान पड़ता था, कि ये कब बाण चढ़ाते, कब खींचते और कब छोड़ते हैं। जैसे ऐरावत पर चढ़े इन्द्रके बाणोंसे दानव व्याकुल होगये थे, ऐसे ही पाण्डवोंके वीर राजा

शाल्वसे व्याकुल होगये। उस समय शाल्वका एक हाथी पाण्डव, सोमक और सृञ्जय वंशी क्षत्रियोंको अनेक रूपसे दिखाई देने लगा। अर्थात् जिधर जो देखता था, उसे चारों ओर ऐरावतके समान घूमता हुआ शाल्वका हाथी ही दीखता था, उस समय हमारे शत्रुओंकी सेना चारों ओर भयसे व्याकुल भागती हुई दीखती थी, कोई युद्धमें खड़ा होनेकी इच्छा नहीं करता था। उस समय राजा शाल्वने पाण्डवोंकी सेनाके वीरोंको भगा दिया, और अपने हाथीको चारों ओर घुमाने लगे। पाण्डवोंकी सेनाको भागते देख तुम्हारे सब प्रधान वीर राजा शाल्वकी प्रशंसा करने लगे। और चन्द्रमाके समान निर्म्मल शङ्ख बजाने लगे। इस कौरवोंके प्रसन्न शब्दको सुनकर पाण्डवोंके प्रधान सेनापति पाञ्चालदेशके राजपुत्र वीर धृष्टद्युम्नको ऐसा क्रोध हुआ कि क्षमा न कर सके, तब वीर धृष्टद्युम्न शीघ्रता सहित शाल्वके हाथीकी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे जम्भासुर इन्द्र सहित ऐरावतकी ओर दौड़ा था, राजा द्रुपदके बेटे और पाण्डवोंके सेनापतिको अपनी ओर आते देख वीर शाल्वने अपना हाथी उनकी ओर दौड़ाया, सेनापतिने उस हाथीको अपनी ओर आते देख जलती अग्निके समान तेज विषमें बुझे अत्यन्त तेज तीन बाण मारे, फिर महात्मा धृष्टद्युम्नने पांच सौ तेज बाण हाथीके सिरमें मारे, तब वह हाथी बाणोंसे व्याकुल होकर युद्धसे भागा। परन्तु राजा शाल्वने कोड़े और अङ्कुशसे अपने भागते हुए हाथीको फिर पाञ्चालदेशके स्वामी धृष्टद्युम्नकी ओर लौटाया। वीर धृष्टद्युम्न अपने रथकी ओर हाथी आते देख शीघ्रता सहित उससे उतर-कर गदा लेकर रथसे कूदे उस हाथीने धृष्ट-द्युम्नके रथको मारडाला और घोड़ोंके सहित [illegible] उठाकर फेंक दिया और [illegible] [illegible] धृष्टद्युम्नको रथहीन और हाथीके डरसे व्याकुल देख भीमसेन, सात्यकी और शिखण्डी वेगसे दौड़े उन सब वीरोंने उस हाथीकी ओर अनेक बाण चलाये तब वह व्याकुल होकर चक्कर खाने लगा। तब राजा शाल्व इस प्रकार बाण चलाने लगे। जैसे सूर्य्य अपनी किरणोंको जगत्में फैला देता है। तब पाण्डवोंकी ओरके अनेक वीर मरने लगे। तब सेनापति धृष्टद्युम्नके सहित सब वीर शाल्वका पराक्रम देख घबड़ाने लगे। और हाथीके रोकनेका उपाय करने लगे। तब महापराक्रमी शत्रुनाशन वीर धृष्टद्युम्न पर्व्वतके शिखरके समान भारी गदा लेकर और सावधान होकर वेगसे हाथीकी ओर लौटे, तब काले मेघके समान मद बरसते और पर्व्वतके समान भारी शरीरवाले, हाथीके वीर धृष्टद्युम्नने एक गदा, मारी उस गदाके लगनेसे हाथीका सिर फट गया मुंहसे रुधिर बहने लगा और इस प्रकार पृथ्वीमें गिरा जैसे भूकम्प होनेसे पर्व्वत टूटकर गिर पड़ता है। उस हाथीके गिरते ही तुम्हारी सेनामें हाहाकार होगया, उसी समय सात्यकीके बाणसे राजा शाल्वका सिर भी कटकर गिर गया, वह हाथी, राजा शाल्वके सहित इस प्रकार पृथ्वीमें गिरा जैसे इन्द्रका वज्र लगनेसे पर्व्वत टूट पड़ता है।

२० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! वीर राजा शाल्वके मरनेपर तुम्हारी सेना भागने लगी। और इस प्रकार कांपने लगी, जैसे आंधी चलनेसे वृक्ष। अपनी सेनाको भागते देख महावीर महाबल-वान कृतवर्म्मा पाण्डवोंसे युद्ध करनेको चले, कृत-वर्म्माको बाण चलाते और पर्व्वतके समान खड़ा देख तुम्हारी सेना फिर लौटी, हे महाराज! तब कौरव और पाण्डवोंका फिर घोर युद्ध होने लगा। और दोनोंने मृत्युको आगे करलिया,

इस समय कृतवर्म्माने विचित्र युद्ध किया। क्यों कि एकलेही ने पाण्डवोंकी सब भारी सेनाको रोक दिया। तब दोनों ओरके वीर प्रसन्न होकर गर्ज्जने और युद्ध करने लगे। उनके गर्ज्जनेका शब्द आकाशतक फैल गया, अपनी सेनाको व्याकुल देख सिनीके पोते सात्यकी दौड़े उन्होंने आते ही अपने सात बाणोंसे महा बलवान रण्डक्षेम धूर्त्तिको मारडाला। उनको अपनी ओर आते और बाण वर्षाते देख कृतवर्म्मा वेगसे दौड़े, तब ये दोनों वृष्णि-बंशी वीर तेज बाण चलाते हुए घोर युद्ध करने लगे। तब पाण्डव और पाञ्चाल आदि सब वीर इन दोनोंका युद्ध देखने लगे। तब वे दोनों मतवाले हाथियोंके समान प्रसन्न होकर बाण बर्षाने लगे दोनों अपने अपने रथोंकी अनेक प्रकारकी गतियोंसे घूमते थे, कभी बाणोंमें छिप जाते थे और कभी प्रगट होजाते थे, उस समय हमने दोनों यदुवंशी वीरोंके बाण आकाशमें टीड़ीदलके समान घूमते देखे, तब कृतवर्म्माने सात्यकीके शरीरमें एक बाण मारा और चार बाणोंसे चारों घोड़ोंको मारडाला। उस बाणके लगनेसे सात्यकीको ऐसा क्रोध हुआ जैसे अङ्कुश लगनेसे हाथीको तब उन्होंने कृतवर्म्माके आठ बाण मारे तब कृतवर्म्माने भी कानतक धनुष खींचकर तीन बाण सात्य-कीको मार एकसे धनुष काट दिया। तब सात्यकीने उस धनुषको फेंककर शीघ्र दूसरा धनुष लेकर बाण चढ़ाया, तब महाबलवान महापराक्रमी सात्यकीने अपने धनुष कटनेसे महाक्रोध करके कृतवर्म्माकी ओर दौड़े, तब दश तेज बाणोंसे कृतवर्म्माके सारथी और घोड़ोंको मरा देख कृतवर्म्माने सात्यकीके मार-नेके लिये भाला चलाया तब सात्यकीने उस भालेको मार्गहीमें काटकर चूरा कर दिया तब कृतवर्म्मा घवड़ाने लगे। तब सारथी और घोड़े रहित रथपर बैठे कृतवर्म्माकी छातीमें एक तेज बाण मारा उस बाणके लगते ही कृतवर्म्मा रथसे नीचे उतरे उनको रथहीन और सात्यकीसे हारा हुआ देख तुम्हारे सब यो[illegible] डरने लगे। विशेष कर राजा दुर्य्योधन घबड़ा गये, कृतवर्म्माको रथहीन देखकर कृपाचार्य दौड़े और उन्हें अपने रथपर विठलाकर स[illegible] धनुषधारियोंके देखते देखते युद्धसे हटा ले गये कृतवर्म्माको भागते और सात्यकीको युद्धमें खड़ा देख तुम्हारी सेना फिर भागने लगी परन्तु ऐसी धूल उड़ी कि पाञ्चाल सेना तुम्हारी भागती सेनाको देख न सकी दुर्य्योधनको छोड़ और सब सेना भागने लगी। अपनी सेनाको भागते देख राजा दुर्य्योधनको महाक्रोध हुआ और उन एकलेहीने पाचो पाण्डव, धृष्टद्युम्न शिखण्डी, द्रौपदीके पाचों पुत्र, सब पाञ्चाल सब सृञ्जय, सब सोमक और सब कैकयोंको रोक दिया उस समय एकले महापराक्रमी दुर्य्योधन सावधान होकर घोर युद्ध करने लगे जैसे यज्ञशालामें मन्त्रोंसे दी हुई आहुति जलाती हुई अग्नि चारों ओर प्रकाशित दीखती है ऐसे ही उस युद्धमें राजा दुर्य्योधन दीखने लगे। उस समय उनके आगे कोई वीर इस प्रकार नहीं ठहरता था। जैसे यमराजके आगे मनुष्य। तब थोड़े ही समयमें कृतवर्म्मा दूसरे रथमें बैठकर युद्धमें आगये।

२१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्। उस समय महा वीर दुर्य्योधन रथमें बैठे ऐसे दीखते थे, जैसे शिव, राजा दुर्य्योधन शत्रुओंपर इस प्रकार बाण चला रहे थे, जैसे मेघ पर्व्वतोंपर जल बरसाते हैं, सब युद्धभूमिमें दुर्य्योधनके बाण ही बाण देखने लगे उस समय पाण्डवोंकी सेनामें कोई हाथी, घोड़ा, रथ, मनुष्य ऐसा न बचा था जिसके शरीरमें दुर्य्योधनका बाण न लगा

…उस समय हम जिस योद्धाको देखते थे उसे ही दुर्य्योधनके वाणोंसे व्याकुल पाते थे, जैसे चलती हुई सेनाकी धूलसे मनुष्य छा जाते हैं तैसे ही दुर्य्योधनके वाणोंसे छागये थे, उस समय महाधनुषधारी शीघ्र वाण चलानेवाले राजा दुर्य्योधनके वाणोंसे पृथ्वी भर गई। राजा दुर्य्योधन एकले ही सबसे लड़ते रहे यह देखकर हम सब लोग आश्चर्य करने लगे, दुर्य्योधनने युधिष्ठिरके सौ, भीमसेनके सत्तर, सहदेवके पांच, नकुलके चौसट, धृष्टद्युम्नके पांच, द्रौपदीके पुत्रोंके सात सात और सात्यकिके तीन वाण मारे फिर एक वाणसे सहदेवका धनुष काट दिया तब प्रतापी सहदेवने उस धनुषको फेंक कर शीघ्रता सहित दूसरा धनुष लेकर दुर्य्योधनके शरीरमें दश तेज वाण मारे ऐसे ही नकुल भी राजा दुर्य्योधनके शरीरमें नौ वाण मार सिंहके समान गर्ज्जने लगे, सात्यकिने एक, द्रौपदीके पुत्रोंने तिहत्तर, धर्मराज युधिष्ठिरने पांच और अस्सी वाण भीमसेनने मारे और भी अनेक वीरोंने चारों ओरसे दुर्य्योधनको वाणोंसे छा दिया परन्तु दुर्य्योधन कुछ न घबड़ाये और शीघ्र सहित सावधान होकर वाण चलाते रहे उस समय राजा दुर्य्योधन ऐसा काम कर रहे थे, जैसा कोई मनुष्य नहीं कर सका, किसीकी यह शक्ति नहीं थी, कि उनकी ओरको देख सके [illegible] भी सावधान होकर राजा दुर्य्योधनकी ओर दौड़े तब दोनों ओरसे महा-घोर युद्ध होने लगा, जैसे वर्षाकालमें बढ़ते हुए समुद्रका शब्द होता है, तैसे ही सेनाका शब्द होने लगा, तब इधरसे भी अनेक वीर [illegible] करने लगे, अश्वत्थामा ने सात्यकिको रोक दिया, उस समय [illegible] नहीं जान पड़ता था [illegible] महापराक्रमी [illegible] और अश्वत्थामा एक दूसरेके मारनेका यत्न करने लगे, दोनोंकी धनुषके शब्दसे सब मनुष्य डरने लगे, उसी समय शकुनि युधिष्ठिरकी ओर वाण चलाने लगे और महाराजके चारों घोड़ोंको मारकर सब सेनाका उत्साह बढ़ानेके लिये सिंहके समान गर्ज्जे, तब राजा सहदेवके रथपर बैठकर युद्धसे चले गये, फिर दूसरे रथमें बैठकर महाराजने शकुनिके शरीरमें नौ वाण मारकर पांच और मारे, और सिंहके समान गर्ज्जने लगे, तब शकुनि और युधिष्ठिरका घोर युद्ध होने लगा। उस युद्धको देखकर सिद्ध, चारण और गन्धर्व्व दोनोंकी प्रशंसा करने लगे। महावीर शकुनिके पुत्र उलूक महापराक्रमी नकुलकी ओर दौड़े और नकुल भी उनकी ओर दौड़े, दोनों उत्तम कुलमें उत्पन्न हुए महारथ बली घोर युद्ध करने लगे। वे दोनों एक दूसरेके वाणोंको काटकर अपनी अपनी विजयका यत्न करने लगे, उधर सात्यकि और कृतवर्म्मा भी बली और इन्द्रके समान युद्ध करने लगे। दुर्य्योधनने एक वाणसे धृष्टद्युम्नका धनुष काट दिया, और उनके शरीरमें अनेक वाण मारे, धृष्टद्युम्नने भी दूसरा धनुष लेकर दुर्य्योधनसे घोर युद्ध किया, जैसे दो मतवाले, हाथी घोर युद्ध करते हैं। ऐसे ही इन दोनोंका भयानक युद्ध हुआ।

जैसे इन्द्रियोंके सङ्ग जीव लड़ता है। ऐसे ही कृपाचार्य्य और द्रौपदीके पुत्रोंका महाघोर युद्ध हुआ, इस युद्धमें कुछ मर्य्यादा न रही जैसे मूर्खको इन्द्री व्याकुल कर देती है। तैसे ही उन पांचोंने कृपाचार्य्यको व्याकुल कर दिया, परन्तु कृपाचार्य्य भी एकले ही उस पांचोंके सङ्ग विचित्र युद्ध करते रहे, जैसे जीव इन्द्रियोंको जीतनेका उपाय करता है, तैसे ही कृपाचार्य्य भी उनके जीतनेका उपाय करने लगे। पैदल पैदलोंसे रथी रथियोंसे, हाथीपर चढ़े हाथी पर चढ़ोंसे और घुड़चढ़े घुड़चढ़ोंसे घोर युद्ध करने लगे।

हे राजन्! इस प्रकार सब ओर घोर ओर विचित्र युद्ध हुआ, कोई वीर शत्रुके पास जाकर गर्ज्जने लगा और कोई किसीको मारने लगा। घोड़ों और पैदलोंके दौड़नेसे ऐसी धूल उड़ी कि दिन छोंमें रात्रिसी दीखने लगी। रथोंके पहियोंके वायु और हाथियोंके श्वाससे उड़कर धूल सूर्य्यतक पहुंच गई, उस धूलसे सूर्य्यका तेज घट गया, सब भूमि और वीर भी छागये। फिर थोड़े समयके पश्चात् वीरोंका रुधिर बहनेसे सब धूल बैठ गई, जब यह घोर धूल शान्त हुई, तब मैंने फिर देखा कि चारों ओर घोर युद्ध होरहा है। हे राजेन्द्र! उस दो पहरके समयमें चारों ओर वीरोंके कवच ही पड़े दीखते थे, जैसे जलते हुए बनमें बांस चटकनेका शब्द होता है। ऐसे ही बाणोंके चलनेका शब्द सुनाई देता था।

२२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! ऐसा घोर युद्ध होनेसे तुम्हारी सेना इधर उधर भागने लगी। तब राजा दुर्य्योधन बहुत यत्नसे उनको रोक कर पाण्डवोंकी सेनासे युद्ध करने लगे। तब तुम्हारी ओरके और भी वीर लौटे और घोर युद्ध करने लगे। यह युद्ध देवासुर संग्रामके समान हुआ उस समय दोनों ओरसे कोई भागा नहीं, उस समय दोनों ओरके वीर केवल अनुमान और चिन्होंसे युद्ध कर रहे थे, अर्थात् कोई किसीको पहचान नहीं सक्ता था, तब राजा युधिष्ठिरको महाक्रोध हुआ, और राजोंके समेत तुम्हारे पुत्रोंको जीतनेके लिये, कृपाचार्य्यके शरीरमें तीन बाण मार कर चार बाणसे कृतबर्म्माके चारो घोड़ोंको मारडाला। तब यशस्वी कृतबर्म्माको अश्वत्थामाने अपने रथपर चढ़ा लिया कृपाचार्य्यने भी युधिष्ठिरके आठ बाण मारे, तब राजा दुर्य्योधनने युधिष्ठिरसे लड़नेके लिये सात सौ रथ भेजे, वे वायु और मनके समान तेज चलनेवाले रथ वीरोंके सहित युधिष्ठिरकी ओर दौड़े ता[...] उनमें बैठे वीर युधिष्ठिरको घेरकर बाण चलाने लगे। राजा युधिष्ठिर उनके बीचमें ऐसे छि[प] गये, जैसे सूर्य्य मेघोंमें। राजाको घिरा देख शिखण्डी राजाकी रक्षाके लिये दौड़े तब फिर पाञ्चाल और कौरवोंका घोर युद्ध होने लगा। रुधिर बह चला, पाञ्चाल और पाण्डवोंने थोड़े ही समयमें उन सात सौ रथोंका नाश कर दिया, और तुम्हारी सेनाकी ओर दौड़े वैसा उस समय कौरव और पाण्डवोंका युद्ध हुआ ऐसा न सुना था और न देखा था, इस मर्य्यादा रहित घोर युद्धमें दोनों ओरके वीरोंका नाश होने लगा, दोनों ओरसे धनुषधारी गर्ज्जने लगे। शङ्ख बजाने लगे और धनुषोंपर टङ्कार देने लगे। कहीं वीरोंके शरीर कटने लगे। अपनी अपनी बिजयके लिये वीर दौड़ने लगे। इस घोर युद्धमें पृथ्वी भरकी अनेक युवती स्त्री बिधवा हुई, तब जगत्का नाश करनेवाले अनेक घोर उत्पात हुए फिर उस पवित्र कुरुक्षेत्रमें क्षत्रीलोग सावधान होकर युद्ध करने लगे।

हे राजन्! स्वर्गमें जानेकी इच्छावाले, क्षत्री चारों ओर गर्ज्जने लगे। उस समय बन और पर्व्वतोंके सहित भूमि हिलने लगी; आकाशसे जलती हुई दण्डके समान बिजली गिरी आकाशसे सूर्य्यके मण्डलकी ओरकी बिजली गिरने लगी। भयानक वायु चलने लगा, बालू बर्षने लगी, हाथियोंकी आंसू बहने लगीं। और सब कांपने लगे। इन सब शकुनोंका निरादर करके वीर क्षत्री फिर भी युद्ध करने लगे और सावधान होकर शत्रुओंको मारने लगे। उस रमणीय कुरुक्षेत्रमें स्वर्ग जानेको इच्छावाले क्षत्री घोर युद्ध करने लगे। तब गान्धारराज सु[ब]लके पुत्र अपने प्रधान वीरोंसे बोले, तुम सब पाण्डवोंके आगे खड़े हुए युद्ध किये जाव[...]

और मैं पीछेसे जाकर नाश किये देता हूं, शकुनिके ऐसे वचन सुन हमारी ओरके मद्र-देशीय योद्धा प्रसन्न होकर गर्ज्जने और हंसने लगे। तब पाण्डवोंकी ओरके योद्धा भी मद्र-देशीय वीरोंके ऊपर घोर बाण वर्षाने लगे। तब वे सब इधर उधरको भाग चले अपनी सेनाको भागते देख बलवान शकुनि क्रोधकर बोले, अरे अधर्मियों तुम लोग युद्ध छोड़कर कहां भागे जाते हो? युद्ध करो भागनेसे क्या होगा?

हे महाराज! उस समय घोर प्राससे युद्ध करनेवाले दस सहस्र वीर शकुनिके सङ्गमें थे, उसी सेनाको सङ्गमें लेकर वीर शकुनि पाण्डवोंके पीछेसे जाकर बाण वर्षाने लगे तब वह पाण्डवोंकी सेना इस प्रकार फट गई जैसे वायु लगनेसे मेघ फट जाते हैं. तब राजा युधिष्ठिर चारों ओरको देखने लगे। फिर महाबलवान सहदेवसे बोले, हे पाण्डव! यह दुर्बुद्धि सुबल-पुत्र सावधान होकर हमारी सेनाको पीछेसे मार रहा है, तुम बहुत शीघ्र द्रौपदीके पुत्रोंके सहित दौड़ो और इसको मारडालो। मैं पाञ्चाल वीरोंके सहित इस रथ सेनाको नाश कर दूंगा. हमारी आज्ञासे तुम्हारे सङ्ग सब हाथी सब घोड़े और तीन सहस्र पैदल जाय और तुम हमारी आज्ञासे शकुनिको मारो।

महाराजकी आज्ञा सुनते ही धनुषधारी योद्धोंके सहित सात सौ हाथी पांच सहस्र घोड़े, तीन सहस्र पैदल, पांचो द्रौपदीके पुत्र और बलवान सहदेव महायोद्धा शकुनिसे युद्ध करनेको चले। इनको आते देख प्रतापवान शकुनि भी पाण्डवोंके सामनेसे हटकर पीछेसे सहदेवकी सेनाका नाश करने लगा। तब पाण्डवोंके वीर [illegible] हटके शकु-निकी सेनामें घुसे और भी [illegible] शकुनिको [illegible] लगे।

हे [illegible] बड़ा घोर [illegible] हे महाराज! यह घोर युद्ध आपकी उस कपट सम्मतिहीका फल हुआ दोनों ओरसे धनुषके रोदोंके शब्द होने लगे, एक वीर दूसरेको मारने लगा, उस समय कोई अपने और परायेको नहीं पहचानता था, हे भरतकुल सिंह! वीरोंके हाथसे छूटी हुई सांगी आकाशमें इस प्रकार छूटती थी, मानों सहस्रों बिजली गिर रही हैं, चमकते और गिरते हुए सहस्रों खड्गोंसे आकाशकी अद्भुत शोभा दीखती थी, हे भरतकुल सिंह! आकाशमें चलते हुए प्रास ऐसे जान पड़ते थे मानो सहस्रों जुगुनूं चमक रहे हैं, सहस्रों घोड़े रुधिरसे भीगे वीरोंके सहित पृथ्वीमें गिरने लगे, किसीके मुखसे रुधिर गिरने और कोई पिसकर मर गये। हे महाराज! उस समय दोनों सेना धूलसे भर गई और चारों ओर वीर इधर उधरको घबड़ाकर भागने लगे। कोई वीर पृथ्वीमें गिरा और किसीके मुखसे रुधिर बहने लगा, कोई महापराक्रमी वीर दूसरे वीरको बाल पकड़कर घोड़ेपरसे खींचने लगा, कोई मल्ल युद्ध करने लगा, कोई घोड़ेसे गिरकर मरगया, कोई अभिमानी वीर पृथ्वीमें गिरकर मर गया, उस समय कटे हुए शिर और रुधिरसे भीगे हाथोंसे पृथ्वी भर गई, तब किसी तेज घोड़ेकी भी यह शक्ति न हुई कि थोड़ी दूर भी चल सके, सब शस्त्रधारी रुधिरसे भीग गये, यह घोर युद्ध थोड़े समय तक होता रहा तब शकुनि बचे हुए छः सहस्र घुड़ चढ़ोंको लेकर युद्धसे भाग गये, तब पाण्डवोंके भी छः सहस्र घुड़चढ़े थकी हुई शकु-निकी सेनाके पीछे दौड़े, तब रुधिरमें भीगे प्राणकी आशा छोड़ अपने वीरोंको पीछे दौड़ते देख सहदेव बोले, इस समय रथोंपर बैठे वीर युद्ध नहीं करसक्ते और हाथी सेनाको तो कया ही क्या है? राजा शकुनि युद्ध छोड़कर भाग गये, अब लौटकर नहीं आवेंगे इसलिये हमारे सङ्गके रथ रथ सेनामें और हाथी हाथी सेनामें मिल-

जांय, सहदेवके बचन सुन द्रौपदीके पांचो पुत्र मतवाले, हाथियोंको सेनाको लेकर महारथ पाञ्चाल राजा धृष्टद्युम्नकी ओरको चले गये। सहदेव भी शकुनिको सेनाको धूलसे भरो देख एकले राजा युधिष्ठिरके पास चले गये। सब वीरोंको गया हुआ देख, शकुनि क्रोध करके धृष्टद्युम्नकी सेनाको बाईं ओरसे काटने लगे, तब धृष्टद्युम्नको सेनासे घोर युद्ध होने लगा, दोनों ओरसे खड्ग चलने लगे, और वीरोंके शिर काट काटकर गिरने लगे और धनुषोंसे बाण छूटनेका ऐसा शब्द होने लगा, जैसे तालके वृक्ष टूटनेसे होता है, शस्त्रोंके साथ कहीं हाथ और कहीं पैर कटकर गिरने लगे और कहीं ऐसा घोर शब्द होने लगा कि, सुनकर रोंए खडे होने लगे। जैसे मांसके लिये एक पक्षी दूसरेको मारता है, ऐसे ही वीर लोग भी भाई, पुत्र और मित्रोंको मारने लगे, कहीं परस्पर लड़ते हुए वीर हम पहले तुझे मारेंगे हम पहले तुझे मारेंगे; ऐसा शब्द करने लगे, कहीं सहस्रों वीर मरकर घोड़ोंसे गिरने लगे और कहीं घोड़ेही गिरने लगे। कहीं अत्यन्त तेज चलनेवाले घोड़े पृथ्वीमें गिर कर तड़फने लगे। कहीं हाहाकार करते हुए मनुष्य गिर गये, कहीं वीरोंके मर्म्मस्थानोंको काटते हुए शक्ति और खड्गोंके घोर शब्द होने लगे।

हे राजन्! ऐसे तुम्हारी ओरके सब वीर शस्त्रोंके घाव और प्याससे व्याकुल होकर इधर उधरको भागने लगे। अनेक वीर रुधिरकी गन्धिसे मतवाले होकर अपने और परायेको भी मारने लगे। उस समय जो जिसके आगे आगया, उसने उसीको मारडाला। हे राजन्! उस समय अनेक विजय चाहनेवाले, क्षत्री, शस्त्रोंसे मरकर पृथ्वीपर गिर गये। स्यार, गिद्ध और भेड़िये बहुत प्रसन्न हुए, उस दिन तुम्हारे पुत्रके देखते देखते तुम्हारी सेनाका बहुत नाश हुआ। उस रुधिरसे भीगे और मरे हुए शरीरोंसे ढकी पृथ्वीको देखकर कादर लोग डरने लगे, दोनों ओरको सेना खड्ग, पट्टिश और परिघोंसे कटकर पृथ्वीमें गिर गई, तो भी योद्धा लोग बलके अनुसार शस्त्र चलाते रहे और कहते रहे कि जबतक हमारा प्राण रहेगा, तबतक शक्ति भर युद्ध करेंगे। वीरोंके घावसे रुधिर बहने लगा, कहीं कबन्ध (रुण्ड) चमकता खड्ग हाथमें लिये हुए रुधिरमें भीगे कटे शिरको हाथमें लिये घूमने लगे। इस प्रकार सहस्रों कबन्ध होगये, तब रुधिरकी गन्धिसे वीर भी घबड़ाने लगे। जब मार काटका शब्द कम हुआ, तब शकुनिने देखा कि मेरे सङ्ग बहुत थोड़े घुड़चढ़े रह गये। परन्तु शकुनि उतने ही वीरोंको लेकर धृष्टद्युम्नकी भारी सेनाकी ओरको चले पाण्डवोंके वीर भी हाथी, घोड़े और रथोंपर चढ़कर और पैदल भी शकुनिकी ओर दौड़े। धृष्टद्युम्नने शकुनिकी सब सेनाको अपनी सेनाके बीचमें लेलिया और युद्ध समाप्त करनेके लिये, तुम्हारी सेनाके काटने लगे। तुम्हारे वीर भी अपने चारों ओर पाण्डवोंकी सेनाको देख रथ घोड़े और हाथियोंपर चढ़कर अनेक प्रकारके शस्त्र चलाने लगे। कोई कोई पैदल मुक्के और दांतोंसे शत्रुओंको मारने लगा। कोई शस्त्र नष्ट होनेसे आप भी मर गया, जैसे पुण्य नाश होनेपर बिमानोंसे देवता गिरते हैं। तैसे ही हाथी, घोड़े और रथोंसे वीर गिरने लगे, इस समय वीरोंको भाई, पुत्र और पिता कुछ नहीं जान पड़ता था, तब मर्य्यादा रहित युद्ध होगया।

२३ अध्याय समाप्त

सञ्जय बोले, जब वह घोर शब्द कुछ कम हुआ और पाण्डवोंने तुम्हारी उस सेनाका भी नाश कर दिया, तब शकुनि सात सौ घुड़

रथियोंको सङ्ग लेकर लौट गये और सेनामें जाकर कहने लगे कि, हे शत्रुनाशन क्षत्रियो! और युद्ध करो। फिर सबसे बोले, महाबलवान राजा दुर्य्योधन कहां हैं? शकुनिके वचन सुन सब क्षत्री बोले, जहां वह पूर्ण चन्द्रमाके समान छत्र शोभित होरहा है, जहां ये कवच पहने रथोंपर चढ़े अनेक वीर खड़े हैं, जहां वह मेघके समान घोर शब्द होरहा है। वहीं महाबली राजा दुर्य्योधन युद्धकर रहे हैं। आप शीघ्र वहां जांय तो अवश्य दर्शन होगा। क्षत्रियोंके ऐसे वचन सुनकर राजा शकुनि तुम्हारे पुत्रके पास गये, राजा दुर्य्योधनको रथ सेनाके बीचमें खड़े देख सब क्षत्रियोंको प्रसन्न करते हुए ऐसे बोले, मानो युधिष्ठिरको जीतकर ही आये हैं। हे राजन् दुर्य्योधन! तुम इन सब रथ सेनाको जीत लो मैंने पाण्डवोंके सब घुड़-चढ़े वीरोंको मारडाला, जब तुम इस युधिष्ठि-रसे रक्षित रथ सेनाको जीत लोगे तबमैं हाथी सेना और पदातियोंका नाश कर दूंगा। शकु-निके ऐसे वचन सुन तुम्हारे ओरके सब वीर प्रसन्न होकर युधिष्ठिरकी सेनाकी ओर दौड़े, सब क्षत्री धनुषोंपर बाण चलाने लगे, सिंहके समान गर्जने लगे। तब चारों ओरसे बाण छूटने और धनुषकी टङ्कारका शब्द होने लगा, इन सब क्षत्रियोंको अपने पास आया हुआ देख अर्जुन चक्रपाणिसे बोले, हे कृष्ण! आप साव-धान होकर घोड़े हांकिये और इस समुद्रके समान सेनामें प्रवेश कीजिये, अब मैं अपने तेज-धार शस्त्रोंसे नाश कर दूंगा। आज इनलोगोंको परस्पर युद्ध करते हुए अठारह दिन बीत गये, [illegible] है। पहले दिन हम महात्मा पाण्डवोंकी सेना अनन्त जान पड़ती थी परन्तु आज सब वह नष्ट होगयी, अब [illegible] दुर्य्योधनकी सेना [illegible] युद्ध करने [illegible] समान रह गई है। [illegible], अब हम [illegible]

जाना था। कि अब मूर्ख दुर्य्योधन सन्धिकर लेगा तो सबका कल्याणही होगा परन्तु उस मूर्खने ऐसा नहीं किया, भीष्मने जो कहा था, वही उसके लिये अच्छा था। परन्तु बुद्धि हीन दुर्य्योधनने वह भी न माना जब उस महाघोर युद्धमें भीष्म मरकर पृथ्वीमें गिरे थे, तब न जाने फिर किस लिये युद्ध होता रहा? भीष्मके मरनेपर भी युद्ध होता रहा इससे हम जानते हैं कि धृतराष्ट्रके पुत्र महामूर्ख है। फिर वेद जाननेवालोंमें श्रेष्ठ गुरु द्रोणाचार्य्य, कर्ण और विकर्णके मरनेपर भी युद्ध समाप्त न हुआ, जब पुत्रोंके सहित पुरुषसिंह कर्ण मारे गये थे और सेना बहुत थोड़ी रह गई थी तब भी युद्ध समाप्त न हुआ। जब वीर श्रवायुद्ध, कुरुवंशी जलसन्ध और राजा श्रुतायुध मारे गये तब भी वह युद्ध समाप्त न हुआ। जब भूरिश्रवा शल्य, शाल्व और उज्जैनके प्रधान वीर मारे गये तोभी युद्ध समाप्त न हुआ। जब जयद्रथ, अलायुद्ध राक्षस, वाह्लिक और सोमदत्त मारे गये तब भी युद्ध समाप्त न हुआ। जब वीर भगदत्त, काम्बोजदेशी महावीर और दुःशासन मारे गये तब भी युद्ध समाप्त न हुआ। इन अनेक देशोंके प्रधान बलवान और वीर राजोंको मरा हुआ देख भी युद्ध समाप्त न हुआ, अनेक अक्षौहिणीपति राजोंको भीमसेनके हाथसे मरा देखकर भी दुर्य्योधनने मूर्खता और लोभसे युद्धको समाप्त न किया। दुर्य्यो-धनको छोड़कर राजकुलमें उत्पन्न हुआ ऐसा कौन क्षत्री होगा जो वृथा ऐसा घोर वैर करे? जिनमें भी कुरुवंशी ऐसा कौन मूर्ख होगा जो शत्रुको अपनेसे अधिक बलवान, गुणवान और तेजवान जान कर युद्ध करे? जिसने सन्धिके लिये तुम्हारेही वचन न सुने वह दूसरेके क्या सुनता? जिसने शान्तिके लिये अनेक यत्न करते हुए भीष्म, विदुर और द्रोणाचार्य्यके वचन न सुने उसकी औषधि क्या है? हे जनार्दन!

जिसने अपने पिताके बचन न सुने और कल्याण बचन कहती हुई माताका जिसने निरादर कर दिया वह निश्चय ही वंशका नाश करनेको उत्पन्न हुआ था हमको अभी भी इसकी नीति और चेष्टासे यही मालम देताहै कि यह हमे जीता हुआ राज्य न देगा, विदुरने हमसे पहले ही कहा था कि, दुर्य्योधन जीते जी तुम्हारा राज्य तुमको न देगा। जबतक इस दुर्बुद्धिके शरीरमें प्राण रहेंगे तबतक पापरहित पाण्डवोंके साथ पाप ही करता रहेगा, सत्यवादी विदुर सदा यही कहा करते थे कि यह मूर्ख बिना युद्ध किये बसमें नहीं आवेगा, महात्मा विदुरने जो कुछ कहा था दुष्ट दुर्य्योधनके वैसे ही लक्षण जान पड़ते हैं। जिस मूर्खने परशुरामके कल्याण भरे बचन न माने वह निश्चय ही नाशके मुखमें बैठा है। जब यह उत्पन्न हुआ था तब ही अनेक सिद्धोंने कहा था कि यह दुष्ट सब क्षत्रियोंका नाश करेगा आज उन सब सिद्धोंका बचन ठीक हुआ अर्थात् दुर्य्योधनके कारणसे सब क्षत्रियोंका नाश होगया। आज हम बचे हुए क्षत्रियोंको भी मारडालेंगे। जिस समय डर शून्य हो जायंगे और कोई क्षत्री न रहेगा तब ये मूर्ख दुर्य्योधन अपने मरनका उपाय करेगा, बस इसके मरनेहीसे यह वैर समाप्त होजायगा। हे वृष्णिकुलश्रेष्ठ! मैं अपनी बुद्धि और विदुरके बचनसे और इस दुष्टकी चेष्टासे ऐसेही समझता हूं इसलिये आप इसी सेनाके आगे हमारे रथको ले चलिये। मैं इन सबको दुर्य्योधनके सहित मारूंगा। हे माधव! आज इन दुर्ब्बल सेनाको दुर्य्योधनके देखते मार धर्म्मराजका कल्याण करूंगा।

सञ्जय बोले, अर्ज्जुनके बचनको स्वीकार कर श्रीकृष्णने बेडर होकर उस घोर सेनाकी ओरको घोड़ोंकी सान उठाई और सेना प्रवेश किया, कुन्त, खड्ग और बाणोंसे भयानक शाङ्करूपी कांटोंसे भरे, गदा और परिघरूपी मार्गवाले रथ और हाथीरूपी वृक्षोंसे भरे, घोड़े और पदातिरूपी लताओंसे पूर्ण उस सेनारूपी बनमें महायशस्वी कृष्ण उस ऊंची पताकावाले रथको घुमाने लगे। वे सफेद घोड़े अर्ज्जुनके समेत कृष्णसे प्रेरित होकर चारों सेनामें दीखने लगे। तब शत्रुनाशन अर्ज्जुन उस सेनापर इस प्रकार बाण बरसाने लगे जैसे मेघ जल बर्षाता है उस समय अर्ज्जुनकी धनुषसे छूटे हुए अर्ज्जुनके बाणोंका चारों ओर घोर शब्द होने लगा, अर्ज्जुनके धनुषसे छूटे हुए बज्रके समान बाण चारों ओर क्षत्रियोंके कवचोंमें लगने लगे उन बाणोंके लगनेसे सब वीर, हाथी, घोड़े और रथोंसे मर मर कर गिरने लगे। बाण भी इस प्रकार पृथ्वीमें गिरते थे, जैसे शब्द करते हुए पक्षी उस समय गाण्डीव धनुषसे छूटे हुए बाण चारों ओर दीखते थे, उस समय कोई दिशा नहीं दिखलाई देती थी, तौभी वीर अर्ज्जुन आगेसे भागते नहीं थे। जैसे अग्नि काठको जला देती है ऐसे ही सूर्य्यके समान तेजस्वी धनुष बाणधारी अर्ज्जुन उस सेनाको जलाने लगे। जैसे सूखे वृक्ष और लतावाले बनको अग्नि भस्म कर देता है ऐसे ही प्रतापी अर्ज्जुनने उस सेनाको भस्म कर दिया। तेज बाणरूपी ज्वालावाले अर्ज्जुनरूपी तेजस्वी अग्निने तुम्हारे पुत्रकी सेनाको क्षण भरमें नाश कर दिया, अर्ज्जुनके सोनेके पङ्खवाले एक बाणको भी कोई न सह सका अर्थात् सब एक ही एक बाणसे मर गये, अर्ज्जुनने भी हाथी, घोड़े, या मनुष्यके मारनेको दूसरा बाण नहीं चलाया। एकले अर्ज्जुनने उस घोर सेनामें प्रवेश करके बाणोंसे उस सेनाका इस प्रकारसे नाश किया जैसे इन्द्र दानवोंका नाश करते हैं।

२४ अध्याय समाप्त।

[illegible]क्षय बोले, वीरोंकी विजयके लिये अनेक [illegible]त्न करते और पीछेको न हटते देख अर्ज्जुन [illegible]ी इनके मारनेका यत्न करने लगे। उस समय अर्ज्जुन बाण चलाते हुए ऐसे दीखते थे, जैसे पानी बरसाता हुआ मेघ।

हे भरतकुलश्रेष्ठ! तब तुम्हारी सेनाके वीर अर्ज्जुनके बाणोंसे व्याकुल होकर भाई, पिता और मित्रोंको छोड़कर तुम्हारे पुत्रके देखते देखते युद्धसे भागे, किसी रथकी धुरी टूट गई, किसीका सारथी मर गया, किसीके पहिये टूट गये किसीके पहियेकी नाभी टूट गई, किसी वीरके पास चलानेको बाण न रहे और कोई भयसे व्याकुल होकर भाग गया। कोई बिना घाव लगी ही डरकर भाग गये, कोई अपने बान्धवोंको मरा देख अपने पुत्रोंको लेकर भागे, कोई बापको, कोई सहायकोंको कोई बन्धुओंको और कोई भाइयोंको रोने लगे, हे पुरुषसिंह! कोई सब छोड़कर युद्धसे भागे, कोई घाव लगनेसे बड़ी मूर्च्छा खाकर गिर गये, कोई अर्ज्जुनके बाण लगनेसे ऊंचे श्वास लेने लगे, कोई उनको अपने रथोंपर बिठलाकर धीरज देने लगे और फिर प्याससे व्याकुल होकर युद्ध करनेको चले, कोई महापराक्रमी और तुम्हारे पुत्रकी आज्ञा पालन करनेके लिये पानी पीकर और घोड़ोंको शान्त करके फिर युद्ध करनेको चले, कोई अपने भाई, बाप और बेटोंको डेरोंमें लिटाकर और शान्त करके कवच पहनकर फिर युद्ध करनेको चले, कोई दूसरे रथोंको सजाकर उनपर बैठ घण्टे बजाते हुए धृष्टद्युम्नकी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे [illegible] विजय करनेके समय दैत्य और दानव दौड़े थे, कोई सोनेके रथपर बैठकर धृष्टद्युम्नसे युद्ध करने लगा, तब वीर धृष्टद्युम्न [illegible] महा क्रोध करके एक रथ [illegible] और दु[illegible] [illegible] सेनाको [illegible] [illegible] हुआ और [illegible] सेना अपने सङ्गमें लेकर तुम्हारे पुत्रोंको मारने चले, हे महाराज! उनको आते देख तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन उनके ऊपर अनेक प्रकार बाण वर्षाने लगे, तुम्हारे धनुषधारी पुत्रने नाराच, अर्द्धनाराच और वत्सदन्त आदि विषमें बुझे बाणोंसे धृष्टद्युम्नको व्याकुल कर दिया और चार बाणोंसे उनके घोड़े भी मार डाले, महाधनुषधारी धृष्टद्युम्नको उन बाणोंके लगनेसे ऐसा क्रोध हुआ जैसे अङ्कुश लगनेसे हाथीको। तब चार बाणोंसे दुर्य्योधनके चारो घोड़ोंको मार कर एक बाणसे सारथीका शिर काट कर गिरा दिया; तब राजा दुर्य्योधन रथसे उतर कर एक घोड़े पर चढ़े और सेनासे थोड़ी दूर जाकर खड़े होगये, शत्रुनाशन महाबलवान् दुर्य्योधन अपनी सेनाका नाश देखकर उसी घोड़ेपर चढ़ कर शकुनिके पास चले गये, जब यह रथसेना नष्ट हो चुकी और बचे हुए वीर भाग गये, तब तीन सहस्र हाथियोंने पाण्डवोंको सेनाको घेर लिया, उस समय पाचो पाण्डव उन हाथियोंके बीचमें ऐसे शोभित होने लगे, जैसे मेघोंके बीचमें पांच ग्रह, तब महा बलवान् अर्ज्जुन कृष्ण सारथी और सफेद घोड़ोंके रथपर बैठकर उस पर्व्वतके समान हाथियोंकी सेनामें घुस कर तेज और तीक्ष्ण बाण चलाने और उस सेनाका नाश करने लगे, हमने उस समय यह देखा कि अर्ज्जुनके एक एक ही बाणसे अनेक हाथी मर कर गिर गये, भीमसेन भी मतवाले हाथीके समान उस सेनाको देखकर हाथमें गदा लेकर दण्डधारी यमराजके समान रथसे उतरे उन महारथ भीमसेनको रथसे उतरते देख तुम्हारे सब सेना डरने लगी। भीमसेनकी गदा धारण किये देख हाथी और घोड़े भी विष्ठा और मूत्र करने लगे, उस समय भीमसेनकी गदासे पर्व्वतके समान गिर टूटे और रुधिरमें भीगे हाथी इधर उधरको भागते दौड़ते थे, कहीं

भीमसेनको गदाके लगनेसे कहीं चिल्लाते हुए हाथी इस प्रकार पृथ्वी पर गिरते थे, इधर उधर भागते हुए हाथियोंको देखकर तुम्हारी सब सेना भयसे व्याकुल होगई, तब राजा युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव भी क्रोध करके अपने तेज बाणोंसे हाथियोंको मारने लगे, द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्न भी राजा दुर्य्योधनको जीत कर उनको घोड़े पर चढ़ कर भागते देख और पाण्डवोंको हाथियोंसे घिरा हुआ जान उधर हीको हाथियोंको मारनेकी इच्छासे युद्ध करनेके लिये चले गये।

इधर रथसेनामें शत्रुनाशन दुर्य्योधनको न देखकर अस्वत्थामा, कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा क्षत्रियोंसे पूछने लगे कि राजा दुर्य्योधन कहां है? किसीने जब उनके वचनका उत्तर न दिया तब इन तीनों महारथोंने जान लिया कि महाराज आजके युद्धमें मारे गये, उस समय उन तीनोंके मुखोंका रङ्ग उड़ गया तब फिर घबड़ा कर क्षत्रियोंसे पूछने लगे कि, महाराज कहां है? तब किसी क्षत्रीने कहा कि पाञ्चाल राजा धृष्टद्युम्नकी घोर सेनासे हारकर राजा दुर्य्योधन शकुनिके पास चले गये हैं, कोई कोई बाणोंसे व्याकुल क्षत्री क्रोधसे भरकर कहने लगे कि, दुर्य्योधनसे क्या काम है? कहीं जीता हो तो ढूंढ़ने होसे क्या? चलो सब मिलकर पाण्डवोंसे युद्ध करें अब राजासे क्या काम है?

वे सब बाहन रहित बाणोंके घावोंसे पीड़ित क्षत्री दुर्य्योधनके ठीक पता न लगा सके और सब चिल्लाने लगे कि, हम जिस पाण्डवोंकी सेनासे घिरे हुए है, आज उसका सर्व्वनाश करेंगे। ये हमारी ओरके हाथियोंको मारकर पाण्डव लोग निकले जाते है। उनके वचन सुनकर महापराक्रमी अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और महाधनुषधारी कृतवर्म्मा अपनी रथसेनाको छोड़कर धृष्टद्युम्नकी सेनाको काटते हुए शकुनिके पास पहुंच गये, उ॰ चले जानेके पश्चात् धृष्टद्युम्न और पाण्डव तुम्हारी सेनाका नाश करते करते मिल गं॰ उन वीरोंको अपनी ओर आते हुए देख तुम्हारी ओरके वीरोंको जीनेकी आशा गई, सबके मुखोंके रङ्ग उड़ गये; हम आ॰ सेनाको शस्त्र रहित और भागती हुई देख घबड़ाने लगे, और धृष्टद्युम्नसे आप हो ॰ करने लगे, उस समय हमारी ओरके पाञ्चमहा रथ अर्ज्जुन और धृष्टद्युम्नसे व्याकुल होकर कृपाचार्य्यके पास भाग गये, वहां भी महापराक्रमी धृष्टद्युम्न पहुंच गए और थोड़ा ही युद्ध करके उन्होंने उन पाचोंको जीत लिया। तब हम फिर भागे और थोड़ी दूर जाकर देखा कि चार सौ रथोंके समेत महारथ सात्यकि युद्ध करनेको चले जाते हैं। उस समय धृष्टद्युम्नके घोड़े कुछ थक गये थे, इसलिये वह हमको पकड़ न सके, तब मैं उनसे छूटकर सात्यकिकी सेनाकी ओर इस प्रकार भागा, जैसे पापी नरककी ओरको दौड़ता है। तब वहां भी क्षण॰ मात्र घोर युद्ध होता रहा महारथ सात्यकिने मेरी सब सामग्री काट डाली, तब मुझे पृथ्वीमें मूर्च्छित पड़ा देख जीता ही पकड़ लिया, तब हमने थोड़े ही समयमें देखा कि भीमसेनकी गदा और अर्ज्जुनके बाणोंसे हमारी सब गज सेना नष्ट होगयी। उस समय पर्व्वतोंके समान हाथियोंके गिरनेसे पाण्डवोंके रथोंकी गति बन्द होगई तब महाबलवान भीमसेनने उन हाथियोंको खींच खींचकर अपन रथोंका मार्ग बना लिया, तब अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा उस रथ सेनामें भी शत्रुनाशन महारथ दुर्य्योधनको न पाकर बहुत घबड़ाये और धृष्टद्युम्नकी वैसे ही युद्ध करते खड़े तथा अपनी सेनाको वैसे ही नष्ट होते छोड़ राजाको ढूंढनेके लिये शकुनिकी ओर चले गये।

२५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! जब महा-बलवान भीमसेनने उस गजसेनाका नाश कर दिया, और प्राण नाशक दण्डधारी यमराजके समान घूमने लगे। और जब राजा दुर्य्योधनका कहीं पता न लगा, तब तुम्हारे सब बचेहुए पुत्रने भीमसेनसे युद्ध करनेको चले, दुर्म्मर्षण, श्रुतान्त, जैत्र, भूरिबल, रवि, जयत्सेन सुजात, दुर्विषह, अरिहा, श्रुतर्वा और महाबाहु इन सब महा-वीर तुम्हारे पुत्रोंने चारों ओरसे भीमसेनको घेर लिया। हे महाराज! तब महारथ भीम-सेन भी अपने रथपर चढ़कर तुम्हारे पुत्रोंके मर्म्मस्थानोंमें बाण मारने लगे। तब तुम्हारे पुत्र भी उनकी ओर दौड़े तब भीमसेनने हंस-कर घोर क्रोध करके एक बाणसे दुर्म्मर्षणका सिर काटकर पृथ्वीपर गिरा दिया। दूसरे सब शरीर काटने योग्य बाणसे श्रुतान्तको और तीस रेसे जयत्सेनको मारडाला। शत्रुनाशन जयत्-सेन उस बाणके लगते ही पृथ्वीपर गिर गया। तब श्रुतर्वाने महाक्रोध करके गिद्धके पङ्ख लगे, अत्यन्त तेज सौ बाण भीमसेनके शरीरमें मारे, तब भीमसेनने क्रोध करके विष और अग्निके समान एक तेज बाणसे जैत्र, भूरिबल और रविको मारडाला। ये तीनों भाई कटकर वहांसे इस प्रकार पृथ्वीमें गिरे जैसे वसन्त कालमें फला हुआ, टेसू कटकर गिरता है; तब भीम-सेनने एक अत्यन्त तेज बाणसे दुर्विमोचनको मारकर गिरा दिया, दुर्विमोचन मरकर इस प्रकार रथसे गिर [illegible] हुआ [illegible] [illegible] पृथ्वीमें गिरता है। फिर [illegible] सुजातको [illegible] मारकर पृथ्वीमें गिर गये [illegible] देख [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मरा देख [illegible] [illegible]

धनुषको घुमाते हुए विष और अग्निके समान बाण छोड़ते हुए भीमसेनकी ओर दौड़े और भीमसेनका धनुष काटकर बीस बाण उनके शरीरमें मारे, महाबलवान भीमसेनने शीघ्रता सहित दूसरा धनुष लेकर अनेक बाण चलाये, और श्रुतर्वासे कहने लगे, कि खड़ारह खड़ा-रह उस समय उन दोनोंका ऐसा घोर भयानक और अद्भुत युद्ध हुआ, जैसा जंभासुर और इन्द्रका हुआ था। इन दोनोके यमराजके दण्डके समान तेज बाणोंसे आकाश, पृथ्वी, दिशा और सब कोने भर गये। तब श्रुतर्वाने क्रोध करके भीमसेनके हृदय और हाथोंमें अनेक बाण मारे, तब उन बाणोंसे व्याकुल होकर भीमसेनका क्रोध ऐसा बढ़ा जैसे पूर्णमासीके दिन समुद्र बढता है। तब भीमसेनने अपने बाणोंसे उनके घोड़े और सारथीको मार डाला।

श्रुतर्वाको रथहीन देखकर भीमसेनने बहुत तेज बाणोंसे व्याकुल कर दिया और अपनी बाण विद्याकी शीघ्रता दिखलाई।

तब श्रुतर्वा भी खड्ग और ढाल लेकर रथसे उतरने लगे। परन्तु भीमसेनने शीघ्रता सहित तेज बाणोंसे उसका शिर काटकर पृथ्वीमें डाल दिया, तब शिर काटनेसे उसका शरीर भी पृथ्वीमें गिर गया, वीर श्रुतर्वाको मरा हुआ देख तुम्हारी सेना भयसे व्याकुल होगई और बचे हुए वीर उनसे युद्ध करनेको दौड़े, उनको अपनी ओर आते देख प्रतापवान भीमसेन भी युद्ध करनेको चले, तब उन्होंने चारों ओरसे भीमसेनको घेर लिया तब भीमसेनने अपने तेज बाणोंसे उन सबको इस प्रकार व्याकुल कर दिया जैसे इन्द्र राक्षसोंको व्याकुल कर देता है। भीमसेनने रथोंमें बैठे पांच सौ वीर, घोड़ों पर चढ़े सात सौ वीर, आठ सौ घोड़े और सहस्रों पैदल मारडाले।

इस प्रकार तुम्हारे पुत्रोंका नाश करके भीमसेनने अपनेको कृतकृत्य और अपने जन्मको

सफल जाना, उनको इस प्रकार युद्ध करते देख तुम्हारी सेनाके किसी वीरको यह शक्ति न देख पड़ी कि उनकी ओर दृष्टि कर सके। इस सब सेनाको भगाकर और अनेक वीरोंको भगाकर भीमसेन ताल ठोकने लगे। उस तालके शब्दसे हाथी डरने लगे। हे महाराज। उस समय तुम्हारी जो सेना मरनेसे बची थी सो भयसे व्याकुल होगई।

२६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! उस समय तुम्हारे पुत्रोंमेंसे केवल दुर्य्योधन और सुदर्शन ही मरनेसे बचे थे, ये दोनों अश्वसेनामें खड़े थे, उनको देख श्रीकृष्ण अर्ज्जुनसे बोले।

हे अर्ज्जुन! शत्रु मरनेसे थोड़े शेष हैं तुम अपनी जातिकी रक्षा करो ये देखो सञ्जयको पकड़े हुए सात्यकी युद्धसे लौटे आते हैं, देखो पापी धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे लड़ते लड़ते नकुल और सहदेव भी थक गये है। यह देखो दुर्य्योधनको छोड़कर कृतवर्म्मा, कृपाचार्य्य और महारथ अश्वत्थामा खड़े हैं।

यह देखो हमारे प्रधान सेनापति महातेजस्वी धृष्टद्युम्न सब दुर्य्योधनकी सेनाका नाश करके प्रभद्रकवंशी क्षत्रियोंके सहित युद्धभूमिमें खड़े हैं।

यह देखो जिनके शिरपर छत्र लगा है, जो बार बार चारों ओर देख रहे है, जो व्यूह बनाये घुड़चढ़ी सेनाके बीचमें खड़े हैं वही महाराज दुर्य्योधन हैं। तुम तेज बाणोंसे इनका नाश करके कृतकृत्य होंगे। हे तात! जबतक हाथी सेनाको मरा देख और तुमको आया देख यह सेना न भाग जाय तभीतक तुम दुर्य्योधनको जीत लो, तुम अपनी सहायताके लिये शीघ्र एक मनुष्य भेजकर धृष्टद्युम्नको अपने पास बुला लो, इस समय पापी [दुर्य्यो]धन बहुत थक गया है, इसलिये इसे मार ही डालना चाहिये। यह पाण्डवों[की] सेनाका नाश करके पाण्डवोंको जीत [लि]या यह समझकर कैसा प्रसन्नतासे खड़ा है। [अब] इसकी सब सेना मारी जायगी और पाण्डवोंके बाणोंसे व्याकुल होगा तब आप ही मर[नेके] लिये युद्धमें आवेगा।

श्रीकृष्णके ऐसे बचन सुन अर्ज्जुन बोले, [हे] कृष्ण! धृतराष्ट्रके सब पुत्रोंको भीमसेनने मा[रा] है, ये जो दोनों खड़े हैं सो भी अब न बचेंगे। भीष्म मारे गये, द्रोणाचार्य्य मारे ग[ये], कर्ण मारे गए, मद्रराज शल्य मारे गए, जय[द्रथ] मारे गए, अब सुबलपुत्र शकुनीके सङ्गवाले प[ांच] सौ घुड़चढ़े, दो सौ रथ, एक सौ हाथी और तीन सहस्र पैदल शेष हैं। प्रधानोंमें अश्व[त्थामा], कृपाचार्य्य, त्रिगर्त्तदेशके राजा सुशर्मा, उलूक, शकुनी और कृतवर्म्मा शेष रहगये हैं। अब दुर्य्योधनकी बस इतनी ही सेना है, परन्तु जगत्में कालसे कोई नहीं बचता इसलिये यह भी नहीं बचेंगे। देखो सेना नाश होनेसे दुर्य्योधनका तेज कैसा कम होगया है? मुझे निश्चय है कि आज ही महाराजके शत्रुओंका सर्व्व नाश होगया। यदि युद्ध छोड़कर न भागें तो आज कोई वीर हमसे नहीं बचेगा जो आज हमसे युद्ध करनेको आवेंगे, वे चाहें साक्षात् देवता ही क्यों न हों तौभी जीते नहीं बचेंगे। आज तेज बाणोंसे दुष्ट शकुनीको मारकर महाराजका पुराना शोक दूर करूंगा। जिस शकुनिने उस सभामें जुआ खेलकर हमारे रत्न छीन लिये थे, सो आज मैं सब लेलूंगा। पाण्डवोंके हाथसे पति और पुत्रोंको मरा हुआ सुन आज हस्तिनापुरकी स्त्री रोवेंगी। हे कृष्ण! आज यह कर्म्म समाप्त होजायगा। हमारे धनुषकी टङ्कारको यह घुड़चढ़ी सेना नहीं सह सकी, अब तुम चलो हम इसका नाश करेंगे।

यशस्वी अर्ज्जुनके बचन सुन कृष्णने दुर्य्योधनकी सेनाकी ओर घोड़े हांके, महाराज

अर्जुन, महारथ भीम और महारथ सहदेव दुर्य्योधनको मारनेके लिये सिंहके समान गर्जते हुए चले।

उनको धनुष धारण किये वेगसे आते देख महारथ सुवलपुत्र शकुनि युद्ध करनेको चले, तुम्हारे पुत्र सुदर्शन भीमसेनसे, सुशर्म्मा और शकुनी अर्जुनसे और घोड़ेपर चढ़े दुर्य्योधन सहदेवसे युद्ध करने लगे।

तब दुर्य्योधनने एक प्रास सहदेवके शिरमें मारा उसके लगनेसे सहदेव रुधिरमें भीग गए और बिपीले सांपके समान स्वास लेते हुए मूर्च्छित होकर रथपर गिर गये, फिर थोड़े समयमें चैतन्य होकर महाक्रोध करके दुर्य्योधनको अपने तेज वाणोंसे व्याकुल कर दिया, महापराक्रमी अर्जुन भी अपने तेज वाणोंसे अनेक घुड़चढ़े वीरोंके शिर काटने लगे। उस सेनाका नाश करके अर्जुन त्रिगर्त्तदेशको रथ सेनाकी ओर चले गये। त्रिगर्त्तदेशीय महारथ भी अर्जुन और कृष्णके ऊपर वाण चलाने लगे। फिर अर्जुन सत्यकर्म्मासे युद्ध करनेको गये, उसकी एक धुरी काटकर महायशस्वी अर्जुनने शिलापर घिसे तेज वाणोंसे चमकते हुए सोनेके कुण्डल सहित उसका शिर काट दिया।

हे राजन्! तब महापराक्रमी अर्जुन इस प्रकार [illegible] लगे। जैसे हरिनोंके [illegible] सिंह घूमता है।

[illegible] मारकर फिर अर्जुनने तीन [illegible] मारे [illegible] सोनेके [illegible] सहित [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] वाणोंसे [illegible] करके एक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] करकर

पृथ्वीमें गिर गया तब पाण्डवोंकी सेना बहुत प्रसन्न और तुम्हारी सेना बहुत दुःखी होगई फिर अपने तेज वाणोंसे उसके पैंतालीस महारथ पुत्रोंको मारडाला, फिर त्रिगर्त्तदेशीय सब सेनाका नाश कर दिया।

हे महाराज! उस ही समय महारथ भीमसेन भी क्रोध करके तुम्हारे पुत्र सुदर्शनसे युद्ध करने लगे। तब हंसकर उसे वाणोंसे छिपा दिया, फिर एक वाणसे शिर काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। जब महावीर सुदर्शन मरकर पृथ्वीमें गिरे, तब उनके सङ्गी भीमसेनसे युद्ध करने लगे और अनेक प्रकारके वाण वर्षाने लगे। तब भीमसेनने वज्रके समान घोर वाणोंसे उस सब सेनाका नाश कर दिया अनन्तर अनेक सेनाके प्रधान वीर भीमसेनसे युद्ध करनेको आये भीमसेनने अपने तेज वाणोंसे उनका भी नाश कर दिया।

इसी प्रकार तुम्हारी ओरके वीरोंने भी पाण्डवोंके महारथोंको वाणोंसे व्याकुल कर दिया दोनों ओरके वीर वाणोंसे मर मर सोचते हुए पृथ्वीमें गिर गये।

२७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज धृतराष्ट्र! जब यह हाथी, घोड़े और मनुष्योंका नाश करनेवाला घोर युद्ध होने लगा, तब सुवलपुत्र शकुनी सहदेवसे युद्ध करनेको धाये, प्रतापवान् सहदेव उनको अपनी ओर आते देख पक्षियोंके समान शीघ्र चलनेवाले अनेक वाण शकुनीकी ओर छोड़े।

उलूकने भीमसेनके शरीरमें दश और शकुनिने भी तीन वाण मारे, फिर शकुनीने सहदेवको और [illegible] वाण चलाये वे चारों ओर [illegible] करके पक्षियोंके पङ्ख लगे सोनेके [illegible] शिलापर घिसे वाण कानोंतक

खींच खींचकर छोड़ने लगी। उस समय इन चारोंकी धनुषोंकी बाण वर्षा ऐसी दीखती थी जैसे मेघसे जल बर्षता हो।

हे महाराज! तब भीमसेन और महाबलवान सहदेवने महाक्रोध करके तुम्हारी सेनाका नाश करना बिचारा तब इन दोनोंने इतने बाण छोड़े कि तुम्हारी सब सेना पूरित होगई और आकाशमें महा अन्धकार दीखने लगा। अनेक घोड़े बाणोंसे व्याकुल होकर इधर उधर भागने लगे, अनेक मरे हुए वीर उनके पैरोंमें आकर इधर उधरको खिचने लगे, अनेक घोड़ोंपर चढ़े वीर उन घोड़ोंके सहित मरकर मार्ग ही में गिर गये। किसीका कवच कट गया और किसीका प्रास टूट गया, गिरते हुए खड्ग, सार्ङ्गी, प्रास और परश्वधोंसे पृथ्वी ऐसी पूरित होगई जैसी वसन्तकालमें फूलोंसे। हे महाराज! दोनों ओरके वीर क्रोध करके सेनामें घूमने और शत्रुओंको मारने लगे, हे पृथ्वीनाथ! कुण्डल पहिने कमलके समान सुन्दर कटे हुए मुखोंसे पृथ्वी भर गई, कवच और बाजूबन्द पहिने, खड्ग, प्रास और परश्वध लिये हाथीके सूंड़के समान सुन्दर कटे हुए हाथ पृथ्वीमें चारो ओर दीखने लगे, अनेक कबन्ध उठ कर नाचने लगे, और मांस खानेवाले, जन्तु चारो ओर घूमने लगे, कौरवोंकी थोड़ी सेना देखकर पाण्डवोंके बीर बहुत प्रसन्न हुए और शत्रुओंका नाश करने लगे।

उस ही समय प्रतापवान शकुनीने एक प्रास सहदेवके शिरमें मारा, उसके लगनेसे सहदेव गिरते ही व्याकुल होकर रथमें गिर गये तब प्रतापवान भीमसेनने क्रोध करके अपने बाणोंसे सब सेनाको रोक दिया और अनेक वीरोंको मारकर सिंहके समान गर्ज्जने लगे, उस शब्दसे हाथी घोड़े और मनुष्य व्याकुल होकर इधर उधर भागने लगे।

शकुनीके सहियोंको भागते देख राजा दु[...]धन बोले, अरे अधर्म्मियों? लौटो और युद्ध[...] भागनेसे क्या होगा युद्ध करनेसे यश और [...]नेसे स्वर्ग मिलता है। जो वीर सन्मुख यु[...] मरता है। वह निःसन्देह स्वर्गमें जाता है।

राजाके ऐसे वचन सुन मृत्यु अवश्य हो[...] यह निश्चयकर वीर लोग लौटे। उनके लौ[...] घोर शब्द होने लगा। उस समय वह सेना [...] दीखने लगी, जैसे उछलता हुआ समुद्र। उ[...] युद्ध करनेको पाण्डवोंकी सेनाके वीर भी च[...]

इतने ही समयमें महापराक्रमी सहदे[...] सावधान होकर हंसकर शकुनीके शरीरमें [...] और घोड़ोंके तीन तीन बाण मारकर श[...]नीका धनुष काट दिया। शकुनीने शी[...] सहित दूसरा धनुष लेकर नकुलके शरीरमें [...] और भीमसेनके शरीरमें सात बाण मारे।

हे महाराज! उसी समय पिताकी र[...] करते हुए उलूकने भीमसेनके शरीरमें स[...] और सहदेवके शरीरमें सत्तर बाण मारे, भी[...]सेनने भी क्रोध करके उलूकके आठ, शकुनी[...] चौसठ और रचा करनेवाले वीरोंके तीन ती[...] बाण मारे, फिर ये सब वीर इकट्ठे होकर स[...]देवके ऊपर इस प्रकार बाण बर्षाने लगी। [...] बिजली वाले मेघ पर्वतके ऊपर जल बर्षाते [...] तब महा प्रतापवान सहदेवने उन सबको श[...] बाणोंसे रोककर एक बाणसे उलूकका [...] काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। वह सहदे[...] हाथसे मरकर रुधिरमें भीगकर पाण्डवों[...] प्रसन्नता बढ़ाता हुआ पृथ्वीमें गिरा।

हे महाराज! अपने पुत्रकी मरा हुआ दे[...] शकुनीकी आखमें आंसू भर आई और इसके [...] उनके कण्ठसे स्वासलेते हुए चणभर तक वि[...]रके बचनोंकी स्मरण करते हुए शान्त होगा[...] और सोचने लगे। फिर क्रोध करके सहदेव[...] और तीन बाण चलाये, प्रतापी सहदेवने उन[...] अपने बाणोंसे काटकर शकुनीका धनुष का[...]

दिया। तब सुबल पुत्रने क्रोध करके सहदेवकी ओर चमकता हुआ एक खड्ग चलाया। सहदेवने हंसकर एक बाणसे उस खड्गको दो टूकड़े कर दिये, तब शकुनीने एक भारी गदा लेकर सहदेवकी ओर फेंकी परन्तु वह रथतक न पहुंचने पाई बीचहीमें गिर गई, तब शकुनीने क्रोध करके कालरात्रिके समान भयानक शक्ती सहदेवकी ओर चलाई उस सोनेसे मढी शक्तिको सहदेवने अपने बाणोंसे काटकर इस प्रकार पृथ्वीमें गिरा दिया, जैसे चमकती हुई, बिजलीको।

इस शक्तीको कटी और शकुनीको भयसे व्याकुल देख शकुनीके सहित सब सेना इधर उधर भाग चली। उस समय सहदेवकी विजय देखकर विजयी पाण्डवोंकी सेनामें घोर शब्द होने लगा। तुम्हारी सब सेना युद्धसे विमुख होगई उस सेनाको भागते हुए देख प्रतापवान सहदेव सहस्रों बाण चलाते हुए सोनेके रथमें बैठे रोके सहित महाधनुषको चलाते गान्धार [illegible] वीरोंसे रक्षित बड़े बड़े घोड़ोंके रथपर बैठे शकुनीको अपना अंश समझकर अर्थात् इसने सभामें इसे मारनेकी प्रतिज्ञाकी थी। यह विचार कर उसके पास जाकर बोले, अरे दुर्बुद्धे! मनुष्य बन, क्षत्रियाका धर्म स्मरण कर [illegible], अरे मूर्ख! तूने सभामें पासे [illegible] हम लोगोंकी हंसता था, आज उसका [illegible], फिर जिन दुरात्माओंने हंस हंसकर हमारा निरादर करा था। वे सब मारे गये, अब केवल एक कुलांगार दुर्योधन और उसका मामा तू शेष है। [illegible] कोई मनुष्य लकुड़से तोड़ [illegible] पृथ्वीमें गिराता है। [illegible] [illegible] पृथ्वीमें गिरा [illegible] सिंहके समान महाबल- [illegible] सहदेवने क्रोधसे भर- [illegible] बाणोंसे [illegible] मारकर [illegible] घोड़े मारडाले, फिर एक एक बाणसे धनुष ध्वजा और छत्र काटकर सिंहके समान गर्जने लगे। फिर ध्वजा, छत्र और धनुष रहित शकुनीको बाणसे व्याकुल करके और भी अनेक बाण चलाये। तब सुबल पुत्र शकुनी क्रोध करके सहदेवको मारनेके लिये, एक प्रास उठाकर सहदेवको ओर दौड़े। उस ही समय सहदेवने क्रोध करके एक ही समय धनुषपर तीन बाण चढाकर छोड़े, एकसे शकुनीका प्रास और दोसे मोटे मोटे हाथ कट गये, फिर सहदेवने एक तेज बाणसे उसका शिर काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया, और अत्यन्त ऊंचे शब्दसे गर्जने लगे। वीर सहदेवने उस तेज बाणके द्वारा कुरुकुल विरोधके मूल शकुनीके तड़फते हुए शिर और हाथ रहित शरीरके टुकड़े टुकड़े कर दिये, रुधिरमें भीगे हुए शकुनीको पृथ्वीमें सोते हुए देख तुम्हारी सेनाके बचे हुए वीर भयसे व्याकुल होकर शस्त्र ले लेकर युद्धसे भाग गये। तुम्हारी सेनाके वीरोंके मुख सूख गये, गांडीवधनुषकी टङ्कार सुनकर हाथी, घोड़े और दुर्य्योधन भयसे व्याकुल होकर इधर उधरको भागने लगे। शकुनीको रथसे गिराकर सब पाण्डवोंके योद्धा अपनी सेनाको प्रसन्न करनेके लिये शङ्ख बजाने लगे। फिर सब पाण्डव और श्रीकृष्ण सहदेवके चारों ओर खड़े होकर उनकी प्रशंसा करके कहने लगे, हे वीर! तुमने प्रारब्धसेही इस दुष्टको पुत्रके सहित युद्धमें मारा।

८८ अध्याय समाप्त।

आगे ह्रद प्रवेश पर्व्व लिखते हैं।

सञ्जय बोले, हे महाराज! तब शकुनीके [illegible] क्रोध करके पाण्डवोंसे युद्ध करनेको दौड़े, [illegible] सहदेवको मारने लगे, तब विषभरे सांपके समान क्रोध करके [illegible] भीमसेन और अर्जुन उनको मारने को दौड़े। तब अर्जुनने [illegible] उन घोड़ोंपर चढ़े हुए वीरोंके

शिर और हाथ काटकर पृथ्वीमें गिरा दिये।

राजा दुर्य्योधनने अपनी सेनाका नाश देखकर बचे हुए हाथी, घोड़े, रथोंपर बैठे और पदातियोंसे कहा कि तुम लोग सब इकट्ठे होकर बन्धुबान्धवों सहित पाण्डवोंको और सेना सहित सेनापति धृष्टद्युम्नको मारकर शीघ्र हमारे पास आओ।

उन सब वीरोंने राजाकी आज्ञाको शिरसे ग्रहण किया, और पाण्डवोंको मारनेको चले, परन्तु उनके सङ्ग कोई प्रधान नहीं था, इसलिये व्यूह न बन सका। कहीं घोड़े भागने लगे। और कहीं सेनामें धूल उड़ने लगी, उस समय तुम्हारी ओरके वीरोंको दिशाका ज्ञान भी नहीं रहा था।

तब पाण्डवोंकी सेनामेंसे थोड़ेसे वीर निकले और उन्होंने चण भरमें इन सबोंको मारडाला।

हे महाराज! उस समय पाण्डव और सृञ्जयवंशी चत्रियोंके हाथसे ग्यारह अचौहिणी सेना समाप्त हुई।

हे महाराज! उस सहस्रों महात्मा राजोंसेभरे डेरेमें घावसे व्याकुल एकले राजा दुर्य्योधन खड़े रह गये।

हे महाराज! उस समय अपने वीर और सहायकोंसे दुर्य्योधनको पृथ्वी शून्य दीखने लगी, पाण्डवोंके धनुषका शब्द सुनकर तथा, उन्हें नाचते कूदते देखकर और उनका मनोर्थ सिद्ध जानकर राजा दुर्य्योधन बहुत घबड़ाये तब उन्होंने अपनेको वाहन और सेनासे हीन देखकर भागनेकी इच्छा करी।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय। जिस समय हमारी सब सेना मर गई और डेरोंमें कोई नहीं रहा तब पाण्डवोंकी कितनी सेना शेष थी? उस समय अपनी सेनाका नाश देखकर मेरे पुत्र मूर्ख दुर्य्योधनने क्या किया? सो तुम हमसे कहो।

सञ्जय बोले, उस समय पाण्डवोंकी सेनामें दो सहस्र रथ, सात सौ हाथी, पांच सहस्र घोड़े और एक लाख पदाति शेष थे, इस ही सेनाका व्यूह बनाकर धृष्टद्युम्न खड़े थे।

हे महाराज! उस समय महारथ दुर्य्योधन पाण्डवोंको कूदते और अपनी सेनाका नाश देख गदा हाथमें लेकर भयसे व्याकुल होकर मरे हुए घोड़ेको छोड़ पूर्व्वकी ओरको भगे। हे महाराज! जो तेजस्वी दुर्य्योधन केवल गदा लेकर पैरों भागे जाते थे। वे ही एक दिन ग्यारह अचौहिणीके स्वामी थे। हे महाराज! थोड़ी दूर पैरों चलकर महाराजने बुद्धिमान धर्म्मात्मा विदुरके वचनोंका स्मरण किया, महाराज अपने मनमें कहने लगे। कि बुद्धिमान विदुरने हमारे वैरसे चत्रियोंके इस सर्व्वनाशको पहले ही देख लिया था। ऐसा विचारकर दुःखसे व्याकुल महाराज तालावमें प्रवेश करनेको चले।

हे महाराज! उस समय धृष्टद्युम्नको अगाड़ी करके पाण्डव अपनी सेनाके सहित तुम्हारे बचे हुए वीरोंको मारने लगे। हे महाराज! हाथी, घोड़े, और मनुष्योंके सहित जब सुबल पुत्र शकुनी मारे गये, तब तुम्हारी सेनाके डेरे ऐसे दीखने लगे, जैसे वृच कटनेसे बनकी भूमि, हे महाराज! उस समय तुम्हारी सेनामें केवल कृतवर्म्मा, पराक्रमी अश्वत्थामा और कृपाचार्य्यके सिवाय और कोई वीर नहीं दीखता था।

हे राजन्! मुझे सात्यकीके रथमें बंधा हुआ देख सेनापति धृष्टद्युम्न बोले, इसे जीता ही छोड़ दो क्योंकि इसके जीने और मरनेसे हमें कुछ लाभ और हानि नहीं।

धृष्टद्युम्नके वचन सुन महारथ सात्यकीने मेरे मारनेको तेज खड्ग निकाला उसी समय महात्मा व्यास आये, और उन्होंने कहा कि सञ्जयको मत मारो इसे जीता ही छोड़ दो।

व्यासके वचन सुन सात्यकी उनको आगे हाथ [illegible]ड़ने लगे और मुझे छोड़कर बोले, हे सञ्जय! [illegible]म्हारा कल्याण हो यहांसे भागजावो।

उनकी आज्ञा सुनकर मैं शस्त्र और कवचसे [illegible]हित होकर रुधिरमें भीगकर सन्ध्या समय [ह]स्तिनापुरकी ओर चला। एक कोसभर चला [था], तो देखा कि महाराज दुर्य्योधन घावोंसे [व्या]कुल एकले गदा लिये पैरों चले जाते हैं। [मु]झे देखते ही महाराजकी आखोंमें आंसू भर [आ]ए और मेरी ओर न देख सके फिर उन्होंने [दू]सरी ओरसे मुख फेर लिया। फिर मैं भी दीन [हो]कर उनके पास ठहर गया, मैं भी उन्हें [इ]तना दुःखसे भागते हुए देखकर दुःखसे व्याकुल [हो]गया और क्षणभर कुछ न कह सका फिर [अ]पने पकड़े जानेका और व्यासकी कृपासे जीते [ब]चनेका सब वर्णन उनसे किया।

फिर महाराजने चैतन्य होकर अपने भाई [औ]र सब सेनाका समाचार मुझसे पूंछा मैंने जो [कु]छ देखा था सब कह दिया। हे महाराज! [अश्व]त्थामा, कृतवर्म्मा और कृपाचार्य्य जीते हैं। [मैं] इस समाचारको नहीं जानता था मुझसे [व्या]स भगवान्ने कहा कि वे तीनों जीते हैं।

हे महाराज! फिर महाराजने ऊंचा स्वांस [ले]कर मेरा हाथ पकड़ लिया और कहने लगे। हे सञ्जय! अब हम अपने सहायकी मे[ं से] [illegible] किसीको जीता नहीं देखते [illegible] तुम महाराजसे जाकर कहना कि [तुम्ह]ारा पुत्र दुर्य्योधन [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] जीता है। [illegible] दुर्य्योधनके सिवाय [illegible] और वह भी घायल [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दिया।

[illegible]

दूरसे आते हुए बाणोंसे व्याकुल कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा और कृतवर्म्माको देखा, उन्होंने मुझे देखकर घोड़ोंको तेज हांका और मेरे पास आकर बोले, हे सञ्जय! तुम प्रारब्धहीसे जीते हो कहो राजा दुर्य्योधन कहो जीते हैं वा नहीं?

तब मैंने महाराजकी कुशल उनसे कही और दुर्य्योधनने जो कुछ मुझसे कहा था सब उनको कह सुनाया और यह भी कह दिया कि महाराज इस तालावहीमें है।

मेरे वचन सुन और तालावको बड़ा भारी देख अश्वत्थामा ऊंचे स्वरसे रोकर कहने लगे कि हाय हमको धिक्कार है कि जो महाराज यह भी नहीं जानते कि हम लोग अभी जीते हैं। यदि महाराज हमको मिलजांय तो अभी हम सब पाण्डवोंको जीत लेंगे। बहुत समय तक इस प्रकार रोकर पाण्डवोंकी सेनाको उधर ही आते देख मुझे कृपाचार्य्यके रथपर बिठलाकर डेरोंकी ओर चले गये।

हे महाराज! वहां जाकर हमने देखा कि सूर्य्य अस्त होनेके समय डेरोंमें पहरे देनेवाले मनुष्य व्याकुल हो रहे हैं। तब हम लोगोंसे राजा दुर्य्योधनका सर्व्वनाश सुन डेरोंमें हाहा-कार मचगया। बूढ़े, रानी और डेरोंकी रक्षा करनेवाले मनुष्य राजोंकी स्त्रियोंको ले लेकर अपने अपने नगरोंको ओरको चल दिये।

हे महाराज! डेरोंमें स्त्रियोंके रोनेका महा शब्द उठा, कोई छाती पीटने लगी, कोई सिर पीटने लगी, कोई नखूनोंसे छाती चीरने लगी, कोई बाल उखाड़ने लगी और कोई हाहाकार कर करके शोच करने लगीं।

तब दुर्य्योधनके मन्त्री दुःखी होकर रोने लगे, फिर रानियोंको संग लेकर हस्तिना-पुरको चले उनके संग बेतधारी और द्वारपाल [illegible] स्त्रियोंकी रक्षा करनेवाले लोग भी [illegible] [illegible] [illegible] राजोंके रथपर [illegible] अपनी अपनी रानियोंको लेकर अपने

अपने नगरोंको चले गये, जिन स्त्रियोंको पहिले सूर्य्यने भी नहीं देखा था, वे ही कोमल शरीर-वाली सुन्दर स्त्री बान्धवोंके मरनेसे ग्वालियो और अहीरोंसे मार्ग पूंछती हुई अपने अपने नगरोंको चलीं।

भीमसेनके डरसे मनुष्य भी एक दूसरेको देखते हुए भागे।

इस घोर युद्ध होनेके पश्चात् शोकसे व्याकुल होकर युयुत्सु समयके अनुसार एक स्थानपर शोचने लगे, कि ग्यारह अक्षौहिणियोंके स्वामी दुर्य्योधनको वीर पाण्डवोंने जीत लिया। भीष्म और द्रोणाचार्य्य आदि सब मारे गये। मैं प्रारब्धसे अकेला बच गया हूं, इस समय ये सब डेरेके लोग भी भागे जाते हैं, जिन स्त्रियोंको कभी किसीने नहीं देखा वे स्त्री आज भयसे व्याकुल पैरों चली जाती हैं। वे मनुष्य हरिनोंके समान घबड़ाये हुए चारों ओर देखते चले जाते हैं, दुर्य्योधनके बचे हुए मन्त्री रानियोंको सङ्ग लेकर हस्तिनापुरको चले जाते हैं। इस समय हमें पाण्डवोंके पास चलना चाहिये।

ऐसा विचारकर महावाहु युयुत्सु ने महाराज युधिष्ठिर और भीमसेनसे यह समाचार कह सुनाया। दोनोंके ऊपर कृपा करनेवाले महाराजने प्रसन्न होकर युयुत्सु को अपनी छातीसे लगाया और हस्तिनापुर जानेको विदा किया।

वे राजाकी आज्ञासे रथपर चढ़कर घोड़ोंको शीघ्र हांकते हुए रानियोंको सङ्ग लेकर हस्तिनापुरको चले आये, सूर्य्य अस्त होते होते रोते हुए युयुत्सु नगरमें पहुंचे उन्होंने आपके पाससे जाते रोते हुए विदुरको मार्गमें देखा और रथसे उतरकर प्रणाम किया, तब विदुरने कहा, हे पुत्र! तुम प्रारब्धहीसे इस कुरुकुल क्षयसे बचे हो परन्तु राजासे पहिले ही तुम नगरमें क्यों चले आये? इसका कारण तुम विस्तार पूर्व्वक हमसे कहो।

युयुत्सु बोले, जब युद्धसे जाति बांधव ... पुत्र सहित शकुनी मारे गये, तब राजा दुर्य्योधन घोड़ेसे उतरकर डरसे पूर्व्वको ओर ... गये राजाके भागेसे ही सब लोग डेरे छोड़ ... डर कर भाग गये अनन्तर राजा और ... भाइयोंकी स्त्रियोंको लेकर प्रधान मन्त्रीगण और भाग आये।

तब मैंभी महाराज और कृष्णको आ... सार भागती हुई स्त्रियोंकी रक्षा करनेके ... हस्तिनापुरको चला आया।

युयुत्सुके वचन सुन और उनके कर्म्मको समयानुसार जानकर धर्म्मात्मा विदुरने उनकी बहुत प्रशंसा की और कहा कि तुमने कौरवों ... यमें धर्म्मके अनुसार अपने कुलकी रक्षा की ... और प्रारब्धहीसे उस युद्धसे बचकर आये, ... तुम्हें इस समय इस प्रकार देख रहे हैं। ... प्रजा सूर्य्यको देखती है। अब तुम ही ... हतभाग्य और हमारे वचन न माननेवाले दुर्य्योधन ... व्याकुल अन्धे राजा धृतराष्ट्र की लठी हो।

हे पुत्र! आज तुम हस्तिनापुरमें विश्राम करके प्रातःकाल युधिष्ठिरके पास जाइयो।

ऐसा कहकर विदुर रोने लगे। ... युयुत्सुको लेकर राजभवनमें गये, उस समय राजभवनमें चारों ओरसे हाहाकार मच रहा था। कोई मनुष्य आनन्द नहीं दीखता था उस घरकी ऐसी शोभा दीखती थी जैसे चारों ओरका चौबचा कटनेसे तालावकी चारों ओरसे शून्य दिखाई देता था। चारों ओर मनुष्य रो रहे थे, युयुत्सुको वहां पहुंचाकर धर्म्मज्ञ विदुर भी श्वास लेते हुए अपने घर चले गए, युयुत्सु अपने घरमें जाकर अपने ... मनुष्योंसे मिले, तौ भी कुलनाश होनेके दुःखसे रात्रिभर न सोये।

२९ अध्याय समाप्त।

शल्यपर्व्वमें ह्रदप्रवेश पर्व्व समाप्त हुआ।

गदायुद्धपर्व्व ।

आगे गदायुद्धपर्व्व लिखते हैं ।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय ! जब पाण्डवोंने हमारी सब सेनाका नाश कर दिया, तब हमारी ओरके बचे हुए, कृपाचार्य्य, बलवान् अश्वत्थामा, कृतवर्म्मा, और मूर्ख राजा दुर्य्योधनने क्या किया ?

सञ्जय बोले, हे राजन् ! जब महात्मा क्षत्रियोंके परिवार डेरोंसे भाग गये और सब डेरे शून्य होगये, तब कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा और कृतवर्म्मा ये तीनों महारथ उसी समय विजयी पाण्डवोंका शब्द सुनकर डेरोंमें न बैठ सके और राजाको ढूंढनेके लिये उस ही तालावकी ओर चले ।

धर्मात्मा महाराज युधिष्ठिरने भी अपने भाइयोंके सहित दुर्य्योधनको मारनेके लिये ढूंढने लगे। पाण्डवोंने बहुत क्रोध और यत्न करके ढूंढनेपर भी कहीं राजा दुर्य्योधनका पता न पाया ।

राजा दुर्य्योधनने गदा लेकर बहुत शीघ्रतासे तालाबमें घुसकर अपनी मायासे जलको स्थिर कर दिया ।

तब ढूंढते ढूंढते पाण्डवोंके घोड़े थक गये. तब वे लोग अपने डेरोंमें आकर अपनी सेनाका प्रबन्ध करने लगे। जब पाण्डव डेरोंमें चले गये, तब [illegible] कृतवर्म्मा धीरे [illegible] राजा [illegible]

[illegible]

दिया । अब हम लोग आपकी रक्षा करेंगे । तब पाण्डव आपके बलको नहीं सह सकेंगे । इसलिये आप उठिये. और पाण्डवोंसे युद्ध कीजिये ।

राजा दुर्य्योधन बोले, हे वीरो ! हमारी और पाण्डवोंके घोर युद्धरूपी मनुष्योंके नाशसे बचे हुए तुम तीन पुरुषसिंहोंको प्रारब्धहीसे जीता देखते है । आप लोग बहुत थक गये हैं, और हम भी घावोंसे व्याकुल हैं, पाण्डवोंकी सेनाका उत्साह बहुत बढ़ा हुआ है । इसलिये हम इस समयमें युद्ध करना नहीं चाहते हैं । हे वीरो ! आप लोगोंका जो हमारी ओर ऐसा चित्त है । यह कुछ आश्चर्य नहीं मैं आप लोगोंके बलको जानता हूं, परन्तु समयको नांघ नहीं सकता हूं, आज रात्रि भर विश्राम करके प्रातःकाल होते ही आप लोगोंके सहित पाण्डवोंसे निःसन्देह युद्ध करूंगा ।

सञ्जय बोले, महाबलवान राजाके ऐसे वचन सुन द्रोणपुत्र अश्वत्थामा बोले, हे राजन् ! आपका कल्याण हो ।

आप उठिये हम आपके सब शत्रुओंको जीतेंगे, हम जय और विजयकी शपथ खाकर कहते हैं । यदि सोमक वंशियोंका नाश न करें तो महात्माओंको व्रत हीन योग्य यज्ञोंका फल हमें न मिले, हे राजन् ! अब हम आपसे सत्य करते हैं, की यह रात्रि बीतनेपर हम सब पाञ्चालोंका नाश करेंगे । और बिना उनको मारे कवच नहीं खोलेंगे ।

हे राजन् ! जहां ये सब बात होरही थी, वहां उसी समय भीमसेनके लिये, मांस लानेवाले, [illegible] मांस भारसे थककर पानी पीनेको आये और [illegible] छिपकर बातें सुनने लगे । [illegible] राजाको [illegible] [illegible] दिन [illegible] [illegible] महारथोंके [illegible] और [illegible] महाराज युधिष्ठि[illegible]

पास चले, महाराज युधिष्ठिरने उन सबसे पहले कहा था कि तुम दुर्य्योधनको ढूढ़ना युधिष्ठिरके वेही वचन स्मरण करके धीरे धीरे कहने लगे, की चलो महाराजसे दुर्य्योधनका पता बतावेंगे तो वे हमको बहुत धन देंगे निश्चय राजा दुर्य्योधन ये ही हैं, यह समाचार बुद्धिमान् धनुषधारी भीमसेन सुनते ही हम लोगोंको बहुत धन देंगे, इस सूखे मांसको लेकर क्या करेंगे। इसके क्लेशकारी तृप्तिसे क्या होगा, ऐसा कहते हुए वे सब व्याधे धन लेनेकी इच्छासे मांसकी वहंगी उठा कर डेरोंकी ओर चले गये।

हे राजन्! पाण्डव लोग भी विजय कर और दुर्य्योधनको नाशकर बैर समाप्त करनेके लिये चारों ओर दूतोंको भेजने लगे। थोड़े समयमें सब सेनावालोंने आकर महाराजसे कहाकी राजा दुर्य्योधन कहीं मर गया। उनके वचन सुन राजा युधिष्ठिर ऊंचे स्वांस लेकर बहुत चिन्ता करने लगे, उसी समय वे व्याधे बहुत शीघ्रतासे डेरोंमें पहुंचे, यद्यपि पहरेदारोंने उन्हें रोका तोभी वे लोग प्रसन्न होकर भीमसेनके पास चले गये और महाबलवान् भीमसेनसे सब समाचार कह सुनाया। तब उन्होंने बहुत प्रसन्न होकर उन्हें बहुत धन देकर बिदा किया और यह सब समाचार महाराजा युधिष्ठिरसे कह दिया।

भीमसेन बोले, हे महाराज! आप जिसके लिये शोच कर रहे थे, उस दुर्य्योधनको हमारे व्याधे देख आये, वह अपनी मायासे जलको स्तम्भित करके तालाबमें सोता है।

कुन्तीपुत्र अजीत शत्रु युधिष्ठिर भीमसेनके ऐसे प्यारे वचन सुनकर अपने भाइयोंके सहित बहुत प्रसन्न हुए महाधनुषधारी दुर्य्योधनको तालाबमें सोते सुन श्रीकृष्णके सहित वहीं चलनेकी इच्छा करी।

हे पृथ्वीनाथ! उस समय पाण्डव और पाञ्चालोंकी सेनामें प्रसन्न क्षत्रियोंका घोर श होने लगा, कहीं वीर गर्जने लगे और कहीं कूदने लगे, चारों ओर वीर पाण्डवोंकी सेना यही शब्द सुनाई देता था, कि पापी दुर्य्यो नका पता लगगया और उसे हमारे मनु देख भी आये, हे पृथ्वीनाथ! उस समयमें प्रसन्न सोमक वंशियोंके वेगवान् रथोंका घोर श पूरित होगया था, सब क्षत्री थके हुए वाहन पर चढ कर दुर्य्योधनको ढूढते हुए युधिष्ठि रके सङ्ग चले, उसमें प्रतापवान धर्म्मराजके स भीमसेन, अर्ज्जुन, नकुल, सहदेव, सेनाप धृष्टद्युम्न, महापराक्रमी शिखण्डी, उत्तमौ महारथ सात्यकी, द्रौपदीके पांचों पुत्र और हुए सोमक वंशी चलो, सब घोड़े, हाथी सहस्रों पैदल थे, थोड़े ही समयमें प्रताप धर्म्मराज युधिष्ठिर उस ठंढे जलवाले, स समान गम्भीर द्वैपायन नाम तालाबके पहुंचे, जहां अद्भुत विधि और दैव मायासे जलको स्तम्भित करके गदाधारी रा... राज दुर्य्योधन सोतेथे, दुर्य्योधन भी जलके भीतरहीसे युधिष्ठिरकी आती हुई सेनाक मेघके समान शब्द सुना, राजा युधिष्ठिर भी अपने भाइयोंके सहित दुर्य्योधनको मारनेके लिये शङ्ख और रथके पहियोंके शब्दसे पृथ्वीको कंपाते हुए और धूलिसे आकाशको पूरित करते हुए उस तालाबके पास पहुंचे युधिष्ठिरकी सेनाका शब्द सुनकर कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा, और कृतवर्म्मा दुर्य्योधनसे ऐसा बोले, विजयी प्रसन्न पाण्डवोंकी सेना इधर ही चली आती है, इसलिये हम लोग भागते हैं आप साव धान होजाइये।

उन वीरोंके वचन सुन महाराजने बहुत अच्छा कहकर फिर अपनी मायासे जलको स्तम्भित कर दिया और आप तालाबमें सु गये, ये तीनों भी राजाकी आज्ञा पाकर शो शोकसे व्याकुल होकर वहांसे चले गये। ती

और बहुत दूर जाकर थककर एक बड़गदकी छायामें बैठकर राजाका शोच करने लगे कि महाबलवान धृतराष्ट्रपुत्र दुर्य्योधन जलके भीतर सोते हैं और पाण्डव भी युद्धके लिये वहीं पहुंच गये हैं, न जानें यह युद्ध कैसा होगा? न जाने महाराजकी क्या दशा होगी? और न जानें महाराजके सङ्ग पाण्डव कैसा व्यवहार करेंगे? यही सोचते सोचते उन्होंने रथोंसे घोड़े छोड़े और वहीं सो रहे।

३० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! धृतराष्ट्र जब वे तीनों वीर चले गये, तब पाण्डवोंकी सेना उस तालाबके पास पहुंची जहां मायासे जल स्तम्भित करके राजा दुर्य्योधन सोते थे। वहां जाकर कुरुकुलश्रेष्ठ महाराज युधिष्ठिर श्रीकृष्णसे ऐसा बोले, हे कृष्ण! यह देखो दुर्य्योधनने अपनी दैवी मायासे इस जलको कैसा स्तम्भित कर दिया है, ये किसी मनुष्यसे भी नहीं डरता आज यदि इस छलीको साक्षात् इन्द्र भी रक्षा करें तोभी यह मुझसे जीता नहीं बचेगा।

श्रीकृष्ण बोले, हे महाराज! इस छलीको छलहीसे मारिये, छलीको छलसे मारनेमें कुछ भी पाप नहीं होता। हे भारतकुलश्रेष्ठ! [illegible] क्रिया करके इसका [illegible] दानवोंको मारा है, [illegible] कौशलहीसे महा बलवान [illegible] मारा था [illegible] भी कौशलहीसे [illegible] राक्षसको मारा था, और [illegible] राक्षसको भी [illegible] कौशलहीसे [illegible]

भी वैसे ही कौशल और बलसे दुर्य्योधनको मारिये।

हे राजन्! पहिले समयमें मैंने भी विप्रचित्ती और तारक नाम राक्षसको कौशलहीसे मारा था, वातापी इल्वल, शुन्द, उपशुन्द, त्रिसिरा भी कौशलहीसे मारे गये, कौशलहीसे इन्द्र स्वर्गका राज्य करते हैं। हे युधिष्ठिर! कौशलही जगतमें प्रधान है और कुछ नहीं, अनेक दैत्य, दानव और राक्षस कौशलहीसे मारे गये हैं। इसलिये आप भी कौशलसे ही काम कीजिये।

सञ्जय बोले, श्रीकृष्णके ऐसे वचन सुन महाव्रतधारी कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर जलमें सोते हुए महाबलवान दुर्य्योधनसे बोले।

हे दुर्य्योधन! सब क्षत्री और अपने वंशका नाश करके अब अपने जीनेकी इच्छासे तुम जलमें क्यों घुसे हो? तुम उठो और हम लोगोंसे युद्ध करो। हे पुरुषश्रेष्ठ! तुम्हारा वह अभिमान और तुम्हारा वह गौरव अब कहां गया? जो तुम डरकर पानीके भीतर छिपे हो, सभामें सब लोग तुम्हें वीर कहा करते थे, परन्तु आज पानीमें छिपनेसे हमें वह सबकी बात झूठ जान पड़ी, तुम क्षत्रीकुलमें उत्पन्न हुए हो विशेषकर कुरुवंशी कहलाते हो अपने जन्म और वंशका स्मरण करो और उठकर हम लोगोंसे युद्ध करो। हम कुरुकुलमें उत्पन्न हुए हैं। यह कहके भी क्या युद्धसे डरकर छिपे हो? क्या यह तुम्हारे लिये एक आश्चर्यकी बात नहीं है; राज्य और युद्धमें न रहना युद्ध छोड़कर भागना यह क्षत्रियोंका धर्म नहीं है।

शूरे और बहादुर लोग ऐसा करते हैं, युद्ध छोड़कर भागनेसे क्षत्रियको स्वर्ग नहीं होता तुम [illegible] समाप्त किये भाई, पुत्र, पिता, सम्बन्धी, मामा और भाइयोंका नाश कराकर तुम [illegible] इस जलमें छिपे हो, हे दुर्बुद्धे!

तू वृथा वीरताका अभिमान किया करता था, और सबको सुनाया करता था, कि मैं वीर हूं; वीर लोग क्षत्रियोंको देखकर कदापि युद्ध छोड़ कर नहीं भागते, हे वीर! तुम युद्ध छोड़कर क्यों भाग आये? सो तुम अब भय दूर करके उठो और हम लोगोंसे युद्ध करो। सब क्षत्रियोंका नाश कराके अब तुम्हें जीना धर्म नहीं है, हे दुर्य्योधन! तुम्हारे समान क्षत्रिय अपने धर्मको नहीं छोड़ते हैं, हे भारत! तुम जो पहिले कर्ण और सुवलपुत्र शकुनिके आश्रयसे अपनेको सब मनुष्योंसे अधिक मानते थे, उस ही घोर पापका फल भोगनेके लिये आज तुमको हम लोगोंसे युद्ध करना होगा, तुम्हारे समान क्षत्रियको युद्ध छोड़कर भागना बहुत अनुचित है, तुम्हारा वह बल, तुम्हारा वह अभिमान, तुम्हारा वह तेज, तुम्हारा वह गर्ज्जना और तुम्हारी वह शस्त्रविद्या आज कहां गई? जो डरसे पानीमें छिपे हो, तुम उठो और क्षत्रिय धर्मके अनुसार हम लोगोंसे युद्ध करो ब्रह्माने तुम्हारा यही धर्म बनाया है कि, हम लोगोंको जीतकर पृथ्वीके स्वामी बनो अथवा लड़कर पृथ्वीमें शयन करो; हे महाराय! तुम अपने धर्मको पालन करो और हम लोगोंको मार कर जगत्के राजा बनो।

सञ्जय बोले, हे महाराज। बुद्धिमान युधिष्ठिरके ऐसे बचन सुन जलके भीतरसे तुम्हारे पुत्र ऐसा बोले।

दुर्य्योधन बोले, हे पृथ्वीनाथ! हे भारत! मनुष्योंको भय हो यह कुछ आश्चर्य्यकी बात नहीं है। भय होना मनुष्योंका स्वाभाविक धर्म है परन्तु मुझे वह भी नहीं है अर्थात् मैं किसी समय किसीसे नहीं डरता मैंने तुम्हारे भयसे मरनेके डरसे या किसी शोकसे जलमें प्रवेश नहीं किया है वरन युद्ध करता बहुत थक गया, रथ टूट गया सारथी और रक्षा करनेवाले मर गए, कोई साथी न रहा, तब थोड़ासा सांस लेनेके लिये इस जलमें आयाथा, अब तुम और तुम्हारे सब साथी सावधान हो जाओ मैं जलसे निकल कर सबको मारूंगा।

युधिष्ठिर बोले, हम सब सावधान हैं और बहुत समयसे तुम्हें ढूंढ़ रहे हैं इसलिये तुम उठो और हम लोगोंको मारकर इस जगत्का राज्य करो। अथवा हम लोगोंके हाथसे मर कर वीर लोकको जावो।

दुर्य्योधन बोले, हे कुरुकुलश्रेष्ठ। मैं जिन लोगोंके लिये जगत्का राज्य करना चाहता था, वे मेरे सब भाई मरे हुए पृथ्वीमें सोते हैं और भी जगत्के उत्तम क्षत्रिय नष्ट होगये पृथ्वी रत्नोंसे हीन होगई अब विधवा स्त्रीके समान मैं इसको नहीं भोगना चाहता; द्रोणाचार्य्य, कर्ण और भीष्म पितामह मर गये, इस लिये अब मुझे युद्ध करनेसे कुछ लाभ नहीं है, तौ भी पाञ्चाल और पाण्डवोंका उत्साह तोड़नेके लिये मैं अब भी तुम्हें मारनेका साहस करता हूं ऐसा कौन मूर्ख राजा होगा जो अपने सब सहायकोंका नाश कराके राज्य करनेकी इच्छा करे। इसलिये अब यह रत्न हीन पृथ्वी तुम्हीं लो। जगत्में ऐसा कौन मनुष्य होगा, जो भाई पुत्र और जातिका नाश कराके जीनेकी इच्छा करे विशेषकर मेरे समान वीर; अब मुझे जीनेकी कुछ इच्छा नहीं, मैं हरिनका चमड़ा ओढ़कर बनको जाता हूं। यह क्षत्रिय, हाथी और घोड़ोंसे रहित पृथ्वी तुम्हारी हो, हे राजन! तुम अपनी इच्छानुसार वीर और रत्नोंसे रहित पृथ्वीका राज्य करो।

सञ्जय बोले, हे राजन्! महायशस्वी युधिष्ठिर जलके भीतरसे दुर्य्योधनके ऐसे वचन सुन ऐसा कहने लगे।

युधिष्ठिर बोले, हे तात। अब इस बृथा रोनेसे कुछ फल न होगा। जैसी शकुनी मनमें छलसे पाण्डवोंका राज्य छीननेकी इच्छा

[illegible] मेरे मनमें नहीं है। तुम अत्यन्त समर्थ भी हो तौ भी मैं तुम्हारा दिया राज्य नहीं चाहता परन्तु तुम्हें मारकर पृथ्वीका राजा बनूंगा। अब तुम पृथ्वीके स्वामी नहीं हो, इसलिये तुम्हें देनेका भी कुछ अधिकार नहीं जब तुम समर्थ थे, और हमलोग कुलकी शान्तिके लिये धर्म्मसे आधा राज्य मांगते थे, तभी तुमने हमें क्यों नहीं दिया था?

महावीर श्रीकृष्णका निरादर करके अब तुम हमको राज्य देना कहते हो, यह तुम कैसी भूलकी बात कहते हो? कौन ऐसा राजा होगा जो समर्थ होकर अपना राज्य दूसरेको देनेकी इच्छा करे?

हे राजन्! तुमको इस समय पृथ्वी देने और अपने वशमें रखनेकी समर्थ नहीं है। तुमने श्रीकृष्णसे कहा था कि मैं सुईकी नाकीके समान पृथ्वी बिना युद्धके युधिष्ठिरको न दूंगा। सो तुम आज सब पृथ्वी मुझे क्यों देते हो? तुम पहिले सुईके नाकीके समान पृथ्वी नहीं देना चाहते थे, सो आज सब पृथ्वी छोड़नेकी क्यों इच्छा करते हो? तुम हमको जीतकर जगतके राजा बनो। ऐसा कौन मूर्ख राजा होगा जो अपने जीतेजी अपने शत्रुको राज्य दे। परन्तु तुम मूर्ख हो, अपनी मूर्खतासे बक रहे हो। अब तुम हम लोगोंको जीतकर पृथ्वीके राजा बनो। अथवा हमारे हाथसे मरकर स्वर्गको जाओ। हमारे और तुम्हारे दोनोंके [illegible] यह सन्देह नहीं रहेगा, कि आज युद्धमें किसकी विजय हुई, [illegible] हमारे [illegible] है। [illegible] हमारे मारनेके लिये [illegible] कर [illegible] तुम्हें हमारा राज्य [illegible] इत्या- [illegible] हो [illegible] छोडूंगा। इसलिये उठो और युद्ध करो, युद्ध होनेसे कल्याण होगा।

युधिष्ठिरने और सब वीरोंने भी दुर्य्योधनको इत्यादि अनेक कठोर वातें कहीं।

३१ अध्याय समाप्त।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय। हमारे पुत्र दुर्य्योधन स्वभावहीसे महाक्रोधी थे। उन्होंने युधिष्ठिरके ऐसे कठोर वचन सुनके क्या कहा? उन्होंने इससे पहिले, किसीके कठोर वचन नहीं सुने थे, सब जगत् महाराज कहकर जिनका आदर करता था, जिस छत्रकी छाया अभिमानसे सूर्य्यके समान आकाशमें घूमती थी, जिसकी कृपासे वन और म्लेच्छोंके सहित यह पृथ्वी स्थिर थी, हे सञ्जय! उस मेरे पुत्रने पाण्डवोंके कठोर वचन सुनके कैसे सहे? और क्या कहा? सो तुम हमसे कहो उस समय वे ऐसी आपत्तिमें पड़े थे, कि एक सेवक भी उनके सङ्ग न था।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र! भाइयोंके सहित युधिष्ठिरके ऐसे कठोर वचन सुनकर राजा दुर्य्योधन बार बार हाथ पटकते हुए और गर्म स्वांस लेते हुए युद्ध करनेकी इच्छा करने लगे। और युधिष्ठिरसे ऐसा वचन बोले।

हे महाराज। आप लोग वाहन और सहायकोंके सहित हैं, मैं अकेला वाहनरहित और थका हुआ हूं। सो रथोंमें बैठ शस्त्र सहित अनेक वीरोंसे अकेला शस्त्र रहित पैदल घावोंसे व्याकुल किस प्रकार युद्ध करूंगा? हे राजन्! धर्म्मसे एक एक के सङ्ग युद्ध करनेसे कुछ भय नहीं करना परन्तु अकेलेसे अनेक वीरोंके सहित युद्ध करना अधर्म्म है, मैं तुमसे भीमसेनसे, अर्जुनसे, नकुलसे, सहदेवसे, श्रीकृष्णसे, द्रुपदसे सब पाञ्चालोंसे और सात्यकि आदि सब वीरोंसे युद्ध नहीं करता, मैं एकका ही

सबको मार सक्ता हूं। परन्तु जगत्में कीर्त्तिका मूल धर्म्म ही है, आपका धर्म्म नष्ट न हो, इसीलिये, यह सब कह रहा हूं। जैसे वर्ष सब ऋतुवोंको नाघ जाता है, ऐसे ही मैं सब तुम लोगोंको जीत लूंगा? जैसे प्रातःकाल एकला सूर्य्य अपने तेजसे सब तारोंको छिपा देता है। ऐसे ही आज मैं एकला रथ, और शस्त्रोंसे हीन होनेपर भी तुम्हारा सबका नाश करूंगा। हे पाण्डवो! तुम लोग स्थिर और सावधान होजावो, आजमैं महायशस्वो चत्रिय, बाल्हीक, भीष्म, द्रोणाचार्य्य, महात्मा कर्ण, वीर जयद्रथ, वीर भगदत्त, मद्रराज शल्य, भूरिश्रवा, अपने, पुत्र, सुबलपुत्र शकुनी आदि अपने बान्धवोंके ऋणसे छूटूंगा। और तुम्हे बान्धवोंके सहित मारूंगा? ऐसा कहकर महाराज चुप होगए।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे महावीर! प्रारब्धहीसे तुम चत्रियधर्म्मको जानते हो, प्रारब्धहीसे तुम युद्धके लिये उपस्थित हुए हो, प्रारब्धहीसे तुम्हारे चित्तमें वीरता आई है। तुम्हे धन्य है जो तुम एकले ही हमसे युद्ध करनेको उपस्थित होगए। अब हम तुम्हारी इच्छानुसार तुम्हे एक बरदान देते हैं। जो तुम्हारी इच्छा हो सो शस्त्र ले लो। और हम सबमेंसे जिस वीरके सङ्गमें तुम्हारी इच्छा हो उससे युद्ध करो और सब लाग युद्ध देखेंगे, कोई लड़ेगा नहीं, और भो बरदान देते है। कि हम पांचोंमेसे एकको मारनेसे भी तुम्हारा राज्य मिलेगा अथवा मरकर स्वर्ग मिलेगा।

दुर्य्योधन बोले, आपने जो कहा हम वही स्वीकार करते है। शस्त्र हमारे पास गदा है, आपकी सम्मती हो तो हम इसीसे युद्ध करें, अब तुम सबमेंसे जो गदा युद्ध जानता हो सो गदा लेकर हमसे पैदल गदा युद्ध करें, रथोंमें बैठकर अनेक विचित्र युद्ध किए आज यह आपकी आज्ञासे घोर गदा युद्ध भी होजाय। वीर लोग अनेक शस्त्रोंसे युद्ध करते हैं। परन्तु मैं केवल गदाहीसे भाइयोंके सहित तुमको मारूंगा पाञ्चाल और सृञ्जय आदि तुम्हारे सब पक्षवालोंको मारूंगा। हे युधिष्ठिर! मैं युद्धमें इन्द्र भी नहीं डरता।

युधिष्ठिर बोले, हे गान्धारीपुत्र दुर्य्योधन तुम मनुष्य बनो पानीसे निकलकर गदा धारण करके एक एकसे युद्ध करो आज यदि इन्द्र भी तुम्हारी रचा करें तोभी जोते नहीं बचोगे।

सञ्जय बोले, युधिष्ठिरके इन कटु वचनोंको पुरुषसिंह दुर्य्योधन चमा न कर सके और भीतरसे मतवाले हाथोके समान स्वास लेने लगे। जैसे उत्तम घोड़ा कोड़ेकी चोट नहीं सह सक्ता, ऐसे ही दुर्य्योधन युधिष्ठिरके कड़े बचन न सह सके, तब बलसे सब पानीको उथल पुथल करके सोनेसे जड़ी पर्व्वतके समान भारी दृढ़ गदाको कन्धेपर रखकर इस प्रकार निकले जैसे मतवाला हाथी जलसे निकलता है। महाबलवान दुर्य्योधन दो पहरके सूर्य्यके समान खड़े होकर गदाको छूने लगे। उस समय गदाधारी दुर्य्योधनका शरीर ऐसा दीखता था, जैसे शिखरके सहित पर्व्वत और प्रलयकालमें शूलधारी यमराज। महाबाहु शत्रुनाशन गदाधारी दुर्य्योधनको सब लोग दण्डधारी यमराज, वज्रधारी इन्द्र और त्रिशूलधारी शिवके समान देखन लगे।

उनको युद्धमें एकले खड़ा देख पाञ्चाल सृञ्जय और पाण्डव ताली देकर हंसने लगे। तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन उस हंसीको न चमा कर सके और नेत्र फैलाकर देखने लगे। मानो पाण्डवोंको भस्म कर देंगे। फिर दांत चबाकर भौंह टेढ़ी करके श्रीकृष्ण और पाण्डवोंसे बोले।

अरे पाण्डवो! तुम सब हमारे पास आकर और हंसीका फल लो और पाञ्चालोंके सहित मरकर स्वर्गको जावो।

सञ्जय बोले, रुधिर और पानीमें भीगे दुर्य्योधनका शरीर उस समय ऐसा दीखता था,

जैसे झरनोंके सहित पर्व्वत उस समय पाण्डवोंने उन्हें दण्डधारी यमराजके समान देखा, तब मतवाले बैलके समान नाचते हुए मेघके समान गर्ज्जते हुए दुर्य्योधन गदा लेकर पाण्डवोंको ललकारने लगे ।

दुर्य्योधन बोले, हे युधिष्ठिर ! अब तुम लोग एक एक मुझसे युद्ध करनेको चले आवो, क्योंकि धर्म्मके अनुसार एक बीरके साथ अनेक बीर नहीं लड़ सक्ते । यद्यपि मेरा बैर सबहीके सङ्ग है । और सभीको मुझसे लड़ना चाहिए परन्तु आप युक्त और अयुक्त विषयोंको जानते हैं ।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे दुर्य्योधन ! तुम्हारी बुद्धि ऐसी न होनी चाहिए क्योंकि यह बतलाओ कि अभिमन्युको के महारथोंने मिलकर मारा था ? क्षत्रियोंका धर्म्म महादुष्ट और नीच है, नहीं तो अभिमन्युको कौन मार सक्ता था ? तुम सब लोग धर्म्मात्मा और बीर थे, और सब लोग इन्द्रलोकमें जानेके लिये धर्म्मसे युद्ध कर रहे थे, और यह भी जानते थे कि, एक बीरके सङ्ग अनेक बीरोंको युद्ध न करना चाहिए तब अभिमन्युको तुम्हारी सम्मतिसे अनेक बीरोंने क्यों मारा ? धर्म्म सब मनुष्य करना चाहते हैं । परन्तु धर्म्म बड़ा कठिन है, धर्म्म करनेसे स्वर्गका द्वार दीखने लगता है, जो हो अब तुम यह कवच, पहिनो बालोंको ठीक करके टोप लगावो और भी जो सामग्री तुम्हारे पास न हो सो हम से लो, हम फिर भी एक बरदान तुम्हें देते हैं । कि हम पाचोंमेंसे जिसके सङ्ग तुम लड़ना चाहो उस एकको मार कर राजा बनोगे, अथवा उसके हाथसे मरकर स्वर्गको जावोगे, हे बीर ! जीवदानको छोड़कर और जो तुम्हारी इच्छा हो सो हमसे मागो ।

सञ्जय बोले, हे राजन् ! तब तुम्हारे पुत्रने सोनेका विचित्र कवच पहिना और सोनेका विचित्र टोप ओढ़ा उस समय उनकी शोभा सुमेरु पर्व्वतके समान दीखने लगी तब गदा लेकर दुर्य्योधन खड़े हुए और ऐसा बोले, पांचो पाण्डवोंमेंसे जिसकी इच्छा हो सो गदा लेकर हमसे युद्ध करनेको आवे । चाहे सहदेव, चाहे भीमसेन, चाहे नकुल, चाहे अर्ज्जुन और चाहे साक्षात् युधिष्ठिर ही मुझसे क्यों न लड़ें, आज सबको मारूंगा आज मैं सोनेकी मढ़ी गदासे युद्ध करके इस बैरके पार जाऊंगा, मुझे यह निश्चय है कि जगत्में मेरे समान कोई गदायुद्ध नहीं जानता, इसलिये यदि धर्म्मसे लड़ोगे तो मैं तुम सबोंको मारडालूंगा । परन्तु मुझे ऐसे अभिमानके बचन न कहने चाहिये अथवा जो कहता हूं वह सब सत्य करके दिखला दूंगा, इसलिये कहनेमें कुछ दोष नहीं; अधिक क्या कहैं जिसे युद्ध करना हो सो गदा लेकर आवे हमारे बचन सत्य है वा झूठ हैं सो प्रत्यक्ष होजावेंगे ।

३२ अध्याय समाप्त ।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र ! दुर्य्योधनको इस प्रकार गर्ज्जते देख श्रीकृष्ण बोले, हे युधिष्ठिर ! आपने यह क्या भूल करी जो दुर्य्योधनको यह बरदान दिया कि हम पाचोंमेंसे एकको मारकर राजा बनोगे, यदि अब यह तुमसे, अर्ज्जुनसे, नकुलसे या सहदेवसे युद्ध करना चाहे तो क्या हो ? इसने तेरह बर्षतक लोहेके भीमसेन बनाकर तोड़नेका अभ्यास किया है, तब हम लोगोंकी कार्य्यसिद्धि कैसे होगी ? हे राजोंमे श्रेष्ठ ! हम इस समयमें भीमसेनके सिवाय और किसीको ऐसा नहीं देखते जो दुर्य्योधनको जीत सके आपने क्रोध और साहसमें भर करके ऐसे बचन कह दिये जैसे शकुनी और आपसे पहिले जुवा हुआ था वैसे ही अब यह दूसरा जुआ होगया, जो हो भूलसे, भीमसेन बलवान और समर्थ हैं, परन्तु राजा दुर्य्योधन चतुर और चालाक हैं, चतुर

बलवानसे सदा तेज रहता है, यह नियम है ऐसे चालाक शत्रुके सङ्गमें आपने घोर प्रतिज्ञा कर दी, आप आपत्तिमें पड़े और हम लोगोंको भी दुःखमें डाला, ऐसा कौन राजा होगा जो इतने युद्धसे प्राप्तहुए राज्यको एक मनुष्यके मरनेपर शत्रुके हाथमें देदे? हमें कोई ऐसा मनुष्य और देवता नहीं दीखता जो गदाधारी दुर्य्योधनको जीत सके, आप भीमसेन, नकुल, सहदेव और अर्ज्जुन पांचोंमें कोई ऐसा नहीं है जो धर्मसे युद्ध करते हुए दुर्य्योधनको जीत सके तब आपने ऐसा क्यों कहा कि गदासे युद्ध करो? और एकको मार कर राजा होजाओ? राजा दुर्य्योधन बड़ा चतुर है, इसलिये भीमसेन उन्हें जीत सकें या नहीं इसमें हमें सन्देह है, हमें यह निश्चय होता है कि पाण्डु और कुन्तीकी सन्तान केवल भीख मांगने और बनमें रहनेहीके लिये उत्पन्न हुई है राज्य भोगनेको नहीं।

भीमसेन बोले, हे यदुकुलश्रेष्ठ! आप कुछ भय मत कीजिये हम निःसन्देह दुर्य्योधनको मारेंगे और इस घोर बैरके पार जायगे। हमें निश्चय है, कि धर्मराजकी विजय होगी हमारी दुर्य्योधनकी गदासे दुगुणी भारी है, इसलिये आप भय मत कीजिये हम दुर्य्योधनसे गदा युद्ध कर सक्ते हैं। आप सब लोग देखिये हम एकले तीनों लोकोंके सहित शस्त्रधारी देवतोंसे युद्ध कर सक्ते है। फिर दुर्य्योधनकी तो कथा हो क्या है?

सञ्जय बोले, भीमसेनके ऐसे बचन सुन उनकी प्रशंसा करके प्रसन्न होकरके श्रीकृष्ण बोले, हे महाबाहो! तुम्हारे ही आश्रयसे आज राजा युधिष्ठिर शत्रुरहित हुएहैं और तुम्हारे ही आश्रयसे इनको यह उत्तम लक्ष्मी प्राप्त हुई है, तुमने धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंको मारा, तुमने अनेक राजा और राज पुत्रोंको मारा तुम्हारे पास आते ही कलिङ्ग, मागध, प्राच्य, गान्धार, और कुरुवंशी क्षत्रियोंका नाश होगया। जैसे विष्णुने जीत कर स्वर्ग इन्द्रको दिया था, वैसे ही तुम दुर्य्योधनको मार कर सब पृथ्वी युधिष्ठिरको दो हमें यह निश्चय है कि तुम इसे मारोगे तुम उसकी जङ्घा तोड़ कर अपनी प्रतिज्ञा पालन करना। यह चालाक, बलवान् और महायोद्धा है इसलिये यतनके सहित सावधान होकर इससे युद्ध करना।

हे राजन्! तब सात्यकी युधिष्ठिरादि पाण्डव और धृष्टद्युम्नादि पाञ्चाल भीमसेनकी प्रशंसा करने लगे। तब महाबलवान भीमसेन सृञ्जयवंशी क्षत्रियोंके बीचमें खड़े सूर्य्यके समान तेजस्वी युधिष्ठिरसे बोले, हे महाराज। मैं इससे युद्ध कर सक्ता हूं, यह नीच नहीं मुझे जीत सक्ता है, जैसे अर्ज्जुनने खाण्डव बनको जलाके अपना महा क्रोध शान्त किया था, वैसे ही आज मैं दुर्य्योधनको मारकर अपने हृदयमें भरे क्रोधको शान्त करूंगा, आज इस पापीको गदासे मारकर आपके हृदयका शल्य निकालूंगा। हे पापरहित! आप प्रसन्न हूजिए आज आप विजय और कीर्त्ति माला पहिनोंगे, मूर्ख दुर्य्योधन राज्य, धन और प्राणोंसे छूटेगा, आज अपने पुत्रको मरा हुआ सुन गान्धारी धृतराष्ट्र शकुनिकी सम्मतिसे किये हुए पापका स्मरण करेंगे।

ऐसा कह कर भरतकुलश्रेष्ठ बलवान भीमसेन गदा लेकर खड़े होगये और जैसे इन्द्रने वृत्रासुरको ललकारा था, वैसेही दुर्य्योधनको पुकारने लगे। दुर्य्योधन भी उस ललकारको क्षमा न कर सके और जैसे मतवाला हाथी मतवाले हाथीकी और युद्ध करनेको दौड़ता है, ऐसे भीमसेनकी ओरको दौड़े गदाधारी दुर्य्योधनको पाण्डवोंने शिखरधारी कैलाशके समान देखा, महाबलवान एकले दुर्य्योधनका सब पाण्डव इस प्रकार शब्द बढ़ाने लगे जैसे झुण्डसे छुटे हाथीका। राजा दुर्य्योधनको उस समय न कुछ घबड़ाहट थी, न

कुछ भय था, न कुछ थकाई थी, और न कुछ दुःख था, वे सिंहके समान युद्धमें खड़े थे, उन्हें गदा धारण किये शिखरधारी पर्व्वतके समान खड़ा देख भीमसेन बोले, वारणावत नगरमें राजा धृतराष्ट्रने और तुमने जो हमारे सङ्ग अधर्म्म किया था, उसको स्मरणकरो, रजस्वला द्रौपदीको सभामें दुःख दिया था, शकुनीके छलसे महाराजको जीताथा, और भी धर्म्मात्मा पाण्डवोंके सङ्ग तुमने जो जो पाप किये हैं आज उन सबका फल देखोगे। रे दुष्टात्मा! तेरे ही पापसे महायशस्वी भरतकुल श्रेष्ठ हम सबके पितामह भीष्म शरशय्यापर सोते हैं, तेरे ही पापसे गुरु द्रोणाचार्य्य, कर्ण महाप्रतापी शल्य और वैरका मूल शकुनी मारा गया, तुम्हारे सब बीर भाई, बेटे, महायोद्धा अनेक राजा और उत्तम क्षत्रियोंका नाश हुआ पापी, द्रौपदीका क्लेश देनेवाला प्रातिकामी भी मारा गया अब एक कुलनाशन पुरुषाधम तुही बचा है सो अब गदासे तुझे भी निःसन्देह मार डालूगा, आज तेरा महा घोर अभिमान जिससे पाण्डवोंको राज्य मिलना बहुत कठिन था, उसे गदासे तोड़ूंगा।

दुर्य्योधन बोले, रे पापी भीमसेन! वृथा बकनेसे क्या होगा? आज मैं तेरी युद्ध श्रद्धाका नाश करदूंगा आज मुझसे युद्ध कर, रे पापी। क्या तू नहीं देखता है कि मैं हिमाचलके शिखरके समान भारी गदा लिये खड़ा हूं? ऐसा कौन शत्रु है, कि जो गदा धारण करने पर भी मुझको जीत सके। न्यायसे तो मुझे इन्द्र भी नहीं जीत सक्ता, हे कुन्तीपुत्र! शरद्कालके जल रहित मेघके समान मत गर्ज्ज जो तुझमें बल हो सो दिखला।

दुर्य्योधनके बचन सुन सब पाण्डव और सृञ्जय उनकी प्रशंसा करने लगे, जैसे मतवाले हाथीको कोई क्रोधित करता है, ऐसे ही सब ताली बजाकर दुर्य्योधनका क्रोध बढ़ाने लगे हाथी, घोड़े गर्ज्जने लगे, और विजयी पाण्डव शस्त्र चमकाने लगे।

३३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! जब इन दोनोंका घोर युद्ध होनेकी उपस्थित हुवा तब बलराम तीर्थोंसे घूमते हुए यह युद्ध देखनेको आये उनको देखकर श्रीकृष्णके सहित सब पाण्डव प्रसन्न होकर खड़े होगये और यथा योग्य सत्कार करके कहने लगे कि अपने दोनों शिष्योंका युद्ध देखिये तब बलराम, श्रीकृष्ण और पाण्डवोंको बैठे तथा भीमसेन और दुर्य्योधनको बैठे हुए देख बोले मैं पुष्य नक्षत्रमें द्वारिकासे गया था, और श्रवणमें लौट कर आया हूं आज मुझे द्वारिकासे चले बयालिसदिन हुए अब अपने दोनों शिष्योंका गदा युद्ध देखनेको आया हूं बलरामकी बात सुन और बीर भीमसेन बीर दुर्य्योधन गदा हाथमें लेकर युद्ध करनेको अखाड़ेमें चले गये तब राजा युधिष्ठिर बलरामको हृदयसे लगाकर कुशल पूंछने लगे श्रीकृष्ण और महाधनुषधारी यशस्वी अर्ज्जुनने भी प्रसन्न होकर बलरामको प्रणाम किया भीमसेन और महाबलवान दुर्य्योधनने भी गदा लिये ही लिये बलरामको प्रणाम किया और कुशल पूंछी सब राजा और महात्मा क्षत्री बलरामके चारों ओर बैठकर कहने लगे कि आप इन दोनोंका युद्ध देखिये। महात्मा रोहिणीपुत्र बलराम भी पाण्डव और सृञ्जयोंसे मिलकर कुशल प्रश्न पूछने लगे और सब राजोंसे भी कुशल पूंछी, उन सब राजाओंने भी बलरामसे कुशल पूंछी। इस प्रकार सबसे कुशल प्रश्न करके महात्मा बलरामने प्रेम सहित श्रीकृष्ण और सात्यकीको अपने छातीसे लगाकर माथा सूङ्घकर कुशल प्रश्न किया। इन दोनोंने भी अपने गुरु बलरामकी कुशल

पूंछ इस प्रकार पूजा करी जैसे इन्द्र और उपेन्द्र ब्रह्माकी पूजा करते हैं। तब महाराज युधिष्ठिरने शत्रुनाशन रोहिणीपुत्रसे कहा कि हे राम! अब आप इन दोनों भाइयोंका घोर युद्ध देखिये, उन सब महात्मा महारथ क्षत्रियोंके बीचमें बैठकर नीलाम्बरधारी गौरवर्णवाले बलराम इस प्रकार शोभित हुए जैसे तारोंके बीचमें पूर्णचन्द्रमा। तब दुर्य्योधन और भीमसेनका घोर युद्ध होने लगा। दोनोंको यही इच्छा हुई को इस वैरको समाप्त कर देवें।

३४ अध्याय समाप्त।

महाराज जनमेजय बोले, हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! जिस समय कौरव और पाण्डवोंका युद्ध होनेवाला था, तब ही बलराम श्रीकृष्णकी सम्मतिसे यदुवंशियोंके सहित तीर्थयात्राको चले गए थे और यह कह गए थे कि हम इन दोनोंमेंसे किसीकी सहायता नहीं करेंगे। परन्तु वे फिर क्यों चले आए। यह कथा आप हमसे विस्तारपूर्व्वक कहिये, आप सब वृत्तान्तको जानते हैं। इसलिये कहिए कि बलरामने इस युद्धको किस प्रकार देखा?

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, जब महात्मा पाण्डव बिराट नगरके उपप्लव अर्थात् उपनगर या छावनीमें रहते थे, उसी समय युधिष्ठिरने सब जगत्के कल्याणके लिये और सन्धिके लिये, श्रीकृष्णको हस्तिनापुर भेजा था, उन्होंने वहां जाकर राजा धृतराष्ट्रसे यथार्थ बचन कहे थे, परन्तु उन्होंने नहीं माने यह कथा हम पहिले तुमसे कह चुके हैं। जब सन्धि न हुई तब महाबाहु पुरुषश्रेष्ठ श्रीकृष्ण लौटकर पाण्डवोंके पास आगये और कहने लगे कि, हे पाण्डव! कुरुवंशके नाशका समय आगया, कौरवोंने हमारे बचन नहीं माने, आज पुष्य नक्षत्र है। युद्ध करनेको चलो जब सेनाका विभाग होने लगा, तब महाबलवान् रोहिणीपुत्र बलरामने अपने भाई श्रीकृष्णसे कहा कि, हे यदुनन्दन। तुम दुर्य्योधनकी भी सहायता करो परन्तु श्रीकृष्णने उनके बचन नहीं माने तब महायशस्वी बलराम पुष्य नक्षत्रमें तीर्थयात्राको चले गए, जिस दिन बलराम श्रीकृष्णसे बिदा हुए, उस दिन पुष्य और जिस दिन द्वारिकासे चले, उस दिन अनुराधा नक्षत्र था, बलरामके सङ्ग मुख्य यदुवंशी चले गये, उसी दिन शत्रुनाशन कृतवर्म्मा दुर्य्योधनके पास और सात्यकी सहित श्रीकृष्ण पाण्डवोंके पास चले गये, उस ही पुष्यनक्षत्रमें पाण्डवोंने कौरवोंसे युद्ध करनेको यात्रा करी।

बलराम थोड़ी दूर जाकर दूतोंसे बोले तुम लोग द्वारिका जावो और तीर्थयात्राकी सब सामग्री लाओ हम सरस्वतीके तटपर मिलेंगे शीघ्र आवो, सहस्रों यज्ञ करानेवाले, उत्तम ब्राह्मण आदि सामग्री सब ले आवो उनको वैसे आज्ञा देकर महाबलवान बलराम सरस्वतीके तटको चले गये, फिर द्वारिकासे आएहुए ऋत्विज अर्थात् यज्ञ करानेवाले ब्राह्मण, बान्धव, रथ, हाथी, घोड़े, पैदल बैल, गधे, ऊंट, गाय, भिक्षुक, याचक, सोना, चांदी, वस्त्र आदि सब वस्तु मिल गई। फिर उनको सङ्गमें लेकर सरस्वतीके तटपर घूमने लगे। जिस देशमें जाते थे, तहां भूखे रोगी, थके बालक और बूढ़ोंको अनेक प्रकारके धन, वस्त्र और भोजन देते थे, जो ब्राह्मण जिस समय आकर जो मांगता था, उसी समय उसको वही मिलता था, बलरामकी आज्ञासे मार्गमें मनुष्योंने ऐसा प्रबन्ध किया था कि जहां बलरामके जानेका मार्ग था। और जहा उनके ठहरनेका निश्चय होता था, वहा पहिलेहीसे खाने, पीने, वस्त्र, आसन और पलङ्ग आदि सामग्रीके ढेर होजाते थे, ब्राह्मणोंके सत्कारकी सामग्री भी ठीक कर ली थी जो ब्राह्मण वा क्षत्री जिस स्थानमें जो बस्तु खानेकी इच्छा करता था, उसे वहीं वह बस्तु प्राप्त होती थी। जिसे चलनेके

इच्छा हो उसे वाहन, प्यासेको पीनेकी वस्तु और भूखेको स्वाद अन्न लिये हर समय मनुष्य खड़े रहते थे। इसी प्रकार वस्त्र और आभूषणोंका भी पूरा प्रबन्ध था, उस समय वह बीर मनुष्योंसे भरा हुआ मार्ग स्वर्गके समान दीखता था, बाजारमें दूकानोंपर सुन्दर खाद्य खानेकी वस्तु भरी हुई दीखती थी, अनेक रत्नोंसे जड़े बने हुए वृक्ष और लता शोभित होरहीं थीं। सैकड़ों मनुष्य घूमते थे, इस प्रकार महात्मा हलधर बलराम पवित्र होकर ब्राह्मणोंको द्रव्य देते हुए अनेक यज्ञ दान करते हुए तीर्थोंमें घूमने लगे।

उस यात्रामें घड़ा भर दूध देनेवाली सोनेकी सींगवाली, उत्तम वस्त्रधारिणी सहस्रों गौ, अनेक देशोंमें उत्पन्न हुए घोड़े, वाहन, दास, रत्न, मोती, मणी, मूंड़े, सोना, शुद्ध चादी तथा तांबे और लोहेके सहस्रों बरतन महात्मा ब्राह्मणोंको दान किये। इस प्रकार उदार महानुभाव बलराम सरस्वतीके तटपर बहुत धन दान करते करते क्रमसे कुरुक्षेत्रमें पहुंच गये।

जनमेजय बोले, हे ब्राह्मणश्रेष्ठ। सरस्वतीके तटपर जो तीर्थ हैं, आप उनके पुण्यफल और कर्म्मोंका वर्णन हमसे कीजिये, हमारी इन तीर्थोंका क्रम सुननेकी बहुत इच्छा है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे महाराज। हे राजेन्द्र। युदुकुलश्रेष्ठ बलराम पहिले द्वारिकासे चलकर ब्राह्मण और अपने बान्धवोंके सहित पवित्र प्रभास क्षेत्रमें पहुंचे, इसी स्थानपर चन्द्रमा राज्ययक्ष्मा रोगसे पीड़ित हुए थे, और वहीं शापसे छूटकर फिर तेजको प्राप्त हुए थे। वहीं अबतक जगत्में प्रकाश करते हैं। चन्द्रमाको तेज इस स्थानमें मिला था, इसलिये इसका नाम प्रभास क्षेत्र होगया।

जनमेजय बोले, हे भगवन्! भगवान् चन्द्रमाको राजयक्ष्मा रोग क्यों होगया था? वे इस तीर्थमें आकर क्यों डूबे थे? और उन्हें फिर तेज कैसे प्राप्त हुआ? यह सब कथा आप हमसे विस्तार पूर्व्वक कहिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजेन्द्र! दक्ष प्रजापतिकी नक्षत्र नामक सत्ताइस कन्या थीं। उन्होंने सत्ताइसों कन्या चन्द्रमाको व्याह दीं, जगत्के मनुष्य गिननेके लिये उन्हें ही नक्षत्र कहते हैं। वे सब बड़े बड़े नेत्रोंवाली और असाधारण रूपवाली थीं, परन्तु उन सबमें रोहिणी अधिक रूपवती थी, इसलिये चन्द्रमा उसीसे अधिक प्रेम करते थे, और सदा उसहीके घरमें रहा करते थे। इसलिये सब स्त्री चन्द्रमासे रुष्ट होगईं और अपने बाप दक्ष प्रजापतिसे जाकर कहने लगी कि, हे प्रजापते। चन्द्रमा हम लोगोंके पास नहीं आते सदा रोहिणीके घरमें रहते हैं इसलिये हम सब तुम्हारे पास रहकर तपस्या करेंगी।

उनके बचन सुनकर दक्ष प्रजापतिने चन्द्रमासे कहा तुम ऐसा महा अधर्म्म मत करो और सबसे समान प्रेम रखो फिर अपनी बेटियोंसे कहा कि तुम सब चन्द्रमाके घरको चली जावो वे हमारी आज्ञासे सबके सङ्ग समान प्रेम रखेंगे।

तब वे सब चन्द्रमाके घरमें चली गईं परन्तु भगवान् चन्द्रमा फिर भी रोहिणीसे वैसाही प्रेम करने लगे, तब वे सब फिर अपने पिताके पास जाकर कहने लगीं कि भगवान चन्द्रमा हम लोगोंके पास नहीं रहते इसलिये हम सब यहीं रहकर आपकी सेवा करंगी।

तब दक्ष प्रजापतिने चन्द्रमासे कहा कि तुम सब स्त्रियोंसे समान प्रेम करो नहीं तो हम तुम्हें शाप देवेंगे यह कहकर सबको बिदा कर दिया परन्तु भगवान् चन्द्रमा उनके वचनका निरादर करके फिर भी रोहिणी हीके सङ्ग रहने लगे।

तब फिर वे सब क्रोधित होकर अपने पिताके घर गईं और शिरसे प्रणाम कर कहने

लगीं कि चन्द्रमाने आपके वचनको नहीं माना और हम लोगोंसे प्रेम नहीं करते वे सदा रोहिणी होके घरमें रहते हैं, इसलिये आप हमको या तो शरण दीजिये अथवा ऐसा उपाय कीजिये जिससे चन्द्रमा हम लोगोंसे प्रेम करें।

उनके वचन सुन भगवान् दक्ष प्रजापतिने क्रोध करके राज्यक्ष्मा रोगको चन्द्रमाके पास भेजा वह चन्द्रमाके हृदयमें घुस गया तब वह दिन दिन क्षीण होने लगे।

उन्होंने इस रोगके छूटनेके लिये अनेक यज्ञादि यत्न भी किये परन्तु शाप न छूटा और क्षीण होगये उनके क्षीण होनेसे औषधी न उत्पन्न हुई और जो उत्पन्न भी हुई वे रस वीर्य्य और स्वादसे हीन होगई। औषधियोंका नाश होनेसे प्रजाका नाश होने लगा मनुष्य दुर्व्वल और हीन होगये।

तब सब देवता चन्द्रमाके पास जाकर बोले, कि आपका यह रूप अब कैसा होगया? आपमें पहिलेके समान तेज क्यों नहीं रहा? यह सब कारण आप हमसे कहिये तब हम लोग उसका उपाय करेंगे।

देवतोंके वचन सुन चन्द्रमा बोले कि दक्ष प्रजापतिने शाप दिया है, इसलिये हमें यक्ष्मा-रोग होगया है।

चन्द्रमाके वचन सुन सब देवता दक्ष प्रजा-पतिके पास जाकर कहने लगे कि, हे भगवन्! अब आप चन्द्रमाके ऊपर कृपा करके इस शापको लौटा लोजिये क्यों कि चन्द्रमा क्षीण हो चुके अब बहुत थोड़े शेष हैं इनके क्षीण होनेसे सब प्रजाका नाश होजायगा इसलिये आप कृपा कीजिये, चन्द्रमाके क्षीण होनेसे औषधी और बीज नहीं रहेंगे औषधी न रह-नेसे हम लोग कैसे रहेंगे यह विचार कर आप कृपा कीजिये।

देवतोंके वचन सुन दक्ष प्रजापति बोले, हमारा शाप वृथा नहीं हो सक्ता परन्तु यदि चन्द्रमा अपनी सब स्त्रियोंसे समान प्रेम तो थोड़े ही किसी कारणसे उनका शाप कर सक्ते हैं उपाय हम बतला देते हैं चन्द्रमा सरस्वतीके तीर्थमें स्नान करें तो उनका तेज फिर वैसाही होजायगा हमारे यह वचन सत्य हैं परन्तु इतना शाप बना ही रहेगा आधे महीने तक चन्द्रमा क्षीण हुआ करेगा और आधे महीने तक बढ़ा करेंगे, ये पश्चिम समुद्रके तट पर जाके सरस्वती और समुद्रके सङ्गममें शिवको पूजा करें तब फिर तेज बढ़ जायगा।

तब चन्द्रमा ऋषियोंकी आज्ञासे अमावस तिथिको सरस्वती तीर्थ पर पहुंचे तब उनका तेज बढ़ने लगा और किरण शीतल होगई तब सब देवता प्रभास क्षेत्रमें आकर दक्ष प्रजाप-तिको प्रणाम करने लगे, और चन्द्रमासे मिले फिर दक्ष प्रजापतिने सब देवतोंको विदा करके चन्द्रमासे कहा, हे पुत्र! तुम कभी अपनी किसी स्त्रीका अपमान न करना और सदा हमारी आज्ञामें रहना।

यह कह कर दक्षप्रजापतिने चन्द्रमाको विदा किया, चन्द्रमा भी उनसे विदा हो अपने घर चले गये तब सब देवता और प्र पहिलेके समान प्रसन्न होकर रहने लगे।

हमने जिस प्रकार चन्द्रमाको शाप हुआ था और जैसे प्रभास-क्षेत्र सब तीर्थोंमें श्रेष्ठ हुआ सो सब कथा तुमसे कही उस दिनसे चन्द्रमा सदा अमावसको प्रभास तीर्थके स्नान करते हैं और उनका तेज बढ़ता है, इस तीर्थमें चन्द्रमाका प्रभाव बढ़ा इसलिये लोग इसे प्रभास कहते हैं।

यहांसे बलराम चमसोद्भेद नामक तीर्थमें गये वहा विधिपूर्व्वक स्नान करके ब्राह्मणोंको दान देकर एक रात्रि रहे फिर जल पीकर शीघ्रता सहित स्वस्त्ययन सुनकर चले गये, जहां घास और पृथ्वी चिकनी हो तहां सिद्ध लोग कहते हैं कि यहां सरस्वती हैं।

३५ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, कि वहांसे बलराम उदपान नामक तीर्थमें गये, उस ही तीर्थमें महायशस्वी त्रत नामक मुनिको परम पद लाभ हुआ था। उस स्थानपर बलरामने प्रसन्न होकर बहुत दान किया। इसी स्थानमें महातपस्वी त्रत नामक ब्राह्मणने कुएंमें बैठकर धर्म्म धारण करके सोम पिया था, उनके दोनो भाई उन्हे वहीं छोड़कर चले गये थे। तब उन्होंने अपने दोनों भाइयोंको शाप दिया था।

जनमेजय बोले, हे ब्रह्मन्! इस तीर्थका नाम उदपान क्यों हुआ? वे ब्राह्मणश्रेष्ठ त्रत कुएमें क्यो गिरे थे? उनके भाई उनको कुएमें पड़े छोड़ क्यों चले गये थे? फिर उन्होंने यज्ञ कैसे करी? और सोमपान कैसे करा? यदि आप यह कथा हमसे कहने योग्य समझें तो कहिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! पहिले युगमें एकत, द्वित और त्रत नामक तीन भाई थे ये तीनों गौतम मुनिके बेटे थे। तीनों महातपस्वी सूर्य्यके समान तेजस्वी, प्रजापतिके समान महात्मा तपसे ब्रह्म लोकको जीतनेवाले, वेदपाठी और सन्तानवान थे। उनके नियम और तपसे गौतम सदा प्रसन्न रहते थे, फिर बहुत दिनके पश्चात् गौतम अपने पुण्यके फलसे ब्रह्म लोकको चले गये। इनके मरनेके पश्चात् उनके यजमान गौतमके तीनों पुत्रोंका वैसा ही आदर करने लगे। उन तीनोंमें विद्या और कर्म्मसे त्रत श्रेष्ठ था। वे अपने पिता गौतम मुनिके समान थे, महात्मा और पुण्यात्मा मुनि भी उन्हे गौतमके समान मानते थे।

तभी एक दिन एकत और द्वितने धन इकट्ठा करनेके लिये यज्ञ करनेका विचार किया फिर त्रतसे जाकर कहा कि हम पशु और यज्ञकी सामग्री इकट्ठा कर रहे है। महाफलवाला यज्ञ करके प्रसन्नता पूर्व्वक सोमपान करेंगे।

हे राजन्! फिर तीनों भाइयोंने ऐसा ही किया और यज्ञके लिये मांगकर पशु लाए, जब उन पशुवोंको लिये हुए पूर्व्व दिशाको चले आते थे, उस समय प्रसन्न त्रत तीनों महात्मा ऋषियोंके आगे प्रसन्न हुए चले जाते थे और पीछेसे दोनों भाई पशुवोंको हांकते चले आते थे तब बहुत गौ देखकर दोनों भाइयोंने विचार किया कि ऐसा कुछ उपाय करना चाहिये, कि जिसमें सब गौ हमहीं दोनोंको मिले और त्रतको न मिलें तब उन पापियोने परस्पर ये बात चीत करी कि त्रत यज्ञकर्म्ममें बहुत कुशल और वेदपाठी है। इसलिये इन्हे और भी बहुत गौ मिल जायेंगी हम इन सब गौवोंको लेकर चलदें।

तब ये दोनों भाई त्रतको छोड़कर चलदिये, त्रत भी रात्रिहीमें इनके सङ्ग ही सङ्गमें चले तब मार्गमें एक भेड़िया मिला उसे देखकर त्रत भागे। मार्गके पास ही एक कूवा था, वह बहुत गहरा भयानक और धूल कांटोंसे भरा था, त्रत उसीमें गिर पड़े महात्मा त्रत उसमें गिरकर ऊंचेस्वरसे रोने लगे। उन दोनों भाइयोंने उस शब्दको सुना और जान लिया कि, त्रत कुएमें गिर गये, परन्तु भेड़ियेके डरसे और पशुवोंके लोभसे उन्हे वहीं छोड़कर भाग गये। महात्मा त्रत अपने लोभी भाइयोंसे छूटकर जल रहित तृणके और धूलके भरे हुए कुएमें गिरकर अपनेको नरकवासी पापीके समान मानने लगे। फिर उन्होंने अपनी बुद्धिसे विचारा कि जो ब्राह्मण सोमपान नहीं करता उसे नरक का भय रहता है। अब मुझे इस कुएमें सोम कैसे मिले?

अनन्तर उस महातपस्वीने एक लटकती हुई घास देखी फिर धूलको जल और अग्नि अपने शरीरको आहुति और उस घासको सोम सङ्कल्प करके ऋक् यजु और सामवेद पढ़ना आरम्भ किया, उस ही धूलिको आहुति मानकर देवतोंके भाग निकाले और ऊंचेस्वरसे वेद पढ़ना आरम्भ किया। वह शब्द आकाशतक

फैल गया, तब उस महाशब्दको सुनके देवता घबड़ाने लगे। तब उस शब्दको सुनकर देवतोंके पुरोहित वृहस्पति बोले, महात्मा त्रितने यज्ञ किया है, हम सब लोग वहींको चलें, यदि हमलोग न चलेंगे तो वह महातपस्वी दूसरे देवता बना लेगा।

वृहस्पतिके वचन सुनके सब देवता महात्मा त्रितको यज्ञमें पहुंचे और उस महात्माको यज्ञ दीक्षाके लिये कुएमें तेजसे प्रकाशित होते देखा।

अनन्तर सब देवता बोले, हे महा भाग! हमलोग अपना अपना भाग लेनेको तुम्हारे पास आये हैं।

त्रित बोले, हे देवतो! देखो हम इस अन्धे कुएमें पड़े हैं, हमें कुछ चैतन्यता भी नहीं है।

फिर त्रितने मन्त्रोंके सहित देवतोंको भाग दिये, वे लोगभी अपना अपना भाग पाकर प्रसन्न होगये और कहने लगे, कि जो चाहो वरदान मांगो।

त्रित बोले, कि हमें कुएसे निकालो और जो इस कुएको छूवे उसको सोम पियेका फल होय।

हे राजन्! देवता उन्हें यह दोनों वरदान देकर चले गये, उसही समय उस कुएको तोड़ कर सरस्वती नदी निकाली और उसने त्रितको ऊपरको उछाल दिया, तब त्रित भी प्रसन्न होते हुए अपने घरको आये और भाइयोंको देखकर क्रोध करके बोले, तुम लोग हमें जङ्गलमें एकला छोड़कर चले आये थे। इसलिये उस पाप कर्मसे हम तुम्हें शाप देते हैं। कि तुम लोग बड़े बड़े दांतवाले, भेड़िये बनकर जगत्में डोलो, फिर लङ्गूर बन्दर और रीछ योनिमें जन्मलो, इस सत्यवादीके वचन निकलतेही वे भेड़िये होगये।

इस प्रकार इस तीर्थका नाम उदपान हुवा वहां महात्मा बलरामने ब्राह्मणोंको बहुत दान देकर कुरु क्षेत्रकी ओर यात्रा करी।

३६ अध्याय समाप्त।

वैसम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जनमेज तब हलधारी बलराम कुरुक्षेत्रमें पहुंचे औ जल स्पर्श करके विश्राम किया; हे राजन् यह वही स्थान था। जहां सरस्वती शूद्रों दोषसे नष्ट होगई थी, इस ही लिये मुनियो उसका नाम विनशन तीर्थ रक्खा है।

वहांसे चलकर बलवान बलराम स स्वतीके तटपर सुभूमिक नामक तीर्थ पहुंचे इसी तीर्थपर सदा अति उत्तम सु मुखवाली पवित्र अप्सरा क्रीड़ा करा का हैं। हे प्रजानाथ! उस स्थानपर महीनेमें देवता और गन्धर्व्व आया करते हैं। आ लोग सदा ही उस तीर्थको सेवा करते हैं, उ स्थानमें देवता पितर और औषधी आकर ग और अप्सराओंसे मिलकर क्रीड़ा करती हे राजन्! वह स्थान अप्सराओंकी क्री करनेका है, वहां अप्सरा फूल बर्षाती हैं, क्रीड़ा करती हैं। इस स्थानपर बलरा ब्राह्मणोंको बहुत दान दिया। दिव्य गीत बाजे सुने गन्धर्व्व अप्सरा और राक्षसोंकी छाहीं देखी।

वहांसे चलकर रोहिणी पुत्र हलधर ग तीर्थमें पहुंचे, वहां तपस्वी विश्वावसु गन्धर्व्व मनोहर गीतगाते और नाचते रहते वहा बलरामने ब्राह्मणोंका बकरी, भेड़, गधे, ऊंट, सोना, चांदी, आदि दान दिये ब्राह्मणोंको इच्छानुसार धन और भो सन्तुष्ट करके स्तुती सुनते हुए शत्रुनाशन राम ब्राह्मणोंके सहित गर्गस्रोतपर पहुंचे, स्थानपर बैठकर महात्मा महातपस्वी वृद्ध चार्य्यने कालज्ञान तारोंकी गतिसे अनेक उत्पातोंको जाना था। इसी लिये इस तीर्थ नाम गर्गस्रोत विदित होगया, इस स्थ ज्योतिष पढ़नेके लिये अनेक मुनि व्रतधारी महात्मा गर्गकी सेवा करते थे, वहां जाकर श्वेतचन्दनधारी महात्मा एक कुण्डलधारी वन

रामने तपस्वी ब्राह्मणोंको विधिके अनुसार बहुत दान किया।

उस स्थानमें ब्राह्मणोंको उत्तम उत्तम भोजन कराकर नीलाम्बर महायशस्वी बलराम शङ्ख तीर्थ में पहुंचे, वहां जाकर एक सुमेरुके समान ऊंचा शृङ्ग देखा उस सफेद पर्व्वतके समान शृङ्गके चारों ओर ऋषी तपस्या कर रहे थे, उस सरस्वतीके तटपर एक उत्तम वृक्ष भी देखा, महातेजस्वी यक्ष, विद्याधर, राक्षस महाबलवान पिशाच और सहस्रो सिद्ध भोजन छोड़कर उसके चारों ओर तपस्या कर रहे थे और उनका यह प्रणाथा कि जब व्रत और नियम समाप्त हो तब समय होनेपर उसीका फल खांय और फिर तपस्या करने लगे, परन्तु ऐसा उत्तम वृक्ष था, कि उसके नीचे बैठे ऋषियोंको कोई नहीं देख सक्ता था, उस पवित्र लोक विख्यात तीर्थमें यदुकुल श्रेष्ठ बलरामने तांबे और लोहेके बरतन अनेक प्रकारकी वस्तु सहित अनेक गौ तपस्वियोंको दान करीं, वहासे पवित्र द्वैतबनमें पहुंचे वहां अनेक वेषधारी मुनियोंको देखा फिर जलमें स्नान करके ब्राह्मणोंको अनेक दान देकर सरस्वतीके दक्षिण ओरको चले गये। वहां थोड़ी दूर जाकर धर्म्मात्मा महात्मा बलरामने नाग तीर्थको देखा, इस स्थानमें महातेजस्वी सर्प राजा वासुकीका स्थान था। वहां सहस्रो सर्प रहते थे, इसी स्थानपर चौदह सहस्र ऋषियोंने और सब देवतोंने मिलकर नागराज वासुकीका विधिके अनुसार अभिषेक किया था। इसी लिये उस स्थानपर सांपोंका डर नहीं था, वहा भी अनेक रत्न दान करके पूर्व्व देशके सैकड़ों सहस्रों तीर्थोंको देखते हुए तीर्थोंमें स्नान करते हुए ऋषियोंकी उपदेशानुसार दान उपास और नियम करते हुए उनके बतलाये हुए मार्गोंसे चलते हुए पूर्व्वकी ओरको चले, फिर उस स्थानपर पहुंचे जहां सरस्वती नदी बहनेसे बन्द होगई है, उस समय बलराम ऐसे शीघ्र जाते थे, जैसे वायुके बशमें मेघ, वहां जाकर नैमिषारण्यको देखा वहा सरस्वतीको निवृत्ति देखकर यदुवंशियोंमें श्रेष्ठ बलराम विस्मित होगये।

जनमेजय बोले, हे ब्रह्मन्! हे यज्ञ करनेवालोंमें श्रेष्ठ सरस्वती पूर्व्वकी ओर बहती थी, तब वहासे निवृत्त क्यो होगई? और बलराम विस्मित क्यों हुए? हम यह सब कथा आपके मुखसे सुनना चाहते हैं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जनमेजय पहिले सतयुगमें नैमिष नामक ऋषियोंने बारह बर्षका यज्ञारम्भ किया था। उसमें अनेक ऋषी तीर्थ जानकर आये थे। हे महाराज! उस यज्ञमें इतने मुनि आये कि सरस्वतीके तटके तीर्थ नगरके समान दीखनेलगी, हे पुरुष सिंह! समन्त पञ्चक नामक तीर्थतक मुनि लोग तीर्थोंके लोभसे आये,उनके धुयें और वेद पाठके शब्दसे दिशायें पूरित होगईं उन महात्माओंकी अग्नि शालाओंसे सरस्वती नदी सब ओर प्रकाशित दीखने लगी, बालखिल्या, अश्मकुट्ट, दन्तोलखल, प्रसख्यान नामादि अनेक ऋषी थे, कोई वायू, कोई जल और कोई पत्ते खाकर रहता था, कोई पृथ्वीमें सोता था, और कोई अनेक नियम धारण किये था, इस प्रकार इन मुनियोंने सरस्वतीको इस प्रकार शोभित किया-जैसे देवता गङ्गाको शोभित करते हैं। अनन्तर उन यज्ञ करनेवाले सहस्रों मुनियोंसे सरस्वतीका तट ऐसा भर गया, कि कुछ भी अवकाश न रहा, तब ऋषियोंने अपने यज्ञोपवीतोंसे तीर्थ बनाकर अग्नि होत्र करने आरम्भ किये। जब सरस्वतीने उन ऋषियोंको चिन्तासे व्याकुल और निराश देखा तब उनको अपनी मायासे अनेक मुनियोंको अनेक कुञ्ज दिखलाये।

हे जनमेजय! मुनियोंके ऊपर कृपा करके फिर पूर्व्वकी ओर बहने लगी, पुण्यात्मा और

तपस्वियोंके ऊपर कृपा करके सरस्वतीने यह बड़ा आश्चर्य किया ।

हे राजन् ! उस ही दिनसे इसका नाम नैमिषीय कुंज है, हे राजन् ! यह भी स्थान कुरुक्षेत्र हीमें है सो तुम भी वहां अनेक दान करो ।

हे महाराज ! उस स्थानमें सरस्वतीको निवृत्त और अनेक कुञ्ज देखकर महात्मा बलदेवको आश्चर्य हुआ, वहां जलका स्पर्श करके ब्राह्मणोंको अनेक प्रकारके बरतन और अनेक प्रकारकी खानेकी वस्तु दान करी, तब ब्राह्मणोंसे पूजित होकर वहांसे चले और अनेक बेर, इङ्गदी, खम्मारी, बड़गद, पीपल, बहेड़े, दाख, करील, पीलू, फालसे, बेल, आमले, अति मुक्तक और आम आदि सरस्वतीके तटके वृक्षोंसे शोभित, केलेके वृक्षोंसे भरा नेत्रोंके प्यारे वायु, जल, फल और पत्ते खानेवाले मुनियोंसे पूरित दन्तोलूखल, अश्मकुट्ट, वानेय मुनियोंसे पूरित वेदके शब्दसे पूरित अनेक हरिनोंके सहस्रों झुण्डों करके राजित हिंसा-रहित धार्मिक मनुष्योंसे सेवित सप्त सारस्वत नामक तीर्थमें कङ्कणक नामक सिद्धने तपस्या करी थी ।

३७ अध्याय समाप्त ।

जनमेजय बोले, इस तीर्थका नाम सप्तसार-स्वत क्यों हुआ ? भगमार्कण्ड मुनि कौन थे ? उन्होंने क्या नियम किया था ? कैसे सिद्ध हुए थे ? किसके वंशमें हुए थे ? और क्या पढ़े थे ? हम इस सब कथाको आपसे सुनना चाहते हैं ।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् ! जगतमें सुप्रिया काञ्चनाची, विशाला, मनोरमा, सरस्वती, ओघवती, सुरेणी और विमलोदका नामक सात सरस्वती हैं, इनसे सब जगत् व्याप्त होरहा है ।

जब ब्रह्माने महायज्ञ किया था, और उ समय अनेक ब्राह्मण सिद्ध हुए थे, जहा पुण्या वाचनका शब्द और वेदोंका शब्द हो रा था । उस यज्ञको देखकर देवता भी प्रस गए थे, यज्ञ करनेके लिये ब्रह्माने दीक्षा दी महात्मा लोग जो मनमें इच्छा करते थे, उनक वही फल उसी समय मिलता था । उस यज्ञ गन्धर्व्व गाते थे, अप्सरा नाचती थीं और दि बाजे बजते थे, उस यज्ञको सामग्री देखक देवता आश्चर्य करते थे और मनुष्योंकी त कथा ही क्या है ? जब ब्रह्माने इस यज्ञ पुष्करक्षेत्रमें किया तब महात्मा ऋषियान कहा कि यह यज्ञ अच्छो नहीं हुई क्यों कि नदिया मेंसे सरस्वतो तो यहा है नही ।

तब ब्रह्माने सुप्रभा नामक सरस्वतीको बुलाया उसको देख ऋषी लोग बहुत प्रसन्न हुए ब्रह्माको प्रणाम करतो हुई सरस्वतीको शीघ्र आते देख ब्राह्मणोंने कहा कि यह यज्ञ बहुत अच्छा हुआ ।

हे राजन् ! इस प्रकार ब्राह्मणोंकी प्रसन्न ताके लिये ब्रह्माने सरस्वतीको पुष्करक्षेत्रमें बुलाया था । हे राजन् ! जब नैमिषारण्यम अनेक मुनि इकट्ठे हुए तहां वेदके विषयमें अनेक प्रकारके बिचित्र शास्त्रार्थ होने लगे। जहांपर वेदपाठी ब्राह्मण बैठे थे, तहां थोड़े मुनि आकर सरस्वतीका ध्यान करने लगे। हे राजेन्द्र ! विदेशसे आये हुए मुनियोंकी सह यताके लिये उन यज्ञ करनेवाले मुनियोंके ध्यान करनेसे महाभागा काञ्चनाची नामक सरस्वती नैमिषारण्यमें आई ।

जब राजा गय गया नामक स्थानमें यज्ञ कर रहे थे और अनेक व्रतधारी ब्राह्मणोंने सरस्वतीका महाध्यान किया, तब विशाला नामक सरस्वती गयासे पहुंची, यह शीघ्र बहन वाली नदो हिमाचलके शिखरसे चली थी।

जब उत्तरको शिला अर्थात अयोध्यामें

उद्दालकके पुत्र यजमान बनकर यज्ञ कर रहे थे तब उन्होंने पहिले सरस्वतीका ध्यान किया, तब बकले और हरिनका चमड़ा ओढ़नेवाले, मुनियोंसे पूजित होकर मनोरमा नामक सरस्वती अयोध्यामें पहुंची।

हे राजेन्द्र! जब महाराज कुरुने कुरुक्षेत्रमें यज्ञ करी तब उन्होंने सरस्वतीका ध्यान किया ध्यान करते ही राज ऋषियोंसे सेवित ऋषभ द्वीपको छोड़कर सुरेणु नामक सरस्वती कुरुक्षेत्रमें पहुंची।

ओघवती नामक सरस्वती महात्मा वशिष्ठके ध्यान करनेसे कुरुक्षेत्रमें आई थी।

जब दक्ष प्रजापतिने गङ्गाद्वारमें यज्ञ किया था, तब सुरेणु नामक सरस्वती शीघ्रता सहित वहां आई थी, यह सरस्वती बहुत शीघ्र बहती हैं।

जब ब्रह्माने हिमाचल पर यज्ञ करी थी, तब भगवती विमलोदका नामक सरस्वती वहां गई थीं और उसी पवित्र तीर्थमें सातों सरस्वतियोंका सङ्गम होगया, इसीलिये इस तीर्थका नाम सप्त सारस्वत तीर्थ हुआ।

हमने ये सातों सरस्वतियोंका वर्णन किया अब बाल ब्रह्मचारी मंकणककी कथा सुनो।

एकदिन मंकणक मुनि सरस्वती नदीमें स्नान कर रहे थे, तब एक सुन्दर नेत्रवाली नङ्गी नहाती स्त्रीको देखा उसको देखते ही इनका वीर्य्य स्खलित होगया तब उस वीर्य्यको मंकणकने घड़ेमें लेलिया उस घड़ेमें वीर्य्यके सात भाग होगये, तब उससे सात ऋषी उत्पन्न हुये इनहीको जगत्में मरुद्गण कहते हैं, इन हीसे उच्छ्वास वायु उत्पन्न हुये है।

उन सातों ऋषियोंके ये नाम हैं वायुवेग, वायुवल वायुहा, वायुमण्डल, वायुरेता, वायुज्वाल और वायुचक्र, ये सातो बड़े बलवान थे, आगे उस महा ऋषिका तीन लोक विख्यात अद्भुत चरित्र सुनो।

हमने कुशाग्र नामक मुनिसे सुना है कि एक दिन सिद्ध मंकणक हाथमें साग लिये चले; जाते थे, तब हाथसे सागका रस टपक पड़ा उसको देख मंकणक प्रसन्न होकर नाचने लगे उनके नाचनेसे उनके तेजसे मोहित होकर सब स्थावर जङ्गम जगत् नाचने लगा, तब ब्रह्मादिक देवता और महा तपस्वी मुनि महादेवके पास जाकर बोले, कि आप ऐसा उपाय कीजिये कि जिसमें ये मुनि न नांचें, तब महादेवने उनके पास जाकर मंकणक मुनिको बहुतही प्रसन्नतासे नाचते हुए देखा तब देवतोंके कल्याणके लिये महादेवने इनसे कहा, हे धर्म्म जानने वाले ब्राह्मण! तुम क्यों नांच रहे हो? तुम्हारी इतनी प्रसन्नताका कारण क्या है? आप धर्म्म जाननेवाले तपस्वो और ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ हैं।

मंकणक बोले, हे ब्रह्मन। हे जगत्के स्वामी। क्या आप नहीं देखते कि हमारे हाथसे सागका रस गिर पड़ा। उसीको देखकर हम प्रसन्नतासे नांच रहे हैं।

मुनिका वचन सुन महादेव बोले, हे ब्राह्मण। हम कोई आश्चर्य्यका स्थान नहीं देखते अब तुम हमें देखो।

ऐसा कहकर बुद्धिमान महादेवने अपनी अंगुली अंगूठेमें मारी उस घावसे बर्फके समान भस्म निकलने लगी यह देख मंकणक लज्जित हो उनके चरणोंमें गिर पड़े और उन्हें महादेव जानकर विस्मित होकर कहने लगे हम शिवसे अधिक किसी देवताको नहीं मानते।

हे शूलधारी। आप ही सब देवता और राक्षसोंकी गति हैं। हे बरदान देनेवाले हमने बुद्धिमानोसे सुना है, कि आप ही इस सब जगत्को बनाते हैं। और प्रलयकालमें सब जगत् आप होमें मिल जाता है आपको देवता भी नहीं जान सक्ते मेरी तो कथा ही क्या है, जगत्के सब भाव तुममें दिखाई देते है। हे पाप रहित। ब्रह्मादिक देवता भी आपको

उपासना करते हैं। हे देव! तुम जगत्के रूप और देवतोंके भी बनानेवाले हो आपकी कृपासे सब देवता निर्भय होकर आनन्द करते हैं।

हमने जो चपलता करी वह भूल थी, अब हम आपसे यह बरदान मांगते हैं कि हमारी तपस्या क्षीण न होवे।

मुनिके ऐसे वचन सुन महादेव प्रसन्न होकर बोले, हे ब्राह्मण हमारे आशीर्वादसे तुम्हारा तप सहस्रों गुण बढ़ेगा, हम तुम्हारे सङ्ग इस आश्रममें सदा निवास करेंगे, जो मनुष्य इस सारस्वत तीर्थमें हमारी पूजा करेगा उसे जगत्में कोई वस्तु दुर्लभ नहीं होगी मरकर वह मनुष्य सारस्वत लोकमें जायगा, हमने यह महातेजस्वी मंकणककी कथा तुमसे कही ये मङ्कणक मातरिश्वा मुनि और सुकन्याके पुत्र थे।

३८ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जनमेजय बलरामने वहां रहकर आश्रमवासी मुनियोंकी पूजा करी और मङ्कणक मुनिकी बहुत भक्ती करी फिर रात्रिभर रहकर ब्राह्मणोंको अनेक प्रकारके दान देकर महापराक्रमी बलराम मुनियोंसे पूजित होकर उस स्थानके जलको स्पर्श करके मुनियोंकी आज्ञा लेकर औशनस नामक तीर्थमें पहुंचे।

हे महाराज। इसी स्थानपर बड़े पेट और बड़े शिर और छोटी जङ्घावाले कपालमोचन नामक महामुनिकी मुक्ति हुई थी। इसी स्थान पर रामने राक्षसको फेंका था इसी स्थानपर महात्मा शुक्राचार्य्यने तपस्या की थी, यहांपर उन्हें नीति बनानेकी बुद्धि हुई थी यहीं बैठकर महात्मा शुक्राचार्य्यने देवता और दानवोंके युद्धका विचार किया था। इसही तीर्थसे शुक्राचार्य्यका बहुत बल बढ़ गया था, यहां उन्होंने महात्मा ब्राह्मणोंको विधिसे अनुसार बहुत दान किया था।

राजा जनमेजय बोले, हे ब्रह्मन्! इस तीर्थका नाम कपालमोचन कैसे हुआ? उसका शिर पहिले क्यों कटा था? और फिर कैसे जुड़ गया।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् पहिले समयमें महात्मा राम दण्डकारण्यमें निवास करते थे, और राक्षसोंका नाश करते थे, तब ही जनस्थाननिवासी दुरात्मा राक्षसका एक तेज बाणसे उन्होंने शिर काटा। हे महाराज! वही वनमें घूमते महोदर मुनिकी जङ्घा तोड़कर जमआया।

उसके लगनेसे महाबुद्धिमान् महोदर मुनि चल फिर न सके और तीर्थयात्रा भी न कर सके पैरमें भी पीव निकलने लगी, बहुत पीड़ा होने लगी, तौ भी वे तीर्थोंमें घूमते ही रहे, हमने सुना है, कि उसी अवस्थामें महातपस्वी महोदर सब नदी और सब समुद्रमें स्नानकर आये और सब मुनियोंसे अपनी दशा कहते रहे परन्तु किसी तीर्थमें उनका यह दुःख न छूटा, तब उन्होंने अनेक मुनियोंसे सरस्वतीके तटपर बिराजमान् औशनस नामक तीर्थकी प्रशंसा सुनी।

तब वे सब पापोंके नाश करनेवाले शिर औशनस तीर्थमें पहुंचे जब उन्होंने उस तीर्थमें स्नान किया, उसी समय वह शिर जलके भितर गिर गया। और गुप्त होगया, तब उसके छूटनेसे वे मुनि भी बहुत प्रसन्न हुए, फिर वे पवित्र और प्रसन्न होकर अपने घरको चले आये, महातपस्वी महोदरने अपने आश्रममें आकर अपने कपाल छूटनेकी कथा महात्मा मुनियासे कही उन्होंने सुनकर उस तीर्थका नाम कपालमोचन रख दिया। महात्मा महोदर फिर उसी तीर्थपर गये, और इच्छानुसार जल पीकर सिद्ध होगये।

वृष्णिकुल श्रेष्ठ बलराम भी यहां बहुत दान करके रुषङ्गु मुनिके आश्रमको चले गये, इसी तीर्थपर आर्ष्टिषेण मुनि सिद्ध हुए थे, और इस ही आश्रमपर महामुनि विश्वामित्र चत्रीसे ब्राह्मण हुए थे, इस पवित्र सब कामनासे भरे तीर्थकी ब्राह्मण सदा सेवा करते हैं। यहीं तपस्वी रुषङ्गुने शरीर त्याग किया था।

रुषङ्गु नामक एक बूढा ब्राह्मण था। जब उसकी शरीर छोड़नेको इच्छा हुई तब अपने सब पुत्रोंको बुलाकर महातपस्वी रुषंगू बोले, तुम लोग हमे पृथूदक नामक तीर्थमें ले चलो पुत्रोंने इनकी अवस्था पूर्ण देखकर उस महात्माको सरस्वतीके तटपर पृथूदक नामक तीर्थ पर पहुंचा दिया, महातपस्वी रुषंगू सहस्रों तीर्थोंसे भरी ब्राह्मणोंसे सेवित सरस्वतीके तटपर पहुंचकर बिधि पूर्व्वक स्नान करते तीर्थोंके गुणोको स्मरण करते अपने पुत्रोंसे ऐसा बोले, जो महात्मा सरस्वतीके उत्तर तीरपर पृथूदक नामक तीर्थपर जप करता हुआ, शरीर छोड़ेगा? उसे फिर शरीर धारण करनेका दुःख नहीं उठाना पड़ेगा, ऐसा कहकर उन्होंने शरीर छोड़ दिया।

ब्राह्मणोंके प्यारे धर्म्मात्मा बलरामने उस तीर्थमें स्नान करके ब्राह्मणोंको बहुत दान दिया।

इसी स्थानमें बैठकर ब्रह्माने सब जगत्‌की रचा था, इसी स्थानपर महातपस्वी ऋषियोंमें श्रेष्ठ सिन्धुद्वीप और आर्ष्टिषेण महातप करके ब्राह्मण होगये थे। और यहीं राजऋषि देवापी भी ब्राह्मण हुए थे और इसी स्थानपर महातपस्वी महातेजस्वी भगवान् विश्वामित्र भी ब्राह्मण होगये थे।

३९ अध्याय समाप्त।

राजा जनमेजय बोले, हे ब्रह्मन्। भगवान आर्ष्टिषेणने किस प्रकार घोर तप किया? सिन्धुद्वीप कैसे ब्राह्मण बने थे, देवापी और विश्वामित्र किस प्रकार ब्राह्मण हुए थे सो कथा हमसे कहिये हमे सुननेकी बहुत इच्छा है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! पहिले सतयुगमें एक आर्ष्टिषेण नामक ब्राह्मण था। वह बहुत दिनतक गुरुके घरमें रहा परन्तु सब विद्या समाप्त न कर सका, जब बहुत दिनतक पढनेपर भी बेद समाप्त न हुए तब आर्ष्टिषेण बहुत घबड़ाये और घोर तपस्या करने लगे। उस तपके बलसे उन्हें सब बेद विद्या आगई और सिद्ध भी होगए, फिर उन्होंने उस तीर्थको तीन बरदान दिये, जो मनुष्य आजसे इस तीर्थमें स्नान करेगा, उसे अश्वमेध यज्ञका फल होगा। आजसे इस तीर्थमें सांपोंका भय नहीं रहेगा इस तीर्थमें स्नान करनेसे मनुष्यको शीघ्र ही फल मिलेगा, ये तीनों बरदान देकर महातपस्वी आर्ष्टिषेण स्वर्गको चले गये।

हे तात। इस ही तीर्थपर महाप्रतापी सिन्धुद्वीप देवापी और जितेन्द्री विश्वामित्र घोर तप करके ब्राह्मण हुए थे।

पहिले समयमें एक गाधि नामक प्रतापी चत्री हुए थे। उनके पुत्रका नाम विश्वामित्र था, हे राजन्! वह गाधि नामक राजा विश्वामित्रके पिता बड़े प्रतापी थे उन्होंने अपने पुत्रको राज्य देकर अपने शरीर छोड़नेकी इच्छा करी तब सब प्रजाने इकट्ठे होकर कहा कि, हे महाराज! आप कभी स्वर्गको मत जाइये और हम लोगोंके दुःखको रचा कीजिये तब राजा गाधिने अपनी प्रजासे कहा कि पुत्र सब जगत्‌की रचा करेगा।

ऐसा कहकर राजा गाधि विश्वामित्रको राज्य देकर आप स्वर्गको चले गये, और राजा विश्वामित्र राज्य करने लगे। परन्तु विश्वामित्र अनेक यत्न करनेपर भी जगत्‌की रचा न कर सके तब एक दिन उन्होंने सुना कि प्रजाको राचसोंने बहुत पीड़ा दे रहे है। यह सुनकर

चतुरङ्गिनी सेना लेकर नगरसे बाहर निकले फिर बहुत दूर जाकर वशिष्ठ मुनिके आश्रमपर ठहरे।

सेनावालोंने उस स्थानपर अनेक उपद्रव करे तब भगवान वशिष्ठ भी आश्रमपर आये, और अपने उनको टूटा देखकर बहुत क्रोध किया, और अपनी गौसे बोले कि, तुम घोर रूपवाले भयानक मनुष्योंको उत्पन्न करो वशिष्ठके वचन सुन गौने वैसा ही किया, उनको देखते ही विश्वामित्रकी सेना इधर उधर भागने लगी, तब अपनी सेनाको भागती हुई सुन विश्वामित्रने तप करनेका विचार किया, और सरस्वतीके तटपर इस तीर्थमें आकर नियम और उपवासोंसे शरीरको सुखाते हुए तपस्या करने लगे, कभी जल पीकर रह जाते थे, कभी वायु और कभी सूखे पत्ते ही खाते थे और पृथ्वीसे सोते थे, उनके यह सब नियम देखकर देवता विघ्न करने लगे। परन्तु महात्मा विश्वामित्रकी बुद्धि कुछ भी भ्रष्ट न हुई। थोड़े दिनमें बहुत तप करके सूर्य्यके समान तपस्वी होगये फिर उनके घोर तपको देखकर ब्रह्मा वरदान देनेको आये तब विश्वामित्रने यह वरदान मांगा कि हम ब्राह्मण होजांय ब्रह्माने कहा ऐसा ही होजायगा। इस प्रकार महातपस्वी विश्वामित्र ब्राह्मण होकर अपना काम सिद्ध करके देवतोंके समान जगत्में घूमने लगे।

महाबलवान् बलरामने इस तीर्थमें बहुत धन दूधदेनेवाली गाय पलङ्ग वस्त्र भूषण खाने पीनेकी वस्तु ब्राह्मणोंको दान दिये।

वहांसे वकदाल्भ्य नामक मुनिके आश्रमको चले गये।

४० अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे महाराज जनमेजय प्रसन्न बलवान बलराम वकदालभ्य मुनिके आश्रममें पहुंचे वहीं महात्मा व लभ्यने तप किया था। यह स्थान वह है। जानेसे दूसरी जातिके मनुष्य भी ब्राह्मण हैं। यह स्थान विचित्र वीर्य्य पुत्र धृत राज्यमें है, इसपर महात्मा वकदालभ्य क्रोध करके अपने तप और नियमोंसे श सुखाते हुए तपस्या करते थे।

हे राजन्! पहिले समयमें जब मुनियोंने नैमिषारण्यमें राजा विश्वजित्के लिये बार वर्षकी यज्ञ करी थी, और पाञ्चालदेशके मु वहां आये थे। तब उन्होंने यज्ञमेंसे रहित इक्कीस बैल दक्षिणामें पाये तब वकदा लभ्य मुनिने मुनियोंसे कहा तुमलोग इन बैलों बाटलो हम इनमेंसे नहीं लेंगे, और रा धृतराष्ट्रके पास जाकर दूसरे बैल मांग लावेंगे।

ऐसा विचार कर वे राजाधृतराष्ट्रके पा गये और बैल मांगे, तब उन्होंने क्रोध क कहा कि, हे ब्राह्मणाधम! हमारी ये स मरीपड़ी हैं, यदि तुम चाहो तो यही लेजा

राजाके वचन सुन धर्मके जाननेवाले व दालभ्य मुनिको महाकोप हुआ और क लगे। कि इस मूर्खने हमें सभाके बीचमें कठोर वचन कहे।

थोडे समय तक ऐसा विचार कर वक लभ्य मुनिने उनका राज्य नाश करनेकी करी और उन ही मरी हुई गौओंको ले फिर सरस्वतीके तटपर जाकर उनका काट काट करके राजा धृतराष्ट्रके आहुती देने लगे, महातपस्वी वकदा सरस्वतीके तटपर आग जलाकर उसी आहुती देनी आरम्भ करी, जब यह भ यज्ञ विधिके अनुसार होने लगी, तब धृतराष्ट्रका राज्य नाश होने लगा।

हे महाराज! उस देशका इस प्रका होने लगा, जैसे कुल्हाड़ीसे काटनेसे राज्यभरके मनुष्य व्याकुल होगये।

अपने राज्यको व्याकुल देख राजा धृतराष्ट्र घबड़ाये और शोचने लगे, कि अब हम क्या उपाय करें? जब सब ब्राह्मण और राजा सब उपाय करके थक गये, तब उन्होंने ज्योतिषियोंको बुलाकर पूछा, तब उन्होंने कहा कि तुमने एक ब्राह्मणका निरादर किया था, वही गौवोंके मांससे होम कर रहा है, इसीसे तुम्हारे राज्यका नाश हुआ जाता है। महात्मा बकदालभ्य सरस्वतीके तटपर यज्ञ कर रहे हैं। उन्हींके तपके बलसे तुम्हारे राज्यका नाश हुवा जाता है।

उनके बचन सुन राजा धृतराष्ट्र बकदालभ्य मुनिके पास जाकर गौ देकर और पृथ्वीमें गिर कर शिरसे प्रणाम किया। और हाथ जोड़ कर कहा, हे भगवन्! हे नाथ! मेरी बुद्धि मूर्खतासे नष्ट होगई है, मैं दीन और लोभी हूं, इसलिये आप मेरा अपराध क्षमा कीजिये इस समय मैं आपकी शरण हूं इसलिये आप प्रसन्न हूजिये।

राजाको इस प्रकार शोकसे व्याकुल और रोते देखकर मुनिको कृपा आगई और उनके राज्यको आहुतियोंसे छुड़ाय दिया महात्मा बकदालभ्य प्रसन्न होकर क्रोधको दूर किया और उस राज्यकी आपत्तिसे छुड़ानेके लिये आहुति देनी आरम्भकरी उस राज्यकी आपत्तिसे छुड़ाकर फिर राजा धृतराष्ट्रसे बैलमांगे उन्होंने प्रसन्न होकर बहुतसे बैल दिये।

महात्मा बकदालभ्य उन बैलोंको लेकर प्रसन्न होकर अपने आश्रमको चले गये, महातपस्वी महाराज धृतराष्ट्र भी सावधान होकर अपने देशको चले गये।

हे महाराज! इस ही तीर्थमें देवतोंकी विजय और राक्षसोंके नाशके लिये महा बुद्धिमान बृहस्पतिने मांससे यज्ञ करा था तब देवतोंसे हार कर युद्धमें राक्षसोंका नाश होगया था।

इस तीर्थमें भी यशस्वी बलदेवने हाथी घोड़े खच्चर लगी रथ रत्न बहुत धन अन्न और बस्त्रादि दान किया।

हे महाराज। यहांसे बलदेवजी ययाति नामक तीर्थमें पहुंचे इस तीर्थमें जब महात्मा नहुष पुत्र ययातिने यज्ञ किया था, तब सरस्वती घी और दूधको होकर बही थी, उसी यज्ञके प्रतापसे महाबाहु राजा ययाति इसी शरीरसे ऊपरको उड़कर स्वर्गको चले गये।

जब दूसरी बार महाराज ययातिने इस तीर्थमें यज्ञ करी थी, तब उदारता और भक्ति बढ़ाकर ब्राह्मणोंको बहुत दान किये थे, जो ब्राह्मण जहां बैठा था, उसने जिस बातकी इच्छा करी उसे वहीं वही बस्तु मिली थी, तब उस यज्ञमें ब्राह्मणोंको घर शय्या और छःरस युक्तके भोजन मिले थे, राजाकी उस उत्तम भक्तिको देखकर ब्राह्मणोंने उनको बहुत आशीर्वाद देकर उनकी प्रशंसा करी, उस यज्ञको देखकर देवता मनुष्य और गन्धर्व्व प्रसन्न होकर आश्चर्य करने लगे।

४१ अध्याय समाप्त।

राजा जनमेजय बोले, हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! महात्मने। बशिष्ठके आश्रममें वह अपबाहु नामक तीर्थ कैसे हुआ नदियोंमें श्रेष्ठ सरस्वतीने उस ऋषिको क्यों बहाया था? उन मुनि और सरस्वतीसे बैर क्यों होगया था? आपकी बाणी सुननेसे हमारा जी तृप्त नहीं होता, इस लिये यह कथा भी आप कहिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! महामुनि बिश्वामित्र और बशिष्ठसे बहुत बैर हो गया था क्यों कि उन दोनोंको तप करते करते दोनोंमें बिरोध बढ़ गया था। महात्मा बशिष्ठका आश्रम स्थाणु तीर्थमें था, और उससे पूर्व्वकी ओर बिश्वामित्रका आश्रम था।

हे महाराज! उसी स्थानमें तीर्थमें विश्वामित्र घोर तप करते थे, सरस्वती और शिवकी पूजा करते थे, और उसी दिनसे उस तीर्थका अभिषेक किया था, उसी तीर्थमें जिस प्रकार विश्वामित्रने बशिष्ठको उग्र तपके बलसे चलित कर दिया था सो कथा तुम हमसे सुनो।

हे महाराज! महातपस्वी विश्वामित्र और बशिष्ठ उस स्थानमें रहकर परस्पर बिरोधसे घोर तप करने लगे, परन्तु महामुनि विश्वामित्र बशिष्ठका अधिक तेज देखकर दाह और शोच करने लगे, एकदिन बैठे बैठे उन्होंने यह बिचारा कि यदि यह सरस्वती नदी सदा धर्म करनेवाले महातपस्वी मुनि और ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ बशिष्ठको अपने जलमें बहाकर मेरे पास ले आवेतो उन्हें मार डालूं।

ऐसा विचार महामुनि विश्वमित्रने क्रोधसे लालनेत्र करके सब नदियोंमें श्रेष्ठ सरस्वतीका ध्यान किया।

ध्यान करते ही सरस्वती बहुत व्याकुल होगई इतने समयमें महावीर्य्यवान् विश्वामित्रको और भी क्रोध बढ़ गया तब सरस्वती मलीन होकर कांपती हुई हाथ जोड़कर और अनाथ स्त्रीके समान दीन होकर विश्वामित्र पास आई और कहने लगी कि, हे भगवन्! हम आपका कौनसा काम करें।

विश्वामित्र बोले, हम बसिष्ठको मारेंगे, इस लिये तुम उन्हें अपने पानीमें बहा लावो उनके बचन सुन कमलके समान नेत्रवाली सरस्वती नदी वायुसे हिलती हुई लताके समान कांपने लगी।

महानदी सरस्वतीकी यह दशा देख विश्वामित्र बोले, तुम बिना विचारे बशिष्ठको हमारे यहां ले आवो।

विश्वामित्रके ऐसे बचन सुन और उनके मनमें पाप जानकर उधर बशिष्ठके भी असाधारण प्रतापको जानकर सरस्वती बहुत घबड़ाई और बशिष्ठके पास जाकर बुद्धिमान विश्वामित्रके सब बचन कहसुनाये।

दोनोंके शापसे डरती मलीन चिन्ताकुल धर्म्मात्मा बशिष्ठने ऐसे बचन सुनाये।

बशिष्ठ बोले, हे नदियोंमें श्रेष्ठ! सरस्वती तुम अपनी रक्षा करो और हमें बहाकर विश्वामित्रके पास ले चलो, इससे कुछ विचार मत करो नहीं तो वे तुम्हें शाप दे देंगे।

कृपाशील बशिष्ठ मुनिके ऐसे बचन सुन नदियोंमें श्रेष्ठ सरस्वती शोचने लगी कि कौनसा काम करनेसे हमारा कल्याण होगा फिर उसने बिचारा कि बशिष्ठने मेरे ऊपर बहुत ही कृपा करी है इसलिये जिसमें उनका कल्याण हो सो काम करना मुझे उचित है।

एक दिन सरस्वतीने महामुनि विश्वामित्रको होम और जप करते देखकर विचारा इस समयमें नहीं उठ सकेंगे।

ऐसा विचारकर उन्होंने अपना तट तोड़ दिया, और बशिष्ठको वहां ले चली बहते हुए बशिष्ठ उनकी स्तुति करने लगे।

बशिष्ठ बोले, हे सरस्वती! तुम ब्रह्माके तलावसे निकली हो सब जगत् तुम्हारे उत्तम जलसे पूरित है। तुम आकाशमें जाकर मेघोंको जलसे पूरित करती हो तुम सब जलोंका रूप हो, तुम्हारे ही प्रतापसे हम लोग वेद पढ़ते हैं। तुम पुष्टी, कान्ती, कीर्ति, सिद्धि, बुद्धि और बाणी रूपी हो। तुम इस सब जगत्में व्याप्त हो तुम सब जगत्में चार रूप करके बसती हो।

बशिष्ठकी ऐसी स्तुती सुन सरस्वती बेगसे बहने लगी फिर उनके आश्रमके पास जाकर विश्वामित्रसे कह दिया, मैं बशिष्ठको ले आई।

बशिष्ठको अपने पास आये देख, विश्वामित्रको बहुत क्रोध हुआ और बशिष्ठके मारनेके लिये अस्त्र ढूंढ़ने लगे।

विश्वामित्रको क्रोध देख ब्रह्महत्याके भयसे

वशिष्ठको सरस्वतीने सावधान होकर पूर्व्वकी ओर वेगसे बहा दिया।

इस प्रकार सरस्वतीने दोनो मुनियोंका वचन सत्य किया।

वशिष्ठको बहते देख क्रोधी विश्वामित्र क्रोध करके बोले, हे नदियोंमें श्रेष्ठ सरस्वती तू हमसे छल करके चली गई।

इसलिये तेरा जल रुधिर होजाय और उसे राक्षस पियें।

बुद्धिमान विश्वामित्रने ऐसे बचन सुनते ही सरस्वतीका जल रुधिर होगया और एक वर्ष-तक वैसा ही रहा।

सरस्वतीकी यह दशा देख ऋषी, देवता, गन्धर्व्व और अप्सरा आदि सब घबड़ा गये।

हे पृथ्वीनाथ! फिर सरस्वती वैसी ही होंगे उसी दिनसे इस तीर्थका नाम वशिष्ठाप्रवाह तीर्थ हुआ।

४२ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जनमेजय क्रोधभरे बुद्धिमान् विश्वामित्रका शाप होनेसे सरस्वतीको उस तीर्थमें रुधिर बहने लगा। एक दिन एक राक्षस उस शुद्ध तीर्थ-पर आया और उस रुधिरको पीकर बहुत प्रसन्न होकर इस प्रकार नाचने और हंसने लगे जैसे स्वर्गमें देवता।

एक दिन अनेक तपस्वी तीर्थ करते करते तीर्थोंमें स्नान करने जाते उस रुधिर बहनेवाले तीर्थमें भी पहुंचे।

हे राजेन्द्र! महातपस्वी और महाभाग मुनीश्वर सरस्वतीके उस तीर्थमें पानीको रुधिरसे भरा और उसे राक्षसोंका पीते देख मुनि-योंने सरस्वतीके उद्धारका यत्न किया अनन्तर महाव्रतधारी और महाभाग मुनियोंने नदि-योंमें श्रेष्ठ सरस्वतीको बुलाकर पूछा। हे कल्याणी! तुम्हारा यह तालाव ऐसा नष्ट क्यों होगया है? इसका कारण हमसे कहो सो सुनकर हम लोग कुछ उपाय करेंगे।

ऋषियोंके बचन सुनि कांपती हुई सरस्व-तीने सब वृत्तान्त कह सुनाया।

सरस्वतीको दुःखित देख तपस्वी बोले, शाप और उसका कारण हम लोगोंने सुना अब कुछ उपाय करेंगे।

सरस्वतीसे ऐसा कहकर ऋषियोंने परस्पर बिचार किया कि, सरस्वतीको इस शापसे छुड़ाना उचित है। फिर उन सबने तप उपास और कठोर व्रत करके जगत्के स्वामी शिवको प्रसन्न करके सरस्वतीका शाप छुड़ा दिया।

उन ब्राह्मणोंको कृपासे सरस्वतीका जल पहिलेके समान निर्म्मल होगया, और पहिलेके समान बहने लगी।

सरस्वती जल निर्म्मल देखकर वे राक्षस भूखे मरने लगे। तब हाथजोड़कर उन दया-वान् मुनियोंके शरण गये, और कहने लगे। हम लोग सनातन धर्म्मसे भ्रष्ट होकर राक्षस हुए हैं, और अब भूखसे व्याकुल होरहे है, अब हम लोगोंकी यह इच्छा नहीं है, कि हम सब आप लोगोंका द्वेश करके पापी बने और घोर पापमें पड़े हमलोग ब्रह्मराक्षस है। योनि-दोष और स्त्रियोंके दोष हमें पाप करना ही होता है। जो वैश्य, शूद्र और क्षत्रिय ब्राह्मणोंके द्वेष करते हैं। वे हमारे ही समान राक्षस होंगे, जो आचार्य्य ऋत्विग गुरु और बूढ़ेका द्वेष करते हैं। प्रथम जो किसी प्राणीका द्वेष करते है, वे भी राक्षस होंगे।

हे मुनीश्वरों तुम लोग तीनों लोकका उद्धार करनेमें समर्थ हो इसलिये हम लोगोंका भी उद्धार कीजिये।

राक्षसोंके बचन सुनकर ऋषियोंने महा-नदीसे कहा कि जो अन्न सड़ा कीड़ोंसे खाया जूठा बालयुक्त और रोते हुए मनुष्यसे दिया हुआ

अन्न राक्षसोंका भाग होगा, जो इस अन्नको खायगा वह राक्षसोंका अन्न खानेवाला होगा, इसलिये बुद्धिमान यत्नके सहित विचार करके इन अन्नोंको छोड़ देय। ऋषियोंने उन उन राक्षसोंको मुक्तिके लिये सरस्वतीसे वरदान मांगा। हे पृथ्वीनाथ! ऋषियोंकी सम्मति जानकर सरस्वतीने अरुणा नामक अपनी दूसरी धाराको बुलाया राक्षसोंने उसमें स्नान किया और उनकी मुक्ति होगई।

अरुणामें स्नान करनेसे ब्रह्महत्या छूट जाती है यह विचार देवराज इन्द्रने इस तीर्थमें स्नान किया और ब्रह्महत्यासे छूट गये।

राजा जनमेजय बोले, हे भगवन्! इन्द्रको ब्रह्महत्या क्यों लगी थी? और इस तीर्थमें स्नान करनेसे वे पाप रहित कैसे होगये?

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे महाराज! जिस प्रकार इन्द्रने विश्वासघात किया था, सो कथा हम तुमसे कहते हैं तुम सुनो।

पहिले समयमें नमुचो इन्द्रसे डर कर सूर्य्यकी किरणोंमें घुस गये, तब इन्द्रने उससे मित्रता करली और उसके सङ्ग यह प्रतिज्ञा-करी कि, हे राक्षस श्रेष्ठ मित्र! हम सत्यकी शपथ खाकर कहते हैं कि तुम्हें न सूखेसे न गीलेसे न रातको और न दिनको मारेंगे।

इस प्रतिज्ञाको नमुचीने भी स्वीकार कर लिया एक दिन इन्द्रने पानीमें फेना देखा तब उसहीसे कुहर पड़नेके समय उसका शिर काट दिया। वह कटा हुवा नमुचीका शिर बोला! अरे मित्रको मारने वाले पापी! ऐसा कहता हुआ इन्द्रके बहुत पीछे दौड़ा इन्द्र उससे व्याकुल होकर ब्रह्माके पास गये, और यह सब समाचार कह सुनाया।

लोक गुरु ब्रह्माने कहा कि, हे इन्द्र! सरस्वतीका मुनियोंने पवित्र जलवाली बनादिया है इसलिये तुम उसहीके पाप भय नाशक तीर्थ पर जाकर यज्ञ करो और जलका स्पर्श करो यह नदी पहिले समयमें गूढ़ भावसे आई थी, यह स्थान सरस्वती और अरुणाका सङ्गम है, इसलिये बहुत पवित्र तीर्थ है।

हे देवेन्द्र! तुम वहां जाकर यज्ञ करो और अनेक प्रकारके दान दो तब तुम इस घोर ब्रह्महत्यारूपी पापसे छूटोगे

ब्रह्माके ऐसे वचन सुन इन्द्रने उस तीर्थमें जाकर स्नान किया, और विधिके अनुसार यज्ञ किया, तब उस ब्रह्महत्यासे छुट कर और अत्यन्त प्रसन्न होकर स्वर्गको चले गये। वह शिर भी उस तीर्थमें स्नान करके अक्षय लोकोंको चला गया।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, उस तीर्थमें भी उत्तम कर्म्म करनेवाले, महात्मा बलरामने जलस्पर्श करके बहुत दान दिये फिर वहांसे सोम तीर्थको चले गये।

हे राजेन्द्र! इस ही तीर्थमें चन्द्रमाने राजसूय यज्ञ करी थी; उस यज्ञमें ब्राह्मण श्रेष्ठ बुद्धिमान् महात्मा अत्रि होता थे।

इसी स्थानमें देवता और राक्षसोंका घोर युद्ध हुवा था, इसी युद्धमें कार्त्तिकेयने तारकासुरको मारा था, इसी स्थान पर दैत्योंके नाश करनेवाले, स्वामिकार्त्तिककी देव सेनापति पद मिला था, यहीं स्वामिकार्त्तिक पाकरके वृक्षके नीचे सदा निवास करते हैं।

४३ अध्याय समाप्त।

राजा जनमेजय बोले, हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! आपने हमसे सरस्वतीका महात्म कहा अब कार्त्तिकेयके अभिषेककी कथा हमसे कहिये।

हे कहनेवालोंमें श्रेष्ठ! भगवान् कार्त्तिकेयका किस समय किस देशमें किसने किस विधिसे अभिषेक किया था? उन्होंने किस प्रकार दैत्योंका नाश किया था? यह कथा सुननेकी हमारी बहुत इच्छा है, आप कहिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय। तुम जो हमारे बचन सुनकर प्रसन्न हुए हो यह कुरुकुलके अनुसार ही है, हम महात्मा कार्त्तिकेयका अभिषेक और प्रभाव तुमसे वर्णन करते हैं सुनो।

पहिले समयमें शिवका तेज अग्निमें गिरा था, यद्यपि भगवान् अग्नि सब बस्तुको खा सक्ते हैं तौभी उस अक्षय बीर्य्यको भस्म न कर सके, तब अग्निका तेज बहुत बढ़ गया, तौभी अग्नि उस तेजसे भरे गर्भको धारण न कर सके अनन्तर अग्निने ब्रह्माकी आज्ञासे वह सूर्य्यके समान तेजस्वी गर्भ गङ्गाको दे दिया परन्तु गङ्गा भी उस गर्भको धारण न कर सकी और देव पूरित हिमालय पर्व्वतपर फेंक दिया। वह अग्निके समान तेजस्वी गर्भ वहीं बढ़ने लगा, और सब लोक उसके तेजसे पूरित होगये।

एक दिन उस सरकंडेके बनमें पड़े महात्मा भगवानको कृत्तिका नक्षत्रोंने देखा तब उन सबने उन्हें पुत्र बनानेके लिये कहा कि ये हमारे पुत्र हैं।

भगवान् कार्त्तिकेय भी उनका अभिप्राय जान कर अपने छः मुख बनाकर उन छःहोंका दूध पीने लगे।

दिव्य शरीर धारण करनेवाली कृत्तिका देवी उस बालकका प्रभाव देखकर बिस्मित होगई

हे कुरुकुल श्रेष्ठ! जहां पर गङ्गाने उस गर्भको गिराया था, वह पर्व्वत उत्तम सोनेके समान चमकने लगा, बढ़ते बढ़ते वह तेज सब जगत्में फैल गया। इसलिये सब पर्व्वत भी भरगये और उनमेंसे सोना निकलने लगा।

हे राजेन्द्र। गङ्गापुत्र महायोगी महाबलवान कार्त्तिकेय उसी दिनसे कार्त्तिकेय नामसे प्रसिद्ध हुए, तब वे अपने श्रम, तपस्या और बीर्य्यके बलसे चन्द्रमाके समान बढने लगे, और वैसे ही सुन्दर भी होगये उस ही सरकण्डेके बनमें उनकी स्तुती करनेके लिये गन्धर्व्व और मुनि आने लगे। सुन्दर रूपवाली सहस्रों गन्धर्व्व और देवतोंकी कन्या उनके पास आके नाचने गाने और दिव्य बाजे बजाकर उनकी स्तुती करने लगीं। नदियोंमें श्रेष्ठ गङ्गाभी उनके पास आती थी, जबसे पृथ्वीने उन्हें धारण किया था, तबसे पृथ्वीका भी तेज बहुत बढ गया था।

अनन्तर वृहस्पतिने उनका जातकर्म्म किया था। चारों वेद चारों उपवेद चरण शस्त्र और संग्रह ग्रन्थोंके सहित धनुर्वेद हाथ जोड़कर उनके पास आये इसी प्रकार सरस्वती भी उनके पास पहुंच गई।

एकदिन कार्त्तिकेयने पार्व्वती और अनेक प्रकारके रूपधारी भूतोंके सङ्ग बैठे महाबलवान शिवको देखा शिवके सङ्गके भूत अद्भुत थे, कोई विचित्र ध्वजावाला, कोई विचित्र भूषणवाला, किसीका सिंहके ऐसा मुंह, किसीका गधेके समान मुख, किसीका रीछके समान मुंह, किसीका भेड़िये, किसीका मगर, किसीका हाथी, किसीका ऊंट, किसीका उल्लू, किसीका गिद्ध, किसीका कुक्कुट और किसीका कबूतरके समान मुख था।

किसीका शरीर भेड़िये, किसीका साही, किसीका गोह, किसीका बकरी, किसीका भेड़, और सिकीका गायके समान था।

कोई पर्व्वत और मेघोंके समान शरीरवाले, थे। कोई गदा और कोई चक्र लिये थे, कोई अञ्जनके समान काले और कोई सफेद पर्व्वतके समान सुन्दर थे।

हे पृथ्वीनाथ। शिवके सङ्ग सातो मातृगण, साध्य, विश्वेदेव, वसु, पितर, रुद्र, आदित्य, सिद्ध, सर्प, पक्षी, पुत्र सहित भगवान् ब्रह्मा, इन्द्र, नारदादिक, मुनि, देवता, गन्धर्व्व, वृहस्पत्यादि सिद्ध, देव ऋषि, विष्णु, जगत् श्रेष्ठ पितर और यामा, धामा, आदि देवतोंके देवता उस अविनाशी बालकको देखने आये।

उनको देख महायोगी कार्त्तिकेय भी शूलधारी देवराज शिवके पासको चले, कार्त्तिकेयको आते देख शिव, पार्व्वती, गङ्गा और अग्नि इन चारोंके मनमें यह बात उठी कि यह बालक पहिले हमारे ही पास आवेंगे।

इन चारोंका यह अभिप्राय जान भगवान् कार्त्तिकेयने क्षण भरमें अपनी मायासे चार शरीर बना लिये उन चारोंके ये नाम हैं, शाख विशाख, नैगमेय, और स्कन्द, इस प्रकार चार अद्भुत शरीर भगवान कार्त्तिकेयने बनाये।

तिनमेंसे स्कन्द शिवके पास, विशाख पार्व्वतीदेवीके पास भगवान साधुमूर्त्ति शाख अग्निके पास और अग्निके समान तेजस्वी नैगमेय गङ्गाके पास गये, ये चारों महातेजस्वी और समान रूपवाले, चारों एकही समय चारोंके पास गये यह देखकर देवता, दानव और राक्षस विस्मय करके हाहाकार करने लगे, और इन सबके रोंए खड़े होगये।

तब शिव, पार्व्वती, अग्नि और गङ्गाने कार्त्तिकेयको ब्रह्माके पैरोंमें डाल दिया और प्रणाम करके चारों बोले।

हे भगवन्! आप हमलोगोंकी प्रसन्नताके लिये इस बालकको कहींका स्वामी बना दीजिये।

उनके बचन सुन भगवान बुद्धिमान ब्रह्मा शोचने लगे। कि इस बालकको क्या देना चाहिये? सब रत्न पहिले ही देवता, गन्धर्व्व, राक्षस, भूत, पक्षी और सर्पोंको दे चुके हैं और सब ऐश्वर्य्य भी सब पा चुके हैं। थोड़े समयतक विचार करके ब्रह्माने उन्हें सब ऐश्वर्य्य भोगनेमें समर्थ समझा और देवतोंका सेनापति बना दिया फिर देवतोंके सब राजोंको बुलाकर ब्रह्माने यह आज्ञा सुना दी।

अनन्तर हिमाचलके सहित ब्रह्मादिक देवता कार्त्तिकेयको सङ्ग लेकर इनका अभिषेक करनेके लिये सब नदियोंमें श्रेष्ठ पवित्र सरस्वती देवीके तटपर तीनों लोक विख्यात समन्तपञ्चक नामक तीर्थपर आये, वहां पवित्र सब गुणोंसे भरे सरस्वतीके तटपर सब देवता प्रसन्न होकर बैठे।

४४ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जनमेजय तब बृहस्पति अभिषेकको सब सामग्री इकट्ठे करके शास्त्रमें लिखी विधिके अनुसार होम करने लगे।

अनन्तर हिमाचलके दिये उत्तम मणिजटित सिंहासनपर कार्त्तिकेयको बिठलाकर, सब मङ्गलकी सामग्री रखकर और सब अभिषेकको वस्तु इकट्ठी करके महाबलवान इन्द्र, विष्णु, सूर्य्य, चन्द्रमा, धाता, बिधाता अग्नि, वायु, पूषा, भग, अर्य्यमा, अंश, विवस्वान्, रुद्र, मित्र, वरुण, वसु, आदित्य, अश्विनीकुमार, मरुत, साध्य, गन्धर्व्व, पितर, अप्सरा, यक्ष राक्षस, सांप, देव ऋषि, ब्रह्मर्षि, वैखानस, बालखिल्य, वायुभक्षी, किरणभक्षी, भृगु, अङ्गिरादि महात्मा यताती, सर्प, विद्याधर, आदि पवित्र योगी, सिद्ध, ब्रह्मा, पुलस्त्य, महातपा पुलह, अङ्गिरा, कश्यप, अत्रि मरीचि, भृगु, क्रतु, हर, प्रचेता, मनु, दक्ष, यज्ञ, तारे, ग्रह, मूर्त्तिमान् सनातन वेद, समुद्र, तालाव, अनेक प्रकारके तीर्थ, पृथ्वी, आकाश, दिशा, वृक्ष, देव माता अदिति, ही श्री, स्वाहा, सरसती, सती, सिनीवाली अनुमती, कुहू, राका धिषणा, आदि देवतोंकी स्त्री, हिमाचल, विन्ध्याचल, अनेक शृङ्गोंके सहित सुमेरु, सेवकोंके सहित ऐरावत, कला, काष्ठा, महीना, पक्ष, रात्रि, दिन, ऋतु, घोड़ोंमें श्रेष्ठ उच्चैःश्रवा नागराज बासुकि, अरुण, गरुड़, वृक्ष, औषधी, भगवान धर्म्म, शमन सहित यमराज, काल और सेवकों सहित मृत्यु, आदि सब देवता अपने अपने शरीरोंसे अभिषेकके लिये जलके घड़े भरवार और मङ्गलकी सामग्री लेकर आये।

फिर देवतोंने प्रसन्न होकर सोनेके घड़ोंमें सरस्वतीका पवित्र और दिव्य जल भरकर दानवोंको भय देनेवाले महात्मा कार्त्तिकेयका अभिषेक किया। जैसे पहिले समयमें जलराज-वरुणका अभिषेक हुआ था, ऐसे ब्रह्माने और महातेजस्वी कश्यप आदि ऋषियोंने कार्त्तिकेयका अभिषेक किया।

फिर ब्रह्माने प्रसन्न होकर वायुके समान शीघ्र चलनेवाले, इच्छानुसार बलधारी सिद्ध पार्षद दिये।

ब्रह्माने कार्त्तिकेयको नन्दिसेन, लोहिताक्ष घण्टाकर्ण और विख्यात कुमुदमाली पारिषद दिये।

भगवान महातेजस्वी शिवने अनेक माया जाननेवाले दानवोंका नाश करनेवाला महाबलवान एक पार्षद दिया, उसीने देवासुर संग्राममें क्रोध करके चौदह प्रयुत राक्षसोंको अपने पैरोंसे पीस दिया था।

अनन्तर देवतोंने विष्णुरूपिणी दानवोंका नाश करनेवाली किसीसे न हारनेवाली नैऋत सेना उनको दे दी तब इन्द्रादिक सब देवता, गन्धर्व्व, यक्ष, राक्षस, मुनि और पितर उनकी जय जय पुकारने लगे।

हे राजन्! अनन्तर प्रतापवान सूर्य्यने प्रसन्न होकर अपने सङ्ग रहने वाले काल और यमराजके समान बलवान अपने समान तेजस्वी सुभ्राज और भास्वर नामक दो अनुचर दिये।

ब्रह्माने भी महाबलवान प्रमथ और उन्माथ नामक दो अनुचर दिये।

चन्द्रमाने कैलाशके शिखरके समान सुन्दर श्वेत मालाधारी और सुमणि नामक दो अनुचर दिये।

अग्निने अपने पुत्र कार्त्तिकेयको शत्रुओंकी सेनाको नाश करनेवाले, महावीर ज्वालाजिह्व और ज्योति नामक दो सेवक दिये।

अंशनामक देवताने बुद्धिमान कार्त्तिकेयको परिघ, कभीरु, महाबलवान दहती, और महावीर दहन नामक पांच सभासद दिये।

शत्रुनाशन इन्द्रने वज्रधारी, उत्क्रोश और दण्डधारी पञ्चवक्त्र नामक दो सेवक दिये।

उन्होंने युद्धमें अनेक दानवोंका नाश किया था।

महायशस्वी विष्णुने चक्र, विक्रम और संक्रम नामक तीन बलवान सभासद दिये।

वैद्योंमें श्रेष्ठ अश्विनीकुमारने सब विद्याओंसे पूर्ण वर्द्धन और नन्दन नामक दो पारिषद दिये।

महात्मा कार्त्तिकेयको धाताने कुसुम कुन्द, कुमुद डम्बर, और आडम्बर नामक सेवक दिये।

त्वष्टाने माया जाननेवाले, महाबलवान मेघ चक्र संचक्र चक्र और अतिचक्र नामक दो अनुचर दिये।

महात्मा कार्त्तिकेयको भगवान मित्रने सब माया जाननेवाले, सुव्रत और सत्यसन्ध नामक दो बलवान पार्षद दिये ये दोनोंपार्षद विद्या और तपसे भरे थे।

विधाताने अत्यन्त सुन्दर तीनलोकोंमें विख्यात् महात्मा सुव्रत और शुभकर्मा नामक दो सेवक दिये।

पूषाने कार्त्तिकेयको सब माया जाननेवाले, पाणी तक और कालो नामक दो पार्षद दिये।

हे भरतकुल श्रेष्ठ! वायुने कार्त्तिकेयको बड़े मुख और बड़े बलवाले बल और अतिबल नामक दो पार्षद दिये।

सत्यवादी वरुणने बड़े मुख और बड़े बलवाले यम और अतियम नामक दोपार्षद दिये

अग्निके पुत्र कार्त्तिकेयको हिमाचलने सुवर्चा और अतिवर्चा नामक दो अनुचर दिये।

मेरु पर्व्वतने अग्नि पुत्रको महात्मा कांचन और मेघमाली नामक दो अनुचर दिये। फिर मेरुने स्थिर और अति स्थिर नामक दो अनुचर और दिये।

विन्ध्याचलने पत्थरोंसे युद्ध करनेवाले महा-पराक्रमी उच्छ्रुङ्ग और अति शृङ्ग नामक दो अनुचर दिये।

समुद्रने गदाधारी संग्रह और विग्रह नामक दो अनुचर दिये।

सुन्दरी पार्व्वतीने उन्माद, शंकुकर्ण और पुष्पदन्त नामक सेवक दिये।

सर्पराज वासुकीने अग्नि पुत्रको जय और महाजय नामक दो सर्प दिये।

इसी प्रकार साध्य, रुद्र, पितर, वसु, समुद्र, नदी, और पर्व्वतोंने कार्त्तिकेयको शूल और पट्टिस धारी अनेक सेनापति दिये।

हे राजन्! अनेक प्रकारसे युद्ध करनेवाले, सब युद्ध विद्याके जाननेवाले विचित्र भूषण-धारी इन गणोंके नाम भी तुम सुनो शंकु-कर्ण निकुम्भ, पद्म, कुमुद, अनन्त, द्वादश भुजा, उपपृश्न, घ्राणश्रवा, कपिस्कन्द, कांच-नाक्ष, जलन्धर, अक्षसन्तर्पन, कुनदीक, तम, अन्तकृत, एकाक्ष, द्वादशाक्ष, एकजट, सहस्र बाहु, विकट, व्याघ्राक्ष, क्षितिकम्पन, जरायु-नामा, सुनामा, सुचक्र, प्रियदर्शन, परिश्रुत, कोकनद, प्रियमाली, प्रियानुलेपन, अजोदर, गजशिरा, स्कन्धाक्ष, शतलोचन, ज्वालाजिह्व, कराखाक्ष, शितिकेश, जटी, हरी, परिश्रुत, कोकनद, कृष्णकेश, जटाधर, चतुर्दंष्ट्र, अष्टजिह्व, मेघनाद, प्रथुश्रवा, विधूताक्ष, धनुर्व्वक्र, मारुता-शन, उदाराक्ष, रथाक्ष, वज्रनाभ, वसुप्रभ, समु-द्रवेग, शैलकम्पी, वृषमेष, प्रवाह, नन्द, उपनन्द, धूम्र, श्वेत, कलिङ्ग, सिद्धार्थ, वरद, प्रियक, नन्द, प्रतापी, गोनन्द, आनन्द, अमोद, स्वस्तिक ध्रुवक, क्षेमवाह, सुवाह:, सिद्धपात्र, गोव्रज, कनकापीड़, महा पारिषदेश्वर, गायन, हसन, बाण, बल-वान्, खड्ग वैताली, गतिताली, कथक, वातिक, हंसज, पङ्क, दिग्धाङ्ग, समद्रीन, मादन, रणोत्कट, प्रहास, श्वेतसिद्धनन्दन, कालकण्ठ, प्रभास, कुम्भा ण्डोदर, कालकक्ष, शित, भूत, मथुन यज्ञबाहु, सुबाहु, देवयाजी, सोमप, मज्जान, महातेज, काथ, क्राथ, तेजधर, तुहार, बलवान, चित्रदे सुप्रसाद, मधुर, महाबलवान, किरीटी, बल मधुवर्ण, कलशोदर, धर्म्मद, मन्मथकर, सूची वेणु, सुवक्त, श्वेतवक्र, चारुवक्त, पांडु दण्डबाहु, रज, सुबाहु, कोकिल, कनकाक्ष, बालाप्रिय, सञ्चारक, कोकन गृध्र, पत्र, जम्बुक, लोहवक्र, अजवक्र, कुम्भवक्र, कुम्भक स्वर्णग्रीव, कृष्णोजा, हंसज, चन्द्रमा पाणीकूच, शम्बुक, पञ्चवक्र, शिक्ष, चाषवक्र, जम्बुक, शाकवक्र और कुण्डल आदि ब्रह्माके बनाये योगी महात्मा सदा ब्राह्मणोंके प्यारे सहस्रो पारिषद कार्त्तिकेयके पास आये।

हे जनमेजय! इनमेंसे कोई युवा, कोई बालक और कोई बूढ़े थे अब उनके अनेक प्रकारके मखोंका वर्णन सुनों कोई कछुवे, कोई भूसे, कोई खरहे, कोई उल्लू, कोई गधे, कोई सूअर, कोई बिलावके समान मुखवाले थे किसीका लम्बा, मुख था, कोई नी उल्लू, कोई मूस, मोर, मछली, बकरी, मेंढ़ा, भेड़, भैंस, रीछ, शार्दूल, गैड़ा, सिंह, भयानक हाथी, नाको, गरुण, गिद्ध, कङ्क, भेड़िया, गाय, गधा और चीतेके समान मुखवाले थे!

किसीका बड़ा पेट किसीके बड़े पैर और किसीके तारेके समान नेत्र थे किसीका मुख परेवा किसीका बैल किसीका कोकिला किसीका बाज किसीका तीतर, किसीका गिरगिट, किसीका साप, और किसीका शूलके समान भयानक मुख था, ये सब उस समय निर्म्मल वस्त्र धारण किये थे, और सांपोंके भूषण पहिने थे।

किसीके नाक गायके ऐसी थी, और किसीका मुख गायके ऐसा था, और किसीका शरीर बहुत दुबला और पेट बहुत बड़ाथा, किसीका शरीर बहुत मोटा और पेट छोटा था, किसीकी गरदन छोटी थी, और कान भारी थे, को

ंप लपेट रहा था, कोई हाथीका चमड़ा ोढ़ रहा था, और कोई मृगछाला ओढ़ हा था।

किसीका मुख कांधेमें किसीका पेटमें किसीका पीठमें किसीका ठोड़ीमें किसीका ांघमें और किसीका पसुलीमें मुख था किसीके अनेक मुख थे किसीके सब शरीरमें ुखी मुख थे, किसीके शरीरमें अनेक सापोंके ुख लगे थे किसीके अनेक हाथ और किसीके अनेक शिर थे, किसीके अनेक वृक्षोंके समान हाथ थे और किसीका कमरमें मुख था, किसीका मुख सापके फणोंके समान था, ये सब अनेक देशोंके रहनेवाले थे अनेक प्रकारके सोनेके भूषण धारण किये थे, अनेक प्रकारके वस्त्र और माला पहिरे थे, अनेक प्रकारके सुगन्ध लगाये थे, चमड़ा ओढ़े थे, कोई पगड़ी बांधे थे कोई मुकुट बांधे थे कोई सुन्दर कंठ-वाले और कोई महातेजस्वी थे, कोई किरीट बाधे थे किसीके पाच शिखाथीं किसीके सोनेके समान शिखा थी, किसीके दो शिखा थी और किसीके सात शिखा थी, किसीका शिर मुड़ा था और किसीकी जटा बढ़ी थी, किसीके मुखपर बड़े बड़े बाल थे कोई बिचित्र माला पहिने थे ये सब वीर रसके प्यारे और देवतोंको भी जीतनेवाले थे।

सबकाल सूखे मुख बड़े बड़े कमर और पेटवाले थे, किसीकी कमर बड़ी भारी और किसीकी कमर छोटो थी किसीका पेट बड़ा और किसीका लिङ्ग बड़ा भारी था, किसीका हाथ बड़ा और किसीके छोटे छोटे थे, कोई बहुत लम्बे और कोई बौने ही थे कोई कुबड़े और कोई छोटी जांघवाले थे।

किसीका कान किसीकी नाक और किसीका शिर हाथीके समान था, किसीकी नाक कछुवेके समान थी, किसीकी नाक भेड़ि-येके समान थी कोई लम्बे श्वांस लेता था, किसीकी जङ्घा बड़ी भारी थी किसीका मुख बड़ा भयानक और नीचेको था।

हे राजन्! किसीके बड़े बड़े दांत किसीके चार दांत और किसीके हाथीके समान दांत थे किसीका बड़ा सुन्दर और तेजस्वी शरीर था। कोई उत्तम आभूषण पहिने था, किसीके नेत्र बन्दरके समान थे, किसीके कान छोटे छोटे थे, किसीकी नाक लाल थी, किसीके लम्बे और चौड़े दांत थे। किसीके मोटे मोटे ओठ और पीले पीले बाल थे, किसीके अनेक चरण किसीके अनेक ओठ किसीके अनेक हाथ किसीके अनेक दांत और किसीके अनेक शिर थे। अनेक प्रकारके चमड़े ओढ़े अनेक भाषाको जाननेवाले थे सब गण परस्पर वार्त्ता करने लगे, और प्रसन्न होकर सभामें आये। किसीका ऊंटके समान गला था किसीके बड़े बड़े नखूनथे किसीके बड़े बड़े चरण और किसीके बड़े बड़े हाथ थे।

हे भारत! किसीके बन्दरके समान आंख थीं किसीके गले नीले थे, किसीके लम्बे लम्बे कान थे, किसीका भेड़ियेके समान पेट था, कोई अञ्जनके समान काले शरीरवाला था किसीकी सफेद आंख और गला था, किसीके पिङ्गलवर्ण नेत्र थे, किसीका विचित्र रङ्ग था, किसीका चमरके समान रंग था, किसीके शरी-रपर लाल और सफेद बिन्दु थे, किसीके शरी रमें अनेक रंग थे, कोई एक ही रंगवाला था, और किसीका रंग मोरके समान था।

हे राजन्। अब तुम इनके शस्त्रोंका बर्णन सुनो। किसीके हाथमें फांसी, किसीका मुख गधेके समान किसीको पीठमें आंख थीं, किसीका कण्ठ नीला था। किसीके हाथमें परिघ किसीके शतघ्नी, किसीके चक्र, किसीके मुशल किसीके खड्ग, किसीके दण्ड किसीके गदा, किसीके भुशुण्डी और किसीके हाथमें तोमर था। महावेगवाले महात्मा महाबल

वान गणोंके हाथमें और भी अनेक प्रकारके शस्त्र थे।

प्रारम्भसे कार्त्तिकेयका अभिषेक देखकर यह सब युद्ध करनेवाले वीर बहुत प्रसन्न हुए, फिर घण्टे बांधकर नाचने लगे और भी अनेक पारिषद यशस्वी महात्मा कार्त्तिकेयके पास आये। देवताओंकी आज्ञासे पृथ्वी और अन्तरिक्षमें रहनेवाले वायुके समान वेगवान राजा और पहिले लिखे गणोंके समान हजारों लाखों करोड़ों और पद्मों गण अभिषेक होते हुए कार्त्तिकेयके चारों ओर खड़े होगये।

४५ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! अब इस कार्त्तिकेयके सङ्ग रहनेवाली शत्रुनाशिनी मातृगणोंका वर्णन करते हैं। तुम सुनो।

हे भारत इन ही यशस्विनी। कल्याणी मातृयोंसे य सब जगत् व्याप्त है।

प्रभावती, विशालाक्षी, पालिता, श्रीमती, बहुला, बहुपुत्रिका, अप्सजाता, गोपाली, बृहदम्बिका, जयावती मालातिका, ध्रुवरत्ना, भयङ्करी वसुदामा, क्षमा, विशोका, नान्दनी, एक चूड़ा, महाचूड़ा, चक्रनमी उत्तेजना, जयत्सेना, कमलाक्षी, शोभना क्षोधना, शलभी, खरी, माधव, शुभवक्ता, तीर्थश्रेणी, गीतप्रिया कल्याणी रुद्ररोमा, मिताशना मेघस्वना भोगवती, सम कनकावती, अलाताक्षी वीर्य्यवती विद्युज्जिह्वा, पद्मावती, सुनक्षत्रा कन्दरा बहुयोजना, सन्तानिका महाबला, कमला, सुदामा, बहुदामा, सुप्रभा, यशस्विनी, नृत्यप्रिया, शता, उलूखलमेखला, शतघण्टा, शतानन्दा, भगानन्दा, भाविनी वपुष्मता, चन्द्र सीता भद्रकाली, ऋक्षा, अम्बिका निष्कटिका, वामा चत्वरसिनी, सुमङ्गला, अस्तिमती बुद्धिकामा, जयप्रिया, धनदा, सुप्रसादा, भवदा, महेश्वरी, येड़ी, भेड़ी, समेजतु, वेताल[illegible] कण्डूती, कालिका, देवमित्रा, वसुपोई, का[illegible] चित्रसेना, कुक्कुटिका, शङ्कुलिका, शकुनि[illegible] कुण्डरिका, कौकुलिका, कुम्भिका, शतो[illegible] उत्क्राथिनी, जलेला, महावेगा, कङ्कण [illegible] जवा कण्ठकिनी प्रघासा, पूतना केशयन्त्री वामा क्रोशना, तड़ित्प्रभा मन्दोदरी मु[illegible] कोटरा मेघवाहिनी सुभगा लम्बिनी, ल[illegible] ताम्र चूड़ा, विकाशिनी, ऊर्ध्ववेणीधरा, पिं[illegible] लोहमेखला, पृथवस्त्रा, मधूलिका, मधुकु[illegible] पक्षालिका, मुतकुलिका, जरायुजड़, जग[illegible] दहदहा, धमधमा, खड्गा अखड्ग, पूषणा [illegible] कुट्टिका, अमोघा, लम्ब, पयोधरा, वेणी, वी[illegible] पिंगाक्षी, लोहमेखला, शशउलूक मुखी, [illegible] खरजिह्वा, महाजवा, शिशुमारमुखा, शता [illegible] ताक्षी, विभीषणा जयालिका कामचरी, दीर्घ[illegible] महोत्कटा, कादिहिका, वामनिका, मुकुटा, ल[illegible] ताक्षी, महाकाया, हरिपिण्डा, एकत्वचा, सुमा, कृष्णा कर्णा, क्षुरकर्म्मा, चतुःकर्णा, प्रावर्णा, चतुष्पदा, निकता, महिषयना, ख[illegible] महाकर्णी, भेरस्वना, महाश्वरा, शङ्खकवा, [illegible] महाबला गणा सुगणा सोति कामदा चतुष्[illegible] भूततोर्था, अन्यगोचरी, पासुसा, महायशा, प[illegible] गोदा, महिटादा, विशाल, प्रतिष्ठा, सुप्र[illegible] रोचमाना, सुरोचना, नौकर्णा मुख कर्णा वि[illegible] शान्यिनी एकचन्द्रा मेघ माला और विरा[illegible]

हे भरतकुल सिंह! इनको आदि [illegible] और भी सहस्रों मातृगण अनेक प्रक[illegible] स्वरूप बनाकर कार्त्तिकेयके संग रहती [illegible] इन सबके बड़े बड़े दात और बड़े बड़े मुख [illegible] सब अङ्ग मधुरता, यौवन, भूषण और महात[illegible] भरी है। इच्छानुसार रूप धारण कर[illegible] है। किसीके शरीरमें मास नहीं है, कोई [illegible] है। किसीका सोनेके समान रङ्ग है। मेघके समानकाली, कोई धूवेंके समान र[illegible] और कोई लाल रङ्गवाली है।

सब बड़े बालवाली सफेद वस्त्र धारिणी, ऊपरको देखनेवाली, पिङ्गवर्ण नेत्रवाली, किसीके बड़े बड़े पेट, लम्बे लम्बे कान, लम्बे लम्बे स्तन, कोई कालनेत्रवाली, किसीके बन्दरके समान नेत्र हैं। ये सब बरदान देनेमें समर्थ हैं और सदा प्रसन्न रहनेवाली हैं और सब इच्छानुसार घूमती हैं। कोई यम, रुद्र, चन्द्रमा, कुबेर, वरुण, इन्द्र, अग्नि, वायु, कार्त्तिकेय, सूर्य्य और कोई बराहको शक्तिसे बनी हैं। रूपमें अप्सराओंके तुल्य हैं, इनको देखते ही मन वशमें नहीं रहता इनकी बड़ी मीठी वाणी है बचनमें कुबेरके समान युद्ध करने और बलमें इन्द्रके समान और तेजमें अग्निके समान हैं। इन्हें देखकर युद्धमें शत्रु बहुत डरते हैं। ये सब इच्छानुसार रूप धारण कर सक्ती हैं। शीघ्र चलनेमें वायुके समान हैं। इनका बल, वीर्य्य और पराक्रम अपार है। ये सब वृक्ष चौराहे, गुफा, स्मशान पर्व्वत और दुर्गोंमें रहती हैं। अनेक प्रकारके वस्त्र, आभूषण और माला धारण करती हैं चित्र वेष बनाती हैं और अनेक प्रकारकी भाषा बोलती हैं।

हे राज शार्द्दूल! इनको आदि लेकर और भी सहस्रो भयानक गण इन्द्रकी आज्ञासे कार्त्तिकेयके सङ्ग चले, फिर इन्द्रने दानवोंका नाश करनके लिये बड़े शब्दवाली घटोंसे युक्त अपने तेजसे प्रकाश करती हुई एक सांगी कार्त्तिकेयको दई और प्रातः कालके सूर्य्यके समान एक पताका तथा अनेक शस्त्र और बलसे भरी महा तेजस्वी शत्रुओंसे लड़नेवाली रुद्रके समान पराक्रमी तीस सहस्र बीरोंसे भरी धनञ्जय नामक सेना शिवने दी। यह सेना कभी युद्धसे लौटना नहीं जानती।

विष्णुने बल बढ़ानेवाली वैजयन्ती माला पार्व्वतीने सूर्य्यके समान दो निर्म्मल वस्त्र, गङ्गाने अमृतसे उत्पन्न हुवा कमण्डलु, वृहस्पतिने प्रसन्न होकर दण्ड, गरुड़ने विचित्र पङ्खवाला अपना प्यारा पुत्र मोर, अरुणने लाल चोटीवाला मुर्गा, राजा वरुणने बलवान सांप, भगवान हरिणका चमड़ा और युद्धमें जय होनेका आशीर्व्वाद दिया।

इस प्रकार कार्त्तिकेय देवतोंके सेनापति बनकर उस पर्व्वतके ऊपर जलती हुई अग्निके समान प्रकाशित होने लगे। फिर अपने पार्षद और मातृगणके सहित कार्त्तिकेय देवतोंको प्रसन्न और राक्षसोंका नाश करनेके लिये चले फिर उस भयानक नैऋत सेनामें शङ्ख और भेर आदि बाजे बजने लगा। ध्वजा उड़ने लगी। जैसे शरत्कालके आकाशमें तारे चमकते हैं ऐसे शस्त्र चमकने लगे। देवतोंने और सब भूत गणोंने सावधान होकर शङ्ख,भेर, पटह क्रकच, बजायके सींग आड़म्बर और बड़े शब्दवाले डिण्डिम आदि बाजे बजाये। फिर इन्द्रादिक देवता कार्त्तिकेयकी स्तुति करने लगे, गन्धर्व्व और देवता गाने लगे और अप्सरा नाचने लगीं।

अनन्तर कार्त्तिकेयने प्रसन्न होकर वरदान दिया कि जो शत्रु तुम लोगोंको मारना चाहते हैं हम उनका नाश करेंगे। कार्त्तिकेयसे बरदान पाकर महात्मा देवता बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने शत्रुओंको मरा हुवा जान लिया। कार्त्तिकेयका बरदान सुनकर सब जन्तु प्रसन्न होकर गर्ज्जने लगे। यह शब्द तीनों लोकोंमें पूरित होगया।

हे राजन्। उस शूल और मुशल धारियोंकी महासेनाको संग लेकर कार्त्तिकेय दैत्योंका नाश और देवतोंकी रक्षा करनेको चले।

हे राजन्। उस अलात, गदा, मुशल, नाराच, सांगी और तोमर धारिणी कार्त्तिकेयकी सेनाके आगे परिश्रम, विजय, धर्म्म, सिद्धि, लक्ष्मी, धारणाशक्ति और स्मरण शक्ति चली कार्त्तिकेयके सेनाके बीर मतवाले सिंहके समान गर्ज्जने लगी।

तेज और बलसे भरे कार्त्तिकेयको आते देख दैत्य, दानव और राक्षस सब ओरसे व्याकुल होकर इधर उधरको भागने लगे। देवता भी शस्त्र लेकर उनके पीछे दौड़े कार्त्तिकेयको भी उन्हें देखकर बहुत क्रोध हुआ और बार बार शक्ति चलाने लगे, उस समय कार्त्तिकेयका ऐसा तेज बढ़ा जैसे आहुती जलातेहुए अग्निका।

हे महाराज! जिस समय अनन्त तेजस्वी कार्त्तिकेयने शक्ती चलाई, उस समय पृथ्वीमें आकाशसे बिजली गिरी और अनेक तारे टूट टूट इस प्रकार गिरे कि जैसे प्रलयमें गिरते हैं।

हे महाराज! जब कार्त्तिकेयने शक्ति छोड़ी उसी समय उससे करोड़ों शक्ति निकलने लगीं। तब भगवान् कार्त्तिकेयने प्रसन्न होकर उन्हीं शक्तियोंसे एक लाख वीरोंके सहित महापराक्रमी महाबली दैत्यराज तारकको मारा, महिषासुरको आठपद्म वीरोंके सहित मारा, त्रिपाद नामक दानवको एक करोड़ दानवोंके सहित मारा और हृदोदर नामक दानवको दशनिखर्व्व दानवोंके सहित मारा, जिस समय अनेक शस्त्रधारी पार्षदोंके सहित कार्त्तिकेय शत्रुओंका नाश कर रहे थे, उस समय दोनों ओरकी सेनामें घोर शब्द होने लगा, और वीर नाचने, कूदने, गर्ज्जने और दौड़ने लगे।

हे राजन्! उस समय सब जगत् कार्त्तिकेयकी शक्तिके तेजसे भुना जाता था, सहस्रों दानव शक्तिकी ज्वालासे जल गये, सहस्रों कार्त्तिकेयके शब्दसे मर गये, और सहस्रों ध्वजाकी हवासे उड़ गये। कोई घण्टेका शब्द सुनकर भयसे पृथ्वीमें गिर गये और कोई शस्त्रोंसे कटकर मर गये। इस प्रकार महाबलवान कार्त्तिकेयने सहस्रों दुष्ट दानवोंको मार डाला।

अनन्तर बलीका बेटा बलवान बाण नामक दानव क्रौञ्च पर्व्वतपर खड़ा होकर देवतोंका नाश करने लगा। तब महाबुद्धिमान कार्त्तिकेय उस देवतोंके शत्रुको मारने चले।

वह उनसे डरकर क्रौञ्च पर्व्वतमें छिप गया, तब कार्त्तिकेयने क्रोध करके क्रौञ्चपक्षियोंके शब्दसे भरे, उस पर्व्वतको तोड़ दिया। उसके टूटनेसे बड़े शालके वृक्ष टूटने लगे। बन्दर, हाथी डरकर भागने लगे। लंगूर और रीछ इधर उधरको भागकर चिल्लाने लगे, हरिन घबड़ाकर भागने और बोलने लगे, शरभ और सिंह इधर उधर दौड़ने लगे। उसके शिखरोंपर रहनेवाले, विद्याधर गिरने लगे। शक्तिका शब्द सुनकर किन्नर घबड़ा गये। उस समय उस पर्व्वतकी एक विचित्र शोभा दीखती थी।

अनन्तर उस पर्व्वतसे विचित्र माला और आभूषण पहिने सैकड़ों सहस्रों दानव निकले उन सबको कार्त्तिकेयके वीरोंने मारडाला।

अनन्तर भगवान कार्त्तिकेयने क्रोध करके भाईके सहित बाण नामक दैत्यको इस प्रकार मारा जैसे इन्द्रने वृत्रासुरको मारा था।

शत्रुनाशन कार्त्तिकेयने अनेक बार शक्ति छोड़कर पर्व्वतके एकही बार अनेक टूकड़े कर दिये, कार्त्तिकेयके हाथसे छूट छूटकर शक्ति फिर उन्हीके हाथमें आजाती थी। भगवान कार्त्तिकेय इस प्रकार सहस्रो देवतोंके शत्रु दानवोंको मारकर और क्रौञ्च नामक पर्व्वतको तोड़कर पहिलेसे द्विगुण तेज, प्रभाव, लक्ष्मी, यश और तेजसे प्रकाशित हुए।

हे राजन्! इस प्रकार दानवोंका नाश करके महाबलवान कार्त्तिकेय बहुत प्रसन्न हुए देवता शङ्ख और नगारे बजाने लगे। देवतोंकी स्त्री फूल बर्षाने लगीं, योगी और देवतोंके स्वामी कार्त्तिकेयको ओर दिव्य सुगन्धी लेकर वायु चलने लगा। गन्धर्व्व, यज्ञ करनेवाले, महाऋषी इनकी स्तुति करने लगे। इनमें कार्त्तिकेयको कोई ब्रह्माका पुत्र, कोई सनातन

कोई शिवकापुत्र, कोई अग्निकापुत्र, कोई कृत्तिकापुत्र, कोई पार्व्वतीका पुत्र, और कोई गंगाका पुत्र मानते हैं। कोई एक शरीर कोई दो शरीर, कोई तीन शरीर, और कोई सहस्रों शरीर मानते हैं।

हे राजन्। हमने देवता और योगियोंके स्वामी कार्त्तिकेयके अभिषेककी कथा तुमसे कही अब सरस्वतीके पवित्र तीर्थकी कथा सुनो।

जब कार्त्तिकेयने दानवोंको मारा तभी से यह तीर्थ स्वर्गके समान होगया वहीं बैठकर कार्त्तिकेयने सबको अलग अलग ऐश्वर्य्य बांट दिये प्रधान नैऋतोंको तीनों लोक दिये।

हे महाराज। इस प्रकार दैत्योंके वधनाशक कार्त्तिकेयका इस तीर्थपर अभिषेक हुआ था।

इस तीर्थका नाम तैजस तीर्थ है, यहींपर देवतोंने वरुणको जलका राजा बनाया था।

उस तीर्थमें स्नान करके बलदेवने कार्त्तिकेयकी पूजा करी और प्रसन्न होकर ब्राह्मणोंको सोना, वस्त्र और आभूषण दान किये, फिर प्रसन्न होकर एक रात रहकर पूजा करी और तीर्थमें स्नान किये।

हे राजन्। तुमने जो हमसे पूंछा था, सो हमने कहा इस प्रकार सब देवतोंने आकर भगवान कार्त्तिकेयका अभिषेक किया था।

४६ अध्याय समाप्त।

राजा जनमेजय बोले, हे ब्रह्मन्! आपने हमसे विधिपूर्व्वक कार्त्तिकेयके अभिषेककी अद्भुत कथा कही जिसको सुनकर मैंने अपने शरीरको पवित्र माना। कार्त्तिकेयका अभिषेक और दैत्योंका नाश सुनकर हमारे रोंये, खड़े होगये और मन प्रसन्न होगया।

हे महाबुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ! आप सब विषयोंमें निपुण हो और मुझे कथा सुननेमें परम प्रीति और इच्छा है, इसलिये आप हमसे वरुणके अभिषेककी कथा कहिये देवतोंने किस प्रकार वरुणको जलका राजा बनाया था।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्। अब यह पहिले कल्पकी अद्भुत कथा तुमसे कहते हैं सुनो, पहिले सतयुगमें सब देवतोंने वरुणसे आकर कहा, हे देव! जैसे इन्द्र भयसे हमलोगोंकी रक्षा करते हैं। तैसे ही आप भी नदियोंके स्वामी होकर जलकी रक्षा कीजिये आपको रहनेके लिये मछलियोंका स्थान समुद्र मिलेगा, नद और नदियोंका स्वामी समुद्र तुम्हारे वशमें रहेगा। तुम्हारी वृद्धी और हानि चन्द्रमाके घटने और बढ़नेके अनुसार हुआ करेगी, अर्थात् चन्द्रमाके बढ़नेसे बढ़ेगी और घटनेसे घटेगी।

देवतोंके वचन सुन वरुणने कहा कि बहुत अच्छा। तब सब देवता समुद्रके तटपर आये, और शास्त्रमें लिखी विधिके अनुसार वरुणको जलका स्वामी बनाया, फिर जल और जलजन्तुवोंकेपति वरुणकी प्रशंसा करते हुए सब देवता अपने अपने घरको चले गए। महायशस्वी वरुण भी जलका अधिकार पाकर समुद्र नदी, नद और तलावोंकी इस प्रकार रक्षा करने लगे। जैसे इन्द्र देवतोंकी रक्षा करते हैं।

प्रलम्बासुरनाशक बलराम उस तीर्थमें भी स्नान करके अनेक प्रकारके दान देकर अग्नितीर्थको चले गये।

हे पापरहित जनमेजय! इसही तीर्थमें अग्निशमी गर्भमें आकर छिपे थे, उस समय सब जगत् नष्ट होनेको उपस्थित होगया था। तब सब देवता ब्रह्माके पास जाकर बोले कि, हे जगत्पते! न जानें भगवान अग्निका किस कारण नाश होगया है, इस जगत्का नाश हुवा जाता है। अब आप अग्निको सम्पादन कीजिये।

राजा जनमेजय बोले, हे भगवन्! जगत्पूज्य भगवान अग्नि कैसे नष्ट होगये थे? और

फिर देवतोंने उन्हें कैसे जाना ? यह कथा आप हमसे कहिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, एक समय भृगुके शापसे प्रतापवान अग्नि बहुत डरकर शमी नामक लकड़ीके भीतर घुस गये और वहीं नष्ट होगये।

अग्निको नष्ट हुए देख सब देवता बहुत घबड़ाये और अत्यन्त दुःखित होकर इन्द्रादिक उन्हें ढूढ़ने लगे। फिर अग्नितीर्थमें आकर देखा कि अग्नि समी वृक्षके भीतर विधिके अनुसार वास करते हैं।

हे पुरुषसिंह ! उनको देखकर वृहस्पति आदि देवता बहुत प्रसन्न हुए, और फिर अपने अपने घरको चले गये। अग्नि भी भृगुके शापसे सब वस्तु खानेवाले होगये यह कथा तुमने पहिले सुनी है, उस तीर्थमें भी स्नान करके बुद्धिमान बलराम ब्रह्मयोनि तीर्थको चले गये।

हे राजन् ! ब्रह्माने पहिले इसी तीर्थमें विधिपूर्व्वक देवतोंके तीर्थ बनाये थे, और देवतोंके सहित स्नान भी किया था। बलदेव वहां भी स्नान करके कौवेर नामक तीर्थको चले गये।

हे राजन्। इसी स्थानमें तपस्या करनेसे इलबिलाके पुत्र कुवेर धनपति हुए थे, इनको वहीं धन और निधि प्राप्त हुई थी, वहां भी बलरामने विधिपूर्व्वक ब्राह्मणोंको बहुत धन दान किया और जलमें यक्षराज महात्मा कुवेरका यह स्थान देखा जहां कुवेरने तपस्या करके धनपतिका पद और महातेजस्वी शिवसे मित्रता पाई थी, वहीं कुवेर धनपति देवता और लोकपाल बने थे, और वहीं उनके नलकूबर नामक पुत्र हुआ था वहीं देवतोंने उनका अभिषेक किया था। वहीं उन्हें बहुत शीघ्र चलनेवाला हंसयुक्त पुष्पक नामक दिव्य विमान मिला था, और वहीं वे निर्ऋत कुलके स्वामी बने थे, वहा स्नान करके और अनेक प्रकारके दान करके सफेद चन्दनधारी बलराम शीघ्र सहित अनेक जन्तुवोंसे भरे सब ऋतुयोंमें फलने और फूलनेवाले वृक्षोंसे शोभित बदरपाचन नामक तीर्थको चले गये।

४७ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय। वहांसे चलकर बलराम बदरपाचन नामक तीर्थमें पहुंचे, इसी स्थानमें एक कन्याने व्रत धारण करके सिद्धोंके समान तप किया था बहुस्रवती नामक कन्या भरद्वाज मुनिकी पुत्री जगत्में असाधारण रूपवती और बालकहीसे ब्रह्म चारिणी थी।

हे महाराज। उसने देवराज इन्द्रको अपना पति बनानेके लिये घोर तप और नियम करने आरम्भ किये इस प्रकार स्त्रियोंसे न होने योग्य अनेक घोर तप और नियम करते करते उस कुमारी कन्याको बहुत वर्ष बीत गये।

हे पृथ्वीनाथ ! उसके इस प्रकार तप, भक्ति, नियम प्रेम और आचरण देखकर देवतोंके स्वामी भगवान इन्द्र प्रसन्न हुए और महात्मा वशिष्ठका रूप बनाकर उसके आश्रममें आये।

हे भारत ! महातपस्वी वशिष्ठको अपने यहा आये देख उस कन्याने शास्त्रकी विधिके अनुसार उनकी पुजा करी फिर वह नियम जाननेवाली कल्याणभरी कन्या मीठे वचन बोली।

हे भगवन्। हे मुनिश्रेष्ठ। हे व्रतधारण करनेवाले। आप क्या आज्ञा देनेको मेरे पास आये हैं ? आपकी जो आज्ञा होगी सो मैं सत्यके अनुसार पूरी करूंगी, परन्तु मेरी भक्ति इन्द्रमें अधिक है, इसलिये मैं तुम्हारी स्त्री न बनूंगी।

हे तपोधन ! मैंने यह प्रतिज्ञा की है, कि व्रत, नियम और तपसे तीन लोकोंके स्वामी इन्द्रको प्रसन्न करूंगी।

हे भारत ! भगवान इन्द्र उस कन्याके ऐसे वचन सुन हंसकर उसकी ओर देखने लगे और उसके नियम जानकर बोले ।

हे कल्याणी । हे उत्तम व्रतधारिणी । तुम घोर तप कर रही हो, हम जानते हैं । तुमने जो इच्छा धारण करके यह व्रत किया है । वह सब वैसे ही सिद्ध होगा, जगत्में तपसे सब कुछ मिल सक्ता है, मनुष्य तपसे देवतोंके स्थानोंमें जाता है, तपसे महासुखप्राप्त होता है यह विचारकरभी मनुष्य तप करके शरीर छोड़ते हैं और दूसरा जन्म पाकर देवता होजाते हैं । अब हम तुमसे जो बचन कहते हैं, सो सुनिये पांच बेर तुम्हारे पास हम धरे जाते हैं, तुम इनको पकावो और हम नहाकर आते हैं, ऐसा कहकर भगवान इन्द्र वहांसे चलेगये और वहांसे थोड़ी दूर जाकर तीनो लोकोंमें विदित इन्द्रतीर्थमें जाकर तप करने लगे और उस कन्याकी परीक्षा करनेके लिये ऐसी माया करी कि अग्निमें बेर न पक सकें ।

हे राजन् ! तब उस कन्याने पवित्र और सावधान होकर आगमें उन बेरोंको पकाना आरम्भ किया, परन्तु पकाते पकाते सब दिन बीत गया और वे बेर न पके जब उसकी सब लकड़ी भी जल चुकीं तब बहुत घबड़ाई और आगमें अपना शरीर जलानेकी इच्छा करी । सुन्दरी श्रुतावतीने पहिले आगमें अपने पेर जलाये जलते हुए पैरोंको बार बार आगमें जलाती थी, इस प्रकार निन्दारहित श्रुतावतीने वशिष्ठके प्रसन्न करनेके लिये ऐसा घोर कर्म्म किया, और उसका कुछ विचार न किया, और कुछ उसके मनमें दुःख न हुआ और कुछ उसके मुखका रङ्ग भी न बदला, जैसे कोई पानी पड़नेसे प्रसन्न होता है, ऐसे ही वह आगमें जलनेसे प्रसन्न होती थी, उसके मनमें यह निश्चय रहा कि मैं जैसे होगा वैसे ही बेर पकाऊंहीगी. इस प्रकार उसने निश्चय कर लिया परन्तु बेर तब भी न पके भगवान् अग्निने उसके सब पैर जला दिये परन्तु तौभी उसके मनमें कुछ दुःख न हुआ ।

तब तीन लोकके स्वामी इन्द्र प्रसन्न हुए और उसको अपना रूप दिखलाकर बोले, हे दृढ़व्रतवाली सुन्दरी । मैं तेरी भक्ति और तपसे प्रसन्न हुआ अब तेरे मनकी इच्छा पूरी होगी, हे महाभागी । अब तुम थोड़े दिनमें शरीर छोड़कर स्वर्गको जाओगी और वहां हमारे सङ्ग रहोगी और लोकमें यह तुम्हारा तीर्थ स्थिर रहेगा, हे सुन्दर भौंहवाली । इस सब पापनाशन तीर्थका नाम बदरपाचन होगा, इसमें सदा ब्रह्मऋषी स्नान करेंगे ।

हे पापरहित ! महाभाग्यवती ! इस ही तीर्थपर अरुन्धतीको छोड़कर सप्त ऋषी हिमाचलको चले गये थे, वहां जाकर इन्होंने फल, मूल खाकर तप करना आरम्भ किया, तब हिमाचलपर बारह वर्ष तक जल न वर्षा परन्तु ये तपस्वी आश्रम बनाकर रहते ही रहे ।

भगवती अरुन्धती भी यहां रह कर तप करने लगी उसको घोर तप करते देख महायशस्वी बरदान देनेवाले शिव प्रसन्न हुए ।

अनन्तर ब्राह्मणका वेष बनाकर उसके पास आये और कहने लगे कि, हे सुन्दरी ! हम तुमसे भिक्षा चाहते हैं ।

सुन्दरी अरुन्धती बोली, हे ब्राह्मण । हमारे यहां अन्न घट गया है, ये बेर खाइये महादेव बोले, हे उत्तम व्रतधारिणी ! इनको पका दो शिवके बचन सुन अरुन्धती शिवके प्रसन्न करनेके लिये जलती हुई अग्निमें उन बेरोंको पकाने लगी और शिव उनके पास बैठकर दिव्य पवित्र और मनोहारिणी कथा सुनाते रहे, कुछ न खाते, पकाते और कथा सुनाते अरुन्धतीको वह बारह वर्षका अकाल एक दिनके समान बीत गया ।

तब सप्तऋषी भी फल लेकर पर्व्वतसे लौटे

तब शिवने अरुन्धतीसे कहा कि, हे धर्म्म जाननेवाली। हम तुम्हारे नियम और तपसे बहुत प्रसन्न हुए अब तुम जैसे पहिले मुनियोंके सङ्ग जाती थीं वैसे ही जाओ। फिर भगवान् शिवने अपना रूप दिखाकर अरुन्धतीका चरित्र सुनाया और कहा कि तुम लोगोंने जो हिमाचलमें तप किया और अरुन्धतीने जो घरमें तप किया सो हमारे सम्मतमें दोनों समान नहीं हुए तपस्विनी अरुन्धतीने घोर तप किया इसने बारह वर्षतक कुछ नहीं खाया और बेर पकाकर समय बिता दिया।

अनन्तर भगवान् शिव फिर प्रसन्न होकर अरुन्धतीसे बोले, हे कल्याणी! तेरे मनमें जो इच्छा हो सो वरदान हमसे मांगो। महादेवके वचन सुन बड़े बड़े लाल नेत्रवाली अरुन्धती सप्तऋषियोंके बीचमें बोली यदि आप मुझसे प्रसन्न हुए हैं, तब यह वरदान दीजिये कि इस तीर्थका फल अद्भुत होजाय सिद्ध, देवता और ऋषी इससे प्रेम करें और इसका नाम बदरपाचन तीर्थ हो। जो तीन दिनतक पवित्र होकर इस तीर्थमें रहे और उपवास करे, उसे बारह वर्षका फल होय। शिवने उस तपस्विनीसे कहा कि, ऐसा ही होगा, तब सप्तऋषियोंने उनकी स्तुति करी और वे अपने लोकको चले गये, अरुन्धतीका सावधान भूख और प्यासके रहित तथा पहिलेके समान सुन्दर देखकर ऋषियोंको विस्मय हुआ। इस प्रकार पतिव्रता अरुन्धतीको इस तीर्थमें सिद्धिप्राप्ति हुई थी, हे कल्याणी। तुमने भी हमारे लिये ऐसा ही व्रत किया, परन्तु तुमने कुछ विशेष किया इसलिये हम प्रसन्न होकर अधिक वर देते हैं, अरुन्धतीको महात्मा शिवने जो वरदान दिया था उसके प्रताप और तुम्हारे तेजसे हम यह वरदान देते हैं कि जो मनुष्य सावधान होकर इस तीर्थमें एक दिन रहैगा और स्नान करेगा वह मरकर दुर्लभ लोकोंको जायगा

ऐसा कहकर देवतोंके स्वामी प्रतापवान् वान् इन्द्र स्वर्गको चले गये।

हे राजन्! इन्द्रके जाते ही श्रुताव[ती के] ऊपर पवित्र सुगन्ध भरे फूलोंकी वर्षा लगी, देवता आकाशमें खड़े होकर [दुन्दुभी] बजाने लगे। उत्तम पवित्र और सुगन्धि वायु चलने लगा फिर श्रुतावती मरकर तपके प्रभावसे इन्द्रकी स्त्री बनी और [उनके] संग विहार करने लगी।

राजा जनमेजय बोले, हे भगवन्! [इस] श्रुतावतीकी माता कौन थी? और वह [किसकी] पत्नी थी? यह कथा आप हमसे कहो [हमको] सुननेकी बहुत इच्छा है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, एक दिन महा[मुनि] भरद्वाजके आश्रमके पासको विशालनै[त्री] घृताची चली जाती थी उसको देखकर मुनि[का] वीर्य्य गिरा, मुनीश्वरने उसे अपने हाथमें लेक[र] दोनामें रख दिया उससे यह कन्या उत्[पन्न] होगई। भगवान् भरद्वाजने उसका जातक[र्म] करके ब्रह्मऋषियोंकी सभामें उसका नाम श्रु[ता]वती रक्खा फिर उसे अपने आश्रममें छोड़कर हिमाचलके वनमें तपस्या करनेको चले गये।

वृष्णिकुलश्रेष्ठ महानुभाव बलवान् ब[लदेव उस] तीर्थमें स्नान करके ब्राह्मणोंको बहुत दा[न] देकर इन्द्रतीर्थको चले गये।

४८ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जन[मे]जय। यदुकुलश्रेष्ठ महाबलवान् बलदेव व[हांसे] चलकर इन्द्र तीर्थपर पहुंचे और वहां ब्रा[ह्म]णोंको अनेक रत्न और धन विधिपूर्वक द[ान] किये।

हे राजेन्द्र। इस ही स्थानपर इन्द्रने [सौ] यज्ञ करीं थीं और वृहस्पतिको बहुत [धन] दिया था। इन्द्रने उन यज्ञोंको सांग स[मा...]

और वेदपाठी ब्राह्मणोंको पूर्ण दक्षिणा देकर विधिपूर्व्वक पूर्ण किया था, उसी दिनसे महा-तेजस्वी इन्द्रका नाम शतक्रतु अर्थात् सौ यज्ञ करनेवाला हुआ उन्हींके नामसे यह सनातन और प्रसिद्ध तीर्थ भी होगया इसपर जानेसे सब प्रकारके पाप दूर होजाते हैं।

वहांपर मुशलधारी बलदेवने ब्राह्मणोंको उत्तम भोजन और बस्त्रादिक दान करके राम तीर्थकी यात्रा करी।

हे राजन्! इस ही तीर्थपर भृगुवंशी महाभागी महातपस्वी परशुरामने उत्तम क्षत्रियोंका नाश करनेके पीछे मुनियोंमें श्रेष्ठ काश्यपको पुरोहित बनाकर वाजपेय यज्ञ और सौ अश्वमेध यज्ञ करी थी वहीं उन्होंने दक्षि-णामें सब पृथ्वी दान कर दी थी।

बलदेवने वहां भी ब्राह्मणोंको अनेक प्रका-रके रत्न, गौ, हाथी, दास, दासी, बकरी और भेड़ आदि दान करी।

अनन्तर मुनियोंको प्रणाम करके उस देव-ऋषि पूजित तीर्थसे यमुना तीर्थको छोड़ गये, इसी तीर्थमें दितीके पुत्र सफेद रंगवाले बरुणने राजसूय यज्ञ करी थी जब यह राजसूय यज्ञ आरम्भ हुई तब तीनो लोकोंको भय देनेवाला देवता और दानवोंका घोर युद्ध होने लगा। बरुणने पहिले भी देवता और दानवोंको जीतकर यज्ञारम्भ करा था, यह नियम है कि राजसूय यज्ञके अन्तमें घोर युद्ध होता है।

हे महाराज! बलरामने वहां भी ब्राह्मण और ऋषियोंकी पूजा करके भिक्षुकोंको उनकी इच्छानुसार दान दिया।

बनमालाधारी कमलनेत्र बलराम ऋषि-योंके सुखद कथा सुनते हुए प्रसन्न होकर वहांसे चले और आदित्य तीर्थपर पहुंचे।

हे राजाओंमें श्रेष्ठ! वहीं यज्ञ करनेसे सूर्य्यको इतना तेज और नक्षत्रोंका राज्य मिला है। इसी तीर्थपर रहनेसे इन्द्रादिक सब देवता, विश्वेदेव, मरुत, गन्धर्व्व, अप्सरा, वेदव्यास, शुकदेव, मधुनाशक, कृष्ण, यक्ष, राक्षस और अनेक पिशाचादि सहस्रों योगी सिद्ध होगये हैं। यह सरस्वतीका तीर्थ बहुत ही पवित्र और कल्याण दायक है, इस ही तीर्थमें पहिले समयमें विष्णुने मधु और कैटभ नामक दान-वोंको मारा था, इसी उत्तम तीर्थमें स्नान करनेसे धर्म्मात्मा वेदव्यासको योग और परम सिद्धि प्राप्त हुई थी इसी तीर्थमें महातपस्वी असित देवलने योग किया था और सिद्ध होगये थे।

४६ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमे-जय! पहिले समयमें इस तीर्थमें गृहस्थ धर्म्म धारण करके महातपस्वी धर्म्मात्मा असित देवल मुनि रहते थे, वे मनसे, बचनसे और कर्म्मसे सब प्रानियोंको समान समझते थे, पवित्र होकर सदा धर्म्म करते थे, इन्द्रियोंको सदा बशमें रखते थे, दण्ड धारण करते थे कभी क्रोध नहीं करते थे, अपनी निन्दा और स्तुतीको समान ही मानते थे, शत्रु और मित्रको एकसा सोना और ढेलेको समान ही मानते थे, सदा देवता, ब्राह्मण और अतिथि-योंकी पूजा किया करते थे, सदा ब्रह्मचर्य्य धारण और धर्म्म करते थे।

हे महाराज। एक दिन उनके पास जैगिषव्य नामक बुद्धिमान योगी मुनि आये और महातेजस्वी देवलके आश्रममें सावधान होकर ठहरे, सदा योग करनेवाले महातपस्वी सिद्ध देवल महामुनिने जयगिषव्यको देखकर धर्म्मके मतुसार पूजन करी।

अनन्तर महातेजस्वी जैगिषव्य ऋषी भी उनके आश्रमके पास ही रहने लगे। इस प्रकार इन दोनोंको रहते रहते बहुत समय बीत गया।

हे जनमेजय! देवलने कभी भी उनको भोजनके समय न देख एकदिन महामुनि जैगिषव्य भिक्षाके समय धर्म्म जाननेवाले, देवल ऋषीके आश्रममें आये महात्मा महातेजस्वी जैगिषव्यको अपने आश्रममें आया देख देवलने बहुत प्रसन्न होकर उनका बहुत आदर किया, और विधिपूर्व्वक शक्तिके अनुसार उनकी पूजा भी करी तब जैगिषव्य महात्मा देवलके स्थानमें रोज आने लगे। एक दिन देवलने विचारा कि मैं कै वर्षसे इस अतिथीकी पूजा करता हूं। परन्तु इसे कुछ भी आलस्य नहीं है, ऐसा विचारते हुए धर्म्मात्मा श्रीमान् देवल मुनि घड़ा लेकर आकाश मार्गसे नदियोंके स्वामी समुद्रको चले, वहां जाकर देखा कि महातेजस्वी जैगिषव्य बैठे हैं। तब उनको बहुत आश्चर्य हुआ और कहने लगे कि यह भिक्षुक यहां कैसे आगया।

फिर महामुनि देवलने विधिपूर्व्वक समुद्रमें स्नान करके नित्य कर्म्म और जप किया फिर घड़ेमें जल भरकर अपने आश्रमको चले आये।

हे जनमेजय! जब देवल अपने आश्रममें आये तब देखा तो जैगिषव्य वहीं बैठे हैं। परन्तु कुछ बोलते नहीं केवल काष्ठके समान बैठे तपस्या कर रहे हैं। और जलमें भीगे हैं, समुद्रके समान गम्भीर जैगिषव्यको देखकर देवलमुनिको बहुत चिन्ता हुई। उनको वैसे ही आसनमें बैठे छोड़ गये थे, जैगिषव्यके योग प्रभावको देखकर देवलको बहुत आश्चर्य हुआ, वे कहने लगे, कि मैंने इन्हें अभी समुद्रमें देखा था, अब ये यहां कैसे आगये?

ऐसा विचारते देवल मुनि इसकी परीक्षा करनेको फिर आकाशको उड़े आकाशमें उड़ने वाले सिद्ध जैगिषव्यकी पूजा कर रहे हैं।

अनन्तर दृढ़व्रतधारी महापरिश्रमी देवलने एक ओर जाते जैगिषव्यको देखा, वहांसे पितर लोकको, वहांसे यमलोक, वहांसे चन्द्र लोक, वहांसे एकान्तमें यज्ञ करनेवाले मुनियोंके लोक वहांसे अग्निहोत्रियोंके लोक, वहांसे दर्श और पौर्णमास यज्ञ करनेवाले महात्माओंके लोकमें वहांसे पशुओंसे यज्ञ करनेवालोंके लोकमें, वहांसे देवपूजित चातुर्मास्य यज्ञ करनेवालोंके लो वहांसे अग्निष्टोम यज्ञ, करनेवालेके लो वहांसे बहुत दक्षिणायुक्त वाजपेय यज्ञ क वालोंके लोकसे, वहांसे राजसूय और पुण्ड यज्ञ करनेवाले महाबुद्धिमानोंके लोकमें, व अश्वमेध और नरमेध यज्ञ करनेवालोंके लो वहांसे अत्यन्त दुःखसे करने योग्य सर्व्वमेध सौत्रामणिय यज्ञ करनेवालोंके लोकमें, व द्वादशाह यज्ञ करनेवालोंके लोकमें, व मित्रावरुण लोकमें, वहांसे आदित्य लोक वहांसे रुद्रलोक, बृहस्पति लोक, गोलोक, ब यज्ञ लोक, तीन महालोक और वहांसे प व्रता लोकसे जाते देखा उसके पश्चात् महामु जैगिषव्य अन्तर्धान होगये, और देवल उन्हें देख सके। तब महाभाग देवल जैगिषव्य प्रभाव, व्रत, सिद्धि और योगबलका विचा करने लगे।

अनन्तर महाधीरधारी देवल बोले कि, हे सिद्धो! हम महातेजस्वी जैगिषव्यको नहीं देखते तुम लोग ब्रह्मयज्ञ करते हो इसलिये कहो कि जैगिषव्य कहां गये? हमें सुननेकी बहुत इच्छा है।

सिद्ध बोले, हे दृढव्रतधारी देवल! जैगिषव्य सनातन ब्रह्म लोकको चले गये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, ब्रह्मयज्ञ करनेवाले सिद्धोंके वचन सुन देवल मुनि शीघ्रतासे ब्रह्मलोकको चले परन्तु गिर पड़े तब वे सिद्ध फिर बोले, हे तपोधन देवल! तुम ब्रह्मलोक नहीं जासक्ते हो वहां जानेकी शक्ति जैगिषव्य होती है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, सिद्धोंके वचन सु महामुनि देवल क्रमसे उन्हीं लोकोंमें उतर

हुए अपने पवित्र आश्रममें आये और देखा कि जैगिषव्य मुनि वहीं बैठे हैं।

तब देवलने धर्म्मयुक्त बुद्धिसे विचार कर और महात्मा जैगिषव्यके योगबलको देखकर हाथ जोड़कर देवल मुनि बोले, हे भगवन्। हम आपसे मोक्ष धर्म्म सुनना चाहते हैं। देवलके बचन सुन महामुनि जैगिषव्यने शास्त्रके अनुसार उन्हे ज्ञान उपदेश किया। तब महामुनि देवलने विधिपूर्व्वक सब कर्म्मोंको छोड़कर सन्यास लेनेको इच्छा करी।

उन्हे सन्यासी होते देख सब पितर और देवता रोकर कहने लगे, कि अब हमारी पूजा कौन करेगा?

सब ओरसे देवतोंके करुणायुक्त वचन सुन देवलने सन्यास छोड़नेकी इच्छा करी।

उन्हे सन्यास छोड़ते देख पवित्र फल, मूल और वृक्ष रोरोकर कहने लगे, कि मूर्ख क्षुद्र देवल अब फिर हमारा नाश करेगा इसने पहिले सब प्राणियोंको अभय दान किया और अब फिर मूर्खता करता है।

तब देवल मुनि फिर बिचारने लगे, कि गृहस्थधर्म्म अच्छा है वा सन्यास?

हे राजेन्द्र! तब उनको बुद्धिमें सन्यास धर्म्म अच्छा ठहरा और उसके करनेसे उन्हे परम सिद्धी और योग प्राप्त हुआ। तब वृहस्पति आदि देवता जैगिषव्यके पास आकर उनकी प्रशंसा करने लगे। तब ऋषिश्रेष्ठ नारद बोले।

जैगिषव्य कुछ तपस्वी नहीं है, इसने देवलको भ्रमसें डाल दिया।

धीर नारदके वचन सुन देवता बोले, आप महात्मा जैगिषव्यको ऐसे वचन मत कहिये इनके तप, तेज और योगके समान किसीका प्रभाव नहीं है।

हे राजन्। हमने महात्मा जैगिषव्य और देवलका इस प्रकार प्रभाव वर्णन किया यह तीर्थ उन्हीं दोनों महात्माओंका स्थान है। महात्मा उत्तम कर्म्म करनेवाले बलदेवने वहा से ब्राह्मणोंको अनेक दान देकर धर्म्म और अर्थको प्राप्त किया फिर वहांसे सोमतीर्थको चले गये।

५० अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय। इसी तीर्थपर चन्द्रमाने राजसूय यज्ञ किया था, और यहीं तारकासुरसे घोर युद्ध हुवा था। वहा भी स्नान करके और ब्राह्मणोंको दान देकर सावधान बलदेव महाऋषि सारस्वतके तीर्थको चले गये।

हे राजन्! इस ही तीर्थपर बारह वर्षके अकालमें सारस्वत मुनिने ब्राह्मणोंको वेद पढ़ाया था।

राजा जनमेजय बोले, पहिले समयमें जब बारह वर्षका अकाल पड़ा था, तब सारस्वत मुनिने ब्राह्मणोंको कैसे वेद पढ़ाया था।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे महाराज। पहिले समयमें महातपस्वी ब्रह्मचारी और बुद्धिमान दधीच नामक मुनि थे, उनके तपसे इन्द्र सदा भय करते थे, परन्तु अनेक लोभ दिखलानेपर भी दधीचि मोहित नहीं होते थे तब इन्द्रने सुन्दर रूपवती अलम्बुषा नामक अप्सराको उनका तप भङ्ग करनेके लिये भेजा।

वह अप्सरा सरस्वतीमें देवतोंका तर्पण करते महात्मा दधीचिके पास पहुंची उस सुन्दरीको देख महात्मा दधीचिका वीर्य्य सरस्वतीमें गिरा सरस्वतीने प्रसन्न होकर पुत्र होनेके लिये उस वीर्य्यको धारण किया और कुछ समयमें उनके पुत्र हुआ।

तब सरस्वती उस पुत्रको लेकर दधीचिके पास गई और उस पुत्रको देकर ऋषियोंके बीचमें ऋषिश्रेष्ठ दधीचिसे बोली, हे ब्रह्मऋषे!

जिस समय अलम्बुषा नामक अप्सराको देख कर तुम्हारा वीर्य्य गिरा था, तब तुम्हारा तेज नष्ट न हो यह बिचारकर मैंने उस वीर्य्यको धारण कर लिया था, सो अब उत्तम पुत्र हुआ है। आप लीजिए हमने केवल तुम्हारी भक्ती हीसे इसे धारण किया था।

सरस्वतीके वचन सुन दधीचि मुनि बहुत प्रसन्न हुए फिर पुत्रको लेकर उसको कण्ठसे लगाया और उसका माथा सूंघा फिर महामुनि दधीचिने सरस्वतीको यह वरदान दिया कि, हे सरस्वती! तुम्हारे जलमें तर्पण करनेसे विश्वेदेव, पितर अप्सरा और गन्धर्व तृप्त होंगे।

हे राजन्! ऐसा कहकर दधीचि मुनि प्रसन्न होकर महानदी सरस्वतीकी इस प्रकार स्तुति करने लगे।

हे महाभागे! तुम पहिले ब्रह्माके तलावसे निकली हो महाव्रतधारी ब्राह्मण तुम्हें जानते हैं। हे प्रियदर्शने! तुमने हमारा बहुत प्रिय काम करी इसलिये तुम्हारे इस महातपस्वी लोक पूजित पुत्रका नाम सारस्वत मुनि होगा, ये बारह बर्षके अकालमें ब्राह्मणोंको वेद पढ़ावेंगे, तुम हमारी कृपासे सब नदियोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ होजावोगी।

हे राजन्। ऋषाके ऐसे वचन सुन और वरदान पाकर सरस्वती उस पुत्रको लेकर अपने घर चली गई। उसी समय देवता और दानवोंका घोर युद्ध होने लगा तब भगवान इन्द्र राक्षसोंका मारने योग्य शस्त्र ढूंढ़नको तीनों लोकोंमें घूमे परन्तु कहीं न मिला तब देवतोंसे बोले कि, दधीचिकी हड्डीके बिना हम दानवोंको नहीं मार सक्ते इसलिये तुम दधीचसे जाकर उनकी हड्डी मांगो।

देवताने जाकर उनसे कहा, हे दधीचि! तुम अपनी हड्डी हमको दो हम इनसे दानवोंका नाश करेंगे, देवताके बचन सुन दधीचि मुनिने बिना बिचारे अपना प्राण छोड़ दिया, और देवतोंका कल्याण करनेके लिये इन्द्र लोकको चले गये, तब इन्द्रने प्रसन्न होकर दधीचिकी हड्डियोंसे अनेक गदा, वज्र, चक्र और भारी भारी दण्ड बनाये।

महातपो प्रजापति पुत्र भृगुने बहुत तपस्या करके महा तेजस्वी दधीचिको लोककाम्य लेकर बनाया था। ये पर्वतके समान भारी और ऊंचे थे, इन्द्र सदा इनके तेजसे डरते थे।

हे राजन्! इन्द्रने उस ही ब्राह्मणके तेज उत्पन्न हुए वज्रको क्रोध और मन्त्रसे छोड़कर आठ सौ दश दानवोंको मारा जब वह भयानक काल बीत गया तब बारह बर्षका घोर अकाल पड़ा।

हे महाराज। उस अकालमें बड़े बड़े ऋषि भूखसे व्याकुल होकर इधर उधर दौड़ने लगे उनको भागते देख सारस्वत मुनिने भी भागनेकी इच्छा करी, तब उनसे सरस्वती बोली, हे पुत्र! तुम कहीं मत जाओ हम तुम्हें खानेके लिये प्रतिदिन मछली देंगी, तुम उन्हें ही खाओ और यहीं रहो। सरस्वतीके बचन सुन सारस्वत मुनिने देवता और पितरोंका तर्पण किया और मछली खाकर वेद पढ़ाने लगे। उस घोर अनावृष्टिमें एक मुनि दूसरेसे खानेको पूछने लगे भूखसे व्याकुल इधर उधर भागते मुनियोंको वेद भूल गये।

हे राजेन्द्र! तब एक मुनिने निर्जन वनमें बैठे वेदपाठी महामुनि सारस्वतको देवताके समान देखा तब उसने जाकर सब मुनियोंसे कह दिया तब सब मुनि सारस्वतके पास आकर बोले, आप हम लोगोंको वेद पढ़ाइये, उनके बचन सुन सारस्वत बोले, तुम सब विधिपूर्वक हमारे शिष्य बन जाओ।

उनके बचन सुन मुनि बोले, हे पुत्र! तुम अभी बालक हो हमें शिष्य कैसे करोगे?

सारस्वत मुनि बोले, जो अधर्म्मसे कहे और जो अधर्म्मसे किसीको शिष्य करे उन

दोनोंका नाश होजाता है। हमारा धर्म्म नाश नहीं होगा प्राचीन मुनि अधिक अवस्था बूढे बाल, धन और बान्धवोंकी सहायतासे तप नहीं करते थे, पश्चात् ब्राह्मणोंमें अधिक अवस्था, बूढे बाल, धन और बन्धुओंसे कोई बूढा नहीं कहाता इस लोगोंमें जो अधिक विद्वान् होता है वही बड़ा कहाता है, सारस्वत मुनिके ऐसे बचन सुन साठ सहस्र मुनि उनके शिष्य होगये और उनसे वेद पढकर धर्म्म करने लगे। साठ सहस्र ऋषी सारस्वतके आसनके लिये एक एक मुट्ठी कुशा लाते थे और उस बालक ऋषीके वशमें रहते थे।

महाबलवान् कृष्णके बड़े भाई रोहिणीपुत्र बलदेवने वहां भी प्रसन्न होकर बहुत दान किया फिर वहांसे वृद्ध कन्या नामक तीर्थको चले गये।

५१ अध्याय समाप्त।

जनमेजय बोले, हे ब्रह्मन्! उस स्थानमें रहकर कन्याने कैसे किसलिये और कौन कौन नियमोंसे तप किया था? हम ये सविस्तर कथा आपसे सुनना चाहते हैं अब आप हमसे यथार्थ वर्णन कीजिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! पहिले समयमें एक महातपस्वी महायशस्वी और महावीर्य्यवान कुणीगर्ग नामक मुनि हुए थे, उन्होंने घोर तप करके मनसे सुभ्रू नामक कन्या उत्पन्न करी, उसको देखकर मुनि बहुत प्रसन्न हुए और शरीर छोड़कर स्वर्गको चले गये, कल्याणी कमल नयनी सुभ्रू भी आश्रम पर रहकर उपवास, नियम और घोर तप करके देवता और पितरोंकी पूजा करने लगी।

अनन्तर घोर तप करके उस कन्याने बहुत समय बिता दिया यद्यपि उसके पिताने उसका विवाह न करना चाहा परन्तु उसने अपने समान पति न पानेके कारण विवाह न किया और अपने शरीरको घोर तपसे सुखाने लगी। हे राजन्! कुछ दिन तप करते करते वह कन्या बूढ़ी होगई तब उसने उस तपके बलसे अपनेको कृतार्थ माना जब वह एक चरण भी चलनेमें समर्थ न रही तब उसने परलोकमें जानेकी इच्छा करी।

उसको शरीर छोड़ते देख नारद मुनि बोले, कि हमने महाव्रतधारियोंसे देव लोकमें सुना है कि बिना विवाही कन्याको स्वर्ग नहीं मिलता यद्यपि तुमने बहुत तपस्या करी परन्तु किसी लोकमें जाने योग्य नहीं हुई।

नारदके वचन सुन कन्या बोली, कि जो मुझसे ब्याह करे उसको मैं अपना आधा तप दे दूंगी कन्याके बचन सुन गालवके पुत्र श्टङ्गवान् मुनि बोले, हे सुन्दरी! हम तुमसे विवाह करते हैं, और एक नियम कर लेते हैं कि एक ही रात्रि तुम्हारे सङ्ग रहेंगे, उस कन्याने यही स्वीकार करके बिधिपूर्व्वक अग्निमें आहुति देके ब्याह कर लिया, उस रात्रिको सुभ्रू बड़ी सुन्दरी युवती होगई दिव्य वस्त्र और दिव्य गन्ध धारण करके अपने पतिके पास गई उसको घरमें चान्दना करते हुये देख श्टङ्गवान् बड़े प्रसन्न हुये और रात भर उसके सङ्ग रहे।

प्रातःकाल सुभ्रू अपने पतिसे बोली, हे ब्राह्मण! हमने जो तुमसे प्रतिज्ञा करी थी, सो पूरी हुई अब हम जाती है तुम्हारा कल्याण हो।

हे राजन्! ऐसा कहकर वह सुभ्रू वहांसे चली गई और चलती चलती कहने लगी, जो मनुष्य एक रात्रि रहकर इस स्थानमें देवतोंकी पूजा करेगा उसे ५८ अठावन वर्ष ब्रह्मचर्य्य करनेका फल मिलेगा, ऐसा कहकर पतिव्रता सुभ्रू स्वर्गको चली गई।

उसके मरनेसे श्टङ्गवान् ऋषी भी उसके रूपके शोचमें व्याकुल होगये और प्रतिज्ञाके अनुसार उसका आधा तप बहुत दुःखसे ग्रहण

किया, फिर तप करके शरीर छोड़के उसीके पास चले गये, जीवन भर उसके रूपका स्मरण करके दुःख भोगते हैं।

हे राजन्! हमने तुमसे वृद्ध कन्याकी कथा ब्रह्मचर्य्य और स्वर्ग जानेका वर्णन करी वहां भी हलधारी बलरामने ब्राह्मणोंको अनेक दान किये वहीं उन्होंने सुना कि पाण्डवोंने शल्यको मारकर जला दिया तब यहांसे चलकर समन्त पञ्चक नामक तीर्थके द्वारपर आये और ऋषियोंसे कुरुक्षेत्रका फल पूंछने लगे।

यदुकुलसिंह महात्मा बलरामका प्रश्न सुन मुनि लोग कुरुक्षेत्रका यथार्थ फल कहने लगे।

५२ अध्याय समाप्त।

ऋषी बोले, हे राम! यह सनातन समन्तपञ्चक तीर्थ ब्रह्माकी उत्तरवेदी कहा जाता है, यहीं उत्तम वर देनेवाले देवतोंने अनेक यज्ञ करीं थीं पहिले समयमें महातेजस्वी राजऋषी बुद्धिमान महात्मा कुरुने अनेक वर्षतक इसमें निवास किया था और इस पृथ्वीको जोता था इसलिये इसका नाम कुरुक्षेत्र हुआ।

बलराम बोले, हे महर्षियों! महात्मा कुरुने इस पृथ्वीको क्यों जोता था? यह कथा हम आप लोगोंसे सुनना चाहते हैं।

ऋषी बोले, हे राम! पहिले समयमें कुरुको प्रतिदिन यह पृथ्वी जोतते देख इन्द्र स्वर्गसे आये और पूंछने लगे।

इन्द्र बोले, हे राजर्षी! आप प्रतिदिन अत्यन्त यत्न करके इस पृथ्वीको क्यों जोतते हैं?

कुरु बोले, हे इन्द्र! हमारी यह इच्छा है कि जो मनुष्य यहां मरेंगे, वह स्वर्गको जावेंगे, इन्द्र उनके बचन सुन बहुत हंसे और स्वर्गको चले गये राजा कुरु भी उसी प्रकार पृथ्वी जोतते रहे।

इस प्रकार अनेक बार इन्द्र आये और पूंछकर हंस हंसकर स्वर्गको चले गये, जब इसी प्रकार तप करते करते कुरुको बहुत दिन होगये तब इन्द्रने देवतोंको बुलाकर कुरुकी यह इच्छा कह सुनाई।

इन्द्रके बचन सुन देवता बोले, यदि यही उचित होतो राजऋषि कुरुको वरदान दीजिये परन्तु कठिनता यही है कि यदि कुरुक्षेत्रमें मरे सब मनुष्य स्वर्गको चले आवेंगे तो हमें यज्ञमें भाग नहीं मिलेगा।

देवतोंके बचन सुन इन्द्र राजऋषि कुरुके पास आकर बोले, आप वृथा परिश्रम कर रहे हैं। हमारे वचन सुनिये जो पशु वा मनुष्य इस स्थानमें भोजन छोड़कर और सावधान होकर मरेंगा, अथवा युद्धमें मरेगा वह स्वर्गको जायगा।

इन्द्रके बचन सुन कुरुने कहा बहुत अच्छा फिर कुरुकी आज्ञा लेकर इन्द्र प्रसन्न होकर स्वर्गको चले गये।

हे यदुकुलश्रेष्ठ! इस प्रकार पहिले समयमें राजऋषि कुरुने इस तीर्थकी स्थापन किया था, इन्द्र और ब्रह्मादिक देवतोंने इस प्रकार इसे वरदान दिया था, जगत्में इस स्थानके समान पवित्र स्थान और नहीं है जो मनुष्य यहां घोर तप करते हैं, वह मरनेके पश्चात् ब्रह्मलोकको जाते हैं, जो यहां दान देते हैं उनका वह दान शीघ्र ही सहस्र गुण होजाता है, जो कल्याण चाहनेवाले मनुष्य सदा यहां निवास करते हैं वे कदापि यमराजकी पुरी नहीं देखते, जो राजा यहां उत्तम यज्ञ करते हैं वे पृथ्वी रहने तक स्वर्गमें रहते हैं।

हे हलायुध! देवराज इन्द्रने इस तीर्थके विषयमें जो कुछ कहा है सो सुनो, कुरुक्षेत्रकी धूलि वायुसे उड़कर जिस मनुष्यके ऊपर गिर जाती है वह महापापी हो तोभी परम गतिको प्राप्त होता है।

हे पुरुषसिंह! इस स्थानमें यज्ञ करनेसे अनेक देवता ब्राह्मण और नृग आदि राजा शरीर छोड़कर स्वर्गको चले गये।

तरन्तुक, अरन्तुक, रामहृद और मचक्रुक इन तीर्थके बीचकी भूमिका नाम कुरुक्षेत्र, समन्तपञ्चक और ब्रह्माकी उत्तर वेदी है, यह सब गुणोंसे भरा देवतोंसे सेवित और कल्याणदायक तीर्थ हैं, इसलिये तीर्थमें मरे राजा सब स्वर्गको जायंगे, इन्द्र और ब्रह्मादिक देवतोंने यही कहा था और ब्रह्मा, विष्णु तथा शिवने इसकी बड़ी प्रशंसा करी थी।

५३ अध्याय समाप्त

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजा जनमेजय! कुरुक्षेत्रमें जाकर बलरामने बहुत दान दिये वहासे महुवे, आम, पाकर, बड़गद, करञ्जवा, कटहल और इन्द्रजवके वृक्षोंसे पूरित पवित्र आश्रमकी ओर चले गये, वहा जाकर मुनियासे पूंछा कि यह पवित्र उत्तम लक्षणोंसे भरा श्रेष्ठ आश्रम किसका है?

ऋषी बोले, हे राम! यह जिसका आश्रम है उसकी कथा विस्तारसे सुनो यहांपर पहिले देवश्रेष्ठ विष्णुने घोर तप किया था यहीं उन्होंने अनेक सनातन यज्ञ समाप्त किये थे, यहींसे बाल ब्रह्मचारिणी ब्रम्हाणी नामक तपस्विनी योग और तप करके सिद्ध होकर स्वर्गको गई थी।

हे राजन्! महात्मा शाण्डिल्य मुनिकी पुत्री पतिव्रता ब्रह्मचारिणीने ऐसा घोर तप किया जो स्त्रियोंसे नहो हो सक्ता अन्तको वह महाभाग्यवती ब्रह्माणी देवता और ब्राह्मणोंसे पूजित होकर स्वर्गको चली गई।

हे राजन्! ऋषियोंके वचन सुन बलदेव हिमाचलपर उस आश्रमका दर्शन करनेको गये और ऋषियोंको प्रणाम किया।

अनन्तर वहीं सन्ध्यावन्दन करके ताड़की ध्वजावाले बलराम थोड़ी दूरतक पर्व्वतके ऊपर चढ़े, वहां उस आश्रमको देखकर बहुत आश्चर्य करने लगे। वहां सरस्वतीके प्रभावसे एक पाकरके वृक्षमेंसे जल निकलते देखा, वहांसे उत्तम तीर्थ करके बनको चले गये, वहां अनेक प्रकार दान किये, और पवित्र निर्म्मल ठण्डे जलमें स्नान करके देवता और पितरोंका तर्पण किया।

महाबलवान महायोद्धा बलरामने वहां ब्राह्मणों और सन्यासियोंके सहित एक रात्रि रहकर मित्रवरुणाश्रमकी यात्रा करी।

हे राजन्! इस ही तीर्थमें पहिले इन्द्र, अग्नि और अर्य्यमा प्रसन्न हुये थे, यहांसे यमुनाकी ओर चले गये। महाबलवान बलदेवजीने वहां जाकर ऋषी और सिद्धोंके सहित स्नान किया, और बहुत प्रसन्न हुए, और वहां बैठकर ऋषियोंसे उत्तम उत्तम कथा सुनने लगे, उसी समय सोनेके समान वस्त्र पहिने सोनेका डण्डा हाथमें लिये कमण्डलु धारण किये मीठे शब्दवाली मनोहर बीन बजाते, नाचते और गानेमें निपुण देवता और ब्राह्मणोंसे पूजित सदा लड़ाई करानेवाले लड़ाईके प्यारे भगवान नारदऋषी आये, उनको देखकर श्रीमान् बलदेव खड़े होगये और नियमके अनुसार पूजा करके महाव्रतधारी ब्रह्मऋषी नारदसे कौरवोंका समाचार पूछने लगे।

बलराम बोले, हे तपोधन! यद्यपि मैंने यह सब समाचार सुना है, तो भी विस्तारसे सुनना चाहता हूं? मैं आपसे दीन बाणोंसे पूंछता हूं? कि कुरुक्षेत्रमें जो क्षत्रिय और राजा इकट्ठे हुए थे उनकी क्या दशा है?

हे राजन्! रोहिणीपुत्रके वचन सुन सब धर्म्म जाननेवाले नारदने कुरुकुल नाशक इस प्रकार वर्णन करना आरम्भ किया।

नारद बोले, हे रोहिणीपुत्र! भीष्म, द्रोण-

चार्य्य, जयद्रथ, महारथ पत्नोंके सहित वार्णा, भूरिश्रवा, और महापराक्रमी मद्रराज शल्य, आदि अनेक राजा और राजपुत्र अपने प्यारे प्राणोंको छोड़कर स्वर्गको चले गये, उन सब युद्धसे न हटनेवाले वीरोंने दुर्य्योधनकी विजयके लिये प्राणदिये। अब दुर्य्योधनकी ओरके वीरों मेंसे केवल शत्रुनाशन कृपाचार्य्य, कृतवर्म्मा, और वीर अश्वत्थामा यही तीन जीते बचे हैं, ये भी पाण्डवोंके डरसे इधर उधर भागे फिरते हैं।

शल्यके मरने और कृपाचार्य्य आदि वीरोंके भागनेपर राजा दुर्य्योधन दुःखसे व्याकुल होकर द्वैपायन नामक तालावमें घुस गये, उस स्तम्भन किये हुए जलमें दुर्य्योधनको सोते सुन श्रीकृष्णके सहित पाण्डव आये, चारों ओरसे वचनरूपी कोड़े मारने लगे।

तब महावीर दुर्य्योधन भी भारी गदा लेकर पानीसे निकले और अब भीमसे घोर युद्ध करेंगे, यदि शिष्योंका घोर युद्ध देखनेकी आपको इच्छा हो तो शीघ्र जाइये क्योंकि यह भयानक युद्ध अभी होने वाला है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, नारदके ऐसे वचन सुन बलदेवने ब्राह्मणोंको पूजा करके विदा किया, और अपने सङ्गियोंसे कहा कि तुम सब द्वारकाको जावो।

अनन्तर बार बार सरस्वतीको देखते हुए अक्षयप्रश्रवणसे चलकर पर्व्वतसे उतरे और प्रसन्न होकर ब्राह्मणोंके आगे नीचे लिखे पद्य कहने लगे।

दोहा।

सरस्वती तट बास सम, और कहां जग वास।
सरस्वती तट गुण सदृश, और कहां गुण रास॥
सरस्वती सो रात कहां, जहां नाय नर वृन्द।
गये स्वर्ग सब भाजि हैं, सदाहि सकल अनन्द॥
सरस्वती सब नदिनमें, श्रेष्ठ कहो सब लोग।
हू लोकके शोक जहां, छूटत दुष्कृत भोग॥

अनन्तर यदुकुलश्रेष्ठ शत्रुनाशन बलराम शीघ्र चलनेवाले, सफेद घोड़ोंके रथपर चढ़कर शिष्योंका युद्ध देखनेको चले।

५४ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमे इस प्रकार यह घोर युद्ध होना आरम्भ तब राजा धृतराष्ट्रने दुःखमें भरकर स यसे पूछा।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जब बल युद्धमें पहुंच गये, तब हमारे पुत्र दुर्य्योध भीमसेनके सङ्ग कैसे युद्ध किया? सञ्जय बो हे महाराज! बलदेवको अपने पास आया दे तुम्हारे पुत्र महाबलवान महाबाहु दुर्य्योध बहुत प्रसन्न हुए।

महाराज युधिष्ठिर भी हलधारी बलर मको देख प्रसन्नता सहित खड़े हुये, और विधि पूर्व्वक उनकी पूजा करके आसन दिया तथा कुशल पूछी।

अनन्तर बलराम मीठे धर्म्मयुक्त और स वीरोंके कल्याणसे भरे, वचन बोले, हे राजोंमें श्रेष्ठ! हमने ऋषियोंसे सुना है कि कुरुक्षेत्र स्वर्ग देनेवाला और परम पवित्र तीर्थ है, वहां देवता ऋषि और महात्मा ब्राह्मण रहते हैं। वह ब्रह्माकी उत्तर वेदी है, वहां जो युद्धमें मरता है वह सदा इन्द्रके सहित स्वर्गमें निवास करता है।

हे राजन्! इसलिये हम सब लोग भी समन्त पञ्चक तीर्थमें चलें वहां जो युद्धमें मरेगा वही स्वर्गको जायगा।

हे राजन्! जगत्के हितैच्छु, महावीर राजा युधिष्ठिर उनके वचन सुनकर समन्तपञ्चककी ओर चले उनके सङ्ग ही राजा दुर्य्योधन भी भारी गदा लेकर मतवाले हाथीके समान झमते झामते चले, कुरुराजको उनके सङ्ग

कवच और गदा धारण किये पैरोंपैरो सावधान चलते देख अन्तरिक्ष और वायु मण्डलमें घूमनेवाले देवता और सिद्ध साधु साधु और धन्य धन्य कहने लगे।

तब सेनामें शङ्ख और भेर आदि बाजे बजने लगे। सब वीर सिंहोंके समान गर्ज्जने लगे। यह शब्द सब दिशाओंमें पूरित होगया तब ये सब वीर क्रमसे चलते चलते कुरुक्षेत्रमें पहुंचे।

अनन्तर उस सद्गति देनेवाले तीर्थमें दुर्य्योधनको सम्मतिसे सरस्वतीके दक्षिण तटपर पूर्वको मुंह करके दुर्य्योधन और भीमसेन खड़े हुए। उस समयानुसार अर्थात् ऊसरर हित पृथ्वीमें युद्ध करनेको खड़े हुए तब भीमसेन कवच पहिनकर भारी गदा लेकर गरुड़के समान शीघ्रतासे युद्धभूमिमें आये। दूधरसे दुर्य्योधन भी टोप और सोनेका कवच पहनकर सोनेके पर्वतके समान अचल होकर युद्धभूमिमें खड़े हुये, ये दोनों पुरुषसिंह भाई दुर्य्योधन और भीमसेन कवच पहनकर दो मतवाले, हाथियोंके समान उपस्थित हुए।

हे महाराज। उस समय ये दोनों वीर ऐसे दीखते थे, जैसे एक समय उदय हुए चन्द्रमा और सूर्य्य एक दूसरेको मारनेकी इच्छासे इस प्रकार देखने लगे, मानो भस्मकर देंगे।

अनन्तर क्रोधसे लाल नेत्र करके दांत चबाकर सांस लेते हुए बलवान दुर्य्योधनने गदा उठाई और भीमसेनको ओर देखकर ऐसे ललकारा जैसे हाथी हाथीको ललकारता है।

अनन्तर बलवान भीमसेनने भी पहाड़के समान भारी गदा उठाकर राजा दुर्य्योधनको इस प्रकार पुकारा जैसे वनमें सिंह सिंहको पुकारता है। ये दोनों गरुड़के समान वीर यम और इन्द्रके समान युद्धमें खड़े हुए, ये दोनों श्रीकृष्ण, बलदेव, कुवेर, मधु, कैटभ, शुन्द, उपशुन्द, राम, रावण, बालि, सुग्रीव, काल और मृत्युके समान खड़े होकर मतवाले हाथीके समान युद्ध करनेको लगे। दोनों क्रोधी सांपके समान क्रोध रूपी विष छोड़ने लगे। दोनों वीर एक दूसरेकी तरफको देखने लगे। दोनों शार्दूलके समान पराक्रमी, युद्ध विद्याके जाननेवाले, भरत कुलसिंह वीरसिंहके समान युद्ध करने लगे। दोनों नखून और दांत रूपी शस्त्रयुक्त सिंहके समान वीर, दोनों प्रलयकालमें बढ़े हुए, दो समुद्रोंके समान दुस्तर, दोनों महाबलवान, महारथ, पृथ्वीके लिये इस प्रकार युद्ध करने लगे, जैसे शरत ऋतुमें एक हथिनीके लिये दो मतवाले हाथी लड़ते हैं। दोनों गर्ज्जते और बर्षते हुए, बर्षाऋतुके पूर्व और पश्चिमके मेघके समान दोनों शत्रुनाशन दो मङ्गल ग्रहोंके समान, दोनों महात्मा, महातेजस्वी, महादीप्तमान कुरुकुलश्रेष्ठ प्रलयकालमें उदय होते हुए, सूर्य्योंके समान दीखने लगे। दोनों महाबाहु वीरसिंह और केशरीके समान युद्ध करने लगे। दोनों गदाधारी वीर शिखरधारी पर्व्वतके समान दीखने लगे। और दोनोंके ओठ क्रोधसे फरकने लगे। दोनों एक दूसरेको ओर देखने लगे, दोनों पुरुष उत्तम महात्मा वीर गदा लेकर युद्धमें खड़े हुए और दोनों अत्यन्त प्रसन्न होकर उत्तम घोड़ोंके समान कूदने लगे। मतवाले हाथी, और बैलोंके समान गर्ज्जने लगे। उस समय इन दोनोंकी शोभा दो दानवोंके समान दीखती थी।

तब अर्ज्जुन, नकुल, सहदेव, महात्मा कृष्ण, महापराक्रमी बलदेव, कैकयवंशी क्षत्रिय सृञ्जयवंशी क्षत्रिय और महात्मा पाञ्चालदेशीय वीरोंके बीचमें बैठे अभिमानसे भरे महाराज युधिष्ठिरसे दुर्य्योधन वीरोंके समान बचन बोले, आज आप सब राजोंके सहित बैठकर हमारा और भीमसेनका गदा युद्ध देखिये।

महाराजने दुर्य्योधनके बचन सुन वैसाही किया, अर्थात् बैठकर देखने लगे। उस समय वह युधिष्ठिरकी राज सभा ऐसी सुन्दर

थी जैसे आकाशमें सूर्यका मण्डल। उस सभाके बीचमें बैठे हुए नील वस्त्रधारी गोरे वर्णवाले, श्रीमान् बलराम ऐसे दीखते थे, जैसे तारोंके बीचमें रात्रिको चन्द्रमा।

हे महाराज! उस समय ये दोनों प्रबुनाप्रन महापराक्रमी और एक दूसरेको कठोर वचन कहने लगे। एक दूसरेको इस प्रकार देखने लगे। जैसे वृत्रासुर और इन्द्र परस्पर देखते थे।

५५ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! पहिले भीमसेन और दुर्य्योधनका घोर वचन युद्ध हुआ तब राजा धृतराष्ट्र दुःखित होकर सञ्जयसे बोले।

हे पापरहित सञ्जय! मनुष्यके बलको धिक्कार है, जिसका फल ऐसा घोर होता है। देखो जो मेरा पुत्र किसी समय ग्यारह अक्षौहिणियोंका स्वामी था, जिसकी आज्ञामें सब राजा चलते थे, जो इस पृथ्वीका राज्य करता था वही आज गदा लेकर एकला पैरों युद्ध करनेको चला। जो इस जगत्का स्वामी कहलाता था, सो ही आज गदा लेकर एकला पैरा युद्ध करनेको चला जाता है। यह देखकर हम प्रारब्धको बलवान् न कहें तो किसको कहें?

हाय! हमारा पुत्र घोर आपत्तिमें पड़े है, ऐसा कहकर महाराज धृतराष्ट्र चुप होगये।

सञ्जय बोले, हे महाराज! अनन्तर महावीर्य्यवान् दुर्य्योधनने प्रसन्नतासे मेघ और मतवाले बैलके समान गर्ज्जकर युद्ध करनेके लिये भीमसेनको ललकारा।

हे महाराज! जिस समय महात्मा दुर्य्योधनने भीमसेनको पुकारा उस समय घोर अशकुन होने लगे। घोर वायु चलने लगा, आकाशसे धूलि वर्षने लगी, दशोंदिशामें अन्धकार होगया, अनेक बिजली घोर शब्द करती हुई पृथ्वीमें गिरी, बिना समय राहु सूर्यको ग्रास करने लगा, वन और वृक्षोंके सहित पृथ्वी कांपने लगी, पर्व्वतोंके शिखर टूट टूटकर पृथ्वीमें गिर गये अनेक प्रकारके जन्तु चारों ओर घूमने लगे। रोती हुई शियारी मुखसे आग निकालती हुई चारों ओर घूमने लगी, दीप्त दिशामें दारुण अपशकुनका चिन्ह दीखने लगे। अनेक प्रकारके शरीर रहित भूतोंके शब्द सुनाई देने लगे जल बढ़ने लगा।

इत्यादि और भी अनेक अपशकुन देखकर भीमसेन अपने बड़े भाई धर्म्मराज युधिष्ठिरसे बोले।

हे पाण्डव! हे राजेन्द्र! हे महाराज! मूर्ख दुर्य्योधन मुझे युद्धमें नहीं जीत सकता, आज मैं बहुत दिनसे हृदयमें भरा क्रोध निकाल लूंगा, आज दुष्ट दुर्य्योधनको मारकर आपके हृदयका शल्य निकालूंगा, आज इस कुरुकुलाधमको गदासे मारकर आपके गलेमें विजय कीर्त्तिकी माला पहिनाऊंगा, आज इस गदासे ही इस पापीके शरीरके सौ सौ टुकड़े करूंगा, फिर यह फिर हास्तिनापुरमें नहीं जायगा।

हे भरतकुलसिंह! हे पापरहित! शय्यापर सांप छोड़ने, भोजनमें विष देने, यमुनामें डूबने, लाक्षागृहमें जलाने, सभामें हंसने, कपटसे सर्व्वस्व छीनने, एक वर्ष छिपकर रहने और बारह वर्ष वनमें रहने आदि सब दुःखोंसे आज पार जाऊंगा, इसने हमें इतने दिनोंतक दुःख दिया है सो मैं आज एक दिनमें मारकर उसका बदला लेलूंगा, पापी दुर्बुद्धी दुर्य्योधनकी अवस्था समाप्त होगई, अब इस पापीको माता पिता और स्त्रियोंका दर्शन नहीं होगा। अब इसका सुख समाप्त होगया यह कुरुकुलका सन्तानका कुलकलङ्क दुर्य्योधन राज्यलक्ष्मी और प्राण छोड़कर पृथ्वीमें सोवेगा। आज अपने पुत्रको मरा हुवा सुन राजा धृतराष्ट्र भी शकुनीके वचनोंका स्मरण करेंगे।

हे राज शार्द्दूल ऐसा कहकर भीमसेनने गदा उठाई और जैसे इन्द्रने वृत्रासुरको पुकारा था ऐसे दुर्य्योधनको ललकारा।

अनन्तर गदाधारी दुर्य्योधनको शिखरधारी कैलाशके समान देख क्रोध करके भीमसेन बोले, अरे दुर्बुद्धे! मैंने आज तुझे प्रारब्धहीसे युद्धमें देखा है, तू अपने और धृतराष्ट्रके पापोंका स्मरणकर जो हमारे सङ्ग वारणावत नगरमें करे थे तुझको स्मरण है, कि सभामें रजस्वला द्रौपदीको कैसे दुःख दिये थे? सभामें तैने और शकुनीने राजाको छला था, हमने वनमें कैसे कैसे दुःख उठाये हैं विराटनगरमें हमको ऐसा जान पड़ता था कि मानो जन्महो दूसरा है, आज वह सब क्रोध तुझे मारकर शान्त करूंगा। तेरेही लिये महारथ गङ्गापुत्र भीष्म शिखण्डीके हाथसे मरकर शरशय्यापर सोते हैं। तेरे ही लिये द्रोणाचार्य्य, कर्ण, प्रतापी शल्य, वैरुरूपी अग्निको जलानेवाला शकुनी, द्रौपदीको क्लेश देनेवाला पापी प्रातिकामी और विचित्र युद्ध करनेवाले शूरवीर तथा और भी अनेक राजा मारे गये अब तुझे भी गदासे निःसन्देह मारूंगा।

हे राजेन्द्र! ऊंचे स्वरसे ऐसे वचन भीमसेनके सुन सत्यपराक्रमी दुर्य्योधन बेडर होकर बोले, रे क्षुद्र! रे कुलाधम! तुझ ऐसे साधारण मनुष्योंके वचनोंसे और मनुष्योंके समान दुर्य्योधन नहीं डरेगा, क्यों वृथा बक बक करता है युद्ध कर आज मैं तेरी युद्धकी इच्छा मिटा दूंगा बहुत दिनसे मेरी इच्छा थी कि तेरा और मेरा गदायुद्ध हो सो आज प्रारब्धसे वही समय आगया यह बात देवतोंने भी ऐसे ही रची थी। रे दुर्बुद्धे! बहुत कहनेसे क्या होता है जो तैने वचन कहा है, उसे कर्म्मसे करके सत्य कर।

दुर्य्योधनके वचन सुन सोमकवंशी क्षत्रिय आदि सब राजा उनकी प्रशंसा करने लगे और उन्हें क्रोध बढ़ानेके लिये ताली बजाने लगे। अपनी प्रशंसा सुन कुरुराजके रोंये खड़े होगये और युद्ध करनेका निश्चय करने लगे।

अनन्तर महात्मा भीमसेन गदा लेकर वेगसे महात्मा दुर्य्योधनको ओर दौड़े उस समय विजयी पाण्डवोंके हाथी चिल्लाने लगे। घोड़े हींसने लगे और शस्त्र चमकने लगे।

५६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, भीमसेनको अपनी ओर आते देख प्रसन्न दुर्य्योधन भी गर्ज्जते हुये वेगसे उनको ओर दौड़े। ये दोनों महात्मा इस प्रकार लड़ने लगे। जैसे दो सींगवाले बैल लड़ते हैं, गदासे गदा लगनेसे घोर शब्द होने लगा इन दोनों विजय चाहनेवाले वीरोंका ऐसा घोर युद्ध हुआ जैसा इन्द्र और प्रह्लादका हुवा था। इस युद्धको देखकर वीरोंके रोंये खड़े होने लगे।

अनन्तर दोनों गदाधारी वीर रुधिरमें भीगकर फूले हुए टेसूके समान दीखने लगे। दोनोंकी गदाओंसे आगके पतङ्गे निकलने लगे और उनसे आकाश ऐसा शोभित होगया जैसा जुगुनुवोंसे। दोनों शत्रुनाशन वीर थोड़े समयतक ऐसा घोर युद्ध करके थक गये फिर मुहूर्त्त मात्र सांस लेकर दोनोंने गदा उठाई और एक दूसरेको मारने लगे। दोनों महापराक्रमी पुरुषसिंह वीर थोड़े समयतक सांस लेकर फिर इस प्रकार युद्ध करने लगे। जैसे एक हथिनीके लिये दो मतवाले हाथी लड़ते हैं। उन दोनोंको गदा धारण किये और समान बलवान देखकर देवता गन्धर्व्व और मनुष्य आश्चर्य्यमें आगये और विजयमें बहुत सन्देह होने लगा।

अनन्तर ये दोनों बलवान् भाई एक दूसरेको मारनेके लिये अन्तर देखने लगे और

अनेक प्रकारकी गतिसे चलने लगे। उस समय भीमसेनकी भयानक गदा देखनेवालोंको यमराजके दण्ड और इन्द्रके वज्रके समान दीखती थी जिस समय भीमसेन गदा चलाते थे तब मुहूर्त्त भर उसीका घोर शब्द सुनाई देता था इसी प्रकार महावेगवाली दुर्योधनकी गदा भी चलती थी और सब लोग देखकर आश्चर्य करते थे।

हे भारत! अनेक प्रकारके मार्गसे चलते हुये भीमसेनकी शोभा बहुत बढ़ी ये दोनों वीर अपनी अपनी रक्षा करते हुए बार बार इस प्रकार युद्ध करने लगे। जैसे मांसके लिये दो बिलाव लड़ते हैं तब भीमसेन अनेक प्रकारके मार्गोंसे अनेक प्रकारके मण्डल करने लगे। कभी गत (शत्रुके सन्मुख जाना) कभी प्रत्यागत (शत्रुके आगेसे बिनामुख फेरे पीछेको लौटना) कभी विचित्र अस्त्र यन्त्र (किसी मर्म्मको देखकर अस्त्र मारना अथवा शत्रुके शस्त्रसे अपने शस्त्रको बचाना) कभी अनेक प्रकारके स्थान (शस्त्र मारने योग्य मर्म्मस्थानोंको देखना) परिमोक्ष (शस्त्रको वृथा कर देना) प्रहार बञ्चन शत्रुके शस्त्रसे बचना) परिधावन (शीघ्रतासे दहिने बांये जाना) अभिद्रवण (शीघ्रतासे आगे आना) अक्षेप (शत्रुके हाथसे चले हुये शस्त्रको अथवा उसके यत्नको वृथा करनेका उपाय करना) अवस्थान (सावधान और स्थिर होकर आगे खड़ा रहना) विग्रह (खड़े हुए शत्रुसे युद्ध करना) परिवर्त्तन (सब ओरसे घूमकर शत्रुको मारना) सम्वर्त्तन (शत्रुके शस्त्रको रोकना) अवप्लुत (शत्रुके शस्त्रसे नीचा होकर बचना) उपप्लुत (उछलकर बचना) उपन्यस्त (पास आकर शस्त्र मारना) और अपन्यस्त (घूमकर पीठकी ओर हाथ करके शत्रुकी मारना, आदि अनेक प्रकारकी गती दिखलाने लगे। दोनो कुरुकु-लश्रेष्ठ वीर, दोनों गदा विद्या जाननेवाले दोनों महापराक्रमी, अनेक प्रकारके मण्ड करते हुए युद्धमें चारों ओर खेलने लगे औ एक दूसरेको गदासे इस प्रकार मारने लगे जैसे एक मतवाला हाथी दूसरेको दात मारता है। तब दोनों रुधिरमें भीग गये।

हे शत्रुनाशन! यह भयानक गदा युद्ध दोनोंका ऐसा हुवा जैसा इन्द्र और वृत्रासुरक हुवा था।

हे महाराज! इस प्रकार इस घोर-गदा युद्धमें तुम्हारे पुत्र दहिने और भीमसेन बायें ओर घूमने लगे।

हे महाराज! बाईं ओर घूमते हुए भीमसेनकी पसुरीमें तुम्हारे पुत्रने एक गदा मार परन्तु भीमसेनने उसका कुछ भी विचार किया और यमराजके दण्डके समान भयानक तथा इन्द्रके वज्रके समान घोर गदाको घुमाने लगे। उस समय घूमती हुई भीमसेनकी गदा मण्डलके समान दीखने लगी।

अनन्तर शत्रुनाशन दुर्य्योधन भी अपनी घोर गदाको उठाकर घुमाने लगे चारों ओर उसका वायु छा गया उस समय महातेजस्वी दुर्य्योधन गदाको घुमाते हुए अनेक मार्गोंसे चलने लगे। तब उनका तेज भीमसेनसे बहुत अधिक होगया तब भीमसेन भी अधिक बलसे अपनी गदा घुमाने लगे। और उससे घोर शब्द आगकी, चिनगारी तथा धुआं निकलने लगा। भीमसेनकी गदाका वेग देखकर दुर्य्योधन भी पर्व्वतके समान भारी गदाका बलसे घुमाने लगे! महात्मा दुर्य्योधनकी गदाके वायुका वेग देखकर सब पाण्डव और सोमकवंशी क्षत्रिय डरने लगे।

अनन्तर ये दोनों शत्रुनाशन वीर एक दूसरेको गदासे इस प्रकार मारने लगे जैसे दांतसे एक हाथी दूसरे हाथीको मारता है दोनों युद्धमें घमने लगे।

अनन्तर वे दोनों रुधिरमें भीग गये यह युद्ध उस दिन ऐसा घोर हुवा जैसे इन्द्र और वृत्रासुरका हुआ था ।

हे महाराज! बलवान् दुर्य्योधन भीमसेनको अपने आगे खड़ा देख विचित्र मार्गसे चलकर उनकी ओर दौड़े तब क्रोध भरे भीमसेनने दुर्य्योधनको सोनेसे जड़ी गदामें एक गदा मारी उसके लगते हो दोनों गदाओंमेंसे आगके पतङ्गे निकलने लगे। और दो वज्र लड़नेके समान घोर शब्द उठा, जब भीमसेनने अपनो गदा दुर्य्योधनको गदामें मारी तब पृथ्वी कापने लगी ।

हे राजेन्द्र! उस गदा प्रहारको दुर्य्योधन क्षमा न कर सके और भीमसेनको खड़ा देख ऐसा क्रोध हुवा जैसे हाथीको देखकर दूसरे हाथीको क्रोध होता है ।

अनन्तर शीघ्रतासे बाईं ओर आकर भीमसेनके शिरपर एक गदा मारी परन्तु भीमसेन उससे कुछ भी कम्पित न हुये, इस आश्चर्य्यको देखकर सब सेनाके वीर आश्चर्य्य और भीमसेनकी प्रशंसा करने लगे ।

अनन्तर भोमसेन भी सोनेसे मढ़ो प्रकाशसे भरो एक गदा दुर्य्योधनके फेंकने मारी परन्तु दुर्य्योधनने उस गदाको बचा दिया, महा बलवान दुर्य्योधनकी इस विद्याको देखकर सब सेनाके लोग आश्चर्य्य करने लगे। वह भीमसेनके हाथसे छूटी हुई महावज्रके समान शब्दवाली गदा जब पृथ्वीमें गिरो तब सब पृथ्वो हिलने लगी। भीमसेन उस समय पागलके समान इधर उधर घूमने लगे ।

उनको पागलके समान इधर उधर घूमते और गदाको पृथ्वीमें पड़ो देख दुर्य्योधनने एक गदा उनको पसुलोमें मारी उस गदाके लगनेसे भीमसेनको अपने करने और न करने योग्य कामोंका कुछ भी ध्यान न रहा ।

भीमसेनकी यह दशा देख पाञ्चाल और पाण्डवोंके सब सङ्कल्प नष्ट होगये और सब अत्यन्त मलीन होगये परन्तु भीमसेनको अत्यन्त क्रोध हुआ, जैसे अङ्कुश लगनेसे हाथीको ।

अनन्तर गदा उठाकर तुम्हारे पुत्रकी ओर ऐसे दौड़े, जैसे हाथी हाथीकी ओर अथवा सिंह हाथीकी ओर दौड़ता है ।

अनन्तर गदायुद्धमें निपुण भीमसेनने दौड़कर एक गदा मारो उसके लगनेसे दुर्य्योधनने व्याकुल होकर अपने घुटने पृथ्वोमें टेक दिये ।

हे राजन्! कुरुकुलश्रेष्ठ दुर्य्योधनकी यह दशा देख सृञ्जयवंशी चत्री गर्ज्जने लगे। परन्तु भरतकुलश्रेष्ठ दुर्य्योधन उस गर्ज्जनेको क्षमा न कर सके और क्रोधमें भरकर सास लेते हुये, हाथीके समान खड़े हुए और भीमसेनकी ओर इस प्रकार देखने लगे, मानो इन्हे भस्म कर देंगे ।

अनन्तर महापराक्रमी महात्मा दुर्य्योधन गदा लेकर महात्मा भीमसेनकी ओर इस प्रकारसे दौड़े मानो अभी इनका शिर तोड़ डालेंगे फिर एक गदा भीमसेनको कनपटीमें मारी परन्तु भीमसेन उसके लगनेसे पर्व्वतके समान खड़े ही रहे और रुधिरके बहनेसे उनकी ऐसी शोभा बढ़ी जैसे मद बहते हुए हाथीकी अनन्तर शत्रुनाशन भोमसेनने शत्रुओंका नाश करनेवाली लोहेकी बनी वज्र और बिजलीके समान घोर शब्दवाली गदा दुर्य्योधनके शरीरसें मारी ।

हे महाराज! उसके लगनेसे दुर्य्योधनके शरीरको सन्धि ढोली होगई और इस प्रकार चक्कर खाकर पृथ्वीमें गिर पड़े जैसे आंधी लगनेसे फला हुआ सालका वृक्ष टूटकर गिरता है ।

हे महाराज! दुर्य्योधनको पृथ्वीमें पड़ा देख पाण्डव बहुत प्रसन्न हुए फिर दुर्य्योधन चैतन्य होकर इस प्रकार उठे जैसे मतवाला, हाथी तालावसे निकलता है ।

महारथ शिक्षित दुर्य्योधनने उठकर आगे खड़े हुये, भोमसेनके शरीरमें एक गदा

उसके लगते ही भीमसेन मूर्च्छित होकर पृथ्वीमें गिर पड़े, तब दुर्य्योधन सिंहके समान गर्ज्जने लगे, और फिर एक गदासे बज्रके समान दृढ़ भीमसेनका कवच तोड़ दिया उस समय आकाशमें खड़े देवता और अप्सरा फूल वर्षाने लगे। और प्रशंसा करने लगे।

पुरुषश्रेष्ठ भीमसेनको कवच रहित पृथ्वीमें पड़ा देख सोमक, सृञ्जय और पाण्डवोंको बहुत भय हुआ।

अनन्तर एक मुहूर्त्तमें भीमसेनने चैतन्य होकर रुधिरसे भीगा मुंह पोंछा; आंख खोलीं और सावधान होकर बलसे खड़े हुए।

५७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! जब इन दोनों कुरुकुलश्रेष्ठ वीरोंका इस प्रकार घोर युद्ध होने लगा तब अर्ज्जुनने यशस्वी कृष्णसे पूछा।

हे जनार्द्दन! ये दोनों वीर युद्ध कर रहे हैं, आपकी सम्मतिसे इन दोनोंमेंसे कौन अधिक श्रेष्ठ है? और किसमें कौन गुण अधिक है? सो आप हमसे कहिये।

श्रीकृष्ण बोले, हे अर्ज्जुन! इन दोनोंको विद्या समानही है, परन्तु भीमसेनमें बल अधिक है। तैसे ही दुर्य्योधन भीमसेनसे चतुर और सावधान अधिक है. इसलिये भीमसेन धर्म्मयुद्धसे इसको न मार सकेंगे, परन्तु यदि अन्यायसे युद्ध करें तो अवश्य ही जीतेंगे, हमने सुना है कि देवतोंने छलसे अनेक दानवोंको जीता है, इन्द्रने विरोचनको छलसे मारा था, वृत्रासुरका तेज छलसे नष्ट किया था, इसलिये भीमसेन भी छलसे युद्ध करें।

हे अर्ज्जुन! भीमसेनने जूवेके समय भी प्रतिज्ञा करी थी, कि मैं गदासे तेरी जङ्घा तोड़ूंगा सो अब शत्रुनाशन भीम छली दुर्य्योधनके सङ्ग छल करके अपनी प्रतिज्ञाको पालन करें यदि भीमसेन केवल अपने बलके भरोसे न्यायसे युद्ध करते रहेंगे, तो राजा युधिष्ठिरको घोर आपत्तिमें पड़ना पड़ेगा।

हे पाण्डव! अब हम तुमसे और वर्णन करते हैं, सो सुनो धर्म्मराज युधिष्ठिरके अपराधसे अब हम लोगोंको फिर भी घोर भयमें पड़ना हुआ, भीष्मादिक वीरोंको मारकर और कर्म्म करके जय और उत्तम यश प्राप्त किया, तथा वैर शान्त किया, परन्तु अब वही प्राप्त हुई विजय फिर सन्देहमें पड़ गई। धर्म्मराज युधिष्ठिरने यह बड़ी भूल करी जो दुर्य्योधनसे यह कह दिया कि, तुम हममेंसे एकको मा कर राजा होजाओगे, दुर्य्योधन चतुर, और एकायन गत अर्थात् मरने या विजय होने निश्चय कर चुका है।

हे अर्ज्जुन! शुक्रने अपनी नीतिमें जो कु लिखा है, सो तुम सुनो जो शत्रु भागकर फि युद्ध करनेको लौटे और जो बचनेकी इच्छा करे और जो मरते मरते शत्रुके कुलसे शेष र जाय उससे सदा डरता रहै, क्योंकि इसे अप हारने और मरनेका कुछ भय नहीं होता।

हे अर्ज्जुन! केवल साहससे युद्ध करते हु और जीनेकी आशा छोड़कर लड़ते हुये शत्रुके आगे इन्द्र भी नहीं लड़ सक्ता।

यह दुर्य्योधन युद्ध छोड़कर भागा है, ताला वमें छिपा था, युद्धमें हार कर वनमें जानेकी इच्छा करता था, इसकी सब सेना मारी गई थी ऐसा कौन बुद्धिमान होगा जो ऐसे शत्रुको द्वन्द्व युद्ध करनेको बुलावे? अब हमको यह सन्देह होगया है, कि ऐसा न हो कि दुर्य्योधन हमारा जीता हुवा राज्य छीन ले क्योंकि इसने तेरह वर्षतक भीमसेनको मारनेके लिये नीचे ऊपर घूमकर गदा युद्धका अभ्यास किया है, यदि महाबाहु भीमसेन अन्यायसे नहीं युद्ध करेंगे तो अवश्य ही दुर्य्योधन राजा होजायगा अर्थात् भीमसेन मारे जांयगे।

महात्मा श्रीकृष्णके ऐसे वचन सुन अर्ज्जुनने भीमसेनको दिखलाकर अपनी बाईं जांघमें हाथ मारा उस चिन्हको देखकर भीमसेन भी चैतन्य होगए, और गदा लेकर युद्धमें अनेक प्रकारके विचित्र यमक, अयमक, दक्षिण, वाम और गोमूत्र आदि अनेक मण्डलोंसे घूमते हुये, दुर्य्योधनको मोहित करने लगे। उसी प्रकार तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन भी भीमसेनके लिये अनेक प्रकारकी गतियोंसे घूमने लगे। ये दोनों वीर यमराजके समान क्रोध करके वैर समाप्त करनेके लिये चन्दन और अगर लगी गदाको घुमाने लगे।

दोनों वीर एक दूसरेको मारनेके लिये इस प्रकार लड़ने लगे। जैसे दो गरुड़ एक साँपका मांस खानेके लिये युद्ध करते हैं, दोनों चारों ओर घूमकर गदा घुमाने लगे। गदामें गदा लगनेसे आगके पतङ्ग निकलने लगे। दोनों वीर उस घोर युद्धमें इस प्रकार उछलने लगे। जैसे वायु लगनेसे दो समुद्र। दोनोंके प्रहार समान हो चलते थे, इन दोनों मतवाले हाथियोंके समान लड़ते हुवे वीरोंकी गदाका शब्द गिरती हुई बिजलीके समान सुनाई देता था। थोड़े समयमें दोनों मत्, नाशन वीर लड़ाई करते करते थक गए और बैठ गए, फिर क्षण भरमें खड़े होकर क्रोधमें भरकर गदा लेकर घोर युद्ध करने लगे।

हे राजेन्द्र! ये दोनों बैलके समान आंखवाले वीर घोर युद्ध करने लगे।

अनन्तर दोनोंके शरीर फूटने और रुधिरमें भीगनेके कारण ऐसे दीखने लगे जैसे हिमाचल पर फूले हुये टेसू।

अनन्तर भीमसेनने दुर्य्योधनको छल करनेके लिये थोड़ा मार्ग दिया। तब भीमसेन उनके पीछे दौड़े। और वेगसे एक गदा फेंककर मारी तब दुर्य्योधनने हटकर उस गदाको वृथा कर दिया, वह गदा पृथ्वीमें गिर पड़ी।

अनन्तर दुर्य्योधनने घूमकर बलसे एक गदा भीमसेनके शरीरमें मारी तब महातेजस्वी भीमसेनके शरीरसे रुधिर बहने लगा और उन्हें मूर्च्छा सी आगई परन्तु दुर्य्योधन यह न समझ सके कि भीमसेन अत्यन्त व्याकुल होगये हैं। उन्होंने यही जाना कि यह हमारे गदा मारना चाहते हैं इसी लिये उन्होंने दूसरी गदा नहीं मारी भीमसेनने भी बहुत कष्ट करके अपने शरीरको स्थिर किया, और थोड़े ही समयमें सावधान होकर प्रतापी भीमसेन गदा लेकर वेगसे दुर्य्योधनकी ओर दौड़े।

महातेजस्वी भीमसेनको अपनी ओर आते देख दुर्य्योधन उनकी उस गदाको नष्ट करनेके लिये इधर उधरको चलने लगे। और फिर छलकर भीमसेनको मारने दौड़े भीमसेनने भी दुर्य्योधनके मनकी बात जान ली और उसे छल करते देख सिंहके समान गर्ज्जकर उनकी ओर दौड़े इतनेमें दुर्य्योधन भी उनके शिरमें गदा मारनेको उछले।

हे राजन्! जैसे ही दुर्य्योधन उनके शिरमें गदा मारनेको उछले वैसे ही भीमसेनने वेगसे उनकी जांघमें गदा मारी वह वज्रके समान भीमसेनकी गदा लगते ही दुर्य्योधनकी अत्यन्त सुन्दर दोनों जङ्घा टूट गईं।

हे महाराज! जङ्घा टूटते ही तुम्हारे पुत्र पृथ्वीमें शब्द करते हुए गिर पड़े, उस समय भयानक वायु चलने लगा बिजली गिरी आकाशसे धूलि और रुधिर बर्षने लगा; इन्द्र, यक्ष राक्षस और पिशाच आकाशमें गर्ज्जने लगे। भयानक पक्षी और हरिन घोर शब्द करने लगे, पाण्डवोंकी ओरके बचे हुये हाथी, घोड़े और वीर गर्ज्जने लगे। दुर्य्योधनको गिरा हुआ देख पाण्डवोंकी सेनामें शङ्ख, भेर, मृदङ्ग, बजने लगे। अनेक देवता आकाशमें बाजे बजाने लगे, चारों ओर ध्वजा और शस्त्र लेकर अनेक पैर और अनेक हाथवाले भयानक रूपवाले और भय देनेवाले कबन्ध घूमने लगे।

हे राजन्। कुए, तलाब और नदियोंके सब सोतोंमें रुधिर बहने लगा। पुरुष, स्त्री और स्त्री पुरुषोंके समान दिखाई देने लगी।

इन घोर उत्पातोंको देखकर पाञ्चाल और पाण्डव बहुत घबड़ाए।

हे राजन्! देवता, गन्धर्व्व, अप्सरा, सिद्ध और चारण इस ही युद्धका वर्णन करते और दोनों पुरुषसिंहोंकी प्रशंसा करते हुवे अपने अपने घरको चले गये।

५८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! दुर्य्योधनको कटे हुए शाल वृक्षके समान पृथ्वीमें पड़ा हुवा देख पाण्डव अत्यन्त प्रसन्न हुए, जैसे मतवाला हाथी सिंहसे मरकर पृथ्वीमें गिर जाता है, ऐसेही दुर्य्योधनको पड़ा देख सोमकवंशी क्षत्री अत्यन्त प्रसन्न हुये।

हे महाराज। पृथ्वीमें पड़े हुए दुर्य्योधनके पास जाकर प्रतापवान् भीमसेन बोले, रे दुर्बुद्धे! रे मूर्ख! तैने एक वस्त्रधारिणी द्रौपदीको सभामें बुलाकर हंसकर हमको बैल बैल कहा था यह उसी हंसनेका फल तुझको प्राप्त हुवा।

हे महाराज। ऐसा कहकर भीमसेनने अपना बायां पैर दुर्य्योधनके शिरपर रख दिया, फिर शत्रुनाशन भीम राजसिंह दुर्य्योधनके शिरको अपने बायें पैरसे ठुकराते हुवे कहने लगे।

जो मूर्ख पहिले हमको बैल बैल कहकर नाचते थे, अब हम भी इन्हें बैल बैल कह कर बार बार नाचते हैं। हम लोग छल अग्नि, फांसी, जुआ और कपटसे किसीको जीतना नहीं चाहते परन्तु अपने बाहुबलसे शत्रुओंको जीतते हैं।

हे राजन्। इस वैरको समाप्त करके भीमसेन हंसकर युधिष्ठिर, श्रीकृष्ण, अर्जुन, नकुल, सहदेव और धृष्टद्युम्न आदि पाञ्चालोंसे बो

जिन मूर्खोंने रजस्वला द्रौपदीको स बुलाकर वस्त्र खींचा था उन धृतर पुत्रोंको पाण्डवोंने युद्धमें मारा, देखो द्रौपदीके तपका फल है जिन दुष्ट धृतरा पुत्रोंने हमें पहिले नपुंसक कहा था उ हमने बन्धु और सेनाके सहित मारा अब चाहे नरकमें जांय और चाहे स्वर्गमें।

हे महाराज। अनन्तर भीमसेन फि दुर्य्योधनके पास जाकर उनके कन्धेपर रख हुई गदा हाथसे पकड़कर और बायां पै शिरपर रखकर कि यही छली दुर्य्योधन है

क्षुद्र भीमसेनको कुरुकुलश्रेष्ठ दुर्य्योधन शिरपर बायां पैर रखते देख धर्म्मात्मा सोम वंशी क्षत्रिय प्रसन्न न हुये।

अनन्तर भीमसेनको बार बार नाचते दुर्य्योधनकी इस दशामें पड़े देख महार युधिष्ठिर भीमसेनसे बोले।

हे पापरहित भीम। तुमने धर्म्म अथ अधर्म्मसे वैर समाप्त किया और अपनी प्रतिज्ञ पूरी करी अब दुर्य्योधनके पाससे हट जाओ यह राजा और अपने वंशका मनुष्य है इस शिर पर पैर देना उचित नहीं है, इसके शि पर पैर मत देवो, घोर अधर्म्ममें मत पड़ो यह ग्यारह अक्षौहिणियोंका स्वामी और कुरु कुलका महाराज था। इसके बान्धव, मन्त्री सेना, भाई और पुत्र सब युद्धमें मारे गये, य हमारा सपिण्ड हो नहीं किन्तु साक्षात भा ही है। इसके सङ्ग ऐसा करना घोर अधर्म है, ये महाराज आज सब प्रकार सोचनीय दशामें पड़े हैं, पहिले सब मनुष्य कहते थे कि भीमसेन धर्म्मात्मा हैं, सो तुम आज ऐसा अधर्म क्यों कर रहे हो?

हे महाराज। भीमसेनसे ऐसा कहकर रोते हुए युधिष्ठिर शत्रुनाशन दुर्य्योधनके पास जाकर अत्यन्त दीन होकर कहने लगे।

हे प्यारे दुर्योधन भाई! तुम कुछ क्रोध मत करना और कुछ शोच भी नहीं करना क्योंकि पहिले किये हुवे पापोंका फल अवश्य ही होता है मनुष्यकी प्रारब्धमें लिखा फल भोगना ही पड़ता है?

हे कुरुकुलश्रेष्ठ! यदि यह बात सत्य न होतो तो क्या तुम हमसे और हम तुमसे वैर करते?

हे भारत! तुम अपने अपराधसे, लोभसे और बालबुद्धिसे इस घोर आपत्तिमें पड़े तुम मित्र, भाई, पिता, पुत्र और पोते आदिकोंका नाश कराके अब मरे तुम्हारे अपराधसे तुम्हारे भाई और जातिके सब लोग मारे गये।

हे पापरहित कौरव! अब हमें तुम्हारा कुछ शोच नहीं है, परन्तु अपना ही भारी शोच है।

हाय! अब हम अपने प्यारे बन्धुवोंसे हीन होकर जगत्में शोक कैसे भोगेंगे? हाय! हम शोकसे रोती हुई भाई और बेटोंकी विधवा स्त्रियोंको कैसे देखेंगे?

हे राजन्! तुम्हें धन्य है जो सुखसे स्वर्गमें वास करोगे और हम इस नरकमें रहकर अनेक प्रकारके दुःख उठावेंगे राजा धृतराष्ट्रके पुत्र और पोतोंकी विधवा स्त्री शोकसे व्याकुल होकर हमारी निन्दा करेंगी।

सञ्जय बोले, ऐसा कहकर महाराज धर्म्मराज युधिष्ठिर ऊंचे सांस लेकर दुःखसे व्याकुल होकर बहुत समयतक ऊंचे स्वरसे रोते रहे।

५८ अध्याय समाप्त।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! हमारे पुत्रको अधर्म्मसे मरा हुआ देख महापराक्रमी गदायुद्धको विशेष रूपसे जाननेवाले रोहणीपुत्र बलदेवने क्या किया और क्या कहा? सो हमसे कहो।

सञ्जय बोले, राजा दुर्य्योधनके शिरपर भीमसेनको पैर रखते देख बलवान् बलरामको महा क्रोध हुवा फिर शस्त्र चलानेवालोंमें श्रेष्ठ हलधारी बलदेव राजोंके बीचमें हाथ उठाकर ऊंचे स्वरसे बोले।

भीमसेनको धिक्कार है, भीमसेनको धिक्कार है, भीमसेनको बारबार धिक्कार है, इसने गदायुद्धके शास्त्रमें कहीं ऐसा नहीं देखा जैसा अधर्म्म युद्धमें भीमसेनने किया, नाभीके नीचे शस्त्र न मारै यह शास्त्रका निश्चय है, परन्तु इस मूर्खने कुछ शास्त्र नहीं पढ़ा इसलिये इच्छानुसार जो चाहता है सो कर बैठता है।

हे राजन्! ऐसा कहते कहते क्रोधके मारे बलदेवके नेत्र लाल होगये फिर युधिष्ठिरकी ओर देखकर कृष्णसे बोले, यह असाधारण हमारे समान वीर एकला नहीं गिरा बरन हम भी इसके सङ्गही गिर गये, क्योंकि जो जिसके आश्रयसे रहता है उसके गिरनेसे आश्रयमें भी दोष आजाता है।

हे महाराज! ऐसा कहकर बलवान् बलदेव हल उठाकर भीमसेनकी ओर दौड़े उस समय ऊपरको हाथ उठाये हल लिये महात्मा बलदेवका ऐसा रूप दीखने लगा जैसे अनेक धातुयुक्त सफेद पर्व्वतका। बलदेवको भीमसेनकी ओर वेगसे जाते हुए देख बलवान् श्रीकृष्णने दौड़कर अपने लम्बे और मोटे हाथोंसे पकड़ लिया और हाथ जोड़कर बिनय करने लगे। उस समय इन दोनों यदुकुलश्रेष्ठ वीरोंकी ऐसी शोभा दीखती थी जैसे सन्ध्या समय आकाशमें उदय हुये सूर्य्य और चन्द्रमाकी।

श्रीकृष्ण बोले, हे पुरुषसिंह! अपनी वृद्धि मित्रकी वृद्धि, मित्रके मित्रकी वृद्धि, शत्रुकी हानि, शत्रुके मित्रकी हानि और शत्रुके मित्रके मित्रकी हानि, ये छः प्रकारकी अपनी वृद्धि समझी जाती हैं, यदि इन छः वृद्धियोंमेंसे अपने मित्रके लिये उलटे फलहों

अर्थात् अपनी, अपने मित्रकी और अपने मित्रके मित्रकी हानि हो और शत्रुकी वृद्धि शत्रुके मित्रकी वृद्धि या शत्रुके मित्रके मित्रकी वृद्धि हो तो मनको कुछ दुःख देना चाहिये और मनको शान्ति देनेका उपाय करना चाहिये। कलत-क्षित पराक्रमी पाण्डव हमारे स्वभावहीसे मित्र हैं, अर्थात् हमारी फूफीके पुत्र हैं। इनको छलियोंने छल लिया था और हम यह भी जानते हैं कि अपनी प्रतिज्ञा पालन करना ही क्षत्रियोंका धर्म है भीमसेनने पहिले ही सभामें प्रतिज्ञा करी थी कि हम अपनी गदासे दुर्य्योधनकी जङ्घा तोड़ेंगे।

हे शत्रुनाशन! महामुनि मैत्रेयने पहिले ही दुर्य्योधनको शाप दिया था कि तेरी जङ्घा भीमसेन अपनी गदासे तोड़ेंगे, इसलिये आप क्रोध न कीजिये हम इससे कुछ दोष नहीं देखते।

हे प्रलम्बनाशन। हमारे पितामह और पाण्डवोंके नाना एक ही थे पाण्डव हमारे गाढ़े सम्बन्धी और मित्र हैं, उनकी वृद्धिसे हमारी वृद्धि है इसलिये आप ऐसा कीजिये क्रोध मत कीजिये।

श्रीकृष्णके वचन सुन धर्म्मात्मा बलदेव बोले, तुम्हारे मुखसे जो आता है सोई बकते जाते हो धर्म्मकी एक बात भी नहीं कहते, महात्मा धर्म्म ही करते हैं, और जो मनुष्य उस धर्म्मको नाश करते हैं, अर्थात् अत्यन्त लोभी अर्थका नाश करता है, और अत्यन्त कामी कामका नाश कर देता है, जो मनुष्य धर्म्मसे अर्थको धर्म्मसे कामको और कामसे अर्थको नाश नहीं करता अर्थात् धर्म्मके आश्रयसे अर्थ अर्थके आश्रयसे धर्म्म और अर्थ धर्म्मके आश्रयसे काम करता है वही अत्यन्त सुख भोगता है, यहां भीमसेनने धर्म्मका नाश किया इसलिये सब नाश होगया।

श्रीकृष्ण बोले, यदि इस समय आप शान्त होजांय तो सब लोक आपको क्रोधरहित धर्म्मात्मा और धर्म्मको प्यारा कहेंगे इसलिये आप क्रोध न कीजिये शान्त हूजिये, आप जानते हैं कि, कलियुग आगया इसलिये भीमसेनकी प्रतिज्ञा और वैरको पूरा होने दीजिये।

सञ्जय बोले, श्रीकृष्णके धर्म्मरूपी छलसे भरे वचन सुनके बलराम प्रसन्न न हुये और राजोंके बीचमें बोले।

धर्म्मात्मा दुर्य्योधनको भीमसेनने अधर्म्मसे मारा है, इसलिये जगत्के वीर इन्हें छली योधा कहेंगे।

धर्म्मात्मा धर्म्मसे युद्ध करनेवाले धृतराष्ट्रपुत्र राजा दुर्य्योधन भी युद्धरूपी यज्ञमें दोचा पाके शत्रुरूपी अग्निमें अपना शरीर जलाकर सनातन स्वर्गको जायगी और इनका यश जगत्में बना रहेगा।

हे महाराज! ऐसा कहकर सफेद मेघके समान सुन्दर शरीरवाले रोहिणीपुत्र प्रतापी बलदेव रथपर चढ़कर द्वारिकाको चले गये।

हे राजन्! जब बलदेव द्वारिकाको चले गये तब पाञ्चाल, पाण्डव और श्रीकृष्ण अत्यन्त दुःख करने लगे।

अनन्तर शोकसे व्याकुल चिन्तासे नीचा मुख किये शोककी सङ्कल्प त्यागे एकान्तमें बैठे युधिष्ठिरके पास जाकर श्रीकृष्ण बोले।

हे पृथ्वीनाथ हे धर्म्मराज! आप धर्म्म जान करके भी इतना शोच क्यों करते हैं, जब दुर्य्यो धनके सब बन्धु बान्धव मारे गये तब मूर्च्छि यदि भीमसेनने उसके शिरपर पैर रख दि तो क्या अधर्म्म हुवा?

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे कृष्ण! कुलनाशके समयमें जो भीमसेनने क्रोध क राजाके शिरमें पैर मारा सो हमें अच्छा न जान पड़ा, इसलिये हम प्रसन्न नहीं धृतरा पुत्रोंने हमारे सङ्ग बहुत ही छल किये थे, अनेक कठोर वचन कहके हमें वनको निक था, वही महादुःख भीमसेनके हृदयमें भ

यही विचारकर हमने इस समय क्षमा करी अब इस छली, लोभी और कामीको धर्म्म अथवा अधर्म्मसे मारकर भीमसेन इच्छानुसार भोग करें।

सञ्जय बोले, धर्म्मराजके ऐसे वचन सुन श्रीकृष्ण बोले, इस समय हम सब लोगोंकी यही प्रार्थना है, कि आप भीमसेनपर कृपा कीजिये।

भीमसेनका कल्याण चाहनेवाले श्रीकृष्णके ऐसे वचन सुन महाराजने कहा कि बहुत अच्छा।

अनन्तर क्रोधी भीमसेन भी युद्धमें दुर्य्योधनको मारकर और प्रसन्न होकर अपने बड़े भाईके पैरोंमें आपड़े फिर खड़े होकर हाथ जोड़कर अत्यन्त प्रसन्न होकर बोले।

हे पृथ्वीनाथ! आज यह पृथ्वी आपके शत्रुओंसे शून्य होगई, अब आप इसका राज्य कीजिये और अपने धर्म्मको पालन कीजिये।

हे महाराज! वैरका मूल छली दुर्य्योधन पृथ्वीमें सोता है, कठोर वचन कहनेवाले दुःशासन, राधापुत्र कर्ण और शकुनी आदि सब आपके शत्रु मार गये। अब यह रत्नोंसे भरी, वन और पर्व्वतोंके सहित सब पृथ्वी आपकी शत्रुहीन महाराज जानके आपके अधीन है।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे महावीर! राजा दुर्य्योधन मारा गया वैर समाप्त होगया, यह सब काम कृष्णकी सम्मतिसे हुवा, हमने पृथ्वी जीती तुम प्रारब्धहीसे माता और क्रोधके ऋणसे छूटे, प्रारब्धहीसे हमारी विजय हुई और प्रारब्धहीसे वह शत्रु मारा गया।

६० अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! दुर्य्योधनको युद्धमें पड़ा हुवा देख पाण्डव और सृञ्जयोंने क्या किया? सो हमसे कहो।

सञ्जय बोले, जैसे सिंहसे मरकर मतवाला हाथी पृथ्वीमें गिर जाता है, ऐसे ही भीमसेनके हाथसे मरा हुआ दुर्य्योधनको देख सृञ्जय, पाण्डव और श्रीकृष्ण बहुत प्रसन्न हुये; कोई अपना दुपट्टा घुमाने लगा, कोई सिंहकी समान गर्ज्जने लगा। कोई धनुष टङ्कारने लगा, कोई रोदा लगाने लगा, कोई नगारा भी बजाने लगा, कोई शङ्ख बजाने लगा, कोई कूदने लगा, कोई उछलने लगा, और कोई हंसने लगा।

हे महाराज! पृथ्वी उनके इस आनन्दको न सह सकी।

अनन्तर सब वीर भीमसेनके पास आकर कहने लगे। आपने इस समय घोर कर्म्म किया, दुर्य्योधनने बहुत दिनतक युद्धमें परिश्रम किया था, हम लोग इस कर्म्मको ऐसा समझते है, जैसे इन्द्रने वृत्रासुरको मारा था। अनेक मार्ग और मण्डलोंमें घूमते हुए वीर दुर्य्योधनको आपके सिवाय और कौन मार सक्ता था आप वैरके पार होगये, ऐसा कर्म्म दूसरा और क्षत्रिय कोई नहीं कर सकता, आपने प्रारब्धहीसे युद्धमें मतवाले हाथीकी समान दुर्य्योधनके शिरपर पैर दिया।

हे पापरहित! आपने दुःशासनका रुधिर इस प्रकार पिया जैसे भैंसेको मारकर सिंह रुधिर पीता है। जो राजा युधिष्ठिरका वैर करते थे, आपने प्रारब्धहीसे उनके शिरपर पैर दिया, दुर्य्योधन आदि शत्रुओंके मारनेसे आपका यश पृथ्वीमें प्रारब्धसे फैल गया, जैसे वृत्रासुरके मारनेमें इन्द्रकी प्रशंसा देवतोंने करी थी वैसे ही हम लोग आपकी प्रशंसा करते हैं। दुर्य्योधनके मरनेसे जो हम लोगोंके रोंये खड़े हुए है सो अबतक नहीं बैठते हैं।

हे महाराज! जहां भीमसेनके पास खड़े हुए सोमक, पाण्डव और सृञ्जय ऐसे वचन कह रहे थे। तहां उसी समय वार्त्तावह समाचार फैलनेवाले, पहुंच गए।

तब श्रीकृष्ण पुरुषसिंह प्रसन्न पाञ्चाल और पाण्डवोंसे बोले, मरे हुए शत्रुको वचनोंसे मारना

उचित नहीं यह पापी उसी समय मारा गया था, जिस समय इसने लज्जा छोड़ दी थी, अब इस मूर्खको कठोर बचन सुनानेसे क्या होगा? इस लोभीके सब पापी ही सहायक थे, ये मित्रोंके वचन नहीं मानता था, कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य्य, बिदुर, भीष्म और सञ्जयोंके अनेक बार समझाते भी इस नीचने पाण्डवोंको पिताका राज्य न दिया, अब यह दुष्ट शत्रुही हो वा मित्रही हो काष्ठके समान पड़ा है, इसे कठोर वचन सुनानेहीसे क्या होगा? यह पापी प्रारब्धहीसे वंश और मित्रोंके सहित मारा गया, अब आप लोग रथोंमें बैठकर डेरोंको चलिये।

श्रीकृष्णके ऐसे वचन सुन दुर्य्योधनको महाक्रोध आया और उठकर पृथ्वीमें कुहनी टेककर बैठे फिर भौंह टेढ़ी करके श्रीकृष्णको देखा उस समय पैर टूटे राजाकी ऐसी शोभा दीखती थी जैसे क्रोध भरे पूंछ कटे बिषीले सांपकी उस समय महाराज अपने प्राणनाश पीड़ा करनेवाली पीड़ाको भूलकर श्रीकृष्णसे बहुत कठोर बचन बोले।

अरे कंसके दासके दास दुर्बुद्धी पापी कृष्ण! तुझे कुछ भी लज्जा और घृणा नहीं है, मुझे अधर्म्मसे गदायुद्धमें मराहुआ देख तुझे कुछ भी लज्जा नहीं होती, तैंने ही भीमसेनको याद दिला दी कि इसकी जङ्घा तोड़, क्या मैं यह नहीं जानता कि तैंने धर्म्मसे युद्ध करते हुए सहस्रों राजोंको अर्ज्जुनके हाथसे अधर्म्मसे मरवा दिया, तैंने प्रतिदिन पाप और छल करके हमारी तरफके सहस्रो बीरोंको मरवा डाला शिखण्डीको आगे करके पितामहको मारा।

अरे दुर्बुद्धे! अश्वत्थामा नामक हाथीको मारकर बलवान गुरुजीसे शस्त्र रखवा लिये और उनको इस पापी धृष्टद्युम्नने मारडाला, तू देखता रहा तूने इसे न रोका।

क्या मैंने यह नहीं सुना कि पाण्डवोंके मारनेके लिये जो इन्द्रने कर्णको शक्ती दी थी, वह तूने घटोत्कचके ऊपर छुड़वा दी? तेरे समान जगत्में और कौन पापी होगा, जिसने नागराज अश्वसेनको छोड़कर रथका पहिया उठाते हुए घबड़ाये हुए, कर्णको अर्ज्जुनको बिजयके लिये मरवा दिया?

तेरीही सम्मतिसे हाथकटे बलवान भूरिश्रवाको महात्मा सात्यकीने मारा। यदि मैं कर्ण, भीष्म और द्रोणाचार्य्य, धर्म्मसे युद्ध करने पाते, तो तेरा कदापि बिजय न होती परन्तु तू ऐसा अनार्य्य है कि, तैंने छल करके अनेक धार्म्मिक राजोंको मारडाला।

श्रीकृष्ण बोले, हे दुष्टात्मन् गान्धारीपुत्र! अब तू सेना, भाई, पुत्र और मित्रोंके सहित पाप करता करता मर गया, तेरेही पापसे बीर भीष्म और द्रोणाचार्य्य मारे गये तेरे समान पापी कर्ण भी मारा गया।

अरे मूर्ख! हमने बार बार पाण्डवोंके पिताका राज्य मांगा पर तैंने न दिया। तूने पहिले शकुनीकी सम्मति और लोभसे पाण्डवोंका राज्य न दिया। अरे दुर्बुद्धे! तैंने भीमसेनको विष दिया, माताके सहित सब पाण्डवोंको लाक्षागृहमें जलाया जुवेके समय रजस्वला द्रौपदीको दुःखदिया जुवा न जाननेवाले महात्मा धर्म्मज्ञ युधिष्ठिरको जुवा जाननेवाले शकुनीने छलसे जीता इसी लिये हमने तुझको इस प्रकार युद्धमें मारा।

अरे दुष्ट निर्लज्ज! जिस समय तृणबिन्दु मुनिके आश्रममें रहते हुये पाण्डव आखेटको गये थे तब पापी जयद्रथने द्रौपदीको कैसा क्लेश दिया था? अनेक बीरोंने मिलकर एकले बालक अभिमन्युको मारा इसी लिये हमने तुझको इस प्रकार युद्धमें मारा, तैंने जो हमारे अपकार करे थे, उसीसे हमने भी ऐसा किया। तैंने बृहस्पति और शुक्रका उपदेश नहीं सुना, बूढ़ोंकी सेवा नहीं करी इसीसे हमारे कल्याण भरे वचन नहीं सुने थे। तैंने लोभ और तृष्णाके

वश होकर जो जो पाप करे थे, उन सबका फल भोग।

दुर्य्योधन बोले, हे कृष्ण! हमने विधिपूर्वक वेद पढ़े, समुद्र पर्य्यन्त पृथ्वीका राज्य किया, शत्रुवोंके शिरपर पैर दिया हमारे समान महात्मा कौन होगा? महात्मा चत्रिय जिस प्रकार युद्धमें मरनेकी इच्छा करते हैं, उसी प्रकार हम मरे जिन भोगोंको राजा नहीं भोग सकते ऐसे देवतोंके योग्य भोग हमने भोगे, उत्तम ऐश्वर्य्य प्राप्त किया, हमारे समान महात्मा कौन होगा? अब हम अपने मित्र और भाइयोंसे स्वर्गमें जाकर मिलेंगे, तुम लोग शोकसे व्याकुल होकर जगत्में रहोगे और तुम्हारे सब सङ्कल्प नष्ट होजांयगे।

सञ्जय बोले, इस वचनके कहतेही बुद्धिमान कुरुराजके ऊपर पवित्र सुगन्धि भरे फूल बर्षने लगे। गन्धर्व्व मनोहर बाजे बजाने लगे, अप्सरा नाचने लगीं, राजाका यश गाने लगीं सिद्ध दुर्य्योधनको धन्य धन्य कहने लगे। उत्तम सुगन्धि भरा वायु चलने लगा, आकाश निर्म्मल वैदूर्य्य मणिके समान दीखने लगा; और दिशा भी निर्म्मल होगयीं।

हे राजन्! इन अद्भुत शकुनोंको देख और दुर्य्योधनको प्रशंशा सुनके श्रीकृष्णादिक सब लज्जित होगये, भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कर्ण और भूरिश्रवाको अधर्म्मसे मरा हुआ सुन सब लोग शोकसे व्याकुल होकर शोचने लगे।

पाण्डवोंको दीन और चिन्ता करते देखकर श्रीकृष्ण मेघ और नगारेके समान गम्भीर शब्दसे बोले, जिस मार्गसे महात्मा चलें उसीसे सबको चलना चाहिये, दैत्यनाशक देवतोंने अनेक दानवोंको छलसे मारा है, इसलिये शत्रु को इस प्रकार मारनेका आप लोग शोच मत कीजिये. शत्रुवोंको किसी प्रकार छलादिकसे मारना ही धर्म्म है। केवल धर्म्मयुद्धसे आप लोग भीष्मादिक वीरोंको नहीं मार सकते थे और इस शीघ्र शस्त्र चलानेवालेको भी नहीं मार सकते थे।

मैंने यह सब छल और कपट केवल आप लोगोंके कल्याणहीके लिये किया है और उसीसे ये सब भीष्मादिक युद्धमें मारे गये यदि मैं ऐसे छल नहीं करता तो क्योंकर तुम्हारी विजय होती और राज्य धन कहांसे होता? भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कर्ण और भूरिश्रवा ये चारों महारथ और महात्मा थे, इनको धर्म्म युद्धमें साचात् लोकपाल भी नहीं जीत सकते थे और परिश्रमरहित गदाधारी दुर्य्योधनको भी धर्म्मयुद्धमें साक्षात् दण्डधारी यमराज भी नहीं मार सकते थे। आप लोग इसका कुछ बिचार न कीजिये अब हम लोग कृतकृत्य होगये सन्ध्या होगई अब डेरोंको चलें सब हाथी, घोड़े और राजा बिश्राम करें।

हे महाराज। श्रीकृष्णके ऐसे बचन सुन पाण्डव और पाञ्चाल बहुत प्रसन्न होकर सिंहके समान गर्ज्जने लगे। फिर श्रीकृष्णने पाञ्चजन्य शङ्ख बजाया अनन्तर सब वीर अपने अपने शङ्ख बजाने लगे और दुर्य्योधनको मरा हुआ देखकर बहुत प्रसन्न हुए।

६१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, अनन्तर परिघके समान हाथवाले राजोंने अपने अपने शङ्ख बजाए और प्रसन्न होकर हमारे डेरोंको चले, उस पाण्डवोंकी सेनाके पीछे महाधनुषधारी युयुत्सु, सात्यकी, सेनापति धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और द्रौपदीके पांचोपुत्र आदि महाधनुषधारी चले। अनन्तर सब पाण्डवोंने हमारे स्वामी रहित डेरोंमें जाकर टूटे हुए अखाड़े के समान महाराज दुर्य्योधनका डेरा देखा उस समय उन डेरोंमें स्त्री, नपुंसक और बूढ़े मन्त्रियोंके सिवाय और कोई न था। उस डेरेकी शोभा ऐसी

दीखती थी जैसे उत्सव रहित भूमि और हाथी रहित तलावको।

तब दुर्य्योधनके सब मन्त्री मैले और गेरूके कपड़े पहने पाण्डवोंके आगे आखड़े हुए।

डेरोंमें पहुंचकर पाण्डव आदि महारथ अपने अपने रथोंसे उतरे।

अनन्तर पाण्डवोंका सदा कल्याण चाहनेवाले कृष्ण अर्ज्जुनसे बोले, तुम बहुत शीघ्र अपना गाण्डीव धनुष चढ़ावो और दोनों अक्षय तूणीर बांधकर शीघ्र रथसे कूदो तब मैं पीछे रथसे उतरूंगा। हे पापरहित! तुम्हारा इसहीमें कल्याण है।

श्रीकृष्णके वचन सुन पाण्डुपुत्र अर्ज्जुनने वैसाही किया।

अनन्तर बुद्धिमान कृष्ण भी घोड़ेकी लगाम छोड़कर रथसे कूद पड़े जगत्स्वामी महात्मा कृष्णके उतरते ही वह रथ विना लगाये अग्निसे आपही आप जल उठा, दिव्य बन्दर ध्वजा अन्तर्द्धान होगई थोड़े ही समयमें आसन, लगाम, घोड़े, धुर और पहियोंके समेत रथ भस्म होकर पृथ्वीमें गिर पड़ा।

इस रथका पहले ही महारथ द्रोणाचार्य्य और कर्णने अपने शस्त्रोंसे भस्म कर दिया था, अर्ज्जुनके रथको भस्म हुआ देख सब वीर लोग आश्चर्य्य करने लगे।

अनन्तर हाथ जोड़कर और प्रणाम करके अर्ज्जुन श्रीकृष्णसे बोले, हे भगवन्! हे गोविन्द! हे यदुनन्दन! हे महाबाहो! यह क्या आश्चर्य्य हुवा? यह रथ अग्निसे क्यों जल गया यदि आप हमें सुनाने योग्य समझें तो मुझसे कहिये?

श्रीकृष्ण बोले, हे अर्ज्जुन! यह रथ कर्ण और द्रोणाचार्य्यके ब्रह्मास्त्र आदि शस्त्रोंसे पहिले ही जल चुका था परन्तु मैं बैठा था इसलिये भस्म नहीं होसका अब यह सब काम होचुका इसलिये मैं भी उतर गया और यह भस्म होगया।

अनन्तर शत्रुनाशन श्रीकृष्ण हंसकर … महाराज युधिष्ठिरका हाथ पकड़ कर … प्रकार बोले।

हे कुन्तीपुत्र! प्रारब्धहीसे आपकी वि… होती है और प्रारब्धहीसे आपका शत्रु मा… गया, प्रारब्धहीसे आप भीमसेन, अर्ज्जुन, नकु… और सहदेव इस घोर वीर क्षयसे कुशल पूर्व… बचे और आपके शत्रु मारे गये अब आपको … कुछ इस समय करना हो सो शीघ्रतासे कीजि… अब अर्ज्जुनके सहित अपने डेरोंको चलिये।

आपने जो पहिले मधुपर्क देखकर ह… कहा था, कि यह अर्ज्जुन आपका भाई … मित्र है, आप सब आपत्तियोंमें इसकी र… कीजियेगा, और मैंने भी आपके वचन स्वीक… किये थे, सो यह वीर विजयी सत्य पराक्र… अर्ज्जुन अपने भाइयोंके सहित इस घोर यु… बचे, हमने भी आपकी आज्ञानुसारही इन… रक्षा करी।

हे महाराज! श्रीकृष्णके ऐसे वचन … धर्मराज युधिष्ठिरके रोये रोयें प्रसन्न हो… और श्रीकृष्णसे बोले।

हे शत्रुनाशन! कर्ण और द्रोणाचार्य्य… छोड़े हुए, ब्रह्मास्त्रको आपके सिवा सा… वज्रधारी इन्द्र भी नहीं सह सकेंगे, आपहीक… कृपासे अर्ज्जुनने संशप्तक सेनाको नाश किया, और घोर युद्धसे नहीं हटा आपहीकी कृपासे हमको अनेक प्रकारके कर्म, तेज और उत्तम गति प्राप्त हुई, हमसे विराट नगरमें पहिलेही वेदव्यासमुनिने कहा था, कि जहां धर्म तहां कृष्ण और जहां कृष्ण तहां विजय होगी।

हे महाराज! इन सब बातोंको समाप्त करके सब वीर आपके डेरोंमें घुसे वहां उनके कोश (खजाना) रत्न आदि ऋद्धियोंके ढेर चांदी, सोना, मणि, मोती, उत्तम उत्तम आभू… षण, कश्मीरी दुशाले, चमड़े असंख्य दासी, दास, राज्यकी सब सामग्री मिली उस आपके अक्षय

धनको प्राप्त करके शत्रुहीन पाण्डव बहुत प्रसन्न हुए।

अनन्तर ये सब वीर रथोंसे उतरकर थोड़े समयतक वहांपर बैठे रहे और वाहनोंको शान्त किया तब महायशस्वी श्रीकृष्ण बोले, कि सब सेना आज यहीं रहे परन्तु महाराज भीमसेन, अर्ज्जुन, नकुल, सहदेव, सात्यकी और हम मङ्गलके लिये डेरोंसे बाहर रहेंगे।

श्रीकृष्णके वचन सबने स्वीकार किये और ये सातों मङ्गलके लिये डेरोंसे निकलकर सरस्वती नदीको चले गये और रात भर वहीं रहे।

हे महाराज! वहां जाकर महाराज युधिष्ठिरने बहुत बिचारकर समयके अनुसार श्रीकृष्णसे ऐसे बचन कहे।

हे शत्रुनाशन कृष्ण! गान्धारी क्रोधसे बहुत ही व्याकुल होगी, इसलिये हमारी इच्छा है कि आप उनके पास जाइये और समयके अनुसार हेतु और कारण भरे ऐसे बचन सुनाइये जिसमें गान्धारी शान्त होय, वहां हमारे पितामह व्यास भी होंगे, जब आप गान्धारीसे कुछ कहेंगे, तब वह आप अवश्य ही शान्त होजावेगी।

हे महाराज! अनन्तर सब लोगोंकी यही सम्मति हुई कि श्रीकृष्णको हस्तिनापुर अवश्य ही भेजना चाहिये तब श्रीकृष्ण भी शैव्य, सुग्रीव, मेघपुष्प और बलाहक नामक शीघ्र चलनेवाले घोड़ोंके रथपर बैठकर दारुक सारथीको साथ लेकर चल दिये. वहां प्रतापी, कृष्णको जाते देख सब पाण्डव श्रीकृष्णसे बोले, कि आप पुत्ररहित यशस्विनी गान्धारीको जाकर समुझाइये पाण्डवोंके वचन सुन श्रीकृष्ण हस्तिनापुरको चल दिये, और पुत्ररहित गान्धारीके पास पहुंचे।

६२ अध्याय समाप्त।

महाराज जनमेजय बोले, हे ब्राह्मणश्रेष्ठ वैशम्पायन मुने! धर्मराज युधिष्ठिरने शत्रुनाशन कृष्णको गान्धारीके पास क्यों भेजा? और कृष्ण क्यों गये? इसमें कोई भारी कारण होगा, क्यों कि श्रीकृष्ण इस युद्धसे पहिले ही एक बार शान्ति करानेके लिये हस्तिनापुर गये थे, परन्तु वह इनकी इच्छा पूर्ण नहीं हुई तब फिर श्रीकृष्ण वहां क्यों गये? विशेषकर जब सब शत्रु मारे गये? दुर्य्योधन मर गये जगत्में युधिष्ठिरका कोई शत्रु न रहा शत्रुओंके डेरे शून्य होगये और उत्तम यश भी प्राप्त हो चुका तब फिर स्वयं श्रीकृष्ण हस्तिनापुर क्यों गये? आप हमसे सब वर्णन कीजिये इस कार्य्यका जो कारण हो सो भी आप हमसे कहिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे भरतकुलश्रेष्ठ महाराज! आपने जो प्रश्न किया, वह आपहीके योग्य हैं। अब हम उसका कारण कहते हैं, आप सुनिये, महाराज युधिष्ठिरने महाबलवान दुर्य्योधन को अन्यायसे गदा युद्धमें मरा हुआ देख यह बिचारा कि महाभाग्यवती गान्धारी घोरतप करती है। यह अपने तपसे तीनों लोकोंको भस्म कर सकती है, वह जब सुनेगी कि हमारे छलरहित पुत्रको पाण्डवोंने छलसे मारा तब क्रोध करके अपने मनकी अग्निसे भस्म कर देंगी, उस दुःखको वह कैसे सह सकेंगी, ऐसा विचार करते करते महाराजकी बुद्धि भय और शोकसे व्याकुल होगई तब बहुत शोच विचारकर श्रीकृष्णसे बोले।

हे कृष्ण! आपकी कृपासे हमने यह निष्कण्टक राज्य पाया, हम इस राज्यको मनसे भी नहीं पा सकते थे, हे महाबाहो! आपने हमारे देखते देखते इन सब शत्रुओंका नाश कर दिया, आपने देवासुर संग्राममें दानवोंको मारनेके लिये देवतोंको सहायता देकर दानवोका नाश किया था, ऐसा ही हमे सहायता देकर कौरवोंका नाश किया।

हे वार्ष्णेय! आप यदि अर्ज्जुनके सारथी और स्वामी न होते तो इस शत्रु सेनारूपी समुद्रका नाश कैसे होता? आपने हमारे लिये

परिघ, सांग, भिण्डिपाल, तोमर और परश्वध आदि वज्रके समान आयुधोंकी चोटें खाईं और अनेक कठोर वचन भी सुने परन्तु दुर्य्योधनके मरनेसे आपका यह सब परिश्रम सफल हुआ, परन्तु यह सब जिसमें नष्ट न होजाय सो उपाय कीजिये हमें विजय प्राप्त होनेपर भी गान्धारीके क्रोधसे सन्देह है, क्योंकि महाभागिनी गान्धारी सदा घोर तप करती रहती हैं, वे अपने पुत्र और पोतोंको मरा हुआ सुन हमें अवश्य ही भस्म कर देंगी इसलिये उन्हें इस समय प्रसन्न करना हमारी सम्मति है।

हे पुरुषोत्तम! क्रोधसे लालनेत्रवाली और पुत्र शोकसे व्याकुल गान्धारीको आपके सिवाय कौन मनुष्य देख सक्ता है? इसलिये हमारी सम्मतिमें आता है कि आप वहां जाइये, आप जगतके कर्त्ता नाशक और अव्यय हैं इसलिये क्रोध भरी गान्धारीको शान्त कीजिये समयके अनुसार प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कारणोंसे भरे वचन सुनाकर आप गान्धारीको अवश्य ही शान्त करेंगे।

हे महावाहो! हमारे पितामह भगवान् व्यास भी वहीं होंगे आप सदा पाण्डवोंका कल्याण चाहते हैं इसलिये सब प्रकारसे गान्धारीका क्रोध शान्त कीजियेगा।

महाराजके ऐसे वचन सुन यदुकुलश्रेष्ठ कृष्णने दारुकको बुलाकर कहा कि हमारा रथ ले आओ।

दारुकने महात्मा श्रीकृष्णके वचन सुन शीघ्र रथ तयार करके कृष्णसे कहा कि रथ खड़ा है।

अनन्तर यदुकुलश्रेष्ठ शत्रुनाशन श्रीकृष्ण रथपर बैठकर चल दिये और थोड़े ही समयमें रथके शब्दसे दिशाओंको पूरित करते हुए हस्तिनापुर पहुंचे और महाराज धृतराष्ट्रको समाचार देकर उनके पास गये और वहां पहिलेहीसे बैठे मुनिश्रेष्ठ व्यासको देखा।

अनन्तर श्रीकृष्णने वेदव्यास और राजाके चरणोंमें प्रणाम करके गान्धारीको प्रणाम किया। फिर राजाका हाथ पकड़कर ऊंचे स्वरसे बहुत समयतक रोते रहे फिर आंसू पोंछकर मुंह धोकर कुल्ला किया और बैठकर शत्रुनाशन धृतराष्ट्रसे बोले।

महाराज! आप बूढ़े हैं, समयके अनुसार जो कुछ हुआ सो आपने सुना ही होगा आपको कोई बात अविदित नहीं है, आप और पाण्डवोंका चित्त न मिला तब कुरुकुल और क्षत्रियोंका नाश क्यों न होता? धर्मात्मा युधिष्ठिरने अपने सब भाइयोंको शान्त कर लिया था, परन्तु आपने उन्हें जुएमें जीतकर उनको वनवास दिया वह भी उन्होंने स्वीकार किया फिर एक वर्षतक अनेक प्रकारके रूप बनाकर छिपकर विराट नगरमें निवास किया इत्यादि और भी अनेक क्लेश पाण्डवोंने सदा समर्थ होने पर भी असमर्थके समान सहे आगे जब युद्ध होनेकी उपस्थित होगया तब स्वयं मैंने आकर आपसे पांच गांव मांगे, परन्तु आपने समयके फेरसे लोभके वश होकर वे भी न दिये कहांतक कहैं आपहीके अपराधसे यह क्षत्रीवंश नष्ट होगया; भीष्म, सोमदत्त, वाह्लीक कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा और बुद्धिमान् विदुरने बहुत बार आपसे शान्ति करनेको कहा परन्तु आपने उनके वचनको भी न सुना।

हे भारत! आपका इसमें कुछ भी दोष नहीं है समय बिगड़नेसे सबकी बुद्धि ऐसी नष्ट होजाती है। आप इस कार्य्यमें मूर्ख होगए इसमें प्रारब्धके और कालके सिवा किसको दोष देवें?

हे महाबुद्धिमान्! आप पाण्डवोंको कुछ दोष न दीजिये क्यों कि इस विषयमें महात्मा पाण्डवोंका कुछ भी दोष नहीं है आप धर्म, न्याय और स्नेहसे विचारिये तो यह सब आपहीके किये दोषोंका फल जान पड़ेगा आप पाण्डवोंको किसी प्रकार दोष मत दीजिये क्योंकि वे आपको और गान्धारीको पिण्ड देनेवाले कुलमें उत्पन्न हुये पुत्र हैं।

हे भरतकुलश्रेष्ठ। आप और यशस्विनी गान्धारी पाण्डवोंको ओरसे कुछ द्वेष न करो क्योंकि यह सब आपहीके दोषोंका फल है, हम आपको प्रणाम करते हैं आप कृपा करके पाण्डवोंकी रक्षा कोजिये।

हे महावाहो। महाराज युधिष्ठिरकी आपकी कैसी भक्ति और प्रीति है सो आप जानते हैं सब अहितकारी शत्रुवोंको मारकर भी आपके और यशस्विनी गान्धारीके सोचसे रात दिन व्याकुल रहते हैं हमने उन्हें कभी भी शान्त नहीं देखा।

हे पुरुषसिंह! आप पुत्रोंके शोकसे व्याकुल होरहे हैं इस ही लज्जासे महाराज स्वयं आपके पास नहीं आए ऐसा कहकर यदुकुल श्रेष्ठ कृष्ण शोकसे पीड़ित गान्धारीसे बोले।

हे सुबलपुत्री। मैं तुमसे जो कहता हूं सो सुनो इस समय पीड़ित जगत्‌में तुम्हारे समान सौभाग्यवती स्त्री कोई नहीं है, तुमने हमारे आगे सभामें धर्म्म और अर्थसे भरे दोनों ओरके कल्याण करनेवाले वचन कहे परन्तु तुम्हारे पुत्रोंने नहीं माना; युद्धको जाते समय भी तुमने दुर्य्योधनको कठोर वचन कहे कि, रे मूर्ख! जहां धर्म्म है वहां ही विजय होती है, परन्तु उसने उनको भी नहीं माना।

हे राजपुत्री! तुम्हारे वे सब वचन सत्य होगये इसलिये तुम अपने मनमें कुछ शोक न करो। हे कल्याणी। तुम अपने क्रोध भरे नेत्रोंसे चर और अचर जगत् तथा पृथ्वीको भस्म कर सक्ती हो परन्तु पहिले सब कारण विचारकर पाण्डवोंके नाशका विचार मतकरो।

श्रीकृष्णके वचन सुन गान्धारी बोली, हे महावाहो कृष्ण! तुम जैसे हो सो अच्छेही हो परन्तु शोकोंके कारण मेरी ही बुद्धि नष्ट होगई है इस समय हमें पुत्ररहित अन्धे राजाकी और मेरी पाण्डवोंकी केवल आप होकी शरण है, आपके वचन सुनकर मेरी बुद्धि स्थिर होगई ऐसा कहकर पुत्रोंके शोकसे पीड़ित गान्धारी कपड़ेसे मुंह ढककर रोने लगी, तब फिर शोकपीड़ित गान्धारी और धृतराष्ट्रको श्रीकृष्ण अनेक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कारणोंसे समझाने लगे।

उसी समय श्रीकृष्णको अश्वत्थामाकी प्रतिज्ञाका स्मरण आगया तब बहुत शीघ्रतासे उठे और राजा धृतराष्ट्रके चरणोंमें शिर रखकर कहने लगे कि, हे कुरुकुलश्रेष्ठ! आप किसी प्रकारका शोक न कीजिये, आज रात्रिको अश्वत्थामाने पाण्डवोंको मारनेका विचार किया है, इसलिये मुझे वहां जानेकी आज्ञा दीजिए ऐसा कहकर कृष्णने व्यासदेवको प्रणाम किया।

केशिनाशन् श्रीकृष्णके वचन सुन महाबाहु धृतराष्ट्र और गान्धारी शीघ्रतासे बोले।

हे महावाहो! हम तुमसे फिर मिलेंगे, अब तुम शीघ्र जाओ और पाण्डवोंकी रक्षा करो।

महाराजके वचन सुन कृष्ण दारुकके सहित रथपर बैठकर सेनाकी तरफ चले गये।

कृष्णके जानेके पीछे महात्मा व्यास राजा धृतराष्ट्रको समझाते रहे महात्मा कृष्ण भी कृतकृत्य होकर हस्तिनापुरसे चलकर पाण्डवोंको देखनेके लिये डेरोंमें पहुंचे और उनसे मिलकर प्रसन्नतापूर्व्वक सब समाचार कह सुनाये।

६३ अध्याय समाप्त।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जङ्घा टूटनेके पश्चात् अभिमानी हमारे पुत्रने तुमसे क्या कहा? वह हमारा पुत्र सदासे क्रोधी और पाण्डवोंका वैरी था, तब इस आपत्तिमें पड़कर तुमसे क्या कहा?

सञ्जय बोले, हे महाराज! उस आपत्तिमे पड़कर जांघ टूटनेके पश्चात् महाराजने हमसे जो कहा सो सुनिये, मुझको अपने पास खड़े देख जङ्घा टूटे महाराज उठे और मेरी ओर

देखा उस समय महाराजका सब शरीर धूलिसे भर रहा था।

अनन्तर अपने हाथ ऊंचे टेककर मतवाले, हाथीके समान बैठे और इधर उधर बिथरे हुए बालोंको घुमाते हुए दांतसे दांतोंको पीसकर महाराज युधिष्ठिरको धिक्कार देकर लम्बा सांस लेकर क्रोध और आंसू भरे नेत्रोंसे मेरी ओर देखकर बोले।

हे सञ्जय! किसी समय शान्तनुपुत्र भीष्म, शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ कर्ण, कृपाचार्य्य, शकुनी, महाशस्त्रधारी द्रोण, अश्वत्थामा, वीर शल्य और कृतवर्म्मादि मेरे सङ्ग थे, मैं बारह अक्षौहिणियोंका स्वामी था और आज इस दुर्दशामें पड़ा हूं, समयकी गति बड़ी कठोर है समयको कोई नाघ नहीं सक्ता।

हे महाबाहो! यदि कोई हमारा जीता हुआ मित्र मिले तो कहना कि भीमसेनने दुर्य्योधनको ऐसे अन्यायसे मारा पापी पाण्डवोंने श्रीमान् भीष्म, द्रोणाचार्य्य, भूरिश्रवा और कर्णके सङ्ग भी ऐसेही ऐसे अधर्म्म किये थे, इनका अपयश जगत्में फैलेगा, हमें यह निश्चय है, कि हमारे मित्रोंके मरनेसे और इस छलयुक्त पाण्डवोंकी बिजयसे महात्मा प्रसन्न नहीं होंगे, क्यों कि अन्याय कर्म्मको कौन महात्मा प्रशंसा करता है? अधर्म्मसे बिजय करके पापी पाण्डुपुत्र भीमसेनके सिवा और कौन प्रसन्न होगा।

हे सञ्जय! इसमें क्या आश्चर्य्य है जो जङ्घा टूटनेके पश्चात् क्रोधी भीमसेनने मेरे शिरपर पैर धर दिया?

हे सञ्जय! जो तेजसे भरे राज्यपर बैठे बन्धुवोंसे युक्त शत्रुओंका निरादर करे उसकी प्रशंसा करनी चाहिये मेरे माता और पिता दोनों ही युद्ध विद्याको पूर्णरीतिसे जानते हैं। आज वह दुःखसे व्याकुल होंगे। तुम उनसे कहना कि तुम्हारे पुत्रने ऐसे कहा है, कि हमने अपने जीवनमें अनेक यज्ञ करे, सेवकोंको सन्तुष्ट करा, समुद्र सहित पृथ्वीको अपनी आज्ञामें चलाया, जीते हुए शत्रुओंके शिरपर पैर रक्खा, शक्तिके अनुसार दान किये, मित्रोंका हित किया, और शत्रुओंको दबाया हमारे समान और महात्मा कौन होगा, बन्धुवोंका सनमान किया, देवऋण, पितृऋण, और ऋषिऋणसे शरीरको छुड़ाया हमारे समान जगत्में और कौन महात्मा होगा। राजोंमें मुख्य महाराजोंके ऊपर आज्ञा चलाई, दुर्लभमान प्राप्त किया अब उत्तम मार्गसे स्वर्गको जाता हूं मेरे समान और महात्मा कौन होगा? दूसरोंका राज्य छीने, राजोंसे दासोंके समान सेवा करा मेरे समान महात्मा कौन होगा। विधि अनुसार सब वेद पढ़े, अनेक दान दिये, र रहित अवस्था पाई और अपने धर्म्मसे स्वर्ग जाता है। मेरे समान और महात्मा कौन हो मुझे प्रारब्धहीसे शत्रुवोंने जीतकर अपना नहीं बनाया, प्रारब्धहीसे मेरी लक्ष्मी म पश्चात् शत्रुओंके हाथमें गई, अपना धर्म्म कर नेवाले महात्मा क्षत्री जिस रीतिसे मरना चाहते है, आज मैं उसी रीति मरा मेरे समान और महात्मा कौन होगा?

अच्छा हुआ जो मैंने अपना वैर न छोड़ा और न्यायसे न हारा अच्छा हुवा जो मैंने युद्धमें कोई अधर्म्म न किया जो मनुष्य सोतेको, म पियेको मारता है, अथवा बिष देकर मारत है उसकी प्रशंसा जगत्में नहीं होती ऐसे जो धर्म्म छोड़कर युद्ध करता है, उसकी प्रशंसा जगत्में नहीं होती।

हे सञ्जय! तुम बलवान अश्वत्थामा, कृ चार्य्य और कृतवर्म्मासे हमारी ओरसे कहना कि तुम लोग अधर्मी, विश्वासघ पाण्डवोंका विश्वास कभी न करना।

हे महाराज। मुझसे ऐसा कहकर म पराक्रमी दुर्य्योधन वार्त्तावह (समाचार प्र करनेवाले) लोगोंसे बोले, पापी भीमसेनने

धर्म्मसे मारा सो अब हम स्वर्गमें जाकर द्रोणाचार्य्य, कर्ण, शल्य, महापराक्रमी वृषसेन, सुबलपुत्र शकुनी, महावीर जलसन्ध, राजा भगदत्त, महाधनुषधारी सोमदत्त, सिन्धुराज जयद्रथ, दुःशासन आदि सौ भाई, महाबलवान दुःशासनपुत्र और लक्ष्मण आदि अपने सहस्रों बन्धुओंसे मिलेंगे, मैं उनके पीछे इस प्रकार स्वर्गको जाता हूं जैसे सामग्री रहित बटोही।

हाय हमारी बहिन दुःशला अपने सौ भाई और पतिको मरा हुआ सुन दुःखसे व्याकुल होकर क्या करेगी? हमारे पिता बूढ़े महाराज वह, पोतोंकी बहू और गान्धारीके सहित किस दुर्दशामें पड़ेंगे? हमें यह निश्चय है कि, विशालनयनी सुन्दरी लक्ष्मणकी माता पुत्र और पतिको मरा हुआ सुन अवश्य ही मर जायगी।

यदि कहीं महापण्डित सब स्थानोंमें घूमनेवाले, महाभाग चार्व्वाक मेरी इस दशाको सुन ले तो अवश्यही पाण्डवोंसे बदला लेंगे। मै तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध पवित्र समन्त पञ्चक तीर्थपर मरकर स्वर्गको जाता हूं तुम लोग भी जाओ।

हे महाराज! राजाके ऐसे बचन सुन वार्त्तावह रोने लगे और वहांसे चले गये, राजाका रोना सुनकर सब पशु पक्षी भी भाग गये, चर और अचर वन और समुद्रके सहित सब पृथ्वी कांपने लगी। आकाशसे बिजली गिरी।

ये वार्त्तावह अश्वत्थमाके पास पहुंचे और गदायुद्धमें राजाके गिरनेका समाचार सब कह दिया और थोड़े समय तक रोते रहे फिर सब इधर उधरको चले गये।

६४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! दुर्य्योधनको पृथ्वीमें गिरपड़ा सुन तेजवान शत्रो, गदा और तोमरादि शस्त्रोंके घावोंसे व्याकुल आपकी ओरके वीरोंमेंसे बचे हुये, अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा, तेज घोड़ोंके रथोंपर बैठकर राजाके पास आये, उन्होंने वहां आकर महात्मा दुर्य्योधनको वायुसे टूटे हुए वनमें पड़े शालवृक्षके समान देखा। उस समय रुधिरमें भीगे, तड़फते हुये महाराजकी ऐसी शोभा दीखती थी, जैसे व्याधके बाणसे कटे हुए हाथीकी। रुधिरसे भीगे तड़फते हुये, महाराजकी ऐसी शोभा दीखती थी, जैसे आकाशसे गिरे सूर्य्यकी वायुसे सूखे समुद्रकी और आकाशमें स्थित तेजसे भरे चन्द्रमाके मण्डलकी।

हाथीके समान पराक्रमी धूलसे भरे महाबाहु महाराजको उस समय मांस खानेवाले, जन्तु चारोंओरसे इस प्रकार घेर रहे थे, जैसे लोभी सेवक राजाको घेरे रहते है। क्रोधसे आंख फैलाये भौंह टेढ़ी किये क्रोधसे भरे सिंहके समान पुरुषसिंह महाधनुषधारी दुर्य्योधनको पृथ्वीमें पड़े देख एकबार इन तीनों वीरोंको मूर्च्छा आगयी।

अनन्तर रथोंसे उतरकर सब राजाके पास गए और पृथ्वीमें बैठ गये।

अनन्तर आंखोमे आसू भरकर ऊंचे सांस लेकर भरतकुलश्रेष्ठ सब लोकोंके राजोंके महाराज दुर्य्योधनसे अश्वत्थामा बोले।

हे पुरुषसिंह! आप आज इस प्रकार धूलमें पड़े लोटते है। इससे हमें निश्चय होता है, कि मनुष्यमें कुछ भी शक्ति नहीं है।

हे राजेन्द्र! आप राजोंके महाराज और पृथ्वीके स्वामी होकर भी आज इस भयानक जङ्गलमें एकले क्यो पड़े है।

हे भरतकुलसिंह! आज यह क्या है जो आपके पास दुःशासन और महारथ कर्ण आदि मित्रोको नहीं देखते? —

हे महाराज! आप भी आज धूलमें सोते हैं। इससे हमें निश्चय होता है, कि कालकी और जगत्‌की गतिको कोई नहीं जान सक्ता है।

यही शत्रुनाशन महाराज पहिले क्षत्रियोंके आगे चलते थे, सो ही आज धूल और तिन खा रहे हैं।

हे राजोंमें श्रेष्ठ! आपका वह निर्म्मल छत्र और पङ्खा कहां गया? आपकी वह महासेना आजकहां गई? कारणोंसे उत्पन्न हुए कार्य्योंकी गति जानना बड़ा कठिन है, आप लोक पूज्य होकर भी इस दुर्दशाको पहुंच गये।

हे महाराज! आप सदा इन्द्रकी समानता करते थे, सो आज इस दुर्दशामें पड़े हैं, इससे निश्चय होता है कि लक्ष्मी स्थिर नहीं।

हे महाराज! दुःख भरे अश्वत्थामाके ऐसे वचन सुन हाथोंसे आंख पोंछकर तुम्हारे पुत्रने कृपादिक वीरोंको देखकर समयके अनुसार ऐसे वचन बोले।

हे वीरो। ब्रह्माने जगत्की ऐसी ही गति बनाई है, कि जो उत्पन्न हुआ है उसे एक दिन मरना ही है सो आप लोगोंके देखते देखते मैं भी इस गतिको प्राप्त हुआ, मैं किसी समय पृथ्वीका राजा था और आज इस दशाको प्राप्त हूं, अच्छा हुआ जो मैं युद्धमें किसी आपत्तिमें न पड़ा, अच्छा हुआ जो पापियोंने मुझे छलसे मारा, अच्छा हुआ जो मैं युद्धके लिये सदा उत्साह करता रहा। आज मैं जाति और बान्धवोंसे रहित होकर प्रारब्धहीसे इस घोर युद्धसे बचे हुये कुशल सहित आप लोगोंको देखता हूं। मैं इससे बहुत प्रसन्न हुआ हूं, आप लोग मेरे मित्र हैं मेरे मरनेका कुछ शोक मत कीजिये, यदि आप लोग वेदोंको सत्य मानते हो तो मैं अपने सत्यसे सनातन स्वर्गको जाऊंगा, मैं महातेजस्वी कृष्णके प्रभावको जानता हूं, इसी लिये सनातन क्षत्रिय धर्म्मसे नहीं नष्ट हुआ मैं स्वर्गको जाता हूं इसलिये आप लोग कुछ शोक न कीजिये। आप लोगोंने जो अपने करने योग्य हमारी विजयके उपाय किये सो आप ही लोगोंके योग्य थे।

हे महाराज! ऐसा कहकर महाराजकी आंख आंसुवोंसे भर गई और पीड़ासे व्याकुल होकर चुप होगए, राजाको शोकसे व्याकुल रोते देख अश्वत्थामाको क्रोध आया और प्रलयकालकी जलती हुई अग्निके समान उनका रूप होगया।

अनन्तर क्रोधमें भरकर हाथसे हाथ मल कर आंखोंमें आंसू भरकर राजासे बोले।

हे महाराज। क्षुद्र पाञ्चालोंने मेरे पिताको भी अधर्म्मसे मारे, परन्तु मुझे इतना उनका शोक नहीं है जितना शोक आपका होगया है।

हे महराज। मैं आपसे सत्य की शपथ खाकर कहता हूं सुनिये यदि आजकी रात्रि कृष्णके देखते देखते सब पाञ्चलोंका नाश कर ती मुझे इष्टापूर्त्तों, दान और धर्म्म आदि उत्त कर्म्मोंका फल न होय।

हे महाराज! अब आप मुझे आ दीजिये मैं किसी न किसी उपायसे पाञ्चालों नाश करूंगा।

अश्वत्थामाके ऐसे वचन सुन दुर्यो बहुत प्रसन्न होकर कृपाचार्य्यसे बोले।

हे गुरुजी! आप बहुत शीघ्र एक कल जल भर लाइए, राजाके वचन सुन कृपाच बहुत शीघ्र एक कलश जल भरलाए। राजाने फिर कृपाचार्य्यसे कहा, हे ब्राह्मणश्र यदि आप हमारी प्रसन्नता चाहते हैं तो अश्व त्थामाका सेनापति अभिषिक्त कीजिये धर्म्म जाननेवालोंने ऐसा कहा है कि, राजाकी आज्ञासे ब्राह्मण भी क्षत्रिय धर्म्मके अनुसार युद्ध करे. राजाके वचन सुन कृपाचार्य्यने अश्वत्था- माका अभिषिक्त किया अश्वत्थामा भी सेनापति बन राजाका हाथ पकड़ सिंहके समान गर्ज्जने लगे और वहांसे चल दिये रुधिर भरे दुर्य्योधन भी उस भयावनी रात्रिको वहीं पड़े रहे।

हे राजेन्द्र! यह तीनों वीर भी शोक और चिन्तासे व्याकुल होकर उस युद्ध भूमिसे बाहर जाकर सोचने लगे।

६५ अध्याय समाप्त।

गदापर्व्व और शल्यपर्व्व समाप्त।

महाभारत।



सौप्तिकपर्व्व।

दोहा।

ार नारायण व्यास अरु, बन्दि सरस्वति पाय।
ारत की भाषा करूं, सुजननको सुख दाय॥

सञ्जय बोले, हे राजा धृतराष्ट्र! तब वे तीनों ीर दुर्य्योधनके पाससे दक्षिणकी ओरको चले, फिर सन्ध्याके समय डेरोंके पास आकर भयसे व्याकुल होगये, फिर रथोंसे घोड़े छोड़-कर छिपकर डेरोंके पास बैठे उस समय ये तीनों बीर बाणोंके घावोंसे व्याकुल थे, घोड़े थक गये, प्यासके मारे मुख सूख रहे थे. राजाके मरनेसे क्रोध और शोकसे व्याकुल थे, तब थोड़े समय तक वहां बैठे।

अनन्तर पाण्डवोंकी सेनाका भयानक सब्द सुनकर उन्होंने जाना कि ये सब हमें मारनेको इधर ही चले आते हैं। तब भयसे व्याकुल होकर ऊंचे और गर्म सांस लेते हुये, पाण्ड-वोंका विचार करते हुये पूर्व्वकी ओर भागे।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! भीमसेनने युद्धमें हमारे पुत्रको मारडाला यह बात सुनकर हमें विश्वास नहीं होता क्यों कि दश सहस्र हाथि-योंके समान बलवाला तरुण दुर्य्योधन भीम-सेनके हाथसे मारा गया, यह सुनकर हमें निश्चय नहीं होता क्यों कि उसका शरीर बज्रके समान था और उसे कोई भी नहीं मार सकता था।

हे गालवगण पुत्र! पाण्डवोंने दुर्य्योधनको मारडाला यह सुनकर हमें निश्चय होता है कि कोई मनुष्य प्रारब्धको नहीं नांघ सक्ता।

हे सञ्जय! सौ पुत्रोंको भीमसे मरा सुन करके मेरा हृदय फट नहीं गया इससे जानता हूं कि यह पत्थरसे भी अधिक कठोर है, अब हम दोनों बूढ़ोंकी क्या दशा होगी? मैं कदापि युधिष्ठिरके राज्यमें न रह सकूंगा, हाय! आप ही राजा और राजाका पिता होकर मैं अब पाण्डवोंका सेवक होकर कैसे रहूंगा?

हे सञ्जय! सब पृथ्वीको अपनी आज्ञामें चलाकर राजोंके शिरपर रहकर अब युधिष्ठि-रकी आज्ञामें कैसे चलूंगा?

महात्मा विदुरका बचन सत्य हुआ, दुर्य्यो-धनने विदुरकी बात कुछ न मानी इसीसे यह आपत्ति आई।

हे सञ्जय! जिसने मेरे सौ पुत्रोंको मारा उस भीमसेनके बचनोंको मैं कैसे सह सकूंगा?

हे सञ्जय! जब भीमसेनने हमारे पुत्र दुर्य्योधनको अधर्म्मसे मारडाला तब कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा और कृतवर्म्माने क्या किया।

सञ्जय बोले, हे महाराज! जब ये तीनों वीर वहांसे पूर्व्वकी ओर भागे, तब थोड़ी दूर जाकर अनेक वृक्ष लताओंसे भरा घोर बन देखा, तब रथोंसे उतरकर थोड़े समयतक ठहरकर वहांपर विश्राम किया और घोड़ोंको पानी पिलाया, तब सूर्य्य भी अस्त होने लगे। तब ये तीनों दक्षिणकी ओर चलकर उस हरिन, पक्षी, वृक्ष, लता और सांपोंसे भरे बनमें घुसे।

अनन्तर चारों ओर देखते हुए चलते वीरोंने उस वनमें एक उत्तम जल भरे उत्तम नीले कमल और सहस्रों सफेद कमल आदि फूलोंसे भरा एक तालाव देखा और उसीके तटपर अनेक शाखावाला एक बरगदका वृक्ष था, तब वे रथोंसे उतर घोड़ोंको रथसे खोलकर जल स्पर्श करके विधि पूर्व्वक सन्ध्या करने लगे। तब भगवान सूर्य्य भी अस्ताचलके शिखरपर पहुंच गए और सब जगत्की माता रात्रि आगई। उस समय नक्षत्र और तारोंसे भरा आकाश ऐसा सुन्दर दीखने लगा, जैसे सफेद विन्दुसहित नीलावस्त्र; रात्रिमें घूमनेवाले जन्तु घूमने लगे। और भयानक शब्द करने लगे, मास खानेवाले जन्तु प्रसन्न होने लगे, दिनमें घूमनेवाले सब सो गये, उस भयानक घोर रात्रिके प्रथम पहरमें शोकसे व्याकुल तीनों वीर एक स्थानमें बैठकर विचार करने लगे, और उस ही कुरुकुल नाशके शोकसे व्याकुल होगये।

उस समय तीनों परिश्रम, घाव और निद्रासे व्याकुल थे, इसलिये पृथ्वीमें लोट गये, तब सदासे सुख भोगनेवाले, दुःख भोगनेमें असमर्थ शोकसे व्याकुल उत्तम शय्यामें सोने योग्य महारथ कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा, अनाथके समान पृथ्वीहीमें सोगये परन्तु क्रोध भरे अश्वत्थामाको निद्रा न आई और सापके समान सांस लेते रहे फिर बार बार क्रोधमें भरकर महाबाहु, अश्वत्थामा उस अनेक जन्तुओंसे भरे घोर वनको देखने लगे। फिर उस बरगदके ऊपरको देखा।

हे महाराज! उस बरगद पर सहस्रों कौवे निःसन्देह सो रहे थे, उसी समय एक भयानक शब्दवाला बड़े शरीर, नखों और कच्ची आखवाला और गरुड़के समान वेगवाला उल्लू आया तब उसने चुप होकर उन सोते हुये कौओंमें प्रवेश किया और शाखापर जाकर सोते हुए सहस्रों कौओंको मारडा[ला] किसीके पङ्ख काट दिये, किसीका शिर [काट] दिया और किसीके पैर काट दिये अर्थात् [जो] कौआ उसके आगे आया उसीको मारडा[ला] क्षण भरमें उस बड़गदके सब कौवे [उसने] मारडाले और वह स्थान मरे हुये कौ[ओंके] शिरोंसे भर गया। बलवान् उल्लू अपने [शत्रु कौ]ओंको मारकर बहुत प्रसन्न हुआ।

उल्लूका यह घोर कर्म्म देखकर अश्वत्थामा[ने] विचारा कि इस पक्षीने हमको अच्छा उप[देश] किया, शत्रुओंके मारनेका यही समय है [और] यही रीति है, मैंने राजाके आगे पाण्डव[ोंके] मारनेकी प्रतिज्ञा करी है, परन्तु मैं शस्त्रध[ारी] विजयी पाण्डवोंको दूसरी रीतिसे नहीं [मार] सक्ता, अब ऐसे ही पाण्डवोंका नाश करूं[गा] यदि न्यायसे युद्ध करूं तो अवश्य ही मेरा [नाश] इस प्रकार होगा जैसे आगमें पड़नेसे फ[तिंगा] जल जाता है, इस समय केवल कपट ही[से] मेरा काम सिद्ध होसक्ता है, यद्यपि यह नियम [है] कि संशयवाले कामोंसे निःसन्देह काम करन[ा] अच्छा है, महात्माओंने यह भी कहा है [कि] जगत्में नीच काम करनेसे निन्दा होती है परन्तु क्षत्रियधर्म्म करनेवालेको चरण चरणप[र] निन्दित और दुष्ट कर्म्म करने होते हैं, पाण्ड[वों]ने भी इस युद्धमें अनेक अधर्म्म करे हैं, महा[त्मा]ओंने भी ऐसा कहा है कि चाहे शत्रु थक[ा] हो, चाहे भागता हो, चाहे भोजन करता हो चाहे चला जाता हो और चाहे बैठा हो उसे अवश्य मारना चाहिये। जिस सेनाका स्वामी मर गया हो, जिसके दो टुकड़े होगये हों, तो सेना सोता हो उसे आधी रातमें मारना चाहिये। यही तप जाननेवाले महात्माओंका सिद्धान्त है।

ऐसा विचारकर प्रतापवान् अश्वत्थामाने पाञ्चाल और पाण्डवोंके मारनेके लिये दुष्ट बुद्धि करी, फिर सोते हुए अपने मामा कृपाचार्य्य

और कृतवर्म्माको जगाया, तब महाबलवान् कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा उठे और लज्जित होकर अश्वत्थामाके वचनका कुछ उत्तर न दिया, तब थोड़े समयतक बिचारकर आखोंसे आसू भरकर अश्वत्थामा कहने लगे। महा-बलवान् एक वीर राजा दुर्य्योधन मारे गये। इन्होंके लिये हम लोगोंसे और पाण्डवोंसे वैर हुआ था, धर्म्मात्मा एकले दुर्य्योधनको अनेक पापियोंने मिलकर मार डाला, पापी चुद्र भीमसेनने ग्यारह अक्षौहिणीके स्वामी महाराजके शिरपर पैर धरा, यह बहुत ही अन्याय किया इस समय पाञ्चाल प्रसन्न होरहे है, हंस रहे है, शङ्ख और नगारे बजा रहे हैं, ये देखो वायुसे उछलते हुए समुद्रके समान पाण्डवोंकी सेनाके बाजोंका शब्द होरहा है, देखो घोड़े हींच रहे हैं, हाथियोंका शब्द होरहा है, ये इनके रथोंका शब्द सुनकर हमारे रोंवे खड़े हुये जाते हैं, पाण्डवोंने जो कौरवोंका नाश किया उस सेनामेंसे केवल हम तीन ही बचे है, जो बीर मारे गये उनमेंसे किसीको सौ हाथीका बल था और कोई सब शस्त्र विद्याके जाननेवाले थे, देखो समय बड़ा कठिन है कोई यह नहीं जानता था कि इस कामका यह फल होगा निश्चय ही कार्य्योंकी गति बहुत कठिन हैं आप इस आपत्तिके समयमें क्या करना चाहिये और क्या करनेसे हमारा कल्याण होगा सो कहिये ?

१ अध्याय समाप्त।

कृपाचार्य्य बोले. तुमने जो कहा सो हमने सब सुना अब कुछ हमारे भी वचन सुनो, हे महाबाहो ! सब मनुष्य प्रारब्ध और उद्योगके वश्य हैं. केवल प्रारब्धहीसे सब काम सिद्ध नहीं होते और केवल उद्योगहीसे सब काम सिद्ध नहीं होते. अर्थात् प्रारब्ध और उद्योग इन दोनों हीसे काम सिद्ध होते हैं, जगतमें तीन प्रकारके काम होते हैं, एक उत्तम दूसरा मध्यम और तीसरा अधम और तीनो ही काम बिना प्रारब्ध सिद्ध नहीं होते। कहीं जो एक काम यत्नसे सिद्ध होता है और कहीं वही काम उसही यत्नसे नष्ट होता दीखता है, देखो जब जुते हुये खेतमें मेघ बर्षता है तब कैसा उत्तम फल होताहै और वही मेघ जब पर्व्वतपर बर्षता है, तो क्या फल होता है? परन्तु हां रीति है कहीं प्रारब्ध उद्योगकी सहायता करता है, और कहीं उद्योग प्रारब्धकी सहायता करता है, पण्डितोंने पहिलेको मुख्य माना है जैसे उत्तम जल बर्षनेसे बीजके गुण बढ़ते है, ऐसे ही प्रारब्धकी सहायतासे कर्म्म करनेसे सिद्धी होती है, पण्डित लोग प्रारब्धको बिचार कर उद्योगमें प्रवृत्त होतेहै, महापुरुष होनेपर भी यदि प्रारब्ध छोड़कर उद्योग करना चाहे तो वह व्यर्थ होजाता है। अब पण्डित और मूर्खोंमें केवल इतना ही भेद दीखता है कि मूर्ख आलस्यके बश होकर उद्योग करना ही नहीं चाहते परन्तु पण्डित उसे उलटा व्यवहार करते है। अर्थात् उद्योग करते है और प्रारब्धको मुख्य मानते है, जगत्में किये हुये कर्म्मका फल अवश्य ही मिलता है, परन्तु उत्तम कर्म्मके बिना किये पश्चाताप रहता है। यदि कोई मनुष्य बिना उद्योग किये प्रारब्धसे कुछ फल पाय जाय और जो परिश्रम करनेपर भी फल न पावे तो इन दोनोंकी निन्दा करनी चाहिये। उद्योगी जगत्में सुखसे जीता है, और आलसीको सुख नहीं होता क्यो कि जगत्में प्राय उद्योगी ही सुखी दीखते है, यदि परिश्रमी परिश्रम करनेपर भी कुछ फल न पावे तो उसे पछताना नहीं पड़ता अथवा परिश्रमका फल ही भोगता है. जो आलसी बिना कर्म्म किये फल पाते है. लोग उसकी निन्दा अनेक प्रकारकी बात कहते हैं और ...

मनुष्य उससे द्वेष भी करते हैं। इसलिये बुद्धिमानोंने यह निश्चय किया है, कि इन दोनों विषयोंको छोड़कर कार्य्य सिद्ध करनी चाहिये, अर्थात् परिश्रमका फल भोगना चाहिये, और बिना परिश्रमका धन न लेना चाहिये यदि मनुष्य केवल प्रारब्ध या कर्म्महीको छोड़कर कोई कर्म्मकी सिद्धि करना चाहे तो सिद्धी नहीं होती अर्थात् दोनोंहीसे कर्म्म करनेसे सिद्ध होता है, जो मनुष्य उद्योगको छोड़कर सिद्धी चाहता है उसका फल सिद्ध नहीं होता; जो उद्योगी मनुष्य देवतोंको नमस्कार करके अत्यन्त विचारपूर्व्वक उद्योग करता है, उसके भारी विघ्न भी नष्ट नहीं कर सकते अर्थात् उसका कार्य्य अनेक विघ्न होनेपर सिद्ध होता ही है. अत्यन्त विचारका अर्थ यह है कि बूढ़ोंकी सेवा करना, उनकी सम्मति बूझनी और उनहीके कहे हुए वचनोंको करना मनुष्यको उचित है, प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर बूढ़ोंके पास जाय क्यों कि बूढ़ोंकी सम्मति सुखका मूल है और उसी सम्मतिसे कार्य्यसिद्धी भी होती है, जो मनुष्य ऐसा करता है उसकी कार्य्यसिद्धि अवश्य होती है, जो मूर्ख लोभ, मोह क्रोध और भयके वश होकर कोई कार्य्य करना चाहता है. उस मूर्खकी लक्ष्मी शीघ्र ही नष्ट होजाती है, वो अदूरदर्शी लोभी और मूर्ख दुर्य्योधनने कल्याण करनेवालोंके वचनोंका निरादर करके मूर्खोंकी सम्मतोंसे मूर्खतामें भरकर अनेक बार रोकनेपर भी बिना विचारे महात्मा पाण्डवोंसे वैर किया था। परन्तु वह इस कार्य्यके करनेमें समर्थ न था, यह पहिलेहीसे दुष्टचित्त था, किसीके वचन नहीं मानता था, अब हम भी उस ही पापीकी सहायता करते हैं, इसलिये हम लोग भी महा अधर्म्मी और पापी होगये, मैं यही विचार रहा हूं और इसीसे मेरी बुद्धी इस समय नष्ट होगई है, क्या करना चाहिये, यह कुछ नहीं जान पड़ता और यह भी नियम है कि जब मनुष्यकी बुद्धि नष्ट होजाय तब उ अपने मित्रोंसे सम्मति पूंछनी चाहिये, क्यों ऐसे समयमें वेही उसका कल्याण कर सकते पण्डितोंने ऐसा कहा है, कि उस समय यथा मित्र जैसा कहे वैसाही करना उचित है। इ लिये हमारी बुद्धिमें ऐसा आता है। कि यहां चलकर महाराज धृतराष्ट्र गान्धारी औ महात्मा विदुरसे यह वृत्तान्त कहैं, फिर वे लो जैसा कहेंगे, वैसाही करनेमें हमारा कल्याण होगा, क्यों कि बिना उद्योग किये कहीं फल प्राप्त नहीं होता। यदि उद्योग करनेपर कार्य्य सिद्धि न होय तो उसमें मनुष्यका कुछ दोष नहीं और उसे ही प्रारब्ध कहते है।

२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज। कृपाचा अर्थ और धर्म्मसे भरे उत्तम वचन सुन जलती हुई अग्निके समान क्रोधमें भर मनको दूषित करके अश्वत्थामा कृपाच और कृतवर्म्मासे बोले।

हम यह जानते हैं, कि जगत्‌में सब म ष्योंकी बुद्धि अलग अलग होती है, और लोग अपने अपनेको महाबुद्धिमान जान अपनी अपनी प्रशंसा किया करते हैं। अ अपने अपनेको बड़ा समझते है। सब लो अपनी अपनी बुद्धिकी साधु कहते हैं, परन्तु कारण और समयके अनुरोधसे अनेक प्रकार बुद्धियोंमेंसे एक बुद्धिको स्थिर करता है, औ जो दूसरोंकी सम्मति सुनकर प्रसन्न होता है उसहीका कार्य्य सिद्ध होता है, मनुष्यों चित्तकी वृत्ति अलग अलग होती है, इसी लिये समय समयपर व्याकुल होकर अनेक अनेक प्रकारकी बुद्धि उत्पन्न होती हैं। जो अपनी स्थिर करी हुई बुद्धिको छोड़कर दूसरेके सम्मतियोंको स्वीकार करता है। उसको बुद्धि

अनेक प्रकार बुद्धियोंसे नष्ट होजाती है, जैसे वैद्य अत्यन्त सावधान होकर चिकित्सा करता है, और रोगको शान्त करता है, ऐसे ही जो बुद्धिमान मनुष्य कार्य्योंको जानकर भी केवल अपनी बुद्धिसे कार्य्योंको करता है, उसकी लोग निन्दा करते हैं। युवा अवस्थासे मनुष्य दूसरी ही बुद्धिसे मोहित रहता है, मध्य अवस्थामें कुछ और ही बुद्धि होजाती है और बुढापेमें कुछ और बुद्धि अच्छी लगा करती है, हे कृतवर्म्मन्! जब मनुष्यको घोर आपत्ति आकर पडती है, अथवा बहुत अधिक धन प्राप्त होजाता है, तब उसकी बुद्धि नष्ट होजाती है, परन्तु जब एक ही मनुष्यको असर्म्म करनेके कारण अनेक प्रकारकी बुद्धि होती है, तब वह बुद्धि किसीको अच्छी नहीं लगती, जो अपनी बुद्धिके अनुसार अत्यन्त निश्चय करके कार्य्यका उद्योग करता है, तब वही बुद्धि उसके उद्योगकी सहायता करती है।

हे कृतवर्म्मन्! मनुष्य मरणपर्य्यन्त कार्मोंको भी अच्छा ही समझकर करता है, क्यों कि मनुष्य जिस कामको कर्ता है उसमें अपनी समस्त बुद्धिको लगा देता है और उस ही कर्म्मको अपना कल्याणदायक समझ लेता है।

इस समय इस घोर आपत्तिमें पड़नेके कारण जो बुद्धि मुझे उत्पन्न हुई है उससे मेरा शोक नष्ट होगया। अब तुम दोनोंसे यही कहता हूं सुनो, ब्रह्माने जब सृष्टि बनाई थी तब ही उन्होंने सब वर्णोंके कर्म्म भी अलग अलग बना दिये थे और सबमें एक एक गुण भी दे दिया था। ब्राह्मणोंको वेद पढ़ना, क्षत्रियोंको तेज बढ़ाना, वैश्योंको धन कमाना और शूद्रोंको सबकी सेवा करनी। जो ब्राह्मण इन्द्री न जीत सके, जो क्षत्री तेजस्वी न हो, जो वैश्य धन न इटा सके और जो शूद्र इनकी सेवा न करे तो इन सबकी निन्दा करनी चाहिये।

यदि आप ने जगत्पूरित ब्राह्मण वंशमें उत्पन्न हुआ हूं परन्तु अभाग्य होनेके कारण क्षत्रिय धर्म्मको धारण कर रहा हूं सो आपत्तिमें इस क्षत्रियधर्म्मको धारण करके भी अब छोड़ दूं और ब्राह्मणोंका धर्म्म करने लगूं तो अच्छा नहीं, यह दिव्य धनुष और इन दिव्य बाणोंको धारण करके भी यदि पिताके मारनेका बदला न लूं तो महात्माओंमें बैठकर क्या कहूंगा?

अब मैं क्षत्रिय धर्म्मका आश्रय लेकर अपने पिता और महाराजके पास स्वर्गमें जाऊंगा, इस समय विजयी पाञ्चाल सेना थककर विजय पाकर कवच खोलकर अत्यन्त विश्वासपूर्व्वक सो रही है, सो अभी मैं डेरोंमें घुसकर भूतके समान उनका नाश कर दूंगा। आज मैं धृष्टद्युम्नादि सब क्षत्रियोंको इस प्रकार मारूंगा, जैसे इन्द्र दानवोंको मारता है। आज डेरोंमें घुसकर इस प्रकार क्षत्रियोंको मारूंगा, जैसे बढी हुई अग्नि सूखे काठको जलाती है, आज पाञ्चालोंका नाश करके ही शान्त होऊंगा, आज युद्धमें मैं पाञ्चालोंके लिये ऐसा भयानक बनूंगा, जैसे प्रलयकालमें प्रजाके लिये साक्षात शिव। आज मैं पाञ्चाल और पाण्डवोंको मारकर प्रसन्न होकर इधर उधर खींचता फिरूंगा, आज पाञ्चालोंके शरीरसे पृथ्वीको पूर्ण करके पिता, राजा दुर्य्योधन, कर्ण, भीष्म और जयद्रथादिके ऋणसे छूटूंगा, आज पाञ्चालोंको दुर्लभ स्थान दिखाऊंगा, आज पाञ्चालदेशीय महाराज धृष्टद्युम्नका शिर अपने बलसे ऐसा काटूंगा, जैसे कोई पशूका काटता है।

हे कृपाचार्य्य! आज सोते हुये पाञ्चाल और पाण्डवोंके बालकोंके शिर मेरे तेज धारवाले खड्गसे कटेंगे। हे महाबुद्धिमन्! आज समस्त सोते हुए पाञ्चालोंको रातमें मारकर मैं सुखी और कृतकृत्य हूंगा।

३ अध्याय समाप्त।

कृपाचार्य्य बोले, हे वीर! आज प्रारब्धहीसे तुम्हें ऐसी बुद्धि उत्पन्न हुई। तुम्हें साक्षात बज्रधारी इन्द्र भी युद्धमें नहीं रोक सक्ता, परन्तु हमारी बुद्धिमें यह आता है कि इस समय तुम कवच खोलकर रथसे ध्वजा उतारकर सो रहो प्रातःकाल होते ही हम कृतवर्म्मा तुम्हारे सङ्ग चलेंगे और सब शत्रुओंका नाश करेंगे।

हे महारथ! तुम हमारी सहायतासे सेना सहित पाञ्चालराजको मारियो, तुम सब कुछ करनेमें समर्थ हो परन्तु कई दिनसे जाग रहे हो इसलिये इस समय सो रहो जब तुम्हारा परिश्रम दूर होजायगा और सोनेके कारण चित्त सावधान हो जायगा तब हम लोगोंकी सहायतासे तुम निःसन्देह शत्रुवोंका नाश करोगे, जब तुम रथपर बैठकर धनुष धारण करोगे तब साक्षात् इन्द्र भी तुमको नहीं जीत सकेंगे, जब कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा तुम्हारी रक्षा करेंगे, तब साक्षात् इन्द्रकी क्या सक्ती है, जो तुमसे युद्ध कर सके? इसलिये अब हम लोग रात्रिभर सोवें और प्रातःकाल होते ही घोर युद्ध करेंगे और इनको मारेंगे, इसमें सन्देह नहीं तुम्हारे पास सब दिव्य बाण है और कृतवर्म्मा भी महाधनुषधारी और सब प्रकारकी युद्धविद्या जाननेवाले हैं, सो हम तीनो मिलकर प्रतःकाल शत्रुओंसे युद्ध करेंगे और युद्धमें शत्रुओंको मारकर अत्यन्त प्रसन्न होंगे।

अब तुम सावधान होके इस समय सोरहो, प्रातःकाल होतेही हम और कृतवर्म्मा दोनो धनुष धारण करके उत्तम रथोंपर चढ़कर तुम्हारे सङ्ग चलेंगे और युद्ध करते हुए शत्रुओं को अपना नाम सुनाकर मारेंगे फिर उनको निर्म्मल दिनमें मारकर तुम इस प्रकार सुख कीजिए जैसे दानवोंको मारकर इन्द्र; जैसे इन्द्र क्रोध करके दानवोंके मारनेमें समर्थ है, ऐसेही तुम सब पाञ्चालोंको मारनेको समर्थ हो, हे वीर! जब हम और कृतवर्म्मा तुम्हारी युद्धमें रक्षा करेंगे, तब साक्षात् इन्द्र भी तुम्हें नहीं जीत सक्ते हम तुमसे सत्य कहते हैं कि हम और कृतवर्म्मा शत्रुवोंको बिना जीते युद्धसे न छूटेंगे। अवश्य ही पाञ्चाल और पाण्डवोंको मारेंगे, अथवा उनके हाथसे मरकर स्वर्गको जांयगे।

हे महाबाहो! अधिक क्या कहैं हम सब प्रकारसे प्रातःकाल तुम्हारी सहायता करेंगे।

अपने मामाके ऐसे कल्याण भरे बचन सुन अश्वत्थामाके नेत्र क्रोधसे लाल होगए, और ऐसा बचन बोले, रोगी और क्रोधभरे मनुष्यको अर्थ चिन्ता न करनेवालेको और कामीको निद्रा कहा? आज हमको भी वही समय आगया है, अब इस युद्धमें केवल मेरा ही चौथा भाग शेष है, इसीसे मेरी निद्रा नष्ट होगई।

हाय द्रोणाचार्य्य मारे गये, मैंने प्रसन्न पाञ्चालोंसे ये शब्द अपने कानोंसे सुने इससे अधिक दुःख और जगत्में क्या होगा? आपके देखते देखते इन पापियोंने मेरे पिताको कैसे मारा? यह स्मरण करके मेरा हृदय रातदिन जला करता है, आपके देखते देखते हमारे पिताका जैसा निरादर हुआ सो स्मरण करके मेरे शरीरके मर्म्मस्थान फटे जाते हैं, मुझ ऐसे मनुष्यको एक मुहूर्त्तभर भी जीना उचित नहीं मैं बिना धृष्टद्युम्नके मारे जी नहीं सक्ता, इसने मेरे पिताको मारा है, इसलिये मैं भी इसे मारूंगा, और इसके सब सङ्गियोंको भी मारूंगा देखो जङ्घा टूटे राजा हमारे आगे कैसे रोते थे, जगत्में ऐसा कौन कठोर होगा, कि राजाके बचन, सुनकर जिसका हृदय न जलने लगे! आखोंसे आसू न आय जाय? मेरे जीते जी मित्रका नाश होगया, यह स्मरण करके मेरा शोक ऐसे बढ़ता है, जैसे अधिक जल होनेसे समुद्रकी तरङ्ग। मेरा चित्त इस समय एकाग्र है, तब निद्रा और सुख कहा? उनको इस

और अर्जुन रक्षा करते हैं, इसलिये युद्धमें साक्षात इन्द्र भी नहीं जीत सक्ता, मैं इससे अपने क्रोधको रोक नहीं सकता और जगत्में किसीको ऐसा भी नहीं देखता जो इसे शान्त कर सके। मैंने वाचीत वह मनुष्योंके मुखसे यह सुना है कि मेरे मित्र दुर्योधनका निरादर हुआ इसलिये मैंने आपसे जो कुछ कहा वही निश्चय है, पाण्डवोंकी विजय ही सुनकर मेरा हृदय जला जाता है अब मैं शत्रुओंका नाश करके ही सावधान होकर सुखसे सोऊंगा।

४ अध्याय समाप्त।

५

कृपाचार्य्य बोले, मूर्खको कितना ही समुझाओ तो भी वह नहीं समझता, हमारी बुद्धिमें ऐसा आता है, कि जिस मनुष्यके वशमें इन्द्री नहीं होती वह पूरी रीतिसे अर्थ और धर्म्मके जाननेमें समर्थ नहीं होता, इसी प्रकार महाबुद्धिमान भी नम्रताके मारे, दूसरे प्रकारकी शिक्षा ही नहीं सुनता। इसी लिये यह भी पूर्ण रीतिसे धर्म्म और अर्थके विषयोंको नहीं जान सक्ता। यदि मूर्ख वीर बहुत दिनतक भी पंडितोंकी सेवा करे, तो भी धर्म्मको इस प्रकार नहीं जान सक्ता, जैसे करछी भोजनके रसको और बुद्धिमान उन्हीं पंडितोंके पास क्षणमात्र बैठनेसे भी धर्म्मको इस प्रकार जान लेता है, जैसे जीभ अन्नके रसोंको जो धर्म्म सुननेकी इच्छावाला मनुष्य इन्द्रियोंको वशमें कर लेता है, वह बुद्धिमान सब शास्त्रोंके तत्वको शीघ्र ही जान लेता है, और ग्रहण करने योग्य विषयोंसे विरोध नहीं करता जो अभिमानी, बड़ोंके वचन न माननेवाला नीच पुरुष कल्याणको छोड़कर पाप करता है, वही पापी होता है।

सनाथ मित्रको मित्र पापसे रोकते हैं, और महात्मा ही मित्रोंके वचन सुनकर पापसे बचते हैं और पापी नहीं। जैसे मित्र अनेक प्रकारके वचन कहकर पागलको समुझाते हैं। ऐसे ही साधारण मनुष्यको भी समयपर समझाना चाहिये। जब देखे कि हमारा कोई बुद्धिमान मित्र पाप करता है, तब पंडितको उचित है, कि अपनी शक्तिभर उसे बार बार रोके यदि वह पाप करनेवाला मित्र भी अपने मनमें समझे कि यह बात कल्याणकी है तो उसे पीछे पछताना न पड़ेगा. सिद्धान्त यह है, कि जो मनुष्य सोता हो, जिसके पास शस्त्र न हो, जो कहे कि हम आपहीके हैं, जो शरणागत हो जिसके बाल खड़े हो और जिसका वाहन छूट गया हो ऐसे मनुष्योंको मारना धर्म्म नहीं। इस समय सब पाञ्चाल विश्वास सहित कवच खोलकर प्रेतके समान अचेत सो रहे हैं, जो पापी मूर्ख इस समय उनसे द्रोह करेगा वह अवश्य ही अपार घोर नरकमें जायगा।

हमारी यह इच्छा है कि तुम सब शस्त्र जाननेवाले और प्रसिद्ध वीर हो तुम्हें जगतमें थोड़ा भी कलङ्क न लगने पावे। प्रातःकाल होते ही तुम सूर्य्य के समान तेज धारण करके सब शत्रुओं को जीतियो यदि तुम रीति पाञ्चालोंको मारोगे तो तुम्हारे जीवनमें ऐसा कलङ्क लग जायगा जैसे सफेद वस्त्रमें लाल रङ्गका धब्बा।

अश्वत्थामा बोले, हे मामा! आपने जो कहा वह सब वसे ही है, इसमें कुछ सन्देह नहीं परन्तु पाण्डवोंहीने पहिले इस धर्म्म रूपी पुलको काटकर सैकड़ों टुकड़े कर दिये हैं, अनेक राजा और आपके देखते देखते शस्त्ररहित हमारे पिताको धृष्टद्युम्नने मार-डाला। जिस समय महारथ कर्णका पहिया पृथ्वीमें घुस गया था और वे उसके निकालनेमें महापरिश्रम कर रहे थे उसी समय अर्जुनने उन्हें मारडाला, शिखण्डीको आगे करके अर्जुनने शस्त्ररहित भीष्मको मारा, महाशस्त्रधारी भूरिश्रवाको व्रतमें बैठे देखकरभी अनेक राजोंके रोकनेपर भी सात्यकीने मारडाला। भीम-

सेनने गदायुद्धमें अधर्मसे राजाको मारा और उनके शिरपर पैर रक्खा, देखो अनेक महारथोंने मिलकर पुरुषसिंह महाराजको मरवा दिया, जांघ टूटे राजा मेरे आगे कैसे रोते थे, यह स्मरण करके मेरे शरीर जले जाते हैं; ऐसे पापी पाञ्चाल धर्मके छोड़नेवालोंकी निन्दा करते नही और हमारी निन्दा करते हो। चाहे मैं अगले जन्ममें कीड़ा हूं चाहे पतङ्गा बनूं परन्तु अपने पिताके मारनेवाले पाञ्चालोंको सोते ही मारूंगा, अब मैं अपने कर्मके लिये बड़ी ही शीघ्रता करता हूं, सो मुझे सुख और निद्रा कहां? जगत्में कोई मनुष्य ऐसा नहीं है, न होगा जो मुझे इनके मारनेसे रोके।

सञ्जय बोले, ऐसा कहकर प्रतापवान् अश्वत्थामा उठे और अपने रथमें घोड़े जोड़कर एकलेही शत्रुवोंकी ओर चल दिये, तब महात्मा कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा बोले, हे पुरुषसिंह। आपने अपने रथमें घोड़े क्यों जोड़े? आपके चित्तमें क्या आया है? हम लोग प्रातःकाल होते ही आपके सङ्ग युद्ध करनेको चलेंगे और आपके समान ही सुखदुःख भोगेंगे परन्तु इस समय आप कहां जाते सो कहिये?

उनके वचन सुन क्रोध भर अश्वत्थामा अपने पिताके मरनेका स्मरण करके अपनी इच्छा प्रकाशित करने लगे। आप लोग जानते हैं कि हमारे पिताने अपने तेज बाणोंसे लाखो बीरोंको मारा था और पीछे शस्त्र त्यागनेपर धृष्टद्युम्नने उन्हें मार डाला अब मैं भी उस पापी, अधर्मी, शस्त्ररहित, धृष्टद्युम्नको वैसे ही पाप कर्मसे मारूंगा, मैं उस पापीको बिना शस्त्र ही पशुके समान मारूंगा, जिसमें उसे स्वर्ग न हो। आप दोनो महारथ शीघ्र कवच पहिनकर खड्ग और धनुष धारण करके वही खड़े खड़े हमारे लौटनेका मार्ग देखो।

ऐसा कहकर अश्वत्थामाने अपना रथ हांका और शत्रुओंकी ओरको चले उनके सङ्ग कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा भी चले उस समय इन तीनों बीरोंका ऐसा तेज दीखता था, जैसे यज्ञमें जलती हुई अग्नि चलते चलते थे तीनों बीर पाण्डवोंकी सेनाके पास पहुंचे और देखे तो वहां सब बीर सोते हैं तब महारथ अश्वत्थामा रथसे उतरे और द्वारपर गये।

५ अध्याय समाप्त।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय। अश्वत्थामाको डेरोंके द्वारपर खड़े देख कृपाचार्य और कृतवर्म्माने क्या किया सो हमसे कहो?

सञ्जय बोले, अश्वत्थामाको द्वारपर खड़े देख दोनो बीरोने उनके संग सम्मति करी, तब क्रोध भरे अश्वत्थामा थोड़ा और आगे बढ़े तब उन्होने द्वारपर चन्द्रमा और सूर्य्यके समान तेजस्वी बड़े शरीरवाले बाघका चमड़ा ओढ़े काले हरिनका चमड़ा बिछाए जनेऊ पहिने अनेक मोटे मोटे हाथोंमें शस्त्र लिये, सांपका बाजू बन्द पहिने, जलती हुई अग्निरूपी नेत्र युक्त, भयानक, बड़ी बड़ी दाढवाला मुख फैलाए, सहसा नत्र खोले एक भूतको देखा हम उस भूतके शरोरका बर्णन नहीं कर सकते उसको देखकर पर्व्वतभी फटते थे।

अश्वत्थामाका देखते ही उस भूतके आंख कान और नाकसे आगको सहसा भयानक ज्वाला निकलने लगीं और उन ज्वालावोंसे सहस्रो शङ्ख, चक्र, गदाधारी विष्णु उत्पन्न होगये। उस भयङ्कर भूतको देखकर अश्वत्थामा कुछ न डरे और सावधान होकर सहस्रो दिव्य बाण उसके ऊपर चलाने लगे। अश्वत्थामाके सब दिव्य बाण उसके शरीरमें जाकर गुप्त होगए। अश्वत्थामा उस अद्भुत कर्म्मको देखकर बिचारने लगे। जैसे बड़वाग्नि समुद्रके जलको भस्म कर देती है, ऐसे

ही मेरे बाण इस भूतके शरीरमें गुप्त और निरर्थक होगये।

अनन्तर अश्वत्थामाने जलती हुई अग्निके समान तेज भरी एक सांगी लेकर मारी, तब वह शक्ती उसके शरीरमें लगकर इस प्रकार टूट गई जैसे प्रलयकालकी बिजली सूर्य्यसे लगनेसे।

अनन्तर चमकते हुए आकाशके समान सुन्दर सोनेके मूठवाला खड्ग उस भूतके शरीरमें मारा, वह खड्ग म्यानसे इस प्रकार निकला जैसे बिलसे सर्प निकलता है, तब वही खड्ग उस भूतके शरीरमें मारा, परन्तु वह उस भूतके शरीरमें ऐसे गुप्त होगया, जैसे बिलमें नवाल घुस जाता है तब अश्वत्थामाने क्रोध करके इन्द्रकी ध्वजाके समान लम्बी तेजसे भरी गदा मारी वह भी उसके शरीरमें चली गई।

तब अश्वत्थामाके पास कुछ शस्त्र न रहा उस समय अश्वत्थामा शस्त्ररहित होकर इधर उधर देखने लगे। तब देखा कि आकाश विष्णुवोंसे भर रहा है।

इस अद्भुत बातको देखकर शस्त्ररहित अश्वत्थामा दुःखी होकर कृपाचार्य्यके वचन स्मरण करके विचारने और मन कहने लगे कि जो अपने मित्रोंके कड़वे वचन नहीं सुनता वह हमारे समान आपत्तिमें पड़कर शोचता है। जो शास्त्र न पढ़ा मूर्ख बूढ़ोंके वचन न मानकर पाप करता है उसे अवश्य आपत्तिमें पड़ना होता है।

महात्मा गुरुवोंने ऐसा उपदेश किया है, कि गौ, ब्राह्मण, राजा, मित्र, स्त्री, माता, गुरु, दुर्बल, मूर्ख, अन्धे, सोते, डरे और सोकर उठो समय उठे तथा पागल, मतवाले और प्रमत्त मनुष्यपर शस्त्र न चलावे।

परन्तु मैं सनातन शास्त्रमें लिखे धर्मको छोड़कर अधर्म करना चाहता था। इसी लिये इस घोर आपत्तिमें पड़ा. महात्मा इसे ही घोर आपत्ति कहते हैं, कि जो मनुष्य जिस कामको करना चाहे और भयसे उस कामको बिना करे लौट आवे। जैसे असमर्थ कर्म्म नहीं कर सक्ता, वैसेही उद्योगी मनुष्य जब लौटता है. तब वह भी उसीके समान होजाता है। जगत्में प्रारब्धके आगे मनुष्यका कर्म्म नहीं चलता परन्तु यदि मनुष्य परिश्रम करके अपने कार्य्यको समाप्त न कर सके और धर्म्मसे भी नष्ट होजाय, तब आपत्तिमें अवश्य ही पड़ता है।

पण्डित मनुष्यको उचित है, कि कामके आरम्भसे पहिले ही उसके बिगड़ने और सुधरनेके विषयोंको देख ले नहीं तो पीछे मेरे समान दुःखमें पड़कर भयसे कार्य्य छोड़कर निवृत्त होना पड़ता है, मैंने बिना विचारे यह काम किया था, जो ही द्रोणाचार्य्यका पुत्र युद्धसे नहीं लौटेगा, परन्तु यह भूत दैवके समान खड़ा है मैं अत्यन्त विचारने पर भी इसको नहीं समझ सक्ता, मुझे यह निश्चय होता है, कि मैंने जो अधर्म्म करना विचारा था, यह उसीका भयानक फल मेरा नाश करनेको आया है, मेरी प्रारब्धमें यही लिखा था, कि युद्धसे लौटना पड़ेगा, अन्यथा मुझको युद्धसे लौटानेकी समर्थ किसकी थी?

अब मैं कपाल मालाधारी, सूर्य्य नेत्रवाले, भक्तोंका दुःख दूर करनेवाले, रोगरहित, जटाधारी भगवान शिवकी शरण जाता हूं, वे ही मेरे इस घोर दुःखको दूर करेंगे वे तप और बलके कारण सब देवतोंसे अधिक हैं, इसलिये मैं उनही शूलधारी शिवकी शरण जाता हूं।

६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! ऐसे कहकर अश्वत्थामा पृथ्वीसे खड़े होकर प्रणाम करके शिवकी स्तुति करने लगे।

अश्वत्थामा बोले, हम महातेजस्वी, स्थिर, कल्याणरूप, रुद्र, सर्व्व जगत्के स्वामी, ईश्वर,

पर्व्वतपर सोनेवाले, वर देनेवाले, विहार और प्रकाश करनेवाले, जगतभावन ईश्वर, नीलकण्ठ, सनातन, व्यापक, दक्षयज्ञ विनाशक, भक्तदुःखनाशक, जगद्रूप, विरूपाक्ष, अनेक रूपधारी, पार्व्वतीपति, श्मशानवासी, महाबलवान गणोंके स्वामी, सर्व्व व्यापक, नरपञ्जर धारी, रुद्र, जटा धारी, ब्रह्मचारी, त्रिपुरासुर नाशक, स्तुतिकरने योग्य, स्तुति किये हुये देवतोंसे, स्तुतियोग्य, अनन्त, कृत्तिवासा, विलोहित, नीलकण्ठ, न सहनेयोग्य, दुःख निवारण करने योग्य, इन्द्र, ब्रह्माको बनानेवाले, ब्रह्म, ब्रह्मचारी, व्रतधारी, तपस्वी गपार, तपस्वियोंको फल देनेवाले, अनेक रूपधारी, त्रिनेत्रगणोंके प्यारे, धनके स्वामी, जगत्के सुख, पार्व्वतीके हृदयके प्यारे, कार्त्तिकेयके पिता, उत्तम बैलपर चढ़नेवाले, सूक्ष्म वस्त्रधारी, पार्व्वतीको भूषण, पहिरानेवाले, उत्तमसे उत्तम, अत्यन्त उत्तम, सबसे उत्तम, उत्तम शस्त्रधारी, सब जगत्के स्वामी, सब दिशा, और देशोंके रक्षक, सुवर्ण कलशधारी, और चन्द्रमाको माथेमें धारण करनेवाले भगवान शिवको मैं अत्यन्त कठिन और शुद्ध मनसे प्रणाम करता हूं। यदि मैं इस घोर आपत्तिसे पार होजाऊं तो पवित्र होकर सब प्रकारकी सामग्रियोंसे पवित्र शिवकी पूजा करूंगा।

महात्मा सुकर्म्मी अश्वत्थामाका अभिप्राय जानकर योगके बलसे उनके आगे एक सुवर्णकी वेदी बनगई और उसमें आपसे आप आग जलने लगी, और उसकी ज्वालासे सब आकाश और पृथ्वी पूरित होगई तब उस वेदीसे अनेक हाथ पैर शिरवाले, रत्नोंके विचित्र आभूषण पहिरेहोए और पर्व्वतोंके समान शरीरवाले, अनेक गण उत्पन्न होगये।

किसीका मुख कुत्तेका, किसीका ऊंटका, किसीका गधेका, किसीका घोड़ेका, किसीका गायका, किसीका स्यारका, किसीका रीछका, किसीका बिलावका, किसीका चीतेका, किसीका कौवेका, किसीका बन्दरका, किसीका तोतेका, किसीका हंसका, किसीका हाथीका, किसीका दावीघाट पक्षीका, किसीका गरुड़का, किसीका कछुवेका, नाका शिशुमार अर्थात् घड़ियाल मगर, मछली, कछुवे, कबूतर, परेवा, मजुनामक मछलीके समान मुख था।

किसीके हाथमें कान था, किसीके हजार नेत्र थे, किसीके बड़ाभारी पेट था, किसीके शरीरमें मांसही नहीं था, किसीके कौवेका किसीका गरुड़का मुख था, किसीके शिर ही नहीं था, किसीके रीछका ऐसा मुख था किसीके नेत्र अग्निके समान थे, किसीकी बड़ी भारी जिह्वा थी, किसीका अग्निके समान र था, किसीके नेत्र और बाल अग्निके समान थे सबके चार चार हाथ थे, किसीका बकरे समान मुख था, किसीका भेड़के समान मुख था किसीका मुख शङ्खके समान था, किसीका शरीर शङ्खके समान था, कोई शङ्खकी माला पहिरे था कोई शङ्ख बजा रहा था, और कोई ख हाथमें लिये था, किसीके जटा थी, किसी पांच शिखा थीं। कोई शिर मुड़ाये था किसीका पतला पेट था, किसीके चार दांत किसीके चार जीभ थीं, किसीके कान छोटे थे थे, कोई मूंजकी करधनी पहिरे था, को शिरमें किरीट धारण किये था, और को पगड़ी बांधे था।

किसीका बड़ा सुन्दर मुख था, और को सुन्दर आभूषण पहिरे था, किसीके गलेमें का लकी माला और किसीके गलेमें नीले कमल माला थी, कोई मुकुट धारण किये थे, को उत्तम महात्म्यसे भरे थे, ऐसे सहस्रों ग अश्वत्थामाको दिखाई दिये, किसीके हाथ शतघ्नी, किसीके हाथमें लाठी, किसीके हाथ डण्डा, किसीके हाथमें भुशुण्डी, किसीके हाथ परिघ, किसीके हाथमें बाण, किसीके प्रच किसीके परश्वध, किसीके बरछी और किसी

सांप था, हाथमें सबके पास ध्वजा और पताका थीं, कोई सांपका बाजूबन्द पहने था, और कोई उत्तम विचित्र आभूषण पहिरे था।

किसीके कमरमें तूणीर बंधा था, सब धूल और मिट्टीसे भरे सफेद वस्त्र और माला पहिने थे और धूमसे वस्त्रवाले थे, कोई मृदङ्ग, कोई घण्टा, कोई गोमुख बजाते थे, कोई सोनेके समान रङ्गवाला गण नाचता था, कोई कूदता था, कोई उछलता था, कोई भागता था, कोई वेगसे दौड़ता था, किसीके बाल वायुसे उड़ते थे कोई मतवाले, हाथीके समान गर्ज्जकर इधर उधर, घूमते थे, कोई शूल और पट्टिश हाथमें लेकर भयानक रूप धारण करके दौड़ते थे, कोई अनेक प्रकारके रङ्ग वस्त्र, अनेक प्रकारकी माला कोई अनेक प्रकारकी गन्धि और रत्नोंके आभूषण किये था, वे सब शत्रुनाशन महापराक्रमी भक्तोंकी रक्षा करनेवाले और मांस तथा आन्तका भोजन करनेवाले, थे कोई चुड़ैल, कोई कर्णिकार और पिठरोदर नामक भूत थे, किसीके बड़े बड़े लिङ्ग थे, और किसीके बड़े बड़े अण्डकोश थे, किसीके बड़े बड़े दांत और किसीकी भयानक जटा थी, उस समय उन्होंने नक्षत्र, तारा, ग्रह, सूर्य्य, चन्द्रमाके समान पृथ्वी कर दई। येही सब गण चारों प्रकारके जगत्का नाश कर सकते हैं, इन्हें कहीं भय नहीं, होता यही शिवको मोहको देख सकते हैं। येही जगत्के स्वामी और सब काम करनेमें समर्थ हैं, सब विद्याओंको जाननेवाले हैं, किसीका द्वेष नहीं करते। आठो प्रकारकी ऋद्धी प्राप्त होनेपर भी अभिमान नहीं करते, इनका कर्म्म देखकर शिव भी आश्चर्य करते हैं, यह भी शिवकी सदा आराधना करते हैं, ब्राह्मणोंके वैरियोंका रुधिर पीते हैं। भगवान शिव भी मन, वचन और कर्म्मसे अपना भक्त जानकर इन्हें पुत्रके समान मानते हैं। यही सदा चारो प्रकारके नाश पीते हैं। इन्होंने विद्या, ब्रह्मचर्य्य, तप और योगसे शिवको प्रसन्न किया है, और शिवकी सायुज्य मोक्ष पाई है, भगवान सब जगत्के स्वामी शिव पार्व्वतीके सहित इनके हृदयमें निवास करते हैं।

तब ये सब गण अनेक प्रकारके बाजे बजाते हंसते, कूदते, उछलते, जगत्को डराते, अपने तेजसे सब ओर प्रकाश करते अश्वत्थामाकी ओर दौड़े और महात्मा अश्वत्थामाको सोते हुये वीरोंका तेज दिखाने लगे। और भयानक परिघ, शूल और पट्टिश लेकर अश्वत्थामाको डराने लगे। उनको देखकर तीनों लोक डर सकते हैं, परन्तु अश्वत्थामा न डरे तब धनुषधारी तलहत्थी पहिने वीर अश्वत्थामाने पवित्र धनुष और तेज बाणोंको समिध बनाकर अपने शरीरको आहुति करना चाहा अश्वत्थामाने भगवान शिवको उत्तम स्तुतिकरके ऐसा कहा।

अश्वत्थामा बोले, हे भगवन् शिव! सब जगत् आपमें स्थित है, सब जगत्के गुण आपमें विद्यमान है; मैं अङ्गिरावंशमें उत्पन्न हुआ, ब्राह्मण हूं, सो अब आपकी भक्ति और योगसे अपने शरीरकी अग्निमें जलाता हूं, यदि मैं शत्रुओंको नहीं जीत सकता तो आप इस बलीको ग्रहण कीजिये। ऐसा कहकर अश्वत्थामा उस जलती हुई अग्निमें घुस गये।

इनको अग्निमें ऊपरको हाथ किये हुये खड़ा देख साक्षात् शिव हंसकर बोले, हे प्यारे भक्त! मुझे कृष्णने सत्य, पवित्रता, कोमलता, त्याग, तप, नियम, क्षमा, भक्ति, धारणा बुद्धि और वचनसे प्रसन्न किया था, इसलिये उनके समान कोई जगत्में प्यारा नहीं है, उन्होंने मुझसे कहा था, कि तुम पाञ्चालोंकी रक्षाकरो इसी लिये मैं उनकी रक्षा कर रहा था, परन्तु अब उनका काल आगया इसलिये अब वे नहीं जी सकते।

ऐसा कहकर भगवान् शिवने उनके शरीरमें प्रवेश किया और एक तेज खड्ग दिया, तब अश्व

त्थामा तेजसे अत्यन्त प्रकाशित होने लगी, और अत्यन्त बलवान होगये।

अनन्तर ये सब भूत भी डेरेमें जाते हुये अश्वत्थामाके सङ्ग इस प्रकार चले जैसे शिवके सङ्ग चलते थे।

७ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जब महारथ अश्वत्थामाने इस प्रकार डेरेमें प्रवेश किया तब कृपाचार्य और कृतवर्मा डरसे भाग तो नहीं गये? परन्तु अश्वत्थामाको डेरोंमें घुसते हुए देख पहरे दारोंने क्यों न रोका? क्या उन्हें किसीने देखा ही नहीं? हमें जान पड़ता है कि उस कर्मको अत्यन्त भारी जानकर ये दोनों महारथ नहीं लौटे? प्रारब्धहीसे सोमक और पाण्डवोंको मारनेपर भी वे लोग जीते बच गए और दुर्योधनके सङ्ग स्वर्गको न गये? प्रारब्धहीसे ये दोनों वीर पाञ्चालोंके हाथसे बच गये कहो उस युद्धमें इन्होंने क्या क्या किया?

सञ्जय बोले, हे महाराज! जिस समय महात्मा अश्वत्थामा डेरोंके भीतर घुस गए तब कृपाचार्य और कृतवर्मा द्वारपर खड़े रहे, उनको अत्यन्त सावधानतासे द्वारपर खड़े देख अश्वत्थामा धीरेसे बोले, आप लोग अत्यन्त सावधान होकर खड़े रहिये; हमें निश्चय है कि आप सब क्षत्रियोंको मार सक्ते हैं और यह तो थोड़ेसे बचे मनुष्य हैं, तिसमें भी सोरहे हैं, मैं डेरेमें जाकर कालके समान घूमूंगा, आप लोग ऐसा यत्न कीजिये कि कोई मनुष्य जीता हुआ न भागने पावे।

ऐसा कहकर अश्वत्थामा द्वारकी ओरसे चल दिये और एक बिना द्वारके मार्गको देखकर धीरेसे कूदकर युधिष्ठिरके भयानक डेरेमें घुसे फिर अपने जीनेकी आशा और भय छोड़कर धृष्टद्युम्नके चिन्ह देखकर धीरेसे उनके डेरेमें घुसे।

हे महाराज! उस समय धृष्टद्युम्न आ[...] सब क्षत्रिय, हमने युद्धमें घोर कर्म किया है, यह विचारकर विशेषकर थकाई और घावों[...] व्याकुल होनेके कारण बेचेत सोरहे थे।

हे महाराज! अश्वत्थामाने धीरेसे धृष्टद्युम्नके डेरेके भीतर जाकर देखाकि महात्मा धृष्टद्युम्न बड़े, विस्तृत मलमलोंके बने बिछौना युक्त फूलोंकी माला लगी, उत्तम सुगन्धि चूर्ण और धूपसे सुगन्धित पलंगपर विश्राम पूर्वक निर्भय सोरहे थे।

हे महाराज! तब अश्वत्थामाने शीघ्रता[...] महापराक्रमी महारथ महायोद्धा धृष्टद्युम्न[...] एक लात मारी। उसी समय वीर धृष्टद्यु[म्न] जागे और देखा कि महारथ अश्वत्थामा आ[...] खड़े हैं, तब उन्होंने शीघ्रतासे उठना चा[हा] परन्तु अश्वत्थामाने शीघ्रतासे उनके बा[ल] पकड़कर पृथ्वीमें गिरा दिया और छातीप[र] पैर रख दिया, वीर धृष्टद्युम्न निद्रासे अत्य[न्त] व्याकुल थे इसलिये कुछ न कर सके तब अश्व[त्था]माने एक पैर उनके कण्ठपर और एक पै[र] छातीपर रखकर पशुके समान मारना आर[म्भ] किया, तब पाञ्चालराजका शब्द भी बन्द होगया।

अनन्तर उन्होंने अपने नखूनोंसे अश्वत्था[...]माको चीरना चाहा परन्तु जब वह भी न क[र] सके तब कुछ तुतलाते धीरे धीरे बोले, हे गुरु[...]पुत्र आप यह क्या करते हैं? हमें शस्त्र[से] मारिये। हे ब्राह्मणश्रेष्ठ। तब हम आपक[ी] कृपासे वीरलोकको जायेंगे उस समय शत्रु[नाशन] धृष्टद्युम्न इसके सिवाय और कुछ न क[ह] सके, वीर पाञ्चालराजपुत्र इतना ही कहकर चुप होगये, तब बलवान अश्वत्थामा बोले[...] अरे कुलाधम दुर्बुद्धे! जो लोग गुरुको मार[ते] हैं उन्हें वीर लोक नहीं मिलता इसलिये[...] शस्त्रसे मारने योग्य नहीं, ऐसा कहकर धृष्टद्यु[म्न]के मर्मस्थानोंमें बलसे लात मारने ल[गे] मरते हुए वीर धृष्टद्युम्नके शब्दसे उनके पा[...]

सोई स्त्रियां और उनकी रक्षा करनेवाले जागे उन्होंने अपने स्वामीकी ऐसी दशा देख अश्व-त्थामाको भूत जाना और भयके मारे कुछ न बोल सकीं। इसी प्रकार धृष्टद्युम्नको अश्व-त्थामाने पशुके समान मारडाला।

अनन्तर उस डेरेसे निकलकर तेजस्वी अश्वत्थामा रथपर बैठकर दूसरे डेरोंकी ओर शत्रुवोंको मारनेको दौड़े।

अश्वत्थामाके जानेके पीछे स्त्रियोंने देखा कि महाराज मरे पड़े हैं, तब वे सब हाहाकार करके और अत्यन्त शोकसे व्याकुल होकर रोने लगीं।

तब सब श्रेष्ठ क्षत्रिय जागे और कहने लगे कि यह क्या हुआ ? ऐसा कहकर सब क्षत्रिय युद्धके लिये व्यूह (किला) बनाने लगे। तब द्वारपर जाकर देखा कि कृपाचार्य्य खड़े हैं, तब सब स्त्री उनको देखकर डरीं, तब सब क्षत्रिय उनसे पूछने लगे कि जिसने महाराज पाञ्चाल-राजको मारा है और जो रथपर चढ़कर भागा जाता है वह क्या कोई राक्षस है वा मनुष्य ?

ऐसा कहते हुये वे सब वीर अश्वत्थामाको मारने दौड़े, परन्तु अश्वत्थामाने रुद्रास्त्रसे उन सबको मार डाला। फिर यहांसे चलकर उत्तमौजाके डेरेमें पहुंचे और उनको भी सोते ही देखा फिर उनके भी कण्ठमें एक पैर और एक पैर छातीमें धरकर उन्हें भी वैसे ही मार डाला। शत्रुनाशन उत्तमौजाको मरा हुआ सुन महाबलवान युधामन्यु गदा लेकर उठे और अश्वत्थामाको राक्षस जानकर एक गदा उसकी छातीमें मारी, तौभी अश्वत्थामाने उसके बाल पकड़कर पृथ्वीमें गिरा दिया और पशुके समान मार डाला।

हे महाराज ! तब वहांसे दूसरे दूसरे महा-रथोंके डेरोंमें जाकर सबको सोते ही मार-डाला। किसीको कांपते हुये मारा और किसीको उठते हुवे मारडाला।

खड्गयुद्ध जाननेवाले अश्वत्थामाने घूम घूमकर इस प्रकार शत्रुवोंको मारा जैसे कोई यज्ञमें पशुवोंको मारे।

अनन्तर सब गुल्मोंमें घुसकर केवल शस्त्र-रहित सोते और थके गुल्मपालकोंको मारा फिर हाथी और घोड़ोंके बन्धन खड्गसे काट दिये। उस समय रुधिरमें भीगे अश्वत्था माका शरीर प्रलयकालके यमराजके समान दीखता था।

खड्गधारी अश्वत्थामा तीन गतियोंसे रुधि-रमें भीगे खड्गको घुमाते हुये महाभयानक राक्षसोंके समान दीखने लगे।

हे कुरुकुलश्रेष्ठ ! उस समय जो क्षत्रिय डेरोंमें जागते थे, वेही अश्वत्थामाका स्वरूप देखकर चुप होकर आंख बन्दकर लेते थे, और डरके मारे मूर्च्छित होजाते थे, शत्रुनाशन अश्व-त्थामाका रूप देखकर सब लोग उसे राक्षस जानते थे, उन्हें कालके समान अपने डेरोंमें घूमते देख बचे हुये पाञ्चाल और द्रौपदीकेपुत्र जागे और अश्वत्थामाने भी उन्हें देखा तब अनेक धनुषधारी अश्वत्थामाको देखकर डरने लगे। इतनेमें द्रौपदीके पुत्रोंने सुना कि हमारे मामा धृष्टद्युम्न मारे गये, तब वे पांचों क्रोध करके डेरोंके द्वारकी ओर चले, वहां जाकर देखा कृपाचार्य्य खड़े हैं, तब उन्होंने कृपाचार्य्यके ऊपर बाण बर्षाना आरम्भ किया इतनेमें प्रभ-द्रकवंशी क्षत्रियोंमें समाचार पहुंचा तब वे लोग भी पहुंचे।

तब शिखण्डी क्रोध करके अश्वत्थामाके ऊपर घोर बाण बरसाने लगे। कृपाचार्य्य उनको देखकर सिंहके समान गर्ज्जे, उस समय उस शब्दसे सुनते ही अश्वत्थामाको अपने पिताके मरनेका स्मरण आगया। तब महा-क्रोध करके तेज खड्ग लेकर उन वीरोंके मार-नेके लिये अपने रथसे कूदे और अनेक चन्द्र-माके समान प्रकाशित अनेक बिन्दयुक्त ढाल

और सोनेकी मूठवाला चमकता हुआ, खड्ग लेकर द्रौपदीके पुत्रोंकी ओर दौड़े और प्रतिविन्ध्यके कोखमें एक खड्ग मारा, उसके लगतेही वह कटकर पृथ्वीमें गिर गया, उसके गिरते ही प्रतापवान सुतसोमने एक प्रास अश्वत्थामाको मारा, और फिर खड्ग लेकर उनकी ओर दौड़े, परन्तु अश्वत्थामाने शीघ्रताके सहित उनका हाथ काट दिया, फिर शीघ्रता सहित उनकी पसुलीमें एक खड्ग मारा, उसके लगते ही उसका हृदय फट गया, और मरकर पृथ्वीमें गिरगया, तब नकुलपुत्र बलवान शतानीकको कुछ शस्त्र न मिला, तब टूटे हुये रथका पहिया उठाकर अश्वत्थामाकी छातीमें वेगसे मारा, तब अश्वत्थामाने वेगसे दौड़कर उसे पृथ्वीमें गिरा दिया, और फिर उसका शिर काट लिया, तब श्रुतकर्माने दौड़कर एक परिघ अश्वत्थामाकी छातीमें मारा, वह परिघ अश्वत्थामाके खड्गसहित दहिने हाथसे लगा तब अश्वत्थामाने झपटकर उसके मुखमें एक खड्ग मारा, वह भी मरकर पृथ्वीमें गिर गया, तब वीर महारथ श्रुतकीर्त्ति, अश्वत्थामाकी ओर सहस्रों बाण वर्षाने लगे। परन्तु अश्वत्थामाने ढालसे उन सब बाणोंको बचाकर चमकते हुये कुण्डलों सहित श्रुतकीर्त्तिका शिर छेदन किया, तब भीष्मके मारनेवाले शिखण्डीको प्रभद्रकवंशी क्षत्रियोंमें खड़ा देख अश्वत्थामा उनकी ओर दौड़े, वीर शिखण्डीने भी अनेक प्रकारके बाण चलाये परन्तु कुछ सिद्धि न हुई तब एक बाण दोनों भौंहके बीचमें मारा, उसके लगनेसे द्रोणपुत्रको महाक्रोध हुआ, और दौड़कर शिखण्डीको मध्य शरीरसे काट दिया।

शत्रुनाशन अश्वत्थामा क्रोधमें भरकर शिखण्डीको मारकर प्रभद्रक सेनाकी ओर वेगसे दौड़े फिर राजा विराटके वंशमें जो बचे थे, जो राजा द्रुपदके बेटे, पोते और मित्र रह गये थे, उन सबको मारडाला।

फिर और और भी प्रधान प्रधान क्षत्रियों खड्गसे काट दिया, उस समय सब वीरोंको य दीखता था, कि लाल वस्त्र पहिने फांसी हाथ लिये लाल मुख और लाल नेत्रवाली का लाल माला और लाल चन्दन धारण कि काली युद्धमें घूम रही है, और फांसीसे अने मनुष्य और हाथियोंको मार रही है, किसी यह देखा कि सोते हुए शस्त्ररहित महारथों वही काली फांसीसे खींच रही है।

किसीको यह दीखने लगा कि यही का और यही अश्वत्थामा युद्धके आरम्भसे हमा नाश कर रहे हैं।

हे राजन्! उन सब पाञ्चालोंको प्राय पहले ही मारडाला था, पीछे अश्वत्थाम उनका नाश किया, उस समय अश्वत्थाम भयानक शब्दसे पाण्डवोंके डेरेके सब म घबड़ा रहे थे, कोई वीर अश्वत्थामाके भ नक रूपको देखकर उसे साक्षात् यमर समझते थे।

अनन्तर उस घोर शब्दसे पाण्डवोंके डेर सोते हुए सैकड़ों सहस्रों धनुषधारी वीर तब अश्वत्थामाने भी प्रलयकालके यमरा समान रूप धारण करके किसीका पैर, किसी हाथ, किसीकी कोख और किसीकी जङ्घा दी कोई हाथी घोड़ोंकी मूठमें आकर मर कोई कहने लगा, यह क्या है? यह कौन क्यों एक बारगी इतना हल्ला हो रहा डेरेमें क्या होता है?

इस प्रकार अश्वत्थामा उन वीरोंके कालरूप होगये शस्त्र चलानेवालोंमें अश्वत्थामाने कवच और शस्त्ररहित अ वीरोंको उठते उठते मार डाला। तबनिद्र व्याकुल अश्वत्थामाके शस्त्रसे पीड़ित अनेक क्षत्रिय इधर उधर डरसे भागने लगे। किसीका पैर न चला कोई भयसे व्याकुल होगया, इस प्रकारसे सब वीर हाहाकार

करने लगे। तब अश्वत्थामा फिर शीघ्रतासे घोर शस्त्रवाले रथपर चढ़े और बाणोंसे सहस्रों वीरोंको मारने लगे और जिसको अपनी ओर आते देखा उसको मारडाला।

कोई रथके पहियेमें आकर मर गया और किसीको अश्वत्थामाने अनेक प्रकारके बाणोंसे मार डाला, फिर थोड़ीदूर जाकर रथसे उतर और आकाशके समान चमकते हुए खड्गसे फिर वीरोंको मारने लगे।

महावीर अश्वत्थामाने उस डेरेको ऐसा व्याकुल कर दिया जैसे मतवाला हाथी तालाबको व्याकुल कर देता है।

हे राजन्! उस घोर शब्दसे सहस्रों योद्धा उठते थे, परन्तु भय और निद्रासे व्याकुल होकर इधर उधर दौड़ने लगते थे, कोई वृथा बकता था और कोई हाहाकार करता था, कोई शस्त्र और वस्त्र ढूढ़ता था, किसीके बाल खुले थे, कोई इधर उधर घूमता था और कोई थककर बैठ जाता था।

हे राजन्! हाथी, घोड़े अपने बन्धन छुड़ाकर भागते थे कोई हाथी, घोड़ा मूत करता था और कोई लीद करता था, कहीं योद्धा भयके मारे पृथ्वीमें सो जाते थे और हाथी घोड़े उन्हें आकर मार डालते थे।

हे राजन्! उसी समय अनेक राक्षस और भूत प्रसन्नतासे गर्ज्जने लगे और उस शब्दसे आकाश पूरित होगया तब हाथी, घोड़े इधर उधर दौड़ने लगे। उनके घूमनेसे घोर धूल उठी तब महाअन्धकार छागया, तब कोई मनुष्य अपने पिता और भाईको भी न पहिचान सका, हाथी, हाथियोंको और घोड़े घोड़ोंको घोर दौड़े और परस्पर एक दूसरेको मारते थे, कहीं कोई हाथी, घोड़ा, मनुष्यको पीस देता था, कहीं निद्रा और अन्धकारसे व्याकुल वीर पड़े थे कहीं वीर अपने ही वीरोंको मारते थे, कहीं द्वारपाल द्वारोंको छोड़कर इधर उधर भागते थे, कहीं गुल्ममें सोते वीर गुल्म छोड़कर इधर उधर भागते थे, कहीं वीर भयसे व्याकुल होकर बाप और बेटोंको पुकारते थे, कहीं अपने बान्धवोंको छोड़कर योद्धा भागते थे, कहीं अपना अपना गोत्रका नाम लेकर अपना परिचय देते थे, कोई हाहाकार करके पृथ्वीमें गिर जाता था, जो कोई लड़नेको उठता था, उसको अश्वत्थामा मार डालता था, जो क्षत्रिय भयसे व्याकुल होकर अपना जीव लेकर भागता था, उसीको द्वारपर कृपाचार्य्य और कृतबर्म्मा मार डालते थे।

शस्त्ररहित और कवचरहित हाथ जोड़ते हुये और कांपते हुये क्षत्रियोंको भी उन्होंने मार डाला, कोई जीता वीर डेरोंके बाहर न निकल सका।

अनन्तर दुर्बुद्धि कृपाचार्य्य और कृतबर्म्माने और अश्वत्थामाको प्रसन्नताके लिये डेरोंमें तीनों ओर आग लगाय दई तब वीर अश्वत्थामा खड्ग लेकर शीघ्रतासे उस चान्दनेमें घूसने लगे। तब सहस्रों वीरोंको खड्गसे इस प्रकार मारडाला जैसे कोई मनुष्य तिलके वृक्ष उखाड़कर फेंक देता है।

तब हाथी गर्ज्जने लगे, मरे हुये मनुष्योंसे पृथ्वी भर गई किसी वीरका हाथ कट गया, किसीका पैर कट गया, किसीकी पीठ फट गई, किसीका मुंह कट गया इस प्रकार महात्मा अश्वत्थामाने सहस्रों वीरोंको गिरा दिया, वह भयानक अन्धकार रात्रि और भी भयानक दीखने लगी कहीं न मारने योग्य शरीरमें शस्त्रलग गया वह रात्रि भागते हुये हाथी, घोड़े और मनुष्योंसे भयानक दीखने लगी, और कोई भाईका, कोई बापको, और कोई बेटोंको पुकारने लगे, और कोई कहने लगा कि क्रोध भरे धृतराष्ट्रके पुत्रोंने हमारे लिये जो नहीं किया था, सो आज सोते समय भयानक राक्षसोंने किया, हाय पापी पाण्ड-

वोंमेंसे एक भी यहां नहीं है, इसी लिये राक्षसोंने हमारा नाश कर दिया, जिनकी रक्षा करनेवाले साक्षात् श्रीकृष्ण हैं, उन्हें राक्षस, गन्धर्व्व और यक्ष भी नहीं जीत सकते।

पाण्डव ब्राह्मणोंके भक्त, सत्यवादी, जितेन्द्रिय और सब मनुष्योंपर कृपा करनेवाले हैं, अर्जुन सोते, मतवाले, शस्त्ररहित, हाथजोड़ते, भागते और खुलेहुये बालवालोंको नहीं मारते। परन्तु इन पापी राक्षसोंने हमारा सर्व्वनाश कर दिया, इस प्रकार कहते हुए अनेक बीर पृथ्वीमें गिर गये, कोई धीरेसे बोलने लगा और कोई तड़फने लगा, तब क्षणमात्रमें यह शब्द भी बन्द होगया और रुधिरसे भीगनेके कारण पृथ्वीकी धूल भी बैठ गई, फिर अश्वत्थामाने कुछ उद्योग करते हुए बीरोंको देखा, तब क्रोध करके उनको भी इस प्रकार मारडाला जैसे प्रलयकालमें शिव प्रजाका नाश करते हैं। कहीं लपटे हुए सोते बीरोंको मारडाला। कहीं भागतोंको मारा कहीं पड़े हुए बीरोंको मारा, कहीं युद्ध करते हुवोंको मारा, कहीं बीर अग्निमें जलने लगे और कही परस्पर लड़कर मर गये।

हे महाराज! जिस समय अश्वत्थामाने पाण्डवोंके डेरोंमें प्रवेश किया था, उस समय रात्रि के पहिले दो पहर बीत चुके थे, अर्थात् आधीरातको डेरोंमें गये थे, वह रात्री हाथी, घोड़े और मनुष्योंका नाश करनेवाली थी और मास खानेवाले भूत और जन्तुओंको प्रसन्नता बढ़ाती थी, तब अनेक प्रकारके राक्षस घूमने लगे, वे मनुष्योंके मासखाने और रुधिर पीने लगे, कोई भयानक धूरले रङ्गवाला, किसीके बड़े बड़े दांत, कोई धूलसे भरा, किसीके बड़ी बड़ी जटा, किसीका बड़ा मुंह, किसीका बड़ा पेट, किसीके पैरके पञ्जे पीछेको थे, कोई घण्टा बजा रहा था, किसीका नीलाकण्ठ था, कोई महाभयानक था, वे सब भयानक निर्द्दय अनेक रूपधारी राक्षस पुत्र और स्त्रियोंके सहित वहां आए, फिर मनुष्योंका रुधिर पीकर नाचने लगे और कहने लगे कि यह रुधिर बड़ा स्वादमें श्रेष्ठ और पीने योग्य है, मांस खाने वाले जन्तु भी प्रसन्नता पूर्व्वक रुधिर पीने लगे। चरबी, मास और वसा खाने लगे। चरबी खानेसे राक्षसोंके पेट फूल गये, एक प्रकारके मुखवाले भयानक सहस्रों राक्षस मनुष्योंको घोर रूप बनाकर और घोर कर्म्म करके डराते थे, उस घोर युद्धमें मांस खाकर और रुधिर पीकर बहुत प्रसन्न हुये।

तब अश्वत्थामाने देखा कि आकाश लाल होगया उस समय अश्वत्थामाके खड्गकी मूठि रुधिरसे भीग गई थी और खड्ग हाथमें फस गया था, मानो एक ही होगया था, तब अश्वत्थामाने भी डेरोंसे निकलनेकी इच्छा करी।

और उस घोर कर्म्मको करके प्रसन्नता पूर्व्वक ऐसे खड़े हुए जैसे प्रलयकालमें अग्नि। उन्होंने इस कर्म्मको अपनी प्रतिज्ञानुसार ही समाप्त किया, फिर अपने पिताके मरनेका शोक भी छोड़ दिया।

पुरुषसिंह अश्वत्थामा सोते शब्द रहित डेरोंमें घुसे थे और सबको मारकर शब्दरहित डेरोंमेंसे निकले फिर डेरोंसे बाहर आकर कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मासे मिले और प्रसन्न होकर उनसे सब समाचार कहा और वह भी सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे, कि अच्छा हुआ फिर ताड़ी बजाने लगे।

हे महाराज। इस प्रकार यह भयानक रात्री सोमकोंके लिये आई थी, उसमें सोते हुए उन्मत्त सहस्रों सोमकोंका नाश हुआ, देखो इन ही सोमकोंने हमारी सेनाका नाश किया था और यही आज इस प्रकार मारे गये, कालकी गतिको कोई नहीं जान सका यह बड़ी ही कठिन है।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय ! महारथ अश्व-त्थामाकी यह इच्छा तो थी, कि हमारे पुत्रकी विजय होय तब उन्होंने पहिले यह कर्म्म क्यों नहीं किया था ?

दुर्य्योधनके मरनेपर महात्मा द्रोणपुत्रने ऐसा कुकर्म्म क्यों किया सो तुम हमसे कहो ?

सञ्जय बोले, हे कुरुकुलश्रेष्ठ ! पाण्डवोंके और कृष्णके भयसे अश्वत्थामाने ऐसा नहीं किया था. आज वे पाण्डव, श्रीकृष्ण और सात्यकी सेनामें नहीं थे, इसही लिये अश्वत्थामाने इनको मार डाला । यदि वे लोग होते तो साक्षात् इन्द्र भी उन लोगोंको नहीं मार सक्ता था ।

हे महाराज ! इस प्रकार यह सोती हुई पाण्डव सेनाका नाश हुआ, तब तीनों महारथ कहने लगे कि बहुत अच्छा हुआ, तब अश्व-त्थामा अत्यन्त प्रसन्न होकर बोले, कि सब पाञ्चाल द्रौपदीके पुत्र, सोमक और बचे हुये मत्स्यवंशी क्षत्रिय मारे गये, अब हम लोग कृतकृत्य होगए, अब राजाके पास चलना चाहिये कदाचित् वे जीते होयं तो उनसे यह सब समाचार कहें ।

८ अध्याय समाप्त ।

सञ्जय बोले, हे राजन् ! ये तीनों वीर पाञ्चाल और द्रौपदीके पुत्रोंको मारकर रथों-पर चढकर वहां पहुंचे, जहां राजा दुर्य्योधन पड़े थे, उन्होंने जाकर देखा कि महाराज मरा ही चाहते हैं । तब वे सब रथोंसे उतरे और राजाके पास गये. उस समय राजा तड़फ रहे थे. उनके मुंहसे रुधिर बहता था, चारो ओर अनेक स्यार और भेड़िये आदि मांस खानेवाले जन्तु खड़े थे. और पीड़ासे व्याकुल राजा दुर्य्योधन कठिनतासे उनको हटा रहे थे, तब ये तीनों वीर रुधिर भीगे राजाके पास गये और शोकसे व्याकुल होकर खड़े होगए ।

उस समय इन तीनों रुधिर भीगे वीरोंके बीचमें राजाको ऐसी शोभा दीखती थी जैसे तीन अग्नियोंके बीचमें प्रधान अग्नि की ।

महाराजको अनुचित रीतिसे पड़े देख तीनों वीर सांस लेकर रोने लगे । तब कृपा-चार्य्य उनके पास गये और उनके मुखका रुधिर अपने हाथसे पोंछकर रोकर कहने लगे । प्रारब्ध बहुत बड़ी वस्तु है देखो ग्यारह अक्षौ-हिणीके स्वामी राजा दुर्य्योधन आज पृथ्वीमें मूर्च्छित होकर सोते हैं, देखो सोनेके समान रङ्गवाले गदाके प्यारे महाराजको सोनेसे भूषित गदा पृथ्वीमें पड़ी है, यह गदा इस महात्मा यशस्वी वीरको किसी युद्धमें नहीं छोड़ती अब स्वर्ग जाते समय भी इनको नहीं छोड़ती । देखो यह सोनेके भूषणवाली गदा इन महात्मा वीरके संग प्यारी स्त्रीके समान सोती है । हाय । यही शत्रुनाशन महराज पहिले राजोंके आगे चलते थे, आज पृथ्वीमें पड़े हुये धूल खाते हैं । समय बड़ा कठिन है । हाय ! जिस कुरु-राजके हाथसे मारे हुए सहस्रों शत्रु पृथ्वीमें सोते थे, वही ये आज शत्रुओंके हाथसे लड़कर पृथ्वीमें सोते हैं, जिनको देखते ही सैकड़ों राजा डरसे नीचे हो जाते थे, वही महाराज आज मांस खानेवाले, जन्तुओंके बीचमें वीरके योग्य शय्यापर सोरहे हैं, जिन महाराजके पास हर समय सहस्रों ब्राह्मण धनके लिये बैठे रहते थे, इन्हींके पास आज मांस खानेके लिये स्यार खड़े हैं ।

सञ्जय बोले, कुरुकुलश्रेष्ठ दुर्य्योधनको इस प्रकार पृथ्वीमें पड़े देख अश्वत्थामा ऊंचे स्वरसे रोने लगे और कहने लगे ।

हे राजशार्दूल ! आपको सब जगत्के क्षत्रिय धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ कहा करते थे, आप कुवे-रके समान योद्धा साक्षात् बलरामके शिष्य हैं ।

हे पापरहित ! भीमसेनने अनन्तर पाकर आपको कैसे मारडाला ?

हे महाराज! महापराक्रमी और अत्यन्त चतुर आपको पापी भीमसेनके हाथसे मरा हुआ हम देखते हैं, समयकी गति बहुत ही कठिन, पापी, क्षुद्र, मूर्ख भीमसेनने धर्म्म जाननेवाले, आपको मारडाला। इससे हम जानते हैं, कि समयकी गति बड़ी कठिन है, धर्म्मसे बुलाकर और धर्म्म युद्ध आरम्भ करके भीमसेनने आपकी जङ्घा तोड़ दी, इससे अधिक अधर्म्म और क्या होगा? जिसने अधर्म्मसे मरे हुये आपके शिरमें पैर रखते भीमसेनको देखा उस क्षुद्र, कृष्ण और युधिष्ठिरको धिक्कार है, जबतक पृथ्वीमें मनुष्य रहेंगे तबतक सब वीर भीमसेनकी अवश्य निन्दा करेंगे।

हे महाराज! यदुकुलश्रेष्ठ वीर बलराम सदा कहा करते थे, कि गदा युद्धमें दुर्योधनके समान कोई नहीं है, बलराम सब सभाओंमें आपकी प्रशंसा किया करते थे, कि राजा दुर्योधन गदायुद्धमें हमारे शिष्य हैं, हे महाराज! महामुनियोंने जो क्षत्रियोंके लिये उत्तम गति कही है, युद्धमें मरनेसे आपको वही गति प्राप्त हुई।

हे पुरुषसिंह दुर्योधन! हम आपका कुछ शोच नहीं करते परन्तु हमें पुत्ररहित गान्धारी, और आपके पिताहीका शोच है, वे दोनों बूढ़े शोकसे व्याकुल होकर भिक्षुकोंके समान पृथ्वीमें घूमेंगे, दुर्बुद्धी कृष्ण और अर्ज्जुनको धिक्कार है, जो धर्म्मज्ञ अभिमान करनेपर भी आपकी यह दशा देखते रहे निर्लज्ज पाण्डव क्या यह कह सकेंगे, कि हमने दुर्योधनको धर्म्मसे मारा?

हे गान्धारीपुत्र! आपको धन्य है, जो शत्रुवोंके आगे धर्म्मयुद्धमें मारे गये, परन्तु पुत्ररहित गान्धारी और अन्धेराजाकी क्या गति होगी हमें यही शोक है, महारथ कृपाचार्य्य, कृतवर्म्मा, और हमें धिक्कार है, जो आपके सङ्ग स्वर्गको न चले, आप हमें सब प्रकारका सुख देते थे, रक्षा करते थे, और प्रजाका कल्याण करते थे, सो हम आपके सङ्ग न चल सके इसलिये हम नीच मनुष्योंको धिक्कार है, हमने, हमारे पिता और कृपाचार्य्यने आपकी कृपासे रत्न भरे घर पाये, आपकी प्रसन्नतासे हम लोगोंने मित्र और बान्धवोंके सहित दक्षिणाओंके सहित भारी भारी यज्ञ करीं अब हम पापी इस जगत्में कैसे जियेंगे।

अब हम इस जगत्में रहकर दरिद्री होकर आपके धर्म्मका स्मरण करेंगे वह कौनसा कर्म्म आपका है, जिसका स्मरण हम नहीं करेंगे।

हे कुरुकुलश्रेष्ठ! अब हमको जगत्में दुःख ही भोगना शेष है, क्यों कि अब आपके बिना हमको सुख और शान्ति कहां? हे महाराज आप स्वर्गमें जाकर सब महारथियोंसे मिलकर हमारी ओरसे क्रमके अनुसार सबकी पूजा करना फिर सब धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ गुरुजीको प्रणाम करके कहना, कि मैंने धृष्टद्युम्नको मारडाला। फिर महारथ राजा बाह्लीक, सिन्धुराज जयद्रथ, सोमदत्त और भूरिश्रवादि स्वर्गमें बैठे राजोंसे मिलकर कुशल प्रश्न करना।

सञ्जय बोले, जाघ टूटे मूर्च्छित राजासे ऐसा कहकर फिर उनके मुखकी ओर देखकर अश्वत्थामा बोले, हे महाराज दुर्योधन! अभी आप जीते हो तो कानको सुख देनेवाले, मेरे बचन सुनिये, अब पाण्डवोंकी सब सेनामें केवल सात मनुष्य शेष हैं और आपकी ओरसे हम तीन बचे हैं, पाण्डवोंकी ओर पाचो पाण्डव छठे कृष्ण और सातवें सात्यकी. आपकी ओर मैं कृतबर्म्मा और कृपाचार्य्य।

द्रौपदीके पाचोपुत्र, धृष्टद्युम्नके पुत्र, पाञ्चाल और मत्स्यवंशी सब बचे हुए चत्री मारे गये; मैंने आपके वैरका बदला ले लिया, पाण्डवोंका बंश नाश होगया। मैंने रातको डेरेमें घुस कर वाहनों सहित सब वीरोंको मारडाला।

पृथ्वीनाथ। मैंने डेरोंमें घुसकर पापी सोते हुये धृष्टद्युम्नको पशुके समान मारा।

राजा दुर्य्योधन अश्वत्थामाके प्यारे बचन सुनकर चैतन्य होकर बोले, जो कर्म्म भीष्मने तुम्हारे पिता द्रोणाचार्य्यने और कर्णने नहीं किया था सो कृपाचार्य्य और कृतवर्म्माके सहित तुमने मेरे लिये किया, पापी चुद्र पाण्डवोंका सेनापति शिखण्डीके सहित मारा गया यह सुन कर मैं अपनेको इन्द्रके समान मानता हूं आप लोगोंका कल्याण हो अब हम फिर आप लोगोंसे स्वर्गमें मिलेंगे।

हे राजन्! ऐसा कहकर महावीर महा- मनस्वी दुर्य्योधन शान्त होगये और मित्रोंका शोक नाश करके प्राण पवित्र स्वर्गको चला गया और शरीर यहां पड़ा रहा।

हे महाराज! इस प्रकार आपके पुत्र दुर्य्यो- धन शत्रुओंसे युद्ध करके मारे गये, ये तीनों वीर भी मरे हुए राजाका स्पर्श करके रोते हुये अपने अपने रथोंपर बैठे और पीछेको देखते हुये शोकसे व्याकुल होकर नगरकी ओर चले उसी समय सूर्य्य भी उदय होने लगा।

हे महाराज! आपकी बुरी सम्मतिसे यह कुरुकुलका नाश हुआ। हे महाराज। जब आपके पुत्र स्वर्गको चले गये, तब मुझे भी व्यास- देवजीकी दी हुई दिव्य दृष्टि नष्ट होगई।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, राजा धृतराष्ट्र इस प्रकार अपने पुत्रका मरना सुनकर शोकसे व्याकुल होगये और चिन्ता करने लगे।

९ अध्याय समाप्त।

ऐषीकपर्व्व।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमे- जय! जब रात्रि बीत गई तब धृष्टद्युम्नका सारथी धर्म्मराजके पास जाकर कहने लगा।

सारथी बोला, हे महाराज! द्रुपदके पत्नोंके सहित आपके पांचो पुत्र मारे गये, वे सुखसे विश्वास पूर्व्वक डेरोंमें सो रहे थे, उसी समय कृतवर्म्मा, पापी कृपाचार्य्य और पापी अश्वत्था- माने सबको मारडाला।

हे महाराज! आपकी हाथी, घोड़ा और मनुष्योंसे भरी सेनामें केवल एक मैं ही बचा हूं उन्होंने प्रास, शक्ति और परश्वधोंसे हमारी सेनाका नाश कर दिया, उस समय आपकी सेनामें ऐसा शब्द होता था, जैसे कुल्हाड़ीसे काटते हुए बनमें।

हे धर्म्मात्मन्। मै किसी प्रकार कृतवर्म्मासे बचकर भाग आया हूं, उस सब सेनामेंसे केवल मैं ही एकला बचा हूं।

सारथीके ऐसे बचन सुन महापराक्रमी महाराज युधिष्ठिर पुत्रशोकसे व्याकुल होकर पृथ्वीमें गिरपड़े, तब उनको गिरते देख सात्यकी, कृष्ण, अर्जुन, नकुल और सहदेव दौड़े और उन्हे पकड़ लिया, तब कुन्तीपुत्र थोड़े समयमें चैतन्य हो; शोकसेव्याकुल होकर ऐसे दीनबचन बोले।

हमने पहले शत्रुओंको जीत लिया था, और अब फिर हार गये. दिव्य दृष्टिवाले महात्मा भी समय और कार्य्योंकी गतिको नहीं जान सक्ते, देखो कोई हारकर हारता है, और हम जीतकर हार गये; भाई, पिता, बन्धु, मित्र, पुत्र और पोतोंको मारकर भी हम लोग पीछे हार गये, अर्थोंको विचारना और देखना भी अनर्थ ही है, हमारी यह विजय भी पराजयके समान होगई जिस विजयको पाकर दुर्बुद्धि राजाको शोच करना पड़े, उसे बुद्धिमान् विजय क्यों कहेंगे, वह तो पराजयसे भी अधिक दुःख दायक है, जिन मित्रोंके लिये हम पाप और विजय करनेकी इच्छा करते थे, वेही हमारे विजयी मित्र आज मारे गये।

जिन्होंने बाणरूपी फण, खड्गरूपी जिह्वा, धनुषरूपी फैलेहुए मुख, धनुष टङ्काररूपी फुङ्कार

वाले परम वीर, कर्णरूपी क्रोधी विषीले सांपके विषको शान्त किया था, वही युद्धसे न भागनेवाले हमारे मित्र आज हमारी भूलसे मारे गये।

जो रथ और, वाणतरङ्ग, घोड़ेरत्न, शक्ति और खड्ग मकरों, ध्वजा नाका, धनुष भौंर, वाणफेन, युद्ध चन्द्रमा और धनुषकी टङ्काररूपी शब्दयुक्त, द्रोणाचार्य्यरूपी समुद्रको शस्त्ररूपी नावपर चढ़कर तैर गये थे, वेही राजपुत्र आज हमारी भूलसे मारे गए।

देखो जगत्‌में भूलके समान और कोई बुरी बात नहीं है, भूले हुये मनुष्यके सब अभिप्राय नष्ट होजाते हैं, और अनेक अनर्थ उसका घेर लेते हैं।

जिन्होंने ऊंची ध्वजारूपी, धुआं वाण ज्वाला, क्रोध वायु धनुष पहिए और तल शब्द-रूपी शब्द और अनेक प्रकारके शस्त्र, आहुत युक्त भीष्मरूपी सेनामें जलती हुई अग्निको सहा था, वही राजपुत्र आज भूलसे मारे गये।

प्रमत्त मनुष्य विद्या, तप, लक्ष्मी और यशको नहीं पा सक्ता देखो शत्रुओंको मारकर इन्द्र सुखसे राज करते हैं।

देखो आज ये इन्द्रके समान पराक्रमी राज पुत्र और राजोंके पोते भूलसे सामान्य मनुष्योंके समान इस प्रकार मारे गये, जैसे धनधान्य भरे बनिये समुद्रको पार होकर छोटी नदीमें तरते हुए डूब जांय हमें यह निश्चय है, कि हमारे सब सम्बन्धी सोते हुये मारे गये, अब हमें कुछ शोच नहीं है, वे सब निश्चय ही स्वर्गको चले गए हमें केवल पतिव्रता द्रौपदीहीका शोक है, कि वह अपने भाई, पुत्र और बूढ़े पिताको मरा हुआ, सुन किस दशाको प्राप्त होगी?

निश्चय ही वह शोकसे व्याकुल होकर पृथ्वीमें गिर पड़ेगी आज वह सुख भोगने योग्य द्रौपदी इस शोकसमुद्रके पार कैसे जायगी? उसकी क्या दशा होगी अपने भाई पुत्रोंकी मरा हुआ सुन उसकी ऐसी दशा होजायगी जैसे आगमें जलते हुये मनुष्यकी।

कुरुकुलके स्वामी महाराज युधिष्ठिर इस प्रकार रोते हुए व्याकुल होकर नकुलसे बोले, तुम जाओ उस मन्दभागिनी राजपुत्रीको उसके पिता और भाइयोंकी स्त्रियोंके समेत तथा और भी उनके मातृपक्षकी स्त्रियोंको अपने सङ्ग लेकर आवो।

माद्रीपुत्र नकुलने शरीरधारी धर्मके समान महाराजके वचन ग्रहण किये और रथपर चढ़कर शीघ्रता सहित पाञ्चाल राजपुत्री द्रौपदी और पाञ्चालदेशीय स्त्रियोंके पास चले।

महाराज युधिष्ठिर भी नकुलको उधर भेजकर आप शोकसे व्याकुल होकर रोते हुये अपने मित्र और भाइयोंके सहित उस मांस खानेवाले जन्तुओंसे भरी युद्धभूमिकी ओर चले।

वहां जाकर उस भयानक शोकसे भरी हुई भूमिमें महाराज धर्मधारियोंमें श्रेष्ठ कुरुवंशियोंमें आगे चलनेवाले युधिष्ठिरने अपने पुत्र, सम्बन्धी और मित्रोंको भूमिमें सोते, रुधिरसे भीगे, शरीर और शिर कटे पृथ्वीमें सोते हुए देखा। उनको देखकर महाराज एकबार ऊंचे स्वरसे रोये और फिर सब मित्रोंके सहित मूर्च्छित होकर पृथ्वीमें गिर गये।

१० अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमे जय! अपने बेटे, पोते और सम्बन्धियोंको मरा हुआ देखकर महाराज अत्यन्त शोकसे व्याकुल होगये; जब महात्मा युधिष्ठिर बेटे, पोते, भाई और सम्बन्धियोंके शोकसे व्याकुल होकर आखोंमें आंसू भरकर कांपने लगे तब सब रोते हुये मित्र उन्हें समझाने लगे।

उसी समय प्रातःकालके सूर्य्यके समान चमकते हुये, रथपर बैठे हुए रोती हुई द्रौप

दोके सहित नकुल आपहुंचे। द्रौपदी पहिले ही उपप्लव (छावनी) को चली गई थीं, वहीं अपने पुत्रोंके मरनेका समाचार सुना और व्याकुल होगई। द्रौपदी महाराजके पास आकर और शोकसे व्याकुल होकर इस प्रकार पृथ्वीमें गिर पड़ी जैसे केलेका वृक्ष आंधीसे टूट-कर गिर पड़ता है, उस समय फूले हुये कम-लके समान नेत्रवाली द्रौपदीका मुख शोकसे व्याकुल होनेके कारण ऐसा होगया जैसा राहुके ग्रहण करनेसे चन्द्रमा।

द्रौपदीको पृथ्वीमें पड़ी देख महापराक्रमी भीमसेनने अपने हाथोंसे उठा लिया और समझाने लगे, तब रोती हुई द्रौपदी महा-राजसे बोली, हे पृथ्वीनाथ! आज प्रारब्धहीसे आप इस सब पृथ्वीके राजा हुए, अब क्षत्रियोंके धर्मके पालनेवाले अपने बेटोंको यमराजको भेंट देकर आप कुशलसे तो हैं? कहिये इस सब पृथ्वीका राज्य पाकर अब आप मतवाले हाथीके समान चलनेवाले अभिमन्युका कभी स्मरण तो न कीजिएगा ना? कहिए क्षत्रियोंके धर्ममें रहनेवाले वीर पुत्रोंकी मृत्यु सुनकर आप मेरे सङ्ग विहार तो कीजिएगा ना? और कभी उन पुत्रोंकातो स्मरण नहीं कीजिएगा? मैं यह बात सुन कर, कि पापी अश्वत्थामाने मेरे पुत्रोंको सोते हुए मारडाला शोकसे व्याकुल होगई हूं, शोक मेरे शरीरको इस प्रकार तपाता है, जैसे पास रक्खी हुई अग्नि वस्तुको।

हे राजन्! यदि आप अपने पराक्रमसे उस पापी अश्वत्थामाको युद्धमें नहीं मारियेगा तो मैं अन्न नहीं खाऊंगी और यहीं मर जाऊंगी। हे पाण्डवों! तुम भी सब हमारी इस प्रतिज्ञाको सुनो यदि अश्वत्थमा इस पापके फलको नहीं पावेगा तो मैं यहीं मर जाऊंगी।

ऐसा कहकर यशस्विनी द्रौपदी धर्मराज युधिष्ठिरके पास बैठ गई; धर्मात्मा राजरूपी युधिष्ठिरने अपनी प्यारी पटरानीको व्रतमें बैठे देख उस सुन्दरीसे ऐसे बचन कहे, हे धर्म्म जान-नेवाली सुन्दरी! तुम क्षत्रियोंके धर्म्मका स्मरण करो तुम्हारे पुत्र और भाई धर्म्मयुद्धसे मारे गये हैं, इसलिये कुछ शोक मत करो; हे कल्याणी, हे सुन्दरी! अश्वत्थामा इस समय किसी वन पर्व्वतमें छिप रहे हैं, उनको हम कैसे मार सकेंगे?

द्रौपदी बोली, हे महाराज! तुमने सुना है कि अश्वत्थमाके शिरमें उत्पन्न हुई मणि है, उस पापीको मारकर वही छीन लेनी चाहिये। मैं उसको आपके शिरमें स्थापन करके जिऊंगी यही मेरी इच्छा है, इसलिये आप ऐसा ही कीजिये।

ऐसा कहकर द्रौपदी भीमसेनके पास गई और कहने लगी, हे भीम! आप क्षत्रियोंके धर्म्मका स्मरण करके हमें इस दुःखसे बचाइये उस पापी अश्वत्थामाको इस प्रकार जीतिये, जैसे इन्द्रने सम्बरको जीता था, जगत्में तुम्हारे समान कोई मनुष्य बलवान् नहीं है, उस लाक्षाभवनमें आपने मरते हुए पाण्डवोंको जैसे बचाया था सो समाचार जगत्में प्रसिद्ध है, जब हिड़म्ब राक्षससे पाण्डवोंको आपत्ति हुई थी तब भी आपहीने इनकी रक्षा की थी, जिस समय विराट नगरसे कीचकने मुझे अत्यन्त दुःख दिया था, तब भी आपन मेरी इस प्रकार रक्षा करी थी जैसे इन्द्र इन्द्राणीकी रक्षा करते हैं।

हे कुन्तीपुत्र! आपने जैसे ये सब कर्म्म करे हैं ऐसे ही अश्वत्थामाको मारकर सुखी हूजिये।

द्रौपदीका अनेक प्रकारका रोना सुनकर महा बलवान् कुन्ती पुत्र भीमसेन क्षमा न कर सके और सोनेके रथपर बैठ धनुष पर रोदा चढ़ाकर बाण चढ़ाने लगे। उसी समय नकुल अपने स्थानसे उठकर भीमसेनका रथ हांकने लगे। तब भीमसेनने अपने धनुषपर टङ्कार दिया और नकुलने अपने घोड़ोंको वायु

के समान वेगसे छांवा, तब नकुलके हांकनेसे वे शीघ्र चलनेवाले घोड़े अपने खेरोंसे निकलकार अश्वत्थामाके रथकी लोकपर चले।

११ अध्याय समाप्त।

श्री वैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! जब महापराक्रमी भीमसेन अश्वत्थामाको मारने चले गये, तब यदुकुल श्रेष्ठ, कमललनेत्र श्रीकृष्ण कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरसे बोले, हे पाण्डव! ये आपके भाई भीमसेन पुत्रशोकसे व्याकुल होकर एकले ही अश्वत्थामाको मारने चले जाते हैं। हे भरतकुलश्रेष्ठ! भीमसेन आपको सब भाइयोंसे प्यारे हैं, आप उनको इस आपत्तिसे उबारनेके लिये क्यों नहीं दौड़ते? महात्मा शत्रुनाशन सब धनुष धारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने जो सब पृथ्वीको भस्म करनेमें समर्थ अर्ज्जुनको प्रसन्न होकर जो शस्त्र दिया था वही एक दिन क्रोधी अश्वत्थामाने अपने पितासे मागा। महात्मा धर्म्म जाननेवालोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने विचारा कि यह बड़ा चञ्चल और दुष्ट है, तब भी द्रोणाचार्य्यने अश्वत्थामाको वह शस्त्र सिखा दिया परन्तु अधिक प्रसन्न होकर नहीं दिया और फिर कहा कि, हे पुत्र! अत्यन्त आपत्ति पड़नेपर भी तुम यह शस्त्र किसी मनुष्यपर न छोड़ना।

गुरुजीने अपने पुत्रसे ऐसे बचन कहकर फिर कहा कि तुम इस जगत्में महात्माओंके मार्ग पर नहीं चल सकोगे।

पापी दुष्टात्मा अश्वत्थामा अपने पिताके कठोर बचन सुनकर सब सुखोंसे निराश हो गये और शोकसे व्याकुल होकर जगत्में घूमने लगे। हे कुरुकुलश्रेष्ठ! उन दिनों आप बनमें थे तब ही घूमते घूमते अश्वत्थामा द्वारिकामें पहुंचे, वहां यादवोंने उनका बहुत ही स्वागत किया तब वे वहां कुछ दिनतक ठहर गये, एक दिन हम और वे दोनों समुद्रके तटपर घूम रहे थे, तब उन्होंने हंसकर हमसे कहा कि, हे कृष्ण। हमारे पिताने जो घोर तप करके देवता और दानवोंसे पूजित ब्रह्मशिर नामक अस्त्र अगस्त मुनिसे पाया है, मैं भी उसे आजकल अपने पिताके समान ही जानताहूं, इसलिये आप हमसे इस शस्त्रको सीखिये और युद्धमें शत्रुवोंके नाश करनेवाला अपना दिव्य चक्र हमको दे दीजिये।

हे राजन्! मैंने अश्वत्थामाको हाथ जोड़ते अनेक यत्नकरके चक्र मांगतेदेख ऐसे वचन कहे।

जगत्में देवता, दानव, गन्धर्व्व, मनुष्य, पक्षी और सांप कोई ऐसा नहीं है, जो हमारे बलके सौ भागके एक भागके समान भी हो, जो हो यह धनुष, यह चक्र, यह शक्ती और यह गदा रक्खी है, जो शस्त्र चाहो सो ले लो हम देते हैं, तुम जिस शस्त्रको उठा सको और युद्धमें चला सको उसे ही ले लो और उसके बदलेमें जो शस्त्र तुम देना चाहते हो सो हम नहीं लेते।

अश्वत्थामाने सहस्र धारवाले बीचमें वज्रके बने लोहेके चक्रको हमसे मागा, तब हमने भी कहा कि लो, तब वह प्रसन्न होकर उठे और बायें हाथसे उठाने लगे। परन्तु जराभी स्थानसे न उठाने सके तब दहिना हाथ लगाकर उठाने लगे, परन्तु सब बल और सब पराक्रम करके हार गए परन्तु चक्र न उठा। जब वे उसको उठा वा हिला न सके तब बहुत ही मलीन मन होकर थककर बैठ गये।

तब मैंने उनको निवृत्त देखकर घबड़ाये हुये अश्वत्थामासे कहा, जो जगत्में सब धनुषधारियोंमें प्रमाण गिने जाते हैं, जो गाण्डीव धनुष, सफेद घोड़े और हनुमानकी ध्वजा सहित रथपर बैठते हैं, जिन्होंने साक्षात पार्व्वती नाथ शिवको द्वन्द्वयुद्धमें प्रसन्न किया है, जिसके समान इस जगत्में मुझे कोई मान्य और प्यारा नहीं है जिसको मैं अपनी स्त्री और पुत्र दे सक्ता हूं उस मित्र और घोर कर्म्म करनेवाले

अर्जुनने भी मुझसे आजतक ऐसे वचन नहीं कहे जैसे आज आपने कहे, जिसके लिये हमने बारह वर्षतक हिमाचल पर्वतपर घोर तप किया था, जो हमारे समान धर्म्म करनेवाली रुक्मिणीके गर्भसे उत्पन्न हुआ है उस सनत्कुमारके समान तेजस्वी हमारे पुत्र प्रद्युम्नने भी आजतक ऐसे वचन नहीं कहे थे, जैसे तुमने आज कहे। महाबलवान् बलदेव, गदा और साम्ब आदि वृष्णी और अन्धकवंशी द्वारिका वासी किसी क्षत्रियने ऐसे वचन नहीं कहे जैसे आज तुमने कहे। तुम भरतकुलके गुरु द्रोणाचार्य्यके पुत्र हो यही जानकर सब यादवोंने आपका सत्कार किया। हे महारथ! इस चक्रको आप लेकर कौनसे महारथसे युद्ध कीजिएगा सो कहो हमारे ऐसे वचन सुन अश्वत्थामाने हमसे कहा।

हे कृष्ण! हम यह चक्र लेकर आपकी गुरु पूजा करके आपहीसे युद्ध करते हम आपसे सत्य कहते हैं कि इसीलिये हमने आपसे ये देवता और दानवोंसे पूजित चक्र मांगा था और यह भी इच्छा थी कि हमें कोई न जीत सके परन्तु यह दुर्लभ काम हमारा सिद्ध न हुआ इसलिये हम प्रसन्नता पूर्वक आपसे जानेकी आज्ञा मांगते हैं, आप सब भयानकोंसे भी भयानक हैं, इसी लिये इस भयानक चक्रको कोई नहीं ले सक्ता।

ऐसा कहकर हमारे दिये हुए खच्चर, घोड़े धन और अनेक प्रकारके रत्न लेकर अश्वत्थामा अपने घरको चले गये।

वही अश्वत्थामा अत्यन्त पापी चञ्चल और दुष्ट है, और ब्रह्मशिर अस्त्रको जानता भी है, इसलिये भीमसेनकी इससे रक्षा करनी चाहिए।

१२ अध्याय समाप्त।

वैशम्पायन मुनि बोले. हे राजन् जनमेजय! यदुकुल श्रेष्ठ श्रीकृष्ण सब शस्त्रोंसे भरे काम्बोजदेशमें उत्पन्न हुए घोड़ोंकी माला पहिने घोड़ोंसे युक्त रथमें बैठे उस सूर्य्यके समान चमकते हुए रथके धुरके दहिनी ओर शैब्य, बाईं ओर सुग्रीव और आगेकी ओर मेघपुष्प और बलाहक नामक घोड़े जोड़े गए। ऊपरसे विश्वकर्म्माकी बनाई रत्न जड़ी सोनेके ऊंचे डण्डेवाली प्रकाशमान गरुड़युक्त ध्वजा, फहराने लगी। उसीमें सब धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ कृष्णके दोनों ओर अर्जुन और युधिष्ठिर इस प्रकार बैठकर शोभित हुए जैसे इन्द्रको दोनों ओर बैठे अश्विनीकुमार, तब कृष्णने उस लोक पूजित घोड़ोंके रथको कोड़ेसे हांका तब घोड़े उस रथ, युधिष्ठिर, श्रीकृष्ण और अर्जुनको लेकर शीघ्रतासे दौड़े।

जिस समय श्रीकृष्णने उन शीघ्र चलनेवाले घोड़ोंको हांका तब ऐसा शब्द होने लगा, जैसे आकाशसे पक्षी गिरते हैं। तब क्षणमात्रमें ये तीनों वीर महाधनुषधारी भीमसेनके पास पहुंचे यद्यपि इन सब महारथोंने भीमसेनको बहुत रोका तो भी क्रोधी भीमसेन शत्रुके मारनेसे निवृत्त न हुए उन सब महाधनुषधारी वीरोंके सहित भीमसेन शीघ्र घोड़ोंको दौड़ाते हुए गङ्गाके तीरको चले गये, क्यों कि उन्होंने मार्गमें सुना था, कि हमारे पुत्रोंको मारनेवाला अश्वत्थामा वहीं है?

थोड़ी दूर जाकर गङ्गाके तटपर जाकर महात्मा व्यासको ऋषियोंके सहित बैठे देखा और वहीं देखा कि दुष्ट अश्वत्थामा शरीरमें घी लगाए कुशाकी चटाई ओढ़ शरीरमें धूल लपटाये बैठा है।

उसको देखते ही भीमसेन धनुषपर बाण चढ़ाकर खड़ा रह खड़ा रह कहकर दौड़े।

अश्वत्थामा भीमसेनको धनुष धारण किये और पीछेसे युधिष्ठिर, अर्जुन और श्रीकृष्णको एक रथपर आते देख बहुत घबड़ाया और उसने समयके अनुसार यही विचारा कि ब्रह्मशिर अस्त्र चलाऊं।

तब महात्मा अश्वत्थामाने उसी दिव्य अस्त्रका ध्यान किया, फिर एक सींक बांये हाथमें लेकर उस मन्त्रको पढ़ा और उन सब शस्त्रधारी वीरोंपर क्षमा न कर सके, फिर "जगत् पाण्डवरहित होजाय" क्रोध करके ऐसा कहकर सब जगत्का नाश करनेके लिये प्रतापी अश्वत्थामाने उस शस्त्रको छोड़ दिया। तब वह सींक आगसे जलने लगी, और ऐसा जान पड़ा कि यह प्रलयकालके यमराजके समान आज तीनो लोकको भस्म करदेगी।

१३ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे महाराज जनमेजय! महाबाहु श्रीकृष्णने उन सब लक्षणोंसे अश्वत्थामाका सब अभिप्राय जानकर शीघ्रतासे अर्जुनसे कहा।

हे अर्जुन! हे अर्जुन! तुम्हारे हृदयमें जो द्रोणाचार्य्यका बताया हुआ दिव्य अस्त्र वर्त्तमान है, अब उसके छोड़नेका समय आगया। हे पाण्डव! हे अर्जुन! अपने भाई और अपनी रक्षाके लिये शीघ्रतासे दिव्य अस्त्रको छोड़ो।

श्रीकृष्णके ऐसे बचन सुन शत्रुनाशन अर्जुन धनुष बाण लेकर शीघ्रतासे उतरे और ब्रह्मशिर अस्त्र छोड़नेके पहिले "हमारे गुरुपुत्र अश्वत्थामाका कल्याण होय पीछे हमारे भाइयोंका और हमारा कल्याण होय" ऐसा कहकर देवता, गुरु और शिवको प्रणाम करके "अश्वत्थामाका शस्त्र हमारे शस्त्रसे शान्तहो" ऐसा कहकर अर्जुनने उस शस्त्रको छोड़ दिया।

वह शस्त्र गाण्डीव धनुषसे छूटकर प्रलयकालकी अग्निके समान जलने लगा, उसी प्रकार द्रोणपुत्र अश्वत्थामाका महातेजस्वी शस्त्र भी जलने लगा, और चारों ओर प्रकाश करने लगा उस समय आकाशसे बिजली गिरने लगी, और भी भयानक सहस्रो अपशकुन होने लगे। सब जगत् भयसे व्याकुल होगया। आकाश शब्द और आगसे पूरित होगया, बन और पर्वतोंके समेत पृथ्वी हिलने लगी।

तब महामुनि नारद और कुरुकुलके पिता यह महात्मा व्यासने सब लोगोंको तपाते हुए उन दोनों शस्त्रोंके तेजको देखा फिर अश्वत्थामा और अर्जुनको शान्त करने ल[illegible] सब धर्म्मोंके जाननेवाले सब जगत्के कल[illegible] चाहनेवाले महातेजस्वी नारद और व्यास दोनों जलते हुए शस्त्रोंके बीचमें खड़े होगए दोनों जलते हुये बाणोंके बीचमें इस प्र[illegible] शोभित हुए जैसे जलती हुई दोअग्नि। इन दो[illegible] महात्माओंको देवता वा दानवादि इनकी[illegible] करते थे, इनका कोई निरादर नहीं कर स[illegible] था, इसी लिये ये उस शस्त्रसे नहीं जले तब दोनों महात्मा सब जगत्का कल्याण कर[illegible] लिये ऐसे बचन बोले।

पहिले समयमें भी शस्त्रविद्या जानने[illegible] अनेक महावीर हुये हैं, परन्तु किसीने मनुष्[illegible] लिये इस शस्त्रको नहीं छोड़ा, हे वीरो[illegible] तुमने ऐसा साहस क्यों किया?

१४ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् ज[illegible] जय। हे पुरुषसिंह। उन शस्त्रोंको अ[illegible] समान जलते हुए देख अर्जुनने शीघ्रतासे अ[illegible] शस्त्रको लौटाना चाहा और हाथ जोड़कर उन दोनों महात्माओंसे बोले, हमने इसलिये इस शस्त्रको छोड़ा कि इसके तेजसे अश्वत्थामाके शस्त्रका तेज नष्ट होय, अब हम शस्त्रको लौटा लेयं तो पापी अश्वत्थामा अपने शस्त्रके तेजसे निश्चय ही हम सबको भस्म कर देगा, इसलिये इस समय जो कुछ हमारे और जगत्के कल्या[illegible] णके लिये बात हमसे कहिए सो ही हम करें क्यों कि आप दोनों देवतोंके समान स्वामी है। ऐसा कहकर अर्जुनने अपने शस्त्रको लौटा लिया।

हे राजन्! उस शस्त्रका लौटारना बड़ा ही कठिन था, अर्ज्जुनके सिवाय साक्षात् इन्द्र भी उसे नहीं लौटा सकते थे, वह ब्रह्माके तेजसे बना था, इसलिये छोड़नेके पश्चात् ब्रह्मचारीके सिवाय कोई पापी उसे लौटा नहीं सक्ता, जो बिना कार्य्य किये उस शस्त्रको छोड़े और फिर लौटानेको इच्छा करे तो वह शस्त्र उसहीका शिर काट देता था।

अर्ज्जुन ब्रह्मचारी और ब्रती होकर भी घोर आपत्तिमें पड़नेसे भी उस घोर शस्त्रको कभी नहीं छोड़ते थे, वे ब्रतको पालनेवाले बीर और ब्रह्मचारी तथा गुरुकी सेवा करनेवाले थे, इस-लिये इस शस्त्रको लौटा सके।

अनन्तर अश्वत्थामाने ऋषियोंको अपने आगे खड़ा देख शस्त्र लौटानेकी इच्छा करी परन्तु शीघ्र न लौटा सके, तब अश्वत्थामा दीन होकर व्याससे बोले।

हे मुने। मैंने भीमसेनके भयसे घोर आप-त्तिमें पड़कर अपनी रक्षाके लिये इस शस्त्रको छोड़ा था, इसने दुर्य्योधनको मारते समय बहुत अधर्म्म किया था, यह भीमसेन युद्धमें अन्याय करता है, इसी लिये मैंने भीमपर यह शस्त्र छोड़ा था, अब मैं इसका लौटा नहीं सकता; मैंने इस घोर दिव्य अस्त्रको अग्निका मन्त्र पढ़-कर पाण्डवोंका नाश करनेके लिये छोड़ा था, सो अब यह पाण्डवोंका अवश्य ही नाश करेगा।

हे ब्रह्मन्! मैंने क्रोधसे भरकर भूलसे युद्धमें जो ये शस्त्र छोड़ा सो पाप किया।

श्रीव्यास मुनि बोले, हे तात! कुन्तीपुत्र अर्ज्जुन भी इस ब्रह्मशिर शस्त्रको जानते हैं। उन्होंने जो युद्धमें इस शस्त्रको छोड़ा था, सो क्रोधमें भरकर या तुम्हारा नाश करनेके लिये नहीं वरन् केवल तुम्हारे शस्त्रका बल शान्त करनेके लिये छोड़ा था, और फिर उन्होंने उसे लौटा भी लिया, देखो तुम्हारे पिताहीसे उन्होंने भी सीखा था, महाबाहु अर्ज्जुन क्षत्रि-योंके धर्म्ममें स्थित हैं, बुद्धिमान साधु और सर्व्व शस्त्रविद्याके पण्डित हैं तब तुम उन्हे बन्धुओंके सहित क्यों मारना चाहते हो? जहां ब्रह्मशिर अस्त्रके तेजसे शान्त किया जाता है, उस देशमे बारह बर्षतक जल नहीं बर्षता इसी लिये प्रजाका कल्याण चाहनेवाले महाबाहु अर्ज्जुन समर्थ होनेपर भी इस शस्त्रको नहीं काटते।

हे महाबाहो! तुम्हे पाण्डव और राज्य इन सबहीकी रक्षा करनी चाहिये इसलिये तुम इस शस्त्रको लौटा लो तुम्हारा क्रोध शान्त हो, पाण्डवोंका कल्याण हो क्यो कि राजऋषि युधि-ष्ठिर अधर्म्मसे किसीको जीतना नहीं चाहते तुम अपने शिरकी मणी पाण्डवोंको दे दो तब वे तुम्हारे प्राण छोड़ देंगे।

अश्वत्थामा बोले, हे भगवन्! मैंने पाण्ड-वोंसे जितने रत्न पाये हैं, और कौरवोंसे जो धन पाया है उन सबसे यह मणि अधिक है, जिसके पास रहनेसे प्यास, भूख, शस्त्र, रोग, देवता, दानव, साप, राक्षस, और चोरोंसे कुछ भय नहीं होता ऐसी उत्तम मणी मैं पाण्डवोंको नहीं दे सक्ता परन्तु आपके बचनोंको टाल भी नहीं सक्ता इसलिये यह मणी रक्खी है, और यह मैं बैठा हूं परन्तु अब यह व्यर्थ शस्त्र अभिमन्युकी स्त्रीके गर्भमें जाकर गिरैगा, क्यों कि मैं इसे छोड़-कर लौटा नहीं सक्ता, मैं आपके बचनको भी टाल नहीं सक्ता इसलिये यह शस्त्र वहीं जाय।

श्रीव्यास मुनि बोले, हे पापरहित। जो तुम चाहते हो सोही करो और इस शस्त्रको गर्भमें छोड़कर शान्त हो।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, व्यासके बचन सुन अश्वत्थामाने उस छोड़े हुए शस्त्रको उत्तराके गर्भमें जानेकी आज्ञा दी।

१५ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमे-जय! पापी अश्वत्थामाके अभिप्रायको जानकर

श्रीकृष्ण प्रसन्न होकर अश्वत्थामासे बोले, एक दिन राजा विराटकी पुत्री अभिमन्युकी स्त्री उत्तरा अपने घरमें बैठी थी, तब उससे एक ब्राह्मणने आकर ऐसे वचन कहा, कि जब कुरुकुलका नाश हो चुकेगा, तब तुम्हारे पुत्र होगा वह पहले गर्भमें नष्ट होजायगा फिर उसका जन्म होगा। आज उस महात्माका वचन सत्य हुवा अब कुरुकुलकी रक्षा करनेवाला परीक्षित नामक उत्तराका पुत्र होगा।

यदुकुलश्रेष्ठ श्रीकृष्णके ऐसे वचन सुन अश्वत्थामा क्रोधमें भरकर बोले, हे कमलनेत्र कृष्ण! जो तुम पाण्डवोंके पक्षपातसे कह रहे हो सो ऐसा नहीं होगा क्योंकि हमारा वचन मिथ्या नहीं होता; जिस विराटपुत्रीके गर्भको तुम रक्षा करना चाहते हो यह हमारा छोड़ा हुआ शस्त्र उसी गर्भका नाश करेगा।

श्रीकृष्ण बोले, अरे क्षुद्र! यह शस्त्र वृथा नहीं होगा वह गर्भ मर जायगा परन्तु फिर जीकर दीर्घायु पावेगा, तुझे सब मनुष्य नपुंसक, पापी, सदा पाप करनेवाला और बालकोंको मारनेवाला कहेंगे, इसलिये हम और भी एक शाप तुझे देते हैं, क्योंकि इस महापापका फल अवश्यही तुझे होना चाहिए। तू तीन हजार वर्षतक कहीं किसीसे किसी प्रकारकी सम्पत्ति बिना पाये एकला और असहाय होकर जगत्में डोलेगा, हे क्षुद्र! तू मनुष्योंके बीचमें नहीं रहेगा, तेरे शरीरसे पीब और रुधिरकी दुर्गन्धि आवेगी भयानक जङ्गलोंमें घूमता फिरेगा और अनेक प्रकारके दुःख सहेगा, परीक्षित भी दीर्घायु पाकर वेद पढ़ेंगे, अनेक प्रकारके व्रत करेंगे, और कृपाचार्य्यसे सब शस्त्रविद्या सीखकर क्षत्रियोंका धर्म्म पालन करेंगे, बीर धर्म्मात्मा परीक्षित साठ बर्ष राज्य करेंगे, युधिष्ठिरके पीछे महाबाहु परीक्षित ही कुरुकुलके राजा होंगे, रे नराधम! रे दुर्बुद्धे! तेरे देखते देखते परीक्षित महाराज होंगे तू हमारे सत्य और तपके बलको देख तेरे शस्त्रके अग्निसे जले हुए परीक्षितको हम जिला देंगे।

श्रीव्यास मुनि बोले, तुमने हमारे वचनोंका निरादर करके ऐसा घोर कर्म्म किया तुम ब्राह्मण और विशेष कर पण्डित होके ऐसे ऐसे घोर कर्म्म करते हो और क्षत्रीधर्म्मका पालन करते हो इसलिये देवकीपुत्रने जो कुछ तुम लिये कहा सो सब सत्य होगा।

अश्वत्थामा बोले, पुरुषश्रेष्ठ भगवान् कृ[illegible] वचन सत्यहोय मैं आजसे आपके संगही रहूं[illegible]

वैशम्पायन मुनि बोले, ऐसा कहकर अ[illegible] त्थामाने महात्मा पाण्डवोंको मणि दे द[illegible] और आप मलीन होकर सबके देखते दे[illegible] वनको चले गये।

पाण्डव लोग भी अश्वत्थामाके संग उत[illegible] हुई मणि लेकर श्रीकृष्ण, वेदव्यास और म[illegible] मुनि नारदको आगे करके शीघ्रता सहित [illegible] धारिणी, यशस्विनी द्रौपदीके पासको चले गए[illegible]

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, तब पतपरि[illegible] पाण्डव घोड़ोंको वायुके समान दौड़ाते [illegible] कृष्णके सहित डेरोंको चले गए, वहां जाक[illegible] सब लोग रथसे उतरे और शोकसे भरी द्रौ[illegible] दीको शोकसे व्याकुल देखा परन्तु द्रौपदी इ[illegible] देखकर प्रसन्न होगई। तब श्रीकृष्णके सहि[illegible] पाचो पाण्डव द्रौपदीके चारों ओर बैठ गये [illegible] राजाकी आज्ञासे महाबली भीमसेनने व[illegible] मणी द्रौपदीको दी और ऐसे बचन कहे।

हे कल्याणी! यह तुम्हारे बेटोंके मार[illegible] वालेसे जीतकर छीनी है, अब तुम उठो औ[illegible] क्षत्राणियोंके धर्म्मका स्मरण करो। हे कम[illegible] नयनी। जिस समय मधुदैत्यके नाश कर[illegible] वाले श्रीकृष्ण हस्तिनापुरसे महाराजसे विदा होक[illegible] चले थे, उस समय तुमने कैसे कैसे कठोर वचन कहे थे कि मेरे पति, पुत्र और तुम सब मर गए जिस समय महाराजने शान्ति करनेकी इच्छा कीथी तब तुम इनसे कैसे कैसे कठोर वचन

कहे थे! वे सब चत्रियोंके धर्मके अनुसार ही थे, क्या तुम उन्हें कुछ भी नहीं स्मरण करती हो? हमारा राज्य छीननेवाला पापी दुर्य्योधन मारा गया, मैंने तड़फते हुए पापी दुःशासनका रुधिर पिया, बैर समाप्त होगया; अब तुम पाण्डवोंसे कुछ नहीं कह सक्ती हो अश्वत्थामाको जीतकर ब्राह्मण और गुरु समझकर जीता छोड़ दिया, उसका यश जगत्में नष्ट होगया, केवल शरीर ही बाकी रह गया है उससे मणि और शस्त्र छीन लिये।

द्रौपदी बोली, अब मैं अरिण होगई गुरु-पुत्र तो हमारे गुरुही हैं अब इस मणिको राजा अपने शिरमें बांधे।

महाराज युधिष्ठिरने उस मणिको गुरुका प्रसाद मानकर द्रौपदीकी हठसे अपने शिरमें बांधा। उस समय उस मणिसे राजा ऐसे शोभित हुए, जैसे चन्द्रमाके सहित पर्व्वत, तब द्रौपदी शोकसे व्याकुल होकर उठीं और महाबाहु युधिष्ठिरने श्रीकृष्णसे कुशल पूंछी।

१६ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, जब इस प्रकार तीनों वीरोंने रात्रिको सोते हुए युधिष्ठिरकी सब सेनाको मारडाला, तब शोच करते हुए राजा युधिष्ठिर कृष्णसे बोले, हे कृष्ण! पापी चुद्र दुरात्मा अश्वत्थामाने हमारे सब महारथ पुत्रोंको कैसे मारडाला? सब शस्त्रविद्याके जाननेवाले एकले ही सैकड़ों और सहस्रों वीरोंसे लड़नेवाले द्रुपदके सब पुत्रोंको कैसे अश्वत्थामाने मारडाला? देखो जिस महारथको युद्धमें खड़ा देखकर महाधनुषधारी द्रोणाचार्य्य युद्धसे हट जाते थे, उस वीर धृष्टद्युम्नको एकले अश्वत्थामाने कैसे मार डाला? हे पुरुषसिंह! हमारे गुरुपुत्र अश्वत्थामाने कौनसा कर्म्म किया था, जिससे एकलेहीने सबको मारडाला।

श्रीकृष्ण बोले निश्चय यह निश्चय है कि अश्व-त्थामा निश्चय ही देवतोंके देवता, ईश्वरके ईश्वर, सनातन शिवकी शरण गये होंगे, इसीसे उन्होंने सबको मारडाला। शिव प्रसन्न होकर मनुष्यको अमर कर सकते हैं और ऐसा परा-क्रम दे सक्ते हैं जिससे मनुष्य इन्द्रको भी मार सक्ता है, हम देवतोंके देवता शिवके अनेक पुराने कर्म्म जानते है। हे भारत! वह जगत्के आदि अन्त और मध्य है उनकी शक्तिसे सब जगत् अपना अपना काम करता है, जिस समय भगवान् ब्रह्मा पहिले सृष्टि बनाने लगे। तब उन्होंने भी शिवके ऐसे ही प्रभाव देखे और शिवसे कहा कि तुम सृष्टि बनाओ तब शिवने कहा कि अच्छा और फिर ब्रह्माको जगत्के दोष दिखलाये तब महातपस्वी ब्रह्माने बहुत दिनतक जलमें डूबकर तपस्या करी इस प्रकार बहुत दिनतक तपस्या करते करते ब्रह्मा जगत्कर्त्ता शिवका मार्ग देखते रहे फिर उन्होंने अपने मनसे एक मनुष्य उत्पन्न किया।

ब्रह्माने अपने पिता शिवको जलमें सोता हुआ देख उस पुरुषसे कहा यदि मुझसे पहिले कोई उत्पन्न न हुआ हो तो मैं सृष्टि रचूं, उस पुरुषने कहा कि, तुम विश्वास रक्खो तुमसे पहिले उत्पन्न हुआ कोई नहीं है, ये जो जलमें सोते हैं सो सनातन पुरुष हैं अब तुम प्रजा उत्पन्न करो।

तब ब्रह्माने दक्ष प्रजापति आदि लेकर सब जगत् बनाया फिर स्वेदज, अण्डज, उद्भिज और जरायुज ये चार प्रकारकी सृष्टि रची, हे राजन्! यह सब प्रजा उत्पन्न होते ही भूखसे व्याकुल होकर दक्ष प्रजापतिको खाने दौड़ी। दक्ष प्रजापति अपनी रक्षाके लिये, ब्रह्माके पीछे दौड़े और कहा कि, हे भगवन्! आप इनसे हमारी रक्षा कीजिये और इन्हे खानेको कुछ दीजिए, तब ब्रह्माने उन्हे अन्न और स्थावर औषधी दी और चलनेवालेमें यह नियम कर दिया कि दुर्व्वलको बलवान् खाजाय।

हे राजन्। तब वह प्रजा अन्न लेकर अपने घरको चली गई; तभीसे अपनी अपनी जातियोंमें प्रेम होने लगा। जब यह सब जगत् उत्पन्न होगया तब सनातन पुरुष भी जलसे उठ बैठे और सब प्रजाओंको देखने लगे। सब जगत्को अनेक रूपसे उत्पन्न हुआ और बढ़ा हुआ देख शिवको बड़ा क्रोध हुआ और अपने लिंगको बलसे पृथ्वीमें पटक दिया, वह लिङ्ग पृथ्वीमें गिरकर वैसा ही रह गया।

तब ब्रह्मा उन्हें शान्त करके बोले, तुमने इतने दिनतक पानीमें सोकर क्या किया? और इस लिङ्गको पृथ्वीमें क्यों पटक दिया?

तब जगत्के गुरु शिव ब्रह्मासे क्रोध करके बोले, प्रजा तो दूसरेने बनाही लो अब मैं इसको रखकर क्या करूंगा? तुमने तपसे अन्न और ओषधी भी बना लिए अब प्रजा सुख करे ऐसा कहकर शिव क्रोधमें भरकर मुञ्जमाल नामक पर्व्वतपर तप करनेको चले गए।

१७ अध्याय समाप्त।

श्रीकृष्ण बोले, हे राजन्। युधिष्ठिर जब सत्ययुग बीत चुका तब देवतोंने वेदोंके प्रमाणसे विधिपूर्व्वक यज्ञोंको बनाया, उनके अनुसार ही यज्ञकी सामग्री घी और भाग लेने योग्य देवतोंको बनाया, परन्तु वे यथार्थ रूपसे शिवको नहीं जानते थे, इसलिये उन्होंने भगवान शिवका भाग न दिया, तब शिवने क्रोध करके पहिले धनुष बनाया फिर लोक यज्ञ, क्रियायज्ञ, सनातन गृहयज्ञ, पञ्चभूत यज्ञ और नृयज्ञ, बनाया, और फिर जगत् बनाया, फिर लोकयज्ञ और नृयज्ञसे पाच हाथका धनुष बनाया हे भारत! उस धनुषका रोदा वषट्कार हुआ और सब यज्ञकी सामग्रीसे उसे पुष्ट किया तब महादेव क्रोध करके उस धनुषको लेकर उस स्थानपर आये जहां सब देवता यज्ञ कर रहे थे, ब्रह्मचारी सनातन शिवको धनुष लिये देख पृथ्वी और पर्व्वत कांपने लगे। वायु चलता चलता बन्द होगया, आग जलती जलती बुत गई आकाशमें तारे और नक्षत्र घूमने लगे। सू और चन्द्रमाका मण्डल अस्त होगया, ना और आकाश अन्धकारसे भर गया देवता औ सब प्राणी घबड़ाने लगे। सब देवता घब गए, तब शिवने उस यज्ञके हृदयमें एक बा मारा तब यज्ञ और अग्नि हरिण बनकर भ गये, शिवभी उस तेजसे प्रकाशित होने लो और आकाशमें यज्ञको ढूढने लगे। जब य नष्ट होगया तब सब देवता घबड़ाने लगे। त शिवने क्रोध करके धनुषके कोनेसे सविता हाथ, भगके नेत्र और पूषाके दांत तोड़ डाले तब सब देवता और यज्ञके अङ्ग इधर उधरक भाग गये कोई वहीं मुरदेके समान गिरपड़े त शिवने देवतोंको भागते देख धनुषके कोनेसे सबक रोक दिया, तब देवतोंने अपने बचनसे उस धनु षके रोदेको काट दिया तब सब देवता यज्ञक संगमें लेकर धनुषरहित शिवकी शरणमें गये

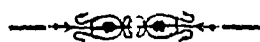
तब शिवने भी उनके ऊपर कृपाकर दी त भगवान शिवने अपनेको पके तलावमें गिरा दिया, वहीं क्रोध अब अग्नि रूप होकर जलक सुखाता है, शिवने फिर प्रसन्न होकर भगक नेत्र, सविताको हाथ और पूषाको दांत दे दि और फिर जगत्में यज्ञ होने लगे। उसी दिन सब जगत् सावधान होगया तभीसे देवतोंने स यज्ञोंमें शिवका भाग दे दिया।

हे राजन्। शिवहीके क्रोधसे यह सब ना हुआ और उनहोकी प्रसन्नतासे सुख होग इसीसे तुम्हारे सब महारथ पुत्र और साथिर सहित धृष्टद्युम्न मारे गए आप उस कर्म्मको अश्व त्थामाका किया न मानिये यह सब शिवकी कृपा हुआ है, अब आगे जो कुछ काम हो सो कीजिए

१८ अध्याय समाप्त।

ऐषीक और सौप्तिक पर्व्व समाप्त।

महाभारत।



स्त्री पर्व्व।

दोहा।

नरनारायण व्यास अरु, बन्दि सरस्वति पाय।
भारतकी भाषा करों, सुजननको सुखदाय॥

महाराज जनमेजय बोले, हे वैशम्पायन मुने। जिस समय राजा दुर्य्योधन सब सेनाके सहित मारे गये तब महाराज धृतराष्ट्रने सुनकर क्या किया? महामनस्वी कुरुकुलराज महाराज युधिष्ठिरने क्या किया? और कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा, और कृतवर्म्माने क्या किया? हमने यह सुना कि कृष्णने अश्वत्थामाको शाप दिया था सञ्जयने राजासे क्या कहा सो हमसे कहिये?

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे महाराज। सौ पुत्रोंके मरनेसे राजा धृतराष्ट्रकी ऐसी दशा होगई जैसे शाखा कटनेसे वृक्षकी उस समय पुत्र शोकसे व्याकुल चिन्तासे भरे राजा धृतराष्ट्रके पास जाकर सञ्जय बोले।

हे महाराज! शोक किसीकी सहायता नही करता इसलिये आप क्यों शोक करते हैं? देखो अठारह अक्षौहिणी सेना मारी गई, इस समय पृथ्वी मनुष्योंसे रहित होगई है अब किसी ओर कुछ वस्तु नही दीखता, अनेक देशोंसे आये हुये राजा तुम्हारे पुत्रोंके सहित मारे गये, अब आप उठिये, गुरु, बेटे, पोते, जाती और मित्रोंका प्रेत कर्म्म कीजिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय। सञ्जयके ऐसे दया भरे वचन सुनकर अपने पुत्र और पोतोंके शोकसे व्याकुल राजा धृतराष्ट्र मूर्च्छित होकर पृथ्वीमें गिर गये, उस समय राजाकी ऐसी दशा होगई जैसे वायुसे उखड़े हुए वृक्षकी।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय। मेरे सब पुत्र, मन्त्री और मित्र मारे गये अब मैं जीकर जगत्में केवल दुःख ही भोगूंगा, अब मैं बन्धुरहित होकर जीकर क्या करूंगा? मेरी इस समय ऐसी दशा होगई है जैसे पङ्ख कटनेसे बूढे पक्षीकी, मेरा राज्य नष्ट होगया, आंख जाती रहीं और सब बन्धु भी मारे गये, अब तेजरहित सूर्य्यके समान मैं अब जीकर क्या करूंगा? मैने पहिले अपने मित्र परशुराम, ब्रह्मऋषि नारद और कृष्णद्वैपायन मुनिके वचन नही माने थे, सभामें जा सभाके बीचमें बैठकर श्रीकृष्णने कल्याण भरे वचन कहे थे मैने इनके वचन नही सुने उन्होंने मुझसे कहा था "हे राजन्! पाण्डवोंके सङ्ग आप वैर मत कीजिये और अपने पुत्र दुर्य्योधनको वशमें कीजिये" तब मैंने दुर्बुद्धिमें पड़कर उनके वचन न माने भीष्मने जो धर्म्म भरे वचन कहे थे सो भी मैंने नहीं माने अब सोचता हूं नाचते हुये बैलके समान पराक्रमी दुर्य्योधन, दुःशासन और कर्णका मरना सुनकर मेरा हृदय फटा जाता है। द्रोणाचार्य्यरूपी सूर्य्यको ग्रहण लग गया यह सुनकर भी मेरा हृदय फटता है।

हे सञ्जय! मुझे स्मरण नहीं होता कि मैंने अपने जन्ममें कोई पाप किया है जिसका

मुझको यह भयानक फल भोगना पड़ा मुझ्को निश्चय है कि मैंने पहिले जन्मोंमें कुछ पाप किया था, उसीसे ब्रह्माने मुझे ऐसे ऐसे दुःख दिये यह बुढ़ापा, बन्धु और मित्रोंका नाश ये प्रारब्धहीसे सब दुःख इकट्ठे होगये हैं; अब इस जगत्में हमारे समान दुःखी और कौन है? इसलिये व्रतधारी पाण्डव आज ही हमें ब्रह्म लोकके बड़े रस्तेमें जाते देखे अर्थात् हम इस ही समय प्राण त्याग करते हैं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, इस प्रकारसे राजाको अनेक प्रकार रोते देख सञ्जय बोले, हे महाराज! आपने बूढ़ोंके मुखसे वेद और अनेक शास्त्र सुने हैं, इसलिये आप शोकको छोड़ दीजिए, हे राजन्! जैसे पुत्रके मरनेसे राजा सृञ्जयको शोक हुआ था और उनको मुनियोंने समझाया था जैसे उनके पुत्रोंको अभिमान हुआ था ऐसे ही तुम्हारे पुत्रको भी अभिमान हुआ था आपने पहिले किसीको बात नहीं मानी केवल लोभमें पड़के अन्याय करने लगे और अपना भी प्रयोजन कुछ सिद्ध न कर सके, केवल अत्यन्त तेज धारवाली तलवारके समान अपनी महातेज बुद्धिसे काम करते रहे।

आपके पुत्रने सदा ही मूर्खोंको मन्त्री रक्खा, जिसका दुःशासन मूर्ख राधापुत्र कर्ण, दुष्टात्मा शकुनी, मन्त्री होय उसका नाश क्यों न होता? जिसने सब जगत्को जीता था, ऐसे शल्य, कुरुकुलमें बूढ़े भीष्म, गान्धारी विदुर, कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य्य, महाबाहु कृष्ण, बुद्धिमान नारद और अनन्त तेजस्वी व्यास आदि मुनियोंके बचन दुर्योधनने न माने, कभी किसी धर्मका आश्रय न लिया केवल सदा युद्ध करनेहीकी इच्छा रक्खी जैसे वायु तिनकोंको इधर उधर उड़ाकर लेजाता है, तैसेही काल भी सब जन्तुओंको इधर उधर करता रहता है, दुर्योधन मूर्ख, अभिमानी केवल युद्ध करनेकी इच्छा करनेवाला, दुष्ट, क्षमा हीन, असन्तोषी और बलवान था।

तुम विद्वान बुद्धिमान और सदासे सत्यवादी हो ऐसे बुद्धिमान मनुष्योंको कभी मोह नहीं होता।

हे राजन्! तुम्हारे पुत्रने धर्मका आदर नहीं किया सब क्षत्रियोंका नाश कराया और शत्रुओंका यश बढ़ा दिया, तुम भी उस समय मध्यस्थ थे, परन्तु कोई बात तुमने भी अच्छी न की तराजूके दोनों ओर समान बोझ न रक्खा, मनुष्यको ऐसा उचित है कि पहिले ही शक्तिके अनुसार ऐसा विचारकरे जिसमें आगे कोई दुःख न भोगना पड़े, तुमने भी पुत्र प्रेममें आकर दुर्योधनके अनुकूल ही वर्त्ता किया, फिर अब आपत्ति पड़नेसे क्यों शोक करते हो? जो केवल शहत देखकर वृक्ष पर चढ़ जाता है और अपने गिरनेका भय नहीं करता वह वृक्षपरसे गिरकर तुम्हारे ही समान आपत्ति भोगता है, शोचसे धन, बल, लक्ष्मी और मोक्ष सिद्ध नहीं होती। जो आप ही आग बनाकर पीछे कपड़ेसे ढकता है और पीछे जलनेसे शोच करता है वह पण्डित नहीं कहाता, तुमने अपने पुत्रको सङ्ग लेकर वचन रूपी वायुसे धौंककर और लोभरूपी घी डालकर युधिष्ठिररूपी अग्निको चैतन्य कर दिया उस बढ़ी हुई अग्निकी बाणरूपी ज्वालामें तुम्हारे पुत्र पतङ्गके समान जल गये, अब तुम उनका क्या शोच करते हो? अब जो तुम अपनी आंसुवोंसे शरीरको भिगा रहे हो यह व्यवहार शास्त्रसे विरुद्ध है, पण्डित ऐसा नहीं करते ये आंसू मनुष्यको अग्निके समान भस्म करते हैं, इसलिये आप क्रोधको छोड़िये और अपने आत्माको शान्त कीजिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, जब महात्मा सञ्जय ऐसा कह चुके तब शत्रुनाशन विदुर राजाको समझाने लगे।

१ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! तब पुरुषसिंह विचित्र वीर्य्यपुत्र धृतराष्ट्रके पास आकर विदुरने मरे हुये वाक्योंके समान जो कुछ कहा सो तुम सुनो, ये बचन विदुरने राजाके प्रसन्न होनेके लिये कहा था।

विदुर बोले, हे लोकनाथ! हे महाराज! आप क्यों शोचते हैं? उठिये जगत्में सब जीवोंकी अन्तमें यही गति होती है, इसलिये अपने आत्माको शान्त कीजिये जगत्में जितनी सञ्चय की हुई वस्तु हैं, उन सबका एक दिन नाश होता है। जितनी ऊंचीवस्तु हैं वे सब एक दिन नीची होती हैं, जितने संयोग है, उन सबका अन्तमें वियोग होता है और सब उत्पन्न होनेवाले मरते हैं।

हे चत्रियश्रेष्ठ! जब शूर और कायर सबहीको एक दिन मरना है। तब वीर चत्री युद्धहीमें मरे यह कोई नियम नहीं है कि ऐसे मरे और बिना युद्ध किये जीता रहे क्यों कि काल आनेसे सब ही मर जाते है, जगत्के पहिले ब्रह्म था, अन्तमे ब्रह्म रहैगा केवल बीचमें शरीर धारण करता है इसलिये सब शरीर नष्ट होनेवाले हैं, इसमें रोनेसे क्या होगा? शाच करनेसे मरा हुआ नहीं मिलता और शोचनेसे कोई मर भी नहीं जाता लोक इस ही प्रकार स्थित है, इसलिये आप शोच करने योग्य नहीं हैं।

हे कुरुकुलश्रेष्ठ! काल जगत्में सब प्रकारके जीवोंका नाश करता है, उसका कोई भी मित्र और शत्रु नहीं है, जैसे वायु तिनकोंको इधर उधर उड़ाया करता है वैसेही कालभी जीवोंको इधर उधर घुमाया करता है, यद्यपि सब एक रीति से उत्पन्न होते हैं परन्तु मरनेके समय जिसको काल पहिले आता है, वही मनुष्य पहिले मरता है, इसलिये रोनसे क्या होगा?

यदि आप शास्त्रों को प्रमाण मानते हो तो निश्चय ही वे सब स्वर्गको गए इसलिये आप युद्धमें मरे हुए वीरोंका शोच न कीजिये वे सब चत्री वेदपाठी, ब्रतधारी थे और सब युद्धमें सन्मुख मरे उनके लिये रोनेसे क्या लाभ है? सब अज्ञानसे यहां आए थे, और अज्ञानसे नष्ट होगए, तुम उनके कोई नहीं हो और वे तुम्हारे कोई नहीं थे, इसलिये रोनेसे क्या होगा? चत्रियों की दोनो ही ओरसे सुख है अर्थात् युद्धमें मरे तो स्वर्ग और शत्रुवोंको मारा तो यश मिलता है, जो चत्रिय युद्धमें मरता है वह इन्द्रका अतिथि बनता है इन्द्र उनको इच्छानुसार सुख देनेवाले लोकोंको देते है, जिस प्रकार युद्धमें मरनेवाले चत्रियोंको स्वर्ग मिलता है ऐसा अनेक दक्षिणा युक्त यज्ञ और अनेक तपस्या करनेसे भी नहीं मिलता और ऐसा सुख अनेक विद्या पढ़नेसे भी नहीं मिलता है।

हे राजन्! वीरोंने शरीररूपी अग्निमें बाण रूपी आहुती छोड़ी और दूसरोंकी आहुती सही तब ये सब स्वर्ग को चले गए हमने यह स्वर्गका मार्ग आपसे कहा वास्तवमें चत्रियोंका युद्धके समान कल्याण और कहीं नहीं है वे सब सभाको शोभा बढ़ानेवाले वीर महात्मा चत्री उत्तम लोकोंको गए इसलिये आप उनका कुछ शोक न कीजिए।

हे पुरुषसिंह! आप अपने आत्माको शान्त कीजिए और शोकसे व्याकुल होकर शरीर मत छोड़िये, जगत्में सहस्रो माता, पिता, स्त्री और पुत्र बन चुके। तुम किसके हुए और तुम्हारा कौन हुआ जगत्में शोकके सहस्रों और भयके सैकड़ों स्थान हैं, उनमें प्रतिदिन मूर्ख जाते हैं, पण्डित नहीं।

हे कुरुकुलश्रेष्ठ! कालका कोई मित्र, शत्रु और मध्यस्थ नहीं है, वह समान रूपसे सबका नाश करता है, काल जगत्का नाश करता है, काल सब जगत्के सोनेपर भी जागता है। कालको कोई भी नहीं नांघ सका यौवन

रूप, जीवन द्रव्य, सुख और मित्रोंके सङ्ग रहना सब अनित्य हैं, इसलिये पण्डित इनकी इच्छा न करे; सब जगत्के शोचको आप एकले अपने ऊपर न लीजिए क्यों कि जो अभाव होनेवाला होता है वह किसीके रोके रुकता नहीं।

यदि मनुष्य अपना पराक्रम देखे तो विना शोक किये ही शोचका बदला लेय। शोकरूपी दुःखकी यही औषधी है, क्यों कि शोक करनेसे शोक नष्ट नहीं होता। वरन् उलटा बढ़ता ही है बुरा कर्म्म करने और वस्तुओंके वियोगसे जो शोक उत्पन्न होता है उससे मूर्ख मनुष्योंका हृदय जला करता है, आप जो शोच करते हैं, इससे धर्म्म, अर्थ और कोई, सुख भी सिद्ध नहीं होगा, इससे जगत्के कार्य्य सिद्ध नहीं होते और स्वर्ग भी नष्ट होजाता है।

साधारण मनुष्य जब किसी छोटी अवस्थासे बड़ी अवस्थाको प्राप्त होता है, अर्थात् दरिद्रसे धनी होजाता है, तब उसे सन्तोष नहीं होता और अनेक प्रकारको उपद्रव करता है, परन्तु पण्डित क्रमसे सन्तुष्ट होता चलाजाता है मनुष्य मनका और बुद्धिसे औषधियोंसे शरीरका दुःख दूर कर, हमने जो यह ज्ञान तुमसे कहा इसको मूर्ख नहीं समझ सकता पूर्व्वजन्मका किया हुआ कर्म्म सोतेके सङ्ग सोता है, बैठेके सङ्ग बैठता है और चलते हुयेके सङ्ग चलता है अर्थात् किसी समय सङ्ग छोड़ता नहीं है।

मनुष्य जिस जिस अवस्थामें जो जो शुभ या अशुभ कर्म्म करता है, उसी उसी अवस्थामें उसका वैसा ही फल भोगता है, जिस जिस शरीरसे मनुष्य जो जो कर्म्म करता है, उसका उसका फल उसही शरीरसे भोगना पड़ता है, आत्मा ही आत्माका बन्धु है, आत्मा ही आत्माका शत्रु है और आत्मा ही किये हुए कर्म्मका साक्षी है, बिना किये हुए कोई कर्म्मका फल नहीं भोगता धर्म्मका सुख और पापका फल दुःख है, आपके समान बुद्धिमान लोग मल नाश करनेवाले अज्ञानसे उत्पन्न हुये पाप कर्म्म नहीं करते हैं।

२ अध्याय समाप्त।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे महाबुद्धिमान तुम्हारे उत्तम वचन सुननेसे मेरा शोक नष्ट होगया, अब कुछ और सुननेकी इच्छा है हम तुमसे प्रश्न करते हैं, कि प्यारी वस्तुओंके छूटने और अनिष्ट वस्तुओंके मिलनेसे पण्डितोंके मनमें दुःख क्यों नहीं होता?

विदुर बोले, हे राजन्! जिस जिस वस्तुसे मनमें सुख वा दुःख होय पण्डित उनहीसे दूर रहे और अपने मनको वशमें रक्खे तो शान्ति प्राप्ति होती है।

हे पुरुषसिंह! आप अत्यन्त विचार कर देखिये तो यह अनित्य जगत् केलेके वृक्षके समान सार हीन मिलेगा, देखो सब पण्डित, मूर्ख, धनी और निर्धन श्मशानमें जाकर एक समान सो रहते हैं, देखो उस समय मांसरहित हड्डी और नाड़ियोंसे बन्धे हुए शरीरोंमें मनुष्यका भेद देखता है, अर्थात् मरे हुए दरिद्र और धनीके शरीरमें कुछ भेद नहीं रहता, जिससे कुल और रूप आदिके विशेष भाव होते हैं, वह प्रारब्ध सदा ही सब कामोंमें सङ्ग रहती है तब मूर्ख मनुष्य वृथा क्यों शोक करते हैं। पण्डितोंने शरीरोंको घरके समान कहा है जैसे घर टूटनेसे घरका स्वामी नहीं मरजाता ऐसे ही शरीर नष्ट होनेसे नित्य जीवका नाश नहीं होता; जैसे मनुष्य पुराने वस्त्र छोड़कर नवीन वस्त्र पहिननेकी इच्छा करता है, ऐसे ही जीव एक शरीरको छोड़कर दूसरे शरीरमें चला जाता है।

हे विचित्रवीर्य्य पुत्र! मनुष्य विना कुछ कर्म्म किये फल नहीं भोगता सुख अथवा दुःख

अपने ही किये कर्म्मोंसे मिलता है, कर्म्मसे स्वर्ग, सुख, दुःख, स्वतन्त्रता और परतन्त्रता प्राप्त होती है, जैसे कोई मिट्टीका बरतन चाक पर चढ़ते ही फूट जाता है, कोई पकते और कोई बहुत दिनमें टूटता है, ऐसे ही किसी कर्म्मका फल उसी समय किसीका कुछ दिनमें और किसीका फल बहुत दिनमें होता है, कोई कर्म्म किसी कर्म्मसे रुक जाता है, कोई करते ही मात्र और कोई पीछे फल देता है।

हे राजन्। मनुष्योंके शरीरोंकी ऐसी गति है, जैसे कोई फल होते ही कोई सूखा और कोई पकता पकाता गिर पड़ता है, जैसे किसी अन्नकी हाण्डी चुल्हेपर चढ़ी, कोई उतरी कोई उतरती कोई आधी पकी और कोई पूरी पककर फूटती है, ऐसे ही किसीका शरीर गर्भहीमें उत्पन्न होते ही, किसीका एक दिनमें किसीका दूसरे दिन, किसीका एक पक्षमें किसीका एक महीनेमें, किसीका एक बर्षमें किसीका दो बर्षमें, किसीका जवानीमें, किसीका बुढ़ापेमें, नष्ट होजाता है, पहिले कर्मोंके वशमें होकर मनुष्य उत्पन्न होते हैं और मरते हैं, यह संसार अपने स्वभावसे ऐसे ही चलता है, जैसे कोई जन्तु खेलनेके लिये पानीमें तैरता है, उसमें कभी डूबता है और कभी उछलता है, ऐसे ही इस गम्भीर जगत्में मूर्ख कर्म्मके वशमें होकर बंधते हैं और दुःख भोगते हैं परन्तु कल्याण चाहनेवाले पण्डित इन सब दुःखोंसे छूटकर मोक्ष पदको पाते हैं।

३ अध्याय समाप्त।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे कहनेवालोंमें श्रेष्ठ विदुर इस संसाररूपी वनको मनुष्यसे कैसे जान सका है, हम इस विषयको सुनना चाहते हैं तुम कहो।

विदुर बोले, इस जीवको जन्महोतेसे क्रिया [illegible] होती है, पहिले वह स्त्रीके गर्भमें थोड़े और स्त्रीका रज मिलता है, तब ही जीव आकर उसमें बास करता है, फिर क्रमसे जब पांच महीने बीत जाते हैं तब उस बालकके सब अङ्ग पूरे होजाते हैं, उस समय वह अपवित्र मांस और ऊपरको पैरके अनेक क्लेश सहता हुआ वायुके वेगसे योनीके द्वारमें टंगा रहता है। वहां उसे योनीकी पीड़ा और पूर्व्व जन्मके कर्म्मोंसे अनेक कष्ट भोगने पड़ते हैं जब उस घोर आपत्तिसे छूटता है, तब संसारमें आकर अनेक उपद्रव करता और देखता है उसके पास अनेक बन्धु बान्धव ऐसे आते हैं, जैसे मासको और कुत्ते। फिर जब कुछ समय बीत जाता है, तब पहिले कर्म्मोंसे अनेक रोग आकर अनेक पीड़ा देते हैं, जब वह मनुष्य इन्द्रियोंकी फांसीमें फंसकर विषयोंके स्वादमें पड़ता है तब ही उसे अनेक प्रकारके विषय आकर घेर लेते हैं, उन विषयोंसे बार बार दुःख पानेपर भी आपत्तिसे नहीं छूटता, जब बुरा या भला काम करते करते आपत्तियोंसे तृप्त नहीं होता तब महात्मा शास्त्र और ध्यानकी विधिसे अपने आत्माकी रक्षा करते हैं। परन्तु मूर्ख कुछ भी नहीं जान सक्ता तब उसे यमदूत खींचकर मारडालते हैं और यमलोकको ले जाते हैं। तब सब इन्द्रिय नष्ट होनेपर भी जो पहिले पुण्य और पाप किया था, उसका फल देखकर भी अपने कल्याणका कोई उपाय नहीं करता अर्थात् अपने आप ही बन्धन काटनेका उपाय नहीं करता।

देखो कैसे आश्चर्यकी बात है कि सब जगत् पागलके समान होकर लोभके वशमें पड़ा है, देखो मनुष्य लोभ, क्रोध और भयमें पागल होकर अपने आत्माका कुछ ध्यान नहीं करता।

"हम कुलीन हैं" इस अभिमानसे छोटे कुलवालोंका और धनके अभिमानसे दरिद्रियोंकी निन्दा करता है, मैं पण्डित हूं और सब मूर्ख हैं यह जानकर दूसरोंके दोष देखाता

है, परन्तु अपने दोषोंको दूर करनेकी इच्छा नहीं करता।

देखो पण्डित, मूर्ख, धनी, निर्धन, कुलीन, अकुलीन, मानी और मानरहित सब ही श्मशानमें जाकर नष्ट होकर सो जाते हैं किसीका मांस हड्डी और वसा भी नहीं बचती उस समय दूसरे मनुष्योंको धनी और दरिद्रमें कुछ भी भेद नहीं दीखता, इससे उनका अज्ञान ही कुलीन यह अकुलीन, रूपवान वा कुरूप था।

जब सब श्मशानमें जाकर एक समान ही पृथ्वीमें सो जाते हैं, तब मूर्ख मनुष्य लोभके वशमें होकर काहेको परस्पर लड़ना भिड़ना चाहता है?

हे पृथ्वीनाथ! जो इस तलको प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे सुनकर इस ही प्रकार इस अनित्य जीव लोकमें अपने धर्म्मको पालता है, वह परम गतिको पाता है। जो इस तलको जानकर ऐसा ही वर्त्ताव करता है। वह अनेक मनुष्योंको मोक्ष करता है।

४ अध्याय समाप्त।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे विदुर! तुमने जो वर्णन किया सो बुद्धिमानोंके जानने योग्य है इसलिये तुम इसहीको विस्तारपूर्वक हमको सुनाओ।

विदुर बोले, हे महाराज! हम ब्रह्माको प्रणाम करके आपसे इस जगत्‌रूपी बनका उसी ही प्रकार वर्णन करते हैं जैसे महर्षियोंने कहा है।

एक ब्राह्मण कभी अनेक मास खानेवाले भयरूप महाशब्दवाले बाघ, हाथी और ऋच्छोंके झुण्डोंसे भरे, भयानक गर्ज्जने योग्य बनमें पहुंच गया, जिस बनको देखकर साक्षात् यमराज भी डरे, वहां जाकर इस ब्राह्मणका हृदय कांपने लगा। रोए' खड़े होगये और सब काम भूल गया, फिर चारों ओर देखता हुआ "मैं किधर जाऊं" ये बिचारता हुआ, उन जन्तुवोंसे बचता हुआ भयसे व्याकुल होकर इधर उधर बनमें घूमने लगा। उस वायुसे भरे बनसे विषयोंसे व्याकुल ब्राह्मण दूर न जा सका फिर पर्व्वतोंके समान ऊंचे पांच सिरोंवाले सांपके सहित एक स्त्रीको देखा, फिर आकाशके समान वृक्षोंसे पूरित बेत और बड़े बड़े तिनकोंसे भरे एक तालावको देखा, फिर ब्राह्मण उस गहरे तलावमें गिर पड़ा, फिर एक तिनकेको पकड़कर उस लता भरे तलावमें अभिमान सहित इस प्रकार लटकने लगा, जैसे कटहरका बड़ा फल, वह जिस डालमें लटकता था, वहां इसका शिर नीचेको पैर ऊपरको थे, तब वहां उसने फिर एक उपद्रव देखा कि कूवेके बीचमें सांप बैठा है और ऊपर एक मतवाला हाथी खड़ा है, उस हाथीके छः मुह, सफेद और काला रङ्ग और चार पैर हैं, और क्रमसे उसहीकी ओर चला आता है, उस कूवेके ऊपर जो वृक्ष था, उसकी डालियोंमें भयानक अनेक रूपवाली मखियोंका छाता लगा है, उससे बार बार थोड़ा सहत गिरता है, और उसीको खाकर वह मूर्ख ब्राह्मण उस सङ्कटहीमें प्रसन्न होरहा है और उसकी प्यास नहीं बुझती और उसकी यही इच्छा होती है कि मैं सदा यही सहत पीता रहूं। कभी उससे निराश नहीं होता फिर उस ब्राह्मणने देखा कि एक सफेद और एक काला मूसा जिस लताको मैं पकड़े रहा हूं उसे काट रहे हैं, परन्तु तोभी उस ब्राह्मणको जीनेकी आशा न छुटी, भयानक सांप, घोर स्त्री, बनके जन्तु, नीचेवाला सांप ऊपरवाला हाथी, लता काटनेवाले दोनों मूसे और मधुमक्खी इन महाभयोंको भूलकर भी वह ब्राह्मण केवल सहतके स्वादको लेने लगा, और जीनेसे निराश

न हुआ और इस ही प्रकार कूवेरूपी संसारमें पड़ा रहा।

५ अध्याय समाप्त।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे कहनेवालोंमें श्रेष्ठ विदुर! कष्टको बात है कि वह ब्राह्मण महाकष्टमें पड़ा कहो वह वहां कैसे प्रसन्न और तृप्त होता था, वह देश कहां है, जहां ब्राह्मण धर्म्म सङ्कटमें पड़ा था, वह उस दुःखसे कैसे छूटेगा, मुझे उसके ऊपर बहुत कृपा आई है, तुम यह मुझसे सब वर्णन करो।

बिदुर बोले, हे महाराज! मोक्ष जाननेवाले महात्माओंने यह वृत्तान्त कहा है, इससे मनुष्यका परलोकमें कल्याण होता है, हमने जो भयानक वन कहा वही घोर संसार है, जङ्गली जन्तु कहे वे सब रोग है, बड़ी शरीरवाली जो स्त्री कही वह यौवन और रूप नाश करनेवाला बुढ़ापा है, जो सांप कहा सो शरीरमें नीचे रहनेवाला साप काल है वह सब शरीर धारियोंका नाश करता हैं उस कूवेमें जो घास लटकती है जिसको मनुष्य पकड़कर लटक रहा है, वही अवस्था जीनेकी आशा हैं, जो इस वृक्षको ओर छह सुखवाला हाथी दौड़ा आता है, वही वर्ष है ६ ऋतु उसके सुख और चार महीने उसके पैर हैं और जो मूसे उसी वृक्षको काट रहे हैं, पण्डित उन्हे दिन रात कहे हैं, इसमें जो सहतकी मक्खो है वे अभिलाष हैं जो सहतको धार बहती है वोही इच्छाओंके रस हैं, मनुष्य उसीमें डूबता और उछलता है पण्डितोंने इस प्रकार इस संसार चक्रका वर्णन किया है इसी प्रकार पण्डित लोग संसारकी फांसी काटकर सुख पाते हैं।

६ अध्याय समाप्त।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे बिदुर! तुम बहुत पण्डित हो तुमने जो मित्रके समान वचन कहे इनको सुनकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ अब तुम कुछ और वर्णन करो।

बिदुर बोले, हे राजन्! अब हम इस ही विषयको फिर बिस्तारसे वर्णन करते है, आप सुनिये इस ही तत्वको जानकर पण्डित लोग संसार बन्धनसे छूट जाते हैं, जैसे मनुष्य बहुत दूरके मार्गको चला जाता है और थक थककर कहीं कहीं बैठ जाता है, हे भारत! इसही प्रकार मनुष्य गर्भवासमे आकर मूर्ख फिर भी उसी बन्धनमें पड़ते हैं और पण्डित लोग उसी बन्धनको काटकर सुख भोगते हैं। जिस संसारको बनरूपसे बर्णन किया था, उसीको यहां पर मार्ग कहा है। हे भरतसिंह! चर और अचर जीवोंसे भरा हुआ यह लोक अनेक चक्रके समान है, पण्डित इस संसारको कभी भी इच्छा नहीं करते, इस जगत्में जिन मनुष्योंको ससारमें मन और शरीरके रोग होते है, वेही सांप है। हे भारत। उन सांपोंसे मनुष्य बार बार दुःख पाता है, और बार बार कर्म्मोंके वशमें होकर फिर वही कर्म्म करता है, उन्हे छोड़नेकी इच्छा नहीं करता है इसीसे मनुष्य सदा मूर्ख बना रहता है, यदि उनसे भी मनुष्य किसी प्रकार बच जाय तो रूप और यौवन नाश करनेवाले बुढ़ापेसे किसी प्रकार नहीं बच सक्ता। शब्द, रूप, रस, गन्ध और अनेक प्रकारके स्पर्शके वशमें होकर मास और चर्बीके भयानक कीचड़में फसता है, वर्ष, महीने, पक्ष, रात्रि दिन और सन्ध्या हो क्रमसे मनुष्यको रूप और आयुको नष्ट करते हैं, यही समयका विचार है मूर्ख लोग उसे नहीं जानते, ब्रह्माने, पहिले ही सब सुख, दुःख अवस्था बुढ़ापा और रोग लिख दिये हैं, शरीर, रथ, मन, सारथी इन्द्रिय घोड़े बुद्धि और कर्म्म रास है, जो इस रथमें बैठनेवाला अर्थात् जीव उन दौड़ते हुए घोड़ोंके सङ्ग दौड़ता है, वह संसार चक्रमें चाकके समान

घूमता है, जो पण्डित अपनी बुद्धिसे उन घोड़ोंको अपने वशमें रखकर घूमते हुए इस संसार चक्रमें आप स्थिर होता है, और किसी प्रकार मोहमें नहीं पड़ता वह उस घूमनेसे बचता है।

हे राजन्! संसारमें घूमने वालोंको बार बार यही दुःख भोगने पड़ते हैं, इसलिये पण्डित इनको छोड़नेहीका उपाय करे, इसके छोड़नेमे विलम्ब नहीं करना चाहिये क्यों कि विलम्ब करनेसे यह वृच बढ़ता ही जाता है।

हे राजन्! जो मनुष्य इन्द्रियोंको वशमें करके क्रोध और लोभको छोड़ देता है, सन्तोष करके सत्य बोलता है वही शान्ती और सुख पाता है।

हे महाराज! यह शरीर यमराजका रथ है इसमें बैठकर मूर्ख लोग पागल होजाते हैं और उनही दुःखोंमें पड़ते हैं। जिनमे आप पड़े हैं। पुत्र, राज्य और मित्रोंका नाश होना ये सब दुःख उन्हें ही होते हैं। जो बहुत लोभ करते हैं, इसलिये पण्डितको उचित है कि अपने दुःखोंकी औषधि करे संसाररूपी रोगकी औषधि मनुष्य अपने मनको वशमें करके करे। इसकी औषधी ब्रह्मज्ञान ही है, मनुष्यको जैसे मनकी स्थिरता शक्ति उसको जैसे छुड़ा सक्ती है तैसे बल, धन, मित्र और बन्धु बान्धव नहीं छुड़ा सकते। इसलिये आप अपने मनको स्थिर करके सावधान हूजिये। इन्द्रियोंको वशमें रखना, त्याग और सावधानी ये तीनों ब्रह्मके घोड़े हैं, जो मनुष्य इन घोड़ोंको लगामको पकड़कर शील-रूपी रथमें बैठकर चलता है, वह मृत्युके डरको पार होके ब्रह्मलोकको चला जाता है।

हे पृथ्वीनाथ! जो सब मनुष्योंको अभय दान करनेसे मनुष्यको फल मिलता है वह सहस्रों यज्ञ और व्रत करनेसे भी नहीं मिलता है ऐसी कोई बात नहीं है जो निश्चय करके मनुष्यको हित कही जाय परन्तु सब मनुष्योंके लिये मरना ही अहित है इसलिये पण्डि मनुष्यको उचित है, कि सदा सब प्राणि पर कृपा करे परन्तु मूर्ख मनुष्य अनेक प्रका मोह और बुद्धिके जालमें फंसकर संसा घूमते हैं, परन्तु पण्डित संसारको छोड़ सनातन ब्रह्मको प्राप्त होते हैं।

७ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेज कुरुकुलराज धृतराष्ट्र। विदुरके ऐसे वचन पुत्रोंके शोकसे व्याकुल होकर मूर्च्छा खा पृथ्वीमें गिर पड़े। राजाको पृथ्वीमें पड़े मूर्च्छित देखकर सब बान्धव, श्रीकृष्ण, द्वैपा वेदव्यास, विदुर, और सञ्जय आदि सब म उनके ऊपर ठंडा जल छिड़कने लगे ब देरमें बहुत यत्न करनेसे राजा धृतराष्ट्र चै होकर पुत्रोंके शोकसे व्याकुल होकर ब देर तक रोते रहे फिर कहने लगे कि मनु जन्मको धिक्कार है, विशेष कर गृहस्थों क्यों कि बार बार गृहस्थोको दुःख ही भोग होता है देखो पुत्र, धन, जाति और संबं योंका नाश होनेसे दुःख और अग्निके सम महादुःख भोगने पड़ते हैं। जिनको स सहते शरीर जलन लगते और बुद्धिका न होजाता है, उस समय जीनेसे मरना अ समुझते हैं आज प्रारब्ध उलटी होनेसे मु भी वैसाही भयानक दुःख हुवा है मुझे नि होता है, कि बिना प्राण छोड़े इस दुःखके नहीं जा सकूगा, हे ब्राह्मण श्रेष्ठ व्यास मु अब मैं अपना प्राण छोड़ दूंगा।

महात्मा वेद जाननेवालोंमें श्रेष्ठ अ पिता व्यासमुनीसे ऐसा कहकर राजा धृतर फिर शोकसे व्याकुल होकर अपने पुत्रों ध्यान करते हुए मूर्खके समान चुप होक बैठ गये।

राजा धृतराष्ट्रको पुत्र शोकसे व्याकुल देख-कर व्यासमुनि ऐसे वचन कहने लगे।

श्रीव्यासमुनि बोले, हे महाराज महाबाहु धृतराष्ट्र! तुम बड़े बुद्धिमान हो तुमने अनेक कथा सुनी है अब हम तुमसे जो कहते हैं सो सुनो, हे शत्रुनाशन! जगत्में ऐसी कोई वस्तु नहीं है जिसे तुम नहीं जानते इसमें कुछ सन्देह नहीं है कि तुम जगत्की अनित्यताको जानते हो, हे भारत! इस अनित्य जीव लोकमें जीव अपने समय तकही निवास करता है तब तुम जीने और मरनेका शोच क्यों करते हो?

हे राजन्! तुम्हारे देखते ही देखते समयके प्रभावसे यह वैर उत्पन्न होगया और दुर्योधन उसका कारण होगये, हे राजन्! जो बात अवश्य होनेवाली होती है वह कभी नहीं रुक सक्ती है कुरुकुलमें युद्ध होने ही वाला था, इसलिये तुम शोच क्यों करते हो, उस युद्धमे जो वीर रहे थे सो सब स्वर्गको गये।

हे महाबाहो! सब बातोंको जाननेवाले महात्मा विदुरने शांतिके लिये बहुत यत्न भी किये परन्तु कोई मनुष्य बहुत दिनतक बहुत यत्न करनेपर भी प्रारब्धको नहीं रोक सक्ता हमने जो देवतोंकी बात अपने कानसे सुनी थी सो तुमसे कहते हैं, उसके सुननेसे तुम कुछ सावधान होगे।

पहिले मैं एकदिन बहुत शीघ्रतासे सावधान होकर इन्द्रकी सभामें गया वहां जाकर सब देवतोंको इकट्ठे देखा, हे पापरहित! वहां नारद आदि सब देव ऋषि भी बैठे थे, मैंने वहां पृथ्वीको भी देखा पृथ्वी कुछ कामके लिये देवताके यहां गई थी. उसने सब देवतोंसे कहा तुम लोगोंने जो मेरे कामके लिये कहा था, और धर्मसे जो प्रतिज्ञा की थी, उसे सत्य करो।

पृथ्वीके ऐसे वचन सुन देवतोंकी सभामें बैठे हुए जगत् वन्दित विष्णु हंसकर पृथ्वीसे बोले, हे देवी! श्री धृतराष्ट्रके सौ बेटोंमें बड़ा दुर्योधन है, वह तुम्हारे कामको सिद्ध करेगा, उस ही राजासे तुम्हारे सब काम सिद्ध होंगे, उसके लिये सब महाशस्त्रधारी राजा कुरुक्षेत्रमें इकट्ठे होकर एक दूसरेको मारेंगे। हे देवि! उस ही युद्धमें तुम्हारा भार उतरेगा, इसलिये तुम अपने घरको जावो और सब जगत्को धारण करो।

हे राजन्! तुम्हारा बेटा दुर्योधन जगत्का नाश करनेके लिये गान्धारीके पेटसे उत्पन्न हुआ था, वह क्रोधी, चञ्चल, किसीकी बातको न माननेवाला और कलियुगका अवतार था, प्रारब्धसे उसके भाई उसका मामा शकुनी और परममित्र कर्ण भी वैसे ही उत्पन्न होगये थे, जब जैसा राजा होता है, तब उसके सब मनुष्य भी वैसे ही होजाते हैं। सब राजा जगत्के नाश करनेहीको इकट्ठे हुए थे।

जब राजा धर्म्मात्मा होता है; तब अधर्मी भी धर्म्मात्मा होजाते हैं, इसमें कुछ सन्देह नहीं कि स्वामीके दोष और गुण नौकरमें भी आजाते हैं।

हे राजन्! हे महाबाहो! दुष्टराजा दुर्योधनके वशमें होकर तुम्हारे सब बेटे मारे गये कुरुकुलका इस प्रकार नाश होगा, यह बात हमसे वेदका तत्व जाननेवाले नारद पहिले ही कह गये थे।

हे पृथ्वीनाथ! तुम्हारे पुत्रोंके हो देखते नाश हुआ इसलिये तुम उनका शोच मत करो क्यों कि शोकसे कुछ होता नहीं।

हे भारत! तुम्हारे दुष्ट पुत्रोंने इस जगत्का नाश किया अब भी पाण्डव तुम्हारा कुछ अपराध नहीं करेंगे, हे राजन्! तुम्हारा कल्याण हो युधिष्ठिरकी राजसूय यज्ञमें नारदने ये सब पहिले ही कह दिया था, कि कौरव और पाण्डव परस्पर लड़के मर जायगे, इसलिये जो तुम्हें करना होय सो करलो।

नारदके ऐसे वचन सुन पाण्डवोंने उस ही समय बहुत शोच किया था, हमने ये सब गुप्त

बात तुमसे कही अब तुम ये सब प्रारब्धसे हुआ ऐसा विचार कर शोक छोड़ दो, सब पर कृपा करो। हे महाबाहो! हमने युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें ये सब समाचार पहिले ही सुना था जब मैंने यह गुप्तबात युधिष्ठिरसे कही थी, तभीसे उन्होंने शान्तिके लिये बहुत यत्न किया परन्तु प्रारब्ध बड़ी ही बलवान है इसे कोई कभी नांघ नहीं सकता सब चर और अचर यमलोकको जांयगे तब तुम ऐसे धर्म्मात्मा बुद्धिमानोंको प्राणियोंकी गति और अगति जानकर भी ऐसा शोच होता है तुमको बार बार शोकसे व्याकुल देखकर राजा युधिष्ठिर प्राणतक भी दे सक्ते हैं।

हे राजेन्द्र! जो वीर राजा युधिष्ठिर सदा पशुवोंपर भी कृपा करते हैं, सो तुम्हारे ऊपर कृपा क्यों न करेंगे? हे भारत! मेरे कहनेसे प्रारब्धके वश और पाण्डवोंकी कृपासे तुम प्राणोंको धारण करो। हे तात! ऐसा करनेसे जगत्में तुम्हारी बहुत कीर्त्ति होगी। धर्म्म, अर्थ और तपकी बहुत वृद्धि होगी, तुम इस आगके समान जलते हुए पुत्रशोकको बुद्धिरूपी पानीसे बुझा देवो।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, महातेजस्वी व्यासके ऐसे बचन सुन राजा धृतराष्ट्र थोड़ी देरतक शोच करके ऐसा बोले, हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! मैं महाशोक जालमें फसा हूं इसलिये मुझे कुछ ज्ञान नहीं होता मैं बार बार मूर्च्छित होता हूं, हे देव! अब आपके बचन सुनकर मैं शोक छोड़ने और मन सावधान होनेका यत्न करूंगा।

राजा धृतराष्ट्रके ऐसे बचन सुन सत्यवतीके पुत्र व्यास मुनि वहीं अन्तर्धान होगये।

८ अध्याय समाप्त।

महाराज जनमेजय बोले, हे ब्राह्मणश्रेष्ठ वैशम्पायन मुने! जब धृतराष्ट्रके पास भगवान वेदव्यास चले गये, तब उन्होंने क्या किया कुरुकुल श्रेष्ठ महात्मा धर्म्मराज युधिष्ठिरने तथा बचे हुए कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा और कृतवर्म्माने क्या किया सो कहिये, हमने अश्वत्थामा और श्रीकृष्णके परस्पर शापकी कथा सुनी इसके पश्चात् सञ्जयने राजा धृतराष्ट्रसे क्या कहा सो कहिये?।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय। जब राजा दुर्य्योधन मारे गये और सब सेनाका नाश हो चुका तब सञ्जय शोकसे व्याकुल होकर राजा धृतराष्ट्रके पास आकर कहने लगे।

सञ्जय बोले, हे राजन्। अनेक देशोंके राजा कुरुक्षेत्रमें इकट्ठे होकर तुम्हारे पुत्रोंके सहित मारे गये अनेक बार पाण्डवोंने पृथ्वी मांगी तो भी दुर्य्योधनने वैरका अन्त करनेके लिये ये सब जगत्का नाश कराया, अब आप क्रमसे बेटे, पोते, पिता, बन्धु और बान्धवोंके प्रेत कर्म्म कीजिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, सञ्जयके ऐसे भयानक बचन सुनते ही राजा धृतराष्ट्र मरे हुए मनुष्यके समान मूर्च्छित होकर पृथ्वीमें गिर पड़े।

राजाको पृथ्वीमें पड़ा देख सब धर्म्म जाननेवाले बिदुर उनके पास आकर ऐसा बचन कहने लगे, हे भरतकुल श्रेष्ठ महाराज! आप क्या पृथ्वीमें पड़े हैं, उठिये और कुछ शोच कीजिये, हे लोकनाथ! जगत्के सब प्राणियोंकी यही दशा होती है, हे राजन्! जगत् पहिले नहीं था, केवल बीचमें होगया है और अन्तमें भी नहीं रहेगा, इसलिये उसका शोच क्या करना? कोई रोनेसे मरे हुएके सङ्ग नहीं जाता न रोनेसे मरा हुआ मिलता ही है, इसलिये आप शोच क्यों करते हैं? कभी ऐसा होता है कि मनुष्य बिना युद्ध किये ही मर जाता है और कभी युद्ध करनेसे भी बचता है परन्तु

काल आनेसे कोई नहीं बचता, कालका कोई मित्र या शत्रु नहीं है, इसलिये वह सबहीका नाश करता है, जैसे वायु तिनकोंको उड़ाया करता है ऐसे ही कालके बशमें होकर सब प्राणी घुमा करते हैं, सबको वहीं जाना है परन्तु जिसका काल पहिले आता है, वही पहिले जाता है इसमें शोचनेका क्या काम है ?

हे राजन् ! जिन युद्धमें मरेहुए महात्माओंका आप शोच करते हैं, वे शोचने योग्य नहीं थे, वे सब स्वर्गको गये क्षत्रियोंको युद्धमें मरनेसे जो गति मिलती है सो दक्षिणा सहित यज्ञ अनेक तप करनेसे भी नहीं मिलती। उन वीरोंने शत्रुओंकी शरीररूपी अग्निमें बाणरूपी आहुती छोड़ी और तेज बाणोंको सहा। हे राजन्! क्षत्रियोंके लिये युद्धसे बचकर और कोई स्वर्गका मार्ग नहीं है सब महात्मा वीर क्षत्री उत्तम स्वर्गको गये इसलिये उनका शोच नहीं करना चाहिये। हे भरतसिंह! आप अपनी बुद्धिसे अपना धीरज बांधिये क्यों कि शोचसे व्याकुल होकर आप कुछ न कर सकेंगे।

९ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! विदुरके ऐसे वचन सुन राजा धृतराष्ट्र वाहन तैयार होनेको आज्ञा देकर फिर ऐसा बोले, गान्धारी और कुन्तीके सहित कुरुकुलकी सब स्त्री और जितनी स्त्रिया वहां हैं सबको हमारे पास लेआओ ऐसा कहकर राजा धृतराष्ट्र शोकसे व्याकुल होकर मूर्खके समान उठे और विदुरका हाथ पकड़के वाहनको ओर चले, अपने पतिकी आज्ञासे पुत्रोंके शोकसे व्याकुल गान्धारी, कुन्ती आदि सब स्त्रियोंके सहित राजसभामें आईं वे सब शोचसे व्याकुल थी एक दूसरीको छूती हुई बहुत ऊंचे स्वरसे रोने लगी, तब विदुर उन्हें समझाने लगे। परन्तु समझाते समझाते आप उनसे भी अधिक शोकसे व्याकुल होगए उन रोती हुई स्त्रियोंको वाहनमें बिठला कर बाहरको ले चले, तब सब राजमहलोंमें महा हाहाकार शब्द होने लगा, बालकसे बूढ़े तक सब शोकसे व्याकुल होगये जिन स्त्रियोंको कभी देवतोंने भी नहीं देखा था, वेही स्वामियोंके मरनेसे साधारण मनुष्यके आगे कुरुक्षेत्रको चलीं, किसीने अपने बाल खोल दिये और कोई अपने गहने उतार उतार कर फेंकने लगीं, सब स्त्री एक एक धोती पहिनकर अनाथके समान घरसे निकली जैसे हाथियोंके न रहनेसे उनकी हथनी रोती हुई गुफाओंसे निकलती है ऐसे ही सब स्त्री सफेद पर्व्वतके शिखरके समान घरोंसे निकलीं उस समय रोती हुई स्त्रियोंके झुण्ड चारों ओर नगरमें दीखते थे कोई दूसरीका हाथ पकड़कर भाई, बेटे, पति आदिको रोती थी उस समय ऐसा जान पड़ता था कि जगत्में प्रलय होगया कोई रोती थी, कोई चिल्लाती थी, कोई ज्ञानशून्य होकर इधर उधरको दौड़ती थी। उस समय उन्हें यह नहीं जान पड़ता था कि हमें क्या करना चाहिये जो स्त्री पहिले सखियोंसे भी लज्जित होती थीं सो निर्लज्ज होकर एक धोती पहिनकर सामान्य मनुष्यके आगे घूमने लगी, तब एक दूसरीको समझाने लगी और एक दूसरीको देखने लगी।

राजा उन सहस्रों रोती हुई स्त्रियोंको सङ्गमें लेकर शोकसे व्याकुल होकर शीघ्रता सहित कुरुक्षेत्रको चले, उनके पीछे चित्र बनानेवाले बनिये और सब जीविकाके लोग चले इस प्रकार महाराज सबको सङ्ग लेकर नगरसे बाहर निकले उस समय कुरुकुलका नाश होनेके पश्चात उन स्त्रियोंके रोनेका घोर शब्द उठा उससे सब जगत् कांपने लगा उस समय ऐसा जान पड़ता था मानों सब जगत् भस्म होगया सब लोग जानते थे कि जब सब जग-

त्का नाश हो चुका उस समय राजभक्त सब नगरवासी शोकसे अत्यन्त ही व्याकुल थे।

१० अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! जब महाराज धृतराष्ट्र नगरसे निकलके एक कोस पहुंचे तब उन्हें कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा और कृतवर्म्मा मिले, अन्धे जगत्के स्वामी राजा धृतराष्ट्रको देखके ये वीर रोकर कहने लगे, हे महाराज! आपके पुत्र महा घोर कर्म्म करके अपने सब सहायकोंके सहित इन्द्रलोकको चले गये, हे महाराज दुर्य्योधनकी सेनासे केवल हम ही तीन वीर बचे हैं और आपकी सब सेना मर गई राजा धृतराष्ट्रसे ऐसा कहकर पुत्रशोकसे व्याकुल गान्धारीसे कृपाचार्य्य ऐसे बोले, हे गान्धारी तुम्हारे सब पुत्र निर्भय होकर शत्रुवोंका नाश करके अपनी बीर कीर्त्तीको जगत्में स्थापन करके युद्धमें मारे गये। अपने निर्म्मल देह धारण करके अपने शस्त्रोंके बलसे उत्तम लोकमें देवतोंके समान बिहार करते है, उन बीरोंमें ऐसा कोई न था, जो युद्धसे फिरा हो सब अस्त्रोंसे मारे गये किसीने शत्रुओंके आगे हाथ नहीं जोडे अर्थात् कोई दीन होकर नहीं मरा, उन महात्माने क्षत्रियोंके लिये यही गति कही है शस्त्रसे मरना ही परम गति है, इसलिये तुम इनका शोच मत करो। हे रानी! तुम्हारे पुत्रोंके शत्रु पाण्डवोंकी भी वृद्धि नहीं होगी देखो अश्वत्थामाकी सहायतासे हम लोगोंने जो कुछ किया है सो सुनो, जब हम लोगोंने सुना कि तुम्हारे पुत्र राजा दुर्य्योधनको भीमसेनने अधर्म्मसे मारा तब हम लोगोंने डेरोंमें जाकर सबको मारडाला सोते हुए धृष्टद्युम्न आदि सब पाञ्चाल द्रुपदके सब बेटे और द्रौपदीके सब बेटे सभी शस्त्रसे मारे गये, इस प्रकार हमने तुम्हारे पुत्रोंके शत्रुका नाश कर दिया अब हम केवल तीनहीं शेष है, इसलिये युद्धमें नहीं खड़े हो सकते, अब हम यहांसे भागते हैं, क्योंकि वीर पाण्डव क्रोधसे व्याकुल होकर इधरहीको बहुत शीघ्र आवेंगे क्योंकि वे लोग वैरको समाप्त करना चाहते हैं, वह यशस्वी लोग हमारे पैरोंके चिन्ह। देखते देखते हमारे पीछे आवेंगे और हमने उनका सर्व नाश करदिया है इसलिये हम यहा खड़े नहीं हो सक्ते हैं, हे रानी! अब हमको जानेकी आज्ञा दो हम यहा खड़े नहीं होसकते और तुम भी कुछ शोक मत करो।

हे राजन्! आप भी कुछ शोक मत कीजिये केवल धर्म्म ही कीजिये आप ब्रह्म, वली धर्म्म और प्रारब्धकी शरण लीजिये,ऐसा कहकर उन तीनोंने राजाको प्रदक्षिणा करके अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा महा बुद्धिमान राजा धृतराष्ट्रको देखते हुए अपने घोड़ोंको शीघ्र हांकते हुए गङ्गाकी ओरको भागे। फिर गङ्गाके तटपर जाकर तीनो रथोंसे उतरे और घबड़ाकर एक दूसरेसे सम्मती करने लगे फिर तीनों एक दूसरेसे पूछकर तीन ओरको चलेगये, कृपाचार्य्य हस्तिनानगरको हृदीक पुत्र कृतवर्म्मा अपने देश अर्थात् द्वारकाको और द्रोणाचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामा व्यासमुनीके आश्रमको चले गये, इस प्रकार ये तीनो बीर महात्मा पाण्डवोंके वैरसे व्याकुल होकर एक दूसरेको ओर देखते हुए तीन ओरको चले गए, जिस समय ये तीनों बीर राजा धृतराष्ट्रसे मिले थे उस समय सूर्य्य अस्त होना चाहते थे, जब अश्वत्थामा व्यासमुनिके आश्रम पर पहुंचे तब ही महारथ पाण्डवोंने अपने बलसे वहा जाकर उनको जीत लिया।

११ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! जब सब सेना मारी गई तब अश्वत्थामाकी जीतके धर्म्मराज युधिष्ठिरने सुना कि हमारे बूढ़े पिता हस्तिनापुरसे चले आते हैं, तब पुत्र शोकसे व्याकुल राजा युधिष्ठिर पुत्र शोकसे व्याकुल राजा धृतराष्ट्रके पासको चले उनके सङ्ग महावीर श्रीकृष्ण सात्यकि और यूयुत्स भी चले उनके पीछे वहा आई हुई पाञ्चालदेशके क्षत्रियोंका स्त्रियोंके सङ्ग शोकसे व्याकुल द्रौपदी भी चली।

राजा युधिष्ठिरने कुररीयोंके समान रोती हुई स्त्रियोंके झुण्डोंको गङ्गाकी ओर जाते हुए देखा वे सब ऊपरको हाथ उठाये राजा युधिष्ठिरकी निन्दा करती अनेक झूठे और कठोर वचन कहती हुई गङ्गाको जाती थीं, उस समय वे सब स्त्रिया ही कहती थी कि, हे महाराज युधिष्ठिर! आपने अपने पिता, भाई, गुरुपुत्र और मित्रोंको मारडाला आपका वह धर्म्म लज्जा कहा चली गई आपने द्रोणाचार्य्य, भीष्म पितामह और जयद्रथको मारकर राज लेनेकी कैसे इच्छा करी?

हे महाराज! महाबलवान अभिमन्यु और द्रौपदीके पाचो पुत्र आदि बन्धु और बान्धवोका नाश करके अब राज्यलेके क्या सुख भोगियेगा?

महाराज युधिष्ठिर! कुररीयोंके समान रोती हुई उन स्त्रियाको छोड़ कर आगेको चले और जाकर अपने पिता धृतराष्ट्रको प्रणाम किया। पीछे सब शत्रुनाशन पाण्डवाने अपना अपना नाम लेके महाराजका प्रणाम किया।

फिर महाराज धृतराष्ट्रने अपने पुत्रोंके नाश करनेवाले युधिष्ठिरका शोकसे व्याकुल होके बिना प्रेम अपनी छातीसे लगाया फिर महाराज युधिष्ठिरको अपने मीठे वचनसे शान्त करके भीमसेनको मारनेकी इच्छासे ढूंढने लगे, उस समय महाराज धृतराष्ट्रके शरीरका ऐसा दाहना था जैसे प्रलयकालमें जगतको जलानेवाली अग्निका; उस समय शोक रूपी वायुके चलनेसे क्रोध रूपी अग्नि भीमसेन वृक्षको जलाने चाहती थी।

महाराज धृतराष्ट्रकी भीमसेनको मारनेकी इच्छा जान कर श्रीकृष्णने भीमसेनको अपने हाथोंसे पकड़ कर उनके आगेसे हटा दिया और एक लोहेकी बनी भीमसेनकी मूर्त्ति राजाके आगे खड़ी करदी महा बुद्धिमान श्रीकृष्णने उनकी इच्छा जान कर पहिले ही यह उपाय कर रखा था।

राजा धृतराष्ट्रने उस मूर्त्तिको भीमसेन जानकर हाथोंमें दबाकर पीस दिया, दश हजार हाथियोंके समान बलवान् राजा धृतराष्ट्र जब उस भीमसेनकी मूर्त्तिको तोड़ चुके तब उनका हृदय फट गया और मुहसे खून गिरने लगा फिर जैसे फला हुवा कल्पवृक्ष पृथ्वीमें गिर जाताहै वैसे ही रुधिरमें भीगे राजा धृतराष्ट्र पृथ्वीमें गिर पड़े तब महा विद्वान सञ्जयने उनको पकड़ा और उनको शान्त करनेके लिये कहने लगे कि आप ऐसा मत कीजिये।

तब राजा धृतराष्ट्रका क्रोध शान्त हुआ और शोकसे व्याकुल होकर हा भीम हा भीम कहके रोने लगे।

जब श्रीकृष्णने देखा अब राजाका क्रोध शांत होगया तब पुरुषश्रेष्ठ श्रीकृष्ण बोले, हे महाराज धृतराष्ट्र! आप कुछ शोच मत कीजिये आपने भीमसेनको नहीं मारा आपने यह लोहेकी बनी भीमसेनकी मूर्त्ति तोड़ी है हमने आपको क्रोधके वशमें देखकर अपने हाथसे खींचकर भीमसेनको मृत्युके मुहसे निकालाहै हेराजशार्दूल! जगतमें आपके समान बलवान् कोई नहीं है जो आपके हाथोंके बलको सहसके ऐसा जगतमें कौन है जैसे यमराजके पास जाकर कोई जीता नहीं बच सक्ता तैसेही आपके हाथोंके बीचमें आकर कोई नहीं बच सक्ता इसी

हमने राजा दुर्य्योधनके बनाये हुए भीमसेनकी लोहेकी मूर्त्ति आपके आगे रख दई थी आप का मन पुत्रोंके शोकसे व्याकुल होगया है, अब आपके मनमें कुछ भी धर्म्म नहीं रहा इसलिये भीमसेनको मारना चाहते हैं आपकी यह शक्ति नहीं है जो भीमसेनको मार सके आपके पुत्रोंको अवस्था नष्ट हो चुकी थी, वह कदापि नहीं जी सक्ते थे, हमने जो पहिले शान्तिके लिये कहा था, उन सबको स्मरण करके शान्त होइये और शोकको दूर कीजिये।

१२ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! इसके पश्चात् महाराज धृतराष्ट्रके पास शौच कर्म्म करानेके लिये बहुत सेवक आये जब राजा पवित्र हो चुके तब श्रीकृष्ण उनसे बोले, हे राजन्! आपने सब वेद और अनेक शास्त्र पढ़े हैं अनेक पुराण सुने हैं और सब धर्म्म अधर्म्मको आप जानते हैं इस प्रकार महा बुद्धिमान और सब कार्य्योंमें समर्थ होकर भी अपने दोषको बिना विचारे ऐसा क्रोध क्यों करते है, हे भारत! शकुनी, द्रोणाचार्य्य, विदुर सञ्जय, और हमने जो आपसे पहिले कहा था सो आपने नहीं किया जब आपने हमलोगोंके रोकने पर भी और पाण्डवों को अपनेसे बल और क्रोधमें तेजमें अधिक जान कर भी इन बचनोंको नहीं ग्रहण किया इसीसे यह आपत्ति पड़ी जो राजा अपनी बुद्धिको स्थिर करके देश और कालके अनुसार सब दोषोंको देखता है जगत्में उसीका कल्याण होता है और जो बार बार कहनेपर भी सुख और दुःखके वचनोंको ग्रहण नहीं करता वह पीछे आपत्तिमें पड़के शोचता है।

हे राजन्! आपने अपनी बुद्धि को नाश कर दिया और केवल दुर्य्योधनके वशमें पड़ गये उसहीके अपराधसे आप इस आपत्तिमें पड़े हैं तब भीमसेन से बैर क्यों करते हैं? आप अपने अपराधको स्मरण करके क्रोधको त्याग कीजिये जिस दुष्टने इसके वशमें होकर द्रौपदीको सभामें बुलाया था भीमसेनने बैर समाप्त होनेके लिये उसे मार डाला।

हे राजन्! आप अपने और अपने दुष्ट पुत्र के कर्म्म को स्मरण कीजिये आपने अपराध रहित पाण्डवों को निकाल दिया था।

श्री वैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जनमेजय श्रीकृष्णके ऐसे सच्चे वचन सुनकर महाराज धृतराष्ट्र श्रीकृष्णसे बोले, हे कृष्ण! जो तुम इस समय कहते हो, सो सब ऐसेही है परन्तु पुत्रोंका प्रेम बहुत बलवान है, इससे मेरा धीरज नष्ट होगया था, प्रारब्धहीसे महा-पराक्रमी पुरुषसिंह भीमसेन आपसे रक्षित होकर मेरे हाथोंके बीचमें नहीं आये अब मेरा सब क्रोध शान्त होगया और अब मुझे कुछ दुःख भी नहीं रहा। इसलिये अब मैं महाबल-वान भीमसेनको देखना चाहता हूं, हे कृष्ण! सब राजा और दुर्य्योधन आदि अपने बेटोंके मरनेके पीछे अब मेरा प्रेम पाण्डवोंसे अधिक बढ़ गया है, मैं उनका कल्याण चाहता हूं।

तब महाराज धृतराष्ट्रने रोकर सुन्दर शरीरवाले भीमसेन, अर्ज्जुन, नकुल और सह देवका शरीर स्पर्श किया।

१३ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! इसके पश्चात् महाराज धृतराष्ट्रकी आज्ञासे श्रीकृष्णके सहित पांचो पाण्डवोंने गान्धारीके पास गये।

तब पुत्रशोकसे व्याकुल निन्दारहित गान्धा-रीने शत्रुरहित युधिष्ठिरको आते हुए देखकर शाप देनेकी इच्छा करी।

गान्धारीके मनमें पाण्डवोंकी ओरसे पाप जानकर भगवान सत्यवती पुत्र व्यास आये भगवान व्यासने ये सब समाचार अपने आश्रमहीमें ध्याननेत्र और शुद्ध मनकी शक्तिसे जान लिये थे अनन्तर भगवान व्यास पवित्र सुगन्धसे भरे गङ्गाजलको स्पर्श करके मनके समान शिघ्र चलकर उस स्थानमें आए और आकर महातपस्वी वेदपाठी व्यासने शान्ति करनेके लिये गान्धारीसे ऐसे बचन कहे।

हे गान्धारी। तुम शान्त हो पाण्डवोंके ऊपर क्रोध मत करो, और हमारे बचन सुनो जिस समय विजयकी इच्छासे महाराज दुर्य्योधनने तुमसे कहा था कि, हे माता। मैं शत्रुओंसे युद्ध करनेको जाता हूं, तुम हमारे जयकारकी बात करो इस प्रकार १८ वीं बार मांगनेपर भी तुमने बार बार यही कहा था, कि जिधर धर्म्म होगा उधर ही विजय होगी सो तुम्हारी बात झूठ नहीं हुई तुमको इस समय भी वैसे ही शान्त रहना चाहिये इस घोर युद्धमें पाण्डवोंने अनेक राजोंको मारकर विजय पाई है, इससे यही निश्चय होता है, कि इस युद्धमें विजयका मूल धर्म्मही था, तुम पहिले बहुत ही क्षमा करनेवाली थी. सो अब क्षमा क्यों नहीं करती हो?

हे धर्म्म जाननेवाली गान्धारी। हे सत्य वचन कहनेवाली! तुम अधर्म्मको छोड़ो, तुम अपने कहे हुए उस वचनको स्मरण करो कि जहां धर्म्म है वहां विजय होगी अब तुम क्रोधको छोड़ दो और ऐसी बुद्धिको दूर करो।

गान्धारी बोली, हे भगवन्! मैं पाण्डवोंकी निन्दा नहीं करती और न उनका नाश करना चाहती हूं परन्तु मेरा मन पुत्रोंके शोकसे व्याकुल होगया है, इसीसे इतना क्रोध आगया था. जैसे तुमको पाण्डवोंकी रक्षा करनी चाहिये वैसे ही धृतराष्ट्र और मुझको भी उनकी रक्षा करनी चाहिये दुर्य्योधन, मेरे भाई शकुनी, कर्ण और दुःशासनके अपराधसे यह कुरुकुलका नाश होगया युधिष्ठिर भीमसेन, नकुल और सहदेवने मेरा कुछ अपराध नहीं किया, सब वीर परस्पर लड़कर मर गये, इससे मुझे कुछ दुःख नहीं हुआ परन्तु भीमसेनने दुर्य्योधनको गदायुद्धमें बुलाकर अनेक प्रकारसे युद्ध करते और अपनेसे अधिक विद्वान देखके उनको नाभीके नीचे गदा मारी और श्रीकृष्ण भी उस अधर्म्मको देखते रहे इसहीको स्मरण करके मुझे बहुत क्रोध आता है और यह भी शोच आता है कि महात्मा धर्म्म जाननेवाले शूरबीर केवल प्राणके भयसे धर्म्मको कैसे छोड़ देते है।

१४ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय। गान्धारीके ऐसे वचन सुनकर डरते हुए भीमसेन उनके पास गये और कहने लगे कि मैंने यह कर्म्म चाहे धर्म्मसे किया, चाहे अधर्म्मसे किया केवल दुर्य्योधनके डरसे अपनी रक्षा करनेके लिये ऐसा किया है। सो तुम क्षमा करो दुर्य्योधन महाबलवान था, उसे युद्धमें धर्म्मसे कोई नहीं जीत सक्ता था, इस ही लिये यह अधर्म्म मैंने किया दुर्य्योधनने भी पहिले महाराज युधिष्ठिरको अधर्म्महीसे जीता था, और हम लोगोंको अनेक दुःख दिये थे, इसी लिये मैंने यह अधर्म्म किया अपनी सब सेनामेंसे केवल बलवान दुर्य्योधनही बच गये थे वे अब हमको न मार डाले इसलिये मैंने ये अधर्म्म किया राजपुत्री रजस्वला द्रौपदीको सभामें बुलाकर जो कुछ वचन कहा था, सो सब तुम जानती हो इसलिये मैंने ये अधर्म्म किया दुर्य्योधनको बिना जीते हम समुद्र पर्य्यन्त पृथ्वीके राजा नहीं बन सक्ते, इसलिये मैंने यह अधर्म्म किया।

द्रौपदीको अनेक वचन कहनेपर भी दुर्य्योधन शान्त न हुआ और उसने सभाके बीचमें

द्रौपदीको अपनी बांई जांघ दिखलाई उस दुष्टको हम चारों भाई उस ही समय मार डालते परन्तु धर्मराज युधिष्ठिरकी आज्ञाके वशमें होकर कुछ न कर सके।

हे रानी! इस घोर वैरको दुर्य्योधनहीने बढाया, देखो हम लोगोंने वनमें कैसे कैसे दुःख उठाये इसलिये मैंने अधर्म्म किया।

दुर्य्योधनके मरनेसे युधिष्ठिरको राज्य मिला और हम चारों भाई भी वैर समाप्त करके शान्त हुए।

गान्धारी बोली, हे प्यारे भीमसेन। तुमजो हमारे पुत्रकी प्रशंसा करते हो और कहते हो कि हमने उसको मारा सो तुमने इतना ही अपराध नहीं किया जिस समय वृषसेनने नकुलके घोड़े मारडाले थे, तब तुमने दुःशासनके शरीरसे निकालकर रुधिर पिया उस घोर दुष्ट अनार्य्योंके करने योग्य कर्म्मकी बड़ी प्रशंसा नहीं करते सो अयुक्त कर्म्म तुमने किया।

भीमसेन बोले, अपने शरीरमें और भाईके शरीरमें कुछ भेद नहीं होता जगत्में कोई मनुष्यका रुधिर नहीं पी सक्ता और अपने रुधिरकी कथा हो तो क्या है।

हे माता दुःशासनका रुधिर मेरे दांतोंसे भीतर नहीं गया था, अर्थात् मैंने केवल ओठ होंसे लगाकर छोड़ दिया था, तुम इसका कुछ शोच मत करो केवल मेरे हाथ ही रुधिरसे भीगे थे, इस सत्यको केवल यमराज ही जानते हैं, जिस समय युद्धमें वृषसेनके बाणोंसे नकुलके घोड़े मारे गये और तुम्हारे पुत्र बहुत प्रसन्न हुए तब मैंने उनको डरानेके लिये ही यह कर्म्म किया था, जिस समय जूवा खेलनेके पीछे दुःशासनने द्रौपदीके बाल पकड़कर खींचे थे, और मैंने क्रोधसे भरकर प्रतिज्ञा कर दी थी वही बात मेरे हृदयमें बनी रही मैं उस प्रतिज्ञाको बिना पूर्ण किये सदाको क्षत्रियोंके धर्म्मसे नष्ट होजाऊंगा, इसलिये मैंने ये यह कर्म्म किया।

हे गान्धारी! तुमने पहिले अपने पुत्रोंको हमारा अपराध करते देखकर भी न रोका और अब हमपर दोष लगाती हो, सो यह दोष लगाना वृथा है।

गान्धारी बोली, हे भीम तुमने बूढ़े राजाके सौ पुत्रोंको मार डाला जिसने तुम्हारा कम अपराध किया था, उस एकको भी क्यों न छोड़ा हम दोनों बूढ़े और अन्धोंका राज्य भी छिनगया और लाठीके समान एक सन्तान भी न रही यदि तुम धर्म्मसे मेरे सब पुत्रोंको मारकर मेरे पास आते तो मुझे इतना दुःख न होता।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, फिर बेटे और पोतोंके शोकसे व्याकुल गान्धारीने क्रोधमें भरकर पूछा की राजा युधिष्ठिर कहां हैं।

तब राजोंके महाराज युधिष्ठिर डरसे कांपते हुए हाथ जोड़कर उनके पास गये और इस प्रकार मीठे बचन बोले, हे माता। तुम्हारे पुत्रोंको मारनेवाला सब जगत्के नाश करनेका मूल कारण युधिष्ठिर मैं ही हूं, निश्चय ही मैं तुमारा अपराधी हूं इसलिये मुझे शाप दो मुझे ऐसे मित्रोंके मरनेके पीछे राज्य धन और जीनेसे कुछ प्रयोजन नहीं है, मैं बड़ा मूर्ख और मित्रोंका द्रोही हूं।

राजा युधिष्ठिरको डरे देख और उनके ऐसे वचन सुन गान्धारीने कुछ न कहा केवल श्वास लेने लगी जिस समय महाराज युधिष्ठिर डरसे कांपते हुए उनके पैरोंपर गिर पड़े तब धर्म्म जाननेवाली गान्धारीने उन्हें अपने कपड़ोंके भीतरसे अंगुली दिखाई उसी समय सुन्दर नखूनवाले महाराज युधिष्ठिरके नखून बिगड़ गये, महाराजकी यह दशा देखके अर्जुन श्रीकृष्णके पीछे जाकर छिप गये।

पाण्डवोंको इधर उधर छिपते देख गान्धारीका क्रोध शान्त हुआ। फिर उनको माताके समान समझने लगी।

फिर गान्धारीकी आज्ञा लेकर ये सब वीर माता कुन्तीके पास गये जिस समय वीर पाण्डव अपनी माताके पास गये तब पुत्रोंके दुःखसे व्याकुल बहुत दिनोंसे पुत्रोंसे छूटी कुन्ती अपने आंसुओंको कपड़ेसे पोंछती हुई आई और बार बार उनके शरीरोंको स्पर्शकरके अनेक प्रकारके अस्त्रोंसे कटे हुए। शरीरोंको देखने और छूने लगी फिर पुत्ररहित द्रौपदीका शोच करने लगी फिर भूमिमें पड़ी और रोती हुई द्रौपदीको देखा द्रौपदी बोली, हे माता ! अभिमन्युके सहित तुम्हारे सब पोते कहां चले गये तुमको बहुत दिनके पीछे यहां आई हुई देखकर भी वे तुमारे पास अभी तक क्यों नहीं आते ? बिना पुत्रोंके मैं इस राज्यको लेकर क्या करूंगी ?

रोती हुई शोकसे व्याकुल द्रौपदीको उठा कर बड़े बड़े नेत्रवाली कुन्ती समझाने लगी। फिर अपने पुत्र और द्रौपदीके सहित रोती हुई कुन्ती रोती हुई गान्धारीके पास गई।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, यशस्विनी कुन्तीको द्रौपदीके सहित रोते हुए देख गान्धारी बोली, तुम कुछ शोच मतकरो देखो मैं भी कैसे शोकमें पड़ी हुई हूं भयानक समय स्वभावहीसे आगया था, महाबुद्धिमान विदुरने जैसे कहा था, सो सब वैसे ही हुआ, यह कर्म्म अवश्य होनेवाला था, सो समाप्त होगया वे सब युद्धमें मारे गये, उनका सोच करना अब वृथा है जैसे शोकमें तुम पड़ी हो वैसे ही मैं भी पड़ी हूं । तुममें और मुझमें कोई भेद नहीं है और अब तुम्हें हमें समझावे और कौन अवेगा ? मेरे ही अपराधसे इस कुलका नाश हुआ।

१५ अध्याय समाप्त।

जल प्रदानिक पर्व्व समाप्त।

आगे स्त्री बिलाप पर्व्व लिखते हैं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजा जयमेजय ! ऐसा कहके गान्धारी चुप हो गई फिर उसने वहीं बैठे बैठे हुवे ज्ञान दृष्टिसे उस युद्धभूमिको देखा, सदा सत्य बोलनेवाली पतिव्रता महाभाग्यवती तपस्विनी गान्धारीने धर्म्मात्मा महामुनि व्यासकी कृपासे उस युद्ध भूमिको देखा। बुद्धिमती गान्धारीने उस वीरोंकी युद्धभूमिको दूरसे इस प्रकार देखा जैसे कोई अपने घरकी वस्तुको देखता है उस भयानक युद्धभूमिको देखकर वीरोंके भी रोंयें खड़े होते थे, उस युद्धभूमिमें हड्डी, बाल, चर्बी, रुधिर, और शस्त्र भरे हुए थे, उस समय उस युद्धभूमिमें मरे हुए हाथी, घोड़े, मरे हुए रुधिरमें भरे हुए मनुष्य दिखाई देते थे, किसीके शरीरका पता भी नहीं था, वह युद्ध भूमि हाथी, घोड़े, मनुष्य और स्त्रियोंके शब्दसे भर गई चारो ओर शियार बगुले और गिद्ध आदि मास खानेवाले मनुष्य दीखने लगे मनुष्योंका मांस खानेवाले राक्षस कुररी भयानक सियारी और गिद्ध उस युद्धभूमिको देखकर प्रसन्न होने लगे।

तब भगवान् व्यासकी आज्ञासे महाराज, धृतराष्ट्र, युधिष्ठिर भीमसेन, अर्जुन, नकुल और सहदेव श्रीकृष्ण और बन्धु सहित महाराज धृतराष्ट्रको आगे करके कुरुकुलकी स्त्रियोंको सङ्ग लेकर युद्धभूमिमें गये।

कुरु क्षेत्रमें जाकर पति रहित स्त्रियोंने मरे हुए अपने अपने पति, पिता, पुत्र और भाइयोंको देखा और देखा की वहां उनके शरीरके मांसको कौवे, सियार, गिद्ध, भूत, पिशाच और राक्षस खा रहे हैं उस समय उस युद्धभूमिको उन स्त्रियोंने महाकालके अखाड़ेके समान देखा फिर अनेक बहुत मूल्यवाले वाहनोंसे रोती हुई उतरी जिन कुरुकुलकी स्त्रियोंने दुःख कभी नहीं देखा था, वे दुःखसे व्याकुल होकर पृथ्वीमें लोटने लगीं।

उस समय नाथ रहित रोती हुई चेतना रहित दुःखसे व्याकुल रोती हुई पांचाल और कौरवोंकी स्त्रियोंके शब्दसे वह युद्ध भूमि पूरित हो गई।

उस युद्ध भूमिको देखकर धर्म्म जाननेवाली सुबलपुत्री गान्धारी महात्मा श्रीकृष्णको बुलाकर ऐसे बचन बोली।

हे कमल नेत्र कृष्ण! हे माधव! देखो हमारे बेटोंकी स्त्री विधवा होकर बाल खोले कुररोके समान रो रही हैं ये अपने अपने पतियोंके गुण स्मरण करके रो रही हैं ये अपने अपने पति पुत्र और पिताको ढूंढ़ रहीहैं।

ये युद्धभूमिमें अनेक वीर माता और अनेक वीरोंकी स्त्री अपने अपने पुत्र और पतियोंको देख रोरही हैं।

ये देखो पुरुष सिंह कर्ण, भीष्म, अभिमन्यु, द्रोणाचार्य्य, महाराज द्रुपद और महाराज शल्य आदि वीर, जलती हुई अग्निके समान मरे हुवे पड़े हैं।

यह युद्धभूमिमें सोनेके कवच निष्टमणि, वीरोंके बाजूबन्द, अङ्गूठी, माला, वीरोंके हाथसे टूटे हुवे सांगो परिघ, खड्ग अनेक प्रकारके तेजवान धनुष पड़े है।

कहीं मास खानेवाले पची प्रसन्न होकर बैठे है कहीं खेल रहे हैं और कहीं सुखसे सो रहे है। हे वीर! हे भगवन्! हे जनार्द्दन! उनको देखकर मेरा हृदय शोकसे जला जाता है। इस पाञ्चाल और कुरुकुलके नाशसे हमे ऐसा जान पड़ता है, कि सब जगत्का नाश हो गया।

देखो इन वीरोंके रुधिरमें भीगे शरीरों सहस्रों गिद्ध आदि पची खा रहे है, कहीं कोई गिद्ध किसी वीरका पेट खींचे लिये जाते है।

जयद्रथ, कर्ण, भीष्म और अभिमन्यु आदि वीरोंकी मृत्यु देखकर किसे शोच न होगा। जिनको कोई नहीं मार सक्ता था, आज उनको चैतन्यरहित निरखकर मनुष्यके समान मरा हुआ देखकर कौवे, सियार और गिद्ध खारहे हैं।

ये सब वीर क्रोधके वशमें होकर दुर्योधनकी आज्ञासे युद्धमें मारे गये, ये पुरुषसिंह वीर इस समय जलती हुई अग्निके समान पृथ्वीमें पड़े हैं।

जो पहिले कोमल बिछौनोंपर सोते थे सो आज पृथ्वीमें मुह फैलाये पड़े हैं, पहिले जो सदा भाटोंके मुखसे स्तुति सुनकर प्रसन्न होते थे, वे आज अनेक प्रकारके भयानक सियारियोंके शब्द सुन रहे है जो पहिले यशस्वी वीर शरीरमें चन्दन और अगर लगाकर पलङ्गपर सोते थे सो आज धूलमें लोटते पृथ्वीमें पड़ेहै उनके भूषणोंको शोर शब्द करते युद्धमें सियार और कौवे इधर उधर खिच रहे है, ये अभिमानी वीर अबतक भी तेजवाण खड्ग और निर्म्मल गदा इस प्रकार ले रहे है जैसे जीते हुए लिये रहते थे, अनेक सुन्दर वीरोंके हाथोंको मांस खानेवाले जन्तु इधर उधर लिये घूमते हैं इस समय भी उनका तेज सूर्य्यके समान दिखाता है, कोई परिघके समान सुन्दर हाथवाले वीर गदाको छातीसे लगाये युद्धको भोग सुख किये इस प्रकार सोते हैं, जैसे अपनी प्यारी स्त्रीके सङ्ग सोते थे, किसी वीर को कवच विमल शस्त्र धारण किये देख और उन्हें जीता जान कोई मास खानेवाला जन्तु उनके पास नहीं जाने सक्ता। किसी किसी महात्मा वीरको मासभची खींच रहे हैं और उनकी सोनेकी माला इधर उधर फैली जाती है ये देखो ये भयानक सियार महात्मा वीरोंके गलेसे हार निकालकर इधर उधर खींचे फिरते हैं।

जो स्त्री पहिले समयमें रात्रिके पिछले पहरमें भाटोंके मुखसे स्तुति सुनकर जागती थी और जो अनेक पूजा और शिक्षासे युक्त थी

वेही आज शोक और दुःखसे व्याकुल होकर बीर स्त्रीके समान रो रही है, हे केशव! हे वृष्णि कुल शार्दूल! इन सुन्दर स्त्रियोंके सूखते हुवे कोमल मुख इस समय लाल कमलके समान दीखते हैं, ये कुरुकुलकी स्त्री रोना बन्द करके अपने अपने पतियोंके पास बैठी हैं, ये दुःख और क्रोधसे व्याकुल कौरवोंकी स्त्रियोंके मुख प्रातःकालके सूर्य्यसे सोना और ताम्बेके समान लाल होगये हैं।

हे कृष्ण! ये गोरे रङ्गवाली (१६) सोलह वर्षकी दुर्य्योधनकी उत्तम स्त्रियोंके झुण्ड एक साड़ी पहिने दुःखसे व्याकुल होरही हैं, इनका भयानक रोना सुनकर और एक दूसरीको समझाते देखकर मेरा हृदय फटा जाता है ये बहुत समयतक रोकर ऊंचे सास लेकर और दुःखसे व्याकुल होकर इस प्रकार पृथ्वीमें पड़ी हैं मानों अभी मर जायगी।

कोई अपने पतियोंका शरीर देखकर रोती है, कोई कोमल हाथोंसे शिर पीट रही है।

इस समय यह युद्धभूमि कटे हुए शिर हाथ और शरीरोंसे पूर्ण दीखती है।

ये देखो ये स्त्री शरीर रहित शिर और शिररहित शरीरोंको देखकर मूर्च्छित हो-रही हैं।

कहीं कोई स्त्री दुःखसे व्याकुल होकर शरीरमें शिर लगाकर देखती है और कहती है कि यह शिर इनका नहीं है।

कोई बाणोंसे कटे हुवे हाथ, पैर और आंख मिलाकर दुःखसे व्याकुल होरही है।

कोई कुरुकुलकी स्त्री स्यार और पक्षियोंसे खाये हुवे शिर हाथमें लेकर अपने पतियोंको नहीं पहिचानती।

हे मधुसूदन! कोई मनुष्योंके हाथसे मरे भाई, पुत्र और बालकोंको पृथ्वीमें पड़ा देख हाथोंसे शिर पीट रही है, इस समय यह रुधिर और मांसके कीचड़से भरी और टूटे हुवे रथोंसे सहित हाथ और कुण्डल सहित शिरोंसे ऐसी शोभित पूर्ण होगई है कि जानने योग्य नहीं रही।

हे यदुकुलश्रेष्ठ! यह भूमि मरे हुए शरीरोंसे भर गई है ये निन्दारहित स्त्री दुःख भोगने योग्य नहीं थी परन्तु दुःख भोग रही है। यह युद्धभूमि इस समय इन मरे हुए शरीरोंसे ऐसी पूर्ण होगई जैसे ताराओंसे रात्रिमें आकाश पूर्ण होता है इस समय महाराज धृतराष्ट्रके बेटाकी थोड़ी अवस्थावाली और सुन्दर बालोंवाली स्त्रियोंके अनेक झुण्ड इधर उधर घूमते फिरते हैं मेरे लिये इससे अधिक दुःख और क्या होगा? मैं जो इन स्त्रियोंके ऐसे रूप देखती हूं इससे निश्चय होता है कि मैंने पहिले जन्ममें महा अपराध किया है।

हे कृष्ण! मेरे सब बेटे और सब पोते मारे गये और इससे और अधिक दुःख क्या होगा?

श्रीकृष्णसे ऐसा कहकर गान्धारी रोने लगी और उसने मरे हुवे बेटोंको देखा।

१६ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमे-जय! दुर्य्योधनको मरा हुआ देखकर गान्धारी शोकसे व्याकुल होकर इस प्रकार पृथ्वीमें गिर पड़ी जैसे केलेका वृक्ष टूट कर गिर पड़ता है, फिर थोड़े समयमें चैतन्य होकर रुधिरसे भीगे हुए दुर्य्योधनको उठाकर हा पुत्र! हा पुत्र! कह कर रोने लगी इस समय गान्धारीकी सब इन्द्री शोकसे व्याकुल हो रही थी, फिर हार आदि भूषणोंसे युक्त हृदयको आंसुओंसे भिगोती हुई शोकसे व्याकुल होकर पास खड़े हुए श्रीकृष्णसे ऐसे वचन बोली।

हे कृष्ण! जब ये क्षत्रियोंका नाश करनेवाला युद्ध होनेवाला था, तब सब राजोंमें श्रेष्ठ दुर्य्योधनने हाथ जोड़ कर मुझसे कहा था,

हे माता ! अब ये घोर युद्ध होनेवाला है, तुम हमारे बिजयके लिये आशिर्व्वाद करो।

मैंने इस आनेवाली आपत्तिको पहिले ही जान लिया था तब मैंने कहा कि, हे पुरुषसिंह! जहां धर्म्म है वहांही बिजय होगी तुम युद्धमें कुछ भूल मत करना और पीछे युद्धमें शस्त्रसे मरकर देवतोंके लोकको जावो।

हे कृष्ण! मैंने इससे पहिलेही यह कह दिया था, इसलिये इसका मुझे कुछ शोच नहीं है परन्तु बन्धु रहित दीन राजा धृतराष्ट्रका शोच करती हूं।

हे कृष्ण! य देखो महा बलवान् सब शस्त्र विद्या जाननेवाले महा क्रोधी बीर ज्येष्ठ दुर्य्योधन आज पृथ्वीमें सोते हैं देखो समयकी गति कैसी कठिन है कि जो शत्रुनाशन दुर्य्योधन पहिले राजोंके आगे चलते थे, सो आज धूलमें लिपटे हुए पृथ्वीमें पड़े हैं हमें यह निश्चय होता है कि बीर दुर्य्योधन साधारण गतिका नहीं प्राप्त हुवे य अवश्य हो स्वर्ग लोकको गय, क्योंकि इस समय तक भी युद्धहीको ओर सुख करके सोते है जिस बीरके पास पहिले उत्तम उत्तम स्त्री रहती थीं, आज उसी बीर शय्यापर सोते हुए देख भयानक सियारी पास बैठी है जिसके पास पहिले राजा लोग बैठते थे, आज उसही मरे हुए पृथ्वीमें पड़े दुर्य्योधनके पास गिद्ध बैठे हैं पहिले समयमें उत्तम पङ्खे से हवा की जाती थी, आज उस होको कौवे अपने पंखोंकी हवासे शीतल कर रहे हैं ये महा बलवान् सत्य पराक्रमी महाबाहु दुर्य्योधनको युद्धमें भीमसेनने ऐसे मारा जैसे सिंह हाथीको मार डालता है।

हे कृष्ण! ये देखो बीर दुर्य्योधन भीमसेनके हाथसे मरकर गदा लिये रुधिरमें भींगे पृथ्वीमें सोते हैं देखा किसी दिन ग्यारह अक्षौहिणी सेना इनके सङ्ग थी सो आज मर कर पृथ्वीमें पड़े है जो महा धनुषधारी महा बलवान् दुर्य्योधन भीमसेनके हाथसे मर कर इस प्रकार पृथ्वीमें पड़े हैं जैसे सिंहके डरसे शार्दूल इस मूर्ख बालकने विदुर और महाबाहु धृतराष्ट्रका निरादर किया था, इससे इस अवस्थाको पहुंचा जिसके बशमे शत्रुरहित पृथ्वी १३ वर्ष तक रही थी वही महाराज दुर्य्योधन आज पृथ्वीमें पड़े हैं।

हे कृष्ण! थोड़े ही दिन हुए कि हाथी घोड़े और गाड़ीसे भरी पृथ्वी राजा दुर्य्योधनकी आज्ञामें चलती थी, सो आज हाथी घोड़े और बलसे हीन होकर दूसरेकी आज्ञामें चलती है अब हमें जीनेसे क्या सुख है देखो अनेक स्त्रियां मरे हुए बीरके पास बैठी हुई रोरही हैं।

हे कृष्ण! ये देखो उत्तम बाल और पतली कमरवाली लक्ष्मणकी माता दुर्य्योधनको गोदमें लिये सोनेकी देवीके समान बैठी हैं जिस समय राजा जीते थे, तब यह सुन्दरी उनके पास बैठ कर बिलास करती थी मैं अपने बेटे पोतेको मरा हुवा देखती हूं तो भी मेरे हृदयके सौ टुकड़े नहीं होते, ये देखो निन्दा रहित लक्ष्मणको माता अपने पुत्रका माथा सूंघती हैं और दुर्य्योधनको हाथसे पोंछती है ये इस समय अपने पति और पुत्रका सोचकर रही है ये बड़े नेत्रवाली रानी अपने दोनों हाथोंसे शिर पीटती है और दुर्य्योधनके सम्मुख गिरती है ये कमल पर गिरी दूसरे कमलके समान दिखती है कभी अपने पुत्रको पूंछती है। यदि वेद और श्रुति सब सत्य है ता राजा दुर्य्योधनने अवश्यही अपने बाहु बलसे स्वर्गको जीत लिया।

१७ अध्याय समाप्त।

गान्धारी बोली, हे कृष्ण! ये देखो भीमसेनकी गदासे मरे हुवे परिश्रम रहित मेरे सौ

बेटे पृथ्वीमें पड़े हैं, इससे अधिक दुःख मुझे और क्या होगा जो मेरे बेटेकी स्त्री और अपने पति और पुत्रोंको मरा हुआ देख बाल खोले इधर उधर दौड़ रही है जो पहिले भूषण पहिन कर छत पर टहलती थी, सो आज रुधिरसे भीगी पृथ्वीमें लोट रही है ये, सब बड़े कष्टसे गिद्ध सियार और कौवेको हटाती है और दुःखसे व्याकुल होकर पागलके समान इधर उधर घूम रही है।

ये देखो दूसरी सुन्दर शरीरवाली स्त्री इस युद्धभूमिको देखकर दुःखसे व्याकुल होकर पृथ्वीमें पड़ी है।

हे कृष्ण। लक्ष्मणकी माता राजपुत्री और दुर्य्योधनकी पटरानीको देखकर मेरा मन शान्त नहीं होता।

कोई पतिको कोई पुत्रको और कोई अपने भाईको पृथ्वीमें पड़ा हुआ देख मूर्च्छा खाकर पृथ्वीमें गिरती है, हे कृष्ण। कहीं युवती कहीं बूढ़ी स्त्री अपने बन्धुओंको रो रही हैं।

हे कृष्ण कहीं कोई स्त्री थकाई और मोहसे व्याकुल होकर रथके जुए या मरे हुवे हाथी और घोड़ाके शरीरका आश्रय लेकर रोरही है।

हे कृष्ण कोई स्त्री अपने बन्धुका कटा हुआ कुण्डल समेत शिर हाथसे लेकर रोरही है, इसीसे यह निश्चय होता है कि मैंने और सब स्त्रियोंने पहिले जन्ममें कोई महा पाप किया था, इसीसे धर्मराजने इस वंशका नाश किया।

हे कृष्ण! पहिले किये हुए पुण्य और पापका अवश्य ही फल होता है ये देखो बड़े बड़े [illegible] हुए काले बालोंवाली [illegible] हंसके समान सुन्दर चालोंवाली स्त्री शोक और दुःखसे व्याकुल सारसोंके समान रोरही हैं।

हे कृष्ण! ये देखो इन स्त्रियोंके मुखको [illegible] कुम्हलाये दे रहा है।

हे कृष्ण! ये देखो महा अभिमानी मतवाले हाथियोंकेसमान बलवान मेरे बेटोंके अनेक चन्द्रमा युक्त बाल सूर्य्यके समान सोनेके कवच सोनेकी माला पृथ्वीमें इस प्रकार पड़े हैं जैसे जलती हुई अग्नि।

हे कृष्ण। ये देखो शत्रुनाशन वीर भीमसेनके हाथसे मर कर पृथ्वीमें सोते हैं भीमसेनने इनके सब शरीरका रुधिर पी लिया भीमसेनने इसे जूवेमें जीती हुई द्रौपदीके बचनसे मार डाला।

हे कृष्ण! इसने कर्ण और दुर्य्योधनको प्रसन्न करनेके लिये जुवेमें जीती हुई द्रौपदीसे कहा था की, हे पाञ्चाली! तू नकुल, सहदेव, और अर्ज्जुनके सहित हमारी दासी होगई अब हमारे घरमें जाकर दासीके काम कर।

हे कृष्ण। मैंने उस ही समय राजा दुर्य्योधनसे कहा था कि, हे पुत्र। इस मृत्यु कि फांसमें पड़े हुवे लड़ाईके प्यारे दुर्बुद्धि अपने मामा शकुनीको त्याग कर पाण्डवोंसे सन्धिकर ले, अरे दुर्बुद्धे। तू क्रोधी भीमसेनको नहीं जानता जैसे कोई मशाल जलाकर हाथीको क्रोधित करता है ऐसे ही तू अपने वचन रूपी तेज बाणोंसे भीमसेनको क्रोध दिलाता है मैंने एक बार क्रोध करके अपने पुत्रोंको ऐसे ही समझाया था परन्तु उन्होंने न माना, इसीसे पाण्डवोंने उन्हें इस प्रकार नष्ट कर दिया जैसे विषैला साप अपने विषसे बैलोंका नाश करता है, ये दुःशासन अपने बड़े बड़े हाथ फैलाये दुशासन इस प्रकार पृथ्वीमें पड़े हैं जैसे सिंहसे मर कर हाथी, महा क्रोधी भीमसेन ये महा घोर कर्म किया जो दुशासनका रुधिर पिया।

१८ अध्याय समाप्त।

गान्धारी बोली हे कृष्ण! ये देखो मेरे पुत्र महाबलि[illegible] विकर्ण भीमसेनके बाणोंसे सौ टुकड़े हुए पृथ्वीमें पड़े हैं।

हे मधुसूदन! ये हाथियोंके भुण्डमें पड़े हुए विकर्ण ऐसे शोभित होरहे हैं, जैसे शरद-कालके मेघोंके बीचमें चन्द्रमा, ये देखो इसके धनुषोंको ठेंठयुक्त हाथके मांस खानेके लिये गिद्ध काट रहे हैं।

हे कृष्ण! इसकी तपस्विनी स्त्री मांस खाने-वाले गिद्धोंको बहुत कष्टसे हटाती है, परन्तु हटा नहीं सकती।

हे कृष्ण! जो विकर्ण सुखसे सोने योग्य था, सो आज धूलमें लपटा हुआ पृथ्वीमें पड़ा है, इसके सब मर्म्मस्थान बाणोंसे कट गये हैं, तौभी तेज नष्ट नहीं हुआ।

हे कृष्ण! ये शत्रुनाशन दुर्मुख युद्धकी ओर मुख किये प्रतिज्ञापालक भीमसेनके हाथसे मरे हुए पड़े हैं, उनका आधा मुख सियार खा गये हैं, तो भी वह ऐसा दीखता है जैसे सप्तमीका चन्द्रमा, इस वीरका मुख अभीतक शोभासे नष्ट नहीं हुआ तो भी न जाने यह शत्रुओंके हाथसे मरकर धूलमें क्यों पड़ा है? जिस वीरके आगे युद्धमें कोई भी वीर खड़ा न हो सक्ता था, जो अपने बलसे स्वर्गको भी जीत सकता था, वह दुर्मुख शत्रुओंके हाथसे कैसे मारा गया?

हे कृष्ण! जगत्में वीर जिस धनुषधारीकी उपमा देते थे, वह धृतराष्ट्रका बेटा चित्रसेन आज मरकर पृथ्वीमें सोता है उस विचित्र मालाधारीके पास मांस खानेवाले जन्तुओंके सहित खड़ी हुई सुन्दर स्त्रियोंके रोनेसे और मांस खानेवाले जन्तुओंके शब्दसे यह युद्धभूमि इस समय विचित्र दीखती है।

हे कृष्ण! ये अपनी स्त्रियोंके बीचमें पड़े कटे तरुण विविंशति धूलमें सोते हैं इस बाणोंसे कटे हुए वीरके पास सहस्रों गिद्ध बैठे हैं, जिसने पाण्डवोंकी सेनाको व्याकुल कर दिया था, वोही आज महात्माके योग्य शय्यापर सोता है, इसका हंसता हुआ सुन्दर नाक और सुन्दर भौंहवाला मुख चन्द्रमाके समान दीख रहा है, इसकी स्त्री इसके पास ऐसे बैठी है, जैसे क्रीड़ा करते हुए गन्धर्वोंके पास देवतोंकी सहस्रों कन्या।

ये देखो शत्रुओंकी सेनाके नाश करनेवाले महावीर दुःसहका शरीर लगे हुए बाणोंसे ऐसा दीखता है, जैसे फले हुए कचनारके वृक्षोंसे पर्व्वत, सोनेकी माला और चमकते हुए कवचसे इसकी शोभा ऐसे दीखती है, जैसे जलती हुई अग्निके सहित सफेद पर्व्वत की।

१८ अध्याय समाप्त।

गान्धारी बोली, हे कृष्ण! जिसको जगत्के मनुष्य बल और तेज में आपसे छोटा कहते थे जो सिंहके समान बलवान था, उस अकेलेने दुर्य्योधनके भयानक चक्र व्यूहको तोड़ दिया था, सो अभिमन्यु शत्रुओंके लिये मृत्यु, होकर आप मर गये।

हे कृष्ण! उस महातेजस्वी अर्जुनपुत्रका तेज मरनेपर भी अभीतक शान्त नहीं हुआ, ये उनकी स्त्री विराटकी पुत्री निन्दारहित उत्तरा अपने बालक पतिको मरा हुआ देख रो रही हैं, ये देखो उसे गोदमें लेकर उत्तरा पूछ रही हैं, ये सुन्दरी उत्तरा उसके फूले हुए कमलोंके समान मुखको देख देखके रोती हैं, पहिले ये लज्जामें भरकर और मद्यवेके मदसे मत वाली होकर उनके पास जाती थी, सो आज उनका रुधिरमें भीगा सोनेका कवच उतारकर देख रही हैं, उनको देखकर उनसे कहती है, कि, हे पापरहित कृष्ण! ये तुम्हारे समान सुन्दर आंखवाले तुम्हारे समान बली और तेजस्वी अभिमन्यु मरकर पृथ्वीमें पड़े हैं।

फिर उनसे कहती है कि तुम अत्यन्त सुकुमार थे, सदा कोमल हरिनके चमड़ेपर सोते थे, आज पृथ्वीमें क्यों पड़े हो? क्या कुछ दुख नहीं होता? आज ये बड़े बड़े सोनेके बाजूबन्द

युक्त धनुष खींचनेसे ठेंठयुक्त हाथीके सूंड़के समान हाथ फैलाकर पृथ्वीमें क्यों पड़े हो? इतने सुखसे आज क्यों सोते हो कि जो मेरे हुये रोनेपर भी नहीं बोलते, पहिले दूरहीसे मुझको देखकर बोलते थे, आज मैंने क्या अपराध किया जो नहीं बोलते? तुम सुभद्रा देवतोंके समान पिता और मुझे दुःखसे व्याकुल छोड़कर कहां जाते हो।

हे कृष्ण! ये देखो अभिमन्युके रुधिरसे भीगे हुए बाल खींच करके उसका मुह अपनी गोदमें रखकर उत्तरा ऐसे पूछ रही है, मानो ये जीते ही हैं, उत्तरा पूछती है कि तुम अर्ज्जुनके बेटे और साचात् श्रीकृष्णके भानजे थे, सो युद्धमें कैसे मारे गये? पाप कर्म्म करनेवाले कृपाचार्य्य, कर्ण, जयद्रथ, द्रोणाचार्य्य, और अश्वत्थामाको धिक्कार है, जिन्होंने मुझे विधवा कर दिया, जिस समय उन सबने अकेले बालक तुमको मिलकर मारा था, उनका मन कैसा होगया था? पाञ्चाल और पाण्डवोंके देखते देखते तुम्हें सनाथ होनेपर भी अनाथके समान वे दुष्टात्मा शत्रुवोंने कैसे मारडाला? तुमको मरा हुआ देख तुम्हारे महात्मा पिता बहुत रोरहे हैं, तुम्हारे बिना न जाने बीर पुरुषसिंह अर्ज्जुन कैसे जीते हैं, हे कमलनैन! तुम्हारे बिना पाण्डव विजय और राज्य पानेपर भी प्रसन्न नहीं हुए मैं भी तुम्हारे पीछे उन्ही लोकोंको जाती हूं जिनको तुमने अपने शस्त्र और धर्मसे जाता है, मैं बड़ी अभागिनी हूं जो तुम्हें युद्धमें मरा हुआ देखकर भी जीती हूं हे पुरुषसिंह! अब स्वर्गमें जाकर हंसकर मीठी वाणीसे मेरे समान किस स्त्रीको बुलाओगे, निश्चय ही अपने शोभा और मीठी वाणीसे अप्सराओंका मन हरोगे, तुम अपने पुण्यसे [illegible] यदि [illegible] अप्सराओंके [illegible] विहार [illegible] हे सुभद्रा-[illegible]! [illegible] और तुम्हारा संग लिखा था, सातवें महीनेमें तुम मर गये।

उत्तराके ऐसे बचन सुनकर ये बिराटकुलकी स्त्री उन्हें पकड़ती हैं, फिर आप ही बिराटको रुधिरमें भीगे और द्रोणाचार्य्यके बाणसे कटे पृथ्वीमें पड़े देख वे आप ही रोती हैं, ये सियार, कौवे और गिद्ध उनका मांस खारहे हैं, ये उनकी स्त्री मांस खानेवालोंको हटा नहीं सकती और ये सब रानी घाम और परिश्रमसे व्याकुल होरही हैं इनके मुख सूख कर पीले होगये है।

हे कृष्ण! ये उत्तरा अभिमन्यु काम्बोजदेशी सुदच्चिण लक्ष्मण और सुदर्शन आदि बालक मरे पड़े हैं।

२० अध्याय समाप्त।

गान्धारी बोली, हे कृष्ण! ये बिकर्त्तन पुत्र महा धनुषधारी महारथ कर्ण जलती हुई अग्निके समान अर्ज्जुनके ही बाणरूपी जलसे शान्त होकर पड़े, उन्होंने अनेक महारथोंको युद्धमें मारा था, सो आज ये रुधिरमें भीगकर युद्धमें मरे पड़े हैं ये महा क्रोधी महा धनुषधारी बलवान बीर कर्ण अर्ज्जुनके हाथसे मर कर पृथ्वीमें सोते हैं ये सब बाल खोले उनकी स्त्री उनके पास बैठी रोरही हैं जिस कर्णके आश्रयसे हमारे महारथ पुत्रोंने पाण्डवोंसे इस प्रकार युद्ध किया था जैसे हाथियोंका झुण्ड अपने राजाको आगे करके लड़ता है उस ही कर्णको अर्ज्जुनने इस प्रकार मार डाला जैसे सिंह शार्द्दूलको। अथवा मतवाला हाथी हाथीको। जिस कर्णके भयसे सदा धर्म्मराज युधिष्ठिर घबड़ाते रहते थे जिसके डरसे युधिष्ठिर तेरह वर्ष सुखसे नहीं सोये थे, जिसको युद्धमें कोई नहीं जीत सक्ता था, जो जलती हुई प्रलय कालकी अग्निके समान तेजस्वी इन्द्रके समान घोर और हिमाचल पर्व्वतके समान

स्थिर था, सो वीर कर्ण धृतराष्ट्र पुत्र दुर्योधनको शरणा देकर आज मर कर इस प्रकार पृथ्वीमें पड़े हैं जैसे वायुसे टूटा हुआ वृत्त, ये देखो वृषसेनकी मा कर्णकी स्त्री पृथ्वीमें पड़ी हुई रोरही है और कहती है कि तुम्हारे गुरुने जो शाप दिया था इसहीसे पृथ्वीने तुम्हारे रथका पहिया पकड़ लिया उसही समय और अर्जुनने युद्धमें तुम्हारा शिर काट लिया।

ये सुषेणकी माता महापराक्रमी महावीर कर्णको सोनेका कवच पहिने पृथ्वीमें पड़े देख मूर्च्छा खाकर गिर पड़ी है, देखो मांस खानेवालोंने महात्मा कर्णका शरीर थोड़ा ही छोड़ा है, इस समय ये ऐसे भयानक दीखते हैं, जैसे कृष्णपक्षका चन्द्रमा यह उनकी स्त्री उठकर और कर्णका मुख देखकर रोती है और अपने पतके शोकसे व्याकुल होगई है।

२१ अध्याय समाप्त।

गान्धारी बोली, हे कृष्ण! ये देखो आवन्ती नगरीके मरे हुवे राजाको गिद्ध और सियार खारहे हैं जगतमें इनके अनेक बन्धु थे, परन्तु इस समय बन्धु रहित मनुष्यके समान भीमसेनके हाथसे मारे गये, इन वीरने अनेक वीरोंको युद्धमें मारा था, सो आज आप मर कर और रुधिरमें भीगकर वीर शय्यापर सोते हैं आज उन्हें ही मांस खानेवाले सियार कौवे आदि पक्षी इधर उधर खींचे फिरते हैं समय बड़ा कठोर है, आज इस ही वीरकी स्त्री इसके चारों ओर बैठी रोरही हैं।

हे कृष्ण। ये देखो महा धनुषधारी यशस्वी वाल्हिक सोते हुए शार्दूलके समान बाणसे मरे हुवे पृथ्वीमें पड़े हैं उनके मरनेपर भी मुख ऐसा सुन्दर दीखता है जैसे पूर्णमासीका चन्द्रमा।

हे कृष्ण। देखो पुत्रके शोकसे व्याकुल प्रतिज्ञा पालक अर्जुनके हाथसे मरे हुवे जयद्रथ पड़े हुवे हैं महात्मा द्रोणाचार्य्यके रक्षा करने परभी ११ अक्षौहिणीका व्यूह तोड़ कर सत्यपालन करनेके लिये इन्हें मारा था, ये महा यशस्वी महा अभिमानी जयद्रथ सिन्धु और सौवीर देशके स्वामी थे, आज उन्हेंही सियार और गिद्ध खारहे हैं यद्यपि इनकी भक्त स्त्री उनकी रक्षा कर रही हैं तौ भी इनको डराकर गिद्ध और सियार उन्हें खींच कर वनमें ले जाना चाहते हैं परन्तु काम्बोज वन देशकी स्त्री उनकी रक्षा कर रही है जिस समय कैकेयदेशके क्षत्रियोंके समेत द्रौपदीको जयद्रथ ले भागे थे, उसी समय पाण्डव उन्हें मार डालते परन्तु उस समय उन्होंने दुःसलाका मान रखनेके लि[ये] उन्हें नहीं मारा था, परन्तु न जाने आज दुःसलाको क्यों विसरा दिया, आज वही हमारी पुत्री दुःसला अपने पतिको मरा हुआ देख पाण्डवोंको गाली देती है, अपना शिर और छाती पीटती है और रोती है।

हे कृष्ण। इससे अधिक मेरे लिये और क्या दुःख होगा जो मेरी पुत्री और बेटोंकी बहू विधवा होकर रो रही हैं ये देखो दुःसला अपने पतिका शिर न पाकर शोक और भयसे रहित मनुष्यके समान चारों ओर दौड़ती है अकेले जयद्रथने अभिमन्युकी रक्षा करनेके लिये आते हुवे सब पाण्डवोंको रोक दिया था, जिसने पाण्डवोंकी बहुत सेनाका नाश कर दिया था, सोई जयद्रथ आज मरे हुए पड़े हैं उस महा योद्धा वीरके चारों ओर रोती हुई चन्द्रमाके समान मुखवाली स्त्री इस प्रकार बैठी हैं जैसे मतवाले हाथीके पास हथिनी।

२२ अध्याय समाप्त।

गान्धारी बोली, हे कृष्ण। ये साक्षात् नकुलके मामा शल्य धर्म्म जाननेवाले युधिष्ठिरके हाथसे मर कर पृथ्वीमें पड़े हैं

ये मद्र देशके महा बलवान् राजा सदा अपनेको तुम्हारे समभते थे इन्होंने ही कर्णका

रथ हांकते समय पाण्डवोंकी विजयके लिये कर्णका तेज नाश किया था, आज उसही शल्यके पूर्ण चन्द्रमाके समान सुन्दर और कमलके समान नेत्रयुक्त मुखको कौवे खा रहे हैं।

इसके मुखसे जो सोनेके समान जीभ निकल आई है उसे पक्षी खा रहे हैं। युधिष्ठिरके हाथसे मरे हुए मद्रराज शल्यके चारों ओर बैठी हुई स्त्री रो रही हैं ये उत्तम क्षत्रो कुलमें उत्पन्न हुए पतला कपड़ा पहिननेवाली स्त्री पुरुष सिंह क्षत्रिय श्रेष्ठ शल्यको देख रोरही हैं शल्यके चारोंओर बैठी स्त्री इस प्रकार रोती हैं जैसे कीचड़में फसे हाथीके चारोंओर खड़ी उसी समयकी ब्याई हथिनी, ये ही शल्य शरण आयेको शरण देते थे वही वीर शल्य बाणोंसे कटे पड़े हैं।

हे कृष्ण! ये पर्व्वत वासी महा प्रतापवान श्रीमान राजा भगदत्त हाथीका अङ्कुश हाथमें लिये हुए पृथ्वीमें पड़े हैं जिसके शिर पर ये सोनेकी माला विराजमान है उसे ये मास खानेवाले खाय रहे हैं इस समय राजा भगदत्तके बाल बहुत ही शोभित हो रहे हैं। अर्जुनके सङ्ग इसका घोर युद्ध हुआ था उस युद्धको देखकर वीरोंके रोयें खड़े होते थे इन दोनोंका ऐसा युद्ध हुआ था, जैसे इन्द्रके सङ्ग वृत्रासुरका, अन्तमें महाबाहु भगदत्त अर्जुनके हाथसे मार गये अपने बलसे अर्जुनके हृदयमें सन्देह कर दिया था।

हे कृष्ण! जगत्में जिसके समान कोई तेजस्वी बलवान् और वीर्य्यवान् कोई नहीं है वे भी इस समय मरे पड़े हैं वे महातेजस्वी इस समय ऐसे शोभित हो रहे हैं जैसे प्रलय-कालके आकाशसे गिरे हुए सूर्य्य अपने बाण-रूपी किरणोंसे शत्रुओंको तपा कर अब अस्त होगये हैं, इन्होंने जन्म भर अपना [illegible] [illegible] मिटा, [illegible] आज वीर शर शय्यापर सोते हैं, कार्त्तिक आदि [illegible] शय्यापर सोते हुए भीष्मकी शोभा इस समय ऐसी दीखती है जैसे सरकण्डोंके बनमें सोते हुए भगवान् कार्त्तिकेयकी बाणोंकी शय्यापर भीष्म सोते हैं, अर्जुनने एक बाणका तकिया भी इनको दिया है, इन्होंने अपने पिताकी आज्ञासे ब्रह्मचर्य्य पालन किया है सोई भीष्म आज शर शय्यापर सोते हैं, इनके समान जगत्में कोई वीर नहीं है, ये धर्म्मज्ञ सब विद्या जाननेवाले सब विषयोंका निर्णय करनेवाले भीष्म देवतोंके समान प्राण धारण कर रहे हैं, इनके समान कोई विद्यमान, पराक्रमी और धर्म्मात्मा कोई नहीं है, सो आज शर शय्यापर सोते हैं, जब पाण्डवोंने इनको बुलाकर पूछा था कि आपकी मृत्यु कैसे होगी, तब सत्यवादी महात्मा धर्म्म-जाननेवालेने अपनी मृत्यु पहिले ही बता दी थी इन्होंहीने नष्ट हुए कुरुवंशका फिर उद्धार किया था सोई महाबुद्धिमान आज इस दशाको प्राप्त हो गए।

हे कृष्ण! जब देवताके समान भीष्म ही स्वर्गको चले गये तब कौरव लोग हस्तिनापुरमें जाकर क्या करेंगे।

हे कृष्ण! सात्यकीके गुरु और अर्जुन आदि कौरवोंके गुरु द्रोणाचार्य्य मरे पड़े हैं वे महाबलवान् परशुराम और इन्द्रके समान शस्त्रविद्याको जानते थे, इन्हींके प्रतापसे अर्जुनने ऐसे ऐसे घोर कर्म्म करे थे, सोई द्रोणाचार्य्य आज मरे पड़े हैं, शस्त्रोंने भी उनकी रक्षा नहीं करी इन्होंके आश्रयसे कौरव लोग पाण्डवोंको युद्ध करनेके लिये ललकारते थे, वेही अस्त्र जाननेवालोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य आज शस्त्रोंसे कटे हुए पृथ्वीमें पड़े हैं जिन्होंने अग्निके समान तेज धारण करके पाण्डवोंकी सेनाको भस्म किया था वेही द्रोणाचार्य्य आज बुझी हुई आगके समान मरे हुए पृथ्वीमें पड़े हैं, इस समय भी उनके धनुषकी मूठी नहीं छूटी और दस्ताने भी नहीं छूटे, ये सभी

भी जीते हुएके समान दीखते हैं ये ब्रह्माके समान चारों वेद और शस्त्र विद्याको जानते थे, देखो जिन द्रोणाचार्य्यके चरणोंमें सैकड़ों शिष्य प्रणाम करते थे उन्ही प्रणाम करने योग्य सुन्दर चरणोको सियार खींचते फिरते हैं, ये देखो धृष्टद्युम्नके हाथसे द्रोणाचार्य्यके पास दुःखसे भरी हुई कृपी बैठो है, देखो शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ अपने पति मरे हुए द्रोणाचार्य्यके पास बाल खोले नीचा मुख करे रोती हुई कृपी बैठी है, धृष्टद्युम्नके बाणोंसे कृपी काचली कट गया है अब जटाधारिणी ब्रह्मचारिणी, सुकुमारी, यशस्विनी कृपी अपने पतिका प्रेत कर्म्म करनेको चाहती है, ये जटाधारी ब्रह्मचारी द्रोणाचार्य्यके ब्राह्मण शिष्य धनुष शक्ति रथोंके पहिये और अनेक प्रकारके बाणोसे चिता बना रहे हैं, अब उन्होंने चितामें आग लगाकर द्रोणाचार्य्यको जला दिया ये साम वेद जाननेवाले द्रोणाचार्य्यके शिष्य रोरहे हैं और अपने गुरुकी प्रशंसा कर रहे हैं, अब ये चिताकी प्रदक्षिणा करके और कृपीको आगे करके गङ्गा स्नानको जाते हैं।

२३ अध्याय समाप्त।

गान्धारी बोली, हे कृष्ण! ये सोमदत्त पुत्र भूरिश्रवा सात्यकीके हाथसे मरे हुए पड़े है देखो अनेक प्रकारके पक्षी इनका मांस खा रहे हैं, ये देखो पुत्रके शोकसे व्याकुल सोमदत्त महाधनुषधारी सात्यकीकी निन्दा कर रहे हैं, जो निन्दारहित भूरिश्रवाकी माता शोकसे व्याकुल होकर अपने पतिको बहुत समझा रही है कहती हैं, हे महाराज! अपने प्रारब्ध हीसे इस भयानक कुरुकुल नाशको देखा अपने प्रारब्धहीसे अनेक यज्ञ करनेवाले अपने पुत्र भूरिश्रवाकी मृत्यु न देखी, अपने प्रारब्धहीसे सारसियोंके समान रोती हुई अपने बहुओंके शब्द नहीं सुनते है, महाराज ये आपकी बेटेकी बहू एक साड़ी पहिने बाल खोले अनाथ होकर इधर उधर रोती फिरती हैं, अपने प्रारब्धहीसे सियारोंसे खाये जाते हुए अर्जुनके बाणसे हाथ कटे भूरिश्रवाको नहीं देखा आप प्रारब्धही से रोती हुई बहू स्त्रीका शब्द नहीं सुनते अपने प्रारब्धहीसे महात्मा भूरिश्रवाका शोकका भरा हुवा छत्र रथसे गिरता हुआ न देखा।

ये सुन्दर नेत्रवाली भूरिश्रवाको स्त्री अपने मरे हुवे पतिके चारों ओर बैठो सोच कर रही है, जो पतिके शोकसे व्याकुल दीन स्वरसे रोती हुई भूरिश्रवाको स्त्री पृथ्वीमें गिरती हैं और कहती हैं कि अर्जुनने यह क्या कुकर्म किया जो यज्ञ करनेवाले आपका हाथ छलसे काट लिया इससे भी अधिक पाप कर्म्म सात्यकीने किया जो शस्त्ररहित आपका शिर काट लिया है, परन्तु आप एकलेको अधर्मसे दो दो महारथीने मिलकर मारा इस यशनाशक अधर्म भरे कार्म्मको करते सात्यकी सभा और महात्माओंके बीचमें क्या कहेंगे? इस प्रकार जो भूरिश्रवाकी स्त्री रो रही है, ये भूरिश्रवाकी पटरानी स्त्री अपने पतिका हाथ गोदमें लेकर कहती है कि यदि वीर क्षत्रियोंका नाश करनेवाला मित्रोंको अभय दान देनेवाला और सहस्रों गौवोंको दान करनेवाला आपका हाथ वीर अर्जुनने कृष्णके देखते देखते दूसरेके सङ्ग युद्ध करते हुए बिना कहे काट दिया, अब ऐसा पाप कर्म्म करके कृष्ण और अर्जुन क्या कहेंगे, इतना कहकर ये रानी चुप होगई है, भूरिश्रवाकी स्त्री सब रोरही हैं।

जो महापराक्रमी शकुनी अपने भानजे सहदेवके हाथसे मरे हुए पड़े हैं, पहिले अनेक मनुष्य सोनेके डण्डेवाले पङ्खासे हवा करते थे, आज उनको ही कौवे अपने पङ्खोंसे हवा कर रहे है, जो अपनी मायासे सैकड़ों सहस्रों रूप बनाता था, उस छलीकी माया सहदेवके तेजसे

भस्म होगई, जिस छलीने सभामें युधिष्ठिरको जीता था और उनका सब राज्य ले लिया था, वही शकुनी आज मर कर पृथ्वीमें पड़ा है, जिस छलीने मेरे पुत्रोंका नाश करनेहीके लिये छल सीखा था सोई उस ही छलसे शकुनीको आज गिद्ध और कौवे खा रहे हैं, इस ही दुष्टके कारणसे मेरे पुत्र और पाण्डवोंमें वैर हुआ था, इसहीसे मेरे पुत्र और बान्धवोंके सहित मारा गया। जैसे मेरे पुत्र शस्त्रोंसे मरकर स्वर्गको गये हैं, ऐसे ही यह दुर्बुद्धि मरकर स्वर्गको गया ऐसा नहीं कि यह दुष्टबुद्धि वहां भी कोमल बुद्धिवाले मेरे बेटोंमें वैर करादे।

२४ अध्याय समाप्त।

गान्धारी बोली, हे कृष्ण। ये देखो दुशालेकी शय्यापर सोने योग्य बैलके समान कन्धेवाला महापराक्रमी काम्बोज देशका राजा मरके धूलमें सोता है जिसके चन्दन लगने योग्य हाथोंको रुधिरसे भीगे हुए देख उसकी स्त्री रोरही है, उसकी दुःख भरी स्त्री ऐसा कह रही है कि जो सुन्दर उजली अंगुलीवाले परिघके समान दृढ़ आपके वही हाथ हैं जिनके संगमें विहार करती करती मैं तृप्त नहीं होती थी। हे प्रजा नाथ! अब मैं आपके विना अनाथ होकर कहा कांपती और रोती फिरूंगी इन स्त्रियोंको घरमें बैठे बहुत समय बीत गया, तौभी फूल मालाओंके समान इनकी सुगन्ध नष्ट नहीं हुई।

हे कृष्ण ये देखो सब प्रकार समान सोनेके बाजूबन्द पहिने कलिङ्गदेशकावीर राजामरा पड़ाहै।

हे कृष्ण! ये जयत्सेन नामक मगधदेशके राजाकी स्त्री अपने मरे हुवे पतिके चारों ओर खड़ी हुई व्याकुल होकर रोरही है।

हे कृष्ण! जिन बड़ी बड़ी आंखवाली इन स्त्रियोंका गाना और कामदेवका शब्द मरे हृदयको भी नहीं सोने देता, जो मगधदेशकी रानी उत्तम सेजपर सोने योग्य थी सो आज शोकसे व्याकुल होकर वस्त्र आभूषण फेंककर भूमिमें लोट रही हैं।

हे कृष्ण! जो कोशलदेशके राजपुत्र वृहद्बलकी स्त्री अपने पतिके चारों ओर बैठी हुई रोरही हैं और दुःखसे व्याकुल होकर अभिमन्युके छूटेहुए बाणोंको इनके शरीरसे निकालती है और मूर्च्छा खाकर गिरती हैं, इन सुन्दरी स्त्रीके मुख घाम और परिश्रमसे व्याकुल होकर ऐसे होगये हैं। जैसे मुरझाये हुए कमल।

हे कृष्ण! ये देखो सोनेकी माला और सुन्दर बाजूबन्द पहिरे धृष्टद्युम्नके बालक बेटे मरे पड़े हैं, ये सब बालक रथरूपी गदा, धनुष, ज्वाला, बाण, शक्ति और गदारूपी इन्धनयुक्त द्रोणाचार्य्यरूपी अग्निमें इस प्रकार जल गये जैसे आगमें पतङ्ग जलते है।

ये सुन्दर बाजूबन्द पहिरे केकयदेशके पांचो राजपुत्र द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे मरकर युद्धकी ओरको मुख किये पड़े हैं।

ये तपे हुए सोनेके कवच पहिने ताड़की ध्वजावाले वीर अपने तेजसे पृथ्वीको जलती हुई अग्निके समान प्रकाशित करते हैं।

हे कृष्ण! जैसे वनमें सिंहसे मरकर मतवाला हाथी गिरता है, ऐसे ही द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे मरे हुए महाराज द्रुपद पृथ्वीमें पड़े हैं महाराज द्रुपदका कमलके समान सफेद छत्र ऐसा दीखता है, जैसे शरद कालमें चन्द्रमा। दुःखसे भरी बूढ़ी राजा द्रुपदकी स्त्री और बेटोंकी बहू राजा द्रुपदको जलाकर और उनकी चिताकी प्रदक्षिणा करके लौटी जाती हैं

हे कृष्ण! ये देखो चन्देलोंके राजा धृष्टकेतुकी स्त्री अपने वीर पतिको द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे मरा हुआ देख रोरही है इस ही महाधनुर्धारी द्रोणाचार्य्यके बाणोंका नाश किया था. रणमें इन्हींके बाणोंसे इस प्रकार मारे गये, जैसे नदी नदसे वृक्ष टूट जाता है,

इस ही महारथने युद्धमें सहस्रों वीरोंको मारा था, इस समय उसे पक्षी खारहे हैं, और इसकी स्त्री भी पास बैठी है।

जो महापराक्रमी वीर तुम्हारी फूफीका पोता था, सो आज बान्धव और सेनाके सहित मारा गया। इसकी स्त्री इसे गोदमें लेकर रोरही है।

हे कृष्ण। ये देखो सुन्दर कुण्डल और सुन्दर मुखवाला धृष्टकेतुका पुत्र द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे कटा हुआ पृथ्वीमें पड़ा हुआ है इसने शत्रुवोंसे युद्ध करते हुए अपने पिताको अभी-तक नहीं छोड़ा।

हे कृष्ण! ऐसे ही मेरा पोता लक्ष्मण भी अपने पिताके सहित स्वर्गको चला गया।

हे कृष्ण! ये सोनेके बाजूबन्द और कवच पहिने बाण, खड्ग धारण किये, निर्म्मल माला पहिने हुए बैलके समान आंख और रूपवाले उज्जैन निवासी विन्द और अनुविन्द इस प्रकार पृथ्वीमें पड़े हैं, जैसे बसत ऋतुमें वायुसे टूटे हुए कचनारके वृक्ष।

हे कृष्ण। युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्ज्जुन, नकुल, सहदेव और तुमको कोई जगत्‌में नहीं मार सक्ता जो भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कर्ण, कृपा-चार्य्य, दुर्य्योधन, अश्वत्थामा, सिन्धुराज जय-द्रथ, सोमदत्त, विकर्ण, और वीर कृतबर्म्माके हाथसे तुम सब बच गये।

हे कृष्ण। समयकी गति बड़ी कठिन है जो पुरुषसिंह वीर अनेक बाणोंसे देवता और गन्धर्वोंको भी मार सकते थे, सोही आज मर-कर पृथ्वीमें पड़े हैं, कालके लिये कोई कर्म्म कठिन नहीं है देखो सब वीर मारे गये।

हे कृष्ण! जिस समय तुम सन्धि करानेको आये थे, और बिना काम सिद्ध भये लौट गये थे, तब ही मेरे बलवान पुत्रोंका नाश हो चुका था, उसी दिन भीष्म और बुद्धिमान बिदुरने मुझसे कहा था, कि "अब तुम अपने पुत्रोंसे प्रेम मत करो" उनका ज्ञान झूठा नहीं हुआ थोड़े ही दिनमें मेरे महापराक्रमी पुत्र भस्म होगये। श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमे-जय! ऐसा कहकर गान्धारी धीरजको छोड़-कर शोकसे व्याकुल होकर पृथ्वीमें गिर पड़ी फिर पुत्रोंके शोकसे व्याकुल होकर उठी और क्रोधसे कृष्णको दोष लगाने लगी।

गान्धारी बोली, हे कृष्ण। जब कौरव और पाण्डव दोनो परस्पर लड़के नष्ट होते थे, तब तुमने उन्हें मना क्यों नहीं किया? तुमने सबके बचन सुने थे, तुम समर्थ बलवान और बहुत सेवकोंसे युक्त होनेपर भी कौरवोंका नाश देखते रहे। इस लिये उस कर्म्मका फल भोगो मैंने जो अपने पतिकी सेवासे तप किया होवे उससे मेरा बचन सत्य होय, तुमने कौरव और पाण्डवोंको युद्ध करनेसे न रोका इससे तुम भी अपनी जातिका नाश करोगे।

हे कृष्ण! अबसे छत्तीसवें अपने बेटे, पोते जाती और बन्धुवोंसे हीन होकर अनाथके समान बनमें दुष्ट उपायसे मारे जावोगे। जैसे ये कुरु कुलकी स्त्रीयाती फिरती हैं ऐसेही तुम्हारा स्त्री पुत्र और बान्धवोंसे हीन होकर रोवेंगी।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, देवी गान्धारीके ऐसे भयानक बचन सुनकर श्रीकृष्ण हसकर बोले, हे गान्धारी! तुम जो कहती हो सो पहिले ही हमने विचार लिया था, प्रारब्धहीसे यदुवंशियोंके नाशका समय आगया है, उन्हें मेरे सिवाय देवता और दानव भी नहीं मार सकते वे परस्पर लड़के नष्ट हो जायगे।

श्रीकृष्णके ऐसे बचन सुन पाण्डवोंने घबड़ा-कर अपने जीनेकी आशा छोड़ दी।

२५ अध्याय समाप्त।

स्त्री बिलाप पर्व्व समाप्त।

आगे श्राद्ध पर्व्व लिखते हैं।

श्रीकृष्ण बोले, हे गान्धारी! अब तुम उठो शोक मत करो, ये कुरुवंशका नाश तुम्हारे ही

अपराधसे हुआ है, तुमने पहिले महाअभिमानी दुरात्मा निष्ठुर लड़ाईसे प्यारे और वृद्धोंकी आज्ञा न माननेवाले दुर्य्योधनको न रोका, अब मुझे दोष क्यों देती हो, जो मरे हुए मनुष्य अथवा नष्ट हुए कामका शोच करता है, उसे कुछ लाभ नहीं होता और सदा दुःखहीमें पड़ा रहता है, ब्राह्मणी तपस्वी, गाय, बोझ ले चलनेवाले, घोड़ी दौड़ानेवाले, शूद्रदास, वैश्य पशु पालनेवाले और राजपुत्री क्षत्रियाणी मनुष्यको मारनेवाले पुत्रको उत्पन्न करती है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, श्रीकृष्णके दूसरी बार ऐसे कठोर वचन सुनकर गान्धारी शोकसे व्याकुल होकर चुप होगई।

धर्म्म जाननेवाले राजा धृतराष्ट्र भी अपनी दुर्बुद्धि दूर करके युधिष्ठिरसे बोले, हे पाण्डव! तुम युद्धसे बचीहुई सेनाकी गिन्ती जानतेहो यदि मरे हुवोंकी गिन्ती जानते हो तो हमसे कहो।

युधिष्ठिर बोले, हे राजन्! इस युद्धमें १० हजार १० हजार छाछट करोड़ मनुष्य मारे गए, इनके सिवाय जिन वीरोंको कोई नहीं देख सक्ता था, ऐसे १४ हजार १० हजार ३ हजार और ५ वीर मारे गये महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे पुरुषश्रेष्ठ युधिष्ठिर! मेरी बुद्धिमें तुम सर्व्वज्ञ हो इसलिये हमसे कहो वे और कौन कौन गतिको प्राप्त भये!

महाराज युधिष्ठिर बोले, जो इस युद्धमें प्रसन्न होकर मरे हैं वे सब महावीर इन्द्रलोकको गये, जो युद्धमें बिना प्रसन्न होकर युद्ध करते करते मरे हैं वे गन्धर्व्व लोकको गए, जो भागते और प्राणदान मांगते हुये [illegible] शस्त्रसे मारे गये वे गुह्यक लोकको गये, जो [illegible] शस्त्रहीन लज्जासे भरे युद्धका [illegible] धर्म्मसे मरे हैं, वे [illegible] ब्रह्मलोकको गए, जो [illegible] भीतर मारे गए उनका जन्म उत्तर कुरुदेशमें होगा।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे पुत्र तुम कौनसे ज्ञानके बलसे सिद्धके समान उन्हें देख रहेहो।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे राजन्! जब मैं आपकी आज्ञासे बनमें घूमता था, तब तीर्थयात्राके समय देवर्षि लोमस मेरे पास आये थे, उन्हीकी कृपा और योगसे यह शक्ति होगई है।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे युधिष्ठिर! अब तुम विधिपूर्व्वक अनाथ और सनाथ क्षत्रियोंके शरीर जलावो किसीका शरीर नष्ट न होने पावे इनका संस्कार करनेवाला कोई नहीं है और जिन्हें गिद्ध और सियार खींच रहे हैं, उनका कर्म्म भी हमेंही करना चाहिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे महाराज! धृतराष्ट्रकी ऐसी आज्ञा सुन कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरने दुर्य्योधनके पुरोहित सुधर्म्मा, अपने पुरोहित धौम्य सञ्जय, महाबुद्धिमान विदुर, युयुत्सु, इन्द्रसेन आदि सारथी और सब सेवकोंको आज्ञा दी कि तुम लोग इन सबके प्रेतकर्म्म करो।

महाराज युधिष्ठिरकी आज्ञासे विदुर, सञ्जय, सुधर्म्मा और इन्द्रसेन आदि सेवकोंने चन्दन अगर तगर आदि काठ, घी, तेल सुगन्धी और बहुत मूल्यवाले रेशमी कपड़े इकट्ठे करके काठ टूटे रथ और शस्त्रोंकी चिता बनाकर सावधान होकर शास्त्रमें लिखी विधिके अनुसार सब राजोंको क्रमसे फूंका सौ भाइयोंके सहित राजा दुर्य्योधन, शल्य, भूरिश्रवा, जयद्रथ, अभिमन्यु, सुदर्शन, लक्ष्मण, राजा धृष्टकेतु, बृहद्रथ, सोमदत्त, सैकड़ो सञ्जय, राजा क्षेमधन्वा, विराट, द्रुपद, शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, युधामन्यु, विक्रान्त उत्तमौजा, कौशल्य द्रौपदीके पुत्र, शकुनी, अचल वृषक, राजा भगदत्त, पुत्रोंके सहित कर्ण, महाधनुषधारी कैकेय, राक्षसराज घटोत्कच, बकासुरका भाई अलम्बुष और जलसिन्ध आदि बहुतसे राजोंको घीकी धारासे जलती हुई अग्निमें फूंक दिया, जिसे महात्माओंके पिताके समान कर्म्म किया [illegible] साम और ऋग्वेदकी ऋचा पढ़ने

लगे। उस रात्रीमें स्त्रियोंके रोनेके शब्दसे मिला हुआ वेदका शब्द भी भयानक होता, वे धूंआरहित जलती हुई चिता आकाशतक दिखाई देने लगी, और जो अनेक देशोंसे आये हुए अनाथ वहां मरे हुए पड़े थे, विदुरने राजाकी आज्ञासे उन सबको इकट्ठा करके चिताओंमें घी डालकर जला दिया इस प्रकार राजा युधिष्ठिर उनको फूककर राजा धृतराष्ट्रको आगे करके गङ्गाको चले।

२६ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! वे सबलोग पवित्र जलवाली पवित्र गङ्गामें जाकर आभूषण कपड़े और पगड़ी उतारकर पिता, भाई, पोते, मित्र और पुत्रोंको जल देने लगे! दुःखसे रोती हुई स्त्रियां भी अपने पति और बान्धवोंको जल देने लगीं, उस समय गङ्गाका जल अत्यन्त सुन्दर दीखने लगा, वीरोंकी स्त्रियोंसे भरा हुआ वह गङ्गाका तट समुद्रके समान दीखने लगा।

हे महाराज! उस समय शोकसे व्याकुल रोती हुई कुन्ती धीरे धीरे अपने पुत्रोंसे बोली, हे पाण्डवों! जिस वीर लक्षणोंसे भरे महाधनुषधारी महारथ कर्णको अर्जुनने मारडाला जिसको तुम लोग राधा और सूतपुत्र जानते थे, जो सेनाके बीचमें सूर्य्यके समान चमकता था, जो एक ही सब सेना सहित सब पाण्डवोंसे लड़ता था, जो दुर्य्योधनका सेनापति था, जिसके समान जगत्में कोई राजा बलवान नहीं था, जो कभी युद्धको छोड़कर नहीं भागता था जो जगत्में यशको प्राणोंसे भी अधिक प्यारा मानता था, वह कर्ण तुम्हारा बड़ा भाई था पहिले सूर्य्यके तेजसे वही सूर्य्य समान तेजस्वी कवच और कुण्डल धारण किये मेरे गर्भसे उत्पन्न हुआ था, इसलिये तुम लोग उसे भी जल दो। अपनी माताके ऐसे कठोर बचन सुनकर सब पाण्डव कर्णके शोकसे व्याकुल होगये। तब पुरुष सिंह युधिष्ठिर सांपके समान लम्बा स्वास लेकर अपनी मातासे बोले, वे बाणरूपी तरङ्ग ध्वजारूपी बड़ी बड़ी तरङ्ग बड़े बड़े हाथरूपी ग्राहतालीके शब्दरूपी शब्द और रथरूपी भौरसे युक्त कर्णरूपी समुद्र पहिले तुम्हारे देवरूपी गर्भसे कैसे उत्पन्न हुए थे, जिसके बाणोंको अर्जुनके सिवाय और कोई नहीं सह सक्ता था, जिसके बाहुबलसे हमलोग सदा डरते रहते थे, जिसके बाहुबलसे धृतराष्ट्रके पुत्र राज्य करते थे, उस अग्निरूपी वीर्य्यको तुमने कपड़ेसे कैसे छिपाया था, अर्जुनके बाणोंको महारथ कर्णके सिवाय और कोई राजा नहीं सह सक्ता था, यह सब शस्त्र जाननेवालोंमें श्रेष्ठ हम लोगोंके बड़े भाई थे, उस महा बलवानको तुमने पहिले कैसे उत्पन्न किया था, तुमने यह कथा आज तक हम लोगोंसे नहीं कही इसलिये हमारा नाश होगया। कर्ण, अभिमन्यु द्रौपदीके पांचो पुत्र पाञ्चाल और कौरवोंके मरनेसे हमे महा दुःख हुआ है और सब दुःखसे सौ गुना यह दुःख होगया इस समय हम कर्णके शोकसे ऐसे व्याकुल होगये है जैसे कोई अग्निसे जलता है, यदि हम पहिले इस बातको जानते तो यह कुरुकुलका नाश न होता।

धर्म्मराज युधिष्ठिरने इस प्रकार धीरे धीरे रो कर कर्णको जल दिया फिर राजा युधिष्ठिरने कर्णकी सब स्त्रियोंको बुलाकर भाईके औरसे उनका सब कर्म्म किया फिर बोले कि हमने भूलसे अपने बड़े भाईको मारडाला इस लिये हम शाप देते हैं कि स्त्रियोंके मनकी इच्छा पूरी न होगी। ऐसा कहकर महाराज युधिष्ठिर व्याकुल होकर गङ्गासे निकले और तटपर बैठे।

२७ अध्याय समाप्त।

इति श्रीभाषा महाभारत स्त्रीपर्व्व समाप्त।